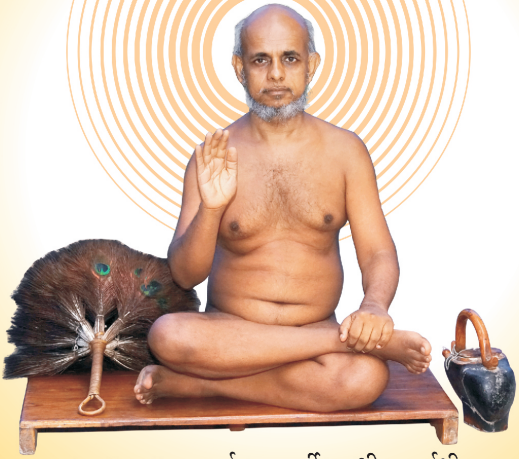

परम पूज्य तपश्चर्या-चक्रवर्ती पट्टाधीशाचार्यश्री

# सुविधिसागर जी महाराज

के

50 वें जन्मदिवस के पावन अवसर पर

सुविधि-परिवार के द्वारा आयोजित

## जिनवाणी-महोत्सव

# सहस्रग्रन्थसंग्रह

❊ जन्मदिवस 19-03-1971 ❊ मुनिदीक्षा-11-05-1989 ❊ आचार्यपद- 20-06-2004

पट्टाधीशपद- 24-12-2010 (20-06-2004 को की गई उद्घोषणा के अनुसार)

परम पूज्य आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज के द्वारा की गई उद्घोषणा:-

हमारी समाधि के पश्चात् आपको इस संघ के संचालकपद पर नियुक्त करते हैं।

(अंकलीकर वाणी-जुलाई 2004) (अक्षयज्योति-अक्तूबर 2004)

# माणक हिन्दी कोश

भाग 5

प्रधान सम्पादक
रामचन्द्र वर्मा

प्रकाशक
हिन्दी साहित्य सम्मेलन
प्रयाग (उत्तरप्रदेश)

(परम्परानायक)

परम पूज्य **चारित्र–चक्रवर्ती,**
आचार्यश्री **आदिसागर** जी महाराज
(अंकलीकर)

(द्वितीय पट्टाधीश)

**परम पूज्य तीर्थभक्त–शिरोमणि,**
आचार्यश्री महावीरकीर्ति जी महाराज

(तृतीय पट्टाधीश)

**परम पूज्य सिद्धान्त–चक्रवर्ती,**
आचार्यश्री सन्मतिसागर जी महाराज

(चतुर्थ पट्टाधीश)

परम पूज्य तपश्चर्या–चक्रवर्ती, **आचार्यश्री** सुविधिसागर जी महाराज

दिगम्बर साधु निरन्तर पगविहार करते रहते हैं। ग्रन्थभण्डार को साथ में रख कर विहार करना अशक्यप्रायः होता है। फलतः उनको ग्रन्थों के सन्दर्भ देखने में असुविधा होती है। उनकी सुविधा के लिये इस कोश का निर्माण किया गया है। इस कोश के निर्माण में किसी भी प्रकार का व्यापारिक हेतु नहीं है।

आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न श्रावकबन्धुओं से निवेदन है कि वे ग्रन्थ का विक्रय कर अध्ययन करने की परम्परा को कायम रखें।

मुखपृष्ठ पर हमने ग्रन्थकर्त्ता, अनुवादक, सम्पादक, प्रकाशक आदि के नाम दिये हैं। किसी संस्थान का कर्तृत्व हमने लुप्त नहीं किया है।

इस कोश के लिये आवश्यक ग्रन्थ हमें अनेक स्रोतों से प्राप्त हुये हैं। हम उन सभी का आभार मानते हैं।

सुविधि–परिवार

# मानक हिन्दी कोश

[ हिन्दी भाषा का अद्यतन, अर्थ प्रधान और सर्वांगपूर्ण शब्द-कोश ]

## पाँचवाँ खंड

(ब से ह तक; तथा दो परिशिष्टों सहित)


प्रधान सम्पादक

**रामचन्द्र वर्म्मा**

सहायक सम्पादक

बदरीनाथ कपूर, एम. ए., पी-एच.डी.



**हिन्दी साहित्य सम्मेलन • प्रयाग**

# प्रकाशकीय

मानक हिन्दी कोश का यह पाँचवाँ और अन्तिम खण्ड हिन्दी जगत् के सम्मुख रखते हुए हमें अतीव प्रसन्नता हो रही है। लगभग आज से दस-ग्यारह वर्ष पहले सम्मेलन के भूतपूर्व आदाता श्री जगदीश स्वरूप एडवोकेट ने इस कार्य का श्रीगणेश किया था और इसके सम्पादन का भार श्री रामचन्द्र जी वर्म्मा को सौंपा था।

नागरी प्रचारिणी सभा द्वारा प्रकाशित हिन्दी शब्द सागर आज से ३५ वर्ष पूर्व प्रकाशित हुआ था और उसके बाद हिन्दी का यह दूसरा बृहत् तथा महत्वपूर्ण कोश ग्रन्थ आज हिन्दी साहित्य सम्मेलन से प्रकाशित हो रहा है।

कोश की विशेषताओं के सम्बन्ध में कोश के प्रधान सम्पादक ने पहले खण्ड में विस्तार से चर्चा की है। उन विशेषताओं की दोहराना यहाँ समीचीन नहीं है। फिर भी हम यहाँ इतना अवश्य कह देना चाहते हैं कि हिन्दी शब्दों का आधी विवेचन प्रस्तुत करने में इस कोश में श्लाघनीय कार्य हुआ है।

निश्चय ही कोश-कार्य ऐसा कार्य नहीं है जिसकी १० वर्षों में ही इतिश्री समझ ली जाय। यह कार्य ऐसा है जिसमें अनेकों पीढ़ियों को दिन-रात लगे रहने की आवश्यकता है। शब्द-चयन के लिए तथा अर्थ निश्चय के लिए सैकड़ों विद्वानों के इसमें बराबर लगे रहने की आवश्यकता है। मानक हिन्दी कोश के प्रथम चार खण्डों के प्रति मनीषी विद्वानों तथा हिन्दी प्रेमियों ने जो सद्भाव प्रकट किये हैं उसके लिए हम कृतज्ञ हैं।

इस कोश के शब्द-चयन, सम्पादन, मुद्रणकार्य में जिनका हमें अनन्य सहयोग प्राप्त हुआ है उनके हम विशेषरूप से आभारी हैं। आशा है हिन्दी जगत् हिन्दी कोश साहित्य में इस अभिनव प्रयास का स्वागत करेगा।

मोहनलाल भट्ट
सचिव, प्रथम शासन निकाय
हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग

# संकेताक्षरों का स्पष्टीकरण

अं०—अंगरेजी भाषा
अ०—(कोष्ठक में) अरबी भाषा
अ०—(कोष्ठक से पहले) अकर्मक क्रिया
अज्ञेय—स० ह्री० वात्स्यायन
अनु०—अनुकरणवाचक शब्द
अप०—अपभ्रंश
अर्द्ध० मा०—अर्द्ध-मागधी
अल्पा०—अल्पार्थक
अव्य०—अव्यय
आस्ट्रे०—आस्ट्रेलिया के मूल निवासियों की बोली
इब०—इबरानी भाषा
उग्र—पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र'।
उदा०—उदाहरण
उप०—उपसर्ग
उभय०—उभयलिंग
कबीर—कबीरदास
कश्म०—कश्मीरी भाषा
केशव०—केशवदास
कोंक०—कोंकणी भाषा
कौ०—कौटिलीय अर्थ-शास्त्र
क्रि०—क्रिया
क्रि० प्र०—क्रिया प्रयोग
क्रि० वि०—क्रिया विशेषण
क्व०—क्वचित्
गुज०—गुजराती भाषा
चन्द०—चन्दबरदाई
जायसी—मलिक मुहम्मद जायसी
जावा०—जावा-द्वीप की भाषा
ज्यो०—ज्योतिष
तिं०—तिंगल भाषा
तो० मा०—तोडा भाषा का मूहा
त०—तमिल भाषा
ति०—तिब्बती
तु०—तुर्की भाषा
तुलसी—गोस्वामी तुलसीदास
ते०—तेलुगु भाषा
दादू—दादूदयाल
दिनकर—रामधारी सिंह 'दिनकर'
दीनदयालु—कवि दीनदयालु गिरि
दे०—देखें
देव—देव कवि
देश०—देशज
द्विवेदी—महावीरप्रसाद द्विवेदी
नपुं०—नपुंसक लिंग
नागरी—नागरीदास
निराला—पं० सूर्यकान्त त्रिपाठी
ने०—नेपाली भाषा
पं०—पंजाबी भाषा
पद्माकर—पद्माकर कवि
पन्त—सुमित्रानन्दन पन्त
पर्या०—पर्याय
पा०—पाली भाषा
पुं०—पुंलिंग
पु० हि०—पुरानी हिन्दी
पुर्त०—पुर्तगाली भाषा
पू० हि०—पूर्वी हिन्दी
पैशा०—पैशाची भाषा
प्रत्य०—प्रत्यय
प्रसाद—जयशंकर प्रसाद
प्रा०—प्राकृत भाषा
प्रे०—प्रेरणार्थक क्रिया
फा०—फारसी भाषा
फ्रां०—फ्रान्सीसी भाषा
बंग०—बंगाली भाषा
बर०—बरमी भाषा
बहु०—बहुवचन
बिहारी—कवि बिहारीलाल
बुं० खं०—बुंदेलखण्डी बोली
भारतेन्दु—भारतेन्दु हरिश्चन्द्र
भाव०—भाववाचक संज्ञा

भू० कृ०—भूत कृदन्त
भूषण—कवि भूषण त्रिपाठी
मतिराम—कवि मतिराम त्रिपाठी
मल०—मलयालम भाषा
मि०—मिलावें
मुहा०—मुहावरा
यहू०—यहूदी भाषा
यू०—यूनानी भाषा
यौ०—यौगिक पद
रघुराज—महाराज रघुराज सिंह, रीवां-नरेश
रसखान—सैयद इब्राहीम .
रहीम—अब्दुर्रहीम खानखानां
राज० त०—राजतरंगिणी
लश०—लश्करी बोली अर्थात् हिंदुस्तानी जहांगिर्मों की बोली
वै०—वैटिन भाषा
व० वि०—वर्ण-विपर्यय
वि०—विशेषण
वि० दे०—विशेष रूप से देखें
विश्राम—विश्रामसागर
व्या०—व्याकरण
शृं०—शृंगार सतसई
सं०—संस्कृत, साक्षा
संयो०—संयोजक अव्यय
संयो० क्रि०—संयोज्य क्रिया
स०—सकर्मक क्रिया
सर्व०—सर्वनाम
सिं०—सिन्धी भाषा
सिंह०—सिंहली भाषा
सूर०—सूरदास
स्त्री०—स्त्रीलिंग
स्पे०—स्पेनी भाषा
हरिऔध—पं० अयोध्यासिंह उपाध्याय
हिं०—हिन्दी भाषा

*यह चिह्न इस बात का सूचक है कि यह शब्द केवल पद्य में प्रयुक्त होता है।

†यह चिह्न इस बात का सूचक है कि इस शब्द का प्रयोग स्थानिक है।

# संस्कृत शब्दों की व्युत्पत्ति के संकेत

अत्या० स०—अत्यादि तत्पुरुष समास (प्रा० स० के अन्तर्गत)
अव्य० स०—अव्ययीभाव समास
उप० स०—उपपद समास।
उपमि० स०—उपमित कर्मधारय समास।
कर्म० स०—कर्मधारय समास
च० त०—चतुर्थी तत्पुरुष समास।
तृ० त०—तृतीया तत्पुरुष समास।
द्व० स०—द्वन्द्व समास
द्विगु० स०—द्विगु समास
द्वि० त०—द्वितीया तत्पुरुष समास
न० त०—नञ्तत्पुरुष समास
न० ब०—नञ्बहुव्रीहि समास
नि०—निपातनात् सिद्धि
पं० त०—पञ्चमी तत्पुरुष समास
पृषो०—पृषोदरादित्वात् सिद्धि
प्रा० ब० स०—आदि बहुव्रीहि समास
प्रा० स०—आदि तत्पुरुष समास
ब० स०—बहुव्रीहि समास
बा०—बाहुलकात्
मयू० स०—मयूरव्यंसकादित्वात् समास
शक०—शकन्ध्वादित्वात् पररूप
ष० त०—षष्ठी तत्पुरुष समास
स० त०—सप्तमी तत्पुरुष समास
√—यह धातु चिह्न है।

विशेष—पृषो०, नि० और बा० ये तीनों पाणिनीय व्याकरण के संकेत हैं। इनके अर्थ हैं, 'पृषोदर' आदि शब्दों की भाँति, 'निपातन' (बिना किसी सूत्र-सिद्धान्त) से और 'बाहुलक' (जहाँ जैसी प्रवृत्ति देखी जाय वहाँ उस प्रकार) से शब्दों की सिद्धि। जिन शब्दों की सिद्धि पाणिनीय सूत्रों से संभव नहीं होती उनकी सिद्धि के लिए उपर्युक्त विधियों का प्रयोग किया जाता है। इन विधियों से किसी शब्द को सिद्ध करने के लिए वर्णों के आगम, व्यत्यय, लोप आदि आवश्यकतानुसार किये जाते हैं।

# मानक हिन्दी कोश

## पाँचवाँ खण्ड



### व

**व**—नागरी वर्णमाला का उन्नीसवाँ व्यंजन जो व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से अंतस्थ, घोष, अल्पप्राण, ईषत्स्पृष्ट तथा दंत्योष्ठ्य है।

**वंक**—वि० [सं० √वंक् (टेढ़ा होना)+अच् (कर्तरि)] १. टेढ़ा। बंक। २ कुटिल।
पु० [√वंक्+घञ्] नदी का मोड़। बंकर।

**वंकट**—वि० [सं० वंक] १. टेढ़ा। बाँका। २ कुटिल। ३ दुर्गम। विकट।

**वंक-नाल**—पु० =वंकनाली।

**वंक-नाली**—स्त्री० [स० कर्म० स०?] सुषुम्ना(नाड़ी)।

**वंकर**—पुं० [स० वंक√रा (लेना)+क] नदी का घुमाव या मोड़।

**वंका**—स्त्री० [स० वंक+टाप्] चारज्रामे (जीन) के अगले हिस्से का ऊँचा उठा हुआ किनारा।

**वंकाला**—स्त्री० [स०] प्राचीन वंग देश की राजधानी का नाम। ('बंगाल्ला' इसी का अपभ्रंश रूप है।)

**वंकिम**—वि० [स० वंक+इमनिच्] आकार, रचना, आदि के विचार से कुछ झुका हुआ या टेढ़ा।
पु० आवारा आदमी।

**वंकिल**—पु० [स०√ वंक्+इनच्] कटक। काँटा।

**वंका**—स्त्री० =वंकि।

**वंकि**—स्त्री० [सं० √वंक्+क्रिन्] १ पशु विशेषत मादा पशु की पसली की हड्डी। २ कोड़ा। ३. प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

**वंक्षण**—पु० [स० वंक्ष् (इकट्ठा होना)+ल्युं—अन] पेड़ू और जाँघ के बीच का अंश।

**वंक्षु**—स्त्री० [स०√वह्+कुन्, नुम्] आधुनिक आक्सस नदी का पुराना नाम।

**वंग**—पु० [स०√ वग् (गति)+अच] १. बंगाल (राज्य)। २. राँगा नामक धातु। ३. वैद्यक मे उक्त धातु की भस्म। ४. कपास। ५. बैंगन। भंटा। ६. एक चंद्रवंशी राजा।
पुं० [?] पहाड़ों की घाटी। (राज०)

**वंगज**—वि० [सं० वंग√जन् (उत्पत्ति)+ड] वंग अर्थात् बंगाल में उत्पन्न। बंगाल मे जन्मा या बना हुआ।
पु० १. बंगाल का निवासी। बंगाली। २ सिंदूर। ३. पीतल।

**वंग-फल**—पु० [सं० ष० त०] सीसा (धातु)।

**वंगसेन**—पु० [सं०] १. अगस्त का वह पेड़ जिसमें लाल फूल लगते हों। २. उक्त में लगनेवाला लाल फूल।

**वंगारि**—पु० [स० वंग-अरि, ष० त०] हरताल नामक खनिज।

**वंगाष्टक**—पु० [सं० वंग-अष्टक, ष० त०] राँगा आदि आठ धातुओं को फूँककर तैयार की जानेवाली औषधि। (वैद्यक)

**वंगीय**—वि० [स० वंग+छ—ईय] १. वंग अर्थात् बंगाल मे होने अथवा उससे संबंध रखनेवाला। २. राँगे का बना हुआ।

**वंगेश्वर**—पु० [स० वंग-ईश्वर, ष० त०] वैद्यक में एक रसौषध।

**वंचक**—वि० [स०√ वंच् (ठगना)+णिच्+ण्वुल्—अक] [भाव० वंचकता] छल-कपट से जो दूसरे को ठग लेता हो।
पु० १ ठग। २ गँवार। ३ पालतू नेवला।

**वंचकता**—स्त्री० [स० वंचक+तल्—टाप्] १. वंचक होने की अवस्था या भाव। २. वंचक का कोई कृत्य।

**वंचन**—पुं० [स०√वंच्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० वंचित] १. धोखा देना या ठगना। २. धूर्तता। ठगी।

**वंचन-योग**—पु० [स० ष० त०] ठगी का अभ्यास।

**वंचना**—स्त्री० [स०√ वंच्+णिच्+युच्—अन, टाप्] छलपूर्वक किसी को ठगने या धोखा देने की क्रिया या भाव।
स० १ छलपूर्वक व्यवहार करना। २. ठगना। ३ वास्तविक रूप या बात छिपाकर कुछ और ही बात बनाना या मिथ्या रूप उपस्थित करना। (चौटिंग)
स०=बाँचना (पढ़ना)।

**वंचनीय**—वि० [सं०√ वंच्+अनीयर] १. जो ठगे जाने के योग्य हो। जिसे ठग सके। २. जो छोड़े या त्यागे जाने के योग्य हो।

**वंचयिता (तृ)**—वि० [स०√वंच्+णिच्+तृच्]=वंचक।

**वंचित**—भू० कृ० [स०√ वंच्+णिच्+क्त] १ धोखे मे आया हुआ। जो ठगा गया हो। २. जो किसी काम, चीज या बात से अलग या दूर किया गया हो। जो रहित हुआ हो। ३. जो वांछित पदार्थ न प्राप्त कर सका हो अथवा जिसे प्राप्त करने मे रोका गया हो। (विश्वनाथ; उक्त दोनों अर्थों मे)

**वंचितक**—पु० [स० वंचित+कन्]=व्याध।

**वंचिता**—स्त्री० [स० वंचित+टाप्] एक प्रकार की पहेली।

**वंचुक**—वि० [सं० √वंच्+उकन्]=वंचक।

**वंच्य**—वि० [सं०√वंच्+ण्यत्]=वंचनीय।

**वंछना**—स० [सं० वांछा] वांछा करना। चाहना।

**बंजुल**—पु० [सं०√वञ् (गति) +उलच्, नुम्] १ बेत। २. तिनिश का पेड़। ३. अशोक। ४ स्थल पर का एक प्रकार का पक्षी।

**बंजुला**—स्त्री० [स० वञ्जुल+टाप्] १. दुधारी गाय। २ पुराणानुसार सह्याद्रि पर्वत से निकलनेवाली एक नदी।

**बंद**—वि० [स०√बंद्+घञ्, करणे] १. कटी दुमवाला। २. कुँआरा। पु०१ अंश। भाग। २ हँगुए की मुठिया। ३. अविवाहित पुरुष।

**बंटक**—वि०[√बंट् (बाँटना)+णिच्+ण्वुल्—अक] बाँटनेवाला। पु० [बंट+कन्] १ बाँट। २. बाँट मे मिलनेवाला हिस्सा। ३. बाँटनेवाला व्यक्ति।

**बंटन**—पुं० [स०√बंट्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० बंटित] १. कोई चीज कुछ व्यक्तियों आदि मे बाँटना। २ किसी चीज के अनेक हिस्से करना।

**बंटनीय**—वि०[स०√बंट्+अनीयर्]जो बाँटा जाय या बाँटा जा सके। बाँटने के योग्य।

**बंटाल**—पुं० [स०√बंट्+आलच्]१ शूरो का युद्ध। २. नौका। ३ कुदाल जिससे जमीन खोदते है।

**बंठ**—वि० [स०]√बंठ् (अकेले जाना)+अच्] १. कुँआरा। २ बौना। ३ अपाहिज। पशु। ४ किसी अंग मे विहीन। हींजाँग। पुं०१ अविवाहित पुरुष। २ दास। ३ बौना व्यक्ति। ४. सेवक। ५ भाला।

**बंठर**—पु०[स०√बंठ्+अरन्]१ ताड के वृक्ष का कल्ला। २. बाँस के कल्ले का वह कडा और मोटा पत्ता जो उसे छिपाये रहता है। यह पत्ता हर गाँठ पर होता है। ३ कुत्ता। ४ कुत्ते की दुम। ५. पशुओ के गले में बाँधने की रस्सी। ६ छाती। स्तन। ७ बादल। मेघ।

**बंड**—वि०[स०√वंड्(आधात करना)+ड]१. वह जिसकी लिंगेंद्रिय के अग्रभाग पर वह चमडा न हो, जो सुपारी को ढँके रहता है। २ जिसका खतना हुआ हो। ३ जिसका कोई अंग कट या निकल गया हो। हींजाँग। पु० ध्वज-भग नामक रोग।

**बंडर**—पु० [सं० √वंड्+अरन्] १. कंजूस। सूम। २ अन्तःपुर का रक्षक नपुंसक। खोजा। स्त्री० पुंश्चली स्त्री।

**बंद**—प्रत्य०[स० वन् से फा०]एक फारसी प्रत्यय जो संज्ञाओ के अन्त मे लगकर 'वाला', 'स्वामी' आदि का अर्थ देता है। जैसे—खुदाबन्द।

**बंदक**—वि०[स०√ वंद् (स्तुति या प्रणाम करना)+ण्वुल्—अक] वंदना करनेवाला।
पु०१ चारण। २ भिक्षु। ३ बाँदा नामक परोपजीवी वनस्पति।

**बंदन**—पु०[स०√वंद्+ल्युट्—अन्] १ नम्रतापूर्वक की जानेवाली वंदना या स्तुति। २ शरीर पर बनाए जानेवाले तिलक आदि चिह्न। ३. एक प्रकार का विष। ४. वंदाक या बाँदा नामक वनस्पति। सिंदूर।

**बंदनक**—पु०[सं० वंदन+कन] वंदन या वंदना।

**बंदन-पूरि**—स्त्री० [स० वंदन=मिंदूर+हिं० पूरि=चूल] अबीर, गुलाल आदि। उदा०—रतिकलाल पर मेलति कामिनि वंदनपूरि।—हितहरिवंश।

**बंदनमाला**—स्त्री० =बंदनवार।

**बंदना**—स्त्री०[स०√वंद्+युच्—अन, टाप्] [भू०कृ०वंदित, वि०वंदनीय] १ आदर और नम्रतापूर्वक की जानेवाली स्तुति। वंदन। २. बौद्धों की एक पूजा। ३ होम हो चुकने पर उसकी भस्म से लगाया जानेवाला तिलक।

**बंदनी**—स्त्री०[स० वंदन+ङीप्]१. स्तुति। वंदना। २. जीवांतु नामक ओषधि। ३ गोरोचन। ४ शरीर पर लगाए जानेवाले तिलक आदि चिह्न। ५ माँगने की क्रिया। याचना। ६. बटी।

**बंदर्भ,य**—वि०[स०√वंद्+अनीयर्] [भाव० वंदनीयता] जिसकी वंदना की जानी चाहिए अथवा की जाने को हो।

**बंदा**—पु०[स०√वंद्+अच्—टाप्]बाँदा नामक परोपजीवी वनस्पति।

**बंदाक, बंदार, बंदारु**—पु० [स०] बंदा या बाँदा नामक परोपजीवी वनस्पति।

**बंदि**—पु०[√बंद्+इन्]—बंदी (कैदी)।

**बंदिग्रह**—पु०[स० बंदि√ग्रह् (ग्रहण+अण्] डाकू।

**बंदित**—भू० कृ०[स०√वंद्+क्त] [स्त्री० बंदिता] जिसकी वंदना हुई हो या की गई हो।

**बंदितव्य**—वि०[सं०√वंद्+तव्य] वंदनीय।

**बंदिता (तृ)**—वि०[स०√वंद्+तृच्] वंदना करनेवाला।
वि० स०'वंदित' का स्त्री०।

**बंदी (दिन्)**—पु० [स०√बंद्+णिनि] १. वह जिसे बंधन मे रखा गया हो। २ वह अपराधी जिसे दंड-स्वरूप कारागार मे रखा गया हो।

**बंदीगृह**—पु०[स० ष० त०] कैदखाना। कारागार।

**बंदीजन**—पु०[स० कर्म० स०]१ राजाओं आदि का यश वर्णन करनेवाली एक प्राचीन जाति। २. उक्त जाति का व्यक्ति या चारण।

**बंद्य**—वि०[स०√वंद्+ण्यत्] =वंदनीय।

**बंधा**—स्त्री०[स० वध+टाप्]१. बाँदा नामक वनस्पति। २ गोरोचन।

**बंधुर**—पु० [स० बंधुर] १. रथ या गाडी का आश्रय जिसमे दोनों हरसे और धुरा प्रधान होते है। २. गाड़ी मे का वह स्थान जहाँ सारथी या गाड़ीवान बैठकर उसे चलाता है।

**बंध्य**—वि० [सं० बन्ध्य] १. जिसमे कोई परिणाम या फल उत्पन्न करने की शक्ति न हो। अनुत्पादक। २. जिसमे बीज या संतान उत्पन्न करने की शक्ति न हो। बाँझ। (स्टरायल) ३. जिसका कोई परिणाम या फल न हो। निष्फल।

**बंध्यकरण**—पु० [स०] अनुर्वरीकरण। (स्टर्लाइजेशन)

**बंध्या**—स्त्री० [स० वध्या] वह स्त्री या मादा पशु जो गर्भ धारण करने मे फलतः प्रसव करने मे असमर्थ हो। बाँझ।

**बंध्या-रुकंटिका**—स्त्री०[सं० बंध्याकर्कटिका] बाँझ ककोड़ा।

**बंध्या-पुत्र**—पु०[स० बन्ध्यापुत्र] बाँझ स्त्री के पुत्र की तरह होनेवाला असंभव पदार्थ।

**बंश**—पु० [सं०√वम् (उगलना)वा√वन् (शब्द)+श] १. बाँस। २ बाँस की बनी हुई बाँसुरी। ३. छाजन की बँडेर जो बाँस की होती है। ४. एक प्रकार की ईख। ५. पीठ के बीच में हड्डियों की गुरियों की लंबी माला या शृंखला जो गरदन से कमर तक होती है। रीढ़। ६. नाक के बीच की लंबी हड्डी। बाँसा। ७. खड्ग के बीच का पीछे की ओर उठा हुआ या ऊँचा भाग। ८. बारह हाथ की एक पुरानी नाप। ९ हाथ या पैर की लंबी हड्डी। नली। १०. युद्ध की सामग्री। ११.

पुष्प। फूल। १२. विष्णु का एक नाम। १३. जीव या प्राणी की संतान-परम्परा। एक ही जीव, प्राणी या व्यक्ति से उत्पन्न होनेवाले जीवों, प्राणियों या व्यक्तियों की परम्परा या शृंखला। कुल। खानदान। १४ दे० 'वंशलोचन'।

**वंशक**—पु० [स० वंश+कन] १. छोटी जाति का बाँस। छोटा बाँस। २. अगर नामक गंध-द्रव्य। अगरु। ३ एक प्रकार की ईख। ४. एक प्रकार की मछली।

**वंशकपूर**—पुं० [स० वंशपूर] वंशलोचन।

**वंशकर**—पु० [स० वंश√कृ (करना)+अच्] वह पुरुष जिससे किसी वंश का आरंभ हुआ हो। मूलपुरुष।

**वंशकरी**—स्त्री० [स० वंशकर+ङीप्] वंशधरा नदी।

**वंशकार**—पु० [स० वंश√कृ+अण्] गवैया।

**वंशज**—पु० [स० वंश√जन् (उत्पत्ति)+ड] १ वह जो किसी वंश में उत्पन्न हुआ हो। २ किसी विशिष्ट व्यक्ति के विचार या उसकी संतान। जैसे—ये लोग टोडरमल के वंशज हैं। (हिंदुस्तान, उक्त दोनों अर्थों में)

**वंशजा**—स्त्री० [सं० वंशज+टाप्] वंशलोचन।

**वंश-तिलक**—पु० [स०] गिगल में एक प्रकार का छंद।

**वंश-धर**—पु० [सं० ष० त०] १ बाँस धारण करनेवाला। २ वह जो किसी के वंश में उत्पन्न हुआ हो। वंशज। ३ वह जिसने अपने वंश या कुल की मर्यादा की रक्षा की हो।

**वंश-धरा**—स्त्री० [स० वंशधर+टाप्] मध्य प्रदेश की एक नदी, जो पुराणानुसार महेन्द्र पर्वत से निकली है। आज-कल इसे 'बंशधारा' कहते हैं।

**वंश-धान्य**—पु० [सं० ष० त०] बाँस का चावल। (वि० दे० 'बाँस')

**वंशनर्ती (र्तिन्)**—पु० [स० वंश√नृत् (नाचना)+णिनि] भाँड।

**वंश-नाश**—पुं० [सं० ष० त०] फलित ज्योतिष के अनुसार एक योग जो शनि, राहु, और सूर्य के एक साथ किसी लग्न में, विशेषतः पंचम लग्न में पड़ने पर होता है, और जिसके फल-स्वरूप सारे वंश या परिवार का नष्ट होना माना जाता है।

**वंश-नेत्र**—पु० [स० ब० स०] ऊख की जड़ या पोर जिसमें से अँखुआ निकलता है।

**वंश-पत्र**—पु० [स० ब० स०] हरताल (खनिज)।

**वंश-पत्रक**—पु० [सं० वंशपत्र+कन्] १. एक प्रकार की ईख जो सफेद होती है। २. एक तरह की मछली। ३. हरताल।

**वंश-पत्र-पतित**—पु० [सं० ष० त०] एक प्रकार का छन्द।

**वंशपत्री**—स्त्री० [सं० वंशपत्र+ङीप्] १. एक प्रकार की घास। २. बाँसा नाम की घास।

**वंश-रोचना**—स्त्री० [स० ष० त०] वंसलोचन।

**वंशलोचन**—पुं० [सं० वंशरोचना] वंसलोचन। (देखे)

**वंश-वज्जा**—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का अर्द्ध-सम वर्णिक वृत्त जो इधर हाल में इंद्रवज्रा और इन्द्रवंशा के योग से बनाया गया है। इसके पहले और तीसरे चरणों में तगण, तगण, जगण और दो गुरु वर्ण होते हैं।

**वंश-वृक्ष**—पुं० [सं० ष० त०] वृक्ष की आकृति का वह रेखा-चित्र जिसमें किसी वंश के मूल पुरुष से लेकर उसके परवर्ती वंशजों (पुरुषों) का क्रमशः नाम एक विशिष्ट क्रम से लिखा होता है।

**वंश-शर्करा**—स्त्री० [सं० ष० त०] वंसलोचन।

**वंश-शलाका**—स्त्री० [स० ष० त०] बीन, सितार, आदि बाजों का डंडा।

**वंशस्थ**—पु० [सं० वंश√स्था (ठहरना)+क] बारह वर्णों का एक वर्ण-वृत्त जिसका व्यवहार संस्कृत काव्यों में अधिक मिलता है। इसमें जगण, तगण, जगण, और रगण आते हैं। इसे 'वंशस्थविल' भी कहते हैं।

**वंश-हीन**—वि० [स० तृ० त०] १. जिसके वंश में कई न हो। निर्वंश। २. जिसके पुत्र न हो।

**वंशागत**—वि० [स० वंश-आगत, ष० त०] १ वंश-परम्परा से प्राप्त। २. उत्तराधिकार में प्राप्त।

**वंशानुक्रम**—पु० [स० वंश-अनुक्रम, ष० त०] [वि० वंशानुक्रमिक] किसी वंश में बराबर चलता रहनेवाला क्रम या परम्परा।

**वंशानुक्रमण**—पु० [सं० वंश-अनुक्रमण, ष० त०] वंश-परंपरा।

**वंशानुक्रमिक**—वि० [स० वंशानुक्रम+ठन्—इक] वंश में परम्परा के रूप में चलनेवाला। आनुवंशिक। (हेरीडेटरी)

**वंशावली**—स्त्री० [स० वंश-आवली, ष० त०] किसी वंश में उत्पन्न पुरुषों की त्रैकालिक क्रम-सूची। (जीनिऐलॉजी)

**वंशिक**—पु० [सं० वंश+ठन्—इक] १ अगर की लकड़ी। २ काला गन्ना।

**वंशिका**—स्त्री० [सं० वंशिक+टाप्] १ अगर की लकड़ी। २ बंसी। मुरली। ३. पिप्पली।

**वंशी**—स्त्री० [सं० वंश+अच्—ङीप्] १ मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा जो बाँस में सुर निकालने के लिए छेद करके बनाया जाता है। बाँसुरी। मुरली। २ वंशलोचन। बंसलोचन। ३ चार कर्ण या आठ कोने की एक पुरानी तोप।

वि० [स० वंशिन्] किसी विशिष्ट वंश में उत्पन्न होने या उससे संबंध रखनेवाला। जैसे—चंद्रवंशी, सूर्यवंशी।

**वंशीधर**—पु० [स० ष० त०] श्रीकृष्ण।

**वंशीय**—वि० [स० वंश+छ—ईय] किसी वंश या कुल से संबंध रखने या उसमें होनेवाला।

**वंशी-वट**—पु० [स० मध्य० स०] वृन्दावन वन में स्थित बरगद का एक पेड़ जिसके नीचे श्रीकृष्ण बंशी बजाते थे।

**वंशोद्भव**—वि० [स० वंश-उद्भव, ब०स०] किसी विशिष्ट वंश या कुल में उत्पन्न।

**वंशोद्भवा**—स्त्री० [सं० वंशोद्भव+टाप्] बंसलोचन।

**वंश्य**—वि० [स० वंश+यत्] १. वंश-संबंधी। वंश का। २ किसी वंश या कुल में उत्पन्न। वंशज।

पु० १. छत की छाजन में की बँडेर। २ पीठ की रीढ़।

**व**—पु० [स०√वा (गमनादि)+क] १. वायु। २ बाण। ३. वरुण। ४. बादल। ५. मंत्रणा। ६. कल्याण। ७. सात्वना। ८ बस्ती। ९. समुद्र। १०. शार्दूल। ११ वस्त्र। १२ कोई का कद। सेरकी। १३. जल में पैदा होनेवाले कंद। शालूक। १४. वदन। १५. अस्त्र। १६. खड्गधारी पुरुष। १७. मूर्खिलता। १८. वृक्ष। १९. कलश से उत्पन्न ध्वनि। २०. मद्य। २१. प्रचेता।

अव्य० [फा०] और। जैसे—अमीर व गरीब।

†सर्व० वह' का संक्षिप्त रूप।

**वक**—पु० [सं०√ वक् (टेढा होना)+अच्, पृषो० नलोप] १ बगला नाम का पक्षी। २. अगस्त का पेड़ या फूल। ३ एक प्रकार का यज्ञ। ४. कुबेर। ५. एक प्राचीन जाति। ६. एक राक्षस जिस भीम ने मारा था। ८ एक असुर या दैत्य जिसे श्रीकृष्ण जी ने मारा था।

**वकअत**—स्त्री० [अ०] १. शक्ति। बल। ताकत। २ महत्त्व। ५ मान-मर्यादा।

**वककच्छ**—पु० [सं० मध्य० स०] एक प्राचीन जनपद जो नर्मदा नदी के किनारे था।

**वकजित्**—पु० [स० वक+√ जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] १ श्रीकृष्ण। २. भीमसेन।

**वक-पंचक**—पु० [सं० ष० त०] कार्तिक शुक्ल एकादशी से कार्तिक पूर्णिमा तक की पाँचों तिथियाँ।

**वक-यंत्र**—पु० [स० मध्य० स०] अरक, आसव आदि खींचने का एक तरह का भबका।

**वकर**—पु०=बकर (नदी का घुमाव या मोड़)।

**वक-वृत्ति**—स्त्री० [स० ष० त०] धोखा देकर काम निकालने की घात में उसी प्रकार लगे रहने की वृत्ति जिस प्रकार बगला शान्त भाव से खड़ा रहकर मछली पकड़ने की घात में रहता है।

**वक-व्रत**—पु० [स० ष० त०] [वि० वकव्रती] १ बगले की तरह चुपचाप और सीधे बनकर किसी का अनिष्ट करने की ताक में रहना। २ [ब० स०] उक्त प्रकार से घात में लगा रहनेवाला व्यक्ति।

**वकार**—पुं० [अ०] १. प्रतिष्ठा। मान-मर्यादा। २ बड़प्पन। महत्त्व।

**वकालत**—स्त्री० [हि० वकील] १. वकील होने की अवस्था या भाव। २. वकील का काम या पेशा। ३. अन्य व्यक्ति द्वारा किसी के पक्ष का किया जानेवाला मडन। (व्यग्य)

**वकील**—पु० [अं० वाकिल] १. वह व्यक्ति जो किसी की ओर से उसका कोई काम करने का भार अपने ऊपर ले। प्रतिनिधि। २. किसी का सदेश कही पहुँचानेवाला व्यक्ति। सदेशवाहक। दूत। ३. राजदूत। एलची। ४. वह जो किसी की ओर से उसके पक्ष का युक्तिपूर्वक मडन या समर्थन करता हो। ५ आज-कल विधिक क्षेत्र मे, एक विशिष्ट परीक्षा पारित और विधिक दृष्टि से अधिकार-प्राप्त वह व्यक्ति जो न्यायालय मे किसी पक्ष की ओर से खडन, मडन आदि का काम करने के लिए नियुक्त होता है।

**वकुल**—पु० [सं०√वकृ (टेढा)+कुलच्] १. अगस्त का पेड़ या फूल।

**वकुला**—स्त्री० [स० वकुल+टाप्] कुटकी नामक ओषधि।

**वकुली**—स्त्री० [स० वकुल+ङीष्] १. काकोली नाम की ओषधि। २ मौलसिरी का फूल।

**वकुश**—पु० [सं०] जैनियों मे वह महापुरुष जिसे भक्तों की चिंता रहती है।

**वकूल**—पु० [अ० वकूल] फ्रैक्टीकरण।
क्रि० प्र०—मे आना।—होना।

**वकूफ**—पु० [अ० वकूफ] १. जानकारी। ज्ञान। २ बुद्धि। समझ। ३. काम करने का अच्छा ढंग। शऊर। सलीका।
मुहा०—वकूफ पकड़ना=अक्ल सीखना।

**वकूफदार**—वि० [अ०+फा०] [भाव० वकूफदारी] १. समझदार। २. अनुभवी।

**वक्त**—पु० [अ० वक्त] १. समय। काल।
क्रि० प्र०—काटना।—गँवाना।—बिताना।
मुहा०—किसी पर वक्त पड़ना=कष्ट या विपत्ति के दिन आना। २. किसी काम या बात के लिए उपयुक्त समझा. अवसर। मौका। जैसे—आप भी ठीक वक्त पर आये। ३. वह निश्चित समय जो किसी विशिष्ट काम के लिए नियत हो। जैसे—उन्हें मैंने यही वक्त दिया था, शायद चले गये हों। ४ पचांग, घडी आदि के अनुसार विवक्षित, पल घडी, दिन आदि। जैसे—खाने का वक्त, सोने का वक्त, स्कूल का वक्त आदि। ५. उतना समय जितना किसी कार्य के सम्पादन मे लगा हो। जैसे—इस काम मे २ घटे का वक्त लगेगा। ६. अवकाश। फुरसत। जैसे—अगर वक्त मिले तो आप भी आ जायँ। ७. मृत्यु का समय। जैसे—अब जिसका वक्त आ जायगा तब उसे जाना ही पड़ेगा।

**वक्तव्य**—वि० [स०√वच् (बोलना)+तव्य] [भाव० वक्तव्यता] १. जो कहा जाने को हो। २. जो कहे जाने के योग्य हो। ३. जिसके सबध मे कुछ कहा जा सकता हो।
पु० १. वक्ता का कथन। २. वह कथित या प्रकाशित विवरण जिसमें किसी ने लोगो की जानकारी के लिए वस्तु-स्थिति स्पष्ट की हो अथवा अपना विचार या मशा प्रकट की हो। (स्टेटमेन्ट)

**वक्तव्यता**—स्त्री० [सं० वक्तव्य+तल्—टाप्] किसी बात के सबध मे वक्तव्य या उत्तर देने का भार।

**वक्ता** (क्तृ)—वि० [स०√वच्+तृच्] १ कहने या बोलनेवाला। २ जो अच्छी तरह कोई बात कह या बोलकर बतला सकता हो। अच्छा बोलनेवाला।
पु० वह जो जन-समाज के सामने कोई बात अच्छी तरह और समझा-कर कहता हो। जैसे—कथा कहनेवाला, भाषण या व्याख्यान देने-वाला।

**वक्तृक**—पु० [सं० वक्तृ+कन्]=वक्ता।

**वक्तृता**—स्त्री० [सं० वक्तृ+तल्—टाप्] १ वक्ता होने की अवस्था, गुण या भाव। २ भाषण। व्याख्यान।

**वक्तृत्व**—पु० [सं० वक्तृ+त्व] १. वक्तृता। वाग्मिता। २. अच्छे वक्ता होने की अवस्था, गुण या भाव। वाग्मिता। ३. वक्तृता। ४ कथन। वक्तव्य।

**वक्तृत्व-कला**—स्त्री० [स० ष० त०] १. वक्तृता अर्थात् प्रभावशाली ढग से भाषण देने की कला या विद्या। (इलोक्यूशन)

**वक्तृत्व-शास्त्र**—पु० [स० ष० त०] वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि दूसरों पर प्रभाव डालने के लिए किस प्रकार की बातें कहनी या वक्तृता होनी चाहिए। (रिटॉरिक)

**वक्त्र**—पु० [स०√वच् (बोलना)+त्र] १. मुँह। मुख। २. जानवरों का थूथन। ३. पक्षियों की चोंच। चचु। ४. तीर, भाले आदि की नोक। ५. अगला भाग। ६. कार्य का आरम्भ। ७. एक तरह का पुराना पहनावा। ८ एक प्रकार का छद।

**वक्त्रज**—पु० [स० वक्त्र√जन् (उत्पत्ति)+ड] ब्राह्मण।

**वक्त्र-ताल**—पुं० [सं० ष० त०] सगीत मे वह ताल जो मुँह से कुछ कह या बजाकर दिया जाय। (किसी पर आघात करके दिये जानेवाले ताल से भिन्न)

**वक्त-तुंड**—पुं० [स० ब० स०] गणेश।

**वक्त-मेदी (दिन्)**—वि० [सं० वक्त√भिद् (भेदन करना)+णिनि, दीर्घ नलोप] बहुत कड़ुआ, चटपटा या तीक्ष्ण (खाद्य पदार्थ)।

**वक्त-शोधी (धिन्)**—वि० [स० वक्त√शुध् (शुद्ध करना)+णिच् +णिनि] मुँह साफ करनेवाला (पदार्थ)।
पुं० जँवीरी नीबू।

**वक्त्रासव**—पु० [सं० वक्त्र-आसव, ष० त०] लाला। थूक।

**वक्फ**—पुं० [अ० वक़्फ़] १. किसी देवता की पूजा आदि धार्मिक कार्यों अथवा लोकोपकारी संस्था का कोई चीज (धन या संपत्ति) अर्पित करने का कार्य। २. उक्त रूप में अर्पित किया हुआ धन या संपत्ति। ३. दान।

**वक्फ नामा**—पु० [अ० वक्फ+फ़ा० नामः] १. वह पत्र जिसके अनुसार किसी के नाम कोई चीज वक्फ की जाय। दानपत्र। २ वह लेख जो वक्फ की हुई संपत्ति या धन का प्रमाण हो।

**वक्फा**—पुं० [अ० वक़्फ़ा] १. दो घटनाओं के बीच में पड़नेवाला थोड़ा समय। अवकाश। २. काम से मिलनेवाली छुट्टी या फुरसत।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

**वक्र**—वि० [सं० √वक् (टेढ़ा होना)+रन् पृषो० नलोप] [भाव० वक्रता] १. जो आड़े या बड़े बल में हो। टेढ़ा या तिरछा। 'ऋजु' का विपर्याय। २. झुका हुआ। नत। ३. कुटिल और धूर्त। ४. त्रिपुर नामक असुर। ५. दे० 'वक्र-गति'।
पुं० १ नदी का मोड़। बकर। २. मंगल ग्रह। ३ शनैश्चर ग्रह। ४. रुद्र।

**वक्र-गति**—वि० [सं० ब० स०] १. टेढ़ी-मेढ़ी चालवाला। २. कुटिल। ३. उलटी गतिवाला (ग्रह)।
पु० १. ग्रह लाघव के अनुसार वे ग्रह जो सूर्य से पाँचवें, छठे, सातवें और आठवें हों। इस प्रकार मंगल ३६ दिन, बुध २१ दिन, बृहस्पति १०० दिन, शुक्र १२ दिन और शनि १८४ दिन वक्री होता है। २ मंगल ग्रह।

**वक्रनाल**—पुं० [सं० ब० स०] फूँककर बजाया जानेवाला पुरानी चाल का एक बाजा।

**वक्रगामी (मिन्)**—वि० [स० वक्र√गम् (जाना)+णिनि] १ जिसकी गति वक्र हो। टेढ़ी चालवाला। २ कुटिल और धूर्त।

**वक्र-ग्रीव**—पुं० [सं० ब० स०] ऊँट।

**वक्र-चंचु**—पु० [सं० ब० स०] तोता।

**वक्रता**—स्त्री० [सं० वक्र+तल्—टाप्] १ वक्र होने की अवस्था, गुण या भाव। टेढ़ापन। २ साहित्य में किसी रचना, वस्तु या विषय के निर्वचन और उसकी वर्णन-शैली में रहनेवाला वह अनोखा बाँकापन या उच्च कोटि का सौन्दर्य जो परम उत्कृष्ट प्रतिभा का परिचायक होता है। जैसे—वस्तु-वक्रता, वाक्य-वक्रता।

**वक्र-ताल**—पु० [सं० ब० स०] वक्रनाल (बाजा)।

**वक्र-तुंड**—पु० [सं० ब० स०] १. गणेश। २. तोता।

**वक्र-दंष्ट्र**—पुं० [सं० ब० स०] सूअर।

**वक्र-दृष्टि**—स्त्री० [स० ब० स०] १. टेढ़ी दृष्टि। २. क्रोध आदि से युक्त दृष्टि। ३. मन्द दृष्टि।
वि० १. (व्यक्ति) जिसकी दृष्टि पड़ने से कुछ अमंगल होता या हो सकता हो। २. क्रोधपूर्ण दृष्टि।

**वक्र-धर**—पुं० [स० ष० त०] द्वितीया का वक्र चन्द्रमा धारण करनेवाले शिव।

**वक्र-नख**—पुं० [स० उपमति स०] १. चुगलखोर। २. तोता।

**वक्र-नाल**—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का पुराना बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता था।

**वक्र-नासिक**—वि० [स० ब० स०] टेढ़ी नाकवाला।
पु०=उल्लू।

**वक्र-पुच्छ**—पु० [सं० ब० स०] कुत्ता।

**वक्र-पुष्प**—पु० [स० ब० स०] १. अगस्त का पेड़। २. पलाश।

**वक्रांग**—वि० [सं० वक्र-अंग, ब० स०] जिसका कोई अंग टेढ़ा हो।
पु० १. हंस नाम का पक्षी। २ सर्प। साँप।

**वक्रित**—भू० कृ० [सं० वक्र+इतच्] टेढ़ा किया हुआ।

**वक्रिम**—वि० [स० वंक् (गमनादि)+क्रिमच्] १. टेढ़ा। २. कुटिल।

**वक्रिमा (मन्)**—स्त्री० [स० वक्र+इमनिच्]=वक्रता।

**वक्री (क्रिन्)**—वि० [स० वक्र+इनि, दीर्घ नलोप] जो अपना सीधा मार्ग छोड़कर इधर-उधर हट गया हो या पीछे की ओर मुड़ने लगा हो। जैसे—अब मंगल ग्रह वक्री होगा।

**वक्रोक्ति**—स्त्री० [स० वक्र-उक्ति, कर्म० स०] १. किसी प्रकार की वक्रता से युक्त कोई चमत्कारपूर्ण उक्ति। २. काकु अलंकार से युक्त उक्ति। ३. साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें एक अभिप्राय से कही हुई बात का काकु या श्लेष के आधार पर कुछ और ही अभिप्राय निकलता या निकाला जाता है। यह अर्थ परिवर्तन शब्दों के आधार पर ही होता है, इसलिए कुछ आचार्य इसे शब्दालंकार मानते हैं।

**वक्रोक्ति-गर्विता**—स्त्री० [स०]=गर्विता (नायिका)।

**वक्रोष्ठिका**—स्त्री० [सं० वक्र-ओष्ठ, ब० स० +कन्+टाप्, इत्व] मद हँसी। मुसकान।

**वक्षःस्थल**—पु० [स० ष० त०] छाती।

**वक्ष (क्षु)**—पु० [स०√वक्ष् (बलिष्ठ होना)+असुन्] १. पेट और गले के बीच में पड़नेवाला वह भाग जिसमें स्त्रियों के स्तन और पुरुषों के स्तन के से चिह्न होते हैं। उरस्थल। २ बैल।

**वक्षस्छद**—पु० [स० वक्षस्√छद् (ढकना)+घ] कवच।

**वक्षु**—पुं० वक्षु (नद)।

**वक्षोज**—पु० [स० वक्षस्√जन् (उत्पन्न करना)+ड] स्त्री का स्तन।

**वक्षोरुह**—पुं० [सं० वक्षस्√रुह (उगना)+] स्त्री का स्तन।

**वक्ष्यमाण**—वि० [स०√वच् (कहना)+लृट्—शानच्, मुक आगम] १. जो कहा जा सके। वाच्य। वक्तव्य। २. जो कहा जा रहा हो।

**वगला**—स्त्री० [स०] बगलामुखी।

**वगलामुखी**—स्त्री० [स० ब० स०] दस महाविद्याओं में से एक।

**वगाहना**—स०=अवगाहना। उदा०—पूतना को पय पान करै मनु पूतनाते बिसवास वगाहत।—देव।

**वगैरह**—अव्य० [अ० वग़ैरह] और इसी प्रकार शेष या संबंधित भी। आदि। इत्यादि।

**वग्ग**†—पुं०=वर्ग।

**वचः (चस्)**—पु०[सं० √वच् (बोलना)+असुन्]वचन। बात।

**वच**—पु० [सं० √वच्+अच्] १. तोता। २ सूर्य। ३ कारण। ४ वचन। बात।
स्त्री०=वाचा।

**वचन**—पु०[सं० √वच्+ल्युट्—अन] १ मनुष्य के मुँह से निकला हुआ सार्थक शब्द। वाणी। वाक्य। २. किसी की कही हुई बात। उक्ति। कथन। ३. दृढ़तापूर्वक या प्रतिज्ञा के रूप में कही हुई बात। जैसे—वचन-बद्ध। ४. व्याकरण मे वह तत्त्व जिसके द्वारा संख्या की संख्या का बोध होता है। (नम्बर)

**वचनकार**। (रिन्)—वि० [सं० वचन√कृ (करना)+णिनि] आज्ञाकारी।

**वचन-गुप्ति**—स्त्री० [सं० ष० त०] जैन धर्म के अनुसार वाणी का ऐसा संयम जिसमे वह अनुचित या बुरी बातें कहने मे प्रवृत न हो।

**वचन-चतुर**—पु०[सं० स० त०] साहित्य मे शृंगार रस का आलम्बन वह व्यक्ति जिसके वचनो में चतुराई भरी होती है।

**वचन-बध**—पु०[सं० तृ० त०] यह कहना कि हम अमुक काम या बात अवश्य और निश्चित रूप से करेंगे।

**वचन-बद्ध**—वि०[सं० तृ० त०] जिसने किसी को कोई विशिष्ट काम करने या न करने का वचन दिया हो।

**वचन-लक्षिता**—स्त्री० [सं० तृ० त०] साहित्य मे वह नायिका जिसकी बात-चीत से उसका उपपति से होनेवाला प्रेम लक्षित होता हो।

**वचन-विदग्धा**—स्त्री०[सं० स० त०] साहित्य मे वह परकीया नायिका जो अपने वचन की चतुराई से नायक की प्रीति सपादित करती हो।

**वचनीय**—वि०[सं०√वच्+अनीयर] १.कहे जाने के योग्य। २. जिसके संबध मे दोष या निंदा की कोई बात कही जा सकती हो। दूषित। बुरा।

**वचर**—पु० [सं० अव√चर्(जाना)+ अच्, अकारलोप] १. कुक्कुट। मुर्गा। २. शठ। दुष्ट।

**वचस्पति**—पु०[सं० ष० त०, षष्ठी का अलुक्] बृहस्पति।

**वचसा**—अव्य०[सं० वचस् की तृतीया विभक्ति का रूप] वचन के रूप मे। वचन से।

**वचस्वी (स्विन्)**—वि० [सं० वचस्+विनि, दीर्घ, नलोप] वाक्पटु।

**वचा**—स्त्री०[सं० √वच् +णिच्+अज्, नि० ह्रस्व] १ वच (ओषधि)। २. मैना। सारिका।

**वचोहर**—पु० [सं० वचस्√ हृ (हरण करना)+अच्] संवादवाहक।

**वच्छ**—पु०[सं० वक्षस् प्रा० वच्छ] उर। छाती।
पु० बछड़ा।

**वजन**—पु०[अ० वजन]१. भार। बोझ। २ भार का परिणाम। तौल। ३ भारीपन। गुरुत्व। जैसे—सोने में वजन होता है। ४ मान-मर्यादा का सूचक महत्त्व। जैसे—उनकी बात कुछ वजन रखती है।
क्रि० प्र०—रखना।
५ वह विशेषता जिसके कारण चित्र का एक अग दूसरे से न्यून या विषम हो जाय। (चित्र-कला)

**वजनदार**—वि०[अ०+फा०] १. (पदार्थ) जिसमे वजन हो। गुरु। भारी। २ (कथन या बात) जिसमें विशेष तथ्य, प्रभाव, बल या महत्त्व हो।

**वजनी**—वि०[अ० वजनी] १. जिसका बहुत वजन या बोझ हो। भारी। २ जिसका विशेष प्रभाव या महत्त्व हो।

**वजह**—स्त्री०[अ०]१. कारण। हेतु। २. प्रकृति। तत्त्व।

**वजा**—स्त्री० [अ० वजअ] १. संघटन। बनावट। रचना। २. बनावट का ढग। ३. बनावट का अच्छा और सुन्दर ढग या प्रकार। सज-धज। ४. अवस्था। दशा। हालत। ५. ढग। प्रणाली। रीति।
वि० १. जो काट या निकालकर अलग कर दिया गया हो। घटाया हुआ। २. (धन) बाद या मुजरा किया हुआ।

**वजादार**—वि० [अ० वजा+फा० दार] [भाव० वजादारी] १. जिसकी बनावट या गठन बहुत अच्छी और सुन्दर हो। तरहदार। २. सज-धजवाला। ३ अपनी रीति-नीति न छोड़नेवाला।

**वजादारी**—स्त्री० [अ०+फा०] १ वजादार होने की अवस्था या भाव। २. आभरण-व्यवहार, बनाव सिंगार, रहन-सहन आदि का अच्छा और सुन्दर ढग। ३ अच्छी वेष-भूषा। ४ मान. मर्यादा आदि का सुन्दरतापूर्वक होनेवाला निर्वाह।

**वजारत**—स्त्री० [अ० वजारत] वजीर अर्थात् मत्री का काम, पद या कार्यालय।

**वजीफा**—पु० [अ० वजीफ़ा] १ भरण-पोषण आदि के लिए मिलनेवाली आर्थिक सहायता। वृत्ति। २ छात्रवृत्ति। ३. पेंशन। ४ नियम और श्रद्धापूर्वक किया जानेवाला जप या पाठ। (मुसलमान)
क्रि० प्र०—पढ़ना।

**वजीकादार**—वि० [अ० वजीफ़ा+फा० दार] जिसे वजीफा मिलता हो।

**वजीर**—पु० [अ० वजीर] १. वह जो बादशाह या प्रधान शासक का सलाहकार हो। अमात्य। मन्त्री। २ राजदूत। ३ शतरज का एक मोहरा जो बादशाह से छोटा तथा बाकी सब मोहरो से बड़ा होता है।

**वजीरिस्तान**—पु० [फा०] वजीरी कबीलो का प्रदेश जो पाकिस्तान की पश्चिमी सीमा पर है।

**वजीरी**—स्त्री०[अ०] वजीर का काम, पद या भाव। वजारत।
पु० पशुओं की एक जाति।

**वजू**—पु० [अ० वुजू] नमाज पढने से पहले शारीरिक शुद्धि के लिए हाथ-पाँव धोना। (मुसलमान)

**वजूद**—पुं०[अ०] १ सत्ता। अस्तित्व।
क्रि० प्र०—मे आना।
२. देह। शरीर। ३. सृष्टि।

**वजूहात**—स्त्री० [अ०] वजह का बहु० रूप।

**वज्द**—पु०[अ०] वह स्थिति जिसमे मनुष्य काव्य, सगीत आदि की उच्च कोटि की रसानुभूति के कारण आनन्द से विभोर होकर अपने आपको भूल जाता है। आनन्दातिरेक के कारण होनेवाली आत्म-विस्मृति।

**वज्र**—वि०[सं० √वज् (गति)+रन्]१. बहुत अधिक कठोर। बहुत कड़ा या सख्त। २. बहुत अधिक उग्र या तीव्र। जैसे—वज्राग्नि।

३. जिस पर महंगा और किसी प्रकार का प्रभाव न पड़ सकता हो। बहुत बढ़ा-चढ़ा। जैसे—वज्र मूर्ख, वज्र वधिर।

पुं० १. पुराणानुसार भाले के फल के समान एक शस्त्र जो इन्द्र का प्रधान शस्त्र कहा गया है, और जो दधीचि ऋषि की हड्डियों से बनाया गया था। कुलिश। २. आकाश से गिरनेवाली बिजली।

क्रि० प्र०—गिरना।—पड़ना।

मुहा०—वज्र पड़े =ईश्वर के प्रकोप से सर्वनाश हो। (स्त्रियों का शाप)

३. बौद्ध साधकों और सिद्धों की परिभाषा में, शून्य अर्थात् परम तत्त्व की संज्ञा जो उसकी अभेद्यता, दृढ़ता आदि गुणों के आधार पर उसे दी गई थी। ४ उक्त के आधार पर बौद्धों में चक्राकार चिह्न की संज्ञा। ५ फलित ज्योतिष में २२ व्यतीपात योगों में से एक व्यतीपात योग। ६ वास्तु-कला में, ऐसा लंबा जिसके बीच का भाग अठकोना हो। ७ पुराणानुसार विष्णु के चरण का एक चिह्न। ८ श्रीकृष्ण के पोते और अनिरुद्ध के पुत्र का नाम। ९ हीरा। १०. फौलाद नाम का लोहा। ११ बरछा। भाला। १२ अबरक। १३ कोकिलाक्ष वृक्ष। १४ गंधकुश। १५ काँसी। १६ धात्री। धौ। १७. चूहड़। सेंहुड़। १८ अकलबीर नाम का पौधा। १९ वज्रपुष्प।

**वज्र-कंटक**—पुं०[सं० ब० स०]१ चूहड़-सेंहुड़। २ कोकिलाक्ष वृक्ष।

**वज्र-कंद**—पुं०[सं० ब० स०] १ जंगली सूरन। २ शंकर कंद। ३. ताड़ के पेड़ का फूल।

**वज्रक**—पुं०[सं० वज्र+कन्]१. हीरा। २ वज्रक्षार। ३ सूर्य का एक उपग्रह। ४. वैद्यक में चर्मरोग के लिए विशेष प्रकार से तैयार किया जानेवाला तेल।

**वज्र-कांति**—स्त्री०[सं० ब० स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**वज्र-कालिका**—स्त्री०[सं० मध्य० स०] बुद्ध की माता माया देवी का एक नाम।

**वज्र-कीट**—पुं० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का कीड़ा जो पत्थर को काटकर उसमें छेद कर देता है। बनरोहू।

**वज्र-कूट**—पुं०[सं० ष० त०] हिमालय की एक चोटी।

**वज्र-केतु**—पुं०[सं० ब० स०] मार्कंडेय पुराण के अनुसार एक राक्षस जो नरक का राजा था।

**वज्र-क्षार**—पुं०[सं० मध्य० स०] वैद्यक में एक रसौषध जिसका व्यवहार गुल्म, शूल, अजीर्ण, शोथ तथा मंदाग्नि आदि उदर रोगों में होता है।

**वज्र-गोप**—पुं०[सं०] वीर बहूटी नाम का कीड़ा। इंद्रगोप।

**वज्र-ज्वाला**—स्त्री०[सं०] कुंभकर्ण की पत्नी का नाम।

**वज्र-डाकिनी**—स्त्री०[सं०] महायान शाखा के तांत्रिक बौद्धों की उपास्य डाकिनियों का एक वर्ग, जिसके अन्तर्गत वे आठ डाकिनियाँ कही गई हैं—लास्या, माला, गीता, नृत्या, पुष्पा, धूपा, दीपा और गंधा। इनकी पूजा तिब्बत में होती है।

**वज्र-तुंड**—पुं०[सं० ब० स०]१ गणेश। २. गरुड़। ३. सिद्ध। ४. मच्छड़। चूहड़। सेंहुड़।

**वज्र-दंत**—पुं०[सं० ब० स०]१. चूहा। २. सूअर।

**वज्र-दंती**—स्त्री०[स० वज्र+दंत] एक प्रकार का पेड़ या पौधा।

**वज्र-दंष्ट्र**—पुं० [सं० ब० स०] इंद्रगोप नाम का कीड़ा। वीरबहूटी।

**वज्र-द्रुम**—पुं० [स० उपमित स०] चूहड़ का वृक्ष। सेंहुड़।

**वज्र-धर**—वि०[स० ष० त०] वज्र धारण करनेवाला।

पुं०१. इंद्र। २. वज्रयान के अनुसार गौतम बुद्ध का एक रूप जिसमें वे अपनी प्रबल शक्ति से साधना में लगे रहते हैं। ३. वह बौद्ध सिद्ध जो वज्र धारण करनेवाला अर्थात् कमल-कुलिश साधना में पारंगत होता था। ४. उल्लू।

**वज्र-धारक**—वि०[स० ष० त०] वज्र धारण करनेवाला।

पुं० ऊँची इमारतों पर लगाया जानेवाला एक विशेष प्रकार का यंत्र या धातु का टुकड़ा जो लोहे के तार से जमीन से जुड़ा होता है और जो आकाश से गिरनेवाली बिजली को अपने अन्दर ले जाता है और इस प्रकार बिजली के कुप्रभाव से इमारत को बचाता है। तड़ित-संवाहक। (लाइटनिंग अरेस्टर)

**वज्र-नख**—पुं०[स० ब० स०] नृसिंह।

**वज्र-पतन**—पुं०[स० ष० त०] वज्रपात।

**वज्र-पाणि**—पुं०[स० ब० स०] १. इन्द्र। २ बाह्मण। ३. एक बोधि-सत्त्व।

**वज्र-पात**—पुं० [स० ष० त०] १ आकाश से बिजली गिरना। २ उक्त बिजली के गिरने से होनेवाला क्षय या नाश। ३ किसी प्रकार का भीषण अनिष्ट या नाश।

**वज्र-बाहु**—पुं०[स० ब० स०]१ इन्द्र। २ रुद्र। ३ अग्नि।

**वज्र-भृत्**—पुं० [स० वज्र√भृ (धारण)+क्विप्, तुक् आगम]इंद्र।

**वज्र-भैरव**—पुं० [स० उपमित स० या मध्य० स०] बौद्धों की महायान शाखा के एक देवता जिन्हें भूटान में 'यमांतक शिव' कहते हैं। इनके अनेक मुख और हाथ कहे गये है।

**वज्र-मणि**—पुं०[स० मयू० स०] हीरा।

**वज्र-मुष्टि**—पुं०[स० ब० स०]१. इंद्र। २. जंगली सूरन। ३. बाण चलाने के समय की एक विशेष हस्तमुद्रा।

**वज्र-यान**—पुं०[सं० उपमित० स०] बौद्ध धर्म का वह रूप जिसमें देवता, मंत्र, गुह्य साधना, अभिचार आदि तांत्रिक प्रवृत्तियों की प्रधानता है।

**विशेष**—आरंभिक बौद्ध साधक शून्य को ही परम तत्त्व मानकर उसकी उपासना करते थे, और इसलिए उसे वज्र (देखे) कहते थे क्योंकि उसमें भी वज्र की सी अभेद्यता और कठोरता थी। इसी आधार पर इस साधना मार्ग का यह नाम पड़ा था।

**वज्र-यानी (निन्)**—वि०[स० वज्रयान-इनि]वज्रयान-सम्बन्धी। वज्रयान का।

पुं० बौद्धों के वज्रयान पन्थ का अनुयायी।

**वज्र-रद**—पुं०[स० ब० स०] सूअर।

**वज्र-राग**—पुं० [स० उपमित स०] वज्रयानी साधना में, करुणा के कारण उत्पन्न होनेवाला सांसारिक राग। (यही राग जब आगे बढ़कर महामुद्रा के प्रति अनुरक्त होता है, तब महाराग कहलाता है।)

**वज्र-लेप**—पुं०[स० उपमित स०] लेप के काम आनेवाला ऐसा मसाला जिसका लेप करने से दीवार, मूर्ति आदि बहुत मजबूत हो जाती है।

**वज्र-धारक**—पु०[सं० ष० त०]१. जैमिनि, सुमंत, वैशपायन, पुलस्त्य और पुलह इन पाँचों ऋषियों का स्मरण जो वज्रपात के निवारण के लिए किया जाता है। २. दे० 'वज्रधारक'।

**वज्र-वाराही**—स्त्री०[स०]१ बुद्ध की माता माया देवी का एक नाम। २ बौद्धों की एक देवी।

**वज्र-व्यूह**—पुं०[स० उपमित स०] एक प्रकार की सैनिक व्यूह रचना जो दुधारी खड्ग के आकार की होती है।

**वज्र-शल्य**—पु०[स० ब० स०] साही (जंतु)।

**वज्र-शाखा**—स्त्री०[स० मध्य० स०] जैन मत के अंतर्गत एक सम्प्रदाय जिसका प्रवर्तन वज्रस्वामी ने किया था।

**वज्र-शृंखला**—स्त्री०[स०ब०स०] सोलह महाविद्याओं में से एक। (जैन)

**वज्र-संघात**—पु०[सं० ष० त०]१ भीमसेन। २ वास्तु-रचना में, पत्थर जोड़ने का एक मसाला जिसमें आठ भाग गोंद, दो भाग कासा और एक भाग पीतल होता था।

**वज्र-समाधि**—स्त्री०[सं० उपमित स०] बौद्ध धर्म के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

**वज्र-सार**—वि०[स० ष० त०] अत्यन्त कठोर।
पुं० हीरा।

**वज्र-हस्त**—पु०[स० ष० त०] इंद्र।
वि० जिसके हाथ में वज्र या बहुत ही भीषण अस्त्र हो।

**वज्र-हृदय**—वि०[सं० ब० व्र०]१ (व्यक्ति) जिसका हृदय अत्यन्त कठोर हो। २ बेरहम।

**वज्रांग**—पु०[सं० वज्र-अंग, ब० स०]१ हनुमान्। २ साँप।

**वज्रांगी**—स्त्री०[स० वज्रांग+ङीप्]१. कौड़िल्ला (पक्षी)। २ हड़-जोड़ी नामक लता जिसकी पत्तियाँ बाँधने पर दरद दूर हो जाता है। (वैद्यक)

**वज्रा**—स्त्री०[स० √वज्र(गति)+रक्—टाप्]१. दुर्गा। २ स्नुही। थूहर। ३ गुरुच।

**वज्राक्ष्य**—पु०[स०वज्र-आख्या ब०स०] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर।

**वज्राघात**—पु०[स० वज्र-आघात, ष० त०]१. आकाश से गिरनेवाली बिजली का आघात। २. बहुत ही कठोर और बड़ा आघात। ३. बिजली के तार आदि का स्पर्श होने पर लगनेवाला आघात।

**वज्राचार्य**—पु०[स० वज्र-आचार्य, ष० त०] नेपाली बौद्धों के अनुसार तान्त्रिक बौद्ध आचार्य जिसे निम्नत में लाभा कहते हैं। यह गृहस्थ होता है और अपनी स्त्री आदि के साथ विहार में रह सकता है।

**वज्राभ**—पु०[स० वज्र-आभा, ब० स०] एक कीमती पत्थर।

**वज्राभ्र**—पु०[स०] काला अभ्रक।

**वज्रायुध**—पु०[स० वज्र-आयुध, ब० स०] इंद्र।

**वज्रासन**—पु०[सं० वज्र-आसन, मध्य० स०] १. हठयोग के चौरासी आसनों में से एक जिसमें गुदा और लिंग के मध्य के स्थान को बाएँ पैर की एड़ी से दबाकर उसके ऊपर दाहिना पैर रखकर पलथी लगाकर बैठते हैं। २. गया में बोधिद्रुम के नीचेवाली वह शिला जिसपर बैठकर बुद्ध ने बुद्धत्व प्राप्त किया था।

**वज्रजित्**—पु०[स० वज्रिन् √जि (जीतना)+क्विप्, तुक् आगम] गरुड़।

**वज्री (ज्रिन्)**—पु० [स० वज्र+इनि] १. इंद्र। २. उल्लू। ३. बौद्ध संन्यासी।

**वज्रेश्वरी**—स्त्री०[सं० वज्र-ईश्वरी, ष० त०]१. एक देवी। (बौद्ध) २. एक प्रकार का तान्त्रिक अनुष्ठान जिसे वज्रवाहिनिका भी कहते हैं। इसमें वज्र बनाकर मन्त्रों द्वारा अभिषेक, पूजन और हवन करते हैं। कहते हैं कि इससे शत्रुओं पर विजय प्राप्त होती है।

**वज्रोली**—स्त्री०[स०] उँगलियों की एक विशिष्ट मुद्रा। (हठयोग)

**वट**—पु०[स० √वट् (लपेटना)+अच्]१ बरगद का पेड़। २.कौड़ी। ३ गोली। ४. वटिका। ५. छोटा गेंद। ६. शून्य। ७. एक प्रकार की रोटी। ८. रस्सी। ९. एकरूपता। १०. एक पक्षी।

**वटक**—पु० [स० वट+कन्] १. बड़ी टिकिया या गोला। बट्टा। २. पकौड़ी आदि पकवान। आठ मासे की एक पुरानी तौल।

**वट-गमनी**—स्त्री० [हि० वाट-मार्ग+ग·न चलना] एक प्रकार का मैथिली लोक गीत जो उत्सवों, मेलों आदि में तथा वर्षा-ऋतु में स्त्रियाँ गाती हैं। इसके प्रत्येक चरण के अंत में 'गजनी' शब्द आता है, इसी लिए इसे 'गजनी' भी कहते हैं।

**वट-दत्ता**—स्त्री०[सं० ब० स०] एक तरह की चमेली।

**वट-पत्री**—स्त्री०[स० ब०स०] पथरफोड़ नामक वनस्पति।

**वटर**—पु०[स० वट+अरन्] १ चोर। २ बटेर पक्षी। ३ खिलौना। ४. उष्णीष। पगड़ी। ५. मथानी।

**वट-सावित्री व्रत**—पु०[स० मध्य० स०] सौभाग्यवती स्त्रियों का एक त्योहार जो जेठ बदी अमावस को होता है। इसमें सौभाग्य स्थिर रखने की कामना से वट और सावित्री का पूजन किया जाता है।

**वटिक**—पु०[स०√वट्+उन्+कन्] शतरंज का मोहरा।

**वटिका**—स्त्री० [स०√वटिका+टाप्] गोली, टिकिया या बटी।

**वटु**—पु०[स०√वट+उ] १. बालक। २. ब्रह्मचारी।

**वटुक**—पु०[स०वटु+कन्]१ बालक। २.ब्रह्मचारी का एक विशिष्ट रूप।

**वटोदका**—स्त्री०[स० वट-उदक, ब०स०+टाप्]एक पश्चिम नदी। (भागवत)

**वटर**—पु०[सं०√वट् (दृढ होना)+अरन्]१. अबट नामक जाति। २. शब्द गढ़ने या बनानेवाला पंडित। ३. चिकित्सक।
वि०१. मूर्ख। २ शरारती। शठ। ३ धोखा। मन्द।

**वड़वा**—स्त्री०[सं० बडवा ·बल √ वा (गति)+क+टाप्, लस्य ड.] १. घोड़ी। २. दासी। ३. वैश्या। ४. अश्विनी नक्षत्र। ५. ब्राह्मण जाति की स्त्री।

**वडिश**—पु०[सं० बडिश ·बलिंग्√ग्रो (नष्ट करना)+क, लस्य ड.]१. बंसी, जिससे मछली फँसाई जाती है। कटिया। २ वैद्यक में एक प्रकार का नश्तर।

**वण**†—पु०=वन (जंगल)।

**वणिक्(ज्)**—पु०[सं०√पण् (व्यवहार करना)+इजि, पण्य व.]१. वाणिज्य या व्यवसाय से जीविका उपार्जित करनेवाला। २ वैश्य।

**वणिक्कवाद**—पुं० दे० 'वाणिज्यवाद'।

**वणिक्-सार्थ**—पु०[सं० ष० त०] व्यापारियों का जत्था जो व्यापार के उद्देश्य से कहीं जा रहा हो।

**वणिज्य**—पु०[सं० वणिज्+यत्] वाणिज्य।

**वत्**—अव्य०[स० व्याकरण का एक प्रत्यय] एक प्रत्यय जो शब्दों के अंत

मे लगकर निम्नलिखित अर्थ देता है। (क) तुल्य, समान। जैसे—चद्रवत्। (ख) के अनुसार, जैसे—विधिवत्।

**वत्सल**—पु०[स० अव√ तस् (अलकृत करना) घञ्, अव के अकार का लोप] -अवतस।

**वत**—अव्य०[स०√वन् (सम्यक् भक्ति करना)+क्त, नलोप] १ खेद। २. अनुकम्पा। ३ सतोष। ४. विस्मय आदि का बोधक शब्द।

**वतन**—पु०[अ०]१. जन्मभूमि। मूल वासस्थान। ३ स्वदेश।

**वतनी**—वि०[अ०]१. वतन सबधी। २. एक ही वतन मे होनेवाला। ३. स्वदेशी।

पु० किसी की दृष्टि मे उसी के देश का दूसरा निवासी।

**वतीना**†—अ०[स० व्यतीत+हि० ना (प्रत्य०)] बीतना। गुजरना। उदा०—अवधि बतीती अजूँ न आये।—मीरा।

स० बिताना। गुजारना।

**वतीरा**—पु०[अ० वतीर]? ढग। रीति। प्रथा। २. चाल-ढाल। ३. टेव। लत।

**वतोका**—स्त्री०[स० अव-तोक, ब० स०, अव के अकार का लोप, टाप्] जिसका गर्भ नष्ट हो गया हो।

स्त्री० बाँझ स्त्री।

**वत्स**—पु०[स० √ वद् (बोलना)+स] १. गाय का बच्चा। बछडा। २. छोटा बच्चा। शिशु। ३. कम का एक अनुचर। ४. इन्द्र जौ। ५. छाती। उर। ६ एक प्राचीन देश।

**वत्सक**—पु०[स० वत्स+कन्][स्त्री० अल्पा० वत्सिका]१ पुष्प कमीस। २. इन्द्र जौ। ३ कुटज। निर्यु डी।

**वत्सतर**—पु०[स० वत्स+तरप्] [स्त्री० वत्सतरी] ऐसा जवान बछडा जो जोता न गया हो। दोहन।

**वत्सतरी**—स्त्री० [स० वत्सतर+ङीष्] ऐसी बछिया जो तीन वर्ष या उससे कम की हो।

**वत्सनाभ**—पु० [स० वत्स√नभ (हिंसा)+अण्] एक प्रकार का जहरीला पौधा। बछनाग।

**वत्सर**—पु० [स० √वस् (निवास करना)+सरन्, सत्य त] बारह महीनो का समय। वर्ष। साल।

**वत्सल**—वि०[स० वत्स+लच्] बच्चो विशेषत अपने बच्चे से अनुराग रखनेवाला। बच्चो से स्नेह करनेवाला।

पु० वात्सल्य रस।

**वत्सासुर**—पु० [स० वत्स-असुर, मध्य० स०] एक असुर जिसका वध श्रीकृष्ण ने किया था।

**वत्सिमा (मन्)**—स्त्री०[स० वत्स+इमनिच्] बचपन। बाल्यावस्था।

**वत्सी (त्सिन्)**—वि०[स० वत्स+इनि] जिसके बहुत से बच्चे हो।

पु० विष्णु।

**वत्सीय**—वि०[स० वत्स+छ—ईय] वत्स-सबधी।

पु० अहीर। ग्वाला।

**वथ्य**†—स्त्री०=वस्तु (चीज)।

**वदंती**—स्त्री०[स०√वद् (कहना)+झि—अन्त+ङीष्] कही हुई बात। कथन।

**वद**—वि०[स० पूर्वपद के साथ आने पर] बोलनेवाला। (समासान्त) जैसे—प्रियवद।

**वदतोव्याघात**—पु० [स० अव्यय] तर्क मे कथन सबधी एक दोष, जो वहाँ माना जाता है जहाँ पहले कोई बात कह कर फिर ऐसी बात कही जाती है जो उस पहली बात के विरुद्ध होती है।

**वदन**—पु०[स०√ वद् (कहना)+ल्युट्—अन] १ कोई बात कहने की क्रिया या भाव। कहना। बोलना। २ मुँह। मुख। ३. किसी चीज के आगे या सामने का भाग।

**वदर**—पु०=बदर (बेर)।

**वदान्य**—वि०[स०]१ वाग्मी। २ बात से सतुष्ट करनेवाला।

**वदाल**—पु० [स० √वद्+क पत्रवें—वद√ अद् (पूर्ण होना)+अच्] १. पाठीन मत्स्य। पहिना मछली। २. आवर्त। भँवर।

**वदि**—अव्य०[सं० √वद+इन्] चाद्र मास के कृष्ण पक्ष मे। बदी मे।

पु० कृष्ण पक्ष।

**वदितव्य**—वि०[सं०√ वद् (कहना)+तव्य] कहे जाने के योग्य। जो कहा जा सके।

**वदी**—पु० दे० 'बदि' (कृष्ण पक्ष)।

**वदीतना**†—अ०, स०= बतीतना।

**वदुसना**—स०[स० विदूषण]१ दोष मढना। २ आरोप करना। ३ भला-बुरा कहना। खरी-खोटी सुनाना।

**वद्य**—वि०[स०√वद्+यत्]१ कहने योग्य। २ अनिष्ट।

पु०१. कथन। बात। २ उपालभ। बदी।

**वध**—पु०[स० √ हन् (हिंसा)+अप्, वधादेश]१. अस्त्र-शस्त्र से की जानेवाली हत्या। २ पशुओ को हत्या करना। ३ जान-बूझकर तथा किसी उद्देश्य से की जानेवाली किसी की हत्या।

**वधक**—पु०[स०√ हन्+ण्वुल्—अक, वधादेश]१. घातक। हिंसक। २. व्याध। ३ मृत्यु। ४ दे० 'बधक'।

वि० वध करनेवाला।

**वधजीवी (विन्)**—पु०[स० वध√ जीव् (जीना)+णिनि] वह जो औरो का वध करके जीविका निर्वाह करता हो।

**वधत्र**—पु०[स० हन्+अत्रन्, वधादेश] वध करने का उपकरण। अस्त्र-शस्त्र।

**वधना**—अ०[स० वर्द्धन] बढना। उन्नति करना।

स०[सं० वध] अस्त्र शस्त्र की सहायता से किसी की जान मे मार डालना।

**वध-भूमि**—स्त्री० [स० ष० त०] वह स्थान जहाँ मनुष्यो, पशुओ आदि का वध किया जाता हो।

**वधामण***—पु० बधावा।

**वधालय**—पु०[सं० वध-आलय, ष० त०] वह स्थान जहाँ पर मास प्राप्त करने के उद्देश्य से पशुओ का वध किया जाता है। बूचडखाना। (स्लाटर हाउस)

**वधिक**†—वि० =बधिक।

**वधित्र**—पु०[स० √ हन् इत्र, वधादेश]१. कामदेव। २. कामासक्ति।

**वधिर**—वि०[स० बधिर] बहरा।

**वधु**—स्त्री०=वधू।

**वधुका**—स्त्री०[सं० वधू+कन्+टाप्, ह्रस्व] वधू।

**वधू**—स्त्री०[स०√वह् (पहुँचाना)+ऊ, ह्रस्य ध] १. ऐसी कन्या जिसका विवाह हो रहा हो अथवा हाल मे हुआ हो। दुलहन। २. पत्नी।

**वधूटी**—स्त्री०[स० वधू+टि+ङीप्] १. पुत्रवधू। २ नवयुवती।

**वधूत**—पु०=अवधूत (संन्यासी)।

**वध्य**—वि०[स० वध्+यत्] जिसका वध होने को हो अथवा किया जाना उचित या शास्त्र-सम्मत हो।

पु०वह जिसका वध किया जाना चाहिए।

**वन**—पु०[स० √वन् (सेवा)+घ]१ ऐसा स्थान जहाँ बहुत दूर तक हर जगह पेड़ ही पेड़ हों। जगल। बन। २ बगीचा। वाटिका। ३. फूलों का गुच्छा। ४ जल। पानी। ५ घर। मकान। ६ किरण। रश्मि। ७ चमसा नामक यज्ञपात्र। ८ दशनामी सन्यासियों का एक वर्ग।

**वन-कुक्कुल**—पु०[स० ष० त०] अच्छी जाति का सूरन या जिमीकद।

**वन-कटाई**—स्त्री० [स०+हि०] किसी क्षेत्र को जगल से रहित कर देना। (डिफारेस्टेशन)

**वन-काम**—वि०[स०वन√कम् (चाहना)+णिड+अण्] जगल मे रहनेवाला।

**वनग**—पु०[वन√गम् (जाना)+ड] वनवासी।

वि० वन की ओर जानेवाला।

**वन-गमन**—पु०[स० स० त०] १ वन की ओर जाना। २ संन्यास ग्रहण करना।

**वन-गोचर**—वि०[व० स०]१. प्राय: वन मे जानेवाला। २ जल मे रहनेवाला।

पु० १ व्याध। २ वनवासी। ३ जगल।

**वन-चंदन**—पु०[सं० मध्य० स०]१ अगरु। अगर। २ देवदार।

**वन-चंद्रिका**—स्त्री०[स० स० त०] मल्लिका।

**वनचर**—पु० [सं० वन√चर् (चलना)+ट] वन मे भ्रमण करनेवाला या रहनेवाला। २. जगली जीव या प्राणी। ३ शरभ नामक जतु।

**वनज**—वि०[स० वन√जन् (उत्पन्न करना)+ड] जो वन (जगल या पानी) मे उत्पन्न हो।

पु०१. कमल। २ मोथा। ३ तुवरु का फल। ४. बनकुलथी। ५ जगली बिजौरा नीबू।

**वनजा**—स्त्री०[स० वनज+टाप्]१ मुदगपर्णी। २ निर्गुडी। ३ सफेद कटियारी। ४ बन-तुलसी। ५ असगध। ६ बन-कपास।

**वनजीवी (विन्)**—पु०[स० वन√जीव् (जीना)+णिनि] १. लकड़हारा। २ बहेलिया।

**वन-ज्योत्स्ना**—स्त्री० [स० ष० त०] एक प्रकार की चमेली।

**वनद**—पु०[स० वन√दा (देना)+क]मेघ। बादल।

**वन-देव**—पु० [प० त०] वन का अधिष्ठाता देवता।

**वन-देवी**—स्त्री०[प० त०] वन की अधिष्ठात्री देवी।

**वन-नाश**—पु०[प० त०] बनाच्छादित प्रदेशो के वृक्ष काटकर उसे साफ करना।

**वन-नाशन**—पु०[प० त०] दे० 'वनकटाई'।

**वन-पाल**—पु०[स० वन √पाल् (रक्षा करना)+णिच्+अच्] वह अधिकारी जो वनों की रक्षा और वृद्धि के लिए नियुक्त रहता है। राजिक। (फारेस्ट रेंजर)

**वन-पिप्पली**—स्त्री०[स० मध्य० स०] छोटी पीपल।

**वन-प्रिय**—पु०[ब० स०] १. कोकिल। २ शोभर हिरन। ३ कपूर कचरी। ४ बहेड़े का पेड़।

**वन-मल्लिका**—स्त्री० [ष० त०] सेवती का पौधा या फूल।

**वन-महोत्सव**—पु० [ष० त०] स्वतन्त्र भारत मे वर्षा ऋतु मे वनो का विस्तार करने के उद्देश्य से होनेवाला कार्यक्रम जिसमे वृक्ष लगाये जाते हैं।

**वन-माला**—स्त्री०[मध्य० स०]१. जगली फूलो की माला। २. विशेषत कुद, कमल, मदार और तुलसी की बनी हुई तथा पैरो तक लटकनेवाली लबी माला।

**वनमाली (लिन्)**—वि०[स० वनमाला+इनि] वनमाला धारण करनेवाला।

पु० श्रीकृष्ण का एक नाम।

**वन-रक्षक**—पु०[ष० त०] वन की देख-भाल करनेवाला अधिकारी।

**वनराज**—पु० [ष० त०, समासान्त टच् प्रत्यय] १ सिंह। २ अश्मतक नामक वृक्ष।

**वन-राजि, वन-राजी**—स्त्री० [ष० त०] १. वन की श्रेणी। वनसमूह। वृक्षसमूह। २ जगल मे की पगडडी।

**वन-रोपण**—पु०[स० ष० त०] खुले मैदान मे, अर्थात् जहाँ पहले से पेड़-पौधे न हो, वहाँ नये सिरे से पेड़-पौधे लगाकर वन या उपवन तैयार करने की क्रिया। वनाच्छादन। (एफारेस्टेशन)

**वन-लक्ष्मी**—स्त्री०[स० ष० त०]१. वन की शोभा। २ केला।

**वनवास**—पु०[स० स० त०] वन का निवास। जगल मे रहना।

**मुहा०—(किसी को) वनवास देना**=बस्ती छोड़कर जगल मे जाकर रहने की आज्ञा देना।

**वनवासक**—पु० [स०ष० त०] १. शाल्मली कद। २ एक प्राचीन नगर।

**वनवासी (सिन्)**—वि०[स०वन√वस् (बसना)+णिनि] [स्त्री० वनवासिनी] १. वन मे रहनेवाला। २ बस्ती छोड़कर जगल में जाकर वास करनेवाला।

पु०१. ऋषभ नामक ओषधि। २ वराही कद। ३. नील महिष नामक कद। ४ डोम कौआ। ५. दक्षिण भारत का एक प्राचीन नगर जहाँ कादम्ब राजाओं की राजधानी थी।

**वन-वृत्ति**—स्त्री०[स०]१ जगल मे जाकर जीविका उपार्जित करना। २ वन्य फल खाकर अथवा वन्य वस्तुएँ बेचकर जीविका चलाना।

**वन-शूकर**—पु०[स० ष०त०] जगली सूअर जो बहुत ही बलवान, भीषण तथा हिंसक होता है।

**वन-संस्कृति**—स्त्री०[स०] आदि काल की वह सस्कृति जिसका विकास उस समय हुआ था जब लोग वनों मे ही रहते थे, फल-मूल खाकर अथवा पशुओं का शिकार करके और खालें, छाले आदि ओढ़-पहनकर रहते थे। (फॉरेस्ट कल्चर)

**वनस्थ**—वि० [स० वन√स्था (ठहरना)+क] १. वन म रहनेवाला। २ वह जिसने वानप्रस्थ आश्रम ग्रहण कर लिया हो। ३ जंगली जानवर।

**वनस्थली**—स्त्री०[सं० ष० त०] वनों से घिरा हुआ प्रदेश।

**वनस्पा**—स्त्री०[सं० वनस्थ+टाप्] अश्वत्थ। पीपल।

**वनस्पति**—स्त्री०[सं० वन-पति, ष० त०, मुट् आगम] जमीन में उगनेवाले पेड़, पौधे, लताएँ आदि।

**वनस्पति घी**—पु० [स०+हिं०] आज-कल घी की तरह का वह चिकना पदार्थ जो नारियल, मूँगफली आदि के तेल साफ करके बनाया जाता है और प्रायः तरकारियों, पकवान आदि बनाने के लिए घी के स्थान पर काम में लाया है।

**वनस्पति विज्ञान**—पु० [स० ष० त०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें वनस्पतियों के उद्भव, रचना, आकार-प्रकार, विकार आदि का विवेचन होता है। (बॉटनी)

**वनहास**—पु०[स० ष० त०]१ काश। काँस। २ कुश का पौधा और फूल।

**वनाच्छादन**—पु०[स० वन-आच्छादन, ष० त०] वनरोपण।

**वनांत**—पु० [स० वन-अंत, ष० त०] जंगली भूमि या मैदान।

**वनाग्नि**—स्त्री० [स० वन-अग्नि, ष० त०] वन में लगनेवाली आग। दावानल।

**वनायु**—पु० [स०√वन+आयुच्]१ अच्छे घोड़ों के लिए प्रसिद्ध एक प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी। ३ पुरुरवा का एक पुत्र।

**वनायुज**—पु०[स० वनायु√ जन् (उत्पन्न करना)+ड] वनायु देश का घोड़ा।

**वनाश**—वि०[स० वन√अश् (खाना)+अण्]१ जल पीनेवाला। २ केवल जल पीकर रहनेवाला।

पु० एक तरह का छोटा जौ।

**वनि**—पु०[स०√वन्+इ]१ अग्नि। २ ढक। ३ याचना।४ इच्छा।

**वनिका**—स्त्री०[स०√वनी+क्+टाप्, ह्रस्व] छोटा वन। उपवन।

**वनित**—भू० कृ० [स० वन् (माँगना)+क्त] १. याचित। २ अभिलषित। ३. पूजित।

**वनिता**—स्त्री०[स० वनित+टाप्] १ अनुरक्त स्त्री। प्रिया। प्रियतमा। २ औरत। स्त्री। ३ छ वर्णों की एक वृत्ति जिसे 'तिलका' और 'डिल्ला' भी कहते हैं। इसमें दो सगण होते हैं।

**वनिता-मुख**—पु०[स० ब० स०] मार्कण्डेय पुराण के अनुसार मनुष्यों की एक जाति।

**वनी**—स्त्री० [सं० वन+ङीप्] छोटा वन। वनस्थली।

**वनीकृत**—भू० कृ० [स० वन+च्वि, ईत्र√कृ+क्त] (स्थान) जिसमें बहुत से पेड़ लगाये गए हों। जो जंगल के रूप में लाया गया हो।

**वने किंशुक**—पुं० [स० स० त०] ऐसी चीज जो वैसे हों बिना मँगे मिले, जैसे वन में किंशुक बिना माँगे या बिना प्रयास किए मिलता है।

**वनेचर**—वि०[सं० वने√चर (गति)+ट, अलुक् स०]=वनचर।

पु० १. जंगली आदमी। २ संन्यासी। ३ वन्य पशु।

**वनेय्य**—पु०[स० वन-इञ्य, स० त०] १. आम। २. पपीट। पापड़।

**वनोत्सर्ग**—पुं०[स० वन-उत्सर्ग, ष० त०]१. देवमंदिर, बावी, कूप, उपवन आदि का शास्त्रविधि से किया जानेवाला उत्सर्ग। मंदिर, कूआँ आदि बनवाकर सर्वसाधारण के लिए दान करना। २ उक्त प्रकार के उत्सर्ग की शास्त्रीय विधि।

**वनौकस्**—वि०[स० वन-ओकस्, ब० स०] जिसका घर वन में हो। वनवासी।

पु०१. तपस्वी। २. जंगली जानवर।

**वनौषधि**—स्त्री० [स० वन-ओषधि, मध्य० स०] जंगल में पैदा होनेवाली जड़ी-बूटी।

**वन्दारवाल**—स्त्री० [स० वंदन+माला] वंदनवार। उदा०—वन्दारवाल बबाणं, बल्ली।—प्रिथिराज।

**वन्य**—वि०[स० वन+यत्] १ वन में उत्पन्न होनेवाला। वनोद्भव। २ जंगल में रहनेवाला। जंगली। जैसे—वन्य जातियाँ। ३ जो सभ्य या शिष्ट न हो, बल्कि जिसकी प्रवृत्तियाँ बर्बर हों।

पु० १ जंगली सूरन। २ क्षीरविदारी। ३ बाराही कंद। ४. राख।

**वन्या**—स्त्री०[स० वन+य, टाप्] १ मुद्गपर्णी। २ गोखरू ककड़ी। ३ गुंजा। घुँघची। ४. अगस्त्य।

**वपन**—पु० [स०√वप् (बोना, काटना)+ल्युट्—अन] [वि० वपनीय, भू० कृ० वपित] १. बीज बोना। २ सिर मुँडना। ३ नाई की दूकान। ४ कपड़ा बुनना। ५ करघा। ६ शुक्र।

**वपनी**—स्त्री० [स० वपन+ङीप्] १ वह स्थान जहाँ नाई क्षौर-कार्य करते हैं। २ हजामत बनाने या बनवाने का स्थान ३ जुलाहों के कपड़ा बुनने का स्थान।

**वपनीय**—वि०[स० √वप्+अनीयर्] [भू० कृ०-वपित] १. जो बपने के योग्य हो। २. बाये जाने के योग्य।

**वपा**—स्त्री०[स० √वप्+अङ्+टाप्]१ चर्बी। मेद। २ बल्मीक। बाँबी।

**वपु (स्)**—पु० [स० √वप्+उस्]१ शरीर। देह। २ रूप।

**वपुमान**—वि० [स० वपुष्मान्]१. सुन्दर और पुष्ट देहवाला। २. सुन्दर। ३ मूर्त। साकार।

**वपुष्टमा**—स्त्री० [स० वपुष्+तमप्+टाप्] १ पद्मचारिणी लता। २ पुराणानुसार काशीराज की एक कन्या जो परीक्षित के पुत्र जनमेजय को ब्याही थी।

**वपोदर**—वि०[स० वपा—उदर, ब० स०] बड़ी तोंदवाला।

**वप्ता (प्तृ)**—पु० [स०√वप् +तृच्] १. पिता। जनक। २. नाई। नापित। ३ बीज बोनेवाला। ४. रवि।

**वप्र**—पु०[स०√वप्+रन्]१.मिट्टी का वह ऊँचा घुस्सा जो गढ़ या नगर की खाई से निकली हुई मिट्टी के ढेर से चारों ओर उठाया जाता है और जिसके ऊपर प्राकार या दीवार होती है। २ वह ढालुई वास्तु-रचना जो मकान की कुरसी की रक्षा के लिए छोटी दीवार के रूप में बनाई जाती है। ३ नदी का किनारा। ४ खेत। ५ धूल। रेणु। ६ पहाड़ की चोटी या पहाड़ के ऊपर की समतल भूमि। ७ टीला। भीटा। ८ प्रजापति। ९. द्वापर युग के एक व्यास।

**वप्रक**—पु०[स० वप्र+कन्]१ वृत्त की परिधि। गोलाई का घेरा। २. चक्कर।

**वप्र क्रिया**—स्त्री०[स० ष० त०] वप्र क्रीड़ा।

**वप्र-क्रीड़ा**—स्त्री०[स० ष० त०] पशुओं का अपने दाँतों, नाखूनों, सींगों आदि से जमीन या टीले की मिट्टी कुरेदना।

**वप्रा**—स्त्री०[सं० वप्र+टाप्] १. जैन के इक्कीसवें जिन नेमिनाथ की माता का नाम। २ मजीठ।

**वप्रि**—पु०[सं० वप्+क्रिन्]१ क्षेत्र। २ समुद्र। ३. स्थान की दुर्गमता।

**वफ़ा**—स्त्री०[अ०]१. कही हुई बात या दिये हुए वचन को पालना। निर्वाह। २ मेल-जोल, संग-साथ, सद्व्यवहार आदि का किया जानेवाला निर्वाह। ३ निष्ठा।

**वफ़ात**—स्त्री०[अ०] मृत्यु। मौत।
क्रि० प्र०—पाना।

**वफ़ादार**—वि०[अ०+फ़ा०] कर्त्तव्य, वचन, साथ आदि का सज्जनता और सत्यतापूर्वक पालन करनेवाला। निष्ठ।

**वबा**—स्त्री०[अ०] १ महामारी। मरी। २ छूतवाला या संक्रामक रोग।

**वबाल**—पु०[अ०] १ बोझ। भार। २ बहुत बड़ी विपत्ति या संकट। ३. झगड़े-बखेड़े की बात। झंझट। ४ बेढंगी प्रकृति। ५ पाप का फल।
मुहा०—(किसी का) वबाल पड़ना दुर्गति की आह पड़ना।

**वभ्रु**—पु०[सं०√बभ्र(गति)+उ] १ एक प्रकार का सर्प। (शब्द०) २. दे० 'बभ्रु'।

**वमन**—पु०[सं०√ वम् (उलटी करना)+ल्युट्—अन्]१ कै करना। उलटी करना। छर्दन। ३ कै किया हुआ पदार्थ। ३ पीड़ा। कष्ट। ४. आहुति।

**वमि**—स्त्री०[सं०√ वम्+इन्]१ एक रोग जिसमें मनुष्य को जी मिचलाता है और जो कुछ खाया-पीया होता है वह मुँह के रास्ते निकलकर बाहर आ जाता है। २ अग्नि।

**वमित**—भू०कृ०[सं०√ वम्+क्त] वमन किया हुआ।

**वमी (मिन्)**—वि०[सं० वम्+इनि] वमि रोग से ग्रस्त।
स्त्री० [वमि+ङीप्] =वमि।

**वम्य**—वि०[सं० वम् यत्] (औषधि) जिससे वमन कराया जा सके।

**वम्री**—स्त्री०[सं०√ वम्+रक्+ङीप्] दीमक।

**वम्री-कूट**—पु०[सं० ष० त०] बल्मीक। बाँबी।

**वय**—सर्व०[सं० अस्मद् शब्द का प्रथमा बहु०] हम।

**वयः क्रम**—पु०[सं० ष० त०] अवस्था। उम्र।

**वयः प्रमाण**—पु०[सं० ष० त०] जीवन-काल।

**वयः सन्धि**—स्त्री०[सं० ष० त०] बाल्यावस्था और यौवनावस्था के बीच की स्थिति। लड़कपन और जवानी के बीच का समय।

**वय**—स्त्री०[सं० वयस्]१. बीता हुआ जीवन-काल। अवस्था। उम्र। २ बल। शक्ति। ३. चिड़िया। पक्षी। ४ वया पक्षी। ५ जुलाहा।
†स्त्री०=बै (जुलाहों की)।

**वयण**—पुं० =वचन। (राज०)
पु०=वचन।

**वयस्**—पु०[सं०√अज् (गति)+असुन्, वी आदेश]१ आयु का बीता हुआ भाग। उम्र। वय। २ चिड़िया। पक्षी।

**वयस्क**—वि०[सं० समस्त पद के अन्त में] शारीरिक दृष्टि से जिसका विकास पूर्णता पर पहुँच चुका हो अथवा यथेष्टहो चुका हो।
पु० १ विवाह के योग्य युवक या युवती।
विशेष—आज-कल विधिक दृष्टि से युवक १८ वर्षों का और युवती १६ वर्षों की होने पर वयस्क मानी जाती हैं।
२ २० या २० से अधिक वर्ष की अवस्थावाला व्यक्ति जिसे विधितः निर्वाचन आदि में मत देने और अपनी सम्पत्ति की व्यवस्था आदि करने का अधिकार प्राप्त होता है।

**वयस्क-मताधिकार**—पु०[सं०] प्रत्येक वयस्क व्यक्ति को राजकीय चुनाव आदि में मत देने का विधि द्वारा प्राप्त अधिकार।

**वयस्कृत्**—वि०[सं० वयस्√कृ (करना)+क्विप्, तुक् आगम] जीवन अथवा आयु बढ़ानेवाला।

**वयस्था**—स्त्री० [सं० वयस्√स्था (ठहरना) +क+टाप् विसर्गलोप] १. युवती स्त्री। २ आमलकी। आँवला। ३ हरें। ४ गुरुच। ५. छोटी इलायची। ६ काकोली। ७ शाल्मली। सेमल।

**वयः-स्थान**—पु०[सं० ष० त०, विसर्गलोप] यौवन। जवानी।

**वयस्य**—वि०[सं० वयस्+यत्] जिनका वय या अवस्था समान हो। सम वय वाले। बराबर की उमर के।
पु० मित्र।

**वयस्यक**—पु०[सं०+वयस्य+कन्] [स्त्री० वयस्यिका] १ सम सामयिक व्यक्ति। २ सखा। मित्र।

**वयस्या**—स्त्री०[सं० वयस्य+टाप्] १ सखी। २ ईंट।

**वयोगत**—वि०[सं० वयस्-गत, ष० त०] =वयस्क।

**वयोवृद्ध**—वि० [सं० वयस्-वृद्ध, तृ० त०] बहुत जो वय के विचार में बहुत बड़ा हो। अधिक उमरवाला। वृद्ध।

**वरंच**—अव्य०[सं० परंच] १ उपस्थित, उक्त, वर्णित आदि से भिन्न या विपरीत स्थिति में। ऐसा नहीं बल्कि ऐसा। २ परन्तु। लेकिन।

**वरंडा**—पु० [सं० √वृ (आच्छादान)+अण्डन्] १ बर्मी की डेर। २ समूह। ३. मुहासा। ४. घास का गट्ठर। ४ फीलखाने की वह दीवार जो दो लड़ाके हाथियों को लड़ने से रोकने के लिए उनके बीच में खड़ी की जाती है।

**वरंडक**—पु०[सं० वरंड+कन्] १ मिट्टी का भीटा। ढूह। २ हाथी का हौदा।

**वरंडा**—स्त्री०[सं० वरंड+टाप्] १. कटारी। कत्ती। २ बत्ती।
†पु० दे० 'बरामदा'।

**वर**—वि०[सं० √वृ (चुनना आदि)+अप् कर्मणि] १ (समस्त शब्दों के अन्त में) सबसे बढ़कर उत्तम। श्रेष्ठ। जैसे—पूज्यवर, मान्यवर। २ किसी की तुलना में अच्छा या बढ़कर। ३ चुने जाने या पसन्द किये जाने के योग्य।
पु० १. बहुत-सी चीजों में से अच्छी या काम की चीज पसंद करके चुनना। चयन। वरण। २. कोई ऐसी अच्छी चीज या बात जो देवता से प्रसाद के रूप में माँगी जाय। ३ देवता की कृपा से उक्त प्रकार की इच्छा या याचना की होनेवाली पूर्ति।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—माँगना। मिलना।
४ वह जो किसी कन्या के विवाह के लिए उपयुक्त पात्र माना या समझा गया हो। ५ नव-विवाहिता स्त्री का पति। ६. कन्या के विवाह के समय दिया जानेवाला दहेज। ७. जामाता। दामाद।

८. बालक। लड़का। ९ दारचीनी। १० अदरक। ११ सुगन्ध तृण। १२ मेंथी नमक। १३. मोलसिरा। १४ हल्दी। १५. गरुड़ पक्षी। प्रत्य० [फा०] एक प्रत्यय जो संज्ञाओं के अन्त में लगकर 'वाला' या 'से युक्त' का अर्थ देता है। जैसे—किस्मतावर, लश्करवर।

**वरक**—पु० [सं० वर√कन्] १ कपड़ा। वस्त्र। २ नाव के ऊपर की छाजन। ३ बन-मूंग। ४ जंगली बेर। झड़बेरी। ५ प्रियंगु। कँगनी। पु० [अ०] १ पृष्ठ। पन्ना। २ धातु विशेषतः सोने या चाँदी का पतला पत्तर जो मिठाइयों, मुरब्बों आदि पर लगाकर सजाया जाता है।

**वरक-साज**—पु० [अ०+फा०] सोने-चाँदी के पत्तर अर्थात् वरक बनाने वाला।

**वरका**—पु० [अ० वरक] पुस्तक आदि का पृष्ठ। पन्ना।

**वरकी**—वि० [अ०] जिसमें कई या बहुत से वरक हों। परतदार।

**वर-कतु**—पु० [सं० ब० स०] इन्द्र।

**वर-चंदन**—पु० [सं० कर्म० स०] १ काला चन्दन। २ देवदार।

**वरज**—वि० [सं० वर√जन् (उत्पत्ति)+ड] उमर या कद में बड़ा। ज्येष्ठ।

**वरजिश**—स्त्री० [फा०] १. कसरत। व्यायाम। २ ऐसा काम जिसमें शारीरिक श्रम अधिक करना पड़ता हो।

**वरजिशी**—वि० [फा०] (शरीर) जो व्यायाम से हृष्ट-पुष्ट हुआ हो।

**वरट**—पु० [सं०√वृ+अटन्] [स्त्री० वरटा] १ हंस। २ कुलथी का फूल।

**वरटा**—स्त्री० [सं० वरट+टाप्] १ मादा हंस। हंसी। २ वर्रे नाम की फलियां। ३ सौंफ या कौंची।

**वरण**—पु० [सं०√वृ+ल्युट्-अन] १. अपनी इच्छा या रुचि से किया जानेवाला चयन। चुनाव। जैसे—उन्होंने न जाने क्यों कटकित पथ का वरण किया।—महादेवी वर्मा। २ प्राचीन भारत में यज्ञ आदि के लिए उपयुक्त ब्राह्मण चुनना और कार्य सौंपने से पहले उनका पूजन तथा सत्कार करना। ३ उत्तर अवसर पर पुरोहित, ब्राह्मण आदि को दिया जानेवाला दान। ४ कन्या के विवाह के समय वर को चुनाव करके विवाह संबंध निश्चित करने का किया या दिया जानेवाला द्रव्य। ५ अर्चन। पूजन। ६ सत्कार। ७ ढकने-लपेटने आदि की क्रिया। ८ घेरा। ९ पुल। सेतु। १०. वरुण वृक्ष। ११ ऊँट। १२ प्राकार।

**वरण-माला**—स्त्री० [सं० ष० त०] जयमाल।

**वरणा**—स्त्री० [सं०] १. वरुणा नदी। २ नित्य नद में मिलनेवाली एक छोटी नदी।

**वरणीय**—वि० [सं०√वृ+अनीयर्] [भाव० वरणीयता, स्त्री० वरणीया] १ वरण किये जाने के योग्य (वर, पात्र आदि)। २ चुनने या संग्रह करने के योग्य। उत्तम। बढ़िया। ३ पूजनीय। पूज्य।

**वर-तिक्त**—पु० [सं० ब० स०] १ कुटज। कोरैया। २ नीम। ३ रोहितक। रोहेड़ा। ४. पाण्डा।

**वरत्रा**—स्त्री० [सं०√वृ+अत्रच्+टाप्] १. बरेत। बरेता। २ चमड़े का तस्मा। ३ हाथी को बाँधकर खींचने का रस्सा।

**वर-त्वच**—पु० [सं० ब० स०] नीम का पेड़।

**वरद**—वि० [सं० वर√दा (देना)+क] [स्त्री० वरदा] १. वर देनेवाला। २ अभीष्ट सिद्ध करनेवाला।

**वर-दक्षिणा**—स्त्री० [सं० ष० त० या मध्य० स०] वह धन जो वर को विवाह के समय कन्या के पिता से मिलता है। दहेज। दायज।

**वरद-मुद्रा**—स्त्री० [सं० कर्म० स०] दूसरों को यह जतानेवाली शारीरिक मुद्रा कि हम तुम्हें मनचाहा वर देने या तुम्हारी सब कामनाएँ पूरी करने को प्रस्तुत हैं। (इसमें देने का भाव सूचित करने के लिए हथेली ऊपर या सामने रखकर कुछ नीचे झुकाई जाती है।)

**वर-वल**—पु० [सं० ष० त०] वर के साथ विवाह के लिए जानेवाले लोगों का समूह। बरात।

**वरदा**—स्त्री० [सं० वरद+टाप्] १ कन्या। लड़की। २ असगंध। ३ अरहुल।

**वरदा चतुर्थी**—स्त्री० [सं० ध्यस्त पद अथवा मध्य० स०] माघ शुक्ल चतुर्थी। वरदा चौथ।

**वर-दाता (तृ)**—वि० [सं० ष० त०] [स्त्री० वरदात्री] वर देनेवाला। वरद।

**वर-दान**—पु० [सं० ष० त०] १. देवता, महापुरुष आदि के द्वारा दिया हुआ वर जिससे अनेक प्रकार के शुभ-सुविधे प्राप्त होते हैं और कष्टों, संकटों आदि का निवारण होता है। २. किसी की कृपा या प्रसन्नता से होनेवाली फल-सिद्धि। ३ वह वस्तु जो शुभ फलदायिनी हो। जैसे—उनका आना मेरे लिए वरदान सिद्ध हुआ।

**वरदानी (नि)**—वि० [सं० वरदान+इनि] १ वरदान करनेवाला। २ मनोरथ पूर्ण करनेवाला।

**वरदी**—स्त्री० [अ० वर्दी] किसी विशिष्ट कार्यकर्ता, वर्ग को पहनावा। जैसे—खेलाड़ियों, चपरासियों, फौजियों या सिपाहियों की वरदी।

**वर-द्रुम**—पु० [सं० कर्म० स०] एक प्रकार का वृक्ष जिसका वृक्ष बहुत बड़ा होता है।

**वरन्**—अव्य० [सं० परम्] १ ऐसा नहीं। २ इसके विपरीत। बल्कि।

**वरना**—स० [सं० वरण] १ वरण करना। चुनना। २ अविवाहिता स्त्री का किसी को अपने पति के रूप में चुनना। वरण करना।

पु० ऊँट।

अव्य० [फा० वर्ना] यदि ऐसा न हुआ तो। नहीं तो।

**वर-प्रद**—वि० [सं० ष० त०] [स्त्री० वरप्रदा] वर देने वाला। वरद।

**वर-प्रदान**—पु० [सं० ष० त०] मनोरथ पूर्ण करना। कोई फल या सिद्धि देना। वर देना। किसी पर प्रसन्न होकर उसका मनोरथ पूरा करने के लिये उसे वर देना। वर-दान।

**वर-फल**—पु० [सं० ब० स०] नारिकेल। नारियल।

**वरम**†—पु० =वर्म।

**वर-मेल्हा**—पु० [पुर्त०] एक प्रकार का लाल चंदन।

**वर-यात्रा**—स्त्री० [सं० ष० त०] १ वर का विवाह के लिए वधू के यहाँ जाना। २ वर के साथ वर-पक्ष के लोगों का कन्या पक्ष के यहाँ विवाह के अवसर पर धूम-धाम से जाना। बरात।

**वरयिता (तृ)**—वि० [सं०√वर (चुनना)+णिच्+तृच्] वरण करनेवाला।

पु० स्त्री का पति। स्वामी।

**वररुचि**—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध प्राचीन वैयाकरण और कवि।

**वरला**—स्त्री० [सं०√वृ (विभक्त करना)+अलच्+टाप्] हँसिनी।

वि० परला (उस पार का)।

**वरवराह**—पु०[सं० कर्म० स०, व्यय प्रयोग]—बर्बर।

**वरवर्णिनी**—स्त्री० [सं० वर-वर्ण, कर्म० स०+इनि, शुद्ध रूप वरवर्णी] १. लक्ष्मी। २ सरस्वती। ३ उत्तम स्त्री। ४. लाक्षा। लाप। ५ हलदी। ६. गोरोचन। ७ कगनी नामक गहना।

**वरही**—पु० [हिं० वर] माथे की एक लंबी पट्टी जो विवाह के समय वधू को पहनाई जाती है। टीका।

†पु०=बर्ही (मोर)।

†स्त्री०=बरही।

**वराग**—पु०[सं० वर-अग, कर्म० स०] १ शरीर का श्रेष्ठ अग अर्थात् सिर। २. [ब० स०] विष्णु जिनके सभी अग श्रेष्ठ है। ३ एक प्रकार का नक्षत्र वत्सर जो ३२४ दिनो का होता है। ४. [कर्म० स०] गुदा। ५ भग। योनि। ६ वृक्ष की शाखा। टहनी। ७. [ब० स०] दारचीनी। ८ हाथी।

† वि० सुदर अगोवाला।

**वरागना**—स्त्री०[सं० वरा-अगना, कर्म०स०] सुडौल अगोवाली सुन्दरी। सुन्दर स्त्री।

स्त्री० =वरागना।

**वरागी (गिन्)**—वि० [सं० वराग+इनि शुद्धरूप वरागिन्] [स्त्री० वरागिनी] सुन्दर अगो और शरीरवाला।

पु० १. हाथी। २ अमलबेत।

स्त्री०[सं० वराग+ङीप्] १. हल्दी। २ नागदती। ३ मजीठ।

**वरा**—स्त्री० [सं०√वृ (चुनना आदि)+अच्-टाप्] १. चिचिका। २. हलदी। ३ रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। ४ गुडूच। ५ मेदा। ६ ब्राह्मी बूटी। ७ भिण्डा। ८ रामशर्पा। ९ पाठा। १० अडहुल। आप। ११ बैगन। भटा। १२ सफेद अपराजिता। १३ शतमूली। १४ यष्टिका। शतावर।

**वराक**—पु० [सं० वृ (अलग करना)+णक्] १ शिव। २ युद्ध।

वि० १ शोचनीय। २ नीच। ३ अभाग्य। दीन हीन। बेचारा।

**वराट**—पु०[सं० वर√अट् (जाना)+अण्] १. कौडी। २ रस्सी। ३. कमलगट्टे का बीज।

**वराटक**—पु० [सं० वराट+उन्] १ कौडी। २ रस्सी। ३. पद्मबीज।

**वराटिका**—स्त्री०[सं० वराट+कन्, टाप्, इत्व] १ कौडी। २. तुच्छ वस्तु। ३. नागकेसर।

**वरानन**—वि० [सं० वर-आनन, ब० स०] [स्त्री वरानना] सुन्दर मुखवाला।

पु० सुन्दर मुख।

**वरान्न**—पु०[सं० वर-अन्न, कर्म० स०] दला हुआ उत्तम अन्न।

**वरायन**—पु० [सं० वर+अयन] १. विवाह से पहले होनेवाली एक रीति। २ वह गीत जो विवाह के समय वर-पक्ष की स्त्रियाँ गाती हैं।

**वरारोह**—पु०[सं० वर-आरोह, ब० स०] १. विष्णु। २. एक पक्षी।

वि० श्रेष्ठ सवारीवाला।

**वरार्ह**—वि०[सं० वर√अर्ह् (योग्य होना)+अच्] १. जिसके सबध मे वर मिल सके। २. जो वर पाने के लिए उपयुक्त हो। ३. बहुमूल्य।

**वराल (क)**—पु० [सं० वर√अल् (भूषण)+अण्; वराल+कन्=वरालक] लवग। लौग।

**वरालिका**—स्त्री०[सं० वरा-आलिका, ब० स०] दुर्गा।

**वरासत**—स्त्री०[अ० विरासत] १. वारिस होने की अवस्था या भाव। २ वारिस को उत्तराधिकार के रूप मे मिलनेवाली सम्पत्ति।

**वरासन**—पु०[सं० वर-आसन, कर्म० स०] १ श्रेष्ठ आसन। २ विशेषत वह आसन जिस पर विवाह के समय वर बैठता है। ३ अडहुल। ४ नपुसक। ५. दरबान।

**वराह**—पु०[सं० वर(√भीष्ट)आ√हृन् (खोदना)+ड] १ शूकर। सूअर। २ विष्णु के दस अवतारो मे से एक जो शूकर के रूप मे हुआ था। ३ एक प्राचीन पर्वत। ४ शिशुमार या सूस नामक जल-जन्तु ५ वाराही कन्द।

**वराहक**—पु०[सं० वराह+कन्] १ हीरा। २ सूँस।

**वराह-कर्णी**—स्त्री०[सं० ष० त० ङीप्] अश्वगधा लता।

**वराह-कल्प**—पु० [मध्य० स०] वह काल या कल्प जिसमे विष्णु ने वराह का अवतार लिया था। वाराहकल्प।

**वराह-कांता**—स्त्री० [सं० तृ० त०] १. वाराहकल्प। २ लज्जालू।

**वराह-पत्री**—स्त्री० [सं० ब० स०, ङीप्] अश्वगधा।

**वराह मिहिर**—पु०[सं०] ज्योतिष के एक प्रसिद्ध आचार्य जो बृहत्सहिता, पचसिद्धातिका और बृहज्जातक नामक ग्रन्थो के रचयिता थे।

**वराह-मुक्ता**—स्त्री० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का कल्पित मोती जिसके सबध मे यह माना जाता है कि यह वराह या सूअर के सिर मे रहता है।

**वराह-व्यूह**—पु०[सं० मध्य० स० या उपमि० स०] एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना, जिसम अगला भाग पतला और बीच का भाग चौडा रखा जाता था।

**वराह-शिला**—स्त्री०[सं० मध्य० स०] एक विचित्र और पवित्र शिला जो हिमालय की एक चोटी पर है।

**वराह-संहिता**—स्त्री० [सं० मध्य० स०] वराहमिहिर रचित ज्योतिष का बृहत्सहिता नाम का ग्रन्थ।

**वराहिका**—स्त्री०[सं० वराह+कन्—टाप्, इत्व] कपिकच्छु। केवाँच। कौंच।

**वराही**—स्त्री०[सं० वराह+ङीप्] १. वराह की मादा। शूकरी। सूअरी। २. [वराह+अच्+ङीप्] वाराही कद। ३. नागर मोथा। ४. असगध। ५ गौरैया की तरह का काले रग का एक पक्षी। ६ दे० 'वाराही'।

**वरि**—स्त्री०[सं० वर=पति] पत्नी। (राज०) उदा०—वर मंदा सह वद वरि।—प्रिथिराज।

अव्य०[सं० उपरि] १. ऊपर। (राज०) उदा०—वले बाढ दे मिली वरि।—प्रिथिराज। २. भाँति। तरह। उदा०—वेस सधि सुहिणा सुवरि।—प्रिथिराज।

**वरियाम**—वि०[सं० वरीयस्] उत्तम। श्रेष्ठ। उदा०—पतो माल गढ पुरुपरा, वणिया भूज वरियाम।—बाँकीदास।

**वरिशी**—स्त्री० [सं० वडिश] मछली फँसानेवाली कँटिया। बसी।

**वरिष्ठ**—वि० [सं० वर+इष्ठन्] १ श्रेष्ठ तथा पूज्य। २ सबसे बडा तथा बढकर। 'कनिष्ठ' का विपर्याय। (सुपरियर)

पुं० [स०] १. धर्म सावर्णि मन्वंतर के सप्त ऋषियों मे से एक। २ उक्तनाम ऋषि का एक नाम। ३. तीतर। ४ मिर्च। ५ तीतर पक्षी।

**वरिष्ठा**—स्त्री० [सं० वरिष्ठ+टाप्] १. हलदी। २ अडहुल। जवा।

**वरी**—स्त्री० [स०√वृ (वरण करना)+अच्-ङीष्] १ शतावरी। रातावर। २ सूर्य की पत्नी।

†स्त्री० [स० वर] विवाह हो चुकने पर वर पक्ष मे कन्या को देने के लिए भेजे जानेवाले कपडे, गहने आदि। (पश्चिम)

**वरीय**—वि० [स० वरीयस्] [भाव० वरीयता] १ सब से अच्छा या बढिया। २ बहुतो मे अच्छा होने के कारण चुने या ग्रहण किया जाने के योग्य। अधिमान्य। (प्रिफरेबुल)

वि० [स० वर+ईय (प्रत्य०)] वर-संबंधी। वर का।

**वरीयता**—स्त्री० [स० वरीयस्+ता] १ चयन, चुनाव आदि के समय किसी को औरो की अपेक्षा दिया जानेवाला महत्त्व। २ वह गुण जिसके फलस्वरूप किसी को चयन आदि के समय औरो से अधिक प्रमुखता मिलती है।

**वरीयान् (यस्)**—वि० [स० वर+ईयसुन्] १ बडा। २ श्रेष्ठ। ३ पूरा जवान। पूर्ण युवा।

पुं० १. कश्यप ज्योतिष मे, सिद्धरूप आदि सत्ताइस योगो मे से अठारहवाँ योग, जिसमे जन्म लेनेवाला मनुष्य दयालु, दाता सत्कर्म करनेवाला और मधुर स्वभाव का समझा जाता है। २ पुलह ऋषि का एक पुत्र।

**वरु**—अव्य०=वरु (बल्कि)।

**वरुड**—पुं० [सं०] एक प्राचीन म्लेच्छ जाति।

**वरुण**[1]—पुं० [स०√वृ+उनन्] १. एक वैदिक देवता जो जल का अधिपति, दस्युओ का नाशक और देवताओ का रक्षक कहा गया है। पुराणो मे वरुण की गिनती दिक्पालो मे की गई है और वह पश्चिम दिशा का अधिपति माना गया है। वरुण का अस्त्र पाश है। २ जल। पानी। ३ सूर्य। ४. हमारे यहाँ सौर जगत् का सबसे दूरस्थ ग्रह। (नेपचून) ५. बरुन का वृक्ष।

**वरुणक**—पुं० [स० वरुण+कन्] वरुण या बरुन का वृक्ष।

**वरुण-ग्रह**—पुं० [स० ब० स०] घोडो का घातक रोग जो अचानक हो जाता है। इस रोग मे घोडे का तालू, जीभ, आँखें और लिंगेन्द्रिय आदि अग काले हो जाते हैं।

**वरुण-दैवत**—पुं० [सं० ब० स०] शतभिषा नक्षत्र।

**वरुण-पाश**—पुं० [सं० ष० त०] वरुण का अस्त्र, पाश या फदा। २. नक या नाक नामक जल-जतु। ३. ऐसा जाल या फंदा जिससे बचना बहुत कठिन हो।

**वरुण-प्रस्थ**—पुं० [स०] कुरुक्षेत्र के पश्चिम का एक प्राचीन नगर।

**वरुण-मंडल**—पुं० [स० ष० त०] नक्षत्रो का एक मडल जिसमें रेवती, पूर्वाषाढा, आर्द्रा, आश्लेषा, मूल उत्तरभाद्रपद और शतभिषा हैं।

**वरुणात्मजा**—स्त्री० [सं० वरुण-आत्मजा, ष० त०] वारुणी। मदिरा। शराब।

**वरुणादिगण**—पुं० [स० वरुण-आदि ब० स०, वरुणादि-गण ष० त०] पेडो और पौधो का एक वर्ग जिसके अंतर्गत बरुन, नील झिंटी, सहिजन, जयंति, मेढ़ासिंगी, पूतिका, नाटकरंज, अग्निमथ (अगेथू), चीता, शतमूली, बेल, अजश्रृंगी, डाभ, वृहती और कटकारी हैं। (सुश्रुत)

**वरुणालय**—पुं० [स० वरुण-आलय, ष० त०] समुद्र।

**वरूथ**—पुं० [स०√वृ (वरण करना)+ऊथन्] १. तनत्राण। बकतर। २ ढाल। ३ लोहे का वह जाल जो युद्ध के समय रथ की रक्षा के लिए उस पर डाला जाता था। ४ फौज। सेना।

**वरूथिनी**—स्त्री० [स० वरूथ+इनि-ङीप्] सेना।

**वरूथी (थिन्)**—पुं० [स० वरूथ+इनि] हाथी की पीठ पर रखी जानेवाली काठी।

**वरेंद्र**—पुं० [स० वर+इंद्र, कर्म० स०] १ राजा। २ इंद्र। ३. बगाल का एक प्रदेश या विभाग।

**परे**—अव्य० [√] १. परे। दूर। २ उस ओर। उधर। ३ उस पार।

**वरेण्य**—वि० [स०√वृ+एण्य] १ जो वरण किये जाने के योग्य हो। २ चाहा हुआ। इच्छित। ३ उत्तम। श्रेष्ठ। ४ प्रधान। मुख्य। पुं० केसर।

**वरेश्वर**—पुं० [स० वर-ईश्वर, कर्म० स०] शिव।

**वर्क**—पुं०=वरक (पृष्ठ)।

**वर्कर**—पुं० [स० √वृक् (स्वीकार)+अर] १ जवान पशु। २ बकरा।

पुं० [अ०] १ काम करनेवाला व्यक्ति। २ विशेषत किसी सभा, समिति आदि का कार्यकर्ता।

**वर्कराट**—पुं० [स० वर्क+√अट् (जाना)+अच्] १ कटाक्ष। २ दोपहर के सूर्य की प्रभा। ३. स्त्री के कुच पर का नख-क्षत।

**वर्किंग कमिटी**—स्त्री० [अ०] किसी सस्था, सभा आदि की वह समिति जो उसकी व्यवस्था करती है।

**वर्ग**—पुं० [स०√वृज् (त्याग देना आदि)+घञ्] १. एकही प्रकार की अथवा बहुत कुछ मिलती-जुलती या सामान्य धर्मवाली वस्तुओ का समूह। श्रेणी। जैसे—ओषधि वर्ग, साहित्यिक वर्ग, विद्यार्थी वर्ग आदि। २ कुछ विशिष्ट कार्यों के लिए बना हुआ कुछ लोगो का समूह। ३. देवनागरी वर्णमाला मे एक स्थान से उच्चरित होनेवाले स्पर्श व्यजन वर्णों का समूह। जैसे—कवर्ग, चवर्ग, टवर्ग आदि। ४ ग्रन्थ का अध्याय, परिच्छेद या प्रकरण। ५ कक्षा। जमात। ६ ज्यामिति मे वह समकोण चतुर्भुज जिसकी लम्बाई-चौडाई बराबर हो। ७ गणित मे समान अको का घात।

**वर्गण**—पुं० [सं० वर्ग+णिच्+युच्-अन.] गुणन। घात। (गणित)

**वर्ग-पद**—पुं०=वर्गमूल।

**वर्ग-पहेली**—स्त्री० [स०+हिं०] पहेलियाँ बुझाने के लिए ऐसी वर्गाकार रेखाकृति जिनमें छोटे-छोटे घर बने होते है तथा जिनमे कुछ सकेतों के आधार पर वर्ण भरे जाते है। (क्रासवर्ड)

**वर्ग-फल**—पुं० [स० ष० त०] गणित मे दो समान राशियो के घात से प्राप्त होनेवाला गुणनफल।

**वर्ग-मूल**—पुं० [स० ष० त०] वह राशि जिसमे वर्गफल को भाग देकर वर्गा क निकाला जाता है।

**वर्ग-युद्ध**—पुं० [स० ष० त०] दे० 'गृह-युद्ध'।

**वर्गलाना**—स० [का० वर्गलानीदन] छल-कपट से किसी को किसी ओर प्रवृत्त करना। बहकाना।

**वर्ग-संघर्ष**—पु० [स० ष० त०] किसी समाज के भिन्न-भिन्न वर्गों में होने-वाला ऐसा पारस्परिक संघर्ष जिसमें एक दूसरे को दबाने या नष्ट करने का प्रयत्न होता है। (क्लास स्ट्रगल)

**वर्गित**—भू० कृ० [स० वर्ग+णिच्+क्त] अनेक वर्गों में बँटा या बाँटा हुआ। वर्गीकृत (कैलेसिफाइड)

**वर्गी (र्गिन्)**—वि० [स० वर्ग+इनि, दीर्घ, नलोप] वर्ग संबंधी। वर्ग का।

**वर्गीकरण**—पु० [स० वर्ग+च्वि, ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० वर्गीकृत] गुण धर्म, रंग-रूप, आकार-प्रकार आदि के आधार पर वस्तुओं आदि के भिन्न-भिन्न वर्ग बनाना। (क्लैसिफिकेशन)

**वर्गीकृत**—भू० कृ० [स० वर्ग+च्वि, ईत्व√कृ+क्त] वर्गित। अनेक या विभिन्न वर्गों में बँटा या बाटा हुआ। (क्लैसिफाइड)

**वर्गीय**—वि० [स० वर्ग+छ-ईय] १. किसी विशिष्ट वर्ग से संबंध रखने-वाला या उसमें होनेवाला। वर्ग का। २ जो किसी विशिष्ट वर्ग के अंतर्गत हो। जैसे—क वर्गीय अक्षर। ३ एक ही वर्ग या कक्षा का। जैसे—वर्गीय मित्र।

पु० सहपाठी।

**वर्गोत्तम**—पु० [स० वर्ग-उत्तम, ष० त०] फलित ज्योतिष में राशियों के वे श्रेष्ठ अंश जिनमें स्थित ग्रह शुभ होते हैं।

**वर्ग्य**—वि० [स० वर्ग+यत्] १ जिसके वर्ग बनाए जा सके या बनाये जाने का हो। २ वर्गीय।

**वर्च्चस्**—पु० [स०√वर्च् (तेज)+असुन्] [वि० वर्चस्वान, वर्चस्वी] १ रूप। २ तेज। प्रताप। ३ कांति। दीप्ति। ४ श्रेष्ठता। ५ अन्न। अनाज। ६ मल। विष्ठा।

**वर्चक**—पु० [स० वर्चस्+कन्] १ दीप्ति। तेज। २ विष्ठा।

**वर्चस्य**—वि० [स० वर्चस्+यत्] तेजवर्द्धक।

**वर्चस्वान् (स्वत्)**—वि० [स० वर्चस्+मतुप्] [स्त्री० वर्चस्वती] १ तेजवान्। २ दीप्तियुक्त।

**वर्चस्वी (स्विन्)**—वि० [स० वर्चस्+विनि] [स्त्री० वर्चस्विनी] तेज-स्वी। दीप्तियुक्त।

पु० चंद्रमा।

**वर्जक**—वि० [स०√वृज् (निषेध करना)+णिच्+ण्वुल्-अक] वर्जन करनेवाला।

**वर्जन**—पु० [स०√वृज्+णिच्+ल्युट्-अन] [वर्जनीय वर्ज्य] १ त्याग। छोड़ना। २ किसी प्रकार के आचरण, व्यवहार आदि के संबंध में होनेवाला निषेध। मनाही। ३ हिंसा ४ दे० 'अपवर्जन'।

**वर्जना**—स्त्री० [स०√वृज्+णिच्+युच्-अन, टाप्] १ वर्जन करने की क्रिया या भाव। मनाही। वर्जन। २ बहुत ही उग्र, कठोर या विकट रूप से अथवा बहुत भयभीत करने हुए कोई बात निषिद्ध ठहराना या वर्जन करने की क्रिया या भाव। (टैबू)

**विशेष**—अनेक असभ्य और आदिम जन-जातियों में इस प्रकार की अनेक परम्परा-गत वर्जनाएँ चली आती है कि अमुक काम आदि नहीं करने चाहिएँ, अमुक पदार्थ कभी नहीं खाने चाहिएँ अथवा अमुक प्रकार के साथ किसी प्रकार का संपर्क नहीं रखना चाहिए, नहीं तो बहुत घातक या भीषण परिणाम भोगना पड़ेगा। सभ्य जातियों में नैतिक तथा सामाजिक क्षेत्रों में भी इसी प्रकार की अनेक वर्जनाएँ प्रचलित है। मनोवैज्ञानिकों का मत है कि जहाँ मन में बहुत सी स्वा-भाविक, अदमनीय और प्रबल प्रवृत्तियाँ तथा वासनाएँ होती हैं, वहाँ प्राकृतिक रूप से उनके दमन या नियन्त्रण की भी प्रवृत्तियाँ होती हैं जो वर्जनाओं का रूप धारण कर लेती हैं।

स० वर्जन या निषेध करना। मना करना।

**वर्जनीय**—वि० [स०√वृज्+णिच+अनीयर्] १ जिसका वर्जन होना उचित हो। वर्जन किये जाने के योग्य। २ त्यागे जाने के योग्य। ३ खराब।

**वर्जयिता (तृ)**—वि० [स०√वृज्+णिच्+तृच्] वर्जक।

**वर्जित**—भू० कृ० [स०√वृज्+णिच्+क्त] १. जिसमें संबंध में वर्जन या निषेध हुआ हो। मना किया हुआ। २ (पदार्थ) जिसका आयात-निर्यात या व्यापार राज्य के द्वारा विधिक रूप से बंद किया या रोका गया हो। (कान्ट्राबैंड) ३ त्यागा हुआ। परित्यक्त। ४ दे० 'निषिद्ध'।

**वर्जित**—स्त्री० [फा०] =वर्जिश (व्यायाम)।

**वर्ज्य**—वि० [स०√वृज्+यत्] वर्जनीय।

**वर्ज्य सूची**—स्त्री० [स०] अर्थशास्त्र में, ऐसी वस्तुओं की सूची जिनके संबंध में किसी प्रकार का वर्जन या निषेध किया गया हो। (ब्लैक लिस्ट)

**वर्ण**—पु० [स०√वर्ण् (रँगना आदि)+घञ्] १. पदार्थों के लाल, पीले, हरे आदि भेदों का नाम। रंग। (कलर) २ वह पदार्थ जिसमें कोई रंगी जाती हो। रंग। ३ शरीर के रंग के आधार पर किया जानेवाला जातियों, मनुष्यों आदि का विभाग। जैसे—मनुष्यों की कृष्णवर्ण, गौरवर्ण पीतवर्ण आदि कई जातियाँ है। ४ भारतीय हिंदुओं में स्मृतियों में कही हुई दो प्रकार की सामाजिक व्यव-स्थाओं में वह जिसके अंतर्गत गुण, कर्म और स्वभाव के विचार से सारा समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र नामक चार वर्गों में विभक्त है। दूसरी व्यवस्था 'आश्रम व्यवस्था' कहलाती है। ५. पदार्थों के निश्चित किए हुए भेद, वर्ग या विभाग। जैसे—स्वर्ण अक्षरों की योजना। ६. भाषाविज्ञान तथा व्याकरण में मुखतः ध्वनि इकाई। ६ उपत का सूचक चिह्न। अक्षर। ७ संगीत में मुद्रण की एक प्रकार का ताल जिसके चार भेद कहे गये है—पाट, विधिपाट कूटपाट और खड पाट ९ आकृति या रूप। १० चित्र। तसवीर। ११ प्रकार। भेद। १२ गुण। १३ कीर्ति। यश। १४ बड़ाई। स्तुति। १५ सोना। स्वर्ण। १६ अगरु। १७ केसर।

**वर्णक**—पु० [सं० √वर्ण+णिच्+ण्वुल्—अक] १ वह तत्व या पदार्थ जिससे रँगाई के काम के लिए रंग बनते हों। रंग। (पिगमेन्ट) २. अंग-राग। ३ देवताओं को चढ़ाने के लिए पिसी हुई हल्दी आदि। पैंपन। ४. अभिनय करनेवालों के पहनने के कपड़े या परिधान। ५ दाढ़ी-मूँछ या सिर के बाल रँगने की दवा या मसाला। ६ चित्रकार। ७. चन्दन। ८ चरण। पैर। ९ मंडल। १०. हरताल।

**वर्ण-क्रम**—पु०[स०] १. वर्णमाला के अक्षरों का क्रम। जैसे—वर्णक्रम से सूची बनाना। २. किसी वस्तु की वह आकृति जो उसे देखने के बाद आँखें बन्द कर लेने पर भी कुछ देर तक दिखाई देती है। ३. प्रकाश मे के रंग जो विशिष्ट प्रक्रिया से विश्लेषित किये जाते हैं। (स्पेक्ट्रम)

**वर्ण-खंड-मेरु**—पुं०[ष० त०] छंद शास्त्र मे वह क्रिया जिससे बिना मेरु बनाए ही वृत्त का काम निकल जाता है, यह पता चल जाता है कि इतने वर्णों के कितने वृत्त हो सकते हैं और प्रत्येक वृत्त मे कितने गुरु और कितने लघु होते हैं।

**वर्ण-चारक**—पु०[सं० ष० त०] १. चित्रकार। २. रंगसाज।

**वर्ण-छटा**—स्त्री०[स० ष० त०] दे० 'वर्णक्रम'।

**वर्ण-ज्येष्ठ**—पु०[स० स० त०] हिन्दुओं के सब वर्णों मे बड़ा अर्थात् ब्राह्मण।

**वर्ण-तूलिका**—स्त्री०[स० ष० त०] वह कूँची जिससे चित्रकार चित्र बनाते हैं। कलम।

**वर्णद**—पुं०[सं० वर्ण√दा (देना)+क]एक प्रकार की सुगन्धित लकड़ी। रत्न-जोत। दती।
वि० वर्ण या रंग देनेवाला।

**वर्ण-दूत**—पु०[स० ब० स०] लिपि।

**वर्ण-दूषक**—पु०[स० ष० त०] १. अपने संसर्ग से दूसरों को भी जाति-भ्रष्ट करनेवाला। २. जाति से निकाला हुआ पतित मनुष्य।

**वर्णन**—पु०[स०√वर्ण् (वर्णन करना, रँगना आदि)+णिच्+ल्युट्—अन] १. वर्णों अर्थात् रंगों का प्रयोग करना। रंगना। २. किसी विशिष्ट अनुभूति, घटना, दृश्य, वस्तु, व्यक्ति आदि के संबंध मे होनेवाला विस्तार-पूर्ण कथन जो उसका ठीक ठीक बोध दूसरों को कराने के लिए किया जाता है। ३. गुण-कथन। प्रशंसा। स्तुति।

**वर्ण-अष्ट**—पु०[सं० ब० स०] छन्दशास्त्र मे एक क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि प्रस्तार के अनुसार इतने वर्णों के वृत्तों के अमुक संख्यक भेद का लघु-गुरु के विचार से क्या रूप होगा।

**वर्णना**—स्त्री०[सं०√वर्ण्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १. वर्णन। २. गुण-कीर्तन।

**वर्णनातीत**—वि० [सं० वर्णन+अतीत, द्वि० त०] जिसका वर्णन करना असंभव हो।

**वर्णनात्मक**—वि० [सं०वर्णन-आत्मन्, ब० स०, कप्] (कथन, लेख आदि) जिसमे किसी अनुभव, अनुभूति, दृश्य आदि का वर्णन हो या किया जाय।

**वर्ण-नाश**—पु०[सं० ष० त०] व्याकरण मे, उच्चारण की कठिनता या किसी और कारण से किसी शब्द मे का कोई अक्षर या वर्ण लुप्त हो जाना। जैसे—'पृष्ठतोपर' मे के 'त' का वर्ण-नाश होने पर पृष्ठापर शब्द बनता है।

**वर्ण-पताका**—स्त्री०[स० ष० त०] छन्दःशास्त्र मे एक क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि वर्णवृत्तों के भेदों मे से कौन सा (पहला, दूसरा, तीसरा आदि) ऐसा है जिसमें इतने लघु और इतने गुरु होंगे।

**वर्ण-पात**—पु०[सं० ष० त०] किसी अक्षर का शब्द मे से लुप्त हो जाना। वर्ण-नाश।

**वर्ण-पाताल**—पु०[ष०त०]छन्दःशास्त्र मे एक क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि अमुक संख्या के वर्णों के कुल कितने वृत्त हो सकते हैं और उन वृत्तों में से कितने लघ्वादि और कितने ल-वत, कितने गुर्वादि और कितने गुर्वंत तथा कितने सर्वलघु होंगे।



**वर्ण-पाश**—पुं०[ष० त०]१. रंग या रंगों का डिब्बा। २. वह डिब्बा जिसमें बने हुए छोटे छोटे-घरों मे रंगों के जमे हुए टुकड़े रखे होते हैं। (चित्रकला)

**वर्ण-पुष्प (क)**—पुं०[ब० स०, कप्] पारिजात।

**वर्ण-प्रत्यय**—पुं०[ष०त०]छंदःशास्त्र मे वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कितने वर्णों के योग से कितने प्रकार के वर्णवृत्त बनते हैं।

**वर्ण-प्रस्तार**—पुं०[ष० त०]छंदःशास्त्र मे वह क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि अमुक संख्यक वर्णों के इतने वृत्त-भेद हो सकते हैं और उन भेदों के स्वरूप इस प्रकार होंगे।

**वर्ण-भेद**—पु०[ष० त०] १. ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र इन चार प्रकार के वर्णों के लोगों मे माना जानेवाला भेद। २. काले, गोरे, पीले, लाल आदि रंगों के आधार पर विभिन्न जातियों मे किया जानेवाला पक्षपातमूलक भेद। (रेशियल डिस्क्रिमिनेशन)

**वर्ण-मर्कटी**—स्त्री० [ष० त०] छन्दःशास्त्र मे एक क्रिया जिससे यह जाना जाता है कि इतने वर्णों के इतने वृत्त हो सकते हैं जिनमे इतने गुर्वादि, गुर्वंत, और इतने लघ्वादि, लघ्वंत होंगे तथा इन सब वृत्तों मे कुल मिलाकर इतने वर्ण, इतने गुरु-लघु, इतनी कलाएँ और इतने पिण्ड (=दो कल) होंगे।

**वर्ण-माता (तृ)**—स्त्री०[ष० त०] लेखनी।

**वर्ण-मातृका**—स्त्री०[ष० त०] सरस्वती।

**वर्ण-माला**—स्त्री०[ष० त०]१ किसी लिपि के वर्णों (लघुतम ध्वनि इकाइयों) की सूची। २ उक्त ध्वनियों के सूचक चिह्नों की सूची।

**वर्ण-राशि**—स्त्री०=वर्णमाला।

**वर्ण-वर्तिका**—स्त्री०[ष० त०]१ चित्रकला मे अलग-अलग तरह के रंगों से बनी हुई बत्ती या पेंसिल की तरह का एक प्राचीन उपकरण। २. पेंसिल। ३ तूलिका।

**वर्ण-विकार**—पु०[ष० त०] भाषाविज्ञान मे, वह स्थिति जब किसी शब्द मे का वर्णविशेष निकल जाता है और उसके स्थान पर कोई और वर्ण आ जाता है।

**वर्ण-विचार**—पुं०[ष० त०] आधुनिक व्याकरण का वह अंश जिसमे वर्णों के आकार, उच्चारण और सन्धियों आदि के नियमों का वर्णन हो। प्राचीन वेदांग में यह विषय शिक्षा कहलाता था।

**वर्ण-विपर्यय**—पुं० [ष० त०] भाषाविज्ञान मे वह अवस्था जब किसी शब्द के वर्ण आगे-पीछे हो जाते हैं और एक दूसरे का स्थान ग्रहण कर लेते हैं।

**वर्ण-वृत्त**—पु०[मध्य० स०] वह पद्य जिसके चरणों मे वर्णों की संख्या और लघु गुरु का क्रम निर्धारित हो।

**वर्ण-व्यवस्था**—स्त्री०[ष० त०] हिंदुओं की वह सामाजिक व्यवस्था जिसके अनुसार वे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र इन चार विभागों या मुख्य जातियों में बँटे हुए हैं।

**वर्ण-श्रेष्ठ**—पु० [स० त०] ब्राह्मण।

**वर्ण-संकर**—पु०[ब० स०] [भाव० वर्ण संकरता] १. व्यक्ति जिसका जन्म विभिन्न वर्णों के माता-पिता से हुआ हो। दोगला। २. व्यभिचार से उत्पन्न व्यक्ति।

**वर्ण-संहार**—पु०[ष०त०] नाटकों मे प्रतिमुख संधि का एक अंग।

**वर्ण-सूची**—स्त्री० [ष० त०] छंद शास्त्र में एक क्रिया जिससे वर्णवृत्तों

की संख्या की शुद्धता, उनके भेदों में आदि, अन्त, लघु और आदि अन्त गुरु की संख्या जानी जाती है।

**वर्ण-हीन**—वि०[तृ० त०]१. जो चारों वर्णों (क्षत्रिय, ब्राह्मण आदि) में से किसी में न हो। २. जातिच्युत।

**वर्णांध**—वि०[स० वर्ण-अंध, मुम्पुपा स०] [भाव० वर्णान्धता] जिसकी आँखो में ऐसा दोष हो कि वह रंगो की पहचान न कर सके। वर्णान्धता रोग का रोगी। (कलर ब्लाइंड)

**वर्णांधता**—स्त्री० [स० वर्णान्ध+तल्—टाप्] नेत्रों का एक प्रकार का रोग या विकार जिसमे मनुष्य को लाल, काले, पीले आदि रंगो की पहचान नही रह जाती। (कलर ब्लाइन्डनेस)

**वर्णागम**—पु० [स० वर्ण-आगम, ष० त०] भाषाविज्ञान मे वह स्थिति जब किसी शब्द के वर्ण मे एक वर्ण और आकर मिलता है।

**वर्णाट**—पु० [स० वर्ण√अट् (गति)+अच्] १. चित्रकार। २ गायक। ३. प्रमिका। ४. पत्नी द्वारा अर्जित धन से निर्वाह करनेवाला।

**वर्णाधिप**—पु० [स० वर्ण-अधिप ष० त०] फलित ज्योतिष मे ब्राह्मणादि वर्णों के अधिपति ग्रह। (ब्राह्मण के अधिपति बृहस्पति और शुक्र, क्षत्रिय के भौम और रवि, वैश्य के चद्र, शूद्र के बुध और अन्त्यज के शनि कहे गये हैं।)

**वर्णानुक्रम**—पु०[स० वर्ण-अनुक्रम, ष० त०] वर्णों का नियत क्रम।

**वर्णानुक्रमणिका**—स्त्री०[स० वर्ण-अनुक्रमणिका, ष०त०] वर्णों के अर्थात् वर्णमाला के अक्षरों के क्रम से तैयार की हुई अनुक्रमणिका या सूची।

**वर्णानुप्रास**—पु०[स० वर्ण-अनुप्रास, ष० त०] एक प्रकार का अलकार।

**वर्णाश्रम**—पु०[स० वर्ण-आश्रम, ष०त०] सनातनी हिंदुओ मे माने जानेवाले (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) चारो वर्ण और चारो आश्रम (ब्रह्मचर्य, गार्हस्थ्य, वानप्रस्थ और सन्यास)।

**वर्णाश्रमी (मिन्)**—वि०[स० वर्णाश्रम+इनि]१. वर्णाश्रम सम्बन्धी। २. जो वर्णाश्रम के नियम, सिद्धान्त आदि मानता और उनके अनुसार चलता हो।

**वर्णिक**—पु०[स० वर्ण+ठन्—इक] लेखक।
वि० १ वर्ण-सम्बन्धी। २ (छन्द) जिनमे वर्णों की गणना या विचार मुख्य हो।

**वर्णिक-गण**—पु० [कर्म० स०] छन्द शास्त्र मे के ये आठो गण—यगण, मगण, तगण, रगण, जगण, भगण, नगण और सगण।

**वर्णिक-छंद (स्)**—पु०[कर्म० स०] सस्कृत छन्द शास्त्र मे वे छन्द जिनके चरणो की रचना वर्णों की सख्या के विचार से होती है।

**वर्णिक-वृत्त**—पु०[कर्म० स०] वर्णिक छद।

**वर्णिका**—स्त्री०[स० वर्णिक+टाप्] १. स्याही। रोशनाई। २. सुनहला या सोने का पानी। ३ चन्द्रमा। ४. लेप लगाना। लेपन।

**वर्णित**—भू० कृ० [स० √वर्ण् (व्याख्यान या स्तुति)+णिच्+क्त]१. जिसका वर्णन हो चुका हो। २ वर्णन के रूप मे आया या लाया हुआ।

**वर्णिनी**—स्त्री०[स० वर्ण+इनि—ङीप्] १. किसी वर्ण की स्त्री। २. हल्दी।

**वर्णी (र्णिन्)**—वि०[स० वर्ण्+इनि] वर्णयुक्त। रगदार।
पु०१ चित्रकार। २ लेखक। ३ ब्रह्मचारी। ४. चारो वर्णों मे से किसी एक वर्ण का व्यक्ति।

**वर्णु**—पु० [स०√ वृ (अलग) करना)+नु] १. आधुनिक बन्नू नदी। २ बन्नू नामक नगर और इसके आस-पास का प्रदेश।

**वर्णोद्दिष्ट**—पु०[स० वर्ण-उद्दिष्ट, ब० स०] छदःशास्त्र मे एक क्रिया जिससे यह माना जाता है कि अमुक संख्यक वर्णवृत्त का कोई रूप कौन सा भेद है।

**वर्ण्य**—वि० [सं० वर्ण्+यत्] १. वर्ण या रंग-संबंधी। २. [√वर्ण्+ण्यत्] वर्णन किये जाने के योग्य।
पु०१ केसर। २. बन-तुलसी। ३ प्रस्तुत विषय। ४. गधक।

**वर्तक**—पु० [स०√वृत्त् (वर्तमान रहना)+ण्वुल्—अक]१. बटुआ। २ नर बटेर। ३. घोडे का खुर।
वि० वर्तन करने या बनानेवाला।

**वर्तन**—पु० [स०√ वृत्+ल्युट्—अन] १. इधर-उधर या चारो ओर घूमना। २ चलना-फिरना। गति। ३ जीवित या वर्तमान रहना। स्थिति। ४ कोई चीज उपयोग या व्यवहार मे लाना। बरतना। ५ लोगो के साथ आचरण या व्यवहार करना। बरतना। बरताव। ७ जीविका। रोजी। ८ उलट-फेर। परिवर्तन। ९ कोई चीज कही रखना या लगाना। स्थापन। १०. पीसना। पेषण। ११. पात्र। बरतन। १२ घाव मे सलाई डालकर हिलाना-डुलाना, जिसमे घाव या नासूर की गहराई और फैलाव आदि का पता लगता है। शल्य-कार्य। १३ चरखे की वह लकडी जिसमे तकला लगा रहता है। १४ विष्णु का एक नाम।

**वर्तना**—स्त्री० [स०√ वृत्+णिच्+युच्—अन, टाप्] १ वर्तन। २ चित्रकला मे, चित्रों मे छाया या अधकार दिखाने के लिए काला या इसी प्रकार का और कोई रग भरना।
†अ०, स०=बरतना।

**वर्तनी**—स्त्री० [स०√वृत्+अनि—ङीप्] १ बटने की क्रिया। पेषण। पिसाई। २. रास्ता। बाट। ३ किसी शब्द के वर्ण, उनका क्रम तथा उच्चारण विधि। (स्पेलिंग)

***वर्तमान**—वि०[सं०√वृत्+शानच्, मुक् आगम] १. (जीव या प्राणी) जो इस समय अस्तित्व या सत्ता मे हो। २.नियम या विधान जो लागू हो या चल रहा हो। ३. जो उपस्थित, प्रस्तुत या समक्ष हो। विद्यमान।
पु० वर्तमान काल।

**वर्तमान-काल**—पु०[स० कर्म० स०] १. व्याकरण मे क्रिया के तीन कालो मे से एक जिससे यह सूचित होता है कि क्रिया अभी चली चलती है। २ वृत्तान्त। समाचार। हाल।

**वर्ति**—स्त्री०[स०√ वृत्+इन्] १ बत्ती। २. अंजन। ३. घाव मे भरी जानेवाली कपडे आदि की बत्ती। ४. औषध बनाने का काम या क्रिया। ५. उबटन। ६. गोली। बटी।

**वर्तिक**—वि०[स०√वृत्+तिकन्] १. बत्ती से सम्बन्ध रखनेवाला। बत्ती का। बत्ती मे युक्त। जिसमे बत्तियाँ हो। उदा०—बन सहस्र वर्तिक नीराजन।—दिनकर।
अ० बटेर नामक पक्षी।

**वर्तिका**—स्त्री० [सं० वर्तिक+टाप्] १. बत्ती। २. बटेर पक्षी। ३.

मेढ़ासिंगी। ३. सलाई। ५ पेंसिल की तरह का एक उपकरण जो रेखाचित्र बनाने के काम आता था।

**वर्तिक**—पुं० [स०√वृत्+इतन्] बटेर।

**वर्तित**—भू० कृ० [स० √वृत्+णिच्+क्त] १. घुमाया या चलाया हुआ। २. संपादित किया हुआ। ३ बिताया हुआ। ४. ठीक या दुरुस्त किया हुआ।

**वर्तितेख**—पु० [स०] बहुत लंबे और मुटठे कोरे की तरह लपेटे जानेवाले कागज पर लिखा हुआ लेख। खर्रा। (रफ़ कॉपी)

**वर्ती (र्तिन्)**—वि० [स० पूर्वपद के रहने पर] [स्त्री० वर्तिनी] १ वर्तन करनेवाला। २. स्थित रहने या होनेवाला। जैसे—तीरवर्ती, दूरवर्ती।

स्त्री० १. बत्ती। २ सलाई।

**वर्तुल**—वि० [स०√वृत्+उलच्] गोल। वृत्ताकार।

पु०१. गाजर। २ मटर। ३ गुड़ धुना। ४ गुलगुला।

**वर्त्म (न्)**—पु० [स०√वृत्+मनिन्, नलोप] १. मार्ग। पथ। रास्ता। २. छकड़ों आदि के चलने से जमीन पर बननेवाली रेखा या लकीर। ३ किनारा। ४ आंख की पलक। ५ आधार। आश्रय। ६. पलकों में होनेवाला एक प्रकार का रोग या विकार।

**वर्त्म-कर्दम**—पु० [स० ब० स०] आंख का एक रोग जिसमें पित्त और रक्त के प्रकोप से आंखों में कीचड़ भरा रहता है।

**वर्त्म-बंध**—पु० [स० ब० स०] आंख का एक रोग जिसमें पलक में सूजन हो जाती है, खुजली तथा पीड़ा होती है और आंख नहीं खुलती।

**वर्त्मार्बुद**—पु० [स० वर्त्मन्-अर्बुद, ब० स०] आंखों का एक रोग जिसमें पलक के अन्दर एक गांठ उत्पन्न हो जाती है।

**वर्दी**—स्त्री० ज्वरदा।

**वर्द्ध**—पु० [स० √वर्ध् (काटना, पूरा करना आदि)+णिच्+अच्] १ काटने, चीरने या तराशने की क्रिया। २ पूरा करना। पूर्ति। ३. भारंगी। ४ सीसा नामक धातु।

**वर्द्धक**—वि० [स०√वृध् (बढ़ना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. वृद्धि करनेवाला। २ [√वर्ध्+ण्वुल्]-अक] काटने, छीलने या तराश करनेवाला।

पु० [स०√वर्ध् (काटना)+अच, वर्ध√कप् (हिंसा)+डि] दे० 'बढ़ई'।

**वर्द्धकी (किन्)**—पु०[स०√ वर्ध्+अच्+कन्+इनि] बढ़ई।

**वर्द्धन**—वि०[सं० √वृध्+णिच्+ल्यु—अन] वृद्धि करनेवाला। जैसे—आनंदवर्धन।

पुं०[√वृध्+णिच्+ल्युट—अन] १. वृद्धि करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. वृद्धि। बढ़ती।

**वर्द्धनी**—स्त्री० [स० वर्द्धन+ङीप्] १. झाड़। २. संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**वर्द्धमान्**—वि०[सं०√वृध्+शानच्, मुक आगम] १. जो बढ़ रहा हो या बढ़ता जा रहा हो। बढ़ता हुआ। २. जिसकी या जिसमें बढ़ने की प्रवृत्ति हो। वर्द्धनशील।

पुं० १. महावीर स्वामी। जैनियों के २४वें तीर्थंकर। २. बंगाल का आधुनिक बर्दवान नगर। ३. मिट्टी का प्याला या कसोरा। ४. एक वृत्त जिसके पहले चरण में १४, दूसरे में १३, तीसरे में १८ और चौथे में १५ वर्ण होते हैं।

**वर्द्धयिता**—वि०[स०√वृध् (बढ़ना)+णिच्+तृच] [स्त्री० वर्द्धयित्री] बढ़ानेवाला। वर्द्धक।

**वर्द्धापन**—पु० [स० √वर्ध् (काटना)+णिच्, आपुक्+ल्युट—अन] १ जनमे हुए शिशु की नाल काटना। २. उन्नति। ३. वृद्धि आदि की कामना से किया जानेवाला धार्मिक कृत्य। ४. महाराष्ट्र में प्रचलित अभ्यंग आदि कृत्य जो किसी की जन्मतिथि पर उसकी उन्नति, दीर्घायु आदि के उद्देश्य से किये जाते हैं।

**वर्द्धित**—भू० कृ० [सं०√वृध्+णिच्+क्त] १ जिसका वर्द्धन या वृद्धि हुई हो। २. कटा या काटा हुआ।

**वर्द्धिष्णु**—वि०[स०√ वृध्+इष्णुच्] बढ़ता रहनेवाला। वृद्धिशील।

**वर्द्ध्र**—पु०[सं०√वृध+रन्] चमड़ा। चमड़े का तस्मा।

**वर्द्ध्रका**—स्त्री० [स०वर्द्ध्र+कन्—टाप् ह्रस्व] दे० 'वर्द्ध्री'।

**वर्द्ध्री**—स्त्री० [स०वर्द्ध्र+ङीप्] १. चमड़े की पेटी। बद्धी २ गले में और छाती पर पहनने का बद्धी नाम का गहना।

**वर्धरोध**—पु०[स०] जीवों, वनस्पतियों आदि की वह स्थिति जिसमें उनका वर्धन या विकास रुक जाता या वैज्ञानिक क्रियाओं से रोक दिया जाता है। (एबोर्शन)

**वर्ध्म**—पु० [स०√वृध् (बढ़ना)+मनिन् वर्धमन्] १ प्राय आतशक या गरमी से रोगी को होनेवाला वह फोड़ा जो जांघ के मूल में संधिस्थान में निकल आता है। बद। २ अंत उत्तरने का रोग।

**वर्ष (न्)**—पु०[सं० √वृ (बढ़ना)+मनिन्] १ साल। हायन। २ घर। मकान। ३ पित्तपापड़ा।

पु०[फा०] शरीर के किसी अंग में होनेवाली सूजन। शोथ। जैसे—जिगर का वर्म।

**वर्मक**—पु०[स० वर्मन्+कन्] आधुनिक बरमा या ब्रह्मा देश का पुराना नाम।

**वर्म-धर**—वि०[स० ष० त०] कवचधारी।

**वर्मा (र्मन्)**—पु०[सं०] एक उपाधि जो कायस्थ, स्त्री आदि जातियों के लोग अपने नाम के अंत में लगाते हैं।

**वर्मिक**—वि०[स० वर्मन्+ठन्—इक] वर्म अर्थात् कवच से युक्त।

**वर्मित**—भू० कृ० [स० वर्मन+णिच् (नामधातु)+क्त] वर्म से युक्त किया हुआ। कवचधारी।

**वर्मी**—वि०=वर्मिक।

**वर्य**—वि०[स०√ वर् (इच्छा करना)+यत्]१. श्रेष्ठ। २. प्रधान।

पुं० कामदेव।

**वर्या**—वि० स्त्री० [√ वृ (वरण)+यत्+टाप्] (कन्या) जिसका वरण होने को हो अथवा जो वरण किये जाने को हो।

**वर्वर**—पु०[स०√ वृ+ष्वरच्]=बर्बर।

**वर्ष**—पु०[स०√वृष् (सींचना)+अच्] १. वर्षा। वृष्टि। २ बादल। मेघ। ३ काल का एक प्रसिद्ध मान जिसमें दो अयन और बारह महीने होते हैं। उतना समय जितने में सब ऋतुओं की एक आवृत्ति हो जाती है। संवत्सर। साल। बरस। ४. काल गणना में उतना समय जितने में कोई विशिष्ट चक्र पूरा होता हो। जैसे—चांद्र वर्ष, नाक्षत्र वर्ष,

वित्त वर्ष। ५. पुराणानुसार पृथ्वी का ऐसा विभाग जिसमे सात द्वीप हों। ६. किसी द्वीप का कोई प्रधान भाग या विभाग। जैसे—इलावर्ष, भारतवर्ष। ७. किसी मास की निश्चित तिथि से लेकर पुनः उसी मास की आनेवाली तिथि के बीच का समय। जैसे—एक वर्ष उन्हे यहाँ आये आज हुआ है।

**वर्षक**—वि० [सं०√ वृर्ष+ण्वुल—अक] १ वर्षा करनेवाला। २ ऊपर से फेंकने या गिरानेवाला। जैसे—अस्त्र-वर्षक।

**वर्षकर**—पु० [सं० वर्ष√कृ (करना)+ट] मेघ। बादल।

**वर्षकरी**—स्त्री० [सं० वर्षकर+ङीप्] झिल्ली। झींगुर।

**वर्षकाम**—वि० [सं० वर्ष√कम् (चाहना)+णिच्+अच्] जिसे वर्षा की कामना हो।

**वर्षकामेष्टि**—पु० [सं० ष० त०] एक यज्ञ जो वर्षा कराने के उद्देश्य से किया जाता था।

**वर्ष-कोष**—स्त्री० [सं० ष० त०] १. दैवज्ञ। ज्यातिषी। २. उड़द। माष।

**वर्षगंठ**—स्त्री०=बरस-गाँठ।

**वर्षज्ञ**—पु० [सं० वर्ष√ज्ञा (मानना)+टक्, कुत्व] १. पवन। वायु। २. अन्तःपुर का नपुंसक रक्षक। खोजा।

**वर्षण**—पुं० [सं० √ वृष् (बरसना)+ल्युट्—अन] १. बरसना। २. वर्षा। ३. वर्षोपल।

**वर्ष-धर**—पु० [सं० ष० त०] १. बादल। २. पहाड़। ३. वर्ष का शासक। ४. अन्तःपुर का रक्षक। खोजा। ५. पृथ्वी को वर्षों से विभक्त करनेवाले पर्वत।

**वर्षप, वर्ष-पति**—पुं० [सं० वर्ष√ पा (रक्षा)+क, वर्ष-पति, ष० त०] वर्ष अर्थात् साल का अधिपति ग्रह।

**वर्ष-पुस्तिका**—स्त्री० [सं०]दे० 'वर्ष-बोध'।

**वर्ष-फल**—पु० [सं० ष० त०] १. फलित ज्योतिष मे जातक के अनुसार वह कुंडली जिससे किसी के वर्ष भर के ग्रहों के शुभाशुभ फलों का विवरण जाना जाता है।

क्रि० प्र०—निकालना।

२. उक्त के आधार पर साल भर के शुभाशुभ फलों का लिखित विचार।

क्रि० प्र०—बनाना।

**वर्ष-बोध**—पुं० [सं० ष० त०] प्रति वर्ष पुस्तक के रूप में प्रकाशित होनेवाला कोई ऐसा विवरण जिसमे किसी देश, वर्ष, समाज आदि से सबध रखनेवाले कार्यों, घटनाओं आदि की सभी मुख्य और जानने योग्य बातों का संग्रह रहता है। अब्द-कोश। (ईयर-बुक)

**वर्षांक**—पुं० [सं० वर्ष-अंक, ष० त०] संख्या क्रम से किसी संवत् या सन् के निश्चित किये हुए नाम जो अंकों के रूप में होते हैं। दिनांक की तरह। जैसे—वर्षांक १९६१, १९६२।

**वर्षांबु**—पु० [सं० वर्षा-अंबु, ष० त०] वर्षा का जल।

**वर्षांश**—पु० [सं० वर्ष-अंश, ष० त०] महीना।

**वर्षा**—स्त्री० [सं०√ वृष्+अ+टाप्] १. आकाश के मेघों से पानी बरसना। वृष्टि। २. किसी चीज का बहुत अधिक मात्रा मे ऊपर से आना या गिरना। जैसे—गोलियों या फूलों की वर्षा। ३. किसी बात का लगातार चलता रहनेवाला क्रम। जैसे—गोलियों की वर्षा। ४. [वर्ष+अच्+टाप्] वह ऋतु जिसमें प्रायः पानी बरसता रहता है। बरसात।

**वर्षागम**—पुं० [सं० वर्षा-आगम ष० त०] १. वर्षा ऋतु का आगमन। २. नये वर्ष का आगमन।

**वर्षाधिप**—पुं० [सं० वर्ष-अधिप, ष० त०] फलित ज्योतिष के अनुसार वह ग्रह जो संवत्सर या वर्ष का अधिपति हो। वर्षपति।

**वर्षानुवर्षी (र्षिन्)**—वि० [सं० वर्ष-अनुवर्ष, ष० त० +इनि] १. प्रति वर्ष होनेवाला। २. जो बराबर कई वर्षों तक निरंतर चलता रहे या बना रहे। ३ (वनस्पति या वृक्ष) जो एक बार उग आने पर अनेक वर्षों तक बराबर बना रहे। बहुवर्षी। (पेरीनियल)

**वर्षा-प्रभंजन**—पु० [सं० मध्य० स०] ऐसी आँधी जिसके साथ पानी भी बरसे।

**वर्षाब्ज**—पु०[स० ष० त०]१. मेघ। बादल। २ ओला।

**वर्षाभू**—पु०[स० वर्षा√भू (होना)+क्विप्] १. भेक। दादुर। मेढक। २ इन्द्रगोप या स्वाभिल नाग का कीड़ा। ३. रक्त पुनर्नवा। ४. कीड़े-मकोड़े।

वि० वर्षा मे या वर्षा से उत्पन्न होनेवाला।

**वर्षा-मंगल**—पु०[स० मध्य० स०] १. वर्षा का अभाव होने या सूखा पड़ने पर मेघों का वरण से वर्षा के लिए प्रार्थना करना। २. इस प्रार्थना से संबंध रखनेवाला उत्सव।

**वर्षा-मापक**—पु०[स०ष०त०] वह यंत्रिल अथवा नल जिसमे वर्षा का पानी आप से आप भरता रहता है, और जिसपर लगे चिह्नों से जाना जाता है कि कितना पानी बरसा। (रेन-गेज)

**वर्षाशन**—पु०[स० वर्ष-अशन, मध्य० स०] वर्ष भर के लिए दिया जानेवाला अन्न।

**वर्षाहिक**—पुं०[सं० वर्षा-अहिक, मध्य० स०] एक प्रकार का बरसाती साँप जिसमे विष नहीं होता।

**वर्षित**—भू० कृ० [सं०√वृष्+णिच्+क्त] १. बरसाया हुआ। २. ऊपर से गिराया या फेंका हुआ।

पुं० वर्षा। वृष्टि।

**वर्षी (र्षिन्)**—वि०[सं० (पूर्वपद के रहने पर)√वृष+णिनि] [स्त्री० वर्षिणी] वर्षा करनेवाला। (यौ० के अंत में) जैसे—अमृत-वर्षी। †स्त्री०=बरसी।

**वर्षीय**—वि० [सं० वर्ष+छ=ईय] [स्त्री० वर्षीया] १. वर्ष या साल से संबंध रखनेवाला। २. गिनती के विचार से, वर्षों का। जैसे—पंच-वर्षीय, दसवर्षीय बालक।

**वर्षुक**—वि०[सं०√वृष्+उकञ्] वर्षा करनेवाला।

**वर्षेश**—पु०[सं० वर्ष-ईश, ष० त०] वर्षाधिप। (दे०)

**वर्षोपल**—पु०[सं० वर्ष-उपल, ष० त०] ओला।

**वर्ष्म (र्ष्मन्)**—पुं०[सं०√वृष्+मनिन्] १. शरीर। २. प्रमाण। ३. चरम सीमा। इयत्ता। ४. नदियों आदि का बाँध।

**वर्ह**—पुं०[स० √बर्ह् (दीप्त करना)+अच्] १. मोर का पंख। ग्रंथि-पर्णी। गठिवन। ३. वृक्ष का पत्ता।

**वर्हण**—पुं० [स०√वृह् (बढना) अथवा√बर्ह्+ल्युट्-अन] पत्र। पत्ता।

**वह्नि (न्)**—पुं० [सं०√वृंह्+इसुन्, नि० न-लोप] १. अग्नि। २ चमक। दीप्ति। ३. यज्ञ। ४. कुश। ५. चीते का पेड़।

**वह्नि-च्यञ**—पु० [स० ब० स०] स्कंद। कार्तिकेय।

**वह्निमुख**—पुं० [सं० ब० स०] १. अग्नि। २. एक देवता।

**वह्निवह्**—पुं० [सं० वह्नि्√वह् (ढोना)+क्विप्] पितरों का एक गण।

**वर्हा (र्हिन्)**—पु० [सं० वर्ह+इनि] १. मयूर। मोर। २. कश्यप के एक पुत्र। ३. तगर।

**वलना**—स० [सं० वलय] १. घेरना। २. लपेटना। ३. पहनना। (राज०) उदा०—वले वले निधि विधि वलित।—प्रिथीराज।

**वलंबा**†—पुं०=अवलंब।

**वल**—पुं० [सं०√वल् (घूमना-फिरना)+अच्] १. मेघ। बादल। २. २ एक असुर जो देवताओं की गौएँ चुराकर एक गुहा में जा छिपा था। इन्द्र ने जब इससे गौएँ छुड़ा ली, तब यह बैल बनकर बृहस्पति के हाथों मारा गया था।

**वलन**—पु० [सं०√वल्+ल्युट्—अन] १. किसी ओर घूमना या मुड़ना। २. चारों ओर घूमना। चक्कर लगाना। ३. ज्योतिष में, किसी ग्रह का अयनाश से हटकर कुछ इधर या उधर होना।

**वलना**—अ० [सं० वलन] १. किसी ओर घूमना या मुड़ना। २. वापस आना। लौटना।

स० १ घुमाना। फिराना। २. लपेटना।

**वलनिक**—वि० [सं० वलन] १. जिसका वलन किया जा सके। २ जो तह करके या मोड़कर छोटा किया जा सके। (फोल्डिंग)

**वलनी**—स्त्री० [सं० वलन] १. वह स्थान जहाँ से कोई चीज किसी ओर घूमती या मुड़ती हो। २ कोई ऐसी चीज जो घूमे या मुड़े हुए रूप में हो। (बेंड)

**वलभी**—स्त्री० [सं०√वल् (आच्छादित होना)+अभि+ङीप्] १. वह छोटा मंडप जो घर के ऊपर शिखर पर बना हो। गुमटी। निगोल। २ घर का ऊपरी भाग। ३ छप्पर। ४ छत। ५. काठियावाड़ की एक प्राचीन नगरी।

**वलय**—पु० [सं०√वल्+अयन्] १. गोलाकार घेरा। मंडल। २. घेरने, लपेटने आदि वाली चीज। वेष्टन। ३ हाथ में पहनने का कंगन। ४. वृत्त की परिधि। ४. एक प्रकार की व्यूह रचना जिसमें सैनिक मंडल बनाकर खड़े होते हैं। ५. एक प्रकार का गल-गंड रोग। ६. शाखा।

**वलयित**—भू० कृ० [सं० वलय+णिच्+क्त] घेरा या लपेटा हुआ। परिवृत्त। वेष्टित।

**वलवला**—पुं० [अ० वल्वलः] १. क्षोर-शुल। २. मन की उमंग। आवेश। क्रि० प्र०—उठना।

**वलसूदन**—पुं० [सं० वल√सूद् (मारना)+ल्यु—अन] इंद्र।

**वलाक**—पुं० [स्त्री० वलाका]=बलाक (बगला)।

**वलायत**—स्त्री०=विलायत।

**वलाहक**—पुं० [सं० वारि-वाहक, ष० त०, पृषो० सिद्धि] १. मेघ। बादल। २. मुस्तक। ३. पर्वत। पहाड़। ४. कुश द्वीप का एक पर्वत। श्रीकृष्ण के रथ का एक घोड़ा। ६. एक प्राचीन नद। ७. साँपों की एक जाति जो दर्व्वीकर के अन्तर्गत मानी गई है।

**वलि**—पुं० [सं०√वल्+इन] १. रेखा। लकीर। २. चंदन आदि से बनायें जानेवाले चिह्न या रेखाएँ। ३. देवताओं आदि को चढ़ाई जानेवाली वस्तु। ४. देवताओं के उद्देश्य से मारे जानेवाले पशु। ५. झुर्री। बल। सिकुड़न। ६. पंक्ति। श्रेणी। कतार। ७.एक दैत्य जो प्रह्लाद का पौत्र था और जिसे विष्णु ने वामन अवतार लेकर छला था। ८. पेट के दोनों ओर पेटी के सिकुड़ने के कारण पड़ी हुई रेखा। बल। जैसे—त्रिवली। ९. राजकर। १०. बवासीर का मसा। ११. छाजन की जोलती। १२. गंधक। १३. पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा।

**वलिक**—पुं० [सं० वलि+कन्] ओलती।

**वलित**—भू० कृ० [स०√वल्+क्त] १ घूमा, मुड़ा या बल खाया हुआ। २. झुका या झुकाया हुआ। ३. घिरा या घेरा हुआ। परिवृत्त। ४. जिसमें झुर्रियाँ या सिकुड़नें पड़ी हों। ५ किसी के चारों ओर लिपटा हुआ। आच्छादित। ६. मिला हुआ। युक्त। सहित।

पु० १. काली मिर्च। २. हाथ की एक मुद्रा।

**वलि-मुख**—पु० [स० ब० स०] १. बानर। बंदर। २. गरम दूध में मठा मिलाने से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का विकार।

**वली**—स्त्री० [सं० वलि+ङीप्] १. झुर्री। शिकन। २ अवली। पंक्ति। श्रेणी। ३. रेखा। लकीर। ४. चंदन आदि के बनाए हुए चिह्न या रेखाएँ। ५. पेट-पर पड़नेवाली रेखा। जैसे—त्रिवली।

पु० [अ०] १. वह जो प्रजा और महाराजा दोनों का ईश्वर की दृष्टि में प्रिय और मान्य हो। २. वह व्यक्ति जो किसी नाबालिग या स्त्री की संपत्ति का कर्ता-धर्ता तथा रक्षक हो। अभिभावक। ३ स्वामी।

**वली अल्लाह**—पु० [अ०] एक प्रकार के सिद्ध मुसलमान फकीर।

**वली अहद**—पु० [अ०] युवराज।

**वलीक**—पु० [सं०√वल्+कीकन्] १ ओलती। २ सरकंडा।

**वलीमुख**—पु०=वलिमुख (बंदर)।

**वलूक**—पुं० [सं०√वल्+अक] १. कमल की जड़। २. एक प्रकार का पक्षी।

**वले**—अव्य० [फा०] १. लेकिन। मगर। २. पुन।

**वलेकिन**—अव्य०=लेकिन।

**वल्क***—पु०=वलय।

**वल्क**—पु० [सं०√वल्+क, नि०] १. पेड़ की छाल। वल्कल। २. मछली के ऊपर का चमकीला छिलका। मछली की चोई।

**वल्क-द्रुम**—पु० [सं० मध्य० स०] भोज पत्र का वृक्ष।

**वल्कल**—पु० [सं०√वल्+कलन्] १. पेड़ों के धड़ और काण्ड पर का आवरण। छाल। २ प्राचीन काल में वह छाल जो जंगली लोग, तपस्वी आदि कपड़े की तरह ओढ़ते-पहनते थे। ३. एक दैत्य। ४. ऋग्वेद की शाकल नामक शाखा।

**वल्कला**—स्त्री० [सं० वल्कल+टाप्] १ एक प्रकार का सफेद पत्थर जिसका गुण शीतल और शान्तिकारक माना जाता है। शिला वल्का। २. तेजबल नामक वनस्पति।

**वल्कली (लिन्)**—वि० [सं० वल्कल+इनि] (पेड़) जिसकी छाल ओढ़ने पहनने के काम आती है।

**वल्गन**—पु० [सं०√वल्ग् (उछलना)+ल्युट्—अन] १. उछलने, कूदने

या फाँदने की क्रिया या भाव। २ दुलकी। ३. व्यर्थ की उछल-कूद और बकवाद।

**वल्गा**—स्त्री०[स०√वल्ग्+अच्+टाप्] वाग। रास। लगाम।

**वल्गु**—वि०[स०√वल्+उ, गुक्-आगम] १. रूपवान्। सुंदर। २. प्रिय। मधुर। ३ बहुमूल्य।

पुं० [स०] १. बौद्धों के बोधि द्रुम के चार अधिकृत देवताओं में से एक। २ बकरा।

**वल्गुक**—पुं०[सं० वल्गु+कन्] १. चंदन। २ जंगल। वन। ३ पण। बाजी। ४ क्रय-विक्रय। सौदा। ५. मूल्य। दाम।

वि० वल्गु।

**वल्गुज**—पुं०[स०√वल्+उज] १. एक प्रकार का चमगादड़। २. गीदड़। शृगाल।

**वल्गुजा**—स्त्री०[स० वल्गु√जा (लेना)+क+टाप्] १. बकुची। २. चमगादड़।

**वल्गुजिका**—स्त्री०[स० वल्गुल+कन्+टाप्, इत्व] १. कत्थई रंग की पतंग जाति का कीड़ा जिसे 'तेलपायी' भी कहते हैं। चपटा। २ पिटारी। मंजूषा।

**वल्गुजी**—स्त्री० [स० वल्गुल+ङीप्] १ चमगादड़। गेदुर। २ पिटारी। मंजूषा।

**वल्ल**—पुं०[अ०] पुत्र। बेटा।

**पल्वियत**—स्त्री०[अ०] पुत्र होने की अवस्था या भाव।

**पत्र—वल्वियत लिखाना**=यह लिखाना कि हम किसके पुत्र है। पिता का नाम बतलाना।

**वल्मीक**—पुं०[सं०√वल्+कीकन्, नुम्-आगम] १. दीमकों का लगाया हुआ मिट्टी का ढेर। बाँबी। बिमौट। २ ऐसा मेघ जिसपर सूर्य की किरणें पड़ रही हों। ३. एक प्रकार का रोग जिसमें संधि-स्थलों में सूजन आ जाती है। ४. वाल्मीकि ऋषि।

**वल्ल**—पुं०[स०√वल्ल (ढकना)+अच्] १. घुँघची। २ एक पुरानी तौल जो किसी के मत से तीन और किसी के मत से छ: तोले की होती थी। ३. आवरण। ४ निषेध। ५. अनाज आँसाना या बरसाना। ६. शल्की। सलई।

**वल्लकी**—स्त्री०[स०√वल्+क्वुन्+ङीप्] १ वीणा।२ नारद की वीणा का नाम। ३. सलई का पेड़।

**वल्लभ**—वि० [स०√वल्+अभच्] [स्त्री० वल्लभा] अत्यन्त प्रिय। प्रियतम। प्यारा।

पुं० १.अत्यन्त प्रिय व्यक्ति। २. स्त्री का पति। ३. श्लोक। स्वामी। ४ अच्छे लक्षणोंवाला घोड़ा। ५. एक प्रकार का सेम। ६ दे० 'वल्लभाचार्य'।

**वल्लभ-मत**—पुं०=वल्लभ-सम्प्रदाय।

**वल्लभ-सम्प्रदाय**—पुं० [सं० ष० त०] महाप्रभु वल्लभाचार्य द्वारा स्थापित पुष्टिमार्ग सम्प्रदाय का दूसरा नाम। दे० 'पुष्टि-मार्ग'।

**वल्लभा**—वि० स्त्री० [सं० वल्लभ+टाप्] स० 'वल्लभ' का स्त्री०।

**वल्लभी**†—पुं०=वलभी।

**वल्लर**—पुं०[सं०√वल्+अरन्] १. निकुंज। २. वन। ३. लता। ४. मंजरी। ५. अगर।

**वल्लरी**—स्त्री०[सं० वल्लर+ङीष्] १. वल्ली। लता। २. मंजरी। ३. मेथी। ४. बचा। बच। ५. पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा।

**वल्लव**—पुं० [सं० वल्ल्√वा (गति)+क] [स्त्री० वल्लवी] १ १. गोप। ग्वाला। २. रसोइया।

**वल्लाह**—अव्य०[अ०] १. ईश्वर की शपथ लेते हुए। २. सचमुच।

**वल्लि**—स्त्री०[सं०√वल्+इन्] १. लता। २. पृथिवी।

**वल्लिका**—स्त्री० [सं० वल्लि+कन्+टाप्] १. लता। वल्ली। २. बेला। ३. पोई नामक साग।

**वल्लिज**—पुं०[स० वल्लि√जन् (उत्पत्ति)+ड] मिर्च।

**वल्लि-दूर्वा**—स्त्री०[सं० मध्य० स०] सफेद दूब।

**वल्ली**—स्त्री०[सं० वल्लि+ङीष्] १. लता। २. काली अपराजिता। ३. केवटी मोथा। ४ अग्नि दमयन्ती। ५ खाल का बूट।

**वल्लूर**—पुं०[सं०√वल्+ऊरच्] १. कुंज। २. मंजरी। ३. क्षेत्र। ४. निर्जल स्थान।

**वल्लूर**—पुं०[सं०+वल्+ऊरच्] १. धूप में सुखाया हुआ मांस, विशेषत: मछली का मांस। २ सूअर का मांस। ३ ऊसर जमीन। ४. जंगल। वन। ५. उजाड़ जगह। बीरान।

**वल्लव**—पुं०[सं०] एक दैत्य जिसे बलराम जी ने मारा था। इल्वल।

**वव**—पुं०[स०] एक करण। (ज्यो०)

**वशंकर**—वि०[सं० वशकर] वशीभूत करनेवाला।

**वशंवद**—वि०[सं० वश√वद्(बोलना)+खच्, मुम्] १.जो किसी के वश या प्रभाव में हो। २ कही हुई बात या आज्ञा माननेवाला। आज्ञाकारी।

**वश**—पुं०[स०√वश् (चाहना आदि)+अप्] १. अधिकार, नियन्त्रण या प्रभाव क्षेत्र में लाने या रखने की शक्ति या समर्थता। काबू। वि० १. काबू में आया हुआ। अधीन। २.आज्ञानुवर्ती। ३. नीचा दिखलाया हुआ। ४. जादू-टोने से मुग्ध किया हुआ।

**पद—वश का**=जिस पर वश चलता हो। जो संयम हो। जैसे—यह काम हमारे वश का नहीं है।

**मुहा०—वश चलना**=ऐसी स्थिति होना कि अधिकार या शक्ति अपना पूरा काम कर सके। जैसे—तुम्हारा वश चले तो तुम उसे घर से निकाल दो। **वश में होना**=पूर्ण नियन्त्रण में होना।

५. इच्छा। ६. जन्म। ७. कलियों के रहने का स्थान। चकला।

**वशक**—वि०[सं० वशकर] [स्त्री० वशिका] १. वश में करनेवाला। २. वश में किया हुआ।

**वशंका**—स्त्री० [सं० वश√कै (शोभा)+क+टाप्] आज्ञा और वश में रहनेवाली पत्नी।

**वशग**—वि० [सं० वश√गम् (जाना)+ड] [स्त्री० वशगा] आज्ञाकारी।

**वशा**—स्त्री०[सं०√वश्+अच्+टाप्] १. बंध्या स्त्री। बाँझ। २. ओरू। पत्नी। ३. गौ। ४. हथिनी। ५. स्त्री के पति की बहन। ननद।

**वशानुग**—वि० [स० वश-अनुग, ष० त०] १. वश में रहनेवाला। २. वश में किया हुआ। ३. दे० 'वशग'।

**वशित**—स्त्री०=वशित्व।

**वशित्व**—पु० [सं० वशिन्+त्व] १. वश में होने की अवस्था या भाव। वश चलना। २. योग मे अणिमा आदि आठ सिद्धियों मे से एक सिद्धि जिससे साधक सब को वश मे कर सकता है। ३. सम्मोहन।

**वशिमा**—स्त्री० [सं० वश+इमनिच्] योग की वशित्व नामक सिद्धि।

**वशिर**—पुं० [सं०√वश्+किरच्] १. समुद्री लवण। समुद्री नमक। २ एक प्रकार की लाल मिर्च।

**वशिष्ठ**—पुं०=वसिष्ठ।

**वशी (शिन्)**—वि० [सं० वश+इनि] १. जो किसी के वश में हो। २. जिसने अपनी इच्छाशक्ति और इन्द्रियों को वश मे कर रखा हो।

**वशीकर**—वि० [सं० वश+च्वि, ईत्व√कृ+ट] १. वश मे करनेवाला। जैसे—वशीकर मत्र। २. सम्मोहक।
पु० वशीकरण।

**वशीकरण**—पु० [सं० वश+च्वि, ईत्व√कृ (करना)+ल्युट्—अन] [वि० वशीकृत] १. दूसरो को अपने वश मे करने, रखने अथवा लाने की क्रिया या भाव। वश मे करना। २. तत्र में एक प्रकार का प्रयोग जिसमें मत्र-बल से किसी को अपने वश मे किया या लाया जाता है। ३. ऐसा साधन जिससे किसी को वशीभूत किया जा सके या किया जाता हो।

**वशीकृत**—भू० कृ० [सं० वश+च्वि, ईत्व√कृ+क्त] १. वश में किया हुआ। २. मोहित। मुग्ध।

**वशीभूत**—भू० कृ० [सं० वश+च्वि, ईत्व√भू (होना)+क्त] वश मे आया या किया हुआ। अधीन। ताबे।

**वश्य**—वि० [सं० वश+यत्] [भाव० वश्यता] १. जो वश मे किया गया हो। २. जो वश मे किया जा सकता हो। ३. अधीनस्थ।
पु० १. दास। नौकर। सेवक। २. अधीनस्थ कर्मचारी या व्यक्ति।

**वश्यता**—स्त्री० [सं० वश्य+तल्+टाप्] वश में होने की अवस्था या भाव। अधीनता।

**वश्या**—स्त्री० [सं० वश्य+टाप्] १. लगाम। २. गोरोचन। ३ नीली अपराजिता।

**वषट्**—अव्य० [सं०√वह (पहुँचाना)+डषटि] एक शब्द जिसका उच्चारण यज्ञ के समय अग्नि मे आहुति देते समय किया जाता है।

**वषट्-कार**—पु० [सं० ब० स०] १. देवताओं के उद्देश्य से किया हुआ यज्ञ। होम। होत्र। २. तैंतीस वैदिक देवताओं में से एक देवता। ३. वषट् (शब्द) का उच्चारण करनेवाला व्यक्ति।

**वषट्-कृत**—भू० कृ० [सं० सुप्सुपा स०] देवताओं के निमित्त अग्नि में डाला हुआ। होम किया हुआ। हुत।

**वषट्-हृत्य**—पु० [सं० मध्य० स०] होम।

**वष्कयणी**—स्त्री० [सं०√वष्क् (गति)+अयन्=वष्कय (एक साल का बछड़ा)+ङीं (ले जाना)+क्विप्+ङीप्, तारा] बकेना गाय।

**वसंत**—पुं० [सं०√वस्+झच्] १. वर्ष की छः ऋतुओं में से एक ऋतु। हेमंत और ग्रीष्म के बीच की ऋतु। २ माघ सुदी पचमी को मनाया जानेवाला एक पर्व जो उक्त ऋतु के आगमन का सूचक होता है। ३ संगीत में छः मुख्य रागों में से एक जो विशेष रूप से वसंत ऋतु में गाया जाता है। ४. एक ताल। ५. चेचक। ६. अतिसार। ७. फूलों का गुच्छा।

**वसंतक**—पुं० [सं० वसंत+कन्] ब्योनाक। सोनापाढ़ा।

**वसंतगीर्वाणी**—स्त्री० [सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**वसंत चोखी (खिन्)**—पुं० [सं०] कोकिल।

**वसंतजा**—स्त्री० [सं० वसंत√जन् (उत्पन्न करना)+ड+टाप्] १ वासती लता। २. सफेद जूही। ३. वसंतोत्सव।

**वसंततिलक**—पुं० [सं० ष० त०] १ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे तगण, भगण, जगण, जगण, और दो गुरु—इस प्रकार कुल चौदह वर्ण होते हैं। २. एक प्रकार का पौधा और उसके फूल।

**वसंत तिलका**—स्त्री० [सं० वसंततिलक+टाप्] वसंततिलक (वर्णवृत्त)।

**वसंतदूत**—पु० [सं० ष० त०] १. आम (वृक्ष)। २ कोयल। ३. पचरंग। ४. चैत्रमास।

**वसंत-दूती**—स्त्री० [सं० वसंतदूत+ङीष्] १. कोयल। २. पाडर वृक्ष। ३ माधवी लता।

**वसंत-नारायणी**—स्त्री० [सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**वसंत पंचमी**—स्त्री० [सं० ष० त०] माघ महीने की शुक्ल पचमी। पहले इस दिन वसंत और रति सहित कामदेव की पूजा होती थी, पर आज-कल यह सरस्वती पूजन का दिन माना जाता है। इसे श्री-पंचमी भी कहते हैं।

**वसंत-पूजा**—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का धार्मिक समारोह जिसमे वेदों के कुछ विशिष्ट मत्रों का सस्वर पाठ होता है।

**वसंत बधु**—पुं० [सं० ष० त०] कामदेव।

**वसंत-भूपाल**—पुं० [सं० मध्य० स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**वसंत भैरवी**—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] ऐसी भैरवी जो वसंत राग मे गाई जाती हो।

**वसंत महोत्सव**—पुं० [सं० ष० त०] १. एक उत्सव जो प्राचीन काल मे वसंत पंचमी के दूसरे दिन कामदेव और वसंत की पूजा के उपलक्ष में मनाया जाता था। २ होली का उत्सव।

**वसंत मालव**—पुं० [सं० मध्यम० स०] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते है।

**वसंत यात्रा**—स्त्री० [सं०] वसंतोत्सव।

**वसंत-वत**—पुं० [सं० ब० स०] कोकिल।

**वसंत सखा**—पुं० [सं०] कामदेव।

**वसंती**—वि० [सं० वसंत] १. वसंत ऋतु-संबंधी। वसंत का। जैसे—वसंती मौसम। २. वसंत ऋतु मे फूलने वाली सरसों के फूलों की तरह हलके पीले रग का। वसंती। जैसे—वसंती चोली, वसंती साड़ी।
पु० उक्त प्रकार का रंग।

**वसंतोत्सव**—पुं० [सं०] १. वसंत पचमी के दिन मनाया जानेवाला उत्सव। (पश्चिम) २. प्राचीन काल में माघ सुदी छठ (वसंत पचमी के दूसरे दिन) को मनाया जानेवाला उत्सव जिसमे कामदेव की पूजा की जाती थी। ३. होली का उत्सव।

**वसअत**—पु० [अ०] १. विस्तार। फैलाव। २. चौड़ाई। ३. अँटने या समाने की जगह। गुंजाइश। समाई। ४. शक्ति। सामर्थ्य।

**वसत**†—स्त्री० १. बस्ती। २ बसऊत।
†पु० वस्त्र (कपड़ा)।

**वसति**—स्त्री०[स०√वस् (निवास करना)+अति] १ वास। रहना। २ घर। ३ आबादी। बस्ती। ४. जैन साधुओं का मठ। ५. रात।

**वसती**—स्त्री०[स० वसति-ङीष्] १. वास। रहना। २ रात। ३ घर। ४ बस्ती।

**वसन**—पु० [स० √वस् (आच्छादन करना)+ल्युट्-यु-अन] १. वस्त्र। कपड़ा। २ ढकने का कपड़ा। आच्छादन। आवरण। ३ किसी स्थान पर बसना। निवास। ४. कमर में पहनने का गहना। ५ तेजपत्ता।

**वसना**—स्त्री०[स०] स्त्रियों की कमर का एक गहना।
अ०=बसना।
†अ०[स० वश] वश में होना।

**वसनार्णवा**—स्त्री०[स० ब० स०] भूमि। पृथ्वी।

**वसा**—पु०[अ०] १. नील का पत्ता। २. खिजाब। ३. उबटन। ४ पुराने चाम का एक प्रकार का छापे का कागज जो चाँदी के वरक लगाकर छापा जाता था।

**वसल**—पु०=वस्ल (संयोग)।

**वसली**—स्त्री०[अ० वस्ली] चित्रकला में कई कागजों को चिपकाकर बनाया हुआ गत्ता या दफ्ती।

**वसलीगर**—पु० [अ०+फा०] १ वसली या गत्ता बनानेवाला। २ हाथ के अंकित चित्रों को वसली या गत्ते पर चिपका कर उसमें गोट आदि लगानेवाला।

**वसवास**—पु०[अ० वस्वास मि० स० विश्वास] १. अविश्वास। २ संदेह। संशय। ३ आगा-पीछा। दुविधा।
पुं०[हि० बसना+वास] निवास। वास।

**वसवासी**—वि० [अ० वसवास] १ विश्वास न करनेवाला। संशयात्मा। शकी। २ धोखा देनेवाला। धूर्त।
†वि० निवासी।

**वसह**—पु०[स० वृषभ, प्रा० वसह] बैल।

**वसा**—स्त्री०[स०] [वि० वसीय] १ पीले अथवा सफेद रंग का एक प्रसिद्ध चिकना या तैलाक्त पदार्थ जो पशुओं, मछलियों और मनुष्यों के शरीर में पाया जाता है और जिसकी अधिकता होने पर उनमें मोटाई आती है। चरबी। (फैट) २ उक्त प्रकार का कोई सैद्धिय तरल या पदार्थ (जैसे—पौधों या फलों में का)। ३. मज्जा।

**वसाकेतु**—पु०[सं०] एक प्रकार या तरह का धूमकेतु या तारक पुंज।

**वसातत**—स्त्री०[अ० वस्त(मध्य)का भाव०] १ मध्यस्थता २ जरिया। द्वार।

**वासति**—पु० [सं० ब० स०] १. उत्तर भारत का एक प्राचीन जनपद। २ उक्त जनपद का निवासी। ३ इक्ष्वाकु का एक पुत्र।

**वसा प्रमेह**—पु०[स० ष० त०] एक प्रकार का मेहरोग जिसमें पेशाब के साथ चरबी निकलती है।

**वसामेह**—पु०[स० ष० त०]=वसाप्रमेह

**वसार**—पु०[सं० वसा+रच्] १. इच्छा। २. वश। ३. अभिप्राय।

**वसाल**—पुं०[?] मेढ़। (राज०) उदा०—डोला करह सिवासियउ, देवें वीस वसाल—डो० मा० दू०।

**वसित**—वि०[सं०] १. बसा हुआ। २ पहना हुआ। ३. एकत्र या संगृहीत किया हुआ।
पुं० १ निवास स्थान। २ बस्ती। ३. वस्त्र।

**वसितव्य**—वि० [स०√वस् (आच्छादन करना)+तव्य, इत्व] धारण करने या पहने जाने के योग्य।

**वसिर**—पु० [स०√वस्+किरच्] १. समुद्री लवण। २ गज पिप्पली। ३. लाल चित्रक। ४. जलनीम।

**वसिष्ठ**—पुं०[सं० वस+इष्ठन्] १. वैदिककालीन सूर्यवंशी राजाओं के पुरोहित एक प्राचीन ऋषि जो ब्रह्मा के मानस पुत्र माने जाते तथा ऋग्वेद के सातवें मण्डल के रचयिता कहे गये है। २ सप्तर्षि मंडल का एक तारा जिसके पास का छोटा तारा अरुधती कहलाता है।

**वसिष्ठ पुराण**—पु०[स० मध्य० स०] एक उप-पुराण जो कुछ लोगों के मत से 'लिंग पुराण' ही है।

**वसिष्ठ प्राची**—पु०[स० ब० स०] एक प्राचीन जनपद।

**वसी (सिन्)**—पु० [स० वस+इनि] ऊदबिलाव।
पु० [अ०] वसीयत लिखकर जिसे वारिस बनाया गया हो। वह जिसके नाम वसीयत लिखी गई हो।

**वसीअ**—वि०[अ०] १ चौड़ा। २ फैला हुआ। विस्तृत।

**वसीका**—पु०[अ० वसीका] १. ऋण-पत्र। २ दस्तावेज। ३ इकरारनामा। ४ वह धन जो सरकारी खजाने से इसलिए जमा किया गया हो कि उसका सूद जमा करनेवाले के संबंधियों को मिला करेगा अथवा किसी धर्म-कार्य आदि में लगाया जायगा। ५ उक्त प्रकार की मद में से अथवा सहायता के रूप में भरण-पोषण आदि के लिए नियमित रूप से मिलनेवाला धन। वृत्ति।

**वसीय**—वि०[सं०] १ बसा संबंधी। २. जिसमें बसा या चरबी का भाग अधिक हो। (फैटी)
†पु०=वसी (जिसके नाम वसीयत हो)।
†वि०=वसीअ (विस्तृत)।

**वसीयत**—स्त्री०[अ०] १. वह लिखित आदेश कि मेरी अनुपस्थिति में या मृत्यु के उपरान्त मेरी सम्पत्ति का वारिस अमुक व्यक्ति या अमुक संस्था होगी। २ उक्त आशय का लिखा हुआ आदेश पत्र। वसीयतनामा।

**वसीयतनामा**—पु०[अ०+फा०] वह पत्र जिसपर कोई वसीयत लिखी हो। इच्छापत्र।

**वसीला**—पु०[अ० वसीलः] १. लगाव। संबंध। २. कोई काम करने का द्वार या साधन। जरिया।

**वसुंधरा**—स्त्री० [सं० वसुं√धा (धारण करना)+क्विप्-नुम्] पृथ्वी।

**वसु**—वि०[स०] १. जो सदैव निवास करता हो। २. जिसमें सबका निवास हो।
पुं० १. सूर्य। २. विष्णु। ३. शिव। ४. कुबेर। ५. धन-सम्पत्ति। जैसे—सोना-चाँदी, रत्न आदि। ६. किरण। रश्मि। ७. साधु पुरुष। सज्जन। ८. जल। पानी। ९. तालाब। सरोवर। १०. अग्नि। ११. पेड़। वृक्ष। १२ पीली मूँग। १३. मौलसिरी। १४. अगस्त का पेड़। १५. जोते जानेवाले घोड़े, बैल आदि की जोत। १६. देवताओं का

एक मंत्र जिसके अन्तर्गत आठ देवता हैं। १७. उक्त के आधार पर आठ की संख्या का वाचक शब्द। १८ छप्पय के ही सकनेवाले भेदों में से ६९वाँ भेद।

स्त्री०[सं०] १. दीप्ति। चमक। २. वृद्धि नामक ओषधि। ३. दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो धर्म की ब्याही थी, और जिससे द्रोण आदि आठ वसुओं का जन्म हुआ था। ४. अमरावती।

**वसुक**—पुं० [सं०√वस्+उक या वसु+कन्] १. सौभर नमक। २. पांसु लवण। ३ बथुआ नाम का साग। ४. काला अगर। ५. आक। मदार। ६. मौलसिरी।

**वसुकरी**—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**वसुकर्ण**—पुं०[सं० ब० स०] एक मंत्र-द्रष्टा ऋषि।

**वसुकाला**—स्त्री०[सं०] एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसे 'तारक' भी कहते हैं। दे० 'तारक'।

**वसुक**—पुं०[स० वसु√दा (देना)+क] १. कुबेर। २. विष्णु।

**वसुरा**—स्त्री०[स० वसुक+टाप्] स्कंद की एक मातृका।

**वसुदेव**—पु०[सं०] मथुरा के राजा कंस के बहनोई जो श्रीकृष्ण के पिता थे।

**वसुदैवत**—पुं०[स० ब० ग०] धनिष्ठा नक्षत्र।

**वसुदेव्या**—स्त्री०[स० वसुदेव+यत्+टाप्] धनिष्ठा नक्षत्र।

**वसुद्रुम**—पु०[स० मध्यम० स०] गूलर।

**वसुधमिका**—स्त्री०[सं० ब० स०] १. स्फटिक। बिल्लौर। २ सगमरमर।

**वसुधा**—स्त्री०[स० वसु√धा (धारण करना)+क+टाप्] पृथ्वी। वि० धन देनेवाला।

**वसुधाधर**—पु०[सं०] १. पर्वत। २. विष्णु।

**वसुधान**—पु० [सं० वसु√धा (धारण करना)+ल्युट्—अन] पृथ्वी।

**वसुधारा**—स्त्री०[सं० वसुधार+टाप्] १ एक शक्ति। (जैन) २. बौद्धों की एक देवी। ३. अलका पुरी। ४ एक प्राचीन तीर्थ। ५. एक प्राचीन नदी। ६. सांदीमुख श्राद्ध के अन्तर्गत एक कृत्य जिसमें घी की सात धारें दी जाती हैं।

**वसुध**—पुं०[सं० वसु√नी (होना)+ड] यज्ञ।

**वसुनील**—पु०[स० तृ० त०] ब्रह्मा।

**वसुनीथ**—पु०[स० ब० स०] अग्नि।

**वसुनेत्र**—पुं०[सं० ब० स०] बौद्धों के अनुसार ब्रह्मा का एक नाम।

**वसुपति**—पु०[सं०] श्रीकृष्ण।

**वसुपाल**—पुं० [सं० वसु√पाल् (पालन करना)+अच्] राजा।

**वसुप्रद**—पु०[स०] १. शिव। २. कुबेर। ३ स्कंद का एक अनुचर। वि० धन देनेवाला।

**वसुप्रभा**—स्त्री०[सं० ब० स०] १. अग्नि की एक जिह्वा। २. कुबेर का राजनगर।

**वसुबंध**—पुं०[सं०] महायानी शाखा के एक बौद्ध जिनकी रचनाओं के चीनी अनुवाद अब भी प्राप्य हैं।

**वसुभ**—पुं०[सं०] धनिष्ठा नक्षत्र।

**वसुमती**—स्त्री०[सं०] १. पृथ्वी। २. एक प्रकार का वर्ण, वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में तगण और रगण होते हैं।



**वसुमना**—पुं०[सं० ब० स०] १. अग्नि। २. शिव। ३. पुराणानुसार एक मंत्र-द्रष्टा ऋषि।

**वसुयान**—पुं०[सं०] पुराणानुसार उत्तर दिशा का एक पर्वत।

**वसुरिंग**—पुं०[सं० ब० स०] महायानी शाखा के एक बौद्ध आचार्य जो काश्मीर के पश्चिम अपरान्त देश के निवासी कहे गये हैं।

**वसुरुचि**—पुं०[सं० वसु√रुच् (प्रकाश करना)+क्विप्] एक प्रकार के देवता।

**वसुरूप**—पुं०[सं० ब० स०] शिव।

**वसुल**—पुं०[सं० वसु√ला (लेना)+क] देवता।

**वसुवन**—पुं०[सं० ष० त०] ईशान कोण में स्थित एक प्राचीन देश। (बृहत्संहिता)

**वसुविद्**—पुं०[सं० वसु√विद् (प्राप्त होना)+क्विप्] अग्नि।

**वसुषी**—स्त्री०[सं० ब० स०] स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

**वसुश्रेष्ठ**—पुं०[स०] श्रीकृष्ण।

**वसुषेण**—पुं०[सं० ब० स०] १. कर्ण। २. विष्णु।

**वसुसारा**—स्त्री०[सं० ष० त०] अलका (नगरी)।

**वसुस्थली**—स्त्री०[सं० ब० स०] अलका (नगरी)।

**वसुहा**—स्त्री०[स० वसुधा] १ पृथ्वी। २. जगह। स्थान।

**वसूल**—वि०[अ०] १. जो मिला या प्राप्त हुआ हो। २. (प्राप्य धन या पदार्थ) जो दूसरे से ले लिया गया हो। उगाहा हुआ। ३. जितना व्यय या परिश्रम हुआ हो उसका मिला हुआ प्रतिफल।

पुं० उगाही या प्राप्त की हुई रकम। प्राप्ति।

**वसूली**—स्त्री०[अ० वसूल] १. वसूल करने या होने की अवस्था, क्रिया या भाव। प्राप्य धन की प्राप्ति। उगाही। २. लोगों से धन आदि लेकर इकट्ठा करने की क्रिया या भाव।

वि० जो वसूल किये जाने को हो।

**वस्त**—पु०[सं०] बकरा।

पुं०[अ०] बीच का भाग। मध्य।

†स्त्री०=वस्तु।

**वस्तक**—पुं०[सं० वस्त+कन्] बनाया हुआ नमक। (प्राकृतिक नमक से भिन्न)

**वस्तव्य**—वि०[सं०√वस् (निवास करना)+तव्य] (स्थान) जिसमें निवास किया जा सके। रहने या बसने के योग्य।

**वस्तावा**—पु०=उस्ताद।

**वस्ति**—स्त्री०[सं०]१. नाभि के नीचे का भाग। पेड़ू। २. मूत्राशय। (यूरिनरी ब्लैडर) ३ पिचकारी। ४. दे० 'वस्ति कर्म'।

**वस्तिकर्म**—पु०[स०] १. लिंगेंद्रिय, गुदेंद्रिय आदि मार्गों से पिचकारी देने की क्रिया। (वैद्यक) २. आज-कल आँतें साफ करने के लिए या रेचन के उद्देश्य से गुदा-मार्ग से जल ऊपर चढ़ाने की क्रिया। (एनिमा)

**वस्तिकुंडलिका**—स्त्री० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमें मूत्राशय में गाँठ-सी पड़ जाती है, उसमें पीडा तथा जलन होती है और पेशाब कठिनता से उतरता है।

**वस्तिवात**—पुं०[सं०] एक प्रकार का मूत्र रोग जिसमें वायु बिगड़कर वस्ति (पेड़ू) में मूत्र की रोक देती है।

**वस्तिशोधन**—पुं० [सं०]१. मदन वृक्ष। मैनफल का पेड़। २.बैंगफल।

**वस्ती**—वि०[स०] वस्त अर्थात् मध्य भाग में होनेवाला। बीच का। †स्त्री०१. वस्ती। २.=वस्ति।

**वस्तु**—स्त्री० [स०√वस् +तुन्] १. वह जो कुछ अस्तित्व मे हो। वह जितकी वास्तविकता हो। गोचर पदार्थ। २. अम्र द्वारा निर्मित चीज। ३ वह जो किसी वाद-विवाद, आलोचना या विचार का विषय हो। विषय। ४. कथावस्तु।

**वस्तुक**—पु०[सं० वस्तु+कन्]१. सार भाग। २ बथुआ का साग।

**वस्तु-जगत्**—पु०[स० कर्म० स०] यह दृश्यमान जगत्। ससार।

**वस्तु-ज्ञान**—पु०[स०]१. किसी वस्तु की पहचान। २ मूल तथ्य या वास्तविकता का ज्ञान। तत्त्वज्ञान।

**वस्तुतः**—अव्य०[स० वस्तु+तसिल्] वास्तविक रूप या स्थिति मे। वास्तव मे। (ड्री फैक्टो)

**वस्तु-निर्देश**—पुं०[स० ब० स०] मंगलाचरण का एक भेद जिसमें कथा का कुछ आभास दे दिया जाता है। (नाटक)

**वस्तु-निष्ठा**—वि०[स०]१. अध्यात्म और दर्शन में, जो बाह्य तत्त्वों या भौतिक पदार्थों से सबध रखता हो, स्वय कर्ता के आत्म या चेतना से जिसका कोई सबध न हो। 'आत्म-निष्ठ' का विपर्याय। २ कला और साहित्य मे जो बाह्य तत्त्वो या भौतिक पदार्थों पर ही आश्रित हो, स्वय कर्ता या कृती के आत्म या चेतना से जिसका कोई सबध न हो। 'आत्म-निष्ठ' का विपर्याय। (ऑब्जेक्टिव, उक्त दोनों अर्थों के लिए)

**वस्तु-बल**—पु०[सं० ष० त०] वस्तु का गुण।

**वस्तु-रूपक**—पु० दे० 'आलेख्य रूपक'।

**वस्तु-वक्रता**—स्त्री०[सं०] साहित्यिक रचनाओ मे होनेवाला एक प्रकार का सौन्दर्य-सूचक तत्त्व जो कवि की शब्दावली से भिन्न उन वस्तुओ या विषयो पर आश्रित होता है जिन्हे वह अपने वर्णन के लिए चुनता है। वाक्य-वक्रता (देखें) की तरह यह भी कवि की श्रेष्ठतम प्रतिभा से उद्भूत होता और काव्य के समस्त सौंदर्य का उद्गम होता है। वर्ण्य वस्तु या विषय की रमणीयता, सुकुमारता और कौशलपूर्ण प्रदर्शन ही इसके प्रमुख लक्षण हैं।

**वस्तुवाद**—पु०[स०] [वि० वस्तुवादी] यह दार्शनिक सिद्धान्त कि जगत् जिस रूप में हमें दिखाई देता है, उसी रूप मे वह वास्तविक और सत्य है। **विशेष**—न्याय और वैशेषिक का यही सिद्धांत है जो अद्वैतवाद के सिद्धान्त के बिलकुल विपरीत है।

**वस्तु-स्थिति**—स्त्री०[सं० ष० त०] किसी चीज या वस्तु की वास्तविक स्थिति।

**वस्तूत्प्रेक्षा**—स्त्री०[स०] साहित्य में उत्प्रेक्षा अलंकार का एक भेद जिसमे किसी उपमेय मे उपमान के कार्य, गुण आदि की कल्पना की जाती है।

**वस्तूपमा**—स्त्री०[स० ब० स०] उपमा अलकार का एक भेद।

**वस्त्य**—पु०[स० वस्तु+यत्] बसने की जगह। बसती।

**वस्त्र**—पु०[स०√ वस् (आच्छादन करना)+त्रन्] ऊन, कई, रेशम आदि के तागों से बुना या जमाकर तैयार किया हुआ वह प्रसिद्ध पदार्थ जो पहनने, ओढने आदि के काम आता है। कपड़ा।

**वस्त्रग्रंथि**—स्त्री० [स० ष० त०] नीवी। नाडा। इजारबंद।

**वस्त्रप**—पु०[स०] आधुनिक गिरनार पर्वत और तीर्थ का पुराना नाम।

**वस्त्र-पट**—पुं० [स०] कपड़ो पर हाथ से अंकित किया हुआ चित्र। (प्राचीन)

**वस्त्र-पुत्रिका**—स्त्री०[सं० मध्य० स०] गुड़िया।

**वस्त्र-पूत**—वि०[सं०] कपड़े से छाना हुआ।

**वस्त्र-बंध**—पु०[स०] नीवी। इजारबद।

**वस्त्र-भवन**—पु०[स० ष० त०] खेमा। तंबू।

**वस्त्र-रंजन**—पु०[स०] कुसुभ का पेड।

**वस्त्रांगार**—पु०[सं० वस्त्र+आगार]१. वह स्थान जहाँ सब प्रकार के या बहुत से कपडे हों। २ घर में वह कमरा जिसमें पहनने के कपडे रखे जाते हों तथा उतारे और पहने जाते हो। (वॉर्डरोब रूम)

**वस्त्र**—पु०[सं०√वस् (आच्छादन करना)+त्र]१. वेतन। २. दाम। मूल्य। ३ कपड़ा। ४. द्रव्य। वस्तु। ५. घौ का पेड़। ६. छाल। त्वक्।

**वस्त्रक**—पुं०[सं० वस्त्र+कन्] करघनी।

**वस्त्रक**—पुं०[अ०]१. प्रशसा। स्तुति। २. विशेषता-सूचक गुण। सिफत।

**वस्त्र**—पु०[अ०]१. एक दूसरे का आपस में मिलना। मिलन। २. स्त्री और पुरुष या प्रेमी और प्रेमिका का मिलाप। संयोग। ३. मनुष्य की आत्मा का परमात्मा में लीन होना। मृत्यु। ४. प्रेमी और प्रेमिका का सभोग।

**वस्ली**—स्त्री०=दे० 'बसली'।

**वस्वौकसारा**—स्त्री० [सं० स० त०] १. इद्रपुरी। २. कुबेर की अलकापुरी। ३. गगा।

**वहंत**—पु०[स०√वह् (ढोना)+अ—अन्त] १. वायु। २. बालक।

**वह**—सर्व०[स०√वह् (ढोना)+अच्] १. एक सर्वनाम जो किसी स्थिति या सबध से अनुमानित किया जाता अथवा ज्ञात या सूचित होता हो। २ पति के लिए प्रयुक्त सर्वनाम। जैसे—वह मुझसे कुछ भी नही कह गये थे।

पु०[सं०]१. बैल का कथा। २. घोड़ा। ३. वायु। हवा। ४. मार्ग। रास्ता। ५. नद।

वि० वहन करने अर्थात् उठा या ढोकर ले जानेवाला (यौ० के अन्त मे)। जैसे—भारवह।

**वहत**—पु०[सं०]१. बैल। २. पथिक। यात्री।

**वहति**—पु० [सं०]१. बैल। २. वायु। ३. परामर्शदाता।

**वहती**—स्त्री०[सं०] नदी।

**वहदत**—स्त्री०[अ०]१. 'वहिद' अर्थात् एक होने की अवस्था, गुण या भाव। २ अद्वैतवाद। ३. एकान्तता।

**वहदानी**—वि० [अ०] [भाव० वहदानियत] १. 'वहिद' अर्थात् एक से संबंध रखनेवाला। २. अद्वैतवाद-सम्बन्धी।

**वहन**—पु०[सं०√ वह् (ढोना)+ल्युट्—अन]१. कहीं से ले जाने के लिए कोई चीज उठाना या लादना। भार ढोना। २. लाक्षणिक अर्थ मे, कर्तव्य आदि के रूप में लिए हुए भार का निर्वाह करना। ३. एक स्थान से दूसरे स्थान पर चीजें ले जाने का साधन। जैसे—गाड़ी, नाव आदि। ४. वास्तुकला में खंभे के नौ भागों में से सबसे नीचेवाला भाग।

**वहनक**—पुं०[सं०] गाड़ी, ठेला, नाव आदि जिसपर भार आदि लादकर कहीं ले जाया जाता है। संवाहक।

**वहन-पत्र**—पुं०[सं० कर्म०स०] वह पत्र जिसमें वहन की जानेवाली अर्थात् ढोकर कहीं ले जाई जानेवाली चीजों का विवरण या सूची रहती है। (बिल आफ़ लेडिंग)

**वहना**—स०[सं० वहन] १. वहन करना। ढोना। २. कर्तव्य आदि ऊपर लेना अथवा उसका निर्वाह करना।

**वहनीय**—वि० [स०√वह् (ढोना)+अनीयर्] १. वहन करने के योग्य। २. जो वहन किया जाने को हो।

**वहम**—पुं०[अ०]मन में प्राय: बनी रहनेवाली कोई ऐसी असगत या निराधार धारणा जिसके फल-स्वरूप अपने किसी अनिष्ट या हानि की समावना जान पड़ती हो। झूठा शक। मिथ्या संदेह।

**वहमी**—वि०[अ०]१. जिसके मन में प्राय: कोई वहम बना रहता हो। २. शकी।

**वहला**—स्त्री०[सं० वहल+टाप्]१ शतपुष्पा। २. बड़ी इलायची। ३. दीपक राग की एक रागिनी।

**वहशत**—स्त्री०[अ०]१ वहशी अर्थात् जंगली होने की अवस्था या भाव। जंगलीपन। बर्बरता। २. उजड़ेपन। ३ पागलपन। बावलापन। ४. अधीरता और विकलता के कारण होनेवाला मानसिक विक्षेप। पागलों का-सा आचार-व्यवहार।

मुहा०—वहशत सवार होना=किसी प्रबल मनोवेग के कारण सहसा पागलपन का सा काम करने को उतारू होना।

५. किसी स्थान के उजाड़ या सुनसान होने के कारण छाई रहनेवाली उदासी। खिन्न करनेवाला सन्नाटा। ६. आकार-प्रकार, रूप-रंग आदि का डरावनापन।

क्रि० प्र०—छाना।—बरसना।

**वहशियाना**—वि०[अ०] वहशियों की तरह का।

**वहशी**—वि०[अ०]१. जंगल में रहनेवाला। जंगली। वन्य। २. (पशु) जो जंगल में घूमता-फिरता और रहता हो। 'पालतू' का विपर्याय। ३. (व्यक्ति) जो परम असभ्य तथा असंस्कृत हो। बर्बर।

**वहाँ**—अव्य० [हिं० यह] १. उस स्थान में। उस जगह। २. उस अवसर, बिंदु या स्थिति पर। जैसे—उसे इतना बढ़कर रुक जाना चाहिए था, पर वह वहाँ रुका नहीं, बल्कि आगे बढ़ता चला गया।

**वहा**—स्त्री०[सं० वह+टाप्]१. नदी। २. पानी की धारा या बहाव।

**वहाबी**—पुं०[अ०]१. मौलवी अब्दुलवहाब का चलाया हुआ एक मुस्लिम सम्प्रदाय जो कुरान को मानता है पर हदीसों को नहीं मानता। २. उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

**वहा-वाचक**—पुं०[सं०] दे० 'धारावेगमापी'।

**वहि**—अव्य० [सं०√वह+इसुन्, जो अंबर न हो]। बाहर। (इसके यौ० के लिए दे० 'वहि:' के यौ०)

**वहित**—भू० कृ०[सं० अव√हा (त्याग करना)+क्त, अलोप]१. वहन किया हुआ या ढोया हुआ। २. ज्ञात। ४. विख्यात। ५. प्राप्त।

**वहित्र**—पुं०[सं०] वहन करने का उपकरण। जैसे—गाड़ी, जहाज, नाव, रथ आदि।

**वहित्री**—स्त्री० [सं० वहि+इनि+ङीप्] नौका। नाव।

**वहिरंग**—वि०, पु०=बहिरंग।

**वहिर्गत**—वि०=बहिर्गत।

**वहिर्द्वार**—पुं०=बहिर्द्वार।

**वहिर्भूत**—वि०=बहिर्भूत (बहिर्गत)।

**वहिष्करण**—पुं०=बहिष्करण।

**वहिष्कार**—पुं०=बहिष्कार।

**वहिष्ठ**—वि० [स० वह+इष्ठन्] अधिक भार वहन करनेवाला।

**वहीं**—अव्य०[हिं० वहाँ+ही]१. उसी स्थान पर। उसी जगह। २ उसी बिंदु, समय या स्थिति पर।

**वही**—सर्व० [हिं० वह+ही] उस वस्तु या तृतीय व्यक्ति की ओर निर्दिष्ट रूप से संकेत करनेवाला सर्वनाम, जिसके संबंध में कुछ कहा जा चुका हो। निश्चित रूप से पूर्वोक्त। जैसे—यह वही किताब है जो तुम ले गये थे।

स्त्री०[अ०] ईश्वर की कही हुई बात। देव-वाणी।

**वहीख**—पुं०[सं०]१ रक्तवाहिनी नाड़ियों का एक वर्ग। शिरा। २ स्नायु। ३. मांसपेशी। पट्ठा।

**वहीवक**—पुं०[सं० ब० स०] चार प्रकार के सन्यासियों में से एक।

**वह्नि**—पुं०[सं०√वह् (धारण करना)+नि]१ अग्नि। २ तीन प्रकार की अग्नियों के आधार पर तीन की संख्या का सूचक शब्द। ३ चित्रक। चीता। ४. भिलावाँ। ५. मित्रविंदा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

**वह्निकर**—पुं०[सं० वह्नि√कृ+अच्]१. विद्युत्। बिजली। २ अठारानि। ३. चकमक पत्थर।

**वह्नि कुमार**—पुं० [स० ष० त०] एक प्रकार के देवगण।

**वह्नि दैवत**—वि० [स० ब० स०] अग्निपूजक।

**वह्निनी**—स्त्री० [सं०] जटामासी।

**वह्निबीज**—पुं० [सं०]१. स्वर्ण। सोना। २. बिजौरा नींबू।

**वह्निभूतिक**—पुं० [स० ब० स०] चाँदी।

**वह्निभोग**—पुं० [सं० ष० त०] घी।

**वह्निमंथ**—पुं० [सं०]=अग्निमंथ वृक्ष।

**वह्निमित्र**—पुं० [सं०] वायु। हवा।

**वह्निसुत**—पुं० [स०] देवता।

**वह्निरेता (तस्)**—पुं०[सं०] शिव।

**वह्निलोह**—पुं० [सं०] ताम्र। ताँबा।

**वह्निलोहक**—पुं०[सं०] कौंसा।

**वह्निशिखा**—स्त्री०[सं० ब० स०] १. कलिहारी या कलियारी नाम का विष। २. धौ। ३. प्रियंवद। ४. गजपीपल।

**वह्निश्वरी**—स्त्री०[सं० ष० त०] लक्ष्मी।

**वह्य**—पुं० [स०√वह् (ढोना)+क्यप्]१. वाहन। यान। २. गाड़ी। शकट।

वि० वहनीय।

**वह्यक**—वि०[सं० वह्य+कन्]=वाहक।

**वाँ**—प्रत्य०[स्त्री० वीं]एक प्रत्यय जो १,२, ३, ४, और ६ को छोड़कर शेष संख्या वाचक शब्दों के अन्त में लगकर उनके क्रमिक स्थान का सूचक होता है। जैसे—पाँचवाँ, सातवाँ, आठवाँ आदि।

†अव्य०=यहाँ।

**वांक**—पुं०[सं० वक+अण्] समुद्र।

**वांकड़ा**—वि०=बाँका।

**वांछक**—वि०[सं०√ वाञ्छ् (इच्छा करना)+ण्वुल्-अक] इच्छुक।

**वांछन**—पु०[स०√ वाञ्छ्+ल्युट्—अन][भू० कृ० वांछित] वाछा या इच्छा करना।

**वांछनीय**—वि०[सं० √ वाञ्छ्+अनीयर्] जिसकी वाछा या कामना की गई हो या की जाने को हो।

**वांछा**—स्त्री० [स०√ वाञ्छ्+अ+टाप्] [भू० कृ० वांछित, वि० वांछनीय] इच्छा। अभिलाषा। चाह।

**वांछित**—भू० कृ० [सं०√ वाञ्छ्+क्त] जिसकी वाछा की गई हो। चाहा हुआ। इच्छित।

**वांछितव्य**—वि०[सं०] वाछनीय।

**वांछिनी**—स्त्री०[स० वाञ्छा+इनि+ङीप्] पुश्चली स्त्री।

**वांछी (छिन्)**—वि० [सं० वाञ्छा+इनि] वाछा करने या चाहनेवाला।

**वांत**—पुं०[स०√ वम् (वमन करना)+क्त] उल्टी। कै। वमन।

**वांतादी**—वि० [सं० वात √ अद् (खाना)+णिनि,] वमन की हुई चीज खानेवाला।
पुं०१. कुत्ता। २. वह ब्राह्मण जो केवल पेट के लिए अपने कुल की मर्यादा नष्ट करे।

**वांति**—स्त्री०[सं०√ वम्+क्तिन्] कै। वमन।

**वांश**—वि० [स० वंश+अण्] १. वंश-संबंधी। वंश का। २. बाँस संबंधी।

**वांशिक**—पुं० [सं० वंश+ठक्—इक]१ बाँस काटनेवाला। २. वंशी अर्थात् बाँसुरी बनानेवाला।

**वांशी**—स्त्री०[सं० वांश+ङीप्] बंसलोचन।

**वा**—अव्य०[स०√वा+क्विप्] विकल्प या संदेहवाचक शब्द। अथवा। या। जैसे—मनुष्य वा पशु।
सर्व० [हिं० वह]१. वह। २ उस। (ब्रज)

**वाइ**†—सर्व०=वही।

**वाइज**—पु०[अ०]१. वाज अर्थात् नसीहत करनेवाला। २ धर्म या नीति का उपदेश करनेवाला।

**वाइदा**—पु०=वादा।

**वाइ**†—स्त्री०=वायु।

**वाइसराय**—पुं०[अ०] अंगरेजी शासन में भारत का वह सर्वप्रधान शासक अधिकारी जो सम्राट् के प्रतिनिधि-स्वरूप यहाँ रहता था। बड़ा लाट।

**वाउचर**—पुं०[सं०] आधार पत्र। (रेखें)

**वाउला**—वि०=बावला।

**वाउल**—वि०=बावुल।

**वाक्**—पुं० [सं०√वच् (बोलना)+क्विप्]१. वाणी। वाक्य। २. शब्द। ३. कथन। ४. वाद। ५. बोलने की इन्द्रिय। ६. सरस्वती।

**वाक**—पु०[स० वक+अण्]१. बकों अर्थात् बगलों का समूह। २. वैद्यों का एक विशिष्ट अंश या भाग। ३. खेत की वह कूत जो बिना खेत नापे की जाती है। ४. वाक्य।
वि० वक या बगले से सम्बन्ध रखनेवाला।

**वाकई**—अव्य०[अ०] यथार्थ में। वास्तव में। वस्तुतः। जैसे—क्या आप वाकई वहाँ गये थे।

**वाकफीयत**—स्त्री०[अ०] जान-पहचान। परिचय।

**वाकया**—पुं०[अ० वाकिअ]१. घटना, विशेषतः दुर्घटना। २. वृत्तांत। हाल।

**वाक्यातीत**—वि०[अ०] विशिष्ट घटना से संबंध रखनेवाला। जो घटित हुआ हो।

**वाका**—वि०[अ० वाकअ]१. जो घटना के रूप में घटित हुआ हो। २. किसी स्थान पर स्थित।
पु० वाकया (घटना)।

**वाकारना**—स०[?] ललकारना। (राज०)। उदा०—बिलकुलियौ बदन जेम वाकारयौ।—प्रिथीराज।

**वाकिनी**—स्त्री० [स० वाक+इनि+ङीप्] तांत्रिकों की एक देवी।

**वाकिफ़**—वि०[अ०]१ परिचित। २ जानकार।

**वाकिफ़कार**—वि०[अ० वाकिफ़+फा० कार] [भाव० वाकिफ़कारी] किसी काम या बात की अच्छी ठीक या पूरी जानकारी रखनेवाला।

**वाकुची**—स्त्री० [सं० वा√कुच् (संकुचित करना) +क +ङीप्]= बकुची।

**वाकुल**—वि०[सं० वकुल+अण्] वकुल-संबंधी। बकुल का।
पुं० वकुल। मौलसिरी।

**वाकोपवाक**—पु० [सं० द्व० स०] कथोपकथन। बात-चीत।

**वाकोवाक**—पुं०[सं० द्व० स०] कथोपकथन। बात-चीत।

**वाक्योवाक्य**—पु० [सं०] १. कथोपकथन। बात-चीत। २. तर्क-वितर्क।

**वाक्कलह**—पुं० [सं० तृ० त०] कहा-सुनी।

**वाक् चपल**—वि०[स० तृ० त०]१. जो बातें करने में चतुर हो। २ बकवादी।

**वाक् छल**—पुं०[सं० तृ० त०]१ न्याय शास्त्र के अनुसार छल के तीन भेदों में से एक। ऐसी बात कहना जिसका और भी अर्थ निकल सके तथा इसी लिए दूसरा बोलें में रहे। २. टाल-मटोल की बात। बहाना। (क्विलिंग)

**वाक्पटु**—वि०[स०] बात-चीत करने में चतुर।

**वाक्पति**—पुं०[सं० ष० त०]१. बृहस्पति। २. विष्णु।

**वाक्पारुष्य**—पुं० [सं० तृ० त० या मध्य० स०] १. बात-चीत में होनेवाली कठोरता या परुषता। कड़वी बात कहना। २. धर्मशास्त्रानुसार किसी की जाति, कुल इत्यादि के दोषों को इस प्रकार ऊँचे स्वर से कहना कि उससे उद्वेग या क्षोभ उत्पन्न हो।

**वाक्य**—पु०[सं०√वच् (बोलना)+ण्यत्] शब्द या शब्दों का ऐसा समूह जो एक विचार पूरी तरह से व्यक्त करे। जुमला। (सेन्टेन्स)

**वाक्यकर**—वि० [सं०] झूठी या तरह-तरह की बातें बनानेवाला।
पुं० सन्देशवाहक।

**वाक्यग्रह**—पुं०[सं० ष० त०] मुँह का पक्षाघात से ग्रस्त होना।

**वाक्यभेद**—पु०[सं० स० त०] मीमांसा में एक ही वाक्य का एक ही काल में परस्पर विरुद्ध अर्थ करना।

**वाक्य-वक्रता**—स्त्री०[स०]साहित्यिक रचनाओं का एक प्रकार का सौन्दर्य सूचक तत्त्व जो वाक्य रचना के अवयवों और उत्कृष्ट वाक्यपद के रूप में

रहता है। यह तरंग कवि की बहुत ही उच्च कोटि की प्रतिभा से उद्भूत होता है और सारे प्रबंध गुणों, सभी रसों की निष्पत्ति तथा अलंकारों का उद्गम या मूल स्रोत होता है। उदा०—(क) कहाँ लौं बरनौं सुन्दरताई खेलत कुँवर कनक आँगन में, नैन निरखि छवि छाई। कुलहि लसत सिर स्याम सुभग अति, बहुबिधि सुरँग बनाई। मानो नव घन ऊपर राजत मघवा धनुष चढ़ाई। अति सुदेस मृदु चिकुर हरत मनमोहन मुख बगराई। मानो प्रकट कंज पर मंजुल अलि अवली थिर आई।—सूर। (ख) कबिर के है जगती के प्रात, चितनल के ये सार्वकाल। शून्य निश्वासों के आकाश, आँसुओं के ये सिंधु विशाल। यहाँ सुख सरसों लोक सुमेरु, बरे जग है जग का कंकाल।—पंत।

**वाक्य-विन्यास**—पु०[स० ष० त०]वाक्यों, शब्दों या पदों को यथा-स्थान रखना। वाक्य बनाना।

**वाक्य-विश्लेषण**—पु०[स०] व्याकरण का वह अंग या क्रिया जिसमें किसी वाक्य में आये हुए शब्दों के प्रकार, भेद, रूप पारस्परिक संबंध आदि का विचार होता है।

**वाक्याडंबर**—पु० [सं० ष० त०] केवल वाक्यों या बातों में दिखाया जानेवाला आडम्बर।

**वाक् संयम**—पु०[स० ष० त०] वाणी का संयम। व्यर्थ बातें न करना।

**वाक्-सिद्धि**—स्त्री० [सं० ष० त०] तंत्र-मंत्र योग आदि के द्वारा अथवा स्वाभाविक रूप से प्राप्त होनेवाली ऐसी सिद्धि जिसमें कही हुई बात पूरी होकर रहती है। जो बात मुँह से निकल जाय, वह ठीक सिद्ध होना।

**वागना**—अ०[?] आवरण या व्यवहार करना। (पश्चिमी हिन्दी और मराठी) उदा०—कलपत कोटि जनम जुग बागै दर्शन कतहुँ न पाये।—कबीर।

**वागर**—पु०[स० वाक्/ग्रह (प्राप्त होना आदि)+अच्] १. वारक। २. बाध। सान। ३. निर्णय। ४. भेंडिया। ५. पंडित। ६ मृगजु। ७. निडर। निर्भय।
†पुं०=बाँगडा (प्रदेश)

**वागा**—स्त्री०[स० वल्गा] लगाम।

**वागाह्व**—वि०[सं० स० त०] विश्वासघाती। झूठी आशा देने या दिलानेवाला।

**वाचीश**—पु० [स० ष० त०] १. बृहस्पति। २. ब्रह्मा। ३ वाग्मी। ४. कवि।
वि० अच्छा बोलनेवाला। वक्ता।

**वाचीशा**—स्त्री०[स० वागीश+टाप्] सरस्वती।

**वाचीश्वर**—पु०[सं० ष० त०] १ बृहस्पति। २. ब्रह्मा। ३. कवि। ४. मंजुकोष। ५. बोधि सत्त्व।
वि० बहुत अच्छा वक्ता।

**वाचीश्वरी**—स्त्री० [सं० वागीश्वर+ङीप्] १. सरस्वती। २. नवदुर्गाओं में से एक।

**वाजकाश**—स्त्री०[फा०] १. छोड़ देना। २. दे देना। ३. मुक्त करना।

**वाजुजी**—स्त्री० [सं० वा√गुज् (संकोच करना)+क+ङीप्] बकुची।

**वाजुद**—पु०[सं० ष० त०] १. कमरख। २. बैंगन। भंटा।

**वाजुरा**—स्त्री०[सं० वा√गु+उरच्+टाप्] वह जाल जिसमें हिरन आदि फँसाये जाते हैं।

**वाजुरि**—स्त्री०[सं० वाजुरा] जाल। पाश। उदा०—वाजुरि जपे बिसतरप।—प्रिथिराज।

**वाजुरिक**—पुं० [सं० जा वाजुरा+ठक्—इक] हिरन फँसानेवाला शिकारी। मृग व्याध।

**वाजुलि**—पुं० [सं० वा √गुज् (सुरक्षित रखना)+इलि, ड—ल] १.डिब्बा। २. पानदान।

**वाजुलिक**—पु०[स० वाजुलि+कन्] राजाओं का वह सेवक जिसका काम उनको पान खिलाना होता था। प्राचीनकाल में वह भृत्य जो राजाओं को पान लगाकर खिलाता था।

**वाणेश्वरी**—स्त्री०[सं० वाणीश्वरी] =वागीश्वरी।

**वाग्गुलि**—पुं०[स०] वागुलिक।

**वाग्जाल**—पु०[सं० वाक्+जाल] ऐसी घुमाव-फिराव की बातें जिनका मूल उद्देश्य दूसरों को धोखा देना या फँसाना होता है।

**वाग्दंड**—पु०[स० कर्म०स०] दंड के रूप में कही जानेवाली कठोर बातें। झिड़की। भर्त्सना।

**वाग्दत्त**—भू० कृ० [तृ० त०] [स्त्री० वाग्दत्ता] (पदार्थ) जिसे किसी को देने का वचन दिया गया हो।

**वाग्दत्ता**—स्त्री०[स०] ऐसी कन्या जिसके विवाह की बात पक्की हो चुकी हो।

**वाग्दल**—पुं० [स० ष० त०] ओष्ठाधर। ओठ।

**वाग्दान**—पु०[स० ष० त०] १. किसी को कोई वचन देना। किसी से वादा करना। २. कन्या के विवाह की बात किसी से पक्की करना और उसे कन्यादान का वचन देना।

**वाग्दुष्ट**—वि०[सं० तृ०त०] १. कटुभाषी। २. जिसे किसी ने कोसा या शाप दिया हो।

**वाग्देवता**—पु० [सं० ष० त०] (सं० में स्त्री०) वाणी। सरस्वती।

**वाग्देवी**—स्त्री०[सं० ष० त०] सरस्वती।

**वाग्दोष**—पु०[स० ष० त०] १. बोलने की त्रुटि। जैसे—वर्णों का ठीक उच्चारण न करना। २. व्याकरण संबंधी दोष या भूल। ३. निन्दा। ४. गाली।

**वाग्बद्ध**—वि०[स० तृ० त०] १. मौन। २. वचन-बद्ध।

**वाग्भट**—पुं०[सं०] १. अष्टांग हृदय संहिता नामक वैद्यक ग्रन्थ के रचयिता जिनके पिता का नाम सिंहगुप्त था। २. पदार्थ चन्द्रिका, भाव प्रकाश, रसरत्न, समुच्चय शास्त्र-दर्पण आदि के रचयिता। ३. एक जैन पंडित जिनके पिता का नाम नेमिकुमार था। इनके रचे हुए अलंकार तिलक, वाग्भटालंकार और छंदानुशासन प्रसिद्ध ग्रन्थ हैं।

**वाग्मिता**—स्त्री०[सं०] वाग्मी होने की अवस्था, गुण या भाव।

**वाग्मित्व**—पुं०=वाग्मिता।

**वाग्मी**—पु०[सं० वाच्+ग्मिनि] १. वह जो बहुत अच्छी तरह बोलना जानता हो। अच्छा वक्ता। २. पंडित। विद्वान्। ३. बृहस्पति का एक नाम।

**वाग्य**—वि० [सं० वाक्/या (प्राप्त होना)+क] १. बहुत कम बोलनेवाला। २. तौल या सोच-समझकर बोलनेवाला। ३. सत्य बोलनेवाला।
पु० १. नम्रता। २. निर्वेद।

**वाग्यमन**—पुं०[सं०] वाणी का संयम। बोलने में संयम।

**वाग्युद्ध**—पु०[स० ष० त०] बात-चीत के रूप में होनेवाला झगड़ा या लड़ाई। बहुत अधिक कहा-सुनी।

**वाग्रोध**—पु०[सं०] एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक रोग जिसमें स्मृति नष्ट हो जाने के कारण आदमी कुछ पढ़ या सुनकर भी उसका अर्थ नहीं समझ सकता। (एफेशिया)

**वाग्लोप**—पु० [सं०] दे० 'वाग्रोध'।

**वाग्वज्र**—पु०[स० कर्म० स०] १. बहुत अधिक कठोर वचन। २. शाप।

**वाग्वादिनी**—स्त्री० [स० वाक्√वद् (बोलना)+णिनि+ङीप्] सरस्वती।

**वाग्विदग्ध**—वि०[स० तृ० त०] वाक्चतुर।

**वाग्विलास**—पु०[स० ष० त०] १. प्रसन्नतापूर्वक होनेवाला पारस्परिक सम्भाषण। आनन्दपूर्वक बातचीत करना। २ प्रेम और सुख से की जानेवाली बातें।

**वाग्वीर**—वि०[स० तृ० त०] १. बहुत अधिक तथा बड़ी बड़ी बातें करनेवाला। २. खाली बातें बनानेवाला।

**वाग्वैदग्ध्य**—पु० [स० ष० त०] १. वाग्विदग्ध होने की अवस्था या भाव। २ कथन, लेख, वक्तव्य आदि में होनेवाला चमत्कारपूर्ण तत्त्व।

**वाङ्निष्ठा**—स्त्री०[स० ष० त०] अपनी कही हुई बात पर दृढ़ रहना।

**वाङ्मती**—स्त्री० [स० वाक्+मतुप्+ङीप्] नेपाल की एक नदी जो आजकल 'बागमती' कहलाती है।

**वाङ्मय**—वि०[स० वाक्+मयट्] १. वाक्यात्मक। २. वचन-संबंधी। ३. जो वाक् या वचन के रूप में हो। ४. वचन द्वारा किया हुआ। जैसे—वाङ्मय पाप। ५ जिसका पठन-पाठन हो सके।

पु० गद्य-पद्यात्मक वाक्य आदि जो पठन-पाठन का विषय हो। लिपि-बद्ध विचारों का समस्त संग्रह या समूह। साहित्य।

**विशेष**—वाङ्मय और साहित्य का मुख्य अंतर जानने के लिए दे० 'साहित्य' का विशेष।

**वाङ्मुख**—पु०[स० ष० त०] ग्रंथ की भूमिका या प्रस्तावना।

**वाङ्मूर्ति**—स्त्री०[स० ष० त०] सरस्वती।

**वाच्**—स्त्री० [स०√वच् (बोलना)+क्विप्] वाचा। वाणी। वाक्य।

**वाच**—स्त्री०[स०√वच् (बोलना)+णिच्+अच्] एक प्रकार की मछली।

स्त्री०[अ० वॉच] कलाई पर पहनने या जेब में रखने की छोटी घड़ी।

**वाचक**—वि० [स०√वच्+ण्वुल्—अक] १. कहने या बोलनेवाला। २. बतानेवाला या बोध करानेवाला। जैसे—सम्बन्ध-वाचक ३. वाचन करने अर्थात् पढ़कर सुनानेवाला। जैसे—कथा-वाचक।

पु०१. वह जिससे किसी वस्तु का अर्थ बोध हो। नाम। संज्ञा। संकेत। २. व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान में तीन प्रकार के शब्दों में एक जो प्रसिद्ध या साक्षात्-अर्थ का बोधक होता है, अर्थात् अर्थ के साथ जिसका वाच्य-वाचकवाला सम्बन्ध होता है।

**वाचक धर्म लुप्ता**—स्त्री० [ब० स०+टाप्] साहित्य में लुप्तोपमा अलंकार का एक प्रकार या भेद जिसमें वाचक और धर्म दोनों का कथन नहीं होता। उदा०—दोनों भैया मुख शशि हमें लौट आकर दिखाओ—प्रिय-प्रवास।

**वाचक्नवी**—स्त्री०[सं० वचक्नु+इञ्+ङीप्] गार्गी। वाचक्नु की।

पुं० वचक्नु ऋषि की अपत्य या गोत्रज।

**वाचन**—पु० [स०√वच्+णिच्+ल्युट्-अन] १. लिखी हुई चीज पढ़ना या उच्चारण करना। पठन। बाँचना। जैसे—कथा-वाचन। २. कहना या कहकर बताना। ३. किसी मत, विचार, या विषय का प्रतिपादन। ४. विद्यार्थियों सभा में किसी विषयक का पढ़ा जाना। (रीडिंग) जैसे—यह विषयक का प्रथम वाचन था।

**वाचनक**—पु०[सं० वाचन+कै+क] पहेली।

**वाचना**—स्त्री०=वाचन।

स०=बाँचना (पढ़ना)।

**वाचनालय**—पुं०[स०] वह सार्वजनिक (या निजी) स्थान जहाँ बैठकर पठन या अध्ययन किया जाता हो। (रीडिंग रूम)

**वाचनिक**—वि० [सं० वचन+ठक्—इक] वचन के द्वारा अथवा कथन के रूप में होनेवाला।

**वाचयिता (तृ)**—वि०[स०√वच्+णिच्+तृच्]=वाचक।

**वाचस्पति**—पु०[सं० ष० त०] १. बृहस्पति। २ प्रजापति। ३. ब्रह्मा। ४. सोम। ५. बहुत बड़ा विद्वान्।

**वाचा**—स्त्री० [स० वाच्+टाप्] १. वाणी। २. वचन, शब्द या वाक्य। ३. शपथ ४. सरस्वती।

अव्य० [स०] वचन द्वारा। वचन से।

**वाचापत्र**—पु०[स०] प्रतिज्ञा-पत्र।

**वाचाबंध**—वि०=वाचाबद्ध।

पुं०=वाचा-बंधन।

**वाचा-बंधन**—पु०[सं०] प्रतिज्ञा करके उसमें बँधना।

**वाचा-बद्ध**—वि०[स०] किसी को वचन देने के कारण बँधा हुआ। प्रतिज्ञा-बद्ध।

**वाचाल**—वि०[स० वाच्+आलच्] [भाव० वाचालता] १. बोलने में तेज। वाक्पटु। २. बकवादी। व्यर्थ बोलनेवाला। ३. उद्धतापूर्वक या बहुत बढ़-चढकर बातें करनेवाला।

**वाचालता**—स्त्री०[स० वाचाल+तल्+टाप्] वाचाल होने की अवस्था या भाव।

**वाचिक**—वि०[स०√वच्+ठक्-इक] १. वाचा या वाणी-संबंधी। २. वाचा या वाणी से निकला हुआ। मुँह से कहा हुआ। ३ संकेत के रूप में कहा या बतलाया हुआ।

पु० १. सन्देश आदि के रूप में कहलाई जानेवाली बात या भेजा जानेवाला पत्र। २. अभिनय का एक प्रकार या भेद जिसमें केवल वाक्य-विन्यास द्वारा अभिनय का कार्य सम्पन्न होता है।

**वाची**—वि० [सं० वाच्+इनि, वाचिन्] १. वाचक। वाचा-सम्बन्धी। २. वाचा के रूप में होनेवाला। ३. परिचय या बोध करानेवाला। जैसे—पक्षी-वाची शब्द। ४. वाचन करनेवाला।

**वाच्य**—वि [सं०√वच्+ण्यत्] १. जो वाचा के रूप में आता हो या आ सकता हो। जो कहा जा सके या कहे जाने के योग्य हो। २. शब्द की अभिधा शक्ति के द्वारा जिसका बोध होता हो या हो सकता हो। अभिधेय। ३. जिसे लोग बुरा कहते हों। कुत्सित। निन्दनीय। बुरा।

पुं० वाचक शब्द का अर्थ। वाच्यार्थ।

**वाच्यता**—स्त्री० [सं० वाच्य+तल्+टाप्] १. 'वाच्य' होने की अवस्था या भाव। २. निंदा। ३. बदनामी।

**वाच्यत्व**—पुं०[सं० वाच्य+त्व]=वाच्यता।

**वाच्यार्थ**—पुं०[सं०] वाचक का अर्थ। अभिधेयार्थ।

**वाच्यावाच्य**—पुं०[सं०] १. कही जाने के योग्य बात और न कही जाने के योग्य बात। २. किसी अवसर पर अथवा किसी व्यक्ति से कहने और न कहने योग्य बातें।

**वाज**—पु०[सं०√वज्+घञ्] १. घृत। घी। २. यज्ञ। ३. अन्न। ४. जल। ५ संग्राम। ६. बल। ७. बाण के पीछे का पंखा। ८. पलक। ९. वेग। १०. मुनि। ११. आवाज। शब्द।

**वाज**—पु० [अ० वजज] १. उपदेश। २. विशेषतः धार्मिक उपदेश।

**वाजपति**—पु०[सं०] अग्नि।

**वाजपेई**†—पुं०=वाजपेयी।

**वाजपेय**—पु०[सं०] सात श्रौत यज्ञों मे से पाँचवा यज्ञ जो बहुत श्रेष्ठ माना जाता है।

**वाजपेयक**—वि०[सं० वाजपेय+कन्] वाजपेय-सम्बन्धी।

**वाजपेयी**—पुं० [सं० वाजपेय+इनि,] १. वह पुरुष जिसने वाजपेय यज्ञ किया हो। २ कान्यकुब्ज ब्राह्मणो के एक प्रतिष्ठित वर्ग की उपाधि। ३ उक्त के आधार पर बहुत बडा कुलीन या धर्म-निष्ठ व्यक्ति। उदा०—कौन थौं सोमजाजी अजामिल, कौन गजराज थौं बाजपेई। तुलसी।

**वाजप्य**—पु० [स०] एक गोत्रकार ऋषि। इनके गोत्र के लोग वाजप्यायन कहलाते हैं।

**वाजप्यायन**—पुं०[सं०] वाजप्य ऋषि के गोत्र का व्यक्ति।

**वाजबी**—वि०=वाजिबी।

**वाजभोजी (जिन्)**—पु०[वाज√भुज् (खाना)+णिनि] वाजपेय यज्ञ।

**वाजभव**—पु० [स०] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

**वाजभवा (वत्)**—पु०[सं०] १. अग्नि। २. एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि। ३. एक ऋषि जिनके पुत्र का नाम 'नचिकेता' था और जो अपने पिता के क्रुद्ध होने पर यमराज के पास ज्ञान प्राप्त करने गये थे।

**वाजसनेय**—पुं०[सं० वाजसनि+ढक्-एय] १. यजुर्वेद की एक शाखा जिसे याज्ञवल्क्य ने अपने गुरु वैशंपायन पर क्रुद्ध होकर उनकी पढ़ाई हुई विद्या उगलने पर सूर्य के तप से प्राप्त की थी। २ याज्ञवल्क्य ऋषि।

**वाजसनेयक**—वि०[सं० वाजसनेय+कन्] १. याज्ञवल्क्य से संबद्ध। २. वाजसनेय।

**वाजा**—वि०[अ० वाजः] ज्ञात। विदित। जैसे—आपको यह बात वाजा रहे।

**वाजित**—वि०[सं० वाज+इतच्] १. पखडाला। २. (तीर या बाण) जिसमें पंख लगे हो।

**वाजिन**—पुं०[सं० वाज+इनि-अ॰] १. शक्ति। २. होड़। ३ संघर्ष।

**वाजिनी**—स्त्री०[सं० वाजिन्+ङीप्] १. घोड़ी। २. असंगध।

**वाजिव**—वि०[अ०] १. उचित। २. संगत।

**वाजिबी**—वि०=वाजिब।

**वाजिभ**—पुं०[सं०] अश्विनी नक्षत्र।

**वाजिमेध**—पुं०[सं० ष० त०] अश्वमेध।

**वाजिराज**—पुं० [सं० ष० त०] १. विष्णु। २. उच्चैःश्रवा।

**वाजिशिरस्**—पु०[सं० वाजिशिरस्+ष० स०] विष्णु का एक अवतार।

**वाजी (जिन्)**—पु०[सं० वाज+इनि] १. घोडा। २. वासक। अड़सा। ३. हवि। ४. फटे हुए दूध का पानी।

**वाजीकर**—वि० [सं० वाजी√कृ (करना)+अच्] (औषध) जिससे स्त्री-संभोग की शक्ति बढती हो।

**वाजीकरण**—पुं० [सं० वाज+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्-अन] एक प्रक्रिया जिससे पुरुष मे घोड़े की शक्ति आ जाती है।

**वाट**—पुं०[स०√वट् (घेरना)+घञ्] १. मार्ग। रास्ता। २. इमारत। वास्तु। ३. मंडप।

**वाटधान**—पु०[सं० ष० स०] १. कश्मीर के नैर्ऋतकोण का एक प्राचीन जनपद। २. एक संकर जाति।

**वाटली**—स्त्री०[सं० वर्तुली] १. छोटी कमोरी। २. अँगूठी।

**वाटिका**—स्त्री० [सं०√वट् (घेरना)+ण्वुल्—अक,+टाप्,इत्व] १. वास्तु। इमारत। २. बगीचा। ३. हिंगुपत्री।

**वाटी**—स्त्री० [सं०√वट् (घेरना)+घञ्+ङीष्] इमारत। वास्तु।

**वाटुक**—पु०[सं०] भुना हुआ जौ। बहुरी।

**वाटय**—पु०[सं० वाट+यत्] १. बरिंगारा (पौधा)। २.भुना हुआ जौ।

**वाडव**—पु०[सं० वाड्√वा (प्राप्त होना)+क] वडवाग्नि। वडवानल।

**वाडवाग्नि**—स्त्री० [स०]=वडवानल।

**वाण**—पु०[सं०] बाण। (दे०)

**वाणिज**—पु० [सं० वणिज+अण्] १. व्यापारी। २. वडवाग्नि।

**वाणिज्य**—पु०[सं० वणिज+ष्यञ्] १. बहुत बडे पैमाने पर होनेवाला व्यापार। (कामर्स)

**वाणिज्य-चिह्न**—पु०[स० ष० त०] वह विशिष्ट चिह्न जो कारखानेदार या व्यापारी अपने बनाये और बेचे जानेवाले सब तरह के माल या सामान पर इसलिए अकित करते हैं कि औरो से उनका पार्थक्य और विशिष्टता सूचित हो। (मर्केन्टाइल मार्क)

**वाणिज्य दूत**—पु०[ष० त०] किसी देश का वह राजकीय दूत जो किसी दूसरे देश मे रहकर इस बात का ध्यान रखता है कि हमारे पारस्परिक वाणिज्य मे कोई व्याघात न होने पावे। (कॉन्सल)

**वाणिज्यवाद**—पुं०[स० ष० त०] [वि० वाणिज्यवादी] पाश्चात्य देशों में मध्य युग में प्रचलित वह मत या सिद्धान्त जिसके अनुसार यह माना जाता था कि साधारण जन-समाज की तुलना मे वणिकों या व्यापारियों के हितों का सबसे अधिक ध्यान रखा जाना चाहिए जिसमे आयात कम और निर्यात अधिक हो। (मर्केन्टाइलिज्म)

**वाणिता**—स्त्री०[स० वाण+इतच्+टाप्] एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

**वाणिनी**—स्त्री०[सं०√वण् (बोलना)+णिनि+ङीप्] १. नर्तकी। २. मत्त स्त्री। ३. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १६ वर्ण अर्थात् क्रमानुसार नगण, जगण, भगण, फिर जगण और अन्त में रगण और गुरु होता है।

**वाणी**—स्त्री० [सं०√वण्+णिच्+इन्+ङीप्] १. सरस्वती। २. मुँह से निकलनेवाली सार्थक बात। वचन।

**मुहा०—वाणी स्फुरना**—मुँह से बात निकलना। (व्यंग्य)

३. बोलने या बात-चीत करने की शक्ति। ४. जिह्वा। जीभ। ५. स्वर। ६. एक छद।

**वातंड**—पुं०[सं० वतड+अण्] एक गोत्रकार ऋषि, जिनके गोत्रवाले वातंड्य कहलाते हैं।

**वातंड्य**—पु०[स० वातंड+ष्यञ्] [स्त्री० वातंड्यायिनी] वातंड ऋषि के गोत्र में उत्पन्न व्यक्ति।

**वात**—पु०[स०√वा (जाना आदि)+क्त] १. वायु। हवा। २ वैद्यक के अनुसार शरीर में होनेवाला वायु का प्रकोप।

**वातकंटक**—पु०[सं० ब० स०] एक प्रकार का वात रोग जिसमें पैरों की गाँठों या जोड़ों में बहुत पीडा होती है।

**वातकी (किन्)**—वि० [सं० वात्+इनि, कुकच्] वात रोग से ग्रस्त।

**वातकुंज**—पु०[ष० त०] नख-क्षत।

**वातकेतु**—पु०[स० ष० त०] धूल। गर्द।

**वातकेलि**—स्त्री०[सं० ष० त०] १. सुन्दर आलाप। २. स्त्री के उपपति का रत-क्षत।

**वातगंड**—पु० [स० तृ० त०] वात के प्रकोप के कारण होनेवाला एक तरह का गलगंड रोग।

**वात गुल्म**—पु०[स० तृ० त०] वात के प्रकोप से होनेवाला गुल्म रोग।

**वातघ्नी**—स्त्री० [स० वात√हन् (मारना)+टक्+ङीप्] १. शालपर्णी। २. अश्वगंधा।

**वात-चक्र**—पु० [सं० ब० स०] १. ज्योतिष मे एक योग। २ [ष० त०] बवंडर। चक्रवात।

**वातज**—वि० [सं० वात+√जन् (उत्पन्न करना)+ड] वात या वायु के प्रकोप से उत्पन्न होनेवाला। जैसे—वातज रोग।

**वात-तूल**—पु०[स० तृ० त०] बहुत ही महीन तांगों के रूप मे हवा में इधर-उधर उड़ती हुई दिखाई देनेवाली चीज।

**वातध्वज**—पुं०[सं० ब० स०] मेघ। बादल।

**वात-नीड़ा**—स्त्री०[स०] एक प्रकार का रोग जिसमे वायु के प्रकोप से दाँत की जड मे नासूर हो जाता है। (पायोरिया)

**वातपट**—पु०[सं० ष० त०] पताका। ध्वजा।

**वात-पुत्र**—पु०[सं० ष० त०] १. हनुमान्। २. भीम। ३. नेवला।

**वात-प्रकृति**—वि०[सं० ष० त०] १. (व्यक्ति) जिसकी प्रकृति में वात की प्रधानता हो। २ (पदार्थ) जो खाने पर शरीर में वात का प्रकोप बढ़ानेवाला हो।

**वात-प्रकोप**—पुं०[सं० ष० त०] शरीर में वात या वायु का इस प्रकार बढ़ना या विगड़ना कि कोई रोग उत्पन्न होने लगे।

**वात-मृग**—पु० [सं० मध्य० स०] वायु की विपरीत दिशा में दौड़नेवाला एक प्रकार का मृग।

**वातरंग**—पु०[स० ब० स०] पीपल।

**वातर**—वि०[स० वात√रा (लेना)+क] १ वात-सम्बन्धी। २. अन्धड या तूफान से सम्बन्ध रखनेवाला। ३. हवा की तरह तेज।

**वात-रक्त**—पुं०[सं० ब० स०] रक्त मे रहनेवाला वात के प्रकोप से उत्पन्न होनेवाला एक रोग जिसमें पैरों के तलवे से घुटने तक छोटी-छोटी फुंसियां हो जाती हैं, जठराग्नि मंद पड़ जाती है, और शरीर दुर्बल होता जाता है।

**वातरव**—पुं०[स० ब० स०] मेघ। बादल।

**वातरायण**—पु० [स० वात√रै (शब्द करना)+ल्युट्—अन] १. निष्प्रयोजन पुरुष। निकम्मा आदमी। २. बौखलाया हुआ आदमी। ३. लोटा। ४ कुट नामक ओषधि।

**वातल**—पुं०[सं० वात√ला (लेना)+क] चना।
वि० वात का प्रकोप उत्पन्न करनेवाला।

**वातल**—वि० [सं०] १. वात से संबंध रखनेवाला। वात का। २. वात के कारण उत्पन्न होनेवाला। (रोग या विकार) जैसे—वातल लासक।

**वातलालसक**—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का वातक वात-रोग जिसमें रोगी को ज्वर के साथ कलेजे की धड़कन, अंगों की सूजन और नेत्र-कष्ट होता है। (बेरी-बेरी)

**वातव्याधि**—स्त्री०[स० तृ० त०] १. वात के प्रकोप से उत्पन्न होनेवाला रोग। २. गठिया नामक रोग।

**वात-सारथि**—पु०[सं० ब० स०] अग्नि।

**वात-स्कंध**—पु०[स० ष० त०] आकाश का वह भाग जिसमे वायु चलती रहती है।

**वात स्थान**—पुं०[स० ब० स०] अग्नि।

**वातांड**—पु०[सं० ब० स०] अंडकोश-संबंधी एक प्रकार का वायु रोग जिसमे एक अंड चलता रहता है।

**वाताट**—पु०[सं० वात√अट् (चलना)+अच्] १. सूर्य का घोड़ा। २. हिरन।

**वातात्मज**—पु०[स० ष० त०] हनुमान्।

**वाताद**—पु०[स० वात√अद् (खाना)+अच्] वादाम।

**वातानुकूलन**—पु०[स०] [भू० कृ० वातानुकूलित] यांत्रिक या वैज्ञानिक प्रक्रिया से ऐसी व्यवस्था करना कि किसी घिरे हुए स्थान के ताप-मान पर उसके बाहर के ताप-मान का प्रभाव न पड़ने पावे; अर्थात् उस स्थान के अंदर की गरमी या सरदी नियंत्रित और नियमित रहे। (एयर कन्डिशनिंग)

**वातानुकूलित**—भू० कृ० [सं०] (स्थान) जिसका ताप-मान वातानुकूलन वाली प्रक्रिया से नियंत्रित और नियमित किया गया हो। (एयर कन्डिशन्ड)

**वातापी**—पुं० [सं०] एक राक्षस जो आतापि का भाई था। (इन दोनों भाइयों को अगस्त्य ऋषि ने खा लिया था।)

**वातापेय**—पुं० [सं० वातापि—यत्] १. जल। २. सोम।

**वाताम**—पुं० [स० पृषो० सिद्धि] बादाम।

**वातायन**—पुं०[सं० ब० स०] १. झरोखा जो घरों आदि मे इसलिए बनाया जाता है कि बाहर से प्रकाश और वायु अन्दर आवे। २. एक मंत्र-द्रष्टा ऋषि। ३. एक प्राचीन जनपद। ४. घोड़ा।

**वातायनी**—स्त्री०[सं० वातायन-ङीप्] लकड़ी, लोहे, सीमेन्ट आदि की वह रचना जो छत के नीचे दीवार में इसलिए बनाई जाती है कि कमरे मे प्रकाश और वायु आ सके। (वेन्टिलेटर)

**वातारि**—पु०[सं० ष० त०] १. एरंड। २. शतमूली। ३. अजवायन। ४. बायबिडंग। ५. जमीकन्द। सूरन। ६. जिलावाँ। ७. घुहूड़। सेंहुड़। ८ शतावर। ९ नील का पौधा। १०. तिलक।

**वातालो**—स्त्री०[सं० वाताल-ङीष्, ष० त०] १. तूफान। २. बवंडर।

**वातावरण**—पुं०[कर्म० स०] [वि० वातावरणिक] १. वायु की वह राशि जो पृथ्वी, ग्रह आदि पिंडों को चारों ओर से घेरे रहती है।

शरीर, स्वास्थ्य आदि के विचार से वायु का उतना अंश जो किसी प्रदेश, स्थान आदि में होता है। जैसे—बिहार का वातावरण, कमरे का वातावरण। ३. किसी वस्तु या व्यक्ति के आस-पास की वह परिस्थिति या बात जिसका उस वस्तु या व्यक्ति के अस्तित्व, जीवन-निर्वाह, विकास आदि पर प्रभाव पड़ता है। ४. किसी कलात्मक या साहित्यिक कृति के वे गुण या विशेषताएँ जो दर्शक या पाठक के मन में उस कृति के रचनाकाल, रचना-स्थान आदि की कल्पना या मनोभाव उत्पन्न करती हैं। जैसे—इस मूर्ति का वातावरण बतलाता है कि यह शुंग काल की है, अथवा गांधार की बनी है। (एटमॉस्फियर)

**वातावरणिक**—वि० [सं०] १. वातावरण-संबंधी। २. वातावरण का या वातावरण में होनेवाला।

**वाताष्ठीला**—स्त्री० [सं० तृ० त०] एक रोग जिसमें वात के प्रकोप के कारण पेट में गाँठ-सी पड़ जाती है। (वैद्यक)

**वातास**—स्त्री० [स० वात] वायु। हवा। उदा०—जो उठती हो बिना प्रयास। ज्वाला सी पाकर वातास। ]—पंत।

**वाति**—पु० [स०√वा (जाना)+अति] १. वायु। हवा। २ सूर्य। ३. चन्द्रमा।

**वातिक**—वि० [सं० वात+ठञ्—इक] १. वात सम्बन्धी। वात का। २. जिसे वात का कोई रोग हो। वात-ग्रस्त। ३. तूफान या बवंडर से सम्बन्ध रखनेवाला। ४ बकवादी।
पु० १. पागल। विक्षिप्त। २ एक प्रकार का ज्वर। ३. चातक। पपीहा।

**वातुल**—वि० [स० वात+उलच्] [भाव० वातुलता] १. वात-संबंधी। २ वात के प्रकोप के कारण होनेवाला। जैसे—गठिया (रोग)।
पु० पागल। बावला।

**वातोदर**—पु० [सं० तृ० त०] एक रोग जिसमें हाथ, पाँव, नाभि, काँख, पसली, पेट, कमर और पीठ में पीड़ा होती है, इसके साथ कब्ज और खाँसी भी होती है। (वैद्यक)

**वातोन्माद**—पु० [सं० वात+उन्माद, ब० स०] अपतंत्रक नामक रोग। (हिस्टीरिया) देखें 'अपतंत्रक'।

**वातोर्मी**—पुं० [स० ब० स०] ग्यारह अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसमें मगण भगण, तगण और अन्त में दो गुरु होते हैं।

**वात्य**—वि० [सं० वात+यत्] वात या वायु-सम्बन्धी। जैसे—वात्य भार।

**वात्या**—स्त्री० [स० वात+य+टाप्] १. बहुत तेज चलनेवाली हवा। २ विशेषत ४० से ७५ मील प्रति घंटे चलनेवाली तेज आँधी। (गेल)

**वात्स**—पुं० [स० वत्स+अण्] [स्त्री० वात्सी] १ एक गोत्रकार ऋषि का नाम। २. ब्राह्मण द्वारा शूद्रा के गर्भ से उत्पन्न व्यक्ति।

**वात्सरिक**—पु० [स० वत्सर+ठक्—इक] ज्योतिषी।
वि० १. वत्सर या वर्ष-सम्बन्धी। जैसे—वात्सरिक श्राद्ध। २. प्रतिवर्ष होनेवाला। वार्षिक।

**वात्सल्य**—पुं० [सं०] १. प्रेम। २. विशेषतः माता-पिता के हृदय में होनेवाला अपने बच्चों के प्रति नैसर्गिक प्रेम।

**वात्सल्य-भाजन**—पुं० [सं०] वह जिसके प्रति वत्स का-सा प्रेम हो। वत्स के समान प्रिय।



**वात्स्य**—पुं० [सं० वत्स+यञ्] १. एक प्राचीन ऋषि। २. एक गोत्र जिसमें और्व, च्यवन, भार्गव, जामदग्न्य और आप्नुवान नामक पाँच प्रवर होते हैं।

**वात्स्यायन**—पुं० [सं० वात्स्य+फक्—आयन] १. कामसूत्र के रचयिता एक प्रसिद्ध ऋषि। २. न्याय शास्त्र के भाष्यकार एक प्रसिद्ध पंडित।

**वाद**—पुं० [सं०√वद्+घञ्] १. कुछ कहना या बोलना। २. वह जो कुछ कहा जाय। उक्ति। कथन। ३. किसी कथन के समर्थन के लिए उपस्थित किया जानेवाला तर्क। दलील। ४. किसी बात विशेषत सैद्धांतिक बात के संबंध में दोनों ओर से कही जानेवाली बातें। तर्क-वितर्क। विवाद। बहस। ५. अफवाह। किंवदंती। ६. विचार के लिए न्यायालय में उपस्थित किया जानेवाला अभियोग। मुकदमा। (सूट) ७. कला, विज्ञान या कल्पनामूलक किसी विषय के संबंध में नियमों, सिद्धांतों आदि के आधार पर स्थिर किया हुआ वह व्यवस्थित मत जो कुछ क्षेत्रों में प्रामाणिक और मान्य समझा जाता हो। (थियरी) जैसे—विकासवाद, सापेक्षवाद। ८. कोई ऐसा तत्त्व या सिद्धान्त जो तत्त्वज्ञों या विशेषज्ञों द्वारा निर्यत या निश्चित हुआ हो। (इश्म)
**विशेष**—इस अर्थ में इसका प्रयोग कुछ संज्ञाओं के अंत में प्रत्यय के रूप में होता है। जैसे—छायावाद, रहस्यवाद, साम्यवाद आदि।

**वादकर्णी**—पु० [सं० ब० स०] न्यायालय ने जिसे अपने फैसले में ऋणी ठहराया है। (जजमेंट क्रेडिटर)

**वादक**—वि० [स०√वद् (कहना)+णिच्+ण्वुल्—अक] १. कहने या बोलनेवाला। २. वाद-विवाद करनेवाला। ३. बाजा बजानेवाला।

**वाद-ग्रस्त**—वि०=विवादग्रस्त।

**वाद-चंचु**—पुं० [स० त०] शास्त्रार्थ करने में पटु। वाद-विवाद करने में दक्ष।

**वाद्यदंड**—पुं० [ष० त०] सारंगी आदि बाजे बजाने की कमानी।

**वादन**—पुं० [सं०√वद् (कहना)+णिच्+ल्युट्—अन] १. कहने या बोलने की क्रिया। २. बाजा बजाना। ३ बाजा। वाद्य। ४. वादक।

**वादनक**—पुं० [स० वादन+कन्] बाजा।

**वाद-पद**—पु० [सं०] विधिक क्षेत्र में, किसी वाद या दीवानी मुकदमे से संबंध रखनेवाली वे विवादाग्रस्त और विचारणीय बातें जो पहले पक्ष की ओर से दावे के रूप में कही जाती हों, परंतु दूसरा पक्ष जिनसे इन्कार करता हो। तनकीह। (इश्यू)
**विशेष**—न्यायालय ऐसी ही बातों के सत्यासत्य का विचार करके उनके आधार पर मुकदमे का निर्णय करता है। यह दो प्रकार का होता है—विधि वाद-पद जिसमें केवल कानूनी दृष्टि से विचारणीय बातें आती हैं और तथ्य वाद पद जिसमें तथ्य अर्थात् वास्तविक घटनाओं से संबंध रखनेवाली बातें आती हैं। इन्हें क्रमात् इश्यू ऑफ लॉ और इश्यू ऑफ फैक्ट्स कहते हैं।

**वाद-प्रतिवाद**—पु० [स० द्व० स०] दो पक्षों या व्यक्तियों में किसी विषय पर होनेवाला खंडन-मंडन और तर्क-वितर्क।

**वाद-मूल**—पुं० [सं० ष० त०] वह मूल कारण जिसके आधार पर कोई मुकदमा या व्यवहार न्यायालय में विचारार्थ उपस्थित किया जाता है। (कॉज़ ऑफ़ ऐक्शन)

**वादर**—पुं०[सं० वदर+अण्] १. कपास का पौधा। २. सूती कपड़ा। ३ बेर का पेड़।
वि० सूती कपड़े का बना हुआ।

**वादरायण**—पु०[स० वदर+अयन, ष० त०, +अण्] बादरायण (वेद-व्यास)।

**वादरायणि**—पु०=वादरायणि (शुकदेव)।

**वाद-विवाद**—पु०[सं० द्व० स०] १. वाद-प्रतिवाद। २ वह विचार-पूर्ण बात-चीत जो किसी निष्कर्ष पर पहुँचने के लिए होती है। (डिस्कशन)

**वाद-विषय**—पु०[स० ष० त०] वाद-मूल। (दे०)

**वाद-व्यय**—पु०[स० ष० त०] किसी वाद या मुकदमे मे होनेवाला उचित और नियमित व्यय। (कास्टस)

**वाद-साधन**—पु०[ स० ष० त०] १. अपकार करना। २. तर्क करना।

**वाद-हेतु**—पु०[स० ष० त०]=वाद-मूल।

**वादा**—पु०[अ० वाइदः] १. किसी काम या बात के लिए नियत किया हुआ समय। २. किसी से दृढ़ता और निश्चयपूर्वक, यह कहना कि हम तुम्हारे लिए अमुक काम करेंगे या तुम्हें अमुक चीज देंगे। प्रतिज्ञा। वचन।
क्रि० प्र०—पूरा करना।
३. दे० 'वायदा'।

**वादा-खिलाफी**—स्त्री०[अ०+फा०] वादा पूरा न करना। प्रतिज्ञा का पालन न करना।

**वादानुवाद**—पु०[स० द्व० स०]=वाद-प्रतिवाद।

**वादिक**—वि०[स० वादि+कन्] कहनेवाला।
पु० १. जादूगर। २ भाट। चारण। ३. तार्किक।

**वादित**—भू० कृ० [स०√वद् (कहना)+णिच्+क्त] जिसमे से नाद या स्वर उत्पन्न किया गया हो। बजाया हुआ।

**वादित्र**—पु०[स०√वद् (कहना)+णिच्+ष्ट्रन्] वाद्य। बाजा।

**वादीश**—पु०[स० त० त०] मजुघोष का एक नाम।

**वादी**—वि०[स० वादिन्] १. बोलनेवाला। वक्ता। २. जो किसी वाद से सम्बन्ध रखता हो या उसका अनुयायी हो। जैसे—समावादी।
पु० १. वह जो कोई ऐसा विषय उपस्थित करे जिस पर विचार होने की हो या दूसरो को जिसका खडन अथवा विरोध करना पड़े। २ वह जो न्यायालय मे किसी के विरुद्ध कोई अभियोग उपस्थित करे। फरियादी। मुद्दई। ३ सगीत मे वह स्वर जो किसी राग में सर्वप्रमुख होता है, और जिसका उपयोग और स्वरो की अपेक्षा अधिक होता है। इसी स्वर पर ठहराव भी अपेक्षाकृत अधिक होता है और इसी के प्रयोग से उस राग म जान भी आती है और उसकी शोभा भी होती है। जैसे—यमन राग मे गाधार स्वर वादी होता है।
†स्त्री०=बाई (बात की अधिकता या जोर)। (पश्चिम)
वि०=वातग्रस्त। जैसे—वादी शरीर।

**वादीवदि***—क्रि० वि० [सं० वाद से] कह-बदकर। दृढ़तापूर्वक कह कर। उदा०—बहतँ कटकि माहि वादीवदि।—प्रिथीराज।

**वाद्य**—पु०[सं०√ वद् (कहना)+णिच्+यत्] १. बाजा बजाना। २. बाजा।

**वाद्यक**—पु०[सं० वाद्य√कन्] बाजा बजानेवाला।

**वाद्य-वृंद**—पु०[सं०] १. अनेक प्रकार के बहुत से बाजो का समूह। २. उक्त प्रकार के बाजों का वह सगीत जो ताल, लय आदि के विचार से एक साथ बजने पर होता है। (आर्केस्ट्रा)

**वाद्य-सगीत**—पु०[स०] ऐसा संगीत जिसमें केवल वाद्य या बाजे ही बजते हो, कठ सगीत बिलकुल न हो। (इन्सट्रुमेंटल म्यूजिक)

**वाध**—पु०[स०√ वाध् (रोकना)+घञ्]=बाध (बाधा)।

**वाधूक**—पु०[स० वाधू√ला (हलना)+क] एक गोत्रकार ऋषि। इनके गात्र के लोग वाधूल कहलाते है।

**वान्**—प्रत्य० [स०] [स्त्री० वती] एक सस्कृत प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अत मे लग कर पुलिंग या सपत्र होने का सूचक होता है। जैसे—ऐश्वर्य-वान्, धैर्यवान् आदि।

**वान**—पु०[स०√वा (गमनादि)+ल्युट्—अन] १. गति। २. सुरभि। ३ सुगंध। ४. पानी में लगनेवाला हवा का झोंका। ५. चटाई।
प्रत्य०[सं० वान्] एक प्रत्यय जो कुछ सवारियो के नामो के अत मे लगकर उन्हें चलाने या हाँकनेवाले का सूचक होता है। जैसे—एक्का-वान, गाड़ीवान।
वि०[स०] १. वन-सबधी। जगल का। २. सूखा या सुखाया हुआ।
पु०१. बडा और घना जगल। २ जल आदि का बहाव या आगे बढना। ३. सूखा फल। (ड्राई फ्रूट)। ४. महक। सुगधि। ५. यम।

**वानक**—पु०[स० वान+कन्] ब्रह्मचर्यावस्था।

**वान दड**—पु०[स० ष० त०] करघे की वह लकडी जिसमे बुनने के लिए बाना लपेटा रहता है।

**वानप्रस्थ**—पु० [स० वन+प्र√स्था (ठहरना)+कु, वनप्रस्थ+अण्] १. भारतीय आर्यों मे जीवन-यापन के चार शास्त्र विहित आश्रमों या विभागों में से एक जो गृहस्थ आश्रम के उपरान्त और सन्यास से पहले आता है और जिसमें मनुष्य ५० वर्ष का हो जाने पर पचीस वर्षों तक वनो मे घूमता-फिरता रहता है। २. महुए का पेड़। ३ पलाश।

**वानर**—पु०[स०]१ ऐसा प्राणी जो पूरी तरह से तो नर या मनुष्य न हो, फिर भी उससे बहुत कुछ मिलता-जुलता हो। जैसे—गोरिल्ला, चिम्पाजी आदि। २. बन्दर। ३. दोहे का एक लघु भेद जिसके प्रत्येक चरण मे १० गुरु और २८ लघु होते हैं।

**वानर-युद्ध**—पु०[स०] दे० 'छापामार लड़ाई'।

**वानर-सेना**—स्त्री० स०] छोटे-छोटे बच्चो का दल जो कोई विशिष्ट कार्य करने के लिए नियुक्त हो।

**वानरी**—वि०[स०] १. वानर-सम्बन्धी। बन्दर का। २. वानर या बन्दर की तरह का। जैसे—वानरी तर।
स्त्री०१. बन्दर की मादा। बँदरिया। २. कँवाच। काँछ।

**वानरी तप**—पु०[सं०] एक प्रकार का तप या तपस्या जो बन्दरो की तरह बराबर वृक्षो पर ही रहकर और उनके पत्ते, फल आदि खाकर की जाती है।

**वानवासक**—पु०[स० वानवास+कन्] वैदेही माता से उत्पन्न वैद्य का पुत्र।

**वान-वासिका**—स्त्री० [सं० वानवास+कन्+टाप्, इत्व] सोलह

मात्राओं के छन्दों का चौपाइयों का एक भेद, जिसमें नवीं और बारहवीं मात्राएँ लघु होती हैं।

**वानस्पतिक**—वि०[सं०] १ वनस्पति-सम्बन्धी। वनस्पति का। २. वनस्पति के द्वारा बनने या होनेवाला। जैसे—वानस्पतिक खाद या तैल।

**वानस्पतिक खाद**—स्त्री०[स०+हि०] गोबर, मल, पीधो आदि के मिश्रण से बनाई हुई खाद। कूड़े आदि से बनी खाद। (कंपोस्ट)

**वानस्पत्य**—पुं०[स० वनस्पति+ष्यञ्] १ वह वृक्ष जिसमें पहले फूल लगकर पीछे फल लगते हैं। जैसे—आम, जामुन आदि। २ वनस्पतियों का वर्ग या समूह। ३ वनस्पतियों, वृक्षों और वनों की वृद्धि, पोषण आदि से सम्बन्ध रखनेवाला शास्त्र। (आर्बोरिकल्चर)

वि०=वानस्पतिक।

**वानिक**—वि०[सं० वन+ठक्—इक]१ जंगली। वन्य। २. जंगल में रहनेवाला। वनवासी।

**वानीर**—पुं०[सं० वन+ईरन्; अण्] १ बेत। २ पाकर वृक्ष।

**वानेय**—पुं०[स० वन+ढक्—एय] केवड़ा या केथा।

वि० १. वन में रहने या होनेवाला। २. जल-संबंधी।

**वान्य**—वि०[स० वन+ष्यञ्]वन-संबंधी। वन का। जंगली।

**वाप**—पुं०[स०√ वप् (बोना)+घञ्]१ बीज आदि बोना। बपन। २. खेत। ३. मुंडन।

**वापक**—वि०[सं० √ वप् (बोना)+णिच्+ण्वुल्—अक] वपन करने अर्थात् बीज बोनेवाला।

**वापन**—पुं०[स० √ वप् (बोना)+णिच् छन्प्रुट्-अन] बीज बोना।

**वापस**—वि०[फा०]१ (जीव या यान) जो कहीं से आकर लौट आया हो। २ (वस्तु) जिसे किसी ने माँगने मांगकर अथवा खरीदकर फेर दिया हो।

**वापसी**—वि०[फा० वापस]१. जो वापस होकर आया हो। जैसे—वापसी जवाब। २. वापस जाने से संबंध रखनेवाला। जैसे—वापसी टिकट। स्त्री०१. वापस होने या लौटने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ वापस की या लौटाई हुई चीज देने या लेने की क्रिया या भाव।

**वापसी टिकट**—पुं०[हि०] वह टिकट जिससे कही जाया और वहाँ से वापस आया जा सकता हो। जैसे—रेल या हवाई जहाज का वापसी टिकट। (रिटर्न टिकट)

**वापिका**—स्त्री० [सं० वप+इञ्+कन्+टाप्]=वापी।

**वापित**—वि०[ सं०√वप् (बोना)+णिच्+क्त] १. बोया हुआ। २ मूँडा हुआ।

**वापी**—स्त्री०[सं०वापि+ङीष्] एक प्रकार का चौड़ा और बड़ा कूआँ या छोटा तालाब जिसमें जल तक पहुँचने के लिए प्रायः सीढ़ियाँ बनी रहती हैं। बावली।

**वाप्य**—पुं०[सं० वापी+यत् वा√वप्+ण्यत्] वपन किए या बोए जाने के योग्य (बीज या भूमि)।

पुं० १. वापी या बावली का पानी। २ बोया हुआ धान्य (रोपे हुए से भिन्न)। ३ कूट नामक ओषधि।

**वाम**—वि० [सं० वा+मन्] १. शरीर के उस पक्ष में या उसकी ओर होनेवाला जो दूसरे पक्ष की अपेक्षा साधारण प्रणियों में कमजोर या दुर्बल होता है। बायाँ। २. 'दक्षिण' या 'दाहिना' का विपर्याय। ३. प्रतिकूल। विरुद्ध। ३. कुटिल। टेढ़ा। ४ दुष्ट। बुरा।

पुं० १. कामदेव। २. वरुण। ३. धन-सम्पत्ति। ४ कुच। स्तन। ५ चन्द्रमा के रथ का एक घोड़ा। ६ सर्वोच्च छंद का आठवाँ भेद. जिसके प्रत्येक चरण में सात जगण और एक यगण होते हैं। इसे मंजरी, मकरंद और माधवी भी कहते हैं। ७ वामदेव।

**वामक**—पुं०[सं० वाम+कन्] १. एक प्रकार की अंग-भंगी। २. बौद्धों के अनुसार एक चक्रवर्ती।

**वाम-कक्ष**—पुं०[स० ब० स०] एक गोत्रकार ऋषि जिनके गोत्र के लोग वामकक्षायन कहलाते हैं।

**वामता**—स्त्री०[सं०] १. वाम होने की अवस्था या भाव। २ प्रतिकूलता। विरुद्धता।

**वामदेव**—पुं०[स०] १ शिव। महादेव। २. एक वैदिक ऋषि।

**वामदेवी**—स्त्री०[स०] १ दुर्गा। २. सावित्री।

**वामन**—वि०[स०] [स्त्री० वामनी] १ छोटे कद या डील का। ठिगना। २ नाटा। बौना। खर्व। ३ ह्रस्व।

पुं० १. विष्णु। २. विष्णु का पाँचवाँ अवतार जो अदिति के गर्भ से हुआ था; और जिसमें उन्होंने बौने का रूप धारण करके राजा बलि को छलकर उससे सारी पृथ्वी दान रूप में ले ली थी। ३ अठारह पुराणों में से एक। ४ शिव। ५ एक दिग्गज का नाम। ६ छोटे डील का या बौना घोड़ा।

**वामन द्वादशी**—स्त्री० [स० ष० त०] भाद्रपद शुक्ला द्वादशी जिस दिन व्रत करके वामन अवतार की पूजा करने का विधान है।

**वामनिका**—स्त्री०[स० वामन+कन्+टाप्+इत्व] १ स्त्री के अनुचरी एक मातृका। २ बौनी या ठिंगनी स्त्री।

**वामनी**—स्त्री०[स० वामन+ङीप्] एक प्रकार का योनि रोग।

**वाम मार्ग**—पुं०[स०] तांत्रिक साधना में एक पद्धति जिसमें मृत प्राणियों के दाँतों की माला पहनते, कपाल या खोपड़ी का पात्र रखते, छोटी कच्ची मछलियाँ और माँस खाते तथा सजातीय पर-स्त्रियों से समान रूप से मैथुन करते हैं।

**वाम-मार्गी**—वि०[स०] वाम-मार्ग सम्बन्धी। वाम मार्ग का।

पुं० वह जो वाम-मार्ग का अनुयायी हो।

**वामरथ**—पुं०[स०] एक गोत्रकार ऋषि जिनके गोत्रवाले वाम-रथ्य कहलाते थे।

**वामकूर**—पुं०[सं० वाम√लू (काटना)+रक्]दीमक का भीटा। वल्मीक। बाँबी।

**वामलोचना**—स्त्री०[सं०] सुन्दरी स्त्री।

**वाम-शील**—वि०[सं०] [स० वामशीला] प्रायः या सदा वाम अर्थात् प्रतिकूल या विरुद्ध रहनेवाला।

**वामांगिनी**—स्त्री०[सं०] विवाहिता पत्नी।

**वामांगी**—स्त्री०[सं०]=वामांगिनी।

**वामाँवा**—वि०[फा०] [भाव० वामाँदगी] १ पीछे छूटा हुआ। २. थक जाने के कारण रास्ते में पीछे छूटा हुआ। ३. बाकी बचा हुआ। ४. लाचार। विवश।

**वामा**—स्त्री०[स०√वम् निकालना)+अण्+टाप्, अथवा वाम+अ+च्

टापृ] १ स्त्री। २. दुर्गा। ३. पार्श्वनाथ की माता। ४. दस अक्षरों के एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में तगण, यगण और भगण तथा अंत में एक गुरु होता है।

**वामाक्षी**—स्त्री० [स० ब० स०] १ सुंदरी स्त्री। २ दीर्घ 'ई' स्वर या उसकी मात्रा।

**वामाचार**—पु०[स०] दे० 'वाम-मार्ग'।

**वामाचारी** (रिन्)—पु०[स० वामाचार+इनि]=वाम-मार्गी।

**वामावर्त**—वि०[स० वाम-आ√वृत्+अच्] १ (पदार्थ) जिसका मुँह बाईं ओर घुमा हुआ हो। जैसे—वामावर्त शंख। २ (क्रिया) जिसका आरम्भ बाईं ओर से हो। जैसे—वामावर्त प्रदक्षिणा। 'दक्षिणावर्त' का विपर्याय।

**वामिका**—स्त्री०[स० वाम+कन्+टाप्+इत्व] चंडिका देवी।

**वामी**—स्त्री० [स० वाम+ङीप्] १. स्त्री। गौ। २. घोड़ी। ३ हथनी। ४ मधी।

**वामेक्षणा**—स्त्री०[स० ब० स०] सुंदर नेत्रोंवाली स्त्री।

**वामोरु**—स्त्री०[स० ब० स०] सुंदरी स्त्री।

**वाम्नी**—स्त्री०[स०] एक गात्रकार बिंदुकी जिसके गात्रवाले वाक्य्य कहलाते थे।

**वाय**—पु०[स०√वे (बुनना)+घञ्] १ बुनना। वयन। २. साधन। अव्य० [फा०] दुःख, शोक आदि का सूचक अव्यय। जैसे—वायफिक्मत।

**वायक**—वि०[सं०] बुननेवाला।

पुं० जुलाहा। तन्तुवाय।

**वायदड**—पु०[सं० ष० त०] १ करघे का हत्था। २ करघे की डरकी।

**वायदा**—पुं० [फा० वाइदः] १ वादा। वचन। २. सट्टेवालों की परिभाषा में, भविष्यकाल के सम्बन्ध में किया जानेवाला सौदा। जैसे—दालों के वायदे के बाजारों में इस सप्ताह भी अच्छी तेजी-मंदी आई।

**वायन**—पु०[सं०√वे (बुनना)+ल्युट्—अन] १. मंगल अवसरों, उत्सवों आदि के समय बनाई जानेवाली मिठाई। २ उक्त का वह अंश जो रिश्तेनाते में भेजा जाय। ३. सौगात।

**वायव**—वि०[सं०] १ वायु-संबंधी। वायु का। २. वायु के द्वारा या उसकी सहायता से होनेवाला। (एरियल) ३ जिसका कुछ भी आधार न हो। हवाई। जैसे—वायव स्वप्न।

**वायव-भट्ठी**—स्त्री० दे० 'पवन भट्ठी'।

**वायवी**—वि०[वायु+अण्+ङीप्] वायु के समान हृदय के भीतर ही भीतर रहनेवाला। प्रकाश में न आनेवाला।

स्त्री० उत्तर पश्चिमी कोण।

**वायवीय**—वि०[सं०] १. वायु-संबंधी। २ वायु के बल से चलनेवाला। (एरियल)

स्त्री० वह तार जिसका एक सिरा तो रेडियो यंत्र से संबद्ध होता है और दूसरा सिरा या तो खुले आकाश में विस्तृत होता है या ऊँचाई पर खड़े हुए बाँस से साथ लगा रहता है। (एरियल)

**वायव्य**—वि०[सं० वायु+यत्] १. वायु-संबंधी। २ वायु के द्वारा बनने या होनेवाला। ३. जिसका देवता वायु हो।

पु० १. पश्चिम और उत्तर दिशाओं के बीच का कोण जिसका अधिपति वायु देवता माना गया है। २. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ३. दे० 'वायु-पुराण'।

**वायव्या**—स्त्री०[सं० वायव्य+टाप्]=वायव्य (कोण)।

**वायस**—पुं०[सं०] १ अगर का पेड़। २. कौआ।

**वायसतंतु**—पु०[स० मध्य० स०] १. हनु के दोनों जोड़। २. काक तुंडी।

**वायसी**—स्त्री० [स० वायस+अण्+ङीप्] १. छोटी मकोय। काकमाची। २. महा ज्योतिष्मती। ३. सफेद घुँघची। ४. काकजंघा। ५. महाकरंज। ६ काकतुंडी। कौआ ठोंठी।

**वायसेतु**—पु०[स० ष० त०] काँस (तृण)।

**वायु**—स्त्री०[स०] १. वायु। हवा।

**विशेष**—हमारे यहाँ (क) इसकी गिनती पाँच महाभूतों में की गई है, और इसका गुण स्पर्श कहा गया है। (ख) इसकी एक दूसरे के ऊपर सात तहें या परतें मानी गई हैं जिनके नाम हैं—आवह, प्रवह, संवह, उद्वह, विवह, परिवह और परावह।

२. धार्मिक क्षेत्र में एक देवता जो उक्त का अधिष्ठाता माना गया है और जिसका निवास उत्तर-पश्चिम कोण में माना गया है। ३ दर्शनशास्त्र में, जीवनी-शक्ति या प्राणों का वह मुख्य आधार जो शरीर के अन्दर रहता है और जिसके पाँच भेद कहे गये हैं—प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान। ४ वैद्यक में, उक्त का वह अंश या रूप जो शरीर के अन्दर रहता है और जिसके प्रकोप या विकार से अनेक प्रकार के रोग उत्पन्न होते हैं। वात।

**वायु-अपनयन**—पु० [स०] वायु का धूल, बालू आदि उड़ाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाना।

**विशेष**—प्रायः समुद्र तट से और शुष्क प्रदेशों से होकर बहनेवाली वायु वहाँ से अपने साथ बहुत सी धूल, बालू, आदि भी उड़ा ले जाती है जिससे कहीं तो ऊपर की मिट्टी साफ होने से नीचे का चट्टान निकल आती है और कहीं रेत के टीले बन जाते हैं। विज्ञान में वायु की यही क्रिया वायु-अपनयन कहलाती है।

**वायु-कोण**—पु०[सं०] वायव्य (कोण)।

**वायुगंड**—पुं०[सं० पु० त०] १. अजीर्ण नामक रोग। २. पेट अकरने का रोग। अफरा।

**वायु-गुल्म**—पुं०[सं०] १. वायु-विकारों के कारण पेट में बनने या घूमता रहनेवाला वायु का गोला। २. बवंडर।

**वायु-छिद्र**—पु०[सं०] भू-गर्भ शास्त्र में, समुद्रतट की चट्टानों में कहीं-कहीं पाये जानेवाले वे छिद्र जिनमें हवा भरी रहती है, और ज्वार या भाटा होने पर जिनमें से भीतरी वायु के दबाव के कारण पानी के फुहारे से छूटने लगते हैं। ब्लो-होल

**वायु-तनय**—पु०[सं० ष० त०]=वायु-नंदन (हनुमान्)।

**वायु-वाह**—पु०[सं०] मेघ। बादल।

**वायु-संजन**—पु०[वायु√जन (हर्षित करना)+ल्युं—अन] १. हनुमान्। २ भीम।

**वायु-सेवा**—पु०[ब० स०] स्वाति नक्षत्र।

**वायु-संचक**—पु०[ष० त०] शरीर में रहनेवाला प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान नामक पाँच वायुओं का समाहार।

**वायु-पथ**—पुं०=वायु-मार्ग

**वायु-पुत्र**—पु०[सं०] १. हनुमान्। २. भीम।

**वायु-पुराण**—पु०[मध्य० स०] अठारह मुख्य पुराणों में से एक पुराण।

**वायु-कल**—पुं०[सं०] इन्द्रधनुष।
**वायु-मख्य**—पुं० [स०] सर्प। साँप।
**वायु-भार**—पु०[स०] वायु-मंडल में वायु की ऊपरी तहों का नीचेवाली तहों पर पड़ने .ला वह भार जिसके कारण नीचे की वायु घनी और भारी होती है। (एटमास्फेरिक प्रेशर)
विशेष—हमारे धरातल पर प्रति वर्ग इंच प्राय: १४॥ पौंड भार रहता है।
**वायु-भार-मापक**—पु०[सं०] वह यंत्र जिससे किसी स्थान या वातावरण के घटने या बढ़नेवाले ताप-क्रम का पता चलता है। (बैरोमीटर)
**वायु-मंडल**—पुं०[स०] १. वह गोलाकार वाष्पीय आवरण जो हमारी पृथ्वी को चारों ओर से घेरे हुए है। (एटमॉस्फियर) २. दे० 'वातावरण'।
**वायुमंडल विज्ञान**—पु०[सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि इस पृथ्वी के वायु-मंडल की क्या-क्या विशेषताएँ हैं, उसमे कैसे-कैसे वाष्प हैं, और ऊपर की ओर उसका विस्तार कहाँ तक और कैसा है। (एयरलॉजी)
**वायु-मत्त**—स्त्री०[स०] लक्षितविस्तर के अनुसार एक प्राचीन लिपि।
**वायुमापी**—पुं०[स०] वह यंत्र जो वायु मिनि के द्वारा वायु की शुद्धि और उसमे होनेवाले आविसजन का मान या माप बतलाता है। (यूडिओमीटर)
**वायु-मार्ग**—पु०[स०] आकाश या वायु मे के वे निश्चित मार्ग जिनसे होकर हवाई जहाज आदि एक देश से या स्थान से दूसरे देश या स्थान को जाते हैं। (एयर रूट)
**वायु-मिति**—स्त्री०[स०] वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि वायु में कितनी शुद्धता है। (यूडिओमेट्री)
**वायु-यान**—पु०[मध्य स०] हवा मे उड़नेवाला मनुष्य निर्मित यान। हवाई जहाज।
**वायु-लोक**—पु०[स०] १ पुराणानुसार एक लोक। २. आकाश।
**वायु-वलन**—पुं० दे० 'वातानुकूलन'।
**वायु-वाहन**—पु०[स० त०] १ विष्णु। २ शिव। ३. धूआँ।
**वायु-संचलन**—पु०[स० ब० स०] [वि० वायु-संचलित]दे० 'वातानुकूलन'।
**वायु-संचलित**—भू० कृ० [स०] दे० 'वातानुकूलित'।
**वायु-सख**—पु०[सं०] अग्नि। आग।
**वायु-सेना**—स्त्री०[स०] सेना का वह विभाग जो वायुयानों से शत्रु-पक्ष पर गोले आदि फेंकता है।
**वायु-सेवन**—पु०[सं०] स्वास्थ्य रक्षा के लिए खुली हवा मे घूमना-फिरना, उठना-बैठना या रहना।
**वायु-सेवा**—स्त्री०[फा०] वायुयानो के द्वारा की जानेवाली कोई सार्वजनिक सेवा। जैसे—वायुयान द्वारा यात्री या डाक लाने ले जाने का काम।
**वायु-स्नान**—पुं०[सं०] स्वास्थ्य ठीक रखने के लिए नगे बदन होकर खुली हवा में कुछ देर तक इस प्रकार रहना कि शरीर के सब अंगों मे अच्छी तरह हवा लगे। (एयर-बाथ)
**वारंक**—पुं०[सं०√वृ+अकन्] पक्षी।
**वारंग**—पुं०[स०√वृ+अंगच्] १. तलवार की मूठ। २. प्राचीन वैद्यक में एक प्रकार का अस्त्र।
**वारंट**—पुं०[अं०] १. आज्ञा-पत्र। २. विधिक क्षेत्र मे न्यायालय का ऐसा आज्ञापत्र जिसके अनुसार किसी राजकीय कर्मचारी को कोई ऐसा काम करने का आदेश होता है जो साधारण स्थिति में वह न कर सकता हो। जैसे—गिरिफ्तारी या तलाशी का वारंट। ३. लोक-व्यवहार मे किसी की गिरफ्तारी के लिए निकलनेवाला आज्ञा-पत्र।
**वार**—पुं०[सं०√वृ+घञ्] १ द्वार। दरवाजा। २ अवरोध। रुकावट। ३. आवरण। ढकन। ४. नियत काल या समय। ५ किसी काम या बात की पुनरावृत्ति का आनेवाला अवसर। दफा। बारी। (दे० 'बार') ६. सप्ताह के दिनों के नामों के अंत मे लगनेवाला कालाधिक सूचक शब्द। जैसे—रविवार, सोमवार आदि। ७ क्षण। ८ कुज नामक वृक्ष। ९ शराब पीने का प्याला। १० तीर। बाण। ११. जलाशय का किनारा। कूल। तट। १२. विशेष रूप से जलाशय का वह किनारा जो वक्ता की ओर हो। उदा०—पार कहे उत वार है और कहे उतपार। इसी किनारे बैठ रह, वार यहि पार।
**पद—वार-पार, वारापार।** (देखें स्वतंत्र शब्द)
†अव्य० और। तरफ।
पुं०[सं० वार=दौव, बारी] आक्रमण आदि के समय किया जानेवाला आघात। प्रहार। जैसे—तलवार या लाठी से वार करना।
**मुहा०—वार खाली जाना**=(क) प्रहार, निशाने आदि में चूक होना। (ख) युक्ति निष्फल होना।
प्रत्य० [फा०] कम से। क्रमात्। जैसे—तफसीलवार, नामवार, ब्यौरेवार।
†प्रत्य०=वाला। जैसे—करनवार।
**वारक**—वि०[स०√वृ (रोकना) + णिच+ण्वुल्—अक] १ वारण अर्थात् निषेध करनेवाला। मना करनेवाला। २ रुकावट डालनेवाला। प्रतिबन्धक।
पु० १. घोड़ा। २ घोड़े का कदम। ३ ऐसा समय या स्थान जहाँ कोई कष्ट या पीडा हो। ४. बाधा का अवसर या स्थान। ५. एक प्रकार का सुगंधित तृण।
**वार-कन्या**—स्त्री०[स०] वेश्या। रंडी।
**वारकी**—पु०[स० वारक+इनि] १ प्रतिवादी। २. शत्रु। ३ समुद्र। ४. ऐसा तपस्वी जो केवल पत्ते खाकर रहता हो। पर्णाशी। यती।
**वारकीर**—पुं०[सं० स० त०] १. किसी की पत्नी का भाई। साला। २. द्वारपाल। ३. बाडवाग्नि। बड़वानल। ४. जूं नाम का कीड़ा। ५. कंघी। ६. लड़ाई मे सवार के काम आनेवाला घोड़ा।
**वारगहा**—पु०[स० वारि+गृह, मि० फा० बारगाह] १ तंबू। खेमा। २. दे० 'बारगाह'।
*पुं०[सं० वारण+गृह] हाथियों के बाँधने का स्थान। उदा०—बंधन दधि कि वारगह।—प्रिथीराज।
**वारज**—पुं०[सं०] [भू० कृ० वारित] १. अनिष्ट या अनुचित कार्य आदि के सम्बन्ध में होनेवाली निषेधात्मक आज्ञा, आदेश या सूचना। निषेध। मनाही। २. अनिष्ट आदि को दूर रखने या उनसे बचने के

लिए किया जानेवाला उपाय या कार्य। ३. आपत्तिजनक या दूषित प्रकाशनों आदि का प्रचार रोकने के लिए राज्य या शासन की ओर से होनेवाली निषेधात्मक आज्ञा या व्यवस्था। (स्क्रेशन) ४ बाधा। रुकावट। ५ शरीर को अस्त्रों आदि के आघात से बचानेवा। कवच। बकतर। ६ हाथी को वश मे रखनेवाला अंकुश। ७. सम्भवतः इसी आधार पर हाथी की संज्ञा। ८. छप्पय छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में कुछ आचार्यों के मत से ४१ गुरु और ७० लघु तथा कुछ आचार्यों के मत से ४१ गुरु और ६६ लघु मात्रा होती हैं। ९ हरताल। १०. काला शीशम। ११. सफेद कोरैया।

**वारणावत**—पु०[स०] एक प्राचीन नगर जिसमे दुर्योधन ने पांडवों के लिए लाक्षागृह बनवाया था।

**वारणिय**—वि०[सं०] १. वारण-संबंधी। २. (उपाय या कार्य) जो अनिष्ट, क्षति, हानि आदि से बचने अथवा अपने हित-साधन के विचार से पहले किया जाय। (प्रिकाशनरी)

**वारणीय**—वि०[स०√वृ (रोकना)+णिच+अनीयर्] वारण करने योग्य। मनाही के लायक।

**वार-तिय**—स्त्री० [स० वार+स्त्री] वेश्या।

**वारद**†—पु०=वारिद (बादल)।

**वारदात**—स्त्री०[अ० 'वारिद' का बहु० शुद्ध रूप वारिदात] १ घटना। २ बुरी घटना। दुर्घटना। ३ चोरी, डकैती, मार-पीट, दंगा-फसाद आदि की आपराधिक घटना। ४ किसी प्रकार की घटना का विवरण। (मूलतः बहुवचन; पर उर्दू और हिन्दी मे एक-वचन रूप मे प्रयुक्त)

**वारन**†—पु०[स० वदनमाल] बदनवार।

पु०[स० वारण] हाथी।

स्त्री०[हि० वारना] वारने की क्रिया या भाव। निछावर। बलि।

†पु०[स० वारण] परदा। उदा०—निरबोर वारन बिसारं पुनि द्वार हू कौ।—सेनापति।

**वारना**—स०[स० वारण=दूर करना] टोने-टोटके के रूप मे कोई चीज किसी के सिर के चारो ओर मे घुमाकर निछावर करना।

**मुहा०—वारी जाऊँ**—निछावर हो जाऊँ। (स्त्रियाँ)

पु० निछावर।

**मुहा०—(किसी पर) वारने जाना**—निछावर होना।

**वारनिश**—स्त्री० [अ०] १. स्पिरिट, चपड़े, रूमी मस्तगी आदि के योग से बननेवाला एक प्रकार का चाल जो लकड़ी के सामान पर चमक लाने के लिए लगाया जाता है।

**वार-पार**—पु०[स० अवर-पार] १ इस पार के और उस पार के दोनों किनारे या सिरे। जैसे—बाढ़ का पानी चारो ओर इतनी दूर तक फैल गया था, कि कहीं उसका वार-पार नही दिखाई देता था। २ पूरा या समूचा विस्तार।

अव्य० इस किनारे, छोर या सिरे से उस किनारे छोर, या सिरे तक। आर-पार। जैसे—तीर हिरन के वार-पार कर गया।

**वार-फेरा**†—पु०=वारा-फेरा।

**वार-बाण**—पु०[स०] कंचुक की तरह का, पर उससे कुछ छोटा एक पुराना पहनावा जो युद्ध के समय पहना जाता था।

**वारयितव्य**—वि०[स०√वृ (रोकना)+णिच्+तव्यत्]=वारणीय।

**वारयिता (तृ)**—पुं० [सं०√वृ (रोकना)+णिच्+तृच्] १. रक्षक। २. पति।

वि० वरण करनेवाला।

**वार-वधू**—स्त्री० [सं०] वेश्या। रंडी।

**वारवाणि**—पुं०[स०] १. बंशी बजानेवाला। २ अच्छा गवैया। ३. न्यायाधीश। ४. ज्योतिषी।

**वारवाणी**—स्त्री०[स०] वेश्या।

**वारवास, वारवास्य**—पु० [सं०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद जो भारत की पश्चिमी सीमा के उस पार था।

**वारस्त्री**—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वेश्या। रंडी।

**वारांगना**—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वेश्या। रंडी।

**वारांनिधि**—पु०[स० ष० त०] समुद्र।

**वारा**—वि०[स० वारण] १ (पदार्थ) जिसके खरीदने या बेचने मे कुछ आर्थिक बचत भी हो। २. (दर या भाव) जिस पर बेचने से लागत व्यय निकल आने के सिवा कुछ आर्थिक बचत भी हो।

पु० १. वह स्थिति जिसमे किसी निश्चित दर पर कोई चीज खरीदने या बेचने मे लागत, व्यय आदि निकालने के साथ साथ कुछ बचत भी होती हो। २ फायदा। लाभ। उदा०—उनके बारे की कुछ मार्फ कही न जाइ।—रसनिधि।

पु०[हि० वारना] चीज वारने या निछावर करने की क्रिया या भाव।

**पद—वारा-फेरा।**

**मुहा०—वारा जाना या वारा होना**—किसी पर निछावर जाना या बलि होना। (बहुत अधिक प्रेम का सूचक) **वारी जाना**=वारा जाना। (स्त्रियाँ)

**वाराणसी**—स्त्री०[स०] वरुणा और अस्सी नदियों के बीच मे बसी हुई तथा गंगा तट पर स्थित काशी नगरी। बनारस।

**वाराणसेय**—वि०[स० वाराणसी+ढक्—एय] १ वाराणसी-संबंधी। २ वाराणसी मे उत्पन्न या बना हुआ। बनारसी।

**वारा-न्यारा**—पु०[हि० वार+न्यारा] १. झंझट या झगड़े-बखेड़े आदि का निपटारा। २. ऐसी स्थिति जिसमे किसी एक ओर का पूरा निर्णय या निश्चय हो जाय, या तो इधर हो जाय या उधर हो जाय। जैसे—सट्टे मे रोज लाखों रुपयों का वारा-न्यारा होता रहता है।

**वारा-पार**—पु०[स० वार+पार] १. यह पार और वह पार। २. अन्तिम या चरम सीमा। जैसे—ईश्वर की महिमा का कोई वारा-पार नही है।

**वारा-फेरा**†—पु०[हि० वारना+फेरना] १. किसी के ऊपर से कोई चीज या कुछ द्रव्य निछावर करने की क्रिया या भाव। २ विवाह, मुंडन आदि शुभ अवसरों पर होनेवाली उक्त रस्म। ३. वह धन या पदार्थ जो उक्त प्रकार से निछावर किया जाय।

**वाराह**—पु०[सं०] [स्त्री० वाराही] १ सूअर। बराह। २ विष्णु का तीसरा अवतार जो शूकर या सूअर के रूप मे हुआ था। काली मैनी का वृक्ष। ३. जलाशय के किनारे होनेवाला बेत।

**वाराहपदी**—स्त्री०[स० ब० स०] अश्वगंधा। असगंध।

**वाराही**—स्त्री० [सं० वराह+ऊप्] १. ब्रह्माणी आदि आठ मातृकाओं

में से एक मातृका। २ एक योगिनी। ३. श्यामा पक्षी। ४. कँगनी नामक कदन्न। ५. वाराही कंद।

**वाराही कंद**—पु० [सं० मध्य०स०] एक प्रकार का महाकंद जो औषध में काम आता है। गृष्टि।

**वारि**—पु०[स०√वृ (रोकना)+णिच्-इञ्, अथवा वृ+इण्] १. जल। पानी। २. कोई तरल या द्रव पदार्थ। ३ वाणी। सरस्वती। ४. हाथी बाँधने का सिकड़। ५. छोटा गगरा या घड़ा। ६ सुगन्ध बाला।

**वारिकक**—पु०[प० त०] समुद्र।

**वारि-केय**—पु०[वारिका+ढक्—एय] दे० 'जल-लेखी'।

**वारि-कील**—पु०[स०] कच्छप। कछुआ।

**वारि-गर्भ**—पु० [ब० स०] बादल। मेघ।

**वारि-चर**—वि०[स०] पानी में रहने और चलने फिरनेवाला। जलचर।
पु० १ मछली आदि जीव-जन्तु जो पानी में रहते है। २ शंख।

**वारिज**—वि०[सं०] जल में या जल से उत्पन्न होनेवाला।
पु० १ कमल। २ मछली। ३ शंख। ४. घोंघा। ५ कौड़ी। ६ खरा और बढ़िया नमक। ७ द्रोणी लवण।

**वारिजात**—वि०,पु० [स०]=वारिज।

**वारित**—भू० कृ०[स०] जिसका वारण किया गया या हुआ हो। मना किया हुआ।

**वारित्र**—पु०[स० वारि√त्रा (रक्षा करना)+ड] अविहित या निन्दनीय आचरण।

**वारिद**—पु०[स०] १ बादल। मेघ। २ नागर मोथा।
वि०[अ०] जो आकर उपस्थित या घटित हुआ हो। सामने आया हुआ। आगत।
**विशेष**—वारिदात इसी का बहुवचन है जो हिन्दी में 'वारदात' (देखें) के रूप में प्रचलित है।

**वारिदात**—स्त्री०[अ०]=वारदात।

**वारिधर**—पु० [स०] १ बादल। मेघ। २ नागर मोथा। ३ एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में रगण, नगण, और दो भगण होते हैं।

**वारिधि**—पु०[सं०] समुद्र।

**वारिनाथ**—पु०[सं० ष० त०] १. वरुण। २. समुद्र। ३. बादल। मेघ।

**वारिनिधि**—पु०[सं०] समुद्र।

**वारिपर्णी**—स्त्री० [स० ब० स०, ङीप्] १. जल-कुमी। २. पानी में होनेवाली घास।

**वारिपंख**—पु०[स०] फुहारा।

**वारियाँ**—अव्य० [हिं० वारना] मैं तुम पर निछावर हूँ। (स्त्रियाँ)
**मुहा०—वारियाँ जाऊँ**=दे० 'वारना' के अन्तर्गत मुहा०—'वारी जाऊँ'।
**वारियाँ लेना**=बार-बार निछावर होना। (विशेष दे० 'वारना' और 'वारा' के अन्तर्गत)

**वारि-रथ**—पुं० [स० ष० त०] जहाज या यान।

**वारि-रुह**—पु०[वारि√रुह् (उत्पन्न होना)+क] कमल।

**वारि-वर्त्त**—पुं० [सं० वारि+आवर्त्त] मेघ। बादल।

**वारि-वाह**—पुं०[सं०] मद्य के निर्माता या व्यापारी।

**वारि-वाह**—पु०[स०] १ मेघ। बादल। २. नागर मोथा।

**वारि-वाहन**—पु०[ष० त०] मेघ। बादल।

**वारि-शास्त्र**—पु०[स०] १. फलित ज्योतिष का वह अंग जिससे यह जाना जाता है कि अब, कहाँ और कितनी वर्षा होगी। २ दे० 'वारिकेय'।

**वारिस**—पु०[अ०] १ वह जिसे किसी की विरासत मिले। २. उत्तराधिकारी। ३. व्यापक क्षेत्र में, जिसने अपने आपको किसी दूसरे के कार्यों आदि का संचालन करने के योग्य बना लिया हो।

**वारीश**—पु०[स० ष० त०] समुद्र।

**वारी**—स्त्री० [सं० वारि+ङीष्] १. हाथी के बाँधने की जंजीर या अँड़ुआ। गजबंधन। २ छोटा घड़ा। कलसा।
वि० स्त्री० दे० 'वारा' के अन्तर्गत 'वारी जाना' आदि मुहा०।

**वारी-फेरी**—स्त्री०=वारा-फेरा।

**वारीश**—पु०[स० ष० त०] समुद्र।

**वार्धक**—पु०[सं० √वृध्+ण्वुल्] १. सौरों का गोला। २. नाव में भरा हुआ पानी बाहर फेंकने का तसला। ३ धान को मैंड़ा। सूँट। ४ आँख में से निकलनेवाला कीचड़ आदि।

**वार्ष**—पु०[स०√वृ (मना करना)+णिच्+उण्] वह हाथी जिस पर विजय पताका चलता है। विजय-हस्ति।

**वार्षट**—पु० [सं० वार+डट्] १ मृत्यु-शय्या। २ द्रव ले जाने की अरथी। टिकठी।

**वार्षण**—पु०[स० वर्षण+अण्] १ जल। पानी। २. शतभिषा नक्षत्र। ३ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ४ हरताल। ५ एक उप-पुराण। ६. वरुण या वरुना नामक वृक्ष।
वि०१ वर्षण-संबंधी। २. जलीय। ३ पश्चिमी।

**वार्षणक**—पु०[सं० वार्षण+कन्] एक प्राचीन जनपद।

**वार्षण-कर्म**—पु०[स० कर्म० स०] कूआँ, तालाब, नहर आदि बनाने का काम।

**वार्षणि**—पु०[स० वर्षण+इञ्] १ अगस्त्य मुनि। २ वसिष्ठ। ३ भृगु ऋषि। ४. दाँतवाला हाथी। ५ वारुण या बरुना नामक पेड़। ६ वार्षणक जनपद।

**वार्षणी**—स्त्री०[स० वर्षण+अण्+ङीप्] १ वरुण की पत्नी, वरुणानी। २ वृन्दावन के एक कदंब का रस जो वरुण की कृपा से बलराम जी के लिए निकला था। ३. कदंब के फलों से बनाई जानेवाली मदिरा। ४. मदिरा। शराब। ५. उपनिषद् विद्या जिसका उपदेश वरुण ने किया था। ६ पश्चिम दिशा। ७ शतभिषा नक्षत्र। ८ एक प्राचीन नदी (कदाचित् आधुनिक वरुणा)। ९. इन्द्रवारुणी लता। १० घोड़े की एक प्रकार की चाल। ११ मादा हाथी। हथनी। १२ भुई आँवला। १३. गाँडर दूब। १४. गंगास्नान का एक पुण्य पर्व या योग जो चैत्र कृष्ण त्रयोदशी को शतभिषा नक्षत्र पड़ने पर होता है।

**वार्षणी वल्लभा**—पु०[ष० त०] समुद्र।

**वार्षणीश**—पुं०[सं० ष० त०] विष्णु।

**वार्षण्य**—वि० [सं० वर्षण+ष्य, अथवा वार्षणी+यत्] वरुण-सम्बन्धी। वारुण।

**वार्षद**—पुं०[सं० वार्ष√दा (देना)+क] अग्नि। आग।

**वार्कजंभ**—पुं० [सं० वृकजंभ+अण्] १ वृकजंभ ऋषि के गोत्रज। २ एक नाग का नाम।

**वार्क्ष**—वि० [स० वृक्ष+अण्] वृक्ष-संबंधी। वृक्ष का।
पुं० वृक्षों की छाल से बना हुआ कपड़ा।

**वार्क्षी**—स्त्री० [स० वार्क्ष+ङीप्] प्रजागण की स्त्री मारिषा का दूसरा नाम।

**वार्ड**—पुं० [अं०] १ रक्षा। हिफाजत। २ वह व्यक्ति जो किसी की रक्षा या हिफाजत में रहता हो। ३. किसी विशिष्ट कार्य के लिए स्थानों का निश्चित किया हुआ विभाग। मंडल। जैसे—(क) इस नगर पालिका में १२ वार्ड है। (ख) इस अस्पताल में यहमा के रोगियों के लिए अलग वार्ड बनेगा।

**वार्डन**—पुं० [अं०] किसी विभाग विशेषत छात्रावास के किसी विभाग का व्यवस्थापक अधिकारी।

**वार्डर**—पुं० [अं०] १. वह जो किसी वार्ड (मंडल) में रक्षा का काम करता हो। २. जेलों में कैदियों का पहरेदार।

**वार्णक**—पुं० [स० वर्णक+अण्] लेखक।

**वार्णव**—पुं० [स० [वर्ण् नद से वर्णु+अण्] आधुनिक बम्बई नगर और उसके आसपास के प्रदेश का पुराना नाम।

**वार्णिक**—पुं० [स० वर्ण+ठञ्—इक] लेखक।

**वार्त**—वि०, पु०=वार्त्त।

**वार्तक**—पुं० [स० वार्त+कन्] बटेर पक्षी।

**वार्तमानिक**—वि० [स० वर्तमान+ठक्—इक] १. वर्तमान (काल) से सम्बन्ध रखनेवाला। आज-कल का। २. जो वर्तमान (उपस्थित या विद्यमान) से सम्बन्ध रखता हो।

**वार्त्त**—वि० [वृत्ति+अण्] १ वृत्ति-सम्बन्धी। वृत्ति का। २. नीरोग। स्वस्थ। ३ हल्का। ४ निस्सार। ५ साधारण। ६ ठीक।
पुं० वह जो किसी वृत्ति (काम, धन्धे या पेशे) में लगा हो। वह जो रोजी-रोजगार में लगा हुआ हो।

**वार्त्ता**—स्त्री० [स०] १. बात-चीत। २ ऐसा कथन या बात जो केवल औपचारिक रूप से कही गई हो, पर जिसका व्यावहारिक रूप में सदा उपयोग न होता हो। (फारमल टाक)। ३ ऐसा कथन जो किसी को किसी विषय का ज्ञान कराने के लिए हो। (टाक) ४ किंवदन्ती। जनश्रुति। अफवाह। ५ खबर। समाचार। ६ वृत्तान्त। हाल। ७ बात-चीत का प्रसंग या विषय। ८ वैश्यों की वृत्ति। जैसे—कृषि गो-रक्षा, वाणिज्य-व्यापार आदि। ९. चीजें खरीदना और बेचना। क्रय-विक्रय। १०. दुर्ग का एक नाम।

**वार्त्ताक**—पुं० [स०] १ बैंगन। भटा। २ बटेर पक्षी।

**वार्त्ताकी**—स्त्री० [स० वार्ताक+ङीप्] बैंगन। भटा।

**वार्त्तानुकर्षक**—पुं० [सं० ष० त०] गुप्त बातें ढूँढ कर जानने या निकालने वाला, अर्थात् गुप्तचर। जासूस।

**वार्त्तानुजीवी (विन्)**—वि० [स० ष० त०] कृषि या व्यापार से जीविका चलानेवाला।

**वार्त्तायन**—पुं० [स० ब० स०] देव 'राजपत्र'।

**वार्त्तालाप**—पुं० [स० ष० त०] लोगों के आपस में होनेवाली बात-चीत। कथोपकथन।

**वार्त्तावह**—पुं० [सं० वार्त्ता√वह् (ढोना)+अच्] १. पनसारी। २. दूत। ३. राजकीय शासन का आय-व्यय आदि से सम्बन्ध रखनेवाला अंग या विभाग।

**वार्त्तिक**—वि० [वृत्ति+ठक्—इक] १ वार्त्ता संबंधी। २ वार्त्ता या समाचार लानेवाला। ३ विशद् व्याख्या के रूप में होनेवाला। व्याख्यात्मक।
पुं० १ किसान। २. व्यवसायी। ३ दूत। चर। ४ वैद्य। ५. ऐसी विश्लेषणात्मक व्याख्या जिसमें किसी सूत्र, भाष्य आदि का अर्थ समझाया जाता है, उसमें होनेवाली छूट, त्रुटि आदि का निर्देश किया जाता है तथा उसकी व्याप्ति मर्यादित या वर्द्धित की जाती है। ६. काव्यायन का वह प्रसिद्ध ग्रंथ जिसमें पाणिनि के सूत्रों पर विश्लेषणात्मक व्याख्याएँ लिखी हुई हैं।

**वार्दर**—पुं० [वार √दृ (फाड़ना)+अप्] १. दक्षिणावर्त्त शंख। २. जल। ३. आम की गुठली। ४. रेशम। ५. घोड़े के गले पर दाहिनी ओर की एक भौरी।

**वार्द्धक्य**—पुं० [स० वृद्ध+ष्यञ्, कुक्] १ वृद्ध होने की अवस्था या भाव। वृद्धावस्था। २ वृद्धावस्था के फलस्वरूप होनेवाली कमजोरी। ३ वृद्धि।

**वार्धाणस**—पुं० [स० वार्द्धी नासिका+अच्, नस-आदेश, णत्व, ब०स०] १ लंबे कानोंवाला बकरा। २ गैंडा। ३ एक प्रकार का पक्षी जिसका बलिदान प्राचीन काल में विष्णु के उद्देश्य से किया जाता था।

**वार्धुंच**—पुं० [स० वार्+√मुच् (त्याग)+क्विप्] १ बादल। २ मोथा।

**वार्य**—वि० [सं०] १. वरण करने योग्य। २ वर के रूप में प्राप्त या स्वीकार करने योग्य। ३ बहुमूल्य।
वि०=निवार्य।
पुं० १. वर। २ चहारदीवारी।

**वार्ष**—वि० [स०]=वार्षिक।

**वार्षक**—पुं० [स० वर्ष+अण्+कन्] पुराणानुसार पृथ्वी के दस भागों में से एक।

**वार्षगण**—पुं० [स० ष० त०] एक प्रकार का वैदिक आचार्य।

**वार्षिक**—वि० [स० वर्षा+ठक्—इक] १ जल की वर्षा या वर्षा ऋतु से संबंध रखनेवाला। २. प्रति वर्ष होनेवाला। एक वर्ष के बाद होनेवाला। ३ एक वर्ष तक चलता रहनेवाला।
अव्य० प्रति वर्ष के हिसाब से।

**वार्षिकी**—स्त्री० [स०=वार्षिक] १ प्रति वर्ष दी जानेवाली वृत्ति या अनुदान। (एनुइटी) २. प्रतिवर्ष होनेवाला कोई प्रकाशन। (एनुअल) ३. किसी मृत व्यक्ति के उद्देश्य से, उसकी मरणतिथि के विचार से प्रतिवर्ष होनेवाला कोई स्मारक कृत्य। बरसी।

**वार्षिक्य**—वि० [स० वार्षिक+यत्]=वार्षिक।
पुं० वर्षा ऋतु।

**वार्ष्ण**—पुं० [स० वृष्णि+अण्] कृष्णचन्द्र।

**वार्षी**—स्त्री० [सं० वर्षा+अण्+ङीप्] वर्षा ऋतु।

**वार्षुक**—वि० [सं० वर्षुक+अण्] १. बरसनेवाला। २. बरसातेवाला।

**वार्ष्ण्य**—वि० [सं० वृष्णि+ढक्—एय] १ वार्ष्ण्य-संबन्धी। २. वार्ष्ण्य का अनुयायी या भक्त।

पुं०१. वृष्णि का वंशज। २. श्रीकृष्ण।

**बार्हस्पत्य**—वि०[सं० बृहस्पति+यञ्]=बार्हस्पत्य।

**बालंटियर**—पु०[अं०] स्वयं सेवक।

**बाल**—पु०[√वल् (चलना)+घञ्] (घोड़ों आदि की) पूंछ के बाल।
प्रत्य०[हिं० वाला] एक प्रत्यय जो कुछ संज्ञाओं के अन्त में लगकर यह अर्थ देता है—(क) वाला या मालिक जैसे; कोठीवाल। (ख) रहने वाला; जैसे—गयावाल। (ग) क्रिया करनेवाला; जैसे—देवाल =देनेवाला, लेवाल=लेनेवाला।

**बालक**—पुं०[सं० बाल+कन्]१. बालछड़। २. हाथ में पहनने का कंगन।

**बालदैन**—पुं०[अ० वालिदैन]माता-पिता।

**बालना**†—स० [?] गिराना। डालना। (राज०) उदा०—काजल गल वालियौ फिरि।—प्रिथीराज।

**बालव**—पु०[सं० बाल√वा (गमनादि)+क] फलित ज्योतिष में एक करण।

**बाला**—स्त्री०[सं० बाल+टाप्] इलायची और उपेन्द्रवज्रा के मेल से बने हुए उपजाति नामक सोलह प्रकार के वृत्तों में से एक, जिसके पहले तीन चरणों में दो तगण, एक जगण और दो गुरु होते हैं, तथा चौथे चरण में और सब वही रहता है, केवल प्रथम वर्ण लघु होता है।
प्रत्य०[सं० वान्] [स्त्री० वाली] १ पूर्ववर्ती पद (संज्ञा) के स्वामी या धारक का बोधक। जैसे—चरखावाला, रथवाला। २ पूर्ववर्ती पद (क्रिया) के संपादक का बोधक। जैसे—नाचनेवाला, मारनेवाला। ३. पूर्ववर्ती पद (स्थान वाचक संज्ञा) से संबंध रखनेवाला। जैसे—शहरवाला, देहातवाली जमीन। †४. पूर्ववर्ती पद (उपभोग्य वस्तु) के उपभोग से संबन्ध रखनेवाला। (पश्चिम) जैसे—खानेवाली मिठाई=खाने की मिठाई।
वि०[फा०] उच्च। ऊँचा।

**बालिका**—स्त्री०[सं० बाल+कन्+टाप्, इत्व]१ -बालिका। २.= बालुका।

**बालिद**—पु०[अ०] [स्त्री० वालिदा, भाव० वल्दियत]पिता। बाप।

**बालिदा**—स्त्री०[अ० वालिद] माता। माँ।

**बालिदैन**—पु०[अ०] माँ-बाप। माता-पिता।

**बाली (लिन्)**—पु०[सं० वालिहता (तृ), वालि√हन् (मारना)+तुच्, ष० त०] सुग्रीव का बड़ा भाई एक वानर।
प्रत्य० हिं० 'वाला' का स्त्री०।
पु० [अ०] १ मालिक। स्वामी। २. बादशाह। ३ सहायक। मददगार। ४. सरकार।

**बालुक**—स्त्री० [सं० बालु+कन्] १. एक प्रकार का गंध द्रव्य। २. पनियालू।

**बालुका**—स्त्री०[सं०] १. वृक्ष की शाखा। डाल। २ ककड़ी। ३. बालुका। बालू।

**बालेय**—पुं०[सं० बालि+ढञ्—एय]१ पुत्र। बेटा। २. एक प्रकार का करंज। ३. गधा।

**बाल्क**—वि०[सं० वल्क+अण्] वल्कल या छाल-संबंधी।
पुं० वृक्षों की छाल या उसके रेशों से बना हुआ कपड़ा।



**बाल्कल**—वि० [सं० वल्कल+अण्] वल्कल-सम्बन्धी। छाल का।

**बाल्मीकि**—पु०[सं० वल्मीक+इञ्] संस्कृत भाषा के आदि कवि तथा रामायण के रचयिता।

**बाल्मीकीय**—वि० [सं० बाल्मीकि+छ—ईय] १. बाल्मीकि-सम्बन्धी। बाल्मीकि का। २. बाल्मीकि-कृत।

**बाल्हा**†—पुं०=बल्लभ। (राज०)

**बाय***—स्त्री०[सं० वायु]१. हवा। २. गंध। महक। (राज०) जैसे —बचबाव (बाघ के शरीर से निकलनेवाली गंध)।

**बावदूक**—पुं०[सं०√वद् (बोलना)+यङ, दीर्घ, ऊक्] १ अच्छा बोलनेवाला। वक्ता। वाग्मी। २. बकवादी।

**बाबना**†—अ०[सं० वाद्य] बजना। उदा०—विधि सहित बधावे वाजिब बावे।—प्रिथीराज।
स०=बजाना।

**बायु**†—स्त्री०=वायु। (राज०)

**बायेला**—पु०[अ०] १ रोना-पीटना। विलाप। २ शोर-गुल। हो-हल्ला।
क्रि० प्र०—मचाना।

**बायक**—वि०[सं० वा√शा (पतला करना)+ण्वुल्—अक]१ चिल्लानेवाला। २. रोनेवाला।
पु०=वासक (अड़ूसा)।

**बायन**—पु० [सं० वा√शा (छीलना)+ल्युट—अन]१ पक्षियों का बोलना। २. मक्खियों का भिनभिनाना। ३ चिल्लाना।

**बायित**—पु०[सं० √वाश् (शब्द करना)+क्त, इत्व] पशु, पक्षी आदि का शब्द।

**बायिता**—स्त्री०[सं० बायित+टाप्]१. स्त्री। २ हथनी।

**बायिष्ठ**—पु०[बायिष्ठ+अण्] १ एक उपपुराण का नाम। २ एक प्राचीन तीर्थ।
वि० बायिष्ठ-सम्बन्धी।

**बायिष्ठी**—स्त्री०[सं० बायिष्ठ+ङीप्] गोमती नदी।

**बाल्कल**—वि०[सं० बल्कल+अण्] बड़ा।
पु० योद्धा।

**बाष्प**—पु०[सं०]१. भाप। २. आँसू। ३ लोहा। ४. भटकटैया।

**बाष्पन**—पु०[सं०] ताप की सहायता से तरल पदार्थ को बाष्प के रूप में परिणत करना। बाष्प बनाना। (वेपोराइजेशन)

**बाष्पशील**—वि०[सं०][भाव० बाष्पशीलता] (पदार्थ) जो कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में बाष्प बनकर उड़ता हुआ समाप्त हो सकता हो। (वोलेटाइल)

**बाष्प-स्नान**—पु०[सं०] कुछ विशिष्ट प्रकार के रोगों की चिकित्सा के लिए ऐसी स्थिति में रहना कि सारे शरीर या पीड़ित अंग पर खौलते हुए पानी की भाप लगे। (एयर बाथ)

**बासंत**—पु०[सं० वासन्त+अण्]१. कोयल। २. मलयानिल। ३. मूँगा। ४. मैनफल। ५. ऊँट।

**बासंतक**—वि०[सं० वासन्त+कन् अथवा वसंत+वुञ्—अक]१. वसंत-सम्बन्धी। २ वसंत ऋतु में होनेवाला।

**बासंतिक**—पु० [सं० वसन्त+ठक्—इक] १. भाँड़। २. नर्तक।
वि० वसंत-सम्बन्धी।

**वासंती**—स्त्री० [वासन्त+ङीप्] १ माधवीलता। २. जूही। ३. दुर्गा। ४. गलियारी। ५ मदनोत्सव। ६. एक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में १४-१४ वर्ण होते है।

**वासंवर**†—स्त्री०[सं० वैश्वानर] आग। अग्नि।

**वास**—पु०[स० वस्+घञ्] १ किसी स्थान पर टिक कर रहना। अवस्थान। निवास। जैसे—कल्पवास, कारावास, स्वर्गवास आदि। २. घर। मकान। ३. अड्डा। वासक। ४. गंध। बू।
पु०[सं० वस्त्र] कपड़ा। वस्त्र। उदा०—धरी निधि नील वास उत्तर सुधारत हौ।—सेनापति।

**वासक**—पु० [सं० वास+ण्वुल्—अक] १. अड्डूसा। २. दिन। दिवस। ३. शालक राग का एक भेद।

**वासक-सज्जा**—स्त्री०[सं० वासक√सज्ज् (तैयार होना)+णिच्+अण्+टाप्] साहित्य मे वह नायिका जो स्वय सज-संवरकर तथा घर-बार सजा-सँवारकर प्रिय की प्रतीक्षा मे बैठी हुई हो।

**वासगृ**†—वि०[स० वासक] बसानेवाला।
†पु०=वासुकि।

**वासगृह**—पु० [स०] वासभवन।

**वासत**—पु०[सं०√ वास् (शक करना)+अतच्] गधा।

**वासतेय**—वि० [स० वसति+ढक्—एय]बस्ती के योग्य। रहने लायक (स्थान)।

**वासन**—पु०[स० वसि+ल्युट्—अन] [वि० वासित] १. निवास करना। बसना। २. सुगंधित करना। बासना। ३. वसन। कपडा। ४ ज्ञान।

**वासना**—स्त्री०[स०√वस् (मिलना)+णिच्+युच्—अन,+टाप्] १. कोई ऐसी आकाक्षा, इच्छा या कामना जो मन मे दबी हुई, बनी या बसी रहती हो।
**विशेष**—शास्त्रो मे कहा है कि यह किसी पूर्व संस्कार के फलस्वरूप मन मे बनी रहती है, और जब तक इसका अन्त नही होता, तब तक मनुष्य को मुक्ति नही प्राप्त हो सकती। न्याय-शास्त्र मे कहा गया है कि यह एक प्रकार का मिथ्या सस्कार है जो शरीर को आत्मा से भिन्न समझने की दशा मे मन में बना रहता है।
२. किसी चीज या बात की ऐसी इच्छा या वासना जिसकी पूर्ति सहज मे न हो सकती हो। ३. ज्ञान। ४. दुर्गा का एक नाम। ५. अर्क की पत्नी का नाम।
स० -बासना। (गन्ध से युक्त करना)।

**वासभवन**—पु०[सं०]१. रहने का घर। २. प्राचीन भारत मे धवल गृह का वह ऊपरी भाग (सौध से भिन्न) जिसमें स्वयं राजा और रानियाँ रहा करती थी। २. अन्त पुर। ३. शयनागार।

**वासर**—पु०[सं०√ वस् (निवास करना)+णिच्+अर] १ दिन। दिवस। २. वह कमरा या घर जिसमे वर-वधू की सोहागरात होती है।

**वासर-कन्यका**—स्त्री०[ष० त०] रात्रि। रात।

**वासरमणि**—पु०[स० ष० त०] सूर्य।

**वासरिक**—वि० [सं०] १. वासर-संबंधी। वासर का। २ प्रतिदिन होनेवाला। दैनिक।

**वासरेश**—पु०[स०] सूर्य।

**वासव**—वि०[सं०] १. वसु-संबंधी। २. इन्द्र-संबंधी। इन्द्र का।
पु० १. इन्द्र। २. धनिष्ठा नक्षत्र।

**वासवि**—पु०[सं०] १. इन्द्र के पुत्र जयत। २. अर्जुन।

**वासवी**—स्त्री० [सं० वासव+ङीप्] १. व्यास की माता सत्यवती। मत्स्यगधा। २ इन्द्राणी। शची।

**वासवेय**—पु०[सं० वासवी+ढक्—एय] वासवी के पुत्र, वेदव्यास।

**वास-स्थान**—पु०[सं०] रहने की जगह। निवास-स्थान। आवास। (एड्रेस)

**वासा**—स्त्री०[स० √ वस्+णिच्+अच्+टाप्] १. बासक। अड्डूसा। २. माधवी लता।
†पु०=बासा।

**वासामात्य**—पु०[स० वास+अमात्य] वह राजकीय अधिकारी जो किसी पराये राज्य मे वहाँ के शासन आदि पर दृष्टि रखने के लिए अमात्य के रूप मे रखा जाता हो। (रेजिडेन्ट)

**वासि**—पु०[स० वस+इञ्] एक प्रकार का छोटा कुल्हाडा या बसूला।

**वासित**—भू० कृ०[सं० वास+क्त,इत्व] १ वास अर्थात् सुगध से युक्त। सुगंधित किया या महकाया हुआ। २ कपडे से ढका हुआ। ३. देर का बना हुआ। बासी।

**वासिता**—स्त्री०[स० वासित+टाप्]१ स्त्री। २. हथनी। ३. आर्या छन्द का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण मे ९ गुरु और ३९ लघु वर्ण होते हैं।

**वासित**—वि०[अ०]१ जिसका वस्ल अर्थात् संयोग हुआ हो। २. जो वसूल अर्थात् प्राप्त हुआ हो।
**पद—वासिल-बाकी**।

**वासिल-बाकी**—पु० [अ०+फा०] ऐसी सभी धनराशियाँ या रकमे जो या तो प्राप्य होने पर प्राप्त या वसूल हो चुकी हो अथवा अभी प्राप्त या वसूल होने को बाकी हो।

**वासिलात**—पु० [अ० वासिल का बहु०] वे धनराशियाँ या रकमे जो वसूल हो चुकी हो।

**वासिष्ठ**—वि०[सं० वासिष्ठ+अण्] वसिष्ठ-सम्बन्धी।
पु० १. वसिष्ठ का वशज। २. लहन। लहू।

**वासिष्ठी**—स्त्री०[स० वसिष्ठ+ङीप्] गोमती नदी।

**वासी (सिन्)**—वि० [सं० वास+इनि] रहनेवाला। बसनेवाला। जैसे—काशीवासी, मथुरावासी।
स्त्री०[सं० वस+इञ्+ङीप्] बढइयों का बसूला।

**वासुंधरेयी**—स्त्री०[सं० वासुन्धरेय+ङीप्] सीता।

**वासु**—पु०[सं०]१ विष्णु। २. आत्मा। ३. परमात्मा। ४. पुनर्वसु नक्षत्र।

**वासुकि**—पु०[सं० वासु√ कै+क+इञ्]१. आठ नाग राजाओ मे से एक जो कश्यप के पुत्र माने जाते हैं तथा जिनका उपयोग समुद्र-मन्थन के समय रस्सी के रूप मे किया गया था। २ एक प्राचीन देवता।

**वासुकेय**—वि०[सं०] वासुकि-सम्बन्धी।
पु०=वासुकि।

**वासुदेव**—पु०[सं०]१. वसुदेव के पुत्र श्रीकृष्णचन्द्र। २. पीपल का पेड़।

**वासुदेवक**—पु० [सं० वासुदेव+कन्] वासुदेव या श्रीकृष्ण के उपासक।

**वासुदेव-धर्म**—पु०[सं०] वि० पु० चौथी, पाँचवीं शती का एक धार्मिक सम्प्रदाय जो वासुदेव या श्रीकृष्ण का उपासक था। यह 'एकांतिक धर्म' का विकसित रूप था।

**वासुभद्र**—पुं०[सं०] वासुदेव। श्रीकृष्णचन्द्र।

**वासुरा**†—पु०=वासर।

**वासुरा**—स्त्री०[सं० वास+उरच्+टाप्]१. स्त्री। २. हथनी। ३. जमीन। भूमि। ४. रात। रात्रि।

**वासू**—स्त्री०[सं० वास+ऊ (बाहु०)] नाटक मे सेविका बननेवाली स्त्री के लिए संबोधन रूप मे प्रयुक्त शब्द।

**वासोखत**—पु०[फा०] १. दिल के बहुत ही जले हुए या दुःखी रहने की अवस्था या भाव। मानसिक सन्ताप। २. उर्दू फारसी मे मुसम्मन (षट्-पदी) के रूप मे लिखा हुआ वह काव्य जिसमे प्रेमिका के उपेक्षापूर्ण दुर्व्यवहारों के कारण परम दुःखी होकर प्रेमी उसे जली-कटी बातें सुनाता और अपने दिल के फफोले फोड़ता है।

**वासोख्ता**—वि०[फा०]१. जला हुआ। २ दिल-जला।

**वास्कट**—स्त्री०[अ० वेस्टकोट] पाश्चात्य ढग की बिना आस्तीन की कुरती या फतुही।

**वास्तव**—वि०[स० वस्तु+अण्] जो वस्तु या तथ्य के रूप मे हो। यथार्थ। सत्य।

पु० परमार्थ अथवा मूलतत्त्व या भूत।

**पद—वास्तव में**=वास्तविकता यह है कि। हकीकत मे।

**वास्तविक**—वि०[स० वस्तु+ठक्—इक] [भाव० वास्तविकता] १. जो वास्तव मे हो। जो अस्तित्व मे हो।

**विशेष**—यथार्थ और वास्तविक मे मुख्य अतर यह है कि यथार्थ मे उचित और न्यायसंगत होने का भाव प्रधान है और उसका अर्थ है —जैसा होना चाहिए, वैसा। परन्तु 'वास्तविक' मुख्यत. इस भाव का सूचक है कि किसी चीज या बात का प्रस्तुत या वर्तमान रूप क्या अथवा कैसा है। काल्पनिक या मिथ्या से भिन्न। (रियल)

२. (वस्तु) जो खरी तथा प्रामाणिक हो।

**वास्तविकता**—स्त्री०[सं०]१. वास्तविक होने की अवस्था या भाव। (रिएलिटी) २. ऐसी स्थिति जो सत्य हो। ३. ऐसी बात जो घटित हुई हो।

**वास्तव्य**—वि०[सं०√ वस्+तव्यत्]१. निवास करने अर्थात् बसने या रहने के योग्य (स्थान)। २. निवास करने या बसनेवाला (व्यक्ति)।

पुं० बसी हुई जगह। बस्ती।

**वास्ता**—पु०[अ० वास्त]१. संबंध। लगाव। सरोकार।

**मुहा०—(किसी का) वास्ता देना**=किसी की शपथ देना। (परिचम) **(किसी से) वास्ता पड़ना**=किसी से लेन-देन या व्यवहार स्थापित होना।

२. मित्रता। ३. अवैध संबंध विशेषतः पर-स्त्री और पर-पुरुष का। ४. जरिया। द्वारा।

**वास्तु**—पुं०[सं०]१. बसने या रहने के लिए अच्छा और उपयुक्त स्थान। २. वह स्थान जिस पर रहने के लिए मकान बनाया जाय। ३. बनाकर तैयार किया हुआ घर या मकान। ४. ईंट, चूने, पत्थर, लकड़ी आदि से बनाकर तैयार की जानेवाली कोई रचना। इमारत। जैसे—कूआँ, तालाब, पुल आदि।

**वास्तुक**—पु०[सं० वास्तु+कन्]१. बथुआ नाम का साग। २. पुनर्नवा। गदहपूरना।

**वास्तु-कर्म (न्)**—पु०[ष० त०] इमारत बनाने का काम।

**वास्तु-कला**—स्त्री०[स०] वास्तु या मकान, महल आदि बनाने की कला जिसके अन्तर्गत चित्रण और तक्षण दोनों आते हैं और जो बिल्कुल आरंभिक तथा सब कलाओं की जननी मानी गई है। (आर्किटेक्चर)

**वास्तु-काष्ठ**—पु०[सं०] इमारत के काम मे आनेवाली लकड़ी, अर्थात् किवाड़, चौखट, धरनें, आदि बनाने के योग्य लकड़ी।

**वास्तुर, वास्तुपति**—पु०=वास्तु-पुरुष।

**वास्तु-पुरुष**—पु०[स०] वास्तु अर्थात् इमारत या बसने योग्य स्थान का अधिष्ठाता देवता।

**वास्तु-पूजा**—स्त्री०=वास्तु शांति।

**वास्तु-बंधन**—पु०[ष० त०] इमारत बनाने का काम।

**वास्तु-याग**—पु०[स०] वह याग जो नये घर मे प्रवेश करने से पहले किया जाता है।

**वास्तु-विद्या**—स्त्री०=वास्तु-कला।

**वास्तु-वृक्ष**—पु०[स०] वह वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारत के काम आती हो।

**वास्तु-शांति**—स्त्री०[सं०] कर्मकांड-संबंधी वे हृत्य जो गृह-प्रवेश से पहले वास्तु या मकान के दोष शांत करने के लिए किए जाते हैं और जिसमे वास्तु-पुरुष का पूजन प्रधान होता है।

**वास्तु-शास्त्र**—पु०[स०] =वास्तु-कला।

**वास्तूक**—पु०[सं० वास्तु+कन्, पृषो० दीर्घ] बथुआ। (साग)

**वास्तूपशम, वास्तूपशमन**—पु०=वस्तु-शांति।

**वास्ते**—अव्य०[अ०]१. निमित्त। लिए। जैसे—मेरे वास्ते किताब लाना। २ सबब। हेतु। जैसे—मैं भी इसी वास्ते वहाँ गया था।

**वास्तेय**—वि० [सं० वस्ति+ढक्—एय] १. वास्तु-संबंधी। २. बसने या रहने के योग्य (स्थान)।

**वास्तोष्पति**—पु०[सं० ष० त०]१. इन्द्र। २. देवता। ३ वास्तुपति।

**वास्त्र**—वि०[सं० वस्त्र+अण्] १. वस्त्र-संबंधी। २. वस्त्र से बना हुआ। ३. ढका हुआ।

पुं० प्राचीन भारत मे वह रथ जो कपड़े से ढका होता था।

**वास्त्य**—वि०[सं० वास+यत्]१. (स्थान) जो बसने के योग्य हो। २. (स्थान) जो छाये जाने के योग्य हो।

**वाह**—वि०[सं०√ वह् (ढोना)+घञ्]१. वहन करनेवाला। २. वहन-वाला। (यौ० के अन्त में)

पु०१. वाहन। सवारी। जैसे—गाड़ी, रथ आदि। २. बोझ खींचने या ढोनेवाला पशु। जैसे—घोड़ा, बैल आदि। ३. वायु। हवा। ४. चार गोणी के बराबर एक पुरानी तौल। ५. बाँह। बाहु।

अव्य०[फा०] १. प्रशंसा-सूचक शब्द। धन्य। जैसे—वाह! यह तुम्हारा ही काम था। २. आश्चर्य, घृणा आदि का सूचक शब्द। जैसे—वाह! यह तुम कैसी बात कहते हो।

पु०[?] एक प्रकार का रात्रिचर जन्तु जिसकी बोली प्रायः बिल्ली की

बोली की तरह की होती है। यह पेड़ों पर भी चढ़ सकता है और पाला भी जाता है।

**वाहक**—वि० [स०√वह् (ढोना)+ण्वुल्—अक] ढो या लादकर ले जानेवाला।
पु०१ कुली। २. सारथी। ३ एक विषैला कीड़ा।

**वाहणी**†—पु०=वाहन। (डिं०)

**वाहन**—पु०[स०√वह् (ढोना)+ल्युट्—अन, वृद्धि निपा०] १ वहन करने अर्थात् ढोने की क्रिया या भाव। २. कोई ऐसा पशु या चालजिस पर लोग सवार होत हो। नवारी। जैसे—घोड़ा, गाड़ी, रथ आदि। ३. उद्योग। प्रयत्न।

**वाहनप**—पु०[स०] वह जो किसी प्रकार के वाहन की देख-रेख करता हो। जैसे—महावत, साईस आदि।

**वाहना**—स्त्री०[स० वाहन+टाप्] सेना।
†स०१.=वाहना। २.=वाहिना।

**वाहनिक**—पु०[स० वाहन+ठक्—इक] वह जो भारवाहक पशुओं के पालन-पोषण, वर्द्धन आदि का काम करता हो।

**वाहनीक**—पु०=वाहनिक।

**वाहनीय**—वि०[स०√वह् (ढोना)+णिच्+अनीयर्] जो वहन किया जा सके।
पुं० भारवाही पशु।

**वाहप**†—पुं०=पाहरु (पहरेदार)।

**वाहला**—स्त्री०[सं० वाह+लच्+टाप्] १ धारा। स्रोत। २ प्रवाह बहाव। ३ वाहन।
†पु०१.=बादल। २.=नाला (पानी का)। (राजा०)

**वाहवना**†—स०=वाहना (वाहना)।

**वाह-वाही**—स्त्री०[फा०] १. कोई अच्छा काम करने पर लोगों का वाह-वाह कहना। साधुवाद। २ समाज मे होनेवाली प्रशसा।
क्रि० प्र०—मिलना।—लूटना।—होना।

**वाहि**—सर्व० [हिं० वा] उसको। उसे।

**वाहिक**—पु०[स० वाह+ठक्—इक] १. गाड़ी, रथ आदि यान। २ उनका नाम का बाजा।

**वाहिकता**—स्त्री०[वाहिक+तल्-टाप्]वाहिक होने की अवस्था या भाव।

**वाहिकत्व**—पु०=वाहिकता।

**वाहिका**—स्त्री०[स०] रक्तवहन करनेवाली शिरा। वाहिनी। (वेसल)

**वाहित**—भू० कृ० [स०√वह् (ढोना)+णिच्+क्त] १. जिसका वहन हुआ हो। ढोया हुआ। २. बहता हुआ। प्रवाहित। ३. चलाया हुआ। चालित। ४. वचित।

**वाहिन**—वि०[अ०] १ एक। २. अकेला। ३ अनुपम।
पु० ईश्वर।

**वाहिनी**—स्त्री०[सं०] १ सेना। फौज। २. प्राचीन भारतीय सेना की एक इकाई जो तीन गुल्मो के योग से बनती थी। ३. आज-कल सेना का वह विशिष्ट विभाग जो किसी एक उच्च सैनिक अधिकारी के अधीन हो। (डिवीजन) ४. शरीर-विज्ञान मे नली के आकार के वे सूक्ष्म आधार जो रक्त के कण एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाते हैं। (वेसल) ५. नदी।

**वाहिनीय**—वि०[स०] शरीर के अन्दर की वाहिनियों से सबध रखनेवाला। (वैस्कयुलर)

**वाहिनीपति**—पु०[स० ष० त०] १ वाहिनी नामक सैनिक विभाग का अधिपति। २ सेनापति।

**वाहियात**—वि०[अ० वाही का फा० बहू०] [भाव० वाहियातपन] १. (वस्तु) जो निरर्थक या व्यर्थ हो। २ (बात) जो बे-सिर-पैर की, अश्लील या बेहूदी हो। ३ (व्यक्ति) जो तुच्छ, दुष्टप्रकृति, निकम्मा या मूर्ख हो।
**विशेष**—यह शब्द मूलत. बहुवचन सज्ञा होने पर उर्दू और हिंदी मे विशेषण रूप मे दोनो वचनो मे समान रूप से प्रयुक्त होता है। जैसे—वाहियात लडका, वाहियात बात।

**वाहियाती**—स्त्री०[फा० वाहयात] १ वाहियातपन। २. कोई वाहियात बात।

**वाही**—वि०[अ०] १ सुस्त। ढीला। २ निकम्मा। निरर्थक। उदा०—अजी बस जाओ भी, कुछ तुम तो बडे वाही हो।—इन्शा०। वाहियात इसी का बहु० रूप है। ३ अश्लील, गदा और भद्दा।
**मुहा०—वाही तबाही बकना** (क) अश्लील, गदी या भद्दी बातें कहना। (ख) बे-सिर-पैर की या व्यर्थ की बातें करना।
४ मूर्ख। लेतरूफ। ५ आवारा। ६. बेहूदा।

**वाही-तबाही**—वि०[अ० वाही+तबाही] १ आवारा। २ बेहूदा। ३. बे-सिर-पैर का। अड-बड।
स्त्री० गन्दी और भद्दी बातें।
क्रि० प्र०—बकना।

**वाहु**—स्त्री०[स०√वाध् (नाश करना)+कु, हादेश]=वाहु।

**वाह्य**—वि०[स०√वह्+ण्यत्] वहन किये जाने के योग्य। जिसका वहन हो सके।
पु० १. यान। सवारी। २. घोड़े, बैल, हाथी आदि पशु जो वहन के काम आते है।
क्रि०, क्रि० वि०=वाह्या।
**विशेष**—उक्त अर्थ में 'वाह्य' के यौ० के लिए दे० 'वाह्या' के यौ०।

**वाह्लिक**—वि०[सं०] वाह्लीक देश का।

**वाह्लीक**—पु०[स०√वह्+क्विप्+कन्] १. एक प्राचीन जनपद जो भारत की उत्तर-पश्चिम सीमा पर था। गांधार के पास का प्रदेश। आधुनिक बल्ख राज्य। २. उक्त देश का निवासी। ३. उक्त देश का घोड़ा। ४. केसर। ५. हींग।

**विगेश**—पु०[स० ष० त०] अग्नि।

**विजामर**—पु०[सं०] आँख का सफेद भाग।

**विंदक**—पु० [सं० विंद+कन्] १. प्राप्त करनेवाला। पानेवाला। २. जाननेवाला। ज्ञाता।

**विंदु**—पुं०[सं० विन्द+उण्] १ पानी या किसी तरल पदार्थ का कण। बूंद। २. छोटा गोलाकार चिह्न। बिंदी। ३. हाथी के मस्तक पर रगों से किये जानेवाले चिह्न। ४. लिखने मे अनुस्वार का चिह्न। ५. शून्य का चिह्न। सिफर। ६. रेखा-गणित में वह स्थान जिसकी स्थिति तो हो, पर जिसके विभाग न हो सकते हों। ७. दाँत से कमनेवाला घाव।

दन्त-क्षत। ८ किसी चीज का बहुत छोटा टुकड़ा। कण। कनी। ९. वेदान्त मे, नाद के फल-स्वरूप होनेवाली क्रिया। देखें 'नाद'। १०. रत्नो का एक दोष या धब्बा जो चार प्रकार का कहा गया है—आवर्त (गोल) वर्त्ति (लम्बा) अरक्त (लाल) यव (जौ के आकार का)। वि० १. ज्ञाता (वेत्ता)। जानकार। २. दाता। दानी। ३. जिसका ज्ञान प्राप्त करना उचित हो। जानने योग्य।

**बिंदुक**—पु०[स०] माथे पर लगाया जानेवाला टीका या बिन्दी।

**बिंदु-चित्रक**—पु० [स० ब० स०] हिरन जिसके शरीर पर सफेद चित्तियाँ हो।

**बिंदु-जाल**—पु०[सं०] सुदरता के लिए गोंद या छापाकर किसी स्थान पर बनाई हुई बिंदियाँ। जैसे—हाथी के मस्तक या सूँड पर का बिंदु-जाल, बाँह या हाथ पर गोदने का बिंदु-जाल।

**बिंदु-तंत्र**—पु०[स० ष० त०] चौपड आदि की बिसात। सारि-फलक।

**बिंदु-तीर्थ**—पुं०[स० मध्यम० स०] काशी का प्रसिद्ध पचनद तीर्थ जहाँ बिन्दु माधव का मंदिर है। पचगगा।

**बिंदु-त्रिवेणी**—स्त्री०[स० ब० स०] सगीत मे स्वर साधन की एक प्रणाली जिसमे तीन बार एक स्वर का उच्चारण करके एक बार उसके बाद के स्वर का उच्चारण करते हैं, फिर तीन बार उस दूसरे स्वर का उच्चारण करके एक बार तीसरे स्वर का उच्चारण करते है, और अत मे तीन बार सातवें स्वर का उच्चारण करके एक बार उसके अगले सप्तक के पहले स्वर का उच्चारण करते है।

**बिंदु-पत्र**—पु०[सं० मध्यम० स०] भोजपत्र।

**बिंदु-माधव**—पु० [स० मध्यम० स०] काशी की एक प्रसिद्ध विष्णु मूर्ति।

**बिंदु-मालिनी**—स्त्री०[सं०]सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**बिंदुर**—पु०[स० बिंदु+रक्] छोटी बिंदी। बुदकी।

**बिंदुराजि**—पु०[सं० ब० स०] एक तरह का साँप जिसके शरीर पर बूँदकियाँ होती हैं।

**बिंदु-रेख**—पु०[स०] १. बिंदु-रेखा। २. अकन की एक विशेष प्रक्रिया जिसमे विभिन्न बिंदुओं को रेखाओं से सबद्ध किया जाता है। ३ उक्त प्रकार से बिंदुओं को रेखाओं से सबद्ध करने पर बना हुआ चित्र। (ग्राफ; अंतिम दोनो अर्थों के लिए)

**बिंदु-रेखा**—स्त्री० [स०] बिंदुओं को मिलाने से बननेवाली रेखा। बिंदु-रेखा।

**बिंदुसर**—पु०[स० मध्यम० स०] १ पुराणानुसार कैलाश पर्वत के दक्षिण का एक सरोवर। २ भुवनेश्वर क्षेत्र मे स्थित एक प्राचीन सरोवर।

**बिंध**†—पुं०=विध्य (विध्याचल)।

**बिंध्य**—पु०[स० विंध+यत्] एक प्रसिद्ध पर्वत-श्रेणी जो भारतवर्ष के मध्य में पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ है, यह आर्यावर्त की दक्षिणी सीमा पर है, और दक्षिण भारत को उत्तर भारत से विभक्त करता है।

**बिंध्य-कूट (क)**—पु०[कर्म० स०, ब० स०] १. विंध्य पर्वत। २. अगस्त्य मुनि का एक नाम।

**बिंध्य-गिरि**—पुं०[मध्यम० स०] विंध्य पर्वत।

**बिंध्य-चूलिक**—पु०[ब० स०] विंध्य पर्वत के दक्षिण का प्रदेश।

**बिंध्यवासिनी**—स्त्री० [स०] मिरजापुर जिले के अतर्गत स्थित दुर्गा की एक मूर्ति।

**बिंध्या**—स्त्री०[सं० विंध्य+टाप्] एक प्राचीन नदी।
पु०=विंध्य।

**बिंध्याचल**—पु०[स० मध्यम० स०] १. विंध्य पर्वत। २. उक्त पर्वत का वह विशिष्ट अंश जो मिरजापुर के पास है और जहाँ विन्ध्यवासिनी देवी का मंदिर है। ३. वह नगरी जिसमे उक्त मदिर स्थित है।

**बिंध्याद्रि**—पु०[सं० मध्यम० स०] विंध्य पर्वत।

**बिंश**—वि०[स० विंशति+डट्, अति-लोप] बीसवाँ।
पु० किसी चीज का बीसवाँ भाग।

**बिंशक**—वि०[स०] बीस।

**बिंशत**—वि०[स०] बीस। (समस्त शब्दो मे)

**बिंशति**—स्त्री०[स० विंश+ति] १ बीस की सख्या। २. उक्त संख्या के सूचक अक।
वि० जो गिनती मे बीस अर्थात् दस का दूना हो।

**बिंशति बाहु**—पु०[स० ब० स०] रावण।

**बिंशोत्तरी**—स्त्री० [स० ब० स०] फलित ज्योतिष मे, मनुष्य के शुभाशुभ फल जानने की एक रीति जिसमे मनुष्य की आयु १२० वर्ष मान कर उसके विभाग करके नक्षत्रों और ग्रहों के अनुसार फल कहे जाते हैं।

**बि**—उप०[स०]एक उपसर्ग जो क्रियाओं तथा संज्ञाओं में लगकर निम्न-लिखित अर्थ देता है—(क) अलगाव या पार्थक्य, वियोग। (ख) विपरीतता; जैसे—विस्मरण, विक्रय। (ग) अशीकरण; जैसे—विभाग। (घ) अन्तर, जैसे—विशेष, विलक्षण। (ङ) क्रम या विन्यास; जैसे—विद्या। (च) आधिक्यता, जैसे—विकरालता। (छ) अनेक-रूपता या विचित्रता, जैसे—विविध। (ज) निषेध या राहित्य, जैसे—विकच। (झ) परिवर्तन, जैसे—विकार।
पु० १. अन्न। २ आकाश। ३. आँख।
स्त्री० पक्षी। चिडिया।

**बि०**—स० विक्रम संवत् का संक्षिप्त रूप।

**बिकंकट**—पु०[स० वि√कट् (गमनादि)+अटन्] गोखरू।

**बिकंकत**—पु०[स० वि√कंक् (गमनादि)+अतच्] १ एक प्रकार का जगली वृक्ष जिसके कुछ अग औषध के काम आते हैं; और प्राचीन काल मे जिसकी लकडी यज्ञ मे जलाई जाती थी। कटाई। किंकिणी।

**बिकंडक**—पु०[स० ब० स०] १. जवासा। २. विककट।

**बिकंप**—वि०[स० कर्म० स०] १. काँपता हुआ। २. चचल। ३. अस्थिर।

**बिकंपन**—पु०[स०] १. हिलना-डुलना। काँपना। २ गति। चाल।

**बिक**—पु०[स० ब० स०] नई ब्याई हुई गौ का दूध।
वि० १ जल-रहित। जल-विहीन। २ अप्रसन्न।

**बिकच**—पुं०[सं० ब० स०] १. एक प्रकार के धूमकेतु जिनकी सख्या ६५ कही गई है; और यह माना गया है कि इनका उदय अशुभ होता है। २. ध्वज। ३. क्षपणक।
वि० १. जिसके बाल न हों। २. खिला हुआ। विकसित। ३. व्यक्त। स्पष्ट। ४. चमकता हुआ।

**विकचित**—भू० कृ० [स०] खिला हुआ (फूल)।

**विकच्छ**—पु०[स० ब० स०]ऐसी नदी जिसके दोनो ओर तराई या कछार न हो।

**विकट**—वि०[स० वि√कट्(गमनादि)+अच्] १ बहुत बडा। विशाल। २ भद्दा। भोंडा। ३ उग्र, तीव्र, भयकर या भीषण। ४ टेढ़ा। बक। ५ कठिन। मुश्किल। ६. दुर्गम। ७. दुस्साध्य।
पु० १ विस्फोटक। २ सोमलता। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

**विकटक**—वि० [स० विकट+कन्] जिसकी आकृति खराब हो गई हो।

**विकटा**—स्त्री०[स० विकट+टाप्] १ बुद्ध की माता, मायादेवी। २. टेढ़े पैरोंवाली लडकी जो विवाह के योग्य न हो।

**विकथा**—स्त्री०[सं०] निरर्थक या बेहूदी बात।

**विकर**—पु०[स० वि√कृ (करना)+अच्] १ रोग। व्याधि। २. तलवार चलाने के ३२ प्रकारो मे से एक।

**विकरण**—पु०[स०] व्याकरण मे, प्रकृति या धातु और प्रत्यय के बीच मे होनेवाला वर्णागम। जैसे—'घोडा पर' मे का 'ए' विकरण है।
वि० करण अर्थात् इन्द्रियो से रहित।

**विकरार***—वि० १.=विकराल। २.=बे-करार (विकल)।

**विकराल**—वि०[स० तृ० त०] [भाव० विकरालता] भीषण आकृति-वाला। डरावना।

**विकर्ण**—वि०[स० ब० स०]१. कर्णरहित। २ जिसके कान न हो। बिना कानोवाला। २ जिसे सुनाई न पड़ता हो। जो सुन न सके। बहरा। ३ जिसके कान बड़े और लम्बे हो। ४. रेखा-गणित मे चार या अधिक कोणवाले क्षेत्र मे किसी कोण से उसकी ठीक विपरीत दिशावाले कोण तक पहुँचने या होनेवाला। टेढे या तिरछे बल मे ऊपर से नीचे आने अथवा नीचे से ऊपर जानेवाला। (डायगनल)
पु० १ कर्ण का एक पुत्र। २. दुर्योधन का एक भाई। ३ एक प्रकार का साँप। ४. एक प्रकार का तीर या बाण। ५ रेखा गणित मे वह रेखा जो किसी चतुर्भुज को तिरछे बल से पड़नेवाले आमने-सामने के विन्दुओ को मिलाती हुई चतुर्भुज को दो भागो मे विभक्त करती है। (डायगनल)

**विकर्णक**—पु०[स० विकर्ण+कन्] १ एक प्रकार की गँठिबन। २. शिव का व्याडि नामक गण।

**विकर्णतः**—अव्य०[स०]विकर्ण के रूप मे। तिरछे बल मे। (डायगनली)

**विकर्णिक**—पु०[स० विकर्ण+ठक्—इक] सरस्वती नदी के आस-पास का देश। सारस्वत प्रदेश।

**विकर्णी**—स्त्री०[स० विकर्ण+इनि, दीर्घ, न—लोप] एक प्रकार की ईंट जिसका व्यवहार यज्ञ की वेदी बनाने मे होता था।

**विकर्तन**—पु०[स० ब० स०] १ सूर्य। २ आक। मदार। ३ ऐसा राजकुमार जिसने पिता के राज्य पर अनुचित रूप से अधिकार जमा लिया हो।

**विकर्म**—पु०[स०] १. दूषित या निषिद्ध कर्म। २ कर्म विशेषत. वृत्ति से निवृत्त होना। ३. विविध कर्म।

**विकर्मस्थ**—पु०[विकर्म√स्था (ठहरना)+क] वह जो वेद-विरुद्ध आचरण करता हो। (धर्म-शास्त्र)

**विकर्मिक**—वि०[स०] १. दूषित या निषिद्ध कर्म करनेवाला। २ व्यवसाय या विविध कार्यो मे लगा रहनेवाला।
पुं० प्राचीन काल मे वह अधिकारी जो बाजारो, हाटो, मेलो आदि की व्यवस्था तथा निरीक्षण करता था।

**विकर्ष**—पु०[स० वि√कृष् (खीचना)+घञ्] १. बाण। तीर। २ धनुष की प्रत्यचा खीचने की क्रिया। २ अन्तर। दूरी। फासला।

**विकर्षण**—पु० [स०] १. छीना-झपटी करना। २ आकर्षण। खीचना। ३. दूसरी ओर या विपरीत दिशा मे खीचना। ४. खीचकर अपनी ओर लाना। लौटाना। ५. न रहने देना। नष्ट करना। ६. विभाग। हिस्सा। ७. कुश्ती का एक पेंच। ८ कामदेव के पाँच बाणों मे से एक। ९. एक प्राचीन शास्त्र जिसमे लोगो को आकर्षित करने की कला का वर्णन था।

**विकल**—वि०[स० ब० स०] १. जिसमे कल न हो। कल से रहित। २ जिसका आराम या चैन नष्ट हो चुका हो। बेचैन। व्याकुल। ३ जिसकी कला न रह गई हो। कला से रहित या हीन। ४ जिसका कोई अग टूट या निकल गया हो। खडित। जैसे—विकलाग। ५ जिसमे कोई कमी हो। घटा हुआ। ६. असमर्थ। ७ क्षाभ, भय आदि से युक्त। ८ प्रभाव, शान्ति आदि से रहित। ९. कुम्हलाया या मुरझाया हुआ। १०. प्राकृतिक। स्वाभाविक।
पु०=विकला।

**विकलन**—पु० [वि √ कल्(गिनती करना)+ल्यु—अन] हिसाब-किताब मे किसी मद में कोई रकम किसी के नाम लिखना। (डेबिट)

**विकलांग**—वि०[स० ब० स०] १. किसी अग से हीन। २ जिसका कोई अग बेकाम हो।

**विकला**—स्त्री० [स० विकल+टाप्] १ कला का साठवाँ अश। २ बुध ग्रह की गति। ३. वह स्त्री जिसका रजोदर्शन बन्द हो गया हो।

**विकलाना**—अ० [स० विकल+आना (प्रत्य०)] व्याकुल होना। घबराना। बेचैन होना।
†स० किसी को विकल या बेचैन करना।

**विकलास**—पु०[स० विकलास्य] एक प्रकार का प्राचीन बाजा, जिस पर चमडा मढ़ा होता था।

**विकलित**—भू० कृ०[स० वि√कल्+क्त, इत्व अथवा विकल+इतच्] १. विकल किया हुआ। २ विकल। बेचैन। ३. दुखी। पीडित।

**विकलेंद्रिय**—वि०[स० ब० स०] १ जिसकी इन्द्रियाँ वश मे न हों। २. दे० 'विकलांग'।

**विकल्प**—वि०[स०] [वि० वैकल्पिक] १. ऐसी स्थिति जिसमे यह समझना या सोचना पड़ता है कि यह है या वह। २. मन मे एक कल्पना उत्पन्न होने के बाद उससे मिलती-जुलती की जानेवाली दूसरी कल्पना। पहले कुछ सोचने के बाद फिर कुछ और सोचना। ३ वह अवस्था जिसमे सामने आई हुई कई बातो या विषयो मे से कोई बात या विषय अपने लिए चुनने की आवश्यकता होती है। (आप्टान)। ४. सामने आये हुए दो या अधिक ऐसे कामों या बातो में से हर एक जो आवश्यक, सुमीते आदि के अनुसार काम मे लाया या लिया जा सकता हो। (आल्टरनेटिव)। ५. व्याकरण मे किसी बात या विषय से सम्बन्ध रखनेवाले दो या अधिक नियमो, विधियो आदि में से अपनी इच्छा के अनुसार कोई नियम या विधि

मानना, लगाना या लेना। ६ धोखा। भ्रम। भ्रान्ति। ७. विचित्रता। विलक्षणता। ८. योग शास्त्र मे, पाँच प्रकारकी चित्त-वृत्तियों में से एक जिसमे कोई चीज या बात बिना तथ्य या वास्तविकता का विचार किए ही मान ली जाती है। जैसे—चाहे पारस पत्थर होता ही या न होता हो, फिर भी यह मान लेना कि उसका स्पर्श लोहे को सोना बना देता है। ९. योगसाधन मे एक प्रकार की समाधि। १० साहित्य मे एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमे दो परस्पर विरोधी बातों का उल्लेख करके कहा जाता है कि या तो यह हो या वह; अथवा या तो यह होना चाहिए या वह। (आल्टरनेटिव) जैसे—पार्वती की यह प्रतिज्ञा या तो मैं शंकर से विवाह करूँगी या जन्म-भर कुँआरी रहूँगी। उदा०—वैर तो बढायो, कह्यो काह को न मान्यो, अब दाँतनि तिनृका की कृपान गही कर मे।—मतिराम। ११. मन मे विशेष रूप से की जानेवाली कोई कल्पना या विचार। निर्णय। जैसे—दंड देने का विकल्प। १२. मन मे उत्पन्न होनेवाली तरह-तरह की कल्पनाएँ। १३ कल्प का कोई छोटा अंग या विभाग। अवान्तर कल्प। १४ विचित्रता। विलक्षणता।

**विकल्पन**—पु०[सं०] [भू० कृ० विकल्पित] १ विकल्प करने की क्रिया या भाव। २ किसी बात में सन्देह करना।

**विकल्पना**—स्त्री० [सं०] १ तर्क-वितर्क करना। २ सन्देह करना।

**विकल्पसम**—पु०[सं० ब० स०] न्याय-दर्शन मे २४ जातियों में से एक जिसमे वादी के दिये हुए दृष्टान्त मे अन्य धर्म की योजना करते हुए साध्य मे भी उसी धर्म का आरोप करके अथवा दृष्टान्त की असिद्ध ठहराकर वादी की युक्ति का निरर्थक खंडन किया जाता है। जैसे—यदि वादी कहे—'शब्द अनित्य है, क्योंकि वह घर की तरह उत्पत्ति धर्मवाला है।' और इस पर प्रतिवादी कहे 'घर जिस प्रकार उत्पत्ति धर्म से युक्त होने के कारण अनित्य और मूर्त है, उसी प्रकार शब्द भी उत्पत्ति धर्म से युक्त होने के कारण अनित्य और मूर्त है।' तो ऐसा तर्क 'विकल्पसम' कहा जायगा।

**विकल्पित**—भू० कृ०[सं०] १. जिसके सम्बन्ध मे विकल्पन (तर्क-वितर्क या सन्देह) किया गया हो। अनिश्चित और सदिग्ध। २ जो विकल्प (देखें) के रूप में ग्रहण किया गया हो ३. जिसके सम्बन्ध में कोई निश्चय न हो। ४ जिसके सम्बन्ध मे कोई नियम न हो। अनियमित।

**विकल्प्य**—वि०[सं० ब० स०] कल्पय या पाप से रहित। निष्पाप।

**विकस**—पु०[सं० वि√कस् (विकसित होना)+अच्] चंद्रमा।

**विकसन**—पु०[सं० वि√कस् (विकसित होना)+ल्युट्—अन] [वि० विकसित] १ विकाश करना या होना। २. फूलों आदि का खिलना।

**विकसना**—अ० [सं० विकसन] १ विकास के रूप मे आना या होना। २. फूलों आदि का खिलना।

**विकसाना**—स०[सं० विकसन] १. विकास के रूप में लाना। २. खिलने में प्रवृत्त करना। खिलाना।

**विकसित**—भू० कृ० [सं० वि√कस्+क्त, इत्व] १ जिसका विकास हुआ हो या किया गया हो। २ खिला हुआ।

**विकस्वर**—वि० [सं० वि√कस्+वरच्] विकासशील। खिलनेवाला। पु० साहित्य मे एक प्रकार का अर्थालंकार जो उस समय माना जाता है। जब विशेष का सामान्य द्वारा समर्थन करने के उपरान्त सामान्य का विशेष द्वारा भी समर्थन किया जाता है।

**विकांक्ष**—वि०[ब० स०] आकांक्षा से रहित।

**विकांक्षा**—स्त्री०[सं० विकांक्ष+टाप्] १ कोई आकांक्षा न होना। आकांक्षा का अभाव। २ अनिश्चय। दुविधा।

**विकाम**—वि०[सं० ब० स०] कामना से रहित। निष्काम।

**विकार**—पु०[सं० वि√कृ (करना)+घञ्] १. प्रकृति, रूप, स्थिति आदि में होनेवाला परिवर्तन। २. किसी चीज के आकार, गुण, रंग-रूप, स्वभाव आदि मे होनेवाला परिवर्तन जिससे वह खराब हो जाय और ठीक तरह से काम देने के योग्य न रह जाय। खराबी। बिगाड़। ३. वह तत्त्व या बात जिसके कारण चीज मे उक्त प्रकार की खराबी या दोष आता हो। जैसे—उद्वेग, भावना आदि में होनेवाला विकास। ४ मुख पर क्रोध, घृणा आदि के फल-स्वरूप होनेवाली ऐंठन या विकृति। ५ शारीरिक कष्ट या घाव। ६ वेदान्त और सांख्य दर्शन के अनुसार किसी पदार्थ के रूप आदि का बदल जाना। परिणाम। जैसे—ककण सोने का विकार है, क्योंकि वह सोने से ही रूपान्तरित होकर बना है। ७ निरुक्त के प्रधान चार नियमों मे से एक जिसके अनुसार एक वर्ण के स्थान मे दूसरा वर्ण हो जाता है।

**विकारित**—भू० कृ०[सं० वि√कृ+णिच्+क्त] जो किसी प्रकार के विकार से युक्त किया गया हो अथवा आपसे आप हो गया हो।

**विकारी (रिन्)**—वि० [सं० वि√कृ+णिनि, दीर्घ, न लोप] १ जिसमे कोई विकार उत्पन्न हुआ हो। विकार से युक्त। २. जिसमे कोई परिवर्तन हुआ हो अथवा किया गया हो। ३ जिसमें कोई विकार या परिवर्तन होता रहता हो या होने को हो।

पु० साठ संवत्सरों मे से एक संवत्सर का नाम।

**विकाल**—पु०[सं० कर्म० स०] १ ऐसा समय जब देव-कार्य, पितृ-कार्य आदि का समय बीत गया हो। २. सन्ध्या का समय। ३. विलम्ब। देर।

**विकालत**—स्त्री०→कालत।

**विकालिका**—स्त्री०[सं० विकाल+कन्+टाप्, इत्व] जल-घड़ी।

**विकाश**—पु०[सं० वि√काश् (दीप्त होना)+घञ्] १. प्रकाश। रोशनी। २. फैलाव। विस्तार। ३. बढ़ती। वृद्धि। ४. आकाश।

वि० एकांत। निर्जन।

**विकाशक**—वि०[सं० वि√काश्+ण्वुल्—अक] विकासक।

**विकास**—पु०[सं०] १ अपने आपको प्रकट या व्यक्त करना। २. फैलना या बढ़ना। ३. फूलों आदि का खिलना। ४ आँख, मुँह आदि का खुलना। ५ किसी चीज या बात का अस्तित्व मे आकर या आरम्भ होकर फैलते या बढ़ते हुए और उन्नति की अनेक क्रमिक अवस्थाएँ पार करते हुए अपनी पूरी बाढ़ तक पहुँचना। बढ़ते-बढ़ते अपना पूरा रूप धारण करना। ६ उक्त क्रिया के परिणाम-स्वरूप प्रकट हुई वस्तु या स्थिति। ६. यह सिद्धान्त कि कोई वस्तु अपनी आरंभिक सामान्य अवस्था से अपनी प्रकृति के अनुसार बढ़ती तथा फूलती-फलती हुई पूर्ण अवस्था प्राप्त करती है। (इवोल्यूशन)

स्त्री०[?] दूब की तरह की एक घास जो चौपाये बहुत चाव से खाते हैं।

**विकासक**—वि०[सं० वि√कस्+ण्वुल्—अक] विकास करने अर्थात् खोलने या बढ़ानेवाला।

**विकासन**—पु० [सं० वि√कस्+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विकसित] १. विकास करने की क्रिया या भाव। २. खिलना। ३. खुलना। ४. फैलना।

**विकासना**—स०[स० विकास] १. विकास करना। २ खोलकर प्रकट या व्यक्त करना। ३ खिलने में प्रवृत्त करना।
†अ०=विकसना।

**विकासवाद**—पु० [ष० त०] यह सिद्धान्त कि ईश्वर ने यह सृष्टि (अथवा इसका कोई अंग) इसी या प्रस्तुत रूप में नहीं उत्पन्न कर दी थी, वरन् इसका रूप प्रतिक्षण बदलता और बनता जा रहा है। (थियरी ऑफ इवोल्यूशन)
**विशेष**—इस सिद्धान्त के अनुसार यह माना जाता है कि इस पृथ्वी पर प्राणियों, वनस्पतियों आदि का आरम्भ बहुत ही सूक्ष्म रूप में हुआ था, और धीरे-धीरे उनका विकास होने पर वे सब फैलते, बढ़ते और अनेक प्रकार के रूप-रंग धारण करते गये, उनकी शक्तियाँ आदि बढ़ती गईं और उनके बहुत-से भेद-विभेद होते गये।

**विकासवादी**—वि०[स०] विकासवाद-सम्बन्धी।
पु० वह जो विकासवाद का अनुयायी या ज्ञाता हो।

**विकासित**—भू० कृ० [स० वि√कस्+णिच्+क्त] १ जिसका विकास किया गया हो। २ सामने लाया हुआ। ३ फैलाया या बढ़ाया हुआ।

**विकिर**—पु० [स० वि√कृ (करना)+क] १. पक्षी। चिड़िया। २ कुआँ। ३ बिकिरण। बिखेरना। ४ बिखेरी जानेवाली वस्तु। ५ वे चावल आदि जो पूजा के समय विघ्न दूर करने के लिए चारों ओर फेंके जाते हैं। अक्षत।

**विकिरक**—वि०[सं०] जो अपनी किरणें चारों ओर फेंकता या फैलाता हो। किरणें बिकीर्ण करनेवाला। (रेडिएटर)
पु० कोई ऐसा पदार्थ या यंत्र जो किसी प्रकार की किरणें, ताप, भाप, शीत आदि अंदर से निकालकर बाहर फैलाता या बिखेरता हो। (रेडिएटर)

**विकिरण**—पु०[स०] १ इधर-उधर फेंकना या फैलाना। छितराना। बिखेरना। २ किसी केन्द्र से शाखाओं आदि के रूप में निकलकर इधर-उधर फैलाना या बढ़ाना। ३. आज-कल वैज्ञानिक क्षेत्र में किसी केन्द्र से ताप, प्रकाश की किरणों अथवा किसी प्रकार की ऊर्जा को निकलकर इधर उधर या चारों ओर फैलना। (रेडिएशन) ४. चीरना-फाड़ना। ५ हत्या करना। मार डालना। ६ ज्ञान। ७ मदार का पौधा। आक।

**विकिरणता**—स्त्री०[स०] १ वह स्थिति जिसमें किसी चीज की किरणें निकलकर किसी ओर फैलती हैं। २ आधुनिक विज्ञान में वह स्थिति जिसमें अणु-बमों आदि के विस्फोट के कारण विषाक्त किरणें निकलकर चारों ओर फैलती और वातावरण दूषित करके जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि को बहुत हानि पहुँचाती हैं। (रेडियो-एक्टिविटी)

**विकिरण-मापी**—पु० [स०] वह यंत्र जिसकी सहायता से तपे हुए पदार्थों में से निकलनेवाली ताप-रश्मियों का परिमाण या शक्ति जानी या नापी जाती है। (रेडियो मीटर)

**विकिरण-विज्ञान**—पु० [स०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें इस बात का विचार और विवेचन होता है कि अनेक पदार्थों में से किरणें कैसे निकलती हैं और उनके क्या-क्या उपयोग, प्रकार या स्वरूप होते हैं। (रेडियोलोजी)

**विकीरना**—स०[स० विकीर्ण] १. फैलाना। २. चारों ओर छितराना या बिखेरना।

**विकीर्ण**—भू० कृ० [स० वि√कृ (फैंकना)+क्त] १. चारों ओर फैलाया या छितराया हुआ। २. खुले, बिखरे या उलझे हुए (बाल)। ३ प्रसिद्ध। मशहूर।
पु० संस्कृत व्याकरण में स्वरों के उच्चारण में होनेवाला एक दोष।

**विकुंचन**—पु०[सं०] [भू० कृ० विकुंचित] १. सिकुड़ना। २ मुड़ना।

**विकुंज**—पु० [स० ब० स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जाति।

**विकुंठ**—वि०[स०] १ तेज और नुकीला। २. अत्यधिक भुखरा।
†पु०=वैकुंठ।

**विकुंठा**—स्त्री०[स० विकुंठ+टाप्] १ मन का केंद्रीकरण। मन को एकाग्र करना। २ विष्णु की माया।

**विकुक्षि**—पु०[स० विकुक्ष+इनि] अयोध्या के राजा कुक्षि के पुत्र का नाम।
वि० जिसका पेट फूला हुआ और बड़ा हो। तोंदवाला।

**विकृत**—भू० कृ०[स० वि√कृ (करना)+क्त] [भाव० विकृति] १ जिसमें किसी प्रकार का विकार आ गया हो। २ जिसका आकार या रूप बिगड़ गया हो। बेडौल। ३. असामान्य। ४ अधूरा। अपूर्ण। ५ अराजक। विद्रोही। ६. बीमार। रोगी। ७ उद्विग्न। ८ अपाकृतिक।
पु० १. दूसरे प्रजापति का नाम। २ साठ संवत्सरों में से चौबीसवाँ संवत्सर। ३ बीमारी। रोग। ४. विवर्तन। ५. गर्भपात।

**विकृत-दृष्टि**—पु० [स० ब० स०] ऐब-तानना।

**विकृत-स्वर**—पु०[स०] गगीत में, वह स्वर जो अपने नियत स्थान से हट कर दूसरी श्रुतियों पर जाकर ठहरता है। इसके १२ प्रकार या भेद कहे गये हैं।

**विकृता**—स्त्री०[स० विकृत+टाप्] एक योगिनी का नाम।

**विकृति**—स्त्री० [स० वि√कृ (करना)+क्तिन्] १. विकृत होने की अवस्था या भाव। २. खराबी। विकार। ३ वह रूप जो विकार के उपरान्त प्राप्त हो। बिगड़ा हुआ। ४ बीमारी। रोग। ५. परिवर्तन। ६ मन में होनेवाला क्षोभ। ७ काम-वासना। ८ वैर। शत्रुता। ९ धार्मिक क्षेत्र में माया का एक नाम। १०. पिंगल में २३ वर्णों वाले छन्दों की संज्ञा। ११. सांख्य के अनुसार मूल प्रकृति का वह रूप जो उसमें विकार आने पर होता है। विकार। परिणाम। १२ व्याकरण में शब्द का वह रूप जो उसको मूल धातु से विकृत होने पर प्राप्त होता है।

**विकृति विज्ञान**—पुं०[स०] चिकित्सा-शास्त्र और दैहिकी का वह अंग या विभाग जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि शरीर में किस प्रकार के विकार होने से कौन-कौन-से रोग होते हैं। रोग-विज्ञान। (पैथालोजी)

**विकृतिवेत्ता**—पु०[स०] वह जो विकृति-विज्ञान का ज्ञाता हो। (पैथॉलोजिस्ट)

**विकृतीकरण**—पु०[सं०] किसी की आकृति अथवा कृति के कुछ अंगों को छोटा-बड़ा करके इस उद्देश्य से उसे विकृत करना कि लोग उसे देखकर अनायास हँस पड़ें। (कैरिकेचर)

**विकुष्ट**—भू० कृ०[सं० नृ० त०] [भाव० विकृष्टि] १. खींचा हुआ।

२ खींच या निकालकर अलग किया हुआ। ३ फैलाया या बढ़ाया हुआ। ४ ध्वनि के रूप मे आया या लाया हुआ।

**विक्षिप्ति**—स्त्री० [स०] विक्षिप्त होने की अवस्था या भाव।

**विकेंद्रण**—पु० [स०] विकेंद्रीकरण। (दे०)

**विकेंद्रीकरण**—पु० [स०] १ केन्द्र से हटाकर दूर करना। २. राजनीतिक क्षेत्र मे, शक्ति या सत्ता का एक केंद्र या स्थान मे निहित न होकर अनेक केंद्रो या स्थानों मे थोड़े-थोड़े अशो मे निहित होना। (डिसेन्ट्रलाइजेशन)

**विकेट**—पु० [अ०] १ क्रिकेट के खेल मे वे डडे जिन पर गुल्लियाँ रखी जाती है। यष्टि। २ बल्लेबाज। जैसे—तीन विकेट गिर चुके हैं। ३ दोनो ओर की विकेटो के बीच की जगह।

**विकेश**—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० विकेशी] १. जिसके सिर के बाल खुले हों। २. जिसके सिर पर बाल न हों। गंजा।

पु० १. एक प्रकार का प्रेत। २ पुच्छल तारा।

**विकेशी**—स्त्री० [स०] १ ऐसी स्त्री जिसके सिर के बाल खुले हों। २ गजे सिरवाली स्त्री। ३ मही (पृथ्वी) के रूप मे शिव की पत्नी का नाम। ४ एक प्रकार की धूतना।

**विकोष**—वि० [स० ब० स०] १ कोष या म्यान मे निकला हुआ(शस्त्र)। २ खुला हुआ। अनाच्छादित। ३ जिस पर भूमी, छिलका आदि न हो।

**विक्टोरिया**—स्त्री० [अ०] एक प्रकार की घोडा-गाडी जो देखने मे प्राय. फिटन से मिलती-जुलती होती है।

पु० एक छोटा ग्रह जिसका पता सन् १८५० मे हैंड नामक एक पाश्चात्य ज्योतिषी ने लगाया था।

**विक्रम**—पु० [स० वि√क्रम् (चलना आदि)+अच्] १ विपरीत गति। 'सक्रम' का विपर्याय। २. चलने मे पडनेवाला कदम। डग। पग। ३. चलना। गति। ४ किसी को दबाकर अपने अधिकार या वश मे करना। ५ विशिष्ट पौरुष या बल। ६ बहादुरी। वीरता। ७ ढग। तरीका। ८ विष्णु का एक नाम। ९ साठ सवत्सरो मे से चौदहवाँ सवत्सर। ९ बिना किसी क्रम या प्रणाली के होनेवाला वेद-पाठ। १०. दे० 'विक्रमादित्य'।

वि० १. क्रम से रहित। बिना क्रम का। २ उत्तम। श्रेष्ठ।

**विक्रमक**—पु० [स० विक्रम+कन्] कार्तिकेय के एक गण का नाम।

**विक्रमण**—पु० [स० वि√क्रम् (चलना आदि)+ल्युट्—अन] १. चलना। कदम रखना। २. आगे बढना। 'सक्रमण' का विपर्याय। ३. विक्रम। वीरता।

**विक्रम-शिला**—स्त्री० [स०] प्राचीन भारत की एक नगरी जिसमे बहुत बडा बौद्ध विद्यालय था।

**विक्रमाजीत**†—पु०=विक्रमादित्य।

**विक्रमादित्य**—पु० [स० स० त०] उज्जयिनी के एक प्रसिद्ध प्रतापी राजा जिनके सबध मे अनेक प्रवाद प्रचलित हैं। आज-कल का विक्रमी सवत् इन्ही का चलाया हुआ माना जाता है।

**विक्रमाब्द**—पु० [स० मध्यम० स०] विक्रमादित्य के नाम से चलाया हुआ सवत्। विक्रम सवत्।

**विक्रमार्क**—पुं० [स० त०]=विक्रमादित्य।

**विक्रमी**—पु० [स० विक्रम+इनि, दीर्घ, न-लोप विक्रमिन्] १. वह जिसमे बहुत अधिक बल हो। विक्रमवाला। पराक्रमी। २. विष्णु। ३ शेर।

वि० १. विक्रम-सबधी। विक्रम का। २. विक्रमाब्द-सबधी।

**विक्रमीय**—वि० [स० विक्रम+छ—ईय] विक्रमादित्य-सबधी।

**विक्रय**—पु० [स०वि√की (बेचना)+अच्] दाम लेकर कोई चीज देना। दाम लेकर किसी चीज का स्वत्वाधिकार दूसरे को देना। बेचना। 'क्रय' का विपर्याय।

**पद—क्रय-विक्रय।**

**विक्रयक**—वि० [सं० वि√की+ण्वुल्—अक] बेचनेवाला। विक्रेता।

**विक्रय-कर**—पु० [प० त०] वह राजकीय कर जो चीजो के विक्रय के समय खरीदनेवाले से लिया जाता है। बिक्रीकर। (सेल-टैक्स)

**विक्रयण**—पु० [स० वि√की (बेचना)+ल्युट—अन] बेचने की क्रिया। विक्रय। बिक्री।

**विक्रय-पंजी**—स्त्री० [स० ष० त०] वह पजी (बही) जिसमे व्यापारी नित्य अपनी बेची हुई चीजो के नाम, मूल्य आदि लिखते है। (सेल्स जर्नल)

**विक्रय-पत्र**—पु० [स० ष० त०] वह पत्र या लेख जिसम यह लिखा जाता है कि इतना मूल्य लेकर अमुक व्यक्ति ने अमुक वस्तु दूसरे व्यक्ति के हाथ बेची है। बैनामा। (सेल-डीड)

**विक्रय-लेख**—पु० [स०] विक्रय-पत्र।

**विक्रयिक**—पु०=विक्रेता

**विक्रयी (यिन्)**—पु०=विक्रेता।

**विक्रेय**—वि० [स० विक्रय+यत्] जो बेचा जाने को हो।

**विक्रांत**—भू० कृ० [स० वि√क्रम्+क्त] १ जो चल कर पार किया गया हो। २ जिसमे विशेष विक्रम अर्थात् बल या शूरता हो। वीर। ३ विजयी। ४ प्रतापी। ५ तेजस्वी।

पु० १ बहादुर। वीर। २ शेर। सिंह। ३ डग। पग। ४ बल और शक्ति। विक्रम। ५ हिरण्याक्ष का एक पुत्र। ७ प्रजापति। ८. साहस। हिम्मत। ९ व्याकरण मे एक प्रकार की सधि जिसमे विसर्ग अविकृत ही रहता है। १० वैकान्त मणि।

**विक्रांता**—स्त्री० [स० विक्रान्त+टाप्] १ अग्निमथ वृक्ष। अरणी। २ जयती। ३ मूसाकानी। ४ अडहुल। गुडहर। ५. अपराजिता। ६. लज्जावती। लजालू। ७ हसपदी नामक लता।

**विक्रांति**—स्त्री० [स०वि√क्रम्+क्तिन्] १ गति। २ विक्रम। वीरता। ३. घोडे की सरपट चाल।

**विक्रिया**—स्त्री० [स० वि√कृ+श+टाप्] १ विकार। २. प्रतिक्रिया।

**विक्रियोपमा**—स्त्री० [स० मध्यम० स०] एक प्रकार का उपमालकार जिसमे किसी विशिष्ट क्रिया या उपाय का अवलब कहा जाता है।

**विक्री**—स्त्री०=बिक्री (विक्रय)।

**विक्रीत**—भू० कृ० [स० वि√की+क्त] बेचा हुआ।

**विक्रेतव्य**—वि०=विक्रेय।

**विक्रेता**—पु० [सं० वि√की+तृच्] बिक्री करनेवाला। बेचनेवाला।

**विक्रेय**—वि० [वि√की+यत्] जो बेचा जाने को हो। बिकाऊ।

**विक्रोश**—पु० [स० वि√क्रुश् (चिल्लाना)+घञ्] १ लोगो को अपनी सहायता के लिए पुकारना। गोहार। २ कुवाच्य कहना।

**विक्रोष्टा (ष्टृ)**—पुं० [स० वि√क्रुश्+तृच्] १ गोहार करनेवाला। २. गाली देनेवाला।

**विक्लव**—वि० [सं० वि√क्लु (अधीर होना)+अच्] १. विकल। बेचैन। २. क्षुब्ध। ३ भयभीत। ४ दुखी। संतप्त।

**विक्लिन्न**—वि० [सं० वि√क्लिद् (भीगना)+क्त] १. बहुत पुराना। जीर्ण-शीर्ण। २ गला-सड़ा। ३. पकाकर मुलायम किया हुआ। ४ गीला। तर।

**विक्लेद**—पु० [सं० वि√क्लिद्+घञ्] १ आर्द्रता। २. गलाना या द्रव करना। ३ क्षय।

**विक्षत**—भू० कृ० [सं० तृ० त०] १ जिसमे क्षत लगा हो। जिसमे खराश पड़ी हो। २ जिसे क्षत या घाव लगा हो। घायल। जख्मी।

**विक्षय**—पु० [सं० ष० स०] अधिक मद्य-पान के कारण होनेवाला रोग। (वैद्यक)

**विक्षिप्त**—वि० [सं० वि√क्षिप् (फेंकना)+क्त] [भाव० विक्षिप्तता] १ फेंका या छिनराया हुआ। २ छोड़ा या त्यागा हुआ। व्यक्त। ३ जिसका मस्तिष्क ठीक तरह मे काम न करता हो। पागल। सिड़ी। ४. पागलो की तरह घबराया हुआ और विकल।

**विक्षिप्तक**—पु० [सं० विक्षिप्त+कन्] ऐसी लाश या शव जो जलाया या गाड़ा न गया हो, बल्कि या ही कही फेंक दिया गया हो।

**विक्षिप्तता**—स्त्री० [सं० विक्षिप्त+तल्+टाप्] विक्षिप्त या पागल होने की अवस्था या भाव। पागलपन।

**विक्षुब्ध**—वि० [सं० वि√क्षुभ् (अधीर होना)+क्त] जिसमे किसी प्रकार का क्षोभ उत्पन्न किया गया हो अथवा आप से आप हुआ हो।

**विक्षेप**—पु० [वि√क्षिप् (फेंकना)+घञ्] १ इधर-उधर छितराना या फेंकना। २ झटका देना। ३ धनुष का चिल्ला या डोरी चढ़ाना। ४ गदायुद्ध मे गदा की कोटि से समीपवर्ती शत्रु पर प्रहार करना। ५ मन इधर-उधर दौड़ाना या भटकाना। ६ बाधा। विघ्न। ७ सेना का पड़ाव। छावनी। ८ एक तरह का प्राचीन अस्त्र।

**विक्षेपण**—पु० [सं० वि√क्षिप् (फेंकना)+ल्युट्—अन] १ ऊपर अथवा इधर-उधर फेंकने की क्रिया। २ झटका देना। ३ धनुष की डोरी खीचना। ४ बाधा। विघ्न। ५ विक्षेप।

**विक्षेप लिपि**—स्त्री० [कर्म० स०] एक प्रकार की प्राचीन लिपि।

**विक्षेपक (पृ)**—पु० [सं० वि√क्षिप्+तृच्] विक्षेप या विक्षेपण करनेवाला।

**विक्षोभ**—पु० [सं० वि√क्षुभ् (अधीर होना)+घञ्] १ विशेष रूप मे होनेवाला क्षोभ। उद्विग्नता। २ किसी अशुभ या अनिष्ट घटना के कारण मन मे होनेवाला ऐसा विकार जो क्रुद्ध या दुखी कर दे। ३ उथल-पुथल।

**विक्षोभण**—पु० [सं० वि√क्षुभ्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विक्षोभित] क्षोभ उत्पन्न करने की क्रिया या भाव।

**विक्षोभित**—भू० कृ० [सं० वि√क्षुभ्+क्त]=विक्षुब्ध।

**विक्षोभी (भिन्)**—वि० [सं० वि√क्षुभ्+णिनि दीर्घ न लोप] [स्त्री० विक्षोभिणी] क्षोभ उत्पन्न करनेवाला। क्षोभकारी।

**विखंड**—वि० [सं०] १. टुकड़े-टुकड़े किया हुआ। २ बहुत छोटे खंडो या टुकडो मे परिवर्तित।

**विखंड राशि**—पु० [सं०] भूगोल मे चट्टानो की सतह पर से टूट-फूटकर गिरे हुए ककड़ो का समूह। मलबा। (डेट्रिटस)

**विखंडित**—भू० कृ०=खंडित।

**विखंडी (ण्डिन्)**—वि० [सं० वि√खंड् (टुकड़ा करना)+णिनि, दीर्घ न लोप] तोड़ने-फोड़ने या नष्ट करनेवाला।

**विख**—वि० [सं० वि० नासिका, ब० स०, नासिका-खादेश] जिसकी नाक कटी हुई हो या न हो।

†पु०=विष (जहर)।

**विखनस**—पु० [सं०] १ ब्रह्मा। २ एक प्राचीन ऋषि।

**विखावा**—पु०=विषाद।

**विखिरिक**—पु० [सं० वि√खद् (खाना)+णिच्+क्त+कन्] ऐसा मृत शरीर जिसका बहुत-सा अश पशुओ ने खा डाला हो।

**विखानां**—पु०=विषाण (सींग)।

**विखानस**—पु०=वैखानस।

**विखार्यंध**—स्त्री०=बिसार्यंध।

**विखुर**—पु० [सं० वि√खुर (काटना)+अच्] १. राक्षस। २ चोर। वि० जिसके खुर न हो। खुरा से रहित।

**विख्यात**—भू० कृ० [सं० वि√ख्या (प्रसिद्धि होना)+क्त] [भाव० विख्याति] प्रसिद्ध। मशहूर। जिसकी ख्याति चारो ओर हो।

**विख्याति**—स्त्री० [सं० वि√ख्या (ख्याति)+क्तिच्] विख्यात होने की अवस्था या भाव। प्रसिद्धि। शोहरत।

**विख्यापन**—पु० [सं० वि√ख्या+णिच्+ल्युट—अन] १ प्रसिद्ध करना। मशहूर करना। २ सार्वजनिक रूप से घोषणा करना।

**विख्यापित**—भू० कृ० [सं०] जिसका विख्यापन हुआ हो।

**विगंध**—वि० [सं० ब० स०] १. जिसमे किसी प्रकार की गध न हो। २ बदबूदार। बुरी गधवाला।

**विगंधकीकरण**—पु० [सं०] वह रासायनिक प्रक्रिया जिसके द्वारा लोहे आदि धातुओ मे मिली हुई गधक निकाल कर दूर की जाती है। (डीसल्फराइज़ेशन)

**विगंधिका**—स्त्री० [सं० विगध+कन्+टाप्+इत्व] १. हपुषा। हाऊबेर। २ अजगधा। तिलवन।

**विगणन**—पु० [सं० वि√गण् (गिनती करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विगणित] १ हिसाब लगाना। लेखा करना। २. ऋण से मुक्त होना।

**विगत**—भू० कृ० [सं० वि√गम् (जाना)+क्त] [स्त्री० विगता] १ बीता हुआ। गत। २. गत से ठीक पहले का। अन्तिम या बीते हुए से ठीक पहले का। जैसे—विगत दिन (बीते हुए कल से पहले अर्थात् परसो का), विगत वर्ष (गत अर्थात् पिछले साल से पहले का)। ३. जो कही इधर-उधर चला गया हो। ४ जिसकी कान्ति या प्रभाव नष्ट हो चुका हो। निष्प्रभ। ५ जो किसी बात से रहित या हीन हो चुका हो। जैसे—विगत यौवन। उदा०—बोले बचन विगत सब दूषन। —तुलसी।

**विगता**—स्त्री० [सं० विगत+टाप्] ऐसी कन्या जो किसी दूसरे व्यक्ति के प्रेम मे पड़ी हो और इसी लिए विवाह के लिए अनुपयुक्त हो।

**विगति**—स्त्री० [सं० वि√गम्+क्तिन्] दुर्दशा। दुर्गति।

**विगद**—वि० [सं० ब० स०] रोगरहित। नीरोग।

पु० १ बात-चीत। चर्चा। २. शोर-गुल। हो-हल्ला।

**विगम**—पु० [सं० वि√गम्+घञ्] १ प्रस्थान। प्रयाण। २ पार्थक्य। ३. अनुपस्थिति। ४. त्याग। ५. हानि। ६. नाश। ७. समाप्ति। ८ मृत्यु। ९. मोक्ष।

**विगर**—पु०[सं० ब० स०] १ दिगबर यति। २ पहाड़। ३ भोजन का त्याग करनेवाला व्यक्ति।

**विगर्हण**—पु० [सं०] [वि० विगर्हित] बुरे काम के लिए निन्दा करना और बुरा-भला कहना। भर्त्सना।

**विगर्हणा**—स्त्री०[सं० वि√गर्ह् (निन्दा करना)+णिच्+टाप्] भर्त्सना। डाँट-फटकार।

**विगर्हणीय**—वि०[सं० वि√गर्ह्+अनीयर्] निंदनीय।

**विगर्ही**—स्त्री०[सं० वि√गर्ह्+अच्+टाप्] =विगर्हण।

**विगर्हित**—भू० कृ०[सं० वि√गर्ह्+क्त, तृ० त०] १ जिसकी भर्त्सना की गई हो। जिसे डाँट या फटकार बतलाई गई हो। २ बुरा। खराब। ३ निंद्य।

**विगर्ही (र्हिन्)**—वि० [सं० वि√गर्ह्+णिनि] विगर्हण करनेवाला।

**विगर्ह्य**—वि [सं० वि√गर्ह्+यत्] जो भर्त्सना का पात्र हो। डाँटने-डपटने या निंदा किये जाने के योग्य।

**विगलन**—पु०[सं० वि√गल् (पिघलना)+ल्यु-अन] [भू० कृ० विगलित] १ अच्छी या पूरी तरह से गलना या पिघलना। २ तरल पदार्थ का चूना, बहना या रिसना। ३ मन का आर्द्र होना। ४ नाश या लोप होना। ५ शिथिल होना।

**विगलित**—भू० कृ०[सं० तृ० त०] १ जो गल गया हो। पिघला हुआ। २. गिरा हुआ। पतित। ४ बहा हुआ। ५ ढीला। शिथिल। ६ विकृत।

**विगाढ**—भू० कृ० [सं० वि√गाह् (विलोडन करना)+क्त] १ नहाया हुआ। स्नात। २. डूबा हुआ। ३ अन्दर घुसा, धँसा या पैठा हुआ। ४ जो बहुत अधिक मात्रा में हो। बहुत गहन या घना।

**विगाथा**—स्त्री०[सं० वि√गाथ् (कहना)+अङ्+टाप्] आर्या छन्द का एक भेद जिसके विषम पदों में १२-१२, दूसरे में १५ और चौथे में १८ मात्राएँ होती हैं और अन्त का वर्ण गुरु होता है। विषम गणों में जगण नहीं होता, पहले दल का छठा गण (२७ ही मात्रा के कारण) एक लघु का मान लिया जाता है। इसे 'विग्गाहा' और 'उद्गीति' भी कहते हैं।

**विगाल**—पु०[सं० कर्म० स०] १ निंदा। २ अपवाद। ३. असामजस्य। ४ घृणा।

**विगाहन**—पुं० [सं० वि√गाह्+अच्]—अवगाहन।

**विगीत**—वि०[सं० वि√गै (गाना या कहना)+क्त] १ अनेक प्रकार से या अनेक रूपों में कहा हुआ। २ बुरी तरह से कहा या गाया हुआ। ३ परस्पर विरोधी। ४. निंदित।

**विगीति**—स्त्री०[सं० वि√गै+क्तिन्] आर्या छंद का एक भेद।

**विगुण**—वि०[सं० ब० स०] १. जिसमें कोई गुण न हो। गुण-रहित। गुण-विहीन। २. निर्गुण।

**विगूढ**—भू० कृ० [सं० तृ० त०] १. छिपा हुआ। गुप्त। २. जिसकी निंदा की गई हो।

**विगृहीत**—वि०[सं० वि√ग्रह् (ग्रहण करना)+क्त] १. फैलाया या विभक्त किया हुआ। २. पकड़ा हुआ। ३. जिसका विरोध या सामना किया गया हो। ४. रोका हुआ। ५. जिसका विश्लेषण हुआ हो। विश्लिष्ट।

**विग्गाहा**—स्त्री०[सं०विगाथा] विगाथा नामक छन्द जो आर्या का एक भेद है।

**विग्रह**—पु० [सं० वि√ग्रह्+अच्] १. विस्तृत करना। फैलाना। २. अलग या दूर करना। ३. टुकड़ा। विभाग। ४. यौगिक शब्दों अथवा समस्त पदों के किसी एक अथवा प्रत्येक शब्द को अलग करना। (व्याकरण) ५. लड़ाई-झगड़ा और वैर-विरोध। ६ युद्ध। समर। ७. नीति के छ गुणों में से एक, विपक्षियों में कलह या फूट उत्पन्न करना। ८. आकृति। मूरत। ९. देह। शरीर। १० प्रतिमा या मूर्ति। जैसे—शालग्राम की बटिया या शिव का लिंग। ११ शृंगार। सजावट। १२. शिव का एक नाम या लिंग। १३ स्कन्द का एक अनुचर। १४. साख्य के अनुसार कोई तत्त्व।

**विग्रहण**—पु० [सं० तृ० त०] रूप धारण करना। शक्ल में आना।

**विग्रही**—वि०[सं०√ग्रह+णिनि] १ विग्रह या लड़ाई-झगड़ा करनेवाला। २ युद्ध करनेवाला। ३ मूर्ति-पूजक।

पु० प्राचीन भारत में युद्ध-विभाग का मंत्री या सचिव।

**विग्राह्य**—वि०[सं० विग्रह+ण्यत्] जिसके साथ विग्रह अर्थात् लड़ाई या युद्ध किया जा सके।

**विघटन**—पु०[सं० विघट्टन] १ किसी वस्तु के संयोजक अंगों का इस प्रकार अलग या नष्ट होना कि उसका प्रस्तुत अस्तित्व या रूप नष्ट हो जाय। 'घटन' का विपर्याय। (डिस-इन्टिग्रेशन) जैसे—किसी संस्था या समाज का विघटन। २ खराब होना या टूटना-फूटना। बिगड़ना। ३ नष्ट करना या होना।

**विघटिका**—स्त्री०[सं० ब० स०] समय का एक छोटा मान जो एक घड़ी का २३वाँ भाग होता है।

**विघटित**—भू० कृ०[सं० वि√घट् (मिलाना)+क्त] १ जिसके संयोजक अलग-अलग किये गये हों। २. तोड़ा-फोड़ा हुआ। ३ नष्ट किया हुआ। ४ (संस्था, समिति आदि) जिसे भंग कर दिया गया हो। (डिस्साल्वड)

**विघट्टन**—पु०[सं० वि√घट्ट (संयुक्त करना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विघट्टित] १. खोलना। २. पटकना। ३ रगड़ना। ४. दे० 'विघटन'।

**विघड़ही (हिन्)**—वि०[सं० विघट्ट+इनि] विघटन करनेवाला।

**विघन**—पुं०[सं० वि√हन् (मारना)+अप्, ह—घ] १ आघात करना। चोट पहुँचाना। २. बड़ा और भारी हथौड़ा। घन। ३ इन्द्र।

†पु०=विघ्न।

**विघर्षण**—पु०[सं० वि√घृष् (रगड़ना)+ल्युट्-अन] अच्छी तरह रगड़ना या घिसना।

**विघस**—पु०[सं० वि√अद् (खाना)+अप्, अद्—घस्] १. आहार। भोजन। २. देवताओं, पितरों, बड़ों आदि के उपभोग के उपरान्त बचा हुआ अन्न।

**विघात**—पु०[सं०] १. आघात। चोट। २. विनाश। ३ निवारण। रोक। ४. बाधा। ५. हत्या। ६. आज-कल मालिकों को हानि पहुँ-

चाने के विचार से जान-बूझकर उनके यंत्र या उपयोगी सामान तोड़ना-फोड़ना। तोड़-फोड़ का कार्य। अंतर्वर्ष। (सैबोटेज) ७ नाश।

**विघातक**—वि०[सं० विघात+कन्] १ विघात करनेवाला। २. तोड़-फोड़ के काम करनेवाला।

**विघातन**—पु०[सं० वि√हन्+ल्युट्–अन] १ विघात करने की क्रिया। २ मार डालना। हत्या।

**विघाती (तिन्)**—वि०[सं०] [स्त्री० विघातिनी] = विघातक।

**विघूर्णन**—पु० [सं०] [भू० कृ० विघूर्णित] १ इधर से उधर घूमना या होना। २ चारों ओर घूमना। ३ आज-कल, किसी अक्ष या केन्द्र के चारों ओर चक्कर काटना या लगाना। (जादरेशन)

**विघ्न**—पु०[सं० वि√हन्+क] १ बीच में आकर पड़नेवाली कोई ऐसी बात जिसमें होता हुआ काम रुक जाय। अड़चन। बाधा।
क्रि० प्र०—आना।—डालना—पड़ना।—होना।
२ ऐसा अशुभ चिह्न जिसके कारण बनता हुआ काम बिगड़ जाता हो। (प्रवाद)

**विघ्नक**—वि० [सं० विघ्न+कन्] विघ्नकारी।

**विघ्नकारी (रिन्)**—वि० [सं०] बाधा उपस्थित करनेवाला। विघ्न डालनेवाला।

**विघ्ननाशक**—वि०[ष० त०] विघ्नों का नाश करनेवाला।
पुं० गणेश।

**विघ्नपति, विघ्नराज**—पुं०[सं० ष० त०] गणेश।

**विघ्नविनायक**—पु०[ष० त०]गणेश।

**विघ्नित**—भू० कृ०[सं० विघ्न+इतच्] १ (कार्य) जिसमें विघ्न पड़ा या डाला गया हो। २. बाधित।

**विघ्नेश**—पु०[ष० त०] गणेश।

**विचकित**—वि०[सं० विचक+इतच्] १ चकित। २. घबराया हुआ।

**विचक्षण**—वि०[सं० वि√चक्ष्(कहना)+युच्–अन] १ तीव्र दृष्टि-वाला। बहुत दूर की चीजें या बातें देखनेवाला। २. प्रकाशमान। ३. बुद्धिमान्। समझदार। ४ कुशल। दक्ष।
पु० पंडित। विद्वान्।

**विचक्षु**—वि०[सं०] चक्षुओं से रहित। अंधा।

**विचक्षुष्क†**—वि०=विचक्षण।

**विचय**—पु०[सं० वि+चि (बटोरना)+अप्] १ एकत्र करना। इकट्ठा करना। जमा करना। २. जाँच-पड़ताल करना।

**विचयन**—पु०[सं० वि√चि+ल्युट्–अन] १ इकट्ठा करना। एकत्र करना। २. जाँचना। परखना। ३. चुराई या छिपाई हुई वस्तु। खोज निकालने के उद्देश्य से किसी की ली जानेवाली तलाशी।

**विचयन-प्रकाश**—पु०[सं०] वह तीव्र प्रकाश जिसके द्वारा बहुत दूर तक की चीजें प्रकाशित होती हों। खोज-बत्ती। (सर्चलाइट)

**विचरण**—पुं०[सं० वि√चर् (चलना)+ल्युट्, यु=अन] [भू० कृ० विचरित] १. चलना। २. घूमना-फिरना।

**विचरना**—अ० [सं० विचरण] चलना-फिरना। घूमना-फिरना।

**विचर्चिका**—स्त्री०[सं० वि√चर्च् (फाड़ना)+ण्वुल्–अक+टाप्, इत्व] १. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर पर दाने निकलते हैं और खुजली होती है। व्याधी। २. छोटी फुन्सी।

**विचल**—वि०[सं० वि√चल् (हिलना)+अप्] [भाव० विचलता] १ जो बराबर हिलता रहता हो। २. जो स्थिर न हो। अस्थिर। ३ अपने मार्ग या स्थान से गिरा, डिगा या हटा हुआ। ४ प्रतिज्ञा, संकल्प आदि से हटा हुआ।

**विचलता**—स्त्री०[सं०] विचल होने की अवस्था या भाव।

**विचलन**—पु०[सं०] [भू० कृ० विचलित] १ ठीक या सीधा मार्ग छोड़कर इधर-उधर होना। पथ से भ्रष्ट होना। (डेविएशन) जैसे—मनुष्य का नैतिक विचलन। (ख) प्रकाश की रेखाओं की विचलन। २ जान-बूझकर या अनजान में उपेक्षापूर्वक अपने कर्तव्य या मत से हटकर इधर-उधर होना। कार्य, निश्चय या विचार पर दृढ़ न रहना। उत्क्रम से भिन्न। (डेविएशन)

**विचलना**—अ०[सं०विचलन]१ अपने स्थान से हट जाना या चल पड़ना। २ इधर-उधर होना। ३ अधीर या विचलित होना। ४ प्रतिज्ञा, संकल्प आदि से हटना।

**विचलाना**†—अ०=विचलना।
स० विचलित करना।

**विचलित**—भू० कृ०[सं०] १ भय, साहस की कमी, साधन-हीनता आदि के फलस्वरूप अपनी प्रतिज्ञा, सिद्धान्त या स्थान से हटा हुआ। २ अस्थिर। चंचल। ३ विकल।

**विचार**—पु०[सं० वि√चर् (चलना)+घञ्] [वि० विचारणीय, वैचारिक, भू० कृ० विचारित] १. किसी चीज या बात के संबंध में मन ही मन तर्क-वितर्क करके कुछ सोचने या समझने की क्रिया या भाव। आगा-पीछा। ऊँच-नीच आदि का ध्यान रखते हुए कुछ निश्चय करने की क्रिया। जैसे—तुम भी इस बात पर विचार कर लो। २ उक्त प्रकार की क्रिया के फल-स्वरूप किसी बात या विषय के सम्बन्ध में मन में बननेवाला उसका चित्र। सोच-समझकर स्थिर की हुई भावना। खयाल। (आइडिया) जैसे—(क) मेरे मन में एक और विचार आया है। (ख) इस पुस्तक में आपको बहुत से नये विचार मिलेंगे। ३. कोई प्रश्न सामने आने पर उसके सम्बन्ध में कुछ निर्णय करने के लिए उसके सब अंग अच्छी तरह तर्क करते हुए देखना या समझना। (कन्सिडरेशन) ४ दो विरोधी दलों, पक्षों, मतों आदि के विवादास्पद विषय के सम्बन्ध में कुछ निश्चय करने से पहले किसी न्यायालय या विचारशील व्यक्ति के द्वारा होने-वाली सब अंगों और बातों की जाँच-पड़ताल। फैसले के लिए मुकदमे की सुनवाई। (ट्रायल) जैसे—न्यायालय में अभियोग के सम्बन्ध में होने-वाला विचार। ५. घूमना-फिरना। विचरण।

**विचारक**—वि०[सं० वि√चर् (चलना)+णिच्+ण्वुल्–अक] विचार करनेवाला।
पुं० वह जो किसी विषय पर अच्छी तरह विचार करता हो। विचार-शील। २. वह जो न्यायालय आदि में बैठकर अभियोगों का विचार और निर्णय करता हो। न्यायकर्ता। (मुंसिफ) ३. पथ-प्रदर्शक। नेता। ४. गुप्तचर। जासूस।

**विचारकर्ता**—पु०[सं० विचार√कृ (करना)+तृच, ष० त०] १ वह जो किसी प्रकार का विचार करता हो। सोचने विचारनेवाला। २. न्यायाधीश। विचाराध्यक्ष।

**विचार-गोष्ठी**—स्त्री०[सं०] विद्वानों या विशेषज्ञों की वह गोष्ठी जो

किसी विशिष्ट गंभीर विषय पर विचार करने के लिए बुलाई गई हो। (सेमिनार)

**विचारज्ञ**—पु०[स० विचार√ज्ञा (जानना)+क] १. वह जो विचार करना जानता हो। २. विचारशक्ष।

**विचारण**—पु० [सं० वि√चर् (चलना)+णिच्+ल्युट्—अन] विचारने की क्रिया या भाव।

**विचारणा**—स्त्री०[स० विचारण+टाप्] १ विचारने की क्रिया या भाव। २. सोची-विचारी हुई बात। ३ कोई काम करने से पहले यह सोचना कि यह काम करना चाहिए या नहीं अथवा हम से हो सकेगा या नहीं।

**विचारणीय**—वि०[स० वि√चर् (चलना)+णिच्+अनीयर्] १. (बात या विषय) जिस पर विचार करना उचित हो या विचार किया जाने को हो। चिन्त्य। २. सन्दिग्ध।

**विचार-धारा**—स्त्री०[स०] १. आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि मनुष्य के मन में विचार कहाँ से और किस प्रकार उत्पन्न होते हैं और उनके कैसे-कैसे भेद या रूप होते हैं। वैचारिकी। २. विचारों का प्रवाह। (आउडियालोजी)

**विचारना**—अ० [स० विचार] १ विचार करना। सोचना-समझना। गौर करना। २ जानने के लिए किसी से कुछ पूछना। ३ तलाश करना ढूँढना।

**विचार-नेता**—पु०[स०] वह जो किसी क्षेत्र में जन-साधारण के विचारों का नेतृत्व या मार्ग-प्रदर्शन करता हो।

**विचार-पति**—पु०[स० ष० त०] १ बहुत बड़ा विचारक। २. न्यायाधीश।

**विचारवान**—पु०[स०विचार+मतुप्, म-व] १ जो ठीक तरह से विचार करता हो। विचारशील। २. जिसमें विचार करने की विशेष क्षमता हो।

**विचार-शक्ति**—स्त्री०[स० ष० त०] सोचने या विचार करने की शक्ति। बुद्धि। प्रज्ञा। (इन्टेलेक्ट)

**विचारशास्त्र**—पु०[ष० त०] मीमांसा दर्शन।

**विचारशील**—पु०[स० ष० त०] [भाव० विचारशीलता] वह जिसमें किसी विषय पर अच्छी तरह सोचने या विचारने की शक्ति हो। विचारवान्।

**विचार-स्थल**—पु०[ष० त०] १. विचार करनेवाला स्थल। २. अदालत। न्यायालय।

**विचार-स्वातंत्र्य**—पु०[स०]राज्य, शासन आदि की ओर से मिलनेवाली वह स्वतंत्रता जिसमें मनुष्य हर तरह की बातें सोच सकता तथा उन्हें व्यक्त या प्रकाशित भी कर सकता है। (लिबर्टी ऑफ थॉट)

**विचाराधीन**—वि० [स० विचार+अधीन] १. (बात या विषय) जिस पर अभी विचार हो रहा हो २. दे० 'न्यायाधीन'।

**विचाराध्यक्ष**—पु०[स० ष० त०] =विचारपति।

**विचारालय**—पु०[सं० ष० त०] न्यायालय। कचहरी।

**विचारिका**—स्त्री० [सं० विचार+कन्+टाप्-इत्व] १ प्राचीन काल की वह दासी जो घर में लगे हुए फूल पौधों की देख-भाल तथा इसी प्रकार के और काम करती थी। २ अभियोगों आदि का विचार करनेवाली स्त्री। स्त्री-विचारक।

**विचारित**—भू० कृ०[स० विचार+इतच्] १. जिसके संबंध में विचार कर लिया गया हो। २. निश्चित या निर्णीत किया हुआ।

**विचारी (रिन्)**—पु०[स० वि√चर् (चलना)+णिच्+णिनि] वह जिस पर चलने के लिए बहुत बड़े बड़े मार्ग बने हों (जैसे—पृथ्वी)। वि० १. विचरण करने या घूमने-फिरनेवाला। २ विचारक। ३ विचारशील।

**विचार्य**—वि० [स० वि√चर् (चलना)+णिच्+यत्]=विचारणीय।

**विचालन**—पु०[सं० तृ० त०] १. इधर-उधर चलाना। २ अलग या दूर करना। हटाना। ३. नष्ट करना। ४. विचलित करना।

**विचिंतन**—पु०[स० वि√चिन्ति (सोचना)+ल्युट्—अन] अच्छी तरह चिंतन करना। खूब सोचना-समझना।

**विचिंतनीय**—वि० [स० वि√ चिन्ति+अनीयर्] (बात या विषय) जो चिंता करने या सोचने के योग्य हो।

**विचिंता**—स्त्री० [स० वि√चिन्ति-अच्+टाप्] सोच-विचार। चिंतन।

**विचिंत्य**—वि०[स० विचिन्त+यत्]=विचिंतनीय।

**विचिकित्सा**—स्त्री० [स० वि√कित् (रोग दूर करना)+सन्+अ.+टाप्]१. किसी बात या विषय में होनेवाली शंका या सन्देह। २ भूल। ३ संदेह।

**विचित**—भू० कृ०[स० वि√ चि (इकट्ठा करना)+क्त]अन्वेषित किया या खोजा हुआ।

**विचिति**—स्त्री०[स० वि√ चि+क्तिच्] खोज या ढूँढ निकालने की अवस्था या भाव।

**विचित्त**—स्त्री० [स० विचित्त+इनि] १ मन ठिकाने या शान्त न रहना। २ अन्यमनस्कता। अनमनापन। ३ मूर्च्छा। बेहोशी।

**विचित्र**—वि० [स० तृ० त०] [भाव० विचित्रता] १ जिसमें कई प्रकार के रंग हों। कई तरह के रंगों या वर्णोंवाला। रंग-बिरंगा। २ जिसमें मन को कुछ चकित करनेवाली असाधारणता या विलक्षणता हो। अजीब। जैसे—आज एक विचित्र बात मेरे देखने में आई। ३ जिसमें कोई ऐसी नई बात या विशेषता हो जो साधारणत सब जगह न पाई जाती हो और जो अनोखा जान पड़ता हो। साधारण से भिन्न। नया और विलक्षण। ३. मन में कुतूहल उत्पन्न करने, चकित या विस्मित करनेवाला। जैसे—वह भी विचित्र स्वभाववाला आदमी है। ४ खूबसूरत। सुन्दर।

पु०१. पुराणानुसार रौच्यमनु के एक पुत्र का नाम। २ साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार जो उस समय होता है जब किसी फल की सिद्धि के लिए किसी प्रकार का उल्टा प्रयत्न करने का उल्लेख किया जाता है।

**विचित्रक**—पु०[स० ब० स०+कन्] भोजपत्र का वृक्ष।

वि० विचित्र।

**विचित्रता**—स्त्री०[स० विचित्र+तल्+टाप्] १ विचित्र होने की अवस्था या भाव। २ वह विशेषता जिसके फलस्वरूप कोई चीज विचित्र प्रतीत होती हो।

**विचित्र-विभ्रमा**—स्त्री०[स०]केशव के अनुसार वह प्रौढ़ा नायिका जो अपने

सौन्दर्य मात्र से नायक को आकृष्ट या मोहित करती हो। (देव ने इसी को भविभ्रमा कहा है)।

**विचित्रवीर्य**—पु० [स० ष० त०] चन्द्रवंशी शान्तनु के एक पुत्र का नाम। (गद्दाभारत)

**विचित्रशाला**—स्त्री०[ष० त०] अजायबघर। अजायबखाना।

**विचित्रांग**—पु०[स० ब० स०] १. मोर। २. बाघ।

**विचित्रा**—स्त्री० [स० विचित्र+अच्+टाप्] संगीत मे, एक रागिनी जिसे कुछ लोग भैरव राग की पाँच स्त्रियों मे और कुछ लोग त्रिवण, बरारी, गौरी और जयंती के मेल से बनी हुई संकर जाति की मानते है।

**विचित्रित**—भू० कृ०[स० विचित्र+इतच्]१ अनेक रंगों से रंगा या अंकित किया हुआ। २. सजाया हुआ।

**विची**—स्त्री० [स० विचि+ङीप्] वीचि (लहर)।

**विचेतन**—वि०[स० ब० स०] १ जिसमे चेतना शक्ति न हो। अचेत। २. संज्ञाहीन। बेहोश। ३ जिसे भले-बुरे का ज्ञान न हो। विवेक-हीन।

पु०१ चेतना से रहित करने का क्रिया या भाव। २ प्राणियों की वह अवस्था जिसमे शरीर या उसका कोई अंग चेतनारहित या संज्ञाशून्य हो जाता है। संज्ञा-नाश। निश्चेतन। संवेदनहरण। (ऐनेस्थीशिया)

**विचेतनक**—वि०[स०] शरीर या उसका कोई अंग चेतना से रहित या संज्ञाशून्य करनेवाला। संज्ञा-नाशक। (एनीस्थेटिक)

**विचेतनीकरण**—पु०[स०] [भू० कृ० विचेतनीकृत] दे० 'निश्चेतनीकरण'।

**विचेता (तस्)**—वि०[स० ब० स०] १. जिसका चित्त ठिकाने न हो। घबराया हुआ। २ जो कुछ जानता न हो। ३ दुष्ट। पाजी। ४ बेवकूफ। मूर्ख।

**विचेष्ट**—वि० [स० ब० स०] [भाव० विचेष्टता] १ जो सचेष्ट न हो। २ अक्रिय। ३ गतिहीन। अचल।

**विच्छर्दन**—पु०[स० वि√ छर्द् (इच्छा करना)+ल्युट्—अन, कर्म० स०] [भू० कृ० विच्छर्दित] पीड़ा आदि होने पर मुँह या शरीर के अंगों से बुरी चेष्टा करना। इधर-उधर लोटना और तड़पना।

**विचेष्टा**—स्त्री०[स० वि√ चेष्ट् +अङ्+टाप्]१ बुरी या खराब चेष्टा करना। भौंहें निकोड़ना, मुँह बनाना या हाथ-पैर पटकना। २ क्रिया।

**विच्छर्दन**—पु० [स० वि√ छर्द् (कै करना)+ल्युट्, अन] [भू० कृ० विच्छर्दित]१ कै या वमन करना। २ बलपूर्वक बाहर निकालना। फेंकना। ३ त्याग करना। छोड़ना। ५ तिरस्कार करना।

**विच्छर्दिका**—स्त्री०[स० विछर्द+क+टाप्, इत्व] वमन। कै।

**विच्छाय**—पु० [स० ष० त०] १ पक्षियों की छाया। २ मणि। रत्न।

वि० १. जिसकी छाया न पड़ती हो २ कांतिहीन।

**विच्छित्ति**—स्त्री०[स० वि√छिद् (काटना)+क्तिन्] १ काटकर अलग या टुकड़े करना। २ विच्छेद। ३ कमी। त्रुटि। ४ गले मे पहनने का एक प्रकार का हार। ५. कविता मे होनेवाली यति। विराम। ६ वेशभूषा आदि के सम्बन्ध मे की जानेवाली लापरवाही। ७. ऐसी लापरवाही के कारण वेशभूषा मे दिखाई देनेवाला बेढंगापन। ८. रंगों आदि से शरीर चित्रित करने की क्रिया या भाव। ९. साहित्य मे एक प्रकार का हाव जिसमे स्त्री थोड़े शृंगार से ही पुरुष को मोहित करने की चेष्टा करती है।

**विच्छिन्न**—भू० कृ० [स० वि√ छिद् +क्त]१ जिसका विच्छेद हुआ हो। २ जो काट या छेदकर अलग कर दिया गया हो। ३ जिसका अपने मूल अंग के साथ कोई सम्बन्ध न रह गया हो। ४ अलग। जुदा। पृथक्। ५ जिसका अन्त हो चुका या कर दिया गया हो। ६. कुटिल।

**विच्छेद**—पु०[स० वि√छिद्+घञ्]१ काट या छेदकर अलग करने की क्रिया। २ किसी प्रकार बीच से टूटना। विशृंखलता। ३ किसी पूरे मे से उसका कोई अंग या अंश किसी प्रकार अलग होना। ४ अलगाव। पार्थक्य। ५ नाश। बरबादी। ५ वियोग। विरह। ६ पुस्तक का अध्याय या प्रकरण। परिच्छेद। ७ बीच मे पड़नवाला खाली स्थान। अवकाश। ८ कविता की यति या विराम।

**विच्छेदक**—वि०[स० वि√ छिद् (काटना)+ण्वुल्—अक] विच्छेद करनेवाला।

**विच्छेदन**—पु०[स० वि √ छिद्+ल्युट्—अन] [वि० विच्छेदनीय] विच्छेद करने की क्रिया या भाव। दे० 'व्यवच्छेदन' (शब्द का)।

**विच्छेदी**—वि०[स० वि √ छिद्+णिनि] विच्छेदक।

**विच्छेद्य**—वि०[स० विच्छेद+यत्] जिसका विच्छेद किया जा सकता हो अथवा किया जाने को हो।

**विच्युत**—भू० कृ० [स० वि√ च्यु (मिलना आदि)+क्त] [भाव० विच्युति]१ जो कटकर अथवा और किसी प्रकार इधर-उधर गिर पड़ा हो। २. जो अपने स्थान से गिर या हट गया हो। च्युत। भ्रष्ट। ३ (अंग) जो जीवित शरीर से काटकर अलग किया या निकाला गया हो। (सुश्रुत) ४ नष्ट।

**विच्युति**—स्त्री०[स० वि√ च्यु (हटना)+क्तिन्] १ विच्युत होने की अवस्था, क्रिया या भाव। ३ गर्भ-पात। ४. नाश।

**विछलना**†—अ० क्रि० १ -विछलना (फिसलना)। २ विचलना।

**विछोह**†—वि० -विच्छेद।

**विछोही**†—वि०[हिं० विछोह+ई (प्रत्य०)] १. जिसका प्रिय व्यक्ति उससे बिछुड़ चुका हो। २ बिछोह से दुःखी। विरही।

**विछोहा**†—पु०[स० विच्छेद]१. ऐसी अवस्था जिसमे प्रिय के विदेश चले जाने पर उससे संयोग न होता हो। २ संयोग न होने के फलस्वरूप होनेवाला दुःख। विरह।

**विछोही**†—वि०=विछोही।

**विजंघ**—वि०[स० ब० स०]१. जिसकी जाँघें कट गई हों या न हों। २. (गाड़ी या सवारी) जिसमे धुरी, पहिए, आदि न हों।

**विजई**†—वि०=विजयी।

**विजट**—वि०[स० ब० स०]१. जटा से रहित। २ (सिर के बाल) जो यों ही खुले हों, जूड़े आदि के रूप मे बँधे न हों।

**विजड**—वि०[स०] जो पूरी तरह से जड़ हो चुका हो। जिसमे चेतनता का कुछ भी अंश न हो।

**विजड़ीकरण**—पु०[स०] [भू० कृ० विजड़ीकृत] विजड़ करने की अवस्था, क्रिया या भाव।

**विजन**—वि०[ब० स०]१ जनहीन। २. एकांत।
पु० -व्यजन (पखा)।

**विजनन**—पु०[स०] [भू० कृ० विजनित]१. संतान को जन्म देना। जनन। प्रसव। २. प्रयोगशालाओं आदि मे वैज्ञानिक प्रक्रियाओं की सहायता से स्त्री-पुरुष के संयोग के बिना संतान उत्पन्न करना।

**विजना**†—पु०[सं० विजन] [स्त्री० अल्पा० विजनी] पखा।

**विजन्मा (न्मन्)**—पु०[स० ब० स०]१ किसी स्त्री का उसके उपपति या जार से उत्पन्न पुत्र। जारज सन्तान। २. एक प्राचीन वर्ण-संकर जाति। ३. वह जो जाति से च्युत कर दिया गया हो।

**विजन्या**—वि०[स० विजन+यत्—टाप्] गर्भवती (स्त्री)।

**विजयत**—पु०[स० वि√जि (जीतना)+झ—अन्त] द्वंद का एक नाम।

**विजयंती**—स्त्री०[स० वि√जि+शतृ+ङीप्]१ एक अप्सरा का नाम। २ ब्राह्मी।

**विजय**—स्त्री० [स० वि√जि+अच्] १ शत्रु को पराजित करने पर होनेवाली जीत। २ प्रतियोगी या प्रतिस्पर्धी को हराकर सिद्ध की जानेवाली श्रेष्ठता। ३ वह अवस्था जिसमे सब विघ्न-बाधाएँ दूर कर दी गई हों। ४ एक प्रकार का छन्द जो केशव के अनुसार सर्वैया का भलगयद नामक भेद है। ५. भोजन की क्रिया के लिए आदरपूर्वक पद। (पूरब) जैसे—अब आप विजय के लिए उठे, अर्थात् भोजन करने चले।

**विजयक**—पु०[स० विजय+कन्] वह जो सदा विजय प्राप्त करता रहता हो। सदा जीतता रहनेवाला।

**विजयकण्ठल**—पु०[स०]१ एक प्रकार का कल्पित हार जो दो हाथ लंबा और ५०४ लड़ियों का माना जाता है। कहते हैं ऐसा हार केवल देवता लोग पहनते हैं। २. ऐसा हार जिसमे ५०० मोती या नग हों।

**विजय-कुंजर**—पु०[स० च० त०] १ राजा की सवारी का हाथी। २ लड़ाई मे काम आनेवाला हाथी।

**विजय-केतु**—पु०[स० ष० त०]=विजय-पताका।

**विजय-डिंडिम**—पु०[स० च० त०] प्राचीन काल मे युद्ध-क्षेत्र मे बजाया जानेवाला एक प्रकार का बड़ा ढोल।

**विजय-दंड**—पु०[स० ब० स०] सैनिकों का वह विभाग जो सदा विजयी रहता हो।

**विजयदशमी**—स्त्री०=विजयादशमी।

**विजय-दीपिका**—स्त्री०[स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**विजय-नागरी**—स्त्री०[स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**विजय-पताका**—स्त्री०[स० ष० त०] १. सेना की वह पताका जो जीत के समय फहराई जाती है। २. विजय का सूचक कोई चिह्न।

**विजय-पर्पटी**—स्त्री०[स० मध्यम० स०] वैद्यक में एक प्रकार का रस जो पारे, रेंड़ की जड़, अदरक आदि के योग से बनता और सन्निपाती रोग मे दिया जाता है।

**विजय-पूर्णिमा**—स्त्री० [स० मध्यम० स०] आश्विन की पूर्णिमा।

**विजय-भैरव**—पु०[स० च० त०] वैद्यक मे एक प्रकार का रस।

**विजय-महल**—पुं०[स० च० त०] प्राचीन काल का एक प्रकार का ढोल। डंका।

**विजय-यात्रा**—स्त्री०[स० ष० त०] वह यात्रा जो किसी पर किसी प्रकार की विजय प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाय।

**विजय-रत्नाकरी**—स्त्री०[स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**विजय-लक्ष्मी**—स्त्री०[स० कर्म० स०] विजय की अधिष्ठात्री देवी, जिसकी कृपा पर विजय निर्भर मानी जाती है।

**विजय-वसंत**—पु०[स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**विजयशील**—वि०[स० ब०स०] जो विजय प्राप्त करता हो। सदा जीतता रहनेवाला।

**विजय-श्री**—स्त्री०[स०]१ संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। २ विजय-लक्ष्मी।

**विजय-सरस्वती**—स्त्री०[स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**विजय-सामंत**—पु० [स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**विजय-सारंग**—पु० [स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**विजयसार**—पुं०[स० ब० स०] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारत के काम आती है। बिजैसार।

**विजया**—स्त्री० [स० विजय+टाप्]१ दुर्गा। २ पुराणानुसार पार्वती की एक सखी जो गौतम की कन्या थी। ३ यम की भार्या। ४ एक योगिनी। ५ दक्ष की कन्या। ६ इन्द्र की पताका पर अंकित एक कुमारी। ७ श्रीकृष्ण के पहनने की माला। ८ कादंबरी का एक प्राचीन विभाग। ९ विजयादशमी। १० पुरानी चाल का एक प्रकार का बड़ा रंभा या तबू। ११ वर्तमान अवसर्पिणी के दूसरे अर्हत की माता का नाम। १२ एक सम-मात्रिक छंद (क) जिसके प्रत्येक चरण मे १०-१० की यति पर ४० मात्राएँ होती है और अंत मे रगण होता है। (ख) जिसके प्रत्येक चरण मे १२, १२, १०, १० की यति से ४४ मात्राएँ होती हैं। १३ एक वर्णिक वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे आठ वर्ण होते हैं। इसके अंत मे लघु और गुरु अथवा नगण भी होता है। १४ भंग। भाँग। १५ हरें। १६ बच। १७ जयंती। १८ मजीठ। १९ अग्निमथ। २० एक प्रकार का शमी वृक्ष।

**विजया एकादशी**—स्त्री० [स० मध्यम० स०] १ क्वार सुदी एकादशी। २ फागुन बदी एकादशी।

**विजया दशमी**—स्त्री० [स० मध्य० स०] आश्विन मास के शुक्ल पक्ष की दशमी जो हिन्दुओं का बहुत बड़ा त्यौहार मानी जाती है।
**विशेष**—इसी तिथि को राम ने रावण को मारा था।

**विजयानंद**—पु० [स०] संगीत मे ताल के साठ मुख्य भेदों मे से एक।

**विजयाभरणी**—स्त्री० [सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**विजयास्तमी**—स्त्री०[स०] रविवार के दिन पड़नेवाली किसी मास की शुक्लपक्ष की सप्तमी।

**विजयास्त्र**—पु०[स० विजय+अस्त्र] वह अस्त्र, क्रिया या साधन जिससे विजय प्राप्त करना निश्चित हो। (इम्पकार्ड)

**विजयी**—वि० [स० विजि+इनि] १. वह जिसने विजय प्राप्त की हो। जीतनेवाला। २. (वह व्यक्ति या पक्ष) जिसकी प्रतियोगिता युद्ध, विवाद आदि मे जीत हुई हो।
पु० अर्जुन।

**विजयोत्सव**—पु० [स० ष० त०] १ विजय दशमी के दिन होनेवाला उत्सव। २. युद्ध मे विजय प्राप्त करने पर होनेवाला उत्सव।

**विजर**—वि०[ब० स०]१ जिसे जरा या बुढ़ापा न आता हो जराहीन। २. नया। नवीन।

**विजल**—वि० [स० ब० स] जल से रहित। जलहीन। निर्जल। पु० अनावृष्टि। सूखा।

**विजलीकरण**—पु० [स०] निर्जलीकरण।

**विजल्प**—पु० [स० पु० न०] १ व्यर्थ की बहुत-सी बकवाद। २ किसी को बदनाम करने के लिए कही जानेवाली झूठी बात।

**विजल्पन**—पु० [स०] [भू० कृ० विजल्पित] १ विजल्प करने की क्रिया या भाव। २ बहना। बोलना। ३ अस्पष्ट रूप से कोई बात पूछना। ४ बे सिर पैर की या व्यर्थ की बात कहना।

**विजात**—वि० [स० कर्म० स०] [स्त्री० विजाता] १ जन्मा हुआ। २ विभिन्न जातियों के माता पिता से उत्पन्न। वर्णसंकर। दोगला। पु० सवैया छन्द का एक भेद जिसमें प्रत्येक चरण में ५-५-४ के विश्राम से १९ मात्राएँ और अंत में मगण या यगण होता है। इसकी पहली और आठवीं मात्राएँ लघु रहती हैं।

**विजाता**—स्त्री० [स०] ऐसी स्त्री जिसने बच्चे या बच्चों को जन्म दिया हो। वि० 'विजात' की स्त्री०।

**विजाति**—वि० [स० ब० स०] विजातीय। (दे०) स्त्री० दूसरी या भिन्न जाति।

**विजातीय**—वि० [स० विजाति +छ—ईय] [भाव० विजातीयता] किसी की दृष्टि में, उसकी जाति से भिन्न जाति का। पराई जाति का। (हेट्रोजीनियस)

**विजानक**—वि० [स० वि √ ज्ञा (जानना) +ल्यु—अन, +कनज्ञा—जा] जाननेवाला।

**विजानता**—स्त्री० [स० विजान +तल् +टाप्] १ जानकारी। २ चातुर्य।

**विजानना**—स० [स० विजानता] विशेष रूप से जानना।

**विजानु**—पु० [स०] १ युद्ध में लड़ने का विशेष कौशल। २ तलवार चलाने का एक ढंग।

**विजार**—पु० [देश०] एक तरह की भूमि जिसमें धान, चना आदि बोया जाता है।

**विजारत**—स्त्री० [अ० विज़ारत] १ वजीर अर्थात् मन्त्री का कार्य या पद। २ मंत्रियों का समूह। मंत्रिमण्डल। ३ वजीर या मन्त्री का कार्यालय।

**विजिगीषा**—स्त्री० [स० विजिगीष +टाप्] विजय पाने की इच्छा।

**विजिगीषु**—वि० [स० वि √जि +सन् +उ] जिसे विजय पाने की इच्छा हो।

**विजिगीषुता**—स्त्री० [स०] विजिगीषा।

**विजिट**—स्त्री० [अ०] १. भेंट। मुलाकात। २. डाक्टरों आदि का रोगी का देखने के लिए उसके घर जाना। ३. उक्त काम के लिए डाक्टर को मिलनेवाली फीस।

**विजित**—भू० कृ० [स० वि √जि (जीतना) +क्त] जिस पर विजय पाई गई हो। जिसे जीता गया हो।
पु० फलित ज्योतिष में, पराजय का सूचक ग्रह।

**विजितात्मा (त्मन्)**—पु० [स० ब० स०] शिव।

**विजितारि**—स० [स० ब० स०] वह जिसने शत्रुओं को जीत लिया हो।

**विजिति**—स्त्री० [स० वि √ जि +क्तिन्] १. विजय। जीत। २. प्राप्ति।

**विजिती (तिन्)**—वि० [सं० विजित +इनि, दीर्घ नलोप] विजयी।

**विजितेय**—वि० [स० विजित +ठक्, ढ—एय] जिस पर नियंत्रण या विजय प्राप्त की जा सके या की जाने को हो।

**विजित्व**—पु० [स०] १ ऐसा भोजन जिसमें अधिक रस न हो। २. एक प्रकार की लपसी।

**विजित्वर**—वि० [स० वि √जि +क्वि, तुक्] विजयी। विजेता।

**विजित्वरा**—स्त्री० [स० विजित्वर +टाप्] एक देवी का नाम।

**विजोष**—वि० [स०] विजिगीषु। (दे०)

**विजुली**—स्त्री० [स० विजुल +ङीप्] पुराणानुसार एक देवी का नाम।
†स्त्री०=बिजली।

**विजृंभण**—पु० [स०] १ खिलना। २. खुलना। ३. तानना या फैलना। ४. विकसित या विस्तृत होना। ५ जँभाई लेना।

**विजृंभा**—स्त्री० [स० विजृम्भ +टाप्] उबासी। जभाई।

**विजृंभिणी**—स्त्री० [स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**विजेतव्य**—वि० [स० वि √ जि +तव्य] विजेय।

**विजेता (तृ)**—वि० [स० वि √ जि +तृच्] जीतनेवाला। विजयी

**विजेय**—वि० [स० वि √जि +यत्] जो जीता जा सके या जीने जाने के योग्य हो।

**विजै**†—स्त्री०=विजय।

**विजैसार**—पु० [स० विजयसार] साल की तरह का एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

**विजोग**†—पु०=वियोग।

**विजोगी**†—वि०=वियोगी।

**विजोर**—वि० [हिं० वि +जोर=बल] जिसमें जोर न हो। बलहीन। निर्बल।
†पु०=बिजौरा नीबू।

**विजोहा**—पुं० [स० विभोहा] एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं। इसे जोहा, विभाहा और विजोरा भी कहते हैं।

**विज्जल**—वि० [स० वि √ जड् (स्थित रहना) +अच्, ड—ल, जुट्] (स्थान) जहाँ फिसलन हो।
पु० १. शालमलीकंद। २. एक तरह की चावल की लपसी। ३. एक तरह का तीर या बाण।

**विज्जव**—पुं० [स०] एक प्रकार का बाण।

**विज्जावइ**—पु० [स० विद्यापति] =विद्यापति। उदा०—विज्जावई कविवर एहु गावए।—विद्यापति।

**विज्जु**†—स्त्री०=बिजली।

**विज्जुज**—पु० [स० विज्ज +उलच्, जुट्] १. स्वाद। छिलका। २. दारचीनी।

**विज्जुलता**—स्त्री० [स० विद्युलता] विद्युत्। बिजली।

**विज्जोहा**—पु०=विजोहा (छन्द)।

**विज्ञ**—वि० [स० वि √ ज्ञा (जानना) +क] [भाव० विज्ञता] १. (व्यक्ति) जिसकी जानकारी बहुत अधिक हो। २. विशेषतः विषय का बहुत बड़ा जानकार। ३. समझदार और पढ़ा-लिखा व्यक्ति।

**विज्ञता**—स्त्री० [स० विज्ञ +तल् +टाप्] विज्ञ होने की अवस्था या भाव।

**विज्ञत्व**—पु० [स० विज्ञ +त्व]=विज्ञता।

**विज्ञप्त**—भू० कृ० [सं० वि√ज्ञप् (जानना)+क्त] १. जिसकी जानकारी दूसरों को करा दी गई हो। २. विज्ञप्ति के रूप में निकाला या प्रकाशित किया हुआ।

**विज्ञप्ति**—स्त्री० [सं० वि √ज्ञप्+क्तिन्] १ जतलाने या सूचित करने की क्रिया। २ इश्तहार। विज्ञापन। ३. आज-कल किसी अधिकारी या उसके कार्यालय की ओर से निकलनेवाली ऐसी सूचना जिसमे किसी बात या विषय का स्पष्टीकरण हो। (कम्यूनीक) ४ दे० 'बुलेटिन'।

**विज्ञात**—वि० [सं० वि√ज्ञा+क्त] १. जाना या समझा हुआ। २ प्रसिद्ध। मशहूर।

**विज्ञातव्य**—वि० [स० वि√ज्ञा+तव्य] जानने या समझने के योग्य (बात या विषय)।

**विज्ञाता (तृ)**—पु० [सं० वि√ज्ञा+तृच्] विज्ञ।

**विज्ञाति**—स्त्री० [स० वि√ज्ञा+क्तिन्] १. ज्ञान। समझ। २ जानकारी। ३. गय नामक देवयोनि। ४. पुराणानुसार एक कल्प का नाम।

**विज्ञान**—पु० [स० वि √ज्ञा+ल्युट्—अन] १. ज्ञान। जानकारी। २ बुद्धि विशेषत निश्चयात्मिका बुद्धि। ३. अच्छी तरह काम करने की योग्यता। दक्षता। ४ सांसारिक कार्यों, बातों और व्यवहारों का अच्छा अनुभव तथा ठीक और पूरा ज्ञान। ५ आविष्कृत सत्यो तथा प्राकृतिक नियमों पर आधारित क्रमबद्ध तथा व्यवस्थित ज्ञान। ६ विशेषत भौतिक जगत् से संबंधित उक्त प्रकार का ज्ञान। ७. दार्शनिक तथा धार्मिक क्षेत्रों मे अविद्या या माया नाम की वृत्ति। ८. बौद्धों के अनुसार आत्मा के स्वरूप का ज्ञान। आत्मा का अनुभव। ९. आत्मा। १० ब्रह्म। ११ मोक्ष। १२ आकाश। १३. कर्म।

**विज्ञान कोश**—पु० [स० मध्यम० स०] १. वेदात्त के अनुसार ज्ञानेन्द्रियाँ और बुद्धि। २ विज्ञानमय कोश जो आत्मा को परिवृत्त करने वाला पहला आवरण या कोश कहा गया है।

**विज्ञानता**—स्त्री० [स० विज्ञान+तल्+टाप्] विज्ञान का धर्म या भाव।

**विज्ञान पाद**—पु० [स०] वेदव्यास।

**विज्ञानमय कोष**—पु० [स०] -विज्ञान कोश।

**विज्ञानवाद**—पु० [सं०] [वि० विज्ञानवादी] बौद्ध महायान का एक दार्शनिक सिद्धान्त जिसमे यह माना जाता है कि ससार के समस्त पदार्थ असत्य होने पर भी विज्ञान या चित्त की दृष्टि से सत्य ही हैं।

**विज्ञानवादी**—वि० [स०] विज्ञानवाद-सबधी।

पु० विज्ञानवाद का अनुयायी।

**विज्ञानिक**—वि० [स० विज्ञान+ठन्—इक] १. जिसे ज्ञान हो। २. विज्ञ। ३. दे० 'वैज्ञानिक'।

**विज्ञानिता**—स्त्री० [स०विज्ञानि+तल्+टाप्] विज्ञानी का धर्म या भाव।

**विज्ञानी (निन्)**—पु० [सं० विज्ञान+इनि] १. ज्ञानी। २. वैज्ञानिक।

**विज्ञानीय**—वि० [सं० वि√ज्ञा+अनीयर्] विज्ञान-सबंधी। वैज्ञानिक।

**विज्ञापक**—वि० [स०] दूसरों को जानकारी करनेवाला।

पुं० समाचार-पत्रो आदि मे विज्ञापन छपानेवाला। विज्ञापन-दाता।

**विज्ञापन**—पु० [सं० वि√ज्ञा+णिच्+युक—अन] १. सब लोगो को कोई बात जतलाने या बतलाने की क्रिया या भाव। जानकारी कराना। सूचित करना। २. पत्रों आदि में लोगों की जानकारी के लिए विशेष रूप से छपवाई जानेवाली बात या सूचना। ३. उक्त उद्देश्य से बाँटा जानेवाला सूचना-पत्र। ४ प्रचार तथा बिक्री के उद्देश्य से किसी वस्तु के संबंध में सामयिक पत्रों मे प्रकाशित कराई जानेवाली सूचना।

**विज्ञापना**—स्त्री० [सं० विज्ञापन+टाप्] विज्ञप्त करना। जतलाना। बतलाना।

**विज्ञापनीय**—वि० [सं० वि √ज्ञप् (जानना)+णिच्+अनीयर्] (बात या विषय) जो दूसरो को सार्वजनिक रूप में बताये जाने के योग्य हो।

**विज्ञापित**—भू० कृ० [स० वि√ज्ञप्+णिच्+क्त] १. जो बतलाया जा चुका हो। जिसकी सूचना दी जा चुकी हो। २. जिसके विषय मे विज्ञापन प्रकाशित हो चुका हो। ३ जिसकी सूचना दी गई हो। (नोटिफ़ायड)

**विज्ञापित क्षेत्र**—पु० [स०] स्थानिक स्वशासन और प्रबध के लिए नियत किया हुआ छोटा क्षेत्र। (नोटिफ़ायड एरिया)

**विज्ञापी**—वि० [स० विज्ञापिन्]=विज्ञापक।

**विज्ञाप्ति**—स्त्री० [स० वि √ज्ञा (जानना)+णिच्, पुक्,+क्तिन्] -विज्ञप्ति।

**विज्ञाप्य**—वि० [स० वि √ज्ञप्+ण्यत्]=विज्ञापनीय।

**विज्ञेय**—वि० [स० वि√ज्ञा+यत्] (बात या विषय) जो जानने या समझने के योग्य हो।

**विज्वर**—वि० [स० ब० स०] १ जिसका ज्वर उतर गया हो। जिसका बुखार छूट गया हो। २ सब प्रकार के क्लेशों, चिन्ताओं आदि से मुक्त।

**विट**—पुं० [सं०√विट्+विषप्] १. साँचर नमक। २ मल। विष्ठा।

**विटंक**—वि० [स०] ऊँचा।

पु० १ बैठने का ऊँचा स्थान। २ वह छतरी जिसपर पक्षी बैठते हैं।

**विट**—पुं० [स०] १. वह जिसमे काम-वासना बहुत अधिक हो। कामुक। २. पुश्चली स्त्रियों और वेश्याओं से सबध रखने और प्राय उन्ही के साथ रहनेवाला व्यक्ति। लफट। ३ बहुत बडा चालाक या धूर्त आदमी। ४ साहित्य मे एक प्रकार का नायक जो प्राय ऐसा व्यक्ति होता है जो बात-चीत मे बहुत चतुर, बहुत बडा धूर्त तथा लंपट हो और अपनी सारी सम्पत्ति भोग-विलास मे नष्ट करके किसी विलासी राजा, राजकुमार या धनवान् के साथ बहुत-कुछ विदूषक के रूप में रहने लगा हो और उसके भोग-विलास मे सहायक होकर और उसका मनोरजन करके अपना निर्वाह भी करता हो और प्राय वेश्याओं के साथ रहकर थोड़ा बहुत भोग-विलास भी करता हो। भाण (देखें) नामक प्रहसन या रूपक का यही नायक होता है। ५. बहुत बडा बदमाश या लुच्चा। ६. एक प्राचीन पर्वत। ७. दुर्गंध खैर। ८. नारंगी का पेड़। ९. साँचर नमक। १०. चूहा। ११ गुह। मल। विष्ठा।

**विटक**—पु० [सं० विट+कन्] १. नर्मदा के किनारे का एक प्राचीन प्रदेश। २. उक्त प्रदेश मे रहनेवाली एक जाति। ३. घोडा।

**विटछत्रि**—पुं० [सं० ष० त०] चुआ या चुनचुना नाम का कीड़ा जो बच्चो की गुदा में उत्पन्न होता है।

**विटप**—पु०[स०] १ वृक्ष या लता की नई शाखा। कोपल। २ छतनार पेड़। झाड़। ३. पड़। वृक्ष। ४ लता।

**विटपी (पिन्)**—वि०[स० विटप+इनि] (वनस्पति) जिसमें नई शाखाएँ या कोपलें निकली हों।

पु० १. पेड़। वृक्ष। २ अजोर का पेड़। ३ वट वृक्ष।बड़ का पेड़।

**विटपी मृग**—पु०[स० ष० त०] शाखामृग (बंदर)।

**विटमालिक**—पु०[स० मध्यम० स०] सोना-मक्खी।

**विट-लवण**—पु०[स० मध्यम० स०] एक प्रकार का नमक।

**विटामिन**—पु०[अं०विटैमिन] प्राय सभी अनाजों, तरकारियों और फलों में बहुत ही सूक्ष्म मात्रा में पाया जानेवाला एक नव-आविष्कृत तत्व जो शरीर के अंगों के पोषण, स्वास्थ्य-रक्षण आदि के लिए आवश्यक और उपयोगी माना गया है और जिसके बहुत से भेद तथा उपभेद देखे गये हैं। (विटैमिन)

**विट् खदिर**—पु०[स० कर्म० स०] एक प्रकार का खदिर जो बदबूदार होता है।

**विट्घात**—पु०[स० ष० त०] मूत्राघात नामक रोग।

**विट्कल**—पु०[?] विष्णु के अवतार एक देवता जिनकी मूर्ति पंढरपुर (महाराष्ट्र) में प्रतिष्ठित है।

**विट्शूल**—पु०[स०] एक प्रकार का शूल रोग।

**विट्सर**—वि०[स०] वाग्मी।

पु० बृहस्पति।

**विटुल**†—पु०=विट्ठल।

**विटोबा**†—पु०=विट्ठल।

**विडंग**—पु०[स०√विड्+अङ्गच्] बाय विडंग।

पु०[?] घोड़ा।

**विडंबक**—वि०[स० वि√डम्ब् (विडम्बना करना)+णिच्+ण्वुल्-अक] १. ठीक अनुकरण करनेवाला। पूरी नकल करनेवाला। २. केवल अपमानित करने या चिढ़ाने के लिए किसी की नकल उतारनेवाला। ३ हँसी उड़ाने के लिए निंदा करनेवाला।

**विडंबन**—पु०[स०] १ किसी को चिढ़ाने, अपमानित करने आदि के उद्देश्य से उसकी नकल उतारना या हँसी उड़ाना। २. विडंबना।

**विडंबना**—स्त्री०[स० विडम्बन+टाप्] [वि० विडंबनीय, भू० कृ० विडंबित] १ किसी को चिढ़ाने के लिए उसकी उतारी जानेवाली नकल। २. वह हँसी-मजाक जो किसी को चिढ़ाने या अपमानित करने के लिए किया जाय। ३ दम्भ।

**विडंबनीय**—वि०[स० वि√डम्ब्+अनीयर्] जिसकी विडंबना हो सके या होना उचित हो।

**विडंबित**—भू० कृ०[स०] जिसकी विडंबना की गई हो या हुई हो।

**विडंबी (म्बिन्)**—वि०[स० विडम्ब+इनि] १. दूसरों की नकल उतारनेवाला। २. चिढ़ाने या अपमानित करने के उद्देश्य से दूसरों का हँसी-मजाक उड़ानेवाला।

**विड**—पु०[स०] विट् लवण। बिरिया नोन।

**विडरना**—अ०[स० तलव, हिं० डालना या सं० वितरण] १ इधर-उधर होना। तितर-बितर होना। २. भागना।

**विडराना**—स०=विडारना।

**विडलवण**—पु०[स० उपमि० स०] साँचर नमक।

**विडारक**—पु०[स० विड+आरकन्, विडाल+कन्, ल—र] बिड़ाल। बिल्ली।

**विडारना**—स०[हिं० बिडरना का स० रूप] १ तितर-बितर करना। इधर-उधर करना। छितराना २. नष्ट करना।

**विडाल**—पु०[स०√विड् (निंदा करना)+कालन्] १. आँख का पिंड। २ आँख में लगाई जानेवाली दवा या उस पर किया जानेवाला लेप। ३ बिल्ली। ४ गन्ध-बिलाव। ५ हरताल।

**विडालाक्षी**—स्त्री०[स०] बिल्ली-जैसी आँखोंवाली स्त्री।

**विडाली**—पु०[स० विडाल+ङीष्] १. भिंडारी कंद। २. बिल्ली।

**विडीन**—पु०[स० वि√डी (उड़ना)+क्त] पक्षियों की एक विशेष प्रकार की उड़ान।

**विडोजा (जस्)**—पु०[स०]=इंद्र।

**विद्ग्रह**—पु०[स०] कोष्ठबद्धता। मलावरोध।

**विद्घात**—पु०[स०] मलमूत्र का अवरोध। पेशाब और पाखाना रुकना।

**विद्ज**—वि०[स०] विष्ठा में से उत्पन्न होनेवाला (कीड़ा)।

**विद्भंग**—प०[स०] दस्त आने का रोग।

**विद्भेद**—पु०[स० ष० त०]=विद्भंग।

**विद्भेदी (दिन्)**—वि०[स०]=जिसके खाने से दस्त आते हों। विरेचक।

**विद्लवण**—पु०[स०] विट्लवण। साँचर नमक।

**विद्वराह**—पु०[स० मध्यम० स०] गाँवों में रहनेवाला सुअर।

**वितंड**—पु०[स० वि√तंड् (ताड़न करना)+अच्] १ हाथी। २. एक तरह का पुरानी चाल का ताल।

**वितंडा**—स्त्री०[स० वितंड+टाप्] १ ऐसी आपत्ति, आलोचना या विरोध जो छिद्रान्वेषण के विचार से किया गया हो। २ दूसरे के पक्ष को दबाते हुए अपने मत की स्थापना करना। ३ व्यर्थ की कहा-सुनी। झगड़ा। ४. हूब। ५ कबूतर। ६ शिला रस।

**वितंत्र**—पु०[स० वि+तंत्र] ऐसा बाजा जिसमें तार न लगे हों। बिना तार का बाजा।

**वितंत्री**—स्त्री०[स० ब० स०] ऐसी वीणा जिसके तारों का स्वर ठीक मिला न हो।

**वितंस**—पु०[स० वि√तंस् (भूषित करना)+अच्] १. पक्षी रखने का पिंजरा। २ वह रस्सी, जंजीर आदि जिससे पशु या पक्षी को बाँधा जाय।

**वित**—वि०[स० विद्] १. जाननेवाला। ज्ञाता। २. चतुर। होशियार। पु०=वित्त (अर्थ)।

**वितत**—भू० कृ०[स० वि√तन् (विस्तार होना)+क्त] १.फैला हुआ। विस्तृत। २ खींचा या तानाहुआ। जैसे—वितत धनुष। ३ झुका हुआ। पु० १ वीणा नाम का बाजा। २. वीणा की तरह का कोई बाजा।

**वितताना**—अ०[सं० व्यथा] व्याकुल या बेचैन होना।

**वितति**—स्त्री०[सं० वि√तन्+क्तिन्] वितत होने की अवस्था या भाव। विस्तार।

**वितौरसि**—वि०[सं० वितत(फैला हुआ)+उरसि] १. चौड़ी या विस्तृत छातीवाला (वीरों का लक्षण) २. उदार हृदय।

**वितथ**—वि०[सं०वि√तन्+क्थन्] [भाव० वितथता] १. झूठा। मिथ्या। २. निरर्थक। व्यर्थ।
पुं०१ गृह-देवताओं का एक वर्ग। २. भरद्वाज ऋषि।

**वितथ्य**—वि०[स०] १. तथ्य-रहित। २. वितथ। (दे०)

**वितस्ता**—पु०[स० वि√तन्+क, टुट्-आगम] पंजाब की झेलम नदी का प्राचीन नाम।

**वितनु**—वि०[सं० वि√तन्+उ] १ तनहीन। देहहीन। विदेह। २ कोमल, सूक्ष्म तथा सुंदर।
पुं० कामदेव।

**वितपन**†—वि०=व्युत्पन्न।

**वितमस**—वि०=वितमस्क।

**वितमस्क**—वि०[स०] १ जिसमें तम या अंधकार न हो। २ तमोगुण से रहित।

**वितरक**—वि०[स० वितर+कन्] वितरण करनेवाला। बाँटनेवाला।
पुं० व्यावसायिक क्षेत्र में वह व्यक्ति या संस्था जो किसी उत्पादक संस्था की वस्तुओं की बिक्री आदि का प्रबंध करता है। (डिस्ट्रीब्यूटर)

**वितरक नदी**—स्त्री०[स०] आधुनिक भूगोल के पे, किसी नदी के मुहाने पर बननेवाली उसकी शाखाओं में से प्रत्येक शाखा जो स्वतंत्र रूप से जाकर समुद्र में गिरती है। (डिस्ट्रीब्यूटरी)

**वितरण**—पु०[स० वि√तृ (पार करना)+ल्युट्—अन] १ दान करना। देना। २. अर्पण करना। ३ बाँटना। ४ अर्थशास्त्र में उत्पत्ति के फल स्वरूप होनेवाली प्रीति का उत्पत्ति के साधनों में बाँटना। ५. व्यापारिक क्षेत्र में विक्रय तथा प्रदर्शन के उद्देश्य से दुकानदारों तथा व्यापारियों को निर्मित वस्तुएँ देना।

**वितरण**†—वि०=वितरक।

**वितरना**—स०[स० वितरण] वितरण करना। बाँटना। उदा०—आकर्षण घन सा वितरे जल। निर्वासित हो संतप्त सकल। —प्रसाद।

**वितरित**—अव्य०=अतिरिक्त।

**वितरित**—भू० कृ०[स० वितर+इतच्] जो वितरण किया गया हो। बाँटा हुआ।

**वितरिता**—वि०[स० वि√तृ (तरना)+तृच्]=वितरक।

**वितरेक**—पु०=व्यतिरेक।

**वितर्क**—पुं०[सं० वि√तर्क् (तर्क करना)+अच्] १. कुतर्क करना। २. किसी के तर्क का खंडन करने के लिए उसके विपरीत उपस्थित किया जानेवाला तर्क। ३. साहित्य में एक संचारी भाव जो उस समय माना जाता है जब मन में कोई विचार उत्पन्न होने पर मन ही मन उसके विरुद्ध तर्क किया जाता है और इस प्रकार असमंजस में रहा जाता है। ४ एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें किसी प्रकार के संदेह या वितर्क का उल्लेख होता है और कुछ निर्णय नहीं होता।

**वितर्कण**—पुं०[सं० वि√तर्क् (तर्क करना)+ल्युट्—अन] १. तर्क करने की क्रिया या भाव। २. संदेह। ३ वाद-विवाद।

**वितर्कित**—वि०[सं० वितर्क+इत] १. जिसमें किसी प्रकार के वितर्क या संदेह के लिए अवकाश हो। २. अद्भुत। विलक्षण।

**वितर्दि (र्दि)**—स्त्री० [वि√तर्द् (मारना)+इन्] १. वेदी। २ मंच। ३. छज्जा।

**वितल**—पु०[सं० तु० त०] पृथ्वी के नीचे स्थित सात लोकों में से दूसरा लोक। (पुराण)

**वितली (लिन्)**—पुं०[स० वितल+इनि] बकदेव, जो वितल के धारक माने गए हैं। (पुराण)

**वितस्ता**—स्त्री०[स० वि√तस् (ऊपर फेंकना)+क्त+टाप्] पंजाब की झेलम नदी का प्राचीन नाम।

**वितस्ताख्य**—पु०[सं० ब० स०] कश्मीर में स्थित तक्षक नाग का निवास-स्थान। (महाभारत)

**वितस्तात्रि**—पु०[स० मध्यम० स०] राजतरंगिणी में उल्लेखित एक पर्वत।

**वितस्ति**—पु०[स० वि√तस्+क्ति] बारह अंगुल की एक नाप। बित्ता।

**विताडन**—पु०[स० वि√ताड् (मारना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विताडित] ताड़न।

**वितान**—पु० [स० वि√तन् (बिस्तार करना)+घञ्] १ फैलाव। बिस्तार। २ ऊपर से फैलाई जानेवाली चादर। चँदोआ। २ जमाव। समूह। ४. घटा। ५. शून्य स्थान। खाली जगह। ६ यज्ञ। ७. अग्निहोत्र आदि क्रिया। ८ एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में नगण, भगण और दो दो गुरु होते हैं। ९ सिर पर बाँधी जानेवाली पट्टी।
वि० १ खाली। शून्य। २ दुबी। ३ मूर्ख। ४ दुष्ट। ५. परिव्यक्त।

**वितानक**—पु०[सं०] १. बड़ा चँदोआ। २. खेमा। ३. धन-सम्पत्ति। ४ पनियाँ।
वि० फैलानेवाला।

**विताननता**—स०[स० वितान] १. खेमा, शामियाना आदि तानना। २. कोई चीज तानना या फैलाना।

**वितार**—पु०[सं० ब० स०] एक प्रकार का केतु या पुच्छल तारा। (बृहत्संहिता)

**वितारक**—पु०[सं० वितार+कन] बिधारा नामक जड़ी।

**विताल**—वि०[सं० ब० स०] (संगीत या वाद्य) जो ठीक ताल में न बज रहा हो। बे-ताल।
पुं० संगीत में ऐसा ताल जो गाई या बजाई जानेवाली चीज के उपयुक्त न हो।

**वितिकम**†—पुं०=व्यतिक्रम।

**वितिमिर**—वि०[स० ब० स०] जिसमें तम या अंधकार न हो।

**वितीत**†—वि०=व्यतीत।

**वितीपात**†—पुं०=व्यतीपात।

**वितीपाती**—वि०[स० व्यतीपात+ई (प्रत्य०)] जो बहुत अधिक उपद्रव करता हो। पाजी। शरारती।
**विशेष**—फलित के अनुसार ज्योतिष के व्यतीपात योग में जन्म लेनेवाले बालक बहुत दुष्ट होते हैं। इसी आधार पर यह विशेषण बना है।

**वितीर्ण**—भूं०[सं० वि√तृ+क्त]=वितरण।
भू० कृ० १. पार किया या लाँघा हुआ। २. दिया या सौंपा हुआ। ३ जीता हुआ।

**वितुंड**—पु०[सं०] हाथी।

**वित्तु**†—पु०=वित्त (अव)।

**वित्तुद**——पु०[सं०वि√तुद् (पीडित करना)+अच्] एक प्रकार की भूत योनि। (वैदिक साहित्य)

**वित्तुज**—पु०[स० वि√नुद्+क्त] १ शिरियारी या सुसना नामक साग। २ शैवाल। सेवार।

**वित्तुन्नक**—पु०[स० वित्तुन्न+कन्] १ धनिया। २ तूतिया। ३ केवटी मोथा। ४ भू-आँवला।

**वित्तुष्ट**—वि० [स० वि√तुष् (मनुष्ट होना)+क्त]=अमतुष्ट।

**वित्तृण**—वि०[स० ब० स०] (स्थान) जिसमें तृण, घास आदि न उगती हो। तृण से रहित।

**वित्तृप्त**—वि०[स० ब० स०] जो तृप्त या सतुष्ट न हुआ हो। अतृप्त।

**वित्तृष**—वि०[स० ब० स०]=वितृष्ण।

**वित्तृष्ण**—वि०[स०] [भाव० वितृष्णा] जिसके मन में कुछ भी या कोई तृष्णा न रह गई हो। तृष्णा-रहित।

**वितृष्णा**——स्त्री०[स० कर्म० स०] [वि० वितृष्ण] १ मन से किसी बात की तृष्णा न रह जाना। तृष्णा का अभाव। २ बुरी या विकट तृष्णा।

**वित्त**—पु०[स०] १ धन। सपत्ति। २. राज्य, सस्था आदि के आय-व्यय आदि की मद या विभाग और उसकी व्यवस्था। (फाइनान्स)

**वित्त-कोश**—पुं०[स० ष० त०] १. रुपये-पैसे आदि रखने की थैली। २. धन आदि का खजाना।

**वित्तगोप्ता**—पु०[सं० ष० त०] कुबेर के भडारी का नाम।

**वित्तदा**—स्त्री०[स० वित्त√दा (देना)+क, +टाप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

**वित्तनाथ**—पु०[स० ष० त०] कुबेर।

**वित्तपति**—पु०[स० ष० त०]=वित्तपाल।

**वित्तपाल**—पु० [सं० वित्त√पाल् (पालन करना)+अच्] १ कुबेर। २. खजानची। ३. भडारी।

**वित्तपुरी**—स्त्री०[सं० ष० त०] कुबेर की अलका नगरी।

**वित्त-मंत्री**—पु०[सं० ष० त०] १ राज्य का वह मत्री जो आय-व्यय वाले विभाग का प्रधान अधिकारी हो। (फ्राइनान्स मिनिस्टर) २. किसी सस्था के आय-व्यय वाले विभाग का मंत्री। अर्थ-मत्री।

**वित्त-वर्ष**—पु०[सं०] वित्तीय वर्ष।

**वित्तवान्(वत्)**—वि० [स० वित्त+मतुप्, म-व, नुम्] धनवान्।

**वित्त-विधेयक**—पु०[सं० ष० त०] आधुनिक शासन मे विधान सभा मे आगामी वर्ष के लिए उपस्थित किया जानेवाला वह विधेयक जिसमें आय-व्यय सबधी सभी मुख्य बातो का उल्लेख रहता है। (फ्राइनान्स-बिल)

**वित्त-सचिव**—पुं०[स०] वित्त मंत्री।

**वित्त-साधन**—पुं०[सं० ष० त०] आधुनिक शासन व्यवस्था में वे सब द्वार या साधन जिनसे राज्य, सस्था आदि को अर्थ या धन प्राप्त होता है। (फाइनान्सेज)

**वित्तहीन**—वि०[सं० ष० त०] धन-हीन। निर्धन।

**वित्ति**—स्त्री०[स० विद् (जानना)+क्ति] १. विचार। २. प्राप्ति। ३. लाभ। ४. ज्ञान। ५. सभावना।

**वित्तीय**—वि०[स० वित्त+छ-ईय] १. वित्त-सबधी। वित्त का। २. वित्त की व्यवस्था के विचार से चलने या होनेवाला। (फाइनान्सल)

**वित्तीय वर्ष**—पु०[स०]किसी देश की वित्तीय व्यवस्था की दृष्टि से नियत किया हुआ बारह महीनो का समय या वर्ष। जैसे—भारतीय वित्तीय वर्ष १ अप्रैल से ३१ मार्च तक होता है।

**वित्तेश, वित्तेश्वर**—पु०[स० ष० त०] कुबेर।

**वित्त्व**—पु०[स० विद्+त्व] वेत्ता होने की अवस्था या भाव।

**वित्थार**†—पु०=विस्तार।

**वित्थव**—भू० कृ० [स०] घबराया हुआ। व्याकुल।
†वि०=थ्युत्पन्न।

**वित्रप**—वि०[स० ब० स०] निर्लज्ज। बेहया। बेशरम।

**वित्रास**—पु०[स० वि√त्रस् (कांपना)+घञ्]=त्रास (भय)।

**वित्रासन**—पु०[स० वि√त्रस्+णिच्+ल्युट्-अन] [भू० कृ० वित्रासित] डराने की क्रिया। त्रासन।
वि० डरावना। भयानक।

**वित्रुक**—पु०[स० वि√त्रुक्+कन्] पवन।

**वित्रुकना**—अ०[हि० थकना] थकना। उदा०—अग अग वित्रुकित भइ-नारी।—नन्ददास। २ चकित या मुग्ध होकर स्तभित होना।

**वित्रुकित**—भू० कृ०[हि० वित्रुकना] थका हुआ। शिथिल। चकित या मुग्ध होने के कारण स्तब्ध।

**वित्रुराना**—स०=वित्रुराना। (छितराना)।

**वित्था**†—स्त्री०=व्यथा।

**वित्थारना**—स०[सं० वितरण] १. फैलाना। २ छितराना।

**वित्थित**—वि०=कथित।

**वित्थुर**—पुं०[स०√व्यथ् (पीडित करना)+उरच्, य=इ] १. चोर। २ राक्षस। ३. क्षय। नाश।
वि० १. अल्प। थोडा। २. व्यथित।

**वित्थुरा**—स्त्री०[स० वित्थुर+टाप्] १. विरहिणी स्त्री। २ विधवा स्त्री।

**वित्द**—वि० [सं०√विद् (जानना)+क्विप्] जाननेवाला। ज्ञाता। जैसे—ज्योतिर्वित्।
पु० १ पंडित। विद्वान्। २. बुध ग्रह। ३. तिल का पौधा।

**वित्व**—वि०=विद्।

**वित्सग्ध**—भू० कृ०[स० वि√सह् (जलाना)+क्त] [भाव० वित्सग्धता] १. जला हुआ। २. नष्ट। ३. तपा हुआ। ४. जिसने किसी विषय का अच्छा या पूरा ज्ञान प्राप्त करने के लिए अनेक कष्ट सहे हो। ५. चतुर। ६. रसिक।

**वित्सग्धक**—पुं०[स० वित्सग्ध+कन्] जली हुई छाश। (बौद्ध)

**वित्सग्धता**—स्त्री० [स० वित्सग्ध+तल+टाप्] वित्सग्ध (देखें) होने की अवस्था या भाव।

**वित्सग्धा**—स्त्री०[सं० वित्सग्ध+टाप्] साहित्य में वह परकीया नायिका जो चतुरतापूर्वक पर-पुरुष को अपने प्रति अनुरक्त करती है।

**वित्सन्न**—भू० कृ०[स० तृ० त०] १. दिया या सौंपा हुआ। २. बाँटा हुआ।

**वित्सन्नाग**†—वि०=विद्वान्।

**विदर**—पुं०[स० वि√दृ (फाड़ना)+अच्] दराज (सूराख)।

**विदरण**—पुं० [स० वि√दृ+ल्युट—अन] [भू० कृ० विदरित] १. विदीर्ण करना। फाड़ना। २ विद्रधि नामक रोग।

**विदरना**—अ० [सं० विदरण] विदीर्ण होना। फटना।
स० १. विदारण करना। फाड़ना। २ कष्ट देना। पीड़ित करना। उदा०—विदर न मोहि पीत रग ऐसे।—नूर मुहम्मद।

**विदर्भ**—पुं०[स० ब० स०] १. आधुनिक महाराष्ट्र के बरार नामक प्रदेश का पुराना नाम। २ उक्त प्रदेश का राजा।

**विदर्भजा**—स्त्री०[स० विदर्भ√जन् (उत्पन्न करना)+ड+टाप्] १. अगस्त्य ऋषि की पत्नी लोपामुद्रा। २ दमयती। ३ रुक्मिणी।

**विदर्भराज**—पु०[स० ष० त०] दमयती के पिता राजा भीष्मक जो विदर्भ के राजा थे।

**विदर्य्य**—पुं०[स० ब० स०] बिना फनवाला साँप।

**विदल**—वि०[स० ष० त०] १ दल से रहित। बिना दल का। २ खिला हुआ। विकसित। ३. फटा हुआ।
पुं० १. सोना। स्वर्ण। २. अनार का दाना। ३. चना। ४. दाल की पीठी। ५ बाँस की पट्टियों का बना हुआ दौरा या पिटारा।

**विदलन**—पुं०[स० वि√दल् (दलन)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विदलित] १ मलने, दलने या दबाने आदि की क्रिया। २ दलने, पीसने या रगड़ने की क्रिया।

**विदलना**—स० [स० विदलन] दलित करना। नष्ट करना।

**विदलान्न**—पुं०[स० ब० स०, कर्म० स०] १. दला हुआ अन्न। २. दाल। ३ पकाई हुई दाल।

**विदलित**—भू० कृ०[स० वि√दल् (दलन करना)+क्त] १. जिसका अच्छी तरह दलन किया गया हो। २. कुचला या रौंदा हुआ। ३. काटा, चीरा या फाड़ा हुआ। ४ बुरी तरह से ध्वस्त या नष्ट किया हुआ।

**विदा**—स्त्री०[स०√विद्+अङ्+टाप्] बुद्धि। ज्ञान। अक्ल।
स्त्री० [स० विदाय, मि० अ० विदाअ] १ रवाना होना। प्रस्थान। २. कहीं से चलने के लिए मिली हुई अनुमति।

**विदाई**—स्त्री०[हिं० विदा+ई (प्रत्य०)] १. विदा होने की क्रिया या भाव। प्रस्थान। २ विदा होने के लिए मिली हुई अनुमति। ३ विदा होने के समय मिलनेवाला उपहार या धन। ४ किसी के विदा होने के समय उसके प्रति शुभ कामना प्रकट करने के लिए लोगों का एकत्र होना। (फ्रेयरवेल)
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—माँगना।—मिलना।

**विदाय**—पुं०[स० ब० स०] १. विसर्जन। २. प्रस्थान। रवानगी। ३. प्रस्थान करने के लिए मिली हुई अनुमति। ४. दान।
†स्त्री०=विदाई।

**विदायी (यिन्)**—वि०[सं० विदाय+इनि] १. जो ठीक तरह से चलाता या रखता हो। नियामक। २. दाता। दानी।
†स्त्री०=विदाई।

**विदार**—पुं०[सं० वि√दृ (फाड़ना)+घञ्] १. युद्ध। समर। २. फाड़ना। विदारण।

**विदारक**—पुं०[सं० वि√दृ+ण्वुल्—अक] १. वृक्ष, पर्वत आदि जो जल के बीच में हों। २. छोटी नदियों के तल में बना हुआ गड्ढा जिसमें नदी के सूखने पर भी पानी बचा रहता है। ३. नौसादर।
वि० विदारण करनेवाला या फाड़नेवाला।

**विदारण**—पुं०[स० वि√दृ+णिच्+ल्युल्—अक] १. बीच में से अलग करके दो या अधिक टुकड़े करना। चीरना, फाड़ना या ऐसी ही और कोई क्रिया करना। २. मार डालना। वध। ३ ध्वस्त या नष्ट करना। ४. कनेर। ५. खपरिया। ६. नौसादर।

**विदारना**—स०[हिं० विदरना] १. विदारण करना। फाड़ना।

**विदारिका**—स्त्री० [स० वि√दृ+णिच्+ण्वुल्—अक,+टाप्, इत्व] १. बृहत्संहिता के अनुसार एक प्रकार की डाकिनी जो घर के बाहर अग्निकोण में रहती है। २ गभारी नामक वृक्ष। ३ शालपर्णी। ४. कड़ुई तुँबी। ५. विदारी कंद।

**विदारित**—भू०कृ०[स० वि√दृ+णिच्+क्त] जिसका विदारण हुआ हो।

**विदारी (रिन्)**—वि० [सं० वि√दृ+णिनि] विदारक।
स्त्री०[स० वि√दृ (फाड़ना)√णिच्+अच्+ङीष्] १. शालपर्णी। २ भुई कुम्हड़ा। ३. विदारी कंद। ४ क्षीर काकोली। ५. 'भाव प्रकाश' के अनुसार अठारह प्रकार के कंठ रोगों में से एक प्रकार का कंठ रोग। ६ एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमें बगल में फुंसी निकलती है। ७ वाग्भट्ट के अनुसार मेढ़ा सींगी, सफेद पुनर्नवा, देवदार, अनन्तमूल, नृहती आदि ओषधियों का एक गण।

**विदारी कंद**—पुं०[स० ब० स०, ष० त०] भुई कुम्हड़ा।

**विदारी गंधा**—स्त्री०[सं०]१. सुश्रुत के अनुसार शालपर्णी, मुर्ष कुम्हड़ा, गोखरू, शतमूली, अनंतमूल, जीवती, मुगवन, कटियारी, पुनर्नवा आदि औषधियों का एक गण। २. शालपर्णी।

**विदाह**—पुं०[स०वि √दह् (जलाना)+घञ्] [वि० विदाहक, विदाही] १. पित्त के प्रकोप के कारण होने वाली जलन। २ हाथ-पैरों में होने-वाली जलन।

**विदाही**†—वि०=विदाहक।

**विदिक्**—स्त्री०[स० वि√दिश्+क्विप्] दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण। विदिशा।

**विदित**—भू० कृ० [स० विद् (जानना)+क्त] जाना हुआ। अवगत।
पुं० कवि।

**विदिता**—स्त्री०[सं० विदित+टाप्] जैनों की एक देवी।

**विदिव**—पु०[स० विद्+वन्, इ] १. पंडित। विद्वान्। २. योगी।

**विदिशा**—स्त्री०[स०] दो दिशाओं के बीच का कोण।

**विदिशा**—स्त्री० [स० तृ० त०,+टाप्] १. वर्तमान भेलसा नामक नगर का प्राचीन नाम। २. एक पौराणिक नदी जो पारियात्र नामक पर्वत से निकली हुई कही गई है। ३. दो दिशाओं के बीच की दिशा। कोण।

**विदीपक**—पु०[स० कर्म० स०] दीपक। दीया।

**विदीर्ण**—भू० कृ० [स०] १. जिसे फाड़ा गया हो। २. टूटा या तोड़ा हुआ। ३. जो मार डाला गया हो। निहत।

**विदु**—पुं० [सं०√विद् (जानना)+कु] १. हाथी के मस्तक पर का वह सहारा अंश जो दोनों कुभों के बीच में पड़ता है। २. घोड़े के कान के बीच का भाग।
वि० बुद्धिमान्।

**विदुष**†—पु०[स्त्री० विदुषी]=विदुर (विद्वान्)।

**विदुसम**—प०[स०ष०त०] १ वह जो सब बातें जानता हो। २ विष्णु।

**विदुर** [ ]वि०√विद् (जानना)+कुरच्] १ वह जो जानकार हो। २ ज्ञानवान्। ज्ञानी। ३ पंडित।
पु० १ अम्बिका के गर्भ से उत्पन्न व्यास के पुत्र जो धृतराष्ट्र और पांडु के भाई थे। २ एक प्राचीन पर्वत। विदूर।
पु० वैदूर्य (मणि)।

**विदुल**—पु०[नि० वि√दुल् (झूलना)+क, √विद् (जानना) +कुलच्] १ बेंत। २. जलबेंत। ३ अमलबेंत। ४. बोल नामक गन्धद्रव्य।

**विदुला**—स्त्री० [स० विदुल+टाप्] १ सातला नाम का पौधा। २. विट् खदिर।

**विदुष**—भू०[त०√विद् (जानना)+क्वसु, ब-उ] [स्त्री० विदुषी] विद्वान्। पंडित।

**विदुषी**—स्त्री०[स० विदुष+ङीष्] विद्वान् स्त्री।

**विदूर**—वि०[स०] जो बहुत दूर हो।
पु० १ बहुत दूर का प्रदेश। दूर देश। २ एक प्राचीन जनपद अथवा उसमें स्थित एक पर्वत जिसमें वैदूर्य रत्न अधिकता से मिलता था। ३. वैदूर्य मणि।

**विदूरज**—पु०[स०] विदूर पर्वत में उत्पन्न, अर्थात् वैदूर्य मणि।

**विदूरत्व**—पु०[स० विदूर+त्व] विदूर होने की अवस्था या भाव। बहुत अधिक अन्तर या दूरी।

**विदूरथ**—पु०[स०]१ कुशेत्र का एक नाम। २ बारहवें मनु का एक पुत्र।

**विदूरित**—भू० कृ०[स० विदूर+इतच्] दूर किया या परे हटाया हुआ।

**विदूषक**—पु०[स०][स्त्री० विदूषिका] १ दूसरों में दोष बतलाकर उनकी हँसी उड़ानेवाला व्यक्ति। उदा०—वेद विदूषक विश्व विराधी—तुलसी। २ अपने वेष, चेष्टा, बात-चीत आदि से अथवा ढोंग रचकर और दूसरों की नकल उतार कर लोगों को हँसानेवाला। मसखरा। ३ प्राय नाटकों में इस प्रकार का एक पात्र जो नायक का अंतरंग मित्र या सखा होता है तथा जिसकी सूरत-शकल, हाव-भाव, बातें आदि सब को हँसानेवाली होती हैं। ४ साहित्य में चार प्रकार के नायकों में से एक प्रकार का नायक जो अपने कौतुक और परिहास आदि के कारण कामकेलि में सहायक होता है। ५ कामुक या विषयी व्यक्ति। ६ भांड।

**विदूषण**—पु० [स० विद्√दूष् (दूषित करना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विदूषित] १ किसी पर दोष लगाने की क्रिया या भाव। २ भर्त्सना करना। कोसना।

**विदूषना**—वि०[स० विदूषण] १ दूसरों पर दोष लगाना। बुरा बताना। २ कष्ट या दुःख देना।
†अ०—दुखी होना।

**विदूषित**—भू०कृ०[स० वि√दूष् (दूषित करना)+क्त]१. जिस पर दोष लगाया गया हो। २ दोष से युक्त। खराब। बुरा। ३. जिसकी भर्त्सना की गई हो। निन्दा किया हुआ।

**विदृक् (दृश्)**—वि०[स० ब० स०] १. जिसे दिखाई न पड़े। अन्धा। २. जो देखने में किसी से भिन्न हो। 'सदृश' का विपर्याय।

**विदेय**—वि०[स० तृ० त०] दिये जाने के योग्य। देय।

**विदेव**—पु०[स० ब० स०] १. राक्षस। २. यक्ष।

**विदेश**—पु०[स०] स्वदेश से भिन्न दूसरा कोई देश।

**विदेशी**—वि०[स० विदेश+इनि] १. विदेश अर्थात् दूसरे देश का। २ विदेश में बनने या होनेवाला। जैसे—विदेशी कपड़ा।
पु० विदेश अर्थात् दूसरे देश का निवासी।

**विदेशीय**—वि०[स० विदेश+छ—ईय]=विदेशी।

**विदेह**—वि०[स०]१ देह अर्थात् शरीर से रहित। जिसका शरीर न हो। २ अवैत। बेहोश। ३ शारीरिक नित्यादि आदि से रहित। ४ सामान्य बातों से विरक्त। ५. मृत।
पु० १ वह जिसकी उत्पत्ति माता-पिता से न हुई हो। जैसे—देवता, भूत-प्रेत आदि। २ मिथिला के राजा जनक का एक नाम। ३. मिथिला देश। ४. मिथिला देश का निवासी। मैथिल। ५ राजा निमि का एक नाम।

**विदेह-कैवल्य**—पु० [स०] जीवन्मुक्त व्यक्ति को प्राप्त होनेवाला मोक्ष।

**विदेहत्व**—पु०[स० विदेह+त्व] १ विदेह होने की अवस्था या भाव। २ मृत्यु। मौत।

**विदेहपुर**—पु०[स०] राजा जनक की राजधानी। जनकपुर।

**विदेहा**—स्त्री०[स० विदेह+टाप्] मिथिला नगरी और प्रदेश का नाम।

**विदेही (हिन्)**—पु०[स०] ब्रह्मा। स्त्री० सीता।

**विदोष**—वि०[स० ब० स०] दोष-रहित।
पु० १ अपराध। २. पाप।

**विद्दा**†—स्त्री०=विद्या।

**विद्ध**—भू० कृ०[स०√व्यध् (छेदना)+क्त, य-इ] १ बीच में छेदा या बेधा हुआ। जैसे—विद्ध कर्ण। २ फेंका हुआ। ३ घायल। ४ जिसमें बाधा पड़ी हो। ५ टेढ़ा। वक्र। ६ किसी के साथ बँधा हुआ। बद्ध। ७. किसी के साथ मिला या लगा हुआ। जैसे—दशमी विद्ध एकादशी, अर्थात् ऐसी एकादशी जिसमें पहले कुछ दशमी भी रही हो। ८ मिलता-जुलता। ९ पंडित। विद्वान्।

**विद्धक**—वि०[स० विद्ध+कन्] विद्ध करनेवाला।
पु० मिट्टी खोदने की एक प्रकार की खंती या फावड़ा।

**विद्ध-व्रण**—पु०[स०तृ०त०] १.काँटा चुभने से होनेवाला घाव। २. ऐसा व्रण जो किसी चीज के अंग में चुभने या धँसने के फल-स्वरूप हुआ हो।

**विद्धा**—स्त्री०[स० विद्ध+टाप्] छोटी-छोटी फुन्सियाँ।
वि० स० विद्ध का स्त्री०।

**विद्धि**—स्त्री०[सं०√व्यध् (आघात करना)+क्तिन्, य-इ] १. चुभने या धँसने की क्रिया या भाव। वेध। २ इस प्रकार होनेवाला छेद। ३. आघात। चोट। प्रहार।

**विद्यमान**—वि०[स०] [भाव० विद्यमानता] १. जो अस्तित्व में हो। २. जो सामने उपस्थित या मौजूद हो।
**विशेष**—'उपस्थित' और 'विद्यमान' में मुख्य अंतर यह है कि 'उपस्थित' में तो किसी के सामने आने या होने का भाव प्रधान है, परंतु 'विद्यमान' में कहीं या किसी जगह वर्तमान रहने या सत्तात्मक होने का भाव मुख्य है।

**विद्यमानत्व**—पु०[स० विद्यमान+त्व]=विद्यमानता।

**विद्या**—स्त्री०[सं०] १. अध्ययन, शिक्षा आदि से अर्जित किया जाने-

वाला ज्ञान। इल्म। २. पुस्तकों, ग्रन्थों आदि में सुरक्षित ज्ञान। इल्म। ३ किसी तथ्य या विषय का विशिष्ट और व्यवस्थित ज्ञान। ४ किसी गंभीर और ज्ञातव्य विषय का कोई विभाग या शाखा। ५ किसी कार्य या व्यापार की वे सब बातें जिनका ज्ञान उस कार्य के सम्पादन के लिए आवश्यक हो। ६ कौशल या चातुर्य से भरा हुआ ज्ञान। जैसे—ठग-विद्या। ७ दुर्गा।

**विद्याकर**—पु०[सं०] विद्वान् व्यक्ति।

**विद्या-गुरु**—पु०[सं०] वह गुरु जिससे विद्या पढ़ी हो। शिक्षक। (मंत्र देनेवाले गुरु से भिन्न)

**विद्या-गृह**—पु०[सं०] विद्यालय। पाठशाला।

**विद्यात्व**—पु०[सं०] विद्या का भाव।

**विद्या-दान**—पु०[सं०] किसी को विद्या देना या सिखाना।

**विद्या देवी**—स्त्री०[सं०] १ सरस्वती। २ जैनों की एक देवी।

**विद्यादोही**—पु०[सं०] १ विद्यार्थी। २ विद्या-प्रेमी। उदा०—पहले दीक्षित विद्या दीही।—तूतीमोहम्मद।

**विद्याधन**—पु०[सं० कर्म० स०] १ विद्या रूपी धन। २ विद्या के बल से अर्जित किया हुआ धन।

**विद्याधर**—पु०[सं० विद्या√भृ (धारण करना)+अच्] [स्त्री० विद्याधरी] १ एक प्रकार की देव योनि जिसके अन्तर्गत खेचर, गन्धर्व, किन्नर आदि माने जाते हैं। २ वैद्यक में एक रसौषधि। ३. कामशास्त्र में एक प्रकार का आसन या रति—बन्ध।

**विद्याधरी**—स्त्री०[सं० विद्याधर+ङीप्] विद्याधर नामक देवता की स्त्री।

**विद्याधारी**—पु०[सं० विद्याधार+इनि, विद्याधारिन्] एक प्रकार के वर्ण वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में चार मगण होते हैं।

**विद्याधि देवता**—स्त्री०[सं०प० त०] विद्या की अधिष्ठात्री देवी, सरस्वती।

**विद्याधिप**—पु०[सं० ष० त०] १ गुरु। शिक्षक। २. पंडित। विद्वान्।

**विद्यापति**—पु०[सं० ष० त०] १ राज-दरबार का सबसे बड़ा विद्वान्। २ मिथिला के प्रसिद्ध कवि।

**विद्यापीठ**—[सं० ष० त०] १ शिक्षा का बड़ा और प्रमुख केन्द्र। २. ऐसा विद्यालय जिसमें ऊँचे दरजे की शिक्षा दी जाती हो। महाविद्यालय।

**विद्या मंदिर**—पु०[सं० ष० त०] विद्यालय।

**विद्यामहेश्वर**—पु०[सं० ष० त०] शिव।

**विद्यारंभ**—पु०[सं०] हिंदुओं में, बालक को विद्या की पढ़ाई आरम्भ कराने का संस्कार।

**विद्याराज**—पु०[सं०] विष्णु की एक मूर्ति।

**विद्यार्थी**—पु०[सं० विद्या√अर्थ+णिनि] १. वह बालक जो प्राचीन काल में किसी आश्रम में जाकर गुरु से विद्या सीखता था। २. आजकल, वह बालक या युवक जो किसी शिक्षा-संस्था में अध्ययन करता हो। ३. वह व्यक्ति जो सदा कुछ न कुछ और किसी न किसी विषय में जानने-सीखने की लालायित तथा प्रयत्नशील रहता है।

**विद्यालय**—पुं०[सं०] ऐसी शिक्षण संस्था जिसमें नियमित रूप से विभिन्न कक्षाओं के विद्यार्थियों को शिक्षा दी जाती है।

**विद्यावधू**—स्त्री०[सं० ष० त०] सरस्वती।

**विद्यावान्**—वि०[सं० विद्या+मतुप्, म→व] विद्वान्।

**विद्या वृद्ध**—वि०[सं० तृ० त०] विद्या या ज्ञान में औरों से बहुत आगे बढ़ा हुआ।

**विद्या-व्रत**—पु०[सं० ष० त०] गुरु के यहाँ रहकर विद्या सीखने का व्रत।

**विद्या**—स्त्री० विद्युत् (बिजली)।

**विद्युच्चालक**—वि०[सं० ष० त०] (पदार्थ) जिसके एक सिरे से स्पर्श होते ही विद्युत् दूसरे सिरे तक चली जाय। जैसे—धातुएँ, द्रव-पदार्थ आदि।

**विद्युत्**—स्त्री० [सं० वि√द्युत् (प्रकाश करना)+विप्] १. बिजली। २. सन्ध्या का समय। ३ पुरानी चाल की एक प्रकार की वीणा। ४ एक प्रकार की उल्का।

वि० १. बहुत अधिक चमकीला। २. चमक या दीप्ति से रहित।

**विद्युता**—स्त्री० [सं० विद्युत्+टाप्] विद्युत्। बिजली।

**विद्युतिक**—वि०—वैद्युत् (बिजली संबंधी)।

**विद्युत्पात**—पु०[सं०] आकाश से बिजली गिरना। वज्रपात।

**विद्युत्पावक**—पु०[सं०] प्रलय काल के सात मेघों में से एक मेघ।

**विद्युत्प्रभा**—स्त्री०[सं० विद्युत-प्रभ+टाप्] १ दैत्यों के राजा बलि की पोती का नाम। २ अप्सराओं का एक गण या वर्ग।

**विद्युत्प्रापक**—पु०[सं० विद्युत्+मापक, प० त०] एक प्रकार का यंत्र जो विद्युत् की गति या वेग अथवा उसके व्यय की मात्रा नापता है। (इलेक्ट्रोमीटर)

**विद्युन्माला**—स्त्री०[सं०] १. आकाश में दिखाई पड़नेवाली बिजली की रेखा। २ चार चरणों का एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो भगण और दो गुरु होते हैं।

**विद्युन्मुख**—पु०[सं० ब०स०] एक प्रकार के उपग्रह।

**विद्युत्य**—वि०[सं० विद्युत्+यत्] विद्युत् या बिजली से संबंध रखनेवाला। विद्युतिक।

**विद्युत्-विश्लेषण**—पु०[सं०] वह वैज्ञानिक प्रक्रिया जिससे विद्युत् के द्वारा खनिज पदार्थों में से धातुएँ निकालकर अलग की जाती हैं। (इलेक्ट्रोलिसिस)

**विद्युद् गौरी**—स्त्री० [सं० उपमि० स०, ब० स०] शक्ति की एक मूर्ति।

**विद्युद्दर्शी**—पु०[सं०] एक प्रकार का यंत्र जिसकी सहायता से यह देखा जाता है कि किसी वस्तु में कैसी और कितनी विद्युत् की धारा का संचार है। (एलेक्ट्रोस्कोप)

**विद्युद्दाम (न्)**—पु०[सं० ष० त०] बिजली की रेखा।

**विद्युल्लता**—स्त्री०[सं०]=विद्युन्माला।

**विद्युल्लेखा**—स्त्री०[सं० ब० स०] १. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण होते हैं। इसे शेषराज भी कहते हैं। २. विद्युत्। बिजली।

**विद्येश**—पु०[सं० ष० त०] शिव।

**विद्योत**—स्त्री०[सं० वि√द्युत् (प्रकाश करना)+घञ्] १. विद्युत्। बिजली। २. चमक। दीप्ति। प्रभा।

**विद्रध**—वि० [सं०] वि√रध् (आवरण)+कि] १. मोटा-ताजा। हृष्ट-पुष्ट। २. दृढ। पक्का। मजबूत। ३. उद्यत। प्रस्तुत।
पु०—विद्रधि।

**विद्रधि**—पु० [स० वि√रध् (आवरण)+कि, पृषो० सिद्धि] पेट मे होनेवाला ऐसा घाव या फोडा जिसमे मवाद पड गया हो।

**विद्रधिका**—स्त्री० [स० विद्रधि+कन्+टाप्] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का छोटा फोडा जो पुराने प्रमेह के कारण होता है।

**विद्रव**—पु० [स० वि√द्रु (जाना)+अप्] १. द्रवित होना। गलना। २. घबराहट की स्थिति। ३ वृद्धि। समझ। ४ भागना।

**विद्रवण**—पु० [स०] विद्रव।

**विद्राव**—पु० [स० वि√द्रु+घञ्] विद्रव। (दे०)

**विद्रावक**—वि० [स०] १ पिघलानेवाला। २ भगानेवाला।

**विद्रावण**—पु० [स०] [भू० कृ० विद्रावित] [वि० विद्राव्य] १. फाडना। २ नष्ट करना। ३. दे० 'विद्रव'।

**विद्रावी (विन्)**—वि० [स०] १ पिघलने या पिघलानेवाला। २. भागने या भगानेवाला।

**विद्रुत**—वि० [स० वि√द्रु (जाना)+क्त] १ भागा हुआ। २. गला, पिघला या बहा हुआ। ३ डरा हुआ। भयभीत।
पु० लडाई का एक ढग।

**विद्रुम**—पु० [स० कर्म० स०, वि√द्रु+म] १ प्रवाल। मूँगा। २ मुक्ता-फल नामक वृक्ष। ३ वृक्षो का नया पत्ता। कापल।
वि० हरा अर्थात् वृक्षो से रहित (स्थान)।

**विद्रुमफल**—पु० [स०] कुरूप नामक सुगधित घास।

**विद्रुम-लता**—स्त्री० [स०] १ नलिका या नली नामक गध द्रव्य। २ मूँगा। विद्रुम।

**विद्रूप**—पु० [स० निरूप] किसी का किया जानेवाला उपहास। मजाक उडाना।

**विद्रूपण**—पु० [हि० विद्रूप से] किसी का उपहास करना। दिल्लगी या मजाक उडाना।

**विद्रोह**—पु० [स० वि√द्रुह् (वैर करना)+घञ्] १ किसी के प्रति किया जानेवाला द्रोह अर्थात् शत्रुतापूर्ण कार्य। २. विशेषत. राज्य या शासन के प्रति अविश्वास या दुर्भाव उत्पन्न होने पर उसकी आज्ञा, विधान आदि के विरुद्ध किया जानेवाला आचरण और व्यवहार। ३ देश या राज्य में क्रान्ति करने के लिए किया जानेवाला उपद्रव।

**विद्रोही (हिन्)**—वि० [स०] १ विद्रोह-संबधी। २ विद्रोह के रूप मे होनेवाला।

**विद्वज्जन**—पु० [स० कर्म० स०] १ विद्वान्। २ ऋषि।

**विद्वत्कल्प**—वि० [स० विद्वस्+कल्पप्] नाम-मात्र का थोडा पढा-लिखा (आदमी)।

**विद्वत्ता**—स्त्री० [स० विद्वस्+तल्+टाप्] बहुत अधिक विद्वान् होने का भाव। पाडित्य।

**विद्वत्व**—पु० [स० विद्वस्+त्वल्] =विद्वत्ता।

**विद्वद्गोष्ठ**—पु० [स०] विद्वानो मे होनेवाली बहस या विवाद।

**विद्वान्**—वि०, पुं० [स०] १ वह जो आत्मा का स्वरूप जानता हो। २ वह जिसने अनेक प्रकार की विद्याएँ अच्छी तरह पढी हो। ३ सर्वज्ञ।

**विद्विष**—वि० [सं०] द्वेष या शत्रुता रखनेवाला।
पु० दुश्मन। शत्रु।

**विद्विष्ट**—भू० कृ० [स० वि√द्विष् (द्वेष करना)+क्त] [भाव० विद्विष्टता] जिसके प्रति द्वेष की भावना व्यक्त की गई हो।

**विद्विष्टि**—स्त्री० [स० वि√द्विष्+क्तिन्] विद्वेष।

**विद्वेष**—पु० [स० वि√द्विष्+घञ्] १ विशेष रूप से किया जानेवाला द्वेष। २. मनोमालिन्य के कारण मन मे रहनेवाला वह द्वेष या बैर जिसके फल-स्वरूप किसी को नीचा दिखाने या हानि पहुँचाने का प्रयत्न किया जाता है। (स्पाइट) ३ दुश्मनी। शत्रुता।

**विद्वेषक**—वि० [स० वि√द्विष्+ण्वुल्-अक]=विद्वेषी।

**विद्वेषण**—पु० [स० वि√द्विष् (द्वेष करना)+णिच्+ल्युट्-अन] १ विद्वेष करने की क्रिया या भाव। २ दो व्यक्तियो मे विद्वेष उत्पन्न करना।
वि० विद्वेषी।

**विद्वेषिता**—स्त्री० [स० विद्वेषि+तल् टाप्]=विद्वेष।

**विद्वेषी (न्)**—वि० [स० वि√द्विष्+णिनि] मन मे किसी के प्रति विद्वेष रखनेवाला। विद्वेष करनेवाला।
पु० दुश्मन। शत्रु।

**विद्वेष्य**—वि० [स० विद्वेष+यत्] जिसके प्रति मन मे विद्वेष रखा जाय या रखना उचित हो।

**विधंस**†—पु०=विध्वस।
वि०=विध्वस्त।

**विधंसना**—स० [स० विध्वंसन] नष्ट करना। बरबाद करना।

**विध**—पु० [स० विधि] ब्रह्मा।
†स्त्री०=विधि।

**विधजी**—स्त्री० [स० विधा+ङीप्+ङीष्] ब्रह्मा की शक्ति, महासरस्वती।

**विधन**—वि० [स० ब० स०] धन-हीन।

**विधना**—स० [स० विधि] १. प्राप्त करना। २ अपने साथ लगना। ऊपर लेना।

**विधमन**—पु० [स० वि√ध्मा (चौंकना)+ल्युट्-अन, वि√ध्मा (धौंकना)+शतृ ना] धौंकनी से हवा करना। धौंकना।

**विधर**†—अव्य०=उधर (उस तरफ)।

**विधरण**—पु० [स०] [भू० कृ० विधृत] १ पकडना। २ आज्ञा न मानना।

**विधर्ता (र्तृ)**—पु० [स० वि√धृ (धारण करना)+तृच्] विधरण करनेवाला।

**विधर्म**—वि० [स०] १ धर्मशास्त्र की आज्ञा, विधि आदि से बाहर का। अधार्मिक। धर्महीन। २. जिसमे किसी की धार्मिक भावना को आघात लगता हो। ३ अन्यायपूर्ण। ४ अवैध।
पु० १ किसी की दृष्टि से उसके धर्म से भिन्न धर्म। २ ऐसा कार्य जो किया तो गया हो अच्छी भावना से, परन्तु जो वस्तुत धर्मशास्त्र के नियम के विरुद्ध हो।

**विधर्मक**—वि० [सं०] १. विधर्म-संबधी। विधर्म का। २. विधर्म के रूप मे होनेवाला।
३. दे० 'विधर्मी'।

**विधर्मिक**—वि० [सं०]=विधर्मक।

**विधर्मी (र्मिन्)**—पु० [स० विधर्म+इनि] १. वह जो अपने धर्म के

विपरीत आचरण करता हो। धर्म-भ्रष्ट। २ जो किसी दूसरे धर्म का अनुयायी हो। ३ जिसने अपना धर्म छोड़कर कोई दूसरा धर्म अंगीकृत कर लिया हो।

**विधवा**—स्त्री० [सं०] १ वह स्त्री जिसका पति अर्थात् पति मर गया हो। पतिहीन। राँड़। २ विशेषत वह स्त्री जिसने पति के देहांत के उपरांत फिर और विवाह न किया हो।

**विधवापन**—पुं० [सं० विधवा+हिं० पन (प्रत्य०)] वह अवस्था जिसमें विधवा बिना विवाह किये ही अपना जीवन यापन करती है। रँड़ापा। वैधव्य।

**विधवाश्रम**—पुं० [सं० ष० त०, विधवा+आश्रम] वह स्थान जहाँ अनाथ विधवाओं को रखकर उनका पालन-पोषण किया जाता हो।

**विधाँसना**†—स० [सं० विध्वंसन] १. विध्वस्त या नष्ट करना। बरबाद करना। २ अस्त-व्यस्त या गड़बड करना।

**विधा**—स्त्री० [सं०] १ ढग। तरीका। रीति। २ प्रकार। भाँति। ३ हाथी, घोड़े आदि का चारा। ४ वेतन। ५ भाड़ा। किराया। ६ मजदूरी। ७ कार्य। क्रिया। ८ उच्चारण।

**विधातव्य**—वि० [सं० वि√धा (धारण करना)+तव्यत्] १ जिसके संबध में विधान हो सकता हो या होने के लिए हो। २ (काम) जो किया जा सकता हो या आवश्यक रूप से किया जाने को हो। कर्तव्य।

**विधाता (तृ)**—वि० [सं० वि√धा+तृच्] [स्त्री० विधातृका, विधात्री] १ विधान करनेवाला। २ रचनेवाला। बनानेवाला। ३ प्रबंध या व्यवस्था करनेवाला।

पुं० १ सृष्टि की रचना करनेवाली शक्ति। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४ शिव। ५. कामदेव। ६ विश्वकर्मा।

स्त्री० मदिरा। शराब।

**विधातु**—स्त्री० दे० 'असार' (धातुओं का)।

**विधात्री**—वि० स्त्री० [सं० विधातृ+ङीप्] १ विधान करनेवाली। २ रचनेवाली। बनानेवाली। ३ प्रबंध या व्यवस्था करनेवाली।

स्त्री० पिप्पली। पीपल।

**विधान**—पुं० [सं० वि√धा+ल्युट्-अन] [वि० वैधानिक] १ किसी कार्य के संबंध में किया जानेवाला आयोजन और उसका प्रबंध या व्यवस्था। २ कोई चीज तैयार करने के लिए बनाना। निर्माण। रचना। सर्जन। ३ किसी चीज या बात का किया जानेवाला उपयोग, प्रयोजन या व्यवहार। जैसे—धातु मे प्रत्यय का विधान करना। ४ यह कहना या बतलाना कि अमुक काम या बात इस प्रकार होनी चाहिए। ढग, प्रणाली या रीति बतलाना। ५. बतलाया हुआ ढग, प्रणाली या रीति। विशेषत धार्मिक रीति। ६ कायदा। नियम। ७ कही या बतलायी हुई ऐसी बात जो आदेश के रूप मे हो और जिसका अनुसरण या पालन आवश्यक और कर्तव्य के रूप मे हो। जैसे—धर्मशास्त्र का विधान। ८ आज-कल राज्य या शासन के द्वारा जारी किया हुआ कोई कानून जिसमे किसी विषय की विधि और निषेध से संबंध रखनेवाली सभी बातें धाराओं के रूप मे लिखी रहती हैं। कानून। (लॉ) ९ नाटक मे, विभिन्न भावनाओं, विचारों आदि मे होनेवाला द्वंद्व और सघर्ष। १०. अनुमति। आज्ञा। ११. अर्चन। पूजा। १२. धन-सपत्ति। १३. किसी को हानि पहुँचाने के लिए किया जानेवाला दाँव-पेंच या शठता का व्यवहार। शाठ्यपूर्ण आचरण। १४ शब्दों मे उपसर्ग, प्रत्यय आदि लगाने की क्रिया या रीति। १५ हाथी को मस्त करने के लिए खिलाया जानेवाला चारा।

**विधानक**—पुं० [सं० विधान+कन्] १ विधान। २. वह जो विधान का ज्ञाता हो।

वि० विधान करनेवाला।

**विधान-परिषद्**—स्त्री० [सं०] राज्य की विधान सभा से भिन्न दूसरी बड़ी विधि-निर्मात्री सभा जिसका चुनाव परोक्ष रीति से होता है। (लेजिसलेटिव कौंसिल)

**विधान-मंडल**—पुं० [सं०] राज्य के संबध मे विधान बनानेवाले दोनों अगों का सामूहिक नाम और रूप। (लेजिस्लेचर)

**विशेष**—इसके दो अग या सदन होते हैं—विधान परिषद् और विधानसभा।

**विधान-सप्तमी**—स्त्री० [सं०] माघ शुक्ल सप्तमी।

**विधान-सभा**—स्त्री० [सं०] किसी देश या राज्य की वह सभा या सस्था, विशेषत निर्वाचित प्रतिनिधियों की सभा या सस्था जिसे कानून या विधान बनाने का अधिकार होता है। (लेजिस्लेटिव एसेम्बली)

**विधानांग**—पुं० [सं०] विधान-मडल।

**विधानी**—वि० [सं० विधान+इनि, अथवा विधान+हिं० ई (प्रत्य०)] १ विधान जाननेवाला। २ विधान या विधिपूर्वक काम करनेवाला।

**विधायक**—वि० [सं० वि√धा+ण्वुल्-अक, वृक्] [स्त्री० विधायिका] १ विधान करनेवाला। जैसे—एकता का विधायक। २ कार्य का सम्पादन करनेवाला। ३ निर्माण या रचना करनेवाला। ४. निर्माण के रूप में होनेवाला। रचनात्मक। ५ प्रबंध या व्यवस्था करनेवाला।

पुं० विधान सभा (या परिषद्) का सदस्य।

**विधायन**—पुं० [सं०] १. विधान करने या बनाने की क्रिया या भाव। २. आज-कल विशेष रूप मे शासन अथवा विधान मडल द्वारा कोई विधान (कानून) बनाने की क्रिया या भाव। (एनैक्टमेन्ट) ३. उक्त प्रकार से बने हुए अधिनियम, विनियमों आदि।

**विधायन-संग्रह**—पुं० [सं०] किसी विषय, विभाग आदि के कार्य-सचालन से संबद्ध नियमों, निर्देशों आदि का सग्रह। सहिता। (कोड) जैसे—बंगाल विधायन सग्रह।

**विधायिका**—वि० स्त्री० [सं०] विधान-निर्मात्री सस्था। जैसे—विधान परिषद्, विधान सभा, लोक सभा, राज्य सभा आदि।

**विधायी (यिन्)**—वि० [सं० वि√धा (धारण करना)+णिनि, युक्] [स्त्री० विधायिनी] विधान करने या बनानेवाला। विधायक। (दे०)

पुं० १ निर्माण करनेवाला। २ सस्थापक।

**विधारण**—पुं० [सं० वि√धृ (धारण करना)+णिच्+ल्युट्-अन] १. रोकना। २. वहन करना।

**विधि**—स्त्री० [सं०] १. कोई काम करने का ठीक ढग या रीति, क्रिया, व्यवस्था आदि की प्रणाली।

**मुहा०—(किसी काम या बात की) विधि बैठना**=लगाई हुई युक्ति का ठीक या सफल सिद्ध होना। जैसे—यदि तुम्हारी विधि बैठ गई तो काम होने मे देर न लगेगी।

२. आपस में होनेवाली अनुकूलता या सगति।

**मुहा०**—(आपस में) **विधि बैठना**=अनुकूलता, मेल-मिलाप या संगति होना। जैसे—अब तो उन लोगों में विधि बैठ गई है। **विधि मिलना**=अनुरूपता होना। जैसे—जन्म-कुंडली की विधि मिलना।

३ ऐसी आज्ञा या आदेश जिसका पालन अनिवार्य या आवश्यक हो। ४ धर्म-ग्रन्थों, शास्त्रों आदि में बतलाई हुई ऐसी व्यवस्था जिसे साधारणतः सब लोग मानते हों।

**पद—विधि-निषेध**=ऐसी बातें जिनमें यह कहा गया हो कि अमुक-अमुक काम या बातें करनी चाहिए और अमुक-अमुक काम या बातें नहीं करनी चाहिए।

५ आचार-व्यवहार।

**पद—गति-विधि**=आने बढ़ने, पीछे हटने आदि के रूप में होनेवाली चाल-ढाल या रंग-ढंग। जैसे—पहले कुछ उसके रोजगार की गति-विधि तो देख लो, तब उनके साथ साझेदारी करना।

६ तरह। प्रकार। भाँति। उदा०—एहि विधि राम सबहि समुझावा।—तुलसी। ७ व्याकरण में वह स्थिति जिसमें किसी से काम करने के लिए कहा जाता है। जैसे—(क) तुम वहाँ जाओ। (ख) यह चीज यहीं रहनी चाहिए। ८ साहित्य में, एक अर्थालंकार जिसमें किसी सिद्ध विषय का फिर से विधान किया जाता है। जैसे—वर्षा-काल के ही मेघ, मेघ हैं। ९ आज-कल राज्य या शासन के द्वारा चलाये या बनाये हुए वे सब नियम, विधान आदि जिनका उद्देश्य सार्वजनिक हित की रक्षा करना होता है और जिनका पालन सबके लिए अनिवार्य तथा आवश्यक होता है। कानून। (लॉ)

पु० सृष्टि की रचना करनेवाला, ब्रह्मा।

**विधिक**—वि० [सं०] [भाव० विधिकता] १ विधि-संबंधी। २ विधि के रूप में होनेवाला। ३. (कार्य) जिसे करने में कोई कानूनी अड़चन न हो। ४ जो विधि के विचार से न्याय-संगत हो। (लीगल)

**विधिकता**—स्त्री० [सं०] १ विधिक होने की अवस्था या भाव। २. कानून के विचार से होनेवाली अनुकूलता।

**विधिक प्रतिनिधि**—पु० [सं०] वह प्रतिनिधि जिसे किसी की ओर से न्यायालय में कानूनी कार्रवाई करने का अधिकार प्राप्त हो। (लीगल रिप्रेजेंटटिव)

**विधिकर्ता**—पु० [सं०] वह जो विधि या कानून बनाता हो। (लॉ-मेकर)

**विधिक व्यवहार**—पु० [सं०] वह कार्य या प्रक्रिया जो किसी व्यवहार या मुकदमे में विधि या कानून के अनुसार होती है। (लीगल प्रोसीडिंग)

**विधिक साध्य**—स्त्री० [सं०] विधिक-निर्णय। (दे०)

**विधिज्ञ**—पु० [सं०] १ वह जो विधि-विधान आदि का अच्छा ज्ञाता हो। २ कानून का ज्ञाता ऐसा व्यक्ति जो दूसरों के व्यवहारों के संबंध में न्यायालय में प्रतिनिधि के रूप में काम करता हो। (लायर) ३. वह जो काम करने का ठीक ढंग जानता हो।

**विधितः**—अव्य० [सं०] १ विधि या रीति के अनुसार। २ कानून के अनुसार। (बाईलॉ) ३ कानून की दृष्टि में या विचार से। (ब्री जूरी, लॉ-फुली)

**विधि दर्शक**—पु० [सं०] विधिदर्शी। (दे०)

**विधिदर्शी**—पु० [सं० विधिदर्शिन्] यज्ञ में वह व्यक्ति जो यह देखने के लिए नियुक्त होता था कि होता, आचार्य आदि विधि के अनुसार कर्म कर रहे हैं या नहीं।

**विधिना**†—पु०=विधना (ब्रह्मा)।

**विधि-निषेध**—पु० [सं० ष० त०] साहित्य में आक्षेप अलंकार का एक भेद जिसमें कोई काम करने की विधि या अनुमति देने पर भी प्रकारांतर से उसका निषेध किया जाता है। जैसे—आप जाते हैं तो जाइए; अगले जन्म में मैं आपके दर्शन करूँगी। (अर्थात् आप के दर्शन की लालसा में प्राण दे दूँगी।)

**विधि-पत्नी**—स्त्री० [सं०] सरस्वती।

**विधिपाट**—पु० [सं०] मूद्रग के चार वर्णों में से एक वर्ण। शेष तीन वर्ण ये हैं—पाट, कुटपाट और खड़पाट।

**विधिपुत्र**—पु० [सं० विधि+पुत्र] ब्रह्मा के पुत्र, नारद।

**विधिपुर**—पु० [सं० विधि+पुर] ब्रह्मलोक।

**विधि-भंग**—पु० [सं०] १ विधि अर्थात् कानून का उल्लंघन करने की क्रिया या भाव। नियम तोड़ना। (ब्रीच आफ लॉ)

**विधि-भेद**—पु० [सं०] साहित्य में, उपमा अलंकार का एक दोष जो उस समय माना जाता है, जब उपमेय और उपमान के गुण, धर्म आदि का मेल ठीक से नहीं बैठता।

**विधिरानी**—स्त्री० [सं० विधि+हिं० रानी] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

**विधिलोक**—पु० [सं०] ब्रह्मलोक।

**विधिवत्**—अव्य० [सं०] १ विधिपूर्वक। विधित। २ जिस प्रकार होना चाहिए उसी प्रकार।

**विधि-वधू**—स्त्री० [सं०] ब्रह्मा की पत्नी, सरस्वती।

**विधि-वादपद**—पु० [सं०] विधिक क्षेत्रों में वह वादपद जिसका संबंध व्यवहार या मुकदमे के केवल विधिक या कानूनी पक्ष से हो। तथ्य-वादपद से भिन्न। (इश्यु आफ लॉ)

**विधि-वाहन**—पु० [सं०] ब्रह्मा की सवारी, हंस।

**विधिविहित**—वि० [सं० तृ० त०] शास्त्रीय विधियों आदि में कहा या बतलाया हुआ। विधि में जैसा विधान हो, वैसा।

**विधिवेध**—पु० [सं० ष० त०] विधि और निषेध।

**विधुंतुद**—पु० [सं० विधुन्तुद] राहु।

**विधुंतुद**—पु० [सं० विधि√तुद् (दुःख देना)+खच्, मुम्] चंद्रमा को दुःख देनेवाला। राहु।

**विधु**—पु० [सं०] १ चंद्रमा। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४. वायु। हवा। ५ कपूर। ६. अस्त्र। आयुध। ७. जल से किया जानेवाला स्नान। ८ पौधों आदि का प्रक्षालन।

**विधुकांत**—पु० [सं०] संगीत में, एक प्रकार का ताल।

**विधुतार**—स्त्री० [सं० ष० त०] चन्द्रमा की स्त्री। रोहिणी।

**विधुप्रिया**—स्त्री० [सं० ष० त०] १. चंद्रमा की स्त्री। रोहिणी। २. कुमुदिनी। कोई। (दे०)

**विधु-बंधु**—पु० [सं० ष० त०] कुमुद (फूल)।

**विधु-बेनी**—स्त्री० [सं० विधु+वदन, प्रा० वयन] चंद्रमुखी। सुंदरी स्त्री।

**विधुमणि**—पु० [सं० ष० त०] चंद्रकांत मणि।

**विधुमुखी**—वि० [सं०] चन्द्रमा के समान सुंदर मुखवाली (स्त्री)।

**विधुर**—वि० [सं०] [स्त्री० विधुरा] १ दुःखी। २. घबराया या डरा

हुआ। ३ बेचैन। विकल। ४ अशक्त। असमर्थ। ५. छोड़ा या त्यागा हुआ। परित्यक्त। ६. मूढ़। ७. जिसकी स्त्री मर चुकी हो। रँड़ुआ। ८ किसी बात से रहित या हीन। (यौ० के अन्त में) जैसे—अनुनय-विधुर=जो अनुनय-विनय करना न जानता हो या न करता हो। पु० १. कष्ट। दुख। २ जुदाई। वियोग। ३ अलगाव। पार्थक्य। ४. कैवरय। ५. दुश्मन। शत्रु।

**बिधुरा**—स्त्री०[सं०] १ कानों के पीछे की एक स्नायु ग्रन्थि, जिसके पीड़ित या खराब होने से आदमी बहरा हो जाता है। २ मट्ठा। लस्सी।

**बिधुबदनी**—स्त्री०[सं० ब० स०] चन्द्रमुखी।

**बिधुर**—भू० कृ०[सं०] [भाव०विधुरित] १ काँपता हुआ। २ हिलता हुआ। ३ छोड़ा या त्यागा हुआ। ४ अलग या दूर किया हुआ। ५ निकाला या बाहर किया हुआ।

**बिधुति**—स्त्री०[स०]

**बिधूनन**—पु०[स० वि√धू (कंपन)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० बिधूनित] कंपन। काँपना।

**बिधृत**—भू० कृ०[स० वि√धृ (धारण करना)+क्त] १ ग्रहण या धारण किया हुआ। २. अलग किया हुआ। ३. रोका हुआ। ४. आनाकानी अधिकार में लाया हुआ। ५. सँभाला हुआ।
पु० १. आज्ञा की अवज्ञा। २. असंतोष।

**बिधृति**—स्त्री०[स० वि√धृ+क्तिन्] १. अलगाव। पार्थक्य। २ विभाजन। ३. व्यवस्था। ४. नियम। ५ विभाजक रेखा।

**बिधेय**—वि०[सं०] १. देने योग्य। २ प्राप्त करने योग्य। ३. जिसके प्रति विधि का आदेश दिया जाय। ४. जिसे कुछ करने का आदेश दिया जाय। ५. जिसके संबंध में विधान किया जाने का हो। ६ प्रदर्शित किये जाने के योग्य। ७ प्रज्वलित किये जाने के योग्य।
पु०१. वह काम जो अवश्य किये जाने के योग्य हो। २ व्याकरण में, वह पद या वाक्यांश जिसके द्वारा किसी के संबंध में कुछ विधान किया अर्थात् कहा या बतलाया जाता है। हिन्दी में इसका अन्वय या तो (क) कर्ता से होता है या (ख) प्रधान कर्म से। जैसे—(क) राम जाता है। और (ख) राम रोटी खाता है। में 'जाता है' और 'खाता है', विधेय है, क्योंकि 'जाता है' से राम (कर्ता) के संबंध में और 'खाता है' से रोटी (कर्म) के संबंध में कुछ कहा या बतलाया गया है। ३. साहित्य में प्रिय के मान-मोचन के दो उपचारों में से एक, जिसमें उपेक्षा, पृष्टता, भय, हर्ष आदि दिखलाकर उसे प्रकारान्तर से अनुकूल करने का प्रयत्न किया जाता है।

**बिधेयक**—पुं० [सं० विधेय+कन्] आज-कल किसी कानून या विधान का वह प्रस्तावित रूप या मसौदा जो विधान बनानेवाली परिषद् या सभा के सामने विचारार्थ उपस्थित किया जाने को हो। (बिल)

**बिधेयता**—स्त्री०[सं० विधेय+तल्+टाप्] १ विधेय होने की अवस्था, गुण या भाव। २. अधीनता।

**बिधेयत्व**—पुं०[सं० विधेय+त्व] विधेयता।

**बिधेयात्मा (त्मन्)**—पुं०[सं० ब० स०] विष्णु।

**बिधेयाविमर्श**—पु० [सं० ब० स०] साहित्य में एक प्रकार का वाक्य-दोष जो विधेय अंश के प्रधान स्थान प्राप्त होने पर होता है। मुख्य बात का वाक्य-रचना के बीच दबा रहना।

**बिध्य**—वि०[स०√विध् (छेदना)+यत्] जो बींधा जाने को हो या जो बेधा जा सकता हो।

**बिध्यात्मक**—वि०[सं०] १. विधि से संबंध रखता हुआ और उससे युक्त। २. जो विधि के पक्ष का हो। सकारात्मक। तहिक। 'निषेधात्मक' का विपर्याय। (पाश्चिदिव)

**बिध्वंस**—पु०[स० वि√ध्वंस् (नाश करना)+घञ्] १ विनाश। नाश। बरबादी। २. घृणा। ३. वैर। शत्रुता। ४ अनादर। अपमान।

**बिध्वंसक**—वि०[स० वि√ध्वंस् (नाश करना)+ण्वुल्—अक] विध्वंस या नाश करनेवाला।
पु० एक प्रकार के विनाशक पौधे। (डेस्ट्रक्टिव)

**बिध्वस्त**—भू० कृ०[स० वि√ध्वंस्+क्त] नष्ट किया हुआ। बरबाद किया हुआ।

**बिन**†—सर्व०[हिं० वा—उन] हिं० 'उन' के बहु० उन' को स्थानिक रूप। अव्य० बिना (बँगला)।

**बिनत**—वि०[स०] [स्त्री० विनता] १ नीचे की ओर प्रवृत्त। झुका हुआ। २ जिसने किसी के सामने मस्तक या सिर झुका रखा हो। ३ विनीत। नम्र। ४ टेढ़ा। बंका। ५ सिकुड़ा हुआ। संकुचित। ६ कुबड़ा। कुब्ज।
पु० महादेव। शिव।

**बिनतकौ**†—स्त्री० =विनति।

**बिनता**—स्त्री०[स० विनत+टाप्] १. दक्ष प्रजापति की एक कन्या जो कश्यप को ब्याही थी और जिसके गर्भ से गरुड़ का जन्म हुआ था। २ एक राक्षसी जिसे रावण ने सीता के पास उसे समझाने-बुझाने के लिए रखा था। ३. व्याधि उत्पन्न करनेवाली एक कल्पित राक्षसी। ४. प्रेत या बहुमूत्र के रोगियों को होनेवाला एक प्रकार का फोड़ा।

**बिनति**—स्त्री०[स० वि√नम् (नम्र होना)+क्तिन्] १ विनीत होने की अवस्था, गुण या भाव। २. झुकाव। ३ विनीत भाव से की जानेवाली प्रार्थना। अनुनय-विनय। ४. व्यवहार, स्वभाव आदि की नम्रता। ५ दमन। ६. निवारण। रोक। ७. विनियोग।

**बिनती**—स्त्री०[सं० विनत+ङीप्]=विनति।

**बिनद्ध**—भू० कृ०[सं० वि√नह् (बाँधना)+क्त] १ किसी के साथ जोड़ा या बाँधा हुआ। २. बन्धन से युक्त किया हुआ।

**बिनमन**—पु० [स० वि√नम् (नम्र होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विनमित] १. झुकना। २ नम्रतापूर्वक झुकना।

**बिनम्र**—वि० [स०] [भाव० विनम्रता] १. विशेष रूप से नम्र। २ विनीत और सुशील। ३. झुका हुआ।
पु० तगर का फूल।

**बिनम्रता**—स्त्री०[सं०] विनम्र होने की अवस्था या भाव।

**बिनय**—स्त्री०[सं०] १. यह कहना या बतलाना कि अमुक काम या बात इस प्रकार होनी चाहिए। कुछ करने का ढंग बतलाना या सिखाना। शिक्षा। २. कोई काम या बात करने का अच्छा, ठीक और सुंदर ढंग। ३. आचार, व्यवहार आदि में रहनेवाली नम्रता और सौजन्य जो अच्छी शिक्षा से प्राप्त होता है। (मॉडेस्टी)। ४. कर्तव्य आदि का ऐसा निर्वाह और पालन जिसमें कुछ भी त्रुटि या दोष न हो। ५. आदेशों, नियमों आदि का ठीक ढंग से और भले आदमियों की तरह

किया जानेवाला पालन। (शिक्षित) ६ नम्रतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना या विनती। ७ नीति। ८ इंद्रिय-निग्रह। जितेंद्रिय व्यक्ति। १० किसी को नियंत्रण या शासन में रखने के लिए कही जानेवाली ऐसी बात जिसके साथ अवज्ञा के लिए दंड का भी भय दिखाया जाय या विधान किया गया हो। (स्मृति) ११ वणिक्। व्यापारी।

**विनयकर्म (न्)**—पु० [सं० ष० त०] पढ़ाने, सिखाने आदि का कार्य। शिक्षण। शिक्षा।

**विनय-ग्राही (हिन्)**—वि० [सं०] अनुशासन में रहकर मर्यादा का पालन करनेवाला।

**विनयधर**—पु० [सं०] पुरोहित।

**विनय पिटक**—पु० [सं० ष० त०] बौद्धों का एक धर्म-ग्रंथ जिसमें विनय अर्थात् सदाचार संबंधी नियम संगृहीत हैं।

**विनयवान्**—वि० [सं० विनय+मतुप्, विनयवत्] [स्त्री० विनयवती] जिसमें विनय अर्थात् नम्रता हो। शिष्ट।

**विनयशील**—वि० [सं०] जो स्वभावतः विनम्र हो। प्रकृति से विनम्र।

**विनयाध्यक्ष**—पु० = सभाध्यक्ष।

**विनयावनत**—भू० कृ० [सं० तृ० त०] विनय के कारण झुका हुआ। विनम्र।

**विनयी (यिन्)**—वि० [सं० विनय+इनि, दीर्घ, न-लोप] विनययुक्त।

**विनवना**†—स० [सं० विनय] विनय करना। नम्रतापूर्वक कुछ कहना। अ० १ नम्र होना। २ झुकना।

**विनशन**—पु० [सं० वि√नश् (नाश करना)+ल्युट्—अन] विनाश करने की क्रिया या भाव।
वि० विनश्वर।

**विनश्वर**—वि० [सं० वि√नश् (नष्ट करना)+वरच्] [भाव० विनश्वरता] जिसका विनाश होने को हो।

**विनष्ट**—भू० कृ० [सं०] [भाव० विनष्टि] १ जो अच्छी तरह नष्ट हो चुका हो या नष्ट किया जा चुका हो। बरबाद। २ मरा हुआ। मृत। ३. बिगड़ा हुआ। विकृत। ४. भ्रष्ट आचरणवाला। पतित।

**विनष्टि**—स्त्री० [सं० वि√नश् (नष्ट करना)+क्तिन्] १ वह अवस्था जो विनाश की सूचक हो। २ विनाश। ३ पतन। ४ लोप।

**विनष्टीपत्नीकी (यिन्)**—वि० [सं० विनष्टीप√जीव् (जीवित करना)+णिनि] मुर्दा जाकर जीनेवाला।

**विनस**—वि० [सं० ब० स०, नासिका—नसादेश] [स्त्री० विनसा, विनसी] १ बिना नाक का। नककटा। २ बेशर्म।

**विनसना**—अ० [सं० विनशन] नष्ट होना। लुप्त होना।
†स० -विनसाना।

**विनसाना**—स० [हि० विनसना का स० रूप] १ नष्ट करना। २. बिगाड़ना।
†अ० = विनसना।

**बिना**—अव्य० [सं० वि+ना] १ न होने पर। अभाव में। बिना। जैसे—आप के बिना काम न चलेगा। २ अलग रहकर अथवा उपयोग न करते हुए। जैसे—बिना जूते के चलने में कष्ट होता है। ३ अतिरिक्त। सिवा। (क्व०) जैसे—तुम्हारे बिना उसका है ही कौन।

**विनाड़ी**—स्त्री० [सं०] एक घड़ी का साठवाँ भाग। पल। प्रायः २४ सेकंड का समय।

**विनाथ**—वि० [सं० ब० स०] जिसका नाथ न हो। अनाथ।

**विनाम**—भू० [सं० वि√नम् (नम्र होना)+घञ्] १ टेढ़ापन। वक्रता। २ वैद्यक में, पीड़ा आदि के कारण शरीर के किसी अंग का झुक जाना। ३ किसी पदार्थ का वह गुण जिसके कारण वह झुकाया या मोड़ा जा सकता है।

**विनायक**—पु० [सं० कर्म० स०] १. गणों के नायक गणेश। २ गरुड़। ३. गुरु। ४ गौतम बुद्ध। ५. बाधा। विघ्न।
**विशेष**—पुराणों में विनायक के कई रूप कहे गये हैं। यथा कीर्ण विनायक, दवविघ्नविनायक, सिद्धर विनायक, हस्ति विनायक आदि।

**विनायक चतुर्थी**—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] माघ सुदी चौथ। गणेश-चतुर्थी।

**विनायिका**—स्त्री० [सं०] १ विनायक अर्थात् गणेश की पत्नी। २ गरुड़ की पत्नी।

**विनाल**—वि० [सं० ब० स०] जिसमें नाल अर्थात् डंठल न हो।

**विनाश**—पु० [सं० वि√नश्+घञ्] १ ऐसी स्थिति जो अत्यधिक धन-जन की हानि की परिचायिका हो। नाश। ध्वंस। जैसे—भूकंप के कारण शहरों, बाढ़ के कारण गाँवों, अतिवृष्टि या अनावृष्टि के कारण खेतों का होनेवाला विनाश। २ अदर्शन। लोप। ३ खराबी। विकार। ४ दुर्दशा। ५. नुकसान। हानि।

**विनाशन**—पु० [सं०] १ नाश करना। २ मार डालना। ३ बिगाड़ना। ४ काल का पुत्र एक असुर।

**विनाशित**—भू० कृ० [सं० वि√नश्+णिच्+क्त]=विनष्ट।

**विनाशी (शिन्)**—वि० [सं० वि√नश्+णिनि] [स्त्री० विनाशिनी] १ विनाश या ध्वंस करनेवाला। (डेस्ट्रॉयर) २ मार डालनेवाला। ३ खराब करने या बिगाड़नेवाला।

**विनाश्य**—वि० [सं० वि√नश् (नष्ट करना)+ण्यत्] जिसका विनाश हो सकता या होने को हो।

**विनासा**†—पु० = विनाश।

**विनासक**—वि० [सं० ब० स०, +कन्, ह्रस्व] बिना नाक का। नकटा।
†वि० = विनाशक।

**विनासन**†—पु० = विनाशन।

**विनासना**†—स० [सं० विनाशन] विनाश करना।
†अ० विनष्ट होना।

**विनिंदा**—स्त्री० [सं० विनिन्द+टाप्] बहुत अधिक निंदा।

**विनिगमक**—वि० [सं० वि+नि√गम्+ण्वुल्—अक] निश्चयपूर्वक एक पक्ष को स्वीकृत करने और दूसरे को त्यागनेवाला।

**विनिगमना**—स्त्री० [सं०] १ विचारपूर्ण निर्णय। २ वह स्थिति जिसमें एक पक्ष का ग्रहण और दूसरे पक्ष का त्याग होता है। ३. नतीजा। परिणाम।

**विनिग्रह**—पु० [सं० वि+नि√ग्रह् (ग्रहण करना)+क] १. निग्रह। संयम। २ बाधा। रुकावट। ३. अवरोध।

**विनिद्र**—वि० [सं० ब० स०] १. जिसे नींद न आई हो। जागता हुआ। २. जिसे नींद न आती हो। ३. खिला हुआ। उन्मीलित।

**विनिधान**—पु०[स०] [भू० कृ० विनिधित] १. किसी विशिष्ट उद्देश्य अथवा कार्य के लिए अथवा योजना के अनुसार किसी को अलग कर कहीं रखना। (एलोकेशन) जैसे—छात्रवृत्ति के लिए किसी निधि के कुछ अंश का होनेवाला विनिधान। २ कार्य-प्रणाली आदि के संबंध में दी जानेवाली सूचना। हिदायत।

**विनिपात**—पु०[स०] १ विशेष रूप से या अच्छी तरह से किया हुआ निपात। २. विनाश। ३ वध। ४ अपमान। ५ गर्भपात। ६. बहुत बड़ा कष्ट या संकट उपस्थित करनेवाली घटना या स्थिति। आपद्। (कैलेमिटी)

**विनिपातक**—वि०[स० वि+नि√पत् (पतन होना)+णिच्+ण्वुल्—अक] विनिपात अर्थात् विनष्ट करनेवाला।

**विनिपाती (तिन्)**—वि०[स०] = विनिपातक।

**विनिमय**—पु०[सं०] १ एक वस्तु लेकर उसके बदले में दूसरी वस्तु देना। परिवर्तन। (बार्टर) २ वह प्रक्रिया जिसके अनुसार भिन्न-भिन्न प्रदेशों या देशों का लेन-देन विनिमय-पत्रों के अनुसार होता है। ३ वह प्रक्रिया जिसके अनुसार भिन्न भिन्न देशों के सिक्कों के आपेक्षिक मूल्य स्थिर होते हैं और जिसके अनुसार आपसी लेन-देन चुकाये जाते हैं। ४ किसी क्षेत्र में किसी से कुछ पाकर उसके बदले में वैसा ही कुछ देना। (एक्सचेंज, अंतिम तीनों अर्थों के लिए) जैसे—विचार-विनिमय।

**पद—विनिमय की दर**=वह निश्चित की हुई दर जिस पर देशों के सिक्के परस्पर बदले जाते हैं।

५. गिरवी या बंधक रखना। ६. साहित्य में एक अर्थालंकार जिसमें कुछ कम देकर बहुत कुछ लेने का वर्णन रहता है।

**विनियंत्रण**—पु०[सं० ब० स०] [भू० कृ० विनियंत्रित] १ नियंत्रण उठा लेना। २ व्यापारिक क्षेत्र में, शासन द्वारा किसी चीज की बिक्री, मूल्य आदि पर लगाये हुए नियंत्रण का हटाया जाना। (डि-कन्ट्रोल)

**विनियम**—पु०[सं०वि+नि√यम् (रोकना)+घञ्]१ रोक। २ संयम। ३ नियंत्रण। ४ शासन। ५ आज-कल कोई ऐसा विशिष्ट नियम जो किसी नये निश्चय या आदेश के अनुसार बनाया गया हो। (रेग्युलेशन)

**विनियोग**—पु०[स० वि+नि√युज् (संयुक्त करना)[+घञ्] १ फल-प्राप्ति के उद्देश्य से किसी वस्तु का होनेवाला उपयोग। २ वैदिक कृत्य में मन्त्रों का होनेवाला प्रयोग। ३ प्रवेश। पैठ। ४ प्रेषण। भेजना। ५ व्यापार में पूँजी लगाना। ६ किसी विशिष्ट उद्देश्य, प्रयोजन आदि के निमित्त संपत्ति आदि किसी दूसरे को देना। (एप्रोप्रिएशन) ७. संपत्ति आदि बेचकर निकालना। (डिस्पोजल)

**विनियोजक**—पु०[स०] विनियोजन या विनियंत्रण करनेवाला।

**विनियोज्य**—पु०[स०] [वि० विनियोज्य, भू० कृ० विनियुक्त, विनियोजित] १. विनियोग करना। २ विशेष रूप से नियुक्त करना। ३. भेजना। प्रेषण। ४ अर्पण।

**विनिर्गत**—भू० कृ०[स०] १ बाहर निकाला हुआ। २. बीता हुआ। व्यतीत। ३. मुक्त।

**विनिर्गम**—पुं०[स० वि+निर्√गम् (जाना)+अप्]१ बाहर निकलना। २. प्रस्थान या यात्रा करना।

**विनिवेशन**—वि०[स० वि+नि√विश् (प्रवेश करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विनिवेशित, वि० विनिवेशी] १ प्रवेश। घुसना। २. अवस्थित या स्थित होना। अधिष्ठान। ३ स्थान आदि का बसना।

**विनिवेशी (शिन्)**—वि० [सं० वि+नि√विश्+णिनि] [स्त्री० विनिवेशनी] १. प्रवेश करनेवाला। घुसनेवाला। २ बसने या रहनेवाला।

**विनिश्चय**—पु०[स० वि+निस्+√चि (चयन करना)+अच्] किसी विषय में खूब सोच-समझकर किया जानेवाला निश्चय या निर्णय। (डेसीजन)

**विनिषिद्ध**—भू० कृ०[स०] [भाव० विनिषिद्धता] १ जिसका विशेष रूप से निषेध हुआ हो। २ जिसका शासन द्वारा विधिक रीति से निषेध किया गया हो। (कन्ट्राबैंड) जैसे—विनिषिद्ध व्यापार।

**विनिषिद्ध व्यापार**—पु०[स० ष० त०] वह व्यापार जिसे शासन ने विनिषिद्ध ठहराया हो। (कन्ट्राबैंड ट्रेड)

**विनीत**—वि०[स० वि√नी (ढोना)+क्त] [भाव० विनीतता, विनीति] १ जिसमें विनय हो। विनय से युक्त। २ सुशील। ३ नम्र और शिष्ट। ४. नम्रतापूर्वक किया जानेवाला। जैसे—विनीत निवेदन। ५ जितेन्द्रिय। संयमी। ६ ग्रहण किया हुआ। ७. शिक्षित। ८ अलग या दूर किया हुआ। ९ दक्षित। १० साफ किया हुआ।

पु०१. वणिक्। बनिया। २ व्यापारी। ३ ऐसा घोड़ा जो जोत, सवारी आदि के काम में सधा हुआ हो। ४ वमनक या दौना नाम का पौधा।

**विनीति**—स्त्री०[स० वि√नी (ढोना)+क्तिन्] १. विनय। २ सद्व्यवहार। ३. सम्मान।

**विनु**†—अव्य०=बिना।

**विनुक्ति**—स्त्री०[सं०] १. श्रौत सूत्र के अनुसार एक प्रकार का एकाहकृत्य। २ दूर करना। हटाना।

**विनूठा**†—वि०=अनूठा।

**विनोदित**—स्त्री०[स० ब० स०] साहित्य में, एक अर्थालंकार जो उस समय माना जाता है जब कोई वस्तु स्वयं शोभायुक्त होती है तथा किसी अन्य वस्तु के होने या न होने से उसकी शोभा पर प्रभाव नहीं पड़ता।

**विनोद**—पु० [स० वि√नुद् (प्रेरणा देना)+घञ्] १ ऐसा काम या बात जिसका मुख्य प्रयोजन अपना (और दूसरे का भी) मन बहलाना तथा प्रसन्न रखना होता है। जैसे—खेल, तमाशा आदि। २ उक्त के द्वारा होनेवाला मन-बहलाव तथा प्राप्त होनेवाला आनंद। ३ हँसी-ठट्ठा। ४ एक प्रकार का प्रासाद। ५ कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का आलिंगन।

**विनोद-वृत्ति**—स्त्री० [स०] मनुष्य की वह वृत्ति जो उसे विनोद करने और विनोदपूर्ण बातें समझने और प्रसन्नतापूर्वक सहन करने में समर्थ करती है। (सेन्स ऑफ ह्यूमर)

**विनोदी (दिन्)**— वि०[स० वि√नुद्+णिनि] [स्त्री० विनोदिनी] १ विनोद-संबंधी। २ विनोद-प्रिय। जैसे—विनोदी स्वभाव। ३. विनोद के द्वारा जी बहलाने या मन को प्रसन्न करनेवाला। विनोदशील। ४. हँसी-दिल्लगी करनेवाला। हँसोड़।

**विन्यसन**—पु०[स०] [भू० कृ० विन्यस्त]=विन्यास।

**विन्यस्त**—भू० कृ० [स० वि+नि√अस् (होना)+क्त] १. रखा हुआ। स्थापित। २ क्रम से या सजाकर रखा हुआ। ३. अच्छी तरह जोड़ा, बैठाया या लगाया हुआ। ४. फेंका हुआ। क्षिप्त।

**विन्यास**—पु०[स० वि+नि√अस् (होना)+घञ्] [वि० विन्यस्त]

१ कोई चीज कहीं स्थापित करना। जमाकर रखना। २ सजाने-सजाँरने, ठीकस्थान पर रखने तथा ठीक क्रम से लगाने की क्रिया या भाव। जैसे—केश-विन्यास, वस्तु-विन्यास।

**विपंचक**—पु०[स०वि√पच्+ण्वुल्—अक]भविष्यवक्ता।

**विपंची**—स्त्री०[स० वि√पच+अच्+ङीष्] १ फीड़ा। खेल। २ वीणा की तरह का एक प्रकार का बाजा।

**विपक्व**—वि०[स० वि√पच्(पकना)+क्त] १. अच्छी तरह पका हुआ। २ पूरी बाढ़ पर पहुँचा हुआ। ३ जो पका न हो। कच्चा।

**विपक्ष**—वि०[सं० ब० स०] [भाव० विपक्षता] विपक्षी। (दे०) पु० १. किसी पक्ष या पहलू के सामने या नीचेवाला पक्ष या पहलू। २ किसी पक्ष, दल आदि के विचार से विरोधी पक्ष या दल। विशेषत ऐसा पक्ष या दल जिससे विरोध, शत्रुता, विवाद आदि हो। ३ विरुद्ध व्यवस्था या बाधक नियम। ४. विरोध। ५ व्याकरण मे, किसी नियम के विरुद्ध अथवा उससे भिन्न व्यवस्था। बाधक नियम। अपवाद। ६. तर्कशास्त्र मे ऐसा पक्ष जिसमे साध्य का अभाव हो।

**विपक्षी (क्षिन्)**—वि०[सं०] १. (पक्षी) जिसके डैने या पंख न हो। २ जिसका सबध विपक्ष (विरोधी दल आदि) से हो। ३ जिसके पक्ष मे कोई न हो। ४. उलटा। विपरीत।

पु० १. विरोधी। २. दुश्मन। शत्रु। ३ प्रतिद्वन्द्वी।

पु०[स० विपक्षिन्] वह जो किसी पक्ष के विरोधी पक्ष मे हो। दूसरा फरीक।

**विपचन**—पु०[स०] शरीर मे पोषक तत्त्वो या द्रव्यो का पहुँचकर भिन्न-भिन्न रसो आदि के रूप मे परिवर्तित होना। उपापचयन। चयापचयन। (मेटाबोलिज्म)

**विपज्जनक**—वि०[स०] विपत्ति उत्पन्न करने या लानेवाला।

**विपणन**—पु०[स०] बाजार मे जाकर माल खरीदने या बेचने की क्रिया या भाव। (मार्केटिंग)

**विपणि (णी)**—स्त्री० [स०] १ बाजार। हाट। २. बिक्री का माल। ३ क्रय-विक्रय। खरीद-फरोख्त।

**विपत्तन**—पु०[स० वि+पत्तन] आधुनिक राजविधानो मे किसी ऐसे व्यक्ति को अपने देश से बाहर निकाल देना जो जनता या राज्य के हित के विरुद्ध आचरण या व्यवहार करता हो। देश-निकाला। (डिपोर्टेशन)

**विपत्ति**—स्त्री०[स० वि√पद् (गमन)+क्तिन्] १. ऐसी घटना या स्थिति जिसके फल-स्वरूप कष्ट, चिन्ता या हानि अधिक मात्रा मे होती हो या होने की सभावना हो।

क्रि० प्र०—आना।—झेलना।—टलना।—ढाना।—पड़ना।—भुगतना।—भोगना।

२ झझट या बखेड़े का काम या बात।

**विपद्य**—पु०[स०] वह पद जिसमे किसी से प्राप्य धन का व्योरा होता है। प्राप्यक। (बिल)

**विपथ**—पु०[स०] १. खराब या बुरा रास्ता। ऐसा रास्ता जिस पर चलने से कष्ट, हानि आदि हो सकती हो। २ बगल का रास्ता। ३. एक प्रकार का रथ। ४. अनुचित कामों मे प्रवृत्त होना।

**विपथगामी (मिन्)**—वि०[स०] १. विपथ पर चलनेवाला। २. चरित्र-हीन। कुमार्गी।

**विपथन**—पु०[स०] [भू० कृ० विपथित] अपने उचित या नियत पथ अथवा मार्ग से हटकर इधर-उधर होना। (एबेरेशन)

**विपद्**—स्त्री०[स० वि√पद्(गमन)+क्विप्] १ विपत्ति। आफत। सकट। २. मृत्यु। ३ नाश।

**विपदा**—स्त्री० [स० विपद्+टाप्] १. विपत्ति। आफत। २ दुःख। ३. शोक या सकट।

**विपन्न**—भू० कृ०[स० वि√पद् (गमन)+क्त] १ विपत्ति मे पड़ा हुआ। विपत्तिग्रस्त। २. कठिनाई या झझट मे पड़ा हुआ। ३ आर्त्त। दुःखी। ४. धोखे या भ्रम मे पड़ा हुआ। ५ मरा हुआ। मृत। जो नष्ट हो चुका हो। विनष्ट। ७ भाग्यहीन। अभागा।

**विपरीत**—वि०[स०वि+परि√इ(गमन)+क्त][भाव०जो विपरीतता] १ जैसा होना चाहिए उसका उलटा। उलटे क्रम, स्थिति आदि मे होनेवाला। २. जो अनुकूल या मुआफिक न हो। मेल न खानेवाला। ३ नियम के विरुद्ध होनेवाला। गलत। ४ असत्य। मिथ्या।

पु० केवल के अनुसार एक अर्थालकार जिसमे कार्य की सिद्धि मे स्वय साधक या बाधक होना दिखाया जाता है।

**विपरीतक**—वि०[स० विपरीत+कन्] विपरीत।

पु०=विपरीत रति।

**विपरीत रति**—स्त्री०[स० कर्म० स०] साहित्य मे ऐसी रति जिसमे सभोग के समय पुरुष नीचे और स्त्री ऊपर रहती है। काम-शास्त्र का पुरुषायित बन्ध।

**विपरीत लक्षणा**—स्त्री०[स० कर्म० स०] किसी चीज की ऐसी व्यग्यपूर्ण अभिव्यक्ति जिसमे परस्पर विरोधी गुणो, लक्षणो आदि का उल्लेख भी हो।

**विपरीत लिंग**—पु० दे० 'लिंग' (न्यायशास्त्र वाला विवेचन)।

**विपरीता**—स्त्री०[स० विपरीत+टाप्] १ बदचलन स्त्री। दुराचारिणी। २ दुश्चरित्रा पत्नी।

**विपरीतार्थ**—वि०[स० कर्म० स०] विपरीत अर्थात् उलटे अर्थवाला।

**विपरीतोपमा**—स्त्री०[स० ष०त०]केवल के अनुसार एक अलकार जिसमे किसी भाग्यवान् व्यक्ति की हीनता वर्णन की जाय और अति दीन दशा मे दिखाया जाय।

**विपर्ण**—वि०[स०] जिसमे पर्ण या पत्ते न हो।

पु० एक साथ या आमने-सामने लगी हुई रसीदो आदि का वह बाहरी भाग जो लिख या भरकर किसी को दिया जाता है। (आउटर फॉयल)

**विपर्णक**—वि०[स० ब० स०] जिसमे पत्ते न हो।

पु० टेसू। पलास।

**विपर्यय**—पु० [स० वि+परि √ ई (गमन)+अच्]१. ऐसा उलट-फेर या परिवर्तन जिससे किसी क्रम के अतर्गत कोई कुछ आगे और कोई कुछ पीछे हो जाय। पारस्परिक स्थान-परिवर्तन करनेवाला हेर-फेर। (ट्रासपोजीशन) जैसे—'पिटारा' से 'टिपारा' मे होनेवाला वर्ण-विपर्यय। व्यतिक्रम। २. उलटकर फिर पहले रूप, स्थान आदि मे लाना। (रिवर्शन) ३ कुछ को कुछ समझना। मिथ्या ज्ञान। भ्रम। ४. गलती भूल। ५. अव्यवस्था। गडबड़ी। ६. नाश। बरबादी।

**विपर्यस्त**—भू०कृ०[स० विपरि+अस्त, वि+परि√अस् (होना)+क्त] १. जिसका विपर्यय हुआ हो। जो उलट-पलट गया हो। जो इधर

का उधर हो गया हो। २. इधर-उधर बिखरा हुआ। अस्त-व्यस्त। ३. चौपट। बरबाद। ५. जो ठीक न समझकर उलट दिया या रख कर दिया गया हो।

**विपर्यास**—पुं० [स० वि+परि+ अस् (होना)√घञ्] [वि०विपर्यस्त] १. विपर्यय। उलट-पलट। व्यतिक्रम। २. जैसा होना चाहिए, उसके विरुद्ध कुछ और ही हो जाना। ३. भ्रम। भ्रांति।

**विपल**—पु०[स० ब० स०] पल का साठवाँ अंश।

**विपश्चन**—पु०[स०]प्रकृत ज्ञान। यथार्थ बोध। (बौद्ध)

**विपश्चित**—वि०[स०] जिसे यथार्थ ज्ञान हो। अच्छा ज्ञाता।

**विपाक**—पु०[स० वि√ पच् (पकना)+घञ्] १. परिपक्व होना। पकना। २ पूरी तरह से तैयार होकर काम में आने के योग्य होना। ३. खाई हुई चीज का पचना। हजम होना। ४ परिणाम या फल। ५ किये हुए कर्मों का फल। ६ जायका। स्वाद। ७ दुर्गति। दुर्दशा। ८ विपत्ति। ९ विपर्यय।

**विपाटन**—पु० [स० वि√पट् (गमन) +णिच्+ल्युट्—अन] [वि० विपाटक, भू० कृ० विपाटित] १. उखाड़ना। खोदना। २ तोड़ना-फोड़ना।

**विपाटल**—वि०[स० तृ० त०] गहरा लाल (रंग)।

**विपाठ**—पु०[स०] एक तरह का बड़ा तीर।

**विपात**—पु० [ग० वि√ पत् (गिरना)+घञ्] १ पतन। २ नाश।

**विपातन**—पु०[स० वि√पत् (गिराना)+णिच्+ल्युट्—अन]१ विपात करना। २ गिराना। ३. नष्ट करना। ४. गलाना।

**विपादन**—पु०[स० वि√ पद् (गमन)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विपादित] १ वध। हत्या। २ क्षय। नाश।

**विपादिका**—स्त्री०[स० विपाद+कन्+टाप्, इत्व] १ अपरस नामक रोग। २. पैर में होनेवाली बिवाई। ३. प्रहेलिका। पहेली।

**विपाल**—वि०[स० ब० स०]१. जिसे किसी ने न पाला हो। २. जिसका कोई पालक न हो। अनाथ।

**विपाशा**—स्त्री०[सं० विपास+टाप्] पंजाब की व्यास नदी का पुराना नाम।

**विपिन**—पु०[स० √ वेप् (काँपना)+इनन्] १. वन। जंगल। २. उपवन। वाटिका। ३ समूह।
वि० घना। सघन।

**विपिनचर**—वि०[सं० विपिन√चर् (चलना)+अच्] १ वन में रहने-वाला। वनचर।
पु०१ जंगली आदमी। २. जंगली जीव-जंतु।

**विपिनतिलका**—स्त्री०[स० ब० त०,+टाप्] एक प्रकार की वर्णवृत्ति जिसके प्रत्येक चरण में नगण, रगण, नगण और दो रगण होते हैं।

**विपिनपति**—पु०[स० ष० त०] वनराज। सिंह।

**विपिनविहारी**—वि०[स० विपिन-वि√हृ (हरण करना)+णिनि, दीर्घ, न-लोप, विपिन+विहारी] वन में विचरनेवाला।
पु० श्रीकृष्ण।

**विपुंसक**—वि०[स० ब० स०] नपुंसक।

**विपुंसी**—स्त्री०[स० विपुंस +ङीप्] वह स्त्री जिसकी चेष्टा, स्वभाव या आकृति पुरुषों की-सी हो। मर्दानी औरत।

**विपुत्र**—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० विपुत्री] जिसके आगे पुत्र न हो। पुत्र-हीन। निपूत।

**विपुर**—वि०[सं० ब० स०] जिसके रहने का स्थान निश्चित न हो।

**विपुल**—वि०[स०] [स्त्री० विपुला] [भाव० विपुलता] १. संख्या या परिमाण में बहुत अधिक। २. बहुत बड़ा। विशाल। ३. बहुत गंभीर या गहरा।
पु०१. सुमेरु पर्वत का पश्चिमी भाग। २. हिमालय। ३ एक प्रसिद्ध पर्वत जिसकी अधिष्ठात्री देवी विपुला कही गई हैं। ४ राजगृह के पास की एक पहाड़ी।

**विपुलक**—वि० [स० ब० स०] १. बहुत चौड़ा। २ पुलक से रहित।

**विपुलता**—स्त्री०[स० विपुल+तल्+टाप्] विपुल होने की अवस्था या भाव।

**विपुला**—स्त्री०[स० विपुल+टाप्]१ पृथ्वी। २. विपुल नामक पर्वत की अधिष्ठात्री देवी। ३ एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में भगण, रगण और दो लघु होते हैं।४ आर्या छन्द के तीन भेदों में से एक भेद जिसके प्रथम चरण में १८, दूसरे में १२, तीसरे में १४ और चौथे में १३ मात्राएँ होती हैं।

**विपुलाक्षी**—स्त्री०=विपुलता।

**विपुष्ट**—वि०[स०]१ जो अच्छी तरह पुष्ट न हो। २ जिसे भरपेट खाने को न मिलता हो।

**विपुष्प**—वि०[सं० ब० स०] पुष्पहीन (वृक्ष)।

**विप्रयक**—पुं०[स०√ पूय (दुर्गन्ध करना)+अच्+कन्] १. सड़ायँध। २ सड़ा हुआ मुर्दा। (बौद्ध)

**विप्रयुक्त**—भू० कृ०[स० वि√युज् (पृथक् करना)+क्त] अलग किया हुआ।

**विप्रोहना**—स०[सं० वि+प्रोत]१ पोतना। २. लोपना।
स०=पोहना।

**विप्र**—पु० [स० √ वप् (बीज फैलाना)+र निपा० सिद्धि, अथवा वि√ प्रा (पूर्ण करना) +ड] १ ब्राह्मण। २. पुरोहित। ३. कर्मनिष्ठ और धार्मिक व्यक्ति। ४. पीपल। ५ खिरस का पेड़। ६ पापर या रेणुका नाम का पौधा।
वि० १ मेधावी। २ विद्वान्।

**विप्रक**—पु०[स० विप्र+कन्] नीच ब्राह्मण।

**विप्रकर्षण**—पु०[स० वि+प्र√ कृष् (आकर्षण करना)+ल्युट्—अन] [वि० विप्रकृष्ट]१. दूर खींच ले जाना। दूर हटाना। २. काम पूरा करना।

**विप्रकार**—पु०[सं० वि+प्र√ कृ (करना)+घञ्] [वि० विप्रकृत] १. तिरस्कार। अनादर। २. अपकार।

**विप्रकीर्ण**—वि०[स० वि+ प्र√ कृ (फैंकना)+क्त]१ बिखरा या क्षिप्त-राया हुआ। इधर-उधर गिरा-पड़ा। २. अस्त-व्यस्त। अव्यवस्थित।

**विप्रकृष्ट**—भू० कृ०[स० वि+प्र √कृष् (खींचना)+क्त] १. खींचकर दूर किया हुआ। २. दूर का। दूरस्थ।

**विप्रगीत**—वि०[स० वि+प्र √ गा (गाना)+क्त, ब० स०] जिसके संबंध में मतभेद हो। (जैन)

**विप्र-चरण**—पु० [ष० त०] [स० विप्र+चरण] भृगु मुनि की लात का चिह्न जो विष्णु के हृदय पर माना जाता है।

**विप्रता**—स्त्री० [स० विप्र+तल्+टाप्] १ विप्र होने की अवस्था या भाव। २ ब्राह्मणत्व।

**विप्रतिपत्ति**—स्त्री० [स०] १ मति, विचारों, स्वार्थों आदि में होनेवाला झगड़ा। मतभेद या संघर्ष। विरोध। २ किसी काम या बात पर की जानेवाली आपत्ति। ३ किसी के प्रति होनेवाला शत्रुतापूर्ण भाव। ४ भूल। ५ न्याय में, ऐसा कथन जिसमें दो परस्पर विरोधी बातें हों। ६ बदनामी।

**विप्रतिपन्न**—भू० कृ० [स० वि०] प्रति+√पद् (गमन)+क्त] १ जिसमें प्रतिज्ञा का अभाव हो। २ संदिग्ध। ३ जो स्वीकृत नहीं। अग्राह्य। असाध्य। ४ जो प्रमाणित या सिद्ध न हुआ हो। अप्रमाणित। अनिद्ध।

**विप्रतिषिद्ध**—वि० [स० वि+प्रति+√सिध् (गना करना)+क्त] १. जिसका निषेध किया गया हो। निषिद्ध। (स्मृति) २ उल्टा। विरुद्ध। ३ मना किया हुआ। वर्जित।

**विप्रतिषेध**—पु० [स० वि+प्रति+√सिध् (मना करना)+घञ्] १ नियन्त्रण में रखना। २ दो सम कार्य-प्रणालियों का संघर्ष। ३ व्याकरण में, वह अतिल स्थिति जो दो विभिन्न नियमों के एक साथ प्रयुक्त होने के फलस्वरूप उत्पन्न होती है।

**विप्रत्यय**—पु० [ष० मध्यम स०] प्रत्यय या विश्वास का अभाव। अविश्वास।

**विप्रत्व**—पु० [स० विप्र+त्व] विप्रता।

**विप्रधित**—वि० [स० वि+√प्रध् (ख्यात करना)+क्त] विख्यात। मशहूर।

**विप्र-पद**—पु० [ष० त० त०] विप्र-चरण।

**वि-प्रपात**—पु० [स० तृ० त०] १ विशेष रूप से होनेवाला पतन। बिलकुल गिर जाना। २ ढालुआँ।

पु० खाई।

**विप्र-बधु**—पु० [स० ष० त० या ब० स०] १ वह ब्राह्मण जो अपने कर्म से च्युत हो। नीच ब्राह्मण। २ एक मंत्रद्रष्टा ऋषि।

**विप्रबुद्ध**—वि० [स० तृ० त०] [भाव० विप्रबुद्धता] १ अच्छी तरह जागा हुआ और सचेत। जागरूक। २ ज्ञानी।

**विप्रमाथी (थिन्)**—वि० [स० वि+प्र√मथि (मथन करना)+णिनि] [स्त्री० विप्रमाथिनी] १ अच्छी तरह मथन करनेवाला। २. ध्वंस या नाश करनेवाला। ३ व्याकुल या क्षुब्ध करनेवाला।

**विप्रयुक्त**—वि० [स० तृ० त०] १ अलग किया हुआ। २ बिछुड़ा हुआ। विमुक्त। ३ बाँटा हुआ। विभक्त।

**विप्रयोग**—पु० [स०] [भू० कृ० विप्रयुक्त] १ अलग या पृथक् होने की अवस्था या भाव। अलगाव। पार्थक्य। २ किसी बात या वस्तु से रहित या हीन होने की अवस्था या भाव। 'संयोग' का विरुद्धार्थक। जैसे—बिना धनुष-बाण के राम। (यदि धनुष-बाण वाला राम कहा जायगा तो वह 'संयोग' कहलाएगा)। ३ साहित्य में, विप्रलंभ के दो भेदों में से एक, जो उस मानसिक कष्ट या विरह का सूचक है, जो दूसरे से विवाह हो जाने पर कौमार्य अवस्था के प्रेम-पात्र के स्मरण से होता है। (आयोन से भिन्न) ४ वियोग। विरह। ५. दुख या दुःखद समाचार।

**विप्रयोगी (गिन्)**—वि० [स० वि+प्रयोग+इनि] १ विप्रयोग-संबंधी। २. विप्रयोग करनेवाला। विमुक्त।

**विप्र-राम**—पु० [स०] परशुराम।

**विप्रर्षि**—पु० [स० विप्र+ऋषि] वह ऋषि जो ब्राह्मण कुल में उत्पन्न हुआ हो। जैसे—विप्रर्षि दुर्वासा।

**विप्रलंभ**—पु० [स०] १ छलपूर्ण व्यवहार। २ बात बनाकर या वादा पूरा न करके किसी को धोखा देना। ३. मतभेद के कारण होनेवाला झगड़ा। ४ अभीष्ट वस्तु प्राप्त न होना। चाही हुई चीज न मिलना। ५ एक दूसरे से अलग होना। विच्छेद। ६ साहित्य में, प्रेमी और प्रेमिका का वियोग या विरह। ७ साहित्य में, अलंकार का वह प्रकार या भेद जिसमें नायक और नायिका के विरह का वर्णन होता है। ८ अनुचित या बुरा काम।

**विप्रलंभक**—वि० [स० विप्रलंभ+कन्] धोखा देकर या वचन-भंग कर दूसरों को छलनेवाला। धूर्त और भाग्यबाज।

**विप्रलंभन**—पु० [स० वि+प्र+√लभ् (चाहा करना)+ल्युट—अन, नुम्] [भू० कृ० विप्रलंभित] छल करना। धोखा देना।

**विप्रलंभी (भिन्)**—वि० [स०] विप्रलंभक।

**विप्रलब्ध**—भू० कृ० [स०] १ जिसे किसी ने छला हो। २ जिससे वादा-खिलाफी की गई हो। ३ निराश। ४ वंचित। ५ जिसका प्रिय से समागम न हुआ हो। विप्रकृत।

**विप्रलब्धा**—स्त्री० [स० विप्रलब्ध+टाप्] १ साहित्य में, वह नायिका जिसका प्रिय उसे वचन देकर भी संकेत स्थल पर न आया हो। २ वह नायिका जो प्रिय के वचन भंग करने तथा संकेत-स्थल पर न मिलने के कारण दुःखी हो।

**विप्रलाप**—पु० [स०] १ व्यर्थ की बकवाद। प्रलाप। २ झगड़ा। विवाद। ३ दुर्वचन।

**विप्रलापी (पिन्)**—वि० [स० वि+प्रलाप+इनि] विप्रलाप करनेवाला।

**विप्रलुंपक**—पु० [स० विप्रलुंप+कन्] १ बहुत बड़ा लालची। अतिलोभी। २ वह जो अपने लिए औरों को कष्ट देना या पीड़ित करता हो। ३ वह शासक जो बहुत अधिक कर लेता हो।

**विप्रलुप्त**—भू० कृ० [स० तृ० त०] १ जो लूटा गया हो। अपहृत। २ गायब या लुप्त किया हुआ। ३ जिसके काम में विघ्न डाला गया हो।

**विप्रलोप**—पु० [स० तृ० त०] [वि० विप्रलुप्त] १ बिलकुल लोप। २ पूरा नाश।

**विप्रवाद**—पु० [स० ऋग्यम० स०] १ बुरे वचन। २ बकवाद। ३. कलह। विवाद। ४ मतैक्य का अभाव। मतभेद।

**विप्रवास**—प० [ष० कर्म० स०] [भू० कृ० विप्रवासित] १. परदेश में रहना। प्रवास। २ सत्यागी का अपने वस्त्र दूसरे को देना जो एक अपराध या दोष माना गया है।

**विप्र-वजनी**—स्त्री० [सं०] दो पुरुषों से यौन-संबंध रखनेवाली स्त्री।

**विप्रवन**—पु० [सं० मध्यम० स०] ऐसा प्रश्न जिसका उत्तर गणित ज्योतिष के द्वारा दिया जाय।

**विप्रशिलक**—पु० [सं०] [स्त्री० विप्रशिलका] वैद्य। ज्योतिषी।

**विप्र-हरण**—पुं० [स० मध्य० स०] १ परित्याग। २. मुक्ति।

**विद्राविष**—पुं०[सं० ष० त०] चंद्रमा।

**विप्रिय**—वि०[सं० वि√ प्री (प्रसन्न करना)+क्त]१. जो प्रिय न हो। अप्रिय। २. कटु और तीक्ष्ण। ३. जो रुचि के अनुकूल न हो।
पु०१. अप्रिय काम या बात। २. अपराध। कसूर। ३ वियोग। विरह।

**विप्रेत**—वि०[सं० तृ० त०]१. बीता हुआ। गत। २. अस्त-व्यस्त। छिन्न-भिन्न।

**विप्रोषित**—भू० कृ०[सं० वि+प्र√वस् (निवास करना)+क्त] १. देश से निकाला हुआ। २. देश से बाहर गया हुआ। ३ अनुपस्थित।

**विप्लव**—पु० [स० वि√ प्लु (तैरना, कूदना)+अप्] १. पानी की बाढ़। २. किसी चीज का पानी मे डूबना। ३. उथल-पुथल। हल-चल। ४ उत्पात। उपद्रव। ५. देश या राज्य में होनेवाला ऐसा उपद्रव जिससे शांति में बाधा पड़े। बलवा। ६. आफत। विपत्ति। ७ विनाश। ८. डाँट-डपट। ९. अनादर। १०. घोड़े की बहुत तेज चाल।

**विप्लवक**—वि०[स० विप्लव+कन्] विप्लव करनेवाला।

**विप्लवी**, (विन्)—वि०[सं० वि√प्लु+णिनि] १ क्षांति करनेवाला। २ क्षण-भंगुर।

**विप्लाव**—पु० [स० वि√ प्लु+घञ्] १. पानी की बाढ़। २. घोड़े की बहुत तेज चाल।

**विप्लावक**—वि० [सं० वि√ प्लु +ण्वुल् —अक] विप्लव करने या करानेवाला।

**विप्लावन**—पु० [स० ब० स० या मध्यम० स०] १ निंदा करना। २. अपशब्द कहना।

**विप्लावी**—वि०[सं० विप्लाविन्] [स्त्री० विप्लाविनी] १ उपद्रव करनेवाला। २. बाढ़ लानेवाला। ३ निंदक।

**विप्लुत**—वि०[सं०] [भाव० विप्लुति] १. तितराया या बिखरा हुआ। अस्त-व्यस्त। २ घबराया हुआ। हक्का-बक्का। ३ तोड़ा या भग किया हुआ (वचन आदि)। ४. आचार-भ्रष्ट। चरित्रहीन। ५ नियम, प्रतिज्ञा आदि से च्युत। ६. अस्पष्ट। ७. विपरीत। विरुद्ध।

**विप्सा**—स्त्री०=वीप्सा। (दे०)

**विफल**—वि०[स०]१. (वृक्ष) जिसमे फल न लगे हों या न लगते हो। २. जिसके अण्डकोश न हो या काट दिये गये हो। ३ निरर्थक। ४. जिसका उद्देश्य सिद्ध न हुआ हो। ५. जिसके प्रयत्न का कोई फल न हुआ हो। ६ जो परीक्षा में अनुत्तीर्ण हुआ हो।

**विफलता**—स्त्री०[स० विफल+तल्+टाप्] विफल होने की अवस्था या भाव।

**विबंध**—पु०[सं० ब० स०]१. बहुत कड़ा बन्धन। २. पेट के अफरा नामक रोग का एक भेद। ३. अनाज, भूसे आदि का ढेर। ४. बैलों आदि के कन्धे पर रखा जानेवाला जूआ। जुआठा। ५. चौड़ी और बड़ी सड़क। राजमार्ग। ६. प्राचीन काल में, वह आय जो राजा को प्रजा से होती थी। ७. बन्धन। हथकड़ी।

**विबंधन**—पु०[सं० तृ० त०] [वि० विबंधक]१. बाँधने की क्रिया या भाव। २. पीठ, छाती, पेट आदि के घाव या फोड़े पर बाँधी जानेवाली पट्टी। (सुश्रुत) ३. बाधा। रुकावट।



**विबंधु**—वि०[सं० ब० स०, वि+बन्धु] १. जिसके भाई-बंधु न हों। बन्धुहीन। २ अनाथ।

**विबल**—वि०[सं० मध्यम० स०]१ बल या शक्ति से रहित। अशक्त। २ विशेष रूप से बलवान्। बहुत बड़ा बली।

**विबाध**—वि०[सं० ब० स० या मध्यम० स०] बाधारहित।

**विबुद्ध**—वि०[सं० तृ० त०, वि+ बुद्ध] [भाव० विबुद्धता]१. जागा हुआ। जाग्रत। २ खिला हुआ। विकसित। ३ ज्ञानवान्।

**विबुध**—पु०[सं० वि√ बुध् (जानना)+क] १. पंडित। बुद्धिमान्। २. देवता। ३ चन्द्रमा। ४ शिव।
वि० विद्वानों से रहित।

**विबुधतरु**—पुं०[ष० त०] कल्पवृक्ष।

**विबुधधेनु**—स्त्री०[सं०] कामधेनु।

**विबुधनदी**—स्त्री०[ष० त०] आकाश-गंगा।

**विबुधपति**—पुं०[ष० त०] देवताओं का राजा, इन्द्र।

**विबुधपुर**—पु० [स० ष० त०] देवताओं का देश, स्वर्ग।

**विबुधप्रिया**—स्त्री०[स०] चंचरी या चर्चरी नामक छंद का दूसरा नाम।

**विबुधबेलि**—स्त्री०[सं० ष० त०] कल्पलता।

**विबुध-वन**—पु०[स० ष० त०] इन्द्र का कानन।

**विबुध-विलासिनी**—स्त्री०[स० ष० त०]१. देवांगना। २. अप्सरा।

**विबुध-वैद्य**—पुं०[स० ष० त०] देवताओं के चिकित्सक, अश्विनीकुमार।

**विबुधाचार्य**—पु०[स० विबुध+आचार्य, ष० त०] बृहस्पति।

**विबुधान**—पु०[स० वि√बुध (जानना)+शानच्]१ पंडित। आचार्य। २. देवता।

**विबुधापगा**—स्त्री० [स० विबुध-आपगा, ष० त०] आकाश गंगा।

**विबुधावास**—पुं० [स० ष० त०, विबुध +आवास] १. स्वर्ग। २. देव-मन्दिर।

**विबुधेंद्र**—पु०[सं० विबुध+इन्द्र, ष० त०] इंद्र।

**विबुधेश**—पु० [स० ष० त० विबुध+ईश] देवताओं का राजा, इन्द्र।

**विबोध**—पु०[स० मध्यम० स०]१. जागरण। जागना। २. अच्छा और पूरा ज्ञान। ३ चेतनता। होश-हवास।
वि० जिसे बोध या ज्ञान न हो।

**विबोधन**—पु० [स० वि√बुध (जानना)+ल्युट्—अन्] [भू० कृ० विबोधित] १. जगाना। प्रबोधन। २ ज्ञान कराना। ३. डाहस या सान्त्वना देना। ४ प्रस्फुटित करना। खिलाना।

**विब्बोक**—पु०[स०] विब्बोक (हाव)।

**विभंग**—पु०[सं० ब० स०] [भू० कृ० विभग्न] १. सब चीजें यथास्थान रखना या लगाना। विन्यास। २ टूटना। ३ विभाग। ४ विशृंखलता होना। ५. भौंहों से की जानेवाली चेष्टा। भ्रू-भंग। ६ मन का भाव प्रकट करनेवाली चेष्टा। ७ किसी कड़ी या ठोस चीज का आघात आदि के कारण बीच से टूट जाना। (मैथ्वेचर) जैसे—अस्थिविभंग।

**विभंगि**—स्त्री०[स० विभंग+इन्] १. अनुकृति। २. भंगी।

**विभंगी** (गिन्)—वि०[सं० वि√ भञ् (भग होना)+णिनि]१. कपशील। २. झुर्रियोंवाला।

**विवर्धपुर**—वि०[सं०] अस्विर।

**विभक्त**—भू० कृ० [सं० वि√ भज् (भाग करना)+क्त, तु० त०] १. जिसके विभाग किए गए हों। २ अलग किया हुआ। ३. बाँटा हुआ। ३ जिस पैतृक सपत्ति मे से अपना अश प्राप्त हो गया हो।
पुं० वह अश जो किसी को पैतृक सपत्ति मे से प्राप्त हुआ हो।

**विभक्तज**—पु० [सं० विभक्त+√ जन् (उत्पन्न होना) +ड] सम्पत्ति के बँटवारे के बाद पैदा होनेवाला लड़का। (स्मृति)

**विभक्तवाद**—पु०[सं०] [वि० विभक्तवादी] यह मत या सिद्धान्त कि त्यागियो तथा साधुओ को ससार या समाज से अलग रहना चाहिए।

**विभक्ति**—स्त्री० [स० वि√भज् +क्तिन्] १ विभक्त करने या होने की अवस्था या भाव। विभाग। बाँट। २. अलगाव। पार्थक्य। ३ सस्कृत व्याकरण के अनुसार शब्द मे लगनेवाला वह प्रत्यय जिससे उस शब्द का कारक, लिंग तथा वचन जाना जाता है।

**विभज्य**—वि०[सं०] विभाज्य।

**विभर**—वि०[स० विभा] १. प्रकाशमान्। २ तेजस्वी।

**विभव**—पु०[स०] १ ईश्वर का अवतार। २ ऐश्वर्य। ३. धन-सपत्ति। ४. बल। शक्ति। ५ उदारता। ६. अधिकता। बहुतायत। ७ मोक्ष। ८ पालन। ९ विकास। १०. छत्तीसवाँ संवत्सर।

**विभवकर**—पु०[सं०] वह कर जो किसी की धन-सपत्ति या वैभव के विचार से लिया जाता है। (वेल्थ टैक्स)

**विभवशाली**—वि०[स०] १. संपत्तिशाली। २ शक्तिशाली।

**विभवी (विन्)**—वि०[स० विभव+ इनि, वीर्य, नलोप]=विभवशाली।

**विभाँति**—स्त्री०[सं० वि+ हिं० भाँति] प्रकार। किस्म।
वि० अनेक प्रकार का।
अव्य० अनेक प्रकार से।

**विभा**—स्त्री०[स० वि√भा (प्रकाश करना) +क्विप्] १. प्रभा। कान्ति। २. किरण। रश्मि। ३. छवि। शोभा।

**विभाकर**—वि०[सं०] प्रकाश करने या फैलानेवाला।
पुं० १ सूर्य। २ आक। मदार। ३ चित्रक। चीता। ४. अग्नि। आग। ५ राजा।

**विभाग**—पु०[स० वि+ भज् (भाग करना) + घञ्] १. कोई चीज कई टुकड़ो या भागो मे बाँटना। २. उक्त प्रकार से अलग किया हुआ अश या टुकड़ा। ३. ग्रन्थ का परिच्छेद या प्रकरण। ४ कोई विशिष्ट कार्य करने के लिए अलग किया हुआ क्षेत्र (डिपार्टमेन्ट)। जैसे—न्याय-विभाग। ५ कार्य-सचालन के सुभीते के लिए किसी कार्य-क्षेत्र के कई छोटे-छोटे हिस्सों मे से हर एक (सेक्सन)। ६ किसी विशिष्ट कार्य के लिए निश्चित किया हुआ क्षेत्र या खड (डिविजन)।

**विभागक**—पुं०[सं० विभाग कन्] १. विभाग करनेवाला। विभाजक। २ विभागीय। (दे०)

**विभागात्मक-नक्षत्र**—पु० [सं० कर्म० स०] रोहिणी आर्द्रा, पुनर्वसु, मघा, चित्रा, स्वाती, ज्येष्ठा और श्रवण आदि आठ प्रकाशमान् नक्षत्र।

**विभागी (गिन्)**—वि०[स० वि√भज् (भाग करना)+णिन्] १ विभाग। २ हिस्सेदार।

**विभागीय**—वि०[स०] किसी विशिष्ट विभाग में होने या उससे संबंध रखनेवाला। (डिपार्टमेन्टल) जैसे—विभागीय कार्रवाई।

**विभाजक**—वि०[स० वि√भज् (भाग करना) +ण्वुल्-अक] १. विभाजन करनेवाला। २. बाँटनेवाला।
पुं० वह सख्या या राशि जिससे दूसरी संख्या को भाग दिया जाय। (गणित)

**विभाजन**—पु० [स० वि√भज् (भाग करना)+णिच्+ल्युट्-अन] १. हिस्सा लगाना। विभाग करना। २. सयुक्त संपत्ति आदि को उसके स्वामियो द्वारा आपस मे बाँटना। ३. पात्र। बरतन।

**विभाजित**—भू० कृ०[स० वि√भज् (भाग करना)+णिच्+क्त] १. जिसका विभाजन हो चुका हो। २. विभाजन द्वारा जिसका अश अलग किया या निकाल लिया गया हो। खंडित। जैसे—विभाजित भारत।

**विभाज्य**—वि०[स० वि√भज् (भाग करना)+ण्यत्] जिसका विभाजन हो सके या होने को हो।

**विभात**—पु०[स० वि√भा (प्रकाश करना) +क्त] सवेरा। प्रभात।

**विभाति**—वि०[स० वि√भा (प्रकाश करना)+क्तिन्] शोभा। सुंदरता।

**विभाना**—अ०[स० विभा+ हिं० ना (प्रत्य०)] १. चमकना। शोभित होना। फबना।
स० १. चमकाना। सुशोभित करना।

**विभाव**—पु० [स०] साहित्य मे वह निमित्त या हेतु जो आश्रय मे भाव जाग्रत या उद्दीप्त करता हो। इसके दो भेद हैं—आलंबन और उद्दीपन।

**विभावक**—वि०[स० विभाव+कन्] १. अभिव्यक्त करनेवाला। २. तर्क करनेवाला।

**विभावन**—पु०[वि√भू (होना) +णिच्+युच्-अन] १.सोचने की क्रिया या भाव। २. अनुभूति। ३ परीक्षण। ४. तर्क। ५. साहित्य में, वह स्थिति जिसमे कविता या नाटक के पात्र के साथ पाठक या दर्शक का तादात्म्य होता है।

**विभावना**—स्त्री०[स०] १. कल्पना। २ कारण के अभाव मे कार्य की होनेवाली कल्पना। ३ उक्त के आधार पर साहित्य में एक विरोध-मूलक अर्थालंकार।
**विशेष**—यह पाँच प्रकार का कहा गया है—(क) कारण के अभाव में कार्य होना, (ख) अपर्याप्त कारण से कार्य होना, (ग) प्रतिबधक तत्त्व के होने पर भी कार्य होना, (घ) विरुद्ध कारण द्वारा कार्य होना, और (ङ) कार्य से कारण की व्युत्पत्ति होना।

**विभावनीय**—वि०[स० वि√भू (होना)+णिच्+अनीयर्] जिसकी भावना अर्थात् चिंतन या विचार हो सके।

**विभावरी**—स्त्री० [सं० वि√भा (प्रकाश करना)+वनिप्+ङीप् आदेश] १ रात्रि। रात। २. तारों से जगमगाती हुई रात। ३. चतुर और मुखरा स्त्री। ४. कुटनी। दूती। ५. पतिता स्त्री। ६. रजनी। ७ हलदी। ८. मेदा। ९. प्रचेतस की नगरी का नाम।

**विभावरीश**—पु०[स० विभावरी-ईश, ष० त०] निशापति। चन्द्रमा।

**विभावसु**—वि०[स० ब० स] जिसमें विशेष प्रकाश हो। अधिक प्रभा-वाला।
पु०१. सूर्य। २ अग्नि। ३. चन्द्रमा। ४. वसुओं के एक पुत्र। ५. नरकासुर का पुत्र एक दानव। ६ एक गंधर्व जिसने गायत्री से वह सोम

छीना था, जो वह देवताओं के लिए ले जा रही थी। ७. आक। मदार। ८. चित्रक। चीता। ९. गले मे पहनने का एक प्रकार का हार।

**विभावित**—भू० कृ० [सं० तु० त०] १. जिसकी विभावना हुई हो। कल्पित। २. निश्चित। ३ गृहीत या स्वीकृत।

**विभावी (विन्)**—वि० [ स० वि√भू (होना)+णिनि, ] १. भावों का उदय करनेवाला। २. प्रकट करनेवाला। ३. शक्तिशाली।

**विभाव्य**—वि०[सं० वि√भू (होना)+ण्यत्] जिसके संबध मे विभावना या विचार हो सकता हो। विभावना के लिए उपयुक्त।

**विभाषा**—स्त्री० [स०] [वि० वैभाषिक] १ यह कहना कि ऐसा हो भी सकता है और नही भी हो सकता। २ व्याकरण म. ऐसा प्रयोग जिसके संबंध में उक्त प्रकार के दोहरे मत, विचार या सिद्धान्त मिलते हों। ३ उक्त मतों नियमो आदि के चुनाव के संबध मे होनेवाली स्वतंत्रता। ४ भाषा-विज्ञान मे. किसी भाषा की कोई ऐसी बड़ी शाखा जो उसके विशिष्ट विभाग के अंतर्गत हो और जिसके कई स्थानिक भेद, प्रभेद भी हों। बोली। (डायलेक्ट)

**विभाषित**—वि०[स० विभाषा+इतच्] जो इस रूप मे कहा गया हो कि ऐसा हो भी सकता है और नही भी हो सकता।

**विभास**—पु० [ स० वि√भास् (प्रकाश करना)+अप्] १. चमक। दीप्ति। २. संगीत मे संदेरे गाया जानेवाला एक प्रकार का राग। ३ पुराणानुसार एक देव-योनि। ४ तैत्तरीय आरण्यक के अनुसार, सप्तर्षियों में से एक।

**विभासक**—वि० [सं० विभास+कन्] [स्त्री० विभासिका] १ चमकने या चमकानेवाला। प्रकाशयुक्त। २ प्रकट या व्यक्त करनेवाला।

**विभासना**—अ०[स० विभास+हिं० ना (प्रत्य०)] १. चमकना। २ विभासित होना। जान पडना।

**विभासा**—स्त्री०[सं० विभास+टाप्] १. प्रकाश। २ चमक। ३ कांति।

**विभासित**—भू० कृ०[सं०] १. प्रकाशित। २. चमकता हुआ। ३. कांति से युक्त।

**विभिन्न**—भू० कृ० [सं०] [भाव० विभिन्नता] १. काट या छेदकर अलग किया हुआ। २. अलग। पृथक्। ३. जो ठीक वैसा ही न हो जैसा कि कोई और प्रस्तुत पदार्थ हो। ४. जिनमें परस्पर कुछ न कुछ विभेद या असमता दिखाई दे।

**विभिन्नता**—स्त्री०[स० विभिन्न+तल्+टाप्] १. विभिन्न होने की अवस्था या भाव। २. वह तत्त्व जो दो या अधिक वस्तुओं का भेद दरशाता हो। ३. फरक। अंतर।

**विभीत**—भू० कृ० [सं० वि√भी (भय करना)+क्त, तु० त०] [भाव० विभीति] भय-भीत।

**विभीति**—स्त्री०[सं० वि√भी (भय करना)+क्तिन्] १. डर। भय। २ शंका। ३. सन्देह।

**विभीषक**—वि०[सं० वि√भीष् (भयभीत होना)+ण्वुल्-अक] डरानेवाला। भयानक।

**विभीषण**—वि०[सं० वि√भीष् (भयभीत होना)+ल्यु-अन] [स्त्री० विभीषणा] बहुत अधिक भीषण।

पुं० १. रावण का एक भाई जिसे राम ने रावण की मृत्यु के उपरांत लंका का राजा बनाया था। २. अपने भाई-बंधुओं से द्रोह करके शत्रुओं के साथ जा मिलनेवाला व्यक्ति। (व्यग्य) ३. नरसल। ४. एक तरह का मुहूर्त।

**विभीषिका**—स्त्री०[स० विभीषा+कन् टाप्, इत्व] १. भय-प्रदर्शन। डर दिखाना। २. वह साधन जिससे किसी का भयभीत किया जाय। ३. भय का वह उग्र रूप जिसके उपस्थित होने पर मनुष्य किंकर्तव्य-विमूढ हो जाता है। त्रास। (ड्रेड)

**विभु**—वि०[सं० वि√भू (होना)+डु] [भाव० विभुता] १ जो सर्वत्र वर्तमान हो। सर्वव्यापक। जैसे—दिक्, काल, आत्मा आदि। २ जो सब जगह जा या पहुँच सकता हो। ३ बहुत बड़ा। महान्। ४ सदा बना रहनेवाला। नित्य। ५ अपने स्थान से न हटनेवाला। अचल। अटल। ६ ऐश्वर्यशाली। ७. शक्तिशाली। समर्थ।

पुं० १ ब्रह्मा। २. जीवात्मा। ३ ईश्वर। ४ शिव। ५ विष्णु। ६ प्रभु। स्वामी। ७. नौकर। सेवक।

**विभुता**—स्त्री०[सं० विभु+तल्+टाप्] १ विभु होने की अवस्था या भाव। सर्वव्यापकता। २. ऐश्वर्य। वैभव। ३. प्रभुत्व। ४ शक्ति।

**विभूति**—स्त्री०[स० वि√भू (होना)+क्तिन्] १ बहुत अधिक होने की अवस्था या भाव। बहुतायत। विपुलता। २ बढ़ती। वृद्धि। ३ धन-धान्य आदि की यथेष्टता। ऐश्वर्य। विभव। ४. धन-संपत्ति। दौलत। ५ भगवान् विष्णु का वह ऐश्वर्य जो नित्य और स्थायी माना जाता है। ६. अणिमा, महिमा आदि अलौकिक या दिव्य शक्तियाँ। ७ चिता की वह राख या भस्म जो शिव जी अपने शरीर पर पोतते थे। ८. यज्ञ, हवन आदि के बाद बची हुई राख जो शैव लोग माथे पर या शरीर मे लगाते है। ९ लक्ष्मी। १० एक दिव्यास्त्र जो विश्वामित्र ने राम को दिया था। ११ सृष्टि। १२ प्रभुत्व।

**विभूषा (ण)**—वि० [स० वि√भू (होना)+मनिन्, विजहू+इमनिच्, बहु-भू वा] ऐश्वर्यवान्। शक्तिशाली।

पुं० श्रीकृष्ण।

**विभूषण**—पुं०[सं० वि√भूष् (भूषित करना)+णिच्+ल्युट्-अन] [वि० विभूष्य, भू० कृ० विभूषित] १. आभूषणो अर्थात् गहनों से सजाना। २ आभूषण, गहना अथवा अलकरण का कोई और उपकरण। ३. सौन्दर्य। ४. मंजुश्री का एक नाम। (बौद्ध)

**विभूषना**—स० [स० विभूषण] १. विभूषित करना। २. गहनों आदि से सजाना। ३. सजाना सँवारना। ४. शोभा से युक्त करना।

**विभूषा**—स्त्री० [सं० विभूषण—टाप्] १. आभूषणो, गहनो अथवा सजावट के उपकरणों से युक्त होने की अवस्था। २ उक्त अवस्था से प्रस्फुटित होनेवाली शोभा।

**विभूषित**—भू० कृ०[सं० वि√भूष् (भूषित करना)+क्त] १. आभूषणो से सजा या सजाया हुआ। अलंकृत। २. अच्छी बातो या गुणो से युक्त। ३ शोभित।

**विभूष्य**—वि०[सं० वि√भूष् (भूषित करना)+यत्] विभूषित किये जाने के योग्य। सजाये जाने के योग्य।

**विभेद**—पुं० [स० वि√भिद् (काटना)+अच्, घञ्-वा] १. वह तत्त्व जो दो वस्तुओं में होनेवाली असमता का द्योतक हो। २ अनेक भेद और प्रभेद। ३. कटा हुआ अंश, छेद या दरार। ४. खंड। विभाग। ५. एक से विकसित होकर अनेक रूप बनना। ६. मिश्रण। मिलावट।

७ दे० 'विभेदन'। ८ विशेष रूप से किया हुआ अलगाव या भेद। (डिस्क्रिमिनेशन)

**विभेदक**—वि०[स० वि√भिद्+ण्वुल्—अक] १ भेदन करनेवाला। काटने या छेदनेवाला। २ विभेद उत्पन्न करनेवाला। ३ भेदने या छेदनेवाला। ४ घुसने या धँसनेवाला। ५ अन्तर या भेद दिखलाने या बतलानेवाला। ६ आपस में मतभेद करानेवाला।

पु० विभीतक। बहेड़ा।

**विभेदकारी** (रिन्)—वि०[स०विभेदक√कृ+णिनि]=विभेदक।

**विभेदन**—पु०[स० वि√भिद्+ल्युट्—अन] [वि० विभेदनीय, विभेद्य, भू० कृ० विभेदित] १ बीच में से छेदना या भेदना। २. काटना या तोड़ना। ३ खंड या टुकड़े करना। ४ अलग या पृथक् करना। ५. अन्तर या भेद उत्पन्न करना, मानना या समझना। ६. आपस में मन-मुटाव पैदा करके फूट डालना।

**विभेदना**—स०[स० विभेदन] १ भेदन करना। छेदना। काटना। २. विभेद या भेद उत्पन्न करना। ३ छेदते हुए अन्दर घुसना या धँसना। ४. अन्तर उत्पन्न करना। फरक डालना।

**विभेदी** (दिन्)—वि०[स०]=विभेदक।

**विभेद्य**—वि० [स० वि√भिद् (काटना)+यत्] १ विभेदन के लिए उपयुक्त। जिसका विभेदन हो सके। २ जिसमें भेद या अन्तर निकाला जा सके।

**विभोर**—वि० [स० विह्वल] १. विकल। विह्वल। २ मग्न। लीन। ३. मत्त। मस्त।

**विभौ**†—पु०=विभव।

**विभ्रंश**—पुं०[स० वि√भ्रंस् (नाश करना)+अच्] १. विनाश। ध्वंस। २. अवनति। ३. पतन। ४. पहाड़ के ऊपर का चौरस मैदान। ५. ऊँचा कगार।

**विभ्रंशन**—पु०[स०] [वि० विभ्रंशी, भू० कृ० विभ्रंशित] विभ्रंश करने की क्रिया या भाव।

**विभ्रम**—पु०[स० वि√भ्रम् (चलना)+घञ्] १. चारों ओर घूमना। चक्कर लगाना। भ्रमण। २ किसी काम या बात में होनेवाला भ्रम। भ्रांति। किसी काम या बात में होनेवाला शक या संदेह। ४. पारस्परिक व्यवहार में किसी काम या बात का अर्थ, आशय या उद्देश्य समझने में होनेवाली भूल। और का और समझना। गलत-फहमी। (मिसअन्डर-स्टैंडिंग) ५ मनोविज्ञान में. किसी विशिष्ट मानसिक विचार के कारण किसी ज्ञानेन्द्रिय के द्वारा होनेवाला ऐसा भ्रम जो प्रायः निराधार होता है। निर्मूल भ्रम। (हैल्यूसिनेशन) जैसे—अँधेरे में कोई आकृति या भूत-प्रेत दिखाई देना। ६. साहित्य में, संयोग शृंगार के प्रसंग में स्त्रियों का एक हाव जिसमें वे प्रियतम का आगमन सुनकर अथवा उससे मिलने के लिए जाने के समय उतावली और उत्सुकता के कारण कुछ उलटे-पुलटे गहने-कपड़े पहन लेती हैं। ७. घबराहट। विकलता। ८ शोभा।

**विभ्रमी** (मिन्)—वि० [स० वि√भ्रम (घूमना)+णिनि, दीर्घ, नलोप] चारों ओर घूमने या चक्कर खानेवाला।

**विभ्रान्त**—भू० कृ०[स०] [भाव० विभ्रांति] १ जो घूम या चक्कर खा चुका हो। २ चारों ओर फैला या बिखरा हुआ। ३ भ्रम में पड़ा हुआ। ४. घबराया हुआ। ५. अस्थिर। चंचल।

**विभ्रांति**—स्त्री०[स०वि√भ्रम् (चक्कर काटना)+क्तिन्] १. फेरा। चक्कर। २ भ्रम। भ्रांति। ३. घबराहट।

**विभ्राड्**—पु०[स०] १ आपत्ति। विपत्ति। संकट। २ उत्पात। उपद्रव। वि० दीप्त। चमकीला।

**विमंडन**—पु० [स० न्+त०, वि√मण्ड् (सजाना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विमंडित] १ गहनों आदि से सजाना। २ सजावट।

पु० अलंकार। गहना।

**विमंडित**—भू० कृ० [स० वि√मण्ड्+क्त, तु० त०] १. अलंकृत। सजा हुआ। २ सुशोभित। ३ किसी से युक्त। मिला हुआ।

**विमत**—वि०[मध्य० स०] [भाव० विमति, वैमत्य] १. जिसका मत या विचार अच्छा न हो। २. जो अच्छी राय न देता हो।

पु० १. ऐसा मत या विचार जो किसी के विरुद्ध पड़ा या दिया गया हो। विमति। (डिस्सेन्ट) २ ऐसी राय जो अनुकूल न हो।

**विमति**—वि०[स० मध्यम० स०] जिसकी बुद्धि ठिकाने न हो। मूर्ख।

स्त्री० १ विमत होने की अवस्था या भाव। विरुद्ध मत या विचार। २ खराब या बुरी मति (बुद्धि या विचार) ३. किसी के विपरीत या विरुद्ध मति या विचार। ४ असहमति।

**विमत्सर**—पु०[स० मध्यम० स०] बहुत अधिक मत्सर या अहंकार। वि० मत्सर से रहित।

**विमद**—वि०[स० ब० स०] १ मद से रहित। २ (हाथी) जिसे मद न बहता हो।

**विमध्य**—वि०[वि√मन् (जानना)+पक्, न-ध] [भाव० विमध्यता] १ जिसका अंश अपने केन्द्र या ठीक मध्य में न हो। केंद्र या मध्य से कुछ इधर-उधर हटा हुआ। उत्केंद्र। २. (वृत्त) जिसका मध्य दूसरे वृत्त के मध्य या केन्द्र से भिन्न हो। ३ जो आकृति, गति आदि में ठीक गोलाकार न हो और इसी लिए वृत्त के हर बिंदु से जिसमें एक ही मध्य न पड़ता हो। उत्केंद्र। (एक्सेन्ट्रिक)

**विमध्यता**—स्त्री०[स०विमध्य+तल्+टाप्] विमध्य होने की अवस्था या भाव। उत्केंद्रता। (एक्सेन्ट्रिसीटी)

**विमन**—वि०[स० ब० स० विमनस्]=विमनस्क।

**विमनस्क**—वि०[स० ब० स०, कप्] १ अनमना। अन्यमनस्क। २ उदास। खिन्न।

**विमर्द**—पु०[वि√मृद् (रगड़ना)+घञ्] १. रगड़ना। २ रौंदना। ३. संघर्ष। ४ नाश। ५. बाधा। संघर्ष। ७. खंडन (ग्रहण)।

**विमर्दक**—वि०[स० विमर्द+कन्] विमर्दन करनेवाला।

**विमर्दन**—पु०[स०वि√मृद्+ल्युट्—अन,] [वि० विमर्दनीय, भू० कृ० विमर्दित] १ खूब मर्दन करना। अच्छी तरह मलना-दलना। २. खूब रगड़ना या रौंदना। ३. कुचलना या पीसना। ४. नष्ट करना। ५. मार डालना। ६. बहुत अधिक कष्ट देना या पीड़ित करना। ७ अंकुरित या प्रस्फुटित होना। (सांख्य)

**विमर्दित**—भू० कृ०[स० वि√मृद् (रगड़ना)+क्त, तु० त०] १. मला-दला हुआ। २. कुचला या रौंदा हुआ। ३. नष्ट किया हुआ। ४. पीड़ित। ५. अपमानित।

**विमर्दी**—वि०[सं० विमर्द+इनि, विमर्दिन्] [स्त्री० विमर्दिनी] विमर्दन करनेवाला। विमर्दक।

**विमर्श**—पु० [वि√मृश् (स्पर्शनादि)+घञ्] १. सोच-विचार कर तथ्य या वास्तविकता का पता लगाना। २ किसी बात या विषय पर कुछ सोचना-समझना। विचार करना। ३ गुण-दोष आदि की आलोचना या मीमांसा करना। (डेलिबरेशन) ४ जाँचना और परखना। ५ किसी से परामर्श या सलाह करना। ६ ज्ञान। ७ नाटक मे पाँच संधियो मे से एक संधि।
दे० 'विमर्श-संधि'।

**विमर्शक**—वि० [स०] विमर्श करनेवाला।

**विमर्शन**—पु० [सं० वि√मृश् (तर्क-विवेचन करना)+ल्युट्—अन] [वि० विमृष्ट, विमर्शी भू० कृ० विमर्शित] विमर्श करने की क्रिया या भाव।

**विमर्श-संधि**—स्त्री० [सं०] नाटक की पाँच संधियो मे से एक जो ऐसे अवसर पर मानी जाती है जहाँ क्रोध, लाभ, व्यसन आदि के विमर्श या विचार से फल-प्राप्ति का प्रयत्न किया जाता हो और गर्भ संधि (देखे) के द्वारा यह उद्देश्य बीज रूप मे प्रकट भी हो जाता हो। अवमर्श-संधि।
**विशेष**—प्रसाद के चद्रगुप्त नाटक म यह उस समय आती है, जब चाणक्य की नीति से असतुष्ट होकर चन्द्रगुप्त के माता-पिता चले जाते हैं, और चद्रगुप्त अकेला पडकर अपना असतोष और क्रोध प्रकट करता है और विमर्शपूर्वक साम्राज्य स्थापित करने के लोभ से प्रयत्न आरभ करता है।

**विमर्शी (र्शिन्)**—वि० [स० वि√मृश् (विचार करना)+घञ्, विमर्श+इनि] विमर्श अर्थात् विचार या समीक्षा करनेवाला।

**विमर्ष**—पु० [स० वि√मृष् (सहन करना)+घञ्] =विमर्श।

**विमल**—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० विमला, भाव० विमलता] १. जिसमें किसी प्रकार का मल न हो। मलरहित। निर्मल। २ साफ तथा पारदर्शक। जैसे—विमल जल। ३. दूषण, दोष आदि से रहित। जैसे—विमल चरित्र। ४ दर्शनीय। सुन्दर। ५ सफेद तथा चमकता हुआ।
पु० १. चाँदी। २ एक प्रकार की उप-धातु। ३. पद्म-काठ। ४. सेधा नमक। ५ गत उत्सर्पिणी के ५वे और वर्तमान अवसर्पिणी के १३वें अर्हत् या तीर्थंकर। (जैन)

**विमलक**—पु० [सं० विमल+कन्] एक प्रकार का नग या बहुमूल्य पत्थर।

**विमलता**—स्त्री० [स० विमल+तल्+टाप्] विमल होने की अवस्था, गुण या भाव।

**विमलध्वनि**—पु० [स० ब० स०] छ. चरणों का एक प्रकार का छन्द जो एक दोहे और समान भर्वाधा में मिलकर बनता है।

**विमला**—स्त्री० [स० प० त०] १ योग मे, सिद्धि की दस भूमियों या स्तरो मे से एक। २ एक देवी जो वासुदेव की नायिका कही गई है। ३. सरस्वती। ४. गालवा (वृक्ष)।

**विमलात्मा (त्मन्)**—वि० [स० ब० स०] जिसका हृदय निर्मल तथा शुद्ध हो।
पु० चन्द्रमा।

**विमलाद्रि**—पु० [स० मध्यम० स०] गुजरात का गिरनार पर्वत।

**विमलालोक**—पु० [सं० ब० स०] संन्यासियों का एक भेद।

**विमली**—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**विमांस**—पु० [स० मध्यम० स०] ऐसा मास जो खराब हो तथा भक्ष्य न हो।

**विमा**—स्त्री० [स०] [वि० विमीय] किसी दिशा मे काया का होने वाला विस्तार जो नापा जा सकता हो। आयाम। (डाइमेंशन)
**विशेष**—विमाएँ तीन प्रकार की होती हैलंबाई, चौडाई, और ऊँचाई। (जिसके अनर्गत मोटाई या गहराई भी आ जाती है)।
**पद**—द्विविम, त्रिविम। (द०)

**विमाता (तृ)**—स्त्री० [स० मध्यम० स०] सौतेली माँ।

**विमातृज**—वि [सं० विमातृ√जन् (उत्पन्न करना)+ड] विमाता से उत्पन्न। सौतेला।

**विमान**—वि० [ब० स०] जिसका कोई मान न हो। मान से रहित।
पुं० १.पुराणानुसार देवताओ का वह यान या रथ जो आकाश-मार्ग से चलता था। २ आज-कल आकाश-मार्ग से उडनेवाला यान या सवारी। वायुयान। हवाई जहाज। ३ महात्मा, वृद्ध आदि के शव की ऐसी अरथी जो फूल-मालाओं आदि से खूब सजाई गई हो। ४ रामलीला आदि के जलूस मे वह चौकी जिस पर देवताओ की मूर्तियाँ रखकर आदमी लोग कधे पर उठाकर चलते हैं। ५ रथ। ६ घोडा। ७. सात खडोवाला मकान। ८ परिमाण। ९. वास्तुकला मे, ऐसा देवमदिर जिसका ऊपरी भाग बहुत ऊँचा और गावदुमा या लर्जनदार हो।

**विमान-चालक**—पु० [ष० त०] वह जो हवाई जहाज या वायु-यान चलाता है।

**विमान-चालन**—पु० [ष० त०] हवाई जहाज चलाने की विद्या या क्रिया (एविएशन)

**विमानन**—पु० [स०] विमान अर्थात् हवाई जहाज चलाने की कला, क्रिया या विद्या। (एयर नैविगेशन)

**विमान-पत्तन**—पु० [स०] हवाई अड्डा। (एयर-पोर्ट)

**विमान-वाहक**—पु० [स० विमान+वाहक] एक प्रकार का समुद्री जहाज जिसके ऊपर बहुत लबी-चौडी छत होती है और जिस पर बहुत से हवाई जहाज रहते हैं।

**विमानित**—भू० कृ० [स० वि√मान् (मान करना)+क्त, विमान+इतच्] जिसका अपमान हुआ हो।

**विमार्ग**—पु० [कर्म० स०] १ बुरा रास्ता। कुमार्ग। २. बुरा आचरण। ३ झाड़ बुहारी।

**विमार्गा**—स्त्री० [स०] दुश्चरित्रा स्त्री।

**विमार्जन**—पु० [स० वि√मृज् (शुद्ध करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विमार्जित] १. धोना। २ साफ करना। ३ पवित्र करना।

**विमासना**—अ० [स० विमर्श] राय या विचार करना। विमर्श करना।

**विमित**—वि० [स०] परिमित। सीमित।
पु० १ भवन। २. विशेषत ऐसा भवन जो चार खभो पर आश्रित हो। ३. बडा कमरा।

**विमिश्र**—वि० [स० तृ० त०] १ जिसमे कई तरह की चीजों का मेल हो। मिला-जुला। २. जो विशुद्ध हो।

**विमिश्रा**—स्त्री० [स० विमिश्र+टाप्] मृगशिरा, आर्द्रा, मघा और अश्लेषा नक्षत्रो मे सूर्य की होनेवाली गति जिसका मान ३० दिनों तक रहता है।

**विमिश्रित**—भू० कृ० [स०] जिसमे कई तरह की चीजें मिली हो या मिलाई गई हों।

**विमीय**—वि० [स०] विमा-सबधी। विमा का। (डाइमेंशनल)

**विमुक्त**—भू० कृ०[सं० तृ० त०] [भाव० विमुक्तता, विमुक्ति] १ कैद, पाश, बधन आदि से जो छूट चुका हो या छोड़ दिया गया हो। रक्षत्र हुआ या किया हुआ। २. दड आदि से छूटा हुआ। ३ चलाया या छोड़ा हुआ। जैसे—**विमुक्त बाण**। ४. स्वच्छदतापूर्वक विचरण करनेवाला। ५ बरखास्त। कार्य-भार से मुक्त किया हुआ।

**विमुक्ति**—स्त्री०[स०] १. विमुक्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव। कष्ट, सकट आदि से होनेवाला छुटकारा। ३ कार्य-भार, नियम, बधन आदि से मिलनेवाला छुटकारा। (एजेम्प्शन) ४ विछोह। ५ मोक्ष।

**विमुख**—वि०[ब० स०] [स्त्री० विमुखी, भाव० विमुखता] १ जिसने किसी ओर से मुँह फेर या मोड लिया हो। २ फलत जो किसी से उदासीन या विरक्त हो चुका हो। ३ प्रतिकूल। विरुद्ध। ४ जो फल-प्राप्ति से वचित रहा हो।

**विमुखता**—स्त्री०[सं० विमुख+तल्+टाप्] विमुख होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

**विमुग्ध**—वि०[सं० वि√मुह् (मुग्ध करना)+क्त] [भाव० विमुग्धता] १ मोहित। आसक्त। २ भ्रम मे पडा हुआ। भ्रान्त। ३. घबराया और डरा हुआ। विकल। ४ उन्मत्त। मतवाला। ५ पागल। बावला। ६ अचेत। बेसुध।

**विमुग्धक**—वि०[स० विमुग्ध+कन्] विमुग्ध करनेवाला।

पु० साहित्य मे, एक प्रकार का छोटा अभिनय।

**विमुद्र**—वि०[स० ब० स०] १. जिस पर मोहर या छाप न लगी हो। २ जिसका मुँह बन्द न हो। खिला या खुला हुआ।

**विमुद्रण**—पु०[स० वि+मुद्रा+युच्-अन, तु० त०] [भू० कृ० विमुद्रित] १ मुद्रा या छाप तोडना या हटाना। २ खिलने मे प्रवृत्त करना।

**विमूढ**—वि०[सं०] [स्त्री० विमूढा, भाव० विमूढता] १ विशेष रूप से मुग्ध। अत्यन्त मोहित। २ भ्रम या मोह मे पडा हुआ। ३ अचेत। बेसुध। ४ बहुत बडा। मूढ या नासमझ।

पु० १. एक देवयोनि। २ एक प्रकार की सगीत-कला।

**विमूढक**—पु० [सं० विमूढ+कन्] साहित्य मे एक प्रकार का प्रहसन।

**विमूढ गर्भ**—पु०[सं० ब० स०] ऐसा गर्भ जिसमे बच्चा भर गया हो या मर जाता हो।

**विमूर्च्छ**—वि०[स०] जिसकी मूर्च्छा दूर हो गई हो।

**विमूर्च्छित**—वि० [स०] =मूर्च्छित (बेहोश)।

**विमूल**—वि०[स० ब० स०] १ मूल से रहित। बिना जड का। २. मूल से उखाडा या हटाया हुआ। ३ ध्वस्त या नष्ट किया हुआ। बरबाद।

**विमूलन**—पु०[स० वि√मूल् (स्थित करना)+ल्युट्-अन] १ जड से उखाडना। उन्मूलन। २. ध्वस। विनाश।

**विमृश**—पु०[स०] विमर्श।

**विमृश्य**—वि०[स० वि√मृश्(विचार करना)+यत्] जिसके विषय मे विमर्श अर्थात् आलोचना या विवेचन हो सके या होने को हो। विमर्श के योग्य।

**विमृष्ट**—भू० कृ०[स० वि√मृश् (विचार करना)+क्त] १ जिसके सबध मे विमर्श अर्थात् आलोचना या विवेचन हो चुका हो। २. अच्छी तरह विचारा हुआ।

**विमोक**—वि०[स० ब० स०] १. दुर्वासना, द्वेष, राग आदि से मुक्त या रहित। २ जिसके ऊपर कोई आवरण न हो। ३. स्पष्ट। साफ।

पु० छुटकारा। मुक्ति।

**विमोक्ता(क्तृ)**—वि० [स० वि√मुच् (छोडना)+तृच्] विमुक्त करने या छुडानेवाला।

**विमोक्ष**—पु०[स० वि√मोक्ष् (छोडना)+अच्] १ छुटकारा। २ जन्म-मरण के बन्धन से होनेवाला छुटकारा। मुक्ति। ३. पकडी हुई चीज इधर-उधर छोड़ना या फेंकना। ४. चन्द्रमा या सूर्य के ग्रहण का अन्त। उग्रह। ५. मेरु पर्वत। ६ दे० 'मोक्ष'।

**विमोक्षण**—पु०[स० वि√मोक्ष् (छोडना)+ल्युट्-अन [भू० कृ० विमोक्षित] १. बधन आदि खोलना। मुक्त करना। २ हथियार आदि चलाना या छोडना।

**विमोक्षी (क्षिन्)**—वि०[स० वि√मोक्ष् (छोड़ना)+णिनि] जिसे मुक्ति या निर्वाण प्राप्त हुआ हो।

**विमोघ**—वि० [स० ब० स०] १. अमोघ (अचूक)। २ व्यर्थ। बेकार।

**विमोचक**—वि० [स० वि०√मुच् (छोड़ना)+ण्वुल्-अक] मुक्त करने या करानेवाला।

**विमोचन**—पु०[स० वि√मुच् (छोडना)+ल्युट्-अन] [वि० विमोचनीय, विमोच्य, भू० कृ० विमोचित] १ बधन आदि खोलकर मुक्त करना, छुटाना या छोडना। २ सवारी मे से खीचनेवाले जानवर को खोलना। जैसे—गाडी या रथ मे से घोडो या बैलो का विमोचन। ३ किसी प्रकार के नियत्रण, सीमा आदि से अलग या बाहर करना। जैसे—रथ से अश्व-विमोचन। (ख) धनुष से बाण का विमोचन। ४. गिराना या फेंकना।

**विमोचना**†—स०[स० विमोचन] १ विमोचन अर्थात् मुक्त करना या करवाना। २ किसी पर से रोक उठा या हटा लेना जिससे वह स्वच्छद गति प्राप्त कर सके। ३ गिराना। ४. निकालना।

**विमोच्य**—वि०[स० वि√मुच् (छोडना)+यत्] जिसका विमोचन हो सकता हो या होने को हो। मुक्त होने के योग्य।

**विमोह**—पु०[स० वि√मुह् (मुग्ध करना)+घञ्] १ अज्ञान, भ्रम आदि के कारण उत्पन्न होनेवाला मोह। २ अचेत होने की अवस्था या भाव। बेहोशी। ३ बुद्धिभ्रंश। ४ एक नरक।

**विमोहक**—वि०[स० विमोह+कन्] १. मोहित करनेवाला। लुभावना। २ मन मे लोभ उत्पन्न करने या ललचानेवाला। ३ सुध-बुध भुलाने वाला।

पु० सगीत मे, एक राग जो हिंडोल राग का पुत्र माना जाता है।

**विमोहन**—पु० [स० वि√मुह् (मुग्ध करना)+ल्युट-अन] [भू० कृ० विमोहित, वि० विमोही] १. मुग्ध या मोहित करना। लुभाना। २. किसी का मन अपने वश मे करना। ३ सुध-बुध भुलाना। ४ कामदेव के पाँच बाणो मे से एक। ५. एक नरक का नाम।

**विमोहना**†—अ०[स० विमोहन] १. मोहित होना। २. अचेत या बेसुध होना। ३. भ्रम मे पडना।

स० १. मोहित करना। २. बेहोश करना। ३. भ्रम मे डालना।

**विमोहा**—स्त्री०[हिं०] विज्जोहा नामक छन्द का दूसरा नाम।

**विमोहित**—भू० कृ०[स० वि√मुह् (मुग्ध करना)+क्त] १. जो किसी

पर मोहित या आसक्त हो। २. जो सुध-बुध खो चुका हो। बेसुध। बेहोश। ३. भ्रम या धोखे में पड़ा हुआ।

**विमोही (हिन्)**—वि० [सं०] [स्त्री० विमोहिनी] १. जिसमे किसी के प्रति मोह न हो। २. मोहित करनेवाला। मोह लेनेवाला। ३ धोखे या भ्रम मे डालनेवाला।

**विमौट**—पु० =बिमौट (बाँबी)।

**वियंग**—वि० [सं० अव्यग] जो टेढ़ा-मेढ़ा न हो। सीधा।
*पु० [?] शिव।

**विय**†—वि० [सं० द्वि०, द्वितीय, प्रा० विय] १. दो। युग्म। २. दूसरा।

**वियत्**—पु० [सं० वि√यम्+क्विप्, तुक्, म-लोप] १ आकाश। २. वायु-मडल।
वि० १. गमनशील। २ गतिशील।

**वियत्-पताका**—स्त्री० [सं० वियत्+पताका] विद्युत। बिजली।

**वियद्गंगा**—स्त्री० [सं० ष० त०] आकाशगगा।

**वियम**—पु० [वि√यम्+अप्] वियाम।

**वियाम**—पु० [सं० वि√यम् (सयम करना)+घञ्] १. इन्द्रिय-निग्रह। सयम। २. विराम। ३ कष्ट। ४. रोक।

**वियुक्त**—वि० [भि०√युज् (सयुक्त होना)+क्त] [भाव० वियुक्ति] १ जो युक्त या सयुक्त न हो। २ जो किसी से अलग, जुदा या पृथक् हो चुका हो। ३. जिसे औरो ने छोड दिया हो। परित्यक्त। ४. वियोगी। ५ वचित, रहित या हीन।

**वियुग्म**—वि० [सं०] १ जो युग्म अर्थात् जोड़ा न हो। अकेला। २. (गणित मे वह राशि) जिसे दो से भाग देने पर एक निकलता या बचता हो। (ऑड) ३. जिसमे कुछ अस्वाभाविकता हो।

**वियुत**—वि० [भ० वि√यु (मिलना, न मिलना)+क्त] १. वियुक्त। अलग। २ जो किसी से अलग हुआ हो। वियुक्त। ३. रहित। हीन।

**वियो**—वि०=विय (दूसरा)।

**वियोग**—पु० [नि√युज् (सयोग होना)+घञ्, मध्यम० स०] १ योग न होने की अवस्था या भाव। पार्थक्य। २. ऐसी अवस्था जिसमे दो जीव विशेषत प्रेमी एक दूसरे से दूर हो और इस प्रकार उनमे मिलन न होता हो। ३. उक्त अवस्था के फलस्वरूप प्रेमियो को होनेवाला कष्ट। ४. किसी का सदा के लिए बिछुडना। मरने के कारण होनेवाला अलगाव। ५. उक्त के फलस्वरूप होनेवाला शोक।

**वियोग-शृंगार**—पु० [सं०] साहित्य मे, शृंगार रस का वह अग या विभाग जिसमे विरही की दशा का वर्णन होता है। विप्रलभ। ४. 'सयोग शृंगार' का विपर्याय।

**वियोगांत**—वि० [सं० ब० स०] (कथा-कहानी या नाटक) जिसके अतिम दृश्य में प्रेमी, मित्र आदि के वियोग का वर्णन हो।

**वियोगिन**—स्त्री०=वियोगिनी।

**वियोगिनी**—वि० [वियोगिन्+ङीप्] जो नायक, पति या प्रिय के परदेश चले जाने पर उसके विरह मे दुखी हो।
स्त्री० विरहिणी नायिका।

**वियोगी (गिन्)**—वि० [सं० वियोगिन्] [स्त्री० वियोगिनी] १. जिसका किसी से वियोग हुआ हो। २. विरही।
पु० १. नायक जो नायिका से वियुक्त होने पर दुखी हो। २. चकवा पक्षी। चक्रवाक।

**वियोजक**—वि० [सं० वि√युज् (मिलना)+णिच्+ण्वुल्-अक] [स्त्री० वियोजिका] वियोजन करनेवाला। पृथक् करनेवाला।
पु० गणित मे, वह छोटी सख्या जो किसी बडी संख्या मे से घटाई गई हो।

**वियोजन**—पु० [सं० वि√युज् (मिलना)+णिच्+ल्युट्-अन] [भू० कृ० वियोजित, वियुक्त] १ वियोग होना। योग का अभाव। २ जुदाई। वियोग। ३. गणित मे एक सख्या (या राशि) में, से दूसरी सख्या (या राशि) घटाने की क्रिया।

**वियोजित**—भू० कृ० [सं० वि√युज् (मिलना)+णिच्+क्त] १ जिसका किसी से वियोग हुआ हो। २ जिसे बलात् किसी से अलग या जुदा कर दिया गया हो। ३ वचित।

**वियोज्य**—वि० [सं० वि√युज् (मिलना)+यत्] १ जिसका वियोजन हो सके या होने को हो। २ (गणित में सख्या) जिसमे से कोई छोटी सख्या घटाई जाने को हो।

**विरंग**—वि० [सं० ब० स०] १ रंगहीन। २ अनेक रगोवाला। रग-बिरगा। ३ बदरग।

**विरंच (चि)**—पु० [सं० वि√रञ्च् (रचना करना)+अच्] ब्रह्मा।

**विरंचि-सुत**—पु० [सं० ष० त० विरंचि+सुत] नारद।

**विरंजन**—पु० [सं०] [भू० कृ० विरंजित] १ रजन से रहित करना। २ ऐसी प्रक्रिया जिससे किसी वस्तु मे के सब रग हट या निकल जायँ। ३. धोकर साफ करना। प्रक्षालन।

**विरक्त**—वि० [सं०] [भाव० विरक्ति, विरक्तता] १. गहरा लाल। रक्त वर्ण। खूनी। २. जिसके रग मे कुछ परिवर्तन आ चुका हो। ३. जिसकी किसी पर आसक्ति न रह गई हो। 'अनुरक्त' का विपर्याय। ४. सासारिक प्रपचो, बधनो आदि से परे रहनेवाला। ५ भोग-विलास आदि से बहुत दूर रहनेवाला। ६. खिन्न।

**विरक्तता**—स्त्री० [सं० विरक्त+तल्+टाप्]=विरक्ति।

**विरक्ति**—स्त्री० [सं० वि√रञ्ज् (राग करना)+क्तिन्] १. विरक्त होने की अवस्था या भाव। २. मन मे अनुराग या चाह न रहने की अवस्था या भाव। ३. सासारिक बातो की ओर से मन हटाना। वैराग्य। ४. भोग-विलास आदि के प्रति होनेवाली अरुचि या उदासीनता। ५ अप्रसन्नता। खिन्नता।

**विरचन**—पु० [सं० वि√रच् (बनाना)+ल्युट्-अन] [वि० विरचनीय, भू० कृ० विरचित] १. रचना करना। निर्माण। बनाना। २ तैयारी।

**विरचना**—स० [सं० विरचन] १. निर्माण करना। बनाना। रचना। २. अलकृत करना। सजाना।
†अ०=विरचन होना।

**विरचित**—भू० कृ० [सं० वि√रच् (बनाना)+क्त] १. रचा या बनाया हुआ। निर्मित। रचित। २ (ग्रन्थो आदि के सबध मे) लिखित।

**विरज**—वि० [ब० स०] १ धूल, गर्द आदि से रहित। २. जो रजोगुण प्रधान न हो। ३. जिसमे रजोगुणी प्रवृत्ति न हो। ४ स्वच्छ। निर्मल। ५. (स्त्री) जिसका रजोधर्म रुक गया या समाप्त हो चुका हो।
पु० १. विष्णु। २. शिव।

**विरजन**—वि० [स०] रज-परिवर्तन करनेवाला।

**विरजा**—स्त्री० [स०] १. ऑकड़ुए की एक सखी। २. नहुष की स्त्री।

**विरजाक्ष**—पु० [स० ब० स०] एक पर्वत जो मेरु के उत्तर में कहा गया है।

**विरजा-क्षेत्र**—पु० [स० ष० त०] उड़ीसा का एक तीर्थ-स्थान जो जाजपुर के पास है।

**विरत**—वि० [सं० वि√रम् (रमण करना)+क्त, म-लोप] [भाव० विरति] १ जो रत अर्थात् अनुरक्त या प्रवृत्त न रह गया हो। जिसका मन किसी ओर से हट गया हो। २ जिसने किसी से अपना संबंध तोड़ लिया हो। जो अलग हो गया हो। जैसे—किसी काम से विरत होना। ३ जिसने सांसारिक विषयों से अपना मन हटा लिया हो। विरक्त। वैरागी। ४ जो विशेष रूप से किसी ओर रत हुआ हो।

**विरति**—स्त्री० [सं० मध्यम० स०, ब० स० वा] १ विरत होने की अवस्था या भाव। उदासीनता या विरक्ति। २ वैराग्य।

**विरथ**—वि० [सं० ब० स०] १ जिसके पास रथ न हो अथवा जो रथ पर आरूढ़ न हो। २ रथ से गिरा या हटा हुआ। ३ पैदल।
पु० पैदल सिपाही।

**विरद**—पु० [सं० विरद] १ बड़ा और सुन्दर नाम। २ ख्याति। प्रसिद्धि। ३ कीर्ति। यश।
वि० जिसे रद अर्थात् दाँत न हों। दन्तहीन।

**विरदावली**†—स्त्री० दे० 'बिरदावली'।

**विरदैत**—वि० [हिं० विरद+ऐत (प्रत्य०)] १ बड़े विरदवाला। २. कीर्ति या यशवाला। ३ किसी का विरद बखाननेवाला।
पु० चारण।

**विरम**—पु० =विराम। उदा०—जागरणोत्थ यह सुप्ति-विरम भ्रम भर। —निराला।

**विरमण**—पु० [सं० वि√रम् (क्रीडा)+ल्युट्—अन] १ विराम करना। ठहरना। थमना। रुकना। २ रमण करना। रमना। ३. भोग-विलास। ४ रमण में मन हटा कर अलग होना। परित्याग।

**विरमना**†—अ० [सं० विरमण] १. रम जाना। मन लगाना। अनुरक्त हो जाना। किसी से या कहीं से मन लगाना। २. मन का रमने लगना। ३ ठहरना। रुकना। ४ गति, वेग आदि का कम होना या रुकना।
†अ०—विलंबना।

**विरमाना**†—स० [हिं० विरमना का स० रूप] १ किसी का विरमने में प्रवृत्त करना। विलमाना। २ घोड़े या भ्रम में डालना।

**विरल**—वि० [सं० वि√रा (लेना)+कलन्] [भाव० विरलता] १. जिसके अंग या अंश बहुत पास-पास न हों। जो घना न हो। जिसमें बीच-बीच में अवकाश हो। 'सघन' का विपर्याय। जैसे—विरल बुनावटवाला कपड़ा। २ जो बहुत कम मिलता हो। दुर्लभ। ३ जो गाढ़ा न हो। पतला। ४ निर्जन। एकान्त। ५. खाली। शून्य। ६ अल्प। थोड़ा।

**विरला**—वि० [सं० विरल] १ विरल। २ जो केवल कहीं-कहीं या बहुत कम मिलता अथवा होता हो।

**विरलीकरण**—पु० [सं० विरल+च्वि+√कृ (करना)+ल्युट्—अन] सघन को विरल करने की क्रिया।

**विरव**—पु० [सं० मध्यम० स०] अनेक या विविध प्रकार के शब्द।
वि० १. जिसमें शब्द न हो। २ जो शब्द न करता हो। निःशब्द। नीरव।

**विरस**—वि० [मध्म० स०] [भाव० विरसता] १ जिसमें रस या मिठास न हो। २. फल जो स्वाद में फीका हो। ३. जिसमें रुचि को आकृष्ट करने का कोई गुण या तत्त्व न हो। जिसमें रुचि न लगती हो। ४. (साहित्यिक रचना) जिसमें रस का परिपाक न हुआ हो।
पु० काव्य में होनेवाला रसभंग नामक दोष।

**विरसता**—स्त्री० [सं० विरस+तल्+टाप्] १ विरस होने की अवस्था या भाव। २ साहित्य का रस-भंग नामक दोष।

**विरह**—पु० [सं०] १ किसी वस्तु से रहित होना। किसी वस्तु के अभाव में होना। २. प्रिय व्यक्तियों का एक दूसरे से अलग होना जो दोनों पक्षों के लिए बहुत कष्टप्रद हो। वियोग। ३ उक्त के फलस्वरूप होनेवाला मानसिक कष्ट या दुःख। ४ त्याग।
वि० रहित। हीन।

**विरह-निवेदन**—पु० [सं०] साहित्य में, दूत या दूती का नायक (अथवा नायिका) के पास पहुँचकर उससे यह कहना कि तुम्हारे विरह में नायक (अथवा नायिका) कितनी दुःखी है।

**विरहा**†—पु० =बिरहा (गीत)।

**विरहागि***—स्त्री० =बिरहाग्नि।

**विरहाग्नि**—स्त्री० [सं० ष० त०] प्रिय के विरह या वियोग के कारण होनेवाला तीव्र मानसिक कष्ट या संताप।

**विरहानल**—पु० [सं० ष० त०, मध्यम० स०] =विरहाग्नि।

**विरहिणी**—वि० [सं० विरह+इनि+ङीप्] पति या प्रिय के विरह से संतप्त (नायिका)।

**विरहित**—वि० [सं० वि√रह (त्याग करना)+क्त] रहित। शून्य।

**विरही (हिन्)**—वि० [सं० विरह+इनि] [स्त्री० विरहिणी] (नायक) जो प्रियतमा के विरह से संतप्त हो।

**विरहोत्कंठिता**—स्त्री० [सं० तृ० त०] साहित्य में, वह विरहिणी नायिका जो प्रिय के आगमन के लिए अधीर हो रही हो।

**विराग**—पु० [सं० वि√रञ्ज् (राग करना)+घञ्, मध्यम० स०] १ मन में राग का होनेवाला अभाव। किसी चीज या बात की चाह न होना। 'अनुराग' का विपर्याय। २. किसी काम, चीज या बात से मन उचट या हट जाना। विरक्ति। ३ सांसारिक सुख-भोग की चाह न रह जाना। वैराग्य। ४ संगीत में, दो रागों के मेल से बना हुआ संकर राग।

**विरागी (गिन्)**—वि० [सं० विराग+इनि] [स्त्री० विरागिनी] १ जिसके मन में राग (चाह या प्रेम) न हो। राग-रहित। २ दे० 'विरक्त'।

**विराज**—वि० [सं० वि√राज् (शोभित होना)+अच्] १. चमकीला। २ राज्य-रहित।
पु १ राजा। २. क्षत्रिय। ३ ब्रह्माण्ड। ४. एक प्रकार का मन्दिर। ५ एक प्रकार का एकाह यज्ञ। ६ एक प्रजापति का नाम।

**विराजन**—पु० [सं० वि√राज्+ल्युट्—अन] १. शोभित होना। २. उपस्थित या विद्यमान होना। ३ बैठना।

**विराजना**—अ० [सं० विराजन] १ शोभित होना। प्रकाशित होना। २ उपस्थित या विद्यमान होना। ३ बैठना। (बड़ों के लिए आदर-सूचक) जैसे—आइए विराजिए।

**विराजमान**—वि०[सं० वि√राज्+शानच्, मुक्] १. प्रकाशमान। चमकता हुआ। चमक-दमकवाला। २. उपस्थित। विद्यमान। (बड़ों के लिए आदरार्थक; विशेषतः बैठे रहने की दशा में)

**विराजित**—भू० कृ० [सं० वि√राज्+क्त] १. सुशोभित। २ प्रकाशित। ३. विराजमान।

**विराट्**—वि०[सं०] बहुत बड़ा या भारी। जैसे—विराट् सभा, विराट् आयोजन।

पु० १. विश्वरूप ब्रह्मा। २. विश्व। ३. क्षत्रिय। ४. दे० 'विश्व-रूप'।

**विराट**—पु०[सं०] १. मत्स्य देश का पुराना नाम। २. उक्त देश का राजा जिसकी उत्तरा नामक कन्या का विवाह अभिमन्यु से हुआ था। ३. संगीत में एक प्रकार का ताल।

**विराण** †—वि०[फा० बेगान] [स्त्री० विराणी] दूसरे का। पराया।

**विराध**—पु०[सं० वि√राध् (पीड़ित करना)+अच्] १ पीड़ा। क्लेश। तकलीफ। २. एक राक्षस जो दंडकारण्य में लक्ष्मण के हाथ से मारा गया था।

वि० कष्ट देने या पीड़ित करनेवाला।

**विराधन**—पु०[सं० वि√राध् (पीड़ित करना)+ल्युट्-अन] १ किसी का अपकार या हानि करना। २. कष्ट देना। पीड़ित करना।

**विराम**—पु०[सं०] १ क्रिया, गति, चाल आदि में होनेवाला अटकाव। २ कार्य-व्यापार में होनेवाली मंदी। ३ आराम या विश्राम के उद्देश्य से चुप-चाप पड़े रहने की अवस्था या भाव। ४ विश्राम। ५ कार्य, पद, सेवा आदि से अवकाश ग्रहण करना। ६ पद्य के चरण में की यति। ७ विराम-चिह्न।

**विराम-काल**—पु०[सं०] वह छुट्टी जो काम करनेवालों को विराम करने या गुस्ताने के लिए मिलती है।

**विराम-चिह्न**—पु०[सं०] लेखन, छपाई आदि में प्रयुक्त होनेवाले चिह्न। (पक्चुएशन) जैसे—,; .- आदि।

**विराम-संधि**—स्त्री०[सं०] युद्ध होने रहने की दशा में बीच में होनेवाली वह अस्थायी संधि जो स्थायी संधि की शर्तें निश्चित करने के लिए होती है और जिसके अनुसार युद्ध कुछ समय के लिए स्थगित कर दिया जाता है। अवहार। (आर्मिस्टिस)

**विराल**—पु०[सं० वि√डल्+घञ्, ड—र] बिडाल। बिल्ली।

**विराव**—पु० [ग० वि०√ह (शब्द करना)+घञ्] १ शब्द। आवाज। २ मुँह से निकलनेवाली वाणी। बोली। उदा०—मोर कौं सोर गान कोकिल विराव कौ।—सेनापति। ३. शोर-गुल। हो-हल्ला।

वि० रव अर्थात् शब्द से रहित। जिसमें आवाज न हो।

**विरावण**—वि०[सं० विराव√नी (ढोना)+ड] [स्त्री० विरावणी] १. बोलने या शब्द करनेवाला। २. रोने-चिल्लानेवाला। ३. शोर-गुल करने या हो-हल्ला मचानेवाला।

**विरावी (विन्)**—वि०[सं०] विरावण।

**विरास**†—पुं०=विलास।

**विरासत**—स्त्री०=वरासत।

**विरासी**†—वि०=विलासी।

**विरिंच (चि)**—पु०[वि√रिच् (बनाना)+अच्, नुम्] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव।



**विरिक्त**—वि०[वि√रिच् (रेचन करना)+क्त] [भाव० विरिक्ति] १. जो रिक्त हो। खाली। २ (पेट) जो जुलाब लेने के बाद साफ हो गया हो।

**विरेक**—वि०[स० मध्यम० स० या ब० स०] जिसे रोग न हो। निरोग।

**विरेचनालय**—पुं०[सं०] वह स्थान जहाँ रोगों का निदान तथा उपचार किया जाता हो। (क्लिनिक)

**विरेचना**†—अ०=उलझना।

**विरेचाना**†—स०=उलझाना।

†अ०=उलझना।

**विरेफ**—पु०[सं० ब० स०] १. उच्च स्वर में की जानेवाली घोषणा। २. किसी के गुण, प्रताप आदि का वर्णन। प्रशस्ति। ३. उक्त की सूचक कोई पदवी जो प्रायः राजाओं के नाम के साथ लगती थी। जैसे—'चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य' में 'विक्रमादित्य' विरुद है। ४ कीर्ति। यश।

**विरुदावली**—स्त्री०[सं० ष० त०] १ विरुदों या पदवियों का संग्रह। २. किसी बड़े व्यक्ति के गुणों, पराक्रम आदि का होनेवाला विस्तार-पूर्वक वर्णन। ३. गुणावली।

**विरुद्ध**—वि०[सं०] १. सामने आकर विरोधी होनेवाला। २ कार्य, प्रयत्न आदि का विरोध करने या उसकी विफलता चाहनेवाला। ३ जो अनुकूल नहीं, बल्कि प्रतिकूल हो। मेल या संगति में न बैठनेवाला। विपरीत। ४. साधारण नियमों आदि से विभिन्न और उलटा। जैसे—विरुद्ध आचरण।

अव्य० १. प्रतिकूल स्थिति में। विलाफ। जैसे—किसी के विरुद्ध चलना या बोलना। २ किसी के मुकाबले या विरोध में। ३. सामने।

पु०[सं०] भारतीय नैयायिकों के अनुसार ५ प्रकार के हेत्वाभासों में से एक जो वहाँ माना जाता है जहाँ दिया हुआ हेतु स्वयं अपनी प्रतिज्ञा के विपरीत हो।

**विरुद्धकर्मा (र्मन्)**—वि०[सं० ब० स०] १. विरुद्ध कर्म करनेवाला। २ विपरीत या निन्दनीय आचरणवाला।

पु० श्लेष अलंकार का एक भेद जिसमें किसी क्रिया के फलस्वरूप होनेवाली परस्पर विरुद्ध प्रतिक्रियाओं का उल्लेख होता है। (केशव)

**विरुद्धता**—स्त्री०[सं० विरुद्ध+तल्+टाप्] १. विरुद्ध होने की अवस्था या भाव। विरोध। २. प्रतिकूलता।

**विरुद्ध-मति-कारिता**—स्त्री०[स०] साहित्य में, एक प्रकार का काव्य-दोष जो ऐसे पद या वाक्य के प्रयोग में होता है जिससे वाच्य के संबंध में विरुद्ध या अनुचित भाव उत्पन्न हो सकता है। जैसे—"भवानीश" में यह दोष इसलिए है कि भव से उनकी पत्नी का नाम भवानी हुआ है। अब उसमें ईश शब्द जोड़ना इसलिए ठीक नहीं है कि इससे अर्थ हो जायगा—भव की स्त्री के स्वामी।

**विरुद्धार्थ**—वि०[सं०] विरोधी अर्थवाला।

पुं० विरुद्ध या विपरीत अर्थ।

**विरुद्धार्थ दीपक**—पु०[सं०]साहित्य में दीपक अलंकार का एक भेद जिसमें एक ही बात से दो परस्पर विरुद्ध क्रियाओं का एक साथ होना दिखाया जाता है।

**विरुधा**†—पु०=विरोध।

†वि०=विरुद्ध।

†पु०=वीरुध। (पौधा या लता)

**विरुह**[3]—वि०=विरुद्ध।

†पु०=विरोध।

**विरूज**—पु०[स० ब० स०] एक अग्नि जिसका स्थान जल में माना गया है।

**विरूढ़**—भू० कृ०[स० वि√रुह् (उत्पन्न होना)+क्त] १. किसी पर चढ़ा हुआ। आरूढ़। सवार। २ अंकुरित। ३. उत्पन्न। जात। ४. अच्छी तरह जमा, बैठा या बैठा हुआ।

**विरूपिणी**—स्त्री०[स० विरूप+इनि।ङीप्] वैसाख बदी एकादशी।

**विरूप**—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० विरूपा] [भाव० विरूपता] १ अनेक या कई रूपोंवाला। २ कई तरह या प्रकार का। ३ भद्दे रूपवाला। कुरूप। बदसूरत। ४ जिसका रूप बदल गया हो। ५. शोभा, श्री आदि से रहित। ६ उलटा, विपरीत या विरुद्ध। ७. अप्राकृतिक। ८ अन्य या दूसरे प्रकार का। भिन्न।

पु० १ बिगड़ी हुई सूरत। २ पांडु रोग। ३. शिव। ४ एक असुर। ५. पिप्पलीमूल।

**विरूपण**—पु०[सं०] [भू० कृ० विरूपित] आघात आदि के द्वारा अथवा और किसी प्रकार का रूप या आकार बिगड़ना।

**विरूपता**—स्त्री०[स० विरूप+तल्+टाप्] विरूप होने की अवस्था या भाव।

**विरूप-परिणाम**—पु०[स०] एक-रूपता में अनेक-रूपता अर्थात् निर्विशेषता से विशेषता की ओर होनेवाला परिवर्तन। एक मूल प्रकृति से अनेक विकृतियों का विकसित होना।

**विरूपा**—स्त्री० [स० विरूप+टाप्] १ दुरालभा। २ अतिविषा। ३. यम की पत्नी का नाम।

वि० स० विरूप का स्त्री०।

**विरूपाक्ष**—वि०[स० ब० स०] जिसकी आँखें विरूप हों।

पु० १ शिव। २ शिव का एक गण। ३ रावण का एक सेनापति जिसे सुग्रीव ने मारा था। ४ पुराणानुसार एक दिग्गज।

**विरूपिक**—वि०[स्त्री० विरूपिका] =विरूप।

**विरूपी (पिन्)**—वि०[स० विरूप+इनी] [स्त्री० विरूपिणी] १ जिसका रूप बिगड़ा हुआ हो। २ कुरूप। बदसूरत। ३ डरावनी या भयानक आकृतिवाला।

पु० गिरगिट नामक जन्तु।

**विरेक**—पु०[स० वि√रिच् (रेचन करना)+घञ्]=विरेचक।

**विरेचक**—वि० [स० वि√रिच् (रेचन करना)+ण्वुल्-अक] (पदार्थ) जो दस्त लानेवाला हो। दस्तावर।

**विरेचन**—पु० [वि√रिच् (रेचन करना)+ल्युट्-अन] १ ऐसी क्रिया करना जिससे दस्त आवें। २ ऐसा पदार्थ या औषधि जिसके सेवन से दस्त आते हों। विरेचक पदार्थ।

**विरेची (चिन्)**—वि०[स० वि√रिच् (रेचन करना)+णिनि]=विरेचक।

**विरेच्य**—वि०[स० वि√रिच् (रेचन करना)+यत्] जो दस्तावर दवा देने के योग्य हो। जिससे विरेचन कराया जा सके।

**विरोक**—पु० [स० वि√रुच् (चमकना)+घञ्] १. चमक। दीप्ति। २. किरण। रश्मि। ३ चन्द्रमा। ४. विष्णु। ५ छेद। सूराख।

**विरोकना**†—स०=रोकना।

**विरोचन**—पु० [स० वि√रुच् (चमकना) युच्—अन] १. प्रकाशमान होना। चमकना। २ सूर्य की किरण। ३. सूर्य। ४. चन्द्रमा। ५. अग्नि। ६. विष्णु। ७ प्रह्लाद के पुत्र और बलि के पिता का नाम। ८. राजा बलि का एक नाम। ९ आक। मदार। १०. रोहित वृक्ष। रुहेड़ा। ११. ध्योनाक। सोनापाढ़ा। १२ धूतकरंज।

वि० चमकनेवाला। दीप्तिमान।

**विरोध**—पु०[स० वि√रुध् (ढकना)+घञ्] १ विशेष रूप से होनेवाला रोध या रुकावट। २ किसी कार्य या प्रयत्न को रोकने या विफल करने के लिए उसके विपरीत होनेवाला प्रयत्न। (ऑपोजीशन) ३. भिन्न भिन्न तथ्यों, विचारों आदि में होनेवाला ऐसा तत्त्व जो एक दूसरे के विपरीत हो। (रिपग्नेन्सी) ४ मतों, व्यक्तियों, सिद्धान्तों आदि में होनेवाली पारस्परिक विपरीतता। ५. उक्त के फलस्वरूप आपस में होनेवाला ऐसा संघर्ष जिसमें प्रायः वैर या शत्रुता का भाव भी सम्मिलित होता है। (कॉन्फ्लिक्ट) ६ आपस में होनेवाली अनबन या बिगाड़।

**पद—वैर-विरोध**। ७ ऐसी स्थिति जिसमें दो बातें एक साथ हो सकती हों। विप्रतिपत्ति। व्याघात। ८ उलटी या विपरीत स्थिति। ९ विरोध-भास। (दे०) १० नाटक का एक अंग जिसमें किसी बात का वर्णन करते समय विपत्ति का आभास दिखाया जाता है। ११ नाश।

**विरोधक**—वि०[स० वि√रुध् (ढकना)+ण्वुल्-अक] १ विरोध संबंधी। २ विरोधी।

पु० नाटक में ऐसा विषय जिसका प्रदर्शन या वर्णन निषिद्ध हो।

**विरोधन**—पु० [स० वि√रुध् (ढकना)+ल्युट्-अन] [वि० विरोधी-विरोधित, विरोध्य] १ विरोध करने की क्रिया या भाव। प्रतिरोध। २ ध्वंस। नाश। बरबादी।

**विरोधना**—स०[स० विरोधन] १. किसी का या किसी से विरोध करना। २ वैर करना।

**विरोध-पीठ**—पु० [स०] विधायिका सभा में विरोध पक्षवालों के बैठने का स्थान। (ऑपोजीशन बेंच)

**विरोधाभास**—पु०[स०] साहित्य में एक विरोधमूलक अर्थालंकार जिसमें वस्तुतः विरोध का वर्णन न होने पर भी विरोध का आभास होता है।

**विरोधित**—भू० कृ० [स० वि√रुध् (ढकना)+क्त] जिसका विरोध किया गया हो।

**विरोधिता**—स्त्री०[स० विरोधिन्+तल्+टाप्] १ विरोध। २ वैर। शत्रुता। ३ फलित ज्योतिष में, नक्षत्रों की प्रतिकूल दृष्टि।

**विरोधी (धिन्)**—वि०[स०] १. जो किसी के विरुद्ध आचरण करता हो। विरोध करनेवाला। २. जो इस प्रयास में हो कि अमुक कार्य को प्रचलन में न लाया जाय अथवा प्रचलन से उठा लिया जाय। ३. विरुद्ध पड़ने या होनेवाला। उलटा। विपरीत।

पु० १ विपक्षी। २ शत्रु। वैरी।

**विरोध्य**—वि०[स० विरोध+यत्] जिसका विरोध किया जा सके या किया जाने को हो।

**विरोपण**—पु० [सं० वि√रूप् (बढ़ना)+णिच्+ल्युट्-अन] [वि०

**विरोपणीय, विरोप्य**, भू० कृ० विरोपित] १ जमीन में पौधे आदि लगाना। रोपना। २. लेप करना। चढाना या लगाना।

**विरोम**—वि० [सं० ब० स०] रोम-रहित। बिना रोएँ का।

**विरोह**—पु० [स० वि√रुह् (अकुर निकलना)+घञ्] १ अकुरित होना। २. उत्पत्ति या उद्भव होना।

**विरोहण**—पु० [स० वि√रुह् (अंकुरित होना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विरोहित वि० विरोहणीय, एक स्थान से उखाडकर दूसरे स्थान पर लगाना। रोपना।

**विरोही**—वि० [सं० वि√रुह् (उगना)+णिनि=विरोहिन्] [स्त्री० विरोहिणी] (पौधा) रोपनेवाला।

**विर्त्त†**—स्त्री०=वृत्ति।

पु०=वृत्त।

**विलंघन**—पु० [स० वि√लघ् (लाँघना)+ल्युट्-अन] १. कूद या लाँघकर पार करना। २. उपवास। लघन। ३ किसी काम, चीज या बात से अपने आपको रहित या वंचित रखना।

**विलंघना**—स०=लाँघना।

**विलंघनीय**—वि० [स० वि√लघ् (लाँघना)+अनीयर्] १ जिसका विलघन हो सके या होने को हो। २. (काम) जो सहज में किया जा सके। सुगम।

**विलंघित**—भू० कृ० [स० वि√लघ् (लाँघना)+क्त] जिसका विलघन हुआ हो।

**विलंघी (न्)**—वि० [स० वि√लघ् (लाँघना)+णिनि] विलघन करनेवाला।

**विलंघ्य**—वि० [स० वि√लघ् (लाँघना)+यत्] विलघनीय।

**विलंब**—पु० [स० वि√लम्ब् (देर करना)+घञ्] १ ऐसी स्थिति जिसमे अनुमान, आवश्यकता, औचित्य आदि से अधिक समय लगे। अति-काल। देर। २. इस प्रकार अधिक लगनेवाला समय।

**विलंबन**—पु० [स० वि√लम्ब् (देर होना)+ल्युट्-अन] [वि० विलंबनीय, विलबी, भू० कृ० विलंबित] १. देर करना। विलब करना। २. टँगना या लटकना। ३. आश्रय या सहारा लेना।

**विलंबना**—स० [स० विलबन] १. आवश्यकता से अधिक समय लगाना। २. देर या विलंब करना।

अ० १. देर या विलब होना। २. लटकना। ३. आश्रय या सहारा लेना। ४. दे० 'विरमना' या 'विलमना'।

**विलंब शुल्क**—पुं० [ष० त०] १ वह शुल्क जो किसी काम या बात में विलंब करने पर देना पड़े। (लेट फ़ी) २. वह अतिरिक्त शुल्क जो जहाज, रेल आदि से आया हुआ माल देर से छुडाने पर देना पडता है। (डेमरेज)

**विलंबित**—वि० [सं० वि√लम्ब् (देर करना)+क्त] १. लटकता या झूलता हुआ। २. जिसमें विलंब लगा हो या देर हुई हो। ३. देर करने या लगानेवाला।

पुं० १. ऐसे जीव-जंतु जो बहुत धीरे-धीरे चलते हो। जैसे—गैंडा, भैंस आदि। २. संगीत में ऐसी लय, जिसमें स्वरो का उच्चारण बहुत बंद गति से होता हो। 'द्रुत' का विपर्याय।

**विलंबी (न्)**—वि० [स० वि√लम्ब् (देर करना)+णिनि] [स्त्री० विलंबिनी] १. लटकता हुआ। झूलता हुआ। २ विलंब करने या देर लगानेवाला।

पु० साठ सवत्सरों मे से बत्तीसवाँ सवत्सर।

**विलक्ष**—वि० [स० वि√लक्ष् (लक्षित करना)+अच्] १ जिसमे विशिष्ट चिह्न या लक्षण न हो। २ जिसका कोई लक्ष्य न हो। ३ चकित। ४ लज्जित।

**विलक्षण**—वि० [स० ब० स०] १. जिसका कोई लक्षण न हो। २ जिसके बहुत से लक्षण हो। ३. अपने वर्ग के अन्यों की अपेक्षा जिसके लक्षण मे विशेषता हो। जैसा साधारण होता है, उससे कुछ अलग प्रकार का। ४. किसी की तुलना मे कुछ अलग और विशिष्ट प्रकार का।

**विलक्षणता**—स्त्री० [स० विलक्षण+तल्+टाप्] १. विलक्षण होने की अवस्था या भाव। २ वह गुण जिसके कारण कोई चीज विलक्षण कही जाती है।

**विलक्षणा†**—अ० =विलक्षणा।

स०=लक्षणा।

**विलक्षाना†**—स० [हिं० विलखना का स०] १ =बिलखाना। २ =लखाना।

**विलग**—वि० [हिं० वि (उप०)+लगना] जो किसी के साथ लगा हुआ न हो। अलग। जुदा। पृथक्।

पु० अन्तर। फरक। भेद।

**विलगाना**—अ० [हिं० विलग+ना (प्रत्य०)] अलग होना। पृथक् होना।

स० अलग या पृथक् करना।

**विलग्न**—वि० [सं०] १ किसी के साथ लगा हुआ। सलग्न। २. झूलता या लटकता हुआ। ३. किसी मे बंद किया या बाँधा हुआ। ४. बीता हुआ। व्यतीत। ५. कोमल।

पु० १ कमर। २. चूतड़। ३. जन्म-पत्री। ४ राशियो का उदय।

**विलच्छन†**—वि०=विलक्षण।

**विलज्ज**—वि० [स० ब० स०] निर्लज्ज। बेहया।

**विलपन**—पु० [स०] १. विलाप करना। २. गप-शप करना। २. तेल आदि के नीचे जमने या बैठनेवाली मैल। गदगी।

**विलपना**—अ० [स० विलाप] विलाप करना। रोना।

**विलब्ध**—भू० कृ० [स० वि√लभ् (प्राप्त होना)+क्त] १ दिया हुआ। पाया हुआ। मिला हुआ। प्राप्त। लब्ध। २. अलग या पृथक् किया हुआ।

**विलम**†—पु०=विलंब।

**विलमना**—अ०=विलमना।

**विलय**—पु० [स० वि√ली (मिलना, घुलना आदि)+अच्] १. किसी चीज का पानी मे घुलकर मिल जाना। घुलना। २. एक पदार्थ का किसी रूप में दूसरे पदार्थ में घुलना-मिलना। विलीन होना। ३. आज-कल किसी छोटे देश या राज्य का अपनी स्वतत्र सत्ता गँवाकर दूसरे बडे देश या राज्य में मिल जाना। छोटे राज्य का बड़े मे लीन होना। (मर्जिंग) ४. आत्मा का शरीर से निकलकर परमात्मा में मिलना, अर्थात् मृत्यु।

मौन। ५. मृष्टि का नष्ट होकर अपने मूल तत्त्वों में मिल जाना, अर्थात् प्रलय। ६. ध्वंस। नाश।

**विलयन**—पु०[स० वि√ली(लम होना)+ल्युट्—अन]१ लय या विलय होने की अवस्था, क्रिया या भाव। विलीन होना। २ एक वस्तु का दूसरी वस्तु में इस प्रकार मिलकर समा जाना कि उस पहली वस्तु का स्वतंत्र अस्तित्व न रह जाय। ३. किसी देशी रियासत का या किसी छोटे राज्य का बड़े राज्य में होनेवाला विलय।(मजर)

**विलसन**—पु०[स० वि√लस् (चमकना)+ल्युट्—अन] १ चमकने की क्रिया या भाव। २ क्रीडा। प्रमोद। विलास।

**विलसना**—अ०[स० विलसन] १ शोभा पाना। फबना। २. क्रीडा या विलास करना। ३ किसी बीज का सुखपूर्वक भोग-विलास करना।

**विलसाना**†—स०=विलसाना।

**विलसित**—वि०[स० वि√लस्+क्त] १. चमकता हुआ। २. व्यक्त। ३ क्रीड़ा में मग्न। ४. विनोदी।

पु० १. चमकने या चमकाने की क्रिया। २ चमक। दीप्ति। ३. अभिव्यक्ति। ४ क्रीडा। ५. अंग-भंगी। ६ परिणाम। फल।

**विलह-बंदी**—स्त्री०[?] ब्रिटिश शासन में, जिले के बन्दोबस्त का वह संक्षिप्त ब्योरा जिसमें प्रत्येक महाल का नाम, कास्तकारों के नाम और उनके लगान आदि का ब्योरा लिखा जाता था।

**विलहा**†—पु० दे० 'बोलहा'।

**विलाना**—अ०, स०=विलाना (नष्ट होना या करना)।

**विलाप**—पु०[स० वि√लप् (बोलना)+घञ्] हार्दिक दुःख प्रकट करने के लिए विलख-विलख कर या विकल होकर रोने की क्रिया।

**विलापन**—वि०[सं० वि√लप्(कहना)+ल्युट्—अन] १ रुलानेवाला। २. जो विलाप का कारण हो (शस्त्रादि)। ३. पिघलानेवाला। ४ नष्ट करनेवाला।

पुं० १ रुलाने की क्रिया। २. नाश। ३. मृत्यु। ४. पिघलाने का साधन। ५. शिव का एक गण।

**विलापना**—अ० [सं० विलाप] विलाप करना।

†स०=रोपना (वृक्ष आदि)।

**विलापी (पिन्)**—वि० [स०वि० √लप्+णिनि] रोने या विलाप करनेवाला।

**विलायत**—पुं० [अ०] १. पराया देश। दूसरों का देश। बहुत दूर का विशेषत. समुद्र पार का देश। २. भारतीयों की दृष्टि से इंग्लैंड अमेरिका, यूरोप आदि देश या महादेश।

**विलायती**—वि०[अ०] १. विलायत का। विदेशी। २. विलायत या दूसरे देश का बना हुआ। ३. विलायत या दूसरे देश में रहनेवाला। विदेशी।

**विलायती पटुआ**—पुं०[ हिं० विलायती+पटुआ] लाल पटुआ। लाल सन।

**विलायती बैंगन**—पुं०[हिं०] टमाटर। (देखें)

**विलायन**—पुं०[स० वि√ली+णिच्+ल्युट्—अन] प्राचीन भारत का एक अस्त्र। कहते हैं कि इस अस्त्र के प्रयोग से शत्रु की सेनाएँ विश्राम करने लगती थीं।

**विलावल**†—पुं०=बिलावल (राग)।

**विलास**—पु०[स० वि√लस्(साथ में क्रीडा करना)+घञ्] १. ऐसी क्रिया या व्यापार जो अपने को प्रसन्न तथा प्रफुल्लित रखने के लिए किया जाय। २ क्रीडा। खेल। ३. अधिक मूल्य की और सुख-सुविधा की वस्तुओं का ऐसा उपभोग या व्यवहार जो केवल मन प्रसन्न करने के लिए हो। शौकीनी। (लक्षणा) ४. अनुराग तथा प्रेम में लीन होकर की जानेवाली क्रीड़ा। ५. ऐसी स्त्रियोचित भाव-भंगी या कोमल चेष्टा जो काम-वासना की उत्पादक या सूचक हो। ६. साहित्य में संयोग शृंगार का एक भाव जिसमें प्रिय से सामना होने पर नायिका अपनी कोमल चेष्टाओं तथा भाव-भंगियों से उसके मन में अपने प्रति अनुराग उत्पन्न करती है। ७. मनोहरता। सौन्दर्य। ८. किसी अंग की आकर्षक और कोमल चेष्टा। जैसे—भ्रू-विलास। ९ किसी वस्तु का उक्त प्रकार से हिलना-डोलना। जैसे—विद्युत् विलास। १०. आनन्द। प्रसन्नता। हर्ष। ११. यथेष्ट सुख-भोग।

**विलासक**—वि०[सं० विलास+कन्] [स्त्री० विलासिका] १ इधर-उधर फिरनेवाला। २ दे० 'विलासी'। ३. नर्तकी।

**विलासन**—पु०[स० वि√लस्+ल्युट्—अन] विलास करने की क्रिया या भाव।

**विलासिका**—स्त्री० [स० विलास्+कन्+टाप्, इत्व] साहित्य में, एक प्रकार का शृंगार प्रधान एकांकी रूपक जिसका विषय संक्षिप्त और साधारण होता है।

**विलासिता**—स्त्री०[सं०] १. विलासी होने की अवस्था या भाव। २. विलास।

**विलासिनी**—स्त्री०[सं० विलास+इनि+ङीप्] १. सुंदरी युवती। कामिनी। २. रंडी। वेश्या। ३. एक वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ज, र, ज, ग, ग होता है।

वि० विलासिता-प्रिय (स्त्री)।

**विलासी (सिन्)**—वि० [सं० विलास+इनि] १. (व्यक्ति) जो प्रायः ऐसी क्रीडाओं में रत रहता हो जिनसे उसे सुख-भोग प्राप्त होता हो। २. हँसी-खुशी में समय बितानेवाला। ३. आराम-तलब। ४. कामुक।

पु० वट्ट (वृक्ष)।

**विलास्य**—पुं०[सं० विलास+यत्] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे होते थे।

वि० विलास के लिए उपयुक्त या योग्य।

**विलिंग**—वि०[सं० ब० स०] १. लिंग-रहित। २. दूसरे या भिन्न लिंग का।

पुं० लिंग अर्थात् चिह्न का अभाव।

**विलिखन**—पुं० [सं० वि√लिख् (रेखा करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विलिखित] १. लिखना। २. खरोंचना। ३. खोदकर अंकित करना।

**विलिप्त**—भू० कृ०[सं० वि√लिप् (लीपना)+क्त] १. पुता हुआ। लिपा हुआ। २. उबटा या चुपड़ा हुआ। ३. अस्त-व्यस्त। ४. कलुषित।

**विलीक**†—वि०=व्यलीक (असत्य)।

**विलीन**—भू०कृ० [वि√ली (मिलना, घुलना)+क्त] १. (पदार्थ) जो किसी दूसरे पदार्थ में गल, घुल या मिल गया हो। २. उक्त के आधार पर जो अपनी स्वतंत्र सत्ता खोकर दूसरे में मिल गया हो।

३. जो गायब या लुप्त हो गया हो। अदृश्य। ४. नष्ट। ५. मृत। ६. जो आड़ में जा छिपा हो। ओझल।

**विलुप्तक**—पुं० [सं०] [भू० कृ० विलुप्तित] नष्ट करना।

**विलुप्त**—भू० कृ० [सं०] १. जिसका लोप हो गया हो। नष्ट। २. जो अदृश्य या गायब हो गया हो। ३. नष्ट। बरबाद।

**विलूनक**—वि० [स० वि√लूल् (मर्दन करना)+ण्वुल्–अक] नाश करनेवाला।

**विलून**—भू० कृ० [स० वि√लू (काटना)+क्त, त–न] १. कटा हुआ। अलग किया हुआ। २. काटकर अलग किया हुआ।

**विलेख**—पुं० [वि√लिख्+घञ्] १. अनुमान। कल्पना। २. सोच-विचार। ३. वह करण या लिखित जिसमें दो पक्षों में होनेवाला अनुबंध लिखा हो और जिस पर प्रमाण-स्वरूप दोनों पक्षों के हस्ताक्षर हों। दस्तावेज। (डीड)

**विलेखन**—पुं० [स० वि√लिख् (लिखना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विलेखित] १. खरोचना। २. खोदना। ३. उखाड़ना। ४. चिह्न बनाना। ५. चीरना। ६. नदी का मार्ग। ७. विभाजन।
वि० खरोचनेवाला।

**विलेखा**—स्त्री० [स० विलेख+टाप्] १. खरोंच। २. चिह्न। ३. विलेख। लेख्य।

**विलेखी (खिन्)**—वि० [सं० वि√लिख् (लिखना)+णिनि] १. खरोंचने वाला। २. चिह्न बनानेवाला। ३. इकरार लिखनेवाला। ४. विलेख अर्थात् अनुबंध या संधि-पत्र लिखनेवाला।

**विलेप**—पुं० [सं० वि√लिप् (लेपन करना)+घञ्] १. शरीर आदि पर लगाने का लेप। २. दीवारों पर लगाया जानेवाला पलस्तर।

**विलेपन**—पु० [सं० वि√लिप्+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विलेपित] १ लेप करने या लगाने की क्रिया या भाव। अच्छी तरह लीपना या लगाना। २. लेप के रूप में लगाई जानेवाली चीज। लेप।

**विलेपनी**—स्त्री० [स० विलेपन+ङीप्] १. वह स्त्री जिसने अगराग लगाया हो। शृंगारित स्त्री। २. मंड़ि।

**विलेपी (पिन्)**—वि० [स० वि√लिप् (लेप करना)+णिनि] [स्त्री० विलेपिनी] १. लेप करनेवाला। २. पलस्तर करनेवाला। ३. चिपका या साथ लगा हुआ। ४. लसदार। लसीला।

**विलेय**—वि० [स०] १. जिसका विलय हो सके या किया जा सके। २. (पदार्थ) जो पानी या किसी तरल द्रव्य में घुल सके। (सोल्यूबल)

**विलेशायी (शिन्)**—पु० [सं० विले√वस् (रहना)+णिनि, दीर्घ, नलोप ह्रस्वमी-अलुक्] सर्प।

**विलेशय**—वि० [स० विले√शी (सोना)+अच्, सप्त०-अलुक्] बिल में वास करनेवाला।
पुं० १. साँप। २. चूहा। ३. बिच्छू। ४. गोह। ५. खरगोश।

**विलोक**—वि० [सं० ब० स०] १. लोक या जन से रहित। २. निर्जन।
पुं० १. दृष्टि। नजर। २. दृश्य।

**विलोकन**—पुं० [सं० वि√लोक् (देखना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विलोकित] १. देखना। २. विचार करना। ३. तलाश करना। ढूँढ़ना। ४. ध्यान देना। ५. अध्ययन करना।

**विलोकना**—स० [सं० विलोकन] १. देखना। २. निरीक्षण करना। ३. ढूँढ़ना।

**विलोकनि**—स्त्री० [हिं० विलोकना] १. देखने की क्रिया या भाव। २. दृष्टि। नजर।

**विलोकनीय**—वि० [स० वि√लोक् (देखना आदि)+अनीयर्] देखने योग्य अर्थात् सुन्दर।

**विलोकित**—भू० कृ० [सं०] १. देखा हुआ। २. निरीक्षित।

**विलोकी (किन्)**—वि० [सं० वि√लोक् (देखना)+णिनि, दीर्घ, न-लोप] १. देखनेवाला। २. निरीक्षण करनेवाला।

**विलोचन**—पु० [सं०] १. लोचन। नेत्र। आँख। २. एक नरक का नाम।
वि० लोचन अर्थात् आँख से रहित।

**विलोडक**—वि० [सं० वि√लुड् (मथना आदि)+ण्वुल्–अक] विलोड़न करनेवाला।
पुं० चोर।

**विलोडन**—पु० [सं० वि√लुड् (मथना आदि)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० विलोड़ित] १. मथना। २. हिलाना। ३. चुराना।

**विलोड़ना**—स० [स० विलोड़न] विलोड़न करना। विलोड़ना।

**विलोप**—पु० [स० वि√लुप् (भागना)+घञ्] १. लोप। २. बाधा। रुकावट। ३. आपत्ति। संकट। ४. नाश। ५. नुकसान। हानि। ६. कोई चीज चुरा या लेकर भागना।

**विलोपक**—वि० [स० वि√लुप् (नष्ट करना)+ण्वुल्–अक] विलोप करनेवाला।

**विलोपन**—पुं० [स०] [भू० कृ० विलोपित] १. विलोप करने की क्रिया या भाव। २. जो कुछ पहले से वर्तमान हो, उसे काट या रद्द करके अलग करने, छोड़ने या निकालने की क्रिया या भाव। (डिलीशन)

**विलोपना**—स० [स० विलोपन] १. लोप करना। २. नाश करना। ३. ले भागना। ४ बाधा या विघ्न डालना।
अ० १. लुप्त होना। २. नष्ट होना।

**विलोपी (पिन्)**—वि० [सं० वि√लुप् (गायब करना आदि)+णिनि, दीर्घ, नलोप] लोप अर्थात् पूर्णतया नष्ट या ध्वस्त करनेवाला।

**विलोप्ता (प्तृ)**—वि० [स० वि√लुप् (लुप्त करना)+तृच्] विलोपी।
पु० १. चोर। २. डाकू।

**विलोप्य**—वि० [स० वि√लुप् (लुप्त करना)+यत्] जिसका विलोपन हो सके। विलुप्त किये जाने के योग्य।

**विलोभ**—वि० [वि√लुभ् (विमोहित करना)+घञ्] जिसे लोभ न हो। लोभ से रहित।
पुं० १. ऐसी बात जो मन को ललचाती हो। २. प्रलोभन। ३. माया के कारण उत्पन्न होनेवाला भ्रम या मोह।

**विलोभन**—पुं० [सं०] १. विलोभ। २. प्रलोभन।

**विलोम**—वि० [सं०] १. जिसे बाल न हों। लोम-रहित। २. सामान्य या स्वाभाविक स्थिति के विपरीत स्थिति में होनेवाला। ३. सामान्य क्रम से न होकर विपरीत क्रम से होनेवाला। ४. जो सामान्य रीति, प्रथा आदि के विचार से नहीं, बल्कि उसके विपरीत हुआ हो। जैसे—विलोम विवाह। ५. क्रम के विचार से ऊपर से नीचे की ओर जानेवाला। जैसे—विलोम स्वर साधन।

पु० १. साँप। २. कुत्ता। ३. रहट। ४. एक वरण। ५. संगीत में स्वरों का अवरोहात्मक साधन।

**विलोमक**—वि०[सं० विलोम+कन्] १. उलटे या विपरीत क्रम से चलने या होनेवाला। २. (औषध या पदार्थ) जिसके प्रयोग से शरीर के बाल, विशेषत. फालतू बाल झड़ जाते हों। (डेपिलेटरी)

**विलोम जात**—वि०[सं०] १. (बच्चा) जो उलटा जन्मा हो। २. जिसकी माता का वर्ण उसके पिता के वर्ण की अपेक्षा ऊँचा हो।

**विलोमत**—अव्य०[सं०] १. विलोम अर्थात् उलटे प्रकार या रूप से। २. विपरीत दिशा या रूप में। (कॉन्ट्रसली) २. दे० 'प्रतिकमात्'।

**विलोमन**—पु०[सं०] [भू० कृ० विलोमित] १. विलोम अर्थात् उलटे रूप से चलाना, रखना या लगाना। २. नाटकों में मुख-सन्धि का एक अंग।

**विलोमवर्ण**—वि०[सं०] (व्यक्ति) जिसकी माता का वर्ण पिता के वर्ण की अपेक्षा ऊँचा हो।

**विलोमा (मन्)**—वि०[सं० ब० स०] १. केश-रहित। २. उलटी ओर मुड़ा हुआ।

**विलोल**—वि०[सं० तृ०त०] १. लहराता या हिलता हुआ। २. अस्थिर। चंचल। ३. सुन्दर। ४. ढीला। शिथिल। ५. अस्त-व्यस्त। बिखरा हुआ।

**विलोहित**—वि०[सं० तृ० त०] १. गाढ़ा लाल। २. बैंगनी रंग का। २ हलका लाल।

पु० १. रुद्र। २ शिव। ३. एक नरक का नाम। ४. लाल प्याज।

**विलोहिता**—स्त्री०[सं० विलोहित+टाप्] अग्नि की एक जिह्वा।

**विल्व**—पु०[सं० √विल् (भेदन करना)+अन्-विल्वन्]=बिल्व (बेल का पेड़ और फल)।

**विव**—वि०[सं०] १. दो। २. दूसरा।

**विवक्ता (क्तृ)**—पु० [सं० वि√वच् (बोलना)+तृच्] १. कहने या बतलानेवाला। २ स्पष्ट बात कहनेवाला। ३. ठीक या दुरुस्त करनेवाला।

**विवक्षा**—स्त्री०[सं० वि√वच् (कहना)+सन्, द्वित्व,+टाप्] १. कुछ कहने या बोलने की इच्छा। २. वह जो किसी के स्वभाव का अंश हो। ३. शब्द के अर्थ में होनेवाली विशिष्ट छाया जो उसका स्वाभाविक अंग होती है। ४ फल या परिणाम के रूप में या आनुषंगिक रूप से होने वाली बात। (इम्प्लिकेशन)

**विवक्षित**—भू० कृ० [सं०] १. जो कहे जाने को हो। २. (आर्थी छाया) जिसे शब्द व्यक्त कर रहा हो।

**विवत्स**—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० विवत्सा] संतानहीन।

**विवदन**—पु०[सं० वि√वद् (बोलना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विवदित] विवाद करने की क्रिया या भाव।

**विवदना**—अ० [सं० विवाद+हिं० नाप्रत्य०] विवाद अर्थात् तर्क-वितर्क या झगड़ा करना।

**विवदमान्**—वि०[सं०] विवाद या झगड़ा करनेवाला।

**विवदित**—वि०[सं०] जिसके सम्बन्ध में किसी प्रकार का विवाद हुआ हो। (डिस्प्यूटेड)

**विवर**—पु० [सं०] १. छिद्र। बिल। २. गर्त। गड्ढा। ३. दरार। ४. कन्दरा। गुफा। ५. किसी ठोस चीज के अंदर होनेवाला खोखला स्थान। (कैविटी)

**विवरण**—पु०[सं० वि√वृ (सवरण करना)+ल्युट्-अन] १. स्पष्ट रूप से समझाने के लिए किसी घटना, बात आदि का विस्तारपूर्वक किया जानेवाला वर्णन या विवेचन। २. उक्त प्रकार से कहा हुआ वृत्तान्त या हाल। जैसे—किसी सस्था का वार्षिक विवरण, अधिवेशन या बैठक का कार्य-विवरण। ३. ग्रन्थ की टीका या व्याख्या। ४. किसी अधिकारी आदि के पूछने पर अपने कार्यों आदि के संबंध में बताई जानेवाली विस्तृत बातें।

**विवरण-पत्र**—पुं०[सं०] १. वह पत्र जिसमें किसी प्रकार का विवरण लिखा हो। (रिपोर्ट) २. ऐसा सूचीपत्र जिसमें सूचित की जानेवाली वस्तुओं का थोड़ा-बहुत विवरण भी हो।

**विवरणिका**—स्त्री०[सं०] १. विवरण-पत्र।

**विवरना**†—अ०=बिवरना (सुलझना)।

† स०=बिवरना (सुलझाना)।

**विवरणी**—स्त्री० [सं०] आय-व्यय आदि की स्थिति बतानेवाला वह लेखा जो प्रतिवेदन के रूप में कहीं उपस्थित किया जाने को हो। (रिटर्न)

**विवर्जन**—पु०[सं०] [भू० कृ० विवर्जित] १. त्याग करने की क्रिया। परित्याग। २. मनाही। निषेध। वर्जन। अनादर। ४. उपेक्षा।

**विवर्जित**—भू० कृ०[सं० वि√वर्ज् (मना करना)+क्त] जिसका या जिसके सम्बन्ध में विवर्जन हुआ हो।

**विवर्ण**—वि०[सं०] १. जिसका कोई रंग न हो। रंगहीन। २. जिसका रंग बिगड़ गया हो। ३. कांति-हीन। ४. रंग-बिरंगा। ५. जो किसी वर्ण के अंतर्गत न हो, अर्थात् जाति-च्युत।

पु० साहित्य में एक भाव जिसमें भय, मोह, क्रोध, लज्जा आदि के कारण नायक या नायिका के मुख का रंग बदल जाता है।

**विवर्णता**—स्त्री०[सं०] विवर्ण होने की अवस्था या भाव। वैवर्ण्य।

**विवर्त**—पु०[सं०] १. घूमना। मुड़ना। २. लुढ़कना। ३. नाचना। ४. एक रूप या स्थिति छोड़कर दूसरे रूप या स्थिति में आना या होना। ५. वेदान्त का यह मत या सिद्धान्त कि सारी सृष्टि वास्तव में असत् या मिथ्या है; और उसका जो रूप हमें दिखाई देता है, वह भ्रम या माया के कारण ही है। ५. लोक-व्यवहार में किसी वस्तु का कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में या किसी कारण से मूल से भिन्न होना। जैसे—रस्सी का साँप प्रतीत होना या ब्रह्म का जगत् प्रतीत होना। ७. ढेर। राशि। ८. आकाश। ९. धोखा। भ्रम।

**विवर्तक**—वि०[सं०] विवर्तन करनेवाला। चक्कर लगानेवाला।

**विवर्तन**—पु०[सं०] [भू० कृ० विवर्तित] १. किसी के चारों ओर घूमना। चक्कर लगाना। २. किसी ओर ढलकना या लुढ़कना। ३. भिन्न भिन्न अवस्थाओं में से होते हुए या उन्हें पार करते हुए आगे बढ़ना। विकसित होना। विकास। ४. नाचना। नृत्य। ५. अरविन्द दर्शन में, चेतना का क्रमशः उन्नत तथा जाग्रत होकर विश्व की सृष्टि और विकास करना। 'निवर्तन' का विपर्याय। (इवोल्यूशन)

**विवर्तवाद**—पुं०[सं०] दार्शनिक क्षेत्र में, यह सिद्धान्त कि ब्रह्म ही सत्य है और यह जगत् उसके विवर्त या भ्रम के कारण कल्पित रूप है।

**विवर्तवादी**—वि०[सं०] विवर्तवाद-सम्बन्धी।

पुं० वह जो विवर्तवाद का अनुयायी हो।

**विवर्तित**—भू० कृ० [सं० वि√वृत् (उपस्थित रहना)+क्त] १. जिसका विवर्तन हुआ हो या जो विवर्त के रूप मे लाया गया हो। २. बदला हुआ। परिवर्तित। ३. घूमता या चक्कर खाता हुआ। ४ नाचता हुआ। ५. (अंग) जो मुड़क या मुड गया हो। ६. (अंग) जिसमें मोच आ गई हो।

**विवर्ती (र्तिन्)**—वि० [सं० वि√वृत् (उपस्थित रहना)+णिनि] =विवर्तक।

**विवर्द्धन**—पुं० [सं० वि√वृध् (बढना)+णिच्+ल्युट्-अन] [भू० कृ० विवर्द्धित] १ बढ़ाने या वृद्धि करने की क्रिया। २. बढती। वृद्धि।

**विवर्द्धिनी**—स्त्री० [सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**विवश**—वि० [सं० वि√वश् (वश में करना)+अच्] [भाव० विवशता] १. जो स्वय अपनी इच्छा के अनुसार नही बल्कि दूसरो की इच्छा से अथवा परिस्थितियों के बधन मे पड़कर काम कर रहा हो। २ जिसका अपने पर वश न हो, बल्कि जो दूसरो के वश में हो। ३. जिसे कोई विशिष्ट काम करने के अतिरिक्त और कोई चारा न हो। ४ पराधीन।

**विवशता**—स्त्री० [सं० विवश+तल्+टाप्] १. विवश होने की अवस्था या भाव। लाचारी। २. वह कारण जिसके फलस्वरूप किसी को विवश होना पडता हो।

**विवस**†—वि० =विवश।

**विवसन**—वि० [स्त्री० विवसना] =विवस्त्र।

**विवस्त्र**—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० विवस्त्रा] जिसके पास वस्त्र न हो अथवा जिसने वस्त्र उतार दिये हो।

**विवस्वत्**—पु० [सं०] १. सूर्य। २. सूर्य का सारथी, अरुण। ३. पन्द्रहवे प्रजापति का नाम।

**विवस्वान् (स्वत्)**—पु० [सं० विवस्वत्] १. सूर्य। २. सूर्य का सारथी, अरुण। ३ अर्क। मदार वृक्ष। ४. वर्तमान मनु का नाम। ५. देवता।

**विवाक**—पु० [सं० वि√ वच् (कहना)+घञ्] १. न्यायाधीश। २. मध्यस्थ।

**विवाचन**—पु० स० वि√वच् (कहना)+णिच्+ल्युट्-अन] आपसी झगड़ो का पच या पचायतो के द्वारा होनेवाला विचार और निर्णय।

**विवाद**—पु० [सं०] १. किसी बात या वस्तु के सम्बन्ध में होनेवाला जबानी झगड़ा। कहा-सुनी। तकरार। २. किसी विषय में आपस मे होनेवाला मतभेद। ३. ऐसी बात जिसके विषय मे दो या अनेक विरोधी पक्ष हो और जिसकी सत्यता का निर्णय होने को हो। (डिस्प्यूट) ४. न्यायालय मे होनेवाला वाद। मुकदमा।

**विवादक**—वि० [सं० वि√ वद् (कहना)+ण्वुल्—अक] विवाद करनेवाला। झगड़ालू।

**विवादार्थी (र्थिन्)**—पु० [सं० विवादार्थ+इनि, ब० स०] १. वादी। मुद्दई। २. मुकदमा लड़नेवाला व्यक्ति।

**विवादास्पद**—वि० [सं० ष० त०] १. (विषय) जिसके सम्बन्ध में दो या अधिक पक्षो का विवाद चल रहा हो। २. प्रस्ताव, मत, विचार आदि जिसके संबंध में तर्क-वितर्क चल सकता हो। (कान्ट्रोवर्सल)

**विवादी (दिन्)**—वि० [सं० वि√वद् (कहना)+णिनि] १. विवाद करनेवाला। कहासुनी या झगड़ा करनेवाला। २. मुकदमा लड़नेवाला। पुं० संगीत में वह स्वर जिसका प्रयोग किसी राग में नियमित रूप से तो नही होता फिर भी कभी-कभी राग में कोमलता या सुन्दरता लाने के लिए जिसका व्यवहार किया जाता है। जैसे—भैरवी में साधारणत. तीव्र ऋषभ या तीव्र निषाद का प्रयोग नही होता फिर भी कभी कभी कुछ लोग सुन्दरता लाने के लिए इसका प्रयोग कर लेते हैं।

**विवाह**—वि० [सं०] (विषय) जिस पर विवाद, बहस या तर्क-वितर्क होने को हो या हो सकता हो। (डिबेटेबुल)

**विवान**†—पुं० =विमान।

**विवास**—पु० [सं०] १. घर छोडकर कही दूसरी जगह जाकर रहना। २. निर्वासन।

**विवासन**—पुं० [सं० वि√ वस् (निवास करना)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ०विवासित] १ निर्वासित करना। निर्वासन। २ दे० 'विरापण'।

**विवास्य**—वि० [सं० वि√ वस्+ण्यत्] (व्यक्ति) जो अपने निवास-स्थान से निकाल दिया जाने को हो या निकाला जा सके।

**विवाह**—पु० [सं० वि√ वह् (ढोना)+घञ्] १ हिंदू धर्म मे सोलह सस्कारो मे से एक जिसमे वर तथा कन्या पति-पत्नी का धर्म स्वीकार करते हैं।

**विशेष**—हिन्दू धर्म में आठ प्रकार के विवाह माने गये हैं—ब्रह्म, दैव आर्ष, प्राजापत्य, आसुर, गान्धर्व, राक्षस और पैशाच्य।

३ उक्त सस्कार के अवसर पर होनेवाला उत्सव या समारोह। ४. व्यापक अर्थ मे, वह उत्सव जिसमे पुरुष तथा स्त्री वैवाहिक बन्धन मे बँधना स्वीकार करते हैं। ५. उक्त अवसर पर होनेवाला धार्मिक कृत्य। जैसे— विवाह पडित जी करावेंगे।

**विवाहना**†—स०=व्याहना।

**विवाहला**—पु० [सं० विवाह] विवाह के समय गाये जानेवाले गीत। (राज०)

**विवाह-विच्छेद**—पु० [स० ष० त०] वह अवस्था जिसमे पुरुष और स्त्री अपना वैवाहिक सम्बन्ध तोड़कर एक दूसरे से अलग हो जाते है। तलाक। (डाइवोर्स)

**विवाह्य**—वि० कृ० [स्त्री० विवाही] =विवाहित।

**विवाहित**—भू० कृ० [सं० विवाह+इतच्] [स्त्री० विवाहिता] १. जिसका विवाह हो गया हो। व्याहा हुआ। २. जिसके साथ विवाह किया गया हो।

**विवाह्य**—वि० [सं० वि√ वह् (ढोना)+ण्यत्] १. जिसका विवाह होने को हो या होना उचित हो। २. जिसके साथ विवाह किया जा सकता हो।

**विविं**—वि० [सं०] १. दो। २. दूसरा। द्वितीय।

**विविक्त**—भू० कृ० [स० वि√ विच् (पृथक् होना)+क्त] [स्त्री० विविक्ता] १. पृथक् किया हुआ। २. बिखरा हुआ। अस्त-व्यस्त। ३. निर्जन। ४ पवित्र। जैसे—विविक्त स्त्री।

पुं० १. त्यागी। २. संन्यासी।

**विविक्ति**—स्त्री० [सं० वि√ विच् (पृथक् करना)+क्तिन्] १ विवेक-पूर्वक काम करना। २. अलगाव। पार्थक्य। ३. विभाग।

**विविध**—[वि० स० ब० स०] १. अनेक या बहुत प्रकार का। भाँति-भाँति का। जैसे—विविध विषयों पर होनेवाले भाषण। २ कई विभागो, मदों आदि का मिला-जुला। फुटकर। (मिसलेनियस)

**बधिर**—पु० [स० वि०√बृ (संवरण करना)+अच्]=बिवर।

**बिवीत**—पु० [स० वि०√वी (गमन, व्याप्त होना आदि)+क्त] १. चारों ओर से घिरा हुआ स्थान। २. पशुओं के रहने का बाड़ा।

**बिषु**—पु०=बिषु।

**बिशेष**—'बिषु' के यौ० के लिए दे० 'बिषु' के यौ०।

**बिवृत**—वि० [स०] १ फैला हुआ। विस्तृत। २. खुला हुआ। ३ (वर्ण) जिसका उच्चारण करते समय मुख-द्वार पूरा खुलता हो। पु० व्याकरण में उच्चारण की वह अवस्था जिसमे मुख-द्वार पूरा खुलता है।

**बिशेष**—नागरी वर्णमाला में 'आ' बिवृत वर्ण (स्वर) है।

**बिवृता**—स्त्री० [स० बिवृत+टाप्] योनि का एक रोग जिसमे उस पर मडलाकार फुंसियाँ होती है और बहुत जलन होती है।

**बिवृति**—स्त्री० [सं०] १. बिवृति होने की अवस्था या भाव। २. किसी की कही या लिखी हुई बात की अपनी बुद्धि से प्रसगानुकूल अर्थ लगाना या स्थिर करना। निर्वचन। (इन्टरप्रिटेशन) ३. भाषा विज्ञान का बिवृत नामक प्रयत्न अथवा वह प्रयत्न करने की क्रिया या भाव।

**बिवृतोक्ति**—स्त्री० [स० ब० स०] साहित्य मे, एक प्रकार का अलकार जिसमें श्लेष मे छिपाया हुआ अर्थ कवि स्वय अपने शब्दो द्वारा प्रकट कर देता है।

**बिवृत्त**—वि० [स०] १ घूमता हुआ या चक्कर खाता हुआ। २. चलता हुआ। ३. ऐंठा हुआ या मुडा हुआ। ४. खुला या खोला हुआ। ५ सामने आया या लाया हुआ।

**बिवृत्ति**—स्त्री० [स० वि√ वृत् (फैलाना आदि)+क्तिन्] १. बिवृत्त होने की अवस्था या भाव। २. चक्कर खाना। घूमना। ३. विस्तार। फैलाव। ४. विकास। ५. ग्रन्थ की टीका या व्याख्या।

**बिवृद्ध**—वि० [स०] [भाव० बिवृद्धि] १ बहुत बढा हुआ। २. पूरी तरह से विकसित। ३ प्रौढ़ अवस्था तक पहुँचा हुआ। ४ शक्तिशाली।

**बिवेक**—पु० [स०] [भाव० विवेकता] १ अन्त करण की वह शक्ति जिसमे मनुष्य यह समझता है कि कौन-सा काम अच्छा है या बुरा, अथवा करने योग्य है या नहीं। (कान्शेन्स) २ अच्छी बुद्धि या समझ। ३. सद्विचार की योग्यता। ४. सत्यज्ञान।

**बिवेकवादी**—पु० [स०] वह जो यह कहता या मानता हो कि मनुष्य को वही काम करना चाहिए और वही बात माननी चाहिए जो उसका विवेक ठीक मानता हो।

**बिवेकवान्**—वि० [स० बिवेक+मतुप्, म-व, नुम्] १. जिसे सत् और असत् का ज्ञान हो। अच्छे-बुरे को पहचाननेवाला। २. बुद्धिमान।

**बिवेकाधीन**—वि० [स०] (विषय) जो किसी के बिवेक पर आश्रित हो। (डिस्क्रीशनरी)

**बिवेकी (किन्)**—वि० [स० बिवेक+इनि, ] १. जिसे बिवेक हो। भले-बुरे का ज्ञान रखनेवाला। बिवेकशील। २. बुद्धिमान। ३. ज्ञानी। ३ न्यायशील।
पु० न्यायाधीश।

**बिवेचक**—वि० [स० वि√ विच्+ण्वुल्—अक] बिवेचन करनेवाला।

**बिवेचन**—पुं० [सं० वि√ विच् (जाँच करना)+ल्युट्—अन] १. किसी चीज या बात के सभी अंगो या पक्षों पर इस दृष्टि से विचार करना कि तथ्य या वास्तविकता का पता चले। यह देखना कि क्या समझना ठीक है और क्या ठीक नही है। सत् और असत् का विचार। २. तर्क-वितर्क। ३ मीमांसा। ४. अनुसधान। ५. परीक्षण।

**बिवेचना**—स्त्री० [बिवेचन+टाप्] १. बिवेचन। २ बिवेचन करने की योग्यता या शक्ति।

**बिवेचनीय**—वि० [स० वि√ विच् (विचारना)+अनीयर्] जिसका बिवेचन होने को हो या होना उचित हो।

**बिवेचित**—भू० कृ० [सं० वि√विच् (बिवेचन करना)+क्त] जिसकी बिवेचना की गई हो या हो चुकी हो। २ निश्चित या तै किया हुआ। निर्णीत।

**बिवेच्य**—वि० [स०] बिवेचनीय।

**बिव्योक**—पु० [स० वि√ वा (गमन करना) आदि)+कु, विङ्-ओक, ष० त०] साहित्य-शास्त्र के अनुसार एक हाव जिसमे स्त्रियाँ सयोग के समय प्रिय का अनादर करती हैं।

**बिशंक**—वि० [स० ब० स०] शका-रहित। निःशक।

**बिशंकनीय**—वि० [स० वि०√शक् (सदेह करना)+अनीयर्] जिसमे किसी प्रकार की शका न हो।

**बिशंका**—स्त्री० [स० वि√शक् (सदेह करना)+अच्+टाप्] १ आशका। २ डर। भय। ३. आशका का अभाव।

**बिशंकी (किन्)**—वि० [स० वि√ शक्+णिनि] जिसे किसी प्रकार की आशंका हो।

**बिशंक्य**—वि० [स० वि√ शक् +ण्यत्] १. जिसके मन मे कोई शका हो या हो सकती हो। २. प्रशनास्पद। पूछने योग्य।

**बिश्**—स्त्री० [स० विश् (प्रवेश करना)+क्विप्] १ प्रजा। २. रिआया। ३. कन्या। लडकी।
वि० जिसने जन्म लिया हो।

**बिश**—पु० [सं० √ विश् (प्रवेश करना आदि)+क] १. कमल की डडी। मृणाल। २. मनुष्य। ३. चाँदी।
स्त्री० १. कन्या। २. लडकी।

**बिशद**—वि० [स०] [भाव० बिशदता] १. स्वच्छ। निर्मल। साफ। २. स्पष्ट रूप से दिखाई देनेवाला। ३. उज्ज्वल। चमकीला। ४ सफेद। ५ चिंतारहित। शांत तथा स्थिर। ६. खुश। प्रसन्न। ७. मनोहर। सुन्दर। ८. अनुकूल।
पु० १. सफेद रग। २. कसीस। ३. बहूती। बन-भटा।

**बिशदता**—स्त्री० [सं०] १ बिशद होने की अवस्था या भाव। २. निर्मलता। ३ स्पष्टता।

**बिशदित**—भू० कृ० [सं० वि√ शद् (स्वच्छ करना आदि)+क्त] बिशद अर्थात् साफ़ किया हुआ।

**बिशद**—पुं० [सं० वि√ शी (स्वप्न, सशय आदि)+अच्] १. संशय। संदेह। शक। २ आश्रय। सहारा। २. केन्द्र। मध्य।

**बिशरण**—पु० [सं० वि√ शृ (मारना)+ल्युट्—अन] १. मार डालना। हत्या करना। वध करना। २. नाश। ३. विस्फोटन।

**बिशल्य**—वि० [सं०] १. (स्थान) जो काँटों से रहित हो। २. तीर

जिसमें नोक न हो। ३. (स्थिति) जिसमें कष्ट या संकट न हो।

**विशल्या**—स्त्री०[सं० विशल्य+टाप्]। १. गुडूच। २. दंती। ३. नागदंती। ४. अग्नि-शिखा नामक वृक्ष। निशोथ। ६. पाटला। ७. सेंसारी। ८. एक प्रकार की तुलसी जिसे रमदंती भी कहते हैं। ९ एक प्राचीन नदी। १०. लक्ष्मण की स्त्री उर्मिला का दूसरा नाम।

**विशसन**—पुं० [सं०] [भू० कृ० विशसित]१. वध करना। २. नष्ट या बरबाद करना। ३. युद्ध।

**विशसित**—भू० कृ० [सं० वि√ शस् (मारना)+क्त] १. जो मार डाला गया हो। २. काटा या चीरा हुआ।

**विशस्त**—वि०=विशसित।

**विशांपति**—पुं०[सं० ष० त०] राजा।

**विशा**—स्त्री०[सं० विश् (प्रवेश करना)+क+टाप्] १. जाति। २. लोक।

**विशाकर**—पु०[सं० विशा√कृ (करना)+अच्] १. भद्रमुंड। लकासिज। २. दंती। ३ हाथीशुंडी। ४. पाटला या पाढर नामक वृक्ष।

**विशाख**—पु०[सं० विशाखा+अण्, ब० स०]१ कार्तिकेय। २. शिव। ३. धनुष चलानेवाले की वह मुद्रा जिसमें एक पैर आगे और एक पीछे रखा जाता है। ४. पुराणानुसार एक देवता जिनका जन्म कार्तिकेय के वज्र चलाने से हुआ था। ५. गदहपुरना। पुनर्नवा। ६. बालकों को होनेवाला एक प्रकार का रोग। (वैद्यक) वि०—१. शाखाओं से रहित। २. माँगनेवाला। याचक।

**विशाख-यूप**—पु०[सं० ब० स०] एक प्राचीन देश जिसे कुछ लोग मद्रास प्रान्त का आधुनिक विशाखपत्तन मानते हैं।

**विशाखा**—स्त्री०[सं० विशाख+टाप्]१. बड़ी शाखा में से निकली हुई छोटी शाखा। २. सत्ताईस नक्षत्रों में से सोलहवाँ नक्षत्र जो मित्र गण के अन्तर्गत है और इसे राधा भी कहते हैं। ३. कौशाम्बी के पास का एक प्राचीन जनपद। ५. सफेद गदहपूरना। ५. काली अपराजिता।

**विशासन**—पुं०[सं० वि√ शास् (काटना, आदि)+णिच्+ल्युट—अन] [भू० कृ० विशासित]१. खंडित या नष्ट करना। २. विष्णु का एक नाम।

वि० काटने, तोड़ने या नष्ट करनेवाला।

**विशारद**—पुं०[सं० वि √ शृ (मारना)+णिच् +ल्युट्—अन] १. मार डालना। २. चीरना या फाड़ना।

**विशारद**—वि० [सं० विशाल√दा (देना)+क, ल+र] १. समस्त पदों के अन्त में किसी विषय का विशेषज्ञ। जैसे—चिकित्साविशारद, शिक्षा-विशारद। २. पंडित। विद्वान्। ३. उत्तम। श्रेष्ठ। ४. अभिमानी।

पुं० बकुल वृक्ष।

**विशाल**—वि०[सं०√ विश्(प्रवेश करना)+कालन्][भाव० विशालता] १. बड़े आकार-प्रकार, आयतन, आदि की दृष्टि से अत्यधिक ऊँचा या विस्तृत हो। २. जिसके आकार-प्रकार में भव्यता हो। ३. सुन्दर।

पुं० १. पेड़। २. पक्षी। ३. एक प्रकार का हिरन।

**विशालक**—पुं०[सं० विशाल+कन्]१. कैथ। कपित्थ। २. गरुड़।



**विशालता**—स्त्री०[सं० विशाल+तल्+टाप्] विशाल होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव।

**विशाल-पत्र**—पुं०[सं० ब० स०] १ शीताल नामक वृक्ष। हिंताल। २. मानकंद।

**विशाला**—स्त्री०[सं० विशाल+टाप्] १. इन्द्रवारुणी नामक लता। २. पोई का साग। ३. मुरा-मांसी। ४. कलंगा नामक घास। ५. महेन्द्रवारुणी। ६. प्रजापति की एक कन्या। ७. दक्ष की एक कन्या। ८. एक प्राचीन तीर्थ।

**विशालाक्ष**—पुं०[सं० ब० स०] [स्त्री० विशालाक्षी] १. महादेव। २ विष्णु। ३. गरुड़।

वि० बड़ी और सुन्दर आँखोंवाला।

**विशालाक्षी**—स्त्री० [सं० विशालाक्ष+ङीप्] १ पार्वती। २. एक देवी। ३. चौंसठ योगिनियों में से एक योगिनी। ४. नागदंती।

**विशिका**—स्त्री०[सं० विश+कन्+टाप्, इत्व] बालू। रेत।

**विशिख**—पु०[सं० ब० स०]१ रामसर या भद्रभुज नामक घास। २. बाण। ३. रोगी के रहने का स्थान।

वि० १ शिखाहीन। २ (बाण) जिसकी नोक भोंगी हो। ३. (आग) जिसमें से लपट न उठ रही हो।

**विशिखा**—स्त्री० [सं० विशिख+टाप्] १ कुदाल। २ छोटा बाण। ३ एक तरह की सूई। ४. मार्ग। रास्ता। ५ रोगियों के रहने का स्थान।

**विशिरस्क**—पुं० [सं० ब० स०, +कन्] पुराणानुसार मेरु पर्वत के पास का एक पर्वत।

वि० सिर या मस्तक से रहित।

**विशिरा(रस्)**—वि० [सं०] जिसका सिर न हो या न रह गया हो।

**विशिष्ट**—वि०[सं०] [भाव० विशिष्टता]१ (वस्तु) जिसमें औरों की अपेक्षा कोई बहुत बड़ी विशेषता हो। २ (व्यक्ति) जिसे अन्यों की अपेक्षा अधिक आदर, मान आदि प्राप्त हो या दिया जा रहा हो। ३. अद्भुत। ४ श्रिष्ट। ५ कीर्तिशाली। ६. तेजस्वी। ७. प्रसिद्ध।

**विशिष्टता**—स्त्री० [सं०विशिष्ट+तल्—टाप्] विशिष्ट होने की अवस्था, धर्म या भाव।

**विशिष्टाद्वैत**—पुं० [सं० विशिष्ट+अद्वैत] आचार्य रामानुज (सन् १०३७—११३७ई०) का प्रतिपादित किया हुआ यह दार्शनिक मत कि यद्यपि जगत् और जीवात्मा दोनों कार्यतः ब्रह्म से भिन्न हैं फिर भी वे ब्रह्म से ही उद्भूत हैं, और ब्रह्म से उनका उसी प्रकार का संबंध है जैसा कि किरणों का सूर्य से है, अतः ब्रह्म एक होने पर भी अनेक हैं।

**विशिष्टी**—स्त्री०[सं० विशिष्ट+ङीष्]शंकराचार्य की माता का नाम।

**विशिष्टीकरण**—पुं०[सं०]१ किसी काम या बात को कोई विशिष्ट रूप देने की क्रिया या भाव। २. किसी कला, विद्या या शास्त्र में विशिष्ट रूप से प्रवीणता या योग्यता प्राप्त करने की क्रिया या भाव। (स्पेशलाइजेशन)

**विशीर्ण**—भू० कृ०[सं० वि√शृ(हिंसा करना)+क्त]१ जिसके टुकड़े-टुकड़े या खण्ड-खण्ड हो गये हों। २. गिरा हुआ। पतित। ३ संकुचित। ४. सूखा हुआ। ५. दुबला-पतला। ६. बहुत पुराना।

**विशील**—वि०[सं० ब० स०] १ बुरे शीलवाला। २. दुश्चरित्र।

**विशुद्ध**—वि०[स०तृ०त०] [भाव० विशुद्धि]१. जो बिलकुल शुद्ध हो। खरा। जैसे—विशुद्ध घी। २ जिसमें कुछ भी दोष या मैल न हो। ३. सच्चा। सत्य।

**विशुद्ध चक्र**—पु०[स०] हठयोग के अनुसार शरीर के अन्दर के छ: चक्रों में से एक जो धूम्र वर्ण का तथा सोलह दलोंवाला है तथा गले के पास माना गया है।

**विशेष**—आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार इसी चक्र की ग्रंथियों की प्रक्रिया से शरीर के अन्दर के विष बाहर निकलते हैं।

**विशुद्धता**—स्त्री०[स० विशुद्ध+टाप्]१ विशुद्ध होने की अवस्था या भाव। पवित्रता। २. चारित्रिक पवित्रता।

**विशुद्धि**—स्त्री० [स०]१ विशुद्धता। २. दोष, शंका आदि दूर करने की क्रिया या भाव। ३ भूल का सुधार। ४ पूर्ण ज्ञान। ५ सादृश्य।

**विशुद्धिवाद**—पु०[स०] यह सिद्धान्त कि दूषित प्रभावों से अपने को या अपनी चीजों को निर्दोष तथा विशुद्ध रखना चाहिए।

**विशूचिका**—स्त्री०[स० वि√शूच् (सूचना देना)+अच्+कन्, टाप, इत्व] विसूचिका (रोग)।

**विशून्य**—वि०[स० विशून+यत्] [भाव० विशून्यता]१. पूरी तरह से रिक्त या शून्य। २ जिसके अन्दर वायु तक न रह गई हो। (वैकुम)

**विशृंखल**—वि०[स० ब० स०] १ जो शृंखलित न हो। बंधनहीन। ३. जो किसी प्रकार तंबाया या रोका न जा सके। अदम्य।

**विशृंखलता**—स्त्री०[स०] विशृंखल होने की अवस्था या भाव।

**विशृंग**—वि०[स० ब० स०] जिसे शृंग न हों। शृंगरहित।

**विशेष**—वि०[स० वि√शिष् (विशेषता होना)+घञ्] १ जिसमें औरों की अपेक्षा कोई नयी बात हो। विशेषता-युक्त।२ जिसमें औरों की अपेक्षा कुछ अधिकता हो। ३ विचित्र। विलक्षण। ४. बहुत अधिक। विपुल। पु०१ वह जो साधारण से अतिरिक्त और उससे अधिक हो। अधिकता। ज्यादती। २ अन्तर। ३. प्रकार। भेद। ४. विचित्रता। विलक्षणता। ५ तारतम्य। ६ नियम। कायदा। ७ अंग। अवयव। ८ चीज। पदार्थ। वस्तु। ९ व्यक्ति। १० निर्वाह। सार। ११. साहित्य में, एक प्रकार का अलंकार जिसके तीन भेद कहे गये हैं।

**विशेषक**—वि०[सं०] विशेष रूप देने या विशिष्टता उत्पन्न करनेवाला। पु०१ विशेषता बतलानेवाला चिह्न, तत्त्व या पदार्थ। २ माथे पर लगाया जानेवाला टीका या तिलक जो प्राय: किसी सम्प्रदाय के अनुयायी होने का सूचक होता है। ३ प्राचीन भारत में, अगर, कस्तूरी, चंदन आदि से गाल, माथे आदि पर की जानेवाली एक प्रकार की सजावट। ४ साहित्य में,एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें पदार्थों से रूप-सादृश्य होने पर भी किसी एक की विशिष्टता के आधार पर उसके पार्थक्य का उल्लेख होता है। उदा०—कागन मे मधु बानि ते, मैं पिक लियो पिछान। —पद्माकर।५ एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ५ भगण और एक गुरु होता है। इसे अवयगीत, नील, और लीला भी कहते हैं। ६ साहित्य में, ऐसे तीन पदों या श्लोकों का वर्ग या समूह जिनमें एक ही क्रिया होती है, और इसी लिए इन तीन पदों या श्लोकों का एक साथ अन्वय होता है। ७. तिल का पौधा। ८. चित्रक। चीता।

**विशेषक चिह्न**—पु०[स०] वे चिह्न जो वर्णमाला के अक्षरों या वर्णों पर उनका कोई विशिष्ट उच्चारण-प्रकार सूचित करने के लिए लगाये जाते हैं। (डायाक्रिटिकल मार्क्स)

**विशेषज्ञ**—पु०[स० विशेष√ज्ञा (जानना)+क] [भाव० विशेषज्ञता] वह जो किसी विषय का विशेष रूप से ज्ञाता हो। किसी विषय का बहुत बड़ा पंडित।

**विशेषण**—पु०[स०]१ वह जिससे किसी प्रकार की विशेषता सूचित हो। २ व्याकरण में, ऐसा विकारी शब्द जो किसी संज्ञा की विशेषता बतलाता हो, उसकी स्थिति मर्यादित करता हो अथवा उसे अन्य संज्ञाओं से पृथक करता हो। (ऐडजेक्टिव)

**विशेषता**—स्त्री०[स० विशेष+तल्+टाप्]१. विशेष होने की अवस्था या भाव। २. किसी वस्तु या व्यक्ति में औरों की अपेक्षा होनेवाली कोई अच्छी बात।

**विशेषांक**—पु०[सं० विशेष+अंक] सामयिक पत्र का वह अंक जो किसी विशिष्ट अवसर पर या किसी विशेष उद्देश्य से और साधारण अंकों की अपेक्षा विशिष्ट रूप में या अलग से प्रकाशित होता है। (स्पेशल नम्बर)

**विशेषाधिकार**—पु०[सं०]किसी विशिष्ट व्यक्ति को विशेष रूप से मिलनेवाला कोई ऐसा अधिकार जिससे उसे कुछ सुभीता भी मिलता हो। (प्रिविलेज)

**विशेषित**—भू० कृ०[सं० वि√शिष् (विशेषता होना)+क्त]१ जिसमें विशेषता लाई गई हो। २ (संज्ञा शब्द) जिसकी विशेषता कोई विशेषण मर्यादित करता हो।

**विशेषी**—वि०[स० वि√ शिष् +णिनि ] जिसमें कोई विशेष बात हो। विशेषता-युक्त। विशिष्ट।

**विशेषोक्ति**—स्त्री० [सं० विशेष+उक्ति] साहित्य में, एक अर्थालंकार जिसमें कारण के पूरी तरह से वर्तमान रहते भी कार्य के अभाव का अथवा किसी क्रिया के होने पर भी उसके परिणाम या फल के अभाव का उल्लेख होता है। (पिक्यूलियर+एलेजेशन) यह विभावना का बिलकुल उल्टा है। इसके उक्त निमित्ता, अनुरक्त निमित्ता और औचित्य निमित्ता ये तीन भेद माने गये हैं।

**विशेष्य**—पु०[स० वि√ शिष् +ण्यत्] व्याकरण में, वह शब्द अथवा पद, जिसकी विशेषता कोई विशेषण या विशेषण पद सूचित करता या कर रहा हो।

**विशेष्य-लिंग**—पु० [स०] व्याकरण में, ऐसा शब्द जिसका लिंग उसके विशेष्य के लिंग के अनुसार निरूपित हो। जैसे—पाले या हिम के अर्थ में शिशिर शब्द पु० है शीत काल के अर्थ में पुंनपुंसक तथा ऋतु से युक्त पदार्थ के अर्थ में विशेष्य लिंग होता है। अर्थात् उसका वही लिंग होता है, जो उसके विशेष्य का होता है।

**विशेष्यसिद्धि**—स्त्री० [स० विशेष्य+असिद्धि, तृ० त०] तर्कशास्त्र में, ऐसा हेत्वाभास जिसके द्वारा स्वरूप की असिद्धि हो।

**विशोक**—वि० [सं० ब० स०] [भाव० विशोकता] जिसे शोक न हो। शोक से रहित।

पु०१. अशोक वृक्ष। २ ब्रह्मा का एक मानस पुत्र।

**विशोका**—स्त्री०[स० विशोक+टाप्] बौद्ध दर्शन के अनुसार, ऐसी चित्त-

वृत्ति जो सम्प्रज्ञात समाधि से पहले होती है। इसे ज्योतिष्मती भी कहते हैं।

**विशोषित**—भू० कृ०[स० ब० स०] जिसका रक्त निकाल लिया गया हो।

**विशोष्य**—वि०[स०] विशुद्ध करने के योग्य। विशोध्य।

**विशोधन**—पु०[स०] [भू० कृ० विशोधित] १. विशुद्ध करने या बनाने की क्रिया या भाव। २. विशुद्धीकरण।

**विशोधनी**—स्त्री० [स० विशोधन+ङीप्] १. बहुआ की पुरी का नाम। २. ताम्बूल। पान। ३. नागदती। ४. नीली नाम का पौधा।

**विशोधित**—भू० कृ०[स० वि√शुध् (शुद्ध करना)+क्त] जिसका विशोधन हुआ हो या किया गया हो।

**विशोधिनी**—स्त्री० [स०] १ नागदती। २ जमालगोटा। ३. नीली नाम का पौधा।

**विशोधी (धिन्)**—वि० [स० वि√शुध्+णिनि] विशुद्धि करने या बनानेवाला।

**विशोध्य**—वि०[स० वि√शुध्+यत्] जिसका विशोधन होने को हो या हो सकता हो।

पु० ऋण। कर्ज।

**विशंपति**—पु० [सं० ष० त०] [स्त्री० विशंपत्नी] १ राजा। २ वैश्यों या व्यापारियों का पंच या मुखिया।

**विश्रंभ**—पु० [स०] १. किसी में होनेवाला दृढ़ तथा पूर्ण विश्वास। २ प्रेम। सुहब्बत। ३ रति के समय प्रेमी और प्रेमिका में होनेवाला झगड़ा। ४. वध। हत्या। ५ स्वच्छन्दतापूर्वक घूमना-फिरना।

**विश्रंभी (भिन्)**—वि० [स० वि√भृम्भ् (विश्वास करना)+णिनि] १. विश्वास करनेवाला। विश्वास का पात्र। विश्वसनीय। ३ गोपनीय (वार्ता)। ४ प्रेम-सबंधी।

**विश्रब्ध**—वि०[स०] १. जिसका विश्वास किया जा सके। २. जो किसी का विश्वास करे। ३. निडर। निर्भय। ४. शान्त और सुशील।

**विश्रब्ध-नवोढ़ा**—स्त्री० [स०] साहित्य में, वह नायिका (विशेषत. ज्ञातयौवना) जिसमें लज्जा और भय पहले से कम हो गया हो और जो प्रेमी की ओर कुछ-कुछ आकृष्ट होने लगी हो।

**विश्रम**—पु०[सं० वि√श्रम् (श्रम करना)+घञ्, ब० स०]=विश्राम।

**विश्रय**—पु०[सं० वि√श्रि (आश्रय देना)+अच्] आश्रय। स्थान।

**विश्रयी (यिन्)**—वि०[स० विश्रय+इनि] आश्रय या सहारा लेनेवाला।

**विश्रव (व्)**—पु०[सं०] ख्याति। प्रसिद्धि।

**विश्रवा (वस्)**—पु० [स०] कुबेर के पिता जो पुलस्त्य के पुत्र थे।

**विश्रांत**—वि०[स० ब० स०] १ जिसने विश्राम कर लिया हो। २. जो कम हो गया या रुक गया हो। ३. रहित। ४. समाप्त। ५ वंचित। ६. क्लांत।

**विश्रांति**—स्त्री० [सं०] १. विश्राम। आराम। २. थकावट। ३. कार्य-काल पूरा होने अथवा और किसी कारण से अपने कार्य, पद, सेवा आदि से स्वामी रूप से हट कर किया जानेवाला विश्राम। (रिटायरमेण्ट)

**विश्राम**—पुं०[सं०] १. ऐसा उपचार, क्रिया या स्थिति जिससे श्रम दूर हो। थकावट कम करने या मिटानेवाला काम या बात। आराम। (रेस्ट) २. कर्मचारियों, विद्यार्थियों को कुछ नियत घंटों तक काम करने के बाद थकावट और सुस्ती मिटाने तथा जलपान आदि करने के लिए मिलनेवाला अवकाश। ३ ठहरने का स्थान। विश्रामालय। ४. चैन। सुख।

**विश्रामालय**—पु०[सं० ष० त०] वह स्थान जहाँ यात्री लोग सवारी के इन्तजार में ठहर या रुककर विश्राम करते हों।

**विश्राव**—पु०[सं० वि√श्रु (सुनना)+घञ्] १. तरल पदार्थ का झरना, बहना या रिसना। क्षरण। २ बहुत अधिक प्रसिद्धि। ३ ध्वनि।

**विश्रावण**—पु०[स० वि√श्रु+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विश्रावित] कोई तरल पदार्थ, विशेषत रक्त बहना।

**विश्री**—वि०[स०] १ जिसकी श्री नष्ट या लुप्त हो गई हो। श्रीहीन। २ (व्यक्ति) जिसके मुख पर सौंदर्य की झलक न दिखाई पड़ती हो। भद्दा।

**विश्रुत**—वि०[स० तृ० त०] [भाव० विश्रुति] १ जिसे लोग अच्छी तरह से सुन चुके हों। २. जिसे सब लोग जान चुके हों, फलतः प्रसिद्ध।

**विश्रुतात्मा (त्मन्)**—पु० [स० विश्रुत+आत्मा, ब० स०] विष्णु।

**विश्रुति**—स्त्री०[स० वि√श्रु (ख्याति होना)+क्ति] विश्रुत होने की अवस्था या भाव।

**विश्लथ**—वि०[स० ब० स०] १ बहुत थका हुआ। श्लथ। क्लान्त। २ ढीला। शिथिल। ३. बन्धन से छूटा हुआ। मुक्त।

**विश्लिष्ट**—भू० कृ०[स० वि√श्लिष् (संयुक्त होना)+क्त] १ जिसका विश्लेषण हो चुका हो। २ जो अलग किया जा चुका हो। ३. खिला हुआ। विकसित। ४. प्रकट। व्यक्त। ५ खुला हुआ। मुक्त। ६ थका हुआ। शिथिल।

**विश्लिष्ट संधि**—स्त्री०[स० ब० स०] शरीर के अंगों की ऐसी सन्धि या जोड़ जिसकी हड्डी टूट गई हो। (बैंधक)

**विश्लेष**—पु०[सं० वि√श्लिष्+घञ्] १. अलग या पृथक् होना। २ वियोग। ३. थकावट। शिथिलता। ४. विगति। ५. विकास।

**विश्लेषण**—पु०[स०] [भू० कृ० विश्लेषित] १. अलग या पृथक् करना। २ किसी वस्तु के संयोजक अंगों या द्रव्यों को इस उद्देश्य से अलग-अलग करना कि उनके अनुपात, कर्तृत्व, गुण, प्रकृति, पारस्परिक संबंध आदि का पता चले। ३. किसी विषय के सब अंगों की इस दृष्टि से छान-बीन करना कि उनका तथ्य या वास्तविक स्वरूप सामने आए। (एनैलिसिस उक्त दोनों अर्थों के लिए) ४. बैंधक में, घाव या फोड़े में वायु के प्रकोप से होनेवाली एक प्रकार की पीड़ा।

**विश्लेषणात्मक**—वि०[सं० विश्लेषण+आत्मक] (विचार या निश्चय) जो विश्लेषणवाली प्रक्रिया के अनुसार हो। 'आत्मनेपदात्मक' का विपर्याय। (एनैलिटिकल)

**विश्लेषी (षिन्)**—वि० [सं० विश्लेष+इनि] १. विश्लेषण करनेवाला। २. वियुक्त।

**विश्लेष्य**—वि०[सं०] जिसका विश्लेषण होने को हो या हो रहा हो।

**विश्वंकर**—पुं०[स० विश्व√कृ (पार करना आदि)+खच्, मुम्] भगवान बुद्ध का एक नाम।

**विश्वंभर**—वि०[सं० विश्व√भृ (भरण-पोषण करना)+खच्, मुम्] [स्त्री० विश्वंभरा] विश्व का भरण-पोषण करनेवाला।

पु० १. विष्णु। २. इन्द्र। ३. अग्नि। ४. एक उपनिषद् का नाम।

**विश्वंभरा**—स्त्री०[सं०] पृथ्वी।

**विश्वंभरी**—स्त्री०[स०] १ पृथ्वी। २ संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**विश्व**—वि०[स०√विश् (प्रवेश करना)+क्वन्] कुल। समस्त।
पुं० १ सृष्टि का वह सारा अश जो हमे दिखाई देता है। २. ब्रह्माड। समस्त सृष्टि। ३ जगत्। ससार। ४ विष्णु। ५ शिव। ६. जीवात्मा। ७. देह। शरीर।

**विश्वक**—वि०[स०] १ विश्व-सबधी। २ जिसका प्रभाव, प्रसार आदि विश्व-व्यापी हो। (यूनीवर्सल)

**विश्वकर्ता**—पु०[स० प० त०] विश्व का स्रष्टा। ईश्वर।

**विश्वकर्मा (र्मन्)**—पु० [स० ब० स०] १ समस्त ससार की रचना करनेवाला अर्थात् ईश्वर। २ ब्रह्मा। ३. सूर्य। ४ शिव। ५ वैद्यक मे शरीर की चेतना नामक धातु। ६ एक शिल्पकार जो देवताओ के शिल्पी और वास्तु-कला के सर्वश्रेष्ठ आचार्य माने गए हैं। ७ इमारत का काम करनेवाले राज, बढई, लोहार आदि।

**विश्वकाय**—पु०[स० ब० स०] सारा विश्व जिसका शरीर हो, अर्थात् विष्णु।

**विश्वकाया**—स्त्री०[स० विश्वकाय+टाप्] दुर्गा।

**विश्वकार**—पु०[स० ष० त०] विश्वकर्मा।

**विश्वकार्य**—पु०[स० ष० स०] सूर्य की सात किरणों या रश्मियो मे से एक।

**विश्वकृत्**—पु०[स०] १. विश्व का निर्माता अर्थात् ईश्वर। २. विश्वकर्मा।

**विश्वकेतु**—पु०[स० प० त०] (कृष्ण के पौत्र) अनिरुद्ध।

**विश्वकोश**—पु० [स०] ऐसा कोश या भंडार जिसमे ससार भर के पदार्थ संगृहीत हो। २ ऐसा विशाल ग्रन्थ जिसमे ज्ञान-विज्ञान की समस्त शाखाओ-प्रशाखाओ तथा महत्त्वपूर्ण बातो का विश्लेषण तथा विवेचन होता है। (एनसाइक्लोपीडिया)
**विशेष**—विश्व कोश मे विभिन्न विषयो के बड़े-बड़े विद्वानो के लिखे हुए ग्रन्थो, निबधो, विवेचनों आदि के साराश सकलित होते हैं, और उन विषयो के शीर्षक प्राय. अक्षर-क्रम से लगे रहते हैं।

**विश्वगंध**—पु० [स० ब० स०] १. बोल (गध द्रव्य)। २. प्याज। वि० जिसकी गध बहुत दूर-दूर तक फैलती हो।

**विश्वगंधा**—स्त्री०[स० विश्वगंध+टाप्] पृथ्वी।

**विश्वग**—वि०[स० विश्व√गम् (जाना)+ड] विश्व भर में जिसका गमन या गति हो।
पुं० ब्रह्मा।

**विश्वगर्भ**—पु०[सं० ब० स०] १. विष्णु। २. शिव।

**विश्वगुप्त**—पु०[सं० ष० त०] विष्णु।

**विश्व-गोचर**—वि० [सं०] जिसे सब लोग जान या देख सकते हों।

**विश्वगोप्ता**—पुं०[सं० ष० त०] १. विष्णु। २ इन्द्र। ३. विश्वम्भर।

**विश्व-चक्र**—पुं०[सं० ब० स०] पुराणानुसार बारह प्रकार के महादानों मे से एक। इसमे एक हजार पल का सोने का चक्र बनवाकर दान किया जाता है।

**विश्व-चक्षु (क्षुस्)**—पुं०[स०] ईश्वर।

**विश्वजित्**—वि०[स०] विश्व को जीतनेवाला।
पु० १ वह जिसने सारे विश्व को जीत लिया हो। २. एक प्रकार की अग्नि। ३. एक प्रकार का यज्ञ। ४. वरुण का पाश।

**विश्वजीव**—पु०[स० ष० त०] ईश्वर।

**विश्वतः(तस्)**—अव्य० [सं० विश्व+तसिल्] १. विश्व भर मे सब कहीं। सर्वत्र। २. सारे विश्व के विचार से।

**विश्वतोमा**—स्त्री०[सं०] गगा नदी।

**विश्वत्रय**—पुं०[स०] आकाश, पाताल और मर्त्य लोक।

**विश्वदेव**—पु०[स०] देवताओं का एक वर्ग जिसकी पूजा नांदी-मुख श्राद्ध मे की जाती है।

**विश्वदेवत**—पु०[स०] उत्तराषाढ़ा नक्षत्र जिसके देवता विश्वदेव माने जाते है।

**विश्वधर**—पु०[स० विश्व√धृ (धारण करना)+अच्] विश्व को धारण करनेवाले विष्णु।

**विश्वधाम (न्)**—पुं० [स०] ईश्वर।

**विश्वधारिणी**—स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

**विश्वधारी (रिन्)**—पुं० [स०] विष्णु।

**विश्वनाथ**—पु०[स०] १ विश्व के स्वामी, शकर। महादेव। २ काशी का एक प्रसिद्ध ज्योतिर्लिंग।

**विश्वनाभ**—पु०[स०] विष्णु।

**विश्व-नाभि**—स्त्री०[स०] विष्णु का चक्र जो विश्व की नाभि के रूप में माना जाता है।

**विश्वपति**—पुं०[स०] १ ईश्वर। २. श्रीकृष्ण।

**विश्व-पविक**—वि०[स०](रोग या विकार) जो बहुत बड़े भू-भाग, सारे महाद्वीप या सारे संसार मे फैला या फैल सकता हो। (पैण्डेमिक)

**विश्व-प्रकाश**—पु०[स० कै० त०] सूर्य।

**विश्वभन्स (भ्यस्)**—पु० [सं० विश्व√भ्स (खाना)+कनिन्] १. अग्नि। २. चन्द्रमा। ३. सूर्य। ४. देवता। ५. विश्वकर्मा।

**विश्व-बंधु**—वि०[स० ष० त०] जो विश्व का मित्र हो।
पुं० शिव।

**विश्वबाहु**—पुं०[सं०] १. विष्णु। २. महादेव।

**विश्व-बीज**—पु०[स० ष० त०] विश्व की मूल प्रकृति, माया।

**विश्वभद्र**—पुं० [सं० ब० स०] सर्वतोभद्र (चक्र)।

**विश्व-भर**—वि०[स० ष० त०] जिससे विश्व उत्पन्न हुआ हो।
पुं० ब्रह्मा।

**विश्वभुज्**—पुं० [सं० विश्व√भुज् (भोग करना)+क्विप्] १. ईश्वर। २. इन्द्र।

**विश्व-माता (तृ)**—स्त्री०[सं० ष० त०] दुर्गा, जो विश्व की माता कही गई है।

**विश्वभुजी**—स्त्री०[सं० ब० स०] पार्वती।

**विश्वमूर्ति**—वि०[सं० ब० स०] जो सब रूपों में व्याप्त हो।
पुं० विष्णु।

**विश्व-योनि**—पुं०[सं० ष० त०] ब्रह्मा।

**विश्वरुचि**—पुं०[स०] एक देव-योनि।

**विश्वरुची**—स्त्री०[सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

**विश्वरूप**—पुं०[सं०] १. विष्णु। २. शिव। ३. भगवान श्रीकृष्ण का

वह स्वरूप जो उन्होंने गीता का उपदेश करते समय अर्जुन को दिखलाया था। ४. एक प्राचीन तीर्थ।

**विश्वरूपी (पिन्)**—पुं० [स० विश्वरूप+इनि] विष्णु।

**विश्वलोचन**—पु० [स०] १. सूर्य। २ चन्द्रमा।

**विश्ववाद**—पुं० [स०] १. दार्शनिक क्षेत्र का यह मतवाद कि विज्ञान की दृष्टि से यह सिद्ध किया जा सकता है कि सारा विश्व एक स्वतंत्र सत्ता है और कुछ निश्चित नियमों के अनुसार उसका निरंतर विकास होता चलता है। (कौंजमिस्म) २ यह सिद्धांत कि तत्त्वज्ञान संबंधी सभी बातें सारे विश्व में समान रूप से पाई जाती हैं। (युनिवर्सलिज्म)

**विश्ववास**—पुं० [सं०] संसार। जगत्।

**विश्ववित्**—वि० [सं० विश्व√विद् (जानना)+क्विप्] १. जो विश्व की सब बातें जानता हो। २. बहुत बड़ा पंडित।
पुं० ईश्वर।

**विश्वविद्यालय**—पुं० [सं०] वह बहुत बड़ी शैक्षणिक संस्था जिसके अन्तर्गत या अधीन सभी प्रकार के विषयों की सर्वोच्च शिक्षा देनेवाले बहुत से महाविद्यालय हों और जिसे, अपने स्नातकों को शिक्षा संबंधी उपाधियाँ देने का अधिकार हो। (यूनीवर्सिटी)

**विश्वव्यापक**—वि०, पु० [स०] विश्वव्यापी। (दे०)

**विश्वव्यापी**—वि० [स० विश्वव्यापिन्] १. जो सारे विश्व में व्याप्त हो। २. जो संसार या उसके अधिकतर भागों में व्याप्त हो।
पु० ईश्वर या परमात्मा।

**विश्वश्रवा (वस्)**—पुं० [सं०] रावण के पिता का नाम।

**विश्वसन**—पु० [सं० वि√श्वस् (जीवन देना)+ल्युट्—अन] १. विश्वास। २. ऋषियों और मुनियों के रहने का स्थान।

**विश्वसनीय**—वि० [स० वि√श्वस् (विश्वास करना)+अनीयर्] १. (व्यक्ति) जिस पर विश्वास किया जा सकता हो। २ (बात) जिस पर विश्वास किया जाना चाहिए।

**विश्वसहा**—स्त्री० [स०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

**विश्व-साक्षी (क्षिन्)**—पु० [स०] ईश्वर।

**विश्वसित**—भू० कृ० [सं० वि√श्वस् (विश्वास करना)+क्त] १ जिस पर विश्वास किया गया हो। २. विश्वास-पात्र। ३ जिसे अपने पर पूर्ण विश्वास हो।

**विश्व-सृज्**—पु० [सं०] विश्व की सृष्टि करनेवाला ईश्वर या ब्रह्मा।

**विश्वस्त**—भू० कृ० [स० वि√श्वस् (विश्वास करना)+क्त] १. जिसका विश्वास किया जाय। २. जिसके मन में विश्वास हो चुका हो।

**विश्वस्रष्टा (ष्टृ)**—पु० [स० ष० त०] शिव।

**विश्व-हेतु**—पु० [सं०] विश्व की सृष्टि करनेवाले विष्णु।

**विश्वांड**—पुं० [सं० कर्म० स०] ब्रह्माण्ड।

**विश्वा**—स्त्री० [सं०√विश् (प्रवेशकरना)+क्वन्+टाप्] १. दक्ष की एक कन्या जो धर्म को ब्याही थी और जिससे वसु, सत्य, क्रतु आदि दस पुत्र उत्पन्न हुए थे। २. बीस पल की एक प्राचीन तौल या मान। ३. पीपल। ४. सोंठ। ५. अतीस। ६. शतावर। ७. चौरपुष्पी। शंखिनी।

**विश्वाक्ष**—वि० [सं० विश्व+अक्ष] जिसकी दृष्टि पूर्ण विश्व पर हो।
पुं० ईश्वर।

**विश्वातीत**—वि० [सं० ष० त०] १. जिसे विश्व प्राप्त न कर सकता हो। २. विश्व से अलग या दूर।
पुं० ईश्वर।

**विश्वात्मा (त्मन्)**—पु० [स० ब० स० विश्व+आत्मन्] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. सूर्य।

**विश्वाद्**—पुं० [सं० विश्व√अद् (खाना)+क्विप्] अग्नि।

**विश्वाधार**—पुं० [स० ष० त०] विश्व का आधार अर्थात् परमेश्वर।

**विश्वानर**—वि०, पु०=वैश्वानर।

**विश्वामित्र**—वि० [स० ब० स०, विश्व+मित्र] जो विश्व का मित्र हो।
पुं० गाधि नामक कान्यकुब्ज क्षत्रिय नरेश के पुत्र जिन्होंने घोर तपस्या से ब्राह्मणत्व प्राप्त किया था।
**विशेष**—भगवान राम ने इन्हीं की आज्ञा से ताड़का का वध किया था।

**विश्वामृत**—वि० [सं० विश्व+अमृत] जिसकी कभी मृत्यु न हो। अमर।

**विश्वायन**—पु० [सं० ष० त०] १. वह जो विश्व की सब बातें जानता हो। सर्वज्ञ। २. ब्रह्मा।

**विश्वावसु**—पु० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. साठ संवत्सरों में से एक। स्त्री० रात्रि। रात।

**विश्वावास**—पुं० [सं० ष० त०] ईश्वर। परमात्मा।

**विश्वाश्रय**—पु० [सं० ष० त०] विश्व को आश्रय देनेवाला अर्थात् ईश्वर।

**विश्वास**—पु० [सं० वि√श्वस्+घञ्] १ किसी बात, विषय, व्यक्ति आदि के संबंध में मन में होनेवाली यह धारणा कि यह ठीक, प्रामाणिक या सत्य है, अथवा उसे हम जैसा समझते हैं, वैसा ही है, उससे भिन्न नहीं है। एतबार। यकीन। २. धार्मिक क्षेत्र में, ईश्वर, देवता, मत, सिद्धान्त आदि के संबंध में होनेवाली उक्त प्रकार की धारणा। (बिलीफ़)
**मुहा०—(किसी पर) विश्वास जमना या बैठना**=विश्वास का दृढ़ रूप धारण करना। **(किसी को) विश्वास दिलाना**=किसी के मन में उक्त प्रकार की धारणा दृढ़ करना।
३. केवल अनुमान के आधार पर होनेवाला मन का दृढ़ निश्चय। जैसे—मेरा तो यह दृढ़ विश्वास है कि वह अवश्य आएगा।

**विश्वास-घात**—पु० [सं० ष० त०, तृ० त०] १. किसी को विश्वास दिला कर उसके प्रति किया जानेवाला द्रोह। २. विश्वासनीय व्यक्ति द्वारा अपने मित्र या स्वामी के हितों के विरुद्ध किया हुआ ऐसा बुरा काम जिससे उसका विश्वास जाता रहे।

**विश्वास-घातक**—वि० [सं० विश्वास√हन् (मारना)+ण्वुल् अक, ब० स०] विश्वासघात करनेवाला (व्यक्ति)।

**विश्वास-पात्र**—वि० [सं०] (व्यक्ति) जिसका विश्वास किया जाता हो और जो विश्वास किये जाने के योग्य हो। विश्वासनीय।

**विश्वासिक**—वि० [स० वैयधिकरण]=विश्वासनीय।

**विश्वासित**—वि० [सं० विश्वास+इतच्] जिसे विश्वास दिलाया गया हो।

**विश्वासी (सिन्)**—वि० [सं० विश्वास+इनि] १. जो किसी एक पर विश्वास करता हो। विश्वास करनेवाला। २. जिसका विश्वास किया जा सके।

**विश्वास्य**—वि० [सं० वि√श्वस्+णिच्+यत्] विश्वास के योग्य। विश्वसनीय।

**विश्वेदेव**—पुं० [सं०] १. अग्नि। २. वैदिक युग में इन्द्र, अग्नि आदि

ऐसे नौ देवताओं का एक वर्ग जो विश्व के अधिपति और लोकरक्षक माने जाते थे।

**विशेष**—अग्नि-पुराण में इनकी संख्या दस कही गई है। यथा—क्रतु, दक्ष, वसु, सत्य, काम, काल, ध्वनि, रोचक, आर्द्रव और पुरूरवा। नांदीमुख श्राद्ध में इन्हीं का पूजन होता है।

**विश्वेश**—पु०[स० विश्व+ईश, ष० त०] १. शिव। २ विष्णु। ३ उत्तराषाढा नक्षत्र जिसके अधिपति विश्व नामक देवता कहे गए हैं।

**विश्वेश्वर**—पु०[स० विश्व+ईश्वर, ष० त०] १. ईश्वर। २ शिव की एक मूर्ति।

**विशगी(गिन्)**—वि० [सं० विशग+इनि] जो किसी से संलग्न हो। किसी के साथ लगा हुआ।

**विष**—पु०[नं० √विष्+क] १ कोई ऐसा तत्त्व या पदार्थ जो थोडी मात्रा में भी शरीर के अन्दर पहुँचने या बनने पर भीषण रोग या विकार उत्पन्न कर सकता और अंत में घातक सिद्ध हो सकता हो। जहर। (व्यावहारिक) २ कोई ऐसा तत्त्व या बात जो नैतिक या चारित्रिक पवित्रता अथवा सार्वजनिक कल्याण, सुख, स्वास्थ्य आदि के लिए नाशक या भीषण सिद्ध हो। जैसे—बाल-विवाह समाज के लिए विष है।

**पद—विष की गाँठ**—बहुत बडी खराबी या बुराई पैदा करनेवाली बात, वस्तु या व्यक्ति।

**मुहा०—(किसी चीज में) विष घोलना**=ऐसा दोष या खराबी पैदा करना जिससे सारी भलाई या सुख नष्ट या मजा किरकिरा हो जाय। ३ पानी। ४. कमल की नाल या रेशा। ५ पद्मकेसर। ६ बोल (गंधद्रव्य)। ७ बछनाग। ८ कलिहारी।

**विष-कंटक**—पु०[स० ब० स०] धुरालभा।

**विष-कंटकी**—स्त्री०[स० विषकटक+ङीप्] बाँझ कर्कोटकी।

**विष-कंठ**—पु०[स० ब० स०] शिव। महादेव।

**विष-कंद**—पु० [स० मध्य० स०] १ नीलकंद। २. इंगुदी। हिंगोट।

**विष-कन्या**—स्त्री० [स० मध्य० स०] वह कन्या या स्त्री जिसके शरीर में इस आशय से विष प्रविष्ट किया गया हो कि उसके साथ सम्भोग करनेवाला मर जाय।

**विशेष**—प्राचीन भारत में घोखे से शत्रुओं का नाश करने के लिए कुछ लडकियाँ बाल्यावस्था में कुछ दवाएँ देकर तैयार की जाती थीं और छल से शत्रुओं के पास भेजी जाती थीं।

**विष-कृत**—वि०[सं०] विषाक्त।

**विष-गंधक**—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का तृण जिसमें भीनी-भीनी गंध होती है।

**विष-गिरि**—पु०[स० ष० त०] ऐसा पहाड जिस पर जहरीले पेड-पौधे होते हैं।

**विषघ**—वि० [स० विष√हन् (मारना)+ड, ह्-घ] विष का नाश करनेवाला।

**विषघा**—स्त्री०[स०] गुरुच।

वि० विष दूर करनेवाला। विष-नाशक।

**विषघ्न**—पु०[स० विष√हन् (मारना)+टक्, कुत्व] १. सिरिस वृक्ष। २. भिलावाँ। ३. भू-कदंब। ४. गंध-तुलसी। ५ चम्पा।

**विषघ्नी**—स्त्री० [स० विषघ्न+ङीप्] १. हिलमोचिका या हिलच नामक साग। २ बन-तुलसी। ३. इन्द्रवारुणी। ४. मुर्ई-आँवला। ५. गदहपुरना। पुनर्नवा। ६ हल्दी। ७ गदा करंज। ८ वृश्चिकाली। ९ देवदाली। १०. कठ-केला। ११. सफेद चिचड़ा। १२. रास्ना।

**विष-ज्वर**—पु०[सं० मध्य० स०] १ शरीर में किसी प्रकार का जहर पहुँचने या उत्पन्न होने पर चढ़नेवाला ज्वर जिसमें जलन भी होती है। २. झँझ।

**विषणि**—पु०[सं० विष√नी (होना)+क्विप्] एक प्रकार का साँप।

**विषण्ण**—वि० [सं० वि√सद्+क्त] [भाव० विषण्णता] १. उदास। २ दुःखी तथा हतोत्साहित। ३ जिसमें कुछ करने की इच्छा-शक्ति न रह गई हो।

**विष-तंत्र**—पु०[सं० ष० त०] वह तंत्र या चिकित्सा-प्रणाली जिससे विष का कुप्रभाव दूर या नष्ट किया जाता था।

**विष-तरु**—पु०[स० ष० त०] कुचला।

**विषता**—स्त्री०[स० विष+तल्+टाप्] १ विष का धर्म या भाव। जहरीलापन। २ ऐसी चीज या बात जो विषाक्त प्रभाव उत्पन्न करती हो।

**विषदंड**—पु०[सं० ष० त०] कमलनाल।

**विष-दंतक**—पु०[स० ब० स०] सर्प। साँप।

**विषदंष्ट्रा**—स्त्री०[स० मध्य स०] १. साँप का वह दाँत जिसमें विष होता है। २ नाग-दमनी। ३ सर्प-कंकालिका नामक लता।

**विषद**—पु०[सं० वि√सद् (क्षीण करना)+अच्] १ बादल। मेघ। २. सफेद रंग। ३ अतिविषा। अतीस। ४. हीराकसीस।

वि० १ विषैला। २. साफ। स्वच्छ।३

**विषदा**—स्त्री०[स० विषद+टाप्] अतिविषा। अतीस।

**विषदिग्ध**—भू० कृ० [स० ब० स०] [भाव० विषदिग्धता] (वस्तु) जिसमें विष का प्रवेश कराया गया हो। विषाक्त।

**विष-दुष्ट**—वि०[स० तृ० त०] (पदार्थ) जो विष के सम्पर्क के कारण दूषित या विषाक्त हो गया हो।

**विष-दूषण**—वि०[सं० ष० त०] विष का प्रभाव दूर करनेवाला।

**विष-द्रुम**—पु०[स० ष० त०] कुचला।

**विषधर**—वि०[स० विष√धृ+अच्] विषाक्त। जहरीला।

पु० साँप।

**विषधात्री**—स्त्री०[सं०]जरत्कार ऋषि की स्त्री मनसा देवी का एक नाम।

**विष-नाशन**—वि०[स० ष० त०] विष का प्रभाव नष्ट करनेवाला।

पु० १ सिरिस का पेड। २. मानकन्द।

**विषनाशिनी**—स्त्री०[सं० ष० त०] १. सर्प ककाली नामक लता। २. बाँझ ककोड़ा। ३ गन्ध नाकुली।

**विष-पत्रिका**—स्त्री०[स० ष० त०] कोई जहरीली पत्ती या छिलका।

**विष-पुच्छ**—पु०[सं० ब० स०] [स्त्री० विष-पुच्छी] बिच्छू।

**विषपुष्प**—पु०[स० ब० स० या मध्य० स०] १. नीला पद्म। २. अलसी का फूल। ३. मैनफल।

**विष-प्रयोग**—पु०[सं० ष० त०]१ चिकित्सा के लिए विष का औषधि के रूप में होनेवाला प्रयोग। २. किसी की हत्या के लिए उसे जहर देना।

**विष-मंत्र**—पुं०[सं० ष० त०] १. वह जो विष उतारने का मंत्र जानता हो। ऐसा मंत्र जिससे विष का प्रभाव दूर होता हो। २. ऐसा व्यक्ति जो उक्त प्रकार का मंत्र जानता हो। ३. सँपेरा।

**विषम**—वि० [सं० मध्य० स०] [स्त्री० विषमा] [भाव० विषमता] १. जो सम अर्थात् समान या बराबर न हो। असमान। 'सम' का विपर्याय। २ (संख्या) जो दो से भाग देने पर पूरी न बँटे बल्कि जिसमें एक बाकी बचे। ताक। ३. (कार्य या स्थिति) जो बहुत ही कठिन या विकट हो। ४. (विषय) जिसकी मीमांसा सहज में न हो सके। जैसे—विषम समस्या। ५ बहुत ही उत्कट, प्रचंड, भीषण या विकट। जैसे—विषम विपत्ति। ६ भयंकर। भीषण। ७ तीव्र। तेज।

पुं० १ विपत्ति। संकट। २. छंद शास्त्र में, ऐसा वृत्त जिसके चारों चरणों में अक्षरों और मात्राओं की संख्या समान न हो। ३ साहित्य में, एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें या तो दो परस्पर विरोधी बातों या वस्तुओं के संयोग का उल्लेख होता है, या उस संयोग की विषमता अर्थात् अनौचित्य दिखलाया जाता है। (इन्कांग्रुइटी) ४ गणित में, पहली, तीसरी, पाँचवीं आदि विषम संख्याओं पर पड़नेवाली राशियाँ। ५ संगीत में, ताल का एक प्रकार। ६ वैद्यक में, चार प्रकार की जठराग्नियों में से एक जो वायु के प्रकोप से उत्पन्न होती है।

**विषम-कर्ण**—पुं०[सं० ब० स०] (चतुर्भुज) जिसके कोण सम न हों।

**विषम-कोण**—पुं०[सं० कर्म० स०] ज्यामिति में ऐसा कोण जो सम न हो। समकोण से भिन्न कोई और कोण।

**विषम-चतुष्कोण**—पुं०[सं० ब० स०] ऐसा चतुष्कोण जिसकी भुजाएँ विषम हों। (ज्यामिति)

**विषम-छंद**—पुं०=विषमवृत्त।

**विषम ज्वर**—पुं०[सं० कर्म० स०] १ मच्छरों के दंश से फैलनेवाला एक प्रकार का ज्वर जिसके साथ प्रायः जिगर और तिल्ली भी बढ़ती है। इसके आरंभ में बहुत जाड़ा लगता है, इसी से इसे जूड़ी और शीत ज्वर भी कहते हैं। (मलेरिया) २. क्षय रोग में होनेवाला ज्वर।

**विषमता**—स्त्री०[सं०विषम+तल्+टाप्] १. विषम होने की अवस्था या भाव। २ ऐसा तत्त्व या बात जिसके कारण दो वस्तुओं या व्यक्तियों में अंतर उत्पन्न होता है। ३. द्वेष। बैर।

**विषम त्रिभुज**—पुं०[सं० कर्म० स०] ऐसा त्रिभुज जिसके तीनों भुज छोटे-बड़े हों, समान न हों। (ज्यामिति)

**विषमत्व**—पुं०[सं० विषम+त्व] विषम होने की अवस्था या भाव। विषमता।

**विषम-नयन**—पुं०[सं० ब० स०] शिव। महादेव।

**विषम-नेत्र**—पुं०[सं० ब० स०] शिव। महादेव।

**विषम-बाहु**—पुं०=विषम-भुज।

**विषम-भुज**—पुं०[सं० ब० स०] ज्यामिति में ऐसा क्षेत्र, विशेषतः त्रिभुज जिसके कोई दो भुज आपस में बराबर न हों। (स्केलीन)

**विषम-बाण**—पुं०[सं० ब० स०] १. कामदेव का एक नाम। २. कामदेव।

**विषमवृत्त**—पुं०[सं० ब० स०] ऐसा छंद या वृत्त जिसके चरण या पद समान न हों। असमान पदोंवाला वृत्त।

**विषम-शिक्ष**—पुं० [सं०] प्रायश्चित्त आदि के लिए व्यवस्था देने के संबंध का एक रोध जो इस समय माना जाता है, जब कोई भारी पाप करने पर हलका प्रायश्चित्त करने या हलका पाप करने पर भारी प्रायश्चित्त करने की व्यवस्था दी जाती है।

**विषमांग**—वि०[सं० विषम+अंग] जिसके सब अंग या तत्त्व भिन्न-भिन्न अथवा परस्पर विरोधी प्रकार के हों। 'समांग' का विपर्याय। (हेटेरोजीनिअस)

**विषमा**—स्त्री०[सं० विषम+टाप्] १ झरबेरी। २. एक प्रकार का बबूना।

**विषमाक्ष**—पुं०[सं० ब० स०] शिव। महादेव।

**विषमाग्नि**—पुं०[सं० कर्म० स०] वैद्यक में एक प्रकार की जठराग्नि जो वायु के प्रकोप से उत्पन्न होती है।

**विषमाशन**—पुं०[सं० कर्म० स०] विषमाशन।

**विषमायुध**—पुं०[सं० ब० स०] कामदेव।

**विषमाशन**—पुं०[सं० कर्म० स०] १. ठीक समय पर भोजन न करना। २. आवश्यकता से कम या अधिक भोजन करना।

**विषमित**—भू० कृ०[सं०] विषम रूप में लाया हुआ। जो विषम किया या बनाया गया हो।

**विषमीकरण**—पुं०[सं०] १. 'सम' को विषम करने की क्रिया या भाव। विषम करना। २ भाषा विज्ञान में, वह प्रक्रिया जिसके किसी शब्द में दो व्यंजन या स्वर पास-पास आने पर उनमें से कोई उच्चारण के सुभीते के लिए बदल दिया जाता है। 'समीकरण' का विपर्याय। (डिस्सिमिलेशन)

**विषमुष्टि**—पुं० [सं०] १ केशमुष्टि। २ बकायन। धौरा नीम। ३ कलिहारी। ४ कुचला।

**विषमेषु**—पुं०[सं० ब० स०] कामदेव।

**विषय**—पुं०[सं०वि√सि+अच्, षत्व] [वि० विषयक] १ वह तत्त्व या वस्तु जिसका ग्रहण या ज्ञान इन्द्रियों से होता है। जैसे—रस-जिह्वा का और गंध नासिका का विषय है। २ कोई ऐसी चीज या बात जिसके संबंध में कुछ कहा, किया या समझा-सोचा जाय। ३ कोई ऐसा काम या बात जिससे संबंध रखनेवाली बातों का स्वतंत्र रूप से अध्ययन, मीमांसा या विवेचन होता है। ४. कोई ऐसी आधारिक कल्पना या विचार जिस पर किसी प्रकार की रचना हुई हो। विषय-वस्तु। (थीम) जैसे—किसी काव्य या नाटक का विषय। ५. कोई ऐसी चीज या बात जिसके उद्देश्य से या प्रति कोई कार्य या प्रक्रिया की जाती हो। (सबजेक्ट, उक्त सभी अर्थों के लिए) ६. वे बातें या विचार जिनका किसी ग्रन्थ, लेख आदि में विवेचन हुआ हो या किया जाने को हो। (मैटर) ७. सांसारिक बातों से इंद्रियों के द्वारा प्राप्त होनेवाला सुख। जैसे—विषय-वासना। ८. स्त्री के साथ किया जानेवाला संभोग। मैथुन। ९. सांसारिक भोग-विलास और उसके साधन की सामग्री (आध्यात्मिक ज्ञान या तत्त्व से पार्थक्य दिखाने के लिए)। १० जगह। स्थान। ११ प्राचीन भारत में, कोई ऐसा प्रदेश या भू-भाग जो किसी एक जन या कबीले के अधिकार में रहता था और उसी के नाम से प्रसिद्ध होता था। १२. परवर्ती काल में क्षेत्र, प्रदेश या राज्य।

**विषयक**—वि०[सं० विषय+कन्] १. किसी कथित विषय से संबंध रखनेवाला। विषय-संबंधी। जैसे—ज्ञान-विषयक बातें। २. विषय के रूप में होनेवाला।

**विषय-कर्म(न्)**—पुं०[सं० ष० त०] सांसारिक काम-धन्धे।

**विषय-निर्धारिणी-समिति**—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वह छोटी समिति जो किसी सभा मे उपस्थित किये जानेवाले विषयो या प्रस्तावो के स्वरूप आदि निश्चित करती हो। (सबजेक्ट्स कमेटी)

**विषयपति**—पु०[स० ष० त०] किसी विषय अर्थात् राज्य का स्वामी या प्रधान व्यवस्थापक।

**विषय-वस्तु**—स्त्री०[सं०] कल्पना, विचार आदि के रूप मे रहनेवाला वह मूल तत्त्व जिसे आधार मानकर कोई कलात्मक या कौशलपूर्ण रचना की गई हो। किसी कृति का आधारिक और मूल विचार-विषय। (थीम) जैसे—इन दोनो नाटको मे भले ही बहुत-कुछ समता हो फिर भी दोनो की विषय-वस्तु एक दूसरी से भिन्न है।

**विषय-समिति**—स्त्री० =विषय-निर्धारिणी समिति।

**विषयांत**—पु०[स० विषय+अन्त, ष० त०] विषय अर्थात् देश या राज्य की सीमा।

**विषयांतर**—वि०[स०विषय+अन्तर,कर्म०स०] समीप स्थित। पडोसका। पु० १ एक विषय को छोडकर दूसरे विषय पर आना। २. असावधानता आदि के कारण मूल विषय पर कहने-कहते (या लिखते-लिखते) दूसरे विषय पर भी कुछ कहने (या लिखने) लगना।

**विषया**—स्त्री०[स० विषय+टाप्] १ विषय-भोग की इच्छा। २ विषय-भोग की सामग्री।

**विषयाधिप**—पु०[स० विषय+अधिप ष० त०]=विषयपति।

**विषयानुक्रमणिका**—स्त्री०[स० ष० त०] विषयो के विचार से बनी हुई अनुक्रमणिका। विशेषतः किसी ग्रन्थ मे विवेचित विषयो की अनुक्रमणिका या सूची। (इन्डेक्स)

**विषयासक्त**—वि०[स० स० त०] [भाव० विषयासक्ति] सासारिक विषयो का भोग-विलास के प्रति आसक्ति रखनेवाला।

**विषयासक्ति**—स्त्री०[स० स०त०] सासारिक विषयो के भोग मे रत रहने की अवस्था या भाव।

**विषयी(यिन्)**—वि० [स० विषय+इनि] १ विषयो अर्थात् भोग-विलास मे रत रहनेवाला। २. कामुक।
पु० १ कामदेव। २ धनवान् व्यक्ति। ३. राजा।

**विषरूपा**—स्त्री०[स०] १ अतिविषा। अतीस। २ छोटा नीम। मीठी नीम। ३. कफोड़ा। खेसरा।

**विषल**—पु०[स० विष+√ला (ग्रहण करना)+क, विष+लच् वा] विष। जहर।

**विष-लता**—स्त्री०[सं० मध्य० स०] १ इन्द्र वारुणी नाम की लता। २ कमल-नाल। मृणाली।

**विष-वल्ली**—स्त्री०[स० ष० त०] इन्द्र वारुणी (लता)।

**विष-विज्ञान**—पु०[स० ष० त०] वह विज्ञान या विद्या जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि भिन्न-भिन्न प्रकार के विष किस प्रकार अपना काम करते हैं और उनका प्रभाव किस प्रकार दूर किया जा सकता है। (टॉक्सीकालोजी)

**विषविद्या**—स्त्री०[स० ष० त०] मत्र आदि की सहायता से झाड-फूँककर विष का प्रकोप, प्रभाव या विकार शान्त करने की विद्या।

**विष-विधि**—स्त्री०[स० ष० त०] एक तरह की परीक्षा जिससे यह जाना जाता था कि अमुक व्यक्ति अपराधी है अथवा निरपराधी।

**विष-वृक्ष**—पुं०[सं०] १. ऐसा पेड़ जिसके अग विष का काम करते हों। २. गूलर।

**विष-वैद्य**—पु०[स० ष० त०] वह जो मत्र-तंत्र की सहायता से विष उतारता हो।

**विष-शत्रु**—पु०[स० ष० त०] जहरबाद। (दे०)

**विष-हंता(तृ)**—पुं०[स० ष० त०] सिरिस (पेड)।
वि० विष का प्रभाव नष्ट करनेवाला।

**विष-हंत्री**—स्त्री० [स० विष-हन्+ङीप् ष० त०] १. अपराजिता २. २. निर्विषी।

**विषह्न**—वि०[स० विष√हन् (मारना)+ड] जो विष का नाश करता हो। विषघ्न।
पु० १ देवपाली। २ निर्विषी।

**विषहर**—वि०[स० ष० त०] (औषध या मत्र) जिससे विष का प्रभाव दूर होता हो। विष दूर करनेवाला।

**विषहरा**—स्त्री०[स० विषहर+टाप्] १. मनसा देवी का एक नाम। २. देवपाली। ३ निर्विषी।

**विषहा**—स्त्री०[सं० विषह+टाप्] १ देवपाली। बदाल। २ निर्विषी।

**विषहारक**—पु०[स० ष० त०] भुइँकदब।
वि० विष का प्रभाव दूर करनेवाला।

**विषांकुर**—पु०[स० ष० त०] तीर।

**विषांगना**—स्त्री०[स० मध्य० स०] विष-कन्या।

**विषांतक**—वि०[स० ष० त०] जिससे विष का नाश हो।
पु० शिव। महादेव।

**विषा**—स्त्री०[स० विष+टाप्] १ अतिविषा। अतीस। २. कलिहारी। ३. कडवी तोरई। ४ काकोली। ५. बद्धि। समझ।

**विषाक्त**—वि०[स०] जिसमे विष मिला हो। २ (वातावरण) जो बहुत अधिक दूषित हो।

**विषाण**—पु०[स०√विष्+कानच्] १ जानवर का सीग। २. हाथी का बाहरवाला दाँत। हाथी-दाँत। ३ सूअर का दाँत। खाँग। ४. ऊपरी सिरा। चोटी। ६. शिव की जटा। ७. भवानी। ८ मेढ़ा-सिंगी। ९. वराही कद। १० गेठी। ११ ऋषभक नामक औषधि। ११. इमली। १२ सीग का बनाया हुआ बाजा। सिंगी। उदा०—कि जाने तुम आओ किस रोज बजाते नूतन रुद्र विषाण।—दिनकर। १३ चोटी।

**विषाणका**—पु०[स० विषाण+कन्] १ सीग। २. हाथी।

**विषाणिका**—स्त्री०[स० विषाण+ठन्-इक+टाप्] १. मेढ़ासिंगी। २ सातला। ३. काकडासिंगी। ४. भागवत वल्ली नाम की लता। ५ सिंघाड़ा। ६ ऋषभक नामक औषधि। ७. काकोली।

**विषाणी**—वि०[सं० विषाण+इनि, विषाणिन्] ८. जिसे सीग हो। सीगवाला।
पु० १ सीगवाला पशु। २. हाथी। ३. सूअर। ४. साँड़। ५ सिंघाड़ा। ६. ऋषभक नामक औषधि। ७. क्षीर काकोली। ८ मेढ़ासींगी। ९ वृश्चिकाली। १०. इमली।

**विषाणु**—पु०[सं० विष+अण्] कुछ विशिष्ट रोगों मे शरीर के अन्दर उत्पन्न होनेवाला एक विषाक्त तत्त्व जो दूसरे जीवो के शरीर में किसी प्रकार पहुँचकर वही रोग उत्पन्न कर सकता है। (विरस)

**विषाद्**—पुं०[सं० विष√अद् (खाना)+क्विप्] हलाहल विष खानेवाले शिव।

**विषाद**—पु०[सं० वि√सद्+घञ्] [वि० विषण्ण] १. शारीरिक शिथिलता। २. जड़ता। निश्चेष्टता। ३. मूर्छा। ४. अभिलाषा या उद्देश्य पूरा न होने पर उत्साह या वासना का दुःखद रूप से मंद पड़ना जो साहित्य के शृंगारिक क्षेत्र में एक संचारी भाव माना गया है। (डिस्पॉन्डेन्सी) ५. आज-कल, मन की वह दुःखद अवस्था जो कोई भारी दुर्घटना (बाढ़, भूकंप, महापुरुष का निधन आदि) होने पर और भविष्य के संबंध में मन में गहरी निराशा या भय उत्पन्न होने पर प्रायः सामूहिक रूप से उत्पन्न होती है। (ग्लूम)

**विषादन**—पु०[सं०] [भू० कृ० विषादित] १. किसी के मन में विषाद उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। २. परवर्ती साहित्य में, एक प्रकार का गौण अर्थालंकार जिसमें बहुत अधिक विषाद उत्पन्न करनेवाली स्थिति का उल्लेख होता है। (यह प्रहर्षण नामक अलंकार के विरोधी भाव का सूचक है।)

**विषादनी**—स्त्री०[सं० विष√अद् (खाना)+ल्युट्-अन+ङीप्] १ पलाशी नाम की लता। २ इन्द्रवारुणी।

**विषादिता**—स्त्री०[सं० विषाद+तल्+टाप्, इत्व] विषाद का धर्म या भाव।

**विषाद्विनी**—स्त्री०[सं० विषाद+इनि, ह्रस्व+ङीप्] १ पलाशी नाम की लता। २. इन्द्रवारुणी।

**विषादी (दिन्)**—वि०[सं०] विषाद-युक्त।

**विषानल**—पु०[सं० ष० त०] साँप।

**विषापह**—वि०[सं० विष+अप√हन् (मारना)+ड] विष का नाश करनेवाला।
पु० मौलश्री नामक वृक्ष।

**विषापहा**—स्त्री०[सं० विषापह+टाप्] १. इन्द्रवारुणी। इन्द्रायन। २. निर्विषी। ३ नाग-दमनी। ४. अर्कपत्रा। इसरौल। ५ सर्प-काकोली।

**विषायुध**—पु० [सं० ब० स०] १. जहर मे बुझाया हुआ या जहरीला आयुध। २. साँप।

**विषार**—पु०[सं० विष√ऋ(प्राप्त होना आदि)+अच्] साँप।

**विषारि**—पु०[सं० ष० त०] १. महाचव्य नामक साग। २ घृत-करञ्ज।
वि० विष को दूर करनेवाला। विषनाशक।

**विषालु**—वि०[सं० विष+आलुच्] विषैला। जहरीला। (व्यायजनस)

**विषास्त्र**—पुं०[सं० ब० स०] १. ऐसा अस्त्र जो विष मे बुझाया गया हो। २. साँप।

**विषी**—पुं०[सं० विष+इनि, विषिन्] १. विषपूर्ण वस्तु। जहरीली चीज। २. जहरीला साँप।
वि० विषयुक्त। जहरीला।

**विषुप**—पुं०[सं० विषु√पा (रक्षा करना)+क] विषुव।

**विषुव**—पु०[सं० विषु√वा (गमन)+क] गणित ज्योतिष में, वह समय जब सूर्य विषुवत् रेखा पर पहुँचता है तथा दिन और रात दोनों बराबर होते हैं।

**विषुवत्**—वि०[सं० विषु+मतुप्, म→व] बीच का। मध्यस्थित।
पुं०=विषुव।



**विषुवत्-रेखा**—स्त्री०[सं० ष० त०] भूगोल में, वह कल्पित रेखा जो पृथ्वी तल के पूरे मानचित्र पर ठीक बीचो-बीच गणना के लिए पूर्व-पश्चिम खींची गई है। (इक्वेटर)

**विषुवद्दिन**—पुं०[सं०] ऐसा दिवस जिसमें दिन और रात दोनों समय के मान से बराबर होते हैं।

**विषुवद्वृत्त**—पु०[सं० ष० त०] विषुवत् रेखा के आस-पास पड़नेवाले देश।

**विषूचक**—पु०[सं०]=विसूचिका (रोग)।

**विषूचिका**—स्त्री०=विसूचिका।

**विषौषधि**—स्त्री०[सं० ष० त०] १. जहर दूर करने की दवा। २. नागदंती।

**विष्कंद**—पुं०[सं० ब० स०] १. वह जो गति को रोकता हो। २. बाधा। विघ्न।

**विष्कंभ**—पु० [सं० वि √स्कम्भ्+अच्] १ अड़चन। बाधा। रुकावट। २. दरवाजे का अर्गल। ब्योड़ा। ३. खंभा। ४. फैलाव। विस्तार। ४. नाटक या रूपक मे, किसी अंक के आरंभ का वह अंश या स्थिति जिसमे कुछ पात्रों के द्वारा कुछ भूत और कुछ भावी घटनाओं की संक्षिप्त सूचना रहती है। जैसे—भास्तेन्दु कृत चन्द्रावली नाटिका के पहले अंक के आरंभ मे नाटक और शुकदेव वार्ता विष्कंभ है। ५. फलित ज्योतिष में, सत्ताईस योगो मे से पहला योग जो आरंभ के ५ दंडो को छोड़कर शुभ कार्यों के लिए बहुत अच्छा कहा गया है। ७ ज्यामिति मे, किसी वृत्त का व्यास। ८ योग-साधन का एक प्रकार का आसन या बंध। ९ पेड़। वृक्ष। १०. एक पौराणिक पर्वत।

**विष्कंभन**—पुं० [स० विष्कम्भ+कन्] [भू० कृ० विष्कभित] १ बाधा डालना। २ विदारण करना या फाड़ना।

**विष्कंभी(भिन्)**—पु० [स० वि√स्कम्भ् (रोकना)+णिनि] १ शिव का एक नाम। २. अर्गल। ब्योड़ा।

**विष्क**—पुं०[सं० √विष्क् (मारना)+अच्] ऐसा हाथी जिसकी अवस्था बीस वर्ष की हो।

**विष्कर**—पुं०[सं० वि√कृ+अच्] १ एक दाना। २ पक्षी। चिड़िया। ३ अर्गल। ब्योड़ा।

**विष्कलन**—पुं० [स० वि√ कल् (खाना) +ल्युट्—अन] भोजन। आहार।

**विष्किर**—पुं०[स० वि√ कृ(फेंकना)+क, गुट्, षत्व] १ पक्षी। चिड़िया। २ साँप।

**विष्टंभ**—पु० [स० वि√ स्तम्भ् (रोकना)+घञ्] १. अच्छी तरह से जमाना या स्थिर करना। २ रोकना। ३ बाधा। रुकावट। ४. आक्रमण। चढ़ाई। ५. अनाह या अंबिध नामक रोग।

**विष्टंभी (विन्)**—वि० [स० वि√ स्तम्भ् (रोकना)+णिनि, दीर्घ न—लोप] कब्जियत करनेवाला (पदार्थ)।

**विष्ट**—भू० कृ० [सं० √विश् (प्रवेश करना)+क्त] [भाव० विष्टि] १. घुसा हुआ। २. भरा हुआ। ३. युक्त।

**विष्टप**—पुं०[सं० √ विश्+कपन, गुट्] १ स्वर्ग-लोक। २. जगह। स्थान।

**विष्टप-हारी**—पुं०[सं० विष्टप√ हृ (हरण करना)+णिनि, ष० त०] १. भुवन। लोक। २. पात्र। बरतन।

**विष्टर**—पु० [स० वि√ स्तृ +अप्, पत्व] १ आक। मदार। २. वेड़। वृक्ष। ३ आसन, विशेषतः पीठ। ४. कुश का आसन।

**विष्टरश्रवा (वस्)**—पु०[स० विष्टर+श्रवस्, ब० स०]१. विष्णु। २. कृष्ण।

**विष्टि**—स्त्री०[स०√ विष् (व्याप्त रहना आदि)+क्तिन्]१ ऐसा परिश्रम जिसका पुरस्कार न दिया जाता हो। २. व्यवसाय। पेशा। ३ प्राप्ति। ४ वेतन। ५ फलित ज्योतिष के ग्यारह करणों में से सातवाँ करण जिसे विष्टिभद्रा भी कहते हैं। ६ एक प्रकार का पौराणिक व्रत।

**विष्टिकर**—पु०[स० विष्टि+कृ(करना)+अप्, ष० त०]१ प्राचीन काल के राज्य का वह बड़ा सैनिक कर्मचारी जिसे अपनी सेना रखने के लिए राज्य की ओर से जागीर मिला करती थी। २ अत्याचारी। जालिम।

**विष्टि-भार**—पु०[स० ष० त०] बेगारी का भार। उदा०—बोले ऋषि भृगुरेंगे हम सह विष्टि-भार।—मैथिलीशरण गुप्त।

**विष्ठा**—स्त्री० [स० वि√स्था (ठहरना)+क, पत्व+टाप्]१. वह चीज जो प्राणियों के गुदा मार्ग से निकलती है। गूह। मल। २. बहुत ही गंदी तथा त्याज्य वस्तु।

**विष्ठित**—भू० कृ०[स० वि√ स्था (ठहरना)+क्त]१ स्थित। २ उपस्थित। २ विद्यमान।

**विष्णु**— पु० [स०√विष् (व्यापक रहना)+नुक्] १ हिंदुओं के एक प्रधान और बहुत बड़े देवता जो संसार का भरण-पोषण करनेवाले कहे गये हैं। २ अग्नि देवता। ३ वसु देवता। ४ बारह आदित्यों में से एक।

**विष्णु-कांति**—पु०[स०] एक प्रकार का बहुत गहरा आसमानी रंग। (सेरुलियन)
वि० उक्त प्रकार के रंग का।

**विष्णु-कांत**—पु०[स० ब० स०] १ इश्कपेचाँ नामक लता या उसका फूल। २ सर्गाल मे, एक प्रकार का ताल।

**विष्णु-कांता**—स्त्री० [स०] १ नीली अपराजिता। कोयल नाम की लता। २ बारगाही कन्द। मेठी। ३ नीली शंखाहुली।

**विष्णुचक्र**—पु०[स० ष० त०] विष्णु के हाथ का चक्र सुदर्शन।

**विष्णुतिथि**—स्त्री०[स० ष० त०]एकादशी और द्वादशी दोनों तिथियाँ, जिनके स्वामी विष्णु माने जाते हैं।

**विष्णुत्व**—पु० [स० विष्णु+त्व] विष्णु होने की अवस्था, धर्म, पद या भाव।

**विष्णुदैवत**—पु०[स० ब० स०] श्रवण नामक नक्षत्र जिसके स्वामी विष्णु माने जाते हैं।

**विष्णुधर्मोत्तर**—पु०[स० ब० स०] एक उपपुराण का नाम जो विष्णु-पुराण का एक अंग माना जाता है।

**विष्णुधारा**—स्त्री०[स० ष० त० या ब० स०] १. पुराणानुसार एक प्राचीन नदी। २ उक्त नदी के तट का एक तीर्थ।

**विष्णु-पत्नी**—स्त्री०[स० ष० त०] १ विष्णु की स्त्री। लक्ष्मी। २ अदिति का एक नाम।

**विष्णु-पद**—पु०[स० ष० त०]१ विष्णु के चरण या उनकी बनाई हुई आकृति। २ आकाश। ३. स्वर्ग। ४ कमल।

**विष्णु-पदी**—स्त्री०[स० ब० स०,+ङीप्] १. गंगा। २. द्वारिकापुरी। ३ वृष, वृश्चिक, कुंभ और सिंह इनमें से प्रत्येक की संक्रान्ति।

**विष्णुपुरी**—स्त्री० [स०ष०त०] स्वर्ग।

**विष्णु-प्रिया**—स्त्री०[स० ष० त०]१. लक्ष्मी। २. तुलसी का पौधा।

**विष्णु-माया**—स्त्री० [स० ष० त०] दुर्गा।

**विष्णुयशा**—पु०[स० ब० स०, विष्णुयशस्] पुराणानुसार जो ब्रह्मयशा का पुत्र और कल्कि अवतार का पिता होगा।

**विष्णुयान**—पु०[सं० ष० त०] गरुड़।

**विष्णु-रथ**—पु०[स० ष० त०] गरुड़।

**विष्णु-लोक**—पु०[स० ष० त०] बैकुंठ। गोलोक।

**विष्णु-वल्लभा**—स्त्री०[स० ष० त०]१ तुलसी का पौधा। २. कलिहारी।

**विष्णु-वृद्ध**—पु०[स०] एक प्राचीन गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

**विष्णु-शक्ति**—स्त्री०[स० ष० त०] लक्ष्मी।

**विष्णु-शिला**—स्त्री०[स० ष० त०] शालग्राम का विग्रह।

**विष्णु-शृंखला**—पु० [स० ष० त०] श्रवण नक्षत्र में पड़नेवाली द्वादशी।

**विष्णु-श्रुत**—पु०[स० तृ० त०]प्राचीन काल का एक प्रकार का आशीर्वाद जिसका आशय है विष्णु तुम्हारा मंगल करे।

**विष्णु-स्मृति**—स्त्री०[स० मध्यम० स०] एक प्रसिद्ध स्मृति। (याज्ञवल्क्य)

**विष्णुहृता**—स्त्री०[स० तृ० त०]१ तुलसी का पौधा। २ मरुआ।

**विष्णुहर**—पु०[स० ब० स०] विष्णु के पूजा के निमित्त किया जानेवाला भूमि या संपत्ति का दान।

**विष्वर्धा**—पु०[स० वि√ स्पर्ध् (संघर्ष करना)+असुन्, ब० स० विष्वधंस्] स्वर्ग।
वि० स्पर्धा से रहित।

**विष्फार**—पु०[स० वि√स्फर् (स्फुरण करना)+घञ्+अच्,अत्व०षत्व] धनुष की टंकार। विस्फार।

**विष्यंदन**—पु०[स० वि√ स्यन्द्+ल्युट्—अन]१. चूना। २. बहना। ३ पिघलना। ४ एक तरह की मिठाई।

**विष्य**—वि०[स०विष+यत्] जिसे विष दिया जाना चाहिए या दिया जाने को हो।

**विष्व**—वि०[स० √ विष् (व्याप्त होना)+क्वन्]१. हिंस्र। २. हानिकारक। ३ दुष्ट।

**विष्वक्**—वि० [स०] १. बराबर इधर-उधर घूमनेवाला। २. विश्व संबंधी। विश्व का। २. सारे विश्व में समान रूप से होने या पाया जानेवाला। (यूनीवर्सल)। ३. इस जगत् से भिन्न, शेष सारे विश्व से संबंध रखनेवाला। पृथ्वी को छोड़कर सारे आकाश और ब्रह्माण्ड का। ब्रह्माण्डीय। (कॉस्मिक)
अव्य० १ चारों ओर। २. सब जगह।
पु०=विष्वच्।

**विष्वक्किरण**—स्त्री० [सं०] दे० 'ब्रह्माण्ड किरण'।

**विष्वक्कवाद**—पु०[स०] दे० 'विश्ववाद'।

**विष्वक्सिद्धान्त**—पु०[स० कर्म० स०] दर्शन और न्यायशास्त्रों में, वह सिद्धान्त जो किसी वर्ग या विभाग के सभी व्यक्तियों या सभी प्रकार के

तत्त्वों के लिए समान रूप से प्रयुक्त होता या हो सकता हो। (डॉक्ट्रिन ऑफ यूनीवर्सल्स)

**विश्वक्सेन**—पुं०[सं० ब० स०]१. विष्णु। २. शिव। ३ एक मनु का नाम जो मत्स्य पुराण के अनुसार तेरहवें और विष्णु पुराण के अनुसार चौदहवें हैं।

**विश्वव्यात**—पुं०[सं०] एक प्रकार की दूषित वायु।

**विषंकड**—पुं०[स० ब० स०] १. इंगुदी या हिंगोट नाम का वृक्ष। २. शेर। सिंह।
वि० बहुत बड़ा। विशाल।

**विसंक्रमण**—पु०[सं०] [भू० कृ० विसंक्रमित] बहुत अधिक ताप पहुँचाकर ऐसी क्रिया करना जिससे किसी पदार्थ में लगे हुए कीटाणु या रोगाणु पूरी तरह से नष्ट हो जायँ और दूसरी वस्तुओं में लगकर उन्हें दूषित न करने पावें। (स्टरिलाइजेशन) जैसे— शल्य-चिकित्सा में चीर-फाड करने से पहले नश्तरों आदि का होनेवाला विसंक्रमण।

**विसंगत**—वि० [सं० ब० स०, तृ० त० वा] जो संयत न हो। जिसके साथ संगति न बैठती हो। बे-मेल।

**विसंज्ञ**—वि०[स० ब० स०] संज्ञाहीन। बेहोश।

**विसंधि**—स्त्री०[स०] समस्त-पदों या शब्दों की संधियाँ मनमाने ढंग से बनाना-बिगाड़ना, जो साहित्य में एक दोष माना गया है।

**विसंधिज**—वि०[स० ब० स०] जिनकी या जिनसे संधि न हो।

**विसंभारा**—वि०[हिं० वि०+ संभार] जिसकी सुध-बुध ठिकाने न हो।

**विसंवाद**—पु० [सं०वि०सम्√वद् (कहना)+घञ्] १ विरोध। झूठा कथन। २. अनुचित कहासुनी। ३ डाँट-फटकार। ४ प्रतिज्ञा भंग करना। ५ खंडन। ६. असहमति।
वि० अद्भुत। विलक्षण।

**विसंवादी**—वि०[सं० वि-सम्√वद् (कहना)+णिनि, दीर्घ, न-लोप] १. धोखा देनेवाला। २. वचन-भंग करनेवाला। ३ खंडन करनेवाला। पु० संगीत में, वह स्वर जिसका वादी स्वर से मेल न बैठता हो।

**विसंहत**—भू० कृ० [स० वि-सम्√हन् (हिंसा करना)+क्त] १ जो संहत न हो। २ अलग या पृथक् किया हुआ।

**विस**—पुं०[सं० वि√सो (तनूकरण)+क]कमल।
†पुं०=विष।

**वि-सदृश**—वि०[सं०]१. जो किसी विशिष्ट के सदृश न हो। भिन्न। (डिस्सिमिलर)। २. अनोखा। विलक्षण।

**विसन**†—वि०=विषम।

**विसम्मति**—स्त्री०[सं०] किसी विषय में दूसरे के मत से सहमत न होने की अवस्था या भाव। विमत होना। (डिसेन्ट)

**विसर्ग**—पुं०[स० वि√सृज्+घञ्]१ सामने आये हुए काम या बात के सम्बन्ध में आवश्यक कार्यवाही, उचित निर्णय, आदि करके उसे निपटाने की क्रिया या भाव। (डिस्पोजल)। २ दान। ३. त्याग। ४. मल-मूत्र का त्याग। शौच। ५. मृत्यु। ६. मोक्ष। ७. प्रलय। ८ वियोग। ९. चमक। दीप्ति। १०. सूर्य का एक अयन। ११. वर्षा, शरद और हेमन्त ऋतुओं का समूह। १२. व्याकरण के अनुसार एक वर्ण जिससे ऊपर-नीचे दो बिन्दु होते हैं और उसका उच्चारण प्रायः अर्द्ध ह के समान होता है।

**विसर्गी**—वि०[स०] १ जिसमें विसर्ग हो। विसर्ग से युक्त। २. बीच-बीच में ठहरने या रुकनेवाला। जैसे—विसर्गी ज्वर। ३. दानी। ४. त्यागी।

**विसर्गी ज्वर**—पु०[स०] वह ज्वर जो बराबर बना न रहता हो, बल्कि बीच-बीच में कुछ समय के लिए उतर जाता हो। अंतराधिक ज्वर। विरामी ज्वर (इन्टरमिटेंट फीवर)

**विसर्जन**—पु०[स० वि√सृज् (त्याग करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विसर्जित] १ परित्याग करना। छोड़ना। २ किसी को कुछ करने का आदेश देकर कहीं भेजना। ३. कहीं से प्रस्थान करना। विदा होना। ४ अंत। समाप्ति। ५ दान। ६ देव-पूजन के सोलह उपचारों में से अंतिम उपचार जिसमें आहूत देवता के प्रति यह निवेदन होता है कि अब पूजन हो चुका, आप कृपया प्रस्थान करें। ७ उक्त के आधार पर, पूजन आदि के उपरान्त प्रतिमा या विग्रह का किसी जलाशय में किया जानेवाला प्रवाह। भसान। जैसे—दुर्गा या सरस्वती की मूर्ति का गंगा में होनेवाला विसर्जन। ८ कार्य की समाप्ति पर उसके सदस्यों आदि का कार्य-स्थल से होनेवाला प्रस्थान।

**विसर्जनी**—स्त्री०[सं० विसर्जन+ङीप्] पूजा के मुँह पर के चन्दे का एक भाग।

**विसर्जनीय**—वि०[स० वि√सृज्+अनीयर्] जिसका विसर्जन हो सके अथवा किया जाने को हो।

**विसर्जित**—भू० कृ०[स० वि√सृज्+क्त, इत्व] जिसका विसर्जन हुआ हो।

**विसर्प**—पु०[सं० वि√सृप् (सरकना, चलना)+घञ्]१ रेंगते हुए या मन्द गति से इधर-उधर घूमना, फैलना या बढ़ना। २ खुजली नामक चर्म रोग। ३. नाटक में, किसी कार्य का अप्रत्याशित रूप से होनेवाला दुःखद परिणाम।

**विसर्पण**—पु०[स० वि√सृप्+ल्युट्—अन]१. साँप की तरह लहराते हुए चलना। २. उक्त प्रकार की लहराती हुई आकृति या स्थिति। (मिण्डर) ३ फैलना। ४. फेंकना। ५ फोड़ों आदि का फूटना।

**विसर्पिका**—स्त्री०[सं०वि√सृप् +ण्वुल्—अक, इत्व,+टाप् या विसर्प+कन्+टाप्, इत्व] विसर्प या खुजली नामक रोग।

**विसर्पी (र्पिन्)**—वि०[स०]१. तेज चलनेवाला। २. फैलनेवाला। ३. साँप की तरह लहराते हुए चलनेवाला। लहरिदेवार। (मिण्डर) ४. रेंगता हुआ और बढ़ने या चलनेवाला। ५ (पौधा या बेल) जो धीरे-धीरे आगे बढ़कर जमीन पर फैले या किसी आधार पर चढ़े। (क्रीपिंग)

**विसल**—पुं०[स० विस√ला (ग्रहण करना)+क, अथवा विस+कलच्] दूब का नया पत्ता। पल्लव।

**विसवर्त्म**—पु०[सं० ब० स०] आँखों का एक प्रकार का रोग।

**विसार**—पुं० [स० वि√सृ (गमन)+घञ्] १. विस्तार। २ निर्गम। निकास। ३. प्रवाह। बहाव। ४. उत्पत्ति। ५. मछली।

**विसारक**—वि०[सं०] विसरण करनेवाला।

**विसारण**—पु०[सं०] [भू० कृ० विसारित, वि० विसारी]१. फैलाना। २. चलाना। ३. निकालना। ५. कार्य का संपादन करना।

**विसाल**—पुं० [अ०] १. मिलन। २ प्रेमी और प्रेमिका का मिलन। २. मृत्यु, जिससे आत्मा जाकर परमात्मा से मिल जाती है।

उदा०—पल भर में सारी रात मुझे बिसाल हुआ। मेरे जनाजे में बैठ रहे थे सारी रात।—कोई शायर।

**बिसिनी**—स्त्री०[सं० बिस+इनि+ङीप्] कमलिनी।

†वि० व्यसनी।

**बि-सुकृत**—वि०[सं० ब० स०] जिसके कर्म अच्छे न हों। पु०१ धर्म-विरुद्ध कार्य। २ दुष्कर्म।

**बिसूचन**—पु०[सं० वि√ सूच् (सूचित करना)+ल्युट्—अन] सूचित करना। जतलाना।

**बिसूचिका**—स्त्री०[सं० वि√ सूच्+अच्+टाप्, इत्व] वैद्यक के अनुसार, एक प्रकार का रोग, जिसे कुछ लोग हैजा कहते हैं।

**बिसूची**—स्त्री०[सं० वि√ सूच्+अच्+ङीप्] वह रोग जिसमें कै और दस्त होते हैं, परन्तु पेशाब नहीं होता।

**बिसूरण**—पु०[सं० वि√ सूर् (दुःख होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० बिसूरित] १ दुःख। रंज। २. चिन्ता। फिक्र। ३ विरक्ति। वैराग्य।

**बिसृत**—भू० कृ० [सं० वि √ सृ (गमन)+क्त] [भाव० बिसृति] १ फैला या फैलाया हुआ। २. ताना हुआ। ३ कथित। उक्त।

**बिसृष्ट**—भू० कृ० [सं० वि√सृज् (रचना) +क्त-यत्व-त-ट] [भाव० बिसृष्टि] १. जिसकी सृष्टि हुई हो। २ छोड़ा, त्यागा या निकाला हुआ। ३ प्रेरित।

पु० विसर्ग नामक लेख-चिह्न जो इस प्रकार लिखा जाता है—:

**बिसृष्टि**—स्त्री०[सं० वि√ सृज्+क्तिन्] १. विसृष्ट होने की अवस्था या भाव। २. सृष्टि। ३. छोड़ना, त्यागना या निकालना। ४ भेजना। ५ प्रेरणा करना। ६. सतान। ७ स्राव।

**बिसैन्यीकरण**—पु०[सं०] [भू० कृ० बिसैन्यीकृत] युद्ध के आवश्यकता-वश प्रस्तुत किये गये सैनिकों को सैन्य-सेवा से पृथक् करना। सैन्य-विघटन (डिमिलिटराइज़ेशन)

**बिसौष्ठव**—पु०[सं० मध्य० स०] सौष्ठव या सुख का अभाव। कष्ट। दुःख।

**बिस्खलन**—पु०[सं०] [भू० कृ० बिस्खलित]=स्खलन।

**बिस्त**—पु०[सं० √ बिस् (छोड़ना)+क्त]१. एक कर्ष का परिमाण। २. सोना। स्वर्ण।

**बिस्तर**—पुं०[सं० वि√ स्तृ (फैलना)+अप्] [भाव० बिस्तृता] १ बिस्तार। २. प्रेम। ३. समूह। ४. आसन। ५ आधार। ६ गिनती। संख्या। ६. शिव का एक नाम।

वि० अधिक। बहुत।

**बिस्तरण**—पुं०[सं० वि√ स्तृ+ल्युट्—अन]१. विस्तार बढ़ाना। विस्तृत करना।

**बिस्तार**—पु०[सं० वि √ स्तृ+घञ्]१. फैले हुए होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. वह क्षेत्र या सीमा जहाँ तक कोई चीज फैली हुई हो। फैलाव। (एक्सटेन्ट) ३. लंबाई और चौड़ाई। ४. विस्तृत विवरण। ५ शिव। ६ विष्णु। ७ वृक्ष की शाखा। ८. गुच्छा।

**बिस्तारण**—पु०[सं०]१. विस्तार करना। फैलाना। २ काम-काज या कर्म-क्षेत्र बढ़ाना।

**बिस्तारना**—ब०[सं० बिस्तरण] विस्तार करना। फैलाना।

**बिस्तारवाद**—पु०[सं०]यह मत या सिद्धान्त कि राज्य को अपने अधिकार, क्षेत्र और सीमाओं का निरंतर विस्तार करते रहना चाहिए, भले ही इसमें दूसरे राज्यों या राष्ट्रों का अहित होता हो। (एक्सपैन्शनिज्म)

**बिस्तारिणी**—स्त्री०[स० वि√ स्तृ+णिनि+ङीप्] संगीत में एक श्रुति।

**बिस्तारित**—भू० कृ० [स० बिस्तार+इतच्] १. जिसका बिस्तार हुआ हो। २. व्यापक विवरण से युक्त।

**बिस्तारी (रिन्)**—वि०[स० बिस्तारिन्] १ जिसका बिस्तार अधिक हो। विस्तृत। २ शाखितशाली।

पु० बड़ा या बरगद का पेड़।

**बिस्तीर्ण**—भू० कृ०[स० वि√ स्तृ+क्त] [भाव० बिस्तीर्णता]१ जो फैला या फैलाया हुआ हो। विस्तृत किया हुआ। २ व्यापक सूत्र-वाला। ३. बहुत चौड़ा। ४. बहुत बड़ा। ५. विपुल।

**बिस्तृत**—भू० कृ०[स० वि√स्तृ +क्त] [भाव० बिस्तृति]१ जो अधिक दूर तक फैला हुआ हो। लंबा-चौड़ा। विस्तारवाला। जैसे—यहाँ आप लोगों के लिए बहुत बिस्तृत स्थान है। २. (कथन या वर्णन) जिसमें सब अंग या बातें विस्तारपूर्वक बताई गई हों। जैसे—बिस्तृत विवेचन। ३ बहुत बड़ा या लंबा-चौड़ा। (एक्स्टेन्सिव, उक्त सभी अर्थों में)

**बिस्तृति**—स्त्री० [स० वि√स्तृ+क्तिन्] १. फैलाव। विस्तार। २ व्याप्ति। ३ लंबाई, चौड़ाई या गहराई। ४ वृत्त का व्यास।

**बिस्थापन**—पु०[स०] [भू० कृ० बिस्थापित]१. जो कहीं स्थापित या स्थित हो उसे वहाँ से हटाना। २ किसी स्थान पर बसे हुए लोगों को कहीं से बलपूर्वक हटाना और वहाँ जगह उनसे खाली करा लेना। (डिस्प्लेसमेन्ट)

**बिस्थापित**—भू० कृ० [सं० वि√ स्था+णिच्+पुच्+क्त] १. जो अपने स्थान से हटा दिया गया हो। २. जिसमें उसका निवास-स्थान जबरदस्ती छीन लिया गया हो। (डिस्प्लेस्ड)

**बिस्थिति**—स्त्री० [स०] ऐसी विकट स्थिति जिसमें उलट-फेर की संभावना हो।

**बिस्फार**—पु०[स० वि√ स्फुर् (संचालन)+घञ्, उ-आ] [वि० बिस्फारित] १. धनुष की टंकार। कमान चलाने का शब्द। २. धनुष की डोरी। ३. फैलाव। विस्तार। ४. तेजी। फुरती। ५. कंपना। कंपन। ६ विकास।

**बिस्फारक**—पुं०[स० बिस्फार+कन्] एक प्रकार का विकट सन्निपात ज्वर जिसमें रोगी को खाँसी, मूर्च्छा, मोह और कम्प होता है।

वि० बिस्फार करनेवाला।

**बिस्फारण**—पुं०[स० वि√ स्फुर् (हिलना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० बिस्फारित]१. खोलना या फैलाना। २. पक्षियों का डैने फैलाना। ३. फाड़ना। ४. धनुष चढ़ाना।

**बिस्फारित**—भू० कृ०[स० बिस्फार+इतच्]१. अच्छी तरह से खोला या फैलाया हुआ। जैसे—बिस्फारित नेत्र। २. फाड़ा हुआ।

**बिस्फीत**—भू० कृ०[सं०] [भाव० बिस्फीति] जो स्फीत न हो। 'स्फीत' का विपर्याय।

**बिस्फीति**—स्त्री०[सं० ब० स०] दे० 'अवस्फीति'।

**बिस्फुरण**—पु०[स० वि√ स्फुर् (कंपित होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० बिस्फुरित] १. विद्युत् का कंपन। २. स्फुरण।

**विस्फुलिंग**—पुं०[सं० वि√ स्फुर् (हिलना) +डु = विस्फु, विस्फु+ लिंग, ब० स०] १. एक प्रकार का विष। २. आग की चिनगारी। स्फुलिंग।

**विस्फूर्जन**—पुं०[स० वि√ स्फूर्ज् (फैलाना) +ल्युट्—अन] [भू० कृ० विस्फूर्जित] १.किसी पदार्थ का बढ़ना या फैलना। विकास। २. गरजना।

**विस्फोट**—पुं०[स० वि√ स्फुट् +घञ्] १. अन्दर की भरी हुई आग या गरमी का उबल या फूटकर बाहर निकलना। जैसे—ज्वालामुखी का विस्फोट। २. उक्त क्रिया के कारण होनेवाला जोर का शब्द। ३. एकत्र गैस, बारूद, आदि का अग्नि या ताप के कारण जोर का शब्द करते हुए बाहर निकल पड़ना। (एक्सप्लोज़न) ४. बड़ा और जहरीला फोड़ा।

**विस्फोटक**—पुं०[स० विस्फोट+कन्] १. फोड़ा विशेषत. जहरीला फोड़ा। २. चेचक या शीतला नामक रोग।
वि० (पदार्थ) जो अन्दर की गरमी या ताप के कारण चटक कर फूट जाय।

**विस्फोटन**—पुं०[स० वि√ स्फुट्+ल्युट्—अन] विस्फोट उत्पन्न करने की क्रिया या भाव।

**विस्मय**—पुं० [सं० वि√ स्मि+अच्] १. आश्चर्य। २ अचम्भा। २. वह विशिष्ट स्थिति जब किसी प्रकार की अप्रत्याशित तथा चमत्कारिक बात या वस्तु सहसा देखकर प्रसन्नता-मिश्रित आश्चर्य होता है। ३. साहित्य में, उक्त के आधार पर अद्भुत रस का स्थायी भाव।
वि० जिसका अभिमान या गर्व चूर्ण हो चुका हो।

**विस्मयाकुल**—वि०[सं० तृ० त०] जो बहुत अधिक विस्मय के कारण घबरा या चकरा गया हो।

**विस्मयादि-बोधक**—पुं० [स०] व्याकरण मे, अव्यय का वह भेद जो ऐसे अविकारी शब्द का सूचक होता है जो आश्चर्य, खेद, दुःख, प्रसन्नता आदि का सूचक होता है। जैसे—वाह, हाय, ओह आदि।

**विस्मरण**—पुं० [सं० वि√स्मृ (स्मरण करना)+ल्युट्—अन, मध्यम० स०] [भू० कृ० विस्मृत] १. स्मरण न होने की अवस्था या भाव। भूलना। २ भुलाना।

**विस्मापन**—पुं० [स० वि√ स्मि (आनन्द होना)+णिच्, आत्व, पुक्, +ल्युट्—अन] १. गधर्व-नगर। २. कामदेव।
वि० विस्मयकारक।

**विस्मारक**—वि०[स० वि√ स्मृ (स्मरण करना) +णिच्+ण्वुल्,-अक] विस्मरण कराने या भुला देनेवाला। 'स्मारक' का विपर्याय।

**विस्मित**—भू० कृ०[सं०वि√स्मि (आश्चर्य होना)+क्त] [भाव० विस्मृति] जिसे विस्मय हुआ हो।

**विस्मिति**—स्त्री०[स० वि√ स्मि (आश्चर्य करना)+क्तिन्]=विस्मय।

**विस्मृत**—भू० कृ०[सं० वि√ स्मृ+क्त] [भाव० विस्मृति] १. जिसका स्मरण न रहा हो। भूला हुआ। २. भुलाया हुआ।

**विस्मृति**—स्त्री० [सं० वि√स्मृ+क्ति, मध्यम० स०] भूल जाना। विस्मरण।

**विस्रंभ**—पुं०[सं०]=विश्रंभ।

**विस्रंभन**—पुं०[सं० वि√ स्रु (बहना)+ल्युट्—अन] १. बहना। २. झड़ना। ३. रक्षना।

**विस्रा**—स्त्री० [सं० विस्र+अच्+टाप्] १. हाऊबेर। हबुषा। २. चरबी।

**विस्राम**†—पुं०=विश्राम।

**विस्राव**—पु०[सं० वि√ स्रु (बहना)+घञ्] भात का माँड़। पीच।

**विस्रावण**—पु०[सं० वि√ स्रु (बहना)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० विस्रावित] १. बहाना। २. रक्त बहाना। ३. अर्क चुआना।

**विस्वर**—वि०[सं० ब० स०]१ स्वरहीन। २. बेमेल। ३. कर्कश (स्वर)।

**विस्वाद**—वि०[स० ब० स० या मध्यम० स०] १. जिसमे स्वाद न हो। २. फीका।

**विहंग**—पुं०[सं० विहायस्√गम्+खच्, ह्रस्व, मुम्, विहादेश] १. पक्षी। चिड़िया। २. सूर्य। ३. चन्द्रमा। ४. सोना मक्खी। ५. बादल। मेघ। ६. तीर। बाण।

**विहंगक**—वि०[स० विहंग+कन्] आकाश मे उड़नेवाले।
पुं० छोटा पक्षी।

**विहंगम**—पु०[स० विहायस्√गम् (जाना)+खच्, मुम्, विहादेश] १ पक्षी। चिड़िया। २. सूर्य।
†वि०=वेहंगम।

**विहंगम मार्ग**—पुं०[सं० कर्म० स०] योग की साधना मे, दो मार्गों मे से एक जिसके द्वारा साधक बिना अधिक काया-क्लेश सहे बहुत जल्दी और सहज में उसी प्रकार अपने प्राण ब्रह्माड तक ले जाता है, जिस प्रकार पक्षी उड़कर वृक्ष के ऊपरी भाग पर जा पहुँचता है। यह दूसरे अर्थात् पिपीलिका मार्ग की तुलना में श्रेष्ठ समझा जाता है।

**विहंगमा**—स्त्री० [सं० विहंगम+टाप्] १. सूर्य की एक प्रकार की किरण। २. चिड़िया। ३. बहँगी।

**विहंग-राज**—पुं०[सं० ष० त०] गरुड़।

**विहंगहा(हन्)**—पु० [स०] बहेलिया।

**विहंगिका**—स्त्री०[स० विहंग+कन्+टाप्, ह्रस्व] बहँगी।

**विहँड़ना**—स०[?] १. नष्ट करना। २. मार डालना।

**विहँसना**—अ०=हँसना।

**विहग**—पु०[सं० विहायस्√ गम्+ड, विहादेश] १. पक्षी। चिड़िया। २. सूर्य। ३. चन्द्रमा। ४. ग्रह। ५. तीर। बाण।

**विहगेंद्र**—पुं०[स० विहग+इन्द्र] गरुड़।

**विहत**—भू० कृ० [सं० वि√हन् (मारना)+क्त, न-लोप] १. मारा हुआ। हत। २. फाड़ा हुआ। विदीर्ण। ३ जिसका निवारण हुआ हो। निवारित। ४ जिसका प्रतिरोध या विरोध किया गया हो।
पु० जैन-मंदिर।

**विहति**—स्त्री० [स० वि√ हन्+क्तिन्] विहत होने की अवस्था या भाव।

**विहर**—पुं० [स० वि√ हृ (हरण करना)+अच्] वियोग। बिछोह।

**विहरण**—पु०[स० वि√ हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १.विहार करने की क्रिया या भाव। २ फैलना। ३ वियोग। बिछोह। ४. घूमना-फिरना।

**विहरना**—अ० [सं० विहार] १. विहार करना। २. घूमना-फिरना।

**विहर्ता(र्तृ)**—वि० [सं० वि√ हृ +तृच्] १. विहार करनेवाला। २. घूमने-फिरने का शौकीन।

१. ढाक।

**विहव**—पु०[स० वि√हु (दान देना, लेना)+अच्]१. यज्ञ। २. युद्ध। लड़ाई।

**विहसन**—पु०[सं० वि√ हस् (हँसना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० वि० हसित]१ मंद और मधुर मुस्कान। हास्य। २. किसी की हँसी या मजाक उड़ाना।

**विहसित**—पु०[स० वि√ हस् (हँसना) +क्त] ऐसा हास्य जो न बहुत उच्च हो, न बहुत मधुर। मध्यम हास्य।
भू० कृ० जिसकी हँसी उड़ाई गई हो। उपहसित।

**विहस्त**—पु०[ब० स०] पंडित। विद्वान्।

**विहाग**—पु०=बिहाग (राग)।

**विहाग**—पु०=बिहाग (सबेरा)।

**विहाना**—स०[स० विहीन] पृथक् करना।
अ०, स० विहाना (बीतना, बिताना)।

**विहायस**—पु०[स०]१. आकाश। आसमान। २ दान। ३ चिड़िया। पक्षी।

**विहार**—पु०[स० वि√ हृ (हरण करना)+घञ्]१. घूमना। २ आनन्द प्राप्त करने या मौज लेने के लिए घूमना। ३ घूमने-फिरने तथा आनन्द लेने की जगह। जैसे—उद्यान, बगीचा। ४ प्राचीन काल में, बौद्ध श्रमणों के रहने का मठ या आश्रम। ५ रति-क्रीड़ा। ६ रति-क्रीड़ा का स्थान।

**विहारक**—वि० [स० वि√हृ+ण्वुल्—अक, विहार+कन्] १ विहार करनेवाला। २ विहार अर्थात् बौद्ध मठ-सम्बन्धी।

**विहारिका**—स्त्री०[स० विहार+कन्+टाप्, ह्रस्व]छोटा विहार या मठ।

**विहारी**—वि० [स० वि√ हृ+णिनि] [स्त्री० विहारिणी] जो विहार करता हो। विहार करनेवाला।
पु० श्रीकृष्ण का एक नाम।

**विहास**—पु०[स०] मुसकान।

**विहसक**—वि०[स०]=हसक।

**विहि**—पु०[सं० विधि]१ विधाता। २ विधान।
†स्त्री० विधि।

**विहित**—भू० कृ० [भ० वि√ धा+क्त]१ जो विधि के अनुसार हुआ या किया गया हो। २ जो विधि के अनुरूप या अनुसार हो। ३ उचित। मुनासिब।

**विहीन**—वि० [स० वि√ हा (त्याग करना) +क्त, ईत्व, त-न] [भाव० विहीनता, भू० कृ० विहीनित] १ रहित। बगैर। बिना। २ छोड़ा या त्यागा हुआ।

**विहृत**—वि०[सं० विहीन] रहित।
अव्य० बिना। बगैर।

**विहृत**—पु० [स० वि√ हृ+क्त] साहित्य में हाव की वह अवस्था जिसमें प्रिया लज्जा के कारण प्रिय पर अपना मनोभाव नहीं प्रकट कर पाती।
भू० कृ० हरण किया हुआ।

**विहृति**—स्त्री०[सं० वि√ हृ+क्तिन्]१ जबरदस्ती या बल-पूर्वक कुछ ले लेना या कोई काम करना। २. खेलना। ३ क्रीड़ा। विहार।

**विह्वल**—वि० [स० वि√ ह्वल्+अच्] [भाव० विह्वलता] आशंका, भय आदि मनोविकारों के कारण किंकर्तव्यविमूढ़-सा होकर जो अपना चैन तथा साहस खोड चुका हो और घबरा रहा हो।

**विह्वलता**—स्त्री० [सं० विह्वल+तल्+टाप्] विह्वल होने की अवस्था या भाव। व्याकुलता। घबराहट।

**वीँद**—पु०[स० वीरेंद्र] बहुत बड़ा वीर। (डिं०)

**वीक**—पु० [स० √अज् (गमन)+कन्, अज—वी]१ वायु। हवा। २. चिड़िया। पक्षी। ३. मन।

**वीकाश**—पु०[स० वि√ काश् (विकाश करना)+घञ्, दीर्घ] १ एकांत स्थान। २ प्रकाश। रोशनी।

**वीक्ष**—पु०[स० वि√ ईक्ष् (देखना)+अच्] दृष्टि।

**वीक्षक**—वि०[सं० वि√ ईक्ष् +ण्वुल्—अक] देखनेवाला।

**वीक्षण**—पु० [स० वि√ ईक्ष् +ल्युट्—अन] [भू० कृ० वीक्षित, वि० वीक्षणीय] देखने की क्रिया। निरीक्षण।

**वीक्षणीय**—वि०[स०वि√ ईक्ष् +अनीयर्] जो देखे जाने के योग्य हो। दर्शनीय।

**वीक्षा**—स्त्री०[स० वि√ ईक्ष्+अङ्+टाप्] देखने की क्रिया। वीक्षण। दर्शन।

**वीक्षित**—भू० कृ०[स० वि√ ईक्ष्+क्त] देखा हुआ।
पु० दृष्टि। नजर।

**वीक्ष्य**—वि०[स० वि√ ईक्ष्+ण्यत्] देखने या देखे जाने के योग्य।
पु० १ वह जो देखा जाय। दृश्य। २. घोड़ा। ३ नर्तक। नचनिया।

**वीङ**—पु०[?] कदम। डग। (डिं०)

**वीक्षना**—स०[स० वीक्षण] देखना। (राज०)

**वीचि**—स्त्री०[स०√वे+कीचि]१ लहर। तरंग। २. बीच की खाली जगह। अवकाश। ३ चमक। दीप्ति। ४. सुख। ५. किरण।

**वीचिमाली (लिन्)**—पुं०[स०] समुद्र।

**वीची**—स्त्री० [स० वं,चि+कीच्] तरंग। लहर।

**वीज**—पु० [स० वि√ जन् (उत्पन्न होनेवाला)+ड, दीर्घ, वि√ईज् (गमन)+अच्] १. मूल कारण। असल वजह। २ वनस्पति आदि की वह गुठली या दाना जिससे उस जाति की और वनस्पतियाँ उत्पन्न होती हैं। बीज। बीआ। ३ वीर्य। शुक्र। ४. अंकुर। ५ फल। ६ आधार। ७ निधि। खजाना। ८. तेज। ९. तत्त्व। १० भज्जा। ११. तांत्रिकों के अनुसार, एक प्रकार के मंत्र जो बड़े बड़े मंत्रों के मूल तत्त्व के रूप में माने जाते हैं। प्रत्येक देवी या देवता के लिए ये मंत्र अलग-अलग होते हैं। १२. दे० 'बीज-गणित'।
†स्त्री० बिजली (विद्युत्)।

**वीजक**—पु०[स० बीज+कन् बीज√कै+क] १ बीज। बीआ। २. विजयसार या पियासाल नामक वृक्ष। ३. बिजौरा नींबू। ४ सफेद सहिजन। ५. दे० 'बीजक'।

**बीज-कर**—पु०[स० बीज√ कृ (करना)+अच्]उड़द की दाल जो बहुत पुष्टिकर मानी जाती है।

**बीजकृत**—वि०[सं० बीज√कृ +क्विप्] शुक्र बढ़ाने तथा पुष्ट करनेवाला (पदार्थ)।

**बीजकोश**—पु०[स० ष० त०]१. फलों, पौधों आदि का वह अंग जिसके अन्दर बीज रहते हैं। २ कमलगट्टा। ३. सिंघाड़ा।

**बीज-गणित**—पु०[स० तृ० त०] गणित की वह शाखा जिसमें सांकेतिक

अक्षरों की सहायता से राशियाँ निकाली जाती हैं और गणना की जाती है।

**बीजगणित**—पुं०[स० मध्यम० स०] धनियाँ।

**बीजन**—पुं० [सं० वि०√ईज् (गमन)+ल्युट्—अन] १. पंखा झलना। हवा करना। २. पंखा। चँवर। ३. चादर। ४. चकोर पक्षी। ५. लोभ।

**बीजपुरक**—पुं०[सं० कर्म० स०] वह पुरुष जिससे किसी वंश की परम्परा चली हो।

**बीजपूर**—पुं०[सं० ब० स०]१ बिजौरा नीबू। २ चकोतरा। ३ गलगल।

**बीज-मार्गी**—पुं०[सं० बीज√मार्ग् (खोजना)+णिनि, बीजमार्गिन्] एक प्रकार के वैष्णव जो निर्गुण के उपासक होते हैं, और देवी-देवताओं का पूजन नहीं करते।

**बीजलिका**—स्त्री०=बिजली। (डिं०)

**बीजसार**—पुं०[सं० ब० स०] बायबिडंग।

**बीजसू**—स्त्री०[स० बीज√सू (उत्पन्न करना)+क्विप्] पृथ्वी।

**बीजा**†—स्त्री०=बिजली।

वि० =दूजा (दूसरा)।

पुं० [अ०] पार-पत्र पर लिखा जानेवाला वह लेख जिसके आधार पर विदेशी यात्री को किसी दूसरे देश में प्रवेश करने और घूमने-फिरने का अधिकार प्राप्त होता है। इण्टाक। (बीजा)

**बीजित**—भू० कृ० [सं० बीज+इतच्] १ बोया हुआ। २. पंखा झलकर ठंढा किया हुआ। ३. सींचा हुआ।

**बीजी**—वि०[सं० बीज+इनि] जिसमें बीज हों। बीजोंवाला।

पुं० १. पिता। बाप। २. चौराई का साग।

**बीजीवक**—पुं०[सं० बीज+उदक, उपमि० स०] आकाश से गिरनेवाला ओला। बिनौरी।

**बीज्य**—वि०[स० वि०√ईज् +यत्, बीज+यत् वा]१ जो बोया जा सकता हो। बोया जाने के योग्य। २. जो अच्छे बीज से उत्पन्न हुआ हो। ३. कुलीन।

**बीजन**—पुं०[सं० व्यजन] बिजन। पंखा। (राज०)

**बीजना**—स०[सं० व्यजन] पंखा झलना।

**बीटक**—पुं०[सं० वीट+कन्] [स्त्री० अल्पा० बीटिका] पान का बीड़ा।

**बीटा**—स्त्री०[सं० वि०√ इट्+क+टाप्] प्राचीन काल में, एक प्रकार का खेल जो लकड़ी के डंडे से खेला जाता था।

**बीटिका**—स्त्री०[सं० वि०√ इट्+इन्, बीटि+कन्+टाप्] पान का छोटा बीड़ा।

**बीडी**—स्त्री० [सं० बीटि+ङीष्] १. पान का बीड़ा। २. गाँठ विशेषतः पहने हुए कपड़े में लगाई जानेवाली गाँठ।

**बीडुली**—स्त्री०[सं० बेण्ट] एक प्रकार की पगड़ी। (राज०)

**बीच**—स्त्री०=बीणा।

**बीणा**—स्त्री०[सं० √ वी+न+टाप्] १. एक तरह का प्राचीन भारतीय बाजा जो सितार, सरोद आदि का मूल रूप है और सब बाजों में श्रेष्ठ माना जाता है। २. साधकों और सिद्धों की परिभाषा में, जीव की काया या शरीर। ३. बिजुरी। बिजली।

**बीणा-दंड**—पुं०[सं० ष० त०] बीणा का वह लंबोतरा अंश जो दोनों तूंबों या सिरों के बीच में पड़ता है।

**बीणाधारी**—स्त्री० [सं०] मर्म.त मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**बीणा-पाणि**—स्त्री० [सं० ब० स०] सरस्वती।

पुं० नारद।

**बीणा-प्रवेश**—पुं० [ष०] बीणा की वह गट्ठी जिसे आगे-पीछे करने से तार से निकलनेवाला स्वर तीव्र-मंद होता है।

**बीणावती**—स्त्री० [सं० बीणा+मतुप्, म—व,+ङीप्] सरस्वती।

**बीणा-वादिनी**—स्त्री० [सं० ब० स०] सरस्वती।

**बीणा-हस्त**—पुं० [स० ब० स०] शिव। महादेव।

**बीणी**—पुं०[स० ष० बीणा+इनि] वह जो बीणा-वादन में कुशल हो।

**बीतंस**—पुं० [वि√तंस् (भूषित करना)+घञ्] वह (जाल या पिंजरा) जिसमें पशु-पक्षी फँसाये या रखे जाते हैं।

**बीत**—वि० [स०√वी+क्त, वि√इ+क्त] १. गया या बीता हुआ। २ स्वतन्त्र किया हुआ। ३ जो अलग या पृथक हो गया हो। ४ ओझल। ५ युद्ध करने के लिए उपयुक्त। ६. किसी काम या बात से मुक्त या रहित। जैसे—बीतचिन्त, बीतराग।

पुं० १. ऐसी चीज जो पुरानी होने के कारण काम में आने के योग्य न रह गई हो।

**विशेष**—प्राचीन भारत में बुड्ढे घोड़े, हाथी, सैनिक आदि बीत कहे जाते थे।

२. अनुमान के दो भेदों में से एक।

**बीतक**—पुं०[स० बीत+कन्]१ कपूर और चंदन का चूर्ण रखने का पात्र। २. घिरी हुई जमीन। बाड़ा।

**बीत-मल**—वि०[सं०]१ मल से रहित। निर्मल। २ निष्पाप।

**बीतराग**—पुं०[स० ब० स०]१ ऐसा व्यक्ति जिसने सांसारिक आसक्ति का परित्याग कर दिया हो। वह जो निस्पृह हो गया हो। राग-रहित। ३. गौतम बुद्ध। ३. जैनों के एक प्रधान देवता।

**बीतसूत्र**—पुं०[सं०] यज्ञोपवीत। जनेऊ।

**बीतहव्य**—पुं०[स० ब० स०] वह जो यज्ञ में आहुति या हव्य देता हो।

**बीतहोत्र**—पुं०=बीतिहोत्र।

**बीति**—स्त्री०[सं०√ वी+क्तिन्]१. गति। चाल। २. चमक। दीप्ति। ३ खाने-पीने की क्रिया। ४. गर्भ धारण करना। ५. यज्ञ।

पुं० [√वी+क्तिच्] घोड़ा।

**बीतिहोत्र**—पुं०[सं० ब० स०] १. अग्नि। २. सूर्य। ३. याज्ञिक।

**बीथी**—स्त्री०[स०√ विथ्+इन्+ङीष्]१. पंक्ति। कतार। २. मार्ग। रास्ता। सड़क। ३. बाजार। हाट। ४. आकाश में सूर्य के भ्रमण करने का मार्ग। ५. आकाश में नक्षत्रों के रहने के स्थानों के कुछ विशिष्ट भाग जो वीथी या सड़क के रूप में माने गए हैं। जैसे—नागवीथी, गजवीथी, गो-वीथी आदि। ६. दृश्य काव्य या रूपक के २७ भेदों में से एक जो एक ही अंक का और शृंगार-रस-प्रधान होता है। इसमें एक से तीन तक पात्र होते हैं। प्राचीन काल में ऐसे रूपक अलग भी खेले जाते थे और दूसरे नाटकों के साथ भी।

**बीध्र**—पुं०[सं० वि√ इन्ध् (दीप्त होना)+क्रन्] १. आकाश। २. अग्नि। ३. वायु।

**बीनाह**—पु. [सं० वि√नह् (रोकना)+घञ्, दीर्घ] वह जंगला या ढकना जो कूएँ के ऊपर लगाया जाता है।

**बीपा**—स्त्री० [सं० बीप+टाप्] बिजली।

**बी० पी०**—पु० [अं० वेल्यू-पेयबुल के आरंभिक अक्षर बी० और पी०] १. डाक द्वारा चीजें भेजने की वह व्यवस्था जिसमें पानेवाले व्यक्ति से चीजों का दाम वसूल करके तब उन्हें चीजें दी जाती हैं। २. उक्त प्रकार से भेजी हुई चीज।

**बीप्सा**—स्त्री० [सं० वि√आप् (व्याप्त होना)+सन्, इत्व, अ+टाप्] १ व्याप्ति। २ कार्य की निरंतरता सूचित करने के लिए होनेवाली शब्द की आवृत्ति। जैसे—खड़े-खड़े या चलते-चलते। ३. एक प्रकार का शब्दालंकार जिसमें आदर, घृणा, विस्मय, शोक, हर्ष आदि के प्रसंगों में उपयुक्त शब्दों की पुनरावृत्ति होती है। यथा—रीझि रीझि रहसि रहसि हँसि-हँसि उठै साँसे भरि, आँसू भरि कहत दई दई।—देव।

**बीभत्स**—पु० [स०] [भू० कृ० बीभत्सित]=बीभत्सा।

**बीरंबर**—पु० [सं० वीर√भृ (रखना)+खच्, मुम्] १ जंगली पशुओं को मारने या उनसे बचने के लिए की जानेवाली लड़ाई। २. मोर।

**बीर**—पु० [स० √अज्+रक्, वी—आदेश,√वीर+अच् वा] [भाव० बीरता] १ वह जो यथेष्ट बलवान और साहसी हो। बहादुर। शूर। २ योद्धा। सिपाही। सैनिक। ३ उक्त के आधार पर साहित्य में शृंगार आदि नौ रसों में से एक रस जिसमें उत्साह, वीरता, साहस, आदि गुणों का रस-पूर्ण परिपाक होता है। ४ वह जो किसी विकट परिस्थिति में भी आगे बढ़कर अच्छी तरह और साहसपूर्वक अपने कर्तव्य का पालन करे। ५. वह जो किसी काम में और लोगों में से बहुत बढ़कर हो। जैसे—दानवीर, धर्मवीर। वह जो किसी काम या बात में बहुत चतुर या होशियार हो। जैसे—बाग्वीर। ७ स्त्री की दृष्टि में उसका पति। ८ पुत्र। बेटा। ९. भाई के लिए बहन का एक प्रकार का संबोधन। १० तांत्रिकों की परिभाषा में, साधना के तीन प्रकारों या भावों में से एक जिसमें खूब मद्यपान करके और उन्मत्त होकर मनुष्य, भैंसे या भेड़-बकरी का बलिदान किया जाता है।

**विशेष**—कहा गया है कि दिन के पहले दस दंडों में पशु भाव से, बीच के १० दंडों में वीर भाव से और अंतिम १० दंडों में दिव्य भाव से साधना करनी चाहिए। कुछ लोगों के मत से, १६ वर्ष की अवस्था तक पशु भाव से, फिर ५० वर्ष की अवस्था तक वीर भाव से और उसके बाद दिव्य भाव से साधना करनी चाहिए।

११ तांत्रिकों की परिभाषा में, वह साधक जो उक्त प्रकार के वीर-भाव से साधना करता हो। १२ वज्रयानी सिद्धों की परिभाषा में, वह साधक जो वज्र-प्रज्ञोपाय योग के द्वारा महारागा में विराग का दमन करता हो। १३ साहित्य में एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में ३१ मात्राएँ और १६ मात्राओं पर यति या विराम होता है। आल्हा नामक गीत वस्तुतः इसी छंद में होता है। १४ विष्णु। १५ जैनों के जिनदेव। १६ यज्ञ की अग्नि। १७ सींगिया विष। १८ काली मिर्च। १९ पुष्करमूल। २० काँजी। २१. उशीर। खस। २२. आलूबुखारा। २३ पीली कटसरैया। २४. चौलाई का साग। २५. वाराही कन्द। गेंठी। २६ लताकरंज। २७ अर्जुन नामक वृक्ष। २९. कनेर। काकोली। ३०. सिंदूर। ३१. शालिपर्णी। सरिवन। ३२. लोहा। ३३ नरकट। ३४. नरसल। ३५. भिलावाँ। ३६. कुश। ३७. ऋषभक नामक ओषधि। ३८. तोरी। तुरई।

**बीरक**—पु० [सं० वीर+कन्] १. साधारण वीर या योद्धा। २. नायक। ३. एक तरह का पीवा। ४. पुराणानुसार चाक्षुष मन्वंतर के एक मनु। ५ सफेद कनेर।

**बीर-कर्मा (र्मन्)**—वि० [सं०] वीरोचित कार्य करनेवाला।

**बीर-काम**—वि० [सं०] वह जिसे पुत्र की कामना हो। पुत्र की इच्छा रखनेवाला।

**बीरकाव्य**—पु० [सं०] ऐतिहासिक घटनाओं के आधार पर बना हुआ वह काव्य जिसमें किसी वीर व्यक्ति के युद्ध संबंधी बड़े बड़े कार्यों का उल्लेख या वर्णन होता है। (हिन्दी में प्रेमे काव्य प्रायः रासों के नाम से प्रसिद्ध हैं।)

**बीरकुक्षि**—वि० [सं० ब० स०] (स्त्री) जो वीर पुत्र प्रसव करती हो।

**बीर-केशरी (रिन्)**—पु० [सं० स० त०] वह जो वीरों में सिंह हो।

**बीरगति**—स्त्री० [स० ष० त०] १ युद्ध-क्षेत्र में मारे जाने पर योद्धाओं को प्राप्त होनेवाली शुभ-गति। २ इन्द्रपुरी।

**बीर-गाथा**—स्त्री० [सं० ष० त०] ऐसी कविताप्रधान गाथा जिसमें किसी वीर के वीरतापूर्ण कृत्यों का वर्णन होता है।

**बीर-चक्र**—पु० [सं०] एक तरह का पदक जो भारत में शासन द्वारा बहुत वीरतापूर्ण कार्य करने पर सैनिकों को दिया जाता है।

**बीरज**—वि० [सं०] वीर से उत्पन्न।
†वि०=बिरज।

**बीरण**—पु० [सं० वि√ईर् (गमनादि)+ल्युट्—अन] १ कुश, दर्भ, काँस, दूब आदि की जाति के तृण। २ उशीर। खस। ३. एक प्राचीन ऋषि। ४. एक प्रजापति।

**बीरणी**—स्त्री० [सं० वीरण+ङीष्] १ तिरछी चितवन। २. नीची भूमि। ३ वीरण की पुत्री और चाक्षुष की माता।

**बीरता**—स्त्री० [सं० वीर+तल्+टाप्] १. वीर होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ वीर का कोई वीरतापूर्ण या साहसिक कार्य।

**बीरत्व्या (त्न्)**—पु० [सं०] कामदेव।

**बीरद्रह**—पुं० [सं० ष० त०] प्राचीन काल का एक प्रकार का सैनिक पहनावा।

**बीरपत्नी**—स्त्री० [सं० ष० त०] १ वह जो किसी वीर की पत्नी हो। २. वैदिक काल की एक नदी।

**बीर-पान**—पु० [सं० ष० त०] एक तरह का पेय (विशेषतः मादक पेय) जो युद्ध क्षेत्र में जाते समय या युद्ध में योद्धा पीते थे।

**बीरपुष्पी**—स्त्री० [स०] १ महाबला। सहदेई। २ सिंहपुष्पी। लटकन।

**बीर-पूजा**—स्त्री० [सं०] मानव समाज में प्रचलित वह भावना जिसके फलस्वरूप उन लोगों के प्रति विशेष भक्ति और श्रद्धा प्रकट की जाती है जो असाधारण रूप से अपनी वीरता का परिचय देते हैं। (हीरो-वर्शिप)

**बीर-प्रसू**—वि० [सं०] वह (स्त्री) जो वीर संतान उत्पन्न करे।

**बीरबाहु**—पु० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. रावण का एक पुत्र। ३. धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

**बीरभद्र**—पु० [सं०] १ श्रेष्ठ वीर। २. शिव की जटा से उत्पन्न एक वीर

जिसने यज्ञ का यज्ञ नष्ट कर दिया था। ३. अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा। ४. खस।

**वीर-भूमित**—स्त्री०[सं० ष० त०] आधुनिक वीरभूमि का प्राचीन नाम।

**वीर-मंगल**—पुं०[सं०] हाथी।

**वीर-मत्स्य**—पु०[सं०] रामायण के अनुसार एक प्राचीन जाति।

**वीर-मार्ग**—पु० [स० ष० त०] स्वर्ग, जहाँ वीर योद्धा मरने के बाद जाते हैं।

**वीर-मुष्टिका**—स्त्री० [सं०] पहलने का एक तरह का पुरानी चाल का छल्ला।

**वीर-रज**—पु० [सं० वीररजस्] सिंदूर।

**वीर-राघव**—पुं०[सं० कर्म० स०] रामचन्द्र।

**वीर-रात्रि**—स्त्री० [स०] गुप्त काल के गुंडों की परिभाषा में वह रात जिसमें गुंडे कोई बहुत बड़ी दुर्घटना या दुस्साहस का काम कर गुजरते थे।

**वीर-रेणु**—पु० [सं० ब० स०] भीमसेन।

**वीर-ललित**—वि०[स०] वीरों का-सा, पर साथ ही कोमल (स्वभाव)।

**वीर-लोक**—पु० [स० ष० त०] स्वर्ग।

**वीरवती**—स्त्री०[स० वीर+मतुप्, म—व,+ङीप्] १ ऐसी स्त्री जिसका पति और पुत्र दोनों जीवित और सुखी हों। २ मांसरोहिणी लता।

**वीर-वसंत**—पु०[स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**वीर-वह**—पुं०[स०] १. वह रथ जो घोड़ों द्वारा खींचा जाय। २. रथ।

**वीर-व्रत**—पु०[स० ब० स०] १. ऐसा व्यक्ति जो अपने व्रत पर अडिग रहता हो। २. निष्ठापूर्वक ब्रह्मचर्य का पालन करनेवाला।

**वीर-शयन**—पु०[स०] वीरशय्या।

**वीर-शय्या**—स्त्री०[स०ष० त०] वीरो के सोने का स्थान अर्थात् रणभूमि। लड़ाई का मैदान।

**वीरशाक**—पुं०[स० ष० त०, या मध्य० स०] बथुआ (साग)।

**वीर-शैव**—पुं०[सं० मध्यम० स०] शैवों का एक सम्प्रदाय।

**वीरसू**—वि०[स०] वीरप्रसू। (दे०)

**वीरस्थ**—वि० [स०] वीर चढ़ाया जानेवाला (पशु)।

**वीर-स्थान**—पुं०[सं० ष० त०] १. स्वर्ग, जहाँ वीर लोग मरने पर जाते हैं। २. तांत्रिक साधकों का वीरासन।

**वीरहा**—पुं० [स० वीरहन्] १. ऐसा अग्निहोत्री ब्राह्मण जिसकी अग्निहोत्रवाली अग्नि आलस्य आदि के कारण बुझ गई हो। २. विष्णु। वि० वीरो को मारनेवाला।

**वीरहोत्र**—पुं०[सं०] विंध्य पर्वत पर स्थित एक प्राचीन प्रदेश।

**वीरांतक**—वि० [स० ष० त०] वीरों को नष्ट करनेवाला। वीरों का नाशक।

पुं० अर्जुन (वृक्ष)।

**वीरा**—स्त्री०[सं० वीर+टाप्] १. ऐसी स्त्री जिसके पति और पुत्र हों। २. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन नदी। ३. मदिरा। शराब। ४. ब्राह्मी बूटी। ५. मुरामांसी। ६. क्षीर काकोली। ७. जूही आँवला। ८. केला। ९. एलुआ। १०. बिदारी कन्द। ११. काकोली। १२. चीर्कुआर। १३. शतावर।

**वीराचार**—पुं०[सं०] वाममार्गियों का एक विशिष्ट प्रकार का आचार या साधना-पद्धति जिसमें मद्य को शक्ति और मांस को शिव मानकर शक्ति-साधन किया जाता है।

**वीराचारी (रिन्)**—पुं० [सं० वीराचारिन्] [स्त्री० वीराचारिणी] वीराचार के अनुसार साधना करनेवाला वाम-मार्गी।

**वीरान**—वि०[सं० विरिण (ऊसर) से फा०] १. (प्रदेश) जिसमें बस्ती न हो। निर्जन। २. लाक्षणिक अर्थ में, शोभा-विहीन।

**वीराना**—पुं०[फा० वीरान:] निर्जन प्रदेश।

**वीरानी**—स्त्री०[फा०] वीरान होने की अवस्था या भाव।

**वीरासंसन**—पुं०[स० वीर+आ √ शंस् (कहना)+णिच्+ल्युट्—अन] ऐसी युद्ध-भूमि जो बहुत ही भीषण और भयानक जान पड़ती हो।

**वीरासन**—पु०[सं० वीर+आसन] १. योग-साधन में, एक विशिष्ट प्रकार का आसन या मुद्रा। २ मध्ययुगीन भारत में राजदरबारों में बैठने का एक विशिष्ट प्रकार का आसन या मुद्रा जिसमे दाहिना घुटना मोड़कर पैर चूतड़ के नीचे रखा जाता था और बायाँ मुड़ा हुआ घुटना सामने खड़े बल में रहता था।

**वीरिणी**—स्त्री०[सं०] १. ऐसी स्त्री जिसका पति और पुत्र दोनों जीवित तथा सुखी हों। २. वीरण प्रजापति की कन्या जो दक्ष को ब्याही थी। ३. एक प्राचीन नदी।

**वीरुध**—पु० [स० विर√रुध्+क्विन्] १ वृक्ष और वनस्पति आदि। २. ओषधि के काम मे आनेवाली वनस्पति।

**वीरुधा**—स्त्री० [स० वीरुध्+टाप्] दवा के रूप में काम आनेवाली वनस्पति। ओषधि।

**वीरेंद्र**—पु०[स० वीर+इन्द्र, ष०त०] वीरों में प्रधान या बहुत बड़ा वीर।

**वीरेश**—पु०[स० वीर+ईश, ष० त०] १. शिव। महादेव। २. वीरेन्द्र।

**वीरेश्वर**—पु०[सं० वीर+ईश्वर, ष० त०] शिव। महादेव।

**वीर्य**—पु०[स० √वीर्+यत्] १. शरीर की सात धातुओं मे से एक जिसका निर्माण सब के अंत में होता है, और जिसके कारण शरीर मे बल और कांति आती है। यह स्त्री प्रसंग के समय अथवा रोग आदि के कारण यों ही मूत्रेंद्रिय से निकलता है। इसे चरम धातु और शुक्र भी कहते हैं। २. पराक्रम। वीरता। ३. ताकत। बल। शक्ति। जैसे—बाहुवीर्य=बाहों या हाथों की शक्ति, वाचि वीर्य=बोलने की शक्ति। ४. वैद्यक के अनुसार, किसी पदार्थ का वह सार भाग जिसके कारण उस पदार्थ में शक्ति रहती है। किसी धातु का मूल तत्त्व। ५. अन्न, फल आदि का बीज जो बोया जाता है।

**वीर्यकृत्**—वि०[सं०] १. जो बल या वीर्य उत्पन्न करता हो। बलकारक। २. बलवान्। शक्तिशाली।

**वीर्यज**—वि०[सं०] वीर्य से उत्पन्न।

पुं० पुत्र।

**वीर्यवंत**—पुं०[सं०] प्लक्ष द्वीप मे रहनेवाले क्षत्रियों का एक वर्ग।

**वीर्यवत्**—वि०[सं० वीर्य+मतुप्, म—व] वीर्यवान्।

**वीर्यशुल्क**—पुं०[सं०] ऐसा काम या बात जिसे पूरा करने पर ही किसी से या किसी का विवाह होना संभव हो। विवाह करने के लिए होनेवाली शर्त।

**वीर्यांतराय**—पुं० [सं० ब० स०] पाप-कर्म जिसका उदय होने से जीव हृष्ट-पुष्ट होते हुए भी शक्ति-विहीन हो जाता है। (जैन)

**वीर्या**—स्त्री० [सं० वीर्य+टाप्]१ शक्ति। २ पुरुषत्व।

**वीर्याधान**—पु० [सं० ष० त०] वीर्य धारण करना या कराना। गर्भाधान।

**वीर्यान्वित**—वि० [सं० तृ० त०] शक्तिशाली।

**वीरा**—पु० अ० देo 'बीजा'।

**वृजद**—पु० [अ०] वजूद।

**वृसूल**—वि०, पु०=वसूल।

**वृसूली**—वि०, स्त्री०=वसूली।

**वृंत**—पु० [सं०√वृ (आच्छादन)+क्त, नि० मुम्]१ स्तन का अगला भाग। २ डंठल। ३. पंडा रखने की तिपाई। ४ कच्चा और छोटा फल। ५ वह पतला डंठल जिस पर पत्ती या फूल लगा रहता है। पर्णवृंत। (पेटिओल)

**वृंतक**—पु० [सं०√वृन्त+अच् (प्राप्त होना)+अण्]१ बैंगन। २ पोई का साग।

**वृंताकी**—स्त्री० [सं० वृन्ताक+ङीप्] बैंगन। भंटा।

**वृंद**—वि० [सं० √वृ (आच्छादित)+दन्, नुम्, गुणाभाव] बहुसमूहक। पु० १ समूह। २ सौ करोड़ की संख्या। ३ फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का मुहूर्त। ४ ढेर। राशि। ५ गुच्छा। ६ गले में होनेवाला अर्बुद।

**वृंदवाद्य**—पु० [सं०] देo 'वाद्यवृंद'।

**वृंदसंगीत**—पु० [सं०] समवेतगान। सहगान। गाना।

**वृंदा**—स्त्री० [सं० वृंद+टाप्] राधिका का एक नाम।

**वृंदाक**—पु० [सं० वृन्दा+कन्] परगाछा या बाँदा नामक वनस्पति।

**वृंदार**—पु० [सं० वृन्द√ऋ (गमन)+अण्]देवता।

**वृंदारक**—पु० [सं० वृन्द+आरकन्] देवता या श्रेष्ठ व्यक्ति।

**वृंदारण्य**—पु० [सं० ष० त०]१ वृन्दावन।

**वृंदावन**—पु० [सं० ष० त०]१ मथुरा के समीप स्थित एक वन। २ दक्षिण भारत में बसी हुई एक आधुनिक बस्ती जो प्रसिद्ध तीर्थस्थल है। ३ वह स्थान जिसमें तुलसी के पौधे हों।

**वृंदावनेश्वर**—पु० [सं०]श्रीकृष्ण।

**वृंदावनेश्वरी**—स्त्री० [वृन्दावनेश्वर+ङीप्] राधिका।

**वृंदी**—वि० [सं० वृन्द+इनि] जो समूहों में बँटा हो।

**वृंहण**—वि० [सं० √बृंह् (वृद्धि करना)+ल्यु—अन] पुष्ट करनेवाला। पु० १ वह पदार्थ जो पुष्टिकारक हो। बलवर्द्धक द्रव्य। २ एक प्रकार का धूमशाल। ३ सुश्रुत का।

**वृक**—पु० [सं०] [स्त्री० वृकी] १ भेड़िया। २ गीदड़। ३. कौआ। ४ चोर। ५ वज्र। ६ क्षत्रिय। ७ अगस्त वृक्ष।

**वृककेतु**—स्त्री० [सं० वृककेतन+टाप्] कृष्ण की माता देवकी।

**वृकयूप**—पु० [सं० कर्म० स०] १. एक तरह का सुगंधित धूप। २ सारंगीन।

**वृका**—स्त्री० [सं० वृक+टाप्] पाढा (लता)।

**वृकाक्ष**—पु० [सं० ब० स०] १. जंगली कुत्ता। २. चोर।

**वृकोदर**—पु० [सं० ब० स०] १ भीमसेन का एक नाम। २ ब्रह्मा।

**वृक्क**—पु० [सं० वृक्क] पशु, पक्षियों और स्तनपायी जीवों के पेट के अन्दर का एक अंग जो दो बड़ी ग्रन्थियों या गुल्मों के रूप में होता है और जिसके द्वारा मूत्र शरीर के बाहर निकलता है। गुरदा। (किडनी)

**वृक्क शोथ**—पु० [सं०] एक घातक रोग जिसमें वृक्क या गुरदे सूज जाते हैं। (नेफाइटिस)

**वृक्का**—स्त्री० [सं० वृक्क+टाप्] हृदय।

**वृक्ष**—पु० [सं०√व्रश्च् (छेदने)+स, किन्] १. मोटे तथा कठोर तनेवाली वनस्पतियों का एक वर्ग। पेड़। दरख्त। २ दे० 'वंश-वृक्ष'।

**वृक्षक**—पु० [सं० वृक्ष+कन्] १ वृक्ष। पेड़। २. छोटा पेड़।

**वृक्ष कुक्कुट**—पु० [सं०] जंगली कुत्ता।

**वृक्षचर**—पु० [सं० वृक्ष√चर+ट] बंदर।

**वृक्ष-रोहण**—पु० [सं०] १ कुछ वृक्षों का कृत्रिम उपायों या विशिष्ट प्रक्रियाओं से असमय में ही खिलने लगना या खिलाया जाना। २. भारतीय साहित्य में कवि प्रसिद्धि (देखें) के अन्तर्गत एक प्रकार की मान्यता और उसका वर्णन। जैसे—सुंदरी युवतियों के पैर की ठोकर से अशोक में फूल लगना और खिलना, उनके नाचने से कचनार में फूल आना, उनके गाने से आम में मंजरियाँ लगना, उनके आलिंगन से कुरबक का खिलना, उनके मुस्कराने से चम्पा का और देखने मात्र से तिलक का खिलना आदि। (दे० 'कवि-प्रसिद्धि' और 'कवि-समय')

**वृक्ष-यूप**—पु० [सं०] खीष (पेड़)।

**वृक्षनाथ**—पु० [सं० ष० त०] वृक्षों में श्रेष्ठ, बड़। बरगद।

**वृक्ष-निर्यास**—पु० [सं० ष० त०] वृक्ष के तने, शाखा आदि में से निकलने-वाला तरल द्रव्य। निर्यास।

**वृक्ष-प्रतिष्ठा**—स्त्री० [सं०] वृक्ष लगाना। वृक्षरोपण।

**वृक्ष-भक्षा**—स्त्री० [सं० वृक्ष√भक्ष्+अच्+टाप] बाँदा नामक वनस्पति।

**वृक्ष-मूलिक**—वि० [सं०] वृक्ष के मूल में होनेवाला अथवा उससे संबंध रखनेवाला।

**वृक्षराज**—पु० [सं० ष० त०] परजाता। पारिजात।

**वृक्षवल्ली**—स्त्री० [सं० वृक्ष√रुह्+क+टाप्] १ परगाछा नाम का पौधा। २ रुद्रवन्ती। ३ अमरबेल। ४ जमुका लता। ५. बिदारी कंद। ६ कपी नामक पौधा।

**वृक्ष-रोपण**—पु० [सं०] सामूहिक रूप से वृक्ष लगाने की क्रिया या भाव। पौधों आदि को इस उद्देश्य से कहीं प्रतिष्ठित करना कि वे आगे चलकर बड़े पेड़ का रूप धारण करें।

**वृक्ष-रोपक**—वि० [सं०] वृक्ष-रोपण करनेवाला।

**वृक्ष-वासी**—वि० [सं० वृक्षवासिन्] [स्त्री० वृक्षवासिनी] जो वृक्षों पर रहता हो अथवा प्राकृतिक रूप से वृक्षों पर रहने के लिए उपयुक्त हो। (आरबोरियल)

**वृक्ष-संकट**—पु० [सं० ब० स०] वह पतला रास्ता जो घने पेड़ों के बीच से दूर तक चला गया हो।

**वृक्ष-स्नेह**—पु० [सं० ष० त०] वृक्ष निर्यास। (दे०)

**वृक्षादन**—पु० [सं० वृक्ष√अद् (खाना)+ल्युट्—अन] १. कुल्हाड़ी २. अश्वत्थ। पीपल। ३ पयाल या चिरौंजी का पेड़। ४ मधु मक्खियों का छत्ता।

**वृक्षाम्ल**—पुं० [सं० ष० त०, मध्यम स०] १. इमली। २ चूक नाम की खटाई। ३ अमडा। ४. अमर बेल।

**वृक्षायुर्वेद**—पु० [सं० ष० त०] वह शास्त्र जिसमें वृक्षों के रोगों और उनकी चिकित्सा का वर्णन होता है।

**वृक्षाम्ल**—पु० [सं० ब० स०] १ वह जिसने किसी वृक्ष पर अपना घर (घोंसला) बनाया हो। २. पक्षी। चिड़िया।

**वृक्षावास**—पु० [सं० ब० स०] तपस्वी, साँप या कोई अन्य प्राणी जो वृक्ष की कोटर मे रहता हो।

**वृक्षोत्थ**—वि० [स० वृक्ष+उद्√स्था (ठहरना)+क] वृक्ष पर उत्पन्न होनेवाला।

**वृक्षोत्पल**—पु० [स० स० त०] कनियारी या कनकचम्पा नामक पेड़।

**वृक्षीका (कस्)**—पु० [स० ब० स०] वनमानुष।

**वृक्ष्य**—पु० [स० वृक्ष+यत्] पेड़ का फल।
वि० वृक्ष-सबधी।
पु० फल, फूल, पत्ती आदि जो वृक्ष मे लगते हैं।

**वृज**—पु० [स०√वृज् (त्याग करना)+अच्] व्रज।

**वृजन**—पु० [स०√वृज् (त्याग करना)+ल्युट्–अन] १. केश विशेषत कुचित केश। २ बल। शक्ति। ३. युद्ध। लड़ाई। ४. निपटारा। निराकरण। ५ दुष्कर्म। पाप। ६ दुश्मन। शत्रु। ७. शरीर के बाल।
वि० १ टेढ़ा। वक्र। २ कुटिल। ३ नश्वर।

**वृजन्य**—वि० [स० कर्म० स०] बहुत ही सीधा-सादा। परम साधु (व्यक्ति)।

**वृजि**—स्त्री० [स०√वृज् (त्याग करना)+इन्] १. व्रज भूमि। २. बिहार का तिरहुत या मिथिला प्रदेश जहाँ पहले विदेह, लिच्छवि आदि रहते थे।

**वृजिन**—पु० [स०√वृज् (त्याग करना)+इनच्, कित्] १ पाप। गुनाह। २ कष्ट। दुःख। ३. शरीर पर की खाल। त्वचा। ४. रक्त। लहू। ५ शरीर। ६. शरीर पर के बाल।
वि० १. टेढ़ा। वक्र। २ पापी।

**वृज्य**—वि० [स०√वृज् (त्याग करना)+यत्] जो घुमाया या मोड़ा जा सके।

**वृत**—वि० [सं०√वृ (वरण करना)]+क्त] १. जो किसी काम के लिए नियुक्त किया गया हो। मुकर्रर किया हुआ। २. ढका हुआ। ३. प्रार्थित। ४. स्वीकृत। ५. गोलाकार।
†पु० =व्रत।

**वृति**—स्त्री० [सं०√वृ (वरण करना)+क्तिन्] १. वह जिससे कोई चीज घेरी या ढकी जाय। २. नियुक्ति। ३. छिपाना। गोपन।

**वृत्त**—वि० [स० √वृत् (व्यवहार करना)+क्त] १. जो अस्तित्व मे आ चुका हो। २. जो घटित हो चुका हो। ३. मृत। ४. गोल।
पु० १ धर्म या वेद-शास्त्र के अनुकूल आचरण या व्यवहार। २. वृतान्त। हाल। ३ चरित्र। ४. वर्णिक छद। (पे०) ५. वह क्षेत्र जो चारो ओर से किसी ऐसी रेखा से घिरा हो जिसका प्रत्येक बिंदु उस क्षेत्र के मध्य बिंदु से समान अंतर पर हो। गोल। मडल। ६ ज्यामिति मे उक्त प्रकार की रेखा जो किसी क्षेत्र को घेरती हो। (सर्किल, अन्तिम दोनों अर्थों मे) ७ स्तन का अग्र भाग। ८ गूंदा नाम की घास। ९. सफेद ज्वार। १०. अंजीर। सतिवन। १०. कछुआ। ११. वृत्ति। १२. वृत्तासुर।

**वृत्तक**—पुं० [सं० वृत्त+कन्] १. ऐसा गद्य जिसमें कोमल तथा मधुर अक्षरों और छोटे-छोटे समासों का व्यवहार किया गया हो। २. छंद।

**वृत्त-खंड**—पु० [स० ष० त०] ज्यामिति मे, किसी वृत्त का वह अश या खंड जो चाप तथा दो अर्द्ध व्यासा से घिरा हो। (सेक्टर)

**वृत्त-गंधि**—स्त्री० [सं०] साहित्य मे ऐसा गद्य जिसमे अनुप्रासों की अधिकता होती है तथा जो पद्य का-सा आनन्द देता है।

**वृत्त-चित्र**—पु० [सं०] आज-कल सिनेमा का वह चित्र जिसम किसी विशिष्ट कार्य या घटना के मुख्य-मुख्य अग-उपाग अथवा ब्योरे की और बातें लोगों की जानकारी या ज्ञानवृद्धि के लिए दिखाई जाती है। (डाक्यूमेन्टरी फिल्म) जैसे—दुर्गापुर के लोहे के कारखाने या राष्ट्रपति की जापान-यात्रा का वृत्त-चित्र।

**वृत्त-चेष्टा**—स्त्री० [स०] १. स्वभाव। प्रकृति। मिजाज। २ चाल-ढाल।

**वृत्त-पत्र**—पु० [स०] १. वह पंजी जिसमे दैनिक कार्यों, घटनाओं आदि का संक्षिप्त उल्लेख हो। २. किसी सस्था या सभा के निश्चयों, कार्यों आदि के विवरण अथवा तत्सबधी लेख आदि प्रकाशित करनेवाला सामयिक पत्र। (जर्नल) २. पुत्रदात्री नाम की लता।

**वृत्तपर्णी**—स्त्री० [स० वृत्तपर्ण+ङीप्] १. पाठा। पाढा। २ बड़ी शखपुष्पी।

**वृत्तपुष्प**—पु० [स०] १. सिरिस का पेड़। २ कदब। ३. भू-कदब। ४. जल-बेत। ५. सेवती। ६. मोतिया। ७ चमेली।

**वृत्तपुष्पा**—स्त्री० [सं० वृत्तपुष्प+टाप्] १ नागदमनी। २. सेवती।

**वृत्त-फल**—पु० [स०] १ कोई गोलाकार फल। २. काली या गोल मिर्च। ३. अनार। ४ बेर। ५ कपित्थ। कैथ। ६. लाल चिचड़ा। ७. करज। ८ तरबूज। ९. खरबूजा।

**वृत्तफला**—स्त्री० [स० वृत्तफल+टाप्] १. बैगन। भटा। २. आँवला।

**वृत्तबंध**—पु० [स०] छदोबद्ध रचना।

**वृत्तवान् (वत्)**—वि० [स० वृत्त+मतुप्, म–व] जिसका आचरण उत्तम हो। सदाचारी।

**वृत्तशाली (लिन्)**—वि० [सं०]=वृत्तवान्।

**वृत्तांत**—पुं० [सं०] १. किसी घटना, वस्तु, विषय, स्थिति आदि की जानकारी कराने के उद्देश्य से उससे सबद्ध कही या बतलाई जानेवाली बातें या किया जानेवाला वर्णन। २. समाचार। हाल।

**वृत्ता**—स्त्री० [स० वृत्त+टाप्] १ शिंशपा नाम का क्षुप। २ रेणुका नामक वनस्पति। ३ प्रियगु। ४. मांस-रोहिणी। ५ सफेद सेम। ६. नाग-दमनी।

**वृत्तानुवर्त्ती (र्त्तिन्)**—पु० [सं०+वृत्त+अनु√वृत् (व्यवहार करना)+णिनि] वृत्तवान्। (वै०)

**वृत्तानुसारी (रिन्)**—वि० [सं० वृत्त+अनु√सृ (गमन आदि)+णिनि] शुभ आचरण करनेवाला।

**वृत्तार्ध**—पु० [स० ष० त०] वृत्त का आधा भाग जो व्यास तथा चाप से घिरा होता है।

**वृत्ति**—स्त्री० [सं०√वृत्+क्तिन्] १. चक्कर खाना। घूमना। २. किसी वृत्त या गोले की परिधि। वृत्त। ३. वर्तमान होने की अवस्था, दशा या भाव। ४. चित्त, मन आदि का कोई व्यापार। जैसे—चित्त-वृत्ति। ५. उक्त के आधार पर योग में चित्त की विशिष्ट अवस्थाएँ जो पाँच प्रकार की मानी गई हैं। यथा—क्षिप्त, मूढ़, विक्षिप्त, एकाग्र, और निरुद्ध। ६. कोई ऐसी क्रिया, गति आदि जिसके फलस्वरूप

कुछ होना हो। कार्य। व्यापार। ६. कोई काम करने का ढंग या प्रकार। ८ आचरण और व्यवहार तथा इनसे संबंध रखनेवाला शास्त्र। आचार-शास्त्र। ९ वह कार्य या व्यापार जिसके द्वारा किसी की जीविका चलती हो। जीवन-निर्वाह का साधन। धंधा। पेशा। जैसे—आकाश-वृत्ति, यजमानी वृत्ति, वेश्यावृत्ति, सेवावृत्ति आदि। १०. जीविका-निर्वाह, भरण-पोषण आदि के लिए नियमित रूप से मिलनेवाला धन। जैसे—छात्रवृत्ति। ११. किसी ग्रन्थ विशेषतः सूत्रग्रन्थ का अर्थ और आशय स्पष्ट करनेवाली संक्षिप्त परन्तु गंभीर टीका या व्याख्या। जैसे—अष्टाध्यायी की काशिका वृत्ति। १२. शब्दों की अभिधा, लक्षणा और व्यंजना नाम की अर्थ-बोधक शक्तियाँ। शब्द-शक्ति। १३. व्याकरण में, ऐसी गूढ़ वाक्य-रचना जिसकी व्याख्या करनी पड़ती हो। १४. नाटकों में, आशय और भाव प्रकट करने की एक विशिष्ट शैली जिसे कुछ आचार्य काव्य की रीतियों के अन्तर्गत और कुछ शब्दालंकार के अन्तर्गत मानते हैं।

**विशेष**—प्राचीन आचार्य कायिक और मानसिक चेष्टाओं को ही वृत्ति मानते थे, परन्तु परवर्ती आचार्यों ने इसे विकसित और विस्तृत करके इन्हें काव्यगत रीतियों के समकक्ष कर दिया था, और इनके ये चार भेद कर दिये थे—कौशिकी, आरभटी, भारती और सात्वती तथा अलग अलग रसों के लिए इनका अलग अलग विधान कर दिया गया था। नाटकों में भिन्न-भिन्न रसों के साथ अलग-अलग वृत्तियों का संबंध होने के कारण प्रत्येक रस के लिए अनुकूल और उपर्युक्त वर्ण-रचना को भी 'वृत्ति' कहने लगे थे, जिससे 'वृत्यनुप्रास' पद बना है। परवर्ती आचार्यों ने इन वृत्तियों का नाटकों के सिवा काव्य में भी आरोप किया था, और इनके उपनागरिका, कोमला, परुषा आदि भेद निरूपित किये थे। नाट्यशास्त्र की 'प्रवृत्ति' और 'वृत्ति' के लिए दे० 'प्रवृत्त' ६ का विशेष। १५. वृत्तान्त। हाल। १६. प्रकृति। स्वभाव। १७. प्राचीन काल का एक प्रकार का संहारक अस्त्र।

**वृत्ति-कर**—पु० [सं० ष० त०] वह कर जो कोई पेशा या वृत्ति करनेवाले लोगों पर लगता है। पेशे पर लगनेवाला कर। (प्रोफेशन टैक्स)

**वृत्तिकार**—पुं० [सं० वृत्ति√कृ+अण्] वह जिसने वार्तिक लिखा हो। व्याख्या ग्रन्थ लिखनेवाला।

**वृत्ति-विरोध**—पु० [स० स० त०] भारतीय साहित्य में रचना का एक दोष जो उस समय माना जाता है, जब वृत्तियों (विशेष दे० 'वृत्ति' ५ और ६) के नियमों का ठीक तरह से पालन नहीं होता। जैसे—शृंगार रस के वर्णन में परुष वर्णों का प्रयोग करना वृत्ति-विरोध है।

**वृत्तिस्थ**—वि० [सं० वृत्ति√स्था+क] १. जो अपनी वृत्ति पर स्थित हो। २. जो अपनी वृत्ति से जीविका उपार्जित करता हो।

**वृत्तीय**—वि० [सं०] १. वृत्ति-संबंधी। वृत्ति का। २. जो वृत्त के रूप में हो। गोलाकार।

**वृत्य**—वि० [स०√वृत्+क्यप्] १. जो घेरा जाने को हो। २. जिसकी वृत्ति लगने को हो।

**वृत्यनुप्रास**—पुं० [स० मध्यम० स०] एक प्रकार का शब्दालंकार जो उस समय माना जाता है जब किसी चरण या पद में वृत्ति के अनुकूल वर्णों की आवृत्ति होती है। यह अनुप्रास का एक भेद है।

**विशेष**—वृत्तियाँ तीन हैं—उपनागरिका या वैदर्भी, गौड़ी और कोमला या पांचाली। इस प्रकार वृत्यनुप्रास के भी तीन भेद किये गए हैं—उपनागरिका वृत्यनुप्रास, परुषानुप्रास और कोमला वृत्यनुप्रास।

**वृत्र**—पु० [स०√वृत्+रक्] १. अन्धकार। अंधेरा। २. बादल। मेघ। दुश्मन। शत्रु। ४. एक असुर जो त्वष्टा का पुत्र था तथा जिसका वध इन्द्र ने किया था।

**वृत्रघ्न**—पुं० [सं० वृत्र√हन् (मारना)+क] १. वृत्र नामक असुर को मारनेवाले इन्द्र। २ वैदिक काल का गंगा-तटपर का एक देश।

**वृत्रघ्नी**—स्त्री० [सं० वृत्रघ्न+ङीप्] एक नदी। (पुराण)

पु०=वृत्रघ्न।

**वृत्रत्व**—पु० [स० वृत्र+त्व] १. वृत्र का धर्म या भाव। २. दुश्मनी। शत्रुता।

**वृत्रनाशन**—पुं० [सं० ष्ठि० त०] वृत्र नामक असुर को मारनेवाले इन्द्र।

**वृत्रशंकु**—पुं० [स०] एक प्रकार का खभा। (वैदिक)

**वृत्रहा**—पु० [स० वृत्र√हन्+विक्प्] वृत्रासुर को मारनेवाले इन्द्र।

**वृत्रारि**—पु०[स० ष० त०] इंद्र।

**वृत्रासुर**—पु०[सं० मध्यम० स०] वृत्र नामक असुर। दे० 'वृत्र'।

**वृथा**—वि० [स०√वृ (वरण करना)+थाल्] जिसका कोई उपयोग या प्रयोजन न हो। व्यर्थ। फजूल।

अव्य० १. बिना किसी आवश्यकता या प्रयोजन के। २. मूर्खता या भूल से।

**वृथात्व**—पु०[स० वृथा+त्वल्] वृथा होने की अवस्था या भाव।

**वृथा-मांस**—पुं०[स०] ऐसा मांस जिसका व्यवहार या सेवन न किया जा सकता हो। निषिद्ध मांस।

**वृद्ध**—वि०[स०] [स्त्री० वृद्धा, भाव० वृद्धि] १. बढ़ा हुआ। २ अच्छी या पूरी तरह से बढ़ा हुआ। ३. गुण, विद्या आदि के विचार से औरों की अपेक्षा बहुत चतुर, विद्वान् या बहुत श्रेष्ठ। जैसे—तर्क, व्याकरण आदि शास्त्रों के अध्ययन से वृद्ध होना ४. जो अपनी युवा विशेषतः प्रौढ़ावस्था पार कर चुका हो। बुड्ढा। ५ पुराना। ६. जो खूब सोम-पान करता हो। जिसकी उमर सोमपान करने में ही बीती हो। पु०[√वृध्+क्त] [भाव० वृद्धता, वृद्धत्व] १. वह जो अपनी औसत आयु आधी से अधिक पार कर चुका हो। बुड्ढा। मनुष्यों में साधारणतः ६० वर्ष या इससे अधिक अवस्थावाला व्यक्ति। ३. पंडित। विद्वान्। ४. वह जो श्रेयोयोग्यता आदि के विचार से औरों की अपेक्षा श्रेष्ठ तथा सम्मानित हो। (एल्डर) ५. वृद्धावस्था। बुढ़ापा। ६. गैलज नामक गन्ध-द्रव्य।

**वृद्ध-काक**—पुं०[स० कर्म० स०] द्रोण काक। पहाड़ी कौवा।

**वृद्ध-केशव**—पुं०[स०] सूर्य की प्रतिमा। (पुराण)

**वृद्ध-गंगा**—स्त्री०[स०] हिमालय की एक छोटी नदी।

**वृद्धता**—स्त्री० [स० वृद्ध+तल्+टाप्] वृद्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव।

**वृद्धत्व**—पु०[सं० वृद्ध+त्वल्]=वृद्धता।

**वृद्ध-दारु**—पुं०[स०] १. सिरिस का पेड़। २. सरल का पेड़।

**वृद्ध-नाभि**—पुं०[सं०] जिसकी तोंद निकली या बढ़ी हुई हो।

**वृद्ध-पराशर**—पु०[सं०] प्रसिद्ध धर्मशास्त्रकार।

**वृद्ध-प्रपितामह**—पु० [सं०] [स्त्री० वृद्ध प्रपितामही] दादा का दादा। परदादा का पिता।

**वृद्ध-प्रपिती**—स्त्री०[सं० कर्म० स०] १. कुटनी। २. धाय। दाई।

**वृद्धबला (ला)**—पु० [सं० वृद्ध (बृहस्पति)√भू (सुनना)+असुन्, ब० स०] इंद्र।

**वृद्धभाजक**—पुं०[सं० ष० त०] कापालिक।

**वृद्धांगुलि**—स्त्री०[सं० कर्म० स०] अँगूठा।

**वृद्धार्हत**—वि०[सं० ष० त० कर्म० स०] सम्मान या प्रतिष्ठा के योग्य।

**वृद्धा**—स्त्री०[सं० वृद्ध+टाप्] वह स्त्री जो अवस्था मे वृद्ध हो गई हो। बुढ़ढी।
वि० बुढ़िया।

**वृद्धाचल**—पुं०[सं० मध्यम० स०] दक्षिण भारत का एक तीर्थ।

**वृद्धावस्था**—स्त्री०[सं०] वृद्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव। बुढ़ापा।

**वृद्धि**—स्त्री०[स०√वृध् (बढ़ना)+क्तिन्] १. वृद्ध होने की अवस्था या भाव। २ गुन, मान, मात्रा, सख्या आदि में अधिकता होना जो उन्नति, प्रगति, विकास आदि का सूचक होता है। जैसे—वेतन, सतान आदि की वृद्धि। ३ उक्त के आधार पर होनेवाली अधिकता जो उन्नति, प्रगति, विकास आदि की सूचक होती है। ४. विशेषत: वृत्ति, वेतन आदि मे होनेवाली अधिकता। (इन्क्रीमेंट) ५. अभ्युदय। समृद्धि। ६. ब्याज। सूद। ७ राजनीति मे हृषि, वाणिज्य, दुर्ग, सेतु, कुजरबंधन, कन्याकर वलादान और सैन्यसन्निवेश इन आठों वर्गों का उपचय। वर्द्धन। स्फाति। ८. वह अशीच जो घर में संतान उत्पन्न होने पर सगे-सबधियों को होता है। ९. एक प्रकार की लता जो अष्ट वर्गों के अन्तर्गत मानी गई है। १०. फलित-ज्योतिष में विषकभ आदि २७ योगों के अन्तर्गत ग्यारहवाँ योग।

**वृद्धिक**—पु०[स०] लिखाई मे एक प्रकार का चिह्न जो इस बात का सूचक होता है कि लिखाई या छपाई में यहाँ कोई पद या शब्द भूल से बढ़ा दिया गया है। यह इस प्रकार लिखा जाता है—∧

**वृद्धि-कर्म**—पु० [सं० ष० त०]=वृद्धि-श्राद्ध।

**वृद्धिका**—स्त्री०[सं० वृद्धि+कन्+टाप्] १. ऋद्धि नाम की ओषधि। २. सफेद अपराजिता। ३. अर्कपुष्पी।

**वृद्धि-जीवक**—पु०[सं० तृ० त०] वह जो वृद्धि या ब्याज से अपना निर्वाह करता हो। सूद से अपना निर्वाह करनेवाला। महाजन।

**वृद्धिद**—वि०[सं० वृद्धि√दा+क] वृद्धि देनेवाला।
पुं० १. जीवक नामक ऋषभ। २ शूकरकन्द।

**वृद्धि-पत्र**—पु०[सं० ब० स०] चिकित्सा के काम आनेवाला एक तरह का शस्त्र। (सुश्रुत)

**वृद्धि-योग**—पु०[सं० मध्यम० स०] फलित ज्योतिष के २७ योगों मे से एक योग।

**वृद्धि-श्राद्ध**—पुं०[सं० ष० त०] नांदीमुख नामक श्राद्ध जो मांगलिक अवसरों पर होता है।

**वृद्धि-सानु**—पुं०[सं०] १. पुरुष। आदमी। २. कर्म। कार्य। ३. पत्ता।

**वृध्य**—वि०[स०√वृध् (बढ़ना)+क्यप्] १. बूढ़ों में होनेवाला। वृद्ध-संबंधी। २. जिसकी वृद्धि हो सकती हो।

**वृन्ताक**—पुं०=वर्ण।

**वृक्ष**—पुं०[सं०√वृ (वरण करना)+शक्] १. अड़ूसा। २. चूहा। ३. अदरक।
†पुं०=वृष।

**वृश्चन**—पुं० [सं०√व्रश्च् (काटना)=ल्युट्-अन, ब—व्] वृश्चिक। बिच्छू।

**वृश्चिक**—पुं०[स०√व्रश्च् (काटना)+किकन्, ब—व्] १. मकड़ी की तरह का पर उससे बड़ा एक तरह का जंतु जिसका डंक बहुत अधिक जहरीला होता है। २. ज्योतिष में बारह राशियो में से आठवीं राशि जिसक तारे बिच्छू का-सा आकार बनाते हैं। (स्कार्पियो)। ३ अगहन मास जिसमें प्राय: सूर्योदय के समय वृश्चिक राशि का उदय होता है। ४. वृश्चिकाली या बिच्छू नाम की लता। ५. गोबर मे उत्पन्न होनेवाला कीड़ा। घूक कीट। ६. मदन वृक्ष। मैनफल। ७. गवह-पूरना। पुनर्नवा।

**वृश्चिकजी**—स्त्री०[सं० ब० स०, ङीप्] मूसाकानी।

**वृश्चिकाली**—स्त्री०[सं०] १. बिछुआ या बिच्छू नाम की घास। २. सफेद गवहपूरना। ३. पिठवन।

**वृश्चिकाली**—स्त्री०[सं० ब० स०] बिच्छू नाम की लता। जिसकी जड़ का प्रयोग ओषधि के रूप मे होता है।

**वृश्चिकेश**—पु०[सं० ष० त०] वृश्चिक राशि के अधिष्ठाता देवता; वृष (ग्रह)।

**वृश्चिपत्री**—स्त्री०[सं० वृश्चिपत्र+ङीप्, ष० त०] १. वृश्चिकाली। २. मेढ़ासिंगी।

**वृष**—पुं०[सं०√वृष् (सीचना)+क] १. साँड़। २. कामशास्त्र के अनुसार चार प्रकार के पुरुषो में से एक जो शक्तिगी जाति की स्त्री के लिए उपयुक्त कहा गया है। ३. स्त्री का पति। स्वामी। ४. धर्म जिसके चार पैर माने जाते हैं और जो इसी कारण साँड़ के रूप मे माना जाता है। ५. पुराणानुसार ग्यारहवें मन्वन्तर के इद्र का नाम। ६. श्रीकृष्ण का एक नाम। ७. दुश्मन। शत्रु। ८ गेहूँ। ९. चूहा। १०. अड़ूसा। ११ ऋषभक नामक ओषधि। १२. धमासा।

**वृषक**—पु०[सं०] १. साँड़। २. एक प्रकार का साँप। ३ चूहा। ४. गेहूँ। ४. भिलावाँ। ५. अडूसा। ६. ऋषभक नामक ओषधि।

**वृषकर्णी**—स्त्री०[सं०] १. सुदर्शन नाम की लता। २. एक प्रकार का विधारा।

**वृषका**—स्त्री०[सं० वृषक+टाप्] एक नदी। (पुराण)

**वृष केतन**—पुं०[सं० ब० स०] शिव। महादेव।

**वृषकेतु**—पुं०[सं० ब० स०] १. शिव या महादेव, जिनकी ध्वजा पर बैल का चिह्न माना जाता है। २. लाल गवहपुरना।

**वृषकेतु**—पुं० [सं० मध्यम० स०, ब० स० वा] वर्षा करनेवाले इंद्र।

**वृषगण**—पुं०[सं० ष० त०] वैदिक ऋषियो का एक गण।

**वृष-चक्र**—पुं० [सं० ष० त०] फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का चक्र जिसमें एक बैल बनाकर उसके भिन्न-भिन्न अंगों मे नक्षत्रों आदि के नाम लिखते हैं और तब उसके द्वारा खेती सबधी शुभाशुभ फल आदि निकालते हैं।

**वृषभ**—पुं० [सं०√वृष (उत्पन्न करना)+क्यु—अन] १. इंद्र। २.

कर्ण। ३ विष्णु। ४. पाँडा के कारण होनेवाली बेहोशी। ५. अहंकोच। ६ साड़। ७. घोड़ा। ८. पेड़। वृक्ष।

**वृषण-कण्डु**—स्त्री० [स० ष० त०] १. एक रोग जिसमें पसीने, मैल आदि के कारण अडकोष के आसपास फुन्सियाँ निकल आती है। २ उक्त रोग में निकलनेवाली फुन्सियाँ।

**वृषणाश्व**—पु० [सि० ब० स० या ष० त०] १. एक प्रसिद्ध वैदिक राजा। २ इन्द्र के घोड़े का नाम।

**वृषदर्भ**—पु० [स० ब० स०] १. श्रीकृष्ण का एक नाम। २. राजा शिबि का एक पुत्र।

**वृषदेवा**—स्त्री० [स० ब० स०] वायु पुराण के अनुसार वसुदेव की एक स्त्री।

**वृषध्वज**—पु० [स० ब० स०] १. शिव। महादेव। २ गणेश। ३. पुण्यशील व्यक्ति। पुण्यात्मा। ४. पुराणानुसार एक पर्वत।

**वृषध्वजा**—स्त्री० [स०] दुर्गा का नाम।

**वृष-नाशन**—पु० [स०] १. पुराणानुसार श्रीकृष्ण का एक नाम। २. वाय-विडंग।

**वृषपति**—पु० [स० ष० त०] १. शिव। महादेव। २ नपुंसक।

**वृषपर्णी**—स्त्री० [स०] १ मूसाकानी। आखुकर्णी २. दंती। ३ सुदर्शना लता।

**वृषपर्व्वा**—पु० [स० ब० स०, वृषपर्व्वन्] १ शिव। महादेव। २ विष्णु। ३. एक असुर या दैत्य जिसने दैत्य-गुरु शुक्राचार्य की सहायता से बहुत दिनों तक देवताओं के साथ युद्ध ठान रखा था। ४ भँगरा। ५. करेला। ६ एक प्रकार का तृण।

**वृषप्रिय**—पु० [स० ब० स०] विष्णु।

**वृषभ**—पु० [स०√वृष्+अभच्, वित्] १ बैल या साँड़। २ कामशास्त्र के अनुसार वह श्रेष्ठ पुरुष जो शास्त्रिनी स्त्री के लिए उपयुक्त हो। ३ सूर्य की एक वीथी। ४. एक प्राचीन तीर्थ। ५. साहित्य में वैदर्भी रीति का एक भेद। ६ कान का विवर। ७. ऋषभ नामक ओषधि।

**वृषभ-केतु**—पु० [स० ब० स०] शिव का एक नाम।

**वृषभ-गति**—पु० [स० ब० स०] १. शिव। महादेव। २ ऐसी सवारी जिसे बैल खींचते हों।

**वृषभत्व**—पु० [स० वृषभ्+त्वल्] वृषभ होने की अवस्था, धर्म या भाव। वृषभता।

**वृषभध्वज**—पु०=वृषभध्वज (शिव)।

**वृषभ-ध्वज**—पु० [स० ब० स०] महादेव जिनकी ध्वजा पर वृषभ की मूर्ति बनी होती है।

**वृषभ-वीथी**—स्त्री० [स०] सूर्य्य की एक वीथी।

**वृषभांक**—पु० [स० ब० स०] महादेव। शिव।

**वृषभा**—स्त्री० [स० वृषभ+टाप्] पुराणानुसार एक प्राचीन नदी।

**वृषभाक्ष**—पुं० [स० ब० स०] विष्णु।

**वृषभानु**—पु० [स०] राधिका जी के पिता। (पुराण)

**वृषभानुजा**—स्त्री० [स० वृषभानु√जन्+ड+टाप्] राधिका जी।

**वृषभान-नंदिनी**—स्त्री० [स० ष० त०] राधिका जी।

**वृषभासा**—स्त्री० [स०] द्वादूरी।

**वृषभी**—स्त्री० [स० वृषभ+ङीष्] १. विधवा स्त्री। २. केवाँच। कौंछ।

**वृषरवि**—पु०=वृषभानु।

**वृषल**—वि० [सं०√वृष्+कलच्] [भाव० वृषलता] १. जिसे धर्म आदि का कुछ भी ज्ञान न हो, फलतः कुकर्मी और पापी। २. शूद्र। ३. बदचलनी या शूद्रता के कारण जातिच्युत किया हुआ ब्राह्मण या क्षत्री। ४. घोड़ा। ५. चन्द्रगुप्त का एक नाम।

**वृषली**—स्त्री० [स०] १. बारह वर्षीय कुमारी कन्या विशेषतः ऐसी कन्या जिसे मासिक धर्म होने लगा हो। २ रजस्वला स्त्री। ३. शूद्र-पत्नी। ४. बाँझ स्त्री अथवा मरा हुआ पुत्र जनमनेवाली स्त्री।

**वृषलीपति**—पु० [स० ष० त०] वह पुरुष जिसने ऐसी कन्या से विवाह किया हो जो विवाह से पहले ही रजस्वला हो चुकी हो।

**वृषवासी (सिन्)**—पु० [स०] केरल स्थित वृष पर्वत पर रहनेवाले अर्थात् शिव जी।

**वृषवाहन**—पु० [स० ष० त०] शिव। महादेव।

**वृषशत्रु**—पु० [स०] विष्णु।

**वृषस्कंध**—पु० [स० ब० स०] शिव। महादेव।

**वृषांतक**—पु० [स० ष० त०] विष्णु।

**वृषा**—स्त्री० [स० वृष+टाप्] १. गौ। २. मूसाकानी। आखुकर्णी। ३ केवाँच। कौंछ। ४. दंती। ५. असगंध ६ मालकंगनी।

**वृषाकपि**—पु० [स० ब० स०, दीर्घ] १ शिव। २. विष्णु। ३ इन्द्र। ४. सूर्य। ५. अग्नि।

**वृषाकृति**—पु० [स० ब०स०] विष्णु।

**वृषाक्ष**—पु० [स० ब० स०] विष्णु।

**वृषाणक**—पु० [स० वृषाण+कन्] १. शिव। महादेव। २. शिव का एक अनुचर।

**वृषाणी (नि)**—पु० [वृषाण+इनि] ऋषभ नामक ओषधि।

**वृषादित्य**—पु० [स० ष० त०] वृष राशि के अर्थात् वृष राशि के ज्येष्ठ मास की संक्रान्ति का सूर्य जिसका ताप बहुत अधिक होता है।

**वृषायण**—पु० [स० वृष+कक्, क-आयन, णत्व, ब० स०] १. शिव। महादेव। २ गौरैया पक्षी।

**वृषायणी**—स्त्री० [स० ब० स०] गंगा का एक नाम।

**वृषाश्व**—पु० [स० ब० स०] १ ऐसे जंतु जिनकी बोली बहुत कर्कश होती है। २. वह लकड़ी जिससे नगाड़े पर आघात किया जाता है।

**वृषाश्वित**—स्त्री० [स० तृ० त०] गंगा।

**वृषासुर**—पु० [स० मध्यम० स०] भस्मासुर दैत्य का एक नाम।

**वृषी (न्)**—पु० [सं०] मोर।

**वृषेड**—पु० [स० ष० त०] १. साँड़। २. बैल।

**वृषोत्सर्ग**—पु० [स० ष० त०] पुराणानुसार एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमें लोग अपने मृत पिता आदि के नाम पर साँड़ पर चक्र दाग कर उसे यों ही घूमने के लिए छोड़ देते हैं। ऐसे साँड़ों से किसी प्रकार का काम नहीं लिया जाता।

**वृषोदर**—पु० [सं० ब० स०] विष्णु।

**वृष्टि**—स्त्री० [स०√वृष्+क्तिन्] १. आकाश से जल की वर्षा होने की अवस्था या भाव। पानी बरसना। २. वर्षा का जल। ३. वर्षा की तरह बहुत सी छोटी-छोटी चीजें ऊपर से गिरने की क्रिया या भाव। जैसे—

सुमन वृष्टि। ४. किसी क्रिया का कुछ समय तक लगातार होना। जैसे— कुवाच्यों की वृष्टि।

**वृष्टि-जीवन**—वि०[सं०] जिसका जीवन वर्षा पर निर्भर हो।

पु० १. चातक। २ ऐसा प्रदेश या क्षेत्र जिसकी फसल बहुत कुछ वर्षा पर ही आश्रित हो।

**वृष्टिभू**—पु०[सं०] मेढक।

**वृष्टिमान**—पु०[सं०] वृष्टि-मापक।

**वृष्टिमापक**—पु०[सं०] नल के आकार का एक प्रकार का यंत्र जिसके द्वारा यह जाना जाता है कि कितनी मात्रा में वृष्टि हुई।

**वृष्टि-वेक्षत**—पुं०[सं० ष० त०] बृहत्संहिता के अनुसार बहुत अधिक वृष्टि होना या बिलकुल वृष्टि न होना, जो उपद्रव, संकट आदि का सूचक माना जाता है। ऐसी विकृति या खराबी जो वर्षा की अधिकता अथवा कमी के फलस्वरूप उत्पन्न हुई हो।

**वृष्णि**—पु०[सं०√वृष् (सीचना)+नि, कित्] [वि० वार्ष्णेय] १ मेघ। बादल। २ इन्द्र। ३.अग्नि। ४ शिव। ५ विष्णु। ६ वायु। ७ ज्योति। ८ गौ। ९ यादव वंश। १० उक्त वंश में उत्पन्न होने वाले श्रीकृष्ण। ११ मेढा (पशु)। १२ साँड।

वि० १. प्रचंड। उग्र। तेज। २ नीच। ३. कोधी। ४ नास्तिक।

**वृष्णिक-गर्भ**—पु० [स० ब० स०] श्रीकृष्ण।

**वृष्ण्य**—पु० [स०√वृष्+यत्] वीर्य।

**वृष्य**—वि०[स०√वृष्+क्यप्, यत्, वा] १ (पदार्थ) जिससे वीर्य और बल बढता है। २ (पदार्थ) जिसके सेवन से मन मे आनन्द उत्पन्न होता हो।

पु०१ ईख। ऊख। २. उडद की दाल। ३. आँवला। ४. ऋषभ नामक ओषधि। ५ कमल की नाल।

**वृष्या**—स्त्री०[स० वृष्य+टाप्] १ अष्ट वर्ग की ऋद्धि नामक ओषधि। २ शतावर। ३ आँवला। ४. बिदारीकन्द। ५. अतिबला। ककही। ६ बडी दती। ७. केवाँच। कौंछ।

**वृहत्**—वि०[सं०] आकार-प्रकार, मान-परिमाण आदि मे जो बहुत बड़ा हो। जैसे—वृहत् कोश।

**वृहती**—स्त्री०=बृहती।

**वृहत्कंद**—पुं०[स० कर्म० स०, ब० स०] १ विष्णुकद। २. गाजर।

**वृहत्काय**—पु० [स०] भीम।

**वृहत्कुक्षि**—पुं०[स० ब० स०] जिसका पेट निकला या बढा हुआ हो।

**वृहत्ताल**—पु०[स० कर्म० स०] श्रीताल (वृक्ष)।

**वृहत्तृण**—पु०[स० ब० स०, कर्म०स० वा] साँठ।

**वृहत्त्वक्**—पु०[स० ब० स०] सप्तपर्ण या सतिवन नामक वृक्ष।

**वृहत्पत्र**—पु०[स० ब० स०] नीम का पेड़।

**वृहत्पंचमूल**—पु०[सं० पचमूल, द्विगु स०, वृहत् पचमूल, कर्म० स०] बेल, सोनापाठा, गभारी, पाँडर और गनियारी इन पाँचों का समूह। (वैद्यक)

**वृहत्पत्र**—पुं०[सं० ब० स] १. हापीकद। २. पठानी लोध। ३. बथुआ नामक साग।

**वृहत्पत्रा**—स्त्री०[स० वृहत्पत्र+टाप्] १. त्रिपर्णी कंद। २. कासमर्द।

**वृहत्पर्ण**—पुं०[स० ब० स०] पठानी लोध।

**वृहत्पाद**—पुं०[स० ब० स०] वट का वृक्ष। बरगद।

**वृहत्पीलू**—पु०[स० कर्म० स०] पहाडी अखरोट, महापीलू।

**वृहत्फल**—पुं०[सं० ब० स०] १. केला। २ सफेद कुम्हडा। पेठा।

**वृहत्फला**—पु०[स० ब०स०] १ कुम्हडा। २. कटहल। ३. जामुन। ४ चिचड़ा।

**वृहत्फला**—स्त्री०[सं० वृहत्फल+टाप्] १ कद्दू। लौकी। २. कड़वा कद्दू। ३. महेन्द्रवारुणी। ४. जामुन। ५. सफेद कुम्हडा। पेठा।

**वृहद्गंध**—पु०[स० ब० स०] हाथी।

**वृहद्दला**—स्त्री० [सं० कर्म० स०] बड़ी इलायची।

**वृहद्गृह**—पु०[स० ब० स०] विंध्य पर्वत के पश्चिम मे मालव के पास का एक प्राचीन देश।

**वृहद्वंती**—स्त्री० [स० ब० स०, कर्म० स०] बडी दती। द्रवती।

**वृहद्दल**—पु० [स० ब० स०] १ पठानी लोध। २ सप्तपर्ण। छतिवन। ३ लाल लहसुन। ४ श्रीताल या हिमताल नामक वृक्ष। ५ लजालू।

**वृहद्दला**—स्त्री०[स० वृहद्दल+टाप्] लाजवती। लजालू।

**वृहद्धान्य**—पु०[स० कर्म० स०] ज्वार।

**वृहद्बला**—स्त्री०[स० ब० स०, कर्म० स०] १ पीत पुष्पा। सहदेई। २ पठानी लोध। ३. लजालू।

**वृहद्भानु**—पु०[स० ब० स०] १ सूर्य। २ अग्नि। ३ चित्रक। चीता।

**वृहद्रथ**—पु०[स० ब० स०] १ इन्द्र। २ यज्ञ-पात्र। ३ सामवेद का एक अग या अश। ४ एक तरह का मत्र।

**वृहद्वया**—स्त्री०[स० वृहत्-रथ+टाप्] एक प्राचीन नदी।

**वृहद्वल्कल**—पु०[स०] १. पठानी लोध। २ सप्तपर्ण। छतिवन।

**वृहद्वारुणी**—स्त्री०[स० कर्म० स०] महेन्द्रवारुणी। इनारु।

**वृहद्वल**—पु०[सं० ब० स०] १ अर्जुन। २ बाहु। बाँह। ३ नरसल का बड़ा पेड़।

**वृहद्वला**—स्त्री०[स० वृहद्वल+टाप्] स्त्री वेष मे अर्जुन का उस समय का नाम जब वह अज्ञातवास के समय राजा विराट् के यहाँ अतःपुर मे नाच-गाना सिखलाते थे।

**वृहस्पति**—पुं०[स० ष० त०]=बृहस्पति।

**वृही**—पु०[स०√वृह् (वृद्धि करना)+णिनि, दीर्घ, नलोप] साठी धान।

**वेंकट**—पु०[स०] दक्षिण भारत मे स्थित एक पहाड की चोटी जिस पर विष्णु का मंदिर है।

**वेंकटाचल**—पु०[स० मध्यम० स०]=वेंकट पर्वत।

**वेंकटेश, वेंकटेश्वर**—पु०[स०] वेंकट पर्वत पर स्थापित विष्णु की मूर्ति का नाम।

**वे**—सर्व० [हिं० वह] हिं० 'वह' का बहुवचन।

**विशेष**—विभक्ति लगाने पर 'वे' का रूप 'उन' तथा 'उन्हों' हो जाता है। जैसे—(क) उनमें बहुत से सफल कलाकार हैं। (ख) उन्होंने ये सब खेल दिखलाये थे।

**वेकट**—पुं०[स०√वे+कटच्] १ युवक। जवान। २. विदूषक। ३. जौहरी। ४ भाकुर मछली।

**वेक्षण**—पु०[सं० अव√ईक्ष् (देखना)+ल्युट्–अन] १. अच्छी तरह ढूँढना या देखना। २ देखना।

**वेग**—पुं०[सं० विज् (चलना आदि)+घञ्] १. मन में होनेवाली प्रबल

प्रवृत्ति। मनोवेग। २ गति या चाल में होनेवाला ज़ोर या तेज़ी। जैसे—नदी का वेग अब कुछ कम होने लगा है। ३. किसी प्रकार की क्रिया के सम्पादन में समय के विचार से होनेवाली तेज़ी या शीघ्रता। ४ शरीर की वह आन्तरिक वृत्ति या शक्ति, जो प्राणियों को मल, मूत्र आदि का त्याग करने में प्रवृत्त करती है। ५ जल्दी। शीघ्रता। ६. कोई काम करने की दृढ़ प्रतिज्ञा या पक्का निश्चय। ७. उद्यम। उद्योग। ८ बढ़ती। वृद्धि। ९. आनन्द। प्रसन्नता। १०. वीर्य। शुक्र। ११. न्याय के अनुसार चौबीस गुणों में से एक गुण जो आकाश, जल, तेज, वायु और मन में पाया जाता है। १२ लाल इन्द्रायन। १३. महाज्योतिष्मती। १४ दे० 'संवेग'।

**वेगग**—वि०[स०] [स्त्री० वेगगा] १ बहुत तेज चलनेवाला। २. बहुत तेज बहनेवाला।

**वेग-धारण**—पुं०[स०] ऐसी क्रिया को रोकना जो वेगवती हो। विशेषत. मल-मूत्र रोकना जो स्वास्थ्य के लिए अत्यन्त हानिकारक होता है।

**वेग-नाशन**—पु०[स०] जिसके कारण शरीर से निकलनेवाला मल आदि रुकता है।

**वेग-निरोध**—पुं०[स० ष० त०] १. वेग का काम करना या घटाना। २. दे० 'वेगधारा'।

**वेगमापक**—पुं०[सं०] ऐसा यंत्र जो किसी गतिमान वस्तु की गति का वेग मापता हो। जैसे—नदी की धारा का वेग-मापक यंत्र।

**वेगवती**—वि०[स० वेग+मतुप्, म—ब,+ङीप्] जिसका वेग अत्यधिक हो।
स्त्री० दक्षिण भारत की एक नदी।

**वेगवान्**—वि०[स० वेग+मतुप्] वेग-पूर्वक चलनेवाला। तेज चलनेवाला।
पुं० विष्णु।

**वेग-वाहिनी**—स्त्री०[स०] १ गंगा। २. पुराणानुसार एक प्राचीन नदी। ३ संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**वेग-विघात**—पु० [स०] वेग-धारा।

**वेगसर**—पुं०[स०] १ तेज चलनेवाला घोड़ा। २. खच्चर।

**वेगा**—स्त्री०[स० वेग+टाप्] बड़ी मालकंगनी। महाज्योतिष्मती।

**वेगित**—भू० कृ०[स० वेग+इतच्] १. वेग से युक्त किया हुआ। २ लुब्ध (समुद्र)।

**वेगिनी**—स्त्री०[स० वेग+इनि+ङीप्] नदी।

**वेगी** (गिन्)—वि० [स० वेग+इनि] १ जिसका वेग तीव्र या अत्यधिक हो। वेगवान्।
पुं० बाज पक्षी।

**वेगीय**—वि० [स० वेग+छ, छ—ईय] १. वेग-संबंधी। वेग का। २. वेग के फलस्वरूप होनेवाला।

**वेट्**—पु०[स०√वेट् (शब्द करना)+क्विप्] यज्ञ में प्रयुक्त होनेवाला स्वाहा की तरह का एक शब्द।

**वेट्ट चंदन**—पुं० [स० मध्यम० स०] मलयागिरि चंदन।

**वेड**—पु०[स०√विड्+अच्] एक तरह का चंदन।

**वेड़ा**—स्त्री०=बेड़ा (नावों का समूह)।

**वेडमिका**—स्त्री०[स० वेडगा+कन्+टाप्, इत्व] वह कचौरी जिसमें उरद की पीठी भरी हुई हो। बेड़ई।

**वेण**—पुं० [सं०√वेण् (गमन)+अच्] १. एक प्राचीन वर्णसंकर जाति जो मुख्य रूप से गाने-बजाने का काम करती थी। २. राजा पृथु के पिता का नाम।

**वेणवी** (विन्)—वि० [सं० वेणु+इनि] जिसके पास वेणु हो।
पुं० शिव।

**वेणा**—स्त्री०[सं० वेण+टाप्] १ एक प्राचीन नदी जिसे पर्णसा भी कहते हैं। २. उशीर। खस।

**वेणि**—स्त्री०[सं०√वी (गमन)+नि, णत्व] १. बालों की लटकती हुई चोटी। २. चोटी गूँथने की क्रिया। ३. जल-प्रवाह। ४. संगम। ५ देवदाली। बंदाल।

**वेणिक**—पुं०[स० वेणि+कन्] १. एक प्राचीन जनपद। २. उक्त जनपद का निवासी।

**वेणिका**—स्त्री०[स० वेणिक+टाप्] स्त्रियों की वेणी।

**वेणिनी**—स्त्री० [स० वेण+इनि,+ङीप्] स्त्री जिसकी गूँथी हुई चोटी लटक रही हो।

**वेणी**—स्त्री० [सं० वेण+ङीप्] १. स्त्रियों के बालों की गूँथी हुई चोटी। कबरी। २. पानी का बहाव। ३. भीड़-भाड़। ४. देवदाली। ५. एक प्राचीन नदी। ६. भेड़। ७. देवताड़।

**वेणीदान**—पु०[सं० ष० त०] किसी तीर्थ-स्थान, विशेषत प्रयाग में केश मुँडाने का एक कृत्य या संस्कार।

**वेणोर**—पु० [स० वेण+ईन्] १. नीम का पेड़। २ रीठा।

**वेणु**—पुं० [स०√अज् (गमन)+णु, अज्—वी (वे)] १ बाँस। २. बाँस की बनी हुई बंशी। मुरली। ३ दे० 'वेणु'।
वि० वेणुकीय।

**वेणुक**—पु०[स० वेणु+कन्] १. वह लकड़ी या छड़ी जिससे गौ, बैल आदि हाँकते हैं। २. अकुश। ३ बाँसुरी। ४ इलायची।

**वेणुका**—स्त्री०[स० वेणु+कन्+टाप्] १. बाँसुरी। २ हाथी को चलाने का प्राचीन काल का एक प्रकार का दंड जिसमें बाँस का दस्ता लगा होता था। ३. जहरीले फलवाला एक प्रकार का वृक्ष।

**वेणुकार**—पुं० [स० वेणु√कृ (करना)+अण्, उप० स०] वह व्यक्ति जिसका पेशा बाँसुरी बनाना हो।

**वेणुकीय**—वि०[स० वेणुक+छ, छ—ईय] वेणु-संबंधी। वेणु का।

**वेणुज**—वि०[सं० वेणु√जन्+ड] जो वेणु अर्थात् बाँस से उत्पन्न हो।
पुं० १. बाँस के फूल में होनेवाले दाने जो चावल कहलाते हैं और जो पीसकर ज्वार आदि के आटे के साथ खाये जाते हैं। बाँस का चावल। २ गोल मिर्च।

**वेणुज-मुक्ता**—स्त्री०[स० कर्म० स०] बाँस में होनेवाला एक प्रकार का गोलदाना जो प्रायः मोती कहलाता है।

**वेणुप**—पुं०[सं०] १. एक प्राचीन जनपद (महाभारत)। २. उक्त जनपद का निवासी।

**वेणुप्रुर**—पुं० [स०] आधुनिक बेलगाँव का पुराना नाम।

**वेणु-बीज**—पुं०[स०] बाँस के फूल में होनेवाले दाने जो ज्वार आदि के साथ पीसकर खाये जाते हैं। बाँस का चावल।

**वेणुमती**—स्त्री० [सं० वेणु+मतुप्+ङीप्] पश्चिमोत्तर प्रदेश की एक नदी। (पुराण)

**वेणुमान**—पुं० [सं० वेणुमत्] १. एक पौराणिक पर्व। २. एक पौराणिक कुल या वंश।

**वेणु-मुद्रा**—स्त्री० [स०] तान्त्रिकों की एक प्रकार की मुद्रा।

**वेणु-यव**—पु० [स०] वेणु-बीज।

**वेणु-वन**—पु० [स० ष० त०] ऐसा वन जिसमें बाँसों के बहुत अधिक झुरमुट हों।

**वेण्वा**—स्त्री० [सं० वेणु+यत्] पुराणानुसार विंध्य पर्वत से निकली हुई एक नदी।

**वेण्वा**—स्त्री० [स० वेणु+अच्+टाप्] पुराणानुसार पारिपात्र पर्वत की एक नदी।

**वेण्वा-तट**—पु० [सं० ष० त०] वेण्वा नदी के तट पर स्थित एक प्रदेश। (महा०) २ उक्त प्रदेश का निवासी।

**वेत**—पु०=बेंत।

**वेतन**—पु० [स०√वी (गमन)+तनन्] १ वह धन जो किसी को कोई काम करने के बदले में दिया जाय। पारिश्रमिक। उजरत। २ वह धन जो निश्चित रूप से निरंतर काम करते रहने पर बराबर नियत समय पर मिलता रहता है। तनख्वाह। (पे) जैसे—मासिक या साप्ताहिक वेतन। ३ जीविका निर्वाह का साधन। ४. चाँदी। रजत।

**वेतन-भोगी (गिन्)**—पु० [स०] वह जो वेतन पर किसी के यहाँ नौकरी करता हो।

**वेतस**—पु० [स०] १ बेंत। २ जल-बेंत। ३ बड़वानल।

**वेतसक**—पु० [स० वेतस+कन्] एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)

**वेतस-पत्रक**—पु० [स०] एक तरह का शल्य। (सुश्रुत)

**वेताल**—पु० [स०√अज्+विच्, वी, √तल्+घञ्, कर्म० स०] १ द्वारपाल। संतरी। २ शिव के एक गणाधिप। ३ पुराणानुसार एक तरह की भूत-योनि या प्रेतात्माओं का वह वर्ग जिसका निवास-स्थान श्मशान माना गया है। ४ उक्त योनि के भूत जो साधारण भूतों के प्रधान माने गए हैं। ५ ऐसा शव जिस पर भूतों ने अधिकार कर लिया हो। ६. छन्दस के छठे भेद का नाम जिसमें ६५ गुरु और २२ लघु कुल ८७ वर्ण या १५२ मात्राएँ अथवा ६५ गुरु और १८ लघु कुल ८३ वर्ण या १४८ मात्राएँ होती हैं।

**वेताला**—स्त्री० [स० वेताल+टाप्] दुर्गा।

**वेत्ता**—वि० [स०√विद् (जानना)+तृच्] समस्त पदों के अन्त में; अच्छा या पूर्ण ज्ञाता। जैसे—तत्त्ववेत्ता, शास्त्रवेत्ता।

**वेत्र**—पुं० [स०√वी+त्र] १. बेंत। २. द्वारपाल के पास रहनेवाला डंडा।

**वेत्रक**—पुं० [सं० वेत्र+कन्] रामसर। सरपत।

**वेत्रकार**—पुं० [स० वेत्र√कृ (करना)+अण्] वह जो बेंत के सामान बनाता हो।

**वेत्रकूट**—पु० [स० मध्यम० स०] पुराणानुसार हिमालय की एक चोटी।

**वेत्र-गंगा**—स्त्री० [स० मध्यम० स०] हिमालय से निकली हुई एक नदी।

**वेत्रधर**—पुं० [स० वेत्र√धृ (रखना)+अच्, ष० त०] १ द्वारपाल। संतरी। २. चोबदार। ३. लठैत।

**वेत्रवती**—स्त्री० [सं० वेत्र+मतुप्, म—व+ङीप्] बेतवा नदी।

**वेत्रहृ (हृत्)**—पु० [सं० वेत्र √ हृ (मारना)+क्विप्] इंद्र।



**वेत्रासन**—पुं० [सं० ष० त०] बेंत का बुना हुआ आसन।

**वेत्रासुर**—पुं० [स० मध्यम० स०] एक असुर जिसका वध इन्द्र ने किया था।

**वेत्रिक**—पु० [सं० वेत्र+ठक्—इक] १ एक जनपद। २. उक्त जनपद का निवासी। ३. चोबदार।

**वेत्री**—पु० [स० वेत्र+इनि, वेत्रिन्] १ द्वारपाल। संतरी। २ चोबदार।

**वेद**—पु० [स०] १. वह जो जाना गया हो। ज्ञान। २. धार्मिक ज्ञान। तत्त्वज्ञान। ३. भारतीय आर्यों के आद्य प्रधान धार्मिक ग्रन्थ जो हिन्दुओं में सर्व-प्रधान हैं।

**विशेष**—आरंभ में ऋग्वेद, यजुर्वेद और सामवेद ही तीन वेद थे। जिनके कारण वेदत्रयी पद बना था। पर बाद में चौथा अथर्ववेद भी इनमें सम्मिलित हो गया था, और अब उनकी गणना चार हो गई है। ये संसार के सबसे अधिक प्राचीन धर्मग्रन्थ हैं। प्रत्येक वेद के दो मुख्य विभाग हैं (क) मंत्र अथवा संहिता भाग और (ख) ब्राह्मण भाग। हिन्दू इन्हें अ-पौरुषेय मानते हैं, अर्थात् ये मनुष्यों द्वारा रचित नहीं हैं,बल्कि स्वयं ब्रह्मा के मुख से निकले हैं। स्मृतियों से इनका पार्थक्य जतलाने के लिए इन्हें 'श्रुति' भी कहते हैं, जिसका आशय यह है कि वेदों में कही हुई बातें लोग परम्परा से सुनते चले आये थे, जो बाद में लिपिबद्ध करके ग्रन्थ रूप में संकलित की गई थीं। आधुनिक विद्वानों के मत से इनकी रचना लगभग ६००० वर्ष पूर्व हुई होगी।

४. विष्णु का एक नाम। ५ यज्ञों के भिन्न भिन्न अंग या कृत्य। यज्ञांग। ६ छंद। ७ धन-सम्पत्ति।

**वेदक**—वि० [सं० वेद+कन्] वेदन अर्थात् ज्ञान करानेवाला।

**वेदकर्ता (र्तृ)**—पु० [स० ष० त०] १ वेद या वेदों का रचयिता। २. सूर्य। ३ शिव। ४ विष्णु। ५. वर पक्ष के वे लोग जो विवाह-कृत्य सम्पन्न हो जानेपर वधू के घर पहुँचकर उसे और वर को आशीर्वाद देते तथा मंगल-कामना प्रकट करते हैं।

**वेदकार**—पु० [सं०] वेद या वेदों का रचयिता।

**वेद-गंगा**—स्त्री० [स० मध्यम० स०] दक्षिण भारत की एक नदी जो कोल्हापुर के पास से निकलकर कृष्णा नदी में मिलती है।

**वेदगर्भ**—पुं० [सं० ष० त०] १. ब्रह्मा। २ ब्राह्मण।

**वेदगर्भा**—स्त्री० [सं० वेदगर्भ+टाप्] १ सरस्वती नदी। २. रेवा नदी।

**वेदगुप्त**—पु० [स० ब० स०] श्रीकृष्ण का एक नाम।

**वेदगुह्य**—पु० [सं० ब० स०] विष्णु।

**वेद-जननी**—स्त्री० [सं० ष० त०] सावित्री जो वेद की माता कही गई है।

**वेदज्ञ**—पु० [स० वेद√ज्ञा (जानना)+क] १ वेदों का ज्ञाता। वेद जानने वाला। २ ब्रह्म-ज्ञानी।

**वेदज्ञ**—पुं० [सं० वेद+ष्ण] वेद का धर्म या भाव।

**वेद-दीप**—पु० [स० ष० त०] महीधर का किया हुआ शुक्ल यजुर्वेद का भाष्य।

**वेदन**—पुं० [सं०√विद् (जानना)+ल्युट्—अन] १ ज्ञान। २ अनुभूति। ३ संवेदन। ४. कष्ट। पीड़ा। वेदना। ५ धन-सम्पत्ति। ६. विवाह। ७. शूद्र स्त्री का उच्च वर्ग के पुरुष के साथ होनेवाला विवाह।

**वेदना**—स्त्री० [सं० वेदन+टाप्] १. बहुत तीव्र मानसिक या शारीरिक

कष्ट। विशेषतः प्रसव के समय स्त्रियों को होनेवाला कष्ट। २. तीव्र मानसिक दुःख। व्यथा।

**वेदनी**—स्त्री० [सं०√वेदन+ङीप्] त्वचा।

**वेदनीय**—वि० [स०√विद् (जानना)+अनीयर्] १. जो वेदन के लिए उपयुक्त हो अथवा जिसका वेदन हो सके। २. जानने के लिए उपयुक्त। ३ वेदना या कष्ट उत्पन्न करनेवाला।

**वेदबीज**—पु० [स० ष० त०] श्रीकृष्ण।

**वेदभू**—पु० [स० ब० स०] देवताओं का एक गण। (महा०)

**वेद-मंत्र**—पु० [स० मध्यम स० या ष० त०] १. वेदों मे आए हुए मन्त्र। २. पुराणानुसार एक प्राचीन जनपद। ३ उक्त जनपद का निवासी। ४ मूलमन्त्र। (दे०)

**वेद-माता (तृ)**—स्त्री० [स० ष० त०] १. गायत्री। सावित्री। २ दुर्गा। ३ सरस्वती।

**वेद-मूर्ति**—पु० [स० ष० त०] १ वेदों का बहुत बड़ा ज्ञाता। २ सूर्य।

**वेद-यज्ञ**—पु० [मध्यम० स०] वेद पढ़ना। वेदाध्ययन।

**वेदवती**—स्त्री० [स०] १ सीता का पूर्वजन्म का नाम। उस जन्म मे ये राजा कुशध्वज की पुत्री थीं। २ एक प्राचीन नदी।

**वेद-वदन**—पु० [ब० स०] १. ब्रह्मा। २. व्याकरण।

**वेद-वाक्य**—पु० [स०] ऐसा वाक्य या कथन जिसकी सत्यता असंदिग्ध हो। वेद में आए हुए वाक्य के समान मान्य कोई अन्य वाक्य या कथन।

**वेदवादी (दिन्)**—पु० [स०] वेदों का ज्ञाता।

**वेदवाह**—पु० [स० वेद√वह् (ढोना)+घञ्] वह जो वेदों का ज्ञाता हो।

**वेद-वाहन**—पु० [स० ष० त०] सूर्य।

**वेद-व्यास**—पु० [स० वेद+वि√अस् (होना)+अण्] एक प्राचीन मुनि जिन्होंने वेदों का वर्तमान रूप में सकलन किया था। ये सत्यवती के गर्भ से उत्पन्न पराशर के पुत्र थे। व्यास।

**वेद-व्रत**—पु० [स० ब० स०] वह जो वेदों का अध्ययन करता हो।

**वेदशिर**—पु० [स० ब० स०] १ एक प्रकार का अस्त्र। (पुराण) २ पुराणानुसार मार्कंडेय का एक पुत्र जो मूर्द्धन्या के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। कहते हैं, भार्गव लोगों का मूल पुरुष यही था।

**वेदसार**—पु० [सं० ष० त०] विष्णु।

**वेद-स्वरूपी**—पु० [स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**वेदांग**—पु० [स० ष० त०] १ वेद के अंगों में से हर एक। २. वेद के छः अंग। ३ सूर्य।

**वेदांत**—पु० [स० वेद+अन्त] १ वेदों मे प्रतिपादित सिद्धान्तों का निरूपण और विवेचन करनेवाला शास्त्र। २. भारतीय छः दर्शनों में से अंतिम दर्शन जो उपनिषदों की शिक्षा और सिद्धान्तों पर आश्रित है और जिसमे वेदों का अंतिम या चरम उद्देश्य निरूपित है और जिसे उत्तर-मीमांसा भी कहते हैं।

**विशेष**—इस दर्शन का मुख्य सिद्धान्त यह है कि यह सारी सृष्टि एकमात्र ब्रह्म मे उद्भूत है, और वह ब्रह्म इस सृष्टि के प्रत्येक अणु-परमाणु तक मे व्याप्त है। इस दर्शन मे मुख्यतः ब्रह्म और जगत् तथा ब्रह्म और जीव के पारस्परिक संबंधों का निरूपण है। अहं ब्रह्मास्मि, तत्त्वमसि, सोहं अस्मि आदि इसके मुख्य सिद्धान्त हैं। लोक मे जो अद्वैत की भावना, भूत या माया के प्रति तिरस्कार आदि के भाव प्रचलित हैं वे अधिकतर इसी वेदांत की शिक्षा के फल हैं।

**वेदांत**—पु० [सं०] व्यास कृत ब्रह्मसूत्र।

**वेदांती (न्तिन्)**—पु० [स० वेदान्त+इनि] वेदांत का पूर्ण ज्ञाता। ब्रह्मवादी।

**वेदाग्रणी**—स्त्री० [स० ष० त०] सरस्वती।

**वेदात्मा**—पु० [स० ष० त०] १ विष्णु। २ सूर्य।

**वेदादि**—पु० [स० ष० त०] प्रणव या ओंकार का मंत्र।

**वेदाधिदेव**—पु० [स० ष० त०] ब्राह्मण।

**वेदाधिप**—पु० [स० ष० त०] वेदों के अधिपतिग्रह।

**विशेष**—ऋग्वेद के अधिपति बृहस्पति, यजुर्वेद के शुक्र, सामवेद के मंगल, अथर्व वेद के बुध।

**वेदाध्यक्ष**—पु० [स० ष० त०] विष्णु।

**वेदि**—स्त्री०=वेदी।

**वेदिका**—स्त्री० [स० वेदिक+टाप्]=छोटी वेदी।

**वेदित**—भू० कृ० [स०√विद् (जानना)+क्त] १ निवेदित। २ वेद द्वारा कथित या जतलाया हुआ। २ देखा हुआ।

**वेदितव्य**—वि० [स०√विद् (जानना)+तव्यत्] बात या विषय जो जाना जा सके।

**वेदित्व**—पु० [स० वेदि+त्व] विदित होने का भाव। ज्ञान।

**वेदी (दिन्)**—वि० [सं०] १ जाननेवाला। ज्ञाता। २ पंडित। विद्वान्। ३. विवाद करनेवाला।

पु० १ ब्रह्मा। २. आचार्य। ३. एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

स्त्री० १ यज्ञ-कार्य के लिए साफ करके तैयार की हुई भूमि। वेदी। २. मांगलिक या शुभ कार्य के लिए तैयार किया हुआ चौकोर स्थान और उसके ऊपर का मंडप। ३ सरस्वती। ४. ऐसी अँगूठी जिसपर किसी का नाम अंकित हो। ५. पूजन आदि के समय उँगली की एक प्रकार की मुद्रा। ६ अवष्ठा नामक वनस्पति।

**वेदीश**—पु० [स० ष० त०] ब्रह्मा।

**वेदुक**—वि० [स०√विद् (जानना)+उकञ्] १. जाननेवाला। ज्ञाता। २ प्राप्त करनेवाला। ३. मिला हुआ। प्राप्त।

**वेदेश्वर**—पु० [स० ष० त०] ब्रह्मा।

**वेदोक्त**—भू० कृ० [सं० स० त०] वेदों मे कहा हुआ।

**वेदोपकरण**—पु० [स० ष० त०] वेदांग।

**वेदोपनिषद्**—स्त्री० [स० मध्यम० स०] एक उपनिषद् का नाम।

**वेद्धव्य**—वि० [सं०√विध् (छेदना)+तव्यत्] वेधे या छेदे जाने के योग्य।

**वेद्धा**—वि० [स०√विध् (छेदना)+तृच्] १. वेधने या छेदनेवाला। २ वेध करनेवाला।

**वेद्य**—वि० [स०√विद् (जानना)+ण्यत्] १. (बात या विषय) जो जानने या समझने के योग्य हो। २. कहे जाने के योग्य। ३. प्रशंसनीय। ४. प्राप्त किये जाने के योग्य।

**वेद्यत्व**—पु० [स० वेद्य+त्व] ज्ञान। जानकारी।

**वेध**—पुं० [स०√विध् (छेदना)+घञ्] १. किसी चीज में नुकीली चीज धँसाना। बेधना। २. यंत्रों आदि की सहायता से आकाशस्थ ग्रहों, नक्षत्रों आदि की गति, स्थिति आदि का पता लगाने की क्रिया।

पद—वेधशाला।
३. ज्योतिष के ग्रहों का किसी ऐसे स्थान में पहुँचना जहाँ से उनका किसी दूसरे ग्रह में सामना होता हो। जैसे—युतवेध, पताकी वेध। ४. गंभीरता। गहराई। ५ ब्रह्मा। ६ विष्णु। ७. शिव। ८ सूर्य। ९. दक्ष आदि प्रजापति। १० पंडित। विद्वान्। ११. सफेद मदार।

**वेधक**—पु० [सं० √विध् (भेदना)+ण्वुल्—अक] १. वेध करनेवाला। २. वेधन करने या वेधनेवाला।
पु० १. वह जो मणियों आदि को बेधकर अपनी जीविका चलाता हो। २. कपूर। ३ धनिया। ४ अमलबेंत।

**वेधनी**—पु० [सं० वेधन+ङीप्] १. वह उपकरण जिससे मोती आदि बेधे जाते हैं। २. अंकुश।

**वेधनीय**—वि० [सं०√विध् (छेदना)+अनीयर्] जिसका वेध या वेधन हो सके या होने को हो।

**वेधशाला**—स्त्री०[सं० ष० त०] वह प्रयोगशाला जिसमें ग्रह, नक्षत्रों आदि की गति का पर्यवेक्षण किया जाता है। (आब्जर्वेटरी)

**वेधस**—पु०[सं० वि√धा+असु, वेधस्+अच्] हथेली मे अँगूठे की जड के पास का स्थान। अगुष्ठमूल। ब्रह्मतीर्थ।
विशेष—आचमन के लिए इसी गड्ढे मे जल देने का विधान है।

**वेधा (धस्)**—पु०[सं० वि√धा+असु, वेधादेश] १ ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४ सूर्य। ५ दक्ष आदि प्रजापति। ६. आक। मदार।

**वेधालय**—पु०[सं० ष० त०]=वेधशाला।

**वेधित**—भू० कृ०[सं०√विध् (छेदना)+णिच्+क्त]१. जिसका वेधन या भेदन किया गया हो। २ (ग्रह या नक्षत्र) जिसका ठीक ठीक पर्यवेक्षण किया जा चुका हो।

**वेधिनी**—स्त्री०[सं० वेधिन्+ङीप्] जोंक। ।
वि० सं० 'वेधी' का स्त्री०।

**वेधी (धिन्)**—पु०[सं०] १. वेधन या भेदन करनेवाला। २. ग्रह-नक्षत्रों आदि की गति का पर्यवेक्षण करनेवाला।

**वेध्य**—वि०[सं०√विध् (छेदना)+ण्यत्] जिसमे वेध किया जाय। जिसका वेध हो सके या होने को हो।

**वेन**—पुं०[सं०√अज् (गमन)+न, अज्-वी] वेण। (दे०)

**वेन्य**—पु०[सं० वेन+यत्] सुन्दर। मनोहर।
पुं० वेण।

**वेपथु**—पु०[सं०√वेप् (काँपना)+ अथुच्] १. काँपने की क्रिया। कँप-कँपी। २. कप (साहित्यिक अनुभाव)।

**वेपन**—पुं०[सं०√वेप् (काँपना)+ल्युट्—अन] १. काँपना। कप। २. वात रोग।

**वेर**—पु० [सं०अज+रन्, अज—वी] १ शरीर। देह। बदन। २. केसर।

**वेल**—पुं०[सं०] १. उपवन। २. कुंज। ३. बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या।
†स्त्री०=वेला।

**वेलना**—अ०[सं० वेल्] १. हिलना। २. काँपना। ३. विकल होना।

**वेला**—स्त्री०[सं०] १. मर्यादा। सीमा। २. समुद्र का तट। ३. तरंग। लहर। ४. किसी काम या बात का नियमित या निश्चित समय। जैसे—भोजन की वेला, मृत्यु की वेला, सन्ध्या की वेला आदि। ५. समय का एक विभाग जो दिन और रात का चौबीसवाँ भाग होता है। कुछ लोग दिनमान के आठवें भाग को भी वेला मानते हैं। ६ वाणी। ७. अवकाश। अवसर। ९ आसक्ति। राग। ९. भोजन। १०.रोग। बीमारी।
वि० [हिं० उरला] इस ओर या पार का। इधर का। उदा०—सुर नर, मुनिजन ये सब वेलै तीर।—कबीर।

**वेला-जल**—पुं०[सं०] चन्द्रमा के आकर्षण से ऊपर उठनेवाला समुद्र का ज्वार जल। (टाइडल वाटर्स)

**वेला-ज्वर**—पुं०[सं०] मृत्यु के समय होनेवाला ताप या ज्वर।

**वेलाद्रि**—पुं० [सं० स० त०] ऐसा पर्वत जो समुद्र के किनारे स्थित हो।

**वेलाधिप**—पु०[सं०] फलित ज्योतिष मे, दिनमान के आठवें भाग या वेला के अधिपति देवता।

**वेलार्क**—पु०[?] बाण का फूल। (डिं०) उदा०—वेलार्क अणी झठि ठिठि बर्ष।—प्रिथीराज।

**वेलावित्त**—पुं०[सं० ब० स०] प्राचीन काल के एक प्रकार के कर्मचारी। (राजतरंगिणी)

**वेलिका**—स्त्री०[सं० वेला+कन्+टाप्, इत्व] १ नदी के किनारे का स्थान। २. ताम्रश्लिप्त का एक नाम।

**वेल्लन**—पुं०[सं०√वेल्ल् (चलना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० वेल्लित] १. गमन। २. कप। कंपन। ३. जमीन पर घोड़ों के लोटने की क्रिया या भाव। ४. झुकना। ५. लिपटना।

**वेल्ली**—स्त्री०[सं० वेल्लि+ङीप्] बेल। लता।

**वेवांत**—पुं०[सं०] १. पानी का गड्ढा। २. अग्नि। आग।

**वेश**—पुं० [सं०√विश् (प्रवेश करना)+घञ्] १ अन्दर जाने या पहुँचने की क्रिया या भाव। प्रवेश। २ प्रवेश का द्वार, मार्ग या साधन। ३. रहने का स्थान, घर या मकान। ४. वेश्या का घर। ५. पहनने के कपड़े आदि। पोशाक। ६. कुछ खास तरह के ऐसे कपड़े जिन्हे पहनने पर कोई विशिष्ट रूप प्राप्त होता है। भेस। (डिस्गाइज) जैसे—अभिनेता कभी राजा का कभी सेवक का वेश धारण करता है। ७. परिश्रम या सेवा के बदले में मिलनेवाला धन। पारिश्रमिक। ८. खेमा। तंबू।

**वेशक**—वि०[सं० वेश+कन्] प्रवेश करनेवाला।
पुं० घर। मकान।

**वेशकार**—पुं०[सं०] १. वह जो पुतलियाँ बनाता और उनका शृंगार करता हो। २. पहनने के अनेक प्रकार के वस्त्र बनानेवाला। (आउट-फ़िटर)

**वेशता**—पुं० [सं० वेश+तल्+टाप्] वेश का धर्म या भाव। वेशत्व।

**वेशत्व**—पुं० [सं० वेश +त्व]=वेशता।

**वेशधर**—पुं०[सं०] १. वह व्यक्ति जिसने किसी दूसरे का वेश धारण किया हो। २. वह जिसने किसी को छलने के लिए अपना वेश बदल लिया हो। ३. जैनियो का एक सम्प्रदाय।

**वेशन**—पुं०[सं०] प्रवेश करना।

**वेशनी**—स्त्री० [सं०√विश् (प्रवेश करना)+ल्युट्—अन,+ङीप्] ड्योढ़ी। पौरी।

**वेश-युवती**—स्त्री०[सं० कर्म० स०] वेश्या। रंडी।

**वेशर**—पु०[सं० वेश+रक्] खच्चर।

**वेश-रच्या**—स्त्री०[स० कर्म० स०] वेश-बीथी।

**वेश-वधू**—स्त्री०[स० कर्म० स०] वेश्या। रंडी।

**वेश-वनिता**—स्त्री०[सं०] वेश्या। रंडी।

**वेश-वार**—पु०[स० ष० त०] १ वेश्या का घर। २. धनिया, मिर्च, लौंग आदि मसाले।

**वेशवास**—पुं० [सं० ष० त०] वेश्या का कोठा। वेश्यालय।

**वेश-वीथी**—स्त्री०[स० ष० त०] वह गली या बाजार जिसमे वेश्याएँ रहती हों।

**वेश-स्त्री**—स्त्री०[स० कर्म० स०] वेश्या। रंडी।

**वेशांत**—पुं० [स०√विश् (प्रवेश करना)+झ—अन्त, ष० त०, ब० स०] छोटा तालाब।

**वेशिक**—पुं०[स० वेश+ठक्—इक्] हस्त-शिल्प। दस्तकारी।

**वेशी (शिन्)**—वि० [स०√विश् (प्रवेश करना)+णिनि] प्रवेश करनेवाला।

**वेश्म**—पुं०[स०√विश्+मनिन्] घर। मकान।

**वेश्मस्त्री**—स्त्री०[सं०] वेश्या। रंडी।

**वेश्मांत**—पु०[स०] अन्त पुर। जनानखाना।

**वेश्या**—पु०[स०] १. वेश्या के रहने का मकान। रंडी का घर। २ वेश्या की वृत्ति। रंडी का पेशा।

**वेश्यांगना**—स्त्री०[स० कर्म० स०] ऐसी स्त्री जो वेश्या-वृत्ति करती हो।

**वेश्या**—स्त्री०[स०] १. ऐसी स्त्री जो धन लेकर लोगो के साथ सभोग कराने का व्यवसाय करती हो। गणिका। २ आज-कल ऐसी स्त्री जो उक्त प्रकार का व्यवसाय करने के सिवा लोगो को रिझाने के लिए नाचगाने का भी काम करती हो। तवायफ।

**वेश्याचार्य**—पुं०[सं०] रंडियो का दलाल। भड़ुआ।

**वेश्या-पत्तन**—पुं० [स०] वह बाजार जहाँ वेश्याएँ रहती हो। चकला।

**वेश्यालय**—पु०[स० ष० त०] वेश्या या वेश्याओ के रहने की जगह।

**वेश्या-वृत्ति**—स्त्री०[स० ष० त०] १. वेश्या बनकर अर्थात् धन लेकर पर-पुरुषो से सभोग करना। कसब कमाना। २ गुण, शक्ति का वह परम घृणित और निंदनीय उपयोग जो केवल स्वार्थ-साधन के लिए बहुत बुरी तरह से किया या कराया जाय। (प्रॉस्टीटचूशन)

**वेष**—पुं०[स०√वेष्+अच्] १ पहने हुए कपड़े आदि। वेश। २. रंग-मंच मे पीछे का वह स्थान जहाँ नट लोग वेश रचना करते है। नेपथ्य। ३. वेश्या का घर। रंडी का मकान। ४. काम करना या चलाना।

**वेषकार**—पु० [स०] वह कपड़ा जो किसी चीज पर उसे सुरक्षित रखने के लिए लपेटा जाता है। बेठन।

**वेषण**—पु०[स० √ वेष् (व्याप्त होना)+ल्युट्—अन] १. वेष बनाने की क्रिया या भाव। २. परिचर्या। सेवा। ३ कासमर्द। ४. धनिया। ५. सेवा।

**वेषधारी**—वि०=वेशधारी।

**वेष-भूषा**—स्त्री०[स०] वे कपडे जो किसी विशिष्ट देश, जाति, सप्रदाय आदि के लोग करते हैं। २. शरीर की सजावट के लिए पहने हुए कपड़े आदि।

**वेषवार**—पु०=वेशवार।

**वेष्ट**—पु०[स० √ वेष्ट् (लपेटना)+घञ्] १. वृक्ष का किसी प्रकार का निर्यास। २. गोंद। ३. धूपसरल नामक पेड। ४ सुथुत के अनुसार मुँह मे होनेवाला एक प्रकार का रोग। ५ ब्रह्म। ६. आकाश। ७. पगडी।

**वेष्टक**—वि०[स० √ वेष्ट्+ण्वुल्—अक] चारों ओर से घेरनेवाला। पु० १. छाल। वल्कल। २. कुम्हडा। ३ उष्णीष। पगडी। ४. चहार-दीवारी। परकोटा। ५ दे० 'वेष्ट'।

**वेष्टन**—पु०[स० √ वेष्ट्+ल्युट्—अन]१. कोई चीज किसी दूसरी चीज के चारो ओर लपेटना। २ इस प्रकार लपेटी जानेवाली चीज। ३. पगड़ी। ४. मुकुट। ५. कान का छेद।

**वेष्टनक**—पु०[सं० वेष्टन√ कै (प्रकाश करना)+क] कामशास्त्र में एक प्रकार का रतिबध।

**वेष्टव्य**—वि०[स०√ वेष्ट् (लपेटना)+तव्यत्] घेरे या लपेटे जाने के योग्य।

**वेष्टसार**—पु० [स० ब० स०] १. श्रीवेष्ट। गधाबिरोजा। २ धूपसरल नामक वृक्ष।

**वेष्टित**—भू० कृ०[स० √ वेष्ट् (लपेटना)+क्त] १. चारो ओर से घिरा या घेरा हुआ। २ कपडे, रस्सी आदि से लिपटा या लपेटा हुआ। ३ रुका या रोका हुआ। रुद्ध।

पु०१. पगडी। २. एक प्रकार का रतिबध। ३. नृत्य की एक मुद्रा।

**वेसा**—स्त्री०=वयस।

**वेसानर**—पु०[स० वैश्वानर] आग। (डिं०)

**वेसर**—पु०[स० वेस√ रा (लेना)+क] खच्चर।

**वेसवार**—पु०[स० वेस√ वृ (निवास करना)+अण्]१ जीरा, धनिया, लौंग, मिर्च आदि पीसकर बनाया हुआ मसाला। २ एक प्रकार का पकाया हुआ मास।

**वेसासना**—स०[स० विश्वास] विश्वास करना। (डिं०) उदा०—त्रिध पर्भ मति कोई वेसासो।—प्रिथीराज।

**वेह**—पुं०[?] मगल कलश। (डिं०)

**वेध्य**—वि०[स० विध्य+अण्]१. विध्य पर्वत पर होनेवाला अथवा उससे सबध रखनेवाला। २. विध्यवासी।

**वै**—अव्य० एक निश्चय-बोधक अव्यय।

वि० [सं० द्वि] दो।

प्रत्य०[स० वा] १ भी। जैसे—कहुवै (कुछ भी)। २ ही। जैसे—भूत वै (भूत ही)।

**वैकक्ष**—पु०[स० वि√ कक्ष् (व्याप्त होना)+अण्]१ वह माला जो जनेऊ की तरह शरीर पर धारण की जाय। २. उक्त प्रकार से माला पहनने का ढग।

**वैकक्ष्यक**—पु०[स० वैकक्ष+यत्+कन्] एक प्रकार का हार जो कन्धे और पेट पर जनेऊ की तरह पहना जाता था।

**वैकटिक**—पु०[स० विकट+ठक्—इक] जौहरी।

वि० विकट।

**वैकट्य**—पु०[स० विकट्+ष्यञ्]=विकटता।

**वैकल्पिक**—वि०[सं० विकल्प+ठक्—इक] डींग हाँकनेवाला। शेखीबाज।

**वैकर्ण**—पु०[स० विकर्ण+अण्]१. वैदिक काल का एक जनपद। २. वात्स्य मुनि का दूसरा नाम।

**वैकर्त्तायन**—पुं० [स० वैकर्त्त+फक्—आयन] वह जो वैकर्त्त या वात्स्य मुनि के वंश में उत्पन्न हुआ हो।

**वैकर्तन**—पुं० [स०]१ सूर्य के एक पुत्र का नाम। २. कर्ण का एक नाम। वि० १. सूर्य-सम्बन्धी। २ जो सूर्यवंश में उत्पन्न हुआ हो। पद—वैकर्तन कुल=सूर्यवंश।

**वैकर्म**—पु० [स० विकर्म+अण्] बुरा कर्म। दुष्कर्म।

**वैकल्प**—पुं० [स० विकल्प+अण्]१. ऐसी स्थिति जिसमे किसी को दो या अधिक चीजो मे से कोई एक चुनने की पूर्ण स्वतन्त्रता होती है। २. इस प्रकार चुनी हुई वस्तु।

**वैकल्पिक**—वि० [स० विकल्प+ठक्—इक]१ जो विकल्प के रूप में हो। २. जिसके विषय मे विकल्प का उपयोग या प्रयोग किया जाने को हो अथवा किया जा सकता हो। जिसके चुनाव में अपनी इच्छा या रुचि का प्रयोग किया जा सकता हो। (आप्शनल)३. संदिग्ध। ४. किसी एक ही अंग या पक्ष से संबंध रखनेवाला।

**वैकल्य**—पु०[स० विकल+ष्यञ्] १. विकल होने की अवस्था या भाव। विकलता। २ उत्तेजना। ३. बल या शक्ति से हीन होना। निर्बलता। ४ कमी। न्यूनता। ५ भ्रम उत्पन्न करनेवाली त्रुटि या दोष। जैसे—श, ष, और स अथवा व और ब के उच्चारण मे वैकल्य जनित सादृश्य है। ६. कातरता। ७ अंग-हीनता। ८ अभाव।
वि० अधूरा। अपूर्ण।

**वैकारिक**—वि०[स० विकार+ठक्]१ विकार युक्त। २. विकार-संबंधी। २ किसी प्रकार के विकार के फलस्वरूप होनेवाला।
पु०=विकार।

**वैकारिकी**—स्त्री० [सं० वैकारिक से] आधुनिक चिकित्सा शास्त्र की वह शाखा जिसमे इस बात का विचार या विवेचन होता है कि शरीर मे किस प्रकार के विकार होने मे कौन-कौन से अथवा कैसे-कैसे रोग उत्पन्न होते है। (पैथालोजी)

**वैकार्य**—पु०[स० विकार+ष्यञ्] विकार का भाव या धर्म।
वि० जिसमे विकार होता या हो सकता हो।

**वैकाल**—पु०[स० विकाल+अण्]१ दिन का तीसरा पहर। २ शाम। सन्ध्या।

**वैकालिक**—वि०[सं० विकाल+ठक्—इक]१ विकाल-संबंधी। २. सन्ध्या का। सान्ध्य।

**वैकासिक**—वि० [स०]१ विकास-सम्बन्धी। २ विकास के रूप मे होनेवाला।

**वैकुंठ**—पु० [सं०] [वि० वैकुंठीय]१ विष्णु का एक नाम। २. वह स्वर्गीय लोक जिसमें विष्णु निवास करते है। ३ स्वर्ग। ४. इन्द्र। ५. सफेद पत्तोवाली तुलसी। ६. संगीत मे एक प्रकार का ताल।

**वैकृत**—वि०[सं० विकृत+अण्] [भाव० वैकृति]१. जो विकार के कारण उत्पन्न हुआ हो। २. दुस्साध्य। ३ विकारी। परिवर्तनशील।
पुं० १ विकार। जरावी। २. वीभत्स रस या उसका कोई आलंबन।

**वैकृत ज्वर**—पु० [सं० कर्म० स०] वह ज्वर जो प्रस्तुत ऋतु के अनुकूल न हो, बल्कि किसी और ऋतु के अनुकूल हो।

**वैकृतिक**—वि० [सं० विकृति+ठक्]१ विकृति से संबंध रखने या उसके कारण उत्पन्न होनेवाला। २. नैमित्तिक।

**वैकृत्य**—पुं०[सं० विकृत+ष्यञ्] १. विकार। २ परिवर्तन। ३. दुःखावस्था। ४. वीभत्स काम या बात।

**वैक्रम**—वि०[सं० विक्रम+अण्] विक्रम-संबंधी।

**वैक्रमीय**—वि० [सं० विक्रम+छण्—ईय] विक्रम-संबंधी। जैसे—वैक्रमीय संवत्।

**वैक्रांत**—पु०[स० विक्रांति+अण्] चुन्नी नामक मणि।

**वैक्रिय**—वि०[सं० विक्रिय+अण्] जो बिकने को हो। बेचे जाने के योग्य। विक्रेय।

**वैक्लव्य**—पुं० [सं० विक्लव+ष्यञ्] १. विकलता। व्याकुलता। २. पीड़ा। ३. शोक। ४ अस्त-व्यस्तता।

**वैखरी**—स्त्री०[सं० वि+खॅ√ रा (लेना)+क+अण्,+ङीप्] १ मुँह से उच्चरित होनेवाला शब्द। २. बोलने की शक्ति। ३. सरस्वती। वाग्देवी।

**वैखानस**—पु०[स० विखान+ड+अणुञ्+अण्]१ जो वानप्रस्थ आश्रम मे प्रवृत्त हो चुका हो। २ एक प्रकार के संन्यासी जो वनो मे रहते हैं। ३ कृष्ण यजुर्वेद की एक शाखा। ४. भागवत के दो स्कंधों मे से एक।

**वैखानसीय**—स्त्री०[स० वैखानस+छ—ईय] एक उपनिषद् का नाम।

**वैगंध**—पु० [सं०] भालझाड़ी का डब्बा जिसमे माल भेजा जाता है।

**वैगलेय**—पु०[सं० विगला+ढक्—एय] भूतो का एक गण। (पुराण)

**वैगुण्य**—पु० [सं० विगुण+ष्यञ्] १ विगुण होने की अवस्था या भाव। विगुणता। २ दोष। ३. नीचता। ४ अपराध।

**वैग्रहिक**—पु०[स० विग्रह+ठक्—इक] विग्रह या शरीर संबंधी। शारीरिक।

**वैघटिक**—पु०[स० विघट+ठक्—इक] जौहरी।

**वैघात्य**—वि०[स० वि√ हन् (मारना)+णिच्—ण्यत्] जिसका घात किया जा सके या हो सके।

**वैचक्षण्य**—पु०[स० विचक्षण+ष्यञ्] विचक्षणता।

**वैचारिकी**—स्त्री०=विचारधारा। (आइडियालोजी)

**वैचित्त्य**—पु०[स० विचित्त+ष्यञ्] १. चित्त की भ्रांति। भ्रम। २ २ अन्यमनस्कता।

**वैचित्र**—पु०[स० विचित्र+अण्] १. विचित्रता। विलक्षणता। २. भेद। फरक। ३ सुन्दरता।

**वैचित्र्य**—पु०[स० विचित्र+ष्यञ्] विचित्रता।

**वैचित्र्यवीर्य**—पुं०[स०] विचित्रवीर्य की संतान—धृतराष्ट्र, पांडु, विदुर आदि।

**वैच्युति**—स्त्री०[सं० वैच्युत+इति]१. विच्युत होने की अवस्था या भाव। विच्युति। २. पतन।

**वैजनन**—पुं०[सं० विजनन+अण्] गर्भ का अन्तिम मास।

**वैजन्य**—पुं०[सं० विजन+ष्यञ्]१. विजनता। एकांत। २. इन्द्र की पुरी का नाम।

**वैजयंत**—पु०[सं०]१. इंद्र। २. घर। मकान। ३. अग्निमंथ।

**वैजयंतिक**—पु०[स०वैजयन्त+ठक्—इक] वह जो पताका या झंडा उठाकर चलता हो। (इंदरब)

**वैजयंती**—स्त्री०[सं०]१ पताका। झंडा। २ जयंती नामक पौधा। ३ पाँच नग वाली मोतियों की पचरंगी माला।

**वैजयिक**—वि०[सं०विजय+ठञ्]—इक]१ विजय-संबंधी। २ विजय के फलस्वरूप मिलने या होनेवाला।

**वैजात्य**—पु०[सं० विजाति+ष्यञ्]१ विजातीय होने की अवस्था, धर्म या भाव। २ विलक्षणता। ३ बदचलनी। लंपटता।

**वैजिक**—पु०[सं० बीज+ठक्—इक]१ आत्मा। २ कारण। हेतु।
वि०१ बीज-सम्बन्धी। २ वीर्य-संबंधी। ३ बिजली संबंधी।

**वैज्ञानिक**—वि०[सं० विज्ञान+ठक्]१. विज्ञान-संबंधी। २ ठीक रीति या सिलसिले से होनेवाला।
पु०विज्ञान का ज्ञाता। विज्ञान-वेत्ता।

**वैडाल-व्रत**—पु०[सं० उपमि० सं०] [वि० वैडाल-व्रती] पाप और कुकर्म करते हुए भी ऊपर से साधु बने रहने का ढोंग।

**वेणु**—वि०[सं० वेणु+अण्, उ-लोप] वेणु संबंधी। बाँस का।
पु० बाँस की खपाचियां आदि से चटाइयाँ, टोकरियाँ आदि बनानेवाला कारीगर।

**वेणव**—पु०[सं० वेणु+अण्]१ बाँस का फल। २ बाँस का वह डंडा जो यज्ञोपवीत के समय धारण किया जाता है। ३ वेणु। बाँसुरी।
वि० वेणु-संबंधी। वेणु का।

**वैणविक**—पु०[सं० वैणव+ठक्—इक] वह जो वेणु बजाता हो। वंशी बजानेवाला।

**वैणवी (त्रिन्)**—पु० [सं० वैणव+इनि] १ वह जो वेणु बजाता हो। २ शिव।

**वैणिक**—पु०[सं० वीणा+ठक्—इक] वह जो वीणा बजाता हो। वीणा-कार।
वि० वीणा-सम्बन्धी। वीणा का।

**वेणुक**—पु०[सं० वेणु√कै (प्रकाश करना)+क+अण्]१ वह जो वेणु बजाने में निपुण हो। वंशी बजानेवाला। २ हाथी चलाने का अंकुश।

**वेण्य**—पु०[सं० वेणु+ष्यञ्] राजा वेणु के पुत्र का एक नाम।

**वैतंडिक**—पु०[सं० वितंडा+ठक्—इक] वितण्डा खड़ा करनेवाला। बहुत बड़ा झगड़ालू व्यक्ति।

**वैतंसिक**—पु०[सं० वितंस+ठक्—इक] कसाई।

**वैतत्य**—पु०[सं० विनत+ष्यञ्]=विनति (विस्तार)।

**वैतथ्य**—पु०[सं० वितथ+ष्यञ्]१ वितथ होने की अवस्था या भाव। २. विफलता।

**वैतनिक**—वि० [सं० वेतन+ठक्—इक]१ वेतन-संबंधी। वेतन का। २ जिसे किसी पद पर काम करने के फलस्वरूप वेतन मिलता हो। जैसे—वैतनिक मंत्री।
पु० नौकर। भृत्य।

**वैतरणी**—स्त्री०[सं० वितरण+अण्,+ङीप्]१ उड़ीसा की एक नदी का नाम जो बहुत पवित्र मानी जाती है। २ पुराणानुसार परलोक की एक नदी जिसे (यह शरीर छोड़ने पर) जीवात्मा को पार करना पड़ता है।

**वैतस्त**—वि०[सं० वितस्ता+अण्]१ वितस्ता नदी-संबंधी। २ वितस्ता नदी से प्राप्त।

**वैतानिक**—वि०[सं० वितान+ठक्—इक]१. यज्ञ-संबंधी। २. पवित्र।

**वैताल**—पु०[सं० वेताल+अण्] स्तुति पाठक। वैतालिक।
वि० वेताल-सम्बन्धी। वेताल का।

**वैतालिक**—पु०[सं० वेताल+ठक्—इक]१. प्राचीन काल का वह स्तुति-पाठक जो प्रातःकाल राजाओं को उनकी स्तुति करके जगाया करता था। स्तुति पाठक। २. ऐन्द्रजालिक। जादूगर।

**वैताली (लिन्)**—पु०[सं० वैताल+इनि] कार्तिकेय का एक अनुचर।

**वैतालीय**—वि०[सं० वेताल+छ—ईय] वेताल-सम्बन्धी।
पु०१. एक प्रकार का विषम वृत्त जिसके पहले और तीसरे चरणों में चौदह-चौदह और दूसरे और चौथे चरणों में सोलह-सोलह मात्राएँ होती हैं।

**वैतृष्ण्य**—पु० [सं० वितृष्ण+ष्यञ्] वितृष्ण होने की अवस्था या भाव।

**वैत्तिक**—वि०[सं०] वित्त-सम्बन्धी।

**वैदंभ**—पु०[सं० विदंभ+अण्] शिव का एक नाम।

**वैद**—पु०=वैद्य।

**वैदक**—पु०=वैद्यक।

**वैदग्ध (ग्ध्य)**—पु० [सं० विदग्ध+अण्, विदग्ध+ष्यञ्] १ विदग्ध या पूर्ण पंडित होने की अवस्था, धर्म या भाव। पांडित्य। विद्वत्ता। २ कार्य-कुशलता। दक्षता। पटुता। ३. चातुरी। चालाकी। ४. रसिकता। ५. शोभा। श्री। ६ हाव-भाव।

**वैदर्भ**—वि०[सं० विदर्भ+अण्]१ विदर्भ देश का। २ विदर्भ देश में उत्पन्न। ३. बात-चीत करने में चतुर।
पु०१ विदर्भ का राजा या शासक। २. दमयंती के पिता भीमसेन। ३ रुक्मिणी के पिता भीष्मक। ४. वाक्चातुरी। ५. मसूड़ा फूलने का रोग।

**वैदर्भक**—पु०[सं० विदर्भ+अण्+कन्] विदर्भ का निवासी।

**वैदर्भी**—स्त्री०[सं० विदर्भ+अण्+ङीप्] १ संस्कृत साहित्य में साहित्यिक रचना का वह विशिष्ट प्रकार या शैली जो मुख्यतः विदर्भ और उसके आस-पास के देशों में प्रचलित थी, और जो प्रायः सभी गुणों से युक्त सुकुमार वृत्तिवाली तथा सर्वश्रेष्ठ मानी जाती थी। करुणा, शृंगार आदि रसों के लिए यह विशेष उपयुक्त मानी गई है। २. अगस्त्य ऋषि की पत्नी। ३. दमयन्ती। ४. रुक्मिणी।

**वैदांतिक**—वि०[सं० वेदान्त+ठक्—इक] वेदांत जाननेवाला। वेदांती।

**वैदारिक**—पु०[सं० विदार+ठक्—इक] सन्निपात ज्वर का एक भेद।

**वैदिक**—वि० [सं० वेद+ठक्—इक] १. वेद-संबंधी। वेद का। जैसे—वैदिक काल, वैदिक धर्म। २. जो वेदों में कहा गया हो।
पु०१ वह जो वेदों में बतलाये हुए कर्मकांड का अनुष्ठान करता हो। वेद में कहे हुए कृत्य करनेवाला। २. वह जो वेदों का अच्छा ज्ञाता या पंडित हो।

**वैदिक धर्म**—पु०[सं० कर्म० स०] आर्यों का वह धर्म जो वेदों के युग में प्रचलित था। (इसमें प्रकृति की उपासना पितरों का पूजन, यज्ञकर्म, तपस्या आदि बातें मुख्य थीं, और जादू-टोने या मंत्र-यंत्र का भी कुछ प्रचलन था।)

**वैदिक-युग**—पु०[सं० कर्म० स०] वह युग या समय, जब वेदों की रचना हुई थी और वैदिक धर्म प्रचलित था।

**वैदिश**—वि० [सं० विदिशा+अण्] १. विदिशा-सम्बन्धी। विदिशा का। २. विदिशा में होनेवाला।

पु० विदिशा का निवासी।

**वैदिश्य**—पु०[विदिशा+ष्यञ्] विदिशा के पास का एक प्राचीन नगर।

**वैदुरिक**—पु०[सं० विदुर+ठक्—इक]१ विदुर का भाव। २. विदुर का मत या सिद्धान्त।

**वैदुष**—पुं०[स० विद्वस्+अण्] विद्वान्। पंडित।

**वैदुष्य**—पु०[स० विद्वस्+ष्यञ्] विद्वत्ता। पांडित्य।

**वैदूर्य**—पु०[स०]१ हरे रंग के रत्नों का एक वर्ग। (बेरिल) २ लहसुनिया नामक रत्न। (लैपिस लेजुली)

**वैदेशिक**—वि०[स० विदेश+ठक्—इक]१ विदेश में होनेवाला। २. विदेशों से संबंध रखनेवाला।
पु० विदेशी व्यक्ति।

**वैदेश्य**—वि०=वैदेशिक।

**वैदेहक**—पु०[स० वैदेह+कन्]१ वणिक्। व्यापारी। २. एक प्राचीन वर्णसंकर जाति।

**वैदेही**—स्त्री०[स० विदेह+अण्+ङीप्]१. विदेह राजा जनक की कन्या; सीता। २ वैदेह जाति की स्त्री। ३. पिप्पली। ४. रोचना।

**वैद्य**—पु०[स० विद्या+अण्]१ पंडित। विद्वान्। २. आयुर्वेद का ज्ञाता। ३ आयुर्वेद द्वारा निर्दिष्ट चिकित्सा पद्धति के अनुसार चिकित्सा करनेवाला। ४ एक जाति जो प्रायः बंगाल में पाई जाती है। इस जाति के लोग अपने आप को अबष्ठसंतान कहते हैं। ५ वासक। अडूसा।
वि० वेद-सम्बन्धी। वेद का।

**वैद्यक**—पु०[स०वैद्य+कन्] वह शास्त्र जिसमें रोगों के निदान और चिकित्सा का विवेचन हो। आयुर्वेद।

**वैद्याधर**—वि०[स० विद्याधर+अण्] विद्याधर-सम्बन्धी।

**वैद्युत**—वि०[स० विद्युत+अण्] विद्युत-संबंधी। बिजली की।

**वैद्रुम**—वि०[स० विद्रुम+अण्] विद्रुम-सम्बन्धी। मूँगे का।

**वैध**—वि०[स० विधि+अण्]१. विधि-सम्मत। २ विधि की दृष्टि में ठीक। विधि के अनुकूल।

**वैधता**—स्त्री०[स०] वैध होने की अवस्था, धर्म या भाव।

**वैधर्मिक**—वि०[स० विधर्मी+ठन्+अण्]१. धर्म-विरुद्ध। २. विधर्मियों जैसा।

**वैधर्म्य**—पु०[स० विधर्म+ष्यञ्]१ विधर्मी होने की अवस्था या भाव। २. नास्तिकता। ३. वह जो अपने धर्म के अतिरिक्त अन्यान्य धर्मों के सिद्धान्तों का भी अच्छा ज्ञाता हो।

**वैधव**—पुं०[स० विधु+अण्] विधु अर्थात् चन्द्रमा के पुत्र, बुध।
वि० विधु-सम्बन्धी। विधु का।

**वैधवेय**—वि०[सं० विधवा+ढक्—एय] विधवा के गर्भ से उत्पन्न।

**वैधव्य**—पु०[सं० विधवा+ष्यञ्] विधवा होने की अवस्था या भाव। रँड़ापा।

**वैधस**—पु० [सं० वेधस्+अण्] राजा हरिश्चन्द्र जो राजा वेधस के पुत्र थे।
वि० वेधस-संबंधी। वेधस का।

**वैधात्र**—पु० [सं० विधातृ+अण्] सनत्कुमार जो विधाता के पुत्र माने जाते हैं।

**वैधात्री**—स्त्री०[स० वैधात्र+ङीप्] ब्राह्मी (जटी)।

**वैधिक**—वि०[स० विधि+ठक्—इक] वैध। विधि-सम्मत।

**वैधी**—स्त्री० [स० विधि+अण्+ङीप्] ऐसी भक्ति जो शास्त्रों में बतलाई हुई विधि के अनुसार या अनुरूप हो। जैसे—कीर्तन, भजन आदि।

**वैधुर्य**—पु [सं० विधुर+ष्यञ्]१ विधुर होने की अवस्था या भाव। २. हताश या कातर होने की अवस्था या भाव। ३. भ्रम। धोखा। ४. सन्देह। ५. कष।

**वैधृति**—पु [स० ब० स०, पृषो० सिद्धि] १. ज्योतिष में विष्कम्भ आदि सत्ताइस योगों में से एक जो अशुभ कहा गया है। २ पुराणानुसार विधृति के पुत्र एक देवता।

**वैधेय**—वि०[स० विधि+ढक्—एय य, विधेय+अण्] १. विधि-संबंधी। विधि का। २ सबंधी। रिश्तेदार। ३. मूर्ख। बेवकूफ।

**वैनतक**—पु० [स० विनता+अण्, अकच्] एक प्रकार का यज्ञ पात्र जिसमें घी रखा जाता था।

**वैनतेय**—वि०[स० विनता+ढक्—एय] विनता-सम्बन्धी। विनता का।
पु० १. विनता की संतान। २. गरुड़। ३ अरुण।

**वैनतेयी**—स्त्री०[स० वैनतेय+ङीप्] एक वैदिक शाखा।

**वैनत्य**—वि०[स० विनत+ष्यञ्] विनीत। विनम्र।

**वैनयिक**—पु०[स०विनय+ठक्—इक]१ विनय। २. निवेदन। प्रार्थना। ३. वह जो शास्त्रों आदि का अध्ययन करता हो। ४ युद्ध-रथ।
वि०१ विनय-संबंधी। २ विनय अर्थात् नीतिपूर्ण आचरण करनेवाला।

**वैनायक**—वि०[सं० विनायक+अण्] विनायक या गणेश सम्बन्धी। विनायक का।
पु० पुराणानुसार भूतों का एक गण।

**वैनायिक**—पु०[स० विनाय+ठक्—इक] बौद्ध धर्म का अनुयायी। बौद्ध।

**वैनाशिक**—पु०[स० विनाश+ठक्—इक] १ फलित ज्योतिष में, जन्म-नक्षत्र से तेरहवाँ नक्षत्र। २ जन्म नक्षत्र से सातवाँ, दसवाँ और अठारहवाँ नक्षत्र। ये तीनों नक्षत्र अशुभ समझे जाते हैं और निधन-तारा कहलाते हैं। इन नक्षत्रों में यात्रा करना वर्जित है। ३. बौद्ध।
वि० १. विनाश-सम्बन्धी। विनाश का। २ परतन्त्र। पराधीन।

**वैनीतक**—पु०[स० विनीत+कै (प्रकाश करना)+क+अण्] १ एक तरह की बड़ी पालकी। विनीतक। २. वाहन का साधन अर्थात् कहार, घोड़ा आदि।

**वैन्य**—पु०[स० वेन+ष्यञ्] वेन के पुत्र, पृथु।

**वैपथक**—वि०[स० विपथ+कन्, +अण्] १. विपथ-संबंधी। विपथ का। २. विपथ पर चलनेवाला।

**वैपरीत्य**—पुं०[सं० विपरीत+ष्यञ्] विपरीतता।

**वैपार**—पु०=व्यापार।

**वैपारी**—पुं०=व्यापारी।

**वैपित्र**—वि०[सं० विपितृ+अण्](सबंध के विचार से ऐसे भाई या बहनें) जो एक ही माता के गर्भ से परन्तु विभिन्न पिताओं के वीर्य से उत्पन्न हुए हों।

**वैपुल्य**—पुं०[सं० विपुल+ष्यञ्] विपुलता।

**वैफल्य**—पु० [सं०] विफल+ष्यञ्] १ विफलता। २ साहित्य में रचना का एक दोष जो उस समय माना जाता है जब रचना में शब्दाडंबर मात्र होता है पर चमत्कार का अभाव होता है।

**वैबुध**—वि० [सं० विबुध+अण्] विबुध अर्थात् देवता-संबंधी।

**वैबोधिक**—पु० [सं० विबोधिक+ठक्—इक] १ रात को पहरा देनेवाला व्यक्ति। २ जगानेवाला व्यक्ति। विशेषतः स्तुति पाठ द्वारा राजा को जगानेवाला व्यक्ति।

**वैभव**—पु० [सं० विभु+अण्] १ विभव अर्थात् धनी होने की अवस्था या भाव। २ धन-दौलत। ऐश्वर्य। ३ बड़प्पन। महत्ता। ४ शान-शौकत। ५ शक्ति। सामर्थ्य।

**वैभवशाली**—वि० [सं०] १. (व्यक्ति) जिसके पास बहुत अधिक धन-संपत्ति हो। विभववाला। २ अत्यधिक समर्थ।

**वैभाधिक**—वि० [सं० वैभव+ठक्—इक] १ वैभव-सम्बन्धी। २ वैभवशाली।

**वैभातिक**—वि० [सं० विभात+ठक्—इक] विभात अर्थात् प्रभात संबंधी।

**वैभार**—पु० [सं०] राजगृह के पास का एक पर्वत।

**वैभावरि**—वि० [सं० विभावरी+अण्] विभावरी अर्थात् रात-संबंधी।

**वैभाषिक**—वि० [सं० विभाषा+ठक्—इक] १ विभाषा में होनेवाला। विभाषा-सम्बन्धी। २ वैकल्पिक। ३ बौद्धों के विभाषा नामक संप्रदाय से संबंध रखनेवाला अथवा उसका अनुयायी।

**वैभाष्य**—पु० [सं० विभाषा+ष्यञ्] किसी मूल या सूत्रग्रन्थ का विस्तृत भाष्य।

**वैभूतिक**—वि० [सं० विभूति+ठन्—इक] १ विभूति-संबंधी। विभूति का। २ विभूति के फलस्वरूप होनेवाला। ३ प्रचुर।

**वैभोज**—पु० [सं० विभोज+अण्] एक प्राचीन जाति जिसका मूल पुरुष द्रुह्यु माना गया है। (महाभारत)

**वैभ्राज्य**—पु० [सं० विभ्राज+अण्] १ देवताओं का उद्यान या बाग। २. पुराणानुसार मेरु के पश्चिम में सुपार्श्व पर्वत पर का एक जंगल। २ स्वर्ग के अन्तर्गत एक लोक।

**वैमत्य**—पु० [सं० विमत+ष्यञ्] १ विमति अर्थात् मतभेद की अवस्था या भाव। फूट। २ मतों का न मिलना। ३ मतों में होनेवाला अंतर या फरक।

**वैमनस्य**—पु० [सं० विमनस्+ष्यञ्] १ विमनस्क या अन्यमनस्क होने की अवस्था या भाव। २ दुर्मनी। वैर। शत्रुता। ३. मानसिक दौर्बल्य। उदासी।

**वैमल्य**—पु० [सं० विमल+ष्यञ्]=विमलता।

**वैमात्र**—वि० [सं० विमातृ+अण्] [स्त्री० वैमात्रा] (संबंध के विचार से) ऐसे भाई या बहनें जो विभिन्न माताओं के गर्भ से उत्पन्न, परन्तु एक ही पिता की संतान हों।

**वैमात्रक**—पु० [सं० वैमात्र+कन्] [स्त्री० वैमात्री] सौतेला भाई।

**वैमात्रेय**—वि० [सं० विमातृ+ढक्—एय] [स्त्री० वैमात्रेयी] १. विमातृ-संबंधी। विमाता का। २ विमाता या सौतेली माँ की तरह का। (स्टेप-मदरली) जैसे—किसी के साथ किया जानेवाला वैमात्रेय व्यवहार।

**वैमानिक**—वि० [सं० विमान+ठक्—इक] १ विमान-संबंधी। २. विमान में उत्पन्न।

पु० १. वह जो विमान पर सवार हो। २. हवाई जहाज चलानेवाला। (पायलट) ३ जैनमत के अनुसार स्वर्गलोक में रहनेवाले जीव। ३. वह जो आकाश में विचरण करता या कर सकता हो।

**वैमानिकी**—स्त्री० [सं० वैमानिक+ङीप्] विमान या हवाई जहाज चलाने की क्रिया, विद्या या शास्त्र। (एयरोनाटिक्स)

**वैमुख्य**—पु० [सं० विमुख+ष्यञ्] १ विमुखता। २ विरक्ति। ३. घृणा। ४. पलायन।

**वैमूढक**—पु० [सं०] नृत्य का वह प्रकार जिसमें स्त्रियों का वेश धारण करके पुरुष नाचते हैं।

**वैमूल्य**—पु० [सं० विमूल्य+अण्] मूल्य की भिन्नता।

**वैमृध**—पु० [सं० विमृध+अण्] इड़ा।

**वैयक्तिक**—वि० [सं० व्यक्ति+कन्, +अण्] १ किसी विशिष्ट व्यक्ति अथवा उसके अधिकार, गुण, स्वभाव आदि से संबंध रखनेवाला। (पर्सनल) २ जो पारिवारिक, सामूहिक या सार्वजनिक कार्यक्षेत्र के अन्तर्गत न आता हो। बल्कि जिस पर एक ही व्यक्ति का विधिक अधिकार हो। (प्राइवेट)

**वैयक्तिक बंध**—पुं० [सं०] वह बंध या प्रतिज्ञापत्र जिसके अनुसार लेखक या हस्ताक्षरकर्ता अपने आप को कोई काम करने या कोई प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए बद्ध करता है। (पर्सनल ला)

**वैयक्तिक विधि**—स्त्री० [सं०] आधुनिक राजकीय विधानों में देशव्यापी विधियों या कानूनों से भिन्न वह विधि या कानून जिसका प्रयोग किसी क्षेत्र के विशिष्ट निवासी या निवासियों के संबंध में कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में होता है। (पर्सनल ला)

**वैयग्र**—पु० [सं०]=व्यग्रता।

**वैयर्थ्य**—पु० [सं० व्यर्थ+ष्यञ्] व्यर्थ होने की अवस्था या भाव। व्यर्थता।

**वैयसन**—वि० [सं० व्यसन+अण्] व्यसन-संबंधी। व्यसन का।

**वैयाकरण**—वि० [सं० व्याकरण+अण्] व्याकरण-सम्बन्धी। व्याकरण का।

पुं० १. वह जिसे व्याकरण-शास्त्र का पूर्ण ज्ञान हो। व्याकरण का ज्ञाता। २ व्याकरण-शास्त्र की रचना करनेवाला।

**वैयाघ्र**—पु० [सं० व्याघ्र+अण्] १ व्याघ्र-सम्बन्धी। २ व्याघ्र की तरह का। ३. जिस पर व्याघ्र की खाल मढ़ी गई हो।

पु० पुरानी चाल का एक तरह का रथ जिस पर बाघ की खाल मढ़ी होती थी।

**वैयास**—वि० [सं० व्यास+अण्] व्यास-सम्बन्धी। व्यास का।

**वैयासकि**—पुं० [सं० व्यास+इञ्, अकञ्-आदेश, ऐच्] वह जो व्यास का वंशज हो।

पु० व्यास द्वारा रचित।

**वैर**—पुं० [सं० वीर+अण्] शत्रुता का वह उत्कट या तीव्र रूप जो प्रायः जाग्रत रहता और बहुत कुछ स्थायी या स्वाभाविक होता है।

**विशेष**—'वैर' और 'शत्रुता' का अंतर जानने के लिए देखें 'शत्रुता' का विशेष।

**वैरक्त**—पुं०[सं० विरक्त+अण्] विरक्त होने की अवस्था या भाव। विरक्तता।

**वैरता**—स्त्री०[म० वैर+तल्+टाप्] वैर का भाव। पूर्ण शत्रुता।

**वैरत्य**—पुं०[स० विरल+ष्यञ्]१. विरलता। २ एकांत स्थान।

**वैर-शुद्धि**—स्त्री०[स०] वैरी से उसके किए गए अपकार का बदला लेने के लिए उसका कोई अपकार करना। वैर का बदला चुकाना।

**वैरस्य**—पुं०[स० विरस+ष्यञ्]१. विरक्त होने का भाव। विरसता। २. अनिच्छा।

**वैराग**†—पुं०=वैराग्य।

**वैरागिक**—वि० [म० विराग+ठञ्—इक] १. विराग-संबंधी। २. विराग उत्पन्न करनेवाला।

**वैरागी**—वि०[सं० वैराग+इनि] जिसके मन में विराग उत्पन्न हुआ हो। जिसका मन संसार की ओर से हट गया हो। विरक्त। जैसे—बड़ा वीर वैरागी।

पुं० उदासीन वैष्णवों का एक संप्रदाय।

**वैराग्य**—पुं०[स० विराग+ष्यञ्]१. वह अवस्था जिसमें मन में किसी के प्रति राग-भाव नहीं होता। २ मन की वह वृत्ति जिसके कारण संसार की विषय-वासना तुच्छ प्रतीत होती है और व्यक्ति संसार की झंझटें छोड़कर एकांत में रहना और ईश्वर का भजन करना है। विरक्ति।

**वैराज**—पुं० [स० विराज+अण्] १. विराट् पुरुष। परमात्मा। २. एक मनु का नाम। ३. पुराणानुसार सत्ताइसवें कल्प का नाम। ४. पितरों का एक वर्ग। ५ वैराग्य। (दे०)

**वैराजक**—पुं० [स० वैराज+कन्, अथवा वि√राज् (सुशोभित होना)+ण्वुल्—अक, +अण्] उन्नीसवाँ कल्प। (पुरा०)

**वैराज्य**—पुं०[स० विराज+ष्यञ्] १ ऐसी शासन-प्रणाली जिसमें दो प्रभु-सत्ताएँ किसी राष्ट्र का शासन-सूत्र संभाले रहती हैं। २ ऐसा देश जिसमें उक्त प्रकार की शासन-प्रणाली प्रचलित हो।

**वैराट**—वि० [म० विराट्+अण्] १ विराट्-सम्बन्धी। विराट् का। २. लंबा-चौड़ा। विस्तृत।

पुं०१. महाभारत का विराट पर्व। २. वीरबहूटी। इन्द्रगोप।

**वैराटक**—पुं० [म० वैराट+कन्]शरीर के किसी अंग में होनेवाली जहरीली गाँठ या गिल्टी। (सुश्रुत)

**वैरिंचि**—वि०[स० विरिंच+ठञ्] विरिंचि या ब्रह्मा-संबंधी। ब्रह्मा का।

**वैरिंच्य**—पुं० [स० विरिंच+ष्यञ्] ब्रह्मा की संतान सनक, सनन्दन आदि ऋषि।

**वैरि**—पु०[म० वैर+इनि] वैरी। शत्रु। दुश्मन।

**वैरी**—पुं०[स० वैरिन्] वह जिसके साथ वैर-भाव हो। दुश्मन।

**वैरूपाक्ष**—पु० [सं० विरूपाक्ष+अण्] विरूपाक्ष के गोत्र या वंश में उत्पन्न।

**वैरूप्य**—पुं० [सं० विरूप+ष्यञ्]१. विरूप होने की अवस्था या भाव। विरूपता। २. विकृति। ३. बेढंगापन।

**वैरेचन**—वि० [सं० विरेचन+अण्] विरेचन-संबंधी। विरेचन का।

**वैरोचन**—वि०[सं० विरोचन+अण्] १. विरोचन से उत्पन्न। २. सूर्यवंश में उत्पन्न।

पुं०१. बुद्ध का एक नाम। २. राजा बलि का एक नाम। ३. सूर्य का एक नाम। ३. सूर्य का एक पुत्र। ४. अग्नि का एक पुत्र।

**वैरोचनि**—पुं०[सं० विरोचन+इञ्]१. बुद्ध का एक नाम। २. राजा बलि का एक नाम। ३ सूर्य का एक पुत्र।

**वैरोद्धार**—पु०[सं० प०त०] वैर-शुद्धि।

**वैरोधक, वैरोधिक**—वि० [म०] अनुकूल न पड़नेवाला अथवा विरोधी सिद्ध होनेवाला।

**वैलक्षण्य**—पुं०[स० विलक्षण+ष्यञ्]१. विलक्षण होने की अवस्था या भाव। विलक्षणता। २. ऐसा गुण या धर्म जिसके कारण कोई चीज विलक्षण प्रतीत होती हो।

**वैलक्ष्य**—पु०[स० विलक्ष+ष्यञ्]१. लज्जा। शर्म। २. आश्चर्य। ताज्जुब। ३. स्वभाव की विलक्षणता।

**वैल-स्थान**—पुं०[सं०विलस्थान+अण्]वह स्थान जहाँ मुरदे गाड़े जाते हैं। कब्रिस्तान।

**वैलिंग्य**—पु०[म० वैलिंग+ष्यञ्] लिंग अर्थात् परिचायक चिह्न से रहित होने की अवस्था या भाव। लिंगहीनता।

**वैलोम्य**—पु०[सं० विलोम+ष्यञ्]=विलोमता।

**वैवक्षिक**—वि० [म०] १. विवक्षा-संबंधी। २ विवक्षा-जन्य।

**वैवधिक**—पु०[स० विवध+ठक्—इक]१ फेरी लगानेवाला व्यापारी। २. अनाज या गल्ले का व्यापारी। ३ कूत। ४ मजदूर।

**वैवर्ण**—पु०[स० विवर्ण+अञ्] १. विवर्ण होने की अवस्था या भाव। २. लावण्य या सौन्दर्य का अभाव। ३ मलिनता। ४ वैवर्ण्य। (दे०)

**वैवर्णिक**—पु० [स० विवर्ण+ठक्—इक] वह जो जाति-च्युत कर दिया गया या अपने वर्ण से निकाल दिया गया हो।

**वैवर्ण्य**—पुं० [सं० विवर्ण+ष्यञ्]१ विवर्णता। २ साहित्य में एक सात्विक भाव जो उस समय माना जाता है जब क्रोध, भय, मोह, लज्जा, रोग, शीत या हर्ष के कारण किसी के मुँह का रंग उड़ने लगता है। ३ मलिनता। ४. जाति से च्युत होने की अवस्था या भाव।

**वैवर्त**—पुं०[सं० विवर्त+अण्] चक्र या पहिए की तरह घूमना।

**वैवश्य**—पुं०[स० विवश+ष्यञ्]१. विवश होने की अवस्था या भाव। विवशता। २. कमजोरी। दुर्बलता।

**वैवस्वत**—पुं०[स० विवस्वत+अण्] १ सूर्य के एक पुत्र का नाम। २ एक रुद्र का नाम। ३ शनैश्चर। ४. पुराणानुसार (क) वर्तमान मन्वंतर और (ख) उसके मनु का नाम। ५. कलियुग के अधिष्ठाता सातवें मनु।

वि०१. सूर्य-सम्बन्धी। २. मनु-संबंधी। ३. यम-संबंधी।

**वैवस्वती**—स्त्री०[सं० वैवस्वत+ङीप्]१ दक्षिण दिशा। २ यमुना। ३. यम की बहन।

**वैवाह**—वि० [सं० विवाह+अण्] विवाह-संबंधी। विवाह का।

**वैवाहिक**—वि०[सं० विवाह+ठक्—इक]१ विवाह-सम्बन्धी। विवाह का। (मैरिटल) २. विवाह के फलस्वरूप होनेवाला।

पुं०१. विवाह। २ विवाह के फलस्वरूप होनेवाला संबंध। ३ एवमूर।

**वैवाह्य**—वि०[स० विवाह+ष्यञ्]१ विवाह-संबंधी। विवाह का। २ जो विवाह के योग्य हो या जिसका विवाह होने को हो।

पुं० विवाह-संबंधी कृत्य।

**वैवृत्त**—पु०[सं० विवृत्त+अण्] उदात्त आदि स्वरों का क्रम।

**वैशंपायन**—पुं० [स० विशम्प+फञ्—आयन्] एक प्रसिद्ध ऋषि का नाम जो वेदव्यास के शिष्य थे। कहते हैं कि महर्षि वेदव्यास की आज्ञा से इन्होंने जन्मेजय को महाभारत की कथा सुनाई थी।

**वैशद्य**—पु० [स० विशद+ष्यञ्] १. विशद होने का भाव। विशदता। २ निर्मलता।

**वैशाली**—स्त्री०=वैशाली।

**वैशल्य**—पु० [स० विशल्य+अण्] बहुत बड़े कष्ट या वेदना से होनेवाली मुक्ति।

**वैशाख**—पु० [स० विशाखा+अण्] १ भारतीय वर्ष के बारह महीनों में से एक जो चान्द्र गणना से दूसरा और सौर गणना के अनुसार पहला महीना होता है। इस मास की पूर्णिमा विशाखा नक्षत्र में पडती है, इसलिए इसे वैशाख कहते हैं। २ एक प्रकार का ग्रह जिसका प्रभाव घोड़ों पर पड़ता है, और जिसके कारण उसका शरीर भारी हो जाता है और वह काँपने लगता है। ३ बाण चलाने की एक प्रकार की मुद्रा। ४ मयानी का डडा। ५. लाल गदहपूरना।

**वैशाखी**—स्त्री० [स० विशाखा+अण्+ङीप्] १ ऐसी पूर्णिमा जो विशाखा नक्षत्र में युक्त हो। वैशाख मास की पूर्णिमा। २ सौर मास की सक्रान्ति के दिन होनेवाला उत्सव। ३ पुराणानुसार वसुदेव की एक पत्नी। ४ लाल गदहपूरना।

**वैशारद**—वि० [स० विशारद+अण्] विशारद।

**वैशारद्य**—पु० [स० विशारद+ष्यञ्] विशारद या पडित होने की अवस्था, कर्म या भाव। विशारदता।

**वैशाली**—स्त्री० [स०] आधुनिक मुजफरपुर (बिहार) मे स्थित एक प्राचीन नगरी जिसे विशाल नामक राजा ने बसाया था तथा जो महावीर वर्द्धमान की जन्मभूमि है। आज-कल यह बसाढ नाम से प्रसिद्ध है।

**वैशालीय**—पुं० [स० विशाला+छण्—ईय] जैन धर्म के प्रवर्तक महावीर का एक नाम।

**वैशालेय**—पु० [स० विशाल+ढक्—एय] १ विशाल का वशज। २. तक्षक।

**वैशिक**—पु० [स० वेश+ठक्—इक] तीन प्रकार के नायकों मे से वह नायक जो वेश्याओं के साथ भोग-विलास करता हो। वेश्यागामी नायक। वि० १ वेश्यावृत्ति से सबध रखनेवाला। २ वेश्या-सबधी। वेश्या का।

**वैशिष्ट्य**—पु० [स०] विशिष्टता।

**वैशेषिक**—पु० [स० विशेष+ठक्—इक] १ छ दर्शनों मे से एक जो महर्षि कणादकृत है और जिसमे पदार्थों के स्वरूप आदि का विचार तथा द्रव्यों का निरूपण है। पदार्थ-विद्या। २. उक्त दर्शन का अनुयायी।

**वैशेष्य**—पु० [स० विशेष+ष्यञ्] विशेष का भाव। विशेषता।

**वैशिक**—वि० [स० वेश्म+ठक्—इक] वेश्म अर्थात् घर या मकान में रहनेवाला।

**वैश्य**—पु० [स०√विश्+क्विप्+ष्यञ्] हिंदुओं में तीसरे वर्ण का व्यक्ति जिसका मुख्य कर्म व्यापार तथा खेती कहा गया है।

**वैश्यता**—स्त्री० [स० वैश्य+तल्+टाप्] वैश्य का धर्म या भाव। वैश्यत्व।

**वैश्यभद्रा**—स्त्री० [स० द्व० स०] बौद्धों की वैश्या और भद्रा नाम की दो देवियाँ।

**वैश्या**—स्त्री० [स० वैश्य+टाप्] १. वैश्य जाति की स्त्री। २ हल्दी।

**वैश्रंभक**—पु० [पुं० विश्रंभक+अण्] देवताओं का एक उद्यान। (पुराण)

**वैश्रवण**—पु० [स० विश्रवण+अण्] १. कुबेर। २ शिव।

**वैश्रवणालय**—पु [स० ष० त०] १ कुबेर के रहने का स्थान। २. बड का पेड़। वट वृक्ष।

**वैश्लेषिक**—वि० [स०] १ विश्लेषण-सबधी। २ विश्लेषण के फलस्वरूप जात होनेवाला। (एनैलिटिकल)

**वैश्व**—वि० [स० विश्व+अण्] विश्वदेव-सबधी। विश्वदेव का।
पु० उत्तराषाढा। नक्षत्र।

**वैश्वजनीन**—वि०=विश्वजनीन।

**वैश्वदेव**—पु० [स० विश्वदेव+अण्] विश्वदेव को प्रसन्न करने के उद्देश्य से किया जानेवाला यज्ञ।

**वैश्वदेवत**—पु० [स० विश्वदेवता+अण्] उत्तराषाढा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता विश्वदेव माने जाते हैं।

**वैश्वयुग**—पु० [स० विश्व-युग, ष० त०,+अण्] फलित ज्योतिष के अनुसार वृहस्पति के शोभकृत्, शुभकृत्, क्रोधी, विश्वावसु और पराभव नामक पाँच सवत्सरों का युग या समूह।

**वैश्वरूप्य**—वि० [स० विश्वरूप+अण्] १. बहुत से रूपोंवाला। २ विभिन्न प्रकार का।

**वैश्वानर**—पु० [स० विश्वानर+अण्] १ अग्नि। २. परमात्मा। ३ चेतन। ४. चित्र। ५ चित्रक। चीता।

**वैश्वानर-मार्ग**—पुं० [स०] चन्द्रवीथी का एक भाग।

**वैश्वामित्र, वैश्वामित्रक**—वि० [स० विश्वामित्र+अण्+कन्] विश्वामित्र-सबधी।

**वैश्वासिक**—वि० [स० विश्वास+ठक्—इक] =विश्वास-संबधी।

**वैषम्य**—पु० [स० विषम+ष्यञ्] विषम होने की अवस्था या भाव।

**वैषयिक**—वि० [स० विषय+ठक्—इक] १. विषय-वासना-सबधी। विषय का। २ विषय-वासना मे लिप्त रहनेवाला। विषयी।

**वैषिक**—वि० [स० विष+ठक्—इक] १ विष-सबधी। २. विष के सयोग से उत्पन्न होनेवाला। विषजन्य। (टॉक्सिक) जैसे—रक्त में होनेवाला वैषिक विकार।

**वैषत**—पुं० [स० विषुवत्+अण्] विषुव सक्रांति।
वि० विषवत्-सम्बन्धी।

**वैष्किर**—पु० [स० विष्किर+अण्] ऐसा पशु या पक्षी जो चारों ओर घूम-फिरकर आहार प्राप्त करता हो।

**वैष्णव**—वि० [स० विष्णु+अण्] [स्त्री० वैष्णवी] १ विष्णु-संबधी। जैसे—वैष्णव विचार। २ विष्णु का उपासक।
पुं० १. हिंदुओं का एक प्रसिद्ध धार्मिक संप्रदाय। इसमें विष्णु की उपासना करते हुए अपेक्षाकृत विशेष आचार-विचार में रहना पडता है। २ उक्त के आधार पर सात्विक वृत्तिवाला और निरामिषभोजी व्यक्ति। ३ विष्णु पुराण। ४. यज्ञ-कुण्ड की भस्म।
वि० विष्णु-संबधी। विष्णु का।

**वैष्णवाचार्य**—पु० [स० वैष्णव+त्व] वैष्णव होने की अवस्था, धर्म या भाव। वैष्णवता।

**वैष्णवाचार**—पुं० [सं० ष० त०] १. वैष्णव का आचार-विचार। २. मांस आदि असात्विक पदार्थ का सेवन न करना।

**वैष्णवी**—स्त्री० [स० वैष्णव+ङीप्] १ विष्णु की शक्ति। २. दुर्गा। ३. गंगा। ४. तुलसी। ५. पृथ्वी। ६ श्रवण नक्षत्र। ७. अपराजिता या कोयल नाम की लता। ८. शतावर।

**वैष्ण्य**—वि०[सं० वैष्णव+यत्, य, ष्यञ्] विष्णु-संबंधी। विष्णु का।

**वैसंदर**†—पु०[स० वैश्वानर] अग्नि। आग।

**वैसर्गिक**—वि० [स० विसर्ग+ठक्-इक] १. विसर्ग-संबंधी। २. जो विसर्जन करने या त्यागे जाने के योग्य हो। त्याज्य।

**वैसर्जन**—पुं०[स० विसर्जन+अण्] १. विसर्जन करने या उत्सर्ग करने की क्रिया। २ विसर्जित किया हुआ। पदार्थ। ३ यज्ञ की बलि।

**वैसर्प**—पु०[स० विसर्प+अण्] विसर्प नामक रोग।

**वैसा**—वि०[हिं०] १. किसी के अनुरूप या उसके अनुकरण पर किया जाने या होनेवाला। उसी तरह का। २ ऐसा। जैसा—वैसा काम करो कि लोग तुम्हें पुरस्कृत करें।
अव्य० उस प्रकार।

**वैसादृश्य**—पु०[स० विसदृश+ष्यञ्] विसदृश या असमान होने का भाव। असमानता। विषमता।

**वैसे**—अ०[हिं० वैसा] उस प्रकार से। उस तरह से।

**वैस्तारिक**—वि०[स० विस्तार+ठक्—इक] १ विस्तार-संबंधी। विस्तार का। २. विस्तृत।

**वैस्वर्य**—पुं०[स० विस्वर+ष्यञ्] १. विस्वर होने की अवस्था या भाव। २. उद्वेग, पीड़ा आदि के कारण होनेवाला स्वर-भंग। स्वर का विकृत होना। ३. गला बैठना।

**वैहंग**—वि०[स० विहग+अण्] विहग-संबंधी। पक्षी का।

**वैहायस**—वि०[स० विहायस्+अण्] १. आकाश में विचरण करनेवाला। २. आकाशस्थ। २. वायु-संबंधी।
पु० देवता।

**वैहार**—पु०[स० विहार+अण्] मगध में राजगृह के पास का एक प्राचीन पर्वत।

**वैहारिक**—वि०[सं० विहार+ठक्-इक] १. विहार-संबंधी। विहार का। २. विहार के लिए काम में आनेवाला।

**वैहार्य**—वि० [स० वि√हृ (हरना)+ण्यत्, +अण्] जिससे हँसी-मजाक किया जाता हो।
पु० साला।

**वैहासिक**—पु०[स० विहास+ठक्-इक] ऐसा व्यक्ति जो लोगों को बहुत अधिक हँसाता हो।

**वोट**—पुं०[अ०] चुनाव में किसी उम्मेदवार को मतदाता द्वारा दिया जानेवाला मत।
†स्त्री० ओट। उदा०—बदन चंद पट वोट जरावैं।—नंददास।

**वोटर**—पुं०[अं०] वह जिसे चुनाव में मत देने का अधिकार प्राप्त हो। मतदाता।

**वोटिंग**—स्त्री०[अं०] चुनाव के समय मत दिये या लिये जाने का काम।

**वोड़ना**†—स०=ओड़ना (पसारना)।

**वोड़ा**—पुं०[सं० वा+उड्] १. गोह नामक जंतु। गोनस सर्प। २. एक प्रकार की मछली।

**वोढ़ु**—पुं०[सं०] ऐसी स्त्री का पुत्र जो मायके में रहती हो।

**वोद**—वि०[सं०] ओदा। गीला।

**वोदर**†—पु०=उदर।

**वोरव**—पुं०=ओरी (धान)।

**वोल्ट**—पु०[अ०] दे० 'ऊर्जा' (विद्युत् का)।

**वोल्टेज**—पुं०[अ०] दे० 'ऊर्जा-मान'।

**वोल्वाह**—[सं०]पु० ऐसा घोड़ा जिसकी दुम और अयाल के बाल पीले रंग के हों।

**वोहित्थ**—पु०[स० वोहित+यत्] बड़ी नाव। जहाज।

**व्यंकुश**—वि०[स० वि+अंकुश] निरंकुश।

**व्यंग**—वि०[स० वि+अंग] [भाव० व्यंगता, व्यंगत्व] १ अंग-रहित। २ जिसका कोई अंग खंडित हो अथवा न हो। विकलांग। ३. लँगड़ा। ४. अव्यवस्थित।
पु० १. मुँह पर काली झुर्रियाँ निकलने का एक रोग। २. मेचक।
पु०=व्यंग्य।

**व्यंगिता**—स्त्री०[स० व्यंगि+तल्+टाप्] १. विकलांगता। २ पंगुता।

**व्यंगी**—वि०[स० व्यंग+इनि] विकलांग।

**व्यंगुल**—पु०[स० ब० स०] अंगुल का साठवाँ भाग। (नाप)

**व्यंग्य**—पु०[स० व्यंग+यत्] १. शब्द की व्यंजना शक्ति (दे०) द्वारा निकलनेवाला अर्थ। २. किसी को चिढ़ाने, दुःखी करने या नीचा दिखाने के लिए कही जानेवाली ऐसी बात जो स्पष्ट शब्दों में न होने पर भी अथवा विपरीत रूप की होने पर भी उक्त प्रकार का अभिप्राय या आशय प्रकट करती हो। (आईरनी)

**व्यंग्य गीति**—स्त्री०[स०] ऐसा गीत या पद्यात्मक रचना जिसका मुख्य उद्देश्य किसी व्यक्ति या उसकी कृति पर व्यंग्य करके उसकी हँसी उड़ाना हो। (सैटायर)

**व्यंग्य-चित्र**—पुं०[मध्यम० स०] ऐसा उपहासात्मक तथा सांकेतिक चित्र जिसका मुख्य उद्देश्य किसी घटना, बात, व्यक्ति आदि की हँसी उड़ाना होता है। (कार्टून)

**व्यंग्य-विदग्धा**—स्त्री०[सं०] साहित्य में नायिका की वह सखी जो व्यंग्य-पूर्ण बात कहकर उसे यह जतलाती हो कि मैंने तुम्हारा सब हाल जान लिया है।

**व्यंग्यार्थ**—पु०[कर्म० स०] व्यंजना शक्ति के द्वारा प्राप्त अर्थ। सांकेतिक अर्थ। (सा०)

**व्यंजक**—वि०[स०] व्यंजन अर्थात् व्यक्त करनेवाला।
पुं० १. ऐसा शब्द जो व्यंजना द्वारा अर्थ प्रकट करता हो। २. आन्तरिक भाव व्यक्त करनेवाली चेष्टा।

**व्यंजन**—पु०[सं०] १. व्यक्त या प्रकट करने अथवा होने की क्रिया या भाव। व्यंजना। २. तरकारी, साग आदि जो दाल, चावल, रोटी आदि के साथ खाई जाती है। ३. साधारण बोल-चाल में सभी तरह के पकाये हुए भोजन। ४. वर्णमाला का कोई ऐसा वर्ण जिसका उच्चारण किसी और वर्ण विशेषतः स्वर की सहायता के बिना संभव न हो। देवनागरी वर्ण माला में 'क' से 'ह' तक वर्णों का समूह। ५. चिह्न। निशान। ६. अंग। अवयव। ७. भूँछ। ८. दिन। ९. उपस्थ।

**व्यंजनकार**—पु०[स० व्यंजन√कृ+अण्] तरह-तरह के व्यंजन अर्थात् पकवान बनानेवाला।

**व्यंजन-संधि**—स्त्री०[सं० ष० त०] संस्कृत-व्याकरण के अनुसार समीपस्थ व्यंजनों का मिलना अथवा मिलकर नया रूप धारण करना।

**व्यंजन-हारिका**—स्त्री०[सं० ष०त०] पुराणानुसार एक प्रकार की अमंगल-कारिणी शक्ति जो विवाहिता लड़कियों के बनाए हुए खाद्य पदार्थ उठा ले जाती है।

**व्यंजना**—स्त्री०[सं० व्यंजन+टाप्] १. प्रकट करने की क्रिया, भाव या शक्ति। २. शब्द की तीन प्रकार की शक्तियों या वृत्तियों में से एक जिससे शब्द या शब्द-समूह के वाच्यार्थ अथवा लक्ष्यार्थ से भिन्न किसी और ही अर्थ का बोध होता है। शब्द की वह शक्ति जिसके द्वारा साधारण अर्थ को छोड़कर कोई विशेष अर्थ प्रकट होता है।

**व्यंजित**—भू० कृ०[सं० वि√अञ् (गमनादि)+णिच्+क्त] जिसकी व्यंजना या अभिव्यक्ति हुई हो।

**व्यंद**†—पु०=विंद।

**व्यंशुक**—वि०[सं० ब० स०] वस्त्रहीन। नग्न। नंगा।

**व्यंसक**—पु०[सं० वि√अंस्+ण्वुल्-अक] धूर्त। चालाक।

**व्यंसन**—पु०[सं० वि√अंस्(समाघात करना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० व्यंसित] ठगने या धोखा देने की क्रिया।

**व्यक्त**—भू०कृ०[सं० वि√अञ्ज्+क्त] १. जिसका व्यंजन हुआ हो। जो प्रकट किया या सामने लाया गया हो। २. साफ। स्पष्ट।

**व्यक्तता**—स्त्री०[सं०व्यक्त+तल्+टाप्] व्यक्त होने की अवस्था या भाव।

**व्यक्त-दृष्टांत**—वि०[सं०] प्रत्यक्षदर्शी।

**व्यक्त-राशि**—स्त्री०[सं० कर्म० स०] अंकगणित में ऐसी राशि या अंग जो व्यक्त किया या बतला दिया गया हो। ज्ञात राशि।

**व्यक्त-रूप**—पु०[सं०] विष्णु।

**व्यक्तालेप**—पु०[सं०] साहित्य में आक्षेप अलंकार का एक भेद जिसमें पहले अपनी ही कही हुई कोई बात काटकर दोबारा उसे और जोरदार रूप में कहते हैं। जैसे—वह सीधा क्या है, बल्कि यों कहना चाहिए कि मूर्ख है।

**व्यक्ति**—स्त्री०[सं० वि√अञ्ज् (व्याप्त होना)+क्तिन्] १. (समस्त पदों के अंत में) व्यक्त, जाहिर या स्पष्ट करने की क्रिया या भाव। जैसे—अभिव्यक्ति। २ भूत मात्र। ३. पदार्थ। वस्तु। ४. प्रकाश। पुं० १ वह जिसका कोई अलग और स्वतंत्र रूप या सत्ता हो। समष्टि का कोई अंग। २. मनुष्य या किसी और शरीरधारी का सारा शरीर जिसकी पृथक सत्ता मानी जाती है और जो किसी समूह या समाज का अंग माना जाता है। समष्टि का विपर्याय। व्यष्टि। ३ आदमी। मनुष्य।

**व्यक्तिक**—वि०[स०] किसी एक ही व्यक्ति से संबंध रखनेवाला, दूसरे सभी व्यक्तियों से पृथक् या भिन्न। (इण्डिविजुअल)

**व्यक्तित्व**—पु० [सं० व्यक्ति+त्वल्] १. व्यक्त होने की अवस्था या भाव। (इण्डिविजुएलिटी) २. किसी व्यक्ति की निजी विशिष्ट क्षमताएँ, गुण, प्रवृत्तियाँ आदि जो उसके उद्देश्यों, कार्यों, व्यवहारों आदि में प्रकट होती हैं और जिनसे उस व्यक्ति का सामाजिक स्वरूप स्थिर होता है। (पर्सनैलिटी)

**विशेष**—मनोविज्ञान के अनुसार प्रत्येक व्यक्ति का व्यक्तित्व दो भागों में विभक्त रहता है—एक आन्तर, दूसरा बाह्य। आन्तर व्यक्तित्व मूलतः नैसर्गिक या प्राकृतिक होता है और आध्यात्मिक, दैविक तथा दैहिक शक्तियों का सम्मिलित रूप होता है। यह मनुष्य के अन्दर रहनेवाली समस्त प्रकट तथा प्रच्छन्न प्रवृत्तियों और शक्तियों का प्रतीक होता है। बाह्य व्यक्तित्व इसी का प्रत्याभास मात्र होता है, फिर भी लोक के लिए वही गोचर या दृश्य होता है। इससे यह सूचित होता है कि कोई व्यक्ति अपनी आन्तरिक प्रवृत्तियों और शक्तियों को कहाँ तक कार्यान्वित तथा विकसित करने में समर्थ है या हो सका है।

**व्यक्तिवाद**—पु०[सं०व्यक्ति√वद्+घञ्] [वि० व्यक्तिवादी] १ यह मत या सिद्धान्त कि प्रत्येक व्यक्ति को अपने ढंग से चलना और रहना चाहिए, दूसरों के सुख, दुःख आदि का ध्यान नहीं रखना चाहिए। २. आर्थिक क्षेत्र में, यह सिद्धान्त कि सब प्रकार के काम-धन्धों में सब लोगों को स्वतन्त्र रहना चाहिए, शासन अथवा समाज का उन पर कोई नियन्त्रण नहीं रहना चाहिए, और उन्हें अपनी इच्छा से मिलकर अपना संगठन स्थापित करने की स्वतन्त्रता होनी चाहिए। ३ आधुनिक राजनीति में, यह सिद्धान्त की सृष्टि व्यक्तियों के कल्याण के लिए ही हुई है, व्यक्तियों की सृष्टि राज्य या शासन का अस्तित्व बनाए रखने के लिए नहीं हुई है। (इंडिविजुएलिज्म)

**व्यक्तिवादी**—वि०[सं०] व्यक्तिवाद-संबंधी।
पुं० वह जो व्यक्तिवाद के सिद्धान्तों का अनुयायी और समर्थक हो। (इंडिविजुएलिस्ट)

**व्यक्तिकरण**—पुं०[सं० व्यक्त+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्-अन] व्यक्त करने की क्रिया या भाव।

**व्यक्तीकृत**—भू० कृ०[सं० व्यक्त+च्वि√कृ (करना)+क्त] व्यक्त किया हुआ।

**व्यक्तीभूत**—वि०[सं० व्यक्त+च्वि√भू (होना)+क्त]=व्यक्तीकृत।

**व्यग्र**—वि०[सं० ब० स०] [भाव० व्यग्रता] १ जो चिंतित तथा बेचैन हो। २ डरा हुआ। भीत। ३ काम में लगा हुआ। व्यस्त। ४. उद्यमी। उद्योगी। ४. आसक्त। ५. हठी।

**व्यग्रता**—स्त्री०[सं० व्यग्र+तल्+टाप्] १ व्यग्र होने की अवस्था या भाव। २. वह बात जिससे सूचित होता है कि व्यक्ति व्यग्र है।
पुं० विष्णु।

**व्यजन**—पु०[सं० वि√अज्+ल्युट्] [भू० कृ० व्यजित, वि√अज्+क्त] १ पंखे आदि से हवा करने की क्रिया या भाव। २. पंखा। ३ आजकल कमरे, निवास-स्थान आदि में खिड़कियों, झरोखों आदि के द्वारा की जानेवाली ऐसी व्यवस्था जिससे घिरी और छाई हुई जगह में बराबर हवा आती जाती रहे। संवातन। हवादारी। (वेन्टिलेशन) ४. किसी प्रश्न या बात की ओर जन-साधारण या उससे संबद्ध लोगों का ध्यान खींचना।

**व्यजनिक**—पु०[सं० व्यजन+ठक्-इक] [स्त्री० व्यजनिका] वह नौकर या सेवक जिसका मुख्य काम स्वामी को पंखा हाँकना होता था।

**व्यजनी (निन्)**—पु०[सं० व्यजन+इनि] ऐसा पशु जिसकी पूँछ चँवर बनाने के काम आती है।

**व्यत्यय**—वि०, पु०=व्यत्यय।

**व्यतिकर**—वि० [सं० वि-अति√कृ (करना)+अप्] व्यति करनेवाला।

पु० १. मिलन। संयोग। २. सम्पर्क। लगाव। ३. घटना। ४. अवसर। ५. संकट। ६. अन्योन्य आश्रित सम्बन्ध। ७. विनिमय। ८. विपरीतता। ९. अन्त या नाश। १० व्यसन।

**व्यतिकार**—पु०[स० व्यति√कृ (करना)+अण्] १. व्यसन। २. विनाश। ३. मिलावट। मिश्रण। ४. व्याप्ति। ५. लगाव। संबंध। ६. झुंड। समूह।

**व्यतिक्रम**—पु० [स० वि-अति√क्रम् (चलना)+घञ्] १. किसी क्रम में होनेवाली बाधा या रुकावट। २ क्रम-विपर्यय। ३ उल्लंघन।

**व्यतिक्रमण**—पु० [स०] १. क्रम में उलट-फेर होना। २ क्रम-भंग करना।

**व्यतिक्रांत**—भू० कृ०[स० व्यति√क्रम्+क्त] [भाव० व्यतिक्रांति] १ जिसके क्रम में बाधा खड़ी हुई या की गई हो। २ जिसका उल्लंघन हुआ हो। ३. भग किया हुआ। भग्न। ४. बिताया या बीता हुआ।

**व्यतिचार**—पु०[स० वि-अति√चर् (चलना)+घञ्] १ पाप-कर्म करना। २ दूषित आचरण करना। ३ ऐब। दोष।

**व्यतिपात**—पु०[स० वि-अति√पत् (गिरना)+घञ्] १. बहुत बड़ा उत्पात। भारी उपद्रव या खराबी। २. दे० 'व्यतीपात'।

**व्यतिरिक्त**—वि० [स० वि-अति√रिच् (विरेचन)+क्त] [भाव० व्यतिरिक्तता] १. भिन्न। अलग। २ बढ़ा हुआ।
क्रि० वि० अतिरिक्त। सिवा।

**व्यतिरेक**—पु०[स० वि-अति√रिच् +घञ्] १. अभाव। २. अन्तर। भेद। ३. बढ़ती। वृद्धि। ४. अतिक्रमण। ५ दो चीजों की ऐसी तुलना जो उनके परस्पर विरोधी गुणों को आधार बनाकर की गई हो। ७. साहित्य में एक अर्थालंकार जो उस समय माना जाता है जब उपमान की अपेक्षा उपमेय का गुण विशेष के कारण उत्कर्ष बताया जाता है।

**व्यतिरेकी (किन्)**—वि० [स० वि-अति√रिच्+धिनुण्] वह जो किसी का अतिक्रमण करता हो। भिन्नता या भेद उत्पन्न करनेवाला।

**व्यतिव्यस्त**—वि०[स० वि अति√व्यस् (होना)+क्त] अस्त-व्यस्त।

**व्यतिहार**—पु०[स० वि-अति√हृ+घञ्] १. दो चीजों को अपने स्थान से हटाकर एक के स्थान पर दूसरी रखना। २ इस प्रकार स्थान आदि का होनेवाला परिवर्तन। (इन्टरचेंज) ३ किसी प्रकार का परिवर्तन। ४. अदला-बदली। विनिमय। ५. गाली-गलौज। ६ मार-पीट।

**व्यतीकार**—पु०[स० वि-अति√कृ (करना)+घञ्-दीर्घ] १ व्यसन। २. विनाश ३ मिलावट। मिश्रण। ४ भिड़त।

**व्यतीत**—भू० कृ०[स० वि-अति√इ (गमन)+क्त] १ गुजरा या बीता हुआ। २. मरा हुआ। मृत ३. जो कही से चला गया हो। प्रस्थित। ४. परित्यक्त। ५. उपेक्षित।

**व्यतीतना**—अ [सं० व्यतीत] व्यतीत होना। बीतना। गुजरना।
स० व्यतीत करना। गुजारना। बिताना।

**व्यतीपात**—पुं०[सं० वि-अति√पत् (गिरना)+घञ्] १. बहुत बड़ा प्राकृतिक उत्पात। २. ज्योतिष में एक योग जिसमें यात्रा करना निषिद्ध माना गया है। ३. अपमान।

**व्यतीहार**—पु० [स० वि-अति√हृ(हरण करना)+घञ्+दीर्घ] १ विनिमय। अदला-बदली। २. परिवर्तन। ३. गाली-गलौज और मार-पीट।

**व्यत्यय**—पुं०=१. व्यतिक्रम। २. विचलन।

**व्यत्ययक**—पुं०[स०] लिखाई आदि में एक प्रकार का चिह्न जो इस बात का सूचक होता है कि लिखने या छापने में यहाँ इस शब्द के अक्षर कुछ आगे-पीछे हो गये हैं।

**व्यथक**—वि०[स०√व्यथ् (भय देना)+णिच्+ण्वुल्—अक] व्यथित करनेवाला।

**व्यथन**—पु०[सं०√व्यथ् (भय होना)+ल्युट्-अन] व्यथा।
वि०=व्यथक

**व्यथा**—स्त्री०[स०] उग्र मानसिक या शारीरिक पीड़ा।

**व्यथित**—भू० कृ०[स०√व्यथ् (भय देना)+क्त] व्यथा-ग्रस्त।

**व्यथी (थिन्)**—वि०[स० व्यथा+इनि] व्यथा से ग्रस्त या युक्त।

**व्यथ्य**—वि०[स० व्यथा+यत्] १. जिसे व्यथा दी जा सके। २. व्यथा उत्पन्न करनेवाला।

**व्यधन**—पु०[स०√व्यध् (ताड़ना देना)+ल्युट्—अन] बेधन।
वि० बेध्य।

**व्यधगत**—भू० कृ०[सं०] [भाव० व्यधगति] १. जो कहीं चला गया हो। व्यथित। २. लुप्त। ३. बचित। ४. रहित।

**व्यधगति**—स्त्री०[स०] १. प्रस्थान। २. लोप। ३. राहित्य।

**व्यधगम**—पु० [स० वि-अप√गम् (जाना)+अप्] १. प्रस्थान। २. लोप। ३. बीतना (समय)।

**व्यधगमन**—पु०[स० वि-अप√गम्+ल्युट्—अन] व्यधगति।

**व्यधदिष्ट**—भू० कृ० [सं० वि-अप√दिश् (आज्ञा देना)+क्त] १. निर्दिष्ट। २. सूचित। ३. जो छोड़ा गया हो। ४. रहित या वंचित किया हुआ। ५ निन्दित।

**व्यधदेश**—पु०[स० वि-अप√दिश् (कहना)+घञ्] १. निर्देश। २. सूचना। ३. वचना। ४. निद्रा।

**व्यधनय**—पु०[स० वि-अप√नी (ढोना)+अप] १. विनाश। बरबादी। २. त्याग।

**व्यधनयन**—पु० [स० वि-अप√नी (ढोना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० व्यधनीत] छोड़ देना। त्याग।

**व्यधरोपण**—पुं०[सं० वि-अप्√रुह् (चढ़ना)+णिच्—ल्युट्-अन, ह्—प] [वि० व्यधरोपित] १. भुलाना। २. काटना। ३. दूर करना। हटाना।

**व्यधवर्ग**—पु०[सं० ब० स०] १. अलग होना। २. छोड़ना। त्यागना।

**व्यधवर्जन**—पु० [स० वि-अप√वर्ज (छोड़ना)+ल्युट्—अन] [वि० व्यधवर्जित] १. छोड़ना। त्याग। २. निवारण। ३. देना। दान।

**व्यधेक्षा**—स्त्री०[सं० वि-अप√ईक्ष् (देखना)+अङ+टाप्] १. आकांक्षा इच्छा। चाह। २. अनुरोध। आग्रह।

**व्यधोह**—पुं० [स० वि-अप√ऊह् (वितर्क करना)+घञ्] विनाश। बरबादी।

**व्यभिचार**—पुं०[सं०] १. बहुत ही निकृष्ट आचरण। २. ऐसी स्थिति जिसमें हर जगह चोरी, छिनाही, घूस, पक्षपात आदि का बोल-बाला हो। ३. स्त्री का पर-पुरुष से अथवा पुरुष का पर-स्त्री से होनेवाला अनुचित संबंध। छिनाला। जिना। (एडल्टरी) ४. नियमों का अपवाद। ५ एक तर्क छोड़कर दूसरे तर्क का सहारा लेना। ६. न्याय में ऐसा हेतु जिसका साध्य न हो।

**व्यभिचारी**—वि० [सं० वि-अभि√चर् (चलना)+णिनि] १ व्यभिचार संबंधी। २ व्यभिचार करनेवाला। ३. (शब्द) जिसके अनेक अर्थ हों। ४ अस्थिर।
पु० साहित्य में, संचारी भाव। (दे० )

**व्यभ्र**—वि० [सं० मध्यम० स०] अभ्र या मेघ से रहित। अर्थात् स्वच्छ तथा निर्मल (आकाश)।

**व्यय**—पु० [सं०वि√इ+अच्] १ उपर्भोग आदि में आने के कारण किसी चीज का क्षीण या लुप्त होना। २. भोग, निर्माण आदि में धन का खर्च होना। ३ किसी मद विशेष में होनेवाला धन का खरच। जैसे—डाक व्यय। यात्रा व्यय। ४ समय का बीतना। ५ नाश। ६. त्याग। ७ दान। ८ फलित ज्योतिष में लग्न से बारहवाँ स्थान जिसके आधार पर व्यय पक्ष का विचार किया जाता है। ९ बृहस्पति की गति या भार के विचार से एक वर्ष या संवत्सर का नाम।

**व्ययक**—वि० [सं० वि√इण् (गमनादि)+ण्वुल्-अक] जो व्यय करता हो। व्यय करनेवाला।

**व्ययमान**—वि० [सं० ब० स०] अपव्ययी। बहुत अधिक व्यय करनेवाला।

**व्ययशील**—वि० [सं०] अधिक व्यय करनेवाला।

**व्ययिक**—वि० [सं० व्यय से] १ व्यय-संबंधी। व्यय का। जैसे—आय-व्ययिक। २ व्यय के फलस्वरूप होनेवाला।

**व्ययित**—भू० कृ० [सं०√व्यय् (खर्च करना)+क्त] जो या जिसका व्यय हो चुका हो। व्यय किया हुआ।

**व्ययी (यिन्)**—पु० [सं० व्यय+इनि] बहुत अधिक खर्च करनेवाला। व्ययशील।

**व्यर्थ**—वि० [सं० वि-अर्थ, प्रा०ब०] [भाव० व्यर्थता] १ अर्थ से रहित। अर्थ-हीन। २ धन-हीन। ३ जो उपयोग में न आने को हो। ४ जिसकी कुछ भी आवश्यकता न हो। ५ जो लाभप्रद न हो। निरर्थक। अव्य० बिना किसी आयोजन के।

**व्यर्थक**—वि० [सं० व्यर्थ+कन्] निरर्थक।

**व्यर्थता**—स्त्री० [सं० व्यर्थ+तल्+टाप्] व्यर्थ होने की अवस्था या भाव।

**व्यर्थन**—पु० [सं०] १. व्यर्थ सिद्ध करना। महत्त्व, प्रयोजन आदि नष्ट करना। २. आज्ञा, निर्णय आदि को रद्द करना। (नलिफिकेशन)

**व्यलीक**—पु० [सं० वि√अल् (पूरा होना)+कीक] १ ऐसा अपराध जो काम के आवेग के कारण किया जाय। २ किसी प्रकार का अपराध। कसूर। ३ डाँट-डपट। फटकार। ४ कष्ट। दुःख। ५ विट। ६. विलक्षणता। ७ शोकोच्छ्वास। ८. झगड़ा। ९. झंझट। बखेड़ा। १०. ओलती।
वि० १. जो अच्छा न लगे। अप्रिय। २. कष्टदायक। ३ अपरिचित। ४. अद्भुत। विलक्षण।

**व्यवकलन**—पु० [सं० वि+अव√कल् (शब्द करना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० व्यवकलित] १. बड़ी राशि में से छोटी राशि घटाना। (गणित) २ घटाव। ३. जुदाई। पार्थक्य।

**व्यवकीर्ण**—वि० [सं० वि+अव√कृ (करना)+क्त] १. घटाया हुआ। २. अलग या जुदा किया हुआ।

**व्यवच्छिन्न**—भू० कृ० [सं० वि+अव√छिद् (अलग करना)+क्त] १. काट कर अलग या जुदा किया हुआ। २. विमक्त। ३. निर्धारित। निश्चित।

**व्यवच्छेद**—पु० [सं० वि+अव√छिद्+घञ्] १. पार्थक्य। अलगाव। २. खंड। विभाग। हिस्सा। ३. ठहराव। विराम। ४. छुटकारा। निवृत्ति। ५ अस्त्र या शस्त्र चलाना। ६. विशेषता दिखलाना या बतलाना।

**व्यवच्छेदक**—वि० [सं० वि+अव√छिद्+ण्वुल्-अक] व्यवच्छेद करनेवाला।

**व्यवच्छेदन**—पु० [सं० वि+अव√छिद्+ल्युट्-अन] [भू० कृ० व्यवच्छिन्न] १. व्यवच्छेद करने की क्रिया या भाव। २. आज-कल किसी मृत शरीर के अंगों-उपांगों आदि का ज्ञान प्राप्त करने के लिए उसके सब अंग अलग करके देखना। (डिस्सेकशन)

**व्यवदात**—वि० [सं० वि+अव√दै (शोधन करना)+क्त] १ निर्मल। साफ। २. चमकीला।

**व्यवदान**—पु० [सं० वि-अव√दो (खंड करना)+ल्युट्-अन] १ किसी पदार्थ को शुद्ध और साफ करने का नियम या भाव। संस्कार। सफाई। उज्ज्वल करने या चमकाने की क्रिया या भाव।

**व्यवधा**—स्त्री० [सं वि-अव√धा (रखना)+अङ्+टाप्] व्यवधान। परदा।

**व्यवधाता (तृ)**—वि० [सं०√वि+अव√धा (रखना)+तृच्] १ पृथक् करनेवाला। २. बीच में पड़कर आड़ करनेवाला।

**व्यवधान**—पु० [सं०वि+अव√धा+ल्युट्-अन] १ जुदा या अलग होना। २. वह चीज या बात जो किसी चीज को दो हिस्सों में बाँटती या खंडित करती हो। ३ बीच में आड़ करनेवाली चीज। ओट। परदा। ४ बीच में पड़नेवाला अवकाश। ५. अंत। समाप्ति।

**व्यवधायक**—वि० [सं० वि+अव√धा+ण्वुल्-अक] [स्त्री० व्यवधायिका] १. आड़ या ओट करनेवाला। २. छिपाने या ढकनेवाला।

**व्यवधारण**—पु० [सं० वि+अव√धा (रखना)+ल्युट्-अन] अच्छी तरह अवधारण या निश्चय करना।

**व्यवधि**—पुं० [सं०]=व्यवधान।

**व्यवसर्ग**—पु० [सं० वि+अव√सृज् (छोड़ना)+घञ्] १ विभाजन। २. छुटकारा। मुक्ति।

**व्यवसाय**—पु० [सं० वि+अव√ सो (पतला करना)+घञ्] १ ऐसा कार्य जिसके द्वारा किसी की जीविका का निर्वाह होता हो। जीविका-निर्वाह का साधन। पेशा। (प्रोफ़ेशन) २. रोजगार। व्यापार। ३ कार्य-चेष्टा। उद्यम। ४. उद्योग। प्रयत्न। ५. कार्य का संपादन। ६. निश्चय। ७. इच्छा या विकार। ८. अभिप्राय। मतलब। ९. विष्णु। १०. शिव।

**व्यवसाय-संघ**—पु० [सं०] किसी व्यवसाय, पेशे या वर्ग के श्रमिकों का वह संघटन जो मालिकों या व्यवस्थापकों से अपने उचित अधिकार प्राप्त करने के लिए बनता है। (ट्रेड यूनियन)

**व्यवसायी (यिन्)**—पुं० [सं० व्यवसाय+इनि] १. वह व्यक्ति जो किसी व्यवसाय में लगा हुआ हो। २. वह व्यक्ति जो एक या अनेक व्यवसाय करता हो।
वि० व्यवसाय में लगे हुए व्यक्ति से संबंध रखनेवाला।

**व्यवसित**—भू० कृ० [सं० वि+अव√सो (पतला करना)+क्त] १. जिसका अनुष्ठान किया गया हो। व्यवसाय के रूप में किया हुआ। २. कुछ करने के लिए उद्यत या तत्पर। ३. निश्चित।

**व्यवसिति**—स्त्री० [सं० वि+अव√सो+क्तिन्] =व्यवसाय।

**व्यवस्था**—स्त्री० [सं० वि+अव√स्था (ठहरना)+अङ्+टाप्] १. ठीक अवस्था। अच्छी हालत। २. क्रम, ढग आदि के विचार से उपयुक्त स्थिति में होना। चीजों का ठिकाने पर तथा सजा-सँवार कर रखा होना। ३. वह कार्य या योजना जिसके फलस्वरूप हर काम ठीक-ठिकाने से किया या अपनी देख-रेख मे कराया जाता है। इन्तजाम। प्रबंध। (मैनेजमेंट) ४. आज-कल विधिक और वैधानिक क्षेत्रो मे, किसी निम्नस्थ अधिकारी के निर्णय के विरुद्ध बड़े अधिकारी का दिया हुआ आदेश या किया हुआ निर्णय।

**मुहा०—व्यवस्था देना**=पडितो आदि का यह बतलाना कि अमुक विषय मे शास्त्रो का क्या मत अथवा आज्ञा है। किसी विषय मे शास्त्रो का विधान बतलाना।

५ कार्य, कर्तव्य आदि का निर्वाह करना। (डिस्पोज़ीशन) ६. धन-सम्पत्ति के बँटवारे, व्यय आदि से संबंधित योजना। (डिस्पोज़ीशन) ७. नियम, विधि आदि मे कुछ विशिष्ट उद्देश्य से निकाली जानेवाली गुजाइश या रास्ता। (प्राविजन)

**व्यवस्थाता**—वि० [सं० वि+अव√स्था (ठहरना)+तृच्, व्यवस्थातृ] १ वह जो व्यवस्था करता हो। व्यवस्था या इंतजाम करनेवाला। २ शास्त्रीय व्यवस्था देनेवाला।

**व्यवस्थान**—पु० [सं० वि+अव√स्था (ठहरना)+ल्युट्—अन] १ उपस्थित या व्यवस्थित होना। २. व्यवस्था। प्रबंध। ३ विष्णु।

**व्यवस्थापक**—पु० [ सं० वि+अव√स्था (ठहरना)+णिच्+ण्वुल्—अक, पुक्] [स्त्री० व्यवस्थापिका]* १ वह जो यह बतलाता हो कि अमुक विषय मे शास्त्रो का क्या मत है। व्यवस्था देनेवाला। २. वह अधिकारी जो संस्था आदि के कार्यों का प्रबंध करता हो। (मैनेजर)

**व्यवस्था-पत्र**—पु० [सं० मध्यम० स०] ऐसा पत्र जिस पर कोई शास्त्रीय व्यवस्था लिखी हो। शास्त्रीय व्यवस्था का शापक पत्र।

**व्यवस्थापन**—पु० [सं०वि+अव√स्था (ठहरना)+णिच्+ल्युट्—अन, पुक्] १ व्यवस्था करने की क्रिया या भाव। २. किसी विषय मे शास्त्रीय व्यवस्था देना या बतलाना।

**व्यवस्थापनीय**—वि० [सं० वि+अव√स्था (ठहरना)+णिच्+अनीयर, पुक्] व्यवस्थापन के योग्य।

**व्यवस्थापिका सभा**—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] विधान सभा। (दे०)

**व्यवस्थापित**—भू० कृ०[सं० वि+अव√स्था (ठहरना)+णिच् +क्त, पुक्] १. जिसके संबध में किसी प्रकार का व्यवस्थापन हुआ हो। २. निर्धारित। ३. नियमित। ४. व्यवस्थित।

**व्यवस्थाप्य**—वि० [सं० वि+अव√स्था (ठहरना) +णिच्+यत्, पुक्] व्यवस्थापन के योग्य। व्यवस्थापनीय।

**व्यवस्थित**—भू० कृ०[सं० वि+अव√स्था (ठहरना) +क्त] १. जिसकी ठीक व्यवस्था की गई हो। २. जो ठीक क्रम या सिलसिले से चल रहा हो।

**व्यवस्थिति**—स्त्री०[सं० वि+अव√स्था+क्तिन्] १ व्यवस्थापन। २. व्यवस्था।

**व्यवहरण**—पु० [स० वि-अव√हृ (हरना)+ल्युट् अन] १. अभियोगों आदि का नियमानुसार होनेवाला विचार। २ मुकदमे की सुनवाई या पेशी। व्यवहार।

**व्यवहर्ता**—पु०[स० वि+अव√हृ (हरण करना)+तृच्] न्यायकर्त्ता। न्यायाधिकारी।

**व्यवहार**—पु०[स० वि+अव√हृ+घञ्] १ क्रिया। काम। २ निर्णय, विचार आदि कार्यान्वित करना। ३ दूसरो मे किया जानेवाला बर-ताव। ४. वस्तु आदि का किया जानेवाला उपभोग या भोग। काम मे लाना। ५ रुपये-पैसे, लेन-देन आदि का काम। महाजनी। ६ मुकदमा। ७ किसी मुकदमे से संबध रखनेवाली उसकी सारी प्रक्रिया। ८ न्याय। ९. शर्त। १०. स्थिति।

**व्यवहारक**—पुं०[सं० व्यवहार+कन्] १ वह जिसकी जीविका व्यवहार मे चलती हो। २. वह जो न्याय या वकालत आदि करता हो। ३ वह जो व्यवहारो के लिए उचित उमर तक पहुँच चुका हो। वयस्क। बालिग।

**व्यवहारजीवी (विन्)**—पु० [सं० व्यवहार√ जीव् (जीवित होना)+णिनि] वह जो व्यवहार अर्थात् मुकदमेबाजी या वकालत आदि के द्वारा अपनी जीविका चलाता हो।

**व्यवहारज्ञ**—पु०[सं० व्यवहार√ज्ञा (जानना)+क] १ वह जो व्यवहार शास्त्र का ज्ञाता हो। २. वयस्क। बालिग।

**व्यवहारतः**—अव्य०[सं० व्यवहार+तसुं] १. व्यवहार अर्थात् बरताव के विचार से। २ प्रायोगिक दृष्टि से जिस रूप मे होना चाहिए ठीक उसी रूप मे।

**व्यवहारत्व**—पु०[सं० व्यवहार+त्व] व्यवहार का धर्म या भाव।

**व्यवहार-दर्शन**—पु०[सं०] दे० 'आचार-शास्त्र'।

**व्यवहार-निरीक्षक**—पु० [सं० ष० त०] वह अधिकारी जो सरकार की ओर से मुकदमे की पैरवी करता हो। (कोर्ट इन्स्पेक्टर)

**व्यवहार-पाद**—पु०[स० ष० त०] १. व्यवहार के पूर्वपक्ष, उत्तर, क्रिया पाद और निर्णय इन चारों का समूह। २. उक्त चारों में से कोई एक जो व्यवहार का एक पाद या अंग माना जाता है।

**व्यवहार-मातृका**—स्त्री०[सं० ष० त०] न्यायालय के दृष्टिकोण तथा विधि के अनुसार होनेवाली कार्रवाई। (स्मृति)

**व्यवहार-विधि**—स्त्री० [सं०ष०त०] वह शास्त्र जिसमे अपराधों का विवेचन तथा अपराधियों को समुचित दण्ड की व्यवस्था होती है।धर्मशास्त्र।

**व्यवहार-शास्त्र**—पु०[सं० ष० त०] दे०'व्यवहार-विधि'।

**व्यवहार-सिद्धि**—स्त्री० [सं० ष० त०] व्यवहार शास्त्र के अनुसार अभियोगों का निर्णय करना।

**व्यवहारांग**—पु० [सं० ष० त०] व्यवहार के ये दो अंग दीवानी कानून और फौजदारी कानून।

**व्यवहारासन**—पु०[सं० ष० त०, च०त० वा] वह आसन जिस पर बैठकर न्यायाधीश मुकदमे सुनते तथा अपना निर्णय सुनाते हैं।

**व्यवहारास्पद**—पुं०[सं०] वह निवेदन जो वादी अपने अभियोग के संबंध मे राजा अथवा न्यायकर्ता के सम्मुख करता हो। नालिश। फरियाद।

**व्यवहारिक**—वि० [सं० व्यवहार+ठक्—इक] १. जो व्यवहार के लिए उपयुक्त या ठीक हो। व्यवहार योग्य। २. जो साधारणत व्यवहार या उपयोग मे आता हो। व्यावहारिक।

**व्यवहारिक जीव**—पु० [सं० कर्म० स०] वेदात के अनुसार विज्ञानमय कोष जो आनंदमय के साथ बुद्धि के संयुक्त होने पर प्रस्तुत होता है।

**व्यवहारिका**—स्त्री० [स० व्यवहारिक+टाप्] ससार मे रहकर उसके सब व्यवहार या कार्य करना। दुनियादारी।

**व्यवहारी (रिन्)**—वि० [सं० व्यवहार+इनि] १. व्यवहार करनेवाला। २ व्यवसाय मे लगा हुआ। ३. (आचरण आदि) जिसका सामान्यत उपयोग किया जाता हो। ४ मुकदमा लडनेवाला।

**व्यवहार्य**—वि० [सं० वि+अव√हृ (हरण करना)+ण्यत्] जो व्यवहार मे आने के योग्य हो। जिसका व्यवहार हो सके।

**व्यवहित**—वि० [सं० वि+अव√हा (छोडना)+क्त] छोडा हुआ।

**व्यवहृत**—भू० कृ० [सं० वि+अव√हृ (हरण करना)+क्त] जो व्यवहार मे आ चुका हो। व्यवहार मे लाया हुआ।
पु० व्यापार।

**व्यवहृति**—स्त्री० [स० वि+अव√हृ (हरण करना)+क्तिन्] १ व्यापार या रोजगार मे होनेवाला नफा। २ व्यवसाय। व्यापार। रोजगार। ३. काम करने का कौशल। होशियारी।

**व्यवाय**—पु० [सं० वि+अव्√इण् (गमन)+घञ्] १. तेज। २ शुद्धि। ३. नतीजा। परिणाम। ४. आड। ओट। ५. बाधा। विघ्न। ६ स्त्री-प्रसंग। मैथोना।

**व्यवायी**—वि० [सं० वि+अव√इण् +णिनि] १ आड या ओट करनेवाला। २. कामुक।
पु० ऐसी चीज जो शरीर मे पहुँचकर पहले सब नाडियों मे फैल जाय और तब पचे। जैसे—भाँग या अफीम।

**व्यष्टि**—पु० [स० वि√अञ्+क्तिन्] समष्टि का अंग या सदस्य व्यक्ति।

**व्यसन**—पु० [सं० वि√अस् (होना)+ल्युट्—अन] १ विपत्ति। आफत। संकट। २ कष्ट। तकलीफ। दुख। ३. पतन। ४ विनाश। ५ अमांगलिक या अशुभ बात। ६ ऐसा कार्य या प्रयत्न जिसका कोई फल न हो। निरर्थक काम या बात। ७ किसी काम या बात के समय मे होनेवाली ऐसी तीव्र प्रवृत्ति या रुचि जिसके फलस्वरूप मनुष्य प्राय. सदा उसी काम में लगा रहता हो। जैसे—लिखने-पढने का व्यसन। ८ भोगविलास या विषय-वासना के संबंध मे दूषित मनोविकारों के कारण होनेवाली ऐसी आसक्ति जिसके बिना रहना कठिन हो या जिससे जल्दी छुटकारा न हो सकता हो। बुरी आदत या लत। जैसे—जुए, मद्यपान या वेश्यागमन का दुर्व्यसन। ९. अशक्तता। या असमर्थता। १० दुर्भाग्य।

**व्यसनार्त**—वि० [सं० तृ० त०] जिसे किसी प्रकार का दैवी या मानवी कष्ट पहुँचा हो।

**व्यसनिता**—स्त्री० [सं० व्यसनिन्+तल्+टाप्] १. व्यसनी होने की अवस्था या भाव। २ व्यसन।

**व्यसनी (निन्)**—वि० [सं० व्यसन+इनि] जिसे किसी बुरे काम की लत पड़ गई हो।

**व्यसनोत्सव**—पुं० [सं० ष० त०] वाम-मार्गियों का बहुत से लोगों को मिला कर मद्यपान करना।

**व्यस्त**—वि० [सं० वि√अस्+क्त] १ घबराया हुआ। व्याकुल। २. इस प्रकार काम में लगा हुआ कि दूसरी ओर ध्यान न दे सकता हो। ३ किसी के अन्दर फैला हुआ। व्याप्त। ४ फेंका हुआ। ५ जो ठीक क्रम मे न हो। अव्यवस्थित। ६. अलग। पृथक्।

**व्यस्तक**—वि० [सं० व्यस्त+कन्] जिसमे हड्डी न हो। बिना हड्डी का।

**व्यस्त गतागत**—पु० [सं०] एक प्रकार का चित्र काव्य जिसमे अक्षरों या वर्णों की स्थापना ऐसे कौशल से की जाती है कि यदि उसे सीधा अर्थात् आरंभ की ओर से पढ़ें तो एक अर्थ निकलता है, पर यदि उलटा अर्थात् अंत की ओर से पढें तो कुछ दूसरा ही अर्थ निकलता है। (केशव) उदा०—दैवन माधव ज्यों सर के सब रेख सुदेस सुबेस सबे . . .।

**व्यस्त-पद**—पु० [सं कर्म० स०] १. समास-रहित पद। 'समस्त' पद का विपर्याय। २. अव्यवस्थित या गडबड कथन। (न्यायालय)

**व्यहू**—पु० [सं० मध्यम० स०] एक से अधिक दिनों मे होनेवाला।

**व्याकरण**—पु० [स० वि+आ√कृ (करना)+ल्युट्—अन] १ वह शास्त्र जिसमे बोलचाल तथा साहित्य मे प्रयुक्त होनेवाली भाषा का स्वरूप, उसके गठन, उसके अवयवों, उनके प्रकारों और पारस्परिक संबंधों तथा उनके रचनाविधान और रूप परिवर्तन का विचार होता है। २ बोल-चाल में ऐसी पुस्तक जिसमे भाषा-संबंधी नियमों का सकलन होता है। ३ अनन्तर। भेद। ४ व्याख्या। ५ निर्माण। रचना। ६ धनुष की टंकार। ७ भविष्यद्वाणी। (वौद्ध)

**व्याकर्ता (र्तृ)**—पु० [स० वि+आ√कृ (करना)+तृच्] परमेश्वर।

**व्याकर्षण**—पु० [स० वि+आ√कृष्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० आकृष्ट] =आकर्षण।

**व्याकार**—पुं० [सं० वि+आ√कृ (करना)+अण्] १ विकृत आकार। २ रूप-परिवर्तन। ३ व्याख्या।

**व्याकीर्ण**—भू० कृ० [स० वि+आ√कृ (बिखेरना)+क्त] १ चारो ओर अच्छी तरह फैलाया हुआ। २ लुब्ध।

**व्याकुंचन**—पुं० [स० वि+आ√कुञ्च+ल्युट्—अन] [भू० कृ० व्याकुंचित] १ आकुचन। सिकोड़ना। २ टेढ़ा करना। मोड़ना।

**व्याकुल**—वि० [सं०] [भाव० व्याकुलता] १ उत्सुकता, परेशानी, भय आदि के फलस्वरूप जिसके मन मे घबराहट हो। बेचैन। २ जिसे कोई विशेष उत्कठा या कामना न हो। ३. कातर। ४. काम मे लगा हुआ। व्यस्त। ५ काँपता या हिलता हुआ।

**व्याकुलता**—स्त्री० [सं० व्याकुल+तल्+टाप्] १ व्याकुल होने की अवस्था या भाव। विकलता। घबराहट। २. कातरता।

**व्याकृत**—भू० कृ [सं० वि+आ√कृ (करना)+क्त] १ पृथक् पृथक् किया हुआ। २. प्रकट किया हुआ। ३. जिसकी व्याख्या की गई हो। ४. रूपांतरित। परिवर्तित। ५ विकृत। ६ विश्लिष्ट।

**व्याकृति**—स्त्री० [सं० वि+आ√कृ+क्तिन्] १ प्रकाश में लाने का काम। प्रकाशन। २. व्याख्या करने की क्रिया या भाव। ३. रूप में परिवर्तन करना। ४. विश्लेषण। ५. पृथक्करण।

**व्याकोच**—पुं० [सं० वि+आ√कुच्+अच्] फूलों आदि का खिलना। वि० खिला हुआ।

**व्याकोच**—पुं० [सं० वि+आ√कुच् (विकास करना)+अच्] १. विकास। २. खिलना।
वि० १. विकसित। २. खिला हुआ।

**व्याकोश**—पुं० [स० वि+आ√ कुश् (निन्दा करना)+घञ्] १. किसी को क्रोधपूर्वक दी जानेवाली गाली। फटकार। २. खिलाहट।

**व्याक्षेप**—पुं० [सं० वि+आ√ क्षिप् (फेंकना)+घञ्] १ बिलब। देर। २. घबराहट। विकलता। ३. बाधा। विघ्न। ४. परदा। ५. व्यवधान।

**व्याख्या**—स्त्री० [सं० वि+आ√ख्या+अङ्+टाप्] [भू० कृ० व्याख्यात] १ किसी कठिन या दुरूह उक्ति, पद, वाक्य या विषय को अधिक बोधगम्य, सरल या सुगम रूप से समझाने के लिए कही जानेवाली बात या किया जानेवाला विवेचन। किसी जटिल वाक्य आदि के अर्थ का स्पष्टीकरण। टीका। (एक्सप्लेनेशन) २. किसी वाक्य, कथन आदि का अपनी बुद्धि या अपने दृष्टिकोण से लगाया जानेवाला अर्थ। अनुवचन। अर्थयन। (इन्टरप्रेटेशन) ३ किसी विषय का कुछ विस्तार से किया हुआ वर्णन।

**व्याख्यागम्य**—वि० [सं० तृ० त०] १. जिसकी व्याख्या हो सकती हो। २. जो व्याख्या होने पर ही समझ में आ सकता हो।
पु० वादी के अभियोग का ठीक-ठीक उत्तर न देकर इधर-उधर की बातें कहना।

**व्याख्यात**—भू० कृ० [स० वि +आ√ ख्या (प्रकाशित करना)+क्त] १. जिसकी व्याख्या हुई हो या की गई हो। २ जिसकी टीका हो चुकी हो। ३ वर्णित।

**व्याख्यातव्य**—वि० [स० वि+आ√ ख्या+तव्यत्] जिसकी व्याख्या करने की आवश्यकता हो।

**व्याख्याता (तृ)**—पुं० [स० वि+आ√ ख्या+तृच्] १ वह जो किसी विषय की व्याख्या करता हो। व्याख्या करनेवाला। २. वह जो व्याख्यान देता या भाषण करता हो।

**व्याख्यान**—पुं० [सं० वि+आ√ ख्या+ल्युट्—अन] १ किसी गूढ़ या गंभीर बात की व्याख्या करने की क्रिया या भाव। २. ऐसा ग्रंथ जिसमें किसी धार्मिक या लौकिक विषय के किसी कठिन ग्रन्थ या गूढ़ विषय की व्याख्या की गई हो। ३ किसी गूढ़ विषय के संबंध में विस्तारपूर्वक कही जानेवाली बातें। भाषण। वक्तृता। (लेक्चर)

**व्याख्यानशाला**—स्त्री० [स० ष० त०] वह स्थान जहाँ अनेक प्रकार के व्याख्यान आदि होते हों।

**व्याख्येय**—वि० [स० वि+आ√ ख्या+यत्] जिसकी व्याख्या होने को हो अथवा होना उचित हो।

**व्याघट्टन**—पुं० [सं० वि+आ√ घट्ट (रगड़ना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० व्याघट्टित] १. अच्छी तरह रगड़ना। संघर्षण। २. मथना।

**व्याघात**—पुं० [सं० वि√आ√हन् (मारना)+घञ्, न—त] १ क्रम, सिलसिले आदि में पड़नेवाली बाधा। २. किसी प्रकार का होनेवाला आघात या लगनेवाला धक्का। ३. विशेषतः अधिकार या स्वत्व पर होनेवाला आघात। (इन्क्रोअचमेंट) ४. किसी कार्य या प्रयत्न में होने वाला विषाद। ५. सत्ताइस योगों में से तेरहवाँ योग जिसमें शुभ कार्य करना वर्जित है। ६ काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें एक ही उपाय के द्वारा अथवा एक ही साधन के द्वारा दो विरोधी कार्यों के होने का वर्णन होता है।

**व्याघाती (तिन्)**—वि० [स०] १ व्याघात करनेवाला। २ विघ्नकारक।

**व्याघ्र**—पुं० [स० वि+आ√ घ्रा (सूँघना)+क] १. बाघ। शेर। २ लाल रँग। ३. करंज।

**व्याघ्र-ग्रीव**—पुं० [सं० ब० स०] १. पुराणानुसार एक प्राचीन देश का नाम। २. उक्त देश का निवासी।

**व्याघ्रचर्म**—पुं० [सं० ष० त०] बाघ की खाल।

**व्याघ्रता**—स्त्री० [सं० व्याघ्र+तल्+टाप्] व्याघ्र का धर्म या भाव।

**व्याघ्रनख**—पु० [स० ब० स०] १ बघनखा। २. नख नामक गन्ध-द्रव्य। ३ भुहड़। ४. एक प्रकार का कद।

**व्याघ्रनखी**—स्त्री० [स०] नख या नखी नामक गंध द्रव्य।

**व्याघ्रपद**—पुं० [स०] १ वशिष्ठ गोत्र के एक प्राचीन ऋषि जो ऋग्वेद के कई मंत्रों के द्रष्टा थे। २. एक प्रकार का गुल्म।

**व्याघ्रमुख**—पुं० [स० ब० स०] १. बिल्ली। २ पुराणानुसार एक देश का निवासी। ३. एक पौराणिक पर्वत।

**व्याघ्रवक्त्रा**—पु० [सं०] १ शिव। २ बिल्ली।

**व्याघ्रिणी**—स्त्री० [सं० व्याघ्र+इनि+ङीप्] बौंडी की एक देवी।

**व्याघ्री**—स्त्री० [स० व्याघ्र+ङीप्] १ मादा व्याघ्र। २ एक प्रकार की कौड़ी। ३. नख नामक गन्ध द्रव्य।

**व्याज**—पुं० [स० वि√अज् (गमनादि)+घञ्] १ मन में कोई बात रख कर ऊपर से कुछ और करना या कहना। छल। कपट। फरेब। धोखा। जैसे—व्याज-निन्दा, व्याज-स्तुति आदि। २. बाधा। विघ्न। ३. देर। बिलब।
पुं०=व्याज (सूद)।

**व्याज-निंदा**—स्त्री० [स० तृ० त०] १ छल या बहाने से की जानेवाली किसी की निंदा। २ साहित्य में एक अलंकार जो उस समय माना जाता है जब किसी एक की निंदा इस प्रकार की जाती है कि उनसे किसी दूसरे की निंदा प्रतीत होने लगती है।

**व्याज-स्तुति**—स्त्री० [स० तृ० त०] १. ऐसी स्तुति जो व्याज या किसी बहाने से की जाय और ऊपर से देखने में स्तुति न जान पड़े फिर भी उनकी स्तुति ही हो। २. साहित्य में एक अलंकार जो उस समय माना जाता है जब कोई कथन अभिधा शक्ति की दृष्टि से निंदा सूचक होता है परन्तु जिसका वाक्यार्थ वस्तुतः स्तुतिपरक होता है।

**व्याजोक्ति**—स्त्री० [सं० तृ० त०] १. वह कथन जिसमें किसी प्रकार का व्याज अर्थात् छल हो। कपट-भरी बात। २ साहित्य में एक अर्थालंकार जो उस समय माना जाता है जब कोई ऐसी बात छिपाने का प्रयत्न किया जाता है जिसका रहस्य वस्तुतः खुल चुका हो।

**व्याड**—पुं० [सं० वि+आ√अड् (गमन)+घञ्] १. साँप। २ बाघ। ३. इन्द्र।
वि० धूर्त। चालबाज।

**व्याडि**—पुं० [सं० व्याड+इनि] एक प्राचीन वैयाकरण।

**व्यादान**—पु० [सं० वि+आ √दा (देना)+ल्युट्—अन, कर्म० स०] १ फैलाव। विस्तार। २ उद्घाटन। खोलना। ३ निर्देश। ४ वितरण।

**व्यादिष्ट**—भू० कृ० [सं० वि+आ√ दिश् (कहना) +क्त]१ जो पहले कहा या बतलाया जा चुका हो। २ वितरित। ३ निर्दिष्ट।

**व्यादेश**—पु० [सं० वि+आ√दिश् (कहना)+घञ्] [भू० कृ० व्यादिष्ट] विधिक क्षेत्र में किसी व्यक्ति को कोई काम करने विशेषत न करने के लिए दिया हुआ ऐसा आदेश जिसका पालन न करना न्यायालय का अपमान समझा जाता हो और फलत दडनीय हो। (इजंक्शन)

**व्याध**—पु० [सं०√व्यध् (मारना)+ण] १ वह व्यक्ति जो शिकार से जीविका उपार्जित करता हो। पक्षियो आदि को जाल मे फँसानेवाला बहेलिया। २ प्राचीन भारत मे उक्त प्रकार के काम करनेवाली एक जाति। ३ शबर नामक प्राचीन जाति।
वि० दुष्ट। पाजी।

**व्याधा**†—पु०=व्याध।

**व्याधि**—स्त्री० [सं० वि+आ√ धा (रखना)+कि]१ किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट। २ रोग। बीमारी (डिजीज)। ३ आपत्ति। विपत्ति। सकट। **विशेष**—साहित्य मे इसे तेंतीस सचारी भावो के अतर्गत रखा गया है, और मन या शरीर की अवस्था को इसका आधार माना गया है। यथा—मानस मदिर मे सती, पति की प्रतिमा थाप। जलती सी उस विरह मे बनी आरती आप।—मैथिलीशरण।
४. कुट नामक ओषधि।

**व्याधिकी**—स्त्री० दे० 'रोग-विज्ञान'।

**व्याधिघ्न**—वि० [स० व्याधि√हन्+क] व्याधि नष्ट करनेवाला।

**व्याधित**—भू० कृ० [स० व्याध+इतच्] व्याधिग्रस्त।
पु० रोग। बीमारी।

**व्याधिहर**—वि० [स०] व्याधि दूर करनेवाला।

**व्याधी (धिन्)**—वि० [स० व्याधि+इन्] जिसे कोई व्याधि हो। व्याधि से युक्त।
स्त्री०=व्याधि।

**व्याध्य**—वि० [सं० व्याधि+व्यञ्] व्याध-सबधी। व्याधि का।
पु० शिव।

**व्यान**—पु० [स० वि√आ√अन्+अच्]शरीर मे रहनेवाली पाँच वायुओ मे से एक जो सारे शरीर में सचार करनेवाली कही गई है। सारे शरीर मे इसी द्वारा रस पहुँचता है, पसीना निकलता और खून चलता है तथा अन्य शारीरिक क्रियाएँ होती हैं।

**व्यानद्ध**—वि० [स० वि+आ√नह् (बाँधना)+क्त]१ किसी के साथ अच्छी तरह से बँधा हुआ। २ परम्परा से सबद्ध।

**व्यापक**—वि० [स० वि√आप् (प्राप्त होना)+ण्वुल्—अक्] १. चारो ओर फैला हुआ। २ छाया हुआ। ३ घेरने या ढकनेवाला। ४. जिसका कार्यक्षेत्र या पेटे मे बहुत-सी बातें आती हो। (कम्प्रिहेन्सिव) ५ सामान्य।

**व्यापक-न्यास**—पु० [स० कर्म० स०] तात्रिको के अनुसार एक प्रकार का अगन्यास, जिसमे किसी देवता का मूलमत्र पढ़ते हुए सिर से पैर तक न्यास करते है।

**व्यापत्ति**—स्त्री० [सं० वि√ आप् (प्राप्त होना)+क्तिन्]१. मृत्यु। मौत। २ नाश। बरबादी। ३ हानि। ४. किसी अक्षर का लोप या उसकी जगह दूसरे अक्षर का आना। (व्याकरण)

**व्यापन**—पु० [स० वि√ आप् (प्राप्त होना)+ल्युट्—अन] [वि० व्याप्य, भू० कृ० व्याप्त] १. किसी के अन्दर पहुँचकर चारो ओर फैलाना। २. ऊपर आकर अथवा चारो ओर से घेरना। ३ व्यापक रूप से सामान्य सिद्ध करना।

**व्यापना**—अ० [सं० व्यापन] १. चारो ओर फैलना। व्याप्त होना। २. किसी मे समाना।

**व्यापन्न**—भू० कृ० [स० वि+आ√पद् (स्थान)+क्त] १. विपत्ति या आफत मे फँसा हुआ। २. मृत।

**व्यापादन**—पुं० [स० वि+आ√पद्+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० व्यापादित] [वि० व्यापादक-व्यापादनीय।] १ किसी को कष्ट पहुँचाने का उपाय सोचना। २ मार डालना। हत्या करना। ३ नष्ट करना।

**व्यापार**—पुं० [स०] १ कार्य, आचरण, प्रयोग आदि के रूप मे की जानेवाली कोई बात। किया जानेवाला या किया हुआ कोई काम। (चेष्टा) जैसे—नाटक का मुख्य तत्त्व व्यापार है। २ क्रियात्मक रूप धारण करने का भाव। काम करना। (ऑपरेशन) ३ वह जो आचरण, व्यवहार, प्रयोग आदि के रूप मे किया जाय। (कान्डक्ट) जैसे—जीवन व्यापार। ४ चीजें खरीदकर बेचने का काम। रोजगार। (ट्रेड, बिजिनेस)। ५ न्याय के अनुसार विषय के साथ होनेवाला इद्रियों का सयोग। ६ मदद। सहायता।

**व्यापारक**—वि० [स० व्यापार+कन्] व्यापार करनेवाला।

**व्यापार-कर**—पु० [स०] वह कर जो व्यापारियो पर कोई विशिष्ट व्यापार या रोजगार करने के सबध में लगता है। (ट्रेड टैक्स)

**व्यापार चिह्न**—पु० [स० ष० त०] वह विशिष्ट चिह्न जो व्यापारी अपने विशिष्ट उत्पादनो आदि पर अकित करते हैं। (ट्रेड मार्क)

**व्यापारण**—पु० [स० व्यापार√ नी (ढोना)+ड] १ आज्ञा देना। २ किसी काम पर किसी को नियुक्त करना। काम मे लगाना।

**व्यापार-तुला**—स्त्री० [स०] आज-कल देशो और राष्ट्रों के पारस्परिक व्यापार और विनिमय के क्षेत्र मे वह स्थिति जिससे यह सूचित होता है कि एक देश ने दूसरे देश से कितना माल मँगाया और कितना वहाँ भेजा। (ट्रेड बैलन्स)
**विशेष**—यदि माल मँगाया गया हो कम और भेजा गया हो अधिक तो व्यापार-तुला पक्ष मे मानी जाती है, और इसकी विपरीत दिशा मे विपक्ष मे रहती है।

**व्यापार मंडल**—पुं० [स०प० त०] बड़े बड़े व्यापारियो की वह संस्था जिसका मुख्य उद्देश्य व्यापार बढ़ाना तथा व्यापारियो के हितो की रक्षा करना होता है।

**व्यापाराना**—वि० [स० व्यापार+हिं० आना] १ व्यापार-सबधी। २. व्यापार के नियमों के अनुसार होनेवाला। जैसे—व्यापाराना भाव।

**व्यापारिक**—वि० [स०व्यापार+ठक्—इक] व्यापार या रोजगार-संबंधी। व्यापार का।

व्यापारित—भू० कृ०[स०व्यापार+इतच्] १. व्यापार या काम में लगाया हुआ। २. किसी स्थान पर रखा या जमाया हुआ।

व्यापारी—पु० [स० व्यापार+इनि] १ व्यापार करनेवाला व्यक्ति। २ व्यापार के द्वारा जीविका निर्वाह करनेवाला व्यक्ति।

व्याप्ती—वि० [सं० वि√आप् (प्राप्त होना)+णिनि] १. व्याप्त होनेवाला। २ सर्वत्र फैलनेवाला। ३ आच्छादक।
पु० विष्णु का एक नाम।

व्याप्त—भू० कृ०[सं० वि√ आप् (प्राप्त होना)+क्त]१ जो किसी के अन्दर पूरी तरह से फैला या समाया हुआ हो। २. जिसमें कुछ फैला या समाया हुआ हो। ३. सब ओर से घिरा या ढका हुआ।

व्याप्ति—स्त्री०[स०वि√आप्+क्तिन्] [वि० व्याप्त, व्याप्य] १ किसी वस्तु या स्थान के सब अंगों या भागों में फैले हुए या व्याप्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव। (परवेजन) २ साधारणतः सभी अवस्थाओं में व्याप्त होने का भाव। (जेनरलिटी) ३ न्याय शास्त्र में किसी एक पदार्थ में दूसरे पदार्थ का पूर्ण रूप से मिला या फैला हुआ होना। ४. विकृति विज्ञान में किसी रोग की समाप्ति (देखे) के बाद की वह अवस्था जिसमें वह रोग शरीर में रहता हो। जैसे—इस रोग की व्याप्ति काल १० दिन तक है। ५. आठ प्रकार के ऐश्वर्यों में से एक प्रकार का ऐश्वर्य। ६ ऐसा तत्त्व, नियम या सिद्धान्त जो सब जगह समान रूप से प्रयुक्त हो सकता अथवा होता हो। ७. फैलाव। विस्तार। ८ पूर्णता। ९ प्राप्ति।

व्याप्तित्व—पुं०[स० व्याप्ति+त्व] व्याप्ति का धर्म या भाव।

व्याप्य—वि०[स० वि√आप् (व्याप्त होना)+ण्यत्] १ जिसे अधिक व्यापक बनाया जा सकता हो या बनाया जाने को हो। २. जो व्याप्त हो सकता हो।
पु० कार्य पूरा करने का साधन या हेतु।

व्याभंग—पु०[सं०] विज्ञान में, वह स्थिति जिसमें प्रकाश की रेखा किसी अपारदर्शक पदार्थ का कोना छूती हुई निकलती है और उसमें के रंगों की रेखाएँ अलग-अलग बिखरें देती हैं। (डिफ्रैक्शन)

व्याम—पु०[सं० वि√अम्+घञ्] उतनी दूरी या लंबाई जितनी दोनों हाथ अगल-बगल खूब फैला देने पर एक हाथ की उँगलियों के सिरे से दूसरे हाथ की उँगलियों के सिरे तक होती है।

व्यामिश्र—पु० [सं० वि+आ√मिश्र्+अच्] दो प्रकार के पदार्थों या कार्यों को एक में मिलाने की क्रिया।
वि० १. किसी के साथ मिला या मिलाया हुआ। २. अनेक प्रकारों से युक्त। ३. क्षुब्ध। ४ अन्यमनस्क। ५ संदिग्ध।

व्यामोह—पुं०[सं० वि+आ√मुह् (मुग्ध होना)+घञ्]१. विशेष रूप से होनेवाला मोह। २. ऐसी मानसिक अवस्था जिसमें घबराहट के कारण मनुष्य अपना कर्तव्य स्थिर करने में असमर्थ हो।

व्यायाम—पुं०[स० वि+आ√यम्+घञ्] १ कोई ऐसी क्रिया या व्यापार जिसमें शरीर अथवा उसके किसी एक या अनेक अंगों को किसी असामान्य स्थिति में अथवा विभिन्न स्थितियों में इस उद्देश्य से लाया जाता है, जिससे शरीर पुष्ट हो तथा रक्त का संचार ठीक प्रकार से होता रहे। कसरत। (एक्सरसाइज) २. पौरुष। ३. परिश्रम। ४. क्लांति। थकावट। ५. रति-क्रिया के उपरांत होनेवाली थकावट। ६ अभ्यास।

व्यायामिक—वि० [स० व्यायाम+ठक्—इक] १ व्यायाम-सम्बन्धी। व्यायाम का। २ व्यायाम के फलस्वरूप होनेवाला।

व्यायामी (मिन्)—पु०[स० व्यायाम+इनि] १. वह जो व्यायाम करता हो। कसरत करनेवाला। कसरती। २ परिश्रमी। मेहनती। ३. व्यायाम से पुष्ट (शरीर)।

व्यायोग—पु०[स० वि+आ√युज+घञ्] साहित्य में दस प्रकार के रूपकों में से एक प्रकार का रूपक या दृश्य काव्य। इसके पात्रों में स्त्रियाँ कम और पुरुष अधिक होते हैं। इसमें गर्भ, विमर्ष और संधि नहीं होती।

व्यार्त—वि० [स० तृ० त०] विशेष रूप से आर्त।

व्याल—पु०[स० वि+आ√ अल्+अच्]१ साँप। २ चीता। बाघ। शेर या ऐसा ही और कोई हिंसक जंतु। ३ वह सिखाया हुआ चीता जिसकी सहायता से दूसरे पशुओं का शिकार किया जाता है। ४ दुष्ट हाथी। ५. राजा। ६ विष्णु। ७ एक प्रकार का दंडक छंद।
वि० १. दुष्ट। पाजी। २. अपकार करनेवाला।

व्यालक—पु०[स० व्याल+कन्] १ दुष्ट या पाजी हाथी। २ हिंसक जन्तु।

व्यालग्राही(हिन्)—पु०[स०] सँपेरा।

व्यालग्रीव—पु०[स०]१. बृहत्संहिता के अनुसार एक देश का नाम। २ उक्त देश का निवासी।

व्यालता—स्त्री०[स० व्याल+तल्+टाप्] व्याल का धर्म या भाव।

व्याल-मृग—पु०[स०] बाघ। शेर।

व्यालि—पु०[स० वि-आ√अद्(उचम करना)+इन्, ड—ल] व्यालि नामक प्राचीन ऋषि और वैयाकरण।

व्यालिक—पु०[स० व्याल+ठन्—इक] सँपेरा।

व्याली—पु०[स० व्याल+इनि] शिव।

व्यालीढ—पु०[सं० वि+आ√लिह् (आस्वाद लेना)+क्त] साँप का ऐसा दंश जिसमें केवल एक या दो दाँत कुछ-कुछ लगे हों और घाव में से खून न बहा हो।

व्यालुप्त—पु०[स० वि+आ√लुप् (जुदा करना)+क्त] साँप का ऐसा दंश जिसमें दो दाँत भरपूर बैठे हों और घाव में से खून भी निकला हो।

व्यालू—पुं०=व्यालू।

व्यावरण—पु० [सं०] [भू० कृ० व्यावृत, कर्ता व्यावर्तक]१. चारों ओर से घेरना। २. किसी शक्ति के फलस्वरूप आकार, रूप आदि का विकृत होना। (कन्टोर्शन)

व्यावर्त—पु०[सं० वि+आ√वृत् (वर्तमान)+अच्] १ आगे की ओर निकली हुई नाभि। २. चक्रवर्द्ध। चक्रमर्द।

व्यावर्तक—वि०[स० वि+आ√वृत् (वर्तमान रहना)+णिच्+ण्वुल्—अक]१. चारों ओर से घूमनेवाला। २. पीछे लौटनेवाला।

व्यावर्तन—पु०[स० वि+आ√ वृत् (वर्तमान रहना)+णिच्+ल्युट्—अन] १. चारों ओर घूमना। २.पीछे की ओर लौटना। ३ घुमाव। ४. मोड़।

व्यावसायिक—वि०[सं० कर्म०स०] व्यवसाय या पेशे से संबंध रखनेवाला।

**व्यावहारिक**—वि०[सं० व्यवहार+ठक्—इक] १. व्यवहार (बरताव या मुकदमे) सबंधी। २ जिसे व्यवहार मे लाया जा सकता हो। ३ जो व्यवहार मे आ सकता हो। ४ (व्यक्ति) जो व्यवहारशील हो। अच्छा बरताव करनेवाला।

**व्यावहारिक-कला**—स्त्री०[स०] ललित कला से भिन्न वे कलाएँ जो प्रयोग या प्रयोग मे आनेवाली वस्तुओ की रचना से सम्बन्ध रखती हैं। (ऐप्लायड आर्टस) जैसे—कपड़े, मिट्टी के बरतन, भेज, कुर्सियाँ आदि बनाने की कला।

**व्यावहारिक-विज्ञान**—पुं०[सं०] ऐसा विज्ञान जिसकी सब बातें प्रयोग या परीक्षा के द्वारा ठीक सिद्ध की जा सकती हो। (एक्सपेरिमेन्टल साइन्स)

**व्यावहार्य**—वि०[स०व्यवहार+ण्यञ्] जो व्यवहार या कार्य मे आने के योग्य हो।

**व्याविध**—वि०[स०वि+आ√ विध् +क] विभिन्न प्रकार का। तरह तरह का।

**व्यावृत्त**—वि०[भ० वि√ आ+वृत् +क्त]१. छूटा हुआ। निवृत्त। २ मना किया हुआ। निवेंधित। ३ टूटा हुआ। खंडित। ४ अलग या पृथक् किया हुआ। ५. विभक्त।

**व्यावृत्ति**—स्त्री०[स० वि+आ√ वृत् +क्तिन्] १. मुँह मोड़ना। २. घेरना। ३. पीछे की ओर लुढ़कना। ४ (नैत्रादि) घुमाना। ४. प्रशंसा। स्तुति। ५. निषेध। मनाही। ६. बाधा। विघ्न। ७. निराकरण। ८. नियोग। ९. बचाकर रखा हुआ धन।

**व्यासंग**—पुं० [सं० वि+ आ√ सञ्ज् (साथ रहना)+घञ्] १. घनिष्ठ संपर्क। २. आसक्ति। ३. मनोयोग। ४.जोड़। योग। ५. पार्थक्य।

**व्यासंगी(न्)**—वि० [सं० व्यासंग+इनि] मनोयोगपूर्वक कार्य मे लगा रहनेवाला।

**व्यास**—पुं० [सं० वि√ अस् +घञ्] १. पराशर के पुत्र कृष्ण द्वैपायन जिन्होंने वेदों का संकलन, विभाग और संपादन किया था। कहा जाता है कि अठारही पुराणों, महाभारत, भागवत और वेदांत आदि की रचना भी इन्होने ही की थी। २. कथावाचक (ब्राह्मण)। ३. किसी वृत्त मे की वह रेखा जो उसके केन्द्र से होकर एक सिरे से दूसरे सिरे तक सीधी जाती हो। ४. फैलाव।

**व्यासकूट**—पुं०[सं० ष० त०]१. महाभारत मे आए हुए वेदव्यास के कूट श्लोक। २. वह कूट श्लोक जो सीता हरण होने पर रामचन्द्र जी ने माल्यवान् पर्वत पर कहे थे और जिनसे उन्हे कुछ शांति मिली थी।

**व्यासक्त**—वि०[सं० वि+आ√ सञ्ज् (संग रहना) +क्त] बहुत अधिक आसक्त।

**व्यासक्ति**—स्त्री० [स० वि+आ√ सञ्ज्+क्तिन्] विशेष रूप से होनेवाली आसक्ति।

**व्यास गद्दी**—स्त्री० [सं०+हिं०] ऊँची चौकी या आसन जिस पर बैठकर पंडित या व्यास कथा-वार्ता कहते हैं। व्यास-पीठ।

**व्यास-गीता**—स्त्री०[सं० ष० त०] एक उपनिषद् का नाम।

**व्यासता**—स्त्री० [सं० व्यास+तल्+टाप्] व्यास होने की अवस्था, धर्म या भाव।

**व्यासत्व**—पुं०[सं० व्यास+त्व]=व्यासता।

**व्यास-पीठ**—पुं० [सं० ष० त०] वह ऊँचा आसन जिस पर बैठकर व्यास लोग पौराणिक कथाएँ कहते हैं। व्यास की गद्दी।

**व्यास-वन**—पुं०[सं०] एक प्राचीन वन या जगल।

**व्यास-सूत्र**—पुं०[सं०] वेदात सूत्र।

**व्यासारण्य**—पुं०[स० मध्यम० स०] व्यास-वन नामक प्राचीन वन।

**व्यासार्द्ध**—पुं०[स० ष० त] ज्यामिति मे वृत्त के केन्द्र से उसकी परिधि तक बीची जानेवाली सीधी रेखा जो मान मे व्यास की आधी होती है।

**व्यासासन**—पुं०[सं० ष० त०] व्यास गद्दी। व्यास पीठ।

**व्यासिद्ध**—वि० [सं० वि+आ√ सिध् (मांगल्यप्रद)+क्त] दे० 'प्रारक्षित'।

**व्यासीय**—वि० [सं० व्यास+छ—ईय] व्यास का।

**व्यासेध**—पुं०[सं० वि+आ√सिध् (मांगल्यप्रद)+घञ्] दे० 'प्रारक्षण'।

**व्याहत**—वि०[सं० वि+आ√हन् (मारना)+क्त]१. मना किया हुआ। निवारित। निषिद्ध। २. निरर्थक। व्यर्थ।

पु० साहित्य मे एक प्रकार का अर्थदोष जो उस दशा मे माना जाता है जब पहले कोई बात कहकर उसी के साथ तुरन्त कोई ऐसी दूसरी असंगत या विरोधी बात कही जाय जो ठीक न बैठती हो। यथा—चंद्रमुखी के बदन-सम बिनकर कह्यो न जाइ।

**व्याहति**—स्त्री० [सं० वि+आ√ हन् (मारना)+क्तिन्] बाधा। विघ्न।

**व्याहरण**—पुं०[सं० वि+आ√ हृ+ल्युट्—अन] [भू० कृ०व्याहृत]१. उक्ति। कथन। २. कहानी। किस्सा।

**व्याहार**—पुं०[सं० वि+आ√ हृ (हरण करना)+घञ्] १. वाक्य। जुमला। २. प्रश्न करना। पूछना।

**व्याहृत**—भू० कृ०[सं० वि+आ√हृ (हरण करना)+क्त] १. कहा हुआ। कथित। २. खाया हुआ। भुक्त।

**व्याहृति**—स्त्री०[सं० वि+आ√हृ (हरण करना)+क्तिन्]१. उक्ति। कथन। २. भू भुवः आदि सप्त लोकात्मक मंत्र।

**व्युच्छित्ति**—स्त्री०[स०]=व्युच्छेद।

**व्युच्छिन्न**—भू० कृ०[सं० वि+उत्√छिद् (फाड़ना)+क्त] १. उन्मूलित। २ विनष्ट।

**व्युच्छेद**—पुं०[सं० वि+उत्√ छिद् (फाड़ना)+घञ्]१. अच्छी तरह किया हुआ उच्छेद। २. विनाश। बरबादी।

**व्युति**—स्त्री०[सं०] बुनने अथवा सीने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**व्युत्क्रम**—पुं०[सं० वि+उत्√ क्रम्+घञ्]१ व्यतिक्रम। २. मृत्यु। ३ अपराध।

**व्युत्क्रमण**—पुं०[सं० वि+उत√ क्रम् (चलना)+ल्युट्—अन] उल्लंघन करने की क्रिया या भाव।

**व्युत्थान**—पुं०[स० वि+उत्√ स्था (ठहरना)+ल्युट—अन]१. खड़े होना। २. किसी के विरुद्ध खड़े होना। ३. एक प्रकार का मृत्यु। ४. समाधि। ५. योग के अनुसार चित्त की क्षिप्त, मूढ और विक्षिप्त ये तीनों अवस्थाएँ या चित्तभूमियाँ जिनमें योग का साधन नहीं हो सकता। इन भूमियों में चित्त बहुत चंचल रहता है।

**व्युत्थित**—भू० कृ० [स० वि+उत्+ स्था (ठहरना)+क्त] जो किसी के विरुद्ध खड़ा हुआ हो। जो किसी का विरोध कर रहा हो।

**व्युत्पत्ति**—स्त्री०[सं० वि√उत्√पद्+क्तिन्] १. किसी चीज का मूल उद्गम या उत्पत्ति का स्थान। २ किसी शब्द का वह मूल रूप जिससे निकल या बिगड़कर उसका प्रस्तुत रूप बना हो। (डेरिवेशन) ३. व्याकरण, कोश आदि में किसी शब्द की मौलिक रचना आदि का विवरण। जैसे—ब्यूह की व्युत्पत्ति है—वि√ऊह्+घञ्। ४. किसी विज्ञान या शास्त्र का अच्छा ज्ञान। बहुत सी बातों की जानकारी। बहुज्ञता। जैसे—दर्शनशास्त्र में उनकी अच्छी व्युत्पत्ति है।

**व्युत्पत्तिक**—वि०[स०] १. व्युत्पत्ति से सम्बन्ध रखनेवाला। २. व्युत्पत्ति के रूप में होनेवाला। (डेरिवेटिव)

**व्युत्पन्न**—भू० कृ०[सं० वि०+ उत्√पद्+क्त] १. जिसकी उत्पत्ति हुई हो। उत्पन्न। २. (शब्द) जिसकी व्युत्पत्ति ज्ञात हो।

**व्युत्पादक**—वि०[सं० वि+उत्√पद्+ण्वुल्—अक] उत्पन्न करनेवाला। उत्पादक।

**व्युत्पादन**—पुं०[स०वि+उत्√पद्(स्थान आदि)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० व्युत्पादित] १ उत्पन्न करना। २ व्युत्पत्ति।

**व्युत्पाद्य**—वि०[सं० वि+ उत्√पद्+णिच्+यत्] १ जिसके मूल रूप की व्याख्या की जा सके। २ जिसकी व्युत्पत्ति बतलाई जा सके।

**व्युत्सर्ग**—पु० [सं० वि+उत्√सृज् (छोड़ना)+घञ् ] १ त्याग। विरक्ति। २. शरीर के मोह का त्याग। (जैन)

**व्युपदेश**—पुं०[सं० वि+ उप√दिश् (आदेश करना)+घञ्] १. उपदेश। २. बहाना। ३ छद्म। छल।

**व्युपरम**—पु०[सं० ब० स०] १. शांति। २ निवृत्ति। ३. स्थिति। ४ बाधा। ५. विराम। ६ अन्त।

**व्युषाश**—पु०[सं० ब० स०] अशांति।

**व्युष**—स्त्री० [सं० वि√उष् (दाह करना आदि)+क] प्रात काल। सवेरा।

**व्युष्ट**—पु०[स० वि√ उष्+क्त] १. प्रभात। तड़का। २. दिन। ३. फल।
भू० कृ० १. जला हुआ। २. चमकीला। ३. स्पष्ट।

**व्युष्टि**—स्त्री०[स० वि√उष्+क्तिन्] १. फल। २. समृद्धि। ३. प्रशंसा। स्तुति। ४. उजाला। प्रकाश। ५. प्रभात। तड़का। ६. जलन। दाह। ७. इच्छा। कामना।

**व्यूक**—पु०[सं०] १. एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी।

**व्यूढ**—भू० कृ०[सं० वि√ वह् (ढोना)+क्त] [स्त्री० व्यूढ़ा] १. ब्याहा हुआ। विवाहित। २. मोटा। ३. अच्छा। बढ़िया। ४. तुल्य। समान। ५. दृढ़। पक्का। मजबूत। ६. फैला हुआ। विस्तृत। ७. विकसित। ८ ब्यूह के रूप में आया या लाया हुआ।

**व्यूढपति**—पु०[सं०] वह व्यक्ति जो अपनी विवाहित पत्नी की रति या संभोग से संतुष्ट रहता हो और पर-स्त्री की कामना न करता हो।

**व्यूढि**—स्त्री०[सं० वि√ वह् (ढोना)+क्तिन्] १. ठीक ठीक क्रम। विन्यास। २. पंक्ति। ३. व्यूह।

**व्यूत**—भू० कृ०[सं० वि√वेञ् (बुनना)+क्त] बुना या सिया हुआ।

**व्यूति**—स्त्री० [सं० वि√वेञ्]+क्तिन्] बुनने या सीने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**व्यूह**—पु०[सं० वि√ऊह् (वितर्क करना)+घञ्] १. समूह। जमघट। २. निर्माण। रचना। ३. तर्क। ४. देह। शरीर। ५. परिणाम। नतीजा। ६. फौज। सेना। ७. युद्ध में सुदृढ़ रक्षा पंक्ति बनाने के उद्देश्य से सैनिकों का किसी विशेष क्रम से खड़ा होना। ८. अंश। भाग। योजना

**व्यूहन**—पु०[सं० वि√ ऊह् + ल्युट्—अन] व्यूह रचने की क्रिया या भाव। २. रचना। विस्थापन।

**व्यूहित**—भू० कृ० [सं० वि√ ऊह् +क्त] व्यूह के रूप में किया या लगाया हुआ।

**व्योक**—पुं०[सं० √ व्ये+मनिन्, व्योमन्, नि० सि०] १ आकाश। अंतरिक्ष। आसमान। २. जल। पानी। ३. बादल। मेघ। ४. शरीरस्थ वायु। ५. अभ्रक। ६. कल्याण। मंगल। ७. विष्णु। ८. एक प्रजापति।

**व्योमक**—पु०[सं० व्योमन्+कन्] एक तरह का आभूषण। (बौद्ध)

**व्योमकेश**—पुं०[सं० ब० स०] शिव।

**व्योम गंगा**—स्त्री०=अकाश गंगा।

**व्योमग**—वि०[स० व्योमन्√गम्+ड] १ आकाशचारी। २. स्वर्गीय।

**व्योमगमनी**—स्त्री०[स०-ब० स०] इंद्रजाल का वह भेद जिसके द्वारा मनुष्य हवा में उड़ता हुआ दिखाई पड़ता है।

**व्योमचर**—वि०[सं० व्योमन्√चर्+अच्] वह जो आकाश में विचरण करता हो। आकाशचारी।
पु० १. देवता। २. पक्षी।

**व्योमचारी**—वि०, पु०=व्योमचर।

**व्योम धूम**—पु०[स० ष० त०] बादल।

**व्योमपाद**—पु०[स० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

**व्योम-पुष्प**—पु० [स०] अस्तित्वहीन अथवा कल्पित वस्तु। आकाश-कुसुम।

**व्योम-मंडल**—पु०[स०ष० त०] १ आकाश। आसमान। २. झंडा। ध्वजा।

**व्योम-मृग**—पुं० [स० ष० त०] चन्द्रमा के दस घोड़ों में से एक।

**व्योमयान**—पुं० [स०] १ सूर्य। २ आकाश में चलनेवाला यान। आकाश-यान। (स्पेस शिप) ३. हवाई जहाज।

**व्योमवल्ली**—स्त्री० [सं० ष० त०] आकाशवल्ली। अमरबेल।

**व्योम-सरिता**—स्त्री०[स० ष० त०]=आकाश-गंगा।

**व्योमस्थली**—स्त्री०[स० ष० त०] पृथ्वी। जमीन।

**व्योमाब्ज**—पु०[स०] गौतम बुद्ध का एक नाम।

**व्योमी (मिन्)**—पुं०[स० व्योमन्+इनि] चन्द्रमा के दस घोड़ों में से एक।

**व्योमोदक**—पु०[सं० ष० त०] वर्षा का जल। बरसात का पानी।

**व्योमिक**—वि० [सं० व्योमन्+ठक्—इक] व्योम-संबंधी। व्योम या आकाश का।

**व्रज**—पु०[स०√व्रज्(जाना)+क] १. जाने या चलने की क्रिया। व्रजन। गमन। २. झुंड। समूह। ३ गोकुल, मथुरा, वृन्दावन के आस-पास के प्रदेश का नाम।

**व्रजक**—वि०[सं०√व्रज् (गमनादि)+ण्वुल्—अक] भ्रमण करनेवाला।
पुं० सन्यासी।

**व्रजन**—पु०[सं०√व्रज्+ल्युट्—अन] चलना या जाना। गमन।

**ब्रजनाथ**—पु०[स० ष० त०] ब्रज के स्वामी श्रीकृष्ण।

**ब्रजभाषा**—स्त्री०[स०ष० त०] ब्रज प्रदेश में बोली जानेवाली भाषा। ग्यारहवीं शताब्दी से इसमें निरंतर रचनाएँ प्रस्तुत हो रही है।

**ब्रज-मंडल**—पु०[स० ष० त०] ब्रज और उसके आस-पास का प्रदेश।

**ब्रजमोहन**—पु० [स० ब्रज√मुह्+णिच्+ल्युट्-अन, ष० त०] श्रीकृष्ण।

**ब्रजराज**—पु०[स० ष० त०] श्रीकृष्ण।

**ब्रजवल्लभ**—पु०[स० ष० त०] श्रीकृष्ण।

**ब्रजांगन**—पु०[स० ष० त०] गोष्ठ।

**ब्रजांगना**—स्त्री०[स० ष० त०] १. ब्रज की स्त्री। २ गोपी (श्रीकृष्ण के विचार से)।

**ब्रजित**—भू० कृ०[स०√ब्रज्+क्त] गया हुआ। प्रस्थित। पु० १ गमन। २ भ्रमण।

**ब्रजी**—स्त्री०[स० ब्रज] ब्रजभाषा (ब्रज की बोली)।

**ब्रजेंद्र**—पु०[स० ष० त०] १ नंदराय। २ श्रीकृष्ण।

**ब्रजेश्वर**—पु०[स० ष० त०] श्रीकृष्ण।

**ब्रज्य**—वि०[स०√ब्रज् (गमनार्थ)+क्यप्] ब्रजन संबंधी।

**ब्रज्या**—स्त्री०[स० ब्रज्य+टाप्] १ घूमना-फिरना, टहलना या चलना। पर्यटन। २ गमन। जाना। ३. आक्रमण। चढ़ाई। ४. पगडंडी। ५ ढेर या समूह बनाना। ६. दल। जत्था।

**व्रण**—पु० [त०√व्रण् (अंग चूर्ण करना)+अच्] १. किसी प्रकार के प्राकृतिक विकार से होनेवाला घाव। २. क्षत। घाव। ३ छिद्र। छेद। ४ दोष।

**व्रण-दंचि**—स्त्री० [सं० ष० त०] वह गाँठ जो फोड़े के ऊपर पड़ती है।

**व्रणन**—पु० [स०√व्रण्+ल्युट्-अन] [भू० कृ० व्रणित] छेद करना। छेदना।

**व्रण-रोहिणी**—स्त्री० [स०] एक प्रकार की छोटी पीली लता हरें। रोहिणी।

**व्रण-शोथ**—पु०[स० ष० त०] फोड़े, घाव आदि में होनेवाली सूजन।

**व्रणारि**—पु० [स० ष० त०] १. बोल नामक गंधद्रव्य। २. अगस्त वृक्ष।

**व्रणित**—भू० कृ० [स० व्रण+इतच्] १ जिसे व्रण लगा हो। आहत। २. जिसे व्रण हुआ हो। ३ जो छेदा या बेधा गया हो।

**व्रणिल**—वि०[सं० व्रण+इलच्] व्रणी।

**व्रणी (न्)**—पु०[स० व्रण+इनि] १ जिसे व्रण हुआ हो। २ जिसके हृदय पर गहरी चोट लगी हो।

**व्रणीय**—वि०[स० व्रण+छ-ईय] १ व्रण-संबंधी। २. व्रण के फलस्वरूप होनेवाला।

**व्रण्य**—वि०[स०√व्रण् (अंगचूर्ण करना)+क्यप्] जो व्रण अच्छा करने के लिए गुणकारी हो।

**व्रत**—पु०[स०√वृ+अतच्] १. धार्मिक या नैतिक पवित्रता के निमित्त किया जानेवाला दृढ़ निश्चय या संकल्प। २ ऐसा दृढ़ निश्चय जिसमें किसी प्रकार का त्याग अपेक्षित हो। ३ पुण्य प्राप्ति या धार्मिक अनुष्ठान के लिए किया जानेवाला उपवास। जैसे—एकादशी का व्रत। ४ नियम। ५ आदेश।

**व्रत-चर्या**—स्त्री०[स० ष० त०] किसी प्रकार का व्रत करने या रखने का काम।

**व्रतचारिता**—स्त्री०[सं० व्रतचारिन्+तल्+टाप्] व्रतचारी होने की अवस्था, धर्म या भाव।

**व्रतचारी**—पु० [स० व्रतचारिन्] वह जो किसी प्रकार के व्रत का आचरण या अनुष्ठान करता हो। व्रत करनेवाला।

**व्रतती**—स्त्री० [स० प्र√तन् (विस्तार करना)+क्तिन्, पृषो० सिद्धि, प्र-त्र] १. विस्तार। फैलाव। २ लता।

**व्रतधर**—वि०[स० व्रत√धृ+अच्] जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। व्रत करनेवाला।

**व्रत-पक्ष**—पु०[सं० ष० त०] भाद्र मास का शुक्ल पक्ष।

**व्रत-भिक्षा**—स्त्री०[स०] वह भिक्षा जिसे बालक को यज्ञोपवीत संस्कार के समय माँगने का विधान है।

**व्रत-संग्रह**—पु०[सं० ष० त०] वह दीक्षा जो यज्ञोपवीत के समय गुरु से ली जाती है।

**व्रतस्थ**—वि०[स० व्रत√स्था (ठहरना)+क] जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो।
पु० ब्रह्मचारी।

**व्रत-स्नातक**—पु०[स० तृ० त०+कन्] तीन प्रकार के ब्रह्मचारियों में से वह ब्रह्मचारी जिसने गुरु के यहाँ रहकर व्रत तो समाप्त कर लिया हो, पर जो बिना वेद समाप्त किए ही घर लौट आया हो।

**व्रताचरण**—पु०[स० ष० त०] किसी प्रकार के व्रत का पालन।

**व्रतादेश**—पु०[स० ष० त०] १. व्रत का आदेश देना। २. यज्ञोपवीत संस्कार जिसमें बालक को व्रत दिया जाता है। ३. व्रतादेश।

**व्रतादेशन**—पु०[स० ष० त०] वेदों का वह प्रदेश जो उपनयन संस्कार के बाद ब्रह्मचारी को दिया जाता है।

**व्रतिक**—वि० [स० व्रत+इनि,+कन्] १. जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। २ व्रत-संबंधी। ३ व्रत के फलस्वरूप होनेवाला।

**व्रती**—पु०[स० व्रत+इनि, व्रतिन्] [स्त्री० व्रतिनी] १ वह जिसने किसी प्रकार का व्रत धारण किया हो। जैसे—वेद-व्रती। २ यज्ञ करनेवाला यजमान। ३ ब्रह्मचारी।

**व्रतेश**—पु०[स० ष० त०] शिव।

**व्रतोपनयन**—पु०[स० ष० त०] उपनयन संस्कार।

**व्रतोद्यापन**—पु०[सं० ष० त०] कोई धार्मिक अनुष्ठान आरंभ करना।

**व्रत्य**—वि०[स० व्रत+यत्] १ वह जिसने कोई व्रत धारण किया हो। पु० ब्रह्मचारी।

**व्रन**—पु०१ =वर्ण २. =व्रण।

**व्रश्चन**—पुं०[सं०√व्रश्च् (काटना)+ल्युट्-अन] १. काटना या छेदना। २ सोना, चाँदी आदि काटने की छेनी। ३ लकड़ी का बुरादा। ४ कुल्हाड़ी।

**व्राच**—पुं०[अप०] १. प्राचीन अपभ्रंश भाषा का वह रूप जो प्राय एक हजार बरस पहले सिंध प्रदेश में प्रचलित था, और जिससे आधुनिक सिंधी भाषा की उत्पत्ति मानी जाती है। (इसका साहित्य अभी तक नहीं मिला है।) २. पैशाची भाषा का एक भेद।

**व्राज**—पुं०[सं०√व्रज्+घञ्] १. चलना या जाना। गमन। २. कुल्ला।

**व्रात्यिक**—पु०[स० व्रत्य+कन्] एक प्रकार का उपवास जिसमे केवल दूध पर रहा जाता है। (सन्यासी)

**व्रात**—पु० [सं०√वृ+क्तच्,पृषो० सिद्धि] १ आदमी। मनुष्य। २. जत्था। दल। ३. जीविका उपार्जन के लिए किया जानेवाला परिश्रम या प्रयत्न। ४ जातिच्युत ब्रह्मचारी की संतान।

**व्रात्य**—वि०[स० व्रात+यत्] व्रत-संबंधी। व्रत का।

पुं० १ ऐसा आर्य या हिन्दू जिसके पूरे धार्मिक संस्कार न हुए हों। २ ऐसा ब्राह्मण, क्षत्रिय या शूद्र जो वैदिक कृत्य न करता हो। ३ वर्णसंकर।

**व्रात्यता**—स्त्री०[सं० व्रात्य+तल्+टाप्] व्रात्य होने की अवस्था या भाव।

**व्रात्यत्व**—पुं०[स० व्रात्य+त्व]=व्रात्यता।

**व्रात्य-स्तोम**—पु० [स० मध्यम० स०] एक प्रकार का यज्ञ जो व्रात्य या संस्कारहीन लोग करते थे।

**व्रिज**—पु० १. =वृक्ष। २. =वृष।

**व्रिश**†—वि०=बूढ़ा।

**व्रीड़**†—पु०[सं०√व्रीड् (लज्जा)+घञ्] लज्जा। शरम।

**व्रीडन**—पु०[स०√व्रीड्+ल्युट्-अन] १ लज्जा। २ नम्रता।

**व्रीडा**—स्त्री०[स०√व्रीड्+अ+टाप्] लज्जा। शरम।

**विशेष**—साहित्य में इसकी गिनती सचारी भावों में है।

**व्रीडित**—भू० कृ० [स०√व्रीड् (लज्जा)+क्त, व्रीडा+इतच्] १. लज्जित। २. विनीत।

**व्रीहि**—पु०[स०√वृह्+इन्, पृषो० सिद्धि] १ धान। चावल। २. धान का खेत। ३. अनाज। अन्न।

**व्रीहियुक्त**—पु०[स०] एक प्रकार का शस्य। (सुश्रुत)

**व्रीहि-श्रेष्ठ**—पु०[सं० स० त०] शालि धान्य।

**व्रीही**—पुं०[स० व्रीहि+इनि, व्रीहिन्] वह खेत जिसमे धान बोया गया हो। पुं०=व्रीहि।

**व्रीह्य पूप**—पु०[सं० मध्यम०स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का पूआ, जो चावल पीसकर बनाया जाता था।

**व्रीह्य**—वि० [सं० व्रीहि+अण्] १ व्रीहि अर्थात् चावल-संबंधी। २. चावल का बना हुआ।

**व्हिस्की**—स्त्री० दे०'हिस्की'

**व्हेल**—स्त्री०[अ०] मछली की तरह का एक बहुत बडा और प्रसिद्ध स्तनपायी समुद्री जंतु। ह्वेल।

## श

**श**—देवनागरी वर्णमाला का तीसवाँ वर्ण जो व्याकरण और भाषा विज्ञान के अनुसार ऊष्म, तालव्य, अघोष, महाप्राण ईषद्विवृत व्यंजन है।

**शंक**—पु० [सं०√शक्+घञ्] १. शका। २. भय।

**शंकना**—अ० [स० शका] १. संदेह करना। २. डरना।

**शंकनीय**—वि० [स०√शक् +अनीयर्] १ जिसके विषय में कोई शका हो सकती हो या उठाई जा सकती है। शंक्य। २. जिसके ठीक होने के संबध मे किसी को दृढ निश्चय न हो; और इसी लिए जिसके संबंध मे कुछ प्रश्न किया जा सकता हो। (वेबेरचनेबुल)

**शंकर**—पुं० [सं० श√कृ+अच्] १. शिव। २ शंकराचार्य। ३. भीमसेनी कपूर। ४. एक प्रकार का छन्द। ५. संगीत मे एक प्रकार का राग।

वि० [स्त्री० शंकरा] कल्याणकारी। शुभंकर।

†वि०, पुं०=संकर।

**शंकर-शैल**—पुं० [सं० ष० त०] कैलास पर्वत।

**शंकरा**—स्त्री० [सं० शंकर+टाप्] १. पार्वती। २. मंजीठ। ३. शमी।

पु० शकर नामक राग।

वि० स्त्री० कल्याण करनेवाली।

**शंकराचार्य**—पुं० [सं० मध्य० स०] १. दक्षिण भारत के केरल प्रदेश के एक प्रसिद्ध शैव आचार्य जो अद्वैत मत के प्रतिपादक तथा प्रवर्त्तक थे। (सन् ७८८-८२० ई०)

**विशेष**—इन्होंने बदरिकाश्रम, करवीर, द्वारका और शारदा नाम के चार पीठ स्थापित किए थे, जिनके अधिष्ठाता अभी तक शकराचार्य कहे जाते हैं।

**शंका**—स्त्री० [सं०√शंक+अ+टाप्] १. किसी प्रकार के भावी अनिष्ट, आघात या हानि का अनुमान होने पर मन में होनेवाला कष्ट मिश्रित भय। आशका। २. मन की वह स्थिति जिसमे किसी मान्य या निर्णीत तथा निश्चित की हुई बात के सामने आने पर उसके संबध मे कोई आपत्ति, जिज्ञासा या प्रश्न उत्पन्न होता है। कोई बात ठीक न जान पडने पर उसके संबंध मे मन में तर्क उठने की अवस्था या भाव। जैसे—(क) आपने इस चौपाई (या श्लोक) का जो अर्थ किया है, उसके संबध मे मुझे एक शका है अर्थात् मैं समझता हूँ कि वह अर्थ ठीक नही है, और उसका ठीक रूप कुछ दूसरा ही होना चाहिए। (ख) पडित लोग शास्त्रार्थ करते समय एक दूसरे के मत पर तरह-तरह की शकाए करते हैं।

**विशेष**—मनोविज्ञान की दृष्टि से यह कोई मनोवेग नही है, बल्कि कुछ विशिष्ट परिस्थितियो मे होनेवाला बौद्धिक या मानसिक व्यापार मात्र है।

३. उक्त के आधार पर, साहित्य में तैतीस सचारी भावों में से एक। मन का वह भाव जो किसी प्रकार की आशका भय आदि के कारण होता है और जिसमें शरीर में कंप होता, रंग फीका पड़ जाता और स्वर विकृत हो जाता है। उदा०—चौंकि चौंकि चकता कहत चहूँघाते यारो, लेत रहौ खबरि कहाँ लौ सिवराज है।—भूषण। ४. दे० 'आशंका', 'संदेह' और 'संशय'।

**शंकाकुल**—वि० [सं० तृ० त०] शका से आकुल या चिचलित।

**शंकाग्राह**—पुं० [सं० शका+अवग्राह] किसी बात की शंका होने पर उसके संबंध मे पता लगाने के लिए की जानेवाली बातचीत।

**शंका-समाधान**—पु० [सं०] किसी की उठाई हुई शका का इस प्रकार निराकरण करना जिससे जिज्ञासु का पूरा समाधान या संतोष हो जाय।

**शंकित**—भू० कृ० [सं० शंका+इतच्] जिसके मन में शंका हुई हो।

**शंकु**—पुं० [सं०√शक्+उण्] १. कोई ऐसा घन पदार्थ जिसका नीचेवाला भाग तो गोलाकार हो, मध्य भाग क्रमशः पतला होता गया हो

और ऊपरी सिरा बिलकुल नुकीला हो। (कोन) २. कील। मेख। ३ खूँटा या खूँटी। ४. बरछा। भाला। ५. तीर की गाँसी या फल। ६. शस्त्र नाम की बहुत बड़ी संख्या। ७. शिव। ८. कामदेव। ९. जहर। विष। १०. पाप। ११. राक्षस।१२. हंस। १३. एक प्रकार की मछली। १४. दीमकों की बाबी। वल्मीक। १५. पुरानी चाल का एक प्रकार का बाजा। १६ बारह अंगुल की नाप। १७ उक्त नाम की वह खूँटी जिसकी सहायता से प्राचीन काल में, दीपक, सूर्य आदि की छाया नापी जाती थी। १८ वनस्पतियों की वह शक्ति जिससे वे जमीन के अन्दर का रस खींचती हैं। १९ पत्ते या पत्ती की नस। २०. वास्तु शास्त्र में, ऐसा खंभा जिसका बीच का भाग मोटा और ऊपर का भाग पतला हो। २१. जूए का दाँव। बाजी। २२ लिंग। २३. नवीं नामक गंध द्रव्य।

**शंकु गणित**—पुं० [स०] ज्यामिति के अन्तर्गत गणित की वह क्रिया जिसमें शंकु के भिन्न-भिन्न भागों का मान स्थिर किया जाता है। (कोनिक्स)

**शंकुच्छाया**—स्त्री० [स० ष० त०] प्राचीन भारत में १२ अंगुल की एक नाप जिससे दीपक, सूर्य आदि की छाया नापी जाती थी।

**शंकुमती**—स्त्री० [स०] एक प्रकार का वैदिक छन्द जिसके पहले चरण में पाँच और बाकी तीनों चरणों में छः छः या कुछ कम या अधिक वर्ण होते हैं।

**शंख**—पुं० [स०√शम्+ख] १. एक प्रकार का बड़ा समुद्री घोंघा (जल-जंतु) जिसका ऊपरी आवरण या खोल फूँककर बजाने के काम आता है। २. उक्त जल-जन्तु का खोल जिसके ऊपरी छेद में मुँह से जोर से हवा भरने पर एक विशेष प्रकार का जोर का शब्द होता है। यह दो प्रकार का होता है—दक्षिणावर्त्त और वामावर्त।

**पद—शंख का मोती**—एक प्रकार का कल्पित मोती जिसकी उत्पत्ति शंख के गर्भ से मानी जाती है।

**मुहा०—शंख बजना**=विजय या आनंदोत्सव होना। **शंख बजाना**—(क) आनंद मनाना। (ख) वंचित रहना। (व्यंग्य)

३ एक लाख करोड़ या दस सर्ब की संख्या। ४ हाथी का गंडस्थल। ५ कनपटी। ६ पुराणानुसार एक निधि का नाम। ७. कुबेर की निधि के देवता। ८. चरण-चिह्न। ९. नवीं नामक गंध द्रव्य। १० छप्पय छंद का एक भेद जिसमें १५२ मात्राएँ या १४९ वर्ण होते हैं जिनमें से ३ गुरु और शेष लघु होते हैं। ११. वटक वृक्ष का एक भेद जिसके प्रत्येक चरण में दो तगण और चौदह रगण होते हैं। १२. कपाल। मस्तक। १३ हवा चलने से होनेवाला शब्द। १४. दे० 'शंखासुर'।

**शंखक**—पुं० [स०√शख+बुन्—अक] १. शंख की बनी हुई चूड़ी। साँख। २. वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का विकट रोग जिसमें कनपटी के पास लाल गिलटी निकलती है और शरीर में बहुत जलन होती है। ३. शंख नामक निधि। ४ हीरा कसीस। ५. मस्तक। माथा।

**शंखकार**—पुं० [स० शंख√कृ+अण] १. वह जो शंख से तरह-तरह की चीजें बनाता हो। २. पुराणानुसार एक संकर जाति जो उक्त प्रकार का काम करती थी।

**शंख-चूड**—पुं० [स०ब० स०] १ एक प्रकार का बहुत जहरीला नाग या साँप जिसके शरीर पर काली बिंदियाँ होती हैं। २. एक प्राचीन तीर्थ। ३. पुराणानुसार एक राक्षस जिसे कंस ने कृष्ण को मारने के लिए भेजा था, पर जो कृष्ण के हाथों स्वयं मारा गया था।

**शंखज**—वि० [सं० शख√जन्+ड] शंख से निकला या बना हुआ। पुं० एक प्रकार का कल्पित मोती जिसकी उत्पत्ति शंख के गर्भ से मानी गई है।

**शंख-द्राव**—पुं० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार का बहुत तीक्ष्ण अरक जो उदर रोगों के लिए उपकारी माना गया है। कहते हैं कि यह धातुओं, शंखों आदि तक को गला देता है, इसी लिए यह काँच या चीनी के बरतन में रखा जाता है।

**शंख-धर**—[सं० ष० त०] विष्णु।

**शंख-नारी**—स्त्री० [स०] सोमराजी नामक वृक्ष का एक नाम।

**शंख-पलीता**—पुं० [हिं०] ज्वालामुखी पर्वतों में से निकलनेवाला एक प्रकार का रेशेदार खनिज पदार्थ जिसका उपयोग गैस के मट्ठे बनाने में होता है। इस पर ताप तथा विद्युत का प्रभाव बहुत कम और देर में होता है।

**शंखपाणि**—पुं० [ब० स०] विष्णु।

**शंख-पुष्पी**—स्त्री० [ब० स० ङीष्] १. सफेद अपराजिता। २. जूही। ३. शंखाहुली।

**शंख-लिखित**—वि० [द्वं० स०] दोष-रहित। बे-ऐब।

पुं० १. शंख और लिखित नाम के दो ऋषि जिन्होंने एक स्मृति बनाई थी। २. उक्त ऋषियों की बनाई हुई स्मृति। ३. न्यायशील और पुण्यात्मा राजा।

**शंखवटी**—स्त्री० [सं०] वैद्यक में एक प्रकार की वटी या गोली जो पेट के रोगों में गुणकारी कही गई है।

**शंख-वात**—पुं० [ष० त०] वायु के प्रकोप से सिर में होनेवाली पीड़ा।

**शंख-विष**—पुं० [मध्य० स०] सखिया।

**शंखावर्त**—पुं० [सं० शख-आवर्त, ब० स०] भगंदर रोग का एक संबुकावर्त नामक भेद।

**शंखासुर**—पुं० [सं०शंख-असुर, कर्म० स०] एक प्रसिद्ध राक्षस जिसका वध विष्णु ने मत्स्यावतार में किया था। कहते हैं कि यह ब्रह्मा के यहाँ से वेद चुराकर समुद्र में जा छिपा था।

**शंखिनी**—स्त्री० [सं० शंख+इनि+ङीप्] १ एक प्रकार की वनौषधि। २. कामशास्त्र में वह नायिका जो न अधिक मोटी हो न पतली; जिसका सिर तथा स्तन छोटे, पैर बड़े और बाहें लंबी होती हैं। यह काम से अधिक पीड़ित, परपुरुष से रमण की इच्छुक, कर्कश तथा चुगलखोर स्वभाववाली होती है।

**शंखी**†—पुं०=शंख।

**शंपा**—स्त्री० [सं०] विद्युत्। बिजली।

**शंपाक**—पुं० [सं० ब० स०] अमलतास।

**शंब**—पुं० [सं०√शम्ब (गति)+अच्] १. इंद्र का वज्र। २. दोबारा की गई जोताई।

वि० १. भाग्यशाली। २. सुखी। ३. अभागा।

**शंबर**—पुं० [सं०√शंब+अरन्] १. जल। २. मेघ। ३. पर्वत। ४. एक प्रकार का हिरन। ५. युद्ध। ६ इंद्रजाल। जादू। ७. अर्जुन वृक्ष। ८. एक राक्षस।

**शंबरारि**—पुं० [सं० ष० त०] कामदेव।

**शंका**—पुं० [फा० शंबः] शनिवार।

**शंकु**—पुं० [सं० शंक+उन्] घोंघा।

**शंकूक**—पुं० [सं०√शम्ब्+कू, शंबू+कन्] १. घोंघा। २. शंख। ३. हाथी के कुंभ का अंतिम भाग। ४. हाथी का सूँड़ की नोक। ५. त्रेता युग में रामराज्य का एक शूद्र तपस्वी जिसकी तपस्या से एक ब्राह्मण पुत्र अकाल ही मर गया था। कहते हैं कि इस पर राम ने इसका वध किया और ब्राह्मण का मृत पुत्र जी उठा था।

**शंकूका**—स्त्री० [सं० शंकूक+टाप्] सीपी।

**शंभु**—वि० [सं० शम्√भू+डु] कल्याण करने और सुख देनेवाला। पुं० १. शिव। २. विष्णु। ३. एक प्रकार के सिद्ध पुरुष। ४ ब्राह्मण।

**शंभु-क्रिय**—पुं० [सं० ब० स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**शंसन**—पुं० [सं०√शंस्+ल्युट्-अन] १. प्रशंसा करना। २. मंगल कामना करना। ३ कहना।

**शंसनीय**—वि० [सं०√शंस्+अनीयर्] १. प्रशंसनीय। २ मंगल करनेवाला। ३ कथनीय।

**शंसा**—स्त्री० [सं०√शंस्+अ+टाप्] १. प्रशंसा। २. मंगल-कामना। ३. कथन।

**शंस्य**—वि० [सं०√शंस्+ण्यत्] १. शंसा के योग्य। २ जिसकी शंसा की जाय। ३. प्रशंसनीय। ४. कथित।

**शः**—प्रत्य० [सं०] एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगकर (क) उसके अनेक गुने होने का भाव सूचित करता है। जैसे—बहुश, शतश. आदि। (ख) उसके सिलसिलेवार होने का सूचक होता है। जैसे—क्रमशः। (ग) जैसे—प्रकृतिश।

**श**—पुं० [सं०√शी+ड] १. कल्याण। २ मंगल। ३ सौख्य। ४ समृद्धि। ५ शास्त्र। ६. शिव। ७ शस्त्र।
वि० शुभ।

**शऊर**—पुं० [अ० शुऊर] १ कोई बात या काम करने का ठीक ढंग या तरीका। जैसे—उसे बात करने का शऊर नहीं है। २ सामान्य योग्यता या लियाकत। ३. बुद्धि।

**शक**—पुं० [सं०√शक्+अच्] १. तातार देश का पुराना नाम। २ तातार देश की, एक प्राचीन जाति जिसके कुछ लोगों ने भारत पर आक्रमण किए थे। कहते हैं कि विक्रमादित्य ने उन्हें पूरी तरह से परास्त किया था। जो लोग बच गये थे, वे भारतीय आर्यों और विशेषतः ब्राह्मणों से मिलकर शाकद्वीपी ब्राह्मण कहलाने लगे थे। ३ राजा शालिवाहन का एक नाम। ४. बहुत बड़ा या मारके का युद्ध और उसमें होनेवाली विजय।
पुं० [अ०] बहुत-कुछ अनुमान पर आधारित ऐसी धारणा कि अमुक काम ऐसे हुआ होगा या अमुक व्यक्ति ने ऐसा किया होगा। जैसे—पुलिस उस पर चोरी का शक कर रही है।

**शक**—वि० [अ०] जिसमें दरार पड़ी हो। फटा हुआ। विदीर्ण।

**शकट**—पुं० [सं०√शक्+अटन्] १. छकड़ा। २. गाड़ी। ३ छकड़े या गाड़ी भर का बोझ जो २००० पलों का एक परिमाण था। ४. एक असुर जिसे कृष्ण ने बाल्यावस्था में मारा था। ५. तिनिश वृक्ष। ६. दे० 'शकट व्यूह'।

**शकट व्यूह**—पुं० [सं० मध्य० स०] प्राचीन भारत में, एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना जिसके दोनों पक्षों के बीच में सैनिकों की दोहरी पंक्तियाँ होती थीं।

**शकटी (टिन्)**—पुं० [स० शकट+इन्] शकट अर्थात् बैलगाड़ी हाँकनेवाला व्यक्ति।

**शकर**—स्त्री० [सं० शकल से फा०] शक्कर। चीनी।

**शकरखोरा**—पुं० [फा० शकरखोरः] गौरैया के आकार की एक प्रकार की हरे नीले रंग की बारहमासी चिड़िया जिसकी दुम गहरी भूरी, पुतलियाँ भूरी और चोंच तथा पैर काले रंग के होते है।

**शकर-पारा**—पुं० [फा० शकर पारः] १. एक प्रकार का फल जो नीबू से कुछ बड़ा होता है। २. आटे-मैदे आदि का एक तरह का पकवान जो टुकड़ों में होता है और प्रायः चाशनी में लिपटा होता है। ३. सिलाई में एक प्रकार का टाँका।

**शकर-पीटन**—पुं० [?] धूहर की तरह की एक प्रकार की कँटीली झाड़ी।

**शकर-बादाम**—पुं० [फा० शकर+बादाम] खूबानी या जर्द आलू नामक फल।

**शकरी**—स्त्री० [फा० शकर] फालसा।

**शकल**—पुं० [सं०√शक् (कर सकना)+कलच्] १ त्वचा। चमड़ी। २. छाल। छिलका। ३ दालचीनी। ४. आँवला। ५ कमल की नाल। ६. चीनी। शक्कर। ७ खड। टुकड़ा। उदा०—पंचभूत का भैरव मिश्रण शम्भाओ के शकल निपात।—प्रसाद। ८ एक प्राचीन देश।
स्त्री० [अ० शक्ल, मि० स० शकल=त्वचा] १ चेहरे की बनावट। आकृति। रूप। जैसे—शकल न सूरत, गधे की मूरत।
**पद—सूरत शकल**=चेहरे की बनावट। रंग-रूप।
**मुहा०—(किसी की) शकल बिगाड़ना**=इतना मारना-पीटना कि आकृति खराब हो जाय।
२. मुख की ऐसी चेष्टा जिससे कोई भाव प्रकट होता हो। जैसे—रुपया माँगते ही उनकी शकल बदल गई। ३ किसी चीज की आकृति, गढ़न, ढाँचा या बनावट।
**मुहा०—शकल बनाना**=अच्छा या सुंदर रूप धारण करना (या कराना)।
४. उपाय। युक्ति।
**मुहा०—शकल निकालना**=युक्ति चलना या सूझना।

**शकली**—स्त्री० [सं० शकल+ङीप्] सकुची मछली।

**शक संवत्**—पुं० [सं०√शक् (सामर्थ्य)+अच्, मध्य० स०] महाराज शालिवाहन द्वारा प्रवर्तित एक संवत् जो ई० सन् ७८ में प्रचलित हुआ था।

**शकांतक**—पुं० [सं० शक-अंतक, ष० त०] शक जाति का अंत करनेवाला, विक्रमादित्य।

**शकाब्द**—पुं० [सं० शक-अब्द, मध्य० स०] राजा शालिवाहन का चलाया हुआ संवत्। शक संवत्।
**विशेष**—यह ईसवी सन् के ७८ वर्ष पश्चात् आरंभ हुआ था।

**शकार**—पुं० [सं० श+कार] १. शकवंशीय व्यक्ति। शकवंश का आदमी। २ संस्कृत नाटकों की परिभाषा में राजा का वह साला जो नीच जाति का हो।

**शाकारि**—पु० [सं० ष० त०] शक जाति का शत्रु, विक्रमादित्य।

**शाकील**—वि० [फा०] [स्त्री०=शाकीला] अच्छी शकल-सूरत वाला। सु-दर। खूबसूरत।

**शाकुंत**—पु० [स०√शक्+उन्त] १. पक्षी। चिड़िया। २ नीलकंठ। ३. एक प्रकार का कीड़ा।

**शाकुंतक**—पु० [स० शाकुन्त+कन्] छोटी चिड़िया।

**शाकुंतला**—स्त्री० [सं० शाकुंत√ला (लेना)+क+टाप्] पुराणानुसार, मेनका नामक अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न विश्वामित्र की कन्या जिसका विवाह राजा दुष्यंत से हुआ था।

**शाकुंतिका**—स्त्री० [स०√शक्+उन्ति+कन्+टाप्] १. छोटी चिड़िया। २. प्रजा। रिआया।

**शाकुन**—पु० [स०√शक (कर सकना)+उनन्] १. चिड़िया। पक्षी। २ कोई काम आरंभ होने के समय घटित होनेवाली कोई ऐसी विशिष्ट घटना जो उस कार्य के भविष्य के संबंध में शुभ अथवा अशुभ परिणाम सूचित करनेवाले लक्षण के रूप में मानी जाती हो। जैसे—यात्रा के समय बिल्ली का सामने से रास्ता काटकर निकल जाना अशुभ शकुन और मां या पानी का घड़ा दिखाई देना शुभ शकुन माना जाता है। **विशेष**—प्राचीन काल में प्राय. पक्षियों के बोलने या सामने आने से ही इस प्रकार के शुभाशुभ फलों का अनुमान या कल्पना की जाती थी, इसी लिए इस धारणा का भी पक्षीवाचक 'शकुन' नाम पड़ा था। मुहा०—शकुन देखना या विचारना=कोई कार्य करने से पहले किसी उपाय से लक्षण आदि देख या पूछकर यह निश्चय करना कि यह काम होगा या नहीं, अथवा काम अभी करना चाहिए या नहीं। ३ शुभ मुहूर्त में होनेवाला कोई शुभ काम। ४ उत्सव अवसरों पर गाये जानेवाले गीत। ५ गिद्ध नामक शिकारी पक्षी।

**शाकुनज्ञ**—पु० [स० शकुन√ज्ञा (जानना)+क] १. शकुनों का शुभाशुभ फल बतलानेवाला व्यक्ति। २ ज्योतिषी।

**शाकुन-द्वार**—पु० [सं०] यात्रा पर निकलने के समय एक साथ शुभ और अशुभ सगन होना।

**शाकुन-शास्त्र**—पु० [स० मध्यम० स०] वह शास्त्र जिसमे शकुनो के शुभ और अशुभ फलों का विवेचन हो। शकुन बतलानेवाला शास्त्र।

**शाकुनाह**—पु० [स० शकुन-आहुत, तृ० त०] १ एक प्रकार का चावल जिसे दाऊदखानी कहते हैं। २ बच्चों को होनेवाला एक प्रकार का रोग। ३. एक प्रकार की मछली।

**शाकुनि**—पु० [स०√शक्+उनि] १. पक्षी। चिड़िया। २. गिद्ध पक्षी ३ गंधार राज सुबल के एक पुत्र का नाम। **विशेष**—यह दुर्योधन के मामा थे तथा बहुत बड़े पापाचारी थे। वि० १ दुष्ट। २. पापचारी।

**शाकुनिका**—स्त्री० [स० शकुनि+कन्+टाप्] स्कंद की अनुचरी एक मातृका।

**शाकुनी**—स्त्री० [स० शकुन+ङीष्] १. श्यामा पक्षी। २ मादा गौरैया पक्षी। ३ बच्चों को कष्ट देनेवाली एक कल्पित पूतना।

**शाकुनी-भातृजा**—स्त्री०[स० व्यस्त पद] बालकों की एक प्रकार की कष्टदायक व्याधि जो उनके जन्म से छठे दिन, छठे मास या छठे वर्ष होती है और जिसमें उन्हें ज्वर तथा कंप होता है।

**शाकुनीश्वर**—पुं०[सं० शकुनि-ईश्वर, ष० त०] पक्षियों के स्वामी, गरुड़।

**शाकुली**—स्त्री० [सं० शकुल+ङीष्] १. सकुची मछली। २. एक पौराणिक नदी।

**शाकृत्**—पु० [सं०] १. विष्ठा। गूह। २. गोबर।

**शाकृद्देश**—पुं० [सं० शकृत्-देश, ष० त०] मलद्वार। गुदा।

**शाकृद्द्वार**—पु० [सं० शकृत्-द्वार, ष० त०] मलद्वार। गुदा।

**शाक्कर**—स्त्री० [सं० शर्करा मि० फा० शक्कर=चीनी] १. चीनी। २. कच्ची चीनी। खांड।
पु० [सं०] १. साँड। २. बैल।

**शाक्करी**—स्त्री० [शक्करी+ङीष्] १. वर्णवृत्त के अंतर्गत चौदह अक्षरोवाले छंदों की संज्ञा। २. मेखला। ३. एक प्राचीन नदी।
वि० [हिं० शक्कर] जिसमे शक्कर या चीनी मिली हो।

**शाक्की**—वि० [अ० शक+ई (प्रत्य०)] १. जो हर बात को संदेह भरी दृष्टि से देखता हो। २. जिसका शक सदा बना रहता हो।

**शाक्त**—वि० [स०√शक् (सकना)+क्त] १. शक्ति सम्पन्न। समर्थ। २. पटु। ३. मधुरभाषी।

**शाक्तव**—पुं० [सं० मक्त] सत्तू।

**शाक्ति**—स्त्री० [सं०√शक् (सकना)+क्तिन्] १ वह शारीरिक गुण या धर्म जिसके द्वारा अंगो का संचालन, आत्म-रक्षा, बल-प्रयोग और ऐसे ही दूसरे काम होते हैं। पराक्रम। ताकत। जोर। (स्ट्रेंथ) जैसे—रोग के कारण उसमें उठने-बैठने की भी शक्ति नहीं रह गई है। २ कोई ऐसा गुण, तत्त्व या धर्म जो कोई विशिष्ट कार्य करता, कराता अथवा क्रियात्मक रूप मे अपना परिणाम या प्रभाव दिखाता हो। ताकत। बल। जैसे—(क) बातें याद रखने या सोचने-समझने की शक्ति। (ख) ओषधियों मे होनेवाली रोगनाशक शक्ति। ३. कोई ऐसा तत्त्व जो निश्चित रूप में और बलपूर्वक किसी से कोई काम कराने मे समर्थ हो। (फोर्स) जैसे—(क) उसमें उसका मुँह बंद करने की शक्ति है। (ख) इस इंजन मे सौ घोड़ो की शक्ति है। (ग) मत्रों में आज-कल वह शक्ति नहीं रह गई है। ४. कोई ऐसा तत्त्व या साधन जो अभीष्ट या कार्यकी सिद्धि में सहायक होता है। जैसे—आर्थिक शक्ति, सैनिक शक्ति। ५ आधुनिक राजनीति में, वह बड़ा पराक्रमी और बलशाली राज्य जिसके पास यथेष्ट धन, सेना आदि का साधन हो और जिसका दूसरे राज्यों की नीति आदि पर प्रभाव पड़ता हो। (पावर) जैसे—आज कल अमेरिका और रूस दो ससार की सबसे बड़ी शक्तियाँ हैं। ६ धार्मिक क्षेत्रों मे, ईश्वर, देवी-देवता आदि मे माना जानेवाला वह गुण या तत्त्व जिसके फलस्वरूप वे अपना कार्य करते या प्रभाव दिखाते हैं। जैसे—दैवी शक्ति, रौद्री शक्ति।
**विशेष**—हमारे यहाँ कुछ देवताओं की उक्त प्रकार की शक्तियाँ उनकी पत्नी और देवी के रूप मे मानी गई हैं। जैसे—दुर्गा, पार्वती, लक्ष्मी आदि।
७ तंत्र के अनुसार किसी पीठ की अधिष्ठात्री देवी जिसकी उपासना करनेवाले शाक्त कहे जाते हैं। ८ तांत्रिकों की परिभाषा में वह नटी, कापालिकी, वेश्या, धोबिन, नाउन, ब्राह्मणी, शूद्रा, म्लेच्छिन या मालिन जो युवती, रूपवती और सौभाग्यवती हो। ९. स्त्रियों की भग। योनि। (तांत्रिक) १०. न्याय और साहित्य में, वह तत्त्व जो शब्द

और उसके अर्थ से संबंध स्थापित करता अथवा शब्द का अर्थ प्रकट करता है। ११. बोल-चाल मे अधिकार या वश। जैसे—उसे मनाना तुम्हारी शक्ति के बाहर है। १२. प्रकृति। १३. माया। १४. बरछी या साँग नामक अस्त्र।

पु० एक प्राचीन ऋषि जो पराशर के पिता थे।

**शक्ति-ग्रह**—पु० [सं० शक्ति√ग्रह् (ग्रहण करना)+अच्] १. शिव। महादेव। २. कार्तिकेय। ३ माला-बरदार। ४. साहित्य में, वह वृत्ति या शक्ति जिससे शब्द के अर्थ का ज्ञान होता है।

**शक्ति-धर**—पुं० [स० ष० त०] स्कंद। कार्तिकेय।

**शक्ति-पाणि**—पु० [सं० ब० स०] कार्तिकेय। स्कंद।

**शक्ति-पूजक**—वि० [ष० त०] १. शक्ति का उपासक। २. वाममार्गी।

**शक्ति-पूजा**—स्त्री० [सं० ष० त०] शाक्तों द्वारा होनेवाली शक्ति की पूजा।

**शक्ति-बोध**—पुं० [सं० तृ० त०] शब्द शक्तियों से प्राप्त होनेवाले अर्थों का ज्ञान।

**शक्ति-मत्ता**—स्त्री० [स० शक्ति+मतुप्, शक्तिमत्+तल्+टाप्] १ शक्ति सपन्न होने की अवस्था या भाव। ३ शक्ति का होनेवाला घमड।

**शक्ति-मान् (मत्)**—वि० [स० शक्ति+मतुप्] [स्त्री० शक्तिमती] जिसमें यथेष्ट शक्ति हो। बलवान्। बलिष्ठ। ताकतवर।

**शक्ति-वादी (दिन्)**—वि० [स० शक्ति√वद् (कहना)+णिनि] १ शक्ति-संबधी। २. शक्ति का उपासक तथा अनुयायी। शाक्त।

**शक्ति-वीर**—पु० [सं० ष० त०] वह जो शक्ति की उपासना करता हो। वाममार्गी। शाक्त।

**शक्ति-वैकल्य**—पु० [सं० ष० त०] १ शक्ति का अभाव। कमजोरी। दुर्बलता। २. असमर्थता।

**शक्ति-शोधन**—पुं० [स० ष० त०] शाक्तों का एक संस्कार जिसमे वे किसी स्त्री को शक्ति की प्रतिनिधि या प्रतीक बनाने से पहले कुछ विशिष्ट कृत्य करके उसे शुद्ध करते हैं।

**शक्तिष्ठ**—वि० [सं० शक्ति+स्था (ठहरना)+क] शक्ति-संपन्न।

**शक्ती**—पु० [सं० शक्ति] एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण मे १८ मात्राएँ होती हैं और इसकी रचना ३+३+४+३+५ होती है। अंत मे सगण, रगण या नगण मे से कोई एक और आदि मे एक लघु होना चाहिए।

वि० शक्ति-संपन्न।

**शक्तु**—पुं०[सं०√शक् (एकत्रित होना)+तुन्] सत्तू।

**शक्तुक**—पुं० [सं० शक्तु√कै (मालूम होना)+क] जावप्रकाशानुसार एक प्रकार का बहुत तीव्र और उग्र विष।

**शक्य**—वि० [सं०√शक् (सकना)+यत्] भाव० शक्यता] १. जिसका अस्तित्व में आना संभावित हो। जो हो सकता हो। २. (अर्थ) जो शब्द-शक्ति से प्राप्त होता हो।

**शक्यता**—स्त्री० [सं० शक्य+तल्+टाप्] शक्य होने की अवस्था, धर्म या भाव।

**शक्र**—पुं० [सं०√शक्+रक्] १. दैत्यों का नाश करनेवाले, इन्द्र। २. अर्जुन वृक्ष। ३. कुटज। कोरैया। ४. इन्द्रजौ। ५. ज्येष्ठा नक्षत्र। ६. रगण का एक भेद जिसमें ६ मात्राएँ होती हैं।

वि० योग्य। समर्थ।

**शक्र-कार्मुक**—पु० [सं० ष० त०] इन्द्र-धनुष।

**शक्र-केतु**—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्रध्वज।

**शक्र-गोप**—पु० [सं० शक्र√गुप् (छिपाना)+णिच्+अच्] इन्द्रगोप। बीरबहूटी।

**शक्र-चाप**—पु० [स० ष० त०] इंद्रधनुष।

**शक्र-जाल**—पु० [तृ० त०]=इन्द्रजाल।

**शक्रजित्**—पु० [सं० शक्र√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] १. वह जिसने इंद्र पर विजय प्राप्त की हो। २ मेघनाद।

**शक्रत्व**—पु० [सं० शक्र+त्व] शक्र का धर्म या भाव।

**शक्र-दिशा**—स्त्री० [स० ष० त०] पूर्व दिशा जिसके स्वामी इन्द्र माने जाते है।

**शक्र-देव**—पु० [सं० कर्म० स०] इन्द्र।

**शक्र-दैवत**—पु० [स० ब० स०] ज्येष्ठा नक्षत्र जिसके स्वामी इन्द्र माने जाते हैं।

**शक्र-धनुष**—पु० [सं०] इन्द्र-धनुष।

**शक्र-ध्वज**—पु० [सं०] इन्द्रध्वज।

**शक्र-नंदन**—पु० [स० ष० त०] अर्जुन जो इन्द्र का पुत्र माना गया है।

**शक्र-पुर**—पु० [स० ष० त०] इन्द्र के रहने की पुरी, अमरावती।

**शक्र-पुष्पी**—स्त्री० [सं० शक्रपुष्प+ङीष्] १. कलिहारी। कलियारी। २. अग्नि-शिखा नामक वृक्ष। ३. नागदमनी।

**शक्र-भवन**—पुं० [स० ष० त०] स्वर्ग।

**शक्र-माता (तृ)**—स्त्री० [स० ष० त०] इंद्र की माता, भार्गी।

**शक्र-यव**—पु० [स० ष० त०] इन्द्र जौ। कुटज बीज।

**शक्र-लोक**—पु० [सं० ष० त०] इंद्रलोक। स्वर्ग।

**शक्र-वाहन**—पुं० [स० ष० त०] इन्द्र का वाहन अर्थात् मेघ। बादल।

**शक्र-शरासन**—पु० [स० ष० त०] इन्द्र-धनुष।

**शक्र-शाला**—स्त्री० [सं० ष० त०] यज्ञ-भूमि में वह स्थान जहाँ इन्द्र के उद्देश्य से बलि दी जाती थी।

**शक्र-सारथी**—पु० [सं० ष० त०] इंद्र का सारथी, मातलि।

**शक्र-सुत**—पु० [सं० ष० त०] इंद्र का पुत्र बलि, जिसे राम ने मारा था।

**शक्राग्नि**—पु०[सं० शक्र-अग्नि, ब० स०,] विशाखा नक्षत्र जिसके स्वामी इन्द्र और अग्नि माने जाते हैं।

**शक्राणी**—स्त्री० [सं० शक्र+ङीष्, आनुक्] १. इन्द्र की पत्नी, शची। इन्द्राणी। २. निर्गुंडी।

**शक्रात्मज**—पुं० [सं० शक्र-आत्मज, ष० त०] अर्जुन।

**शक्रानिल**—पु०[स० शक्र-अनिल, ष० स०,] ज्योतिष में प्रभव आदि साठ संवत्सरों के बारह युगों में से दसवें युग के अधिपति।

**शक्राशन**—पुं० [सं० शक्र√अश् (भोजन करना)+ल्युट्-अन] १. भाँग। विजया। भंग। २. कुटज। कोरैया। ३ इन्द्र जौ।

**शक्रासन**—पु० [सं० ष० त०] १. इन्द्र का आसन। २. सिंहासन।

**शक्रि**—पुं० [सं० शक्र+किरच् बहु०] १. मेघ। बादल। २. वज्र। ३. हाथी। ४. पहाड़। पर्वत।

**शक्रोत्थान**—पुं० [ब०स०] इंद्रध्वज नामक उत्सव। शक्रोत्सव।

**शक्रोत्सव**—पु० [सं० ष० त०] इंद्रध्वज नाम का उत्सव।

शक्वर—स्त्री० [अ०] दे० 'शक्कर' (आकृति या सूरत)।
शक्वर—पु० [स०√शक् (कर सकना)+वनिप्-रच] १ बैल। २. आकाश।
शक्वरी—स्त्री० [स० शक्वर+ङीप्] १ गाय। २ ऊँगली। ३. मेखला। ४ एक प्रकार का छन्द। ५. एक प्राचीन नदी।
शक्स†—पु०=शख्स (व्यक्ति)।
शक्स—पु० [अ०] [भाव० शक्सीयत] आदमी। पुरुष। व्यक्ति।
शक्सियत—स्त्री० [अ०] शक्स (व्यक्ति) होने की अवस्था या भाव। व्यक्तित्व।
शक्सी—वि० [अ०] १. शक्स का। मनुष्य का। २. वैयक्तिक।
शगल—पुं० [अ० शुगल] १ ऐसा काम जिसे समय गुजारने विशेषत. मन-बहलाव के लिए किया जाता हो। (हौबी) २ धंधा।
शगाल—पु० [स० शृंगाल से फा०] गीदड़। शृगाल।
शगुन—पु० [स० शकुन] १ दे० 'शकुन'। २ हिन्दुओं में एक रस्म जिसमें वर-कन्या के विवाह की बात पक्की की जाती है। ३. उक्त अवसर पर वह धन जो कन्या-पक्षवाले वर-पक्षवालों को देते हैं।
शगुनिया†—पु० [हि० शगुन+इयाँ (प्रत्य०)] १. वह ज्योतिषी जो विभिन्न प्रकारों के सगुनों का शुभाशुभ फल बतलाता हो। २. सगुनों का फल बतलानेवाला पंडित।
शगुफ्ता—वि० [फा० शिगुफ्तः] [भाव० शगुफ्ती] १. खिला हुआ। विकसित। २. प्रफुल्लित। प्रसन्न-चित्त।
शगून—पु०=शगुन या शकुन।
शगूनिया—पुं०=शगुनिया।
शगूफा—पुं० [फा० शिगूफ़] १. खिला हुआ फूल। २ कोई मनोरजक या विलक्षण बात।
मुहा०—शगूफा छोड़ना=कोई ऐसी विलक्षण या मनोरजक बात कहना जो झगड़े की मूल हो।
शग्ल†—पु०=शगल।
शचि—स्त्री० [सं० √ शच् (स्पष्ट कहना)+कि] १. इन्द्र की पत्नी। २. प्रज्ञा। बुद्धि। ३ वाग्मिता। ४ शताक्ष। ५. असवर्ग।
शची—स्त्री०=शचि।
शचीपति—पुं० [स० ष० त० स०] इन्द्र।
शचीश—पुं० [स० ष० त० स०] इन्द्र।
शजर—पुं० [अ०] दरख्त। वृक्ष।
शजरा—पु० [अ० शजर] १. शजर अर्थात् वृक्ष की आकृति के रूप में होनेवाला किसी वश के लोगों का विवरण। वश-वृक्ष। ३. खेत का वह नक्शा जो पटवारी या लेखपाल अपने पास रखते हैं।
शट—पुं० [सं०√ शद् (रोग आदि)+अच्] १. खटाई। अम्लरस। २. एक प्राचीन देश।
वि० अम्ल। खट्टा।
शटा—स्त्री० [सं० शट्+टाप्] १. जटा। २. शेर का अयाल। सिंह-केसर।
शटि—स्त्री० [सं० शट+इन्] १. कचूर। कर्चूर। २. कपूरकचरी। ३. आँवा हल्दी। ४. सुगन्ध बाला।
शठी—स्त्री० [सं० शटि+ङीप्]=शटि।
शड्डुक—पु० [स० शङ्कु+कन्] गूँधा हुआ चौरेठा जिसमें मोयन भी डाला गया हो।
शठ—वि० [सं० शठ+अच्] १. स्वभाव से दुष्ट। २. धोखेबाज। ३. मूर्ख। ४. आलसी।
पुं० १. साहित्य में, वह नायक जो ऊपर ऊपर से अपनी स्त्री के प्रति प्रेम प्रकट करता हो परन्तु वस्तुत. जो पर-स्त्री से प्रेम करता हो। ऐसा नायक जो अपराध छिपाने में चतुर होता हो। २. वह जो दो आदमियों के बीच में पड़कर उनके झगड़े का निपटारा करता हो। मध्यस्थ। ३ लोहा। ४. ताड़ का पेड़। ५. केसर। ६. धतूरा। ७ चित्रक। चीता। ८. तगर का फूल।
शठता—स्त्री० [सं० शठ+तल्+टाप्] १. शठ का धर्म या भाव। २. शठ का कोई ऐसा कार्य जो दूषित वृत्ति का सूचक हो। ३. दुष्ट उद्देश्य से किया जानेवाला कोई काम।
शठत्व—पुं० [स० शठ+त्व] शठता।
शठिका—स्त्री० [सं० शठ+कन्+टाप्, इत्व] १ कचूर। २. कपूरकचरी। ३. वनअदरक।
शठी—स्त्री० [शठ+ङीप्]=शठिका।
शण—पु० [स० √शण् (दान आदि)+अच्] १ सन नामक पौधा। २. शणपुष्पी। बन-सलाई। ३. भग। भाँग। विजया।
शणपुष्पी—स्त्री० [स० ब० स०] १.एक प्रकार की वनस्पति जो साधारणत. बनसलाई कहलाती है। २ अरहर।
शत—वि० [सं० दशत्-दश=श] १. सौ। २. असख्य।
पु० १ सौ का सूचक अक या संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१००। २ एक तरह की सौ चीजों का संग्रह। जैसे—नीति शतक। ३. शताब्दी। शती। ४. विष्णु का एक नाम।
वि० जिसके सौ अंश या विभाग हों।
शत-किरण—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार की समाधि।
शत-कुडी (न्)—पु० [स० शतकुड+इन्] एक प्रकार का यज्ञ जिसमें सौ कुण्डों में हवन एक साथ होता है।
शत-कुंभ—पु० [स०] सफेद कनेर।
शतकुभ—पु० [स० ब० स०] १. एक पर्वत जिसके संबंध में प्रसिद्ध है कि वहाँ सोना मिलता है। २. सोना। ३. सफेद कनेर।
शत-कोटि—पुं० [सं० ब० स०] १. सौ करोड की संख्या। अर्बुद। २ इन्द्र का वज्र। ३. हीरा।
शतक्रतु—पु० [स० ब० स०] इन्द्र।
वि० जिसने सौ यज्ञ किये हों।
शतखंड—पु० [सं० ब० स०] १. सोना। स्वर्ण। २ सोने की बनी हुई कोई चीज। स्वर्ण-वस्तु।
शतगु—वि० [स० ब० स०] जिसके पास सौ गाएँ हों।
शतगुण—वि० [सं० कर्म० स०] सौ गुना।
शतगुणित—भू० कृ० [सं० शतगुण+इतच्] सौगुना किया हुआ।
शत-गेह—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार की भूत योनि।
शतघ्न—पुं० [स०] शिव।
शतघ्नी—स्त्री० [स० शत√ हन् (मारना)+टक्+ङीप्] १. एक तरह

का प्राचीन क्षेप्यास्त्र। २. गले में होनेवाली एक प्रकार की घातक गाँठ। (रोग)

**शत-कंद**—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का आभूषण या गहना जिसमे चन्द्रमा की सैकडो आकृतियाँ बनी होती हैं।

**शतकञ्ज**—पुं० [सं० ब० स०]१. सौ पत्तियोवाला कमल। शतदल। कमल। ३. कठफोड़वा या काठ-ठोका नामक पक्षी।

**शतजटा**—स्त्री०[स० ब० स०] सतावर। शतमूली।

**शतजित्**—पु० [सं० शत्√जि (जीतना)+क्विप्, तुक्] १ विष्णु का एक नाम। २ एक प्रकार का यज्ञ।

**शतजिह्व**—पु० [स० ब० स०] शिव। महादेव।

**शत-तंत्री**—स्त्री० [सं० शततत्र+ङीप्] एक प्रकार की वीणा जिसमे प्रायः सौ तार लगे होते हैं।

**शततारका**—स्त्री०[स० ब० स०] शतभिषा नक्षत्र।

**शतदल**—वि०[ब० स०] जिसके सौ दल हों। सौ दलोंवाला।
पुं० कमल।

**शतदला**—स्त्री०[सं० शतदल+टाप्] सेवती (फूल)।

**शतद्रु**—स्त्री०[स० शत√द्रु (बहना)+कु]१. शतलज नदी का प्राचीन नाम। २ गगा नदी।

**शतधन्वा**—पु०[स० ब० स०] एक योद्धा जिसने सत्राजित् को मारा था, और इसी लिए जो श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया था।

**शतधा**—स्त्री०[स० शत+धा] दूब।
वि० १ सौ गुना। २ सौ तरह का।
अव्य० सैकडों प्रकार से।

**शतधामा**—पु०[स० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

**शतधार**—वि०[ब० स०]१ सौ धाराओंवाला। २. (अस्त्र) जिसकी सौ धारें हों।

**शतधृति**—पु०[स० ब० स०]१ इन्द्र। २. ब्रह्मा। ३. स्वर्ग।

**शतपति**—पु०[स० ष० त०] सौ मनुष्यों या सैनिकों का सरदार।

**शतपत्र**—वि०[स० ब० स०]१. सौ दलों या पत्तोवाला। २. सौ पखो या परोवाला।
पु० १. कमल। २. सेवती। ३. मोर। मयूर। ४ कठ-फोडवा नामक पक्षी। ५. सारस। ६. मैना। ७ बृहस्पति।

**शतपत्रा**—स्त्री०[स० शतपत्र+टाप्] १ स्त्री। २ दूब।

**शतपत्री**—स्त्री० [स० शतपत्र+ङीप्] १. सेवती। २. गुलाब का केसर।

**शतपथ**—वि०[सं० ब० स०] १. बहुत से मार्गोवाला। २. बहुत-सी शाखाओंवाला।
पुं०[सं० ब० स०, अच्०+समा०] यजुर्वेद का एक ब्राह्मण जिसके कर्ता याज्ञवल्क्य माने जाते हैं।

**शतपथिक**—वि०[सं० शतपथ+ठन्—इक]१. बहुत से मतों का अनुयायी। २. शतपथ ब्राह्मण का अनुयायी या ज्ञाता।

**शतपद**—वि०[सं० ब० स०] [स्त्री० शतपदी] सौ पैरोंवाला।
पुं०[स्त्री० शतपदी] १. गोजर। २. झींगुर।

**शतपद्म**—पुं० [स० मध्यम० स०] सफेद कमल।

**शतपर्वा**—स्त्री०[सं० ब० स०]१. बाँस। बंश। २. गन्ना। ३. दूब। ४. बच। ५. कुटकी। ६. सुसंचित द्रव्य। ७. करेमू का साग। ८. भार्गव ऋषि की पत्नी का नाम।

**शतपाद**—वि०, पु० [ब० स०]=शतपद।

**शतपादिका**—स्त्री० [स० शतपाद+कप्+टाप्, इत्व]१. काकोली नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २ कनखजूरा। गोजर।

**शतपुत्री**—स्त्री० [स० ब० स०+ङीप्] १. सतपुतिया। तरोई। २. शतावर।

**शतपुष्प**—पु०[सं० ब० स०] साठी धान्य।

**शतपुष्पा**—स्त्री०[स० शतपुष्प+टाप्]१. सोआ नाम का साग। २. सौफ। ३. गवेधुक।

**शतफल**—पु०[सं० ब० स०] बाँस।

**शतबला**—स्त्री० [स० ब० स०] एक नदी। (महाभारत)

**शतबाहु**—पु०[सं० ब० स०]१. सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का कीड़ा। २ पुराणानुसार एक असुर। ३. बौद्धों के अनुसार मार का एक पुत्र।

**शतभिषा**—स्त्री०[सं० शतभिष+टाप्]२७ नक्षत्रों में से चौबीसवाँ नक्षत्र जिसमे १०० तारे हैं। शत-तारका।

**शतभीरु**—पुं०[सं० ब० स०] मल्लिका। चमेली।

**शतमख**—पुं०[सं० ब० स०]१. इन्द्र। शतक्रतु। २. उल्लू।

**शतमन्यु**—वि०[स० ब० स०]१. क्रोधी। गुस्सावर। २. उत्साही।
पु०१. इन्द्र। २. उल्लू।

**शत-मयूख**—पु०[ब० स०] चन्द्रमा।

**शत-मान**—पु०[स० शत√मि+ल्युट्—अन]१ सोना, चाँदी आदि तौलने का सौ मान का बटखरा या बाट। २. आढक नाम की प्राचीन काल की तौल, जो प्राय पौने चार सेर की होती थी। ३. रूपामक्खी नामक उपधातु।
वि० जो तौल मे सौ मान हो।

**शतमूला**—स्त्री०[स० ब० स०,+टाप्]१. बड़ी सतावरी। २. बच। ३ नीली दूब।

**शतमूली**—स्त्री०[स० शतमूल—ङीप्]१ सतावरी नाम की ओषधि। २. मूसली नामक ओषधि। ३ बच।

**शतरंज**—पु०[फा० मि० स० चतुरङ्ग]एक प्रकार का प्रसिद्ध खेल जो चौसठ खानों की बिसात पर ३२ गोटियों से खेला जाता है।
विशेष—सब मोहरें दो रगों के होते हैं। प्रत्येक रंग मे ८ सिपाही या पैदल, २ हाथी, २ घोड़े, २ ऊँट, १ बादशाह तथा १ वजीर होते है।

**शतरंजबाज**—पु० [फा० शतरंज+फा० बाज] [भाव० शतरंजबाजी] १. शतरज खेलने का शौकीन। २. शतरज के खेल का बहुत बड़ा खिलाड़ी।

**शतरंजबाजी**—स्त्री०[फा०] शतरज खेलना।

**शतरंजी**—स्त्री०[फा०]१. शतरज का खिलाड़ी। २. शतरंज खेलने की बिसात। ३. ऐसी चादर या दरी जिसमे रग-बिरगे खाने बने हुए हों। ४. मिस्सी की रोटी।

**शतरात्र**—पु० [स० ब० स०] सौ रातों तक बराबर चलता रहनेवाला यज्ञ।

**शतच्छ**—पु० [स० ब० स०] १ यज्ञ का एक रूप जिसके सौ मुँह कहे गये हैं। २. एक शक्ति। (शैव)

**शतच्छिद्र**—स्त्री० [स० शतच्छद्र+ष—इय] १. यज्ञ की हवि। २. यजुर्वेद का एक अंग या अध्याय।

**शतच्छी**—स्त्री० [स० शतच्छद्र+ङीप्] =शतच्छिद्र।

**शतरूपा**—स्त्री० [स० ब० स०+टाप्] १ ब्रह्मा की पत्नी तथा माता। २. स्वयंभुव मनु की पत्नी तथा माता।

**शत-लोचन**—वि० [स० ब० स०] जिसके सौ नेत्र हों।
पुं० १. स्कन्द का एक अनुचर। २. एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि।

**शत-वल्ली**—स्त्री० [स० ब० स०] १. नीली दूब। २ काकोली।

**शत-वादन**—पु० [स० ष० त०] सौ बाजों का एक साथ बजना।

**शत-वार्षिक**—वि० [स० शतवर्ष+ठक्—इक] १. सौ-सौ वर्षों के उपरान्त होनेवाला। २ जिसकी अवधि सौ वर्षों की हो।

**शत-वार्षिकी**—स्त्री० [स०] किसी पुरुष, संस्था आदि के जन्म के ठीक सौ वर्ष बाद मनाया जानेवाला उत्सव। (इन्टेनरी) जैसे—रवीन्द्र शत-वार्षिकी।

**शत-वीर्या**—स्त्री० [स० ब० स०] १. सफेद दूब। २ सतावर। ३ सफेद मूसली। ४ मुनक्का। ५. किशमिश।

**शतशः**—अव्य० [स० शत+शस्] सैकड़ों प्रकार से। बहुत तरह से।

**शतशीर्ष**—पु० [स० ब० स०] १ विष्णु का एक नाम। २. एक प्रकार का अभिमन्त्रित अस्त्र।

**शतह्रदा**—स्त्री० [स० ब० स०, +टाप्] १. विद्युत्। बिजली। २ वज्र। ३. दक्ष की एक कन्या जो बाहुपुत्र को ब्याही थी। ४. विराध नामक राक्षस की माता।

**शतांग**—वि० [स० ब० स०] जिसके सौ अंग हों।
पु० १ रथ। २ तिनिश वृक्ष। ३. एक राक्षस।

**शतांगुल**—पु० [स० ब० स०] ताल वृक्ष।

**शतांश**—पु० [सं० कर्म० स०] किसी चीज के सौ बराबर हिस्सों में से कोई एक। सौवाँ हिस्सा।

**शतां**—स्त्री० [स० शत+टाप्] सफेद मूसली।

**शताक्ष**—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० शताक्षी] सौ आँखोंवाला।
पु० पुराणानुसार एक दानव।

**शताक्षी**—स्त्री० [स० शताक्ष+ङीष्] १. पार्वती। २ दुर्गा। ३ रात्रि। रात। ४. सौंफ।

**शतानंद**—पु० [सं० शत+आ√नन्द्+अण्] १. ब्रह्मा। २ विष्णु। ३. विष्णु का रथ। ४ श्रीकृष्ण। ५. गौतम ऋषि।

**शतानक**—पुं० [स० ब०स०] हमशान। मरघट।

**शतानन**—पु० [सं० ब० स०] बेल। श्रीफल।
वि० सौ मुहोंवाला।

**शतानना**—स्त्री० [सं० शतानन+टाप्] एक देवी का नाम।

**शतानीक**—वि० [सं० ब० स०] (वृद्ध) जिसकी अवस्था सौ या अधिक वर्षों की हो।
पु० १ द्रौपदी के गर्भ से उत्पन्न नकुल का एक पुत्र। २. व्यास के एक शिष्य। ३. जनमेजय के पुत्र का नाम।

**शताब्द**—वि० [स० ब० स०] सौ वर्षवाला।
पुं० शताब्दी।

**शताब्दी**—स्त्री० [सं० शताब्द+ङीप्] १. सौ वर्षों की अवधि की सूचक संज्ञा। २. किसी सन् या संवत् की किसी इकाई से सैकड़े तक का समय। शती। (सेन्चुरी)
वि० सौ वर्षों के उपरान्त होनेवाला। जैसे—शताब्दी समारोह।

**शतायु (ष्)**—वि० [सं० ब० स०] १०० वर्ष की अवस्थावाला।

**शतायुध**—वि० [स० ब० स०] जो सौ अस्त्र धारण करता हो। सौ अस्त्रों वाला।

**शतार**—पु० [स० ब० स०] १. वज्र। २. सुदर्शन चक्र।

**शतारु**—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का कोढ़ जिसमें खाल पर लाल, काली और बादामी फुंसियाँ हो जाती हैं।

**शतावधान**—पु० [ब० स०] वह व्यक्ति जो सौ काम एक साथ कर सकता हो।

**शतावधानी (निन्)**—पु० [सं०] शतावधान।

**शतावर**—पुं० [सं० शत्—आ √वृ (वरण करना) +अच्, शतावरी] सफेद मूसली। सतावर।

**शतावरी**—स्त्री० [सं० शत—आ √ वृ+अच्+ङीप्] १. शतमूली। शतावर। सफेद मूसली। २. कचूर। ३. इन्द्राणी। शची।

**शतावर्त**—पु० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. शिव।

**शतावानि**—पु० [सं० ब० स०] वज्र।

**शतिक**—वि० [स० शत+ठन्—इक] १ शत अर्थात् सौ संबंधी। सौ का। २ प्रति सौ के हिसाब से लगनेवाला (कर)।

**शती**—स्त्री० [सं० शत+ङीष्, शतिन्] १. सौ का समूह। सैकड़ा। जैसे—दुर्गा सप्तशती। २. दे० 'शताब्दी'।

**शतेश्वर**—पुं० [सं० ब० स०] शिव का एक नाम। २ शिव का एक अनुचर या गण। ३. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

**शतेश्वरी**—स्त्री० [सं० शतेश्वर+ङीप्] कार्तिकेय की एक मातृका।

**शत्रुंजय**—पुं० [सं० शत्रु√जि (जीतना) +खच्—मुम्] १ काठियावाड़ में स्थित एक प्रसिद्ध पर्वत। विमलाद्रि। २. परमेश्वर।
वि० शत्रु को जीतनेवाला।

**शत्रु**—पुं० [स०] १. दो पक्षों में से हर एक जिनमें एक दूसरे के प्रति दुर्भावना हो। २. वह जो अपना अथवा दूसरे का घोर अहित चाहता हो। ३ वह जो किसी के नाश के लिए उतारू हो।

**शत्रुघाती**—पु० [स० शत्रु √ हन् (मारना) +णिनि—कुत्व, =घ, शत्रु-घातिन्] शत्रुघ्न के पुत्र का नाम।
वि० शत्रु का नाश करनेवाला।

**शत्रुघ्न**—पुं० [सं० शत्रु√हन् (मारना) +क] सुमित्रा के गर्भ से उत्पन्न राजा दशरथ के चतुर्थ पुत्र।
वि० शत्रुओं को मार डालनेवाला।

**शत्रुघ्नी**—स्त्री० [सं० शत्रुघ्न+ङीप्] हथियार।

**शत्रुजित्**—वि० [स० शत्रु√जि (जीतना) +क्विप्, तुक्] शत्रु को जीतनेवाला।
पुं० शिव।

**शत्रुता**—स्त्री० [सं० शत्रु+तल्+टाप्] द्वेष भाव से उत्पन्न वह मनोभावना जिससे किसी को कष्ट या हानि पहुँचाने की प्रवृत्ति होती है।

विशेष—वैर और शत्रुता में मुख्य अंतर यह है कि वैर का स्वरूप अपेक्षया अधिक उग्र या तीव्र होता है और सदा जाग्रत रहता है। वैर जातिगत या स्वाभाविक भी हो सकता है, पर शत्रुता में ये बातें या तो होती ही नहीं या कम होती हैं। नेवले और साँपों में वैर ही होता है शत्रुता नहीं। इसके विपरीत हम किसी अवसर पर अज्ञान या मूर्खतावश अपने साथ शत्रुता तो कर सकते हैं परन्तु वैर नहीं कर सकते।

**शत्रुताई**—स्त्री०=शत्रुता।

**शत्रुत्व**—पुं० [सं० शत्रु+त्व] शत्रुता। दुश्मनी।

**शत्रुदमन**—वि० [सं० शत्रु√ दम (दमन करना)+ल्युट्—अन] शत्रुओं का दमन या नाश करनेवाला।
पु० दशरथ के पुत्र शत्रुघ्न।

**शत्रुमर्दन**—पुं० [सं० शत्रु√ मृद् (मर्दन करना)+ल्यु—अन] शत्रुघ्न का एक नाम।
वि० शत्रुओं का मर्दन करनेवाला।

**शत्रुसाल**—वि० [सं० शत्रु+हि० सालना] शत्रु के हृदय में शूल अर्थात् कष्ट और भय उत्पन्न करनेवाला।

**शत्रुहंता (तृ)**—वि०[सं० ष० त०] शत्रु का नाश करनेवाला।

**शत्रुहा**—वि० [सं० शत्रु√हन् (मारना)+क्विप्, दीर्घ, न-लोप] शत्रु का नाश करनेवाला।
पु० शत्रुघ्न।

**शत्वरी**—स्त्री० [सं० शत+वरच्+ङीप्] रात्रि। रात।

**शद**—पुं०[सं० √ शद् (पतला करना)+अच्] १ कोई वानस्पतिक खाद्य पदार्थ। २ राजस्व। कर।

**शदक**—पुं०[सं०√ शद् (पतला करना)+ण्वुल्—अक] ऐसा अनाज जिसकी भूसी न निकाली गई हो।

**शदीद**—वि०[अ०] १. प्रबल। २ कठिन।

**शद्द**—पुं०[अ०] १. शब्द पर जोर देना। २ द्वित्व अक्षर।

**शद्रि**—पुं०[सं०√ शद् (पतला करना)+क्रि] १. मेघ। बादल। २. हाथी। ३. अर्जुन।
स्त्री० १. बिजली। २. खड।

**शन**—पुं०[सं० शन+अच्] १ शांति। २ चुप्पी। मौन।
†पुं०=सन नामक पौधा।

**शनपुष्पी**—स्त्री०[सं० ब० स०] वन-सनई।

**शनाख्त**—स्त्री०[फा०] ठीक ठीक और पूरी पूरी पहचान।

**शनाख्त (स्त)**—वि०[फा०] पहचानने या परखनेवाला।

**शनाशाई**—स्त्री०[फा०] ज्ञान-पहचान। परिचय।

**शनि**—पुं०[सं० शन+इनि√ शो (पतला करना)+अनि-कित्] १. सौर जगत के नौ ग्रहों में सातवाँ ग्रह जो फलित ज्योतिष में अशुभ और कष्टदायक माना जाता है। शनैश्चर। २. दुर्भाग्य। बद-किस्मती।
†पुं०=शनिवार।

**शनिप्रसू**—स्त्री०[सं० ष० त० स०] शनि की माता छाया जो सूर्य की पत्नी कही गई हैं।

**शनि-प्रिय**—पुं०[सं० ष० त० स०] नीलमणि। नीलम।

**शनिवार**—पुं०[सं० मध्य० स०] सप्ताह के सात दिनों में एक दिन का नाम जो शुक्र और रवि के बीच पड़ता है।

**शनिश्चरा**—पुं०=शनि।

**शनै**—अव्य० [सं० शण+डैसि—कृ० पृषो०] धीरे। आहिस्ता। हौले।

**शनैश्चर**—पुं०[सं० शनैस्√ चर् (चलना)+ट] शनि नामक ग्रह।

**शपथ**—स्त्री०[√शप् (निन्दा करना)+अथ] अपने कथन की सत्यता जतलाने के उद्देश्य से ईश्वर, देवता अथवा किसी पूज्य या अतिप्रिय वस्तु की दी जानेवाली साक्षी तथा की जानेवाली दुहाई। (ओथ)

**शपथ-पत्र**—पुं०[सं० ष० त०] ईश्वर अथवा अंतःकरण को साक्षी रखकर शुद्ध हृदय से लिखा जानेवाला वह पत्र जो न्यायालय में या वरिष्ठ अधिकारी के सामने यह सूचित करने के लिए उपस्थित किया जाता है कि मेरा अमुक कथन या प्रस्थापन बिलकुल ठीक है। हलफनामा। (एफिडेविट)

**शपथ-भंग**—पुं०[सं० ष० त०] शपथपूर्वक कोई प्रतिज्ञा करके भी उसका पालन न करना, जो विधिक दृष्टि से अपराध माना जाता है।

**शपन**—पुं०[सं०√शप् (निंदा करना)+ल्युट्—अन] १ शपथ। कसम २. गाली। दुर्वचन।

**शफ्त**—पुं०[सं०√शप्(निन्दा करना)+क्त] उलूक नामक तृण।
वि० जिसे शाप दिया गया हो मिला हो।

**शफ**—पुं०[स०√शप्+अच्, पृषो० प०—फ] १. वृक्ष की जड़। २. पशुओं का खुर। ३ नखी नामक गन्ध द्रव्य।

**शफक**—स्त्री०[अ० शफक] सूर्य के निकलने और डूबने के समय क्षितिज पर दिखाई देनेवाली लाली।
मुहा०—शफक फूलना=उक्त अवसरों पर क्षितिज में दूर तक लाली फैलना। उदा०—फूले शफक तो जर्द हो गालों के सामने। पानी भरे घटा तेरे बालों के सामने।—कोई शायर।

**शफकत**—स्त्री०[अ० शफकत] १ अनुग्रह। मेहरबानी। २. प्रेम। मुहब्बत।

**शफ़गोल**—पुं० [फा०] इसबगोल।

**शफ़तालू**—पुं०[फा०] एक प्रकार का बड़ा आड़ू या मतालू।

**शफर**—स्त्री०[सं० शफ√ रा (लेना)+क] पोठी या सौरी मछली।

**शफरी**—स्त्री०=शफर।

**शफा**—स्त्री०[अ० शफा] १. स्वास्थ्य। तन्दुरुस्ती। २ आरोग्य।

**शफाखाना**—पुं०[अ० शफा+फा० खाना] १ स्वास्थ्यवर्द्धक स्थान। २. अस्पताल। चिकित्सालय।

**शफ़ीक**—वि० [अ० शफ़ीक] १. शफकत या अनुग्रह करनेवाला। २. प्यार करने या प्रिय लगनेवाला।
पु० प्रिय मित्र।

**शफ़्तालू**—पुं०=शफ़तालू।

**शफ्फाफ**—वि०[अ० शफ़्फ़ाफ़] उजला या धवल (वस्त्र)।

**शब**—स्त्री०[फा०] रात। रात्रि।

**पद**—शबोरोज=रात-दिन।

**शबदी**—पुं०[सं० शब्द] १. शब्द। लफ्ज। २. किसी महात्मा के कहे हुए उपदेशात्मक पद या पद्य। जैसे—गुरु नानक की शबदी।

**शबनम**—स्त्री० [फा०] १. ओस। २. सफेद रंग का एक प्रकार का बढ़िया कपड़ा।

**शबनमी**—स्त्री०[फा०] शबनम अर्थात् ओस से बचने के लिए ताना जानेवाला कपड़ा।

**शबबरात**—स्त्री०[फा०] हिजरी सन् के शाबान माह की चौदहवीं रात।
**विशेष**—इस दिन मुसलमान अपने मृत पूर्वजों के उद्देश्य से गरीबों को भोजन बाँटते, उत्सव मनाते, दीपमालाएँ जलाते तथा आतिशबाजी छोड़ते हैं।

**शबर**—पु०[सं० ग√ वृ (वरण करना)+अच्]१ दक्षिण भारत में रहनेवाली एक जंगली या पहाड़ी जाति। २ जंगली आदमी। ३ शिव। ४ हाथ। ५ जल। ६. ऐसी सन्तान जो शूद्र तथा भील के संयोग से उत्पन्न हुई हो।
वि० चितकबरा।

**शबरक**—वि०[सं० शबर+कन्] [स्त्री० शबरिका]१ शबर लोगों में होनेवाला। २. जंगली।

**शबर-चंदन**—पु०[स० शबर+हि० चदन] एक प्रकार का चदन जो लाल और सफेद दोनों मिले हुए रंगों का होता है।

**शबरी**—स्त्री० [सं० शबर+ङीप्] १ शबर जाति की नारी। २. रामायण में वर्णित शबर जाति की एक राम-भक्त स्त्री जिसने उन्हें चख चखकर जूठे बेर खिलाये थे। ३ बौद्ध तांत्रिकों की एक उपास्य नायिका जो बहुत दूर के किसी ऊँचे पर्वत पर रहनेवाली अबोध बालिका के रूप में मानी गई है।

**शबल**—वि०[सं० शप् (निन्दा करना)+वल्, प+ब]१ चितकबरा। २ रगबिरंगा। ३ अनेकृत।
पु० १. कई रंगों को मिलाकर बनाया हुआ रंग। २ बौद्धों का एक प्रकार का धार्मिक कृत्य। ३. अग्नि। धारा। ४ चित्रक। चीता।

**शबलक**—वि०[स० शबल+कन्]=शबल।

**शबलता**—स्त्री०[स० शबल+तल्—टाप्] शबल होने की अवस्था या भाव। रग-बिरगा होना।

**शबलत्व**—पु०[सं० शबल+त्व]=शबलता।

**शबला**—स्त्री०[स० शबल+टाप्] १ चितकबरी या बहुरंगी गौ। २. कामधेनु।

**शबलित**—भू० कृ० [स० शबल+इतच्] १ चितकबरा। रगबिरंगा। २. अनेक रंगों में रँगा हुआ।

**शबली**—स्त्री०[सं० शबल+ङीप्] शबला। (दे०)

**शबाब**—पुं० [अ०] १ यौवनकाल। युवावस्था। जवानी। २ उठती जवानी। ३. युवावस्था का सौन्दर्य। ४. सौन्दर्य।

**शबाहत**—स्त्री०[अ०]१. रूप। २ आकृति। सूरत। ३. अनुरूपता। समानता।

**शबिस्तान**—पु०[फा०]१. बड़े आदमियों के सोने का कमरा। अंतःपुर। २. मसजिद में वह स्थान जहाँ रात को ईश्वर-प्रार्थना करते हैं।

**शबीह**—स्त्री०[अ०]१ वह चित्र जो किसी व्यक्ति की सूरत-शक्ल के ठीक अनुरूप बना हो। २ अनुरूपता। समानता।

**शब्द**—पु० [स०√शब्+घञ्] १ किसी प्रकार के आघात के फल-स्वरूप वायु में होनेवाला ऐसा रूप जो कानों में पहुँचकर सुनाई पड़ता हो। आवाज। ध्वनि। (साउन्ड) २ अक्षरों, वर्णों आदि से बना और मुँह से उच्चारित होने या लिखा जानेवाला वह संकेत जो किसी कार्य, बात या भाव का बोधक हो। सार्थक ध्वनि। लफ्ज। (वर्ड) ३. परमात्मा का मुख्य नाम ओम्। ४. साधु-सत्ता के ऐसे पद जिनमें निराकार का गुण कथन होता है।

**शब्द-काम**—वि० [सं० ष० स०] [स्त्री० शब्द-कामा] जिसे बात-चीत करने का चस्का हो। बातें करने का शौकीन। बातरसिया।
पु० बातचीत में होनेवाली चुहलबाजी।

**शब्दग्रह**—पु०[स० शब्द√ग्रह्+अच्] कान।
वि०[स०] शब्द अर्थात् ध्वनि या वर्ण ग्रहण करनेवाला।

**शब्द-चातुर्य**—पुं० [सं० ष० त०] बातचीत करने का कौशल।

**शब्द-चित्र**—पु०[ब० स०]१ अनुप्रास नामक अलंकार। २ चुने हुए शब्दों में किसी घटना या बात का ऐसा जानेवाला सजीव वर्णन। ३. ऐसी रचना जिसमें किसी घटना, बात आदि का सजीव वर्णन हो।

**शब्द-चोर**—पु०[स०] दूसरों की रचनाओं से शब्द, प्रयोग आदि उड़ा लेने वाला।

**शब्द-जाल**—पु०[सं० ष० त०, ब० स०] कथन का वह रूप जिसमें कोई छोटी-सी तथा सीधी-सी बात बहुत से तथा भारी भारी शब्दों में घुमा-फिरा कर कही गई हो।

**शब्दत्व**—पु०[स० शब्द+त्व] शब्द का धर्म या भाव। शब्दता।

**शब्द-नृत्य**—पु०[स० ष० त०] एक प्रकार का नृत्य।

**शब्द-पति**—पु०[स० ष० त०]१ वाणी का धनी। २. विशेषतः ऐसा व्यक्ति जो कहना तो बहुत कुछ हो परन्तु करता-धरता कुछ न हो।

**शब्द-प्रमाण**—पु०[स० कर्म० स०] मौखिक प्रमाण। आप्त प्रमाण।

**शब्द-प्राज्ञ**—पुं० [सं० ष० त०] शब्द के अर्थों का अनुसंधान। शब्दार्थ की जिज्ञासा।

**शब्द-बोध**—पु०[स० तृ० त०] किसी की कही हुई बातों मात्र से प्राप्त होनेवाला ज्ञान।

**शब्द-ब्रह्म**—पु०[सं० मध्य० स०]१ परमात्मा या ब्रह्म का वह ब्रह्मा-वाला रूप जिससे उसने सृष्टि की रचना की थी। २. योगियों, साधकों आदि की परिभाषा में कुंडलिनी से ऊपर उठनेवाले नाद का वह रूप जो निरुपाधि दशा में रहता है। ३ ओंकार। प्रणव। ४. वेद।

**शब्द-भेदी**—पु०=शब्दवेधी।

**शब्दमहेश्वर**—पु०[स० ष० त०] शिव।

**शब्दयोनि**—स्त्री०[स० ष० स०] १ शब्द की उत्पत्ति। व्युत्पत्ति। २ जड़। मूल।
पु० ऐसा शब्द जो अपने आरंभिक या मूल रूप में हो, विकृत न हुआ हो।

**शब्द-विद्या**—स्त्री०[स० ष० त०] शब्द-शास्त्र। व्याकरण।

**शब्दविरोध**—पु० [सं० ष० त०] शब्द-गत विरोध। विषयगत विरोध से भिन्न।

**शब्दवेध**—पु०[सं० शब्द√विध्+घञ्] किसी ऐसे चिह्न या लक्ष्य पर तीर चलाना जो देखा तो न गया हो परंतु जिससे या जिसका होता हुआ शब्द सुना गया हो।

**शब्दवेधी (धिन्)**—पुं० [सं० शब्द√विध् (वेधन करना)+णिनि] १ वह व्यक्ति जो बिना लक्षित किए ऐसे चिह्न या लक्ष्य का वेधन करता हो जहाँ से कुछ शब्द हुआ हो। २. अर्जुन।

**शब्दशः**—अव्य०[सं०]१. जैसे शब्द हैं वैसे। २. शब्दावली के अनुसार। एक एक शब्द करके।

**शब्द-शक्ति**—स्त्री०[ष० त०] शब्द की वह शक्ति जो उसका अर्थ उद्घाटित करती है। ये तीन प्रकार की मानी गई है—अभिधा, लक्षणा और व्यंजना।

**शब्द-शास्त्र**—पुं० [सं० ष० त०, मध्य० स०] वह शास्त्र जिसमें भाषा के भिन्न भिन्न अंगों और स्वरूपों का विवेचन तथा निरूपण किया जाय। व्याकरण।

**शब्द-शूर**—पुं० [सं० स० त०] वह जो केवल बातें करने में अपनी बहादुरी दिखाता हो।

**शब्द-साधन**—पुं०[स० ब० स०] व्याकरण का वह अंग या अध्याय जिसमे शब्दों की व्युत्पत्ति, रूपांतर आदि दिखलाया जाता है।

**शब्द-सौष्ठव**—पु० [स० ष० त०] किसी रचना का शब्द-गत सौन्दर्य। शब्दों के संकलन, क्रम आदि से लक्षित होनेवाला सौंदर्य।

**शब्दाडंबर**—पु०[सं० ष० त०]१. साधारण बात कहने के लिए बड़े-बड़े शब्दों और जटिल वाक्यों का प्रयोग। शब्द-जाल। (वाग्जेंस्ट) २. साहित्य में, उक्त प्रकार की कोई ऐसी उक्ति जिसमें कोई विशेष चमत्कार न हो। जैसे—केवल अनुप्रास के विचार से कहना—का बलमा बलमा बलमा बलमा बलमा बलमा हैं।

**शब्दातीत**—वि०[स० ब० स०]१. शब्द की जिस तक पहुँच न हो। जो शब्दों के परे हो। २ जो शब्दों में न कहा जा सके। अकथनीय। ३. ईश्वर का एक विशेषण।

**शब्दानुशासन**—पु०[स० ष० त०] व्याकरण।

**शब्दायमान**—वि० [सं० शब्द+क्यङ्, शानच्, मुम्] शब्द करता हुआ।

**शब्दार्थ**—पुं०[सं० ष० त०] शब्द का अर्थ।

**शब्दार्थी**—स्त्री०[सं०] किसी अन्य भाषा के कुछ विशिष्ट शब्दों अथवा अपनी ही भाषा के कठिन या पारिभाषिक शब्दों की ऐसी सूची जिसमें उन शब्दों के अर्थ, पर्याय या व्याख्याएँ भी की गई हों। (ग्लासरी)

**शब्दालंकार**—पुं०[स० मध्य० स०] साहित्य में अलंकारों के दो मुख्य भेदों में से एक जिसमें शब्दों या उनके वर्णों का चमत्कार प्रधान होता है, अर्थों का नहीं।

**शब्दावली**—स्त्री०[स० ष० त०]१. किसी बोली या भाषा मे प्रयुक्त होनेवाले शब्दों का समूह। २. किसी जाति, वर्ग, संप्रदाय आदि में प्रचलित सब शब्दों का समूह। (वोकेबुलरी) ३. किसी वाक्य आदि के शब्दों का प्रकार तथा क्रम। ४. किसी विज्ञान या विषय मे प्रयुक्त होनेवाले पारिभाषिक शब्दों की सूची, विशेषतः ऐसी सूची जो अक्षरक्रम से लगी हो और जिसके साथ उसके पर्याय या व्याख्याएँ भी दी गई हों। (टर्मिनालॉजी) ५. दे० 'शब्दार्थी'।

**शब्देंद्रिय**—स्त्री०[सं० ष० त०] कान।

**शब्बो**—स्त्री०[फा०]रजनीगंधा नामक पौधा या उसका फूल। गुलशब्बो।

**शम**—पुं०[सं०√ शम् (शान्ति प्राप्त करना)+अच्]१. शांति। २. मोक्ष। ३. निवृत्ति। छुटकारा। ४. अंतःकरण तथा इन्द्रियों को वश में रखना जो साहित्य में शान्त रस का स्थायी भाव माना गया है। ५. क्षमा। ६. उपकार। ७. तिरस्कार। ८ हस्त। हाथ।

**शमई**—वि०[अ० शमअ]१. शमा का। २. शमा के रंग का।



पुं० शमा अर्थात् मोमबत्ती की तरह का सफेद रंग।

**शमक**—वि०[सं० √ शम्+ण्वुल्—अक]१. शमन करनेवाला। (औषधि या औषध) जो त्वचा की जलन और शोथ की पीड़ा कम करता अथवा उनका शमन करता हो। (डिमल्यैन्ट)

**शमता**—स्त्री० [सं० शम्+तल+टाप्] शम का धर्म या भाव। शमत्व।

**शमथ**—पुं०[स० शम+अथच् बाहुल०]१. शांति। २ मंत्री।

**शमन**—पु०[सं०√ शम् (शान्त होना)+ल्युट्—अन] १. बढ़े हुए उपद्रव, कष्ट, दोष को दबाने की क्रिया। दमन। जैसे—रोग या विद्रोह का शमन। २. शांति। ३ वैद्यक मे, ऐसी औषधि जो वात-संबंधी दोषों को दूर करती है। ४. यम। ५. हिंसा। ६ अनाज। ७ बलि।

**शमनवस्ति**—स्त्री० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का वस्तिकर्म जिसमें प्रियंगु, मुलेठी, नागरमोथा और रसौत को दूध में पीसकर मलद्वार से पिचकारी देते हैं।

**शमनस्वसा**—स्त्री० [स० ष० त०] यम की भगिनी अर्थात् यमुना।

**शमरी**—स्त्री० [स० शमन+ङीप्] रात्रि।

**शमनीय**—वि०[सं०√शम् (शान्त होना)+अनीयर्] जिसका शमन किया जा सके या किया जाने को हो।

**शमल**—पु०[स० शम+कलच्] १. विष्ठा। गूह। २. पाप।

**शमला**—पुं०[अ० मिलाओ स० शामल्य]१. प्राचीन काल का एक प्रकार का पतला शाल जो पगड़ी पर बद के रूप मे बाँधा जाता था। २. पुरानी चाल की एक प्रकार की पगड़ी। ३ पगड़ी पर लगाया जानेवाला तुर्रा। कलँगी।

**शमशम**—पुं०[सं० मध्यम० स०] शिव।

**शमशीर**—स्त्री० =शमशेर।

**शमशेर**—स्त्री०[फा० शम=नाखून+शेर=सिंह]१. वह हथियार जो शेर की पूँछ अथवा नख के समान बीच में कुछ झुका हो अर्थात् तलवार खड्ग आदि। २. तलवार।

**शमांतक**—पु० [स० ष० त०] कामदेव।

**शमा**—स्त्री०[अ० शमअ]१. मोम। २. मोमबत्ती। ३. दीया।

**शमादान**—पु०[फा०] वह पात्र जिसमें मोमबत्तियाँ रखकर जलाई जाती हैं।

**शमि**—स्त्री०[सं० शम+इनि] १. शिवी धान्य (मूँग, मसूर, मोठ, उड़द, चना, अरहर, मटर, कुलथी, लोबिया इत्यादि)। २. सफेद कीकर।

पुं० यज्ञ।

**शमित**—भू० कृ०[सं० √ शम् (शान्त होना)+क्त]१ जिसका शमन किया गया हो या हुआ हो। दबाया हुआ। २. शान्त।

**शमिता (तृ)**—पु० [सं०√शम् (शान्त होना)+तृच्] यज्ञ मे पशु की बलि देनेवाला।

**शमिपत्र**—पु०[सं० ब० म०] पानी मे होनेवाली लजालू नाम की लता।

**शमी**—स्त्री०[स० शमि+ङीप्, शिवा?] एक प्रकार का बड़ा कीकर जो पवित्र माना जाता है। सफेद कीकर।

वि०[सं० शमिन्]१. शमन करनेवाला। २. शान्त।

**शमीक**—पुं० [स० शमी+कन्—शम+इकन्] एक प्रसिद्ध क्षमा-शील ऋषि जिनके गले मे परीक्षित ने मरा हुआ साँप डाल दिया था। इस पर वे तो कुछ भी न बोले, पर इनके पुत्र शृंगी ऋषि ने परीक्षित को शाप दिया जिसके कारण सातवें दिन तक्षक के काटने से परीक्षित की मृत्यु हुई थी।

**शमीगर्भ**—पु० [स० शमीगर्भ+अच्] १ ब्राह्मण। २ अग्नि।

**शमीधान्य**—पु० [स० मयू० स०]=शिवी धान्य।

**शमीर**—पु० [स० शमी+र] शमी वृक्ष।

**शमीरकंद**—पु० [स० मध्यम० स०] वाराही कद। शूकर कंद।

**शम्स**—पु० [अ०] १ सूर्य। २. तसबीह मे लगा हुआ फुँदना।

**शम्सी**—वि० [अ०] सूर्य-संबंधी। सौर।
स्त्री० मुगलशासन मे मिलनेवाला छमाही वेतन।

**शर्यंड**—पु० [स०√शी (शयन करना)+अण्डन्] १ एक प्राचीन जनपद। २. उक्त जनपद का निवासी।

**शय**—पु० [स०√ शी (शयन करना)+अच्] १. शय्या। २. निद्रा। नींद। ३ साँप। ४ पण। वार्त। ५ हाथ।
†स्त्री० [अ० वी] १ वस्तु। २ बाधा (भूत-प्रेत की)।
स्त्री०=शह।

**शयव**—पु० [सं० शी+अथच्] १ गहरी नींद। २ मृत्यु। मौत। ३. यम। ४ साँप। ५ सूअर। ६ मछली।

**शयन**—पु० [स०√ शी+ल्युट्—अन] १ निद्रित होने या सोने की क्रिया। सोना। २ खाट। शय्या। ३. बिस्तर। बिछौना। ४. स्त्री-प्रसंग। मैथुन। सभोग।

**शयन आरती**—स्त्री० [सं० शयन+आरती] देवताओं की वह आरती जो रात में उन्हें सुलाने के समय की जाती है।

**शयन-कक्ष**—पु० [स० ष० त०] सोने का कमरा या घर। शयनागार।

**शयन-गृह**—पुं० [स०ष०त०] सोने का स्थान। शयन मंदिर। शयनागार।

**शयन-चौथिनी**—स्त्री० [सं० ष० त०] अगहन मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

**शयन-भोग**—पु० [स० शयन+भोग] देवताओं के शयन समय का भोग। रात्रि का नैवेद्य जो मंदिरो मे चढता है।

**शयन-मंदिर**—पुं० [स० ष० त०] सोने का स्थान। सोने का कमरा। शयन-गृह। शयनागार।

**शयनागार**—पु० [स० ष० त०] सोने का स्थान। शयन मंदिर। शयन-गृह।

**शयनासन**—पु० [सं० ष० त०] १ वह आसन या बिस्तर जिस पर कोई सोता हो। २ खाट, चारपाई, चौकी, पीढ़ा आदि वे सब उपकरण जिन पर लोग बैठते, लेटते या सोते हैं।

**शयनिका**—स्त्री० [सं० शयन+कन्-टाप्-इत्व] १. शयनागार। २. आज-कल रेलगाडी का वह डिब्बा जिसमे यात्रियों के सोने की व्यवस्था रहती है। (स्लीपर)

**शयनीय**—वि० [सं०√ शी (शयन करना)+अनीयर्] सोने के योग्य (स्थान)।

**शयनैकादशी**—स्त्री० [सं० ष० त०] आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी।

**शयाक**—पु० [स०√शी (शयन करना)+शानच्+कन्, शी+आनकवी] १. सर्प। साँप। २ गिरगिट।

**शयालु**—वि० [सं० शी+आलुच्] नींद से भरा हुआ। निद्रालु।
पु० १. अजगर। २. कुत्ता। ३. गीदड।

**शयित**—भू० कृ० [स०√ शी (शयन करना)+क्त] १. सोया हुआ। सुप्त। २. लेटा या लेटाया हुआ। ३. आड़े बल में रखा हुआ।
पु० १. अजगर। २. सिलोड़ा।

**शयिता (तृ)**—वि० [स० √ शी (शयन करना)+तृच्] सोनेवाला।

**शय्या**—स्त्री० [सं० शी+क्यप्—टाप्] १. खाट। पलंग। २. पलंग पर बिछा हुआ बिछौना।

**शय्यागत**—वि० [स० द्वि० त० स०] शय्या पर पड़ा हुआ।
पुं० रोगी।

**शय्या-दान**—पु० [सं० ष० त०स०] मृतक की प्रेत-आत्मा की शांति के उद्देश्य से महापात्र को दिया जानेवाला पलंग तथा बिछावन।

**शय्या-पाल**—पुं० [सं० शय्या√पाल् (पालन करना)+अच्] वह जो राजाओं आदि के शयनागार की व्यवस्था तथा रक्षा करता हो।

**शय्या-भूत**—पु० [स० ष०त०स०] बालकों का वह रोग जिसके कारण वे सोये-सोये बिस्तर पर पेशाब कर देते है।

**शय्या-व्रज**—पु० [स०मध्यम० स०] रोगी के बहुत दिनों तक शय्या-ग्रस्त रहने के कारण उसकी पीठ आदि के छिल जाने से होनेवाला घाव। बिस्तर घाव। (बेड-सोर)

**शरंड**—पु० [स० शृ+अण्डच्] १ पक्षी। चिड़िया। २. छिपकली। ३ गिरगिट। ४ पुरानी चाल का एक प्रकार का गहना।
वि० १ कामुक। २ धूर्त।

**शर**—पुं० [स० √शृ +अच्] तीर। बाण। २ सामुद्रिक शास्त्र मे, शरीर के किसी अंग पर होनेवाला तीर का-सा निशान जो शुभाशुभ फल का सूचक माना जाता है। ३ कामदेव के पाँच बाणों के आधार पर पाँच की सूचक संख्या। ४ बरछी या भाले का फल। ५. हिंसा। ६. सरकंडा। ७. सरपत। ८. उशीर। खस। ९ दही या दूध के ऊपर की मलाई। साढ़ी।

**शरअ**—स्त्री० [अ०] १ वह सीधा रास्ता जो ईश्वर ने भक्तों के लिए बतलाया हो। २ कुरान में बतलाया हुआ विधान या इसी प्रकार की आज्ञा जिसका पालन प्रत्येक मुसलमान के लिए जीवन-यात्रा के उपरान्त के प्रसंग में आवश्यक और कर्तव्य हो। ३. इस्लामी धर्म-शास्त्र। ४. धर्म। मजहब। ५ दस्तूर। प्रथा।

**शरई**—वि० [अ०] १. शरअ के अनुसार किया जानेवाला। २. जो शरअ की दृष्टि में उचित हो। ३. जिसका कुरान में उल्लेख हो और पालन हर मुसलमान के लिए आवश्यक बतलाया गया हो। ४. शरअ का पालन करनेवाला।

**शरकांड**—पु० [सं० ष० त०] सरपत। सरकडा।

**शरकार**—पु० [स० शर√कृ(करना)+अण्] वह जो तीर बनाता हो।

**शर-कोट**—पु० [स० ष० त०] १. इस प्रकार चलाए हुए तीर कि शत्रु के चारों ओर तीरो का घेरा बन जाय। २. इस प्रकार तीरों से बननेवाला घेरा।

**शरगा**—पुं० [अ० शर्ग:] बादामी रंग का घोड़ा।

**शरण्यचन्द्र**—पुं० [स० मध्यम० स०] १ शरत् ऋतु का चन्द्रमा। २. विशेषतः शरत् पूर्णिमा का चन्द्र।

**शरण्य**—पुं० [सं० शर√जन् (उत्पन्न करना)+ड] मक्खन। नवनीत। वि० शर से उत्पन्न या बना हुआ।

**शरद**—पु०[सं०√शृ (मसनादि)+अटन्]१. कुसुंभ नाम का साग। २. करंज। ३. गिरगिट।

**शरदी**—स्त्री०[सं० शरद्—ङीप्] लज्जालुका। लाजवंती।

**शरण**—स्त्री० [स० शृ (पूरा करना)+ल्युट्-अन] १. उपद्रव, कष्ट आदि से बचने के लिए किसी समर्थ के पास आकर अपनी रक्षा कराने की क्रिया या भाव। पनाह।
क्रि० प्र०—में आना या जाना।
२. ऐसा स्थान जहाँ पर जाकर कोई रक्षित रहे।
क्रि० प्र०—जाना।—लेना।
३ रक्षा के लिए भागकर आये हुए व्यक्ति के शत्रु को मारना या उसका नाश करना। ४. घर। मकान। ५. अधीनस्थ व्यक्ति। मातहत। ६. सारन प्रदेश का पुराना नाम।

**शरण-क्षेत्र**—पु०[स० ष० त०] १ ऐसा स्थान जहाँ अपराधी, भगोड़े आदि पहुँचकर शरण लेते और सुरक्षित रहते हों। शरणस्थान।
**विशेष**—मध्य युग में ईसाई धर्माधिकारी अपनी शरण में आये हुए लोगों को राजकीय अधिकारियों के हाथों से बचा कर अपने यहाँ रख लेते थे। जिससे यह शब्द बना था। आजकल दूसरे देशों के अपराधियों को शरण देनेवाले राज्यों या क्षेत्रों के लिए व्यवहृत।
२. पशु-पक्षियों आदि के लिए वह सुरक्षित स्थान जहाँ वे निर्भयता-पूर्वक रह सकते हों और जहाँ उनका शिकार करने की मनाही हो। शरणस्थान। (सक्चुअरी)

**शरणगृह**—पु०[स० ष० त०]जमीन के नीचे बनाया हुआ वह स्थान जहाँ लोग हवाई जहाजों के आक्रमण से बचने के लिए छिपकर रहते हैं। (शेल्टर)

**शरणद**—वि०[सं० शरण√दा+क] शरण देनेवाला।

**शरणस्थान**—पु०[सं० शरण ष० त०] शरण-क्षेत्र। (दे०)।

**शरणा**—स्त्री०[सं० शरण-टाप्] गंध-प्रसारिणी (लता)।

**शरणागत**—भू० कृ० [द्वि० त० स०] किसी की शरण में आया हुआ।

**शरणागति**—स्त्री० [सं०] किसी की शरण में आए हुए होने की अवस्था या भाव।

**शरणापन्न**—वि० [स० द्वि० त० स०] शरणागत।

**शरणार्थी(र्थिन्)**—वि० [सं० शरण√अर्थ (माँगना)+णिनि ब० स० वा०] जो किसी की शरण चाहता हो। फलतः असहाय तथा विस्थापित। पु० आज-कल वे लोग जो पाकिस्तान से भागकर शरण लेने के लिए भारत में आकर बस गये हैं। (रिफ्यूजी)

**शरणि**—स्त्री० [सं० शृ+अनि] १. मार्ग। पथ। रास्ता। २. जमीन। भूमि। ३. हिंसा।

**शरणी**—स्त्री०[सं० शरण-ङीप्] १. गंध-प्रसारिणी नाम की लता। २. जयंती। ३. पथ। मार्ग।
वि० स्त्री० शरण देनेवाली। जैसे—अशरण-शरणी भवानी।

**शरण्य**—वि०[सं० शरण+यत्] १. जिसके पास या जहाँ पहुँच कर शरण ली जाय या ली जा सके। २ आक्रमण, विकार आदि से रक्षित रखने वाला। (प्रोटेक्टिव) जैसे—आयुर्वेद का शरण्य स्वरूप।

**शरण्यता**—स्त्री०[स० शरण्य+तल्—टाप्] शरण्य का भाव।

**शरण्यशुल्क**—पु० दे० 'संरक्षण शुल्क'।

**शरण्या**—स्त्री०[सं० शरण्य—टाप्] दुर्गा।

**शरण्यु**—पु०[स० शृ+अन्यु]१. मेघ। बादल। २. वायु। हवा। स्त्री० सूर्य की पत्नी का नाम।

**शरत्**—स्त्री० [स० शृ+अदि चर्त्व]१. वैदिक युग में, भाद्रपद और आश्विन महीनों की ऋतु। २. आज-कल, आश्विन और कार्तिक महीनों की ऋतु। ३. वत्सर। वर्ष।

**शरत**—स्त्री० १.=शरत्। २.=शर्त।

**शरता**—स्त्री०[स०]१ शर का भाव। २. बाण-विद्या। उदा०—छोड़ि दई शरता .. ।—केशव। ३ बाण-विद्या में होनेवाली पटुता।

**शरतिया**—अव्य० =शर्तिया।

**शरत्काल**—पु०[स० ष० त० स०]आश्विन और कार्तिक के दिन। शरद् ऋतु।

**शरत्पथ**—पु०[स० मध्यम० स०] श्वेत पथ।

**शरत्पर्व**—पु० [स० ष० त० स०] शरद पूर्णिमा।

**शरदंड**—पु०[स० ब० स०]१. बाबूल। २ सरकंडा। ३ शरदंडा नदी के तट पर बसी हुई साल्व जाति की एक शाखा।

**शरदंडा**—स्त्री० [स० शरदंड—टाप्] पूर्वी पंजाब की एक प्राचीन नदी (कदाचित् शरावती)।

**शरदंत**—पु० [स० ष० त०] शरद् ऋतु का अंत। अर्थात् हेमंत ऋतु का आरंभ।

**शरद**—स्त्री० =शरत्।

**शरदई**—वि०=सर्वदई (सर्व के रंग का)।

**शरद पूर्णिमा**—स्त्री० [सं०ष०त०स०]क्वार मास की पूर्णिमा। शारदीय पूर्णिमा।

**शरदा**—स्त्री०[स० शरद—टाप्] १. शरद ऋतु। २. वर्ष। साल।

**शरदिंदुमुखी**—स्त्री०[स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**शरदिज**—वि० [सं०शरदि√जन् (उत्पन्न करना)+ड] शरद् ऋतु में उत्पन्न होनेवाला।

**शरदृतु**—पु०[सं० ष० त० स०] शरद् ऋतु का चन्द्रमा। शरच्चंद्र।

**शरद्ऋतु**—पु० [सं० शरत्+ऋतुप्—अ=अ] शरत् ऋतु।

**शरधि**—पु०[स० शर√धा (रखना)+कि] तूणीर। तरकश।

**शरन्मुख**—पु०[सं० ष० त० स०] शरद ऋतु का आरंभ।

**शरपंजल**—पु०[सं० ब० स०] जवासा। धमासा।

**शर-पंजर**—पु० [सं०] शर-कोट। (दे०) उदा०—जारूयो शर-पंजर छार करयो, नैमित्त्यन को अति चित्त डर्‌यो।—केशव।

**शरपुंख**—पु०[स०ब० स०] १. नील की तरह का सर-फोंका नाम का पौधा। २. तीर या बाण में लगाया हुआ पंख या पर। ३. बैद्यक में, चीर-फाड़ के काम के लिए एक प्रकार का यंत्र।

**शरफ**—पुं० [अ०] १. खूबी। २. बड़ाई। प्रशंसा। ३. सौभाग्य। ४. मान। प्रतिष्ठा। महत्त्व।

**शरबत**—पुं०[अ०] १. चीनी आदि में पकाकर तैयार किया हुआ औषधि

या फल का गाढ़ा रस। जैसे—अनार, सतरे या शहतूत का शरबत। २. उक्त का कुछ अंश पानी मे घोलकर बनाया हुआ पेय। ३. किसी फल का रस निचोड़कर तथा उसमे चीनी, पानी, आदि मिलाकर बनाया हुआ पेय। ४ ऐसा पानी जिसमे गुड, चीनी, मिसरी आदि मे से कोई चीज घुली हो। ५. मुसलमानो मे एक रीति जिसमें विवाह के उपरात कन्यापक्ष वाले वर पक्षवालों को शरबत पिलाते हैं। ६ उक्त अवसर पर वह धन जो शरबत पीने के उपलक्ष मे वर पक्षवालो को दिया जाता है।

**शरबत-पिलाई**—स्त्री० [हिं० शरबत+पिलाना] वह धन जो वर और कन्या पक्ष के लोग एक दूसरे को शरबत पिलाकर देते हैं। (मुसल०)

**शरबती**—वि० [हिं० शरबत] १. शरबत की तरह मीठा या तरल। जैसे—शरबती तरकारी। २. उक्त के आधार पर रसपूर्ण, मधुर तथा प्रिय। जैसे—शरबती आँखें। ३. जो शरबत बनाने के काम आता हो। जैसे—शरबती नीबू, शरबती फालसा। ४. जो शरबत के रग का हो। कुछ कुछ लाल। गुलाबी।

पु० १ पानी मे घुली हुई चीनी की तरह का एक प्रकार का हलका पीला रग जिसमें हलकी लाली भी होती हो। २. एक प्रकार का नगीना जो पीलापन लिए लाल रग का होता है। ३. एक प्रकार का बढिया कपडा जो तनजेब से कुछ मोटा और अद्धी से कुछ पतला होता है। ४. मीठा नीबू। ५. एक प्रकार का बढ़िया आम।

**शरबती नींबू**—पुं० [हिं० शरबत+नींबू] १. चकोतरा। २. गलगल। ३. जंबीरा या मीठा नीबू।

**शरबान**—पुं० [सं० शर+बान] अगिया घास।

**शरभंग**—पुं० [स० ब० स०] एक प्राचीन महर्षि जो दक्षिण मे रहते थे।

**शरभ**—पु० [स० शर√भृ+अच्] १. टिड्डी। २. फतिंगा। ३. हाथी का बच्चा। ४. विष्णु। ५. ऊंट। ६. एक प्रकार का पक्षी। ७ शेर। सिंह। ८. आठ पैरोंवाला एक कल्पित मृग। ९ राम की सेना का एक यूथपति बन्दर। १० एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे ४ नगण और १ सगण होता है। इसे शशिकला और मणिगुण भी कहते हैं। ११. दोहे का एक भेद जिसमे २० गुरु और ८ लघु मात्राएँ होती हैं।

**शरभा**—स्त्री० [स० शरभ-टाप्] १ शुष्क अवयवों वाली और विवाह के अयोग्य कन्या। २. लकडी का एक प्रकार का यत्र।

**शरभू**—पुं० [स० शर√भू+विवप्] कार्तिकेय।

**शरम**—स्त्री० [फा० शर्म] १. लज्जा। हया। गैरत।

मुहा०—शरम से गड़ना=मारे लज्जा के दबे या झुके जाना। बहुत लज्जित होना। शरम से पानी पानी होना=बहुत लज्जित होना।

२. किसी बड़े का लिहाज या सकोच। ३ इज्जत। प्रतिष्ठा।

**शरमनाक**—वि० [फा० शर्मनाक] (कार्य या व्यवहार) जिसके कारण शर्म आती हो या आनी चाहिए। लज्जाजनक। निर्लज्जतापूर्ण।

**शरमल्ल**—पुं० [सं० सप्त० त० स०] १. वह जो तीर चलाने मे निपुण हो। धनुर्धारी। २. मैना पक्षी।

**शरमसार**—वि० [फा० शर्मसार] [भाव० शरमसारी] १. जिसे शरम हो। लज्जावाला। २. लज्जित। शरमिन्दा।

**शरम-हुजूरी**—स्त्री० [अ० शर्म+फा० हुजूर।] मुँह देखने की लाज।

**शरमाऊ**†—वि० [हिं० शरम+आऊ (प्रत्य०)] शरमानेवाला। लजीला।

**शरमाना**—अ० [अ० शर्म+आना (प्रत्य०)] १. किसी के सामने कुछ करने या कहने का उत्साह न होने के फलस्वरूप झेंपना। लाज से नम्र होना। २. लज्जित होना।

स० लज्जित या शरमिन्दा करना।

**शरमाऊ**†—वि० =शरमाऊ।

**शरमा-शरमी**—अव्य० [फा० शर्म] १. लज्जा के कारण। २. संकोचवश।

**शरमिंदगी**—स्त्री० [फा०] शरमिंदा या लज्जित होने की अवस्था, धर्म या भाव। लाज। झेंप।

क्रि० प्र०—उठाना।

**शरमिंदा**—वि० [फा० शर्मिन्द.] जो अपने किसी अनुचित कार्य या व्यवहार के फलस्वरूप लज्जित तथा दुःखी हो। लज्जा से जिसका मस्तक नत हो गया हो।

**शरमीला**—वि० [फा० शर्म+ईला (प्रत्य०)] लाज-भरा। लाज से युक्त। 'निर्लज्ज' का विरुद्धार्थक। जैसे—शरमीली आँखें, शरमीली वधू।

**शरयू**†—स्त्री०=सरयू (नदी)।

**शरर**—पु० [अ०] चिनगारी।

**शरलोमा (मन्)**—पु० [सं० ब० स०] एक प्राचीन ऋषि जिन्होंने भरद्वाज जी से आयुर्वेद संहिता लाने के लिए प्रार्थना की थी।

**शरवाणि**—स्त्री० [स०] १ शर। २ तीर का फल।

पु० १. तीर चलानेवाला योद्धा। २. पैदल सिपाही।

**शर-वारण**—पु० [सं० ब० स०] ढाल, जिससे तीरों की बौछार रोकी जाती है। ढाल, जिससे तीरों का वारण किया जाता है।

**शरव्य**—पुं० [सं० शर+यत्—शर√ध्ये (मुक्त होना)+ड] १. बाण का लक्ष्य। २. तीरदाज।

**शरह**—स्त्री० [अ०] १ वह कथन या वर्णन जो किसी बात को स्पष्ट करने के लिए किया जाय। अच्छी तरह अर्थात् स्पष्ट और विस्तृत रूप से कुछ कहना। २. व्याख्या। ३ ग्रन्थ की टीका या भाष्य। ४. किसी चीज की बिक्री की दर या भाव। ५. किसी काम या चीज की दर। जैसे—लगान की शरह।

**शरह-बंदी**—स्त्री० [अ० शरह+फा० बन्दी] १. दर या भाव निश्चित करने की क्रिया। २. (मंडी आदि के) भावों की तालिका।

†स्त्री०=शरज।

**शराकत**—स्त्री० [फा०] १. शरीक या सम्मिलित होने की अवस्था या भाव। २ हिस्सेदारी। साझा।

**शराटिका**—स्त्री० [सं०] १. टिटिहरी। २. लजालु लता।

**शराद्ध**†—पु०=श्राद्ध।

**शराप**—पु०=शाप।

**शरापना**—स० [सं० शाप+हिं० ना (प्रत्य०)] किसी को शाप देना।

**शराफ**†—पु०=सराफ।

**शराफत**—स्त्री० [अ० शराफ़त] १. शरीफ या सज्जन होने की अवस्था या भाव। २. सज्जनोचित कोई व्यवहार या शिष्टाचार।

**शराफा**†—पु०=सराफा।

**शराफी**†—स्त्री०=सराफी।

**शराब**—स्त्री० [अ०] १. मदिरा। सुरा। वारुणी। मद्य। दारू। २.

हकीमों की परिभाषा मे, किसी चीज का मीठा अरक या शरबत। जैसे—शराब बनफशा।

**शराबखाना**—पु० [अ० शराब+फा० खाना] शराब बनने तथा बिकने की जगह। वह स्थान जहाँ शराब मिलती हो।

**शराबखोरी**—स्त्री० [फा०] १. शराब पीने का कृत्य। मदिरा पान। २. शराब पीने की आदत या लत।

**शराबख्वार**—पु० [फा०] वह जो शराब पीता हो। मदिरा पीनेवाला। मद्यप। शराबी।

**शराबी**—पुं० [अ० शराब+हिं० ई (प्रत्य०)] व्यक्ति जिसे शराब पीने का व्यसन हो।

**शराबोर**—वि० [फा०] पानी से तर। गीला।

**शरारत**—स्त्री० [अ०] १ शरीर या पाजी होने की अवस्था या भाव। २. दुष्टतापूर्ण कार्य।

**शरारतन्**—क्रि० वि० [अ०] शरारत या पाजीपन से।

अव्य० [अ०] शरारत अर्थात् किसी को तंग करने की नियत से।

**शरारि**—पु० [स० शर√ऋ (गमनादि)+इ] १. राम की सेना का एक यूथपति बंदर। २ टिटिहरी नाम की चिड़िया।

**शरारी**—स्त्री० [शरारि—ङीप्] टिटिहरी।

**शरारोप**—पु० [स०ञ० स०] धनुष जिस पर शर चढ़ाया जाता है। कमान।

**शराली**—स्त्री० [स०शरालि—ङीप्] टिटिहरी नाम की छोटी चिड़िया।

**शराव**—पु० [स० शर√अव (रक्षा करना)+अण्] १ मिट्टी का एक प्रकार का पुरवा। कुल्हड़। २. वैद्यक मे एक प्रकार का परिमाण या तौल जो चौंसठ तोले या एक सेर की होती है। (वैद्यक मे सेर चौंसठ तोले का ही होता है)।

**शरावती**—स्त्री० [स० शरा+मतु- -प्-म =व—दीर्घ—ङीप्] १. गंगा नामक नदी का पुराना नाम। २. एक प्राचीन नगरी जिसे लव ने अपनी राजधानी बनाई थी।

**शरावर**—पु० [स० व० स०] १. ढाल। २. कवच। वर्म।

**शरावरण**—पु० [स० ब० स०] ढाल जिससे तीर का वार रोकते हैं।

**शराविका**—स्त्री० [स० शराव+कन्—टाप् इत्व] १. ऐसी फुंसी जो ऊपर से ऊँची और बीच मे गहरी हो। २ एक प्रकार का कुष्ठ रोग।

**शराश्रय**—पु० [स० ष० त० स०] तीर रखने का स्थान, तरकश।

**शरासन**—पु० [स० शर√अस् (फेंकना)+ल्युट्—अन] धनुष। कमान। चाप।

**शरास्य**—पु० [सं० शर√अस् (रखना)+ण्यत्] धनुष। कमान।

**शरिष्ठ**—वि०=श्रेष्ठ।

**शरी**—स्त्री० [सं० शरि—ङीप्] एरका या मोथा नाम का तृण।

**शरीअत**—स्त्री० [अ०] मुसलमानी धर्म मे शरअ के अनुसार आचरण करना। नमाज, रोजे आदि का निर्वाह और पालन।

**विशेष**—सूफी संप्रदाय मे यह साधना की चार स्थितियों में से पहली है। शेष तीन स्थितियाँ तरीकत, मारफत और हकीकत कहलाती हैं।

**शरीक**—वि० [अ०] १. किसी के साथ मिला हुआ। शामिल। सम्मिलित। २. कष्ट आदि के समय सहानुभूति दिखाने या सहायता करनेवाला। पुं० १. वह जो किसी बात मे किसी के साथ रहता हो। साथी। २ साझीदार। हिस्सेदार। ३. ऐसा निकट सम्बन्धी जो पैतृक संपत्ति का हिस्सेदार हो या रहा हो।

**शरीफ**—पु० [अ० शरीफ] १. ऊँचे घराने का व्यक्ति। कुलीन मनुष्य। २. सज्जन और सभ्य व्यक्ति। भला आदमी। ३. मक्के के प्रधान अधिकारी की उपाधि।

वि० पवित्र या शुभ। जैसे—मिजाज शरीफ।

पुं० [अ० शेरिफ] अंगरेजी शासन में, कलकत्ते, बम्बई और मद्रास में सरकार की ओर से नियुक्त किए जानेवाले एक प्रकार के अवैतनिक अधिकारी जिनके सुपुर्द शांति-रक्षा तथा इसी प्रकार के और कुछ काम होते हैं।

**शरीफा**—पु० [स० श्रीफल या सीताफल] १. झाड़ीले आकार का एक प्रकार का प्रसिद्ध वृक्ष जो प्रायः सारे भारत में फल के लिए लगाया जाता है। २.उक्त वृक्ष का फल जो अमरूद की तरह गोल और खाकी रंग का होता है। इसके अन्दर सफेद मीठा गूदा (बीजो मे लिपटा हुआ) होता है। श्रीफल। सीताफल। रामसीता।

**शरीर**—पु० [स० शृ (हिंसा करना)+ईरन्] [भाव० शरीरता, वि० शारीरिक] १. मनुष्य या पशु आदि के समस्त अंगों की समष्टि। सिर से पैर तक के सब अंगो का समूह। देह। तन। बदन। जिस्म।

वि० [अ०] दुष्ट-प्रकृति।

**शरीरक**—पु० [सं० शरीर+कं+क+कन्] १. छोटा शरीर। २ आत्मा।

**शरीरज**—वि० [स० शरीर√जन् (उत्पन्न करना)+ड] जो शरीर से उत्पन्न हुआ हो या होता हो।

पुं० १. पुत्र। बेटा। २. कामदेव।

**शरीरता**—स्त्री० [स० शरीर+तल्—टाप्] शरीर का भाव या धर्म।

**शरीरत्याग**—पुं० [स० ष० त०] मृत्यु। मौत।

**शरीरत्व**—पु० [सं० शरीर+त्व] शरीर का भाव या धर्म। शरीरता।

**शरीर-पतन**—पु० [स० ष० या त०, ब० स०] १ शरीर का धीरे-धीरे क्षीण होना। २ मृत्यु। मौत।

**शरीर-पात**—पुं० [स० ष० त०] देह का अंत या नाश। शरीरांत। देहावसान। मृत्यु। मौत।

**शरीर-भृत**—पु० [स० शरीर√भृ+क्विप्+तुक्] १. वह जो शरीर धारण किए हो। शारीरी। २. विष्णु। ३. जीवात्मा।

**शरीर-यापन**—स्त्री० [ब० स०] जीवन का निर्वाह या यापन।

**शरीर-रक्षक**—पु० [ष० त० स०] अंगरक्षक (दे०)।

**शरीर-वृत्ति**—स्त्री० [स० मध्यम स०] जीवन निर्वाह करने की वृत्ति।

**शरीर-शास्त्र**—पु० [सं०] शारीर।

**शरीर-शोधन**—पुं० [सं० ष० स० ष० त०] वह औषधि जो कुपित मल, पित्त और कफ ऊर्ध्व अथवा अधोमार्ग से शरीर के बाहर निकाल दे।

**शरीर-संस्कार**—पुं० [सं० ष० त०] १. शरीर को शुद्ध तथा स्वच्छ करने की क्रिया। २. गर्भाधान से लेकर अन्त्येष्टि तक के मनुष्य के वेद-विहित सोलह संस्कार।

**शरीर-सेवा**—स्त्री० [सं० ष० त०] ऐसे सब काम जिनसे शरीर अच्छी तरह और सुख से रहे।

**शरीर-सेवी**—पु०[स० शरीर सेवा+इनि] वह जो केवल अपने शारीरिक सुखों का ध्यान रखता हो।

**शरीरस्थ**—वि०[स० शरीर√स्था (ठहरना)+क]१. शरीर में रहनेवाला या स्थित। २. जीवित।

**शरीरांत**—पु० [स० ष० त० स०] मृत्यु।

**शरीरार्पण**—पु०[स० ष० त० स०] सेवा-भाव से किसी कार्य में जी-जान से जुटना।

**शरीरावरण**—पु०[स० ष० त० स०] १ शरीर को ढकनेवाली कोई चीज। २ खाल। चमड़ा। ३. ढाल। वर्म।

**शरीरास्थि**—पु० [सं० ष० त० स०, शरीर+अस्थि] कंकाल। पिंजर।

**शरीरी**—वि०[सं० शरीर+इनि, दीर्घ न लोप] शरीरधारी।
पु०१ प्राणी। २ आत्मा। जीव।

**शर**—पु०[स० शृ (हिंसा करना)+उन्]१ वज्र। २. तीर। बाण। ३. हिंसा। ४ आयुध। अस्त्र। ५. क्रोध। गुस्सा।
वि०१. हिंसक। २. बहुत पतला। ३. नुकीला।

**शरेज**—पु०[स० शर√जन् (उत्पन्न करना)+ड, सप्तमी, अलुक्] कार्तिकेय।

**शरेष्ट**—पु०[स०√शृ+अच्=शर. काम-इष्ट; ष० त०] आम। आम्र।
†वि०=श्रेष्ठ।

**शर्कर**—पुं०[स०√ शृ (हिंसा करना)+करच्] १. कंकड़। २. बालू का कण। ३. एक पौराणिक देश। ४ उक्त देश का निवासी। ५ एक प्रकार का जल-चर जन्तु। ६. शक्कर। चीनी।

**शर्करकंद**—पु०[स० ष० त० या ब० स०] शकरकंद।

**शर्करक**—पु० [स० शर्कर+कन्] मीठा नीबू। शरबती नीबू।

**शर्करजा**—स्त्री०[स०शर्कर√जन् (उत्पन्न करना)+ड—टाप्] चीनी।

**शर्करा**—स्त्री० [स० शर्कर—टाप्] १ शक्कर। चीनी। २ बालू का कण। ३ पथरी नामक रोग। ४ कंकड़। ५ ठीकरा। ६ पुराणानुसार एक देश जो कूर्मचक्र के पुच्छ भाग में कहा गया है। ७. दे० 'शर्करार्बुद'।

**शर्करांचल**—पु०[स० ष० त०]पुराणानुसार चीनी का वह पहाड़ जो दान करने के लिए लगाया जाता है।

**शर्करांधेनु**—स्त्री०[स० ष० त० स०] पुराणानुसार चीनी की वह गौ जो दान करने के लिए बनाई जाती है।

**शर्करांप्रभा**—स्त्री०[स० ब० स०] जैनों के अनुसार एक नरक का नाम।

**शर्करांप्रमेह**—पु० [स० मध्य० स०] ऐसा प्रमेह जिसमें मूत्र का रंग सफेद हो जाता है और उसके साथ शरीर की शर्करा भी निकलती है।

**शर्करामारी**—पु० [स० ष० त०] एक प्रकार का यंत्र जिससे यह जाना जाता है कि किसी घोल या तरल पदार्थ में शर्करा या चीनी का कितना अंश है। (सैकिमीटर)

**शर्करार्बुद**—पु०[स० स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग जिसमें त्रिदोष के कारण मांस, शिरा और स्नायु में गाँठें पड़ जाती हैं।

**शर्करा-सप्तमी**—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] वैशाख शुक्ल सप्तमी; इस दिन सुवर्णाश्व का पूजन होता है।

**शर्करासव**—पु०[स० मध्यम० स०] चीनी से बनाई जानेवाली शराब।

**शर्करिक**—वि० [स० शर्करा+ठन्—इक] १. शर्करा से युक्त। २ शर्करा से बना हुआ।

**शर्करी**—स्त्री० [स० शर्करा—ङीप्] १ नदी। २. मेखला। ३. कलम। लेखनी। ४. वर्णवृत्त के अंतर्गत चौवह अक्षरों की एक वृत्ति। इसके कुल १६३८४ भेद होते हैं जिनमें १३ मुख्य हैं।

**शर्करीय**—वि० [सं० शर्करा+छ—ईय] शर्करा-संबंधी। शर्करा का।

**शर्करोदक**—पु० [स० मध्यम० स०] शरबत।

**शर्कोटि**—पु०[स० ब० स०] साँप।

**शर्ट**—स्त्री० [अं०] एक प्रकार का पाश्चात्य पहनावा जो कुरते की तरह का तथा कालर वाला होता है। कमीज।

**शर्त**—स्त्री०[अ०] १. किसी बात, घटना आदि की सत्यता तथा असत्यता अथवा विद्यमानता तथा अविद्यमानता आदि के संबंध में दो पक्षों द्वारा दाँव पर लगाया जानेवाला धन। बाजी।
क्रि० प्र०—जीतना।—बदना।—बाँधना।—लगाना।—हारना।
२. कोई ऐसी बात जो किसी काम या बात की सिद्धि के लिए आवश्यक रूप से अपेक्षित हो। (दर्शं) जैसे—वह यहाँ आ तो सकता है, पर शर्त यह है कि तुम उससे लड़ने लगो। ३. दे० 'उपबन्ध'।
क्रि० प्र०—रखना।—लगाना।

**शर्तिया**—अव्य०[अ०]शर्त बदकर, अर्थात् बहुत ही निश्चय या दृढ़तापूर्वक। जैसे—मैं शर्तिया कहता हूँ कि आप अच्छे हो जायँगे।
वि० बिल्कुल ठीक और निश्चित।

**शर्ती**—अव्य०=शर्तिया।

**शर्द्ध**—पु०[स०√शृध् [अपान वायु के निन्दित शब्द]+घञ्]१ तेज। २ अपान वायु। पाद।

**शर्द्धन**—पु०[स०√शृध् (अपान वायु के शब्द)+ल्युट्—अन] अधोवायु त्याग करना। पादना।

**शर्बत**—पु०=शरबत।

**शर्बती**—वि०, पु०=शरबती।

**शर्म**—पु० [स०√ शृ (हिंसा करना)+मनिन्] १. सुख। आनन्द। २ घर। मकान।
वि० परम सुखी।
स्त्री०=शरम।
**विशेष**—शर्म और ह्रया का अन्तर जानने के लिए दे० 'ह्रया' का विशेष।

**शर्मद**—वि०[सं० शर्मन् √ दा (देना)+क] [स्त्री० शर्मदा] आनंद देनेवाला। सुखदायक।
पु० विष्णु का एक नाम।

**शर्मन्**—पु०=शर्म्मा।

**शर्मर**—पु० [स० शर्म्मन् √ रा (लेना)+क] एक प्रकार का वस्त्र।

**शर्मरी**—स्त्री०[सं० शर्म्मर—ङीप्] दाख। हुल्वी।

**शर्मसार**—वि०[फा०][भाव० शर्मसारी]१. लज्जाशील। २. लज्जित। शरमिन्दा।

**शर्मा**—पुं०[स० शर्मन् दीर्घ, मलोप] ब्राह्मणों के नाम के अन्त में लगने वाली उपाधि। जैसे—पं० पद्मसिंह शर्मा।

**शर्माऊ, शर्माऊ**—वि०=शरमीला।

**शर्माना**—अ०, स०=शरमाना।

शर्माशर्मी—अ० य०=शरमा-शरमी।
शर्मिंदगी—स्त्री०=शरमिंदगी।
शर्मिंदा—वि०=शरमिंदा।
शर्मिष्ठा—स्त्री०[सं० शर्म्य+ष्ठन्—टाप्] दैत्यों के राजा वृषपर्वा की कन्या जो शुक्राचार्य की कन्या देवयानी की सखी थी।
शर्मीला—वि०=शरमीला।
शर्व—पु० [स० √ शृ (हिंसा करना)+वप्] १. योद्धा। २. तीर। बाण। ३. उँगली।
शर्वण—पु०[स० शर्व √ नी (ढोना)+ड]वैदिक काल का एक जनपद जो कुरुक्षेत्र के अंतर्गत था।
शर्वणावत्—पु० [स०शर्व्वन√अव् (रक्षा करना)+क्विप् तुक्] शर्व्वण नामक जनपद के पास का एक प्राचीन सरोवर जो तीर्थ माना जाता था।
शर्वा—स्त्री० [सं० शर्व्य—टाप्] १. रात्रि। रात। २ उँगली। ३ छोटा तीर।
शर्र—पु० [फा०]१. शरारत। २. झगड़ा-फसाद। ३ बुराई। खराबी।
शर्व—पु० [सं०√शृ(हिंसा करना)+व, शर्व+अच्] १ शिव। महादेव। २. विष्णु।
शर्वपत्नी—स्त्री०[स० ष० त० स०]१. पार्वती। २ लक्ष्मी।
शर्वपर्वत—पु० [स० ष० त० स०] कैलाश (पर्वत)।
शर्वर—पु०[स० √ शर्व्+अरन्] १ अंधकार। अँधेरा। २ सन्ध्या। ३ कामदेव।
शर्वरी—स्त्री०[सं०√शृ+वनिप्—ङीप्] १ रात। रात्रि।२ सन्ध्याकाल। ३ हलदी। ४ औरत। स्त्री। ५ बृहस्पति के साठ सवत्सरों मे से चौंतीसवाँ सवत्सर।
शर्वरीकर—पु०[सं० शर्वरी√कृ (करना)+ट-अच्-वा] विष्णु।
शर्वरी-दीपक—पु०[स० ष० त० स०] चन्द्रमा।
शर्वरीपति—पु०[स० ष० त० स०]१. चन्द्रमा। २. शिव।
शर्वरीश—पु०[सं० ष० त० स०] चन्द्रमा।
शर्वला—स्त्री०[स०√ शर्व+घञ्√ला+क-टाप्] तोमर नामक अस्त्र।
शर्वाक्ष—पु०[सं०ब० स०] रुद्राक्ष। शिवाक्ष।
शर्वाचल—पु०[सं० ष० त० स०] कैलाश।
शर्वाणी—स्त्री०[सं० शर्व+ङीप्—आनुक्] पार्वती।
शर्वरीक—वि०[स०√शृ (हिंसा करना)+ईकन्]१. हिंसक। २. खल। दुष्ट।
पुं० १. अग्नि। २. घोड़ा।
शर्वांग—पुं०[सं० √शर्व्+अङ्गच्, ब०स०]१. लोकपाल। २. एक प्रकार का नमक।
शर्व—पु० [सं०√शर्व् (गमनादि)+अच्]१. ब्रह्मा। २. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ३. कंस का एक अमात्य। ४. ऊँट। ५. भाला। ६. साही का काँटा। ७. दे० 'शल्यराज'।
शल्क—पुं०[सं० शल+वुन्—अक]१. मकड़ी। २. ताड़ का पेड़। ३. साही का काँटा।
शल्कक—पुं०[फा० शलजम] एक प्रकार का कंद जो चरी के काम आता है तथा जिसकी तरकारी भी बनाई जाती है।
शल्क—पु० [सं०√शल् (गमनादि)+अच्] १. टिड्डी। शरभ। २. फतिंगा। ३. छप्पय के ३१वें भेद का नाम। इसमें ४० गुरु और ७२ लघु कुल ११२ वर्ण या मात्राएँ होती हैं।
शल्कार—स्त्री०=सलकार।
शल्काक्ष-पुर्त—पु०[स० तृ० त० स०] वह जो शलाकाओं आदि की सहायता से पक्षियों को पकड़ता हो। चिड़ीमार। बहेलिया।
शलाका—स्त्री०[स० शल+आकन्—टाप्]१. धातु, लकड़ी आदि की लंबी सलाई। सलाखा। सीख। २. आँख मे सुरमा लगाने की सलाई। ३ घाव की गहराई आदि नापने की सलाई। ४ जूआ खेलने का पासा। ५. काठ का छोटा टुकड़ा जिसकी सहायता से निर्वाचन मे मत लिया जाता था। (बैलट) ६ अस्थि। हड्डी। ७ तिनका। तृण। ८ मैना पक्षी। ९. मदन वृक्ष। १० सलाई का पेड़। शल्लकी। ११ बच। १२. पैर की नली की हड्डी।
शलाकापत्र—पु० [ष० त० स०] प्राचीन भारत की शलाका के स्थान पर आज-कल प्रयुक्त होनेवाला वह पत्र जिसके द्वारा चुनाव के समय लोग अपना मत प्रकट करते हैं। (बैलट पेपर)
शलाकापुरुष—पु०[स० मध्यम० स०] बौद्धो के ६३ दैवपुरुषों मे से एक।
शलाका मुद्रा—स्त्री०[स०] सभ्यता के आरंभिक काल की वे मुद्राएँ या सिक्के जो छोटे-छोटे धातु खंडों के रूप मे होते थे और धातुओं के छड़ या शलाकाएँ काटकर बनाये जाते थे। (वेन्टवार कवायन)
विशेष—ऐसे सिक्कों पर प्रायः कोई अंक या चिह्न नही होता था।
शलाका†—स्त्री०=सलाखा।
शलातुर—पु० [स०ब०स०] एक प्राचीन जनपद जो पाणिनि का निवास-स्थान था।
शलभ—स्त्री० [स०√ शल् (हिंसा करना)+अच्—ङीप्] साही (जंतु)।
शलीला—पु०=सलीता।
शलूक—पु०[फा०सलूक] आधी बाँह की एक प्रकार की कुरती जो प्रायः स्त्रियाँ पहना करती है।
शल्क—पु०[स० शल+क]१. टुकड़ा। खंड। २. कुछ विशिष्ट फलों का ऊपरी कड़ा छिलका। ३. मछली के शरीर पर का छिलका, जो कड़ा और चमकीला होता है। (स्केल)
शल्कल—पु० [स०√ शल् (संवरण करना आदि) +कलन्]=शल्क।
शल्कली—पु०[स० शल्कल+इनि शल्कलिन्] मछली।
शल्यलि—पु०[स०√शल्+मलच्-इनि, इञ् वा] शाल्मली वृक्ष। सेमल।
शल्य—पु० [स०√ शल+यत्]१.मद्र देश के एक राजा का नाम जो द्रौपदी के स्वयंवर के समय भीमसेन के साथ मल्लयुद्ध मे हार गये थे। २. एक प्रकार का तीर। ३.फोड़ों आदि की चीर-फाड़ के द्वारा की जानेवाली चिकित्सा। ४. हड्डी। ५. आँख मे सुरमा लगाने की सलाई। ६. छप्पय के ५६ वें भेद का नाम। इसमे १५ गुरु १२२ लघु कुल १३७ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ७ मैनफल। ८. सफेद खैर। ९. शिंगि मछली। १०. लोध। ११. बेल का पेड़। १२. साही नामक जन्तु। १३. सांग। बरछी। १४. दुर्वचन। १५. पाप। १६. वे पदार्थ जिनसे शरीर मे किसी प्रकार की पीड़ा या रोग आदि उत्पन्न होता है

**शल्यकंठ**—पु०[सं० ब० स०] साही जंतु।

**शल्यक**—२०[स० शल्य√कै (क)+क]१. साही नामक जन्तु। २. मैनफल। ३. खदिर। खैर। ४. बेल का पेड़ या फल। ५ लोध। ६ एक प्रकार की मछली।
वि० १ शल्य-संबंधी। २. शल्य चिकित्सा या शल्य कर्म से संबंध रखने-वाला। (सर्जिकल)

**शल्य-कर्त्तन**—पु० [स० ब० स०] रामायण के अनुसार एक प्राचीन जनपद।

**शल्य कर्त्ता**—पु०[स०√शल्य√कृ+तृच्] शल्यकार।

**शल्यकार**—पु० [स० शल्य √कृ+अण्] वह जो शल्य-चिकित्सा का अच्छा ज्ञाता हो; या शल्य-चिकित्सा करता हो। (सर्जन)

**शल्यकारी**—स्त्री० [स०] शल्य अर्थात् चीर-फाड करके चिकित्सा करने की क्रिया। (सर्जरी)

**शल्यकी**—स्त्री०[सं० शल्यक—ङीप्] साही।

**शल्य-क्रिया**—स्त्री०[स० ष०त०स०] शारीरिक विकार को दूर करने के लिए की जानेवाली चीर-फाड। (सर्जरी)

**शल्य-चिकित्सक**—पु०[स०]=शल्यकार।

**शल्य-चिकित्सा**—स्त्री० [स०]=शल्यकारी।

**शल्यज नाड़ी व्रण**—पु०[सं० नाड़ी-व्रण-ष० त० सं० शल्यज—नाडी व्रण कर्म०स०] नाडी मे होनेवाला एक प्रकार का व्रण या घाव जो नाडी मे ककडी या काँटा पहुँच जाने पर होता है।

**शल्य-तंत्र**—पु०[स० मध्यम० स०] वह विद्या जिसमे शल्य-चिकित्सा के सब अगो का विवेचन हो।

**शल्य-लोम (मन्)**—पु०[स० ब० म०] साही।

**शल्य-शालक**—पु०[स० ष० त० स०]=शल्यकारी।

**शल्य-शास्त्र**—पु० [सं० ष० त०] चिकित्सा शास्त्र का वह अग जिसमे शरीर मे गडे हुए काँटों आदि के निकालने का विधान रहता है। (सर्जरी)

**शल्या**—स्त्री०[स० शल्य—टाप्]१. मेदा नाम की ओषधि। २. नाग वल्ली। ३. विकंकत।

**शल्यारि**—पु०[स० ष० त० स०] युधिष्ठिर।

**शल्योद्धार**—पुं०[स० ष० त० स०] शरीर मे गड़े हुए काँटे, तीर आदि को निकालने का कार्य।

**शल्योपचार**—पु०[स० मध्य०स०] चिकित्सा क्षेत्र मे, शल्य के द्वारा किया जानेवाला उपचार। चीर-फाड। (ऑपरेशन)

**शल्योपचारक**—पु० =शल्योपचारी।

**शल्योपचारिक**—वि०[स० ष० त०] शल्योपचार-संबंधी।

**शल्योपचारी**—पु०[स० शल्योपचार+इनि] वह जो शल्योपचार द्वारा चिकित्सा करता हो। (सर्जिकल आपरेटर)

**शल्ल**—पु०[स० शल्√ला (लेना)+क—शल+लच् वा]१. चमडा। २. वृक्ष की छाल। ३. मेंढक।
वि० शिथिल तथा सुस्त।

**शल्लक**—पु०[स० शल्ल+कन्]१. शोणवृक्ष। सलई। २. साही नामक जन्तु। ३. शरीर की खाल या चमडा।
स्त्री०[तु०] बकवाद।

**शल्लकी**—स्त्री०[सं० शल्लक—ङीप्]१. साही। २ सलाई का पेड़।

**शल्व**—पु०[शल्+व] शाल्व नामक एक प्राचीन भूखण्ड।

**शव**—पु [स० √शव् (गमनादि)+अच्]१. जीवनी-शक्ति से रहित शरीर। देह जिसमे से प्राण-पखेरु उड़ गये हों। लाश। २. लाक्षणिक अर्थ में ऐसी वस्तु जो अचेष्ट और निर्जीव हो चुकी हो। ३. जल।

**शवच्छेद(न)**—पु०=शव-छेद (न)

**शवच्छेद (न)**—पु०[स० ष०त०]१. वैज्ञानिक अनुसधान के लिए शव का किया जानेवाला शल्योपचार। २. दे० 'शव-परीक्षा'।

**शवता**—स्त्री०[स० शव+तल्—टाप्]१ शव का भाव। २. निर्जीवता। मृदापन।

**शव-दाह**—पुं०[सं० ष० त०] हिन्दुओं मे एक सस्कार जिसमे शव जलाया जाता है।

**शव-द्रव्य**—पु०[स० ष० त०] मृत शरीर पर डाला जानेवाला कबल या चादर। कफन।

**शवधान**—पु०[स० ब० स०] पुराणानुसार शरधान प्रदेश का दूसरा नाम।

**शव-परीक्षा**—स्त्री०[सं० ष० त०] सदिग्धावस्था या सन्दिग्ध अवस्था मे मरे हुए व्यक्ति के शव की वह जाँच या परीक्षा जिससे यह जाना जाता है कि मृत्यु आकस्मिक और स्वाभाविक हुई है या किसी के हत्या करने पर हुई है। (पोस्ट मार्टेम)

**शव-भस्म**—पु० [सं० ष० त०] चिता की भस्म जो शिव जी शरीर पर लगाते थे।

**शव-मंदिर**—पु०[स० ष० त० स०]१. श्मशान। मरघट। २ समाधि। मकबरा।

**शव-यान**—पु०[स०ष०त०]१ अरथी जिसपर शव ले जाते हैं। टिकठी। २. वह सवारी जिसमें मुर्दे ढोये जाते हैं।

**शवर**—पु०[स० शव+अरन् बाहु० शव√रा (लेना)+क वा] [स्त्री० शबरी] शबर। (दे०)

**शव-रथ**—पु०[स०]=शव-यान।

**शबरी**—स्त्री०[सं० शवर-ङीप्]=शबरी।

**शवल**—पु०[सं० √शाप् (निन्दा करना)+कलन्, ष्=ब]१. चीता। चित्रक। २. जल। पानी।
वि० चित-कबरा। शबल।

**शवला**—स्त्री०[सं० शवल—टाप्] चितकबरी गाय।

**शवलित**—भू० कृ०[सं० शवल+इतच्]=शबलित।

**शवली**—स्त्री० [सं० शवल—ङीप्] चितकबरी गाय।

**शव-शयन**—पु०[सं० ब० स०] श्मशान। मरघट।

**शव-समाधि**—स्त्री०[सं० ष० त०] किसी महात्मा का अथवा कुछ विशिष्ट रोगों के कारण मरे हुए व्यक्ति का शव जल में प्रवाहित करने अथवा गाडने का एक संस्कार।

**शव-साधन**—पुं०[स० तृ० त०] तंत्र में, शव पर या श्मशान में बैठकर मत्र जगाने की क्रिया।

**शवाक्ष**—पुं०[सं० उपमि० स०]१. मनुष्य के शव का मांस। २. सड़ा-गला अन्न।

**शवासन**—पुं०[स० शव+आसन मध्य० स०] हठयोग में एक प्रकार का

आसन जिसमें मृत व्यक्ति की तरह चित्त लेटकर शरीर के सब अंग बिल्कुल ढीले या शिथिल कर दिये जाते हैं।

**शव्य**—पु०[स० शव+यत्] वह कृत्य जो शव को अन्त्येष्टि क्रिया के लिए ले जाने के समय होता है।
वि० शव सम्बन्धी। शव का।

**शव्वाल**—पुं०[अ०] दसवाँ अरबी महीना।

**शश**—पुं०[स० √शश् (गमनादि)+अच्] १. खरगोश। २. चन्द्रमा का कलंक या लांछन। ३. लोध। ४. कामशास्त्र में चार प्रकार के पुरुषों में से ऐसा पुरुष जो सर्वगुण सम्पन्न हो। यह मधुर-भाषी, सत्यवादी, सुशील तथा कोमलांग होता है।
वि० [फा०] छ।
पु० छ की संख्या।

**शशक**—पु०[स० शश+क] खरगोश।

**शशगानी**—पु०[फा० शश=छ+गानी?] चांदी का एक प्रकार का सिक्का जो फिरोजशाह के राज्य में प्रचलित था।

**शशधर**—पु०[फा०] चौसर के पासे में वह घर जहां पहुंच कर गोटी रुक जाती है और इस प्रकार खिलाड़ी निरुपाय हो जाता है।
वि०१ निरुपाय। २. चकित। ३. हैरान।

**शशधर**—पु०[स० ष० त०]१ चन्द्रमा। २. कपूर।

**शशभृत्**—पु०[स०शश√भृ(भरण करना)+क्विप्—तुक्] १. चन्द्रमा। २ कपूर।

**शशमाही**—वि०[फा०] हर छ. महीने पर होनेवाला। छमाही।

**शशमौलि**—पु०[स० ब० स०] शिव।

**शश-लक्षण**—पु०[स० ब० स०] चन्द्रमा।

**शश-लांछन**—पु०[स० ब० स०] चन्द्रमा।

**शश-शृंग**—पु० [स० ष० त० स०] वैसी ही असंभव या अनहोनी बात अथवा कार्य जैसा खरगोश को सींग होना होता है। ('आकाश-कुसुम' की तरह प्रयुक्त)

**शश-स्थली**—स्त्री०[स० उपमि० स०] गंगा-यमुना के बीच का प्रदेश। दोआब।

**शशांक**—पु०[स० ब० स०]१. चन्द्रमा। २. कपूर।

**शशांकज**—पु०[स०शशांक√जन् (उत्पन्न होना)+ड] बुध जो चन्द्रमा का पुत्र कहा गया है।

**शशांक-शेखर**—पु०[स० ब० स०] महादेव। शिव।

**शशांक-सुत**—पु०[स० ष०त० स०] चन्द्रमा का पुत्र बुध (ग्रह)।

**शशांकोपल**—पु०[स० मध्यम० स०] चंद्रकांतमणि।

**शशा**—स्त्री०[शश-टाप्] मादा खरगोश।

**शशाद (न)**—पु०[स० शश√अद्(खाना)+ल्यु—अन] बाज नाम का पक्षी।

**शशि (शिन्)**—पुं०[सं० शश+इनि] १. चन्द्रमा। इंदु। २. मोती। ३. छः की संख्या का वाचक शब्द। ४. छप्पय के ५४वें भेद का नाम। इसमें १७ गुरु और ११८ लघु कुल १३५ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं। ५. रगण के दूसरे भेद (ISS) की संज्ञा।

**शशिक**—पु०[स० शशि+कन्]१. एक प्राचीन जनपद। २. उक्त जनपद में रहनेवाली जाति।



**शशिकर**—पु०[सं० ष० त० स०] चन्द्रमा की किरण।

**शशि-कला**—स्त्री०[स० ष० त० स०] १ चन्द्रमा की १६ कलाओं में से हर एक। २. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में ४ नगण और १ सगण होता है।

**शशिकांत**—पुं०[सं० ब० स०]१. चन्द्रकांत मणि। २. कुमुद। कोई।

**शशिखंड**—पु०[सं० ष० त० या ब० स०]१. चन्द्रमा की किरण। २. महादेव।

**शशिज**—पुं०[सं० शशि√जन् (उत्पन्न करना)+ड] चन्द्रमा का पुत्र, बुध (ग्रह)।
वि० शशि से उत्पन्न।

**शशि-तिथि**—स्त्री०[स० ष० त० स०] पूर्णिमा। पूर्णमासी।

**शशि-दैव**—पुं०[स० ब० स०] मृगशिरा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देव चन्द्रमा कहे गये हैं।

**शशिधर**—पु०[सं० √धृ+अच् ष० त० स०] शिव।

**शशिनी**—स्त्री०[स०] चंद्रमा की १६ कलाओं में से एक।

**शशि-पुत्र**—पु०[स० ष०त०स०] बुध (ग्रह) जो चन्द्र का पुत्र कहा गया है।

**शशिपुष्प**—पु०[सं० ष० त०] कमल। पद्म।

**शशि-पोषक**—वि०[स० ष० त० स०] चन्द्रमा का पोषण करनेवाला।
पु० उजला पाख। शुक्ल पक्ष।

**शशि-प्रकाशी**—स्त्री०[स०] संगीत में कनाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**शशि-प्रभ**—वि० [स० ब० स०] चन्द्रमा के समान प्रभावाला।
पु० १. मोती। २. कुमुद। कुई।

**शशि-प्रभा**—स्त्री०[स० शशिप्रभ-टाप्] ज्योत्स्ना। चाँदनी।

**शशि-प्रिय**—पु०[स० ष० त० स०]१. कुमुद। कोई। २. मोती।

**शशि-प्रिया**—स्त्री०[स० शशिप्रिय—टाप् ष० त०] सत्ताइसों नक्षत्र जो चन्द्रमा की पत्नियां माने जाते हैं। (पुराण)

**शशि-भाल**—पु०[सं० ब० स०] महादेव। शंकर।

**शशि-भूषण**—पु०[स० ब० स०] शिव। महादेव।

**शशिभृत्**—पुं०[स० शशि√भृ (भरण करना)+क्विप्-तुक्] शिव। महादेव।

**शशि-मंडल**—पु०[स० ष० त० स०] चन्द्रमा का घेरा या मंडल। चन्द्र-मंडल।

**शशि-मणि**—पुं०[स० मध्यम० स०] चन्द्रकांत मणि।

**शशि-मुख**—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० शशिमुखी] शशि सदृश सुन्दर मुखवाला।

**शशि-मौलि**—पु०[स० ब० स०] शिव। महादेव।

**शशि-रस**—पु०[स० ष० त० स०] अमृत।

**शशि-रेखा**—स्त्री०[स० ष० त० स०] चन्द्रमा की एक कला।

**शशि-लेखा**—स्त्री० [स० ष० त० स०]१ चन्द्रमा की कला। २ गिलोय। गुडूच। ३. बकुची।

**शशि-वदना**—वि०[ब० स०] शशि-मुखी।
स्त्री० एक प्रकार का वृत्त, जिसके प्रत्येक चरण में १ नगण(III) और १ यगण (ISS) होता है। इसे चौवसा, चउरस्रा और पादाकुलक भी कहते हैं।

**शशि-शाला**—स्त्री०[ष० त० या फा० शीशा+सं० शाला] शीशों का बना हुआ या बहुत से शीशों से सजा हुआ घर। शीश-महल।

**शशि-शेखर**—पुं०[स० ब० स०] शिव। महादेव।

**शशि-शोधक**—वि०[सं० ष० त० स०] चन्द्रमा की कलाओं का शोधक।

पुं० अंधेरा पाख। कृष्णपक्ष।

**शशि-सुत**—पु०[स० ष० त०] चन्द्रमा का पुत्र, बुध (ग्रह)।

**शशि-हीरा**—पु०[स०+हिं०] चन्द्रकांत मणि।

**शशी**—पुं०=शशि।

**शशीकर**—पु०[सं० शशिकर] चन्द्रमा की किरण।

**शशीश**—पु० [स० ष० त०] १. शिव। महादेव। २. कार्तिकेय।

**शश्वत्**—वि०=शाश्वत।

**शष्कुली**—स्त्री० [सं० शष्कुल—ङीप्] १. पूरी, पक्वान्न आदि। २. कान का छेद। ३ सौरी मछली।

**शष्प**—स्त्री० [स० शष+पक्] १. नई घास। २. नीली दूब। ३. ज्ञान या बुद्धि का नाश। ४. उपरुपर के बाल।

**शसन**—पु०[सं०√ शस् (वध करना)+ल्युट्—अन] १. बलि के निमित्त पशु का किया जानेवाला वध। २. हत्या।

**शसा**—पु०[स० शस] खरगोश। खरहा।

**शसि**—पु०=शशि।

**शसी**—पुं०=शशि।

**शस्त**—पु०[स०√ शस् (कल्याण करना)+क्त] १. शरीर। बदन। २ कल्याण। मंगल।

भू० कृ० १. प्रशस्त। २. प्रशंसित। ३ जो मार डाला गया हो। निहत। ४ आहत। घायल। ५. मांगलिक।

पु०[फा०]१. वह हुड्डी या बालों का छल्ला जो तीर चलाने के समय अंगूठे में पहना जाता था। २. निशाना। लक्ष्य।

क्रि० प्र०—बाँधना।—लगाना।

३ दूरबीन की तरह का वह यंत्र जिससे जमीन नापने के समय उसकी सीध देखी जाती है। ४. मछली फँसाने का काँटा। बंसी।

**शस्तक**—पु०[सं० शस्त+कन्]हाथ में पहनने का चमड़े का दस्ताना। अगुलित्र।

**शस्ति**—स्त्री०[सं० √शस् (कल्याण करना)+क्तिन्] स्तुति। प्रशंसा। प्रशस्ति।

**शस्त्र**—पुं०[स० √शस्+ष्ट्रन्] १. कोई ऐसी चीज जिससे लड़ाई-झगड़े या युद्ध के समय शत्रु पर प्रहार किया जाता हो। हथियार। २ लाक्षणिक रूप में कोई ऐसी चीज या बात जिसके द्वारा विपक्षी या विरोधी को दबाया अथवा शांत किया जाता हो। (बेपन) ३ किसी प्रकार का उपकरण या औजार। ४. लोहा। ५. फौलाद। ६. स्तोत्र। ७. कुछ पढ़कर सुनाना। पाठ।

**शस्त्रक**—पुं०[सं० शस्त्र+कन्] लोहा।

**शस्त्र-कर्म (र्मन्)**—पुं० [स०] घाव या फोड़े में नश्तर लगाना। फोड़ा आदि की चीर-फाड़ का काम। शल्यकारी।

**शस्त्र-क्रिया**—स्त्री० [सं० ष० त० स०] १. शस्त्र-कर्म। २. शल्योपचार।

**शस्त्र-गृह**—पु० [सं० ष० त० स०]=शस्त्रागार।

**शस्त्रजीवी (विन्)**—पुं०[स० शस्त्र√ जीव् (जीवित रहना)+णिनि शस्त्रजीविन्] योद्धा। सैनिक।

**शस्त्रदेवता**—पु०[सं० ष० त० स०] युद्ध का अधिष्ठाता देवता।

**शस्त्रधर**—पु०[सं० ष० त०] योद्धा। सैनिक।

**शस्त्रधारी(रिन्)**—वि०[स० शस्त्र√धृ+णिनि] [स्त्री० शस्त्रधारिणी] शस्त्र धारण करनेवाला। हथियारबंद।

पु० १. योद्धा। सैनिक। २ एक प्राचीन देश। ३. सिलहपोश नाम का जंतु।

**शस्त्रपाणि**—पु०[सं० ब० स०] शस्त्रधारी।

**शस्त्रभृत**—पुं०[स०]=शस्त्रधारी।

**शस्त्र-विद्या**—स्त्री०[सं० ष० त०]१ शस्त्र चलाने का कौशल या ज्ञान। २ यजुर्वेद का उपवेद धनुर्वेद, जिसमें सब प्रकार के अस्त्र चलाने की विधियों और लड़ाई के संपूर्ण भेदों का वर्णन किया गया है।

**शस्त्रशाला**—स्त्री०[स० ष० त०]=शस्त्रागार।

**शस्त्रशास्त्र**—पु०[सं० ष० त०]=शस्त्रविद्या।

**शस्त्रहत चतुर्दशी**—स्त्री०[स० शस्त्र-हत तृ० त०—चतुर्दशी ष० त०] गौण आश्विन कृष्ण चतुर्दशी और गौण कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी। इन दोनों तिथियों में उन लोगों का श्राद्ध किया जाता है, जिनकी हत्या शस्त्रों द्वारा होती है।

**शस्त्राख्य**—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार का केतु। (बृहत्संहिता)

**शस्त्रागार**—पु०[स० ष० त०स०] १. शस्त्र आदि रखने का स्थान। शस्त्रशाला। शस्त्रालय। सिलहखाना। २ वह स्थान जहाँ पर अनेक प्रकार के शस्त्र प्रदर्शित किए अथवा सुरक्षित रखे जाते हो।

**शस्त्राजीव**—पु०[स० शस्त्र-आ√जीव् (जीवित रहना)+अच् ब० स०] =शस्त्रजीवी।

**शस्त्रायस**—पु० [स० मध्यम स० समा०—अच्] ऐसा लोहा जिससे शस्त्र बनाये जाते हैं।

**शस्त्रालय**—पु०[स० ष० त०]=शस्त्रागार।

**शस्त्री**—पु०[स० शस्त्र+इनि शस्त्रिन्]१. वह जो शस्त्र आदि चलाना जानता हो। २. वह जिसके पास शस्त्र हो। ३ छोटा शस्त्र, विशेषत. छुरी या चाकू।

**शस्त्रीकरण**—पु०[स० शस्त्र+च्वि√कृ+ल्युट्—अन, दीर्घ] आक्रमण आदि से राष्ट्र की रक्षा के उद्देश्य से सेना तथा निवासियों को शस्त्रों आदि से सज्जित करना।

**शस्त्रोपजीवी (विन्)**—पु०[स० शस्त्र-उप√जीव् (जीवित रहना)+णिनि] शस्त्रजीवी। (दे०)

**शस्य**—पु०=शष्प।

**शस्य**—वि०[स०√शस्+ यत्[१. प्रशंसनीय। २ बढ़िया।

पु० १ नई घास। कोमल तृण। २. वृक्ष का फल। ३. फसल। ४. अन्न। ५ प्रतिभा का नाश या हानि। ६. सद्गुण।

**शस्यक**—पु०[सं० शस्य+कन्] एक प्रकार का रत्न।

**शस्यागार**—पु०[स० ष० त० स०] खलिहान।

**शहंशाह**—पुं०[फा०] १ राजाओं का राजा। सम्राट्। २. चक्रवर्ती राजा।

**शहंशाही**—वि०[फा०]१. शहंशाहों में होनेवाला। २. शहंशाह द्वारा

किया हुआ। ३. शाहों का सा। शाही। राजसी। जैसे—शहंशाही ठाठ-बाट।

स्त्री० १. शहंशाह होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २. शहंशाह का पद। ३. लेन-देन का खरापन।

**शह**—पुं० [फा० शाह का संक्षिप्त रूप] १. बहुत बड़ा राजा। बादशाह। २. दूल्हा। वर।

वि० बड़ा और श्रेष्ठ।

स्त्री० [फा०] १. शतरंज के खेल में कोई मोहरा किसी ऐसे स्थान पर रखना जहाँ से बादशाह उसकी घात में पड़ता हो।

क्रि० प्र०—खाना।—देना।—लगाना।

२. गुप्त रूप से किसी को भड़काने या उभारने की क्रिया या भाव। जैसे—ये तुम्हारी शह पाकर ही तो इतना उछलते है।

क्रि० प्र०—देना।

३. गुड्डी, पतंग या कनकौवे आदि को धीरे-धीरे डोर ढीली करते हुए आगे बढ़ाने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—देना।

**शहचाल**—स्त्री० [फा० शह+हिं० चाल] शतरंज में बादशाह की वह चाल जो बाकी सब मोहरों के मारे जाने पर चली जाती है।

**शहजादा**—पुं० [फा० शाहजादः] [स्त्री० शहजादी] १. शाह का बेटा। राजपुत्र। २. युवराज।

**शहजादी**—स्त्री० [फा० शहजादी] १. राजकुमारी। २. युवराज्ञी।

**शहजोर**—वि० [फा०] [भाव० शहजोरी] बलवान। ताकतवर।

**शहजोरी**—स्त्री० [फा०] १. शहजोर होने की अवस्था या भाव। २. बल-प्रयोग। जबरदस्ती।

**शहतूत**—पुं०=शहद।

**शहतीर**—पुं० [फा०] लकड़ी का चीरा हुआ बहुत बड़ा और लंबा लट्ठा जो प्रायः छत छाने के काम आता है।

**शहतूत**—पु० [फा०] १. तूत का पेड़ और उसका फल। २. उक्त वृक्ष की मीठी फली।

**शहद**—पुं० [अ०] एक बहुत प्रसिद्ध मीठा, गाढ़ा और परम स्वादिष्ट तरल पदार्थ जो कई प्रकार के फीके विशेषतः मधूमक्खियाँ अनेक प्रकार के फूलों के मकरन्द से संग्रह करके अपने छत्तों में रखती हैं। मधु।

**विशेष**—यह प्रायः सभी प्रकार के रोगों मे गुणकारी माना जाता और सभी अवस्थाओं के प्राणियों के लिए लाभ-दायक माना जाता है।

**पद—शहद की छुरी**=मीठी छुरी। (देखें)

**मुहा०—शहद लगाकर अलग होना**=उपद्रव का सूत्रपात करके अलग होना। आग लगाकर दूर होना। **शहद लगाकर चाटना**=किसी निरर्थक पदार्थ को यों ही लिए रहना और उसका कुछ भी उपयोग न कर सकना। (व्यंग्य) जैसे—आप अपनी पुस्तक शहद लगाकर चाटिये, मुझे उससे कहीं अच्छी पुस्तक मिल गई है।

वि० अत्यधिक मीठा।

**शहनशीन**—पुं० [फा०] बहुत बड़े आदमियों के बैठने के लिए सबसे ऊँचा या मुख्य आसन।

**शहना**—पुं० [अ० शहनः] १. खेत की चौकसी करनेवाला। शस्यरक्षक। २. खेतिहरों से राज-कर उगाहनेवाला अधिकारी। उदा०—राज्य का शहना आया, आठवाँ अंश ले गया।—वृन्दावनलाल वर्मा। ३. वह व्यक्ति जो जमींदार की ओर से असामियों को बिना कर दिए, खेत की उपज उठाने से रोकने और उसकी रक्षा के लिए नियुक्त किया जाता है। ४. नगर का कोतवाल।

**शहनाई**—स्त्री० [फा०] १. बाँसुरी या अलगोजे के आकार का, पर उससे कुछ बड़ा, मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला एक प्रकार का बाजा जो प्रायः रोशन-चौकी के साथ बजाया जाता है। नफीरी। २. रोशनचौकी।

**शहबाज**—पुं० [फा०] एक प्रकार का बड़ा बाज पक्षी।

**शहबाला**—पुं० [फा० ] वह छोटा बालक जो विवाह के समय दूल्हे के साथ पालकी पर अथवा उसके पीछे घोड़े पर बैठकर वधू के घर जाता है।

**शहबुलबुल**—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बुलबुल जिसका सारा शरीर लाल, कंठ काला और सिर पर सुनहले रंग की चोटी होती है।

**शहमात**—स्त्री० [फा०] शतरंज के खेल में ऐसी मात जिसमें बादशाह को केवल शह ही मिस्त देकर इस प्रकार मात किया जाता है कि बादशाह के चलने के लिए कोई घर ही नही रह जाता।

**शहर**—पुं० [फा० शह्र] मनुष्यों की बस्ती जो कस्बे से बहुत बड़ी हो, जहाँ हर तरह के लोग रहते हों और जिसमें अधिकतर बड़े पक्के मकान हों। नगर।

**शहर-पनाह**—स्त्री० [फा०] वह दीवार जो किसी नगर की रक्षा के लिए उसके चारों ओर बनाई जाय। शहर की चार-दीवारी। प्राचीर। नगरकोटा।

**शहरी**—वि० [फा०] १. शहर से संबंध रखनेवाला। शहर का। २. शहर का निवासी। नागरिक। ३. शहरियों का सा।

**शहवत**—स्त्री० [अ०] १. इच्छा, विशेषतः भोग-विलास की इच्छा। २. स्त्री-संभोग के लिए होनेवाली इच्छा। काम-वासना। ३. स्त्री-संभोग। मैथुन।

**शहवत परस्त**—वि० [अ०+फा०] जिसमें भोग-विलास या स्त्री-संभोग की प्रबल प्रवृत्ति हो।

**शह-सवार**—वि० [फा०] कुशल घुड़सवार।

**शहादत**—स्त्री० [अ०] १. शहीद होने की अवस्था या भाव विशेषतः जेहाद में लड़ते हुए प्राण देना। २. वध। ३. गवाही। ४. प्रमाण।

**शहाना**—वि० [फा० शहाना] [स्त्री० शाहानी] १. शाहों का। २. शाहों में होनेवाला। ३. शाहों जैसा। राजसी। ४. उत्तम। बढ़िया।

पुं० १. कपड़ों का वह जोड़ा जो विवाह के समय वर को पहनाया जाता है। २. मुसलमानों में विवाह के समय गाया जानेवाला एक प्रकार का लोक-गीत।

पुं० [देश० या फा० शाही से] सम्पूर्ण जाति का एक राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

**शहाना कान्हड़ा**—पु० [हि० शहाना+कान्हड़ा] संपूर्ण जाति का एक प्रकार का कान्हड़ा राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

**शहाब**—पु० [फा०] [वि० शहाबी] गहरा लाल रंग। विशेषत. कुसुम से तैयार किया जानेवाला गहरा लाल रंग।

**शहाबा**—पुं० दे० 'अगिया बैताल'।

**शहाबी**—वि० [फा०] शहाब के रंग का। गहरा लाल।
पु० उक्त प्रकार का रंग।

**शहीद**—वि० [अ०] १ अपने धर्म, सदाचार या कर्तव्य-परायणता की रक्षा के निमित्त अपने प्राण देनेवाला। जैसे—शहीद हकीकत राय। २. आज-कल (वह व्यक्ति) जो स्वतन्त्रता की रक्षा अथवा उसकी प्राप्ति के लिए अपनी जान गँवाता हो। जैसे—शहीद भक्त सिंह।

**शहीदी**—वि० [अ० शहीद] १ शहीद संबंधी। २. जो शहीद होने के लिए तैयार हो। जैसे—शहीदी जत्था। ३. लाल रंग।

**शांकर**—वि० [स० शंकर+अण्] १. शंकर-संबंधी। शंकर का। २. शंकराचार्य का। जैसे—शांकर भाष्य।
पु० १. शंकराचार्य का अनुयायी। २ एक प्रकार का छंद। ३ एक प्रकार की सोमलता। ४. आर्द्रा नक्षत्र, जिसके देवता शिव है। ५ सांड।

**शांकरी**—पुं० [सं० शंकर+इङ्] शिव के पुत्र गणेश जी। २. कार्तिकेय। ३. अग्नि। ४. शमी वृक्ष।
स्त्री० [शांकर-ङीप्] शिव द्वारा निर्धारित अक्षरों का क्रम। शिव-सूत्र।

**शांकव**—वि० [स० शंकु+अञ्] जो शंकु के आकार या रूप में हो। जिसके नीचे का भाग चौड़ा या मोटा हो और ऊपर का भाग बराबर पतला या कोणाकार होता गया हो। (कोनिक)

**शांख**—पुं० [स० शंख+अण्] शंख की ध्वनि।
वि० शंख-संबंधी। शंख का।

**शांखायन**—पु० [स० शंख+फिञ्-आयन] एक गृह्य और श्रौत सूत्रकार ऋषि जिनका कौशीतकी ब्राह्मण ग्रंथ है।

**शांखिक**—वि० [स० शंख+ठञ्-इक] [स्त्री० शांखिकी] १ शंख संबंधी। २ शंख का बना हुआ।
पु० १. वह जो शंख बजाता हो। २ वह जो शंख बनाता या बेचता हो।

**शांख्य**—वि० [स० शंख-यञ्] १. शंख-संबंधी। २. शंख का बना हुआ।

**शांडिक**—पु० [सं० षंड+ठञ्-इक] सांड़ा नामक जंतु।

**शांडिल्य**—पु० [स० शांडिल+यञ्] १. एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि जो स्मृतिकार भी कहे गये है। २. उक्त मुनि के कुल या गोत्र मे उत्पन्न व्यक्ति। ३ बेल वृक्ष या उसका फल। ४. अग्नि।

**शांतपार्य**—अव्य० [स०] एक पद जिसका अर्थ है 'पाप शात हो'। और जिसका प्रयोग किसी बड़े के सामने उसके कोप आदि से बचने की कामना से किया जाता था।

**शांत**—वि० [स०√शम् (शात होना)+क्त, निपा०, दीर्घ] १ (उत्पात या उपद्रव) जिसका शमन हो चुका हो या किया जा चुका हो। जो दबाया गया हो या दबा दिया गया हो। जिसकी उग्रता या प्रचडता न रह गई हो या नष्ट कर दी गई हो। जैसे—उपद्रव, क्रोध, या विद्रोह शात होना। २. (क्रिया या व्यापार) जिसका पूर्णत: अत या समाप्ति हो चुकी हो। जैसे—शीत शात होना। ३. जिसमे कोई आवेग, चचलता, वासना या विकार न रह गया हो। जैसे—वह बहुत शात भाव से जीवन बिताता है। ४. जिसने इन्द्रियों और मन को वश मे कर लिया हो। जितेन्द्रिय। ५. उत्साह, उमग, कर्मठता आदि से रहित। ६. चुप। मौन। ७ थका या हारा हुआ। श्रांत। ८. जिसकी उष्णता या ताप नष्ट हो चुका हो। जैसे—अग्नि या दीपक शान्त होना। ९ जिसकी घबराहट या चिंता दूर हो चुकी हो।
पु० १. साहित्य मे नौ रसो मे से अंतिम रस जो सब रसो मे प्रधान या सर्वोपरि माना गया है और जिसका स्थायी भाव निर्वेद अर्थात् काम आदि मनोविकारो का शमन माना गया है। (भक्ति-काल मे इस रस को विशेष महत्व प्राप्त हुआ था।)

**शांतता**—स्त्री० [स० शात+तल्-टाप्] शाति।

**शांतनव**—पु० [स० शन्तनु+अण्] [स्त्री० शांतनवी] राजा शांतनु के पुत्र भीष्म।

**शांतनु**—पु० [स० शातनु+डु] १ द्वापर युग के २१वे चन्द्रवशी राजा। २ ककड़ी।

**शांतस्वरूपी**—पु० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**शांता**—स्त्री० [स० शात-टाप्] १ श्रृगी ऋषि की पत्नी का नाम जिसके जनक दशरथ थे और पालक-पोषक अगराज लोमपाद थे। २ शमी-वृक्ष। ३. जाँबिला। ४. रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। ५ दूब। ६ सगीत मे, एक श्रुति।

**शांति**—स्त्री० [स०√शम् (शान्त होना)+क्तिन्] १ शात होने की अवस्था जिसमे उद्वेग, क्षोभ, चिंता, दु ख आदि का पूर्णत. अभाव होता है। चित्त का ठिकाने और स्वस्थ रहना। २ दिल का आराम, इतमीनान और चैन। ३. जन-समूह या समाज की वह अवस्था जिसमे उत्पात, उपद्रव मार-पीट, लडाई-झगडे, विद्वेष आदि का अभाव हो और फलत लोग निश्चित भाव से सुखपूर्वक जीवन बिताते हों। ४ राजनीतिक क्षेत्र मे, वह स्थिति जिसमे राज्य, राष्ट्र आपस मे लडते-झगडते या मार-पीट न करते हो। ५ वातावरण की वह स्थिति जिसमे नैसर्गिक तत्त्वो मे कोई उग्रता या प्रचडता न रहती हो। ६ ऐसी स्थिति जिसमें किसी प्रकार की अप्रिय या कटु ध्वनि या शब्द न होता हो। नीरवता। सन्नाटा। स्तब्धता। ७ ऐसी शारीरिक स्थिति जिसमे पीडा, रोग आदि का दमन या शमन हो चुका हो। (पीड़ा, उक्त सभी अर्थों मे) ८ जीवन या शारीरिक व्यापारों का अत या समाप्ति। मृत्यु। मौत। ९ गभीरता, धीरता आदि की सौम्य स्थिति। १०. धार्मिक दृष्टि से तृष्णा, राग, विराग, आदि से मुक्त या रहित होने की अवस्था। ११. कर्मकाड मे वह धार्मिक कृत्य जो अनिष्ट या अशुभ बातों का निवारण करने के लिए किया जाता है। जैसे—ग्रह-शांति, मूलशांति आदि। १२. दुर्गा का एक नाम।

**शांतिक**—वि० [स० शांति+ठक्] १ शांति-संबंधी। शांति का। २. शांति के परिणाम-स्वरूप होनेवाला।
पु० कर्मकाण्ड का शांति नामक कर्म।

**शांतिकर्म**—पु० [स०√मध्य० स०] वह पूजा-पाठ जो अनिष्ट, बाधा आदि की शांति के निमित्त किया जाता है।

**शांतिकलश**—पु० [सं० मध्यम० स०] शुभ अवसरों पर शांति के निमित्त स्थापित कलश।

**शांतिगृह**—पु० [स० ष० त०] वह स्थान जहाँ पर यज्ञ की समाप्ति के बाद स्नान करने का विधान होता था।

**शांतिद**—वि० [सं० शांति√दा+क] [स्त्री० शांतिदा] शांति देनेवाला। पुं० विष्णु।

**शांतिदाता (तृ)**—वि० [स० ष० त०] [स्त्री० शांतिदात्री] शांति देनेवाला।

**शांतिदायक**—वि० [सं० शांति√दा+ण्वुल् अक-युक्] [स्त्री० शांतिदायिका] शांति देनेवाला।

**शांतिदायी (यिन्)**—वि० [स०शांति√दा+णिनि-युक्] [स्त्री० शांतिदायिनी] शांति देनेवाला।

**शांतिनाथ**—पु० [स० ष० स०] जैनो के एक तीर्थंकर या अर्हत् का नाम।

**शांतिपर्व**—पुं० [स०√मध्य० स०] महाभारत का बारहवाँ और सब से बड़ा पर्व जिसमे युद्ध के उपरात युधिष्ठिर की चित्तशांति के लिए कही हुई बहुत सी कथाएँ, उपदेश और ज्ञान-चर्चाएँ है।

**शांतिपाठ**—पु० [स० मध्य० स०] १. किसी मागलिक कार्य के आरभ मे, विघ्न-बाधा दूर करने के लिए, किया जानेवाला धार्मिक पाठ या कृत्य। २. बराबर यह कहते रहना कि शांति रहे, शांति रहे।

**शांतिपात्र**—पु० [स० मध्यम० स०] वह पात्र जिसमे ग्रहों, पापो आदि की शांति के लिए जल रखा जाय।

**शांतिभंग**—पु० [स० ष० त०] १ शांत स्थिति मे होनेवाली गडबडी या बाधा। २ ऐसा अनुचित काम या उपद्रव जिससे जन-साधारण के सुख और शांतिपूर्वक रहने मे बाधा होती हो। (ब्रीच ऑफ पीस)

**शांतिवाचन**—पु० [स० मध्यम० स०] शांतिपाठ।

**शांतिवाद**—पु० [स० शांति√वद्+घञ्] [वि० शांतिवादी] आधुनिक राजनीति में वह वाद या सिद्धान्त जिसमे सब प्रकार की सैनिक शक्तियों के प्रयोगों और युद्धों का विरोध करते हुए यह कहा जाता है कि सब राष्ट्रों को शांतिपूर्वक रहना और आपसी झगडों को शांतिपूर्ण उपायों से निपटाना चाहिए। (पैसिफिज्म)

**शांति-वादी**—वि० [म०] शांतिवाद संबधी। शांतिवाद का।

पु० वह जो शांतिवाद के सिद्धान्तों का अनुयायी और समर्थक हो। (पैसिफ़िस्ट)

**शांति-सन्धि**—स्त्री० [सं० मध्य० स०] युद्ध के उपरांत युद्ध-रत राष्ट्रों में होनेवाली वह सधि जिसके द्वारा शांति स्थापित होती और परस्पर मित्रता का व्यवहार आरम्भ होता है। (पीस ट्रीटी)

**शांब**—पु० [स०]=सांब।

**शांबर**—वि० [स० शंबर+अण्] १ शंबर दैत्य संबधी। २ सौंबर मृग सबंधी।

पुं० लोध का पेड।

**शांबर-शिल्प**—पु० [स० कर्म० स०] इंद्रजाल। जादू।

**शांबरिक**—पुं० [सं० शम्बर+ठक्-इक] जादूगर। मायावी।

**शांबरी**—स्त्री० [सं० शांबर-ङीष्] १ माया। इन्द्रजाल। २. जादूगरनी।

पुं० १. एक प्रकार का चंदन। २. लोध। ३. मूसाकानी।

**शांभविक**—पु० [स० शंभु+ठञ्-इक] शस्त्र का व्यवसाय करनेवाला व्यक्ति।

**शांभूक**—पु० [सं० शांभु+कन्] घोघा।

**शांभर**—स्त्री० [स० शंभर+अण्] सौंभर झील।

पु० सौंभर नामक नमक।

**शांभव**—वि० [स० शंभु+अण्] १ शंभु-संबधी। शिव का। २ शंभु से उत्पन्न। ३. शिव का उपासक।

पु० १. देवदार। २. कपूर। ३. गुग्गुल। ४ एक प्रकार का विष।

**शांभवी**—स्त्री० [स० शांभव-ङीष्] १ दुर्गा। २ नीली दूब।

**शाइस्तगी**—स्त्री० [फा०] शाइस्ता होने की अवस्था या भाव।

**शाइस्ता**—वि० [फा० शाइस्तः] १. शिष्ट तथा सभ्य। २ नम्र तथा सुशील। ३. जिसे अच्छा आचरण या व्यवहार सिखाया गया हो।

**शाकंभरी**—स्त्री० [स० शाक√भृ (भरण करना)+खच्-मुम्-ङीष्] १ दुर्गा। २. सौंभर नगर का प्राचीन नाम।

**शाकंभरीय**—वि० [सं० शाकंभर+छ-ईय] सांभर झील से उत्पन्न। पु० सौंभर नमक।

**शाक**—वि० [स० शक+अण्] १ शक जाति संबधी। २ शक राजा का। ३. शक सम्वत् संबधी।

पु० १ वनस्पति। २. विशेषतः ऐसी वनस्पति जिसकी तरकारी बनाई जाती हो। ३. किसी वनस्पति के वे पत्ते जिनकी तरकारी बनाई जाती है। ४. उक्त की बनी हुई तरकारी। ५ सागवान। ६. भोजपत्र। ७. सिरिस। ८ सात द्वीपों मे से छठा द्वीप। ९ शक जाति के लोग। १०. एक युग, विशेषतः शक राजा शालिवाहन का युग। ११. उक्त के द्वारा चलाया हुआ सवत्। १२. शक्ति।

वि० [अ० शाक] १ भारी। २. दूभर। दुस्सह।

मुहा०—शाक गुजरना=कष्टकर प्रतीत होना। खलना।

३. कष्ट या दुःख देनेवाला (काम)।

**शाकट**—वि० [स० शकट+अण्] १ शकट या गाडी सबधी। २ (वह जो कुछ) गाडी पर लादा गया हो।

पु० १. गाड़ी खींचनेवाला पशु। २. गाडी पर लादा जानेवाला बोझ। ३. लिसोढ़ा। ४. धौ का पेड़। ५ खंत।

**शाकटायन**—पु० [स०शकट+फक्-आयन] १ शकट का पुत्र या वशज। २ एक बहुत प्राचीन सस्कृत वैयाकरण जिसका उल्लेख पाणिनि ने किया है। ३ एक दूसरे अर्वाचीन वैयाकरण जिनके व्याकरण का प्रचार जैनों में है।

**शाकटिक**—पुं० [स० शकट+ठक्-इक] १ सग्गड़ हाँकनेवाला व्यक्ति। २. गाड़ीवान।

**शाकटीन**—पु० [सं० शकट+खञ्-ईन] १. गाडी का बोझ। २ बीस तुला या दो हजार पल की एक पुरानी तौल।

**शाकद्रुम**—पुं० [सं० मध्यम० स०] १. वरण वृक्ष। २. सागौन।

**शाकद्वीपीय**—वि० [स० शाकद्वीप+छ-ईय] शक (द्वीप) का रहनेवाला।

पुं० ब्राह्मणों का एक वर्ग जिसे मग भी कहते है और शक द्वीप से आया हुआ माना जाता है।

**शाक-भक्ष**—वि० [सं० ब० स०] =शाकाहारी।

**शाकरी**—स्त्री० [सं० शाक√रा (लेना)+क ङीष्] देखो 'शाकारी'।

**शाकल**—वि० [सं० शकल+अण्] १ शकल अर्थात् अंश या खंड से संबंध रखनेवाला। २ शकल नामक रंग से बना या रँगा हुआ।
पुं० १ अंश। खण्ड। टुकड़ा। २. ऋग्वेद की एक शाखा या संहिता। ३ लकड़ी का बना हुआ जंतर या ताबीज। ४. एक प्रकार का साँप। ५ प्राचीन भारत में मद्र जनपद की राजधानी। (आजकल का स्यालकोट नगर)।

**शाकलिक**—वि० [सं० √शाकल+ठक्-इक] शकल या शाकल संबंधी।

**शाकली**—पुं० [सं० शाकल-ङीष्] एक प्रकार की मछली।

**शाकल्य**—पुं० [सं० शकल+यञ्] एक प्राचीन ऋषि जो ऋग्वेद की शाखा के प्रचारक थे और जिन्होंने पहले-पहल उसका पद पाठ किया था।

**शाकशाल**—पुं० [सं० शाक√शाल् (सुशोभित होना)+अच्] बकायन। महानिंब वृक्ष।

**शाका**—स्त्री० [सं० शाक-टाप्] हरीतकी। हड़। हर्रे।

**शाकारी**—स्त्री० [सं० शाकार+अण्-ङीष्] शाकों अथवा शाकरों की बोली जो प्राकृत का एक भेद है।

**शाकाष्टका**—स्त्री० [सं० मध्य० स०] फाल्गुन कृष्ण पक्ष की अष्टमी। (इस दिन पितरों के उद्देश्य से शाकदान किया जाता है।)

**शाकाष्टमी**—स्त्री० [सं० मध्यम० स०]=शाकाष्टका।

**शाकाहार**—पुं० [सं० ष०, त० स०] अनाज अथवा फल-फूल का भोजन। (मांसाहार से भिन्न)

**शाकाहारी**—पुं० [सं० शाकाहारिन्] वह जो केवल अन्न, फल और साग-भाजी खाता हो; मांस न खाता हो। निरामिषभोजी। (वेजीटेरियन)

**शाकिनी**—स्त्री० [सं० शाक+इनि-ङीष्] १. शाक अर्थात् शाक-भाजी की खेती। २. वह भूमि जिसमें साग-भाजी बोई जाती हो। [सं० शाकिन्—ङीप्] ३ एक पिशाची या देवी जो दुर्गा के गणों में समझी जाती है। डाइन। चुड़ैल।

**शाकिर**—वि० [अ०] १. शुक्र करने अर्थात् कृतज्ञता प्रकाशित करनेवाला। शुक्रगुजार। २. संतोषी।

**शाकी**—वि० [अ०] १. शिकायत करनेवाला। २ नालिश या फरियाद करनेवाला। ३ चुगल-खोर।

**शाकुंतल, शाकुंतलेय**—वि० [सं० शकुंतला+अण्, शकुंतला+ढक्-एय] शकुंतला संबंधी।
पुं० शकुंतला के गर्भ से उत्पन्न राजा भरत।

**शाकुंतिक**—पुं० [सं० शकुंत+ठञ्-इक] बहेलिया।

**शाकुन**—वि० [सं० शकुन+अण्] १. पक्षी संबंधी। चिड़ियों का। २. शकुन संबंधी।
पुं० १. बहेलिया। २. दे० 'शकुन'।

**शाकुनि**—पुं० [सं० शाकुन+इन] बहेलिया।

**शाकुनी**—पुं० [सं० शाकुन+इन, दीर्घ, नलोप शाकुनिन्] १. मछली पकड़नेवाला। मछुआ। २ शकुन का विचार करनेवाला पंडित। ३ एक प्रकार का प्रेत।

**शाकुनेय**—वि० [सं० शकुन+ढक्-एय] पक्षी-संबंधी। शकुन संबंधी।
पुं० १. बकासुर दैत्य का एक नाम। २ एक प्रकार का छोटा उल्लू।

**शाकुल**—पुं०=शाकुलिक।

**शाकुलिक**—पुं० [सं० शकुल+ठक्-इक] १. मछलियों का झोल या समूह। २. मल्लाह।

**शाक्त**—वि० [सं० शक्ति+अण्] १. शक्ति-संबंधी। बल-संबंधी। २. दुर्गा-संबंधी।
पुं० वह जो तांत्रिक रीति से शक्ति अर्थात् देवी की पूजा करता हो। शक्ति का उपासक, अर्थात् वाम-मार्गी।

**शाक्तागम**—पुं० [सं० ष० त० स०] शाक्तों का आगम या शास्त्र अर्थात् तंत्रशास्त्र।

**शाक्तिक**—पुं० [सं० शक्ति+ठक्-इक] १. शक्ति का उपासक। शाक्त। २. शक्ति (एक प्रकार का भाला) चलानेवाला। भाला-बरदार।

**शाक्तीक**—वि० [सं० शक्ति+ईकक्] शाक्तिक।

**शाक्तेय**—पुं० [सं० शक्ति+ढक्-एय] शक्ति का उपासक। शाक्त।

**शाक्य**—पुं० [सं० शक+यञ्+यत्-ञ्य वा] १ गौतम बुद्ध के वंश का नाम। २. गौतम बुद्ध।

**शाक्यमुनि**—पुं० [सं० कर्म० स०] गौतमबुद्ध।

**शाक्य सिंह**—पुं० [सं० सप्त० त०] गौतमबुद्ध।

**शाक्र**—पुं० [सं० शक्र+अण्] शक्र (इंद्र) संबंधी।
पुं० ज्येष्ठा नक्षत्र जिसके अधिपति इंद्र माने जाते हैं।

**शाक्री**—स्त्री० [सं० शक्र-ङीष्] १ दुर्गा। २. इन्द्राणी।

**शाक्वर**—पुं० [सं० √शक्+ष्वरप्-अण्] १. इन्द्र। २ इन्द्र का वज्र। ३ साँड़। ४. प्राचीन आर्यों का एक सरकार।

**शाख**—पुं० [सं० √शाख् (व्याप्त होना)+अच्] कृत्तिका का पुत्र, कार्त्तिकेय। २. भाँग। ३ करंज।
स्त्री० [सं० शाखा से फा०] १ वृक्ष की शाखा। डाली।
**मुहा०—(किसी बात में) शाख निकालना**—व्यर्थ दोष या मूल निकालना।
२ किसी वस्तु, संस्था आदि का वह अंश या विभाग जो उसके संबंध के अथवा उसकी तरह के कुछ काम करता हो। शाखा। ३ पशु का सींग। ४. शरीर का दूषित रक्त निकालने का सींग का उपकरण। सिंगी। ५.किसी बड़ी चीज के साथ लगा हुआ छोटा खंड या टुकड़ा। ६. नदी आदि की बड़ी धारा में से निकली हुई छोटी धारा। शाखा।

**शाखदार**—वि० [फा०] १. शाखाओं से युक्त। २ सींगवाला (पशु)।

**शाखसाना**—पुं० [फा०] १. झगड़ा। विवाद। २ तर्क-वितर्क। बहस। ३. किसी काम या बात में निकाला जानेवाला व्यर्थ का दोष। ४. किसी बात का कोई विशिष्ट अंग या पक्ष। ६ ईरान में फकीरों का एक फिरका जो अपने आप को घायल कर लेने की धमकी देकर लोगों से पैसे लेते हैं।

**शाखा**—स्त्री० [सं०] १. वृक्षों आदि के तने से इधर-उधर निकले हुए अंग। टहनी। डाल। २. किसी मूल वस्तु से इसी रूप में या इसी प्रकार के निकले हुए अंग। जैसे—नदी की शाखा।
**मुहा०—(किसी की) शाखाओं का वर्णन करना**=(क) गुण, महत्व आदि का वर्णन करना। उदा०—साखा बरनै रावरी छिजवर ठौरे ठौर।—दीनदयाल। (ख) शाखोच्चार करना।
३. किसी मूल वस्तु के वे अंग जो दूर रहकर भी उसके अधीन और उसके अनुसार काम करता हो। जैसे—किसी दुकान या बैंक की शाखा।

(शाँच, उक्त सभी अर्थों के लिए) ४. वेद की संहिताओं के पाठ और क्रम-भेद। ५. किसी विषय या सिद्धान्त के संबंध मे एक ही तरह के विचार या मत रखनेवाले लोगो का वर्ग। वर्ग। सम्प्रदाय। (स्कूल) ६. ज्ञान या मत से संबंध रखनेवाला किसी विषय की कई भिन्न भिन्न विचार-प्रणालियों या सिद्धान्तो मे से कोई एक। (स्कूल) ७ शरीर के हाथ और पैर नामक अग। ८. हाथों या पैरों की उँगलियाँ। ९. दरवाजे की चौखट। १०. घर का किसी ओर निकला हुआ कोना। ११. विभाग। हिस्सा। १२. किसी चीज का किसी प्रकार का अंग या अवयव।

**शाखा चंक्रमण**—पुं० [सं० ष० त०] १. एक डाल पर से दूसरी डाल पर कूद कर जाना। २. बिना किसी एक काम को पूरा किये दूसरे काम को हाथ मे ले लेना। ३ थोड़ा-थोडा करके काम करना।

**शाखाचंद्र-न्याय**—पुं० [स० मध्य० स०] उसी प्रकार मिथ्या बात को सत्य मानने का एक प्रकार का न्याय जैसे शाखा पर चंद्र का होना मान लिया जाय।

**शाखानगर**—पुं० [कर्म० स०] उप-नगर।

**शाखापित्त**—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमें हाथों-पैरों मे जलन और सूजन होती है।

**शाखापुर**—पु० [स०] उप-नगर।

**शाखामृग**—पु० [सं० ष० त०] १. बानर। बदर। २. गिलहरी।

**शाखायित**—वि० [स० शाखा+क्यङ्क्त+] शाखाओ से युक्त।

**शाखारंड**—पुं० [स०] ऐसा ब्राह्मण जो अपनी वैदिक शाखा को छोडकर किसी दूसरी वैदिक शाखा का अध्ययन करे।

**शाखालंबी**—वि० [सं०] वृक्ष की शाखा मे लटकने वाला।
पु० बंदरों की तरह का एक जंतु जो प्रायः वृक्षो की शाखाओं में लटका रहता है; और अधिक चल-फिर नही सकता।

**शाखा-वात**—पु० [स० ब० स०] हाथ या पैर मे होनेवाला वात रोग।

**शाखाशिफा**—स्त्री० [सं० ष० त० स०] पेड़ की वह शाखा जिसने जड का रूप धारण कर लिया हो।

**शाखी (खिन्)**—वि० [स० शाखा+इनि, दीर्घ, नलोप] १. (वृक्ष) जिसकी अनेक शाखाएँ हों। २ (संस्था) जिसके अधीनस्थ कार्यालय अनेक स्थानों पर हों। ३. किसी शाखा से संबंधित।
पुं० १. पेड़। वृक्ष। २. वेद। ३. वेद की किसी शाखा का अनुयायी। ४. पीलू वृक्ष। ५. तुर्किस्तान का निवासी।

**शाखीय**—वि० [सं० शाखा+छ-ईय] १. शाखा सबधी। शाखा का। २. शाखा पर का।

**शाखोच्चार**—पुं० [सं० ष० त० स०] १. विवाह के समय वर और वधू की ऊपर की पीढ़ियों का संबंधित पुरोहित द्वारा होनेवाला कथन। २. किसी के पूर्वजों के नाम ले-लेकर उनपर कलंक लगाना या उनके दोष बताना। (व्यंग)

**शाखोट**—पुं० [सं० ब० स०] सिहोर (पेड़)।

**शाख्य**—वि० [सं० शाखा+यत्]=शाखीय।

**शागिर्द**—पुं० [फा०] [भाव० शागिर्दगी] १. चेला। शिष्य। २. संबंध के विचार से किसी के द्वारा सिखाया-पढ़ाया हुआ व्यक्ति।

**शागिर्द-पेशा**—पुं० [फा० शागिर्द-पेशा] १. वह जो किसी के अधीन रहकर कोई काम सीखता हो। २. कर्मचारी। अहलकार। ३. खिदमतगार। ४. मकान के पास ही नौकर-चाकर के रहने के लिए बनाई हुई कोठरी।

**शागिर्दी**—स्त्री० [फा०] १. शागिर्द होने की अवस्था या भाव। शिष्यता। २. टहल या सेवा जो शागिर्द का कर्तव्य है।

**शाजिच**—पुं० [सं०] वि० १. प्रबल। २ शक्तिशाली। ३. प्रसिद्ध। ख्यात। १. ऐसा जौ जिसका छिलका या भूसी कूटकर निकाल दी गई हो। २. जौ का दलिया।

**शाज**—वि० [अ०] १. दुर्लभ। २. अद्भुत। अनोखा।
पद—शाजो नादिर=कभी-कभी यदा-कदा।

**शाट**—पु० [स०√शट् (डोरा)+अण्] १. कपड़े का टुकड़ा। २ कमर। में लपेटकर पहना जानेवाला कपडा। जैसे—धोती, तहमद आदि। ३. एक प्रकार की कुरती या कंतुही। ४. कोई ढीला-ढाला पहनावा। जैसे—चोगा।
पु०—[अ०] खेल में गेंद पर किया जानेवाला जोर का आघात।

**शाटक**—पु० [स०√शाट् (डोरा)+ण्वुल्-अक] वस्त्र। कपड़ा।

**शाटिका**—स्त्री० [स० शाटक+टाप्-इत्व] १ साडी। धोती। २ स्त्रियों की पहनने की धोती या साड़ी। ३. कचूर।

**शाटी**—स्त्री० [स० शाट-ङीष्] १. साडी। २. धोती।

**शाठ्य**—पु० [स० शठ+ष्यञ्] शठता।

**शाण**—पु० [स० क्षण+अण्] १. हथियारों की धार तेज करने का पत्थर या और कोई उपकरण। १. कसौटी नामक काला पत्थर। २ चार माशे की एक पुरानी तौल।
वि० १. सन के पौधे से संबंध रखनेवाला। २ सन के रेशों से बना हुआ।
पु० सन के रेशे का बना हुआ कपडा। भँगरा।

**शाणवास**—पु० [सं० ब० म०] १. वह जो सन का बना हुआ वस्त्र पहनता हो। २. जैनों का एक अर्हत्।

**शाणोत्तीव**—पु० [स० क्षाण-आ√जीव्+अच] सान लगानेवाला कारीगर।

**शाणिता**—भू० कृ० [सं० शाण+इतच्-टाप्] १. (शस्त्र) जिसे सान पर चढ़ाकर चोखा या तेज किया गया हो। २. कसौटी पर कसा हुआ।

**शाणी**—स्त्री० [सं० शाण+ङीष्] १. सन के रेशों से बना हुआ कपड़ा। भँगरा। २. फटा-पुराना कपड़ा। फटी पोशाक। ३. वह छोटा कपडा जो यज्ञोपवीत के समय ब्रह्मचारी को पहनने के लिए दिया जाता है। ४ धार तेज करने की सान। ५. कसौटी नामक पत्थर। ६. छोटा खेमा। रावटी। ७. आरा। ८ चार माशे की तौल। ९ सकेत।

**शात**—भू० कृ० [सं०√शो (पतला करना)+क्त] १. सान पर चढ़ाकर तेज किया हुआ। २. पतला। बारीक। ३. दुर्बल। कमजोर।
पुं० १. चंदन। २. सुख। ३. आनंद।

**शात-कुंभ**—पु० [सं० शातकुंभ+अण्] १. कचनार का वृक्ष। २. धतूरा। ३. कनेर। ४. सोना। स्वर्ण।

**शातन**—पुं० [सं०√शो (पतला करना)+णिच् तङ्-ल्युट्-अन] [वि० शातनीय, भू० कृ० शातित] १. सान पर चढ़ाकर धार तेज करना। चोखा करना। २. पेड़ आदि को काटना या कटवाना। ३. नष्ट करना। ४. छीलना। तराशना। ५. लकड़ी रँदना।

**शात-पत्रक**—पु० [स० शतपत्र+अण्-कन्] चद्रिका। चाँदनी। ज्योत्स्ना।

**शातला**—स्त्री० =शातला।

**शातिर**—पु० [अ०] १. शतरज का अच्छा खिलाडी। २ बहुत बडा चालाक और चालबाज। परम धूर्त। ३ धूत।

**शातोदर**—वि० [स० ष० स०] [स्त्री० शातोदरी] १. पतली कमर-वाला। क्षीण-कटि। २. दुबला-पतला।

**शात्रव**—पु० [स० शत्रु+अण्] १ शत्रुत्व। शत्रुता। २ शत्रु। दुश्मन। ३. शत्रुओ का समूह।

वि० १. शत्रु-संबधी। २ दुश्मन का। ३. शत्रुतापूर्ण।

**शाद**—पुं० [स०√शद् (पतला करना)+ड] १ गिरना या पडना। पतन। २ घास। ३ कीचड।

**शाद-माद**—वि० [फा०] [भाव० शादमानी] प्रसन्न। खुश।

**शादाब**—वि० [फा०] [भाव० शादाबी] १ सिंचित। २ हराभरा। सरसब्ज।

**शादियाना**—पु० [फा० शादियान] १ खुशी या आनद-मगल के समय बजनेवाले बाजे। २ आनन्द-मगल के समय गाया जानेवाला गीत। ३ वह धन जो किसान जमीदार को ब्याह के अवसर पर देते हैं। ४. बधाई। वधाई।

**शादी**—स्त्री० [फा०] १ खुशी। प्रसन्नता। आनन्द। २ आनन्द विशेषत ब्याह के अवसर पर मनाया जानेवाला उत्सव। ३ विवाह। ब्याह।

क्रि० प्र०—करना। —रचना।—होना।

**शादी-गमी**—स्त्री० [स० फा० अ०] १ विवाह तथा मृत्यु। २ बोल-चाल मे, गृहस्थी मे लगे रहनेवाले जन्म, मृत्यु विवाह आदि सुख-दुख।

**शाद्वल**—वि० [स० शाद्+डवुल्च्] हरित तृण या दूब से युक्त। हरी घास से ढका हुआ। हरा-भरा।

पु० १ हरी घास। २ भरा द्वीप। (दे०) ३. साँड। ४ बैल।

**शान**—पु० [स० शान (तेज करना)+अच्] १. कसौटी। २ सान नामक उपकरण जिससे चाकू, छुरी आदि की धार तेज करते हैं।

स्त्री० [अ०] १ तडक-भडकवाली सजावट। ठाट-बाट। जैसे—कल बडी शान से सवारी निकली थी।

**पद—शान-शौकत**। (देखे)

२ गर्व, महत्तव, वैभव आदि सूचित करनेवाली चर्चा या स्थिति। जैसे—वह खूब शान से बातें करता (या रहता) है। ३ विशालता। जैसे—(क) उसके मकान की शान देखने योग्य है। (ख) वह सब खेत की शान है। ४ मान-मर्यादा। प्रतिष्ठा। मान्यता।

**पद—किसी की शान में**=किसी बडे के सबध मे। किसी के प्रति या किसी के विषय मे। जैसे—उसकी शान मे, ऐसी बात नही कहनी चाहिए।

**मुहा०—शान गवाँना**=शान में बट्टा लगाना। **शान मारी जाना**=शान पर ऐसा आघात लगना कि वह नष्ट हो जाय। **शान में बट्टा लगाना**= शान या मान-मर्यादा मे कमी या त्रुटि होना।

**शानदार**—वि० [स०शान+फा० दार] [भाव० शानदारी] १ ऐश्वर्य-वाला। २. तडक-भडकवाला। ३. उच्च कोटि का तथा प्रशंसनीय। जैसे—शानदार जीत।

**शानपाव**—पु० [सं० ष० त० स०] १ चन्दन रगड़ने का पत्थर। २ पारियात्र पर्वत।

**शान-शौकत**—स्त्री० [अ०] तडक-भडक। वैभव-सूचक ठाटबाट या सजा-वट।

**शाना**—पु० [फा० शान] १ कघा। कघी। २. कन्धा। मोढा।

**मुहा०—शाने से शाना छिलना**=बहुत अधिक भीड़ और रेल-पेल होना।

**शाप**—पु० [स० √शप् (निंदा करना)+घञ्] १. अनिष्ट-कामना के उद्देश्य से किया जानेवाला कथन। २ उक्त की सूचक बात या वाक्य।

**विशेष**—प्राचीन भारत में प्राय कुपित या पीडित होने पर ऋषि, मुनि, ब्राह्मण आदि हाथ मे जल लेकर किसी दुष्ट या पीडक के सम्बन्ध मे कोई अशुभ कामना प्रकट करते थे।

२ धिक्कार। भर्त्सना। ३ ऐसी शपथ जिसके न पालन करने पर कोई अनिष्ट परिणाम कहा जाय। बुरी कसम।

**शापग्रस्त**—भू० कृ० [स० तृ० त०] जिसे किसी ने शाप दिया हो। शापित।

**शाप-ज्वर**—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का ज्वर जो माता-पिता, गुरु आदि बडो के शाप के कारण होनेवाला कहा गया है।

**शापांबु**—पु० [स० मध्यम० स०] वह जल जो किसी को शाप देने के साथ हाथ मे लिया जाता था।

**शापास्त्र**—पु० [स० मध्य० स०] शाप रूपी अस्त्र।

**शापित**—भू० कृ० [स० शाप+इतच्] शाप से पीडित।

**शापोत्सर्ग**—पु० [सं० ष० त० स०] किसी को शाप देने की क्रिया।

**शापोद्धार**—पु० [स० ष० त०] शाप या उसके प्रभाव से होनेवाला छुट-कारा। शाप-मुक्ति।

**शाफरिक**—पुं० [स० शफर+ठक्—इक] मछुआ। धीवर।

**शाबर**—वि० [स० शबर+अण्] दुष्ट। कपटी।

पु० १. खगबी। बुराई। २ हानि। ३ लोध का पेड। ४ ताँबा। ५. अँधेरा। अन्धकार। ६ एक प्रकार का चदन।

**शाबर-तंत्र**—पु० [स० मध्य० स०] एक तन्त्र ग्रन्थ जो शिव का बनाया हुआ माना जाता है।

**शाबर-भाष्य**—पु० [स० तृ० त० स०] मीमासा सूत्र पर प्रसिद्ध भाष्य या व्याख्या।

**शाबरी**—स्त्री० [स० शाबर-ङीष्] १ शबरो की भाषा। २ एक प्रकार की प्राकृत भाषा।

**शाबल्य**—पु० [सं० शबल+ष्यञ्] शबलता।

**शाबाश**—अव्य० [फा० शाद बाश=प्रसन्न रहो] एक प्रशसा-सूचक शब्द। खुश रहो। वाह वाह। धन्य हो। क्या कहना।

**शाबाशी**—स्त्री० [फा०] किसी कार्य के करने पर 'शाबाश' कहना। वाह-वाही। साधुवाद।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

**शाब्द**—वि० [शब्द+अण्] [स्त्री० शाब्दी] १ शब्द सम्बन्धी। शब्द या शब्दों का। २ वाक्य के शब्दों में रहने या होनेवाला। ३ साहित्य में, शब्दों के कारण स्पष्ट रूप से कहा हुआ। कथित 'अर्थ' से भिन्न और उसका उल्टा। जैसे—शाब्दी विभावना या व्यंजना। ४ मौखिक। ५ शब्द करता हुआ।

पु० १. शब्द-शास्त्र का पंडित। २. वैयाकरण।

**शाब्दबोध**—पुं० [सं० कर्म० स०] शब्दों के प्रयोग द्वारा होनेवाले अर्थ का ज्ञान। वाक्य के तात्पर्य का ज्ञान।

**शाब्दिक**—वि० [सं० शब्द+ठक्—इक] १ शब्द-संबंधी। शब्द का। २ शब्द करता हुआ। ३. शब्दों के रूप में होनेवाला। मौखिक। जैसे—शाब्दिक सहानुभूति।

पुं० १. शब्दशास्त्र का ज्ञाता। २. वैयाकरण।

**शाब्दी**—वि० [सं०] १. शब्द-संबंधी। २. केवल शब्दों में होनेवाला। जैसे—शाब्दी व्यंजना।

**शाब्दी व्यंजना**—स्त्री० [स० मध्य० स०] व्यंजना शब्द-शक्ति का एक भेद, जिसमें व्यंजित होनेवाला अर्थ किसी विशेष शब्द तक ही सीमित रहता है, उससे आगे नहीं बढ़ता।

**शाम**—वि० [सं० शम+अण्] शम अर्थात् शांति-संबंधी।

पुं० [सं० शामन्] सामगान।

वि०, पुं०=श्याम।

वि० [फा०] सायं। साँझ।

**मुहा०—शाम फूलना**=संध्या समय पश्चिम की ललाई का प्रकट होना। स्त्री० [देश०] लोहे, पीतल आदि धातु का बना हुआ वह छल्ला जो हाथ में ली जानेवाली छड़ियों, डंडों आदि के निचले भाग में अथवा औजारों के दस्ते में लकड़ी को घिसने या छीजने से बचाने के लिए लगाया जाता है।

क्रि० प्र०—जड़ना।—लगाना।

पु० एक प्रसिद्ध प्राचीन देश जो अरब के उत्तर में है।

**शामक**—वि० [स० √ शम्+ण्वुल्—अक] १ शमन करनेवाला। २. (दवा) जो कष्ट, घबराहट या पीड़ा कम करे। (सेडीटिव)

**शामकरण**†—पुं०=श्यामकर्ण (घोड़ा)।

**शामत**—स्त्री० [अ०] १. बदकिस्मती। दुर्भाग्य। २. बुरदशा करनेवाली विपत्ति।

क्रि० प्र०—आना।—घेरना।—में पड़ना या फँसना।

**पद—शामत का मारा**=जिसे शामत ने घेरा हो।

**मुहा०—शामत सवार होना या सिर पर खेलना**=शामत आना। बुरदशा का समय आना।

**शामत जदा**—वि० [अ० शामत+फा० जदा] १. जिस पर शामत या विपत्ति आई हो। विपदग्रस्त। २. कमबख्त। बदनसीब। अभागा।

**शामती**—वि० [अ० शामत+हिं० ई (प्रत्य०)] जिसकी शामत आई हो। जिसकी बुरदशा होने को हो।

**शामन**—पुं० [सं० शमन+अण्] १. शमन। २. शांति। ३. मार डालना। हत्या।

**शामली**—स्त्री० [सं० शामन—ङीष्] १. दक्षिण दिशा जिसके अधिपति यम माने गए हैं। २. शांति। ३. स्वच्छता। ४. अन्त। समाप्ति। ५. वध। हत्या।

**शामा**—पुं० [?] १. एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ और जड़ कोढ़ के रोगी के लिए लाभदायक मानी जाती हैं।

†वि०, स्त्री० श्यामा।

**शामिख**—स्त्री० [सं० शमिष्—अण्] १. यज्ञ में मांस पकाने के लिए जलाई हुई अग्नि। २. वह स्थान जहाँ उक्त आग जलाई जाती है।

**शामियाना**—पुं० [फा० शामियान] एक प्रकार का तंबू जो बाँसों पर रस्सियों की सहायता से टाँगा जाता है।

क्रि० प्र०—खड़ा करना।—गाड़ना।—तानना।—लगाना।

**शामिल**—वि० [फा०] १. मिला हुआ। सम्मिलित।

**पद—शामिल-हाल**।

२ इकट्ठा।

**शामिल-हाल**—वि० [फा० शामिल+अ० हाल] १ जो दुःख, सुख आदि अवस्थाओं में साथ रहे। साथी। शरीक। २ (परिवार के लोग) जो एक साथ मिलकर रहते हों।

**शामिलात**—स्त्री० [अ०] संयुक्त संपत्ति। साझी जायदाद।

**शामिलाती**—वि० [अ० शामिलात] किसी के साथ मिला हुआ। सम्मिलित।

**शामी**—वि० [श्याम (देश)] १. शाम देश-सम्बन्धी। २ शाम देश में होनेवाला। जैसे—शामी कबाब।

पु० [देश०] एक प्रकार का लोहे का छल्ला जो छड़ी या लकड़ी की मूठ आदि पर चढ़ाया जाता है।

क्रि० प्र०—जड़ना।—लगाना।

**शामी-कबाब**—पुं० [हिं० शामी+कबाब] टिक्कियों के रूप में तवे पर भूना हुआ मांस जिसमें मसाले आदि मिलाये गये होते हैं।

**शामूल**—पुं० [स० शम+ऊलच्—अण्] ऊनी कपड़ा।

**शाम्य**—पुं० [सं० शाम+यत्] १ शम का धर्म या भाव। शमता। २. भाई-चारा। बन्धुत्व। ३. शालि।

**शायक**—पुं० [स० √ शो+ण्वुल्—अक—मुक्] १. बाण। तीर। शर। २ तलवार।

वि० [अ० शाइक] १. शौक करने या रखनेवाला। शौकीन। २. अभिलाषी। इच्छुक।

**शायद**—अव्य० [सं० स्यात् से फा०] सन्देह और संभावना सूचक अव्यय। कदाचित्। संभव है कि। जैसे—शायद वह आज आएगा।

**शायर**—पुं० [अ०] [स्त्री० शायरा] १. वह जो उर्दू फारसी आदि के शेर आदि बनाता हो। २. काव्य-रचना करनेवाला।

**शायराना**—वि० [अ० शायर+फा० आना (प्र०य०)] १. शायर संबंधी। २ शायरों जैसा। जैसे—शायराना तबीयत। ३. कवि-सुलभ।

**शायरी**—स्त्री० [अ०] १. कविता करने का भाव या कार्य। २ कविता। काव्य।

**शायाँ**—वि० [फा०] अनुरूप। उपयुक्त।

**शाया**—वि० [फा०] १. प्रकट। जाहिर। २ छापकर प्रकट किया हुआ। प्रकाशित।

**शायिक**—वि० [सं० शय्या-ठक्+इक] १. शय्या बनानेवाला। २. सेज सजानेवाला।

**शायिका**—स्त्री० [सं० शायिक—टाप्] १. शयन। २. निद्रा। ३. दे० 'शयनिका'।

**शायित**—भू० कृ० [सं० शी (शयन करना)+णिच्—क्त] [स्त्री० शायिता] १. सुलाया या लेटाया हुआ। २. गिराया हुआ।

**शायिता**—स्त्री० [सं० शायिन्+तल्—टाप्] शयन। सोना।

**शायी**—वि०[सं० √शी (शयन करना)+णिनि] [स्त्री० शायिनी] शयन करनेवाला। सोनेवाला। जैसे—क्षीरशायी भगवान्।

**शारंग**—पुं०=सारंग।

**शारंगक**—पुं०[स० शारंग+कन्] एक प्रकार का पक्षी।

**शारंग-धनुष**—पु०[सं० ष० स०]१. शारंग नामक धनुष से सुशोभित अर्थात् विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

**शारंगपाणि**—पु०[सं० ष० स०]१. हाथ में शारंग नामक धनुष धारण करनेवाले; विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. रामचन्द्र।

**शारंग-पाणी**—पुं०=शारंगपाणि।

**शारंग-भृत्**—पु०[सं० शारंग+√भृ (रखना)+क्विप्—तुक्] १. शारंग धनुष को धारण करनेवाले विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

**शारंगवत**—पु०[सं० शारंग+मतुप—म=व] कुरु वर्ष नामक देश।

**शारंगष्टा**—स्त्री०[स० शारंग, स्था (ठहरना)+क—टाप्] १. काक जंघा। २ मकोय। ३ गुंजा। घुंघची।

**शारंगी**—स्त्री०[सं० शारंग-ङीष्] सारंगी नामक बाजा।

**शार**—वि०[सं०√शृ+घञ्]१. चितकबरा। कई रंगों का। २. पीला। ३. नीले-पीले और हरे रंग का।

पु०१. एक प्रकार का पासा। २ वायु। हवा। ३. हिंसा।

स्त्री० कुश। कुशा।

**शारंज**—पु०[अ० शारिअ] १. बड़ी सड़क। राजमार्ग। २. लोगों को धर्म का मार्ग बतलानेवाला। धर्मशास्त्री।

**शारक**—स्त्री०[पा० मिलाओ स० शारिका] मैना।

**शारणिक**—वि०[स० शरण+ठक्-इक]१ शरण देनेवाला। २ शरण-चाहनेवाला। शरणार्थी।

**शारद**—वि०[सं० शरद्+अण्]१. शरद्-संबंधी। २ शरद ऋतु में होने-वाला। ३ नवीन। ४. वार्षिक। ५ शालीन।

पु० १ वर्ष। साल। २. बादल। मेघ। ३. सफेद कमल। ४. मौल-सिरी। ५ काँस नामक तृण। ६ हरी मूँग। ७. एक प्रकार का रोग।

**शारदा**—स्त्री०[स० शारद—टाप्] १. सरस्वती। २. भारत की एक प्राचीन लिपि जो दसवीं शताब्दी के लगभग पंजाब और कश्मीर में प्रचलित हुई थी। आज-कल की कश्मीरी, गुरुमुखी और टाकरी लिपियाँ इसी से निकली हैं। ३. एक प्रकार की वीणा। ४ दुर्गा। ५. ब्राह्मी। ६. अनंतमूल।

**शारदाभरण**—पु०[सं० ब० स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**शारदिक**—पुं०[स० शरद्+ठञ्-इक]१ शरद् ऋतु में होनेवाला ज्वर। २. शरद् की फ़सल। ३. श्राद्ध। ४. बीमारी। रोग।

**शारदी**—स्त्री० [सं० शारद—ङीष्] १. जलपीपल। २. छतिवन। सप्तपर्णी। ३. आश्विन मास की पूर्णिमा।

पु० [सं० शारदिन्]१. अपराजिता। २. सफेद कमल। ३. अन्न, फल आदि।

वि० शरद काल का।

**शारदीय**—वि०[सं० शरद+छण्—ईय] [स्त्री० शारदीया] शरद्काल का। शरद् ऋतु-सम्बन्धी। जैसे—शारदीय नवरात्र।

**शारदीय महापूजा**—स्त्री०[स० कर्म० स०] शरद्काल में होनेवाली दुर्गा की पूजा। नवरात्रि की दुर्गापूजा।

**शारद्व**—वि०[सं० शरद्+यत्] शरद् काल का। शरद् ऋतु-सम्बन्धी।

**शारि**—पु०[स० √शृ (हिंसा करना)+इञ्]१. पासा, शतरज आदि खेलने की गोटी। मोहरा। २. चौसर, शतरज आदि की बिसात। ३ कपट। छल। ४ मैना पक्षी। ५. एक प्रकार के गीत।

**शारिका**—स्त्री०[स० शारि+कन्—टाप्]१. मैना चिड़िया। २. चौसर, शतरज आदि के खेल। ३. सारंगी बजाने की कमानी। ४. वीणा, सारंगी आदि कोई बाजा। ५ दुर्गा।

**शारिका कवच**—पु० [स० ष० त०] दुर्गा का एक कवच जो रुद्रयामल तन्त्र में है।

**शारित**—वि०[स० शारि+इतच्] चित्र-विचित्र। रंग-बिरंगा।

**शारिपट्ट**—पु० [स० ष० त० स०] शतरज, चौसर आदि खेलने की बिसात।

**शारिफल**—पु०[स० ष० त० स०]=शारिपट्ट।

**शारिवा**—स्त्री०[स० शारि√वन् (पृथक् करना)+ड-टाप्] १. अनंतमूल। सालसा। दुरालभा। २ जवासा। धमासा।

**शारी**—स्त्री०[स० शारि—ङीष्]१ कुश नामक घास। २ एक प्रकार का पक्षी। ३. मूँज।

पु०१. गोटी। मोहरा। २. गेंद।

**शारीर**—वि०[स० शरीर+अण्] १. शरीर-संबंधी। शरीर का। २. शरीर से उत्पन्न।

पुं० १. जीवात्मा। २ साँड। ३. गृह। मल।

**शारीरक**—वि०[सं० शरीर+कन्—अण्]१ शरीर से उत्पन्न। २. शरीर-संबंधी। ३. शरीर में स्थित।

पु० १. आत्मा। २ आत्मा-सम्बन्धी अन्वेषण।

**शारीरक भाष्य**—पु०[स० मध्य० स०]शंकराचार्य का किया हुआ ब्रह्मसूत्र का भाष्य।

**शारीरक-सूत्र**—पु० [स० कर्म० स०] वेदव्यास कृत वेदान्त सूत्र।

**शारीरकीय**—वि०[स० शारीरक+छ-ईय]=शारीरक।

**शारीरतत्त्व**—पु० [सं० शरीर-तत्त्व-ष० त० स०+अण्] शरीर-विज्ञान।

**शारीर विज्ञान (शास्त्र)**—पु० [स० ब० स०] वह शास्त्र जिसमे जीवों की शारीरिक रचना और उनके बाहरी तथा भीतरी सभी अंगों, अस्थियों, नाड़ियों और उनके कार्यों आदि का विवेचन होता है। (एनाटमी)

**शारीर-विद्या**—स्त्री०[स० मध्यम० स०]=शरीर विज्ञान।

**शारीरविधान**—पु०[सं० ब० स०]१. वह शास्त्र जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि जीव किस प्रकार से उत्पन्न होते और बढ़ते हैं। २. शारीर विज्ञान।

**शारीरज्वर**—पु०[सं० ब० स०] वह रोग जो वात, पित्त, कफ और रक्त के विकार से उत्पन्न हो।

**शारीर शास्त्र**—पु०[स०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमें प्राणियों और वनस्पतियों के अंगों और उपांगों का व्यवच्छेदन करके उनकी क्रियाओं आदि का अध्ययन किया जाता है। (एनाटमी)

**शारीरिक**—वि० [सं० शरीर+ठक्—इक] १. शरीर-संबंधी। २. भौतिक।

शारक—वि०[स०√ शृ (हिंसा करना)+ण्वुल्] हत्या या नाश करनेवाला।

शार्ङ्ग—पुं० [सं० शृंग+अण्] १. धनुष। कमान। २. विष्णु के हाथ मे रहनेवाला धनुष। ३. अदरक। आदी। ४. एक प्रकार का साग। ५. धनुर्धारी।
वि०१. शृंग-सम्बन्धी। शृग का। २ सींग का बना हुआ।

शार्ङ्क—पुं०[स० शार्ङ्ग+कन्]पक्षी। चिड़िया।

शार्ङ्गधन्वा (न्वन्)—पु० [स० ब० स०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. वह जो धनुष चलाता हो। कमनैत।

शार्ङ्गधर—पुं०[स० ष० त० स०] १. विष्णु। २ श्रीकृष्ण।

शार्ङ्गपाणि—पु० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३. वह जो धनुष चलाता हो। कमनैत।

शार्ङ्गभृत्—पु०[सं० शार्ङ्ग√ भृ+क्विप्—तुक] विष्णु।

शार्ङ्गविक—पु० [सं० कर्म० स०] एक प्रकार का स्थावर विष।

शार्ङ्गेष्टा—स्त्री० [सं० शार्ङ्ग√ स्था (ठहरना)+क–टाप्] १ काक जघा। २ घुँघची।

शार्ङ्गेष्टा—स्त्री० [स०] १. महाकरज। २. लता करज।

शार्ङ्गायुध—पु०[सं० ब० स०] १. विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३. धनुर्धारी। कमनैत।

शार्ङ्गी (ङ्गिन्)—पु० [स० शार्ङ्ग+इनि] १ विष्णु। २. श्रीकृष्ण। ३ धनुर्धर। कमनैत।

शार्क–पुं०[सं० शृ+कन्—अण्] चीनी। शर्करा।
स्त्री० [अं०] एक प्रकार की बड़ी हिंसक मछली जो समुद्रों मे रहती है।

शार्कफ—पु०[सं० शार्क+कन्] १. दूध का फेन। दुग्धफेन। २. चीनी का डला। ३. मांस का टुकड़ा।

शार्कर—पुं० [सं० शर्करा+अण्] १. दूध का फेन। २. लोध। ३. कंकरीली या पथरीली जगह।
वि०१. जिसमें कंकड़, पत्थर आदि हों। २. शर्करा या चीनी से बना हुआ।

शार्करक—पुं०[सं० शार्कर+कन्]१. वह स्थान जो कंकड़ों और पत्थरों से भरा हो। कंकरीली-पथरीली जगह। २. चीनी बनाने का स्थान। खडसार।
वि० कंकड़, पत्थर आदि से भरा हुआ।

शार्करमद्य—पुं०[सं० शार्कर-मद्य] प्राचीन काल की एक प्रकारकी शराब जो चीनी और जौ से बनाई जाती थी।

शार्करी-वास—पुं० [सं० ब० स०] एक प्राचीन देश जो उत्तर दिशा में में था।

शार्करीव—वि०[सं० शर्करा+ छण्—ईय] शार्करीक।

शार्दूल—पुं० [सं० √शृ (हिंसा करना)+उलच्-दुक्च निपा सिद्ध] १. चीता। बाघ। २. केसरी। सिंह। ३. राक्षस। ४. सरभ नामक जंतु। ५. एक प्रकार का पक्षी। ६. यजुर्वेद की एक शाखा। ७. चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ८. घोड़े का एक भेद जिसमे ६ गुरु और १६ लघु मात्राएँ होती हैं।
वि० सर्वश्रेष्ठ।

शार्दूल-बंद—पुं०[सं० ब० स०] जंगली प्याज।

शार्दूलख—पुं० [सं० शार्दूल√ जन्(उत्पन्न करना)+ड] व्याघ्र-नख नामक गंध-द्रव्य।
वि० शार्दूल से उत्पन्न।

शार्दूल-ललित—पुं०[सं०ब०स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसका प्रत्येक पद अठारह अक्षरों का होता है और उनका क्रम इस प्रकार है—म, स, ज, स, त, स।

शार्दूल-ललित—पुं०[सं० ब० स०]=शार्दूललालित।

शार्दूल-वाहन—पु०[सं० ब० स०] एक जिन। (जैन)

शार्दूल-विक्रीडित—पुं० [स० ब० स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसका प्रत्येक पद १९ अक्षरों का होता है। उनका क्रम इस प्रकार है—म, स, ज, स, त, त, एक गुरु।

शार्याति—पु०[सं० शर्याति√ अण्]१. वैदिक काल के एक प्राचीन राजर्षि। २ एक प्रकार का साग।

शार्वर—पु०[स० शर्वर+अण्] बहुत अधिक अंधकार।

शार्वरिक—वि०[सं० शर्वरी+ठक्—इक] रात्रि संबंधी। रात का।

शार्वरी—स्त्री० [सं० शर्वरी+अण्—ङीप्]१. रात। २. लोध।
पु०[सं० शार्वरिन्] बृहस्पति के साठ संवत्सरों में से ३४वाँ संवत्सर।

शार्ङ्गकटोत्कच—पुं० [सं०] बुकेशी राक्षस का एक नाम जो वामन पुराण के अनुसार विद्युत्केशी का पुत्र था।

शार्ङ्गकायन—पुं०[सं० शलंक+फक्—आयन]१. विश्वामित्र के एक पुत्र का नाम। २. शिव का नदी।

शार्ङ्गकायनि—पु०[स० शालकायन+ङीप्] एक प्राचीन गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

शार्ङ्गकि—पुं०[सं० शलंक+इञ्] पाणिनि।

शार्ङ्गकी—स्त्री० [सं० शालंक—ङीप्] १. पुड़िया। २. कठ-पुतली।

शाल—पुं० [सं० √शल् (प्रशस्त होना)+घञ्]१. साखू (वृक्ष)। २. पेड़। वृक्ष। ३. एक प्राचीन नद। ४. एक प्रकार की मछली। ५. चूना। राल। ६. राजा शालिवाहन का एक नाम।
स्त्री० [फा०] ओढ़ने की एक प्रकार की गरम चादर।

शालक—पुं०[स० शाल+कन्]१. पटुआ। २. मसखरा। हँसोड़।

शाल-कल्याणी—स्त्री०[सं० उपमि० स०] एक प्रकार का साग जो चरक के अनुसार भारी, रूखा, मधुर, शीतवीर्य और पुरीष-भेदक होता है।

शालग्राम—पुं०[सं० ब० स०] गोलाकार बटिया के रूप में गंडक नदी मे मिलनेवाले पत्थर के टुकड़े जिनकी पूजा की जाती है।

शालख—पुं०[सं० शाल√जन् (उत्पन्न करना)+ड] एक प्रकार की मछली।
वि० शाल (साखू) से उत्पन्न या बना हुआ।

शाल-चीज—पुं०[फा०] वह जो शाल के किनारे पर बेल-बूटे आदि बनाता हो।

शाल-निर्यास—पु०[सं० ष० त० स०]१. राल। चूना। २. शाल या सर्ज नामक वृक्ष।

शाल-पर्णा—स्त्री०[सं० ब० स०] शालपर्णी।

**शालपर्णिका**—स्त्री० [ग० ब० स०] १. मुरा नामक गंध द्रव्य। २. एकांगी नामक वनस्पति।

**शालपर्णी**—स्त्री० [स० ब० स०] सरिवन नामक वृक्ष।

**शालबाफ़**—पु० [फ़ा०] [भाव० शालबाफ़ी] १. शाल या दुशाला बुननेवाला। २. लाल रंग का एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।

**शालबाफ़ी**—स्त्री० (फ़ा०) १. दुशाला बुनने का काम। शालबाफ़ का काम। २ शाल बुनने की मजदूरी।

**शाल-भंजिका**—स्त्री० [स० शाला√भञ् (बनाना)+ण्वुल्—अक-टाप्, इत्व] १. कठ-पुतली। २ गुड़िया। पुतली। ३. प्राचीन भारत में, राज-दरबार में नाचनेवाली स्त्री। ४. रंडी। वेश्या।

**शाल-भंजी**—स्त्री० [स०]=शाल भंजिका।

**शालभ**—पु० [स० शलभ+अण्] बिना सोचे-विचारे उसी प्रकार आपत्ति में कूद पड़ना जिस प्रकार पतंग आग या दीपक पर कूद पड़ता है।

वि० शलभ-संबंधी। शलभ का।

**शालभस्य**—पु० [स० मध्य० स०] शिलिंद नामक मछली।

**शाल-युग्म**—पु० [स० ष० त० स०] दोनों प्रकार के शाल अर्थात् सर्जवृक्ष और बिजय सार।

**शालरस**—पु० [सं० ष० त० स०] राल। धूना।

**शालव**—पु० [स० शाल√वच् (जाना आदि)+अ] लोध्र। लोध।

**शालवानक**—पु० [स० ब० स०] १. एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी।

**शालवाहन**—पुं० [स० ब० स०]=शालिवाहन।

**शालसार**—पु० [स० ष० त० स०] १. हींग। हिंगु। २. धूना। राल। ३. शाल या सालु नामक वृक्ष। ४ पेड़। वृक्ष।

**शाला**—स्त्री० [सं० √शो (पतला करना)+कालन्—टाप्] १ घर। गृह। मकान। २. किसी विशिष्ट कार्य के लिए बना हुआ मकान या स्थान। जैसे—गो-शाला नृत्यशाला, पाठशाला। ३. पेड़ की डाल। शाखा। ४ इन्द्रवज्रा और उपेन्द्रवज्रा के योग से बननेवाले सोलह प्रकार के वृत्तों में से एक प्रकार का वृत्त।

**शालाक**—पु० [स० शाला+कन्] १ झाड़-झखाड़। २ झाड-झखाड़ से उत्पन्न होनेवाली आग।

**शालाकी (किन्)**—पु० [स० शालाक+इनि] १. शल्य चिकित्सा करने-वाला। जर्राह। २ नापित। हज्जाम। ३ भाला-बरदार।

**शालाक्य**—पु० [सं० शालाक+ष्यञ्] १. आयुर्वेद की एक शाखा जिसमें कान, आँख नाक, जीभ, मुँह आदि रोगों की चिकित्सा सम्बन्धी विवरण हैं। २. वह जो आँख, नाक, मुँह आदि के रोगों की चिकित्सा करता हो।

**शालाजिर**—पु० [स०ब०स०] मिट्टी की तश्तरी, पुरवा, प्याला आदि बरतन।

**शालातुरीय**—वि० [स० शालातुर+छ—ईय] शालातुर प्रदेश सम्बन्धी। पु० १ शालातुर का निवासी। २. पाणिनि।

**शाला-मृग**—मुं० [सं० सप्त० त०] १. गीदड़। शृगाल। २. कुत्ता।

**शालार**—पु० [स० शाला√वृह (गमनादि)+अण्] १. सीढ़ी। २ पिंजरा। ३. दीवार में लगी हुई खूँटी। ४. हाथी का नख।

**शाला-वृक**—पु० [सं० सप्त० त०] १. कुत्ता। २. बन्दर। ३. बिल्ली। ४. हिरन। ५. गीदड़। शृगाल। ६. लोमड़ी।

**शालि**—पु० [सं० √ शल+इन्] १. हेमंत ऋतु में होनेवाला धान। जड़हन। २. चावल। विशेषतः जड़हनी धान का चावल। ३. बास-मती चावल। ४. काला जीरा। ५. गन्ना। ६ गन्ध-बिलाव। ७ एक प्रकार का यज्ञ।

**शालिक**—पु० [स० शालि+कन्] १. जुलाहा। २. कारीगरों की बस्ती। ३. एक तरह का कर।

**शालिका**—स्त्री० [स० शालि√ कै (होना)+क—टाप्] १. बिदारी कंद। २. शालपर्णी। ३. घर। मकान। ४. मैना पक्षी।

**शालि-धान**—पु० [स० शालि धान्य] बासमती चावल।

**शालिनी**—स्त्री० [स० शालि√नी (ढोना)+ड, ङीप्] १ गृहस्वामिनी। २ ग्यारह अक्षरों का एक वृत्त जिसमें क्रम से १ यगण, २ तगण और अंत में २ गुरु होते हैं। ३. पद्मकंद। भसीड़। ४ मेथी।

**शालिपर्णी**—स्त्री० [स० ब० स०] १ मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २ पिठवन। ३. बन-उरदी। ३. सरिवन।

**शालि-वाहन**—पु० [स० ब० स०] एक प्रसिद्ध भारतीय सम्राट् जिन्होंने शक संवत् चलाया था।

**शालिहोत्र**—पु० [स० शालि√ हु (देन-लेन)+ष्ट्रन्] १. घोड़ा। २. अश्व चिकित्सा। ३. घोड़ों और दूसरे पशुओं आदि की चिकित्सा का शास्त्र। पशु चिकित्सा। (वेटेरिनरी)

**शालिहोत्री**—पु० [स० शालि होत्र+इनि (प्रत्य०)] १. घोड़ों की चिकित्सा करनेवाला। २. पशु चिकित्सक।

**शाली**—स्त्री० [सं० शाल+अच्—ङीप्] १ काला जीरा। २ शाल-पर्णी। ३ मेथी। ४ बुरालम्बा।

प्रत्य० [सं० शालिन्] [स्त्री० शालिनी] एक प्रत्यय जो संज्ञा शब्दों के अंत में लगकर युक्त, वाला आदि का अर्थ देता है। जैसे—ऐश्वर्यशाली, भाग्यशाली, शक्तिशाली।

**शालीन**—वि० [स० शाला+ख—ईन] [भाव० शालीनता] १. लज्जाशील। हयावाला। २ विनीत। नम्र। ३ अच्छे आचरणवाला। ४. सदृश। समान। ५ शाला-संबंधी।

**शालीनता**—स्त्री० [स० शालीन+तल्—टाप्] शालीन होने की अवस्था, धर्म या भाव।

**शालीनत्व**—पु० [सं० शालीन+त्व] शालीनता।

**शालीय**—वि० [स० शाला+छ—ईय] शाला अर्थात् घर सम्बन्धी।

**शालु**—पु० [स० शाल+उण्] १ भसीड़। कमलकंद। २ चोरक नामक गन्ध द्रव्य। ३ कसेरी की चीज। ४. मेंढक। ५ एक प्रकार का फल।

**शालुक**—पु० [स० शल+उकञ्] १ भसीड़। पद्मकंद। २. जायफल।

**शालूक**—पु० [स० शाल+ऊकञ्] १. जायफल। जातीफल। २. मेंढक। ३. भसीड़। ४. एक प्रकार का रोग।

**शालेय**—पु० [स० शालि+ढक्—एय] १. शालि अर्थात् धान का खेत। २. सीफ। ३. मूली।

वि० १. शाल सम्बन्धी। शाल का। २. शाला अर्थात् घर सम्बन्धी।

**शाल्मलि**—पु० [सं० शाल+मलिच्—ङीष् मा] १. सेमल का पेड़।

२. पृथ्वी के सात खण्डों में से एक जिसकी गिनती नरकों में होती है। ३. पुराणानुसार एक द्वीप।

**शाल्मली**—स्त्री० [सं० शाल्मल—ङीप्] १. शाल्मलि। सेमर। २. पाताल की एक नदी।

पु० गरुड़।

**शाल्मली-कंद**—पुं० [सं० ष० त० स०] शाल्मलि की जड़ जो वैद्यक में औषधि के रूप में व्यवहृत होती है।

**शाल्मली-फलक**—पुं० [सं० शाल्मली—फल+कन्] एक तरह की लकड़ी जिस पर रगड़कर शस्त्र तेज किये जाते थे। (सुश्रुत)

**शाल्मली वेष्ट**—पुं० [स०] सेमल के वृक्ष का गोंद, । मोचरस।

**शाल्व**—पुं० [स० शाल+व] १. एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का राजा या निवासी।

**शाव**—पु० [स० √शव् (गमनादि)+घञ्] १. बच्चा विशेषतः पशुओं आदि का बच्चा। शावक। २. मृत शरीर। शव। ३. घर में किसी के मरने पर होनेवाला अशौच। सूतक। ४. मरघट। मसान। ५ भूरा रंग।

वि० १ शव-सम्बन्धी। शव का। २. मृत्यु के फलस्वरूप होनेवाला।

**शावक**—पु० [स० शाव+कन्] १. किसी पशु या पक्षी का बच्चा। २. झाऊ नामक वृक्ष।

**शावर**—पु० [स० शव+णिच्—अरच] १. पाप। गुनाह। २. अपराध। कसूर। ३. लोध का पेड़।

वि०, पु०=शावर।

**शावरक**—पु० [सं० शावर+कन्] पठानी लोध।

**शावरी**—स्त्री० [स० शावर+अण्—ङीप्] कौंछ। केवाँच।

**शाश्वत**—वि० [स० शश्वत्+अण्] जो सदा से चला आ रहा हो और सदा चला-चलने को हो। नित्य। (एटर्नल)

पु० १. स्वर्ग। २. अतरिक्ष। ३. शिव। ४. वेदव्यास।

**शाश्वतवाद**—पु० [सं० ष० त०] यह दार्शनिक सिद्धान्त कि आत्मा एक रूप, चिरन्तन और नित्य है, उसका न तो कभी नाश होता है और न कभी उसमें कोई विकार होता है। 'उच्छेदवाद' का विपर्याय।

**शाश्वतिक**—वि० [सं० शाश्वत+ठक्—इक]=शाश्वत।

**शाश्वती**—स्त्री० [सं० शाश्वत-ङीप्] पृथ्वी।

**शाष्कुल**—वि० [स० शष्कुल+अण्] मांस-मछली खानेवाला।

**शास**—पुं० [स०√शास्+(अनुशासन करना)+घञ्] १. अनुशासन। २. प्रशंसा। स्तुति।

**शासक**—पुं० [सं० √ शास् (अनुशासन करना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री० शासिका] १. वह जो शासन करता हो। शासन-कर्ता। २. किसी शासनिक इकाई का प्रधान अधिकारी। (हाकिम)

**शासन**—पुं० [स०√शास्+ल्युट्—अन] १. ज्ञान-वृद्धि के लिए किसी को कुछ बतलाना, समझाना या सिखाना। २. किसी को इस प्रकार अपने अधिकार, नियंत्रण या वश में रखना कि वह आज्ञा, नियम आदि के विरुद्ध आचरण या व्यवहार न कर सके। ३. किसी देश, प्रान्त या स्थान पर नियंत्रण रखते हुए उसकी ऐसी व्यवस्था करना कि किसी प्रकार की गड़बड़ी या अराजकता न होने पाए। हुकूमत। सरकार। (गवर्नमेंट) ५. वह प्रमुख अधिकारी और उसके मुख्य सहायकों का वर्ग जो उक्त प्रकार की व्यवस्था करते हों। हुकूमत। (गवर्नमेंट) ६. आज्ञा। आदेश। हुक्म। ७. वह आज्ञा पत्र जिसमें किसी को प्रबंध या व्यवस्था करने का अधिकार या आदेश दिया गया हो। ८ कोई ऐसा पत्र जिस पर कोई निश्चय, प्रतिज्ञा या समझौता लिखा गया हो। जैसे—पट्टा, शर्तनामा आदि। ९. राजा या राज्य के द्वारा निर्वाह आदि के लिए दान की हुई भूमि। १०. इन्द्रिय-निग्रह। ११. शास्त्र। १२. दंड। सजा। १३. कायदा। नियम।

वि० दंड देने या नष्ट करनेवाला। (यौ० के अन्त में) जैसे—(क) पाक-शासन=पाक नामक असुर को मारनेवाला, अर्थात् इन्द्र। (ख) स्मर शासन=कामदेव का नाश करने वाले, अर्थात् शिव।

**शासन-कर**—पु० [सं०] गुप्त-काल में वह अधिकारी जो राजा या शासन का आदेश लिखकर निम्न अधिकारियों के पास भेजता था।

**शासन-कर्ता (र्तृ)**—पुं० [स० ष० त० स०] वह जो शासन करता हो। शासक।

**शासन-तंत्र**—पु० [स० ष० त० स०] १. वे सिद्धान्त जिनके अनुसार शासन होता या किया जाता हो। २. शासन करने के लिए होनेवाली व्यवस्था।

**शासन-धर**—पु० [स० ष० त० स०] १ शासक। २. राजदूत।

**शासन-निकाय**—पुं० [सं०] वह समिति या निकाय जो किसी संस्था की प्रशासनिक व्यवस्था करने के लिए और सब प्रकार से उसपर नियंत्रण रखने के लिए नियुक्त किया गया हो। शासी-निकाय। (गवर्निंग बाडी)

**शासन-पत्र**—पु० [सं० ष० त०] सरकारी हुकुम-नामा। राज्यादेश।

**शासन-प्रणाली**—स्त्री० [स० ष० त०] किसी देश या राज्य पर शासन करने की कोई विशिष्ट प्रणाली या ढंग। शासन-तंत्र।

**शासन-वाहक**—पु० [स० ष० त० स०] १ वह जो राजा की आज्ञा लोगों के पास पहुँचाता हो। २ राजदूत।

**शासन-शिला**—स्त्री० [स० ष० त०] वह शिला जिस पर कोई राजाज्ञा लिखी हो। वह पत्थर जिस पर किसी शासक की घोषणा, लेख आदि अंकित हो।

**शासनहर**—पु० [सं० ष० त०]=शासन-वाहक।

**शासनहारी (रिन्)**—पुं० [सं० शासनहारिन्]=शासन-वाहक।

**शासना**—स्त्री० [सं०] दंड। सजा।

**शासनिक**—वि० [सं०शासन+ठक्—इक] १. शासन से संबंध रखनेवाला। २. सरकारी। राजकीय। ३. शासन-विभाग का। जैसे—शासनिक अधिकारी।

**शासनी**—स्त्री० [स० शासन-ङीप्] धर्मोपदेश करनेवाली स्त्री।

**शासनीय**—वि० [स० √शास्+अनीयर] १ जिस पर शासन करना उचित हो। २. जिस पर शासन किया जा सके। ३. दंड पाने के योग्य। दंडनीय। ४. जिसमें सुधार करना हो या किया जा सके।

**शासित**—भू० कृ० [सं०√शास् (शासन करना)+क्त] [स्त्री० शासिता] १. (प्रदेश) जो शासन के अधीन हो। २. (व्यक्ति) जो नियन्त्रण में हो। ३. जिसे दंड दिया गया हो। दंडित।

पुं० १. प्रजा। २. निग्रह। संयम।

**शासी (सिन्)**—वि० [सं० √शास् (शासन करना)+णिनि] शासन करनेवाला।

**शासी निकाय**—पु० [सं० ष० त०] राज्य, सस्था आदि की व्यवस्था और शासन (प्रबध) करनेवाले लोगों का वर्ग, निकाय या संघ। शासन-निकाय। (गवर्निंग बॉडी)

**शास्ता (स्तृ)**—पु० [स० √शास् (शासन करना)+तृच्] १. कोई ऐसा व्यक्ति जिसे किसी प्रकार का शासन करने का पूर्ण अधिकार हो। २ अधिनायक। तानाशाह। शासक। ३. राजा। ४. पिता। बाप। ५. गुरु। शिक्षक। ६ निरकुश शासक।

**शास्ति**—स्त्री० [सं० शास्+ति बाहु०] १. शासन। २. दड। सजा। ३ कोई ऐसी दडात्मक क्रिया या कार्रवाई जो किसी पूर्ण स्वतत्र व्यक्ति, राज्य, सस्था आदि के साथ उसे ठीक रास्ते पर लाने के लिए की जाय। अनुशास्ति। (सैंकशन) ४. अर्थदण्ड या जुरमाने से भिन्न वह अन्य धन जो अनुचित या नियम विरुद्ध कार्य करनेवाले से वसूल किया जाता हो। (पेनैलिटी)

**शास्त्र**—पु०[स०√शास्+ष्ट्रन्][वि० शास्त्रीय] १. कोई ऐसी आज्ञा या आदेश जो किसी को नियम या विधान के अनुसार आचरण या व्यवहार करने के सबध में दिया जाय। २. कोई ऐसा धर्मग्रन्थ जिसमे आचार, नीति आदि के नियमो का विधान किया गया हो और जिसे लोग पवित्र तथा पूज्य मानते हो।

**विशेष**—हिन्दुओं में प्राचीन ऋषि-मुनियो के बनाये हुए बहुत से ऐसे ग्रन्थ हैं जो लोक मे 'शास्त्र' के नाम से प्रसिद्ध और मान्य हैं। पर मुख्य रूप से शास्त्र चौदह कहे गये है; यथा—चार वेद, छः वेदांग, पुराण मात्र, आन्वीक्षिकी, मीमासा और स्मृति। इनके सिवा शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छद, ज्योतिष और अलकार शास्त्र की गणना भी शास्त्रों मे होती है।

३ किसी कला, विद्या या विशिष्ट विषय से संबध रखनेवाला ऐसा विवेचन अथवा विवेचनात्मक ग्रन्थ जिसमे उसके सभी अगो, उपागो, प्रक्रियाओं आदि का वैज्ञानिक ढग से वर्णन और विश्लेषण हो। (सायन्स)

**विशेष**—'विज्ञान' और शास्त्र' मे मुख्य अतर यह है कि विज्ञान तो उन तथ्यों पर आश्रित होता है जो हमे अपने अनुभवों, निरीक्षणों आदि के आधार पर प्राप्त होते हैं, परतु शास्त्र उन आध्यात्मिक तथ्यो का विवेचनात्मक स्वरूप है जो हमे उक्त प्रकार के अनुभवो, निरीक्षणों आदि का अनुशीलन या मनन करने पर विदित होते है। इसके अतिरिक्त विज्ञान का क्षेत्र तो वही तक परिमित रहता है, जहाँ तक वस्तुओ का सबध प्रकृति से होता है, परतु शास्त्र का क्षेत्र इसके उपरांत और आगे विस्तृत होकर उस सीमा की ओर बढ़ता है जहाँ उसका संबध हमारी आत्मा और मनोभावो से स्थापित होता है। जैसे—ज्योतिषशास्त्र, शरीर शास्त्र आदि।

४ वे सब बातें जिनका ज्ञान पढ़ या सीखकर प्राप्त किया जाय। ५. किसी गभीर विषय का किसी के द्वारा प्रतिपादित किया हुआ मत या सिद्धान्त।

**शास्त्रकार**—पु० [स० शास्त्र√कृ (करना)+अण् उपप० स०] शास्त्र विशेषत. धर्मशास्त्र की रचना करनेवाला।

**शास्त्रकृत्**—पु० [स० शास्त्र√कृ (करना)+क्विप्-तुक्] १. शास्त्र बनानेवाले, अर्थात् ऋषि-मुनि। २. आचार्य।

**शास्त्रचक्षु (क्षुस्)**—पु० [सं० ष० त०] १. शास्त्र की आँख, अर्थात् ज्योतिष। २. पडित। विद्वान्।

**शास्त्रज्ञ**—पु० [सं० शास्त्र√ज्ञा (जानना)+क] १ शास्त्र का ज्ञाता। २. धर्मशास्त्रों का आचार्य।

**शास्त्र-तत्त्वज्ञ**—पु० [सं० ष० त० स०] गणक। ज्योतिषी।

**शास्त्रत्व**—पुं० [स० शास्त्र+त्व] शास्त्र का धर्म या भाव।

**शास्त्रदर्शी**—पुं० [सं० शास्त्र√दृश् (देखना)+णिनि] =शास्त्रज्ञ।

**शास्त्रशिल्पी (ल्पिन्)**—पुं० [स० शास्त्रशिल्प+इनि] १. काश्मीर देश। २. जमीन। भूमि।

**शास्त्राचरण**—पु० [स० शास्त्रआ√चर (करना)+णिच्-ल्यु-अन] १ शास्त्रों का अध्ययन और मनन। २. शास्त्र में बतलाई हुई बातो का आचरण और पालन।

**शास्त्रार्थ**—पु० [स० ष० त०] १. शास्त्र का अर्थ। २. शास्त्र के ठीक अर्थ तक पहुँचने के लिए होनेवाला तर्क-वितर्क या विवाद। ३. किसी प्रकार का तात्त्विक वाद-विवाद।

**शास्त्री (स्त्रिन्)**—पु० [स० शास्त्र+इनि] १. वह जो शास्त्रों आदि का अच्छा ज्ञाता हो। शास्त्रज्ञ। २ धर्मशास्त्र का अच्छा ज्ञाता या पडित। ३ आज-कल एक प्रकार की उपाधि जो कुछ विशिष्ट परीक्षाओं मे उत्तीर्ण होनेवाले व्यक्तियो को मिलती है।

**शास्त्रीकरण**—पु० [स० शास्त्र+च्वि√कृ+ल्युट्—अन दीर्घ] किसी विषय की सब बातें व्यवस्थित रूप से एकत्र करके और शास्त्रीय ढग से उनका विवेचन करके उसे शास्त्र का रूप देना।

**शास्त्रीय**—वि० [स० शास्त्र+छ—ईय] १. शास्त्र-संबधी। शास्त्र का। २ शास्त्र मे बतलाये हुए ढग या प्रकार का। जैसे—शास्त्रीय सगीत। ३. शास्त्रीय ज्ञान अथवा उसके शिक्षण से संबध रखनेवाला। दार्शनिक। ४. शास्त्रीय ज्ञान पर आश्रित। (एकेडमिक) जैसे—शास्त्रीय विवेचन।

**शास्त्रोक्त**—भू० कृ० [स० स० त०] शास्त्र मे कहा हुआ।

**शास्य**—वि० [स०√शास् (शासन करना)+ण्यत्] १ जिसका शासन किया जा सकता हो या किया जाने को हो। २ सुधारे जाने के योग्य। ३. दडित होने के योग्य।

**शाहंशाह**—पु० [फा०] सम्राट।

**शाहंशाही**—स्त्री० [फा०] १. शाहशाह होने की अवस्था या भाव। २ शाहशाह का कार्य या पद।

वि० १. शाहंशाह संबधी। २. शाहशाहो का सा। ३ उदारता, बड़प्पन आदि का सूचक।

**शाह**—पु० [फा०] १. बहुत बड़ा राजा या महाराज। बादशाह। २ मुसलमान फकीरों की उपाधि। ३. ताश, शतरज आदि मे का बादशाह।

वि० १. बहुत बड़ा या श्रेष्ठ। (यौ० के आरंभ मे) जैसे—शाहकार, शाहबलूत, शाहराह आदि। २. शाहो का-सा। जैसे—शाह खर्च।

**शाहकार**—पु० [फा०] कला संबंधी कोई बहुत बड़ी कृति।

**शाहखर्च**—वि० [फा०] [भाव० शाहखर्ची] बहुत अधिक खर्च करनेवाला।

**शाहखर्ची**—स्त्री० [फा०] १. शाहखर्च होने की अवस्था या भाव। २. शाहों की तरह किया जानेवाला अन्धाधुन्ध खर्च।

**शाहज़ादा**—पुं० [फा० शाहज़ादः] [स्त्री० शाहज़ादी] बादशाह का लड़का। राजकुमार।

**शाहज़ादी**—स्त्री० [फा०] १. बादशाह की कन्या। राजकुमारी। २. कमल के फूल के अंदर का पीला जीरा।

**शाहतरा**—पुं० [फा०] पित्त पापड़ा।

**शाहबरा**—पुं० [फा०] किले या महल के आस-पास की बस्ती।

**शाहदाना**—पुं० [फा० शाहदान.] १ बहुत बड़ा मोती। २. भाँग के बीज।

**शाहदाना**—पुं० [फा०] औषधों का राजा अर्थात् भाँग या शराब।

**शाहनशाँ**—पुं० [फा०] शाह-नशीन।

**शाहबलूत**—पुं० =बलूत (वृक्ष)।

**शाहबाज़**—पुं० [फा० शाहबाज़] एक प्रकार का बाज।

**शाहबाला**—पुं० =शहबाला।

**शाहबुलबुल**—स्त्री० [अ० शाह+फा० बुलबुल] एक प्रकार की बुलबुल जिसका सिर काला सारा शरीर सफेद और दुम एक हाथ लंबी होती है।

**शाहरग**—स्त्री० [फा०] वह बड़ी और सीधी नली जो गले से नीचे की ओर जाती है और जिससे साँस लेते हैं। श्वास नली।

**शाहराह**—स्त्री० [फा०] १ वह बड़ा मार्ग जिसपर बादशाह की सवारी निकलती थी। २ बड़ा और चौड़ा रास्ता। राजमार्ग। ३ सड़क।

**शाह सुलेमान**—पुं० [फा०] हुदहुद पक्षी का मुसलमानी नाम।

**शाहाना**—वि० [फा० शाहानः] १. शाहों का। २. शाहों का-सा। ३ शाहों के योग्य। ४. बहुत बढ़िया।
पुं०=शहाना। (राज०)

**शाहिद**—पुं० [अ०] शहादत देनेवाला। गवाह।
वि० मनोहर। सुन्दर।

**शाही**—वि० [फा०] १. शाह का। २. शाह द्वारा रचाया हुआ। ३ शाहों का-सा। ४. राजसी।
स्त्री० १. बादशाह का शासन अथवा राज्य-काल। २. किसी प्रकार का आधिकारिक प्रकार, व्यवहार या स्वरूप। जैसे—नादिरशाही, नौकरशाही।

**शिंगरफ़**—पुं० [फा० संगर्फ़] इंगुर। हिंगुल।

**शिंगरफ़ी**—वि० [फा० शंगर्फ़ी] १. शिंगरफ संबंधी। २. शिंगरफ के रंग का। लाल। सुर्ख।
पुं० उक्त प्रकार का रंग।

**शिंघाण**—पुं० [सं०√शिंघ् (सूँघना)+ल्युट्-अन पत्व पृथो० शिंघ+ल्नी (डोना)+ड] १. अन्दर की वायु की जोर से नाक का मल बाहर निकालना। २. लौहमल। मंबूर। ३. तराजू की डंडी के ऊपर का काँटा या सूई। ४. काँच का बरतन। ५. दाढ़ी। ६. फूला हुआ अडकोश।

**शिंघाणक**—पुं० [सं० शिंघाण+कन्] [स्त्री० शिंघाणिका] १. नाक के अन्दर का पेच। २. कफ। बलगम।

**शिंघाणी (णिन्)**—पुं० [सं० शिंघाण+इनि] नाक।

**शिंशित**—भू० कृ० [सं० शिंघ् (सूँघना)+क्त] सूँघा हुआ। आघ्रात।

**शिंघिनी**—स्त्री० [सं० शिंघ+इनि-ङीप्] नाक।

**शिंजन**—पुं० [सं० शिंज् (आभूषणों आदि की झनकार]+ल्युट्-अन] [वि० शिंजित] १. आभूषणों का होनेवाला शब्द। २. धातु खण्डों के बजने से होनेवाला शब्द।

**शिंजा**—स्त्री० [सं० शिंज् (ध्वनि होना)+अच्-टाप्] १. शिंजन। आवाज। झंकार। २. धनुष की डोरी।

**शिंजिका**—स्त्री० [सं०] करधनी।

**शिंजित**—भू० कृ० [स० शिंज (ध्वनि होना)+क्त] शब्द करता हुआ।

**शिंजिनी**—स्त्री० [स०√शिंज् (ध्वनि होना)+णिनि-ङीप्] १ धनुष की डोरी। चिल्ला। पतंचिका। २. करधनी, नूपुर आदि के घुँघरू।

**शिंजी (जिन्)**—वि० [सं०√शिंज् (ध्वनि करना)+णिनि] १. शब्द करनेवाला। २. बजनेवाला।

**शिंपैंजी**—पुं० [?] अफ्रीका के जंगलों में पाया जानेवाला एक प्रकार का वन-मानुष। शिंपैंजी।

**शिंब**—पुं० [सं० शम+डिम्बच् बाहु०] १ फली। छीमी। २. चकवँड। चकमर्द।

**शिंबा**—स्त्री० [सं० शिंब-टाप्] १. छीमी। फली। २ सेम। ३. शिंबी धान्य।

**शिंबिक**—पुं० [सं० शिंब+टक् इक] मूँगफली।

**शिंबिका**—स्त्री० [स० शिंबिक-टाप्] १ फली। छीमी। २ सेम।

**शिंबिनी**—स्त्री० [स० शिंब+इनि-ङीप्] १. श्यामा चिड़िया। कृष्ण चटक। २. बड़ी सेम।

**शिंबिपर्णी**—स्त्री० [सं० ब० स०-ङीप्] वनमूँग। मुद्गपर्णी।

**शिंबी**—स्त्री० [स० शिंब-ङीष्] १. छीमी। फली। बौड़ी। २. सेम। ३. केवाँच। कोंछ। ४. वन-मूँग।

**शिंबी धान्य**—पुं० [स० मध्यम० स०] वह अन्न जिसके दानों में दो दल हों। छिदल अन्न। दाल। जैसे—मूंग, मसूर, मोठ, उड़द आदि।

**शिंशपा**—स्त्री० [स० शिंश√पा (रक्षा करना)+क-टाप्] शिंव √शा (पान करना)+क पृषो० सिद्ध वा] १. शीशम का पेड़। २. अशोक वृक्ष।

**शिंशपा**—स्त्री०=शिंशपा।

**शिंशुमार**—पुं० [सं० शिंश√मृ (मारना)+णिच्-अच्] सूँस नामक जल जन्तु।

**शिकंजा**—पुं० [फा० शिकंज.] १. कोई ऐसा यंत्र जिससे चीजें कसकर दबाई जाती हों। २ जिल्दबंदों का एक यंत्र जिससे वे बनकर तैयार होनेवाली किताबें दबाकर उनके किनारे काटते हैं। ३ वह तागा जिससे जुलाहे घुमावदार बंद बनाते हैं। ४ प्राचीन काल का एक प्रकार का यंत्र जिसमें अपराधियों को यंत्रणा देने के लिए उनके पैर कसकर जकड़ दिये जाते थे।
**मुहा०—(किसी को) शिकंजे में खिंचवाना**=(क) उक्त प्रकार के यंत्र में किसी के पैर फँसा कर या और किसी प्रकार बहुत अधिक यंत्रणा देना। (ख) बहुत अधिक कष्ट देना।
५. रूई की गाँठें बाँधने के समय उन्हें दबाने का यंत्र। पेंच। ६. ऊख तेल आदि पेरने का कोल्हू।

**शिकन**—स्त्री०[फा०] किसी समतल सतह के दबने, मुड़ने, बढ़ने, सिकुड़ने आदि के फलस्वरूप बननेवाला रेखाकार चिह्न।
क्रि० प्र०—आना।—डालना।—निकालना।—पड़ना।
**मुहा०—चेहरे पर शिकन आना**=आकृति से असन्तोष, कष्ट आदि व्यक्त होना।

**शिकम**—पु० [फा०] पेट। उदर।
पद—शिकम परवर=पेटू।

**शिकमी**—वि० [फा०] १. पेट संबंधी। २. निज का। अपना। ३ किराये, लगान आदि के विचार से जो किसी दूसरे के अन्तर्गत हो। जैसे—शिकमी काश्तकार, शिकमी किरायेदार।
मुहा०—शिकमी देना=किराये, लगान आदि पर ली हुई जमीन किसी दूसरे को किराये या लगान पर देना।

**शिकमी काश्तकार**—पु० [फा०] ऐसा काश्तकार जिसे जोतने के लिए खेत दूसरे काश्तकार से मिला हो।

**शिकरा**—पु० [फा० शिकर:] एक प्रकार का बाज जो दूसरे पक्षियों का शिकार करने के लिए सधाया या सिखाया जाता।

**शिकवा**—पु० [अ० शिकव] १ शिकायत। उलाहना। २ ग्लानि।

**शिकस्त**—स्त्री० [फा०] १ भंग। २ टूटना। ३ विफलता। ४. पराजय।
क्रि० प्र०—खाना।—देना।
स्त्री० [फा० शिकस्त:] उर्दू लिपि की घसीट लिखावट।
वि० टूटा-फूटा।

**शिकस्तगी**—स्त्री० [फा०] १. टूटे-फूटे हुए होने की अवस्था या भाव। २. तोड़-फोड़।

**शिकस्ता**—वि० [फा० शिकस्त] टूटा-फूटा। भग्न।
स्त्री०=शिकस्त (लिपि)।

**शिकायत**—स्त्री० [अ०] १ किसी के अनुचित या नियम-विरुद्ध व्यवहार के फलस्वरूप मन मे होनेवाला असंतोष। २ उक्त असंतोष को दूर करने के लिए संबंधित अथवा आधिकारिक व्यक्ति से किया जानेवाला निवेदन। ३ किसी के अनुचित काम का किसी के सम्मुख किया जानेवाला कथन। ४ दंडित करवाने के उद्देश्य से किसी की किसी दूसरे से कही जानेवाली सही या गलत बात। ५. कोई ऐसा आरंभिक या हलका शारीरिक कष्ट जो रोग के रूप में हो। जैसे—बुखार की शिकायत।

**शिकायती**—वि० [अ० शिकायत+हिं० ई (प्रत्यय)] १ शिकायत करने वाला (पत्र या लेख)। २. जिसमे किसी की या कोई शिकायत हो।

**शिकार**—पु० [फा०] १. जंगली विशेषत: हिंसक पशु-पक्षियों को पकड़ने या मारने का कार्य। मृगया। आखेट।
क्रि० प्र०—खेलना।
२. वह जानवर जो उक्त प्रकार से मारा जाय। ३ ऐसे पशु का मांस जो खाया जाता हो। गोश्त। ४ भक्ष्य पदार्थ। आहार। भोजन। जैसे—छिपकली को शिकार मिल गया। ५ फँसाया हुआ ऐसा व्यक्ति जिससे लाभ उठाया जा सकता हो।
क्रि० प्र०—बनना।—बनाना।—होना।
६. असामी।

**शिकारगाह**—स्त्री० [फा०] शिकार खेलने का स्थान।

**शिकारबंद**—पु० [फा०] वह तस्मा जो घोड़े की दुम के पास चारजामे के पीछे शिकार किये हुए जानवर को लटकाने या आवश्यक सामान बाँधने के लिए लगाया जाता है।

**शिकारा**—पु० [फा० शिकारः] कश्मीर में होनेवाली एक प्रकार की बड़ी नाव जिसमे पूरी गृहस्थी के सुखपूर्वक रहने की व्यवस्था होती है। (हाउस-बोट)

**शिकारी**—पु० [फा०] शिकार या आखेट करनेवाला अहेरी।
वि० १. शिकार-संबंधी। २. जिसका शिकार किया जाता हो उससे संबंध रखनेवाला। ३ जिससे शिकार किया जाता हो। जैसे—शिकारी राइफल।

**शिकोह**—पु० [फा० शुकोह] भय।

**शिक्थ**—पुं० [सं० शिच्+थक्—कुक् पृषो० स=श वा] मोम।

**शिक्य**—पु० [स० शिच्+यत्—कुक च]=शिक्या।

**शिक्या**—स्त्री० [सं० शिक्य—टाप्] १. बहँगी के दोनो कोरों पर बँधा हुआ रस्सी का जाल जिस पर बोझ रखते है। २ छीका। सिकहर। ३. तराजू की रस्सी।

**शिक्षक**—पु० [सं०√शिक्ष् (अभ्यास करना)+ण्वुल्—अक] विद्या या हुनर सिखलानेवाला व्यक्ति।

**शिक्षण**—पु० [स०√शिक्ष् (अभ्यास करना)+ल्युट्—अन] शिक्षा देने अर्थात् पढाने का काम। तालीम। शिक्षा।

**शिक्षण-विज्ञान**—पु० [स० ष० त०] वह विज्ञान जिसमे शिक्षार्थियों को शिक्षा देने के सिद्धांतों का विवेचन होता है। (पेडागोजी)

**शिक्षणालय**—पुं० [सं० ष० त०] वह स्थान जहाँ शिक्षार्थी शिक्षा प्राप्त करते हैं।

**शिक्षणीय**—वि० [सं०√शिक्ष् (अभ्यास करना)+अनीयर] जिसे शिक्षा दी जा सके या दी जाने की हो। सिखाये-पढाये जाने के योग्य।

**शिक्षा**—स्त्री० [स०√शिक्ष्+अ] [वि० शिक्षित, शैक्षणिक] १. किसी प्रकार का ज्ञान या विद्या प्राप्त करने के लिए सीखने-सिखाने का क्रम। तालीम। जैसे—किसी भाषा विज्ञान या शास्त्र की शिक्षा। २ उक्त प्रकार से प्राप्त किया हुआ ज्ञान या विद्या। (एजुकेशन) जैसे—आप अभी अमेरिका से चिकित्सा-शास्त्र की शिक्षा प्राप्त कर लौटे हैं।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।
**विशेष**—आज-कल शिक्षा के अन्तर्गत वे सभी बातें हैं जो किसी को किसी विषय का अच्छा ज्ञाता या उपयुक्त कार्यकर्ता बनाने के लिए पढ़ाई या सिखाई जाती है। शिक्षा का उद्देश्य मनुष्य को विद्या या विषय का ज्ञाता बनाने के सिवा नैतिक, मानसिक और शारीरिक सभी दृष्टियों से कर्मठ, योग्य, सदाचारी, समर्थ, स्वावलंबी आदि बनाना भी होता है। ३ किसी प्रकार के अनुचित कार्य या व्यवहार से मिलनेवाला उपदेश या ज्ञान। नसीहत। जैसे—इस नकदमेबाजी से तुम्हें शिक्षा तो मिली। ४ (क) छ वेदांगों में से एक जिसमें वैदिक साहित्य के वर्णों, मात्राओं, स्वरों आदि के उच्चारण-प्रकार का विवेचन है। (ख) आज-कल, व्याकरण का वह अंग जिसमे अक्षरों या वर्णों और उनके संयुक्त रूपों आदि के ठीक ठीक उच्चारण स्वरूप और फलत: उनके लेखन-प्रकार (अक्षरी या हिज्जे) का विवेचन होता है। (ऑर्थोग्रैफी) ५. नम्रता। विनय। ६. दक्षता। निपुणता। ७. उपदेश। ८. मंत्रणा। सलाह। ९ शासन। दंड। सजा।

**शिक्षाकर**—पु० [स०√शिक्षा+√कृ (करना)+अच्] व्यास।

**शिक्षालेप**—पु० [स० ब० स०] काव्य में एक प्रकार का अलंकार जिसमें प्रिय को किसी प्रकार की शिक्षा देकर अर्थात् अच्छी बात बतलाकर कही जाने से रोका जाता है। (केशव)

**शिक्षा-गुरु**—पुं० [सं० ष० त० स०] शिक्षा देने अर्थात् विद्या पढ़ानेवाला गुरु।

**शिक्षा-दंड**—पुं०[सं० मध्यम० स०] वह दंड जो कोई बुरी आदत या चाल छुड़ाने के लिए दिया जाय।

**शिक्षा-दीक्षा**—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] ऐसी शिक्षा जो चारित्रिक, बौद्धिक या मानसिक विकास के उद्देश्य से दी जाती हो।

**शिक्षा-पद**—पुं० [स० ष० त० स०] १. उपदेश। २. बौद्धों में, पंचशील के नियम जिनका लोगों को उपदेश दिया जाता है।

**शिक्षा-पद्धति**—स्त्री० [सं० ष० त० स०] शिक्षा देने का ढंग या तरीका। जैसे—भारतीय शिक्षा-पद्धति।

**शिक्षा-परिषद्**—स्त्री० [स० ष० त० स०] १ प्राचीन भारत में किसी ऋषि का वह शिक्षालय जहाँ वैदिक ग्रन्थों की पढ़ाई होती थी। २. आज-कल शिक्षा-संबंधी व्यवस्था करनेवाली परिषद्।

**शिक्षा-प्रणाली**—स्त्री० [स० ष० त० स०] विद्यार्थियों को शिक्षा देने की प्रणाली अर्थात् ढंग या तरीका।

**शिक्षार्थी (र्थिन्)**—वि० [स० शिक्षार्थ+इनि] १ जो शिक्षा प्राप्त करना चाहता हो। २. शिक्षा प्राप्त करनेवाला।

**शिक्षालय**—पुं० [स० ष० त० स०] शिक्षणालय। (दे०)

**शिक्षा-विभाग**—पुं० [स० ष० त०स०] शिक्षा-संबंधी राजकीय विभाग।

**शिक्षा-व्रत**—पुं० [स० मध्यम० स०] जैन धर्म के अनुसार गार्हस्थ्य धर्म का एक प्रधान अंग जो चार प्रकार का कहा गया है—सामयिक, देशावकाशिक, पौष और अतिथि संविभाग।

**शिक्षा-शक्ति**—स्त्री० [स० ष० त०] शिक्षा ग्रहण करने का सामर्थ्य।

**शिक्षित**—भू० कृ० [स०√शिक्ष् (अभ्यास करना)+क्त, शिक्षा+इतच् वा] १. (वह) जो शिक्षा प्राप्त कर चुका हो। २. जिसे शिक्षा मिली हो। पढ़ा-लिखा। साक्षर। ३. सिखाया हुआ।

**शिक्ष्यमाण**—पुं० [स०√शिक्ष् (अभ्यास करना)+यक्-शानच्-मुक्] १. वह जिसे किसी प्रकार की शिक्षा दी जा रही हो। २.वह जिसे किसी कार्यालय में काम मिलने से पहले किसी प्रकार की शिक्षा प्राप्त करनी पड़ रही हो।

**शिखंड**—पुं० [सं० शिखा√अम्+ड, ष० त० स०] १. मोर की पूँछ। मयूर-पुच्छ। २. चोटी। शिखा। ३. काक-पक्ष। काकुल।

**शिखंडक**—पुं० [सं० शिखंड+कन्] १. काक-पक्ष। काकुल। २. मोर की पूँछ।

**शिखंडिक**—पुं० [सं० शिखंड+ठन्-इक] १. कुक्कुट। मुर्गा। २. एक प्रकार का मानिक (रत्न)।

**शिखंडिका**—स्त्री० [सं० शिखंडिक-टाप्] शिखा। चोटी।

**शिखंडिनी**—स्त्री० [सं० शिखंड+इनि-ङीप्] १. मोरनी। मयूरी। २. जूही। ३. मुरगी।
वि० स्त्री० शिखंड युक्त।

**शिखंडी**—पुं०[सं० शिखंडिन्] [स्त्री० शिखंडिनी] १. मोर। २. मुरगा। ३. बाण। तीर। ४. शिखा। ५. विष्णु। ६. शिव। ७. बृहस्पति। ८. कृष्ण। ९. द्रुपद का पुत्र जो जन्मतः स्त्री था, पर बाद में तपस्या से पुरुष बन गया था। महाभारत में, अर्जुन ने इसी की बीच में खड़ा करके इसकी आड़ से भीष्म को घायल किया था। १०. फलतः ऐसा व्यक्ति जिसमें पौरुष या बल का अभाव हो, पर जिसकी आड़ लेकर दूसरे लोग अपना काम निकालते हों। ११ पीली जूही। स्वर्ण-यूथिका। १२. गुंजा। घुँघची।

**शिखक**—स्त्री०=शिखा।

**शिखर**—पुं० [स० शिखा+अरच् अलोप] १. किसी चीज का सबसे ऊपरी भाग। सिरा। चोटी। २ पहाड़ की चोटी। पर्वत-शृंग। ३ गुंबद, मंदिर, मसजिद आदि का ऊँचा नुकीला सिरा। ४ गुंबद। ५. मंडप। ६. मंदिर या मकान के ऊपर का उठा हुआ नुकीला सिरा। कँगूरा। कलश। ७ जैनों का एक प्रसिद्ध तीर्थ। ८. एक प्रकार का छोटा रत्न। ९. उँगलियों की एक मुद्रा जो तान्त्रिक पूजन में बनाई जाती है। १० प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। ११ लौंग। १२. कुंद की कली। १३ काँस। बगला। १४ पुलक। रोमांच।

**शिखरणी**—स्त्री० [स० शिखर√नि+क्विप् ङीप्] =शिखरिणी।

**शिखर-दशना**—वि० स्त्री०[स० ब० स०] (स्त्री) जिसके दाँत कुंद की कली के समान हों।

**शिखरन**—पुं०[स०शिखर√नी (बोना)+ड शिखरिणी] दही और चीनी का बना हुआ एक प्रकार का मीठा गाढ़ा पेय पदार्थ जिसमें केशर, कपूर, मेवे आदि पड़े होते हैं।

**शिखर-वासिनी**—स्त्री० [सं० शिखर√वस् (रहना)+णिनि] शिखर पर बसनेवाली दुर्गा।

**शिखर-सम्मेलन**—पुं० [ष० त०] कई राष्ट्रों के सर्वोच्च अधिकारियों अथवा शासकों का ऐसा सम्मेलन जो किसी महत्वपूर्ण राजनीतिक विषय पर विचार करने के लिए हो। (सम्मिट कान्फरेन्स)

**शिखरा**—स्त्री० [सं० शिखर-टाप्] १. मूर्व्वा। मरोड़फली। मुरा। २. एक गंधा जो विश्वामित्र ने रामचन्द्र को दी थी।

**शिखरिणी**—स्त्री० [सं० शिखर+इनि+ङीप्] १. श्रेष्ठ स्त्री। २. शिखरन नामक पेय पदार्थ। ३. १७ अक्षरों की एक वर्णवृत्ति जिसमें छठें और ग्यारहवें वर्ण पर यति होती है। ४. रोमावली। ५ बेला या मोतिया नामक फूल। ६. नेवारी। ७. आम। ८. किंशमिश। ९. मूर्वा। मरोड़-फली।

**शिखरी**—पुं० [सं० शिखर+इनि-दीर्घ-नलोप] १. पर्वत। पहाड़। २. पहाड़ी किला। ३. पेड़। वृक्ष। ४ अपामार्ग। चिचड़ा। ५. बंदाक। बाँदा। ६. लोबान। ७ काकड़ा सिंगी। ८. ज्वार। मक्का। ९. कुंदक नामक गन्ध द्रव्य। १०. एक प्रकार का मृग।
स्त्री०[सं० शिखरा] एक गंधा जो विश्वामित्र ने रामचन्द्र को दी थी। शिखरा।

**शिखांत**—पुं० [सं० शिखा+अंत ष० त०] शिखा का अंतिम अर्थात् सबसे ऊपरी भाग।

**शिखा**—स्त्री० [सं० शि+अक् पृषो०-टाप्] १. हिन्दुओं में, मुंडन के समय सिर के बीचोबीच छोड़ा हुआ बालों का गुच्छा जो फिर कटाया नहीं जाता और बढ़कर लंबी चोटी के रूप में हो जाता है। चुंदी। चोटी।
पद—शिखासूत्र=चोटी और जनेऊ जो द्विजों के मुख्य चिह्न हैं और जिनका त्याग केवल संन्यासियों के लिए विधेय है।
२. मोर, मुर्गी आदि पक्षियों के सिर पर उठी हुई चोटी या पंखों का गुच्छा।

चोटी। कलगी। ३. आग, दीपक आदि की ऊपर उठने वाली लौ। ४. प्रकाश की किरण। ५ किसी चीज का नुकीला सिरा। नोक। ६. ऊपर उठा हुआ सिरा। चोटी। ७. पैर के पंजों का सिरा। ८. स्तन का अगला भाग। चूचुक। ९. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके विषम पादों में २८ लघु मात्राएँ और अंत में एक गुरु होता है। सम पादों में ३० लघु मात्राएँ और अन्त में एक गुरु होता है। १०. पहने हुए कपड़े का आँचल। दामन। ११. पेड़ की जड। १२. पेड की डाल। शाखा। १३. श्रेष्ठ वस्तु या व्यक्ति। १४. नायक। सरदार। १५. काम-वासना की तीव्रता के कारण होनेवाला ज्वर। काम-ज्वर। १६ तुलसी। १७. बच। १८. जटामासी। बालछड। १९. कलियारी नामक विष। लांगली। २० मरोड़-फली। मूर्वा।

**शिखाकंद**—पुं० [स० ब० स०] शलजम। शलगम।

**शिखातप**—पु० [स० ष० त० स०] दीप-वृक्ष। दीवट। दीयर।

**शिखाधर**—पुं० [सं० ष० त० स०] मयूर। मोर।
वि० शिखा धारण करनेवाला।

**शिखाधार**—पुं० [सं०]=शिखाधर।

**शिखापित्त**—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमें हाथ-पैर की उँगलियों में सूजन और जलन होती है।

**शिखाभरण**—पु० [स० ष० त० स०] १ शिरोभूषण। २. मुकुट।

**शिखामणिक**—पु० [स० ष० त० स०] १. सिर पर धारण किया जानेवाला रत्न। २. मुकुट में लगाया जानेवाला रत्न। ३ सर्व-श्रेष्ठ पदार्थ या वस्तु।

**शिखामूल**—पु० [सं० ब० स०] ऐसा कन्द जिसके ऊपर पत्तियाँ या पत्ते हों। जैसे—गाजर, शलजम आदि।

**शिखालु**—पुं० [स० शिखा+आलुच्] मोर की चोटी। कलगी।

**शिखावल**—पु० [स० शिखा+वलच्] [स्त्री० शिखावली] १. मोर। मयूर। २ कटहल।

**शिखावान् (वत्)**—वि० [स० शिखा+मतुप्-म=व-नुम्-दीर्घ नलोप] [स्त्री० शिखावती] शिखावाला।
पु० १ अग्नि। २. चित्रक। चीता। ३ केतु ग्रह। ४. मयूर। मोर।

**शिखावृक्ष**—पु० [स० ष० त०स०] वह आधार जिस पर दीया रखा जाता है। दीवट।

**शिखावृद्धि**—स्त्री० [स०ष० त०स०] १ ब्याज का प्रतिदिन बढ़ना। २. ब्याज पर भी जोड़ा जानेवाला ब्याज। सूद-दर-सूद। (कम्पाउंड इन्टरेस्ट)

**शिखि (खिन्)**—पुं० [सं० शिखा+इन] १. मोर। मयूर। २. तामस मन्वन्तर के इन्द्र का नाम। ३. कामदेव। ४. अग्नि। ५. तीन की संख्या का वाचक शब्द।
वि०=शिखावान्।

**शिखि-ग्रीव**—पुं० [स० शिखि-ग्रीवा+अच् ब० स० वा] १. नीलाथोथा। २ कांत पाषाण नाम का नीला पत्थर।

**शिखिध्वज**—पुं० [सं० ष० त० स०] १. धूम। धूआँ। २ एक प्राचीन तीर्थ। ४. मयूरध्वज राजा का दूसरा नाम।

**शिखिनी**—स्त्री० [स० शिखा+इनि-ङीप्] १. मयूरी। मोरनी। २. मुरगी। ३. जटाधारी नाम का पौधा।

**शिखि-वाहन**—पुं० [स० ब० स०] मयूर की सवारी करनेवाले कार्तिकेय।

**शिखिशिंह**—पुं० [स० ष० त०] १ तेंदू (पेड)। २ आबनूस (वृक्ष)।

**शिखी (खिन्)**—वि० [स० शिखिनी] शिखा या शिखाओं से युक्त। चोटी या चोटियोंवाला।
पु० १. मोर। मयूर। २. मुरगा। ३. एक प्रकार का सारस। ४. बगला। ५ बैल या साँड़। ६ घोड़ा। ७. चित्रक। चीता। ८. अग्नि। ९. तीन की संख्या का वाचक शब्द। १०. दीपक। दीआ। ११ पित्त। २१ पुच्छल तारा। केतु। १३ मेथी। १४. शतावर। १५. पेड। वृक्ष। १६. पर्वत। पहाड। १७. ब्राह्मण। १८. बाण। तीर। १९. जटाधारी। साधु। २०. इन्द्र। २१ एक प्रकार का विष।

**शिखीश्वर**—पु० [ष० त० स०] कार्तिकेय।

**शिगाफ**—पु० [फा० शिग़ाफ़] १ दरार। दरज। २ सूराख। छेद। ३. चिकित्सा के उद्देश्य से नश्तर से फोड़ो आदि में लगाया जानेवाला चीरा।

**शिगाल**—पु० [स० शृगाल से फा०] गीदड। सियार।

**शिगूफ़ी**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का जंगली पौधा जो दवा के काम आता है।

**शिगूफा**—पु०=शगूफा।

**शिग्रु**—पुं० [स० शि+रुक्-गुक् च] १ सहिंजन का वृक्ष। शोभाजन। २. शाक। साग।

**शित**—भू० कृ० [स०√शो (पतला करना)+क्त] १. सान पर चढ़ा कर तेज किया हुआ। २ नुकीला। ३ दुर्बल।
†वि०=सित।

**शितद्रु**—स्त्री० [स० शित्√द्रु (गिरिलना)+कु] १. शतद्रु। सतलज। २ क्षीर-मोरट। मोरठ।

**शितफल**—पु० [स० ब० स०] शरीफा। सीताफल।

**शिताब**—अव्य० [फा०] जल्द। झटपट। शीघ्र।

**शिताबी**—स्त्री० [फा०] १ शीघ्रता। जल्दी। २. उतावली। हड़बड़ी।

**शितावर**—पु० [स० शतावर] १ बकुची। सोमराजी। २ शिरियारी। ३ शतावर।

**शिति**—वि० [स०√शो (पतला करना)+क्तिच्] १. सफेद। २. काला। ३ नीला। ४. रंग-बिरंगा।
पु० भोजपत्र।

**शितिकंठ**—पु० [स० ब० स०] १ महादेव। शिव। २. नाग देवता। ३ जल-काक। मुरगाबी। ४ पपीहा। ५ मोर।

**शिति-चंदन**—पुं० [स० ब० स०] कस्तूरी।

**शितिपक्ष**—पुं० [स० ब० स०] हंस।

**शिति-रत्न**—पु० [मध्यम० स०] नीलम।

**शितिपुट**—पु० [स० ब० स०] १. बिल्ली की तरह का एक जानवर। २ एक प्रकार का काला भौंरा।

**शिथिल**—वि० [√श्लथ् (हिंसा करना)+किलच्-पृषो०] [भाव० शिथिलता] १ जिसमें खिंचाव न होने के कारण ढिलाई हो। ढीला। २. (व्यक्ति) जिसके वृद्धावस्था, थकावट, बीमारी आदि के फल-स्वरूप

अंग-अंग ढीले पड़ गये हो। ३. जिसमे तेजी या फुरती न हो। जिसकी गति मंद हो। ४. आलस्य के कारण काम न करनेवाला। ४. जो अपनी बात पर दृढ़ न रहता हो। ५. (काम या बात) जिसका पालन दृढ़तापूर्वक न होता हो। ६. निबंधन या दबाव में रखा हुआ। ७. (शब्द) जो स्पष्ट न हो।

**शिथिलता**—स्त्री० [स० शिथिल+तल्—टाप्] १ शिथिल होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. साहित्य मे, वाक्य-रचना का वह दोष जिसमे आर्थी दृष्टि से शब्द अच्छी तरह गठे हुए न हों। ३. तर्क में किसी अवयव का अभाव।

**शिथिलाई**†—स्त्री० =शिथिलता।

**शिथिलाना**—अ० [स० शिथिल+आना (प्रत्य०)] १. शिथिल होना। ढीला पड़ना। २ श्रान्त होना। थकना।
स० १. शिथिल करना। २. थकाना।

**शिथिलित**—भू० कृ० [सं० शिथिल+इतच्] जो शिथिल हो गया हो। ढीला पड़ा हुआ।

**शिथिलीकरण**—पु० [सं० शिथिल+च्वि√कृ (करना)+ल्युट् अन—दीर्घ] [वि० शिथिलीकृत] शिथिल करना। ढीला करना।

**शिथिलीभूत**—भू० कृ० [स० शिथिल+च्वि√भू (होना)+क-दीर्घ] जो शिथिल हो गया हो। ढीला पड़ा हुआ।

**शिद्दत**—स्त्री० [अ०] १. तीव्रता। प्रबलता। २ उग्रता। प्रचडता। ३. अधिकता। ज्यादती। ४. कठिनाई। कष्ट।

**शिनाख्त**—स्त्री० [फा०] १. यह निश्चय कि अमुक वस्तु या व्यक्ति यही है। किसी व्यक्ति, वस्तु आदि को देख कर बतलाना कि यही अमुक व्यक्ति या वस्तु है। पहचान। २. भला-बुरा पहचानने की योग्यता। तमीज। परख। जैसे—उसे हीरों की अच्छी शिनाख्त है।

**शिनाख्त**—वि० [फा०] [भाव० शिनाखी] पहचाननेवाला। जानकार।

**शिनाख्ती**—स्त्री० [फा०] १. पहचान। परिचय। २. जानकारी।

**शिनि**—पु० [सं० शि+निक्] १. गर्ग ऋषि के पुत्र का नाम। २. क्षत्रियों का एक भेद।

**शिप्र**—पुं० [सं०शि+रक-पुक् च] हिमालय पर्वत का एक सरोवर।

**शिप्रा**—स्त्री० [सं० शिप्र-टाप्] एक नदी जिसके तट पर उज्जयिनी नगर बसा हुआ है। (कहते हैं कि यह शिप्र नामक सरोवर से निकली थी।)

**शिफर**—पुं०=सिफर (डाल)।

**शिफा**—स्त्री० [सं० शि+फक्—टाप्] १. एक प्रकार के वृक्ष की रेशेदार जड़ जिससे प्राचीन काल में कोड़े बनते थे। २. कोड़े या चाबुक की फटकार अथवा मार। ३. कोड़ा या चाबुक।
पद—शिफा-दंड=कोड़े या बेंत मारने का दंड।
४. माता। माँ। ५. हलदी। ६. कमल की नाल। भसीड़। ७. लता। बल्ली। ८. दरिया। नदी। ९. घटामासी। १०. चोटी। शिखा।

**शिफा**—स्त्री० [अ०] १. बीमारी, रोग आदि से होनेवाला छुटकारा। २. स्वास्थ्य।

**शिफाकंद**—पुं० [सं० उपमि० स०] कमल की जड़। भसींड़।

**शिफाग्रह**—पुं० [सं० शिफा√ग्रह् (आरोहण करना)+क] बरगद (पेड़)। वटवृक्ष।

**शिबि**—पुं० [सं० शिबि-कित्]=शिवि।

**शिमाल**—स्त्री० [अ०] [वि० शिमाली] उत्तर दिशा।

**शिया**—पु०=शीया (सम्प्रदाय)।

**शिरःकपाली**—पु० [स० शिरःकपाल+इनि] कापालिक सन्यासी।

**शिरःकंद**—पुं० [स० ष० त० स०] माथे की हड्डी। कपालास्थि।

**शिरःफल**—पु० [सं० ब० स०] नारिकेल। नारियल।

**शिर (र्)**—पुं० [सं० शृ+क] १. सिर। कपाल। मुंड। खोपड़ा। २. मस्तक। माथा। ३. ऊपरी भाग। चोटी। ४. अगला भाग। सिरा। ५ सेना का अगला भाग। ६. पद्य के चरण का आरंभ। टेक। ७. अगुआ, प्रधान या मुखिया। ८ पिप्पलीमूल। ९. शय्या। १०. बिछौना। बिस्तर। ११ अजगर।

**शिरकत**—स्त्री० [अ०] १ शरीक होने की अवस्था, क्रिया या भाव। मिलना। २. एक साथ मिलकर किसी काम मे प्रवृत्त होना। ३. व्यापार मे हिस्सेदार बनना। साझेदारी।

**शिरकती**—वि० [फा०] १ साझे का। सम्मिलित। २. शिरकत के फलस्वरूप होनेवाला।

**शिरक्षित्र**—पुं०=शीर-विश्त।

**शिरगं का**—पु० [देश०] दुग्ध-पाषाण नामक वृक्ष।

**शिरज**—पु० [स० शिर√जन् (उत्पन्न करना)+ड] केश। बाल। वि० शिर या सिर से उत्पन्न।

**शिरत्राण**†—पुं०=शिरस्त्राण।

**शिरनेत**—पु० [देश०] १. गढवाल या श्रीनगर के आस-पास का प्रदेश। २. क्षत्रियो का एक वर्ग।

**शिरफूल**—पुं० =सीस-फूल (गहना)।

**शिरमौर**—पु०=सिर-मौर।

**शिरश्चन्द्र**—पु० [स० ब० स०] महादेव। शिव।

**शिरसा**—अव्य० [स० शिरस+आप्] सिर झुकाकर या आदरपूर्वक। शिरोधार्य करते हुए। जैसे—कोई बात शिरसा मानना या स्वीकृत करना।

**शिरसिज**—पु० [सं० शिरसि√जन् (उत्पन्न करना)+ड सप्तमी अलुक् स०] केश। बाल।

**शिरसिरुह**—पुं० [सं० शिरसि√रुह् (उगना)+क-अलुक् स०] केश। बाल।

**शिरस्कर**—पुं० [सं० शिरस्√कृ (प्रकाशित)+क] १. पगड़ी। २. शिरस्त्राण।

**शिरस्त्र**—पु० [शिरस्√त्रै (रक्षा करना)+क] =शिरस्त्राण।

**शिरस्त्राण**—पुं० [सं०शिरस्√त्रै+स्युट्—अन] वह टोप जो युद्ध आदि के समय सैनिक सिर पर पहनते हैं।

**शिरहन**—पुं० [स० शिर+आधान] १. तकिया। २. सिरहाना।

**शिरा**—स्त्री० [सं० शृ+क—टाप्] १. रक्त की छोटी नाड़ी। खून की छोटी नली। (ब्लड वेसल) २. पानी का सोता; विशेषतः जमीन के अन्दर बहनेवाला सोता। ३. कूएँ से पानी खींचने का डोल।

**शिराकत**—स्त्री०=शराकत।

**शिराग्रह**—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का वात रोग।

**शिराज**—स्त्री० [देश०] हिन्दुओं की एक जाति जो चमड़े का काम करती है।

**शिराजाल**—पुं० [स० ष० त० स०] १ शरीर के अन्दर की छोटी रक्त-नाड़ियों का समूह। २. आँख संबंधी एक रोग।

**शिरापत्र**—पुं० [सं० ब० स०] १. पीपल का पेड़। २ हिंताल। ३. कपित्थ। कैथ।

**शिरापीड़िका**—स्त्री० [स० ब० स०] १. आँख का एक रोग जिसमें पुतली के पास एक फुंसी निकल आती है। २. बहुमूत्र के रोगियों को निकलने वाली एक प्रकार की घातक फुंसी।

**शिराफल**—पुं० [सं० ब० स०] नारियल।

**शिरामल**—पु० [स० ब० स०] नासि।

**शिरायु**—पु० [स० ब० स०] रीछ। भालू।

**शिरार्ल**—वि० [सं० शिरा+लच्] १. शिरा-संबंधी। २. शिरायुक्त। ३. बहुत सी शिराओंवाला।
पु० कमरख।

**शिराबरोध**—पुं० [स० ब०स०] एक प्रकार का रोग जिसमे शरीर के अंदर किसी शिरा मे रक्त के कणों की गाँठ बनकर ठहर जाती और उस अंग के रक्त-संचार मे बाधक होती है। (थ्राम्बोसिस)

**शिराहर्ष**—पुं० [ष० त० स० ब० स० वा] १ नसो का झनझनाना। २. एक रोग जिसमे आँखें लाल हो जाती हैं।

**शिरि**—पुं० [सं०√शृ+कि] १. खड्ग। तलवार। २. तीर। बाण। ३. फतिंगा। ४. टिड्डी।

**शिरिआरी**—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की जंगली बूटी या शाक जो औषध के काम में आती है। सुसना।

**शिरीष**—पुं० [सं० शृ+ईषन्-किन्] १. सिरस का पेड़। २. उक्त का पुष्प।

**शिरोगृह**—पु० [स० मध्यम० स०] अट्टालिका का सब से ऊपरवाला कमरा।

**शिरोग्रह**—पु० [स० ब० स०] समलबाई नामक रोग।

**शिरोरुह**—पुं० [सं० शिरस्√जन् (उत्पन्न करना)+ड] बाल। केश।

**शिरोदाम**—पु० [सं० ष० त० स० शिरोदामन्] पगड़ी। साफा।

**शिरोधरा**—स्त्री० [सं० शिरस्√धर् (रक्षना)+अच्-टाप्] ग्रीवा। गरदन।

**शिरोधाम**—पुं०[सं० ष० त० स०] चारपाई का सिरहाना।

**शिरोधार्य**—वि० [स० तृ० त० स०] आदरपूर्वक सिर पर धारण किए जाने या माने जाने के योग्य। सादर अंगीकार किए जाने के योग्य।

**शिरोपाव**—पुं०=सिरोपाव।

**शिरोभूषण**—पु०[सं० ष० त० स०]१. सिर पर पहनने का गहना। जैसे—सीसफूल। २. मुकुट। ३. श्रेष्ठ व्यक्ति।

**शिरोभूषा**—स्त्री०[सं० ष० त०]१. सिर की भूषा। २. सिर पर धारण किया जानेवाला वस्त्र, पगड़ी, टोपी आदि।

**शिरोमणि**—पु०[सं० मध्यम० स०]१. सिर पर का रत्न। चूड़ामणि। २. मान्य और श्रेष्ठ व्यक्ति। ३. माला में का सुमेरु।

**शिरोमाली (लिन्)**—पुं०[सं० शिरस्-माला-ष० त० स०—इनि, दीर्घ, नलोप] मनुष्य की खोपड़ियों या मुंडो की माला धारण करनेवाले, शिव।

**शिरोमौलि**—पु०[सं० ष० त० स०]१. सिर पर पहना जानेवाला आभूषण या रत्न। २. श्रेष्ठ व्यक्ति।

**शिरोरक्षी (क्षिन्)**—पु०[स० शिरस्-रक्षा-ष० त० स०—इनि] प्राचीन भारत में, सदा राजा के साथ रहनेवाला रक्षक। अंग-रक्षक। (बाँडी गॉर्ड)

**शिरोरत्न**—पुं०[सं० ष० त० स०]=शिरोमणि।

**शिरोवर्ती (र्तिन्)**—वि०[सं० शिरस्√वृत् (रहना)+णिनि, दीर्घ नलोप] प्रधान। मुखिया।
पुं० प्रधान। मुखिया। नायक।

**शिरोवल्ली**—स्त्री०[स० तृ० त०] मोर, मुर्गे आदि की चोटी। कलगी।

**शिरोवस्ति**—पु०[स० ष० त० स०] वैद्यक मे, शिर के वातज दर्द का एक उपचार।

**शिरोविंदु**—पु०[सं० मध्य० स०] आकाश मे वह स्थान या उसका सूचक बिंदु जो हमारे सिर के ठीक ऊपर पड़ता है। 'अधोविंद' का विपर्याय। (जेनिथ)

**शिरोहर्ष**—पु०[सं० ब० स०] समलबाई नामक रोग।

**शिरोहारी (रिन्)**—पु० [सं० शिरस्√हृ+णिनि]खोपड़ियो की माला पहननेवाले, शिव।

**शिलींधिर**—पु० [सं० ब० स०] एक प्राचीन गोत्र-प्रवर्त्तक ऋषि।

**शिलंब**—पु० [सं० ब० स०] १. जुलाहा। तंतुवाय। २ बुद्धिमान् व्यक्ति।

**शिल**—पुं०[सं० √शिल् (एक, एक कण का बीनना)+क] उछ नामक वृत्ति।
स्त्री०१.= शिला। २.=सिल।

**शिलंध**—पु०[स० शिल√जन् (उत्पन्न करना)+ड]=शैलेज (छरीला)।

**शिल-रीति**—पु०[स० ब० स०] उछवृत्ति। (दे०)

**शिला**—स्त्री० [सं० शिल+क—टाप्] १ पाषाण। पत्थर। २ पत्थर का बड़ा और चौड़ा टुकड़ा। चट्टान। सिल। ३ पत्थर की कंकड़ी या रोड़ा। ४ मनःशिल। मैनसिल। ५. कपूर। ६. शिलाजीत। ७. शैल। ८ नील का पौधा। ९ हर्रे। १० गोरोचन। ११. दूब। १२. उछवृत्ति।

**शिलाकुसुम**—पु०[सं० ष० त० स०]१ शैलेय नामक गन्ध द्रव्य। २ शिलाजीत।

**शिलागार**—पु०[सं० ष० त० स०] चूना।

**शिलाखंड**—पु०[सं० ष० त०]१. पत्थर का बड़ा टुकड़ा। चट्टान। २. आज-कल पुरातत्व मे पत्थरों का वह ढेर जो बहुत प्राचीन काल मे किसी घटना या स्मारक के रूप में लगाया जाता था।

**शिलाज**—पु० [सं० शिला√जन् (उत्पन्न करना)+ड]१ छरीला। पत्थर का फूल। २ लोहा। ३. शिलाजीत। ४ पेट्रोल।

**शिला-जतु**—पु०[मध्य० स०] शिलजीत।

**शिलाजा**—स्त्री०[सं० शिलाज—टाप्] सगमरमर।

**शिलाजीत**—स्त्री० [सं० शिलाजतु] कुछ विशिष्ट प्रकार की चट्टानों

के अत्यधिक तपने पर उनमें से निकलनेवाला एक प्रकार का रस जो काले रंग का होता है और अत्यधिक पौष्टिक माना जाता है।

**शिलाटक**—पु०[सं० शिला√अट् (जाना)+ण्वुल् —अक] १. बहुत बड़ा मकान। अट्टालिका। २. घर के ऊपर का कोठा। अटारी। ३. बड़ी इमारत की चहारदीवारी। परकोटा। ४. गड्ढा। गर्त।

**शिलात्व**—पु० [सं० शिला+त्व] १. शिला का भाव। २. शिला का धर्म अर्थात् कठोरता, जड़ता आदि।

**शिला-दान**—पु०[सं० ष० त० स०] पत्थर की मूर्ति विशेषतः शालग्राम का दिया जानेवाला दान।

**शिलाद्विष्य**—पु०[सं०] हर्षवर्द्धन।

**शिलाधातु**—पुं०[सं० ष० त० स०]१. सोनगेरू। २. खपरिया। ३. चीनी। शक्कर।

**शिलानिर्यास**—पु०[ष० त० स०]=शिलाजीत।

**शिला-न्यास**—पु०[सं० ष० त०]१. नये भवन की नींव के रूप में रखा जानेवाला पहला पत्थर। २. नींव रखने का कृत्य।

**शिला-पट्ट**—पु० [सं० ष० त० स०]१. पत्थर की चट्टान। २ मगाले आदि पीसने की सिल।

**शिला-पुत्र (क)**—पु०[ष०त०] पत्थर का वह टुकड़ा जिसे मिल पर रगड कर चीजें पीसी जाती हैं। लोढा।

**शिलापुष्प**—पु०[स० ष० त०]१. छरीला। शैलेय। २. शिलाजीत।

**शिलाप्रक्षेप**—पु० [सं० ष० त० स०] लड़ाई में शत्रुओं पर पत्थर फेंकना या लुढ़काना। (को०)

**शिला-बंध**—पु०[ब० स०] पत्थर की चहारदीवारी या परकोटा।

**शिला-भव**—पु०[स० त० स०]१. शिलाजीत। २ छरीला।

**शिलाभेद**—पु०[स०+ शिला √भिद्+अण्]१. पत्थर तोडने की छेनी। २. पाषाणभेदी वृक्ष। पखानभेद।

**शिला-मल**—पुं०[ष० त० स०] शिलाजीत।

**शिला-मुद्रण**—पु० [स० तु० त०] [भू० कृ० शिलामुद्रित] पुस्तकों आदि की पुरानी चाल की एक प्रकार की छपाई जो पत्थर की शिला पर अंकित चिन्हों या अक्षरों की सहायता से होती थी। (लीथोग्राफ)

**शिलायु**—पु० [सं० ब० स०] गले में होनेवाला एक प्रकार का विकार।

**शिला-रस**—पु०[सं०ष० त०स०]१. शैलेय नामक गन्ध द्रव्य। २. लोबान की तरह का एक प्रकार का सुगंधित गोंद।

**शिलारोपण**—पु०[ष०त०]नींव में पत्थर को प्रस्थापित करना। शिला-न्यास।

**शिला-लेख**—पुं०[सप्त० त०] १. वह लेख जो पत्थर पर खुदा हो। २. वह पत्थर जिसपर लेख आदि खुदा हो। ३. दे० 'पुरालेख'।

**शिलालेखविद्**—पु० [सं० शिलालेख√ विद्+ क्विप्] वह जो पुराने शिलालेखों के लेख आदि पढ़ने में प्रवीण हो। पुरालेखविद्। (एपिग्राफिस्ट)

**शिलाह्व**—पुं० [सं० ब० स०]१. एक प्राचीन जनपद। २. उक्त जनपद का निवासी।

**शिला-वृष्टि**—स्त्री०[सं० ष० त० स०] १. आकाश से ओले या पत्थर गिरना। २. पत्थर के टुकड़े किसी पर फेंकना।

**शिलावेश्म (न्)**—[स० ष० त० स०]१. कंदरा। गुफा। २. पत्थरों का बना हुआ मकान।

**शिलासन**—पु०[स० ब० स०]१. पत्थर का बना हुआ आसन। २. शिलाजीत। ३. शैलेय नामक गन्ध द्रव्य।

**शिलासार**—पु०[सं० ष० त० स०] लोहा।

**शिलास्वेद**—पुं०[सं० ष० त० स०] शिलाजीत।

**शिला-हरि**—पु० [स० मध्यम० स०] शालग्राम की मूर्ति।

**शिलाहारी (रिन्)**—वि०[स० शिला√ हृ (हरण करना)+णिनि]खेतों से अन्न बिनकर जीविका चलानेवाला। उञ्छशील।

**शिलाह्व**—पु० [स० ब० स०] शिलाजीत।

**शिलिंद**—पु०[स० शिलि√ दा (देना)+क पृषो० सिद्ध] एक प्रकार की मछली।

**शिलि**—पु०[सं०√ शिल् (एक-एक दाना बीनना)+कि] भोजपत्र। भूर्जवृक्ष।
स्त्री० डेहरी।

**शिलींध्र**—पु०[स० शिली√ध् (रखना)+क पृषो० मुम्]१. केले का फूल। २. आकाश से गिरनेवाला ओला। बिनौरी। ३. भुंइछत्ता। ४. कठ-केला। ५. शिलिंद नामक मछली।

**शिलींध्रक**—पुं० [स० शिलींध्र+कन्] कुकुरमुत्ता। खुमी।

**शिलींध्री**—स्त्री० [स० शिलींध्र-ङीप्] १ केंचुआ। गडूपदी। २. मिट्टी। ३. एक प्रकार का पक्षी।

**शिली**—स्त्री० [सं० शिल-ङीप्]१. केंचुआ। २ मेंढक। ३. देहलीज। ४. भोजपत्र। ५. तीर। बाण। ६. भाला।

**शिलीपद**—पु० [स० ब० स] फीलपाँव नामक रोग। श्लीपद।

**शिलीभूत**—भू० कृ० [स०] जो जमकर पत्थर के सदृश कठोर हो गया हो।

**शिलीमुख**—पु०[स० ब० स०]१. भ्रमर। २. तीर। बाण। ३. युद्ध। समर।
वि० बेधक्। मूर्ख।

**शिलुच**—पु०[स० ब० स०]१. नाट्यशास्त्र के आचार्य एक प्राचीन ऋषि। २. बेल का वृक्ष।

**शिलेय**—वि०[स०] शिला-संबंधी। शिला का।
पु० शिलाजीत।

**शिलोंछ**—पु०[स० शिल√उंछ+घञ्] खेतों से अन्न बिनकर जीविका निर्वाह करना। उञ्छवृत्ति।

**शिलोच्चय**—पु०[सं० ब० स०] पर्वत। पहाड़।

**शिलोच्च**—पुं० [स० शिल-उद्√स्था (ठहरना)+क, स, ञ, लोप] १. छरीला या शैलेय नामक गंध-द्रव्य। २. शिलाजीत।

**शिलोद्भव**—पु०[सं०ब० स०]१. शैलेय। छरीला। २. पीला चन्दन।

**शिलोका**—वि० [सं० ब० स० शिलोकस] पर्वत पर होनेवाला।
पुं० गरुड़।

**शिल्प**—पुं०[सं० शिल्+पक्] हाथ से काम करने का हुनर। दस्तकारी। हस्तकला।

**शिल्पक**—पुं०[सं० शिल्प+कन्] एक प्रकार का नाटक जिसमें इंद्रजाल तथा अध्यात्म संबंधी बातों का वर्णन रहता है।

**शिल्पकर**—पु० [शिल्प√कृ (करना) +अच्] शिल्पकार।

**शिल्पकला**—स्त्री० [स० ष० त० स०] शिल्प। (दे०)

**शिल्पकार**—पु० [स० शिल्प+√कृ करना)+अण् उप० स०] १. शिल्पी। कारीगर। २. मकान बनानेवाला राज। मेमार।

**शिल्पकारी**—पु० [स० शिल्प√कृ (करना)+णिनि शिल्पकारिन्] =शिल्पकार।
स्त्री०=शिल्प।

**शिल्प-गृह**—पु० [ष० त० स०] वह स्थान जहाँ शिल्प-सम्बन्धी कोई कार्य होता हो। कारखाना।

**शिल्पजीवी (विन्)**—पु० [सं० शिल्प√जीव् (जीवन निर्वाह करना)+णिनि] शिल्प से जिसकी जीविका चलती हो। शिल्पी।

**शिल्पज्ञ**—वि०-पु० [सं० शिल्प√ज्ञा (जाना)+क] शिल्प जाननेवाला।

**शिल्पता**—स्त्री० [स० शिल्प+तल्—टाप्] शिल्प का भाव या धर्म। शिल्पत्व।

**शिल्पत्व**—पुं० [सं० शिल्प+त्व]=शिल्पता।

**शिल्पप्रज्ञापति**—पुं० [स० मध्यम० स०] विश्वकर्मा का एक नाम।

**शिल्प-यंत्र**—पुं० [मध्य० स०] ऐसा यंत्र जिससे शिल्प सम्बन्धी काम होता या चीजें बनती हों।

**शिल्प-लिपि**—स्त्री० [स०मध्यम० स०] पत्थर, ताँबे आदि पर अक्षर खोदने की कला।

**शिल्प-विद्या**—स्त्री० [ष० त०, स० मध्यम० स०] १. हाथ से तरह तरह की चीजें बनाने की कला। २. गृह-निर्माण कला। मकान आदि बनाने की विद्या।

**शिल्प-विद्यालय**—पु० [ष० त० स०] वह विद्यालय जिसमे अनेक प्रकार के शिल्प अर्थात् चीजें बनाने की कला सिखाई जाती हो।

**शिल्पशाला**—स्त्री० [स० ष० त० स०] कारखाना। शिल्पगृह।

**शिल्पशास्त्र**—पुं० [स० मध्यम० स०] १. वह शास्त्र जिसमें दस्तकारियों का विवेचन होता है। २ वास्तुशास्त्र।

**शिल्पिक**—पुं० [स० शिल्प+इनि+कन्] १. वह जो शिल्प द्वारा निर्वाह करता हो। कारीगर। शिल्पी। २. शिव का एक नाम। ३. नाटक का शिल्पक नामक भेद।

**शिल्पिका**—स्त्री० [सं० शिल्पिक—टाप्] एक प्रकार का तृण जो ओषधि रूप में काम आता है।

**शिल्पिनी**—स्त्री० [सं० शिल्पिन्—ङीप्] १. स्त्री शिल्पी। २ एक प्रकार की घास।

**शिल्पी (ल्पिन्)**—पु० [सं०] १. शिल्प सम्बन्धी काम करनेवाला व्यक्ति। शिल्पकार। कारीगर। २. मेमर। राज। ३. चित्रकार। ४ नली नामक गन्ध-द्रव्य।

**शिलहक**—पुं० दे० 'शिलारस'।

**शिवंकर**—पु० [सं० शिव√कृ (करना)+खच्—मुम्] मंगल करनेवाले; शिव। २. शिव का एक गण। ३. एक असुर जो रोग फैलानेवाला कहा गया है। ४. एक प्रकार का बालग्रह। ५. तलवार।

**शिवंसा**—पु० [सं० शिव+अंश] पैदावार या फसल का वह अंश जो शैव साधुओं के लिए अनाज काटने के समय पृथक् कर दिया जाता है।

**शिव**—वि० [सं०√षो (पतला करना)+वन् पृषो०] १. मांगलिक। शुभ। २. स्वस्थ तथा सुखी। ३. भाग्यवान्।
पु० १. कल्याण। मंगल। २. हिन्दुओं के प्रसिद्ध देवता महादेव जो त्रिमूर्ति के अंतिम देवता तथा सृष्टि का संहार करनेवाले माने गये है। ३. देवता। ४. बेद। ५. लिंग जो शिव का चिह्न माना जाता है। ६. परमेश्वर। ७. महाकाल या रुद्र नामक देवता। ८ वसु। ९. मोक्ष। १०. शुभग्रह। ११. जल। पानी। १२. बालू। रेत। १३. फलित ज्योतिष में, विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों में से एक योग। १४. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में ५-६ के विश्राम से ११ मात्राएँ अंत में सगण, रगण, नगण मे से कोई एक होती है। तीसरी, छठी और नवी मात्राएँ लघु रहती हैं। १५. प्लक्ष द्वीप तथा जंबू द्वीप के एक वर्ष का नाम। १६. पारा। १७ सिन्दूर। १८. गुग्गुल। १९ पुंडरीक वृक्ष। २०. काला धतूरा। २१. आँवला। २२. कदंब। २३. सिर्च। २४. तिल का फूल। २५. चन्दन। २६. मौलसिरी। २७. लोहा। २८ फिटकरी। २९ सेंधा नमक। ३०. समुद्री नमक। ३१ सुहागा। ३२ नीलकंठ पक्षी। ३३ कौआ। ३४. एक प्रकार का मृग। ३५ गीदड़। ३६. लंट। ३७. गुड़ की शराब। ३८. एक प्रकार का नृत्य।

**शिवक**—पुं० [सं० शिव+कन्] १. काँटा। कील। २ खूँटा।

**शिवकर**—पु० [स० शिव√कृ (करना)+अच्] चौबीस जिनों में से एक।

**शिवकर्णी**—स्त्री० [स० ब० स०—ङीप्] कातिकेय की एक मातृका।

**शिवकांची**—स्त्री० [सं० ष० त० स०] दक्षिण भारत का एक प्रसिद्ध तीर्थ।

**शिव-कांता**—स्त्री० [ष० त० स०] पार्वती।

**शिवकारिणी**—स्त्री० [स० शिव√कृ (करना)+णिनि—ङीप्] मंगल करनेवाली, दुर्गा।

**शिवकारी**—वि० [शिव√कृ (करना) णिनि—दीर्घ, नलोप] [स्त्री० शिवकारिणी] १. कल्याण करनेवाला। २. शुभ।

**शिव-कीर्तन**—पु० [स० ष० त० स०] १ शिव का भजन तथा स्तुति। २. शिव का कीर्तन करनेवाला, शैव। २. विष्णु। ३. शिव के द्वारपाल।

**शिवक्षेत्र**—पु० [स० ष० त० स०] १. कैलास। २ काशी।

**शिवगंगा**—स्त्री० [सं० ष० त०] ऐसी नदी या जलाशय जो शिव के मंदिर के समीप हो।

**शिव-गति**—पु० [स० ब० स० वा] जैनों के अनुसार एक अर्हत् का नाम।
वि० १. सुखी। २. समृद्ध।

**शिवगिरि**—पु० [स० ष० त० स०] कैलास पर्वत)।

**शिव-चतुर्दशी**—स्त्री० [मध्यम० स०] १. फाल्गुन बदी चौदस जिस दिन शिवरात्रि का उत्सव मनाया जाता है। २. शिवरात्रि।

**शिवता**—स्त्री० [सं०] १. शिव का धर्म, पद या भाव। २. शिव-सायुज्य। मोक्ष। अमरता।

**शिव-तीर्थ**—पु० [मध्य० स०] काशी।

**शिवतेज (स्)**—पु० [सं० ष० त० स०] पारा। पारद।

**शिवत्व**—पुं० [शिव+त्व]=शिवता।

**शिवदत्त**—पुं० [सं० तृ० त० स०] विष्णु का चक्र।

**शिव-दिशा**—स्त्री० [सं० ष० त०] ईशान कोण जिसके स्वामी शिव हैं।
**शिवबूटी**—स्त्री० [सं० ब० स०] १. दुर्गा। २. एक बोगिनी।
**शिव-बीज**—पु०[सं० ब० स०] आर्द्रा नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता शिव हैं।
**शिव-द्रुम**—पु० [सं० मध्यम० स०] बेल का पेड़ जिसकी पत्तियाँ भगवान शिव को चढ़ाई जाती हैं।
**शिवधातु**—पु०[सं० ष० त०स०] १. पारद। पारा। २. गोदंती नामक मणि।
**शिवनंदन**—पुं० [सं० शिव√नन्द् (हर्षित करना)+ल्यु-अन] शिव जी के पुत्र, गणेश।
**शिवनाथ**—पु० [सं० कर्म० स०] शिव। महादेव।
**शिव-नाभि**—पु० [स० ष० स०] एक प्रकार का शिव-लिंग जो अन्य शिव-लिंगों मे श्रेष्ठ माना जाता है।
**शिवनामी**—स्त्री० [स०+हिं] वह चादर जिसपर शिव का नाम अनेक स्थानों पर छपा होता है तथा जिसे शिवभक्त ओढ़ते हैं।
**शिवनारायणी (णिन्)**—पु० [स० शिव-नारायण, ढ० स०-इनि] हिन्दुओं का एक सप्रदाय।
**शिव-निर्माल्य**—पु० [सं० ष० त० स०] १. शिव को अर्पित किया या चढ़ाया हुआ पदार्थ जिस का उपभोग वर्जित है। २. परम अप्राह्य वस्तु।
**शिव-पीठिका**—स्त्री० [सं० ष० त०] वह आधार जिस पर शिवलिंग स्थापित किया जाता है।
**शिवपुत्र**—पु० [स० ष० त० स०] १. गणेश। २. कार्त्तिकेय। ३ पारा। पारद।
**शिवपुर**—पु० [सं० ब० त० स०] १. जैनों का स्वर्ग जहाँ वे मुक्ति का सुख भोगते हैं। मोक्ष-शिला। २. काशी।
**शिवपुराण**—पु० [सं० मध्यम० स०] अठारह पुराणों में से एक पुराण जो शैव पुराण भी कहा जाता है और जिसमें शिव की महिमा बतलाई गई है।
**शिवपुरी**—स्त्री० [सं० ष० त० स०] काशी।
**शिव-प्रिय**—पु० [सं० ष० त० स०] १. रुद्राक्ष। २. धतूरा। ३. भाँग। विजया। ४. अगस्त का पेड़। ५. बिल्वीर। स्फटिक।
**शिव-प्रिया**—स्त्री० [स० ष० त० स० टाप्] दुर्गा।
**शिव-बीज**—पुं० [स० ष० त० स०] पारा जो शिव जी का वीर्य कहा गया है।
**शिवमल्लिका**—स्त्री० [सं० शिवमल्ल+कन्-टाप्-इत्व] १. वसु नामक पुष्प वृक्ष। २. आक। मदार। ३ अगस्त का पेड़। ४ शिवलिंग। ५. बीवल्ली वृक्ष।
**शिवमल्ली**—स्त्री० [सं० शिवमल्ल-ङीप्] १. मौलसिरी। २. आक। मदार। ३. बक वृक्ष। ४. लिंगनी लता।
**शिवमात्र**—पुं० [सं० शिव+मात्रच्] बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या का नाम।
**शिवरंजनी**—स्त्री० [सं० ष० स०] संगीत में एक प्रकार की रागिनी।
**शिवराजी**—पुं० [हिं० शिव+राज] एक प्रकार का बहुत बड़ा कबूतर।
**शिवरात्र**—स्त्री०=शिवरात्रि।
**शिवरात्रि**—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] १. फाल्गुन बदी चतुर्दशी। (कहते हैं कि इसी रात्रि को शिव-पार्वती का विवाह हुआ था।) २. किसी चान्द्र मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी।
**शिव-रानी**—स्त्री० [स०+हिं०] पार्वती।
**शिव-लिंग**—पु० [स० ष० त० स०] लिंग के आकार का वह शिला-खंड जिसे महादेव जी की पिंडी मानकर पूजा जाता है। शिव की लिंग-मूर्ति।
**शिवलिंगी**—स्त्री० [ स० शिवलिंग-ङीप् ] एक प्रकार की प्रसिद्ध लता। बिजगुरिया। पचगुरिया।
वि० शिव-लिंग संबंधी।
**शिव-लोक**—पुं० [स० ष० त०] शिव जी का लोक, कैलास।
**शिव-वल्लभा**—स्त्री० [सं० ष० त०] १. दुर्गा। २. सेवती।
**शिववल्ली**—स्त्री०=शिवलिंगी।
**शिव-वाहन**—पुं० [स० ष० त० स०] नदी नामक बैल जिसकी सवारी शिव करते थे।
**शिव-वीर्य**—पु० [स० ष० त० स०] पारा जो शिव जी का वीर्य कहा गया है।
**शिव-वृषभ**—पु० [सं० ष० त० स०] शिव का बैल अर्थात् नंदी।
**शिव-शंकरी**—स्त्री०[स०शिव शंकर-ङीप्,शिवशंकरी]देवी की एक मूर्ति।
**शिव-शेखर**—पुं० [स० ब० स०, ष० त० स० वा] १. शिव का मस्तक। २. धतूरा। ३ आक। मदार। ४. बक वृक्ष।
**शिव-शैल**—पु० [स० ष० त० स०] कैलास पर्वत।
**शिव-सायुज्य**—पुं०[स० ष० त० स०] १. शिव का पद। मोक्ष। २. मृत्यु।
**शिव-सुन्दरी**—स्त्री० [सं० ष० त० स०] दुर्गा।
**शिवा**—स्त्री० [स० शिव-टाप्] १ पार्वती। २. दुर्गा। ३ मुक्ति। मोक्ष। ४. मादा गीदड़। गीदड़ी। ५ हर्रे। ६ सोआ नामक साग। ७ सफेद कीकर। शमी। ८ आँवला। ९ हल्दी १० दूब। ११ गोरोचन। १२. श्यामा लता। १३. धौ। १४. अनंतमूल। १५ एक बुद्धि-शक्ति।
**शिवाक्ष**—पुं० [सं० ब० स०] रुद्राक्ष।
**शिवाटिका**—स्त्री० [स० शिव√अट् (जोजना)+ण्वुल् अक-टाप्, इत्व] १. वंशपत्री नामक तृण। २. सफेद पुनर्नवा। ३. हिंगुपत्री। ४. कठूमर।
**शिवात्मक**—पुं० [सं० ब० स०] सेंधा नमक।
**शिवानंदी**—पुं० [स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।
**शिवानी**—स्त्री० [सं० शिव-ङीप्-आनुक्] १. दुर्गा। २. जयंती वृक्ष।
**शिवा-प्रिय**—पुं० [सं० ष० त० स०] १. शिव। २. बकरा जिसका शिवा अर्थात् दुर्गा के आगे बलिदान किया जाता है।
**शिवा-बलि**—पुं० [स० चतु० त० स०] दुर्गा के निमित्त की जानेवाली बलि। (तंत्र)
**शिवायतन**—पुं० [सं० ष० त० स०]=शिवालय।
**शिवारुत**—पुं० [सं० ष० त० स०] गीदड़ के बोलने का शब्द जिससे शुभाशुभ शकुन का विचार किया जाता है।
**शिवालय**—पुं० [सं० ष० त० स०] १. ऐसा देवालय जिसमें शिव-लिंग

स्थापित हो। २ देव-मंदिर। (क्व०) ३ श्मशान। मरघट। ४ लाल तुलसी।

**शिवाला**—पु० [सं० शिवालय] १. शिव जी का मंदिर। शिवालय। २. देव-मंदिर। (क्व०) ३ लोहारों, सुनारों आदि की भट्ठी।

**शिवालु**—पु० [सं० शिव√अल् (पूरा होना)+उनु] शृगाल। सियार।

**शिवि**—पु० [स०√शि+वि गुणाभाव] १. एक प्रसिद्ध दानी राजा जो उशीनर के पुत्र और ययाति के नाती थे। प्रसिद्ध है कि ये कपोत (अग्नि) के रक्षार्थ बाज (इन्द्र) को अपने शरीर का सारा मांस देने के लिए उद्यत हो गये थे।

**शिविका**—स्त्री० [स० शिव+णिच्+ण्वुल्—अक—टाप्—इत्व] पालकी। डोली।

**शिविर**—पु० [स०√शी (पतला करना)+किरच्, बुकच] १. लेमा। २. सैनिक पड़ाव। छावनी। ३ किला। दुर्ग। ४ आज-कल, वह स्थान जहाँ कोई बड़ा आदमी या दल कुछ समय के लिए ठहरा हो। पड़ाव। (कैम्प) ५. एक प्रकार का धान्य।

**शिवीरव**—पु० [स० कर्म० स०] पालकी। शिविका।

**शिवेतर**—वि० [स० पं० त० स०] जो शिव अर्थात् मांगलिक न हो। अमांगलिक। अशुभ।

**शिवेश**—पु० [स० ष० त० स०] शृगाल। गीदड़। सियार।

**शिवेष्ट**—पुं० [स० ष० त० स०] १. अगस्त वृक्ष। २ बिल्व। बेल।

**शिवेष्टा**—स्त्री० [स० शिवेष्ट-टाप्] दूब।

**शिवोद्भव**—पु० [स० ब० स०] एक प्राचीन तीर्थ। (महाभारत)

**शिवोपनिषद्**—स्त्री० [स० मध्यम० स०] एक उपनिषद् का नाम।

**शिशन**†—पुं०=शिश्न।

**शिशिर**—पु० १ माघ और फाल्गुन की ऋतु। २ शीतकाल। जाड़ा। ३. हिम। पाला। ४. विष्णु। ५ एक प्रकार का अस्त्र। ६ सूर्य। ७ लाल चन्दन।
वि० [शश+किरच्—निपा०] १. बहुत अधिक ठंढा। २. ठंढ से जमा हुआ।

**शिशिर-कर**—पु० [ब० स०] चन्द्रमा।

**शिशिर-किरण**—पु० [ब० स०] चन्द्रमा।

**शिशिरता**—स्त्री० [सं० शिशिर+तल्—टाप्] १. शिशिर का भाव या धर्म। २ बहुत अधिक सर्दी।

**शिशिर-मयूख**—पुं० [ब० स०] चन्द्रमा।

**शिशिर-रश्मि**—पु० [ब० स०] चन्द्रमा।

**शिशिरांत**—पुं० [सं० ष० त० स० ब० स० वा] शिशिर ऋतु के अंत में होनेवाली ऋतु अर्थात् वसंत।

**शिशिरांशु**—पु० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।

**शिशिरात्रय**—पु० [सं० ब० स०] पुराणानुसार एक पर्वत जो सुमेरु के पश्चिम में कहा गया है।

**शिशु**—पु० [स० शो+कु सन्वद्भावोद्विर्त्वञ्च] [भाव० शिशुता, शैशव] १ बहुत ही छोटा बच्चा। (बेबी) २. सात-आठ वर्ष तक की अवस्था का बालक। (इन्फैन्ट) ३ पशुओं आदि का बच्चा। ४. कार्तिकेय का एक नाम।

**शिशुक**—पुं० [सं० शिशु+कन्] १ शिशुमार या सूँस नामक जल-जंतु। २. छोटा शिशु। ३. एक प्रकार का वृक्ष। ४. एक प्रकार का साँप।

**शिशुकल्याण केंद्र**—पु० [ष० त० स०] छोटे बच्चों की देखभाल तथा कल्याण के उद्देश्य से बनाया हुआ स्थान। (चाइल्ड वेलफेयर सेंटर)

**शिशुकृच्छ्र**—पु० [स० मध्यम० स०] एक प्रकार का चन्द्रायण व्रत जिसे शिशु चान्द्रायण या स्वल्प चान्द्रायण भी कहते हैं।

**शिशु-गंध**—स्त्री० [सं० ब० स] मल्लिका। मोतिया।

**शिशु-चांद्रायण**—पु० [स० मध्यम० स०] शिशुकृच्छ्र (दे०)।

**शिशुता**—स्त्री० [स० शिशु+तल्—टाप्] शिशु होने की अवस्था, धर्म या भाव।

**शिशुताई**†—स्त्री०=शिशुता।

**शिशुत्व**—पु० [सं० शिशु+त्व]=शिशुता।

**शिशुधानी**—स्त्री० [सं० ष० त०] [वि० शिशुधानीय] कुछ विशिष्ट प्रकार के जंतुओं में पेट के आगे की वह थैली जिसमें वे अपने नव-जात बच्चे रखकर चलते हैं।

**शिशुनाग**—पु० [स० ब० स०] १ एक राक्षस का नाम। २ दे० 'शैशुनाग'।

**शिशुपन**—पुं०=शिशुता।

**शिशुपाल**—पु० [स० शिशु√पाल् (पालन करना)+अच्] चेदि देश का एक प्रसिद्ध राजा जिसे श्रीकृष्ण ने मारा था।

**शिशुमार**—पु० [सं० शिशु√मृ (मरना)+णिच्—अच्] १ सूँस नामक जलजंतु। २. एक नक्षत्र-मंडल जिसकी आकृति मगर या सूँस की तरह है। ३ कृष्ण। ४ विष्णु। ५ सौर जगत्।

**शिशुमार-चक्र**—पु० [सं० मध्यम० स०] सौर जगत्।

**शिश्न**—पुं० [सं० शश+नक् नि०] पुरुष की जननेंद्रिय। लिंग।

**शिश्नोदरपरायण**—वि० [स० शिश्नोदरपर+फक्—आयन] कामुक (या लंपट) और पेटू।

**शिश्नोदरवाद**—पु० [स० शिश्नोदर√वद् (कहना)+अण्] वह वाद, मत, या सम्प्रदाय जिसका संबंध जननेंद्रिय और उदर से हो, जैसे—फ्रायड का काम सिद्धान्त या मार्क्स का समाजवाद। (व्यंग्य के रूप में)

**शिष**†—पु०=शिष्य।
† स्त्री०=सीख (शिक्षा)।

**शिषरी**—पु० [सं० शिष√रा (लेना)+क—इनि] अपामार्ग। चिचड़ा।
वि०=शिखरी (शिखर से युक्त)।

**शिषा**†—स्त्री०=शिक्षा।

**शिषि**†—पुं०=शिष्य।

**शिषी**†—पु०=शिखी।

**शिष्ट**—वि० [सं०√शास्+क्त√शिष्+क्त] [भाव० शिष्टता] १ (व्यक्ति) जो एक सामाजिक प्राणी के रूप में दूसरों से सभ्यतापूर्ण तथा सौजन्यपूर्ण व्यवहार करता हो। २. धीर तथा शान्त। ३ बुद्धिमान्। ४ आज्ञाकारी। ५. प्रसिद्ध।
पु० १. मंत्री। वज़ीर। २. सभासद्। सभ्य।

**शिष्ट-कथ**—वि० [सं० शिष्ट√कथ्+णिच्-अच्] शिष्टतापूर्वक बात-चीत करनेवाला।

**शिष्टता**—स्त्री० [शिष्ट+तल्–टाप्] १. शिष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव। २. शिष्ट आचरण। ३. उत्तमता। श्रेष्ठता। ४. अक्षीनता।

**शिष्टत्व**—पुं० [शिष्ट+त्व]=शिष्टता।

**शिष्टमंडल**—पुं० [सं० ष० त०] १. शिष्ट व्यक्तियों का दल। २. किसी विशिष्ट कार्य के लिए कहीं भेजा जानेवाला विशिष्ट व्यक्तियों का दल। (डेपुटेशन) जैसे—जापान या रूस से सांस्कृतिक सम्पर्क बढ़ाने के लिए भेजा जानेवाला शिष्ट-मंडल। ३. दे० 'प्रतिनिधिमंडल'।

**शिष्ट-सभा**—स्त्री० [सं० ष० त० स०] प्राचीन भारत की राज्यसभा या राज्यपरिषद्।

**शिष्टाचार**—पुं० [ष० त० स०] १. शिष्टतापूर्ण आचरण और व्यवहार। २. ऐसा आचरण जो साधारणतया एक सामाजिक प्राणी से अपेक्षित हो। ३ ऊपरी या दिखावटी सभ्य व्यवहार। ४. आवभगत। सत्कार।

**शिष्टाचारी** (रिन्)—पु० [सं० शिष्टाचार+इनि शिष्ट-आ √चर (चलना)+णिनि वा] १. शिष्ट आचरण करनेवाला। २. सदाचारी। ३. विनम्र। ४ किसी समाज, संस्था, कार्यालय आदि द्वारा निर्धारित नियमों के अनुसार आचरण करनेवाला।
वि० शिष्टाचार-संबंधी।

**शिष्टि**—स्त्री० [स०√शास् (अनुशासन करना)+क्तिन्] १. आज्ञा। आदेश। २. शासन। हुकूमत। ३. दंड। सजा। ४. सुधार। ५. सहायता।

**शिष्ण**—पु०=शिश्न।

**शिष्य**—पुं० [स०√शास् (अनुशासन करना)+क्यप्] [भाव० शिष्यता] १. वह जो शिक्षक से किसी प्रकार की शिक्षा पाता हो। विद्यार्थी। २. किसी की दृष्टि से वह व्यक्ति जिसने उससे विद्या सिखी हो। चेला। ३. वह जिसने किसी को अपना गुरु और आदर्श मानकर उसमे कुछ पढ़ा या सीखा हो या उसके दिखलाये हुए मार्ग का श्रद्धापूर्वक अनुकरण किया हो। चेला। शागिर्द। (हिंसाहुल) ४. वह जिसने गुरु आदि से गुरुमंत्र लिया हो। चेला। ५. वह जो अभी हाल में श्रावक बना हो।

**शिष्यता**—स्त्री० [सं० शिष्य+तल्–टाप्] शिष्य होने की अवस्था या भाव। शिष्यत्व।

**शिष्यत्व**—पुं० [सं० शिष्य+त्व]=शिष्यता।

**शिष्य-परंपरा**—स्त्री० [सं० ष० त० स०] किसी गुरु के सम्प्रदाय की परम्परागत शिष्य-मंडली।

**शिष्या**—स्त्री० [सं० शिष्य-टाप्] एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में सात गुरु अक्षर होते हैं। शीर्षरूपक।
स्त्री० सं० शिष्य का स्त्री०।

**शिस्त**—स्त्री० [फा०] १. मछली पकड़ने का काँटा। बंसी। २. आघात आदि का लक्ष्य। निशाना।
क्रि० प्र०—बाँधना।—लगाना।
३. बुरजीन की तरह का एक प्रकार का यंत्र जिससे जमीन नापने के समय सीध आदि देखी जाती है। ४. अँगूठा।

**शिस्तबाज**—पुं० [फा०] १. शिस्त लगाकर मछली पकड़नेवाला। २. निशानेबाज।



**शिह्लक**—पुं० [सं० शिर+लक् नि० सु=श] शिलारस नाम का गंध द्रव्य।

**शी**—स्त्री० [सं०√ (शयन करना)+क्विप्] १. शांति। २. शयन। ३. भक्ति।

**शीआ**—पु०=शीया।

**शीकर**—पुं० [सं०√सीक+करन्] १. पानी की बूँद। २ बहुत छोटी बूँदों के रूप में होनेवाली वर्षा। फुहार। ३. ओस। ४ वायु। ५. जाड़ा। ठंड। शीत। ६. गन्ध-विरोजा। ७. धूप नामक गन्ध द्रव्य।

**शीघ्र**—अव्य० [स० शिघि+रक् पृषो०] १. बिना विलंब किए। बिना अधिक समय बिताये। २. तत्क्षण। तुरत।
पद—शीघ्र ही=कुछ ही समय बाद।
३. फुरती से।

**शीघ्रकारी**—वि०[सं० शीघ्र√कृ (करना)+णिनि, शीघ्रकारिन्] १. शीघ्र कार्य करनेवाला। काम करने में तेज। फुरतीला। २. शीघ्र प्रभाव दिखानेवाला। ३ उग्र। तीव्र।
पुं० एक प्रकार का सन्निपात ज्वर।

**शीघ्रकोपी**—वि० [सं० शीघ्र√कुप् (क्रोध करना)+णिनि] १ जल्दी गुस्सा होनेवाला। २. चिड़चिड़े स्वभाववाला।

**शीघ्रग**—वि०[सं० शीघ्र√गम् (जाना)+ड] तेज चलनेवाला। द्रुतगामी।
पुं० १. सूर्य। २. वायु। ३. खरगोश।

**शीघ्रगामी (मिन्)**—वि०[सं० शीघ्र√गम (जाना)+णिनि शीघ्रगामिन्] [स्त्री० शीघ्रगामिनी] तेज चलनेवाला।

**शीघ्रता**—स्त्री० [सं० शीघ्र+तल्–टाप्] १ वह स्थिति जिसमें जल्दी जल्दी कोई काम किया जाता है। जल्दी। २. तेजी। ३. जल्दबाजी। उतावलापन।

**शीघ्रत्व**—पुं० [सं०शीघ्र+त्व] =शीघ्रता।

**शीघ्रपतन**—पुं० [सं० ष० स०] स्त्री-सहवास के समय पुरुष के वीर्य का जल्दी स्खलित हो जाना।

**शीघ्रबेधी**—पुं० [सं० शीघ्र√विध् (बेधना)+णिनि] शीघ्रता से बाण चलाने या निशाना लगानेवाला। लघु-हस्त।

**शीघ्र**—स्त्री० [सं० शीघ्र-टाप्] १. एक प्राचीन नदी। २. दंती वृक्ष।

**शीघ्रेश्वर**—पुं०[सं० शीघ्र+च–ईश्व] १. शिव। २. विष्णु। ३. बिल्लियों की लड़ाई।
वि० १. शीघ्रगामी। २. तेज।

**शीघ्री (घ्रिन्)**—वि० [सं० शीघ्र+इनि] १. शीघ्रकारी। २. शीघ्रगामी। ३. तुरंत उच्चारण करनेवाला।

**शीघ्र्य**—पुं० [सं० शीघ्र+ष्यञ्]=शीघ्रता।

**शीत**—वि० [√श्यै (स्पर्श करना)+क्त] १. ठंडा। शीतल। २. शिथिल। सुस्त।
पुं० १. जाड़ा। ठंड। सरदी। २. जाड़े का मौसम। ३. जुकाम। प्रतिश्याय। ४. कपूर। ५. दालचीनी। ६. बेंत। ७. लिसोड़ा। ८. मौम। ९. ओस। १०. कोहरा। तुषार। ११. पित्तपापड़ा। १२. एक प्रकार का चंदन। १३. जल। पानी।

**शीतक**—वि० [शीत√कृ (करना)+ड] १.ठंढ या ठंढक उत्पन्न करनेवाला। २. आलसी।
पुं० [सं० शीत√कृ (करना)+ड] १. शीतकाल। जाड़े का मौसम। २. बिच्छू। ३ बन-सनई। ४. एक प्रकार का चन्दन। ५ शीत विशेषतः ठंढक उत्पन्न करनेवाला एक यंत्र जिससे गर्मी के दिनों में कमरे ठंढे रख जाते हैं। (कूलर)

**शीत कटिबंध**—पु० [स० ब० स०] भूगोल मे पृथ्वी के वे कल्पित विभाग जो भूमध्यरेखा से २३½ अंश उत्तर के बाद और २३½ अंश दक्षिण के बाद पड़ते हैं और जिनमें अपेक्षया अधिक सरदी पड़ती है। (फरीजिड जोन)

**शीतकर**—पुं० [स० ब० स०] १. ठंढी किरणोंवाला, अर्थात् चद्रमा। २. कपूर ।
वि० ठंढा या शीतल करनेवाला।

**शीत-काल**—पुं० [स० ष० त०] १ हेमत ऋतु। २. सरदी के दिन। जाड़े का मौसम।

**शीत-किरण**—वि० [स० ब० स०] शीतल किरणोंवाला।
पु० चद्रमा।

**शीत किरणी**—स्त्री० [स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**शीत-कृच्छ्र**—पु० [स० मध्यम० स०] मिताक्षरा के अनुसार एक प्रकार का व्रत।

**शीतकार**—पु० [स० कर्म० स०] शुद्ध सुहागा।

**शीतगंध**—पु० [स०ब० स०] चंदन। सदल।

**शीतगात्र**—पु० [सं० ब०स०] शरीर के ठंढे पडने का एक रोग।

**शीतगु**—पु० [स० ब० स०] १. चन्द्रमा। २ कपूर।

**शीतचंपक**—पु० [सं०] १. दर्पण. शीशा। २. दीपक। दीआ।

**शीत-च्छाय**—वि० [ब० स०] जिसकी छाया शीतल हो।
पु० बड का पेड, जिसकी छाया ठढी होती है।

**शीत-ज्वर**—पु० [स० मध्य० स०] जाड़ा देकर आनेवाला बुखार। विषम ज्वर। जूड़ी।

**शीत-तरंग**—स्त्री० [स०] १.शीतकाल मे सहसा तापमान के गिरने से होनेवाली ऐसी उग्र ठंढ जिसमें हाथ-पैर गलने लगते हैं। २. किसी दिशा में बढ़नेवाली शीत की वह तरंग जिससे दो-चार दिनों के लिए सरदी बहुत बढ जाती है। (कोल्ड वेव)

**शीतता**—स्त्री० [स० शीत+तल्—टाप्] १. शीत का भाव या धर्म। शीतत्व। ठढापन। २. सरदी।

**शीतत्व**—पु० [स० शीत+त्व]=शीतता।

**शीतदंत**—पु० [स० ब० स०] एक रोग जिसमें ठंढी हवा तथा ठंढा पानी दाँतों मे लगने के फलस्वरूप पीड़ा होती है।

**शीत-दीधिति**—पुं० [स० ब० स०] चन्द्रमा जिसकी किरणें शीतल होती हैं।

**शीतद्युति**—पु०[सं० ब० स०] चन्द्रमा।

**शीतन**—पुं०[स०] [भू० कृ० शीतित] ठंढा करने की क्रिया या भाव। (कूलिंग)

**शीतपर्णी**—स्त्री०[स० ब० स०] अर्कपुष्पी।

**शीतपाकी**—स्त्री०[स० ब० स०] १. काकोली नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २. घुंघची। ३. अतिबला। ककही।

**शीतपित्त**—पु०[सं० ब० स०] शीतकाल मे होनेवाला एक प्रकार का रोग जिसमे अचानक सारे शरीर मे छोटे छोटे चकत्ते निकल आते हैं और उनमें बहुत तेज खुजली होती है। जुड़-पित्ती। (यूरिकेरिया)

**शीतपुष्प**—पु०[स० ब० स०] १ छरीला। शैलेय। २ केवटी मोथा। ३. सिरिस का पेड।

**शीतपुष्पा**—स्त्री०[स० शीतपुष्प—टाप्] ककही। अतिबला।

**शीत-पूतना**—स्त्री०[स० मध्यम० स०] भावप्रकाश के अनुसार एक प्रकार का बालग्रह या बालरोग।

**शीतप्रभ**—पु०[स० ब० स०] १ चन्द्रमा। २ कपूर।

**शीतफल**—पु० [स० ब०स०] १ गूलर। २ पीलू। ३ अखरोट। ४ आंवला। ५ लिसोडा।

**शीतभानु**—पु०[सं० ब० स०] चन्द्रमा।

**शीत-मयूख**—पु०[स० ब० स०] १. चन्द्रमा। २. कपूर।

**शीत-मरीचि**—पु०[स० ब० स०]१. चन्द्रमा। २ कपूर।

**शीत-मेह**—पु०[स० मध्यम० स०] एक प्रकार का प्रमेह रोग।

**शीतमेही (हिन्)**—पु०[स०शीतमेह+इनि] वह जिसे शीत-मेह रोग हो।

**शीतयुद्ध**—पु०[स मध्य० स०] राष्ट्रों के पारस्परिक व्यवहार में वह स्थिति जिसमे प्रत्यक्ष रूप से युद्ध तो नही होता, फिर भी प्रत्येक राष्ट्र अपने आपको प्रभावशाली तथा सशक्त बनाने के लिए ऐसी राजनीतिक चालें चलता है जिनके कारण दूसरे राष्ट्रो के सामने बडी बड़ी उलझनें खडी हो जाती हैं। (कोल्ड वार)

**शीत-रश्मि**—पु० [स० ब० स०] १ चन्द्रमा। २ कपूर।

**शीत-रस**—पु०[स० ब० स०] प्राचीन भारत मे, ईख के कच्चे रस की बनी हुई एक प्रकार की मदिरा।

**शीतवच**—पु०[स० ब०स०] चन्द्रमा।

**शीतवह**—पु०[सं० ब० स०] सफद कमल।

**शीतल**—वि०[स० शीत√ला+क] १ शीत उत्पन्न करनेवाला। सर्द। ठढा। 'उष्ण' का विपर्याय। २. जिसमे कुछ कुछ ठढक हो। जैसे—शीतल समीर। ३ जो शीतलता या ठढक प्रदान करता हो। ४. जिसमे आवेश न हो। शात। ५. प्रसन्न। ६ सतुष्ट।
पु०१ कसीस। २ छरीला। ३. चन्दन। ४. मोती। ५. उशीर। खस। ६ बनसनई। ७ लिसोडा। ८ चपा। ९ गाल। १०. पद्मकाठ। ११ पीत चदन। १२ भीमसेनी कपूर। १३ शाल वृक्ष। १४ हिम। १५ मटर। १६ चन्द्रमा। १७ जैनो का एक प्रकार का व्रत।

**शीतलक**—पु०[स० शीतल√कन्]१ मरुआ। मरुवक। २. कुमुद।
वि० शीतल करनेवाला।

**शीतल-चीनी**—स्त्री०[स शीतल+हिं० चीनी] कबाब चीनी।

**शीतलच्छाय**—वि०[स० ब० स०]=शीतच्छाय।

**शीतलता**—स्त्री०[स० शीतल+तल्—टाप्]१. शीतल होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २ जडता।

**शीतलताई**†—स्त्री०=शीतलता।

**शीतलत्व**—पु०[स० शीतल+त्व]=शीतलता।

**शीतल-पाटी**—स्त्री० [स०+हिं०] एक प्रकार की चिकनी, पतली और बढ़िया चटाई।

**शीतल भंडार**—पुं०[सं० ब० स०]१. विशेष प्रकार से निर्मित तथा यंत्रों आदि से संचालित वह भंडार गृह जिसका तापमान कृत्रिम रूप से कम कर दिया जाता है तथा जिसके फल स्वरूप उसमें रखी हुई चीजें ताप के कुप्रभाव से सुरक्षित रहती हैं। ठंडा गोदाम। (कोल्ड स्टोरेज) २. शीतागार। सर्दखाना।

**शीत-लहरी**—स्त्री०[स०]=शीत तरंग। (देखें)

**शीतला**—स्त्री०[सं० शीतल—टाप्]१. एक प्रसिद्ध रोग जिसमें शरीर पर दाने या फफोले निकल आते हैं। २ उक्त की अधिष्ठात्री देवी। ३. नीली दूब। ४. अर्क पुष्पी।

**शीतला-वाहन**—पु०[ष० त० स०] गधा, जो शीतला देवी का वाहन कहा गया है।

**शीतला-षष्ठी**—स्त्री० [ष० त०] माघ शुक्ला षष्ठी जो शीतला देवी के पूजन की तिथि कही गई है।

**शीतलाष्टमी**—स्त्री० [सं० ष० त० स०] चैत्र कृष्ण पक्ष की अष्टमी जो शीतलादेवी के पूजन की तिथि कही गई है।

**शीतली**—स्त्री०[सं० शीतल-ङीप्]१. जल में होनेवाला एक प्रकार का पौधा। २. श्वेतवल्ली। ३ चेचक या शीतला नामक रोग।

**शीतवल्ली**—स्त्री०[स० ब० स०] नीली दूब।

**शीतवासा**—स्त्री०[स० ब० स०] जूही। यूथिका।

**शीत-वीर्य**—पु० [म० ब० स०]१ पद्माख। २ पाषाण-भेद नामक वनस्पति। ३ पित्त-पापड़ा। ४ पाकर वृक्ष। ५. नीली दूब। ६. बच।
वि० (पदार्थ) जो खाने पर शरीर मे ठंढक लाता हो। ठंढी तासीर वाला।

**शीत-शिव**—पु०[सं० कर्म० स०] १ सेंधा नमक। २. छरीला। पत्थर-फूल। ३. सोआ नामक साग। ४. शमी वृक्ष। ५. कपूर।

**शीतशिवा**—स्त्री०[स० शीत-शिव-टाप्]१. शमी वृक्ष। २. सौंफ।

**शीतशूक**—पु०[सं० ब० स०] जौ। यव।

**शीत-संग्रह**—पुं०[सं० ष० त० स०]=शीतल भंडार।

**शीत-सन्निपात**—पुं० [सं० मध्यम० स०] एक प्रकार का सन्निपात जिसमें शरीर सुन्न और ठंढा हो जाता है।

**शीत-सह**—पु०[सं० शीत√सह (सहन करना)+अच्] पीलू। शस्ल वृक्ष।
वि० जिसमे शीत अर्थात् ठंढ या सरदी सहने की विशेष क्षमता हो।

**शीत-सहा**—स्त्री०। [सं० शीतसह-टाप्] १ शेफालिका। २. नेवारी। ३. मोतिया। बेला। ४. चमेली। ५. पीलू वृक्ष।

**शीत-सीकर**—पुं० दे० 'शीताम्भ'।

**शीतांग**—पुं०[सं० ब० स०] शीत सन्निपात।
वि० ठंढे अंगोंवाला।

**शीतांगी**—स्त्री० [सं० शीतांग—ङीप्] हंसपदी लता।

**शीतांशु**—पुं०[सं० ब० स०] १. चन्द्रमा। २. कपूर।

**शीता**—स्त्री० [सं० शीत—टाप्] १. सरदी। ठंढ। २. एक प्रकार की दूब। ३. शिल्पिका नामक घास। ४. अमलतास।

**शीतागार**—पु० [सं०]=शीतल भंडार।

**शीताम्भ**—पुं०[सं०ष० त०] किसी ओर से आनेवाली शीतल वायु की धारा का वह अग्र भाग जो गरम वायु के सामने आ पड़ने के कारण कुछ नीचे दब जाता है और शीत की हल्की तह के रूप मे किसी प्रदेश के ऊपर से होता हुआ आगे बढ़ता है। (कोल्ड फ्रन्ट)
**विशेष**—जब यह शीताम्भ किसी प्रदेश के ऊपर से होकर गुजरता है तब उस प्रदेश में तापमान और वायुभार गिर जाता है, आँधी आती और वर्षा होती है।

**शीतातप**—पुं० [सं० द्व० स०] शीत और आतप दोनों। जाड़ा और गरमी।

**शीताद**—पुं० [सं० शीत-आ√दा (देना)+क] एक प्रकार का रोग जिसमे मसूड़ो से दुर्गंध निकलने लगती है।

**शीताद्रि**—पु० [स० मध्यम० स०] हिमालय पर्वत।

**शीताद्य**—पु० [स० शीताद+यत्] शीतज्वर।

**शीताभ**—पु० [स० ब० स०]१ चन्द्रमा। २. कपूर।

**शीतालु**—वि०[स० शीत+आलुच्] १. शीत के फलस्वरूप जो काँप रहा हो। २. शीत से सत्रस्त।

**शीतांशम (म्नु)**—पु०[स० कर्म० स०] चद्रकात मणि।

**शीतोदक**—पु०[स० ब० स०] एक नरक का नाम।

**शीतोष्ण**—वि०[स० द्व० स०] १. ठंढा और गरम। २ कुछ कुछ ठंढा और कुछ कुछ गरम।

**शीतकार**—पु०=शीतकार।

**शीधु**—पु०[स० शी+धुक्] मदिरा। शराब। विशेषत. ऊख के रस को सडाकर बनाई जानेवाली शराब।

**शीन**—वि०[स० √ शॅय (गमनादि)+क्त—संप्रसा० त=न] १. मूर्छित। २. जमा हुआ।
पु० =अजगर।
पु०[अ०]१ अरबी-फारसी वर्णमाला का एक वर्ण जिसका उच्चारण तालव्य 'श' का सा होता है। २. उक्त वर्ण का सूचक लिपिचिह्न।
**मुहा०—शीन काफ दुरुस्त होना**=शब्दों के ठीक उच्चारण का उचित ज्ञान होना।

**शीर**—पुं०[स० क्षीर से फा०] दूध।
पुं०[स०] अजगर।
वि० नपुंसक।

**शीरखिस्त**—पु०[फा०] एक प्रकार की यूनानी रेचक ओषधि।

**शीरखोरा**—वि० [फा० शीरख्वार] (बालक) जो अभी अपनी माँ का दूध पीता हो।

**शीरगर्म**—वि० [फा०] (तरल पदार्थ) जो उबलता हुआ न हो, बल्कि साधारण गर्म हो। उतना ही गरम जितना पीने योग्य दूध होता है।

**शीरमाल**—पुं०[फा०] एक प्रकार की मीठी रोटी जिसे पकाते समय दूध का छींटा दिया जाता है।

**शीरा**—पुं०[फा० शीर:] गुड़, चीनी, मिसरी आदि के घोल को उबालकर तैयार की हुई चाशनी।

**शीराज़**—पुं० [फा०] एक प्रसिद्ध ईरानी नगर।

**शीराज़ा**—पु० [फा० शीराज:]१. वह फीता जो किताबों की सिलाई की ओर पर शोभा और मजबूती के लिए लगाया जाता है। २. इन्तजाम। प्रबन्ध। व्यवस्था। ३. क्रम। सिलसिला। ४. कपड़ों की सिलाई। सीवन।

क्रि० प्र०—खुलना।—टूटना।

**शीराज़ी**—वि० [फ़ा०] शीराज़ का।

पुं० १. शीराज़ का निवासी। २. एक प्रकार का कबूतर।

**शीरी**—वि० [फ़ा०] १. मधुर। मीठा। २. प्रिय। रुचिकर।

**शीरी**—पुं० [सं० क्षीर+ङीष्] १. कुश। कुशा। २. मूँज। ३. कलिहारी। कांगली।

**शीरीनी**—स्त्री० [फ़ा०] १. मिठास। मधुरिमा। २. मिठाई। मिष्ठान्न। ३. गुरु, देवता, पीर आदि के सामने आदरपूर्वक रखी जानेवाली मिठाई।

क्रि० प्र०—चढ़ाना। बाँटना।

**शीर्ण**—भू० कृ० [सं० √ शॄ (टूकड़े होना)+क्त] [भाव० शीर्णता] १. खंड-खंड। टूकड़े-टूकड़े। २. गिरा हुआ। च्युत। ३. टूटा या फटा हुआ और फलतः बहुत पुराना। ४. कुम्हलाया या मुरझाया हुआ। ५. दुबला-पतला। कृश।

पुं० गूगल नामक गन्ध द्रव्य।

**शीर्णता**—स्त्री० [शीर्ण+तल्—टाप्] शीर्ण होने की अवस्था या भाव।

**शीर्णत्व**—पुं० [शीर्ण+त्व]=शीर्णता।

**शीर्णपत्र**—पुं० [स० ब० स०] १. कर्णिकार। कनियारी। २. पठानी लोध। ३. नीम।

**शीर्णपर्ण**—पुं० [सं० ब० स०] निंब। नीम।

**शीर्णपाद**—पुं० [स० ब० स०] यमराज।

**शीर्णपुष्पी**—स्त्री० [सं० शीर्णपुष्प—ङीप्] सौंफ।

**शीर्ति**—पुं० [सं०√शॄ (टूकड़े करना)+क्तिन्] तोड़ने-फोड़ने की क्रिया। खंडन।

**शीर्य**—वि० [सं० शॄ (खंड करना)+क्यप्-यत्] १. जो तोड़ा-फोड़ा जा सके। २. भंगुर। नाशवान्।

पुं० एक प्रकार की घास।

**शीर्ष**—पुं० [सिरस्-शीर्ष पृषो० √शॄ+क, सुक् वा] १. किसी चीज का सबसे ऊपरी तथा उन्नत सिरा। २. सिर। ३. मस्तक। ललाट। ४. काला अगर। ५ एक प्रकार की घास। ६. एक प्राचीन पर्वत। ७. ज्यामिति मे वह बिंदु जिस पर दो ओर से दो तिरछी रेखाएँ आकर मिलती हों। (वर्टेक्स) ८. खाते मे किसी मद का नाम। (हेड)

**शीर्षक**—पुं० [स० शीर्ष√कै (होना)+क] १. सिर। २ मस्तक। माथा। ३. ऊपरी भाग। चोटी। ४. सिर की हड्डी। ५ टोपी आदि शिरस्त्राण। ६. लेखों आदि के ऊपर दिया जानेवाला उनका ऐसा नाम जिससे उनके विषय का कुछ परिचय मिलता हो। (हेडिंग) ७. राहु ग्रह।

**शीर्ष-कोण**—पुं० [सं० मध्य० स०] ज्यामिति मे, किसी आकृति का वह कोण जो तल के ठीक ऊपरी भाग में खड़े बल में होता है। (वर्टिकल एंगिल)

**शीर्ष-नाम**—पुं० [सं० मध्य० स०] लेख्य, विधान आदि का वह पूरा नाम जो उसके आरम्भ में विशेषतः मुख-पृष्ठ पर रहता है।

**शीर्ष-पट**—पुं० [सं० ष० त० स०] सिर पर लपेटा जानेवाला वस्त्र अर्थात् पगड़ी या साफा।

**शीर्ष-त्राण**—पुं० [शीर्ष√ त्रै (रक्षा करना)+ल्युट्] शिरस्त्राण।

**शीर्ष-रेखा**—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १. किसी वर्ण के ऊपरवाली रेखा या लकीर। २. देव-नागरी लिपि में चिह्नों के ऊपर की सीधी बेडी रेखा।

**शीर्ष-विंदु**—[स० ष० त० स०] १. आँख का मोतिया-बिंद नामक रोग। २. दे० 'शिरोबिंदु'।

**शीर्ष-स्थान**—पुं० [स० मध्य० स०] १. सबसे ऊँचा स्थान। २. सिर।

**शीर्षण्य**—पुं० [स० शीर्ष+यत्—शीर्षन्] १. टोपी। २. सिरके साफ और घुंघराले बाल। ३. खाट या चारपाई का सिरहाना। ४ पगड़ी। साफा।

**शीर्षासन**—पुं० [स० शीर्ष+आसन] हठयोग, व्यायाम आदि मे एक प्रकार का आसन या मुद्रा जिसमे सिर नीचे और पैर ऊपर करके सीधे खड़ा हुआ जाता है।

**शीर्षोदय**—पुं० [स० ष० त० स०] मिथुन, सिंह, कन्या, तुला, वृश्चिक, कुंभ और मीन राशियाँ जिनका उदय शीर्ष की ओर से होना माना गया है।

**शील**—पुं० [सं० √शील (अभ्यास)+अच्] १. मनुष्य का नैतिक आचरण और व्यवहार; विशेषतः उत्तम और प्रशंसनीय या शुभ आचरण और व्यवहार। (डिस्पोजीशन)

**विशेष**—शील वस्तुतः मनुष्य की प्रकृति और व्यक्तित्व से संबद्ध होता है, और इसी लिए कहीं कहीं यह स्वभाव के पर्याय के रूप में भी प्रयुक्त होता है। यह प्रायः सुनिश्चित और अस्थायी या स्थिर भी होता है। यह स्वभाव के आंशिक पक्ष या रूप में होता है; इसलिए इसे देह-स्वभाव भी कहते हैं।

**मुहा०—शील निभाना**=(क) सद्-व्यवहार मे अंतर न आने देना। (ख) किसी के द्वारा अनिष्ट होने पर भी उसका अनिष्ट न करना। **(किसी स्त्री का) शील भंग करना**=किसी स्त्री के साथ व्यभिचार करके उसका सतीत्व नष्ट करना।

३. हमारे मन की वह सद्भावना पूर्ण वृत्ति जो विकट प्रसंग आने पर भी हमे उग्र, उद्धत या कटु नही होने देती और जो हमारी विनम्रता, शिष्टता आदि की सूचक होती है। (मार्डेस्टी)

**विशेष**—यह वृत्ति बहुत कुछ अंशतः होती और शिक्षा तथा शिष्ट समाज के संपर्क से प्राप्त होती है।

३. वह मानसिक वृत्ति जिसमे लज्जा और संकोच की प्रधानता होती है, और इसी लिए उचित अवसरों पर भी प्रायः कोई बात नही कहने देती। मुरौवत।

**मुहा०—शील तोड़ना**=मुरौवत न करना या न रखना।

**शीलन**—पुं० [सं०√शील (अभ्यास करना)+ल्युट्—अन] १. अभ्यास। २. विवेचना। ३ प्रवर्तन। ४. धारण करना। ५. ग्रहण करना।

**शीलवान्**—वि० [स० शील+मतुप्—म=व-नुम् शीलवत्] [स्त्री० शीलवती] १. उत्तम शीलवाला। २. शीलो का पालन करनेवाला। (बौद्ध)

**शीलींध्र**—पुं० [स० शिली √ध्रु (रखना)+क पृषो० मुम्] १. केले का फूल। २ ओला। ३. कुकुरमुत्ता। ४. शिलिंद मछली।

**शीश**—पुं० दे० 'शीर्ष'।

**शीश-तरंग**—पुं० [हि० शीश+सं० तरंग] जलतरंग की तरह का एक

बाजा। जिसमें दो पटरियों पर शीशे के छोटे-बड़े बहुत से टुकड़े जड़े होते हैं। इन्हीं शीशों पर आघात करने से अनेक प्रकार के स्वर निकलते हैं।

**शीशम**—पु०[सं० सिंशिपा से या०] एक प्रकार का पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत बढ़िया होती है और इमारत तथा मेज, कुरसियाँ आदि बनाने के काम आती है।

**शीश-महल**—पु०[फा० शीश+अ० महल] १. शीशे का बना हुआ मकान। २. वह कमरा या कोठरी जिसकी दीवारों में सर्वत्र शीशे जड़े हों।

**पद—शीशमहल का कुत्ता**=ऐसा व्यक्ति जो उस कुत्ते की तरह घबराया या बौखला गया हो जो शीशमहल में पहुँचकर अपने चारो ओर कुत्ते ही ही कुत्ते देखकर घबरा या बौखला जाता है।

**शीशा**—पु० [फा०] १. एक प्रसिद्ध कड़ा और भंगुर पदार्थ जो बालू, रेह या खारी मिट्टी को आग मे गलाने से बनता है, और जिससे अनेक प्रकार के पात्र, दर्पण आदि बनते हैं। २. उक्त का वह रूप जिसमे ठीक ठीक प्रतिबिम्ब दिखाई देता है। आईना। दर्पण।

**पद—शीशा-बाशा**=बहुत नाजुक चीज।

**मुहा०—शीशे में मुँह तो देखो**=पहले अपनी पात्रता या योग्यता तो देखो। (व्यग्य)

३. उक्त पदार्थ का बना हुआ वह पात्र जिसमे प्राचीन काल में शराब रखी जाती थी।

**पद—शीशे का देव**=शराब।

**मुहा०—शीशे में उतारना**= (क) भूत, प्रेत आदि को मंत्र बल से बाँधकर शीशे के पात्र में बन्द करना। (ख) किसी को अपनी ओर आकृष्ट या अनुरक्त करके अपने वश मे करना।

४. झाड़, फानूस आदि काँच के बने सजावट के सामान। ५. लाक्षणिक अर्थ मे बहुत ही चिकनी तथा चमकीली वस्तु।

**शीशागर**—पु०[फा०] [भाव० शीशागरी] शीशे बनानेवाला कारीगर।

**शीशागरी**—स्त्री० [फा०] शीशे की चीजें बनाने का काम तथा हुनर।

**शीशी**—स्त्री० [फा० शीशा] काँच की लम्बी कुप्पी। बोतल के आकार का छोटा पात्र।

**मुहा०—शीशी सुँघाना**=अस्त्र चिकित्सा करने से पहले एक खास दवा सुँघाकर रोगी को इसलिए बेहोश करना कि चीर-फाड़ से उसे कष्ट या पीड़ा न हो।

**शुंग**—पुं० [सं० शम्+ग, अ=उ] १. वट वृक्ष। बरगद। २. आँवला। ३. पाकड़। ४. वृक्षों आदि का नया पत्ता। ५. फूल के नीचे की कटोरी। ६. एक क्षत्रिय राजवंश जिसने मौर्यों के उपरांत मगध पर शासन किया था।

**शुंगी (गिन्)**—पुं० [सं० शुंग+इनि (इन्)] १. पाकर। पाकड़ का पेड़। २. वट-वृक्ष। बरगद।

**शुंठी**—स्त्री० [सं० शुंठ—ङीप्] सोंठ।

**शुंड**—पं० [सं० शुन्+ड] १. हाथी का सूँड़। २. हाथी का मद। ३. एक तरह की शराब।

**शुंडक**—पुं० [सं० शुंड+कन्] १. एक प्रकार की रसभेरी। २. शौंडिक।

**शुंडा**—स्त्री० [सं० शंड—टाप्] १. सूँड़। २. शराबखाना। भौली। ३. मदिरा। शराब। ४. रंडी। वेश्या। ५. कुटनी।

**शुंडा-दंड**—पुं० [सं० उपमि० स०] हाथी का सूँड़।

**शुंडार**—पुं० [सं० शुंड+र] १. हाथी की सूँड़। २. साठ वर्ष की अवस्था का हाथी। ३. कलवार।

**शुंडाल**—पुं० [सं० शुंडा+लच्] हाथी।

**शुंडिक**—पुं० [सं० शुंडा+ठक्—इक] १. वह जो शराब बनाने का व्यवसाय करता हो। २. शराब बनानेवाली एक जाति। ३. मद्य बिकने का स्थान। मद्यशाला।

**शुंडिका**—स्त्री० [सं० शुंडिक—टाप्] गले के अन्दर की घाँटी। अलिजिह्वा। लक्ष्री। घाँटी।

**शुंडी**—पुं० [सं० शुंड+अच्—ङीप् शुंडिन्] १. हाथी। २. कलवार। शौंडिक।

स्त्री० १. हाथी सूँड़ी नाम का पौधा। २. गले के अन्दर की घाँटी। कौआ।

**शुंभ**—पु० [स०√शुंभ् (दीप्त होना आदि)+अच्] प्रह्लाद का पौत्र एक असुर जिसे दुर्गा ने मारा था।

**शुंभ-मर्दिनी**—स्त्री० [शुंभ√मृद् (मर्दन करना)+णिनि—ङीप्] दुर्गा।

**शुक**—पु० [√शुक् (गमनादि)+क] १. तोता। सुग्गा। २. शुकदेव मुनि। ३. कपडा। वस्त्र। ४. पहने हुए कपड़े का आँचल। ५. पगड़ी। साफा। ६. सिरिस का पेड़। ७. लोध। ८. सोनापाठा। ९. भड़-भाँड़। १०. तालीश पत्र। ११. एक प्रकार की गठिबन।

**शुक-कीट**—पु०[स० उपमि० स०] हरे रग का एक प्रकार का फतिंगा जो प्रायः खेतों मे उड़ता फिरता है।

**शुक-कूट**—पु०[स० ष० त० स०] दो खंभों के बीच मे शोभा के लिए लटकाई हुई माला।

**शुकच्छद**—पु०[स० ष० त० स०] १. तोते का पर। २. गठिबन। ३ तेजपत्ता।

**शुकतरु**—पु०[स० मध्य० स०] शिरीष (वृक्ष)।

**शुकतुंड**—पु०[स० ष० त० स०] १. तोते की चोंच। २. हाथ की एक मुद्रा जो तान्त्रिक पूजन के समय बनाई जाती है।

**शुकतुंडी**—स्त्री० [स० शुक-तुंड—ङीप्] सूआठोढी नामक पौधा।

**शुकदेव**—पु०[स० मध्यम० स०] कृष्ण द्वैपायन व्यास के पुत्र जो पुराणों के बहुत बड़े वक्ता और ज्ञानी थे।

**शुकद्रुम**—पु०[स० मध्य० स०] शिरीष वृक्ष।

**शुकनासिकान्याय**—पु० [सं० ष० त० मध्य० स०] एक प्रकार का न्याय। जिस प्रकार तोता फँसाने की नली में लोभ के कारण फँस जाता है, वैसे ही फँसने की क्रिया या भाव।

**शुकनास**—पुं० [सं० ब० स०] १. केवाँच। कौंछ। २. गंमारी। ३. नासिका नामक गंध-द्रव्य। ४. बथुनाक। सोना-पाढ़ा। ५. अगस्त का पेड़।

**शुकपुच्छ**—पुं०[सं० ब० स०] १. थुनेर। २. सिरिस का पेड़। ३. धन्वक। ४. अगस्त का पेड़।

**शुकशिम्ब**—वि०[स० ष० त०] तोते को प्रिय लगनेवाला।

पुं० १. सिरिस का पेड़। २. कमरख।

**शुक्रप्रिया**—स्त्री०[स० शुक्रप्रिय—टाप्]१. नीम। २. आमुन।
**शुक्र-फल**—पुं०[स० ब० स०] १. आक। मदार। २. सेमल।
**शुक्र-बाहन**—वि०[सं० ब० स०] जिसका वाहन शुक्र हो।
पु० कामदेव।
**शुक्रशिंबा, शुक्रशिंबि**—स्त्री० [सं० उपमि० स०] कपिकच्छु। केवाँच। कौंछ।
**शुक्रशीर्ण**—स्त्री० [सं० ब० स०] १. धुनेर। २. तालीश पत्र। ३ तेजपत्ता।
**शुकाक्षन**—पुं०[सं० शुक√अक्(खाना)+ल्युट्—अन] अनार। दाडिम।
**शुकाक्षन**—पु०[सं० ब० स०]१. गौतम बुद्ध। २. अर्हत्।
**शुकी**—स्त्री०[सं० शुक्—ङीप्] १. तोते की मादा। तोती। सुग्गी। २. कश्यप मुनि की पत्नी का नाम।
**शुकेष्ट**—पु०[स० ष० त० स०] शिरीष वृक्ष।
**शुकोदर**—पु०[स० ब० स०] तालीश पत्र।
**शुकोह**—पु०[फा०] दे० 'शिकोह'।
**शुक्त**—भू० कृ०[स० √ शुच् (शोक करना)+क्त] [भाव० शुक्ति] १. स्वच्छ। निर्मल। २. खट्टा। अम्लीय। ३. कडा। ४. शराबदार। ५. अग्नि। ६. उजाड़। ७. निर्जन। ८. मिला हुआ। मिश्रित। ९. क्लिष्ट।
पु०१. अम्लता। खटाई। २. सड़ाकर खट्टी की हुई चीज। खमीर। ४. काँजी। ५. सिरका। ६. चुक नाम की खटाई। ७ गोश्त। मास। ८. अग्नि और कठोर बात।
**शुक्ता**—स्त्री०[स० शुक्त—टाप्] १. चुक का पौधा। २. काँजी।
**शुक्ति**—स्त्री० [स० √ शुच् (शोकादि)+क्तिन्]१. सीप। सीपी। २. सुतुही। ३ शख। ४. बेर। ५. नखी नामक गन्ध द्रव्य। ६ अर्श या बवासीर नामक रोग। ७. कापालिकों के हाथ मे रहनेवाला कपाल। ८. अस्थि। हड्डी। ९. दो कर्ष या चार तोले की एक तौल। १०. आँख का एक रोग जिसमे मांस की एक बिंदी सी निकल आती है। ११. घोड़े के गरदन की एक भौरी।
**शुक्तिक**—पु० [स० शुक्ति+कन्] १. एक प्रकार का नेत्र रोग। २. गन्धक।
**शुक्तिका**—स्त्री० [स० शुक्तिक—टाप्]१. सीप। २ चुक नामक साग। ३. आँख का शुक्ति नामक रोग।
**शुक्तिज**—पु० [स० शुक्ति√जन् (उत्पन्न करना)+ड] मोती।
वि० शुक्ति अर्थात् सीप से उत्पन्न।
**शुक्तिपुट**—पु० [स० ष० त० स०] १. सीप का खोल। २ शख। ३. सुतुही नामक जल-जन्तु तथा उसका खोल।
**शुक्तिबीज**—पु०[सं० ष० त०स०] मोती।
**शुक्तिभगि**—पु० [ष० त० स०] मोती।
**शुक्तिमती**—स्त्री०[सं० शुक्ति+मतुप—ङीप्] १. एक प्राचीन नदी। २. चेदि राज्य की राजधानी।
**शुक्तिमान्(मत्)**—पु० [ स०शुक्तिमत्—नृम्—दीर्घ] एक पर्वत जो आठ कुल-पर्वतों मे से है।
**शुक्ति वधू**—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १. सीप। सीपी। २. सीपी में रहनेवाला कीड़ा।
**शुक्ल**—वि० [स० शुच्+रक्]१. चमकीला। देदीप्यमान। २. साफ।
पु०१. अग्नि। आग। २ हमारे सौरग्रह का एक प्रमुख तथा बहुत चमकीला ग्रह जो कभी कभी दिन के प्रकाश मे भी दिखाई देता है तथा जो पुराणानुसार दैत्यों का गुरु कहा गया है।
**विशेष**—यह सूर्य से ६७,०००,००० मील दूर है। यह सूर्य का पूरा चक्कर प्राय: २०० से कुछ अधिक दिनो मे लगाता है।
३ शुद्ध और स्वच्छ सोम। ४. सोना। स्वर्ण। ५. धन-सम्पत्ति। दौलत। ६ सार भाग। सत्त। ७. पुरुष का वीर्य। ८. पौरुष। ९ चित्रक या चीता नामक वृक्ष। १० एरंड। रेंड। ११ आँख की पुतली का फूली नामक रोग। १२ दे० 'शुक्रवार'।
पु०[अ०] किसी उपकार या लाभ के लिए किया जानेवाला कृतज्ञता का प्रकाश। जैसे—शुक्र है, आप आ तो गये।
**शुक्ल-कर**—वि०[स० शुक्ल√कृ (करना)+अच्] वीर्य बनानेवाला।
पु० मज्जा, जिससे शुक्र या वीर्य का बनना कहा गया है। (वैद्यक)
**शुक्ल-कृच्छ्र**—पु०[स० ब० स०] मूत्रकृच्छ्र रोग। सूजाक।
**शुक्लगुजार**[1]—वि०[अ० शुक्ल+फा० गुजार] [भाव० शुक्लगुजारी] १. किसी का शुक्र अर्थात् आभार माननेवाला। २. आभार प्रकट या प्रदर्शित करनेवाला।
**शुक्लगुजारी**—स्त्री० [अ०+फा०] शुक्लगुजार होने की अवस्था या भाव। आभार प्रकट या प्रदर्शित करना।
**शुक्लज**—पु०[स० शुक्ल√ जन् (उत्पन्न करना)+ड]१. पुत्र। बेटा। २. जैन देवताओ का एक वर्ग।
वि० शुक्र से उत्पन्न।
**शुक्ल-ज्योति**—स्त्री०[स० ब० स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
**शुक्ल-दोष**—पु०[स० ब० स०] नपुसकता।
**शुक्ल-पुष्प**—पु०[स० ब० स०] १ कटसरैया। २ सफेद अपराजिता।
**शुक्ल-प्रमेह**—पु०[सं० ब० स०] वीर्य के क्षय होने का एक रोग। धातु का गिरना।
**शुक्लभुज**—पु०[स० शुक्ल√भुज् (खाना)+क्विप्] मयूर। मोर।
**शुक्लभू**—पु० [सं० शुक्ल√भू (होना)+क्विप्] मज्जा।
**शुक्लमेह**—पुं० [स०] वीर्य के क्षय होने का एक रोग।
**शुक्लल**—वि०[स० शुक्ल√ला (लेना)+क]१. जिसमें शुक्र या वीर्य हो। २. शुक्र या वीर्य उत्पन्न करने या बढ़ानेवाला।
**शुक्लवार**—पु०[सं० ष० त० स० मध्यम० स० वा]सप्ताह का छठा दिन। बृहस्पतिवार के बाद का और शनिवार से पहले का दिन। जुमेरात।
**शुक्ल-वासर**—पु०[ष० त० स०]—शुक्रवार।
**शुक्ल-शिष्य**—पु०[सं०] १. शुक्राचार्य। २. असुर।
**शुक्ल-स्तंभ**—पु०[स० ब० स०] काम का वेग रोकने के फलस्वरूप होनेवाली नपुसकता।
**शुक्लांग**—पुं०[सं० ब०स०] मयूर। मोर।
**शुक्लाचार्य**—पु०[सं० कर्म० स०] १. असुरों के देवता जो महर्षि भृगु के पुत्र थे और युद्ध में मरे हुए असुरों को मंत्र-बल से फिर से जिला देते थे। पुराणों के अनुसार वामन रूप धारण करके विष्णु ने इन्हे काना कर दिया था। २. काना या एकाक्ष व्यक्ति। (व्यग्य)

**शुक्राणु**—पुं० [सं० ष० त०] नर या पुरुष के वीर्य का वह अणु जो माद्दा या स्त्री के अंड अथवा गर्भ में प्रविष्ट होकर संतान उत्पत्ति का कारण होता है। (स्पर्म)

**शुकाना**—पुं० [फा० शुकानः] वह धन जो किसी को शुक्रिया अदा करते समय दिया जाता है। जैसे—वकील या डाक्टर को दिया जानेवाला शुकाना।

**शुक्रिम**—वि० [सं० शुक्र+इमनिच्] =शुक्ल।

**शुक्रिय**—वि० [सं० शुक्र+घ—इय] १. शुक्र-सम्बन्धी। शुक्र का। २. जिसमें शुद्ध रस हो। ३०. शुक्र बढानेवाला।

**शुक्रिया**—पुं० [फा० शुक्रियः] किसी के उपकार या अनुग्रह के बदले में कृतज्ञता प्रकट करते समय कहा जानेवाला शब्द। धन्यवाद।
क्रि० प्र०—अदा करना।

**शुक्ल**—वि० [सं० √शुच् (पवित्र करना आदि)+क्त, कुत्व] १. सफेद। श्वेत। २. सात्विक। ३ यशस्कर। ४ चमकीला।
पु० १. सरयूपारी आदि ब्राह्मणों के एक वर्ग का अल्ल या कुल नाम। २. चान्द्रमास का शुक्ल पक्ष। ३. सफेद रेंड का पेड़। ४ आँखों का एक प्रकार का रोग जो उसके सफेद तल या डेले पर होता है। ५. कुन्द का पौधा और फूल। ६. सफेद लोध। ७. मक्खन। ८. चाँदी। ९. घत्र। घौ। १०. योग।

**शुक्ल-कंद**—पुं० [स० ब० स०] १ भँसाकंद। २ शंखालू। सौंस। ३. अतीस।

**शुक्ल-कंदा**—स्त्री० [सं० कर्म० स० टाप्] १. सफेद अतीस। २. बिदारी कंद।

**शुक्लक**—पुं० [स० शुक्ल+कन्] १. शुक्ल पक्ष। २. खिरनी का पेड़।
वि० =शुक्ल।

**शुक्ल-कुष्ठ**—पुं० [सं० कर्म० स०] सफेद कोढ़।

**शुक्ल-क्षेत्र**—पुं० [स० कर्म० स०] १. पवित्र स्थान। २. तीर्थ स्थान।

**शुक्लता**—स्त्री० [स० शुक्ल+तल्—टाप्] शुक्ल होने की अवस्था धर्म या भाव।

**शुक्लत्व**—पुं० [सं० शुक्ल+त्व] =शुक्लता।

**शुक्ल-पक्ष**—पुं० [सं० कर्म० स०] चांद्रमास में कृष्ण पक्ष से भिन्न दूसरा पक्ष। चाँदना पक्ष।

**शुक्ल-पुष्प**—पुं० [सं० ब० स०] १. छत्रक वृक्ष। २. कुंद का पौधा और फूल। ३. मरुआ पौधा। ४. सफेद ताल-मखाना। ५. पिंडार। ६. मैन-फल।

**शुक्लपुष्पा**—स्त्री० [स० शुक्ल पुष्प-टाप्] १. हाथी शुंडी नामक क्षुप। २. शीत कुंभी। ३. कुंद नामका पौधा और फूल।

**शुक्लपुष्पी**—स्त्री० [सं० शुक्ल पुष्प-ङीप्] १. नागदंती। २. कुंद का पौधा और फूल।

**शुक्लफेन**—पुं० [सं० ब स०] समुद्र फेन।

**शुक्ल-बल**—पुं० [सं० ब० स०] जैनों के अनुसार एक जिन देव का नाम।

**शुक्ल-मंडल**—पुं० [सं० ष० स०] आँखों का सफेद भाग जो पुतली से भिन्न होता है।

**शुक्ल-मेह**—पुं० [सं०] चरक के अनुसार एक प्रकार का प्रमेह रोग।

**शुक्ल-शाल**—पुं० [सं० ब० स०] १. गिरि निंब। २. सफेद शाल का वृक्ष।

**शुक्लांग**—वि० [सं० ब० स०] श्वेत अंगों वाला।

**शुक्लांगा**—स्त्री० [स० शुक्लांग-टाप्] शेफालिका।

**शुक्लांबर**—पुं० [सं० कर्म० स०] सफेद कपड़ा।
वि० जो श्वेत वस्त्र पहने हो।

**शुक्ला**—स्त्री० [सं० शुक्ल+अच्—टाप्] १. सरस्वती। २. चीनी। ३. काकोली। ४. शेफालिका। ५ बिदारी कन्द। ६ शूकर कन्द।

**शुक्लाभिसारिका**—स्त्री० [सं० मध्य० स०] साहित्य मे वह परकीया नायिका जो शुक्ल पक्ष या चाँदनी रात मे अपने प्रेमी से मिलने के लिए सजधज कर संकेत-स्थल पर जाती है।

**शुक्लाम्ल**—पुं० [सं० कर्म० स०] चूका या चूकिका नामक साग।

**शुक्लिमा (मन्)**—स्त्री० [स० शुक्ल+इमनिच्] सफेदी। श्वेतता।

**शुक्लोदन**—पुं० [सं० ब स०] ललित विस्तर के अनुसार महाराज शुद्धोदन के भाई का नाम

**शुक्लोपला**—स्त्री० [सं० कर्म० ब० स० अच् टाप्] चीनी। शर्करा।

**शुक्लौदन**—पु० [स० कर्म० स०] अरवा चावल।

**शुगल**†—पुं०=शगल।

**शुचा**—स्त्री० [सं० √शुच् (शोक करना) +क्विप्—टाप्] शोक।
स्त्री०=शुचि।

**शुचि**—वि० [सं०√शुच्+कि] [भाव० शुचिता] १ शुद्ध। पवित्र। २. साफ। स्वच्छ। ३ निर्दोष। ४ स्वच्छ हृदयवाला। ईमानदार और सच्चा। ५. चमकीला।
स्त्री० १. पवित्रता। शुद्धता। २ स्वच्छता।
पुं० १ सफेद रंग। २ सूर्य। ३. चन्द्रमा। ४. अग्नि। ५ शिव। ६. शुक्र नामक ग्रह। ७. ग्रीष्म ऋतु। गरमी के दिन। ८. ज्येष्ठ मास। जेठ का महीना।
पुं० [सं० शुच्+कि] १. अग्नि। २. चन्द्रमा। ३ ग्रीष्म ऋतु। ४. शुक्र। ५ ब्राह्मण। ६. कार्तिकेय। ७ चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

**शुचिकर्मा (र्मन्)**—वि० [स० ब० स०] सदाचारी।

**शुचिता**—स्त्री० [स० शुचि+तल्—टाप्] १. शुचि होने की अवस्था, धर्म या भाव। २. स्वास्थ्य रक्षा की दृष्टि से स्नान-पान, रहन-सहन आदि में शुद्धता और सफाई रखने की अवस्था या भाव। (सैनिटेशन)

**शुचिद्रुम**—पुं० [सं० कर्म० स०] पीपल।

**शुचिरोचि**—पुं० [स० ब० स० शतरोचिस्] चन्द्रमा।

**शुचिश्रवा (वस्)**—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

**शुची**—वि० [सं०शुच् (पवित्र करना)+क्विप्—इति, शुचिन्] शुचि अर्थात् पवित्र या शुद्ध रहनेवाला।

**शुजा**—वि० [अ० शुजाअ] शूरवीर। दिलेर।

**शुजाअत**—स्त्री० [अ०] वीरता। शूरता

**शुटीर्य**—पुं० [सं०] १ वीरता। २. वीर्य।

**शुतुद्रि, शुतुद्रु**—स्त्री० [सं०] शतद्रु या सतलज नदी।

**शुतुर**†—पुं० [सं० उष्ट्र से फा०] ऊँट।

**शुतुर दमदा**—पुं० [फा०] वह भद्दा और भोंडा नखरा जो ऊँट के नखरे की तरह का जान पड़े।

**शुतुर बे मुहार**—वि० [फा०] बिना सोचे-समझे अनियंत्रित रूप में इधर-उधर या किसी ओर चल पड़नेवाला।

**शुतुरमुर्ग**—पुं० [फा०]मुर्ग की जाति का एक पक्षी जिसकी गरदन काफी लम्बी होती है।

**शुतुरी**—वि० [फा०] १. ऊँट-संबंधी। २. ऊँट के रंग का। ३. ऊँट के बालों का बना हुआ।

**शुदनी**—स्त्री० [फा०]आकस्मिक और निश्चित रूप से होनेवाली घटना या बात। भावी। होनी। होनहार।

**शुबहुद**—स्त्री० [फा०] किसी काम या बात का थोड़ा ज्ञान।

†स्त्री०=सुध-बुध।

**शुमा**—वि० [फा० शुमः] जो हो या बीत चुका हो। (समास में के अंत में) जैसे—पासशुमा, रजिस्ट्रीशुदा।

**शुद्ध**—वि० [सं०√शुध् (शोधन करना)+क्त]१ (पदार्थ)जिसमें किसी प्रकार का खोट या मैल न हो। खालिस। २ (पदार्थ या व्यक्ति) जिसमें कोई ऐब या दोष न हो। निर्दोष। ३ (व्यक्ति) जिनका धार्मिक या नैतिक दृष्टि से पतन न हुआ हो। जो भ्रष्ट न हुआ हो। ४. (आचरण, विचार या व्यवहार) जिसमें कोई त्रुटि या दोष न हो। ५ पाप से रहित। निष्पाप। ६ साफ और सफेद। ७ उज्ज्वल। चमकीला। ८.(गणना या लेख) जिसमें कोई अशुद्धि, गलती या भूल न हो। ९. अनूपम। बेजोड़। १०. (शास्त्र) जिसकी धार चोखी या तेज की गई हो। सान पर चढ़ाया हुआ।

पुं० १. सेंधा नमक। २ काली मिर्च। ३ चाँदी। ४ एक तरह की घास। ५. शिव। ६. चौदहवें मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक। ७. संगीत शास्त्र में प्राचीन अथवा मार्ग रागों की संज्ञा। जैसे—भैरव, मेघ आदि राग।

**शुद्ध-कर्मा (र्मन्)**—वि० [ब० स०] शुद्ध और पवित्र कर्म करनेवाला।

**शुद्ध-तरंगिणी**—स्त्री० [स० ब० स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**शुद्धता**—स्त्री० [स० शुद्ध+तल्-टाप्] शुद्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव।

**शुद्धत्व**—पुं० [सं० शुद्ध+त्व]=शुद्धता।

**शुद्ध-पक्ष**—पुं० [स०] चान्द्र मास का शुक्ल पक्ष।

**शुद्ध-भोगी**—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**शुद्ध-मंजरी**—स्त्री० [सं० ब० स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**शुद्ध-मनोहरी**—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**शुद्धमांस**—पु० [सं०] पकाया हुआ ऐसा मांस जिसमें हड्डी न हो। (वैद्यक)

**शुद्धांत**—पु० [सं० ब० स०] १. प्राचीन भारत में, राजाओं का अंतःपुर जो शुद्ध और पवित्र माना जाता था। २. दे० 'अवलगुह'।

**शुद्धांत पालक**—पुं० [स० ष० त०]वह जो अंतःपुर के द्वार पर पहरा देता हो।

**शुद्धांता**—स्त्री० [सं० शुद्धांत-टाप्] रानी।

**शुद्धा**—स्त्री० [सं० शुद्ध-टाप्]कुटज बीज। इन्द्र-जौ।

**शुद्धात्मा (त्मन्)**—पुं० [सं० ब० स०] शिव का एक नाम।

**शुद्धाद्वैत**—पु० [सं० शुद्ध+अद्वैत] वल्लभाचार्य का चलाया हुआ एक वेदांतिक सम्प्रदाय। इसमें मायारहित ब्रह्म को अद्वैत तत्त्व माना जाता है और सारा जगत् प्रपंच उसी की लीला का विलास है।

**शुद्धापह्नुति**—स्त्री० [सं० मध्य० स०] साहित्य में, अपह्नुति अलंकार का एक भेद जिसमें अति सादृश्य के कारण सत्य होने पर भी उपमेय को असत्य कहकर उपमान को सत्य सिद्ध किया जाता है।

**शुद्धाशुद्धि**—स्त्री० [स० द्व० स० या ब० स०] शुद्ध और अशुद्ध होने की अवस्था या भाव।

**शुद्धि**—स्त्री० [स०√शुध् (शोधन करना)+क्तिन्] १ शुद्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव। शुद्धता। २. सफाई। स्वच्छता। ३ पवित्रता। शुचिता। ४ चमक। द्युति। ५. ऋण आदि का चुकता होना या चुकाया जाना। परिशोध। ६ गणित में घटाने की क्रिया। बाकी। ७ कोई ऐसा धार्मिक कृत्य जो किसी अपवित्र वस्तु को पवित्र अथवा धर्म-च्युत व्यक्ति को फिर से धर्म में मिलाने या धार्मिक बनाने के लिए किया जाय। ८ दुर्गा का एक नाम।

**शुद्धिकंद**—पु० [स० ब० स०] लहसुन।

**शुद्धिपत्र**—पु० [स० मध्यम० स०]१ आद्य-कल ग्रन्थों आदि के अन्त में लगाया जानेवाला वह पत्र जिससे सूचित हो कि कहाँ क्या अशुद्धि है। (एरर्टा) २. प्राचीन भारत में वह व्यवस्था पत्र जो प्रायश्चित्त के उपरान्त शुद्धि के प्रमाण में पंडितों की ओर से दिया जाता था। (शुक्र-नीति)

**शुद्धोद**—पुं० [स० ब० स०] समुद्र। सागर।

**शुद्धोदन**—पुं० [स० ब० स०] भगवान् बुद्धदेव के पिता का नाम।

**शुद्धोदनि**—पु० [स० शुद्धोदन+इनि] विष्णु का एक नाम।

**शुनःशेप**—पु० [स०]अजीगर्त ऋषि के पुत्र जिन्हें अजीगर्त ने यज्ञ में बलि चढ़ाने के लिए दे दिया था पर जिन्होंने कुछ वेदमंत्र सुनाकर अपने आपको बलिदान होने से बचाया था।

**शुन**—पु० [सं०√शुन् (गमनादि)+क] १ कुत्ता। २ वायु। हवा। ३. आराम। सुख।

**शुनक**—पुं० [सं० शुन+कन्] १. कुत्ता। २ एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

**शुनहोत्र**—पुं० [सं० शुन्+√हु (देना-लेना)+ष्ट्रन ष०त०स० वा] १. एक प्राचीन ऋषि का नाम। २. भारद्वाज ऋषि के पुत्र जो ऋग्वेद के कई मंत्रों के द्रष्टा हैं।

**शुनाम्बुक**—पुं० [सं० ब० स०] हिमालय के उत्तर का एक प्राचीन प्रदेश

**शुनासीर, शुनासीर**—पुं० [सं० ब० स०] १. इंद्र। २ सूर्य। ३ देवता।

**शुनासीरी (रिन्)**—पुं० [सं० शुनासीर+इनि] [वि० शुनासीरीय] इंद्र।

**शुनि**—पुं० [सं०√शुन् (गमनादि)+क—इनि] [स्त्री० शुनी] कुत्ता।

**शुनहा**—पुं० [अ० शुनहः] १. अनुमानजन्य परन्तु आधार रहित यह दृढ़ धारणा की अमुक आपत्तिजनक या अपराधपूर्ण आचरण संभवतया अमुक व्यक्ति ने ही किया है। २. सन्देह। शक। ३. धोखा। भ्रम।

**शुभंकर**—वि० [सं० शुभ√कृ (करना)+खच् मुम्] [स्त्री शुभंकरी] मंगलकारक। शुभकारी।

**शुभंकरी**—स्त्री० [सं०√शुभ्√कर-ङीष्] १. पार्वती। २. शमीवृक्ष।

शुभ—वि० [सं०√शुभ् (दीप्ति करना)+क] १. चमकीला। २. सुन्दर। जैसे—शुभ वंत। ३. (चिन्ह, मुहूर्त, लक्षण, समय आदि) जो अनुकूल, लाभप्रद तथा सुखप्रद हो अथवा अनुकूलता, लाभ, सुख आदि का सूचक हो। ४. पवित्र।

पुं० १. कल्याण। मंगल। २. विष्कंभादि सत्ताईस योगों के अंतर्गत एक योग। ३. पद्मक काठ। ४. चाँदी। ५. बकरा।

शुभंकर—वि० [सं० शुभ√कृ (करना)+अच्] शुभ या मंगल करनेवाला।

शुभंकरी—स्त्री० [सं० शुभंकर-ङीप्] पार्वती।

शुभकूट—पुं० [सं० मध्यम० स०] सिंहल द्वीप या लंका का एक प्रसिद्ध पर्वत जिसपर चरण-चिह्न बने हुए हैं।

शुभग—वि० [सं० शुभ√गम् (जाना)+ड] १. सुन्दर। २. भाग्यवान्।

शुभ-ग्रह—पुं० [सं० कर्म० स०] फलित ज्योतिष के अनुसार बृहस्पति, शुक्र, अपापयुक्त बुध और अर्द्धाधिक चंद्रमा जो शुभ माने जाते हैं।

शुभ-चिंतक—वि० [सं० ष० त०] १ शुभ-चिंतन करनेवाला। २. किसी की भलाई की बातें सोचनेवाला। शुभेच्छु।

शुभ-चिंतन—पुं० [स० ष० त०] शुभ या भला चाहना।

शुभदंता—स्त्री० [स० ब० स०] पुराणानुसार पुष्प-दंत नामक हाथी की हथिनी का नाम।

शुभद—पुं० [सं० शुभ√दा (देना)+क] पीपल का पेड़।

वि० शुभ फल देनेवाला। शुभकारक।

शुभ-दर्शन—वि० [स० ब० स०] १. जिसका दर्शन होने पर शुभ फल होता हो। २. सुन्दर।

शुभ-प्रद—वि० [स० ष० त०] शुभद। मंगलकारी।

शुभमस्तु—अव्य० [सं०] शुभ हो। मंगल हो।

शुभराज—पुं० [सं० शुभ्राज] महाराज का शुभ हो। (आशीर्वाद) उदा०—साम्हड बीस आविया पु शुभराज।—ढो० मा०।

शुभ-वासन—वि० [सं० शुभ√वासि+ल्यु-अन] मुख को सुगन्धित करनेवाला (द्रव्य)।

शुभव्रत—पुं० [सं० मध्यम० स०] एक प्रकार का व्रत जो कार्तिक शुक्ला पंचमी को किया जाता है।

शुभशंसी (सिन्)—वि० [सं० शुभ√शंस्+णिनि] शुभ सूचना देनेवाला।

शुभ-सूचन—पुं० [सं० शुभ√सूच्+णिच्-ल्यु-अन] शुभ सूचना। मंगल सूचना।

शुभस्थली—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १. मंगलकारक भूमि। २. यज्ञ भूमि।

शुभांग—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० शुभांगी] १. शुभ अंगोंवाला। २. सुन्दर।

शुभांगी—स्त्री० [सं० शुभांग-ङीप्] १. कुबेर की पत्नी का नाम। २. कामदेव की पत्नी, रति। ३. संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

शुभांजन—पुं०=शोभांजन।

शुभा—स्त्री० [सं० शुभ+क-टाप्] १. शोभा। २. इच्छा। ३. अच्छी या सुन्दर स्त्री। ४. देवताओं की सेना। ५. वंशलोचन। ६. गोरोचना। ७. शमी। ८. सफेद दूब। ९. बकरी। १०. अपरोट। ११. पुरइन की पत्ती। १२. सोआ नामक साग। १३. सफेद बच। १४. अक्षरकरंज।

पुं०=शुक्रवार।

शुभाकांक्षी (क्षिन्)—वि० [सं० शुभ-आ√कांक्ष् (चाहना)+णिनि] १. (किसी के) शुभ या मंगल की आकांक्षा करनेवाला। २. किसी की भलाई चाहनेवाला। शुभचिंतक।

शुभाक्ष—पुं० [सं० ब० स०] शिव।

शुभागमन—पुं० [सं० कर्म० स०] मंगलप्रद और सुखद आगमन।

शुभानन—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० शुभानना] सुन्दर मुखवाला। खूबसूरत।

पुं०=चन्द्रमा।

शुभाशय—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० शुभाशया] (वह) जिसका आशय शुभ हो। अच्छे विचारवाला।

शुभेच्छु—वि० [स० ब० स०] १. शुभ कामना करनेवाला। २. किसी की भलाई चाहनेवाला। शुभचिंतक।

शुभ्र—वि० [स० √शुभ्+रक] [भाव० शुभ्रता] १. श्वेत। सफेद। २. उज्ज्वल। चमकीला।

पु०१. चाँदी। २. अबरक। ३ साँभर नमक। ४. कसीस। ५ पद्मक काठ। ६ खस। ७ चरबी। ८ रूपामक्खी। ९. बंसलोचन। १०. फिटकरी। ११ चीनी। १२ सफेद विधारा। १३ चन्द्रमा।

शुभ्रक—वि० [सं०] शुभ्र या सफेद करनेवाला।

पुं० अंगराग या प्रसाधन सामग्री के रूप में एक प्रकार का तैलाक्त तरल पदार्थ जिसके व्यवहार से बालों में चमक आती है। (ब्रिलियन्टीन)

शुभ्रकर—पु०[स०]१. चन्द्रमा। २ कपूर।

शुभ्रता—स्त्री०[सं० शुभ्र+तल्—टाप्] १.शुभ्र होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव।

शुभ्र-भानु—पुं० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।

शुभ्र-रश्मि—पु०[सं० ब० स०] चन्द्रमा।

शुभ्रांशु—पुं०[सं० ब० स०]१. चन्द्रमा। २. कपूर।

शुभ्रा—स्त्री० [सं० शुभ्र—टाप्] १. गंगा। २. बंसलोचन। ३. फिटकरी। ४. चीनी।

शुभ्राक्ष—पु०[स० कर्म० स०]१ भैंस कंद। २ शंखालु।

शुभ्रिका—स्त्री०[सं० शुभ्र+कन्—टाप्] मधुसर्करा।

शुमार—पुं० [फा०] [भाव० शुमारी] १. संख्या। २ लेखा। हिसाब।

मुहा०—(किसी बात का) शुमार बाँधना=अनुमान या कल्पना से यह समझाना कि आगे चलकर अमुक बात या उसका अमुक रूप होगा।

शुमार-कुनिंदा—पु०[फा० शुमार-कुनिंदः] वह जिसका काम किसी प्रकार की गिनती करना हो।

शुमारी—स्त्री०[फा०] शुमार करने या गिनने की क्रिया या भाव। जैसे—मर्दुमशुमारी।

शुमाल—पुं०[अ०] [वि० शुमाली] १. बायाँ हाथ। २.उत्तर दिशा जो सूर्योदय की दिशा (पूरब) की ओर मुँह करके खड़े होने पर बाईं ओर पड़ती है।

शुमाली—वि०[अ०] उत्तर दिशा में होनेवाला। उत्तरीय।

शुरवा—पुं०=शोरवा।

**शुल्कात**—स्त्री० [अ० शुल्कात] पहल ।
**शुल्क**—पु० [अ० शुरूक] प्रारंभ । आरंभ ।
**शुल्क**—पुं० [सं० √ शुल्क्+घञ्] १. वह धन जो वस्तुओं की उत्पत्ति, उपभोग, आयात, निर्यात आदि करने पर कानूनन कर के रूप मे देय हो। २. वह धन जो किसी संस्था को विशिष्ट सुविधा प्रदान करने पर दिया जाता है। जैसे—प्रवेश शुल्क, चिकित्सा शुल्क, शिक्षा शुल्क। ३. प्राचीन भारत में वह धन जो कन्या का विवाह करने के बदले मे उसका पिता वर के पिता से लेता था। ४. कन्या के विवाह में दिया जानेवाला दहेज। ५. बाजी। शर्त। ६. किराया। भाडा। ७. दाम। मूल्य।
**शुल्क-शाला**—स्त्री० [सं० ष० त० स०] १. वह स्थान जहाँ पर घाट, मार्ग आदि का अथवा और किसी प्रकार का शुल्क या महसूल चुकाया जाता हो। २. चुगीघर।
**शुल्काध्यक्ष**—पु० [सं० ष० त०] लोगो से शुल्क लेनेवाले विभाग का प्रधान अधिकारी। (कौ०)
**शुल्कार्ह**—वि० [स०] १ (पदार्थ) जिसका शुल्क देय हो। २ शुल्क लगाये जाने के योग्य। (ड्यूटिएबुल)
**शुल्व**—पु० [स० √शुल्व् (मान-दान करना)+घञ्, अच् वा] १ ताँबा। २. रस्सी। ३. यज्ञ-कर्म। ४ आचार-विचार।
**शुल्वज**—पु० [स० शुल्व√जन् (उत्पन्न करना) ड] पीतल ।
**शुल्वारि**— पु० [सं० ष० त० स०] गंधक ।
**शुल्वा-सूत्र**—पु० [सं० ब० स०] वैदिक काल मे ज्यामिति का नाम।
**शुषू**—स्त्री० [स०] माँ। माता।
**शुश्रूषक**—वि० [सं०√श्रु (सुनना)+सन—शुश्रूष+ण्वुल्—अक] सेवा-सुश्रूषा करनेवाला।
**शुश्रूषण**—पु० [स०] शुश्रूषा करने की कला, क्रिया या विधा।
**शुश्रूषा**—स्त्री० [स० शुश्रूष+अ—टाप्] [वि० शुश्रूष्य] १ सुनने की इच्छा। २. वह सेवा जो किसी के कहने के अनुसार की जाय। ३ सेवा। टहल। ४ खशामद। चापलूसी।
**शुश्रूषु**—वि० [स० शुश्रूष+उ] १ शुश्रूषा या सेवा करने को उत्सुक। २ आज्ञानुवर्ती। ३. सुनने का अभिलाषी।
**शुषिर**—पु० [स०√शुष् (सोखना)+किरच्] १ लौंग। २ अग्नि। आग। ३. भूसा। ४ आकाश। ५ फूँककर बजाया जानेवाला बाजा।
**शुषिरा**—स्त्री० [स० शुषिर—टाप्] १ नदी। २. पृथ्वी। ३. नली नामक गन्ध द्रव्य।
**शुषेण**—वि०, पुं०=सुषेण ।
**शुष्क**—वि० [स०√शुष् (सोखना)+क] [भाव० शुष्कता]। १. (पदार्थ या वातावरण) जो आर्द्र या नम न हो। २ (स्थान) जहाँ वर्षा न हुई हो या न होती हो। ३. (व्यक्ति) जिसमें कोमलता, ममता, मोह, सहृदयता आदि का अभाव हो। ४. (विषय) जो संपूर्ण न हो। जिससे मनोरंजन न होता हो। नीरस। जैसे—शुष्क वाद-विवाद। ५ जिसमें साथ रहने या न रह सकनेवाली कोई दूसरी बात न हो। पु० काला अजगर।
**शुष्क-कृषि**—स्त्री० [सं० कर्म० स०] सूखी खेती। (रेन्ज)
**शुष्क-क्षेत्र**—पु० [स० ब० स०] वितस्ता नदी के किनारे का एक पर्वत।
**शुष्कगर्भ**—पु० [स० ब० स०] एक रोग जिसमें वात के कुप्रभाव से गर्भ सूख जाता है। (वैद्यक)
**शुष्कता**—स्त्री० [स० शुष्क+तल्—टाप्] शुष्क होने की अवस्था या भाव। सूखापन।
**शुष्कल**—पु० [स० शुष्क√ला (लोना)+क] मांस।
वि० मास-भक्षी।
**शुष्क व्रण**—पु० [स० कर्म० स०, ब० स० वा] वह घाव जो सूख तथा भर गया हो।
**शुष्काग**—पु० [स० ब० स०] वन वृक्ष। घौ।
वि० [स्त्री० शुष्कागी] सूखे हुए अगोंवाला। दुबला-पतला।
**शुष्कांगी**—पु० [स० शुष्काग—ङीष्] १ प्लव जाति का एक प्रकार का पक्षी। २ गोह नामक जन्तु।
**शुष्का**—स्त्री० [सं० शुष्क—टाप्] स्त्रियो का योनिकंद नामक रोग।
**शुष्मा**—पु० [स०√शुष् (सुखाना)+नक्] १. सूर्य। २ अग्नि। ३ बल। शक्ति
**शुष्म**—पु० [स० शुष+मन्] १ अग्नि। २ सूर्य। ३ तेज। पराक्रम। ४ वायु। ५ चिड़िया। पक्षी।
**शुष्मा (न्)**—पु० [स० शुष+मनिन्] १ अग्नि। २ चित्रक या चीता नामक वृक्ष। ३ पराक्रम। ४ तेज।
**शुहदा**—पु०=शोहदा ।
**शुहरत**—स्त्री०=शोहरत ।
**शुह्र**—पु० [सं०] एक प्राचीन आर्येतर जाति जो बाद मे आर्यों मे मिल गई थी।
**शूक**—पु० [स०√शिर (पतला करना)+कक्] १ अन्न की बाल या सीका जिसमे दाने लगते हैं। २. जौ। यव। ३ काँटा। ४. एक प्रकार का कीडा। ५ नकीला सिरा। नोक। ६ एक प्रकार का रोग जो लिंग-वर्द्धक ओषधियो के लेप के कारण होता है। ७ दे० 'शूकतृण'।
**शूकक**—पु० [स० शूक√कै (होना आदि)+क] १ एक तरह का अन्न। २ अनुकम्पा। दया। ३. वर्षाकाल। ४. शरीर का रस नामक धातु।
**शूक कीट**—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का नुकीले औजारो का कीड़ा।
**शूक-तृण**—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार की घास। इसे सूकड़ी भी कहते है।
**शूक धान्य**—पु० [मध्य० स०] अन्नों का वह वर्ग जिसके दाने या बीज बालों मे लगते हैं।
**शूकपत्र**—पु० [स० ब० स०] ऐसा साँप जिसमें विष न होता हो। जैसे—पानी का साँप।
**शूकर**—पु० [स० शूक√रा (लेना)+क] १ सूअर। २ बाराह (अवतार)। स्त्री० शूकरी।
**शूकरकंद**—पु० [स० मध्य० स०] बाराही कंद।
**शूकरक**—पु० [स० शूकर+कन्] एक प्रकार का शालिधान्य।
**शूकर-क्षेत्र**—पु० [स० मध्यम० स०] एक प्राचीन तीर्थ जो नैमिषारण्य के पास है।
**शूकरता**—स्त्री० [स० शूकर+तल्-टाप्] सूअर होने की अवस्था या भाव। सूअरपन।

शूकर-कंद—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसे सूअर बाढ़ कहते हैं।

शूकरपाटिका—स्त्री०[सं० ब० स०] १. केवाँच। काँछ। २. कोंछ-सिंदी। खेम।

शूकरमुख—पुं० [स० ब० स०] एक नरक का नाम।

शूकरास्ता—स्त्री०[स० शूकरास्ि, ब०स०+तल्—टाप्] एक प्रकार का नेत्र-रोग।

शूकरेस्वरी—स्त्री०[सं० ब० स०] एक बौद्ध देवी जिसे वाराही भी कहते हैं।

शूकरिक—पु०[स० शूकर+ठन्—इक] एक प्रकार का पौधा।

शूकरिका—स्त्री०[स० शूकरिक—टाप्] एक प्रकार की चिड़िया।

शूकरी—स्त्री०[स० शूकर—ङीप्]१ सुअरी। वाराही। २ खैरी साग। ३. वाराही कंद। गेंठी। ४. सूँस नामक जल-जंतु। ५ विधारा।

शूकल—पु०[सं० शूक√ला(लेना)+क] ऐसा घोड़ा जो जल्दी चौक या भड़क जाता हो और फिर जल्दी वश मे आता हो।

शूका—स्त्री०[स० शूक+अच्—टाप्] काँछ। केवाँच।

शूकी—स्त्री०[सं० शूक] छोटा नुकीला काँटा। (स्याइक)

शूक्त—पु०[स० शूकत] सिरका।

शूक्ष्म—वि०=सूक्ष्म।

शूची—स्त्री०=सूई।

शूद्र—पु०[स० शुच्+रक् पृषो० च=द—दीर्घ] [स्त्री० शूद्रा] १ हिन्दुओं मे चार प्रकार के प्रमुख वर्णों या जातियो मे से एक जिसका मुख्य आचरण अन्य तीन वर्णों (अर्थात् ब्राह्मण, क्षत्रिय और वैश्य) की सेवा करना कहा गया है। २ उक्त वर्ण का व्यक्ति। ३ दास। सेवक। ४. नैऋत्य कोण में स्थित एक देश।
वि०[भाव० शूद्रता] बहुत खराब या बुरा। निकृष्ट।

शूद्रक—पु०[स० शूद्र+कन्] १. संस्कृत के प्रसिद्ध 'मृच्छकटिक' के रचयिता। २ शूद्र। ३. दे० 'शबुक'।

शूद्रक्षेत्र—पुं० [सं० उपमि० स०] काले रग की ऐसी भूमि जिसमे अनेक प्रकार की घास, तृण तथा अनेक प्रकार के धान उत्पन्न होते हैं।

शूद्रता—स्त्री० [सं० शूद्र+तल्—टाप्] शूद्र होने की अवस्था, धर्म या भाव।

शूद्र-द्युति—पु० [सं० उपरि ब० स०] नीला रंग जो रंगों में शूद्र वर्ण का माना जाता है।

शूद्र-प्रेष्य—पु०[सं० ष० त० स०] ऐसा ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य जो किसी शूद्र की नौकरी करता हो।

शूद्रा—स्त्री०[सं० शूद्र—टाप्] शूद्र जाति की स्त्री। शूद्राणी।

शूद्राणी—स्त्री० [स० शूद्र—ङीप्—आनुक] शूद्र जाति की स्त्री। शूद्रा।

शूद्राद्य—पुं०[सं० ष० त० स०]शूद्र वर्ण के स्वामी से प्राप्त होनेवाला अन्न या भोजनेवाली जीविका।

शूद्री—स्त्री०[सं० शूद्र—ङीप्] शूद्र की स्त्री। शूद्रा।

शून—वि० दे० 'शून्य'।

शूना—स्त्री०[सं०√क्षिव (क्षति पूर्ति)+क्त—न—संप्र०दीर्घ—टाप्] १.गृहस्थ के घर के वे स्थान जहाँ नित्य अनजाने में अनेक जीवों की हत्या हुआ करती है। जैसे—चूल्हा। २. गले के अन्दर की घटी। लकरी। ३. बूहड। स्नूही।

शून्य—वि०[स० शून्य+यत्] [भाव० शून्यता] १ जिसमे कुछ न हो। खाली। जैसे—शून्यगर्भ। २. जिसका कोई आकार या रूप न हो। निराकार। ३. जिसका अस्तित्व न हो। ४ जो वास्तविक न हो। असत्। ५. समस्त पदों के अंत मे, रहित। जैसे—ज्ञानशून्य।
पु० १. खाली स्थान। अवकाश। २. आकाश। ३ एकांत स्थान। ४. गणित में, अभाव सूचक चिह्न। ५. बिंदु। बिंदी। ६ अभाव। ७ विष्णु। ८. स्वर्ग। ९ ईश्वर। परमात्मा। १० विज्ञान मे, ऐसा अवकाश जिसमे वायु भी न हो।

शून्य-गर्भ—वि०[सं० ब० स०]१. जिसके गर्भ मे कुछ न हो। २ मूर्ख। ३. निस्सार।
पु० पपीता।

शून्य-चक्र—पु०[स० मध्य० स०]हठ योग मे सहस्रार चक्र का एक नाम। (नाथ-पंथी)

शून्यता—स्त्री०[स० शून्य+तल्—टाप्]१. शून्य होने की अवस्था या भाव। २. अभाव।

शून्यत्व—पु०[स० शून्य+त्व] शून्यता।

शून्य-दृष्टि—स्त्री०[स० कर्म० स०]ऐसी दृष्टि जिससे सूचित होता हो कि मन मे नाम को भी कोई भाव नही है।

शून्यपथ—पु०[स० कर्म० स० ब० स०वा] आकाश।

शून्यपाल—पु० [सं० शून्य√पाल् (पालन करना)+णिच—अच्]१. प्राचीन काल में, वह व्यक्ति जो राजा की अविद्यमानता, असमर्थता या अल्पवयस्कता के कारण अस्थायी रूप से राज्य का प्रधान बनाया जाता था। २. स्थानापन्न अधिकारी।

शून्य-बहरी—स्त्री०[सं०] सोन बहरी (रोग)।

शून्य-मंडल—पुं०[स० कर्म० स०]हठ योग में,सहस्रार चक्र का एक नाम।

शून्य-मध्य—वि०[सं० ब० स०]जिसके मध्य मे शून्य या अवकाश हो।

शून्य-मनस्क—वि० [सं० ब० स० —कप्] अन्यमनस्क।

शून्य-मूल—पु०[स० ब० स०]१ प्राचीन भारत मे, सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना। २. ऐसी सेना जिसका वह केन्द्र नष्ट हो गया हो जहाँ से सिपाही आते रहे हों। (कौ०)

शून्यवाद—पु०[स० शून्य√ वद् +घञ्] [वि० शून्यवादी] बौद्धों की महायान शाखा के माध्यमिक नामक विभाग का मत या सिद्धान्त जिसमें संसार को शून्य और उसके सब पदार्थों को सत्ताहीन माना जाता है। (विज्ञानवाद से भिन्न)

शून्यवादी (दिन्)—पुं०[सं०शून्य√ वद् +णिनि]१. शून्यवाद का अनुयायी। २. बौद्ध। ३. नास्तिक।
वि० शून्यवाद-सम्बन्धी।

शून्यहर—पुं० [सं० शून्य√हृ (हरण करना)+अच्] १. प्रकाश। उजाला। २. सोना। स्वर्ण।

शून्य-हृदय—वि०[सं० ब० स०] १. अनवधान। २. खुले दिलवाला।

शून्या—स्त्री० [सं० शून्य+अच्—टाप्]१. नलिका या नली नाम का गंध द्रव्य। २. बाँझ स्त्री। ३. बूहड़।

शून्यागार—स्त्री०[सं० कर्म० स०] एकांत स्थान।

**शून्यावस्था**—स्त्री०[स० कर्म० स०] नाथ-पंथ में, वह अवस्था जिसमें आत्मा शून्य चक्र या सहस्रार में पहुँचकर सब द्वन्द्वों से मुक्त हो जाती है।

**शून्यशून्य**—पुं०[स० ब० स०] जीवन्मुक्ति।

**शूप**—पुं०=सूप।

**शूम**—पुं०=सूम।

**शूमी**—स्त्री०[फा०]१. शूम होने की अवस्था या भाव। सूमपन। २. मनहूसी।

**शूर**—पुं०[सं० √शूर्+अच्] [भाव० शूरता, शौर्य]१. वीर। बहादुर। २. योद्धा। सूरमा। ३. वह जो किसी काम या बात में औरों से बहुत बढ़-चढ़कर हो। जैसे—दान-शूर, शब्द-सूर आदि। ४ सूर्य। ५. सिंह। शेर। ६. सूअर। ७. चीता। ८. सालू का पेड़। ९. बबहर। १०. मसूर। ११. चित्रक या चीता नामक वृक्ष। १२ आक। मदार। १३. कृष्ण के पितामह का नाम। १४. जैन हरिवंश के अनुसार उत्तर दिशा के एक देश का नाम।

**शूरक**—पु० [सं० √ शूर् (हिंसा करना)+क्यु—अन्]१. सूरन। ओल। २. द्योनाक। सोनापाढ़ा।

**शूरता**—स्त्री०[स० √ शूर्+तल्—टाप्] १ शूर होने की अवस्था या भाव। २. शूर का धर्म।

**शूरताई**†—स्त्री०=शूरता।

**शूरत्व**—पुं०=शूरता।

**शूरन**—पुं०=सूरन (जमीकंद)।

**शूरनम्य**—वि०[सं० शूर्+मन्य (मानना)+खच्—मुम्] अपनी बहादुरी के किस्से बढ़ा-चढ़ाकर सुनानेवाला।

**शूर-मानी (निन्)**—पु०[सं० शूर+√मन् (मानना)+णिनि] वह जिसे अपनी शूरता या वीरता का अभिमान हो।

**शूरवीर**—पुं० [सं० सप्त० त० स०, कर्म० स० वा] [भाव०शूरवीरता] बहुत बड़ा वीर। वीर-शिरोमणि।

**शूरसेन**—पुं०[सं० ब० स०] १ मथुरा के एक प्रसिद्ध राजा जो कृष्ण के पितामह और वसुदेव के पिता थे। २. मथुरा और उसके आस-पास के क्षेत्र का नाम।

**शूर-सेनप**—पुं० [सं० शूर-सेना+√ पा (पालना)+क] वीर सेना के रक्षक, कार्तिकेय।

**शूरा**—स्त्री०[सं० शूर—टाप्] क्षीरकाकोली।

पुं०=शूर।

†पुं०=सूर्य।

**शूर्प**—पुं०[सं० √शूर्प् (परिमाण)+घञ्]१. अनाज फटकने का सूप। २. दो द्रोण का एक प्राचीन परिमाण।

**शूर्पक**—पुं०[स० शूर्प+कन्] एक असुर जो किसी के मत से कामदेव का शत्रु था।

**शूर्पकर्ण**—वि०[सं० ब स०] जिसके सूप के समान कान हों।

पुं० १. हाथी। २. गणेश। ३. एक प्राचीन देश। ४. उक्त देश का निवासी। ५. एक पौराणिक पर्वत।

**शूर्पकारि**—पु०[सं० ष० त० स०] शूर्पक का शत्रु अर्थात् कामदेव।

**शूर्पणखा**—वि०[सं० ब० स०] (स्त्री) जिसके नख सूप के समान हों। स्त्री० रावण की बहन।

**शूर्पनखा**—स्त्री०=सूर्पणखा।

**शूर्पभृति**—पुं० [स० मध्यम० स०] दक्षिण भारत का एक पर्वत।

**शूर्पारक**—पुं०[स०] बंबई प्रांत के थाना जिले के सोपारा नामक स्थान का प्राचीन नाम।

**शूर्पी**—स्त्री० [स० शूर्प-ङीप्] १. छोटा सूप। २. शूर्पणखा। ३. एक प्रकार का खिलौना।

**शूर्म**—पुं०[सं० ब० स० अच्] [स्त्री० शूर्मि]१ लोहे की बनी हुई मूर्ति। २ निहाई।

**शूल**—पु०[स० √ शूल्+क]१. बरछे की तरह का एक प्राचीन अस्त्र। विशेष दे० 'त्रिशूल'। २ बड़ा, लंबा और नुकीला काँटा। ३. वायु के प्रकोप से पेट या आँतों में होनेवाली एक प्रकार की प्रबल और विकट पीड़ा। (कॉलिक पेन) ४. किसी नुकीली चीज के चुभने की तरह की शारीरिक पीड़ा। ५ सूली जिस पर प्राचीन काल में लोगों को प्राणदंड दिया जाता था। ६ पीड़ा विशेषतः छाती और पेट में होने-वाली ऐसी पीड़ा जो बरछी की तरह चुभती हुई जान पड़ती है। ७ एक रोग जिसमें रह रहकर उक्त प्रकार की पीड़ा होती है। ८ छड़। सलाख। ९. मृत्यु। मौत। १०. ज्योतिष में, विष्कंभ आदि सत्ताईस योगों के अन्तर्गत नवाँ योग। ११ झंडा। पताका। १२. पोस्ते की पत्तियों की वह तह जो अफीम की चक्की चलाने के समय उसके चारों ओर ऊपर-नीचे लगाई जाती है। (बंगाल)

वि०=नुकीला।

**शूलक**—पुं० [सं० शूल+कन्]१. पुराणानुसार एक ऋषि का नाम। २ दुष्ट या पाजी घोड़ा।

**शूलकार**—पु०[सं० शूल+√कृ(करना)+अण् उप० प० स०] पुराणानुसार एक नीच जाति।

**शूलगव**—पुं०[स० ब० स०] शिव।

**शूलगिरि**—पु० [सं० उपमि० मध्य० स० वा] मदरास राज्य का एक पर्वत।

**शूलग्रह**—पु०[स० शूल+√ग्रह् (रखना)+अच्] शिव।

**शूलग्राही (हिन्)**—पुं०[स० शूल+√ ग्रह् (रखना)+णिनि] शिव। महादेव।

**शूलजनी**—स्त्री०[स०] सज्जी मिट्टी।

**शूल-टंका (ङ्का)**—पु०[स० ब० स०] शिव।

**शूल-धर**—पु०[स० ष० त० स०] शिव।

**शूल-धरा**—स्त्री०[स० शूलधर—टाप्] दुर्गा।

**शूल धारिणी**—स्त्री०[सं० ष० त० स०] दुर्गा।

**शूलधारी (रिन्)**—पु०[स० शूल+√ धृ (रखना)+णिनि] शिव।

**शूलना**—अ० [हिं० शूल+ना] १. शूल की तरह गड़ना। २ शूल गड़ने के समान पीड़ा होना।

स० शूल गड़ाना या चुभाना।

**शूल-नाशन**—पुं० [स० शूल+√नश्+णिच्—ल्यु—अन] १ सौवर्चल लवण। २ हींग। ३. पुष्कर मूल। ४. वैद्यक में, एक प्रकार का चूर्ण जिसका व्यवहार प्रायः शूल रोग में किया जाता है।

**शूल-पत्री**—स्त्री० एक प्रकार की घास, जिसे शूली भी कहते हैं।

**शूल-पाणि**—पुं० [स० ब० स०] शिव।

**शूल-स्तूप**—पु० [सं०उपमि० स०] शूल के आकार-प्रकार का स्तूप।

**शूल हुंडी**—स्त्री० [सं० ष० त० स०] अजवाइन।

**शूलहस्त**—पुं० [सं० ब० स०] शिव।

**शूलांक**—पुं० [सं० ब० स०] शिव। महादेव।

**शूला**—स्त्री० [सं० शूल—टाप्]१ वेश्या। रंडी। २. छड़। सलाख। ३. दे० 'सूली'।

**शूलि**—पुं० [सं० शूल+इनि] शिव का एक नाम।
†स्त्री०=सूली।

**शूलिक**—पु० [सं० शूल+ठन्—इक] १. खरगोश। खरहा। २. वह जो लोगों को शूली पर चढ़ाता था।

**शूलिका**—स्त्री० [सं० शूलिक—टाप्] सीख में गोद कर भूना हुआ मांस। कबाब।

**शूलिनी**—स्त्री० [सं० शूलिन—ङीप्] १ दुर्गा का नाम। २. नागवल्ली। पान। ३. पुत्रदात्री नाम की लता।

**शूली (लिन्)**—वि० [सं० शूल+इनि] शूल रोग से ग्रस्त।
पुं० १. शिव। २. एक नरक। ३. खरगोश।
†स्त्री०=सूली।

**शूल्य**—पुं० [सं० शूल+यत्]=शूलिका।

**शूल्यपाक**—वि० [सं० ब० स०] सीख पर पकाया हुआ।
पुं० कबाब।

**शूल्यवाण**—पु० [सं० ब० स०] भूतयोनि।

**शृंखल**—पु० [स० शृंग√खल् (तुष्टता करना)+अच्—पृषो०]१ मेखला। २. सिकड़। ३. बेड़ी और हथकड़ी। ४. नियम। कायदा।
वि० [भाव० शृंखलता] १. शृंखला के रूप में हो। सुश्रृंखल। २ व्यवस्थित तथा ठीक। ३ नियम, नियंत्रण आदि के अधीन।

**शृंखलक**—पु० [स० शृंखल+कन्] १. ऊँट। २. दे० 'शृंखला'।

**शृंखलता**—स्त्री० [सं० शृंखल+तल्—टाप्] शृंखल होने की अवस्था या भाव। सिलसिलेवार या क्रमबद्ध होने का भाव।

**शृंखला**—स्त्री०[सं० शृंखल—टाप्]१. एक दूसरी में पिरोई हुई बहुत सी कड़ियों का समूह। २. क्रम से आने या होनेवाली बहुत-सी बातें, चीजें, घटनाएँ आदि। (चेन, उक्त दोनों अर्थों में)। ३. एक प्रकार के कार्यों, वस्तुओं आदि का एक के बाद एक करके चलनेवाला क्र माला। (सीरीज) ४. कतार। श्रेणी। पंक्ति। ५. मेखला। ६. करधनी। ७. साहित्य में, एक अलंकार जिसमें कहे हुए पदार्थों का क्रम से वर्णन किया जाता है।

**शृंखला-बद्ध**—वि०[सं० तृ० त० स०] १. जंजीर या सिकड़ से बँधा हुआ। २. जो शृंखला के रूप में किसी विशिष्ट क्रम से लगा हो।

**शृंखलित**—भू० कृ०[सं० शृंखला+इतच्]१. सिकड़ से बँधा हुआ। २. शृंखला के रूप में बँधा या लाया हुआ। ३. तागे आदि में पिरोया हुआ।

**शृंग**—पुं० [सं०√शृ (हिंसा करना)+घनृत्ट्] १. पशुओं का सींग। २. चोटी। शिखर। जैसे—पर्वत शृंग। ३. कपूर। ४. सिंगी नामक बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है। ५. कमल। ६. औषध नामक ओषधि। ७. सोंठ। ८. अदरक। आदी। ९. अगरु। १० काम-वासना। ११. चिह्न। निशान। १२. स्त्री की छाती। स्तन। १३. प्रधानता। प्रमुखता। १४ पानी का फुहारा। १५ दे० 'ऋष्यशृंग' (ऋषि')
वि० तीक्ष्ण। तेज।

**शृंगकंद**—पु०[सं० ब० स०] सिंघाड़ा।

**शृंगज**—पुं०[स० शृंग√ जन् (उत्पन्न करना)+ड]१. अगर। अगरु। २. तीर। बाण।
वि० शृंग से उत्पन्न।

**शृंग-धर**—पु०[स० ष० त० स०] पर्वत। पहाड़।

**शृंगनाभ**—पु०[सं० ब० स०] एक प्रकार का विष।

**शृंग-पुर**—पु०[सं० मध्यम० स०] शृंगवेरपुर।

**शृंगला**—स्त्री० [सं० शृंग √ ला (लेना)+क] मेढ़ासिंगी।

**शृंगवान् (वत्)**—वि०[सं० शृंग+मतुप्-म=व-नुम्—दीर्घ, नलोप] शृंगवाला।
पुं० पर्वत। पहाड़।

**शृंगवेर**—पु० [स० ब० स०]१. आदी। अदरक। २. सोंठ। ३. दे० 'शृंगवेरपुर'।

**शृंगवेरपुर**—पु०[सं० मध्यम० स०] इलाहाबाद जिले में गंगा तट पर स्थित सिंगरौर नामक स्थान जो प्राचीन काल में निषाद राजा गुह की राजधानी थी।

**शृंगवेरिका**—स्त्री०[सं० शृंगवेर+कन्—टाप्, इत्व]गोभी।

**शृंगसुख**—पु०[स० मध्यम० स०] सिंगी या सिंघा नामक बाजा।

**शृंगसोर**—पु०[स० उपमि स०] सोर नामक मछली।

**शृंगाट**—पु०[स० शृंग√अट् (प्राप्त होना)+अच्]१ सिंघाड़ा। २ गोखरू। ३. विकंकत। कंटाई। ४. चौमुहानी या चौराहा। ५. कामरूप देश का एक पर्वत।

**शृंगाटक**—पु०[सं० शृंगाट+कन्]१. सिंघाड़ा। २ प्राचीन काल का एक प्रकार का खाद्य-पदार्थ जो मांस से बनाया जाता था। ३. तीन चोटियोंवाला पर्वत। ४. चौमुहानी। ५. दरवाजा। ६. वैद्यक में, शरीर का एक मर्मस्थान जो मस्तक में उस स्थान पर माना जाता है, जहाँ नाक, कान, आँख और जीभ से संबंध रखनेवाली चारों शिराएँ हैं।

**शृंगार**—पु०[स० शृंग√ऋ (गमन करना आदि)+अण्]१. मूर्ति, शरीर आदि में ऐसी चीजें जोड़ना या लगाना जिनसे उनकी शोभा का सौन्दर्य और भी बढ़ जाय, और वे अधिक आकर्षक तथा प्रिय-दर्शन बन जायँ। २. लाक्षणिक अर्थ में, ऐसा तत्त्व या गुण जिससे किसी की शोभा बढ़ती तथा सौन्दर्य निखरता है। जैसे—लज्जा स्त्री का शृंगार है। ३. स्त्रियों की वह क्रिया जो वे सुन्दर कपड़े, गहने आदि लगाकर अपने आप को अधिक आकर्षक तथा सुन्दर बनाने के लिए करती हैं। सजावट। ४. वे सब पदार्थ जिनके योग से किसी चीज की शोभा या सौंदर्य बढ़ता हो। प्रसाधन-सामग्री। सजावट का सामान। ५. साहित्य का नौ रसों में से एक रस जिसमें प्रेमी और प्रेमिका के पारस्परिक प्रेमपूर्ण व्यवहारों की चर्चा होती है।
**विशेष**—शृंगार का मूल शब्दार्थ ही है—ऐसी स्थिति जिसमें काम-वासना की प्राप्ति या वृद्धि हो। मनुष्य की काम-वासना से सम्बद्ध बातों से

मिलनेवाला आनन्द या सुख ही इस रस का मूल आधार है, और यह सब रसों में प्रधान माना गया है। इसके दो मुख्य विभाग किए गए हैं—संयोग और वियोग शृंगार।

५. उक्त के आधार पर भक्ति का वह पक्ष जिसमे भक्त अपने इष्टदेव को पति तथा अपने आपको उसकी पत्नी मानकर उनकी आराधना करता है। ६ मैथुन। रति। सभोग। ७. सिंधूर जो स्त्रियो के सौभाग्य का मुख्य चिह्न है। ८. लौंग। ९ अदरक। आदी। १०. चूर्ण। ११. काला अगर। १२. सोना। स्वर्ण।

**शृंगारक**—पु०[सं० शृंगार+कन्]१. प्रेम। प्रीति। २. सिंधूर। ३. लौंग। ४. अदरक। आदी। ५. काला अगर।

वि० शृंगार करनेवाला।

**शृंगार-जन्मा (न्मन्)**—पु० [स० ब० स०] कामदेव।

**शृंगारण**—पु०[स०√शृंगार√नी (डोना)+ड] कामवासना से प्रेरित होने पर किया जानेवाला प्रेमप्रदर्शन।

**शृंगारना**—स० [हिं० शृंगार+हि० ना (प्रत्य०)] शृंगार करना। सजाना। सँवारना।

**शृंगारभूषण**—पु० [स० ष० त०]१. सिंधूर। २. हरताल।

**शृंगारयोनि**—पु०[सं० ष० स०] कामदेव।

**शृंगारवेश**—पु०[सं० ष०त०] वह सुन्दर वेश जिसे धारण करके प्रेमी अपनी प्रेमिका के पास जाता है, अथवा प्रेमिका अपने प्रेमी के पास जाती है।

**शृंगारहाट**—स्त्री०[सं०शृंगार+हिं० हाट] वह हाट या बाजार जिसमे मुख्यतः वेश्याएँ रहती हों। चकला।

**शृंगारिक**—वि० [स० शृंगार+ठक—इक] १. शृंगार-संबंधी। शृंगार का। जैसे—शृंगारिक सामग्री। २. शृंगार रस से संबंध रखनेवाला। जैसे—शृंगारिक काव्य।

**शृंगारिणी**—स्त्री०[सं०]१. शृंगार करनेवाली स्त्री। २. वह स्त्री जिसका यथेष्ट शृंगार हुआ हो। ३.संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। ४. एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पाद मे चार रगण (ऽ।ऽ) होते हैं। उसको 'स्त्रागिणी' 'कामिनी' 'मोहन' 'लक्षीधरा' और 'लक्ष्मीधरा' भी कहते हैं।

**शृंगारित**—भू० कृ०[स० शृंगार+इतच्]१. जिसका शृंगार हुआ हो। सजाया हुआ। २. मुग्ध।

**शृंगारिया**—पुं०[सं० शृंगार+हिं० इया (प्रत्य०)] १. वह जो शृंगार करने की कला मे निपुण हो। २. वेश-भूषियों का शृंगार करनेवाला व्यक्ति। ३. बहुरूपिया।

**शृंगारी**—वि०[स० शृंगारिन्]१ शृंगार-संबंधी। शृंगार का। २. शृंगार रस का प्रेमी। ३. किसी के प्रेमपाश मे बँधा हुआ। अनुरक्त।

पु०१. वेश-भूषा और सजावट आदि। २ हाथी। ३. चुन्नी या मानिक नामक रत्न। ४. सुपारी।

**शृंगाह्व**—पु०[सं० ब० स०] १. जीवक नामक ओषधि। २. सिंघाड़ा।

**शृंगाह्वा**—स्त्री०[स० शृंगाह्व-टाप्]=शृंगाह्व।

**शृंगि**—पु०[सं० शृंग+इनि] सिंघी मछली।

वि० शृंगी।

**शृंगिक**—पु०[स० शृंगी+कन्] सिंगिया नामक विष।

**शृंगिका**—स्त्री० [स० शृंगिक—टाप्] १. सिंघी नामक बाजा। २. अतीस। ३. काकड़ा-सिंगी। ४ मेढ़ा-सिंगी। ५. पीपल।

**शृंगिणी**—स्त्री०[सं० शृंग+इनि—ङीप्]१. गाय। गौ। २. मोतिया। ३. माल-कंगनी। ४ अतीस।

**शृंगी**—वि०[स० शृंगिन्] [स्त्री० शृंगिणी] जिसमे शृंग हो। शृंग से युक्त।

पु०१. सींगवाला जानवर। २ पर्वत। पहाड़। ३. हाथी। ४ पेड़। वृक्ष। ५ बरगद। ६. पाकर। ७ अमड़ा। ८ जीवक नामक ओषधि। ९. ऋषभक नामक ओषधि। १०. सिंगिया नामक विष। ११ सिंगी नामक बाजा। १२ महादेव। शिव। १३ एक प्राचीन देश। १४ एक प्रसिद्ध ऋषि जो शमीक के पुत्र थे।

स्त्री०१. अतीस। २ काकडा-सिंगी। ३ सिंगी मछली। ४ मजीठ। ५ आँवला। ६. पोई का साग। ७ पाकर। ८ बरगद। ९ जहर। विष। १०. सोना। ११ ऋषभक नामक ओषधि।

**शृंगी गिरि**—पु०[स० मध्यम० स०] एक प्राचीन पर्वत जिस पर शृंगी ऋषि तप किया करते थे।

**शृंगेरी**—पु०[स०] मैसूर राज्य मे स्थित शकराचार्य के मतानुयायी सन्यासियों का एक प्रसिद्ध मठ।

**शृंगोन्नति**—स्त्री०[स० ष० त० स०] ज्योतिष मे ग्रहों, नक्षत्रों आदि की एक प्रकार की गति।

**शृग**—पु०=शृगाल।

**शृगाल**—पु०[स० अमृक √ला+क, पृषो० ] १ सियार। गीदड़। २ बौद्ध साधुओं की परिभाषा मे ज्ञानवान् मन का प्रतीक जो वासनामय मन के प्रतीक सिंह का शिकार करनेवाला कहा गया है। ३ वासुदेव। ४. कायर या डरपोक व्यक्ति। ५. निर्दय व्यक्ति। ६ खल। दुष्ट।

**शृगालिका**—स्त्री०[स०शृगाल+कन्—टाप्—इत्व]१ गीदड़की माता। गीदड़ी। २ लोमड़ी। ३. बिदारी कद।

**शृगाली**—स्त्री० [स० शृगाल—ङीप्]१. ताल-मखाना। २ बिदारी कद। ३. मादा सियार।

**शृत**—पु०[स० √ शृ (पाक करना)+क्त]१. काढा। क्वाथ। २. उबाला या औटाया हुआ दूध।

**शृत-शीत**—पु० [स० मध्य० स०(शृतरूपान् शीतः )] औटाया हुआ पानी जो प्राय. ज्वर के रोगियों को दिया जाता है।

**शृष्टि**—पु०[स०] कस के आठ भाइयों मे से एक।

†स्त्री०=सृष्टि।

**शेख**—पु०[अ०] [स्त्री०शेखानी]१ पैगंबर मुहम्मदके वंशजों की उपाधि। २ मुसलमानो की चार जातियों मे से एक जो अन्य तीनों से श्रेष्ठ मानी गई है। ३ इस्लाम धर्म का उपदेशक। ४ वृद्ध और पूज्य व्यक्ति। पीर।

†पु०=शेष।

**शेखचिल्ली**—पु०[अ०+हिं०]१ एक कल्पित मूर्ख व्यक्ति जिसके संबंध मे बहुत-सी विलक्षण और हास्यास्पद कहानियाँ कही जाती हैं। २.ऐसा मूर्ख व्यक्ति जो बिना समझे-बूझे बहुत बढ़-चढ़कर बे-सिर पैर की बातें कहता हो।

**शेखर**—पु० [स० √ शिख्+अरन—पृषो०]१. शीर्ष। सिर। माथा। २. सिर पर पहनने का किरीट या मुकुट। ३. सिर पर लपेटी जानेवाली

माला। ४. पहाड़ की चोटी। शिखर। ५. ऊपरी सिरा। ६. उच्चता या श्रेष्ठता का सूचक पद। ७ छंद शास्त्र में टगण के पाँचवे भेद की संज्ञा (।ऽ।) जैसे—रजनाथ। ८. संगीत में, ध्रुव या स्थायी पद का एक प्रकार का भेद।

**शेखर-मंजिका**—स्त्री० [सं०ष०त०]संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**शेखरापीड़ योजन**—पुं० [स० ब० स०] चौसठ कलाओं मे से एक कला। जिसमें सिर पर पगड़ी, माला आदि सुन्दर रूप से पहनाई जाती है।

**शेखरी**—स्त्री० [स० शेखर—ङीप्]१. बंदाक। बाँदा। २. लौंग। ३. सहिंजन की जड़। ४ संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**शेखसद्दो**—पुं०[अ० शेख+देश० सद्दो]मुसलमान स्त्रियों के उपास्य एक कल्पित पीर जो कभी कभी भूत-प्रेत की तरह उनके सिर पर आते या उन्हें आविष्ट करते हैं।

**शेखावत**—पुं० [अ० शेख] राजस्थान के राजपूतो की एक उपजाति।

**शेखी**—स्त्री०[फा० शेखी]१ मुसलमानों की शेख नामक जाति या वर्ग का अभिमान या घमंड। २ इस प्रकार का झूठा अभिमान कि हमने अमुक अमुक बड़े काम किये हैं अथवा हम ऐसे ऐसे काम कर सकते हैं। डींग। ३. झूठी शान। अकड़।

क्रि० प्र०—बघारना।—हाँकना।

**शेखीबाज**—वि०[अ० शेखी+फा० बाज] [भाव० शेखीबाजी] शेखी बघारने या डींग हाँकनेवाला।

**शेफ**—पु०[सं० शी+पन्]१. पुरुष की इंद्रिय। लिंग। २ अण्डकोष। ३. दुम।

**शेफ**—पुं०[सं० शी+फन्] शेप।

**शेफालि, शेफालिका, शेफाली**—स्त्री० [सं० ब० स०] नील सिंधुआर का पौधा। निर्गुंडी।

**शेयर**—पुं०[अं०]१. संपत्ति आदि में होनेवाला अंश। २ व्यापार आदि में होनेवाला हिस्सा। पत्ती।

**शेर**—पुं०[सं० वशेर से फा०] [स्त्री० शेरनी] १. एक प्रसिद्ध हिंसक पशु। सिंह।

**पद—शेर बबर, शेर बच्चा, शेरमर्द।**

**मुहा०—शेर और बकरी का एक घाट पर पानी पीना**=ऐसी स्थिति होना जिसमें दुर्बल को सबल का कुछ भी भय न हो।

२. अत्यन्त निर्भीक, वीर और साहसी पुरुष। (लाक्षणिक) ३. बहुत उग्र या तीव्र पदार्थ या व्यक्ति।

**मुहा०—(बत्ती) शेर करना**=चिराग की बत्ती बढ़ाकर रोशनी तेज करना।

वि० बहुत गहरा या चटकीला (रंग)। जैसे—शेर गुलाबी या शेर लाल।

पु०[अ०] फारसी, उर्दू आदि की कविता के दो चरणों का समूह।

**शेर अफगन**—वि०[फा०] शेर को गिराने या पछाड़नेवाला।

**शेरगढ़ी**—स्त्री०[हिं०]सम्राट अशोक के स्तम्भों पर की वह आकृति जिसमें चारों ओर चार शेरों के मुँह होते हैं और जिसकी अनुकृति स्वतन्त्र भारत का राजचिह्न है।

**शेर-दरवाजा**—पुं०[फा०=सिंह-द्वार।

**शेर-मुहाँ**—वि०=शेरमुहाँ। (दे०)

**शेर-पंजा**—पुं० [फा० शेर+पंज.] शेर के पंजों के आकार का एक अस्त्र। बघनहाँ।

**शेरपा**—पुं० [फ० शेर+पा (नेपाली प्रत्य०)] १ चीता। बाघ। २. वह पहाड़ी मजदूर जो २४-२५ हजार फुट से भी अधिक ऊँचाई वाले पहाड़ों पर चढ़ने का अभ्यस्त हो। ३ साधारणतः ऊँचे पहाड़ों पर, विशेषतः हिमालय पर चढ़नेवाला मजदूर।

**शेर-बच्चा**—पु०[फा०शेर-बच्च:]१. बहुत ही पराक्रमी तथा वीर व्यक्ति। २. पुरानी चाल की एक प्रकार की छोटी बन्दूक।

**शेर-बबर**—पु०[फा०] सिंह। केसरी।

**शेर मर्द**—पु० [फा०] [भाव० शेरमर्दी] बहुत ही पराक्रमी और वीर व्यक्ति।

**शेर-मुहाँ**—वि०[फा०+हिं०]१. जिसका मुँह या अगला भाग शेर की आकृतिवाला हो। जैसे—शेरमुहाँ कड़ा। २ (जमीन या मकान) जिसका अगला भाग चौड़ा और पिछला भाग सँकरा हो। नाहर-मुखी। (अशभ)

**शेरवानी**—स्त्री०[देश०] मुसलमानी ढग का एक प्रकार का अगा।

**शेल**—पु०=दे० 'सेल'।

**शेलुक**—पुं०[सं० शेलु+कन्]१ लिसोड़ा। २. मेथी। ३ लोध।

**शेलुका**—स्त्री०[स० शेलुक—टाप्]बनमेथी।

**शेव**—पुं० [सं० शी+वन्]१. उन्नति। २ उच्चता। ऊँचाई। ३ घनदौलत। ४. लिंग। ५ मछली। ६ साँप। ७ अग्नि।

**शेवड़ा**—पुं०[सं० श्रावक] जैन यति या साधु।

**शेवल**—पु० [सं० शेव√ला (लेना)+क] सेवार। शैवाल।

**शेवलिनि**—स्त्री०[स० शेवल+इनि]१ ऐसी नदी जिसमे सेवार हो। २. नदी।

**शेवा**—पुं०[फा० शेव:]तौर तरीका। (आचार-व्यवहार आदि का) ढंग।

**शेवाल**—पु०[सं० √शी +विच्√ वल्+घञ्] सेवार। सेवाल।

**शेवाली**—स्त्री०[सं०शेवाल—ङीप्]एक प्रकार की जटामासी (वनस्पति)।

**शेष**—वि० [स०√शिष् (मारना)+अच्] १. औरों विशेषतः खाद्य बातों के न रह जाने पर भी जो अभी विद्यमान हो। २ अनावश्यक या आवश्यकता से अधिक होने पर जिसका आभोग या उपयोग न किया जा सका हो। ३. जो पूर्णतया क्षीण, नष्ट या समाप्त हो गया हो। ४ जिसका उल्लेख, कथन आदि अभी होने को हो। जैसे—कहानी अभी खत्म नहीं हुई शेष फिर सुनाऊँगा।

पुं०१. बाकी बची हुई चीज या भाग। अवशिष्ट अंश। २. किसी घटना या व्यक्ति का स्मरण करनेवाला कोई बचा हुआ पदार्थ या वस्तु। स्मारक। ३. बड़ी संख्या मे से छोटी संख्या घटाने से बची हुई संख्या। बाकी। ४. वह पद या शब्द जो किसी वाक्य का अर्थ या आशय पूरा और स्पष्ट करने के लिए लगाना पड़ता हो। अध्याहार। ५. अंत। समाप्ति। ६. परिणाम। फल। ७ मृत्यु मौत। ८. साक्ष। ९ पुराणानुसार सहस्र फणों के सर्पराज जो पाताल में हैं और जिनके फनों पर पृथ्वी का ठहरा होना कहा गया है। १० रामचन्द्र के भाई लक्ष्मण जो उक्त सर्पराज के अवतार माने जाते हैं। ११. बलराम। १२ एक प्रजापति। १३. दस दिग्गजों में से एक। १४. परमेश्वर। १५.

हाथी। १६ जमालगोटा। १७. पिंगल में दगण के पाँचवे भेद का नाम। १८. छप्पय छंद के पचीसवें भेद का नाम जिसमे ४६ गुरु, ६० लघु कुल १०६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं।

**शेष जाति**—स्त्री० [सं० ष० त०] गणित मे बचे हुए अक को लेने की क्रिया।

**शेषधर**—पु० [स० ष० त०] शेष अर्थात् सर्प को धारण करनेवाले, शिवजी।

**शेषनाग**—पुं० [सं० मध्य० स०] सर्पराज शेष जो पुराणानुसार पृथ्वी को अपने सिर पर धारण करनेवाले माने गये हैं।

**शेषवाद**—पु० [स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**शेषर**—पु०=शेखर।

**शेषराज**—पु० [सं०] १ एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे दो मगण होते हैं। विद्युल्लेखा। २. शेषनाग।

**शेषवत्**—पु० [शेष+मतुप् म=व] न्याय मे अनुमान का एक भेद जिसमे किसी परिणाम के आधार पर पूर्ववर्ती कारण या घटना का अनुमान किया जाता है। जैसे—नदी की बाढ़ देखकर ऊपर हुई वर्षा का अनुमान।

**शेषशायी (यिन्)**—पुं० [स० शेष√शी+णिनि] शेषनाग पर शयन करने वाले, विष्णु।

**शेषांश**—पु० [स० कर्म० स०] १ बचा हुआ अश या भाग। २. अन्तिम अंश या भाग।

**शेषा**—स्त्री० [सं० शेष—टाप्] देवताओं को चढ़ाई हुई वस्तु जो दर्शको या उपासकों को बाँटी जाय। प्रसाद।

**शेषाचल**—पुं० [स० मध्यम० स०] दक्षिण भारत का एक पर्वत।

**शेषोक्त**—भू० कृ० [स० सप्त० त० स०] कहयो मे से अन्त में कहा हुआ। जिसका उल्लेख सब के अन्त में हुआ हो।

**शै**—स्त्री० [अ०] १. वस्तु। पदार्थ। चीज। २ भूत-प्रेत।
†स्त्री० दे० 'शह।' (उत्तेजना)।

**शैक्ष्य**—पु० [सं० शीक्ष+यत्] सिकहर। छीका।

**शैक्ष**—पु० [सं० शिक्षा+अण्] आचार्य के पास रहकर शिक्षा प्राप्त करने वाला शिष्य।

**शैक्षणिक**—स्त्री० [सं० शिक्षण+ठक्—इक] १. शिक्षण या शिक्षा-सम्बन्धी। (एजुकेशन) २ शिक्षाप्रद। ३. शास्त्रीय ज्ञान अथवा उसके शिक्षण से सबध रखनेवाला। शास्त्रीय। (एकेडेमिक)

**शैक्षिक**—वि० [सं० शिक्षा+ठक्—इक] शिक्षा-संबधी। शिक्षा का। (एजुकेशनल)
पुं० १ वह जो शिक्षा (वेदांग) का ज्ञाता या पंडित हो। २ वह जो आधुनिक शिक्षा-विज्ञान का पडित हो। (एजुकेशनिष्ट)

**शैख**—पुं० [स०] नीच तथा पतित ब्राह्मण की संतान। (स्मृति)

**शैखरिक**—पुं० [सं० शिखर+ठक्—इक] अपामार्ग। चिचड़ा। लटजीरा।

**शैघ्र्य**—पु० [स० शीघ्र+अण्] शीघ्रता। तेजी।

**शैतान**—पु० [अ०] १ ईश्वर के सन्मार्ग का विरोध करनेवाली शक्ति जो कुछ सामी धर्मों (यथा इस्लाम धर्म, ईसाई आदि) मे एक दुष्ट देवता और पतित देवदूतो के अधिनायक के रूप में मानी गई है। यह भी माना जाता है कि यही मनुष्यों को बहकाकर कुमार्ग मे लगाता और ईश्वर तथा धर्म से विमुख करता है।

**पद—शैतान का बच्चा**=बहुत दुष्ट आदमी। **शैतान की आँत**=बहुत लबी-चौड़ी चीज या बात। (व्यग्य) **शैतान की खाला**=बहुत दुष्ट या पाजी औरत (गाली)। **शैतान के कान हरे**=ईश्वर करे, शैतान यह शुभ बात न सुन सके और इसमें बाधक न हो। (मगलाकाक्षा का सूचक)।
२ दुष्टदेव योनि। भूत-प्रेत आदि।
**मुहा०—(सिर पर) शैतान बढ़ना या लगना**= भूत-प्रेत आदि का आवेश होना। प्रेत का भाव पडना।
३. बहुत बड़ा अत्याचारी या दुष्ट व्यक्ति। ४. दुर्वृत्ति, प्रबल काम-वासना, क्रोध आदि।
**मुहा०—शैतान सवार होना**=दुर्वृत्तियों का बहुत प्रबल होना। ५. लडाई-झगडा या उपद्रव।
**मुहा०—शैतान उठाना या मचाना**=झगड़ा खड़ा करना। उपद्रव मचाना।

**शैतानी**—वि० [अ० शैतान] १. शैतान-संबधी। शैतान का। जैसे—शैतानी गोल। शैतानियो की तरह का बहुत दुष्ट।
स्त्री० १ धृष्टता। पाजीपन। शरारत। २. ऐसा आचरण जो किसी को परेशान करने के लिए किया जाय।

**शैत्य**—पु० [सं० शीत+ष्यञ्] शीतलता। ठडक।

**शैथिल्य**—पु० [स० शिथिल+ष्यञ्] १. शिथिल होने की अवस्था या भाव। शिथिलता। २ तत्परता का अभाव। सुस्ती।

**शैदा**—वि० [फा०] जो किसी के प्रेम मे मुग्ध हो। प्रेम से पागल।

**शैन्य**—पु० [सं० शिनि+यञ्] शिनि का वश।

**शैल**—वि० [स० √ शिला+अण्] १. शिला सबधी। पत्थर का। २. जिसमे पत्थर के टुकड़े मिले हों। पथरीला। ३ कड़ा। कठोर। सख्त।
पु० १. पर्वत। पहाड़। २. चट्टान। ३ छरीला नामक वनस्पति। शैलेय। ४ रसौत। ५ शिलाजीत। ६. सिलोडा।

**शैलक**—पु० [सं० शैल+कन्] छरीला। शैलेय।

**शैलकटक**—पु० [स० ष० त०] पहाड़ की ढाल।

**शैल-कन्या**—स्त्री० [स० ष० त० स०] हिमालय पर्वत की पुत्री, पार्वती।

**शैलकुमारी**—स्त्री० [स० ष० त० स०]=शैलकन्या। पार्वती।

**शैल-गंगा**—स्त्री० [स० ष० त० स०] गोवर्द्धन पर्वत की एक नदी जिसमें श्री कृष्ण ने सब तीर्थों का आवाहन किया था।

**शैल-गंध**—पु० [स० ब० स०] शबर चदन। बर्बर चन्दन।

**शैलगृह**—पु० [स० सप्त० त०] पहाड या चट्टान मे खोदकर बनाया हुआ प्रसाद या मन्दिर।

**शैलज**—पुं० [स० शैल√जन् (उत्पन्न करना)+ड] पत्थर। फूल। छरीला।
वि० [स्त्री० शैलजा] पर्वत से उत्पन्न।

**शैलजा**—स्त्री० [सं० शैलज—टाप्] १ पार्वती। २ गज पिप्पली। ३. दुर्गा। ४. सेहुँली।

**शैलजात**—पु० =शैलेय।

**शैल-तटी**—स्त्री० [स० ष० त० स०] पहाड़ की तराई।

**शैल-बन्धा (न्धन्)**—पुं० [स० ब० स०] महादेव। शिव।

**शैलधर**—पुं० [सं० ष० त० स०] गोवर्धन पर्वत धारण करनेवाले, श्रीकृष्ण।
**शैलनंदिनी**—स्त्री० [सं०] पार्वती।
**शैलनिर्यास**—पुं० [सं०] शिलाजीत।
**शैलपति**—पुं० [सं० ष० त० स०] हिमालय पर्वत।
**शैलपत्र**—पुं० [स० ष० त० स०] बेल का पेड़ और फल।
**शैलपुत्री**—स्त्री० [सं० ष० त० स०] १. पार्वती। २. नौ दुर्गाओं में से एक। ३. गंगा नदी।
**शैल-पुष्प**—पुं० [सं० ष० त० स०] शिलाजीत। शिलाजतु।
**शैलबीज**—पु० [सं० ष० त०] भिलावाँ।
**शैलभेद**—पुं० [सं० ष० त० स०] पखान-भेदी (पौधा)।
**शैलमंडप**—पु० [सं० स० त०] =शैल-गृह।
**शैलरंध्र**—पु० [स० ष० त०] गुफा।
**शैलराज**—पु० [सं० ष० त०] हिमालय पर्वत।
**शैलशिविर**—पु० [सं० ष० त०, ब० स० वा] समुद्र। सागर।
**शैल-संभव**—पुं० [सं० ब० स०] शिलाजीत।
**शैल-सुता**—स्त्री० [स० ष० त० स०] १. पार्वती। २ दुर्गा। ३. गंगा नदी।
**शैलाग्र**—पु० [सं० ष० त० स०] पर्वत का शिखर।
**शैलाट**—पु० [सं० शैल√ अट् (चलना)+अच्] १. पहाड़ी आदमी। परवतिया। २. बिल्लौर। स्फटिक। ३. शेर। सिंह।
**शैलाधिप, शैलाधिराज**—पु० [स० ष० त०] हिमालय।
**शैलाभ**—पु० [स० ब० स०] विश्वदेवों में से एक।
**शैलाली**—पु० [स० शिलालि+फिनि—दीर्घ-लोप] नट।
**शैलिक**—पु० [सं० शिला+ठक्—इक] शिलाजीत।
**शैली**—स्त्री० [सं० शैल-ङीप्] १ ढंग। तरीका। २. साहित्य में, बोल या लिखकर विचार प्रकट करने का वह विशिष्ट ढंग जिसपर वक्ता या उसके काल, समाज आदि की छाप लगी होती है। जैसे—भारतेंदु की शैली, द्विवेदीयुगीन शैली। ३ कोई काम करने अथवा कोई चीज निर्मित, प्रस्तुत या प्रदर्शित करने का कलापूर्ण ढंग। जैसे—चित्र-कला की पहाड़ी शैली, मुगल शैली, राजस्थानी शैली आदि। ४. कठोरता। सख्ती।
**शैलीकार**—पुं० [सं० शैली√कृ+अण्] वह जिसने कला, काव्य, साहित्य आदि के किसी क्षेत्र में किसी नई और विशिष्ट शैली का प्रचलन किया हो।
**शैलू**—पुं० [देश०] लिसोड़ा।
स्त्री० गुजरात और दक्षिण भारत में बननेवाली एक प्रकार की चटाई।
**शैलूक**—पुं० [सं० शैल+ऊकञ्] १ लिसोड़ा। २. भसीड़।
**शैलूष**—पुं० [सं० शिलूष+अण्] १. अभिनय करनेवाला व्यक्ति। अभिनेता। नट। २. गंधर्वों का नेता। ३. बेल का पेड़।
वि० धूर्त।
**शैलूषिक**—पुं० [सं० शिलूष+ठक्-इक] [स्त्री० शैलूषिकी] अभिनेता।
वि०, पुं०=शैलूष।
**शैलेंद्र**—पुं० [सं० नित्य० स०] हिमालय पर्वत।
**शैलेय**—वि० [सं० शिला+ढक्—एय] १. जिसमें पत्थर हो। पथरीला। २. पहाड़ का। पहाड़ी। ३. जो पत्थर से उत्पन्न हो।



पुं० १. शिलाजीत। २. छरीला। ३. मूसलीकंद। ४ सेंधा नमक। ५. सिंह। ६. भौंरा।
**शैलेयी**—स्त्री० [सं० शैलेय-ङीप्] पार्वती।
**शैलेश्वर**—पु० [स० ष० त० स०] शिव। महादेव।
**शैलोदा**—स्त्री० [सं० ब० स०] उत्तर दिशा की एक प्राचीन नदी।
**शैल्य**—वि० [स० शिला+ष्यञ्] १. पत्थर का। २. पथरीला। ३. पहाड़ी। ४. कठोर। सख्त।
**शैव**—वि० [सं० शिव+अण्] १ शिव-संबंधी। शिव का। जैसे—शैव दर्शन। २ शैव सम्प्रदाय का अनुयायी।
पुं० १. शिव का उपासक या भक्त। २. हिन्दुओं का एक प्रसिद्ध सम्प्रदाय (वैष्णव से भिन्न) जो शिव का उपासक है। ३. पाशुपत अस्त्र। ४. धतूरा। ५. अड़सा। ६. जैनों के अनुसार पाँचवें कृष्ण या वासुदेव का एक नाम।
**शैवपत्र**—पु० [स० ब० स०] बिल्व वृक्ष, जिसकी पत्तियाँ शिव पर चढ़ती हैं। बेल।
**शैव पुराण**—पु० [स० कर्म० स०] शिव पुराण।
**शैवल**—पु० [स० √शी (शयन करना) +वलञ्] १. पद्म काष्ठ। पदमकाठ। २. सेवार। ३. एक प्राचीन पर्वत।
**शैवलिनी**—स्त्री० [सं० शैवल+इनि—ङीप्] नदी।
**शैवागम**—पु० [स०] शैवमत के प्रतिपादक धर्म ग्रन्थ जो प्राय. ई० सातवीं शती से पहले बने थे।
**शैवाल**—पु० [स० √ शि (शयन करना) +वालञ्] सेवार।
**शैवी**—स्त्री० [शैव-ङीप्] १. पार्वती। २. मनसा देवी। ३ कल्याण। मंगल।
**शैव्य**—वि० [सं० शिव+ष्य] शिव-संबंधी। शिव का।
पुं० १. कृष्ण के एक घोड़े का नाम। २. पाण्डवों की सेना का एक यूथप।
**शैव्या**—स्त्री० [स० शैव्य—टाप्] अयोध्या के सत्यव्रती राजा हरिश्चन्द्र की रानी। (चंड कौशिक)
**शैशव**—वि० [सं० शिशु+अण्] १. शिशु संबंधी। बच्चों का। २. शिशु या छोटे बच्चों की अवस्था से सम्बन्ध रखनेवाला।
पुं० १. शिशु होने की अवस्था या भाव। २ १६ वर्ष से कम अवस्था। बचपन। ३. लड़कपन।
**शैशविक**—वि० [स० शैशव+ठक्—इक] शैशव-संबंधी। शैशव का।
**शैशविकी**—स्त्री० [सं०] आधुनिक चिकित्सा-प्रणाली की वह शाखा जिसमे शिशुओं के लालन-पालन, रक्षण आदि के प्रकारों एवं सिद्धान्तों का विवेचन होता है। (पेडियाट्रिक्स)
**शैशिर**—वि० [स० शिशिर+अण्] १. शिशिर-संबंधी। शिशिर काल या ऋतु का। २. शिशिर-ऋतु मे होनेवाला।
पुं० १. ऋग्वेद की एक शाखा के प्रवर्तक एक ऋषि। २. चातक।
**शैषिक**—वि० [सं० शेष+ठञ्—इक] शेष या अन्तिम भाग से संबंध रखनेवाला। शेष का।
**शोक**—पुं० [सं० √शुच् (शोक करना)+घञ्] १. किसी आत्मीय या

महान् पुरुष की मृत्यु के कारण होनेवाला घोर दुःख। सोग। (मौनिंग) २. बहुत अधिक दुःख।

**शोकघ्न**—पुं० [सं० शोक √हन् (मारना)+टक्, कुत्व] अशोक वृक्ष।

**शोकहर**—पु०[सं० ब० स०]१. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक पद में ८, ८, ८, ६ के विश्राम से (अंत में गुरु सहित) तीस मात्राएँ होती हैं। प्रत्येक पद के दूसरे, चौथे और छठे चौकाल में जगण न पड़े। इसे शुभ्रंगी भी कहते हैं।
वि० शोक दूर करनेवाला।

**शोकाकुल**—वि०[सं० तृ० त० स०] शोक से विकल।

**शोकारि**—पुं०[सं० ष० त० स०] कदम का पेड़। कदंब का वृक्ष।

**शोकार्त**—वि०[सं० तृ० त० स०] शोक से विकल।

**शोकी (किन्)**— वि०[सं० शोक+इनि] [स्त्री० शोकिनी] जिसे शोक हुआ हो या जो शोक कर रहा हो।
स्त्री० रात।

**शोख**—वि० [फा०] [भाव० शोखी]१. ढीठ तथा निडर। २. ऐसा चंचल या चपल जो केवल दूसरों को चिढ़ाने या तंग करने के लिए बढ़-बढ़कर धृष्टतापूर्ण बातें तथा व्यवहार करता हो। नटखट। (उर्दू-फारसी की कविताओं में प्रेम-पात्र का विशेषण)। ३ (रंग) जो बहुत चटकीला या तेज हो।

**शोखी**—स्त्री० [फा०] शोख होने की अवस्था, गुण या भाव। (उर्दू-फारसी कविताओं में प्रेमपात्र का एक विशिष्ट गुण) २ रंग की चटकाहट।

**शोच (न्)**—पु०[सं०]१. दुःख। रंज। २. चिन्ता। फिक्र।

**शोचन**—पु०[स० √शुच् (शोक करना)+ल्युट्—अन] [वि० शोचनीय, शोचितव्य, शोच्य] १ शोक करना। रंज करना। २ चिन्ता करना। ३ शोक।

**शोचनीय**—वि०[स० √शुच् (शोक करना)+अनीयर्] जिसके संबंध में शोच करना पड़ता हो। जो चिन्ता या फिक्र का विषय हो।

**शोचि**—स्त्री०[सं०]१ लौ। लपट। २ चमक। दीप्ति। ३. रंग। वर्ण।

**शोच्य**—वि०[सं० शुच्+ण्यत्]=शोचनीय।

**शोटीर्य**—पुं०[सं० शुटीर+यत्]बल। वीर्य। पराक्रम।

**शोठ**—वि०[सं० √ शुठ् (आलस्य करना)+अच्]१. मूर्ख। बेवकूफ २. धृष्ट। बुरा। ३. आलसी।

**शोण**—वि०[सं० √शोण् (गत्यादि)+अच्]१. रक्त वर्ण। लाल। उदा०—अरुण जल के शोण कोण थे।—प्रसाद।
पुं० १. लाल रंग २ अरुणता। लाली। ३. अग्नि। ४ सिंदूर। ५. रक्त। लहू। ६. पद्मराग मणि। ७ लाल गदहपूरना। ८. सोनापाठा। ९. लाल गन्ना। १०. सोन (नद)।

**शोणक**—पुं०[सं० शोण+कन्]१ सोनापाठा। २. लाल गन्ना।

**शोणगिरि**—पुं०[सं० मध्य० स०] बिहार की एक पहाड़ी जिस पर मगध देश की पुरानी राजधानी (राजगृह) बसी थी।

**शोणजिंडी**—सं० स्त्री०[सं० कर्म० स०] पीली कटसरैया।

**शोणपद्म**—पु०[सं० ब० स०] लाल पुनर्नवा।

**शोणपद्म**—पुं०[सं० कर्म० स०] लाल कमल।

**शोणपुष्प**—पु०[सं० ब० स०] कचनार।

**शोणपुष्पी**—स्त्री०[सं०] सिंदूर पुष्पी।

**शोणभद्रा**—पु०[सं० शोणभद्र-टाप्] सोन नामक नद।

**शोणरत्न**—पु०[सं० कर्म० स०] मानिक। लाल।

**शोणांबु**—पु०[स० ब० स०] प्रलयकाल के मेघों में से एक मेघ।

**शोणा**—स्त्री०[सं० शोण्—टाप्]१ सोन नामक नद। २ लाल कटसरैया।

**शोणित**—वि० [सं०√शोण् (रंग)+क्त शोण्+इनच् वा] लाल। जैसे—शोणित चंदन।
पु०१ रक्त। लहू। २ वनस्पतियों का रस। ३ केसर। ४ सिंदूर। ५ ताँबा। ६ तृण-केसर।

**शोणितपुर**—पुं०[स० मध्य० स०] बाणासुर की राजधानी का नाम।

**शोणित-शर्करा**—स्त्री०[स० कर्म० स०] शहद की चीनी।

**शोणितार्बुद**—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार का रोग जिसमें त्वचा पर फुंसियाँ हो जाती है।

**शोणितोपल**—पु०[सं० मध्य० स०] मानिक। लाल।

**शोणिमा (मन्)**—स्त्री०[स० शोण+इमनिच्]लालिमा। लाली।

**शोणोपल**—पु०[स० मध्य० स०] मानिक। लाल।

**शोथ**—पु०[सं०√शुं (गत्यादि)+घञ्] १ शरीर के किसी अंग का फूलना। सूजन। २ अंग में सूजन होने का रोग। (इन्फ्लेमेशन)

**शोथक**—वि०[स० शोथ+कन्] शोक उत्पन्न करनेवाला।
पु०१. शोथ। सूजन। २ मुरदाशंख।

**शोथघ्नी**—स्त्री०[स० शोथ √हन्+टच्—कुत्व—ङीप्]१ गदहपूरना। पुनर्नवा। २ शालिपर्णी। गरिवन।

**शोध्य,जित्**—पु०[स० शोथ√जि+क्विप्—तुक्]१ भिलावाँ। भल्लातक। २. गदहपूरना।

**शोधारि**—पु०[सं० ष० त० स०] पुनर्नवा। गदहपूरना।

**शोधयव्य**—वि०[स०√शुध् (शोधन करना)+तव्य] शोधे जाने के योग्य।

**शोध**—पु०[स० √ शुध (शोधन करना)। अच्]१ शुद्ध करना या बनाना। २. कमी, त्रुटियाँ आदि ठीक तथा दुरुस्त करना। ३ छिपी हुई तथा रहस्यपूर्ण बातों की खोज करना। ४ ऋण चुकाना। ५. जाँच। परीक्षण।

**शोधक**—वि०[स० √शुध्+णिच्—ण्वुल्—अक]१ शुद्ध या साफ करनेवाला। जैसे—तेल-शोधक यंत्र। २ शोध या अन्वेषण करनेवाला। ३ ढूँढने या पता लगानेवाला।

**शोधन**—पु०[स०√ शुध् (शोधन करना)+णिच्—ल्युट्। अन] १ शुद्ध या साफ करने की क्रिया या भाव। अनमेल या हानिकर तत्त्व निकालकर किसी चीज को शुद्ध बनाना। २. अशुद्धि, दोष, मूल आदि का सुधार करना। (करेक्शन) ३. वह प्रक्रिया जिसमें धातुओं को शुद्ध करके औषधि का रूप दिया जाता है। ४ नई बातों की खोज करना। खोज का कार्य। अन्वेषण। ५ ऋण चुकाना। ६. प्रायश्चित्त। ७. विरेचन। ८. भाज्य में से भाजक को घटाना। ९ मल। विष्ठा। १०. नील। १६ हीरा कसीस।

**शोधनक**—वि०[सं० शोधन+कन्]शोधन करनेवाला।

**शोधना**—स०[स० शोधन]१. शुद्ध या साफ करना। २. ठीक या दुरुस्त

करना। ३. तलाश करना। खोजना। ४. वैद्यक में, धातुओं को विशेष रीति से इस प्रकार शुद्ध करना कि वे औषधियाँ बन जायँ।

**शोध-निबंध**—पु०[स० मध्य० स०] ऐसा निबंध जिसमे किसी गंभीर विचारणीय विषय के सब अगों की अच्छी तरह जाँच-पड़ताल करके उसके संबध मे कोई मत या विचार स्थिर किया गया हो। (डिस्सर्टेशन)

**शोधनी**—स्त्री०[सं० शोधन-ङीप्] १ मार्जन। झाड़ू। २ ताम्रवल्ली। ३ नील। ४. ऋद्धि नामक औषधि। ५ जमालगोटा।

**शोधनीय**—वि० [सं०√शुध् (शोधन करना)+अनीयर्] १. जिसका शोधन होने को हो। २. (ऋण या देन) जो चुकाया जाने को हो। ३ जो ढूँढ़ा जाने को हो।

**शोधवाना**—स०[हिं० शोधना का प्रे०] १. शोधने का काम किसी से कराना। शुद्ध कराना। २. तलाश कराना। ढुँढ़वाना।

**शोध-शाला**—स्त्री०[सं०]१. वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का शोधकार्य होता हो। २. वह स्थान जहाँ धातुओं को शोधकर उनकी औषधियाँ बनाई जाती हैं। ३. आज-कल वह कारखाना जहाँ तेल, धातु आदि प्राकृतिक पदार्थों को रासायनिक प्रक्रियाओं से शुद्ध और निर्मल करके काम में लाने योग्य बनाया जाता हो। (रीफ़ाइनरी)

**शोधा**—पुं० [हिं० शोधना]सोना-चाँदी शुद्ध करनेवाला व्यक्ति। शोधन करने या शोधनेवाला।

**शोधाक्षम**—वि० [सं० शोध+अक्षम] (व्यक्ति) जो अपना ऋण चुकाने में अक्षम या असमर्थ हो। दिवालिया।

**शोधित**—भू० कृ०[स० शोध+इतच्] १. जिसका शोधन हुआ हो। शुद्ध या साफ किया हुआ। २ जो दोष या भूल सुधारकर ठीक किया गया हो। (करेक्टेड)३. जिसका या जिसके संबंध में शोध हुआ हो। ४. (ऋण या देन) जिसका परिशोधन हुआ हो। चुकाया हुआ।

**शोधैया**—वि०[हिं० शोधना+ऐया (प्रत्य०)] शोधनेवाला।

**शोध्य**—पु० [स० शुध+यत्]अपने अपराध के विषय में सफाई देनेवाला। अपराधी व्यक्ति।

वि०=शोधनीय।

**शोध्यपत्र**—पुं०[सं० कर्म० स०] छापाखाने मे छापनेवाली चीज का वह नमूना जो छापने से पहले भूलें आदि सुधारने के लिए तैयार होता है। (प्रूफ़)

**शोफ**—पु०[सं०]१. शरीर पर होनेवाली ऐसी सूजन जिसमे जलन या पीड़ा न हो। (ओएडिमा) २. शरीर पर होनेवाली गाँठ। अर्बुद।

**शोफघ्नी**—स्त्री० [सं० शोफ√हन्+टप्—ङीप्-कुत्व] रक्त पुनर्नवा।

**शोफहारी**—पुं०[सं० शोफ√हृ (हरण करना)+णिनि] जंगली बर्बरी का पौधा।

**शोफारि**—पुं०[सं० ष० त० स०] हाथीकंद। हस्तिकंद।

**शोबदा**—पुं०[अ० शुअबदः]१. इंद्रजाल। जादू। २. काजीगरी। ३. हाथ की चालाकी।

**शोभ**—पुं०[सं०]१. एक प्रकार के देवता। २. एक प्रकार के नास्तिक। वि०=शोभन।

**शोभन**—वि०[सं० √शुभ् (शोभित होना)+ल्युट्—अक]१. शोभा से युक्त। २. शोभा बढ़ानेवाला। ३. उपयुक्त जान पड़ने तथा फबनेवाला। ४. मंगलकारक। शुभ।

पुं० १. शिव। २. अग्नि। ३. ग्रह। ४. कमल। ५ राँगा। ६. आभूषण। ७. कल्याण। ८. पुण्यकार्य। ९. सुन्दरता। सौन्दर्य। १०. सिन्दूर। ११ ज्योतिष मे विष्कंभक आदि सत्ताइस योगों में से पाँचवाँ योग। १२. बृहस्पति का ग्यारहवाँ संवत्सर। १३. संगीत में, एक प्रकार का राग जो मालकोश राग का पुत्र कहा गया है। १४. २४ मात्राओं का एक छंद जिसमें १४ और १० मात्रा पर यति होती है और अंत मे जगण होता है। इसका दूसरा नाम 'सिंहिका' है।

**शोभनक**—पु०[स० शोभन+कन] सहिजन या शोभाजन।

**शोभना**—पुं० [स० शोभन—टाप्]१. सुन्दरी स्त्री। २. हलदी। ३ गोरोचन। ४ स्कन्द की एक मातृका।

अ० [स० शोभन]शोभित होना। सुहावना लगना।

**शोभनिक**—पु०[स०शोभन+ठन्—इक] एक प्रकार के नट या कुशल अभिनेता।

**शोभनी**—स्त्री०[स० शोभन—ङीप्]सगीत मे, एक रागिनी जो मालकोश की पुत्री कही गई है।

**शोभांजन**—पुं०[स० ब० स०] सहिजन (पेड़)।

**शोभा**—स्त्री० [सं० शुभ्+अ—टाप्] १. कांति। चमक। २. ऐसी सुन्दरता या सौन्दर्य जिसका देखने वाले पर विशेष प्रभाव पड़ता हो। जैसे—पर्वतमालाओं की शोभा। ३. वह तत्त्व या बात जिससे किसी का सौन्दर्य बढ़ता हो। ४. अच्छा गुण। ५. रग। वर्ण। ६. हल्दी। ७. बीस अक्षरों का एक वर्णवृत्त जिसमे यगण मगण, दो नगण, दो तगण और दो गुरु होते हैं तथा छ. और सात पर यति होती है। ८ फारसी सगीत से गृहीत कुछ विशिष्ट गायन-तत्व जिसकी संख्या २४ कही जाती है। ९. दलाली के रूप में मिलनेवाला धन। दलाली की रकम। (दलाल) १०. गोरोचन।

**शोभानक**—पु०[सं०] शोभांजन। सहिजन।

**शोभान्वित**—वि०[सं० तृ० त० स०] शोभा से युक्त।

**शोभायमान**—वि०[सं०] शोभा देता हुआ। सुन्दर।

**शोभा-यात्रा**—स्त्री० [सं०] १. जलूस। २. बरात। (बँगला से गृहीत)।

**शोभित**—भू० कृ० [सं०√ शुभ् (शोभित)+क्त]१. शोभा से युक्त। फबता हुआ। सुन्दर। २. सजा हुआ।

**शोभिनी**—स्त्री० [सं० शोभा+इनि—ङीप्] शोभा देनेवाली।

**शोभी**—वि०[सं०] [स्त्री० शोभिनी] शोभा देनेवाला।

**शोर**—पुं० [फ़ा०]१. ऊँची, तीखी तथा कर्णकटु आवाज या आवाजें। जैसे—रात भर कुत्ते शोर करते रहे। २. लोगों के चीखने-चिल्लाने आदि की सामूहिक ध्वनि। ३. साधारण अर्थ में, किसी चीज की सहसा होनेवाली व्यापक चर्चा।

वि० प्र०—मचना।—मचाना।

**शोरबा**—पुं०[फ़ा० शोर्बः] १. तरकारी, दाल आदि का जूस। रसा। २. पकाये हुए मांस का रसा।

**शोरा**—पुं० [फ़ा० शोरः] सफेद रंग का एक प्रकार का क्षार जो मिट्टी में से निकलता है।

मुहा०—शोरे की पुतली=बहुत गोरी स्त्री।

**शोरा आलू**—पुं०[हिं० शोरा+आलू] बन आलू।

**शोरा पुश्त**—वि० [फा० शोर: पुश्त]१. लड़ाका। २. उपद्रवी। फसादी।

**शोरिश**—स्त्री०[फा०] १. खलबली। हलचल। २. बगावत। विद्रोह।

**शोरी**—पुं०[फा० शोर:] फारसी संगीत में एक मूकाम का पुत्र।

**शोला**—पुं०[अ०] एक प्रकार का छोटा पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत हल्की होती है।

पुं०[अ० शुअल:] आग की लपट। ज्वाला।

**शोला**—पुं०[फा० शोलः] १. आगे निकली हुई नोक। २. किसी बात में निकली हुई कोई ऐसी अनोखी और नई शाखा जो उसे किसी दूसरी ओर प्रवृत्त कर सकती हो या उसमें कोई त्रुटि दिखलाती हो।

मुहा०—शोशा निकालना= कोई दोष दिखाते हुए साधारण आपत्ति खड़ी करना।

३. कोई व्यंग्यपूर्ण या झगड़ा लगानेवाली बात कहना।

क्रि० प्र०—छोड़ना।

**शोष**—पुं०[सं० √शुष् (सोखना)+घञ्]१. सूखने की क्रिया या भाव। २. शुष्कता। खुश्की। ३ क्षीण होना। क्षय। ४. धीरे-धीरे शरीर का क्षीण या दुबला होना। ५. क्षय नामक रोग। तपेदिक। ६. बच्चों का सुखडी नामक रोग।

**शोषक**—वि० [सं० √ शुष् (सोखना)+णिच्, ण्वुल्—अक]१. सोखनेवाला। २. आर्द्रता, नमी आदि चूस या सोख लेनेवाला। ३. क्षीण करनेवाला। ४. अपने लाभ या स्वार्थ के लिए नष्ट करनेवाला। ५. दूर करने या हटानेवाला।

पुं० १. वह जो दूसरों का धन हरण करता हो, तथा उनका पूरा पूरा वास्तविक देय भाग न देता हो। २. समाज का वह वर्ग जो धन खींचता तथा बटोरता चलता हो और गरीबों को और अधिक गरीब बनाता चलता हो। (एक्सप्लाइटर, उक्त दोनों अर्थों में)

**शोष-कर्म**—पुं०[सं० कर्मन् स०] बावली या तालाब आदि से पानी निकलवाना और उससे खेत सिंचवाना। (जैन)

**शोषण**—पु०[स० √शुष् (सोखना)+ल्युट्—अन] [वि० शोषी, शोषणीय]१. एक पदार्थ का किसी दूसरे पदार्थ मे से उसका जलीय या तरल अंश धीरे धीरे खींचकर अपने अन्दर करना या लेना। सोखना। (ऐब्जार्पशन)२. सुखाना। ३. किसी चीज की ताजगी या हरापन धीरे धीरे कम या दूर करना। ४. परोक्ष उपायों से किसी की कमाई या धन धीरे धीरे अपने हाथ में करना। (एक्सप्लाएटेशन)५. न रहने देना। दूर करना। ६. क्षीण या दुबला करना। ७ कामदेव के पाँच बाणों में से एक जो मनुष्य को चिंतित करके उसका रक्त सोखनेवाला कहा गया है। ८. सोंठ। ९. सोनापाढ़ा। १० पिप्पली।

**शोषणीय**—वि०[सं० √शुष् (सोखना)+अनीयर्] जिसका शोषण हो सके या होने को हो।

**शोषयितव्य**—वि०[सं०√शुष् (सोखना)+णिच्—तव्य]=शोषणीय।

**शोषहा**—वि० [सं० शोष√हन् (मारना)+विप्] शोष रोग का नाश करनेवाला।

पुं० अपामार्ग। चिचड़ा।

**शोषित**—भू० कृ०[सं० √शुष् (सोखना)+णिच्—क्त]१. जिसका शोषण हुआ हो। सोखा हुआ। २ सूखा या सुखाया हुआ। ३. (व्यक्ति या वर्ग) जिसका देय भाग उसे पूरा पूरा न मिलता हो और इस प्रकार जिसकी दुर्बलता या असहाय अवस्था का दूसरे फायदा उठाते हों।

**शोषी (षिन्)**—वि०[सं०√शुष् (सोखना)+णिनि] [स्त्री० शोषिणी] १. शोषण करने या सोखने वाला। २ सुखानेवाला।

**शोषना**—स०[स० शोषण] शोषण करना। सोखना।

**शोहदा**—वि०[अ० शोहद के बहु० शुहदा से शुहदः]१. व्यभिचारी। लंपट। २. बदमाश। लुच्चा। ३. आवारा और गुंडा।

**शोहदापन**—पु०[हिं० शोहदा+पन (प्रत्य०)]१. शोहदा होने की अवस्था या भाव। २. शोहदे की कोई हरकत।

**शोहरत**—स्त्री० [अ० शुहरत] १ ख्याति। प्रसिद्धि। २. जोरों की चर्चा या फैली हुई खबर।

**शोहरा**—पु०= शोहरत।

**शौंग**—पु०[स० शुंग+अण्]भरद्वाज ऋषि का एक नाम जो शुंग के अपत्य थे।

**शौंगेय**—पु०[स० शुंगा+ढक्—एय]१ गरुड़। २. बाज पक्षी।

**शौंड**—पु०[सं० शुंड+अण्][भाव० शौंडता]१ कुक्कुट पक्षी। मुरगा। २ देव-चान्द्र। पुनेरा। ३. वह जो शराब पीकर मतवाला हो जाता हो।

**शौंडायन**—पु० [स० शुंडा+फक्-आयन] प्राचीन भारत की एक प्रकार की योद्धा जाति।

**शौंडिक**—वि०[स० शुंडा+ठक्—इक] [स्त्री० शौंडिकी] शराब बनाने तथा बेचनेवाला।

पुं० पिप्पलीमूल।

**शौंडिकागार**—पु०[स० ष० त० स०] शराब की दुकान। हौली। मधुशाला।

**शौंडी**—पु०[सं० शौंड +इनि—दीर्घ—नलोप शौंडिन्] प्राचीन काल की शौंडिक नामक एक प्रकार की जाति।

स्त्री०[स० शौंड—ङीप्] १. पीपल। पिप्पली। २ चव्य। चाब। ३ मिर्च।

**शौंडीर**—वि०[स० √ शुंडा। ईरन—अण्] अभिमानी। अहंकारी।

**शौक**—पु०[स० शुक्+अण्]शुकों का समूह। तोतों का झुंड।

**शौक**—पु०[अ०]१. मनोविनोद या आनन्द प्राप्ति के लिए कोई काम बराबर या पुन पुन. करने की स्वाभाविक या अभ्यास जन्य लालसा। २ उक्त के आधार पर ऐसा काम या खेल जिसमे कोई मग्न रहता हो। जैसे—क्रिकेट या ताश का शौक। ३. सुख-भोग।

मुहा०—शौक करना या फरमाना=किसी पदार्थ का भोग करके उसमें सुख प्राप्त करना। जैसे—चाय हाजिर है, शौक फरमाइए।

शौक चर्राना=शौक पैदा होना। (व्यंग्य)

शौक से=प्रसन्नतापूर्वक।

४. कोई शुभ आकांक्षा या कामना। ५. किसी काम या बात का चसका।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

६. किसी काम या बात की ओर विशेष रूप से होनेवाली प्रवृत्ति या रुचि।

**शौकत**—स्त्री० [अ०] १. बल। शक्ति। २. दबदबा। ३. शानदार। ठाठ-बाट।
पद—शान-शौकत।
४. गौरव।

**शौकर**—पु० दे० 'शूकर-क्षेत्र'।

**शौकरी**—स्त्री० [सं० शूकर+अण्—ङीप्] बराही कंद। गेंठी।

**शौकिया**—क्रि० वि० [अ० शौकिय:] शौक के कारण अर्थात् यों ही। बिना किसी विशिष्ट प्रयोजन के।
वि० शौक से भरा हुआ। जैसे—शौकिया सलाम।

**शौकीन**—वि०[अ० शौक+हिं० ईन (प्रत्य०)] [भाव० शौकीनी] १ जिसे किसी काम, चीज या बात का बहुत शौक हो। जैसे—खाने-पीने का शौकीन, ताश खेलने का शौकीन। २. जो सदा सजा-सँवारा तथा बना-ठना रहता हो। ३. वेश्यागामी।

**शौकीनी**—स्त्री० [हिं० शौकीन] १. शौकीन होने की अवस्था या भाव। २. सदा बने-ठने रहने की इच्छा। ३. वेश्या-गमन की वृत्ति। रंडीबाजी।

**शौक्तिक**—वि० [सं० शुक्तिका+अण्] शुक्तिका या सीपी से उत्पन्न।
पु० मोती। मुक्ता।

**शौक्तिका**—स्त्री० [सं० शौक्तिक-टाप्] सीप।

**शौक्तिकेय**—वि०, पु०=शौक्तिक।

**शौक्तेय**—पु० [सं० शुक्ति+ठक्—एय] मोती।

**शौक्ष**—वि० [सं० शुक्ष+अण्] १. शुक्ष-संबंधी। २. शुक्ष से उत्पन्न।

**शौक्ल**—वि० [सं० शुक्ल+अण्] शुक्ल-संबंधी। शुक्ल का।

**शौच**—पु० [सं० शुचि+अण्] शुचि होने की अवस्था या भाव। शुचिता। शुद्धता। २. शास्त्रीय परिभाषा मे सब प्रकार से पवित्रता या शुद्धता-पूर्वक जीवन व्यतीत करना। ३ शरीर की शुचिता के लिए सबेरे सोकर उठते ही किये जानेवाले कृत्य। जैसे—पाखाने जाना, कुल्ला करना, नहाना आदि। ४. पाखाने जाना। टट्टी जाना।
†पु० अशौच।

**शौच-कर्म**—पु० [सं० मध्य० स०] मल-मूत्र आदि का त्याग करना।

**शौच-गृह**—पु० [सं० ष० त०] वह कोठरी जिसमे लोग बैठकर मल-मूत्र का विसर्जन करते हैं। पाखाना।

**शौचनी**—स्त्री० [सं० शौच से] आज-कल का वह पात्र जिसमें लोग पाखाना फिरते हैं।

**शौच-विधि**—स्त्री० [सं०]=शौच-कर्म।

**शौचागार**—पुं० [ष० त० स०] शौचालय।

**शौचालय**—पु० [सं० शौच+आलय] १. घरों आदि में वह स्थान जहाँ लोग मल त्याग करने के लिए जाते हैं और जहाँ हाथ, मुँह धोने के लिए जल की व्यवस्था रहती है। (लेट्रीन) २. कोई ऐसा स्थान जहाँ पर सार्वजनिक उपयोग के लिए पाखाने बने हुए हों।

**शौचासनी**—स्त्री० [सं० शौच+आसन] काठ आदि का बना हुआ एक प्रकार का पात्र जिस पर बैठकर लोग पाखाना फिरते हैं। (कामोड)

**शौचिक**—पुं० [सं० शौच+ठन्-इक] प्राचीन काल की एक वर्ण-संकर जाति जिसकी उत्पत्ति शौंडिक पिता और कैवर्त माता से कही गई है।
वि० शौच-संबंधी। शौच का।

**शौची (चिन्)**—वि० [सं०√शुच् (शुद्ध करना)+णिनि+दीर्घ, नलोप] [स्त्री० शौचिनी] विशुद्ध। पवित्र।

**शौचेय**—पु० [स० शौच+ठक् एक] रजक। धोबी।

**शौंडीर**—पु० [स०√शौंड् (करना)+ईरन] [भाव० शौंडीरता] १. वीर। बहादुर। २. अभिमानी। ३. त्यागी।

**शौंडीर्य**—पु० [स० शौंडीर+ष्यञ्] १. वीर्य। शुक्र। २. वीरता। बहादुरी। ३. अभिमान। ४. त्याग।

**शौत**—स्त्री०=सौत (सपत्नी)।

**शौद्धोदनि**—पु० [सं० शुद्धोदन+इञ्] महाराज शुद्धोदन के पुत्र, बुद्ध।

**शौद्र**—पु० [सं० शूद्रा+अण्] ब्राह्मण, क्षत्रिय या वैश्य पिता और शूद्रा माता से उत्पन्न पुत्र।

**शौध**—वि०=शुद्ध।

**शौन**—पु० [सं० शुन्+अण्] बेचा जानेवाला अथवा बिक्री के निमित्त रखा हुआ मांस।
वि० श्वान-सम्बन्धी। कुत्ते का।

**शौनक**—पुं० [सं०शुनक्+अण्] एक वैदिक आचार्य और ऋषि जो शुनक ऋषि के पुत्र थे।

**शौनायन**—पु० [स० शुन+फक्—आयन] एक गोत्रप्रवर्तक ऋषि का नाम।

**शौनिक**—पु० [स० शुन+ठक्—इक] १ मांस बेचनेवाला। कसाई। २ शिकारी। ३. आखेट। शिकार।

**शौनिक शास्त्र**—पु० [स० ष०त० स०] वह शास्त्र जिसमे शिकार खेलने, घोड़ों आदि पर चढ़ने की विद्या का वर्णन हो।

**शौनिकायन**—पु० [स० शौनिक+फक्—आयन] वह जो शुनक के गोत्र मे उत्पन्न हुआ हो।

**शौन**—पु० [स० शोभा+अण्] १ देवता। २. राजा हरिश्चन्द्र की वह कल्पित नगरी जो आकाश मे मानी गई है। ३. चिकनी सुपारी।

**शौभांजन**—पु० [सं० शोभाजन+अण्] शोभांजन। सहिजन।

**शौभायन**—पु० [स० शुभ+फक्—आयन] प्राचीन भारत की एक योद्धा जाति।

**शौभिक**—पु० [स० शोभा+ठक्—इक] ऐन्द्रजालिक। जादूगर।

**शौभ्रायण**—पु० [सं० शुभ्र+फक्—आयन] १. एक प्राचीन देश। २. उक्त देश का निवासी।

**शौभ्रेय**—वि० [स० शुभ्रा+ठक्, एय] शुभ्र वस्तु या व्यक्ति-संबंधी।
पुं० एक प्राचीन योद्धा जाति।

**शौरसेन**—पु० [स० शूरसेन+अण्] मथुरा के आस-पास के प्रदेश का नाम।

**शौरसेनिका**—स्त्री० [सं० शौरसेन+कन्—टाप्—इत्व]=शौरसेनी।

**शौरसेनी**—स्त्री० [स०] शौरसेन प्रदेश की एक प्रसिद्ध प्राचीन प्राकृत साहित्यिक भाषा जिसमें आधुनिक खड़ी बोली का विकास माना गया है।

**शौरि**—पुं० [सं० शूर+इञ्] १. विष्णु। २. कृष्ण। ३. बलदेव। ४. वसुदेव। ५. शनैश्चर ग्रह।

**शौरि-रत्न**—पुं० [सं० ष० त० स०] नीलम।

**शौर्प**—वि० [सं० शूर्प+अण्] १. शूर्प। सूप-संबंधी। २. सूप द्वारा नापा हुआ।

**शौरिक**—पु० [सं० शूरिक+अण्] शूरसक प्रदेश मे पाया जानेवाला काले रंग का एक प्रकार का हीरा।
वि० शूरिक सम्बन्धी। शूरिक का।

**शौर्मिक**—वि० [स०]=शौर्य।

**शौर्य**—पु० [स० शूर-ष्यञ्] १. शूर होने की अवस्था, धर्म या भाव। शूरता। २. पराक्रम। शूरतापूर्ण कोई कृत्य। ३. नाटकों में भारभटी नाम-की वृत्ति।

**शौलायन**—पु० [सं० शूल+फक्-आयन] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

**शौल्क**—वि० [सं० शुल्क-अण्] शुल्क-संबंधी। शुल्क का।

**शौल्किक**—पुं० [सं० शुल्क+ठक्+इक] प्राचीन भारत मे वह अधिकारी जो लोगों से शुल्क लेता था। शुल्काध्यक्ष।

**शौल्किकेय**—पुं० [स० शौल्किक+ठक्-एय] एक प्रकार का विष।

**शौल्क**—पु० [सं० शुल्क+अण्] १. सौंफ। शतपुष्पा। २. सुल्फा नाम का साग।

**शौल्विक**—पु० [सं० शुल्व+ठक्-इक] १. प्राचीन भारत की एक वर्ण संकर जाति। २. उक्त जाति का व्यक्ति। ३. कबेरा। ठठेरा।

**शौवन**—पुं० [सं० श्वन्+अण्] १. कुत्ते का स्वभाव। २. कुत्ते का मांस। ३. कुत्तों का झुंड।
वि० १. श्वान-संबंधी। कुत्ते का। २. जिसमें कुत्तों के से गुण हों।

**शौवापद**—वि० [सं० श्वापद+अण्] श्वापद-सबधी। जंगली जानवरों का।

**शौहर**—पुं० [फा०] खाविंद। पति।

**श्नुष्टि**—स्त्री० [सं० श्नुष्+क्तिन् वत्व-ष्टुत्व] वैदिक काल में, समय का एक परिमाण।

**श्मशान**—पु० [सं० ब० स०, ष० त० स०] १. मुरदे या शव जलाने का स्थान। मसान। मरघट। २. कब्रिस्तान। ३. लाक्षणिक अर्थ मे, ऐसा स्थान जो बिलकुल उजड़ा हुआ हो।

**श्मशान-कालिका**—स्त्री० [स० ष० त० स०] तांत्रिकों के अनुसार काली का एक रूप जिसका पूजन मांस-मछली खाकर, मद्य पीकर और नगे होकर श्मशान में किया जाता है।

**श्मशानपति**—पु० [सं० ष० त० स०] १. श्मशान के स्वामी, शिव। २. एक प्रकार के पुराने ऐंद्रजालिक।

**श्मशान-भैरवी**—स्त्री० [स० मध्यम० स०] १. श्मशान में रहनेवाली देवियों में से हर एक। (तंत्र) २. दुर्गा।

**श्मशानवासिनी**—स्त्री० [सं० श्मशान√वस् (रहना)+णिनि-ङीप्] काली।

**श्मशानवासी (सिन्)**—पुं० [सं० श्मशान्-वासिन्-वीर्य, नलोप] १. महादेव। शिव। २. चांडाल। ३. भूत-प्रेत।
वि० श्मशान मे रहनेवाले।

**श्मशान-वैतास**—पुं० [सं० मध्य० स०] एक भूत-योनि जिसके संबध मे प्रसिद्ध है कि वह श्मशानों में रहती है और मुरदों का मांस खाती है।

**श्मशान-वैराग्य**—पु० [सं० सप्त० त०] वह क्षणिक वैराग्य जो श्मशान मे मृत शरीरो को जलाते हुए देखकर संसार की असारता के सम्बन्ध मे मन में उत्पन्न होता है।

**श्मशान-साधन**—पुं० [सं० सप्त० त०] तांत्रिकों की एक प्रकार की साधना जो कुछ विशिष्ट महीनों मे रात के समय श्मशान मे किसी मृत शरीर की छाती पर बैठकर की जाती है।

**श्मश्रु**—पुं० [सं० श्म√श्रि (रहना)+उस्] दाढी और मूँछें।

**श्मश्रुकर**—पुं० [स० श्मश्रु√कृ (करना)+अच्] नाई। नापित। हज्जाम।

**श्मश्रुमुखी**—वि० [सं० ब० स०] दाढ़ी-मूँछोंवाली (स्त्री)।

**श्मश्रुल**—वि० [स० श्मश्रु+लनच्] दाढ़ी-मूँछोंवाला।

**श्याम**—वि० [स० श्यै+मक् ब० स०] १. काला और नीला मिला हुआ (रंग)। २. काला। कृष्ण। ३. हलका काला। सांवला।
पु० १. श्री कृष्ण का एक नाम, जो उनके शरीर के श्याम वर्ण होने के कारण पड़ा था। २. प्रयाग के अक्षयवट का एक नाम। ३. संगीत मे, एक प्रकार का राग जो श्रीराग का पुत्र कहा गया है। ४. बादल। मेघ। ५ कोयल पक्षी। ६. प्राचीन भारत में कन्नौज के पश्चिम का एक प्रदेश। ७. साँवाँ नामक कदन्न।

**श्यामकंठ**—पुं० [स० ब० स०] १ शिव। २. मोर। मयूर। ३ नील कठ नामक पक्षी।

**श्यामक**—पु० [स० श्याम-+कन्] १ साँवाँ नामक कदन्न। २ गन्ध-तृण। राम-कपूर। ३. भारत के पूर्व का श्याम नामक देश।

**श्याम-कर्ण**—पु० [स० ब० स०] ऐसा घोड़ा जिसका शरीर सफेद और कान काले हों। ऐसा घोड़ा बहुत बढ़िया समझा जाता है।
वि० शुभ्र।

**श्यामकाकोला**—स्त्री० [स० ब० स०] गाँडर दूब।

**श्याम-कृष्ण**—वि० [सं० मध्य० स०] जिसका रंग कुछ कालापन लिये नीला हो।
पु० कुछ कालापन लिये हुए नीला रंग।

**श्याम-वन**—पु० [स० मध्य० स०] वनश्याम।

**श्याम-सखेना**—पु० [?] एक प्रकार का लोक गीत। (मैथिल)

**श्यामांचितामणि**—पु० [स० ब० स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**श्यामचूड़ा**—स्त्री० [सं० ब० स०] श्यामा (पक्षी)।

**श्यामता**—स्त्री० [स० श्याम+तल्-टाप्] १. श्याम होने की अवस्था, गुण या भाव। २. कालापन। कृष्णता। ३. मलिनता। ४. उदासी। फीकापन। ५. एक प्रकार का रोग जिसमें शरीर का रंग काला होने लगता है।

**श्याम-नीलांबरी**—स्त्री० [सं० ब० स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**श्यामपत्र**—पु० [सं०ब० स०] तमाल वृक्ष।

**श्यामपर्ण**—पु० [सं० ब० स०] सिरिस का पेड़। शिरीस वृक्ष।

**श्यामपर्णी**—स्त्री० [स० श्यामपर्ण-ङीप्] चाय।

**श्यामपूरवी**—पु० [सं० श्याम+हिं० पूरवी] संगीत में, एक प्रकार का संकर राग जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं, केवल मध्यम तीव्र लगता है।

**श्याम-भैरव**—पु० [स०] संगीत में, एक प्रकार का राग।

**श्याम-मंजरी**—स्त्री० [सं० उपमि० स०] उड़ीसा देश की एक प्रकार की काली मिट्टी जिसका वैष्णव तिलक लगाते हैं।

**श्यामल**—वि० [सं० श्याम+लच्] १. श्याम वर्ण का, काला। साँवला। पुं० १. पीपल। २. काली मिर्च। ३. भ्रमर। ४. काला रंग।

**श्यामलता**—स्त्री० [सं० श्यामल+तल्-टाप्] १. श्यामल होने की अवस्था, गुण या भाव। साँवलापन। कालापन।

**श्यामलांगी**—स्त्री० [सं० उपमि० स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**श्यामला**—स्त्री० [सं० श्यामल+टाप्] १. अश्वगंधा। २. कटभी। ३. जामुन। ४. कस्तूरी। ५. पार्वती का एक नाम।
वि० सं० श्यामल का स्त्री०।

**श्यामलिका**—वि० [सं०] नीली।

**श्यामलिमा**—स्त्री० [सं० श्यामल+इमनिच्] श्यामलता।

**श्यामली**—स्त्री०=श्यामला।

**श्याम-शबल**—पु० [स० द्व० स०] पुराणानुसार यम के अनुचर दो कुत्ते जो पहरा देने का काम करते हैं।

**श्याम-शर**—पुं० [सं०] एक प्रकार की ईख जो गुणकारक और अच्छी मानी जाती है।

**श्याम-शालि**—पु० [सं० मध्यम० स०] काला शालिधान्य।

**श्याम सुंदर**—पु० [स० उपमि० स० कर्म० स०] १. श्रीकृष्ण का एक नाम। २. एक प्रकार का बड़ा वृक्ष।

**श्यामांग**—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० श्यामांगला] जिसका शरीर कृष्ण वर्ण का हो। काले रंग के अंगोंवाला।
पु० बुध ग्रह।

**श्यामांगी**—स्त्री० [सं० श्यामांग-ङीप्] नीली दूब।

**श्यामा**—वि० स्त्री० [सं० श्याम+टाप्] श्याम रंग वाली। काली। २. तपाये हुए सोने के रंग वाली।
स्त्री० १. राधा या राधिका का एक नाम। २. कालिका का एक नाम। ३ काले रंग का एक प्रसिद्ध पक्षी जिसका स्वर बहुत मधुर होता है। ४. सोम लता। ५. कस्तूरी। ६. यमुना नदी। ७. काले रंग की गौ। ८. सोलह वर्ष की तरुणी। ९. सुन्दरी स्त्री। १०. एक प्रकार की लता। ११. हलदी। १२. सोमराजी। बकुची। १३. गुग्गुल। १४. तुलसी। १५. कस्तूरी। १६. लता कस्तूरी। मुश्कदाना। १७. गोरोचन। १८ हर्रे। १९. काली निसोथ। २०. प्रियंगु। २१. नील। २२. भद्रमोथा। २३. हरी दूब। २४. गिलोय। गुडुच। २५. पाषाण भेदी। बटपत्री। २६. पिप्पली। २७ कमलगट्टा। २८. विधारा। २९. घीक्वार। ३०. काली गदहपूरना। ३१. मेढ़ासिंगी। ३२ बांदा। ३३. कोयल नामक पक्षी। ३४. सांवा नामक अन्न। ३५. रात्रि। रात। ३६. मादा कबूतर। कबूतरी। ३७. छाया।

**श्यामाक**—पुं० [सं० श्यामा+कन्] साँवाँ नामक कदन्न।

**श्यामायन**—पुं० [सं० ब० स०] विश्वामित्र के एक गुण जो गोत्र-प्रवर्तक ऋषि थे।

**श्यामायनी**—पुं० [सं० श्यामायनि+ङीष् नलोप] १. वैशंपायन के शिष्यों का एक सम्प्रदाय। २. उक्त सम्प्रदाय का अनुयायी।

**श्यामा-रजनी**—स्त्री०=रजनीगंधा (पौधा और फूल)।

**श्यामिका**—स्त्री० [सं० श्यामा+कन्-टाप् इत्व] १. कालापन। श्यामता। २. हलकी काली धारी या रेखा। ३. युवावस्था में ऊपरी होंठ पर उभरने वाली मूँछों की रेखा। ४. काला रंग। ५. मलिनता। ६. मल। मैल। ७. ऐब। खराबी। दोष। बुराई।

**श्यामित**—भू० कृ० [सं० श्याम+इतच्] काला किया हुआ।

**श्यामेक्षु**—पुं० [सं० कर्म० स०] काली ईख। कजली ईख।

**श्याल**—पुं० [सं०√श्यै (प्राप्त होना)+कालन् वाहुल०] १ पत्नी का भाई। साला। २. बहनोई।
पुं०=शृगाल।

**श्यालक**—पुं० [सं० श्याल+कन्] [स्त्री० श्यालिका] किसी की पत्नी का भाई। साला।

**श्याल कांटा**—पुं० [सं० श्याल+हिं० काँटा] सत्यानाशी। भड़भाँड़।

**श्यालकी**—स्त्री० [सं० श्यालक-ङीष्] किसी की पत्नी की बहन। साली।

**श्याली**—स्त्री० [स० श्याल-ङीष्] साली।

**श्याव**—वि० [सं०√श्यै+कन्] [भाव० श्यावता] कालापन लिये पीला। कपिश।
पुं० उक्त प्रकार का रंग जो काले और पीले रंग के योग से बनता है। कपिश।

**श्याव-दंत**—पुं० [सं० ब० स०] दाँतों का एक रोग जिसमें रक्त मिश्रित पित्त से दाँत जलकर काले, पीले या नीले हो जाते हैं।
वि० काले रंग के दाँतोंवाला।

**श्येत**—वि० [सं०√श्यै (गमनादि)+क्तन्वुक्] श्वेत। सफेद।

**श्येन**—पुं० [सं० श्यै+इनन्] १. बाज (पक्षी)। २ हिंसा। ३ पीला रंग। ४. दोहे का एक भेद जिसमें दो गुरु और दस लघु मात्राएँ होती हैं।

**श्येन-कर्म**—पुं० [स० उपमि० स०] किसी काम में होनेवाली उतनी ही तेजी और दुढता जितनी बाज के शिकार पर झपटने मे होती है।

**श्येन-व्यूह**—पुं० [स० मध्य० स०] एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना।

**श्योनाक**—पुं०[सं०√श्यै (गत्यादि)+निपा०ओनाक सिद्ध] सोनापाड़ा।

**श्वंचन**—पु० [स०√श्वच्+ल्युट्-अन] १ डोला करना। २. मुक्त करना।

**श्वः**—पुं०=स्वर्ग।

**श्रद्ध**—वि० [स० श्रत्√धा (रखना)+अङ] श्रद्धा करनेवाला। श्रद्धावान्।

**श्रद्धांजलि**—स्त्री० [सं० श्रद्धा-अंजलि मध्य० स०] किसी पूज्य या बड़े व्यक्ति के संबंध में श्रद्धा और आदरपूर्वक कही जानेवाली बातें।

**श्रद्धा**—स्त्री० [स०] [वि० श्रद्धालु, श्रद्धेय] १. किसी काम या बात की प्रबल इच्छा या उत्कट वासना। २ गर्भवती स्त्री के मन में उत्पन्न होती रहनेवाली अनेक प्रकार की इच्छाएँ और वासनाएँ। दोहद। ३. आचार, धर्म आदि के क्षेत्र में किसी की अच्छी चीज या बात (जैसे—ईश्वर, धर्म, मोक्ष, स्वर्ग आदि) अथवा पूज्य और बड़े लोगों के प्रति मन में रहनेवाली आदरपूर्ण आस्था या भावना, अथवा उनके प्रति होनेवाला विश्वास। ४. बौद्ध धर्म में, बुद्ध, धर्म और संघ के प्रति होनेवाला उक्त प्रकार का विश्वास। ५. शुद्धाचरण आदि के द्वारा मन में होनेवाली प्रसन्नता। ६. कर्दम मुनि की कन्या जो अत्रि ऋषि की पत्नी थी। ७ वैवस्वत मनु की पत्नी जो कामदेव और रति की कन्या थी। कामायनी।

**श्रप्य**—पुं०=श्राप।

**श्रम**—पुं० [सं०√श्रम्+घञ् न वृद्धि.] [वि० श्रमिक, भू० कृ० श्रमित, कर्ता श्रमी.] १ कोई ऐसा शारीरिक या मानसिक काम जिसे लगातार कुछ समय तक करते करते शरीर मे थकावट या शिथिलता आने लगती हो। शरीर को थकानेवाला काम। परिश्रम। मेहनत। (लेबर) क्रि० प्र०—उठाना।—करना।—पड़ना।—होना।

**मुहा०—श्रम साध्य**=(क) उक्त प्रकार का कोई कठिन काम करना। (ख) किसी काम या बात का अभ्यास करना। उदा०—शकुंति हेतु जोगी श्रम (श्रम) साधे असुर विरौधै पावें।—सूर। २. जीविका-निर्वाह या धन-उपार्जन के लिए किया जानेवाला उक्त प्रकार का कोई काम। ३. उक्त प्रकार के काम करनेवालों का वर्ग या समूह। ४ हाथ में लिये हुए किसी काम में पड़नेवाली मशक्कत। (लेबर, उक्त सभी अर्थ के लिए) ५. क्लांति। थकावट। ६. दौड़-धूप और प्रयत्न। प्रयास। ७. थकावट के कारण शरीर से निकलने-वाला पसीना। ८ साहित्य में, एक प्रकार का सचारी भाव जिसमे कोई काम करते करते मनुष्य थककर शिथिल हो जाता है। ९ कसरत। व्यायाम। १०. अस्त्र-शस्त्र आदि चलाने का अभ्यास। ११. इलाज। चिकित्सा। १२. स्वेद। रज। १३ तपस्या।

**श्रम-कार्यालय**—पुं० [स० मध्य० स०] श्रमिकों की सख्या, स्थिति सबंधी जानकारी देनेवाला राजकीय कार्यालय। (लेबर ब्यूरो)

**श्रमणा**—स्त्री० [सं०√श्रम (श्रम् करना)+ल्युट्-अन टाप्] १ सुदरी स्त्री। २ सुदर्शना ओषधि। ३. गोरखमुडी। ४. जटामासी।

**श्रमणी**—स्त्री० [सं० श्रमण-ङीप्] बौद्ध सन्यासिनी।

**श्रमना**—अ० [स० श्रम] श्रमित होना। थकना। उदा०—सूखे से, कसे से, सकबके से, सके से, थके से, भूले से, भ्रमे से, भभरे से, भकुआने से।—रत्नाकर।

**श्रम-विभाजन**—पुं० [स० मध्यम० स०] अर्थशास्त्र में, किसी कार्य के अलग अलग अगों की क्रिया, रचना आदि के सम्पादन के लिए अलग अलग व्यक्ति नियत करना। (डिस्ट्रीब्यूशन आफ लेबर)

**श्रम-विवाद**—पुं० [स० मध्यम० स०] श्रमिको के वेतन, अधिक लाभाश तथा अन्य प्रश्नों के सबध में मालिकों से होनेवाला विवाद या झगड़ा। (लेबर डिस्प्यूट)

**श्रम-संघ**—पुं० [स० ष० त० स०] कारखानों आदि में काम करनेवाले श्रमिकों का संघ जो उनके स्थिति-सुधार तथा हित-रक्षा की ओर ध्यान रखता है। (लेबर यूनियन)

**श्रमिक-कल्याण-कार्य**—पु० [स० ष० त० स०] श्रमिकों की भलाई के लिए किये जानेवाले कार्य। जैसे—स्वास्थ्य रक्षा, साफ और हवादार मकानों की व्यवस्था आदि। (लेबर वेलफेयर)

**श्रमिक-संघ**—पुं० [स० ष० त० स०]=श्रम-सघ।

**श्रवण**—पुं० [सं०√श्रि+ल्युट्-अन] आश्रय।

**श्रवण**—पुं० [सं०√श्रु+ल्युट्-अन] [वि० श्रवणीय] १. सुनने की क्रिया या भाव। सुनना। २. देवताओं के चरित्र, कथाएँ आदि सुनना जो कि नवधा भक्ति में से एक प्रकार की भक्ति है। ३. सुनने की इंद्रिय। कान। ४. उक्त इन्द्रिय के द्वारा प्राप्त होनेवाला ज्ञान। ५ ज्योतिष में अश्विनी आदि २७ नक्षत्रों में से बाइसवाँ नक्षत्र जिसमे तीन तारे हैं और जिसका आकार तीर की तरह माना गया है।

**श्रवण-दर्शन**—पुं० [सं० ब० स०] साहित्य में, वह अवस्था जब कोई किसी के गुण सुनकर ही उसके प्रति मन में अनुरक्त होता है।

**श्रवण-द्वादशी**—स्त्री० [स० मध्य० स०] भाद्रपद के शुक्ल पक्ष की ऐसी द्वादशी जो श्रवण नक्षत्र में पड़ती हो। कहते हैं कि भगवान् का वामन अवतार ऐसी ही द्वादशी को हुआ था इसीलिए यह पुण्य तिथि मानी जाती है।

**श्रवणपुर**—पुं० [स०] कान में पहनने का ताटक नामक गहना।

**श्रवणेंद्रिय**—स्त्री० [स० मध्य० स०] सुनने की इन्द्रिय। कान।

**श्रव्य**—वि० [स०√श्रु+यत्] [भाव० श्रव्यता] १. जो सुना जा सके या सुनाई देता हो। २. सुनने के योग्य फलतः प्रशसनीय।

**श्रव्यता**—स्त्री० [स० श्रव्य+तल्-टाप्] श्रव्य होने या सुने जा सकने की अवस्था या भाव। (आडिबिलिटी)

**श्रांत**—वि० [सं०√श्रम्+क्त] [भाव० श्राति] १. अधिक श्रम करने के कारण थका हुआ। २. खिन्न। दुखी। ३ जितेन्द्रिय। ४ शान्त। ५. जो सुख-भोग से तृप्त हो चुका हो।

पु० तपस्वी।

**श्राद्ध**—पुं० [स० श्रद्धा+अण्] १. वह काम जो श्रद्धापूर्वक किया जाय। २. सनातनी हिन्दुओ मे पितरों या मृत व्यक्तियो के उद्देश्य से किये जानेवाले पिंड-दान, ब्राह्मण-भोजन आदि कृत्य जो उनके प्रति श्रद्धा प्रकट करने के लिए किये जाते हैं। ३ आश्विन मास का कृष्ण पक्ष जिसमें विशिष्ट रूप से उक्त प्रकार के कृत्य करने का विधान है। पितृ-पक्ष। ४. कोई काम या बात बहुत ही बुरी तरह से बिगाडते हुए करने की क्रिया या भाव। (व्यग्य) जैसे—अपनी इस रचना मे तो उन्होने कविता का श्राद्ध ही किया है। ५. प्रीति। ६ विश्वास।

वि० श्रद्धा से युक्त।

**श्राद्ध-देव**—पुं० [स० मध्य० स०] १. यमराज। २. विवस्वान्। ३ वैवस्वत मनु। ४. ब्राह्मण।

**श्रावक**—पुं० [स०√श्रु+ण्वुल्-अक] [स्त्री० श्राविका] १ बौद्ध सन्यासी। २. जैन सन्यासी। ३ जैन धर्म का अनुयायी। जैनी। ४. नास्तिक। ५. दूर से आनेवाला शब्द। ६ कौआ। ७. छात्र। शिष्य।

वि० श्रवण करने या सुननेवाला। श्रोता।

**श्रावकयान**—पुं० [स०]बौद्धो के हीनयान का शिष्टाचारसूचक नाम।

**श्रावण**—वि० [स० श्रावणी+अण्] १. श्रवण-सबधी। कान-सबधी। २. श्रवण नक्षत्र-संबधी। श्रवण नक्षत्र का।

**पद—श्रावण वर्ष**। (देखें)

३ श्रावण नक्षत्र मे उत्पन्न।

पु० १. चाद गणना के अनुसार वह महीना जिसकी पूर्णिमा को श्रवण नक्षत्र होता और जो असाढ़ तथा भादों के बीच मे पडता है। सावन। २. उक्त मास की पूर्णिमा। ३. श्रवणेंद्रिय का विषय अर्थात् आवाज या शब्द। ४. पुराणानुसार योगियों के योग में होनेवाले पाँच प्रकार के विघ्नों में से एक प्रकार का विघ्न या उपसर्ग जिसमें योगी हजार योजन तक के शब्द ग्रहण करके उनके अर्थ हृदयगम करता था। ५. पाखड।

**श्रावण वर्ष**—पुं० [सं० मध्य० स०] ज्योतिष की गणना में, एक प्रकार का

वर्ष जो उस दिन से माना जाता है जिस दिन श्रवण या धनिष्ठा नक्षत्र में बृहस्पति उदित होता है। फलित ज्योतिष के अनुसार ऐसे वर्ष में साधारण लोग धन-धान्य से सुखी रहते हैं; परन्तु दुष्ट और पाखंडी बहुत ही दुःखी रहते हैं।

**आवणिक**—पुं० [सं० श्रावणी+ठन्—इक] गुप्त काल में, वह कर्मचारी या सेवक जो न्यायालय में वाद उपस्थित होने पर वादी, प्रतिवादी और साक्षी को बुलाने के लिए जोर से आवाज लगाता था।

**आवणी**—स्त्री० [सं० श्रावण—ङीष्] श्रावण मास की पूर्णिमा को होनेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य जिसमें यज्ञोपवीत का पूजन भी होता है।

**आविका**—स्त्री० [स० श्रु (सुनना)+णिच्—ण्वुल् अक-इत्व—टाप्] स० श्रावक का स्त्री० रूप।

**आवित**—भू० कृ० [सं० श्रु (सुनना)+णिच्-क्त] सुनाया हुआ।

**आव्य**—वि० [स०√श्रु+ण्यत्] [भाव० श्राव्यता] १. जो सुना जा सके। सुनाई पड़ने के योग्य। २ जो इतना आवश्यक या उपयोगी हो कि लोग उसे सुनना पसंद करें। ३ जो बिलकुल स्पष्ट सुनाई पड़ता हो।

**श्रित**—भू० कृ० [स०√श्रि (सेवा करना)+क्त] १. आश्रय या शरण के लिए आया हुआ। २. रक्षित। ३. सेवित। ४. पका हुआ।

**श्रितवान् (वत्)**—वि० [स०√श्रि (सेवा करना)+क्तवत्—नुम्, दीर्घ] १. आश्रयदाता। २ सेवक।

**श्रिति**—स्त्री० [सं०√श्रि (सेवा करना)+क्तिन्] आश्रय। सहारा।

**श्री**—स्त्री० [स०√श्रि+क्विप्] १ विष्णु की पत्नी, लक्ष्मी। २ सरस्वती। ३ सिद्धि। ४. धन-दौलत। संपत्ति। ५. ऐश्वर्य। ६. वैभव। ६. धर्म, अर्थ और काम तीनों का समूह। त्रिवर्ग। ७. कीर्ति। यश। ८. शोभा। सौंदर्य। ९ कांति। चमक। १० अधिकार। ११. कमल। १२. सफेद चंदन। १३. लौंग। १४. ऋद्धि नामक ओषधि। १५ मस्तक पर ऊर्ध्व पुंड्र के बीच में लगाई जानेवाली लंबी रेखा। १६. स्त्रियों का माथे पर पहनने की बेंदी नामक गहना। १७. घृतसरल नामक वृक्ष। १८. सामुद्रिक के अनुसार पैर के तलुए में होनेवाली एक प्रकार की शुभ रेखा। १९. बेल का पेड़ और फल। २०. षाड़व जाति की एक रागिनी जो सूर्यास्त के समय गाई जाती है। वि० १. योग्य। २. शुभ। ३. सुन्दर। ४. श्रेष्ठ। ५. एक प्रकार का आदरसूचक विशेषण जो पुरुषों के नाम के पहले लगाया जाता है। जैसे—श्री नारायणदास।

पु० १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. कुबेर। (वि०) ४. एक प्रसिद्ध वैष्णव सम्प्रदाय। ५. एक प्रकार का एकाक्षरी छंद या वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में एक गुरु वर्ण होता है। जैसे—नो। थी। थी। ही। ६. संगीत में, ६ रागों के अन्तर्गत सम्पूर्ण जाति का एक राग जो शरद् ऋतु में गाया जाता है। कहते हैं कि यह राग गाने से सूखा वृक्ष भी हरा हो जाता है। ७. बैल।

**श्रीकंठी**—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**श्रीकरी**—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**श्रीकांत**—पुं० [सं० ष० त०] विष्णु।

**श्रीकृष्ण**—पुं० [सं० ब० स० या मध्यम० स०] एक प्रकार का व्रत जिसमें केवल ओफल (बेल) खाकर रहते हैं।



**श्रीगणेश**—पुं० [सं० मध्य० स०] किसी कार्य का आरंभ या सूत्रपात (जो पहले प्रायः 'श्रीगणेशाय नमः' कहकर किया जाता था)।

**श्रीधर**—पुं० [सं०] विष्णु।

**श्रीफल**—पु० [सं० ब० स०] १. बेल। २ नारियल। ३. शरीफा। ४. शिरनी। ५ आंवला। ६ कच्ची सुपारी। ७ द्रव्य। धन।

**श्रीबल**—पुं०=श्रीवास

**श्रीमंडप**—पुं० [सं० मध्य० स०] प्राचीन भारत में, धवलगृह का वह भाग जिसमें राजा अपने अतिथियों से मिलते थे। (प्रेजेन्स चैम्बर)

**श्रीमंत, श्रीमान्**—वि० [सं०] १. श्री से युक्त। २ धनवान्। सम्पन्न। ३. 'श्री' की तरह प्रयुक्त एक आदरसूचक विशेषण।

**श्रीमालवी**—स्त्री० [स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**श्रीमुख**—पु० [स० ब० स०] १. विष्णु का मुख अर्थात् वेद। २. सुशोभित या सुन्दर मुख।

**श्रीरंजनी**—स्त्री० [सं०] संगीत में, काफी ठाठ की एक रागिनी।

**श्रील**—वि० [स० श्री+लच्] १ शोभायुक्त। २. जो अश्लील न हो। ३. धनवान्।

**श्रुत**—भू० कृ० [सं०√श्रु+क्त] १ सुना हुआ। २ फलत: प्रसिद्ध।

**श्रुतावान**—पु० [स० ष० त०] ब्रह्मवाद।

**श्रुतानुश्रुत**—पु० [स०] इधर-उधर से या दूसरे लोगों से सुनी हुई ऐसी बात जिसकी प्रामाणिकता अनिश्चित हो। (हियरसे)

**श्रुतार्थ**—पुं० [स० कर्म० स०] जबानी कही या सुनी हुई बात।

**श्रुति**—स्त्री० [स०√श्रु+क्तिन्] १ सुनने की क्रिया या भाव। श्रवण करना। सुनना। २. सुनने की इन्द्रिय। कान। ३ कही या सुनी हुई बात। ४. आवाज। शब्द। ५. अफवाह। किंवदन्ती। जनश्रुति। ६. उक्ति। कथन। ७ भारतीय आर्यों और सनातनी हिन्दुओं की दृष्टि में चारों वेद जिनमें उनके विश्वास के अनुसार सृष्टि के आरंभ से चला आया हुआ सारा अपौरुषेय और पवित्र ज्ञान भरा है। (स्मृति से भिन्न)

**विशेष**—परवर्ती काल में उपनिषदों की गिनती भी (श्रुति) में होने लगी।

८. चारों वेदों के आधार पर, चार की संख्या का सूचक शब्द। ९ भाषा-विज्ञान में, वह ध्वनि जो किसी शब्द का उच्चारण करने के समय एक वर्ण या स्वर से दूसरे वर्ण या स्वर तक पहुँचने के समय प्राय. अज्ञात तथा अस्पष्ट रूप से मध्यवाले अवकाश में होती है। १० संगीत शास्त्र में, उक्त के आधार पर वह विशिष्ट प्रकार की ध्वनि जो किसी स्वर का उच्चारण करने में आंशिक रूप से सहायक होती है।

**विशेष**—संगीत शास्त्र के आचार्यों का मत है कि नाभि के नीचे की ब्रह्म-ग्रंथि में जो वायु रहती है, उसके स्फुरण से २२ नाड़ियों के द्वारा २२ प्रकार की अलग अलग ध्वनियाँ होती हैं जो पारिभाषिक क्षेत्र में २२ श्रुतियों के नाम से प्रसिद्ध हैं। संगीत के सातों स्वर कई कई श्रुतियों के योग से उत्पन्न होते हैं। यथा—तीव्रा, कुमुद्वती, मृदा और वृंदावती के योग से षड्ज; पद्मावती, रंजनी और रतिका के योग से गांधार, वज्रिका, प्रसारिणी, प्रीति और मार्जनी के योग से मध्यम, क्षिति, रक्ता, सदीपनी और आलापिनी के योग से पंचम, मदंती, रोहिणी और रम्या के योग से धैवत; तथा उग्रा और क्षोभिणी के योग से निषाद स्वर बनता है।

११. ज्यामिति में, समकोणिक त्रिभुज के समकोण के सामने की भुजा। १२ नाम। संज्ञा। १३ पांडित्य। विद्वत्ता। १४. विद्या। १५. अत्रि ऋषि की कन्या जो कर्दम ऋषि की पत्नी थी। १६. दे० 'श्रुत्यानुप्रास'।

**श्रुति-कटु**—वि० [सं० सप्त० त०] जो सुनने में बहुत अप्रिय या बुरा लगता हो। कर्कश।

**श्रुति-धर**—पुं० [सं० ष० त०] [भाव० श्रुतिधरता] १. वह जो एक बार सुनकर ही हर बात याद कर ले। बहुत बड़ा पंडित या विद्वान्।

**श्रुति-धरता**—स्त्री० [सं० श्रुतिधर+तल्-टाप्] श्रुतिधर होने का भाव।

**श्रुति-माल**—पुं० [सं० ब० स०] ब्रह्मा।

**श्रुति-मधुर**—वि० [सं० सप्त० त०] जो सुनने में भला और मीठा लगता हो।

**श्रुति-रंजनी**—स्त्री० [स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**श्रुति-सुख**—वि० [सं० सप्त० त०] सुनने में मधुर। सुमधुर।

**श्रुति-हर**—वि० [सं० श्रुति√हृ+अच्] कानों को अपनी ओर आकृष्ट करनेवाला; अर्थात् श्रुति-मधुर।

**श्रुवा**—पुं०=स्रुवा।

**श्रूयमाण**—वि० [स०√श्रु (सुनना)+शानच् मुक्] १ जो सुना जाय या सुनाई दे। २ प्रसिद्ध।

**शृंखल**—पुं०=शृखला।

**शृंखला**—स्त्री०[सं० शृंख√छा+क टाप्] १ एक दूसरी में पिरोई हुई बहुत-सी कड़ियों की लड़ी। जंजीर। सिकड़ी। २. लगातार एक क्रम से आने या होनेवाली बहुत सी घटनाएँ, चीजें, बातें आदि। (चेन, उक्त दोनों अर्थों के लिए) ३. एक ही प्रकार के कार्यों, वस्तुओं आदि का एक के बाद एक करके चलनेवाला क्रम। माला। (सीरीज) जैसे—कार्य-शृंखला। ४. एक ही दिशा, रूप, विभाग आदि से कुछ दूर तक चलता रहनेवाला क्रम। माला। श्रेणी। (रेंज) ५ क्रम। सिलसिला। ६. कमर में पहनने की करधनी। तागड़ी। ७. साहित्य में, एक प्रकार का अलंकार जिसमें पहले एक क्रम से कुछ चीजें या बातें गिनाई जाती हैं; और तब उसी क्रम से उनका वर्णन किया जाता है।

**शृंग-नाद**—पुं० [सं०] शृंगी या सिंगी नाम का बाजा। उदा०—सुने गिरि पथ में गुंजारित शृंगनाद की ध्वनि चलती।—प्रसाद।

**शृंगार-सामग्री**—स्त्री० [ष० त०] अनेक प्रकार के सुगंधित चूर्ण, तेल आदि ऐसे पदार्थ जिनका उपयोग कुछ लोग विशेषतः स्त्रियाँ अपने अंग, बालों, शरीर की रंगत आदि का सौंदर्य बढ़ाने के लिए करती हैं। अंगराग। (कास्मेटिक्स)

**श्रेढिक**—वि० [स०] १. श्रेढ़ी-संबंधी। २ श्रेढ़ी से युक्त। २. क्रमशः आगे बढ़ता हुआ। प्रगतिशील। (प्रोग्रेसिव)

**श्रेढ़ी**—स्त्री० [सं० श्रि√ढौक्+क, पृषो० ढीत्] [वि० श्रेढ़िका] १. गणित में, संख्याओं आदि का नियमित क्रमिक रूप से घटते या बढ़ते चलना। २. किसी कार्य या बात का निरंतर बढ़ते चलना। (प्रोग्रेशन)

**श्रेणी**—स्त्री० [सं० श्रि√नि+क्विप्, ह्रीच्] १. अवली। कतार। पंक्ति। २ लगातार चलता रहनेवाला क्रम या सिलसिला। शृंखला। ३. एक ही तरह की ऐसी चीजों या बातों का वर्ग जो कुछ दूर तक एक ही रूप में चलता रहे। (सीरीज) ४. प्राचीन भारत में, एक ही प्रकार के व्यवसाय करनेवाले व्यापारियों का संघटन। (कार्पोरेशन) ५. कार्य, योग्यता आदि के विचार से पदार्थों, व्यक्तियों आदि का होनेवाला वर्ग या विभाग। दरजा। (क्लास) ६ जीना। सीढ़ी। ७ दल। समूह। ८ जंजीर। सिकड़ी। ९. किसी चीज का अगला भाग या सिरा। १० पानी भरने का डोल।

**श्रेणीकरण**—पुं० [सं० ष० त०] [भू० कृ० श्रेणीकृत] १ श्रेणी के रूप में रखने या लाने की क्रिया। वर्गीकरण। २. क्रम से या व्यवस्थित रूप से रखना या लगाना।

**श्रेणी-बद्ध**—पुं० [सं०] प्राचीन भारत में, ऐसा राष्ट्र या जनपद जिसमें श्रेणियों या पंचायतों की प्रधानता हो। (कौ०)

**श्रेणी-प्रधान**—पुं० [सं० ष० स०] प्राचीन भारत में, वह जिसे श्रेणी या व्यापारी जो किसी श्रेणी के अन्तर्गत हो और उसके मनष्यों के अनुसार काम करता हो। (कौ०)

**श्रेय (स्)**—वि० [स०√श्रि+इयसुन्-आदेशदृच्] १ किसी की तुलना में अधिक बढ़कर। बेहतर। २ उत्तम। श्रेष्ठ। ३ वांछनीय। मंगलकारक। ४. शुभ। ५. कीर्ति या यश देनेवाला।

पुं० १. अच्छापन। अच्छाई। उत्तमता। २ कल्याण। मंगल। ३. शुभ आचरण। ४. कर्ता को मिलनेवाला यज्ञ। ५. आध्यात्मिक क्षेत्र में ऐसा धार्मिक कृत्य जो मोक्ष की प्राप्ति में सहायक होता हो। 'प्रेय' का विपर्याय।

**श्रेय मार्ग**—पुं० [सं० मध्य० स०] धार्मिक क्षेत्र में, ऐसा काम या मार्ग जो मनुष्य को स्वर्ग पहुँचाता या मोक्ष दिलाता हो।

**श्रेष्ठ**—वि० [स०√श्रि+इष्ठन, आदेश] १ गुण, मान आदि के विचार से बढ़कर। जैसे—श्रेष्ठ विचार। २ (व्यक्ति) जो उच्च मानवीय गुणों से सम्पन्न हो।

पुं० १. ब्राह्मण। २. राजा। ३ विष्णु। ४ कुबेर।

**श्रेष्ठाश्रम**—पुं० [सं० कर्म० स०] गृहस्थाश्रम जिसमें शेष तीनों आश्रमों का पालन होता है।

**श्रेष्ठि-सार्थ**—पुं० [सं० ष० त० स०] प्राचीन भारत में, वह चबूतरा जिसपर बैठकर सेठ-साहूकार आपस का लेन-देन करते थे।

**श्रोणि**—स्त्री० [सं० श्रोण+इन्] १. कटि। कमर। २. नितंब। चूतड़। ३. पेड़ू। ४. मार्ग। पथ।

**श्रोत**—पुं० [स०√श्रु (सुनना)+असुन्-नुट्] १. कर्ण। कान। २ इन्द्रिय (जिनके मार्ग से शरीर के मल तथा आत्मा निकलती हैं)। ३ हाथी का सूँड़। ४ नदी का वेग या स्रोत।

**श्रोतव्य**—वि० [स०√श्रु (सुनना)+तव्य] १ जो सुना जाय। जो सुना जाने के योग्य हो।

**श्रोत्र**—पुं० [स० श्रोत्र+अण्] १. कर्ण। कान। २ वेदों का ज्ञान। ३. वेद।

**श्रोत्र-ग्राह्य**—वि० [स० तृ० त०] जिसका ग्रहण या ज्ञान श्रोत्र या कानों के द्वारा हो सकता हो। जो सुनाई पड़ता हो या पड़ सकता हो। (ऑडिटरी)

**श्रोत्रिय**—पुं० [सं० छन्दस्+घ-इय, श्रोत्रादेश] प्राचीन भारत में, वह विद्वान् जो छन्द आदि कंठस्थ करके उनका अध्ययन और अध्यापन करता था।

**श्रोण***—पुं० १. - श्रवण। २. =शोण।

**श्रौत**—वि० [सं० श्रुति+अण्] १. श्रुति-संबंधी। २. श्रुतियों में कहा या बताया हुआ। ३. कान-संबंधी। कान का।

**श्रौती**—स्त्री० [सं०] साहित्य में, पूर्णोपमा के दो भेदों में से एक। दूसरा भेद 'आर्थी' कहलाता है।

**श्रौत्र**—पुं० [सं० श्रोत्र+अण्] १. श्रोत्रिय-कर्म। २. श्रोत। कान। ३. वेदों का ज्ञान।
वि० कान संबंधी।

**श्लथन**—पुं० [सं०√श्लथ्+ल्युट्-अन] मानसिक अशांति मिटाने के लिए तथा शरीर में फुरती लाने के लिए अंगों को ढीला छोड़ना।

**श्लिष्ट**—भू० कृ० [सं०√श्लिष्+क्त] १. किसी के साथ जुड़ा, मिला या लगा हुआ। २. जो श्लेषण या संश्लेषण की क्रिया के अनुसार किसी से मिलकर एक हो गया हो। संश्लिष्ट (सिन्थेटिक)। ३. साहित्यिक क्षेत्र में, जो श्लेष से युक्त हो, अर्थात् दो अर्थोंवाला।

**विशेष**—श्लिष्ट और द्व्यर्थक में भेद यह है कि श्लिष्ट का प्रयोग तो ऐसे पदों, वाक्यों, शब्दों आदि के संबंध में होता है जो जान-बूझकर इस दृष्टि से कहे गये हों कि सुभीते के अनुसार उनका दूसरा अथवा कोई और अर्थ भी निकाला या लगाया जा सके, परन्तु द्व्यर्थक का प्रयोग ऐसे पदों, वाक्यों, शब्दों आदि के संबंध में होता है जिनके साधारणतः और स्वभावतः दो अर्थ होते हैं।

**श्लीपद**—पुं० [सं० ब० स० पृषो०] फीलपाँव। (दे०)

**श्लेष**—पुं० [सं०√श्लिष्+घञ्] [वि० श्लेषक, श्लेषी, भू० कृ० श्लेषित, श्लिष्ट] १. संयोग करना। मिलाना। २. किसी के साथ जोड़ना या लगाना। ३. गले लगाना। आलिंगन।

**श्लेष्म**—पुं० [सं०] श्लेष्मा।

**श्लेष्मा**—पुं० [सं० श्लिष+मनिन्, श्लेष्मन्] १. शरीर में का कफ नामक विकार जो शरीर की तीन धातुओं में से एक माना गया है। बलगम। २. बाँधने की डोरी या रस्सी। ३. लिसोड़ा।

**श्लोक**—पुं० [सं०√श्लोक्+अच्] १. आवाज। ध्वनि। शब्द। २. पुकारने का शब्द। आह्वान। पुकार। ३. प्रशंसा। स्तुति। ४. कीर्ति। यश। ५. किसी गुण या विशेषता का प्रशंसात्मक कथन या वर्णन। जैसे—शूर-श्लोक अर्थात् शूरता का वर्णन। ६. संस्कृत के अनुष्टुप् छंद का पुराना नाम। ७. आज-कल संस्कृत का कोई छंद या पद्य।

**श्वः**—पुं० [सं० श्वस्] आनेवाला दूसरा दिन। आगामी कल।

**श्वपच**—वि० [सं० श्व√पच्+अच्] [स्त्री० श्वपची] कुत्ते का मांस खानेवाला।
पु० प्राचीन भारत में, एक प्रकार के चांडाल जिनकी उत्पत्ति भिन्न भिन्न स्मृतियों में अलग अलग वर्णों के माता-पिता से कही गई है।

**श्वबंधक**—पुं० [सं०] =श्वपच (चंडाल)।

**श्वभ्रचर**—पुं० [सं० (श्वभ्र)+चर] अफ्रीका और अरब में पाया जानेवाला एक प्रकार का भीषण बंदर जिसका थूथन और दाँत प्रायः कुत्तों के से होते हैं। (बेबून)

**श्वसन**—पुं० [सं०√श्वस् (साँस लेना)+ल्युट् अन] साँस लेने की क्रिया।

**श्वसित**—पुं० [सं०√श्वस् (साँस लेना)+क्त] १. श्वास। २. आह।
वि० १. श्वास निकालने या ग्रहण करनेवाला। श्वास युक्त। जीवित। २. आह भरनेवाला।

**श्वसुर, श्वश्रुरक**—पुं० [सं०] किसी के पति या पत्नी का पिता। ससुर।

**श्वान**—पुं० [सं०√श्वि+कनिन्] कुत्ता।

**श्वानी**—पुं० [सं०] [स्त्री० श्वानी] कुत्ता।

**श्वास**—पुं० [सं०√श्वस्+घञ्] १. प्राणियों का नाक से हवा खींचकर अन्दर फेफड़ों या हृदय तक पहुँचाना और फिर बाहर निकालना जो जीवन का मुख्य लक्षण है। साँस। (वेग) २. श्वासनली का एक प्रसिद्ध रोग जिसमें साँस बहुत जोर जोर से चलती और रोगी को बहुत कष्ट होता है। दमा। (एज्मा)

**श्वासनली**—स्त्री० [सं०] सिर, गले और छाती के अंदर की वह नली जिससे प्राणी साँस लेते और निकालते हैं। (ट्रैकिया)

**श्वासावाम**—पुं० [सं०] १. साँस लेने में होनेवाली कठिनता या कष्ट। २. कठिनता या कष्ट से लिया जानेवाला साँस।

**श्वासावरोध**—पुं० [सं० श्वास+अवरोध] साँस के आने-जाने में होनेवाली बाधा। दम घुटना। (एस्फिक्सिया)

**श्वासी (सिन्)**—पुं० [सं०√श्वस् (साँस लेना)+णिच्-णिनि, श्वास इनि वा] १. श्वास लेनेवाला प्राणी। २. वायु।

**श्वित**—वि० [सं०√श्वित् (सफेदी)+क्विप्]=श्वेत।
स्त्री० [सं० श्वित+इनि] श्वेतता। सफेदी।

**श्वेत**—वि० [सं०√श्वेत+अच् वा घञ्] [भाव० श्वेतता, श्वेतिमा]

१. जिसमे किसी प्रकार का रंग या वर्ण दिखाई न देता हो। बिना किसी विशिष्ट रंग का। चाँदी, दही आदि की तरह का। उजला। धवल। सफेद।

**विशेष**—आधुनिक विज्ञान के मत से सातों रगों के मेल से ही चीजें श्वेत या सफेद दिखाई देती हैं, क्योंकि सूर्य की किरणें जो सफेद दिखाई देती हैं; वस्तुतः सातो रगों से युक्त होती हैं।

२. निर्मल। साफ। स्वच्छ। ३. कलक, दोष आदि से रहित। ४. उज्वल वर्ण का। गोरा।

पु० १. सफेद रंग। २. चाँदी। रजत। ३. शख। ४ कौड़ी। कपर्दक। ५. सफेद घोड़ा। ६ सफेद बादल। ७. सफेद जीरा। ८. शिव का एक अवतार। ९ वराह की सफेद मूर्ति या रूप। १०. पुराणानुसार एक पर्वत जो रम्य वर्ष और हिरण्य वर्ष के बीच में माना गया है। ११. पुराणानुसार एक द्वीप। १२. आयुर्वेद मे, शरीर की त्वचा की तीसरी तह की संज्ञा। १३. स्कन्द का एक अनुचर। १४. शोभाजन। महिजन। १५. शुक्र ग्रह का एक नाम जो उसके सफेद रग के कारण पड़ा है। १६. एक केतु या पुच्छल-तारा।

**श्वेतकुंजर**—पु० [स० कर्म० स०] इन्द्र का ऐरावत नामक हाथी।

**श्वेतकुष्ठ**—पु० [स० कर्म० स०] रक्त-विकार के कारण होनेवाला एक रोग, जिसमे शरीर पर सफेद दाग या धब्बे बनने और बढ़ने लगते हैं। यह कोढ़ मे गिना जाता है। (ल्यूकोडरमा)

**श्वेतकेतु**—पुं० [स० कर्म० स०] गौतम बुद्ध।

**श्वेतच्छद**—पु० [सं० ब० स०] हंस।

**श्वेत-द्युति**—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा।

**श्वेत-द्वीप**—पु० [स० कर्म० स०] वैकुंठ।

**श्वेत-पत्र**—पु० [सं० मध्य० स०] आधुनिक राजनीति मे, वह राजकीय विज्ञप्ति जो किसी महत्त्वपूर्ण राजनीतिक चर्चा, वार्ता आदि के सबंध में (प्रायः सफेद कागज पर लिखकर) प्रकाशित की जाती है। (ह्वाइट पेपर)

**श्वेत-प्रदर**—पुं० [स० कर्म० स०] स्त्रियो के प्रदर नामक रोग का एक प्रकार जिसमे योनि से सफेद रग का गाढ़ा और बदबूदार पानी निकलता है और जिसके कारण वे बहुत क्षीण तथा दुर्बल हो जाती हैं। (ल्यूकोरिया)

**श्वेतरथ**—पु० [स० ब० स०] ब्रह्मा जिनकी सवारी हंस है।

**श्वेतवाजी**—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा।

**श्वेतवाह**—पु० [स० ब० स०] १ चन्द्रमा। २. इन्द्र। ३ अर्जुन। ४. कपूर।

**श्वेतसार**—पु० दे० 'जलांक'।

**श्वेतांक**—पु० [स० ब० स०] अनाजों, आलूओं, मटरो आदि मे पाया जानेवाला एक प्रकार का गधहीन सफेद खाद्य पदार्थ जिसका उपयोग औषधों और शिल्पीय कार्यों में भी होता है। चावलो मे से यही माड़ के रूप मे निकलता है। (स्टार्च)

**श्वेतिमा** (मन्)— स्त्री० [स० श्वेत+इमनिच् टाप्] श्वेतता।

## ष

**ष**—नागरी वर्णमाला का इकतीसवाँ व्यंजन जो भाषा-विज्ञान तथा व्याकरण के अनुसार ऊष्म, मूर्धन्य, अघोष, महाप्राण तथा ईषद्विवृत है। अवधी में इसका उच्चारण 'ख' की तरह होता है।

**षंजन**—पु० [स०] १. आलिंगन। २. मिलन।

**षंढ**—पु० [स०√षन्+ढ, पृषो० पत्व] १. साँड। बैल। २ नपुसक। ३. ढेर। राशि। ४. भेड़ों आदि का झुड। ५ पशुओं का समूह।

**षंडक**—पु० [सं० षण्ड+कन्] नपुसक।

**षंडता**—स्त्री० [सं० षंड+तल्+टाप्] नपुसकता।

**षंडत्व**—पु० [सं० षण्ड+त्व] नपुसकता।

**षंडयोनि**—स्त्री० [सं०] = षंडी।

**षंडाली**—स्त्री० [सं०] १. तालाब। २. व्यभिचारिणी स्त्री।

**षंडी**—स्त्री० [सं०] ऐसी स्त्री जिसमें स्त्री के मुख्य लक्षणों का अभाव हो, अर्थात् न तो जिसके स्तनों का विकास हुआ हो और न रजस्वलता होती हो। (ऐसी स्त्री पुरुष समागम के अयोग्य होती है।)

**षंढ**—पु० [सं०√षन्+ढ] १. नपुसक। २. क्लीव। ३. शिव।

**षंढा**—स्त्री० [सं० षंढ-टाप्] मरदानी औरत। (शरीर तथा स्वभाव के विचार से)

**षंढिता**—स्त्री० [सं०]=षंढयोनि।

**ष**—पु० [स०] १. केश। बाल। २. स्वर्ग। ३. बुद्धिमान्। ४. विद्वान् आदमी। ५. निद्रा। ६. अत। ७. बची हुई वस्तु। ८. हानि। ९. ज्ञान-हानि। १०. चूचुक। ११. मोक्ष। १२. गर्भ-स्राव। १३. भूण। १४. सहिष्णुता।

वि० १. विद्वान्। विज्ञ। २. बुद्धिमान्। ३. उत्तम। श्रेष्ठ।

**षट्**—वि० [स०√सो+क्विप्, +सु]जो गिनती मे पाँच से एक अधिक हो। छः।

पु० १. छः का सूचक अक या संख्या। २. सगीत मे, षाडव जाति का एक राग जो सवेरे के समय गाया जाता है। ३ कुछ लोगो के मत से यह असावरी, टोडी, भैरवी आदि छ. रागिनियो के योग से बना हुआ सकर राग है।

**षट्क**—वि० [स०] १. छ. गुना। २. छठी बार होनेवाला या किया जानेवाला।

पु० १. छः का अक या संख्या। २. एक ही प्रकार की वस्तुओं का वर्ग या समूह। ३. दर्शन-शास्त्रों के अनुसार इच्छा, द्वेष, प्रयत्न, सुख, दुःख और ज्ञान का वर्ग या समूह।

**षट्-कर्म**—पु० [सं० द्वि० स०] १. शास्त्रों के अनुसार ब्राह्मणो के ये छः कर्म—यजन, याजन, अध्ययन, अध्यापन, दान और प्रतिग्रह। २. स्मृतियों के अनुसार ये छः कर्म जिनके द्वारा आपत्काल में ब्राह्मण अपना निर्वाह कर सकते हैं—उंछवृत्ति, दान लेना, भिक्षा, कृषि, वाणिज्य और महाजनी (लेन-देन)। ३. तत्र-शास्त्र के अनुसार मारण, मोहन (या वशीकरण), उच्चाटण, स्तभन, विद्वेषण और शांति ये छः कर्म। ४. योगशास्त्र मे, धौति, वस्ति, नेती, नौलिक, त्राटक, और कपाल-

भाती ये छः कर्म। ५. साधारण लोगों के लिए विहित ये छः काम जो उन्हें नित्य करने चाहिए—स्नान, संध्या, तर्पण, पूजन, जप और होम। ६. लोक-व्यवहार और बोल-चाल में व्यर्थ के झगड़े-बखेड़े या प्रपंच।

**षट्-कर्मा**—पुं० [सं० ब० स० ]षट्-कर्म करनेवाला, ब्राह्मण, तांत्रिक, योगी या गृहस्थ।

**षट्-कला**—स्त्री० [सं० ब० स०] संगीत में, ब्रह्मताल के चार मुख्य भेदों में से एक।

**षट्क-संपत्ति**—स्त्री० [सं० द्वि० स०] धर्मशास्त्र के अनुसार ये ६ कर्म—दम, शम, उपरति, तितिक्षा, श्रद्धा, समाधान।

**षट्कोण**—वि० [सं० ब० स०] छः कोणोंवाला। (हेक्सैगुलर)
पुं० ज्यामिति में छः कोणोंवाली आकृति।

**षट्-चक्र**—पुं० [सं० द्वि० स०] १. योग में ये छ चक्र—मूलाधार, स्वाधिष्ठान, मणिपुर, अनाहत, विशुद्ध और आज्ञा। २. झगड़े-बखेड़े या झंझट के काम।

**षट्-चरण**—वि० [सं० ब० स०] छः पैरोंवाला।
पुं० १. भौंरा। २. जूँ। ३. टिड्डी।

**षट्-ताल**—पुं० [सं०] संगीत में, मृदंग का एक प्रकार का ताल।

**षट-तिला**—स्त्री० [स०] माघ के कृष्ण पक्ष की एकादशी जिस दिन तिल-दान करने का माहात्म्य है।

**षट्-दर्शन**—पुं० [स० द्वि० स०] हिन्दुओं के तत्त्व-ज्ञान सम्बन्धी ये छः दर्शन या शास्त्र—सांख्य, योग, न्याय, वैशेषिक, पूर्व-मीमांसा और उत्तर मीमांसा।

**षट्-दर्शनी**—पुं० [सं० ब० स०] वह जो हिन्दुओं के षट् दर्शनों का अच्छा ज्ञाता या पंडित हो।

**षट्-पद**—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० षट्पदी] छः पैरोंवाला।

**षट्पदी**—स्त्री० [सं०न०स०] छप्पय छंद जिसमें छः पद या चरण होते हैं।

**षट्-प्रज्ञ**—वि० [स० ब० स०] चारों पुरुषार्थ अर्थात् लोकार्थ और तत्त्वार्थ का ज्ञाता।

**षट्-भुज**—पुं० [सं० ब० स०] ज्यामिति में, वह क्षेत्र या आकृति जिसकी छः भुजाएँ हों। (हेक्सागन)

**षट्-रस**—पुं० [सं० द्वि० स०] खाने-पीने की चीजों के ये छः रस या स्वाद—मधुर, लवण, तिक्त, कटु, कषाय और अम्ल।

**षट्-राग**—पुं० [सं० द्वि० स०] १. संगीत के ये छः मुख्य राग—भैरव, मलार, श्री, हिंडोल, मालकोश और दीपक। २. व्यर्थ का झगड़ा या बखेड़ा।

**षट्-रिपु**—पुं० [सं० द्वि० स०] धर्मशास्त्र के अनुसार ये छः मनोविकार जो मनुष्य के शत्रु माने गये हैं—काम, क्रोध, भय, मोह, लोभ और अहंकार या (किसी किसी के मत से) मत्सर।

**षट्-वर्ग**—पुं० [सं० द्वि० स०] १. एक ही तरह की छः चीजों का वर्ग या समूह। २. फलित ज्योतिष में, क्षेत्र होरा, द्रेक्काण, नवमांश, द्वादशांश और त्रिंशांश का वर्ग या समूह। ३. दे० 'षट्-रिपु'।

**षड्वर्ग**—पुं० [सं०] एक प्राचीन राजर्षि जिन्हें केवल दो घड़ी की साधना से मुक्ति प्राप्त हुई थी।

**षट्-विकार**—पुं० [सं० द्वि० स०] १. दार्शनिक क्षेत्र में, प्राणियों के ये छः विकार या परिणाम—जन्म, शरीर-वृद्धि, बाल्यावस्था, प्रौढ़ता, वार्द्धक्य और मृत्यु। २.=षट्-रिपु।

**षट्-शास्त्र**—पुं० [सं०]=षट्-दर्शन।

**षडंग**—पुं० [सं० द्वि० स०] १. वेदों के ये छः अंग—शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष। २. शरीर के ये छ अंग—दो पैर, दो-हाथ, सिर और धड़।

**षडक्षरी**—पुं० [सं० द्वि० स०] रामानुज के श्री-वैष्णव सम्प्रदाय का दीक्षामंत्र जो छः अक्षरों का है।

**षडग्नि**—स्त्री० [सं०] कर्मकांड के अनुसार ये छः प्रकार की अग्नियाँ—गार्हपत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ्य और औपासनाग्नि।

**षडज**—पुं०=षड्ज (स्वर)।

**षडानन**—वि० [सं० ब० स०] छ मुखोंवाला। जिसके छः मुँह हों।
पुं० १. कार्तिकेय जिनके छः मुँह कहे गये हैं। २ संगीत में, स्वर-साधना की एक प्रणाली जो आरोही में इस प्रकार है—सा रे ग म प ध रे ग म प ध नि, ग म प ध नि सा और अवरोही में इसके विपरीत है।

**षड्-अक्षरी**—स्त्री०=षडक्षरी।

**षड्गुण**—पुं० [स० द्वि० स०] १. छः गुणों का समूह। २. प्राचीन भारतीय राजनीति में राज्य के ये छः गुण या कार्य—सन्धि, विग्रह, यान (चढ़ाई), आसन (विराम), द्वैधीभाव और संश्रय।

**षड्ज**—पुं० [स० षट्√जन्] संगीत के सात स्वरों में से पहला स्वर जो साधारणतः 'सा' कहलाता है।
**विशेष**—संगीत-शास्त्र के अनुसार इस स्वर का उच्चारण नासा, कण्ठ, उर, तालु, जीभ, और दाँतों के सम्मिलित प्रयत्न से होता है, इसलिए इसका नाम षड्ज पड़ा है।

**षड्-दर्शन**—पुं० =षट्-दर्शन।

**षड्-भाग**—पुं० [सं०] भूमि की उपज का वह छठा अंश जो भूमि-कर के रूप में लिया जाता था।

**षड्भाषा**—स्त्री० [स०ब०स०]संस्कृत, प्राकृत, अपभ्रंश, शौरसेनी, मागधी और पैशाची शब्दों के योग से बनी हुई एक प्राचीन मिश्र भाषा जिसका रूप चन्दबरदाई कृत पृथ्वीराज रासों में देखने को मिलता है।

**षड्यंत्र**—पुं० [सं०] १. वह योजना जो कुछ लोग सामूहिक रूप से कोई अनुचित तथा अपराधपूर्ण काम करने के लिए बनाते हैं। २. कोई बड़ा परिवर्तन करने के लिए गुप्त रूप से की जानेवाली कार्रवाई। (कान्सपिरेसी)
क्रि० प्र०—रचना।

**षड्रस**—पुं० [सं०] षट्-रस।

**षड्रिपु**—पुं० [सं०]=षट्-रिपु।

**षड्वर्ग**—पुं० [सं०] षट्-वर्ग।

**षड्विंदु**—पुं० [सं० ब० स०] १. विष्णु। २. गुबरैले की तरह का एक प्रकार का कीड़ा जिसकी पीठ पर बुंदकियाँ होती हैं।

**षड्विकार**—पुं०=षट्-विकार।

**षण्मुख**—वि० [सं०]=षडानन।

**षष्टि**—वि० [सं० षट्+दशति, नि० सिद्धि] जो गिनती में पचास से दस अधिक हो। साठ।

स्त्री० साठ की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।

**षष्टिक**—पु० [स०] साठी नामक धान।

**षष्टिका**—स्त्री० [स०] साठी धान।

**षष्ठ**—वि० [स० षष्+डट्–थुक्] गिनती मे छः के स्थान पर पड़नेवाला। छठा।

**षष्ठान्न**—पु० [सं०] वह अन्न जो तीन दिन का व्रत रखकर उन तीन दिनों मे केवल एक बार खाया जाय।

**षष्ठी**—स्त्री० [सं० षष्ठ+ङीप्] १ चांद्र मास के शुक्ल या कृष्ण पक्ष की छठी तिथि। छठ। २. संस्कृत व्याकरण में संबंध सूचक विभक्ति। ३ बच्चे के जन्म से छठे दिन होनेवाला कृत्य। छठी। ४. सोलह मातृकाओं मे एक मातृका। ५. दुर्गा का एक नाम।

**षांढ**—पु० [सं०] शिव।

**षांढ्य**—पु० [स० ] षंढता।

**षाड़व**—पु० [स० षष्√अज्+अच्+अण्] संगीत में, ऐसा राग जिसमे केवल छः स्वर लगते हों और कोई एक स्वर न लगता हो।

**षाड़व-ओड़व**—पु० [स०] संगीत मे, ऐसा राग जो आरोही मे षाडव और अवरोही मे ओडव हो।

**षाड़व-संपूर्ण**—पु० [स०] संगीत मे ऐसा राग जो आरोही में षाडव और अवरोही मे संपूर्ण हो।

**षाड्गुण्य**—पु० [स०] १ किसी संख्या को छः से गुणा करने पर प्राप्त होनेवाला गुणनफल। २. षड्गुण (देखें) होने की अवस्था या भाव।

**षाण्मातुर**—वि० [स० षण्मातृ+अण्, उत्व] जिसकी छः माताएँ हों। पुं० कार्तिकेय।

**षाण्मासिक**—वि० [स० षण्मास+ठक्] १. अवस्था में छः महीनेवाला। २ जिसकी अवधि छः मास की हो। जैसे—षाण्मासिक चंदा। पु० मृतक का होनेवाला वह श्राद्ध जो उसकी मृत्यु के छः महीने बाद किया जाता है। छः-माही।

**षाण्मुख**—वि० [स०] छः मुखोंवाला। पु० कार्तिकेय।

**षाष्टिक**—वि० [स०] षष्ठी-संबंधी।

**षोडश**—वि०[स० षोडशन्+डट्] जो गिनती मे दस से छः अधिक हो। सोलह।
पुं० सोलह की संख्या।

**षोडशक**—पुं०[स० षोडश+कन्] सोलह।

**षोडश कला**—स्त्री० [स० द्वि० स०] चन्द्रमा की सोलहों कलाएँ। (दे० 'कला')

**षोडश गण**—पु० [सं० द्वि० स०] दार्शनिक क्षेत्र में, पाँचों ज्ञानेन्द्रियों, पाँचों कर्मेन्द्रियों, पांचों भूतों और मन का वर्ग या समूह।

**षोडश दान**—पु०[स० द्वि० स०] धार्मिक क्षेत्र मे, नीचे लिखी १६ चीजों का एक साथ किया जानेवाला दान—भूमि, आसन, जल, वस्त्र, अन्न, दीपक, पान, छत्र, सुगंधित द्रव्य, पुष्प माला, फल, शास्त्र, खड़ाऊँ, गौ, सोना और चाँदी।

**षोडश पूजन**—पुं० [स०]=षोडशोपचार।

**षोडश मातृका**—स्त्री० [स० द्वि० स०] इन सोलह मातृकाओं (एक प्रकार की देवियों) का वर्ग या समूह—गौरी, पद्मा, शची, मेधा, सावित्री, विजया, जया, देवसेना, स्वधा, स्वाहा, शान्ति, पुष्टि, धृति, तुष्टि, मातृ और आत्म-देवता।

**षोडश शृंगार**—पुं० [सं०] सम्पूर्ण शृंगार जिसमें सोलह बातें होती है—उबटन लगाना, स्नान करना, वस्त्र धारण करना, बाल सँवारना, अंजन लगाना, सिंदूर भरना, महावर लगाना, भाल पर तिलक बनाना, ठोड़ी पर तिल बनाना, मेंहदी रचाना, सुगन्धित द्रव्यो का प्रयोग करना, अलंकार धारण करना, पुष्पहार पहनना, पान खाना, होठ रँगना और मिस्सी लगाना।

**षोडश-संस्कार**—पु०[स०] गर्भाधान से लेकर मृत्यु तक के सोलह संस्कार। विशेष दे० 'संस्कार'।

**षोडशांग**—वि० [स०] जिसके १६ अंग या अवयव हो।
पु० सोलह गंध-द्रव्यों से तैयार किया हुआ धूप।

**षोडशांशु**—पु० [स० ब० स०] शुक्र ग्रह।

**षोडशाह**—पु० [स० ब० स०] १. सोलह दिन तक किया जानेवाला एक प्रकार का उपवास। २. मृतक की षोडशी (देखें) नामक कृत्य।

**षोडशिक**—वि० [स० षोडश+ठक्] १. सोलह से संबंध रखनेवाला। २. सोलहवाँ।

**षोडशी**—वि० [सं०] सोलह वर्षों की (युवती)।
स्त्री० १. सोलह वर्षों की युवती स्त्री। २ वह कृत्य जो किसी के मरने के दसवें या ग्यारहवें दिन होता है। (हिन्दू) ३. दस महाविद्याओं में से एक महाविद्या। ४ नीचे लिखी १६ वस्तुओं का वर्ग या समूह—ईक्षण, प्राण, श्रद्धा, आकाश, वायु, जल, अग्नि, पृथ्वी, इन्द्रिय, मन, अन्न, वीर्य, तप, मंत्र, कर्म और नाम।

**षोडशोपचार**—पु० [स० कर्म० स०] पूजन के सोलह अंगों या कृत्य—आसन, स्वागत, अर्घ्य, आचमन, मधुपर्क, स्नान, वस्त्राभरण, यज्ञोपवीत, चंदन, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य, ताम्बूल, परिक्रमा और वंदना।

**ष्ठीवन**—पु० [सं०√ष्ठीव्+ल्युट्] [भू० कृ० ष्ठ्यूत] १. थूकने की क्रिया या भाव। २. थूक।

**ष्ठीवी**—स्त्री० [सं०] =ष्ठीवन।

**ष्ठ्यूत**—भू० कृ० [स०√ष्ठिव्+क्त, ऊठ्] थूका हुआ।

**ष्ठ्यूति**—स्त्री० [स०√ष्ठिव्+क्तिन् ऊठ्] थूकने की क्रिया या भाव।

## स

**स**—नागरी वर्णमाला का बत्तीसवाँ व्यंजन जो भाषा-विज्ञान तथा व्याकरण के अनुसार ऊष्म, दन्त्य, अघोष, महाप्राण तथा ईषद्विवृत है।

**सं**—उप० [स० सम्] एक संस्कृत उपसर्ग जो कुछ शब्दों के पहले लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—१. संग, सहित या साथ; जैसे—संगम, संभाषण, संयुक्त आदि। २. अच्छी या पूरी तरह से; जैसे—संतोष, संन्यास, संपादन आदि। ३ उत्कृष्टता या सुन्दरता, जैसे—संस्तुति।
**विशेष**—कभी-कभी इनके योग से मूल शब्द का अर्थ प्रायः ज्यों का त्यों बना रहता है, और उसमे कोई विशेषता नही आती। जैसे—संप्राप्ति।
† अव्य० द्वारा। से।

**सँहतना**†—स०=सँतना।

**सँजपना†**—स०=सौंपना।

**संका†**—स्त्री०=संका।

**संकट**—पुं० [सं० सम्√कट् (बरसना या ढकना)+अच्] १. सँकरा रास्ता। तंग राह। २. विशेषतः जल या स्थल के दो भागों को जोड़नेवाला तंग रास्ता। जैसे—गिरि-संकट, जल-संकट, स्थल-संकट। ३. दो पहाड़ों के बीच का रास्ता। दर्रा। ४. ऐसी स्थिति जिसमें दोनों ओर कष्टों या विपत्तियों का सामना करना पड़ता हो और बीच में निश्चितता या सुखपूर्वक रहने के लिए बहुत ही थोड़ा अवकाश रह गया हो। ५ आफत। विपत्ति।
वि० सँकरा। जैसे—संकट मूल।

**संकट-चौथ**—स्त्री० [सं० संकट+हिं० चौथ] माघ मास के कृष्ण पक्ष की चतुर्थी।

**संकट-भूल**—वि० [स०] जिसका भूँह सँकरा हो।

**संकट-संकेत**—पुं० [स० ष० त०] विपत्ति या संकट में पड़े हुए लोगों का वह सांकेतिक संदेश जो आस-पास के लोगों को अपनी रक्षा या सहायता के लिए भेजा जाता है। (एस० ओ० एस०) जैसे—डूबते या जलते हुए जहाज का संकट-संकेत।

**संकटा**—स्त्री० [स० संकट+टाप्] १ एक प्रसिद्ध देवी जो संकट या विपत्ति का निवारण करनेवाली मानी जाती है। २. फलित ज्योतिष में, अष्ट योगिनियों में से एक।

**संकटापन्न**—भू० कृ० [स० द्वि० त०] १ संकट या कष्ट में पड़ा हुआ। २ संकटपूर्ण।

**संकटी (टिन्)**—वि० [स० संकट+इनि] जो संकट में पड़ा हो।

**संकत**†—पु०=संकेत।

**संकना**†—अ० [स० शंका] १. शंका करना। संदेह करना। २. आशंकित या भयभीत होना। डरना।

**संकर**—वि० [सं० सम्√कृ (फेंकना)+अप्] १. दो या अधिक भिन्न भिन्न तत्त्वों या पदार्थों के मेल से बना हुआ। जैसे—संकर रंग। २ दो अलग अलग जातियों, वर्णों आदि के जीवों या प्राणियों के संसर्ग से उत्पन्न। दोगला।
पुं० १. अलग अलग तरह की दो चीजों का आपस में मिलकर एक होना।
२. वह जिसकी उत्पत्ति भिन्न भिन्न वर्णों या जातियों के पिता और माता से हुई हो। दोगला। ३. साहित्य में, ध्वनि का वह प्रकार या भेद जिसमें एक ही आश्रय से कई अभिप्राय या ध्वनियाँ निकलती हों। जैसे—प्रिय के आने पर पीन स्तनों और चंचल तथा विशाल नेत्रोंवाली नायिका द्वार पर मंगल कलश और कमलों के बंदनवार का काम बिना आयास के ही संपादित कर रही थी। यहाँ स्तनों से कलशों और नेत्रों से कमलों के बंदनवार का भी भाव निकलता है। ४. साहित्य में, दो या अधिक अलंकारों के इस प्रकार एक साथ और मिले-जुले रहने की अवस्था जिसमें या तो वे एक दूसरे से अलग न किए जा सकें या जिनका उस प्रसंग में स्वतंत्र रूप सिद्ध न हो सके। (काव्यिमसचर) उदाहरणार्थ—यदि किसी वर्णन में दो या अधिक अलंकार समान रूप से घटित होते हों तो उन्हें संकर कहा जायगा। इसकी गणना स्वतंत्र अलंकार के रूप में होती है। ५. न्याय के अनुसार किसी एक ही स्थान या पदार्थ में अत्यंताभाव और समानाधिकरण का एक ही में होना। जैसे—मन में भूतत्व तो है, पर भूतत्व नहीं है, और आकाश में भूतत्व है, पर भूतत्व नहीं है। परन्तु पृथ्वी में भूतत्व भी है और भूतत्व भी है। ६. झाड़ देने पर उड़नेवाली धूल। ७ आग के जलने का शब्द।
†पु०=शंकर।

**संकरक**—वि० [सं० संकर+कन्] १. मिलाने या मिश्रण करनेवाला। २. संकर रूप में लानेवाला।

**संकरजात**†—पुं०=संकर्षण।

**संकर दरनी**—स्त्री० [स० शंकर+भूतणी] शंकर की पत्नी, पार्वती।

**संकरण**—पुं० [स०] १. संकर या मिश्रित करने की क्रिया या भाव। २ दो भिन्न भिन्न जातियों या वर्गों के प्राणियों, वनस्पतियों आदि का संयोग करा के किसी अच्छी या नई जाति का प्राणी या वनस्पति उत्पन्न करने की क्रिया, प्रणाली या भाव। (क्रास ब्रीडिंग)

**संकरता**—स्त्री० [स० संकर+तल्+टाप्] १ संकर होने की अवस्था, धर्म या भाव। सांकर्य। २ दोगलापन।

**संकर पद**—पुं० [स०] भाषा में, ऐसा समस्त पद जो दो भिन्न भिन्न जातियों या भाषाओं के शब्दों के योग से बना हो।

**संकर समास**—पुं० [स०] व्याकरण में, दो ऐसे शब्दों का समास जिनमें से एक शब्द किसी एक भाषा का और दूसरा किसी दूसरी भाषा का हो।

**संकरा**—वि० [स० सङ्कीर्ण] [स्त्री० संकरी] १ (रास्ता) जिसकी चौड़ाई कम हो। २. (वस्त्र) जो पहनने पर तंग आता हो या जो बहुत मुश्किल से पहना जाता हो। तंग।
†पु० कठिनता, विपत्ति आदि की स्थिति।
††पुं० [स० शृङ्खला] सिकड़।

**संकरा**—पु०=शंकराभरण (राग)।

**संकराना**†—स० [हिं० सँकरा+आना (प्रत्य०)] सकुचित करना। तंग करना।
स० [हिं० साँकल] अन्दर बन्द करके बाहर से साँकल लगाना।
†अ० सँकरा या तंग होना।

**संकरित**—भू० कृ० [स० संकर+इतच्] किसी के साथ मिला या मिलाया हुआ।

**संकरिमा**—पुं० [स० संकर ?] एक प्रकार का हाथी।

**संकरी (रिन्)**—पुं० [स० संकर+इनि] वह जो भिन्न वर्ण या जाति के पिता और माता से उत्पन्न हो। संकर। दोगला।
†स्त्री०=शंकरी।

**संकरीकरण**—पुं० [स० संकर+च्वि√कृ (करना)+ल्युट्—अन] १. दो या अधिक अलग अलग जातियों, जीवों, पदार्थों आदि के योग से नया जीव या पदार्थ उत्पन्न करने की क्रिया। २ धर्म-शास्त्र में, नौ प्रकार के पापों में से एक जो जातियों या प्राणियों में वर्ण-संकरता उत्पन्न करने से लगता है।

**संकर्षण**—पुं० [सं०] १. अपनी ओर खींचने की क्रिया या भाव। २ खेत में हल जोतना। ३. ग्यारह रुद्रों में से एक रुद्र। ४. श्रीकृष्ण के भाई बलदेव का एक नाम। ५. वैष्णवों का एक सम्प्रदाय जिसके प्रवर्तक निम्बार्क जी थे। ६ कानून में अधिकार, उत्तरदायित्व आदि के विचार से किसी वस्तु या व्यक्ति के स्थान पर दूसरी वस्तु या व्यक्ति का रखा या नाम चढ़ाया जाना। (सबरोगेशन)

**संकर्षी (र्षिन्)**—वि०[स०√कृष्(खींचना)+णिनि अथवा सकर्ष+इनि] १. खींचने या खींचकर मिलानेवाला। २. छोटा करनेवाला।

**संकलन**—पुं० [स० सम्√कल् (गणना करना)+अच्] १. दो या अधिक चीजों को एक में मिलाना। ३. इकट्ठा करना। सकलन। ३ गणित में जोड या योग नाम की क्रिया। ४. पश्चिमी पजाब की एक प्राचीन पहाडी और उसके आस-पास का स्थान। (आज-कल का सगिला) †स्त्री० [सं० शृखला] साँकल। सिकड़ी।

**संकलन**—पु० [सं० सम्√कल्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० संकलित] १ एकत्र करने की क्रिया। संग्रह करना। जमा करना। २. काम की और अच्छी चीजें चुनकर एक जगह एकत्र करना। ३ कोई ऐसी साहित्यिक कृति जिसमें अनेक ग्रन्थों या स्थानों से बहुत-सी बातें इकट्ठी करके रखी गई हों। (कम्पाइलेशन) ४. ढेर। राशि। ५. गणित मे, योग नाम की क्रिया। जोड़।

**संकल्प**†—पु० =सकल्प।

**संकल्पना**—स० [स० सकल्प+हिं० ना (प्रत्य०)] १ किसी बात का सकल्प या दृढ़ निश्चय करना। २ धार्मिक रीति से सकल्प या मत्र-पाठ करते हुए कोई चीज दान करना। इस प्रकार छोड देना मानों सकल्प करके दान कर दिया हो। उदा०—मुख सकलपि दुख सांबर लीन्हेऊ—जायसी। ४. मन मे किसी बात की कल्पना या विचार करना। सोचना।

**संकला**†—पु० [सं० शाक] शाक द्वीप।

**संकलाना**†—स० [हिं० सकल्पना] १. धार्मिक वृत्ति से सकल्प का मत्र-पाठ करते हुए दान करना। उदा०—जब मेरे बाबा सँकलाए है हांडवो तोहारि।—लोकगीत।

**संकलित**—भू० कृ० [स० सम्√कल्+क्त] १ जिसका सकलन हुआ हो। २. जो सकलन की क्रिया से बना हो। ३ चुन या छाँटकर इकट्ठा किया हुआ। ४ (राशियों या सख्याएँ) जिसका जोड़ लगाया गया हो। ५. इकट्ठा या एकत्र किया हुआ। ६. जो थोडा-थोडा करके बढा या इकट्ठा होकर एक हो गया हो। (एग्रिगेट)

**संकल्प**—पु० [स० सम्√कृप्+घञ्,र—ल] १.कोई कार्यकरने की इच्छा जो मन मे उत्पन्न हो। विचार। इरादा। २ कोई कार्य करने का मन मे होनेवाला दृढ निश्चय। ३. सभा-समिति में किसी विषय मे विचार-पूर्वक किया हुआ पक्का निश्चय। (रिज़ोल्यूशन) ४. धार्मिक क्षेत्र मे, दान, पुण्य या और कोई देवकार्य आरभ करने से पहले एक निश्चित मत्र का उच्चारण करते हुए अपना दृढ निश्चय या विचार प्रकट करना। ५. वह मंत्र जिसका उच्चारण करते हुए उक्त प्रकार का निश्चय या विचार कार्य-रूप मे परिणत किया जाता है।

**मुहा०—(कोई चीज) संकल्प करना**=दान करना या दान करने का दृढ निश्चय करना।

**संकल्पक**—वि० [स० संकल्प+कन्] सकल्प करनेवाला।

**संकल्पना**—स्त्री० [सं०] १. सकल्प करने की क्रिया या भाव। २ शब्द, प्रतीक आदि का लगाया हुआ सामान्य से भिन्न विचारपूर्ण तथा बौद्धिक अर्थ। (कन्सेप्शन) ३ धारणा। ४. इच्छा।
स०=सकल्पना।

**संकल्पा**—स्त्री० [सं० सकल्प+टाप्] दक्ष की एक कन्या जो धर्म की भार्या थी।

**संकल्पित**—भू० कृ० [स० सकल्प+इतच्] १. संकल्प किया हुआ। २ निश्चयपूर्वक स्थिर किया हुआ। ३ जिसकी सकल्पना की गई हो।

**संकल्प्य**—वि० [स० सम्√कल्+ण्यत् वृद्धभाव] १. जिसका सकलन होने को हो या हो सकता हो। २. जो जोडा या युक्त किया जाने को हो। योग्य।

**संकष्ट**—पु० [स०] सकट (कष्ट)।

**संका**—स्त्री०=शका।

**संकाना***—अ० [स० शक्] १. शकित होना। २ भयभीत होना। डरना।
स० १. शकित करना। भयभीत करना। २ डराना।

**संकाय**—स्त्री० [स०] उच्च कोटि के अध्ययन के लिए ज्ञान-विज्ञान आदि का कोई विशिष्ट विभाग या शाखा। (फैकल्टी)

**संकायाध्यक्ष**—पु० [स०] आज-कल विश्वविद्यालयों मे किसी संकाय का प्रधान अधिकारी। (डीन आफ फैकल्टी)

**संकार**—पु० [स० सम्√कृ (करना)+घञ्] १ कूडा-करकट। २ वह धूल जो झाड देने से उडे। ३ आग के जलने का शब्द।
स्त्री० [हिं० सँकारना] १. सँकारने की क्रिया या भाव। २ इशारा। सकेत।

**सँकारना**†—स० [हिं० सकार+ना (प्रत्य०)] सकेत करना। इशारा करना।

**सँकारा**†—पु०=सकारा (प्रात काल)।

**संकाश**—वि० [सं० सम्√काश् (प्रकाश करना)+अच्] समस्त पदो के अत मे, सदृश्य या समान। जैसे—अग्निसकाश।
पु० १. प्रकाश। रोशनी। २. चमक। दीप्ति।
अव्य० १. सदृश। समान। २ पास। समीप।

**संकास**—वि०, पु०, अव्य०=सकाश।

**संकिरण**—वि० [स० सकृप्ट] जो अधिक चौडा न हो। सँकरा।तग।

**संकीर्ण**—वि० [स० सम्√कृ+क्त] [भाव० सकीर्णता] १ जो अधिक चौड़ा या विस्तृत न हो। सकुचित। तग। सँकरा। २ किसी के साथ मिला हुआ। मिश्रित। ३ छोटा। ४. तुच्छ। ५ नीच। ६ वर्ण-सकर। ७ लाक्षणिक अर्थ मे, जो उदार न हो। जिसमे व्यापकता न हो। जैसे—सकीर्ण विचारधारा।
पु० १ ऐसा राग या रागिनी जो दो अन्य रागो या रागिनियो के मेल से बना हो। २ विपत्ति। सकट। ३. साहित्य मे, एक प्रकार का गद्य जिसमे कुछ वृत्तगधि और कुछ अवृत्तगधि का मेल होता है।

**संकीर्णता**—स्त्री० [स० सकीर्ण+टल्+टाप्] १. सकीर्ण होने की अवस्था या भाव। २. नीचता। ३ ओछापन। क्षुद्रता।

**संकीर्तन**—पुं० [सं० सम्√कीर्त् (वर्णन करना)+ल्युट्—अन] १. भली-भाँति किसी की कीर्ति का वर्णन करना। २. ईश्वर, देवता आदि का नाम अपना या यश गाना। कीर्तन।

**संकुचक**—वि० [स०] सकुचित करने या सिकोड़नेवाला।
पु० कुछ ऐसी मछलियाँ जो सिकुड़कर छोटी और फैलकर बड़ी हो सकती हैं।

**संकुचन**—पु० [सं० सम्√कुच् (सकुचित होना)+ल्युट्–अन] १. सकुचित करने या होने की क्रिया या भाव। सिकुड़ना। २. एक प्रकार का बात रोग।

**संकुचना**†—अ०=सकुचना।

**संकुचित**—भू० कृ० [सं० सम्√कुच् (सकोच करना)+क्त] १. जिसमें संकोच हो। संकोच युक्त। लज्जित। जैसे—सकुचित दृष्टि। २. सिकुड़ा या सिकोड़ा हुआ। ३ तंग। संकरा। संकीर्ण। ४. जिसमें उदारता का अभाव हो। अनुदार।

**संकुड़ित**†—वि०=सकुचित।

**संकुरना**†—अ०=सिकुड़ना।

**संकुल**—वि० [सं० सम्√कुल् (इकट्ठा होना)+क] [भाव० सकुलता] १. सकुलित। घना। २ भरा हुआ। पूर्ण। ३. पूरा। सारा। समूचा।

पु० १ युद्ध। समर। २. झुंड। दल। ३ जन-समूह। भीड़। ४. जनता। ५ अगगत वाक्य। ६ ऐसे वाक्य जो परस्पर विरोधी हों।

**संकुलता**—स्त्री० [सं० संकुल+तल्+टाप्] संकुल होने की अवस्था या भाव।

**संकुलित**—भू० कृ० [सं० संकुल+इतच् अथवा सम्√कुल (इकट्ठा होना)+क्त वा] १. घना किया हुआ। २ भरा हुआ। ३ पूरा किया हुआ। ४. इकट्ठा किया हुआ।

**संकृष्ट**—भू० कृ० [सं० सम्√कृ (खींचना)+क्त] १. खींचकर नजदीक लाया हुआ। २. एक साथ किया हुआ।

**संकृष्टि**—स्त्री०=संकर्षण।

**संकेंद्रण**—पु० [सं०] १. चारो ओर से इकट्ठा करके एक केन्द्र पर लाना या स्थिर करना। २. मन के भाव या विचार किसी एक ही बात या विषय पर लाकर लगाना। (कान्सेन्ट्रेशन)

**संकेत**†—वि०=संकरा।

पु०=संकेत।

**संकेत**—पु० [सं० सम्√कित् (बहाना)+घञ्] १. चिह्न। निशान। २. वह चीज जो किसी को किसी प्रकार की निशानी या पहचान के लिए दी जाय। (टोकन) ३ ऐसी शारीरिक चेष्टा जिससे किसी पर अपना उद्देश्य, भाव या विचार प्रकट किया जाय। इंगित। इशारा। जैसे—आँख या हाथ से किया जानेवाला संकेत। ४. कोई ऐसी बात या क्रिया जो किसी विशेष और बँधी हुई बात या कार्य की सूचक हो। ५ किसी घटना, प्रसंग आदि पर प्रकाश डालनेवाली कोई बात। प्रतीक। ६. संकेत-स्थल। (दे०)

**संकेतकी**—स्त्री० [सं०=संकेत] आपस के व्यवहार में गोपन और गोपन के लिए स्थिर की हुई वह वार्ता-प्रणाली जिसमें साधारण शब्दों और पदों के लिए छोटे छोटे सांकेतिक शब्द बना लिए जाते हैं। व्यापारिक और राजनीतिक क्षेत्रों में प्रायः तार द्वारा समाचार और आदेश भेजने के लिए इसका उपयोग होता है। सांकेतिक भाषा। (कोड)

**संकेत-ग्रह**—पुं० [सं० ब० स०] साहित्य में, शब्द की अभिधा शक्ति से ग्रहण किया जाने अथवा निकलनेवाला अर्थ। 'विवक्षाग्रह' से भिन्न।

**संकेत-चिह्न**—पुं० [सं०] ऐसा चिह्न जिसमें प्रतीक के तहारे कोई बात दिखाई गई हो।

**संकेत चिह्न**—पु०[सं०] १ वह चिह्न जो शब्द के संक्षिप्त रूप के आगे लगाया जाता है। जैसे—पु० मे का—०। २. शब्द का संक्षिप्त रूप। जैसे—मध्य प्रदेश का सकेत चिह्न *?—म० प्र०।

**संकेतन**—पुं० [सं० सम्√कित् (बहाना)+ल्युट्–अन] १. संकेत करने की क्रिया या भाव। ३ ठहराव। निश्चय। ३ संकेत-स्थल।

**संकेतना**—अ० [सं० संकेत+हिं० ना (प्रत्य०)] संकेत या इशारा करना।

स० [सं० संकीर्ण] संकट में डालना।

**संकेत-स्थल**—पु० [सं०ष०त०] १. साहित्य मे, वह स्थल जहाँ पर प्रेमी और प्रेमिका मिलते हों। २ वह स्थान जो औरो से छिपाकर कुछ लोगो ने किसी विशेष कार्य के लिए नियत या स्थिर किया हो।

**संकेतागार**—पु० [स० ब० स०] ऐसी लिपि-प्रणाली जिसमे वर्ण-माला के अक्षर अपने शुद्ध रूप मे नही बल्कि निश्चित सकेत रूप मे लिखे जाते हैं। (साइफर)

**संकेतित**—भू० कृ० [सं० सम्√कित् (बहाना) +क्त, अथवा सकेत+इतच्] १. सकेत के रूप मे लाया हुआ। जिसके सबध मे सकेत हुआ हो। २. ठहराया हुआ। निश्चित। ३. आमत्रित।

**संकेतितार्थ**—पु० [स० सकेतित+अर्थ] शब्द या पद का सकेत रूप से निकलनेवाला अर्थ। (साधारण शब्दार्थ से भिन्न)

**संकेलना**†—स० [सं० सकुल] १ इकट्ठा करना। २ समेटना।

**संकोच**—पुं० [सं०] १. सिकुड़ने की क्रिया या भाव। २ वह मानसिक स्थिति जिसमे भय या लज्जा अथवा साहस के अभाव के कारण कुछ करने को जी नही चाहता। ३ असमजस। आगा-पीछा। ४. थोड़े मे बहुत सी बातें कहना। ५ साहित्य मे, एक प्रकार का अलंकार जिसमें 'विकास अलकार' के विरुद्ध वर्णन होता है या किसी वस्तु का अतिशय सकोच पूर्वक वर्णन किया जाता है। ६. एक प्रकार की मछली। ७ केसर।

**संकोचक**—वि० [स० सम्√कुच् (सिकुड़ना)+ण्वुल्–अक] १. संकोच करनेवाला। २ सिकोडनेवाला।

**संकोचन**—पुं० [सं० सम्√कुच्+ल्युट्–अन्] सिकुड़ने या सिकोडने की क्रिया या भाव।

**संकोचना**—स० [स० संकोच] संकुचित करना।

अ० मन मे सकोच करना। असमंजस मे पड़ना।

**संकोचित**—भू० कृ० [सं० संकोच+इतच्] १ सकोच युक्त। जिसमें संकोच हुआ हो। लज्जित। शरमिन्दा।

पुं० तलवार चलाने का एक ढग।

**संकोची (चिन्)**—वि० [सं० सम्√कुच्+णिनि, अथवा संकोच इति] १ संकोच करनेवाला। २. सिकुड़नेवाला। ३. जिसे स्वभावतः या प्रायः संकोच होता हो। सकोचशील।

**संकोचना***—अ० [सं० संकोप+हिं० ना (प्रत्य०)] कोप या कोध करना। कुद्ध होना। गुस्सा करना।

**संकोरना**—स०=सिकोड़ना।

**संक्रंदन**—पुं० [सं० सम्√क्रन्द (रोदन) +ल्युट्–अन] १ शक्र। इंद्र। २. पुराणानुसार भौत्य मनु का एक पुत्र। ३. दे० 'कंदन'।

**संक्रम**—पुं० [स०] १. सीधी अर्थात् सामने की ओर होनेवाली गति। 'विक्रम' का विपर्याय। २. सूर्य की दक्षिणायन गति। ३ दे० 'सक्रमण'।

**संक्रमण**—पु० [स० सम्√क्रम् (चलना)+ल्युट्—अन] १. आगे की ओर चलना या बढ़ना। 'विक्रमण' का विपर्याय। २ अतिक्रमण। लांघना। ३ घूमना-फिरना। ४. एक अवस्था से धीरे धीरे बदलते हुए दूसरी अवस्था मे पहुँचना। जैसे—संक्रमण काल। ५. एक के हाथ या अधिकार से दूसरे के हाथ या अधिकार मे जाना। (पासिंग) ६. सूर्य का एक राशि से निकलकर दूसरी राशि मे प्रवेश करना। ७ एक स्थिति पार करते हुए दूसरी स्थिति मे जाना या पहुँचना। ८. कीटाणु, रोग, आदि का फैलते हुए एक से दूसरे को होना।

**संक्रमण-काल**—पुं० [स० ष० त०] १. वह समय जब कोई पहले रूप से बदलकर दूसरे रूप मे आ रहा हो। २ दे० 'सक्राति'।

**संक्रमण-नाशक**—वि० [स० ष० त०] रोग के सक्रमण से बचाने या मुक्त करनेवाला। (डिसइनफ़ेक्टेंट)

**संक्रमना**†—अ० [स० नकारूप] सक्रमण करना या होना। जैसे—सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में सक्रमना।

**संक्रमित**—वि० [स० सम्√क्रम्+ठन्] १. जिसका सक्रमण हुआ या हो रहा हो। २ अंतरित या हस्तांतरित होनेवाला।

**संक्रमित**—भू० कृ० [स० सम्√क्रम्+क्त] १ जिसका या जिसमे संक्रमण हुआ हो। २ किसी मे युक्त या सम्मिश्रित किया हुआ। जैसे—सक्रमित वाक्य। ३ किसी के अन्दर पहुँचाया या प्रविष्ट किया हुआ। ४ परिवर्तित किया या बदला हुआ।

**संक्रमिता (तृ)**—वि० [स० सम्√क्रम्+तृच्] १ संक्रमण करनेवाला। २ जानेवाला। गमन करनेवाला। ३ प्रवेश करनेवाला।

**संक्रांत**—भू० [स० सम्√क्रम् (चलना)+क्त] १. दायभाग के अनुसार वह धन जो कई पीढ़ियों से चला आ रहा हो। २ दे० 'संक्राति'।

**संक्रांति**—स्त्री० [स० सम्√क्रम् (चलना)+क्तिन्] १. सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि मे जाना। २ वह समय जब सूर्य एक राशि पार करके दूसरी राशि मे पहुँचता है। ३ वह दिन जिसमे सूर्य का उक्त प्रकार का संचार होता है और इसी लिए जो हिन्दुओं मे पर्व या पुण्य-काल माना जाता है। ४ अंतरण या हस्तारण।

**संक्राम**—पु० [सं० सम्√क्रम् (चलना)+घञ्] १. कठिनाई से गगन करना। २. दुर्गम मार्ग। ३. संक्रमण।

**संक्रामक**—वि०[सं०] १. (रोग) जो या तो रोगी के संसर्ग से या पानी हवा आदि के द्वारा भी उत्पन्न होता अथवा फैलाता हो। संसर्ग से भिन्न। (कान्टेजियस)

**विशेष**—संक्रामक और संसर्गज रोगो का अंतर जानने के लिए देखें 'संसर्गज' का विशेष।

२ (काम या बात) जिसके औचित्य या अनौचित्य का विचार किये बिना और केवल दूसरो की देखादेखी प्रचलन या प्रचार होता हो। (कांटेजियस)

**संक्रामित**—भू० कृ० [सं० सम्√क्रम् (चलना)+क्त] संक्रमण के द्वारा कही तक पहुँचाया हुआ।

**संक्रीडन**—पु० [सं० सम्√क्रीडा (खेलना) करना)+ल्युट्—अन] १ क्रीड़ा करना। खेलना। २. परिहास करना।

**संक्रोल**°—स्त्री०=संक्राति।

**संक्रोश**°—पु० [सं० सं√क्रुश् (चिल्लाना)+घञ्] जोर से शब्द करना। चिल्लाना।

**संक्षय**—पुं० [सं० सम्√क्षि+अच्] १ पूरी तरह से होनेवाला नाश। २. प्रलय।

**संक्षारक**—वि० [सं०√क्षर्+ण, क्षार+कन्, सं० क्षारक] संरक्षण करनेवाला। (कोरोसिव)

**संक्षारण**—पु० [स०] [भू० कृ० संक्षारित] क्षार आदि की उत्पत्ति या योग के कारण किसी पदार्थ का धीरे धीरे क्षीण होकर नष्ट होना। (कोरोजन)

**संक्षालन**—पु० [सं० सम्√क्षल् (धोना)+णिच्+ल्युट्—अन] [भू० कृ० संक्षालित] १. धोने की क्रिया। २. वह जल जो धोने, नहाने आदि के काम मे आता हो।

**संक्षिप्त**—वि० [स०√क्षिप् (फेंकना)+क्त] १ ढेर के रूप मे आया या लगाया हुआ। २ जो सक्षेप मे कहा या लिखा गया हो। ३. (लेख, पुस्तक आदि का वह रूप) जिसमे कुछ बातें घटाकर उनका रूप छोटा कर दिया गया हो। ४. (शब्द आदि का रूप) जो लघु हो।

**संक्षिप्तक**—पुं० [स० संक्षिप्त] शब्द या पद का संक्षिप्त रूप या सकेत चिह्न। (एब्रिविएशन)

**संक्षिप्त लिपि**—स्त्री० [स० कर्म० स०] एक प्रकार की लेखन-प्रणाली जिसमे ध्वनियों के सूचक अक्षरो या वर्णों के स्थान पर छोटी रेखाओं, बिन्दुओं आदि का प्रयोग करके लिपि का रूप बहुत संक्षिप्त कर दिया जाता है। (शार्ट हैन्ड)

**विशेष**—इसमें लिपि उतनी ही जल्दी लिखी जाती है, जितनी जल्दी आदमी बोलता चलता है।

**संक्षिप्ता**—स्त्री० [स० संक्षिप्त—टाप्] ज्योतिष मे, बुध ग्रह की एक प्रकार की गति।

**संक्षिप्ति**—स्त्री० [स० सम्√क्षिप् (संक्षिप्त करना)+क्तिन्] नाटक मे चार प्रकार की आरम्भटियो मे से एक।

**संक्षेप**—पु०[स० सम्√क्षिप् (संक्षिप्त करना)+घञ्] १ थोड़े मे कोई बात कहना। २ थोड़े में कही हुई बात का रूप। ३ कम करना। घटाना। ४ लेख आदि का काट-छाँट कर कम किया हुआ रूप। समाहार। ५. चूबक पत्थर।

**संक्षेपक**—वि० [सं०] १. फेंकनेवाला। २ नष्ट करनेवाला। ३. संक्षिप्त रूप में लानेवाला।

**संक्षेपण**—पुं० [स० सम्√क्षिप् (कम करना)+ल्युट्—अन] काट-छाँटकर या और किसी प्रकार सक्षिप्त (कम या छोटा) करने की क्रिया या भाव।

**संक्षेपतः**—अव्य० [स० संक्षिप+तसिल्] सक्षेप में। थोड़े मे।

**संक्षेपतया**—अव्य० [स० सक्षेप+तल्—टाप्—टा] सक्षेप में। संक्षेपतः।

**संक्षोभ**—पुं० [सं० सम्√क्षुभ् (चंचल होना)+घञ्] १. चचलता। २. कंपन। ३. विप्लव। ४. उलट-फेर। ५. अहकार। घमंड। ६. किसी अप्रिय घटना के कारण मन को लगनेवाला गहरा आघात या धक्का। (शॉक)

**संखा**†—पुं०=शंख।

**संख बराड़**—पु० [सं० शंखद्राव] अमलबेंत।

**संख-नारी**—स्त्री० [सं० शंखनारी] एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण मे दो सगण (स, य) होते हैं। सोमराजी वृत्त।

**संखा पुली**—स्त्री० दे० 'शंखपुष्पी'।

**संखिया**—पुं० [सं० शृंगिका या शृंग विष] १. एक प्रकार की बहुत जहरीली प्रसिद्ध उपधातु जो प्रायः सफेद पत्थर की तरह होती है। २. उक्त धातु की भस्म। सोमल।

**संख्यक**—वि० [सं० संख्य+कन्] जिसकी या जिसमे सख्या हो। सख्यावाला। जैसे—अल्पसंख्यक, बहुसंख्यक।

**संख्यता**—स्त्री० [स० सख्य+तल्-टाप्] सख्या का गुण, धर्म या भाव। संख्यत्व।

**संख्यांक**—पुं० [सं० सख्या+अंक] गणित मे, कोई सख्या सूचित करनेवाला अंक। (न्यूमरल) जैसे—१ से ९ तक के अक।

**संख्यांकन**—पुं० [सं०] पदार्थों पर क्रम से संख्या-सूचक अंक लगाना या लिखना। (नम्बरिंग)

**संख्या**—स्त्री० [सं० संख्या+अङ्-टाप्] १ गिनती। तादाद। २. राशि। ३. १,२, ३ आदि अंक। ४. जोड़। ५. विचार। ६ सामयिक पत्र का कोई अंक। ७. वृद्धि।

**संख्याता**—स्त्री० [सं० सख्यात-टाप्] संख्या के सहारे बनी हुई एक तरह की पहेली।

वि० संख्या या गिनती करनेवाला।

**संख्यातीत**—वि० [सं० सख्या√अत् (गमन करना)+क्त] जिसकी गणना न हो सके। बहुत अधिक। अनगिनत।

**संख्यान**—पु० [सं० सं√ख्या (ख्यान होना)+ल्युट-अन्] १. संख्या। गिनती। २. गिनने की क्रिया या भाव। ३. ध्यान। ४. प्रकाश।

**संख्या-लिपि**—स्त्री० [सं०] वह सांकेतिक लिपि-प्रणाली जिसमे अक्षरो के स्थान पर संख्या-सूचक अंकों का प्रयोग किया जाता है।

**संख्येय**—वि० [सं० संख्या+यत्] १. जो गिना जा सके। गणनीय। २. विचारणीय।

**संग**—पुं० [सं० सङ्ग] १. मिलने की क्रिया। मिलन। २. साथ होने या रहने की अवस्था या भाव। सहवास। सोहबत। साथ।

**विशेष**—संग और साथ के अंतर के लिए दे० 'साथ' का विशेष।

३. सांसारिक विषयों या सुख-भोग के प्रति होनेवाला अनुराग या आसक्ति।

४. नदियों का संगम। ५. संपर्क। सम्बन्ध। ६. मैत्री। ७. युद्ध। लड़ाई। ८. रुकावट। बाधा।

क्रि० वि० साथ। हमराह। सहित। जैसे—कोई किसी के संग नहीं जाता।

**मुहा०—(किसी के) संग जमना**=साथ हो लेना। पीछे लगना। **(किसी को) संग लेना**=अपने साथ लेना या ले चलना। **(किसी के) संग सोना**=मैथुन या संभोग करना।

पुं० [फा०] [वि० संगी, संगीन] पत्थर। पाषाण। जैसे—संगमूसा, संगबरनर।

वि० पत्थर की तरह का। बहुत कठोर। बहुत कड़ा। जैसे—संग दिल।

**संग अंजूर**—पुं० [फा० संग+हिं० अंजूर] एक प्रकार की वनस्पति जो हिमालय पर होती है।

**संग-असवद**—पु० [फा० सग+अ० असवद] काले रंग का एक बहुत प्रसिद्ध पत्थर।

**संगजूफी**—स्त्री० [?] एक प्रकार की वनस्पति जो ओषधि के काम आती है।

**संग जारा**—पुं० [फा० सग+जार] चकमक पत्थर।

**संगच्छध्वं**—अव्य० [स०] साथ साथ चलो। उदा०—संगच्छध्व के पुनीतस्वर, जीवन के प्रति गग गाओ।—पत।

**संग जराहत**—पु० [फा०सग+अ० ज राहत] एक प्रकार का सफेद चिकना पत्थर।

**संगठित**—भू० कृ०=संघटित।

**संगणन**—पु०[सं०] १. गणना का वह गभीर और जटिल प्रकार या रूप जिसमें साधारण गणना के सिवा अनुभवों, घटनाओं, नियत सिद्धातो आदि का भी उपयोग किया जाता है। (कम्प्यूटेशन) जैसे—फलित ज्योतिष मे आँधियों, भूकपो आदि की भविष्यद्वाणी सगणन के आधार पर ही होती है। २. दे० 'अनुगणन'।

**संगणना**—स्त्री [सं०] अभिकलन। (दे०)

**संगत**—वि० [स०] १. किसी के साथ जुड़ा, मिला या लगा हुआ। २. इकट्ठा किया हुआ। ३. जो किसी वर्ग, जाति आदि का होने के कारण उसके साथ रखा, बैठाया या लगाया जा सका हो। ४. पूर्वापर या आस-पास की बातों के विचार से अथवा और किसी प्रकार से ठीक बैठने या मेल खानेवाला। (रेलेवेन्ट) ५ जिसमे सगति हो। ६. किसी के साथ दाम्पत्य या वैवाहिक बधन से बँधा हुआ।

स्त्री० [स०√गम् (जाना)+क्त] १. सग रहने या होने का भाव। साथ रहना। सोहबत। सगति। २. साथ रहनेवालो का दल या मंडली। ३. गाने-बजानेवालो के साथ रहकर सारगी, तबला, मँजीरा आदि बजाने का काम।

क्रि० प्र०—बजाना।—मे रहना।

**मुहा०—संगत करना**=गानेवाले के साथ साथ ठीक तरह से तबला, सारगी, सितार आदि बजाना।

४. गाने-बजाने वालों का दल या मडली। उदा०—इधर और उधर रक्खे कधे पे हाथ। चली नाचती गाती सगत के साथ।—कोई शायर।

५. वह जो इस प्रकार किसी गाने या नाचनेवाले के साथ रहकर साज बजाता हो। ६. उदासी, निर्मल आदि साधुओं के रहने का मठ। ७. लगाव। संपर्क। संसर्ग। ८. स्त्री और पुरुष का मैथुन। संभोग। (बाजारू)

**संगतरा**†—पुं०=सतरा (मीठी नारंगी)।

**संग-तराश**—पुं० [फा०] १. पत्थर काटने या गढ़नेवाला मजदूर। पत्थर-कट। २. पत्थर काटने का एक प्रकार का औजार।

**संग-तराशी**—स्त्री० [फा०] सग-तराश का कार्य, पद या भाव।

**संगत-संधि**—स्त्री० [सं० ष० त०] प्राचीन भारतीय राजनीति मे अच्छे राष्ट्र के साथ होनेवाली संधि जो अच्छे और बुरे दिनो मे एक-सी बनी रहती है। कांचन संधि।

**संगति**—स्त्री० [सं०] [वि० संगत] १. सगत होने की अवस्था, क्रिया या भाव। (कम्पैटिबिलिटी) २. किसी के सग मिलने की क्रिया या भाव। मेल। मिलाप।

**मुहा०—संगति बैठाना, मिलाना या जमाना**=दो चीजों या बातों का

मेल मिलाकर उन्हे संगत सिद्ध करना।
३. संग। साथ। सोहबत। ४.सपर्क। सबध। ५. साहित्य मे आगे-पीछे कहे जानेवाले वाक्यो आदि का अर्थ के विचार से या कार्यों आदि का पूर्वापर के विचार से ठीक बैठना या मेल खाना। (कन्सिस्टेन्सी)
क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।—मिलना।—मिलाना।
६. कला के क्षेत्र मे, किसी कृति के भिन्न भिन्न अगो की ऐसी सुसघटित स्थिति जिसमे कही से कोई चीज या बात उखड़ती या टूटती हुई न जान पड़े और उसका सारा प्रवाह या रूप कही से खटकता हुआ न जान पड़े। तालमेल। सामजस्य। (हॉर्मनी) ७. लोक-व्यवहार मे, आस-पास की बातों या पूर्वापर स्थितियो के विचार से सब बातो के उपयुक्त और ठीक रूप से यथा-स्थान होने की ऐसी अवस्था या भाव जिसमे कही परस्पर विरोधी तत्त्व न दिखाई देते हों। (रेलेवेन्सी)
क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।—मिलना।—मिलाना।
८. कोई बात जानने या समझने के लिए उसके सबध मे बार-बार प्रश्न करना। ९. जानकारी। ज्ञान। १० सभा। समाज। ११ मैथुन। सभोग। १२. मुक्ति। मोक्ष।

**संगतिया**—पु० [स० सगत+हिं० इया (प्रत्य०)] १ गवैया या नाचने-वालो के साथ रहकर तबला, मँजीरा, सारगी आदि बजानेवाला व्यक्ति। साजिया। २. सगी। साथी।

**संगती**—पु० [स० सगत+हिं० ई (प्रत्य०)] १ वह जो साथ मे रहता हो। सग रहनेवाला। २. दे० 'सगतिया'।

**संगध**—पु० [स०] संग्राम। युद्ध।

**संगधिल**—वि० [फा०] [भाव० संगदिली] पत्थर हो दिल जिसका। अर्थात् निर्दय।

**संगपुश्त**—वि० [फा०] जिसकी पीठ पत्थर के समान कड़ी हो।
पुं० कछुआ।

**संगबसरी**—पुं० [फा०] एक प्रकार की मिट्टी जिसमे लोहे का अश अधिक होता है।

**संगम**—पु० [स० सम्√गम् (जाना)+अप्] १. दो वस्तुओ के मिलने की क्रिया या भाव। मिलाप। सयोग। मेल। २. दो धाराओ या नदियो के मिलने का स्थान। जैसे—गगा और यमुना का संगम। ३. दो या अधिक रेखाओ, वस्तुओ आदि के एक साथ मिलने का भाव या स्थान। (जंक्शन) ४. सग। साथ। ५ मैथुन। सभोग। ६ सम्पर्क। सम्बन्ध। उदा०—तेउ पुनि तिहि चली रँगीली तजिगृह संगम।—नन्ददास। ७ वर्तमान काल की सब बातों का ज्ञान। उदा०—आगम सगम निगम मति ऐसे मंत्र विचारि।—केशव। ८ ज्योतिष मे ग्रहों का योग। कई ग्रहों आदि का एक स्थान पर मिलना या एकत्र होना।

**संगमन**—पुं० [सं० सम्√गम् (जाना)+ल्युट्—अन] लोगो मे आपस मे होनेवाला पत्राचार, मेल-मिलाप और व्यवहार। सचार। (कम्युनिकेशन)

**संग-मरमर**—पु० [फा० सग+अ० मर्मर] सफेद रग का एक प्रकार का बहुत चिकना और मुलायम प्रसिद्ध पत्थर।

**संग-मूसा**—पु० [फा०] काले रग का एक प्रकार का चिकना बहुमूल्य पत्थर।

**संग-यशब**—पुं० [फा०] एक प्रकार का बहुमूल्य पत्थर जो नीले सफेद, हरे आदि रगों का होता है।
**विशेष**—हीलदिली इसी पत्थर की बनती है।

**संगर**—पु० [स० सम्√गृ (शक करना)+अप] १. युद्ध। समर। सग्राम। २. विपत्ति। सकट। ३ प्रतिज्ञा। ४. अगीकरण। स्वीकरण। ५ प्रश्न। सवाल। ६ नियम। ७. जहर। विष। ६. शमी वृक्ष का फल।
पु० [फा०] १. वह घुस या दीवार जो ऐसे स्थान मे बनाई जाती है जहाँ सेना ठहरती है। रक्षा के लिए सैनिक पडाव के चारों ओर बनाई हुई खाई, घुस या दीवार। २. मोरचेबन्द।

**संगरा**—पु० [फा० सग?] १ कूओं के तख्ते पर बना हुआ वह छेद जिसमे पानी खीचने का पप बैठाया हुआ होता है।
†पु०=सेंगरा।

**संग-रासिख**—पु० [फा०] तावें की मैल जो खिजाब बनाने के काम मे आती है।

**संगरेजा**—पु० [फा० सग+रेज०] पत्थर के छोटे छोटे टुकड़े। ककड। बजरी।

**संग-रोध**—पु० [स०] वह क्रिया या व्यवस्था जो देश मे बाहर से आनेवाले किसी सक्रामक रोग को रोकने के लिए मार्ग मे किसी स्थान पर की जाती है, और जिसके अनुसार यात्री आदि निरीक्षण, परीक्षण आदि के लिए कुछ समय तक रोके रखे जाते है। (क्वारंटीन)

**संगलक**—पु० [देश०] एक प्रकार का रेशम।

**संगल**†—स्त्री० [स० शृखला] १. लोहे की जजीर या सिकड़। २. अपराधियों के पैरो मे पहनाई जानेवाली बेडी।

**संगव**—पुं० [स०]प्रात स्नान के तीन मुहूर्त बाद का समय जो दिन के पाच भागों मे से दूसरा है और जिस मे गौएँ दुहने के बाद चरने के लिए ल जायी जाती थी।

**संगवाना**†—स०[सं० सगर?] १ हत्या कराना। मरवा डालना। २ अधिकार या वश मे करना।

**संगविनी**—स्त्री०[स० सगव+इनि] वह स्थान जहाँ गौएँ दुहने के लिए एकत्र की जाती थी।

**संग-सार**—पु०[फा०] प्राचीन काल का एक प्रकार का प्राण-दड जिसमे अपराधी को पत्थरो के साथ दीवार के रूप मे चुनवा दिया जाता था।
वि० पूरी तरह से ध्वस्त या बरबाद किया हुआ।

**संग-सुरमा**—पु० [फा० सग-सुर्म०] काले रग की एक प्रकार की उपधातु जिसे पीसकर आँखों में लगाने का सुरमा बनाया जाता है।

**संगाती**†—पु० [हिं० सग+आती (प्रत्य०)] १.वह जो सग रहता हो। साथी। सगी। २ दोस्त। मित्र।
वि० पूरी तरह से ध्वस्त या बरबाद किया हुआ।

**संग-सुरमा**—पुं० [फा० सग-सुर्म०] काले रग की एक प्रकार की उपधातु जिसे पीसकर आँखो मे लगाने का सुरमा बनाया जाता है।

**संगाती**†—पु० [हिं० सग+आती (प्रत्य०)] १.वह जो सग रहता हो। साथी। सगी। २. दोस्त। मित्र।

**संगायन**—पु० [स० सम्√ (गान करना)+ल्युट्-अन] १. साथ-साथ गाना या स्तुति करना। २ प्राचीनकाल में वह सभा जिसमे बौद्ध भिक्षु साथ मिलकर महात्मा बुद्ध के उपदेशो का गान या पाठ करते थे। ३. आज-कल कोई बड़ी धर्म-सभा।

**संगिनी**—स्त्री० [हिं० सगी का स्त्री० रूप] १. साथ रहनेवाली स्त्री। सहचरी। २. पत्नी। भार्या।

**संगिस्तान**—पुं० [फा०] पथरीला-प्रदेश।

**संगी**—पु० [स० सग+हिं० ई (प्रत्य०)] [स्त्री० संगिनी] १. वह जो सदा या प्रायः सग रहता हो। साथी। २. दोस्त। मित्र।
स्त्री० [देश०] एक प्रकार का रेशमी कपडा।
वि० [फा० सग=पत्थर] पत्थर का।

**संगीत**—पु० [स० सम्√गै (गाना)+क्त] मधुर ध्वनियों या स्वरो का कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार और कुछ विशिष्ट लय में होनेवाला प्रस्फुटन। यह दो प्रकार का होता है—(क) कठ्य सगीत और (ख) वाद्य सगीत।

**संगीतक**—पु० [सं० सगीत+कन्] १. गान, नृत्य और वाद्य के द्वारा लोगो का मनोरजन। २. एक प्रकार का अभिनयात्मक और सगीत प्रधान नृत्य।

**संगीत कला**—स्त्री० [स०] गान-बजाने की विद्या।

**संगीतज्ञ**—पु० [स०] सगीत (कला तथा शास्त्र) मे निपुण।

**संगीत-रूपक**—पु० [स०] आज-कल प्राय. रेडियो से प्रसारित होनेवाला एक प्रकार का छोटा नाटक या रूपक, जिसमें गीतों की प्रधानता होती है और जिसकी मुख्य कथा कही तो पात्रो के वर्तालाप के द्वारा और कही रूपक प्रस्तुत करनेवाले व्यक्ति की बातों से सम्बद्ध रूप मे बतलाई जाती है।

**संगीत विद्या**—स्त्री०=संगीत शास्त्र।

**संगीत शास्त्र**—पुं० [सं०] वह शास्त्र जिसमे गाने-बजाने की रीतियों, प्रकारो आदि का विवेचना होता है।

**संगीति**—स्त्री० [स० सम्√गै (गाना)+क्तिन्] १. वार्तालाप। बातचीत। २. दे० 'सगीत'।

**संगीतिका**—स्त्री० [स०] पाश्चात्य शैली का ऐसा नाटक जिसका अधिकाश सगीत के रूप मे होता है। गेय नाटक। सागीत। (ऑपेरा)

**संगीन**—वि०[फा०] [भाव० सगीनी] १ पत्थर का बना हुआ। जैसे—सगीन इमारत। २. मोटी तह या मोटे दलवाला। जैसे—सगीन पोत का कपड़ा। ३.पत्थर की तरह कठोर। ४. मजबूत। ५ घोर तथा दडनीय (अपराध)।
स्त्री० [फा०] लोहे का एक प्रकार का अस्त्र जो तिपहला और नुकीला होता है।

**संगीनी**—स्त्री० [फा०] सगीन होने की अवस्था, गुण या भाव।

**संगुप्ति**—स्त्री० [स० सम्√गुप् (रक्षा करना)+क्तिन्] १. छिपाव। दुराव। २. सुरक्षा।

**संगृह**—पुं० [स० सम्√ ग्रह् (सवरण करना)+क्त] चीजों का ऐसा ढेर या राशि जिस पर सुरक्षा आदि के विचार से रेखाएँ अकित हों।

**संगृहीत**—भू० कृ०[सं०] १. संग्रह किया हुआ। एकत्र किया हुआ जमा किया हुआ। संकलित। २. प्राप्त। लब्ध। ३. शासित। ४. स्वीकृत। ५. संक्षिप्त किया हुआ।

**संगृहीता (तृ)**—वि० [सं०सम्√ग्रह् (रखना)+तृच्] संग्रह करनेवाला।

**संगोपन**—पुं०[सं० सम्√गुप् (रक्षा करना)+ल्युट्-अन] अच्छी तरह से छिपाकर रखना।

**संग्रह**—पुं० [सं०] १. एकत्र करने की क्रिया या भाव। इकट्ठा या जमा करना। संचय। जैसे—धन सग्रह करना। २. इकट्ठी की हुई चीजो का ढेर या समूह। जैसे—चित्रो या पुस्तकों का सग्रह। ३. ग्रहण करने या लेने की क्रिया। ४. जमघट। जमावड़ा। ५. गोष्ठी या सभा-समाज। ६.पाणिग्रहण। विवाह। ७ स्त्री-प्रसग। मैथुन। सभोग। ८. वह ग्रंथ जिसमें अनेक विषयों की बातें एकत्र की गई हों। ९. अपना फेंका हुआ अस्त्र मंत्र-बल से अपने पास लौटाने की क्रिया। १०. तालिका। सूची। फेहरिस्त। ११. निग्रह। सयम। १२ रक्षा। हिफाजत। १३. कोष्ठ-बद्धता। कब्जियत। १४ स्वीकार। मजूरी। १५. शिव का एक नाम। १६. सोम याग।

**संग्रहकर्ता**—वि०=सग्राहक।

**संग्रहण**—पु० [स०] १. ग्रहण करना। लेना। २ प्राप्ति। लाभ। ३ गहनों मे नग आदि जड़ना। ४. मैथुन। सभोग। ५. अभिचार। ६ स्त्री के गोप्य अगों का किया जानेवाला स्पर्श। ७.अपहरण।

**संग्रहणी**—स्त्री० [सं०] पाचन क्रिया के विकार के कारण होनेवाला एक रोग जिसमें बराबर और बार बार पतले दस्त होते रहते हैं। (स्प्रू)

**संग्रहणीय**—वि० [सं० सम्√ग्रह् (रखना)+अनीयर्] १ सग्रह किए जाने के योग्य। सग्राह्य। २. (औषधि या औषध) जिसका सेवन आवश्यक और उपयोगी हो।

**संग्रहना***—स० [स० सग्रहण] सग्रह करना। सचय करना। जमा करना।

**संग्राह्यध्यक्ष**—पु०=सग्रहालयाध्यक्ष।

**संग्रहालय**—पुं० [स० ष० त०] १. वह स्थान जहाँ एक ही अथवा अनेक प्रकार की बहुत सी चीजों का सग्रह हो। २ वह भवन अथवा उसका कोई अग जिसमे स्थायी महत्त्व की वस्तुएँ प्रदर्शित की तथा सुरक्षित रखी गई हों। (म्यूजियम)

**संग्रहालयाध्यक्ष**—पुं० [?] किसी सग्रहालय (म्यूजियम) की देखरेख या व्यवस्था करनेवाला प्रधान अधिकारी। (क्यूरेटर)

**संग्रही (ह्रिन्)**—वि० [स०] १. संग्रह या एकत्र करनेवाला। सग्राहक। जैसे—सर्व-सग्रही। २ सासारिक वैभव की कामना रखने और धन-दौलत इकट्ठा करनेवाला। 'त्यागी' का विपर्याय।
पु० महसूल या लगान आदि उगाहनेवाला कर्मचारी। कर एकत्र करनेवाला अधिकारी।

**संग्रहीता (तृ)**—पु० [स० सं√ग्रह् (रखना)+तृच्] वह जो सग्रह करता हो। जमा करनेवाला। एकत्र करनेवाला।

**संग्राम**—पुं० [स०] युद्ध। लड़ाई। समर।

**संग्राम-सुता**—स्त्री० [स०] युद्ध के रूप मे होनेवाली अग्निपरीक्षा।

**संग्राम-पटह**—पुं० [सं०] रण मे बजनेवाला एक प्रकार का बाजा। रण भेरी। रण-डिमडिम।

**संग्राह**—पु० [स० सम्√ग्रह् (रखना)+घञ्] १. औजार या हथियार का दस्ता या मूठ पकड़ना। २. मुट्ठी। ३. मुक्का।

**संग्राहक**—वि० [स० सग्राह+कन्] जो सग्रह करता हो। एकत्र या जमा करनेवाला। सग्रहकारी।

**संग्राही (ह्रिन्)**—पुं० [सं०] १. वैद्यक में वह पदार्थ जो कफादि दोष, धातु, मल तथा तरल पदार्थों को खीचता हो। वह पदार्थ जो मल

के पेट से निकलने मे बाधक होता है। कब्जियत करनेवाली चीज। २. कुटज।

वि० संग्रह करनेवाला। संग्राहक।

**संग्राह्य**—वि० [सं० सम्√ग्रह् (रखना)+ण्यत्] सग्रह किए जाने के योग्य। जमा करके रखने लायक।

**संघ**—पुं० [सं०] १. लोगो का समुदाय या समूह। २. लोगों का एक साथ मिलकर रहना। ३. आपस मे गठे या मिले हुए होने की अवस्था या भाव। ४. मनुष्यों का वह समाज या समुदाय जो किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए बना हो। ५ प्राचीन भारत मे, एक प्रकार का लोकतंत्री राज्य या शासन प्रकार जिसकी व्यवस्था जनता के चुने हुए प्रतिनिधि करते थे। उक्त के अनुकरण पर गौतम बुद्ध की बनाई हुई वह प्रतिनिधिक सस्था जो बौद्ध धर्म के अनुयायियों और विशेषत भिक्षुओ आदि के सबध में आचार, व्यवहार आदि के नियम बनाती और व्यवस्था करती थी। इसका महत्व इतना अधिक था कि बुद्ध और धर्म के साथ इसकी गणना भी बौद्धो मे होने लगी थी। ७. साधु सन्थासियों विशेषत बौद्ध भिक्षुओ और श्रमणो के रहने का मठ। ८. आधुनिक राजनीति में, राज्यो, राष्ट्रों आदि के पारस्परिक समझौते से बननेवाला ऐसा सघटन जो कुछ विशिष्ट बातो मे एक केन्द्रीय सत्ता का अधिकार और अनुशासन मानता हो। (फेडरेशन)

**संघचारी (रिन्)**—वि० [सं०] १. (पक्षी या पशु) जो झुड बनाकर रहता हो। २. (व्यक्ति) जो अधिकतर लोगों अर्थात् बहुमत के अनुसार कोई काम करता हो।

पु० मछली।

**संघट**—पुं० [सं० सम्√घट् (मिलना)+अच्] १. समूह। राशि। ढेर। २. मुठ-भेड। सघर्ष। ३. दे० 'सघटन'।

**संघटन**—पुं० [सं०] १. किसी चीज के विभिन्न अवयवो को जोड़कर उसे प्रतिष्ठित करना। रचना। २. व्यक्तियों का मिलना। ३ किसी विशिष्ट वर्ग या कार्य-क्षेत्र के लोगों का मिलकर एक इकाई का रूप धारण करना जिससे वे सामूहिक रूप से अपने हितों की रक्षा कर सकें। ४. बिखरी हुई शक्तियो को एक मे मिलाकर उन्हें किसी काम के लिए तैयार करना। ५. इस उद्देश्य से बनाई हुई सस्था। (आरगनाइजेशन, अतिम तीनो अर्थों के लिए)

२ स्वरों या शब्दों का सयोग।

**संघटित**—भू०कृ० [सं०] १. जिसका सघटन हुआ हो। २. (व्यक्तियो का वर्ग) जो एक होकर तथा सामूहिक रूप से अपने ध्येय की सिद्धि के लिए प्रयत्नशील हो। ३. युद्ध, प्रतियोगिता आदि मे लगा हुआ। उदा०—सुर विमान हिम-भानु, भानु सघटित परस्पर। —तुलसी। ४ बजाता हुआ।

**संघट्ट**—पुं० [स०] १. रचना का प्रकार या स्वरूप। बनावट। गठन। २. संघर्ष।

**संघट्ट-चक्र**—पुं० [सं० कर्म० स०] फलित ज्योतिष में, युद्ध का परिणाम जानने के लिए बनाया जानेवाला एक प्रकार का चक्र।

**संघट्टन**—पुं० [सं०] १. बनावट। रचना। गठन। २. मिलन। सयोग। ४. घटना। ४. दे० 'सघटन'।

**संघट्टित**—भू०कृ० [स० सं√घट्ट् (इकट्ठा करना)+क्त] १. एकत्र किया हुआ। २. बनाया हुआ। निर्मित। रचित। ३. चलाया हुआ। चालित। ४ रगड़ा या पीसा हुआ। घर्षित।

**संघतिया**†—पुं० १. =संगतिया। २.=सघाती (साथी)।

**संघती**†—पु० [स० सघ, हिं० सग] १ सगी। साथी। सहचर। २. दे० 'सगतिया'।

**संघ-न्यायालय**—पु०[ष० त०]सघराज्य का सर्वोच्च न्यायालय। (फ़ेडरल कोर्ट)

**संघपति**—पु० [स० ष० त०] किसी सघ का प्रधान अधिकारी।

**संघरना***—स० [सं० संहार+हिं० ना (प्रत्य०)] १ सहार करना। मार डालना। २. नाश करना।

**संघराना**†—स० [हिं० सग ?] दुखी या उदास गौ को, उसका दूध दूहने के लिए, परचाना और पुचकारना।

**संघर्ष**—पु० [स०] १. कोई चीज घिसने, घोटने या रगड़ने की क्रिया। २ किसी चीज के कण अलग करने या उसका तल घटाने या घिसने के लिए की जानेवाली कोई ऐसी क्रिया जिसमे बल लगाकर किसी कडी चीज से बार बार रगडते हैं। रगड। ३. दो विरोधी दलो या पक्षो मे एक दूसरे को दबाने के लिए होनेवाला कोई ऐसा प्रयत्न जिसमे दोनों अपनी सारी शक्ति लगा देते और यथा-साध्य एक दूसरे का उपकार या हानि करने पर तुले रहते हैं। ४. उक्त के आधार पर, कठिनाइयो, बाधाओ आदि से बचने तथा प्रबल विरोधी शक्तियो को दबाने के लिए प्राणपन से की जानेवाली चेष्टा या प्रयत्न। (स्ट्रगल; अतिम दोनो अर्थों के लिए) ५ आधुनिक पाश्चात्य साहित्यकारों के मत से नाटक मे वह स्थिति जिसमें दो परस्पर विरोधी शक्तियाँ एक दूसरी को दबाने का प्रयत्न करती हैं। ६. वह अहंकारपूर्ण बात जो अपने प्रतिपक्षी की अपना बड़प्पन जतलाने के लिए कही जाय। ७ बाजी या शर्त लगाना। ८. स्पर्धा। होड। ९ द्वेष। वैर। १०. काम की प्रबल वासना। ११. धीरे धीरे खिसकना, चलना या रेंगना।

**संघर्षण**—पु० [सं० सम्√घृष् (रगडना)+ल्युट्—अन] १ सघर्ष करने की क्रिया या भाव। २ भूगोल मे, धारा मे बहते हुए ककडो की चट्टानो आदि से होनेवाली रगड। (कोरेसन)

**संघर्षी (र्षिन्)**—वि० [सं०] १ सघर्ष-रत। सघर्ष करनेवाला। २ घिसने या रगडनेवाला।

पु० व्याकरण मे ख् ग् फ् ब् और द् व्यजन वर्ग जिनका उच्चारण करते समय मुख द्वार खुला रहता है परन्तु फिर भी हवा टकराती हुई भटके से बाहर निकलती है।

**संघ-वृत्ति**—स्त्री० [स०] मिलकर काम करने के लिए सम्मिलित होने की क्रिया या प्रवृत्ति।

**संघाट**—वि० [सं० संघ√अट् (समनादि)+यञ्] दल या समूह मे रहनेवाला। जो दल बाँधकर रहता हो।

**संघाटिका**—स्त्री० [सं० सम्√घट् (मिलना)+णिच्-ण्वुल्—अक-इत्व-टाप्] १. प्राचीन भारत में स्त्रियो का एक प्रकार का पहनावा। २. कुटनी। दूती। ३. सिंघाड़ा। ४. कुभी।

**संघाटी**—स्त्री० [सं०] बौद्ध भिक्षुओ के पहनने का चीवर।

**संघातक**—पुं० [स०] श्लेष्मा। कफ।

**संघात**—पुं० [सं०] १. जमाव। समूह। समष्टि। २. आघात;

विशेषतः अकस्मात् तथा जोर से लगनेवाला आघात। टक्कर। (इम्पैक्ट) ३. वध। हत्या। ४. कफ। श्लेष्मा। ५. देह। शरीर। ६. रहने की जगह। निवास-स्थान। ७ एक नरक का नाम।

**संघातक**—वि० [सं० संघात+कन्] १. घात करनेवाला। २. प्राण लेनेवाला। ३ नष्ट या बरबाद करनेवाला।

**संघातन**—पु० [स०] सघात करने की क्रिया या भाव।

**संघाती**†—पु०=संगाती (संगी)।

**संघाती**—पुं० [सं० संघात+इनि] संघातक। प्राणनाशक।

**संघाधिप**—पुं० [स० ष० त०] १. धार्मिक सघ का प्रधान। (जैन) २. किसी प्रकार के संघ का अध्यक्ष।

**संघार***—पु०=संहार।

**संघारना***—स०=संहारना।

**संघाराम**—पुं० [सं० ष० त०] बौद्ध भिक्षुओ, श्रमणो आदि के रहने का मठ। विहार।

**संघी**—वि० [सं० सघीय] १. दे० 'सघीय'। २. किसी सघ से सबद्ध। जैसे—जन-संघी। ३. समूही मे रहनेवाला।
पु० किसी सघ का सदस्य।

**संघीय**—वि० [स०] १ संघ-सबधी। सघ का। २. जिसका सघटन सघ के रूप मे हुआ हो। (फेडरल)

**संघृष्ट**—भू० कृ० [सं० स√घृष् (रगडना)+क्त] १. रगड़ खाया हुआ २ रगड़ा हुआ।

**संघेला**—पु० [सं० संग] १. साथी। सहचर। सगी। २ दोस्त। मित्र।

**संघोष**—पु०[स० सम्√घुष् (ध्वनि होना)+घञ्] जोर का शब्द। घोष।

**संच**—पुं० [स० सम्√चि (सग्रह करना)+ड] लिखने की स्याही।
†पुं० संचने की क्रिया या भाव।

**संचक**—पुं० [सं० संच+कन्] साँचा।

**संचकर***—वि०[सं० संचय+कर] १ संचय करनेवाला। २ देख-भाल करनेवाला। ३. कंजूस। कृपण।

**संचना***—पु० [सं० सचयन] १.एकत्र या सग्रह करना। सचय करना। २. देख-भाल करना।
*अ० [सं० संच+चर] प्रविष्ट होना।

**संचय**—पुं० [सं० सम्√चि (चयन करना)+अच् [भू० कृ० संचित] १. चीजें इकट्ठी करने की क्रिया या भाव। २. जमा करना। संकलन। २. इकट्ठी की हुई चीजों का ढेर या राशि। (एक्यूमुलेशन) ३. अधिकता। बहुलता।

**संचयन**—पु० [स० सम्√चि (एकत्र करना)+ल्युट्-अन] १. संचय करने या होने की क्रिया या भाव। २. किसी वस्तु का धीरे धीरे एकत्र होते हुए किसी बड़ी राशि का चित्र धारण करना। इकट्ठा या जमा होना। (एक्यूमुलेशन)

**संचयिक**—वि० [सं० संचय+ठक्-इक] जो संचय करता हो। एकत्र या जमा करनेवाला।

**संचयी (यिन्)**—वि० [सं० संचय+इनि] संचय करनेवाला जमा करनेवाला।
पुं० कंजूस। कृपण।

**संचर**—पुं० [सं० सम्√चर् (चलना)+घ] १. गमन। चलना। २. पुल। सेतु। ३. पानी निकलने का रास्ता। ४. मार्ग। रास्ता। ५. जगह। स्थान। ८. देह। शरीर। ७. संगी। साथी।

**संचरण**—पुं० [स० सम्√चर् (चलना)+ल्युट्-अन] १. संचार करने की क्रिया या भाव। चलना। गमन। २ पसरना। फैलना। ३. काँपना।

**संचरना***—अ०[सं० सचरण] १ घूमना-फिरना। चलना। २. फैलना। ३ प्रचलित होना।
†स०=सचारना।

**संचल**—पुं० [सं० सम्√चल (अस्थिर)+अच्] सौवर्च्चल लवण। साँचर नमक।
वि० काँपता हुआ।

**संचलन**—पु०[सं० सम्√चल् (हिलना)+ल्युट्-अन] १ हिलना-डोलना। २ चलना। ३. काँपना।

**संचार**—पुं० [स०] १. गमन। चलना। २ चलाना। ३. किसी के अन्दर पैठकर दूर तक फैलना। ४ वह राह जिसपर से होकर कोई चीज फैलती हो। ५ आज-कल सदेश, समाचार आदि तथा आदमी सामान आदि भेजने की क्रिया प्रकार और साधन। (कम्यूनिकेशन) ६. रास्ता दिखाना। मार्गदर्शन। ७. विपत्ति। ८. साँप की मणि। ९. देश। १०. उत्तेजित करना। भड़काना। ११ संक्रमण (ग्रह आदि का)।

**संचारक**—वि० [सं० सम्√चर् (चलना)+ण्वुल्-अक] [स्त्री० सचारिका] संचार करने या फैलानेवाला।
पुं० १. नेता। सरदार। २. अन्वेषक।

**संचारण**—पु० [स० सम्√चर्(चलना)+णिच्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० सचारित] संचार करने की क्रिया या भाव।

**संचारना***—स० [स० सचारण] १. सचार करना। फैलाना। २. २. चलाना। ३. चलने और घूमने फिरने में प्रवृत्त करना। उदा०—पुनि इबलीस सँचारेउ डरत रहे सब कोउ।—जायसी।

**संचार-साधन**—पुं०[ष० त०] दो या अधिक स्थानों या व्यक्तियो के बीच सबध स्थापित करने के साधन। डाक, तार, समुद्री तार, रेडियो आदि और गमनागमन के साधन। (मीन्स ऑफ़ कम्यूनिकेशंस)

**संचारिका**—स्त्री० [स०] १. दूती। कुटनी। २. नासिका। नाक। ३ वू। गंध।
वि० 'सचारक' का स्त्री०।

**संचारिणी**—स्त्री० [सं० सम्√चर् (चलना)+णिनि-ङीप्] १. हंसपदी नाम की लता। २. लाल लजालू।
वि० 'संचारी' का स्त्री०।

**संचारित**—भू० कृ०[सं० सम्√चर् (चलना)+णिच्-क्त] १ जिसका सचार किया गया हो। चलाया या फैलाया हुआ। २. भड़काया हुआ। ३. पहुँचाया हुआ।

**संचारी**—वि० [सं० सम्√चर् (चलना)+णिनि-दीर्घ-नलोप] [स्त्री० संचारिणी] १. संचरण या संचार करनेवाला। २. आया हुआ। आगंतुक।
पु० १. साहित्य में वे तत्त्व, पदार्थ या भाव जो रस में संचार करते हुए उसके परिपाक में उपयोगी तथा सहायक होते हैं। इन्हीं को 'व्यभिचारी भाव' भी कहते हैं। (स्थायी भाव से भिन्न)

**विशेष**—यह माना गया है कि स्थायी भाव तो रस के परिपाक तक स्थिर रहते हैं परन्तु सञ्चारी भाव अस्थिर होते और आवश्यकता तथा सुभीते के अनुसार सभी रसों मे संचार करते रहते हैं। इसकी संख्या ३३ कही गई है, यथा—निर्वेद ग्लानि, शंका, असूया, श्रम, मद, धृति, आलस्य, विषाद, मति, चिंता, मोह, स्वप्न, विबोध, स्मृति, आमर्ष, गर्व, उत्सुकता, अवहित्थ, दीनता, हर्ष, व्रीडा, उग्रता, निद्रा, व्याधि, मरण, अपस्मार, आवेग, भास, उन्माद, जडता, चपलता और वितर्क।

२. संगीत में किसी गीत के चार चरणों में से तीसरा। ३. वायु। हवा। ४. धूप नामक गंध-द्रव्य।

**संचाल**—पु० [स०सम्√चल् (कंपना)+ण—चल् या सचालन] १. कंपना। २. चलना।

**संचालक**—वि० [स० सचाल+कन्, सम्√चल (चलना)+ण्वुल्—अक] जो सचालन करता हो। चलाने या गति देनेवाला। परिचालक।

पु० वह प्रधान अधिकारी जो किसी कार्य, विभाग, संस्था आदि चलने की सारी व्यवस्था करता हो। निरीक्षण तथा निर्देशन करनेवाला विभागीय अधिकारी। निर्देशक। (डाइरेक्टर)

**संचालन**—पु० [स० सम्√चल (चलना)+णिच्—ल्युट्—अन] १. चलाने की क्रिया। परिचालन। २ ऐसा प्रबन्ध या व्यवस्था जिसमे कोई काम चलता या होता रहे। किसी कार्य आदि का किया जानेवाला निर्देशन। ३ नियंत्रण।

**संचालित**—भू० कृ० [सं०] (कार्य, विभाग या संस्था) जिसका सचालन किया गया हो या किया जा रहा हो।

**संचाली**—स्त्री० [स० सचाल-ङीप्] गुंजा। घुँघची।

वि० दे० 'सचालक'।

**संचिका**—स्त्री० [सं० संचय] वह नत्थी जिसमें पत्र, कागज आदि इकट्ठे करके रखे जाते हैं। मिसिल। (फाइल)

**संचित**—भू० कृ०[स०] १. संचय किया हुआ। इकट्ठा, एकत्र या जमा किया हुआ। २ ढेर के रूप में रखा, लगाया या लाया हुआ। (एवधूमुलेटेड) ३. सचिका या नत्थी मे लगाया हुआ।

**संचित कर्म**—पु० [स०] १ वैदिक युग मे यज्ञ की अग्नि सचित कर लेने पर किया जानेवाला एक विशिष्ट कर्म। २. आज-कल, पूर्व जन्म मे किए हुए वे सब कर्म जिनका फल इस जन्म में अथवा आनेवाले जन्मो मे भोगना पडता है।

**संचिति**—स्त्री० [सं० सम्√चि (रखना)+क्तिन्] १. सचित करने की क्रिया या भाव। सचय। २. तह लगाना।

**संछर्दन**—पु० [स० स√छर्द् (वमन करना)+ल्युट्—अन] ग्रहण मे एक प्रकार का मोक्ष। (ज्योतिष)

**संज**—पुं० [सं० सम्√जन् (उत्पन्न करना)+ड] १. शिव। २. ब्रह्मा।

**संजन**—पु० [स०√ सञ्ज् (बाँधना)+ल्युट्—अन] १. बाँधना। २. बन्धन। ३. संघटन।

**संजनन**—पु० [स० सम्√जन् (उत्पन्न करना)+ल्युट्—अन][भूत कृ० सजनित]=जनन।

**संजनी**—स्त्री० [स० संजन-ङीप्] वैदिक काल का एक प्रकार का अस्त्र जिससे वध या हत्या की जाती थी।

**संजनीपति**—पु० [सं०] यमराज। (डिं०)

**संजम**†—पु०=संयम।

**संजमी**†—वि०=संयमी।

**संजय**—पुं०[स० स√जि (जीतना)+अच्] १ ब्रह्मा। २. शिव। ३. धृतराष्ट्र का मुख्य मंत्री जिसने उन्हे कुरु-क्षेत्र का सारा हाल सुनाया था।

**संजल्प**—पु० [सं०] साथ बैठकर आपस में की जानेवाली बात-चीत।

**संजात**—भू० कृ० [स०] १ किसी के साथ उत्पन्न। २. किसी से उत्पन्न। जात। जैसे—वात-संजात=हनुमान्। ३ मिला हुआ। प्राप्त।

पुं० पुराणानुसार एक प्राचीन जाति।

**संजात बलि**—वि० [स०] मरे हुए प्राणियो का मांस खानेवाला।

पु० डोमकौआ।

**संजाफ**—स्त्री०[फा० सजाफ] १ झालर। किनारा। कोर। २ रजाइयों आदि मे लगाई जानेवाली गोट। मगजी।

पु० वह घोड़ा जिसका आधा भाग लाल तथा आधा भाग सफेद (या हरा) होता है।

**संजाफी**—वि० [हिं० सजाफ] जिसमें सजाफ लगी हो। किनारेदार। झालरदार।

**संजाब**—पु० [फा०] १ चूहे के आकार का एक जंतु जो प्राय तुर्किस्तान मे होता है। २ एक प्रकार का चमडा। ३ सजाफ (घोड़ा)।

**संजीवगी**—स्त्री० [फा०] १. सजीदा होने की अवस्था या भाव। २ आचरण, विचार या व्यवहार की गंभीरता। ३ स्वभाव सबधी शिष्टता तथा सौम्यता।

**संजीदा**—वि० [फा० सजीदा][भाव० सजीदगी] १ जिसके व्यवहार या विचारों में गम्भीरता हो। गंभीर और शांत। २ बुद्धिमान्। समझदार।

**संजीव**—पु० [स०] १ मरे हुए को फिर से जिलाना। पुन जीवन देना। २. वह जो मरे हुए को फिर से जीवित करता हो। ३. बौद्धों के अनुसार एक नरक।

**संजीवक**—वि० [स० सम्√जीव् (जिलाना)+ण्वुल्—अक] पुनर्जीवित करनेवाला। नया जीवन देनेवाला।

**संजीवकरणी**—स्त्री० [स०] १ एक कल्पित बूटी जिसके द्वारा मृत को फिर से जीवित किया जाता था। २ एक प्रकार की विद्या जिसके प्रभाव से मृत प्राणी फिर से जीवित किया जाता है।

**संजीवन**—पु०[स० सम्√जीव् (जीवित करना)+ल्युट्—अन] १ भली-भाँति जीवन व्यतीत करने की क्रिया। अच्छी तरह जीवित रहना या जीवन बिताना। २ पुनर्जीवित करना। नया जीवन देना। ३. मनु-स्मृति के अनुसार एक नरक।

वि० जीवन देने या जिलानेवाला।

**संजीवनी**—स्त्री० [स० सजीवन-ङीप्] १. पुनर्जीवित करनेवाली एक कल्पित ओषधि। २. पुनर्जीवित करने की विद्या।

**संजीवित**—भू० कृ० [स० सम्√जीव् (जीवित रखना)+क्त] १. जो मर जाने पर फिर से जीवित किया गया हो। २ सजीवनी द्वारा जिसे पुनर्जीवित किया गया हो।

**संजीवी (विन्)**—वि० [सं० सम्√जीव् (जीवित करना)+णिनि] मृत को जीवित करनेवाला।

**संयुक्त**†—वि०=संयुक्त।

**संयुग***—पु० [सं० संयुक्त] संग्राम। युद्ध। लड़ाई।

**संयुत**†—वि०=संयुक्त।

**संयुता**—स्त्री० [सं० संयुक्ता] एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में स, ज, ज, ग होते हैं। इसे 'संयुक्त' या 'संयुक्ता' भी कहते हैं।

**संयूह**—वि० [?] सावधान। उदा०—होहू सजूत बहुरि नहिं अवना।—जायसी।

**सँजोइल***—वि० [सं० सञ्जित, हिं० सँजोना] १. अच्छी तरह सजाया हुआ। सुसज्जित। २. एकत्र किया हुआ।

**सँजोऊ***—पु० [हिं० सँजोना] १. सजावट। २. तैयारी। उपक्रम। ३ सामग्री। सामान।
†पु०=संयोग।

**संजोग**†—पु० =सजोग।

**संजोगिता**†—स्त्री०=संयोगिता।

**संजोगिनी**—स्त्री०=संयोगिनी (जो वियोगिनी न हो अर्थात् जिसका प्रेमी उसके पास हो)।

**संजोगी**—वि० [सं० संयोगिन्] १. संयुक्त। मिला हुआ। २. जो अपने प्रियतम के पास या साथ हो। संयोगी। 'वियोगी' का विपर्याय। पु० एक तरह का बड़ा पिंजरा जो बस्तुत दो पिंजरों को जोड़कर बनाया गया होता है।

**सँजोना**†—स० [स० सज्जा] १. सज्जित करना। अलंकृत करना। सजाना। २. सामग्री आदि एकत्र करके क्रम से रखना।

**सँजौवन**†—पु०[हिं० सँजोना] सज्जित करने की क्रिया या भाव। सजाने का व्यापार।

**संजोवना**†—स०=सँजोना।

**संजोवल**†—वि० [हिं० सँजोना] १. सुसज्जित। २. आवश्यक सामग्री से युक्त। ३. सेना या सैनिक सामग्री से युक्त। ४. सजग। सावधान।

**सँजोवल**†—वि०=सजोवल।

**सँजौवा**†—पु०[हिं०सँजोना] १. सजावट। शृंगार। २ लोगों का जमघट। जमावड़ा।

**सँजोह**†—पुं० [सं० संयोग] लकड़ी का वह चौखटा जो जुलाहे कपड़ा बुनते समय छत से लटका देते हैं और जिसमें राछ या कभी लटकी रहती है।

**संज्ञ**—वि० [स० सम्√ज्ञा (जानना)+क] १. जिसे संज्ञा प्राप्त हो। चेतन। २ नामधारी। ३. चलते समय जिसके घुटने टकराते हों। पु० झाऊ या पीतकाष्ठ नामक पौधा।

**संज्ञक**—वि० [स० संज्ञा+कन्] जिसकी कुछ संज्ञा हो। संज्ञा से युक्त। जैसे—गोपाल संज्ञक व्यक्ति।

**संज्ञपन**—पुं० [स० सम्√ज्ञप् (जानना)+ल्युट्-अन] १. मार डालने की क्रिया। हत्या। २. कोई बात किसी पर अच्छी तरह प्रकट करना। ठीक और पूरी तरह से बतलाना।

**संज्ञप्त**—भू० कृ० [स०] [भाव० संज्ञप्ति] सूचित किया हुआ।

**संज्ञप्ति**—स्त्री० [सं० सम्√ज्ञप् (बताना)+क्तिन्] सूचित करना। सज्ञपन।

**संज्ञा**—स्त्री० [सं०] १. प्राणियों के शारीरिक वर्णों की वह शक्ति जिससे उन्हें बाह्य पदार्थों का ज्ञान और अपने शरीर या मन के व्यापारों की अनुभूति होती है। चेतनाशक्ति। होश। (सेन्स) २. बुद्धि। ३. ज्ञान। ४. वस्तु, व्यक्ति आदि के पुकारे जाने का नाम। ५. किसी वस्तु या कार्य के लिए पारिभाषिक रूप से प्रचलित नाम। (टेक्निकल टर्म) ६. व्याकरण में वह विकारी शब्द जो किसी वास्तविक या कल्पित वस्तु का बोधक होता है। जैसे—राम, पर्वत, घंटा, दया आदि। (नाउन) ७ आँख, हाथ आदि हिलाकर किया जानेवाला इशारा या संकेत। ८. विश्वकर्मा की एक कन्या जो सूर्य को ब्याही थी। ९. गायत्री का एक नाम।

**संज्ञात**—भू० कृ० [स० सम्√ज्ञा (जानना)+क्त] अच्छी तरह जाना या समझा हुआ।

**संज्ञान**—पुं० [स० सम्√ज्ञा (जानना)+ल्युट्-अन] १ संकेत। इशारा। २. ज्ञान विशेषत सम्यक् ज्ञान।

**संज्ञापद**—पु० [स०] वह शब्द जो किसी वस्तु या भाव की संज्ञा या नाम के रूप में प्रचलित हो। नामवाचक शब्द।

**संज्ञापन**—पु० [सं० सम्√ज्ञा (जानना)+णिच्-पक-ल्युट्-अन्] १. ज्ञान कराना या सूचित करना। २ सूचना-पत्र, विशेषत ऐसा सूचना पत्र जो माल के साथ भेजा जाता है और जिसमें भेजे हुए माल का मूल्य, विवरण आदि रहता है। (एटवाइस) ३ कथन।

**संज्ञापुत्री**—स्त्री० [स० ष० त०] सूर्य की पुत्री, यमुना जो संज्ञा के गर्भ से उत्पन्न हुई थी।

**संज्ञावलि**—स्त्री०=नामावली।

**संज्ञावान्** (वत्)—वि० [स० संज्ञा+मतुप्-य=व-नुम्-दीर्घ] १. जो संज्ञा से युक्त हो। २ जिसमें चेतना या होश-हवास हो। ३. जिसका कोई नाम हो।

**संज्ञाहीन**—वि० [सं० तृ० त०] जिसे संज्ञा या चेतना न हो। चेतनारहित। बेहोश। बेसुध।

**संज्ञिका**—स्त्री० [सं० संज्ञा+कन्-इत्व-टाप्]=संज्ञा (नाम)।

**संज्ञी**—वि०=संज्ञावान्।
पुं० जीव। प्राणी।

**संज्वर**—पुं० [सं० सं√ज्वर (ताप बढ़ना)+णिच्-अच्] १. बहुत तीव्र ज्वर। बहुत तेज बुखार। २. क्रोध का उग्र आवेश।

**संझ**—स्त्री० हिं० 'सांझ' का संक्षिप्त रूप जो उसे पौ० पदों के पहले लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—संझला, सँझवाती।

**संझला**—वि० [सं० संध्या, प्रा०संझा+हिं० ला (प्रत्य०)] संध्या संबंधी। सध्या का।
वि० [हिं० मँझला का अनु०] मँझला से कुछ छोटा, और छोटा से बड़ा।

**संझवाती**—स्त्री० [सं० संध्या+वती] १. सध्या के समय जलाया जानेवाला दीपक। शाम का चिराग। २. देहात में दीपक जलाने के समय गाया जानेवाला गीत।
वि० सन्ध्या-सम्बन्धी। संध्या का।

**संझा**†—स्त्री०=सन्ध्या।

**संझिया, सँझैया**†—पु०[सं० संध्या] वह भोजन जो संध्या समय किया जाता है। रात्रि का भोजन।
स्त्री०=साँझ (संध्या का समय)।

**सँझोखा**—पुं०[सं० सन्ध्या] सन्ध्याकाल।

वि०[स्त्री० सँझोखी] सन्ध्या के समय का। उदा०—चलि बरि अलि अनिसार कौ, भली सँझोखी सैल।—बिहारी।

**सँझोखे**†—अव्य०=संध्या समय।

**सँड**—पु०[स० शांत]१. शांति। २. निस्तब्धता। ३. चुप्पी। मौन।
**मुहा०—सँड मारना**=चुप हो जाना। चुप्पी साधना।
†वि०=शठ।

**संड**—पु०[स० शंड] साँड।
**पद—संड-मुसंड।**

**संड-मुसंड**—वि०[सं० शुंड, मुशुंडि=हाथी, हिं० संड+मुसंड (अनु०)] हट्टा-कट्टा। मोटा-ताजा।

**सँड़सा**—पु०[हिं० सँड़सी] बड़ी सँड़सी।

**सँड़सी**—स्त्री०[?] रसोई में बरता जानेवाला एक तरह का कैंची-नुमा उपकरण जिसके द्वारा बटलोई, तसला आदि चूल्हे पर से उतारे जाते हैं।

**संडा**—वि०[हिं० साँड] साँड के समान ताकतवाला। हृष्ट-पुष्ट। उदा०—भुक्की मे सरनाम कि जिनके अधिक विरारें झडे। जिनने खेले गुरु नानक के, सदा बने रहे सडे।
**पद—संडा-मुसंडा।**

पु० बलवान् और हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति या प्राणी।

**संड़ाई**†—स्त्री०[हिं० साँड] मशक की तरह बना हुआ भैंस आदि का वह हवा भरा हुआ चमडा जो नदी आदि पार करने के लिए नाव के स्थान पर काम मे लाते हैं।

**संडास**—पुं०[?] कूएँ की तरह का एक प्रकार का गहरा गड्ढा जिसमे लोग मल-त्याग करते है। शौच-कूप।

**संडास डंकी**—स्त्री०[हिं०] एक प्रकार की लोहे की टंकी जिसमे घर भर का मल या पाखाना इकट्ठा होता रहता है। (सेप्टिक टैंक)

**संत**—पु०[स० सत्]१ साधु, सन्यासी, विरक्त या त्यागी पुरुष। सज्जन और महात्मा। २ परम धार्मिक और साधु व्यक्ति। ३. साधुओ की परिभाषा मे, वह सम्प्रदाय मुक्त साधु जो विवाह करके गृहस्थ बन गया हो। ४ एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरणमे २१ मात्राएँ होती है।
वि० बहुत ही निर्मल और पवित्र।

**संत**—अव्य०[स०] निरंतर। बराबर। लगातार।
वि०१. फैला या फैलाया हुआ। विस्तृत। २. लगातार चलता या बना रहनेवाला। जैसे—सतत ज्वर, सतत वर्षा।
†स्त्री०=सतति।

**संतति**—स्त्री०[सं०]१. फैलाव। विस्तार। २ किसी काम या बात का लगातार होता रहना। ३. बाल-बच्चे। सतान। औलाद। ४ प्रजा। रिआया। ५. गोत्र। ६ झुड। दल। ७ मार्कंडेय पुराण के अनुसार ऋतु की पत्नी जो दक्ष की कन्या थी।

**संतति होम**—पु०[स० मध्यम० स०] एक प्रकार का यज्ञ जो सतान की कामना से किया जाता था।

**संतपन**—पु०[स० सम्√तप् (तप्त होना)+ल्युट्—अन]१ अच्छी तरह तपने या तपाने की क्रिया या भाव। २. बहुत अधिक सताप या दुःख देना।

**संतप्त**—भू० कृ०[सं०]१ बहुत अधिक तपा या जला हुआ। दग्ध। २. जिसे बहुत अधिक संताप या मानसिक कष्ट पहुँचा हो। ३. जिसका मन बहुत दुःखी हो। ४ थका हुआ। श्रान्त। ५. गला या पिघला हुआ।

**संतरण**—पु० [सं० सम्√तृ (तैरकर पार होना)+ल्युट्—अन]१. अच्छी तरह से तरने या पार होने की क्रिया या भाव।
वि०१. तारनेवाला। २. नष्ट करनेवाला। (यौ० के अन्त में)

**संतरा**—पु०[पुर्त० सगतरा] एक प्रकार का बडा और मीठा नीबू। बडी नारगी।

**संतरी**—पु०[अं० सेंटरी]१. किसी स्थान पर पहरा देनेवाला सिपाही। पहरेदार। २ द्वारपाल।

**संतर्जन**—पु०[स०] [भू० कृ० सनर्जित]१ डाँट-डपट करना। डराना-धमकाना। २ कार्तिकेय का एक अनुचर।

**संतर्पक**—वि०[स० सम्√तृप् (तृप्त करना)+ण्वुल्—अक] तर्पण करनेवाला।

**संतर्पण**—पु०[स०] [कर्ता सतर्पक, भू० कृ० सतृप्त]१ अच्छी तरह तृप्त, प्रसन्न या सतुष्ट करने की क्रिया या भाव। २ आधुनिक विज्ञान मे, कोई ऐसी प्रक्रिया जिससे (क) कोई ठोस किसी वस्तु के अन्दर पूरी तरह से समा जाय, या (ख) कोई तरल या वस्तु किसी दूसरे पदार्थ के अन्दर अच्छी तरह भर जाय।

**संतान**—पुं०[स०] १ स्त्री और पुरुष या नर और मादा के संयोग से उत्पन्न होनेवाले उसी प्रकार या वर्ग के अन्य जीव आदि। २ बाल-बच्चे लडके-बाले। सतित। औलाद। ३. कुल। वश। ४ विस्तार। फैलाव। ५ लगातार चलता रहनेवाला क्रम। धारा। ६ प्रबध। व्यवस्था। ७ कल्पतरु। ८ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

**संतान गणपति**—पु०[स०] पुराणानुसार एक विशिष्ट गणपति जो सतान देनेवाले कहे गये है।

**संतान-सप्तमी**—स्त्री०[स०] राजनीतिक क्षेत्र मे ऐसी सधि जो अपना लडका या लडकी देकर की जाय।

**संतानिक**—वि०[स० सतान+ठन्—इक] कल्पतरु के फूलो से बना हुआ।
वि० सतान-सम्बन्धी। सतान का।

**संतानिका**—स्त्री०[स० सतानिक—टाप्]१. क्षीर सागर। २ फेन। ३. मलाई। ४ चाकू का फल। ४. एक तरह की घास।

**संतानिनी**—स्त्री०[स० सतान+इनि—ङीप्] दूध या दही पर की मलाई। साढी।
वि० सतान अर्थात् बाल-बच्चोवाली (स्त्री)।

**संताप**—पु०[स० सम्√तप् (तपना)+घञ्]१ अग्नि, धूप आदि का बहुत तीव्र ताप। आँच। २. शरीर मे किसी कारण से होनेवाली बहुत अधिक जलन। ३. ज्वर। बुखार। ४. शरीर मे होनेवाला दाह नामक रोग। ५. कोई ऐसा बहुत बडा कष्ट या दुःख जिससे मन जलता हुआ सा जान पडे। बहुत तीव्र मानसिक क्लेश या पीडा। ६. दुश्मन। शत्रु। ७. पाप आदि करने पर मन में होनेवाला अनुताप।

**संतापन**—पु०[स० सम्√तप् (तपाना)+णिच्—ल्युट्—अन] १. संताप देने या सतप्त करने की क्रिया। जलाना। २. किसी को बहुत

अधिक कष्ट या दुःख देना। सतप्त करना। ३. एक हथियार। ४. कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
वि० सतप्त करनेवाला।

**संतापना***—स० [स० सतापन] सताप देना। बहुत अधिक दुःख देना। सताना।

**संतापित**—भू० कृ० [सं० सम्√ तप् (ताप पहुँचाना)+णिच्—क्त] जिसे बहुत सताप पहुँचाया गया हो। पीड़ित। सतप्त।

**संतापी (पिन्)**—वि० [सं० सम्√तप् (प्त करना)+णिन्, सतापिन्] सतप्त करने या संताप देनेवाला।

**संताप्य**—वि० [स० सम्√तप् (तपाना)+णिच्—ण्यत्] १. जलाये या तपाये जाने के योग्य। २ पीड़ित या सतप्त किये जाने के योग्य।

**संति**—स्त्री०[सं०√सनु (दान करना)+क्तिच्] १. दान। २. अन्त। समाप्ति।

**संती**—अव्य०[सं० सति?] १ बदले मे। एवज मे। स्थान पर। २. द्वारा।

**संतुलन**—पु० [स०] १. अच्छी तरह तौलने की क्रिया या भाव। २ तौलते समय तराजू के दोनो पलड़े बराबर या ठीक करना या होना। ३ लाक्षणिक अर्थ मे, वह स्थिति जिसमे सभी अग या पक्ष बराबर के या यथास्थान हों। (बैलेन्स)

**संतुलित**—भू० कृ०[स०] १ जिसका सतुलन हुआ हो। २ जिसमे दोनों पक्षों का बल या प्रभाव समान हो या रखा जाय। ३. न अधिक, न कम। ठीक। (बैलेन्सड)

**संतुष्ट**—भू०कृ०[स० सम्√तुष् (सतोष होना)+क्त] [भाव० सतुष्टि] १. जिसका सतोष कर दिया गया हो अथवा हो गया हो। जिसकी तृप्ति हो गई हो। तृप्त। २. जो समझाने-बुझाने से राजी हो गया या मान गया हो।

**संतुष्टि**—स्त्री०[स० सम्√तुष् (तुष्ट होना)+क्तिन्] १ सतुष्ट होने की क्रिया या भाव। तृप्ति। २ सतोष। ३. प्रसन्नता।

**संतूर**—पु० [फारसी०] शत-तन्त्री वीणा का कश्मीरी नाम।

**संतोख**†—पु०=सतोष।

**संतोष**—पु० स०स√तुष् (सतोष करना)+घञ्] १. वह मानसिक अवस्था जिसमे व्यक्ति प्राप्त होनेवाली वस्तु को यथेष्ट समझता है और उससे अधिक की कामना नही रखता। २. वह अवस्था जिसमें अभीष्ट कार्य होने या वाछित वस्तु प्राप्त होने पर क्षोभ मिट जाता है और फलतः कुछ अवस्थाओ मे हर्ष भी होता है। जैसे—मजदूरी की माँगें पूरी हो जाने पर ही सतोष होगा। २ हर्ष। आनन्द। ४. धैर्य।

**संतोषक**—वि० [सं० सतोष+कन्] १. सतुष्ट करनेवाला। २. प्रसन्न करनेवाला।

**संतोषण**—पुं० [स० सम्√तुष् (सतोष होना)+ल्युट्—अन] १. सन्तोष करने की क्रिया या भाव। २. सन्तुष्ट करने की क्रिया या भाव।

**संतोषणीय**—वि० [सं० सम्√तुष् (सतोष करना)+अनीयर्] जिससे या जितने में सन्तोष हो सके।

**संतोषना**—अ० [सं० सतोष] १. सतोष होना। २. सतुष्ट होना। स० १. सन्तोष करना। २. संतुष्ट करना।

**संतोषी (षिन्)**—वि०[सं० सम्√तुष् (प्रसन्न रहना)+णिनि] (व्यक्ति) जो प्राप्त होनेवाली वस्तु को यथेष्ट समझता होता हो और उसी मे संतुष्ट रहता हो।

**संतोष्य**—वि०[स० सम्√तुष् (सतोष करना)+यत्] जिसका सतोष करना या जिसे संतुष्ट करना आवश्यक या उचित हो।

**संत्रस्त**—भू० कृ०[सं०]१. जिसे बहुत सताप हुआ हो। २. बहुत डरा हुआ। ३. भय से काँपता हुआ।

**संत्रास**—पुं०[स० सम् √ त्रस् (भयभीत होना)+घञ्] १. बहुत अधिक या तीव्र त्रास। २. आतंक।

**संत्री**†—पु०=सतरी।

**संधा**—स्त्री०[सं०संहिता?] एक बार में पढ़ा या पढ़ाया हुआ अश। पाठ। सबक।

**संदंश**—पु०[सं० स√दश् (पकड़ना)+अच्] १. सडसी नाम का औजार। २ सुश्रुत के अनुसार सडसी के आकार का, प्राचीन काल का एक प्रकार का, औजार जिसकी सहायता से शरीर मे गडा हुआ काँटा आदि निकालते थे। ककमुख। ३. न्याय या तर्कशास्त्र मे अपने प्रतिपक्षी को दोनो ओर से उसी प्रकार जकड़ या बाँध देना जिस प्रकार सडसी से कोई बरतन पकडते हैं।

**संदंशक**—पु० [स० सदश+कन्] [स्त्री० अल्पा० सदशिका] १. चिमटा। २. सँडसी।

**संदंशिका**—स्त्री० [सं० सं√ दश् (पकड़ना)+ण्वुल्—अक—टाप्—इत्व] १. सडसी। २. चिमटी। ३. कैंची।

**संदं**†—स्त्री० [स० संधि] १. दरार। छेद। बिल। २ दबाव।
†पु०=चद्र।

**संदन***—पु०=स्यदन (रथ)।

**संदर्प**—पु०[स० स√दर्प् दप् (गर्व करना)+घञ्] अहकार। घमड।

**संदर्भ**—पु०[स०] १. भिन्न भिन्न तत्वो या वस्तुओ को मिलाकर कोई नया और उपयोगी रूप देना। जैसे—पिरोना, बुनना, सीना आदि। २. बनावट। रचना। ३. पुस्तक, लेख आदि मे वर्णित प्रसग, विषय आदि जिसका विचार या उल्लेख हो। (कन्टेक्स्ट) जैसे—यह पद्य 'रामवनगमन' संदर्भ का है। ४. किसी गूढ़ विषय पर लिखा हुआ कोई विवेचनात्मक ग्रन्थ। ५. किसी ग्रन्थ मे लिखा हुआ वह पाठ जिसके आधार पर पूर्वापर के विचार से सगति बैठाकर उसका अर्थ लगाया जाता है। (कन्टेक्स्ट) जैसे—सदर्भ से तो इसका यही अर्थ ठीक जान पड़ता है। ६ एक ग्रन्थ में आई हुई ऐसी बातें जिनका उपयोग लोग अपनी जानकारी बढ़ाने के लिए या सदेह दूर करने के लिए करते हैं। वि० दे० 'सदर्भ ग्रथ'।

**संदर्भ ग्रंथ**—पु०[सं०] ऐसा ग्रन्थ जिसमें जानकारी या विमर्श के लिए कुछ विशिष्ट प्रसगो की बातें देखी जाती हो।
**विशेष**—ऐसा ग्रन्थ आद्योपान्त पढ़ा नही जाता बल्कि किसी जिज्ञासा की पूर्ति या सदेह के निवारण के उद्देश्य से देखा जाता है। जैसे—कोश, विश्वकोश, साहित्य कोश आदि सदर्भ ग्रन्थ है।

**संदर्भ साहित्य**—पु०[सं०] साहित्य का वह अश या वर्ग जिसमें ऐसे बड़े और महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ आते हैं जिनमे एक अथवा अनेक विषयो की गूढ़ बातों की पूरी छान-बीन और विवेचन होता है।
**विशेष**—ऐसे साहित्य का उपयोग साधारण रूप से पढ़ी जानेवाली

पुस्तकों की तरह नहीं, बल्कि विशिष्ट अवसरों पर विशेष प्रकार की गंभीर जानकारी प्राप्त करने के लिए ही किया जाता हो। जैसे—विश्व कोश, शब्द कोश, विभिन्न जातियों, देशों और साहित्य के इतिहास आदि। (रेफरेन्स बुक्स)

**संदर्भिका**—स्त्री० [सं० संदर्भ ] किसी विशिष्ट विषय से सम्बन्ध रखने-वाले संदर्भ ग्रन्थों की नामावली या सूची। (बिब्लियोग्राफी)

**संदर्श**—पुं० [सं० सं √ दृश (देखना) +अच्] दे० 'परिदृष्टि'।

**संदर्शन**—पुं० [सं०]१. अच्छी तरह देखना या दिखाना। अवलोकन करना या कराना। २. जाँच। परीक्षा। ३. ज्ञान। ४. आकृति। शक्ल। सूरत। ५. दर्शन।

**संदल**—पुं०[स० चन्दन से फा०] चंदन।

**संदली**—वि०[फा० सदल]१. सदल अर्थात् चन्दन के रंग का। हलका पीला (रंग)। २. चन्दन की लकड़ी का बना हुआ। ३. (खाद्य पदार्थ) जिसमें संदल का सत छोड़ा गया हो फलतः जिसमें संदल की महक हो।
पुं०१. हल्का पीला रंग। २. वह हाथी जिसके बाहरी दांत नहीं होते।

**संदष्ट**—भू० कृ०[स०]१. जिसे अच्छी तरह डंक या दंश लगा हो या लगाया गया हो। २. कुचला या रौंदा हुआ।
पुं० बीणा, सितार आदि की तूँबी की घोड़ियों में तारों के बैठने के लिए बनाये हुए खांचे या निशान।

**संदंश**—पुं०[फा०]१. एक प्रकार की निहाई जिसका एक कोना नुकीला और दूसरा चौड़ा होता है। अहरन। २ बाँधने की रस्सी या सिकड़ी। ३. बाँधने की क्रिया या भाव। ४. हाथी का गडस्थल जहाँ से उसका मद बहता है।

**संदानिनी**—स्त्री० [सं० संदान+इनि—ङीप्] गौओं के रहने का स्थान। गोशाला।

**संदाह**—पुं० [स० सं√ दह् (जलना)+घञ्] वैद्यक के अनुसार मुख, तालु और होंठों में होनेवाली जलन।

**संधि**†—स्त्री०=सधि।

**संदिग्ध**—वि०[सं०]१. (कथन या वाक्य) जिसके संबंध में निर्विवाद रूप से कुछ भी कहा न जा सकता हो। २. (अर्थ, निर्वचन या व्याख्या) जिसके संबंध में किसी प्रकार का अनिश्चय हो। ३. (व्यक्ति) जिसके संबंध में अनुमान हो कि वह अपराधी या दोषी है। (सस्पेक्टेड)
पुं०१. अस्पष्ट कथन। २. अनिश्चय। ३. एक प्रकार का व्यंग्य। ४. वह व्यक्ति जिसके अपराधी होने का संदेह हो। ५. तर्क में एक प्रकार का मिथ्या उत्तर।

**संदिग्धत्व**—पुं० [सं० सन्दिग्ध+त्व] १. संदिग्ध होने की अवस्था, धर्म या भाव। संदिग्धता। २. साहित्य में, एक प्रकार का दोष जो उस समय माना जाता है जब किसी आलंकारिक उक्ति का ठीक ठीक अर्थ प्रकट नहीं होता या अर्थ के संबंध में कुछ संदेह बना रहता है।

**संदिग्धार्थ**—वि०[स० कर्म० स०] जिसका अर्थ संदिग्ध या अस्पष्ट हो।
पुं० विवादग्रस्त विषय।

**संदिष्ट**—वि०[स० सं√ दिश् (कहना)+क्त]१. कहा हुआ। उक्त। कथित। २. सन्देह के रूप में कहा या कहलाया हुआ।
पुं० १. वार्ता। २. समाचार। ३. संदेशवाहक।

**संदी**—स्त्री० [स०सं√दो (बँधना)+ड—ङीप्] शय्या। पलंग। खाट।

**संदीपक**—वि० [सं० सं √दीप् (प्रदीप्त)+ण्वुल्—अक] संदीपन करने-वाला। उद्दीपक।

**संदीपन**—पु०[सं० स√ दीप् (प्रदीप्त करना)+ल्युट्—अन]१. उद्दीप्त अर्थात् तीव्र या प्रबल करने की क्रिया या भाव। उद्दीपन। २ श्रीकृष्ण के गुरु का नाम। ३ कामदेव के पाँच बाणों में से एक।
वि० उद्दीप्त करनेवाला।

**संदीपनी**—स्त्री०[सं० संदीपन—ङीप्] संगीत में, पंचम स्वर की चार श्रुतियों में से तीसरी श्रुति।
वि० संदीपन या उद्दीपन करनेवाली।

**संदीपित**—भू० कृ० =संदीप्त।

**संदीप्त**—भू० कृ०[सं०] [भाव० संदीप्ति] १. जिसका भली-भाँति संदीपन या उद्दीपन हुआ हो। २ जलता हुआ। प्रज्वलित। ३ खूब चमकता हुआ या प्रकाशमान्।

**संदीप्य**—पु०[सं० स√ दीप् (प्रदीपन करना)+ण्य—यक्] मयूर शिखा नामक वृक्ष।
वि० जिसका संदीपन हो सके या होने को हो। संदीपनीय।

**संदुष्ट**—भू० कृ०[सं० स√ दुष् (खराब करना)+क्त]१. दूषित या कलुषित किया हुआ। खराब किया हुआ। २ दुष्ट। ३ कर्मांना।

**संदूक**—पु०[अ० संदूक] [अल्पा०संदूकचा]लकड़ी, लोहे, चमड़े आदि का बना हुआ एक प्रकार का चौकोर आधार या पिटारा जिसमें प्रायः कपड़े, गहने आदि चीजें रखते हैं। पेटी। बकस।

**संदूकचा**—पु०[अ० संदूक+चः (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० संदूकची] छोटा संदूक। छोटा बकस। छोटी पेटी।

**संदूक.ची**—स्त्री०=संदूकचा।

**संदूकड़ी**—स्त्री०[अ० संदूक+हिं० ड़ी (प्रत्य०)] छोटा संदूक। छोटा बकस।

**संदूकी**—वि०[अ०]१ संदूक की शक्ल का। २ जो चारों ओर से संदूक की तरह बंद हो।

**संदूर**†—पु०=सिंदूर।

**संदूषण**—पु०[सं० स√दूष् (दूषित करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० संदूषित, संदुष्ट] १. कलुषित करना। २ गंदा या खराब करना।

**संदेश**—पु०[स०]१. खबर। समाचार। २. वह कथन या बात जो लिखित या मौखिक रूप से एक व्यक्ति द्वारा दूसरे व्यक्ति को भेजी गई हो। संदेशा। ३. अलौकिक, ईश्वरी या दैवी प्रेरणादायक विचार। ४ आजकल किसी बहुत बड़े आदमी का वह कथन जिसमें उसके मतों या विचारों का मुख्य सारांश होता है और प्रायः जिसमें किसी विशिष्ट प्रकार का आचार-व्यवहार करने का उल्लेख होता है। (मेसेज; अन्तिम दोनों अर्थों के लिए) ५. आज्ञा। आदेश।

**संदेश-काव्य**—पुं०[सं०] ऐसा काव्य जिसमें विरही की विरह-वेदना किसी के द्वारा संदेश के रूप में अपने प्रिय के पास भेजने का वर्णन होता है।
**विशेष**—ऐसे काव्यों की परम्परा कालिदास के सुप्रसिद्ध काव्य मेघदूत से चली थी। उसके अनुकरण पर पवन-दूत, हंस-दूत, आदि अनेक काव्यों की रचना हुई थी।

**संदेश-हर**—पु०[सं०] संदेश या समाचार ले जानेवाला दूत। वार्ताहर।

**संदेशा**†—पुं०= संदेश।

**संदेशी**—पुं० [सं० सं√ दिश् (कहना)+णिनि, संदेशिन्] संदेश लाने या ले जानेवाला। संदेशवाहक।

**संदेसा**†—पु०=संदेश।

**संदेसी**†—पु० [हिं० संदेसा+ई (प्रत्य०)] वह जो संदेसा ले जाता हो।

**संदेह**—पुं०[सं०]१. किसी चीज या बात के संबध मे मन मे उत्पन्न होनेवाला यह भाव या विचार कि कही यह अनुचित, त्याज्य या दूषित तो नहीं है अथवा क्या इसकी वास्तविकता या सत्यता मानने योग्य है। शक। (सस्पिशन)

**विशेष**—मन में इस प्रकार का भाव प्राय. यथेष्ट प्रमाण के अभाव मे ही उत्पन्न होता है, और ऊपर से दिखाई देनेवाले तथ्य या रूप पर सहसा विश्वास नही होता। दे०'शका' और 'संशय'।

क्रि० प्र०—करना।—डालना।—मिटना।—मिटाना।—होना।

२ उक्त के आधार पर साहित्य में, एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे किसी चीज या बात को देखकर उसकी यथार्थता या वास्तविकता के संबध मे मन मे संदेह बने रहने का उल्लेख होता। इस प्रकार का कथन कि जो कुछ सामने है, वह अमृत है अथवा कुछ और ही है। यथा (क) कैधौं फूली दुपहरी, कैधौं फूली साँझ।—मतिराम। (ख) निद्रा के उस अलसित वन मे वह क्या भावो की छाया। दृग पलको मे विचर रही या वन्य देवियो की माया।—पत।

**संदेहवाद**—पु०[स०] दार्शनिक क्षेत्र मे यह मत या सिद्धान्त कि वास्तविक या सत्य का कभी ठीक और पूरा ज्ञान नही हो पाता, इसलिए हर बात के सम्बन्ध में मन मे सदेह का भाव बना ही रहना चाहिए।

**विशेष**—इसमें जिज्ञासा की तृप्ति के लिए सदेह का स्थायी रूप मे बना रहना आवश्यक माना जाता है।

**संदेहवादी**—वि०[सं०] सदेहवाद-सम्बन्धी।

पु० वह जो सदेहवाद का अनुयायी और समर्थक हो।

**संदेहात्मक**—वि०[स०] सदिग्ध। (दे०)

**संदेहास्पद**—वि० [स०] सदिग्ध। (दे०)

**संदोल**—पु० [सं० सं√ दुल् (झूलना)+घञ्] कान में पहनने का कर्ण-फूल नाम का गहना।

**संदोह**—पुं०[स० सं√ दुह् (पूरा करना)+घञ्] १. दूध दोहना। २. किसी वस्तु का समूचा भाग या रूप। ३. ढेर। राशि। ४. समूह। झुंड।

**संद्राव**—पु०[सं० सं√द्रु (चलना)+अच्] गूँधने की क्रिया। गुथन।

**संद्राव**—पु०[सं० सं√ द्रु (भागना)+घञ्] युद्ध-क्षेत्र से पराजित होने पर अथवा पराजय के भय से भागना। पलायन।

**संधं**†—स्त्री०[सं० संधि]१. जोड़। संधि। २. दो चीजो के बीच में पड़नेवाली थोड़ी सी जगह। ३. दे० 'सेंध'।

**संधउरा**†—पुं०=सिंधोरा।

**संधना**†—अ०[सं० संधि] संयुक्त होना। मिलना।

†स० संयुक्त करना। मिलाना।

†स०=संधानना।

**संधा**—वि०[सं०] १. अभिसंधि या अभिप्राय से युक्त। जैसे—संधा भाषा।

स्त्री०१. मेल। संधि। २. घनिष्ठ संबंध। ३. अभिप्राय। आशय। ४. आपस में होनेवाला करार, निश्चय या समझौता। ५. किसी प्रकार का दृढ़ निश्चय। ६. सीमा। हद। ७. स्थिति। ८. सबेरे और सध्या के समय दिखाई पड़नेवाली सूर्य की लालिमा या उसके कारण होनेवाला प्रकाश। ९. सध्या का समय। १०. अनुसधान। तलाश।

**संधाता**—पु०[सं० सं√ धा (रखना)+तृच्, सधातृ]१. शिव। २. विष्णु।

**संधान**—पुं०[सं०] [भू० कृ० सधानित] १ निशाना लगाने के लिए कमान पर तीर ठीक तरह से लगाना। निशाना बैठाना। २ ढूँढने या पता लगाने का काम। ३. युक्त करना। मिलाना। ४. मृत शरीर को जीवित करना। सजीवन। ५ दो चीजो का मिलना। संधि। ६. किसी का किसी उद्देश्य से किसी ओर मिलना। सध्यय। (एलायन्स) ७. धातु आदि के खडो को मिलाकर जोड़ना। (वेल्डिंग) ८. किसी चीज को सडाकर उसमे खमीर उठाना। (फ्रमटेशन) ९. मदिरा या शराब चुआना। १०. मदिरा। शराब। ११. काजी। १२. अचार। १३. सीमा। हद। १४. काठियावाड़ या सौराष्ट्र प्रदेश का पुराना नाम। १५. सधि।

**संधानना**†—स० [स० सधान+ना (प्रत्य०)]१. धनुष पर बाण चढ़ाकर लक्ष्य करना। निशाना लगाना। २. तीर या बाण चलाना। ३ किसी प्रकार का शस्त्र चलाने के लिए निशाना साधना।

**संधाना**—पु०[सं० सधानिका] अचार।

**संधानित**—भू० कृ०[स० संधान+इतच्]१ जोडा बाँधा या मिलाया हुआ। २. लक्ष्य किया हुआ। जिस पर निशाना साधा गया हो।

**संधानिनी**—स्त्री० [सं० सधान+इनि—ङीप्] गौओ के रहने का स्थान। गौशाला।

**संधानी**—स्त्री०[स०] १. एक मे मिलने या मिश्रित होने की क्रिया या मिलन। मिश्रण। २ प्राप्ति। लाभ। ३. बन्धन। ४. अन्वेषण। तलाश। ५. पालन-पोषण। ६. काँजी। ७. अचार। ८ शराब बनाने की जगह। ९. धातुओ आदि की ढलाई करने की जगह। १०. दे० 'संधान'।

**संधापगमन**—पुं०[सं०] समीपवर्ती शत्रु से संधि करके दूसरे शत्रु पर चढ़ाई करना।

**संधा भाषा**—स्त्री०[स०] बौद्ध तांत्रिको और परवर्ती साधको में प्रचलित एक प्राचीन भाषा-प्रणाली जिसमे अलौकिक और रहस्यात्मक बाते सीधे सादे शब्दो में नहीं, बल्कि ऐसे प्रतीकात्मक जटिल शब्दो मे कही जाती थी, जिनसे जन-साधारण कुछ भी मतलब नहीं निकाल सकते थे।

**संधा-वचन**—पुं०=संधा भाषा।

**संधि**—स्त्री०[सं०] १. दो या अधिक चीजो का एक में जुड़ना या मिलना। मेल। सयोग। २. वह स्थान जहाँ कई चीजें एक मे जुड़ी या मिली हो। मिलने की जगह। जोड़। ३. शरीर मे वह स्थान जहाँ कई हड्डियाँ एक दूसरी से मिलती हैं। गाँठ। जोड़। (ज्वाइन्ट) जैसे—कोहनी, घुटना आदि। ४. व्याकरण मे शब्दों के रूपो मे होनेवाला वह विकार जो दो अक्षरों के पास-पास आने पर उनके मेल या योग के कारण होता है। ५. एक युग की समाप्ति और दूसरे युग के आरम्भ के बीच का समय। युग-संधि। ६. एक अवस्था की समाप्ति और दूसरी अवस्था के आरम्भ के बीच का समय। जैसे—वय.सधि। ७. दो चीजों के

बीच की खाली जगह। अवकाश। ८. दरज। दरार। ९ राजाओं या राज्यों आदि में होनेवाला वह निश्चय या प्रतिज्ञा जिसके अनुसार पारस्परिक युद्ध बन्द किया जाता है, मित्रता या व्यापार-संबंध स्थापित किया जाता है, अथवा इसी प्रकार का और कोई काम होता है। (ट्रीटी) १०. नाटक में किसी प्रधान प्रयोजन के साधक कथांशों का किसी एक मध्यवर्ती प्रयोजन के साथ होनेवाला संबंध। ये संधियाँ पाँच प्रकार की कही गई हैं—मुखसंधि, प्रतिमुख-संधि, गर्भसंधि, अवमर्श या विमर्श-संधि और निर्वहण संधि। ११. चोरी आदि करने के लिए दीवार में किया हुआ छेद। सेंध। १२. स्त्री की भग। योनि। १३. दोस्ती। मित्रता। १४. संघटन। १५. भेद। रहस्य। १६ कार्य करने का साधन।

**संधिक**—पु० [स०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का सन्निपात, जिसमें शरीर की संधियों में वायु के कारण बहुत पीड़ा होती है।

**संधि-गुप्त**—पुं०[स०] वह स्थान जहाँ शत्रु की आनेवाली सेना पर छापा मारने के लिए सैनिक लोग छिपकर बैठते हैं।

**संधि-चौर**—पु०[स०] सेंध लगाकर चोरी करनेवाला। सेंधिया चोर।

**संधिच्छेद**—पु०[स०]१ चोरी करने के लिए किसी के घर में सेंध लगाना। २ प्राचीन भारतीय राजनीति में, पारस्परिक संधि के नियम भंग करनेवाला पक्ष। ३. दे० संधिविच्छेद'।

**संधिज**—पु०[स०] १. (चुआकर तैयार किया हुआ) मद्य, आसव आदि। २ शरीर के संधि-स्थान पर होनेवाली गाँठ या फोड़ा।
वि० संधि से उत्पन्न या बना हुआ।

**संधित**—भू० कृ० [स० सधा+इतच्] जिनमें संधि हो। संधियुक्त।
पु० आसव। अरक।

**संधिनी**—स्त्री० [स० सधा+इनि—ङीप्] १ गाभिन गौ। २ ऐसी गौ जो गाभिन होने की दशा में भी दूध देती हो। ३ ऐसी गौ जो बछड़ा पास न रहने पर भी दूध देती हो। ४. दिन-रात में केवल एक बार दूध देनेवाली गौ।

**संधिप्रच्छादन**—पु० [स०] संगीत में, स्वर-साधन की एक विशिष्ट प्रणाली जो इस प्रकार होती है। आरोही—सारेग, रेगम, गमप, मपध, पधनि, धनिसा। अवरोही—सानिध, निधप, धपम, पमग, मगरे, गरेसा।

**संधि-पत्र**—पु०[स०] वह पत्र जिस पर आपस की संधि या मेल-जोल की बात निश्चित होने पर उसके सम्बन्ध की शर्तें लिखी जाती हैं।

**संधि-बंधन**—पु०[स०] शिरा। नाड़ी। नस।

**संधि-भंग**—पु०[स०]१. संधि की शर्तों का टूटना या तोड़ना। २. वैद्यक के अनुसार हाथ या पैर आदि के किसी जोड़ की हड्डी टूटना।

**संधिभग्न**—पु०[स०] एक प्रकार का रोग जिसमें अंग की संधियों में बहुत पीड़ा होती है।

**संधि-मोक्ष**—पु०[स० ष० त०]१. राजनीति में पुरानी सन्धि तोड़ना। संधिभंग। २. दे० 'समाधिमोक्ष'।

**संधिरिंधिका**—स्त्री०[स०] १. सुरंग। २. सेंध।

**संधि-राग**—पु०[स०] सिंदूर।

**संधिला**—स्त्री० [स०] १. सुरंग। २. सेंध। ३. नदी। ४. मदिरा। शराब।

**संधि-विग्रहक (हिक)**—पु० [स०] प्राचीन भारत में परराष्ट्रों के साथ युद्ध या संधि का निर्णय करनेवाला मंत्री या राजकीय अधिकारी।

**संधि-विग्रही**—पु०=संधि-विग्रहक।

**संधि-विच्छेद**—पु० [स०] १. आपस की संधि या समझौता तोड़ना या टूटना। २. व्याकरण में किसी पद को संधि के स्थान से तोड़कर उसके शब्द अलग अलग करना। जैसे—'मतैक्य' का संधि विच्छेद होगा=मत+ऐक्य।

**संधि-विद्ध**—पु०[सं०] एक प्रकार का रोग जिसमें हाथ पैर के जोड़ों में सूजन और पीड़ा होती है।

**संधिवेला**—स्त्री०[स०] संध्या का समय। सायंकाल। शाम।

**संधिहारक**—पु०[स० संधि√हृ (हरण करना)+ण्वुल्—अक] वह चोर जो सेंध लगाकर चोरी करता हो। सेंधिया चोर।

**संधेय**—वि० [स० स√धा (रखना) यत्] जिसके साथ संधि की जा सके।

**संध्यंग**—पु०[स० ष० त०] नाटक में मुखसंधि आदि संधियों के अंग।

**संध्यंतर**—पु०[स० संधि+अन्तर]=उप-संधि।

**संध्य**—वि०[स० संधि+यत्] सन्धि-संबंधी। संधि का।

**संध्यांश**—पु०[स०] दो युगों के बीच का समय। युग-संधि।

**संध्या**—स्त्री०[स०]१ दिन और रात दोनों के मिलने का समय। संधि-काल। २ वह समय जब दिन का अंत और रात का आरम्भ होने को होता है। सूर्यास्त से कुछ पहले का समय। सायंकाल। शाम।
**मुहा०—संध्या फूलना**=दिन ढलने पर धीरे-धीरे सन्ध्या का सुहावना समय आना।
३ भारतीय आर्यों की एक प्रसिद्ध उपासना जो सवेरे, दोपहर, और सन्ध्या को होती है। ४. एक युग की समाप्ति और दूसरे युग के बीच का समय। दो युगों के मिलने का समय। युग-संधि। ५. सीमा। हद। ६ एक प्राचीन नदी। ७ एक प्रकार का फूल और उसका पौधा। ८ दे० 'संधा भाषा'।

**संध्याचल**—पु०[स० ष० त०]=अस्ताचल।

**संध्यावल**—पु०[स०] निशाचर। निश्चर।

**संध्या भाषा**—स्त्री० दे० 'संधा भाषा'।

**संध्यारात्र**—पु०[स०]१. संगीत में, श्याम कल्याण राग। २. सिंदूर।

**संध्यालोक**—पु०[स०] सांध्य प्रकाश।

**संध्यावधू**—स्त्री०[स० ष० त०]रात्रि। रात। निशि।

**सन्यासन**—पु०[स०] आपस में लड़कर शत्रुओं का कमजोर होकर बैठ जाना। (कामदक)

**सन्ध्योपासन**—पु०[स० ष० त०] सन्ध्या के समय की जानेवाली आर्यों की सन्ध्या-पूजा आदि।

**सन्निक्षप्ता**—पु०[सं० सम् नि√क्षिप्+तृच्] श्रेणी या सघ के धन का रक्षक या खजाची। (कौ०)

**सन्यसन**—पुं० [स० सम्-नि√अस् (होना)+ल्युट्—अन] [वि० सन्यस्त] १. फेंकना। छोड़ना। २. अलग या दूर करना। हटाना। ३ सांसारिक विषयों से सम्बन्ध छोड़कर अलग होना। ४. धरना। रखना। ५. जमाना। बैठाना। ६. खड़ा करना।

**सन्यस्त**—भू० कृ० [सं०] १. फेंका या छोड़ा हुआ। २. हटाया

या अलग किया हुआ। ३. धरा या रखा हुआ। ४. जमाया या बैठाया हुआ। ५. खड़ा किया हुआ। ६. जिसने संन्यास आश्रम में प्रवेश किया हो।

**संन्यास**—पुं० [स०] [वि० संन्यस्त] १. पूरी तरह से छोड़ना। परित्याग करना। २. हिंदुओं के चार आश्रमों में से अंतिम, जिसमें सब प्रकार के सांसारिक बंधन या संबंध तोड़कर और त्यागी तथा विरक्त होकर सब कार्य निष्काम भाव से किये जाते हैं। चतुर्थ आश्रम। ३ किसी निश्चित क्षेत्र या सीमा के अन्दर ही रहने अथवा कोई काम करने या उस क्षेत्र या सीमा से बाहर न निकलने की प्रतिज्ञा या व्रत। जैसे—गृह-संन्यास, क्षेत्र-संन्यास। (देखें) ४. अपने विधिक या कानूनी अधिकारों का स्वेच्छापूर्वक त्याग। (सिविल सुइसाइड) ५. अपस्मार, भीषण ज्वर, विषयोग आदि के कारण होनेवाली वह अवस्था जिसमें रोगी की चेतना-शक्ति बिलकुल नष्ट हो जाती है। (कॉमा)

**विशेष**—मूर्च्छा और संन्यास में यह अन्तर है कि मूर्च्छा तो अनेक अवस्थाओं में आप से आप दूर हो जाती है, परन्तु संन्यास किसी प्रकार के उपचार या चिकित्सा के बिना दूर नहीं होता।

६ सहसा होनेवाली मृत्यु। अचानक मर जाना। ७ बहुत अधिक थक जाना या परम शिथिल होना। ८. थाती। धरोहर। न्यास। ९. इकरार। वादा। १० प्रतिस्पर्धा। होड़।

**संन्यासी (सिन्)**—पुं० [स० संन्यास+इनि] १ वह जिसने संन्यास आश्रम ग्रहण किया हो। संन्यास आश्रम में रहने और उसके नियमों का पालन करनेवाला। २. त्यागी और विरक्त व्यक्ति। यति।

**सँपरी**†—स्त्री० [हिं० साँप] १. एक प्रकार का लंबा कीड़ा जो मनुष्यों और पशुओं की आँतों में उत्पन्न होता है। पेट का केंचुआ। २. बेला नाम का पौधा और फूल।

**संपक्व**—वि० [स० सम्√ पच् (पकाना)+क्त—व] १ अच्छी तरह उबाला या पकाया हुआ। २. जो पूरा पक चुकने पर अन्त या समाप्ति के समीप पहुँच चुका हो।

**संपत्**—स्त्री० [सं०] सपद्।

**संपति**†—स्त्री०=सपत्ति।

**संपत्कुमार**—पुं० [स०] विष्णु का एक नाम।

**संपत्ति**—स्त्री० [सं०] १. धन-दौलत और जायदाद आदि जो किसी के अधिकार में हो और जो खरीदी या बेची जा सकती हो। जायदाद। (प्रापर्टी; एफ़ेक्ट्स) २. कोई ऐसी चीज जो महत्त्व की और स्वामी के लिए लाभदायक हो। जैसे—वन्य-संपत्ति, पशु-संपत्ति आदि। ३. ऐश्वर्य। वैभव। ४. अधिकता। बहुतायत।

**संपत्तिकर**—पुं० [स०] वह कर जो किसी पर उसकी संपत्ति के विचार से लगाया जाता है। (प्रापर्टी टैक्स)

**संपद्**—स्त्री० [सं०] १. कार्य की पूर्णता या सिद्धि। काम पूरा होना। २. धन-दौलत। सम्पत्ति। २. भण्डार। जैसे—शब्द-संपद। ४ सुख और सौभाग्य की स्थिति। ५. जैसे—संपद-विपद् सबमें साथ देनेवाला व्यक्ति। ६. प्राप्ति। लाभ। ७. अधिकता। बहुतायत। ८. मोतियों की माला। ९. वृद्धि नामक औषधि।

**संपदा**—स्त्री० [सं० सपद्] १. धन। दौलत। २. ऐश्वर्य। वैभव।

**संपन्ना**†—अ० [सं० सम्पन्न] १. (कार्य) पूरा होना। २. (पदार्थ समाप्त होना। न बचना।

**संपन्न**—वि० [सं०] १. पूरा किया हुआ। पूर्ण। सिद्ध। साधित। मुकम्मल। २. (कार्य) जो पूरा या सिद्ध हो चुका हो। ३. किसी गुण या वस्तु से अली-भाँति युक्त। जैसे—धन-संपन्न, विद्या-संपन्न। ४. धनवान्। अमीर।

पुं० अच्छा और स्वादिष्ट भोजन। व्यंजन।

**संपन्न-कम**—पुं० [स०] एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)

**संपराय**—पुं० [स० सम्-पर √इण (गमनार्थि)+घञ्] १. ऐसी स्थिति जो सदा से चली आ रही हो। २. मृत्यु। मौत। ३ युद्ध। लड़ाई। ४ आपत्ति। मुसीबत। ५ भविष्य।

**संपरिग्रह**—पुं० [स०] अच्छी तरह आदर या स्वागत करना।

**संपरीक्षण**—पुं० [स० सम परि√ईक्ष (देखना)+ल्युट्—अन] लेख्य आदि की अच्छी तरह जाँच करके यह देखना कि वह सब प्रकार से नियमानुसार ठीक है या नहीं। (स्क्रुटिनी)

**संपर्क**—पुं० [सं०सं√पृच् (मिलाना)+घञ्] [वि० संपृक्त] १ मिश्रण। मिलावट। २ मेल। संयोग। ३ आपस में होनेवाला किसी प्रकार का लगाव, वास्ता या संसर्ग। ४. स्पर्श। ५ गणित में, राशियों या संख्याओं का जोड़। योग।

**संपर्क-अधिकारी**—पुं० [स०] वह राजकीय अधिकारी जो (क) प्रजा और सरकार में अथवा (ख) भिन्न देशों के साथ मैत्रिक अथवा और किसी प्रकार का संपर्क बनाये रखने के लिए नियत होता है। (लिएसन आफ़िसर)

**संपा**—स्त्री० [स० सम्√ यत् (गिरना)+ड—टाप्] विद्युत। बिजली।

**संपाक**—पुं० [स० ब० स०] १ अच्छी तरह पकना। परिपाक। २ अमलतास।

वि० १. तर्क-वितर्क करनेवाला। २. लम्पट। ३ चालाक। धूर्त। ४ अल्प। कम। थोड़ा।

**संपाट**—पुं० [सं०√पट् (गत्यादि)+घञ्] १ ज्यामिति में, किसी त्रिभुज की बढ़ी हुई भुजा पर लम्ब का गिरना। २ चरखे का तकला।

**संपात**—पुं० [वि० सपातिक] १. एक साथ गिरना या पड़ना। २ संपर्क। समर्ग। ३ संगम। समागम। ४ मिलने का स्थान। संगम। ५ वह स्थान जहाँ एक रेखा दूसरे पर पड़ती या उससे मिलती हो। ६ किसी पर झपटना या टूट पड़ना। ७ पहुँच। पैठ। प्रवेश। ८. घटित होना। ९. गाद। तलछट। १०. उपयोग में आ चुकने के बाद किसी चीज का बचा हुआ अंश।

**संपाति**—पुं० [स० सम्√पत् (गिरना)+णिच्—इनि] १ एक गीध जो गरुड़ का ज्येष्ठ पुत्र और जटायु का भाई था। २. माली नामक राक्षस का एक पुत्र जो विभीषण का मंत्री था।

**संपाती (तिन्)**—वि० [सं०] [स्त्री० सपातिनी] १. एक साथ टूटने या झपटनेवाला। २. उड़ने, कूदने आदि में होड़ लगानेवाला।

पुं०=सपाति।

**संपादक**—वि० [सं० सम्√ पद् (स्थान आदि)+णिच् ण्वुल्—अक] १. कार्य संपन्न करनेवाला। कोई काम पूरा करनेवाला। २. प्रस्तुत या तैयार करनेवाला।

पुं० वह जो किसी पुस्तक, सामयिक पत्र आदि के सब लेख या विषय

अच्छी तरह ठीक करके या देख कर क्रम से लगाता और उन्हें प्रकाशन के योग्य बनाता हो। (एडिटर)

**संपादकत्व**—पु०[सं० संपादक+त्व] संपादक का कार्य या पद।

**संपादकी**—स्त्री०[म० संपादक+हिं० ई (प्रत्य०)] संपादक का काम या पद। जैसे—उन्हें एक पत्र की संपादकी मिल गई है।

**संपादकीय**—वि० [सं०] १. संपादक-संबंधी। संपादक का। २. स्वयं संपादक का लिखा हुआ।
वि० संपादक द्वारा लिखी हुई टिप्पणी या अग्रलेख।

**संपादन**—पु०[स०] [वि० संपादनीय, संपादी, संपाद्य] १. किसी काम को अच्छी और ठीक तरह से पूरा करना। अंजाम देना। २. तयार या प्रस्तुत करना। ३. ठीक या दुरुस्त करना। ४. किसी पुस्तक का विषय या सामयिक पत्र के लेख आदि अच्छी तरह देखकर, उनकी त्रुटियाँ आदि दूर करके और उनका ठीक क्रम लगाकर उन्हें प्रकाशन के योग्य बनाना। (एडिटिंग)

**संपादयिता**—वि० [म० सम्√ पद् (स्थान आदि)+णिच्-तृच्, सपादयितृ] =संपादक।

**संपादित**—भू० कृ०[स० सम्√ पद् (स्थान आदि)+णिच्—क्त]१ (काम)जो पूरा किया गया हो। २ (ग्रन्थ, सामयिक-पत्र या लेख) जिसका क्रम, पाठ आदि ठीक करके सम्पादन किया गया हो।

**संपादी**—वि०[स० संपादित] [स्त्री० संपादिनी]=संपादक।

**संपाद्य**—वि०[सं०]१. जिसका संपादन किया जाने को हो या होने को हो। २ दे० 'निर्मेय'।

**संपालक**—पुं०[स० स√ पाल् (पालन करना)+णिच्—ण्वुल्—अक] =अभिरक्षक।

**संपित**—पुं०[देश०] असम मे होनेवाला एक प्रकार का बास जिसके टोकरे बनते हैं।

**संपिष्ट**—भू० कृ० [सं० सम्√ पिष् (चूर करना)+क्त] १. अच्छी तरह पीसा हुआ। २. अच्छी तरह दबाकर नष्ट किया हुआ।

**संपीडन**—पु०[सं०] [भू० कृ० संपीडित]१. चारो ओर से इस प्रकार दबाना कि आकृति या विस्तार कम हो जाय। (कम्प्रेशन) २. निचोड़ना, मलना या मसलना। ३ बहुत अधिक कष्ट या दुःख देना। पीड़ित करना। ४. साहित्य मे, शब्दों के उच्चारण का एक दोष जो उस दशा मे माना जाता है जब किसी शब्द पर व्यर्थ ही बहुत जोर दिया या जोर से उच्चारण किया जाता है।

**संपुट**—पु०[स० सम्√ पुट् (सबध रखना)+क] १. किसी पदार्थ को कुछ मोड़कर दिया हुआ वह रूप जिसके अन्दर कुछ खाली जगह बन गई हो और इसी लिए जिसमे कुछ रखा जा सके। आधान या पात्र का-सा गोलाकार और अन्दर से खाली अवकाश रखनेवाला रूप। जैसे—पत्तों का सपुट, हथेली का संपुट। २ पत्तों का बना हुआ दोना। ३. बक्सकदार डिब्बा, पिटारी या सन्दूक। ४. हथेली की अंजलि। ५. फूल के दलो का ऐसा समूह जिसके बीच खाली जगह हो। कोश। ६. वैद्यक मे औषध पकाने या रस बनाने के समय किसी पात्र को दिया जानेवाला वह रूप जिसमें गीली मिट्टी आदि से उसका मुँह बन्द करके उसे चारो ओर से गीली मिट्टी से लपेट देते हैं। ७. मृतक की खोपड़ी। कपाल। खप्पर। ८. लेन-देन में वह धन जो उधार दिया गया हो या किसी के यहाँ बाकी पड़ा हो। ९. कटसरैया का फूल। कुरबक।

**संपुटक**—पुं० [म० सपुट+कन्] १. ढकने की चीज। आवरण। २. गोल डिब्बा या पिटारा। ३. एक प्रकार का आसन या रतिबन्ध।

**संपुटिका**—स्त्री०[स०]१. औषध के रूप मे खाने के लिए ऐसी गोली या टिकिया जो ऐसे आवरण के अन्दर बन्द हो जो किसी स्वाद्य पदार्थ का बना हो। २. कोई ऐसा संपुट जिसमे जो दूसरे पदार्थ के चारों ओर से आवृत्त या बन्द हो। (कैप्स्यूल)

**संपुटी**—स्त्री०[स० संपुट-ङीप्] एक तरह की छोटी कटोरी जिसमें पूजन के लिए पिसा हुआ चन्दन, अक्षत आदि रक्खे हैं।

**संपुष्टि**—स्त्री०[म०]१ अच्छी तरह होनेवाली पुष्टि। २ दे० 'परिपुष्टि'।

**संपूज्य**—वि० [स० सम्√ पूज् (पूजा करना)+ण्यत्] बहुत आदरणीय या पूज्य।

**संपूरक**—वि० [स०] १. संपूर्ण या पूरा करनेवाला। २. विशेष रूप से किसी पूर्ण वस्तु की उपादेयता, मार्मिकता आदि बढ़ाने के लिए उसके अंत मे जोड़ा या मिलाया जानेवाला। 'अनुपूरक' से भिन्न। (कांप्लिमेन्टरी)
**विशेष**—अनुपूरक और संपूरक मे मुख्य अन्तर यह है कि अनुपूरक तो किसी पूरी चीज के पीछे या बाद मे स्वतन्त्र हकार्द के लिए भी जोड़ा या लगा हुआ होता है, परन्तु संपूरक किसी चीज या बात का कोई अभाव या कमी पूरी करने के लिए आकर उसमे मिल जाता है।
पु० तत्र अंश, मात्रा या भाव जो किसी पदार्थ मे उसे पूर्ण करने के लिए लगाया जाता हो या लगाना आवश्यक होता हो। किसी चीज को पूर्ण बनाने के लिए बाद मे जोड़ा जानेवाला अंग। 'अनुपूरक' से भिन्न। (कांप्लिमेण्ट)

**संपूरण**—पुं०[स० सम्√ पूर (पूरा होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० संपूरित] अच्छी तरह भरना।

**संपूर्ण**—वि०[सं०]१. अच्छी तरह भरा हुआ। २ आदि से अंत तक सब। पूरा। सारा। ३. पूरा या समाप्त किया हुआ। ४. जो अपने पूर्ण रूप मे हो।
पु०१. संगीत मे ऐसा राग जिसमे सातो स्वर लगते हों। २ दार्शनिक क्षेत्र मे, आकाश नामक भूत।

**संपूर्ण ओड़व**—पु०[सं०] संगीत मे ऐसा राग जो आरोही मे संपूर्ण और अवरोही मे ओडव हो।

**संपूर्णतः**—अव्य० [म० संपूर्ण+तसिल] पूरा पूरा। पूर्ण रूप से।

**संपूर्णतया**—अव्य० [स० संपूर्ण+तल्—टाप्+टा] संपूर्णतः।

**संपूर्णता**—स्त्री० [म० संपूर्ण+तल्—टाप्]१ संपूर्ण होनेकी अवस्था या भाव। पूरापन। २ अन्त। समाप्ति।

**संपेला**†—पुं०=सँपोला।

**संपृक्त**—भू० कृ० [स० सम्√ पृ (मिलना)+क्त] १. जिससे संपर्क स्थापित हो चुका हो या किया गया हो। २. सबद्ध। ३. लगा या सटा हुआ।

**संपृष्ट**—वि० [म० स√प्रच्छ् (पूछना)+क्त—] १ जिससे प्रश्न किए गये हो। २. जिससे पूछ-ताछ की गई हो।

**संपेक्षना**†—स० [स० सप्रेक्षण] देखना।

**सँपेरा**—पुं० [हिं० साँप+एरा (प्रत्य०)] [स्त्री० सँपेरिन] वह जो साँप पकड़कर पालता और लोगों को उनके तमाशे दिखाता हो। मदारी।

**सँपेला**†—पु०=सँपोला।

**सँपै**†—स्त्री० १ =संपत्ति। २. =संपा। (बिजली)।

**सँपोला**—पु० [हिं० साँप+ओला (अल्पा० प्रत्य०)] १. साँप का छोटा बच्चा। २. लाक्षणिक अर्थ में, खतरनाक व्यक्ति।

**सँपोलिया**†—पु० [हिं० साँप+ओलिया] =सँपेरा।

**संपोषक**—वि० [सं०] [स्त्री० संपोषिका] १. भली-भाँति पालन-पोषण करनेवाला। २. अच्छी तरह बढ़ानेवाला।

**संपोषण**—पुं० [सं०] [भू० कृ० संपोषित, वि० संपोष्य] अच्छी तरह पोषण करना।

**संपोष्य**—वि० [स० सम्√पुष् (पालन करना)+ण्यत्] जिसका संपोषण हो सकता हो या होना उचित हो।

**संप्रक्षाल**—वि० [स० सम् प्र√क्षाल् (धोना)+अच्] पूर्ण विधि से स्नान करनेवाला।

पु० १. एक प्रकार के यति या साधु। २. एक ऋषि जिनके संबंध में कहा गया है कि ये प्रजापति के चरणोदक से उत्पन्न हुए थे।

**संप्रक्षालन**—पु० [स० संप्र√क्षाल् (धोना)+ल्युट्+अन] १ अच्छी तरह धोना। खूब धोना। २ पूरी तरह से स्नान करना। ३. जल-प्रलय।

**संप्रजात**—भू० कृ० [सं०] अच्छी तरह जाना हुआ।

पु० योग में समाधि का एक भेद जिसमें विषय-भावना बनी रहती है।

**संप्रति**—अव्य० [स०] १ इस समय। अभी। २. वर्तमान समय में। ३ किसी के सामने। ४. तुलना या मुकाबले में। ५. ठीक तरह से।

पु० १. पूर्व अवसर्पिणी के २४वें अर्हत का नाम। (जैन) २ अशोक के पुत्र कुणाल का एक पुत्र।

**संप्रतिपत्ति**—स्त्री० [सं०] १. पहुँच। गुजर। २ प्राप्ति। लाभ। ३ किसी बात का ठीक और पूरा ज्ञान। ४ बुद्धि। समझ। ५ किसी के साथ होनेवाली मत या विचार की एकता। मतैक्य। ६. कार्य का संपादन। ७ मंजूरी। स्वीकृति। ८ अभियुक्त द्वारा न्यायालय में सच्ची बात मानना या कहना।

**संप्रतिपन्न**—भू० कृ० [सं० सम्-प्रति√पद् (स्थान आदि)+क्त] १. आया या पहुँचा हुआ। उपस्थित। २. मंजूर। स्वीकृत। ३. उपस्थित बुद्धि। प्रत्युत्पन्न-मति।

**संप्रतीति**—स्त्री० [सं० सम्-प्रति√इ (गमनादि)+क्तिन्] १. पूर्ण विश्वास। २. पूर्ण ज्ञान। ३. विनय।

**संप्रत्यय**—पुं० [सं० सं०-अति√इ (गमनादि)+घञ्] १. स्वीकृति। मंजूरी। २. दृढ़ विश्वास। ३. सम्यक् ज्ञान या बोध। ४. मन की भावना या विचार।

**संप्रदा**†—पुं०=संप्रदाय।

†स्त्री०=संपदा।

**संप्रदान**—पुं० [सं० सम्-प्र√दा (देना)+ल्युट्-अन] १. दान देने की क्रिया या भाव। २. दीक्षा के समय शिष्य को गुरु का मंत्र देना। ३. उपहार। भेंट। ४. व्याकरण में, एक कारक जो उस संज्ञा की स्थिति का बोध कराता है जिसके निमित्त कोई कार्य किया गया होता है। इसकी विभक्ति 'को' तथा 'के लिए' है। ५. किसी की वस्तु उसे देना या उसके पास तक पहुँचाना। (डेलिवरी)

**संप्रदाय**—वि० [सं०] [वि० सांप्रदायिक] देनेवाला।

पु० १. परम्परा से चला आया हुआ ज्ञान, मत या सिद्धान्त। २. परम्परा से चली आई हुई परिपाटी, प्रथा या रीति। ३ गुरु-परम्परा से मिलनेवाला उपदेश या मत्र। ४. किसी धर्म के अन्तर्गत कोई विशिष्ट मत या सिद्धान्त। ५ उक्त प्रकार का मत या सिद्धान्त माननेवालों का वर्ग या समूह। जैसे—वैष्णव या शैव सम्प्रदाय। फिरका। ६. कोई विशिष्ट धार्मिक मत या सिद्धान्त। धर्म। जैसे—भारत में अनेक मतों और सम्प्रदायों के लोग रहते हैं। ७ किसी विचार, विषय या सिद्धान्त के संबंध में एक ही तरह के विचार या मत रखनेवाले लोगों का वर्ग। (स्कूल) ८. मार्ग। रास्ता।

**संप्रदायक**†—वि०=सांप्रदायिक।

**संप्रदायी (यिन्)**—वि० [स० सम्-प्र√दा (देना)+णिनि-युक्] [स्त्री० संप्रदायिनी] १. देनेवाला। २ कोई काम करने या कोई बात सिद्ध करनेवाला। ३ किसी सम्प्रदाय का अनुयायी।

**संप्रभु**—वि० [स०] ऐसा प्रभु या सत्ताधर जिसके ऊपर और कोई प्रभु या सत्ताधारी न हो। सर्वप्रधान प्रभु अथवा सत्ताधारी (व्यक्ति या राष्ट्र)। (सावरेन)

**संप्रभुता**—स्त्री० [सं०] सर्वप्रभु होने की अवस्था, गुण या भाव। (सावरेंटी)

**संप्रयुक्त**—भू० कृ० [स० सम्-प्र√युज् (मिलाना)+क्त] १. किसी के साथ अच्छी तरह जोड़ा या मिलाया हुआ। २. किसी के साथ बाँधा या लगाया हुआ। ३. प्रयुक्त।

**संप्रयोग**—पुं० [स० सम्-प्र√युज् (संयोग करना)+घञ्] १. जोड़ने या मिलाने की क्रिया या भाव। एक साथ करना। मिलाना। २. मेल। समागम। ३. मैथुन। संभोग। ४ उपयोग। प्रयोग। ५. ज्योतिष में, किसी नक्षत्र के साथ चन्द्रमा का होनेवाला योग। ६. इन्द्रजाल। जादूगरी। ७ उच्चाटन, मोहन, वशीकरण आदि का प्रयोग।

**संप्रयोगी (गिन्)**—पुं० [सं० सम्-प्र√युज् (संबंध करना)+णिनुण्, संप्रयोग+इनि वा] [स्त्री० संप्रयोगिनी] १ कामुक। लंपट। २. ऐन्द्रजालिक। जादूगर।

**संप्रयोजन**—पुं० [स० सम्-प्र√युज् (मिलाना)+ल्युट्-अन] [वि० संप्रयोजनीय, संप्रयोज्य, भू० कृ० संप्रयोजित, संप्रयुक्त] अच्छी तरह जोड़ना या मिलाना।

**संप्रवर्तक**—वि०[सं० सम्-प्र√वृत् (वर्तमान रहना)+ण्वुल्-अक] १. चलानेवाला। २. जारी या प्रचलित करनेवाला।

**संप्रवर्तन**—पुं० [सं० सम्-प्र√वृत् (वर्तमान रहना)+ल्युट्-अन] [वि० संप्रवर्तनीय] १. गीति देना। चलाना। २. घुमाना। मोड़ना। ३. जारी या प्रचलित करना।

**संप्रवर्ती (र्तिन्)**—वि० [सं० सम्-प्र√वृत (रहना)+णिनि] ठीक की व्यवस्थित करनेवाला।

**संप्रवाह**—पुं० [सं० सं-प्र√वह् (ढोना)+घञ्] लगातार चलता रहनेवाला कम या होता रहनेवाला प्रवाह।

**संप्रवृत्त**—वि० [सं० सम्-प्र√वृत् (रहना)+क्त] १. आगे आया या बढ़ा हुआ। अग्रसर। २. प्रस्तुत। मौजूद। ३. आरम्भ या प्रचलित किया हुआ।

**संप्रवृत्ति**—स्त्री०[स० सम्-प्र√वृत् (रहना)+क्तिन्] १. आसक्ति। २. किसी का अनुकरण करने की इच्छा। ३. उपस्थिति। मौजूदगी। ४ मिलकर एक होना। संघटन।

**संप्रसादन**—पु० [स०] [वि० संप्रसाद्य, भू० कृ० संप्रसादित] किसी को अच्छी तरह या सब प्रकार से प्रसन्न करना।

**संप्रसाद्य**—वि० [स०] [स्त्री० संप्रसाद्या] जिसे सब प्रकार से प्रसन्न और संतुष्ट रखना आवश्यक या उचित हो।

**संप्राप्त**—भू० कृ० [स०] [भाव० संप्राप्ति] १ आया या पहुँचा हुआ। उपस्थित। २. मिला हुआ। प्राप्त। ३ जो घटित हुआ हो।

**संप्राप्ति**—स्त्री०[स०] १. संप्राप्त होने की अवस्था या भाव। २. शरीर विज्ञान मे, वह क्रिया या प्रक्रम जो शरीर मे किसी रोग के कीटाणु पहुँचने, उस रोग के परिपक्व होने और बाह्य लक्षण या स्वरूप होने तक होती है। (इन्क्यूबेशन) जैसे —चेचक का संप्राप्ति-काल दो सप्ताह माना गया है। ३ घटना आदि का उपस्थित या पतित होना।

**संप्रेक्षक**—पुं० [स०-सम्-प्र√ईक्ष् (देखना)+ण्वुल्-अक] देखनेवाला। दर्शक।

**संप्रेक्षण**—पु० [स० सम्-प्र√ईक्ष् (देखना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० संप्रेक्षित, वि० संप्रेक्ष्य] १. अच्छी तरह देखना। २. जाँच-पडताल या देख-भाल करना।

**संप्रेक्ष्य**—वि० [स०] जिसका संप्रेक्षण होने को हो या हो सकता हो। देखने या निरीक्षण करने योग्य।

**संप्रेषक**—वि० [स०] संप्रेषण करनेवाला। (ट्रान्समिटर)

**संप्रेषण**—पु०[स०] १. अच्छी तरह एक जगह से दूसरी जगह भेजना। २ मार्ग, माध्यम या साधन बनकर कोई चीज (जैसे—आज्ञा, प्रकाश, विद्युत्, समाचार आदि) एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाना। (ट्रान्समिशन) ३. काम या नौकरी से अलग करना। बरखास्त करना।

**संप्रेषणी**—स्त्री० [स० संप्रेषण-ङीप्] हिन्दुओं मे मृतक का एक कृत्य जो द्वादशाह को होता है।

**संप्रेष्य**—पुं० [सं० सम्-प्र√इष् (इच्छा करना)+घञ्] १. यज्ञादि मे ऋत्विजो को नियुक्त करना। २. आमंत्रण। आह्वान।

**संप्रोक्त**—भू० कृ० [स० सम्-प्र√वच् (कहना)+क्त-व-ट] १.सबोधित। २. कथित। ३ घोषित।

**संप्रोक्षण**—पु० [स०] [भू० कृ० संप्रोक्षित, वि० संप्रोक्ष्य] १ खूब पानी छिडककर (मंदिर आदि) साफ करना। २ धोना। ३. मदिरा आदि का उत्सर्ग।

**संप्लव**—पु० [सं० सम्√प्लु (डूबना)+अप्] [भू० कृ० संप्लुत] १ पानी की बाढ़। २.बहुत बड़ी राशि या समूह। ३. हो-हल्ला। शोर-गुल। ४. आन्दोलन। हलचल।

**संप्लुत**—भू० कृ० [स० सम्-प्लु (डूबना)+क्त] १. जल से तराबोर। २.डूबा हुआ।

**संप्लेष**—पुं० [स०] १. क्रोध मे आकर किसी से भिड़ना। भिड़ंत। लड़ाई। २. कहासुनी। तकरार।

**संबंध**—पु० [स०] १ किसी के साथ बँधना, जुडना या मिलना। २. वह स्थिति जिसमे कोई किसी के साथ जुड़ा बँधा या लगा रहता है। तात्लुक। लगाव। (कनेक्शन) ३. एक कुल में होने के कारण अथवा विवाह, दत्तक आदि संस्कारों के कारण होनेवाला पारस्परिक लगाव। नाता। रिश्ता। ४. आपस मे होनेवाली बहुत अधिक घनिष्ठता या मेल-जोल। ५ किसी प्रकार का साथ या संयोग। ६ विवाह। शादी। ७. व्याकरण मे एक कारक जिससे एक शब्द के साथ दूसरे शब्द का सबध या लगाव सूचित होता है। जैसे—राम का घोड़ा। ८ प्रसगवश किसी सिद्धान्त का किया जानेवाला उल्लेख। हवाला। ९ ग्रन्थ। पुस्तक। १० एक प्रकार की ईति या उपद्रव।

**संबंधक**—वि०[स० संबंध+कन्] १ सबंध रखनेवाला। सबंधी। विषयक। २. उपयुक्त। योग्य। ३ जो दो वस्तुओ, व्यक्तियों आदि मे पारस्परिक सबध करता या कराता हो (कनेक्टिव)

पु० १. रक्त या विवाह का सबधी। २. मैत्री। ३ मित्र। ४ रिश्तेदार। सबधी। ५ राजाओं मे होनेवाली वह सधि जो आगस मे विवाह-सबध स्थापित करके की जाती थी।

**संबंध तत्त्व**—पु० [सं०] भाषा विज्ञान मे, वह तत्त्व जो किसी पद या वाक्य मे आये हुए अर्थ तत्ववाले शब्दो का पारस्परिक सबध मात्र बतलाता है। 'अर्थनत्त्व' का विपर्याय। (मॉरफीम) जैसे—'समाज का स्वरूप' मे 'का' शब्द सबधतत्त्ववाला, है; क्योंकि वह 'समाज' और 'स्वरूप' में सबध-मात्र स्थापित करता है।

**संबंधातिशयोक्ति**—स्त्री० [स० मध्यम० स०] अतिशयोक्ति अलकार का एक भेद जिसमे पारस्परिक सबध का अभाव होते हुए भी सबध दिखाया जाता है।

**संबंधित**—भू० कृ० [स०] जिसका किसी से सबध स्थापित हो। सबद्ध।

**संबंधी (न्धिन्)**—वि० [सं०] [स्त्री० सबधिनी] १ सबध या लगाव रखनेवाला। २ किसी विषय से लगा हुआ। विषयक।

पु० १ वह जिसके साथ रक्त अथवा विवाह का सम्बन्ध हो। रिश्तेदार। २ दे० 'समधी'।

**संबंधु**—पुं० [स०सम्√बन्ध् (बाँधना)+ड] १.आत्मीय। भाई-बिरादर। २ नातेदार। सम्बन्धी।

**संबः**†—पु०=शंख।

**संबत**†—पु०=संवत्।

**संबद्ध**—वि० [सं०] १. किसी के साथ जुड़ा, मिला या लगा हुआ। २. किसी प्रकार का सबध रखनेवाला।

**संबद्ध लिंग**—पु० दे० 'लिंग' (न्याय-शास्त्रवाला विवेचन)।

**संबद्धीकरण**—पु० [स०] १. संबद्ध करने की क्रिया या भाव। २ विद्यालय, सस्था आदि को अपना अंग या सदस्य मानकर उसे अपने साथ संबद्ध करना। अपने परिवार या संघटन का सदस्य बनाना। (एफिलिएशन)

**संबरण**†—पु०=संवरण।

**संबरणा***—स० [स० संवरण] संवरण करना। रोकना।

**संबल**—पुं० [√सम्ब्+कलच्] १. कहीं जाने के समय रास्ते के लिए साथ में रखा हुआ खाने-पीने का सामान। २. कोई ऐसी चीज, बात या साधन जिससे किसी काम या बात में आगे-बढ़ने में पूरी-पूरी सहायता मिलती हो या जिसका आश्रय लिया जाता हो। (रिसोरसेज) ३. सहारा। ४. गेहूँ की फसल का एक रोग जो पूरब की हवा अधिक चलने से होता है। ४. सेमल का वृक्ष।

†पु०=सबूत (संखिया)।

**संबाद***—पुं०=संवाद।

**संबाध**—पुं०[सं०सम्√बाध् (बाधा देना)+घञ्, ब० स०] १. बाधा। अड़चन। २. भीड़। समूह। ३. संघर्ष। ४. भग। योनि। ५. कष्ट। तकलीफ। ६. नरक का मार्ग।

वि० १. संकीर्ण। २. भरा हुआ। ३ जनाकीर्ण।

**संबाधक**—वि० [सं० सम्√बाध (बाधा देना)+ण्वुल्-अक] १. बाधा डालनेवाला। बाधक। २. तंग करने या सतानेवाला।

**संबाधन**—पु० [स० ब० स०] १. बाधक होना। बाधा डालना। २. रेल-पेल। ३ स्कावट। ४. द्वारपाल। ५ शूल की नोक। ६. भग। योनि।

†पु०=शबूक या शंबूक।

**संबुद्ध**—वि० [स० सम्√बुध् (ज्ञान प्राप्त करना)+क्त] १. जिसे बोध या ज्ञान हो चुका हो। २. जिसे ज्ञान प्राप्त हो चुका हो। ३ जागा हुआ। जाग्रत। ४. अच्छी तरह जाना हुआ। ज्ञात।

पु० १. ज्ञानी। २. गौतम बुद्ध। ३. जैनों के जिन देव।

**संबुद्धि**—स्त्री० [स० सम्√बुध् (ज्ञान प्राप्त करना) क्तिन्] १. संबुद्ध होने की अवस्था या भाव। २. पूरी तरह से होनेवाला ज्ञान या बोध। ३ बुद्धिमत्ता। समझदारी। ४. आह्वान। पुकार।

**संबुल**—पुं० [अ० सुबुल] १. बाल-छड़ नामक सुगंधित वनस्पति। २. अनाज की बाल जिसमें दाने रहते हैं।

**संबुल खतार्इ**—पु० [फा०] तुर्किस्तान में होनेवाला एक प्रकार का पौधा जो औषध के काम में आता है और जिसकी पत्तियों की नसें मिठाई में पड़ती हैं।

**संबेसरा**†—पुं० [सं० सं+हिं० बसेरा] नींद। (वि०)

**संबोध**—पु० [सं० सम्√बुध् (ज्ञान करना)+घञ्] १. सम्यक् ज्ञान। पूरा बोध। २. अच्छी और पूरी जानकारी। ३. ढारस। सान्त्वना।

**संबोधक**—वि० [सं०] संबोधन करनेवाला।

**संबोधन**—पुं० [सं० सम्√बुध् (ज्ञान प्राप्त करना)+ल्युट्-अन] [वि० संबोधित, संबोध्य] १. नींद से उठाना। जगाना। ४. ज्ञान या बोध कराना। ३. समझाना-बुझाना। ४. अह्वान करना। पुकारना। ५. व्याकरण में, वह शब्द जिससे किसी को पुकारा जाता है।

**विशेष**—भूल से इसकी गिनती कारकों में की जाती है, जबकि यह क्रिया के रूप का साधक नहीं करता है।

६. वह स्थिति जिसमें किसी से कुछ कहने के लिए उसके प्रति ध्यान दिया या मुख किया जाता है।

**संबोधनगीति**—स्त्री० [सं०] आधुनिक साहित्य में ऐसा विशद जाति-काव्य जो किसी को संबोधित करके लिखा गया हो और उच्च भावनाओं से युक्त हो। (ओड) जैसे—दिनकर कृत 'हिमालय' या पंत कृत 'भावी पत्नी के प्रति'।

**संबोधना***—स० [सं०] १. समझाना-बुझाना। बोध कराना। २. ढारस या सान्त्वना देना।

**संबोधि**—स्त्री० [सं० सबोध+इनि] पूर्ण ज्ञान। (बौद्ध)

**संबोधित**—भू० कृ० [स०] १. जिसे संबोधन किया गया हो। २. जिसका ध्यान आकृष्ट किया गया हो। ३. जिसे बोध कराया गया हो। ४. (विषय) जिसका ज्ञान या संबोधन कराया गया हो।

**संबोध्य**—वि० [सं०] १. जिसे संबोधन किया जाय। २. जिसे बोध या ज्ञान कराया जाय।

**संभ**†—पु०=शंभु।

**संभक्त**—भू० कृ० [स० सम्√भज् (भाग करना)+क्त] [भाव० संभक्ति] १. बँटा हुआ। विभक्त। २. भाग या हिस्सा पाने या लेनेवाला। ३. भोग करनेवाला।

पु० अच्छा और पूरा भक्त।

**संभक्ति**—स्त्री०[स० सम्√भज् (भाग करना)+क्तिन्] १. विभाजन। २. विभाग। ३ उपभोग। ४. उत्तम और पूरी भक्ति।

**संभक्ष**—वि०[स० सम्√भक्ष् (खाना)+अच्] खानेवाला (समास में)।

पु०१. किसी के साथ बैठकर खाना। सहभोज। २. खाद्य पदार्थ।

**संभग्न**—वि०[स०]१. बहुत टूटा फूटा। २. हारा हुआ। परास्त। ३. विफल।

पु० शिव।

**संभर**—वि० [सं० सम्√भृ (भरण करना)+अच्] भरण पोषण करनेवाला।

पु०=सँभर (झील)।

**संभरण**—पुं० [स० सम्√भृ (भरण करना)+ल्युट्—अन] [वि० संभरणीय, संभृत] १. पालन-पोषण। २. एकत्र करना। चयन। संचय। ३ किसी काम या बात की योजना या विधान। ४. सामग्री। सामान। ५. लोगों की आवश्यकता की चीजें उनके पास पहुँचाने की व्यवस्था। समायोजन। (सप्लाई) ६. यज्ञ की वेदी में लगाई जानेवाली ईंटें।

**संभरणी**—स्त्री०[सं० संभरण—ङीप्] सोमरस रखने का एक यज्ञपात्र।

**सँभरना**†—अ०=संभलना।

†स०[स० स्मरण]=स्मरण करना।

**संभव**—पुं०[सं०] १. किसी लड़की से विवाह करने की इच्छा रखनेवाला व्यक्ति। २. स्त्रियों का दलाल। ३. वह स्थान जहाँ विष्णुव्यास नामक ब्राह्मण के घर विष्णु का दसवाँ कल्कि अवतार होने को है। इसे कुछ लोग मुरादाबाद जिले का संभल नाम का कसबा समझते हैं।

**सँभलना**—अ० [सं० संभरण]१. किसी ओर गिरने, फिसलने, लुढ़कने, भ्रष्ट आदि होने से रुकना। २. किसी बीस आदि का रोका या किसी कर्तव्य आदि का निर्वाह किया जा सकना। ३. किसी आधार या सहारे पर रुका रहना। ४. होशियार या सावधान रहना। ५. चोट या हानि से बचाव करना। ६. स्वस्थ होना। ७. बुरी दशा से बचकर रहना। ८. अच्छी दशा में आना।

*स०[सं० श्रवण] सुनना।

**सँभरना**†—पुं० [हिं० सँभलना] एक बार बिगड़कर फिर सँभली हुई फसल।

**सँभली**—स्त्री० [स० समली] कुटनी। दूती।

**संभव**—वि०[स०] १. (काम) जो किया जा सकता हो अथवा हो सकता हो। किए जाने अथवा हो सकने के योग्य। २. जिसके घटित होने की संभावना हो। जिसके संबंध में यह समझा या सोचा जा सकता हो कि ऐसा हो सकता है। मुमकिन। (पॉसिबुल)

पुं० १. उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। जैसे—कुमार संभव। २. कोई काम या बात घटित होने की अवस्था या भाव। ३. मूल कारण। हेतु। मिलन। ४. संयोग। ५. स्त्री-प्रसग। सहवास। ६. उपयुक्तता। समीचीनता। ७. किसी को अतर्गत कर सकने की योग्यता। समाई। ८ ध्वंस। नाश। ९ मान, मूल्य आदि में समान होने की अवस्था या भाव जो तर्क में एक प्रकार का प्रमाण माना जाता है। जैसे—एक रुपया और सौ नये पैसे दोनों बराबर है। १०. वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे अर्हत। (जैन) ११. बौद्धों के अनुसार एक लोक का नाम।

**संभवतः**—अव्य० [स० समू+तरिल्] १. हो सकता है। संभव है कि। मुमकिन है कि। गालिबन। २. संभावना है कि। हो सकता है कि।

**संभवन**—पुं०[स० सम्√भू (होना)+ल्युट्—अन] [वि० संभवनीय, संभाव्य, भू० कृ० संभूत] १. उत्पन्न होना। पैदा होना। २. संभव या मुमकिन होना। ३ घटित या संभूत होना।

**संभवना***—स० [स० सम्भव+हि० ना (प्रत्य०)] उत्पन्न करना। पैदा करना।

अ० उत्पन्न होना।

**संभवनाथ**—पुं०[सं० ष० त०] वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे तीर्थंकर। (जैन)

**संभवनीय**—वि० [सं० सम्√भू (होना)+अनीयर्] १ जो हो सकता हो। मुमकिन। २. जिसकी संभावना हो।

**संभविष्णु**—पु०[स० सम्√भू (होना)+इष्णुच्] १ जनक। २. उत्पादक। ३ स्रष्टा।

**संभवी**—वि० [स० सम्भविन्] १ किसी से संभूत या उत्पन्न होनेवाला। जैसे—स्वत: संभवी वस्तु या हेतु। २. जो हो सकता हो। मुमकिन। संभव।

**संभव्य**—पु०[स० सम्√भू (होना)+यत्] कपित्थ। कैथ।

वि० जो हो सकता हो। संभव।

**संभाखना**†—पुं०=संभाषण।

**सँभार**†—स्त्री०=सँभाल।

**संभार**—पुं०[सं०] १. एकत्र या इकट्ठा करना। संचय। २ साज-सामान। सामग्री। ३. आयोजन। तैयारी। ४. धन-संपत्ति। ५ दल। झुंड। ६ ढेर। राशि। ७. पालन-पोषण। ८. देख-रेख। निगरानी। ९. नियंत्रण। निरोध।

**संभार तंत्र**—पुं०[सं०]आधुनिक युद्ध कला का वह अंग जिसमें सेना के संचालन, निवास आदि और सैनिकों को उनकी आवश्यक सामग्री पहुँचाने की व्यवस्था होती है।

**सँभारना***—स० [स० स्मरण] स्मरण करना। याद करना।

†स०=सँभालना।

**संभाराधिप**—पु०[स०] राजकीय पदार्थों का अध्यक्ष। तौशा खाने का अफसर। (शुक्रनीति)

**संभारी (रिन्)**—वि०[स० संभार+इनि स० √भृ (भरण करना)+णिनि, सम्भारिन्] [स्त्री० संभारिणी] १. संभार करनेवाला। २ भरा हुआ। पूर्ण।

**सँभाल**—स्त्री०[स० सम्भार] १ संभलने या संभालने की क्रिया या भाव। २ कोई चीज संभालकर रखने की क्रिया या भाव। देख-रेख। हिफाजत। ३. शरीर के अग आदि सँभालकर रखने की शक्ति या समझ। तन-बदन की सुध। जैसे—वह इतना वृद्ध हो गया है कि उसे शरीर की भी सँभाल नहीं रहती। ४. प्रबध। व्यवस्था। जैसे—गृहस्थी की सँभाल। ५. किसी का किया जानेवाला पालन-पोषण।

**सँभालना**—स०[हि० सँभलना का स०] १. ऐसी क्रिया करना जिससे कुछ या कोई सँभले। २. गिरते हुए को बीच में ही रोकना। बीच में ही पकड़ या रोक रखना। ३ बिगड़ते हुए के संबंध में ऐसी क्रिया करना कि वह अधिक बिगड़ने न पावे और धीरे धीरे सुधरने लगे। ४ ऐसी देख-रेख रखना कि बिगड़ने या नष्ट न होने पाए। निगरानी करना। जैसे—घर की चीजें सँभालकर रखना। ५ किसी का पालन-पोषण करना। ६. उचित प्रबंध या व्यवस्था करना। ७ वर्तव्य, कार्य-भार आदि अपने ऊपर लेकर उसका ठीक तरह से निर्वाह करना। जैसे—शासन का कार्य सँभालना। ८ यह देखना कि कोई चीज जितनी या जैसी होनी चाहिए उतनी या वैसी ही है न। जैसे—अपना सब सामान सँभाल लो। ९. अपने आपको आवेग-युक्त या क्षुब्ध न होने देना। जैसे—उस पर क्रोध मत करना; अपने आपको सँभाले रहना। सयो० क्रि०—देना।—लेना।

**सँभाला**—पुं०[हि० सँभलना] १. सँभलने या सँभालने की क्रिया या भाव। २. मरणासन्न व्यक्ति की वह स्थिति जिसमें वह कुछ समय के लिए थोड़ा चैतन्य हो जाता है और ऐसा जान पड़ता है कि उसकी स्थिति सँभल जायगी—वह मरने से बच जायगा। उदा०—बीमारे मुद्दबत ने फिर तह से सँभाला लेकिन वह सँभाले से सँभल जाय तो अच्छा।—कोई शायर।

क्रि० प्र०—लेना।

**सँभालू**—पुं०[हि० सिंधुवार] श्वेत सिंधुवार वृक्ष।

**संभावन**—पु०[सं० सम्√भू (होना)+णिच्—ल्युट्—अन सम्भावन] [वि० संभावनीय, संभावितव्य, संभाव्य, भू० कृ० संभावित] १. कल्पना। भावना। अनुमान। २. इकट्ठा करना। ३. ठीक या पूरा करना। ४. आदर-सम्मान। ५. किसी के प्रति होनेवाली पूज्य बुद्धि या श्रद्धा। ६. पात्रता। योग्यता। ७ ख्याति। प्रसिद्धि। ८ स्त्री.कृति।

**संभावना**—स्त्री०[स० संभावन-टाप्] १. किसी घटना या बात के संबंध की वह स्थिति जिसमें उस घटना के घटित होने या उस बात के पूरे होने की शक्यता होती है। ऐसा जान पड़ता है कि अमुक घटना या बात होना बहुत कुछ संभव प्रतीत होता है। (पॉसिबिलिटी) २. साहित्य में, उक्त के आधार पर एक प्रकार का अलंकार जिसमें इस बात का उल्लेख होता है कि यदि अमुक बात हो जाय तो अमुक बात हो सकती है। जैसे—एहि बिधि उपजै लच्छि जब हीद सीय सम तूल।—तुलसी। ३ दे० 'सभावना'।

**संभावनीय**—वि०[सं० सम्√भू( होना)+णिच्—अनीयर्] १. जिसकी संभावना हो या हो सकती हो। २. जिसकी कल्पना की जा सकती हो। ध्यान या विचार में आ सकने योग्य।

**संभावित**—भू० कृ०[सं०]१ जिसकी कल्पना या विचार किया गया हो। २. उपस्थित या प्रस्तुत किया हुआ। ३. आवृत। ४. प्रसिद्ध। ५. उपयुक्त। योग्य। ६. जिसकी सभावना हो। सभावनीय। सभव। मुमकिन।

**संभावितव्य**—वि०[स० स√ भू (होना)+णिच्—तव्य] १. कल्पना या अनुमान के योग्य। २. जिसके सम्बन्ध मे अनुमान या कल्पना की जा सके। ३. जिसका सत्कार किया जा सकता हो या किया जाने को हो। ४. मुमकिन। सभव।

**संभाव्य**—वि०[स० सम्√ भू (होना)+णिच्—यत्] १ जिसकी सभावना हो। जो हो सकता हो। २. प्रशसनीय। ३ आदर या पूजा का अधिकारी अथवा पात्र। पूज्य और मान्य। ४. जो कल्पना या विचार मे आ सकता हो।

**संभाव्यतः**—अव्य०[स०] सभवतः है कि।

**संभाष**—पु०[स० स√ भाष् (कहना)+घञ्, सम्भाष] १. कथन। बातचीत। सभाषण। २. करार। वादा।

**संभाषण**—पु०[स० सम्√ भाष् (भाषण करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० सभाषित, वि० सभाषणीय, सभाष्य] आपस में होनेवाली बातचीत। वार्तालाप।

**संभाषणीय**—वि०[स० सम्√ भाष् (भाषण अरना)+अनीयर्] जिसके साथ बात-चीत या वार्तालाप किया जा सकता हो।

**संभाषा**—स्त्री०[स० सम्√भाष् (कहना)+अङ—टाप्] १ सभाषण। २ किसी बात या विषय का तथ्य या स्वरूप जानने के लिए होनेवाला वाद-विवाद या विचार। (डिबेट)

**संभाषित**—भू० कृ०[स० सं√ भाष् (भाषण देना)+क्त]१ अच्छी तरह कहा हुआ। २. जिसके साथ बात-चीत की गई हो।

**संभाषी (षिन्)**—वि०[सं०सभाष् (भाषण करना)+णिनि] [स्त्री०सभाषिणी]१. कहनेवाला। २. बातचीत करनेवाला।

**संभाष्य**—वि०[स० सम्√ भाष् (बातचीत करना)+यत्]१ जिससे बातचीत करना उचित हो। जिसके वार्तालाप किया जा सकता हो। २. (विषय ) जिस पर सभाष हो सके। (डिबेटेबुल)

**संभिन्न**—भू० कृ०[स०]१. पूर्णत टूटा हुआ। २. तोड़ा-फोडा हुआ। ३. जिसमें छोभ या हलचल उत्पन्न की गई हो। ४. गठा हुआ। ठोस। ५. खिला हुआ। प्रस्फुटित। ६. ठोस।

**संभिन्न प्रलाप**—पु०[स०] व्यर्थ की बातचीत जो बौद्ध शास्त्र के अनुसार एक पाप है।

**संभीत**—भू० कृ०[सं० सम्√भी (डरना)+क्त] बहुत अधिक डरा हुआ।

**संभु**—पुं०[सं० सम्√ भू (होना)+डु]=शंभु।

**संभुक्त**—भू० कृ०[सं० स√ भुज् (खाना)+क्त] १. खाया हुआ। २. उपभोग किया या भोगा हुआ। प्रयोग में लाया हुआ। ३. अतिक्रांत।

**संभूत**—भू० कृ०[सं०] [भाव० सभूति] १. जो किसी दूसरे के साथ उत्पन्न हुआ हो। २. उत्पन्न। जात। ३. युक्त। सहित। ४. बिल्कुल बराबर हुआ। ५. उपयुक्त। योग्य। ६. बराबर। समान।

**संभूति**—स्त्री०[सं० ]१. संभूत होने की अवस्था या भाव। उत्पत्ति। २. विभूति। वैभव। ३. बढ़ती। वृद्धि। ४. योग से प्राप्त होनेवाली विभूति या अलौकिक शक्ति। ५. क्षमता। शक्ति। ६. शक्ति का प्रदर्शन। ७ उपयुक्तता। ८. पात्रता। योग्यता। ९ मरीचि की पत्नी जो दक्ष प्रजापति की कन्या थी।

**संभूय**—अव्य०[सं०] १. एक में। एक साथ। २. साझे मे।

**संभूयकारी**—पु०[स०] १. प्राचीन भारत मे, किसी सघ मे मिलकर व्यापार करनेवाला व्यापारी जो उस सघ का हिस्सेदार होता था। (स्मृति)२. किसी के साथ साथ काम करनेवाला।

**संभूय-क्रय**—पुं०[स०] थोक माल बेचना या खरीदना। (कौ०)

**संभूय-समन**—पु०[स०] शत्रु पर होनेवाली ऐसी चढ़ाई जिसमे सब सामत भी अपने दलबल के साथ हों। (कामदक)

**संभूय-समुत्थान**—पुं०[सं०] कई हिस्सेदारों के साथ मिलकर किया जानेवाला व्यापार। साझे का कारबार।

**संभृत**—भू० कृ०[स०] [भाव० सभृति]१. इकट्ठा या जमा किया हुआ। एकत्र। २. पूरी तरह से भरा या लदा हुआ। ३. युक्त। सहित। ४. पाला-पोसा हुआ। ५. जिसका आदर या सम्मान किया गया हो। ६ तैयार। प्रस्तुत। ७ बनाया हुआ। निर्मित।

पु० चीख-पुकार। हो-हल्ला।

**संभृति**—स्त्री० [स० सम्√ भृ (भरण करना)+क्तिन्, सम्भृति]१. एकत्र करने की क्रिया या भाव। २ भीड़। समूह। ३ ढेर। राशि। ४. अधिकता। बहुतायत। ५. सामान। सामग्री। ६. पालन-पोषण।

**संभृष्ट**—भू० कृ०[स० सम्√भ्रस्ज् (भूनना)+क्त—भ्रस्ज=भृ पत्व—ष्टुत्व] १. खूब भुना या तला हुआ। कुरकुरा। २. भूने या तले जाने के कारण जो करारा हो गया हो।

**संभेद**—पु०[स० सम्√ भिद् (पृथक् करना)+घञ्, सम्भेद] १. अच्छी तरह छिदना या भिदना। २. ढीला हांकर खिसकना या स्थान-भ्रष्ट होना। ३. अलग या जुदा होना। ४. भेद-नीति। ५. प्रकार। भेद। ६. मिलन।

**संभेदन**—पु० [स० सम्√ भिद् (भेदन करना)+ल्युट्—अन] [वि० सभेदनीय, सभेद्य, भू० कृ० सभिन्न] अच्छी तरह छेदना या आर-पार घुसाना। खूब धँसाना।

**संभेद**—वि० [सं० सम्√भिद् (फाड़ना)+यत्] जिसका सभेदन होने को हो या हो सकता हो।

**संभोग**—पु०[सं०] १. किसी वस्तु का भली-भाँति किया जानेवाला पूरा उपयोग। २ स्त्री और पुरुष का मैथुन। रति-क्रीडा। ३. हाथी के कुम्भ या मस्तक का एक विशिष्ट भाग। ४. साहित्य मे शृगार का वह अंश जो संयोग शृगार कहलाता है। (दे० 'शृंगार')

**संभोग काम**—पुं०[सं०] बौद्धो के अनुसार वह शरीर जिसमे आकर इस संसार के सुख-दुःख आदि भोगे जाते है।

**संभोग-शृंगार**—पु०=सयोग-शृंगार।

**संभोगी (गिन्)**—वि०[स० सभोग+इनि] [स्त्री० सभोगिनी] १. संभोग करनेवाला। २. व्यवहार करके सुख भोगनेवाला।

पुं०१. विलासी व्यक्ति। २. कामुक व्यक्ति।

**संभोक्तव्य**—वि० [सं० सम्√भुज् (भोग करना)+क्यत्]१. जिसका भोग या

व्यवहार होने को हो। जो काम में लाया जाने को हो। २. जिसका भोग या व्यवहार हो सकता हो।

**संभोज**—पुं०[सं० सं√ भुज् (खाना)+घञ्] १ भोजन। खाना। २. खाद्य पदार्थ।

**संभोजक**—वि० [सं० सम्√भुज् (खाना)+ण्वुल्-अक] १ भोजन करने या खानेवाला। २ स्वाद लेनेवाला।

**संभोजन**—पुं० [स० सम्√भुज् (खाना)+ल्युट्—अन] [वि०संभोजनीय, संभोज्य, भू० कृ० समुक्त] १. बहुत से लोगों का मिलकर खाना। २ भोज। दावत। ३. खाने की चीजें। भोजन की सामग्री।

**संभोजनीय**—वि० [स० सम्√भुज् (खाना)+अनीयर्] १ जो खाया जाने को हो। २. जो खाया जा सकता हो।

**संभोज्य**—वि०[स०]=संभोजनीय।

**संभ्रम**—पुं०[स०] १ चारों ओर घूमना या चक्कर लगाना। फेरा। २ उतावली। जल्दबाजी। ३ घबराहट। ४ बेचैनी। विकलता। ५. किसी का सामना होने पर उससे सहमना या सिटपिटाना। ६ किसी को बड़ा समझकर उसके आगे आदरपूर्वक सिर झुकाना। ७. किसी की वह स्थिति जिसके कारण लोग उसका आदर करते या उससे सहमते हों। ८ किसी के प्रति होनेवाला पूज्य भाव। ९ गहरी चाह। उत्कंठा। १० साहस। हौसला। ११ गलती। चूक। भूल। १२ छवि। शोभा। १३. शिव के एक प्रकार के गण।

**संभ्रांत**—भू० कृ० [स०] [भाव० संभ्रांति] १ चारों ओर घुमाया हुआ। २ क्षुब्ध। ३. प्रतिष्ठित। सम्मानित।

**संभ्रांति**—स्त्री०[स०]१. सभ्रांत होने की अवस्था या भाव। २. क्षोभ। ३. प्रतिष्ठा। सम्मान।

**संभ्राजना***—अ०[स० संभ्राज] पूर्णत सुशोभित होना।

**संमत**—वि०[स० सम्√मन् (मानना)+क्त नलोप]=सम्मत।

**समान**—पु०[स०√मन् (मानना)+अच्]=सम्मान।

**संमित**—भू० कृ०[स०√मा (नाप)+क्त] -सम्मित।

**संमुख**—वि०[स०]१. जो किसी के सामने या किसी की ओर मुँह किए हो। २. सामने आया हुआ। उपस्थित। प्रस्तुत।
अव्य० समक्ष। सामने।

**संमुखीन**†—वि०=समुख।

**संमुद्रण**—पुं०[स०] बहुत बढ़िया छपाई करना।

**संमेलन**—पुं० [स० सं√ मिल् (मिलना) ल्युट्—अक]=सम्मेलन।

**संम्राज***—पुं०=साम्राज्य।

**संयंता**—वि०[सं० सम्√यम् (सयम करना)+तृच्, सयतृ]१.सयम करने वाला। निग्रही। २. शासक।

**संयंत्रित**—भू० कृ०[स० सयत्र+इतच्]१ बँधा या जकड़ा हुआ। बद्ध। २ दबाया या रोका हुआ। ३. बन्द।

**संयत्**—वि०[स० सम्√यत्न (पद्म करना)+क्विप्—सम्+क्विप्—तुक वा] १. सबद्ध। लगा हुआ। २ जिसका क्रम न टूटे। लगातार होनेवाला।
पुं० १. नियत स्थान। २. करार। वादा। ३. लड़ाई-झगड़ा। ४. एक प्रकार की पुरानी चाल की ईंट जो वेदी बनाने के काम आती थी।

**संयत**—वि० [सं०]१. बँधा या जकड़ा हुआ। बद्ध। २. दबाया या रोका हुआ। ३. कैद या बन्द किया हुआ। ४. किसी प्रकार की मर्यादा या सीमा के अन्दर रहनेवाला। मर्यादित। (मॉडरेट) ५. कम, नियम आदि से व्यवस्थित किया हुआ। ६ उद्धत। सम्बद्ध। ७. इन्द्रिय-निग्रही। ८ सीमा के अन्दर रखा हुआ।
पुं०१ शिव। २. योगी।

**संयत-प्राण**—वि०[स०] जिसने प्राणायाम के द्वारा प्राणवायु या श्वास को वश में किया हो।

**संयतात्मा (त्मन्)**—वि०[स० ब० स०] जिसने मन को वश में किया हो। चित्तवृत्ति का विरोध करनेवाला।

**संयति**—स्त्री०[स० सम्√यम् (रोकना)+क्तिन्—नलोप] १. सयत रहने या होने की अवस्था या भाव। २. निरोध। रोक।

**संयद्वसु**—पुं०[स०] सूर्य की सात किरणों में से एक।
वि० धनवान्। सम्पन्न।

**संयम**—पुं०[स० सम्√ यम्( सयम करना) +घञ्] [कर्ता सयमी, भू० कृ० सयमित, वि० सयत] १ दबा या रोक कर रखने की क्रिया या भाव। वश में रखना। २ धार्मिक तथा नैतिक दृष्टि से मन को विषय-वासनाओं की अनुचित, बुरे या हानिकारक मार्गों में प्रवृत्त होने से रोकना। जिस की अनुचित वृत्तियों का निरोध। इंद्रिय-निग्रह। ३ शरीर-रक्षा अथवा स्वास्थ्य की दृष्टि से हानिकारक कार्यों या बातों से बचते हुए अलग या दूर रहना। परहेज। ४ व्यावहारिक दृष्टि से अपने आपको अनौचित्य की सीमा से बचाना। अनुचित कामों या बातों से अपने आपको रोकना। (मॉडरेशन) ५ क्रोध आदि में न आना। शांत बने रहना। ६ अच्छी तरह या व्यवस्थित रूप से बद करना या बाँधना। जैसे—केश-सयम। ७. खुला न रहने देना। मूँदना। ८. बधन। ९ योग में, ध्यान, धारणा, और समाधि का साधन। १०. उद्योग। प्रयत्न। ११. प्रलय।

**संयमक**—वि० [ स० सम्√यम् (रोकना) + ण्वुल्—अक या सयम+कन् ] संयम करनेवाला।

**संयमन**—पुं०[स० सम्√यम् (रोकना)+ल्युट्—अन]१. सयम करने की क्रिया या भाव। २. अनुचित या बुरी बातों से मन को रोकना। निग्रह। ३ दमन। ४. आत्म-निग्रह। ५ बन्धन या रुकावट में रहना। ६ अच्छी तरह बाँधना। जकड़ना। ७ अपनी ओर खींचना या तानना। ८. यम की पुरी। सयमिनी।

**संयमनी**—स्त्री०=सयमिनी।

**संयमित**—भू०कृ०[स० सम्√यम्(रोकना)+णिच्—क्त सयम+इतच्-वा]१. जिसके विषय या सम्बन्ध में सयम किया गया हो। २ रोका-कर वश में किया या लाया हुआ। ३. जिसका दमन किया गया हो अथवा हुआ हो। ४. कसा या बाँधा हुआ। ५ अच्छी तरह पकड़ा हुआ।
वि० इन्द्रियों का सयम करनेवाला। इन्द्रिय-निग्रही।

**संयमिता**—स्त्री० [स०√ यम्(रोकना आदि)+णिच्—तृच्] संयम करने की अवस्था, क्रिया या भाव।

**संयमिनी**—स्त्री० [स० सयम+इनि—ङीप्] १. यमराज की नगरी। यमपुरी जो मेरु पर्वत पर स्थित कही गई है। २ काशी पुरी।

**संयमी (मिन्)**—वि०[स० संयमिन्—दीर्घ, नलोप] १. संयम करनेवाला।

२. संयमपूर्वक जीवन बितानेवाला। संयम से रहनेवाला। आत्म-निग्रही।

पु०१. योगी। २ राजा। ३. शासक।

**संयात**—वि०[स० सम्√ या (गमनादि)+क्त]१. साथ चलने या जानेवाला। २ साथ लगा हुआ। ३ आया या पहुँचा हुआ। प्राप्त।

**संयात्रा**—स्त्री०[सं०]१ यात्रा में किसी का साथ होना। साथ साथ यात्रा करना। २ ऐसी यात्रा जिसमे समुद्र पार करना पड़े।

**संयान**—पु०[सं० सम्√ या (गमनादि)+ल्युट्—अन] [वि० सयान, संयायी]१. किसी के साथ चलना या जाना। सह-गमन। २ यात्रा। **पद—उत्तम संयान**=मृत शरीर को अन्त्येष्टि क्रिया के लिए ले जाना। ३. प्रस्थान। रवानगी। ४ गाड़ी। यान।

**संयाम**—पु०[स० सं√ यम् (रोकना)+घञ्]- संयम।

**संयुक्त**—भू० कृ० [स० सं√युज् (जोड़ना)+क्त] १ किसी के साथ जुड़ा, मिला, लगा या सटा हुआ। २ (सचेतन या सन्था) जिसका विघटन न हुआ हो। जैसे—संयुक्त परिवार। ३ जिनके दो या अधिक भागीदार हो। जैसे—संयुक्त खाता। ४. सहित। ५. साथ रहकर या मिलकर काम करनेवाले। जैसे—संयुक्त सगठक।

**संयुक्त खाता**—पु०[स० +हिं०]लेन-देन आदि का वह लेखा या हिसाब जो एक से कुछ अधिक आदमियों के नाम से चलता हो। (ज्वाइण्ट एकाउन्ट)

**संयुक्त राष्ट्र संघ**—पु०[स०]पुराने राष्ट्र सघ की तरह की वह सस्था जो दूसरे महायुद्ध के उपरात उसके स्थान पर अप्रैल १९४६ मे बनाई गई थी, और आज-कल जो सारे संसार मे शांति बनाये रखने, मानव-हितो की रक्षा करने तथा इसी प्रकार के और अनेक लोक-कल्याण के कार्यों में सक्रिय है।(युनाइटेड नेशन्स ऑर्गनिजेशन)

**संयुक्त लेखा**—पुं०=संयुक्त खाता।

**संयुक्त वाक्य**—पुं०[स०]व्याकरण मे ऐसा वाक्य जिसमे दो या अधिक ऐसे उपवाक्य होते हैं जो एक दूसरे के अधीन न हों। (कम्पाउन्ड सेन्टेन्स)

**संयुक्त सरकार**—स्त्री०[स० +हिं०] किसी देश की वह सरकार जो किसी आपात या विशेष संकट के समय सभी प्रमुख राजनीतिक दलो के सहयोग से बनी हो। (कोएलिशन गवर्नमेंट)

**संयुक्ताक्षर**—पु०[सं० सयुक्त+अक्षर] वह अक्षर जो दो अक्षरो के मेल से बना हो। जैसे—क् और त् के योग से 'क्त' या प् और ल् के योग से 'प्ल'।

**संयुग**—पुं०[सं० सम्√युज् (मना करना)+अच्—लोप—पृषो०]१ मेल। मिलाप। २ संयोग। समागम। ३. भिड़न्त। ४. युद्ध। लड़ाई।

**संयुत**—वि०[सं०] १. किसी के साथ मिला या लगाया हुआ। २. जो कई वस्तुओं के योग से बहुत अधिक या इकट्ठा हो गया हो। (क्युमुलेटेड)

**संयुति**—स्त्री०[सं०]१. सयुत होने की अवस्था या भाव। २. दो या अधिक पदार्थों का एक में या एक स्थान पर इकट्ठा होना या मिलना। जैसे—ग्रहों की संयुति। (कंजंक्शन)

**संयोग**—पुं०[सं०]१. दो या अधिक वस्तुओं का एक में या एक साथ होना। मेल। मिश्रण। (कम्बिनेशन) २. समागम। ३. लगाव। सबंध। ४. स्त्री और पुरुष या प्रेमी और प्रेमिका का मिलन। ५ मैथुन। रतिक्रीड़ा। सभोग। ६ वैवाहिक सबध। ७. किसी काम या बात के लिए कुछ लोगों मे होनेवाला मेल। ८. आकस्मिक रूप से आनेवाली वह स्थिति जिसमे एक घटना के साथ ही कोई दूसरी घटना भी घटित हो।

**पद—संयोग से**=बिना पहले से निश्चित किए हुए और आकस्मिक रूप मे। जैसे—मैं वहाँ बैठा हुआ था; इतने मे सयोग से वे भी आ पहुँचे। ९ किसी बात या विचार में होनेवाला पारस्परिक मतैक्य। 'भेद' का विपर्याय। १०. व्याकरण मे, कई व्यंजनों का एक साथ होनेवाला मेल। १०. अनेक सख्याओं का योग। जोड़।

**संयोग-पृथक्त्व**—पुं० [स० द्व० स०-त्व,या ब० स०] ऐसा पार्थक्य या अलगाव जो नित्य न हो। (न्याय)

**संयोग-मंत्र**—पु०[स० ष० त०,या मध्य० स०] विवाह के समय पढा जानेवाला वेदमत्र।

**संयोग-विरुद्ध**—पु०[सं० त्० त०]ऐसे पदार्थ जो साथ साथ खाने के योग्य नही होते, और यदि खाये जायँ तो रोग उत्पन्न करते है। जैसे—घी और मधु; मछली और दूध।

**संयोगिता**—स्त्री०[स०] जयचद की कन्या जिसका पृथ्वीराज ने हरण किया था।

**संयोगिनी**—स्त्री० [स०स योग+इनि—ङीप्] वह स्त्री जो अपने पति या प्रियतम के साथ हो। 'वियोगिनी' का विपर्याय।

**संयोगी (गिन्)**—वि०[स० सयोगिन्—दीर्घ—नलोप] [स्त्री० सयोगिनी]१. जिसका सयोग हो चुका हो। २ जो सयोग के फलस्वरूप हुआ हो। ३ विवाहित। ४ जिसकी प्रिया उसके पास या साथ रहती हो।

**संयोजक**—वि०[स० सम्√युज् (मिलाना)+ण्वुल्—अक] सयोजन करनेवाला।

पु०१ व्याकरण मे वह शब्द (अव्यय) जो दो शब्दों या वाक्यो को जोड़ने का काम करता हो। जैसे—अथवा, और, या। २ आज-कल सभा-समितियो का वह सदस्य जो अन्य सदस्यों को बुलाकर उनका अधिवेशन कराता हो तथा सभापति के कर्तव्यो का पालन भी करता हो (कन्वीनर)

**संयोजन**—पु०[स०सम्√ युज् (जोड़ना)+ल्युट्—अन] [वि० सयोगी, सयोजनीय, सयोज्य, सयोजित] १.सयोग करने अर्थात् जोड़ने या मिलाने की अवस्था या भाव। युग्मन। (कान्जुगेशन) २.एक के साथ किसी दूसरी चीज को सलग्न या सम्मिलित करने की क्रिया या भाव। (अटैचमेन्ट) ३ दो या अधिक चीजो का आपस में मिलना या मिलाया जाना। (कम्बिनेशन) ४. मैथुन। सभोग। ५. कार्य का आयोजन या व्यवस्था। प्रबन्ध। ६ संसार के जजाल मे मनुष्य को लगाये रखने वाला भव-बधन या कारण। (बौद्ध)

**संयोजना**—स्त्री०[स० संयोजन—टाप्]=संयोजन।

**संयोजित**—भू० कृ०[सं० सम्√युज् (मिलाना)+णिच्—क्त] जिसका सयोजन हुआ हो या किया गया हो।

**संयोज्य**—वि०[स० सम्√युज् (मिलाना)+ण्यत्] जिसका सयोजन हो सकता हो अथवा होने को हो।

**संयोध**—पुं० [सं०] युद्ध । लड़ाई ।

**संयोना**†—स०= सँजोना

**संरंभ**—पुं० [सं०] १. ग्रहण करना । पकड़ना । २. आतुरता । उत्कंठा । ३. उद्विग्नता । उद्वेग । ४ खलबली । क्षोभ । ५ उत्साह । उमंग । ६ क्रोध । कोप । ७. शोक । ८. ऐंठ । ठसक । ९ अधिकता । बाहुल्य । १०. आरंभ । शुरू । ११ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र । १२. फोड़े या घाव का सूजना या लाल होना । (सुश्रुत)

**संरक्त**—वि० [स० √रञ्ज् (राग होना)+क्त] १ अनुरक्त । आसक्त । २. आकर्षक । मनोहर । ३ जो क्रोध से लाल हो रहा हो ।

**संरक्षक**—वि० [स० सम्√ रक्ष् (रक्षा करना) +ण्वुल्—अक] [स्त्री० संरक्षिका] १. पर्यवेक्षण करनेवाला । २ देख-रेख, पालन-पोषण आदि करनेवाला । ३. आश्रय या शरण देनेवाला ।

पुं० १. वह जो किसी बालक, स्त्री आदि की देख-रेख, भरण-पोषण आदि का भार वहन करता हो । अभिभावक । (गार्जियन) २ वह जिसके निरीक्षण या देख-रेख मे किसी वर्ग के कुछ लोग रहते हों । (वार्डन) ३ आज-कल संस्थाओं आदि में वह बहुत बड़ा और मान्य व्यक्ति जो उसके प्रधान पोषकों या समर्थकों मे माना जाता हो । (पेट्रन)

**विशेष**—प्रायः संस्थाएं अपनी प्रामाणिकता , मान्यता आदि बढ़ाने के लिए गणमान्य विशिष्ट व्यक्तियों को अपना संरक्षक बना लेती है ।

**संरक्षकता**—स्त्री० [संरक्षक+तल्—टाप्] १. संरक्षक होने की अवस्था या भाव । २ संरक्षक का कार्य या पद ।

**संरक्षण**—पुं० [स० सम्√रक्ष् (रक्षा करना) +ल्युट्—अन] १ अच्छी और पूरी तरह से रक्षा करने की क्रिया या भाव । पूरी देख-रेख और हिफाजत । २ अधिकार । कब्जा । ३. अपने आश्रय मे रखकर पालना-पोसना । ४. आर्थिक क्षेत्र मे, देशी तथा विदेशी माल की प्रतियोगिता हटाने पर शासन द्वारा देशी माल की रक्षा करना । (प्रोटेक्शन; उक्त सभी अर्थों मे)

**संरक्षणवाद**—पुं० [सं०] आधुनिक राजनीति मे यह सिद्धान्त कि राष्ट्र को अपने आर्थिक क्षेत्र में राष्ट्रीय उद्योग-धन्धों का संरक्षण करना और बाहरी प्रतियोगिता के दुष्परिणामों से बचाना चाहिए । (प्रोटेक्शनिज्म)

**संरक्षण शुल्क**—पुं० [सं०] आधुनिक अर्थशास्त्र मे, वह शुल्क या कर जो अपने देश मे बनी हुई चीजों को प्रतियोगिता के कारण नष्ट होने से बचाने के लिए ऐसी विदेशी चीजों पर लगाया जाता है जो सस्ती बिक सकती हों । भरण्य शुल्क (प्रोटेक्शन ड्यूटी) । जैसे—देशी चीनी का व्यापार बढ़ाने के लिए पहले यहाँ विदेशी चीनी पर संरक्षण शुल्क लगाया गया था ।

**संरक्षणीय**—वि० [सं० सम्√रक्ष् (रक्षा करना)+अनीयर्] १. जिसका संरक्षण करना आवश्यक या उचित हो । संरक्षण का अधिकारी या पात्र । २. बचाकर रखे जाने के योग्य ।

**संरक्षित**—भू० कृ० [सं०सं√रक्ष् (रक्षा करना) +क्त] १. जिसका संरक्षण किया गया हो या हुआ हो । २. जो अच्छी तरह बचाकर रखा गया हो । पुं० वह जो किसी संरक्षक की देखरेख में रहता हो । प्रतिपाल्य । (वार्ड)

**संरक्षित राज्य**—पुं० [स०] आधुनिक राज्य मे वह दुर्बल राज्य जिसे किसी दूसरे सबल राज्य ने अपने संरक्षण में ले लिया हो । (प्रोटेक्टोरेट)

**संरक्षितव्य**—वि० [स० √रक्ष् (रक्षा करना)+तव्य] जिसका संरक्षण करना आवश्यक या उचित हो ।

**संरक्षी**—वि० [स० सम्√रक्ष् (रक्षा करना)+णिनि संरक्षा+इति] [स्त्री० संरक्षिणी] १. संरक्षण करनेवाला । २. देखभाल करनेवाला ।

**संरक्ष्य**—वि० [स० सम्√रक्ष् (रक्षा करना)+ण्यत्—यत वा] =संरक्षणीय ।

**संरचना**—स्त्री० [स०] [भू० कृ० संरचित] १ कोई ऐसी चीज बनाने की क्रिया या भाव जिसमे अनेक प्रकार के बहुत से अंगों-उपांगो का प्रयोग करना पड़ता हो । जैसे—किले, पुल या भवन की रचना । लाक्षणिक रूप मे, किसी अमूर्त वस्तु का सारा ढाँचा । बनावट । २ उक्त प्रकार से बनी हुई कोई चीज । (स्ट्रक्चर)

**संरब्ध**—वि० [सं० सम्√रभ् (मिलना) +क्त] १ किसी के साथ अच्छी तरह जुड़ा, मिला या लगा हुआ । २ जो किसी के साथ हाथ मिलाये हो । ३ उद्विग्न । क्षुब्ध । ४ क्रोध मे भरा हुआ । ५ फूला या सूजा हुआ । ६ चकराया हुआ ।

**संराधक**—वि० [स० सम्√राध् (ध्यान करना) +ण्वुल्—अक] १ सराधन करनेवाला । आराधना करनेवाला ।

**संराधन**—पुं० [स०] [वि० संराधनीय, संराध्य, भू० कृ० संराधित] १ आराधना या पूजन और ध्यान करना । २ जयजयकार । ३ आज-कल किसी अप्रसन्न व्यक्ति को समझा-बुझाकर तुष्ट और प्रसन्न करना । (कान्सिलिएशन)

**संराधन अधिकारी**—पुं० [प० त०] आज-कल वह राजकीय अधिकारी जो कल-कारखानों आदि मे काम करनेवाले कर्मचारियों और उनके मालिकों मे झगड़ा होने पर दोनों को समझा-बुझाकर उनमे समझौता कराता हो । (कन्सिलिएशन आफिसर)

**संराधनीय**—वि० [स० सम्√राध् (आराधना करना)+अनीयर्] जिसकी आराधना करना उचित या आवश्यक हो ।

**संराधित**—भू० कृ० [सं० सम्√ राध् (पूजा करना)+क्त] जिसका सराधन किया गया हो ।

**संराध्य**—वि० [सं० सम्√राध् (आराधना करना)। ण्यत्] =सराधनीय ।

**संराव**—पुं० [स०] १. कोलाहल । शोर । २ हलचल । धूम ।

**संरुद्ध**—वि० [स०] १. अच्छी तरह रोका हुआ । २ चारों ओर से घिरा या घेरा हुआ । ३ अच्छी तरह बन्द किया हुआ । ४ छाया या ढका हुआ । ५. पूरी तरह से भरा हुआ । ६ मना किया हुआ । वर्जित ।

**संरूढ**—वि० [सं०] १. अच्छी तरह चढ़ा हुआ । २ किसी पर अच्छी तरह लगा या जमा हुआ । ३. अकुरित । ४ (घाव) जो पूरा या सूख रहा हो । ५. आगे निकला या बाहर आया हुआ । ६ पुष्ट । प्रगल्भ । ७. पुष्ट और प्रौढ़ ।

**संरोदन**—पुं० [सं० सम्√ रुद् (रोना) +ल्युट्—अन] जोर-शोर से या छाती मारकर रोना ।

**संरोध**—पुं० [सं०] १. रोक । रुकावट । २ अड़चन । बाधा । ३. आधुनिक राजनीति में शत्रु के किसी देश या स्थान को चारों ओर से इस प्रकार घेरना कि बाहरी जगत से उसे कोई सहायता न मिल सके । नाकेबंदी (नाकेड़) । ४. बंद करना । मूँदना । ५. हिंसा ।

**संरोधन**—पुं० [सं०] [वि० संरोधनीय, संरोध्य, संरुद्ध] १. रुकावट

डालना। रोकना। २. बाधा खडी करना। बाधक होना। ३ चारों ओर से घेरना। ४. सीमा या हद बनाना। ५. बन्द करना। मूँदना। ६ बदी बनाना। कैद करना। ७. दमन करना। दबाना।

**संरोधनीय**—वि०[स० सम्√रुध् (ढकना)+अनीयर्] जिसका सरोधन हो सके या किया जाने को हो।

**संरोध्य**—वि०[स० सम्√रुध् (ढकना)+ण्यत्]=सरोधनीय।

**संरोहण**—पु०[स० सम्√रुह् (अंकुरित होना)+णिच्—ह्=प—ल्युट्—अन][वि० सरोहणीय, सरोप्य, भू०कृ० संरोपित] १. पेड़-पौधा लगाना। जमाना। बैठाना। रोपना। २. घाव को सुलाकर अच्छा करना।

**संरोपित**—भू० कृ० [सं० √रुह् (उगना)+णिच्—ह्=प—क्त]१. जिसका सरोपण हुआ हो अथवा किया गया हो। २. ऊपर से लगाया या रोपा हुआ।

**संरोप्य**—वि० [सं०√रुह् (उगना)+णिच्—ह्=प—ण्यत्] जिसका सरोपण हो सकता हो या किया जाने को हो।

**संरोह**—पु०[स० सम्√रुह् (उगना)+अच्]१. ऊपर चढना, जमना या बैठना। २. घाव रूखने पर पपड़ी जमना या बनना। ३. बीज आदि का अकुरित होना। ४. आविर्भूत या प्रकट होना। आविर्भाव।

**संरोहण**—पु०[स० सम्√ रुह् (अंकुरित होना)+ल्युट्—अन] [वि० सरोहणीय, संरोही, भू० कृ० सरोहित] सरोह होने की क्रिया या भाव।

**संलक्षण**—पु०[सं० सम्√लक्ष् (देखना आदि)+ल्युट्—अन] [वि० सलक्षणीय, सलक्ष्य, भू० कृ० सलक्षित] १. रूप या उसका लक्षण निश्चित करना। २. पहचानना। ३ ताड़ना। लखना।

**संलक्षित**—भू० कृ० [सं० सम्√लक्ष् (देखना आदि)+क्त] १ लक्षणों से जाना या पहचाना हुआ। २. ताडा या लखा हुआ।

**संलक्ष्य**—वि० [सं०सम्√लक्ष् (देखना आदि)+यत्] १. जो लक्षण से पहचाना जाय। २. जो देखने मे आ सके। ३. जो ताडा या लखा जा सके।

**संलक्ष्य क्रम व्यंग्य**—पुं० [सं०समूलक्ष्य-क्रम-ङ० स०,-व्यंग्य-मध्य० स०] साहित्य में, व्यग्य के दो भेदों मे से एक, ऐसा व्यग्य या व्यजना जिसमें वाच्यार्थ से व्यग्यार्थ की प्राप्ति का क्रम लक्षित हो।

**संलग्न**—वि०[सं०√लग् (सग रहना)+क्त पपीष, सम्√लाज् (लज्जित आदि)+क्त—न] १. किसी के साथ मिला हुआ। २. किसी काम या बात मे लगा हुआ। ३. जुड़ा हुआ। संबद्ध। ४ किसी दूसरे के साथ अन्त में या पीछे से जोड़ा या लगाया हुआ। (एटैंडेड, अटैच्ड)

**संलपन**—पुं०[सम्√लप् (कहना)+ल्युट्—अन] इधर-उधर की बातचीत। गप-शप।

**संलब्ध**—वि० [सम्√लभ् (प्राप्त होना)+क्त] =लब्ध।

**संलय**—पुं० [सम्√ली (गमनादि)+अच्] [वि० सलीन] १. पक्षियो का उतरना या नीचे आना। २. निद्रा। नींद। ३. प्रलय।

**संलयन**—पुं०[स√ली (गमनादि)+ल्युट्-अन] १. पक्षियों का नीचे आना या उतरना। २. लय को प्राप्त होना। लीन होना। ३. नष्ट होना। न रह जाना।

**संलाप**—पुं० [सम्√लप् (कहना)+घञ्] १. बापस की बात-चीत। वार्त्तालाप। २. नाटक में, ऐसी बात-चीत या संवाद जो वीरतापूर्ण हो और जिसमे आदेश या क्षोभ न हो। ३ साहित्य मे, जो आप ही आप कुछ बोलना या बड़बड़ाना जो पूर्व राग की दस दशाओ मे से एक माना गया है। ४. वियोग की दशा में प्रिय से मन ही मन की जाने-वाली बातें।

**संलापक**—पुं०[सलाप+कन्] नाटक में, संलाप।
वि० संलाप करनेवाला।

**संलिप्त**—भू० कृ० [सम्√लिप् (लेप करना)+क्त] १. भली-भाति लिप्त या लीन। २. अच्छी तरह लगा हुआ।

**संलीन**—वि० [सं०] १. अच्छी तरह लगा हुआ। २ छाया या ढका हुआ। ३. पूरी तरह से किसी में समाया हुआ। ४. सिकुडा हुआ। संकुचित।

**संलेख**—पु०[सं०] १ बौद्ध धर्म के अनुसार पूरा-पूरा सयम। २ आज-कल कोई ऐसा पत्र या लेख जिसमे किसी विधिक कृत्य का प्रामाणिक विवरण हो। विलेख। ३ विधिक क्षेत्र म, वह लेख या विलेख जो नियमानुसार लिखा हुआ, ठीक और प्रामाणिक माना जाता हो। (बैलिड डीड) ४ राज्यो मे होनेवाली सधि का वह पूर्व रूप या मसौदा जिस पर पारस्परिक समझौते की मुख्य मुख्य बातें लिखी हों तथा जिस पर सबद्ध पक्षो के प्रतिनिधियों के हस्ताक्षर हुए हों। पूर्व-लेख। (प्रोटोकोल)

**संलोडन**—पु० [सम्√लोड् (घोलना)+ल्युट्-अन] [वि० सलोडित] १.(जल आदि की) खूब हिलाना या चलना। मथना। २ झकझोरना। ३ उलटना-पुलटना। ४. उथल-पुथल करना या मचाना।

**संलोभन**—पुं०=प्रलोभन।

**संवत्**—पु० [स०] १. वर्ष। साल। २. किसी विशिष्ट गणना-क्रम वाली काल-गणना। जैसे—विक्रमी सवत्, शक सवत्।
**विशेष**—इसका प्रयोग मुख्यत. भारतीय गणना प्रणालियो के सम्बन्ध मे ही होता है। पाश्चात्य गणना प्रणालियों के सम्बन्ध मे प्राय: सन् का प्रयोग होता है।

**संवत्सर**—पुं० [स०] १. वर्ष। साल। २ फलित ज्योतिष मे, पाँच-पाँच वर्षों के युगो में से प्रत्येक का प्रथम वर्ष। ३. शिव का एक नाम।

**संवत्सरीय**—वि० [सम्वत्सर+छ—ईय] १. संवत्सर सम्बन्धी। संवत्सर का। २. हर साल होनेवाला। वार्षिक।

**संवदन**—पुं० [सम्√वद् (बोलना)+ल्युट्—अन] १. बातचीत। वार्तालाप। २. सदेशा। ३. आलोचनात्मक विचार। ४ जाँच-पड़ताल।

**संवदना**—स्त्री० [सम्वदन-टाप्] मंत्र-तत्र आदि से अथवा और किसी प्रकार किसी को वश मे करने की क्रिया। वशीकरण।

**संवनन**—पुं०[सम्√वन् (वश करना)+ल्युट्—अन][भू० कृ० संवनित] १. यंत्र-मत्र आदि के द्वारा स्त्रियो को फँसाना या वश में करना। २. दे० 'संवदन'।

**सँवरा**—स्त्री० [सं० स्मरण] १. याद। स्मृति। २. वृत्तान्त। हाल। ३. खबर। समाचार।
स्त्री० [हिं० सँवरना] सँवरे अर्थात् सजे हुए होने की अवस्था या भाव।

**संवर**—पुं० [सम्√वृ (वरण करना)+अप्] १. संवरण करने की क्रिया

या भाव। २. रुकावट। रोक। ३. इन्द्रिय-निग्रह। ४. जैन दर्शन मे कर्मों का प्रवाह रोकना। ५. बौद्ध मतानुसार एक प्रकार का व्रत। ६ जलाशयो आदि का बाँध। ७. पुल। सेतु। ८. चुनने की क्रिया या भाव। चुनाव। ९. कन्या का अपने लिए वर चुनना। स्वयंवर।

**संवरण**—मू० [स०] [वि० संवरणीय] १. दूर करना। हटाना। २. बन्द करना। ३. आच्छादित करना। ढकना। ४. छिपाना। ५. कोई ऐसी चीज जिसमे कोई दूसरी चीज छिपाई, ढकी या रोकी जाय। ६. आड करने या बचानेवाली चीज। ७. मनोवेग आदि को दबा या रोककर वश मे रखना। नियत्रण से बाहर न होने देना। निग्रह। जैसे—क्रोध या लोभ सवरण करना। ८. जलाशयो आदि का बाँध। १०. पुल। सेतु। ११. पसद करना। चुनना। १२. कन्या का विवाह के लिए अपना पति या वर चुनना। १३. वैद्यक मे गुदा के चमडे की तीन तहों या परतो मे से एक। १४. आज-कल सभा-समितियो, ससदो आदि में किसी विषय पर यथेष्ट वाद-विवाद हो चुकने पर किया जानेवाला उसका अन्त या समाप्ति। (क्लोजर)

**संवरणीय**—वि० [सम्√वृ (वरण करना)+अनीयर्] [स्त्री० सवरणीया] १. जिसका सवरण हो सकता हो या होना उचित हो। २. जिसे छिपाकर रखना वाछित हो। गोपनीय। ३. जो वरण अर्थात् विवाह के योग्य हो चुका हो।

**सँवरना**—अ० [स० सवर्णन] १. बनकर अच्छी या ठीक दशा को प्राप्त होना, अथवा सुन्दर रूप में आना। सँवारा जाना। २. अलकृत या सज्जित होना।

स०[सं० स्मरण] स्मरण करना। उदा०—सँवरी आदि एक करताक। —जायसी।

†अ० स्मरण होना। याद आना। उदा०—पुनि बिसरा भा सँवरना, जनु सपने भइ भेंट।—जायसी।

**सँवरा**†—वि०=साँवला।

**सँवरिया**†—वि०=साँवला।

†पु०=साँवलिया।

**संवर्ग**—पु०[सम्√वृजी (मना करना)+घञ्] १. अपनी ओर समेटना। २. इकट्ठा करना। ३ खा जाना। भक्षण। ४. खपत। ५. विलय। ६. (गणित मे) गुणन-फल।

**संवर्जन**—पु० [सम्√वृज् (त्यागना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० संवर्जित, वि० सवर्जनीय, सवृक्त] १. बलपूर्वक ले लेना। हरण करना। छीनना। २. उडा डालना। समाप्त कर देना।

**संवर्त**—पु० [स०] १. लपेटना। २. घुमाव। फेरा। लपेट। ३. लपेट कर बनाई हुई पिंडी। ४. शत्रु से भिडना। ५. गोली। बटी। ६ बड़ी राशि या समूह। ७. संवत्सर। ८. एक प्रकार का विध्यास्त्र। ९. ग्रहो का एक प्रकार का योग। १०. एक केतु का नाम। ११. एक कल्प का नाम। १२. प्रलय काल के मेघो में से एक। १३. इन्द्र का अनुचर एक मेघ, जिससे बहुत जल बरसता है। १४. बादल। मेघ। १५ बहेड़ा।

**संवर्तक**—वि० [स√वृत् (रहना)+णिच्-ण्वुल्—अक] १. संवर्तन करने या लपेटनेवाला। २. नाश या लय करनेवाला।

पु० १. कृष्ण के भाई बलराम का एक नाम। २. बलराम का अस्त्र, हल। ३. बडवानल। ४. बहेड़ा। ५. प्रलय नामक मेघ। ६. प्रलय मेघ की अग्नि।

**संवर्तकल्प**—पु० [मध्यम० स०] बौद्धो के अनुसार प्रलय का एक प्रकार या रूप।

**संवर्तकी**—पुं० [संवर्तक+इति, संवर्तकिन्] कृष्ण के भाई बलराम का एक नाम।

**संवर्तन**—पु० [स०√वृत् (रहना)+ल्युट्-अन] [वि० सवर्तनीय, सवृत्त, भू० कृ० सवर्तित] १ लपेटना। २. चक्कर या फेरा देना। ३ किसी ओर प्रवृत्त होना या मुडना। ४. पहुँचना। ५ खेत जोतने का हल। ६ भारतीय युद्ध कला मे, शत्रु का प्रसार रोकना।

**संवर्तनी**—स्त्री० [सवर्तन-ङीप्] सृष्टि का लय। प्रलय।

**संवर्तनीय**—वि० [स√वृत् (रहना)+अनीयर्] जिसका सवर्तन हो सकना हो या होने को हो।

**संवर्ति**—स्त्री० [सवृत्+इति] दे० 'सवर्तिका'।

**संवर्तिका**—स्त्री० [सवर्त्ति+कन्+टाप्] १. लपेटी हुई वस्तु। २. बत्ती। ३. ऐसा बँधा हुआ पत्ता जो अभी खिलने या खुलने को हो। ४ खेत जोतने का हल।

**संवर्तित**—भू० कृ० [सं√वृत् (रहना)+क्त] १. लपेटा हुआ। २. घुमाया, फेरा या मोडा हुआ।

**संवर्ती**—वि० [स०] [स्त्री० सवर्तिनी] १ किसी के साथ वर्तमान रहने या होनेवाला। २ किसी के समान पद या स्थिति मे रहनेवाला। ३ एक ही काल मे औरों के साथ, प्राय. उसी रूप मे परन्तु भिन्न-भिन्न स्थानों में होनेवाला। (कान्फरेन्ट) जैसे—सवर्ती घोषणा या सूची =ऐसी घोषणा या सूची जो एक साथ कई स्थानो मे प्रकाशित हो।

**संवर्द्धक**—वि० [सम्√वृध् (बढ़ाना)+णिच्-ण्वुल्-अक] सवर्धन करनेवाला।

**संवर्द्धन**—पु० [सम्√वृध् (बढाना)+णिच्-ल्युट्-अन] [वि० सवर्द्धनीय, सवर्द्धित, सवृद्ध] १ अच्छी तरह बढना या बढाना। २ जितना या जो पहले से वर्तमान हो उसमे कुछ और अग्रिकता या वृद्धि करना। (आग्मेन्टेशन) ३ पशु-पक्षियों, पौधो आदि के सबध मे ऐसी क्रिया और देख-भाल करना जिसमे उनके वंश आदि का विकास, विस्तार या वृद्धि हो। (कल्चर) जैसे—मधुमक्खियों आदि का सवर्धन। पाल पोसकर बडा करना। ५. उछत करना। बढाना।

**संवर्द्धनीय**—वि० [सम्√वृध् (बढाना)+णिच्-अनीयर्] १. जिसका सवर्द्धन करना आवश्यक या उचित हो। २ जिसका पालन-पोषण करना आवश्यक या उचित हो।

**संवर्द्धित**—भू० कृ० [सम्√वृध् (बढना)+णिच्-क्त] जिसका संवर्द्धन किया गया हो या हुआ हो।

**संवर्धन**—पु०=सवर्द्धन।

**संवल**—पु० [सम्√वल् (संवरण करना)+क] =संबल।

**संवलन**—पु० [स० सम्+वलन] [वि० सवलित] १. किसी ओर घुमाना या मोड़ना। २ मिलाना। मिश्रण। ३ मेल। ४ मिलावट। मिश्रण। ५. ऐसी व्यवस्था करना कि आवश्यकता के अनुसार घटाया-बढ़ाया जा सके। (कडीशनिंग) जैसे—वायु-सवलन। ६. बल दिखाने के लिए मुठ-भेड़ करना। भिड़ना।

**सँवलाना**—अ० [हिं० साँवला] रंग का साँवला पड़ना या होना। उदा०—लड़की का चेहरा और ज्यादा सँवला गया।—सआदत हसन मन्टो। स० साँवला करना। जैसे—धूप ने उस का रंग सँवला दिया था।

**संवलित**—भू० कृ० [सम्√वल् (पकड़ना)+क्त] १. जिसका सकलन हुआ हो या किया गया हो। २. किसी के साथ मिला हुआ। युक्त। सहित। ३ घिरा या घेरा हुआ। ४. जो शत्रु से भिड़ या लड़ गया हो।

**संवसथ**—पुं० [सम्√वस् (रहना)+अथ] मनुष्यों की बस्ती।

**संवह**—वि०[सम्√वह् (ढोना)+अच्] १. वहन करनेवाला। ले जानेवाला।

पु० १. एक वायु जो आकाश के सात मार्गों में से तीसरे मार्ग मे रहती है। २ अग्नि की सात जिह्वाओं मे से एक।

**संवहन**—पु० [सम्√वह् (ढोना)+ल्युट्–अन] [भू० कृ० सवहित] १ वहन करना। ले जाना। ढोना। २. प्रदर्शित करना। दिखाना।

**संवाक्य**—पु०[सम्√वच् (कहना)+ण्यत्] अच्छी तरह बात-चीत करने या कथा कहने का ढग जो ६४ कलाओं मे से एक है।

**संवातन**—पु० [सं०] [वि० सवाती, भू० कृ० सवातित] ऐसी अवस्था या व्यवस्था जिसमे कमरे, कोठरी आदि में हवा ठीक तरह से आती-जाती रहे। हवादारी। (वेंटिलेशन)

**संवाद**—पु० [सं०] [वि० सवादिक] १. एक-रूपता, सादृश्य आदि के कारण चीजो, बातो आदि का आपस मे ठीक बैठना या मेल खाना। २. किसी से की जानेवाली बातचीत। वार्तालाप। ३. किसी के पास भेजा हुआ या आया हुआ विवरण या वृत्तान्त। ४ खबर। समाचार। ५ चर्चा। ६. निवुक्ति। ७ मुकदमा। व्यवहार। ८. सहमति। ९ स्वीकृति।

**संवादक**—वि० [सम्√वद्(कहना)+विच् ण्वुल्–अक] १. बोलने या बात-चीत करनेवाला। २. संवाद या समाचार देनेवाला। ३. किसी के मत से सहमत होनेवाला। ४. बात मान लेनेवाला। ५. बजानेवाला।

**संवादवाहक**—पु० [सं०] १. वह जो किसी प्रकार का संवाद या खबर देता हो। २. आज-कल वह व्यक्ति जो समाचारपत्रों में छपने के लिए स्थानिक घटनाओ का विवरण लिखकर भेजता हो। (रिपोर्टर, करेस्पान्डेन्ट)

**संवादन**—पु० [सम्√वद् (कहना)+णिच्–ल्युट्–अन] [भू० कृ० संवादित] [वि० सवादनीय,संवादी,संवाद्य] १. बात-चीत करना। बोलना। २ किसी के कथन या मत से सहमत होना। ३. किसी का अनुरोध या बात मान लेना। ४. बाजे आदि बजाना।

**संवादिका**—स्त्री० [सम्√वद् (कहना)+णिच्–ण्वुल्–अक–टाप्] १. फीट। फीड़ा। २. चूहुँटी।

**संवादित**—भू० कृ० [सं√वद् (कहना)+णिच्–क्त] १. संवाद अर्थात् बात-चीत में लगाया या प्रवृत्त किया हुआ। २. प्रसन्न करके मनाया या राजी किया हुआ।

**संवादिता**—स्त्री० [सवादित–टाप्] सवादी होने की अवस्था, गुण या भाव।

**संवादी**—वि० [सम्√वद् (कहना)+णिनि] [स्त्री० संवादिनी] १. संवाद अर्थात् बातचीत करनेवाला। २. राजी या सहमत होनेवाला। ३. किसी के साथ अनुकूल पडने, बैठने या होनेवाला। ४. बाजा बजानेवाला।

पुं० सगीत में, वह स्वर जो किसी राग के वादी स्वर के साथ मिलकर उसका सहायक होता और उसे अधिक श्रुति-मधुर बनाता है। जैसे—षडज से पचम से षडज तक जाने मे बीच के तीन स्वर सवादी होते।

**सँवार**†—स्त्री० [हिं० सँवरना] १. सँवरने या सँवारने की क्रिया, भाव या स्थिति। २. सँवारा या सँवारा हुआ रूप। ३. सबोधन। उदा०—केर सँवार गोसाँई जहाँ परै कछू चूक।–जायसी। ४. 'मार' के स्थान पर मगल-भावित रूप मे बोला जानेवाला शब्द। (मुसलमान स्त्रियाँ) जैसे—तुझ पर खुदा की सँवार (अर्थात् मार)।

†पु० [सं० सवाद या स्मरण] हाल। समाचार। उदा०—पुनि रे सँवार कहेसि अरु दूजी।—जायसी।

**संवार**—पु०[सम्√वृ (ढकना)+घञ्] १. आवरण डालकर कोई चीज छिपाना या ढकना। २. शब्दो के उच्चारण के समय कठ के भीतरी भाग का कुछ दबना या सिकुडना। ३ उच्चारण के बाह्य प्रयत्नो मे से एक जिसमे कठ का आकुचन होता है। 'विवार' का उलटा। ४. बाधा। अडचन।

**संवारण**—पु० [सम्√वृ (वारण करना)+णिच्–ल्युट्–अन] [भू० कृ० सवारित, वि० सवार्य] १. दूर करना। निवारण करना। हटाना। २. न आने देना। रोकना। ३ निषेध करना। मनाही। ४. छिपाना। ५. ढकना।

**संवारणीय**—वि० [सम्√वृ (दूर करना)+णिच्–अनीयर] जिसका सवारण हो सके या होने को हो।

**संवारना**—स० [स० सवर्णन] १ किसी चीज को ऐसा रूप देना कि वह अच्छा या सुन्दर जान पड़े। २. ठीक और दुरुस्त करके काम में आने के योग्य बनाना। ३. अलकृत करना। सजाना। ४. क्रम से लगाकर या ठीक करके रखना। ५. सुधार रूप से कोई कार्य सम्पन्न करना। जैसे—ईश्वर ही हमारे सब काम सँवारता है।

**संवारित**—भू० कृ० [सम्√वृ(हटाना)+णिच्–क्त] जिसका संवारण किया गया हो या हुआ हो।

**संवार्य**—वि० [सम्√वृ (मना करना)+णिच्–ण्यत्]=सवारणीय।

**संवास**—पुं० [सम्√वस्(रहना)+घञ्] १ साथ बसना या रहना। २. पारस्परिक सम्बन्ध। ३. स्त्री संभोग। मैथुन। ४. समाज। सभा। ५. जन-साधारण के उपयोग के लिए नियत खुला स्थान। ६ घर। मकान।

**संवासन**—पु०[स०] [भू० कृ० संवासित] १. सवास करने की क्रिया या भाव। २. अच्छी तरह सुगन्धित करने की क्रिया या भाव।

**संवासी (सिन्)**—वि० [सम्√वस् (रहना)+णिनि] सवास करनेवाला।

**संवाह**—पुं० [सम्√वह् (ढोना)+णिच्–अच्] १. ले जाना। ढोना। २ पैर दबाना। ३. पीड़ित करना। सताना। ४. बाजार। मडी। ५. जन-साधारण के लिए उपयोग के लिए रक्षित खुला स्थान।

**संवाहक**—वि० [सं०] ढोकर अथवा और किसी प्रकार एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जानेवाला। वहनक। वाहक। (कैरियर)

पुं० शरीर के हाथ-पैर आदि अग दबानेवाला सेवक।

**संवाहकता**—स्त्री० [सं०] १. संवाहक होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २. आधुनिक विज्ञान में, किसी पदार्थ का वह गुण या धर्म जिसके फल-स्वरूप ताप, विद्युत्, शीत आदि उसके एक अंग से बढ़कर शेष अंगों में पहुँचते अथवा दूसरे सधर्मी पदार्थों में संवहन करते हैं। (कन्डक्टिविटी)

**संवाहक**—पुं० [सं०] [भू० कृ० संवाहित, कर्ता संवाहक, संवाही; वि० संवाहनीय, संवाह्य] १. कोई चीज एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने की क्रिया या भाव। २. ताप, वाष्प, विद्युत आदि एक स्थान से किसी दूसरे अथ या बिंदु तक पहुँचाने की क्रिया या भाव। (कन्डक्शन) ३. परिचालित करना। चलाना। ४. शरीर के हाथ-पैर, अंग आदि दबाना या उनसे मालिश करना।

**संवाहित**—भू० कृ० [सम्√वह् (ढोना)+णिच्-क्त] १ जिसका संवाहन हुआ हो या किया गया हो।

**संवाही**—वि०[सम्√वह् (ढोना)+णिनि] [स्त्री० संवाहिनी]=संवाहक।

**संवाह्य**—वि० [सम्√वह् (ढोना)+ण्यत्] जिसका संवाहन हो सके या होने को हो। संवाहन का अधिकारी या पात्र।

**संविग्न**—वि० [सं०] १. घबराया हुआ। उद्विग्न। २ क्षुब्ध। ३. डरा हुआ। भीत।

**संविज्ञ**—वि० [सु० वि√ज्ञा (जानना)+क] अच्छा जानकार। सुविज्ञ।

**संविज्ञान**—पुं० [सं०] १. ठीक और पूरा ज्ञान। सम्यक् बोध। २. स्वीकृति। मंजूरी। ३. सहमति।

**संविद्**—स्त्री० [सं०]=संविद्'।

**संविति**—स्त्री०[सम्√विद् (जानना)+क्तिन्] १.प्रतिपत्ति। २.सहमति। ३. चेतना। संज्ञा। ४. अनुभव। तजरबा। ५ बुद्धि। समझ।

**संविदपत्र**—पुं० [सं०] १. वह पत्र जिसमें दो ग्रामों या प्रदेशों के बीच किसी बात के लिए मेल की प्रतिज्ञा या शर्त लिखी हो। (शुक्रनीति) २. किसी प्रकार का इकरारनामा या पट्टा। संविदापत्र।

**संविद्**—स्त्री० [सं०] १. चेतना-शक्ति। चैतन्य। २ ज्ञान। बोध। समझ। ३. सांख्य में, महत्त्व। ४. अनुभूति। संवेदन। ५. आपस में होनेवाला इकरार या समझौता। ६ उपाय। तदबीर। युक्ति। ७. वृत्तान्त। हाल। ८. प्रथा। रीति। ९ नाम। संज्ञा। १०. तुष्टि। तृप्ति। ११. युद्ध। लड़ाई। १२. प्रचारणा। ललकार। १३. इशारा। संकेत। १४. प्राप्ति। लाभ। १५. जायदाद। वल्पत्ति। १६. मिलने के लिए नियत किया हुआ स्थान। संकेत-स्थल। १७. योग में प्राणायाम से प्राप्त होनेवाली एक भूमि। १८ भाँग। विजया।

वि० चेतनायुक्त। चेतन।

**संविदा**—स्त्री० [सं०] १. कुछ खास शर्तों पर आपस में होनेवाला किसी प्रकार का इकरार, ठहराव या समझौता। (कन्ट्रैक्ट) २. गाँजे या भाँग का पौधा।

**संविदापत्र**—पुं०[सं०] वह पत्र जिस पर किसी संविदा की शर्तें लिखी हों। इकरारनामा। ठीकानामा। (कन्ट्रैक्ट डीड)

**संविदा प्रविधि**—स्त्री० [सं०] वह प्रविधि या कानून जिसमें संविदा या ठीके से सम्बन्ध रखनेवाले नियमों का विवेचन हो। (लॉ ऑफ़ कन्ट्रैक्ट)

**संविदित**—भू० कृ०[सम्√विद् (जानना)+क्त] १. अच्छी तरह जाना हुआ। पूर्णतया ज्ञात। २. खोजा या ढूँढा हुआ। ३ सबकी सम्मति से ठहराया या निश्चित किया हुआ। ४. जिसके सम्बन्ध में वचन दिया या वादा किया गया हो। ५ अच्छी तरह बतलाया या समझाया हुआ।

**संविद्वाद**—पु० [ष० त०] पाश्चात्य दर्शन का एक सिद्धान्त जिसमें वेदान्त के समान चैतन्य के अतिरिक्त और किसी वस्तु की पारमार्थिक सत्ता नहीं मानी जाती। चैतन्यवाद।

**संविधा**—स्त्री० [सम्-वि√धा (रखना)+क—टाप्] १ रहन-सहन। आचार-व्यवहार। २ प्रबन्ध। व्यवस्था।

**संविधाता (तृ)**—वि० [सम्-वि√धा (रखना)+तृच्] संविधान करनेवाला।

पुं० विधाता (ब्रह्मा)।

**संविधान**—पु० [स० वि√धा (रखना)+ल्युट्-अन] १ ठीक तरह से किया गया विधान या व्यवस्था। उत्तम प्रबंध। २. बनावट। रचना। ३. आधुनिक राजनीति और शासन-तंत्र में, कानून या विधान के रूप में बने हुए वे मौलिक नियम और सिद्धान्त जिनके अनुसार किसी राज्य, राष्ट्र या संस्था का संघटन, संचालन और व्यवस्था होती है। (कान्स्टिच्यूशन) ४ दस्तूर। प्रथा। रीति। ५. अनुतापन। विलक्षणता।

**संविधानक**—वि० [ स० संविधान+कन् ] संविधान करनेवाला। संविधाता।

पु० १. कोई विचित्र घटना या व्यापार। २. उपन्यास, नाटक आदि की कथनानुसार कथानक। (प्लाट)

**संविधान परिषद्**—स्त्री० [स० मध्य० सं०] वह परिषद् या सभा जो किसी देश, राष्ट्र या संस्था की व्यवस्था और शासन के लिए नियमावली या संविधान बनाने के लिए नियुक्त या संघटित की गई हो। (कांस्टिच्यूएन्ट एसेम्बली)

**संविधानवाद**—पु० [स० संविधान√वद्+घञ्] [वि० संविधानवादी] १. यह मत या सिद्धान्त कि किसी देश या राज्य का शासन निश्चित संविधान के अनुसार होना चाहिए। (कान्स्टिच्यूशनलिज्म)

**संविधानवादी**—वि० [स० संविधान√वद्+णिनि]संविधानवाद सम्बन्धी। संविधानवाद का।

पु० वह जो संविधानवाद का अनुयायी और पोषक हो। (कांस्टिच्यूशनलिस्ट)

**संविधानसभा**—स्त्री०=संविधान परिषद्।

**संविधानिक**—वि० [स० संविधान+ठन्-इक] संविधान अथवा उसके नियमों आदि से सम्बन्ध रखनेवाला। (कांस्टिच्यूशनल)

**संविधानी**—वि०=संविधानिक।

**संविधि**—वि० स्त्री०[सम वि√धा (रखना)+कि] १. विधान। रीति। दस्तूर। २. प्रबन्ध। व्यवस्था। ३. दे० 'प्रविधान'।

पु० [स०] विधान सभा द्वारा पारित प्रस्ताव जो विधान के अंग के रूप में स्वीकार किया जाता है। (स्टेच्यूट)

**संविधेय**—वि० [सम्-वि√धा (रखना)+यत्-आ=ए] १. जिसका संविधान होने को हो या हो सकता हो। २. (काम) जो किया जाने को हो या जिसका प्रबन्ध होने को हो।

**संविभक्त**—वि० [सम् वि√भज् (देना)+क्त] १. अच्छी तरह बँधा हुआ। २. ठीक और सुन्दर बना हुआ। सुडौल। ३. विभक्त किया हुआ।

**संविभाग**—पुं० [सम्-वि-√भज् (देना)+घञ्] १. ठीक तरह से किया गया विभाग। २. प्रदान। ३. राज्य के मंत्री का कार्यालय और वह विशिष्ट विभाग जिसके सब कार्य वहाँ होते हों। (पोर्टफ़ोलियो)

**संविभागी (गिन्)**—पुं० [संविभाग+इनि] अपना अंश या भाग लेनेवाला। हिस्सेदार।

**संविभाजन**—पुं० [सं० संवि√भज्+णिच-ल्युट्-अन] [भू० कृ० संविभाजित, संविभक्त]=विभाजन।

**संविवेक**—पुं० [सं० सं-वि√विच्+घञ्] १. विवेक। २. वह मानसिक शक्ति जिसके द्वारा विकट अवसरों पर हम सब बातें सोच-समझकर उचित कर्तव्य या निर्णय करते हैं। (डिस्क्रीशन)

**संविष्ट**—वि० [सं√विस् (प्रवेश करना)+क्त] १. आया या पहुँचा हुआ। प्राप्त। २. लेटा या सोया हुआ। ३. बैठा हुआ।

**संवीक्षण**—पुं० [सम्-वि√ईक्ष् (देखना)+ल्युट्-अन] [वि० सवीक्षणीय, सवीक्ष्य] १. अच्छी तरह इधर-उधर देखना। अवलोकन। २. तलाश करना। ढूँढ़ना। ३. जाँच-पड़ताल। अन्वेषण।

**संवीक्षा**—स्त्री० [सं०√सवीक्ष्+अ—टाप्] [भू० कृ० सवीक्षित, वि० सवीक्ष्य] किसी चीज या बात के बिलकुल ठीक होने की ऐसी जाँच-पड़ताल जिसमें ब्यौरे की छोटी से छोटी भूल-चूक पर भी पूरा-पूरा ध्यान रखा जाता है। (स्क्रूटिनी)

**संवीत**—भू० कृ० [सम्√वृ (संवरण करना)+क्त-य-इए] १ ढका हुआ। आवृत। २. कवच द्वारा सुरक्षित किया हुआ। ३. जो कुछ पहने हुए हो। ४. रुका हुआ। रुद्ध। ५ जो दिखाई न दे रहा हो। अदृश्य। लुप्त। ६. देखकर भी अनदेखा किया या टाला हुआ। पुं० १. पहनने के कपड़े। परिच्छद। पोशाक। २. सफेद कटसी।

**संवीती**—वि० [स० सवीत+इनि] जो यज्ञोपवीत पहने हो।

**संवृक्त**—भू० कृ० [सम्√वृज् (रखना आदि)+क्त,√वृक् (लेना)+क्त वा] १. छीना हुआ। हरण किया हुआ। २. लापरवाही से खरचा, खाया या उड़ाया हुआ (धन)।

**संवृत**—भू० कृ० [सम्√वृ (ढकना)+क्त] १. ढका या बंद किया हुआ। आच्छादित। २. लपेटा हुआ। ३. घिरा या घेरा हुआ। ४. युक्त। सहित। ५. रक्षित। ६. जिसका दमन किया गया हो। दबाया हुआ। ७. जो अलग या दूर हो गया हो। ८. धीमा किया हुआ। ८ धँधा हुआ (गला)। ९. (अक्षर या वर्ण) जिसके उच्चारण में संवार नामक बाह्य प्रयत्न होता हो। 'विवृत' का विपर्याय।

पुं० [सं√वृ (लेना)+क्त] १. वरुण देवता। २. गुप्त स्थान। ३. एक प्रकार का जलजंतु।

**संवृत्ति**—स्त्री० [सम्√वृ (छिपाना)+क्तिन्] संवृत होने की अवस्था या भाव।

**संवृत्त**—भू० कृ० [सं० संवृत् (रहना)+क्त] १. पहुँचा हुआ। समाप्त। प्राप्त। २. जो घटित हो चुका हो। ३. (उद्देश्य या विचार) जो पूरा सिद्ध हो चुका हो। ४. उत्पन्न। ५. उपस्थित। मौजूद। पुं० वरुण देवता।

**संवृत्ति**—स्त्री० [सम्√वृत् (रहना)]+क्तिन्] १ उद्देश्य, कार्य आदि की निष्पत्ति। सिद्धि। २. एक देवी का नाम।

**संवृद्ध**—वि० [सम्√वृध् (बढ़ना)+क्त] १ बढ़ा या बढ़ाया हुआ। २. ऊपर उठा हुआ। उन्नत।

**संवृद्धि**—स्त्री० [सम्√वृध् (बढ़ना)+क्तिन्] १. बढ़ने की क्रिया या भाव। बढ़ती। वृद्धि। २. समृद्धि।

**संवेग**—पुं० [सम्√विज् (आकुल होना)+घञ्] १. गति आदि का पूरा वेग। झोंक की तेजी। २. मन में होनेवाली खलबली। उद्विग्नता। घबराहट। ३. डर। भय। ४. अतिरेक। ५. दे० 'मनोवेग'।

**संवेजन**—पुं० [सम्√विज् (घबड़ाना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० संवेजित, वि० संवेजनीय] १. उद्विग्न करना। २. खलबली या हलचल मचाना। ३. भयभीत करना। डराना। ४. उत्तेजित करना। भड़काना। ५ ऊपर उठना या खड़ा होना। जैसे—रोम-संवेजन।

**संवेत गान**—पुं० [सं० कर्म० स०] ऐसा संगीत जिसमें अनेक प्रकार के बाजे एक साथ बजते हों। २. कई आदमियों का एक साथ मिलकर कोई चीज गाना। सहगान। (कोरस)

**संवेद**—पुं० [सम्√विद् (जानना)+घञ्] १ सुख-दुःख आदि की अनुभूति। २ ज्ञान। बोध।

**संवेदन**—पुं० [सं० सम्√विद्+ल्युट्-अन] [वि० संवेदनीय, संवेद्य, भू० कृ० संवेदित] १. मन में सुख-दुःख आदि की होनेवाली अनुभूति या प्रतीति। २ किसी प्रकार के प्रभाव, स्पर्श आदि के कारण शरीर के अंगों या स्नायुओं में प्राकृतिक रूप से होनेवाला वह स्पन्दन जिसके मन को उसकी अनुभूति होती है। उदा०—मनु का मन था विकल हो उठा संवेदन से खाकर चोट।—प्रसाद। ३. किसी को किसी बात का ज्ञान या बोध कराना। ४. नक-चिकनी नाम की घास।

**संवेदन-सूत्र**—पुं० [म० मध्य० स०] प्राणियों के शरीर में जाल के रूप में फैली हुई बहुत ही सूक्ष्म नसों में से प्रत्येक नस। (नर्व) विशेष दे० 'तन्त्रिका'।

**संवेदनहारी**—वि० दे० 'निश्चेतक'।

**संवेदना**—स्त्री० [सं० संवेदन+टाप्] १. मन में होनेवाला अनुभव या बोध। अनुभूति। २. किसी को कष्ट में देखकर मन में होनेवाला दुःख। किसी की वेदना देखकर स्वयं भी बहुत कुछ उसी प्रकार की वेदना का अनुभव करना। सहानुभूति। (सिम्पैथी) ३. उक्त प्रकार का दुःख या सहानुभूति प्रकट करने की क्रिया या भाव। (कन्डोलेन्स)

**संवेदनीय**—वि० [सम्√विद् (जानना)+अनीयर्] १ जिसमें या जिसे संवेदन या ज्ञान हो सकता हो। २. जो जतलाया या बतलाया जा सकता हो।

**संवेदित**—भू० कृ० [सम्√विद् (जानना)+णिच्-क्त] १ जिसकी संवेदना के रूप में अनुभूति हुई हो। २. जतलाया या बतलाया हुआ।

**संवेद्य**—वि० [सम्√विद् (जानना)+ण्यत्] [भाव० संवेद्यता] १. संवेदना के रूप में जिसकी अनुभूति या ज्ञान हो सकता हो। २. (बात या विषय) जिसका अनुभव या ज्ञान कराया जा सकता हो। ३. संवेदनीय।

**संवेद्यता**—स्त्री० [सं० संवेद्य+तल्-टाप्] संवेद्य होने की अवस्था, गुण या भाव। (सेन्सिबिलिटी)

**संवेश**—पु० [सम्√विश् (घुसना)+घञ्] १. पास आना या जाना। पहुँचना। २. प्रवेश। भेंट। ३. आसन लगाना। बैठना। ४. लेटना या सोना। ५. बैठने का आसन या पीढ़ा। ६. काम-शास्त्र में, एक प्रकार का रति-बन्ध। ७. अग्नि देवता जो रति के अधिष्ठाता माने गये हैं।

**संवेशक**—वि० [सम्√विश्+णिच्-ण्वुल्–अक] चीजें क्रम से तथा यथा-स्थान रखनेवाला।

**संवेशन**—पुं० [सम्√विश् (बैठना)+णिच्-ल्युट्–अन] [वि० सवेशनीय, सवेश्य, भू० कृ० सवेशित] १. बैठना। २. लेटना या सोना। ३ घुसना। पैठना। ४. स्त्री-समोग। मैथुन। रति।

**संवेशी**—वि० [सम्√विश् (रहना)+णिनि]=सवेशक।

**संवेश्य**—वि०[सम्√विश् (बैठना)+ण्यत्] १. जिस पर लेटा जा सके। २. जिसके अन्दर घुसा या पैठा जा सके।

**संवेष्ट**—पु० [सम्√वेष्ट् (लपेटना)+घञ्] लपेटने का कपड़ा। वेठन।

**संवेष्टक**—पु०[सं० सम्√वेष्ट्+णिच्-ण्वुल्-अक, कन्,ता] वह जो वस्तुओं का सवेष्टन करता हो। पोटली आदि बाँधनेवाला। (पैकर)

**संवेष्टन**—पुं० [सं० सम्√वेष्ट्+णिच्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० सवेष्टित] १. कोई चीज चारों तरफ से अच्छी तरह से लपेटकर बाँधना। २. वह कपड़ा, कागज, टाट या ऐसी और कोई चीज जिसमें कही भेजने के लिए कोई चीज बाँधी जाय। (पैकिंग) ३. चारों ओर से घेरना। ४. बद करना।

**संवेष्टित**—वि०[सम्√वेष्ट (लपेटना)+णिच–क्त] चारो ओर से घेरा या बद किया हुआ। परिवेष्टित। (एन्क्लोज्ड)

**संवैधानिक**—वि० [स० संविधान+ठक्–इक] सविधान से सबध रखने-वाला। सविधान सबधी। (कान्स्टिट्यूशनल)

**संवैधानिक राजतंत्र**—पु० [स० कर्म० स०] किसी राज्य का ऐसा तत्र या शासन जिसका प्रधान अधिकारी ऐसा राजा हो जिसके अधिकार और कर्तव्य सविधान द्वारा नियमित और मर्यादित हों। (कान्स्टि-ट्यूशनल मॉनर्की)

**संव्यवहार**—पु० [सम्-वि-अव√हृ (हरण करना)+घञ्] १. अच्छा व्यवहार या सलूक। एक दूसरे के प्रति उत्तम आचरण। २. बात-चीत का प्रसग या विषय। ३ लेन-देन या व्यवहार। ४. लगाव। सम्पर्क। ५. किसी पदार्थ का उपयोग या व्यवहार। ६ व्यवसायं। रोजगारी। ७. महाजन। ८ लोक मे प्रचलित सुबोध शब्द।

**संशप्त**—वि० [सम्√शप् (शाप देना)+क्त] १. जो शापग्रस्त हो। जिसे शाप मिला हो। २. जिसने किसी से प्रतिज्ञा की हो या किसी को वचन दिया हो। वचन-बद्ध।

**संशप्तक**—पु० [सशप्त ब० स०+कप्] १. ऐसा योद्धा जिसने बिना सफल हुए लड़ाई आदि से न हटने की शपथ खाई हो। २ कुरुक्षेत्र के युद्ध में एक दल जिसने उक्त प्रकार से अर्जुन के वध की प्रतिज्ञा की थी पर स्वय मारा गया था।

**संशब्द**—पुं० [सम्√शब्द् (शब्द करना)+घञ्] १. ललकार। २. उक्ति। कथन। ३. प्रशसा। स्तुति।

**संशम**—पु०[सम्√शम् (शान्त होना)+अच्] कामना, वासना आदि से पूरी तरह से निवृत्त होना। इच्छाओं आदि का दमन।

**संशमन**—पु०[सम्√शम् (शान्त होना)+ल्युट्—अन] १. शान्त करना। २. नष्ट करना। ३. वैद्यक में, ऐसी दवा जो दोषों को बिना घटाए-बढ़ाए रोग दूर करे।

**संशमन वर्ग**—पु०[ष० त०] वैद्यक मे, सशमन करनेवाली ओषधियो (कुट, देवदारु, हलदी आदि) का वर्ग।

**संशय**—पु० [स० सम्√शी+अच्] १ पड़े रहना। लेटना। २. मन की वह स्थिति जिसमें किसी बात के सम्बन्ध मे निश्चय या निश्चय नही होता; और उस बात या ठीक रूप जानने या समझने के लिए मन मे उत्कठा या जिज्ञासा बनी रहती हो। तथ्य या वास्तविकता तक पहुँचने के लिए मन की जिज्ञासापूर्ण वृत्ति। शक। (डाउट)

**विशेष**—सशय बहुधा ऐसी बातो के सम्बन्ध मे होता है जिनपर पहले से और लोग कोई निश्चय कर चुके हो, फिर भी उस निश्चय से हमारा सन्तोष या समाधान न होता हो। हमारे मन मे यह भाव बना रहता है कि ऐसा हो भी सकता है और नही भी हो सकता। यथा—कच्छ सशय ना फिरती बारा।—तुलसी। प्राय दृढ़ता और सन्देह के स्थान पर भी इसका प्रयोग होता है। देखे 'श्रद्धा' और 'सन्देह'। इसी आधार पर यह न्यायशास्त्र मे १६ पदार्थों मे एक माना गया है।

३ खतरे या सकट की आशका या सभावना। जैसे—प्राणो का सशय।

४ होना। साहित्य मे, सन्देह नामक काव्यालकार का दूसरा नाम।

**संशयवाद**—पु० [ष० सशय√वद् +घञ्] १ दार्शनिक क्षेत्र मे, वह मैद्धा-न्तिक स्थिति जिसमे अन्वधिव्याप्ति या श्रद्धा और ठोस प्रमाण की उपेक्षा करके यह सोचा जाता है कि अब तक जो मान्यताएँ चली आ रही है, वे ठीक भी है, तथा नही भी और वे ठीक हो भी सकती है और नही भी हो सकती। (स्केप्टिसिज्म)

**विशेष**—इसमे प्रत्यय, प्रमाण और प्रयत्नात्मक अनुभव की व्यर्थता या मान्यता होती है। ऐसे बातो के सबन्ध मे मन मे सदैव ही बना रहता है।

**संशयवादी**—पु०[स० सशय√वद्+णिनि] वह जो सशयवाद का अनुयायी या समर्थक हो।

**संशय-सम**—पु०[स०] न्याय दर्शन मे २४ जातियों अर्थात् खडन की असगत युक्तियो मे से एक। वादी के दृष्टान्त मे साध्य और असाध्य दोनो प्रकार के धर्मों का आरोप करके उसके साध्य विषय को सदिग्ध सिद्ध करने का प्रयत्न।

**संशयाक्षेप**—पु०[ष० त०]१. सशय का दूर होना। २ साहित्य मे एक प्रकार का अलकार।

**संशयात्मक**—वि०[ब० स०] जिसमे सशय के लिए अवकाश हो।

**संशयात्मा**—पु०[मध्य० स०] वह जिसका मन किसी बात पर विश्वास न करता हो। वह जिसके मन मे हर बात के विषय मे कुछ न कुछ सशय बना रहता हो।

**संशयालु**—वि० [सशय+आलुच्] बात-बात मे सशय या सन्देह करने-वाला।

**संशयावह**—वि०[संशय—आ√वह (ढोना)+अच्]१ मन मे सशय उत्पन्न करनेवाला। २. जो सकट उत्पन्न कर सकता हो। भयावह।

**संशयित**—भू० कृ०[सम्√शी (शयन करना)+क्त] १. (व्यक्ति) जिसके मन में सशय उत्पन्न हुआ हो। २. (बात) जिसके विषय में सशय किया गया हो। सदिग्ध।

**संशयिता**—वि० [सम्√शी (शयन करना)+तृच्] संशय करनेवाला।

**संशयी**—वि० [सं० संशय+इनि] १. जिसके मन मे प्राय. संशय होता रहता हो। शक्की स्वभाववाला। २. जिसके मन में संशय उत्पन्न हुआ हो। ३. जो प्राय संशय करता रहता हो। जैसे—संशयी बुद्धि या स्वभाव।

**संशयोपमा**—स्त्री० [मध्य० स०] साहित्य में, संशय अलंकार का एक भेद जिसमे कई वस्तुओं की समानता का उल्लेख करके संशय का भाव प्रकट किया जाय।

**संशरण**—पु० [सम्√शृ (चूर्ण करना)+ल्युट्—अन्] १ भग करना। तोड़ना। २ चूर-चूर या टुकडे टुकडे करना। २. किसी की शरण लेना।

**संशरक**—वि० [सम्√शृ (भग करना)+उन्—कन्] संशरण करनेवाला।

**संशासन**—पु० [सम्√शास् (शासन करना)+ल्युट्—अन] अच्छा शासन। उत्तम राज्य-प्रबन्ध।

**संशित**—भू० कृ० [स० सम्√शो+क्त] १ सान पर चढाकर चोखा या तेज किया हुआ। २ उद्यत। तत्पर। ३. दक्ष। निपुण। ४. दृढ़। पक्का। जैसे—संशित व्रत।

**संशितात्मा (त्मन्)**—वि०[कर्म०स०] जिसने दृढ़ संकल्प कर लिया हो।

**संशिति**—स्त्री० [स० √शो (तेज करना आदि)+क्तिच्] १ संशय। सन्देह। शक। २. सान पर चढाकर धार तेज करने की क्रिया या भाव।

**संशीत**—भू० कृ० [सम्√शी (गमनादि)+क्त—सप्र०] १. ठंडा किया हुआ। २. ठंड के कारण जमा हुआ।

**संशीलन**—पु०[सम्√शील् (अभ्यास करना)+ल्युट्—अन] १. नियमित रूप से अभ्यास करना। २ समर्ग।

**संशुद्ध**—वि०[स०] १ यथेष्ट शुद्ध। विशुद्ध। २ अच्छी तरह साफ किया हुआ। ३ (ऋण या देन) चुकाया हुआ। ४ जाँचा हुआ। परीक्षित। ५ अपराध, दोष आदि से मुक्त किया हुआ। ६ प्रायश्चित्त आदि के द्वारा पापो से मुक्त किया हुआ।

**संशुद्धि**—स्त्री० [सम्√शुध् (शुद्ध करना)+क्तिन्] संशुद्ध होने की अवस्था या भाव।

**संशुष्क**—वि० [स०√शुष् (सूखना)+क्त=क] १. बिलकुल सूखा हुआ। खुश्क। २. नीरस। फीका। ३ जो रसिक या सहृदय न हो।

**संशोधक**—वि० [सम्√शुध् (शुद्ध करना)+णिच्-ण्वुल्—अक] १. शोधन करनेवाला। दुरुस्त या ठीक करनेवाला। २. संस्कार या सुधार करनेवाला। ३. ऋण या देन चुकानेवाला। ४. (तत्त्व) जो किसी बात या पदार्थ की शुद्धि मे सहायक होता हो। (करेक्टिव)

**संशोधन**—पुं० [सम्√बुध् (शुद्ध करना)+णिच्-ल्युट-अन] [वि० संशोधनीय संशोधत, संशुद्ध, संशोध्य] १. शुद्ध करना या साफ करना। २. त्रुटि, दोष आदि दूर करके ठीक और दुरुस्त करना। (करेक्शन) ३. आजकल विशेष रूप से किसी प्रस्ताव या प्रस्तुत किए हुए विचार के सम्बन्ध में यह कहना कि इसमे अमुक बात घटाई या बढ़ाई जाय अथवा उसका रूप बदलकर उसे अमुक प्रकार का बनाया जाय। (अमेण्डमेण्ट) ४. ऋण, देन आदि चुकाने की क्रिया या भाव।

**संशोधनीय**—वि० [सम्√शुध् (शुद्ध करना)+अनीयर्] जिसका संशोधन हो सके या होने को हो।

**संशोधित**—भू० कृ० [सम्√शुध् (शुद्ध करना)+णिच्+क्त] १. जिसका संशोधन हुआ हो। २ जो ठीक, दुरुस्त या शुद्ध किया गया हो। ३. (ऋण या देन) जो चुकाया गया हो।

**संशोधी**—वि०[सं० √शुध् (शुद्ध करना) +णिनि] [स्त्री० संशोधिनी] संशोधक।

**संशोध्य**—वि०[सं० √ शुध् (शुद्ध करना) +ण्यत्]=संशोधनीय।

**संशोभित**—वि०[सम्√शुभ्] (शोभित होना)+णिच्+क्त]१. अलंकृत। २. सुशोभित।

**संशोषण**—पुं० [सम्√शुष् (सोखना)+णिच् —ल्युट्—अन] [वि० संशोषणीय, संशोष्य]१ अच्छी तरह सोखना। २ सुखाना।

**संशोषित**—भू० कृ०[सम् √ शुष् (सोखना) +क्त] सुखाया या सोखा हुआ।

**संशोषी (षिन्)**—वि० [सम्+शुष् (सुखना)+णिनि] १. सोखनेवाला। २. सुखानेवाला। जैसे—संशोषी ज्वर।

**संशोष्य**—वि० [सम्√शुष् (सुखाना)+ण्यत्] जो सोखा जा सकता हो या सोखा जाने को हो।

**संश्रय**—पु०[सम्√श्रि (सेवा करना) +अच्] [भू० कृ० संश्रित] १. संयोग। मेल। २ आज-कल कुछ विशिष्ट प्रकार के दलो, शक्तियो आदि का किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए आपस मे मेल या मैत्री स्थापित करना। (एलायन्स) ३ लगाव। सम्पर्क। ४ आश्रय। शरण। ५ अवलम्ब। सहारा। ६ आश्रय या शरण लेने की जगह। ७. अंश। भाग। ८ घर। मकान। ९ उद्देश्य। लक्ष्य। १० अंश। भाग। ११. राजाओ मे पारस्परिक और सहायता के लिए होनेवाली सधि।

**संश्रयण**—पु० [सम् √ श्रि ( सेवा करना ) +ल्युट-अन] [वि० संश्रयणीय, संश्रयी, भू० कृ० संश्रित] १ सहारा लेना। अवलम्ब पकड़ना। २. किसी के पास जाकर उसका आश्रय लेना। पनाह लेना।

**संश्रयणीय**—वि० [सम्+श्रि (सेवा करना) +अनीयर्] १ जिसका आश्रय लिया जा सके। २ जिसे आश्रय दिया जा सके।

**संश्रयी**—वि०[सम्+श्रि (सेवा करना) +इनि]१ संश्रय अर्थात् आश्रय या सहारा लेनेवाला। २ शरण लेनेवाला।
पुं० नौकर। भृत्य।

**संश्रवण**—पु०[सम्√श्रु (सुनना)+ल्युट्—अन] [वि० संश्रवणीय, संश्रुत]१. अच्छी तरह ध्यान लगाकर सुनना। २. अगीकृत या स्वीकृत करना। ३ वचन देना। वादा करना।

**संश्राव**—पु० [सम्√श्रु (सुनना)+घञ्] [वि० संश्रावणीय, भू० कृ० संश्रावित]=संश्रवण।

**संश्रावक**—वि०[सम्√ श्रु (सुनना)+ण्वुल्—अक] १. सुननेवाला। श्रोता। २. सुनकर मान लेनेवाला।
पुं० चेला। शिष्य।

**संश्रावित**—भू० कृ० [सम्+श्रु (सुनना)+णिच्—क्त]१ सुनाया हुआ। २. जोर से पढ़कर सुनाया हुआ।

**संश्राव्य**—वि० [सम्√ श्रु (सुनना)+ण्यत्]१ जो सुना जा सके। २. जो सुनाया जा सके।

**संश्रित**—भू० कृ०[सं० √ श्रि (सेवा करना) +क्त]१. जुड़ा या मिला

हुआ। सयुक्त। २. साथ लगा हुआ। संलग्न। ३ जो किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए किसी दल या वर्ग में मिल गया हो। जिसने किसी के साथ सश्रय स्थापित किया हो। (एलायड) ४. टाँगा, टिकाया या लटकाया हुआ। ५. गले से लगाया हुआ। आलिंगित। ६ शरण मे आया हुआ। शरणागत। ७. जिसे आश्रय देकर शरण में रखा गया हो। ८ जिसने सेवा करना स्वीकृत किया हो। ९. जो किसी काम या बात के लिए दूसरे पर आश्रित हो। परावलम्बी।

पु० नौकर। भृत्य।

**संश्रुत**—भू० कृ०[सम्√श्रु (सुनना)+क्त]१. अच्छी तरह सुना हुआ। २. अंगीकृत। स्वीकृत।

**संश्लिष्ट**—भू० कृ०[सं०]१ किसी से अच्छी तरह जुड़ा, मिला, लगा या सटा हुआ। २. किसी के साथ मिलाकर एक किया हुआ। एकीकृत। ३ मिश्रित या सम्मिलित किया हुआ। ४. गले लगाया हुआ। आलिंगित। ५ सश्लेषण की क्रिया से किसी के साथ बना या मिला हुआ। श्लिष्ट। (सिन्थेटिक)

पु०१. ढेर। राशि। २ समूह। ३ वास्तु-शास्त्र में, एक प्रकार का मडप।

**संश्लेष**—पुं०[सं० √श्लिष (मिलाना)+घञ्]१. मिलने या मिलाये जाने की क्रिया या भाव। २ गले लगाना। आलिंगन। परिरम्भण।

**संश्लेषक**—वि०[स०] सश्लेषण या सश्लेष करनेवाला।

**संश्लेषण**—पु० [सम्√ किंवृ (मिलाना)+ल्युट्—अन] [वि० सश्लेषणीय, भू० कृ० सश्लेषित, संश्लिष्ट]१ किसी के साथ जोड़ना, मिलाना या लगाना। २ टाँगना या लटकाना। ३ वह जिससे कुछ जोड़ा या बाँधा जाय। बधन। ४ कार्य से कारण अथवा किसी नियम या सिद्धान्त से किसी चीज या बात के परिणाम या फल का विचार करना। मिलान करना। 'विश्लेषण' का विपर्याय। (सिन्थेसिस) ५ भाषा-विज्ञान में, वह स्थिति जिसमे किसी पद से अर्थ का भी और पर-सर्ग आदि के द्वारा सबंध का भी बोध होता है। जैसे—'मेरा' शब्द में 'मैं' वाले अर्थ तत्त्व के सिवा 'रा' पर-सर्ग के कारण सबंध सूचक तत्त्व भी सम्मिलित है। (एग्लूटिनेशन)

**विशेष**—सस्कृत व्याकरण मे इसी तत्त्व या प्रक्रिया को 'सामर्थ्य' कहते हैं।

**संश्लेषित**—भू० कृ०[सम् √श्लिष् (मिलाना)+णिच्—क्त] जिसका संश्लेषण किया गया हो या हुआ हो।

**संश्लेषी**—वि०[सम् √ श्लिष् (मिलाना)+इनि] [स्त्री० संश्लेषिणी] सश्लेषक।

**संष**†—स्त्री०=सख्या।

†पुं०=शख।

**संस**†—पु०=सशय।

**संसद्**†—पुं०=सशय।

**संसक्त**—भू० कृ०[सं०]१. किसी के साथ मिला, लगा या सटा हुआ। (कन्टिगुअस) २ जुड़ा हुआ। सम्बद्ध। ३ किसी कार्य मे लगा हुआ या प्रवृत्त। ४. किसी के प्रेम में फँसा हुआ। आसक्त। ५ सांसारिक विषय-वासना में लगा हुआ। ५ प्रतियोगिता, युद्ध, विवाद आदि में किसी से भिड़ा हुआ। ७ युक्त। सहित। ८ घना। सघन।

**संसक्ति**—स्त्री०[सं०] [वि० संसक्त]१. किसी के साथ सटे या लगे होने का भाव। (कन्टीगुइटी) २ एक ही तरह के पदार्थों या तत्त्वों का आपस में मिल या सटकर एक रूप होना। ३ वह शक्ति जिससे वस्तु के सब अश एक साथ लगे या सटे रहते हैं। (कोहेसन) ४ सबंध। लगाव। ५. विशेष अनुराग या आसक्ति। लगन। ६ लीनता। ७ प्रवृत्ति।

**ससयर**†—वि०[स० शस्य=अन्न, फसल+आगर]१. (भूमि) जिसमे पैदावार अधिक हो। उपजाऊ। उर्वर। २. लाभ-दायक।

**संसज्जन**—पुं०[स० सम्√सज्ज् (तैयर होना)+ल्युट्—अन, [भू० कृ० ससज्जित]१ अच्छी तरह सजाने की क्रिया या भाव। २. आज-कल युद्ध आदि के लिए सैनिक एकत्र करने और उन्हे अस्त्र-शस्त्र आदि से पूर्ण युक्त करने की क्रिया। (मोबिलाइजेशन)

**संसद**—स्त्री० [स०] १ समाज। सभा। मडली। २. किसी विशेष कार्य के लिए सगठित बहुत से लोगों का निकाय या समुदाय। (एसोसिएशन) ३. आज-कल राज्य या शासन सम्बन्धी कार्यों मे सहायता देने, पुराने विधानो मे सशोधन करने तथा नये विधान बनाने के लिए प्रजा के प्रतिनिधियो की चुनी हुई सभा। (पार्लमेण्ट) ४. प्राचीन भारत मे (क) राज-सभा। (ख) न्याय सभा। ५ एक प्रकार का यज्ञ जो २४ दिनों मे पूरा होता था।

**संसदीय**—वि०[स० ससद] ससद-सबधी। सौंदा।

**संसय**†—पु०=सशय।

**संसरण**—पु०[सम्√सृ (गमनादि)+ल्युट्—अण्] [वि० ससरणीय, ससरित, ससृत]१ आगे की ओर खिसकना या बढ़ना। सरकना। २. गमन करना। चलना। ३ सेना या सैनिको का बिना बाधा के आगे बढ़ते चलना। ४ एक जीवन त्यागकर दूसरा नया जन्म लेना। ५ बहुत दिनों से चला आया हुआ मार्ग या रास्ता। ६ जगत्। ससार। ७ युद्ध का आरम्भ। ८ लड़ाई छिड़ना। ९ प्राचीन भारत मे, नगर के मुख्य द्वार के बाहर बना हुआ वह स्थान जहाँ फाटक बन्द हो जाने के बाद आये हुए यात्री रात के समय ठहरा करते थे।

**संसर्ग**—पुं०[स०]१ ऐसा लगाव या सम्बन्ध जो पास या साथ रहने से उत्पन्न होता है। (कन्टैक्ट) जैसे—(क) ससर्ग से ही गुण और दोष उत्पन्न होते हैं। (ख) यह रोग ससर्ग से फैलता है। २. व्यावहारिक घनिष्ठता। मेल-जोल। २ सपर्क। सबध। ४ किसी के साथ रहने की क्रिया या भाव। सहवास। ५. मैथुन। सभोग। ६ सपत्ति का ऐसी स्थिति मे होना कि परिवार के सब लोगों का उसपर समान अधिकार हो। ७ वैद्यक मे, वात, पित्त, और कफ में से दो का एक साथ होनेवाला प्रकोप या विकार। ८. वह बिन्दु जहाँ एक रेखा दूसरी को काटती हो।

**संसर्गज**—वि०[सं०]१. ससर्ग से उत्पन्न होनेवाला। २. (रोग) जो किसी रोगी को छूने से उत्पन्न होता है। छुतहा। (इन्फेक्शस)

**विशेष**—सकामक और ससर्गज रोगो मे अंतर यह है कि सकामक रोग तो पानी, हवा आदि के द्वारा भी फैलते हैं, परन्तु ससर्गज रोग केवलरोगी के ससर्ग मे रहने अथवा उसे छूने मात्र मे उत्पन्न होते हैं। अर्थात् संसर्गज रोग तो केवल प्रत्यक्ष सबंध से उत्पन्न होते हैं, परन्तु सकामक रोग अप्रत्यक्ष और प्रत्यक्ष दोनो रूपो मे फैलते हैं।

**संसर्ग-दोष**—पु०[सं०] वह दोष या बुराई जो किसी के संसर्ग से उत्पन्न हो।

**संसर्ग-रोध**—पुं०[स०]१. ऐसी व्यवस्था जो किसी स्थान को सक्रामक रोगों आदि से बचाने के लिए बाहर से आनेवाले लोगों को कुछ समय तक कहीं अलग रखकर की जाती है। २ उक्त कार्य के लिए अलग या नियत किया हुआ स्थान। (क्वारेन्टाइन)

**संसर्ग-विद्या**—स्त्री० [ष० त०] लोगों से मेल-जोल पैदा करने की कला। व्यवहार-कुशलता।

**संसर्गाभाव**—पु०[ष० त०]१. ससर्ग का अभाव। सम्बन्ध का न होना। २. न्याय शास्त्र मे अभाव का वह प्रकार या भेद जो संसर्ग न रहने की दशा मे माना जाता है। जैसे—यदि घर मे घडा न हो तो वह ससर्गाभाव माना जायगा। क्योंकि घर में न होने पर भी कहीं बाहर तो घडा होगा ही।

**संसर्गी**—वि० [ससर्ग+इति, सम्√सृज् (छोडना दि)+विनुण् वा][स्त्री० ससर्गिन] १. ससर्ग या लगाव रखनेवाला। २ प्राय या सदा साथ रहनेवाला। सगी। साथी।

पु० धर्मशास्त्र आदि के अनुसार वह जो पैतृक सम्पत्ति का विभाग हो जानेपर भी कुटुम्बियों आदि के साथ रहता हो।

**संसर्जन**—पु०[सम्√सृज् (देना आदि)+ल्युट्—अन] [वि० ससर्जनीय, ससर्ज्य भू० कृ० ससर्जित] १. सयोग होना। मिलना। २. जुडना या सटना। ३ अपनी ओर मिलाना। ४ त्याग करना। छोडना।

**संसर्प**—पु०[सम्√सृप (धीरे चलना)+घञ्] १ रेंगना। २ खिसकना। सरकना। ३. ज्योतिष में, चन्द्र-गणना के अनुसार वह अधिक भाग जो किसी क्षय मास वाले वर्ष मे पडता है।

**संसर्पण**—पु०[सं०√सृप् (धीरे चलना)+ल्युट्—अन] [वि० ससर्पणीय, भू० कृ० ससर्पित] १. धीरे धीरे आगे की ओर चलना या बढना। २. खिसकना या रेंगना। ३. उक्त प्रकार या रूप से ऊपर की ओर बढ़ना या चढ़ना। ४. सहसा आक्रमण करना। अकस्मात् हमला करना।

**संसर्पी**—वि० [ससर्प+इनि, सम्√सृप् (धीरे चलना)+णिनि वा] १ ससर्पण करनेवाला। २. वैद्यक मे पानी पर तैरने या उतरनेवाला।

**संसा**†—पुं०१.=सशय। २ =सांस। ३ =सँडसा।

**संसादन**—पु०[स० सम्√सद् (गड्याना)+णिच्—ल्युट—अन] [वि० ससादनीय, ससाद्य, भू० कृ० ससादित]१. इकट्ठा करना या एकत्र करना। जमा करना। २. क्रम या सिलसिले से रखना या लगाना।

**संसाधक**—वि०[सम्√साध् (सिद्ध करना)+ण्वुल्—अक] जीतने या वश मे करनेवाला।

**संसाधन**—पुं० [सम्√साध् (सिद्ध करना)+ल्युट्—अन] [वि० ससाधनीय, ससाध्य, भू० कृ० ससाधित] १. कोई काम अच्छी तरह पूरा करना। २. काम की तैयारी। आयोजन। ३. जीत या दबाकर वश में करना। दमन करना।

**संसाधनीय**—वि०[सम्√साध् (सिद्ध करना)+अनीयर्]=ससाध्य।

**संसाध्य**—वि० [सम्√साध् (सिद्ध करना)+ण्यत्] १. काम जो पूरा किया जा सकता हो या हो सकता हो। २. जो जीता या दबाया जा सकता हो। ३. जो किये जाने के योग्य हो। ४. जो जीते या दबाए जाने के योग्य हो।



**संसार**—पुं०[स०]१. लगातार एक अवस्था से दूसरी अवस्था मे आते रहना। २. यह जगत् या दुनिया जिसमे जीव या प्राणी आते-जाते रहते हैं। इहलोक। मर्त्यलोक। ३. इस ससार मे बार बार जन्म लेने और मरने की अवस्था। ५. जीवन तथा ससार का प्रपच और माया। ५ घर-गृहस्थी और उसमे का जीवन। उदा०—मेरे सपनो मे कलरव का ससार आँख जब खोल रहा।—प्रसाद। ६ समूह। (क्व०) ७. दुर्गन्ध खादिर। विट् खदिर।

**संसार-गुरु**—पु०[स०] १. ससार को उपदेश देनेवाला। जगद्गुरु। २ कामदेव।

**संसार-चक्र**—पुं०[मध्यम० स०] १ बार बार इस ससार में आकर जन्म लेने और मरकर यह ससार छोडने का क्रम या चक्र। २ ससार का जजाल या झझट। सासारिक प्रपच। ३ ससार मे होता रहनेवाला उलट-फेर या परिवर्तन।

**संसारण**—पु० [सम्√सृ (गमनादि)+णिच्—ल्युट्—अन] [भू० कृ० ससारित] गति देना। चलाना।

**संसार-तिलक**—पु०[ष० त० त०]१ एक प्रकार का बढिया चावल।

**संसार-पथ**—पु० [ष०त०] १ ससार मे आने का मार्ग। २. स्त्रियों की जननेंद्रिय। भग। योनि।

**संसार-भावना**—पु०[स०] ससार को दु खमय समझना।

**संसार-सारथि**—पु०[स०]१ ससार की जीवन यात्रा चलानेवाला; परमेश्वर। २. शिव।

**संसारी**—वि०[सम्√सृ(गत्यादि)+णिन् ससार+इनि वा][स्त्री० ससारिणी] १. ससार-सम्बन्धी। लौकिक। सासारिक। २. घर मे रहकर घर-गृहस्थी चलाने या गृहस्थ जीवन व्यतीत करनेवाला। ३. ससार मे आकर बार-बार जन्म लेने और मरनेवाला। ४. लोक-व्यवहार मे कुशल। दुनियादार।

**संसिक्त**—भू० कृ० [सम्√सिच् (सीचना)+क्त] अच्छी तरह सींचा हुआ। जिसपर खूब पानी छिडका गया हो।

**संसिद्ध**—वि० [सम्√सिध् (पूरा करना)+क्त] १.(काम) जो अच्छी तरह किया गया हो या ठीक तरह से पूरा उतरा हो। २. (खाद्य पदार्थ) जो अच्छी तरह सीझा या पका हो। ३. प्राप्त। लब्ध। ४. नीरोग। स्वस्थ। ५ उदयत। प्रस्तुत। ६ कुशल। दक्ष। निपुण। ८. जिसने योग-साधन करके सिद्धि प्राप्त कर ली हो।

**संसिद्धि**—स्त्री० [सम्√सिध् (पूरा होना)+क्तिन्]१. ससिद्ध होने की अवस्था या भाव। २. सफलता। ३. पक्वता। ४ पूर्णता। ५. स्वस्थता। ६ परिणाम। ७. मुक्ति। ८. अवश्य और निश्चित होनेवाली बात। अवश्यभावी। ९. निसर्ग। प्रकृति। १० स्वभाव। ११. मदमत्त स्त्री।

**संसी**†—स्त्री०=सँड़सी।

**संसुप्त**—भू० कृ०[सम्√सुप् (शयन करना)+क्त] गहरी नींद मे सोया हुआ।

**संसुप्ति**—स्त्री०[सं०] गहरी नींद।

**संसूचक**—वि० [सम्√सूच् (सूचना देना)+णिच्—ण्वुल्—अक] स्त्री० संसूचिका] १. प्रकट करने या जनानेवाला। २. भेद या रहस्य बतलानेवाला। ३. समझाने-बुझानेवाला। ४. डाँटने-डपटनेवाला।

**संसूचन**—पुं० [सम्√सूच् (सूचना देना)+णिच्—ल्युट्—अन] [भू० कृ० संसूचित] [वि० संसूचनीय, संसूच्य] १. प्रकट या जाहिर करना। २. बतलाना। ३. भेद खोलना। ४. समझाना-बुझाना। ५. डाँटना-डपटना। फटकार बताना।

**संसूची**—वि०[सम्√सूच् (सूचना देना)+णिनि] [स्त्री० संसूचिनी]=ससूचक।

**संसूच्य**—वि० [सम्√सूच् (सूचना देना)+ण्यत्] जिसके सम्बन्ध मे या जिसके प्रति संसूचन हो सके। संसूचन का अधिकारी या पात्र। पुं० दे० 'सूच्य'। (नाटक का)

**संसृति**—स्त्री० [सम्√सृ (गत्यादि)+क्तिन्] १. संसार मे बार-बार जन्म लेने की परम्परा। आवागमन। २. जगत्। संसार।

**संसृष्ट**—भू० कृ० [सं०] १. जो एक साथ उत्पन्न या आविर्भूत हुए हों। २. जो आपस में एक दूसरे से मिले हों। सम्बिलष्ट। ३. परस्पर संबद्ध। ४. जो किसी के अतर्गत या अतर्भूत हों। ५. बहुत अधिक हिला-मिला हुआ। बहुत मेल-जोलवाला। ६. (काम) पूरा या सम्पन्न किया हुआ। ७. इकट्ठा किया हुआ। संगृहीत। ८. वैद्यक में, (रोगी) जिसका पेट थमन, विरेचन आदि के द्वारा साफ कर दिया गया हो। ९. धर्म शास्त्र मे, (परिवार) जो बँटवारा हो चुकने के बाद भी मिल कर एक हो गये हो।

पुं०१. घनिष्ठता। हेल-मेल। २. एक पौराणिक पर्वत।

**संसृष्टत्व**—पुं० [सं० ससृष्ट+त्व] १. ससृष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव। २. संपत्ति का बँटवारा हो जाने के बाद फिर हिस्सेदारो का एक में मिलकर रहना। (स्मृति)

**संसृष्ट होम**—पुं० [स०] अग्नि और सूर्य को एक साथ दी जानेवाली आहुति।

**संसृष्टि**—स्त्री० [स० सम्√सृज् (बना)+क्तिन्+षत्व स्टुत्व]१. ससृष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव। २. घनिष्ठता। हेल-मेल। ३. मिलावट। मिश्रण। ४. लगाव। सम्बन्ध। ५. बनावट। रचना। ६ सग्रह। ७ धर्म-शास्त्र मे, बँटवारा या विभाजन हो जाने पर भी परिवारों का फिर मिलकर एक हो जाना। ८. साहित्य में, दो या अधिक काव्यालंकारों का इस प्रकार ससृष्ट होना या साथ साथ आना कि वे सब अलग अलग दिखाई दें। इसकी गणना एक स्वतन्त्र अलंकार के रूप मे होती है।

**संसृष्टी (ष्टिन्)**—पुं० [स० सृष्ट+इनि] धर्मशास्त्र में, ऐसे परिवार या सम्बन्धी जो विभाजन हो चुकने पर भी मिलकर एक हो गये हो।

**सेक**—पु०[सं० सम्√सिच् (सींचना)+घञ्] अच्छी तरह किया जानेवाला पानी आदि का छिड़काव।

**सेचन**—पु०[सं०] संभोग के समय नर का वीर्य माद्दा के अंड में मिलना जो प्रजनन के लिए आवश्यक होता है। (इन्सेमिनेशन)

**विशेष**—अब यह क्रिया रासायनिक पद्धतियों मे भी होने लगी है।

**सेचन**—पुं०[सं० सम्√सेच् (सेवा करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० ससेचित, वि० सेचनीय, सेच्य] १. अच्छी तरह की जानेवाली सेवा। २. सदा सेवा में उपस्थित रहने की क्रिया या भाव। ३. अच्छी तरह किया जानेवाला उपयोग या व्यवहार। ४. अच्छी तरह किया जानेवाला आदर-सत्कार।

**सेवा**—स्त्री०[स० सं√सेव् (सेवा करना)+अ]=सेवन।

**सेवित**—भू० कृ० [सं० सम् √सेव् (सेवा करना)+क्त] जिसका अच्छी तरह से सेवन किया गया हो अथवा हुआ हो। उदा०—सुरांगना, सपदा, सुराओं से संसेवित, नर पशुओ भूभार मनुजता जिनसे लज्जित।—पन्त।

**सेवी (विन्)**—वि०[सं०, सम्√ सेव् (सेव् करना)+णिनि] सेवन करनेवाला।

पुं० टहलुआ। खिदमतगार।

**सेव्य**—वि० [स० सम्√सेव् (सेवा करना)+यत्] जिसका सेवन हो सकता हो अथवा आवश्यक या उचित हो।

**सं**†—पुं० [स० श्वास] १. श्वास। साँस। २. जीवनी-शक्ति। प्राण।

पुं०=सशय।

**संस्करण**—पुं० [स० सम्√कृ (करना)+ल्युट्—अन —सुट्] १. सस्कार करने की क्रिया या भाव। २. अच्छी तरह ठीक, दुरुस्त या शुद्ध करना। सुधारना। ३ अच्छा, नया और सुन्दर रूप देना। ४ द्विजातियो के लिए विहित सस्कार करना। ५ आज-कल पुस्तकों, समाचार-पत्रों आदि की एक बार मे और एक तरह की होनेवाली छपाई। आवृत्ति (एडिशन) जैसे—(क) पुस्तक का राज सस्करण, (ख) समाचार पत्र का प्रात सस्करण।

**संस्कर्ता**—वि०[स० सम्√कृ (करना)+तृच्-गुट्] सस्कार करनेवाला।

**संस्कार**—पु०[सं०]१. किसी चीज को ठीक या दुरुस्त करके उचित रूप देने की क्रिया। जैसे—व्याकरण मे होनेवाला शब्दो का सस्कार। २. किसी चीज की त्रुटियाँ, दोष, विकार आदि दूर करके उसे उपयोगी तथा निर्मल बनाने की क्रिया। जैसे—वैद्यक मे होनेवाला पारे का सस्कार। ३. किसी प्रकार की असगति, अद्यपन आदि दूर करके उसे शिष्ट और सुन्दर रूप देने की क्रिया। जैसे—भाषा का सस्कार। ४. छीछालेदर या मौजकर की जानेवाली सफाई। जैसे—शरीर का सस्कार। ५ किसी को उन्नत, सभ्य, समर्थ, आदि बनाने के लिए कुछ बताने, सिखाने या अच्छे मार्ग पर लाने की क्रिया। जैसे—बुद्धि का सस्कार। ६ मनोवृत्ति, स्वभाव आदि का परिष्करण तथा संशोधन करने की क्रिया। (कल्चर) ७ उपदेश, शिक्षा संगीत, आदि के प्रभाव का वह बहुत कुछ स्थायी परिणाम जो मन मे अज्ञात अथवा ज्ञात रूप से बना रहता है और हमारे परवर्ती आचार-व्यवहार, रहन-सहन आदि का स्वरूप स्थिर करता है। जैसे—बाल्यावस्था का सस्कार, देश, समाज आदि के कारण बननेवाला संस्कार। ८. भारतीय दार्शनिक क्षेत्र मे, इन्द्रियो के विषय-भोग से मन पर पडनेवाला सस्कार। ९. धार्मिक क्षेत्र मे पूर्वजन्मो के किए हुए आचार-व्यवहार, पाप-पुण्य आदि का आत्मा पर पडा हुआ वह प्रभाव जो मनुष्य के परवर्ती जन्मो में उसके कार्यों, प्रवृत्तियो, रुचियो आदि के रूप मे प्रकट होता है। १०. सामाजिक क्षेत्र मे, धार्मिक दृष्टि से किया जानेवाला कोई ऐसा कृत्य जो किसी मे कोई पात्रता अथवा योग्यता उत्पन्न करनेवाला माना जाता हो और जिसका कुछ विशिष्ट अवसरो के लिए विधान हो। (सैक्रामेन्ट) जैसे—(क) जातिच्युत या विधर्मी की जाति या धर्म में मिलाने के लिए किया जानेवाला सस्कार। (ख) मृतक का अन्त्येष्टि संस्कार। ११. हिन्दुओ मे, जन्म से मरण

तक होनेवाले वे विशिष्ट धार्मिक कृत्य जो द्विजातियों के लिए विहित हैं। जैसे—मुंडन, यज्ञोपवीत, विवाह आदि संस्कार। (रिचुअल, राइट)

**विशेष**—मनुस्मृति मे, ये १२ संस्कार कहे गये हैं—गर्भाधान, पुंसवन, सीमन्तोन्नयन, जाति-कर्म, नाम-कर्म, निष्क्रमण, अन्नप्राशन, चूड़ा-कर्म उपनयन, केशांत, समावर्तन और विवाह। परवर्ती स्मृतिकारो ने इनमें चार और संस्कार बढ़ाकर इनकी संख्या १६ कर दी है। परन्तु इन नये संस्कारों के नामो के संबंध मे उनमें मतभेद है।

१२ वैशेषिक दर्शन में गुण का वह धर्म जिसके कारण या फलस्वरूप वह अपने आपको अभिव्यक्त करता है। १३. अन्न आदि कूट-पीसकर पकाने और उन्हे खाद्य बनाने की क्रिया। १४. स्मरण-शक्ति। १५ अलंकरण। सजावट। १६. पत्थर आदि का वह टुकड़ा जिससे रगड़कर कोई चीज साफ की जाती हो। जैसे—पैर के तलुओ के रगड़ने का झाँवाँ, धातुएँ चमकाने के लिए पत्थर की बटिया आदि।

**संस्कारक**—वि० [सं०] संस्कार करनेवाला।

**संस्कारवर्जित**—वि० [सं०] (व्यक्ति) जिसका धर्मशास्त्र के अनुसार संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

**संस्कारवान् (वत्)**—वि० [सं० संस्कार+मतुप्—म=व-नुम् दीर्घ] १. जिसका संस्कार हुआ हो। २. जिस पर किसी संस्कार का प्रभाव दिखाई देता हो। ३. सुन्दर।

**संस्कारहीन**—वि० [सं०] (व्यक्ति) जिसका धर्म-शास्त्र के अनुसार संस्कार न हुआ हो। व्रात्य।

**संस्कारी**—वि०[सं० स√ कृ (करना)+णिनि, संस्कारिन्] जिसका संस्कार हुआ हो।

पु० एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे १६ मात्राएँ होती हैं।

**संस्कार्य**—वि० [सं० सं√कृ (करना)+ण्यत्] १. जिस का संस्कार हो सकता हो। २. जिसका संस्कार होना आवश्यक या उचित हो।

**संस्कृत**—वि० [सम् √ कृ (करना)+क्त—सुट्] [भाव० संस्कृति] १. जिसका संस्कार किया गया हो। २. परिमार्जित। परिष्कृत। ३. निखारा और साफ किया हुआ। ४. (खाद्य पदार्थ) पकाया या सिझाया हुआ। ५. ठीक किया या सुधारा हुआ। ६. अच्छे रूप में लाया हुआ। सँवारा या सजाया हुआ। ७. जिसका उपनयन संस्कार हो चुका हो।

स्त्री० भारतीय आर्यों की प्राचीन साहित्यिक और शिष्ट समाज की भाषा जो जन-साधारण की बोल-चाल की तत्कालीन प्राकृत भाषा को परिमार्जित करके प्रचलित की गई थी। देव-वाणी।

**विशेष**—इस भाषा के दो मुख्य रूप हैं—वैदिक और लौकिक। पाणिनी ने अपने व्याकरण के द्वारा इसे एक निश्चित और परिनिष्ठित रूप दिया था।

**संस्कृति**—स्त्री०[सं० सम्√कृ (करना)+क्तिन्—सुट्] [वि० सांस्कृतिक] १. संस्कार करने अर्थात् किसी वस्तु को संस्कृत रूप देने की क्रिया या भाव। परिमार्जित, शुद्ध या साफ करना। संस्कार। २. अलंकृत करना। सजाना। ३. आज-कल किसी समाज की वे सब बातें जिनसे विदित होता है कि उसने आरम्भ से अब तक कुछ विशिष्ट क्षेत्र में कितनी उन्नति की है।

**विशेष**—आधुनिक विद्वानों के मत से संस्कृति भी सभ्यता का ही दूसरा अंग या पक्ष है। सभ्यता मुख्यतः आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक सिद्धियों से संबद्ध है, और संस्कृति आध्यात्मिक, बौद्धिक तथा मानसिक सिद्धियों से संबद्ध है। यह संस्कृति कला-कौशल के क्षेत्र की उन्नति, सामाजिक रहन-सहन और परम्परागत योग्यताओ तथा विशिष्टताओ के आधार पर आँकी जाती है। सभ्यता मानव समाज की बाह्य और भौतिक सिद्धियो की मापक है, और संस्कृति लोगो के आंतरिक तथा मानसिक उन्नति की परिचायक होती है। इसी लिए सभ्यता समाज-गत और संस्कृति मनोगत होती है।

४. छंदशास्त्र मे २४ वर्णों वाले वृत्तों की संज्ञा।

**संस्कृतीकरण**—पुं०[सं०]१. कोई चीज संस्कृत करने की क्रिया या भाव। २. अन्य भाषा के शब्दों को संस्कृत रूप देना।

**संस्क्रिया**—स्त्री०[सं० सम्√कृ (करना)+ड्-यक—रिपर्—रिङ् इयङ् वा] संस्कार।

**संस्खलन**—पुं० [सं० सम्√स्खल् (गिरना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० स्खलित]=स्खलन।

**संस्तंभ**—पु० [सम्√स्तम्भ् (रोकना)+घञ्] १. गति का सहसा होनेवाला रोध। एकबारगी रुक जाना। २. निश्चेष्टता। ३. स्तब्धता। ४. लकवा या इसी प्रकार का कोई ऐसा रोग जिसमे कोई अंग बेकार और सुन्न हो जाता हो। ५ वृढ़ता। ६.धीरता। ७ जिद। हठ। ८. आचार। सहारा।

**संस्तंभन**—पु० [सं०] [वि० संस्तब्ध, संस्तभनीय, संस्तंभित] १. गति का सहसा रुकना या रोकना। एकबारगी ठहर जाना। २. निश्चेष्ट या स्तब्ध करना या होना। ३. सहारा देना या लेना।

**संस्तंभी (भिन्)**—वि० [सं० सम्√स्तम्भ् (रोकना)+णिनि] संस्तभन करनेवाला।

**संस्तब्ध**—वि० [सं० सम्√स्तम्भ् (रुकना)+क्त—च-भ्-म लोप] १. एकबारगी रुका या ठहरा हुआ। २. निश्चेष्ट। स्तब्ध। ३. सहारा देकर रोका हुआ।

**संस्तर**—पुं० [सं० सम्√स्तृ (ढकना)+अच्] १. तह। परत। २. घास, फूस आदि की चटाई या बिछौना। ३. घास, फूस आदि का छप्पर। ४. बिछौना या बिस्तर। ५. जलाशय या नदी का नीचेवाला भू-भाग। तल। ६. भू-गर्भ में, कोई ऐसी तह या परत जो एक ही तरह के तत्त्व या पदार्थ की बनी हो, अथवा किसी विशिष्ट काल मे जमी हो। (बेड) जैसे—कोयले का संस्तर, चूने का संस्तर आदि।

**संस्तरण**—पुं०[सं० सम्√स्तृ (आच्छादन करना)+ल्युट्-अन] १. फैलाना। पसारना। २. बिछौना। बिछावन। ३. छितराना। बिखेरना। ४. तह या परत चढ़ाना। ५. बिछौना। बिस्तर।

**संस्तव**—पुं०[सं०] १. प्रशंसा। स्तुति। तारीफ। २. उल्लेख। कथन। जिक्र। ३. जान-पहचान। परिचय। ४. घनिष्ठता। हेल-मेल।

**संस्तवन**—पुं० [सं० सम्√स्तु (प्रशंसा करना)+ल्युट्—अन] १. प्रशंसा करना। स्तुति करना। २. कीर्ति या यश का गान करना। ३. आज-कल किसी की प्रशंसा करते हुए उसके सम्बन्ध में यह कहना कि यह अमुक (काम, बात या सेवा के लिए उपयुक्त और योग्य है। (कमिन्डेशन)

**संस्तार**—पुं० [सं०] १. तह। परत। २. बिछौना। बिस्तर। ३. खाट या पर्यंक। शय्या। ४. एक प्रकार का यज्ञ।

**संस्ताव**—पुं० [सं०सम्√स्तु (स्तुति करना)+घञ्] १. यज्ञ में स्तुति करनेवाले ब्राह्मणों के बैठने का स्थान। २. प्रशंसा। स्तुति। ३ जान-पहचान। परिचय।

**संस्ताव्य**—वि० [सम्√स्तु (प्रशंसा करना)+विच्+यत्] प्रशंसनीय। जिसका या जिसके सम्बन्ध में संस्तवन हो सकता हो। (कॉमेंडेबिल)

**संस्तीर्ण**—वि० [सं० सम्√स्तृ (अच्छादन)+क्त-ऋ-दीर्घ] १. फैलाया या पसारा हुआ। २. बिछाया हुआ। ३ छितकाया या बिखेरा हुआ। ४. ढका या छिपाया हुआ।

**संस्तुत**—वि०[सं०सम्√स्तु (स्तुति करना)+क्त]१. जिसकी खूब प्रशंसा या स्तुति की गई हो। २. साथ में गिना हुआ। ३. जाना हुआ। ज्ञात। ४. परिचित।

**संस्तुति**—स्त्री०[सं० सम्√स्तु (स्तुति करना)+क्तिन्] १ अच्छी या पूरी तरह से होनेवाली तारीफ या स्तुति। २ अनुशंसा। सिफारिश। (रिकमेन्डेशन)

**संस्तृत**—भूं० कृ० [सं० सम्√स्तृ (आच्छादन करना)+क्त]=संस्तीर्ण।

**संस्थ**—पुं० [सं० सं√स्था (ठहरना)+क] १ अपने देश का निवासी। स्वदेश वासी। २. चर। दूत।

**संस्था**—स्त्री० [सं०] १. ठहरने की क्रिया या भाव। ठहराव। स्थिति। २. प्रगट होने की क्रिया या भाव। अभिव्यक्ति। आविर्भाव। ३. बँधा हुआ नियम, मर्यादा या विधि। रूढ़ि। ४. आकृति। रूप। ५ गुण। चिह्न। ६. कोई काम, चीज या बात ठिकाने लगाने की क्रिया। आवश्यक या उचित परिणाम तक पहुँचना। ७. अंत। समाप्ति। ८. मृत्यु। मौत। ९. ध्वंस। नाश। १०. वध। हिंसा। ११. प्रलय। १२. यज्ञ का मुख्य अंग। १३ गुप्तचरों या भेदियों का दल या वर्ग। १४. पेशा। व्यवसाय। १५. गिरोह। जत्था। दल। १६. राजाज्ञा। फरमान। १७. समानता। सादृश्य। १८. समाज। १९. आज-कल कोई सघटित वर्ग, समाज या समूह। (बॉडी) २०. किसी विशिष्ट सामाजिक या सार्वजनिक कार्य की सिद्धि के उद्देश्य से संघटित मंडल या समाज। (इन्स्टिच्यूशन) २१ व्यावसायिक दृष्टि से कुछ विशिष्ट नियमों और सिद्धांतों के अनुसार काम करनेवाला कोई सघटित दल, वर्ग या समाज। (सोसाइटी) जैसे—सहकारी संस्था। २२. राजनीतिक या सामाजिक जीवन से संबंध रखनेवाला कोई नियम, विधान या परम्परागत प्रथा जो किसी समाज में समान रूप से प्रचलित हो। (इन्स्टिच्यूशन) जैसे—हिन्दुओं में विवाह धार्मिक संस्था है, अन्यान्य जातियों की तरह मात्र सामाजिक संस्थाएँ नहीं।

**संस्थान**—पुं० [सं०] १. ठहराव। स्थिति। २ बैठाना। स्थापन। ३. अस्तित्व। ४. देश। ५. सर्व-साधारण के इकट्ठे होने का स्थान। ६. किसी राज्य के अंतर्गत जागीर आदि। ७. साहित्य, विज्ञान, कला आदि की उन्नति के लिए स्थापित समाज। (इन्स्टीच्यूशन) ८. प्रबंध। व्यवस्था। १०. किसी काम या बात का अच्छी तरह किया जानेवाला अनुसरण या पालन। १०. जनपद। बस्ती। ११. आकृति। रूप। शकल। १२. कांति। चमक। १३. सुंदरता। सौंदर्य। १४. प्रकृति। स्वभाव। १५. अवस्था। दशा। १६. जोड़। योग। १७. समष्टि। १८. अंत। समाप्ति। १९. नाश। ध्वंस। २०. मृत्यु। मौत। २१. निर्माण। रचना। २२ निकटता। सामीप्य। २३. पास-पड़ोस। २४. चौमुहानी। चौराहा। २५ चौखटा या ढाँचा। २६ साँचा। २७ रोग का लक्षण। २९ ब्रिटिश शासन के समय देशी रियासत। (दक्षिणभारत)

**संस्थापक**—वि० [सं० सम्√स्था (ठहरना)+विच् पुक्-ष्टवुल्-अक] [स्त्री० संस्थापिका] १. संस्थापन करनेवाला। २ बनाकर खड़ा या तैयार करनेवाला ३ नये काम या बात का प्रवर्तन करनेवाला। प्रवर्तक। ४. चित्र, खिलौना आदि बनानेवाला। ५. किसी प्रकार का आकार या रूप देनेवाला।

पुं० आज-कल किसी सस्था, सभा या समाज का वह मूल व्यक्ति, जिसने पहले-पहल उसकी स्थापना की हो।

**संस्थापन**—पुं० [सं० सम्√स्था (ठहरना)+णिच्-यक, ल्युट्-अन] [वि० संस्थापनीय, संस्थाप्य, भू० कृ० संस्थापित] १. अच्छी तरह जमाकर बैठाना या रखना। २ मशीनों, यंत्रों आदि को किसी स्थान पर लगाना। प्रतिष्ठित करना। ३ उक्त रूप में बैठाये या लगाये हुए यंत्रों की सामूहिक सज्जा। प्रस्थापन। (इन्स्टालेशन) ४ कोई नई चीज बनाकर खड़ी या तैयार करना। निर्मित करना। जैसे—भवन का संस्थापन। ५ कोई नया काम या नई बात चलाना या जारी करना, अथवा उसके लिए कोई संस्था स्थापित करना। ६ उक्त प्रकार से स्थापित की हुई संस्था अथवा उसमें काम करनेवाले लोगों का वर्ग या समूह। (एस्टैब्लिशमेन्ट) ७ किसी काम, चीज या बात को कोई नया आकार या रूप देना। ८ नियंत्रित करना। रोकना। ९. ज्ञात करना।

**संस्थापना**—स्त्री० [सं० संस्थापन-टाप्]=संस्थापन।

**संस्थापनीय**—वि० [सं० सं√स्था (ठहरना)+णिच्-पुक्-अनीयर्] जिसका संस्थापन हो सकता हो अथवा होने को हो।

**संस्थापित**—भूं० कृ० [सं० सम्√स्था (ठहरना)+णिच्-पुक्, क्त] १. जिसका संस्थापन किया गया हो या हुआ हो। २ जमा कर बैठाया, रखा या स्थित किया हुआ। ३ चलाया या प्रचलित किया हुआ। ४ इकट्ठा किया हुआ। संचित।

**संस्थाप्य**—वि० [सं० सम्√स्था (ठहरना)+णिच्-पुक्, यत्] जिसका संस्थापन हो सकता हो या होना उचित हो।

**संस्थित**—वि०[सं० सम्√स्था (ठहरना)+क्त] १ टिका, ठहरा या रुका हुआ। २ अच्छी तरह जमा या बैठा हुआ। ३. किसी नये और विशिष्ट रूप में आया या लाया हुआ। ४. बनाकर खड़ा या तैयार किया हुआ। ५. इकट्ठा या एकत्र किया हुआ। ६ मरा हुआ। मृत।

**संस्थिति**—स्त्री०[सं० सम्√स्था (ठहरना)+क्तिन्] १ खड़े होने की क्रिया, अवस्था या भाव। २. ठहराव। स्थिरता। ३. बैठने की क्रिया या भाव। ४. एक ही अवस्था में बने रहने की क्रिया या भाव। संस्थान। ५. दृढ़ता। मजबूती। ६. धीरता। ७ अस्तित्व। हस्ती। ८ आकृति। रूप। ९ गुण। १०. क्रम। सिलसिला। ११. प्रबंध। व्यवस्था। १२ प्रकृति। स्वभाव। १३ अंत। समाप्ति। १४. मृत्यु। मौत। १५. नाश। १६ कोष्ठबद्धता। कब्जियत। १७. ढेर। राशि।

**संस्पर्द्धा**—स्त्री० [सं० सम्√स्पर्ध (संघर्ष करना)+घञ् टाप्] १. स्पर्धा। २. ईर्ष्या।

**संस्पर्द्धी**—वि०[स०सम्√स्पर्ध (स्पर्धा करना)+णिनि][स्त्री०संस्पर्द्धिनी] संस्पर्धा करनेवाला।

**संस्पर्श**—पुं० [सं० सम्√स्पृश् (छूना)+घञ्] अच्छी या पूरी तरह से होनेवाला स्पर्श।

**संस्पर्शी**—वि० [सं० सम्√स्पृश् (छूना)+णिनि संस्पर्शिन्] स्पर्श करने या छूनेवाला।

**संस्पृष्ट**—भू० कृ० [सं०] १. छूआ हुआ। जिसका किसी के साथ स्पर्श हुआ हो। २. किसी के साथ लगा या सटा हुआ। ३ किसी के साथ जुड़ा या बँधा हुआ। ४. जो बहुत पास हो। सम्बन्ध। ५ जिस पर किसी का बहुत थोड़ा या नाममात्र का प्रभाव पड़ा हो।

**संस्फुट**—वि०[स० सम्√स्फुट् (विकसित होना)+क] १ अच्छी तरह फूटा या खुला हुआ। २. अच्छी तरह खिला हुआ।

**संस्फोट**—पुं० [स० सम्√स्फुट् (भेदन करना)+घञ्] युद्ध। लड़ाई।

**संस्मरण**—पु० [सं० सम्√स्मृ (स्मरण करना)+ल्युट्-अन] [वि० संस्मरणीय] १. अच्छी तरह या बार-बार स्मरण करना। २. इष्टदेव आदि का बार बार स्मरण करना या उनका नाम जपना। ३. पूर्व-जन्म के संस्कारों आदि के कारण उत्पन्न या प्राप्त होने अथवा बना रहने वाला ज्ञान। ४ आजकल किसी व्यक्ति विशेषत मृत व्यक्ति के संबंध की महत्त्वपूर्ण और मुख्य घटनाओं या बातों का उल्लेख या कथन। (रेमिनिसेंन्सेज)

**संस्मरणीय**—वि० [स० सम्√स्मृ (स्मरण करना)+अनीयर्] १ जिसका प्राय. संस्मरण होता रहता है। बहुत दिनों तक याद रहने लायक। २ जिसका सस्मरण (नाम, जप आदि) करना अवश्यक और उचित हो।

**संस्मारक**—वि० [स० सम्√स्मृ् (स्मरण करना) +णिच्+ण्वुल्-अक] [स्त्री० सस्मारिका] स्मरण करनेवाला। याद दिलानेवाला।

**संस्मारण**—पुं० [सं० सम्√स्मृ (स्मरण करना)+णिच्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० संस्मरित] १. स्मरण करना। याद दिलाना। २. चौपायो आदि की गिनती करना।

**संस्मृत**—वि० [सं० सं√स्मृ् (स्मरण करना)+क्त] स्मरण किया हुआ। याद किया हुआ।

**संस्मृति**—स्त्री० [स० सम्√स्मृ (स्मरण करना)+क्तिन्] पूर्ण स्मृति। पूरी याद।

**संस्रव**—पुं० [सं० सम्√स्रु (बहाव में जाना)+घञ्] [स्त्री० सस्रवा] १. मिल जुल कर एक साथ बहना। २. अच्छी तरह बहना। ३. बहती हुई चीज। ४. जल की धारा या प्रवाह। ५. तरल पदार्थ का रस कर टपकना या बहना। ६. किसी चीज में से उखाड़ा या नोचा हुआ अश। ७. एक प्रकार का पिंड-दान।

**संस्रावण**—पुं० [सं० सम्√स्रु (बहना)+ल्युट्-अन] १. प्रवाहित होना। बहना। २. गिरना। चूना या टपकना। जैसे—गर्भ का संस्रवण।

**संस्रष्टा**—वि०[सं०सम्√सृज् (सृजन करना)+क्तृच्,ज,त्र-तृच सस्रष्ट] [स्त्री० संस्रष्ट्री] १. आयोजन करनेवाला। २. मिलाने-जुलाने वाला। ३. बनानेवाला। रचयिता। ४. लड़ाई-झगड़ा करानेवाला।

**संस्राव**—पुं० [सं० सम्√स्रु (बहना)+घञ्] १. प्रवाह। बहाव। २ शरीर के घाव, फोड़े आदि में मवाद का इकट्ठा होना। ३. गाद। तलछट।

**संस्रावण**—पु० [सं० सम्√स्रु (बहना)+णिच्-ल्युट्-अन] [भू० कृ० संस्रावित] १. प्रवाहित करना। बहाना। २. प्रवाहित होना। बहना।

**संस्रावित**—भू० कृ० [सं० सम्√सु (बहना)+णिच्-क्त] १. बहाया हुआ। २ बहा हुआ। ३. चू, टपक या रसकर निकला हुआ।

**संस्राव्य**—वि० [सं० सं√स्रु (बहाना)+णिच्- यत्] १. बहाने या टपकाने योग्य। २ बहाये या टपकाये जाने के योग्य।

**संस्वेद**—पुं० [स०] स्वेद। पसीना।

**संस्वेदी (दिन्)**—वि० [सं√स्विद् (पसीना होना)+णिच्] १. जिसके बदन से पसीना निकल रहा हो। २. जिसके प्रभाव से बहुत पसीना आता या आने लगता हो। पसीना लानेवाला।

**संहंता**—वि० [सं० सम्√हन् (मारना) +तृच्, सहतृ] [स्त्री० संहत्री] हनन या वध करनेवाला। मार डालनेवाला।

**संहत**—वि०[सं०सम्√हन् (मारना)+क्त] १ अच्छी तरह गठा, जुड़ा, मिला या सटा हुआ। २. जो जमकर बिलकुल ठोस हो गया हो। ३. गाढ़ा या घना। ४. दृढ़। मजबूत। ५. इकट्ठा या एकत्र किया हुआ। ६ अच्छी तरह मिलाकर एक किया हुआ। (कन्सालिडेटेड) ७. चोट खाया हुआ आहत। घायल।

पु० नृत्य मे एक प्रकार की मुद्रा।

**संहत जानु**—पु० [स०] दोनो घुटने सटाकर बैठने की मुद्रा।

**संहतांग**—वि० [स० कर्म० स०, ब० स० वा] हृष्ट-पुष्ट। मजबूत।

**संहति**—स्त्री० [स०] १. आपस मे चीजो का मिलना। मेल। २ इकट्ठा या एकत्र होना। ३ ढेर। राशि। ४. झुड। दल। ५ घनत्व। घनापन। ६. जोड़। सधि। ७. गठकर या मिलकर एक होना। सघटन। (कसालिडेशन)

**संहनन**—पु० [सं० सम्√हन् (मारना)+ल्युट्-अन] १. सहत करना। एक मे मिलाना। जोडना। २ अच्छी तरह घना या ठोस करना। ३ मार डालना। वध करना। ४. मिलन। मेल। ५ दृढ़ता। मजबूती। ६ पुष्टता। ७. सामजस्य। ८. देह। शरीर। ९ कवच। १०. शरीर की मालिश।

**संहरण**—पु० [सं० सम्√हृ (हरण करना)+ल्युट्-अन] १ एकत्र या संग्रह करना। बटोरना। २. सिर के बाल इकट्ठे करके बाँधना। ३. जबरदस्ती लेना। छीनना। हरण। ४. नाश या सहार करना। ५. प्रलय।

**संहरणा**—वि०-सहर्ता (सहारक)।

**संहरना**—स० [सं० सहार] सहार करना।

अ० १. संहार होना। २. नष्ट होना।

**संहर्ता**—वि० [सम्√हृ (हरण करना)+तृच्] [स्त्री० सहर्त्री] १. इकट्ठा करने वाला। बटोरने या समेटने वाला। २. नाश या सहार करनेवाला ३. मार डालने या वध करनेवाला।

**संहर्ष**—पु० [सं० सम्√हृष् (हर्षित होना)+घञ्] १. प्रसन्नता के कारण शरीर के रोओ का खड़ा होना। पुलक। उमंग। २. भय से रोएँ खड़े

होना। रोमांच । ३. लाग-डाँट । स्पर्धा । होड़। ४. ईर्ष्या। डाह । ५. रगड़ । संघर्ष ६. शरीर की मालिश ।

**संहर्षण**—पुं० [सं० सम्√हृष् (प्रसन्न होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० संहर्षित, सहृष्ट] १. पुलकित होना। २. लाग-डाँट। स्पर्धा। होड़।

**संहर्षी**—वि० [सं० सम्√हृष् (रोमांच होना)+णिनि, सहर्षिन्] [स्त्री० संहर्षिणी] १. पुलकित होनेवाला। २. पुलकित करनेवाला। ३. ईर्ष्या करनेवाला। ४. स्पर्धा करनेवाला।

**संहत**—पु० [सं० सम्√हन् (मारना)+क्त, न—आ, कुत्वाभाव] १. समूह। २. एक नरक का नाम। ३. दे० 'संघात'।

**संहार**—पु० [सं०] १. एक मे करना या मिलाना। इकट्ठा करना। २. संचय । ३. सिर के बाल अच्छी तरह बाँधना । ४ अंत। समाप्ति । जैसे—वेणी सहार । ५ ध्वस। नाश । ६ बहुत से व्यक्तियों की युद्ध आदि में एक साथ होने वाली हत्या । ७ कल्पांत। प्रलय । ८. संक्षेप मे और सार रूप मे कही हुई बात। ९ किसी काम या बात को निष्फल या व्यर्थ करने की क्रिया। निवारण। परिहार। जैसे—किसी के चलाये हुए अस्त्र का सहार अर्थात् विफलीकरण। १०. अपना छोड़ा हुआ अस्त्र फिर से लौटाना या वापस लाना। ११. कौशल। निपुणता। १२. सिकुड़ना। आकुचन । १३ पुराणानुसार एक नरक का नाम।

**संहारक**—वि० [स० सम्√हृ (हरण करना) +णिच्-ण्वुल्-अक, सहार+कन् वा] स्त्री० संहारिका] सहार करनेवाला। सहर्ता।

**संहारकारी**—वि० [स० सहार√कृ (करना)+णिनि] [स्त्री० सहारकारिणी] संहार या नाश करनेवाला।

**संहार काल**—पु० [स०] विश्व के नाश का समय। प्रलय काल।

**संहारना**—स० [स० संहरण] मार डालना।

**संहार भैरव**—पु० [सं०] भैरव के आठ रूपों या मूर्तियो मे से एक। काल भैरव।

**संहार-मुद्रा**—स्त्री०[स०] तान्त्रिक पूजन मे अगो की एक प्रकार की स्थिति, जिसे विसर्जन मुद्रा भी कहते हैं।

**संहारिक**—वि० [स० सहार+ठन्-इक्] १. सहार करनेवाला। संहारक। २. सहार सबधी। सहार का।

**संहारी (रिन्)**—वि० [सं० सम्√हृ (हरण करना)+णिनि] सहार या नाश करनेवाला।

**संहार्य**—वि० [स० सम्√हृ (हरण करना)+ण्यत्] १. समेटने या बटोरने योग्य। संग्रह करने योग्य। इकट्ठा करने लायक। २. जिसका सहार किया जाने को हो या किया जा सकता हो। ३ जो कही दूसरी जगह ले जाया जा सकता हो या ले जाया जाने को हो। ४ जिसका निवारण या परिहार हो सकता हो।

**संहित**—वि० [सं० सम्√धा (रखना)+क्त, धा=हि] १. एक स्थान पर जोड़ या मिलाकर रखा हुआ। एकत्र किया या बटोरा हुआ। २. मिलाया या सम्मिलित किया हुआ। ३. सबद्ध। संश्लिष्ट। ४. अन्वित। युक्त। ५ अनुकूल। अनुरूप। ६ आज-कल जो अधिकारियो के द्वारा नियमो, विधियों आदि की सहिता के रूप मे लाया गया हो। (कोडिफ़ायड)

**संहिता**—स्त्री० [स०] १. सहित अर्थात् एक मे मिले हुए होने की अवस्था या भाव। मेल। सयोग। २ वह नया रूप जो बहुत सी चीजें एकत्र करने या एक साथ रखने पर प्राप्त होता है। सकलन। सग्रह। ३. कोई ऐसा ग्रथ जिसके पाठ आदि का क्रम परम्परा से किसी नियमित और निश्चित रूप में चला आ रहा हो। जैसे—अत्रि (या मनु) की धर्म-सहिता। ४ वेदो का वह मत्र (ब्राह्मण नामक भाग से भिन्न) जिसके पद, पाठ आदि का क्रम निश्चित है और जिसमे स्तोत्र, आशीर्वादात्मक सूक्त, यज्ञ-विधियो से सबध रखनेवाले मत्र और अरिष्टो आदि की शाति से संबंध रखनेवाली प्रार्थनाएँ सम्मिलित हैं। ५ व्याकरण मे अक्षरो की होनेवाली पारस्परिक सधि। ६ राजकीय अधिकारियो द्वारा प्रस्तुत किया हुआ नियमो, विधियों, आदि का सग्रह। (कोड) जैसे—भारतीय दंड सहिता। (इडियन पेनल कोड) ७ ब्रह्म जो समस्त विश्व को धारण किये है और उसका नियत्रण करता है।

**संहिताकरण**—पु० [स०] [भू० कृ० सहिताकृत] नियमों, विधानो आदि को व्यवस्थित रूप देने की क्रिया या भाव। किसी बात या विषय को सहिता का रूप देना। (कोडिफिकेशन)

**संहिति**—स्त्री० [स०] १. सहित होने की अवस्था या भाव। २ दे० 'सश्लेषण'।

**संहृत**—भू० कृ० [स० सम्√हृ(हरण करना)+क्त] १ एकत्र किया हुआ। समेटा हुआ। २ ध्वस्त। नष्ट। बरबाद। ३ पूरा किया हुआ। समाप्त। ४ दूर किया या रोका हुआ। निवारित।

**संहृति**—स्त्री० [स० सम्√हृ (हरण करना)+क्तिन्] १ बटोरने या समेटने की क्रिया। २ सग्रह। ३. नाश। ४ प्रलय। ५ अन्त। समाप्ति। ६ परिहार। रोक। ७ लूट-खसोट। हरण।

**हंड**—भू० कृ० [स०] १. खडा (राम)। २ (व्यक्ति) जिसके रोएँ भय से खडे हो या हुए हो। रोमांचित। ३. पुलकित।

**संह्राद**—पु० [स सम्√ह्लाद् (अव्यक्त ध्वनि)+घञ्] १ कोलाहल। शोर। २ हिरण्यकशिपु का एक पुत्र।

**संह्रादन**—पु० [स० सम्√ह्लाद् (अव्यक्त ध्वनि)+ल्युट्—अन] भू० कृ० सह्लादित] १ कोलाहल करना। शोर मचाना। २ चीखना। चिल्लाना।

**स**—उप० एक उपसर्ग जिसका उपयोग शब्दो के आरम्भ मे कई प्रकार के अर्थ सूचित करने के लिए होता है। यथा—१ 'एक ही' का भाव सूचित करने के लिए; जैसे—सकुल, समोद आदि। २ 'एक ही तरह का' या 'एक सा' का भाव सूचित करने के लिए; जैसे—सदृश, समान आदि। ३. सज्ञाओ से विशेषण और क्रिया विशेषणबनाने के लिए, जैसे—सतृप्त, सप्रेम आदि। ४ बहुव्रीहि समास मे 'युक्त' या 'सह' का भाव सूचित करने के लिए; जैसे—सजीव, सपरिवार आदि। ५ हिन्दी शब्दों मे 'सु' या अच्छा का भाव प्रकट करने के लिए; जैसे—सपूत आदि।

**पु**०[सं० षो (नाश करना)+क] १. ईश्वर। २ महादेव। शिव। ३. चन्द्रमा। ४. जीवात्मा। ५. भृगु। ६ वायु। हवा। ७. ज्ञान। ८. चिन्ता। ९ चमक। दीप्ति। १०. चिड़िया। पक्षी। ११ साँप। १२. रास्ता। सड़क। १३. सगीत में षडज स्वर का सूचक अक्षर। जैसे—रे, ग, म, ध, नि, स। १४. छंद शास्त्र मे 'सगण' का सूचक अक्षर या सक्षिप्त रूप।

**सजायत**—स्त्री०[अ०]१ अच्छाई। भलाई। २. सौभाग्य।

**सजायतमंद**—वि०[अ०+फा०] [भाव० सजायतमंदी] १. भला। सज्जन। २. आज्ञाकारी (सन्तान आदि के लिए प्रयुक्त)। ३. भाग्यवान्। सौभाग्यशाली।

**सह**†—अव्य०[स० सह] से। साथ।

**सहजन**†—पुं०=सहिजन।

**सहन**†—स्त्री०[सं० सन्धि] नाडी का व्रण। नासूर।

स्त्री०=सेना (फौज)।

**सहना**†—स्त्री०=सेना।

**सहमाँ**†—पुं०=सैमाँ।

**सहयो**†—स्त्री०[सं० सखी] सखी। सहेली।

**सहल**†—स्त्री०=सील।

†पुं०=सील।

*वि०=सरल।

**सहवर**†—पुं०=सेवार।

**सही**†—स्त्री०[सं० सरस्वती] सरस्वती नदी।

स्त्री०१.=सखी। २.=सती।

स्त्री०[अ०] कोशिश। प्रयत्न।

स्त्री०[?] वृद्धि। बरकत। उदा०—खग मृग सबर निसाचर सब की पूँजी बिनु बाढ़ी सही।—तुलसी।

**सहीबंदा**—पु०[?] एक प्रकार का पेड़।

**सहीह**—वि०[अ०]१. शुभ। मांगलिक। २. उत्तम। भला।

**सहेस**†—पु०=साईस।

**सहें**—अव्य०=सो।

**सउखा**—पुं०=शौक।

**सउजा**—पुं०=सावज (शिकार)।

पुं०=सौंजा।

**सउत**†—स्त्री०=सौत।

**सउतेला**†—वि०=सौतेला।

**सऊँस**—वि० [?] सब। सारा। उदा०—सऊँस अयोध्या में रामजी दुलरुआ।—लोकगीत।

**सऊँह**—अव्य०=सौंह (सामने)।

**सऊँ***—वि०=सौ (संख्या)।

स्त्री०=संक्रान्ति। जैसे—मकर सऊ=मकर संक्रान्ति।

**सकबी अरब**—पुं० मध्य अरब का एक आधुनिक राज्य जो पहले हिजाज कहलाता था और जिसकी राजधानी मक्का है।

**सकर**†—पुं०=शक्कर।

**सकूँकर**—पु०[कश्मीर] गोह की तरह का लाल रंग का एक जंतु। इसका मांस बहुत बलवर्द्धक माना जाता है। इसे रेत की मछली या 'रेगमाही' भी कहते हैं।

**सक***—पुं०[सं० शंका]१. वीरता का कार्य। साका। २. शक्ति का आतंक। धाक।

मुहा०—सक बाँधना=अपने प्रभुत्व, बल आदि की धाक जमाना। ३. मर्यादा। सीमा।

क्रि० प्र०—बाँधना।

†स्त्री०[शक्ति]१. ताकत। बल। २. सामर्थ्य।

†पुं० शक (सन्देह)।

**सकड**—पुं०[स० अव्य० स०] शालोट वृक्ष। सिंहोर।

†पुं०[स० शकट] [अल्पा० सकटी] छकडा। गाडी।

**सकट चौथ**†—स्त्री०=सकट चौक (गणेश चौथ)।

**सकटान्न**—पु०[सं० अव्य० स०] ऐसे व्यक्ति का अन्न जिसे किसी प्रकार का अशौच हो। ऐसा अन्न अग्राह्य कहा गया है।

**सकटी**—स्त्री०[सं० शकट] छोटा सगड। सगडी।

**सकड़ी**†—स्त्री०=सिकरी।

**सकत**†—स्त्री०[सं० शक्ति]१. बल। शक्ति। २. सामर्थ्य। ३. धनसम्पत्ति।

अव्य० जहाँ तक हो सके। भर-सक। यथा-साध्य।

वि०, पुं०=शक्त।

**सकता**—स्त्री०[सं० शक्ति]१ शक्ति। ताकत। बल। २. सामर्थ्य। बूता।

पु०[अ० सक्त]१. बेहोशी या मूर्च्छा नाम का रोग। २. भौचक्कापन। स्तब्धता। ३ पद्य के चरणो मे होनेवाली यति। विराम। ४. कविता मे यति-भंग नामक दोष।

क्रि० प्र०—पड़ना।

**सकति**†—स्त्री०=शक्ति।

पु०=शाक्त।

**सकती**†—स्त्री०=शक्ति।

**सकन**—पुं०[देश०] १. लता। २. कस्तूरी। मुश्कदाना।

अव्य० [स० स+कर्ण] कान लगाकर। उदा०—जदि तोहे चंचल सुनह सकन भए अपना धधन काए।—विद्यापति।

**सकना**—अ०[स० शक् या शक्य] कोई काम करने मे समर्थ होना। करने योग्य होना। जैसे—कह सकना, खा सकना, जा सकना, बैठ सकना आदि।

†अ०[स० शंका, हिं० सकना= शका करना] १. शंका के कारण घबराना, डरना या सकोच करना। उदा०—सूखे से, श्रमे से, सकमके से, सके से, थके से, भूले से, भ्रमे से, भ्रमरे से, भकआने से।—रत्नाकर। २. दे० 'सकाना'।

**सकपक**—स्त्री०[अनु०] सकपकाने की क्रिया, अवस्था या भाव।

**सकपकाना**—अ०[अनु० सकपक]१ चकित होना। चकपकाना। २. आगापीछा करना। हिचकना। ३. लज्जित होना। शरमाना। ४. संकोच करना।

स० १. चकित करना। २. असमंजस या दुविधा में डालना। ३. लज्जित या सकुचित करना।

**सकरकंदी**—स्त्री०=शकरकंद।

**सकर-खांडी**—स्त्री०[फा० शकर+हिं० खाँड] लाल और बिना साफ की हुई चीनी। खाँड़। शक्कर।

**सकरना**—अ०[सं० स्वीकरण]१. सकारा जाना। स्वीकृत या अंगीकृत होना। मंजूर होना। जैसे—हुंडी सकरना। २. माना जाना। जैसे—दाम या देन सकरना।

संयो० क्रि०—जाना।

**सकरपाला**†—पुं०=शकर-पारा।

**सकरा**—वि० १.=सँकरा। २.=सकरा।

**सकरिया**—स्त्री०[फा० शकर] लाल शकरकंद। रतालू।

**सकर्पंड**—पुं०[गुज०] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी पत्तियाँ आदि का व्यवहार ओषधि के रूप में होता है।

**सकरुण**—वि०[स० अव्य० स०] जिसे करुणा हो। दयाशील।

**सकर्ण**—पुं०[स०] वह जो सुनता या सुन सकता हो।
वि० जिसके कान हों। कानोवाला।

**सकर्मक**—वि०[सं०]१. जो किसी प्रकार के कर्म से युक्त हो।
**पद—सकर्मक क्रिया।** (देखें)
२. जो किसी प्रकार का कर्म या क्रिया कर रहा हो। क्रियाशील। उदा०—प्रस्फुटित उत्तर मिलते, प्रकृति सकर्मक रही समस्त।—कामायनी।

**सकर्मक क्रिया**—स्त्री० [स०] व्याकरण में दो प्रकार की क्रियाओं में से वह क्रिया जिसका कार्य उसके कर्म पर समाप्त होता हो। जैसे—खाना, देना, माँगना, रखना आदि।

**सकल**—वि०[स०] सब। समस्त। कुल।
पु०१. निर्गुण ब्रह्म और सगुण प्रकृति। २ दर्शन-शास्त्र के अनुसार तीन प्रकार के जीवों में से पशुवर्ग के जीव। ३ रोहित घास या तृण।

**सकलात**—पुं०[?] [वि० सकलाती]१. ओढने की रजाई। दुलाई। २. उपहार। भेंट। ३. सौगात। मखमल नाम का कपड़ा।

**सकलाती**—वि०[हिं० सकलात]१. जो उपहार या भेंट के रूप में दिया जा सके। २. अच्छा। बढ़िया।

**सकली**—स्त्री०[हिं०] मत्स्य। मछली।

**सकलेंदु**—पु०[स०] पूर्णिमा का चन्द्रमा। पूरा चाँद।

**सकल्ल**—पु०=शल्य।

**सकसकाना**—अ० [अनु०] बहुत अधिक डरना या डर कर काँपना।

**सकसना**—अ०[स० शंका, हिं० सकना]१ भयभीत होना। डरना। २ अड़ना। ३ धँसना। उदा०—निकसे सकसिन न बचन भयौ हियकिनी गहुवर भर।—रत्नाकर।

**सकसाना**°—स०[अनु०] भयभीत करना। डराना।

**सकां**—पु०=सकवा।

**सकाकुल**—पु०[स० शकाकुल] १. एक प्रकार का कद जिसे अबर कद कहते हैं। २. एक प्रकार का शंताबर। ३ सुधा-मूली।

**सकाकोल**—सं० [अव्य० स०] मनु के अनुसार एक नरक का नाम।

**सकाना**—अ०[सं० शंका, हिं० सकना]१ मन में शंका या संदेह करना। २ संकुचित होकर पीछे हटना। आगे बढने से हिचकना। उदा०—क्षत्रिय तनु धरि समर सकाना।—तुलसी। ३ भयभीत होना। डरना। उदा०—सोच सबै मकाइ कहा करिहै कमलासन।—रत्नाकर। ४ मन में दुःखी होना। उदा०—सुनि मुनिवर के पथ्य बचन, कछु भूप सकाए।—रत्नाकर।
स० हिं० 'सकना' का सकर्मक और प्रेरणार्थक रूप।
जैसे—सके तो सकाओ, नहीं तो छोड दो। (परिहास)

**सकाम**—वि०[स० अव्य० स०] जिसके मन में कोई कामना या इच्छा हो। २. जिसकी कामना या इच्छा पूरी हो गई हो। सफल-मनोरथ। ३. मैथुन या संयोग की इच्छा रखनेवाला। कामी। ४. प्रेम करनेवाला। प्रेमी। ५. स्वार्थ साधन की भावना से काम करनेवाला।

**सकाम निर्जरा**—स्त्री०[सं० ब०स०] जैन धर्म में चित्त की वह वृत्ति जिसमें बहुत अधिक क्षति होने पर भी शत्रु को परम शांतिपूर्वक क्षमा कर दिया जाता है।

**सकामा**—स्त्री०[स० अव्य० स०] ऐसी स्त्री जो मैथुन की इच्छा रखती हो। कामवती स्त्री।

**सकामी (मिन्)**—वि०[स० सकाम+इनि, ]१ जिसे किसी प्रकार की कामना हो। कामनायुक्त। २. कामुक। विषयी।

**सकार**—पु०[स० स+कार] १. 'स' अक्षर। २. 'स' वर्ण की या उससे मिलती-जुलती ध्वनि। जैसे—उस समय किसी के मुँह से सकार भी न निकाला।
स्त्री०[हिं० सकारना] सकार अर्थात् स्वीकृत करने की क्रिया या भाव। स्वीकृति। (ऐसेप्टेन्स)

**सकारना**—स०[स० स्वीकरण] [भाव० सकारा]१ स्वीकृत करना। मंजूर करना। २. महाजनी बोलचाल में, हुंडी की मिती पूरी होने के एक दिन पहले हुंडी देखकर उस पर हस्ताक्षर करना और रुपए चुकाने का उत्तरदायित्व मानना। (आर्नरिंग आफ द ड्राफ्ट)

**सकारा**—पु०[हिं० सकारना] १ सकारने की क्रिया या भाव। २. २. महाजनी लेन-देन में, वह धन जो हुंडी सकारने और उसका समय फिर से बढाने के बदले में लिया जाता है।
पुं०[स० सकाल]=सकाल (सवेरा)।

**सकारात्मक**—वि०[स०] १ (उत्तर या कथन) जो सहमति या स्वीकृति का सूचक हो। नकारात्मक के विपरीत। (एफर्मेटिव) २ जिसका कोई निश्चित मान या स्थिर स्वरूप हो। निश्चयी। (पाजिटिव)

**सकारी**—पु०[हि०सकारना] वह जो कोई हुंडी सकारता हो या जिसके नाम कोई हुंडी लिखी गई हो। (ड्राई)

**सकारे**—अव्य०[स० सकाल] १ प्रातःकाल। सबेरे। तड़के। २ नियत समय से कुछ पहले ही। जल्दी।

**सकालत**—स्त्री०[अ०]१ सकील या गरिष्ठ होने की अवस्था या भाव। गरिष्ठता। २ गुरुता। भारीपन।

**सकाश**—अव्य०[स० अव्य० स०] पास। निकट। समीप।

**सकिया**—स्त्री०[?] एक प्रकार की बडी गिलहरी जिसके पंजे काले होते है।

**सकिलना**—अ०[हिं० सरकना]१ फिसलना। सरकना। २ सिकुडना। सिमटना। ३ कुछ कर सकने के योग्य या समर्थ होना। ४. (कार्य) पूरा होना।

**सकीन**—पु०[देश०] एक प्रकार का जंतु।

**सकील**—वि [अ०] [भाव० सकालत] १. जो जल्दी हजम न हो। गरिष्ठ। दुष्पाक। २ भारी। बजनी।

**सकुच**°—स्त्री०—सकोच।

**सकुचाई**°—स्त्री०[स० सकोच, हिं० सकुच+आई (प्रत्य०)]१. संकुचित होने की क्रिया या भाव। २. सकोच।

**सकुचाना**—अ०[स० सकोच, हिं० सकुच+आना (प्रत्य०)] १. संकोच करना। लज्जा करना। शरमाना। २. फूलों आदि का संपुटित या बन्द होना। ३. सिकुड़ना।

स० [हिं० सकुचाना का प्रे०] किसी को संकोच करने में प्रवृत्त करना। लज्जित करना।

**सकुची**—स्त्री० [स० शकुल मत्स्य] एक प्रकार की मछली जो साधारण मछलियों से भिन्न और प्रायः कछुए के आकार की होती है। इसके चार छोटे-छोटे पैर होते हैं; और एक लम्बी पूँछ होती है। इसी पूँछ से यह शत्रु पर आघात करती है। जहाँ पर इसकी चोट लगती है, वहाँ घाव हो जाता है, और चमड़ा सड़ने लगता है। यह स्थल में भी रह सकती है।

**सकुचीला**—वि० [हिं० सकुच+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सकुचीली] जिसे अधिक और प्रायः संकोच होता हो। संकोच करनेवाला। शरमीला।

**सकुचीली**—स्त्री० [हिं० सकुचीला] लजवनी। लज्जावती लता।

**सकुचौहाँ**—वि० [स० सकोच+हिं० औहाँ (प्रत्य०) [स्त्री० सकुचौही] अधिक और प्रायः संकोच करनेवाला। लजीला।

**सकुड़ना**†—अ०=सिकुड़ना।

**सकुन***—पुं० [सं० शकुन] पक्षी। चिड़िया।
पु०=शकुन।

**सकुनी***—स्त्री० [सं० शकुन] चिड़िया। पक्षी।

**सकुपना***—अ०=सकोपना।

**सकुल**—पुं० [स० कर्म० स०] अच्छा कुल। उत्तम कुल। ऊँचा खानदान।
पु०=सकुची (मछली)।

**सकुलज**—वि० [स० सकुल√ जन् (उत्पन्न करना) +ड] एक ही कुल में उत्पन्न (दो या अधिक व्यक्ति)।

**सकुला**—पुं० [स० सकुल—टाप्] बौद्ध भिक्षुओं का नेता या सरदार।

**सकुलावती**—स्त्री० [स० ब० स०] १. महाराष्ट्री या मेरठी नाम की लता। २. कुटकी।

**सकुली**—स्त्री०=सकुची (मछली)।

**सकुल्य**—वि० [सं० सकुल+यत्] (दो या अधिक) जो एक ही कुल में उत्पन्न हुए हों।

**सकूतरा**—पुं० [?] एक द्वीप जो अरब सागर में अफ्रीका के पूर्वी तट के समीप है। यहाँ मोती और प्रवाल अधिक मिलते हैं।

**सकूनत**—स्त्री० [अ०] रहने का स्थान। निवास-स्थान। पता। जैसे—वहाँ वल्दियत और सकूनत भी पूछी जाती है।

**सकृत्**—अव्य० [सं०] १. एक बार। एक मरतबा। २. सदा। हमेशा। ३. सहित। साथ। उदा०—बँह तँह काक उलूक, बक, मानस सकृत मराल।—तुलसी।
पु०१ गूह। मल। विष्ठा। २. कौआ।

**सकृत्प्रज**—वि० [सं०] जिसे एक ही बच्चा हो।
पु० कौआ।

**सकृत्प्रजा**—स्त्री० [सं०] १. बंध्या रोग। बाँझपन। २. शेर या सिंह की मादा। शेरनी।

**सकृत्फल**—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० सकृत्फला] (पौधा या वृक्ष) जो एक ही बार फलता हो। जैसे—केला।

**सकृत्सू**—वि० स्त्री० [सं० सकृत्√पू (उत्पन्न करना)+क्विप्] (स्त्री) जिसने अभी बालक प्रसव किया हो।



**सकृद्**—अव्य० [सं० शकृत् का वह रूप जो उसे समस्त पदों के पहले लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—सकृद्ग्रह।

**सकृद्गामी मार्ग**—पुं० [स० कर्म० स०] बौद्ध मतानुसार एक प्रकार का धार्मिक मार्ग जिसमें जीव केवल एक बार जन्म लेकर मोक्ष प्राप्त करता है।

**सकेत**†—पुं० [स० सङ्केत] १. संकेत। इशारा। २. प्रेमी और प्रेमिका के मिलने का कोई एकान्त स्थान।
†वि०=[स० सङ्कीर्ण] सँकरा। संकीर्ण।
पुं०१. संकट की स्थिति। २. कष्ट। दुःख। उदा०—खिनही उठै खिन बूढ़ै, अस हिय कँवल सकेत।—जायसी।

**सकेतना***—अ० [हिं० सकेत] सकुचित होना। सिकुड़ना।
स० सकुचित करना। सिकोड़ना।

**सकेती**—स्त्री० [हिं० सकेत] १. कष्ट या विपत्ति में होने की अवस्था या भाव। २. कष्ट। दुःख।

**सकेरना**†—स०=सकेलना।

**सकेलंग**—पुं० [अ० सलिङ्ग] एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जिसकी लकड़ी नरम और सफेद होती है और इमारत आदि बनाने के काम में आती है।

**सकेलना**†—स० [स० सकलन या सकल] १ इकट्ठा करना। जमा करना। उदा०—जो वनिता सुत-द्रव्य सकेलै, हय गय विभव घनेरो।—सूर। २ बिखरे हुए काम या चीजें समेटना। उदा०—ज्यों बाजीगर स्वाँग सकेला।—कबीर। २. काम पूरा करना। निपटाना।

**सकेला**—स्त्री० [अ० सैकल] एक प्रकार की तलवार जो कड़े और नरम लोहे के मेल से बनाई जाती है।
पु० [अ० सकील?] एक प्रकार का लोहा।

**सकोचं**†—पुं०=संकोच।

**सकोचना***—स० [स० सकोच+हिं० ना (प्रत्य०)] संकुचित करना। सिकोड़ना।
अ० संकोच करना। शरमाना।

**सकोड़ना**†—स०=सिकोड़ना।

**सकोतरा**†—पुं०=चकोतरा।

**सकोपना***†—अ० [स० कोप+ना (प्रत्य०)] कोप करना। गुस्सा करना।

**सकोपित**†—वि०=कुपित।

**सकोरना**†—स०=सिकोड़ना।

**सकोरा**†—पुं० [हिं० कसोरा] [स्त्री० सकोरी] मिट्टी की एक प्रकार की छोटी कटोरी। कसोरा।

**सक्कर**†—स्त्री०=शक्कर।

**सक्करी**—स्त्री० [स० शर्करी] शर्करी नामक छन्द।

**सक्का**—पुं० [अ० सक्क] १. भिश्ती। माशकी। २. वह जो मशक में पानी भरकर लोगों को पिलाता फिरता हो।

**सक्त**—वि० [सं०] १. किसी के साथ लगा या सटा हुआ। संलग्न। २. आसक्त
†वि०=सक्त। (कंडा)।

**सक्त-चक्र**—पुं० [सं०] ऐसा राष्ट्र जो चारों ओर शक्ति-शाली राष्ट्रों से घिरा हो। राष्ट्रचक्र।

**सत्तनूपत**—पुं० [सं०] चरक के अनुसार वह व्यक्ति जिसे थोड़ा थोड़ा पेशाब होता हो।

**सत्ति**†—स्त्री०=शक्ति।

**सत्तु**—पुं०[सं० शक्तु]भुने हुए अनाज को पीसकर तैयार किया हुआ आटा। सतू।

**सत्तुक**—पु०[सं०] १. एक प्रकार का विषावतफल जिसकी गाँठ मे सत्तू के समान चूरा भरा रहता है। २. सत्तू।

**सत्तुकार**—पुं०[सं०] वह जो सत्तू बनाता और बेचता हो।

**सत्तुकला**—स्त्री०[सं०] शमी वृक्ष। सफेद कीकर।

**सत्तुप**—पु०[सं०√सज्ज्(मिलना)+क्विप्] सुश्रुत के अनुसार एक मर्म-स्थान जो शरीर के ग्यारह मुख्य मर्म स्थानों मे माना गया है।

**सत्थी**—पु०[सं० सक्थिन्—दीर्घ न लोप, सक्थिन्]१. हड्डी। अस्थि। २. जघा। जाँघ। ३. छकड़े या बैलगाडी का एक अग या अश।

**सत्रा**†—पुं०=शक्र (इन्द्र)।

**सत्रघ्न**†—पुं०[सं० शक्रघन] इन्द्र का अस्त्र, वज्र। (डिं०)

**सत्रपति**—पुं० [सं० शक्रपति] विष्णु। (डिं०)

**सत्र सरोवर**—पु०[सं० शक्र-सरोवर] इद्र-कुड नामक स्थान जो व्रज मे है।

**सत्रारि***—पुं०[सं० शक्रारि] इद्र का शत्रु, मेघनाद।

**सक्रिय**—वि०[स० अव्य० स०]१. जो अपनी अथवा कोई क्रिया कर रहा हो। २. (काम) जिसमे कुछ करके दिखाया जाय। ३. जो क्रियात्मक रूप में हो। (ऐक्टिव)

**सक्रियता**—स्त्री०[स०] सक्रिय होने या अवस्था का भाव। (ऐक्टिविटी)

**सक्त**—वि०[सं०]१. जिसका अतिक्रमण हो सके। जो लाँघा जा सके। २ हारा हुआ। पराजित।

**सक्षम**—वि०[सं०]१. जिसमें किसी विशिष्ट कार्य के लिए क्षमता हो। क्षमतावाली। २. जो किसी विशिष्ट कार्य करने के लिए उपयुक्त और फलतः उसका अधिकारी या पात्र हो। (काम्पीटेन्ट)

**सक्षमता**—स्त्री०[स०] सक्षम होने की अवस्था, गुण या भाव। (कॉम्पीटेन्सी)

**सक्ष**—पु०[स० सखि]१. सखा। मित्र। साथी। २. एक प्रकार का वृक्ष।

**सक्षत**†—वि०=सस्त।

**सक्षती**†—स्त्री०=सखी।

**सक्षत्व**—पु० [सं० सक्ष+त्व] सखा होने की अवस्था, धर्म या भाव। सखापन। मित्रता। दोस्ती।

**सक्षयाऊ**†—पु०[हिं० सखा] एक प्रकार का फाग जो बुन्देलखंड मे गाया जाता है।

**सक्षर**—पु०[सं० अव्य० स०] एक राक्षस का नाम।

†वि०[स० स+क्षर]१. तेज धारवाला। चोखा। पैना। २. प्रखर। ३ प्रबल।

**सक्षरच, सक्षरच***—वि०[फा० शाह्-खर्च] खुलकर अमीरो की तरह खर्च करनेवाला। शाहखर्च। उदा०—बनिय क सक्षरच, ठकुर क हीन। वैद कपूत, व्याधि नहि चीन्ह। —बाघ।

**सक्षरण**†—पुं०=शिक्षरन।

**सक्षरन**—पुं०[सक्ष ?+हिं० रन] मक्खन। नैनू।

**सक्षरा**—वि०[हिं० निखरा का अनु०] (भोजन) जिसकी सिनती कच्ची रसोई मे होती हो। 'निखरा' का विपर्याय।

†पु० दे० 'सखरी'।

**सक्षरी**—स्त्री०[हिं० निखरी (अनु०)] हिन्दुओं में, दाल भात, रोटी आदि, खाद्य-पदार्थ जो घी मे नही तले या पकाये जाते और इसलिए जो चौके के बाहर या किसी अन्य जाति के आदमी के हाथ के बनाए हुए खाने मे छूत और दोष मानते हैं। 'निखरी' का विपर्याय।

स्त्री०[स० शिखर] छोटा पहाड़। पहाड़ी। (डिं०)

**सक्षत**†—पु०=शस्त्र (व्यक्ति)।

**सक्षसावन**—पु०[?] १. पालकी। २ आरामकुरसी। पलग।

**सखा (खिन्)**—पु०[स०] [स्त्री० सखी]१ ऐसा व्यक्ति जो सदा साथ-साथ रहता हो। साथी। सगी। २ दोस्त। मित्र। ३. साहित्य मे, वह व्यक्ति जो नायक का सहचर हो और जो सुख-दुःख मे बराबर उसका साथ देता हो। ये चार प्रकार के होते हैं। पीठमर्द, विट, चेट और विदूषक।

**सखावत**—स्त्री०[अ०]१. सखी या दाता होने की अवस्था, गुण या भाव। दानशीलता। २. आर्थिक उदारता।

**सखिता**—स्त्री०[स० सखी+तल—टाप्] १ सखी होने की अवस्था, गुण या भाव। २ बधुता। मित्रता।

**सखित्व**—पु०[स० सखि+त्व]- सख्यिता।

**सखिनी**†—स्त्री०=सखी (सखा का स्त्री०)।

**सखी**—स्त्री० [स०] १ सहेली। सहचरी। सगिनी। २ साहित्य मे, नायिका के साथ रहनेवाली वह स्त्री जो उसकी अतरग सगिनी होती, सब बातों में उसकी सहायक रहती और नायक से उसे मिलाने का प्रयत्न करती है। शृंगार रस मे इसकी गणना उद्दीपन विभाव मे होती है। इसके कार्य मडन, शिक्षा, उपालभ और परिहास कहे गये है। ३. एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे १४ मात्राएँ और अत मे १ भगण या १ यगण होता है। इसकी रचना मे आदि से अत तक दो दो कलें होती हैं—२+२+२+२+२+२ और कभी कभी २+३+३+२+२+२ भी होती हैं और विराम ८ तथा ६ पर होता है।

वि० [अ० सखी] दाता। दानी। दानशील। जैसे—सखी से सूम भला जो तुरत दे जवाब। (कहावत)

**सखीभाव**—पु०[स० ष० त०, मध्यम० स० वा] वैष्णव सप्रदाय मे, भक्ति का एक प्रकार जिसमे भक्त अपने आपको इष्ट-देवता की पत्नी या सखी मानकर उनकी उपासना करते हैं। विशेष दे० 'सखी सप्रदाय'।

**सखी संप्रदाय**—पुं०[सं०] निम्बार्क मत की एक शाखा जिसकी स्थापना स्वामी हरिदास (जन्म सं० १४४१ वि०) ने की थी। इसमे भक्त अपने आपको श्रीकृष्ण की सखी मानकर उनकी उपासना तथा सेवा करते और प्राय. स्त्रियो के वेष में रहकर उन्ही के आचारो, व्यवहारो आदि का पालन करते हैं।

**सखुआ**—पुं०[सं० शाक.]=साखू (शाल वृक्ष)।

**सखुन**—पु० [फा० सखुन] १.=बातचीत। वार्तालाप। २. उक्ति। कथन।

मुहा०—सखुन डालना=किसी से (क) कुछ चाहना या माँगना। (ख) प्रश्न करना। पूछना।
३. कविता। काव्य। ४. किसी को दिया जानेवाला वचन। वादा।
क्रि० प्र०—देना।—मिलना।

**सखुनचीन**—वि०[फा०] [भाव० सखुनचीनी] इधर की बात उधर लगानेवाला। चुगलखोर।

**सखुनतकिया**—पुं० [फा० सखुन-तकिया] वह शब्द या वाक्यांश जो कुछ लोगों की जबान पर ऐसा चढ जाता है कि बातचीत करने में प्रायः मुँह से निकला करता है। तकिया कलाम। जैसे—क्या नाम, जो है सो, राम आसरे आदि।

**सखुनफहम**—पुं०[फा०]१. वह जो सखुन अर्थात् काव्य अच्छी तरह समझता हो। काव्य का रसिक। २. वह जो बातचीत का आशय अच्छी तरह समझता हो।

**सखुनफहमी**—स्त्री० [फा०] सखुनफहम होने की अवस्था, गुण या भाव।

**सखुन-परवर**—पुं०[फा०] [भाव० सखुनपरवरी]१. वह जो अपनी कही हुई बात का सदा पालन करता हो। जबान या बात का धनी।
२. वह जो अपनी बात पर अड़ा रहता हो। हठी।

**सखुन-शनास**—पुं०[फा०] [भाव० सखुनशनासी] १ वह जो सखुन या काव्य भली भाँति समझता हो। काव्य का मर्मज्ञ। २. वह जो बातचीत का अर्थ ठीक तरह से समझता हो।

**सखुन-संज**—पुं०[फा०]१. वह जो बातचीत अच्छी तरह समझता हो।
२. काव्य का मर्मज्ञ।

**सखुन-साज**—पुं०[फा०] [भाव० सखुन-साजी]१. वह जो सखुन कहता हो। काव्य-रचना करनेवाला। कवि। शायर। २. वह जो प्रायः झूठी मनगढ़न्त बातें कहा करता हो।

**सख्त**—वि०[फा०सख्त] [भाव० सख्ती]१. कठोर। कड़ा। जैसे—पत्थर की तरह सख्त। २. दृढ़। पक्का। ३. कठिन। मुश्किल। जैसे—सख्त सवाल। ४. तीक्ष्ण। प्रखर। तेज। जैसे—सख्त गरमी।
५. दया, ममता आदि से रहित या हीन। जैसे—सख्त दिल, सख्त बरताव। ६. बहुत अधिक। औरों से बहुत बढ़ा हुआ। (केवल दुर्गुणों और दुर्गुणियों के संबंध में) जैसे—सख्त नालायकी, सख्त बेवकूफी।

**सख्ती**—स्त्री०[फा०]१. सख्त या कड़े होने की अवस्था या भाव। कड़ापन। २. व्यवहार आदि की उग्रता या कठोरता। जैसे—बिना सख्ती किये काम न चलेगा। ३. कष्ट। विपत्ति। संकट। उदा०—सख्तियाँ दो ही सही पीं, मैंने वारी उम्र में। एक तेरे आने से पहले एक तेरे जाने के बाद।—कोई शायर।

**सख्य**—पुं०[सं०]१. सखा होने की अवस्था या भाव। २. मित्रता। दोस्ती। ३. बराबरी। समानता। ४. वैष्णव धर्म में भक्ति का वह प्रकार या रूप जिसमें भक्त अपने इष्टदेव को अपना सखा मानकर उसकी आराधना तथा उपासना करता है। (नौ प्रकार की भक्तियों में से एक)

**सख्यता**—स्त्री० [सख्य+तल्—टाप्] =सख्य।

**सगंध**—वि०[सं० अव्य० स०]१. जिसमें गंध हो। गंधयुक्त। महकदार।
२. अभिमानी। घमंडी।

**सगंधा**—स्त्री०[सं० सगंध—टाप्] सुगंधवाले। वाराहीकंद।

वि० [स्त्री० सगंधी]=सगा।

**सगंधी**—वि० [स० सगन्ध+इनि—सगंधिन्] जिसमें गंध हो। महकदार।

**सग**—पुं०[फा०] कुत्ता। श्वान।

**सग-बुबाल**—पु० [फा०] ऐसा घोड़ा जिसकी जीभ कुत्ते की जीभ के समान पतली और लम्बी हो। ऐसा घोड़ा ऐबी समझा जाता है।

**सगड़ी**†—स्त्री०[हिं० सग्गड़]। छोटा सग्गड़।

**सगण**—पु०[सं० अव्य० स०] छंद शास्त्र में एक गण जिसमें दो लघु और एक गुरु अक्षर होता है। जैसे—उपमा-कमला-मनसा आदि। इस गण का प्रयोग छंद के आदि में अशुभ है। इसका रूप ।।ऽ है।

**सगत**†—स्त्री०[सं० शक्ति]१. शिव की भार्या। पार्वती। (डिं०) २. शक्ति।

**सगती**†—स्त्री० =शक्ति।

**सगदा**†—पु०[देश०] एक प्रकार का मादक पदार्थ जो अनाज से बनाया जाता है।

**सगन**—पु०[?] १. दे० 'सगण'। २ दे० 'सकुन'।

**सगनौती**—स्त्री०=शकुनौती।

**सगपण**†—पु०=सगापन।

**सग-पहली**—स्त्री० [हिं० साग+पहली=दाल] ऐसी दाल जो साग के साथ पकाई गई हो।

**सगबध**—वि०[अनु०] १. सराबोर। लथपथ। २. पिघला हुआ। द्रवित। ३. भरा हुआ। परिपूर्ण।
क्रि० वि० १. जल्दी या तेजी से। २. चटपट। तुरन्त।

**सगबगाना**—अ० [अनु० सग-बग]१. लथपथ होना। २. जल्दी या फुरती करना। ३ दे० 'सकपकाना'।

**सगभत्ता**†—पु०[हिं० साग+भात] एक प्रकार का भात जो चावल में साग मिलाकर पकाया जाता है।

**सगर**—पु०[सं०] अयोध्या के एक प्रसिद्ध सूर्यवंशी राजा जो रामचन्द्र के पूर्वज थे। (जब इनके सौवें अश्वमेध यज्ञ का घोड़ा चुराकर इन्द्र पाताल ले गया था तब इनके ६०००० पुत्रों ने पाताल पहुँचने के लिए पृथ्वी खोदी थी जिससे समुद्र की सीमा बढ़ी थी। इसी लिए समुद्र का नाम सागर पड़ा था।
†वि०=सगरा (सब)।
पु०[हिं० सगर] सगर का फूल या पौधा।

**सगरा**†—वि०[स० समग्र] [स्त्री० सगरी] सब। समाम। सकल। कुल।
पु०[सं० सागर] १. समुद्र। सागर। २. झील। ३. तालाब।

**सगर्भ**—वि०[सं० ब० स०] एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा। (भाई, बहन आदि)।

**सगर्भा**—वि० स्त्री०[सं० सगर्भ+आ]१. (स्त्री) जिसे गर्भ हो। गर्भवती स्त्री। २. दो या कइयों में से कोई जो एक ही गर्भ से हुई हो। सहोदरा।

**सगर्भ्य**—वि०[सं० सगर्भ+यत्] =सगर्भ।

**सगल**†—वि०=सकल (सब)।

**सग-लगी**—स्त्री०[हिं० सगा+लगना]१. किसी से बहुत सगापन दिखाने की क्रिया या भाव। बहुत अधिक आत्मीयता या आपसदारी दिखलाना।
२. खुशामद।

**सगलता***—स्त्री०[हिं० सगल=सकल]१. सकल या समस्त का भाव। समस्तता। २. समष्टि।
वि० पूरा। सारा। सब।

**सगला**†—वि०[सं० सकल] सब। समस्त। कुल।

**सगवती**†—स्त्री०[?] खाने का मांस। गोश्त। कलिया।

**सगवारा**†—पुं०[सं० स्वक, हिं० सगा] गाँव के आस-पास की और उससे संबंध रखती हुई भूमि।

**सगा**—वि०[सं० स्वक] [स्त्री० सगी] [भाव० सगापन]१. एक ही माता से उत्पन्न। सहोदर। २. संबंध या रिश्ते में अपने ही कुल या परिवार का। जैसे—सगा चाचा।
*पुं०=सगापन। उदा०—स्वारथ को सबको सगा, जग सगला ही जाणि।—कबीर।

**सगाई**—स्त्री० [हिं० सगा+आई (प्रत्य०)] १ सगे होने का भाव। सगापन। २. घनिष्ठ पारिवारिक संबंध। नाता। रिश्ता। उदा०—देखहु लोग हरि कै सगाई। माय धरै पुत्र धिया संग जाई।—कबीर। ३. आत्मीयता और घनिष्ठता का संग-साथ। उदा०—(क) परिहरि झूठा करि सगाई।—कबीर। (ख) सबसो ऊँची प्रेम सगाई।—सूर। ४. बिलकुल एक से या एक वर्ग के होने की अवस्था या भाव। जैसे—बैन सगाई=वर्णमैत्री या अनुप्रास। ५ विवाह का निश्चय। मँगनी। ६. विवाहा स्त्री के साथ पुरुष का वह संबंध जो कुछ जातियों में विवाह के ही समान माना जाता है। ७. संबंध। नाता। रिश्ता।

**सगापन**—पुं०[हिं० सगा+पन (प्रत्य०)] सगा होने की अवस्था या भाव।

**सगाबी**—स्त्री०[फा० सग+आबी] ऊद-बिलाव नामक जन्तु।

**सगारत**—स्त्री०[हिं० सगा+आरत (प्रत्य०)] सगा होने का भाव। सगापन।

**सगीर**—वि०[अ०]१. छोटा। २. उमर या पद में छोटा। ३. हीन।

**सगुण**—वि०[सं०] गुण से युक्त। जिसमें गुण हो।
पु० सत्त्व, रज, तम तीनों गुणों से युक्त परमात्मा का वह रूप जिसमें वह अवतार धारण करके प्राणियों या मनुष्यों के से आचरण और व्यवहार करता है। साकार ब्रह्म। 'निर्गुण' का विपर्याय।
**विशेष**—मध्ययुग में उत्तर भारत में भक्ति मार्ग में दो संप्रदाय हो गये थे—निर्गुण और सगुण। राम, कृष्ण आदि के अवतार ब्रह्म के सगुण रूप के अंतर्गत आते है। निर्गुण रूप में अवतार की कल्पना नहीं होती।

**सगुणता**—स्त्री०[सं०] सगुण होने की अवस्था, धर्म या भाव। सगुण-पन।

**सगुणी**†—वि०=सगुण।

**सगुन**†—पुं० १.=सगुण। २ =शकुन।

**सगुनाना**—स०[सं० शकुन+हिं० आना (प्रत्य०)] शकुन शास्त्र की विशिष्ट प्रक्रियाओं के अनुसार शकुन देखकर शुभ और अशुभ फलों का विचार करना।

**सगुनिया**†—पुं०[सं० शकुन, हिं० सगुन+इया (प्रत्य०)] वह मनुष्य जो लोगों को शकुनों के शुभाशुभ फल बतलाता हो। शकुन विचारने और उनका फल बतलानेवाला।

**सगुनौती**—स्त्री०[हिं० सगुन] १. शकुन विचारने की क्रिया या भाव। २. वह पुस्तक जिसमें शकुनों के अच्छे और बुरे फलों का विवेचन हो। ३. मंगलाचरण। मंगलपाठ।

**सगुरा**†—वि०[हिं० स+गुरु]१. जिसने किसी गुरु से दीक्षा ली हो। २ जिसने किसी गुरु से, किसी अच्छी बात या काम की शिक्षा पाई हो। 'निगुरा' का विपर्याय।

**सगृह**—पु०[स० अव्य० सं०]=गृहस्थ।

**सगोत्र**†—वि०=सगोत्र।

**सगोती**†—पु०[स० सगोत्र] एक ही गोत्र अथवा कुल या परिवार के लोग भाई-बंद। सगोत्र।

**सगोत्र**—पुं०[स० ब० स०, अव्य० स० वा]१. ऐसे लोग जो एक ही गोत्र के अर्थात् एक ही पूर्वज से उत्पन्न हुए हों। (किन्ड्रेड, किन्समेन) २. कुल। वंश। ३. जाति।

**सगोत्रता**—स्त्री०[स०] सगोत्र होने की अवस्था या भाव। (किनशिप्)

**सगौती**—स्त्री०[देश०] खाने का मांस। गोश्त। कलिया।
†पु०=सगोत्र।

**सघन**—वि०[स० अव्य० स०] १. घना। गझिन। अविरल। गुंजान। 'विरल' का विपर्याय। जैसे—सघन वन। २ ठोस।

**सघनता**—स्त्री०[स० सघन+तल्—टाप्] सघन होने की अवस्था, गुण या भाव।

**सघला**†—वि०[स० सकल] [स्त्री० सघली] सब। सारा।

**सच**—वि०[सं० सत्य] १. जो यथार्थ हो। वास्तविक। २ झूठ रहित। सत्य।

**सचकी**—पु०[स० सचक+इनि] वह जो रथ चलाता हो। सारथी।

**सचन**—पु०[स० चन्+अच्—समास=स] सेवा करने की क्रिया या या भाव। सेवन।

**सचना**†—स०[स० सचयन]१. सचय करना। इकट्ठा करना। २ कार्य का संपादन करना। काम पूरा करना। ३ बनाना। रचना।
†अ०=सचरना।
†अ० १ संचित या एकत्र होना। उदा०—मालती मल्लि मलैज लवंगनि सेवाती सग समूह सची है।—देव। २ कार्य का संपादित या पूरा होना। उदा०—बहु कृत शोनित सों भरे, पितु तर्पणादि किया सची।—कबीर। ३ रचा जाना। बनना।

**सचनाधत्**—पुं० [स० सचन√अन् (रक्षा करना) + क्विप—तुक्] परमेश्वर जिसका भजन सब लोग करते हैं।

**सच-मुच**—अव्य०[हिं० सच+मुच (अनु०)] १ यथार्थत। ठीक ठीक। वास्तव में। वस्तुत। २ निश्चित रूप से। अवश्य।

**सचरना**—अ०[स० संचरण] १ किसी के ऊपर प्रविष्ट होकर संचरित होना। फैलना। २. किसी वर्ग या समाज में पहुँचकर लोगों में हेल-मेल बढ़ाना। उदा०—जा दिन तैं सचरे गोपिन मे, ताहि दिन तैं करत लगरैया।—सूर। ३ किसी चीज या बात का लोगों में प्रचलन या प्रचार होना। फैलना।

**सचराचर**—पुं०[स० द्व० स०] संसार की सब चर और अचर वस्तुएँ। स्थावर और जगम सभी वस्तुएँ।

**सचल**—वि०[स०] [भाव० सचलता]१ जो अचल न हो। चलता हुआ। जगम। २ जो एक से दूसरी जगह आ-जा सके। ३. जो बराबर एक जगह से दूसरी जगह जाता रहता हो। (मूर्विंग) जैसे—सचल पुस्तकालय, सचल निरीक्षण आदि। ४. जो स्थिर न रहे। चचल। ५. जगम।

**सचल-सचय**—पुं०[स० मध्यम० स०] साँचर नमक।

**सचा**†—पुं० =सखा।

**सचाई**†—स्त्री०=सच्चाई।

**सचान**—पु०[सं० सचान=श्येन] श्येन पक्षी। बाज।

**सचाना**†—स० [हिं० सच=सत्य] सच्चा कर दिखलाना। उदा०—झूठहि साचवै, कर कलम मचावै, अहो जुलुम मचावै ये अदालत के अमला।

**सचारना**†—स०[हिं० संचरना का सकर्मक रूप] सचारित करना। फैलाना।

**सचावट**†—स्त्री० [हिं० सच+आवट (प्रत्य०)] सच्चापन। सच्चाई। सत्यता।

**सचित**—वि०[सं० अव्य० स०] जिसे चिंता हो। फिकरमंद।

**सचिक्कण**—वि० [स० अव्य० स०] बहुत अधिक चिकना। जैसे—सचिक्कण केश।

**सचिक्कन**—वि०=सचिक्कण।

**सचित**—वि०[स० √चित् (ज्ञान करण)+क्विप्=स] जिसमें अथवा जिसे चित् अर्थात् ज्ञान या चेतना हो।

**सचित्त**—वि०[सं० अव्य० स०] जिसका ध्यान किसी एक ओर लगा हो।

**सचिव**—पु०[स०]१. मित्र। दोस्त। २. मंत्री या वजीर। ३. सहायक। मददगार। ४ आज-कल किसी बड़े अधिकारी या विभाग का वह व्यक्ति जो अभिलेख आदि सुरक्षित रखता हो और मुख्य रूप से पत्र-व्यवहार आदि की व्यवस्था करता हो। (सेक्रेटरी)

**विशेष**—प्राचीन भारत में, मंत्री और सचिव प्राय समानक शब्द माने जाते थे, परन्तु आज-कल सचिव से मंत्री का पद भिन्न होता है। मंत्री का काम मंत्रणा या परामर्श देना होता है परन्तु सचिव को ऐसा कोई अधिकार नहीं होता।

५. धतूरे का पेड़।

**सचिवता**—स्त्री०[स० सचिव+तल्—टाप्] सचिव होने की अवस्था, पद या भाव।

**सचिव-मंडल**—पुं०[स०]=मंत्रि-मंडल।

**सचिवाधिकार**—पुं०[स० सचिव+अधिकार] किसी राज्य के मंत्रियों अर्थात् सचिवों का शासन-काल। (मिनिस्टरी) जैसे—काग्रेस सचिवाधिकार से शासन-विधि मे अनेक प्रकार के परिवर्तन हुए है।

**सचिवालय**—पुं०[स०] वह स्थान जहाँ राज्य के प्रमुख विभागो के सचिवो और प्रमुख अधिकारियो के कार्यालय हों। (सेक्रेटेरिएट)

**सची**†—स्त्री०[सं० शची] अगर। अगुरु।

†स्त्री०=शची (इन्द्राणी)।

**सची-सुत**—पुं०[सं० शची-सुत]१. शची का पुत्र, जयत। २ श्री चैतन्य महाप्रभु।

**सचु**†—पुं०[?]१. प्रसन्नता। खुशी। २. सुख।

वि०=सच।

**सचेत**—वि०[सं० सचेतन]१. जिसे या जिसमें चेतना हो। चेतन-युक्त। सचेतन। २. समझदार। सयाना। ३. सजग। सावधान।

**सचेतक**—वि०[सं०] सचेत या सजग करनेवाला।

पुं०विधायिका, सभाओं, संसदों आदि में वह अधिकारी जिसका कर्तव्य सदस्यों को इस विषय मे सचेत कराना होता है कि अमुक प्रस्ताव या विषय पर मत देने के लिए आपकी उपस्थिति आवश्यक है। (व्हिप)

**सचेतन**—पुं०[स० अव्य० स०]१. ऐसा प्राणी जिसमे चेतना हो। विवेक-युक्त प्राणी। २. ऐसी वस्तु जो जड न हो। चेतन।

वि०१. चेतनायुक्त। चेतन। २. सजग। सावधान। ३. चतुर। होशियार।

**सचेता (तृ)**—वि०[सं० चित्+असन्—सह=स] समझदार।

†वि०=सचेत।

**सचेती**—स्त्री० [हिं० सचेत+ई (प्रत्य०)] सचेत होने की अवस्था, गुण या भाव।

**सचेष्ट**—वि०[स० अव्य० स०]१ जिसमें चेष्टा हो। २ जो चेष्टा या प्रयत्न कर रहा हो।

पुं० आम का पेड़।

**सचैयत**—स्त्री०[हिं० सच्च-ऐयत (प्रत्य०)]=सच्चाई।

**सच्चरित**—वि० [स० कर्म० स०] जिसका चरित्र अच्छा हो। सच्चरित्र। सदाचारी।

**सच्चा**—वि०[स० सत्य] [स्त्री० सच्ची]१. सच बोलनेवाला। जो कभी झूठ न बोलता हो। सत्यवादी। २. जिसमे किसी प्रकार का छल-कपट या झूठा व्यवहार न हो। अथवा जिसकी प्रामाणिकता, सत्यता आदि मे किसी प्रकार के अंतर या संदेह की संभावना हो। जैसे—(क) जबान का सच्चा अर्थात् सदा सत्य बोलनेवाला और अपने वचन का पालन करनेवाला। (ख)लंगोट का सच्चा अर्थात् जो परस्त्रीगामी न हो और पूर्ण ब्रह्मचारी हो। (ग) हाथ का सच्चा, जो कभी चोरी या बेईमानी न करता हो। ३. जिसमे कोई खोट या मेल न हो। खरा। विशुद्ध। जैसे—सच्चा सोना। ४. जितना या जैसा होना चाहिए उतना या वैसा। त्रुटि, दोष आदि से रहित। जैसे—सच्ची जडाई करना, सच्चा हाथ मारना। ५. जो नकली या बनावटी न हो, बल्कि असली या वास्तविक हो। जैसे—साडी पर सच्ची जरी का काम।

**सच्चाई**—स्त्री०[हिं० सच्चा+आई (प्रत्य०)] सच अर्थात् सत्य होने का गुण या भाव। सत्यता।

**सच्चापन**—पुं० [हिं० सच्चा+पन (प्रत्य०)] सच अर्थात् सत्य होने का गुण या भाव। सत्यता।

**सच्चाहट**—स्त्री०=सच्चाई। (क्व०)

**सच्चित्**—पु०[स०द्व० स०] सत् और चित् से युक्त। ब्रह्म।

**सच्चिदानंद**—पु०[सं० कर्म० स०] सत्, चित् और आनन्द से युक्त परमात्मा का एक नाम। ईश्वर। परमेश्वर।

**सच्चिन्मय**—वि०[स० सच्चित्-मयट्]१. सत् और चैतन्य स्वरूप। २. सत् और चैतन्य से युक्त।

**सच्ची टिपाई**—स्त्री० [हिं०] भारतीय मध्य-युगीन चित्र कला मे चित्र बनाने के समय पहले रूप-रेखा अंकित कर चुकने पर सेंक से होनेवाला अंकन।

**सच्छंद***—वि०=स्वच्छंद।

**सच्छ***—वि०=स्वच्छ।

**सच्छत**†—वि०[सं० क्षत+अत] जिसे क्षत लगा हो। घायल।

**सज्जाति**—स्त्री०[सं० सद्+शाति] सद् या उत्तम शांति। पूरी या विशुद्ध शांति।

**सज्जात्य**—वि०[सं० अव्य० स०]१. छायादार। २. सुन्दर रंगोंवाला। ३. चमकदार। ४. एक ही रंग का।

**सज्जी***—स्त्री०=साजी।

**सज्जील**—पु० [सं० कर्म० स०] सदाचार।
वि० अच्छे शीलवाला। शीलवान्।

**सज**—स्त्री०[स० सज्जा] [वि० सजीला] १. सजाने अथवा सजे हुए होने का गुण या भाव। सजावट। २. गठन या बनावट का ढग। (स्टाइल) जैसे—इमारत की सज मुसलमानी है। ३. शोभा। ४. सुन्दरता।
पु०[देश०] पियासाल नामक वृक्ष।

**सजग**—वि० [स० जागरण] १. सावधान। सचेत। सतर्क। २. चालाक। होशियार।

**सजड़ा**†—पु०=सहिजन (वृक्ष)।

**सजदार**—वि०[हिं० सज+फा० दार (प्रत्य०)] जिसकी सज या बनावट अच्छी हो। सुन्दर।

**सज-धज**—स्त्री० [हिं० सज+धज अनु०] बनाव-सिंगार। सजावट। जैसे—उसकी बरात बहुत सज-धज से निकली थी।

**सजन**—पुं०[स० सत्+जन=सज्जन] [स्त्री० सजनी]१ भला आदमी। सज्जन। सरीफ। २ स्त्री का पति। स्वामी। ३ प्रियतम या प्रिय के लिए शिष्ट सम्बोधन।
वि० [स०] लोगों से युक्त। जन-सहित।

**सजना**—स० [स० सज्जा] १ सज्जित करना। सजाना। २ शरीर पर कपड़े या हथियार आदि धारण करना। जैसे—सिपाहियों का ढाल, तलवार आदि से सजना। ३. कपड़े आदि पर साज टाँकना या लगाना। अ०† आभूषण, वस्त्रादि से सज्जित या अलंकृत होना। सजाया जाना।
**पद—सजना-बजना**=भली भाँति या बहुत सज्जित होना। २ सेना या सैनिकों का अस्त्र-शस्त्र आदि से युक्त होना। ३. उपयुक्त, भला या सुन्दर जान पड़ना। सुशोभित होना।
*पु०१.=साजन। २.=सहिजन।

**सजनी**—स्त्री०[हिं० सजन]१. सखी। सहेली। २. मिथिला मे गाये जानेवाले षट गमनी (दे०) नामक लोक-गीत का दूसरा नाम।

**सजय**—पुं०[स० ब० स०] एक प्रकार के यति।

**सज-धज**†—स्त्री०=सजधज।

**सजल**—वि० [सं०] [स्त्री० सजला]१. जल से युक्त या पूर्ण। जिसमे पानी हो। २. तरल पदार्थ से युक्त। ३. आँसुओ से युक्त। जैसे—सजल नेत्र। ४. जिसमें आब या चमक हो। चमकदार।

**सजला**†—वि०=सँसला।

**सजवना***—स०=सजाना।
†पु०=सजावट।

**सजवाई**—स्त्री०[हिं० सजना+वाई (प्रत्य०)]सजवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

**सजवाना**—स० [हिं० सजाना का प्रे० रूप] सजाने का काम किसी से कराना। किसी को कुछ सजाने में प्रवृत्त करना।

**सजा**—स्त्री०[फा० सजा]१. अपराध आदि के कारण अपराधी को दिया जानेवाला दंड। २. कारागार या जेल मे रखे जाने का दंड। कारावास। (इम्प्रिजनमेन्ट)

**सजाइ***—स्त्री०=सजा (दंड)।

**सजाई**—स्त्री०[स० सजाना+आई (प्रत्य०)]सजाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।
†स्त्री०=सजा (दंड)।

**सजागर**—वि०[स० अव्य० स०]१. जागता हुआ। २ सजग। होशियार।

**सजात**—वि०[स०]१. जो किसी के साथ उत्पन्न हुआ हो। २. जो अपने सम्बन्धियों से युक्त या उनके सहित हो। ३ जो उत्पत्ति, उद्गम अथवा आपेक्षिक स्थिति के विचार से एक प्रकार या वर्ग के हों। (होमोलोगस)

**सजाति**—वि०[स० ब० स०]१. जो जाति या वर्ग मे हो। २. (पदार्थ) जो एक ही प्रकार, प्रकृति या स्वरूप के हों।

**सजातीय**—वि०[स० कर्म० स० जाति+छ—ईय] एक ही जाति या जोड़ के (दो या अधिक)।

**सजात्य**—वि० [स० जाति+यत्] =सजातीय।

**सजान**—वि०[स० सज्ञान] १ जानकार। जाननेवाला। २ चतुर। होशियार।

**सजाना**—स०[स० सज्जा]१. चीजें ऐसे क्रम और ढग से रखना या लगाना कि वे आकर्षक और सुन्दर जान पड़ें। जैसे—आलमारी मे पुस्तकें सजाना। २ (व्यक्ति या स्थान) ऐसी चीजों से युक्त करना कि देखने मे भला और सुन्दर जान पड़े। अलकृत करना। किसी चीज की शोभा या सुन्दरता बढ़ाने के लिए उसमे और भी अच्छी चीजें मिलाना या लगाना। (डिकोरेशन)

**सजाय**—वि०[स० उपव्य० स०] जो अपनी जाया अर्थात् पत्नी के साथ उपस्थित या वर्तमान हो।
†स्त्री०=सजा (दंड)।

**सजा-याफ्ता**—वि०[फा० सजायाफ्त] जिसने दंडविधान के अनुसार दंड पाया हो। । जो सजा भोग चुका हो।

**सजायाब**—वि०[फा०]१ जो दंड पाने के योग्य हो। दंडनीय। २ जो कारागार का दंड भोग चुका हो। सजायाफ्ता।

**सजार, सजाह**—पु०[स० शल्य] शल्य।

**सजाल**—वि०[सं० उपव्य० स०] अयाल से युक्त।

**सजाव**—पु०[सं० सजाना] एक प्रकार का दही।
†पु०=सजावट।

**सजावट**—स्त्री०[हिं० सजाना] १ सजे हुए होने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—दुकान या मकान की सजावट। २. किसी चीज के आस-पास या इधर-उधर पड़नेवाले खाली स्थानों में ऐसी चीजें भरना या लगाना जिनसे उसकी शोभा या सौंदर्य बहुत बढ़ जाय। (डेकोरेशन) ३. शोभा।

**सजावन**—पुं०[हिं० सजाना]१. सजाने की क्रिया। अलकृत करना। मंडन। २. तैयार करना। प्रस्तुत करना।

**सजावल**—पुं०[तु० सजावुल]१. सरकारी कर उगाहनेवाला कर्मचारी।

तहसीलदार। २. राज-कर्मचारी। सरकारी नौकर। ३. सिपाहियों का जमादार।

**सजावली**—स्त्री०[हिं० सजावल] सजावल का पद या काम।

**सजावार**—वि०[फा०] जो दंड का भागी हो। जो सजा पाने के योग्य हो। दंडनीय।

**सजिज**—पु०=सहिजन।

**सजीउ**†—वि०=सजीव।

**सजीला**—वि०[हिं० सजना+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सजीली] १. सज-धज से या बनठनकर रहनेवाला। छैला। २. सुन्दर। आकर्षक। ३. जो बनावट के ढंग के विचार से बहुत अच्छा हो। सुन्दर और सुडौल। तरहदार। (स्टाइलिश)

**सजीव**—वि०[सं० अव्य० स०] १. जीवयुक्त। जिसमे प्राण हो। २ जिसमे जीवनी-शक्ति है। ३ जो देखने मे जीवयुक्त या जीवित सा जान पड़ता हो। ओज-पूर्ण। ४ तेज। फुरतीला।

पु० जीववारी। प्राणी।

**सजीवता**—स्त्री०[सं० सजीव+तल्—टाप्]सजीव होने की अवस्था, गुण या भाव। सजीवपन।

**सजीवन**—पु०[सं० संजीवन] सजीवनी नामक बूटी।

**सजीवन बूटी**—स्त्री०[ सं० सजीवनी+हिं० बूटी] १. रुदंती। रुद्रवती। २. दे० 'सजीवनी'।

**सजीवनी मंत्र**—पु०[ सं० सजीवन+मंत्र] १. वह कल्पित मत्र जिसके संबंध मे लोगों का विश्वास है कि मरे हुए मनुष्य या प्राणी को जिलाने की शक्ति रखता है। २. ऐसी मंत्रणा जिसमे कठिन काम सहज मे पूरा हो सकता हो।

**सजीवनमूर, सजीवनमूरि**†—स्त्री०=सजीवनी (बूटी)।

**सजुग**—वि०=सजग (सचेत)।

**सजुता**—स्त्री०[सं० संयुता] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक सगण, दो जगण और एक गुरु होता है। (सजजग)

**सजुत**—वि०=संयुत (संयुक्त)।

**सजरी**—स्त्री०[?] एक प्रकार की मीठी पूरी।

**सजोना**—स०[हिं० सजाना]१. सज्जित करना। शृंगार करना। सजाना। २. आवश्यक सामग्री एकत्र करके व्यवस्थित रूप से रखना। ३. दे० 'सँजोना'।

**सजोवल**†—वि०=सँजोइल।

**सज्ज**†—पुं०=साज।

स्त्री०१.=सज्जा। २.=सेज।

**सज्जक**—पु०[सं० सज्ज+कन्] सज्जा। सजावट।

वि० सज्जा या सजावट करनेवाला।

**सज्जद**—पुं०[सं०]१. =सज्जन। २.=सज्जा। ३.=साजन।

**सज्जता**—स्त्री०[सं० सज्ज+तल्—टाप्] सज्जा अर्थात् सजे हुए होने का भाव। सजावट।

**सज्जन**—पुं०[सं० कर्म० स०, सद् +जन्]१. भला आदमी। सत्पुरुष। शरीफ। २. अच्छे कुल का व्यक्ति। ३. प्रिय व्यक्ति। ४. पहरेदार। संतरी। ५. पक्षाशय का चाट। ६. दे० 'सज्जा'।

**सज्जनता**—स्त्री०[सं० सज्जन+तल्—टाप्] सज्जन होने की अवस्था, गुण या भाव।

**सज्जनताई**—स्त्री०=सज्जनता।

**सज्जा**—स्त्री०[सं० सज्ज-अच्—टाप्]१. सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। २ वेष-भूषा। ३. कोई काम सुन्दर रूप मे प्रस्तुत करने के लिए सभी आवश्यक उपकरण, साधन आदि एकत्र करके यथास्थान बैठाना या लगाना। ४. उक्त कार्य के लिए सभी आवश्यक और उपयोगी उपकरणो और साधनों का समूह। (ईक्विपमेन्ट, अंतिम दोनों अर्थों के लिए)

स्त्री०[स० शय्या]१. सोने की चारपाई। शय्या। २. श्राद्ध आदि के समय मृतक के उद्देश्य से दान की जानेवाली शय्या जिसके साथ ओढ़ाने, बिछाने आदि के कपडे भी रहते हैं।

वि० [स० सव्य] दाहिना (पश्चिम)।

**सज्जाकला**—स्त्री०[स०] चीजों, स्थानों आदि को अच्छी तरह सजाकर आकर्षक तथा मनोहर बनाने की कला या विद्या। (डेकोरेटिव आर्ट)

**सज्जाद**—वि०[अ०] निजदा करनेवाला। पूजक। उपासक।

**सज्जाद नशीन**—पुं० [अ० सज्जादः+फा० नशीन] मुसलमानों में वह पीर या फकीर जो गद्दी और तकिया लगाकर बैठता हो।

**सज्जादा**—पु०[अ० सज्जादः]१. बिछाने का वह कपड़ा जिसपर मुसलमान नमाज पढ़ते हैं। मुसल्ला। २. पीरों, फकीरों आदि की गद्दी। ३. आसन।

**सज्जित**—भू० कृ०[सं० √ सज्ज् (सजावट करना) +क्त] १ जिसकी खूब सजावट हुई हो। सजाया हुआ। अलकृत। आरास्ता। २. आवश्यक उपकरणो, साधनों, सामग्री आदि से युक्त। (इक्विपड) जैसे—सज्जित सेना।

**सज्जी**—स्त्री०[स० सर्जि, सर्जिका] मिट्टी की तरह का एक प्रकार का प्रसिद्ध क्षार जो सफेदी लिए हुए भूरे रग का होता है। (फुलर्स अर्थ)

**सज्जीखार**—पुं०=सज्जी।

**सज्जीबूटी**—स्त्री०[स० सजीवनी] क्षुप जाति की एक वनस्पति जिसकी शाखाएँ कोमल और पत्ते बहुत छोटे और तिकोने होते है। प्रायः इसी के डठलों और पत्तियों से मज्जीखार तैयार होता है।

**सज्जुता**—स्त्री०[स० संयुता] सजुता या सयुता नामक छद।

**सज्जे**—सर्व० [स० सर्व] सब।

अव्य० पूरी तरह से। सर्वत।

अव्य०[स० सव्य] दाहिनी ओर। (पश्चिम)

**सज्ञान**—वि०[सं० अव्य० स०] १. जिसे ज्ञान हो। ज्ञानवाला। २. समझदार। सयाना। ३. प्रौढ। वयस्क। बालिग। ४. सचेत। सावधान।

**सज्या**—स्त्री०१.=सज्जा। २.=शय्या।

**सज्ञ**—स्त्री०[सं० सज्जा]१. सजावट। २ तैयारी। (डिं०)

**सज्जू**—पु०[सं० सज्जा] सेना को सज्जित करने की क्रिया। फौज तैयार करना। (डिं०)

**सज्जनी**—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का छोटा पक्षी जिसकी पीठ काली, छाती सफेद और चोंच लम्बी होती है।

**सज्जिदार**—पुं०[भाव० सज्जिदारी]=साझीदार।

**सज्जिया**—वि०=साझीदार।

**सङ्ग्रह**—वि० १.=ग्राह्य। २.=सह्य।

**सट**—पुं० [स० √सट्+अच्] जटा।
अव्य० [अनु०] सट शब्द करते हुए।

**सटई**—स्त्री० [देश०] अनाज रखने का एक प्रकार का बरतन।

**सटक**—स्त्री० [अनु० सट से] १. सटकने अर्थात् धीरे से चपत होने या खिसकने की क्रिया। २. तंबाकू पीने का लंबा लचीला नैचा जो अंदर छल्लेदार तार देकर बनाया जाता है। ३ पतली लचीली छड़ी या डंडल।

**सटकन**—स्त्री० [हिं० सटकना] सटकने की क्रिया या भाव।

**सटकना**—अ० [अनु० सट से] धीरे से खिसक जाना। रफूचक्कर होना। चल देना। चंपत होना।
स० बालों में से अनाज निकालने के लिए उसे कूटने की क्रिया। कूटना। पीटना।

**सटकाना**—स० [अनु० सट से] १. छड़ी, कोड़े आदि से इस प्रकार मारना कि 'सट' शब्द हो। जैसे—कोड़ा सटकाना, बेंत सटकाना। २ सट-सट शब्द करते हुए कोई क्रिया करना।

**सटकार**—स्त्री० [अनु० सट] १ सटकाने की क्रिया या भाव। २ सटकाने से होनेवाला शब्द। ३ गौ, बैल आदि छड़ी से हाँकने की क्रिया। ४. दे० 'झटकार'।

**सटकारना**—स०—१.=सटकाना। २.=झटकारना।

**सटकारा**—वि० [अनु०] चिकना और लंबा (बाल)। उदा०—लसत लछारे सटकारे तेरे केस हैं।—सेनापति।

**सटकारी**—स्त्री० [अनु०] ऐसी पतली छड़ी जिसे तेजी से हिलाने पर सट शब्द हो।

**सटक्का**—पुं० [अनु० सट से] १. दौड़। २. झपट।
क्रि० प्र०—मारना।
३. दे० 'सटका'।

**सटना**—अ० [?] १ दो चीजों का इस प्रकार एक में मिलना जिसमें दोनों के पार्श्व एक दूसरे से लग जायँ। जैसे—दीवार से आलमारी सटना। २. चिपकना। ३. मैथुन या संभोग करना। ४. लाठियों आदि से मारपीट होना। (बाजारू)
संयो० क्रि०—जाना।

**सट-पट**—स्त्री० [अनु०] १. सिटपिटाने की क्रिया। चकपकाहट। २ शील। संकोच। ३. असमंजस या दुविधा की स्थिति। आगा-पीछा। ४. डर। भय। ५. घबराहट। उदा०—अरी खरी सट-पट परी बिधु आगै मृग हेरि।—बिहारी।

**सटपटाना**—अ० [अनु०] १. सटपट की ध्वनि होना। २. दे० 'सिट-पिटाना'।
स० सटपट शब्द उत्पन्न करना।

**सटपटी**—स्त्री० [अनु०] १. सटपटाने की क्रिया या भाव। २. सट-पट।

**सटर-पटर**—वि० [अनु०] १ छोटा-मोटा। तुच्छ। जैसे—सटर-पटर सामान। २. बहुत ही साधारण और सामान्य।
पुं० उलझन, झंझट या बखेड़े का काम।

**सड़-सड़**—अव्य० [अनु०] १. सट शब्द करते हुए। सटापट। २ झट-पट। तुरन्त। शीघ्र।

**सटा**—स्त्री० [सं० सट-टाप्] १. साधुओं आदि के सिर पर की जटा। २ घोड़े, शेर आदि के कंधों पर के बाल। अयाल। ३. ‍ऊँट के बाल। ४. बालों की चोटी। ५. चोटी। शिखर।

**सटाक**—पुं० [अनु०] सट शब्द।
**मुहा०—सटाक से**=सट या सटाक शब्द करते हुए।

**सटाकी**—स्त्री० [अनु०] चमड़े की बहु रस्सी या पटटी जो कुछ छड़ियों के सिरे पर बँधी रहती है।

**सटान**—स्त्री० [हिं० सटना+आन (प्रत्य०)] १. सटने की अवस्था या भाव। मिलान। २ वह स्थान जहाँ दो चीजें सटती हैं। सन्धि-स्थल।

**सटाना**—स० [हिं० सटना का स०] १ दो तलों, पार्श्वों आदि को इस प्रकार एक दूसरे के समीप ले जाना कि दोनों एक दूसरे को स्पर्श करने लगें। जैसे—(क) मेज को दीवार से सटा दो। (ख) खटिया को खटिया से सटाना। २. किसी लसीले पदार्थ की सहायता से एक चीज को दूसरी चीज पर चिपकाना। जैसे—दीवार पर इश्तहार सटाना। ३ पुरुष का परस्त्री या वेश्या से सम्बन्ध करवाना। (बाजारू)
४ लाठियों आदि से मार-पीट या लड़ाई करना। (गुंडे)

**सटाय**—वि० [देश०] १. दलालों की परिभाषा में उचित या नियत से कम। न्यून। २ निम्न कोटि का। घटिया। हलका।

**सटाल**—पुं० [स० सटा+लच्] शेर बबर। केसरी। सिंह।
वि० भरा हुआ।
†पुं०=स्टाल

**सटासट**—क्रि० वि० [अनु०] १ सटसट शब्द उत्पन्न करते हुए। जैसे—सटासट बेंत चलाना। २ बहुत जल्दी-जल्दी या फुरती। जैसे—सटासट काम निपटाना।

**सटि**—स्त्री० [स० सट+इन्] कबूर।

**सटियल**—वि० [देश० सटाय] घटिया। रद्दी।

**सटिया**—स्त्री० [हिं० सटना] १. सींने, नाँधों आदि की एक प्रकार की चूड़ी। २. माँग में सिन्दूर भरने का एक उपकरण। ३ दे० 'साटी'।

**सटी**—स्त्री० [सं० सलाटि+ङीप्] बनआदी। जंगली कबूर।

**सटीक**—वि० [स० अव्य० स०] (पुस्तक) जिसमें मूल के साथ टीका भी हो। टीका-सहित। व्याख्यासहित। जैसे—सटीक रामायण।
वि० [हिं० स+ठीक] १ बिलकुल ठीक। उपयुक्त।

**सटैया**†—वि० [देश० सटाय] १ कम गुण या मूल्यवाला। घटिया। निकम्मा। रद्दी।

**सटैल्ला**†—पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी।

**सटोरिया**—पुं० [हिं० सट्टा+ओरिया (प्रत्य०)] व्यक्ति जो सट्टा खेलने का शौकीन हो। सट्टेबाज।

**सट्ट**—पुं० [सं० सट्ट+अच्] दरवाजे के चौखटे में दोनों ओर की लकड़ियाँ। बाजू।
†पुं०=सट्टा।

**सट्टक**—पुं० [स० सट्ट+कन्] १. एक प्रकार का उपरूपक जिसमें अद्‌भुत रस की प्रधानता होती है। इसमें प्रवेशक और विष्कंभक नहीं होते। इसके अंक जवनिका कहलाते हैं। किसी समय में केवल प्राकृत भाषा में लिखे जाते थे। २. जीरा मिला हुआ मट्ठा।

**सट्टा**—पु० [सं० सार्थ या प्रा० सट्ठ, पु० हिं० साट] १. वह इकरारनामा जो दो पक्षों में कोई निश्चित काम करने या कुछ शर्तें पूरी करने के लिए होता है। इकरारनामा। जैसे—बाजेवालों को पेशगी देकर उनसे सट्टा लिखा लो। २. काश्तकारों से खेत की उपज के बँटवारे के सम्बन्ध में होनेवाला इकरारनामा। ३. साधारण व्यापार से भिन्न क्रय-विक्रय का एक कल्पित प्रकार जिसमें लाभ-हानि का निश्चय भाव के उतरने-चढ़ने के हिसाब से होता है, और इसी लिए जिसकी गिनती एक प्रकार के जूए में होती है। (स्पेक्यूलेशन)

स्त्री० [सं०] १. एक प्रकार का पक्षी। २. बाजा।

†पुं०=हाट (बाजार)।

**सट्टा-बट्टा**—पु० [हिं० सटना+अनु० बट्टा] १. उद्देश्य-सिद्धि के लिए की हुई पूर्तता-पूर्ण युक्ति। चालबाजी।

क्रि० प्र०—लड़ाना।

२ किसी प्रकार की अभिसन्धि के रूप में या दुष्ट उद्देश्य से किसी के साथ किया जानेवाला मेल-जोल।

क्रि० प्र०—भिड़ाना।—लड़ाना।

३ स्त्री और पुरुष का अनुचित और गुप्त संबंध।

**सट्टी**—स्त्री० [हिं० हाट या हट्टी] वह बाजार जिसमें एक ही मेल की बहुत सी चीजें लोग दूर दूर से लाकर बेचने हों। हाट। जैसे—तरकारी की सट्टी; पान की सट्टी।

**मुहा०—सट्टी करना**—सट्टी में से सामान खरीदना। **सट्टी मचाना**=सट्टी में जैसा शोर होता है वैसा शोर मचाना। **सट्टी लगाना**=बहुत सी चीजें इधर-उधर फैला देना।

**सट्टे**—अव्य० [अनु० सट से] १ दफा। बार। २ अवसर पर। मौके पर। जैसे—हर सट्टे यही कहते थे—पान खिलाओ। (केवल 'हर' के साथ प्रयुक्त)

**सट्टेबाज**—पुं० [हिं०] [भाव० सट्टेबाजी] वह जो सट्टे की तरह का व्यापार और भाव की तेजी-मन्दी के हिसाब से (बिना माल खरीदे-बेचे) लेन-देन करता हो। (स्पेक्यूलेटर)

**सट्ठा**—स्त्री० [सं०] २ एक तरह का पक्षी। २ एक तरह का बाजा।

**सठ**†—पुं०=शठ।

**सठाँ**†—स्त्री०=शठता।

**सठता**†—स्त्री०=शठता।

**सठमति**—वि० [सं० शठ+मति] दुष्ट प्रकृतिवाला। दुष्ट। उदा०—तजतु अठान न हठ परचौ सठमति, आठौ जाम।—बिहारी।

**सठियाना**—अ० [हिं० साठ=६०] [भाव० सठियाव] १ साठ वर्ष का बुड्ढा होना। २. मनुष्य का ६० वर्ष या इससे अधिक का हो जाने पर मानसिक शक्तियों के क्षीण हो जाने के कारण ठीक तरह से काम-धंधा करने या सोचने-समझने के योग्य न रह जाना।

**मुहा०—सठिया जाना**=ऐसी अवस्था में पहुँचना जब कि बुद्धि ठीक से काम करना छोड़ देती है।

**सठियाव**—पुं० [हिं० सठियाना+आव (प्रत्य०)] सठिया जाने या सठियाये हुए होने की अवस्था या भाव। वह अवस्था जिसमें मनुष्य ६० वर्ष या अधिक का हो जाने पर ठीक तरह से काम-धंधा करने या सोचने-समझने के योग्य नहीं रह जाता। (सिनिलिटी)



**सठौरी**†—स्त्री० [हिं० सीठी या साँठी] गेहूँ, जौ आदि के डंठलों का वह गठीला अंश जिसका भूसा नहीं होता और जो ओसाकर अलग कर दिया जाता है। गहरी। कूँटा। कूँटी।

**सठेरा**—पु० [हिं० साँठा] सन का वह डंठल जो सन निकाल लेने पर बच रहता है। सठा। सरई। सलई।

**सठोरना**—स० [हिं० बटोरना का अनु०; बटोरना-सठोरना] एकत्र या संचित करना।

**सठौरा**†—पु०=सीठौरा।

**सड्डी**†—पुं० [?] ऊँट। (राज०)

**सड़क**—स्त्री० [अ० शरक] १ वह कच्चा या पक्का मार्ग जिस पर गाड़ियाँ, टमटम, मोटरें आदि भी चलती हों। २ लाक्षणिक अर्थ में, पथ या मार्ग। जैसे—राम नाम स्वर्ग तक पहुँचाने की सड़क है।

**सड़क्का**†—पु० दे० 'सटक्का'।

**सड़न**—स्त्री० [हिं० सड़ना] १ सड़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। (डिकाम्पोजिशन) २ दे० 'घूयन'।

**सड़ना**—अ० [सं० शातन या सरण ?] १ किसी पदार्थ में ऐसा विकार होना जिससे उसके यौगिक तत्त्व या अंग अलग अलग होने लगें; उसमें से दुर्गंध आने लगे और वह काम के योग्य न रह जाय। जैसे—अनाज या फल सड़ना। २ लाक्षणिक अर्थ में, हीन अवस्था में पड़े रहना। जैसे—जेल में कैदियों का सड़ना। ३ जल मिले हुए पदार्थ में खमीर उठना या आना।

संयो० क्रि०—जाना।

४ बहुत ही कष्ट या बुरी दशा में पड़े-पड़े समय बिताना। जैसे—बरसों उसे जेल में सड़ना पड़ा।

**पद—सड़ी गरमी**=प्रायः वर्षा ऋतु में होनेवाली वह गरमी जिसमें उमस बहुत अधिक हो।

† अ० जलना। (पश्चिम)

**सड़सठ**—वि० [हिं० सड (सात का रूप)+साठ] जो गिनती में साठ से सात अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६७।

**सड़सी**†—स्त्री०=सँडसी।

**सड़ा**—पुं० [हिं० सड़ना] कुछ चीजों को सड़ाकर बनाया हुआ वह घोल जो गौओं को बच्चा होने के समय पिलाते हैं।

**सड़ाक**—पु० [अनु० सड़ से] कोड़े आदि की फटकार की आवाज, जो प्रायः सड़ के समान होती है।

**पद—सड़ाक से**=बहुत जल्दी।

**सड़ान**—स्त्री० [हिं० सड़ना] सड़ने की क्रिया या भाव। सड़न।

**सड़ाना**—स० [हिं० सड़ना का स० रूप] १ किसी वस्तु को सड़ने में प्रवृत्त करना। किसी पदार्थ में ऐसा विकार उत्पन्न करना कि उसके अवयव गलने लगें और उसमें से दुर्गंध आने लगे। जैसे—सब आम तुमने रखे-रखे सड़ा डाले।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।

२. बहुत अधिक कष्ट या दुर्दशा में इस प्रकार रखना कि कोई उपयोग न हो सके। जैसे—किसी को जेल में रखकर सड़ाना।

**सड़ायँध**—स्त्री० [हिं० सड़ना+गंध] सड़ी हुई चीज से निकलनेवाली दूषित उग्र गंध। सड़ने से उठनेवाली बदबू।

**सड़ाव**—पुं० [हिं० सड़ना+आव (प्रत्य०)] १. सड़ने की क्रिया या भाव। २ सड़ने के फलस्वरूप होनेवाला विकृत रूप या स्थिति।

**सड़ासड़**—अव्य० [अनु० सड़ से] सड़ शब्द के साथ। जिसमे सड़ शब्द हो। जैसे—सड़ासड़ कोड़े या बेंत लगाना।

**सड़ियल**—वि० [हिं० सड़ना+इयल (प्रत्य०)] १. सडा या गला हुआ। २. बहुत ही निकम्मा, निम्न कोटि का या रद्दी। ३. (व्यक्ति) जो जला-भुना उत्तर देता हो।

**तगगार**†—पुं०=शृंगार। (डिं०)

**सत्**—वि ० [सं०√अस् (होना)+शतृ-अलोप] १ सच। सत्य। २ सज्जन। साधु। ३. धीर। ४ स्थायी। ५. पडित। विद्वान्। ६ पूज्य। मान्य। ७ प्रशस्त। ८. पवित्र। शुद्ध। ९ उत्तम। श्रेष्ठ।

पुं० १ ब्रह्मा। २ माध्व सप्रदाय का एक नाम।

**सत**—पुं० [स० सत्] सत्यता-पूर्ण धर्म।

**मुहा०—सत करना या सत पर चढ़ना**=पति का मृत शरीर लेकर पत्नी का चिता पर बैठना और उसके साथ सती होना। उदा०—(क) मूवाँ पीछे यत करे, जीवत क्यू न कराइ।—कबीर। (ख) जब सती सत पर चढे तब पान खाना रस्म है। **सत पर रहना**—(क) सत्य धर्म का पालन करना। (ख) स्त्री का पतिव्रता और साध्वी होना।

पुं० [स० सत्य] १. किसी चीज मे से निकला हुआ सार भाग। तत्त्व। २. जीवनी शक्ति।

वि० १ सत्यतापूर्ण। जैसे—सतगुरु, सतनाम। २ अच्छा। भला। जैसे—सत भाय। ३ शत। सौ। जैसे—सतदल।

वि० 'सात' (सख्या) का सक्षिप्त रूप (यौ० के आरंभ मे, जैसे—सतकोना, सतनजा, सतपदी, सतसई आदि)।

**सतकार**†—पुं०=सत्कार।

**सतकारना***—स० [सं० सत्कार+हिं० ना (प्रत्य०)] सत्कार या सम्मान करना। इज्जत करना।

**सत-कोना**—वि० [हिं० सात+कोना] सात कोनोंवाला।

**सत-खंडा**—वि० [हिं०सात+खड] सात खंडों या मजिलोंवाला। (मकान या महल)

**सत-पँतिया**—स्त्री० [हिं० सात+पाँत] एक प्रकार की बनस्पति, जिसकी तरकारी बनाई जाती है।

**सत-गजरा**—पुं० दे० 'सतनजा'। (बुन्देल०) उदा०—सतगजरा की लोंची रोटी, मिरच हरीरी मेवा।—लोकगीत।

**सत-गुरु**—पुं० [हिं० सत=सच्चा+गुरु] १. अच्छा गुरु। २. ईश्वर। परमात्मा।

**सतजीत**†—पुं०=सत्यजित्।

**सत-जुग**—पुं०=सत्य युग।

**सतत**—अव्य० [सं०] १. निरन्तर। बराबर। लगातार। २. सदा। हमेशा।

वि० [भाव० ततित] निरन्तर चलता रहनेवाला। (परपैचुअल) जैसे—सतत उत्तरोत्तरता या अनुक्रम। (परपैचुअल सक्सेशन)

**सततक**—वि० [सं०] दिन मे दो बार आने या होनेवाला। जैसे—सततक ज्वर।

**सततग**—वि० [स०] वह जो सदा चलता रहता हो। निरतर गतिशील।

पुं० वायु। हवा।

**सतत-ज्वर**—पुं० [स०] ऐसा ज्वर जो दिन मे दो बार आए, या कभी दिन मे एक बार और फिर रात को भी एक बार आए। द्विकालिक विषम ज्वर।

**सतत्व**—पुं० [सं० अव्य० स०] स्वभाव। प्रकृति।

**सत-दाँता**—वि० [हिं० सात+दाँत] (पशु) जिसके सात दाँत हो।

**सत-दल**†—वि०, पुं०=शत-दल।

**सत-व्रत**†—पुं०=शतपृत (ब्रह्मा)।

**सतनजा**—पुं० [हिं० सात+अनाज] सात भिन्न प्रकार के अनाजो का मिश्रित रूप। वह मिश्रण जिसमें सात भिन्न-भिन्न प्रकार के अनाज हो।

वि० अनेक प्रकार के तत्त्वों, पदार्थों आदि से मिल-जुल कर बना हुआ।

**सतनी**†—स्त्री० [स० सप्तपर्णा] १ सप्तपर्ण वृक्ष। सतिवन। छतिवन। २ एक प्रकार का बडा वृक्ष जिसकी लकडी से सन्दूक आदि बनते हैं।

**सतनू**—वि० [सं० अव्य० स०] तन या शरीर से युक्त। शरीरधारी।

**सत-पतिया**—वि० स्त्री० [हिं० सात+पति] १. (स्त्री) जिसने सात पति किये हो। २ दुश्चरित्रा। पुश्चली।

वि० सात पत्तियोवाला (या वाली)।

†स्त्री०=सप्तपतिया।

**सतपदी**—स्त्री०=सप्तपदी।

**सत-परवाँ**—पुं० [स० शतपर्वा] १. शत पर्व्वा। बाँस। २. ऊख। गन्ना।

**सत-पात**†—पुं० [स० शतपत्र] शतपत्र। कमल।

**सत-पुतिया**—स्त्री० [स०सप्तपुत्रिका] एक प्रकार की तरोई जिसमे प्राय पाँच या सात फलियाँ एक साथ गुच्छे के रूप मे लगती हैं।

**सत-पुरिया**—स्त्री० [?] एक प्रकार की जगली मधुमक्खी।

**सतफल**—पुं० [स० शतफल] घुँघची।

**सतफेरा**—पुं० [हिं० सात+फेरा] विवाह के समय होनेवाला सप्तपदी नामक कर्म।

**सतबरगा**†—पुं०=सदबरग (पौधा)।

**सतबरगा**†—पुं० [सं० शतपर्व=बाँस] एक प्रकार का वृक्ष जिसके रेशो से नैपाली कागज बनाया जाता है।

**सतभइया**†—वि० स्त्री० [हिं० सात+भइया] १. जो सात भाई हों। २ जिसके सात भाई हो।

स्त्री० पँगिया मैना।

**सत-भावँ**—अव्य० [सं० सद्भाव] अच्छे भाव से।

**सत-भाव***—पुं०=सद्भाव।

**सतभाव**—पुं० [सं० सद्भाव] १. सद्भाव। अच्छा भाव। २. सरलता। सीधापन। ३. सचाई। सत्यता।

**सतभिखा**†—स्त्री०=शतभिषा (नक्षत्र)।

**सतमँगरी**—स्त्री० [सं० सप्त ग्रामण] सप्तपदी। (दे०)

सतम*—वि०=सप्तम (सातवाँ)।

सतमख—पुं० [सं० शतमख] इंद्र। (वि०)

सत-माय†—स्त्री० [हिं० सौत+माँ] सौतेली माँ।

सतमासा—वि० [हिं० सात+मास] [स्त्री० सतमासी] (शिशु या बालक) जो गर्भ में सात ही महीने रहने के उपरान्त जनमा हो, नौ महीने अर्थात् पूरी अवधि तक न रहा हो।

पु० एक रसम जो गर्भाधान के सातवें महीने में होती है।

सतमूली—स्त्री०=शतमूली।

सत-युग—पुं० [सं० सत्य युग] १. सत्य युग। २ ऐसा समय जब कि लोग सब प्रकार से सुखी, सच्चे और सदाचारी हों।

सतयुगी—वि० [हिं० सत-युग] १ सत-युग के समय का। २. बहुत पुराना। ३. बहुत ही सच्चा, सात्विक या सीधा।

सत-रंग—वि०=सत-रंगा।

सतरंगा—वि० [हिं० सात+सं० रंग] [स्त्री० सत-रंगी] जिसमें सात रंग हों। सात रंगोंवाला। जैसे—सतरंगा साफा, सतरंगी साड़ी।

पु० इन्द्र-धनुष।

सतरंज†—स्त्री०=शतरंज।

सतरंजी—स्त्री०=शतरंजी।

सतर—पुं० [अ०] १. छिपाव। २. मनुष्य का वह अंग जो ढका रखा जाता है और जिसके न ढके रहने पर उसे लज्जा आती है। गुह्य इंद्रिय।

पद—बे-सतर=(क) नंगा। नग्न। (ख) बुरी तरह से अपमानित किया हुआ।

३ आड़। ओट। परदा।

स्त्री० [अ०] १. लकीर। रेखा।

क्रि० प्र०—खींचना।

२. अवली। कतार। पंक्ति।

वि० १. टेढ़ा। बंका। २. कुपित। क्रुद्ध।

†अव्य० [सं० सत्वर] जल्दी या तेजी से।

सतरकी†—स्त्री०=सतड़ी (मृतक की क्रिया)।

सतराई*—स्त्री० [स० शत्रु+हिं० आई (प्रत्य०)] दुश्मनी। शत्रुता।

सतराना—अ० [हिं० सतरा या सं० सतर्जन] १. क्रोध करना। कोप करना। २. कुढ़ना। चिढ़ना।

सयो० क्रि०—जाना।

३. चोचला, दुलार या नखरा दिखाते हुए धृष्टता-पूर्ण आचरण करना।

स० १. क्रोध चढ़ाना। २. चिढ़ाना।

सतराहट†—स्त्री० [हिं० सतराना+हट (प्रत्य०)] सतराने की अवस्था, क्रिया या भाव।

सतरी—स्त्री० [सं० सर्पवल्ली] सर्पवल्ली नामक ओषधि।

सतरु†—पुं०=शत्रु।

सतरौंहाँ†—वि० [हिं० सतराना] [स्त्री० सतरौंही] १. कुपित। कोपयुक्त। २. सतरानेवाला। सतराहट से युक्त। (फलतः झुकने, चिढ़ने या रूठनेवाला)

सतरौंहाँ†—अव्य० [हिं० सतराना] सतराते हुए। सतराहट लिये हुए।

सतर्क—वि० [सं०] [भाव० सतर्कता] १. जो तर्क करने में कुशल हो। २. (व्यक्ति) जो अपनी तथा दूसरों की आवश्यकताओं, विचारों, भावनाओं का पूरा-पूरा ध्यान रखता हो। (कानसिडरेट) ३. जो दूसरों के व्यापारों, कार्यों, आदि की थाह पहले से लगा या अनुमान कर लेता हो और इसी लिए चौकन्ना रहता हो। सावधान।

सतर्कता—स्त्री० [स० सतर्क+तल्-टाप्] १. सतर्क होने की अवस्था, गुण या भाव। २. सावधानी। होशियारी।

सतर्पना*—स० [स० संतर्पण] भली-भाँति तृप्त या संतुष्ट करना।

सतर्ष—वि० [स० अव्य० स०] तृषित। प्यासा।

सतलज—स्त्री० [स० शतद्रु] पंजाब की पाँच नदियों में से एक। शतद्रु नदी।

सत-लड़ा—वि० [हिं० सात+लड़] [स्त्री० सतलड़ी] सात लड़ोंवाला। जैसे—सतलड़ा हार।

पु० [स्त्री० अल्पा० सतलड़ी] सात लड़ियोंवाला बड़ा हार।

सतवंती†—स्त्री० [स० सत्यवती] पतिव्रता या सती और साध्वी स्त्री।

सतवाँसा†—वि० पुं०=सतमासा।

सतवार —वि०[स० सत्] सत् या धर्म पर होनेवाला। सदाचारी और धर्मनिष्ठ।

सतवारा†—पु० [हिं० सात+वार] सात दिनों का समूह। सप्ताह।

सतसंग†—पु०=सत्संग।

सतसंगी†—स्त्री०=सत्संग।

सतसंगी†—वि०=सत्संगी।

सतसई†—स्त्री० [स० सप्तशती] वह ग्रंथ जिसमें सात सौ पद्य हों। सात सौ पद्यों का समूह या संग्रह। सप्तशती। जैसे—बिहारी-सतसई।

सतसठ†—वि०=सड़सठ।

सतसन—पु० [देश०] शीशम का पेड़।

सतह—स्त्री० [अ०] [वि० सतही] १. किसी वस्तु का ऊपरी भाग या विस्तार। १. बाहर या ऊपर का फैलाव। तल। (लेविल) जैसे—जमीन या समुद्र की सतह। २. रेखागणित में, वह विस्तार जिसमें लम्बाई-चौड़ाई तो हो पर मोटाई न हो।

सतह्त्तर—वि०[सं० सप्त सप्तति; प्रा० सत्तसत्तरि; प्रा० सत्तहत्तरि] जो गिनती में सत्तर से सात अधिक हो।

पु० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७७।

सतही—वि० [हिं० सतह] १. सतह या ऊपरी स्तर पर होनेवाला। २. ऊपरी। दिखौआ।

सतांग—पुं०=शतांग (रथ)।

सतांनंद—पुं०[सं० ब० स०] गौतम ऋषि के पुत्र, जो राजा जनक के पुरोहित थे।

सताना—स० [सं० संतापन, प्रा० संतावन] १. संतप्त करना। २. मानसिक क्लेश पहुँचाकर परेशान करना। ३ तंग या परेशान करना।

सतार—पुं० [सं० अव्य० स०] जैनों के अनुसार ग्यारहवाँ स्वर्ग।

सतार—वि० १. तारकों या तारों से युक्त। उदा०—चुनरी स्याम सतार नभ, मुख ससि के अनुहारि।—बिहारी। २. जिसमें तारे टँके, बने या लगे हुए हों।

**सप्तक**—पु० [सं० अव्य० सं०] एक रोग जिस मे शरीर पर लाल और काली फुंसियाँ निकलती हैं ।

**सप्तक**† —पु०=सप्तक ।

**सप्तालु**—वि० [हि० सप्तालू] सप्तालू (फल) की तरह का हलका लाल । (किन्नन)

पु० उक्त प्रकार का रंग जो गुलनारी से हलका होता है ।

**सप्तालू**—पुं० [सं० सप्तालूक मि० फा० शफतालू] १. एक प्रकार का पेड़ जिसके गोल फल खाये जाते हैं । २. उक्त पेड़ का फल । आड़ू । शफतालू ।

**सप्तावना**† —स०=सताना ।

**सप्तावर**—स्त्री० [सं० शतावरी] एक प्रकार का झाड़दार बेल जिसकी जड़ और बीज औषध के काम आते है । शतमूली । नारायणी ।

**सप्तासी**—वि०, पु०=सत्तासी ।

**सप्ति**† —पुं० दे० 'सप्त' ।

† वि०=सप्त ।

† स्त्री०=सप्ती ।

**सप्तिपुत्र**† —पुं०=सप्तपुत्र ।

**सप्तिमाएँ**† —अव्य०=सप्तमाएँ ।

**सप्तिया**† —वि०=सप्तीला ।

† पु०=सप्तिया ।

**सप्तिवन**—पु० [स० सप्तपर्ण; प्रा० सत्तवण्ण] एक सदाबहार बड़ा पेड़ जिसकी छाल दवा के काम आती है । सप्तपर्णी । छतिवन ।

**सप्ती**—वि० स्त्री० [स०] १. अपने पति के अतिरिक्त और किसी पुरुष का ध्यान मन में न लानेवाली । साध्वी । पतिव्रता । २. अपने पति के मरने पर उसके साथ ही जल या मर जानेवाली । सहगामिनी ।

क्रि० प्र०—होना ।

स्त्री० १. दक्ष प्रजापति की कन्या जो शिव को ब्याही थी । २. विश्वामित्र की पत्नी का नाम । ३ पतिव्रता स्त्री । साध्वी । ४. वह स्त्री जो अपने पति के शव के साथ चिता मे जले । सहगामिनी स्त्री ।

**मुहा०—(पति के साथ) सती होना**=मरे हुए पति के शरीर के साथ चिता मे जल मरना । सहगमन करना । **(किसी काम या बात के लिए) सती होना**=बहुत अधिक कष्ट झेलते हुए मर मिटना ।

६. मादा पशु । ७. शुधित या सोंधी मिट्टी । ७. एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण और एक गुरु होता है ।

पु० [सं० सत्] १ वह जो सत्यधर्म का पालन करता हो । २. सात्विक वृत्तियोंवाला साधु या महात्मा । जैसे—बड़े-बड़े जोगी, जती और सती भी उसकी महिमा का पार नहीं पा सके ।

† स्त्री० १. —शक्ती । २. =शक्ति ।

**सती-बौरा**—पुं० [स० सती+हि० चौरा] वह वेदी या छोटा चबूतरा जो किसी स्त्री के सती होने के स्थान पर उसके स्मारक मे बनाया जाता है ।

**सतीत्व**—पु० [सं० सती+त्व] सती होने की अवस्था, धर्म या भाव । पातिव्रत्य ।

**मुहा०—(किसी स्त्री का) सतीत्व बिगाड़ना या नष्ट करना**=किसी स्त्री से बलात्कार करना ।

**सतीत्व-हरण**—पु० [स० ष० त०] किसी सच्चरित्रा स्त्री के साथ बलात्कार करके उसका सतीत्व बिगाड़ना ।

**सतीदोषोन्माद**—पु० [स० मध्यम० स०] स्त्रियो का वह उन्माद रोग जिसका प्रकोप किसी सतीचौरे को अपवित्र करने के कारण माना जाता है ।

**सतीन**—पु० [स० सती√नी (ढोना)+ड] १. एक प्रकार का मटर । २ अपराजिता या कोयल नाम की लता ।

**सतीपन**† —पु०=सतीत्व ।

**सतीर्थ**—पु० [स० ब० स०] १ एक ही आचार्य से पढ़नेवाले विद्यार्थी या ब्रह्मचारी । सहाध्यायी । २ सहपाठी ।

**सतील**—पु० [स० अव्य० स०] १ बाँस । २. अपराजिता । ३ वायु । हवा ।

**सतुआ**† —पु०=सत्तू ।

**सतुआन**† —स्त्री०=सतुआ संक्राति ।

**सतुआ संक्रांति**—स्त्री० [हि० सतुआ+स० संक्रान्ति] मेघ की संक्राति जो प्राय वैशाख में पड़ती है । इस दिन लोग सत्तू दान करते और खाते है ।

**सतुआ सोंठ**—स्त्री० [हि० सतुआ+सोंठ] एक प्रकार की सोंठ ।

**सतुला**—स्त्री० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का जाँघिया जो घुटना तक होता है ।

**सतून**—पु० [स० स्थाणु से फा० सुतून] स्तभ । खभा ।

**सतूना**—पु० [हि० सतून=खभा] बाज की एक प्रकार की झपट जिसमे वह पहले शिकार के ठीक ऊपर उड़ जाता है और फिर एक-बारगी नीचे की ओर उस पर टूट पड़ता है ।

**सतेरक**—पु० [स० सतेर+कन्] ऋतु । मौसम ।

**सतेरी**† —स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मधुमक्खी ।

**सतोखना*** —स०[स० सतोषण] १. सतुष्ट करना । प्रसन्न करना । २ समझा-बुझाकर सतोष या ढाढस दिलाना ।

**सतोगुण**—पु०=सत्त्वगुण ।

**सतोगुणी**—वि०=सत्त्वगुणी ।

**सतोदर**† —पु०=शतोदर (शिव) ।

**सतौला**—पु० [हि० सात+औला (प्रत्य०)] प्रसूता स्त्री का वह विधिवत् स्नान जो प्रसव के सातवें दिन होता है ।

**सतौसर**—वि० [स० सप्तसृक्] सात लड़ो का । सतलड़ा ।

**सत्कंद**—पु० [स० कर्म० स०] एक प्रकार का कदंब ।

**सत्कर्म**—पु० [स० ष० त०, कर्म० स०] [वि० सत्कर्मणीय, भू० कृ० सत्कृत] १. सत्कार करना । आदर करना । २ मृतक की अन्त्येष्टि-क्रिया करना ।

**सत्कर्मणीय**—वि० [स० सत्√कृ (करना)+अनीयर, कर्म० स०] जिसका सत्कार करना आवश्यक और उचित हो । सत्कार का पात्र । आदरणीय । पूज्य ।

**सत्कर्ता (र्तृ)**—वि० [स० कर्म० स०] [स्त्री० सत्कर्त्री] १. अच्छा काम करने वाला । सत्कर्म करनेवाला । २. आदर-सत्कार करनेवाला । पु० आज-कल वह व्यक्ति जो आगत और निमंत्रित व्यक्तियों का किसी रूप में सत्कार करता हो ।

**सत्कर्म**—पु० [सं० कर्म० स०, सत्व मंत्] १ अच्छा कर्म। अच्छा काम। २ धर्म या पुण्य का काम।

**सत्कर्मा (र्मन्)**—वि० [सं० ब० स०] =सत्कर्म करनेवाला।

**सत्कला**—स्त्री० [स० कर्म० स०] =ललित कला।

**सत्काय दृष्टि**—स्त्री० [स०] मृत्यु के उपरांत आत्मा, लिंग-शरीर आदि के बने रहने का सिद्धान्त जो बौद्धों की दृष्टि मे मिथ्या है।

**सत्कार**—पु० [स०] १ अभ्यागत, अतिथि आदि की की जानेवाली खातिरदारी तथा सेवा। २. धन आदि भेंट देकर किसी का किया जानेवाला आदर-सम्मान या सेवा।

**सत्कारक**—वि० [स०] सत्कार करनेवाला। सत्कर्ता।

**सत्कार्य**—वि० [स० सत्√कृ(करना)+णत्] १. जिसका सत्कार होना आवश्यक या उचित हो। सत्कार का पात्र। २. (मृतक) जिसकी अन्त्येष्टि क्रिया होने को हो।

पु० उत्तम कार्य। अच्छा काम।

**सत्कार्यवाद**—पु० [स० मध्यम० स०] १. साख्य का यह दार्शनिक सिद्धान्त कि बिना कारण के कार्य की उत्पत्ति नही हो सकती। फलतः यह सिद्धान्त कि इस जगत की उत्पत्ति शून्य से नही किसी मूल सत्ता से है। (यह सिद्धान्त बौद्धों के शून्यवाद के विपरीत है।) २. दे० 'परिणामवाद'।

**सत्कीर्ति**—स्त्री० [स० कर्म० स०] उत्तम कीर्ति। यश। नेकनामी।

**सत्कुल**—पु० [स० कर्म० स०] उत्तम कुल। अच्छा या बडा खानदान।

वि० जो अच्छे कुल मे उत्पन्न हुआ हो।

**सत्कृत**—वि० [स० सत्√कृ (करना)+क्त] १. अच्छी तरह किया हुआ। २. जिसका सत्कार किया गया हो। ३ सजाया हुआ। अलकृत।

पु० १. सत्कार। २. सत्कर्म।

**सत्कृति**—स्त्री० [स०] अच्छी या उत्तम कृति।

वि० सत्कर्मा।

**सत्क्रिया**—स्त्री० [स० कर्म० स०] १. धर्म का काम। सत्कर्म। २ आदर-सत्कार। ३ किसी कार्य का आयोजन या तैयारी।

**सत्त**—पुं० [सं० सत्व] १. किसी पदार्थ का सार भाग। असली तत्व। रस। जैसे—गेहूँ का सत्त; मुलेठी का सत्त। २ मुख्य उपयोगी तत्व। ३. बल। शक्ति।

†वि०=सत्य।

†पु० १. =सत्य। २. =सतीत्व।

**सत्तम**—वि० [स० सत्+तमप्] १. सबसे अधिक सत् या अच्छा। २. सर्वश्रेष्ठ। ३. परम पूज्य।

**सत्तर**—वि० [सं० सप्तति, प्रा० सत्तरि] जो गिनती में साठ से दस अधिक हो।

पुं० उक्त की बोधक सख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७०।

**सत्तरह**—वि० [सं० सप्तदश, प्रा० सत्तरह] जो गिनती मे दस से सात अधिक हो।

पुं० उक्त की बोधक संख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है—१७।

**सत्तांतरण**—पुं० [सं० सत्ता+अंतरण] [भू० कृ० सत्तांतरित] १. सत्ता का एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना। २. सत्ताधारी का सत्ता दूसरे को सौंपना। (संसेसन, उक्त दोनों अर्थों मे)

**सत्तांतरित**—भू० कृ० [सं० सत्तांतरण] (देश या राज्य) जिसके शासन की सत्ता दूसरे को सौप दी गई हो। (सीडेड)

**सत्ता**—स्त्री० [स० सत्+तल्-टाप्] १ मूर्त रूप मे वर्तमान रहने या होने की अवस्था, गुण या भाव। अस्तित्व। हस्ती। 'अभाव' का विपर्याय। (बीइंग) २ शक्ति। सामर्थ्य। ३ वह अधिकार, शक्ति या सामर्थ्य जो किसी प्रकार का उपभोग करती हुई और अपनी सक्षमता दिखलाती हुई काम करती हो। (पावर) जैसे—राज सत्ता।

**मुहा०—(किसी पर) सत्ता चलाना**=अपना अधिकार दिखलाते हुए और वश मे रखते हुए उपभोग, व्यवहार, शासन आदि करना। ४. राजनीति-शास्त्र मे, किसी विशिष्ट राष्ट्र का वह अधिकार या शक्ति जिससे बढकर और कोई अधिकार या शक्ति न हो। (सावरेंटी)

पु० [हिं० सात] ताश या गंजीफे का वह पत्ता जिसमे सात बूटियाँ हों।

**सत्ताईस**—वि० [स० सप्त-विंशति, प्रा० सत्ताईस] जो गिनती मे बीस से सात अधिक हो।

पु० उक्त की बोधक सख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है—२७।

**सत्ताधारी (रिन्)**—वि० [स० सत्ता√धृ (रखना)+णिनि] जिसे किसी प्रकार की सत्ता प्राप्त हो। सत्तावान। जैसे—सत्ताधारी राज्य।

पु० सत्ताप्राप्त अधिकारी। प्राधिकारी। (वेले)

**सत्तानवे**—वि० [सं० सप्तनवति, प्रा० सत्तानव] जो गिनती में सौ से तीन कम हो।

पु० उक्त की बोधक सख्या जो अंको मे इस प्रकार लिखी जाती है—९७।

**सत्ताना**†—पु०=सत्यानाश।

**सत्तानाशी**—वि०=सत्यानाशी।

**सत्तार**—वि० [अ०] दीवो आदि पर परदा डालनेवाला।

पुं० ईश्वर का एक नाम।

**सत्तारूढ़**—वि० [स० सत्ता+आरूढ़] जो सत्ता प्राप्त कर उसका उपयोग और पालन कर रहा हो।

**सत्तावन**—वि० [स० सप्तपचाशत, प्रा० सत्तावन्न] जो गिनती मे पचास से सात अधिक हो।

पु० उक्त की बोधक सख्या जो अंको मे इस प्रकार लिखी जाती है—५७।

**सत्तावाद**—पु० [स०] [वि० सत्तावादी] यह मत या सिद्धान्त कि किसी अधिनायक या अधिनायक वर्ग के तत्र या शासन की सभी बातें बिना किसी विरोध के मानी जानी चाहिए। (ऑथॉरिटेरियनिज्म)

**सत्ताशास्त्र**—पु०[सं० मध्यम० स०] पाश्चात्य दर्शन की वह शाखा जिसमे मूल या पारमार्थिक सत्ता का विवेचन होता है।

**सत्ता-सामान्यत्व**—पु० [स० ब० स०, त्व] न्याय मे, वह स्थिति जब अनेक द्रव्यो, रूपों आदि मे एक ही तत्व सामान्य रूप से पाया जाता हो। जैसे—कुडल, कंकण आदि अनेक गहनो मे 'सोना' नामक द्रव्य सामान्य रूप से पाया जाता है।

**सत्तासी**—वि० [स० सप्ताशीति, प्रा० सत्तासी] जो गिनती मे अस्सी से सात अधिक हो।

पू० उक्त की बोधक संख्या जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है—८७।

**सत्तू**—पुं० [सं० सक्तुज, प्रा० सत्तुअ] भुने हुए जौ, चने आदि का आटा या चूर्ण।

**सत्त्व**—पु०[ सं०] १. सत्ता से युक्त होने की अवस्था या भाव। अस्तित्व। हस्ती। २ किसी वस्तु में से निकाला हुआ मूल और सार भाग। तत्त्व। सत्त। (एक्सट्रैक्ट) ३. किसी वस्तु की मुख्य और वास्तविक प्रवृत्ति। गुण संबंधी विशिष्टता। खासियत। ४. चित्त या मन की प्रवृत्ति। ५. अच्छे और शुभ कर्मों की ओर होनेवाली प्रवृत्ति। शुभवृत्ति। ६. सांख्य के अनुसार प्रकृति के तीन गुणों में से एक जो सब में उत्तम कहा गया है; और जिसके लक्षण, ज्ञान, शांति, शुद्धता आदि हैं। ७ आत्म-तत्त्व। चित्-तत्त्व। चैतन्य। ८ जीवनी-शक्ति। प्राण-तत्त्व। ९. जीवधारी। प्राणी। १०. भूत-प्रेत। ११. मन की दृढ़ता और धीरता। १२. बल। शक्ति। १३. गर्भ। हमल।

**सत्त्वक**—पुं० [सं०] मृत मनुष्य की जीवात्मा। प्रेत।

**सत्त्वगुण**—पु० [सं० मध्यम० स०] सत्त्व अर्थात् अच्छे कर्मों की ओर प्रवृत्त करनेवाला गुण, जो प्रकृति के तीन गुणों में से एक तथा तीनों में सर्वश्रेष्ठ है।

**सत्त्वगुणी**—वि० [सं० सत्त्वगुण+इनि] १ सत्त्वगुण से युक्त। २ साधु और विवेकी। उत्तम प्रकृति का।

**सत्त्व-दीक्षि**—स्त्री० [सं०] मनुष्य के स्वभाव की तेजस्विता।

**सत्त्वधाम**—पु० [सं० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

**सत्त्वलक्षण**—वि० स्त्री० [सं० ब० स०] जिसमें गर्भ के लक्षण हों। गर्भवती। हामिला।

**सत्त्ववती**—वि० [सत्त्व+मतुप्-म=व ङीप्] १. सत्त्वगुण से सम्पन्न (स्त्री)। २. गर्भवती।

स्त्री० बौद्ध तांत्रिकों की एक देवी।

**सत्त्ववान्**—वि० [सं० सत्त्ववत्-नुम्-दीर्घ सत्त्ववन्] [स्त्री० सत्त्ववती] १ सत्त्व या सार भाग से युक्त। २. जीवनी-शक्ति या प्राणों से युक्त। ३. साहसी। ४. दृढ़। मजबूत।

**सत्त्वशाली**—वि० [सं० सत्त्वशालिन्] [स्त्री० सत्त्वशालिनी] दृढ़, धीर और साहसी।

**सत्त्वशील**—वि० [सं० ब० स०] १ सात्त्विक प्रकृतिवाला। अच्छी प्रकृति का। २. सदाचारी और धर्मात्मा।

**सत्त्वस्थ**—वि० [सं०] १. अपनी प्रकृति में स्थित। २. अपनी बात या स्थान पर दृढ़तापूर्वक ठहरा रहनेवाला। ३. बलवान्। सशक्त। ४ जीवनी-शक्ति से युक्त। प्राणवान्।

**सत्त्वक**—पु० [पा०] कैंची। (वि०)

**सत्थी**—स्त्री० [?] जाँघ का मोटा भाग। (राज०)

**सत्पथ**—पु० [सं०] १ उत्तम मार्ग। २. उत्तम पथ या सम्प्रदाय। ३ अच्छा आचरण। सदाचार।

**सत्पशु**—पु०[सं०] ऐसा पशु जिसे देवता को बलि चढ़ाया जा सकता हो।

**सत्पात्र**—पु० [सं०] १. उपदेश, दान आदि देने के योग्य उत्तम अधिकारी व्यक्ति। २. श्रेष्ठ और सदाचारी व्यक्ति। ३. विवाह के योग्य उत्तम वर।

**सत्पुरुष**—पु० [सं० कर्म० स०] सदाचारी और योग्य व्यक्ति।

**सत्यंकार**—पु० [सं०] [भू० कृ० सत्यकृत] १ किसी को दिया हुआ वचन सत्य करना। वादा पूरा करना। २. पेशगी दिया जानेवाला धन जो इस बात का सूचक होता है कि जिस काम के लिए वह दिया गया है वह अवश्य किया या कराया जायगा। ३ किसी निश्चय, संविदा आदि को ठीक या सत्य ठहराना। विशेष दे० 'सत्यकर्म'।

**सत्य**—वि० [सं०] [भाव० सत्यता] १. सत् संबंधी। सत् का। २. सत् से युक्त। जैसे—संसार में ईश्वर का नाम ही सत्य है। ३. (कथन या बात) जो मूल या वास्तविक के ठीक अनुरूप हो। जिस पर पूरा पूरा विश्वास किया जा सकता हो। जिसमें झूठ या मिथ्या का लेश भी न हो। जैसे—वह सदा सत्य बोलता है। ४ (घटना का उल्लेख या विवरण) जो सत्य या वास्तविकता के ठीक अनुरूप हो। ठीक। यथार्थ। जैसे—यह सत्य है कि आप वहाँ नहीं गये थे। ५ जैसा हो या होना चाहिए, ठीक वैसा ही। जैसे—सत्यव्रत, सत्यसंघ। (दे० अंतिम तीनों अर्थों के लिए।) ६ असल। वास्तविक।

पु० १ ठीक, यथार्थ और वास्तविक तथ्य या बात। जैसे—सत्य कहीं छिपा नहीं रह सकता। २ उचित और न्याय-संगत पक्ष या बात। जैसे—उन्हें सत्य से कोई डिगा नहीं सकता। ३ वह पारमार्थिक सत्ता जिसमें कभी कोई विकार नहीं होता। जैसे—ब्रह्म ही सत्य है, और यह जगत् मिथ्या है। ४ पुराणानुसार ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक। ५ विष्णु। ६ विश्वदेवों में से एक। ७ नादीमुख श्रद्धा के अधिष्ठाता देवता। ८ एक प्रकार का दिव्यास्त्र। ९ पुराणानुसार नवें कल्प का नाम। १०. अश्वत्थ। पीपल। ११ पतिव्रता। १२. कसम। शपथ। १३ दे० 'सत्य युग'।

**सत्यक**—वि० [सं० सत्य+कन्] =सत्यकार।

**सत्यकाम**—वि० [सं० ब० स०] सदा सत्य की कामना रखनेवाला। बहुत सच्चा।

**सत्यगीत**—पु० [सं० ब० स०] एक प्रकार का अस्त्र जो मंत्रबल से चलाया जाता था।

**सत्यजित्**—पु०[सं० ब० स०]१ एक बुद्ध का नाम। २ अक्रूर का एक पुत्र।

**सत्यजित्**—पु०[सं०]१. तीसवें मन्वंतर के इन्द्र का नाम। २. वसुदेव का एक भतीजा।

**सत्यतः**—अव्य०[सं०] सत्य यह है कि। वास्तव में। यथार्थतः। सचमुच।

**सत्यता**—स्त्री०[सं० सत्य+तल्—टाप्]१. सत्य होने की अवस्था, धर्म या भाव। सच्चाई। २. वास्तविकता। ३. नित्यता।

**सत्य-नारायण**—पु०[सं०] नारायण या विष्णु भगवान का एक नाम जिसके संबंध में आज-कल लोक में एक कथा बहुत प्रचलित तथा प्रसिद्ध है।

**सत्यपर**—वि०[सं०] [भाव० सत्यपरता] सत्य में प्रवृत्त। ईमानदार।

**सत्य-पुरुष**—पु०[सं०]१. सारी सृष्टि उत्पन्न करनेवाला वह तत्त्व जो सबसे अतीत, ऊपर और परे माना गया है। २. परमात्मा।

**सत्य-प्रतिज्ञ**—वि०[सं० ब० स०] अपनी प्रतिज्ञा पर सदा दृढ़ रहने और उसका पूर्णतः पालन करनेवाला।

**सत्यभामा**—स्त्री०[स०] श्री कृष्ण की आठ पटरानियों में से एक जो सत्राजित् की कन्या थी।

**सत्यभूषणी**—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सत्य युग**—पुं०[सं० मध्यम० स०] पौराणिक काल-गणना के अनुसार चार युगों में से पहला युग जो इसलिए सर्वश्रेष्ठ कहा गया है कि इसमें धर्म और सत्य की पूरी प्रधानता थी। इसकी अवधि १७२८००० वर्ष कही गई है। इसे कृत् युग भी कहते हैं।

**सत्ययुगाब्द**—स्त्री०[स०] वैशाख शुक्ल तृतीया जिस दिन से सत्य युग का आरंभ माना गया है।

**सत्ययुगी**—वि०[सं० सत्य-युग+इनि]१. सत्य-युग का। सत्य-युग सम्बन्धी। २. सत्य-युग में होनेवाला। ३. सत्य युग के लोगों की तरह का अर्थात् बहुत धर्मात्मा और सच्चा। ४. बहुत पुराना।

**सत्यलोक**—पुं०[स०] ऊपर के सात लोकों में से सबसे ऊपर का लोक जहाँ ब्रह्मा का अवस्थान माना गया है। (पुराण)

**सत्यवती**—वि०[स० सत्यवान् का स्त्री०]१ सत्य का आचरण और पालन करनेवाली। २. पतिव्रता। सती। ३. कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

स्त्री०१. पराशर की पत्नी और व्यास की माता मत्स्यगंधा का वास्तविक नाम। २ एक प्राचीन नदी।

**सत्य-वसु**—पुं०[स०] एक विश्वेदेवा।

**सत्यवाच्**—पुं०[स०]१. सत्य वचन। २ प्रतिज्ञा। ३ मंत्र-बल से चलनेवाला एक प्रकार का अस्त्र। ४ कौआ।

**सत्यवाद**—पुं०[स०] [वि० सत्यवादी]१. सत्य बोलना। सच कहना। २. धर्म पर दृढ़ रहना।

**सत्यवादिनी**—स्त्री०[सं०]१. दाक्षायिणी का एक नाम। २. बोधिद्रुम की एक देवी।

**सत्यवादी**—वि० [सं० सत्यवादिन्] [स्त्री० सत्यवादिनी] १ सत्य कहनेवाला। सच बोलनेवाला। २. अपनी प्रतिज्ञा पर दृढ़ रहनेवाला। ३. धर्म पर दृढ़ रहनेवाला। ४. सत्यवाद संबंधी।

**सत्यवान्**—वि०[सं०] [स्त्री० सत्यवती] सत्य का आचरण और पालन करनेवाला।

पुं० शाल्व देश का एक प्रसिद्ध राजा जो सावित्री का पति था। (पुराणों में कहा गया है कि जब ये युवावस्था में ही मर गये, तब इनकी पत्नी सावित्री ने अपने पातिव्रत्य के बल पर इन्हें यम के हाथों से छुड़ाकर पुनरुज्जीवित किया था।)

**सत्यव्रत**—वि०[स०] जिसने सत्य बोलने का व्रत लिया हो।

पुं० सत्य का पालन करने का नियम या व्रत।

**सत्यशील**—वि०[सं०] [स्त्री० सत्यशीला] सदा सत्य का पालन करनेवाला। सच्चा।

**सत्य-संकल्प**—वि०[सं०] जो अपने संकल्प पर सदा दृढ़ रहे।

**सत्यसंध**—वि०[सं०] [स्त्री० सत्यसंधा] वचन को पूरा करनेवाला। सत्य-प्रतिज्ञ।

पुं०१. भगवान् रामचन्द्र का एक नाम। २. भरत का एक नाम। ३. जनमेजय का एक नाम। ४. कार्तिकेय का एक अनुचर।

**सत्या**—स्त्री०[स० सत्य-टाप्] १. सच्चाई। सत्यता। २. व्यास की माता सत्यवती का एक नाम। ३. सीता का एक नाम। ४ दुर्गा।

**सत्याकृति**—स्त्री०[स० सत्य+डाच्-आकृति, ष० त०]=सत्यंकार।

**सत्याग्रह**—पुं०[सं०]१. सत्य का पालन और रक्षा करने के लिए किया जानेवाला आग्रह या हठ। २. आधुनिक राजनीति में, वह अहिंसात्मक कार्रवाई जो किसी अधिकारी या सत्ता के किसी निश्चय, व्यवहार आदि के प्रति अपना असंतोष, विरोध आदि प्रकट करने के लिए की जाती है, और जिसका मुख्य अंग उस निश्चय या व्यवहार के अनुसार कार्य न करने अथवा उसका पालन न करने के रूप में होता है। (पैसिव रेजिस्टेन्स)

**सत्याग्रही**—वि०[सं०] सत्य के पालन या रक्षा के लिए आग्रह या हठ करनेवाला।

पुं०वह जो सत्याग्रह (देखें) करता हो। सत्याग्रह करनेवाला व्यक्ति।

**सत्यात्मा (त्मन्)**—वि०[सं० ब० स०] पूर्ण रूप से सत्यपरायण।

**सत्यानाश**—पुं०[स० सत्ता+नाश] पूरी तरह से होनेवाला नाश। सर्वनाश। मटियामेट। बरबादी।

**सत्यानाशी**—वि०[हिं० सत्यानाश+ई(प्रत्य०)] [स्त्री० सत्यानाशिनी] १. सत्यानाश करनेवाला। चौपट करनेवाला।

स्त्री० भड़भाँड नाम का कँटीला पौधा।

**सत्यानृत**—पुं०[स० ब० स०]१ झूठ और सच का मेल। ऐसी बात जिसमें कुछ सच भी हो और कुछ झूठ भी हो। २ रोजगार। व्यापार।

**सत्यापन**—पुं०[स० सत्य+णिच् आ-युक्—ल्युट्—अन] [भू० कृ० सत्यापित]१ जाँच या मिलान करके देखना कि ज्यों का त्यों और ठीक या सत्य है कि नहीं। (बेरीफिकेशन)

**सत्यापना**—स्त्री०[सं० सत्याप+णुच्—अन—टाप्]=सत्यापन।

**सत्यापित**—भू० कृ०[सं०] जिसका सत्यापन हुआ या हो चुका हो। (बेरीफ़ाइड)

**सत्यार्जव**—वि०[स०] सीधा-सादा और सच्चा।

**सत्येतर**—वि०[स०] सत्य से भिन्न अर्थात् मिथ्या।

**सत्योत्तर**—पुं०[स० कर्म० स०] १. सत्य बात की स्वीकृति देना। २ अपने किए हुए अपराध, दोष आदि का स्वीकरण। इकबाल।

**सत्र**—पुं०[सं०]१. यज्ञ। २. सौ दिनों में पूरा होनेवाला एक प्रकार का सोम याग। ३ आड़ या ओट करके छिपाना। ४. ऐसा स्थान जहाँ आदमी छिप सकता हो। छिपने की जगह। ५. घर। मकान। ६ धोखा। भ्रांति। ७. धन-संपत्ति। ८. तालाब। ९. जंगल। वन। १० निकट समय या स्थान। ११. वह स्थान जहाँ गरीबों को भोजन दिया जाता हो। अन्नसत्र। सदावर्त। १२. आज-कल वह नियत काल जिसमें कोई काम एक बार आरंभ होकर कुछ समय तक निरंतर चलता रहता हो। (सेशन) १३. संस्था, सभा आदि की निरंतर नियमित रूप से कुछ समय तक होनेवाली बैठक या अधिवेशन। (सेशन)

†पुं०=क्षत्र।

**सत्र-न्यायालय**—पुं०[सं०] किसी जिले के जज का वह न्यायालय जिसमें कुछ विशिष्ट गुरुतर अपराधों का विचार होता है और जिसमें किसी मुकदमे का आरम्भ होने पर उसका विचार और सुनवाई तब तक चलती रहती है जब तक उसका निर्णय नहीं हो जाता। (सेशन कोर्ट)

**सत्रप**—पुं० दे० 'क्षत्रप'।

**सग्रह**—वि० दे० 'सत्+ग्रह'।

**सत्राजित्**—पु०[सं० सत्र—आ√जि (जीतना)+क्विप्—तुक्]१. सत्यभामा का पिता, एक यादव। २ एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

**सत्राजिती**—स्त्री०[सं० सत्राजित्—ङीप्]सत्राजित् की कन्या सत्यभामा का एक नाम।

**सत्रायण**—पु०[सं० सत्र+फक्—आयन] यज्ञो का लगातार चलनेवाला क्रम।

**सत्रासदन**—पुं०[सं० ष० त०] आधुनिक राजतंत्र में, विधानमंडल या संसद के सर्वप्रधान अधिकारी के द्वारा अनिश्चित और दीर्घ काल के लिए किया जानेवाला स्वागत। (प्रोरोगेशन)

**सत्रि**—वि०[सं० सत्र+इनि] बहुत यज्ञ करनेवाला।
पुं०१. हाथी। २. बादल। मेघ।

**सत्री**—वि०[सं० सत्रिन्—दीर्घ-नलोप सत्रिन्] यज्ञ करनेवाला।
पुं०राजहंस।

**सत्रु**†—पुं०=शत्रु।

**सत्रुघन, सत्रुहन**†—पु०=शत्रुघ्न।

**सत्य**†—पु०=सत्य।

**सत्वर**—अव्य०[सं० अव्य० स०]१ त्वरापूर्वक। शीघ्र। २ तुरंत। झटपट।
वि० शीघ्रगामी। तेज-रफ्तार।

**सत्संग**—पु०[सं०]१ सज्जनों के साथ उठना-बैठना। अच्छा साथ। भली सगत। अच्छी सोहबत। २ साधु-महात्मा या धर्म-निष्ठ व्यक्ति के साथ उठना-बैठना और धर्म-संबंधी बातों की चर्चा करना। ३ बोलचाल में, वह समाज या जनसमूह जिसमें कथा-वार्ता या राम-नाम का पाठ होता हो।

**सत्संगति**†—स्त्री०=सत्संग।

**सत्संगी**—वि०[सं० सत्संग+इनि, सत्सगिन्] [स्त्री० सत्सगिनी]१ सत्संग करनेवाला। अच्छी सोहबत में रहनेवाला। २ सबसे मेल-जोल रखनेवाला। ३. धार्मिक व्यक्तियों के साथ रहकर धर्म-चर्चा करनेवाला।

**सत्सनागम**—पुं०[स०ष०त०]१. भले आदमियों का संसर्ग। २. सत्संग।

**सत्सार**—पु०[सं० ब० स०]१. चित्रकार। चितेरा। २. कवि। ३ एक प्रकार का पौधा।

**सथर***—स्त्री०[स० स्थल] पृथ्वी। भूमि।

**सथरी**†—स्त्री०=साथरी।

**सथिया**—पुं०[स० स्वास्तिक]१. आर्यों का स्वस्तिक चिह्न जो इस प्रकार लिखा जाता है ॐ २ सामुद्रिक के अनुसार उक्त प्रकार का वह चिह्न जो देवताओं आदि के तलुए में रहता है। ३ भारतीय ढग से फोड़ों की चीरफाड़ करनेवाला। अस्त्र-चिकित्सक। ४. साँझी नामक लोक-कला का वह प्रकार या रूप जो गुजरात में प्रचलित है। ५ जुलाहों के काम की बाँस या सरकडे की पतली छड़ी। सर।

**सद्**—वि०[सं०] सत् का वह रूप जो उसे कुछ विशिष्ट अवस्थाओं में यौ० के आरम्भ में लगाने पर प्राप्त होता है। जैसे—सद्गुरुदेव।

**सर्वजन**—पु०[स० कर्म० स०] पीतल से बनाया जानेवाला एक प्रकार का बजन।

**सर्वशक**—पु०[स० अव्य० स०] केकड़ा।

**सद**—पु०[स० सदस्]१ सभा। समिति। मडली। २. यज्ञशाला में बनाया जानेवाला एक प्रकार का छोटा मडप।
अव्य०[स० सद्य] तत्क्षण। तुरत। तत्काल।
वि०१. नवीन। नया। २ हाल का। ताजा।
स्त्री०[स० सत्व]१. प्रकृति। स्वभाव। २ आदत। टेव। बान।
स्त्री०[अ० सदा=आवाज़] गड़रियों का एक प्रकार का गीत। (पजाब)
†पु०=शब्द।

**सदइ**†—अव्य०[स० सद्य] तुरंत।
†वि०=सदय।

**सदई**—अव्य०[स०] सदैव।
वि०=सदय।

**सदका**—पु०[अ० सदक़.]१ वह वस्तु जो ईश्वर के नाम पर दी जाय। दान। २ वह वस्तु जो कुदृष्टि या नजर, रोग आदि के निवारण के लिए टोने-टोटके के रूप में किसी के सिर पर से उतार कर किसी को दी या रास्ते में रखी जाय। उतारा।
क्रि० प्र०—उतारना।—करना।
३. निछावर।
**पद—सदके जाऊँ**—मैं तुम पर निछावर होऊँ या बलि जाऊँ। (मुसल०)

**सदन**—पु०[स०]१ रहने का स्थान। निवास-स्थान। २. घर। मकान। ३ वह स्थान जहाँ प्राणियों या व्यक्तियों को आश्रय और रहने-सहने का सुभीता मिलता हो। जैसे—गो-सदन। ४ वह स्थान जहाँ विशिष्ट रूप से कोई लोकोपकारी कार्य हो। जैसे—सेवा सदन। ५ वह मकान जिसमें किसी देश या राज्य के विधान बनाने के कार्य होते हों। (हाउस)
**विशेष**—कुछ देशों में तो इस प्रकार का एक ही सदन होता है; और कुछ देशों में दो-दो सदन होते हैं, जिनमें से एक में तो साधारण जनता के प्रतिनिधि और दूसरे में कुछ विशिष्ट वर्गों के प्रतिनिधि सदस्य होते हैं। भारत में केंद्रीय सदन के दो अंग हैं—लोक-सभा और राज्य-सभा।
६ उक्त भवन में अथवा किसी सभा-समिति के अधिवेशन के समय उपस्थित होनेवाले आधिकारिक व्यक्तियों, सदस्यों आदि का वर्ग या समूह। (हाउस) जैसे—सदन की यही इच्छा जान पड़ती है कि इस विषय का निर्णय आज ही हो जाय। ७. ठहराव। विराम। ८ शिविलता। ९ एक प्रसिद्ध भगवद्भक्त कसाई।

**सदन-त्याग**—पु०[स०] सभा, सभा आदि के किसी कार्य या अध्यक्ष की किसी व्यवस्था या निर्णय से असतुष्ट होकर किसी या कुछ सदस्यों का सदन छोड़कर वहाँ से हट जाना। (वॉक-आउट)

**सदन-नेता**—पु०[स०] ससद् या विधान-सभा द्वारा निर्वाचित वह नेता जो कार्यक्रम आदि निश्चित करता और बहुधा देश या राज्य का प्रधान मत्री होता है। (लीडर आफ दि हाउस)

**सदन-सचिव**—पु०[स०ष०त०] विधान-सभा या लोक-सभा का वह वैतनिक सदस्य जो किसी मंत्री के साथ रहकर उसके समस्त विभागीय कार्यों में सहायता करता हो। ससद-सचिव। (पार्लमेन्टरी सेक्रेटरी)

**सदना**—अ०[सं० सदन=थिराना] १. छेद में से रसना। चूना। २ नाव के पेंदे के छेदों से पानी अन्दर आना।
†पु०=सदन (भगवद्भक्त कसाई)।

**सदफ़**—स्त्री०[अ०] सीपी।

**सद-बरग**†—पु०=सदवर्ग।

**सदबर्ग**—पु०[फा०] हजारा गेंदा नामक पौधा और उसके फूल।

**सदमा**—पु० [अ० सद्म] १. आघात। धक्का। चोट। २. ऐसा मानसिक आघात जो बहुत अधिक कष्ट-प्रद हो। ३. बहुत बड़ी हानि।
क्रि०—उठाना।—पहुँचना।—लगना।

**सदय**—वि०[स०]१. दयावान्। दयालु। २. दयापूर्ण।

**सदर**—वि०[सं० अव्य० स०] भययुक्त। डरा हुआ।
क्रि० वि० डरते हुए।

**सदर**—वि०[अ० सद्र] प्रधान। मुख्य। जैसे—सदर अमीन, सदर दरवाजा, सदर बाजार।
पु०१ छाती। सीना। २. सबसे ऊपर का भाग या स्थान। ३ उच्च पदस्थ लोगों के बैठने या रहने का स्थान। ४. सभा का सभापति। ५. किसी संस्था या राज्य का प्रधान शासक। जैसे—सदरे रियासत। अव्य० ऊपर।

**सदर आला**—पु०[अ०] दीवानी अदालत का वह हाकिम जो जज के नीचे हो। छोटा जज।

**सदर-नशीन**—पु०[अ०+फा०] [भाव० सदरनशीनी] मजलिस या सभा का सभापति।

**सदर बाजार**—पुं०[अ०+फा०]१ नगर का बड़ा या खास बाजार। २. छावनी के पास का बाजार।

**सदरी**—स्त्री०[अ० सद्र=छाती] बिना आस्तीन की एक प्रकार की कुरती या बंडी जो और कपड़ों के ऊपर पहनी जाती है। सीनाबंद।
†वि० स्त्री० सदर का स्त्री० स्थानिक रूप। जैसे—सदरी दरवाजा। (पूरब)

**सदर्थ**—पु०[सं० कर्म० स०]१. असल या मुख्य बात अथवा विषय। २. धनवान् व्यक्ति।

**सदर्थना**—स०[सं० सदर्थ] समर्थन या पुष्टि करना।

**सदस्**—पु०[स०]१. रहने का स्थान। मकान। घर। २. सभा। समाज। ३ यज्ञशाला में, एक प्रकार का छोटा मंडप।

**सदसत्**—वि०[सं० द्व० स०]१. सत् और असत्। २. सच और झूठ। ३. अच्छा और बुरा।
पुं०१. किसी वस्तु के होने और न होने का भाव। २. सच्ची और झूठी बातें। ३. अच्छाई और बुराई।

**सदसद्विवेक**—पु०[सं० ष० त०] सद् और असद् अर्थात् अच्छे और बुरे की पहचान। भले-बुरे का ज्ञान या विवेक।

**सदसि**†—स्त्री०[सं० सदस्] सदस्यों या सभ्यों के बैठने का स्थान। उदा०—बिपुल भूपति सदसि महँ नर-नारि कहौ प्रभु पाहिं।—तुलसी।

**सदस्य**—पुं०[सं० सदस्+यत्] [भाव० सदस्यता]१. यज्ञ करनेवाला। याजक। २. उन व्यक्तियों में से हर एक जिसके योग से कुटुंब, परिवार, संघ, समाज आदि बनते हैं। ३. विशेषतः वह व्यक्ति जिसका संबंध किसी समुदाय से हो और जिसका वह नियमित रूप से चंदा आदि देता हो अथवा जिसके कार्यों आदि में सम्मिलित होता हो। (मेम्बर, उक्त दो अर्थों के लिए)

**सदस्यता**—स्त्री०[स० सदस्य+तल्—टाप] सदस्य होने की अवस्था या भाव। मेंबरी। (मेंबरशिप)

**सदहा**—पु०[स०] यज्ञ करनेवाला। याजक। २. सभासद। सदस्य।
पु०[देश०] अनाज लादने की बड़ी बैलगाड़ी।
वि०[फा०] सैकड़ों। बहुत से।

**सदही**—क्रि० वि०=सदैव।

**सदा**—अव्य०[स०]१. हर समय। हर वक्त। जैसे—सदा भगवान् का नाम लेते रहना चाहिए। २ निरंतर। लगातार। ३. किसी भी अवस्था या स्थिति में। जैसे—मनुष्य को सदा सच्च बोलना चाहिए।
स्त्री०[अ०, भि० स० शब्द, प्रा० सद्द] १ गूँज। प्रतिध्वनि। २. आवाज। शब्द। ३. पुकारने की आवाज। पुकार।
**मुहा०—सदा देना या लगाना**=फकीर का भीख पाने के लिए पुकारना। उदा०—देर से हम दरे दौलत पे सदा देते हैं।—कोई शायर।
४ कोई मनोहर या सुन्दर ध्वनि।

**सदाकत**—स्त्री०[अ० सदाकत] सच्चाई। सत्यता।

**सदाकारी**—वि०[स० सदाकार+इनि] अच्छे आकार या आकृतिवाला।

**सदा-कुसुम**—पु०[स०] धव। धातकी।

**सदा-गति**—पु०[सं० ब० स०]१. वायु। पवन। २. शरीर में का वात। ३. सूर्य। ४. ब्रह्म।
वि० सदा चलता रहनेवाला।

**सदागम**—पुं०[सं० ष० त०]१ सज्जन का आगमन। २. श्रेष्ठ आगम या शास्त्र।

**सदाचरण**—पुं०[स० कर्म० स०] अच्छा चाल-चलन। सात्विक व्यवहार। सदाचार।

**सदाचार**—पु०[सं०]१ धर्म, नीति आदि की दृष्टि से किया जानेवाला अच्छा और शुभ आचरण। अच्छा चाल-चलन। २ उक्त का भाव। (मॉरैलिटी) ३. शिष्टतापूर्ण व्यवहार। ४. प्रथा। रीति।

**सदाचारिता**—स्त्री०[स० सदाचार+इनि—तल्—टाप्]=सदाचार।

**सदाचारी (रिन्)**—वि० [स० सदाचार+इनि] [स्त्री० सदाचारिणी] १. अच्छे आचरणवाला व्यक्ति। अच्छे चाल-चलन का आदमी। सद्वृत्तिशील। २. धर्मात्मा। पुण्यात्मा।

**सदातन**—पु०[स० सदा+ख्यु—अन, तुट् आगम] विष्णु।

**सदात्मा (त्मन्)**—वि० [सं० ब० स०] अच्छे स्वभाव का। नेक। सज्जन।

**सदादान**—पुं०[सं० ब० स०]१ ऐसा हाथी जिसका मद सदा बहता रहता हो। २. ऐरावत। ३. गणेश।

**सदानंद**—पुं०[स० सद्+आनन्द]१. सदा बना रहनेवाला परम सुख। परमानंद। २. शिव। ३. विष्णु। ४. परमात्मा।
वि० सदा प्रसन्न रहने और रखनेवाला।

**सदानर्त**—वि०[स० सदा√ नृत् (नाचना)+अच्] जो बराबर नाचता हो।
पुं० खंजन नामक पक्षी।

**सदापुष्प**—पुं०[स०] १ नारियल। नारियल। २. आक। मदार। ३. कुन्द का फूल।
वि० हमेशा फूलनेवाला (वृक्ष या फूल)।

**सदापुष्पी**—स्त्री०[सं०]१ आक। मदार। २ कपास। ३. चमेली। मल्लिका।

**सदा-फलुन**—पुं०[स०]१ रोहितक वृक्ष। २ आक। मदार। ३ कुन्द का पौधा।

**सदाफरा**[1]—वि०=सदाफल।

**सदा-फल**—वि०[स०] सदा अर्थात् बारहों महीने फलता रहनेवाला (वृक्ष)।
पुं०१. ऊमर। २ नारियल ३. बेल का वृक्ष। ४ एक प्रकार का नीबू।

**सदाफली**—स्त्री० [सं० सदाफल—टाप् ङीप्] १ जपापुष्प। गुडहर। देवीफूल। २. एक प्रकार का बैंगन।

**सदाबर्त**[1]—पुं०=सदावर्त।

**सदाबर्त**—पुं०=सदावर्त।

**सदा-बहार**—वि०[सं० सदा+फा० बहार=फूल-पत्ती का समय] १ (वृक्ष या पौधा) जो सदा हरा-भरा रहे और जिसमे पतझड न होता हो। २ जिसमे सदा फूल लगते रहते हों।

**सदार**—वि०[स० अव्य० स०] जो दारा अर्थात् पत्नी के साथ हो।

**सदारत**—स्त्री०[अ०] सभापतित्व।

**सदावर्त**—पुं०[सं० सदा+व्रत] १ हमेशा अन्न बाँटने का व्रत। नित्य दीन-दुखियों तथा भूखों को भोजन देना।
क्रि० प्र०—खुलना।—बोलना।—चलना।—चलाना।
२ इस प्रकार दिया जानेवाला भोजन।
क्रि० प्र०—बँटना।—बाँटना।

**सदावर्ती**—वि०[हिं० सदावर्त] १. सदावर्त बाँटनेवाला। भूखों को नित्य अन्न बाँटनेवाला। २ बहुत बडा दाता या दानी।

**सदाव्रत**—पुं०=सदावर्त।

**सदाशय**—वि० [स०] [भाव० सदाशयता] जिसके मन का आशय या भाव उदार और श्रेष्ठ हो। उच्च विचारोंवाला। सज्जन। भला मानस।
पुं० वह स्थिति जिसमें कोई व्यक्ति अच्छे और शुभ आशय मे कोई काम करता हो। 'कदाशयता' का विपर्याय। (बोनाफाइडीज)

**सदाशयी**—वि०[स०]१ सदाशय सबधी। २ (व्यक्ति) जो सदाशय से युक्त हो। ३ (काम या बात) जिसमे अच्छा आशय हो ही, बुरा आशय न हो। 'कदाशयी' का विपर्याय। (बोनाफाइड)

**सदाशयता**—स्त्री० [स०]१ सदाशय होने की अवस्था, गुण या भाव। २ विधिक क्षेत्र में वह स्थिति जिसमे मनुष्य ईमानदारी और सच्चाई से अथवा मन में सद् आशय रखकर कोई काम करता है; और जिसके फल स्वरूप कोई अनुचित कार्य हो जाने पर भी वह दोषी नहीं माना जाता।

**सदाशिव**—वि०[स०] सदा कल्याण और मंगल करनेवाला।
पुं० शिव का एक नाम।

**सदा-सुहागिन**—वि० स्त्री० [स० सदा+हिं० सुहागिन] (स्त्री) जो सदा सौभाग्यवती रहे। जो कभी पतिहीन न हो।

स्त्री०१. बेश्या। (परिहास) २ सिंदूरपुष्पी। ३ स्त्रियों का वेश बनाकर रहने वाले मुसलमान फकीरों का एक सम्प्रदाय।

**सदिया**—स्त्री०[फा० साद=सौरा] लाल पक्षी का एक भेद जिसका शरीर भूरे रग का होता है। बिना चित्ती की मुनियाँ।

**सदी**—स्त्री०[अ०]१ सौ वर्षों का समूह। शताब्दी। शती। जैसे—पहली सदी (१—१०० सन्); बीसवीं सदी (१९०१—२००० सन्)। २ सौ चीजों का समूह। जैसे—फी सदी दस आदमी लिये जायेंगे।

**सदुपदेश**—पुं०[स० कर्म० स०] १ अच्छा उपदेश। उत्तम शिक्षा। २ अच्छा परामर्श। बढिया सलाह।

**सदूर***—पुं० [स० शार्दूल] सिंह। उदा०—एहमानि अ.व्रत हस ग्रूर। —जायसी।

**सदृश**—वि०[स०] [भाव० सादृश्य] जो आकार-प्रकार, रूप-रग आदि के विचार से किसी दूसरे से बिलकुल मिलता-जुलता हो। (सिमिलर)
**विशेष**—'सदृश' और 'समान' मे यह अन्तर है कि सदृश का पर्याय तो वहाँ होता है जहाँ चीजें या बातें ऊपर से देखने पर एक सी जान पडें। परन्तु 'समान' का प्रयोग वहाँ होता है जहाँ चीजों या बातों के भडौल, गान, मूल्य आदि मे बराबरी बतलाना अभीष्ट होता है। 'तुल्य' मे इन दोनों से मिश्र तौल अर्थात् सुल्ना या भार का भाव निहित है।

**सदृशता**—स्त्री० [स० सदृश+तल्—टाप्]१ सदृश होने की अवस्था, गुण या भाव। २ समानता। तुल्यता।

**सदेह**—वि०[स०]१ देह या शरीर से युक्त। २ जो कोई विशिष्ट देह धारण करके सामने आया हो। उदा०—और कर्ण से पूछ लो जो सदेह उत्पात।—मैथिलीशरण। ३ प्रत्यक्ष। मूर्तिमान्।
क्रि० वि० शरीर धारण किये रहने की अवस्था मे। जैसे—आप तो यहाँ सदेह बैठे हैं।

**सदैव**—अव्य०[स० सर्व+दाच्, सर्वस-एव] सदा। सर्वदा। हमेशा।

**सदोष**—वि०[स०] [भाव० सदोषता]१ जिसमे दोष किया हो। दोषी। २ जिसमे दोष हो या हो। दोष से युक्त या दोष से भरा हुआ।

**सद्गति**—स्त्री०[स०]१. अच्छी दशा या हालत। २ अच्छा आचरण। सदाचरण। ३. मरने के उपरांत होनेवाली उत्तम लोक की प्राप्ति, और दुर्गति से होनेवाली रक्षा। मुक्ति।

**सद्गुण**—पुं०[स०] अच्छा गुण। उदा०—जिमि सद्गुण सज्जन पहँ आवा।—तुलसी।

**सद्गुणी (णिन्)**—वि०[स० सद्—गुण+इनि] अच्छे गुणोंवाला।

**सद्गुरु**—पुं०[स०]१ अच्छा और श्रेष्ठ गुरु। २ धार्मिक क्षेत्र में, ऐसा गुरु या पथ-प्रदर्शक जिसे स्वानुभूति हो चुकी हो, और जो साधना का ठीक मार्ग या प्रणाली बतला सके। ३. परमात्मा।

**सद्ग्रंथ**—पुं०[स० सद्+ग्रथ] आध्यात्मिक दृष्टि से अच्छा ग्रन्थ। सन्मार्ग बतलानेवाली पुस्तक।

**सद्द***[1]—पुं०[स० शब्द, प्रा० सद्द] शब्द। ध्वनि।
अव्य०=सद्य (तत्काल)।

**सद्दरा**—पुं०[हिं० सात+दौत] सात दाँतोंवाला बैल।

**सद्भाव**—पुं०[स०]१. अच्छा अर्थात् शुभ भाव। हित का भाव। २. दो व्यक्तियों या पक्षों मे होनेवाली मैत्रीपूर्ण स्थिति। ३. छल-कपट, द्वेष आदि से रहित भाव या विचार।

**सद्भावना**—स्त्री०[स०]=सद्भाव।

**सद्भावी**—वि०[सं०]१. सद्भाववाला। सद्भाव से युक्त। २. सदाशयी। (बोलचाल)

**सद्म**—पु०[स० सद्+मनिन्, सद्मन्]१. रहने का स्थान। २. घर। मकान। ३. दर्शक। ४ युद्ध। लड़ाई। ५. पृथ्वी और आकाश।

**सद्मिनी**—स्त्री० [स० सद्म] १. बड़ा मकान। हवेली। २. प्रासाद। महल।

**सद्य**—पु०[स०] शिव का एक नाम।
अव्य०=सद्यः।

**सद्यः**—अव्य०[स०]१. आज ही। २ इसी समय। अभी। ३ तत्काल। तुरन्त।
पु० शिव का एक नाम।

**सद्यःपाक**—वि०[स०] जिसका फल तुरन्त मिले। जिसके परिणाम में विलंब न हो।
पु० रात के चौथे पहर का स्वप्न (जो लोगों के विश्वास के अनुसार ठीक घटा करता है)।

**सद्यःप्रसूत**—वि०[सं०] तुरत का उत्पन्न।

**सद्यःप्रसूता**—वि० स्त्री० [सं०] जिसने अभी या कुछ ही समय पहले बच्चा प्रसव किया हो।

**सद्यस्क**—वि०[स० सद्यस्√ कै (करना)+क]१ वर्तमान काल का। २ इसी समय का। ३. ताजा। ४. आज-कल जिसके संबंध में बहुत ही जल्दी जल्दी या तुरत कोई उपचार या काम करना आवश्यक हो। बहुत आवश्यक या जरूरी। (अर्जेन्ट) जैसे—उन्हें सद्यस्क तार (या पत्र) भेजो।

**सद्योजात**—वि०[स० कर्म० स०] [स्त्री० सद्योजाता] जो अभी या कुछ ही समय पहले उत्पन्न हुआ हो।
पु० शिव का एक रूप या मूर्ति।

**सद्र**—वि० [अ०] अव्य० दे० 'सदर'।

**सधना**—अ०[हिं० साधना] १. किसी काम या बात का पूरा या सिद्ध होना। जैसे—काम सधना। २. अभिप्राय या उद्देश्य सिद्ध होना। मतलब निकलना। ३ हाथ से किये जानेवाले किसी काम का ठीक तरह से अभ्यस्त होना। जैसे—आरी या हथौड़ा चलाने में हाथ सधना। ४ ठीक जगह पर जाकर लगना। जैसे—गोली या तीर चलाने में निशाना सधना। ५. शिक्षा आदि पाकर किसी विशिष्ट उपयोग या कार्य के लिए उपयुक्त होना। जैसे—(क) सवारी के लिए घोड़े का सधना। (ख) बाइसिकिल पर बैठने में शरीर सधना। ७. नाप-तौल आदि में ठीक या पूरा उतरना या बैठना। जैसे—(क) शरीर पर कुरता सधना। (ख) पर्दंगा निकल जाने पर तराजू सधना।

**सधर**—पुं०[सं० अव्य० स०] ऊपर का ओंठ। 'अधर' का विपर्याय।
वि०[?] कठोर। कड़ा। उदा०—धर धर सुंग सधर सुपीन पयोधर।
—भिखारीदास।

**सधर्म**—वि०=सधर्मक।

**सधर्मक**—वि०[सं०]१. समान गुण या क्रियावाला। एकही प्रकार का। २. तुल्य। समान। ३. पुण्यात्मा। ४. सच्चा और सरल। ५. किसी की दृष्टि से उसी के धर्म या सम्प्रदाय का अनुयायी।

**सधर्मा (र्मन्)**—वि०[स० व० स०] =सधर्मक।

**सधर्मिणी**—स्त्री० [स० सहधर्म+इति—सह=स-ङीष्]=सहधर्मिणी (पत्नी)।

**सधर्मी (मिन्)**—वि०[स०] [स्त्री० सधर्मिणी] किसी की दृष्टि से उसी के धर्म का अनुयायी।

**सधवा**—स्त्री० [स० अव्य० स०] ऐसी स्त्री जिसका पति जीवित हो। जो विधवा न हो। सुहागिन। सौभाग्यवती। 'विधवा' का विपर्याय। वि० धव अर्थात् पति से युक्त (स्त्री)।

**सधाना**—स० [हिं० सधना का प्रे०] १. साधने का काम दूसरे से कराना। दूसरे को साधने में प्रवृत्त करना। २ जंगली पशु-पक्षियों को अपने पास या साथ रखकर पालतू बनाना और उन्हें विशिष्ट प्रकार के आचरण सिखाना। उदा०—मुहत में अब इस बच्चे को है हमने भगाया। लड़ने के सिवा नाच भी है इसको सिखाया।—नजीर। ३ उचित आचरण या उपयोग करते हुए किसी काम या चीज का अंत या समाप्ति करना। ४ किसी को अपने अनुकूल बनाने के लिए परचाना।

**सधाव**—पु०[हिं० साधना] सधे या साधे हुए होने की अवस्था या भाव। जैसे—संगीत में स्वरों का सधाव।

**सधावर**—पु०[हिं० सधवा] वह उपहार जो गर्भवती स्त्री को गर्भ के सातवें महीने दिया जाता है।

**सधिया**—स्त्री०१.=सदिया। २ =साध।

**सधीर**†—पुं० दे० 'सधावर'।

**सध्रीची**—स्त्री०[स० सह√अञ्च् (पूजित होना)+क्विप् सह=सधि अलोप, ङीप्—दीर्घ] सखी। (डिं०)

**सन्**—पु०[स० सवत् में, के स से फा०] १. वर्ष। साल। सवत्सर। २. गणना में कोई विशिष्ट वर्ष। ३. किसी विशिष्ट गणना क्रमवाली काल-गणना।
**विशेष**—इसका प्रयोग प्रायः पाश्चात्य गणना प्रणालियों के संबंध में ही होता है। जैसे—ईसवी सन्, हिजरी सन् आदि। भारतीय गणना प्रणालियों के संबंध में संवत् का प्रयोग होता है।

**सनंक**—पु०[अनु० सन् सन्] सन्नाटा। नीरवता।

**सनंदन**—पु०[सं० ब० स०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।

**सन**—पु०[स०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।
पु०[स० शरण] एक प्रसिद्ध पौधा जिसकी छाल के रेशों से टाट, बोरे रस्सियाँ आदि बनती हैं।
प्रत्य०[सं० सत्र] अवधी में करण कारक का चिह्न; से। साथ।
स्त्री०[अनु०] वेग से निकल जाने का शब्द। जैसे—तीर सन से निकल गया।
वि०=सन्न (स्तब्ध)।
पु०=सन् (वर्ष)।

**सनअत**—स्त्री०[अ०] १. कारीगरी। २. हुनर। पेशा। ३. साहित्यिक क्षेत्र में, अलंकार (अर्थालंकार और शब्दालंकार दोनों)।

**सनई**—स्त्री०[हिं० सन] छोटी जाति का सन।

**सनक**—पु०[सं०] ब्रह्मा के चार मानस पुत्रों में से एक।
**पद—सनक गंडना।**

स्त्री०[हिं० सनकना]१. वह अवस्था जिसमे मनुष्य का मस्तिष्क ठीक तरह से और पूरा काम न करता हो और किसी ओर प्रवृत्त होने पर प्रायः उधर ही बना रहता हो। २. पागलों की-सी धुन, प्रवृत्ति या आचरण।

**मुहा०—सनक चढ़ना या सवार होना**=पागलपन की सीमा तक पहुँचती हुई धुन चढ़ना।

**सनकना**—अ०[सं० स्वनः] १. पागल हो जाना। २ पागलो की तरह व्यर्थ बढ़-बढ़ कर बातें करना।

अ०[अनु० सन-सन] सन-सन शब्द करते हुए उड़ना, दौड़ना या भागना।

**सनकाना**†—स०[हिं० सनकना] ऐसा काम करना जिससे कोई सनके या पागल हो।

*अ० दे० 'सनकना'।

**सनकारना** — स०[हिं० सैन+करना]१ किसी काम या बात के लिए संकेत करना। इशारा करना। २ इशारे से पास बुलाना।

संयो० क्रि०—देना।

**सनकियाना**—स०[हिं० सनकाना का स०] किसी को सनकाने में प्रवृत्त करना।

अ०=सनकना।

स०=सनकारना।

**सनकी**—वि०[हिं० सनक] जिसे किसी तरह की सनक या झक हो। झक्की। (एक्सेन्ट्रिक)

स्त्री०[हिं० सैन=संकेत] आँख से किया जानेवाला सकेत। आँख का इशारा।

**मुहा०—सनकी मारना**= आँख से इशारा करना।

**सनत्**—पु०[स०] ब्रह्मा।

**सनत्कुमार**—पुं०[स० मध्यम० स०]१. ब्रह्मा के चार मानस पुत्रो मे से एक। २. बारह सार्वभौमी या चक्रवर्तियो मे से एक। (जैन)३ जैनियों के अनुसार तीसरा स्वर्ग।

**सनतरा**—पु०[हिं० सन] ऐसा वृक्ष जिस पर रेशम के कीड़े पाले जाते हो। जैसे—शहतूत, बेर आदि।

**सनत्सुजात**—पु०[सं० मध्यम० स०] ब्रह्मा के सात मानस पुत्रो मे से एक।

**सनद**—स्त्री० [अ०] १. वह स्थान जहाँ बड़े अधिकारी, फकीर आदि तकिया लगाकर बैठते हैं। २ ऐसी चीज या बात जिस पर भरोसा किया जा सके। ३. प्रामाणिक कथन या बात। ४ प्रमाण-पत्र।

**सनदयाफ्ता**—वि०[अ० सनद+फा० याफ्ता] १. जिसे किसी बात की सनद मिली हो। प्रमाण-पत्र प्राप्त। २ जिसे किसी परीक्षा मे उत्तीर्ण होने की सनद या प्रमाण-पत्र मिला हो।

**सनदी**—वि०[अ०]१. जिसे सनद मिली हुई हो। २. सनद सम्बन्धी। ३. प्रामाणिक।

**सनना**—अ०[सं० सधम्]१. आटे, मैदे, सत्तू आदि का घी, दूध, जल आदि के योग से गूँधा जाना। २. सूखे मसाले मे पानी मिलाकर गीला किया जाना। ३. सम्मिलित होना या किया जाना। जैसे—हमे क्यों सान रहे हो। ४. लीन होना।

**सननी**†—स्त्री०=सानी (चौपायों का खाना)।

**सनबंधा**—पु०=संबंध।

**सनभ**—पुं०[अ०]१ प्रेमपात्र अथवा प्रियतम। २ देवमूर्ति।

**सनमकदा**—पु०[अ० सनम+फा० कद.] देव-मन्दिर।

**सनमान**†—पुं०=सम्मान।

**सनमानना***—स० [स० सम्मान+हिं० ना (प्रत्य०)] सम्मान अर्थात् आदर-सत्कार करना। इज्जत बढ़ाना।

**सनमुख***—अव्य०=सम्मुख।

**सनय**—वि०[स०] प्राचीन। पुराना।

**सनसा**†—पुं० =मंशय।

**सनसनाना**—अ०[अनु० सनसन] १ सनसन शब्द होना। २. सनसन शब्द करते हुए उड़ना, दौड़ना या भागना। ३ झुनझुनी के कारण अंग का हिलना और सन सन शब्द करना।

**सनसनी**—स्त्री० [अनु० सनसन] १ शरीर की वह स्थिति जिसमे आश्चर्य, भय आदि के कारण सवेदनसूत्रों मे रक्त सन सन करता हुआ जान पड़ता है। २ किसी विकट या विलक्षण घटना के कारण समाज या समूह मे फैलनेवाली हलकी उत्तेजना और घबराहट। खलबली। (सेन्सेशन) क्रि० प्र०—फैलना।

**सनहरी**—स्त्री०[अ० सहनक] मिट्टी का एक प्रकार का बरतन जो बहुधा मुसलमान काम मे लाते है।

**सनहला**—पु०[देश०] नाँद की तरह का वह बरतन जिसमे जूठे बरतन इसलिए डाल दिए जाते हैं कि वे भीग जायँ और उनमे लगी हुई जूठन फूल जाय जिससे उन्हें माँजते समय आसानी हो।

**सना**—पु०[अ०] प्रशंसा। स्तुति।

स्त्री०=सनाय।

**सनाई**—स्त्री० [हिं० सनना] सनने या साने जाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

†स्त्री०=शहनाई।

**सनाका**†—पु०[अनु०]१ सनसनाहट। २ किसी आकस्मिक आघात के कारण उत्पन्न होनेवाली चचलता या विकलता। उदा०—बदलेखा का हृदय सनाका खा गया।—हजारीप्रसाद द्विवेदी।

क्रि० प्र०—खाना।

**सनाढ्य**—पु०[स० सन=दक्षिण+आढ्य=सपन्न] गौड ब्राह्मणो की एक शाखा या वर्ग।

**सनातन**—वि०[स०] [भाव० सनातनता] १ जो आदि अथवा बहुत प्राचीन काल से बराबर चला आ रहा हो। जिसके आदि का समय ज्ञात न हो। जो परपरानुसार आचार-विचार आदि पर निष्ठा रखता हो। परपरानिष्ठ। (आर्थोडाक्स)। २ सदा बना रहनेवाला। नित्य। शाश्वत। ४ निश्चल। स्थिर। ४ अनादि और अनत।

पु०[वि० सनातनी] १. अत्यन्त प्राचीन काल। २. बहुत दिनों से चला आया हुआ व्यवहार, क्रम या परम्परा। (विशेषत. धार्मिक आचार, विश्वास आदि के संबध मे)। ३ वह जिसे श्राद्ध आदि मे भोजन कराना आवश्यक हो। ४ ब्रह्मा। ५. विष्णु। ६ शिव।

**सनातन धर्म**—पुं० [सं० मध्यम० स०, कर्म० स० वा] १. ऐसा धर्म जो अनादि अथवा बहुत प्राचीन काल से चला आ रहा हो। २. वर्तमान हिंदू धर्म जिसके संबध मे उसके अनुयायियो का विश्वास है कि यह अनादि

काल से चला आ रहा है। इसके मुख्य अंग है—बहुत से देवी-देवताओं की उपासना, मूर्ति-पूजा, तीर्थ-यात्रा, श्राद्ध, तर्पण आदि।

**सनातन-धर्मी**—पु० [स०] सनातन धर्म का अनुयायी या माननेवाला।

**सनातन पुरुष**—पु०[स०] विष्णु भगवान्।

**सनातनी**—पुं०[सं० सनातन+ई (प्रत्य०)] सनातन धर्म का अनुयायी।
वि० १. सनातन। २. सनातन धर्मावलम्बियों में प्रचलित या होनेवाला।

**सनाथ**—वि० [सं० अव्य० स०] [स्त्री० सनाथा] जिसकी रक्षा करनेवाला कोई स्वामी हो। जिसके ऊपर कोई मददगार या सरपरस्त हो। 'अनाथ' का विपर्याय।
**मुहा०—किसी को सनाथ करना**=शरण में लेकर आश्रय देना। पूरा सहायक बनना।
†अव्य० नाथ-सहित।

**सनाथा**—वि०[स० सनाथ—टाप्](स्त्री) जिसका पति जीवित हो। सधवा।

**सनाभ**—पु०[स० ब० स०]१. सगा भाई। २ सगा संबंधी।

**सनाभि**—पु०[स० ब स०] १ संबंध के विचार से एक ही माँ के पेट से उत्पन्न दो बच्चे चाहे वे एक ही पिता की सन्तान हों या एक से अधिक पिताओं की। २. दे० 'सनाभ'।

**सनामक, सनामा (मन्)**—वि० [स०] एक ही नामवाले (दो या अधिक)। नाम-रानी।

**सनाय**—स्त्री० [अ० सना] एक प्रकार का पौधा जिसकी पत्तियाँ रेचक होती हैं। सोनामुखी।

**सनासना**†—अव्य०[अनु०] सनसन शब्द करते हुए।

**सनाह**†—पु०=सन्नाह।

**सनि**†—पु०=शनि (शनैश्चर)।

**सनित**—भू० कृ०[हिं० सनना] किसी के साथ सना या मिला हुआ।

**सनिद्ध**—वि०[स० अव्य० स०] सोया हुआ। निद्रायुक्त।

**सनीचर**—पु० १.=शनैश्चर। २.=शनिवार।

**सनीचरी**—स्त्री०[हिं० सनीचर]फलित ज्योतिष के अनुसार शनि की दशा जिसमें दुःख, व्याधि आदि की अधिकता होती है।
वि० १. शनि से ग्रस्त। २. मनहूस और अशुभ। जैसे—सनीचरी सूरत।

**सनीड़**—अव्य०[सं० अव्य० स०] १. पड़ोस में। बगल में। २. निकट। पास।
वि०१. जो एक ही नीड़ या घोंसले में रहते हों। २. एक ही स्थान पर साथ साथ रहनेवाले। ३ पड़ोसी।

**सनु**†—वि०=हिं० 'से' विभक्ति का अवधी रूप।

**सनेम***—अव्य०[हिं० स+नेम=नियम]१. नियमपूर्वक। २ व्रत आदि का पालन करते हुए। सदाचारपूर्वक। उदा०—आयुस होइ त रहहुँ सनेमा।—तुलसी।

**सनेस, सनेसा***—पुं०=संदेसा।

**सनेही**†—पुं०=स्नेह।

**सनेही**†—वि०=स्नेही।

**सनै सनै***—अव्य०=शनैः शनैः।

**सनीचर**—पुं०[अ०] चौड़े का पेड़।

**सनौढ़िया**—पुं०=सनाढ्य (गौड़ ब्राह्मणों की एक शाखा)।

**सन्न**—वि०[सं० शून्य, हिं० सुन्न] १ संज्ञाशून्य। संवेदनारहित। बिना चेतना का-सा। जड़। २ भौचक्का। स्तंभित। स्तब्ध। जैसे—यह सुनते ही वह सन्न रह गया। ३ बिलकुल चुप। मौन।
**मुहा०—सन्न मारना**=बिलकुल चुप हो जाना। आवश्यकता होने पर भी कुछ न बोलना। सन्नाटा खींचना।
पुं०[सं०] चिरौंजी का पेड़।

**सन्नक**—वि०[सं०] बौना।

**सन्नत**—भू० कृ०[स० सम् √ नम् (झुकना)+क्त=न]१. अच्छी तरह झुका हुआ। २. नीचे आया हुआ। ३. भरा हुआ।

**सन्नति**—स्त्री०[सं० सम्√ नम् (झुकना)+क्तिन्]१ झुकाव। नति। २ नम्रता। विनय। ३. किसी ओर होनेवाली प्रवृत्ति। ४. कृपा-दृष्टि। मेहरबानी की नजर। ५ आवाज। शब्द। ६. दक्ष की एक कन्या जो ऋतु को ब्याही थी।

**सन्नद्ध**—वि०[सं० सम्√नह् (बाँधना)+क्त]१ किसी के साथ कसा या बँधा हुआ। २. जो कवच आदि पहनकर युद्ध के लिए तैयार हो गया हो। ३. कोई कार्य करने के लिए उद्यत। तैयार। ४ किसी के साथ जुड़ा या लगा हुआ। ५ पास या समीप का।

**सन्नयन**—पु०[स०]१ ले जाना। २. सपत्नि विशेषतः अचल सपत्ति का लेख्य आदि के द्वारा एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना। अभिहस्तांतरण। (कन्वेएन्स)

**सन्नयनकार**—पुं०[सं०] वह जो सन्नयन संबंधी लेख्य आदि लिखकर प्रस्तुत करता हो। (कन्वेएसर)

**सन्नयन-लेखक**—पु०=सन्नयनकार।

**सन्नयन-लेखन**—पु०[स०] सन्नयन विषयक लेख्य आदि लिखने का काम। (कन्वेयंसिंग)

**सन्नयन-विद्या**—स्त्री०[स०] वह विद्या या शास्त्र जिसमें सन्नयन संबंधी लेख्य आदि प्रस्तुत करने का विवेचन होता है। (कन्वेयंसिंग)

**सन्नाटा**—पु० [सं० संनष्ट] १. ऐसी वातावरणीय स्थिति जिसमें किसी भी प्रकार का शब्द न हो रहा हो। २ उक्त स्थिति में पड़कर भयभीत तथा भौचक होने का भाव।
**मुहा०—सन्नाटे में आना**=भयभीत तथा स्तब्ध हो जाना। ३. मौन। चुप्पी।
क्रि० प्र०—खींचना।—मारना।
४ निर्जनता। ५. चहल-पहल का अभाव।
**मुहा०—सन्नाटा बीतना**=उदासी में समय काटना।
६. लेन-देन, व्यापार आदि में सहसा आनेवाली मंदी। जैसे—आज-कल बाजार में सन्नाटा है।
**विशेष**—इस अर्थ में इसका प्रयोग विशेषण की तरह भी होता है। जैसे—आज-कल बाजार सन्नाटा है।
वि०१. जहाँ किसी प्रकार का शब्द न सुनाई पड़ता हो। नीरव। स्तब्ध। २. निराला। निर्जन। ३. (स्थान) जिसमें किसी प्रकार की क्रिया न हो रही हो।
पुं०[अनु० सन सन] १. हवा के जोर से चलने की आवाज। वायु के बहने का शब्द।

**पद—सम्राट् का**=सन सन शब्द करता हुआ और तेजी से चलता हुआ। जैसे—सम्राटे की हवा।

**सम्राटी**—पु०[स० सम्+राटिन्] व्याकरण में, ऐसा अक्षर या वर्ण जिसका उच्चारण किसी स्वर की सहायता से ही होता हो; बिना स्वर लगाये जिसका उच्चारण हो ही न सकता हो। (कान्सोनेन्ट) जैसे—क, ख, ग आदि।

**विशेष**—बिना स्वर की सहायता के जहाँ किसी वर्ण का उच्चारण होता है, वहाँ वह हल् कहलाता है।

**वि०१.** नाद या स्वर से युक्त। २. नाद करनेवाला।

**सम्राह**—पुं०[सं० सम् √नह् (बाँधना)√ +घञ्] १ कवच। बकतर। २. उद्योग। प्रयत्न।

**सन्निकट**—अव्य०[स० सम्-निकट] बहुत निकट। बिलकुल पास।

**सन्निकर्ष**—पु०[स० सम्+नि√ कृष् (समीप करना)+घञ्] [भू० कृ०सन्निकृष्ट] १. सबंध। लगाव। २ निकटता। समीपता। ३ नाता। रिश्ता। ४. आधार। आश्रय। ५ न्याय में, इन्द्रियों से होनेवाला विषयों का सम्बन्ध।

**सन्निकाश**—वि०[स० सम्-निकाश] सदृश। समान।

**सन्निकृष्ट**—भू० कृ० [स० सम्-नि√ कृष् (समीप करना)+क्त] १. पास लाया हुआ। २. निकट। करीब। पास।

**सन्निधि**—पु० [स० सम्-नि√ धा (रखना)+कि] १ सामीप्य। २ आमने-सामने होने की स्थिति।

**सन्निधाता (तृ)**—पुं०[स० सम्-नि√ धा (रखना)+तृच्]१ प्राचीन भारत में,वह राजकर्मचारी जो लोगों को अपने साथ ले जाकर न्यायालय में उपस्थित करता था। २ राजकोष का प्रधान अधिकारी।

**सन्निधान**—पु०[स० सन्-नि √धा (रखना) +ल्युट्—अन]१. वो या अधिक चीजों को साथ-साथ या अगल-बगल रखना। २. वह अवस्था जिसमें चीजें साथ साथ या अगल-बगल रहती या होती हैं। निकटता। समीपता। ३. पडोस। ४ इंद्रियों का विषय। ५ स्थापित करना। स्थापन।

*अव्य० निकट। पास।

**सन्निधि**—स्त्री० [स० सम्-नि√ धा (रखना)+कि] सन्निधान। (दे०)

**सन्निपात**—पु० [स० ब० स०] १ नीचे आना, उतरना या गिरना। विशेषत: साथ साथ नीचे आना, उतरना या गिरना। २ जुटना। मिलना। ३ टकराना। भिड़ना। ४ इकट्ठा या एकत्र होना। ५ कई घटनाओं का एक साथ घटित होना। ६ बहुत-सी चीजों या बातों का मिश्रण। समाहार। ७ वैद्यक में, ज्वर की एक अवस्था जिसमें कफ, पित्त और वात एक साथ कुपित होकर बहुत उग्र रूप धारण करते हैं। त्रिदोष। सन्निपात।

**सन्निबंध**—पु०[सं० सम्-नि √बन्ध् (बाँधना)+घञ्] [भू० कृ० सन्निबद्ध] १. एक में बाँधना। जकड़ना। २. लगाव। सम्बन्ध। ३. आसक्ति। ४ असर। प्रभाव। ५. परिणाम। फल। नतीजा।

**सन्निबद्ध**—भू० कृ० [स० सम्—नि√बन्ध् (बाँधना)+क्त, नलोप] १. एक में बाँधा या जकड़ा हुआ। २. अटका या फँसा हुआ। ३ सहारे पर टिका हुआ।

**सन्निभ**—वि०[स० सम्-नि√ भा (प्रकाशित करना)+क]मिलता-जुलता। रूपाकार। समान।

**सन्निभृत**—वि० [स० सम्-नि√भृ (भरण-पोषण करना)+क]१ छिपा हुआ। २ समझ-बूझकर बातें करनेवाला।

**सन्निमग्न**—वि०[स०]१ खूब डूबा हुआ। २ सोया हुआ।

**सन्नियोग**—पु० [स० सम्-नि √युज् (मिलना) +घञ्] १ संबंध। २. संयोग। ३ आसक्ति। ४ नियुक्ति। ५ आदेश।

**सन्निरुद्ध**—भू० कृ०[स०]१. ठहराया या रोका हुआ। २. दमन किया या दबाया हुआ। ३. अच्छी तरह या कसकर भरा हुआ।

**सन्निरोध**—पु० [स० सम्-नि √रुध् (रोकना)+घञ्] १ रोक। रुकावट। २. बाधा। ३ निवारण। ४ दमन। ५ तंगी। संकोच। ६. तंग रास्ता।

**सन्निवास**—पु०[स० सम्-नि√ वस् (रहना) +घञ्]१ साथ रहना। २ बसना। ३ घोंसला।

**सन्निविष्ट**—भू० कृ० [स० सम् -नि √विश् (प्रवेश करना)+क्त] १ अंदर या भीतर आया या लगाया हुआ। २. जुटा या सटाया हुआ। ३ बीच में जोड़ा, बढ़ाया या लगाया हुआ। (इन्सर्टेड) ४ किसी के साथ जमा, बैठा या रखा हुआ। ५ स्थापित किया हुआ।

**सन्निवेशन**—पु० [स०] १ अंदर लाना या साथ में ले जाना। प्रवेश करना या कराना। २ एकत्र होना या करना। जटना या जुटाना। ३. किसी के बीच में जोड़ना, बढ़ाना या लगाना। ४ किसी के पास या साथ बैठना। ५ सजा या जमाकर रखना। ६. आधार। आश्रय। ७ वास-स्थान। ८ घर। मकान। ९ समूह। १० प्रबंध। व्यवस्था। ११ रचना। गठन।

**सन्निवेशित**—भू० कृ०[स०]१ जिसका सन्निवेश हुआ या किया गया हो। २ बीच में जोड़ा, बढ़ाया या लगाया हुआ।

**सन्निहित**—भू० कृ०[स० सम्—नि√ धा (रखना) +क्त, धा=हि] १. किसी के साथ या पास रखा हुआ। २ समीपस्थ। ३ पड़ोस का। ४ टिकाया, ठहराया या रखा हुआ। ५ कोई काम करने के लिए उद्यत। तैयार।

†पु०=शनिवार।

**सन्न**—पु०[हि०] १ सन या पटसन से बनाया हुआ। स्त्री०१ सन से बुना हुआ कपड़ा। २ सन की जाति का एक प्रकार का छोटा पौधा जो बगीचों में शोभा के लिए लगाया जाता है।

**सन्नद्ध**—पु०[स० सद्+मन्] शुद्ध या अच्छा मन। उदा०—किसी अपर सत्ता के सन्मुख सन्मन से नत होना।—दिनकर।

वि० अच्छे या सद् मनवाला।

**सन्मान**—पु०[स० ष० त०] सम्मान।

**सन्मानना**—स०=सनमानना।

**सन्मार्ग**—पु०[स०] उत्तम या भला मार्ग।

**सन्मुख**—पु०[स०] अच्छा या सुन्दर मुख।

वि० अव्य० स० 'सम्मुख' का अशुद्ध रूप।

**सन्यास**—पु०=सन्यास।

**सपंक (१)**—वि० [सं० स+पंक=कीचड़] १. कीचड़ से भरा हुआ। २. जिसे पार करना बहुत कठिन हो। बीहड़। विकट।

**सपंही**†—स्त्री०=सपेंड़।

**सपक्ष**—वि० [स० ब० स०] १. जिसे पंख या पर हों। परोंवाला। २. किसी की दृष्टि से, उसके पक्ष में रहने या होनेवाला। ३ पोषक या समर्थक। ४ सहायक और साथी।

पु०१ अनुकूल पक्ष। २ न्याय में, वह बात या दृष्टांत जिसमें साध्य अवश्य हो। जैसे—जहाँ धुआँ होता है, वहाँ आग भी रहती है। इस दृष्टि से रसोई घर का दृष्टांत सपक्ष कहलाता है।

**सपक्षी**†—पि०=सपक्ष।

**सपचना**—अ०=सपचना (पूरा होना)।

**सपच्छ***—वि०=सपक्ष।

**सपटा**—पु० [देश०] १ सफेद कचनार। २. एक प्रकार का टाट।

**सपत**†—स्त्री०=शपथ।

†वि० =प्राप्त (सात)।

**सपतना**—अ० [?] किसी स्थान पर पहुँचना। (राज०)

**सपत्न**—वि० [सं०] सपत्नी या सौत की तरह का द्वेष और वैर रखनेवाला।

पु० दुश्मन। वैरी। शत्रु।

**सपत्नता**—स्त्री० [स० सपत्न+तल्—टाप्] वैर। शत्रुता।

**सपत्नी**—स्त्री० [स० ब० स० ङीप्] किसी विवाहिता स्त्री की दृष्टि में उसके पति की दूसरी पत्नी। सौत। सौतिन।

**सपत्नीक**—वि० [स० अव्य० स०—कप] (व्यक्ति) जो अपनी पत्नी या भार्या के साथ हो। जैसे—वह यहाँ सपत्नीक आनेवाले हैं।

**सपथ**†—पु०=शपथ।

**सपदि**—अव्य० [स० सम् √पद् (गत्यादि)+इन—नलोप पृषो०] १ उसी समय। तुरत। २ शीघ्र। जल्दी।

**सपना**†—पु०=सपना।

**सपना**—पु० [सं० स्वप्न] १. वह घटना, बात या दृश्य जो सोये होने पर अंतर्मन में काल्पनिक रूप में भासित होता है। स्वप्न। २. लाक्षणिक अर्थ में, ऐसी बात (क) जिसका अस्तित्व ही न हो। (ख) जो अब दुर्लभ हो गई हो अथवा (ग) जो मनगढंत या कपोल-कल्पित हो और कार्य रूप में न लाई जा सकती हो।

**सपनाना**†—अ० [स० स्वप्न] स्वप्न देखना। जैसे—तुम तो दिन भर बैठे सपनाते रहते हो।

स० स्वप्न दिखाना। जैसे—आज देवी ने उन्हें फिर कुछ सपनाया है (अर्थात् स्वप्न दिखाया है)।

**सपनीला**—वि०[स्त्री० सपनीली]=स्वप्निल।

**सपरदाई**—पुं० [फ० संप्रदायी] तवायफ के साथ तबला, सारंगी या और कोई साज बजानेवाला। समाजी। साजिन्दा।

**सपरना**—अ० [सं० सपादन, प्रा० संपाडण] १. किसी काम का पूरा होना। समाप्त होना। निबटना।

**मुहा०—(व्यक्ति का) सपर जाना**=मर जाना। परलोकगत होना। २. काम का किया जा सकना। हो सकना। जैसे—यह काम हमसे नहीं सपरेगा। ३. काम-धन्धे आदि से निवृत्त होना। निपटना। ४. किसी काम की तैयारी के लिए पहले और कामों से निवृत्त होना। जैसे—वह सबेरे से मेले में चलने के लिए सपर रहे हैं।

**सपराना**—स०[हिं० सपरना का स०] १. काम पूरा करना। निबटाना। खतम करना। २ अन्त या समाप्त करना।

**सपरिकर**—वि०[स०] अनुचर वर्ग के साथ।

**सपरिच्छद**—वि०[स० अव्य० स०] तैयारी या ठाट-बाट के साथ।

**सपरिजन**—वि०[स० अव्य० स०] १ सपरिकर।

**सपरिवार**—वि०[स० अव्य० स०] परिवार के सदस्यों के साथ।

**सपरिश्रम कारावास**—पु०[स०] कैद की वह सजा जिसमें कैदी को कठिन परिश्रम भी करना पड़ता है। कड़ी सजा। (रिगरस इम्प्रीजनमेन्ट)

**सपर्ण**—वि०[स० अव्य० स०] पत्तियों से युक्त।

**सपाट**—वि० [स० स+पट्ट, हिं० पाटा=पीढ़ा] १. जिसका तल बराबर या सम हो। समतल। २. जिसके तल पर कोई दूसरी चीज उभरी, खड़ी या टिकी न हो। जैसे—सपाट मैदान। ३ जो क्षितिज की ओर एक ही सीध में दूर तक चला गया हो। क्षैतिज। (हारिज़ान्टल)

**सपाटा**—पु०[स० सर्पण] १ चलने या दौड़ने का वेग। २ तीव्र गति। दौड़।

**पद—तेर-सपाटा**—मन बहलाने के लिए यहीं जाकर घूमना-फिरना।

**सपाटे की तान**=संगीत में एक प्रकार की तान जिसमें स्वरों का उतार-चढ़ाव बहुत तेजी से होता है।

३ आक्रमण करने के लिए झपटने की क्रिया या भाव। उदा०—दो सौ सवारों का सपाटा पड़ा।—वृंदावनलाल वर्मा।

क्रि० प्र०—पड़ना।—मारना।—मारना।

४. तमाचा। थप्पड़।

क्रि० प्र०—लगाना।

५ छल। धोखा।

**सपाद**—वि०[सं०] १ पाद या चरण से युक्त। २. (ऐसा पूरा) जिसके साथ चतुर्थांश और भी मिला हो। सवाया। जैसे—सपाद लक्ष=एक लाख और पचीस हजार।

**सपिंड**—पु०[स० ब० स०] धर्म-शास्त्र में पारस्परिक दृष्टि से एक ही कुल की सात पीढ़ियों तक के लोग जो एक दूसरे को पिंडदान कर सकते और उनका श्राद्ध करने के अधिकारी होते हैं।

**सपिंडी**—स्त्री०[स० सपिंड—ङीप्] मृतक के निमित्त किया जानेवाला वह कर्म जिसमें वह और पितरों या परिवारों के मृत प्राणियों के साथ पिंडदान द्वारा मिलाया जाता है।

**सपिंडीकरण**—पु० [स०√सपिंड+च्वि+√कृ (करना)+ल्युट्—अनदीर्घ] एक प्रकार का श्राद्ध जिसमें मृतक को पिंड-दान द्वारा पितरों के साथ मिलाते हैं।

**सपीड**—वि०[स० अव्य० स०] पीड़ा युक्त।

**सपुनां**†—वि०=संपूर्ण। उदा०—सपुन सुधानिधि दधि भल मेल।—विद्यापति।

**सपुर्द**—वि०[फा० सिपुर्द] [भाव० सपुर्दगी] १. देख-रेख, पालन-पोषण, रक्षण आदि के निमित्त किसी को सौंपा हुआ। जैसे—बालक या मकान किसी को सपुर्द करना। २. उचित कार्य, विचार आदि के लिए किसी

अधिकारी के हाथ सौंपा हुआ। (कमिटेड) जैसे—चोर को पुलिस के सुपुर्द करना।

**सुपुर्दगी**—स्त्री०[फा० सिपुर्दगी] सुपुर्द करने या सौंपने की अवस्था, क्रिया या भाव। (कमिटमेन्ट)

**सुपूत**—पु०[सं० सत्पुत्र,प्रा० सपुत्त, सउत्त] १ वह पुत्र जो अपने कर्तव्य का पालन करे। अच्छा पुत्र। २ वह पुत्र जिसने अपने कुल या पूर्वजों की कीर्ति बढाई हो।

**सुपूती**—स्त्री०[हिं० सपूत+ई (प्रत्य०)]१. सपूत होने की अवस्था या भाव। २ ऐसी स्त्री जिसने सपूत को जन्म दिया हो।

**सपेद**†—पुं० [?]मपट।

**सपेटा**—पु०[?]१. महोगनी वृक्ष का फल। चीकू। २. [हिं० सपेटा] वह दूध जिसे कच्चे ही मथकर उसमे से मक्खन निकाल लिया गया हो।

**सपेत (त)**†—वि०=सफेद।

**सपेती (ती)**†—स्त्री०=सफेदी।

**सपेरा**†—पु०=सँपेरा।

**सपेला**†—पु०=सँपोला।

**सपोला**†—पु०=सँपोला।

**सप्त**—वि० [स०] जो गिनती मे सात हो। जैसे—सप्तभुज, सप्तऋषि।

**सप्तऋषि**—पुं०=सप्तर्षि।

**सप्तक**—पु०[स०]१. एक ही तरह की सात वस्तुओं, कृतियों आदि का समूह। सात वस्तुओं का समग्र। जैसे—तारासप्तक, सतसई सप्तक। २ संगीत मे, साते स्वरों का समूह। 'षडज' से 'निषाद' तक के सातों स्वर। (ऑक्टेव)

**विशेष**—साधारणत गाने-बजाने के तीन सप्तक होते हैं। संगीत मदा मध्य सप्तक मे होता है। पर कभी कभी स्वर नीचा होकर मन्द्र में और ऊँचा होकर तार मे भी पहुँच जाता है।

वि० १ सात। २. सातवाँ।

**सप्तकी**—स्त्री०[स० सप्तक—ङीप्]सात लड़ियोंवाली करधनी।

**सप्तकृत**—पु०[स० त० त०] विश्वेदेवों में से एक।

**सप्तग्रही**—स्त्री०[सं०]एक ही राशि मे सात ग्रहो का एकत्र होना, जो फलित ज्योतिष के अनुसार अशुभ फल देता है।

**सप्तच्छद**—पुं०[स०] सप्तवर्ण वृक्ष। छतिवन।

**सप्तजिह्व**—वि०[स०] जिसकी सात जिह्वाएँ हों।

पु० अग्नि।

**विशेष**—अग्नि की सात जिह्वाएँ हैं—काली, कराली मनोजवा, सुलोहिता, सुधूम्रवर्णा, उग्रा, और प्रदीप्ता।

**सप्त-तंत्री**—स्त्री० [सं०] वह वीणा जिसमे बजाने के लिए सात तार लगे हों।

**सप्तति**—वि०[सं० सप्तन् +ति—लोप] सत्तर।

**सप्ततितम**—वि० [सं० सप्तति+तमप्] सत्तरवाँ।

**सप्तत्रिंश**—वि० [सं० सप्तत्रिंशत—ड] सैंतीसवाँ।

**सप्तत्रिंशत्**—वि०[सं०] सैंतीस।

**सप्तदश (दशन्)**—वि०[स०] सत्रह।

**सप्तद्वीप**—पु०[सं० कर्म० स०] पुराणानुसार पृथ्वी के ये सात बड़े और मुख्य विभाग—जम्बू, कुश, प्लक्ष, क्रौंच, शाल्मलि, शाक और पुष्कर द्वीप।

**सप्त-धातु**—पुं०[स०]१. आयुर्वेद के अनुसार शरीर के ये सात संयोजक द्रव्य—रक्त, पित्त, मास, वसा, मज्जा, अस्थि और शुक्र। २. चन्द्रमा का एक घोड़ा।

**सप्तधान्य**—पु०[म०] जौ, धान, उरद आदि सात अन्नो का मेल जो पूजा के काम आता है। सत-नजा।

**सप्तनाड़ी चक्र**—पु०[सं० मध्यम० स०] फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का चक्र जिसमे सब नक्षत्रो के नाम रहते हैं; और जिसके द्वारा वर्षा का आगम बताया जाता है।

**सप्तपंचाश**—वि०[स० सप्तपंचाशत्+ड, मध्यम० स०] सतावनवाँ।

**सप्तपंचाशत**—वि० [सं०] सतावन।

**सप्तपत्र**—वि०[स० ब० स०] जिसमे सात पत्ते या दल हों। सात पत्तों वाला।

पु०१ सूर्य। २. मोतिया या मोगरा नाम का बेला। ३ सप्तपर्ण। छतिवन।

**सप्तपदी**—स्त्री०[स०] १ हिन्दुओं मे एक वैवाहिक रीति जिसमे वर और वधू एक दूसरे का वरण करते समय अग्नि की साक्षी मानकर उसकी सात परिक्रमाएँ करते हैं। भँवरी। भाँवर। २ उक्त के आधार पर अग्नि को साक्षी करके कोई बात पक्की करने या वचन देने की क्रिया।

**सप्तपर्ण**—पु०[स०]१ छतिवन का पेड़। २ प्राचीन काल की एक प्रकार की मिठाई।

**र सप्तपर्णी**—स्त्री०[स०] लज्जालु। लज्जावती लता।

**सप्त-पाताल**—पु०[स०] पृथ्वी के नीचे के सात लोक—अतल, वितल, सुतल, रसातल, तलातल, महातल, और पाताल।

**सप्तपुरी**—स्त्री०[स०] सतपुरिया। (दे०)

**सप्तपुरी**—स्त्री०[स०] पुराणानुसार ये सात पवित्र नगर या तीर्थ जो मोक्ष दायक कहे गये हैं—अयोध्या, मथुरा, माया (हरद्वार), काशी, काची, अवन्तिका (उज्जयिनी) और द्वारका।

**सप्त-प्रकृति**—स्त्री०[सं०]प्राचीन भारतीय राजनीति में, राज्य के ये सात अग—राजा, मन्त्री, सामत, देश, कोश, गढ और सेन्य।

**सप्तबाहु**—पु०[स०] बाहुक देश। बलख।

**सप्त-भंगी**—स्त्री०[स०] जैन न्याय के सात मुख्य अग जिनपर उनका स्याद्वाद मत आश्रित है।

**सप्तभद्र**—पुं०[स० ब० स०] १ सिरिस। शिरीष वृक्ष। २. नवमल्लिका। चेवारी। ३. गुआ। घुँघची।

**सप्तभुवन**—पुं०[सं०] भूर्लोक, भुवर्लोक, स्वर्लोक, महर्लोक, जनर्लोक, तपर्लोक और सत्यलोक ये सात भुवन या लोक।

वि० सत मंजिल। सात खण्डोवाला। (मकान)

**सप्तभूम**—वि०[स०] सात खडो का। सतमंजिला (मकान)।

**सप्तम**—वि०[सं० सप्तन्+उट्—मट्] [स्त्री० सप्तमी] सातवाँ।

**सप्तमातृका**—स्त्री०[स०] ये सात माताएँ या शक्तियाँ जिनका पूजन, विवाह आदि शुभ अवसरो के पहले होता है—ब्राह्मी, माहेश्वरी, कौमारी वैष्णवी, वाराही, इन्द्राणी और चामुंडा।

**सप्तमी**—स्त्री०[सं०]१. चांद्र मास के किसी पक्ष की सातवीं तिथि। सातवाँ दिन। २. व्याकरण मे, अधिकरण कारक की विभक्ति।

**सप्त-मृत्तिका**—स्त्री०[सं०] शांति-पूजन मे काम आनेवाली इन सात स्थानो की मिट्टी—अश्वशाला, गजशाला, गोशाला, तीर्थस्थान, राजद्वार, खेत और नदी।

**सप्त-रक्त**—पुं०[सं०] शरीर के सात अवयव जिनका रंग लाल होता है। यथा—हथेली, तलवा, जीभ, आँख, पलक का निचला भाग, तालू और होंठ।

**सप्त-रात्र**—पुं०[सं०] सात रातो का समय।
वि० सात रातों मे समाप्त होनेवाला।

**सप्त-राशिक**—पुं०[स० ब० स०] गणित की एक क्रिया जिसमे सात राशियो के आधार पर किसी प्रश्न का उत्तर निकाला जाता है।

**सप्तर्चि**—पुं०[स०] अग्नि का एक नाम।

**सप्तर्षि**—पुं०[स० कर्म० स०] १ सात प्राचीन ऋषियो का समूह या मंडल।
**विशेष**—(क) शतपथ ब्राह्मण के अनुसार ये सात ऋषि—गौतम, भरद्वाज, विश्वामित्र, यमदग्नि, वसिष्ठ, कश्यप और अत्रि हैं। (ख) महाभारत के अनुसार ये सात ऋषि—मरीचि, अत्रि, अंगिरा, पुलह, क्रतु, पुलस्त्य और वसिष्ठ हैं। २ उत्तरी आकाश मे के सात तारो का एक प्रसिद्ध मंडल या समूह जो रात में ध्रुव तारे की आधी परिक्रमा करता हुआ दिखाई देता है। (उर्सा मेजर)
**विशेष**—वास्तव मे ये सातो तारे एक बड़े नक्षत्र पुंज के (जिसमे कुल मिलाकर ५३ दृश्य नक्षत्र है) अंग या उनके अंतर्गत हैं, जो पुराणानुसार ध्रुव की परिक्रमा करते हुए कहे गये हैं।

**सप्ताला**—स्त्री०[सं०]१. सातला। २ चमेली। ३. रीठा। ४. घुँघची।

**सप्तभंगी**—पुं०[स० सप्तवादिन्] सप्तभंगी न्याय का अनुयायी अर्थात् जैन।

**सप्तविंश**—वि०[सं० सप्तविंशत्] सत्ताईसवाँ।

**सप्तविंशति**—वि०[सं०] सत्ताईस।
स्त्री० उक्त संख्या जो अंकों मे इस प्रकार लिखी जाती है—२७।

**सप्तशती**—स्त्री०[सं० द्वि० स०] १. एक ही तरह की सात चीजों का वर्ग या समूह। २. सात सौ पदों या वृत्तों का संग्रह। सतसई। जैसे—दुर्गा सप्तशती।
पुं० बंगाली ब्राह्मणो की एक जाति या वर्ग।

**सप्तार्ची**—पुं०[स०] विष्णु का एक नाम।

**सप्तषष्ठ**—वि०[सं० मध्यम० स०] सड़सठवाँ।

**सप्तषष्टि**—वि०[स०] सड़सठ।
वि० सड़सठ की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६७।

**सप्तसप्त**—वि०[सं०] सतहत्तरवाँ।

**सप्तसप्तति**—वि०[सं०] सतहत्तर।
स्त्री० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७७।

**सप्तसागर**—पुं०[सं०] १. पृथ्वी पर के सातों सागरों का समूह। २. एक प्रकार का दान जिसमें सात पात्रों में घी, दूध, मधु, दही आदि रखकर ब्राह्मण को दिया जाता है।

**सप्तसिंधु**—पुं०[सं०] प्राचीन आर्यावर्त की वे प्रसिद्ध सात नदियाँ, सिन्धु, पंचनदी (रावी), शतुद्री (सतलज), वितस्ता (झेलम), सरस्वती, यमुना और गंगा।

**सप्तस्वर**—पुं०[स०] संगीत के ये सातो स्वर—स, रे ग, म, प, ध, नि।

**सप्त-स्वरा**—स्त्री० [स०] पुरानी चाल की एक प्रकार की वीणा।

**सप्तांग**—वि०[स०] ष० त०] सात अंगोवाला।
पुं०=सप्त-प्रकृति। (राजनीति का)।

**सप्तार्चि**—पुं०[सं०] अग्नि।
वि० सात किरणोंवाला।

**सप्तात्मा (त्मन्)**—पुं०[सं० ब० स०] ब्रह्मा।

**सप्तार्चि**—पुं० [सं०] १ शनि ग्रह। २. चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

**सप्तार्णव**—पु०[सं० कर्म० स०] पृथ्वी पर के सातो समुद्र।

**सप्तालु**—पु०[स० सप्त+अलुन्] सतालू। शफ़तालू।

**सप्ताशीति**—वि०[स० मध्यम० स०] सत्तासी।
स्त्री० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—८७।

**सप्ताश्व**—पु०[स० ब० स०] ज्यामिति मे, सात भुजाओवाला क्षेत्र।

**सप्ताश्व**—पुं०[स० ब० स०] सूर्य (जिनके रथ मे सात घोड़े जुते हुए माने गये हैं)।

**सप्ताह**—पुं०[स० कर्म० स०]१. सात दिन। सात दिनों की अवधि। जैसे—वे एक सप्ताह बाहर रहेंगे। २. सात दिनो का समय विशेषतः सोमवार से रविवार तक के सात दिन। ३ उक्त सात दिनों मे पढने-वाले, काम, व्यापार या नौकरी के दिन। जैसे—दो सप्ताह स्कूल और जाना है। ४. कोई ऐसा कृत्य या अनुष्ठान जो सप्ताह भर चलता रहे। जैसे—भागवत का सप्ताह, रडियो सप्ताह।
क्रि० प्र०—बैठना।—बैठाना।—सुनना।—सुनाना।
**विशेष**—महीनो को चार सप्ताहों मे विभक्त किया जाता है। परन्तु कई महीनो में अट्ठाइस से अधिक दिन होते हैं। २८ से जितने अधिक दिनो का महीना हो उन दिनो की गिनती अंतिम सप्ताह में होती है। इस प्रकार का अंतिम सप्ताह ८, ९, १० या ११ दिनों का भी होता है।

**सप्ताहांत**—पुं० [सं० सप्ताह+अंत] सप्ताह का अंतिम दिन जो शुक्रवार की आधी रात से रविवार के सवेरे तक माना जाता है। (वीक-एंड)

**सप्पन**—पुं०[देश०] वक्कम का पेड़।

**स-प्रमाण**—वि०[सं० अव्य० स०] १. प्रमाण से युक्त। २ प्रामाणिक।
क्रि० वि० प्रमाण या सबूत के साथ।

**सप्रेटा**—पुं०[अं० सेपरेटेड मिल्क] ऐसा दूध जिसमें से मक्खन या चिकना अंश निकाल लिया गया हो। मक्खनिया दूध।

**सफा**—स्त्री०[अ० साफ़] १. पंक्ति। कतार। २. बिछाने की चटाई। ३. बिछौना। बिस्तर।
पुं० शफ।

**सफरगोल**†—पुं०=इसबगोल।

**सफदर**—वि०[अ०] सफों अर्थात् सैनिक पंक्तियाँ तोड़ने या भेदनेवाला।
पुं०१. बहुत बड़ा वीर। २. एक प्रकार का बड़िया आम।

**सफर**—पुं०[अ० सफ़र]१. हिजरी सन् का दूसरा महीना। २. रास्ते में चलना। २. रवाना होना। ३. वह अवस्था जब कोई एक स्थान से

दूसरे नजदीक या दूर के स्थान को जा रहा हो। ३. यात्रा काल मे तै की जानेवाली दूरी। जैसे—५० मील लबा सफर उन्हें करना पड़ा।

†पु०=सफरी (मछली)।

**सफरदाई**—पु०=सपरदाई।

**सफर मासा**—पु० दे० 'मात्रामासा'।

**सफरमैना**—स्त्री० [अ० सैपर्स ऐंड माइनर्स] सेना के वे सिपाही जो सुरग लगाने तथा खाइयाँ आदि खोदने को आगे चलते हैं।

**सफरा**—पु० [अ० सफ़र] [वि० सफरावी] पित्त।

**सफरी**—वि० [अ० सफ़र] १. सफर-सबधी। २ सफर में साथ ले जाया जानेवाला। जैसे—सफरी बिस्तर।

स्त्री० रास्ते का व्यय और सामग्री।

†पु० [?] अमरूद नामक फल।

†स्त्री०=शफरी (मछली)।

स्त्री० [?] टिकली जो हिंदू स्त्रियाँ माथे पर लगाती है।

**सफल**—वि० [स० अव्य० स०] १. वृक्ष जिसमें फल लगा हो। फलयुक्त। २. (कार्य) जिसका उद्दिष्ट फल या परिणाम हुआ हो। जैसे—परिश्रम सफल होना। ३ (व्यक्ति) जिसका उद्देश्य या परिश्रम अपना परिणाम या फल दिखा चुका हो। जैसे—विद्यार्थी का परीक्षा मे सफल होना। ४ पक्ष जिसका अडकोश कटा न हो या जो बधिया न किया गया हो।

**स-फलक**—वि० [स० अव्य० स०] जिसके पास फलक अर्थात् ढाल हो।

**सफलता**—स्त्री० [स० सफल+तल्—टाप्] १ सफल होने की अवस्था या भाव। कामयाबी। सिद्धि। २ सफल होने पर होनेवाली सिद्धि।

**सफला**—स्त्री० [सं० सफल—टाप्] पौष मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

**सफलित**—वि० [स० सफल+इतच्]=सफलीभूत।

**सफलीकरण**—पु० [स० सफल+च्वि+कृ (करना)+ल्युट्—अन, दीर्घ] भू० कृ० सफलीकृत] सफल करने की क्रिया या भाव।

**सफलीभूत**—भू० कृ० [स० सफल+चि+भू (होना)+क्त दीर्घ] १. (व्यक्ति) जिसे सफलता मिली हो। जो सफल हो चुका हो। २. (कार्य) जो पूरा या सिद्ध हो चुका हो।

**सफहा**—पु० [अ० सफ़ह] १. तल। पार्श्व। २ पुस्तक का पृष्ठ। पन्ना। वरक।

**सफा**—वि० [अ० सफ़ा] १. साफ। स्वच्छ। जैसे—सफा कमरा। २. निर्मल। पवित्र। ३ साफ करनेवाला। जैसे—बालसफा पाउडर। ४. खाली। रहित। जैसे—रात भर मे उनका जेब सफा हो गया।

**सफाई**—स्त्री० [अ० सफ़ा+हिं० ई (प्रत्य०)] १ साफ होने की अवस्था या भाव। स्वच्छता। निर्मलता। २ कूड़े-करकट, मैल आदि से रहित करने या होने की अवस्था या भाव। जैसे—कपड़े, बरतन या मकान की सफाई। ३. त्रुटि, दोष आदि से रहित होने की अवस्था या भाव। जैसे—बोलने या लिखने में दिखाई देनेवाली सफाई। ४. छल-कपट आदि से रहित होने की अवस्था या भाव। जैसे—व्यवहार या हृदय की सफाई। ५ ऋण आदि का परिशोध। लेन-देन या हिसाब चुकता होना। ६. लगाये हुए इलजाम या आरोपित दोष से रहित होने की अवस्था या भाव। जैसे—मामले-मुकदमे मे दी जानेवाली सफाई।

क्रि० प्र०—देना।

७. वाद-विवाद आदि का निपटारा या निर्णय।

**सफा-चट**—वि० [अ०+हिं०] १. (तल) जो ऊपर से पूरी तरह से साफ कर दिया गया हो। जिसके ऊपर कुछ भी जमा या लगा न रहने दिया गया हो। जैसे—सफाचट खोपड़ी, सफाचट दाढ़ी। २. तल जिस पर कुछ भी जमा या लगा न रह गया हो। जो बिलकुल चिकना हो। जैसे—सफाचट मैदान। ३. बिलकुल साफ और स्वच्छ। जैसे—सफाचट दीवार। ४. जिसका कुछ भी अंश या चिह्न बाकी न रहने दिया गया हो। जैसे—जो कुछ उसने पाया वह सब सफाचट कर दिया।

**सफाया**—पु० [अ० सफ़ा] १. जीवों के संबध मे, उनका होने या किया जानेवाला पूरा सहार। जैसे—(क) युद्ध मे जातियो का होनेवाला सफाया। २ वस्तुओ के सम्बन्ध मे. उनका किया जानेवाला ऐसा उपयोग या भोग कि वे नष्ट या समाप्त हो जायँ। जैसे—दो ही वर्षों में उसने बाप-दादा की कमाई का सफाया कर दिया।

**सफीना**—पु० [अ० सफ़ीनः] १. बही। किताब। नोट-बुक।

२ अदालत का लिखा हुआ परवाना। हुकुमनामा।

**सफीर**—पु० [अ० सफ़ीर] एलची। राजदूत।

स्त्री० १. चिड़ियों के बोलने की आवाज। २ सीटी, विशेषत वह सीटी जो पक्षियो, साथियो आदि को अपने पास बुलाने के लिए बजाई जाती है।

**सफीला**—स्त्री० [अ० फसील] १. पक्की चहारदीवारी। २ शहरपनाह। परकोटा।

**सफेद**—वि० [स० श्वेत से फा० सुफेद] १ जो रगीन न हो। जैसे—सफेद बाल।

**पद—सफेद खून**=पुरुष का वीर्य।

२ स्वच्छ तथा उज्ज्वल। जैसे—सफेद पोशाक। ३ (कागज आदि) (क) जिस पर कुछ लिखा न हो। कोरा। (ख) जिस पर लकीरें आदि न खिची हों।

**पद—स्याह सफेद**=(क) भला-बुरा। (ख) हानि-लाभ।

**मुहा०—खून सफेद होना**=मोह, ममता, सहानुभूति आदि का भाव मन मे न रह जाना।

४. साफ। स्पष्ट।

**पद—सफेद-झूठ**। (देखें)

**सफेद-झूठ**—पु० [हिं०] ऐसा झूठ जो ऊपर से देखने पर ही साफ झूट जान पडता हो, और वस्तु-स्थिति के स्पष्ट विपरीत हो।

**विशेष**—हिन्दी मे यह पद अँगरेजी के 'व्हाइट लाई' के अनुकरण पर बना है, पर इसका आशय बिलकुल उलटा लिया जाने लगा है। वस्तुत: अँगरेजी मे 'व्हाइट लाई' ऐसे झूठ को कहते हैं जो केवल औपचारिक रूप मे प्राय बोला जाता है और जिसमे किसी के अनिष्ट या छल-कपट का कुछ भी उद्देश्य नही होता।

**सफेद पलका**—पु० [फा० सुफ़ेद+हिं० पलक] ऐसा कबूतर जिसके पर कुछ सफेद और काले हों।

**सफेद-पोश**—वि० [फा०] [भाव० सफेद-पोशी] १. साफ कपड़े पहननेवाला।

पु० कुलीन और शिक्षित और सभ्य व्यक्ति।

**सफेद सुरमा**—पु० [हिं०] चिरौंजी नामक खनिज पदार्थ जो सफेद रंग का होता है। (चिन्तम)

**सफेद हाथी**—पु० [हिं०] १. बरमा में पाया जानेवाला सफेद रंग का हाथी जो वहाँ बहुत पवित्र माना जाता है और जिससे कोई काम नहीं लिया जाता। २. ऐसा व्यक्ति विशेषत. वेतन-भोगी कर्मचारी, जिसपर व्यय तो बहुत अधिक पड़ता हो, पर जिसका उपयोग प्राय. बहुत कम या नहीं के समान होता हो। (व्हाइट एलिफेन्ट)

**सफेदा**—पुं० [फा० सुफेदा] १. जस्ते का चूर्ण या भस्म जो दवा तथा लोहे, लकड़ी आदि की रँगाई में रंग में मिलने के काम में आती है। ३ एक प्रकार बढ़िया आम। ४. एक प्रकार का बड़ा और बढ़िया खरबूजा। ५. एक प्रकार का पाकवाल जिनका प्रचलन मुसलमानों में है। ६. पंजाब और कश्मीर में होनेवाला एक बहुत ऊँचा और खंभे की तरह सीधा जानेवाला पेड़ जिसकी छाल का रंग सफेद होता है। इसकी लकड़ी सजावट के समान बनाने के काम में आती है।

**सफेदी**—स्त्री० [फा० सुफेदी] १. सफेद होने की अवस्था या भाव। श्वेतता। धवलता। २. बालों के सफेद होने की अवस्था जो वृद्धावस्था की सूचक होती है।

**मुहा०—सफेदी आना**=दाढ़ी मूँछें और सिर के बाल सफेद होना। बुढ़ापा आना।

३. दीवारों आदि पर होनेवाली चूने के भोल की पोताई जिससे वे बिलकुल सफेद हो जाती हैं। ४. सूर्य के निकलने के पहले का उज्ज्वल प्रकाश जो पूर्व दिशा में दिखाई पड़ता है।

**सफ्तालू**†—पु०=शफ्तालू।

**सबंध, सबंधक**—वि० [सं०] जिसके लिए या जिसके संबंध में कोई बंध लिखा गया हो या कोई जमानत दी गई हो।

**सब**—वि० [सं० सर्व] १. अवधि, मान, मात्रा, विस्तार आदि के विचार से जितना है वह कुल। जैसे—(क) यहाँ सब दिन रोना पड़ा रहता है। (ख) सब खुशियाँ वह अपने साथ लेता गया। (ग) सब सामान उसके पास है। २. अंग, अंश, सदस्य आदि के विचार से हर एक। जैसे—वहाँ सब जा सकते हैं किसी के लिए मनाही नहीं है। ३. जोड़ के विचार से होनेवाला।

**पद—सब मिलाकर**=गिनती में जितना जोड़ हुआ है उसके विचार से। जैसे—सब मिलाकर उन्होंने १००००) विवाह में खर्च किये हैं।

**सर्व०** कुल व्यक्ति। जैसे—सब ने यही मत दिया।

वि० [अ०] १. किसी के आधीन रहकर उसीकी तरह काम करनेवाला। जैसे—सब रजिस्ट्रार। २. किसी के अंतर्गत और गौण या छोटा। उप। जैसे—सब-डिवीजन।

**सबक**—पु० [फा० सबक] १. अध्ययन के समय उतना अंश जितना एक बार में पढ़ाया जाय। पाठ। २. नसीहत। शिक्षा।

क्रि० प्र०—मिलना।—सीखना।

**सबकत**—स्त्री० [अ० सबकत] किसी विषय में औरों की अपेक्षा आगे बढ़ जाना। विशिष्टता प्राप्त करना।

**सबब**†—वि०=सब्ब।

**सबब***—पुं० [सं० सब्द] १. शब्द। आवाज। २. किसी महात्मा की वाणी या भजन आदि। जैसे—कबीर जी के सबद, दादू दयाल के सबद।

**सबदी**—वि० [हिं० सबद] किसी साधु-महात्मा के सबद (वचन या आज्ञा) पर विश्वास रखनेवाला।

**सबब**—पु० [अ०]† कारण। वजह। हेतु। २ किसी प्रकार की क्रिया का द्वार या साधन। जैसे—कोई सबब निकालो तो यह काम हो।

**सबर**†—पुं०=सब्र।

**सबरा**—पु०[?] वह औजार जिससे कसेरे टाँका लगाते हैं। बरतन में जोड़ लगाने का औजार।

† वि०=सब (पूरा या सारा)।

**सबल**—वि० [सं० अव्य० स०] [भाव० सबलता] १. जिसमें बहुत बल हो। बलवान्। बलशाली। ताकतवर। २ जिसकी सेना या सैनिक बल हो।

**सबा**—स्त्री० [अ०] १. रास्ता। मार्ग। २. पूरब की ओर से आनेवाली अच्छी और ठंढी हवा जो प्रिय लगती है।

**सबात**—स्त्री० [अ०] १. स्थिरता। स्थायित्व। २. दृढ़ता। मजबूती।

**सबार***—अव्य० [हिं० सबेरा] उचित समय से कुछ पहले ही।

**सबील**—स्त्री० [अ०] १ द्वार। साधन। २. उपाय। युक्ति।

क्रि० प्र०—निकालना।

३. वह स्थान जहाँ लोगों को धर्मार्थ जल या शरबत पिलाया जाता हो। पौसरा। प्याऊ।

क्रि० प्र०—बैठाना।—लगाना।

**सबीहा**—स्त्री०=शबीह।

**सबुज**†—वि०=सब्ज (हरा)।

**सबुनाना**—स० [हिं० साबुन] साबुन लगाना।

**सबू**—पु० [फा० सुबू] १. मिट्टी का घड़ा। मटका। गगरी। २. शराब रखने का पात्र।

**सबूत**—पुं० [अ० सुबूत] वह चीज या बात जिससे कोई और बात साबित अर्थात् प्रमाणित होती हो। प्रमाण।

† वि०=साबूत (पूरा या सारा)।

**सबून**†—पु०=साबुन।

**सबूरा**—पु० [अ० सब्र] [स्त्री० अल्पा० सबूरी] काठ, कपड़े, चमड़े आदि का बना हुआ एक प्रकार का लंबा खड जिससे कुँआरी, विधवा या पतिहीना स्त्रियाँ अपनी काम-वासना तृप्त करती हैं। (मुसल० स्त्रियाँ)

**सबूरी**—स्त्री० [अ० सब्र] १. संतोष। सब्र। उदा०—कहत कबीर सुनो भाई संतों साहब मिलत सबूरी में।—कबीर। २ किसी के द्वारा पीड़ित होने पर तथा असमर्थ या असहाय होने के कारण चुप-चाप बैठकर किया जानेवाला सब्र।

**मुहा०—(किसी की) सबूरी पड़ना**=किसी पीड़ित के उक्त प्रकार के सब्र के फलस्वरूप उत्पीड़क को दैवी गति से दंड मिलना या उसका कोई उपकार होना।

**सबेरा**—पुं०=सवेरा।

**सब्ज**—वि० [फा० सब्ज] १. कच्चा और ताजा (फल, फूल आदि)।

**मुहा०—(किसी को) सब्ज बाग दिखलाना**=अपना काम निकालने के लिए भविष्य के संबंध में बड़ी बड़ी आशाएँ दिखलाना।

२. (रंग) हरा। हरित। ३. भला। शुभ। जैसे—सब्ज-बख्त= भाग्यवान्।

**सब्ज-कदम**—वि० [फा० सब्ज+अ० कदम] जिसके कहीं पहुँचते ही कोई अशुभ घटना हो। जिसके चरण अशुभ हो। (उपहास और व्यंग्य)

**सब्जा**—पुं० [फा० सब्ज] १ हरी घास और वनस्पति आदि। हरियाली। क्रि० प्र०—लहलहाना।

२. भंग। भाँग। विजया। ३. पन्ना नामक रत्न। ४. कान में पहनने का एक प्रकार का गहना। ५. घोड़े का एक रंग जिसमें सफेदी के साथ कुछ कालापन भी मिला होता है। ६ उक्त रंग का घोड़ा। ७. सौ रुपयों का नोट जो प्रायः सब्ज या हरे रंग की स्याही से छपा होता है। (बाजारू) जैसे—एक सब्जा उसके हाथ पर रखो तो काम हो जाय।

**सब्जी**—स्त्री० [फा०] १. सब्ज होने की अवस्था या भाव। हरापन। २. हरी घास और वनस्पति आदि। हरियाली। ३. हरी तरकारी। साग-सब्जी। ४. पकाई हुई तरकारी। जैसे—आलू-मटर की सब्जी।

**सब्र**—पुं० [अ०] १. वह मानसिक स्थिति जिसमें मनुष्य उत्तेजित, उत्पीड़ित, दुःखी या संतप्त किये जाने अथवा किसी प्रकार की विपत्ति या विलम्ब का सामना होने पर भी धीरे और शांत भाव से चुप रहना या सहन करता है। जैसे—(क) थोड़ा सब्र करो, समय आने पर उससे समझ लिया जायगा। (ख) अपमानित होने (या मार खाने) पर भी वह सब्र करके बैठ रहा।

**मुहा०—सब्र आना**=किसी का कुछ अनिष्ट करके अथवा बदला चुकाकर ही चुप या शांत होना। उदा०—मारा जमी मे गाड़ा, तब उसको सब्र आया।—कोई शायर। **सब्र कर बैठना या कर लेना**= चुपचाप और शांत भाव से सहन करते हुए कष्ट, हानि आदि का प्रतिकार न करना। **(किसी पर किसी का) सब्र पड़ना**=उत्पीडक को उत्पीडित के सब्र के फलस्वरूप किसी प्रकार का दुष्परिणाम या प्रतिफल भोगना पड़ना। जैसे—तुम पर मेरा सब्र पड़ेगा, अर्थात् ईश्वर की ओर से तुम्हें इसका दुष्परिणाम भोगना पड़ेगा। **(किसी का) सब्र समेटना**—किसी को पीड़ित करने पर उसके सब्र के फल भोग का भागी बनना।

२. जल्दी, हड़बड़ी आदि छोड़कर धैर्य धारण करना। जैसे—सब्र करो, गाड़ी छूटी नहीं जाती है।

**सब्रह्मचारी**—पुं० [सं० अव्य० स०] वे ब्रह्मचारी जिन्होंने एक साथ एक ही गुरु के यहाँ रहकर शिक्षा प्राप्त की हो।

**सभंग**—वि० [सं०] जिसके खंड या टुकड़े किये गये हों। टूटा या तोड़ा हुआ। भग्न।

**सभंग श्लेष**—पुं० [सं०] साहित्य में, श्लेष अलंकार के दो मुख्य भेदों में से जो उस समय माना जाता है जब किसी शब्द या पद का भंग अर्थात् खंड या विच्छेद करके कोई दूसरा अर्थ निकाला या लगाया जाता है। यथा—जोगी जूँ रहत बिलसत अपनी के मध्य कलकन जौरै दान पाठ परिवार है।—सेनापति। इसमें के 'कनकन' पद का भंग करने पर एक अर्थ होगा—'कनक न जौरे' का और दूसरा अर्थ होगा—कन कन जौरे का।

**विशेष**—इसका दूसरा और विपरीत भेद 'अभंग श्लेष' कहलाता है।

**सभ**†—वि०=सब।

**सभय**†—वि० [सं० अव्य० स०] १. डरा हुआ। भयभीत। २. जिसमें या जिससे भय की आशंका हो। भय-कारक। खतरनाक।

क्रि० वि० भयपूर्वक। डरते हुए।

**सभर्तृका**—वि० स्त्री० [सं० अव्य० स०] (स्त्री) जिसका पति जीवित हो। सधवा।

**सभा**—स्त्री० [सं०] १. एक स्थान पर बैठे हुए बहुत से भले आदमियों का समूह। परिषद्। समिति। जैसे—राज-सभा। २. सभ्य लोगों की वह मंडली जो किसी कार्य की सिद्धि या किसी विषय पर विचार करने के लिए एकत्र हुई हो। जैसे—इसका निर्णय करने के लिए पंडितों की सभा की जानी चाहिए। ३ वह संस्था जो किसी विशिष्ट उद्देश्य या कार्य की सिद्धि के लिए संघटित हुई हो, और नियमित रूप से अपना कार्य करती हो। जैसे—नागरी प्रचारिणी सभा, विद्यार्थी सहायक सभा। ४ वैदिक काल की एक संस्था जिसमें कुछ लोग एकत्र होकर राजनीतिक, सामाजिक आदि विषयों पर विचार करते थे। ५. प्राचीन भारत मे, उक्त प्रकार की संस्था का सदस्य। समासद। सामाजिक। ६ जुआड़ियों का जमघट या समूह। ७ जूआ। द्यूत। ८ झुंड। समूह। ९ घर। मकान।

**सभाई**—वि० [सं० सभा+हिं० आई (प्रत्य०)] सभा मे सभ्य रखने-वाला। सभा का। जैसे—विधान सभाई दल, हिंदू सभाई प्रतिनिधि।

**सभाकक्ष**—पुं० [सं० ष० त०] दे० 'प्रकोष्ठ'।

**सभाग**—वि० [सं०] १ जिसका हिस्सा हुआ हो। २ सामान्य। ३ सार्वजनिक।

वि० [सं० स + भाग्य] [स्त्री० सभागी] १ भाग्यवान्। खुशकिस्मत।

वि०=सुभग (सुन्दर)।

**सभा-गृह**—पुं० [सं०] वह स्थान जहाँ सार्वजनिक सभाएँ या किसी बड़ी संस्था के अधिवेशन होते हों। (एसेम्बली हाउस)

**सभाचतुर**—पुं० दे० 'सदन-नेता'।

**सभा-चातुर**—वि० [सं०] [भाव० सभा-चातुरी] १ वह जो सभा या शिष्ट समाज मे बातचीत करने का अच्छा ढंग जानता हो। विशेषतः जो अपनी चतुराई से लोगों को अपने अनुकूल बना, प्रभावित और प्रसन्न कर सकता हो।

**सभा-चातुरी**—स्त्री० [सं० सभा-चतुर+हिं० ई (प्रत्य०)] सभा-चतुर होने की अवस्था गुण या भाव।

**सभाचार**—पुं० [सं०] १. वे आचरण और व्यवहार जिनका पालन करना किसी सभा मे जाने पर आवश्यक तथा उचित माना जाता हो। २. समाज के रीति-रिवाज। ३. न्यायालयों मे काम होने का ढंग या तरीका।

**सभा-त्याग**—पुं० [सं०] किसी सभा के कार्य या व्यवहार से असन्तुष्ट होकर उसके अधिवेशन से उठकर चले जाना। सदन-त्याग।

**सभानेता**—पुं० दे० 'सदननेता'।

**सभापति**—पुं० [सं०] किसी गोष्ठी या सार्वजनिक सभा के कार्यों के संचालन के लिए प्रधान रूप में चुना हुआ व्यक्ति। (प्रेसिडेन्ट)

**विशेष**—किसी समिति, संस्था आदि का स्थायी प्रधान अध्यक्ष कहलाता

है, जिसका कार्यालय उस समिति, संस्था आदि के विधान द्वारा नियत होता है, परन्तु सभापति अस्थायी होता है। किसी अधिवेशन के लिए ही चुना जाता है। फिर भी लोक-व्यवहार में दोनों शब्द एक दूसरे के स्थान पर प्रयुक्त होते हुए देखे जाते हैं।

**सभा-परिषद्**—स्त्री० [सं०] १. बहुत से लोगों का एकत्र होकर साहित्य, राजनीति आदि से संबंध रखनेवाले किसी विषय पर विचार करना। २. उक्त कार्य के लिए बनी हुई परिषद् या सभा। ३ सभा-भवन।

**सभार्यक**—वि०=सपत्नीक।

**सभावी**—पु० [सं० सभाविन्] सभिक।

**सभासचिव**—पुं०=सदन-सचिव।

**सभास्तव**—पुं० [सं०] वह जो किसी संस्था, समुदाय आदि का सदस्य हो। (मेम्बर)

**सभिक**—पुं० [सं०] वह जो लोगों को अपने यहाँ बैठाकर जूआ खेलाता हो। जूए खाने का मालिक।

**सभीत***—क्रि० वि० [सं० स+भीति] डरते हुए। भयपूर्वक।

**सभ्य**—वि० [सं० सभा+यत्] [भाव० सभ्यता] १. सभा से सम्बन्ध रखनेवाला। २. सभा, समाज आदि के लिए उपयुक्त। ३. अच्छे विचार रखने और भले आदमियों का सा व्यवहार करनेवाला। शिष्ट। ४. (काम या बात) जो भले आदमियों के उपयुक्त और शोभन हो। शिष्ट। (सिविल) जैसे—सभ्य व्यवहार।

पु०१. वह जो किसी सभा, संस्था आदि का सदस्य हो। सभासद। २. सभा आदमी।

**सभ्यता**—स्त्री० [सं०]१. सभ्य होने की अवस्था, गुण या भाव। २. किसी सभा या समाज की सदस्यता। ३. शीलवान् और सज्जन होने की अवस्था और भाव। ४. आज-कल वे सब काम और बातें जो किसी जाति या देश के लोग प्रकृति पर विजय पाने और जीवन निर्वाह में सुगमता लाने के लिए भौतिक साधनों का उपयोग करते हुए आरंभ से अब तक करते आये हैं। किसी जाति या देश की बाह्य तथा भौतिक उन्नतियों का सामूहिक रूप। (सिविलिज़ेशन)

**विशेष**—सभ्यता और संस्कृति का अन्तर जानने के लिए दे० 'संस्कृति' का विशेष।

**सभ्येतर**—वि०[सं० पञ्च० त०] जो सभ्य न होकर उससे भिन्न हो। अर्थात् उजड्ड या बेशऊर।

**सभंग**—वि० [सं० ब० स०] सभी अंगों से युक्त पूर्ण।

**सभंगा**—स्त्री० [सं० ब० स०—टाप्] १. मजीठ। २. लजालू लज्जाती। ३. बराह क्रांता। गेंठी। ४. बला या बाला नामक ओषधि।

**सभंगिनी**—स्त्री० [सं० सभंग+इनि-ङीप्] पौद्यों की एक देवी।

**सभंगी (गिन्)**—वि० [सं० सभंगिन्-वीर्य, नलोप] [स्त्री० सभंगिनी] १. जिसके सभी अंग पूर्ण हों। २. सभी आवश्यक साधनों से युक्त। ३. जिसके सभी अंग समान हों।

**सभंडार**—पुं०=समाधार।

**सभंजन**—पुं० [सं०] [वि० समंजनीय, भू० कृ० समंजित] १. एक चीज दूसरी चीज के साथ जोड़ना, बैठाना या मिलाना। २. यंत्रों के पुरजों आदि को ठीक तरह से यथा-स्थान बैठाना। ३. जमा-खर्च आदि का हिसाब यथास्थान ले जाकर ठीक और पूरा करना। लेखा-जोखा बराबर करना। (ऐडजस्टमेंट) ४ मेल मिलाना। ५ लेप करना या लगाना ६. मालिश करना। मलना।

**सभंजस**—वि०[सं० ब० स०-अच्] [भाव० सामंजस्य]१. उचित। ठीक। वाजिब। २ आस-पास की बातों, वस्तुओं आदि के साथ ठीक जान पड़ने या मेल खानेवाला। ३. किसी काम या बात का अभ्यस्त।

**सभंजित**—भू० कृ०[सं०]१. जिसका समंजन हुआ हो। २. जो ठीक करके परिस्थितियों के अनुकूल या उपयुक्त किया अथवा बनाया गया हो। (एडजेस्टेड)

**सभंत**—पु०[सं०] किनारा। सिरा।

वि०१. समस्त। सारा। २ सार्वजनिक।

**सभंतदर्शी**—वि० [सं० समन्तदर्शिन्] जिसे सब कुछ दिखाई देता हो। सर्वदर्शी।

पु० गौतम बुद्ध।

**सभंत-पंचक**—पु०[सं०] कुरुक्षेत्र का एक नाम।

**विशेष**—कहा गया है कि परशुराम समस्त क्षत्रियों को मार कर उनके लहू से यहीं पाँच तालाब बनाए थे, और उन्हीं में लहू से उन्होंने अपने पिता का तर्पण किया था। इसी से इस स्थान का नाम समत-पंचक पड़ा।

**सभंत-भद्र**—पु०[सं०] गौतम बुद्ध।

**सभंतर**—पु० [सं०ब०स०] १. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी।

**सभंतालोक**—पु० [सं० ब० स०] योग में ध्यान करने का एक प्रकार।

**सभंग**—पु० [फा०] १. बदामी रंग का ऐसा घोड़ा जिसका अयाल, दुम और पुट्ठे काले हों। २. घोड़ा। ३. अच्छा या बढ़िया घोड़ा।

**सभंगर**—पु०[फा०]एक कल्पित जंतु जो फारसी कवि-समय के अनुसार अग्निकुंड में उत्पन्न होता और उसमें बाहर निकलने पर तुरन्त मर जाता है।

†पु०=समुद्र।

**सभ**—वि० [सं०] [स्त्री० समा, भाव० साम्य, समता] १. जो आदि से अंत तक प्रायः एक-सा चला गया हो। जिसमें कहीं बहुत उतार-चढ़ाव या हेर-फेर न हो। २. जिसका तल बराबर हो, ऊबड़-खाबड़ न हो। चौरस। ३ एक बराबर। तुल्य। समान। (इक्वल) यौ० के आरंभ में; जैसे—समकोण, समसीमात। ४. (संख्या) जिससे दो से भाग देने पर शेष कुछ न बचे। जूस। (ईवेन) ५. सब। समस्त। ६. (किसी के) समान या बराबर। की तरह। के समान। जैसे—पुत्र-सम मानना।

पुं०१. संगीत में वह स्थान जहाँ लय के विचार से गति की समाप्ति होती है और जहाँ गाने-बजानेवालों का सिर हिलता या हाथ आप से आप आघात सा करता है। २. साहित्य में, एक अलंकार जिसमें स्थिति के ठीक अनुरूप किसी कार्य का अथवा रूप या नाम के अनुरूप

कार्यों, गुणों आदि का वर्णन होता है। (इक्वल) ३ ज्योतिष में, वह राशि जो सम संख्या पर पड़े। दूसरी, चौथी, छठी आदि राशियाँ। वृष, ककर्ट, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन ये छ. राशियाँ। ४ गणित में, वह सीधी रेखा जो उस जफ के ऊपर दी जाती है जिसका वर्गमूल निकालना होता है।

†पु०=शम (शमन)।

पु० [अ०] जहर। विष।

पुं० [फा० कसम] कसम। शपथ। सौगंध।

**सम-अक्षर**—पुं० [सं०] प्राचीन भारत में, वह स्थान जहाँ जनसाधारण के मनोविनोद के लिए कुश्तियाँ, नाटक और तरह तरह के खेल होते थे।

**सम-अंश**—वि० [सं० ब० स०] १. कद के विचार से एक ही ऊँचाई वाले। २ अधिकार, पद, विद्या, संपत्ति, आदि के विचार से तुल्य। ३ सब बातों में किसी की बराबरी करनेवाला। जोड़ या बराबरी का।

**समकक्ष सरकार**—स्त्री० [सं०+फा०] वह नई सरकार जो किसी देश की पुरानी सरकार को अयोग्य या अवैध समझकर उसे नष्ट करने और उसका स्थान स्वयं ग्रहण करने के लिए बनाई या गठित की जाती है। (पैरेलल गवर्नमेंट)

**समकना**†—अ०=चमकना (चौकना)।

**समकर्ण**—पु० [सं० ब० स०] १ ज्यामिति में किसी चतुर्भुज के आमने सामने वाले कोणों के ऊपर की रेखाएँ। २ शिव। ३ गौतमबुद्ध।

**समकालिक**—वि० [सं०] १. (वे दो या कई काम या बातें) जो एक ही समय में या एक साथ घटित हों। युगपत्। (साइमल्टेनियस) २. दे० 'समकालीन'।

**समकालीन**—वि० [सं०] १ जो उसी काल या समय में जीवित अथवा वर्तमान रहा हो, जिसमें कुछ और विशिष्ट लोग भी रहे हैं। एक ही समय में रहनेवाले। जैसे—महाराणा प्रताप अकबर के समकालीन थे। २ जो उत्पत्ति, स्थिति आदि के विचार से एक ही समय में हुए हों। (कन्टेम्पोरेरी)

**समकोण**—वि० [सं० ब० स०] (त्रिभुज या चतुर्भुज) जिसके आमने सामने के दोनों कोण समान हों।

**सम-कोनक**—वि०=सम-कोण।

**समक्रमण**—पुं० [सं०] [भू० कृ० समक्रमित, कर्ता समक्रामक] एक से अधिक कार्यों या घटनाओं का एक ही समय में, पर भिन्न भिन्न स्थानों में घटित होना। समकालन। (सिंक्रोनाइजेशन)

**सम-क्रमिक**—वि० [सं०] [भाव० समक्रमिकता] (कार्य या घटनाएँ) जो एक ही समय में भिन्न भिन्न स्थानों पर घटित हुई हों। (सिंक्रोनस)

**सम-क्रामक**—वि० [सं०] समक्रमण करने या करनेवाला। (सिंक्रोनाइजर)

**सम-क्वाथ**—पुं० [सं० कर्म० स०] वैद्यक में, वह क्वाथ या काढ़ा जिसका पानी आदि जलाकर आठवाँ भाग रह जाय।

**समक्ष**—अव्य० [सं०] १. आँखों के सामने। २ सामने। जैसे—अब वह कभी आप के समक्ष न आएगा।

**समक्षता**—स्त्री० [सं० समक्ष+तल्—टाप्] १. समक्ष होने की अवस्था या भाव। २. गोचर या दृश्य होने की अवस्था या भाव।

**समग्र**—वि० [सं०] [भाव० समग्रता] आदि से अन्त तक जितना हो, वह सब। समस्त। समूचा। सारा।

**समग्री**†—स्त्री०=सामग्री।

**समचतुर्भुज**—वि० [सं० ब० स०] (ज्यामिति में, क्षेत्र) जिसके चारो भुज या बाहु तो एक से लंबे हों, पर जो समकोणिक न हों। (रहोम्बस) पु० उक्त प्रकार की आकृति या क्षेत्र। (रहोम्बस)

**सम-चर**—वि० [सं०] १ सदा समान व्यवहार करनेवाला। २. सब के साथ एक-सा आचरण करनेवाला।

**समचार**†—पु०=समाचार।

**सम-चित्त**—वि० [सं०] जिसके चित्त की अवस्था सदा समान रहती हो। जिसका चित्त कभी दुःखी या क्षुब्ध न होता हो। समचेता।

**समचेता (तस्)**—वि० [सं०]=समचित्त।

**समज**—पु० [सं०] १ वन। जंगल। २ पशुओं का झुंड।

†स्त्री०=समझ।

**सम-जातिक**—वि० [सं०] पारस्परिक विचार से एक ही जाति, प्रकार या वर्ग के। एक से। सह-जातिक। (होमोजीनिअस)

**सम-जातीय**—वि० [सं०] १. एक ही जाति के। सजातीय। २. दे० 'सम-जातिक'।

**समजा**—स्त्री० [सं०] १. कीर्ति। यश। २ ख्याति। प्रसिद्धि।

**समज्या**—स्त्री० [सं०] १. प्राचीन भारत में, वह उत्सव जिसमें छोटे बड़े स्त्री-पुरुष सभी मिलकर तरह तरह के खेल-तमाशे करते और देखते थे। बाद में साधारण बोलचाल में इसी को समाज्य कहने लग थे। २. बहुत से लोगों का समाज या समूह। सभा। जैसे—विद्वानों की समज्या में उनका यथेष्ट आदर हुआ था।

**समझ**—स्त्री० [सं० समवृद्धि, प्रा० समज्झ] वह मानसिक शक्ति जिससे प्राणियों को देखकर मन में तर्क-वितर्क करके सब चीजों और बातों के अर्थ, आशय, भलाई, बुराई आदि का परिज्ञान होता है। अक्ल। बुद्धि। (इन्टलेक्ट)

**पद—समझ में**=ध्यान या विचार के अनुसार। ख्याल से। जैसे—हमारी समझ में तो यह बात ठीक नहीं जान पड़ती है।

**समझदार**—वि० [हिं० समझ+फा० दार (प्रत्य०)] [भाव० समझदारी] जिसमें अच्छी समझ हो। बुद्धिमान्। अक्लमंद।

**समझदारी**—स्त्री० [हिं० समझदार+ई (प्रत्य०)] समझदार होने की अवस्था, गुण या भाव।

**समझना**—अ० [हिं० समझ+ना (प्रत्य०)] १. वह जो कुछ सामने हो, उसे ध्यान में रखकर उसके आशय, प्रकार, स्वरूप आदि से अवगत होना। ठीक और पूरा ज्ञान प्राप्त करना। जैसे—पहले यह तो समझ लें कि बात क्या है। २ किसी बात का स्वरूप आदि देखकर उसके संबंध की दूसरी आवश्यक बातों का अनुमान या कल्पना करना। (क्लीव)

**क्रि० प्र०**—जाना।—पड़ना।—रखना।—लेना।

**पद—समझ बूझकर**=अच्छी तरह ज्ञान, परिचय आदि प्राप्त करके। सारी स्थिति अच्छी तरह जानकर। जैसे—समझकर मैंने ही तुम्हें वहाँ जाने से मना किया था।

**मुहा०—(अपने आपको) कुछ समझना**=अपने मन में यह अभिमानपूर्ण भाव रखना कि हममें भी कुछ विशिष्ट योग्यता है।

३. किसी के व्यवहार के बदले में उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना। जैसे—कोई कहो समझता है, कोई कहो।

**मुहा०—(किसी से) समझना या समझ लेना**=(क) निपटारा या समझौता करना। जैसे—दोनों को आपस मे समझ लेने दो। (ख) अनिष्ट, अपकार, अपमान आदि का उचित और उपयुक्त बदला लेना। जैसे—अच्छा हम भी तुमसे समझ लेंगे।

**समझाना**—स० [हि० समझना का स०] १. शब्द, सकेत आदि के अर्थ से किसी को भली भाँति परिचित कराना। २. कोई बात अच्छी तरह किसी के मन मे बैठाना। जैसे—न जाने इसे इसकी माँ ने क्या समझाकर यहाँ भेजा था।

**समझावा**—पुं० [हि० समझना] समझने या समझाने की क्रिया या भाव।

**समझौता**—पुं० [हि० समझना+औता (प्रत्य०)] १ लड़ाई-झगड़े, लेन-देन, विवाद आदि के संबंध मे दो या अधिक पक्षों मे होनेवाला ऐसा निपटारा या निर्णय जिसके अनुसार आगे निर्विरोध रूप मे सब काम होते रहें। (कॉम्प्रोमाइज़) २ आपस मे होनेवाला करार या निश्चय।

**समत**†—पु०=सवत्।

**सम-तट**—पु० [स०] १ समुद्र के किनारे पर का प्रदेश। २. बगाल के पूर्व का एक प्राचीन देश।

**सम-तत्त्व**—पु० [स०] वेदांत मे अद्वैत और द्वैत दोनों से परे और भिन्न तत्त्व।

**सम-तल**—वि० [स०] (पदार्थ) जिसका तल सम हो, ऊबड़-खाबड़ न हो। जिसकी सतह बराबर हो। हमवार। जैसे—समतल भूमि।

**समतलन**—पु० [स०] [भू० कृ० समतलित] किसी पदार्थ (जैसे—जमीन आदि) के ऊबड़-खाबड़ तल को सम या बराबर करने की क्रिया या भाव। चौरसाई। (लैवलिंग)

**समता**—स्त्री० [स०] १. सम या समान होने का भाव। बराबरी। तुल्यता। (इक्वैलिटी)। २. ऐसी स्थिति जिसमें कोई अंग या पक्ष आनुपातिक दृष्टि से अनुपयुक्त, बेढगा या भारी जान न पड़े। संतुलन।

**सम-तोल**—वि० [स० सम+हि० तोल (तौल)] भार, महत्त्व आदि के विचार से, एक बराबर। समान।

**सम-तोलन**—पु० [सं०] १ भार, महत्त्व आदि के विचार से सब को समान रखना। २ दोनों पक्षों या पलड़ों को समान रखना। घटने-बढ़ने न देना। (बैलेंसिंग)

**समत्थ**†—वि०=समर्थ।

†पुं०=सामर्थ्य।

**सम-त्रय**—पु० [सं० ष० त०] हर्रे, बहेरा और गुड इन तीनों के समान भागों का समूह। (वैद्यक)

**सम-त्रिभाजन**—पुं० [स०] [भू० कृ० समत्रिभक्त] किसी चीज को तीन बराबर भागों मे काटना। (ट्राइसेक्सन)

**सम-त्रिभुज**—पुं० [सं० ब० स०] ऐसा त्रिभुज जिसके तीनों त्रिभुज बराबर या समान हों।

**समत्व**—पुं० [स०] सम या समान होने की अवस्था या भाव। समता।

**सम-थल**—वि०=समतल (भूमि)।

**समद**—वि० [सं०] १. मद से मत्त। मतवाला। मस्त। २. प्रसन्न।

पु०=समुद्र।

**स-मदन**—वि० [स०] [स्त्री० समदना] प्रबल कामवासना से युक्त। कामातुर।

क्रि० वि० खुशी या प्रसन्नता से। उदा०—भेंटि घाट समदन के फिरें नाह कै माथ।—जायसी।

**समदन**—पु० [स०] युद्ध। लड़ाई।

†स्त्री०[स० हि० समदना] उपहार भेंट।

**समदना**—अ० [स० समद=प्रसन्न] १ प्रेमपूर्वक मिलना। भेंटना। २. आनन्द या खुशी मनाना।

स० १ उपहार या भेंट देना। २. किसी के साथ विवाह करना। ३ सपुर्द करना। सौंपना। ४. धरना। रखना।

स० [मवाद] सवाद या समाचार देना।

**सम-दर्शन**—पु० [स०] सब को एक समान समझना और सब कार्यों या बातों मे एक सा भाव रखना।

वि०=समदर्शी।

**समदर्शी** (र्शिन्)—वि० [स०] [स्त्री० समदर्शिनी] जो सब मनुष्यों, स्थानों, पदार्थों आदि को समान दृष्टि से देखता हो। किसी प्रकार का भेद-भाव न रखता हो। सब को एक सा देखने या समझनेवाला।

**समदाना**—स० [हि० समझना] १ विवाह के बाद वह को विदा करना या कराना। २ ठीक या दुरुस्त करना। ३ समदना।

**समदावन**—पु० [हि० समदना (विवाह करना)] एक प्रकार के गीत जो दुलहिन की विदाई के समय गाये जाते हैं। (मिथिला)

**सम-दृष्टि**—स्त्री० [स०] ऐसी दृष्टि जो सब अवस्थाओं में और सब पदार्थों को देखने के समय समान रहे। समदर्शी की दृष्टि।

**समद्दादशास्त्र**—पु० [स०] बारह बराबर भुजाओंवाला क्षेत्र।

**सम-द्विभाजन**—पु० [स०] [भू० कृ० समद्विभाजित] किसी चीज को दो समान भागों मे बाँटना या विभक्त करना। (बाई सेक्शन)

**समद्विभुज**—पु० [स०] ऐसा चतुर्भुज जिसकी प्रत्येक भुजा अपने सामनेवाले भुजा के समान हो। वह चतुर्भुज जिसके आमने-सामने के भुजाएँ बराबर हों।

**समधाना**†—स०=समदाना।

**समधिक**—वि० [स०] १. जितना होना चाहिए, उससे अधिक या बढ़ा हुआ। (एक्सीडिंग) २. बहुत। अधिक।

**समधिन**—स्त्री० [हि० समधी का स्त्री०] समधी की पत्नी। किसी के पुत्र या पुत्री की सास।

**समधियाना**—पुं० [हि० समधी+इयाना] १. किसी की दृष्टि से उसके पुत्र या पुत्री की ससुराल। २. पुत्र या पुत्री के ससुरालवाले।

**समधी**—पु० [स० सम्बन्धी] [स्त्री० समधिन] सम्बन्ध के विचार से किसी के पुत्र या पुत्री के ससुर।

**समधीन**—वि० [सं० कर्म० स०] १. (व्यक्ति) जिसने अच्छी तरह अध्ययन किया हो। २. (विषय) जिसका किसी ने अच्छी तरह अध्ययन किया हो।

**समधौत**—पुं० [हि० समधी] विवाह की एक रसम जिसमें समधी परस्पर मिलते हैं। मिलनी।

**सम-ध्वनि**—पुं० [स०] ऐसे शब्द जो उच्चारण या ध्वनि के विचार से तो एक हों पर जिनके अर्थ भिन्न भिन्न हों। (होमोनिम) जैसे—हिंदी मेल (मिलाप) और अँगरेजी 'मेल' (डाक) समध्वनि हैं।
वि० (शब्द) जो भिन्नार्थक होने पर भी उच्चारण के विचार से समान ध्वनिवाले हों। (होमोनिमस)

**समनंतर**—वि०[स०] ठीक बगलवाला। बिलकुल सटा हुआ। बराबरी का।
अव्य० अनंतर। उपरांत। बाद।

**समन**—वि० [स० शमन] [स्त्री० समनि] शमन करनेवाला।
पु० दे० 'शमन'।
स्त्री०[फा०] चमेली का पौधा और फूल।
पुं०=सम्मन।

**समनगा**—स्त्री०[ स० ब० स०] १. बिजली। विद्युत्। २. सूर्य की किरण।

**समनचार**†—पुं०=समाचार।

**समनीक**—पु०[सं०] युद्ध। लड़ाई।

**समनुज्ञा**—स्त्री० [स० प्रा० स०] [भू० कृ० समनुज्ञात] १. अनुमति। २. दे० 'अनुज्ञा'।

**समन्यु**—पु०[स० अव्य० स०] शिव का एक नाम।

**समन्वय**—पु०[सं०] १. समान रूप से मिलना। इस प्रकार मिलना कि एक इकाई बन जाय। २. एक को दूसरे में विलय करना। ३. परस्पर विरोध न होने की अवस्था या भाव। विरोध का अभाव। ४ कार्य और कारण का निर्वाह या संबंध। ५. वह अवस्था जिसमें कथनों या बातों का पारस्परिक भेद या विरोध दूर करके उनमें एकता या एकरूपता लाई जाती है।

**समन्वित**—भू० कृ०[स०]१. जिसका समन्वय हुआ हो। २. किसी के साथ जुड़ा, मिला या लगा हुआ। ३. जिसमें कोई बाधा या रुकावट न हो।

**समन्वेषक**—वि०[सं०] समन्वेषण करनेवाला। (एक्सप्लोरेटर)

**समन्वेषण**—पु०[सं०] [भू० कृ० समन्वेषित]१. अच्छी तरह किया जाने वाला अन्वेषण। २. आज-कल मुख्य रूप से, घूम-घूमकर ऐसे देशों, स्थानों आदि का पता लगाना जिन्हें लोग पहले न जानते रहे हों या जिनके संबंध में बहुत कम जानते हों। (एक्सप्लोरेशन)

**सम-पद**—पुं०[स०]१. चतुष्पद चलानेवालों का खड़े होने का एक ढंग जिसमें वे अपने दोनों पैर बराबर रखते हैं। २. संयोग का एक प्रकार का आसन या रतिबंध।

**समपना**†—स० सौंपना।

**सम-पाद**—वि०[सं०] (कविता या छंद) जिसके सब चरण बराबर या समान हों।
पुं०१ उक्त प्रकार का छंद या वृत्त।
२ दे० 'समपद'।

**समर्पना**†—पुं०=समर्पण।

**समबुद्धि**—वि०[सं०] जिसकी बुद्धि सुख और दुःख, हानि और लाभ सब में समान रहती हो।

**सम-बाहु**—वि०=समभुज।

**समबोल**—पुं०=समध्वनिक।

**समभिहरण**—पुं०[सं० प्रा० स०]=समाहरण।

**समभिहार**—पु०[स० सम्-अभि √ हृ (हरण करना)+घञ्] १ किसी काम या बात के बार बार होने का भाव। २. अधिकता। ज्यादती।

**सम भुज**—वि०[स०] (क्षेत्र) जिसकी सब भुजाएँ बराबर या समान हों। सम बाहु। (इक्विलेटरल)

**समभूमिक**—वि०[स०] समतल।

**सममति**—वि०[स० ब० स०]=समबुद्धि।

**सममित**—वि० [स०] [भाव० सम-मिति]जिसके अंगों में अनुपात और गुरुपता के विचार से पारस्परिक समानता और एकरूपता हो। सम-मिति से युक्त। (सिमेट्रिकल)

**सममिति**—स्त्री० [सं०] [वि० सममित] किसी मूर्त कृति या रचना के आकार, बनावट, मान आदि के भिन्न भिन्न अंगों म अनुपात और गुरुपता के विचार से होनेवाली आपेक्षिक और पारस्परिक एकरूपता। किसी वस्तु के भिन्न भिन्न अंगों का ठीक और समंजित विन्यास। (सिमेट्री)

**समय**—पु०[सं०] [वि० सामयिक] १ संयोग-संख्या या दिन-रात के विचार से काल का कोई मान। वक्त। २ अवसर। मौका। वक्त।
**पद—समय विशेष पर**-(क) किसी निश्चित समय पर। (ख) आनेवाले किसी ऐसे समय पर जबकि कोई बात हो सकती हो और जिसके संबंध में कोई विधान या व्यवस्था की गई हो। (फार दि टाइम बीइंग)
**समय कुसमय**=(क) अच्छे या शुभ दिन और बुरे या अशुभ के दिन। (ख) उपयुक्त अवसर पर भी और अनुपयुक्त अवसर पर भी। मौके-बेमौके। जैसे—आप समय कुसमय अपना ही राग अलापते रहते।
३ अवकाश। फुरसत। खाली वक्त।
क्रि० प्र०—निकालना।
४. किसी काम या बात का नियत या निश्चित काल। जैसे—अब उसका समय आ गया वा अतः उन्हें बचाने के लिए सब प्रयत्न विफल हुए। ६ आपस में होनेवाला किसी प्रकार का निश्चय, करार या समझौता। ७ कोई धार्मिक सामाजिक या प्रथा या परिपाटी। जैसे—कवि समय। (देखें) ८ सिद्धांत। ९. परिणाम। अंत। १० प्रतिज्ञा। ११ शपथ। १२. आकृति। शकल। १३ ठहराव। समझौता। १४ आज्ञा। निर्देश। १५. भाषा। १६ इशारा। संकेत। १७ व्यवहार। १९ धन-दौलत। संपत्ति। १९. कर्तव्य-पालन। २०. बोधपना। २१ उपदेश। २२. कष्टों या दुखों का अंत या समाप्ति। २३. कायदा। नियम। २४. धर्म। २५. संन्यासियों, वैदिकों, व्यापारियों आदि के संघों में प्रचलित नियम। (स्मृति)

**समय-क्रिया**—स्त्री० [सं०] प्राचीन भारत में, शिल्पियों या व्यापारियों का परस्पर व्यवहार के लिए नियम स्थिर करना। (बृहस्पति)

**समयज्ञ**—वि०[सं०] [भाव० समयज्ञता] जो समय की प्रवृत्ति, स्थिति आदि का ज्ञान रखता हो। समय के अनुसार चलनेवाला।
पु० विष्णु।

**समय-निष्ठ**—वि० [सं० ब० स०] [भाव० समय-निष्ठता, समय-निष्ठा] १. जो निश्चित समय का ध्यान रखकर ठीक उसी समय काम करता हो। २. अपने ठीक या निश्चित समय पर नियत रूप से होने-वाला। (पंक्चुअल)

**समय-निष्ठता**—स्त्री० [सं०] समय-निष्ठ होने की अवस्था या भाव। (पंक्चुएलिटी)

**समय-बम**—पुं० [सं०+अं० बाम्ब] वह विशेष प्रकार का बम (गोला) जिसमें ऐसी योजना होती है कि कहीं रखे जाने पर पहले से निर्धारित किये हुए समय पर वह आप से आप फूटकर अपना घातक कार्य करता है। (टाइम-बॉम्ब)

**समय-संकेत**—पु० [स०] वह नियत संकेत जो मुख्यतः यह सूचित करने के लिए होता है कि इस समय घड़ी के अनुसार बिलकुल ठीक समय यह है। (टाइम सिगनल) जैसे—दोपहर बारह बजे या रात आठ बजे का समय-संकेत।

**समय-सारिणी**—स्त्री० [सं० ष० त०] १. समय सूचित करने के लिए बनाई हुई सारणी। २ वह पुस्तिका जिसमें विभिन्न गाडियों के विभिन्न स्टेशनों पर पहुँचने तथा छूटने के समय का उल्लेख सारणियों में किया जाता है। (टाइम-टेबुल)

**समय-सूची**—स्त्री०=समय-सारिणी।

**समयानंद**—पु० [स० ब० स०] तांत्रिकों के एक भैरव।

**समयानुवर्ती (र्तिन्)**—वि० [सं० ष० त०] समय देखकर उसी के अनुसार चलनेवाला। (अपॉर्च्युनिस्ट)

**समयानुसार**—वि० [स०समय+अनुसार] जो समय की आवश्यकता देखते हुए उचित या ठीक हो।
अव्य० समय की उपयुक्तता या औचित्य का ध्यान रखते हुए।

**समयानुसारी**—वि० [स०] प्रस्तुत समय को देखते हुए उसकी प्रथा या रीति के अनुसार काम करने या चलनेवाला।

**समयुगल**—पु० [स०] बौद्धकाल में, एक प्रकार का पटका (धोती या साड़ी) जो बराबर लंबाई के रंगीबाले वस्त्रों को एक साथ सटाकर पहना या बाँधा जाता था।

**समयोचित**—वि० [सं० चतु० स०] जो प्रस्तुत समय की आवश्यकता देखते हुए उचित अर्थात् उपयुक्त और ठीक हो। कालोचित। (एक्सपीडिएन्ट)

**समयोचितता**—स्त्री० [स०] समयोचित होने की अवस्था, गुण या भाव। कालोचितता। (एक्सपीडिएन्सी)

**समर**—पुं० [सं०] युद्ध। संग्राम। लड़ाई।
पु० [सं० स्मर] १. कामदेव। २. काम-वासना। उदा०—सम-रस समर-सकोच बस बिबस न ठिक ठहराइ।—बिहारी।
पु० [फा०] १. वृक्ष का फल। २. कार्य का परिणाम या फल।

**समरकंद**—पु० [फा०] [वि० समरकंदी] तुर्किस्तान का एक इतिहास प्रसिद्ध नगर जो अमीर तैमूर की राजधानी था और अब उजबक (सोवियत) प्रजातंत्र के अंतर्गत है। उजबक प्रजातंत्र का एक सूबा।

**सम-रज्जु**—स्त्री० [सं० ब० स०] बीज-गणित में, वह रेखा जिससे धुरी या गहराई जानी जाती है।

**सम-रत**—पुं० [सं० ब० स०] कामशास्त्र के अनुसार एक प्रकार का रति-बंध या आसन।

**समरथ***—वि०=समर्थ।

**समरना**†—स०=सुमिरना।
†अ०=सँवरना।



**समर-भूमि**—स्त्री० [सं०] युद्ध-क्षेत्र। लड़ाई का मैदान।

**समरशायी**—वि० [सं० समरशायिन्] जो युद्ध में मारा गया हो। वीरगति को प्राप्त।

**सम-रस**—वि० [सं०] [भाव० समरसता] १. (पदार्थ) जिसमें एक ही प्रकार का रस या स्वाद हो। २. (व्यक्ति) जो सदा एक ही प्रकार की मानसिक स्थिति में रहता हो। जो न तो कभी क्रोध करता हो और न असाधारण रूप से प्रसन्न होता हो। सदा एक-सा रहनेवाला। ३. (परस्पर ऐसे पदार्थ या व्यक्ति) जो एक ही प्रकार या विचार के हों। जिनके गुण, प्रकृति आदि में कोई अन्तर न हो।

**समरांगण**—पुं० [सं० कर्म० स०, ष० त०] लड़ाई का मैदान। युद्ध-क्षेत्र।

**समरा**—पुं० [अ० समर:] नतीजा। परिणाम। फल।

**समराधिर**—पु० [सं० कर्म० स०] युद्ध-क्षेत्र।

**समराना***—स० हिं० 'समरना' का स०।

**समर्थ**—वि० [सं०] [भाव० समर्थता] कम दाम का। सस्ता।

**समर्चक**—वि०, पुं० [सं० सम्√अर्च् (पूजा करना)+ण्वुल्—अक] समर्चन या पूजा करनेवाला।

**समर्चन**—पु० [स० सम्√अर्च् (पूजा करना) +ल्युट्-अन] अच्छी तरह अर्चन या पूजा करने का काम।

**समर्चना**—स्त्री० [स०]=समर्चन।

**समर्थ**—वि० [स० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+अच्] [भाव० समर्थता, सामर्थ्य] १. शक्तिशाली। २. जो कोई काम सम्पादित करने की शक्ति या योग्यता रखता हो। आधिक, मानसिक या शारीरिक बल से कुछ कर सकने के योग्य। ३. अनुभव, प्रशिक्षण आदि द्वारा जिसने किसी पद के कर्तव्यों का निर्वाह करने की योग्यता प्राप्त कर ली हो। ४. लंबा। चौड़ा। प्रशस्त। ५. अभिलषित। ६. युक्ति-संगत।

**समर्थक**—वि० [स० समर्थ+कन्] १. जो समर्थन करता हो। समर्थन करनेवाला। २. पुष्टि या पोषण करनेवाला।
वि०=समानार्थक।
पुं० चन्दन की लकड़ी।

**समर्थता**—स्त्री० [सं०] समर्थ होने की अवस्था, गुण या भाव। सामर्थ्य। शक्ति। ताकत।

**समर्थन**—पुं० [सं० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+ल्युट्-अन] किसी के प्रस्ताव, मत, विचार के संबंध में यह कहना कि इससे हमारी भी सहमति है। अनुमोदन। (सेकेंडिंग)

**समर्थनीय**—वि० [सं० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+अनीयर्] जिसका समर्थन किया जा सकता हो या हो सकता हो।

**समर्थित**—भू० कृ० [सं० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+क्त] १. जिसका समर्थन किया गया हो। समर्थन किया हुआ। २. जिसका अच्छी तरह विवेचन हुआ हो। विवेचित। ३. स्थिर किया हुआ। निश्चित। ४. जिसकी संभावना हो। संभावित।

**समर्थ्य**—वि० [सं० सम्√अर्थ् (गत्यादि)+यत्-ण्यत्] जिसका समर्थन किया जा सके या किया जाने को हो।

**समर्द्धक**—पुं० [स० सम्√ऋध् (बढ़ना)+ण्वुल्-अक] वरदान देनेवाले, देवता आदि।

**समर्पक**—वि० [सं० सम्√अर्प् (देना)+णिच्-ण्वुल्-अक] [स्त्री० समर्पिका] १. जो समर्पण करता हो। समर्पण करनेवाला। २. कही पहुँचाने के लिए कोई माल देने या भेजनेवाला। परेषक। (कन्साइनर) ३. (काम या बात) जिससे कोई दूसरा काम या बात ठीक तरह से पूरी हो सके या उद्देश्य सिद्ध हो सके। जैसे—समर्पक व्याख्या।

**समर्पण**—पुं० [स०] [भू० कृ० समर्पित, वि० समर्पणीय, सामर्प्य, कर्ता समर्पक] १. किसी को आदरपूर्वक कुछ देना। भेंट या नजर करना। २. धर्म-भाव से या श्रद्धाभक्ति पूर्वक कुछ कहते हुए अर्पित करना। (डेडिकेशन) ३ अपना अधिकार, स्वामित्व, भार आदि किसी दूसरे के हाथ में देना। सौंपना। ४. युद्ध, विवाद आदि बद करके अपने आपको शत्रु या विपक्षी के हाथ में सौंपना। (सरेन्डर, अंतिम दोनो अर्थों मे) ६. वैष्णवों मे किसी भक्त को भगवान् के विग्रह के सामने उपस्थित करके उसे नियमित रूप से आचारवान् भक्त या वैष्णव बनाना। ७. स्थापित करना। स्थापना। ८ दे० 'आत्मसमर्पण'।

**समर्पण-मूल्य**—पुं० [स०] आधुनिक अर्थ-शास्त्र मे, वह धन जो बीमा करनेवाले को अवधि पूरी होने से पहले ही अपना बीमा रद्द कराने या बीमा पत्र लौटा देने पर मिलता है। (सरे-डर वैल्यू)

**समर्पणी**—पुं० [सं० समर्पण] वह जो भगवान् का पूरा भक्त और आचारवान् वैष्णव बन गया हो। विशेष दे० 'समर्पण'।

**समर्पना***—स० [सं० समर्पण] १. समर्पण करना। २. सौंपना।

**समर्पित**—भू० कृ० [स० सम्√अर्प् (देना)+क्त] १. जो समर्पण किया गया हो। समर्पण किया हुआ। २ स्थापित।

**समर्प्य**—वि० [सं० सम्√अर्प् (देना)+णिच्-यत्] जो समर्पण किया जा सके या किया जाने को हो। समर्पण किये जाने के योग्य।

**समर्याद**—वि० [स० अव्य० स०] १. मर्यादा-युक्त। २. अच्छे आचरणवाला। सदाचारी।
अव्य० निकट। पास। समीप।

**स-मल**—वि० [सं०] १. मल से युक्त। २ मलिन। मैला।

**समल**—पु० [स० अव्य० स०] मल। विष्ठा। पुरीष। गू।

**सम-लिंगी-रति**—स्त्री० [स०] यौन विज्ञान तथा लोक मे, कामवासना की वह तृप्ति जो पुरुष किसी अन्य पुरुष (मुख्यत बालक) के साथ अथवा स्त्री किसी दूसरी स्त्री के साथ सभोग करके करती है।

**समली**—स्त्री० [स० श्यामली ?] चील।

**समवकार**—पु० [स०] रूपक का एक भेद जिसमें देवासुरों के संग्राम या समर्द से सम्बन्ध रखनेवाले वीरतापूर्ण कार्यों का उल्लेख होता है। इसमें तीन अंक होते हैं।

**समवतार**—पु० [स० सम्-अव√तृ (पार करना)+घञ्] १. उतरने की जगह। उतार। २. उतरने की क्रिया। अवतरण।

**समवयस्क**—वि० [सं०] [भाव० समवयस्कता] समान वय या अवस्थावाला।

**समवरोध**—पुं० [सं०] [भू० कृ० समवरुद्ध, कर्ता समवरोधक] चारों ओर से अच्छी तरह रोकना।

**समवर्ती**—वि० [सं०] १. वे जो किसी एक वर्ग के अंतर्गत हों या गिनाये गये हों। २ दे० 'सश्रित'।

**समवर्तन**—पुं० [स०] आवश्यकता, उपयोगिता आदि के विचार से किसी वस्तु का ठीक या यथोचित रूप मे होनेवाला विभाजन या सचार। समान वर्तन या व्यवहार। जैसे—शरीर मे शर्करा का ठीक तरह से सम वर्तन न होने पर रक्त विषाक्त होने लगता है।

**समवर्ती**—वि० [स०] १ जो समान रूप से स्थित रहता हो। २ जो पास ही स्थित हो।
पु० यमराज का एक नाम।

**समवलंब**—पु० [सं० ब० स०] ऐसा चतुर्भुज जिसकी दोनों लंबी रेखाएँ समान हों।

**समवसरण**—पु० [सं० सम्-अव√सृ (गत्यादि)+ल्युट्-अन] वह स्थान जहाँ किसी प्रकार का धार्मिक उपदेश होता हो।

**समवाक**—पुं० [स०] सम-ध्वनिक। (दे०)

**समवाय**—पु० [स०] [भाव० समवायत्व, समवायता] १ समूह। झुड। २. ढेर। राशि। ३. मेल। संयोग। ४ आपस में होनेवाला अभेद्य घनिष्ठ और नित्य सबध। ५. न्यायदर्शन मे, तीन प्रकार के संबंधों मे ऐसा सबध जो सदा एक सा बना रहता हो और जिसमे कभी अंतर न पड़ता हो। नित्य संबंध। जैसे—अग और अगी अथवा गुण और जुगी में समवाय संबंध होता है। ६ कोई ऐसा सबध जो सदा एक सा बना रहता हो। ७ कुछ विशिष्ट नियमों के अनुसार बनी हुई वह व्यापारिक सस्था जिसके हिस्सेदारों को अपनी लगाई पूँजी के अनुपात से नफे या लाभ का अश मिलता हो। (कम्पनी)

**समवायिक**—वि० [स० समवाय+ठक्-इक] १ समवाय सम्बन्धी। समवाय का।

**समवायी (यिन्)**—वि० [सं०] १. किसी के साथ समवाय सबध रखनेवाला। २. जो इकट्ठा करके ढेर के रूप मे लगाया हो।
पु० १. अग। अवयव। २ साझेदार। हिस्सेदार।

**सम-सुत**—पु० [स० त० त०] ऐसा छद जिसके चारो चरण समान हों।

**समवेग**—पु० [स०] कृष्ण के रथ का घोड़ा।

**समवेत**—वि० [सं० सम्-अव√इण् (गत्यादि)+क्त] १ एक जगह इकट्ठा किया हुआ। एकत्र। २ जमा किया हुआ। सचित। ३ किसी वर्ग या श्रेणी से मिलाया या लाया हुआ। ४ सबद्ध।

**समवेतन**—पु० [स०] १. समवेत होने की अवस्था. किया या भाव। २ आजकल बालचरों, अनुयायियों, सैनिकों आदि का एक स्थान पर जमा होना। (रैली)

**सम-व्यूह**—पु० [स० ब० स०] प्राचीन भारत मे, ऐसी सेना जिसमें २२५ सवार, ६७५ सिपाही तथा इतने ही घोड़े और रथ होते थे।

**सम-शंकु**—पु० [स० ब० स०] ठीक मध्याह्न का समय।

**समशीतोष्ण कटिबंध**—पु० [स० समशीतोष्ण-ब० स०, कटिबन्ध कर्म० स०] भूमध्य रेखा और उष्णकटिबध के मध्य मे पडनेवाले प्रदेश। (टेम्परेट जोन)

**समशील**—वि० [स०] शील, स्वभाव, प्रकृति आदि के विचार से एक ही तरह के। समान।

**समष्टि**—स्त्री० [स० सम्√अश् (व्याप्त होना)+क्तिन्] १. जितने हों, उन सब का सम्मिलित या सामूहिक रूप। वह रूप या स्थिति जिसमे सभी अगों, व्यष्टियों या सदस्यों का अस्तित्व या सभावेश हो। 'व्यष्टि' का विपर्याय। २. साधु-सन्यासियों आदि का ऐसा

मंडारा या भोज जिसमें सभी स्थानिक साधु-सन्यासी आदि निमंत्रित किये गये हों।

**समष्टि-निगम**—पुं० [सं ] ऐसा निगम जो समष्टि या समुदाय पर आश्रित हों, अथवा बहुतों या सब के सहयोग से काम करता हो, या चलता हो। (एसिगेट कारपोरेशन)

**समष्टिवाद**—पु० [स०] आधुनिक साम्यवाद की वह शाखा जिसका सिद्धांत यह है कि सभी पदार्थों के उत्पादन और वितरण का सारा अधिकार समष्टि रूप से सारे राष्ट्र के हाथ मे रहना चाहिए। (कलेक्टिविज्म)

**समष्टिवादी**—वि० [स०] समष्टिवाद सम्बन्धी। समष्टिवाद का। पु० समष्टिवाद का अनुयायी या समर्थक।

**समष्ठिल**—पु० [स० सम्√स्था (ठहरना)+इलच्] कोकुआ नाम का कँटीला पौधा। २ गंडीर या गिडिनी नाम का साग।

**समष्ठिला**—स्त्री० [स० समष्ठिल+टाप्] १ समष्ठिल। कोकुआ। २ जमींकंद। सूरन। ३. गिडिनी नामक साग।

**समस्त**†—वि०=समस्त।

**सम-संधि**—स्त्री० [स० कर्म० स०] प्राचीन भारतीय राजनीति मे, ऐसी सन्धि जिसमें सन्धि करानेवाले राजा या राष्ट्र आपत्काल मे अपनी पूरी शक्ति के साथ सहायता करने को तैयार हों। (कौ०)

**सम-समुन्नत**—वि० [स०] [भाव० सम-समुन्नति] १. जो थोड़ी थोड़ी दूरी पर, एक के बाद एक करके पहलेवाले धरातल से बराबर कुछ और ऊँचा होता जाता हो। २ जो कुछ रह रहकर सीढ़ियों की तरह बराबर अधिक ऊँचा होता जाता हो। सीढ़ीनुमा। (टेरेस-लाइक)

**सम-सर (सरि)***—वि० [सं० सम+हिं० सर (सदृश)] तुल्य। बराबर। समान। उदा०—मोहि समसरि पापी।—कबीर। स्त्री० बराबरी। समता। उदा०—...उपमा समसरि है न।—नागरीदास।

**सम-सामयिक**—वि० [सं०] समकालीन। (दे०)

**समस्त**—वि० [सं०] [भाव० समस्तता] १. आदि से अंत तक जितना हो, वह सब। कुल। पूरा। (होल) जैसे—समस्त भारत, समस्त संसार। २. किसी के साथ जुड़ा, मिला या लगा हुआ। संपृक्त। ४. (व्याकरण मे पद या शब्द-धातुरूप) जो समास के नियमों के अनुसार मिलकर एक हो गया हो। समास-युक्त। (कम्पाउंड)

**समस्तिका**—स्त्री० [सं० समस्त से] कथन, लेख आदि का संक्षिप्त रूप या सारांश। (एब्सट्रैक्ट)

**सम-स्वामी**—स्त्री० [सं० कर्म० स०] गंगा और यमुना के बीच का देश। अंतर्वेद।

**समस्य**—वि० [सं० सम्√अस् (होना)+ण्यत्-क्यप् वा] १. जो किसी के साथ मिलाया जा सके या मिलाया जाने को हो। २. (पद या शब्द) जिन्हें व्याकरण के अनुसार समास के रूप में मिलाया जा सकता हो।

**समस्यमान्**—वि० [सं०] (व्याकरण में वह पद) जो किसी दूसरे पद के साथ मिलकर समस्त पद बनाता हो या बना सकता हो।

**समस्या**—स्त्री० [सं० समस्य-टाप्] १. मिलने की क्रिया या भाव। मिलन। २. निश्चय। संघटन। ३. उलझनवाली ऐसी विचारणीय बात जिसका निराकरण सहज मे न हो सकता हो। कठिन या विकट प्रसंग। (प्रॉब्लेम) ५ छंद, श्लोक आदि का ऐसा अंतिम चरण या पद जो काव्य-रचना के कौशल की परीक्षा करने के लिए इस उद्देश्य से कवियों के सामने रखा जाता है कि वे उसके आधार पर अथवा उसके अनुरूप पूरा छंद या श्लोक प्रस्तुत करें।

क्रि० प्र०—देना।—पूर्ति करना।

**समस्या-पूर्ति**—स्त्री० [सं० ष० त०] साहित्यिक क्षेत्र मे, किसी समस्या के आधार पर कोई छंद या श्लोक बनाकर तैयार करना।

**समहा**†—अव्य० [सं० समस्त] साथ। संग।

**समहर**†—पुं० =समर (युद्ध)। उदा०—माद परधर मारका ठहरे समहर ठौड़।—बाँकीदास।

†वि०=सम-थल।

**समहित**—पु० [सं०] वह स्थिति जिसमें अनेक देश या राष्ट्र प्राय. एक से विचार रखते हों, एक ही तरह के स्वार्थों का ध्यान रखते हों और अनेक विषयों में एक ही नीति के अनुसार मिलकर चलते हों। (एग्टेन्ट)

**समाँ**—पु० [स० समय] १. समय। वक्त।

**मुहा०—समाँ बँधना**=(संगीत आदि कार्यों का) इतनी उत्तमता से सम्पन्न होता रहना कि सभी उपस्थित लोग स्तब्ध हो जायँ, और ऐसा जान पड़े कि मानों समय भी उसका आनंद लेने के लिए ठहर या रुक गय है।

**विशेष**—आशय यही है कि लोगों को यह पता नही चलने पाता कि इतना अधिक समय कैसे बीत गया।

२. ऋतु। ३. जमाना। युग। जैसे—आज-कल ऐसा समाँ आ गया है कि कोई किसी की नहीं सुनता। ४ अवसर। मौका। ५. सुंदर और सुहावना दृश्य। उदा०—अजब गगा के बहने का समाँ है।—नजीर बनारसी।

**समांग**—वि०[स०सम+अंग] जिसके सब अंग या तत्व एक-से अथवा एक ही प्रकार के हों। 'विषमांग' का विपर्याय। (होमोजीनियस)

**समांजन**—पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार आँखों मे लगाने का एक प्रकार का अंजन।

**समाँ**†—पुं० [स०] १. श्मशान। २. शव। (राज०)

वि०=समान।

**समांत**—पु० [सं० ष० त०] १. वर्ष का अन्त। २. पड़ोसी।

**समांतक**—पुं० [सं० समांत+कन्] कामदेव।

**समांशिक**—वि० [सं० समांश+ठन्-इक] १. समान भागोंवाला। २. समान अंश या भाग पानेवाला।

**समा**—स्त्री० [सं०] १. वर्ष। साल। उदा०—राका राज जरा सारा मास मास समा समा।—केशव। २. ग्रीष्म ऋतु।

वि० सं० 'सम' का स्त्री०। जैसे—कामिनी समा=कामिनी के समान।

†पुं० दे० 'समाँ'।

**समाअत**—स्त्री० [अ०] १. सुनने की क्रिया या भाव। २. ध्यान देने या विचार करने के लिए अवधानपूर्वक सुनने की क्रिया या भाव। जैसे—फरियाद की समाअत, मुकदमे की समाअत।

**समाई**—स्त्री० [हिं० समान+आई (प्रत्य०)] १. समाने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. वह अवकाश जिसमें कोई चीज समाती हो।

जैसे—इस घर में पचड़ आदमियों की समाई नहीं हो सकती। ३ धारण करने की आशक्ति तथा समर्थता। जैसे—जिसकी जितनी समाई होगी, वह उतना ही खरच करेगा।

**समाइ**†—पुं०=समाई।

**समाकर्षण**—पुं० [सं०] [भू० कृ० समाकर्षित, समाकृष्ट] विशेष रूप से होनेवाला आकर्षण। खिंचाव।

**समाकलन**—पुं० [सं०] [भू० कृ० समाकलित] एक ही तरह की बहुत सी इकट्ठी की हुई चीजों का मिलान करके देखना कि उनका क्रम या व्यवस्था ठीक है या नहीं। (कोलेशन)

**समाकार**—वि० [सं० कर्म० स०] जो आकार के विचार से आपस में समान हों।

**समाकुल**—वि० [सं० सम्-आ√कुल(बन्ध आदि)+अच्] बहुत अधिक आकुल या घबराया हुआ।

**समाहार**—पुं० [स०] उन पदार्थों का वर्ग या समूह जो किसी अम्ल या खट्टे पदार्थ के साथ मिलकर लवण और जल बनाते हैं।

**समाख्या**—स्त्री० [सं० सम्-आ√ख्या (ख्यात होना)+अङ्] १. यश। कीर्ति। २. आख्या। नाम। संज्ञा।

**समागत**—भू० कृ० [सं०] १. आया हुआ। जैसे—समागत अतिथि। २. जो आकर सामने उपस्थित या घटित हुआ हो। जैसे—समागत परिस्थिति, समागत प्रसंग।

**समागता**—स्त्री० [सं० समागत-टाप्] एक तरह की पहेली जिसका अर्थ पदों का सन्धि-विच्छेद करने पर निकलता है।

**समागति**—स्त्री० [सं० सम्-आ√गम् (जाना)+क्तिन्] १. समागत होने की अवस्था या भाव। आगमन। २. आकर मिलना। योग।

**समागम**—पुं० [स०] १. पास या सामने जाना। पहुँचना। २. बहुत से लोगों का एक स्थान पर एकत्र होना। जैसे—सतों का या साहित्यकारों का समागम। ३. स्त्री-प्रसंग। संभोग। मैथुन।

**समाघात**—पुं० [सं० सम्-आ√हन् (मारना)+घञ् कुत्व, न=त] १ युद्ध। लड़ाई। २. वध। हत्या।

**समाचरण**—पुं० [स०] [भू० कृ० समाचरित] १. अच्छा, ठीक या शुद्ध आचरण। २ कार्य या व्यवहार करना। आचरण। ३. कार्य का सम्पादन।

**समाचरना***—स० [सं० समाचरण] (किसी का) आचरण या व्यवहार करना।

अ० १. आचरण या व्यवहार के रूप में होना। २. व्याप्त या संचरित होना। उदा०—(क) ऐसी बुधि समचरी घर माँहि तिआही।—कबीर। (ख) समाचरै उसको मेरा ही सोदर निस्संकोच अहो।—मैथिलीशरण।

**समाचार**—पुं० [सं०] १. आगे बढ़ना। चलना। २ अच्छा आचरण या व्यवहार। ३. (मध्य और परवर्ती काल में) किसी कार्य या व्यापार की सूचना। उदा०—समाचार मिथिलापति पाए।—तुलसी। ४. ऐसी ताजी या हाल की घटना की सूचना जिसके संबंध में पहले लोगों को जानकारी न हो। (न्यूज) ५. हाल-चाल। ६ कुशल-मंगल।

**समाचार-पत्र**—पुं० [सं० ष० त०, समाचार=पत्र] १. नियमित समय पर प्रकाशित होनेवाला वह पत्र जिसमें अनेक प्रदेशों, राष्ट्रों आदि से संबंधित समाचार रहते हों। खबर का कागज। अखबार। (न्यूज-पेपर) २. उक्त प्रकार के सभी पत्रों का वर्ग या समूह।

**समाच्छादक**—वि० [सं०] ऊपर या चारों ओर से पूरी तरह छाया या ढका हुआ।

**समाच्छादन**—पुं० [सं०] [भू० कृ० समाच्छादित] ऊपर या चारों ओर से अच्छी तरह छाया या ढका हुआ।

**समाज**—पुं० [सं०] १ बहुत से लोगों का गरोह या झुंड। समूह। जैसे—सत्संग समाज। २. एक जगह रहनेवाले अथवा एक ही प्रकार का काम करनेवाले लोगों का वर्ग, दल या समूह। समुदाय। ३ किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थापित की हुई सभा। जैसे—आर्य समाज, संगीत समाज। ४. किसी प्रदेश या भूखंड में रहनेवाले लोग जिनमें सांस्कृतिक एकता होती है। ५. किसी सम्प्रदाय के लोगों का समुदाय। जैसे—अग्रवाल समाज। (सोशाइटी, उक्त सभी अर्थों में) ६. प्राचीन भारत का सभ्यता (देखें) नामक सार्वजनिक उत्सव। ७* आयाजन। तैयारी। उदा०—बेगि करहु बन गवन समाजू।—तुलसी।

**समाजत**—स्त्री० [अ०] १. शरमिन्दगी। लज्जा। २ विनय। ३. निवेदन। प्रार्थना।

**समाजवाद**—पुं० [सं०] यह आर्थिक तथा राजनीतिक विचार-प्रणाली कि सत्ता तथा स्वामित्व व्यक्तिगत हाथों में नहीं रहना चाहिए, बल्कि समष्टिक या सामूहिक रूप से समाज में निहित रहना चाहिए। (सोशलिज्म)

**विशेष**—समाजवाद प्रतिस्पर्धा के स्थान पर सहकारिता को, मुनाफाखोरी के स्थान पर लोकहित तथा समाज सेवा की भावना को प्रधानता देना चाहता है, और धन के वितरण में आज जैसी विषमता है उसे बहुत कुछ कम करना चाहता है।

**समाजवादी**—वि० [सं०] समाजवाद-संबंधी। समाजवाद का।

पुं० वह जो समाजवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (सोशलिस्ट)

**समाज-शास्त्र**—पुं० [स०] वह आधुनिक शास्त्र जिसमें मनुष्य की सामाजिक प्राणी मानकर उनके समाज और संस्कृति की उत्पत्ति, विकास, संघटन और समस्याओं आदि का विवेचन होता है। (सोशियालॉजी)

**समाज-शास्त्री**—पुं० [स०] वह जो समाज-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो।

**समाजसीक**—वि० [सं०] समाज के सदस्यों अर्थात् लोगों से बराबर मिलता-जुलता रहनेवाला। (सोशिअल)

**समाज-सुधार**—पुं० [स०] मानव समाज अथवा किसी देश में रहनेवाले समाज में फैली हुई कुरीतियाँ, दुर्गुण, दोष आदि दूर करके उन्हें सुधारने का प्रयत्न। (सोशल रिफार्म)

**समाज-सुधारक**—पुं० [स०] वह जो मानव-समाज के दुर्गुणों, दोषों आदि को दूर करने का प्रयत्न करता हो। (सोशल रिफार्मर)

**समाजी**—वि० [स० समाज] समाज-सम्बन्धी। समाज का।

पुं० वह जो वेश्याओं, गाने-बजानेवाली मंडलियों आदि के साथ रहकर तबला, सारंगी या ऐसा ही और कोई साज बजाता हो। साजिन्दा।

पुं०=आर्य-समाजी।

**समाजीकरण**—पुं० [स०] किसी काम, बात या व्यवहार को ऐसा रूप देना कि उस पर समाज का अधिकार या स्थापत्य हो जाय और सब लोग समान रूप से उसका लाभ उठा सकें। (सोशलाइजेशन)

**समाज्ञप्त**—वि० [स० सम्-आ√ज्ञप् (बताना)+क्त] जिसे समाज्ञा दी गई हो या मिली हो।

**समाज्ञा**—स्त्री० [सं०] १. आज्ञा। आदेश। २. नाम। संज्ञा। ३. कीर्ति। यश।

**समाता (तृ)**—स्त्री० [सं० ष० त०] ऐसी स्त्री जो माता के समान हो। २. सौतेली माँ। विमाता।

**समातृक**—वि० [सं०] [स्त्री० समातृका] जिसके साथ उसकी माता भी हो।

अव्य० माता के साथ।

**समातृका**—वि० स्त्री० [सं०] (देश्या) जो किसी खाला या बूढ़ा कुटनी के साथ और उसकी देख-रेख में रहती हो।

**समादर**—पु० [स० सम्-आ√दृ (आदर करना)+अप्] अच्छा और उचित आदर। सम्मान। खातिर।

**समादरणीय**—वि० [सम्-आ√दृ (आदर करना)+अनीयर्] जिसका समादर करना आवश्यक और उचित हो। समादर का अधिकारी या पात्र।

**समादान**—पु० [स० सम्-आ√दा (देना)+ल्युट्-अन] १. पूरी तरह से ग्रहण या प्राप्त करना। २ उपयुक्त उपहार, भेंट आदि ग्रहण करना। ३ बौद्धों का सौगताह्निक नामक नित्य कर्म। ४. जैनों में ग्रहण किये हुए आचारों, व्रतों, आदि की अवज्ञा या उपेक्षा। ५. निश्चय।

**समादिष्ट**—.० कृ० [सं०] १ नियोजित। २. निर्दिष्ट।

**समादृत**—वि० [सं० सम्-आ√दृ (आदर करना)+क्त] जिसका अच्छी तरह आदर हुआ हो। सम्मानित।

**समादेय**—वि०[सं०]१. जो समादान के लिए उपयुक्त हो। २. समादरणीय।

**समादेश**—पु०[सं०] [भू० कृ० समादिष्ट] १. अधिकारपूर्वक किसी को कोई काम करने का आदेश या आज्ञा देना। २. इस प्रकार दिया हुआ आदेश या आज्ञा। (कमांड) ३. निषेधाज्ञा। व्यादेश।

**समादेशक**—पुं० [सं०] १.वह जो किसी को कोई काम करने का आदेश दे। २.वह प्रधान सैनिक अधिकारी जिसके आदेश से सेना के सब काम होते हैं। (कमांडर)

**समादेश याचिका**—स्त्री० [सं०] विधिक क्षेत्र में,वह याचिका या प्रार्थना-पत्र जो उच्च न्यायालय में इस उद्देश्य से उपस्थित किया जाता है कि कोई राजनीतिक या विधिक आदेश कार्यान्वित होने से तब तक के लिए रोक दिया जाय जब तक उच्च न्यायालय में उसके औचित्य का निर्णय न हो जाय। परमादेश। (रिट ऑफ़ मैन्डमस)

**समाधा**†—स्त्री०=समाधि।

**समाधा**—पुं० [सं० सम्-आ√ धा (रखना)+अङ्] १. निराकरण। निपटारा। २. विरोध दूर करना। ३. सिद्धांत। ४. दे० 'समाधान'।

**समाधान**—पु० [सं० सम्-आ√धा (रखना)+ल्युट्—अन] [वि० समाधानीय] १. एक ही आधान या स्थल पर रखना। २. मन को सब ओर से हटाकर एकाग्र करना और ब्रह्म में लीन करना। ३.संशय दूर करना। ४. आपत्ति की निवृत्ति करना। ५. समस्या का निराकरण करना। ६. असंगति, भ्रांति, विरोध आदि दूर करना। ७. नियम। ८. वह युक्ति या योजना जिसके द्वारा समस्या हल की जाती हो। ९. तपस्या। १०. अनुसंधान। अन्वेषण। ११. किसी के कथन या मत की पुष्टि। समर्थन। १२. ध्यान। १३. नाटक की मुख्य संधि के १२ अगों में से एक अग जिसमे बीज ऐसे रूप में फिरसे प्रदर्शित किया जाता है कि वह नायक अथवा नायिका का अभिमत प्रतीत होता है।

**समाधानना**०—स [सं० समाधान] १. किसी का समाधान करना। संशय दूर करना। २.सान्त्वना देना।

**समाधि**—स्त्री०[सं०]१. ईश्वर के ध्यान में मग्न होना। २. योग-साधना का चरम फल, जिसमे मनुष्य सब क्लेशों से मुक्त होकर अनेक प्रकार की शक्तियाँ प्राप्त करता है। यह चार प्रकार की कही गई हैं—सप्रज्ञात, सवितर्क, सविचार और सानन्द।

क्रि० प्र०—लगना।—लगाना।

३. वह स्थान जहाँ किसी का मृत शरीर या अस्थियाँ गाड़ी गई हों।४. प्राणियों की वह अवस्था जिसमे उनकी संज्ञा या चेतना नष्ट हो जाती है और वे कोई शारीरिक क्रिया नही करते।५. साहित्य मे एक अलकार जिसमे किसी आकस्मिक कारण से सहायता मिलने पर किसी के कार्य में सुगमता होने का उल्लेख होता है। इसे 'समाहित' भी कहते हैं। ६. साहित्य मे, काव्य का एक गुण जिसके द्वारा दो घटनाओं का दैव संयोग से एक ही समय मे होना प्रकट होता है और जिसमे एक ही क्रिया का दोनों कर्ताओं के साथ अन्वय होता है। ७. किसी असभव या असाध्य कार्य के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। ८ किसी कष्ट-साध्य काम के लिए मन एकाग्र करना। ९ झगड़े या विवाद का अत या समाप्ति करना। १०. चुप्पी। मौन। ११ समर्थन। १२ नियम। १३. ग्रहण या अगीकृत करना। १४. आरोप। १५. प्रतिज्ञा। १६. बदला चुकाना। प्रतिशोध। १७. निद्रा। नींद।

†स्त्री०=समाधान। (क्व०) उदा०—व्याधि भूत जनित उपाधि काहू खल की समाधि कीजै तुलसी को जानि जन फुरकै।—तुलसी।

**समाधि-क्षेत्र**—पु०[सं० ष० त०]१. वह स्थान जहाँ योगियों के मृत शरीर गाडे जाते हो। २ मुरदे गाडने की जगह। कब्रिस्तान।

**समाधित**—भू० कृ०[सं० सम्-आ√ धा (रखना)+क्त] जिसने समाधि लगाई हो। समाधि अवस्था को प्राप्त।

**समाधित्व**—पु०[सं० समाधि-त्व] समाधि का गुण, धर्म या भाव।

**समाधिदशा**—स्त्री० [सं० ष० त०]योग मे वह दशा जब योगी समाधि में स्थित होता और तन्मय होकर परमात्मा मे लीन हो जाता और चारो ओर ब्रह्म ही ब्रह्म देखता है।

**समाधि लेख**—पुं०[सं०]वह लेख जो किसी मृत व्यक्ति का संक्षिप्त परिचय कराने के लिए उसकी समाधि या कब्र पर लिखा या अंकित किया रहता है। (एपिटैफ़)

**समाधिस्थ**—वि० [स० समाधि√ स्था (ठहरना)+क] जो समाधि में स्थित हो। जो समाधि लगाये हुए हो।

**समाधि-स्थल**—पु०[सं० ष० त०] 'समाधि-क्षेत्र'।

**समाधी (धिन्)**—वि०[सं० समाधि+इनि] समाधिस्थ।

स्त्री०=समाधि।

**समाधेय**—वि० [स० सम्-आ √धा (रखना)+यत्] जिसका समाधान हो सके या होने को हो।

**समान**—व० [सं०] [भाव० समानता] १. गुण, मूल्य महत्त्व आदि के विचार से किसी के अनुरूप या बराबरी का। बराबर। तुल्य। (इक्वल) जैसे—दोनों बातें समान हैं। २. आकार, प्रकार रूप आदि के विचार से किसी की तरह का। सदृश। (सिमिलर) जैसे—ये दोनों गहने समान हैं।

**विशेष**—सदृश, समान और तुल्य का अंतर जानने के लिए दे० 'सदृश' का 'विशेष'।

**पद—एक समान**= एक ही जैसे। बराबर। **समान वर्ण**- ऐसे वर्ण जिनका उच्चारण एक ही स्थान से होता हो। जैसे—क, ख, ग, घ, समान वर्ण हैं।

पु० १. सत्। २. शरीर से, नाभि के पास रहनेवाली एक वायु। स्त्री०=समानता।

**समानक**—वि० [सं०] १.=समान। २.=समानार्थक।

**समान-कालीन**—वि०=समकालीन।

**समान-गोत्र**—पुं० [सं०] सगोत्र।

**समान-तंत्र**—पुं० [सं०] १. सम-व्ययसायी। हमपेशा। २. वेद की किसी एक शाखा का अध्ययन करने तथा उसके अनुसार यज्ञ आदि करनेवाले व्यक्ति।

**समानता**—स्त्री० [स० समान+तल्—टाप्] १ समान होने की अवस्था या भाव। तुल्यता। बराबरी। जैसे—इन दोनों में बहुत कुछ समानता है। २. वह गुण, तत्त्व या बात जो दो या अधिक वस्तुओं आदि में समान रूप से हो।

**समानत्व**—पुं० [सं० समान+त्व]=समानता।

**समाननाम**—पुं० [स० समाननामन्] ऐसे व्यक्ति जिनके नाम एक से ही हों। एक ही नामवाले। नाम-राशी।

**समानयन**—पुं० [सं० सम् - आ √नी (ढोना)+ल्युट—अन] [भू० कृ० समानीत] अच्छी तरह अथवा आदरपूर्वक ले आने की क्रिया।

**समानर्च**—पुं० [स० ब० स०] वे जो एक ही ऋषि के गोत्र या वंश में उत्पन्न हुए हों।

**समानस्थान**—पुं० [स०] १. मध्यवर्ती स्थान। २. भूगोल में, वह स्थान जहाँ दिन-रात का मान बराबर हो।

**समाना**—अ० [सं० समावेशन] १. अंदर आना। भरना। अटना। जैसे—इस घड़े में २० सेर पानी समाता है। २. व्याप्त होना। जैसे—दिल में भय समाना। ३. कहीं से चलकर आना। पहुँचना। †स० अंदर करना। भरना।

**समानाधिकरण**—पु० [स० ब० स०] १. समान आधार। २. व्याकरण में, वे दो शब्द या पद जो एक ही कारक की विभक्ति से युक्त हों। जैसे—राजा दशरथ के पुत्र राम को वनवास मिला; 'यहाँ राजा दशरथ के पुत्र' पद 'राम' का समानाधिकरण है क्योंकि 'को' विभक्ति समान रूप से उक्त दोनों पदों में लगती है।

**समानाधिकार**—पु० [स० कर्म० स०] १. जातीय गुण, धर्म या विशेषता। २. बराबर का अधिकार।

**समानार्थ**—पुं० [सं० ब० स०] वे शब्द आदि जिनका अर्थ एक ही हो। पर्याय। (सिनोनिम)

**समानार्थक**—वि० [सं० ब० स०] (किसी शब्द के) समान अर्थ रखने वाला (दूसरा शब्द)। पर्यायवाची। (सिनोनिमस)

**समानार्थी**—वि० [सं०]=समानार्थक।

**समानिका**—स्त्री० [स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण और एक गुरु होता है।

**समानी**—स्त्री०=समानिका।

**समानुपात**—पु० [स० सम-अनुपात] [वि० समानुपातिक] किसी वस्तु के भिन्न भिन्न अंगों में होनेवाला वह तुलनात्मक संबंध जो आकार, प्रकार विस्तार आदि के विचार से स्थिर होता है और जिससे उन सब अंगों में संगति, सामंजस्य, स्वरूपता आती है। (प्रोपोर्शन)

**समानुपातिक**—वि० [स०] समानुपात की दृष्टि, विचार या हिसाब से होनेवाला। समानुपात संबंधी। (प्रपोर्शनेट)

**समानोदक**—पु० [स० ब० स०] धर्म-शास्त्र में ऐसे लोग जिनकी ग्यारहवीं से चौदहवीं पीढ़ी तक के पूर्वज एक हों।

वि० साथ-साथ तर्पण करनेवाले।

**समानोपमा**—स्त्री० [स० मध्यम स०] उपमा अलंकार का एक प्रकार जिसमें उच्चारण की दृष्टि से एक ही शब्द भिन्न प्रकार से खंड करने पर भिन्न अर्थों का द्योतक होता है।

**समापक**—वि० [सं० सम्√आप् (प्राप्त होना)+ण्वुल्]-अक] समापन पर करनेवाला।

**समापत**†—वि०=समाप्त।

**समापत्ति**—स्त्री० [स०] १. बहुतों का एक ही समय में और एक ही स्थान पर उपस्थित होना। मिलना। २ भेंट। मिलन। ३. अवसर। मौका। ४. योग में ध्यान का एक अंग। ५ अन्त। समाप्ति। ६. आज-कल दंगा, दुर्घटना, युद्ध आदि के कारण लोगों के प्राणों या शरीर पर आनेवाला संकट। (कैजुएल्टी)

**समापन**—पु० [सं०] १. समाप्त करने की क्रिया या भाव। पूरा करना। (डिस्पोजल) २. विचार, विवाद आदि का अन्त करने के लिए कोई विशेष बात कहना। (वाइंडिंग अप) ३. गार डालना।

**समापनीय**—वि० [स० सम्√आप् (प्राप्त होना)+अनीयर] १. जिसका समापन होने की हो अथवा होना उचित हो। समाप्त किये जाने के योग्य। २. मारे जाने के योग्य।

**समापन्न**—भू० कृ० [सं० सम्-आ√पद् (गमनादि)+क] १. प्राप्त किया हुआ। २. घटना के रूप में आया हुआ। घटित। ३. पहुँचा हुआ। ४. पूरा किया हुआ। ५. दुखी। ६. मृत।

**समापवर्तक**—वि० [स०] समापवर्तन करनेवाला।

पु० गणित में, वह राशि जिससे दो या अधिक राशियों को अलग-अलग भाग देने पर शेष कुछ न बचे। (कॉमन फ़ैक्टर) जैसे—यदि २४, ३६ या ४८ को १२ से भाग दिया जाय तो शेष कुछ नहीं बचता। अतः १२ उक्त तीनों राशियों का समापवर्तक है।

**समापवर्तन**—पु० [स० सम-अपवर्तन] गणित में, वह क्रिया जिससे राशियों या संज्ञाओं का अपवर्तन करके उनका समापवर्तक निकाला जाता है। (दे० 'अपवर्तन' और 'समापवर्तन')।

**समापिका क्रिया**—स्त्री० [स०] व्याकरण में, वाक्य के अंतर्गत अपने स्थान के विचार से क्रिया के दो भेदों में से एक। वह पूर्ण क्रिया जिसका काल

किसी दूसरी अपूर्ण क्रिया के काल के बाद आता है और जिससे किसी कार्य की समाप्ति सूचित होती है। जैसे—वह घर जाकर बैठ रहा। मे 'बैठ रहा' समाप्तिका क्रिया है, क्योंकि उससे कार्य की समाप्ति सूचित होती है। (दूसरा भेद पूर्वकालिक क्रिया कहलाता है। उक्त वाक्य में 'जाकर' पूर्वकालिक क्रिया है।)

**समाप्ति**†—भू० कृ०=समाप्त।

**समापी (पिन्)**—वि० [सं० सम्√ आप् (प्राप्त करना) +णिनि] [स्त्री समापिनी]१. समापन करनेवाला। २. समाप्त करनेवाला।

**समाप्त**—भू० कृ०[सं०]१. (कार्य)जिसे पूरा कर दिया गया हो। जैसे—विद्यालय का कार्य समाप्त हो गया है। २. (वस्तु) जिसका भोग, सहार आदि के कारण अस्तित्व नष्ट हो गया हो। जैसे—धन समाप्त होना। ३ (वस्तु) जो बिक चुकी हो फलतः विक्रयार्थ उपलब्ध न हो। जैसे—पापलीन समाप्त हो गई है, नई दो चार दिन मे आ जायगी। ४ (नौकरी या सेवा) जिसका कार्य-काल बीत चुका हो। जैसे—उनकी नौकरी समाप्त हो चुकी है। ५. मृत।

**समाप्त सैन्य**—पु०[स०] प्राचीन भारत मे, ऐसी सेना जो किसी एक ही ढंग की लड़ाई करना जानती थी।

**समाप्ति**—स्त्री० [सं० सम्√आप्(प्राप्त होना)+क्तिन्]१.समाप्त होने की अवस्था या भाव। खतम या पूरा होना। २. अवधि,सीमा आदि का अंत होना। (एक्सपायरी, एक्सपायरेशन) ३. किसी काम, चीज या बात का सदा के लिए स्थायी रूप से अन्त होना। न रह जाना। (एक्स्टिंक्शन)

**समाप्तिक**—पु०[सं०] वह जो वेदो का अध्ययन समाप्त कर चुका हो। वि० समाप्त या पूरा करने वाला।

**समाप्य**—वि० [सं० सम् √आप्( प्राप्त होना) +ण्यत्] समाप्त किये जाने के योग्य। खतम या पूरा करने या होने के लायक।

**समाम्ना**—पुं० [स० सम्+आ √ म्ना+य] [वि० समाम्नायिक] १. शास्त्र। २. समष्टि। समूह।

**समाम्नायिक**—पुं०[सं० समाम्नाय+ठन्—इक] वह जिसे शास्त्रों का अच्छा ज्ञान हो। शास्त्रवेत्ता।

वि० समाम्नाय या शास्त्र संबंधी। शास्त्रीय।

**समायत**—वि०[सं०] [स्त्री०समायता]१. बड़ा या फैला हुआ। विस्तृत। २. बड़ा। विशाल।

†स्त्री०=समाजत (सुनवाई)।

**समायुक्त**—वि०[स० सम्—आ√युज् (मिलाना)+क्त]१. जोड़ा हुआ। २. तैयार किया हुआ। ३ नियुक्त। ४. सपर्क में लाया हुआ। ५. दत्तचित्त। ६. आवश्यकता पड़ने पर दिया या किसी के पास पहुँचाया हुआ। (सप्लायड)

**समायुक्तक**—पुं०[सं०] समायोजक। (दे०)

**समायुत**—भू० कृ० [सं० सम्-आ√यु (मिलाना)+क्त] १. जोड़ा या लगाया हुआ। २. एकत्र किया हुआ। सगृहीत।

**समायोग**—पुं० [सं०] १. संयोग। २. जनसमूह। भीड़। ३. दे० 'समायोजन'।

**समायोजक**—पुं० [सं०] समायोजन करनेवाला। (सप्लायर)

**समायोजन**—पुं०[सं० सम्-आ√युज् (मिलाना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ०समायोजित] १. समायोग। २. लोगों की आवश्यकता की चीजें उनके पास पहुँचाने की व्यवस्था। संभरण। (सप्लाई)

**समारंभ**—पु० [स० सम्-आ√रभ् (प्रारंभ करना)+घञ्-मुम्] १. आरंभ। शुरुआत। २. कोई काम,क्रिया या व्यापार। ३. समारोह। ४. लेप।

**समारंभण**—पु०[सं० सम्-आ√रभ्(प्रारंभ करना)+ल्युट्-अन—मुम्] [भू० कृ० समारभित] १. कार्य आरम्भ करना। २ गले लगाना। आलिंगन।

**समारना**†—स०१.=सँभालना। २.=समारोहना।

**समारब्ध**—भू० कृ०[स० सम्-आ√ रभ् (प्रारम्भ करना)+क्त] जिसका समारभ हुआ हो। आरभ किया हुआ।

**समारभ्य**—वि० [सं० सम्-आ √रभ् (शीघ्रता करना)+यत्] जिसका समारम्भ हो सकता हो या होने को हो।

**समारूढ**—भू० कृ०[स० सम्-आ √रुह् (होना)+क्त]१. किसी के ऊपर चढ़ा हुआ। आरूढ। २ बढ़ा हुआ। ३. अगीकृत। ४. (घाव) जो भर गया हो। (वैद्यक)

**समारोप (प)**—पु० [स०] [वि० समारोपित] अच्छी तरह आरोप या आरोपण करने की क्रिया या भाव।

**समारोह**—पु० [स० सम-आ √रुह् (होना)+घञ्]१. ऊपर जाना विशेषत. चढाई करना। २ कोई ऐसा शुभ आयोजन जिसमें चहल-पहल तथा धूमधाम हो। (फंक्शन)

**समार्थ**—वि०=समार्थक।

**समार्थक**—वि०[सं० ब० स० कप्] समान अर्थवाले (शब्द)। समानक। पु० पर्याय।

**समार्थी (र्थिन्)**—वि० [सं० समार्थ+इनि] बराबरी करने की इच्छा रखनेवाला। २. दे० 'समार्थक'।

**समालंभन**—पु०[ सं०] [भू० कृ० समालंभित]१ शरीर पर केसर आदि का लेप करना। २. वध। हत्या। ३ गले लगाना। आलिंगन। ३ सहारा होना।

**समालप**—पुं०[सं० सम्-आ√ लप् (करना)+घञ्]अच्छी तरह बात-चीत करना।

**समालिंगन**—पुं० [स०सम्-आ√लिग (गत्यादि)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० समालिंगित] प्रगाढ़ आलिंगन।

**समालोकन**—पुं० [सं० सम् -आ √लोक् (देखना)+ल्युट्+अन] [भू० कृ० समालोकित]अच्छी तरह देखना।

**समालोचक**—पुं०[सं० सम्+आ √लोच् (देखकर कहना)+ण्वुल्-अक] वह जो समालोचना करता हो। समीक्षक।

**समालोचन**—पु०[सं० सम्-आ√ लोच् (देखना)+ल्युट्—अन] समालोचना।

**समालोचना**—स्त्री०[सं० समालोचन+टाप्]१. अच्छी तरह देखना। २. किसी कृति के गुण-दोषों का किया जानेवाला विवेचन। ३. साहित्य में, वह लेख जिसमें किसी कृति के गुण-दोषों के संबध में किसी ने अपने विचार प्रकट किये हों। (रिव्यू) ४. साहित्यिक कृतियों के गुण-दोष विवेचन करने की कला या विद्या।

**समालोची**—वि० [सं०सम्-आ √लोच्(देखना)+णिनि]=समालोचक।

**समालोच्य**—वि० [सं०] जिसकी समालोचना हो सकती हो या होने को हो।

**समावा**†—पुं०=समाई।

**समावरण**—पु० [सं०] [भू० कृ०समावृत] कोई छोटा लेख या सूचना जो किसी बड़े पत्र के साथ एक ही लिफाफे में रखकर कहीं भेजी जाय। (एन्क्लोजर)

**समावर्जन**—पु० [सं० सम्-आ √ वृज् (मना करना)+ल्युट्-अन] १. अपनी ओर झुकाना या मोडना। २. उपयोग के लिए अपने अधिकार में लाना या लेना। ३. वश में करना।

**समावर्जित**—भू० कृ० [सं०] १ अपनी ओर झुकाया या मोड़ा हुआ। २. अपने अधिकार या वश में लाया हुआ।

**समावर्त**—पु०[स० सम-आ√वृत् (रहना)+घञ्] १ वापस आना। लौटना। २ दे० 'समावर्तन'।

**समावर्तन**—पुं०[स०]१. वापस आना। लौटना। २. प्राचीन भारत में, वह समारोह जिसमें गुरुकुल के स्नातकों को विद्याध्ययन कर लेने के उपरांत विदाई दी जाती थी। ३. आज-कल विश्वविद्यालयों आदि में होनेवाला वह समारोह जिसमें उच्च परीक्षाओं में उत्तीर्ण होनेवाले परीक्षार्थियों को उपाधियाँ, पदक, प्रमाण-पत्र आदि दिये जाते हैं। (कान्वोकेशन)

**समावर्तनीय**—वि०[सं० सम्-आ √वृत् (रहना) +अनीयर] १. वापस होने के योग्य। लौटाने लायक। २ जो समावर्तन संस्कार के योग्य हो गया हो।

**समावर्ती (र्तिन्)**—वि०[स०] समावर्तन संस्कार के उपरान्त गुरुकुल से लौटनेवाला स्नातक।

**समावास**—पु०[सं० सम्-आ√वस् (रहना)+घञ्] १. निवास स्थान। २. टिकने या ठहरने का स्थान। ३. शिविर। पड़ाव।

**समाविष्ट**—भू०कृ०[सं०सम्-आ√विश्(प्रवेश करना)+क्त]१ जिसका समावेश हो चुका हो या कर दिया गया हो। २. जो छा, भर या व्याप्त हो चुका हो। ३. बैठा हुआ। आसीन। ४. एकाग्रचित्त।

**समावृत**—वि० [स० सम्-आ √वृ (वरण करना)+क्त] [भाव० समावृत्ति]१ अच्छी तरह ढका, छाया या लपेटा हुआ। २.समावर्तन संस्कार के उपरान्त घर लौटा हुआ। ३. सूचनात्मक टिप्पणी या लेख) जो किसी पत्र के साथ एक ही लिफाफे में बन्द करके कहीं भेजा गया हो। (इन्क्लोजड) जैसे—इस पत्र के साथ सभा का कार्य-विवरण समावृत है।

**समावृत्ति**—स्त्री०[सं०]१. समावृत होने की अवस्था या भाव। २. समावर्तन।

**समावेश**—पुं०[सं० सम्-आ√ विश् (प्रवेश करना)+घञ्]१. एक या एक जगह जाना, पहुँचना, साथ रहना या होना। २. किसी चीज या बात का दूसरी चीज में होना। ३. चित्त या मन किसी ओर लगाना। मनोनिवेश।

**समावेशक**—वि०[समावेश+कन्] समावेश करनेवाला।

**समावेशन**—पुं०[स० सम्-आ √विश् (प्रवेश करना) +ल्युट्—अन] २. किसी के अन्दर पैठना। प्रवेश। ३. अधिकार या वश में करना। ३. विवाह-संस्कार।

**समावेशित**—भू० कृ० सं० [सम—आ√ विश् (प्रवेश करना)+णिच्—क्त समावेश+इतच् वा]=समाविष्ट।

**समाश्रय**—पुं०[स०]१. आश्रय। सहारा। २ मदद। सहायता।

**समाश्रित**—भू० कृ० [सं० सम्-आ √श्रि, (सेवा करना)+क्त] १. जिसने किसी स्थान पर अच्छी तरह आश्रय लिया हो। २. सहारे पर टिका हुआ।

पु० वह जो भरण-पोषण के लिए किसी पर आश्रित हो।

**समासंग**—पुं० [स० सम्-आ√ सज्ज् (साथ करना)+घञ्] मिलन। मिलाप। मेल।

**समासंजन**—पु०[स० सम्-आ √सज्ज् (मिलना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० समासजित] १. संयुक्त करना। मिलाना। २. किसी पर जकड़ना या रखना। ३ सपर्क। संबंध।

**समास**—पु०[स०]१ योग। मेल। २. संग्रह। सचय। ३. संक्षेप। ४. संस्कृत व्याकरण में, वह अवस्था जब अनेक पदों का एक पद, अनेक विभक्तियों की एक विभक्ति या अनेक स्वरों का एक स्वर होता है। इसके अव्ययी भाव, तत्पुरुष, बहुव्रीहि और द्वन्द्व चार भेद हैं।

**समासक**—वि०[स० समास+कन्] विग्रह-चिह्नों के अन्तर्गत एक प्रकार का चिह्न जो समस्त पदों के अलग अलग शब्दों के बीच लगाया जाता है। समास का चिह्न।

**समासक्ति**—स्त्री०[स०सम-आ√सज्ज् (मिलना)+क्तिन्] [वि० समासक्त] १ योग। मेल। २. संबंध। ३. अनुराग। ४. समावेश। अंतर्भाव।

**समासन्न**—भू० कृ०[स० सम्-आ √सद् (गत्यादि)+क्त] १. पहुँचा हुआ। प्राप्त। २. निकटवर्ती। पास का।

**समासीन**—वि०[स० सम्√ आस् (बैठना)+क्विप—ख-ईन] अच्छी तरह आसीन या बैठा हुआ।

**समासोक्ति**—स्त्री०[स० समास+उक्ति] साहित्य में, एक अलंकार जिसमें श्लिष्ट सज्ञाओं की सहायता से कोई ऐसा वर्णन किया जाता है जो प्रस्तुत विषय के अतिरिक्त किसी दूसरे अप्रस्तुत विषय पर भी समान रूप से घटता है। जैसे—बड़ी डील लिल पील को सबन तब्बो बन थान। घनि सरजा तू जगत मे ताको हरयो गुमान। इसमे 'सरजा' (सज्ञा) प्रस्तुत (सिंह या शेर) अप्रस्तुत (शिवाजी) के संबंध मे घटता है। यह अप्रस्तुत प्रशसा के विरुद्ध या उल्टा है।(स्पीच ऑफ़ ब्रेविटी)

**समाहता**—अ०[स० समाहृत] सामना करना। सामने आना। उदा०—त्रिवली, नाभि दिखाई कर, सिर कि सकुचि समाहि।—बिहारी।

**समाहरण**—पु०[स० सम्-आ√हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १. चीजें आदि एक स्थान पर एकत्र करना। संग्रह। २. ढेर। राशि। ३. कर, चन्दा, प्राप्य धन आदि उगाहना। वसूली। (कलेक्शन) ४. क्रम, नियम आदि के अनुसार ठीक ढग से या सजाकर बनाया या रखा जाना। (फार्मेशन) जैसे—वायु-यानों का समाहरण। ५. दे० 'समाहार'।

**समाहर्ता (र्तृ)**—वि० [सं०-सम्-आ√हृ(हरण करना)+तृच्] १.समाहार अर्थात् एकत्र या पूजीभूत करनेवाला। २. संक्षिप्त रूप देनेवाला। ३. मिलने या सम्मिलित होनेवाला।

पुं० वह राज कर्मचारी जिसके जिम्मे किसी जिले से राज-कर या प्राप्त धन आदि उगाहने का काम होता है। (कलेक्टर)

**समाहार**—पुं० [सं० सम्-आ√ हृ (हरण करना)+घञ्] १. बहुत सी चीजों को एक जगह इकट्ठा करना। संग्रह। २. ढेर। राशि। ३. मिलन। मिलाप।

**समाहार द्वंद्व**—पुं० [सं० मध्यम० स०] व्याकरण में, ऐसा द्वंद्व समास जिससे उसके पदों के अर्थ के सिवा कुछ और अर्थ भी सूचित होता है। जैसे—सेठ-साहूकार, हाथ-पाँव, बाल-रोटी आदि। इनमें से प्रत्येक अपने पदों के अर्थ के सिवा उसी प्रकार के कुछ और व्यक्तियों या पदार्थों का भी बोध कराता है।

**समाहित**—वि० [सं०] १. एक जगह इकट्ठा किया हुआ, विशेषतः सुंदर और व्यवस्थित रूप से इकट्ठा किया या सजाकर लगाया हुआ। २. केन्द्रित २. शांत। ३. समाप्त। ४. व्यवस्थित। ५. प्रतिपादित। ६ स्वीकृत। ७. सदृश। समान।

पु० १. पुण्यात्मा और साधु पुरुष। २. साहित्य में, वह अवस्था जब कोई भावशांति (देखें) इस प्रकार होती है कि वह किसी दूसरे भाव के सामने दबकर गौण रूप धारण कर लेती है। इसकी गिनती अलंकारों में होती है। ३. 'समाधि' नामक अलंकार का दूसरा नाम।

**समाहूत**—भू० कृ० [सं० सम्-आ√ह्वे (बुलाना)+क्त, व=उ-दीर्घ] १. जिसे बुलाया गया हो। आहूत। २ जिसे ललकारा गया हो। ३ एकत्र किया हुआ।

**समाहृत**—भू० कृ० [सं०] जिसका समाहरण या समाहार हुआ हो।

**समाह्वान**—पुं० [सं० सम्-आ√ह्वे (बुलाना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० समाहूत] १. आवाहन। बुलाना। २. जूआ खेलने के लिए बुलाना या ललकारना।

**समित**—भू० कृ० [सं० सम्√इण् (गत्यादि)+क्त] १. मिला हुआ। संयुक्त। २. समानांतर। ३. अंगीकृत। स्वीकृत। ४. पूरा किया हुआ। ५. मापा हुआ। ६. निरंतर लगा हुआ। जैसे—समित प्रवाह। पु० युद्ध। लड़ाई। समर।

**समिता**—स्त्री० [सं० समित-टाप्] बहुत महीन पीसा हुआ आटा। मैदा।

**समितिंजय**—पुं० [सं० समिति√जि (जीतना)+खच्-मुम्] १. वह जिसने वाद-विवाद, प्रतियोगिता, युद्ध आदि में विजय प्राप्त की हो। विजयी। २. यम। ३. विष्णु।

**समिति**—स्त्री० [सं०] १. सभा। समाज। २. प्राचीन भारत में, राजनीतिक विषयों पर विचार करनेवाली एक संस्था। ३. आज-कल शासन, संस्था, समाज, मुहल्लेवालों आदि द्वारा चुने या मनोनीत किये गये व्यक्तियों का वह दल जिसके जिम्मे कोई विशेष कार्य-भार सौंपा गया हो। जैसे—जलकर समिति, सहकारी समिति।

**समिद्ध**—पुं० [सं० सम्√इन्ध् (जलना)+क्त, नलोप] जलता हुआ। प्रज्वलित। प्रदीप्त।

**समिद्धन**—पुं० [सं० सम्√इन्ध् (जलने की लकड़ी)+ल्युट्-अन] १. आग जलाने या सुलगाने की क्रिया। २. जलाने की लकड़ी। ईंधन। ३. उत्तेजित या उद्दीप्त करने की क्रिया।

**समिध**—पुं० [सं० सम्√इन्ध् (जलना)+क्त] अग्नि।



स्त्री०=समिधा।

**समिधा**—स्त्री० [सं० समिधि] १. लकड़ी, विशेषतः यज्ञकुंड में जलाने की लकड़ी। २. हवन, यज्ञ आदि की सामग्री।

**समिधि**—स्त्री०=समिधा।

**समिर**†—पुं०=समीर।

**समी**—वि०=सम (समान)। उदा०—लिखमी समी रुकमणी लाडी। —प्रिथीराज।

**समीक**—पुं० [सं० सम्+ईकन्] युद्ध। समर। लड़ाई।

**समीकरण**—पु०[सं०] [भू० कृ० समीकृत] १ दो या अधिक राशियों, वस्तुओं आदि को समान या बराबर करने की क्रिया या भाव। २. गणित में, वह क्रिया जिससे किसी ज्ञात राशि की सहायता से कोई अज्ञात राशि जानी जाती है। ३. यह सिद्ध कर दिखलाना कि अमुक अमुक राशियाँ या मान आपस में बराबर हैं। (ईक्वेशन)

**समीकार**—वि० [सं० सम्-च्वि√कृ (करना)+घञ्] जो छोटी-बड़ी, ऊँची-नीची या अच्छी बुरी चीजों को समान करता हो। बराबर करनेवाला।

**समीकृत**—भू० कृ० [स० सम्-च्वि√कृ (करना)+क्त] १. जिसका समीकरण किया गया हो। २ समान किया हुआ। बराबर किया हुआ।

**समीकृति**—स्त्री० [सं० सम्+च्वि√कृ (करना)+क्तिन्]=समीकरण।

**समीक्या**—स्त्री०=समीकरण।

**समीक्ष**—पु० [स० सम्√ईक्ष् (देखना)+घञ्] १. समीकरण। २. समीक्षा।

**समीक्षक**—वि० [सं० समीक्ष+कन्] सम्यक् रूप से देखने या समीक्षा करनेवाला। समालोचक।

**समीक्षण**—पुं० [सं० सम्√ईक्ष् (देखना)+ल्युट्-अन] [भू० कृ० समीक्षित] १. दर्शन। देखना। २. अनुसन्धान। जाँच-पड़ताल। ३. दे० 'समीक्षा'।

**समीक्षा**—स्त्री० [सं० सम्√ईक्ष् (देखना)+अ-टाप्] १ अच्छी तरह देखने की क्रिया। २. छान-बीन या जाँच-पड़ताल करने के लिए अच्छी तरह और ध्यानपूर्वक देखना। परीक्षण। (एग्जैमिनिंग) ३. ग्रन्थों, लेखों आदि के गुण-दोषों का विवेचन। समालोचन। (रिव्यू) ४. मीमांसा दर्शन। ५. सांख्य दर्शन में, पुरुष प्रकृति, बुद्धि, अहंकार आदि तत्त्व। ६. बुद्धि। समझ। ७ कोशिश। प्रयत्न।

**समीक्षित**—भू० कृ० [सं० सम्√ईक्ष् (देखना)+क्त] जिसकी समीक्षा की गई हो। जो भली-भाँति देखा गया हो।

**समीक्ष्य**—वि० [सं०] जिसकी समीक्षा हो सकती हो या होने को हो।

**समीप**—पु० [सं० सम्√इण् (गत्यादि)+घञ्-दीर्घ] समुद्र। सागर।

**समीचीन**—वि० [सं० समीच+ख-ईन] [भाव० समीचीनता] १. यथार्थ। ठीक। २. उचित। वाजिब। ३. न्याय-संगत।

**समीति**†—स्त्री०=समिति।

**समीप**—वि० [सं०] निकट। पास। 'दूर' का विपर्याय।

**समीपता**—स्त्री० [सं० समीप+तल्-टाप्] समीप होने की अवस्था या भाव। निकटता।

**समीपवर्ती** (र्तिन्)—वि०[सं०] जो किसी के समीप या पास में स्थित हो। जैसे—भारत के समीपवर्ती टापुओं में सिंहल प्रधान है।

**समीपस्थ**—वि० [सं०] जो समीप में स्थित हो। पास का। समीपवर्ती।

**समीभाव**—पुं० [सं० सम्+च्वि√भू (होना)+घञ्] १. सामान्य अवस्था। साधारण स्थिति। २. आचरण और जीवन संबंधी सब बातों में रखा जानेवाला समता का भाव।

**समीय**—वि० [सं० सम+छ-ईय] सम संबंधी। सम का।

**समीर**—पुं० [सं० सम्√ईर् (गमनादि)+क] १ वायु। हवा। २. आधुनिक वायुविज्ञान के अनुसार मली जान पडनेवाली वह हलकी हवा जिसकी गति प्रति घंटे १३ से १८ मील तक की हो। (मॉडरेट ब्रीज) ३. प्राण-वायु। ४. शमी वृक्ष।

**समीरण**—पुं० [सं०] [भू० कृ० समीरित] १. चलना। २. वायु। हवा। ३. पथिक। बटोही। ४. प्रेरणा। ५ मरुआ नाम का पौधा। वि० १. चलता हुआ या चलनेवाला। गतिशील। २. उद्दीपक।

**समीरित**—भू० कृ० [सं० सम्√ईर् (प्रेरित करना)+क्त] १. चलाया हुआ। २ भेजा हुआ। ३. प्रेरित। ४ उच्चरित (शब्द)।

**समीहा**—स्त्री० [सं० सम्√ईह् (चेष्टा करना)+अङ्-टाप्] [भू० कृ० समीहित] १. उद्योग। प्रयत्न। कोशिश। २ इच्छा। कामना। ३. अन्वेषण। तलाश। ४. जाँच-पड़ताल।

**समीहित**—भू० कृ० [सं०] चाहा हुआ। इच्छित।

**समुंदर**०—पु० १=समुद्र। २. समंदर।

**समुंदर**†—पु०=समुद्र।

**समुंदर-पात**—पु०=समुंदर-सोख।

**समुंदर फल**—पुं० [सं० समुद्र-फल] एक प्रकार का बहुत बड़ा सदाबहार वृक्ष जो नदियों और समुद्रों के किनारे और तर भूमि में बहुत अधिकता से पाया जाता है।

**समुंदर-फेन**†—पु०=समुद्र-फेन।

**समुंदर फेन**—पुं० [हिं०] समुद्र की लहरों पर की झाग जो सुखाकर औषधि के रूप में काम में लाई जाती है।

**समुंदर-सोख**—पुं० [हिं० समुंदर+सोखना] एक प्रकार का पौधा जिसके बीज वैद्यक में दवा के काम आते हैं। इसके डठल बहुत चमकीले और मजबूत होते हैं। समुंदर-पात।

**समुक्त**—वि० [सं० सम्√वच् (कहना)+क्त, वा०=उ] १. जिससे कुछ कहा गया हो। सम्बोधित। २. जिसकी भर्त्सना की गई हो।

**समुख**—वि० [स० अव्य० स०] १. बहुत अधिक बोलनेवाला। २ सुवक्ता। वाग्मी।

**समुचित**—वि० [सं० सम्√उच् (एक होना)+क्त] १ जो हर तरह से उचित या ठीक हो। वाजिब। २. उपयुक्त। योग्य। ३. जैसा होना चाहिए, अथवा होता आया हो, वैसा।

**समुच्चय**—वि०[सं० सम्√उत्√चि (चयन करना)+क] बहुत ऊँचा। †वि०=समूचा।

**समुच्चयक**—वि० [सं०] १. ऊपर उठानेवाला। २. आगे की ओर ले जाने या बढानेवाला।

**समुच्चय**—पुं० [सं०] [भू० कृ० समुच्चित] १. कुछ वस्तुओं का एक में मिलना। (कॉम्बिनेशन) २. समूह। राशि। ३. कुछ वस्तुओं या बातों का एक साथ एक जगह इकट्ठा होना। समूहि। (क्यूमुलेशन) ४. प्राचीन भारतीय राजनीति में, वह स्थिति जिसमें प्रस्तुत उपाय के सिवाय अन्य उपायों से भी कार्य सिद्ध हो सकता हो। ५. साहित्य में, एक अलंकार जिसमें कई भावों के एक साथ उदित होने, कई कार्यों एक साथ होने या कई कारणों में एक ही कार्य होने का वर्णन होता है। (कन्जंक्शन)

**विशेष**—इसके दो भेद कहे गये हैं। एक तो वह जिसमें आश्चर्य, हर्ष, विषाद आदि अनेक भावों का एक साथ उल्लेख होता है। दूसरा वह जिसमें एक कार्य के अनेक उपायों से सिद्धि हो सकने का वर्णन होता है।

**समुच्चयक**—वि० [सं०] १ समुच्चय संबंधी। २. समुच्चय के रूप में होनेवाला।

**समुच्चयन**—पु० [सं०] १. ऊपर उठाने की क्रिया या भाव। २ इकट्ठा करने या ढेर लगाने की क्रिया या भाव।

**समुच्चय बोधक**—पु० [स०] व्याकरण में, अव्यय का एक भेद जिसका कार्य दो वाक्यों में परस्पर संबंध स्थापित करना होता है। और, किंतु, तथा, परन्तु, बल्कि या वरन् आदि समुच्चय बोधक हैं।

**समुच्चयार्थक**—वि० [स०] समुच्चय या सारे वर्ग के अर्थ से संबंध रखने या वैसा अर्थ सूचित करनेवाला। (कलेक्टिव) जैसे—भीड और समाज समुच्चयार्थक संज्ञाएँ हैं।

**समुच्चयोपमा**—पुं० [सं०] उपमा अलंकार का एक भेद जिसमें उपमेय में उपमान के अनेक गुण या धर्मों का एक साथ आरोप होता है।

**समुच्चित**—भू० कृ० [सं० सम्√उत्√चि (ढेर लगाना)+क्त] १ जो धीरे-धीरे बढकर इकट्ठा और एकाकार हो गया हो। पूंजीभूत। २. संग्रहीत। (क्यूमुलेटेड)

**समुच्छिन्न**—भू० कृ० [स०] बुरी तरह से उखडा, तोडा या फाडा हुआ।

**समुच्छेद**—पुं० [स० सम्-उत्√छिद् (नष्ट करना)+घञ्] १ जड़ से उखाड़ना। उन्मूलन। २. ध्वंस। नाश। बरबादी।

**समुच्छेदन**—पुं० [सं० सम्-उत्√छिद् (नष्ट करना)+ल्युट्-अन] १. जड़ से उखाड़ना। २. नष्ट करना।

**समुज्ज्वल**—वि० [सं०सम्-उत्√उवल् (चमकना)+-अच्] खूब उज्ज्वल। चमकता हुआ।

**समुज्झित**—वि० [सं० सम्√उज्झ् (त्यागना)+क्त] १. त्यागा हुआ। परित्यक्त। २. मिला हुआ। युक्त।

**समुत***—स्त्री०=समझ।

**समुतना**†—अ०=समझना।

**समुत्थ**—वि० [सं० सम्-उत्√स्था (ठहरना)-+क, स-थ लोप] १ उठा हुआ। २. उत्पन्न। जात।

**समुत्थान**—पुं० [स० सम्-उद्√स्था (ठहरना)+ल्युट्-अन] १. ऊपर उठाने की क्रिया। २. उन्नति। ३. उत्पत्ति। ४. आरंभ। ५. रोग का निदान। ६. रोग का शमन या शान्ति।

**समुत्थित**—भू०कृ० [सं० सम्-उद्√स्था (ठहरना)+क्त] १. अच्छी तरह उठा हुआ। २. जो प्रकट हुआ हो। ३. उद्भूत। उत्पन्न। ४. घिरा हुआ (बादल)। ५. प्रस्तुत। ६. जो आरोग्य लाभ कर चुका हो। ७. फूला हुआ। ८. किसी के मुकाबले में उठा हुआ।

**समुत्पन्न**—वि० [सं० सम्-उत्√पद् (गत्यादि)+क्त=न] =उत्पन्न।

**समुत्सुक**—वि० [सं० सम्-उत्√सुच् (शोक करना)+अच्, कर्म० स०] विशेष रूप से उत्सुक। उत्कंठित।

**समुद**--वि० [सं०] मोद या प्रसन्नता से युक्त।
अव्य० मोद या प्रसन्नतापूर्वक।
†पुं०=समुद्र।

**समुदय**--पुं० [सं० समुदयः] [भू० कृ० समुदित] १. ऊपर उठना या चढ़ना। २. ग्रह, नक्षत्र आदि का उदित होना। उदय। ३. शुभ लग्न। साइत। ४. ढेर। राशि। झुंड। समुदाय। ५. कोशिक। प्रयत्न। ६. युद्ध। समर। ७. राज-कर।
वि० समस्त। सब। सारा।

**समुदाचार**--पुं० [सं० सम्-उद् आ√चर् (चलना)+घञ्] १. भलमनसाहत का व्यवहार। शिष्टाचार। २. नमस्कार। ३. प्रणाम। ४. अभिप्राय। आशय। ५. मतलब।

**समुदाय**--पु०[स०√सम्-उद्√अय् (गत्यादि)+घञ्] [वि०सामुदायिक] १ बहुत से लोगों का समूह। २. झुंड। दल। ३. ढेर। राशि। ४. उदय। ५. उन्नति। ६ सेना का पिछला भाग। ७. किसी वर्ग, जाति के लोगों द्वारा बनाई हुई ऐसी संस्था जिसका मुख्य उद्देश्य सामान्य हितों की रक्षा होता है। (ऐसोसियेशन)

**समुदायी**--पुं०=समुदाय।

**समुदित**--भू०कृ० [स०सम्-उद्√इ (गत्यादि)+क्त] १. जिसका समुदय हुआ हो। २ उदित। उठा हुआ। ३. उन्नत। ४. उत्पन्न। जात।

**समुद्गत**--भू० कृ० [सं० सम्- उद्√गम् (जाना)+क्त] १. जो ऊपर उठा हो। उदित। २. उत्पन्न। जात।

**समुद्गार**---पु० [सं० कर्म० स०] बहुत अधिक वमन होना। ज्यादा कै होना।

**समुद्गरण**---पु० [सं०] [भू० कृ० समुद्गत] १. ऊपर उठाना। २. उद्गार। ३. वह अन्न जो वमन करने पर पेट से निकला हो। ४. क्रूर करना। हटाना।

**समुद्गर्ता(र्तृ)**—वि० [सं० सम्√उद्√गृ (हरण करना)+तृच्] १. ऊपर की ओर उठाने या निकालनेवाला। २. उद्धार करनेवाला। ३. ऋण चुकानेवाला।

**समुद्गार**†—पुं०=समुद्गरण।

**समुद्भव**---पुं० [सं०] १. उत्पत्ति। जन्म। २. पुनरुज्जीवन। ३. उपवमन के समय, हवन के लिए जलाई हुई आग।

**समुद्भूति**—स्त्री० [सं० सम्-उद्√भू (होना)+क्तिन्] [वि० समुद्भूत]=समुद्भव।

**समुद्यत**—वि० [सं० सम्-उद्√यम् (शान्त होना)+क्त] जो पूर्ण रूप से उद्यत हो। अच्छी तरह से तैयार।

**समुद्यम**---पुं० [सं० कर्म० स०] १. उद्यम। चेष्टा। २. आरंभ। शुरू।

**समुद्र**—वि० [सं०] १. मुद्रा से युक्त। २. जिस पर मुद्रा अंकित हो।

**समुद्र**---पुं० [सं०] १. वह विशाल जल-राशि जो इस पृथ्वी तल के प्रायः तीन-चौथाई हिस्से में व्याप्त है। सागर। अंबुधि। जलधि। रत्नाकर। २. लाक्षणिक अर्थ में, बहुत बड़ा आगार या आश्रय। जैसे—विद्या-सागर, शब्द-सागर आदि। ३. एक प्राचीन जाति।

**समुद्र-फेन**---पुं० [सं०] समुद्र के किसी भाग में सहसा उत्पन्न होनेवाला वह फेन जो आस-पास के स्थलों में भू-कंप होने अथवा ज्वालामुखी में प्राकृतिक विस्फोट होने के कारण उत्पन्न होता है। (डी-फ्वेक)

**समुद्र-कफ**---पुं० [सं०] समुद्र फेन।

**समुद्र-कांची**—स्त्री० [सं० ब० स०] पृथ्वी जिसकी मेखला समुद्र है।

**समुद्र-कांता**—स्त्री० [सं०] नदी जिसका पति समुद्र माना जाता है। समुद्र की स्त्री अर्थात् नदी।

**समुद्रगा**—स्त्री० [सं०] १. नदी जो समुद्र की ओर गमन करती है। २. गंगा नदी।

**समुद्रगुप्त**—पुं० [सं०] मगध के गुप्त राजवंश के एक बहुत प्रसिद्ध और वीर सम्राट् जिनका समय सन् ३३५ से ३७५ तक माना जाता है। इनकी राजधानी पाटलिपुत्र में थी।

**समुद्र-चुलुक**---पुं० [सं०] अगस्त्य मुनि जिन्होंने चुल्लुओं से समुद्र पी डाला था।

**समुद्रज**---वि० [सं०] समुद्र से उत्पन्न। समुद्र-जात।
पुं० मोती, हीरा आदि रत्न जिनकी उत्पत्ति समुद्र से होती या मानी जाती है।

**समुद्र-झाग**---पुं०=समुद्र-फेन।

**समुद्र-तारा**---स्त्री० [सं०] एक प्रकार की समुद्री मछली जिसका आकार तारे की तरह का होता है। (स्टार फिश)

**समुद्र-नवनीत**—पु० [सं०] १. अमृत। २ चन्द्रमा।

**समुद्रमेखला**—स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

**समुद्र-पत्नी**—स्त्री० [सं०] नदी। दरिया।

**समुद्र-फेन**—पुं०=समुद्र-फेन।

**समुद्र-मंजूषा**—स्त्री० [सं०] सीपी। सीप।

**समुद्र-मंथन**—पुं० [सं०] १. एक प्रसिद्ध पौराणिक कथा जिसमें देवताओं और दानवों ने मिलकर समुद्र मथा था। इस मथन के फलस्वरूप उन्हें लक्ष्मी, मणि, रंभा, वारुणी, अमृत, शंख, ऐरावत हाथी, कल्पवृक्ष, चन्द्रमा, कामधेनु, धन, धन्वंतरि, विष और अश्व ये चौदह पदार्थ मिले थे। २. कुछ ढूँढने के लिए बहुत अधिक की जानेवाली छान-बीन।

**समुद्र-मालिनी**—स्त्री० [सं०] पृथ्वी जो समुद्र को अपने चारों ओर माला की भाँति धारण किये हुए है।

**समुद्र-मेखला**—स्त्री० [सं०] पृथ्वी जो समुद्र को मेखला के समान धारण किये हुए है।

**समुद्र-यात्रा**—स्त्री० [सं०] समुद्र के द्वारा दूसरे देशों की होनेवाली यात्रा। (सी वॉयेज)

**समुद्र-यान**—पुं० [सं०]१. समुद्र के मार्ग से होनेवाली यात्रा। २. समुद्र के तल पर चलने वाली सवारी। समुद्री जहाज।

**समुद्र-रसना**—स्त्री० [स० ब० स०] पृथ्वी।

**समुद्र-लवण**---पु० [सं०] करकच नाम का नमक जो समुद्र के जल से तैयार किया जाता है।

**समुद्र-लहरी**—पुं० [सं०+हिं०] समुद्र के रंग की तरह का हरा रंग। (सी ग्रीन)
वि० उक्त रंग के रंग का।

**समुद्र-वसना**—स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

**समुद्र-वाडव**—पुं० [सं०] बड़वानल।

**समुद्र-वासी(सिन्)**—वि० [सं०] [स्त्री० समुद्र-वासिनी] १. जो समुद्र में रहता हो। २. जो समुद्र के किनारे रहता हो।

**समुद्र-यात्री**

**समुद्र-वृष्टि न्याय**—पुं० [सं०] कहावत की तरह प्रयुक्त होनेवाला एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग यह जानने के लिए होता है कि अमुक काम या बात भी उसी प्रकार व्यर्थ है जैसे समुद्र के ऊपर वृष्टि होना।

**समुद्र-सार**—पुं० [सं०] मोती।

**समुद्र-स्वामी**—स्त्री० [सं० ष० त०] एक प्राचीन तीर्थ जो समुद्र के तट पर था।

**समुद्रांवरा**—स्त्री० [सं० ब० स०] पृथ्वी।

**समुद्राभिसारिणी**—स्त्री० [सं० ष० त०] वह कल्पित देववाला जो समुद्र देव की सहचरी मानी जाती है।

**समुद्राय**—पुं० [सं० समुद्र√ऋ (गमनादि)+उण्] १. कुंभीर नामक जल जंतु। २. तिमिंगल नामक जल-जन्तु। ३. समुद्र के किसी अंश पर बना हुआ पुल।

**समुद्रावरण**—स्त्री० [सं० ब० स०] पृथ्वी।

**समुद्रिय**—वि० [सं० समुद्र+घ—इय] १. समुद्र-संबधी। समुद्र का। २. समुद्र से उत्पन्न। ३. समुद्र में या उसके तट पर रहने या होने वाला। ४. नौ-सैनिक। (नैवेल)

**समुद्री**—वि०=समुद्रिय।

**समुद्री गाय**—स्त्री० [हिं०] नीले रंग का एक प्रकार का समुद्री पशु जो प्रायः गौ के आकार का होता है। इसका मांस खाया जाता है और चरबी अच्छे दामों पर बिकती है।

**समुद्री डाकू**—पुं० [हिं०] वह जो समुद्र में चलनेवाले जहाजों आदि पर डाके डालता हो। जल-दस्यु। (पाइरेट)

**समुद्री तार**—पुं० [सं० कर्म० स०]समुद्र में पानी के भीतर से जानेवाला तार। (केबिल)

**समुद्ग**—वि० [ सं० सम्—उद्√वह् (ढोना)+अच् ] १. श्रेष्ठ। उत्तम। बढ़िया। ३. ढोने या वहन करनेवाला।

**समुद्वाह**—पुं० [सं० सम्—उद्√वह् (ढोना)+घञ्] विवाह।

**समुन्नत**—वि० [सं० सम्—उत्√नम् (झुकना)+क्त] [भाव० समुन्नति] १. जिसकी यथेष्ट उन्नति हुई हो। खूब बढ़ा-चढ़ा। २. बहुत ऊँचा।

पुं० वास्तु शास्त्र में एक प्रकार का खंभा या स्तंभ।

**समुन्नद्ध**—वि० [सं० सम्—उत्√नह् (बाँधना)+क्त] १. जो अपने आपको पंडित समझता हो। २. अभिमानी। घमंडी। ३. उत्पन्न। जात।

पुं० प्रभु। मालिक। स्वामी।

**समुन्नयन**—पुं० [सं०] [भाव० समुन्नति] १. ऊपर की ओर उठाने या ले जाने की क्रिया। २. प्राप्ति। लाभ।

**समुपकरण**—पुं०[सं० सम्—उप√कृ (करना)+ल्युट्—अन]१. उपकरण। २. सामग्री।

**समुपवेशन**—पुं० [सं० सम्—उप√विश् (प्रवेश करना)+ल्युट्—अन] १. अच्छी तरह बैठने की क्रिया। २. अभ्यर्थना।

**समुपस्थान**—पुं० [सं० सम्—उप√स्था (ठहरना)+ल्युट्—अन] सामने आकर उपस्थित होना।

**समुपस्थित**—वि० [सं० सम्—उप√स्था (ठहरना)+क्त] [भाव० समुपस्थिति] १. सामने आया हुआ। उपस्थित। २. प्रकट।

**समुपस्थिति**—स्त्री० [सं० सम्—उप√स्था (ठहरना)+क्तिन्]=समुपस्थान।

**समुपेत**—वि० [सं० सम्-उप√इण् (गत्यादि)+क्त] १. पास आया या पहुँचा हुआ। २. एकत्र किया हुआ। ३. ढेर के रूप में लगाया हुआ। ३. बसा हुआ। आबाद।

**समुल्लास**—पुं० [सं० सम्-उत्√लस् (क्रीड़ा करना)+घञ्] [भू० कृ० समुल्लसित] १. उल्लास। आनन्द। प्रसन्नता। खुशी। २. ग्रन्थ आदि का परिच्छेद या प्रकरण।

**समुहां**—वि० [सं० सम्मुख] १. सामने का। २. सामने की दिशा में स्थित।

अव्य० १. सामने। २. सीधे।

**समुहाना**—अ० [हिं० समुहा] सामने आना या होना।

स० सामने करना या लाना। उदा०—सबही तन समुहानि छिन चलति सबनि पै दीठ।—बिहारी।

**समुहीं**—अव्य०=सामुहें। (सामने)।

**समूचा**—वि० [सं० समुच्चय] आदि से अन्त तक जितना हो, वह सब। जिसके खंड या विभाग न किये गए हों। कुल। पूरा। सब।

**समूड**—वि० [सं० सम्√वह् (ढोना)+क्त, ह=दृढ-त-थ-ढ-व=ड] १ ढेर के रूप में लगाया हुआ। २ इकट्ठा किया हुआ। समूहीन। ३ पकड़ा हुआ। ४. भोगा हुआ। भुक्त। ५. विवाहित। ६. जो अभी उत्पन्न हुआ हो। सद्यःजात। ७. जो मेल में ठीक बैठता हो। संगत।

पुं० १. ढेर। समूह। २. आगार। भंडार।

**समूर**—पुं० [फा० समूर से] शंबर या सांबर नामक हिरन।

**समूल**—वि० [सं० अव्य० स०] १ जिसमें मूल या जड हो। २. जिसका कोई मुख्य कारण या हेतु हो।

क्रि० वि० जड़ या मूल से। जैसे—किसी का समूल नाश करना।

**समूह**—पुं० [सं०] १.एक स्थान पर एक ही तरह की संख्या में अत्यधिक वस्तुओं की स्थिति। जैसे—पक्षियों या पशुओं का समूह। २ बहुत से व्यक्तियों का जमघट। समुदाय।

**समूहतः**—क्रि० वि० [स०] समूह के रूप में। सामूहिक रूप से। (एन ब्लॉक) जैसे—सुधारवादियों ने समूहतः त्याग-पत्र दे दिया।

**समूहना**—पुं० [स०] [भू० कृ० समूहित] १. कई चीजों को एक में मिलाकर उन्हें समूह का रूप देना। २. राशि। ढेर। ३. दे० 'संश्लेषण'। (भाषा-विज्ञान)

**समूहनी**—स्त्री० [सं० समूहन-ङीप्] झाड़। बुहारी।

**समूहित**—भू० कृ० [स०] समूह के रूप में रखा या लाया हुआ।

**समूहीकरण**—पुं० [सं० समूह+करण] वस्तुओं के ढेर या समूह बनाने की क्रिया या भाव।

**समृति**—स्त्री०=स्मृति।

**समृद्ध**—वि० [सं० सम्√ऋध् (वृद्धि करना)+क्त] [भाव० समृद्धि] १. जिसके पास बहुत अधिक संपत्ति हो। संपन्न। धनवान्। समृद्धिशाली। २. कृतार्थ। सफल। ३. सशक्त। ४. अधिक। बहुत। ५. प्रभावशील।

**समृद्धि**—स्त्री० [सं०] १. समृद्ध होने की अवस्था या भाव। २. बहुत अधिक संपन्नता। ऐश्वर्य। ३. कृतकार्यता। सफलता। ४. अधिकता। बहुलता। ५. शक्ति। ६. प्रभावकारक प्रधानता।

**समृद्धी (द्धिन्)**—वि० [सं० समृद्धि+इनि] जो बराबर अपनी समृद्धि करता रहता हो।
स्त्री०=समृद्धि।

**समृष्ट**—भू० कृ० [सं०] झाड़-पोंछ की अच्छी तरह साफ किया हुआ।

**समेकन**—पु० [सं० सम+एकन] [वि० समेकनीय, भू० कृ० समेकित] १. दो या अधिक वस्तुओं आदि का आपस में मिलकर पूर्णत एक हो जाना। २. रसायन-शास्त्र में, दो या अधिक पदार्थों का गलकर या और किसी रूप में एक हो जाना (फ्यूजन)

**समेकनीय**—वि० [सं०] जिसका समेकन हो सके। जो दूसरे में पूर्णत मिलकर उसके साथ एक हो सके। (फ्यूजिबुल)

**समेकित**—भू० कृ० [सं०] जिसका समेकन किया गया हो अथवा हुआ हो। (फ्यूज्ड)

**समेट**—स्त्री० [हिं० समेटना] १. समेटने की क्रिया या भाव। २. समेटी हुई वस्तु।

**समेटना**—स० [हिं० सिमटना] १. बिखरी हुई चीजों को इकट्ठा करना। २. ग्रहण या धारण करना जैसे—किसी का सब्र समेटना।

**समेत**—वि० [सं०] १. किसी के साथ मिला या लगा हुआ। सयुक्त। २. पास आया हुआ।
अव्य० सहित। साथ।

**समेष**—पुं० [सं० सम्√ एष् (वृद्धि करना)+अच्] पुराणानुसार मेरु के अतर्गत एक पर्वत।

**समै, समैया***—पु०=समय।

**समो***—पु०=समय।

**समोखना***—स० [?] जोर देकर या ताकीद से कहना।

**समोच्च रेखा**—स्त्री० दे० 'रूप-रेखा'।

**समोदक**—वि० [सं० ब० स०, सम +उदक] जिसमे आधा पानी हो।
पु० १. चौल। २. मठा।

**समोना**—स० [सं० समन्वय] १. कोई चीज अच्छी तरह किसी दूसरी चीज में भरना या मिलाना। समाविष्ट या सम्मिलित करना। जैसे—इतना बड़ा कथानक छोटीसी कहानी में समो दिया है। २. इकट्ठा या संगृहीत करना। ३. प्रस्तुत करना। बनाना।
अ० १. निमग्न होना। डूबना। २. मग्न या लीन होना। उदा०—यों ही बुड्ढ गये तें अब लौं राजस रंग समोये।—नागरीदास।

**समोसा**—पुं० [?] १. मैदे का बना हुआ तथा घी में तला हुआ नमकीन पकवान जिसके अन्दर आलू आदि भरे जाते हैं। २. उक्त प्रकार का बना हुआ कोई पकवान। जैसे—मलाई का समोसा।

**समोह**—पु० [सं०] समर। युद्ध।

**समौ***—पुं०=समय।

**समौरिया**—वि० [सं० सम+हिं० उमर-इया (प्रत्य०)] किसी की तुलना में समान वय वाला। समवयस्क।

**सम्मत**—वि० [सं० सम्√मन् (मानना)+क्त] १. जिसकी राय किसी की बात से मिलती हो। २. जो किसी बात पर राजी या सहमत हो।
पुं० १. सम्मति। राय। २. अनुमति।

**सम्मति**—स्त्री० [सं०] [वि० सम्मत] १ सलाह। राय। २. अनुज्ञा। अनुमति। ३. किसी विषय मे प्रकट किया जानेवाला मत या विचार। राय। (ओपीनियन) ४. किसी विषय मे कुछ लोगो का एकमत होना। सहमति। (एग्रीमेन्ट) ५. किसी के प्रस्ताव या विचार को ठीक और उचित मानकर उसके निर्वाह के लिए दी जानेवाली अनुमति। सहमति। (कन्सेन्ट) ५. प्रतिष्ठा। सम्मान। ७. इच्छा। कामना। ८. आत्म-ज्ञान।

**सम्मद**—वि० [सं० सम् √ मद् (हर्षित होना)+अप्] आनंदित। प्रसन्न।
पु० १. आमोद। प्रसन्नता। २. एक प्रकार की बहुत बडी मछली।

**सम्मन**—पु० [अ० समन] न्यायालय द्वारा प्रेषित वह पत्र जिसमे किसी को न्यायालय में उपस्थित होने का आदेश दिया जाता है।

**सम्मर्द**—पुं० [सं० सम्√मृद् (मर्दन करना)+घञ्] १. युद्ध। लड़ाई। ३ जन-समूह। भीड। ३. वाद-विवाद। ४. लड़ाई-झगडा।

**सम्मर्दन**—पु० [सं० सम् √ मृद् (मर्दन करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० सम्मर्दित] अच्छी तरह किया जानेवाला मर्दन।

**सम्मर्दी (र्दिन्)**—वि० [स० सम्√ मृद् (मर्दन करना)+णिनि] अच्छी तरह मर्दन करनेवाला।

**सम्मातृ**—वि० [स० ब० स०] जिसकी माता पतिव्रता हो। सती माता वाला।

**सम्माद**—पुं० [सं० सम्√ मद् (उन्मत्त होना)+घञ्] १. उन्माद। पागलपन। २. नशा।

**सम्मान**—पु० [स० सम्√ मान् (मान करना)+अच्] १. किसी के प्रति मन मे होनेवाला आदरपूर्ण भाव। २. वे सब बातें जिनके द्वारा किसी के प्रति पूज्य भाव प्रकट या प्रदर्शित किया जाता है।
वि० मान या प्रतिष्ठा से युक्त।
अव्य०मान या प्रतिष्ठा पूर्वक।

**सम्मानन**—पु० [सं० सम्√मान् (आदर करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० सम्मानित] १. सम्मान या आदर करना। २. बतलाना या सिखलाना।

**सम्मानना**—स० [स० सम्मान] सम्मान करना। आदर करना।
स्त्री० [सं०] सम्मान।

**सम्मानित**—भू० कृ० [सं० सम्√मान् (सम्मानित होना)+क्त] १. जिसका सम्मान किया गया हो। २. जिसे सम्मानपूर्वक लोग देखते हों।

**सम्मानी (निन्)**—वि० [स० सम्√ मान् (आदर करना)+णिनि] जिसमे सम्मान का भाव हो।

**सम्मान्य**—वि० [सं० सम्√ मान् (आदर करना)+यत्] जिसका सम्मान किया जाना आवश्यक और उचित हो। आदरणीय।

**सम्मार्ग**—पु० [स० कर्म० स०] १. अच्छा मार्ग। सत् मार्ग। २. ऐसा मार्ग जिससे मोक्ष की प्राप्ति हो।

**सम्मार्जक**—वि० [स० सम्√ मृज् (युद्ध करना)+ण्वुल्—अक] सम्मार्जन करनेवाला।
पुं० झाड़।

**सम्मार्जन**—पु० [सं० सम्√मृज् (युद्ध करना)+विच् ल्युट्-अन] [भू० कृ० सम्मार्जित] १. झाड़ना-बुहारना। २ साफ करना। ३. स्नानादि (मूर्ति का)। ४. ब्रुश के साथ काम आनेवाला कुश का मुट्ठा। ५ झाड़।

**सम्मार्जनी**—स्त्री० [सं० सम्मार्जन-ङीप्] झाड़। बुहारी। कूंचा।

**सम्मित**—भू० कृ०[सं० सम्√मा (सदृश करना)+क्त]१. मापा हुआ। २. समान। सदृश। ३. जिसके अंगों में आनुपातिक एकरूपता तथा सामजस्य हो। (सिमेट्रिकल)

**सम्मति**—स्त्री०[सं० सम्√मा (ऊँची कामना)+क्तिन्]१ तुल्य या समान करना। २. तुलना। करना।

**सम्मिलन**—पुं०[सं० सम्√मिल् (मिलना)+ल्युट्—अन] १. मेल-मिलाप। २ दो विभिन्न इकाइयों का मिलकर एक होना। जैसे—भारत में गोवा का सम्मिलन। ३. सम्मेलन। (वै०)

**सम्मिलनी**†—स्त्री०=सम्मेलन। उदा०—सम्मिलनी का बिगुल बजा। —अज्ञेय।

**सम्मिलित**—भू० कृ०[सं० सम्√मिल् (मिलना)+क्त]१. किसी के साथ मिला या मिलाया हुआ। २. जो मिल-जुल कर किया गया हो। सामूहिक। जैसे—सम्मिलित प्रयास से ही यह सभव हुआ है।

**सम्मिश्र**—वि० [सं० सम्√मिश्र (मिलाना)+अच्] एक में या साथ-साथ मिलाया हुआ।

**सम्मिश्रक**—पु०[सं०]१. वह जो किसी प्रकार का सम्मिश्रण करता हो। २. वह व्यक्ति जो ओषधियों, विशेषतः विलायती ओषधियों आदि के मिश्रण प्रस्तुत करता हो। (कम्पाउंडर)

**सम्मिश्रण**—पु० [सं०] [भू० कृ० सम्मिश्रित, कर्ता सम्मिश्रक] १. अच्छी तरह मिलाने की क्रिया। २. मेल। मिलावट। ३ औषध तैयार करने के लिए कई प्रकार की ओषधियाँ एक में मिलाना। (कम्पाउंडिंग)

**सम्मीलन**—पुं० [सं० सम् √ मिल् (सकुचित होना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० सम्मिलित]१. (गुणादि का) सकुचित होना। मूँदना। २. ढका जाना। ३. (चन्द्रमा या सूर्य का पूर्ण)ग्रहण। खग्रास।

**सम्मुख**—अव्य०[सं० ब० स०]१. सामने। समक्ष। आगे। २. बिलकुल सीधे।

**सम्मुखी**—वि०[सं० सम्मुख+इनि] जो सम्मुख या सामने हो। सामने का।

पु० दर्पण। आइना।

**सम्मुखीन**—वि०[सं० सम्मुख+ईन] जो सम्मुख हो। सामने का।

**सम्मूढ**—वि०[सं० सम्√मुह् (मुग्ध होना)+क्त]१. मोह में पड़ा हुआ। २. मूढ। मूर्ख। ३. अनजान। अबोध। ४. टूटा हुआ। ५ ढेर के रूप में लगा हुआ।

**सम्मूढ-पीड़िका**—स्त्री०[सं०] वैद्यक में, एक प्रकार का शुक्र रोग जिसमें लिंग टेढ़ा हो जाता है और उस पर फुंसियाँ निकल आती हैं।

**सम्मूर्च्छन**—पुं०[सं० सम्√ मूर्च्छा (मुग्ध होना आदि)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० सम्मूर्च्छित]१. भली भाँति व्याप्त होने की क्रिया। अभिव्याप्ति। २. मूर्च्छा। बेहोशी। ३. बढ़ती। वृद्धि। ४. फैलाव। विस्तार।

**सम्मृष्ट**—भू० कृ०[सं० सम्√मृज् (शुद्ध होना)+क्त]१. अच्छी तरह साफ किया हुआ। २. छाना हुआ।

**सम्मेलन**—पु०[सं०]१ मनुष्यों का किसी विशेष उद्देश्य से अथवा किसी विशेष विषय पर विचार करने के लिए एकत्र होनेवाला समाज। (कॉन्फ्रेंस) २. जमावड़ा। जमघट। ३. मिलाप। सगम। ४. कोई बहुत बड़ी सस्था। जैसे—हिन्दी साहित्य सम्मेलन।

**सम्मोद**—पु०[सं० सम्√मुद् (हर्षित होना)+घञ्]१. प्रीति। प्रेम। २ मोद। हर्ष।

**सम्मोह**—पु०[सं० सम्√मुह् (मोहित करना)+घञ्]१. मोह। २. प्रेम। ३. भ्रम। धोखा। ४. सन्देह। ५. मूर्च्छा। बेहोशी। ६. एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण में एक तगण और एक गुरु होता है।

**सम्मोहक**—वि० [सं० सम्√मुह् (मुग्ध होना)+णिच्-ण्वुल्-अक] १ सम्मोहन करनेवाला। सम्मोहन-शक्ति से युक्त। २. मनोहर। सुन्दर।

पु० सन्निपात ज्वर का एक भेद।

**सम्मोहन**—पु०[सं०]१ इस प्रकार किसी को मुग्ध करना कि उसमें हिलने-डुलने, करने-धरने तथा सोचने-विचारने की शक्ति न रह जाय। २. वह गुण या शक्ति जिसके द्वारा किसी को उक्त प्रकार से मुग्ध किया जाता है। ३. शत्रु को मुग्ध करने का एक प्राचीन अस्त्र। ४ कामदेव का एक बाण।

वि० सम्मोहक।

**सम्मोहनी**—स्त्री० [सं० सम्मोहन-ङीप्] १ लोगों को मोह में डालने या मुग्ध करनेवाली एक तरह की माया। २ लाक्षणिक अर्थ में, वह शक्ति जो मनुष्य को असमर्थ बनाकर भुलावे में डाल देती है।

**सम्मोहित**—भू० कृ० [सं० सम्-मुह् (मुग्ध करना)+णिच्-क्त] १. सम्मोहन के द्वारा जो मुग्ध, मोहित या वशीभूत किया गया हो। २. बेहोश किया हुआ।

**सम्राज**—पु०=साम्राज्य।

**समूह**—पु०[सं०] समुदाय। समूह।

वि० १. पूरा। सब। समस्त। २ उचित। उपयुक्त। ३. ठीक। सही। ४. मनोनुकूल।

क्रि० वि० १. पूरी तरह से। २. सब प्रकार से। ३. अच्छी तरह। भली भाँति।

**सम्यक्-चरित्र**—पुं०[सं०] जैनियों के अनुसार धर्मत्रय में से एक धर्म। बहुत ही धर्म का तथा शुद्धतापूर्वक आचरण करना।

**सम्यक्-ज्ञान**—पु०[सं०] उचित ज्ञान।

पुं० [सं०] जैनियों के अनुसार धर्मत्रय में से एक। रत्नत्रय, सातों तत्त्वों, आत्मा आदि में पूरी पूरी श्रद्धा होना।

**सम्यक्-संबुद्ध**—वि०[सं०] वह जिसे सब बातों का पूरा और ठीक ज्ञान प्राप्त हो गया हो।

पु० गौतम बुद्ध का एक नाम।

**सम्यक् समाधि**—स्त्री०[सं०] बौद्धों के अनुसार एक प्रकार की समाधि।

**सम्याना**†—पु०=शामियाना।

**सक्षम**†—वि०=समर्थ।

**सम्राज्ञना**—अ० [सं० सम्राज्] अच्छी तरह प्रतिष्ठित, स्थापित या विराजमान होना। उदा०—नाभ-प्रताप शम्भु सम्राजें।—निराला।

**सम्राज्ञी**—स्त्री० [स०] १. वह स्त्री जो किसी साम्राज्य की स्वामिनी हो। २. सम्राट् की पत्नी।

**सम्राट्**—पुं० [स०] साम्राज्य का स्वामी।

**विशेष**—प्राचीन भारत मे, यह पद उसी बडे राजा को प्राप्त होता था जो राजसूय यज्ञ कर चुका होता था।

**सम्रिति**†—स्त्री०=स्मृति।

**सम्हलना**—अ०=सँभलना।

**सयण**†—पु० [स० सज्जन]=साजन (प्रियतम)। (राज०)

**सयन**—पु० [स०] शयन।

†पु०=शयन।

**सयल**†—वि० [स० सकल] सब उदा०—सवालरप उत्तर सयल, बजऊँ गड दूरग।—चदबरदाई।

†स्त्री०=सैर।

†पु०=जैल।

**सयान**†—वि०=सयाना।

पु०=सयानपन।

**सयानप***—स्त्री०=सयानपन।

**सयानपत***—स्त्री० [हिं० सयाना+पन (प्रत्य०)] १. सयाने होने की अवस्था या भाव। २. चालाकी। होशियारी।

**सयानपन**—पु० [हिं० सयान+पन (प्रत्य०)] १. सयाना होने की अवस्था, गुण या भाव। २. चतुरता। होशियारी। ३ चालाकी। धूर्तता।

**सयाना**—वि० [स० सज्ञान] [स्त्री० सयानी] १ जो वाल्यावस्था पार करके युवक या वयस्क हो चला हो। जैसे—अब तुम लड़के नही हो, सयाने हुए। २. बुद्धिमान्। समझदार। ३. चालाक। होशियार। ४. कपटी और धूर्त।

पु० १. अनुभवी तथा बुद्धिमान् विशेषत अधिक अवस्थावाला। अनुभवी तथा बुद्धिमान् व्यक्ति। २. ओझा। ३. हकीम। ४. गाँव का मुखिया।

**सयानाचारी**—स्त्री० [हिं० सयाना+चार (प्रत्य०)] वह रसूम जो गाँव के मुखिया को मिलता था।

**सयानी**—स्त्री० [हिं० सयाना] १. सयाने होने की अवस्था या भाव। सयानपन। २. चतुराई। चालाकी। उदा०—तू काहे कौं करति सयानी।—सूर। ४. अनुभवी तथा बुद्धिमान् स्त्री। जैसे—किसी सयानी से राय लेनी थी।

**सयोनि**—वि० [सं० ब० स०] [भाव० सयोनित्व] १. जो एक ही योनि से उत्पन्न हुए हों। २. एक ही जाति या वर्ग के।

पु० इंद्र।

**सरंग**—वि० [सं० √ सं (गत्यादि)+अङ्गच्] १. रंगबाज। २. सानुनासिक।

पुं० १. चौपाया। २. चिड़िया। पक्षी। ३. एक तरह का हिरन।

**सरंगा**†—स्त्री० [हिं० सारंग?] पुरानी चाल का एक प्रकार की नाव जो बहुत तेज चलती थी। उदा०—सरगा सरंगा पैसि चलाएलि खिन-खिन जियहि सकाइ।—अरब्बा दाऊद।

†पु० [हिं० सारंगी] बड़ी सारंगी (बाजा)।

**सरंगी**—स्त्री०=सारंगी।

**सरंजाम**—पु० [फा०] १. काम का पूरा होना। पूर्ति। २. प्रबंध। व्यवस्था। ३. तैयारी।

**सरंड**—पुं० [सं० √सृ (गत्यादि)+अ डच्] १ पक्षी। २. लंपट। ३. गिरगिट। ४. दुष्ट व्यक्ति। ५. एक प्रकार का आभूषण।

**सरंडीय**—पुं०=सरनई,प।

**सरंध्र**—वि० [सं०] जिसमे छिद्र हो। दे० 'छिद्रल'।

**सर** (झ)—पुं० [स०] बडा तालाब। ताल।

स्त्री० [सं० सदृक् या सदृश] समानता। बराबरी।

**मुहा०—किसी की सर पूजना**=किसी की बराबरी तक पहुँचना।

†स्त्री०=शर] चिता। उदा०—अब सर चढौं, जरौं जग सती। —जायसी।

†पु० [सं० स्वर] आवाज। ध्वनि। उदा०—कोकिल कठ सुहाइ सर।—प्रिथीराज।

पुं० [स० अवसर का अनु०] ऐसा अवसर जो किसी काम के लिए उपयुक्त न हो।

**मुहा०—सर अवसर न देखना या समझना**=यह न सोचना कि अमुक काम के लिए यह अवसर ठीक है या नही। उदा०—तुम सिसुपाल महापद पायौ, नर अवसर नहिं जान्यौ।—सूर।

†अव्य० [स० सह] स० 'स' की तरह मुगत या 'सहित' के अर्थ में प्रयुक्त होनेवाला अव्यय। जैसे—सरजीव=सजीव, सरधन=धनवान।

†पु० दे० 'साथिया'।

र० [स० शीर्ष या शिरस् से फा०] १ सिर। (मुहा० के लिए दे० 'सिर' के मुहा०) २ अतिम या ऊरी भाग। सिरा। ३. चरम सीमा। हद।

**मुहा०—(कोई काम या बात) सर पहुँचना**—(क) समाप्त करना। (ख) ठिकाने या हद तक पहुँचना।

वि० १. बलपूर्वक दबाया हुआ। जैसे—प्रतियोगी को सर करना। २. हराया हुआ। पराजित। जैसे—लड़ाई मे दुश्मन की फौज को सर करना। ३. (काम) पूरा या समाप्त किया हुआ। ४. सबसे बड़ा, प्रधान या मुख्य। जैसे—अगर वह खूनी है तो मैं सर खूनी हूँ।

स्त्री० १. गजीफा, ताश, आदि के खेल में, ऐसा पत्ता जिससे जीत निश्चित हो। २. उक्त खेलो मे जीती जानेवाली बाजी या हाथ। जैसे—हमारी चार सरें बनी हैं।

पु० [अ०] १. महोदय २. ब्रिटिश राज्य की एक सम्मानित उपाधि। जैसे—सर फीरोजशाह मेहता।

**सर अंजाम**—पु० [फा०]=सरंजाम।

**सरई**†—स्त्री०=सरहरी (सरपत)।

**सरकंडा**—पुं० [सं० शरकंड] सरपत की जाति का एक पौधा जिसमें गाँठ वाली छड़ें होती हैं।

**सरक**—पुं० [सं० √सृ (गत्यादि)+वुन्—अक] १. सरकने की क्रिया। खिसकना। चलना। २. यात्रियों का दल। ३. शराब पीने का पात्र। ४. गुड़ की शराब। ५ शराब पीना। मद्य-पान। ६. शराब की खुमारी।

**सरकना**—अ० [स० सरक, सरण] १. गीजर, छिपकली, साँप आदि के संबंध में, पेट से रगड़ खाते हुए आगे बढ़ना। २. धीरे-धीरे तथा थोड़ा-थोड़ा आगे बढ़ना। ३. लाक्षणिक अर्थ में, काम चलना।

**मुहा०—सरक जाना**= मर जाना। (बाजारू)

**सरकश**—वि०[फा०] [भाव० सरकशी] १. किसी के विरुद्ध सिर उठाने-वाला। २. सहज में न दबनेवाला। उद्दंड। उद्धत। ३. विद्रोही। बागी। ४. बहुत बड़ा दुष्ट और पाजी।

**सरकशी**—स्त्री०[फा०] सरकश होने की अवस्था या भाव।

**सरका**—पुं०[अ० सर्क] चोरी।

†पु०[हिं० सरकना] हस्त-क्रिया। हस्त-मैथुन।

क्रि० प्र०—करना।

**सरकार**—स्त्री०[फा०] [वि० सरकारी] १. किसी देश के वे सब राज्य-कर्मचारी जिनके हाथ में प्रशासन संबंधी अधिकार होते हैं। शासन। २. किसी देश के सम्राट्, राष्ट्रपति या मुख्य मन्त्री द्वारा चुने हुए मंत्रियों का वह दल जो सामूहिक रूप से उस देश को शासित करता है। (गवर्नमेंट)

पुं० १. प्रभु। २ मालिक। स्वामी। २. राजा, शासक या सम्राट्।

**सरकारी**—वि०[फा०] १ सरकार-संबंधी। जैसे—सरकारी काम, सरकारी हुकुम। २. जिसका दायित्व या भार सरकार पर हो। जैसे—वे सरकारी खर्च पर दिल्ली गये हैं। ३. राज्य-संबंधी। जैसे—सरकारी गवाह। ४. नौकर की दृष्टि से उसके मालिक का।

**सरकारी कागज**—पुं०[हिं०] १. सरकारी कार्यालय या विभाग का कागज। २. प्रामिसरी नोट।

**सरकारी गवाह**—पु०[हिं०] वह व्यक्ति जो अपराधियों का साथ छोड़कर उनके विरुद्ध गवाही देता हो। भेद-साक्षी।

**सरक्क***—वि०[हिं० सरक=मद्य-पात्र] मत्त। मस्त। उदा०—मद सरक्क, पट्टे तिना।—चंदबरदाई।

**सरखत**—पुं०[फा०] १. वह कागज या छोटी बही जिस पर मकान आदि के किराये या इसी प्रकार के और लेन-देन का ब्योरा लिखा जाता है। २. किसी प्रकार का अधिकार-पत्र या प्रमाण-पत्र। उदा०—तुलसी निहाल कै कै दियो सरखतु हैं।—तुलसी। ३ आज्ञापत्र। परवाना। ४. इकरारनामा।

**सरखप***—पुं०=सर्षप (सरसों)।

**सरग***—पुं०=स्वर्ग।

**सरगना**†—पुं० [फा० सर्दन] सरदार। अगुवा। जैसे—चोरों का सरगना।

†अ०[?] डींग हाँकना। शेखी बघारना।

**सरग दुवारी**†—पुं०=स्वर्ग-द्वार।

**सरग-पतारी**—वि०[सं० स्वर्ग+पताल +हिं० ई (प्रत्य०)] १. एक ओर स्वर्ग को और दूसरी ओर पताल को छूनेवाला। २. (गाय या बैल) जिसका एक सींग ऊपर उठा हो और दूसरा नीचे झुका हो। ३. (व्यक्ति) जिसकी एक आँख की पुतली ऊपर की ओर और दूसरी नीचे की ओर रहती हो।

**सरगम**—पु०[हिं० सा, रे, ग, म] १ संगीत में, षड्ज से निषाद तक के सातों स्वरों का समूह। स्वर-ग्राम। २. उक्त स्वर भिन्न भिन्न प्रकारों से साधने की क्रिया या प्रणाली। ३. किसी गीत, तान या राग में लगने-वाले स्वरों का उच्चारण। जैसे—इस तान या लय का सरगम तो कहो।

**सर-गरोह**—पुं०[फा०] किसी गरोह (जत्थे या दल) का प्रधान नेता। मुखिया।

**सरगर्म**—वि०[फा०] [भाव० सरगर्मी] १. जोशीला। आवेशपूर्ण। २ उत्साह या उमंग से भरा हुआ।

**सरगर्मी**—स्त्री०[फा०] १. सरगर्म होने की अवस्था या भाव। २. बहुत बढ़ा हुआ आवेग, उत्साह या उमंग।

**सर-गुजश्त**—स्त्री०[फा०] १ सिर पर बीती हुई बात। २ बयान। वर्णन। ३. जीवन-चरित्र।

**सरगुना**†—वि०=सगुण।

**सरगुनिया**—पुं० [हिं० सरगुन] सगुण ब्रह्म का उपासक।

**सरगोशी**—स्त्री०[फा०] १. कान में कोई बात कहना। २. किसी के पीठ पीछे उसकी शिकायत करना।

**सर-घर**—पु०[स० शर+हिं० घर] तरकश। तूणीर।

**सरघा**—स्त्री० [स०] सर√हृ (मारना) +क, णिच० सिद्ध] मधुमक्खी।

**सरज**†—स्त्री०[स० सृज्] माला। उदा०—सरज दिहें नैं स्रवन लजाना।—नूरमोहम्मद।

स्त्री०[अं० सर्ज] एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा।

**सरजद**—वि०[फा० सर-जदन से] १. प्रकट। जाहिर। २ किया हुआ। कृत।

**सरजना***—स०[स० सर्जन] १ सर्जन करना। २ बनाना। रचना।

**सर-जमीन**—स्त्री०[फा०] १ भूमि। जमीन। २ देश। मुल्क।

**सरजा**—वि०[स०] ऋतुमती (स्त्री)।

पुं०[फा० सरजाह] १. सरदार। २. सिंह। शेर। ३. छत्रपति शिवाजी की उपाधि।

**सरजिव (जीव)***—वि०=सजीव। उदा०—सरजीउ काटहिं, निरजीउ पूजहिं अंत काल कहुँ भारी।—कबीर।

**सर जीवना**†—वि० [स० सजीवन] १ सजीवन। जिलानेवाला। २. उपजाऊ। २ हरा-भरा।

**सरजेंट**†—पु०=सार्जेंट (एक सैनिक अधिकारी)।

**सर-जोर**—वि०[फा०] [भाव० सरजोरी] १ जबरदस्त। प्रबल। २. उद्दंड। उद्धत।

**सरट**—पु०[सं०√सृ (गत्यादि) +अरन्] १ छिपकली। २. छिपकली की तरह के सरीसृपों का एक वर्ग जिनका शरीर और दुम प्रायः दोनों बहुत लंबे होते हैं। (लिजर्ड)

**विशेष**—जीव-सृष्टि के आरंभिक युगों में इस वर्ग के बहुत बड़े-बड़े जंतु हुआ करते थे, पर आज-कल उनके बराबर अपेक्षाया छोटे होते हैं। ३. गिरगिट। ४. वायु। ५. धागा।

**सरण**—पु०[स०] १ धीरे धीरे आगे बढ़ना या चलना। २. सरकना। खिसकना।

†स्त्री०=शरण।

**सरणि**—स्त्री०[स०]=सरणी।

**सरणी**—स्त्री०[स०]१. मार्ग। रास्ता। २. पगडंडी। ३. सीधी रेखा। लकीर। ४. चली आई हुई परिपाटी या प्रथा। ढर्रा।

**सरण्यु**—पुं०[सं० √सृ (गत्यादि)+अन्यु] १. वायु। २. बादल। ३. जल। ४. वसंत। ५. अग्नि। ६. यम।

**सरताज**—पु० [अ०] १. केवड़ा। २. कर्क राशि। ३. कर्कट नामक सांघातिक व्रण। कर्कटार्बुद। (कैन्सर)

**सरता-बरता**—पुं०[सं० वर्त्तन, हिं० बरतना+अनु० सरतना] आपस में बाँटने या विभाजन करने की क्रिया या भाव।

**सर-ताबी**—स्त्री०[फा०]१. विद्रोह। २. उद्दंडता।

**सरतारा***—वि० [?] १. जिसे सब प्रकार की निश्चिन्तता हो। २. अपना काम पूरा कर लेने के उपरान्त जो निश्चिन्त हो गया हो।

**सरद**†—स्त्री०=शरद ऋतु।
वि०=सर्द (ठंढा)।

**सरदई**—वि० [हिं० सरदा+ई (प्रत्य०)] सरदे के रंग का। हरापन लिये पीला।
पुं० उक्त प्रकार का रंग।

**सरद-पूरब (पर्व)**—पुं० दे० 'शरद् पूर्णिमा'।

**सर-दर**—अव्य०[फा० सर+दर=भाव] १. एक सिर से। २. सब मिलाकर एक साथ। सबको एक मानकर उनके विचार से। ३. औसत के विचार या हिसाब से।

**सरदल**—पु०[देश०] दरवाजे का बाजू या साह।
अव्य०=सर-दर।

**सरदा**—पुं०[फा० सर्दः] कश्मीर तथा अफगानिस्तान में होनेवाला खरबूजे की जाति का एक प्रकार का फल जो खरबूजे की अपेक्षा अधिक बड़ा तथा अधिक मीठा होता है।

**सरदाना**†—अ० [हिं० सरदी] सरदी लगने के कारण ठंढा, मन्द या शिथिल होना।
स० सरदी के प्रभाव से युक्त करके ठंढा या मन्द करना।

**सरदाबा**—पुं०[फा० सर्दाबः] १ ठंढे जल से किया जानेवाला स्नान। २. वह स्थान जहाँ ठंढा करने के लिए पानी रखा जाता हो। ३. जमीन के नीचे बना हुआ कमरा। तहखाना। ४. कश्मिरतान या समाधि-स्थल।

**सरदार**—पु०[फा०]१. किसी मंडली का नेता। नायक। अगुआ। नेता। जैसे—मजदूरों या सिपाहियों का सरदार। २. किसी छोटे प्रदेश का प्रधान शासक। ३. अमीर। रईस। ४. सिक्खों के नाम से पहले लगनेवाली एक मान-सूचक उपाधि। जैसे—सरदार बीरेन्द्र सिंह। ५. वह जिसका पेशा से संबंध हो। (पेशाएँ)

**सरदारी**—स्त्री०[फा०] सरदार का पद, भाव या स्थिति। सरदारपन।

**सरदियाना**—अ०[हिं० सरदी]१. (जीव का) सरदी लगने से अस्वस्थ होना। २. लाक्षणिक अर्थ में, आवेश आदि शान्त होना। ठंढा पड़ना।

**सरदी**—स्त्री० [फा० सर्दी] १. ऋतु या वातावरण की वह स्थिति जिसमें भारी और मोटे कपड़े ओढ़ने-पहनने की आवश्यकता प्रतीत होती है। जाड़ा। शीत। 'गरमी' का विपर्याय।
मुहा०—सरदी खाना=ठंढ सहना। शीत सहना।



२. जाड़े का मौसिम। पूस-माघ के दिन। शीत काल। ३. जुकाम या प्रतिश्याय नामक रोग।

**सरदेशमुखी**—स्त्री० [फा० सर=शीर्ष+सं० देश+मुखी ?] चौथ की तरह का एक प्रकार का राज-कर जो मराठा शासन-काल में जनता पर लगता था।

**सरधन**†—वि०=धनवान्।

**सरधा**†—स्त्री०=श्रद्धा।
पु०=सरदा (फल)।

**सरन***—स्त्री०=शरण।

**सरन-द्वीप**—पु०[सं० स्वर्ण द्वीप या सिंहल द्वीप] उर्दू साहित्य में लंका द्वीप का पुराना नाम जो अरब वालों में प्रसिद्ध था।

**सरना**—अ० [स० सरण=चलना, सरकना] १ सरकना। खिसकना। २. हिलना-डोलना। ३ कार्य आदि का निर्वाह होना। पूरा होना। जैसे—ब्याह का काम सरना। ४ उपयोग में आना। उदा०—हाथ वही, उन गात सरै।—रसखान। ५ शक्ति या सामर्थ्य के अनुसार होना। जैसे—जितना हमसे सरेगा, उतना हम भी दे देंगे। ६ परस्पर सद्भाव बना रहना। निभना। पटना।

**सरनाई***—स्त्री०[स० सरणागति] किसी की विशेषत ईश्वर की शरण में जाने की अवस्था या भाव। शरणागति।

**सरनापत्र**†—वि०=शरणापन्न।

**सरनाम**—वि०[फा०] [भाव० सरनामी] जिसका नाम हो। प्रसिद्ध। मशहूर। विख्यात।

**सरनामा**—पु०[फा०]१. किसी लेख या विषय का निर्देश जो ऊपर लिखा रहता है। शीर्षक। २ चिट्ठी-पत्री आदि के आरम्भ में सम्बोधन के रूप में लिखा जानेवाला पद। ३. भेजे जानेवाले पत्रों आदि पर लिखा जानेवाला पता।

**सरनी**†—स्त्री०=सरणी (मार्ग)।

**सर-पंच**—पुं०[फा० सर+हिं० पंच] पंचों में बड़ा और मुख्य व्यक्ति। पंचायत का सभापति।

**सरपट**—स्त्री०[स० सर्पण] घोड़े की बहुत तेज चाल जिसमें वह दोनों अगले पैर साथ-साथ आगे फेंकता है।
अव्य० घोड़े की उक्त चाल की तरह तेज या दौड़ते हुए।

**सरपत**—पु० [स० शरपत्र] कुश की तरह की एक घास जिसमें टहनियाँ नहीं होतीं, बहुत पतली और हाथ दो हाथ लंबी पत्तियाँ ही मध्य भाग से निकलकर चारों ओर फैली रहती हैं। यह छप्पर आदि बनाने के काम में आता है। सरकंडा। सेंठा।

**सरपना**—अ०[स० सर्पण] १. खिसकना। २ आगे बढ़ना।

**सर-परदा**—पुं० [फा० सर-पर्दः] संगीत में, बिलावल ठाठ का एक राग।

**सर-परस्त**—वि० [फा०] [भाव० सरपरस्ती] १. रक्षा करनेवाला। २. संरक्षक।

**सर-परस्ती**—स्त्री० [फा०] सरपरस्त होने की अवस्था या भाव। संरक्षण।

**सरपी**†—पुं०=सर्पी।

**सर-पुत**†—पुं०[हिं० सार=साला+पुत्र] साले का लड़का।

**सर-पेच**—पुं०[फा०]१. पगड़ी के ऊपर कलगी की तरह लगाने का एक जड़ाऊ गहना। २. एक प्रकार का गोटा जो दो-ढाई अंगुल चौड़ा होता है।

**सर-पोश**—पुं०[फा०] बाल या तश्तरी ढकने का कपड़ा।

**सर-फराज**—वि०[फा०] १. ऊँचे पद पर पहुँचा हुआ। २. जो कोई बड़ा काम करके धन्य हुआ हो। ३. जिसका सम्मान बढ़ाया गया हो।

**मुहा०—किसी को सरफराज करना**= बेइज्जत के साथ प्रथम समागम करना। (बाजारू)

**सरफराना**†—अ० [अनु०] व्यग्र होना। घबराना।

**सरफा**—पुं०[फा० सर्फ़.] १. खर्च। व्यय। २. मितव्ययिता। कम-खर्ची।

**सर-डोंका**†—पु०=सरकंडा।

**सर्वंग***—पुं०=सर्वांग।

अव्य० सर्वांगपूर्ण रूप से। सब तरह से।

**सरबंधी**—पु०[सं० शरबध] तीरंदाज। धनुर्धर।

†पुं०१.=सबधी। २. 'समधी।

**सरब**†—वि०=सर्व।

†पु०=सर्वस्व।

**सरबग्य***—वि०=सर्वज्ञ।

**सरबदा**†—अव्य०=सर्वदा।

**सर-बर**—स्त्री०[हिं० सर+अनु० बर] समानता। बराबरी।

स्त्री० [अनु०] व्यर्थ की बकवाद या बहुत बढ़-चढ़कर की जानेवाली बात।

**सरबरना***—अ०[हिं० सर-बर] किसी की समता य बराबरी करना।

**सर-बराह**—वि० [फा०] [भाव० सर-बराही] १. प्रबंधक। व्यवस्थापक। २. राज, मजदूरी आदि का सरदार। ३. रास्ते में खान-पान का और ठहरने आदि का प्रबंध करनेवाला।

**सर-बराही**—स्त्री०[फा०] सर-बराह का कार्य, पद या भाव।

**सर-बरि**†—स्त्री०=सरबर (बराबरी)। उदा०—प्रथमैं बैस न सरबरि कोई।—जायसी।

**सरबस**†—पुं०=सर्वस्व।

**सर-बुलंद**—वि० [फा०] जिसका सिर ऊँचा हो या हुआ हो, फलतः प्रतिष्ठित या सफल।

**सरबेदा**—पु० दे० 'सर-पूत'।

**सरबोर**†—वि०=शराबोर।

**सरभंग**—पुं०[सं० शर+भंग] अघोर पथ (देखें) का एक नाम।

**सरमं**†—पुं०=श्रम।

†स्त्री०=शरम।

**सर-मगी**—स्त्री० [फा० सर+मग्ज] माथा-पच्ची। सिर-खपाई।

**सरभव**—वि०[अ०] १. सदा बना रहनेवाला। २. मस्त। मत्त।

**सरमना***—अ०=शरमाना (लज्जित होना)।

*स०=शरमाना (लज्जित करना)।

**सरमा**—स्त्री० [सं०] १. कुतिया। २. देवताओं की एक कुतिया। ३. दक्ष प्रजापति की एक कन्या। ४. कश्यप की पत्नी।

पुं०[फा०] [हिं० सरमाई] शीत-काल।

**सरमाई**—वि०[फा०] जाड़े का।

स्त्री० जाड़े के कपड़े। जडावर।

**सरमाया**—पुं० [फा० सरमायः] १. मूल-धन। पूँजी। २ धन-दौलत। सम्पत्ति।

**सरवा**—पु०[देश०] एक प्रकार का मोटा धान जिसका चावल लाल होता है। सारो।

**सरयू**—स्त्री० [स०√सृ (गत्यादि)+अण्] उत्तर भारत की एक प्रसिद्ध नदी। इसी के तट पर अयोध्या बसी है।

**सरयूपारी**—वि०[हिं०] मध्य देशवालों की दृष्टि मे, सरयू नदी के उस पार का। जैसे—सरयूपारी बैल।

पुं० ब्राह्मणों का वह वर्ग जो सरयू के उस पार अर्थात् गोरखपुर बस्ती आदि के रहनेवाले है।

**सरर**—पुं०[हिं०सरकना] बाँस या सरकंडे की पतली छड़ी जो ताना ठीक करने के लिए जुलाहे लगाते हैं। सथिया। सतगरा।

**सररा**ना—अ०[अनु० सर सर] हवा बहने या हवा मे किसी वस्तु के वेग से चलने का शब्द होना।

**सरल**—वि० [सं०] [स्त्री० सरला] १ जो सीधा किसी ओर चला गया हो, बीच मे कहीं इधर-उधर घूमा या मुड़ा न हो। २ जो टेढ़ा या वक्र न हो। सीधा। ३. जिसके मन मे छल-कपट न हो। सीधा और भोला। ४. ईमानदार और सच्चा। ५ (कार्य) जिसे पूरा करने मे कुछ भी कठिनता न हो। ६ (लेख आदि) जिसका अर्थ समझने मे कठिनता न हो। आसान। सहज। ७. असली। खरा।

पुं०१. अग्नि। २ चीड का पेड़। ३. चीड का गोंद। गंधा बिरोजा। ४. एक प्रकार का पक्षी। ५. गौतम बुद्ध का एक नाम।

**सरल-काष्ठ**—पु०[सं० ब० स०] चीड की लकड़ी।

**सरलता**—स्त्री०[सं०]१. सरल होने की अवस्था गुण या भाव। २ चरित्र, व्यवहार, स्वभाव आदि का सीधापन। सिधाई। भोलापन। ३. ईमानदारी और सच्चाई। ४. आसानी। सुगमता।

**सरल-द्रव**—पु०[सं०]१. गंधा-बिरोजा। २ ताड़पीन का तेल।

**सरल-निर्यास**—पुं० [सं० ब० स०, ष० त० वा]१ गंधा-बिरोजा। २. ताड़पीन का तेल।

**सरल-रस**—पुं०[सं०]१. गंधा-बिरोजा। २ ताड़पीन का तेल।

**सरलांग**—पुं०[सं० ब० स०]१ गंधा-बिरोजा। २ ताड़पीन का तेल।

**सरला**—स्त्री०[सं० सरल-टाप्]१ चीड का पेड़। २ काली तुलसी। ३ मल्लिका। मोतिया। ४ सफेद निसोथ।

**सरलित**—भू० कृ०[सं० सरल+इतच्] सीधा या सहज किया हुआ।

**सरलीकरण**—पु०[सं०] किसी कठिन काम,चीज, बात या विषय आदि को सरल करने की क्रिया या भाव। (सिम्पलिफिकेशन) जैसे—भाषा का सरलीकरण, वैज्ञानिक प्रक्रिया का सरलीकरण।

**स-रव**—वि०[सं० अव्य० स०]१. जिसमे रव या शब्द होता हो। २. शब्द करता हुआ।

†पुं०१.=सरो। २.=खरांर।

**सरवत**—स्त्री०[अ० सर्वत] अमीरी। सम्पन्नता।

**सरवती**—स्त्री०[सं० सरवत्-ङीप्] विस्तृता नदी।

**सरवन**—पु०[सं० श्रमण] अंधक मुनि के पुत्र श्रवण जो अपने पिता को एक बहँगी में बैठाकर ढोया करते थे।

**सरवनी**†—स्त्री०=सुमरनी।

**सरवर**—पुं०[फा०] सरदार। अधिपति।
†पुं०=सरोवर।
†स्त्री०=सरवरि।

**सरवरि**—स्त्री०[सं० सदृश, प्रा० सरिस+वर] बराबरी। तुलना। समता।
†स्त्री०=शर्वरी (रात)।

**सरवरिया**—वि०[हिं० सरवर] सरयूपार या सरवार का।
पु०=सरयूपारी ब्राह्मण।

**सरवरी**—स्त्री०[फा०] सरवर होने की अवस्था या भाव। सरदारी।

**सरवा**†—पुं०[स० शरावक] १. कटोरा। २. कसोरा। उदा०—ढै उलटे सरवा मनौं दीसत कुछ उनहार।—रहीम।
†पुं०=साला (गाली)।

**सरवाक**—पुं०[स० शरावक=प्याला] १. सपुट। प्याला। २. कसोरा। ३ दीया।

**सरवान***—पुं०[?] १ तबू। खेमा। २. झडा। पताका।
†पुं०[फा० सारवान] [स्त्री० सरवानी] ऊँट चलानेवाला। उदा०—सरवानी विपरीत रस, किय चाहै न डराई।—रहीम।

**सरवार**—पुं० [हिं० सरयू+पार] सरयू नदी के उस पार का भूखण्ड, जिसमें गोरखपुर, देवरिया, बस्ती आदि नगर हैं।

**सरवाला**—पुं०[देश०] एक प्रकार की लता जिसे चोंड़ा-बेल भी कहते हैं। विलाई कंद इसी की जड़ होती है। पोड़ा-बेल।
†पुं०=सरवाला (सह-वाला)।

**सर-सार**—वि०[फा०] [भाव० सरशारी] १. मुँह तक भरा हुआ। लबालब। २. नशे में चूर। ३ मद-मत्त।

**सरस**—वि०[स०] [भाव० सरसता] १. रस अर्थात् जल या किसी अन्य द्रव-पदार्थ से युक्त। २. किसी की तुलना में अपेक्षाकृत अधिक अच्छा। ३. हरा और ताजा। ४. (रचना) जो भावमयी हो तथा जिसमे पाठक के मन के कोमल भाव जगाने की शक्ति हो। ५. रसिक। सहृदय। ६. सुन्दर। मनोहर।
पु० छप्पय छद के ३५ भेदों में से एक भेद का नाम जिसमें ३६ गुरु, ८० लघु, कुल ११६ वर्ण या १५२ मात्राएँ होती हैं।
पुं०[सं० सर:] [स्त्री० अल्पा० सरसी] तालाब। जलाशय।

**सरसई**—स्त्री०[हिं० सरसों] फल के छोटे अकुर या दाने जो पहले दिखाई पड़ते हैं। जैसे—आम की सरसई।
स्त्री०१.=सरस्वती (देवी और नदी)। २.=सरसता।

**सरसता**—स्त्री०[स०]१. सरस होने की अवस्था, गुण या भाव। २. रचना आदि का वह गुण जिसमें वह बहुत ही भावमयी और प्रिय लगती है। ३. व्यक्ति में होनेवाली रस ग्रहण करने की शक्ति। रसिकता। ४. मधुरता।

**सरसती**†—स्त्री०=सरस्वती।

**सरसना**—अ० [सं० सरस] १. हरा होना। पनपना। २. उन्मत होना। ३. अधिक होना। बढ़ना। ४. लोभित होना। लोहना। ५. रसपूर्ण होना। ६ बहुत अधिक कोमल या सरल भाव से युक्त होना। उदा०—सब देवनि आदर प्रनाम कर अति सुख सरसे।—रत्नाकर। ७. (आशय, कार्य आदि) पूरा होना। उदा०—कहि कबीर मन सरसी काज।—कबीर।

**सर-सब्ज**—वि० [फा०] [भाव० सर-सब्जी] १. हरा-भरा। जो सूखा या मुरझाया न हो। लहलहाता हुआ। जैसे—सर-सब्ज पेड़। २. वनस्पतियों या हरियाली से युक्त। जैसे—सर-सब्ज मैदान।

**सर-सर**—पु० [अनु०] १. जमीन पर रेंगने का शब्द। विशेषत: गोजर, साँप आदि जीवों के रेंगने से होनेवाला सर सर शब्द। २. वायु के चलने से होनेवाला सर सर शब्द।
क्रि० वि० १. सर-सर शब्द करते हुए। २. बहुत तेजी या फुरती से।

**सरसराना**—अ०[अनु०] सर-सर] १. सर-सर की ध्वनि होना। जैसे—वायु का सरसराना, साँप का चलने मे सरसराना। २. जल्दी जल्दी काम करना।
स० सर-सर शब्द उत्पन्न करना।

**सरसराहट**—स्त्री० [हिं० सर-सर+आहट (प्रत्य०)] १. वायु आदि चलने या साँप आदि के रेंगने से उत्पन्न ध्वनि। २. शरीर के किसी अग मे होनेवाली सुरसुराहट।

**सरसरी**—वि०[फा० सरासरी] १ जमकर या अच्छी तरह नही, बल्कि यों ही और जल्दी मे होनेवाला। जैसे—सरसरी नजर से देखना। २. चलते ढग से या मोटे तौर पर होनेवाला। (समरी) जैसे—सरसरी प्रक्रिया। (समरी प्रोसिडिंग); सरसरी व्यवहार दर्शन (समरी ट्रायल)।

**सरसाई**†—स्त्री० [हिं० सरसना+आई] सरसने की अवस्था या भाव। शोभा। सुहावनापन।
†स्त्री०=सरसता।

**सरसाना**—स० [हिं० सरसना का स०] सरसने में प्रवृत्त करना। दे० 'सरसना'।
†अ०=सरसना।

**सरसाम**—पुं०[फा०]सन्निपात या त्रिदोष नामक रोग।

**सरसार**—वि०=सरशार (मग्न)।

**सरसिका**—स्त्री० [सं०] १. छोटी सरसी। तलैया। २. बावली। ३. हिंगुपत्री।

**सरसिज**—वि० [सं० सरसि √ जन् (उत्पन्न करना)+ड] जो ताल मे होता हो।
पुं० कमल।

**सरसिज-योनि**—पुं०[सं० ब० स०] कमल से उत्पन्न, ब्रह्मा।

**सरसिरुह**—वि०, पुं०=सरसिज।

**सरसी**—स्त्री०[सं०]१. छोटा सरोवर या जलाशय। २. बावली। ३. एक प्रकार का मात्रिक छंद जिसके प्रत्येक चरण में २७ मात्राएँ (१६ वीं मात्रा पर यति) और अंत में गुरु और लघु होते हैं। इसे सुमेरु भी कहते हैं। होली के दिनों में गाया जानेवाला कबीर प्राय: इसी छंद में होता है।
†स्त्री०[हिं० सरस] वह जमीन जिसमें सरसता या नमी हो।

**सरसीरुह**—पुं०[सं० सरसी√रुह् (शब्द करना)+क] सारस पक्षी।

**सरसीरुह**—पुं०[सं०]१. कमल। २. सगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सरसुति**†—स्त्री०=सरस्वती।

**सरसैंना**—स०[अनु०] किसी को दबाने के लिए धीरे-धीरे सुनाना। फटकारना।

**सरसों**—स्त्री०[सं० सर्षप]१. एक प्रसिद्ध फसल जिसकी खेती होती है। इसमे पीले-पीले रंग के फूल और काले रंग के छोटे छोटे दाने लगते हैं। **मुहा०—(किसी की) आँखों में सरसों फूलना**=अभिमान, प्रेम आदि के कारण सब जगह हरा-भरा दिखाई पड़ना।
२ उक्त पौधे के बीज जिन्हें पेर कर कड़वा तेल निकाला जाता है।

**सरसौंहाँ**†—वि०[हिं० सरसना+औंहाँ (प्रत्य०)]१ सरस। २. मधुर। ३. प्रिय।

**सरस्वती**—स्त्री०[सं०] [वि० सारस्वत]१. भारतीय पुराणों में, विद्या और वाणी की अधिष्ठात्री देवी जिनका वाहन हंस कहा गया है; और जिनके एक हाथ मे पुस्तक दिखाई जाती है। वाग्देवी। भारती। शारदा। २ विद्या। इल्म। ३. पंजाब की एक प्राचीन नदी जिसका सूक्ष्म अंश अब भी कुरुक्षेत्र के पास वर्तमान है। ४. हठयोग में, सुषुम्ना नाड़ी। ५ संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी। ६. उत्तरभारतीय संगीत मे, एक प्रकार की सकर रागिनी। ७. सोम लता। ८. ब्राह्मी बूटी। ९. मालकंगनी। १०. गौ। ११. एक प्रकार का छंद या वृत्त।

**सरस्वती-कंठाभरण**—पुं०[सं०]१. ताल के साठ मुख्य भेदों मे से एक। २. धार के परमार वंशी राजा भोज के द्वारा स्थापित की हुई एक प्रसिद्ध प्राचीन पाठशाला।

**सरस्वती-पूजा**—स्त्री०[स०] १ सरस्वती की की जानेवाली पूजा। २. वसंत पंचमी जिस दिन सरस्वती की पूजा की जाती है। ३. उक्त अवसर पर होनेवाला उत्सव।

**सरस्वान् (स्वत्)**—वि० [स० सरस्वत-नुम्-दीर्घ, नलोप] [स्त्री० सरस्वती] १. जलाशय-संबंधी। २. रसीला। ३. स्वादिष्ट। ४. सुन्दर। ५. भावुक।
पुं० १ समुद्र। २. नद। ३. भैंसा।

**सरहंग**—पु०[फा०] [भाव० सरहंगी]१. सेना का प्रधान अधिकारी और नायक। २. पैदल सिपाही। ३. पहलवान। मल्ल। ४. चौबदार। पहरेदार। ५ कोतवाल।
वि० बलवान्। शक्तिशाली।

**सरह**—पु०[सं० शलभ, प्रा० सरह] १. फतिंगा। २. टिड्डी।

**सरहज**—स्त्री०=सलहज।

**सरहटी**—स्त्री०[स० सर्पाक्षी] सर्पाक्षी नाम का पौधा। नकुल कंद।

**सरहत**†—पुं०[देश०] खलिहान में फैला हुआ अनाज बुहारने का झाड़ू।

**सरहतना**†—स० [देश०] साफ करने के लिए अनाज फटकना। पछोड़ना।

**सरहथ**—पुं०[सं० शर या शल्य+हिं० हाथ] बरछी की तरह का एक हथियार जिससे बड़ी मछलियों का शिकार किया जाता है।

**सरहद**—स्त्री०[फा० सर+अ० हद] [वि० सरहदी]१. किसी देश, भूखंड या राज्य की सीमा। (दे० 'सीमा')२. ऐसी सीमा के आस-पास का प्रदेश।

**सरहद-बंदी**—स्त्री०[फा०] कार्य, क्षेत्र आदि की सरहद या सीमा निश्चित करने का काम।

**सरहदी**—वि०[फा० सरहद+ई (प्रत्य०)]१. सरहद-संबंधी। सीमा-संबंधी। जैसे—सरहदी झगड़े। २. सरहद या सीमा प्रांत का निवासी। जैसे—सरहदी गांधी।

**सरहना**†—स्त्री०[देश०] मछली के ऊपर का छिलका। चूहँ।

**सरहर**†—पुं०=सरपत।

**सरहरा**—वि०[सं० सरल+धड़] १. सीधा ऊपर को गया हुआ। जिस से इधर-उधर शाखाएँ न निकली हों (पेड़)। २. चिकना।

**सरहरी**—स्त्री०[स० शर]१. मूँज या सरपत की जाति का एक पौधा जिसकी छड़ पतली, चिकनी और बिना गाँठ की होती है। २. गडनी या सार्पाक्षी नाम की वनस्पति।

**सरांग**—स्त्री०[स० शलाका]१ लोहे का एक मोटा छड़ जिसपर पीटकर लोहार बरतन बनाते हैं। २. कोई ऐसी लकड़ी जिसकी सहायता से सीधी रेखाएँ खींची जाती हों। ३ किसी प्रकार का सीधा छड़ या पट्टी। ४. खंभा।

**सरां दीप**†—पुं०=स्वर्णद्वीप।

**सरा***—स्त्री० [स० शर] चिता।

स्त्री०[तातारी]१. किला। दुर्ग। २ महल। प्रासाद। जैसे—ख्वाजा सरा, ३. दे० 'सराय'।

*पु०=शर (बाण)।

**सराई**—स्त्री०[स० शलाका]१. सरकंडे की पतली छड़ी। २ दे० 'सलाई'।

स्त्री०[स० शराब=प्याला] मिट्टी का प्याला या दीया। सकोरा।

†स्त्री०[?] पाजामा।

**सराक**—पु०[सं० शराक या श्रावक] बिहार और बंगाल मे रहनेवाली जुलाहों की एक जाति।

**सराछ**†—स्त्री०=सलाख।

**सराजामा**†—पुं०=सरंजाम।

**सराध***—पुं०=श्राद्ध।

**सराना**—स० [हिं० सरना या सारना का प्रे०] (काम) पूरा या सपन्न करना।

**सरापना***—स०[स० शाप, हिं० सराप+ना (प्रत्य०)]१. शाप देना। बद्दुआ देना। अनिष्ट मनाना। कोसना। २ बुरा-भला कहना और गालियाँ देना।

**सरापा**—पु०[फा० सर=सिर+पा=पैर] किसी के सिर से पैर तक के सब अंगों का काव्यात्मक वर्णन। नख-सिख।
अव्य०१. सिर से पैरों तक। २. ऊपर से नीचे तक। ३. आदि से अंत तक।

**सराफ**—पु०[अ० सर्राफ़]१. सोने-चाँदी का व्यापारी। २. वह दूकानदार जो बड़े सिक्कों को कुछ दलाली लेकर छोटे सिक्कों में बदल देता हो। ३ प्रामाणिक और सम्पन्न व्यापारी। ४ अच्छा पारखी।

**सराफा**—पु०[अ० सर्राफ़]१ सराफ का पेशा। २ वह बाजार जिसमें अनेक सराफों की दूकान हों।

**सराफी**—स्त्री०[हिं० सराफ+ई (प्रत्य०)]१. सराफ का अर्थात् चाँदी-सोने या सिक्कों आदि के परिवर्तन का रोजगार। २. महाजनी लिपि। मुंडा।

**सराब**—पु०[अ०]१. मृगतृष्णा। २. धोखा देनेवाली चीज या बात। ३. धोखेबाजी।
†स्त्री०=शराब।

**सराबोर**—वि०=शराबोर।

**सराय**—स्त्री०[तातारी सरा=दुर्ग या प्रासाद]१. रहने का स्थान। २ मध्ययुग मे, यात्रियों, सौदागरो आदि के ठहरने का स्थान जहाँ उनके खाने-पीने तथा मनोरजन आदि की व्यवस्था भी होती थी।
**पद—सराय का कुत्ता**=बहुत ही तुच्छ या नीच और स्वार्थी व्यक्ति।

**सरायत**—स्त्री०[अ०] प्रवेश करना। घुसना। पैठना।

**सरार***—पु०[देश०] थोड़ा-बेल नाम की लता जिसकी जड़ बिलाई कंद कहलाती है।

**सराव***—पुं० [स० शराव]१. मद्यपात्र। शराब पीने का प्याला। २. कटोरा। ३ कसोरा। दीया। ४. एक प्रकार की पुरानी तौल जो ६४ तोले की होती थी।
†पु०[?] एक प्रकार का जगली, डरपोक और सीधा जानवर जो बकरी और हिरन दोनो से कुछ-कुछ मिलता तथा हिमालय के पहाडो मे पाया जाता है।

**सरावग**†—पु०=श्रावक (जैन)।

**सरावगी**—पु०[स० श्रावक] श्रावक धर्मावलंबी। जैन।

**सरावना**—पुं०[स० सरण, हिं० सरना] पाटा। हेंगा।

**सरास**†—पु०[?] भूसी।

**सरासन**†—पु०=सरासन (धनुष)।

**सरासर**—अव्य०[फा०] १ एक सिरे से दूसरे सिरे तक। यहाँ से वहाँ तक। २ एक सिरे से। पूर्णतया। बिलकुल। जैसे—सरासर झूठ बोलना। ३. प्रत्यक्ष। साक्षात्। जैसे—यह तो सरासर जबरदस्ती है।

**सरासरी**—स्त्री०[फा०]१. सरासर होने की अवस्था या भाव। २. किसी काम या बात में की जानेवाली ऐसी शीघ्रता और शीघ्रता जिसमे ब्यौरे की बातों पर विशेष ध्यान न दिया जाय।
अव्य० १. जल्दी मे। २ मोटे हिसाब से। अनुमानतः।

**सराह***—स्त्री०=सराहना।

**सराहत**—स्त्री०[अ०] किसी बात को स्पष्ट करने के लिए की जानेवाली उसकी व्याख्या। स्पष्टीकरण।

**सराहना**—स०[सं० श्लाघन] तारीफ करना। बड़ाई करना। प्रशसा करना।
स्त्री० तारीफ। प्रशंसा।

**सराहनीय**—वि०[बगला से गृहीत]१ प्रशंसा के योग्य। तारीफ के लायक। श्लाघनीय। प्रशसनीय। २. अच्छा। बढ़िया। (असिद्ध रूप)

**सरि**—स्त्री०[सं०√सृ (गत्यादि)+इनि] झरना। निर्झर।
†स्त्री०=सरिता (नदी)।
स्त्री०[सं० शुक] लड़ी। शृंखला। उदा०—मोतिन की सरि सिर कंठमाल हार।—केशव।
स्त्री०=सरवर (बराबरी)।

**सरिक***—स्त्री० [सं० सरिक-टाप्] १. मुनक्का। मौंरी। २. मोतियों की माला या लड़ी। ३. जवाहर। रत्न। ४ छोटा ताल या तालाब। ५. एक प्राचीन तीर्थ। ६. हिंगुपत्री।

**सरिगम**†—पु०=सरगम।

**सरित्**—स्त्री० [सं०√सृ (गत्यादि)+इति] नदी।

**सरित**—स्त्री०=सरिता (नदी)।

**सरितराज**—पुं०=समुद्र।

**सरिता**—स्त्री०[सं० सरित्=बहा हुआ]१. धारा या प्रवाह। २. नदी।

**सरिताल**—वि०[सं० सरिता+ल (प्रत्य०)]सरिताओ या नदियो से युक्त (प्रदेश)।

**सरित्त**—स्त्री०=सरिता।

**सरित्पति**—पु०[सं० ष० त०] समुद्र।

**सरित्वान्(त्वत्)**—पु०[स० सरित+मतुप्+म-ब नुम्] समुद्र।

**सरिद्युत**—पुं०[सं० ष० त०] (गंगा के पुत्र) भीष्म।

**सरिद्**—स्त्री०[स०]'सरित्' का वह रूप जो उसे समस्त पद के आरभ मे लगाने पर प्राप्त जाता है।

**सरिबिही**—स्त्री०[फा० सर=सरदार+देह=गाँव] वह नजर या भेंट जो मध्य युग मे जमीदार या उसका कारिंदा किसानों से हर फसल पर लेता था।

**सरिमा (न्)**—पुं० [स० √ सृ (गत्यादि)+इमनिच्] वायु।
स्त्री० गति। चाल।

**सरियाँ**—स्त्री०[?] एक प्रकार का गीत जो बुदेलखड मे बच्चा होने के समय गाया जाता है।

**सरिया**—पुं० [स० शर] १. सरकडे का छड जो सुनहले या रुपहले तार बनाने के काम आता है। सरई। २. पतली छड़ी। ३. लोहे का पतला लबा छड़ जो स्क्रैब, लिटल आदि के काम आता है।
†स्त्री०[?] ऊँची जमीन।
†पु०[?] मुनारो की परिभाषा मे पैसा या ऐसा ही और कोई सिक्का।

**सरियाना**—स०[?]१. तरतीब से लगाकर इकट्ठा करना। बिखरी हुई चीजे ढग से समेटना। जैसे—लकड़ी सरियाना; कागज सरियाना। २ पीटना या मारना। (व्यग्य) ३. कपड़ों की तह लगाना। जैसे—कमीज सरियाना।

**सरिवन**—पु०[स० शालपर्ण] शाल पर्ण नाम का पौधा। त्रिपर्णी। अशुमती।

**सरिवर, सरिवरि***—स्त्री०=सरवर (बराबरी)।
†पुं०=सरोवर।

**सरिश्त***—स्त्री०[स० सृष्टि से फा०]१. सृष्टि। २. बनावट। ३. प्रकृति। स्वभाव।

**सरिश्ता**—पु० [फा० सरिश्त.]१. अदालत। कचहरी। २ शासनिक कार्यालय का कोई विभाग। ३. उक्त विभाग का दफ्तर।

**सरिश्तेदार**—पु०[फा० सरिश्त.दार]१. किसी विभाग या सरिश्ते का प्रधान अधिकारी। २ अदालतो मे मुकदमो की नस्थियाँ आदि रखने-वाला कर्मचारी।

**सरिश्तेदारी**—स्त्री०[फा०]१. सरिश्तेदार होने का काम, पद या भाव।

**सरिस***—वि०[सं० सदृश, प्रा० सरिस] सदृश। समान। तुल्य।

*पुं०=सिरस (वृक्ष)।

**सरी**—स्त्री० [स० सरि—ङीप्] १. छोटा सरोवर। २. सोता। ३. झरना। नदी।

**सरीक**†—वि०[भाव० सरीकता]=शरीक।

**सरीकत**···स्त्री०[फा० शिरकत]१ शिरकत। २. साझा।

**सरीकता***—स्त्री०[अ० शरीक+हिं० ता (प्रत्य०)]१. शिरकत। २ साझा। ३. हिस्सा।

**सरीका**†—वि०=सरीखा।

**सरीखा**—वि०[स० सदृश, प्रा० सरिस] [स्त्री० सरीखी] अवस्था, गुण, रूप आदि में किसी के तुल्य। जैसा। जैसे—तुम सरीखा।

**सरीर***—पुं०=शरीर (देह)।
वि०=शरीर (शरारती)।

**सरीसृप**—पु०[स०]१. वे जन्तु जो जमीन पर रेंगते हुए चलते हैं। जैसे—कनखजूरा, छिपकली, मगर, साँप, आदि। २. विष्णु का एक नाम।

**सरीसृप विज्ञान**—पुं० [स०] जीव-विज्ञान की वह शाखा जिसमें सरीसृपों के गुणों, विभागों, स्वभावों आदि का विवेचन होता है। (हर्पेटोलोजी)

**सरीह**—वि०[अ०] १. प्रकट। खुला हुआ। २. स्पष्ट।

**सरु**—वि०[स० √सृ (गत्यादि)+उन]१. पतला। २ छोटा।
पु०१ तीर। बाण। २. तलवार की मूठ।

**सरुज**—वि०[स०] रोग-युक्त। रोगी।

**सरुष**—वि०[सं० अव्य० स०] रोष या क्रोध युक्त। कुपित।
अव्य० क्रोधपूर्वक। रोषपूर्वक।

**सरुहना***—अ० १.=सुधरना। २ =सुलझना।

**सरुहाना**—स०[स० सरुज?]१. चंगा करना। २. सुधारना। ३. सुलझाना।

**सरूप**—वि०[स० ब० स०] [भाव० सरूपता]१. जिसका वैसा ही रूप हो। किसी के रूप जैसा। समान। सदृश। २ सुन्दर रूपवाला। ३ आकार वाला। रूप युक्त।
†अव्य० रूप में। तौर पर।

**सरूपता**—स्त्री०[स०]१. सरूप होने की अवस्था, गुण या भाव। वह स्थिति जिसमे एक का रूप दूसरे से मिलता हो। २ ब्रह्मरूप हो जाना।

**सरूपत्व**—पुं०=सरूपता।

**सरूपा**—स्त्री०[स० सरूप—टाप्] भूत की स्त्री जो अस्त्रय ग्रहों की माता कही गई है।

**सरूपी**—वि० [सं० सरूप+इनि] सरूप। (दे०)

**सरूर**—पुं०[फा० सुरूर] १. आनन्द। खुशी। प्रसन्नता। २ किसी मादक पदार्थ का हलका और सुखद नशा। ३ खुमार।

**सरूप**†—पु०=स्वरूप।

**सरेख**—वि०[सं० श्रेष्ठ] [स्त्री०सरेखी]१. अवस्था में बड़ा और समझदार। सयाना। २. चतुर। चालाक।

**सरेखना**—स०=सहेजना।

**सरेखा**—पुं०[हिं० सरेखना] सरेखने की क्रिया या भाव।
†स्त्री०=लेखा (नक्षत्र)।

**सरे-दस्त**—अव्य०[फा०]१ इस समय। अभी। २ प्रस्तुत समय में। फिलहाल।

**सरे-नौ**—अव्य०[फा०]१ प्रारंभ से। शुरू से। २. नये सिरे से।

**सरेबाजार**—अव्य०[फा०] खुले बाजार में और जनता के सामने।

**सरेला**—पुं०[स० श्रृंखला] १ पाल में लगी हुई रस्सी जिसे ढीला करने से पाल की हवा निकल जाती है। २ वह रस्सी जिसमे मछली फँसाने का काँटा या बंसी बँधी रहती है। शिस्त।

**सरेश**†—पु०=सरेस।

**सरे-शाम**—अव्य०[फा०] सन्ध्या होते ही या उससे कुछ पहले ही।

**सरेष**—वि०=सरेख (चतुर)।

**सरेस**—पु०[फा० सरेश] एक प्रसिद्ध लसदार पदार्थ जो ऊँट, गाय, भैंस आदि के चमड़े और हड्डियों या मछली के पोटे को पकाकर निकालते हैं। तथा जो मुख्य रूप से लकड़ियाँ आदि जोड़ने के काम आता है। सहरेश। सरेस।
वि० लसीला और चिपकनेवाला।

**सरेस-माही**—पु०[फा० सरेश-माही] मछली के पांटे को उबालकर बनाया हुआ सरेस।

**सरोंट***—स्त्री०=सिलवट (कपड़ों की)।

**सरो**—पु०[फा० सर्व] एक प्रकार का सीधा छतनार पेड़ जो बगीचों में शोभा के लिए लगाया जाता है। बनझाऊ।
**विशेष**—उर्दू-फारसी कवितांओं मे इसका प्रयोग मनुष्य की ऊँचाई या कद की सुन्दरता सूचित करने के लिए उपमा के रूप में होता है।

**सरोई**—पु०[हिं० सरा?] एक प्रकार का बड़ा पेड़।

**सरोकार**—पुं० [फा०] १. परस्पर व्यवहार का संबंध। २ लगाव। वास्ता। सम्बन्ध।

**सरोकारी**—वि०[फा०] १. सरोकार रखनेवाला। २. जिससे सरोकार या संबंध हो।

**सरोज**—पुं० [स०] [स्त्री० अल्पा० सरोजिनी]१. कमल। २ एक प्रकार का छंद या वृत्त।
वि० सर अर्थात् जलाशय से उत्पन्न।

**सरोजना***—स०[?] प्राप्त करना। पाना।

**सरोजमुख**—वि०[स०] [स्त्री० सरोजमुखी] कमल के समान सुन्दर मुखवाला।

**सरोजिनी**—स्त्री०[सं०]१. कमल से भरा हुआ ताल। २. जलाशय मे खिले हुए कमलो का समूह। कमलवन। ३ कमल।

**सरोजी (जिन्)**—वि० [स० सरोज+इनि—दीर्घ, नलोप]१. कमल संबंधी। कमल का। २. (स्थान) जहाँ बहुत से कमल हों। ३. कमलों से युक्त।
पु० १. ब्रह्मा। २. गौतम बुद्ध का एक नाम।

**सरोट**†—स्त्री०=सिलवट।

**सरोत**†—पु०=श्रोत (कान)।

**सरोतर**†—क्रि० वि०[स० सर्वत्र] आदि से अंत तक।
वि०१. आदि से अंत तक बिलकुल ठीक या पूरा। २. सांगोपांग।

**सरोता**—पुं०१.=श्रोता। २.=सरौता।

**सरोरुह**—पु० [सं० ब० स०]१. बगला पक्षी। बक। २. सारस।

**सरोद**—पु०[स० स्वरोदय से फा०]१. वीणा की तरह का एक प्रकार का बाजा। २. नाच-गाना।

**सरोदा**—पुं०=स्वरोदय (विद्या)।

**सरोरुह**—पु० [स० सरस्√ रुह् (उत्पन्न होना)+क]कमल।

**सरोला**—पु०[देश०] एक प्रकार की मिठाई।

**सरोवर**—पु० [स० सरस्√वृ (वरण करना)+अप्]१. तालाब। २. बड़ा ताल। झील।

**स-रोष**—वि०[स० अव्य० स०] रोष या क्रोध से युक्त। कुपित।
क्रि० वि० रोष या क्रोधपूर्वक।

**सरोसामान**—पु०[फा० सर+द+सामान] सामग्री। असबाब।

**सरोही**†+—स्त्री०=सिरोही।

**सरौ**—पु०[स० शराव]१ कटोरी। प्याली। २ ढकना। ढक्कन।
पु०=सरो (वृक्ष)।

**सरौता**—पु०[स० सार+ओहा+यंत्र, प्रा० सारवत्त] [स्त्री० अल्पा० सरौती]१ कैंची की तरह का एक प्रकार का उपकरण जो सुपारी काटने के काम आता है। २ काठ से जड़ा हुआ एक प्रकार का उपकरण जो कच्चे आम आदि काटने के काम आता है।

**सर्क**—पु०[स० √सृ (गत्यादि) क, इत्वाभाव]१. मन। चित्त। २ वायु। हवा। ३ एक प्रजापति का नाम।

**सर्कस**—पुं० [अं०]१. वह स्थान जहाँ जानवरों का खेल दिखाया जाता है। २ वह बड़ी मंडली जिसके लोग अपने तथा पशुओं के अनोखे तथा साहसपूर्ण खेल दिखलाते हैं। ३ उक्त मंडली के खेलों का प्रदर्शन। जैसे—हम सरकस देखने जा रहे हैं।

**सर्का**—पुं०[अ० सर्क] चोरी।
†पु०=सरका।

**सर्कार**†—स्त्री०=सरकार।

**सर्कारी**†—वि०=सरकारी।

**सर्किल**—पुं०[अं०]१ वृत्त। २. घेरा। ३ मंडल। ४. किसी प्रदेश का छोटा खंड या विभाग।

**सर्कुलर**—पु० [अं०] गश्ती चिट्ठी। परिपत्र।

**सर्ग**—पु०[स०]१. चलना या आगे बढ़ना। गमन। २. गति। चाल। ३. प्रवाह। बहाव। ४ अस्त्र आदि चलाना, छोड़ना या फेंकना। ५. चलाया, छोड़ा या फेंका हुआ अस्त्र। ६. उत्पत्ति स्थान। उद्गम। ७ जगत्। संसार। ८. जीव। प्राणी। ९. औलाद। संतान। १०. प्रकृति। स्वभाव। ११. झुकाव। प्रवृत्ति। रुझान। १२. चेष्टा। प्रयत्न। १३ दृढ़ निश्चय या विचार। संकल्प। १४. बेहोशी। मूर्छा। १५. किसी ग्रन्थ विशेषतः काव्य-ग्रंथ का अध्याय या प्रकरण। १६. शिव का एक नाम।

**सर्गक**—वि०[स० सर्ग+कन्] जन्म देनेवाला। उत्पादक।

**सर्ग-पताकी**—वि०=सरग-पताकी।

**सर्ग-बुद्ध**—पुं०[सं० ब० स०] संगीत में, शुद्ध राग का एक भेद।

**सर्गबंध**—वि० [सं० ब० स०] ग्रन्थ या काव्य जो कई अध्यायों में विभक्त हो। जैसे—सर्गबंध काव्य।

**सर्ग-लेख**—पुं०[स०]वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें ब्रह्माण्ड या विश्व की रचना, विस्तार, स्वरूप आदि का विवेचन हो। (फ्रास्मोग्राफ़ी)

**सर्गवेध**—आधुनिक विचारकों के मत से ज्योतिष, भूगोल, भौमिकी आदि इसी के अंग या विभाग हैं।

**सर्गुन**†—वि०=सगुण।

**सर्जंट**—पुं० [अ० सर्जेन्ट] सिपाहियों का हवलदार। जमादार।

**सर्ज**—पु०[स०] १. बड़ी जाति का शाल वृक्ष। अजकर्ण वृक्ष। २. सलई का पेड़। ३. धूना। राल। ४. विजय साल नामक वृक्ष।
स्त्री०[अं०] एक प्रकार का बढ़िया ऊनी कपड़ा। सरज।

**सर्जक**—वि० [सं०]१. सर्जन करने या चलानेवाला। २ सृष्टि या रचना करनेवाला। स्रष्टा।
पुं०१. बड़ी जाति का शाल वृक्ष। २. विजयसाल नामक वृक्ष। ३. सलई का पेड़। ४. मठा डालकर फाड़ा हुआ दूध।

**सर्जन**—पु०[सं० √सृज् (त्यागना)+ल्युट—अन] [वि० सर्जनीय, सर्जित] १. छोड़ना। त्याग करना। फेंकना। २. निकालना। ३. उत्पन्न करना या जन्म देना। ४. सेना का पिछला भाग। ५ सरल का गोंद।
पु०[अ०] पाश्चात्य चिकित्सा प्रणाली के अनुसार चीर-फाड़ आदि के द्वारा चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक। शल्य-चिकित्सक।

**सर्जनी**—स्त्री०[स० सर्जन-ङीप्] गुदा की वलियों में से बीचवाली वली जिसके द्वारा पेट का मल और वायु बाहर निकलती है।

**सर्जमणि**—पु०[स० ष० त०]१. सेमल का गोंद। मोचरस। २. धूना। राल।

**सर्जि**—स्त्री०=सज्जी।

**सर्जिका**—स्त्री०[स०] सज्जीखार।

**सर्जिखार**—पु०[स० ष० त०] सज्जीखार।

**सर्जित**—भू० कृ०[सं०] जिसका सर्जन हुआ हो। सृष्ट। २. बनाया हुआ। रचित।

**सर्जु**—पु० स०√सृज् (लगना)+उन्] वणिक। व्यापारी।
स्त्री० बिजली। विद्युत्।

**सर्जू**—पु० [स० √ सृज् (त्यागना)+ऊ] १. वणिक। व्यापारी। २. माला। हार।
स्त्री०=सरयू।
स्त्री०=सर्जु (बिजली)।

**सर्जेंट**—पुं०[अं०] पुलिस, सेना आदि के सिपाहियों का जमादार। हवलदार।

**सर्टिफ़िकेट**—पुं०[अ०] प्रमाण-पत्र ()। सनद।

**सर्त**†—स्त्री०=शर्त।

**सर्द**—वि०[फा०]१. इतना अधिक ठंढा कि कँपकँपी होने लगे। जैसे—सर्द हवा।
**मुहा०—सर्द हो जाना**=मर जाना।
२. ढीला। शिथिल। ३. धीमा। मंद। ४. काहिल। सुस्त। ५. आवेग, उत्साह, प्रखरता आदि से रहित या हीन।
क्रि० प्र०—पड़ना।
६. नपुंसक। नामर्द। ७. स्वाद-रहित। फीका।

**सर्दई**—वि०, पुं०=सरदई।

**सर्दखाना**—पु०[फा० सर्दखानः] १. वह बड़ा और ठंढा कमरा जो

मध्ययुग में कस्बों और छोटे छोटे नगरों में घनी छाँह वाले वृक्षों के नीचे इस उद्देश्य से बनाया जाता था कि गरमी के दिनों में लोग दोपहर के समय वहाँ आकर ठंडक में समय बितायें। २. आज-कल विशिष्ट प्रकार से बनाई हुई वह इमारत जिसमें यान्त्रिक साधनों से ठंडक की व्यवस्था रहती है ; और इसी लिए जहाँ तरकारियाँ, फल आदि सड़ने से बचाने के लिए सुरक्षित रूप में रखे जाते हैं। ठंडा गोदाम। शीतागार। (कोल्ड स्टोरेज)

**सर्प-बाई**—स्त्री० [फा० सर्प+हिं० बाई] हाथी की एक बीमारी जिसमे उसके पैर जकड जाते हैं।

**सर्प-बाजारी**—स्त्री० [फा०+हिं०] बाजार की वह अवस्था जब माल तो यथेष्ट होता है परन्तु उसके ग्राहक नही होते।

**सर्पमिजाज**—वि० [फा० +अ०] [भाव० सर्प-मिजाजी] १. (व्यक्ति) जिसमें आवेग, उमग, प्रखरता आदि बातें सहसा न आती हो। उत्साह-हीन। मृदुविद। २. जिनमे शील, सकोच, आदि का अभाव हो। रूखे स्वभाववाला।

**सर्दा**†—पु०=सरदा (फल)।

**सर्दाबा**†—पुं०=सरदाबा।

**सर्दार**†—पु०=सरदार।

**सर्दी**†—स्त्री०=सरदी।

**सर्धा**†— स्त्री०=श्रद्धा।
†पु०=सरदा (फल)।

**सर्प**—पु० [स० √ सृप् (जाना)+अच्—घञ् वा] [स्त्री० सर्पिणी] १. रेंगते हुए चलने की क्रिया या भाव। २. सरीसृप वर्ग का प्रसिद्ध जन्तु; साँप। ३. पुराणानुसार ग्यारह रुद्रो में से एक। ४. एक प्राचीन म्लेच्छ जाति। ५ नागकेसर। ६. ज्योतिष मे, एक दुष्ट योग।

**सर्पकाल**—वि० [सं० ष० त०] जो सर्प का काल हो।
पु० गरुड।

**सर्पगंधा**—स्त्री० [सं०] १. गध नाकुली। २. नकुलकंद। ३. नाग-दमन।

**सर्पगति**—वि० [स० ष० त०] १. साँप की तरह टेढी चाल चलनेवाला। २. कुटिल प्रकृति का।
स्त्री० टेढी चाल।

**सर्पच्छत्र**—पु० [सं०] छत्राक। खुमी। कुकुरमुत्ता।

**सर्पण**—पुं० [सं० √सृप् (धीरे चलना)+ल्युट्—अन] [वि० सर्पणीय, भू० कृ० सर्पित] १ पेट के बल खिसकना। रेंगना। २. धीरे-धीरे चलना। ३. छोड़े हुए तीर का जमीन से कुछ ही ऊपर रहकर चलना। ४. टेढ़ा चलना।

**सर्प-तुण**—पुं० [सं०] नकुलकंद।

**सर्पदंती**—स्त्री० [सं०] नागदती। हाथी शुंडी।

**सर्प-दंष्ट्र**—पुं० [सं०]१. साँप का दांत। २. विशेषतः साँप का विष दांत। ३. साँप के विष-दाँत से लगनेवाला घाव। ४. जमाल गोटा। ५. दंती।

**सर्प-दंष्ट्री**—स्त्री० [सं० सर्पदंष्ट्र—ङीप्] १. मृषिपर्णी। २. दंती।

**सर्प-नेत्रा**—स्त्री० [सं०] १. सर्पाक्षी। २. गध-नाकुली।

**सर्पपति**—पुं० [सं०] शेषनाग।

**सर्पपुच्छी**—स्त्री० [स०] १. नागदती। २. बाँझ कर्कोटा।

**सर्प-फण**—पुं० [स०] अफीम। अहिफेन।

**सर्प-बंध**—पु० [स०] १ कुटिल या पेचीली गति, रेखा आदि। २ कपटपूर्ण-युक्ति।

**सर्प-बेल्लि**—स्त्री० [सं०] नागवल्ली। पान।

**सर्प-भक्षक**—पु० [स०] १. नकुलकद। नाकुलीकद। २. मोर। मयूर।

**सर्पभुक्, सर्पभुज्**—पु० [स०] सर्प-भक्षक।

**सर्प-मीन**—पु० [स०] एक प्रकार की समुद्री मछली जो साँप की तरह लबी होती है और जिनके शरीर मे डैने या पख नही होते। (ईल)

**सर्प-यज्ञ**—पु० [सं०] जनमेजय का वह प्रसिद्ध यज्ञ जो उन्होने नागो अर्थात् सर्पों का नाश करने के लिए किया था। नाग-यज्ञ।

**सर्पयाग**—पु० [स०] सर्पयज्ञ।

**सर्पराज**—पु० [स०]१. साँपों के राजा, शेषनाग। २. वासुकि।

**सर्प-लता**—स्त्री० [स०] नागवल्ली।

**सर्प-वल्ली**—स्त्री० [स०] नागवल्ली।

**सर्प-विद्या**—स्त्री० [स०]१ वह विद्या जिसमे, सर्पों उनकी जातियों, उनके स्वभावों आदि का विवेचन होता है। २ साँपों के पकडने और उनको वश में करने की विद्या।

**सर्प-व्यूह**—पु० [स०] प्राचीन भारत मे, एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना जिसमे सैनिकों की स्थापना सर्प के आकार की होती थी।

**सर्प-शीर्ष**—पु०[स०]१. एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी बनाने के काम मे आती थी। २ तांत्रिक पूजन मे, पजे और हाथ की एक मुद्रा। ३. एक प्रकार की मछली जिसका सिर साँप की तरह होता है। (ओफिसेफैलस)

**सर्प-सत्र**—पुं० [स० मध्यम० स०] सर्प-यज्ञ।

**सर्प-सत्री**—पु० [स० सर्पसत्र+इनि] सर्प-सत्र अर्थात् नाग-यज्ञ रचनेवाले राजा जनमेजय।

**सर्पहा (हन्)**—वि० [सं०] सर्प को मारनेवाला।
पु० नेवला।
स्त्री० सर्पाक्षी। सरहँटी।

**सर्पांगी**—स्त्री० [स० ब० स०]१. सरहँटी। २. नकुलकंद। ३. सिंहली पीपल।

**सर्पा**—स्त्री० [सं० सर्प-टाप्]१. साँपिन। सर्पिणी। २. फणि-लता।

**सर्पाक्ष**—पु० [स० ब० स०] १ रुद्राक्ष। शिवाक्ष। २. सर्पाक्षी। सरहँटी।

**सर्पाक्षी**—स्त्री० [स० सर्पाक्ष-ङीप्]१. सरहँटी। गध-नाकुली। ४. सफेद अपराजिता। ५ शंखिनी।

**सर्पाक्षी**—स्त्री० [स० ब० स०] १. गंध नाकुली। गधरास्ना। रास्ना। २. नकुलकन्द।

**सर्पारि**—पु० [स० ष० त०]१. गरुड। २. नेवला। ३. मोर।

**सर्पावास**—पु० [सं० ष० त०] १. साँप के रहने का स्थान। २. चन्दन का पेड।

**सर्पाशन**—वि० [स० ब० स०] सर्प जिसका भोजन हो।
पु० १. गरुड़। २. मोर।

**सर्पास्य**—वि० [स० ब० स०] साँप के समान मुखवाला।

**सर्पास्या**—स्त्री० [ष० सर्पास्य—टाप्] पुराणानुसार एक यौगिनी।

**सर्पि**—पुं० [सं०√ सप् (इत्यादि)+इति] घृत। घी।

**सर्पिका**—स्त्री० [सं० सप्+कन्—टाप्—इत्व]१. छोटा साँप। २. एक प्राचीन नदी।

**सर्पिणी**—स्त्री० [सं०√सप् (धीरे धीरे चलना)+णिनि—ङीप्] १. साँप की मादा। साँपिन। २. भुजगी नाम की लता। ३. रहस्य सप्रदाय में, माया की एक संज्ञा।

**सर्पित**—भू० कृ० [स० सर्प+इतच्] १. सर्प के रूप में आया या लाया हुआ। २. साँप की तरह टेढ़ा-मेढ़ा चलता या रेंगता हुआ। उदा०—मुख से सर्पित मुखर स्रोत नित प्रीति लखित पिक कूजन।—पंत।

पुं० साँप के काटने से शरीर मे होनेवाला क्षत या घाव। सर्प-दंश।

**सर्पिल**—वि० [स०] [भाव० सर्पिलता] जो साँप की तरह टेढा-मेढ़ा होता हुआ आगे बढता हो। (सर्पेन्टाइन)

**सर्पी (र्पिन्)**—वि० [सं०] [स० सर्पिणी] १. रेंगनेवाला। २. धीरे धीरे चलनेवाला।

†पु०=सर्पि।

**सर्पेष्ट**—पुं० [सं० ष० त०] सर्प का इष्ट अर्थात् चदन का वृक्ष।

**सर्पेश्वर**—पु० [सं० ष० त०] सर्पों के स्वामी, वासुकि।

**सर्पोन्माद**—पु० [सं०] उन्माद (रोग) का एक भेद जिसमें मनुष्य साँप की तरह फुफकारने लगता है। (वैद्यक)

**सर्फ**—वि० [अ० सर्फ़] व्यय किया हुआ। खर्च किया हुआ। जैसे—इस काम मे सौ रुपए सर्फ हो गये।

पु० शब्द-शास्त्र। व्याकरण।

**सर्फा**—पुं० [अ० सर्फ़ः]१ खर्च। व्यय। २. किफायत। मित-व्यय। ३. वह अवस्था जिसमें मनुष्य आवश्यकताओ की पूर्ति नही करता बल्कि धन जोड़ता चलता है।

**सर्वरी**—स्त्री०=शर्वरी (रात)।

**सर्वस्व**†—वि०=सर्वस्व।

**सर्मा**—पुं०=शर्म (आनन्द)।

स्त्री०=शर्म (लज्जा)।

**सर्रक**—स्त्री० [हिं० सर्राना] सर्राते हुए आगे बढ़ने की क्रिया या भाव।

**सर्रा**—पुं० [अनु० सरसर] लोहे या लकड़ी का वह छड जिस पर गराड़ी घूमती है। धुरी। धुरा।

**सर्राटा**—पुं० [अनु० सरसर] १. हवा के तेज चलने से होनेवाला शब्द। २. किसी के तेज चलने से होनेवाला सर-सर शब्द।

**मुहा०—सर्राटे भरना**=तेजी से इधर-उधर आना-जाना।

**सर्राना**—अ० [अनु०] सरसर करते हुए आगे बढ़ना।

**सर्राफ**—पु० दे० 'सराफ'।

**सर्राफा**—पुं०=सराफा।

**सर्राफी**—स्त्री०=सराफी।

**सर्वक्ष**—वि० [सं० सर्व√ क्षप् (हिंसा करना)+क्त्र-नुम्] १. सबको पीड़ित करनेवाला। २. सब से कुछ न कुछ ऐंठकर या छीन-झपटकर ले लेनेवाला।

पुं० १. दुष्ट व्यक्ति। २. पाप।

**सर्व**—वि० [सं०] आदि से अन्त तक। सब। समस्त। सारा।

पुं० १. शिव। २. विष्णु। ३. पारा। ४. स्त्रीलिंग। ५. शिकाकाई।



पुं०=सरो (पेड़)।

**सर्वक**—वि० [स० सर्व+कन्] सब। समस्त। सारा।

**सर्वकर्ता**—पुं० [सं० ष० त० सर्वकर्तृ] ब्रह्मा।

**सर्व-काम**—वि० [सं०] ? सब प्रकार की कामनाएँ रखनेवाला। २. सब प्रकार की कामनाएँ पूरी करनेवाला।

पुं० १. शिव। २. एक अर्हत् या बुद्ध का नाम।

**सर्व-कामद**—वि० [सं०] [स्त्री० सर्व-कामदा] सभी प्रकार की कामना पूरी करनेवाला।

पुं० शिव।

**सर्व-काल**—अव्य० [सं०] हर समय। सदा।

**सर्व-केसर**—पुं० [सं०] बकुल वृक्ष या पुष्प। मौलसिरी।

**सर्व-क्षमा**—स्त्री० [सं०] प्रधान शासक द्वारा बंदियो विशेषत राजनीतिक बंदियो को सामूहिक रूप से किया जानेवाला क्षमा-दान। (एमनेस्टी)

**सर्व-क्षार**—पु० [सं०] १. सब कुछ क्षार अर्थात् नष्ट करना। २. युद्ध में, हारती हुई सेना का पीछे हटते समय फसलों, गुलो आदि को इस उद्देश्य से नष्ट करना कि शत्रु उससे लाभ न उठा सकें। (स्कार्च्ड अर्थ)

**सर्व-गंध**—पुं० [सं०] १. दालचीनी। २ इलायची। ३. केसर। ४.तेजपत्ता। ५. शीतलचीनी। ६. लौंग। ७. अगर। अगरु। ८. शिला रस। ९. नाग-केसर।

**सर्वग**—वि०[सं० सर्व√ गम् (जाना)+ड] [स्त्री० सर्वगा] जिसकी गति सभी ओर या सब जगह हो।

पु०१. ब्रह्मा। २. जीवात्मा। ३. शिव। ४. जल। पानी।

**सर्वगत**—वि०[स०] १. जो सब मे व्याप्त हो। सर्वव्यापक। २. जो किसी जाति, वर्ग या समष्टि के सभी अगों, सदस्यों आदि के सामान्य रूप से पाया जाता हो।

पु० प्राचीन काल में, ऐसा राजकर्मचारी जिसे सभी जगहों मे आने-जाने का पूर्ण अधिकार हो।

**सर्व-गति**—वि०[सं०]१. सब को गति प्रदान करनेवाला। २. जो सब को गति (आश्रय या शरण) देता हो। जैसे—सर्व-गति परमात्मा।

**सर्व-गामी**—वि०=सर्वग।

**सर्व-ग्रास**—पुं०[स०]१. चन्द्र या सूर्य के ग्रहण का वह प्रकार या स्थिति जिसमें उसका मडल पूर्ण रूप से छिप जाता है। पूर्ण ग्रहण। खग्रास। २. किसी का सब कुछ लेकर खा या पचा जाना।

**सर्वग्रासी (सिन्)**—वि०[सं०] १. सब कुछ ग्रस या अपने वश में कर लेनेवाला। २. किसी का सर्वस्व हर लेनेवाला।

**सर्व-चक्रा**—स्त्री०[सं०] बौद्ध तान्त्रिकों की एक देवी।

**सर्व-चारी**—वि०[सं० सर्वचारिन्] [स्त्री० सर्वचारिणी]१. सब जगह घूमने-फिरनेवाला। २. सब में रहने या संचार करनेवाला। सर्व-व्यापक।

पुं० शिव का एक नाम।

**सर्व-जन**—वि०[सं०]१. सब लोगों से संबंध रखनेवाला। सार्वजनिक। सार्विक। २. सभी स्थानों में प्रायः समान रूप से पाया जानेवाला। सार्वदेशिक।

**सर्व-जनीन**—वि०[स०]१. जिसका सम्बन्ध जाति, राष्ट्र या समाज से हो। 'व्यक्तिगत' का विपर्याय। जैसे—सर्वजनीन आज्ञा। २. जिसके उपभोग पर किसी को मनाही न हो। जैसे—सर्वजनीन चित्र।

**सर्वजया**—स्त्री०[स०]१. सवजय नाम का पौधा जो बगीचों में फूलों के लिए लगाया जाता है। देखकली। ३. मार्गशीर्ष महीने मे होनेवाला स्त्रियों का एक प्राचीन पर्व।

**सर्वजित्**—वि०[स०]१. सब को जीतनेवाला। २. जो सब से बढ़-चढ कर हो। सर्व-श्रेष्ठ। उत्तम।
पुं० १. काल या मृत्यु जो सबको जीतकर अपने अधीन कर लेती है। २ एक प्रकार का एकाह यज्ञ। ३ २१वाँ सवत्सर।

**सर्व-ज्ञानी (नित्)**—वि० [स०] जिसके पिता, पितामह और प्रपितामह तीनों जीवित हो।

**सर्वज्ञ**—वि०[स०] [स्त्री० सर्वज्ञा] सब कुछ जाननेवाला। जिसे सारी बातों या विषयों का ज्ञान हो।
पु०१. ईश्वर। २ देवता। ३. गौतम बुद्ध। ४ अर्हत्। ५. शिव।

**सर्वज्ञता**—स्त्री०[स० सर्वज्ञ+तल्—टाप्] सर्वज्ञ होने की अवस्था, गुण या भाव।

**सर्वज्ञत्व**—पु०[स० सर्वज्ञ+त्व]=सर्वज्ञता।

**सर्वज्ञानी**—वि०[स०] सब बातों का ज्ञान रखनेवाला। सर्वज्ञ।

**सर्व-तंत्र**—पुं०[सं०]१ सभी प्रकार के शास्त्रीय सिद्धान्त। २ व्यक्ति जिसने सब शास्त्रो का अध्ययन किया हो।
वि० जो सभी प्रकार के शास्त्रीय सिद्धान्तो के अनुकूल हो। जिससे सभी शास्त्र सम्मत हो।

**सर्वतः**—अव्य०[स० सर्व+तस्] १ सभी ओर। चारो तरफ। २ सभी जगह। ३. सभी प्रकार से। हर तरह से। ४. पूर्ण रूप से। पूरी तरह से।

**सर्व-तापन**—पु०[स० ष० त०]१ (सब को तपानेवाला) सूर्य। २ कामदेव।

**सर्वतो**—अव्य०[सं०] संस्कृत सर्वत. का वह रूप जो उसे समस्त पदो के आरभ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—सर्वतोचक्र, सर्वतोभद्र आदि।

**सर्वतोचक्र**—पुं०[स०] फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का वर्गाकार चक्र जो कुछ विशिष्ट प्रकार के शुभाशुभ फल जानने के लिए बनाया जाता है।

**सर्वतोभद्र**—वि०[स०] १ सब ओर से मगल कारक। सर्वांश मे शुभ या उत्तम। २. जिसके दाढ़ी, भौंहें और सिर के बाल मुड़े हुए हो।
पु०१. विष्णु के रथ का नाम। २ ऐसा चौकोर प्रासाद या भवन जो चारों ओर से खुला हो और जिसकी परिक्रमा की जा सकती हो। ३. कर्मकाण्ड में, एक प्रकार का चौकोर चक्र जो पूजन के समय भूमि, वस्त्रों आदि पर बनाया जाता है। ४. प्राचीन भारत मे, एक प्रकार को चौकोर सैनिक व्यूह-रचना। ५. साहित्य मे, एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसमें चौकोर स्थापित किए हुए बहुत से खानो मे कविता के चरणों के अक्षर लिखे जाते हैं। ५. योग-साधन का एक प्रकार का आसन या मुद्रा। ६. एक प्रकार की पहेली जिसमें शब्द के खडाक्षरों के भी अलग-अलग अर्थ किए जाते हैं। ७. एक प्रकार का गंध-द्रव्य। ८. नीम का पेड़। ९. बांस।

**सर्वतोभद्रा**—स्त्री० [स० सर्वतोभद्र-टाप्]१. कामधेनु। गंभारी। २. अभिनेत्री। नटी।

**सर्वतोभाव**—अव्य०[स०]१. सब प्रकार से। सपूर्ण रूप से। २. अच्छी तरह। भली-भाँति।

**सर्व-तोमुखी**—पु०[स०] प्राचीन भारतीय राजनीति मे, वश में किया हुआ ऐसा मित्र जो आसपास के जागलिकों, पडोसी जातियों आदि से रक्षित रहने मे सहायता देता हो।

**सर्वतोमुख**—वि०[स०] सर्वतोमुखी।
पु० १. ब्रह्मा। २. जीव। ३. शिव। ४. अग्नि। ५. जल। ६. स्वर्ग। ७. आकाश। ८ एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना।

**सर्वतोमुखी (खिन्)**—वि०[स०]१. जिसका मुँह चारो ओर हो। २ जो सभी ओर प्रवृत्त रहता हो। ३ जो सभी तरह के कार्यों या क्षेत्रो के हर विभाग में दक्ष हो। (आल राउण्डर)
पु०=सर्वतोमुख।

**सर्वतोव्याप्त**—वि०[स० ब० स०] सर्व-व्यापक।

**सर्वथा**—अव्य०[स० सर्व+थाल्]१ सब प्रकार से। सब तरह से। २ हर दृष्टि से। हर विचार से। ३. निरा। बिलकुल। सरासर। जैसे—आप का यह कथन सर्वथा मिथ्या है।

**सर्वथैव**—अव्य०[स० सर्वथा+एव] १. पूरी तरह से। निरा। बिलकुल। २ सर्वथा।

**सर्वदंड-नायक**—पु० [स० सर्वदण्ड-कर्म० स० -नायक ष० त०] प्राचीन भारत मे, सेना या पुलिस का एक ऊँचा अधिकारी।

**सर्वद**—वि०[सं० सर्व√दा (देना) +क] सब कुछ देनेवाला।
पु० शिव का एक नाम।

**सर्वदमन**—पुं०[स० ब० स०] शकुतला के पुत्र भरत का एक नाम।

**सर्वदर्शी (शिन्)**—वि० [स० सर्व√ दृश् (देखना) +णिनि] [स्त्री० सर्वदर्शिणी] विश्व में होनेवाली सभी बातें देखनेवाला।

**सर्व-दल**—पु०[स०] [वि० सर्वदलीय] किसी विषय पर विचार करने अथवा किसी क्षेत्र में काम करनेवाले सभी दल या वर्ग। जैसे—उस समय एक सर्वदल सम्मेलन हुआ था।
वि०=सर्वदलीय।

**सर्व-दलीय**—वि०[सं०]१. सब दलो से सबंध रखनेवाला। २. जिसमें सभी दल योग दे रहे हो। सभी दलों द्वारा सामूहिक रूप से किया जानेवाला। (आल पार्टी)

**सर्वदा**—अव्य०[स०] सब समयो में हमेशा। सदा।

**सर्वधारी (रिन्)**—पु०[सं० सर्व √ धृ (रखना)+णिनि] १. साठ संवत्सरो मे से बाइसवाँ सवत्सर। २. शिव।

**सर्वनाभ**—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

**सर्वनाम**—पुं०[सं० सर्व-नामन्]१. वह जो सब का नाम हो, अथवा हो सकता हो। २. व्याकरण मे, ऐसे विकारी शब्दो का भेद या वर्ग जिनका प्रयोग सभी नामो या सज्ञाओं के स्थान पर, उनके प्रतिनिधि के रूप मे होता है। (प्रोनाउन) जैसे—तुम, हम, यह, वह आदि। ३. उक्त शब्द-भेद का कोई शब्द।

**सर्वनाश**—पु०[सं० ष० त०, पंच०, त० ब०] पूरी तरह से होनेवाला ऐसा नाश जिसके उपरांत कुछ भी बच न रहे। पूरा विनाश।

**सर्व-नाशक**—वि०[सं०] सर्वनाश करनेवाला। विध्वंसकारी।

**सर्वनाशन**—पुं०[सं०] सर्वनाश करना।
वि० सर्वनाशक।

**सर्व-नाशी**—वि०=सर्व-नाशक।

**सर्व-निचान**—पुं०[सं०]१. सब का नाश या वध। २. एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

**सर्व-निर्वश (तृ)**—वि०[सं०] सब को अपने नियंत्रण या वश में रखनेवाला।

**सर्वपा**—वि०[सं०] सब कुछ पीनेवाला।
स्त्री० बलि की स्त्री का नाम।

**सर्व-प्रिय**—वि०[सं०] [भाव० सर्वप्रियता] सब को प्यारा। जिसे सब चाहें। जो सब को अच्छा लगे। (पापुलर)

**सर्व-प्रियता**—स्त्री० [सं०]सब का प्रिय होने या अच्छा लगने का भाव। लोक-प्रियता। (पापुलैरिटी)

**सर्वभक्षी**—वि०[सं० सर्वभक्षिन्] [स्त्री० सर्वभक्षिणी] सब कुछ खानेवाला।
पु० अग्नि। आग।

**सर्वभाव**—पु०[सं०]१. संपूर्ण सत्ता। सारा अस्तित्व। २ संपूर्ण आत्मा। विश्वात्मा। ३. पूरी तरह से होनेवाली तुष्टि।

**सर्वभावन**—पु०[सं०] महादेव। शिव।

**सर्व-भोग**—पुं०[सं० ब० स०]प्राचीन भारतीय राजनीति में, ऐसा वैश्य मित्र, जो सेना को तथा भूमि से सहायता करे। (कौ०)

**सर्वभोगी (गिन्)**—वि०[सं०] [स्त्री० सर्वभोगिनी]१. सब का भोग करने और आनन्द लेनेवाला। २ सब कुछ खा लेनेवाला।

**सर्व-मंगला**—वि०[सं० ब० स०] सब प्रकार का मंगल करनेवाली।
स्त्री० १. दुर्गा। २. लक्ष्मी।

**सर्व-मान्य**—वि०[सं०] [भाव० सर्वमान्यता] जिसे सब लोग मानते हों।

**सर्व-मृत्यु**—पुं०[सं०](सब को मूलने या ले जानेवाला) काल या मृत्यु।

**सर्व-मेध**—पुं० [सं०] १. सार्वजनिक सत्र। २. एक प्रकार का सोमयाग।

**सर्वयोनी (निन्)**—पु०[सं० सर्वयोनिन्] शिव का एक नाम।

**सर्वरत्नक**—पु०[सं०] जैन पुराणों की नौ निधियों में से एक।

**सर्व-रस**—पु०[सं०] १. वह जो सभी विद्याओं या विषयों का अच्छा ज्ञाता हो। २. रास। धूना। ३. नमक। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

**सर्व-रसा**—स्त्री०[सं०] वाम की खीलों का मांड़। (वैद्यक)

**सर्वरी**—स्त्री०=शर्वरी (रात)।

**सर्व-रूप**—वि०[सं० ब० स०] जो सब रूपों में हो। सर्वत्रव्यप्त। जो सभी रूपों में वर्तमान या व्याप्त रहता हो।
पु० एक प्रकार की समाधि।

**सर्वलिंगी (गिन्)**—वि०[सं०] [स्त्री० सर्वलिंगिनी] आडंबर रचनेवाला। पाखंडी।
पुं० नास्तिक।

**सर्व-लोकेश**—पु० [सं०] १. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. कृष्ण।

**सर्व-लोचना**—स्त्री०[सं०] एक प्रकार का पौधा जो औषध के काम में आता है।

**सर्वलौह**—पु० [सं०] १ ताबा। ताम्र। २. तीर। बाण।

**सर्व-वर्तुल**—वि०[सं०] (पिंड)जिसका प्रत्येक बिंदु उसके मध्य बिन्दु से समान अन्तर पर हो। गोल। (स्फेरिकल)

**सर्व-वल्लभा**—स्त्री०[सं०] कुलटा या पुश्चली।

**सर्ववाद**—पु०[सं०] सर्ववरवाद।

**सर्ववास**—पु०[सं०] शिव का एक नाम।

**सर्वविद्**—वि०[सं० सर्व √विद् (जानना)+क्विप्] सर्वज्ञ।
पुं० १. ईश्वर। २. जोकार।

**सर्व-वैनाशिक**—वि०[सं०]आत्मा आदि सब को नाशवान् माननेवाला।
पु० बौद्ध।

**सर्व-व्यापक, सर्वव्यापी (पिन्)**—वि० [सं०] जो सब पदार्थों और सब स्थानों में व्याप्त हो।
पु०१ ईश्वर। २ शिव।

**सर्वशः**—अव्य०[सं०] १. पूरा-पूरा। बिलकुल। २ पूरी तरह से। ३. सभी प्रकारों या दृष्टियों से। ४ अपने पूर्ण रूप में। (टोटली)

**सर्व-शक्तिमान् (मत्)**—वि० [सं०] [भाव० सर्वशक्तिमत्ता] [स्त्री० सर्वशक्तिमती] जिसमें सम्पूर्ण शक्ति निहित हो।
पु० ईश्वर का एक नाम। (ओम्नीपोटेन्ट)

**सर्व-शून्यवादी**—पु०[सं०] बौद्ध।

**सर्व-श्री**—वि०[सं०] एक आदरसूचक विशेषण जो अनेक व्यक्तियों के नामों का उल्लेख होने पर उन सबके साथ अलग-अलग श्री न लगाकर उन सब के साथ सामूहिक सूचक के रूप में, आरंभ में लगाया जाता है। जैसे—सर्वश्री सीताराम, भाषोप्रसाद, बालकृष्ण, नारायणदास आदि।

**सर्व-श्रेष्ठ**—वि० [सं०] [भाव० सर्वश्रेष्ठता] सब में बड़ा। सब से बढ़कर।

**सर्व-संहार**—पु०[सं०]१. ऐसा संहार जिसमें कोई न बच निकला हो। (पोग्रोम) २. काल, जो सब का संहार करता है।

**सर्वस्त**†—पुं०=सर्वस्व।

**सर्व-सख**—वि०[सं०] १. जो सब का सखा हो। २. जो सब के साथ हिल-मिल जाता हो। जो सब के साथ मिलता या सख्य-भाव स्थापित कर लेता हो। यारबाश।

**सर्व-सत्ता**—स्त्री० [सं०] [वि० सर्व-सत्ताक] किसी कार्य या विषय से संबंध रखनेवाली सब प्रकार की सत्ताएँ या अधिकार।

**सर्व-सत्ताक**—वि०[सं०]१. सब प्रकार की सत्ताओं से संबंध रखनेवाला। २. सब प्रकार की सत्ताएँ या अधिकार रखनेवाला।

**सर्व-सम्मत**—भू० कृ०[सं०] जो सब की सम्मति से हुआ हो। (यूनैनिमस) जैसे—यह प्रस्ताव सर्व-सम्मत था।

**सर्व-सम्मति**—स्त्री० [सं०] सब की एक सम्मति या राय। मतैक्य। (यूनैनिमिटी)

**सर्वसर**—पुं०[फा०] एक प्रकार का रोग जिसमें मुँह में छाले से पड़ जाते हैं और खुजली तथा पीड़ा होती है।

**सर्व-सहा**—स्त्री०[सं०]पृथ्वी का एक नाम।

**सर्वज्ञाती (त्मिन्)**—पु० [स०] १. ईश्वर। परमात्मा। २. अग्नि। आग। ३. वायु। हवा।

**सर्वज्ञावन**—पुं०[स०]१. सोना। स्वर्ण। २. धन। दौलत। ३. शिव का एक नाम।
वि० सब का सावन।

**सर्व-साधारण**—पुं० [सं०] सभी प्रकार के लोग। जनता। आम लोग। वि०[भाव० सर्व-साधारणता]१ जो सब मे समान रूप से पाया जाता हो। सामान्य। (कामन) २. जो सब लोगो के लिए हो। (पब्लिक)

**सर्व-सामान्य**—वि०[सं०] [भाव० सर्व-सामान्यता]१.जो सब मे समान रूप मे पाया जाय। (कामन) २ जो सब लोगो के लिए हो। (पब्लिक)

**सर्व-सिद्धा**—स्त्री०[सं०] फलित ज्योतिष में, चतुर्थी, नवमी और चतुर्दशी ये तीन तिथियाँ।

**सर्व-सिद्धि**—स्त्री०[स०]१ सब प्रकार की इच्छाओ तथा कार्यों की सिद्धि होना। २. बेल का पेड़ और फल।

**सर्व-सोख**—वि[स० सर्व+हिं० सोखना]सब कुछ सोख लेने, निगल जाने या ले लेनेवाला। उदा०—सत्यानासी जुद्ध कालहूँ सर्व-सोख सा।—रत्ना०।

**सर्वस्तोम**—पु०[स०] एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

**सर्वस्व**—पु०[स०]१. किसी की दृष्टि से वह सारी सपत्ति जिसका वह स्वामी हो। जैसे—लड़के की पढाई मे उसने सर्वस्व गँवा दिया। २ अमूल्य तथा महत्त्वपूर्ण पदार्थ। जैसे—यही लड़का उस बुढ़िया का सर्वस्व था।

**सर्वस्व-संधि**—स्त्री०[सं०] प्राचीन भारतीय राजनीति मे, शत्रु को अपना सर्वस्व देकर उससे की जानेवाली सधि।

**सर्वस्वाहा**—स्त्री० दे० 'सर्वाहा'।

**सर्वस्वी (स्विन्)**—पु०[स०] [स्त्री० सर्वस्विनी] नापित पिता और गोप माता से उत्पन्न एक सकर जाति। (ब्रह्म-वैवर्त्त पुराण)

**सर्वहर**—वि०[स०]१ सब कुछ हर लेनेवाला।
पु० १. यमराज। २. काल। मृत्यु। ३ शिव। ४. वह जो किसी की समस्त सम्पत्ति का उत्तराधिकारी हो।

**सर्वहारा**—वि०[स० सर्व+हरण; बगला से गृहीत]१. जिसका सब कुछ हरण कर लिया गया हो। २ जो अपना सब कुछ खो या गँवा चुका हो।
पु०१. वह जो अपना सर्वस्व गँवाकर कगाल हो गया हो। २. आधुनिक राजनीति में, समाज का वह परम निर्धन व्यक्ति या वर्ग जो केवल मेहनत-मजदूरी करके ही निर्वाह करता हो। (प्रॉलिटेरियट)

**सर्वहारी (रिन्)**—वि०[स०] [स्त्री० सर्वहारिणी] सब कुछ हरण कर लेनेवाला।

**सर्वांग**—पु०[सं०]१. सब अग। समस्त अवयव। २. विशेषत. शरीर के सभी अग। ३. समूह। ३. सभी अंगों का समूह। शरीर। ४ सभी वेदांग। ५. शिव।

**सर्वांगपूर्ण**—वि०[सं०] अपने सब अगो या अवयवो से युक्त।

**सर्वांगिक**—वि० [सं० सर्वाङ्ग+ठन्-इक] १. सब अगों से सबद्ध। २. सब अगों मे होनेवाला।

**सर्वांगीण**—वि०[सं० सर्वाङ्ग+ख—ईन]१ जो सभी अंगों से युक्त हो। २. सभी अगों से संबंध रखने या उनमें व्याप्त रहनेवाला।

**सर्वांत**—पु०[स०] सब का अन्त।

**सर्वांतक**—वि० [सं० सर्वांत-कन्] सब का अन्त या नाश करनेवाला।

**सर्वांतरस्थ**—वि०[सं० सर्वांतर √स्था (ठहरना)+कन्] जो सबके अन्दर स्थित हो।
पु० परमात्मा।

**सर्वांतरात्मा (त्मन्)**—पु० [स० ष० त०] ईश्वर।

**सर्वांतर्यामी (मिन्)**—वि०[स०ष०त०] सब के अन्तःकरण मे रहनेवाला।
पु० ईश्वर।

**सर्वांत्य**—पु०[स०] साहित्य में, ऐसा पद्य जिसके चारो चरणों के अन्त्याक्षर एक मे हो।

**सर्वाक्ष**—पु०[स० ब० स०] रुद्राक्ष। शिवाक्ष।

**सर्वाक्षी**—स्त्री०[स० सर्वाक्ष-ङीप्]दुधिया घास। दुढी।

**सर्वाजीव**—वि० [स० ष० त०] सब की जीविका चलानेवाला।
पु० ईश्वर। परमात्मा।

**सर्वाणी**—स्त्री०[स० सर्व-ङीप्—आनुक्]दुर्गा। पार्वती।

**सर्वातिथि**—पु०[स० ब० स०] वह जो सभी अतिथियों का आतिथ्य करता हो।

**सर्वात्मवाद**—पुं०[स०] १. भारतीय दर्शन मे, शंकराचार्य द्वारा प्रतिपादित अद्वैतवाद जिसमे सृष्टि की सभी चीजो को एक ही आत्मा मे युक्त माना गया है। २ आज-कल पाश्चात्य दर्शन के आधार पर माना जानेवाला वह मत या सिद्धान्त कि सृष्टि के सभी पदार्थ आत्मा मे युक्त हैं, भले ही अचेतन या जड पदार्थों की आत्मा सुप्तावस्था मे हो। सर्वेश्वरवाद। (पैनथ्रिइज्म)
**विशेष**—इसमे ईश्वर का कोई पृथक् अस्तित्व या स्वतन्त्र अस्तित्व नही माना जाता, बल्कि यह माना जाता है कि जो कुछ है वह सब ईश्वर की आत्मा या शक्ति से युक्त है और ईश्वर की व्याप्ति सब मे है।

**सर्वात्मवादी**—वि० [स०] सर्वात्मवाद-संबधी। सर्वात्मवाद का।
पुं० वह जो सर्वात्मवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (पैन्थ्रिईट)

**सर्वात्मा (त्मन्)**—पुं०[सं० ष० त०] १ सब को या सारे विश्व की आत्मा। सत्ता। २. परमात्मा। ब्रह्म। ३. शिव। ४. अर्हत्।

**सर्वाधिक**—वि०[स०ष०त०] सख्या मे, सबसे अधिक। जैसे—निर्दल उम्मीदवार को सर्वाधिक मत मिले हैं।

**सर्वाधिकार**—पु०[स०]१ सब कुछ करने का अधिकार। पूर्ण प्रभुत्व। पूरा इख्तियार। २ सभी प्रकार के अधिकार।

**सर्वाधिकारी (रिन्)**—पु०[स० सर्वाधिकार+इनि] वह जिसे सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हो। सबसे बड़ा तथा सब अधिकारियों का अधिकारी।

**सर्वाधिपति**—पु०[स०] [भाव० सर्वाधिपत्य] वह जो सब का अधिपति (प्रधान या स्वामी) हो।

**सर्वाधिपत्य**—पुं०[सं० ष० त०] सब पर होनेवाला आधिपत्य।

**सर्वाध्यक्ष**—पुं०[सं० ष० त०] सब का शासन, निरीक्षण आदि करनेवाला। अधिकारी या स्वामी।

**सर्वापहरण**—पुं०=सर्वापहार।

**सर्वापहार**—पु०[स०]१. किसी के पास जो कुछ हो, वह सब छीन, लूट या ले लेना। २. जितनी बातें कोई पहले कह चुका हो उन सबसे इन्कार कर जाना या मुकर जाना।

**सर्वपिता न्याय**—पु०[सं०] कहावत की तरह का एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब कोई निमंत्रित व्यक्ति सबसे पहले नियत स्थान पर पहुँच जाता है, और तब उसे वहाँ और सब लोगों के आने की प्रतीक्षा करनी पड़ती है।

**सर्वार्च**—पु०[स०]१. सभी प्रकार के अर्घ अर्थात् पदार्थ और योग के विषय। २. फलित ज्योतिष मे, एक प्रकार का मुहूर्त।

**सर्वार्थवाद**—पु०[स०] यह दार्शनिक मत या सिद्धान्त कि अंत में सभी आत्माओं को ईश्वर की कृपा से मोक्ष प्राप्त होगा। (यूनीवर्सलिज्म)

**सर्वार्थ-साधन**—पु०[सं०] सभी प्रकार के प्रयोजन सिद्ध करना या होना। सारे मतलब पूरे करना या होना।

**सर्वार्थ-सिद्धि**—पु०[स०]१. सब प्रकार के अर्थों के प्राप्ति या सिद्धि। २ जैनों के अनुसार सबसे ऊपर का अर्थात् स्वर्गों के ऊपर का लोक। ३. गौतम बुद्ध।

**सर्वासर**—पु०[स० ब० स०] आधी रात।

**सर्वास्तु**—पु०[स० ब० स०] सूर्य की एक किरण का नाम।

**सर्वावासी (सिन्)**—वि०[स०] सब मे तथा सब स्थानों पर वास करने वाला।

पु० ईश्वर।

**सर्वाशय**—वि०[सं०] जो सबका आधार या आश्रय हो।

पु० शिव।

**सर्वाशी (शिन्)**—वि०[स०] [स्त्री० सर्वाशिनी] सब कुछ खानेवाला। जो खाने मे किसी पदार्थ का परहेज न करता हो।

**सर्वाश्रय**—वि० [सं० ब० स०] सब को आश्रय देनेवाला।

पु० शिव।

**सर्वास्तिवाद**—पु०[स०] १. एक प्रकार का दार्शनिक सिद्धान्त जिसमे यह माना जाता है कि संसार की सभी वस्तुओं की सत्ता या अस्तित्व है वे असार नही हैं। २. बौद्ध दर्शन के वैभाषिक सिद्धान्तों के चार भेदों मे से एक जिसके प्रवर्तक गौतम बुद्ध के पुत्र राहुल कहे जाते है।

**सर्वास्तिवादी (दिन्)**—वि०[स०] सर्वास्तिवाद सम्बन्धी।

पु० १. सर्वास्तिवाद का अनुयायी। २. बौद्ध।

**सर्वास्त्र**—वि०[स०] सब प्रकार के अस्त्रों से सज्जित।

पु० सब प्रकार के अस्त्र।

**सर्वास्था**—स्त्री०[स० ब० स०] जैनों की सोलह विद्या देवियों मे से एक।

**सर्वीय**—वि०[स० सर्व+छ—ईय]१. सबसे संबंध रखनेवाला। सार्विक। २. सब मे समान रूप से होनेवाला।

**सर्वेक्षक**—पु०[स०] सर्वेक्षण करनेवाला। (सर्वेयर)

**सर्वेक्षण**—पु०[स० सर्व+ईक्षण] [भू०कृ० सर्वेक्षित, वि० सर्वेक्ष्य]१. किसी विषय के सही तथ्यों की जानकारी के लिए उस विषय के सब अंगों का किया जानेवाला अधिकारिक निरीक्षण। जैसे—भूमि-सर्वेक्षण। २. कोई ऐसा परिवर्तन या विवेचन जिसमें किसी विषय के सब अंगों का ध्यान रखा गया हो। (सर्वे)

**सर्वेश**—पुं०=सर्वेश्वर।

**सर्वेश्वर**—पुं०[सं० ष० स०]१. सब का स्वामी या मालिक। २. ईश्वर। ३. चक्रवर्ती राजा। ४. एक प्रकार की ओषधि।

**सर्वेश्वरवाद**—पुं०[सं०] दार्शनिक क्षेत्र का वह मत या सिद्धान्त कि संसार के सभी तत्त्वों, पदार्थों और प्राणियों मे ईश्वर वर्तमान है, और ईश्वर ही सब कुछ है, अर्थात् ईश्वर ही जगत् और जगत् ही ईश्वर है। सर्वात्मवाद। (पैन्थिइज्म)

**सर्वेश्वरवादी**—वि०[सं०] सर्वेश्वरवाद-संबंधी।

पुं० वह जो सर्वेश्वरवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (पैन्थिइस्ट)

**सर्व-सर्वा**—पु०[स० सर्वं सर्वः ]किसी घर, दफ्तर, संस्था आदि में वह व्यक्ति जिसे सब प्रकार के काम करने का अधिकार होता है। पूरा मालिक।

**सर्वोच्च**—वि०[स० सर्व+उच्च] [भाव० सर्वोच्चता] १. जो सबसे ऊंचा और बढ़कर हो। सर्वोपरि। २. जो पद, मर्यादा आदि के विचार से और सबसे बढ़कर हो और दूसरों को अपने अधीन रखता हो। (सुप्रीम) जैसे—सर्वोच्च न्यायालय।

**सर्वोच्च न्यायालय**—पु०[स० सर्वोच्च पच० त०; न्यायालय कर्म० स०]१. किसी देश या राज्य का वह सबसे बड़ा न्यायालय जिसके अधीन वहाँ की सारी न्यायपालिका हो और जिसमें वहाँ के उच्च न्यायालयों के निर्णयों आदि के संबंध मे अंतिम रूप से पुनर्विचार होता हो। उच्चतम न्यायालय। (सुप्रीम कोर्ट) २. भारतीय संघ का प्रधान न्यायालय।

**सर्वोत्तम**—वि०[स० पंच त०] सबसे अच्छा। सर्वश्रेष्ठ।

**सर्वोदय**—पु०[स० सर्व+उदय] १. सभी लोगों का उदय अर्थात् उन्नति। २ भारत की आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि समस्याओं के निराकरण के लिए महात्मा गांधी का चलाया हुआ एक सामूहिक आन्दोलन जो मानव-जीवन के दार्शनिक पक्ष पर आश्रित है और जिसका उद्देश्य समाज को ऐसा रूप देना है जिसमे आर्थिक विषमता, दरिद्रता, शोषण आदि के लिए कोई अवकाश न रहे और सब लोग समान रूप से उन्नत, समृद्ध तथा सुखी हो सकें।

**सर्वोपकारी**—वि०[स० ष० त०] सबका उपकार करनेवाला।

**सर्वोपयोगी**—वि०[स०सर्व+उपयोगी] १. जो सब के लिए उपयोगी हो। २ जो सब लोगों के उपयोग मे आता या आ सकता हो।

**सर्वोपरि**—वि०[स०]१ जो सबसे ऊपर हो। २ जो अधिकार, प्रभाव आदि के विचार से अपने क्षेत्र में सबसे ऊपर और बढ़कर हो। (पैरामाउन्ट) जैसे—सर्वोपरि सत्ता।

**सर्वोपरि सत्ता**—स्त्री० [सं०] सबसे बड़ा या प्रधान सत्ता। (पैरामाउन्ट पावर)

**सर्वोप**—पु०[स० कर्म० स०] १. सर्वांगपूर्ण सेना। २. एक प्रकार का शहद।

**सर्वौषधि**—वि० [स०ब०स०,कर्म० स० वा]जिसमे सब तरह की ओषधियाँ हों।

**सर्वौषध**—स्त्री० [सं०कर्म० स०] आयुर्वेद मे ओषधियों का एक वर्ग जिसके अंतर्गत दस जड़ी-बूटियाँ हैं और जिनका उपयोग कर्मकांडी पूजनों आदि में भी होता है।

**सर्ष**—पु०[स०] १. सरसों। २. सरसों के बराबर तौल या मान। ३. एक प्रकार का विष।

**सर्षप-कंद**—पुं०[स०] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ जहरीली होती है।

**सर्षपक**—पुं०[स० सर्षप+कन्] एक प्रकार का साँप।

**सर्षप नाल**—पुं० [सं०] सरसों का साग।
**सर्षपा**—स्त्री० [सं० सर्षप-टाप्] सफेद सरसों।
**सर्षपाशन**—पुं० [सं०] ष० त० त०, ब० स०] पारस्कर गृह्य-सूत्र के अनुसार असुरों का एक नाग।
**सर्षपिक**—पु०[स० सर्षप+ठक्—इक] सुश्रुत के अनुसार एक प्रकार का बहुत जहरीला कीड़ा जिसके काटने से आदमी मर जाता है।
**सर्षपिका**—स्त्री० [स० सर्षप+कन्—टाप्—इत्व] एक प्रकार का लिंग रोग। २. मसूरिका रोग का एक भेद।
**सर्षपी**—स्त्री०[स० सर्षप-ङीप्] १. अमिया। २. सफेद सरसो। ३ खजन पक्षी। भमोका। ४. एक प्रकार का रोग जिसमें सारे शरीर मे सरसों के समान दाने निकल आते हैं।
**सर्षो**†—स्त्री०=सरसो।
**सर्हद**—स्त्री०=सरहद।
**सर्ज्जक क्षार**—पु०[सर्जिका+हिं० क्षार] कचिया क्षार। काच लवण।
**सर्ज्ज**—पु०[स०] १ जल। पानी। २. सरल वृक्ष। ३. घास-पात मे रहनेवाला बोट नाम का कीड़ा।
**सर्जई**—स्त्री०[स० शल्लकी] १. शल्लकी वृक्ष। चीड़। २. चीड़ का गोद। कुंदुरु।
**सर्जन**†—वि०[स० सलग्न] १. किसी के साथ लगा हुआ। सलग्न। २. जिसके सब अग साथ लगे हों, अलग न किये गये हो। अखडित। ३ समेत। सारा।
**सर्जनक**†—पु०=सलजम।
**सर्जना**—स्त्री०[स० शल्लकी] शलकी। सलई। चीड़।
**सर्जल**—पु०[स० सर्ज=जल] पहाड़ी बरफ का पानी।
वि० सर्जल। लजीला।
**सर्जलज**†—पु०=सलजम।
**सर्जज्ज**—वि०[सं० तृ० त०] १. जिसमे या जिसे लज्जा हो। शर्म और हयावान। लज्जाशील। २. जो शरमा रहा हो।
अव्य०१. लजाते हुए। २. लाज से।
**सर्ज्जत्व**—स्त्री० दे० 'सर्जनत'।
**सर्जना**—अ० [स० शस्य, हिं० सालना का अ०] १ साला जाना। छिदना। बिंदना। २. छेद में डाला या पहनाया जाना।
†पु० लकड़ी में छेद करने का बरमा।
पु०[स०] मोती।
**सर्ज्जन**—पु०[देश०] एक प्रकार की झाड़ी जिसकी टहनियो पर सफेद रोएँ होते हैं। यह वर्षा ऋतु में फूलती है। इसके पत्तों आदि का व्यवहार औषधि रूप मे होता है।
**सर्जब**—वि०[अ० सब्ब] नष्ट। बरबाद।
**सर्जम**†—पु०=शलभ।
**सर्जमा**—पु०[अ० सर्स्मा] कपड़ों पर बेल-बूटे काढ़ने के काम आनेवाला छोने-बाँधी का सुनहला-रुपहला तार। बाबला।
**सर्जवट**†—स्त्री०=सिलवट।
**सर्जवन**—पु०[सं० शाखिपर्ण] सरिवन।
**सर्जवात**—स्त्री०[अ०] १. बरकत। २. अनुग्रह। मेहरबानी। ३. याची। दुर्वचन। (परिशुद्ध और अशब्द)
कि० प्र०—सुनाना।
**सर्ज्जस्वल**—पुं०[अ०] १. बहुमूत्र रोग। २ मधु-प्रमेह नामक रोग।
**सर्जसाना**—अ०[अनु०] १ धीरे-धीरे खुजली होना। सरसराहट होना। गुदगुदी होना। ३. दे० 'सरसराना'।
स०१. खुजलाना। २ गुदगुदाना। ३. दे० 'सरसराना'।
**सर्जसाहट**—स्त्री०[अनु०] १. सलसलाने की क्रिया या भाव। २. खुजली। ३. गुदगुदी। ४. सलसल होनेवाला शब्द।
**सर्जली**—स्त्री०[देश०] भाजूफल की जाति का एक प्रकार का बड़ा वृक्ष। बूक।
**सर्जव**—स्त्री०[हिं० साला] सबध के विचार से साले अर्थात् पत्नी के भाई की स्त्री।
**सर्जाई**—स्त्री०[स० शलाका] १. काठ, धातु आदि की छोटा, पतला छड़। जैसे—सुरमा लगाने की सलाई, घाव मे दवा भरने की सलाई, भौंजा, गुलबन्द आदि बुनने की सलाई।
**मुहा०—(आँखों में) सलाई फेरना**=अधा करना। (मध्य-युग में, दण्ड रूप मे अपराधी की आँखो मे गरम-गरम सलाई फेरी जाती थी।
२ दीया सलाई।
†स्त्री०=सलई।
**सर्जाक***—स्त्री०[फा० सलाख] १. सलाख। छड़। २. बाण। तीर।
**सर्जाकना**†—स०[हिं० सलाक] १ सलाख या शलाका से किसी चीज पर निशान करना या लकीर खीचना। २ किसी की आँखो मे तपी हुई सलाई फेरकर उसे अधा करना।
**सर्जाख**—स्त्री०[फा० सलाख, मि० स० शलाका] १ धातु का छड़। शलाका। सलाई। २. रेखा। लकीर।
**सर्जाखना**†—स०=सलाकना।
**सर्जाजीत**†—स्त्री०=शिलाजीत।
**सर्जाद**—पु०[अ० सैलाद] १. एक प्रकार के कद के पत्ते जो पाचक होने के कारण कच्चे खाये जाते हैं। २. कद, फल आदि जो बिना पकाये हुए, केवल कच्चे काटकर भोजन के साथ, प्राय. नमक, मिर्च, खटाई आदि मिलाकर खाये जायँ। जैसे—खीरे, टमाटर, मूली आदि का सलाद।
**सर्जादत**—स्त्री०[अ०] १. कठोरता। २. व्यवहार आदि की कठोरता। ३. वीरता। ४. प्रताप।
**सर्जम**—पु०[अ०] अभिवादन का एक मुसलमानी ढंग जिसमे दाहिने हाथ की उँगलियाँ जोड़कर माथे तक ले जाई जाती हैं।
कि० प्र०—करना।—लेना।
**मुहा०—(अमुक को) सलाम देना**=अमुक से हमारा सलाम कहो। (आशय यह होता है कि ये आकर हमसे मिलें।) **सलाम फेरना**= (क) नमाज खतम करने के बाद ईश्वर को अत मे फिर से नमस्कार करना। (ख) रोष आदि के कारण किसी का सलाम स्वीकार न करना। **किसी को दूर से सलाम करना**=किसी बुरी वस्तु या व्यक्ति से बिलकुल अलग या बहुत दूर रहना। जैसे—उनको तो हम दूर से ही सलाम करते हैं, अर्थात् उनके पास जाना पसन्द नही करते।
**सलाम अलैकुम**—अव्य० [अ०] एक अरबी पद जिसका प्रयोग किसी को सलाम करने के समय किया जाता है, और जिसका अर्थ है—आप सकुशल और सुखी रहें। (मुसल०)

**सलाम-कराई**—स्त्री० [अ० सलाम+हिं० कराई] १. सलाम करने की क्रिया या भाव। २. वह धन जो वूल्हे या दुल्हिन को ससुराल में बड़े लोगों को सलाम करने पर मिलता है।

**सलामत**—वि० [अ०] १ (व्यक्ति) जो जीवित तथा कुशलपूर्वक हो। २. (वस्तु) जो रक्षित या अच्छी दशा में हो। ३ जो कायम या स्थिर हो।
क्रि० वि० कुशलतापूर्वक।

**सलामती**—स्त्री० [अ०] १. सलामत होने की अवस्था या भाव। २ कुशल। क्षेम। ३ अच्छी तन्दुरुस्ती। उत्तम स्वास्थ्य। जैसे—किसी की सलामती मनाना।
**पद—सलामती से**=सकुशल। कुशलतापूर्वक।

**सलामी**—स्त्री० [अ०] १ सलाम करने की क्रिया या भाव। २ विशेषत सिपाहियों, सैनिकों, स्काउटों आदि का एक साथ किसी बड़े अधिकारी, अभ्यागत आदि का अभिवादन करना।
क्रि० प्र०—देना।—लेना।
३. किसी बड़े आदमी के आगमन के समय उसके स्वागतार्थ बंदूकों, तोपों आदि का दागा जाना।
**मुहा०—सलामी उतारना** = किसी महान् व्यक्ति के स्वागतार्थ तोपों को दागना।
४ वह धन जो मकान, दूकान आदि को किराये पर देने के समय पगड़ी के रूप में लिया जाता है।
वि० १. ढालुआँ। जैसे—सलामी छत। २. गाव-दुम।

**सलार**†—पु० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

**सलासत**—स्त्री० [अ०] १. भाषा के सलीस अर्थात् सरल और सुबोध होने की अवस्था या भाव। २. कोमलता। मृदुता। ३. सफाई।

**सलाह**—स्त्री० [अ०] १. अच्छापन। भलाई। जैसे—खैर-सलाह=कुशल-मगल। २. यह बतलाना कि अमुक कार्य इस प्रकार होना चाहिए। सम्मति। राय। ३. आपस में होनेवाला विचार-विमर्श। परामर्श। ४. भविष्य के संबध में होनेवाला विचार। इरादा। ५ राय। सम्मति।
वि० [?] जो गिनती में दस हो। (दलाल)

**सलाहकार**—पु० [अ० सलाह+फा० कार (प्रत्य०)] वह जो सलाह या परामर्श देता हो। राय देनेवाला। परामर्शदाता।

**सलाहियत**—स्त्री० [अ०] १. भलाई। २. योग्यता। ३. नरमी। ४. व्यवहार आदि की कोमलता।

**सलाही**†—पु०=सलाहकार।

**सलि**†—स्त्री०=सर (चिता)।

**सलिता**†—स्त्री०=सरिता (नदी)।

**सलिल**—पुं० [सं०] जल। पानी।

**सलिल कुंतल**—पुं० [सं०] शैवल। सिवार।

**सलिल क्रिया**—स्त्री० [सं०] १. जलांजलि। उदक क्रिया। २. पितरों का तर्पण।

**सलिल-चर**—पुं० [सं०] जल-जीव।

**सलिलज**—वि० [सं० सलिल√जन् (उत्पन्न करना)+ड] जो जल से उत्पन्न हो। जल-जात।
पुं० कमल।

**सलिलद**—वि० [सं०] १. सलिल देनेवाला। जल देनेवाला। जो जल दे। २. पितरों का तर्पण करनेवाला।
पु० बादल। मेघ।

**सलिल-निधि**—पु० [स०] १ जलनिधि। समुद्र। २. सरसरी छद का एक नाम।

**सलिलपति**—पुं० [स०] १ जल के अधिष्ठाता देवता वरुण। २ समुद्र।

**सलिल-योनि**—वि० [सं०] जो जल से उत्पन्न हो, जल-जात।
पुं०=ब्रह्मा।

**सलिलराज**—पुं० [स०]=सलिल-पति।

**सलिल-स्वलचर**—वि० [सं०] (जतु या प्राणी) जो जल और स्थल दोनों में विचरण करता हो। जैसे—हस, सोंप आदि।

**सलिलांजलि**—स्त्री० [स० ष० त०]=जलांजलि।

**सलिलाकर**—पु० [स० ष० त०] समुद्र। सागर।

**सलिलाधिप**—पु० [स० ष० त०] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण।

**सलिलार्णव**—पु० [स०] समुद्र। सागर।

**सलिलालय**—पु० [स० ष० त०] समुद्र। सागर।

**सलिलाशन**—वि० [स० ब० स०] जिसका आहार मात्र जल हो।
जल पीकर जीवित रहनेवाला।

**सलिलाशय**—पु० [स० ष० त०] जलाशय।

**सलिलाहार**—वि०=सलिलाशन।

**सलिलेंद्र**—पु० [सं० ष० त०] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण।

**सलिलेचन**—पु० [स० ब० स०] बाड़वानल।

**सलिलेचर**—पुं० [स० सलिले √चर (चरना)+ट-अलुक] जल-जीव। जलचर।

**सलिलेश**—पुं० [स० ष० त०] जल के अधिष्ठाता देवता, वरुण।

**सलिलेशय**—वि० [सं० सलिले√शी (सोना)+अच्—अलुक] जल मे सोनेवाला। जलशायी।
पु० विष्णु।

**सलिलेश्वर**—पुं० [स० ष० त०] वरुण।

**सलिलोद्भव**—वि० [सं० ब० स०] जो जल में या जल से उत्पन्न हो।
पु० कमल।

**सलिलोदन**—पु० [स० मध्यम० स०] जल में पकाया हुआ अन्न।

**सलीका**—पुं० [अ० सलीकः] १. कार्य संपादन करने का सामान्य तथा स्वाभाविक ढंग। प्रचलित या रूढ़ फलतः अच्छा या मान्य ढंग। २. शऊर। तमीज। ३. योग्यता। लियाकत। ४. आचरण और व्यवहार। ५. सभ्यता और शिष्टता।

**सलीकेदार**—वि० [अ० सलीका+फा० मंद (प्रत्य०)] १. जिसे अच्छा सलीका आता हो। शऊरदार। २. शिष्ट और सभ्य।

**सलीता**—पुं० [स० सत्तलिका=मोटी चादर] मारकीन की तरह का परन्तु उससे अधिक मोटा तथा मजबूत कपड़ा, जिसकी चादरें, चाँदनियाँ आदि बनाई जाती हैं।

**सलीब**—स्त्री० [अ०] सूली।

**सलीबी**—वि० [अ०] सलीब सम्बन्धी। सलीब का।

पु० ईसाई, जो उस मूली को अपना पवित्र धर्म-चिह्न मानते हैं, जिसपर ईसा मसीह टाँगे गये थे।

**सलीम**—वि० [अ०] १. ठीक। दुरुस्त। २. सच्चा और सीधा। सरल-हृदय।

**सलीमशाही**—पु०[अ०+फा०] पुरानी चाल का एक प्रकार का बढ़िया जूता।

**सलीमी**—स्त्री०[अ० सलीम] पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा।

**सलील**—वि० [स०] १. क्रीड़ाशील। लीला-रत। २ खिलाड़ी। ३ किसी प्रकार की भाव-भंगी से युक्त।
अव्य० क्रीडा के रूप में या क्रीडा करते हुए। उदा०—दुर्भर की गर्भ-मधुर पीड़ा, झेलती जिसे जननी खलील।—प्रसाद।

**सलील**—वि० [अ०] [भाव० सलासत] १. सहज। सुगम। आसान। २. सम-तल। हमवार। ३ भाषा या लेख जो सरल और शिष्टोचित या शिष्ट-सम्मत हो।

**सलूक**—पु० [अ०] १ तौर। तरीका। ढंग। (क्व०) २. किसी के प्रति किया जानेवाला व्यवहार। जैसे—इनकी का पति से सलूक अच्छा नहीं है। ३ लोगों के साथ रखा जानेवाला मेल-मिलाप। ४ किसी का किया जानेवाला उपकार। नेकी। भलाई।

**सलूका**—पु०[फा० अनूक] पूरी बाँह की कुरती या बडी।

**सलूग**—पु०[स० त० त०] एक प्रकार का बहुत छोटा कीड़ा। २. जूँ। लीख।

**सलूना**—पु० [स० स+लवण] पकाई या बनाई हुई तरकारी। सालन। (पश्चिम)। जैसे—आलू का सलूना।
वि०=सलोना।

**सलूनी**—स्त्री० [हिं० स+लोन=नमक] चूका शाक। चुक्रिका।

**सलेक**—पु०[स०] तैत्तिरीय संहिता के अनुसार एक आदित्य का नाम।

**सलेमशाही**†—स्त्री०=सलीमशाही।

**सलोआ**†—वि०[स० सलिल+हिं० ऐला (प्रत्य०)] १ जिसमें पानी गिला हो। २ इतना चिकना कि उस पर पैर या हाथ फिसले।

**सलोक**—पु०[स० त० त० ब० स० वा] १ नगर। शहर। २. नगर निवासी। नागरिक।
†पु०=श्लोक।

**सलोकता**—स्त्री०[सं० सलोक+तल्—टाप्]=सालोक्य।

**सलोदा**†—स्त्री०=सिलबट।

**सलोतर**†—पुं०=शालिहोत्र।

**सलोतरी**†—पुं०=शालिहोत्री।

**सलोन**†—वि०=सलोना।

**सलोना**—वि०[हिं० स+लोन=नमक] [स्त्री० सलोनी] १. (पदार्थ) जिसमें नमक पड़ा हो। नमक मिला हुआ। नमकीन। २ (व्यक्ति का रूप) जिसमें लावण्य अर्थात् कोमल और मोहक सौन्दर्य हो। स्त्री० [फा० साले नौ=नव वर्ष।] श्रावण शुक्ला पूर्णिमा अर्थात् रक्षा-बंधन का दिन और त्यौहार। राखी पूनो।
**विशेष**—फगली सन् का आरंभ इसी के दूसरे दिन से होता है; इसलिए भारत के मुसलमान शासक इसे सालेनौ (नव-वर्ष) कहते थे। इसी 'साले-नौ' का अपभ्रष्ट रूप सलोना' है।

**सलोनापन**—पुं०[हिं० सलोना+पन (प्रत्य०)] सलोना होने की अवस्था, गुण या भाव।

**सलोनी**—स्त्री० [सं० श्रावणी] श्रावणी पूर्णिमा को होनेवाला रक्षा-बन्धन का नामक त्योहार।

**सल्तनत**—स्त्री० [अ०] १. सुल्तान के अधीन रहनेवाला राज्य। बादशाहत। साम्राज्य। २. शासन। हुकूमत। ३. सुख और सुभीते की स्थिति। जैसे—तुम्हारी तो किसी तरह सल्तनत ही नहीं बैठती।
क्रि० प्र०—जमना।—बैठना।

**सल्ल**—पुं०[सं० सरल] सरल वृक्ष। सरल द्रुम।
†पु०[स० शल्य] काँटा।

**सल्लकी**—स्त्री०[सं० शल्लकी] १ शल्लकी वृक्ष। सलई। २ सलई का गोंद। कुंदर।

**सल्लम**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का मोटा कपड़ा। गजी। गढ़ा।

**सल्लाह**†—स्त्री०=सलाह।

**सल्ली**—स्त्री०[सं० शल्लकी] शल्लकी। सलई।

**सल्लू**—पु०[हिं० सलना] चमड़े की डोरी।
वि०[?] बेलकूफ। मूर्ख।

**सल्लेअला**—अव्य[अ०] वाहवाह। बहुत खूब। सुभानअल्ला। (मुसल०)

**सल्व**—पुं०=शल्व।

**सव**—पुं० [स०√सू (उत्पन्न होना)+अच्] १. जल। पानी। २ हुकों का रस। ३ यज्ञ। ४ सूर्य। ५ चन्द्रमा। ६ औलाद। संतान।
वि० अज्ञ। ना-समझ।
†पुं०=शव (लाश)।
**मुहा०—सवसाजना**=चिता के ऊपर शव रखना।

**सवत (ति)**†—स्त्री०=सौत।

**सवतिया**†—वि०=सौतिया।

**स-वत्स**—वि०[स०] [स्त्री० स-वत्सा] जिसके साथ उसका बच्चा भी हो। जैसे—स-वत्सा गौ।

**सवन**—पु० [सं०] १ बच्चा जनना। प्रसव। २ यज्ञ। ३. यज्ञ के स्नान समय का सोम-पान। ४. यज्ञ के उपरांत होनेवाला स्नान। अवभृत स्नान। ५. चन्द्रमा। ६. अग्नि। ७ स्वायंभुव मनु के एक पुत्र। ८. रोहित मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक ऋषि का नाम।
†पुं०[?] बतख की जाति का एक प्रकार का जल-पक्षी। कलहंस।

**सवनिक**—वि०[स०] सवन-संबंधी। सवन का।

**सवय**—वि०[सं०] [स्त्री० सवया] १. जिसका वय किसी के वय के समान हो। २. समान वय वाले। समवयस्क।
पुं० सखा।

**सवयस्क**—वि०, पुं०=सवय।

**सवर**—पुं०[स० सव√रा (लेना)+क] १ जल। पानी। २. शिव का एक नाम।

**सवर्ण**--वि०[सं० ब० स०] १. (वे) जो वर्ण या रूप-रंग के विचार से एक ही प्रकार के हों। सदृश। समान। २. (वे) जो एक ही जाति या वर्ण के हों। ३. (शब्द जिनका उच्चारण तो भिन्न हो परन्तु) वर्ण या अक्षर एक-से हों। जैसे--फा० कौल और स० कौल सवर्ण शब्द हैं।

**सवर्ण-विवाह**--पुं०[सं०]१. हिंदुओं में वह विवाह जिसमें कन्या और वर दोनों एक ही वर्ण या जाति के हों। २. साधारणतः अपनी जाति, धर्म, वर्ण या समाज में किया जानेवाला विवाह। 'अंतर्जातीय विवाह' से भिन्न। (एन्डोगैमी)

**सवर्णा**--स्त्री०[स०] सूर्य की पत्नी छाया का नाम।

**सवाँग**†--पु०[हिं० स्वाँग]१. कृत्रिम वेष। भेस। स्वाँग। (देखें) २. व्यक्तियों के लिए संख्या सूचक शब्द। (पूरब) जैसे--चार सवाँग तो घर के ही हो जायँगे।

**सवाँगना**†--अ० [हिं० स्वाँग] १. नकली भेस बनाना। २ किसी का रूप धारण करना। रूप भरना।

**सवा**--वि०[स० सप्त-पाद] पूरा और एक चौथाई। संपूर्ण और एक अंश का चतुर्थांश जो अंकों में इस प्रकार लिखा जाता है--४½।

**सवाई**--स्त्री० [हिं० सवा+ई (प्रत्य०)] ऋण का वह प्रकार जिसमें मूलधन का चतुर्थांश ब्याज के रूप में देना पड़ता है।

†वि०=सवाया।

पु०[?] मध्ययुग में, जयपुर (राजस्थान) के महाराजाओं की उपाधि। जैसे--सवाई मानसिंह।

स्त्री०[?] मूत्रेंद्रिय का एक प्रकार का रोग।

**सवाद**†--पु०=स्वाद।

**सवादिक**†--वि०=स्वादिष्ठ।

**सवाब**--पु०[अ०] १. शुभ कृत्य का फल जो स्वर्ग में पहुँचने पर मिलता है। पुण्य। २. नेकी। भलाई। ३. सत्कर्मों का पर-लोक में मिलनेवाला शुभ फल।

**सवाया**--वि०[हिं० सवा] [स्त्री० सवाई]१. पूरे से एक चौथाई से अधिक । सवा गुना। २. किसी की तुलना में कुछ अधिक या बढ़ा हुआ। उदा०--निज से भी पर-दुःख देखकर स्वयं सवाया।--मैथिलीशरण। ३ पहले जितना रहा हो, उससे भी कुछ और अधिक। उदा० --राणा राव छत्र कौं व्याएँ करि करि प्रीति सवाई। --कबीर।

**सवार**--पु०[फा०]१. वह जो किसी सवारी या यान पर आरूढ़ हो। जैसे --साँवरो सवार। २. वह जो सवारी करने में कुशल हो। जैसे--घुड़सवार। ३. वह जो किसी दूसरे के ऊपर चढ़ा या बैठा हो और उसे किसी रूप में दबाये हुए हो।

**मुहा०--(किसी पर या किसी के सिर पर) सवार होना**=किसी को पूर्ण रूप से अभिभूत करके (क) उसे अपने वश में रखना अथवा (ख) उसे अपने विचारों के अनुसार चलाना।

**सवारी**--स्त्री०[फा०]१. सवार होने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. कोई ऐसा साधन जिस पर सवार होकर लोग एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाते हों। यान। जैसे--गाड़ी, घोड़ा, नाव, मोटर, रेल, हवाई जहाज आदि। ३. वह जो उक्त पर चढ़कर कहीं जाता हो। उक्त पर सवार होनेवाला व्यक्ति। ४. कोई ऐसा जुलूस जिसमें कोई बहुत बड़ा व्यक्ति, कोई धर्मग्रन्थ या देवता की मूर्ति किसी यान पर ले जाई जाती हो। जैसे--राष्ट्रपति की सवारी, रामजी या श्री मनवान् की सवारी।

क्रि० प्र०--निकलना।--निकालना।

५. कुश्ती में, एक प्रकार का पेंच जिसमें विपक्षी को जमीन पर गिराके उसकी पीठ पर बैठकर उसे चित करने का प्रयत्न करते हैं।

क्रि० प्र०--कसना।

६. संगीत या प्रसंग के लिए स्वरों पर चढ़ने की क्रिया। (बाजाफ़े)

क्रि० प्र०--कसना।--गाँठना।

**सवारे**†--अव्य० [स० सप्त+वेला] १ प्रातःकाल। सवेरे। २. समय से कुछ पहले। जल्दी। ३. आनेवाले दूसरे दिन। कल के दिन।

**सवारे***--अव्य०=सवारे।

**सवाल**--पु०[अ०] [बहु० सवालात] १ पूछने की क्रिया या भाव। २. वह बात जो पूछी जाय। प्रश्न।

**पद--सवाल-जवाब**।

३. गणित में, कोई ऐसी समस्या जिसका उत्तर निकालना या निराकरण करना हो। प्रश्न। (वर्वेदचन, उक्त सभी अर्थों में)। ४ कुछ पाने या माँगने के लिए की जानेवाली प्रार्थना। जैसे--भिखारिन ने कुत्ते सिंह के सामने दाँत निकालकर सवाल किया।--उग्र। ५. वह प्रार्थना-पत्र जो न्यायालय में किसी पर कोई अभियोग चलाने के लिए न्यायाधीश के सामने उपस्थित किया जाता है।

**मुहा०--(किसी पर) सवाल देना**=(क) नालिश करना। (ख) फरियाद करना।

६. प्रार्थना। विनती।

**सवाल-जवाब**--पुं० [अ०]१. प्रश्न और उसका उत्तर। २. तर्क-वितर्क। वाद-विवाद। बहस। जैसे--बड़ों से सवाल-जवाब करना ठीक नहीं। ३ झगड़ा। तकरार। हुज्जत।

**सवालिया**--वि०[अ० सवालिय]१. सवाल के रूप में होनेवाला। २. (व्याकरण में, वाक्य) जो पाठक या श्रोता से उत्तर की अपेक्षा रखता हो। प्रश्नात्मक।

**सवाली**--वि० [हिं० सवाल]=सवालिया।

पु० वह जिसने कोई सवाल अर्थात् प्रार्थना या याचना की हो।

**सविकल्प**--वि०[सं०]१. जिसमें किसी प्रकार का विकल्प हो। २. जिसके विषय में कोई सन्देह हो। सदिग्ध। ३. जो स्वयं कुछ निश्चय न कर सकने के कारण किसी प्रश्न के दोनों पक्षों को थोड़ा बहुत ठीक समझता हो। ४. समाधि का एक प्रकार। ५. वेदांत में ज्ञाता और ज्ञेय के भेद का ज्ञान।

**स-विचार**--पु० [सं० अव्य० स०] चार प्रकार की विकल्प समाधियों में से एक प्रकार की समाधि।

क्रि० वि० विचारपूर्वक। सोच-समझकर।

**सवितर्क**--पुं०[स० ब० स०] चार प्रकार की सविकल्प समाधियों में से एक प्रकार की समाधि।

क्रि० वि० तर्क-वितर्कपूर्वक।

**सविता**--पु०[सं०√सू (प्राण प्रदान करना)+तृच्] १. सूर्य। दिवाकर। २. बारह आदित्यों के आधार पर १२ की संख्या का वाचक शब्द।

३. आक। मदार। ४. कुछ लाली लिए हुए सफेद रंग की एक धातु जो प्रायः निकल और लोहे के साथ पाई जाती है। (कोबाल्ट)

**सविता-सवन**—पुं० [सं० सवितृ+सवन, ष० त०] सूर्य के पुत्र हिरण्यपाणि।

**सविता-देवता**—पुं० [सं० सवितृ देवता, ब० स०] हस्त नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता सूर्य्य माने जाते हैं।

**सविता-सुत**—पुं० [सं० सवितृसुत, ष० त०] सूर्य्य के पुत्र, हिरण्यपाणि।

**सवितासुत**—पुं० [सं० सवितृसुत ष० त०] सूर्य के पुत्र, शनैश्चर।

**सवित्र**—पुं०[सं० सू (प्रसव करना)+इत्र] प्रसव करना। लड़का जनना।

**सवित्रिय**—वि० [सं० सवित्+ष—इय] सविता-संबंधी। सविता या सूर्य का।

**सवित्री**—स्त्री०[सं० सवित्र— ङीप्] १. प्रसव करानेवाली धाई। धात्री। धाई। २. माता। माँ। ३. गाय। गौ।

**सविद**—वि०[सं० अव्य० स०] विद्वान्। पंडित।

**स-विधि**—वि०[सं० त० त०] विधि युक्त।
अव्य० विधि के अनुसार। विधिपूर्वक।

**सविनय**—वि० [सं०] १. विनय से पूर्ण। २. विनम्र। ३ शिष्टतापूर्ण या शिष्ट।
अव्य० विनय या नम्रतापूर्वक।

**सविनय अवज्ञा**—स्त्री०[सं०] नम्रता या भद्रतापूर्वक राज्य या प्रधान अधिकारी की किसी ऐसी व्यवस्था या आज्ञा को न मानना जो अन्यायमूलक प्रतीत हो और ऐसी अवस्था में राज्य या अधिकारी की ओर से होनेवाले पीडन तथा कारावास आदि को धीरतापूर्वक सहन करना। (सिविल डिस्ओबीडिएंस)

**सविभास**—पुं० [स० त० स०] सूर्य का एक नाम।

**सविभ्रम**—वि०[स० अव्य० स०] विभ्रम अर्थात् क्रीड़ा, प्रणय, चेष्टा, विलास आदि से युक्त।
क्रि० वि० विभ्रमपूर्वक।

**सविभ्रमा**—स्त्री०=विचित्र विभ्रमा (नायिका)।

**सविशेष**—वि०[स० तृ० त०] किसी विशेष गुण, बात या विशिष्टता से युक्त। 'निर्विशेष' का विपर्याय। जैसे—ब्रह्म का सविशेष रूप।

**सविस्तार**—अव्य०[सं०] विस्तारपूर्वक।

**सवेरा**—पुं०[हिं० स+स० वेला]१. प्रातःकाल। सुबह। २ निश्चित समय के पूर्व का समय। (व्य०)

**सवेरे**—अव्य०[हिं० सवेरा] १. प्रातःकाल के समय। २ नियत या साधारण समय से कुछ पहले। जैसे—न सोना सवेरे, न उठना सवेरे। —गालिब।

**सवैया**—पुं०[हिं० सवा+ऐया (प्रत्य०)]१. तौलने का वह बाट जो सवा सेर का हो। २. वह पहाड़ा जिसमें एक, दो, तीन आदि संख्याओं का सवाया मान बतलाया जाता है। ३. हिन्दी छन्दशास्त्र में, वर्णिक वृत्तों के चरणवाले प्रायः सभी जाति-छंद आ जाते हैं। इन छंदों में लय की प्रधानता होती है, अतः इन्हें पढ़ते समय कुछ स्थलों पर गुरु मात्राओं का ह्रस्व मात्राओं के समान उच्चारण करना पड़ता है। इसके १४ भेद कहे गये हैं, दुर्मिल, मत्तिरा मानिनी, सुन्दरी आदि।

**सव्य**—वि०[सं०]१ वाम। बायाँ। २. दक्षिण। दाहिना। ३. प्रतिकूल। विपरीत।
पुं०१. यज्ञोपवीत। जनेऊ। २. विष्णु। ३ अंगिरा के पुत्र, एक ऋषि जो ऋग्वेद के कई मंत्रों के द्रष्टा थे। ४ चन्द्र या सूर्य ग्रहण के दस प्रकार के ग्रासों में से एक प्रकार का ग्रास।

**सव्यसाची (चिन्)**—पुं०[सं०]१. अर्जुन का एक नाम। २ अर्जुन वृक्ष। ३. दे० 'सव्यसाची'।

**सव्यसिंचार**—पुं०[सं०] भारतीय न्यायशास्त्र में, ५ प्रकार के हेत्वाभासों में से एक।

**सव्यसाची (चिन्)**—पुं०[सं०] अर्जुन (पांडव)।
वि० जो दाहिने और बायें दोनों हाथों से सब काम समान रूप से कर सकता हो।

**सशंक**—वि०[सं०]१. जिसके मन में कोई शंका हो। २ शंका के कारण जो भयभीत हो रहा हो। ३ शंका या भय उत्पन्न करनेवाला।

**सशंकना**—अ० [सं० शंक+हिं० ना (प्रत्य०)]१ शंकायुक्त होना। शंकित होना। २. भयभीत होना। डरना।

**सशस्त्र**—वि० [सं०]१. जिसके पास शस्त्र हो या हों। २. शस्त्र या शस्त्रों से लैस या शस्त्रधारी। जैसे—सशस्त्र बल।
क्रि० वि० शस्त्र या शस्त्रों से सज्जित होकर।

**सशस्त्र तटस्थता**—स्त्री०[सं०] आधुनिक राजनीति में, किसी राष्ट्र अथवा राष्ट्रों से बिलकुल अलग या तटस्थ रहने पर भी अस्त्र-शस्त्रों से इतने सज्जित रहना है कि किसी ओर से आक्रमण होने पर तत्काल अपना बचाव या रक्षा कर सकें। (आर्म्ड न्यूट्रैलिटी)

**सशेष**—वि०[सं० श० त०]१. जिसका कुछ अंश अभी बचा हो। २. (काम) जिसका कुछ अंश अभी पूरा होने का बाकी हो। अधूरा।

**सषुन**†—पुं०=सखुन (उक्ति)।

**स-श्रम**—वि०[स० त० त०] थका हुआ। श्रमित।
क्रि० वि० परिश्रमपूर्वक।

**सशंकना***—अ०=सशंकना।

**सस**†—पुं०[सं० शश]१. खरगोश। २. चंद्रमा। शशि।
†पुं०[सं० शशक] खरगोश।
†पु०[सं० शस्य]१ अनाज। धान्य। २. खेती-बारी। ३ फसल। ४. हरियाली।

**ससक**—पुं०[सं० शशक]१. खरगोश। २. रहस्य सम्प्रदाय में, (क) जीव या आत्मा। (ख) ओंकार शब्द।

**ससकना**†—अ०१.=ससंकना। २.=सिसकना।

**ससत**†—अव्य०[सं० स+सत्य] सचमुच। वस्तुतः। उदा०—साखियात गुणमै ससत।—प्रिथिराज।

**स-सत्त्व**—वि०[सं० त० त०] [स्त्री० ससत्त्वा] १. सत्त्व से युक्त। २. जीवन से युक्त। जानदार। ३. जीव से युक्त। जैसे—ससत्त्वा स्त्री=गर्भवती स्त्री।

**ससन**—पु०[स० √सस् (हिंसा करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० ससित] यज्ञ के बलि-पशु का हनन। बलिदान।

†१०[सं० श्वसन] १. साँस। २ उच्छ्वास।

**ससना**—स०[सं० ससन] १. यज्ञ मे पशु का बलिदान करना। २. मार डालना। वध करना।
अ० १. बलिदान होना। २. मारा जाना।
†अ०[सं० श्वसन] साँस लेना।
†अ० १.=ससकना। २.=सिसकना।

**ससना**†—पुं०[स० शशि] चन्द्रमा। उदा०—प्रगट परिपूरन ससमा। —भगवत रसिक।

**ससरना**—अ०[सं० सरण] सरकना। खिसकना।

**ससराना**†—स०[हिं० ससना का प्रे०] १. सशंकित करना। २ भयभीत करना। डरवाना।
स०[सं० ससन] हत्या कराना।

**ससहर**†—पु०[स० शशधर] चन्द्रमा।

**ससा**†—पुं०[स० शशा] खरगोश। शशक।
पु०=शशि (चन्द्रमा)।

**ससाना**†—स० [सं० सशक] १. सशंकित करना। २. बेचैन या विकल करना।
स०[स० शासन] १. दड देना। २. कष्ट देना।
†अ० १.=ससकना। २.=सिसकना।

**ससि***—पुं०=शशि (चद्रमा)।

**ससिअर***—पु०=शशिधर (चन्द्रमा)। दा०—अनु धनि तूँ ससिअर निसि माहाँ।—जायसी।

**ससि-गोती**—पुं०[स० शशि+गोत्र] मोती। उदा०—हार लागि बेधा ससि-गोती।—नूर मुहम्मद।

**ससिता**†—स्त्री०=शिशुता (बचपन)।

**ससिधर**†—पु०=शशधर (चद्रमा)।

**ससिभान**†—पु०=शशुभानु (चंद्रमा)।

**ससिहर**†—पु०=शशिधर (चन्द्रमा)।

**ससी**†—पु०=शशि (चन्द्रमा)।

**ससीम**—वि०[सं० स+सीमा] [भाव० ससीमता] जिसकी सीमा हो या नियत हो। सीमित। (लिमिटेड)

**ससुर**—पुं०[सं० श्वसुर] १. विवाहित व्यक्ति के संबंध के विचार से उसकी पत्नी (या पति) का पिता। २. संबंध के विचार से ससुर के समान और उसके स्थान पर होनेवाला व्यक्ति। जैसे—चचिया ससुर, ममिया ससुर।

**ससुरा**—पुं० [सं० श्वसुर] १. श्वसुर। ससुर। २. एक प्रकार की गाली। जैसे—उस ससुरे को मैं क्या समझता हूँ। ३. दे० 'ससुराल'।

**ससुरा**†—स्त्री०=ससुराल।

**ससुराल**—स्त्री० [सं० श्वसुरालय] १. श्वसुर का घर। पति या पत्नी के पिता का घर। २. लाक्षणिक अर्थ में, ऐसा घर जहाँ पहुँचने पर पका-पकाया भोजन ठाठ से मिलता हो। ३. कारागृह। जेलखाना। (जुंडे और बदमाश)
**क०—ससुराल का कुत्ता**=वह दामाद जो ससुराल में पड़ा रहता हो।

**ससा**—वि०[सं० स्वल्प] [स्त्री० सस्ती] १. (पदार्थ) जिसका मल्य अपेक्षाकृत साधारण से कुछ कम हो। २. (प्रयार्थ) भिन्न के रूप में पहले की अपेक्षा कभी हो। जिसका भाव उतर गया हो। ३. जो बहुत ही थोड़े व्यय से अथवा सहज मे मिल जाय। जैसे—सस्ता यश। ४ जिसका महत्त्व बहुत ही कम या प्रायः नही के समान हो। जैसे—सस्ता अनुवाद, सस्ता परिहास।

**ससता**—अ०[हिं० सस्ता+ना (प्रत्य०)] किसी वस्तु का कम दाम पर बिकना। सस्ता हो जाना।
स० भाव कम करना। सस्ता करना।

**ससती**—स्त्री०[हिं० सस्ता+ई (प्रत्य०)] १. सस्ते होने की अवस्था या भाव। सस्तापन। २. ऐसा समय जब सब चीजें अपेक्षया कम मूल्य पर बिकती हो।
वि० स्त्री० हिं० 'सस्ता' का स्त्री०।

**सत्पत्नीक**—वि०[स० त० त०] जिसके साथ उसकी पत्नी या स्त्री हो। सपत्नीक।

**सस्मित**—वि० [स०] मुस्कराहट या हँसी से युक्त। जैसे—सस्मित मुखारविंद।
क्रि० वि० मुस्कराते हुए।

**सस्य**—पुं०[सं० शस्य]† अनाज। धान्य। २. पौधों, वृक्षो आदि का उत्पादन। ३ शस्त्र। हथियार। ४. विशेषता। गुण।

**सस्यक**—पु० [स० सस्य+कन्] १. बृहत्सहिता के अनुसार एक प्रकार की मणि। २ असि। तलवार। ३ शस्य। धान्य। ४. साधु व्यक्ति।
वि० गुणो या विशेषताओ से युक्त।

**सस्येष्टा**—स्त्री०[स० अव्य० स०] ऐसी कन्या जिसका हाल ही मे कौमार्य भग हुआ हो। दूषित कन्या।

**सहँगा***—वि०[हिं० महँगा का अनु०] [स्त्री० सहँगी, भाव० सहँगापन] सस्ता। उदा०—मनि, मानिक महँगे किए सहँगे तृन जल नाज। —तुलसी।

**सह**—अव्य०[सं०]सहित। समेत।
वि०१. उपस्थित। विद्यमान। २. सदृश। समान। ३. सक्षम। समर्थ। ४. सहनशील। सहिष्णु। ५ (पदार्थ) जो किसी प्रकार का प्रभाव सहन करने मे यथेष्ट समर्थ हो। (प्रूफ) जैसे—अग्निसह-तापसह आदि।
उप० कुछ विशेषणो, संज्ञाओ आदि के पहले यह उपसर्ग के रूप में लगकर यह अर्थ देता है—किसी के साथ में; जैसे—सहगामी, सहचर, सहजात आदि।
पुं० १. सादृश्य। समानता। बराबरी। २. क्षमता। सामर्थ्य। ३. अगहन का महीना। मार्गशीर्ष। ५. पाशु लवण। ५. शिव का एक नाम। स्त्री० समृद्धि।

**सह-अपराधी**—पुं०[सं०] वह जो किसी अपराधी के साथ रहकर उसके अपराध मे सहायक हुआ हो। अभिषंगी। (एकम्प्लिस)

**सह-अस्तित्व**—पुं०[सं०]=सह-जीवन।

**सहकर्मी (र्मिन्)**—वि०[स०]१. (वह) जो किसी के साथ काम करता हो। किसी के साथ मिलकर काम करनेवाला। २. किसी कार्यालय, संस्था आदि मे जो साथ-साथ मिलकर काम करते हो। (कॉलीग, उक्त दोनों अर्थों में)

**सहकार**—पुं०[सं०]१. सुगंधित पदार्थ। २. आम का वृक्ष। ३ एक दूसरे के कार्यों मे सहयोग करना। ४. औरों के साथ मिलकर काम करने की वृत्ति, क्रिया या भाव। सहयोग। (कोऑपरेशन)५. दे० 'सहकर्मी'।

**सहकारता**—स्त्री० [सं० सहकार+तल्—टाप्]=सहकारिता।

**सहकार-समिति**—स्त्री०[सं०] वह समिति या संस्था जो कुछ विशेष प्रकार के उपभोक्ता, व्यवसायी आदि आपस मे मिलकर सब के हित के लिए बनाते हैं और जिसके द्वारा वे कुछ चीजें बनाने-बेचने आदि की व्यवस्था करते हैं। (कोआपरेटिव सोसाइटी)

**सहकारिता**—स्त्री०[सं०]१. साथ मिलाकर काम करना। सहकारी-होना। (कोआपरेशन) २. सहकारी या सहायक होने का भाव। ३. मदद। सहायता।

**सहकारी**—वि० [सं०] १. सहकार-संबंधी। सहकार का। २. सहकारिता संबंधी।३. (व्यक्ति) जो साथ-साथ काम करते हो तथा एक दूसरे के कामों मे सहायता करते हों। ४. सहायक। मददगार।

**सहगण**—पुं०[सं०]=सभ्य।

**सहगमन**—पुं०[सं० सह√गम् (जाना)+ल्युट्—अन्] १. किसी के साथ जाने की क्रिया। २. मृत पति के शव के साथ पत्नी का चिता पर चढ़ना।

**सहगमन**†—पुं०=सहगमन।

**सहगान**—पुं०[सं०] १. कई आदमियों का साथ मिलकर गाना। २. ऐसा गाना जो कई आदमी मिलकर गाते हों। संवेतगान। (कोरस)

**सहगामिनी**—स्त्री० [सं० सह√ गम् (जाना)+णिनि—ङीप्]१. वह स्त्री जो मृत पति के शव के साथ सती हो। पति की मृत्यु पर उसके साथ जल मरनेवाली स्त्री। २. पत्नी। ४. सहचरी।

**सहगामी (मिन्)**—वि० [सं० सह√ गम् (जाना)+णिनि] [स्त्री० सहगामिनी]१. साथ चलनेवाला। साथी। २ अनुयायी।

**सहगौन**†—पुं० =सहगमन।

**सहचर**—वि०[सं०] [स्त्री० सहचरी]१ साथ-साथ चलनेवाला। २. उठने-बैठने, चलने-फिरने आदि मे प्रायः साथ रहनेवाला। साथी। पुं० १. मित्र। २ सेवक।

**सहचरी**—स्त्री०[सं० सह√ चर् (चलना)+ङीप्]१ सहचर का स्त्री० रूप। २. साथ रहनेवाली स्त्री। सखी। ३. पत्नी। भार्या।

**सहचार**—पुं०[स०]१. दो या अधिक व्यक्तियों का साथ चलना। २. वह अवस्था जिसमे व्यक्तियों, विचारों आदि मे पूरी पूरी संगति होती है। (एसोसिएशन)३. सहचर। साथी।

**सहचार उपाधि लक्षणा**—स्त्री०[सं० सहचार-उपाधि-ब० स० लक्षणा मध्यम० स०] साहित्य में, एक प्रकार की लक्षणा जिसमे जड़ सहचारी के कहने से चेतन सहचारी का बोध होता है।

**सहचारिणी**—वि०[स०]१. साथ मे रहनेवाली। सहचरी। २. पत्नी। भार्या।

**सहचारिता**—स्त्री०[सं० सहचारि—तल्—टाप्] सहचारी होने की अवस्था, गुण या भाव।

**सहचारित्व**—पुं०[सं० सहचारि+त्व]=सहचारिता।

**सहचारी (रिन्)**—वि० [सं०] [स्त्री० सहचारिणी] साथ चलने या रहनेवाला।

पुं०१. सखी। साथी। २ नौकर। सेवक।

**सहज**—वि० [सं०] [स्त्री० सहजा, भाव० सहजता]१.(गुण, तत्त्व, पदार्थ या प्राणी) जो किसी के साथ उत्पन्न हुआ हो। जैसे—सहज कवच, सहज ज्ञान आदि। २. प्राकृतिक। स्वाभाविक। ३. जो सभी दृष्टियों से ठीक और पूरा हो। पूरी तरह और निर्विवाद रूप से ठीक और आदर्श। उदा०—मिलहिं सो बर सहज सुन्दर साँवरो।—तुलसी। ४ जिसके प्रतिपादन या संपादन मे कोई कठिनता न हो। सरल। सुगम। ५. जन्म से प्रकृति के साथ उत्पन्न होने अथवा अपने साधारण रूप मे रहनेवाला। प्रकृत। (नार्मल) ६. मामूली। साधारण।

पुं० १. सगा भाई। सहोदर। २. प्रकृति। स्वभाव। ३ बौद्धों के अनुसार वह मानसिक स्थिति जो प्रज्ञा और उपाय के योग से उत्पन्न होती है। ४ फलित ज्योतिष मे, जन्म-लग्न से तृतीय स्थान जिसमें भाइयों, बहनों आदि का विचार किया जाता है। ५ दे० 'सहज-ज्ञान'।

**सहज-ज्ञान**—पुं०[सं०] १ ऐसा ज्ञान जो जीव या प्राणी के जन्म के साथ ही उत्पन्न हुआ हो। प्रकृति-दत्त ज्ञान। सहज-बुद्धि। (इंस्टिंक्ट) २. वह ज्ञान या चेतना-शक्ति जिससे आत्मा सदा आनन्द और शांति से सम्पन्न रहती है।

**सहजता**—स्त्री०[सं० सहज+तल्—टाप्]१. सहज होने की अवस्था, गुण या भाव। २. सरलता। आसानी।

**सहजधारी(धारिन्)**—पुं० [सं०] सिक्ख संप्रदाय में, वह व्यक्ति जो सिर तथा दाढ़ी के बाल न बढ़ाता हो पर फिर भी गुरु ग्रंथ साहब का अनुयायी समझा जाता हो।

**सहज-ध्यान**—पुं०[स०] सहज समाधि। (दे०)

**सहजन**†—पुं०=सहिजन।

**सहजन्मा (न्मन्)**†—वि० [स०] १. किसी के साथ एक ही गर्भ से उत्पन्न। सहोदर। सगा (भाई आदि)। २. यमज (सन्तान)।

**सहजपंथ**—पुं०[हिं० सहज+पंथ] पूर्वी भारत मे प्रचलित एक गौड़ीय वैष्णव सम्प्रदाय जो बौद्ध तथा हिन्दू तांत्रिकों से प्रभावित है।

**विशेष**—यह सम्प्रदाय मूलतः बौद्धों के सहजयान का एक विकृत रूप है।

**सहज-बुद्धि**—स्त्री०[सं०] वह बुद्धि या समझ जो जीवों या प्राणियों में जन्म-जात होती है; और जिसके फलस्वरूप वे विशिष्ट अवस्थाओं में आप ही आप कुछ विशिष्ट प्रकार के आचरण और व्यवहार करते हैं। (इंस्टिंक्ट) जैसे—स्तनपायी जंतुओं का अपने बच्चों को दूध पिलाना; चिड़ियों का घोंसला बनाना आदि।

**सहज-मार्ग**—पुं०[स०] सहजयान वाली साधना का प्रकार।

**सहज-मित्र**—पुं०[स० कर्म० स०] ऐसे व्यक्ति जो प्रायः तथा स्वभावतः मित्रता का भाव रखते हों और जिनसे किसी प्रकार के अनिष्ट की आशंका न की जाती हो।

**विशेष**—हमारे शास्त्रों में भानजा, मौसेरा भाई और फुफेरा भाई सहज-मित्र और चैमात्रेय तथा चचेरे भाई सहज-बंधु कहे गये हैं।

**सहज-यान**—पुं०[स०] एक बौद्ध संप्रदाय जो हठयोग के कुछ सिद्धान्तों के अनुसार धार्मिक साधना करता था।

**सहज-यानी**—वि०[सं० सहज-यान] सहज-यान संबंधी। सहज-यान का। पु० वह जो सहज-यान संप्रदाय का अनुयायी हो।

**सहज-योग**—पुं०[सं०] ईश्वर के नाम के जप के रूप मे की जानेवाली साधना, जिसमे हठयोग आदि की कष्टदायक क्रियाओं की आवश्यकता नही होती।

**सहजवाद**—पुं०[स०] सहज पथ का मत या सिद्धान्त।

**सहजवादी**—वि०[स०] सहजवाद-सम्बन्धी। सहजवाद का। पु० वह जो सहजवाद का अनुयायी हो।

**सहज-शत्रु**—पुं०[स० कर्म० स०] सौतेला या चचेरा भाई जो संपत्ति के लिए प्रायः झगडा करता है। (शास्त्र)

**सहज-शून्य**—पुं०[सं०] ऐसी स्थिति जिसमें किसी प्रकार का परिज्ञान, भावना या विकार नाम को भी न रह जाय।

**सहज-समाधि**—स्त्री०[स०]१. बौद्ध तान्त्रिको और हठयोगियो के अनुसार वह स्थिति जिसमे मनुष्य समस्त बाह्य आडंबरों से रहित होकर सरलतापूर्वक जीवन निर्वाह करता है। २. वह अवस्था जिसमे मनुष्य बिना समाधि लगाये जीते जी ईश्वर का साक्षात्कार कर लेता है। जीवन्मुक्ति।

**सहज-सुंदरी**—स्त्री०[स०] बौद्ध तंत्र शास्त्र मे, चाडाली या मृगुष्मा नाड़ी का वह रूप जो उसे अपनी ऊर्ध्व गति से डोम्बी में पहुँचाने पर प्राप्त होता है।

**सहजस्थान**—पुं०[स०] जन्म-कुडली मे का तीसरा घर, जिससे इस बात का विचार होता है कि किसी के कितने भाई या बहनें होंगी।

**सहजात**—वि०[स०] १. जो किसी के साथ उत्पन्न हुआ हो। २. (परस्पर वे) जो एक ही माता-पिता से उत्पन्न हुए हों। (कान्जेनिटल) ३ यमज। पुं० सगा भाई। सहोदर।

**सहजाधिनाथ**—पुं०[स०] जन्म-कुंडली के सहज स्थान (तीसरे घर) का अधिपति ग्रह।

**सहजानंद**—पुं०[स० सहज+आनन्द] वह आनन्द या सुख जो योगियों को सहजावस्था मे पहुँच जाने पर मिलता है।

**सहजानि**—स्त्री० [सं०] पत्नी। स्त्री। जोरू।

**सहजारि**—पुं०[स०]=सहज-शत्रु।

**सहजार्श**—पुं०[सं०] ऐसा अर्श या बवासीर (रोग) जिसके मस्से कठोर पीले रंग के और अंदर की ओर मुँहवाले हो। (वैद्यक)

**सहजावस्था**—स्त्री०[सं० सहज+अवस्था] योग-साधन में, मन की वह अवस्था जिसमें वह पूर्ण रूप से सहज-शून्य (देखे) या इच्छा, ज्ञान, विकार आदि से बिलकुल रहित हो जाता है।

**सहजिया**—पुं० दे० 'सहजपंथी'।

**सहजीवन**—पुं०[सं०]१. सब देशों और राष्ट्रो के लोगों का आपस में मिल-जुलकर शांतिपूर्वक रहना और युद्ध आदि से बचना। (को-एगिजस्टेन्स) २. वनस्पति विज्ञान मे, अलग-अलग प्रकार के दो पेड़-पौधों (या एक पौधे और एक जीव) का इस प्रकार सटकर या एक दूसरे पर आश्रित और स्थित होकर रहना कि दोनों का एक दूसरे से पोषण हो। (सिम्बायोसिस) जैसे—गुँगा और उसके साथ रहनेवाला समुद्री जीव।

**सहजीवी (विन्)**—वि०[स०] किसी के साथ रहकर जीवन बितानेवाला। विशेष दे० 'सहजीवन'।

**सहजोद्य**—पुं०[सं०] 'सहजाधिनाथ'। (दे०)

**सहजै***—अव्य०[हिं० सहज] बहुत सहज में। आसानी से। अनायास।

**सहजो**†—पुं०=शहद।

†वि०=सस्ता।

**सहत-महत**—पुं०=आवस्ति।

**सहतरा**—पु०[फा० शाहतरह] पित्त पापड़ा। पर्पट।

**सहता**—वि०[हिं० सहना] [स्त्री० सहती]१ जो सहज में सहन किया जा सके। २. जो इतना गरम हो कि सहन किया जा सके। जैसे—सहते पानी से स्नान करना।

†वि०=सस्ता। उदा०—आँखिया के आँचर सूझत नाहीं, दरबा ले सहता बा धीउ।—बिरहा।

**सहताना***—अ०[हिं० सहता=सस्ता] सस्ता होना।

अ०=गुस्ताना।

**सहतूत**†—पुं०=शहतूत।

**सहत्व**—पुं०[स० √सह् (सहन करना)+अच्—त्व]१. सह अर्थात् साथ होने की अवस्था या भाव। २. एकता। ३. मेलजोल।

**सह-दान**—पु०[स० कर्म० स०] बहुत से देवताओं के उद्देश्य से एक या एक में किया जानेवाला दान।

†स्त्री०=सहदानी।

**सहदानी**—स्त्री०[स० सज्ञान] स्मृति-चिह्न। निशानी। यादगार।

उदा०—रैदास मत मिले मोहि सतगु दीन्ही सुरत सहदानी।—मीराँ।

**सहदूल**†—पुं०=शार्दूल (सिंह)।

**सहदेई**—स्त्री०[सं० सहदेवा] क्षुप जाति की एक पहाड़ी वनस्पति जिसका उपयोग ओषधि के रूप मे होता है।

**सहदेव**—पु०[स० ब० स०, त० त० वा]१. राजा पाडु के पाँच पुत्रो मे से सबसे छोटे पुत्र का नाम। २. जरासन्ध का एक पुत्र।

**सहदेवा**—स्त्री० [सं० सहदेव—टाप्] १. सहदेई। पीतपुष्पी। २. बरियारा। बला। ३ अनन्तमूल। ४. दंतीत्पल। ५ प्रियगु। ६. नील। ७. सर्पाक्षी। ८ सोनबली। ९. भागवत के अनुसार देवक की कन्या और वसुदेव की पत्नी का नाम।

**सहदेवी**—स्त्री०[सं० सह√दिव् (पूजन करना आदि)+अच्—ङीप्] १. सहदेई। पीतपुष्पी। २. सर्पाक्षी। सरहटी। ३. महानीली। ४ प्रियगु।

**सहदेवीगण**—पु०[सं० ष० त०] वैद्यक में, सहदेई, बला, शतमूली, शतावर, कुमारी, गुडूच, सिंही और व्याघ्री आदि ओषधियो का वर्ग जिनसे देव-प्रतिमाओं को स्नान कराया जाता है।

**सहदेवा**†—वि०[?] स्वतन्त्र। उदा०—तासौं नेह जो दिढ़ करै थिर आछहि सहदेव।—जायसी।

**सह-धर्मचारिणी**—स्त्री०[स०] पत्नी। भार्या।

**सह-धर्मिणी**—स्त्री०[सं०] पत्नी। भार्या।

**सह-धर्मी (र्मिन्)**—वि०[सं०] [स्त्री० सहधर्मिणी]१ पारस्परिक दृष्टि से वे जो एक ही धर्म के अनुयायी हों। २. साथ मिलकर धर्म का आचरण या पालन करनेवाले।

**सहन**--पु०[सं०]१. सहने की क्रिया या भाव। २ आज्ञा या निर्णय मानकर उसका पालन करना। (एडाइड) ३. क्षमा। तितिक्षा।
पु०[अ०]१. घर के बीच का खुला भाग। आंगन। चौक। २ घर के सामने का और उससे सलग्न खुला भाग। ३. एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। ४. गजी या गाढ़ा नाम का मोटा सूती कपड़ा।

**सहनक**--स्त्री०[अ०]१. एक प्रकार की छिछली रकाबी जिसका व्यवहार प्राय. मुसलमान लोग करते हैं। तबक। २. बीबी फातिमा की निमाज या फातिहा। (मुसल०)

**सहनची**--स्त्री०[अ० सहन से स्त्री० अल्पा० फा०] सहन या आंगन के इधर-उधर वाली छोटी कोठरी।

**सहनशील**--वि०[ब० स०] [भाव० सहनशीलता] (व्यक्ति) जिसमे अत्याचार, दुर्व्यवहार, विपत्ति आदि सहन करने की स्वाभाविक क्षमता या प्रवृत्ति हो।

**सहनशीलता**--स्त्री०[स० सहनशील+तल्--टाप्] १. सहनशील होने की अवस्था, गुण या भाव। २. सतोष। सब्र।

**सहना**--स०[स० सहन]१ कोई अनुचित, अप्रिय अथवा हानिकारक बात होने पर अथवा कष्ट आदि आने पर किसी कारण-वश चुपचाप अपने ऊपर लेना।
**विशेष**--यद्यपि झेलना, भोगना और सहना बहुत कुछ समानार्थक समझे जाते हैं, परन्तु तीनो मे कुछ अन्तर है। झेलना का प्रयोग ऐसी विकट परिस्थितियो के प्रसग मे होता है जिनमे मनुष्य को अध्यवसाय और साहस से काम लेना पड़ता है। जैसे--विधवा माता ने अनेक कष्ट झेलकर लड़के को अच्छी शिक्षा दिलाई थी। भोगना का प्रयोग कष्ट या दु.ख के सिवा प्रसन्नता या सुख के प्रसगो मे भी होता है,पर कष्टप्रद प्रसगो मे मुख्य भाव यह रहता है कि आया हुआ कष्ट या सकट दूर करने में हम असमर्थ हैं; इसी लिए विवशतापूर्वक सिर झुकाकर उसका भोग करते हैं। परन्तु सहना मुख्यत मनुष्य की शक्ति पर आश्रित होता है। जैसे--इतना घाटा तो हम सहज मे सह लेगे। सहना मे मुख्य भाव यह है कि हम व्यर्थ की झझट नही बढाना चाहते, मन की शांति नष्ट नहीं करना चाहते अथवा जानबूझकर उपेक्षा कर रहे हैं। जैसे--हम उनके सब अत्याचार चुपचाप सहते रहे।
२ अपने ऊपर कोई भार लेकर उसका निर्वाह या वहन करना। ३. किसी प्रकार का परिणाम या फल अपने ऊपर लेना।
अ० किसी वस्तु का ग्रहण, धारण या भोग करने पर उसका सह्य या अच्छी तरह फलदायक सिद्ध होना। जैसे--(क) यह नीलम मुझे सह गया है। (ख) वह मकान उन्हें नही सहा।
अ०हि० 'रहना' के साथ प्रयुक्त होनेवाला उसका अनुकरण-वाचक शब्द। जैसे--कही या किसी के साथ रहना-सहना।
†पु० साहनी।

**सहनाइना**--स्त्री०[फा० शहनाई+आयन (प्रत्य०)] शहनाई बजानेवाली स्त्री।

**सहनाई**†--स्त्री०=शहनाई।

**सहनीय**--वि०[स०√सह् (सहन करना)+अनीयर्] जो सहा जा सके। सहे जाने योग्य। सह्य।

**सहपति**--पु०[सं०] ब्रह्मा का एक नाम।

**सहपाठी (ठिन्)**--पु०[स०] [स्त्री० सहपाठिन्] १ वे जो साथ साथ किसी गुरु से या किसी विद्यालय में पढते हो या पढ़े हो। सहाध्यायी। २. जो एक ही कक्षा मे पढ़ते हो। (क्लासफ़ैलो; उक्त दोनो अर्थों में)

**सहपिंड**--ग०[स० त० त०] कर्मकाड मे, सपिंड नाम की क्रिया।

**सहबा**--स्त्री० [अ०] एक प्रकार की अगूरी शराब।

**सह-भागिनी**--वि०[स०सह-भागी का स्त्री०]समानता के भाव से किसी कार्य मे सम्मिलित होनेवाली। 'सह-भागी' का स्त्री०।
स्त्री० पत्नी। जोरू।

**सह-भागी (गिन्)**--वि०[स०] [स्त्री० सहभागिनी] समानता के भाव से किसी काम मे किसी के साथ सम्मिलित होनेवाला।
पु०१ वह जो व्यापार आदि मे किसी के साथ समानता के भाव से सम्मिलित हो और हानि-लाभ आदि का समान रूप से भागी हो। हिस्सेदार। (को-पार्टनर, शेयरर) २ धर्म-शास्त्रीय या विधिक दृष्टि से वह जो किसी सपत्ति का आंशिक रूप से उत्तराधिकारी हो। (को-पार्टनर)

**सहभावी**--वि०[स० सहभाविन्] सहवर्ती।
पु०१ सगा भाई। सहोदर। २. सहचर। साथी। ३ मददगार। सहायक।

**सहभू**--वि०[स०] साथ साथ उत्पन्न। सहजात।

**सह-भोज, सह-भोजन**--पु०[स०]बहुत से लोगो का साथ बैठकर भोजन करना। ज्योनार।

**सहभोजी (जिन्)**--वि० [स०] (वे) जो एक साथ बैठकर खाते हो। साथ भोजन करनेवाले।

**सहम**--पु०[फा०] १ डर। भय। खौफ़। २. लिहाज। ३ सकोच।

**सह-मत**--वि०[स०] [भाव० सहमति]१ जिसका मत किसी दूसरे के साथ मिलता हो। २. जो दूसरे के मत को ठीक मानकर उसकी पुष्टि करता हो। ३ जो दूसरे से बातचीत, सधि, समझौता आदि करने के लिए तैयार हो।

**सहमति**--स्त्री०[स०]१ किसी बात या विषय मे किसी से सहमत होने की अवस्था या भाव। २ किसी बात या विषय मे कुछ या बहुत मे लो ो का आपस मे एक-मत होना। (एग्रीमेन्ट)

**सहमना**--अ० [फा० सहम+हि० ना (प्रत्य०)] भय खाना। भयभीत होना। डरना।
सयो० क्रि०--जाना।--पड़ना।

**सह-मरण**--पु०[स० त० त०] [भू० कृ० सह-मृत]१ साथ साथ मरना। २ पत्नी का पति के शव के साथ सती होना।

**सह-मात**†--स्त्री०=शह-मात।

**सहमाना**--स०[हि० सहमना का स०]ऐसा काम करना जिससे कोई सहम जाय। भयभीत करना। डराना।
सयो० क्रि०--देना।

**सहमृता**--वि०[स० ब० स०] (स्त्री) जो अपने पति के शव के साथ सती हो जाय।

**सह-युक्त**--पू० कृ०[स०]१. किसी के साथ मे मिला या लगा हुआ। २. जिसका साथ युक्त किया गया हो।

**सहयोग**—पुं० [सं० सह√ युज् (मिलना)+घञ्] १. किसी के काम मे योग देकर या सम्मिलित होकर उसका हाथ बटाना। किसी के साथ मिलकर उसके काम में सहायता करना। २ बहुत से लोगों के साथ मिलकर कोई काम करने का भाव। (कोआपरेशन) ३. सहायता।

**सहयोगवाद**—पुं० [सं० सहयोग√ वद् (कहना)+घञ्] ब्रिटिश शासन में, राजनीतिक क्षेत्र मे सरकार से सहयोग अर्थात् उसके साथ मिलकर काम करने का सिद्धान्त। 'असहयोगवाद' का विपर्याय।

**सहयोगवादी**—वि० [सं० सहयोग√ वद् (कहना)+णिनि] सहयोगवाद-सम्बन्धी।

पु० सहयोगवाद का अनुयायी।

**सहयोगिता**—स्त्री० [सं० सहयोग+इतच्—टाप्-वृद्धि, मध्यम० स०] सहयोगी होने की अवस्था या भाव।

**सहयोगी**—वि० [सं० सह√युज् (मिलना) णिनि, सहयोग+इन् वा] १. सहयोग करने अर्थात् काम मे साथ देनेवाला। साथ काम करनेवाला। २. समकालीन। ३. समवयस्क।

पुं० १ वह जो किसी के साथ मिलकर कोई काम करता हो। सहयोग करनेवाला। साथ काम करनेवाला। २. ब्रिटिश शासन मे, असहयोग आन्दोलन छिड़ने पर सब कामों मे सरकार के साथ मिले रहने, उसकी काउंसिलों आदि मे सम्मिलित होने और उसके पद तथा उपाधियाँ आदि ग्रहण करनेवाला व्यक्ति।

**सहयोजन**—पुं० [सं०] [भू० कृ० सहयुक्त, सहयोजित] १. साथ मिलाने की क्रिया या भाव। २. आज-कल वह रीति या व्यवस्था जिसके अनुसार किसी सभा या समिति के सदस्य ऐसे लोगों को भी अपने साथ सम्मिलित कर लेते हैं, जो मूलत निर्वाचित नहीं हुए होते; फिर भी जिनसे काम मे सहायता मिलने की आशा होती है। (कोआप्शन)

**सहयोजित**—भू० कृ० [सं०] आज-कल किसी सभा-समिति का वह सदस्य जिसे दूसरे सदस्यों ने अपनी सहायता के लिए चुनकर अपने साथ सम्मिलित किया हो। (कोआप्टेड)

**सहर**—स्त्री० [अ०] प्रातःकाल। सवेरा।

पु० १.=शहर। २ =सिहोर (वृक्ष)।

पुं० [अ० सेहर?] जादू। टोना।

**सहर-गही**—स्त्री० [अ०सहर+फा० गह] वह आहार जो किसी दिन निर्जल व्रत रखने से पूर्व प्रातः किया जाता है। सरघी।

**विशेष**—मुसलमान 'रोजे' में और सधवा हिंदू स्त्रियाँ तीज, करवा-चौथ आदि के दिन सहरगही खाती हैं।

**सहरना**†—अ० =सिहरना।

**सहरा**—पुं० [अ०] [वि० सहराई] १. बन। जंगल। २. चित्रकला में, चित्र की वह भूमिका जिसमें जंगल, पहाड़ आदि दिखाये गये हों। ३. खियाहगोश नामक जंतु।

†पुं०दे० 'सेहरा'।

**सहराई**—वि० [अ०] १. जंगली। वन्य। २. लाक्षणिक अर्थ में, पागल।

**सहराज्य**—पुं० [सं०] ऐसा राज्य जिसमें दो या अधिक प्रभुसत्ताएँ अथवा राष्ट्र मिलकर शासन करते हों। (कन्डोमीनियम)

**सहराना***—स०=सहलाना।

†अ०=सिहरना।

**सहरिया**—पुं० [?] एक प्रकार का गेहूँ।

**सहरी**—स्त्री० [सं० शफरी] सफरी मछली। शफरी।

†स्त्री०=सहर-गही।

†वि० [म० सदृशी, प्रा० सरिसी] सदृश। समान। (राज०) उदा०—जूँ सहरी भूह नयण मृग जुता।—प्रिथीराज।

वि०=शहरी (नागर)।

**सहरुण**—पुं० [सं० ब० स०] चंद्रमा के एक घोड़े का नाम।

**सहल**—वि० [सं० सरल से अ०] आसान। सरल।

**सह लगी**—पु० [हिं० साथ+लगना] वह जो चलते समय किसी के साथ हो ले। रास्ते का साथी। हमराही।

**सहलाना**—स० [हिं० सहर=धीरे] १. किसी अक्षिय, सुप्त या दुखते हुए अंग पर इस प्रकार धीरे धीरे हाथ या उँगलियाँ फेरना तथा बार बार रगड़ना कि उसमे चेतना या सक्रियता आ जाय अथवा सुख की अनुभूति हो। जैसे—किसी का हाथ, पैर या सिर सहलाना। २ प्यार से किसी पर हाथ फेरना। ३ मलना।

**सहवन**—पु० [देश०] एक प्रकार का तेलहन।

**सहवर्ती**—वि० [सं०] [स्त्री० सहवर्तिनी] किसी के साथ वर्तमान रहने-वाला। साथ में रहने या होनेवाला। (कान्कामिटेंट)

**सहवर्ती लिंग**—पुं० दे० 'लिंग' (न्यायशास्त्र वाला विवेचन)।

**सहवाद**—पुं० [सं० सह√वद् (कहना)+घञ्] आपस मे होनेवाला तर्क-वितर्क। वाद-विवाद। बहस।

**सह-वास**—पु० [सं०] १ किसी के साथ रहना। २ एक ही घर मे दो परिवारों का या एक ही कमरे मे दो विद्यार्थियों, कर्मियों आदि का मिलकर रहना। ३ मैथुन। समोग।

**सहवासी (सिन्)**—वि० [सं० सहवासिन्] साथ रहनेवाला।

पु० संगी-साथी।

**सहसता**—स्त्री० [सं० ब० स०] पत्नी। भार्या। जोरू।

**सहसंभव**—वि० [सं० ब० स०] जो एक साथ उत्पन्न हुए हों। सहज।

**सहस**—वि०, पुं० =सहस्र (हजार)।

**सहसकिरन**†—पुं०=सहस्र-किरण (सूर्य)।

**सहसगो**†—पु०=सहस्रगु (सूर्य)।

**सहसजीभ**†—पु०=सहस्रजिह्व (शेषनाग)।

**सहसदल***—पु०=सहस्रदल (कमल)।

**सहसनयन**—पुं०=सहस्रनयन (इंद्र)।

**सहसफन**—पु०=सहस्रफन (शेषनाग)।

**सहसबदन**—पु०=सहस्रवदन (शेषनाग)।

**सहसबाहु**†—पुं०=सहस्रबाहु।

**सहसमुखी**—पु०=सहस्रमुख (शेषनाग)।

**सहसमेखी***—स्त्री० [सं० सहस्र +हिं० मेख] युद्ध के समय हाथ में पहनने का एक प्रकार का प्राचीन दस्ताना जिसमें मेखें लगी होती थी और जो कोहनी से कलाई तक का भाग ढकता था।

**सहससीस**—पुं०=सहस्रशीर्ष (शेषनाग)।

**सहसा**—अव्य० [सं०] १. इस प्रकार एकदम जल्दी से या ऐसे रूप में जिसकी पहले से आशा या कल्पना न की गई हो। अकस्मात्।

अचानक। एकाएक। जैसे—वह सहसा उठकर वहाँ से चला गया। २. बिना विचारे उतावली से। जैसे—सहसा वह भी नदी में कूद पड़े।

**विशेष**—सहसा मे मुख्य भाव बिना कुछ सोचे-विचारे शीघ्रतापूर्वक कोई काम कर बैठने का है। जैसे—वह सहसा डरकर चिल्ला पड़ा। अकस्मात् मे मुख्य भाव अकल्पित या अतर्कित रूप से कोई बात होने का है। जैसे—अकस्मात डाकुओ ने आकर गोलियाँ चलानी शुरू कर दी। अचानक भी बहुत कुछ वही है, जो अकस्मात् है, फिरभी इसमे उग्रता और तीव्रतावाला तत्त्व अपेक्षया कम है। जैसे—अचानक घर मे आग लग गई। एकाएक मे किसी चलते हुए क्रम मे एकदम से कोई नया परिवर्तन होने का प्रधान भाव है। जैसे—एकाएक आँधी चलने लगी; और आकाश में बादल घिर आए।

**सहसाहि**—पु०=सहसाक्ष (इंद्र)।

**सहसाही**—पु०=सहसाक्ष (इंद्र)।

**सहस्रानन**—पु०=सहस्रानन (शेषनाग)।

**सहस्त**—वि० [सं० अव्य स०] १. हस्तयुक्त। २. हथियार चलाने में कुशल।

**सहस्र**—वि० [सं०]१. जो गिनती में दस सौ हो। हजार। २ लाक्षणिक अर्थ मे, अत्यधिक। जैसे—सहस्र धी।

पु० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०००।

**सहस्रक**—वि०[स० सहस्र+कन्] १. सहस्र-सम्बन्धी। २ एक हजार वाला।

पुं० एक ही प्रकार या वर्ग की एक हजार वस्तुओं का समाहार या कुलक।

**सहस्रकर**—पु० [सं०] सूर्य।

**सहस्र-किरण**—पु० [सं०] सूर्य।

**सहस्रनु**—पु० [सं०] सूर्य।

**सहस्रचक्षु (क्षुस्)**—पु०[सं०] इंद्र।

**सहस्र-चरण**—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु।

**सहस्रजित**—पु०[स०]१ विष्णु। २ मृगमद। कस्तूरी। ३ जाबवती के गर्भ से उत्पन्न श्री कृष्ण का एक पुत्र।

**सहस्रणी**—पु० [सं० सहस्र√नी (ढोना)+क्विप्] हजारो रथियो की रक्षा करनेवाले, भीष्म।

**सहस्र-दंष्ट्रा**—स्त्री० [स०]१. एक प्रकार की मछली जिसके मुँह मे बहुत अधिक दाँत होते हैं। २ कुछ लोगो के मत से पाठीन नामक मछली।

**सहस्रद**—पुं०[स० सहस्र√दा (देना)+क] १ बहुत बडा दानी। २ हजारों गौएँ आदि दान करनेवाला बहुत बड़ा दानी। ३ पहिना या पाठीन मछली।

**सहस्रदल**—पु० [सं० ब० स०] हजार दलोंवाला अर्थात् कमल।

**सहस्रदृश**—पु०[सं०]१. विष्णु। २. इन्द्र।

**सहस्रधारा**—स्त्री०[सं०]देवताओं आदि का अभिषेक करने का एक प्रकार का पात्र जिसमें हजारो छेद होते हैं।

**सहस्रधी**—वि०[स० ब० स०] बहुत बड़ा बुद्धिमान्।

**सहस्रपौत**—वि०[सं० मध्यम० स०] हजार बार धोया हुआ।

पु० हजार बार पानी से धोया हुआ घी जिसका व्यवहार औषध के रूप मे होता है।

**सहस्रनयन**—पुं०[स० ब० स०]१ विष्णु। २ इन्द्र।

**सहस्रनाम**—पु०[स० ब० स०, कम० स० व] वह स्तोत्र जिसमे किसी देवता या देवी के हजार नाम हो। जैसे—विष्णु सहस्रनाम, शिव सहस्रनाम, दुर्गा सहस्रनाम आदि।

**सहस्रनामा (मन्)**—पु० [स० ब० स०] १. विष्णु। २. शिव। ३. अमलबेंत।

**सहस्रनेत्र**—पु०[स०] १ इंद्र। २ विष्णु।

**सहस्रपति**—पु०[सं० ष० त०] प्राचीन भारत में, हजार गाँवों का स्वामी और शासक।

**सहस्रपत्र**—पु०[स०] कमलपत्र।

**सहस्रपाद**—पु०[स० ब० स०]१ विष्णु। २ शिव। २ महाभारत के एक ऋषि।

**सहस्रपाद**—पु०[स० ब० स०]१ सूर्य। २. विष्णु। ३. सारस पक्षी।

**सहस्रबाहु**—पु० [स० ब० स०] १ शिव। २. कार्तवीर्यार्जुन या हैहय का एक नाम। ३ राजा बलि के सबसे बडे पुत्र का नाम।

**सहस्र-भागवती**—स्त्री०[सं०] देवी की एक मूर्ति।

**सहस्रभुज**—पु०=सहस्रबाहु।

**सहस्रभुजा**—स्त्री०[स० ब स०] दुर्गा का हजार बाहोवाला वह रूप जो उन्होने महिषासुर को मारने के लिए धारण किया था।

**सहस्र-मूर्ति**—पु० [स० ब० स०] विष्णु।

**सहस्र-मूर्द्धा (र्द्धन्)**—पु०[स०]१ विष्णु। २ शिव।

**सहस्रमूलिका, सहस्रमूली**—स्त्री०[सं०] १ काकपत्री। २ बडी दंती। ३ मूसाकाणी। ४ बडी शतावर। ५ मुद्गपर्णी। बनमूँग।

**सहस्रशीर्ष**—पुं०[स० ब० स०]१ विष्णु। २ अनतदेव का एक नाम।

**सहस्ररश्मि**—पु० [स० ब० स०] सूर्य।

**सहस्र-लोचन**—पु०[स० ब० स०] इंद्र।

**सहस्र-वीर्य**—वि०[स०ब०स०]बहुत बडा बलवान्। बहुत बडा ताकतवर।

**सहस्रशः (शस्)**—अ०[स० सहस्+शस्] हजारो तरह से।

वि० कई हजार। हजारो।

**सहस्रशाख**—पु०[स० ब० स०] वेद, जिनकी हजार शाखाएँ हैं।

**सहस्र-शिखर**—पु०[पुं० ब० स०] विंध्य पर्वत का एक नाम।

**सहस्र-शीर्ष (र्ष)**—पुं[सं० ब० स०] विष्णु।

**सहस्र-मुति**—पु० [स० ब० स०] पुराणानुसार जंबूद्वीप का एक वर्ष-पर्वत।

**सहस्रसाव**—पु०[स० ब० सं०] अश्वमेध यज्ञ।

**सहस्रांक**—पुं०[स० ब० स०] सूर्य।

**सहस्रांशु**—पुं० [सं० ब० स०] सूर्य।

**सहस्रांशुज**—पुं०[स० सहस्रांशु√जन् (उत्पन्न करना)+ड] शनिग्रह।

**सहस्रा**—स्त्री०[सं० सहस्र—टाप्]१. मात्रिका। अंबष्ठा। मोहमा। २ मयूरशिखा।

**सहस्राक्ष**—वि०[सं० ब० स०] हजार आँखोंवाला।

पु०१ इंद्र। २. विष्णु। ३. उत्पलाक्षी देवी का पीठ स्थान। (देवी भागवत)

**सहस्रात्मा (त्मन्)**—पुं०[सं० ब० स०] ब्रह्मा।

**सहस्राधिपति**—पु०[सं० ष० त०] प्राचीन भारत मे, वह अधिकारी जो

किसी राजा की ओर से एक हजार गाँवों का शासन करने के लिए नियुक्त होता था।

**सहस्रानन**—पुं० [सं० ब० स] विष्णु।

**सहस्राब्दि**—स्त्री० [स०] किसी सवत् या सन् के हर एक से हर हजार तक के वर्षों अर्थात् दस शताब्दियों का समूह। (माइलीनियम)

**सहस्रायु**—वि० [सं० ब० स०] हजार वर्ष जीनेवाला।

**सहस्रार**—पुं० [सं० ब० स०] १. हजार दलोंवाला एक प्रकार का कल्पित कमल। २ जैन पुराणों के अनुसार बारहवें स्वर्ग का नाम। ३ हठयोग के अनुसार शरीर के अन्दर के आठ कमलों या चक्रों में से एक जो हजार दलो का माना गया है। इसका स्थान मस्तक का ऊपरी भाग माना जाता है। इसे शून्य चक्र भी कहते हैं। आधुनिक विज्ञान के अनुसार यह विचार-शक्ति और शरीर का विकास करनेवाली ग्रन्थियों का केंद्र है।

**सहस्रांशु (शु)**—वि० [स० ब० स०] हजार किरणोंवाला।
पुं० सूर्य।

**सहस्रावर्त**—स्त्री० [सं० सहस्रावर्त्त+टाप्] देवी की एक मूर्ति।

**सहस्राक्ष्य**—पुं० [ग० ब० स०] १ विष्णु। २. अनत नामक नाग।

**सहस्रिक**—वि० [स० सहस्र+ठन्—इक] हजार वर्ष तक चलता रहने या होनेवाला।

**सहस्री (स्रिन्)**—पु० [स० सहस्र+इनि] वह वीर या नायक जिसके पास हजार योद्धा, घोड़े, हाथी आदि हों।
स्त्री० एक ही तरह की हजार चीजो का वर्ग या समूह।

**सहस्रेक्षण**—पुं० [स० ब० स०] इंद्र।

**सहांश**—पुं० [स० सह+अंश] किसी और के साथ रहने या होने पर मिलनेवाला अश या भाग।

**सहांशी**—पु० [स० सह+अंशी] वह जो किसी के साथ किसी प्रकार के लाभ या सपत्ति मे अपना भी अश या हिस्सा पाने का अधिकारी हो। साझीदार। (कोशेयरर)

**सहा**—स्त्री० [सं०√ सह् (सहन करना)+अच्—टाप्] १. घीकुआर। ग्वारपाठा। २. बनभूँग। ३. बडोत्पल। ४ सफेद कटसरैया। ५ कवी का कहही नामक वृक्ष। ६ सर्षिणी। ७ रासना। ८. सत्यानाशी। ९. सेवती। १०. हेमत ऋतु। ११. अगहन मास। १२. मधवन। १३. देवताड़ का वृक्ष। १४. मेंहदी।

**सहा**†—स्त्री०=सहायता।
†वि०=सहायक।

**सहाई***—वि० [सं० सहाय्य] सहायक। मददगार। उदा०—नैन सहाई पलक ज्यों देह सहाई हाथ।
†स्त्री०=सहायता।

**सहाउ**†—वि०, पुं०=सहाय।

**सहाध्यायी (यिन्)**—वि० [स० सह-आ-अधि√ इ (पढ़ना)+णिनि] जिसने किसी के साथ अध्ययन किया हो। सहपाठी।
पु० साथ साथ अध्ययन करनेवाले शिक्षार्थी।

**सहाना**—स० [हि० सहना का स०] ऐसा काम करना जिससे किसी को कुछ सहना पड़े।
†पुं०=सहाना (राग)।



**सहानी**—वि० स्त्री०=सहानी।

**सहानुगमन**—पु०=सहगमन। (दे०)

**सहानुभूति**—स्त्री० [स० सह-अनु √भू (होना)+क्तिन्] १. ऐसी अनुभूति जो साथ साथ दो या अधिक व्यक्तियो को हो। २ वह अवस्था जिसमे मनुष्य दूसरे की अनुभूति (विशेषत. कष्टपूर्ण अनुभूति) का अनुभव शुद्ध हृदय से करता है और उससे उसी प्रकार प्रभावित होता है जिस प्रकार दूसरा व्यक्ति हो रहा हो। सवेदना। हमदर्दी। (सिम्पैथी) ३. अनुकम्पा। दया।

**सहानुसरण**—पुं० [सं०सह-अनु√सृ (गत्यादि)+ल्युट्—अन]=सहानुगमन (सह-गमन)।

**सहापराधी**—पु० [स० सहापराध+इनि] किसी अपराध मे मुख्य अपराधी का साथ देने और उसकी सहायता करनेवाला (व्यक्ति)। (एकाम्प्लिस)

**सहाब**—पुं०=सहाब।

**सहाबी**—पु० [अ०][स्त्री० सहाबिया] वे लोग जो मुहम्मद साहब के उपदेश से मुसलमान हो गये थे और मरण पर्यन्त इस्लाम धर्म को मानते रहे।

**सहाय**—वि०[स०] सहायता करनेवाला।
पुं० १ वह जो दूसरो की सहायता करता हो और उसके कष्ट-दुःख दूर करता हो। २ साथी। ३ अनुयायी। ४ सहायता। ५. आश्रय। सहायना। ६. एक प्रकार का हस। ७. एक प्रकार की वनस्पति।

**सहायक**—वि०[सं०] १ किसी की सहायता करनेवाला। जैसे—दुःख-सुख में अपने ही सहायक होते हैं। २ कार्य, प्रयोजन आदि के सपादन या सिद्धि मे योग देनेवाला। जैसे—पढ़ने में आँखें ही सहायक होगी। ३ (वह अधिकारी या कर्मचारी) जो किसी उच्च अधिकारी के अधीन रहकर उसके कार्यों के सपादन मे योग देता हो। जैसे—सहायक मत्री, सहायक संपादक। ४. किसी के साथ मिलकर उसकी वृद्धि करनेवाला। जैसे—सहायक आजीविका, सहायक नदी।

**सहायक-नदी**—स्त्री०[स०] भूगोल मे, किसी बडी नदी मे आकर मिलनेवाली कोई छोटी नदी। (ट्रिब्यूटरी)

**सहायता**—स्त्री० [सं०] १ सहाय होने की अवस्था या भाव। २ उद्योग या प्रयत्न जो दूसरे का काम सपादित करने या सहज बनाने के निमित्त किया जाता है। जैसे—उसने उन्हे पुस्तक लिखने में सहायता दी। ३. अभावग्रस्त का अभाव दूर करने के लिए उसे दिया जानेवाला धन या अनुदान। जैसे—सरकारी सहायता से यह उद्योग चल रहा है। ४. अनाथो, निर्धनो आदि को निर्वाह या भरण-पोषण के उद्देश्य से दिया जानेवाला धन या वस्तुएँ।

**सहायन**—पुं० [स०सह√अय् (गत्यादि)+ल्युट्—अन य ईण (गत्यादि)+ल्युट्—अन वा]१. साथ चलना या जाना। २. साथ देना। ३. सहायता करना।

**सहायी**†—वि० =सहायक।
†स्त्री०=सहायता।

**सहार**—पु० [सं० सह√ऋ (गमनादि)+अच्, त० त० वा] १. आम का पेड़। सहकार। २. महा प्रलय।

स्त्री०[हिं० सहारना]१. सहारने की क्रिया या भाव। २. सहनशीलता। जैसे—अब उनमे कष्ट सहने की सहार नहीं रह गई है।

**सहारना**†—स०[सं० सहन या हिं० सहार]१. सहन करना। ४. बरदाश्त करना। सहना। २. किसी प्रकार का भार अपने ऊपर लेकर उसे सँभाले रहना। ३. उत्पात, कष्ट आदि होने पर उसकी ओर ध्यान न देना। गवारा करना।

**सहारा**—पु०[हिं० सहारना]१. कोई ऐसा तत्त्व या बात जिससे कष्ट आदि सहन करने या कोई बड़ा काम करने मे सहायता मिलती हो या कष्ट की अनुभूति कम होती हो। २ ऐसी वस्तु या व्यक्ति जिस पर किसी प्रकार का भार सहज मे रखा जा सके और जो वह भार सह सके। कोई ऐसा तत्त्व या बात जिससे किसी प्रकार का आश्वासन मिलता हो।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

**सहारिया**—वि०, पु०=सहराई। उदा०—गाँव क्या था सहारियो की पर्ण-कुटीरो का समूह।—वृन्दावनलाल वर्मा।

**सहार्थ**—वि० [स०] १ समान अर्थ रखनेवाले। २. समान उद्देश्य रखनेवाले।

पुं०१. आनुषंगिक विषय। २. सहयोग।

**सहार्द्र**†—वि०[स० तृ० त०] स्नेहयुक्त।

**सहार्ह**—वि० [स० सह (न)+अर्ह] जो सहन किया जा सके। योग्य।

**सहालग**—पु० [स० सह+लग] १ वह वर्ष जो हिन्दू ज्योतिषियों के मत से शुभ माना जाता हो। २. फलित ज्योतिष के अनुसार वे दिन जिनमे विवाह आदि शुभ कृत्य किये जा सकते हो।

**सहावल**†—पु० =साहुल (सीध नापने का उपकरण)।

**सहासन**—वि० [स० सह+आसन]१. किसी के साथ उसके बराबर के आसन पर बैठनेवाला। २. साथ बैठनेवाला।

पुं० बराबरी का हिस्सेदार। उदा०—सहासन का भाग छीनकर, दो मत निर्जन बन को।—दिनकर।

**सहिजन**—पुं०=सहिजन।

**सहि**—वि०=सभी। उदा०—समाचार इणि माहि सहि।—प्रिथीराज।

**सहिक**—वि०[स० सह+हि० इक (प्रत्य०)]१ जो सचमुच वर्तमान हो। सत्ता से युक्त। वस्तविक। २ जिसमें कोई विशिष्ट तत्त्व या भाव वर्तमान हो। ३ जिसमें किसी प्रकार की दुविधा या सकोच न हो। ठीक और निश्चित। ४ (कथन या मत) जो निश्चित और स्पष्ट रूप से प्रतिपादित या प्रस्थापित किया गया हो। ठीक मानकर और साफ साफ कहा हुआ। ५ गणित में, शून्य की अपेक्षा अधिक, जो 'धन' कहलाता है। ६ (प्रतिकृति या मूर्ति) जिसमे मूल के समान ही छाया या प्रकाश हो। जो उलटा न जान पड़े। सीधा। 'सहिक' का विपर्याय। (पाँजीटिव, उक्त सभी अर्थों के लिए)

पु० १. ऐसा कथन या बात जिसमें किसी सत्य, मत या सिद्धान्त का निश्चत रूप से निरूपण या प्रस्थापन किया गया हो। ठीक मानकर दृढ़तापूर्वक कही हुई बात। २. किसी विषय, निश्चय आदि का वह अश या पक्ष जिसमें उक्त प्रकार का निरूपण या प्रस्थापन हो। ३. ऐसी प्रतिकृति या मूर्ति जिसमें मूल की छाया के स्थान पर छाया और प्रकाश के स्थान पर प्रकाश हो। ऐसी नकल जो देखने में सीधी जान पड़े, उल्टी नही। ४. छापा चित्र मे, नक्षिक पीधे पर से कागज पर छापी हुई वह प्रति जो मूल के ठीक अनुरूप होती है। 'नक्षिक' का विपर्याय। (पॉजिटिव, उक्त सभी अर्थों के लिए)

**सहिकता**—स्त्री० [हि० सहिक+ता (प्रत्य०)] 'सहिक' होने की अवस्था या भाव। (पॉजिटिविटी, पॉजिटिवनेस)

**सहिजन**—पु०[स० शोभाजन] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लंबी फलियाँ तरकारी, अचार आदि बनाने के काम आती हैं। मुनगा।

**सहिदानी**†—स्त्री०[स० सज्ञान] निशानी। चिह्न। पहचान। (दे० 'सहदानी')

**स-हित**—क्रि० वि०[स० स+हित]हितपूर्वक। प्रेम से।

**सहित**—अव्य०[स० सह से] (किसी के) साथ। समेत।

वि०१. किसी के साथ मिला हुआ। युक्त।

**विशेष**—सहित और युक्त में मुख्य अतर यह है कि सहित का प्रयोग तो प्राय क्रिया विशेषण पदो मे होता है और युक्त का विशेषण पदो में। जैसे—(क) चतुर्थांश सहित दे दो। (ख) चतुर्थांशयुक्त रूप।

२ (प्राणायाम) जिसमे पूरक और रेचक दोनो क्रियाएँ की जाती हैं। ('केवल' से भिन्न)

भू० कृ०[स० सहन से] जो सहन किया गया हो। सहा हुआ।

**सहितत्व**—पु०[स० सहित+त्व] सहित का धर्म या भाव।

**सहितव्य**—वि०[स०√सह् (सहन करना)+तव्य] सहन होने के योग्य। जो सहा जा सके। सह्य।

**सहिथी**†—स्त्री०[?] बरछी।

**सहिदान***—पुं०=सहदानी (निशानी)।

**सहिदानी**†—स्त्री०=सहदानी।

**सहिरिया**—स्त्री०[देश०] बसत ऋतु की वह फसल जो बिना सींचे हुए होती है।

**सहिष्णु**—वि०[स० √सह् (सहन करना)+इष्णुच्] जो कष्ट या पीड़ा आदि सहन कर सके। बरदाश्त करनेवाला। सहनशील।

**सहिष्णुता**—स्त्री० [स०] सहिष्णु होने की अवस्था, गुण या भाव। सहनशीलता।

**सही**—वि०[अ० सहीह]१ जिसमे किसी प्रकार का झूठ या मिथ्यात्व न हो। यथार्थ। वास्तविक। २ सच। सत्य। ३. जिसमे कोई त्रुटि, दोष या भूल न हो। बिलकुल ठीक। जैसे—यह इस हिसाब का सही जवाब है।

स्त्री०१. किसी बात को मान्य, यथार्थ या सत्य होने की साक्षी के रूप मे किया जानेवाला हस्ताक्षर। दस्तखत। २. किसी बात की प्रामाणिकता या मान्यता का सूचक कथन। उदा०—ब्रह्मा वेद सही कियो, सिव जोग पसारा हो।—कबीर।

**मुहा०—(किसी कथन या बात की) सही करना**= सत्यता की साक्षी देना। यह कहना कि हाँ, यह बात ठीक है। उदा०—सही भरी लोभस धुसुडि वह बारिखी।—तुलसी।

३. किसी बात की प्रामाणिकता या उसके फलस्वरूप होनेवाली मान्यता। जैसे—चुप रहने की सही नहीं। ४. प्रामाणिकता, मान्यता या शुद्धता सूचक शब्द। जैसे—चलो, यही सही।

अव्य०[ सं० सहन, हिं० सहना या स० सिद्ध] एक अव्यय जो विशिष्ट प्रसंगों में वाक्य के अंत में आकर ये अर्थ देता है—(क) कोई बात सुनकर मान या सह लेना। जैसे—अच्छा यह भी सही। (ख) अधिक नहीं, तो इतना अवश्य। जैसे—आप वहाँ चलिए तो सही। (ग) कोई असंभावित बात होने पर कुछ जोर देते हुए आश्चर्य प्रकट करना। जैसे—फिर भी आप वहाँ गये सही। उदा०—प्रभु आसुतोष कृपालु शिव अबला निरखि बोले सही।—तुलसी।

†स्त्री०=सखी। (राज०)

**सहीफा**—पुं०[अ० सहीफ़ः]१ ग्रन्थ। पुस्तक। २ चिट्ठी। पत्र। ३. सामयिक पत्र।

**सहुँ***—अव्य०[सं० सम्मुख] १ सम्मुख। सामने। २. ओर। तरफ।

**सहुँ**†—वि०[स० सर्व+ही] सभी। उदा०—मन प्रेयी सहु सेन मुरछित।—प्रिथीराज।

**सहुआ**†—पुं०[स० सङ्ग] भूल-चूक। अपराध। दोष। उदा०—सहुए बूढ़ि देखै ता भउ पवै।

**सहूलत**—स्त्री० =सहूलियत।

**सहूलियत**—स्त्री०[अ० सहूलत] १ आसानी। सुगमता। २ सुभीता। ३ शिष्टता और सभ्यतापूर्वक आचरण करने की कला और पात्रता। जैसे—अब तुम सयाने हुए, कुछ सहूलियत सीखो।

**सहृदय**—वि० [स०] [भाव० सहृदयता] १. (व्यक्ति) जो दूसरे के सुख-दुःख की अनुभूति करता हो। २. कोमल गुणों से युक्त हृदयवाला। ३. काव्य, साहित्य आदि के गुणों की परख रखने और उसकी विशेषताओं से प्रभावित होनेवाला। साहित्य का अधिकारी और योग्य पाठक। रसिक। ४. अच्छे गुणों और स्वभाववाला। भला। सज्जन। ५. प्रायः या सदा प्रसन्न रहनेवाला।

**सहृदयता**—स्त्री०[सं० सहृदय+तल्—टाप्]१ सहृदय होने की अवस्था, गुण या भाव। २. वह कार्य या बात जो इस तथ्य की सूचक हो कि व्यक्ति सहृदय है। सहृदय व्यक्ति का कोई कार्य।

**सहेजा**—पुं०[देश०] वह दही जो दूध जमाने के लिए उसमें डाला जाता है। जामन।

स्त्री०[हिं० सहेजना]१. सहेजने की क्रिया या भाव। २. चीजें सहेज कर रखने की प्रवृत्ति या स्वभाव।

**सहेजना**—स०[अ० सही ?] १. कोई चीज लेने के समय अच्छी तरह देखना कि वह ठीक या पूरा है या नहीं। जैसे—कपड़े, गहने या बर्तन सहेजना।

संयो० क्रि०—लेना।

२. अच्छी तरह देखना या बतलाकर कोई चीज किसी को सौंपना। सुपुर्द करना। जैसे—सब चीजें उन्हें सहेज देना।

संयो० क्रि०—देना।

**सहेजवाना**—स०[हिं० सहेजना का प्रे०] सहेजने का काम दूसरे से कराना।

**सहेट**—पुं०=सहेत। उदा०—यवन तें निकसि वृषभानु की कुमारी देख्यो ता समै सहेट को निकुंज सिद्धों तीर को।—मतिराम।

**सहेत**†—पुं०[सं० संकेत] वह निर्दिष्ट एकान्त स्थान जहाँ प्रेमी और प्रेमिका मिलते हैं। अभिसार का पूर्व निर्दिष्ट स्थान।

**सहेतु**—वि० =सहेतुक।

**सहेतुक**—वि०[स० ब० स०] जिसका कोई हेतु हो। जिसका कुछ उद्देश्य या मतलब हो। जैसे—यहाँ यह पद सहेतुक आया है, निरर्थक नहीं है।

**सहेलरी**†—स्त्री०=सहेली। उदा०—विजन-मन-मुदित सहेलरियाँ।—निराला।

**सहेली**—स्त्री०[स० सह=हिं० एली (प्रत्य०)]१ साथ में रहनेवाली स्त्री। संगिनी। २. परिचारिका। दासी। (लव०) ३ १.खां। ४ गौरैया की तरह की काले रंग की एक प्रकार की छोटी चिड़िया।

**सहैया***—वि०[हिं० सहाय] सहायता करनेवाला। सहायक।

वि० [हिं० सहना]१. सहनेवाला। २ सहनशील।

**सहो**—पुं० [अ० सहव] १. अपराध। दोष। २. भूल-चूक। गलती।

**सहोक्ति**—स्त्री०[सं०] साहित्य में, एक अलंकार जिसमें 'सह' 'संग' 'साथ' आदि शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होते हैं कि किसी क्रिया के (क) एक कार्य के साथ और भी कई आर्यों का होना सूचित होता है। जैसे—रात्रि के समय तुम्हारे मुख के साथ ही चद्रमा भी सुशोभित हो जाता है अर्थात् (ख) कोई विलष्ट शब्द इस प्रकार प्रयुक्त होता है कि अलग अलग प्रसंगों में अलग अलग अर्थ देता है। (कनेक्टेड डेस्क्रिप्शन) जैसे—यौवन में उसके ओष्ठ तथा प्रिय दोनों साथ ही रागयुक्त (कमाल लाल और प्रेमपूर्ण या अनुरक्त) हो गये। उदा०—बल प्रताप वीरता बडाई। नाक पिनाकी संग सिधाई।—तुलसी।

**सहोढ़**—पुं०[स०] १ वह चोर जो चोरी के माल के साथ पकड़ा गया हो। २ धर्मशास्त्र मे, बारह प्रकार के पुत्रों मे से वह जो गर्भवती कन्या के साथ विवाह करने पर विवाह के उपरांत उत्पन्न होता है।

**सहोदक**—वि०[स० ब० स०] समानोदक।

**सहोदर**—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० सहोदरा] १. (जन्म के विचार से वे) जो एक ही माता के उदर या गर्भ से उत्पन्न हुए हों। २. सम्बन्ध के विचार से अपना और सगा।

पुं०१. सगा भाई। २. वैज्ञानिक क्षेत्रों में, वे सब जो एक ही मूल से उत्पन्न हुए हों और जिनमे परस्पर रक्त या वंश का सम्बन्ध हो। एक ही कुल या वश के सदस्य।

**सहोपमा**—स्त्री०[सं० ब० स०, मध्य० स० वा] साहित्य में, उपमा अलकार का एक प्रकार या भेद।

**सहोर**—पुं०[सं० शाखोट] एक प्रकार का जंगली वृक्ष।

**सह्य**—वि०[सं०]१ जो सहा जा सके। जो सहन हो सके। २. आरोह्य। ३. प्रिय।

पुं०=सह्याद्रि।

**सह्याद्रि**—पुं०[सं० मध्यम० स०] वर्तमान महाराष्ट्र राज्य की एक पर्वत-माला।

**सहँ**—पुं०[सं० स्वामी] १. स्वामी। मालिक। २ ईश्वर। परमात्मा। ३. स्त्री का पति। ४. मुसलमान फकीर। ५ बोलचाल में, सिपियों के लिए प्रयुक्त आदरसूचक संबोधन।

**साँकड़**—पुं०१.=सिकड़। २.=साँकड़ा।

*वि० [सं० संकीर्ण] सँकरा। उदा०—जमुना तिरे तिरे साँकड़ घाटी।—विद्यापति।

†स्त्री०=साँकड़।

**सांकड़ा**—पुं०[सं० शृखला] पैरों मे पहना जानेवाला कड़े की तरह का एक प्रकार का गहना।

**सांकर***—वि०[सं० संकीर्ण] १. संकीर्ण। तंग। सँकरा। २. कष्ट-दायक।
पुं० कष्ट या संकट की दशा अथवा समय।
स्त्री०=सांकल।

**सांकरा**†—पुं०=सांकड़ा।
†वि०=सँकरा।

**सांकरिक**—वि०[सं० संकर+ठञ्—इक] वर्ण-संकर। दोगला।

**सांकल**—स्त्री० [सं० शृंखला] १. शृंखला। जंजीर। २. दरवाजे में लगाई जानेवाली जजीर। ३. पशुओं के गले में बाँधने की जंजीर। ४. गहने की तरह गले में पहनने की चाँदी-सोने की जंजीर। सिकड़ी।

**सांकल्पिक**—वि० [सं० सकल्प+ठञ्+इक]१. संकल्प-सम्बन्धी। २. काल्पनिक।

**सांकेतिक**—वि०[सं०]१. सकेत-संबंधी। २. संकेत के रूप में होनेवाला। ३. शब्द की अभिधा-शक्ति से सबध रखने अथवा उससे निकलनेवाला। जैसे— सांकेतिक अर्थ।

**सांकेतिक भाषा**—स्त्री०[सं०] कुछ विशिष्ट लोगों के निजी व्यवहार के लिए उनकी बनाई हुई गोपनीय तथा कृत्रिम भाषा। साधारण या जन-भाषा से भिन्न भाषा। (कोड-लैंगवेज)

**सांकेतिकी**—स्त्री०=सांकेतकी।

**सांक्रामिक**—वि०[सं०] संक्रामक।

**सांक्षेपिक**—वि०[सं० संक्षेप+ठञ्—इक]१. संक्षिप्त। २. संकुचित।

**सांख्य**—वि०[सं०]१. संख्या-संबंधी। जो संख्या के रूप में हो।
पुं०१. संख्याएँ आदि गिनने और हिसाब लगाने की क्रिया। २. तर्क-वितर्क या विचार करने की क्रिया। ३. भारतीय हिन्दुओं के छ प्रसिद्ध दर्शनों में से एक दर्शन जिसके कर्ता महर्षि कपिल कहे गये हैं।
**विशेष**—यह दर्शन इसलिए सांख्य कहा गया है कि इसमे २५ मूल तत्त्व गिनाये गये हैं, और कहा गया कि अंतिम या पचीसवें तत्त्व के द्वारा मनुष्य आत्मोपलब्धि या मोक्ष प्राप्त कर सकता है। इसमे आत्मा को ही पुरुष या ब्रह्म माना गया है।

**सांख्य-मार्ग**—पुं०[सं०]सांख्य-योग।

**सांख्य-योग**—पुं०[सं०]ऐसा साख्य जो अच्छी तरह चित्त शुद्ध करके और पूरा ज्ञान प्राप्त करके सच्चे त्याग के आधार पर ग्रहण किया जाय।

**सांख्यायन**—पुं०[सं० सांख्य+क-फ—आयन] एक प्रसिद्ध वैदिक आचार्य जिन्होंने ऋग्वेद के सांख्यायन ब्राह्मण की रचना की थी। इनके कुछ श्रौत सूत्र भी हैं। सांख्यायन कामसूत्र इन्ही का बनाया हुआ माना जाता है।

**सांख्यिक**—वि०[सं०] संख्या या गिनती से संबंध रखनेवाला। संख्या-संबंधी।

**सांख्यिकी**—स्त्री०[सं०]१ किसी विषय की (यथा—अपराध, उत्पादन, जन्ममरण, रोग आदि की) संख्याएँ एकत्र करके उनके आधार पर कुछ सिद्धांत स्थिर करने या निष्कर्ष निकालने की विद्या। स्थिति-शास्त्र। २ इस प्रकार एकत्र की हुई संख्याएँ। (स्टैटिस्टिक्स)

**सांग**—स्त्री० [सं० शक्ति] [अल्पा० सांगी]१. एक प्रकार की छोटी पतली बरछी। २. एक प्रकार का औजार जो कूआँ खोदते समय पानी फोड़ने के काम में आता है। ३. भारी बोझ उठाने या खिसकाने के काम में आनेवाला एक प्रकार का डंडा।
पुं०[हिं० स्वाँग]१ स्वाँग। २. जाटों में प्रचलित एक प्रकार का गीत काव्य।

**सांग**—वि० [सं० स+अंग] अग या अगों से युक्त।
**पद—सांगोपांग**। (दे०)

**सांगतिक**—वि० [सं० सगति+ठक्—इक] १ संगति-संबंधी। २. सामाजिक।
पुं० १. अतिथि। २ वह जो किसी कारबार के सिलसिले मे आया हो। अपरिचित। अजनबी।

**सांगम**—पु०[सं० संगम+अण्]=संगम।

**साँगर**†—पुं०[?] शमी वृक्ष। (राज०)

**सांगरी**—स्त्री०[फा० जगार] कपडे रँगने का एक प्रकार का रंग जो जंगार अर्थात् तूतिये से निकाला जाता है।

**सांगी**—पु०[हिं० साँग] वह जो साँग नामक गीत काव्य लोगों को सुनाता हो।
स्त्री० छोटी साँग (बरछी)।
स्त्री० [स० शकु] १. बैलगाड़ी मे गाड़ीवान के बैठने का स्थान। २ एक्के, गाड़ी आदि मे जाली का वह छीका जिसमे छोटी छोटी आवश्यक चीजे रखी जाती हैं।

**सांगीत**—पुं०[स०]=सगीतिका। (ऑपेरा)
पुं०=सेनापति।

**सांगोपांग**—वि०[सं० अंग+उपांग] जो अपने सभी अंगों और उपांगों अव्य०१. सभी अगों और उपांगो सहित। २. अच्छी और पूरी तरह से।

**सांग्रामिक**—वि०[सं०] १. सग्राम या युद्ध-संबंधी। २. जो अस्त्र-शस्त्रों से युक्त या सम्पन्न हो।

**सांघाटिका**—स्त्री०[सं० सघाट+ठञ्—इक—टाप्]१ मैथुन। रति। २. कुटनी। दूती। ३. एक प्रकार का वृक्ष।

**सांघात**—पु०[स० सघात+अण्]=सघात।

**सांघातिक**—वि०[स० सघात+ठञ्—इक]१. सघात या समूह-सम्बन्धी। २ जो सघात अर्थात् हनन कर सकता हो। ३. जिसके फलस्वरूप मृत्यु तक हो सकती हो। जिससे आदमी मर सकता हो। (फ़टल) ४. जिससे प्राणो पर सकट आ सकता हो। बहुत जोखिम का।
पु० फलित ज्योतिष मे, जन्म नक्षत्र से सोलहवाँ नक्षत्र जिसके प्रभाव से मृत्यु तक होने की सभावना मानी जाती है।

**सांघिक**—वि०[स०] संघ-सबधी। संघीय।

**साँच***—वि०[स० सत्य] [स्त्री० साँची]=सच्चा (सत्य)।

**साँचना***—स०[स० सञ्चय] १. संचित या एकत्र करना। उदा०—दे० 'माँड़ा' (संपत्ति) मे। २. किसी चीज में भरना।
†अ०[?]१. किसी बड़े का कहीं आना। पदार्पण करना। पधारना। (गुज०, राज०) उदा०—सामलो घरे नू म्हारे साँचू दे।—मीराँ।

**साँचर**—पु०[सं० सौवर्चल]एक प्रकार का नमक। सौवर्चल लवण।

**साँचला**†—वि० [हिं० साँच+ला (प्रत्य०)] [स्त्री० साँचली] जो सच बोलता हो। सच्चा। सत्यवादी।

**साँचा**†—पुं०[सं० संचक]१. वह उपकरण जिसमें कोई तरल या गाढ़ा पदार्थ ढालकर किसी विशिष्ट आकार-प्रकार की कोई चीज बनाई जाती है। (मोल्ड) जैसे—ईंट या मूर्तियाँ बनाने का साँचा।

**मुहा०—(किसी चीज का) साँचे में ढला होना**=अंग-प्रत्यंग से बहुत सुन्दर होना। रूप, आकार, आदि मे बहुत सुन्दर होना। **साँचे में ढालना**=आकर्षक, प्रशसनीय या सुन्दर रूप देना। उदा०—हमारे इश्क ने साँचे में तुमको ढाला है।—दाग।

२. वह उपकरण जिसके ऊपर कोई चीज रख या लगाकर उसे कोई नया आकार या रूप दिया जाता है। कलबूत। फरमा। जैसे—जूता या पगड़ी बनाने का साँचा।

**विशेष**—वस्तुत साँचा वही होता है जिसका विवेचन ऊपर पहले अर्थ में किया गया है। दूसरे अर्थ में प्राय. लोग भूल से उसका उपयोग करते हैं। दूसरा रूप वस्तुत 'कलबूत' कहलाता है।

३. वह छोटी आकृति जो कोई बडी आकृति बनाने से पहले नमूने के तौर पर तैयार की जाती है और जिसके अनुकरण पर दूसरी बड़ी आकृति बनाई जाती है। प्रतिमान। (मॉडल) ४. कपड़े पर आकृति बनाने का रगरेजों का ठप्पा।

**साँचारिक**—वि०[स० सचर+ठक्—इक] १. सचार-सबधी। २. जो सचार करता हो। ३. चलता हुआ। जगम।

**साँचिया**—पु०[हि० साँचा+इया (प्रत्य०)]१. किसी चीज का साँचा बनानेवाला कारीगर। २. सचि मे ढालकर चीजें बनानेवाला कारीगर।

**साँचिका***—वि०=साँचा (सञ्चा)।

**साँची**—स्त्री०[?] छपाई का वह प्रकार जिसमे पक्तियाँ बड़े अर्थात् लम्बाई के बल छापी जाती थी।

**विशेष**—अब यह प्रकार बहुत कुछ उठ-सा चला है।

पु०[साँची नगर] एक प्रकार का पान और उसकी बेल।

**साँझ**—स्त्री०[सं० सन्ध्या]१. सूर्य डूबने से कुछ पहले तथा कुछ बाद तक का समय। शाम।

**पद—साँझ ही**=(क) उचित समय से बहुत पहले ही। (ख) बहुत जल्दी ही और अनुपयुक्त समय पर। उदा०—तेकर भाग साँझ ही फूटे।—बाघ।

२. सूर्य ढलने के बाद का समय।

†स्त्री०=साझा।

**साँझ-पाती***—स्त्री०=साझा-पत्ती।

**साँझल**—पु०[सं० सध्या, हिं० साँझ+ल (प्रत्य०)] उतनी भूमि जितनी एक हल से दिन भर में जोती जा सके।

**साँझा**†—पुं०=साझा।

**साँझी**—स्त्री०[हि० साँझ] प्राय: स्त्रियों में प्रचलित एक लोक-कला जिसमें त्योहारों आदि पर घरों और मंदिरों की भूमि या फर्श पर रगीन चूर्णों, अनाज के दानों और भूसियों तथा फूल-पत्तियों से बेल-बूटों, पशु-पक्षियों या दूसरे पदार्थों की आकृतियाँ बनाई जाती हैं। (गुजरात में इसी को सथिया, महाराष्ट्र में रंगोली, बंगाल में अल्पना तथा दक्षिण भारत में कोलं (कोलम्) कहते हैं।

†पुं०=साझेदार।

**साझेदार**†—पुं०=साझेदार।

**साँट**—स्त्री० [सट से अनु०]१. पतली कमची या छड़ी। २. कोड़ा। ३ शरीर पर कोड़े, छड़ी, धप्पड आदि की मार का ऐसा दाग या निशान जो आकार में बहुत कुछ उसी वस्तु के अनुरूप होता है, जिससे आघात किया या मारा गया हो।

क्रि० प्र०—उभड़ आना।—पड़ना।

†स्त्री०[हि० सटना]१. सटने या सलग्न होने की क्रिया या भाव। उदा०—ललित किशोरी मेरी बाकी, चित की साँट मिला दे रे।—ललित किशोरी। २. लगन। लौ। ३. किसी उद्देश्य की सिद्धि के लिए किसी से किया जानेवाला मेल।

**पद—साँट-गाँठ।** (देखें)

†स्त्री०[?]लाल गदहपूरना।

†स्त्री० दे० 'साँठ'।

**साँट-गाँठ**—स्त्री०[हि० साँट (सटना)+गाँठ] आपस में होनेवाला ऐसा निश्चय जिसका कोई गूप्त या गूढ़ उद्देश्य हो। किसी अभिसधि के कारण होनेवाला मेलजोल।

**विशेष**—यद्यपि 'सटना' का भाव० रूप 'साट' ही होता है, पर उक्त में गाँठ के साथ सपृक्त होने के कारण 'साट' का रूप भी 'साँट' हो गया है।

**साँट-साँठ**†—स्त्री०=साँट-गाँठ।

**साँटा**—पु०[हि० साँट=छड़ी]१ करघे के आगे लगा हुआ वह डंडा जिसे ऊपर-नीचे करने से ताने के तार ऊपर-नीचे होते हैं। २. मोटे कपड़े का बटकर बनाया हुआ कोड़ा। ३. सवारी के घोड़े को लगाई जानेवाली एड। ४ ईख। गन्ना।

**साँटिया**†—पु०[हि० साँटी]१. डौडी पीटनेवाला। ढुग्गी बजानेवाला। २ साँटिमार। (दे०)

**साँटी**—स्त्री०[हि० साँटा का स्त्री० अल्पा०]छोटी और पतली छड़ी।

स्त्री०[हि० सटना] प्रतिकार। बदला।

†स्त्री०=१ =साँट। २. साँट-गाँठ।

**साँटे-मार**—पु० [हि० साँटा+मारना] वह चोबदार या सिपाही जो हाथ में साँटा या कपड़े का बना हुआ कोडा रखता और आवश्यकता पड़ने पर भीड हटाने, घोड़े, हाथियों आदि को वश मे करने के लिए उन पर साँटे चलाता है।

**विशेष**—मध्ययुग मे, राजाओं की सवारी के साथ साँटिमार चलते थे।

**साँठ**—पु०[देश०]१. पैरों मे पहनने का साँकडा न।मक गहना। २. ईख। गन्ना। ३. सरकडा। ४. डडा। ५. वह डडा जिससे पीटकर फसल की बालों में से अनाज के दाने अलग किये जाते हैं।

†स्त्री०[स० सस्था] मूलधन। पूँजी। उदा०—साँठि नाहिं लागि बात को पूछा।—जायसी।

†स्त्री०=साँट।

**साँठ-गाँठ**†—स्त्री०=साँट-गाँठ।

**साँठ-साँठ**†—स्त्री०=साँट-गाँठ।

**साँठना**—स०[हि० साँठ]१. हाथ में लेना। पकड़ना। २. ग्रहण करना।

**साँठा***—पु०[स० शरकाड]१. सरकडा। २. गन्ना।

**साँठि**†—स्त्री०=साँठ।

**साँठी**—स्त्री०[सं० सस्था] पूँजी। धन।

†स्त्री०[?] गदहपूरना। पुनर्नवा।
†पु०=साठी (धान)।

**साँठे**—अव्य०[हिं० साँठ]१. कारण या वजह से। २. आधार पर। उदा०—बलि बलि गयो चलि बात के साँठे।—तुलसी।

**साँड़**—पु०[सं० षंढ]१ गौ का वह नर जो संतान उत्पन्न करने के उद्देश्य से बिना बधिया किये पाला गया हो और इसी लिए जिससे कोई काम न लिया जाता हो। २. गौ का उक्त प्रकार का वह नर जो हिंदुओं मे, किसी मृतक की स्मृति में दागकर यों ही छोड़ दिया जाता है। वृषोत्सर्गवाला वृष। ३. लाक्षणिक अर्थ में, वह निश्चिंत व्यक्ति जो हृष्टपुष्ट हो तथा लड़ने-भिड़ने और उत्पात करने मे तेज तथा स्वतन्त्र हो।

**मुहा०—साँड़ की तरह घूमना**=बिलकुल निश्चिंत और स्वतन्त्र रहकर इधर-उधर घूमते रहना। साँड़ की तरह डकरना= मदमत्त होकर अभिमानपूर्वक जोर जोर से बाते करना या चिल्लाना।

४. वह घोड़ा जिसे जोता न जाता हो, बल्कि घोड़ियों से संतान उत्पन्न करने के लिए पाला जाता हो।

†पु०[?][स्त्री० साँड़नी] ऊँट।

**साँड़नी**—स्त्री०[हिं० साँड़?] सवारी के काम में आनेवाली तथा बहुत तेज दौड़नेवाली ऊँटनी।

**पद—साँड़नी सवार**।

**साँड़सी**†—स्त्री०=सँड़सी।

**साँड़ा**—पु०[हिं० साँड़] छिपकली की जाति का पर उससे कुछ बड़ा एक प्रकार का जंगली जानवर जिसकी चरबी दवा के काम मे आती है।

**साँड़िया**—पु०[हिं० साँड़] १. तेज चलनेवाला ऊँट। २ उक्त प्रकार के ऊँट का सवार। (राज०)

**साँड़ी**—स्त्री०=साड़ी (मलाई)। उदा०—कुम्हरा कै घरि हाँड़ी आछै अहीरा कै घर साँडी।—गोरखनाथ।

**साँड़िया**†—पु०=साँड़िया।

**सात**—वि०[सं० सात] अंत से युक्त। जिसका अंत या सीमा हो। 'अनंत' का विपर्याय।
†वि०=ज्ञात।

**सांतत्रिक**—वि०[स० संतति+ठञ्—इक] संतति प्रदान करनेवाला।

**सांतपन कृच्छ्र**—पु० [सं०] एक प्रकार का व्रत जिसमे व्रत करनेवाला भोजन त्यागकर पहले दिन गोमूत्र, गोमय, दूध, दही और घी को कुश के जल में मिलाकर पीता और दूसरे दिन उपवास करता है।

**सांतानिक**—वि० [स० संतान+ठक्—इक] संतान-संबंधी। संतान या औलाद का।

**सांतापिक**—वि०[स० संताप+ठक्—इक] संताप देने या उत्पन्न करनेवाला।

**सांतर**—वि०[स० तु० त०]१. अन्तर या अवकाश से युक्त। २ झीना।

**सांति**†—स्त्री०=शांति।

**सांतीड़ा**†—पु० [हिं० साँड़?] बिगड़ैल बैलों को नाथने का मजबूत और मोटा रस्सा। उदा०—सतना सांतीड़ा सथधाधो।—गोरखनाथ।

**सांत्वन**—पु०[सं०√सान्त्व् (अनुकूल करना)+ल्युट्—अन]१. किसी दुःखी को सहानुभूतिपूर्वक शांति देने की क्रिया। आश्वासन। ढारस। २ आपस में स्नेहपूर्वक होनेवाली बात-चीत। ३ प्रणय। प्रेम। ४ मिलन। मिलाप।

**सांत्वना**—स्त्री०[स० सान्त्वन—टाप्]१. दुःखी, शंकाकुल या संतप्त व्यक्ति को धीरज धरने तथा समझने-बुझाने की क्रिया। २ किसी को यह समझाना कि जो कुछ हो गया है या बिगड़ गया वह अनिवार्य था। अब साहस तथा धैर्य से उसका परिमार्जन किया जा सकता है। ३. उक्त आशय की सूचक उक्ति या कथन। ४ चित्त की शांति और स्वस्थता। ५ प्रणय। प्रेम।

**सांत्वयाद**—पु०[स०√सान्त्व (अनुकूल करना)+अच्√वद् (कहना)+घञ् उप० स०] वह बात जो किसी को सान्त्वना देने के लिए कही जाय। सान्त्वना का वचन।

**सांत्वित**—भू० कृ०[स०√सान्त्व् (अनुकूल करना)+क्त] जिसे सान्त्वना दी गई हो या मिली हो।

**सांथरी**—स्त्री०[स० सस्तर] १. चटाई। २ बिछौना। बिस्तर। ३ बिछाने की गद्दी।

**सांथा**†—पु०[देश०] लोहे का एक औजार जो चमड़ा कूटने के काम आता है।

**सांथी**—स्त्री० [देश०]१ करघे की वह लकड़ी जो ताने के तारों को ठीक रखने के लिए करघे के ऊपर लगी रहती है। २ बुनाई के समय ताने के सूतों का ऊपर उठना और नीचे गिरना।

**सांध (ग)**—पु०[देश०] वह भारी लकड़ी जो पशुओं के गले में इसलिए बाँध दी जाती है कि वे भागने न पावें। लगर। ढेका।

**सांधुष्टिक**—वि०[स० संदृष्ट+ठञ्—इक] एक ही दृष्टि मे होनेवाला। देखते ही तुरन्त होनेवाला। तात्कालिक।

**सांधुष्टिक न्याय**—पु०[सं० संदृष्ट+ठञ्—इक-न्याय—मध्य० स०] एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग उस समय किया जाता है जब कोई चीज देखकर उसी तरह की कोई दूसरी चीज याद आ जाती है।

**सांद्र**—वि०[सं०] [भाव० सांद्रता]१ एक मे गुथा, जुड़ा या मिला हुआ। २ गभीर। घना। उदा०—उठा सांद्र तन का अनगुठन।—दिनकर। ३ हृष्ट-पुष्ट। हट्टा-कट्टा। ४. तीव्र। प्रबल। ५ बहुत अधिक। प्रचुर। ६ चिकना। स्निग्ध। ७ कोमल। मृदु। ८. मनोहर। सुन्दर।
पु०। जगल। वन।

**सांद्रता**—स्त्री०[स० सांद्र+तल्—टाप्] सांद्र होने की अवस्था, गुण या भाव।

**सांद्र-प्रसाद**—पुं० [सं०] एक प्रकार का कफज प्रमेह जिसमे मूत्र का कुछ अंश गाढ़ा और कुछ अंश पतला निकलता है।

**सांद्रमेह**—पु०=सांद्र-प्रसाद।

**सांध**—स्त्री०[स० संधान] निशाना। लक्ष्य।
†स्त्री०[स० संधि]१ सीमा। हद। २. दे० 'संधि'। ३ दे० 'सेंध'।
†स्त्री०=सांझ।

**सांध**—वि०[सं० संधि+अण्] संधि-संबंधी। संधि का।

**सांधना**—स०[स० संधान] निशाना साधना। लक्ष्य करना। संधान करना।
स०[सं० साधन] काम पूरा करना।

स०[सं० सन्धि]१. आपस में मिलाकर एक करना। २. चीजों में जोड़ या टाँका लगाना।

**सांधा**—पुं०[सं० सधि] दो रस्सियों आदि में दी हुई गाँठ। (लश०)
क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।

**सांधिक**—पु०[स० सधा+ठक्—इक] वह जो मद्य बनाता या बेचता हो। शौंडिक।
वि० सन्धि या मेल करानेवाला।

**सांधि-विग्रह**—पु०[स० सधि-विग्रह, द्व० स० ठन्—क]प्राचीन भारत मे, वह राजकीय अधिकारी जिसे दूसरे राज्यो के साथ संधि और विग्रह करने का अधिकार होता था।

**सांध्य**—वि० [स०] १. सध्या-संबधी। सध्या का। २. संध्या के समय होनेवाला।

**सांध्य कुसुमा**—स्त्री०[सं०] ऐसी वनस्पतियाँ या बेलें जो संध्या के समय फूलती हों।

**सांध्य गोष्ठी**—स्त्री०[सं०] संध्या के समय आमंत्रित मित्रों की गोष्ठी जिसमें जलपान भी होता है। (इवनिंग पार्टी)

**सांध्य प्रकाश**—पुं०[सं०] सूर्योदय तथा सूर्यास्त के समय दिखलाई पड़नेवाला धुँधला प्रकाश।

**साँप**—पुं० [सं० सर्प, प्रा० सप्प] [स्त्री० साँपिन] एक प्रसिद्ध रेंगनेवाला जंतु जो काफी लबा होता है तथा बिलों, पेड़ों, पानी आदि मे रहता है।
**विशेष**—इनकी हजारो जातियाँ होती हैं, जिनमें से अधिकतर ऐसी होती हैं जिनके काटने से जीव मर जाते हैं। अजगर, नाग आदि जतु इसी वर्ग के होते हैं।

**पद—साँप की लकीर**=पृथ्वी पर का चिह्न जो साँप के चलने से बनता है।
**साँप की लहर**=साँप के काटने से उसके जहर के कारण शरीर में होनेवाली वह बेहोशी जिसमें आदमी लहरों की तरह छटपटाता रहता है। **साँप के मुँह में**=बहुत ही जोखिम या सांसत की स्थिति मे।
**मुहा०—साँप की तरह केंचुली झाड़ना या बदलना**=(क) पुराना वेश रूप-रंग छोड़कर नया सुन्दर रूप धारण करना। (ख) जैसा समय देखना, वैसा रूप बनाना, या वैसा आचरण-व्यवहार करना। **साँप खेलाना**=मंत्र बल से या और किसी प्रकार साँप को पकड़ना और उससे क्रीड़ा करना। **साँप-छछूँदर की दशा होना**=ऐसी विकट स्थिति में पड़ना कि दोनों ओर घोर संकट की संभावना हो।
**विशेष**—लोक में ऐसा प्रवाद है कि साँप यदि छछूँदर को एक बार मुँह में पकड़ ले तो उसके लिए छछूँदर को छोड़ना भी घातक होता है और निगलना भी, क्योंकि उसे उगलने पर वह अंधा हो जाता है और निगलने पर कोढ़ी हो जाता है।
**मुहा०—(किसी को) साँप सूँघ जाना**=(क) साँप का काट लेना जिससे आदमी प्रायः मर जाता है। (ख) किसी का इस प्रकार बेसुध होकर पड़ जाना कि मानों उसे साँप ने काट लिया हो और वह बेहोश होकर मरणावस्था हो रहा हो। **(किसी के) मत्थे पर साँप छोड़ना**=ईर्ष्याजन्य घोर कष्ट होना। अत्यन्त दुःख होना।
२. आतिशबाजी में वह बाना जो जलाये जाने पर साँप की तरह लंबा होता जाता है। ३. वह व्यक्ति जो समय का लाभ उठाकर विश्वासघात करने से भी न चूकता हो।

**सांपत्कृत**—अ०[सं० संप्रापण] प्राप्त होना। मिलना।
†अ०[सं० संपूर्ण] काम पूरा करके निवृत्त होना। सपरना। उदा०—साँपड़ किया अतनान सूरज सारी जप करे।—जीराँ।

**सांपत्तिक**—वि०[सं०] संपत्ति से संबंध रखनेवाला। संपत्ति का। जैसे—सांपत्तिक व्यवस्था।

**सांपद**—वि०[स० साम्पद] संपदा-सम्बन्धी। सपदा का।

**साँप-धरन**—पुं० [हिं० साँप+धरना] सर्पधारण करनेवाले, शिव। महादेव।

**सांपातिक**—वि०[सं० सपात+ठञ्—इक] १ संपात-संबंधी। संपात का। २. संपात काल में होने अथवा संपात काल से संबंध रखनेवाला। (ज्योतिष)

**साँपिन**—स्त्री०[हिं० साँप+इन (प्रत्य०)] १ साँप की मादा। २. साँप के आकार की एक प्रकार की भौंरी या शारीरिक चिह्न जो सामुद्रिक के अनुसार बहुत शुभ माना जाता है। ३. बहुत अधिक दुष्ट या विश्वासघातिनी स्त्री।

**साँपिया**—वि०[हिं० साँप+इया (प्रत्य०)] साँप के रग का मैलापन लिये काले रंग का।
पुं० उक्त प्रकार का काला रंग।

**सांप्रत**—अव्य०[सं० साम्प्रत] १ इसी समय। अभी। तत्काल। २. इस समय। आज-कल। ३ उचित। उपयुक्त। ४. सामयिक।
वि० किसी के साथ मिला हुआ। युक्त।

**सांप्रतिक**—वि० [स०]१. जो सप्रति या इस समय हो या चल रहा हो। (करेन्ट) २ जो इस समय या आवश्यकता को देखते हुए ठीक और उपयुक्त हो।

**सांप्रदायिक**—वि०[स०] [भाव० सांप्रदायिकता]१. संप्रदाय-संबंधी। संप्रदाय का। २. किसी विशिष्ट सप्रदाय से ही संबद्ध रहकर शेष संप्रदायों का विरोध करने या उनसे द्वेष रखनेवाला। ३ विभिन्न संप्रदायों के पारस्परिक विरोध के फलस्वरूप होनेवाला। (कम्यूनल; उक्त सभी अर्थों में)

**सांप्रदायिकता**—स्त्री०[सं०]१ सांप्रदायिक होने का भाव। २. केवल अपने संप्रदाय की श्रेष्ठता और हितों का विशेष ध्यान रखना और दूसरे सप्रदायों से द्वेष रखना। (कम्यूनलिज्म)

**सांबंधिक**—वि०[स० संबंध+ठक्—इक] संबध का। संबंधी।
पुं० किसी की पत्नी का भाई। साला।

**सांब**—पुं०[सं० साम्ब] १. अम्बा अर्थात् पार्वती सहित शिव। २. कृष्ण के एक पुत्र जो जाम्बवती के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

**सांबपुर**—पुं०[सं० साम्बीपुर] पाकिस्तान के मुलतान नगर का प्राचीन नाम।

**सांबपुराण**—पुं०[सं०] एक उपपुराण का नाम।

**साँबर**०—पुं०=सँवल (राह-खर्च)।

**सांबर**—पुं०[सं०]१. साँबर (हिरण)। २. साँभर (नमक)।

**सांबरी**—स्त्री०[सं० सांबर-ङीप्] १. सब को धोखे में रखनेवाली माया। २. इन्द्रजाल। जादूगरी।

**साँभर**—पुं० [स० सम्मल या साम्मल] १. राजस्थान की एक झील जिसके खारे पानी से नमक बनाया जाता है। २. उक्त झील के पानी

से बनाया हुआ नमक जिसे सांभर कहते हैं। ३. एक प्रकार का बड़ा बारहसिंघा।

†पुं० =सावल (पाथेय)।

**सांवलना**†—स० [स० स्मृत] १. स्मरण करना। २ सुनना। उदा०—सांभल्यौ रास गया-फल होइ।—नरपतिनाल्ह।

†अ० =संभलना।

**सांमुहे**†—अव्य०[स० सम्मुखे] सामने। सम्मुख।

**सांवक**—पुं०[देश०] वह ऋण जो हलवाहों को दिया जाता है और जिसके सूद के बदले में वे काम करते हैं।

†पुं०[सं० श्यामक] सांवा नामक कदन्न।

**सांवटा**—वि० [?] १. समतल। बराबर। २. पूरी तरह से समाप्त किया हुआ। सफाचट। उदा०—तुमने ला पीकर सांवटा कर दिया होगा।—वृन्दावनलाल वर्मा।

**सांवत**†—पु०=सामंत।

**सांवती**†—स्त्री०[देश०] बैलगाड़ी आदि के नीचे की वह जाली जिसमे बैलों के लिए घास आदि रखते हैं।

**सांवत्सर**—वि०,पु०[स०] =सांवत्सरिक।

**सांवत्सरिक**—वि०[स०]१. सवत्सर-सम्बन्धी। २. प्रतिवर्ष होनेवाला। वार्षिक।

पुं०१. ज्योतिषी। २. चांद्र मास।

**सांवत्सरीय**—वि०[स० सवत्सर+छण्]=ईय]१. संवत्सर-सम्बन्धी। २ वार्षिक।

**सांवन**—पुं०[?] मझोले आकार का एक प्रकार का पहाड़ी पेड़ जिसका गोंद ओषधि के रूप में काम आता है। कहते हैं कि यह गोंद मछली के लिए बहुत घातक होता है।

†पु०=सावन (महीना)।

**सांवरा**†—वि०=सांवला।

**सांवलताई**†—स्त्री०=सांवलापन।

**सांवला**—वि० [सं० श्यामल] [स्त्री० सांवली, भाव० सांवलापन] जिसके शरीर का रंग हलका कालापन लिए हुए हो। श्याम वर्ण का।

पु० १. कृष्ण। २. पति के लिए सबोधन।

**सांवलापन**—पु०[हि० सांवला+पन (प्रत्य०)] सांवला होने की अवस्था, गुण या भाव। वर्ण की श्यामता।

**सांवलिया**—वि० [हि० सांवला] साँवले रंग का (व्यक्ति)।

पु० श्रीकृष्ण का एक नाम।

**सांवाँ**—पु० [सं० श्यामक]कगनी या चेना की जाति का एक अन्न जो जेठ में तैयार होता है।

**सांवादिक**—वि०[स० संवाद+ठक्]=इक] १. विवादास्पद। २. प्रचलित। ३. सवाद-सबंधी। ४. समाचार-सबधी।

पु०१. नैयायिक। २ पत्रकार।

**सांवेदिक**—वि० [स०] शरीर के संवेदन सूत्रों से संबंध रखनेवाला। (सेन्सरी)

**सांशयिक**—वि०[स० संशय+ठक्]=इक] १. संशय-संबंधी। २. जिसके सम्बन्ध मे कुछ सशय हो।

**सांस**—पुं०[सं० श्वास] १. प्राणियों का जीवन धारण के लिए नाक या मुँह से हवा अंदर खींचकर फेफड़ों तक पहुँचाने और उसे फिर बाहर निकालने की क्रिया। श्वास। दम। (क्रिद)

**विशेष**—(क) जल में रहनेवाले जीवों और वनस्पतियों मे भी यह क्रिया होती है, पर उनका प्रकार और स्वरूप कुछ भिन्न होता है। जब तक यह क्रिया चलती रहती है, तब तक प्राणी या शरीर जीवित रहता है। (ख) सं० श्वास से व्युत्पन्न हि० सांस सर्वथैव पुल्लिग है। पर उर्दू के कुछ कवियों ने भूल से इसका प्रयोग स्त्रीलिंग मे किया है, और उनके अनुकरण पर हिंदी कोषों मे भी इसे स्त्रीलिंग माना गया है जो ठीक नही है।

क्रि०प्र०—आना।—खींचना।—छोड़ना।—जाना।—निकलना।—लेना। **मुहा०—सांस उखड़ना**=(क) सांस लेने की क्रिया का बीच मे कुछ समय के लिए रुकना। जैसे—गाने मे गवैये का सांस उखडना।(ख) मरने के समय रोगी का बहुत कष्ट से और रुक-रुककर सांस लेना। **सांस ऊपर-नीचे होना**=चिंता, भय आदि के कारण सांस की क्रिया बार बार रुकना। **सांस खींचना**=वायु अदर खींचकर उसे इस प्रकार रोक रखना कि ऊपर से देखने पर निर्जीव या मृत जान पड़े। जैसे—शिकारी को देखते ही हिरन सांस खींचकर पड़ गया। **सांस चढ़ना**=बहुत परिश्रम करने के कारण थक जाने पर साँस का जल्दी जल्दी आना-जाना। **सांस चढ़ाना**=प्राणायाम के समय अथवा यों ही वायु अदर खींचकर उसे कुछ समय के लिए रोक रखना। **सांस छूटना**=सांस लेने की क्रिया बद होना जो मृत्यु का लक्षण है। **सांस टूटना**= दे० 'ऊपर 'साँस उखड़ना'। **सांस तक न लेना**= इस प्रकार चुप या मौन हो जाना कि मानो अस्तित्व या उपस्थिति ही नही है। जैसे—जब मैंने उसे फटकारना शुरू किया, तब उसने सांस तक न लिया। **सांस फूलना**=अधिक शारीरिक श्रम करने के कारण सांस का जल्दी जल्दी चलने लगना। (ख) दमे का रोग होना। **सांस भरना**=दे० नीचे 'ठंडा सांस लेना'। **सांस रहते**=जब तक जीवन रहे। जीते जी। जैसे—सांस रहते तो मैं कभी ऐसा न होने दूँगा। **सांस लेना**=परिश्रम करने-करते थक जाने पर सुस्ताने के लिए ठहरना या रुकना। **उलटा सांस लेना**=(क) मरने के समय बहुत कष्ट से और रुक-रुक कर सांस लेना। (ख) दे० नीचे 'गहरा या ठंडा या लंबा सांस लेना'। **गहरा, ठंडा या लंबा सांस लेना**=(क)बहुत अधिक मानसिक कष्ट के कारण अथवा (ख) मन पर पड़ा हुआ भार हलका होने के कारण कुछ अधिक देर तक हवा अंदर खींचते हुए फिर कुछ अधिक देर तक उसे बाहर निकालना जो ऐसे अवसरों पर प्राय. शरीर का स्वाभाविक व्यापार होता है।

**विशेष**—सांस के शेष मुहा० के लिए दे० 'दम' के मुहा०।

२. किसी प्रकार की जीवनी-शक्ति या सक्रियता। दम। जैसे—अब मामले मे कुछ भी सांस नही रह गया, अर्थात् उसके संबंध में अब कुछ भी नही हो सकता; या अब यह और आगे नही बढ़ाया जा सकता। ३. निरंतर बहुत समय तक काम करते रहते या चल जाने पर सुस्ताने के लिए बीच में किया जानेवाला विश्राम या लिया जानेवाला अवकाश। **मुहा०—सांस लेना**=कोई काम करते समय सुस्ताने के लिए बीच में कुछ ठहरना या रुकना। जैसे—जब तक यह काम पूरा न हो जाय, तब तक मुझे सांस लेने की भी फुरसत न मिलेगी।

४. किसी चीज के फटने आदि के कारण उसके तल में पड़नेवाली पतली दरज या संकीर्ण संधि।

**मुहा०—(किसी चीज का) सांस लेना**=किसी चीज का बीच में से इस प्रकार फटना कि उसकी दरज में से हवा आ जा सके। जैसे—दीवार या फर्श का सांस लेना, अर्थात् बीच मे से फटना।

५. उक्त प्रकार के अवकाश, दरज या संधि में भरी हुई हवा।

**मुहा०—(किसी चीज में का) सांस निकलना**=अदर भरी हुई हवा का बाहर निकल जाना। जैसे—गुब्बारे या रबर के गेंद का सांस निकलना।

**(किसी चीज में) सांस भरना**=अदर हवा पहुँचाना या भरना।

६ एक प्रसिद्ध रोग जिसमे सांस बहुत जोर जोर से और जल्दी जल्दी चलता है। दम या सांस फूलने का रोग। दमा।

**सांसत**—स्त्री०[हिं० सांस+त (प्रत्य०)] १. दम घुटने का सा कष्ट। २. बहुत अधिक शारीरिक कष्ट या यातना। ३. बहुत कठोर शारीरिक दंड।

**सांसत घर**—पु०[हिं० सांसत+घर]१. कारागार की बहुत ही तंग तथा अत्यन्त अंधकारपूर्ण कोठरी जिसमे क्रुद्ध कैदी इसलिए रखे जाते हैं कि उन्हे बहुत अधिक शारीरिक कष्ट हो। २. बहुत ही अंधेरी और छोटी कोठरी।

**सांसद**—वि० [स० ससद] (कथन, व्यवहार या आचरण) जो ससद या उसके सदस्यों की मर्यादा के अनुकूल हो। पूर्ण भद्रोचित। (पार्लमेन्टरी)

**सांसद सचिव**—पु०[स०] किसी राज्य के मंत्री से सम्बद्ध वह सचिव जो उसे ससद के कार्यों मे सहायता देता हो। (पार्लमेन्टरी सेक्रेटरी)

**सांसदी**—पु०[स० ससद] वह जो ससद के रीति-व्यवहारों का अच्छा ज्ञाता हो और उसमे बैठकर सब काम ठीक तरह से चलाने मे पूर्ण पटु हो। (पार्लमिन्टेरियन)

**सांसना***—स० [स० शासन] १. शासन करना। दंड देना। २ डाँटना-डपटना। ३ सांसत में डालकर बहुत कष्ट या दुःख देना।

**सांसर्गिक**—वि०[स० ससर्ग+ठ्—इक] १. ससर्ग सम्बन्धी। २. संसर्ग से उत्पन्न होने या बढ़नेवाला। (कन्टेजस)

**सांसल**—पु० [?] १ एक प्रकार का कबल। २ खेतों में बीज बोना।

**सांसा**—पु० [हिं० सांस] १. श्वास। सांस। २. जीवन। जिंदगी। जैसे—जब तक सांसा, तब तक आशा।

पु०[सं० सशय]१. संदेह। शक। उदा०—सतगुर मिलिया सांसा भाग्या, सैन बताई साँची।—मीराँ। २. भय। डर।

†पुं०=सांसत। जैसे—मेरी जान तभी से सांसि में पड़ी है।

†वि०=सांचा (सच्चा)।

**सांसारिक**—वि० [सं०] [भाव० सांसारिकता] १ जिसका संबंध इस ससार या उसकी वस्तुओं, व्यापारों आदि से हो। आध्यात्मिक तथा पारलौकिक से भिन्न। २. जिसका संबंध मुख्यतः जीवन की आवश्यकताओं, विषय-भोगों आदि से हो।

**सांसिद्धिक**—वि०[सं० सासिद्धि+ठ्—इक]१. संसिद्धि सम्बन्धी। २. प्राकृतिक। स्वाभाविक। ३. आत्म-भू। स्वतः प्रसूता।

**सांसी**—पुं०[?] एक जंगली और यायावर या खानाबदोश जाति।



**सांस्कारिक**—वि० [स० सस्कार+ठ्—इक] १. सस्कार-संबंधी। २. सस्कार-जन्य। ३ अन्त्येष्टि क्रिया से सम्बन्ध रखनेवाला।

**सांस्कृतिक**—वि०[स० संस्कृति+ठ्—इक] संस्कृति से सम्बन्ध रखने या सस्कृति के क्षेत्र में आने या होनेवाला। (कलचरल)

**सांस्थानिक**—वि० [सं० संस्थान+ठ्क्—इक] सस्थान-सम्बन्धी। सस्थान का।

**सांस्पर्शिक**—वि० [सं० सस्पर्श+ठ्—इक] १ सस्पर्श-सम्बन्धी। २ सस्पर्श से उत्पन्न होने या फैलनेवाला। २ दे० 'सकामक'।

**सांहि**—पु०[स०स्वामी] १ स्वामी। मालिक। २ देख-रेख और रक्षा करनेवाला। उदा०—सांहि नाहिं जग बात को पूछा।—जायसी।

**सा**—अव्य०[स० सम=समान] १ एक सबंध-सूचक अव्यय जिसका प्रयोग कही क्रिया विशेषण की तरह और कही विशेषण की तरह नीचे लिखे आशय या भाव सूचित करने के लिए होता है—१. तुल्य, बराबर, सदृश या समान। जैसे—कमल सी आँखें, फूल सा शरीर। २. किसी की तरह या प्रकार का। बहुत कुछ मिलता-जुलता। जैसे—पूर्तों के से काम, बच्चों की सी बातें। ३ सादृश्य होने पर भी किसी प्रकार की आंशिक अल्पता, न्यूनता या हीनता का भाव सूचित करने के लिए। जैसे—(क) वहाँ बैठे-बैठे मुझे नींद सी आने लगी। (ख) वह एक मरियल सा टट्टू ले आया। ४ अवधारण या निश्चय सूचित करने के लिए। जैसे—तुम्हें इनमे की कौन सी पुस्तक चाहिए। ५. किसी अनिश्चित मात्रा या मान पर जोर देने के लिए। जैसे—जरा सा नमक, थोड़े से आदमी, बहुत सी बातें। ६. पूरा-पूरा न होने पर भी बहुत कुछ। जैसे—वहाँ एक गड्ढा-सा बन गया।

**विशेष**—(क) जैसा कि ऊपर के कुछ उदाहरणों से सूचित होता है इस अव्यय का कुछ अवस्थाओं में विशेषण के समान भी प्रयोग होता है, इसी लिए विशेष्य के लिंग और वचन के अनुसार इसके रूप भी बदलकर सी और से हो जाते हैं। (ख) यह अव्यय क्रिया विशेषणों, विशेषणों और संज्ञाओं के साथ लगता ही है, क्रियाओं के भूत-कृदंत रूपों और विभक्तियों के साथ भी लगता है। जैसे—(क) उठता हुआ सा; चलता हुआ-सा। (ख) घर का सा व्यवहार, मूर्खों का सा आचरण। प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ विशेषणों के अत मे लगकर तरह, प्रकार, रूप रंग आदि का भाव सूचित करता है। जैसे—ऐसा=इस-सा, वैसा=उस-सा।

पुं०[सं० षड्ज] सगीत में, षड्ज स्वर का सूचक शब्द या संक्षिप्त रूप। जैसे—सा, रे, ग, म।

**साअत**—स्त्री०[अ०] दे० 'साइत'।

**साइंस**—पुं०[अ०] दे० 'विज्ञान'।

**साइक**—पुं०=शासक।

†पुं०=सायकाल।

**साइकिल**—स्त्री०[अ०] दो पहियोंवाली एक प्रसिद्ध सवारी। पैरगाड़ी। बाइसिकिल।

**साइक्क**†—पु०=सायक (तीर)।

**साइत**—स्त्री०[अ० साअत] १. एक घंटे या ढाई घड़ी का समय। २. समय का बहुत ही छोटा विभाग। क्षण। पल। लमहा। ३. किसी शुभ कार्य के लिए फलित ज्योतिष के विचार से स्थिर किया हुआ कोई

सूक्ष्म काल या समय। मुहूर्त। जैसे—डारचार्ल्स की साइत, भौंवर की साइत।

क्रि० प्र०—दिखाना।—देखना।—निकलना।—निकालना।

†अव्य०=शायद।

**साइनबोर्ड**—पु०[अं०]वह तख्ता या धातु आदि का टुकड़ा जिस पर किसी व्यक्ति, संस्था आदि का नाम और संक्षिप्त विवरण सर्वसाधारण के सूचनार्थ लिखा रहता है। नाम-पट्ट।

**साइयाँ**†—पुं०=साँई (स्वामी या ईश्वर)।

**साइर**—वि०, पुं०=सागर।

†पुं०=सागर। उदा०—सर सरिता साइर गिरि भारे।—नन्ददास।

**साईं**†—पुं०=साँई।

**साई**—स्त्री०[हिं० साइत]१ कार्य आदि के सम्पादन के लिए बातचीत पक्की होने पर दिया जानेवाला पेशगी धन। बयाना। २ विशेषत वह धन जो गाने-बजानेवाले से किसी कार्यक्रम की बात पक्की होने पर उन्हें दिया जाता है।

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लेना।

†स्त्री०[सं० सहाय] सहायता।

स्त्री०[देश०]१ वे छड़ जो बैलगाड़ी के अगले हिस्से में बेड़े बल में मजबूती के लिए एक दूसरे को काटते हुए रखे जाते हैं। २ एक प्रकार का कीड़ा।

†स्त्री०=साई-काँटा।

**साई-काँटा**—पुं०[हिं० शाही (जंतु)+काँटा]एक प्रकार का वृक्ष जो दक्षिण भारत, गुजरात और मध्य प्रदेश में होता है। साई। मोगली।

**साईस**—पु० [रईस का अनु०] [भाव० साईसी] किसी रईस का वह नौकर जो उसके घोड़े या घोड़ों की देख-भाल करता हो।

**साईसी**—स्त्री०[हिं०साईस+ई(प्रत्य०)]साईस का काम, भाव या पद।

**साउज**†—पं०=सावज (पशु)।

**साए**†—पुं०=१ सायर। २. सागर।

**साकंभरी**†—पु०=शाकम्भरी (शील)।

**साक**†—पुं० [स० शाक] शाक। साग। सब्जी। तरकारी। भाजी।

†पु०=सालू।

**साकचोरि**—स्त्री०[?] मेंहदी। हिना।

**साकट**†—पु०=साकत।

**साकत**—पुं०[सं० शाक्त]१. शाक्त मत का अनुयायी। २ वह जो मद्य, मास आदि का सेवन करता हो। ३. वह जिसने गुरु से दीक्षा न ली हो। निगुरा।

वि० दुष्ट। पाजी।

**साकर**†—स्त्री० १. =साँकल। २.=शक्कर।

वि०=साँकर (सँकरा)।

**साकल्य**—पु०[सं०]सकल की अवस्था, गुण या भाव। सकलता। समग्रता।

†पुं०=शाकल्य।

**साकवर**†—पुं०[?] बैल। वृषभ।

**साकांक्ष**—वि०[सं० त० त०]१. (व्यक्ति) जिसके मन में कोई आकांक्षा हो। आकांक्षा रखनेवाला। २ (काम, चीज या बात) जिसे किसी और की कुछ अपेक्षा हो। सापेक्ष।

पुं० भारतीय साहित्य में, एक प्रकार का अर्थदोष जो ऐसे वाक्यों में माना जाता है जिनमें किसी अपेक्षित आशय का स्पष्ट उल्लेख न हो, और फलतः उस अपेक्षित आशय के सूचक शब्दों की आकांक्षा बनी रहती हो। यथा—'जननी, सचि, मुनि पितु वचन क्यों तजिहैं बन राम।—तुलसी। इसमें मुख्य आशय तो यह है कि राम बन जाना क्यों छोड़े। परन्तु 'क्यों तजिहैं बन राम' से यह आशय पूरी तरह से प्रकट नहीं होता, इसलिए इसमें साकांक्ष नामक अर्थ दोष है।

**साका**—पुं०[सं० शाका]१ संवत्। शाका।

क्रि० प्र०—चलना।—चलाना।

२. ख्याति। प्रसिद्धि। ३. कीर्ति। यश। ४. बड़ा काम जिससे कर्ता की बहुत कीर्ति हो।

**मुहा०—साका करके (कोई काम) करना**—सबके सामने, दृढ़ता और वीरतापूर्वक। उदा०—तस फल उन्हहिं देउँ करि साका।—तुलसी। ५. कोई ऐसा बड़ा काम जो सहसा सब लोग न कर सकते हों और जिसके कारण कर्ता की कीर्ति हो।

**मुहा०—साका पूजना**—किसी का अभीष्ट या उक्त प्रकार का कोई बहुत बड़ा काम सम्पन्न या सम्पादित होना। उदा०—आजु आइ पूजी वह साका।—जायसी।

६. धाक। रोब।

**मुहा०—साका चलाना या बाँधना**—(क) आतंक फैलाना। (ख) रोब जमाना।

**साकार**—वि०[सं० तृ० त०] [भाव० साकारता]१ जिसका कुछ या कोई आकार हो। आकारयुक्त। २ विशेषत ऐसा अमूर्त, असांसारिक या पारलौकिक जीव या तत्त्व जो मूर्त रूप धारण करके पृथ्वी पर अवतरित हुआ हो। ३ बात या योजना जिसे उद्दिष्ट उपयोगी या क्रियात्मक आकार अथवा रूप प्राप्त हुआ हो। जैसे—सपने साकार होना। ४ मोटा। स्थूल।

पु०ईश्वर का वह रूप जो साकार हो। ब्रह्म का मूर्तिमान् रूप। जैसे—अवतारों आदि में दिखाई देनेवाला रूप।

**साकारोपासना**—स्त्री०[स० ष० त०]ईश्वर की वह उपासना जो उसका कोई आकार या मूर्ति बनाकर की जाती है। ईश्वर अथवा उसके किसी अवतार की यों ही अथवा मूर्ति बनाकर की जानेवाली उपासना। निराकार उपासना से भिन्न।

**साकिन**—वि०[अ०]१ जो एक ही स्थान पर स्थिर रहता हो। अचल। २ जो चलता-फिरता या हिलता-डोलता न हो। गति-रहित। ३ किसी विशिष्ट स्थान पर रहने या निवास करनेवाला। निवासी। जैसे—चुन्नीलाल साकिन भौजा नरहरपुर।

स्त्री०[अ०साकी का स्त्री०]साकी (मद्य पिलानेवाला) का स्त्री०रूप।

पु०[?] कश्मीर से नेपाल तक के जंगलों में पाया जानेवाला बकरी की तरह का एक प्रकार का पशु जिसका मांस खाया जाता है। कश्मीर में इसे 'कैल' कहते हैं।

**साकी**—पु०[अ०] [स्त्री० साकिन]१. वह जो लोगों को मद्य का पात्र भर कर देता और हुक्का पिलाता हो। शराब और हुक्का पिलाने का काम करनेवाला व्यक्ति। २. उर्दू-फारसी काव्यों में प्रेमिका की एक संज्ञा जिसका काम मद्य पिलाना माना जाता है।

**विशेष**—हमारे यहाँ कुछ संत कवियों ने इसके स्थान पर 'कलाली' (देखें) का प्रयोग किया है।

†स्त्री०[?] कपूर-कचरी।

**साकुआ**†—पुं० [?] घोड़ा। अश्व। (डिं०)

**साकृतिक**—वि०[स०] आकृति से युक्त अर्थात् साकार किया हुआ।

**साकेत**—पु० [स०]१. अयोध्या नगरी। अवधपुरी। २. भगवान् रामचन्द्र का लोक जिसमे उनके भक्तों को मरने पर स्थान मिलता है।

**साकेतक**—पु०[स० साकेत+कन्] साकेत का निवासी। अयोध्या का रहनेवाला।

वि० साकेत-सम्बन्धी। साकेत का।

**साकेतन**—पु०[सं०] साकेत। अयोध्या।

**साकोह**†—पु०=साखू (शाल वृक्ष)।

**साक्षुक**—पुं०[स० शक्तु+ढक्=क] जौ, जिससे सत्तू बनता है।

वि० १. सत्तु-सम्बन्धी। सत्तू का। २. सत्तू से बना हुआ।

**साक्ष**—वि०[स० न० त०]१ अक्ष से युक्त। २. आँखों या नेत्रों से युक्त। आँखोवाला।

**साक्षर**—वि०[स०] [भाव० साक्षरता]१. अक्षर या अक्षरों से युक्त। २. (व्यक्ति) जो अक्षरों को पढ़-लिख सकता हो। ३. शिक्षित। सुशिक्षित। (लिटरेट; उक्त दोनों अर्थों में)

**साक्षरता**—स्त्री०[स०] साक्षर अर्थात् पढे-लिखे होने की अवस्था या भाव। (लिटरेसी)

**साक्षात्**—अव्य० [सं०]१ आँखों के सामने। प्रत्यक्ष। सम्मुख। २. प्रत्यक्ष या सीधे रूप मे। ३ शरीरधारी व्यक्ति (या वस्तु) के रूप मे। जैसे—विद्या मे तो आप साक्षात् बृहस्पति थे।

वि० मूर्तिमान्। साकार। जैसे—आप तो साक्षात् सत्य हैं।

पु०=साक्षात्कार। (क्व०)

**साक्षात्कार**—पु०[स०]१. आँखों के सामने प्रत्यक्ष या साक्षात् उपस्थित होना। सामने आना या होना। जैसे—ईश्वर या देवी-देवताओं का (या से) होनेवाला साक्षात्कार। २. प्रत्यक्ष रूप से होनेवाली भेंट। मुलाकात। ३. इन्द्रियों या मन को (किसी बात या विषय का) होनेवाला पूरा या स्पष्ट ज्ञान। जैसे—मानसिक साक्षात्कार।

**साक्षात्कारी (रिन्)**—वि०[स०] साक्षात् करनेवाला।

**साक्षिता**—स्त्री०[सं०]१. साक्षी होने की अवस्था या भाव। २. गवाही। साक्ष्य।

**साक्षिभूत**—पुं०[सं० कर्म० स०] विष्णु का एक नाम।

**साक्षी (क्षिन्)**—पुं० [स०] [स्त्री० साक्षिणी] १. वह मनुष्य जिसने किसी घटना को घटित होते हुए अपनी आँखों से देखा हो। २. उक्त प्रकार का ऐसा व्यक्ति जो किसी बात की प्रामाणिकता सिद्ध करता हो। गवाह। ३. वह जो कोई घटना घटित होते हुए देखता हो। प्रत्यक्षदर्शी। जैसे—हमारे शरीर में आत्मा साक्षी रूप में रहती है, भोग से उसका कोई सम्बन्ध नहीं होता।

स्त्री० किसी बात को कहकर प्रमाणित करने की क्रिया। गवाही। शहादत।

**साक्षीकरण**—पुं०[स० साक्षि√च्वि√कृ(करना)+ल्युट्—अन] [भू० कृ० साक्षीकृत] दे० 'साक्ष्यकर्म'।

**साक्षीकृत**—भू० कृ०[स०] दे० साक्ष्यकित'।

**साक्षेप**—वि०[सं० तृ० त०]१. जिसके सम्बन्ध मे किसी प्रकार का आक्षेप या आपत्ति की जा सकती हो। २ आक्षेप अर्थात् ताने या व्यंग्य से युक्त (कथन)।

क्रि० वि० आक्षेपपूर्वक।

**साक्ष्यंकन**—पु०[स० साक्षी+अंकन] [भू० कृ० साक्ष्यंकित] किसी पत्र, लेख्य, हस्ताक्षर आदि के सम्बन्ध मे साक्षी के रूप मे यह लिखवाना कि यह ठीक और वास्तविक है। प्रमाणीकरण। (एटेस्टेशन)

**साक्ष्यंकित**—भू० कृ०[स०] जिस पर साक्ष्यकन हुआ हो। (एटेस्टेड)

**साक्ष्य**—पु०[स० साक्षि+यत्]१. वह जो कुछ अपनी आँखों से देखा गया हो। २. आँखों से देखी हुई घटना का कथन। ३ गवाही। शहादत।

**साख**—स्त्री०[स० शाका, हिं० साका]१ धाक। रोब। २ लेन-देन और व्यापार-व्यवहार मे, लेखपन की ऐसी प्रामाणिकता और मान्यता जिसके विषय मे किसी का कोई सन्देह न हो। (क्रेडिट) जैसे—आजकल बाजार (या समाज) मे उनकी बहुत साख है।

**विशेष**—ऐसी प्रामाणिकता व्यक्ति की प्रतिष्ठा और मर्यादा की सूचक होती है।

३ प्रतिष्ठा। मर्यादा।

क्रि० प्र०—बँधना।—बनना।—बनाना।—बाँधना।—बिगड़ना।—बिगाड़ना।

†स्त्री० [सं० शाखा] १ वृक्षों आदि की डाल। शाखा। २. खेत की उपज। पैदावार। ३ पीढ़ी। पुश्त। उदा०—बिन मेहराष घर करै, चौदह साख लबार।—धाय।

स्त्री०[स० साक्षी] गवाही। शहादत। साखी।

**साखत**†—पु०[स० शाक्त]१. शक्ति या देवी का उपासक। शाक्त। २. देवी-देवताओं का उपासक। देव-पूजक। (क्व०) उदा०—साखित (साखत) के तू हरता-करता हरि भगतन के बैरी।—कबीर।

**साखना***—स० [स० साक्षि, हिं० साख+ना (प्रत्य०)] साखी या गवाही देना। शहादत देना।

**साखर***—वि०=साक्षर।

स्त्री०=शक्कर। (महाराष्ट्र)

**साखा***—स्त्री० [स० शाखा]१. वह कीली जो चक्की के बीच में लगी होती है। चक्की का धुरा। २. दे० 'शाखा'।

**साखिआ***—वि०=सारखा (सरीखा या सदृश)।

*स्त्री०=शाखा।

**साखियात***—अव्य०=साक्षात्।

**साखी**—पुं०[सं० साक्षिन्]१. गवाह। २. आपसी झगड़ों का निपटारा करनेवाला पंच। ३. मित्र और सहायक। ४. संगी। साथी।

स्त्री०१. साखी। गवाही। शहादत।

मुहा०—साखी पुकारना=गवाही देना।

२ ज्ञान और भक्ति के क्षेत्र में, महापुरुषों, संतों, साधु-महात्माओं आदि के वे पद जिनमें वे अपने अनुभव, मत या साक्षात्कार की प्राप्ति के लिए अन्य साधु-महात्माओं के वचन साक्षी रूप में उद्धृत करते हैं। जैसे—कबीर की साखी।

†पुं० [सं० साखिन्=शाखी] पेड़। वृक्ष।

**साकू**—पुं० [सं० शाल] एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारत के काम आती है।
स्त्री० उक्त वृक्ष की लकड़ी।

**साकोट**—वि० [सं० सखि+इक्—एय] १. सखा-सम्बन्धी। सखा का। २. लोगों को सहज में अपना सखा बना लेनेवाला, अर्थात् मिलनसार। यार-बाश।

**साकोचारज**—पुं०=साकोचार।

**साकोट**—पुं० [सं० शाकोट] सिहोर वृक्ष। सिहोरा।

**साख्त**—स्त्री० [फा०] १. किसी चीज की बनावट या रचना का कार्य। २. बनावट या रचना का ढंग या प्रकार। ३. बनाकर तैयार की हुई चीज।

**साख्ता**—वि० [फा० साख्तः] १ बनाया हुआ। २. नकली। बनावटी।

**साख्य**—पुं० [सं० सखि+ष्यञ्]=सख्यता।

**साग**—पुं० [सं० शाक] १. कुछ विशिष्ट प्रकार के पौधों की वे पत्तियाँ जो तरकारी आदि की तरह पकाकर खाई जाती हैं। शाक। भाजी। जैसे—सोए, पालक, मरसे या बथुए का साग।
**पत्र—साग-पात**=(क) खाने के साग, पत्ते, कन्द, मूल आदि। (ख) बहुत ही उपेक्ष्य और तुच्छ वस्तु। जैसे—वह तो औरों को अपने सामने साग-पात समझता है।
२ पकाई हुई भाजी। तरकारी। जैसे—आलू का साग, कुम्हड़े का साग। (वैष्णव)

**सागर**—पुं० [सं०] १. समुद्र, जो पुराणानुसार महाराज सगर का बनाया हुआ माना जाता है। उदधि। जलधि। २. बहुत बड़ा तालाब। झील। ३. दशनामी संन्यासियों का एक भेद। ४. उक्त प्रकार के संन्यासियों की उपाधि। ५. एक प्रकार का हिरन।
पुं० [अ० सागर] १. बड़ा प्याला। कटोरा। २ शराब पीने का प्याला।

**सागरज**—वि० [सं०] सागर या समुद्र से उत्पन्न।
पु० समुद्री नमक।

**सागर-बरा**—स्त्री० [सं०] पृथ्वी। भूमि।

**सागरनेमि**—स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

**सागरमुद्रा**—स्त्री० [सं०] इष्टदेव का ध्यान या आराधना करने की एक प्रकार की मुद्रा।

**सागर-मेखला**—स्त्री० [सं०] पृथ्वी।

**सागर-लिपि**—स्त्री० [सं० मध्यम० स०] एक प्राचीन लिपि।

**सागरवासी (सिन्)**—वि० [सं० सागर+√वस् (रहना)+णिनि] १. समुद्र में वास करने या रहनेवाला। २ समुद्र के तट पर रहनेवाला।

**सागर-संगम**—पुं० [सं०] नदी और समुद्र का सगम स्थान, विशेषतः वह स्थान जहाँ समुद्र की लहरें नदी की धारा से मिलती हैं। (एस्चुअरी)

**सागरांत**—पुं० [सं० ष० त०] १. समुद्र का किनारा। समुद्र-तट। २. समुद्र-तट का विस्तार।

**सागरांता**—स्त्री० [सं० सागरांत-टाप्] पृथ्वी।

**सागरांबरा**—स्त्री० [सं० ब० स० सागराम्बरा] पृथ्वी।

**सागराम्बर**—पुं० [सं० ब० स०] सागर में रहनेवाले, वरुण।

**सागस**†—अव्य० [?] सामने। सम्मुख। उदा०—प्रीतम कौ जब सागस लहै।—नददास।

**सागा**†—पु० [सं० सह] सग। साथ। (राज०)

**सागार**—वि० [स० स+आगार] आगार से युक्त। आगार या घर वाला।
पु० गृहस्थ।

**सागी**†—क्रि० वि० दे० 'सागे'। उदा०—मेरी आरति मेटि गुसाँई आई मिलौ मोंहि सागी री।—मीराँ।

**सागु**—पु० [अ० सैगों] १ ताड की जाति का एक प्रकार का पेड़ जिसके तने से आटे की तरह गूदा निकलता है। दे० 'सागूदाना'।

**सागूदाना**—पु० [हिं० सागू+दाना] सागू नामक वृक्ष के तने का गूदा जो पहले आटे के रूप में होता है और फिर कूटकर दानों के रूप में बनाकर सुखा लिया जाता है। यह पौष्टिक होता है और जल्दी पच जाता है, इसी लिए प्राय रोगियों को पथ्य के रूप में दिया जाता है।

**सागे**†—क्रि० वि० [स० सह] सग। साथ। (राज०)

**सागो**†—पु०=सागू।

**सागौन**—पु० [स० शाल] एक प्रसिद्ध वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत सुन्दर तथा मजबूत होती है और इमारत के काम आती है। शाल वृक्ष।

**साग्निक**—वि० [स०] १ अग्नि से युक्त। अग्निसहित। २ यज्ञ की अग्नि से युक्त।
पु० वह गृहस्थ जो सदा घर में अग्निहोत्र की अग्नि रखता हो। अग्निहोत्री।

**साग्र**—वि० [स० तृ० त०] आदि से लेकर, पूरा। कुल। सब।

**साचक्र**—स्त्री० [तु०] मुसलमानों में विवाह की एक रसम जिसमें से एक दिन पहले वर पक्ष वाले कन्या के लिए मेंहदी, मेवे, फल, सुगंधित द्रव्य आदि भेजते हैं।

**साचरी**—स्त्री० [स०] सगीत मे, एक प्रकार की रागिनी।

**साचिव**—वि० [स० सचिव] १. सचिव-सबधी। सचिव का। २ सचिव के कार्य, पद आदि से सबध रखने या उनके पारस्परिक व्यवहार के रूप में होनेवाला। (मिनिस्टीरियल) जैसे—अब दोनों राज्यों में साचिव स्तर पर बात-चीत होगी।

**साचिव्य**—पु० [स० सचिव+ष्यञ्] सचिव होने की अवस्था या भाव। सचिवता। २ सचिव का पद। ३ मदद। सहायता।

**साची कुम्हड़ा**—पु० [देश०] सफेद कुम्हड़ा। पेठा।

**साछी**†—पुं०, स्त्री०=साक्षी।

**साज**—पुं० [सं० त० त०] पूर्व भाद्रपद नक्षत्र।

**साज**—पु० [स० सज्जा से फा० साज] १ सजाने की क्रिया या भाव। सजावट। सजाने के उपकरण या सामग्री।
**पद—साज-सामान (देखें)। बड़े साज से**=खूब सजधज कर।
२ सगीत मे, बाजे या वाद्य यत्र जो गाने-बजाने में विशेष रोचकता उत्पन्न करते है।
**मुहा०—साज छेड़ना**=बाजा बजाने का काम आरम्भ करना। **साज मिलाना**=बाजा बजाने से पहले उसका सुर आदि ठीक करना।
३ लड़ाई में काम आनेवाले हथियार। जैसे—तलवार, बंदूक, ढाल, भाला आदि। ५ बढ़इयों का एक प्रकार का रदा जिससे गोल गलता बनाया जाता है। ६ पारस्परिक अनुकूलता के कारण आपस में होनेवाला मेल-जोल या घनिष्ठता।

**पद—साज-बाज** । (देखें)

वि०[भाव० साजी]१ बनानेवाला। जैसे—कारसाज=काम बनानेवाला; जिल्दसाज=पुस्तकों की जिल्द बनानेवाला। २. चीजों की मरम्मत करके उन्हें ठीक बनानेवाला। जैसे—घड़ी-साज =घड़ियों की मरम्मत करनेवाला।

**साजगिरी**—स्त्री०[देश०] संपूर्ण जाति की एक रागिनी जिसमें सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

**साजड़**†—पुं०=साजर।

**साजन**—पुं०[सं० सज्जन]१ पति। भर्ता। स्वामी। २ प्रेमी। ३. ईश्वर। ४. भला आदमी। सज्जन। ४. संगीत मे, खम्माच ठाठ का एक राग।

**साजना**†—स०=सजाना।

†पु० 'साजन' के लिए सम्बोधक संज्ञा।

**साज-बाज**—पु०[स० साज+बाज (अनु०)]१. आवश्यक सामग्री। साज-सजावट। २ किसी काम या बात के लिए होनेवाली तैयारी और सजावट। ३ आपस मे होनेवाली घनिष्ठता। मेल-जोल। हेल-मेल।

**साबर**—पु०[देश०] गूलू नामक वृक्ष जिससे कतीरा गोंद निकलता है। (दे० 'गूलू')

**साज-संगीत**—पु० [फा०+सं०] साज या बाजों पर होनेवाला संगीत। वाद्य संगीत। कंठ-संगीत से भिन्न।

**साज-सामान**—पु०[फा०] १. वे सब आवश्यक चीजें जो प्रतिष्ठा या मर्यादा के अनुरूप हों। सामग्री। उपकरण। असबाब। जैसे—बरात का साज-सामान। ३. ठाठ-बाट।

**साजा**†—वि०[हि० सजाना]१. सजा हुआ। २. सुन्दर। ३. अच्छा। बढ़िया।

**साजात्य**—पुं०[सं० सजाति+ष्यञ्] सजात या सजाति होने की अवस्था, गुण या भाव जो वस्तु के दो प्रकार के धर्मों में से एक हैं। 'वैजात्य' का विपर्याय।

**साजिंदा**—पुं०[फा० साजिन्द] १. वह जो कोई साज (बाजा) बजाता हो। साज या बाजा बजानेवाला। २. बेश्याओ आदि के साथ कोई साज या बाजा बजानेवाला।

**साजिंदा**—वि०[फा० साज+हिं० इया (प्रत्य०)] सजानेवाला।

**साजिश**—स्त्री०[फा०]१. मेल। मिलाप। २. दुष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए होनेवाली अभिसन्धि। षड-यन्त्र।

**साजिशी**—वि०[फा०]१ जिसमे किसी प्रकार की साजिश हो। २. साजिश करनेवाला। कुचक्री।

**साजुज्य**†— पु०=सायुज्य।

**साझा**—पुं०[स० सहार्द्ध या सहार्ध्य, प्रा० सहायों,]१. व्यापार आदि के लिए किसी काम में कुछ लोगों को मिलाकर रुपए लगाने, परिश्रम या व्यवस्था करने और उससे होनेवाले हानि-लाभ के आंशिक रूप से दायी और अधिकारी होने के लिए आपस में होनेवाला समझौता। हिस्सेदारी।

क्रि० प्र०—करना।—रखना।—लगाना।

२. उक्त प्रकार के समझौते के फलस्वरूप उत्पन्न होनेवाली स्थिति। ३. उक्त प्रकार के कार्यों में किसी व्यक्ति का उतना अंश जिसके विचार से वह लाभ के उचित अंश का अधिकारी या हानि के उचित अंश का उत्तरदायी होता है। ४. किसी वस्तु या सम्पत्ति मे से कुछ अंश या भाग पाने का अधिकार। हिस्सेदारी। जैसे—उस मकान में तीनों भाइयों का साझा है।

**साझा-रस्सी**—स्त्री०[हि०]१ किसी कार्य या व्यापार में होनेवाला साझा या हिस्सेदारी। २. कुछ लोगों मे किसी चीज का होनेवाला बटवारा।

**साझी**—पु०=साझेदार।

**साझेदार**—पुं०[हि० साझा+दार (प्रत्य०)]१. शरीक होनेवाला। हिस्सेदार। साझी। २. व्यापार आदि में साझा करनेवाला व्यक्ति। हिस्सेदार।

**साझेदारी**—स्त्री०[हि० साझेदार+ई (प्रत्य०)] साझेदार होने की अवस्था या भाव। हिस्सेदारी। शराकत।

**साटा**†—स्त्री० १. दे० 'साड़ी'। (स्त्रियों के पहनने की) २. दे० 'सौदा'।

पु०[सं० सार्थ या प्रा० सह]१. बेचने की क्रिया। विक्रय। २. आपस मे होनेवाला विनिमय या लेन-देन। उदा०—जबहि पाइअहि पारखू, तब हीरन की साट।—कबीर। ३ व्यापार। ४. सट्टा।

स्त्री०[हि० सटना]१ सटने की क्रिया या भाव। २ दे० 'सौदे'।

**साटक**—पु० [?] १. अन्न आदि का छिलका या भूसी। २ बहुत ही तुच्छ या निकम्मी चीज। ३. एक प्रकार का छन्द।

**साट-गाँठ**—स्त्री०[स० शाठ्य-ग्रंथि] किसी को कष्ट देने या हानि पहुँचाने के उद्देश्य से कुछ लोगों का आपस मे मिलकर गुट या दल बनाना। (कोल्यूजन)

**विशेष**—मिली-भगत और साट-गाँठ मे बड़ा मुख्य अन्तर हैं। मिली भगत एक तो अस्थायी या क्षणिक होती है और दूसरे उसका उद्देश्य अपने आपको बिलकुल निर्दोष दिखलाते हुए या तो अपना कोई छोटा-मोटा स्वार्थ सिद्ध करना होता है या दूसरे को केवल ठगना और धोखा देना होता है। पर साटगाँठ प्राय बहुत कुछ स्थायी या दीर्घकाल व्यापी होता है और दूसरे उसका उद्देश्य अधिक उग्र, कठोर या क्रूर होता है।

**साटन**—स्त्री०[अ० सैटिन] एक प्रकार का बढ़िया रेशमी कपड़ा जो प्राय. एकरुखा और कई रंगों का होता है।

**साटना**°—स०=सटाना।

**साटनी**—स्त्री०[देश०] भालू का नाच। (कलदर)

**साटा**—पुं० [हि० सट्टा]१. सट्टाबाजी अथवा इसी प्रकार के किसी अन्य अनुचित तथा निन्दनीय उपाय से अर्जित किया हुआ धन। २. दे० 'सट्टा'।

पुं०[?]अदला-बदली परिवर्तन। विनिमय।

**साटी**—स्त्री०[हि० सटना]१. साथ रहनेवाली चीजें। २. सामग्री। सामान।

†स्त्री०[?]१. पतली छड़ी। कमची। २ गदहपूरना। पुनर्नवा।

†वि०=साँठी।

**साटे**†—अव्य०[देश०] बदले में। परिवर्तन मे।

**साटोप**—वि०[सं० त० त०]१. घमड से फूला हुआ। २. गरजता हुआ (बादल)।

**साठ**—वि०[सं० षष्टि] जो गिनती मे पचास मे दस अधिक हो।

पुं० उक्त की सूचक संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—६०।

†स्त्री०=साठी।
पुं०=साथ (संग)।

**साठ-नाठ**—वि०[हिं० साँठि+नाठ (नष्ट)]१. जिसकी पूँजी नष्ट हो गई हो। निर्धन। दरिद्र। २. फीका या रूखा। नीरस। ३ छिन्न-भिन्न। तितर-बितर।
स्त्री०१. मेल-जोल। २. अनुचित संबंध। ३. षड्यंत्र।

**साठसाती**†—स्त्री०=साढ़ेसाती।

**साठा**—वि०[हिं० साठ] जिसकी अवस्था साठ वर्ष की हो गई हो। साठ वर्ष की उम्र वाला। जैसे—साठा सो पाठा। (कहा०)
पु०[देश०]१. बहुत बड़ा या लंबा चौड़ा खेत। २. ईख। गन्ना। ३. एक प्रकार की मधुमक्खी जिसे सठपुरिया भी कहते हैं।
†पुं०=साठी (धान)।

**साठी**—पु०[सं० षष्टिक] एक प्रकार का धान जो लगभग ६० दिन में पककर तैयार हो जाता है।

**साढ़ा**—पु०[देश०]१ घोड़े का एक प्राण-घातक रोग। २. बाँस का वह टुकड़ा जो नाव में मल्लाहों के बैठने के स्थान के नीचे लगा रहता है।

**साढ़ी**—स्त्री०[सं०] शाटिका] १. स्त्रियों के पहनने की धोती। २ विशेषत. ऐसी धोती जो रेशमी हो तथा जिस पर कला-पूर्ण काम हुआ हो। जैसे—बनारसी साड़ी, मदरासी साड़ी।

**साढ़साती**†—स्त्री०=साढ़ेसाती।

**साढ़ी**—स्त्री०[?] मलाई (दूध की)।
†स्त्री०=असाढ़ी (असाढ़ की फसल)।
स्त्री०[सं० शाल] शाल वृक्ष का गोंद।
†स्त्री०=साढ़ी।

**साढ़ू**—पु० [सं० ष्यालिबोढ़ृ] संबंध के विचार से पत्नी की बहन का पति। साली का पति।

**साढ़े-चौहरा**—पु०[हिं० चाढ़े+चौ (चार)+हरा (प्रत्य०)] मध्ययुग में, फसल की एक प्रकार की बँटाई जिसमें फसल का ५।१६ भाग जमींदार को मिलता था और शेष ११।१६ भाग काश्तकार को मिलता था।

**साढ़े-साती**—स्त्री०[हिं० साढ़े-सात+ई(प्रत्य०)] शनि ग्रह की अशुभ और कष्ट-दायक दशा या प्रभाव जो प्रायः साढ़े सात वर्ष, साढ़े सात महीने, या साढ़े सात दिन तक रहता है।
क्रि० प्र०—आना।—उतरना।—चढ़ना।—चलना।—बीतना।

**सात**—वि०[सं०सप्त] जो गिनती में पाँच और दो हो। छ से एक अधिक।
**पद—सात-पाँच**=(क) कई लोग। उदा०—सात-पाँच की लकड़ी एक जने का बोझ। (ख) चालाकी और बहानेबाजी या शरारत की बातें। जैसे— हमसे इस प्रकार सात-पाँच मत किया करो। **सात समुद्र पार**=बहुत अधिक दूर विशेषतः विदेश में। जैसे—उन्होंने सात समुद्र पार की चीजें लाकर इकट्ठी की थी।
**मुहा०—सात परदे में रखना**=(क) अच्छी तरह छिपाकर रखना। **अच्छी तरह संभालकर रखना। सात राजाओं की साखी देना**=(ख) बहुत वृढ़तापूर्वक कोई बात कहना। किसी बात की सत्यता पर बहुत जोर देना। **सात सींकें बनाना**—शिशु जन्म के छठे दिन की एक रीति जिसमें सात सींकें रखी जाती हैं। **साहों भूल जाना**=विपत्ति या संकट आने पर पाँचों इन्द्रियाँ, मन और बुद्धि का ठिकाने न रह जाना और ठीक तरह से अपना काम न कर सकना।
पु० पाँच और दो के योग की संख्या जो इस प्रकार लिखी जाती है—७।

**सातत्य**—पु०[सतत+ष्यञ्]१. सतत होने की अवस्था या भाव। सदा होते रहना। निरंतरता। (कन्टिन्यूइटी) २. सदा बने रहने का भाव। स्थायित्व। (पर्सिस्टेंसी)

**सातपूतो**—वि० [हिं० सात-पूत+ई (प्रत्य०)] (स्त्री) जिसके सात पुत्र हों।
†स्त्री०=सतपुतिया।

**सातला**—पु०[सं० सप्तला] थूहर पौधे का एक प्रकार।

**सातवँ***—वि०=सातवाँ।

**सातवाँ**—वि० [हिं० सात+वाँ (प्रत्य०)] क्रम या गिनती में सात के स्थान पर पड़नेवाला।

**सात्तिक (तिग)**†—वि०=सात्त्विक।

**साती**—स्त्री०[देश०] साँप काटने की एक प्रकार की चिकित्सा जिसमें साँप के काटे हुए स्थान को चीर कर उस पर नमक या बारूद मलते हैं।

**सातवाँ**—वि०[हिं० सात+ई (प्रत्य०)] सात वर्षों, महीनों, दिनों, घड़ियों, पलों तक चलनेवाला। (ज्यो०) जैसे—साढ़े-साती अर्थात् साढ़े सात वर्षों तक चलनेवाली दशा।

**सात्त्व**—वि० [सं० सात्त्व+अञ्] १. सत्त्व गण-संबंधी। सात्त्विक। २. सत्त्व या सार संबंधी।

**सात्त्विक**—वि०[सं० सत्त्व+ठञ्—क] १ जिसमें सत्त्व गुण हो। सतोगुणी। २ सत्त्व गुण से संबंध रखनेवाला। ३ सत्य-निष्ठ। ४. प्राकृतिक। ५ वास्तविक। ६ अनुभूत या भावना-जन्य।
पु०१ साहित्य में, सतोगुण से उत्पन्न होनेवाले निम्न जाति में आठ अंगविकार—स्तंभ, स्वेद, रोमांच, स्वर-भंग, कंप या वेपथु, वैवर्ण्य, अश्रु-पात और प्रलय।
**विशेष**—वस्तुतः ये बातें अन्तःकरण के सत्त्व से ही उत्पन्न होनेवाली मानी गई है। इसलिए इन्हें सात्त्विक कहा गया है। बाद में कुछ आचार्यों ने इनमें जृंभा नामक नवाँ अंग-विकार भी बढ़ाया था।
२ नाट्य-शास्त्र में, स्त्रियों के अंगज और अपलंज कुछ शारीरिक गुण तथा विशेषताएँ जो आकर्षक तथा मोहक होती हैं, और इसी लिए जिनकी गणना स्त्रियों के अलंकारों में की गई है।
**विशेष**—हिन्दी में इनका अन्तर्भाव 'हाव' में ही होता है। दे० 'हाव'।
३. नाट्य-शास्त्र में, नाटक के नायक के विशिष्ट गुण जो आठ माने गये हैं। यथा—शोभा, विलास, माधुर्य, गांभीर्य, स्थैर्य, तेज, ललित और औदार्य। ४. नाट्य-शास्त्र में, चार प्रकार के अभिनयों में से एक जिसमें केवल सात्त्विक भावों का प्रदर्शन होता है। ५ काव्य और नाट्य-शास्त्र की सात्वती नाम की वृत्ति। (दे० सात्वती) ६. ब्रह्मा। ७ विष्णु।

**सात्त्विक अलंकार**—पु०[सं०] नाट्यशास्त्र में, नायिकाओं के वे क्रिया-कलाप तथा सौन्दर्यवर्धक तत्त्व जिनके अंगज, अयत्नज और स्वभावज ये तीन भेद किये गये हैं। (दे० अंगज अलंकार, अयत्नज अलंकार और स्वभावज अलंकार)

**सात्त्विकी**—स्त्री० [सं० सात्त्विक+ङीप्], १. दुर्गा का एक नाम। २.

गौणी भक्ति का एक प्रकार या भेद जिसमें विशुद्ध भक्ति-भाव बनाये रखने के उद्देश्य से ही इष्टदेव का अर्चन और पूजन होता है।
वि० सं० 'सात्विक' का स्त्री०।

**सात्म**—वि०[सं० त० स०] [भाव० सात्म्य] आत्मा से युक्त। आत्मा-सहित।

**सात्म्य**—वि०[स० सात्म+कन्] सात्मन।

**सात्म्यक**—वि० [स० आत्मन्+व्यञ्, त० स०]१ सात्म-संबंधी। सात्म का। २. प्रकृति के अनुकूल। स्वास्थ्यकर।
पुं० १. सात्म्य होने की अवस्था या भाव। २ सरूपता। सारूप्य। ३. एक विशेष प्रकार का रस जिसके सेवन से प्रकृति विरुद्ध कार्य करने पर शारीरिक क्षति क्षीण नहीं होती। ४. अवस्था, समय, स्थान आदि के अनुकूल पड़नेवाला आहार-विहार।

**सात्यकि**—पुं०[स०] कृष्ण का सारथी एक प्रसिद्ध यादव वीर जो सत्यक का पुत्र था।

**सात्यरथि**—पुं०[स० सत्यरथ+इञ, क० स०] वह जो सत्यरथ के वंश मे उत्पन्न हुआ हो।

**सात्यवत्**—पुं० [स० सत्यवती+अण्] सत्यवती के पुत्र, वेदव्यास।
वि० सत्यवती संबंधी। सत्यवती का।

**सात्राजित्**—पुं०[सत्राजित्+अच्] राजा शतानीक जो सत्राजित् के वंशज थे।

**सात्राजिती**—स्त्री०[स० सत्राजित्+ङीप्] सत्यभामा का एक नाम।

**सात्वत**—पुं०[स० सत्त्वत्+अञ्]१ यदुवंशी। यादव। २. श्रीकृष्ण। ३ बलराम। ४ विष्णु। ५ एक प्राचीन देश। ६. एक प्राचीन वर्ण-सकर जाति।
पुं०[स०]१ एक प्राचीन क्षत्रिय जाति जो उत्तर भारत के शूरसेन मडल मे रहती थी। २. उक्त जाति का मत जो 'पाचरात्र' कहलाता था।

**सात्वती**—स्त्री०[स० सात्वत+ङीप्] १. साहित्य में, चार प्रकार की नाट्य-वृत्तियों मे से एक जिसका प्रयोग मुख्य रूप से वीर, रौद्र, अद्भुत आदि रसों में होता है तथा जिसमे ज्ञान, न्याय, औचित्य आदि की प्रधानता रहती है। २. शिशुपाल की माता का नाम। ३. सुभद्रा का एक नाम।

**साथ**—सुं०[स० सह या सहित]१. वह अवस्था जिसमें (क) दो या अधिक वस्तुएँ एक दूसरे के निकट स्थित हो। जैसे—दोनों मकान साथ ही हैं। और (ख) दो या अधिक जीव निकट सपर्क मे रहते हो। जैसे—छात्रावास मे हम दोनों का कुछ दिनों तक साथ रहा है।
**विशेष**—संग और साथ में मुख्य अतर यह है कि संग तो अधिक गहरा या घनिष्ठ और चिर-कालिक होता है, पर साथ अपेक्षया कम घनिष्ठ और प्रायः अल्पकालिक होता है।
**पद—साथ का (या को)**=पूरी, रोटी आदि के साथ खाई जानेवाली तरकारी, भाजी या सालन। **साथ का खेला**=बचपन का ऐसा साथी जिससे मिलकर खेलते रहे हों।
**मुहा०—(किसी का) साथ देना**=किसी काम में संग रहना। सहानुभूति रखते हुए सहायता देना। जैसे—इस काम में हम तुम्हारा साथ देंगे। **(किसी की अपने) साथ लेना**= अपने संग रखना या ले चलना। जैसे—जब तुम चलने लगना, तो हमें भी साथ ले लेना। **(किसी के) साथ सोना** = मैथुन या सभोग करना।
२ वह जो सग रहता हो। बराबर पास रहनेवाला। साथी। सगी।
३. आपस मे होनेवाली घनिष्ठता या मेल-जोल। जैसे—आज-कल उन दोनों का बहुत साथ है। ४ मिलकर उड़नेवाले कबूतरों का झुड या टुकड़ी। (लखनऊ)
अव्य० १ एक सबध सूचक अव्यय जो प्रायः सहचार या सग रहने का भाव या स्थिति सूचित करता है। सहित। से। जैसे—तुम भी उनके साथ रहना।
**पद—साथ ही** = सिवा। अतिरिक्त। जैसे—साथ ही यह भी एक बात है कि आप वहाँ नहीं जा सकेंगे। **साथ ही साथ**=एक साथ। एक सिलसिले मे। जैसे—साथ ही साथ दोहराते भी चलो। **एक साथ** = एक सिलसिले मे। जैसे—(क) एक साथ दोनों काम हो जायँगे। (ख) जब एक साथ इतने आदमी पहुँचेंगे तो वे घबरा जायँगे। **के साथ**=(क) साथ रहते हुए। पूर्वक। जैसे—आराम के साथ काम करना चाहिए। (ख) प्रति। से। जैसे—छोटों के साथ हँसी-मजाक करना ठीक नहीं।
२. द्वारा। उदा०—नवल साथ तब उदर विदार्‌यो।—सूर।

**साथर**†—पु०=सायरा।

**साथरा**†—पु०[स० स्तरण] [स्त्री० अल्पा० साथरी]१ बिछौना। बिस्तर। २. चटाई, विशेषत कुश की बनी चटाई।

**साथिया**†—पु० =स्वास्तिक।

**साथी**—पुं०[हिं० साथ+ई (प्रत्य०) ]१ वे दो या अधिक व्यक्ति जिनका परस्पर साथ हो। २ साथ रहनेवालो मे से एक की दृष्टि से दूसरा। जैसे—पुरुष को स्त्री का सच्चा साथी होना चाहिए। ३. मित्र। सखा।

**साद**—पु०[स० साद]१ अवसन्न होना। डूबना। २ थकावट। ३ विषाद। ४ क्षीणता। ५ नाश। ६. कष्ट। पीडा। ७ विशृङ्खलता। ८ स्वच्छता। ९. क्षरण। १० दे० 'अवसाद'।
पुं०१.=शब्द। (राज०)२ =स्वाद।
वि०[अ०]१. अच्छा। भला। २. मांगलिक। शुभ।
पु० अरबी वर्ण माला का एक वर्ण जिसका उच्चारण 'स' के समान होता है और जिसका उपयोग लाक्षणिक रूप मे किसी बात को ठीक मानकर उससे अपनी सहमति प्रकट करने के लिए होता है। जैसे—उस्ताद ने उसकी बात का साद किया।

**सादक**—वि०[स०] नि शक्त या शिथिल करनेवाला।

**सादगी**—स्त्री० [फा० सादा का भाववाचक रूप]१. सादा होने की अवस्था, गुण या भाव। सादापन। सरलता। २. आचरण, व्यवहार आदि की निष्कपटता और सिधाई। ३ खान-पान, रहन-सहन आदि में आडंबर, तडक-भडक, कृत्रिमता आदि का होनेवाला अभाव।

**सादन**—पुं०[सं०] [भू० कृ० सादित]१ नष्ट करना। २. क्लांत होना। थकना। ३. थकावट। ४ पात्र। बरतन। ५ सदन (घर या मकान)।

**सादर**—अव्य०[सं० स+आदर] आदरपूर्वक। इज्जत से। जैसे—सादर नमस्कार या प्रणाम।

**सादरा**—पु०[?] उच्च शास्त्रीय सगीत में,एक विशिष्ट प्रकार की गायन-शैली जिसके गाने या पद अनेक राग-रागिनियों में निबद्ध होते हैं।

**सादा**—वि० [स० साध से फा० साद] [स्त्री० सादी] १ जिसमे एक ही तत्त्व हो या एक ही प्रकार के तत्त्व हों। जिसमे औरों का मेल या योग न हो। जैसे—सादा पानी। २ जिसमें किसी तरह की उलझन, झलट, पेंच की बात या बनावट न हो। सरल। जैसे—सादा हिसाब। ३. जिसकी बनावट या रचना मे स्वाभाविकता ही हो, विशेष कौशल न हो। ४ जिस पर किसी तरह के बेल-बूटे, सजावट आदि का काम न हो। जिस पर किसी प्रकार का अकन न हो। जैसे—सादे कपडे, सादा कागज। ५. जिसे समझने मे विशेष कठिनता न हो। ६ (व्यक्ति) जो छल-कपट से रहित हो। सरल। सीधा। (सिम्पुल)

**पद—सीधा-सादा**। (देखें)

७ बुद्धि और विवेक से रहित। ना-समझ। मूर्ख। (पश्चिम) जैसे—यहाँ कौन सा सादा है जो तुम्हारी ये बातें मान लेगा।

**सादात**—पुं० [अ०] सैयद जाति या वश।

**सादापन**—पु० [फा० सादा+हिं० पन (प्रत्य०)] सादगी। (दे०)

**सादाशिव**—वि० [स० सदाशिव+अण्] सदाशिव-संबंधी।

**सादिक**—वि० [अ०] १ सच्चा। २ ठीक। दुरुस्त।

**मुहा०—सादिक आना**=(क) सत्य रूप मे घटित होना। (ख) ठीक आना। पूरा उतरना।

**सादिर**—वि० [अ०] १ बाहर निकलनेवाला। २. जारी किया हुआ। जैसे—हुक्म सादिर होना।

**सादी**—स्त्री० [हिं० सादा] १ वह पूरी या रोटी जिसके अन्दर पूरन या कोई चीज भरी न हो। 'कचौरी' का विपर्याय। २. लाल नामक पक्षी की मादा जिसके शरीर पर चित्तियाँ नही होती। मुनियाँ। सदिया।

पु० [स० सदि] १ रथ चलानेवाला। सारथी। २ योद्धा। ३. हवा। वायु।

पु० [फा० सद=शिकार] १ शिकारी। २. घोड़ा। ३. सवार। (डिं०)

†स्त्री०=शादी।

**सादी सजा**—स्त्री० [हिं० +फा०] कारावास का ऐसा दंड (कड़ी सजा से भिन्न) जिसमे कैदी को कोई काम न करना पड़ता हो। (सिम्पुल इम्प्रिजन्मेन्ट)

**सादूर**†—पुं०=सार्दूल (सिंह)।

**सादृश्य**—पु० [स०] १ सदृश्य होने की अवस्था, गुण या भाव। एक-रूपता। (सिमिलेरिटी) २ तुलना। बराबरी। ३. मृग। हिरन।

**सार्द्धत**—वि० [स०] आदि से अत तक का अर्थात् संपूर्ण। सारा।

अव्य० आदि से अत तक।

**सार्द्धस्क**—वि० [स० ब० स०]=सहस्क।

**साध**—स्त्री० [स०श्रद्धा=प्रबल वासना] १. ऐसी अभिलाषा या आकाक्षा जो बहुत समय से मन मे हो और जिसकी पूर्ति के लिए व्यक्ति उत्कठित हो।

**मुहा०—(किसी बात की) साध न रहने देना**=सब प्रकार से इच्छा पूरी कर लेना। कुछ कमी या कसर न रखना। उदा०—व्याध अपराध की साध राखी कहा, पिंगलै कौन मति भक्ति भई।—तुलसी। **साध रावना**=अभिलाषा पूरी करना या होना।

२. गर्भवती स्त्री के मन मे प्राकृतिक रूप से उत्पन्न होनेवाली अनेक प्रकार की अभिलाषाएँ और इच्छाएँ। दोहद। ३ स्त्री के गर्भवती होने के सातवें महीने मे होनेवाली एक प्रकार की रसम।

पु०[स० साधु] १ साधु। सत। महात्मा। भला आदमी। सज्जन। २ उत्तर भारत का एक प्रसिद्ध सप्रदाय जिस पर आगे चलकर कबीर पथ का विशेष प्रभाव पडा था। ३ उक्त सप्रदाय का अनुयायी जो ईश्वर के सिवा और किसी को प्रणाम, नमस्कार आदि का अधिकारी नही समझता, और इसलिए व्यक्तियों के सामने सिर नही झुकाता।

†वि०[स० साधु] उत्तम। अच्छा।

**साधक**—वि०[स०√साध्(सिद्ध होना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री०साधिका] १ साधना करनेवाला। २ साधनेवाला। ३ जो साध्य या ध्येय की प्राप्ति मे साधन बना हो फलत सहायक हुआ हो।

पु० १ वह जो आध्यात्मिक या धार्मिक क्षेत्र मे फल-प्राप्ति के उद्देश्य से किसी प्रकार साधना मे लगा हुआ हो। जैसे—तात्रिक, योगी, तपस्वी आदि। २ कोई ऐसी चीज या बात जिससे कोई कार्य पूरा या सिद्ध करने मे सहायता मिलती हो। जरिया। बगीला। साधन। ३ वह जो किसी काम या बात मे अनुकूल रुखकर सहायक होता हो। ४ वह जो ऊपर से तटस्थ रहकर, परन्तु मन मे कपट रखकर किसी का खुफ उद्देश्य सिद्ध करने मे सहायक होता हो। जैसे—वे दोनों सिद्ध-साधक बनकर मेरे पास आये थे।

**पद—सिद्ध-साधक**। (देखें)

५ न्याय मे, वह लक्षण जिसके आधार पर कोई बात सिद्ध करने का प्रयत्न किया जाता है। हेतु। ६ भूत-प्रेत आदि को साधने या अपने वश मे करनेवाला। ओझा। ७ पुत्रजीव नामक वृक्ष। ८ दमनक। दौना। ९. पित्त।

**साधकता**—स्त्री०[स० साधक+तल्—टाप्]१ साधक होने की अवस्था या भाव। २ उपयुक्तता। ३ उपयोगिता।

**साधकत्व**—पु०[स० साधक+त्व]१ साधकता। २ जादू या बाजीगरी। ३ सिद्धि।

**साधन**—पु० [स०] [वि० सात्त्विक, साध्य, भू० कृ० साधित, कर्ता साधक]१ किसी कार्य का आरभ करके उसे सिद्ध या पूरा करना। २ आज्ञा, निर्णय आदि के अनुसार किसी काम या बात को उचित और पूरा रूप देना। कार्यान्वित करना। पालन करना। ३ विधिक क्षेत्र मे, आदेशों, लेख्यों, सूचनाओं आदि के अनुसार ठीक तरह से काम पूरा करना। निष्पादन। पालन। ४. अपने कार्यों का निर्वाह या अपने पद के कर्तव्यों आदि का पालन करना। ५ कोई चीज तैयार करने का सामान। सामग्री। ६ कोई ऐसी बात जिससे किसी प्रकार की क्षति, त्रुटि, दोष आदि का परिहार होता हो। उपचार। प्रतिविधि। ७ कोई काम पूरा करने में सहायता देनेवाली कोई चीज या सब चीजें। उपकरण। (इन्स्ट्रमेंट)८. कोई ऐसी चीज या बात जिससे कुछ कर सकने की शक्ति या समर्थता आती हो। (मीन्स) जैसे—युद्ध करने के लिए सैनिक साधन। ९. वे सब तत्त्व जिनके सहारे कोई काम पूरा होता हो अथवा आवश्यकता पडने पर जिनका उपयोग किया जा सकता हो। (रिसोर्सेज) १०. कोई ऐसा तत्त्व या वस्तु जिसके द्वारा या

सहायता से काम पूरा होता हो। (एजेन्सी) ११. वैद्यक में, औषध बनाने के लिए धातुएँ आदि फूंकने और शोधने का काम। १२. उपाय। तरकीब। युक्ति। १३. मदद। सहायता। १४. कारण। सबब। १५. धन-संपत्ति। दौलत। १६ पदार्थ। वस्तु। १७. प्रमाण। सबूत। १८. जाना। गमन। १९. उपासना। २०. संधान। २१ मृतक का अग्नि-संस्कार। दाह-कर्म। २२. दे० 'साधना'।

**साधन-क्रिया**—स्त्री० [सं०] समापिका क्रिया। (दे०)

**साधनता**—स्त्री० [सं०] १. साधन का धर्म या भाव। २. साधन की क्रिया। साधना।

**साधनहार***—वि० [स० साधन+हि० हार (प्रत्य०)] १. साधने करने या साधनेवाला। साधक। २ जो साध या सिद्ध किया जा सके। साध्य।

**साधना**—स्त्री० [सं०] १. कोई कार्य सिद्ध या संपन्न करने की क्रिया। साधन। २. ऐसी भाराधना तथा उपासना जो विशेष कष्ट सहन, परिश्रम तथा मनोयोगपूर्वक बहुत दिनों तक करनी पड़ती हो, अथवा जिसमें किसी विशिष्ट प्रकार की सिद्धि प्राप्त होती हो। जैसे—तंत्र या योग की साधना। ३ उक्त के आधार पर किसी बहुत बड़े तथा महत्त्वपूर्ण कार्य के लिए विशेष त्याग, परिश्रम तथा मनोयोगपूर्वक बहुत दिनो तक किया जानेवाला प्रयत्न या प्रयास। जैसे—अधिकतर बड़े बड़े आविष्कार विशिष्ट साधना करने से होते हैं।

स० [स० साधना] १. विशेष परिश्रम तथा प्रयत्नपूर्वक निरंतर कोई कार्य करते हुए उसमें पारगत या सिद्धहस्त होना। जैसे—योग साधना। २. किसी काम या बात का इस प्रकार अभ्यास करना कि वह ठीक तरह से, बहुत सहज में या स्वाभाविक रूप से सम्पादित होने लगे। जैसे—दम साधना=दम या साँस रोकने का अभ्यास करना। ३ किसी चीज को ऐसी स्थिति में लाना कि वह ठीक तरह से और संतुलित रूप मे अपने स्थान पर रहकर पूरा काम कर सके। जैसे—(क) गुड्डी या पतंग साधना=उसमें चिप्पी या पुछल्ला लगाकर उसे संतुलित करना। (ख) तराजू या बटखरा साधना=यह देखना कि तराजू या बटखरा ठीक या पूरा तौलता है या नहीं। (ग) बाइसिकिल पर चढ़ने या रस्से पर चलने में शरीर साधना=शरीर को ऐसी अवस्था में रखना कि वह इधर-उधर गिरने न पाए। ४. शुद्ध या सत्य प्रमाणित करना। ५. निश्चिंत या पक्का करना। ठहराना। ६. किसी को अपनी ओर मिलाकर अपने अनुकूल या वश में करना। उदा०—गांधीराज को पुष साधि सब मित्र शत्रु बल।—केशव।

स० [सं० संधान, पु० हि० सधानना] निशाना लगाना। संधान करना।

**साधनिक**—वि० [सं०] १. साधन-संबंधी। साधन का। २. किसी या कई प्रकार के साधनों से युक्त या सम्पन्न। ३. किसी राज्य या संस्था के प्रबंध, शासन या कार्य-साधन से सम्बन्ध रखनेवाला। कार्यकारी। अधिशासी।

पुं० प्राचीन भारत में, एक प्रकार के राज-कर्मचारी जो सेना आदि के किसी उप-विभाग के व्यवस्थापक होते थे।

**साधनी**—स्त्री० [स० साधन] १. लोहे या लकड़ी का एक औजार जिससे दीवार या जमीन की सतह की सीध नापते हैं। २. राज। मेमार।

उदा०—बोलि साधनी-गुंज मंजु मेंडप रचवायौ।—रत्ना०।

**साधनीय**—वि० [सं०] १. जिसका साधन हो सके। २. जिसकी साधना होने को हो। ३. जो साधना से प्राप्त किया जा सकता हो।

**साधयितव्य**—वि० [सं० √सिध् (गत्यादि)+णिच्-साधादेश, तव्य] (कार्य) जिसका साधन हो सकता हो या किया जा सकता हो।

**साधयिता**—वि० [सं० √सिध् (गत्यादि)+णिच्-साधादेश-तृच्] जो साधन करता हो। साधन करनेवाला। साधक।

**साधर्मिक**—पुं० [सं० सधर्म-ठक्-इक] किसी की दृष्टि से उसी के धर्म का दूसरा अनुयायी। सधर्मी।

**साधर्म्य**—पुं० [सं० सधर्म+ष्यञ्] समान धर्म से युक्त होने की अवस्था, गुण या भाव। एकधर्मता। समान-धर्मता। तुल्य-धर्मता। जैसे—इनमें कुछ भी साधर्म्य नहीं है।

**साधस**—पुं० दे० 'साध्वस'।

**साधार**—वि० [सं०] १. (रचना) जो आधार या नींव पर स्थित हो। २. कथन, विचार आदि जिसका कुछ या कोई आधार हो। तथ्य-पूर्ण।

**साधारण**—वि० [सं० साधारण, अव्य० स०-अण्] १. जैसा साधारणतः सब जगह पाया जाता अथवा होता हो। आम। (यूनुअल) २ जिसमें औरों की अपेक्षा कोई विशेषता न हो। (कॉमन) ३ प्रकार, प्रकृति, रूप आदि के विचार से जैसा सब जगह होता हो, वैसा। प्रकृत। सहज। ४. जिसमें कोई बहुत बड़ी उत्कृष्टता या विशेषता न हो, फिर भी जो अच्छे या बढ़िया से कुछ हलके दरजे का हो। मामूली। (आर्डिनरी) ५. जो प्रायः सभी लोगों के करने या समझने के योग्य हो। सरल। सहज। सुगम। ६. तुल्य। सदृश। समान। ७. दे० 'सामान्य'।

पुं० १. भावप्रकाश के अनुसार ऐसा प्रदेश जहाँ जंगल अधिक हों, रोग अधिक होते हों, और जाड़ा तथा गरमी भी अधिक पड़ती हो। २. उक्त प्रकार के देश का जल।

**साधारण गांधार**—पुं० [सं० कर्म० स०] संगीत में, एक प्रकार का विकृत स्वर जो वंजिका नामक श्रुति से आरम्भ होता है। इसमें तीन श्रुतियाँ होती हैं।

**साधारणतः**—अव्य० [सं०]=साधारणतया।

**साधारणतया**—अव्य० [सं० साधारण+तल्—टाप्-टा] साधारण रूप से। आमतौर पर। साधारणतः।

**साधारणता**—स्त्री० [सं० साधारण] साधारण होने की अवस्था, गुण धर्म या भाव।

**साधारण धर्म**—पुं० [सं०] १. ऐसा कर्तव्य, कर्म या कार्य जो साधारणतः और समान रूप से सब के लिए बना हो। २. ऐसा कर्तव्य, कर्म या धर्म जिसका विधान किसी वर्ग के सब लोगों के लिए हुआ हो। ३. ऐसा गुण, तत्त्व या धर्म जो साधारणतः किसी प्रकार के सब पदार्थों आदि मे समान रूप से पाया जाता हो।

**विशेष**—साधरणीकरण ऐसे ही गुणों, तत्त्वों या धर्मों के आधार पर किया जाता है।

**साधारण निर्वाचन**—पुं० [सं०] वह निर्वाचन जिसमें हर चुनाव क्षेत्र से प्रतिनिधि चुने जाते हों। आम-चुनाव। (जनरल इलेक्शन)

**साधारण वाक्य**—पुं० [सं०] व्याकरण में, तीन प्रकार के वाक्यों में से पहला जो प्रायः बहुत छोटा होता है और जिसमें एक कर्ता और एक

क्रिया (सकर्मक होने पर क्रिया के साथ कर्म भी) होती है। (वाक्य के भेद दो प्रकार मिश्र और संयुक्त कहलाते हैं)।

**साधारणीकरण**—पुं०[सं०] [भू० कृ० साधारणीकृत]१. हमारे प्राचीन साहित्य मे, रस-निष्पत्ति की वह स्थिति जिसमें दर्शक या पाठक कोई अभिनय देखकर या काव्य पढ़कर उससे तादात्म्य स्थापित करता हुआ उसका पूरा-पूरा रसास्वादन करता है।

**विवेच**—यह वही स्थिति है जिसमें दर्शक या पाठक के मन से 'मैं' और 'पर' का भाव दूर हो जाता है और वह अभिनय या काव्य के पात्रों या भावों में विलीन होकर उनके साथ एकात्मता स्थापित कर लेता है।

२. आज-कल एक ही प्रकार के बहुत से विशिष्ट गुणों, तत्त्वो आदि के आधार पर किसी विषय में कोई ऐसा साधारण नियम या सिद्धांत स्थिर करना जो उन सब गुणों या तत्त्वों पर समान रूप से प्रयुक्त हो सके। ३. किसी सामान्य गुण या धर्म के आधार पर अनेक गुणों, तत्त्वों आदि को एक तल पर एक वर्ग मे लाना। गुणों आदि के आधार पर समानता निरूपित करना। (जेनरलाइजेशन)

**साधारण्य**—पुं०[सं० साधारण+ष्यञ्]=साधारणता।

**साधिका**—वि० स्त्री० [सं०√सिध् (गत्यादि)+घिञ्—साधादेश-ण्वुल्—अक, टाप्] सं० 'साधक' का स्त्री०।

स्त्री० गहरी नींद।

**साधिकार**—अव्य०[सं०] १. अधिकारपूर्वक। २. आधिकारिक रूप से। (ऑथॉरिटेटिवली)

वि० १. जिसे कोई अधिकार प्राप्त हो। २. अधिकारपूर्वक या आधिकारिक रूप से कहा या किया हुआ। (ऑथॉरिटेटिव) जैसे—साधिकार घोषणा।

**साधित**—भू० कृ०[सं० √सिध् (गत्यादि)+णिच्-साधादेश-क्त] १. जिसका साधन किया गया हो। सिद्ध किया हुआ। २. (काम) जो पूरा सिद्ध किया गया हो। ३. जिसे दंड दिया गया हो। दंडित। ४ शुद्ध किया हुआ। शोधित। ५. नष्ट किया हुआ। ६. (ऋण या देन) जो चुका दिया गया हो। शोधित।

**साधित्र**—पुं०[सं०] कोई ऐसी वस्तु या साधन जिसकी सहायता से कोई काम पूरा किया जाता हो। उपकरण। (एपरेटस)

**साधी (धिन्)**—वि० [सं० √सिध् (गत्यादि)+णिनि—साधादेश] साधक।

वि० [हिं० साधक या साधना=सिद्ध करना] किसी के दुष्ट उद्देश्य की सिद्धि मे सहायक होनेवाला। साधक। उदा०—जो सो चोर, सोई साधी।—कबीर।

**साधु**—वि०[सं०] [भाव० साधुता, स्त्री० साध्वी]१ अच्छा। भला। २. जिसमें कोई आपत्तिजनक बात या दोष न हो; फलतः ग्राह्य और प्रशसनीय। ३. सच्चा। ४. चतुर। निपुण। होशियार। ५. उपयुक्त। योग्य। ६. उचित। मुनासिब। वाजिब।

अव्य०१. बहुत अच्छा किया या बहुत अच्छा हुआ।

**मुहा०—साधु साधु कहना**=किसी के कोई अच्छा काम करने पर उसकी बहुत प्रशंसा करना।

२. बहुत ठीक, ऐसा ही किया जाय अथवा ऐसा ही हो। ३. बस बहुत हो चुका, अब रहने दो।

पुं०१. वह जिसका जन्म उत्तम कुल में हुआ हो। कुलीन। आर्य। २. वह जिसकी कोई साधना, विशेषत. आध्यात्मिक या धार्मिक साधना पूरी हो चुकी हो। सिद्ध। ३ वह धार्मिक, परोपकारी और सदाचारी व्यक्ति जो धर्म, सत्य आदि का उपदेश करके दूसरो का कल्याण करता हो। महात्मा। संत। ४. वह जो सासारिक प्रपंच छोड़कर त्यागी और विरक्त हो गया हो। ५ बहुत ही शांत भाव से रहनेवाला सदाचारी और सुशील व्यक्ति। बहुत ही भला आदमी। सज्जन। ६. वणिक। व्यापारी। ७ वह जो लोगो को धन आदि उधार देकर उनके ब्याज या सूद से अपना निर्वाह करता हो। महाजन। साहु। ८ जैन यति, मुनि या साधु। ९. जिन देव। १०. दौना नामक पौधा। दमनक। ११. वरुण वृक्ष।

**साधुकारी (रिन्)**—वि०[सं० साधु√कृ (करना)+णिनि] जो उत्तम कार्य करता हो। अच्छे काम करनेवाला।

**साधुज**—वि०[स०] जिसका जन्म उत्तम कुल मे हुआ हो। कुलीन।

**साधुजात**—वि०[स०] १ सुन्दर। खूबसूरत। २ चमकीला। उज्ज्वल। ३. साफ। स्वच्छ। ४ कुलीन।

**साधुता**—स्त्री०[स० साधु+तल्—टाप्]१ साधु होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। साधुपन। २. भलमनसाहत। सज्जनता। ३ नेकी। भलाई। ४. सीधापन। सिधाई।

**साधुत्व**—पुं० [सं० साधु+त्व]=साधुता।

**साधुमती**—स्त्री०[स० साधु-मत्—ङीप्]१. तांत्रिकों की एक देवी। ३. दसवीं पृथ्वी। (बौद्ध)

**साधुवाद**—पु०[स०]१ किसी के कोई उत्तम कार्य करने पर "साधु साधु" कहकर उसकी प्रशंसा करना। २ उक्त रूप मे की हुई प्रशंसा या कही हुई बात।

**साधु-वृत्त**—वि०[सं०] उत्तम स्वभाव और चरित्रवाला। साधु आचरण करनेवाला।

**साधु-वृत्ति**—स्त्री०[सं०] उत्तम और श्रेष्ठ आचरण तथा वृत्ति।

**साधु-साधु**—अव्य० [सं०] साधुवाद का सूचक पद। धन्य-धन्य।

**साधू**—पु०[सं० साधु]१. महात्मा और सत पुरुष। २. विरक्त और ससार त्यागी व्यक्ति।

**साधो**—पु०[सं० साधु] हिं० 'साधु' का सम्बोधन कारक का रूप। जैसे—कहे कबीर सुनो भई साधो।—कबीर।

**साध्य**—वि०[स०]१. (कार्य) जिसका साधन हो सके। जो सिद्ध या पूरा किया जा सके। जैसे—यह कार्य सबके लिए साध्य नही है। २. आसान। सहज। सुगम। ३. तर्क या न्याय मे, (पक्ष या विषय) जो प्रमाणित किया जाने को हो। ४. वैद्यक मे, (रोग) जो चिकित्सा के द्वारा दूर किया जा सकता हो। ५ (काम या बात) जिसका प्रतिकार हो सकता हो अथवा किया जा सकता हो। ६. (विषय) जो प्रयत्न करने पर जाना जा सकता हो।

पु०१ कोई काम पूरा कर सकने की योग्यता या शक्ति। सामर्थ्य। जैसे—यह काम हमारे साध्य के बाहर है। २ न्याय में, वह पदार्थ जिसका अनुमान किया जाय। जैसे—पर्वत से धुआँ निकलता है अतः वहाँ अग्नि है। यहाँ अग्नि साध्य है, जिसका अनुमान किया गया है। ३. इक्कीसवाँ योग। (ज्यो०) ४. गुरु के लिये जानेवाले चार प्रकार के

मंत्रों में से एक प्रकार का मंत्र। (तंत्र) ५. एक प्रकार के गण देवता जिनकी संख्या १२ है। ६. देवता।

**साध्यता**—स्त्री०[सं० साध्य+तल्+टाप्] साध्य होने की अवस्था, गुण या भाव।

**साध्यवसान रूपक**—पु०[स०] साहित्य में, रूपक अलंकार का वह प्रकार या भेद जो साध्यवसाना लक्षणा से युक्त होता है। (एल्लिगोरी)

**साध्यवसाना**—स्त्री०[सं०] साहित्य में, लक्षणा का वह प्रकार या भेद जिसमें स्वयं उपमान में उपमेय का अध्यवसाय या तादात्म्य किया जाता अर्थात् उपमेय को बिलकुल हटाकर केवल उपमान इस प्रकार प्रस्तुत किया जाता है कि उपमेय से उसका कोई अंतर या भेद नहीं रह जाता। जैसे—किसी परम मूर्ख के विषय में कहना—यह तो गधा (या बैल) है। उदा०—अद्भुत, एक अनूप बाग। जुगल कमल पर गज क्रीड़त है, तापर सिंह करत अनुराग।.....फल पर पहुप, पहुप पर पल्लव ता पर मुक, पिक, मृग-मद काग। इसमें केवल उपमानों का उल्लेख करके राधा के सब अंगों के सौंदर्य का वर्णन किया है।

**साध्यवसानिका**—स्त्री०=साध्यवसाना (लक्षणा)।

**साध्यवसाय**—वि०[ब्र० ब० स०] (उक्ति या कथन) जो साध्यवसाना लक्षणा से युक्त हो।

**साध्यवान्** (वत्)—वि० [स०साध्य+मतुप् म=व] (व्यवहार में, वह पक्ष) जिस पर अपना कथन या मत प्रमाणित करने का भार हो।

**साध्यसम**—पु०[सं०]भारतीय नैयायिकों के अनुसार पाँच प्रकार के हेत्वाभासों में से एक, जिसमें किसी हेतु को साध्य के ही समान सिद्ध करने की आवश्यकता होती है। जैसे—यदि कहा जाय "छाया भी द्रव्य है क्योंकि उसमें द्रव्यों के ही समान गति होती है।" तो यहाँ यह सिद्ध करना आवश्यक होगा कि स्वत. छाया में गति होती है।

**साध्याभक्ति**—स्त्री०=परा-भक्ति। (देखें)

**साध्र**—स्त्री०=साध (कामना)। उदा०—रमण रोक मनि साध्र रही।—त्रिपीराज।

**साध्वस**—पु०[स०] १. भय। डर। २. घबराहट। ३. बेचैनी। विकलता। ४. प्रतिभा।

**साध्वाचार**—पु०[सं० उपमि० स०]१. साधुओं का सा आचार और व्यवहार। २. शिष्टाचार।

**साध्वी**—वि०[सं० साधु-ङीप्]१. भली तथा शुद्ध आचरणवाली (स्त्री)। २. पतिपरायण। पतिव्रता।

**पद—सती-साध्वी।** (दे०)

स्त्री० मेदा (ओषधि)।

**सानंद**—वि०[सं० स+आनंद] जो आनन्द से युक्त हो। जैसे—यहाँ सब लोग सानंद हैं।

**अव्य०** आनंद या प्रसन्नतापूर्वक। जैसे—आप सानंद वहाँ जा सकते हैं।

पुं०१. एक प्रकार की संप्रज्ञात समाधि। २. संगीत में, १६ प्रकार के ध्रुवकों में से एक जिसका व्यवहार प्रायः वीर रस के वर्णन में होता है। ३. गुच्छ करंज।

**सान**—पुं०[सं० शाण]१. प्रायः चक्की के पाट के आकार का वह खुरदर पत्थर जिस पर रगड़कर बारबार औजारों और हथियारों की धार चोखी या तेज और साफ की जाती है। (ग्रुइस्टोन)

**मुहा०—(किसी चीज पर) सान देना, धरना या रखना**= उक्त पत्थर पर रगड़कर औजारों की धार चोखी या तेज करना।

२. प्रायः चक्कर के आकार का वह यंत्र जिसमें उक्त पत्थर लगा रहता है और जिसे तेजी से घुमाते हुए औजारों आदि पर सान रखते हैं। पु०[सं० सञ्जपन] संकेत। इशारा। (पूरब) उदा०—काहु के पान काहु दिअ सान।—विद्यापति।

**पद—सान-गुमान**=किसी काम या बात का बहुत ही अल्प रूप में हो सकनेवाला अनुमान या नाम मात्र को हो सकनेवाली कल्पना। जैसे—मुझे तो इस बात का कोई सान-गुमान ही नहीं था कि वह चोर निकलेगा।

†स्त्री०=शान (ठाठ-बाट)।

**सानना**†—स०[हिं० सनना का स०]१. दो वस्तुओं को आपस में मिलाना विशेषतः चूर्ण आदि को तरल पदार्थ में मिलाकर गीला करना। गूँधना। जैसे—आटा सानना। मसाला सानना। २ मिश्रित करना। मिलाना। ३. लाक्षणिक रूप में, किसी को उत्तरदायी या दोषी ठहराने के उद्देश्य से कोई ऐसा काम करना या ऐसी बात कहना कि दूसरों की दृष्टि में वह (दूसरा व्यक्ति) भी किसी अपराध या दोष में सम्मिलित जान पड़े। जैसे—आप तो व्यर्थ ही मुझे इस मामले में सानते हैं।

**सयो० क्रि०**—डालना।—देना।—लेना।

स०[हिं० सान+ना (प्रत्य०)]सान पर चढ़ाकर धार तेज करना। (क्व०)

**सानस**—वि० [सं० तु० त०] १. अग्नि-युक्त। २. कृतिका नक्षत्र से युक्त।

**साना***—अ०[स० शात] १ शात होना। २. समाप्त होना। न रह जाना। उदा०—कृपा-सिंधु बिलोकिए जन मन की सांसति साना।—तुलसी।

स०१. शात करना। २. नष्ट करना। ३. समाप्त करना।

**सानी**—स्त्री०[हिं० सान (ना)+ई (प्रत्य०)]१. गौओं, बैलों, बकरियों आदि को खली-कराई में सानकर दिया जानेवाला भूसा।

**पद—सानी-पानी**=खली-कराई और भूसे को एक में मिलाना। २. अनुपयुक्त रूप से एक में मिलाये हुए कई प्रकार के खाद्य पदार्थ। स्त्री०[?] गाड़ी के पहिये में लगाई जानेवाली गिट्टक। वि० [अ०] १. दूसरा। द्वितीय। जैसे—औरंगजेब सानी। २. जोड़ का। बराबरी का। तुल्य। समान।

**पद—अ-सानी**=अद्वितीय। अतुल्य।

†स्त्री०=सनई।

**सानु**—पु० [सं०] १. पर्वत की चोटी। शिखर। २. छोर। शिरा। ३. समतल भूमि। चौरस मैदान। ४. जंगल। वन। ५. मार्ग। रास्ता। ६. पेड़ का पत्ता। पर्ण। ७. सूर्य। ८. पंडित। विद्वान्। वि०[?] १. लंबा-चौड़ा। २. चौरस। सपाट।

**सानुकंप**—वि० [सं० ब० स०] जिसके मन में अनुकंपा या दया हो। दयालु।

क्रि० वि० अनुकंपा या दया करते हुए।

**सानुकूल**—वि० [सं० तृ० त०] पूरी तरह से अनुकूल।

**सानुज**—पु०[सं० सानु√जन् (उत्पन्न करना)+ज, तृ० त०] १. प्रपौंड्रीक वृक्ष। पुंडेरी। २. तुंडुल नामक वृक्ष।

अव्य० अनुज सहित। छोटे भाई के साथ।

**अनुनय**—वि०[सं० तृ० त०] विनयशील। शिष्ट।
अव्य० अनुनय या विनयपूर्वक।

**अनुनासिक**—वि० [स० तृ० त०] १. (अक्षर या वर्ण) जिसके उच्चारण के समय मुँह के अतिरिक्त नाक से अनुस्वारात्मक ध्वनि निकलती हो। २. नकियाकर गाने या बोलनेवाला।

**अनुप्राण**—वि० [सं० अव्य० स०] अनुप्रास से युक्त।
अव्य० अनुप्रास सहित।

**अनुप्राण्(न्)**—पुं०[सं० सानु+मतुप्] पर्वत।

**अनो**†—पु०[?] सूअर की तरह का एक प्रकार का जंगली जानवर।

**अनाहिक**—वि० [स० सन्नाह+ठञ्-इक] जो सन्नाह पहने हो। कवचधारी।

**अन्निध्य**—पु० [सं० सन्निध+यञ्] १. वह अवस्था जिसमे दो या अधिक जीव या वस्तुएँ साथ-साथ रहती हैं। २. सन्निध होने अर्थात् निकट या समीप होने की अवस्था या भाव। निकटता। समीपता। ३. वह स्थिति जिसमें यह माना जाता है कि आत्मा चलकर ईश्वर के पास पहुँच गई है।

**अन्निपातकी**—स्त्री० [सं० सन्निपात+ठञ्—इक—ङीप्] वैद्यक में, एक प्रकार का योनि-रोग जो त्रिदोष से उत्पन्न होता है।

**अन्निपातिक**—वि० [सं०] १ सन्निपात-सबधी। सन्निपात का। २. त्रिदोष के कारण उत्पन्न होनेवाला (रोग)।

**अन्न्यासिक**—पुं० [सं० सन्न्यास+ठक—इक]=संन्यासी।

**अन्वय**—वि० [सं० अव्य० स०] १. किसी विशिष्ट अर्थ से युक्त। २. वंशपरंपरा से आते या होनेवाला। आनुवंशिक। वंशानुगत।
अव्य० परिवार अथवा वंशजों के साथ।

**आप***—पुं०=साप।

**आपक**—वि०[सं० सपल+अण्]१. सपत्नी या सौत सम्बन्धी। २. सौत से उत्पन्न। सौतेला।
पुं० सौत के लड़के-वाले। सौत की सन्तान।

**आपत्नेय**—वि०[सं० सपत्नि+ठक्—एय] सपत्नी से उत्पन्न। सौतेला।

**आपत्न्य**—पु० [स० सपत्न+ष्यञ्] १. सपत्नी होने की अवस्था, ढंग या भाव। सौतपन। २. सपत्नियों मे होनेवाली द्वेष-भावना, लाग-डाँट या स्पर्धा। ३. सपत्नी या सौत का लड़का। ४. दुश्मन। शत्रु।

**आपत्न-वंक**—पु०[सं०सापत्न्य+कन्]१. सपत्नियों मे होनेवाली प्रतिद्वंद्विता या लाग-डाँट का भाव। २. शत्रुता।

**आपत्नज**—वि०[स०]१. जिसके आगे सतान हो। २. जो अपनी संतान के साथ हो।

**आपन**—पुं० [?] सिर के बाल के झड़ने का एक रोग।

**आपना**†—अ० [सं० शाप, हिं० साप+ना (प्रत्य०)] १. शाप देना। कोसना। उदा०—सापत ताड़त परुष कहन्ता।—कबीर। २ गालियाँ देना। दुर्वचन कहना।

**आपवाद**—वि०[सं०] (नियम या सिद्धान्त) जिसके अपवाद भी हों।

**आपह्नवातिशयोक्ति**—स्त्री०[सं०] साहित्य में, अतिशयोक्ति अलकार का एक भेद जिसमें रूपकातिशयोक्ति के साथ अपह्नुति भी मिली रहती है। इसे कुछ लोग रूपकातिशयोक्ति के अतर्गत और कुछ लोग परिसख्या के अतर्गत भी मानते है।

**आपिंड्य**—पु०[सं० सपिंड+ष्यञ्] सपिंड होने की अवस्था या भाव। वे लोग जो किसी एक ही पितर को पिंड-दान करते हों।

**आपुरस**†—पुं० [स० स+पुरुष] शूरवीर। उदा०—सिंह डीचाणो सापुरस। —जटमल।

**आपेक्ष**—वि०[स०] [भाव० सापेक्षता]१ जो किसी दूसरे तत्त्व, विचार, दृष्टिकोण आदि से सबद्ध होने के कारण उसकी अपेक्षा रखता हो। बिना किसी दूसरे सबद्ध अग के ठीक या पूरा न होनेवाला। (रिलेटिव)
२. किसी की अपेक्षा करनेवाला।

**आपेक्षता**—स्त्री०[स०] १. सापेक्ष होने की अवस्था या भाव। २. सुप्रसिद्ध जर्मन वैज्ञानिक आइन्स्टीन का सिद्धान्त जिसमे विश्व-सबधी पुराने गुरुत्वाकर्षण आदि के सिद्धांतों का खडन करके यह सिद्ध किया गया है कि विश्व की सारी गति सापेक्ष है। (रिलेटिविटी)

**आपेक्षवाद**—पुं०[सं०]१ वह वाद या सिद्धांत जिसमें दो बातो या वस्तुओं को एक दूसरी का अपेक्षक माना जाता है। २. दे० 'सापेक्षता'।

**आपेक्षवादी**—वि०[सं०] सापेक्षवाद-सबधी।
पु० सापेक्षवाद के सिद्धांतो का अनुयायी या समर्थक।

**आपेक्षिक**—वि०[सं०]=सापेक्ष।

**आप्ततंतव**—पु०[सं० ष० स०] एक प्राचीन धार्मिक सप्रदाय।

**आप्तपद**—वि०[सं० सप्तपद+अण्] सप्तपदी-सम्बन्धी।
पुं०१. सप्तपदी। २. मैत्री। ३. घनिष्ठता।

**आप्तपदीन**—वि०[पु० स० सप्तपद-खञ्—ईन]=आप्तपद।

**आप्तमिक**—वि०[सं० सप्तमी+ठक्—इक] सप्तमी-सबधी। सप्तमी का।

**आप्तहिक**—वि० [सं० सप्ताह+ठञ्-इक] १. सप्ताह-सम्बन्धी। २. सात दिनो तक लगातार चलनेवाला। जैसे—साप्ताहिक समारोह। ३. सप्ताह में एक बार होनेवाला। हर सातवें दिन होनेवाला। जैसे—साप्ताहिक पत्र। साप्ताहिक छुट्टी।
पु० वह पत्र जिसका प्रकाशन हर सातवें दिन होता हो।

**साफ**—वि०[अ० साफ़] [भाव० सफाई] १. जिस पर या जिसमें कुछ भी धूल, मैल आदि न हो। निर्मल। 'गंदा' या 'मैला' का विपर्याय। जैसे—साफ कपड़ा, साफ पानी, साफ धीया। २ जो दोष, विकार आदि से रहित हो। जैसे—साफ तबीयत, साफ दिल, साफ हवा। ३. जिसमे किसी प्रकार का खोट या मिलावट न हो। खालिस। जैसे—साफ दूध, साफ सोना। ४. जिसका तल ऊबड़-खाबड़, गठिदार या शाखा-प्रशाखाओं से युक्त न हो। समतल। जैसे—साफ रास्ता, साफ लकड़ी। ५ जिसकी बनावट, रचना, रूप आदि मे कोई त्रुटि या दोष न हो। जैसे—साफ तसवीर, साफ लिखावट। ६. जिसमे किसी प्रकार का छल, कपट या धोखा-धड़ी न हो। नैतिक दृष्टि से बिलकुल ठीक और शुद्ध। जैसे—साफ बरताव, साफ मामला, साफ लेन-देन। ७. जो इतना स्पष्ट हो कि उसके सबध में किसी प्रकार का भ्रम या संदेह न रह गया हो। जैसे—अभी बात साफ नहीं हुई। ८. जिसमे किसी प्रकार का अंधकार या धुँधलापन न हो। देखने में निर्मल और स्वच्छ। जैसे—साफ आसमान, साफ रोशनी। ९. (कार्य)

जिसके सम्पादन मे अनुचित या नियम-विरुद्ध बात न हो। जैसे—साफ खेल, साफ लेन-देन। १०. (उक्ति या कथन) जिसमें किसी प्रकार का छिपाव या दुराव न हो। निश्छल और स्पष्ट रूप से कहा हुआ। जैसे—साफ इन्कार, साफ जवाब।

**पद—साफ और सीधा**=(क) स्पष्ट और बाधाहीन। (ख) स्पष्ट और उपयुक्त।

**मुहा०—साफ साफ सुनाना**=बिलकुल स्पष्ट और ठीक बात कहना। खरी बात कहना।

११. जो स्पष्ट सुनाई पड़े या समझ में आवे। जिसके समझने या सुनने में कोई कठिनाई न हो। जैसे—साफ आवाज, साफ खबर, साफ प्रतिलिपि। १२. जिसके तल पर कुछ भी अंकित न हो। जैसे—साफ कागज। १३ जिसमें कुछ भी तत्त्व या दम न रह गया हो। जैसे—(क) मुकदमे ने उन्हें पूरी तरह से साफ कर दिया। (ख) हैजे ने गाँव के गांव साफ हो गये। १४. जिसका पूरी तरह से अंत कर दिया गया हो। समाप्त किया हुआ। जैसे—(क) इस लड़ाई में दोनों तरफ की बहुत सी फौज साफ हो गई। (ख) कुछ ही दिनों मे उसने घर का सारा माल साफ कर दिया। १५. (ऋण या देन) जो पूरी तरह से चुका दिया गया हो। चुकता किया हुआ। जैसे—जब तक कर्ज साफ न कर लो, तब तक कुछ भी फजूल खरच मत करो। १६. जो अनावश्यक या रद्दी अंश निकालकर ठीक और काम मे आने लायक कर दिया गया हो। जैसे—दस्तावेज का मसौदा साफ करना।

अव्य०१. निश्चित और स्पष्ट रूप से। पूरी तरह से। जैसे—यह साफ जाहिर है कि किताब आप ही ले गये हैं। २. इस प्रकार कि किसी को कुछ पता न चल सके या कोई कुछ भी बाधक न हो सके। जैसे—कहीं से कोई चीज साफ उड़ा ले जाना। ३. इस प्रकार कि कुछ भी आँच न आने पाए। बिना कुछ भी कष्ट भोगे या हानि सहे। जैसे—किसी सकट से साफ बच निकलना। ४ बिना लाछित हुए। निर्दोष भाव या रूप से। जैसे—किसी मुकदमे से साफ छूटना। ५ निरा। बिलकुल। जैसे—यह तो साफ झूठ या बेईमानी है।

**साफल्य**—पु०[सं० सफल+ष्यञ्] १. सफल होने की अवस्था या भाव। सफलता। २. कृतकार्यता। ३. प्राप्ति। लाभ।

**साफा**—पु०[अ०साफ] १. सिर पर बाँधने की पगड़ी। मुरेठा। मुड़ासा। २. पहनने के कपड़ों आदि मे साबुन लगाकर उन्हें साफ करने की क्रिया।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

**पद—साफा-पानी**=नगर के बाहर कहीं एकान्त में जाकर भाँग पीने और कपड़ों में साबुन लगाकर उन्हें साफ करने की क्रिया।

३. शिकारी जानवरों को शिकार के लिए या कबूतरों को दूर तक उड़ने के लिए तैयार करने के उद्देश्य से उन्हें उपवास कराना कि उनका पेट साफ हो जाय और शरीर भारी न रहे।

क्रि० प्र०—देना।

**साफी**—स्त्री०[अ० साफ़]१. हाथ मे रखने का रूमाल। दस्ती। २. वह कपड़ा जिसमें पीसी और घोली हुई भाँग छानते हैं। ३. चिलम के नीचे लपेटा जानेवाला कपड़ा। ४. कपड़े का वह टुकड़ा जिसकी प्रङ्गारता से चूल्हे पर से बरतन उतारा जाता है। ५. एक प्रकार का रंदा।

वि०१. साफ करनेवाला। २. खूब साफ करनेवाला (औषध)।

**साबड़ा**†—पु० साबर (चमड़ा)।

**साबत**—पु०[सं० सावंत] सावत। झरदार। (वि०)

†वि०=साबुत (समूचा)।

**सावति***—स्त्री० [अ० साबूत=पूरा] साबुत या पूरे होने की अवस्था या भाव। पूर्णता।

वि० दे० 'साबुत'।

**साबर**—पुं०[सं० शबर]१. साँभर मृग का चमड़ा, जो बहुत मुलायम होता है। २. शबर नामक जाति। ३. घूहड़। ४. मिट्टी खोदने की सबरी। ५. एक प्रकार का सिद्ध मत्र, जो शिवकृत माना जाता है।

†स्त्री० साँभर (झील)।

**सावल**†—पु०[सं० शबर] बरछी। भाला।

**सावल**†—पु०=शाबास।

**सावित्र**—वि० [अ० सावित्र] पूर्व का। पहले का। पुराने समय का।

**पद—सावित्र दस्तूर**=ठीक पहले जैसा। वैसा ही।

**सावित्रा**—पु०[अ० सावित्र]१. जान-पहचान। मुलाकात। २. लेन-देन आदि का व्यवहार या व्यावहारिक सम्बन्ध। सरोकार। वास्ता।

**मुहा०—किसी से सावित्रा पड़ना**=ऐसी स्थिति आना कि लेन-देन, व्यवहार या और किसी प्रकार का निकट का सम्बन्ध हो।

**साबित**—वि०[फा०] १ सबूत (अर्थात् प्रमाण) द्वारा सिद्ध किया हुआ (तथ्य)। २. दृढ़। पक्का।

पु० वह नक्षत्र, तारा आदि जो एक स्थान पर स्थिर रहता हो।

†वि०=साबुत।

**साबिर**—वि०[अ०]१. सब्र करनेवाला। २. सहन करनेवाला। सहनशील।

**साबुत**—वि० [फा० सबूत] १. जो सपूर्ण इकाई के रूप में हो। जैसे—साबुत आम, साबुत रोटी। २. समूचा। सारा। ३. ठीक। दुरुस्त। जैसे—काम साबुत उतरना।

†पु०=सबूत (प्रमाण)।

†वि०=साबित।

**साबुन**—पुं०[अ०] तेल, सोडे आदि के योग से रासायनिक क्रिया से प्रस्तुत किया हुआ एक प्रसिद्ध पदार्थ, जिससे शरीर के अंग और कपड़े आदि साफ किये जाते हैं।

**विशेष**—साधारणतः यह छोटी बट्टी के रूप मे बनता है। परन्तु आज-कल चूर्ण के रूप में और तरल रूप मे भी साबुन बनने लगे हैं।

**साबुनाना**—पु० दे० 'सागूदाना'।

**साभा**—वि०[स० स+आभा] १. आभा से युक्त। २. चमकदार। चमकीला।

**साभिप्राय**—वि० [सं० तृ० त०] १. अभिप्राय से युक्त। २. विशेष अर्थ-युक्त। ३. जिसका कोई विशिष्ट प्रयोजन या हेतु हो।

अव्य० किसी प्रकार का अभिप्राय अर्थात् आशय या उद्देश्य सामने रखते हुए।

**साभिमान**—वि०[सं० तृ० त०] गर्वीला। घमंडी।

अव्य० अभिमान या घमंड से। अभिमानपूर्वक।

**सामंजस्य**—पु०[स०]१. समजस होने की अवस्था या भाव। २. उपयुक्तता। ३. औचित्य। ४. अनुकूलता। ५. वह स्थिति जिसमे परस्पर किसी प्रकार की विपरीतता या विषमता न हो।

**सामंत**—वि०[स०] सीमा पर या पड़ोस में रहनेवाला।
पु०१. पड़ोसी। २. राजा के अधीन रहनेवाला बड़ा सरदार। ३. प्रजावर्ग का श्रेष्ठ व्यक्ति। ४. वीर। योद्धा। ५. पड़ोस। ६ निकटता। समीपता। ७ संगीत मे कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

**सामंत-तंत्र**—पु०[स०] आधुनिक राजनीति मे, आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक आदि क्षेत्रों की वह व्यवस्था, जिसमे अधिकतर अधिकार बड़े-बड़े सामतों या सरदारों के हाथ मे रहते हैं। (फ्यूडल सिस्टम)

**सामंत-प्रणाली**—स्त्री०=सामत-तत्र। (दे०)

**सामंत-प्रथा**—स्त्री०[स०]=सामत-तत्र।

**सामंत-भारती**—पु०[स०] संगीत मे, मल्लार और सारग के मेल से बना हुआ एक प्रकार का सकर राग।

**सामंतवाद**—पु०[स०] यह सिद्धान्त कि राजनीतिक और सामाजिक आदि क्षेत्रो मे सामत-तन्त्र ही अधिक उपयोगी सिद्ध होता है (फ्यूडलिज्म)

**सामंतशाही**—स्त्री०=सामत-तंत्र।

**सामंत-सभा**—स्त्री०[स०]१. सामतों की सभा। २ इग्लैण्ड मे सामतों की सभा, जिसके बहुत कुछ अधिकार भारतीय राज्य-सभा के समान है। (हाउस आफ लार्डस्)

**सामंत सारंग**—पु०[सं० मध्यम० स०] संगीत मे, एक प्रकार का सारग राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं।

**सामंतिक**—वि०[स०]१. सामन-सबधी। सामत का। २ सामत-प्रणाली से सबध रखनेवाला। सामती (फ्यूडल)

**सामंती**—स्त्री०[स० सामत—ङीप्] संगीत मे, एक प्रकार की रागिनी, जो मेघराग की पत्नी मानी जाती है।
स्त्री०[हिं० सामत] सामंत होने की अवस्था या भाव।
वि०=सामंतिक।

**सामंतेश्वर**—पु०[स० ष० त०]१. सामतों का मुखिया। २. चक्रवर्ती सम्राट्। शाहशाह।

**साम**—पु०[स० सामन्]१. भारतीय आर्यों के वे वेदमत्र, जो प्राचीन काल में यज्ञ आदि के समय गाये जाते थे। (दे० 'सामवेद') २ प्राचीन भारतीय राजनीति मे, चार प्रकार के उपायों मे से पहला उपाय, जिसमे विरोधी या वैरी से मीठी-मीठी बातें करके अपनी ओर मिलाने अथवा सतुष्ट करने का प्रयत्न किया जाता था।
**विशेष**—शेष तीन उपाय, दाम, दड और भेद कहलाते हैं।
स्त्री० १. मीठी-मीठी बातें करना। मधुर भाषण। २. दोस्ती। मित्रता। ३. मित्रता या स्नेह के कारण प्राप्त होनेवाली कृपा। उदा०—अवर न पाइए गुरु की साम।—कबीर।
पु०[यू० शेम, इब्रा० शेम] [वि० सामी] पुरातत्व के क्षेत्र में, दक्षिणी-पश्चिमी एशिया और उत्तर-पूर्वी अफ्रीका के उन क्षेत्रों का सामूहिक नाम, जिनमें अरब, एसीरिया (या असुरिया), फिनीशिया, बैबिलोन आदि प्रदेश पड़ते हैं।
**विशेष**—इन देशो के प्राचीन निवासी एक विशिष्ट जाति के थे, जिन्हें आज-कल सामी कहते है, और इनकी भाषा भी 'सामी' कहलाती थी। दे० "सामी"।
*वि०, पु०=श्याम।
*पु० १. स्वामी। २. सामान। उदा०—वाल्मीकि अजामिल के कहु हुतो न साधन सामो।—तुलसी।
*पु०=श्याम देश।
*स्त्री०१.शाम (संध्या)। २. सामी (छड़ी या डडे की)।

**सामक**—वि०[सं०] सामवेद स धी।
पु०१ वह जो साम वेद का अच्छा ज्ञाता हो। २ वह मूलधन जो ऋण-स्वरूप लिया या दिया गया हो। कर्ज का असल रुपया। ३ सान रखने का पत्थर।
*पु०=श्यामक (सावाँ)।

**सामकारी**—वि०[स० सामकारिन्-साम √कृ (करना)+णिनि] जो मीठे वचन कहकर किसी को डारसे देता हो। सांत्वना देनेवाला।
पु० एक प्रकार का सामगान।

**सामग**—पु० [स० साम√गम् (जाना)+ड=√गै (शब्द करना)+टक्] [स्त्री० सामगी] १. वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो, और अनेक मत्र ठीक तरह गा या पढ़ सकता हो। २. विष्णु का एक नाम।

**साम-गान**—पु० [सं०]१ एक प्रकार का सामनामक वेद-मत्र। २ दे० 'सामग'।

**सामग्री**—स्त्री० [स० समग्र+ष्यञ्-ङीष् यलोप] १ वे चीजे जिनका सामूहिक रूप से किसी काम मे उपयोग होता है। जैसे—लेखन-सामग्री, यज्ञ-सामग्री। २ किसी उत्पादन, निर्माण, रचना आदि के सहायक अग या तत्व। सामान। ३. साधन। ४ घर-गृहस्थी की चीजें।
**विशेष**—इसका प्रयोग सदा एकवचन मे होता है।

**सामज**—वि० [स० साम√जन् (उत्पन्न करना)+ड]जो सामवेद से उत्पन्न हुआ हो।
पु० हाथी, जिसकी उत्पत्ति सामगान से मानी गई है।

**सामत**—पु० दे० 'सामत'।
†स्त्री०=श्यामत।

**सामत्रय**—पु०[स० ष० त०] हर्रे, सोंठ और गिलोय तीनों का समूह।

**सामत्व**—पु० [सं० सामन्+त्व] साम का धर्म या भाव। सामता।

**सामध**—स्त्री० [हिं० समधी] विवाह के समय समधियों की आपस में मिलने की रसम। मिलनी।

**सामधी**—पु० दे० 'समधी'।

**सामन**†—पुं०=सावन (महीना)।
स्त्री० [अ० सैल्मन] एक विशेष प्रकार की ऐसी मछलियो का वर्ग जिनका मास पाश्चात्य देशों मे बहुत चाव से खाया जाता है। (सैल्मन)

**सामना**—पु० [हिं० सामने, पु० हिं० सामुहे] १ किसी के समक्ष होने की अवस्था, क्रिया या भाव।
**पद—सामने का**=(क) जो किसी के देखते हुआ हो। जो किसी की उपस्थिति मे हुआ हो। जैसे—यह तो तुम्हारे सामने का लड़का

है। (ख) किसी की वर्तमानता में। जैसे—यह तो हमारे सामने की घटना है।

२. भेंट। मुलाकात। जैसे—अब उनसे सामना हो, तब पूछना। ३. किसी पदार्थ का अगला भाग। आगे की ओर का हिस्सा। आगा। जैसे—उस मकान का सामना तालाब की ओर पड़ता है। ४. किसी के विरुद्ध या विपक्ष में खड़े होने की अवस्था, क्रिया या भाव। मुकाबला। जैसे—(क) वह किसी बात में आप का सामना नहीं कर सकता। (ख) युद्ध-क्षेत्र में दोनों दलों का सामना हुआ।

**मुहा०—(किसी का) सामना करना**=सामने होकर जवाब देना। धृष्टता या गुस्ताखी करना। जैसे—जरा सा लड़का अभी से सबका सामना करता है।

५. प्रतियोगिता। लाग-डाँट। होड़। जैसे—आज अखाड़े में दोनों पहलवानों का सामना होगा।

**साम-नारायणी**—स्त्री० [स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सामनी**—स्त्री० [सं०] पशुओं को बाँधने की रस्सी।

†वि०, स्त्री०=सावनी।

**सामने**—अव्य० [हिं० सामना] १. उपस्थिति में। आगे। समक्ष। जैसे—बड़ों के सामने ऐसी बात नहीं कहनी चाहिए।

**मुहा०—(किसी के) सामने करना, रखना या लाना**=किसी के समक्ष उपस्थित करना। आगे करना, रखना या लाना। (स्त्रियाँ का किसी के) **सामने होना**=परदा न करके समक्ष आना। जैसे—उनके घर की स्त्रियाँ किसी के सामने नहीं होतीं। २ किसी के वर्तमान रहते हुए। जैसे—इस किताब के सामने उसे कौन पूछेगा। ३. जिस ओर मुँह हो, सीधे उसी ओर। जैसे—सामने चले जाओ; थोड़ी दूर पर उनका मकान है। ४. मुकाबले में। विरुद्ध। जैसे—वह तुम्हारे सामने नहीं ठहर सकता।

**मुहा०—(किसी को किसी के) सामने करना या लाना**=प्रतियोगी, विपक्षी आदि के रूप में खड़ा करना। मुकाबले के लिए खड़ा करना। जैसे—वे तो आड़ में बैठे रहे, और मुकदमा लड़ने के लिए लड़के को सामने कर दिया।

**सामयिक**—वि० [स०] [भाव० सामयिकता] १. समय अर्थात् परिपाटी के अनुसार होनेवाला। २. अनुबंध के अनुसार या अनुरूप होनेवाला। ३. ठीक समय पर होनेवाला। ४. प्रस्तुत या वर्तमान समय का। जैसे—सामयिक पत्र।

**सामयिकता**—स्त्री० [स०] १. सामयिक होने का भाव। २ वर्तमान समय, परिस्थिति आदि के विचार से उपयुक्त दृष्टि-कोण या अवस्था।

**सामयिक पत्र**—पुं० [स०कर्म०स०] १. भारतीय धर्मशास्त्र में, वह इकरारनामा या दस्तावेज जिसमें बहुत से लोग अपना-अपना धन लगाकर किसी मुकदमे की पैरवी करने के लिए आपस में लिखा-पढ़ी करते थे। २. आज-कल नियत समय पर बराबर निकलता रहनेवाला कोई पत्र या प्रकाशन। (पीरियॉडिकल)

**सामयिकी**—स्त्री० [सं० सामयिक] १. सामयिक होने की अवस्था या भाव। २. सामयिक बातों से संबंध रखनेवाली चर्चा या विवेचन।

**सामयोनि**—पुं० [सं० ब० स०] १. बंदर। २. हाथी।

**सामर**—वि० [सं० समर+अण्] समर-संबंधी। समर का। युद्ध का।

†पुं०=समर (युद्ध)।

**सामरथ**—स्त्री०=सामर्थ्य।

†वि०=समर्थ।

**सामरा**—वि० पुं० [स्त्री० सामरी] =साँवला। उदा०—तहु दुहु सुलज्जित नयन सामरा।—विद्यापति।

**सामरापिप**—पुं० [ष० ष० त०] सेनापति।

**सामरिक**—वि० [सं० समर+ठक्-इक] [भाव० सामरिकता]समर संबंधी। युद्ध का। जैसे—सामरिक सज्जा।

**सामरिकता**—स्त्री० [सं० सामरिक+तल्-टाप्] १ सामरिक होने की अवस्था, गुण या भाव। (मिलिटरिज्म) २ युद्ध। लड़ाई। समर।

**सामरिकवाद**—पुं० [सं० कर्म० स०] यह मत या सिद्धान्त कि राष्ट्र को सदा सैनिक दृष्टि से सशक्त रहना चाहिए, और अपने हितों की रक्षा युद्ध या समर की सहायता से करनी चाहिए। (मिलिटरिज्म)

**सामरेय**—वि० [सं० समर+ढक्-एय] समर-संबंधी। सामरिक।

**सामर्थ**—पुं० दे० 'सामर्थ्य'।

**सामर्थी**—वि० [सं० सामर्थ्य+ई (प्रत्य०)] १ सामर्थ्य रखनेवाला। जिसमें सामर्थ्य हो। २ कोई कार्य करने में समर्थ। ३ ताकतवर। बलवान्।

**सामर्थ्य**—पुं० [सं०] १ समर्थ होने की अवस्था या भाव। २ कोई कार्य संपादित करने की योग्यता और शक्ति। (कैपेसिटी) ३ साहित्य में, शब्द की व्यंजना शक्ति। शब्द की वह शक्ति जिससे वह भाव प्रकट करता है। ४. व्याकरण में, शब्दों का पारस्परिक संबन्ध। (भूल से स्त्री० में प्रयुक्त)

**सामल**†—वि०=श्यामल।

**सामवायिक**—वि० [सं० समवाय+ठञ्-इक] १ समवाय-संबंधी। २. समूह-सम्बन्धी।

पुं० मंत्री।

**सामवायिक राज्य**—पुं० [स० समवाय+ठक्-इक राज्य, कर्म० स०] प्राचीन भारतीय राजनीति में, वे राज्य जो किसी युद्ध के निमित्त मिलकर एक हो जाते थे।

**सामविद्**—पुं० [सं० साम√विद् (जानना)+क्विप्] वह जो सामवेद का अच्छा ज्ञाता हो।

**साम-विप्र**—पु०[सं०] वह ब्राह्मण जो अपने सब कर्म सामवेद के विधानानुसार करता हो।

**साम-वेद**—पुं० [सं० सामन्-मध्य० स०] भारतीय आर्यों के चार वेदों में से प्रसिद्ध तीसरा वेद, जिसमें साम (देखें) नामक वेद मंत्रों का संग्रह है।

**सामवेदिक, सामवेदीय**—वि० [सं०] सामवेद-संबंधी।

पुं० सामवेद का अनुयायी ब्राह्मण।

**साम-शर**—पु० [सं० श्यान+शर ?] एक प्रकार का गन्ना जो डुमराँव (बिहार) में होता है।

**साम-शाली***—पुं० [स० साम+शाली] राजनीति के साम, दाम, दंड और भेद नामक अंगों को जाननेवाला राजनीतिज्ञ।

**सामस्त्य**—पुं० [स० समस्त+ष्यञ्] =समस्तता।

**सामहि***—अव्य० [स० सम्मुख] सामने। सम्मुख। समक्ष।

**सामा**—पुं० १.=सामान। २.=सौंवा।
†स्त्री०=श्यामा।

**सामाजिक**—वि० [सं० समाज+ठक्-इक] १. प्राचीन भारत में 'सभा' नामक संस्था से संबंध रखनेवाला। २ आज-कल समाज विशेष जन-समाज से संबंध रखनेवाला। समाज का। जैसे—सामाजिक व्यवहार, सामाजिक सुधार। ३. सामाजिक संबंधों के फलस्वरूप होनेवाला। जैसे—सामाजिक रोग।
पुं० १. प्राचीन भारत में, वह जो 'सभा' नामक संस्था का सदस्य होता था। २. वह जो जीविका निर्वाह या धनोपार्जन के लिए समाज (या समष्या अर्थात् तरह-तरह के तमाशों की व्यवस्था करता था। ३. वे लोग जो उक्त प्रकार के खेल-तमाशे देखने के लिए एकत्र होते थे। ४. साहित्यिक क्षेत्र में, वह जो काव्य, संगीत आदि का अच्छा मर्मज्ञ हो। रसिक। सहृदय।

**सामाजिकता**—स्त्री० [सं० सामाजिक+तल्-टाप्] १. सामाजिक होने की अवस्था या भाव। लौकिकता। २. मनुष्य में समाजशील बनने की होनेवाली वृत्ति।

**सामान**—पुं० [फा०] १. किसी कार्य के लिए साधन स्वरूप आवश्यक और उपयुक्त वस्तुएँ। उपकरण। सामग्री। जैसे—लड़ाई का सामान, सफर का सामान। २. घर-गृहस्थी की उपयोगिता की चीजें। असबाब। जैसे—चोर घर का सारा सामान उठा ले गये। ३. उपकरण। औजार। जैसे—बढ़ई या लोहार का सामान।
**विशेष**—'सामग्री' की तरह सदा एक वचन में प्रयुक्त।
४. इन्तजाम। प्रबन्ध। व्यवस्था।

**सामानिक**—वि० [सं० समान+ठञ्-इक] पद, योग्यता आदि के विचार से किसी के समान।

**सामान्य**—वि० [सं०] [भाव० सामान्यता] १. जिसमें कोई विशेषता न हो। मामूली। २. सब या बहुतों से संबंध रखनेवाला। ३ प्राय: सभी व्यक्तियों, अवसरों, अवस्थाओं आदि में पाया जानेवाला या उनसे संबंध रखनेवाला। सार्वजनिक। आम। (जनरल, उक्त दोनों अर्थों के लिए) ४ जो अपनी संगत या साधारण अवस्था, स्थिति आदि में ही हो; विशेष घटा-बढ़ा या इधर-उधर हटा हुआ न हो। प्रसम। (नार्मल)
पुं० १. *समान होने की अवस्था, गुण या भाव। समानता। बराबरी।* २. वैशेषिक दर्शन में, वह गुण या धर्म जो किसी जाति के सब प्राणियों या किसी प्रकार की सब वस्तुओं में समान रूप से पाया जाता हो। जाति-साधर्म्य। जैसे—मनुष्यों में मनुष्यत्व सामान्य और पशुओं में पशुत्व।
**विशेष**—वैशेषिक में यह ६ पदार्थों में से एक माना गया है और इसी को 'जाति' भी कहा गया है।
३. एक प्रकार का लोक-न्याय मूलक अलंकार जिसमें उपमान और उपमेय अथवा प्रस्तुत और अप्रस्तुत का स्वरूप पृथक् होने पर भी दोनों में गुणों, धर्मों आदि के बिलकुल समान या एक से होने का उल्लेख रहता है। जैसे—यह कहना कि चाँदनी रात में अटारी पर खड़ी हुई नायिका और चद्रमा में इतनी समानता है कि यह पता नहीं चलता कि मुख कौन है और चद्रमा कौन। ४. दे० 'मध्यक'।

**सामान्य छल**—पुं० [सं० मध्यम० स०] न्याय शास्त्र में, एक प्रकार का छल, जिसमें संभावित अर्थ के स्थान में जाति-सामान्य अर्थ के योग से असभूत अर्थ की कल्पना की जाती है।

**सामान्यतः**—अव्य० [सं० सामान्य+तासिल्] सामान्य रूप से। सामान्यतया। (नार्मली)

**सामान्यतया**—अव्य० [सं० सामान्य+तल्-टाप्-टा] सामान्य रूप से। मामूली तौर से। सामान्यत।

**सामान्यता**—स्त्री० [सं०] १, सामान्य या मामूली होने की अवस्था या भाव। २ वह गुण, तत्व या बात जो सामान्य हो। ३. सामान्य होने या सब जगह सामान्य रूप से होने या पाये जाने की अवस्था या भाव। (जनरैलिटी)

**सामान्यतोदृष्ट**—पुं० [सं० सामान्यतस्√दृश् (देखना)+क्त] १ तर्क और न्याय शास्त्र में, अनुमान-संबंधी एक प्रकार का दोष या भूल, जो उस समय मानी जाती है जब किसी ऐसे पदार्थ के आधार पर अनुमान किया जाता है जो न तो कार्य हो और न कारण। जैसे—आम को बौरते देखकर कोई यह अनुमान करे कि अन्य वृक्ष भी बौरने लगे होंगे। २ दो वस्तुओं या बातों में ऐसा साम्य, जो कार्य-कारण संबंध से भिन्न हो। जैसे—बिना चले कोई दूसरे स्थान पर नहीं पहुँच सकता। इसी से यह भी समझ लिया जाता है कि यदि किसी को नहीं पहुँचना हो तो उसे किसी प्रकार चलने से प्रवृत्त करना पड़ेगा।

**सामान्य-निर्वचना**—स्त्री० [सं०] साहित्य में, अप्रस्तुत प्रशसा नामक अलंकार का एक भेद जिसमें प्रस्तुत के लिए किसी अप्रस्तुत सामान्य का कथन होता है।

**सामान्य बुद्धि**—स्त्री० [सं०] प्राय सब प्रकार के जीवों में पाई जानेवाली वह सामान्य या सहज बुद्धि जिससे वे साधारण बातें बिना किसी प्रयत्न के या आप से आप समझ लेते हैं। (कॉमन सेन्स)

**सामान्य भविष्यत्**—पुं० [सं० मध्यम० स०] व्याकरण में, भविष्यत् काल का एक भेद, जिससे यह ज्ञात होता है कि अमुक बात आगे चलकर होगी अथवा आगे चलकर अमुक व्यक्ति कोई क्रिया करेगा। धातु में 'एगा' 'ऊँगा' लगाकर इस काल के क्रिया-पद बनाये जाते हैं। जैसे—जाएगा, खाएगा, हँसेगा, खेलूँगा। इनमें उद्देश्य के लिंग-वचन के अनुसार परिवर्तन होता है।

**सामान्य भूत**—पुं० [सं० मध्यम० स०] व्याकरण में, भूतकालिक क्रिया का एक भेद, जिसमें किसी बीती हुई घटना का उल्लेख मात्र होता है। धातु में 'आ' या 'या' प्रत्यय जोड़कर सामान्य भूत काल का क्रिया-पद बनाते हैं। जैसे—उठा, हँसा, नाचा, आया, लाया, नहाया आदि।

**सामान्य लक्षण**—पुं० [सं०] तर्क में, एक ही जाति या प्रकार के सब जीवों या पदार्थों में समान रूप से पाया जानेवाला वह लक्षण या वे लक्षण जिनके आधार पर उस जाति या प्रकार के सब जीवों या पदार्थों की पहचान होती है। जैसे—किसी घोड़े के सामान्य लक्षण की सहायता से ही शेष सब घोड़ों की पहचान होती है

**सामान्य वर्तमान**—पुं० [सं० मध्यम० स०] व्याकरण में, वर्तमान काल का एक भेद जिससे किसी कार्य के प्राकृतिक रूप से घटित होते रहने या तत्क्षण घटित होने का पता चलता है। धातु में ता है, ता हूँ आदि प्रत्यय लगाये जाते हैं। जैसे—आता है, जाता है, सोता है, हँसता

हूँ आदि ।

**सामान्य विधि**—स्त्री० [सं०] १. कोई साधारण विधि या आज्ञा । जैसे—बुरे काम मत करो । २. किसी देश या राष्ट्र में प्रचलित विधि-प्रविधियों का वह सामूहिक मान जिसके अनुसार उस देश या राष्ट्र के निवासियों का आचरण या व्यवहार परिचालित होता है । (कॉमन लॉ)

**सामान्य विभाजक**—पु० [सं०] गणित में, समापवर्तक राशि । (दे० 'समापवर्तक')

**सामान्या**—स्त्री० [स० सामान्य-टाप्] १. ऐसी स्त्री जो सर्व-साधारण के लिए उपलब्ध या सुलभ हो । २. साहित्य में वह नायिका जो धन कमाने के उद्देश्य से पर-पुरुष से प्रेम करने का ढोंग करती है ।

**सामान्यीकरण**—पु० =साधारणीकरण । (प्राचीन भारतीय साहित्य का)

**सामायिक**—वि० [स०] माया से युक्त । माया सहित ।

पु० जैनों के अनुसार एक प्रकार का व्रत या आचरण जिसमें सब जीवों पर सम भाव रखकर एकांत में बैठकर आत्म-चिंतन किया जाता है ।

**सामाश्रय**—पुं० [स० ब० स०-अण्] प्राचीन भारतीय वास्तु में, ऐसा भवन या प्रासाद जिसके पश्चिम ओर वीथिका या सडक हो ।

**सामासिक**—वि० [स० समास+ठक्-इक] १. समास से संबंध रखने-वाला । समास का । २ समास के रूप में होनेवाला । ३ लघु या संक्षिप्त किया हुआ ।

**सामिक**—पु० [स० सामि+कन्] १ यज्ञों में, बलि पशु को अभिमंत्रित करनेवाला व्यक्ति । २. पेड़ । वृक्ष ।

**सामिधी**†—स्त्री०=सामग्री ।

**सामित्य**—वि० [सं० समिति+यञ्] समिति सम्बन्धी । समिति का ।

पु० समिति का गुण, धर्म या भाव ।

**सामिधेन**—वि० [सं० सम्√इन्ध् (प्रदीप्त करना)+ल्युट्-अन] समिधा या यज्ञ की अग्नि से सम्बन्ध रखनेवाला ।

**सामिधेनी**—स्त्री० [सं० सामिधेन-ङीप्] १. एक प्रकार का ऋक मंत्र जिसका पाठ होम की अग्नि प्रज्वलित करने के समय किया जाता है । २ ईंधन । ३. कोई ऐसी चीज या बात जो किसी प्रकार का ताप या तेज उत्पन्न करती हो । उग्र, तीव्र या प्रबल करनेवाली चीज या बात ।

**सामिधेन्य**—पु० [सं० सामिधेनी+यत्] =सामिधेनी ।

**सामियाना**†—पुं० =शामियाना ।

**सामिल**†—वि०=शामिल ।

**सामिष**—वि० [स० तृ० त०] १. मांस से युक्त । २. गौण्त सहित । जैसे—सामिष भोजन ।

**सामिष श्राद्ध**—पु० [सं० कर्म० स०] पितरों आदि के उद्देश्य से किया जानेवाला वह श्राद्ध जिसमें मांस, मत्स्य आदि का भी व्यवहार होता था । जैसे—अष्टका आदि सामिष श्राद्ध हैं ।

**साली**—पुं० [हिं० साम (देश०)] पुरातत्त्व के अनुसार प्राचीन साम (देखें) नामक भू-भाग के निवासी जिनके अंतर्गत अरब, इब्रानी, एसी-रिया (या असुरिया) और फिनीशिया तथा बैबिलोन के लोग आते हैं । स्त्री० उक्त प्रदेश की प्राचीन भाषा जिसकी शाखाएँ आज-कल की अरबी, इब्रानी फिनिशिया और बैबिलोन आदि की भाषाएँ हैं ।



†स्त्री०=शामी (छड़ी, डडे आदि की) ।

†पु०=स्वामी ।

**सामीची**—स्त्री० [सं०] १. वंदना । प्रार्थना । स्तुति । २. नम्रता । ३ शिष्टता ।

**सामीचीन्य**—पुं० [सं० समीचीनी+ष्यञ्]=समीचीनता ।

**सामीप्य**—पुं० [स० समीप+ष्यञ्] १ समीपता । २. मुक्ति की चार अवस्थाओं में से एक, जिसमें मुक्तात्मा ईश्वर के समीप होती है ।

**सामीर**—पु० [सं०]=समीर (पवन) ।

**सामीर्य**—वि० [स०] समीर-संबंधी । समीर का । हवा का ।

**सामुखि**†—स्त्री०=समक्ष ।

**सामुदायिक**—वि० [स० समुदाय+ठक्-इक] १. समुदाय-संबंधी । समुदाय का । २ समुदाय के प्रयत्न से होनेवाला ।

पु० बालक के जन्म के समय के नक्षत्र से आगे के अठारह नक्षत्र जो फलित ज्योतिष के अनुसार अशुभ माने जाते हैं और जिनमें किसी प्रकार का शुभ कर्म करने का निषेध है ।

**सामुद्र**—वि० [स०] १ समुद्र-संबंधी । समुद्र का । २ समुद्र से निकला हुआ । समुद्र से उत्पन्न ।

पु० १ समुद्र के पानी से तैयार किया हुआ नमक । समुद्री नमक । २. समुंदर फेन । ३ समुद्र के द्वारा दूर-दूर के देशों में जाकर व्यापार करनेवाला व्यापारी । ३ शरीर में होनेवाले ऐसे चिह्न या लक्षण जिन्हें देखकर शुभाशुभ फलों का विचार किया जाता है ।

दे० 'सामुद्रिक' । ४ नारियल ।

**सामुद्रक**—वि० [सं० सामुद्र+कन्] समुद्र संबंधी । समुद्र का ।

पु० १. समुद्र के जल से बनाया हुआ नमक । समुद्री नमक । २. दे० 'सामुद्रिक' ।

**सामुद्र-स्थलक**—पुं० [स० कर्म० स०] समुद्र की तह का विस्तार ।

**सामुद्रिक**—वि० [सं० समुद्र+ठक्-इक] समुद्र से संबंध रखनेवाला । समुद्र या सागर-संबंधी । समुदरी ।

पु० १. फलित ज्योतिष का वह अंग या शाखा जिसमें इस बात का विचार होता है कि मनुष्य की हस्तरेखाओं तथा शरीर पर के अनेक प्रकार के चिह्नों या लक्षणों के क्या-क्या शुभ और अशुभ फल होते हैं । २. उस शास्त्र का ज्ञाता या पंडित । ३. दे० 'आकृति-विज्ञान' ।

**सामुहाँ***—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने । सम्मुख ।

वि० सामने का ।

†पु०=सामना ।

**सामूहिक**—वि० [सं० समूह+ठक्-इक]=सामूहिक ।

**सामूहें***—अव्य० [सं० सम्मुख] सामने । सम्मुख ।

**सामूहिक**—वि० [सं०] [भाव० सामूहिकता] १ समूह या बहुत से लोगों से संबंध रखनेवाला । 'वैयक्तिक' का विपर्याय । २. समूह द्वारा होनेवाला । (कलेक्टिव) जैसे—सामूहिक खेती ।

**सामूह्य**—पुं० [सं०समूह+ष्यञ्] समूह होने की अवस्था, गुण या भाव ।

**सामोद**—वि० [सं० तृ० त०] १. आमोद या आनंद से युक्त । प्रसन्न । २ सुगंधित ।

**सामोद्भव**—पुं० [सं० ब० स०] हाथी ।

**साम्योपनिषद्**—स्त्री० [सं० मध्यम० ब०] एक उपनिषद् का नाम ।

साम्नी—स्त्री० [सं०] १. पशुओं को बाँधने की रस्सी। २. कुछ विशिष्ट प्रकार के वैदिक छन्दों का एक वर्ग। जैसे—साम्नी अनुष्टुप, साम्नी गायत्री, साम्नी जगती, साम्नी बृहती आदि।

साम्मत्य—पुं० [सं० सम्मति+ष्यञ्] सम्मति का गुण, धर्म या भाव।

साम्मुखी—स्त्री० [सं० सम्मुख+अण्-ङीप्] गणित ज्योतिष में, ऐसी तिथि जो सायंकाल तक रहती हो।

साम्मुख्य—पुं० [सं० सम्मुख+ष्यञ्] सम्मुख होने की अवस्था या भाव। सामना।

साम्य—पुं० [सं०] समान होने का भाव। समानता। जैसे—इन दोनों पुस्तकों में बहुत कुछ साम्य है।

साम्यता—स्त्री०=साम्य।

साम्यवाद—पु० [सं० साम्य+√वद् (कहना)+घञ्] मार्क्स द्वारा प्रतिष्ठित तथा लेनिन द्वारा संवर्धित वह विचारधारा जो व्यक्ति के बदले सार्वजनिक उत्पादन, प्रबंध और उपयोग के सिद्धान्त पर समाज-व्यवस्था स्थिर करना चाहती है और इसकी सिद्धि के लिए हर संभव उपाय से घोषित वर्ग को सशक्त करना चाहती है। (कम्युनिज्म)

साम्या—स्त्री० [सं०] साधारण न्याय के अनुसार सब लोगों के साथ निष्पक्ष और समान भाव से किया जानेवाला व्यवहार। समदर्शितापूर्ण व्यवहार। (इक्विटी)

साम्यामूलक—वि० [सं० साम्या+मूलक] जिसमें साम्या या समदर्शिता का पूरा-पूरा ध्यान रखा गया हो। साम्यिक। (ईक्विटेबुल)

साम्यावस्था—स्त्री० [सं०] १. दार्शनिक क्षेत्र में, वह अवस्था जिसमें सत्त्व, रज और तम तीनों गुण बराबर हों; उनमें किसी प्रकार का विकार या वैषम्य न हो। प्रकृति। २. आज-कल लौकिक क्षेत्र में, वह अवस्था या स्थिति जिसमें परस्पर विरोधी शक्तियाँ इतनी तुली हों कि एक दूसरी पर अपना अनिष्ट प्रभाव डालकर कोई गड़बड़ी उत्पन्न न कर सकें। (ईक्विलिब्रियम)

साम्यिक—वि० [सं०]=साम्या-मूलक।

साम्राज्य—पुं० [सं०] १. वे अनेक राष्ट्र या देश जिन पर कोई एक शासन-सत्ता राज करती हो। सार्वभौम राज्य। सलतनत। २. किसी कार्य या क्षेत्र में होनेवाला किसी का पूर्ण आधिपत्य।

साम्राज्य-लक्ष्मी—स्त्री० [सं०] १. साम्राज्य का वैभव। २. तंत्र के अनुसार एक देवी जो साम्राज्य की अधिष्ठात्री मानी गई है।

साम्राज्यवाद—पुं० [सं०] [वि० साम्राज्यवादी] वह वाद या सिद्धान्त जिसमें यह माना जाता है कि किसी देश को अपने अधिकृत क्षेत्रों में वृद्धि करते हुए अपने साम्राज्य का बराबर विस्तार करते रहना चाहिए। (इम्पीरियलिज्म)

साम्राज्यवादी—वि० [सं०] साम्राज्यवाद-संबंधी।

पुं० वह जो साम्राज्यवाद के सिद्धांतों का अनुयायी तथा समर्थक हो। (इम्पिरियलिस्ट)

साम्हना†—पु०=सामना।

साम्हने†—अव्य०=सामने।

साम्हर†—पुं०=साँभर।

साम्हा†—अव्य०=सामने। उदा०—घर गिरि पुर साम्हा धावति। —प्रिथीराज।

पुं०=सामना। (राज०)

सार्ध—वि० [सं०] संध्या-संबंधी। सायंकालीन। संध्याकालीन। अव्य० सन्ध्या के समय। शाम को।

पुं० १. संध्या का समय। शाम। २ तीर। बाण।

सार्धकाल—पुं० [सं०] [वि० सायंकालीन] दिन का अंतिम भाग। दिन और रात के बीच का समय। सन्ध्या। शाम।

सार्धकालीन—वि० [सं०] संध्या के समय का। शाम का।

सार्ध-गृह—वि० [सं०] जो सन्ध्या समय जहाँ पहुँचता हो, वहीं अपना डेरा जमा लेता है।

सार्धतन—वि० [सं०] सायंकालीन। संध्या-संबंधी। सन्ध्या का।

सार्ध-भव—वि० [सं० सायं√भू (होना)+अच्] १. सन्ध्या का। शाम का। २. सन्ध्या के समय उत्पन्न होनेवाला।

सार्ध-संध्या—स्त्री० [सं०] १. सन्ध्या नाम की वह उपासना जो सायंकाल में की जाती है। २. सरस्वती देवी जिसकी उपासना सन्ध्या समय की जाती है।

सार्धस—स्त्री० [अं० साइन्स] १. विज्ञान। शास्त्र। २ भौतिक विज्ञान। ३. रसायन विज्ञान।

साय—पुं० [सं०√सो (नष्ट करना)+घञ्] १ सन्ध्या का समय। शाम। २. तीर। बाण।

सायक—पु० [सं०] १. बाण। तीर। शर। २ कामदेव के पाँच बाणों के आधार पर पाँच की संख्या का वाचक शब्द। ३ खड्ग। ४ भङ्गमुंज। रामकर। ५ एक प्रकार का वृत्त जिसके प्रत्येक पाद में सगण, भगण, तगण, एक लघु और एक गुरु होता है। (।।ऽ, ऽ।। ऽऽ।, ।ऽ)

सायन—पु० [सं०√सो (नष्ट करना)+ल्युट्—अन] एक प्रसिद्ध आचार्य जिन्होंने चारों वेदों के विस्तृत और प्रसिद्ध भाष्य लिखे हैं।

सायनीय—वि० [सं० सायन+छ-ईय] सायन-संबंधी। सायन का।

सायत—स्त्री०=साइत।

†अव्य०=शायद।

सायन—वि० [सं० स+अयन] १. जो अयन से युक्त हो। २. (ज्योतिष में कालगणना) जो अयन अर्थात् राशिचक्र की गति पर अवलंबित या आश्रित हो।

पु० १. किसी ग्रह का वह देशांतर जो वसंत-संपात के आधार पर स्थिर किया जाता है। २ भारतीय ज्योतिष में, काल की गणना करने और पंचांग बनाने की वह पद्धति या विधि (निरयण से भिन्न) जो अयन अर्थात् राशिचक्र की गति पर अवलंबित या आश्रित होती है। (विशेष विवरण के लिए दे० 'निरयण'।)

सायब†—पु० [फा० साहब] पति। स्वामी। (डिं०)

सायबान—पु० [फा० साय. बान] मकान या कमरे के आगे बनाई जानेवाली टीन आदि की छाजन।

सायबी†—स्त्री०=साहबी।

सायमाहुति—स्त्री० [सं०] संध्या के समय दी जानेवाली आहुति।

सायर—पु० [अ०] १. ऐसी भूमि जिसकी आय पर कर न लगता हो। २. ब्रिटिश शासन में जमींदारों की आमदनी की वे मदें जिन पर उन्हें कोई

कर नही देना पड़ता था। जैसे—जंगल, ताल, नदी, बाग आदि से होनेवाली आय की मदें। ३. चुंगी, महसूल या ऐसा ही और कोई कर। ४ फुटकर खर्चों की मदें। मुतफर्रकात।

पुं० [देश०] १. हेगा। २. पशुओं के रक्षक एक देवता। ३. किसी बीज का ऊपरी भाग।

*पु०=सागर।

**सायक**—वि० [अ०] १. सवाल या प्रश्न करनेवाला। प्रश्नकर्ता। २. सवाल अर्थात् याचना करनेवाला। माँगनेवाला।

पु० १. वह जिसने न्यायालय मे किसी विवाद के निर्णय के लिए प्रार्थना-पत्र दिया हो। प्रार्थी। २. वह जो कोई नौकरी या सुभीता माँगता हो। ३ भिखमँगा। भिखारी।

पुं० [देश०] एक प्रकार का धान जो असम देश में होता है।

**साया**—पु० [स० छाया से फा० साय.] १. छाया। छाँह। २ परछाईं।

**मुहा०—(किसी के) साये से भागना**=बहुत अलग या दूर रहना। बहुत बचना।

३ जिन, भूत, प्रेत, परी आदि जिनके संबंध में माना जाता है कि ये छाया के रूप मे होते हैं और उस छाया से युक्त होने पर लोग रोगी, विक्षिप्त आदि हो जाते हैं।

**मुहा०—साये में आना**=भूत-प्रेत आदि के प्रभाव से आविष्ट होकर रोगी या विक्षिप्त होना। प्रेत-बाधा से युक्त होना।

४ ऐसा सपर्क या सबध जो किसी को अपने अधीन करता अथवा उसे अपने गुण, प्रभाव आदि से युक्त करता हो।

**मुहा०—(किसी पर अपना) साया डालना**=(क) किसी को अपने प्रभाव से युक्त करना। **(किसी पर किसी का) साया पड़ना**= समति आदि के कारण अथवा यो ही किसी के गुण, प्रभाव आदि से युक्त होना।

पुं० [अं० शेमीज] १. चोबरे की तरह का एक प्रकार का पहनावा जो प्राय पाश्चात्य देशों की स्त्रियाँ पहनती हैं। २. एक प्रकार का छोटा लहँगा जिसे स्त्रियाँ प्राय महीन साड़ियो के नीचे पहनती हैं। अस्तर।

**सायाबंदी**—स्त्री० [फा० साय:बदी] विवाह के लिए मंडप बनाने की क्रिया। (मुसलमान)

**सायाम**—वि० [सं० स+आयाम] लंबा-चौड़ा। विस्तृत।

**सायास**—अव्य० [स० स+आयास] आयास अर्थात् परिश्रम या प्रयत्नपूर्वक।

**सायाह्न**—पु० [सं० ष० त०] दिन का अंतिम भाग। सध्या का समय। शाम।

**सायुज्य**—पुं० [सं०] १. किसी में मिलकर उसके साथ एक होने की अवस्था या भाव। इस प्रकार पूरी तरह से मिलना कि दोनों में कोई अंतर या भेद न रह जाय। पूर्ण मिलन। २. पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति जिसके संबंध में यह माना जाता है कि जीवात्मा जाकर परमात्मा के साथ मिल गयी और उसमें लीन हो गयी। ३. विज्ञान में, दो पदार्थों का गलकर और किसी रासायनिक क्रिया से मिलकर एक हो जाना। समेकन। (ज्यूजन)

**सायुज्यता**—स्त्री० [सं० सायुज्य+तल्-टाप्] सायुज्य का गुण, धर्म या भाव। सायुज्यत्व।

**सायुज्यत्व**—पु० [सं० सायुज्य+त्व] =सायुज्यता।

**सायुध**—वि० [स० स+आयुध] आयुध या शस्त्रो से युक्त। जिसके पास हथियार हो। स-शस्त्र। (आर्म्ड) जैसे—सायुध रक्षा-दल।

**सायुध**—वि० [स०] [स्त्री० सारंगी] १ रँगा हुआ या गदार। रगीन। २. सुदर। सुहावना। ३ रसीला। सरस।

पुं० १. चितकबरा रग। २. कांति। चमक। दीप्ति। ३. छटा। शोभा। ४. दीपक। दीआ। ५. ईश्वर। ६. सूर्य। ७ चद्रमा। ८. शिव। ९. श्रीकृष्ण। १०. कामदेव। ११. आकाश। १२. आकाश के ग्रह, तारे और नक्षत्र। १३. बादल। मेघ। १४. बिजली। विद्युत्। १५ समुद्र। १६ सागर। १७ तालाब। १८ सर। १९ जल। पानी। २०. शख। २१. मोती। २२. कमल। २३. जमीन। भूमि। २४. चिड़िया। पक्षी। २५. हस २६. मोर। २७ चातक। पपीहा। २८ कबूतर। २९ कोयल। ३०. सोन-चिड़ी। खंजन। ३१. बाज। श्येन। ३२ कौआ। ३३. शेर। सिंह। ३४ हाथी। ३५ घोड़ा। ३६ हिरन। ३७ साँप। ३८ मेंढक। ३९ सोना। स्वर्ण। ४० आभूषण। गहना। ४१ दिन। ४२ रात। ४३ खड्ग। तलवार। ४४ तीर। बाण। ४५. हिरन। ४६ बारहसिंगा। ४७. चीतल। ४८. भौंरा। भ्रमर। ४९. एक प्रकार की मधुमक्खी। ५०. सुगंधित पदार्थ। ५१. कपूर। ५२. चदन। ५३ कर। हाथ। ५४ कुच। स्तन। ५५ सिर के बाल। केश। ५६ हल। ५७ पुष्प। फूल। ५८. कपड़ा। ५९. छाता। ६०. काजल। ६१ एक प्रकार का छंद जिसमें चार तगण होते हैं। इसे मैनावली भी कहते हैं। ६२. छप्पय छद के २६ वें भेद का नाम। ६३ सपूर्ण जाति का एक राग जिसमे सब शुद्ध स्वर लगते हैं। ६४ सारगी नाम का बाजा।

स्त्री० नारी। स्त्री।

पुं० [स० शार्ङ्ग] १. कमान। धनुष। २. विष्णु का धनुष।

**सारंग-नट**—पु० [सं० ष० स०] संगीत में, सारंग और नट के योग से बना हुआ एक संकर राग।

**सारंगनाथ**—पुं० [सं० सारंगनाथ] काशी के समीप स्थित एक स्थान जो अब सारनाथ कहलाता है।

**सारंगपाणि**—पुं० [स० शार्ङ्गपाणि] सारंग नामक धनुष धारण करनेवाले, विष्णु।

**सारंग-भ्रमरी**—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सारंग-लोचन**—वि० [सं०] [स्त्री० सारंग-लोचना] जिसकी आँखें हिरन की आँखों के समान सुंदर हों।

**सारंगा**—स्त्री० [सं० सारंग] १. एक प्रकार की छोटी नाव जो एक ही लकड़ी की बनती है। २. एक प्रकार की बहुत बड़ी नाव जिस पर हजारों मन माल लादा जा सकता है। ३. संगीत में, एक प्रकार की रागिनी।

†पु० [हिं० सारंगी] साधारण से बड़ी सारंगी। (व्यंग्य)

**सारंगिक**— पुं० [सं० सारंग+ठक्-इक] १. चिड़ीमार। बहेलिया। २. एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

**सारंगिका**—स्त्री०=सारंगी।

**सारंगिया**—पुं० [हिं० सारंगी+आ (प्रत्य०)] सारंगी बजानेवाला कलाकार।

**सारंगी**—स्त्री० [सं० सारंग] एक प्रकार का बहुत प्रसिद्ध बाजा जिसमे कसे हुए तार कमानी से रेत कर बजाये जाते हैं।

**सारंभ**—पुं० [सं० तृ० त०] १. क्रोधपूर्ण बात-चीत। २. गरमा-गरम बहस।

**साद**—वि० [सं०] [भाव० सारता] १ जो मूल तत्त्व के रूप मे हो। २. उत्तम। बढ़िया। श्रेष्ठ। जैसे—सार वान्य। ३. असली। वास्तविक। ४. सब प्रकार की त्रुटियो, दोषो आदि से रहित। ५. पक्का। मजबूत। ६. न्यायसंगत।

पुं० १. किसी पदार्थ का वह मुख्य और मूल अश या भाग जो उसमे प्राकृतिक रूप से वर्तमान रहता है और जो उसके गुण, रूप, विशेषता आदि का आधार होता है। तत्त्व। सत्त। जैसे—इस चीज या बात मे कुछ भी सार नही है। २ किसी चीज मे से निकाला हुआ उसका ऐसा उक्त अश या भाग जिसमे उस चीज की यथेष्ट गध, गुण या स्वाद वर्तमान हो। किसी चीज का निकाला हुआ अरक, रस या ऐसी ही और कोई चीज। (एसेन्स, उक्त दोनो अर्थों के लिए) जैसे—इस या तेल में फूलो का सार रहता है। ३ किसी चीज के अदर रहने-वाला वह तत्त्व जिससे उस चीज का पोषण और वर्धन होता है। गूदा। मज्ज। (मैरो) ४. चरक के अनुसार शरीर के अतर्गत आठ स्थिर पदार्थ जिनके नाम इस प्रकार से हैं—त्वक्, रक्त, मास, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र और सत्त्व (मन)। ५. कही या लिखी हुई बातो, विवरणो आदि का वह संक्षिप्त रूप जिसमे विग्दर्शन के लिए उनकी सभी मुख्य बातों का समावेश हो। तात्पर्य या निष्कर्ष। साराश। (ऐबस्ट्रैक्ट) जैसे—इस पुस्तक में दर्शन (या व्याकरण) का सार दिया गया है। ६. साहित्य में, एक अलंकार जिसमे एक बात कहकर उत्तरोत्तर उसके उत्कर्ष-द्योतक सार के रूप में दूसरी अनेक बातो का उल्लेख होता है। (क्लाइमेक्स) जैसे—सब प्राणियो मे मनुष्य श्रेष्ठ है और सब मनुष्यो में उदार, धर्मात्मा और सज्जन श्रेष्ठ है। ७. पिंगल मे, एक प्रकार का मात्रिक सम छद जिसके प्रत्येक चरण मे २८ मात्राएँ होती हैं। अत मे दो गुरु होते हैं; तथा १७ मात्राओ पर यति होती है। ८ पिंगल मे, एक प्रकार का वर्णिक समवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक गुरु और एक लघु होता है। जैसे—राम। नाम। सत्य। धाम। ९. आध्यात्मिक साधको की परिभाषा में, माया या वाणी के चार भेदों में से एक जो भ्रम दूर करनेवाली और बहुत ही सुबोध तथा स्पष्ट होती है। १०. बल। शक्ति। ११. धन। दौलत। १२ काढ़ा। क्वाथ। १३ परिणाम। फल। १४. जल। पानी। १५ दही, दूध आदि मे से निकाला हुआ मक्खन या मलाई। १६. लोहा। १७ लोहे आदि का बना हुआ औजार या हथियार। १८ तरुवार। १९. वैद्यक मे, रससबधिक क्रिया से फूँका हुआ लोहा। वग। २०. चौसर, शतरज आदि खेलने की गोट। २१. जुआ खेलने का पासा। २२. अमृत। २३. अस्थि। हड्डी। २४. आम, इमली आदि का पना। पन्हा। २५. वायु। हवा। २६. बीमारी। रोग। २७. खेती-बारी की जमीन। २८. खेतों में दी जानेवाली खाद। २९. चिरौंजी का पेड़। पियाल। ३०. अनार का पेड़। ३१. नील का पौधा। ३२. मूँग।

†पुं० [स० शल्य, हि०, 'साल' का पुराना रूप] १. बरछी, भाला या इसी प्रकार का और कोई नुकीला औजार या हथियार। २. काँटा। ३ मन मे खटकती रहनेवाली कोई बात। उदा०—मोइ दुसार कियौ हियौ तन धृति भेदैं सार।—बिहारी।

†स्त्री० [हिं० सारना] १ सारने की क्रिया, ढग या भाव। २ पालन-पोषण। ३ देख-रेख। ४. एक प्रकार के गीत जो शिशु की छठी के दिन उसे नहलाने-धुलाने के समय गाये जाते हैं। ५ खाट। पलग।

†पुं० [स० शाला] गौएँ, भेसें आदि बाँधने की जगह।

†पुं० [स० शस्य] खेतो की उपज या पैदावार। फसल। उदा०—चूल्ही कै पीछे उपजै सार।—घाघ।

†पुं० [सं० घनसार] कपूर।

†पुं० [स० सारिका] मैना। पक्षी।

†पुं० १. =साल। २ =साला (पत्नी का भाई)।

†स्त्री०=साल।

**सारक**—वि० [सं० सार+कन्] १ सारण करने या निकालनेवाला। २ दस्तावर। विरेचक।

†पुं० जमालगोटा।

**सार-खदिर**—पुं० [स० ष० स०] दुर्गध खदिर। बबूरी।

**सारखा***—वि०=सरीखा।

**सार-गंध**—पुं० [स० ब० स०] चदन।

**सार-गर्भित**—वि० [स०] १. जिसमे सार या तत्त्व भरा हो। तत्त्वपूर्ण। २ महत्त्वपूर्ण तथा मूल्यवान तथ्यों, युक्तियो आदि से युक्त। जैसे—सार-गर्भित भाषण।

**सार-ग्राही**—वि० [स०] [भाव० सारग्राहिता] वस्तुओ या विषयो का तत्त्व या सार ग्रहण करनेवाला।

**सारघ**—पुं० [स० सरघा+अण्] मधु या शहद जो मधुमक्खी तरह-तरह के फूलो से सग्रह करती है।

वि० मधु-मक्खियो से सम्बन्ध रखनेवाला।

**सारजंट**—पुं० [अ०] पुलिस और सेना मे,सिपाहियो का छोटा अफसर। जमादार।

**सारज**—पुं० [स० सार√ जन् (उत्पन्न करना)+ड] मक्खन।

**सारजासव**—पुं० [स० मध्यम० स०] वैद्यक मे, धान, फल, फूल, मूल, सार, टहनी, पत्ते, छाल और चीनी—इन नौ चीजो से बनाया जानेवाला एक प्रकार का आसव।

**सारटिफिकट**—पुं० [अ०] प्रमाण-पत्र। सनद।

**सारण**—पुं० [स०] [भू० कृ० सारित, कर्ता सारक] १ कही से हटाना या हटाने में प्रवृत्त करना। २. अवांछित, विरोधी या हानिकारक तत्त्वों या व्यक्तियो को कही से निकालना या हटाना। (पजिंग) ३. अतिसार नामक रोग। ४. वैद्यक में, पारे आदि रसों का शोधन। ५ मक्खन। ६ गध। महक। ७ गध-प्रसारिणी। ८ आँवला। ९.आभ्रातक। अमड़ा। १०. रावण का एक मत्री जो रामचन्द्र की सेना मे उनका भेद लेने गया था।

**सारणा**—स्त्री० [स० सारण—टाप्] दे० 'सारण'।

**सारणि**—स्त्री० [स० √सृ (गत्यादि)+णिच्—अनि] १ नाले या छोटी

नहर के रूप में होनेवाला जल-मार्ग। २. गंध प्रसारिणी। ३. गवह-पूरना। पुनर्नवा।

**सारणिक**—पुं०[सं० सरणि+ठक्—इक] १. पथिक। राही। २. सौदागर।

**सारणित**—भू० कृ०[स०] सारणी के रूप मे अंकित किया हुआ।

**सारणी**—स्त्री०[सं०] १. पानी बहने की नाली। २ छोटी नदी। ३. नहर। ४. आज-कल कोई ऐसा कागज या फलक जिसमें बहुत से कोठे, खाने या स्तम्भ बने रहते हैं और जिनके कोठो आदि में किसी विशेष प्रकार के तुलनात्मक अध्ययन, गणना या विवेचन के लिए कुछ अंक, पद या शब्द आदि अंकित होते है। (टेबुल)

**सारणीक**—पुं०[सं०] १. ऐसा टाइपराइटर जिसमे अलग-अलग स्तम्भों में अकादि भरकर सारणी तैयार की जाती हो। (टेबुलेटर) २. दे० 'सारणीकार'।

**सारणीकरण**—पु०[सं०]१. सारणी बनाने की क्रिया या भाव। २ तथ्यों आदि को सारणी के रूप मे अंकित करना। सारणीयन। (टेबुलेशन; उक्त दोनो अर्थों मे)

**सारणीकार**—पु०[स०] वह जो अनेक प्रकार की सारणियाँ बनाने का काम करता हो। (टेबुलेटर)

**सारणी-यंत्र**—पु०[स०]एक प्रकार का आधुनिक यंत्र जिसकी सहायता से सारणियाँ बनाई जाती हैं। (टेबुलेटर)

**सारणीयन**—पु०[सं०] सारणीकरण।

**सारणेश**—पु० [स० ब० स०, ष० त० वा] एक प्राचीन पर्वत।

**सार-तंडुल**—पु०[सं०] चावल।

**सार-तरु**—पु०[स०]१. केले का पेड़। २ खैर का वृक्ष।

**सारता**—स्त्री०[सं० सार+तल्—टाप्] सार के रूप में होने की अवस्था, धर्म या भाव।

**सारथि**—पुं०[स०√सृ (गत्यादि)+अथिन्]१ रथ का चालक। सूत। २. समुद्र। ३. नायक। ४. साथी।

**सारथित्व**—पुं०[स० सारथि+त्व] सारथि का कार्य, धर्म या पद।

**सारथी**—पु०[स० सारथि] [भाव० सारथित्व, सारथ्य] १. रथ चलानेवाला। सूत। २. सब कारबार चलाने, देखने या सँभालनेवाला व्यक्ति। ३. सागर। समुद्र।

**सारथ्य**—पु० [सं० सारथि+ष्यञ्] सारथी का काम या पद।

**सारद**—वि०[सं०] [स्त्री० सारदा] सार या तत्त्व देनेवाला।

†वि०=शारदीय।

†स्त्री०=शारदा (सरस्वती)।

**सारदा**†—स्त्री०=शारदा।

पुं०[सं० शरद] स्थल कमल।

†स्त्री०=शारदा (सरस्वती)।

**सार-दाव**—पुं०[सं०]ऐसी लकड़ी जिसमें सार या हीर वाला अंश अपेक्षया अधिक हो।

**सारदा-सुंदरी**—स्त्री०[सं०] दुर्गा का एक नाम।

**सारदी**—वि०=शारदीय।

**सारदूल**—पुं०=शार्दूल (सिंह)।

**सार-द्रुम**—पुं०[सं०]१. खैर का वृक्ष। २. वह पेड़ जिसकी लकड़ी में हीर या सार-भाग अधिक हो।

**सारद्वाला(तृ)**—पुं०[स०]१ ज्ञान या बोध करानेवाला व्यक्ति। २. शिव।

**सारना***—स० [हिं० सरना का स०]१. (काम) पूरा या ठीक करना। बनाना। २. सुन्दर बनाना। सजाना। ३ रक्षा करना। बचाना। ४. (आँखो में अंजन या सुरमा) लगाना। ५ (अस्त्र-शस्त्र) चलाना। ६ प्रहार करना। ७. पालन-पोषण या देख-रेख करना। सँभालना। ८. पूरा करना। जैसे—पैज सारना=प्रतिज्ञा पूरी करना। ९. दूर करना। हटाना। १०. हटाने मे प्रवृत्त करना। ११ बुझाना। १२. साफ करना। १३. (खेत में) खाद डालना।

**सारनाथ**—पु०[सं० सारगनाथ] वाराणसी की उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्थित एक प्राचीन नगरी जहाँ से गौतम बुद्ध ने अपने धर्म का प्रचार आरंभ किया था।

**सारपद**—पुं०[सं० ब० स०]१. ऐसा पत्ता जिसमे सार अर्थात् खाद हो। २. एक प्रकार का पक्षी।

**सारपाक**—पुं०[स० ब० स०] एक प्रकार का जहरीला फल। (सुश्रुत)

**सार-फल**—पु०[स० ब० स०] जँबीरी नीबू।

**सारबान**—पु०[फा०] [भाव० सारबानी] वह जो ऊँट चलाने या हाँकने का काम करता हो।

**सार-भांड**—पु० [स० ब० स०] १. असली, चोखा या बढ़िया माल। २. उक्त प्रकार के माल का व्यापार। ३ कस्तूरी।

**सार-भाग**—पु०[सं०] किसी कथन, तथ्य, पदार्थ आदि का वह संक्षिप्त अंश जिसमे उसके मुख्य तथा मूल तत्त्व सम्मिलित हो।

**सार-भाटा**—पुं०[हिं० सार+भाटा] ज्वार आने के बाद की समुद्र की वह स्थिति जब लहरें उतार पर होती हैं।

**सारभुक्**—पु० [स० सार√भुज् (खाना) + क्विप्] अग्नि। आग।

**सार-भूत**—वि०[सं०]१. जो किसी तत्त्व या पदार्थ के सार रूप में निकाला गया हो। २. सबसे बढ़िया। श्रेष्ठ।

**सारभृत**—वि० [स० सार√ भृ (भरण करना)+क्विप्—तुक्] १. सार ग्रहण करनेवाला। सारग्राही। २.अच्छी चीजें चुनने या छाँटने वाला।

**सार-मती**—स्त्री०[सं०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सारमतिः**—स्त्री०[स०] वेद। श्रुति।

**सारमेय**—पु०[सं०]१. सरमा नामक वैदिक कुतिया की संतान, चार चार आँखोंवाले दो कुत्ते जो यम के द्वार पर रहते है। २ कुत्ता। श्वान। वि० सरमा-संबंधी। सरमा का।

**सार-लोह**—पु०[सं० षष्ठ० त०] इस्पात। लोहसार।

**सारल्य**—पुं०[सं० सरल+ष्यञ्] सरल होने की अवस्था, गुण या भाव। सरलता।

**सारवती**—स्त्री०[सं०]१. एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में तीन भगण और गुरु होता है। यथा—मोहि चलौ बन संग लिये। पुत्र तुम्हैं हम देखि जिये।—केशव। २. योग मे, एक प्रकार की समाधि।

**सारवत्ता**—स्त्री०[स० सारवत्+तल्—टाप्]१. सारवान् होने की अवस्था या भाव। २. सार ग्रहण करने का कार्य या भाव।

**सारवर्ग**—पुं०[सं० ष० त०] ऐसे वृक्षों तथा वनस्पतियों की सामूहिक संज्ञा जिनमें से दूध या सफेद निर्यास निकलता हो। (वैद्यक)

**सारवान् (वत्)**—वि०[स०]१. जो सार या तत्त्व से युक्त हो। २. ठोस। ३. पक्का। मजबूत। ४. (वृक्ष) जिसमे से निर्यास निकलता हो।

**सार-संग्रह**—पुं०[सं०] किसी विषय की संक्षिप्त और सार-भूत बातों का संग्रह। (कम्पेन्डियम)

**सारस**—वि०[सं०] सर या सरसी अर्थात् तालाब से सम्बन्ध रखनेवाला। पुं०१. लंबी टाँगोंवाला एक प्रकार का प्रसिद्ध और बडा सफेद पक्षी जो प्रायः जलाशयों के पास अपनी मादा के साथ रहता है, और मछलियाँ खाता है। सरसीरुः २. हंस। ३. चन्द्रमा। ४. कमर में पहनने का एक प्रकार का गहना। ५. कमल। ६. छप्पय नामक छन्द के ३७ वें भेद का नाम।

**सारसक**—पु०[सं० सारस+कन्] सारस पक्षी।

**सारस-प्रिय**—पु०[स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सारसाक्ष**—पुं०[सं० ब०स०] लाल नामक रत्न का एक प्रकार या भेद। वि०[स्त्री०सारसाक्षी] सारस अर्थात् कमल के समान सुन्दर नेत्रोंवाला।

**सारसिका**—स्त्री० [स० सारस+कन्—टाप् इत्व] मादा सारस।

**सारसी**—स्त्री०[स० सारस—ङीप्] १ आर्या छंद का २३ वाँ भेद। २. मादा सारस।

**सार-सुता**°—स्त्री० [सं० सुरसुता]=यमुना।

**सारसुती**°—स्त्री०=सारस्वती।

**सार-सूची**—स्त्री० [स०] कोई ऐसी सूची जिसमे किसी विषय से संबध रखनेवाली मुख्य-मुख्य बातों का सार रूप में उल्लेख हो। (ऐब्सट्रैक्ट)

**सारसेचय**—पुं०[स० मध्यम० स०] सेंधा नमक।

**सारस्वत**—वि०[सं०] १ सरस्वती से सम्बन्ध रखनेवाला। सरस्वती का। २. विद्या, विद्वत्ता, शास्त्रीय ज्ञान आदि से संबध रखनेवाला। शास्त्रीय। (एकेडेमिक) ३. सरस्वती नदी से संबध रखने या उसके आस-पास होनेवाला। ४. सारस्वत देश या जाति से सबध रखनेवाला।
पु० १. प्राचीन भारत में, सरस्वती नदी के दोनो तटो पर का प्रदेश जो आधुनिक दिल्ली के उत्तर-पश्चिम में पड़ता है और जो अब पंजाब का दक्षिणी भाग है। प्राचीन आर्यों का यही पवित्र मूल निवास-स्थान था। २. उत्तर प्रदेश में बसनेवाले ब्राह्मणों और उनके वंशजों की संज्ञा। ३. एक मुनि जो सरस्वती नदी के पुत्र कहे गये हैं। ४. वैद्यक मे, एक प्रकार का चूर्ण जो उन्माद, प्रमेह, वायु-विकार आदि में गुणकारी माना जाता है। ५. पुराणानुसार सरस्वती को प्रसन्न करने के उद्देश्य से किया जानेवाला एक प्रकार का व्रत जो प्रति रविवार या प्रति पचमी को किया जाता है। कहते हैं कि यह व्रत करने से आदमी बहुत बड़ा विद्वान् और भाग्यवान् होता है।

**सारस्वती**†—वि०=सारस्वतीय।
†स्त्री०=सरस्वती।

**सारस्वतीय**—वि० [स० सरस्वती+घञ्—ईय] १. सरस्वती का। सरस्वती संबंधी। २. सारस्वत का।

**सारस्वतोत्सव**—पुं० [सं० कर्म० स०] १. एक प्राचीन उत्सव जिसमें सरस्वती का पूजन होता था। २. आज-कल बसंत पचमी को होनेवाला सरस्वती-पूजन।

**सारस्वत्य**—वि० [सं० सरस्वती+ष्यञ्] सरस्वती का। सरस्वती-सम्बन्धी।
पुं० सरस्वती का पुत्र जिसे राजशेखर ने काव्य-पुरुष कहा है।
**विशेष**—महाभारत में कथा है कि भगवान ने सरस्वती को एक पुत्र इसलिए दिया था कि वह वेदो का अध्ययन करके ससार में उनका प्रचार करे। वही सारस्वत्य के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

**सार-हल**—पु०[स० सार (शल्य)+फल] [स्त्री अल्पा० सार-हली] बरछी, भाले आदि की नुकीली अनी या फल। उदा०—सारहली जिउँ सल्हियाँ सज्जण मंझ शरीर।—ढोलामारू।

**सारहली**†—स्त्री० दे० 'सौंडनी'। (वि०) उदा०—असप सारहली बाजइ डूल।—नरपतिनाल्ह।

**सारांभस**—पु० [सं० ब० स०] नीबू का रस।

**सारांश**—पु०[स० सार+अंश]१ किसी पूरे तथ्य, पदार्थ आदि के मुख्य तत्त्वो का ऐसा छोटा या संक्षिप्त रूप जिससे उसके गुण, स्वरूप आदि का ज्ञान हो सके। मुख्य सार भाग। खुलासा। निचोड। समस्तिका। (ऐब्सट्रैक्ट) २. किसी पूरी बात या विवरण की मुख्य और सारभूत विशेषताएँ जो एक जगह एकत्र की गई हों। (समरी) ३. कोई ऐसा छोटा लेख जिसमे कि बड़े लेख की सब बातें आ गई हों। सार-संग्रह। (कम्पेन्डियम) ४. तात्पर्य। मतलब। जैसे—साराश यह कि आप को वहाँ नही जाना चाहिए था। ५. परिणाम। नतीजा। ६ उपसंहार।

**सारांशक**—पुं०[स०] वह कथन या लेख जो किसी विस्तृत उल्लेख या विवरण के सारांश के रूप मे हो। (समरी)

**सारा**—वि०[सं० समभ] [स्त्री० सारी]१ जितना हो वह सब। कुल। समस्त। २. आदि से अंत तक जितना हो, वह सब। पूरा। समग्र। स्त्री०[स०]१. काली निसोथ। २ दूब। ३ सातला। ४. थूहड़। ५. केला। ६. तालीश पत्र।
पु०[?] एक प्रकार का अलकार जिसमे एक वस्तु दूसरी से बढ़कर कही जाती है।
†पुं०=साला।

**सारांभस**—पु०[स० ब० स०] १. जंबीरी नींबू। २. पानिम।

**सारावती**—स्त्री०[स०] सारवती।(दे०)

**सारि**—पु०[सं० सार+इनि,√सृ (गत्यादि)+इण् वा]१. जूआ खेलने का पासा। २ पासे से जूआ खेलनेवाला जुआरी। ३. शतरज आदि की गोटी या मोहरा।

**सारिउँ**°—स्त्री०=सारिका (मैना पक्षी)।

**सारिक**—वि०[स० सार से] १ जो सार रूप मे हो या सारांश से संबंध रखता हो। २. संक्षेप मे कहा गया या संक्षिप्त रूप मे लाया हुआ। (ब्रीफ़) ३. साराश के रूप मे एक जगह इकट्ठा या सघटित किया हुआ। (कन्साइज़)
पुं० दे० 'सारिका'।

**सारिका**—स्त्री०[सं० सारिक+टाप्] मैना नामक पक्षी।

**सारिखा**†—वि०=सरीखा।

**सारिणी**—स्त्री० [स०] १. गन्ध प्रसारिणी लता। २. लाल पुनर्नवा। ३. दुरालभा। ४. दे० 'सारणी'।
वि० स० सारी (सारिन्) का स्त्री०।

**सारित**—भू० कृ०[स०] दूर किया या हटा या हटाया हुआ।

**सारिफलक**—पु०[स० ब० स०] चौपड़ की गोटी या पाशा। बिसात।

**सारिवा**—स्त्री०[सं० सारिव—टाप्]१. अनंतमूल। २. कृष्ण अनन्तमूल।

**सारिष्ट**—वि०[सं०] [भाव० सारिष्टता] १. सबसे अच्छा। श्रेष्ठ। २. अच्छी तरह बढ़ा हुआ। उन्नत। ३. मृत्यु के समीप पहुँचा हुआ। मरणासन्न।

**सारी**—स्त्री० [सं०] १. सारिका पक्षी। मैना। २. जूआ खेलने की गोटी या पाशा। ३. घूहर।
वि०[सं० सारिन्] अनुकरण या अनुसरण करनेवाला।
*स्त्री० [हिं० सारना] १. सारने (बनाने, रक्षित रखने आदि) की क्रिया या भाव। उदा०—कबीर सारी सिरजन हार की जानै नाही कोइ।—कबीर। २ रची या बनाई हुई चीज। रचना। सृष्टि।
वि० हिं० 'सारा' का स्त्री०। सब। समस्त।
स्त्री० १ दे० 'साड़ी'। २. दे० 'साली'।

**सार***—पु०=सार।

**सारूप, सारूप्य**—पु०[स०] १ दो या अधिक वस्तुओं के रूप अर्थात् आकार-प्रकार के विचार से होनेवाली समानता। समरूपता। (सिम्बलेन्स) २ पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक जिसके संबंध में यह माना जाता है कि इसमें भक्त अपने उपास्य देवता के साथ मिलकर रूप विचार से ठीक उसी के अनुरूप हो जाता है।

**सारूप्यता**—स्त्री०[स० सारूप्य+तल्—टाप्]=सारूप्य।

**सारूप्य निबंधना**—स्त्री०[सं०] साहित्य में, अप्रस्तुत प्रशंसा नामक अलंकार का एक भेद जिसमें प्रस्तुत का कथन न करके उसी तरह के किसी अप्रस्तुत का उल्लेख होता है।

**सारो**†—पु०[स० शालि] एक प्रकार का धान जो अगहन में पक जाता है।
†स्त्री०=सारिका (मैना)।
†वि०, पुं०=सारा।

**सारोदक**—पु०[सं० कर्म० स०, ब० स० वा] अनंतमूल या सारिवा का रस।

**सारोपा**—स्त्री०[स०] साहित्य में, लक्षणा का एक प्रकार या भेद जो उस समय माना जाता है जब उपमेय में उपमान का इस प्रकार आरोप होता है कि उपमेय से उपमान का कोई विशिष्ट गुण या धर्म सूचित होने लगे। जैसे—विद्या में आप बृहस्पति हैं, अर्थात् आप बृहस्पति के समान विद्वान् हैं। इसके गौण सारोपा तथा शुद्ध सारोपा दो भेद हैं।

**सारोष्ट्रक**—पु०[स० सारोष्ट्र-ब० स०—ठक्-इक] एक प्रकार का विष।

**सारौ**†—स्त्री०=सारिका (मैना पक्षी)।

**सारौ**†—स्त्री०=सारिका (मैना)।

**सार्गिक**—पु०[सं० सर्ग+ठञ्—इक] वह जो सृष्टि कर सकता हो। स्रष्टा।

**सार्ज**—पुं०[सं० √सृज् (स्थागना)+अण्] चूना। रास।

**सार्टिफिकेट**—पु०[अं०]प्रमाण-पत्र।

**सार्थ**—वि० [सं०] १. अर्थयुक्त। अर्थवान्। २. धनी। ३. उद्देश्यपूर्ण। ४. उपयोगी।
पुं०१. धनी व्यक्ति। २. व्यापारियों का जत्था। ३. सेना की टुकड़ी। ४. समूह। गोल। ५. यात्रियों का दल।

**सार्थक**—वि०[स० सार्थ+कन्] [भाव० सार्थकता] १. (शब्द या पद) जिसका कुछ अर्थ हो। अर्थवान्। २. जिसका उपयोग निरुद्देश्य न हो। जो किसी उद्देश्य की पूर्ति करता हो। जैसे—वाक्य में होनेवाला किसी शब्द का सार्थक प्रयोग। ३ उपयोगी तथा लाभप्रद।

**सार्थकता**—स्त्री०[स० सार्थक+तल्—टाप्] सार्थक होने की अवस्था गुण या भाव।

**सार्थपति**—पु०[स०] व्यापार करनेवाला। वणिक।

**सार्थवाह**—पु०[सं०] व्यापारी (विशेषतः दूर तक माल बेचने जानेवाला)।

**सार्धिक**—वि०[स० सार्ध+ठक्—इक्] जो किसी के साथ यात्रा कर रहा हो।
पु० यात्रा काल में संग-साथ रहने के कारण बननेवाला साथी।

**सार्धी**—पुं०[स० सार्थ+इनि, सारथिन्]=सारथी।

**सार्दूल**—वि०, पुं०=शार्दूल।

**सार्द्र**—वि०=सार्थ।

**सार्द्र**—वि०[स० अव्य० स०]=आर्द्र (गीला या तर)।

**सार्ध**—वि०[स०]जो मान, मात्रा आदि के विचार से किसी पूरे एक से आधा और बढ़ गया हो। जैसे—साढ़े चार, साढ़े दस।

**सार्प, सार्प्य**—वि०[स०] सर्प-संबंधी। सर्प का।
पुं० अश्लेषा नक्षत्र।

**सार्व**—पुं०[सं०]१. सर्व अर्थात् सब से संबंध रखनेवाला। सब का। जैसे—सार्वजनिक। २ सब के लिए उपयुक्त।
पुं०१. गौतम बुद्ध। २. जिन देव।

**सार्वकामिक**—वि० [सं०]१. सब प्रकार की कामनाओं से संबंध रखनेवाला। २. जो सब तरह की कामनाएँ पूरी करता हो।

**सार्वकालिक**—वि०[सं०]१. जो हर समय होता हो। २. सब कालों में होनेवाला। सब समयों का। ३ जिसका संबंध सब कालों से हो। सर्वकाल संबंधी।

**सार्वगुण**—वि० [स० सर्वगुण+अण्] सर्वगुण संबंधी। सब गुणों का।
पु०=खारा नमक।

**सार्वजनिक**—वि०[सं०]१. सब लोगों से संबंध रखनेवाला। सर्वसाधारण संबंधी। (पब्लिक) जैसे—सार्वजनिक उपयोग। २. समान रूप से सब लोगों के काम में आनेवाला। (कॉमन) जैसे—सार्वजनिक कूआँ या धर्मशाला।

**सार्वजनीन**—वि०=सार्वजनिक।

**सार्वजन्य**—वि०[सं०] सार्वजनिक।

**सार्वत्र्य**—पुं०[स०]=सर्वज्ञता।

**सार्वत्रिक**—वि०[सं०]जो सब स्थानों तथा स्थितियों में प्रायः समान रूप से मिलता, रहता या होता हो। (यूनिवर्सल)

**सार्वदेशिक**—वि०[सं०]१. जो सब देशों में होता हो। २. जिसका संबंध सब देशों से हो। (यूनिवर्सल) ३. संपूर्ण देश में होनेवाला।

**सार्वनामिक**—वि०[सं० सर्वनाम ] १. सर्वनाम संबंधी। सर्वनाम का। २. सर्वनाम से निकला या बना हुआ। जैसे—सार्वनामिक विशेषण।

**सार्वभौतिक**—वि०[सं०]१. जिसका संबंध सब भूतों या तत्वों से हो। २. सब प्राणियों से संबंध रखने या उनमें होनेवाला।

**सार्वभौम**—वि० [सं०]१. संपूर्ण भूमि से संबंध रखनेवाला। २. सब देशों से संबंध रखने या मन में होनेवाला।
पु०१. चक्रवर्ती राजा। २. हाथी।

**सार्वभौमिक**—वि०[स०] सार्वभौम। (दे०)
पुं० वह जिसका दृष्टिकोण इतना विस्तृत हो कि संसार के सब देशों तथा उनके निवासियों को एक समान देखता, समझता तथा मानता हो। ऐसा व्यक्ति स्थानिक, राष्ट्रीय, जातीय तथा अन्य संकुचित विचारों से रहित होता है। (कॉस्मोपालिटन)

**सार्वराष्ट्रीय**—वि० [स०] [भाव० सार्वराष्ट्रीयता] १. सब या अनेक राष्ट्रों से संबंध रखनेवाला। अंतर्राष्ट्रीय। (इन्टरनेशनल) २. (नियम या सिद्धान्त) जिसे सब राष्ट्र में मान्यता मिली हो।

**सार्व-लौकिक**—वि०[स०] १. जो संपूर्ण लोक या विश्व में प्रचलित या व्याप्त हो। २. जिसका संबंध सब लोगों से हो। ३. जिसे सब लोग जानते हों। ४. विश्वक।

**सार्विक**—वि० [स० सर्व] [भाव० सार्विकता] १. जो साधारणतः सब जगह या सब बातों में प्राय. समान रूप से देखने में आता हो। (यूनिवर्सल) २. विशेषतः किसी जाति, राष्ट्र, समाज आदि के सब सदस्यों में समान रूप से मिलने या होनेवाला। आम। (जेनरल)

**सार्विक वध**—पुं० [सं०] किसी स्थान पर रहने या एकत्र होनेवालों की की जानेवाली सामूहिक हत्या। (मैसेकर)

**सार्विक हड़ताल**—स्त्री०[स०+हिं०] ऐसी हड़ताल जिसमें साधारणतया सभी संबंधित कर्मचारीगण सम्मिलित होते हैं।

**सार्षप**—पुं०[सं० सर्षप+अण्]१. सरसों। २ सरसों का तेल। ३ सरसों संबंधी। सरसों का।

**सार्ष्टि**—स्त्री०[स० सृष्टि+इञ्] पाँच प्रकार की मूर्तियों में से एक।
वि० [भाव० सार्ष्टिता] अधिकार, पद, स्थिति आदि में किसी के समान।

**सार्ष्टिता**—स्त्री०[स०] अधिकार, पद, स्थिति आदि के विचार से होने-वाली समानता।

**सालंक**—पुं०[स०] संगीत में, राग के तीन प्रकारों में से एक। ऐसा राग जो बिलकुल शुद्ध और स्वतन्त्र होने पर भी किसी दूसरे राग की छाया से युक्त जान पड़ता हो।

**सालंकार**—वि०[स० तृ० त०] अलंकारों से सजा हुआ। अलंकृत।

**सालंग**—पुं०[स० सलग+अण्]=सालक (राग)।

**सालंब**—वि०[स०] तृ० त०] अवलंब या सहारे से युक्त। (समास में)

**साल**—पुं०[पहलवी सालक से फा०, मि० सं० शारद] १ किसी सन् या संवत् के आरंभिक महीने से अंतिम महीने तक का पूरा समय। वर्ष। बरस। जैसे—इस साल अच्छी वर्षा (या फसल) होने की आशा है। २. किसी दिन या महीने से आरंभ करते हुए बारह महीनों का समय। जैसे—यह इमारत साल भर में बनकर तैयार होगी।
स्त्री० [हिं० सालना]१. 'सालने' की क्रिया या भाव। २. सालने, खटकने या चुभनेवाली कोई चीज। जैसे—काँटा या सूई। उदा०—कछु सालहिं लोभ विशाल से हैं।... ।—केशव। ३. मन में होनेवाला कष्ट। वेदना। पीड़ा। कसक। ४ क्षत। घाव। ५. लकड़ियाँ जोड़ने के लिए उनमें किया जानेवाला चौकोर छेद। ६. छेद। सूराख।
पु० [सं०] १. तेंद। वृक्ष। २ जड़। मूल। ३. चूना। राल। ४. चहारदीवारी। परकोटा। ५. एक प्रकार की मछली। ६.गीदड़। सियार। ७. किला। गढ़। (हिं०)

†पु०[?]१ कूचबंदों की परिभाषा में, खस की जड़ जिससे वे कूच बनाते हैं। २ एक प्रकार का जंगली जंतु जिसके मुँह में दाँत नहीं होते और जो चूहिटयाँ, दीमक आदि खाता है।
†पु०१ =शाल (वृक्ष)। २.=शालि। ३.=शल्य।
†स्त्री०=शाला। जैसे—धर्मसाला।

**सालक**—वि०[हिं० सालना+क (प्रत्य०)] सालने या दुःख देनेवाला।

**सालग**—पुं०[स०]=सालक।

**सालगा**†—पुं० दे० 'सलई'।

**साल-गिरह**—स्त्री०[फा०] वर्ष-गाँठ। जन्म-दिन।

**सालग्राम**—पुं०=शालग्राम।

**सालग्रामी**—स्त्री०[सं० शालग्राम] गंडक नदी।

**सालज**—पुं०[स० साल√जन् (उत्पन्न करना)+ड] सर्जरस। धूना। राल।

**साल-द्रुम**—पुं०[सं० मध्यम० स०, ब० स० वा] सागौन का पेड़। साखू।

**सालन**—पुं०[स० सलवण] मास-मछली या साग-सब्जी की मसालेदार तरकारी।
†पु०[स० साल] चूना। राल।

**सालना**—अ०[स० शूल]१ किसी कँटीली चीज का शरीर के किसी अंग में गड़कर या चुभकर पीड़ा उत्पन्न करना। २ लाक्षणिक रूप में, किसी कष्टदायक बात का मन में इस प्रकार घर करना कि वह रह-रहकर विशेष कष्ट देती रहे। ३. गड़ना। चुभना।
संयो० क्रि०—जाना।
स०१. कोई नुकीली चीज किसी दूसरी चीज के अंदर गाड़ना या धँसाना। २. चुभाना। ३. किसी को दुःख देना।

**साल-निर्यास**—पुं०[स० ष० त०] चूना। राल।

**सालपर्णी**—स्त्री०[स० ब० स० ङीप्] शालपर्णी। सरिवन।

**सालपान**—पुं०[स० शालिपर्णी?] एक प्रकार का क्षुप जो वर्षा ऋतु के अंत में फूलता है। इसकी जड़ का व्यवहार ओषधि के रूप में होता है। कसरवा। चाँवर।

**साल-पुष्प**—पुं०[सं०] स्थल कमल।

**सालब मिसरी**—स्त्री० दे० 'सालम मिसरी'।

**साल भंजिका**—स्त्री०=शाल भंजिका।

**सालम मिसरी**—स्त्री०[अ० सअ्लब+मिस्री=मिस्र देश का] एक प्रकार के पौधे का कन्द जो पौष्टिक होने के कारण ओषधियों में प्रयुक्त होता है। वीरकदा। सुधामूली।

**सालर**†—पुं०=सलई।

**सालरस**—पुं० [स० ष० त०] धूना। राल।

**सालस**—पुं० [अ० सालस=तीसरा]१. वह तीसरा व्यक्ति जो दो व्यक्तियों के झगड़े का निपटारा करता हो। तिसरैत। २. पंच।

**साल-सँभर**—पुं० दे० 'बारहसिंगा'।

**सालसा**—पुं०[अ०] रक्त शोधक ओषधियों के योग से बना हुआ पाश्चात्य ढंग का एक प्रकार का काढ़ा।

**सालसी**—स्त्री०[अ०]१. सालस होने की अवस्था या भाव। २. दूसरों का झगड़ा निपटाने के लिए तीसरे व्यक्ति या कुछ व्यक्तियों की बनी हुई पंचायत।

**सालहज**†—स्त्री० =सलहज।

**साला**—पुं० [सं० श्यालक] [स्त्री० साली] १. संबंध के विचार से किसी व्यक्ति की दृष्टि में उसकी पत्नी का भाई। २. लोक-व्यवहार में उक्त प्रकार का संबंध सूचित करनेवाली एक गाली।

पु०[सं०] सरिका। मैना पक्षी।

†स्त्री०=शाला।

वि०[हिं० साल=वर्ष] नियत साल या वर्ष पर होनेवाला या उससे सम्बन्ध रखनेवाला। जैसे—दो-साला पेड़=दो साल का लगा हुआ पेड़। तिन-साला बंदोबस्त = तीन साल के लिए होनेवाला बन्दोबस्त।

**सालाना**—वि० [फा० सालानः] हर साल होनेवाला। वार्षिक।

**सालार**—पुं०[फा०] नायक। नेता। जैसे—सिपह-सालार=सिपाहियों (फौजियों) का नेता।

**सालारजंग**—पु०[फा०]१. योद्धा। २. प्रधान सेनापति। ३. 'साला' (पत्नी का भाई) के लिए उपहासात्मक शब्द।

**सालि**†—पुं०=शालि।

**सालिक**—वि०[सं०]१. पथिक। यात्री। २. मुसलमानों में वह साधक जो गृहस्थाश्रम में रहकर भी ईश्वराराधना में रत रहता हो।

**सालिका**—स्त्री०[सं०] बाँसुरी।

**सालिग्राम**—पुं०=शालग्राम।

**सालिनी**—स्त्री०=शालिनी (गृहिणी)।

**सालिब मिस्री**—स्त्री०=सालम मिस्री।

**सालिम**—वि०[अ०] जो कहीं से खंडित न हो। पूर्ण। संपूर्ण। समूचा। जैसे—सालिम तरबूज।

**सालियाना**—वि०=सालाना (वार्षिक)।

**सालिसी**—स्त्री०[अ०] दे० 'सालसी'।

**सालिहोत्री**—पुं०=शालिहोत्री।

**साली**—स्त्री०[हिं० साला]१. संबंध के विचार से पत्नी की बहन। २ हठयोगियों की परिभाषा में माया, वासना आदि।

स्त्री०[फा० साल]१. साल या वर्ष का भाव। (यौ० के अंत में) जैसे—कहतसाली, खुरकसाली। २ हर साल या प्रति वर्ष के हिसाब से दिया जानेवाला पारिश्रमिक, पुरस्कार या वेतन।

**सालू***—पुं०[हिं० सालाना] १. वह जिसके मन को दूसरों का उत्कर्ष सालता हो। ईर्ष्यालु। २. सालनेवाली बात।

पु०[?] एक प्रकार का लाल कपड़ा जिसे मांगलिक अवसरों पर स्त्रियाँ ओढ़ती हैं। (पश्चिम)

**सालूर**—पुं०=शालूर (मेंढक)

**सालेमा**—स्त्री०[स० सालेय+टाप्] सौंफ।

**सालोक्य**—पु०[सं० सलोक, ब० स० ष्यञ्] पाँच प्रकार की मुक्तियों में से एक प्रकार की मुक्ति, जिसके फल-स्वरूप साधक अपने इष्टदेव के लोक में जाकर उसमें लीन हो जाता है।

**सालोहित**—पुं०[स० ब० स०]१. ऐसा व्यक्ति जिसके साथ रक्त-संबंध हो। नातेदार। २. कुल या वंश का व्यक्ति।

**साल्मली**†—पुं०=शाल्मली (सेमल का पेड़)।

**साल्व**—पु० [सं०] १. एक प्राचीन जाति जो किसी समय मध्य (या उत्तरी ?) पंजाब में रहती थी। २. पंजाब का मध्यप्रदेश जिसमें उक्त जाति रहती थी। २. उक्त प्रदेश का निवासी। ४. एक दैत्य जिसका वध विष्णु ने किया था।

**साल्वेय**—वि०[सं० साल्व+ढक्—एय] साल्व देश-संबंधी। साल्व का।

**सार्वकरण**†—पु०=व्यामकर्ण (घोड़ा)।

**सार्वत**†—पुं०=सामंत।

**साव**—पुं०[स० सावक=शिशु] बालक। पुत्र। (डिं०)

†पु०=साहु।

**सावक**†—पुं०=श्रावक (जैन या बुद्ध भिक्षु)।

**सावका**†—अव्य० [अ० सार्विक?] नित्य। सदा। उदा०—वायु सावका करै लराई, भाइआ सद मतवारी।—कबीर।

**सावकाश**—अव्य० [सं०] अवकाश होने पर। छुट्टी या फुरसत के समय।

†पु०=आकाश।

**सावगी**†—पुं०=सरावगी।

†स्त्री०=किसमिश। (पंजाब)

**सावचेत***—वि०[स० सा+हिं० चेत] [भाव० सावचेती] =सावधान।

**सावज**†—पुं० [स० श्वापद ?]। जंगली जानवर जिसका शिकार किया है। (गैम)

**सावणिक**—पु०[सं० श्रावण] श्रावण मास। (डिं०)

**सावत**—स्त्री०[हिं० सौत]१. सौतों का आपस में भेद या डाह। सौतिया डाह। २. ईर्ष्या। जलन। डाह। उदा०—तहँ गये मद मोह लोभ अति, मरग्रहँ भिटत न सावत।—तुलसी।

**सावद्य**—वि० [सं०] जिसके संबंध में कोई आपत्तिजनक बात कही जा सकती हो। जो किसी रूप में दोष, भ्रम आदि से युक्त हो। 'निरवद्य' का विपर्याय। जैसे—आपका यह कथन मेरी दृष्टि में कुछ सावद्य है।

पु० योग में तीन प्रकार की सिद्धियों में से एक। (शेष दो प्रकार निरुद्य और सूक्ष्म कहलाते हैं।)

**सावधान**—वि०[स० अव्य० स०] [भाव० सावधानता]१. जो अवधान या ध्यानपूर्वक कोई काम करता हो। २. जिसे ठीक समय पर तथा ठीक तरह से काम करने की प्रवृत्ति हो। २ जो परिस्थितियों आदि की क्रियाशीलता के प्रति जागरूक तथा सचेत हो।

**सावधानता**—स्त्री०[स० सावधान+तल्—टाप्]१. सावधान होने की अवस्था, गुण या भाव। २. वह सुरक्षात्मक कार्रवाई जो खतरे आदि से सावधान रहने के लिए की जाती है।

**सावधि**—वि०[स०]१. जिसकी कोई अवधि निश्चित हो। निश्चित कार्य-कालवाला। २. जिसकी सीमा बाँध दी गई हो।

**सावन**—पुं०[स० श्रावण]१. असाढ़ के बाद और भाद्रपद के पहले का महीना। श्रावण। २. वर्षा ऋतु में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

पुं०[सं०]१. सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का काल या समय। पूरा एक दिन और एक रात जिसका मान ६० दंड है। २. यज्ञ का अंत या समाप्ति। ३. बजमान। ४. श्रवण।

वि० १. एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक के काल से संबंध रखनेवाला। २. (काल-मान) जिसकी गणना एक सूर्योदय से दूसरे

सूर्योदय तक के काल के विचार से हो। जैसे—सावन दिन, सावन मास, सावन वर्ष आदि।

पुं०[?] मँझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष जिसका गोंद औषधि के रूप में काम में लाया और मंछलियों के लिए विष होता है।

†पुं०=सावनी (गीत)।

**सावन दिन**—पु०[सं०]१. उतना समय जितना सूर्य को एक बार याम्योत्तर रेखा से चलकर फिर वहीं आने में लगता है। २. एक सूर्योदय से दूसरे सूर्योदय तक का समय। ६० दंडों का समय।

विशेष—(क) यह नाक्षत्र दिन से कभी कुछ छोटा और कभी कुछ बड़ा होता है इसी लिए ज्योतिषी लोग नक्षत्र दिन-मान का ही व्यवहार करते हैं। (ख) तीन सौ साठ सौर दिनों का एक सावन वर्ष होता है।

**सावन-भादों**—पु०[हिं०] राजमहल का वह विभाग जिसमें जल-विहार के लिए तालाब, झरने, फुहारे आदि होते थे।

अव्य० सावन और भादों के महीने में।

**सावन मास**—पु०[सं०] भारतीय ज्योतिष की गणना के अनुसार व्यापारिक और व्यावहारिक कार्यों के लिए माना जानेवाला एक प्रकार का मास जो किसी तिथि से आरंभ होकर उसके तीसवें दिन तक होता है। यदि गणना चांद्र मास की तिथि के अनुसार हो तो उसे चांद्र सावन कहते हैं, और यदि सौर मास की तिथि के अनुसार हो तो उसे सौर सावन मास कहते हैं।

**सावन वर्ष**—पुं०[सं०] ज्योतिष की गणना में वह वर्ष जो ३६० सौर दिनों का होता है। (ट्रापिकल ईयर)

**सावन-हिंडोला**—पु०[हिं०] वे सब गीत जो (क) स्त्रियाँ सावन में झूला झूलने के समय गाती हैं, अथवा (ख) देवताओं के झूलन के उत्सव के समय गाये जाते हैं। ऐसे गीत प्रायः शृंगारात्मक होते हैं।

**सावनी**—वि०[हिं० सावन (महीना)] १. सावन संबंधी। सावन का। २. सावन में होनेवाला।

स्त्री०१. सावन में गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत। २. सावन में कर पक्ष से कन्या के लिए भेजे जानेवाले कपड़े, फल, मिठाइयाँ आदि। ३. सावन के लगभग तैयार होनेवाली फसल। ४. एक प्रकार का पौधा और उसके फूल।

†पु० सावन में तैयार होनेवाला एक प्रकार का धान।

†स्त्री०=भावनी।

**सावनी कल्याण**—पुं०[हिं० सावनी+सं० कल्याण] सावनी और कल्याण के मेल से बना हुआ एक प्रकार का संकर राग। (संगीत)

**सावर**—पुं० [सं० सबर+अण्] १. लोध। २. अपराध। दोष। ३ पाप।

†पु०१.=शाबर। २.=सबर।

**सावरणी**—स्त्री०[सं० सावरण—ङीप्] वह बुहारी जो जैन यति अपने साथ रखते हैं।

**सावरिका**—स्त्री०[सं० सावर+कन्—टाप्, इत्व]एक प्रकार की जोंक जो जहरीली नहीं होती।

**सावर्ण**—वि०[सं० सवर्ण+अण्] जो एक जाति या वर्ण के हों। सवर्ण।

पुं० दे० सावर्णि'।

**सावर्णक**—पुं०[सं०सावर्ण+कन्]=सावर्णि।

**सावर्णि**—पु०[सं० सवर्णा+इञ्]१. सूर्य के पुत्र आठवें मनु। २. उक्त मनु का मन्वंतर।

**सावर्णिक**—वि०[सं० सावर्णि+कन्] जिनका संबंध एक ही जाति या वर्ण से हो।

**सावर्ण्य**—पु० [सं० सवर्ण+ष्यञ्] सवर्ण होने की अवस्था, गुण या भाव।

**सावष्टंभ**—पु० [सं० अव्य० सं०] ऐसा मकान जिसके उत्तर-दक्षिण सड़क हो। (ऐसा मकान बहुत शुभ माना जाता है।)

वि०१. मजबूत। दृढ़। २ आत्म-निर्भर।

**सावित्रिका**—स्त्री०[सं० अव्य० सं०] धाय। दाई।

**सावित्र**—वि०[सं०] १. सवितृ अर्थात् सूर्य-संबंधी। जैसे—सावित्र होम। २. सवितृ या सूर्य से उत्पन्न।

पु०१. सूर्य। २. शिव। ३ वसु। ४. ब्राह्मण। ५. सूर्य के पुत्र। कर्ण। ६ गर्भ। ७. यज्ञोपवीत। ८ एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र।

**सावित्री**—स्त्री०[सं०]१ सूर्य की किरण। २ ऋग्वेद का गायत्री नामक मंत्र जिसमें सूर्य की स्तुति की गई है। ३. सरस्वती। ४ सूर्य की एक पुत्री जो ब्रह्मा को ब्याही थी। ५ दक्ष की एक कन्या जो धर्म की पत्नी थी। ६. मत्स्य देश के राजा अश्वपति की कन्या जो सत्यवान को ब्याही थी और जिसने सत्यवान को काल के हाथ से छुड़ाया था। इसकी गणना परम सती स्त्रियों में होती है। ७ कोई सती-साध्वी स्त्री। ८ सधवा स्त्री। ९. सरस्वती नदी। १० यमुना नदी। ११. उपनयन संस्कार। १२. आँवला।

**सावित्री व्रत**—पु० [सं०] एक व्रत जो स्त्रियाँ जेठ कृष्ण चतुर्दशी को अपने पति की दीर्घायु की कामना से करती हैं।

**सावित्री सूत्र**—पु०[ म० ष० त०, मध्यम० स० ] यज्ञोपवीत। यज्ञोपवीत जो सावित्री दीक्षा के समय धारण किया जाता है।

**सावित्रेय**—पु०[स० सावित्री+ढक्—एय] यमराज। यम।

**सावेरी**—स्त्री०[?] संगीत में भैरव ठाठ की एक प्रकार की रागिनी।

**सावेश**—वि०[सं०] इच्छुक। आकांक्षी।

**सावेश**—पु०[स० ब० स०]१ प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी। ३ ऋषि का पुत्र। ऋषीक।

**साश्चर्य**—वि० [सं०] १. आश्चर्यजनक। चकित करनेवाला। २. चकित।

**साश्रु**—वि०[सं० ब० स०] १ आँसुओं से युक्त। अश्रुपूर्ण। २. रोता हुआ।

अव्य० १. आँसुओं से युक्त होकर। २ आँखों में आँसू भरकर। रोते हुए।

**साश्वत**†—वि०=शाश्वत।

**साष्टांग**—वि० [सं० तृ० त०] आठों अंगों से युक्त।

क्रि० वि० आठों अंगों से। जैसे—साष्टांग प्रणाम करना।

**साष्टांग प्रणाम**—पु०[सं०] सिर, हाथ, पैर, हृदय, आँख, जाँघ, वचन और मन इन आठों से युक्त होकर और जमीन पर सीधे लेटकर किया जानेवाला प्रणाम।

**सास**—स्त्री०[सं० श्वश्रू]१. संबंध के विचार से किसी की पत्नी या पति की माता। २. संबंध के विचार से उक्त स्थान पर पड़नेवाली स्त्री। जैसे—चचिया सास, ममिया सास। ३. नाव और छिद्र सम्बन्धियों

में मणिपूर चक्र में स्थित अपान वायु जो माया, मोह, वासना आदि की जननी मानी गई है। उदा०—सास ननद को मार अदल में विहा चलाई।—पलटूदास।

**सासन**†—पुं० =शासन।

**सासत**†—स्त्री०=सांसत।

**सासति**†—स्त्री०=शास्ति।

**सासन**†—पु०=शासन।

**सासन जेब**—स्त्री०[?] एक प्रकार का सफेद जालीदार कपड़ा।

**सासना**†—स०[स० शासन]१. शासन करना। २. दंड देना। ३. कष्ट देना।

†पु०=शासन।

**सासरा**†—पु०=ससुराल।

**सासा** *—स्त्री०[स० संशय] संदेह।

पु० सांस।

**सासु**—वि० [सं० तृ० त०] प्राणयुक्त। जीवित।

†स्त्री० सास।

**सासुर**†—पु० १ ससुर। २ ससुराल

**सासित**—पु०[सं० ब० स०, तृ० त० वा] शुद्ध सत्व को विषय बनाकर की जानेवाली भावना।

**सास्वादन**—पु०[स० ब० स०] जैनो मे, निर्वाण प्राप्ति की चौदह अवस्थाओं मे से दूसरी अवस्था।

**साह**—पु०[स० साधु]१. सज्जन और साधु पुरुष। २. वणिक। महाजन। साहूकार। ३. धनी और प्रतिष्ठित व्यक्ति। ४. चीते आदि की तरह का एक प्रकार का पहाड़ी हिंसक जंतु जिसके शरीर पर छल्लेदार चित्तियाँ या धब्बे होते हैं। ५. लकड़ी या पत्थर का वह लंबा टुकड़ा जो दरवाजे के चौखटे में देहलीज के ऊपर दोनों पार्श्वों में लगा रहता है।

†स्त्री०[स० शाखा या स्कंध] बाँह। भुजदंड। उदा०—सकल भुआन मगल-मंदिर के द्वार विसाल सुहाई साहे।—तुलसी।

†पु०=शाह (बादशाह)।

**साहचर्य**—पुं०[स०]१. सहचर होने की अवस्था या भाव। २. साथ साथ रहने या होने का भाव। संग-साथ। (एसोसियेशन)

**साहजिक**—वि०[स०]१.(कार्य या व्यापार) जो प्राणी की सहज बुद्धि या आन्तरिक प्रेरणा से संपन्न होता हो। वृत्तिक। सहज। (इंस्टिंक्टिव) २. स्वाभाविक।

**साहजिक धन**—पु०[सं०] पारितोषिक, वेतन, विजय आदि में मिला हुआ धन। (शुक्र नीति)

**साहन**—सुं० [सं साधन] १. साधो। सभी। २. सेना। फौज। ३. परिषद्। (डिं०)

**साहना**—स० [स० सह] १.ग्रहण या प्राप्त करना। लेना। उदा०—खातातार माल खाँ लिए पान कर साहि।—चन्दबरदाई। २. बस मे जैसे का सजोल कराना।

स०[सं० साधन] १. सहारा देना। २. दे० 'साधना'।

†स्त्री०=साधना।

**साहनी**—पुं० [सं० साधनिक,प्रा० साहनिअ] १. प्राचीन भारत में, एक प्रकार के राजकर्मचारी जो किसी सैनिक विभाग में अधिकारी होते थे। २. मध्ययुग मे, एक प्रकार के राजकर्मचारी जो नगर की व्यवस्था करते थे। उदा०—भरत सकल साहनी बोलाये।—तुलसी। ३. परिषद्। बरबारी। ४. संगी। साथी।

स्त्री० सेना। फौज।

**साहब**—पु० [अ० साहिब] १ मालिक। स्वामी। २. परमात्मा। ३. मित्र। साथी। शिष्ट समाज में, भले आदमियों के नाम या पेशे के साथ प्रयुक्त होनेवाला आदरार्थक शब्द। जैसे—बाबू कालिकाप्रसाद साहब, डा० साहब, वकील साहब। ५ अंग्रेजी शासन-काल मे, इगलैण्ड या यूरोप का कोई निवासी।

**साहबजादा**—पु० [अ० साहिब+फा० जादा] [स्त्री० साहबजादी] भले आदमी या रईस का लड़का।

**साहब-सलामत**—स्त्री० [अ०] परस्पर मिलने के समय होनेवाला अभिवादन। बदगी। सलाम। जैसे—अब तो दोनों में साहब-सलामत भी बंद हो गई है।

**साहबान**—पु० [अ०] 'साहब' का बहु०।

†पु० सायबान।

**साहबाना**—वि० [अ०] १ साहबों अर्थात् पाश्चात्य देशों के गोरे अफसरो की तरह का या उनके रंग-ढंग जैसा। २ साहबों अर्थात् भले आदमियों की तरह का।

**साहबी**—वि०[अ० साहिब+ई (प्रत्य०)] साहब का। साहब संबंधी। जैसे—साहबी ठाट-बाट, साहबी रंग-ढंग।

स्त्री०१. साहब अर्थात् स्वामी होने की अवस्था या भाव। अधिकार-पूर्ण प्रभुत्व या स्वामित्व। २. साहब अर्थात् पाश्चात्य देश के गोरे निवासी होने की अवस्था, ढंग या भाव। ३ बड़प्पन। महत्त्व।

**साहबीयत**—स्त्री०[?]'साहबी' या साहब होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव।

**साहस**—पु० [स०] [वि० साहसिक, साहसी] १. प्राचीन भारत में, बलपूर्वक किया जानेवाला कोई अनुचित, क्रूरतापूर्ण तथा नीति-विरुद्ध कार्य। जैसे—किसी के धन या स्त्री का अपहरण, मार-काट, लूट-पाट आदि।

**विशेष**—इसी लिए यह शब्द अत्याचार, दुष्कर्म, बलात्कार आदि का भी वाचक हो गया था।

२. वैदिक युग में, वह अग्नि जिस पर यज्ञ के लिए चरु पकाया जाता था।

३. आज-कल मन की दृढ़ता और शक्ति का सूचक वह गुण या तत्त्व जिसके फलस्वरूप मनुष्य बिना किसी भय या संकोच के कोई बहुत कठिन, जोखिम का बहुत बड़ा या ऐसे के बाहर का काम करने मे प्रवृत्त होता है। (करेज) ४.अर्थशास्त्र में, उत्पत्ति के पाँच साधनों में से एक जिसमें उत्पत्ति के शेष साधनों (भूमि, श्रम, पूँजी तथा प्रबंध) को एकत्र करके उनके द्वारा किसी वस्तु की उत्पत्ति की जाती है। उद्यम। (एण्टरप्राइज) ५. दंड। सजा। ६. जुरमाना।

**साहसांक**—पुं० [सं० ब० स०] राजा विक्रमादित्य का एक नाम।

**साहसिक**—वि० [सं०] १. साहस संबंधी। साहस का। २. जिसमें साहस हो। साहसी। हिम्मतवर। ३. पराक्रमी। ४. निडर। निर्भीक। ५. अत्याचार या क्रूरतापूर्ण अथवा निंदनीय कृत्य करनेवाला। जैसे—चोर, डाकू, लुटेरा, गंठकट, झूठा, ईडियन वगैरह।

**साहूकी(किन्)**—वि० [सं०] १. साहसपूर्ण काम करनेवाला। २.जिसमें साहस हो।
पुं० १. अर्थशास्त्र में वह व्यक्ति जो उत्पत्ति के साधन (अमि, श्रम, पूँजी तथा प्रबंध) एकत्र करके किसी वस्तु का उत्पादन करता हो। (एन्टरप्राइज़र) २. दे० 'साहसिक'।

**साहस**—वि० [सं०] सहस्र-संबंधी। हजार की संख्या से संबंध रखनेवाला।
पुं० १. हजार का समूह। २. हजार सैनिकों का दल।

**साहस्रिक**—वि० [सं० सहस्र+ठक्-इक] सहस्र-संबंधी। साहस।
पुं० किसी इकाई का हजारवाँ अंश।

**साहस्री**—स्त्री० [सं०] १. एक ही प्रकार की एक हजार चीजों का वर्ग या समूह। २. दे० 'सहस्राब्दि'।

**साहा**—पु० [सं० साहित्य] १. वह वर्ष जो हिंदू ज्योतिष के अनुसार विवाह के लिए शुभ माना जाता है। २. विवाह का मुहूर्त। (पश्चिम) ३. किसी प्रकार का शुभ मुहूर्त। उदा०—सकल दोख बिवरजित साहौ।—प्रिथीराज।

**साहाय्य**—पु० [सं०] सहायता। मदद।

**साहि***—पु० [फा० शाह] १. शाह या बादशाह। २. मालिक। स्वामी। ३. धनी। महाजन। साहू। ४. मुसलमान फकीरों की उपाधि।

**साहित्य**—पु० [सं०] १. 'सहित' या साथ होने की अवस्था या भाव। एक साथ होना, रहना या मिलना। २. वे सभी वस्तुएँ जिनका किसी कार्य के संपादन के लिए उपयोग होता है। आवश्यक सामग्री। जैसे—पूजा का साहित्य=अक्षत, जल, फूल-माला, गंध-द्रव्य आदि। ३. किसी भाषा अथवा देश के उन सभी (गद्य और पद्य) ग्रंथों, लेखों आदि का समूह या सम्मिलित राशि, जिसमें स्थायी, उच्च और गूढ़ विषयों का सुंदर रूप से व्यवस्थित विवेचन हुआ हो। (लिटरेचर)
**विशेष**—वाङ्मय और साहित्य में मुख्य अंतर यह है कि वाङ्मय के अंतर्गत तो ज्ञान-राशि का वह सारा संचित भंडार आता है जो मनुष्य को नवीन दृष्टि देता और उसे जीवन-संबंधी सत्यों का परिज्ञान मात्र कराता है। परंतु साहित्य उक्त समस्त भंडार का वह विशिष्ट अंश है जो मनुष्य को ऐसी अंतर्दृष्टि देता है जिससे कलाकार किसी प्रकार की कलासृष्टि करके लोकोत्तर आनंद का अनुभव करते हैं। ४. वे सभी लेख, ग्रंथ आदि जिनका सौंदर्य गुण, रूप या भावुकतापूर्ण प्रभावों के कारण समाज में आदर होता है। ५ किसी विषय, कवि या लेखक से संबंध रखनेवाले सभी ग्रन्थों और लेखों आदि का समूह। जैसे—वैज्ञानिक साहित्य, तुलसी साहित्य। ६ किसी विषय या वस्तु से संबंध रखनेवाली सभी बातों का विस्तृत विवरण जो प्रायः उसके विज्ञापन के रूप में बँटता है। जैसे—किसी बड़े ग्रन्थ, संस्था, यंत्र आदि का साहित्य। (लिटरेचर) ७. गद्य और पद्य की शैली और लेखों तथा काव्यों के गुण-दोष, भेद-प्रभेद, सौंदर्य अथवा नायिका-भेद और अलंकार आदि से संबंध रखनेवाले ग्रन्थों का समूह।

**साहित्य शास्त्र**—पु० [सं० मध्यम० स०] १. वह विद्या या शास्त्र जिसमें रचनाओं के साहित्य पक्ष तथा स्वरूप पर शास्त्रीय ढंग से विचार किया जाता है। २. काव्य-शास्त्र। ३. विशेषतः प्राचीन काव्य शास्त्र जिसमें रसों, अलंकारों, रीतियों आदि पर विचार किया जाता था।

**साहित्यिक**—वि० [स० साहित्य] १. साहित्य (विशेषतः साहित्यिक कृतियों) से संबंध रखनेवाला अथवा उसके अनुरूप होनेवाला। जैसे—साहित्यिक रचना। २. जो साहित्य का ज्ञाता या पारखी हो अथवा साहित्य की रचना करना ही जिसका पेशा हो। जैसे—साहित्यिक व्यक्ति, साहित्यिक संस्था।

**साहित्यिक चोरी**—स्त्री० [स०+हिं०] किसी की साहित्यिक कृति चुराकर (कविता, लेख आदि) उसको अपनी मौलिक कृति के रूप में लोगों के सामने उपस्थित करना। (प्लेजिअरीज्म)

**साहिनी**†—पुं०=साहनी।

**साहिब**†—पु०=साहब।

**साहिबी**—स्त्री०=साहबी।

**साहियाँ***—पु०=सोई।

**साहिर**—पु० [अ०] [भाव० साहिरी] जादूगर।

**साहिल**—पु० [अ०] १ किनारा। तट। २ विशेषत. समुद्र-तट।

**साहिली**—स्त्री० [अ० साहिल=समुद्र-तट] १. काले रंग का एक पक्षी जिसकी लंबाई एक बालिश्त से कुछ अधिक होती है। २ बुलबुल-चश्म।
वि० १ साहिल या तट से संबंध रखनेवाला। २. साहिल पर रहने या होनेवाला।

**साही**—स्त्री० [स० शल्यकी] एक प्रकार का जंतु जिसके सारे शरीर पर लंबे लंबे खड़े काँटे होते हैं। सेई।
†स्त्री० [फा० शाही] एक प्रकार की पुरानी चाल की तलवार।

**साहु**†—पु०=साह।

**साहुरड़ा***—पु० [प० सौहरा] ससुराल। उदा०—पेवकड़े दिन भारी हैं, साहुरड़े जाणा।—कबीर।

**साहूल**—पु० [फा० शाकूल] १. समुद्र की गहराई नापने का एक उपकरण जिसमें एक लंबी डोरी के एक सिरे पर सीसे का लट्टू लगा रहता है। २ वास्तु में, उक्त आकार-प्रकार वह उपकरण जिसमें दीवारें आदि बनाने के समय उनकी सीध नापते हैं। (प्लम्मेट)
†पु० [?] शोर-गुल। होहल्ला। (राज०)

**साहू**—पु०=साह।

**साहूकार**—पु० [हिं० साहू+स० कार (प्रत्य०)] [भाव० साहूकारी] १. वह व्यक्ति जिसके पास यथेष्ट संपत्ति हो। बड़ा महाजन। २. धनाढ्य व्यापारी। कोठीवाला।

**साहूकारा**—पु० [हिं० साहूकार+आ (प्रत्य०)] १. साहूकारों का कार्य, पद या व्यवसाय। महाजनी। रुपयों का लेन-देन। २. वह बाजार जिसमे मुख्य रूप से रुपयों का लेन-देन होता है।
वि० १. साहूकारों का। २. साहूकारों का-सा।

**साहूकारी**—स्त्री० [हिं० साहूकार+ई (प्रत्य०)] साहूकार होने की अवस्था या भाव।

**साहूत**—पु० [अ० नासूत का अनु०] कुछ मुसलमान विशेषतः सूफी फकीरों के अनुसार ऊपर के नौ लोकों मे से सातवाँ लोक।

**साहेब**†—पु०=साहब।

**साहैं**†—अव्य०=सामुहें (सामने)।
स्त्री० [हिं० बाँह] भुज-दंड।

सिर्रे*—अव्य=त्यों ।

सिलना—अ० [हिं० सेंकना का अ०] सेंका जाना ।

सिलरी†—स्त्री०=सिलड़ी ।

सिंग†—पु०=१.=शृंग । २.=सींग ।

सिंगड़ा—पु० [सं० शृंग+डा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० सिंगड़ी] सींग की वह नली जिसमें सैनिक लोग बारूद रखते थे ।

सिंगरफ—पु०=सिंगरफ (ईंगुर) ।

सिंगरी—स्त्री०=सिंगी (मछली) ।

सिंगल—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली ।
†पु० दे० 'सिंगनल' ।

सिंगा—पु० [हिं० सींग] सींग के आकार-प्रकार का एक बाजा जिसे फूँककर बजाते हैं ।

सिंगार†—पु०=शृंगार ।

सिंगारदान—पु० [हिं० सिंगार+सं० आधान या फा० दान (प्रत्य०)] शृंगार की सामग्री रखने का छोटा संदूक ।

सिंगारना—स० [हिं० सिंगार+ना (प्रत्य०)] शृंगार करना । प्रसाधन सामग्री तथा आभूषणों से अपने को या किसी को सजाना ।

सिंगारहाट—पु०[स० शृंगारहट्ट] वह बाजार जिसमें वेश्याएँ रहती हों । चकला ।

सिंगारहार—पु० [स० हारशृंगार] १. हरसिंगार नामक वृक्ष । परजाता । २. उक्त के फूल ।

सिंगारिया—पु० [हिं० सिंगार+इया (प्रत्य०)] १ शृंगार करनेवाला । २. वह पुजारी जो देव-मूर्तियों का शृंगार करता हो ।

सिंगारी—वि० [हिं० सिंगार+ई (प्रत्य०)] सिंगार-संबंधी ।
पु० =सिंगारिया ।

सिंगाल—पु० [देश०] एक प्रकार का पहाड़ी बकरा जो कुमायूँ से नैपाल तक पाया जाता है ।

सिंगाला—वि० [हिं० सींग+वाला (प्रत्य०)] [स्त्री० सिंगाली] सींगवाला (जन्तु) ।

सिंगिया—पु० [सं० शृंगिक] एक प्रसिद्ध विष जो एक पौधे की जड़ है ।

सिंगी—स्त्री० [हिं० सींग] १ सींग का बना हुआ एक प्रकार का बाजा जो मुँह से फूँककर बजाया जाता है । तुरही । २. सींग की तरह वह नली जिसे जर्राह लोग फसद लगाते अर्थात् शरीर का दूषित रक्त चूसकर निकालते हैं ।
क्रि० प्र०—लगाना ।
३. बरसाती पानी में होनेवाली एक प्रकार की मछली । ४. सींग के आकार का घोड़ों का एक अशुभ लक्षण ।

सिंगी-मोहरा—पुं० [हिं० सिंगी+मुहरा] सिंगिया (विष) ।

सिंगौटी—स्त्री० [हिं० सींग+औटी (प्रत्य०)] १. बैल के सींग पर पहनाने का एक आभूषण । २. सींग का बना हुआ घोटना जिससे चमक लाने के लिए कपड़े आदि घोटे जाते हैं । ३. सींग को खोखला करके बनाया हुआ एक प्रकार का पात्र जिसमें घी, तेल आदि रखते थे । ४. जंगलों में मरे हुए जानवरों के सींग ।
स्त्री० [हिं० सिंगार+औटी (प्रत्य०)] वह पिटारी जिसमें स्त्रियाँ शृंगार की सामग्री रखती हैं ।

सिंघ†—पुं०=सिंह (शेर) ।

सिंघल†—पुं०=सिंहल द्वीप ।

सिंघली—वि०=सिंहली ।

सिंघाड़ा—पुं० [सं० शृंगाटक] १. पानी में होनेवाला एक पौधा । २. उक्त पौधे का फल जिसके दोनों ओर सींगों की तरह दो काँटे होते हैं । पानी-फल । (वाँटर चेस्टनट) ३. चित्र-कला में, पत्तों की तरह का तिकोना अंकन । ४. सिंघाड़े के आकार की तिकोनी सिलाई या बेल-बूटे । ५. समोसा नामक पकवान । ६. एक प्रकार की मुनिया (पक्षी) । ७. एक प्रकार की आतिशबाजी । ८. रहट की लाट में ठोंकी हुई लकड़ी जो लाट को पीछे की ओर घूमने से रोकती है । ९. सुनारों का एक औजार जिससे वे माला बनाते हैं ।

सिंघाड़ी—स्त्री० [हिं० सिंघाड़ा+ई (प्रत्य०)] वह नाल जिसमें सिंघाड़ा होता है ।

सिंघाना—पु० दे० 'सिंहाना' ।

सिंघाली—वि० [स० सिंह] १. वीर । २. श्रेष्ठ । (डिं०)
वि०, पु०, स्त्री० दे० 'सिंही' ।

सिंघासन†—पुं०=सिंहासन ।

सिंघिनी†—स्त्री०=सिंहिनी (सिंह का मादा) ।

सिंघिया—पु०=सिंगिया (विष) ।

सिंघी—स्त्री० [हिं० सींग] १. सोंठ । शुंठी । २ दे० 'सिंगी' ।
†स्त्री०=सिंगिया (विष) ।

सिंघू—पुं० [देश०] एक प्रकार का जीरा जो फारस से आता और प्रायः काले जीरे की तरह होता है ।

सिंघेला—पु०[हिं०सिंघ+एला(प्रत्य०)] १. शेर का बच्चा । २ वीरपुत्र ।

सिंचन—पु० [स०√सिंच् (सींचना)+ल्युट्-अन] १. खेतों आदि में पानी सींचने की क्रिया या भाव । सिंचाई । २ पानी का छिड़काव ।

सिंचना—अ० [हिं० सींचना का अ०] १. सिंचाई होना । २ जल का छिड़काव होना ।

सिंचाई—स्त्री० [हिं० सींचना] १. सींचने या पानी छिड़कने का काम या भाव । २ आब-पाशी । ३. वह स्थिति जिसमें फसल उपजाने के उद्देश्य से खेतों में नदी, कुएँ, ताल, वर्षा आदि का जल पहुँचता या पहुँचाया जाता है । (इरिगेशन) ४. खेत सींचने के काम का पारिश्रमिक या मजदूरी ।

सिंचाना—स० [हिं० सींचना का प्रे०] सींचने का काम किसी और से कराना ।
†अ०=सिंचना ।

सिंचित—भू० कृ० [स०√सिंच् (सींचना)+क्त] जिसकी सिंचाई हो चुकी हो । सींचा हुआ ।

सिंचौनी†—स्त्री०=सिंचाई ।

सिंजा—स्त्री० [सं० सिञ-टाप्] शरीर पर पहने हुए गहनों की खनक या झंकार ।

सिंजाफ—पुं० [फा० सिंजाफ्] =संजाफ ।

सिंजित—स्त्री० [स० सिंजा+इतच्] १. सिंजा । २. ध्वनि । शब्द ।
उदा०—नूपुरन चलत धुँधरू बाजैं । सिंजित सुनत हुस हिय लाजैं ।—लाल कवि ।

**सिंधन***—पुं०=स्यदन (रथ)।

**सिंधुक**—पुं० [स० सिंधु+कन्] सिंधुआर या सँभालू नामक पौधा।

**सिंधुरिया**†—वि०=सिंदूरी।

**सिंधुवार**—पु० [स०] निर्गुंडी। सँभालू।

**सिंदूर**—पु० [सं०] १. ईंगुर को पीसकर बनाया हुआ एक प्रकार का लाल चूर्ण जो सौभाग्यवती हिन्दू स्त्रियाँ अपनी माँग में भरती हैं। गणेश और हनुमान् की मूर्तियो पर भी यह घी में मिलाकर पोता जाता है। (बर्मिलियन)

**मुहा०—सिंदूर चढ़ना**=कुमारी का विवाह होना। **सिंदूर भरना या देना**=विवाह के समय वर का कन्या की माँग में सिंदूर डालना। २ बबूल की जाति का एक पहाड़ी पेड़ जो हिमालय के निचले भागो मे पाया जाता है।

वि०=सिंदूरी।

**सिंदूर-तिलक**—पु० [सं० ब० स०] हाथी।

**सिंदूर-तिलका**—स्त्री० [स० सिंदूर-तिलक-टाप्] सधवा स्त्री जिसके माथे पर सिंदूर रहता है।

**सिंदूरदान**—पु० [स०] विवाह के समय वर का कन्या की मांग मे सिंदूर भरना।

**सिंदूर-पुष्पी**—स्त्री० [सं० ब० स०] एक पौधा जिसमें लाल फूल लगते हैं। वीर-पुष्पी। सदासुहागिन। सिंदूरी।

**सिंदूर-बंधन**—पु० [स०] विवाह-सस्कार के समय एक रीति जिसमे वर कन्या की माँग में सिंदूर भरता है।

**सिंदूर रस**—पु० [स०] रस सिंदूर नामक खनिज पदार्थ। रस कपूर।

**सिंदूरिया**—स्त्री० [स० सिंदूर+हि० इया (प्रत्य०)] सिंदूर के रग का। जैसे—सिंदूरिया आम

स्त्री० सिंदूरपुष्पी। सदासुहागिन।

**सिंदूरिच्छा**—स्त्री० [स० सिंदूर+कन-टाप्-इत्व] सिंदूर।

**सिंदूरी**—वि० [स०सिंदूर+हि० ई (प्रत्य०)] सिंदूर के रग का। पीला मिला लाल।

पु० १. उक्त प्रकार का रंग जो पीलापन लिए चमकीला लाल होता है। (बर्मिलियन) २. एक प्रकार का बढ़िया आम। ३. बबूल की जाति का एक प्रकार का छोटा पेड़। ४. लाल हलदी। ५. धव। धातकी। ६. सिंदूरपुष्पी। ७ लाल रंग का कपड़ा।

**सिंधोरा**†—पु०=सिंधोरा।

**सिंध**—पु० [स० सिंधु] अखण्ड भारत की पश्चिमी सीमा पर (आज-कल पाकिस्तान की पश्चिमी सीमा पर) स्थित एक प्रदेश जो अब पश्चिमी पाकिस्तान में है।

**विशेष**—दे० 'सिंधु'।

स्त्री० सैंधवी नामक रागिनी।

**सिंधव**†—पु०=सैंधव। (दे०)

**सिंधवी**—स्त्री०=सैंधवी (रागिनी)।

**सिंधारा**†—पु० [देश०] भेंट आदि के रूप मे सावन बदी तथा सुदी तृतीया के दिन विवाहिता कन्या के घर भेजे जानेवाले पकवान, मिठाइयाँ आदि।

**सिंधी**—वि० [हिं० सिंध] १. सिंध प्रदेश-सबधी। २. सिंध प्रदेश में बनने या होनेवाला।

पु० १ सिंध प्रदेश का निवासी। २. सिंध देश का घोड़ा जो बहुत तेज चलनेवाला और मशक्त होता है।

स्त्री० सिंध देश की भाषा।

**सिंधु**—पु० [म०] १ समुद्र। सागर। २. एक प्रसिद्ध नद जो पंजाब के पश्चिम भाग से होता हुआ सिंध देश मे समुद्र में मिलता है। ३. वरुण देवता। ४ सिंध नामक देश। ५ उक्त देश का निवासी। ६. हाथी के सूंड से निकलनेवाला पानी। ७. हाथी का मद। ८ कुछ लोगों के मत से चार और कुछ लोगों के मत से सात की संख्या का सूचक शब्द। ९. खूब सफेद और साफ सोहागा। १०. सिंधुआर या निर्गुंडी का वृक्ष। ११ सपूर्ण जाति का एक राग जो मालकोश का पुत्र कहा गया है।

स्त्री० एक छोटी नदी जो यमुना मे मिलती है।

**सिंधुआर**—पु० [स० सिंधुवार] निर्गुंडी। सँभालू।

**सिंधु-कन्या**—स्त्री० [स० ष० त०] सिंधु की पुत्री, लक्ष्मी।

**सिंधु-कफ**—पु० [स० ष० त०] समुद्र-फेन।

**सिंधु-कालक**—पु० [स० ब० स०] एक प्राचीन देश जो नैर्ऋत्य कोण में था।

**सिंधु-खोल**—पु० [स० ब० स०] सिंध प्रदेश।

**सिंधुज**—वि० [स० सिंधु√जन् (उत्पन्न होना)+ड] १ सिंधु अर्थात् समुद्र से निकलने या समुद्र मे उत्पन्न होनेवाला। २ सिंधु देश मे उत्पन्न होनेवाला।

पु० १ सेंधा नमक। २. सिंधी घोड़ा। ३ शख। ४ पारा। ५ सोहागा।

**सिंधु-जन्मा (न्मन्)**—पु० [स० ब० स०] १ समुद्र से निकली हुई कोई वस्तु। २ सिंधुपुत्र, चन्द्रमा। ३ सिंधु-प्रदेश मे उत्पन्न होनेवाला व्यक्ति।

**सिंधुजा**—स्त्री० [स० सिंधुज-टाप्] १ सिंध की पुत्री, लक्ष्मी। २ मोती का सीप या सीपी।

**सिंधु-जात**—पु० [स०] सिंधुज। (दे०)

**सिंधु-नंदन**—पु० [स० सिंधु√नन्द् (हर्षित करना)+ल्यु-अन] सिंधुपुत्र, चन्द्रमा।

**सिंधुपति**—पु० [स० ष० त०] १ सिंधु प्रदेश का शासक। २. जयद्रथ।

**सिंधुपर्णी**—स्त्री० [स० ब० स०] गंभारी का पेड़।

**सिंधु-पुत्र**—पु० [स० ष० त०] १. चन्द्रमा। २ तिंदुक जाति का वृक्ष। तेंदू।

**सिंधुपुष्प**—पु० [स० ष० त०, ब० स०] १. शंख। २. कदम। कदब। ३. बकुल। मौलसिरी।

**सिंधु-भैरवी**—स्त्री० [स०] सगीत में एक प्रकार की रागिनी।

**सिंधु-मंथारी**—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सिंधु-माता**—स्त्री० [स० सिंधु-मातृ] सरस्वती, जो नदियों की माता मानी जाती है।

**सिंधुर**—पु० [स० सिंधु√रा (ग्रहण करना)+क] [स्त्री० सिंधुरा] १. हाथी। २. आठ की सख्या का वाचक शब्द।

**सिंधुर-मणि**—पु० [स० ष० त०] गज-मुक्ता।

**सिंधुर-वदन**—पु० [स० ब० स०] गजवदन। गणेश।

**सिंधुरागामी**—वि० [सं०] स्त्री० सिंधुरागामिनी]=गजगामी। स्त्री० गज-गामिनी।

**सिंधु-लवण**—पु० [सं०] सेंधा नमक।

**सिंधुवार**—पुं० [सं०] निर्गुंडी। सँभालू।

**सिंधुसिंध**—पु० [सं०] हलाहल जो समुद्र-मथन करते समय निकला था।

**सिंधु-शयन**—पुं० [सं० ब० स०] विष्णु।

**सिंधु-संगम**—पु० [सं०] १. वह स्थान जहाँ पर नदी और समुद्र मिलते हों। नदी और सागर का संगम-स्थल। २ नदियों का संगम-स्थल।

**सिंधु-सुत**—पु० [सं० ष० त०] जलधर नामक राक्षस जिसे शिव जी ने मारा था।

**सिंधु-सुता**—स्त्री० [सं० ष० त०] १. लक्ष्मी। २ सीप।

**सिंधुरा**—पु० [सं० सिंधुर] संगीत में एक प्रकार का राग।

**सिंधूरी**—स्त्री० [सं० सिंधुर] संगीत में एक प्रकार की रागिनी। †स्त्री० = सिंदूरी।

**सिंधोरा**—पु० [सं० सिंदूर+हिं० ओरा (प्रत्य०)] सिंदूर रखने की काठ की डिबिया।

**सिंब**—पु० दे० 'शिंब'।

**सिंबा**—स्त्री० दे० 'शिंबा'।

**सिंबी**—स्त्री० [सं०] शिंबी (छीमी या फली)।

**सिंसप**—पु० [सं० शिंशपा] शीशम का पेड़।

**सिंसपा**—स्त्री०=शिंशपा (शीशम)।

**सिंह**—पु० [सं०] [स्त्री० सिंहिनी] १. बिल्ली की जाति का, पर उससे बहुत बड़ा एक प्रसिद्ध हिंसक जंतु जो अपने वर्ग में सबसे अधिक पराक्रमी, बलवान् और देखने में भव्य होता है। इसकी गरदन पर बड़े-बड़े बाल (केसर) होते हैं। शेर बबर। केसरी। २. लोक-व्यवहार में, उक्त के आधार पर बल-वीर्य और श्रेष्ठता का सूचक शब्द। जैसे—पुरुष सिंह। ३ ज्योतिष में, मेष आदि बारह राशियों में से पाँचवीं राशि। ४ छप्पय छंद के सोलहवें भेद का नाम। २. वास्तुकला में ऐसा प्रासाद जिसमें बारह कोनों पर सिंह की मूर्तियाँ बनी होती थीं। ६. एक प्रकार का आभूषण जो रथ के बैलों के माथे पर पहनाया जाता था। ७. वर्तमान अवसर्पिणी के २४ में अर्हत् का चिह्न जो जैन लोग रथ यात्रा आदि के समय ध्वजों पर बनाते हैं। ८ दिगम्बर जैन साधुओं के चार भेदों में से एक। ९. संगीत में, एक प्रकार का राग। १०. वेंकट गिरि का एक नाम। ११. एक प्रकार का कल्पित पक्षी। १२. लाल सहिजन।

**सिंह-कर्ण**—पुं० [सं०] खिड़की या गवाक्ष का कोना।

**सिंहकर्मा (र्मन्)**—वि० [सं० ब० स०] सिंह के समान पराक्रम दिखानेवाला। पराक्रमी। वीर।

**सिंह-केसर**—पुं० [सं० ष० त०] १. सिंह की गरदन पर के बाल। २. फेनी नामक पकवान का पुराना नाम। ३. बकुल। मौलसिरी।

**सिंहग**—पुं० [सं० सिंह+√गम् (जाना)+ड] शिव का एक नाम।

**सिंह-घोष**—पुं० [सं० ष० त०, ब० स०, वा] एक बुद्ध का नाम।

**सिंहच्छदा**—स्त्री० [सं० ब० स०] सफेद दूब।

**सिंह-तुंड**—पु०[सं० ब० स०] एक प्रकार की विकट मछली जो नदियों से सटी हुई चट्टानों की दरारों में रहती है।

**सिंह-द्वार**—पु० [सं०] १. प्राचीन भारतीय वास्तु में, किले, नगर या महल का वह प्रधान और बड़ा द्वार, जिसकी बाहरी तरफ दोनों ओर सिंह की आकृतियाँ बनी होती थीं। २ बड़ा और मुख्य द्वार। सदर फाटक।

**सिंह-नंदन**—पुं० [सं०] संगीत में, ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

**सिंह-नाद**—पुं० [सं०] १. शेर की गरज या दहाड़। २. प्रतियोगिता, युद्ध आदि के समय गरजकर की जानेवाली ललकार। जोरदार शब्दों में ललकार कर कही जानेवाली बात। ३. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से सगण, जगण, सगण, सगण और एक गुरु वर्ण होता है। इसे कलहंस और नंदिनी भी कहते हैं। ४ संगीत में, एक प्रकार का ताल। ५. शिव का एक नाम। ६. बौद्धों में धार्मिक ग्रंथों आदि का होनेवाला पाठ।

**सिंहनादक**—पु० [सं० सिंह√नद् (ध्वनि करना)+ण्वुल्-अक्, ब० स०] सिंवी नामक बाजा।

**सिंहनादी (दिन्)**—वि० [सं० नाद+इन्] [स्त्री० सिंहनादिनी] १ जो सिंहनाद करता हो। २ जो सिंह के समान गर्जना करता हो। प० एक बोधिसत्व का नाम।

**सिंहनी**—स्त्री० [सं०] १. शेर की मादा। शेरनी। २ एक प्रकार का छंद जिसके चारो चरणों में क्रम से १२, १८, २० और २२ मात्राएँ होती हैं। यह क्रम उलट देने पर जो रूप होता है उसे 'शार्दूलिनी' कहते हैं।

**सिंह-पर्णी**—स्त्री० [सं०] मायपर्णी।

**सिंह-पिप्पली**—स्त्री० [सं०] सिंहली पीपल।

**सिंह-पुच्छ**—पुं० [सं०] पिठवन। पृश्निपर्णी।

**सिंह-पुच्छी**—स्त्री० [सं०] १ चित्रपर्णिका या चित्रपर्णी। २. बन उड़द। मायपर्णी। ३. पिठवन। पृश्निपर्णी।

**सिंह-पुरुष**—पु० [सं० उपमि० स०] १. सिंह के समान पराक्रमी पुरुष। २ जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक।

**सिंह-पुत्री**—स्त्री० [सं०] पृश्निपर्णी। पिठवन।

**सिंह पौर**—पुं०=सिंह-द्वार।

**सिंह भैरवी**—स्त्री० [सं०] संगीत में. भैरवी रागिनी का एक प्रकार या भेद।

**सिंह-मल**—पुं० [सं०] एक प्रकार की मिश्र धातु। पंच-लौह।

**सिंह-मुख**—वि० [सं० ब० स०] जिसके मुख की आकृति शेर के मुख की आकृति जैसी हो।

पुं० १ शिव का एक गण। २. एक राक्षस।

**सिंह-मुखी**—वि० [सं०] सिंह-मुख।

स्त्री० १. अड़ूसा। २. बाँस। ३. बन उड़द। ४. एक प्रकार की खारी मिट्टी। ५ काली निर्गुंडी या सँभालू।

**सिंहयाना**—स्त्री० [सं० ब० स०] सिंह पर सवारी करनेवाली, दुर्गा।

**सिंहल**—पुं० [सं०] [वि० सिंहली] १. पीतल। २. टीन। ३. प्राचीन भारत के दक्षिण का एक द्वीप जो कुछ लोगों के मत में आधुनिक 'लंका' (देश) है। लंका-द्वीप। ४. उक्त देश का निवासी। सिंहली।

**सिंहलक**—वि० [सं० सिंहल+कन्] सिंहल-संबंधी। सिंहल का। पुं० १. पीतल। २. दारचीनी।

**सिंहला**—स्त्री० [सं० सिंहल-टाप्] १. सिंहल द्वीप। लंका। २. रोंगा। ३. पीतल। ४. छाल या बकला। ५. दारचीनी।

**सिंहली**—वि० [सं० सिंहल+हि० ई० (प्रत्य०)] सिंहल द्वीप में होनेवाला। लंका-संबंधी।
पुं० १. सिंहलद्वीप का निवासी। लंकानिवासी। २. सिंहल द्वीप का हाथी।
स्त्री० सिंहल द्वीप की भाषा।

**सिंहली पीपल**—स्त्री० [सं० सिंह-पिप्पली] सिंहल में होनेवाली एक प्रकार की लता जिसके बीज दवा काम में आते हैं।

**सिंहलीला**—पुं० [सं०] १. संगीत में, एक प्रकार का ताल। २. कामशास्त्र में एक प्रकार का आसन या रति-बंध।

**सिंह-वाहना**—स्त्री० [सं० ब० स०] दुर्गा (जिनका वाहन सिंह है)।

**सिंह-वाहिनी**—स्त्री० [सं०] १. सिंह पर सवारी करनेवाली, दुर्गा। २. संगीत में, कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सिंह-विक्रम**—वि० [सं० ब० स०] घोड़ा जिसमें सिंह के समान शक्ति हो।
पुं० १. घोड़ा। २. संगीत में, एक प्रकार का ताल।

**सिंह-विक्रांत**—पुं० [सं०] १. शेर की चाल। २. शेर के समान पराक्रमी और वीर पुरुष। ३. घोड़ा। ४. ऐसे दंडक वृत्त जिनके प्रत्येक चरण में दो नगण और सात अथवा सात से अधिक यगण हों।

**सिंह विक्रीड**—पुं० [सं०] दंडक वृत्त का एक भेद जिसमें नौ से अधिक यगण होते हैं। इसका प्रयोग अधिकता से प्राकृत भाषा के कवियों ने किया है।

**सिंह-विक्रीडित**—पुं० [सं०] १ योग में एक प्रकार की समाधि। २. संगीत में, एक प्रकार का ताल। ३. दे० 'सिंह-विक्रीड'।

**सिंह विजृंभित**—पु० [सं० ब० स०, उपमि० स०] बौद्ध मत में, एक प्रकार की समाधि।

**सिंहस्थ**—वि० [सं० सिंह√स्था (ठहरना)+क] सिंह राशि में स्थित कोई (ग्रह)। जैसे—सिंहस्थ बृहस्पति।
पुं० वह समय जब बृहस्पति सिंह राशि में होता है, और इसी लिए तब विवाह आदि कुछ शुभ कार्य वर्जित हैं।

**सिंह-हनु**—वि० [सं० ब० स०] जिसकी ढाड़ सिंह के समान हो।
पुं० गौतम बुद्ध के पितामह का नाम।

**सिंहा**—स्त्री० [सं०] १ करेमू का साग। २. कटाई। झटकटैया। ३. बहुती। बन-भंटा।
पुं० १. नाग देवता। २. सिंह लग्न। ३. वह समय जब सूर्य इस लग्न में रहता है।
†पुं०=नर-सिंघा (बाजा)।

**सिंहाण (क)**—पुं० [सं० सिंघ+आनच् पृषो० सिद्ध] १. लोहे पर लगनेवाला जंग या मोर्चा। २. नाक में से निकलनेवाला मल। रेंट। सीड़।

**सिंहानन**—पुं० [सं० ब० स०] १. काला सँभालू। काली निर्गुंडी। २. अड़ूसा।
वि० सिंह के समान मुखवाला।

**सिंहारव**—पु० [सं०] संगीत में, कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

**सिंहार-हार**†—पुं०=हर-सिंगार।

**सिंहाली**—स्त्री० [सं० सिंह+लच्+ङीप] १. सिंहली पीपल। सैहली। २. दे० 'सिंहली'।

**सिंहावलोकन**—पु० [सं०] १ सिंह की तरह पीछे देखते हुए आगे बढ़ना। २. किये हुए कामों या बीती हुई बातों का स्वरूप जानने या बतलाने के लिए उन पर दृष्टिपात करना। ३. संक्षेप में पिछली बातों का दिग्दर्शन या वर्णन। (रिट्रास्पेक्शन) ४. कविता में ऐसी रचना जिसमें किसी चरण के अंत में आये हुए कुछ शब्दों से ही फिर उसके बाद वाले चरण का आरंभ किया जाता है। जैसे—यदि पहले चरण के अंत में 'पारिजात' हो और उसके बादवाले चरण का आरंभ भी 'पारिजात' से हो तो यह सिंहावलोकन कहलाएगा। ५. साहित्य में, यमक अलंकार का एक प्रकार या भेद जिसमें छंद का अंत भी उसी शब्द से किया जाता है जिससे उसका आरंभ होता है।

**सिंहावलोकित**—वि० [सं०] १. सिंहावलोकन के रूप में या उसके सिद्धांत से संबंध रखनेवाला। जिसमें सिंहावलोकन होता हो। (रिट्रास्पेक्टिव) २. दे० 'प्रतिवर्ती'।

**सिंहावलोकित**—भू० कृ० [सं०] जिसका या जिसके संबंध में सिंहावलोकन हुआ हो। (रिट्रास्पेक्टेड)

**सिंहासन**—पु० [सं० सिंह+आसन, मध्य० स०] १. राजाओं के बैठने या देवमूर्तियों की स्थापना के लिए बना हुआ एक विशेष प्रकार का आसन जो चौकी के आकार का होता है और जिसके दोनों ओर शेर के मुख की आकृति बनी होती है। २ देवताओं का एक प्रकार का आसन जो कमल के पत्ते के आकार का होता है। ३ काम-शास्त्र में, सोलह प्रकार के रतिबंधों में से एक। ४ चंदन, रोली आदि का वह टीका या तिलक जो दोनों भौंहों के बीच में लगाया जाता है। ५. लोहे की कील। मेड़ूर। ६. फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का चक्र जिसमें मनुष्य की आकृति में बिभक्त २७ कोठे या खाने होते हैं। इन कोठों या खानों में नक्षत्रों के नाम भरे जाते हैं और उनसे शुभाशुभ फल जाना जाता है।

**सिंहास्य**—पुं० [सं० ब० स०] १ अड़ूसा। २ कचनार। ३ एक बड़ी मछली।

**सिंहिका**—स्त्री० [सं०] १ दाक्षायणी देवी की एक मूर्ति का रूप। २. एक राक्षसी जो कश्यप की पत्नी और राहु की माता थी। ३. ऐसी कन्या जिसके घुटने चलने के समय आपस में टकराते हों और इसी लिए जो विवाह के अयोग्य कही गई है। ४ शोभन नामक छंद। ५ कटकारी। झटकटैया। ६ अड़ूसा। ७. बन-भंटा।

**सिंहिकेय**—पु० [सं० सिंहिका+ढक्-एय] सिंहिका (राक्षसी) के पुत्र राहु।

**सिंही**—स्त्री० [सं०] १. सिंह या शेर की मादा। शेरनी। सिंहनी। २ आर्या नामक छन्द का एक भेद। ३. राहु की माता, सिंहिका। ४. अड़ूसा। ५ घुड़च। ६. बन-मूँग। ७ पीली कौड़ी। ८. नर-सिंघा नाम का बाजा।
स्त्री०=सिंगी।

**सिंहेश्वरी**—स्त्री० [सं० ष० त०] दुर्गा।

**सिंहोड़**†—पुं०=सेहुँड़।

**सिंहोदरी**—वि० स्त्री० [सं० ब० स०] सिंह की कमर की तरह पतली कमरवाली (सुन्दरी स्त्री)।

**सिंहोन्नता**—स्त्री० [सं० ब० स०, उपमि० स०] बसंत-तिलका छंद का दूसरा नाम ।

**सिअरा**†—वि० [सं० शीतल] ठंढा। शीतल।
पु० १. वृक्ष की छाया से युक्त स्थान जो साधारणतः ठंढा होता है। २. छाँह। छाया।
†पु० =सियार (गीदड़)।

**सिआर**†—पु०=सियार ।

**सिउं***—स्त्री०=सीमा ।
*विभ० से। उदा०—आन देव सिउं नाँही काम ।—कबीर ।

**सिएटो**—पुं० [अ० साउथ ईस्ट एशिया ट्रीटी आर्गेनाइजेशन के आरंभिक अक्षरों का समूह] दक्षिण-पूर्वी एशिया की सुरक्षा के उद्देश्य से स्थापित एक राजनीतिक संगठन जिसमें अमेरिका, ब्रिटेन, पाकिस्तान आदि राष्ट्र सम्मिलित हैं।

**सिकंजबी**—स्त्री० [फा० शिकंजबीन] १. नींबू के रस या सिरके में पकाया हुआ शरबत। २. मधुर पेय, जो जल में नींबू का रस और चीनी मिलाकर तैयार किया जाता है।

**सिकंजा**†—पु० =सिकजा ।

**सिकंदर**—पु० [फा०] एक प्रसिद्ध यूनानी सम्राट् ।
पद—सिकंदर का सिकंदर=बहुत बड़ा भाग्यवान् आदमी।

**सिकंदरा**—पु० [फा० सिकंदर] रेल-लाइन के किनारे लगाया जानेवाला वह ऊँचा लंबा जिसके ऊपर हाथ के आकार की पटरियाँ लगी होती हैं। इन पटरियों के ऊपर उठे या नीचे गिरे हुए होने के संकेत से गाड़ियाँ आगे बढ़ती या उस स्थान पर रुककर खड़ी रहती हैं। सिगनल।

**सिकटा**—पुं० [देश०] टूटे हुए मिट्टी के बरतन या खपड़े का छोटा टुकड़ा।

**सिकड़ी**—स्त्री० [सं० शृंखला] १. जंजीर । शृंखला। २. फिजाब बन्द करने के लिए उसमें लगाई जानेवाली जजीर। साँकल। ३. जंजीर के आकार का गले में पहनने का एक प्रकार का गहना। ४. कमर में पहनने की करधनी। ५. अजीर के आकार की कोई बनावट या रचना।

**सिकता**—स्त्री० [सं० सिक+अतच्-टाप्] १. रेतीली भूमि। २. रेत। बालू। ३ चीनी। ४. पथरी (रोग)। ५. लोनी का साग ।

**सिकता-मेह**—पुं० [सं० मध्य० स०] प्रमेह का एक भेद जिसमें पेशाब के साथ रेत के-से कण निकलते हैं।

**सिकतिल**—वि० [सं० सिकता+इलच्] रेतीला । बलुआ ।

**सिकतर**†—पु० [अ० सेक्रेटरी] मंत्री।

**सिकदार**†—पु० [अ० सिक:=विध्वंसनीय] विध्वंसनीय और बलवान् अधिकारी या रक्षक। उदा०—एक कोटु पंच सिकदारा पंचे मागहिं हाला।—कबीर ।

**सिकदार**†—पुं० [?] जंगली बिल्ली की तरह का एक जन्तु ।

**सिकरी**†—स्त्री०=सिकड़ी।

**सिकली**—स्त्री० [अ० सैकल] १. हथियारों की धार तेज करने और उन्हें चमकाने के उद्देश्य से उन्हें विशेष प्रकार से रगड़कर माँजने का काम। २. उक्त की मजदूरी।



**सिकलीगर**—पु० [हिं० सिकली (अ० सैकल)+फा०गर] सिकली करनेवाला कारीगर। हथियारों को माँजने तथा उन पर सान धरनेवाला कारीगर ।

**सिकसोनी**—स्त्री० [देश०] काकजंघा नामक वनौषधि ।

**सिकहर**†—पुं० [सं० शिक्या] छत में टाँगा जानेवाला छीका।
वि० दे० 'छींका'।

**सिकाकली**—स्त्री० [हिं० सींक+आँली] मूँज, कास आदि की बनी हुई छोटी डलिया ।

**सिकार**†—पुं०=शिकार ।

**सिकारी**†—वि०, पुं०=शिकारी।

**सिकुड़न**—स्त्री० [हिं० सिकुड़ना] १ सिकुड़े हुए होने की अवस्था या भाव। वह स्थिति जिसमें कोई वस्तु पहले की अपेक्षा कम विस्तार घेरने लगती है। २. किसी चीज के सिकुड़ने के कारण उसके तल या विस्तार में पड़नेवाला बल । शिकन । जैसे—चाँदनी की सिकुड़न, माथे की सिकुडन।

**सिकुड़ना**—अ० [सं० संकुचन] १. ताप, शीत आदि के प्रभाव से अथवा और किसी कारण से किसी विस्तृत पदार्थ का ऐसी स्थिति में आना या होना कि उसका तल या विस्तार कुछ कम हो जाय। आयाम में शिथिलता आना। आकुंचित होना। बटुरना। 'फैलना' का विपर्याय। जैसे—धुलने से कपड़ा सिकुड़ना । चलने या बैठने से चाँदनी सिकुड़ना। २. व्यक्ति अथवा उसके अंगों के संबंध में ऐसी स्थिति में आना या होना कि अपेक्षया विस्तार कम हो जाय । जैसे—(क) टूटने से हाथ या पैर सिकुड़ना। (ख) भीड़ या सरदी के कारण किसी का कोने में सिकुड़ना।
संयो० क्रि०—जाना।

**सिकुरना**†—अ०=सिकुड़ना

**सिकोड़ना**—स० [हिं० सिकुड़ना] १. ऐसी क्रिया करना जिससे कोई चीज सिकुड़ जाय। २. (प्राणी द्वारा) अपने अंग या अंगों को इस प्रकार एक दूसरे से सटाना कि वह पहले की अपेक्षा कम जगह घेरने लगे।

**सिकोरवा**†—स०=सिकोड़ना ।

**सिकोरा***—पुं० दे० 'कसोरा'।

**सिकोली**—स्त्री० [देश०] कास मूज, बेंत या बाँस की कमाचियों की बनी हुई टोकरी।

**सिकोही**—वि० [फा० शिकोह=तडक-भडक] १. आन-बानवाला। २. गरबीला। ३. बहादुर। वीर।

**सिक्कड़**—पुं० [सं०√सिक् (सीचना)+कक्न्] बाँसुरी में लगाने की जीभी या उसका स्वर मधुर बनाने के लिए लगाया हुआ तार।

**सिक्कड़**—पु० [हिं० सिकड़ी] लोहे आदि की बड़ी और मोटी सिकड़ी।

**सिक्कर**†—पुं०=सिक्कड़।

**सिक्का**—पुं० [अ० सिक्क:] १. प्राचीन काल में, वह ठप्पा जिससे धातु-खंडों की प्रामाणिकता और शुद्धता सूचित करने के लिए विशिष्ट चिह्न अंकित किये जाते थे। मोहर करनेवाला ठप्पा। २. आज-कल निर्दिष्ट मूल्य का वह धातु-खंड जो किसी राजकीय टकसाल में ढला या ठप्पे से दबाकर बनाया गया हो और पदार्थों के क्रय-विक्रय, लेन-देन

आदि विनिमय के साधन के रूप में काम आता हो। जैसे—रुपया, अठन्नी, पैसा, अशरफी, गिन्नी आदि। (कॉयन) ३. किसी व्यक्ति का ऐसा अधिकार, प्रभाव या प्रभुत्व जिसके आगे प्राय. सभी लोग विशेषत विरोधी लोग दबते या सिर झुकाते हों।

**मुहा०—सिक्का जमना या बैठना**=ऐसी बातकपूर्ण स्थिति होना जिससे सब लोग दबे रहें या विरोध न कर सकें।

४ खरीदे हुए माल का दिया जानेवाला नगद दाम। (दलाल) ५ लकड़ी का एक विशिष्ट टुकड़ा जो नाव के अगले भाग पर लगा होता है। ६ धातु की वह नली जिससे मशाल पर तेल डाला जाता है।

**सिक्की**—स्त्री० [अ० सिक्कः] १. छोटा सिक्का। २ आठ आने वाला सिक्का, अठन्नी।

**सिक्के**—क्रि० वि० [हि० सिक्का] सिक्कों के रूप में अर्थात् नगद पूरा दाम देने पर।

**विशेष**—महाजनी बोल-चाल मे इस शब्द का प्रयोग यह सूचित करने के लिए होता है कि जो दाम दिया या लिया जायगा उसमें किसी तरह की छूट या बट्टा अथवा दलाली आदि की रकम सम्मिलित नहीं होगी।

**सिक्ख**—पु० [स० शिष्य] १ शिष्य। चेला। उदा०—कबीर गुरु बैस बनारसी, सिक्ख समुदर पार।—कबीर। २. गुरु नानक के पथ का अनुयायी। ३. इन अनुयायियों का वर्ग जिसने अब एक स्वतन्त्र जाति का रूप धारण कर लिया है।

**विशेष**—ये अनुयायी केश, कंघा, कड़ा, कृपाण और कच्छा (जाँघिया) सदा धारण करते हैं।

*स्त्री०[स० शिक्षा] सीख। शिक्षा।

स्त्री० [सं० शिक्षा] शिक्षा। चोटी।

**सिक्खी**—स्त्री० [हि० सिख+ई (प्रत्य०)] सिक्ख धर्म-मत।

**सिक्खेकार**—पु० [हि० सीखना+कार] [भाव० सिक्खेकारी] वह जिसने किसी गुरु या विशेषज्ञ से किसी कला या विद्या की नियमित रूप से और यथेष्ट शिक्षा पाई हो। 'ओताई' का विपर्याय। (संगीतज्ञ)

**सिक्त**—भू० कृ० [स०√सिच् (सींचना)+क्त] सींचा हुआ। सिंचित। २. भीगा हुआ। तर।

**सिक्थ**—पु० [सं०] १. भात। २. उबाले हुए चावलों या भात का कोई दाना। सीथ। ३. भात का कौर या ग्रास। ४. पिंड-दान के लिए बनाया हुआ भात का पिंड। ५. मोतियों का ऐसा गुच्छा जो तौल मे एक धरण या ३२ रत्ती हो। ६ मोम। ७. नील।

**सिखंड**†—पु०=शिखंड।

**सिखंडी**†—पु०=शिखंडी।

**सिख**—पु०=सिक्ख।

†स्त्री० १. शिखा (चोटी)। जैसे—नख-सिख। २. सीख (शिक्षा)।

**सिखड़ा**†—पु० [हि० सिख] सिख के लिए उपेक्षासूचक शब्द।

**सिखर**†—सं०=शिखर।

†वि० चरम। अत्यंत।

**सिखरन**†—स्त्री०=शिखरन (श्रीखंड)।

**सिखलाना**—स०=सिखाना।

**सिखवन**†—स्त्री०=सिखावन।

**सिखा**†—स्त्री०=शिखा।

**सिखाना**—स० [हि० सीखना का प्रे० रूप] १. किसी को कोई नया काम, बात या विषय सीखने में प्रवृत्त करना। २. सब प्रकार की सबद्ध बातें बताकर शिक्षित या प्रशिक्षित करना। ३. लाक्षणिक अर्थ में, किसी व्यक्ति को विशेष ढंग से कोई काम करने के लिए अच्छी तरह समझाना-बुझाना।

**मुहा०—(किसी को) सिखाना-पढ़ाना**=किसी से विशेष प्रकार का आचरण कराने के उद्देश्य से उसके मन मे कोई बात अच्छी तरह बैठाना।

**सिखावन**—स्त्री० [पु० हि० सिखावना=सिखाना]१. सिखाने की क्रिया या भाव। २. सिखाया हुआ काम, बात या विद्या। ३ उपदेश। नसीहत। शिक्षा।

**सिखावना***—स०=सिखाना।

**सिखिर**†—पुं० १.=शिखर। २.=शिशिर।

**सिखी**†—पु०=शिखी।

**सिखता**†—स्त्री०=सिकता।

**सिगनल**—पु०[अं०]१ किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए अथवा कोई कार्य आरभ कराने के लिए किया जानेवाला सकेत। २ रेल-लाइन के पास लगा हुआ सिंकदरा (देखें)।

**सिगरा**†—वि० [स० समग्र] [स्त्री० सिगरी] सब। सपूर्ण। समस्त। उदा०—सिगरे जग माँह हँसावत है। रघुवशिन्ह पा० नसावत है।—केशव।

**सिगरेट**—पु०[अं०]कागज मे गोलाकार लपेटा हुआ सुरती का चूरा जिसको धुआँ पीया जाता है, और जिसके अनुकरण पर हमारे यहाँ बीड़ी बनी है।

**सिगार**—पु०[अ०] एक विशेष प्रकार का बडा तथा मोटा सिगरेट। चुरुट।

**सिगोती**—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की छोटी चिडिया।

**सिगोन**—स्त्री०[स० सिकता, सिगता] रेत मिली लाल मिट्टी जो प्राय नालो के पास पाई जाती है।

**सिचान***—पु०=सचान (बाज पक्षी)।

**सिच्छक**†—पु०=शिक्षक।

**सिच्छा**†—स्त्री० =शिक्षा।

**सिजदा**—पु०[अ० सज्दः] १. घुटने टेककर और सिर झुकाकर किया जानेवाला प्रणाम। (विशेषत. ईश्वर-प्रार्थना के समय)

**सिजल**—वि०[हि० सजीला]१. जो रूप-रग के विचार से देखने में अच्छा हो। सजा हुआ। सुकर। २. किसी की तुलना मे, बढ़िया। जैसे—सिजल मिठाई।

**सिजली**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का पौधा जो दवा के काम में आता है।

**सिझना**—अ० दे० 'सीझना'।

**सिझान**—स्त्री०[हि० सीझना]१. सीझने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ व्यापारिक क्षेत्र मे, दलाली, ब्याज आदि के रूप में मिलनेवाला धन। क्रि० प्र०—सिझाना।—सीझना।

**सिझाना**—स०[सं० सिद्ध]१. आँच पर पकाकर गलाना। २. कष्ट देना। ३. मिलने के योग्य कराना। प्राप्य कराना। जैसे—हमीं ने तुम्हारी

दलाली सिक्षा दी। ४. अनुचित रूप से या बहकाकर वसूल करना। उतारना। जैसे—उन्होंने जुए में उनसे सौ रुपए सिक्षा लिए। (बाजारू) ५. खाल को विशिष्ट प्रक्रियाओं से पक्का और मुलायम करना। (टैनिंग) ६. विशेष दे० 'सीझना'।

**सिटकिनी**—स्त्री० [अनु० सिट-सिट] खिड़कियों, दरवाजों को अदर से बंद करने के लिए उनमें लगायी जानेवाली एक प्रकार की विदेशी कुडी जो ऊँची उठाये जाने पर ऊपरी चौखट से जा चिपकती है।

**सिटपिटाना**—अ० [अनु० प्राय असमंजस में पड़ने के कारण और किसी के प्रश्न का उसे तत्काल ठीक या स्पष्ट उत्तर न दे सकने की दशा में कुछ लज्जित होकर इधर-उधर करने लगना।

अ० [हिं० सीटना] १.खिन्न तथा व्यथित होकर अनुनय-विनय करना। २ इधर-उधर की हाँकना तथा बढ़-बढ़कर बोलना

**सिटी**—पु० [अ०] नगर। शहर। जैसे—कानपुर सिटी, बनारस सिटी।

**सिट्टी**—स्त्री० [हिं० सीटना] सीटने अर्थात् बहुत बढ़-चढ कर बोलने की क्रिया या भाव।

मुहा०—सिट्टी गुम होना या भूल जाना=इस प्रकार घबरा या सिटपिटा जाना कि मुँह से उत्तर तक न निकल सके।

**सिट्ठी**†—स्त्री०=सीठी।

**सिठना**†—पु० =सीठना।

**सिठनी**†—स्त्री०=सीठनी।

**सिठाई**—स्त्री० [हिं० सीठी] सीठे होने की अवस्था या भाव। सीठापन। सीठी।

**सिड़**—स्त्री० [हिं० सिडी] उन्माद या पागलपन का एक हलका रूप जिसमें आदमी हठपूर्वक कोई काम करता चलता है और रोकने या समझाने पर भी नही मानता। झक। सनक।

क्रि० प्र०—चढ़ना।—सवार होना।

**सिड़-बिल्ला**—पु० [हिं० सिडी+बिल्ला] [स्त्री० सिडबिल्ली] १. पागल। सिडी। २. बुद्धू। बेवकूफ।

**सिड़ी**—वि०[स० अृणीक] [स्त्री० सिड़िन] जिसे सिड़ नामक रोग हो। झक्की। सनकी।

**सिड़ीपन**—पुं० [हिं०] सिड़ी होने की अवस्था या भाव।

**सिणया***—पु०=अृगार। (डिं०)

**सितंबर**—पु०[अ० सेप्टेंबर] पाश्चात्य पंचांग में वर्ष का नवाँ महीना जो अगस्त के बाद और अक्तूबर से पहले पड़ता है। यह सदा ३० दिनो का होता है।

**सित**—वि०[स०] [भाव० सितता] १. उजला। श्वेत। सफेद। २. चमकीला और साफ। स्वच्छ।

पुं०१. शुक्र नामक ग्रह। २. शुक्राचार्य का एक नाम। ३. चान्द्र मास का शुक्ल पक्ष। ४. चीनी। शक्कर। ५. चन्दन। ६. सफेद कचनार। ७. मूली। ८. सफेद तिल। ९. भोजपत्र। १०. चाँदी। रजत।

**सित-कंठ**—वि०[सं० सितिकंठ] जिसका गला सफेद हो।

पु०१. शिव। २. दात्यूह पक्षी। मुरगाबी।

**सितकर**—पुं०[सं०]१. भीमसेनी कपूर। २. चन्द्रमा।

**सितकर्णी**—स्त्री०[सं०] अड़ूसा। वासक।

**सित-काच**—पु०[सं० ब० स०, मध्य० स० वा]१. हलब्बी शीशा। २. बिल्लौर।

**सितकारिका**—स्त्री० [सं० सित√कृ (करना) +ण्वुल—अक टाप्-इत्व] बरियार। बला (पौधा)।

**सित-कुंजर**—पुं०[सं० मध्य० स०]१ ऐरावत हाथी। २ इन्द्र।

**सित-कुंभी**—स्त्री०[स० मध्यम० स०] सफेद पाँडर। श्वेत पाटल (वृक्ष)।

**सितक्षार**—पु०[स० मध्य० स०, ब० स०] सोहागा।

**सितच्छद**—पु०[स० ब० स०]१ हस। २. लाल मंझिन।

**सितच्छदा**—स्त्री०[स० सितच्छद—टाप्] सफेद दूब।

**सितता**—स्त्री०[सं० सित+तल्—टाप्] सित अर्थात् सफेद होने की अवस्था, गुण या भाव। सफेदी।

**सित-तुरग**—पु०[स० ब० स०] अर्जुन।

**सित-दीधिति**—पु०[स० ब० स०] सफेद किरणोवाला। चन्द्रमा।

**सित-द्रुम**—पु०[स० मध्य० स०] १. अर्जुन वृक्ष। २ मोरट नामक क्षप।

**सित-पक्ष**—पु०[स० ब० स०] हस।

**सित-पच्छ***—पु०=सित-पक्ष।

**सितपर्णी**—स्त्री०[स०] अकपुष्पी। अधाहुली।

**सित-पुष्प**—पु०[स० ब० स०]१. तगर का पेड या फूल। गुल चाँदनी। २. सिरिस का पेड़। ३. पिंड खजूर। ४ एक प्रकार का गन्ना।

**सित-पुष्पा**—स्त्री० [स० सितपुष्प—टाप्] १. बला। बरियार। २. कपी (पौधा)। ३. चमेली। मल्लिका। ४. सफेद कुश।

**सित-पुष्पी**—स्त्री०[स० सितपुष्प—ङीप्] १. सफेद अपराजिता। २. केवटी मोथा। ३ कासा नामक तृण। ४. पान का पौधा। नागवल्ली। ५ नागदती।

**सित-प्रभ**—पु०[सं० ब० स०] चाँदी।

**सित-भानु**—पु०[सं० ब० स०] चन्द्रमा।

**सितम**—पु० [फा०]१. ऐसा क्रूर कार्य जो दूसरों पर विशेषत: निरीहो पर बलात् किया जाय। ३. शासक या अधिकारी द्वारा अपनी प्रजा पर किया जानेवाला अत्याचार। ३. अनर्थ। गजब।

मुहा०—सितम ढूना=बहुत बड़ा अनर्थ होना। भारी विपत्ति या संकट आना। सितम ढाना=बहुत बड़ा अनर्थ या अत्याचार करना।

**सितमगर**—वि०[फा०] [भाव० सितमगरी] दूसरों पर विशेषत: निरीहो पर अत्याचार करनेवाला। युवतियों तथा बेगुनाहों को सतानेवाला।

**सितमणि**—स्त्री०[सं० ब० स०, मध्य० स०] बिल्लौर। स्फटिक।

**सित-माष**—पु०[सं०] बोड़ा। लोबिया। राज-माष।

**सित-रश्मि**—पु०[सं० ब० स०] सफेद किरणोंवाला। चन्द्रमा।

**सित-राग**—पुं०[सं० ब० स०] चाँदी। रजत।

**सित-रुचि**—पु०[सं० ब० स०] चन्द्रमा।

**सितली**—स्त्री०[सं० शीतल] बेहोशी या अधिक दर्द के समय निकलने-वाला पसीना।

क्रि० प्र०—छूटना।

**सित-सागर**—पु०[सं० मध्यम० स०] क्षीर सागर।

**सित-सिंधु**—पुं०[स० मध्य० स०]१. क्षीर सागर। २. गंगा।

**सित-हूण**—पुं०[सं० मध्य० स०] हूणों की एक शाखा।

**सितांक**—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार की मछली।

**सितांग**—पुं०[स० ब० स०]१. श्वेत रोहितक वृक्ष। सफेद रोहेड़ा। २. बेला। ३. कपूर। ४. शिव।

**सितांबर**—वि०[सं० ब० स०]=श्वेतांबर।

**सितांशु**—पु०[सं० ब० स०]१. चन्द्रमा। २. कपूर।

**सितांशुक**—वि०[सं० ब० स०] श्वेत वस्त्रधारी। सफेदपोश।

**सिता**—स्त्री०[स० सित—टाप्]१. चन्द्रमा का प्रकाश। चन्द्रिका। चाँदनी। २. चान्द्र मास का शुक्ल पक्ष। ३ चीनी। ४. सफेद दूब। ५. मद्य। शराब। ६. त्रायमाणा लता। ७. चमेली। मल्लिका। ८. सफेद भटकटैया। ९. बकुली। सोमराजी। १०. बिदारीकंद। ११. वच। १२. अंधाहुली। १३. सिंहली पीपल। १४. गोरोचन। १५. चाँदी। १६. सफेद गदहपूरना।

**सिताइश**—स्त्री०[फा०] तारीफ। प्रशंसा। वाहवाही।

**सिताखंड**—पुं०[सं०]१. मधु शर्करा। शहद से बनाई हुई शक्कर। २. मिसरी।

**सितामल**—वि०[स० त० स०] सफेद मूँह वाला।
पुं० १. गरुड़। २. बेल का पेड़।

**सिताब**†—क्रि० वि० [फा० शताब] १ शीघ्र। जल्दी। २. सहज में। उदा०—नूपुर के ऊपर बड़ी कहत न बनत सिताब।—विक्रम।

**सिताबी**†—क्रि० वि० दे० 'सिताब'।
स्त्री० शीघ्रता। जल्दी।
†स्त्री० महतावी नाम की आतिशबाजी। उदा०—सिताबी मोड़ रहा चिपुफांत, बिछा है सेज कमलिनी जाल।—प्रसाद।

**सिताब्ज**—पुं० [सं० कर्म० स०] सफेद कमल।

**सिताभ**—पुं० [ब० स० स०] कपूर।

**सितार**—पुं० [फा० सेहतार]१. बीन की तरह का, पर उससे छोटा एक प्रसिद्ध बाजा, जिसके तारों को तर्जनी में पहनी हुई मिराब से झनकारते हैं तथा इस प्रकार राग-रागिनियाँ निकालते हैं। २. उक्त बाद्य की ध्वनि या उससे निकलनेवाला स्वर-क्रम।

**सितारबाज**—पु० [फा० सेहतार+बाज] [भाव० सितारबाजी] १. वह जो सितार बजाकर अपनी जीविका अर्जित करता हो। सितारिया। २. सितार बजाने का शौकीन। ३. सितार बजाने की कला में पारंगत।

**सितारा**—पुं०[स० सप्त तारक से फा० सितारः]१. आकाश का तारा या नक्षत्र। २. मनुष्य का भाग्य जो आकाश के ग्रहों और नक्षत्रों से प्रभावित माना जाता है।

**मुहा०—सितारा चमकना**=भाग्योदय होना। **सितारा बुलन्द होना**=सितारा चमकना। **सितारा मिलना**=ग्रह मैंची मिलना। गणना बैठना। (फलित ज्योतिष)
३. रुपहले या सुनहले पत्तरों के छोटे गोलाकार टुकड़े जो कपड़ों आदि की शोभा के लिए टाँके जाते या गाल और माथे पर सौन्दर्य बढ़ाने के लिए चिपकाये जाते हैं। चमकीला।
†पु० [हिं० सितार]सितार नामक ऐसा बाजा जो अपेक्षया अधिक बड़ा हो।

**सितारा-पेशानी**—वि०[फा०](घोड़ा) जिसके माथे पर सफेद टीका या बिन्दी हो। (ऐसा घोड़ा बहुत ऐबी समझा जाता है।)

**सितारिया**—पु०[हिं० सितार+इया (प्रत्य०)] वह जो सितार बजाकर अपनी जीविका अर्जित करता हो। वि० दे० 'सितारबाज'।

**सितारी**—स्त्री०[हिं० सितार+ई (प्रत्य०)] छोटी सितार (बाजा)। वि० सितार-संबंधी।

**सितारे हिंद**—पुं० [फा० सितारए हिन्द] एक प्रकार की उपाधि जो ब्रिटिश शासन काल में बड़े लोगों को सम्मानार्थ दी जाती थी। जैसे—राजा शिव प्रसाद सितारे हिन्द।

**सितालक**—पु० [स० ब० स०] सफेद मदार।

**सितालता**—स्त्री० [सं० मध्य० स०] १ अमृतवल्ली। अमृतलता। २. सफेद दूब।

**सितालिका**—स्त्री०[स० ब० स० सितालक—टाप्-ह्रस्व] तालाबों में होनेवाली सीपी।

**सितावर**—स्त्री०[देश०]एक प्रकार का बरसाती पौधा जो दवा के काम में आता है। सर्पदष्ट्रा।

**सितावर**—पु० [सं० सित+√वृ (वरण करना)+अच्—टाप्] सुसना नामक साग। सिरियारी।

**सितावरी**—स्त्री०[स० सितावर-ङीप] बकची। सोमराजी।

**सिताश्व**—पु०[स० ब० स०] १. अर्जुन का एक नाम। २ चन्द्रमा।

**सितासित**—वि०[स० द्व० स०] श्वेत और श्याम। सफेद और काला।
पु०१ बलदेव। २ शुक्र और शनि ग्रह जो क्रमशः सफेद और काले हैं। ३ गंगा और यमुना जिनका जल क्रमशः सफेद और काला है। ४ आँख का एक रोग।

**सितांशु बध**—पु० [स० ब० स०] १. शुक्र ग्रह। २. सफेद रोहित वृक्ष। ३. सफेद फूलोवाला सहिजन। ४. सफेद तुलसी।

**सिते**—वि०=शिति (सफेद)।

**सितिकंठ**†—वि०, पु०=सितकंठ।

**सितिमा**—स्त्री०[स० सित+इमनिच्] श्वेतता। सफेदी।

**सितिवार**—पु० [स० शितिवार]१ सुसना नामक साग। २ कुटज। कुड़ा।

**सितिवास**—पु०[स० शितिवासस् ब० स०] (नीले वस्त्रवाले) बलराम।

**सितुही**†—स्त्री०[स० शुक्तिका] ताल की सीपी। सुतुही।

**सितून**—पु०[फा०] १. स्तंभ। खंभा। २ खाँड़। थूनी। ३. मीनार। लाट।

**सितेतर**—वि० [सं० पच० त०] (श्वेत से भिन्न) काला या पीला।
पु०१ काला धान। २. कुलथी।

**सितोत्पल**—पु० [स० मध्य० स०] सफेद कमल।

**सितोदर**—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० सितोदरा] श्वेत उदर वाला।
पु० कुबेर का एक नाम।

**सितोपल**—पु०[स० कर्म० स०]१ खरिया मिट्टी। खुड़ी। २. बिल्लौर। स्फटिक।

**सितोपला**—स्त्री०[स० सितोपल—टाप्]१. चीनी। २ मिसरी।

**सित्त**†—वि०[स० शत] सौ।
वि० [स० सप्त] सात।

**सिथिल***—वि०=शिथिल।

**सिवका**†—पु०=सदका।

**सिवना**†—अ०, स०=सीदना।

**सिवरा**—पुं०[फा० देह =गाँव+दर] [स्त्री० अल्पा० सिदरी] तीन दरों वाला कमरा या दालान।

**सिवामा**†—पुं०=श्रीदामा।

**सिविक**—वि० [अ० सिद्दीक] सच्चा। सत्यनिष्ठ।

**सिवौती**†—अव्य०=सुदौती।

**सिद्ध**—वि०[भ०] [भाव० सिद्धि, सिद्धता] १. (काम या बात) जिसका साधन या साधना हो चुकी हो। अच्छी तरह पूरा किया हुआ। जैसे—उद्देश्य या कार्य सिद्ध होना। २. (आध्यात्मिक साधन) जो पूरा हो चुका हो या पूरा किया जा चुका हो। जैसे—मंत्र सिद्ध होना। ३. जिसने किसी काम मे पूरी दक्षता या सफलता प्राप्त की हो। दक्ष और सफल। जैसे—सिद्धहस्त। ४. (व्यक्ति) जिसने योग की सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हों। जैसे—सिद्ध पुरुष, सिद्ध महात्मा। (बात, मत या विषय) जो तर्क प्रमाण आदि के द्वारा ठीक या सत्य मान लिया गया हो या माना जाता हो। (एन्टेलिग्रड) जैसे—(क) अब यह सिद्ध हो चुका है कि भारी चीजें भी हवा मे उड सकती हैं। (ख) अब यह सिद्ध हो चुका है कि अणु-शक्ति के द्वारा बहुत बडे-बड़े काम सहज मे पूरे हो सकते हैं। ५ जो प्रमाण, युक्ति आदि के द्वारा ठीक ठहर चुका हो। प्रमाणित। (प्रूव्ड) जैसे— उन्होने अपना पक्ष सिद्ध कर दिखलाया। ६. जो नियमों, विधियो, सिद्धातों आदि के अनुसार ठीक हो। शुद्ध। जैसे—व्याकरण से सिद्ध प्रयोग अथवा शब्द का रूप। ७ (खाद्य पदार्थ) जो आग पर रखकर उबाला, पकाया या सिझाया गया हो। जैसे—सिद्ध अन्न। ८. (कथन या वचन) जो ठीक ठहरा या पूरा उतरा हो। जैसे—किसी का आशीर्वाद (या भविष्यवाणी) सिद्ध होना। ९. (वाद या विवाद) जिसका निर्णय या फैसला हो चुका हो। १०. (ऋण या देन) जो चुकाया जा चुका हो। ११. जो नियम, सिद्धात आदि के अनुसार ठीक तरह से होता हो। जैसे—जन्म-सिद्ध अधिकार, स्वभाव-सिद्ध बात। १२. जो किसी अभिप्राय या उद्देश्य के अनुकूल कर लिया गया हो। जैसे—उसे तो तुमने खाली बातों से ही सिद्ध कर लिया। १३. बनाकर तैयार किया हुआ। १४. प्रसिद्ध। विख्यात।

पुं० १. वह जो किसी प्रकार की साधना पूरी करके उसमे पारंगत हो चुका हो। साधना मे निष्णात। २. वह जिसने तपस्या, योग आदि के द्वारा किसी प्रकार की अलौकिक दक्षता, शक्ति या सिद्धि प्राप्त कर ली हो, अथवा जो मोक्ष का अधिकारी हो चुका हो। ३. वह जिसने अणिमा, महिमा आदि आठों सिद्धियाँ प्राप्त कर ली हों और इसी लिए जिसमें अनेक प्रकार के अलौकिक तथा चमत्कारपूर्ण कृत्य करने की शक्ति आ गई हो। **विशेष**—मध्य युग में ऐसे लोग अजर-अमर तथा परम पवित्र धर्मात्मा तथा डाकिनियों, देवों, यक्षों के स्वामी माने जाते थे। ४. ऐसा त्यागी या विरक्त जो आध्यात्मिक दृष्टि से बहुत बड़ा महात्मा या संत हो अथवा माना जाता हो।

**मुहा०—सिद्ध-साधक बनना**=एक व्यक्ति का सिद्ध का स्वांग रचना और दूसरे लोगों का उसकी अलौकिक सिद्धियों की प्रशंसा करके उसका लाभ कराना। विशेष दे० 'साधक'।

५. एक प्रकार के गण देवता। ६. बौद्ध योगी। (नाथ संप्रदाय के अथवा अन्य हिन्दू योगियों से भिन्न) ७. अर्हत्। जिन। ८. ज्योतिष मे एक प्रकार का योग जो सभी कार्यों के लिए शुभ माना गया है। ९. गुड। १०. काला धतूरा। ११. सफेद सरसो।

**सिद्ध**†—स्त्री०[सं० सिद्धि] पीसी और छानी हुई भाँग।

†स्त्री०[सं० सिद्ध+ई (प्रत्य०)] सिद्धता।

**सिद्धक**—वि०[सं० सिद्ध+कन्] कार्य सिद्ध करनेवाला।

पुं० १. सँभालू। सिंदुवार वृक्ष। २. शाल वृक्ष। साल।

**सिद्धक-साधक**—पुं० दे० 'सिद्ध-साधक'।

**सिद्ध-काम**—वि० [स० ब० स०] जिसकी कामनाएँ पूरी हो गई हो। सफल-मनोरथ।

**सिद्ध-कामेश्वरी**—स्त्री० [स० ष० त०] कामाख्या अर्थात् दुर्गा की एक मूर्ति या रूप।

**सिद्धकारी (रिन्)**—वि० [स० सिद्ध√कृ (करना)+णिनि] [स्त्री० सिद्धकारिणी] धर्मशास्त्रो के अनुसार आचरण करनेवाला।

**सिद्ध-क्षेत्र**—पुं० [सं० ष० त०]१ वह स्थान जहाँ योग या तत्र प्रयोग जल्दी सिद्ध हो। २. दडक वन के एक विशिष्ट क्षेत्र का नाम।

**सिद्ध-गंगा**—स्त्री० [सं० ष० त०] आकाश-गगा। मन्दाकिनी।

**सिद्ध-गति**—स्त्री० [स, कर्म० स०, ब० स०] जैन मतानुसार वे कर्म जिनसे मनुष्य सिद्ध बनता या होता हो।

**सिद्ध-गुटिका**—स्त्री० [स० कर्म० स०]एक प्रकार की कल्पित मत्र-सिद्ध गोली जिसे मुँह मे रख लेने से अदृश्य होने आदि की अद्भुत् शक्ति आ जाती है।

**सिद्ध-ग्रह**—पुं०[सं० मध्य० स०]उन्माद या पागलपन का विशेष प्रकार।

**सिद्ध-जल**—पुं०[सं० ब० स०]१ औटाया हुआ पानी। २ काँजी।

**सिद्धता**—स्त्री०[स० सिद्ध+तल्—टाप्]१ सिद्ध होने की अवस्था या भाव। सिद्धि। २. पूर्णता।

**सिद्धत्व**—पु०[सं० सिद्ध+त्व]=सिद्धता।

**सिद्ध-देव**—पु०[सं० कर्म० स०] शिव। महादेव।

**सिद्ध-धातु**—पु०[सं० कर्म० स०] पारा। पारद।

**सिद्ध नाथ**—पु०[सं० ष० त०] सिद्धेश्वर। महादेव।

**सिद्ध-पक्ष**—पु०[स० कर्म० स०]किसी तर्क का वह अंश जो सिद्ध हो चुका हो और इसी लिए मान्य हो।

**सिद्ध-पथ**—पु०[स०] अंतरिक्ष।

**सिद्ध-पीठ**—पु०[सं० मध्य० स०]१. वह स्थान जहाँ योग या आध्यात्मिक अथवा तांत्रिक साधन सहज में सम्पन्न होता हो। २. कोई ऐसा स्थान जहाँ पहुँचने पर कोई कामना या कार्य प्राय. सहज में सिद्ध होता हो।

**सिद्ध-पुर**—पुं० [ स० ष० त० ] एक कल्पित नगर जो किसी के मत से पृथ्वी के उत्तरी छोर पर और किसी के मत से पाताल मे है।(ज्योतिष)

**सिद्ध-पुष्प**—पु०[सं० ब० स०] करवीर। कनेर।

**सिद्ध-भूमि**—स्त्री० [सं० कर्म० स०, ष० त०] सिद्ध-पीठ। सिद्ध-क्षेत्र।

**सिद्ध-मातृका**—स्त्री०[सं० मध्य० स०]१. एक देवी का नाम। २ एक प्रकार की प्राचीन लिपि।

**सिद्ध-यामल**—पुं०[सं०] तत्र शास्त्र का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ।

**सिद्ध-योग**—पुं०[स० मध्य० स०] ज्योतिष मे, एक प्रकार का योग जो सर्वकार्य सिद्ध करनेवाला माना गया है।

**सिद्ध-योगी (गिन्)**—पुं०[सं० कर्म० स०] शिव। महादेव।

**सिद्धर**—पुं० [?] एक ब्राह्मण जो कंस की आज्ञा से कृष्ण को मारने आया था।

**सिद्ध-रस**—पु० [सं० मध्य० स०] १. पारा। पारद। २ वह योगी जिसने पारा सिद्ध कर लिया अर्थात् रसायन बना लिया हो।

**सिद्ध-रसायन**—पु० [सं० कर्म० स०] वह रसौषध जिसके सेवन से दीर्घ जीवन और यथेष्ट शक्ति प्राप्त होती है।

**सिद्ध-वस्ति**—पुं० [स०] तैल आदि की वस्ति या पिचकारी। (आयुर्वेद)

**सिद्ध-विद्या**—स्त्री० [सं० मध्य० स०] एक महाविद्या।

**सिद्ध-विनायक**—पु० [सं० मध्य० स०] गणेश की एक मूर्ति।

**सिद्ध-शिला**—स्त्री० [सं० ब० स०] ऊर्ध्व लोक का एक स्थान। (जैन)

**सिद्ध-सरित्**—स्त्री० [सं० ष० त०] १. आकाश-गंगा। २. गंगा।

**सिद्ध-सलिल**—पुं० [स० ब० स०] काँजी। २. सिद्धजल।

**सिद्ध-साधक**—पु० [सं० कर्म० स०] १. शिव। २. कल्प-वृक्ष जो सब प्रकार के मनोरथ सिद्ध करनेवाला माना गया है। ३. ऐसे दो व्यक्ति जिनमें से एक तो झूट-मूठ सिद्ध या सत्पुरुष बन बैठा हो और दूसरा सबको उसकी सिद्धता का विश्वास दिलाकर उसके फन्दे में फँसाता हो।

**विशेष**—प्रायः ऐसा होता है कि कोई ढोंगी और स्वार्थी व्यक्ति सिद्ध या महात्मा बनकर कहीं बैठ जाता है, और उसका कोई स्वार्थी लोक में उसका बड़प्पन या महत्त्व स्थापित करता फिरता और लोगों को लाकर उसके जाल में फँसाता है। इसी आधार पर उक्त पद अपने तीसरे अर्थ में प्रचलित हुआ है।

**सिद्ध-साधन**—पु०[सं० ष० त]१. सिद्धि प्राप्त करने के लिए योग या तंत्र की क्रिया करना। २. जो बात सिद्ध या प्रमाणित हो चुकी हो, उसे फिर से सिद्ध या प्रमाणित करना। ३. सफेद सरसो।

**सिद्ध-साधित**—वि०[सं० ब० स०] जिसने किसी कला, विद्या या शास्त्र का ठीक तरह से अध्ययन किये बिना ही केवल प्रयोग या व्यवहार के द्वारा उसमे थोडी बहुत योग्यता प्राप्त कर ली हो। अनाड़ी।

**सिद्ध-साध्य**—वि०[सं० ष० त०]१. जो सिद्ध किया जा चुका हो। प्रमाणित। २. जिसे सपादित कर दिया गया हो।
पुं० एक प्रकार का मन्त्र।

**सिद्ध-सिंधु**—पु०[सं०] आकाश गंगा।

**सिद्ध-सेन**—पु० [स० तु० स०] १. कार्तिकेय। २. संगीत में कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

**सिद्ध-सेवित**—पु०]स० तृ० त०] शिव का एक रूप।

**सिद्ध-स्थली**—स्त्री० [स० ष० त०] सिद्ध योगियों की वह बटलोई जिसके विषय में यह माना जाता है कि उसमें से इच्छानुसार अपेक्षित अन्न निकाला जा सकता है।

**सिद्ध-हस्त**—वि० [सं० ब० स०]१. जिसने कोई काम करते-करते उसमे कुशलता प्राप्त कर ली हो। जिसका हाथ किसी काम में मँजा हो। २. जिसे कुछ विशेष प्रकार के काम करने का बहुत अच्छा अभ्यास हो।

**सिद्धांगना**—स्त्री०[सं० ष० त०] सिद्ध नामक देवताओं की स्त्रियाँ।

**सिद्धांजन**—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का कल्पित अजन जिसके विषय में यह माना जाता है कि इसे आँख में लगा लेने से भूमि के नीचे की वस्तुएँ (गड़े खजाने आदि) भी दिखाई देने लगती हैं।

**सिद्धांत**—पु०[स० सिद्ध+अंत, ब० स०]१. किसी विषय का यह अंत अर्थात् अंतिम निर्णय या निश्चय जो पूरी तरह से ठीक सिद्ध या प्रमाणित हो चुका हो और इसलिए जिसमें किसी प्रकार के परिवर्तन के लिए अवकाश न रह गया हो। २. किसी विषय में तर्क-वितर्क, विचार-विमर्श आदि के उपरांत निश्चित किया हुआ ऐसा मत जो सभी दृष्टियों से ठीक माना जाता हो। असूल। उसूल। [प्रिंसिपुल] ३. कला, विज्ञान, शास्त्र आदि के संबंध में ऐसी कोई मूल बात या मत जो किसी विद्वान् द्वारा प्रतिपादित या स्थापित हो और जिसे बहुत से लोग ठीक मानते हैं। उपपत्ति। (थियरी) ४. धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में वे सुविचारित तत्त्व जिनका प्रचलन किसी विशिष्ट वर्ग मे प्रायः सर्वमान्य होता है। मत। (डाक्ट्रिन) ५. कोई ऐसा ग्रंथ जिसमे उक्त प्रकार की बातें या मत निरूपित हों। जैसे—सूर्य-सिद्धांत। ६ साधारण बोल-चाल मे किसी बात या विषय का तत्त्वार्थ या सारांश। मतलब की या सारभूत बात।

**सिद्धांतज्ञ**—वि० [स० सिद्धांत√ज्ञा (जानना)+क] सिद्धांत की बात जाननेवाला। तत्त्वज्ञ। विद्वान्। २. दे० 'सिद्धांतवादी'।

**सिद्धांत-पाठ**—पु० [स० सिद्धांत√वद् (बोलना)+घञ] यह विचार-प्रणाली कि अपने सिद्धांत का दृढ़तापूर्वक पालन करना चाहिए।

**सिद्धांत-वादी (दिन्)**—वि० [सं० सिद्धांत√वद् (कहना)+णिनि] सिद्धांतवाद-संबंधी।
० वह जो अपने मान्य सिद्धान्तों के अनुसार चलता हो।

**सिद्धांताचार**—पु० [सं० ष० त०] तांत्रिकों का आचार अर्थात् एकाग्र चित्त से शक्ति की उपासना करना।

**सिद्धांतित**—भू० कृ० [स० सिद्धांत+इतच्] तर्क आदि के द्वारा प्रमाणित। साबित।

**सिद्धांती**—वि० [सं० सिद्धांत] १ शास्त्रों आदि के सिद्धांत जाननेवाला। २ अपने सिद्धांत पर दृढ़ रहनेवाला।
पु० तर्कशास्त्र का ज्ञाता या पंडित।

**सिद्धांतीय**—वि० [स० सिद्धांत+छ 'ईय] सिद्धांत-संबंधी।

**सिद्धांबा**—स्त्री० [स० कर्म० स०] दुर्गा।

**सिद्धा**—स्त्री० [स० सिद्ध-टाप्] १. सिद्ध की स्त्री। देवांगना। २. एक वीणिनी। ३. चन्द्रशेखर के मत से आर्याछन्द का १५वाँ भेद जिसमे १३ गुरु और ३१ लघु होते हैं। ४. ऋद्धि नामक ओषधि।

**सिद्धाई**—स्त्री० [स० सिद्ध+हिं० आई] सिद्ध होने की अवस्था, गुण या भाव। सिद्धता।

**सिद्धाग्नि**—स्त्री० [सं० सिद्ध+अग्नि] १. खूब जलती हुई अग्नि। २ ऐसी पवित्र अग्नि जो दूसरों को भी पवित्र और शुद्ध कर दे।

**सिद्धान्न**—पु० [स० कर्म० स०] पकाया हुआ अन्न। जैसे—भात, रोटी आदि।

**सिद्धापगा**—स्त्री० [सं० ष० त०] १. आकाश गंगा। २ गंगा नदी।

**सिद्धायिका**—स्त्री० [सं०] जैनों की चौबीस देवियों में से एक जो अर्हतों का आदेश कार्यान्वित करती है।

**सिद्धारि**—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का मंत्र।

**सिद्धार्थ**—वि० [सं० ब० स०] जिसका अर्थ अर्थात् उद्देश्य या कामनाएँ पूर्ण हो चुकी हों। सफल-मनोरथ। पूर्णकाम।

पु० १. गौतम बुद्ध का एक नाम। २. स्कंद या कार्तिकेय का एक अनुचर। ३ ज्योतिष में, साठ संवत्सरों में से एक। ४. महावीर स्वामी के पिता। (जैन)

**सिद्धार्थक**—पुं० [सं० सिद्धार्थ+कन्] १. श्वेत सर्षप। सफेद सरसो। २. एक प्रकार का सरफोंक।

**सिद्धार्था**—स्त्री० [सं० सिद्धार्थ-टाप्] १. जैनों के चौथे अर्हत् की माता का नाम। २. सफेद सरसों।

**सिद्धासन**—पु० [स० मध्य० स०] ८४ आसनों में से एक। (हठ योग)

**सिद्धि**—स्त्री० [स०] १. कोई काम या बात सिद्ध करने या होने की अवस्था या भाव। कोई काम ठीक तरह से पूरा करना या होना। २ कार्य का ठीक रूप में पूरा उतरना। ३. कोई ऐसा उद्देश्य पूरा होना अथवा किसी ऐसे लक्ष्य तक पहुँचना जिसके लिए विशेष परिश्रम और प्रयत्न किया गया हो। (अटेनमेन्ट) ४. ऐसी विशिष्ट क्षमता, योग्यता या स्थिति जो उक्त प्रकार के परिश्रम या प्रयत्न के फल-स्वरूप प्राप्त हुई हो। (अटेनमेन्ट) ५ परिणाम या फल के रूप में होनेवाली प्राप्ति, लाभ या सफलता। जैसे—इस प्रकार की कहा-सुनी से तो कोई सिद्धि होगी नहीं। ६ ऐसा तथ्य या निर्णय जिसके ठीक होने में कोई संदेह न रह गया हो। ७. वाद-विवाद, व्यवहार आदि का अंतिम निर्णय। झगड़े या मुकदमे का फैसला। ८. किसी प्रकार की समस्या की मीमांसा। ९. आपस में होनेवाला किसी प्रकार का निर्णय। निश्चय। १०. तांत्रिकशास्त्र में, वह स्थिति जिसमें कोई उद्देश्य पूरा करनेवाले साधनों के प्रस्तुत होने का उल्लेख होता है। ११ छंद शास्त्र में, छप्पय के ४१वें भेद का नाम जिसमें ३० गुरु और ९२ लघु वर्ण और कुल १५२ मात्राएँ होती हैं। १२ तपस्या, तांत्रिक उपासना, हठयोग की साधना आदि के फल-स्वरूप साधक को प्राप्त होनेवाली कोई विशिष्ट प्रकार की अलौकिक या लोकोत्तर क्षमता या शक्ति।

**विशेष**—योग-साधना से प्राप्त होनेवाली ये आठ सिद्धियाँ कही गई हैं—अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, ईशित्व और वशित्व। बौद्ध तंत्रों के अनुसार आठ सिद्धियाँ ये हैं—खड्ग, अंजन, पादलेप, अंतर्धान, रस-रसायन, खेचर, भूचर और पाताल।

१३. खाद्य पदार्थ या भोजन का आग पर पकाया जाना या पककर तैयार होना। १४. दक्ष-प्रजापति की एक कन्या जो धर्म को ब्याही थी। १५. गणेश की एक पत्नी का नाम। १६ दुर्गा का एक नाम। १७ ऋण का परिशोध। कर्ज चुकता होना। १८. कार्य-कुशलता। क्षमता। पटुता। १९ बुद्धि। २०. सुख-समृद्धि। २१. मुक्ति। मोक्ष। २२. ऋद्धि या वृद्धि नामक ओषधि। २३. विजया। भाँग।

**सिद्धि-गुटिका**—स्त्री० [स० मध्य० स०] =सिद्ध गुटिका।

**सिद्धिद**—वि० [सं० सिद्धि√दा (देना)+क] सिद्धि देनेवाला।
पुं० १. बटुक भैरव का एक नाम। २. पुत्र-जीव नामक वृक्ष।

**सिद्धिदात्री (त्रृ)**—वि० [सं० सिद्धि√दा (देना)+तृच्, ङीप् स०] [स्त्री० सिद्धिदात्री] सिद्धि देने या कार्य सिद्धि करानेवाला।
पुं० गणेश का एक नाम।

**सिद्धि-भूमि**—स्त्री० [सं० ष० त०] १. ऐसी भूमि जहाँ लोगों को सिद्धियाँ प्राप्त हुई हों। सिद्धि-स्थान। २. ऐसा स्थान जहाँ तपस्या या धार्मिक साधना करने पर सहज में अनेक प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं।

**सिद्धि-योग**—पुं० [सं० ष० त०] ज्योतिष में, एक प्रकार का योग जो सब कार्य सहज में सिद्ध करनेवाला माना जाता है।

**सिद्धि-योगिनी**—स्त्री० [सं०] =सिद्ध-योगिनी।

**सिद्धि-रस**—पु०=सिद्ध-रस।

**सिद्धि-स्थान**—पु० [स० ष० त०] १. पुण्य स्थान। तीर्थ। २. आयुर्वेद के ग्रन्थों में, वह अंश जिसमें चिकित्सा-संबंधी बातों का विवेचन होता है। ३. दे० 'सिद्धि-पीठ' और 'सिद्ध-भूमि'।

**सिद्धीश्वर**—पु० [स० ० त०] १. शिव। महादेव। ३. एक प्राचीन पुण्य-क्षेत्र।

**सिद्धेश्वर**—पु० [स० ब० स० या कर्म० स०] [स्त्री० सिद्धेश्वरी] १. बहुत बड़ा सिद्ध। महायोगी। २. महादेव। शिव। ३. गूलर का पेड़।

**सिद्धोदक**—पु० [सं० ब० स०] १ एक प्राचीन तीर्थ का नाम। २ काँजी।

**सिद्धौघ**—पु० [स० ष० त०] तांत्रिकों के आचार्यों या गुरुओं का एक वर्ग।

**सिधा**†—वि०, पु०=सिद्ध।

**सिधरी**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

**सिधवाई**†—स्त्री० [हिं० सीधा, सिधवाना] वह लकड़ी जो टेक के रूप में तथा पहिये के स्थान पर लगाई जाती थी।

**सिधवाना**†—स० [हिं० सीधा] सीधा करना।

**सिधाई**—स्त्री० [हिं० सीधा] सीधापन। सरलता।

**सिधाना***—अ०=सिधारना (जाना)।

**सिधारना**—अ० [सं० सिद्ध=पूरा किया हुआ] १ गमन या प्रस्थान करना। जाना। (सम्मान सूचक) २. इस लोक से उठ जाना। परलोकवासी होना। ३. परलोक-गत या स्वर्गवासी होना। जैसे—वे तो कल रात्रि में ही सिधार गये।
संयो० क्रि०—जाना।
†स०=सुधारना।

**सिधि***—स्त्री०=सिद्धि।

**सिधु**†—पुं०=सीधु।

**सिधौई**†—स्त्री०=सिधवाई।

**सिध्म**—वि० [सं०] १. जिस पर सफेद दाग हों। २. जिसे श्वेत कुष्ठ नामक रोग हो।
पुं० सेहुआँ नामक रोग।

**सिध्मल**—वि० [सं० सिध्म+लच्] १. जिस पर सफेद दाग हो। २ जिसे श्वेत कुष्ठ रोग हुआ हो।

**सिध्मा**—स्त्री० [स० सिध् (गत्यादि)+मन-टाप्] १. कुष्ठ का दाग। २. कुष्ठ रोग।

**सिध्य**—पुं० [सं०√सिध् (गत्यादि)+क्यप्] पुष्य (नक्षत्र)।

**सिप्र**—वि० [सं०√सिप् (गमनादि)+रक्] १. साधु। २ अपना प्रभाव दिखानेवाला।
पु० पेड़। वृक्ष।

**सिप्र**—पुं० [सं०√सिप् (ढाँपना) नक्] १. शरीर। देह। २. पहनने के कपड़े। पोशाक। ३. कौर। ग्रास। ४ कुंभी नामक वृक्ष।
वि० १. एक आँखवाला। काना। २. सफेद।
पुं० [ब०] अवस्था। उमर।

**सिनक**—स्त्री० [हिं० सिनकना] १. सिनकने की क्रिया या भाव। २. सिनकने पर निकलनेवाला मल। नाक का मल।

**सिनकना**—स० [स० शिंघण] अन्दर से जोर की वायु निकालते हुए नाक का मल या कफ बाहर करना। जैसे—नाक सिनकना।

**सिनि**—पु० [सं० त्रिनि] १. क्षत्रियों की एक प्राचीन शाखा। २ सात्यकि यादव के पिता का नाम।

**सिनी**†—पु०=सिनि।

स्त्री०=सिनीवाली।

**सिनौत**—स्त्री० [देश०] सात रस्सियों को बटकर बनाई गई चिपटी रस्सी। (लखकरी)

**सिनीवाली**—स्त्री० [सं०] १. एक वैदिक देवी जिसका आह्वान, वैदिक मंत्रों में सरस्वती आदि के साथ होता है। २. कुशा। ३ शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा। ४ चाँदनी रात।

**सिनेड**—स्त्री० [अं०] दे० 'सीनेट'।

**सिनेटर**—पु० दे० 'सीनेटर'।

**सिनेमा**—पु० [अं०] १ चल-चित्र। २ वह भवन जिसमें लोगों को चल-चित्र दिखाये जाते हैं।

**सिन्नी***—स्त्री० [फा० शीरीनी] १. मिठाई। २. मुराद पूरी होने पर अथवा देवता, पीर आदि को प्रसन्न करने के लिए चढ़ाई तथा प्रसाद रूप में बाँटी जानेवाली मिठाई।

क्रि० प्र०—चढ़ाना।—बाँटना।

**सिपर**—स्त्री० [फा०] तलवार आदि का वार रोकने की ढाल। (शील्ड)

**सिपरा**†—स्त्री०=शिप्रा (नदी)।

**सिपरिहा**—पुं० [?] क्षत्रियों की एक जाति या भेद।

**सिपह**—स्त्री० [फा०] समस्त पद मे पूर्वपद के रूप मे प्रयुक्त होनेवाला। सिपाह (सेना) का लघु रूप। जैसे—सिपहसालार=सेनापति।

**सिपहगरी**—स्त्री० [फा०] सैनिक का पद या पेशा।

**सिपहरा***—पु०=सिपाही। (उपेक्षासूचक)

**सिपह-सालार**—पु० [फा० सिपह (=फौज)+सालार (=नेता)] सेना का प्रधान अधिकारी। सेना-पति।

**सिपाई***—पु०=सिपाही।

**सिपारस***—स्त्री० [फा० सिपास] १. संस्तुति। २. खुशामद।

**सिपारसी***—वि० [हिं० सिपारस] जो सिपारस के रूप मे हो। प्रशंसात्मक।

पु० खुशामदी।

**सिपारसी टट्टू**—पुं० [हिं०] वह जो केवल सिपारस अर्थात् खुशामद करके अपना काम या जीविका चलाता हो।

**सिपारा**—पु० [फा० सिपारः] कुरान के तीस भागों मे से कोई एक।

**सिपाव**—पु० [फा० सेहपाव] लकड़ी की एक प्रकार की टिकठी या तीन पायो का ढाँचा जो छकड़े, बैलगाड़ी आदि में आगे की ओर इसलिए लगाया जाता है कि छकड़ा या गाड़ी आगे की ओर न झुकने पाये।

**सिपाना-भाषी**—स्त्री० [फा० सेहपाव+हिं० भाषी] हाथ से चलाई जानेवाली चौंकनी या भाषी।

**सिपास**—स्त्री० [फा०] १. कृतज्ञता। २. धन्यवाद। ३. कृतज्ञता-प्रकाश। धन्यवाद प्रकाशन।

**सिपासनामा**—पु० [फा० सिपासनामः] कृतज्ञता तथा सम्मान प्रकट करने के उद्देश्य से लिखा हुआ पत्र। अभिनन्दन-पत्र।

**सिपाह**—स्त्री० [फा०] फौज। सेना।

**सिपाहगिरी**—स्त्री०=सिपाहगरी।

**सिपाहियाना**—वि० [फा० सिपाहियानः] १. सैनिकों या सिपाहियों से संबंध रखनेवाला। २. सैनिकों या सिपाहियों के रंग-ढंग जैसा अथवा उनकी मर्यादा के अनुकूल।

**सिपाही**—पु० [फा०] १ सेना में युद्ध का काम करनेवाला व्यक्ति। फौजी आदमी। सैनिक। २. पुलिस विभाग में साधारण कर्मचारी जो पहरे आदि का काम करता है। (कांस्टेबल) ३. चपरासी। जैसे—हमीलदार का सिपाही।

**सिपुर्द**†—वि०, पु०=सुपुर्द।

**सिप्पर**—स्त्री०=सिपर (ढाल)।

**सिप्पा**—पु० [देश०] १. पुरानी चाल की एक प्रकार की छोटी तोप। २ निशाने पर किया हुआ वार। लक्ष्य-भेद। ३. कार्य-साधन का कौशल-पूर्ण उपाय या युक्ति। तरकीब। (बाजारू)

क्रि० प्र०—बैठाना।—भिड़ाना।—लगाना।

**मुहा०—सिप्पा लड़ाना**=कार्य-साधन का कौशल पूर्ण उपाय या युक्ति करना।

४ कार्य-साधन की आरंभिक कार्रवाई या योजना। ढोल।

**मुहा०—सिप्पा जमाना**=किसी काम या बात की भूमिका तैयार करना।

**सिप्पी**†—स्त्री० =सीपी।

स्त्री० [हिं० सिप्पा का अल्पा० रूप] छोटी तोप।

**सिप्र**—पु० [स०√वप् (एकत्र होना)+रक् पृषो० सिद्ध] १. चन्द्रमा। २ पनीला। ३ एक प्राचीन सरोवर।

**सिप्रा**—स्त्री० [स० सिप्र+टाप्] १. महिषी। भैंस। २. स्त्रियों का कटि-बंध। ३ दे० 'शिप्रा'।

**सिफत**—स्त्री० [अ० सिफ़त] [भाव० सिफाती] कोई ऐसा गुण या विशेषता (क) जो किसी व्यक्ति का स्वभाव बन गई हो अथवा (ख) किसी वस्तु की प्रशंसा या प्रसिद्धि का कारण बन गई हो। जैसे—(क) इस नौकर की सिफत यह है कि वह काम से घबराता नहीं। (ख) इस कपड़े की सिफत है कि यह फटता नहीं है।

**सिफर**—वि० [अ० सिफ़र] १. (पात्र) जिसमें कुछ भरा न हो। खाली। रिक्त। २. (व्यक्ति) जिसमें गुण, बुद्धि, योग्यता, विद्या आदि का पूरा-पूरा अभाव हो। बिलकुल अयोग्य और निकम्मा। जैसे—मुझे तो यह आदमी बिलकुल सिफर मालूम होता है।

पु० १. गिनती मे वह अंक जहाँ से गिनती आरम्भ होती है। वस्तुतः 'कुछ नहीं' का यह सूचक होता है। जैसे—उसे हिसाब के परचे में सिफर मिला है। ३. उक्त का चिह्न —०।

**सिफ़रमी**—स्त्री०=सिफ़लापन।

**सिफ़ला**—वि० [अ० सिफ़लः] [स्त्री० सिफ़ली; भाव० सिफ़लापन] १ नीच। कमीना। २ ओछा। छिछोरा। ३. घटिया दरजे का।

**सिफ़लापन**—पुं० [अ० सिफ़लः+हिं० पन (प्रत्य०)] सिफ़ला होने की अवस्था या भाव। कमीनापन। नीचता।

**सिफा**—स्त्री०=शफा (आरोग्य)।

**सिफ़ात**—स्त्री० [फा० सिफ़ात] 'सिफ़त' का बहु०।

**सिफ़ाती**—वि० [अ० सिफ़ाती] १. सिफ़त अर्थात् गुण से सम्बन्ध रखनेवाला। २. सिफ़त के रूप में होनेवाला। ३. अभ्यास, शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त किया हुआ (गुण या विशेषता)।

**सिफ़ारत**—स्त्री० [अ० सिफ़ारत] सफीर अर्थात् राजदूत का कार्य, पद या भाव। २. सफीर अर्थात् राजदूत का कार्यालय। दूतावास।

**सिफ़ारिश**—स्त्री० [फा० सुफ़ारिश] १. किसी से कही जानेवाली कोई ऐसी बात जिससे अपना या किसी दूसरे का उपकार या भलाई होनी हो। २ कोई ऐसी बात जो किसी का अपराध क्षमा कराने के लिए किसी अधिकारी से कही जाय। ३ किसी के गुण, योग्यता आदि का परिचय देनेवाली ऐसी बात जो किसी ऐसे दूसरे आदमी से कही जाय जो उस पहले व्यक्ति का कोई उपकार या भलाई कर सकता हो। सस्तुति। (रिकमेन्डेशन) जैसे—उन्हें यह नौकरी शिक्षा-मंत्रालय की सिफ़ारिश से मिली है। ४. बोल-चाल में, प्रार्थना के रूप में किसी से कही जानेवाली अपने संबंध में अथवा किसी दूसरे के संबध मे ऐसी बात जिसका मुख्य उद्देश्य कृपा-दृष्टि या अनुग्रह प्राप्त करना होता है।

**सिफ़ारिशी**—वि० [फा० सुफ़ारिशी] १. सिफ़ारिश संबंधी। जैसे—सिफ़ारिशी बातें। २ जो सिफ़ारिश के रूप में हो। जैसे—सिफ़ारिशी चिट्ठी। ३. जो सिफ़ारिश के द्वारा हुआ हो। ४ तुलाभारी।

**सिफ़ारिशी टट्टू**—पु० दे० 'सिपारसी टट्टू'।

**सिबिका***—स्त्री०=शिबिका (पालकी)।

**सिमंत**†—पु०=सीमत।

**सिमई**†—स्त्री०=सिवैंई।

**सिमट**—स्त्री० [हिं० सिमटना] सिमटने की अवस्था, क्रिया या भाव।

**सिमटना**—अ० [हिं० समेटना का अ०] १. दूर तक फैली या बिखरी हुई चीज या चीजो का खिचकर थोड़े विस्तार या स्थान मे आना। संकुचित होना। समेटा जाना। २. दूर तक फैली हुई चीज या तल में शिकन या सिलवट पडना। ३. इकट्ठा होना। बटुरना। ४. क्रम या तरतीब से लगना। ५. काम पूरा या समाप्त होना। ६. भय, लज्जा, आदि के कारण व्यक्ति का संकुचित होना। सिकुड़ना। जैसे—वह सिमटकर कोने में बै गया।
संयो० क्रि०—जाना।

**सिमटी**—स्त्री० [देश०] खेस की तरह का एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

**सिमरख**†—पुं०=गिंगरफ (ईंगुर)।

**सिमर-गोला**—पुं० [देश० सिमर ? +हिं० गोला] एक प्रकार की मेहराब।

**सिमरना**†—स०=सुमिरना।

**सिमरनी**†—स्त्री०=सुमिरनी।

**सिमरिच**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

**सिमल**—पुं० [सं० सीर+हल+माला] १. हल का जूआ। २. उक्त जूए में लगी हुई खूंटी।

**सिमला आलू**—पुं० [हिं० सिमला+आलू] एक प्रकार का पहाड़ी बड़ा आलू। मरबुली।

**सिमला**†—पुं० [सं० सीमान्त] सिवाना। हद।
†स०=सिलाना।

**सिमिटना**†—अ०=सिमटना।



**सिमृति***—स्त्री०=स्मृति।

**सिमेंट**—स्त्री०=सीमेंट।

**सिमेटना***—स०=समेटना।

**सिम्त**—स्त्री० [अ०] ओर। तरफ।

**सिम्रिति**†—स्त्री०=स्मृति।

**सिय**†—स्त्री० [सं० सीता] सीता। जानकी।

**सिरजना***—स० [सं० सर्जन] उत्पन्न करना। रचना।
स०=सीना (सिलाई करना)।
अ० [हिं० सीना] सीया जाना।

**सिरड़ा***—वि० [सं० शीतल, प्रा० सीअड] [स्त्री० सिरड़ी, भाव० सिरड़ाई] १ ठंडा। शीतल। २. अपरिपक्व। कच्चा।

**सिरड़ाई***—स्त्री० [हिं० सिरड़ा+ई (प्रत्य०)] १ शीतलता। ठंडक। २ कच्चापन। कचाई।

**सिरह**†—वि० [फा०]=सियाह (काला)।

**सिरा***—स्त्री०=सीता।

**सिराना**†—स०=सिलाना।
†वि०=मयाना।

**सिरापा**—पु०=सरापा।

**सिरार**—पु० [सं० शृगाल, प्रा० सिआल] [स्त्री० सियारी, सियारिन] गीदड।

**सिरार लाठी**—पु० [हिं०] अमलतास।

**सिरारा**—पुं० [सं० सीता, प्रा० सरिया+रा] एक प्रकार का फावड़ा जिससे जोती हुई जमीन समतल की जाती है।
*पुं०=सियाला।
*वि०=सियरा।

**सिरारी**—स्त्री० [हि सियार] गीदड की मादा।

**सिराल**—पु० [सं० शृगाल] गीदड।

**सियाला**—पु०[सं० शीतकाल] जाडे का मौसम। शीत काल।

**सियाला पोका**—पु० [हिं० सीप+पोका=कीडा] एक प्रकार का बहुत छोटा कीडा जो सफेद चिपटे कोश के अन्दर रहता है, और पुरानी लोनी मिट्टीवाली दीवारों पर मिलता है। लोना-पोका।

**सियाली**—स्त्री० [देश०]एक प्रकार का बिदारन कंद।
वि० [सं० शीतकाल, हिं सियाला] जाडे में तैयार होनेवाली फसल। खरीफ।

**सियावड़**†—पुं०=सियावडी।

**सियावड़ी**—स्त्री० [हिं० सीता+वटी] १. अनाज का वह हिस्सा जो फसल कटने पर खलिहान में से साधुओं के निमित्त निकाला जाता है। २. बिजूका। (दे०)

**सियासत**—स्त्री० [अ०] [वि० सियासती] १. देश का शासन-प्रबंध तथा व्यवस्था। २. राजनीति।
†स्त्री०=सांसित।

**सियासती**—वि० [अ०] राजनीतिक।

**सियाह**—वि० [फा० स्याह] कृष्ण वर्ण का। काला। २. धुंधित। बुरा। जैसे—सियाह-बख्त=अभागा। ३. दे० 'स्याह'।

**सियाह कलम**—स्त्री० दे० 'स्याह कलम'। (चित्र-कला)

**सियाहगोश**—वि० पुं० =स्याह-गोश।

**सियाहत**—स्त्री० [अ०] १. सैर करने की क्रिया या भाव। सैर। २ देश-देशान्तरो का पर्यटन या भ्रमण।

**सियाहपोश**†—पु०=स्याहपोश।

**सियाहा**—पुं० [फा० स्याह:] १. वह पंजी या बही जिसमें नित्य के आय-व्यय का हिसाब लिखा जाता है। २. मुगल-शासन मे वह पंजी जिसमे सैनिको की उपस्थिति लिखी जाती थी। ३. आज-कल वह पंजी या रजिस्टर जिसमें सरकार को प्राप्त होनेवाली मालगुजारी या लगान का हिसाब लिखा जाता है।

**सियाहा-नवीस**—पुं० [फा०] वह कर्मचारी जो सियाहा लिखता हो।

**सियाही**†—स्त्री०=स्याही।

**सिर**—पु० [सं० शिरस्] १. मनुष्यों, जीव-जन्तुओ आदि के शरीर मे गरदन से आगे या ऊपर का वह गोलाकार भाग जिसमें आँख, कान, नाक, मुँह आदि अग होते हैं, और जिसके अन्दर मस्तिष्क रहता है। कपाल। खोपड़ी। (हेड)

**विशेष**—कुछ अवस्थाओं में यह प्राणियो की जान या प्राण का सूचक होता है; और कुछ अवस्थाओं में व्यक्तियों की प्रतिष्ठा या सम्मान का सूचक होता है।

**मुहा०—(किसी को) सिर आँखों पर बैठाना**=बहुत आदर-सत्कार करना। बहुत आवभगत करना। **(किसी की आज्ञा, कथन आदि) सिर-आँखों पर होना**=सहर्ष मान्य या स्वीकृत होना। शिरोधार्य होना। जैसे—आपकी आज्ञा सिर-आँखों पर है। **सिर उठाकर चलना**=अभिमानपूर्वक, अथवा अपनी प्रतिष्ठा या मर्यादा के भाव से युक्त होकर चलना। **सिर उठाना**=(क) किसी के विरोध मे खड़े होना। जैसे—प्रजा का राजा के विरुद्ध सिर उठाना। (ख) सिर और मुँह ऊपर करके किसी की ओर प्रतिष्ठा, प्रबल या साहसपूर्वक देखना। जैसे—अब वह तुम्हारे सामने सिर नही उठा सकता। **सिर उठाने की फुरसत न होना**=कार्य में बहुत अधिक व्यस्त होने के कारण इधर-उधर की बातों के लिए नाम को भी अवकाश न होना। **(किसी का) सिर उतारना**=सिर काट कर हत्या करना। **सिर, ऊँचा करना**=दे० ऊपर 'सिर उठाना'। **सिर ऊँचा होना**=आदर, प्रतिष्ठा या सम्मान मे वृद्धि होना। **(स्त्रियों का) सिर करना**=बाल मँवारना। चोटी गूँथना। **सिर काढ़ना**=दे० 'नीचे सिर निकालना।' **सिर का बोझ उतरना**=दे० नीचे 'सिर से बोझ उतारना'। **(किसी के पास) सिर के बल जाना**=बहुत ही आदर, प्रेम या श्रद्धा से युक्त होकर और सब प्रकार के कष्ट सहकर जाना। **सिर खपाना**=ऐसा काम या बात करना जिससे कोई लाभ न हो और व्यर्थ मस्तिष्क थक जाय। माथापच्ची करना। **(किसी का) सिर खाना**=व्यर्थ की बातें करके किसी को तंग या परेशान करना। **सिर खाली करना**=दे० ऊपर 'सिर खपाना'। **(किसी का) सिर खुजलाना**=ऐसा उपद्रव या शरारत करना कि उसके लिए यथेष्ट दंड मिल सके। शामत आना। जैसे—तुम्हारी इन चालों से तो ऐसा जान पड़ता है कि तुम्हारा सिर खुजला रहा है, अर्थात् तुम मार खाना चाहते हो। **सिर गूँथना**=(क) सिर के बाल बाँधने के लिए कंघी-चोटी करना। (ख) कलियों, फूलों आदि से सिर अलकृत करना। **सिर घुमाना**=दे० 'नीचे सिर गुँड़वाना'। **सिर घूमना**=(क) सिर में चक्कर आना। (ख) कोई विकट स्थिति सामने आने पर बुद्धि चकराना। जैसे—उन लोगों की मार-पीट देखकर तो मेरा सिर घूमने लगा। **सिर चकराना**=सिर घूमना। **(किसी के) सिर चढ़कर मरना**=**(किसी को) सिर चढ़ाना**। किसी के ऊपर जान देना। **(किसी के आगे अपना) सिर चढ़ाना**=किसी देवी या देवता के सामने अपना सिर काटकर गिराना। आप ही अपना बलिदान करना। **(किसी को) सिर चढ़ाना**=किसी की छोटी-मोटी बातों की उपेक्षा करते हुए उसे बहुत उद्दड या गुस्ताख बना देना। **(कोई चीज अपने) सिर चढ़ाना**=आदरपूर्वक या पूज्य भाव से ग्रहण करना। शिरोधार्य करना। **सिर जाना**=मृत्यु हो जाना। उदा०—सर (सिर) जाता है, सर (सिर) से तेरी उलफत नही जाती। —कोई शायर। **(किसी के साथ) सिर जोड़कर बैठना**=बहुत ही पास सटकर या हिल-मिलकर बैठना। **सिर जोड़ना**=किसी काम या बात के लिए कुछ लोगो को इकट्ठा करना। **सिर झाड़ना**=सिर के बालों मे कंघी करना। **(किसी का) सिर झुकाना**=किसी को इस प्रकार परास्त करना कि वह नत मस्तक होने के लिए विवश हो जाय। **(किसी के आगे) सिर झुकाना**=(क) नम्रतापूर्वक सिर नीचे करना। नत-मस्तक होना। (ख) लज्जा आदि के कारण सिर नीचा करना। **(किसी के) सिर डालना**=किसी प्रकार का उत्तरदायित्व या भार किसी को देना या किसी पर रखना। **सिर डारना**=प्राण छोड़ना सिर हिलाना या झुमना। उदा०—घुरली की धुनि सुनि सुर वधू सिर डोरैं। —सूरदास मदन मोहन। **(किसी का) सिर तोड़ना**=अभिमान, उद्दडता, शक्ति आदि नष्ट करना। जैसे—यदि वे मुझसे मुफ्तमेबाजी करेंगे तो मैं उनका सिर तोड़ दूँगा। **(किसी कारण, बात या व्यक्ति के लिए) सिर देना**=प्राण निछावर करना। जान देना। **(किसी के) सिर धरना**=किसी के सिर महना या रखना। **(कोई चीज या बात) सिर धरना**=आदरपूर्वक या पूज्यभाव से ग्रहण करना। शिरोधार्य करना। **सिर धुनना**=पश्चात्ताप या शोक के कारण बहुत अधिक दुख प्रकट करना। **(अपना) सिर नंगा करना**=सिर के बाल खोल कर इधर-उधर बिखेरना। **(किसी का) सिर नंगा करना** अपमानित या बेइज्जत करना। **सिर नवाना**=दे० ऊपर 'सिर झुकाना'। **सिर निकालना**=दबी हुई, शात या साधारण स्थिति से बाहर निकलने का प्रयत्न करना। **सिर नीचा होना**=(क) अप्रतिष्ठा होना। इज्जत बिगड़ना। मान भग होना। (ख) पराजय या हार होना। (ग) खेद, लज्जा आदि का अनुभव होना। **सिर पचाना** दे० ऊपर 'सिर खपाना'। **सिर पटकना**=बहुत कुछ विवश होने हुए भी किसी काम के लिए निरन्तर परिश्रम और प्रयत्न करते रहना। **सिर पड़ना**=दे० नीचे 'सिर पर पड़ना'। **(भूत, प्रेत, देवी, देवता आदि का) सिर पर आना**=किसी व्यक्ति का भूत-प्रेत आदि के आवेश या वश में होना। भूत-प्रेत, देवी-देवता आदि के आवेश से प्रभावित होना। **(कोई अवसर) सिर पर आना**=बहुत ही पास आ जाना। जैसे—बरसात (या होली) सिर पर आ गई है। **(कोई कष्टदायक अवसर या बात) सिर पर आना या आ पड़ना**=बहुत ही पास या बिलकुल सामने आ जाना। जैसे—कोई आफत या सकट सिर पर आना या आ पडना। **(झुठ) सिर पर उठा लेना**=इतना अधिक उपद्रव करना या हल्ला मचाना कि

आस-पास के लोग ऊब या घबरा जायँ। जैसे—तुमने जरा-सी बात पर सारा घर सिर पर उठा लिया। **सिर पर काल चढ़ना**=मृत्यु या विनाश का समय बहुत पास आना। **(किसी के सिर पर) खून चढ़ना या सवार होना**=(क) इतना अधिक आवेश या क्रोध चढ़ना कि मानों किसी के प्राण ले लेंगे। (ख) हत्याकारी का अपने अपराध की भीषणता के विचार से आपे में न रह जाना या मुख-दुख खो बैठना। **(अपने) सिर पर खेलना**=ऐसा काम करना जिसमें जान तक जा सकती हो। जान जोखिम में डालना। **(किसी बात का) सिर पर चढ़कर बोलना**=प्रत्यक्ष रूप से सामने आकर अपना अस्तित्व प्रकट करना। जैसे—जादू वह जो सिर पर चढ़कर बोले। **(किसी के) सिर पर पड़ना**=(क) उत्तरदायित्व या भार आकर पड़ना। जैसे—जिसके सिर पर पड़ेगी वह आप ही सँभालेगा। (ख) कष्ट, संकट आदि घटित होना। गुजरना। जैसे—सारी आफत तो उसी के सिर पड़ी है। **(अपने) सिर पर पाँव रखकर भागना**=बहुत जल्दी या तेजी से भाग जाना। जैसे—सिपाही की आवाज सुनते ही चोर सिर पर पाँव रखकर भागा। **(किसी के) सिर पर बीतना**=कष्ट, संकट आदि घटित होना। जैसे—जिसके सिर पर बीतती है, वही जानता है। **(कोई चीज या बात) सिर पर रखना**=आदरपूर्वक ग्रहण करना। शिरोधार्य करना। **सिर पर लेना**=अपने ऊपर उत्तरदायित्व या जिम्मेदारी लेना। जैसे—जनाई या बदनामी की बात अपने सिर पर लेना। **सिर पर शैतान चढ़ना**=क्रोध, भय आदि के कारण विवेक नष्ट होना। जैसे—सिर पे शैतान है एक और भी शैतान चढ़ा।—कोई शायर। **सिर पर सींग जमना**=ऐसी स्थिति में आना कि औरों से व्यर्थ लड़ाई-झगड़ा करने को जी चाहे। **सिर पर सींग होना**=कोई विशेषता होना। (परिहास और व्यंग्य) जैसे—क्या तुम्हारे सिर पर सींग है जो तुम्हारी हर बात मान ली जाय। **सिर पर सेहरा होना**=किसी प्रकार की विशेषता होना। (व्यंग्य) जैसे—क्या तुम्हारे सिर पर सेहरा है जो सब चीजें तुम्हीं को दे दी जायँ! **(किसी काम या बात का किसी के) सिर पर सेहरा होना**=किसी कार्य का श्रेय प्राप्त होना। वाहवाही मिलना। जैसे—इस काम का सेहरा तुम्हारे सिर पर ही रहा। **(किसी के) सिर पर हाथ फेरना**=किसी को आश्वस्त करने के लिए प्रेमपूर्वक उसके सिर पर हाथ फेरना। **(किसी के) सिर पर हाथ रखना**=किसी अनाथ या पीड़ित को अपनी रक्षा में लेकर उसका समर्थक और सहायक बनना। **(किसी का किसी के) सिर पर होना**=पोषक, समर्थक या संरक्षक का वर्तमान होना। जैसे—उसके सिर पर कोई होता तो यह नौबत न आती। **( कोई बात ) सिर पर होना**=(क) सामने या समक्ष होना। बहुत पास होना। (ख) थोड़े ही समय में घटित होने की आशा या संभावना होना। जैसे—होली सिर पर है, कपड़े जल्दी बनवा लो। **सिर फिरना या सिर जाना**=बुद्धि या मस्तिष्क का ठिकाने न रहना। पागलपन के लक्षण प्रकट होना। जैसे—तुम्हारी इन बातों से तो ऐसा जान पड़ता है कि तुम्हारा सिर फिर गया। **(किसी से) सिर फोड़ना**=व्यर्थ का प्रयत्न या बकवाद करना। जैसे—तुम तो किसी की बात मानोगे नहीं, तुमसे कौन सिर फोड़े। **सिर बाँधना**=सिर के बाल बाँधना या कंघी-चोटी करना। **(किसी का) सिर बाँधना**=सिर पर आक्रमण या वार करना। (पटेबाज) **(घोड़े का) सिर बाँधना**=लगाम इस प्रकार खींचे या पकड़े रहना कि चलने के समय घोड़े का सिर सीधा या सामने रहे। (सवार) **सिर बेचना**=सेना की नौकरी में नाम लिखाना। **सिर भारी होना**=सिर में पीड़ा होना या थकावट जान पड़ना। (रोगी होने के पूर्व लक्षण) **सिर मढ़ना**=दे० ऊपर 'सिर झुमना'। **(कोई काम या बात किसी के) सिर मढ़ना**=(क) कोई काम या बात जबरदस्ती किसी के जिम्मे लगाना। (ख) किसी को किसी अपराध या दोष के लिए उत्तरदायी ठहराना या बनाना। **(कोई काम या बात) सिर मानकर करना**=आज्ञा के रूप में मानकर कोई काम करना। उदा०—सहज सुहृद् गुरु, स्वामी सिख, जो न करइ सिर मानि।—तुलसी। **(किसी से) सिर मारना**=दे० ऊपर 'सिर खपाना'। **(कोई चीज किसी के) सिर मारना**=बहुत ही उपेक्षापूर्वक कोई चीज किसी को देना या लौटाना। जैसे—तुम यह किताब लेकर क्या करोगे ? जिसकी है, उसके सिर मारो। **सिर मुड़ाते ही ओले पड़ना**=प्रारंभ में ही कार्य विगड़ना। कार्यारंभ होते ही विघ्न पड़ना। **सिर मुँड़ाना**=(क) सिर के बाल मुंडवाकर त्यागी या साधु बनना। (ख) अपने पास का धन गँवा डालना। **(किसी का) सिर रँगना**=लाठी आदि से प्रहार करके सिर लहू-लुहान करना। **(किसी के) सिर रखना**=दे० ऊपर '(किसी के) सिर मढ़ना'। **सिर रहना**=(क) मान रहना। प्रतिष्ठा बनी रहना। (ख) जीवन या प्राण रहना। जैसे—सिर रहते मैं कभी यह काम न होने दूँगा। **(किसी काम या बात के) सिर रहना**=इस बात का बराबर ध्यान रखना कि कोई काम किस प्रकार हो रहा है। **(किसी का किसी व्यक्ति के) सिर रहना**=किसी के अतिथि, आश्रित या भार बनकर रहना। जैसे—वहाँ जायँगे तो किसी दोस्त (या समुराल) के सिर रहेंगे। **(अपराध या दोष किसी के) सिर लगाना**=अपराधी या दोषी ठहराना या बताना। उदा०—तुम तो दोष लगावनि कौं सिर बैठे देखत तेरें।—सूर। **सिर सफेद होना**=सिर के बाल पकना। वृद्धावस्था का लक्षण) **(किसी का) सिर सहलाना**=किसी को प्रसन्न करने के लिए उसका आदर-सत्कार करना। सिर सूँघना=छोटों पर अपना प्रेम दिखाते हुए उनका सिर सूँघने की क्रिया करना। उदा०—दै असीस तुम सूँघि सीस सादर बैठायो।—रत्नाकर। **सिर से कफन बाँधना**=जान-बूझकर मरने के लिए तैयार होना। **सिर से खेल जाना**=जान-बूझकर प्राण दे देना। **सिर से खेलना**=(क) सिर पर भूत-प्रेत आदि का आवेश होने की दशा में बार बार सिर इधर-उधर हिलाना। अभुआना। (ख) जान जोखिम में डालना। **सिर से पानी मुजरना**=ऐसी स्थिति में पड़ना कि कष्ट या संकट पराकाष्ठा तक पहुँच जाय और बचने की कोई आशा न रह जाय। (बाढ़ में डूबते हुए आदमी की तुलना के आधार पर) **सिर से पैर तक**=(क) ऊपर से नीचे तक। (ख) आदि से अंत तक। (ग) पूरी तरह से। **सिर से पैर तक आग लगना**=अत्यंत क्रोध चढ़ना और कुछ होना। जैसे—उसकी बातें सुनकर मेरे तो सिर से पैर तक आग लग गई। **सिर से बला टलना**=व्यर्थ की झंझट या परेशानी दूर होना। **सिर से बोझ उतरना**=(क) उत्तरदायित्व से मुक्त होने या काम पूरा हो चुकने पर निश्चित होना। (ख) झंझट या बखेड़ा दूर होना। **सिर हिलाना**=(क) स्वीकृति या अस्वीकृति जताने के लिए सिर को गति देना। (ख) प्रसन्नता सूचित करने के लिए सिर को गति देना। जैसे—अच्छा संगीत सुनकर सिर हिलाना।

**(किसी काम या बात के) सिर होना**=कोई गुप्त काम या बात होने पर लक्षणों से उसे ताड़ या समझ लेना। जैसे—हमने तो सबकी आँख बचाकर उसे रुपया दिया था; पर तुम सिर हो गये (अर्थात् तुमने ताड़ या समझ लिया)। **(किसी के) सिर होना**=किसी के पीछे पड़ना। जैसे—अब तुम उन्हें छोड़कर हमारे सिर हुए हो। **(दोष आदि किसी के) सिर होना**=जिम्मे होना। ऊपर पड़ना। जैसे—यह सारा दोष तुम्हारे सिर है।

२. ऊपर का सिरा। चोटी।

वि० १. बड़ा। महान्। २. उत्तम। श्रेष्ठ। ३. अच्छा। बढ़िया।

*अव्य० १. के ऊपर। पर। २. ठीक अवसर पर। जैसे—सब काम समय सिर होते हैं। उदा०—कहीं समय सिर भगत गति।—तुलसी। ३. आधार या आश्रय पर। जैसे—(क) वह बहाने-सिर वहाँ से उठकर चला गया अर्थात् बहाना बनाकर चला गया। (ख) मैं तो वहाँ काम सिर गया था; अर्थात् काम होने के कारण गया था।

**सिरई**†—स्त्री० [हिं० सिर+ई (प्रत्य०)] खाट या पलंग के चौखट मे उस ओर की लकड़ी जिस ओर सोने के समय सिर रहना चाहते हैं।

**सिर-कटा**—वि० [ हिं० सिर+कटा ] [ स्त्री० सिर-कटी ] १. जिसका सिर कट गया हो। जैसे—सिर-कटी लाश। २ दूसरों का सिर काटने अर्थात् बहुत अधिक अपकार करनेवाला।

**सिरका**—पु०, [फा० सिर्क:] अंगूर, ईख, जामुन, आदि के रस का वह रूप जो उसे धूप में रखकर और सूर्य की गरमी से पकाकर तैयार किया जाता है।

**सिरका-कश**—पुं० [फा०]सिरका या अर्क खींचने का एक प्रकार का यंत्र।

**सिरकी**—स्त्री० [हिं० सरकंडा] १. सरकंडा। सरई। सरहरी। २. सरकंडे की तीलियों की बनी हुई टट्टी, जिसे बैल-गाड़ियों पर धूप, बरसात आदि से बचने के लिए लगाते हैं। ३ बाँस की पतली नली जिसमें बेल-बूटे काढ़ने का कलाबत्तू भरा रहता है।

*पुं०=कुंजर (जाति)।

**सिर-खप**—वि० [हिं० सिर+खपना] १. दूसरों का सिर खपानेवाला। बक-बककर तंग या परेशान करनेवाला। २. बहुत अधिक परिश्रम करके अपना सिर खपानेवाला। ३. (काम) जिसमें बहुत अधिक सिर खपाना पड़ता हो। जैसे—यह बहुत ही वाहियात और सिर-खप काम है।

**सिर-खपना**†—वि०=सिर-खप।

**सिर-खपी**—स्त्री० [हिं० सिर+खपना] सिर खपाने की क्रिया या भाव।

**सिर-खिलौरी**—स्त्री० [देश०] मटमैले रंग की एक प्रकार की चिड़िया जिसकी चोंच और पैर काले होते हैं।

**सिरखिस्त**—पु० [फा० शीरखिश्त] दवा के काम आनेवाला एक प्रकार का गोंद। बबूलकगेंद।

**सिरखा**—पु० [देश०] चोड़ों की एक जाति।

**सिर-गिरी**—स्त्री० [हिं० सिर+गिरि=चोटी] १. टोपी, पगड़ी आदि मे जमाने की कलगी। २. चिड़ियों के सिर पर की कलगी।

**सिरगोला**—पु० [?] बुल्ल पाषाण।

**सिर-घुरई***—स्त्री० [हिं० सिर+घूरना=घूमना] ज्वरांकुश तृण।

**सिर-चंद**—पु० [हिं० सिर+चंद्र] हाथी के मस्तक पर शोभा के लिए लगाया जानेवाला एक प्रकार का अर्द्ध चन्द्राकार आभूषण।

**सिरजक***—वि० [सं० सृजक, हिं० सिरजना] सृजन या सर्जन करनेवाला। रचनेवाला।

पु० ईश्वर।

**सिरजन-हार***—वि० [सं० सर्जन+हिं० हार (=वाला)] सृजन करने अर्थात् बनाने या रचनेवाला।

पु० ईश्वर। परमात्मा।

**सिरजना***—स० [सं० सर्जन] सृजन करना। बनाना। रचना।

*स०=सचना (सचय करना)।

**सिरजित**†—वि० [सं० सर्जित] सिरजा अर्थात् बनाया या रचा हुआ।

**सिर-ढकाई**—स्त्री० [हिं० सिर+ढकना] १. सिर ढाँकने की क्रिया। २. कुमारी वेश्या के सबध की वह रसम जिसमें वह पहले-पहल पुरुष से समागम करती है और उसका सिर ढककर उसे वधू का रूप धारण कराया जाता है।

**सिर-ताज**—वि० [फा० सर+अ० ताज] अग्र-गण्य। प्रधान। मुख्य।

पु० १. सिर पर पहनने का ताज। मुकुट। २. अपने वर्ग मे सर्वश्रेष्ठ वस्तु या व्यक्ति। शिरोमणि।

**सिरतान**†—पु० [हिं० सीर+तान ?] १ काश्तकार। २ मालगुजार।

**सिर-ता-पा**—अव्य० [फा० सर-ता-पा] १. सिर से पाँव तक। २ ऊपर से नीचे तक। ३. कुल का कुल। पूरा का पूरा।

**सिरती***—स्त्री० [हिं० सीर] वह रकम जो असामी जमीन जोतने के बदले मे जमीदार को देता था। लगान।

**सिरत्राण***—पु०=शिरस्त्राण।

**सिरदार***—पु०=सरदार।

**सिरदारी***—स्त्री०=सरदारी।

**सिरदुआली**—स्त्री० [फा० सरदुआल] घोड़े के मुँह पर का वह साज जिसमे लगाम अटकी रहती है।

**सिर-धरा**—वि० [हिं० सिर+धरना] १ जिसे सिर पर रखा जा सके। शिरोधार्य। २. बहुत अधिक प्यार-दुलार मे पला हुआ।

पु० वह जो किसी को अपने सिर पर रखता अर्थात् उसका संरक्षक होता है।

**सिरधक**†—वि०=सिर-धरा।

**सिर नामा**—पु० [फा० सरनामः मि० स० शीर्ष-नाम] १. पत्र के आरभ मे पत्र पानेवाले का नाम, उपाधि, अभिवादन आदि। २. पानेवाले का नाम और पता जो चिट्ठी या लिफाफे के ऊपर लिखा जाता है। ३. लेखों आदि का शीर्षक।

**सिरनेत**—पु० [हिं० सिर+सं० नेत्री=धज्जी या डोरी] १. पगड़ी। २. स्त्रियों का एक वर्ग या शाखा।

**सिर-पच्ची**—स्त्री० [हिं० सिर+पचाना] १. सिर खपाने की क्रिया या भाव। २. सिर खपाने के कारण होनेवाला कष्ट।

**सिर-पाव***—पु०=सिरोपाव। (दे०)

**सिर-पेच**—पु० [फा० सर-पेच] १. पगड़ी। २. पगड़ी के ऊपर बाँधा जानेवाला एक प्रकार का आभूषण या गहना।

**सिर-पोश**—पु० [फा० सर-पोश] [भाव० सिरपोशी] १. सिर ढकने का टोप। सिर पर का आवरण। २. बन्दूक का गिलाफ। ३. किसी चीज को ऊपर से ढकने का गिलाफ।

**सिर-फिरा**—वि० [हिं० सिर+फिरना] [स्त्री० सिर-फिरी] १. जिसका सिर फिर गया अर्थात् मस्तिष्क उलट या विकृत हो गया हो। २ जिसकी बुद्धि सामान्य स्तर से बहुत घट कर हो और इसी लिए जो ऊल-जलूल काम करता हो। ३. कुछ-कुछ पागलों का-सा। जैसे—सिर-फिरी बातें।

**सिर-फूल**—पुं० [हिं० सिर+फूल] सिर पर पहना जानेवाला स्त्रियों का एक आभूषण।

**सिर-फेंटा**—पुं० [हिं० सिर+फेंटा] साफा। पगड़ी। मुरेठा।

**सिर-बंद**—पु० [हिं० सिर+फा० बंद] साफा।

**सिर-बंदी**—स्त्री० [हिं० सिर+फा० बंदी] माथे पर पहनने का स्त्रियों का एक आभूषण।

पुं० एक प्रकार का रेशम का कीड़ा।

**सिर-बेंदी**†—स्त्री०=सिर-बंदी।

**सिर-बोझी**—पुं० [हिं० सिर- बोझ] एक प्रकार का पतला बाँस जो पाटन के काम आता है।

**सिरमट**—पु०=सीमेंट। उदा०—'सार्थकता, को पुष्ट करनेवाला सिरमट है उनका परस्पर समीपत्व।—अज्ञेय।

**सिरमनि***—वि०, पु०=शिरोमणि।

**सिरमिट**†—पुं०=सीमेंट।

**सिरमौर**—वि० [हिं० सिर+मौर] शिरोमणि। सिर-ताज।

पु० सिर का मुकुट।

**सिररुह***—पु०=शिरोरुह (सिर के बाल)।

**सिरवा**—पु० [हिं० सरा] वह कपड़ा जिससे खलिहान में अनाज बरसाने के समय हवा करते हैं। ओसाने में हवा करने का कपड़ा।

क्रि० प्र०—मारना।

**सिरवार**—पु० [हिं० सीर+कार] जमींदार का वह कारिंदा जो उसकी खेती का प्रबंध करता है।

*पु०=सिवार।

**सिरस**—पु० [सं० शिरीष] शीशम की तरह का लम्बा एक प्रकार का ऊँचा पेड़।

**सिरसा***—पु०=सिरस।

**सिरसी**—पु० [देश०] एक प्रकार का तीतर।

**सिरहर**—वि० [हिं० सिर+हर] शिरोमणि।

वि०=सिर-धरा।

**सिरहाना**—पु० [सं० शिरस्+आधान] १. तकिया जिसे सिर के नीचे रखते हैं। (पश्चिम) २. खाट या पलंग का वह स्थान जहाँ तकिया (सोते समय) साधारणतया रखते हैं।

**सिरिंचा**—पुं० [देश०] एक प्रकार का पतला बाँस जिससे कुरसियाँ और मोढ़े बनते हैं।

**सिरा**—पुं० [हिं० सिर] १. किसी चीज के सिर या ऊपरी भाग का अंतिम अंश। शीर्ष भाग। जैसे—सिरे की चमेली। २. किसी लम्बी चीज के दोनों छोरों या अंतिम अंशों में से हर एक। जैसे—उनकी दूकान बाजार के इस सिरे पर और मकान उस सिरे पर है। ३. किसी काम, चीज या बात का वह अंतिम अंश जो उसकी समाप्ति का सूचक होता है।

**पद—सिरे का**=सबसे बढ़ा-चढ़ा। उच्च कोटि या प्रथम श्रेणी का।

**मुहा०—(किसी काम या बात का) सिरे चढ़ना**=ठीक तरह से पूर्णता या समाप्ति तक पहुँचना।

४. आरंभ का भाग। शुरू का हिस्सा। जैसे—अब यह काम नये सिरे से करना पड़ेगा। ५ किसी चीज के आगे या सामने का भाग।

स्त्री० [सं० शिरा] १. रक्त-नाड़ी। २. सिंचाई की नाली। ३. खेत की सिंचाई। ४. पानी की पतली धार।

पुं० पानी रखने का कलसा या गगरा।

**सिराज**—पुं० [अ०] १. सूर्य। २. दीपक। चिराग।

**सिराजी**—वि०, पुं०=सीराजी।

**सिराना**—अ० [सं० शीतल, मा० सीअड़, पु० हिं० सीयर, सीरा] १. ठंढा या शीतल होना। २. धीमा या मंद होना। ३ तृप्त होना।

स० [हिं० सीरा=शीतल] १. ठंढा या शीतल करना। २. धीमा या मंद करना। ३. धार्मिक अवसरों पर गेहूँ, जौ आदि की उगाई हुई बालें, या पत्तियाँ किसी जलाशय या नदी में ले जाकर प्रवाहित करना। ४. तृप्त करना। ५. गाड़ना।

अ० [हिं० सिरा] १. सिरे अर्थात् पूर्णता या समाप्ति तक पहुँचना। २. खतम होना। न रह जाना। ३ गुजरना। बीतना। ४. निपटना। तै होना।

स० [हिं० सिरा] १. सिरे अर्थात् पूर्णता या समाप्ति तक पहुँचाना। समाप्त करना। २. बनाकर तैयार करना। ३ न रहने देना। नष्ट करना। उदा०—एहि विधि धरि मन धीर चीर अँसुवन सिराई कै।—नन्ददास। ४ समय गुजारना। बिताना। ५. तै करना। निपटाना।

**सिरापद**—पु० [सं०] १. पीपल। अश्वत्थ। २. एक प्रकार की खजूर।

**सिरामूल**—पु० [सं०] नाभि।

**सिरा-मोक्ष**—पु० [सं०] शरीर का दूषित रक्त निकलवाना। फसद खुलवाना।

**सिराय**†—स्त्री० [हिं० सिरा] पाई के सिरे पर लगाई जानेवाली लकड़ी। (जुलाहे)

**सिराल**—वि० [सं० सिरा+लच्] १. शिराओं से युक्त। २ जिसमें लंबी या बहुत-सी शिराएँ हों।

**सिरालक**—पु० [सं० सिराल+कन्] एक प्रकार का अंगूर।

**सिराला**—स्त्री० [सं० सिराल+टाप्] १. एक प्रकार का पौधा। २. कमरख।

**सिराली**—स्त्री० [हिं० सिर] मोर की कलगी। मयूर-शिखा।

**सिरालु**—वि० [सं० सिरा+आलुच्] शिराओंवाला। सिराल।

**सिरावना**†—वि० [हिं० सिराना] १. ठंढा या शीतल करनेवाला। २. संताप दूर करनेवाला।

*पुं० सिराने की क्रिया या भाव। (पूरब)

पुं० [सं० सीर=हल] हेंगा।

**सिरावना**†—स०=सिराना।

वि०=सिरावन।

**सिरायुर्ण**—पु० [सं० ] १. पुलक। रोमांच। २. आँखों के डोरों की लाली।

**सिरिख***—पु० =सिरस वृक्ष।
**सिरिच**†—पु० [देश०] लाल सिरस वृक्ष। रक्तवृक्ष।
**सिरिफल**†—पुं०=श्रीफल।
**सिरियारी**—स्त्री० [स० सिरियारी] सुसना का साग। हाथी शुंडी।
**सिरिसा**—पुं०=सरिसता (विभाग)।
**सिरिसेदार**—पुं०=सरिसेदार।
**सिरी**—स्त्री० [सं० सिर+ङीप्] १. करधा। २. कलिहारी। लांगली।
†स्त्री० [सं० श्री] १. लक्ष्मी। २. शोभा। ३. रोली।
†स्त्री० [हिं० सिर] १ सिर पर पहनने का एक गहना। २. 'सिर' का अल्पा० रूप। छोटा सिर। ३. काटी या मारी हुई बकरी, मछली, मुरगी आदि के गले के ऊपर का सारा अंश जो बहुत चाव से खाया जाता है।
**सिरीस**†—पुं०=सिरस (वृक्ष)।
**सिरी-साफ**—पुं० [?] एक प्रकार की मखमल।
**सिरेयस***—पुं०=श्रेयस्।
**सिरोना**—पु० [हिं० सिर+ओना] इड़री। (दे०)
**सिरोपाव**—पु० [हिं० सिर+पाँव] सिर से पैर तक पहनने के सब कपड़े, (अंगा, पगड़ी, पाजामा, पटका और दुपट्टा) जो राज-दरबार से किसी को सम्मान के रूप में दिया जाता है। खिलअत।
**सिरोमनि**†—पु०=सिरोमणि।
**सिरोरुह**†—पु०=शिरोरुह (बाल)।
**सिरोही**—पु० [?] राजपूताने का एक नगर जहाँ की बनी हुई तलवार बहुत ही लचीली और बढ़िया होती है।
स्त्री० तलवार, विशेषत उक्त नगर की बनी हुई तलवार।
स्त्री० [देश०] काले रंग की एक चिड़िया जिसकी चोंच और पंजे लाल रंग के होते हैं।
**सिर्का**†—पुं०=सिरका।
**सिर्फ**—अव्य० [अ० सिर्फ़] १. किसी निश्चित तथा निर्दिष्ट परिमाण या मात्रा में। जैसे—(क) सिर्फ दस आदमी वहाँ गये थे। (ख) सिर्फ दो सेर मिठाई भेजी गई है। २. बस इतना ही या यही, और कुछ नहीं। जैसे—मैं सिर्फ कह ही सकता था।
वि० अकेला।
**सिल**—स्त्री० [स० शिला] १. पत्थर की चट्टान। शिला। २ पत्थर की चौकोर पटिया जो छतें आदि पाटने के काम आती है। सिल्ली। ३. पत्थर की चौकोर पटिया जिस पर बट्टे से मसाला आदि पीसते हैं। ४. उक्त आकार-प्रकार का ढला हुआ चाँदी, सोने आदि का खंड। (इनगॉट) जैसे—चाँदी की सिलें बेचकर सोने की सिल खरीदना। ५. काठ की वह पटरी जिससे दबाकर रूई की पूनी बनाते हैं।
पु० [स० शिल] कटे हुए खेत में गिरे हुए अनाज के दाने चुनकर निर्वाह करने की वृत्ति। दे० 'शिलौंछ'।
पु० [देश०] बलूत की जाति का एक प्रकार का पहाड़ी वृक्ष जिसे 'बंज' और 'शार्क' भी कहते हैं।
पुं० [अ०] क्षय नामक रोग। राजयक्ष्मा। तपेदिक। दिक।
**सिलक**—स्त्री० [हिं० सलक=लगातार] १. लड़ी। झुंडका। २. गले में पहनने की माला या हार, विशेषत चाँदी या सोने का। ३ पंक्ति। श्रेणी। ४. तागा। धागा।
*पुं०=सिलक (रेशम)।
**सिलखरी**†—स्त्री० [देश०] बेल। लता। बलनी।
**सिल-खड़ी**—स्त्री० दे० 'गोरा-पत्थर'।
**सिलगना***—अ०=सुलगना।
**सिलना**†—अ०[हिं० सीना] सिलाई होना। सीया जाना। जैसे—कुरता सिल रहा है।
**सिलप***—पु०=शिल्प।
**सिलपची**†—स्त्री०=चिलमची।
**सिलपट**—वि० [स० शिला-पट्ट] १ जिसका तल चिकना, चौरस और साफ हो। २ घिसने आदि के कारण जिसके ऊपर के अंक, चिह्न आदि नष्ट हो गये हों। जैसे—सिलपट अठन्नी। ३. बुरी तरह से नष्ट किया हुआ। चौपट।
**सिलपोहनी**—स्त्री० [हिं० सिल+पोहना] विवाह की एक रीति।
**सिलफची**—स्त्री० [फा० मैलाबी] चिलमची।
**सिल-फोड़ा**—पु० [हिं० सिल+फोड़ना] पत्थर-चूर नाम का पौधा। पाषाण-भेद।
**सिल-बखिया**—पु० [देश०] एक प्रकार का बाँस जो पूरबी बंगाल की ओर होता है।
**सिलभट**—स्त्री० [देश०] किसी समतल तथा कोमल तल के मुंडने, दबने, घिसकने या झुलने के कारण उसमें उभरनेवाला वह रेखाकार अंश जो उसकी समतलता नष्ट करता है। सिकन। सिकुड़न।
क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।
**सिलवाना**—स० [हिं० सीना का प्रे०] किसी को कुछ सीने में प्रवृत्त करना।
**सिलसिला**—प० [अ०] १. वह सबंध जो एक क्रम में होनेवाली घटनाओं, बातों आदि में होता है। एक के बाद एक करके चलता रहनेवाला क्रम। २ कोई बँधा हुआ क्रम। परम्परा। ३. कतार। पंक्ति। श्रेणी। ४ लड़ी। झुंडला। ५. ठीक तरह से लगा हुआ क्रम। तरतीब।
वि० [सं० सिक्त] [स्त्री० सिल-सिली] १. भीगा हुआ। आर्द्र। गीला। तर। २. ऐसा चिकना जिसपर पैर या हाथ फिसलता हो।
**सिलसिलाबंदी**—स्त्री० [अ०+फा०] १. क्रम का बँधान। तरतीब। २ पंक्ति, श्रेणी आदि के रूप में लगे हुए होने की अवस्था या भाव।
**सिलसिलेवार**—वि० [अ०+फा०] सिलसिले या क्रम से लगा हुआ।
अव्य० सिलसिले या क्रम का ध्यान रखते हुए। क्रमिक रूप से।
**सिलह**—पु० [अ० सिलह] १. हथियार। शस्त्र। २. कवच। (राज०)
**सिलहखाना**—पु० [अ० सिलाह+फा० खान.] वह स्थान जहाँ सब तरह के बहुत-से हथियार रखे जाते हैं। शस्त्रागार।
**सिलहट**—पु० [?] १. असम प्रदेश का एक नगर। २ उक्त नगर के आस-पास की नारंगी जो बहुत बढ़िया होती है। ३. एक प्रकार का अगहनी धान।
**सिलहबंद**—वि० [अ० सिलह+फा० बंद] सशस्त्र। हथियारबंद। शस्त्रों से सुसज्जित।

**सिलहसाज**—पुं० [अ० सिलह+फा० साज] [भाव० सिलहसाजी] हथियार बनानेवाला कारीगर ।

**सिलहार, सिलहारा**—वि० दे० 'सिलाहर' ।

**सिलहिला**—वि० [हिं० सील, सीड+हीला=कीचड़] [स्त्री० सिलहिली] (स्थान) जिस पर पैर फिसले । रपटन वाला । कीचड़ से चिकना ।

**सिलही**—स्त्री० [देश०] बतख की जाति का एक प्रकार का पक्षी जो प्राय. जलाशयों के पास रहता और सिवार खाता है ।

**सिला**—पु० [सं० शिल] १. फसल कट चुकने के बाद खेत मे गिरे-पड़े या बचे-खुचे अन्न-कण चुनने की वृत्ति । २. उक्त प्रकार से बचे और खेत मे बिखरे हुए अनाज के दाने ।

क्रि० प्र०—चुनना ।—बीनना ।

३. अनाज का वह ढेर जो अभी पछोरा तथा फटका जाने को हो ।

†स्त्री०- शिला ।

पु० [अ० सिलह्] १ प्रतिकार । बदला । २. पारिश्रमिक या पुरस्कार । इनाम ।

**सिलाई**—स्त्री० [हिं० सिलना+आई (प्रत्य०)] १ सूई से सीने की क्रिया, ढग या भाव । जैसे—कपड़े या किताब की सिलाई । २. सीने पर दिखाई पडनेवाले टाँके । सीवन । ३. सीने के बदले मे मिलनेवाला पारिश्रमिक या मजदूरी ।

†स्त्री०—सलाई ।

स्त्री० [स० शलाका] बिजली । उदा०—सिहरि सिहरि समरवै सिलाइ प्रिथीराज ।

स्त्री० [देश०] ऊखकी फसल को हानि पहुँचानेवाला भूरापन लिए गहरे लाल रग का कीडा ।

**सिलाजीत**—पु०=शिलाजीत (शिलाजतु) ।

**सिलाना**—स० [हिं० सिलना का प्रे०] सीने का काम किसी दूसरे से कराना । जैसे—दर्जी से कपड़े या जिल्दसाज से किताबें सिलाना ।

स० [हिं० सीलना का प्रे०] सीड या सील मे रखकर ठढा या गीला करना ।

†अ०=सीलना ।

**सिलापाक**—पुं० [हिं० शिला+पाक] पथरफूल । छरीला । शैलज ।

**सिलाबी**—वि० [हिं० सील+फा० आब=पानी या फा० सैलाबी] सीडवाला । तर ।

**सिलारस**—पुं० [स० शिलारस] १. सिल्हक वृक्ष । २ उक्त वृक्ष का गोंद या निर्यास जो सुगधित होता है ।

**सिलावट**—पु० [स० शिला+पट्] पत्थर काटने और गढ़ने वाले । सग-तराश ।

†स्त्री० [हिं० सिलना] सिलने या सीये जाने की क्रिया या ढग । सिलाई ।

**सिलासार**—पुं० [सं० शिलासार] लोहा ।

**सिलाह**—पु० [अ०] १. जिरह-बकतर । कवच । २. अस्त्र-शस्त्र । हथियार ।

**सिलाहखाना**—पुं०=सिलहखाना (शस्त्रागार) ।

**सिलाहर**†—वि० [हिं० सिला+हर (प्रत्य०)] १. जो सिला वृत्ति से अपनी जीविका चलाता हो । २. बहुत ही निर्धन । अकिंचन । दरिद्र ।

**सिलाही**—पुं० [अ० सिलाह+ई (प्रत्य०)] शस्त्र धारण करनेवाला । सैनिक । सिपाही ।

**सिलिगिया**—स्त्री० [सिलाग नगरी] पूरबी हिमालय के सिलाग प्रदेश मे पाई जानेवाली एक प्रकार की भेड ।

**सिलिप**†—पु०=शिल्प ।

**सिलिमुख***—पु०=शिलीमुख (भौंरा) ।

**सिलिया**—पु० [स० शिला] एक प्रकार का पत्थर जो मकान बनाने के काम में आता है ।

**सिलिमार, सिलिमारा**†—पु० दे० 'सिलाहर' ।

**सिली**—स्त्री० [स० शिली] १. धारदार या नुकीली चीज । २. आँख मे अजन लगाने की सलाई । (राज०)

**सिलीपर**—पु० [अ० स्लिपर] १ एक प्रकार का हलका जूता जिसके पहनने पर पजा ढका रहता है और एडी खुली रहती है । आराम पाई । २ लकडी की बडी घरन । ३. विशेषत. रेल की पटरी के नीचे बिछाई जानेवाली लकडी की घरन ।

पु० [अ० स्लीपर] शयनिका । (दे०)

**सिलीमुख**—पु०=शिलीमुख (भौंरा) ।

**सिलेट**—स्त्री० [अं० स्लेट] १. एक प्रकार का कोमल मटमैला पत्थर । २ उक्त पत्थर की वह चौकोर पट्टी जिस पर छोटे बालक लिखने का अभ्यास करते हैं । ३. उक्त प्रकार की पट्टी जिसमे पत्थर के बजाय लोहे, सीसे आदि की चद्दर भी लगी होती है ।

**सिलेटी**—पु० [हिं० सिलेट] सिलेट की तरह का खाकी रग ।

वि० उक्त प्रकार के रंग का ।

**सिलेदार**—पु० [फा० सिलहदार] १. सिलहखाने या शस्त्रागार का प्रधान अधिकारी ।

**सिलोंच**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बडी मछली जो प्राय. ६ फुट तक लबी होती है ।

**सिलोच्च**—पु०[स० शिलोच्च] एक पर्वत जो गगा-तट पर विश्वामित्र के सिद्धाश्रम से मिथिला जाते समय राम को मार्ग मे मिला था ।

**सिलौआ**—पु० [देश०] सन के मोटे रेशे जिनसे टोकरियाँ बनाई जाती हैं ।

**सिलौट**†—स्त्री० =सिलौटी ।

**सिलौटा**—पुं० [हिं० सिल+बट्टा] १. चीजें पीसने की सिल और बट्टा दोनों । २ बडी सिल ।

**सिलौटी**—स्त्री० हिं० 'सिलौट' का स्त्री० अल्पा० ।

**सिल्क**—पु० [अ०] १. रेशम । २. रेशमी कपडा ।

**सिल्किन**—वि० [अ० सिल्केन] सिल्क का । रेशमी । जैसे—सिल्किन साड़ी ।

**सिल्प**†—पु०=शिल्प ।

**सिल्पकी**—स्त्री० [सं० सिल्प+कन् क्रीए] =शल्पकी (सलई) ।

**सिल्ला**—पु० दे० 'सीला' ।

**सिल्ली**—स्त्री० [सं० शिला] १. पत्थर की छोटी पतली पटिया जो प्राय: छत पाटने के काम आती है । २. लकड़ी का वह तख्ता जो उक्त पत्थर की तरह छत पाटने के काम आता है । (पश्चिम) ३. एक विशेष प्रकार के पत्थर का वह छोटा टुकड़ा जिस पर रगड़कर नाई लोग उस्तरे

की धार तेज करते हैं। (ब्लेड-स्टोन)। ४. उक्त प्रकार के रूप में ढाली हुई चाँदी या सोने का खंड। सिल।
स्त्री० [हिं० सिल्ला] फटकने के लिए लगाया हुआ अनाज का ढेर।
स्त्री० [?] १. नदी में वह स्थान जहाँ पानी कम और धारा बहुत तेज होती है। (माझी) २ एक प्रकार का जल-पक्षी जिसका मांस खाया जाता है।

**सिलहक**—पुं० [स०] १ सिलारस नामक वृक्ष। २. उक्त वृक्ष से निकलने वाला गन्ध द्रव्य।

**सिलहकी**—स्त्री० [सं० सिल्हक-कीष्] =सिल्हक।

**सिव**—पु०=शिव।
†पुं० [स० सिवक] दरजी।

**सिवई**—स्त्री०=सेंवई।

**सिवक**—वि० [स० षिव् (सीना)+ण्वुल्-अक] सिलाई करनेवाला।
पुं० दरजी।

**सिव-रात**†—स्त्री०=शिव-रात्रि।

**सिवा**—अव्य० [अ०] १ जो है या हो, उसके अतिरिक्त। इसे छोड़ या बाद देकर। अलावा। जैसे—मिवा उसके यहाँ कोई नही पहुँचा था।
**विशेष**—वाक्य के बीच मे सिवा से पहले 'के' विभक्ति लगती है। जैसे—इन बातों के सिवा एक और बात भी है। तुम्हारे सिवा, हमारे सिवा आदि प्रयोगों में यह 'के' विभक्ति 'तुम्हारे', 'हमारे' आदि शब्दो मे अंतर्भुक्त होती है।
२. किसी की तुलना में और अधिक या बढ़कर। उदा०—तुम जुदाई मे बहुत याद आये। मौत तुम से भी सिवा याद आई।—कोई शायर।
वि० फालतू और व्यर्थ।
*स्त्री०=शिवा।

**सिवाइ***—अव्य०=सिवा।

**सिवाई**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मिट्टी।
†स्त्री०=सिलाई।

**सिवान**—पु० [सं० सीमान] १ किसी राज्य की सीमा। २. सीमा पर स्थित प्रदेश। ३ गाँव की सीमा पर की भूमि।

**सिवाय**—अव्य०, वि०=सिवा।

**सिवार**—स्त्री०=सेवार (घास)।

**सिवाल**—स्त्री०=सेवार।

**सिवाला**†—पुं०=शिवालय।

**सिवाली**—पु० [स० शैवाल] कुछ हलके रंग का एक प्रकार का मरकत या पन्ना जिसमे लुलाई की झलक भी होती है।

**सिवि**†—पुं०=शिवि।

**सिविका**—स्त्री०=शिविका (पालकी)।

**सिविर**†—पुं०=शिविर।

**सिविल**—वि० [अ०] १. नगर-निवासियों से संबंध रखनेवाला। २. नगर या जनपद की व्यवस्था से संबंध रखनेवाला। जनपद। जैसे—सिविल पुलिस। ३. आर्थिक। माली। ४. सभ्य। शिष्ट। ५. दे० 'दीवानी'।

**सिवैया**†—स्त्री०=सेवई।

**सिवंडा**†—पु०=शिखंड (चोटी)।

**सिव**—पुं० १.=शिव्य। २.=सिक्क।
*स्त्री०=सीख (शिक्षा)।

**सिष्ट**†—वि०=शिष्ट।
स्त्री० [फा० शिस्त] मछली फँसानेवाली बंसी की डोरी।

**सिष्य**†—पुं०=शिष्य।

**सिसु**†—पुं०=शिशु।
स्त्री०=सिसक।

**सिसक**—स्त्री० [हिं० सिसकना] १ सिसकने की क्रिया या भाव। २. सिसकने से होनेवाला शब्द।

**सिसकना**—अ० [अनु० सी-सी-सी] १. इस प्रकार धीरे-धीरे रोना कि नाक और मुँह से सी-सी ध्वनि निकलती रहे।
**विशेष**—रोने में मुँह खुला रहता है और गले से आवाज भी निकलती है। सिसकने समय प्राय: मुँह बद रहता है और गले से आवाज धीमी हो जाती है।
†२. हिचकना।

**सिसकारना**—अ० [अनु० सीस्सी+हिं० करना] १. जीभ दबाते हुए वायु मुँह से इस प्रकार छोडना जिसमे सीटी का-सा सी-सी शब्द होता है। जैसे—किसी को बुलाने या कुत्ते को किसी पर झपटाने के लिए सिसकारना।
सयो० क्रि०—देना।
२ सीत्कार करना।

**सिसकारी**—स्त्री० [हिं० सिसकारना] १ सिसकारने की क्रिया, भाव या शब्द। जीभ दबाते हुए मुँह से वायु छोडने का सीटी का-सा शब्द।
२ दे० 'सीत्कार'।
क्रि० प्र०—देना।

**सिसकी**—स्त्री० [हिं० सिसकना] १. सिसकने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—भरना।—लेना।
२. दे० 'सिसकारी'।

**सिस-सोनी**—स्त्री० [हिं० शीशम+बोना] वह स्थान जहाँ शीशम के बहुत-से पेड़ लगाये गये हों अथवा हों। (पूरब)

**सिसहर**†—पुं०=शशिधर। (चंद्रमा)

**सिसियाँद**†—स्त्री० [?+गंध] मछली की-सी-गंध। विसायँध।

**सिसिर**†—पुं०=शिशिर (जाडा)।

**सिसु**†—पु०=शिशु।

**सिसुता***—स्त्री०=शिशुता (बचपन)।

**सिसुपाल***—पु०=शिशुपाल।

**सिसुमार***—पु०=शिशुमार।

**सिसृक्षा**—स्त्री० [सं०√सृज् (बनना)+सन्+क्त्वि-अ-टाप्] रचने या निर्माण करने की इच्छा।

**सिसृक्षु**—वि० [सं० √सृज् (बनाना)+सन्+क्त्वि-उ] सृष्टि करने की इच्छा रखनेवाला। रचना का इच्छुक।

**सिसोदिया**—पुं० [सिसोद (स्थान)] गहलौत राजपूतों की एक प्रतिष्ठित शाखा, जिसकी प्राचीन राजधानी चित्तौड़ में और फिर आधुनिक उदयपुर में थी।

**सिस्न**†—पुं०=शिश्न (पुरुष का लिंग)।

**सिस्य**†—पुं०=शिष्य ।

**सिहद्दा**—पु० [फा० सेह=तीन+अ० हद] १. तीन देशों या प्रदेशों की सीमाओं के एक स्थान पर मिलने का भाव। २ वह स्थान जहाँ तीन हदें मिलती हों।

**सिहर**†—पु० [सं० शिखर] चोटी। शिखर।
†स्त्री०=सिहरन ।

**सिहरन**—स्त्री० [हिं० सिहरना] १. सिहरने की क्रिया, दशा या भाव। २ महलाने के फल-स्वरूप होनेवाला रोमांच।

**सिहरना**†—अ० [स० शिशिर+हिं० ना (प्रत्य०)] १ ठंढ से काँपना। २ भय आदि से रोमांचित होना। ३ भयभीत होने के कारण हिचकना।

**सिहरा**†—पु०=सेहरा ।

**सिहराना**—स० [हिं० सिहरना का स०] ऐसा काम करना जिसमें कोई सिहरे।
*अ०=सिहरना ।
*स०=सहलाना ।

**सिहरावन**—पु० [हि०सिहरना] १ सिहरन। २. सरदी। ठंढ। जाडा।

**सिहरी**—स्त्री०[हि० सिहरना+ई (प्रत्य०)] १. सिहरने की क्रिया या भाव। सिहरन। २ सरदी के कारण होनेवाली कँपकँपी। ३. जुडी-बुखार। ४. रोंगटे खड़े होना। रोमांच।

**सिहरू**—पु० [देश०] मँभालू।

**सिहलाना**†—स०=सहलाना।
अ०=सीलना ।

**सिहली**—स्त्री० [स० शीतली] शीतली लता।

**सिहान**—पु० [स० सिहान] मडूर। लोहकिट्ट।

**सिहाना**†—अ० [सं० ईर्ष्या?] १ ईर्ष्या करना। डाह करना। २ पाने या लेने के लिए ललचना। उदा०—मेरी भलो कि अवतें सकुचाहुँ सिहाहुं।—तुलसी। ३. मुग्ध या मोहित होना।
स० ईर्ष्या या लोभ की दृष्टि से देखना।

**सिहारना**†—स० [देश०] १. तलाश करना। ढूँढ़ना। २. इकठा, एकत्र या सचित करना।

**सिहिकना**—अ० [सं० शुष्क] १. सूखना। २ विशेषत: पौधों या फसल का सूखना। जैसे—धान सिहिकना।
†अ०=सिसकना ।

**सिहिदि***—स्त्री०=सृष्टि।

**सिहुंड**—पु० [स०] =सेहुर (पेड़)।

**सिहोर**†—पुं० [सं० सिहुड] सेहुर।

**सिह्लकी**—स्त्री०=सिल्हकी।

**सिह्य***—पुं०=सुरु (माला)।

**सींक**—स्त्री० [सं० इषीका] १. मूँज, सरपत आदि जातियों के पौधो का सीधा पतला डठल जिसमे फूल या चुवा लगता है। २. किसी प्रकार की वनस्पति का बहुत पतला और लंबा डंठल। लंबा तिनका। ३. सूई की तरह का कोई पतला और लंबा खंड या टुकड़ा। ४. नाक में पहनने का कील या खींग नाम का गहना। ५. किसी चीज पर की पतली, लबी धारी।

५—४८

**सींक-पार**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बत्तख।

**सींकर**—पुं० [हिं० सींक] सीक मे लगा फूल या चुआ।

**सींक-सलाई**—वि० [हिं०] बहुत ही दुबला-पतला।

**सींका**—पुं० [हिं० सींक] पेड-पौधो की वह बहुत पतली और सबसे छोटी उपशाखा या टहनी जिसमे पत्तियाँ और फूल लगते हैं।

**सींकिया**—वि० [हिं० सींक] १. सीक-सा पतला। २. बहुत अधिक दुबला-पतला। कमजोर। जैसे—सीकिया पहलवान। ३ जिसमे सींकों के आकार की लंबी-लबी धारियाँ या रेखाएँ हो। जैसे—सीकिया कपडा, सींकिया छपाई।
पु० एक प्रकार का रंगीन कपडा जिसमे सीकों के आकार की लबी-लंबी धारियाँ होती हैं।

**सींकिया-पहलवान**—पु० [हिं०] दुबला-पतला आदमी जो अपने को बहुत बडा शक्तिशाली समझता हो। (व्यग्य और परिहास)

**सींग**—पु० [सं० शृंग] १. वे कठोर, नुकीले और नुकीले अवयव जो खुरवाले पशुओं के सिर पर दोनो ओर निकलते है। विषाण। जैसे—गौ, बैल या हिरन के सींग।
**मुहा०—सींग जमना या निकलना**=साधारण-सी बात के लिए भी लडने को उद्यत या प्रवृत्त होना। **सिर पर सींग होना**=कोई विशेषता होना। (परिहास) **सींग लगना**=अभिमान बल, या महत्त्व प्रदर्शित करने के लिए कोई अनोखा और नया काम या बात करना। **(किसी के) कहाँ सींग समाना**=कही रहने पर गुजारा या निर्वाह होना। ठिकाना लगना। (आश्चर्यसूचक) जैसे—तुम अभी से इतने उद्दड हो, तुम्हारे सींग कहाँ समाएँगे।
**कहा०—सींग कटाकर बछड़ों में मिलना**=वयस्क या वृद्ध हो जाने पर भी लडकों मे खेलना अथवा उनका-सा आचरण या व्यवहार करना। २ हाथ का अँगोछा जो प्राय: उपेक्षा सूचित करने के लिए दूसरी को दिखाया जाता है और अशिष्ट लोगो में पुरुषेन्द्रिय का प्रतीक माना जाता है।
फि० प्र०—दिखाना।
**मुहा०—सींग पर मारना, रखना या समझना**=बहुत ही उपेक्षित तथा तुच्छ समझना।
३ सिंगी नाम का बाजा।
†प० [स० शार्ङ्ग] धनुष की प्रत्यचा। (डिं०)

**सींगड़ा**—पुं० [हिं० सींग+डा (प्रत्य०)] १. ऐसा पशु जिसके सिर पर सींग हों। २. सिंगी नामक बाजा। ३ वह चोगा या लोग जिसमें प्राचीन काल में बारूद रखते थे ।

**सींगन**—पु०[सं० सींग] सींग का बना हुआ नरसिंहा नाम का बाजा। (राज०)

**सींगवाना**†—पुं०=मूँग-फली।

**सींगना**—स०[हिं० सींग] चुराए हुए पशु पकड़ने के लिए उनके सींग देखना और उनकी पहचान करना।

**सींगरी**—स्त्री०[देश०] १. एक प्रकार का पौधा। २. उक्त पौधे की फली जिसकी तरकारी बनाते हैं। मोगरे की फली। सोगर।

**सींगी**—स्त्री० [हिं० सींग] १. वह पोला सींग जिससे जर्राह शरीर का दूषित रक्त खींचते हैं।

क्रि० प्र०—लगाना ।

२. सिंधी नाम का बाजा । ३. छोटी नदियों तथा तालाबों में होनेवाली एक प्रकार की मछली जिसके मुँह के दोनों ओर तीन सवृंत पतले लंबे काँटे होते हैं ।

**सींघन**—पुं० [देश०] घोड़ों के माथे पर ऐसा टीका या निशान जिसमें दो या अधिक भौंरियाँ हों ।

**सींच**—स्त्री० [हिं० सींचना] १. सींचने की क्रिया या भाव । सिंचाई । २. छिड़काव ।

**सींचना**—स० [सं० सिंचन] १. खेतों में या जमीन पर बोई हुई चीजों की जड़ों तक पहुँचाने के लिए पानी गिराना, डालना या बहाना । आबपाशी करना । २. तर करना । भिगोना ।

**सींचान**†—पुं० = सचान (बाज पक्षी) ।

**सींची**—स्त्री० [हिं० सींचना] खेतों या फसल को पानी से सींचने का समय ।

**सींड़**—पुं० [सं० शिंघण या सिंहाण] नाक के अन्दर से निकलनेवाला कफ-युक्त मल ।

**सींथ**—स्त्री० [सं० सीमंत] स्त्रियों के सिर की माँग ।

मुहा०—**(किसी स्त्री का) सींथ भरना**=किसी स्त्री की माँग में सिन्दूर डालकर उससे विवाह करना । पत्नी बनाना ।

**सींद***—स्त्री० [सं० सीमा] १. सीमा । २. मर्यादा ।

मुहा०—**(किसी की) सींद काटना**=सीमा या मर्यादा का उल्लंघन करके किसी को दबाना या पीड़ित करना ।

**सी**—स्त्री० [अनु०] वह शब्द जो अत्यंत पीड़ा, प्रसन्नता या रसास्वाद के समय मुँह से निकलता है । शीत्कार । सिसकारी ।

मुहा०—**सी करना**=असहमति या असंतोष प्रकट करना ।

†स्त्री० [सं० सीत] बीज बोने की क्रिया । बोआई ।

अव्य० हिं० 'सा' का स्त्री० । जैसे—जरा सी बात ।

†पु० =शीत (सरदी) ।

**सीउ***—पुं० १. =शीत । २. =शिव ।

*स्त्री०=सीमा ।

**सीक**†—पु० [सं० इषीक] तीर । उदा०—सीक धनुष सायक सधाना । —तुलसी ।

†स्त्री०=भीक ।

**सीकचा**—पु० [हिं० सीखचा] १ सीखचा । लोहे का छड़ । २ बरामदे आदि के किनारे आड़ के लिए लगाया हुआ लकड़ी का वह ढाँचा जिसमें छड़ लगे होते हैं ।

**सीकर**—पु० [सं० सीक् (सीचना)+अन्] १. पानी की बूँदें । जल-कण । २. पसीने की बूँदें । स्वेद-कण ।

†पु०=सिकड़ ।

**सीकल**—पु० [देश०] डाल का पका हुआ आम ।

स्त्री० दे० 'सिकली' ।

**सीकस**—पु० [देश०] ऊसर ।

**सीका**—पु० [सं० शीर्षक] सोने का एक आभूषण जो सिर पर पहना जाता है ।

†पु० [स्त्री० अल्पा० सीकी] =छींका ।

†पुं० =सींका ।

पु० [देश०] चवन्नी । (दलाल)

**सीका-काई**—स्त्री० [?] एक प्रकार का वृक्ष जिसकी फलियाँ रौंठे की तरह सिर के बाल आदि मलने के काम में आती हैं ।

**सीकी**†—स्त्री० [हिं० सीका] चवन्नी । (दलाल)

**सीकुर**†—पु० [स० शूक] गेहूँ, जौ, धान आदि की बालों में निकलनेवाले सूत की तरह पतले और नुकीले अंग ।

**सीख**—स्त्री० [स० शिक्षा] १. शिक्षा । तालीम । २ सिखाई हुई अच्छी बात । ३ अनुभव से प्राप्त होनेवाला ज्ञान । ४ परामर्श ।

स्त्री० [फा० सीख] १ लोहे की सलाई । २. तीली । ३ वह कबाब जो लोहे की सलाई पर चिपका कर आग पर भूना जाता है ।

**सीखचा**—पु० [फा० सीख्च] १ लोहे की सींक जिस पर मांस लपेट कर भूनते हैं । २ लोहे का पतला लंबा छड़ जो खिड़कियों, दरवाजों आदि में आड़ या रोक के लिए लगाया जाता है ।

**सीखन***—स्त्री० [हिं० सीखना] शिक्षा । सीख ।

**सीखना**—स० [स० शिक्षण, प्रा० सिक्खण] १. किसी से कला विद्या आदि का ज्ञान या शिक्षा प्राप्त करना । जैसे—अँगरेजी या संस्कृत सीखना, चित्रकारी या सिलाई सीखना । २. स्वयं अभ्यास या अनुभव से कोई क्रिया, शिल्प या विद्या सीखना । जैसे—लड़का बोलना सीख रहा है । ३ किसी प्रकार का कटु अनुभव होने पर भविष्य में सचेत रहने की शिक्षा ग्रहण करना । जैसे—सौ रुपये गँवाकर तुम यह तो सीख गये कि अनजान आदमियों का विश्वास नहीं करना चाहिए ।

संयो० क्रि०—जाना ।—लेना ।

**सीगा**—पु० [अ० सीग] १ साँचा । ढाँचा । २ कार्य, व्यापार आदि का कोई विशिष्ट विभाग । ३ मुसलमानों में विवाह के समय कहे जानेवाले कुछ विशिष्ट अरबी वाक्य ।

क्रि० प्र०—पढ़ना ।

**सीझना**—अ० [स० सिद्ध] [भाव० सीझ] १ आँच पर पकना या गलना । २. आग में पड़कर भस्म होना । जलना । उदा०—लै करसी प्रयाग कब सीझे ।—तुलसी । ३. शारीरिक कष्ट सहना । दुःख भोगना । ४ तपस्या करना । ५. इमारत आदि के काम के लिए वृक्ष की ताजी कटी हुई लकड़ी का कुछ दिनों तक पड़े रहकर सूखना और पक्का या टिकाऊ होना । (सीजनिंग) ६ सूखे हुए चमड़े का मसाले आदि में भीग कर मुलायम और टिकाऊ होना । (टैनिंग) ७. दलाली, ब्याज, लाभ आदि के रूप में कुछ धन मिलना या उसकी प्राप्ति का निश्चित हो जाना । (दलाल) । जैसे—(क) बात की बात में पाँच रुपये सीझ गये । (ख) इस रोजगार में रुपए सैकड़े का ब्याज सीझता है ।

**सीट**—स्त्री० [अं०] बैठने का स्थान । आसन ।

स्त्री० [हिं० सीटना=चमड़ भरी बातें कहना] सीटने की क्रिया या भाव ।

**पद—सीट-पर्दांग** ।

**सीटना**—स० [अनु०] बढ़-चढ़कर बातें करना । डींग हाँकना । शेखी बघारना ।

**सीट-पर्दांग**—स्त्री० [हिं० सीटना+(अँट) पर टाँग] बहुत बढ़-चढ़ कर की जानेवाली बातें । आत्म-प्रशंसा की चमड़-भरी बात । डींग ।

**सीढ़ी**—स्त्री० [स० शीत] १. वह पतला महीन शब्द जो होंठों को गोल सिकोड़कर नीचे की ओर आघात के साथ वायु निकालने से होता है। २. किसी विशिष्ट क्रिया के द्वारा कहीं से उत्पन्न होनेवाला उक्त प्रकार का शब्द। जैसे—रेल की सीटी।

**मुहा०—सीटी देना**=बुलाने या संकेत करने के लिए उक्त प्रकार का शब्द उत्पन्न करना।

३ एक प्रकार का छोटा उपकरण या बाजा जिसमें मुँह से हवा भरने पर उक्त प्रकार का शब्द निकलता है

क्रि० प्र०—बजाना।

**सीढ़†**—स्त्री०=सीठी।

**सीठना**—पु० [सं० असिष्ट, प्रा० असिट्ठ+ना (प्रत्य०)] एक प्रकार के गीत जो स्त्रियाँ विवाह के अवसर पर गाती हैं और जिनके द्वारा संबंधियों का उपहास करती हैं।

**सीठनी**—स्त्री०=सीठना।

**सीठा**—वि० [स० शिष्ट, प्रा० सिट्ठ=बचा हुआ] [भाव० सीठापन] बिना रस या स्वाद का। नीरस। फीका।

**सीठी**—स्त्री० [प्रा० सिट्ठ] १ पत्ते, फाँक, फल आदि का वह अंश जो रस निचोड़ लेने पर शेष बचता है। जैसे—मोसम्मी की सीठी। २ लाक्षणिक अर्थ में ऐसी वस्तु जो सारहीन हो।

**सीड़**—स्त्री० [स० शीत] १ वह तरी या नमी जो आस-पास में पानी की अधिकता के कारण कहीं उत्पन्न हो जाती है। सील। सीलन। २ ठंडक। उदा०—कीन्हेसि धूप, सीड़ औ छाँहाँ।—जायसी।

**सीढ़ी**—स्त्री० [सं० श्रेणी] १. वास्तु-कला में वह रचना अथवा रचनाओं का समूह जिस पर जिन पर क्रमशः पैर रखकर ऊपर चढ़ा या नीचे उतरा जाता है। २. बाँस के दो बल्लों या काठ के लम्बे टुकड़ों का बना लम्बा ढाँचा जिसमें थोड़ी-थोड़ी दूर पर पैर रखने के लिए डंडे लगे रहते हैं और जिसके सहारे किसी ऊँचे स्थान पर चढ़ते हैं।

**पद—सीढ़ी का डंडा**=पैर रखने के लिए सीढ़ी में लगा हुआ स्थान।

३. लाक्षणिक रूप में, उन्नति या बढ़ाव के मार्ग पर पड़नेवाली विभिन्न स्थितियों में से प्रत्येक स्थिति।

**मुहा०—सीढ़ी-सीढ़ी बढ़ना**=क्रम-क्रम से ऊपर की ओर बढ़ना। धीरे-धीरे उन्नति करना।

४. छापे आदि के यंत्रों में काठ की सीढ़ी के आकार का वह खंड जिस पर से होकर बेलन आदि आगे-पीछे आते जाते हैं। ४. किसी प्रकार के यंत्र में उक्त आकार-प्रकार का कोई अंश या खंड।

**सीढ़ीनुमा**—वि० [हिं०+फा०] जो देखने में सीढ़ियों की तरह बराबर एक के बाद एक ऊँचा होता गया हो। सम-संयुक्त।(टेरेस-साइक)

**सीत**—पु० [?] बहुत ही थोड़ा-सा अंश। उदा०—हाँड़ी के चावलों की एक सीत थी।—वृंदावनलाल।

†पुं०=शीत (सरदी)।

**सीत-पकड़**—पुं० [सं० शीत+हि० पकड़ना] १. शीत द्वारा ग्रस्त होने का रोग। २. हाथियों का एक रोग जो उन्हें सरदी लगने से होता है।

**सीतल†**—वि०=शीतल।

**सीतल-चीनी**—स्त्री० दे० 'कबाब चीनी'।

**सीतल-पाटी**—स्त्री० [सं० शीतल+हिं० पाटी] १. पूर्वी बंगाल और असम के जंगलों में होनेवाली एक प्रकार की झाड़ी जिससे चटाइयाँ बनती हैं। २. उक्त झाड़ी के डंठलों से बनी हुई चटाई। ३. एक प्रकार का बारीदार कपड़ा।

**सीतल-बुकनी**—स्त्री० [सं० शीतल+हिं० बुकनी] १ सत्तू। सतुआ। २. साधुओं की परिभाषा में सन्तों की बानी जो हृदय को शीतल करती है।

**सीतला†**—स्त्री०=शीतला।

**सीता**—स्त्री० [सं० √सिव् (बाँधना)+क्त बाहु० दीर्घ—टाप्] १. वह रेखाकार गड्ढा जो जमीन जोतते समय हल के फाल के धँसने से बनता है। कूँड। २. मिथिला के राजा सीरध्वज जनक की कन्या जो रामचन्द्र को ब्याही थी। जानकी। वैदेही।

**पद—सीता की रसोई**=(क) बच्चों के खेलने के लिए बने हुए रसोई के छोटे-छोटे बरतन। (ख) एक प्रकार का गोदना। **सीता की पंजीरी**—कर्पूर वल्ली नाम की लता।

३ वह भूमि जिस पर राजा की खेती होती हो। राजा की निज की भूमि। सीर। ४. वह अन्न जो प्राचीन भारत में सीताध्यक्ष प्रजा से लेकर एकत्र करता था। ५ दाक्षायणी देवी का एक नाम या रूप। ६. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में रगण, तगण, मगण, यगण और रगण होते हैं। ७ आकाश-गंगा की उन चार धाराओं में से एक जो मेरु पर्वत पर गिरने के उपरांत हो जाती है। ८. मदिरा। शराब। ९. पाताल-गारुड़ी नाम की लता। ककही या कंघी नाम का पौधा।

**सीता-जानि**—पु० [स० ब० स०] श्रीरामचन्द्र।

**सीतात्यय**—पु० [स०] किसानों पर होनेवाला जुरमाना। खेती के संबंध का जुरमाना। (कौ०)

**सीताधर**—पु० [सं० सीता√धृ+अच्] सीता (हल) धारण करनेवाले बलराम।

**सीताध्यक्ष**—पुं० [सं० ष० त०] प्राचीन भारत में वह राज-अधिकारी जो राजा की निजी भूमि में खेतीबारी आदि का प्रबंध करता था।

**सीता-नाथ**—पुं० [सं० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

**सीता-पति**—पु० [स० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

**सीता-फल**—पुं० [सं० मध्य० स० ब० स०] १. शरीफा। २. कुम्हड़ा।

**सीता-यज्ञ**—पुं० [सं० मध्य० स०] प्राचीन भारत में हल जोतने के समय होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

**सीता-रमण**—पु० [सं० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

**सीतारवण, सीतारौण**—पुं०=सीता-रमण।

**सीता-वट**—पुं० [स० मध्य० स०] १. प्रयाग और चित्रकूट के बीच स्थित एक वट वृक्ष जिसके नीचे राम, और सीता ने विश्राम किया था। २. उक्त वृक्ष के आस-पास का स्थान।

**सीतावर**—पुं० [सं० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

**सीता-वल्लभ**—पुं० [सं० ष० त०] श्रीरामचन्द्र।

**सीताहार**—पुं० [सं० ब० स०] एक प्रकार का पौधा।

**सीत्कार**—पुं० [सं०] मुँह से निकलनेवाला सी-सी शब्द जो शीघ्रतापूर्वक साँस खींचने या लेने से होता है। सी-सी ध्वनि।

**विशेष**—यह ध्वनि अत्यधिक आनंद, पीड़ा या सरदी के फल-स्वरूप होती है।

**सीत्कृति**—स्त्री०[सं०] सीत्कार। (दे०)

**सीत्य**—पुं०[सं० सीत+यत्]१. धान्य। धान। २. खेत।

**सीध**—पु०[सं० सिक्थ] उबाले या पकाये हुए अन्न का दाना।

**सीद**—पुं०[सं०√सद् (नष्ट करना) जिच् सद्]१. ब्याज या रुपये देने का धंधा। २. सूदखोरी। कुसीद।

**सीदना**—अ०[सं० सीदति] १. दुःख पाना। कष्ट झेलना। २. नष्ट होना।

स०१. दुःख देना। २. नष्ट करना।

**सीदिया**—पु०[?]दक्षिण-पूर्वी युरोप का एक प्राचीन देश जिसकी ठीक सीमाएँ अभी तक निर्धारित नहीं हुई हैं। कहते हैं कि शक लोग मूलत यहीं के निवासी थे और यहीं से भारत आये थे।

**सीदी**—पुं०[सीदिया देश]सीदिया देश का अर्थात् शक जाति का मनुष्य। वि० सीदिया नामक देश का।

**सीद्य**—पुं०[स० √सद् (नष्ट करना)+यत् सद्य-सीद]१. आलस्य। काहिली। २. शिथिलता। सुस्ती। ३. अकर्मण्यता। निकम्मापन।

**सीधमाग**—वि०[स० सीध से]ठंढा या सुस्त पड़ा हुआ।

**सीध**—स्त्री०[सं० सिद्धि]१ सीधे होने की अवस्था, गुण या भाव। २ सीधे या ठीक सामने का विस्तार या स्थिति। जैसे—बस इसी सीध मे चले जाओ, आगे एक कूआँ मिलेगा।

**पद—सीध में**=किसी दिए हुए अमुक ओर सीधे।

**मुहा०—सीध बाँधना**=(क) सड़क, क्यारी आदि बनाने के लिए पहले सीधी रेखा बनाना। (ख) सीधी रेखा स्थिर करना। ३. निशाना। लक्ष्य।

**मुहा०—सीध बाँधना**= निशाना या लक्ष्य साधना।

**सीधा**—वि०[सं० शुद्ध, व्रज० सूधा, सूधो] [स्त्री० सीधी, भाव० सिधाई, सीधापन]१ जो बिना घूमे, झुके या मुड़े कुछ दूर तक किसी एक ही ओर चला गया हो। जिसमे फेर या घुमाव न हो। सरल। ऋजु। 'टेढ़ा' का विपर्याय। जैसे—सीधी लकड़ी, सीधा रास्ता। २. जो ठीक एक ही ओर प्रवृत्त हो। जो ठीक लक्ष्य की ओर हो। जैसे—सीधा निशाना।

**मुहा०—सीधी सुनाना**= साफ साफ कहना। खरी बात कहना।

३. (व्यक्ति) जो कपटी, कुटिल या धूर्त न हो। निष्कपट और सरल प्रकृति का।

**पद—सीधा-सादा**= जो कुछ भी छल-कपट न जानता हो।

४. शांत और सुशील। भला। जैसे—सीधा आदमी, सीधी गौ। ५. (व्यवहार) जिसमें उद्दंडता, कपट या छल न हो।

**पद—सीधी तरह**=शिष्टता और सभ्यतापूर्वक। जैसे—पहले उसे सीधी तरह समझाकर देखो। **सीधे सुभाव (या स्वभाव)**=मन मे बिना कोई छल-कपट रखे। सरल और सहज भाव से। जैसे—मैंने उन लोगो को सीधे-सुभाव समझाकर दिया था। **सीधे-से**=स्पष्ट रूप से। जैसे—उन्होने सीधे से कह दिया कि मैं यह काम नही करूँगा।

**मुहा०—(किसी को) सीधा करना**= कठोर व्यवहार करके अथवा दंड देकर किसी को अपने अनुकूल बनाना या ठीक रास्ते पर लाना।

६. अच्छा, अनुकूल और लाभदायक। जैसे—जब भाग्य सीधा होगा (या सीधे दिन आएँगे) तब सब बातें आप से आप ठीक हो जायँगी।

७. (संबंध) जिसमें और किसी प्रकार का अंतर्भाव, फेर या लगाव न हो। प्रत्यक्ष।

**पद—सीधा-सीधा**=सुगम और प्रत्यक्ष।

८. (कार्य)जिसके संपादन या साधन मे कोई कठिनता या जटिलता न हो। सरल और सुगम। आसान। सहज। जैसे—सीधा काम।

९ (बात या विषय) जिसे समझने में कोई कठिनता न हो। जैसे—सीधी बात, सीधा सवाल। १०. (पदार्थ) जिसका अगला या ऊपरी भाग सामने या ठीक जगह पर हो। 'उल्टा' का विपर्याय। जैसे—सीधा करके पहनो। ११. दाहिना। दक्षिण। जैसे—सीधे हाथ से रुपये दे दो।

क्रि० वि०—ठीक सामने की ओर (सम्मुख)।

पु० किसी पदार्थ के आगे, ऊपर या सामने का भाग।'उलटा' का विपर्याय (आवर्त्त) जैसे—इस कपडे मे सीधे और उलटे का जल्दी पता नही चलता।

पुं०[असिद्ध] बिना पका हुआ अन्न जो प्राय ब्राह्मणो आदि को भोजन बनाने के लिए दिया जाता है।

**सीधापन**—पु०[हिं० सीधा+पन (प्रत्य०)]१ सीधा होने की अवस्था, गुण या भाव। सिधाई। २ व्यवहारशून्य वह विशेषता जिसमें किसी प्रकार का छल-बल नही होता।

**सीधु**—पु०[स०]१. गुड़ या ईख के रस से बना हुआ मद्य। गुड की शराब। २ अमृत।

**सीधु-गंध**—पुं०[स०] मौलसिरी। बकुल।

**सीधुप**—पु०[स०] मद्यप।

**सीधु-पुष्प**—पु०[सं०]१. कदंब। कदम। २. बकुल। मौलसिरी।

**सीधु-रस**—पु०[स० ब० स०] आम का पेड़।

**सीधे**—अव्य०[हिं० सीधा]१ ठीक ऊपर की ओर उठे हुए बल मे। जैसे—सीधे खड़े हो। २ सीध में। बराबर सामने की ओर। सम्मुख। ३ बिना बीच मे इधर-उधर घूमे या मुड़े हुए। जैसे—इसी सड़क से सीधे चले जाओ। ४ बिना बीच मे कहीं ठहरे या रुके हुए।जैसे—पहले तुम सीधे उन्ही के पास जाओ। ५ नरमी या शिष्ट व्यवहार से। जैसे—वह सीधे रुपया न देगा। ६. शान्त भाव से। जैसे—सीधे बैठो।

**सीध्य**—पु०[सं० √सिध् (गमन करना आदि)+क्यप्—पृषो० दीर्घ] गुवा। मलद्वार।

**सीन**—पु०[अं०]१. दृश्य। २. रंग मंच का परदा जिसपर अनेक प्रकार के दृश्य अंकित रहते हैं।

**सीनरी**—स्त्री०[अं०] प्राकृतिक दृश्य।

**सीना**—स०[स० सीवन]१.सूई-धागे या सूजे-रस्सी आदि की सहायता से दो या अधिक कपडे, कागज, टाट, नाइलन, प्लास्टिक, मांस, चमड़े आदि के टुकडो को साथ साथ जोडना। जैसे—फटी हुई धोती सीना; कापी या किताब सीना, जूता सीना। २. सिलाई करना। जैसे—कमीज या पाजामा सीना।

**पद—सीना-पिरोना**=सिलाई, बेलबूटे आदि का काम करना।

३. लाक्षणिक अर्थ में, दो पक्षों के मत-भेद दूर करना।

पुं०[फा० सीन:]१. छाती। वक्षस्थल।
मुहा०-(किसी को) सीने से लगाना=प्रेमपूर्वक गले लगाना। आलिंगन करना।
२. स्त्री का स्तन।
*पु०=सीबाँ (क्रीड़ा)।

**सीना-कोबी**—स्त्री० [फा० सीन.कोबी] छाती पीटते हुए शोक प्रकट करना।

**सीना-जोर**—वि०[फ़ा० सीन जोर] [भाव० सीना-जोरी] १. अपने बल के जोर पर या अभिमान से दूसरो से जबरदस्ती काम करानेवाला। जबरदस्त। २ अत्याचारी।

**सं.ना-जोरी**—स्त्री०[फा० सीन जोरी] १. जबरदस्ती। २. अत्याचार।

**सीना-तोड़**—पु०[हि० सीना+तोडना] कुश्ती का एक पेंच।

**सीना-पनाह**—पु०[फा०] जहाज के पिचले खंड मे लंबाई के बल दोनो ओर का किनारा। (लश०)

**सीना-बंद**—पु०[फा० सीनबन्द] १. सीना बाँधनेवाला वस्त्र या पट्टी। २. अंगिया। चोली। ३ एक प्रकार की कुरती जिसे सदरी भी कहते हैं। ४.पट्टी विशेषत: घोडे की पेटी। ५. ऐसा घोड़ा जिसका अगला पैर लगडाता हो।

**सीना-बाँह**—स्त्री० [हि० सीना+बाँह] एक प्रकार की कसरत।

**सीना-मोड़ा**—पु०[फा०सीन.=छाती+हि० मोडा=कन्धा] छाती, कन्धो आदि का विचार जो प्राय: व्यक्तियों, विशेषत: पशुओ के पराक्रम, बल आदि का अनुमान करने के लिए होता है। जैसे—घोड़े, बकरे आदि का दाम, उनके सीने-मोड़े पर ही लगता है।

**सीनियर**—वि०[अ०]१. बड़ा। वयस्क। २. पद मर्यादा आदि मे श्रेष्ठ। प्रवर। ज्येष्ठ।

**सीनी**—स्त्री०[फा०]१ तश्तरी। थाली। २. छोटी नाव।

**सीनेट**—स्त्री०[अ०]१. विश्वविद्यालय की प्रबधकारिणी सभा। २ अमेरिका की राज्य सभा।

**सीनेटर**—पुं० [अ०] सीनेट का सदस्य।

**सीप**—पु०[स० शुक्ति, प्रा० सुत्ति] [स्त्री० अल्पा० सीपी]१. घोंघे, शख आदि के वर्ग का और कठोर आवरण के भीतर रहनेवाला एक जल-जन्तु जो छोटे तालाबों और झीलो से लेकर बड़े-बड़े समुद्रों तक मे पाया जाता है। शुक्ति। मुक्ता माता। २.उक्त जल-जन्तु का सफेद, कड़ा और चमकीला आवरण या संपुट जो बटन, चाकू आदि के दस्ते आदि बनाने के काम मे आता है, और जिससे छोटे बच्चों को दूध पिलाया जाता है। ३. एक प्रकार का लंबोतरा पात्र जिसमें देव-पूजा, तर्पण आदि के लिए जल रखा जाता है।

**सीपति**—पु०=श्रीपति (विष्णु)।

**सीपर***—पु०=सिपर (ढाल)।

**सीप-सुत**—पुं०[हि० सीप+स० सुत] मोती।

**सीपारा**—पु०[फा०] दे० 'सिपारा'।

**सीपिज**—वि० सीप या सीपी से उत्पन्न।
पु०[हि० सीपी+स० ज] सीपी से उत्पन्न अर्थात् मोती।

**सीपी**—स्त्री हि० 'सीप' का स्त्री० अल्पा०।

**सीबी**—स्त्री०[अनु० सी-सी] सीत्कार। (दे०)

**सीमंत**—पु०[स०] १. सीमा-रेखा। २. स्त्रियो के सिर की माँग। ३. शरीर में हड्डियो का जोड़। ४ दे० 'सीमंतोन्नयन'।

**सीमंतक**—पु०[स० सीमंत √ कृ (करना)+क]१. माँग निकालने की क्रिया। २. सिंदूर जो स्त्रियों की माँग मे डालते है।२ जैन पुराणों के अनुसार एक नरक। ४ उक्त नरक का निवासी। ५ एक प्रकार का माणिक (रत्न)।

**सीमंतवान् (वत्)**—वि० [स० सीमत+मतु्-व=व-नुम्-दीर्घ] [स्त्री० सीमतवती] जिसके सिर के बालो मे माँग निकली हो।

**सीमंतित**—भू० कृ०[स०सीमत +इतच्] सीमत के रूप मे लाया हुआ। माँग निकाला हुआ। जैसे—सीमंतित केश।

**सीमंतिनी**—स्त्री०[स० सीमत+इनि—ङीप्] १ स्त्री। नारी।
**विशेष**—स्त्रियाँ माँग निकालती हैं, इससे उन्हे सीमंतिनी कहते हैं। २ संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सीमंतोन्नयन**—पु० [स० ब० स०] द्विजो के दस संस्कारो मे से तीसरा संस्कार, जो गर्भधारण के चौथे, छठे, आठवे महीने होता है, तथा जिसमे गर्भवती स्त्री के बालो मे माँग निकाली जाती है।

**सीमा**†—पु०[स० सीमा] सीमा। हद।
मुहा०—सीमा फाँड़ना या धरना=(क)अपने अधिकारो का उल्लंघन करते हुए दूसरे के अधिकार-क्षेत्र मे अतिक्रमण करना। (ख) जोर-जबरदस्ती करना।
पु०[फा०] चाँदी।

**सीमक**—पु०[सं० सीम+कन्] सीमा। हद।

**सीमल**†—पुं०=सेमल।

**सीम-लिंग**—पु०[स० ष० त०]प्रदेश की सीमा का चिह्न। हद का निशान।

**सीमांकन**—पु०[स० सीमा+अंकन, ष० त०] [भू० कृ० सीमांकित] अधिकार, कार्य, क्षेत्र आदि के अलग-अलग विभाग करके उनकी सीमा निर्धारित या निश्चित करना। (डिमार्केशन)

**सीमांकित**—भू० कृ०[स०] जिसका सीमांकन हुआ हो। (डिमार्केटेड)

**सीमांत**—पु०[सं०]१.वह स्थान जहाँ किसी सीमा का अंत होता हो। वह जगह जहाँ तक हद पहुँचती हो। सरहद। (फ्रन्टियर) २ गाँव की सीमा। शिवाना। ३. सीमा पर का प्रदेश।

**सीमांत-पूजन**—पु० [स० ष० त०] वर का वधू पूजन या स्वागत जो बरात आने के समय वधू-पक्ष की ओर से गाँव की सीमा पर होता है।

**सीमांत-बंध**—पु०[स० ष० त०, ब० स०]आचरण-संबधी नियम या मर्यादा।

**सीमा**—स्त्री०[स०]१. किसी प्रदेश या स्थान के चारों ओर के विस्तार की अंतिम-रेखा या स्थान। हद। सरहद। (बाउंडरी)
मुहा०—सीमा बंद करना=ऐसी राजनीतिक व्यवस्था करना कि देश की सीमा पर से आदमियों और माल का आना-जाना रुक जाय।
२. किसी विस्तार की अंतिम लंबाई या घेरा। (बार्डर) जैसे—सीमा के प्रदेश। ३. वह अंतिम स्थान जहाँ तक कोई बात या काम हो सकता हो। या होना उचित हो। नियम या मर्यादा की हद। (लिमिट)
मुहा०—सीमा से बाहर जाना=उचित से अधिक बढ़ जाना। (निषिद्ध)

४. माँग। विजया।

**सीमा-कर**—पु०[सं०ष०त०]वह कर जो किसी प्रदेश की सीमा पर आने-जानेवाले व्यक्तियों या सामान पर लगता है। (टरमिनल टैक्स)

**सीमा-चौकी**—स्त्री० [सं०+हिं०] सीमा पर स्थित वह स्थान जहाँ पर सीमा-रक्षा के निमित्त सैनिक रखे जाते हों।

**सीमातिक्रमण**—पुं० [सं० ष० त०] अपनी सीमा का उल्लंघन करके दूसरे के प्रदेश में किया जानेवाला अनधिकार प्रवेश।

**सीमातिक्रमणोत्सव**—पुं०[स०] प्राचीन भारत में, युद्ध यात्रा के समय सीमा पार करने का उत्सव। विजय-यात्रा। विजयोत्सव।

**सीमापाल**—पुं०[सं०]सीमा प्रान्त का रक्षक अधिकारी।

**सीमाब**—पुं०[फा०] पारा। पारद।

**सीमा-बद्ध**—भू० कृ०[स०]१. जिसकी सीमा निश्चित कर दी गई हो। हद के भीतर किया हुआ। जैसे—सीमा-बद्ध प्रदेश। २ सीमाओं अर्थात् मर्यादाओं से बँधा हुआ।

**सीमा-शुल्क**—पु०[स०] वह कर या शुल्क जो किसी राज्य की सीमा पर कुछ विशिष्ट प्रकार के पदार्थों या उनके आयात तथा निर्यात के समय लिया जाता है। (ड्यूटी)

**सीमा-संधि**—स्त्री० [स० ष० त०] वह स्थान जहाँ पर दो या अनेक देशों, राज्यों आदि की सीमाएँ मिलती हों।

**सीमा-सेतु**—पुं० [स० मध्य० स०] वह पुश्ता या मेड़ जो सीमा निश्चित करने के लिए बनाई जाती है।

**सीमिक**—पु० [सं०√स्वन् (शब्द करना)+किनन्-सतृप्ता+ईर्ष] १ एक प्रकार का वृक्ष। २. दीमक। ३. दीमकों की बाँबी।

**सीमिका**—स्त्री० [सं० सीमिक+टाप्] १. दीमक। २. चींटी। च्यूँटी।

**सीमित**—भू० कृ०[स०]१. सीमाओं से बँधा हुआ। २ जिसका प्रभाव या विस्तार एक निश्चित सीमा के अन्तर्गत हो। २. राजनीति शास्त्र में जिसपर सांविधानिक बंधन लगे हों। 'परम' का विध्दार्थक। (लिमिटेड) जैसे—सीमित राज्य-तंत्र।

**सीमी**—वि०[फा०] चाँदी का बना हुआ।

**सीमेंट**—पुं०[अं०]दीवारों आदि की चुनाई में काम आनेवाला एक प्रकार का चूर्ण जिसमें बालू मिलाने पर गारा बनता है तथा जो जुड़ाई और प्लास्तर के काम आता है एवं सूखने पर बहुत कड़ा और मजबूत हो जाता है।

**सीम***—स्त्री०[सं० सीता] सीता। जानकी।

†पु०[सं० शीत] ठंढ।

वि० ठंढा।

**सीमक***—स्त्री०=सीवन।

**सीयरा***—वि०=सियरा (ठंढा)।

**सीर**—पुं०[सं०] १. हल। २. जोता जानेवाला बैल। ३ सूर्य। ४. आक। मदार।

स्त्री०१.वह जमीन जिसे भू-स्वामी या जमींदार स्वयं जोतता या अपनी ओर से किसी दूसरे से जोतवाता आ रहा हो, अर्थात् जिस पर उसकी निज की खेती होती हो। २. वह जमीन जिसकी उपज या आमदनी कई हिस्सेदारों में बँटती हो। ३. हिस्सेदारी। साझेदारी।

स्त्री०[सं० शिरा] रक्तवाहिनी नाड़ी। नस।

**सीर०**—सीर खुलवाना=नश्तर से शरीर का दूषित रक्त निकलवाना।

पु०[?] १ चौपायों का एक संक्रामक रोग। २.पानी का ऐसा बहाव जो किनारे की जमीन काटता हो। (रुख०)

†*वि०=सियरा (ठंढा)।

**सीरक**—पुं० [स० सीर+कन्] १. हल। २. सूर्य। ३. शिशुमार। सूँस।

वि०[हिं० सीरा] ठंढा या शीतल करनेवाला।

**सीरक***—पुं०=शीर्ष।

**सीरत**—स्त्री०[अ०]१ प्रकृति। स्वभाव। २ गुण। विशेषता।

**सीर-धर**—वि०[स० ष० त०] हल धारण करनेवाला।

पु० बलराम का एक नाम।

**सीर-ध्वज**—पु० [स० ब० स०] राजा जनक का पहला और वास्तविक नाम। २ बलराम।

**सीरन**†—पुं०[?] बच्चों का एक प्रकार का पहनावा।

**सीरनी**—स्त्री०[फा० शीरीनी] मिठाई। (दे० 'सिरनी')

**सीर-पाणि**—पु०[स० ब० स०] बलराम का एक नाम।

**सीर-भृत्**—पु०[स० सीर√भृ (सुरक्षित रखना आदि)+क्विप्—तुक्] १. हल चलानेवाला अर्थात् खेतिहर या हलवाहा। २ बलराम।

**सीरम**—पु० [अ०] कुछ विशिष्ट प्रकार के प्राणियों और मनुष्यों के शरीर के रक्त में से निकला हुआ एक तरल पदार्थ जिसमें कुछ विशिष्ट रोगों का आक्रमण रोकने की शक्ति होती है; और इसीलिए जो दूसरे प्राणियों या व्यक्तियों के शरीर में उन्हें किसी रोग से रक्षित रखने के उद्देश्य से सूई के द्वारा प्रविष्ट किया जाता है।

**सीरवाह(क)**—पु०[स०]१ हल चलाने या जोतनेवाला। हलवाहा। २ जमींदार की ओर से उसकी खेती का प्रबंध करनेवाला कारिन्दा।

**सीरष**†—पु०=शीर्ष।

**सीरा**—स्त्री०[स०] एक प्राचीन नदी।

वि०[स० शीतल, प्रा० सीअड्] [स्त्री० सीरी]१ ठंढा। शीतल। २. धीर और शांत प्रकृतिवाला।

†*पु०[फा० शीर.]१ चीनी आदि का पकाया हुआ शीरा। २ मोहन-भोग। हलुआ।

पुं० १ =सिरा (शीर्ष या सिरहाना)। २ =सिरहाना।

**सीरायुध**—पुं०[सं० ब० स०] बलराम।

**सीरियल**—पु०[अं०]१. वह लंबी कहानी या लेख जो कई बार और कई हिस्सों में प्रकाशित हो। २. ऐसी कहानी या खेल जो सिनेमा में उक्त प्रकार से कई भागों में विभक्त करके दिखाया जाता हो।

**सीरी (रिन्)**—पुं०[सं०] (हल धारण करनेवाले) बलराम।

वि०हिं० 'सीरा' का स्त्री०।

**सीरीज**—स्त्री० [स०]१. किसी एक क्रम में पूर्वापर घटित होनेवाली घटनाओं का समाहार या समूह। २. पुस्तक प्रकाशन के क्षेत्र में, किसी एक प्रकाशन संस्था द्वारा प्रकाशित वह पुस्तक-माला जिसका विषय, मूल्य या जिल्द समान हो।

**सीर्लभ**—स्त्री०[स०] एक प्रकार की मछली।

**सील**—स्त्री०[स० शलाका] लकड़ी का एक हाथ लंबा औजार जिस पर चूड़ियाँ गोल और सुडौल की जाती हैं।

†स्त्री०=सीढ़।
†पुं०=शील।
स्त्री०[अ०]१. पत्रों आदि पर लगाई जानेवाली मोहर। छाप। मुद्रा। २. प्रायः ठंढे देशों के समुद्रों मे रहनेवाला एक प्रकार का बड़ा स्तनपायी चौपाया जो मछलियाँ खाकर रहता है।

सीलना—अ०[हिं० सील]१. सील से युक्त या प्रभावित होना। जैसे—दीवार या फरश सीलना। २. सील या नमी के कारण ठंढा होकर विकृत होना।

सीला†—पुं०=सिला।

सीवँ*—स्त्री०=सीमा।

सीवक—वि०[स०] सीनेवाला। सिलाई करनेवाला।

सीवड़ा(ड़ो)—पुं०[स० सीमात] ग्राम का सीमात। सिवाना। (डिं०)

सीवन—पु०[स० √ षिव् (सीना)+ल्युट्—अन]१ सीने का काम। सिलाई। २. सीने के कारण पड़े हुए टाँके। सिलाई के जोड़। उदा०—सीवन को उधेड़कर देखोगे क्यों मेरी कन्था को। —पत्र। ४. दरज। दरार। सधि।
*स्त्री०=सीवनी।

सीवना*—स०=सीना।

सीवनी—स्त्री०[स०सीवन-ङीप्]वह रेखा जो लिंग के नीचे से गुदा तक जाती है। सीवन।

सीवाँ—पुं०[स०सीमिक] एक प्रकार का कीड़ा जो ऊनी कपड़ों को काट डालता है।

सीवी—स्त्री०=सीवी (सीत्कार)।

सीव्य—वि०[सं०√षिव् (सीना)+यत् (क्यप्)] जो सीया जा सके। सीये जाने के योग्य।

सीस—पुं०[स० शीर्ष]१. सिर। माथा। मस्तक। २. कंधा। (डिं०) ३ अंतरीप। (लघ०)
†पुं०=सीसा (धातु)।

सीसक—पुं०[सं०] सीसा नामक धातु।

सीसज—पुं०[सं०] सिंदूर।
वि० 'सीसा' नामक धातु से उत्पन्न या बना हुआ।

सीस-ताज—पुं०[हिं० सीस+फा०ताज] वह टोपी या बंधन जो शिकार पकड़ने के लिए पाले हुए जानवरों के सिर चढ़ा रहता है और शिकार के समय उतारा या खोला जाता है। कुलहा।

सीस-त्राण†—पुं०=शिरस्त्राण।

सीस-पत्र—पुं०[सं०] सीसा नामक धातु।

सीस-फूल—पुं०[हिं० सीस+फूल] सिर पर पहनने का फूल के आकार का एक प्रकार का गहना।

सीसम†—पुं०=शीशम।

सीस-महल†—पुं०=शीश-महल।

सीसर—पुं०[सं० सीस√रा (रोना)+क]१. देवताओं की सरमा नाम की कुतिया का पति। (पाराशर गृह्यसूत्र) २. एक प्रकार का बालग्रह जिसका रूप कुत्ते का-सा कहा गया है।

सीसक†—पुं०=राम-बाँस।

सीसा—पुं०[सं० सीसम] मटमैले रंग की एक मूल धातु जो अपेक्षया बहुत भारी या वजनी होती है। (लेड)
पुं०=शीशा।

सीसी—स्त्री०[अनु०]१. सी-सी शब्द। २ दे० 'सीत्कार'।
स्त्री० शीशी

सीसों*—पु०=शीशम।

सीसोपधातु—पुं०[स०]सिंदूर या ईंगुर जिसे सीसे की उपधातु माना गया है।

सीसोदिया—पु०=सिसोदिया।

सीस्तान—पुं०[फा०] ईरान के दक्षिण मे स्थित एक प्रदेश।

सीह—स्त्री०[स० सीधु=मद्य] महुक। गंध।
†पुं०१.=सिंह। २. सेही (साही जन्तु)। ३.=शीत।

सीह गोस—पुं०=स्याह-गोश।

सीहण(णी)*—स्त्री० [सं० सिंहनी] १ सिंह की मादा। शेरनी। उदा०—'सीहण रण साकै नही, सीह जणे रणसूर।'—बाँकीदास।

सीहुँड—पु०[स०सीहुड+मयो दीर्घः] सेहुँड। थूहर।

सुंकड़—पु०[?] साधुओं का एक संप्रदाय।

सुंग—पुं०[स०] एक प्रसिद्ध प्राचीन राजवश जो अतिम मौर्य-सम्राट् बृहद्रथ के प्रधान सेनापति पुष्यमित्र ने ईसा से प्रायः दो सौ वर्ष पूर्व प्रतिष्ठित किया था।

सुंघनी—स्त्री०[हिं० सूँघना] तम्बाकू को पीस तथा छानकर तैयार किया हुआ चूर्ण जिसे लोग सूंघते हैं तथा दाँतों आदि पर भी मलते है।

सुंघाना—स०[हिं० सूँघना का प्रे०] किसी को कुछ सूँघने मे प्रवृत्त करना।
मुहा०—(किसी को) कुछ सुंघाना=ऐसी बीज सुंघाना जिससे कोई बेहोश हो जाय।

सुंठि†—स्त्री०=सोठ।

सुंड†—पुं०१.=शुंड। २.=सूँड।

सुंड-दंड†—पुं०=शुंडादड।

सुंड-मुसुंड—पुं० [स० शुंड मुशुंडि] जिस का अस्त्र सूंड़ हो। हाथी।
वि०=संड-मुसंड।

सुंडल—पुं० [?] लदू गधे की पीठ पर रखने की गद्दी।

सुंडा—पुं०[स० शुंडि] [स्त्री०अल्पा० सुंडी] हरे रंग का एक प्रकार का कीड़ा जो प्रायः तरकारियों, फलियों आदि में लगकर उन्हें कुतरता है।
पुं०[?] लदू गधे की पीठ पर रखने की गद्दी या गद्दा।
पुं०=सूँड़।

सुंडाल—पुं०[स० सुंडा+लच्] हाथी।

सुंडाली—वि०[सं० शुंडाल=सूँड़वाला] सूँड़वाला।
स्त्री० एक प्रकार की मछली।

सुंडी-बेंत—पुं०[सुंडी ?+हिं० बेंत]एक प्रकार का बेंत जो बंगाल, असम और खासिया की पहाड़ियों पर होता है।

सुंद—पुं०[सं० √सुद् (नष्ट करना)+अप्]१. एक प्रसिद्ध असुर जो निसुंद का पुत्र और उपसुन्द का भाई था। २. विष्णु।

सुंदर—वि० [सं०] [स्त्री० सुन्दरी, भाव० सुन्दरता, सौंदर्य] १. जो गठन, रंग, रूप आदि के विचार से देखने में सुखद लगता हो। २. इंद्रियों को भला प्रतीत होनेवाला। जैसे—सुन्दर बात, सुन्दर विचार, सुन्दर समाचार। ३. शुभ। जैसे—सुंदर मुहूर्त

पुं०१. कामदेव। २. लंका का एक पर्वत। ३. एक प्रकार का वृक्ष।

**सुंदरक**—पुं० [सं० सुंदर-कन] एक प्राचीन तीर्थ।

**सुंदरता**—स्त्री० [सं० सुन्दर+तल्—टाप्] १. भौतिक या शारीरिक रचना, प्रकार या रूप-रंग जो नेत्रों को भला प्रतीत होता हो। २. लाक्षणिक अर्थ में कोई सुन्दर वस्तु।

**सुंदरताई***—स्त्री० [सं० सुन्दर+हिं० ताई (प्रत्य०)]=सुंदरता।

**सुंदरत्व**—पु० [सं० सुन्दर+त्व] सुन्दरता। सौन्दर्य।

**सुंदरम्मन्य**—वि०[सं० सुन्दर√मिन् (मानना)+खच पक्-मुम्]जो अपने आपको बहुत सुन्दर मानता या समझता हो। अपने आपको सुन्दर समझनेवाला।

**सुंदराई**†—स्त्री०=सुन्दरता।

**सुंदरापा**—पुं०[सं० सुन्दर+हिं० आपा (प्रत्य०)] सुंदरता। सौन्दर्य।

**सुंदरी**—वि० स्त्री० [म०] सुन्दर रूपवाली। अच्छी सूरत-शकल वाली। रूपवती।

स्त्री०१. सुन्दर रूपवाली स्त्री। खूबसूरत औरत। २ त्रिपुर-सुन्दरी देवी। ३. एक योगिनी का नाम। ४. सर्वया नामक छंद का दसवाँ भेद जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण और एक गुरु होता है। ५ एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चार भगण होते हैं। इसका एक प्रसिद्ध नाम मोदक भी है। ६ तेइस अक्षरों की एक प्रकार की वर्ण-वृत्ति। ७ व्रत-विलंबित नामक छंद का दूसरा नाम। ८. हलदी। ९. एक प्रकार की मछली। १० एक प्रकार का बड़ा जंगली वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती और नाव बनाने तथा इमारत के काम आती है। ११ पीतल आदि के वे लंबे टुकड़े जो बीन, सारंगी, सितार आदि के दंड पर बंधे रहते हैं और जो स्वर उतारने-चढ़ाने के लिए ऊपर-नीचे खिसकाये जाते हैं। १२. शहनाई की तरह का एक प्रकार का बाजा।

**सुंदोपसुंद**—पुं० [स० द्व० स०] सुंद और उपसुंद नाम के दो भाई जो तिलोत्तमा (अप्सरा) को प्राप्त करने के लिए आपस में लड़ मरे थे।

**विशेष**—इन दोनों भाइयों ने यह वर प्राप्त किया था कि हम तब तक नहीं मरें जब तक स्वयं एक दूसरे को न मारें। अतः इन्द्र द्वारा प्रेषित तिलोत्तमा अप्सरा की प्राप्ति के लिए ये आपस में लड़ मरे थे।

**सुंदोपसुंद न्याय**—पुं० [सं०] एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग ऐसे अवसरों पर होता है जहाँ दो शक्तिशाली व्यक्ति आपस में घनिष्ठ मित्र होने पर भी अन्त में सुन्द और उपसुन्द नामक दैत्यों की तरह लड़ मरते हैं।

**सुंघाई**—स्त्री०[हिं० सोंघा] सोंघे होने की अवस्था, गुण या भाव। सोंधापन।

**सुंघाबट**†—स्त्री०=सुँघाई।

**सुंबिया**—स्त्री०[हिं० सोंधा+इया (प्रत्य०)]१.गुजरात में होनेवाली एक प्रकार की वनस्पति जो पशुओं के चारे के काम में आती है। २. एक प्रकार की ज्वार।

**सुंबा**—पु०[देश०] [स्त्री० अल्पा० सुंबी]१. वह गीला कपड़ा या पुचारा जिसे तोप की गरम नाल पर उसे ठंढा रखने के लिए फेरते या फैलाते थे। २. तोप की नाल साफ करने का गज। ३. लोहे में छेद करने का एक प्रकार का औजार। ४. इस्त्रंब।

**सुंबी**—स्त्री० [हिं० सुंबा] लोहा काटने की छेनी।

**सुंबुल**†—पु०=सबुल।

**सुंभ**—पुं०१.=शुंभ। २.=सुंभ।

**सुंभा**†—पु० [स्त्री० अल्पा० सुंभी]=सुंबा।

**सुंभी**†—स्त्री०=सुंबी।

**सुंसारी**—स्त्री० [देश०] अनाजों में लगानेवाला एक प्रकार का काला कीड़ा।

**सु**—उप० [सं०] एक संस्कृत उपसर्ग जो प्रायः संज्ञाओं और विशेषणों के पहले लगकर उनमें नीचे लिखे अर्थों की वृद्धि करता है। १ अच्छा, उत्तम या भला। जैसे—सुगंधि, सुनाम, सुमार्ग। २ मनोहर या सुन्दर। जैसे—सुदर्शन, सुकेशी। ३ अच्छी या पूरी तरह से। भली भाँति। जैसे—सुयोजित, सुव्यवस्थित। ४ सरलतापूर्वक या सहज में। जैसे—सुकर, सुगम, सुगाह्य। ५ बहुत अधिक। जैसे—सुदीर्घ, सुरम्यस्थ। ६. मांगलिक या शुभ। जैसे—सुदिन, सुसमाचार। ७. उचित और अधिकारी। जैसे—सुपात्र।

पु०१ सुन्दरता। खूबसूरती। २ उत्कर्ष। उन्नति। ३ आनन्द। प्रसन्नता। हर्ष। ४ समृद्धि। ५ अर्चन। पूजन। ६ अनुमति। महमति। ७ कण्ट। तकलीफ।

†सर्व०[सं० स०] सो। वह।

†अव्य० [सं० सह] कुछ क्षेत्रीय भाषाओं में चरण तथा अपादान कारकों का और कहीं-कहीं संबध-सूचक चिह्न।

†वि०=स्व (अपना)।

**सुअ**†—पुं०=सुत (बेटा)।

**सुआटा**—पुं०[सं० शुक, प्रा० सुअ, हिं० सुआ] तोता।

**सुअन**†—पुं० [सं० सुत, प्रा० सुअ] पुत्र। बेटा।

†वि०=सोना (स्वर्ण)। जैसे—सुअन जरद=सोनजर्द।

**सुअना***—अ० [हिं० सुअन] १ उत्पन्न होना। २. उदित होना। उगना।

†पुं०=सुगना (तोता)।

**सुअर**—पुं० हिं०'सूअर' का वह रूप जो उसे यौगिक शब्दों के पहले लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—सुअरबना।

**सुअर-बंता**†—वि० [हिं० सुअर+दन्त=दाँतवाला] सुअर के-से दाँतों वाला।

पुं० वह हाथी जिसके दाँत झुके हुए हों।

**सुअर्ग**†—पुं०=स्वर्ग।

**सुअर्ग-पताकी**—पु० दे० 'स्वर्ग-पताकी'।

**सु-अवसर**—पु०[स० क० स०]ऐसा अवसर या समय जिसमें कार्य साधन के लिए अनुकूल तथा उपयक्त परिस्थितियाँ होती हों।

**सुआ**—स्त्री० [?]साफ पानी में रहनेवाली हरे रंग की एक मछली जिसके दाँत अत्यन्त मजबूत और लंबे होते हैं।

†पुं०=सुअटा (तोता)। २.=सूआ (बड़ी सुई)।

**सुआउ**†—वि० [सं० सु+आयु] जिसकी आयु बड़ी हो। दीर्घायु।

**सुआव**—पुं०[?] स्मरण। याद। (डिं०)

†पुं०=स्वाद।

**सुआल**†—पुं०[देश०] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसके पत्ते प्रतिवर्ष

लड जाते हैं। इसकी लकड़ी इमारत और नावें के काम में आती है।
†पुं०=स्वान।
पु०=सून् (पुत्र)।

सुआना—स० [हिं० सूना का प्रे०] सूने मे प्रवृत्त करना। उत्पन्न या पैदा कराना।
†स०=सुलाना।

सुआमी†—पुं०=स्वामी।

सुआर†—पु० [सं० सूपकार] भोजन बनानेवाला, रसोइया।

सुआरव—वि०[सं० ब० स०] उत्तम शब्द करनेवाला। मीठे स्वर से बोलने या बजनेवाला।

सुआसिन†—स्त्री०=सुआसिनी।

सुआसिनी*†—स्त्री० [सं० सुवासिनी] १. स्त्री, विशेषतः आस-पास मे रहनेवाली स्त्री। २ सौभाग्यवती स्त्री। सधवा।

सुआहित—पु०[स०सु+आहृत?]तलवार के ३२ हाथों में से एक हाथ।

सुइना†—पु० सोना (स्वर्ण)।

सुइया—स्त्री०[हिं० सूआ] एक प्रकार की चिड़िया।
†स्त्री० सुई।

सुइस†—स्त्री० दे० 'सूँस'।

सुई†—स्त्री० सूई।

सुकंकवान् (वत्)—पुं० [सं० सुकंक+मतुप्-म-व] मार्कण्डेय पुराण के अनुसार मेरु के दक्षिण का एक पर्वत।

सुकंटका—स्त्री०[स० ब० स०]१. घीकुआर। २. पिंडखजूर।

सुकंठ—वि०[सं० ब० स०]१. जिसका कंठ सुन्दर हो। सुन्दर गलेवाला। २. जिसके गले का स्वर कोमल और मधुर हो।
पु० सुग्रीव का एक नाम।

सुकंद—पु०[सं० कर्म० स०] कचेरू।

सुकंदक—पु०[स० सुकंद+कन्]१. महाभारत काल का एक प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी। ३. बाराही कंद। गेंठी। ४ प्याज।

सुकंदन—पुं०[सं० ब० स०]१ बैजयती तुलसी। २ बबई तुलसी। बबरक।

सुकंदा—स्त्री० [स० ] १. लक्ष्मणा कंद। पुनवा। २. बाँझ ककोड़ा।

सुकंदी—पु०[स० सुकंद-ङीप्] सूरन। जमीकंद।

सुक*—पु०१ दे० 'शुक'। २. दे० 'शुकदेव'।
†पु०१. दे० 'शुक'। २. दे० 'शुकवार'।

सुकचन—पु० [सं० सकुचन] लज्जा। संकोच। (डिं०)

सुकचना†—अ०=सकुचना।

सुकचाना†—अ०=सकुचाना।

सुकटि—वि०[सं० ब० स०] अच्छी कमरवाली। जिसकी कमर सुन्दर हो।
स्त्री०१. सुन्दर कमर। २. सुन्दर कमरवाली स्त्री।

सुकड़ना†—अ०=सिकुड़ना।

सुकदेव*—पुं०=शुकदेव।

सुकन*—पु०=शकुन। (डिं०)

सुकना†—पुं०[देश०]एक प्रकार का धान जो भादों के अंत में होता है।
†स०=सूखना। (पश्चिम)



सुक-नासा*—स्त्री०[सं० शुक+नासिका]१. तोते की ठोर जैसी नाक। २. स्त्री जिसकी नाक तोते की ठोर जैसी हो।

सुकमार†—वि०=सुकुमार (कोमल)।

सुकर—वि०[सं० सु+कृ (करना)+खल्] [भाव० सुकरता] (कार्य) जो सहज में किया जा सके। सरल। आसान।

सुकरता—स्त्री०[सं० सुकर+तल्—टाप्]१. सुकर होने की अवस्था या भाव। सौन्दर्य। २ सुन्दरता।

सुकरा—स्त्री०[सं० सुकर-टाप्] ऐसी अच्छी और सीधी गौ जो सहज में दुही जा सके।

सुकरात—पुं० एक प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक जो अफलातून (प्लेटो) का गुरु था। (सॉक्रटीज)

सुकराना†—पु० =शुकराना।

सुकरित—वि०[स० सुकृत]१ अच्छा। भला। २. मांगलिक। शुभ।

सुकरीहार†—[पुं०] गले मे पहनने का एक प्रकार का हार।

सुकर्णक—वि०[स० ब० स०] सुन्दर कानोवाला।
पुं० हस्तिकद। हाथीकद।

सुकर्णिका—स्त्री०[स० सुकर्ण+कन्—टाप्, इत्व] १ मूसाकानी नाम की लता। २ महाबला।

सुकर्णी—स्त्री०[सं० सुकर्ण-ङीप्] इन्द्रवारुणी। इन्द्रायन।

सुकर्म—पुं०[स० कर्म० स०]१ अच्छा या उत्तम काम। सत्कर्म। २. देवताओं का एक गण या वर्ग।

सुकर्मा (र्मन्)—वि० [स० सुकर्मन्+सु लोप दीर्घ-नलोप] अच्छे कार्य करनेवाला। सुकर्मी।
पु०१ विषकभ आदि २७ योगो में से सातवाँ योग। २. विश्वकर्मा। ३ विश्वामित्र।

सुकर्मी (र्मिन्)—वि०[सं० सुकर्म+इनि] १ अच्छा काम करनेवाला। २ धर्म और पुण्य के कार्य करनेवाला। ३ सदाचारी।

सुकल—वि०[स० ब० स०] १. कोमल और मधुर परन्तु अस्पष्ट स्वर करनेवाला। २. बहु जो धन के दान तथा व्यय करने मे उदार तथा सुख्यात हो।
†वि०, पुं०=शुक्ल।
†पु०=सुकुल (आम)।

सुकवाना—अ०[?]अचंभे में आना। आश्चर्यान्वित होना।
†स०=सुलवाना। (पश्चिम)

सुकवि—पुं०[सं० कर्म० स०] उत्तम कवि।

सुकांड—वि०[स० ब० स०] सुन्दर काड या डालोंवाला।
पु० करेले का पौधा या बेल।

सुकांडी—वि०[सं० सुकांडिन्, सुकांड+इनि] सुन्दर काण्ड या शाखाओं वाला।
पु० भ्रमर। भौंरा।

सुकाज—पुं०[सं० सु+हिं० काज] उत्तम कार्य। अच्छा काम। सुकार्य।

सुकाजिल—पु०[सं० शुक्तिज] मोती। (डिं०)

सुकाना*—स०=सुखाना।

सुकानी*—पुं०[अ० सुक्कान=पतवार] मल्लाह। माझी।

**सुकाम**—वि० [सं०] अच्छी कामनाएँ करनेवाला।

**सुकाम-व्रत**—पुं० [सं० षतु० स०] किसी उत्तम कामना से धारण किया जानेवाला व्रत।

**सुकामा**—स्त्री० [सं० सुकाम-टाप्] नायमाना लता। नायमान।

**सुकार**—वि० [सं० सु√कृ (करना)+अण्] [स्त्री० सुकारा] १. सहज साध्य। सहज में होनेवाला। (काम) जो सहज में हो सके। सुकर। २. (पशु) जो सहज में वश में किया जा सके। ३. (पदार्थ) जो सहज में प्राप्त हो सके।

**सुकाल**—पुं० [स० कर्म० स०] १. अच्छा या उत्तम समय। २. ऐसा समय जब अन्न यथेष्ट होता हो और सहज में मिलता हो। 'अकाल' का विपर्याय।

**सुकाली (लिन्)**—पु० [सं० सुकाल+इनि] मनु के अनुसार शूद्रों के पितरों का एक वर्ग।

**सुकावना**†—स०=सुखाना।

**सुकाशन**—वि० [सं० सु√काश्(चमकना)+ल्युट्—अन] अत्यन्त दीप्तिमान्। बहुत चमकीला।

**सुकाष्ठ**—पु० [सं० ब० स०] अच्छी लकड़ीवाला (वृक्ष)।
पु० काष्ठानि।

**सुकाष्ठक**—पु० [सं० सुकाष्ठ+कन्] देवदारु।
वि०=सुकाष्ठ।

**सुकाष्ठा**—स्त्री० [सं० सुकाष्ठ-टाप्] १. कुटकी। २. कठ-केला।

**सुकिअ***—पु०=सुकृत (अच्छा कर्म या कार्य)।

**सुकिया**†—स्त्री०=स्वकीया (नायिका)।

**सुकी**—स्त्री० हिं० सुक (तोता)का स्त्री०। तोते की मादा।

**सुकीय***—स्त्री०=स्वकीया (नायिका)।

**सुकुंद**—पुं० [सं० ब० स०] राल। धूना।

**सुकुंदक**—पु० [स० ब० स०] प्याज।

**सुकुआर**†—वि०=सुकुमार।

**सुकुट्ट**—पु० [स० ब० स०] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद।

**सुकुड़ना**†—अ०=सिकुड़ना।

**सुकुति***—स्त्री०=सुकृति।

**सुकुमार**—वि० [स० कर्म० स०] [स्त्री० सुकुमारी, भाव० सुकुमारता] १. (व्यक्ति या शरीर) जिसमें सौन्दर्यपूर्ण कोमलता हो। २ (पदार्थ) जो सहज में कुम्हला या मुरझा सकता अथवा थोड़ी-सी असावधानी से खराब हो सकता हो।
पुं० १. सुन्दर कुमार। सुन्दर बालक। २. वह जो बालकों के समान कोमल अंगोंवाला हो। ३. ईख। ४. बनचंपा। ५. चिचड़ा। ६. कँगनी। ७. मेरु पर्वत के नीचे का वन।

**सुकुमारक**—पुं० [सं० ब० स०] १. तम्बाकू का पत्ता। २. तेजपत्ता। ३. साँवा नामक अन्न।

**सुकुमारता**—स्त्री० [सं० सुकुमार+तल—टाप्] सुकुमार होने की अवस्था, गुण या भाव। सौन्दर्य-पूर्ण कोमलता।

**सुकुमारा**—स्त्री० [स० सुकुमार-टाप्] १. जूही। चमेली। २. केला। ४. मालती।

**सुकुमारिका**—स्त्री० [सं० सुकुमारिक—टाप्] केले का पेड़।

**सुकुमारी**—वि० [स० सु√कुमार(खेलना)+अच्—ङीप्] स०सुकुमार का स्त्री०। कोमल और सुन्दर अंगोंवाली।
स्त्री० १. कुमारी कन्या। २. पुत्री। बेटी। ३ चमेली। ४. ऊख। ५. केला। ६ स्फूर्जका। ७. शखिनी नामक ओषधि। ८. करेला।

**सुकुरमा**†—अ०=सिकुड़ना।

**सुकुर्कुर**—पु० [सं० ब० स०] बालकों का एक प्रकार का रोग जिसकी गणना बालग्रहों में होती है।

**सुकुल**—वि० [स०] जो अच्छे कुल या वंश में उत्पन्न हुआ हो।
पु० १ उत्तम या श्रेष्ठ कुल। २. एक प्रकार का बढ़िया आम जो उत्तर प्रदेश और बिहार में होता है।
†वि०, पु० शुक्ल।

**सुकुलता**—स्त्री० [सं० सुकुल+तल्-टाप्] सुकुल होने की अवस्था या भाव। कुलीनता।

**सुकुल-बेद**—पु० [स० शुक्ल+हिं० बेत] एक प्रकार का वृक्ष।

**सुकुवाँर(वार)***—वि०=सुकुमार।

**सुकूत**—पु० [अ० १. मौन। चुप्पी। २. नीरवता।

**सुकूनत**—स्त्री० [अ० सकूनत] १. ठहरने की जगह। २. निवास। ३. निवास-स्थान।

**सुकृत्**—वि० [सं० सु+√कृ (करना)+क्विप्—सुक्] १ उत्तम और शुभ कार्य करनेवाला। २. धर्म के और पुण्य कार्य करनेवाला। ३ भाग्यवान्। ४. धार्मिक, पवित्र तथा शुभ।
पु० निपुण कारीगर। दक्ष शिल्पी।

**सुकृत**—भू० कृ० [सं०] १ (काम) जो अच्छे ढग से किया गया हो। जैसे—सुकृत कर्म अर्थात् पुण्य का और शुभ काम। २ (कृति) जो बहुत बढ़िया बनाई गई हो।
पु० १. कोई भलाई का कार्य। सत्कार्य। पुण्य कार्य। २. धर्मशील और पुण्यात्मा व्यक्ति। ३. भाग्यवान् व्यक्ति।
मुहा०—सुकृत मनाना=अपने सुकृतों का स्मरण करते हुए यह मनाना कि उनके फलस्वरूप हमारा सकट दूर हो। उदा०—लगी मनावन सुकृत, हाथ कानन पर दीन्हे।—रत्ना०।

**सुकृत-कर्मा**—पु० [स० सुकृतकर्मा कर्म०स०] धर्मात्मा या पुण्यात्मा व्यक्ति।

**सुकृत-व्रत**—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का व्रत जो प्रायः द्वादशी के दिन किया जाता है।

**सुकृतात्मा**—वि० [सं० सुकृतात्मन्, ब० स०] पुण्य कर्म करने की जिसकी वृत्ति हो।

**सुकृति**—स्त्री० [सं० सु√कृ (करना)+क्तिन्] १. धर्म और पुण्य का काम। २ तपश्चर्या। ३. कोई अच्छी या सुन्दर कृति। सत्कर्म।

**सुकृतित्व**—पुं० [सं० सुकृति+त्व] सुकृति का भाव या धर्म।

**सुकृती (तिन्)**—वि० [सं० सुकृत+इनि] १. सत्कर्म करनेवाला। २ धार्मिक और पुण्यशील। ३. भाग्यवान्। ४. बुद्धिमान्।

**सुकृत्य**—पु० [सं० सु√कृ (करना)+क्यप्—सुक्] उत्तम कार्य। सत्कर्म।

**सुकेत**—पु० [सं० ब० स०] आदित्य। सूर्य।

**सुकेतु**—वि० [स० ब० स०] सुन्दर केशों या बालोंवाला।
पु० १. चित्रकेतु राजा का एक नाम। २. ताड़का राक्षसी के पिता का नाम। ३. वह जो पशु-पक्षियों तक की बोली समझता हो।

**सुकेश**—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० सुकेशा] उत्तम केशोंवाला। जिसके बाल सुन्दर हों।
पु०=सुकेशि।

**सुकेशा**—वि० स्त्री० [सं० सुकेश-टाप्] सुन्दर अर्थात् घने तथा लंबे बालों वाली (स्त्री)।

**सुकेशि**—पु० [सं०] विश्रवा ऋषि का पुत्र तथा माल्यवान्, सुमाली और माली नामक राक्षसों का पिता।

**सुकेशी**—स्त्री० [स० सुकेश-ङीप्] १. सुन्दर अर्थात् घने तथा लंबे बालों वाली स्त्री। २. एक अप्सरा का नाम।
वि०=सुकेशा।

**सुकेसर**—पु० [सं० ब० स०] सिंह। शेर।

**सुक्कान**—पु० [अ०] नाव की पतवार।

**सुक्कानी**—पु० [अ०] पतवार चलानेवाला अर्थात् मल्लाह। माझी।

**सुक्खी**—वि० [सं० स्वकीय] अपना। निजी। उदा०—ए बार सुर बदहु नहिं बंधि लेहु सुक्खी बधअ।—चंदबरदाई।
स्त्री० [स० सुकीर्ति] नेकनामी। सुयश।

**सुक्ख**†—पु०=सुख।

**सुक्त**—पु० [स०] एक प्रकार की काँजी।

**सुक्ता**—स्त्री० [सं० सुक्त-टाप्] इमली।

**सुक्ति**—पु० [स० ब० स०] एक प्राचीन पर्वत।
†स्त्री०=शक्ति।

**सुक्र**—पु० [स० सकतु] अग्नि। (डिं०)
†वि०, पु०=शुक्र।

**सुक्रत***—पु०=सुकृत।

**सुक्रति***—पु०=स्त्री०=सुकृति।

**सुक्रतु**—वि० [सं० ब० स०] सत्कर्म करनेवाला। पुण्यशील।
पु० १. अग्नि। २. शिव। ३. इन्द्र। ४. सूर्य। ५. सोम। ६. वरुण।

**सुक्ल***—वि०=शुक्ल।

**सुक्ष**—वि० [स० ब० स०] १. बहुत बड़ा धनवान्। २. बहुत बड़ा राज्यशाली। ३. बलवान्। शक्तिशाली।

**सुक्षिति**—स्त्री० [सं० कर्म० स०, ब० स०] १. सुन्दर निवास-स्थान। २. उक्त प्रकार के स्थान में रहनेवाला व्यक्ति। ३. वह जो धन, धान्य और संतान से बहुत सुखी हो।

**सुक्षेम**—वि० [सं० ब० स०] जिसका जन्म अच्छे गर्भ से हुआ हो।
पुं० ऐसा घर जिसके दक्षिण, पश्चिम और उत्तर की ओर दीवारें या मकान हों, और जो पूर्व की ओर से खुलता हो। (ऐसा मकान बहुत शुभ माना जाता है।)

**सुखंकर**—वि० [सं० सुख√कृ (करना)+टप्] सुकर। सहज।

**सुखंडी**—स्त्री० [हिं० सूखना] प्रायः बच्चों को होनेवाला एक रोग जिसमें उनका शरीर अत्यन्त क्षीण हो जाता है।
वि० लाक्षणिक अर्थ में, अत्यन्त क्षीण अशक्त और दुर्बल।

**सुखंत**†—वि०=सुखद।

**सुख**—पु० [सं०] १ वह प्रिय अनुभूति जो अनुकूल या अभीप्सित वातावरण या स्थिति की प्राप्ति पर होती है। जैसे—इस शुभ समाचार से उसे सुख मिला। २. साधारणतया व्यक्ति की वह स्थिति जिसमें वह आर्थिक, मानसिक तथा शारीरिक कष्टों से मुक्त रहता है और उसे अपेक्षित सुविधाएँ प्राप्त होती हैं, अथवा प्राप्त सुविधाओं से संतोष होता है सुहा०—सुख की नींद सोना=निश्चिन्त होकर आनन्द से सोना या रहना। खूब मजे में समय बिताना। सुख मानना=किसी विशिष्ट परिस्थिति की अनुकूलता के कारण, अच्छी तरह प्रसन्न और संतुष्ट रहना। जैसे—यह पेड़ सभी प्रकार की जमीनों में सुख मानता है। ३. कल्याण। मंगल। ४. धन-धान्य आदि की संपन्नता। ५ स्वर्ग। ६ सुखी नामक छंद का दूसरा नाम।
वि० यौ० पदों के आरम्भ में, १. जो अनुकूल और प्रिय रूप में होता हो। जैसे—सुखक्रिया। २. जहाँ या जिसमें सुख प्राप्त होता हो। जैसे—सुख-कंदरा। ३ जो सहज में या सुगीते से होता हो। जैसे—सुख-दोहन। ४ स्वभावतः अच्छे रूप में होनेवाला। उदा०—जाके सुख-भूख वास से वासित होत दिगत।—केशव।
क्रि० वि० सुखपूर्वक। आराम से। सुखद रूप से।

**सुख-आसन**—पु० [स० मध्य० स०]=सुखासन।

**सुख-कंद**—वि० [स० मध्य० स० सुख +कंद] सब प्रकार के सुख देनेवाला।

**सुख-कंदन**†—वि०=सुखकंद।

**सुख-कंदर**—वि० [स० ष० त० सुख+कंदरा] ऐसा स्थान जहाँ बहुत सुख मिलता हो।

**सुखक***—वि० [हिं० सूखा] सूखा शुष्क।
†वि०=सुखद।

**सुखकर**—वि० [सं०] १. सुख देनेवाला। सुखद। २. जो सहज में किया जा सके। सुकर।

**सुख-करण**—वि० [सं० ष० त० सुख+करण] सुख उत्पन्न करनेवाला।

**सुखकरन**—वि०=सुख-करण।

**सुखकरी**—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सुखकारक**—वि० [सं०] सुख देनेवाला। सुखद।

**सुखकारी**—वि०=सुखकारक।

**सुख-क्रिया**—स्त्री० [सं०] १. सुख-प्राप्ति के लिए किया जानेवाला कार्य। २. ऐसा कार्य जिसे करते समय सुख मिलता हो। ३. ऐसा कार्य जिसे करने में किसी प्रकार का कष्ट न होता हो।

**सुख-गंध**—वि० [सं० ब० स०] अच्छी गंधवाला। सुगंधित।

**सुखग**—वि०[सं० सुख√गम् (जाना)+ड]सुख या आराम से चलने या जानेवाला।

**सुख-गम**—वि० [सं० सुख√गम् (जाना)-अच्]=सुगम।

**सुख-चार**—पुं० [सं० सुख√चर् (चलना)+घञ्] अच्छा या उत्तम घोड़ा। बढ़िया घोड़ा।
वि०=सुख-गम।

**सुख-चाव**—पुं० [सं०+हिं]१. ऐसा कार्य करने का शौक जिससे सुख मिलता हो। २. आनंद-मंगल।

**सुख-जात**—वि० [सं० तृ० त०] सुखी।

**सुख-जीवी (विन्)**—पुं० [सं०]१. वह जो सुखी जीवन बिता रहा हो अथवा सुखी जीवन बिताने के लिए इच्छुक हो। २. वह जो परिश्रम न करना चाहता हो और पकी-पकाई खाना चाहता हो।

**सुख-डैना***—पुं० [हिं० सूखना+डैना (प्रत्य०)] बैलों का एक प्रकार का रोग।

**सुख-करन**—वि० [सं० सुख+हिं० करना] १. सुख देनेवाला। सुखदायक। २. सहज में अनुकूल या प्रसन्न होनेवाला।

**सुखता**—स्त्री० [स०] सुख का धर्म या भाव। सुखत्व।

**सुखतर***—पुं० [सं० सुख+स्थल] ऐसा प्रदेश जहाँ के लोग सुखी हों।

**सुखद**—वि० [सं०] [स्त्री० सुखदा] सुख देनेवाला। जो सुख दे या देता हो। सुखदायी। आरामदेह।

पुं० १. विष्णु। २. विष्णु का लोक या स्थान। ३. संगीत में एक प्रकार का ताल।

**सुखद-गीत**—वि० [सं० ब० स० सुखद+गीत] जिसकी बहुत अधिक प्रशंसा हो। प्रशंसनीय।

**सुख-धनियाँ***—वि०, स्त्री०=सुख-दानि।

**सुखदा**—वि० [स० सुखद का स्त्री०] सुख देनेवाली। सुखदायिनी।

स्त्री० १. गंगा। २ अप्सरा। ३. शमीवृक्ष। ४. एक प्रकार का छन्द।

**सुख-दाता (तृ)**—वि० [सं०] सुख देनेवाला। सुखद।

**सुख-दानि***—वि० [स० सुखदायिनी] सुखदेनेवाला। सुखद।

पुं०=प्रियतम।

स्त्री० [सं०] १. सुंदरी नाम का छंद का दूसरा नाम। २. कुछ आचार्यों के मत से एक प्रकार का छंद जिसके प्रत्येक चरण में ८ मात्राएँ होती हैं। कुछ लोग अंत में गुरु और लघु रखना भी आवश्यक समझते हैं।

**सुखदानी**—वि० स्त्री० [हिं० सुखदान] सुख देनेवाली। आनंद देनेवाली।

स्त्री०=सुख-दानि।

**सुखदायक**—वि० [स० सुख√दा (देना)+ण्वुल्-अक] सुखदेनेवाला। सुखद।

पुं० एक प्रकार का छन्द।

**सुखदायी (यिन्)**—वि० [स० सुख√दा (देना)+णिनि-यिन्] [स्त्री० सुखदायिनी] सुख देनेवाला। सुखद।

**सुखदायी***—वि०=सुखदायी।

**सुखदाव***—वि०=सुखदायी।

**सुखदास**—पुं० [देश०] एक प्रकार का अगहनी धान।

**सुखदेनी**—वि०, स्त्री०=सुखदायिनी।

**सुखदेव**†—पुं०=शुकदेव।

**सुखदेन**—वि०=सुखदायी।

**सुखदेनी**—वि०, स्त्री०=सुखदायिनी।

**सुखदोहा**—वि० स्त्री० [स०] (बादा पशु विशेषतः गाय) जिसे आसानी से दूहा जा सके।

**सुख-धाम**—पुं० [स० ष० त०] १. ऐसा स्थान जहाँ सब प्रकार के सुख प्राप्त हों। २. वह जिसमें सब प्रकार के सुख वर्तमान हों। ३. स्वर्ग।

**सुख ध्वनि**—पुं० [स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सुखन**। पुं० [फा० सख़न] १. बात-चीत। ५. कविता।

**विशेष**—मुख़न के यौ० पदों के लिए दे० 'सख़न' के यौ०।

**सुखना**†—अ०=सूखना।

**सुख-नीलांबरी**—स्त्री० [स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सुख-पर**—वि० [स०]=सुखी।

**सुख-पति**†—स्त्री०=सुषुप्ति। (वेद०)

**सुखपाल**—पुं० [सं० सुख+हिं० पालकी में का पाल] पुरानी चाल की एक प्रकार की पालकी जिसका ऊपरी भाग शिवालय के शिखर-सा होता है।

**सुखपूर्वक**—अव्य० [स०] सुख से। जैसे—वे सुखपूर्वक वहाँ रहते हैं।

**सुखप्रद**—वि० [स० सुख-प्र√दा+क] सुखदेनेवाला। सुखद।

**सुख-प्रश्न**—पुं० [स०] किसी का सुख-क्षेम जानने के लिए की जानेवाली जिज्ञासा।

**सुख-प्रसवा**—वि० स्त्री० [स०] जिसे प्रसव करने के समय विशेष कष्ट न होता हो।

**सुख-प्रिय**—वि० [सं० ब० स०] जो सदा सुख से रहना चाहता हो।

पुं० संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सुख-बोध**—वि० [स०] (बात या विषय) जिसका बोध या ज्ञान सहज में हो सकता हो।

**सुख-मंदिर**—पुं० [स० मध्य० स०] महल का वह विभाग जिसमें राजा लोग बैठकर नृत्य संगीत आदि देखते-सुनते थे।

**सुखमणा**†—स्त्री०=सुषुम्ना (नाड़ी)।

**सुखमणि**—पुं० [स० सुख+मणि] सिक्खों का एक छोटा धर्मग्रन्थ जिसका वे प्राय. नित्य पाठ करते हैं।

**सुखमन***—स्त्री० [स० सुषुम्ना] सुषुम्ना नाम की नाड़ी।

†पुं०=सुख-मणि।

**सुखमा**—स्त्री० [स० सुषमा] १. एक प्रकार का वृत्त। २. सुषमा। शोभा।

**सुख-मानी (मानिन्)**—वि० [स०] १ किसी विशिष्ट अवस्था में सुख माननेवाला। २ हर अवस्था में सुखी रहनेवाला।

**सुख-मुख**—वि० [स०] १. (शब्द या वर्ण) जिसका उच्चारण सरलता से किया जा सकता हो। २. सुन्दर बातें करनेवाला। ३ जो मुँहजोर न हो।

**सुख-राज**—पुं० दे० 'महासुख'।

**सुख-रात**†—स्त्री०=सुख-रात्रि।

**सुख-रात्रि**—स्त्री० [स० ष० त०] १. दीपावली की रात। कार्तिक मास की अमावस्या की रात। ३. वह रात जिसमें पति-पत्नी सुख के लिए रति करते हैं।

**सुख-रात्रिका**—स्त्री० [स०] लक्ष्मी।

**सुख-रात**†—वि० [स० सुख+रात्रि] जो सर्वथा सुखमय हो। सुख की रात्रि।

**सुख-रासी***—वि०=सुख-रास।

**सुख-रूप**—वि० [स०] सुहावने रूपवाला।

**सुख-रूपी**—वि०=सुख-रूप।

**सुख-रोग**—पुं० [हिं०] [वि० सुख-रोगी] कोई ऐसा बे-नाम का अथवा नाम-मात्र का रोग जिसका बड़े आदमी प्रायः काल्पनिक रूप में अपने आप में आरोप कर लिया करते हैं।

**सुखलाना**—पुं०=सुखाना। (पश्चिम)

**सुखवंत**—वि० [स०] १. सुखी। प्रसन्न। सुखद। २. सुख देनेवाला। सुखद।

**सुखवत्**—वि० [सं० सुख+मतुप्-म=व] सुखयुक्त। सुखी।

**सुखवती**—स्त्री० [स० सुखवत्-ङीप्] अमिताभ बुद्ध का स्वर्ग।
वि० सं० सुखवान् का स्त्री०।

**सुखवत्ता**—स्त्री० [स० सुखवत्+तल्-टाप्] १ सुख का भाव या धर्म। २. सुखी होने की अवस्था या भाव।

**सुखवना**†—पुं० [हिं० सूखना] १. सुखाने की क्रिया या भाव। २. वह फसल जो सूखने के लिए धूप में डाली जाती है। ३. कोई चीज सूखने या सुखाने पर उसकी तौल या मान में होनेवाली कमी। ४. गीले अक्षरों को सुखाने के लिए उन पर छिडका या छोड़ा जानेवाला बालू।

**सुखवाद**—पु० [सं०] १. यह मत या सिद्धांत कि इस दुःखपूर्ण संसार में रहकर भी मनुष्य को यथासाध्य सुखभोग करना चाहिए और भविष्य में भी सुख तथा शुभ फल की आशा तथा कामना बनाये रखनी चाहिए। इसमें केवल अर्थ और काम पुरुषार्थ माने जाते हैं। 'दुःखवाद' का विपर्याय। २. दे० 'आशावाद'।

**सुखवादी**—वि० [सं०] सुखवाद-संबंधी।
पुं० १ वह जो सुखवाद का अनुयायी हो। २. आशावादी।

**सुखवान्** (वत्)—वि० [सं० सुख+मतुप्-म=वन्-नुम-दीर्घ] [स्त्री० सुखवती] सुखी।

**सुखवार**—वि० [सं० सुख+हिं० वार (प्रत्य०)] [स्त्री० सुखवारी] १ सुखी। २. सहज। सरल।

**सुखवास**—पु० [स० मध्य० स०] वह स्थान जहाँ का निवास सुखकर हो।

**सुख-सलिल**—पु० [स० मध्य० स०] उष्ण जल। गरम पानी।

**सुख-साध्य**—वि० [स० तृ० त०] [भाव० सुखसाध्यता] १. जिसे सुखपूर्वक प्राप्त किया जा सके। २. सुगम। सहज।

**सुख-सार**—पु० [स० सुख+सार] मुक्ति। मोक्ष।

**सुख-सुभीता**—पु० [स०+हिं०] १ ऐसी बातें जिनके होने पर मनुष्य सुख-पूर्वक जीवन बिता सके। (एमेनिटी) २. सुख और सहूलियत।

**सुख-स्पर्श**—वि० [सं० मध्य० स०] जिसे छूने से सुख मिलता हो।

**सुख-स्वप्न**—पुं० [स०] भावी सुख की ऐसी कल्पना जिसका कोई दृढ़ आधार न हो।

**सुख-स्वरावली**—स्त्री० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सुखांत**—वि० [सं० ब० स०] १. जिसका अंत या समाप्ति सुखमय वातावरण में होती हो। २. (साहित्यिक रचना) जिसका अंतिम अंश मुख्य-पात्र के भावी सुखी-जीवन की ओर इंगित करता हो।

**सुखांबु**—पु० [स० मध्य० स०] गरम पानी।

**सुखा**—स्त्री० [स० सुख-टाप्] वक्ष की पुरी का नाम।

**सुखाई***—क्रि० वि० [हिं० सुखी] १. सुखपूर्वक। अच्छी तरह। २. बिना किसी परिश्रम के। सहज में। उदा०—प्रभु प्रताप मैं जाब सुखाई।—तुलसी।
स्त्री० [हिं० सुखाना+आई (प्रत्य०)] सुखाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**सुखाकर**—पु० [सं० ब० स०] बौद्धों के अनुसार एक लोक।

**सुखाकार**—वि० [सं० ब० त०, ब० स०] जो सुख का आधार।
पुं० स्वर्ग।

**सुखाधिकार**—पु० [सं० सुख+अधिकार] विधिक क्षेत्र में, जमीन, मकान आदि के संबंध में सुख-सुभीते का वह अधिकार जो उसे पहले से या बहुत दिनों से प्राप्त हो; और इसी लिए दूसरों के द्वारा उसका अतिक्रमण दंडनीय अपराध माना जाता है। (राइट आफ़ ईजमेन्ट) जैसे—किसी मकान में पहले से यदि कोई खिड़की चली आ रही हो, तो उसे इस संबंध में सुखाधिकार प्राप्त होता है। यदि कोई पड़ोसी उस खिड़की के ठीक सटाकर नई दीवार खड़ी करता है तो वह दूसरों के सुखाधिकार का अतिक्रमण करता है।

**सुखाना**—स० [हिं० सूखना का प्रे०] १. ऐसी क्रिया करना जिससे किसी चीज की नमी दूर हो जाय। जैसे—धूप में बाल सुखाना। २. (शरीर के संबंध में) क्षीण तथा दुर्बल करना। ३. नष्ट करना। जैसे—खून सुखाना।
अ० [स० सुख+हिं० आना (प्रत्य०)] १. सुखकर प्रतीत होना। अच्छा या भला लगना। २. शरीर के लिए अनुकूल तथा सह्य होना।

**सुखानी**—पु० [अ० सुक्कान ?] मांझी। मल्लाह। (लश०)

**सुखायत**—वि० [स०] सहज में वश में आनेवाला। सीधा और सधा हुआ।

**सुखारा**—वि० [स० सुख+हिं० आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० सुखारी] १. सुखी। २ सरल।

**सुखारि**—पु० [स० सुख√ऋ (गत्यादि)+अण्+इति] उत्तम हवि भक्षण करनेवाले अर्थात् देवता आदि।

**सुखारी**†—वि०=सुखारा।
पु०=सुखारि (देवता)।

**सुखार्थी (र्थिन्)**—वि० [स०] [स्त्री० सुखार्थिनी] सुख चाहनेवाला। सुख की इच्छा करनेवाला।

**सुखाला**—वि० [सं० सुख+हिं० आला (प्रत्य०)] [स्त्री० सुखाली] १ सुखी। २. सहज। सुगम। (पश्चिम)

**सुखालोक**—वि० [स० ब० स०] सुन्दर। मनोहर।

**सुखावत**†—वि०=सुखवत्।

**सुखावती**—स्त्री० [सं०] बौद्धों के अनुसार एक स्वर्ग।

**सुखावतीश्वर**—पु० [स० ष० त०] १. बुद्ध देव। २ बौद्धों के एक देवता।

**सुखावह**—वि० [स० सुख-आ√वह् (ढोना)+अच्] सुख देनेवाला। सुखद।

**सुखास**—वि०[सं० सुख+अस् (खाना)+अच्]जो खाने में बहुत अच्छा जान पड़े।
पु० १. बथुआ। २. तरबूज।
वि० जिससे सुख प्राप्त होने की आशा हो।

**सुखाशा**—स्त्री० [स० ष० त०] सुख पाने की आशा। आराम की उम्मीद।

**सुखाश्रय**—वि० [सं० ष० त०] जिस पर सुख अवलम्बित हो। सुख का आधार।
पुं० ऐसा स्थान जहाँ सुख मिलता हो।

**सुखासन**—पुं० [सं० मध्य० स०] १. वह आसन जिस पर बैठने से सुख हो। सुखद आसन। २. पालकी। ३. आजकल, आराम कुर्सी।

सुखिआ†—वि०=सुखी।

सुखित†—वि० [हिं० सुखना] सूखा हुआ। शुष्क।
वि० [हिं० सुख] सुखी।

सुखिता—स्त्री० [सं० सुख+इतच्-टाप्] सुखी होने की अवस्था या भाव। सुख। आनंद।

सुखित्व—पुं० [सं० सुखी+त्व]=सुखिता।

सुखिया*—वि०=सुखी। उदा०—नानक सुखिया सब संसार। सोइ सुखिया जिन राम अधार।—गुरु नानक।

सुखिर—पुं० [सं० सुखिर?] साँप के रहने का बिल। बाँबी।

सुखी (खिन्)—वि० [सं० सुख+इनि] १. जिसे सुख की अनुभूति हो रही हो। २. जिसे सुख प्राप्त हो। सुखपूर्ण वातावरण में रहने या पलने-वाला। ३. सुखों से भरा। जैसे—सुखी जीवन।
स्त्री० सर्वया छंद का चौवहवाँ भेद जिसके प्रत्येक चरण में आठ सगण और तब लघु और गुरु वर्ण होता है। इसमें १२ और १४ वर्णों पर यति होती है।

सुखीन—पुं० [देश०] एक प्रकार का पक्षी जिसकी पीठ लाल, छाती और पर्दन सफेद तथा चोंच चिपटी होती है।

सुखेतर—पुं० [सं० पंच० त०] सुख से इतर या भिन्न अर्थात् दुःख क्लेश, कष्ट आदि।

सुखेन—अव्य० [सं०] १ सुखपूर्वक। सुख से। २. बहुत ही सहज में। बिना विशेष प्रयास के। उदा०—(क) लरहिं सुखेन काल किन होऊ।—तुलसी। (ख) जो करिवर मुख भूक ही गिरा नचावै सुखेन। —दीनदयाल गिरि।
†पु०=सुखेन (करमर्द)।

सुखेलक—पुं० [सं० सु√खेल (लना)+ण्वुल्-अक्] एक प्रकार का वृत्त या छन्द।

सुखेष्ठ—पुं० [स० सुख+इष्ठन्] शिव। महादेव।

सुखैना*—वि० [स० सुख+हिं० ऐना (प्रत्य०)] १ सुखी। २. सुख देनेवाला। ३. सहज में प्राप्त होनेवाला।

सुखोदक—पुं० [सं० मध्य० स०] गरम पानी। उष्ण जल।

सुखोदय—वि० [सं० ष० त०] जिसका परिणाम सुखद हो।
पु० १. ऐसी स्थिति जिसमें सुख-समृद्धि का आरम्भ हो रहा हो। २ सुख की होनेवाली अनुभूति। ३. कोई मादक पेय। ४. पुराणानुसार एक वर्ष या भू-खंड।

सुखोष्ण—वि० [सं० मध्य० स०] जो इतना उष्ण हो कि सुखद प्रतीत होता हो। गुनगुना।
पु० कुनकुना जल।

सुख्य—वि० [स० √सुख+यत्, सु√(प्रसिद्ध करना)] सुख-संबंधी। सुख का।

सुख्यात—वि० [सं० सु√ख्या (प्रसिद्ध करना)+क्त] [भाव०सुख्याति] जिसकी अच्छी या विशेष प्रसिद्धि हो। प्रसिद्ध। मशहूर।

सुख्याति—स्त्री० [सं० सु√ख्या+क्तिन्] सुख्यात होने की अवस्था या भाव। विशेष रूप से होनेवाली प्रसिद्धि।

सुगंध—स्त्री० [सं०] १. ऐसी गंध जो प्रिय लगती हो। प्रिय महक। सुवास। खुशबू। २. वह पदार्थ जिसमें से अच्छी गंध निकलती हो। खुशबूदार चीज। ३. अगिया घास। गवतृण। ४. श्रीखंड चदन। ५. गंधराज। ६. नील कमल। ७. काला जीरा। ८. गठिवन। ९ चना। १०. भूतृण। ११. लाल सहिजन। १२. मरुआ। १३. माधवी लता। १४. कडेरू। १५. सफेद ज्वार। १६. केवड़ा। १७ रूसा घास। १८. शिलारस। १९. राल। धूना। २०. गंधक। २१. एक प्रकार का कीडा।
वि० १. गंधयुक्त। २. सुगंध से युक्त। सुगंधित। ३. यशस्वी। उदा०—गद्मपत्रेन सुगंध नरेसू।—जायसी।
†स्त्री०=सौगंध।

सुगंधक—पुं० [स० ब० स०] १. द्रोण पुष्पी। गूमा। २. साठी धान। ३. धरणी कद। कदालु। ४. लाल तुलसी। ५. गंध-तृण। ६. नारगी। ७ ककोडा। ८ गधक।

सुगंध-केसर—पु० [स०] लाल सहिजन।

सुगंध-कोकिला—स्त्री० [सं० मध्य०स०] गधकोकिला नामक गध द्रव्य।

सुगंध-गंधा—स्त्री० [स० ब० स०] दाखलदी। दारुहरिद्रा।

सुगंध-गण—पुं० [स०] वैद्यक मे सुगंधित द्रव्यों का एक गण या वर्ग।

सुगंध-तृण—पु० [स० मध्य० स०] गध-तृण। रूसा घास।

सुगंध-त्रय—पु०[स० ष० त०] चदन, बला और नागकेसर, इन तीनों का वर्ग या समूह।

सुगंध-त्रिफला—स्त्री० [स० ष० त०] जायफल, लौंग और इलायची अथवा जायफल, सुपारी तथा लौंग इन तीनों का समूह। (वैद्यक)

सुगंधन—पुं० [स० सु√गन्ध (गत्यादि)+ल्युट्-अन्] जीरा।

सुगंधनाकुली—स्त्री० [सं० मध्य० स०]=गंधनाकुली।

सुगंध-पत्रा—स्त्री० [सं० ब० स०] १. शतमूली। सतावर। २ अपराजिता। ३. धमासा। ४ कठ-अजमोद। ५ वनभाँटा। ६. जीरा। ७ बरियारा। बबला। ८. चिवारा। ९. खजटा।

सुगंधपत्री—स्त्री० [सं० सुगधपत्र+ङीप्] १. जावित्री। २. फूल प्रियगु। ३ खर-जटा। ४. कंकोल।

सुगंध-बाला—स्त्री० [स० सुगंध+हिं० बाला] क्षुप जाति की एक वनौषधि।

सुगंध-भूतृण—पु० [सं०] १. रूसा घास। अगिया घास। २. दे० 'भूतृण'।

सुगंध-मुख्या—स्त्री० [स० ब० स०] कस्तूरी। मृगनाभि।

सुगंध-मूल—पु० [स० ब० स०] हरफा-रेवड़ी। लवलीफल।

सुगंध-मूला—स्त्री० [सं० सुगंध-मूल-टाप्] १. स्थल कमल। स्थल पद्म। २. रासना। ३. आँवला। ४. कपूरकचरी। ५. हरफा-रेवड़ी।

सुगंध-मूली—स्त्री० [सं० सुगंधमूल+ङीप्] गंध पलाशी। कपूरकचरी।

सुगंध-यूथिका—स्त्री० [स० मध्य० स०] छछूंदर।

सुगंधरा—पु० [सं० सुगंध+हि० रा] एक प्रकार का क्षुप और उसका फूल।

सुगंध-रौहिष—पु० [स० मध्य० स०] रौहिष घास। अगिया घास।

सुगंध-वल्कल—पुं० [सं० ब० स०] दारचीनी।

सुगंध-शालि—पुं० [स० नभ्य० स०] वह चावल जिसमें से मीठी भीनी गंध निकलती है। बासमती चावल।

सुगंध-मद्दक—पुं० [सं० ष० त०, जायफल, कंकोल (शीतल चीनी), लौंग, इलायची, कपूर और सुपारी का वर्ग या समूह। (वैद्यक)

**सुगंध-सार**—पुं० [सं० ब० स०] सागौन। साल वृक्ष।

**सुगंधा**—स्त्री० [स०] १. रासन। रासना। २. काला जीरा। ३. कपूर कचरी। ४. खजटा। ५. सौंफ। ६. बाँस-ककोड़ा। ७. नवमल्लिका। नेवारी। ८. पीली जूही। ९. नकुल-कंद। नाकुली। १०. असबरग। ११. सलई। १२. माधवी लता। १३. अनंतमूल। १४. बिजौरा नीबू। १५. तुलसी। १६. निर्गुंडी। १७. एलुआ। १८. बकुची। सोमराजी। १९. एक देवी जिनका स्थान माधव वन में कहा गया है और जिनकी गणना बाइस पीठ-स्थानों में होती है

**सुगंधाढ्य**—वि० [स० तृ० त०] सुगंधित। खुशबूदार।

**सुगंधाढ्या**—स्त्री० [स०] १. त्रिपुरमाली। त्रिपुर मल्लिका। २ बासमती चावल।

**सुगंधि**—स्त्री० [सं०] प्रिय लगनेवाली गंध। खुशबू। वास।
पु० १. परमात्मा। २. आम। ३. कसेरू। ४ पिपरा मूल। ५ धनियाँ। ६. अगिया घास। ७ मोथा। ८. एलुआ। ९. वन-तुलसी। १० गोरख ककड़ी। ११. चन्दन। १२. तुंबरू। १३ अनंतमूल।
वि० =सुगंधित।

**सुगंधिक**—पुं० [स० सुगंधि+कन्] १. गाँडर की जड़। उशीर। खस। २. बासमती चावल। ३. कुमुदिनी। कूँई। ४. पुष्करमूल। ५. काला जीरा। ६ मोथा। ७. एलुआ। ८. शिलारस। ९. कपित्थ। कैथा। १०. पुन्नाग। ११. गंधक।

**सुगंधिका**—स्त्री० [सं०] १. कस्तूरी। मृगनाभि। २. केवड़ा। ३ सफेद अनंतमूल। ५. काली निर्गुंडी।

**सुगंधि-कुसुम**—पु० [सं० ब० स०] १. पीला कनेर। २ असबरग।

**सुगंधित**—भू० कृ० [सं०] १. सुगंध से युक्त किया हुआ। २ (पदार्थ) जिसमें से सुगंधि निकल रही हो।

**सुगंधिता**—स्त्री० [सं०]=सुगंधि।

**सुगंधि-त्रिकला**—स्त्री० [स०]=सुगंध त्रिफला।

**सुगंधिनी**—स्त्री० [सं०] १. आराम शीतला नाम का शाक। सुनदिनी। २. पीली केतकी।

**सुगंधि-पुष्प**—पुं० [स०] धारा कदंब।

**सुगंधि-फल**—पु० [स०] शीतल चीनी। कबाब चीनी।

**सुगंधि-माता (तृ)**—स्त्री० [स० ष० त०] पृथिवी।

**सुगंधि-मूल**—पुं० [सं०] खस। उशीर।

**सुगंधि-मूषिका**—स्त्री० [सं०] छछूँदर।

**सुगंधी (न्धिन्)**—वि० [सं० सुगंध+इनि] जिसमें अच्छी गंध हो। सुवासित। सुगंधयुक्त। खुशबूदार।
पु० एलुआ।
†स्त्री०=सुगंधि।

**सुग**—वि० [सं० सु+ग=गति] १.अच्छी तरह, तेज या बहुत चलनेवाला। २. खूब जागते या सचेत रहनेवाला। ३. अच्छा गानेवाला। ४. सुगम। सहज। ५. सुलभ। ६. सुबोध।
पुं० १. सुभार्ग। २. सूत्र। ३. विष्ठा। मल।

**सुगठन**—स्त्री० [सं० सु (उप०)+हिं० गठन] शरीर के अंगों की अच्छी गठन।
वि०=सुगठित।

**सुगठित**—वि० [सं० सु+हिं० गठित] १. अच्छी तरह से गठा हुआ। २. सघटित।

**सुगत**—पुं० [सं०] १. बुद्ध देव का एक नाम। २ बुद्ध देव का अनुयायी। बौद्ध।
वि० [सं० सुगति] १. अच्छी गतिवाला। अच्छे आचरणवाला। २. जिसे सुगति अर्थात् मोक्ष प्राप्त हुआ हो। ३. सुगम।
†स्त्री०=सुगति।

**सुगतदेव**—पुं० [सं० कर्म० स०] गौतम बुद्ध।

**सुगतायतन**—पुं० [स० ष० त०] बौद्ध मन्दिर।

**सुगति**—स्त्री० [सं० कर्म० स०] १. अच्छी या उत्तम गति। २. सदाचरण। ३. मरने के उपरांत होनेवाली उत्तम गति। मोक्ष। ४. एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

**सुगन**—पुं० [देश०] छकड़े में गाड़ीवान के बैठने की जगह के सामने आड़ी लगी हुई दो लकड़ियाँ जिनकी सहायता से बैल खोल लेने पर भी गाड़ी खड़ी रहती है।

†पुं०=सगुन।

**सुगना**†—पुं० [सं० शुक, हिं० सुग्गा] सुग्गा। तोता।
†पुं०=सहिजन।

**सुगभस्ति**—वि० [स० ब० स०] अत्यत दीप्तिमान्। बहुत चमकीला।

**सुगम**—वि० [स० सु√गम् (जाना)+अच्] [भाव० सुगमता] १. (स्थान) जहाँ सरलता से पहुँचा जा सके। २. (मार्ग) जिस पर आसानी से चला और आगे बढ़ा जा सके। ३.(कार्य) जिसका सपादन या साधन सुलभपूर्वक किया जा सके।

**सुगमता**—स्त्री० [सं० सुगम+तल्—टाप्] १. सुगम होने की अवस्था या भाव। सरलता। आसानी। जैसे—इससे आप के कार्य में बहुत सुगमता हो जायगी। २. वह गुण या तत्त्व जिससे कोई कार्य सरलता से और जल्दी से संपन्न हो जाता है।

**सुगम्य**—वि० [सं० सु√गम् (जाना)+यत्] स्थान जिसमें सहज में प्रवेश हो सके। सरलता से जाने योग्य।

**सुगर**—पुं० [सं० ब० स०] शिंगरफ। हिंगुल।
†वि०=सुगढ़।
†वि० =सुगम।

**सुगरूप**—पुं० [देश०] एक प्रकार की सवारी जो प्रायः रेतीले देशों में काम आती है।

**सुगल**†—पुं०=सुगीव।

**सुग-सुगा**†—स्त्री० [अनु०] कानाफूसी।

**सुग-सुगाना**†—अ० [अनु०] कानाफूसी करना।

**सुगह**—वि० [सं० सु+गाह] जो सहज में पकड़ा या ग्रहण किया जा सके।

**सुगहना**—स्त्री०[सं०]प्राचीन काल में यज्ञ-भूमि के चारों ओर बनाया जानेवाला घेरा जिसके परिणाम-स्वरूप अस्पृश्यों का प्रवेश रुक जाता था।

**सुगाली**—स्त्री० [ सं० ब० स० ] १. सुन्दर शरीरवाली स्त्री। २. संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

सुसाध्य—वि० [सं० ब ब०] (नदी) जिसमें सुख से स्नान किया जा सके; अथवा जिसे सहज में पार किया जा सके।

सुसाना*—अ० [सं० शोक] १. दुःखी होना। २. दुःखी होकर नाराज होना। बिगड़ना।
†स०=दुःखी करना।
†अ० [?] शक या सन्देह करना।

सुसाल†—पुं०=सुकाल। (डिं०)

सुसीत—पुं० [पा० स०] =सुसीतिका।

सुसीतिका—स्त्री० [सं० ब० स०] आर्या छन्द का एक भेद।

सुसुंडा—स्त्री० [सुसुण्डा, ब० स०] गुंडासिनी तृण। गुंडाला।

सुसुरा†—वि०[सं० सुश्रुत] १. जिसने अच्छे गुरु से मंत्र लिया हो। २. जिसने अच्छे गुरु से शिक्षा पाई हो।

सुसृह—पुं० [सं० प्रा० स०] सुन्दर घर।

सुसृही—वि० [स० सुसृह+इनि] १. जिसके पास सुन्दर घर हो। २. जिसकी पत्नी सुन्दर और सुयोग्य हो।

सुसेव्या—वि० स्त्री० [स० ब० स०] सुंदर रूप से गानेवाली।
स्त्री० किन्नरी।

सुसैया—स्त्री० [हिं० सुत्ता] अँगिया। चोली।

सुसौतम—पुं० [स० प्रा० स०] गौतम बुद्ध।

सुस्या†—पुं० [सं० शुक] [स्त्री० सुसी] तोता।

सुस्या-मंजी—पुं० [हिं० सुस्या+पत्र] एक प्रकार का अगहनी धान।

सुस्या-साँप—पुं० [हिं० सुस्या+साँप] एक प्रकार का साँप।

सुस्यी—स्त्री० [हिं० सुस्या का स्त्री०] मादा तोता। तोती।

सुह्म—पुं० [?] वङ्ग और सौर नदियों के बीच के प्रदेश का पुराना नाम।

सुह्मी—वि० [सुह्म प्रदेश से] सुह्म प्रदेश का।
पुं० सुह्म प्रदेश का निवासी।
स्त्री० सुह्म प्रदेश की बोली।

सुह्यचि—पुं० [सं० ब० स०] १. चोरक नामक गंध द्रव्य। २ पिपरामूल।

सुह्यह—पुं० [सं०] फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ या अच्छे ग्रह। जैसे—बृहस्पति, शुक्र आदि।

सुह्रीव—वि० [सं० ब० स०] अच्छी या सुन्दर ग्रीवा (गरदन) वाला।
पुं० १. विष्णु या कृष्ण के चार घोड़ों में से एक। २ वानरों का राजा जो बलि का भाई और श्रीरामचन्द्र का सखा तथा सहायक था। ३. वर्तमान अवसर्पिणी के नवें अर्हत के पिता का नाम। ४. इन्द्र। ५. शिव। ६. एक प्रकार का प्राचीन अस्त्र। ७. शंखा ८. राज-हंस। ९ एक प्राचीन पर्वत। १०. वास्तु-कला में एक प्रकार का मंडप। ११. नायक। सरदार।

सुह्रीवी—स्त्री० [सं० सुग्रीव-ङीप्] दक्ष की एक कन्या तथा कश्यप की पत्नी जो घोड़ों, ऊँटों तथा गधों की जननी कही गई है।

सुह्रीवेश—पुं० [स० ब० स०] श्रीरामचन्द्र।

सुह्वट—वि० [सं०] १. जिसकी सुंदर गठन या बनावट हो। सुडौल। २. जो अच्छी तरह और सहज में बन सकता हो।

सुह्वटित—वि० [स० सुह्वट+इतच्] १. गठन या बनावट के विचार से जो सुडौल फलत. सुन्दर हो। २. गठे हुए शरीरवाला। २. संघटित।

सुह्वदय—वि० [सं०] जिसे मनमाने ढंग से दबा या मोड़कर सभी प्रकार के रूपों में लाया जा सके। (प्लैस्टिक) जैसे—सुह्वद्य मिट्टी।
पुं० दे० 'सुलभ्य'।

सुह्वद्यता—स्त्री० [सं० सुह्वद्य+तल्—टाप्] सुह्वद्य होने की अवस्था, गुण या भाव। (प्लैस्टिसिटी)

सुह्वड़—वि० [स० सुघट] [भाव० सुह्वड़ई, सुह्वड़पन] १. अच्छी तरह गढ़ा हुआ; फलत. सुडौल और सुन्दर। २ जो हर काम अच्छी तरह या ठीक ढंग से कर सकता हो। कुशल। निपुण। होशियार।

सुह्वड़ई—स्त्री० १. =सुह्वडपन। २ =सुघरई (रागिनी)।

सुह्वड़ता—स्त्री०=सुह्वड़पन।

सुह्वड़पन—पुं० [हिं० सुह्वड+पन (प्रत्य०)] सुह्वड़ होने की अवस्था, गुण या भाव। सुघड़ई।

सुह्वड़-भलाई—स्त्री० [हिं०] १. कौशल या चतुराई से भरी हुई चापलूसी की बातें। २. मीठी पर स्वार्थपूर्ण बातें करने का गुण या योग्यता।

सुह्वड़ाई†*—स्त्री०=सुह्वड़ई।

सुह्वड़ापा—पुं० [हिं० सुह्वड+आपा (प्रत्य०)]=सुह्वडपन।

सुह्वड़ी—स्त्री० [हिं० सु+घड़ी] अच्छी शुभ घड़ी।

सुह्वर†—वि०=सुह्वड।

सुह्वरई†—स्त्री०=सुघरई (सुह्वड़पन)।

सुह्वरई कान्हड़ा—पुं० [हिं०सुघरई+कान्हड़ा] संपूर्ण जाति का एक संकर राग।

सुह्वरई-टोड़ी—स्त्री० [हिं० सुघरई+टोडी] संपूर्ण जाति की एक संकर रागिनी।

सुह्वरता—स्त्री०=सुह्वड़ता (सुह्वडपन)।

सुह्वरपन†—पुं०=सुह्वड़पन।

सुह्वराई—सुघड़ाई (सुह्वडपन)।

सुह्वरी—वि० हिं० सुघर (सुह्वड़) का स्त्री०।
स्त्री० [हिं० सु+घड़ी] अच्छी घड़ी। शुभ काल या समय। सुघड़ी।

सुह्वोष—वि०[सं०] जो उच्च या मधुर घोष करता हो। सुन्दर घोष या स्वरवाला।
पुं० चौथे पांडव नकुल के शंख का नाम।

सुह्वोषक—पुं० [सं० ब० स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

सुचंग—वि० [हिं० सु+चंगा] १. अच्छा। बढ़िया। २. सुन्दर।
पुं० घोड़ा। (डिं०)

सुचंद—वि०=सुचंग।
पुं० [हिं० सु+चाँद] पूर्णिमा का चंद्रमा। उदा०—गुन ज्ञान-मान सुचंद है। गंभीर।

सुचंदन—पुं०[सं० ब० स० प्रा० स०] पतंग या बक्कम नाम की लकड़ी जिसका व्यवहार औषध और रंग आदि में होता है। रक्तसार। सुरंग।

सुचंद्र—पुं० [स० ब० स०] १. एक गंधर्व का नाम। २. सिंहिका के पुत्र का नाम।

सुचंद्रा—स्त्री० [सं० सुचन्द्र-टाप्] एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)

सुच*—वि०=शुचि।

सुचकना†—अ०=सकुचना। उदा०—वो जब घर से निकले सुचकते-सुचकते। कुछ कदम भी उठाये सिसकते सिसकते।—नजीर।

**सुचक्षु(क्षुस्)**—वि० [सं० ब० स०] १. सुन्दर चक्षुओं या नेत्रोंवाला। पुं० १. शिव। २. पण्डित। विद्वान्। ३. गूलर। स्त्री० एक प्राचीन नदी।

**सुचना**—स० [स० सचय] संचय करना। एकत्र करना। इकट्ठा करना।
*अ० एकत्र किया जाना। इकट्ठा होना।
†अ० [हिं० सोचना का अ०] सोचा या विचारा जाना। (मब०)

**सुचरित**—वि० [सं०] सुचरित्र।

**सुचरिता**—स्त्री० [स० सुचरित-टाप्] १. अच्छे आचरणवाली स्त्री। २ पतिव्रता स्त्री।

**सुचरित्र**—वि० [स० ब० स०] [भाव० सुचरित्रता] जिसका चरित्र शुद्ध हो। उत्तम आचरणवाला। सच्चरित्र।

**सुचरिता**—वि० [स०] अच्छे चरित्र या शुद्ध आरचण वाली (स्त्री)। स्त्री० सुचरिता।

**सुचा***—स्त्री० [स० सूचना] ज्ञान। चेतना। सुध।
*वि०=सुचि।

**सुचाना**—स० [हिं० सोचना का प्रे०] १. किसी को कुछ सोचने या समझने मे प्रवृत्त करना। २ किसी का किसी बात की ओर ध्यान आकृष्ट करना। सुझाना।

**सुचार***—स्त्री० [स० सु+हिं० चाल] सुचाल। अच्छी चाल।
वि० सदाचारी और सच्चरित्र।
वि० [स० सुचारु] मनोहर। सुन्दर।

**सुचारु**—वि० [सं० सु+चारु] अत्यंत सुन्दर। अतिशय मनोहर। बहुत खूबसूरत।

**सुचाल**—स्त्री० [स० सु+हिं० चाल] उत्तम आचरण। अच्छी चाल। सदाचार।

**सुचालक**—वि०[सं०]वह (वस्तु) जिसमे विद्युत्, ताप आदि का परिचालन सुगमता से हो सके। सुसवाहक। (गुड कंडक्टर)

**सुचाली**—वि० [सं० सु+हिं० चाल+ई (प्रत्य०)] १ जिसकी चाल या गति अच्छी हो। २. अच्छे आचरणवाला। सच्चरित्र।
†स्त्री० पृथ्वी। (डिं०)

**सुचाव**—पु० [हिं० सुचाना] १. सुचाने की क्रिया या भाव। २. दे० 'सुझाव'।

**सुचि**—स्त्री० [सं० सूची] सुई।
वि०=शुचि।

**सुचित**—वि० [स० सुचित्त] १. सुदर चित्तवाला अर्थात् जिसके चित्त मे विकार न हो। २. जिसे किसी प्रकार की चिंतापस्त न किये हुए हो। ३. जो सब प्रकार के कामों, झगड़ों आदि से निवृत्त हो चुका हो।
†वि० शुचि (पवित्र)।

**सुचितई†**—स्त्री० [हिं० सुचित+ई (प्रत्य०)] १. सुचित होने की अवस्था या भाव। निश्चिंतता। बे-फिक्री। २. मन की एकाग्रता और शान्ति। ३. अवकाश। फुरसत।

**सुचिता**—स्त्री०=शुचिता (पवित्रता)।

**सुचिती**—वि०=सुचित।

**सुचित्त**—वि० [सं० ब० स०] [भाव० सुचित्तता] सुचित। (दे०)



**सुचित्र**—वि० [स०] अनेक प्रकारों या रंगों का।
पु० सुंदर चित्र।

**सुचित्रक**—पुं० [सं० सुचित्र+कप्] १ मयूरग नामक पक्षी। मुरगाबी। २. चितला साँप।

**सुचिभा**—स्त्री० [सं० सुचित्र-टाप्, ब० स०] चिभंटा या फूट नामक फल।

**सुचिमंत**—वि० [सं० शुचि+मत्] शुद्ध आचरणवाला। सदाचारी।

**सुचिर**—वि० [स० प्र० स०] १. बहुत दिनों तक बना रहनेवाला। चिरस्थायी। २. बहुत दिनों का। पुराना। प्राचीन।
पु० बहुत अधिक समय। दीर्घ काल।

**सुचिरायु(षु)**—वि० [स० ब० स०] दीर्घ या लबी आयुवाला।
पुं० देवता।

**सुची***—वि०=शुचि (पवित्र)।
स्त्री०=शची (इन्द्राणी)।

**सुचीत***—वि० [स० सुचित्त] १. उत्तम। भला। शुभ। २ मनोहर। सुन्दर। ३. दे० 'सुचित'।

**सुचुटी**—स्त्री० [स० प्रा० स०] १. त्रिफला। २. सँडसी।

**सुचेत (तस्)**—वि० [स०] सचेत। सावधान।
*वि०=सुचित्त।

**सुचेतन**—पुं० [स०] विष्णु। (डिं०)
वि०=सुचेत।

**सुचेता**—वि०=सुचेत।

**सुचेलक**—पुं० [स० सुचेल+कन्] बढ़िया और बहुमूल्य कपडा। पट।
वि० जो अच्छे कपड़े पहने हो।

**सुच्छंद***—वि०=स्वच्छंद।

**सुच्छ**†—वि०=स्वच्छ।

**सुच्छत्र**—पुं० [स० ब० स०] शिव का एक नाम।

**सुच्छत्री**—स्त्री० [स०] पजाब की सतलज नदी।

**सुच्छद**—वि० [सं०] सुन्दर पत्तोवाला।

**सुच्छम**—पु० [?] घोड़ा। (डिं०)
†वि०=सूक्ष्म।

**सुच्छाय**—वि०[सं० ब० स०] १. (वृक्ष) जिसकी छाया अच्छी और यथेष्ट हो। २. (रत्न) जो यथेष्ट चमकीला हो।

**सुजंगी**—पुं०[गड़वाली] भाँग का वह पौधा जिसमे बीज लगे हों।

**सुजंघ**—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर जाँघोंवाला।

**सुजड़**—पुं०[?] तलवार। (डिं०)

**सुजड़ी**—स्त्री०[?] कटारी। (डिं०)

**सुजन**—वि० [कर्म० स०] [भाव० सुजनता] १. नेक। भला। २. कृपालु। दयालु।
पुं० १. भला आदमी। नेक आदमी। २. दूसरो की सहायता करनेवाला। आदमी।
पुं०=स्वजन।

**सुजनता**—स्त्री०[स० सुजन+तल्-टाप्]१ सुजन अर्थात् भले होने की अवस्था या भाव। भलमनसत। २. कृपालुता।

**सुजन-रंजनी**—स्त्री०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सुजनी**—स्त्री० [फा० सोजनी] एक तरह की बड़ी और मोटी बिछाने की चादर।

**सुजन्मा (न्मन्)**—वि० [सं० ब० स०] १. जिसका उत्तम रूप से जन्म हुआ हो। उत्तम रूप से जन्मा हुआ। सुजातक। २. जो विवाहित पुरुष और स्त्री से उत्पन्न हुआ हो फलतः जो जारज न हो। ३. अच्छे कुल में उत्पन्न।

**सुजय**—वि०[स० सु√जी (जीतना)+अच्]जो सहज में जीता जा सकता हो।

**सुजल**—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० सुजला] जहाँ जल यथेष्ट हो और सहज मे मिलता हो।
पुं० कमल। पद्म।

**सुजल्प**—पु० [सं० प्रा० स०] १. उत्तम या सुन्दर कथन। २. सुन्दर भाषण।

**सुजस**†—पुं०=सुयश।

**सुजाक**†—पुं० =मूजाक।

**सुजागर**—वि०[स० सु =भली-भाँति+जागर=प्रकाशित होना] प्रकाशमान्। शोभन और सुन्दर।

**सुजात**—वि०[स० कर्म० स०]१. जो उत्तम कुल में जन्मा हो। २. जो औरस सतान हो, जरज न हो। ३. सुन्दर।
पु० साँड। (बौद्ध)

**सुजातक**—पुं० [स० सुजात+कन्] सौंदर्य। सुन्दरता।

**सुजाता**—स्त्री०[स०]१ गोपी चन्दन। २ मगध की एक बौद्ध-कालीन ग्रामीण कन्या जिसने गौतम बुद्ध को बुद्धत्व प्राप्त करने के उपरांत अपने यहाँ निमत्रित करके भोजन कराया था।

**सुजाति**—वि०[स० प्रा० स०] अच्छी जाति का।
स्त्री० अच्छी और उत्तम जाति।

**सुजातिया**—वि०[स० सु+जाति+इया (प्रत्य०)] उत्तम जाति का। अच्छे कुल का।
†वि०[सं० स्व+जाति+इया (प्रत्य०)] किसी व्यक्ति की दृष्टि से उसकी जाति का।

**सुजान**—वि०[स० सज्ञान] [भाव० सुजानता] १. समझदार। चतुर। सयाना। २ कुशल। निपुण। प्रवीण। ३. सुविज्ञ। ४ सज्जन।
पु०१. पति या प्रेमी। २ परमात्मा।

**सुजानता**—स्त्री०[हि० सुजान+ता (प्रत्य०)] सुजान होने की अवस्था धर्म या भाव। सुजानपन।

**सुजानी**†—वि०=सुजान।

**सुजाब**—पुं०[स० सुजात] पुत्र। (डिं०)

**सुजावा**—पुं०[देश०] बैलगाड़ी में की वह लकड़ी जो पैजनी और कड़ में जड़ी रहती है।

**सुजिह्व**—वि०[सं० ब० स०]१. जिसकी जिह्वा या जीभ सुन्दर हो। २. मीठा बोलनेवाला। मधुर-भाषी।

**सुजीता**—स्त्री०[स० ब० स०] गोपी चंदन।

**सुजीर्ण**—वि०[सं० प्रा० स०]१. (भोजन) अच्छी तरह पचा हुआ। (खाना) जो खूब पच गया हो। २. (पदार्थ) जो बहुत पुराना और जर्जर हो गया हो।

**सुजेय**—वि०[सं० सु√जी (जीतना)+यत्] जो सहज में जीता जा सकता हो।

**सुजोग***†—पुं०=सुयोग।

**सुजोधन***—पुं०=सुयोधन।

**सुजोर**—वि०[स० सु (या फा० शह ?)+फा० ज़ोर] [भाव० सुजोरी] १. जोरदार। प्रबल। २. दृढ़। पक्का। मजबूत।

**सुज्ञ**—वि०[स० सु√ ज्ञा+क] सुविज्ञ।

**सुझाऊ**—वि०[हि० सूझना] [स्त्री० सुझाऊ]१. जिसे दिखाई देता हो। 'अपा' का विपर्याय। २ चतुर। होशियार। (पश्चिम)

**सुझाना**—स०[हि० सूझना का प्रे०] १ किसी के ध्यान मे कोई नई बात लाना। नई तरकीब बताना। २. सुझाव के रूप में किसी के सामने कोई बात रखना। किसी को उसे सुझाये हुए ढग से काम करने के लिए प्रवृत्त करना।

**सुझाव**—पु०[हि० सुझाना] १ सुझाने की क्रिया या भाव। २ वह नयी बात जो किसी को सुझाई गई हो या जिसकी ओर ध्यान आकृष्ट किया गया हो। (सजेशन)

**सुटंक**—वि०[स०] कठोर, कर्कश या जोर का (शब्द)।

**सुटकुन**†—स्त्री०[हि० सुटका का अल्पा०] पतली छोटी छडी।
†स्त्री०=सिटकिनी।

**सुटकना**—स० [हि० सुटका+ना (प्रत्य०)]सुटका मारना। चाबुक लगना।
अ०१ =सटकना। २ =सुडकना। ३ =मिकुडना।

**सुठ**†—वि० =सुठि (सुन्दर)।

**सुठहर**†—पुं०[स० सु-+हि० ठहर=जगह] अच्छा ठिकाना। ठहरने का अच्छा स्थान।

**सुठार***—वि०=सुडार (सुडौल)।

**सुठि**†—वि० [स० सुष्ठ्] १. सुन्दर। २ बढ़िया। अच्छा। ३. बहुत अधिक। ४ पूरा। समूचा।
अव्य० निरा। बिलकुल।

**सुठीला**†—वि०=सुठि (सुन्दर)।

**सुठौन***—वि० दे० 'सुठि'।
†स्त्री०[हि० सु-+ठवन]सुन्दर ठवन या बैठने आदि का ढग।

**सुड़क**—स्त्री०[हि० सुडकना] १ सुडकने की क्रिया या भाव। २. कोई चीज सुड़कते समय होनेवाला शब्द।

**सुड़कना**—स०[अनु०] किसी तरल पदार्थ को नाक की राह, साँस के साथ भीतर खीचना। नास लेना।

**सुड़-सुड़**—स्त्री०[हि० सुडसुडाना]१. सुड़सुड़ाने की क्रिया या भाव। २. सुड़सुड़ाने पर उत्पन्न होनेवाला शब्द।

**सुड़सुड़ाना**—स०[अनु०] कोई कार्य करते समय सुडसुड शब्द उत्पन्न करना। जैसे—नाक सुड़सुड़ाना। हुक्का सुड़सुड़ाना।
†अ० सुड़सुड शब्द करना।

**सुडीनक**—पु०[स० प्रा० स०] पक्षियो की एक विशेष प्रकार की उड़ान।

**सुडुकना**—स०=सुडकना।

**सुडौल**—वि०[स० सु+हि० डौल] [भाव० सुडौलपन]१. सुन्दर डौल या आकारवाला। २. जिसके अंगो में आनुपातिक सामजस्य हो।

**सुड्डा**†—पुं०[देश०] [स्त्री० अल्पा० सुड्डी] धोती की वह लपेट जिसमें रुपया-पैसा रखते हैं। अटी। आँट।

**सुढंग**—वि०[सं० सु+हिं० ढंग] जिसका ढग, प्रकार या रीति सुन्दर हो। पुं० अच्छा ढंग, प्रकार या रीति।

**सुतर**—वि०[स० सु+हिं० ढलना] प्रसन्न और दयालु होकर सहज मे अनुकम्पा करनेवाला।
†वि०=सुघड।

**सुढार***—वि०=सुडौल।

**सुत-घड़िया**†—पुं० [हिं० सुत (सोना)+घड़िया (गढ़नेवाला)] सुनार। (डिं०)

**सुतना**—स०१.=सुनना। २.=सुनाना।

**सुतंत्र, सुतंतर**†—वि०=स्वतंत्र।

**सुतंतु**—पुं०[स० ब० स०]१. शिव। २. विष्णु।

**सुतंत्र**†—वि०=स्वतन्त्र।

**सुतंत्रि**—पु०[सं० ब० स०]१ वह जो तार के बाजे (वीणा आदि) बजाने मे प्रवीण हो। वह जो तत्र-वाद्य अच्छी तरह बजाता हो। २. वह जो कोई बाजा अच्छी तरह बजाता हो।
वि०१ बढ़िया तारोवाला (बाजा)। २ फलतः मधुर स्वरवाला।

**सुत**—पु०[स०] [स्त्री० सुता]१. माता या पिता अथवा दोनों की दृष्टि से वह बालक जो उ के रज और वीर्य से उत्पन्न हुआ हो। पुत्र। आत्मज। बेटा। २ जन्म-कुडली मे लग्न से पाँचवाँ घर जहाँ सन्तान के सम्बन्ध मे विचार किया जाता है।
वि०१. उत्पन्न। जात। २ पार्थिव।
पु० बीज की सख्या।

**सुतकरी**—स्त्री०[हिं० सूत+करी] स्त्रियो के पहनने की पुरानी चाल की जूती।

**सुत-जीवक**—पु०[स० सुत√जीव (जीवित करना) ण्वुल्—अक्]पुत्र-जीव (वृक्ष)।

**सुतत्व**—पु०[सं० सुत+त्व] सुत होने की अवस्था, धर्म या भाव।

**सुतवा**—वि० स्त्री०[सं० सुत√दा (देना)+क—टाप्] सुत या पुत्र देने-वाली।
स्त्री०=पुत्रदा (लता)।

**सुतवार**†—पु०=सूचवार।

**सुतनु**—वि०[सं० सु+तनु] १. सुन्दर शरीरवाला। खूबसूरत। २. सुकुमार शरीरवाला। नाजुक और दुबला-पतला।
स्त्री०१. सुन्दरी स्त्री। २. अकूर की पत्नी का नाम। ३. उग्रसेन की एक कन्या।

**सुतनुता**—स्त्री०[सं० सुतनु+तल्—टाप्] सुतनु होने की अवस्था, गुण या भाव। सुन्दरता।

**सुतप**—वि०[स० सुत√पा (पीना)+क, ब० स०] सोमपान करनेवाला।

**सुतपा (पस्)**—वि० [सं० ब० स०] बहुत अधिक तपस्या करनेवाला।
पु० १. सूर्य। २. विष्णु।

**सुत-पेय**—पुं०[सं०] यज्ञ में सोम पीने की क्रिया। सोमपान।

**सुत-याग**—पुं०[सं०] पुत्र की कामना से किया जानेवाला यज्ञ। पुत्रेष्टि-यज्ञ।

**सुतर**—वि०[स० ब० स०] (जलाशय) जो सुख या आराम से तैरकर या नाव आदि से पार किया जा सके।
†पु०=शुतुर (ऊँट)।

**सुतर-नाल**—स्त्री०=शुतुरनाल।

**सुतरां**—अव्य० [स० सुतराम्] १. अतः। इसलिए। २. और भी। अपितु। किं बहुना। ३. विवश होकर। लाचारी की हालत में। ४. बहुत अधिक। अत्यन्त। ५. अवश्य। जरूर।

**सुतरा**—पु०[हिं० सूत] सूत की तरह का वह पतला चमड़ा जो प्रायः उँगलियो मे नाखून की जड़ के पास उचड़कर निकलने लगता है।

**सुतरी**—पु०[फा० शुतुर] ऊँट के से रंगवाला बैल।
स्त्री०[?]१. करघे में की वह लकड़ी जो पाई में साँथी अलग करने के लिए साँथी के दोनों तरफ लगी रहती है। २. एक प्रकार की घास जिसे हरे-बाल भी कहते हैं।
†स्त्री० १.=सुतारी। २.=सुतली।

**सुतर्दन**—पु०[स० ब० स०] कोकिल पक्षी। कोयल।

**सुतल**—पु०[स० ब० स०]पुराणानुसार सात पाताल लोको मे से एक जो किसी के मत से दूसरा और किसी के मत से छठा लोक है।

**सुतली**—स्त्री०[हिं० सूत+ली (प्रत्य०)] रूई, सन या इसी प्रकार के और रेशो के सूतो या डोरो को एक मे बटकर बनाया हुआ लबा और कुछ मोटा लड जिसका उपयोग चीजें बाँधने, कूएँ से पानी खीचने, पलग बुनने आदि कामो मे होता है। डोरी। रस्सी।

**सुत-वत्करा**—स्त्री०[स०]वह स्त्री जिसने सात पुत्रों को जन्म दिया हो।

**सुतवान्(वत्)**—वि०[स० सुत+मतुप्-म=व-नुम्-दीर्घ] पुत्रोंवाला।

**सुतवाना**†—स०=सुलवाना।

**सुत-स्थान**—पु०[स० ष० त०]जन्म-कुडली मे लग्न से पाँचवाँ स्थान जहाँ से सन्तान सम्बन्धी विचार होता है।

**सुतहर**†—पु०=सुतार।

**सुतहा**†—वि०, पु० [हिं० सूत+हा (प्रत्य०)] [स्त्री० सुतही] १. सूत-सबधी। सूत का। २. सूत का बना हुआ। सूती।
पु० सूत का व्यापारी।

**सुतहार**†—पु०=सुतार।

**सुतही**†—स्त्री०=सुतुही।

**सुतहीनिया**†—पुं०=सुपौनिया।

**सुता**—स्त्री०[सं०]१. पुत्री। बेटी। २. सखी। सहेली। (डिं०)

**सुतात्मज**—पु०[स० ष० त०] [स्त्री० सुतात्मजा] १. लड़के का लड़का। पोता। २. लड़की का लड़का। नाती।

**सुताल**—वि०[सं० ब० स०] अच्छे स्वरवाला। सु-स्वर।

**सुताना**†—स०=सुलाना।

**सुता-पति**—पुं०[सं० ष० त०] किसी की दृष्टि से उसकी कन्या का पति। दामाद। जामाता।

**सुतार**—वि०[सं०]१. चमकीला। २. जिसकी आँखों की पुतलियाँ सुन्दर हों।
पुं०१. एक प्रकार का सुगन्धि द्रव्य। २. गुरु से पढ़े हुए अध्यात्म-शास्त्र का ठीक और पूरा ज्ञान जिसकी गिनती सांख्य-दर्शन में सिद्धियों में की गई है।

पुं०[सं० सूत्रकार] [भाव० सुतारी]१. बढ़ई। २. कारीगर।
†पुं०[?]१. सुख-सुभीता। २. हुद-हुद (पक्षी)।

**सुतारका**—स्त्री०[सं०] चौबीस शासन देवियों में से एक। (बौद्ध)

**सुतारा**—स्त्री०[सं०]१. सांख्य के अनुसार (क) नौ प्रकार की सुष्टियों में से एक और (ख) आठ प्रकार की सिद्धियों मे से एक।

**सुतारी**—स्त्री०[हिं० सुतार+-ई (प्रत्य०)]१. सुतार या बढ़ई का काम। २. वह छुआ जिससे मोची चमड़ा सीते हैं। ३. पुरानी चाल का एक प्रकार का हथियार।
पुं० कारीगर। शिल्पी।

**सुतार्थी (र्थिन्)**—वि० [सं०] पुत्र की कामना करनेवाला। जिसे पुत्र की अभिलाषा हो।

**सुताल**—पुं०[सं०] ताल का एक भेद (संगीत)।

**सुतालीं**†—स्त्री०=सुतारी।

**सुतावना**†—स०=सुलाना।

**सुतासुत**—पुं०[सं० ष० त०] पुत्री का पुत्र। दौहित्र। नाती।

**सुतिक्त**—पुं०[सं०] पित्त-पापड़ा।
वि० बहुत अधिक तिक्त या तीता।

**सुतिक्तक**—पुं० [सं०] १ चिरायता। २. पारिभद्र। परहद। ३ पित्त-पापड़ा।

**सुतिक्ता**—स्त्री०[सं०]१. तोरई। कोशातकी। २. शल्लकी। सलई।

**सुतिन***—स्त्री०=सुतनु (सुन्दर स्त्री)।

**सुतिनी**—स्त्री०[सं०] पुत्रवती। स्त्री जिसे पुत्र हो।

**सुतिया**†—स्त्री०[देश०] गले में पहनने का हुंसुली नाम का गहना।

**सुतिहार**†—पु०=सुतार (बढ़ई)।

**सुती (तिन्)**—पुं० [सं० सुति] [स्त्री० सुतिनी] जिसके आगे बेटा या बेटे हों, फलतः पिता।

**सुतीक्ण**—पुं०=सुतीक्ष्ण।

**सुतीक्ष्ण**—वि० [सं०] १. बहुत अधिक तीक्ष्ण या तीखा। २. बहुत अधिक तीता। ३ दरद भरा। पीड़ा-युक्त।
पुं०१. अगस्त्य मुनि के भाई जो वनवास के समय श्री रामचन्द्र जी से मिले थे। २ सहिजन।

**सुतीक्ष्णक**—पुं०[सं०] सुतीक्ष्ण।

**सुतीक्ष्णका**—स्त्री०[सं०] सरसों। सर्षप।

**सुतीक्ष्णा**†—पुं० =सुतीक्ष्ण।

**सुतीर्थ**—वि०[सं०] (जलाशय) जो सहज में पार किया जा सके।
पुं०१. शिव। २ एक पौराणिक पर्वत।

**सुतुंग**—वि०[सं०] बहुत अधिक ऊँचा।
पुं० १. नारियल का पेड़। २. ज्योतिष में ग्रहों का उच्चांश।

**सुतुही**†—पुं०[हिं० सुतुही] बड़ी सुतुही।

**सुतुही**—स्त्री० [सं० शुक्ति]१. सीपी, जिससे प्रायः छोटे बच्चों को दूध पिलाते हैं। २. बीच में से चिसकर काटी हुई वह सीपी जिससे आम के छिलके छीले जाते हैं, पोस्ते में से अफीम खुरची जाती है, तथा इसी प्रकार के कुछ और काम किये जाते हैं।

**सुतून**—पुं०[फा०] स्तंभ। स्तम्भ।

**सुतेकर**—पुं०[सं०] वह जो यज्ञ करता हो। ऋत्विक्।

**सुतेजन**—पुं०[सं०]१. धामिन नामक वृक्ष। २. बहुत नुकीला तीर।
वि० १. तेज धारवाला। २ नुकीला।

**सुतेजा (जस्)**—पुं० [सं०]१ जैनों के अनुसार गत उत्सर्पिणी के दसवें अर्हत का नाम। २ हरद्वर नाम का पौधा।

**सुतोष**—वि०[स०] सन्तुष्ट।
पुं० पूर्ण तुष्टि। २ सतोष।

**सुत्ता**†—वि० [हिं० सोना] [स्त्री० सुत्ती] सोया हुआ। (पश्चिम)

**सुत्तर**†—पु०[हिं० सूत या फा० शुतुर?]जुलाहो के करघे का वह बाँस जिसमें कघी बँधी रहती है। कुलबाँसा।

**सुत्थना**—पु०[स्त्री०अल्पा० सुत्थनी] कुछ खुली मोरीवाला एक तरह का पाजामा। सूथन। (पश्चिम)

**सुत्था**—स्त्री०[स०] १. सोमरस निकालना या बनाना। २. यज्ञ के लिए सोमरस निकालने का दिन।

**सुत्रामा (मन्)**—पुं०[सं०] १. वह जो उत्तम रूप से रक्षा करता हो। २ इन्द्र। ३ पुराणानुसार तेरहवें मन्वतर का एक देवगण।

**सुत्री**†—स्त्री०[स० सु+त्री]१ सुन्दरी स्त्री। २ औरत। स्त्री। (डिं०)

**सुथना**†—पुं०=सुत्थना।

**सुथनिया**†—स्त्री०=सुथनी।

**सुथनी**—स्त्री०[देश०]१ स्त्रियो के पहनने का एक प्रकार का ढीला पाजामा। सूथन। २ पिंडालू। रतालू।

**सुथरा**—वि०[स० स्वस्थ] [स्त्री० सुथरी] स्वच्छ। निर्मल। साफ।
पु० [सुथरेशाह] सुथरेशाह के पथ का अनुयायी साधु।

**सुथराई**†—स्त्री०=सुथरापन।

**सुथरापन**—पुं० [हिं० सुथरा+पन (प्रत्य०)] सुथरे अर्थात् साफ होने की अवस्था, गुण या भाव।

**सुथरेशाह**—पुं०[भाव० सुथरेशाही] गुरु नानक के एक प्रसिद्ध शिष्य जिन्होने अपना एक स्वतन्त्र सप्रदाय चलाया था।

**सुथरेशाही**—स्त्री० [सुथरेशाह (महात्मा)] १ सुथरेशाह का चलाया हुआ एक सप्रदाय।
पु० उक्त सप्रदाय का अनुयायी साधु। ऐसे साधु प्राय. सुथरेशाह के बनाये हुए पद गाकर भीख मांगते हैं।

**सुथौनिया**—पुं०[देश०] जहाज के मस्तूल के ऊपरी भाग में वह छेद जिसमे पाल लगाने के समय उसकी रस्सी पहनाई जाती है। (लश०)

**सुदंड**—पु०[स० ब० स०] बेंत। बेल।

**सुदंडिका**—स्त्री० [स०] १. गोरख इमली। गोरखी। २. अजदंडी। बड़ा-दंडी।

**सुदंत**—वि०[सं० ब० स०] सुन्दर दाँतोंवाला।
पु० १ अभिनेता। नट। २. नर्तक। ३. हाथी।

**सुदंती**—स्त्री०[स०]१. एक दिग्गज की हथिनी का नाम। २. मादा हाथी। हथिनी।

**सुदंष्ट्र**—वि०[स० ब० स०] सुन्दर दांतोवाला।
पु० श्रीकृष्ण का एक पुत्र।

**सुदक्षिणा**—स्त्री० [स०] १. राजा दिलीप की पत्नी का नाम। २ पुराणानुसार श्रीकृष्ण की एक पत्नी।

**सुदल**—वि० [स०] [स्त्री० सुदती] सुन्दर दाँतोंवाला।

**सुदमा**†—वि०=दमदार।

**सुदर्शन**—पु० [सं०] आम का पेड और फल।

**सुदरसन**—वि०, पुं०=सुदर्शन।

**सुदर्भा**—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का तृण जिसे 'इक्षुदर्भा' भी कहते हैं।

**सुदर्श**—वि०[स०] सुदर्शन। (दे०)

**सुदर्शक**—पुं० [सं०] एक प्रकार की समाधि।

**सुदर्शन**—वि० [स०] [स्त्री० सुदर्शना] १ जो देखने में बहुत अच्छा और भला लगे। सुन्दर। २. जिसके दर्शन सरलता से होते हों या हो सकते हों।

पु० १ विष्णु के हाथ का चक्र। २. शिव। ३. एक प्रकार का पौधा और उसके फूल। ४. वैद्यक में, एक प्रकार का चूर्ण जिसका प्रयोग विषम ज्वर में होता है। ५. कबीर पंथियों के अनुसार एक ब्रह्मचर्य भक्त जो कबीर का शिष्य था। ६ सुमेरु पर्वत। ७ इन्द्र की पुरी, अमरावती। ८ वर्तमान अवसर्पिणी के अठारहवें अर्हत के पिता का नाम। (जैन) ९ जैनों के नौ बलदेवों में से एक। १० दधीचि का एक पुत्र। ११ भरत का एक पुत्र। १२. मछली। १३. एक प्रकार की संगीत-रचना। १४. जामुन। १५ जबूद्वीप। १६. सिद्ध। १७. सन्यासियों का एक दंड जिसमें छ गाँठें होती हैं। १८ सोम लता। १९. मदनमस्त नामक पौधा और उसका फूल।

**सुदर्शन-पाणि**—पु० [स० ब० स०] विष्णु जिनके हाथ में सुदर्शन नामक चक्र रहता है।

**सुदर्शना**—स्त्री०[स०]१. सुन्दरी स्त्री। रूपवती नारी। २ इन्द्र की पुरी, अमरावती। ३. शुक्ल पक्ष की रात। ४ एक प्रकार की मदिरा। ५ कमलों का सरोवर। ६. सोमलता। ७. जामुन का पेड। ८ आज्ञा। आदेश।

वि० स० 'सुदर्शन' का स्त्री०।

**सुदर्शनी**—स्त्री०[स०] इन्द्र की पुरी, अमरावती।

**सुदल**—पुं०[स० प्रा० स०] १. अच्छा और बड़ा दल। २. मोरट या क्षीर मोरट नाम की लता। ३. मुचकुंद।

वि० अच्छे दलवाला।

**सुदला**—स्त्री०[सं० ब० स०]१. सरिवन। शालपर्णी। २. सेवती।

**सु-दर्शन**—वि०[स०] [स्त्री० सुदर्शना] सुन्दर दाँतोंवाला। सुदत।

**सुदांत**—वि०[सं०] बहुत अधिक शांत और सुशील।

पुं० एक प्रकार की समाधि।

**सुदाम**—पु०[सं०]१. श्रीकृष्ण के सखा, एक गोप। सुदामा। २. एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)

**सुदामन**—वि०[सं०] उदारतापूर्वक देनेवाला।

पु० राजा जनक के एक मंत्री का नाम। २. देवताओं का एक प्रकार का अस्त्र। ३. सुदामा।

**सुदामा (मन्)**—पुं०[सं०] १. एक दरिद्र ब्राह्मण जो श्रीकृष्ण का सहपाठी और परम सखा था तथा जिसे श्रीकृष्ण ने ऐश्वर्यवान् बना दिया था। २. इन्द्र का हाथी, ऐरावत। ३. एक प्राचीन पर्वत। ४. समुद्र। ५. बादल। मेघ।

स्त्री०१. रामायण के अनुसार उत्तर भारत की एक नदी। २ पुराणानुसार स्कंद की एक मातृका।

वि० अच्छी तरह और बहुत दान देनेवाला।

**सुदाय**—पुं०[सं०]१. उत्तम दान। २. उपहार के रूप में दिया जानेवाला सुन्दर पदार्थ। ३. यज्ञोपवीत संस्कार के समय ब्रह्मचारी को दी जानेवाली भिक्षा। ४. उपहार, दान या भिक्षा देनेवाला व्यक्ति। ५. विवाह के अवसर पर कन्या या जामाता को दिया जानेवाला दान। दहेज। ६. उक्त प्रकार का धन या चीजें देनेवाला व्यक्ति।

**सुदार**—पुं० [सं०] १ देवदारु। देवदार। २. सरल नामक वृक्ष। ३. विंध्य पर्वत के पारिपात्र खंड का एक नाम।

**सुदारुण**—वि०[सं०] बहुत अधिक दारुण, भीषण या विकट।

पु० एक प्रकार का दिव्य या दैवी अस्त्र।

**सुदावन**†—पु०=सुदामन।

**सुदास**—पु० [स०]१. एक प्राचीन जनपद। २. वह जो सम्यक् रूप से ईश्वर की आराधना या उपासना करता हो।

**सुदि**—स्त्री० दे० 'सुदी'।

**सुदिन**—पु०[स० सु+दिन्]१. अच्छा दिन। साफ दिन। विशेषत. जिस दिन-सुबह सुबह बादल न छाये हों। 'दुर्दिन' का विपर्याय। २. शुभ दिन।

**सुदिव**—वि०[सं०] बहुत अधिक दीप्तिमान्।

**सुदिह**—वि० [स०]१. बहुत तीखा। धारदार। नुकीला। २. बहुत चिकना। ३. बहुत उज्ज्वल।

**सुदी**—स्त्री० [सं० शुक्ल में का शु+दिवस में का दि=सुदि] चान्द्र मास का शुक्ल पक्ष। जैसे—कार्तिक सुदी छठ।

**सुदीक्षा**—स्त्री०[स०] लक्ष्मी।

**सुदीप्ति**—वि०[स०] बहुत अधिक दीप्तिमान्। बहुत उज्ज्वल और चमकीला। अंगिरस गोत्र के एक ऋषि।

**सुदीर्घ**—वि०[सं०] [स्त्री० सुदीर्घा] [भाव० सुदीर्घता] बहुत अधिक लंबा-चौड़ा। खूब-विस्तृत।

पु० चिचड़ा।

**सुदीर्घा**—स्त्री० [सं०] चीना ककड़ी।

**सुदुग्ध**—वि०=सुधुरा।

**सुदुधा**—वि०[स०]१. अच्छा और बहुत दूध देनेवाली। २. जो सहज में दुही जाती हो। (गौ, बकरी, भेंस आदि)

**सुदूर**—वि०[स०] बहुत दूर। अति दूर। जैसे—सुदूर पूर्व।

पु०=शार्दूल। उदा०—लंक देखि कै छपा सुदूर।—जायसी।

**सुदृढ़**—वि०[सं०] [भाव० सुदृढ़ता] बहुत दृढ़। खूब मजबूत। जैसे—सुदृढ़ बंधन।

**सुदृष्टि**—वि०[सं०]१. अच्छी या शुभ दृष्टिवाला। २. दूरदर्शी।

स्त्री० अच्छी और शुभ दृष्टि।

पु० सिद्ध।

**सुदेल**—पु०=सुदेष्ण (पर्वत)।

**सुदेव**—पु०[सं०]१. उत्तम देवता। २. विष्णु का एक पुत्र।

वि० अच्छी क्रीड़ा या खेल करनेवाला।

**सुदेवल**—पुं० [हिं० सु+देव=देवता] देवता का नाम लेकर किया जाने-

वाला (किसी काम या बात का) आरम्भ। जैसे—अब आप अपने काम का सुदेवस कीजिए।

**सुदेव्य**—पु०[स०] भले या श्रेष्ठ देवों का समुदाय।

**सुदेश**—पु०[स०]१. अच्छा और सुन्दर देश। २. किसी काम या बात के लिए उपयुक्त स्थान।

वि० मनोहर। सुन्दर।

**सुदेशिक**—पुं०[सं०] अच्छा पथ-प्रदर्शक।

**सुदेष्ण**—पु०[स०]१. वसिष्ठ के शर्म से उत्पन्न श्रीकृष्ण का एक पुत्र। २. एक प्राचीन जनपद। ३. एक पौराणिक पर्वत।

**सुदेष्णा**—स्त्री०[स०]१. बलि की पत्नी। २. विराट् की पत्नी।

**सुदेस**†—वि०[स० सु+दृश्] देखने में सुन्दर।

पु०[सं० सु+देश] अच्छा देश या स्थान।

*पु०=स्वदेश।

**सुदेसी**†—वि०=स्वदेशी।

**सुदेह**—पु०[सं०] सुन्दर देह। सुंदर शरीर।

वि० सुन्दर देह या शरीर वाला।

**सुदैव**—पुं०[स०]१. सौभाग्य। २. अच्छा संयोग।

**सुदोग्ध्री**—वि०[स०] अधिक दूध देनेवाली।

स्त्री० अधिक दूध देनेवाली गाय।

**सुदोह**—वि०[सं०] दानशील। उदार।

**सुदोहा**—वि०, स्त्री [सं०] सुदोग्ध्री। (दे०)

**सुद्दोह**—वि०[स०] (मादा जंतु) जिसे दूहने में कोई कष्ट न हो।

**सुदौसी**†—अव्य० [सं० सद्यस्=तुरन्त] उचित या ठीक समय से। कुछ पहले ही। कुछ जल्दी ही। (पश्चिम) जैसे—रेल पकड़ने के लिए घर से कुछ सुदौसी ही चलना चाहिए।

**सुद्दा**—पु०[स० सुद्]. [स्त्री० अल्पा० सुद्दी] वह मल जो पेट के अंदर सूखकर आँतों से चिपक गया हो, और बहुत कष्ट से बाहर निकलता हो।

**सुद्ध**†—वि० [स० शुद्ध] १. शुद्ध। खालिस। २. (उपकरण) जो प्रसम गति या स्थिति में हो अथवा ठीक तरह से काम कर रहा हो। जैसे—लहू सुद्ध चल रहा है।

स्त्री०=सुध (चेतना)। उदा०=होनहार हिरदे बसै बिसर जाय सुद्ध। —कहावत।

**सुद्धाँ**†—अव्य० [सं० सह] सहित। समेत। मिलाकर। जैसे—उसके सुद्धाँ वहाँ चार आदमी थे।

**सुद्धांत**†—पुं०=सुद्धात (अंतःपुर)।

**सुद्धा***—अव्य०=सुद्धाँ।

**सुद्धि***—स्त्री० १. दे० 'शुद्धि'। २. दे० 'सुध'।

**सुद्युत**—वि०[सं० प्रा० स०] खूब प्रकाशमान्।

**सुद्युम्न**—पुं०[सं०] वैवस्वत मनु का पुत्र जो इड़ के नाम से ख्यात है।

**सुद्रष्ट**—वि०[स० सदृष्ट] दयावान्। कृपालु। (दे०)

**सुधंग (गा)**—वि०[हिं० सीधा+अंग या सु+ढंग?] १. सरल या सीधे स्वभाव वाला। २. सीधा।

पु० अच्छा या सुन्दर ढंग।

**सुध**—स्त्री०[सं० सुधी?]१. अच्छी बुद्धि। २. सचेतनता। होश।

क्रि० प्र०—खोना।—बिसरना।

३. स्मृति। याद।

मुहा०—सुध दिलाना=याद दिलाना। **सुध बिसारना या भूलना**= याद न रखना। **सुध लेना**=(क) किसी का हाल-चाल पूछने के लिए उसके पास जाना। (ख) किसी बात की ओर ध्यान देना।

**सुधन (न्)**—वि०[स०] बहुत धनी। बड़ा अमीर।

**सुधनु**—पु० [स०]१. राजा कुश का एक पुत्र जो सूर्य की पुत्री तपती के गर्भ से उत्पन्न हुआ था। २. गौतम बुद्ध के एक पूर्वज।

**सुधन्वा (न्वन्)**—वि०[स० ब० स०] १ उत्तम धनुष धारण करनेवाला। २. अच्छा धनुर्धर। होशियार तीरन्दाज।

पु०१. विष्णु। २. विश्वकर्मा। ३ अंगिरा ऋषि। ४. पुराणानुसार एक प्राचीन जाति जिसकी उत्पत्ति व्रात्य वैश्य और सवर्णा स्त्री से कही गई है। ५. शेषनाग।

**सुध-बुध**—स्त्री०[स० शुद्ध+बुद्धि]१ होश-हवाश। चेतना। संज्ञा। २. ज्ञान।

क्रि० प्र०—ठिकाने न रहना।—भूलना।—मारी जानी।

**सुध-मना**—वि० [हिं० सुध=होश+मना] [स्त्री० सुधमनी] जिसे होश हो। सचेत।

**सुधर**—पु०[स०]१. जैनों के एक अर्हत। २ बया पक्षी। (डिं०)

**सुधरना**—अ०[हिं० सुधारना]१. खराब होने या बिगड़ी हुई चीज का मरम्मत आदि होने पर ठीक होना। त्रुटि, दोष आदि का दूर होना। जैसे—हालत सुधरना। २ व्यक्ति के संबंध में, अच्छे आचरणों की ओर प्रवृत्त होना तथा बुरे आचरणों की पुनरावृत्ति न करना। जैसे—लड़के का सुधरना।

**सुधरमा**—वि०, स्त्री०=सुधर्मा।

**सुधराई**—स्त्री०[हिं० सुधरना+आई (प्रत्य०)] सुधरने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**सुधर्म (न्)**—वि०[स० ] धर्मपरायण। धर्मात्मा।

पु०[स०]१. अच्छा और उत्तम धर्म। २. जैन तीर्थंकर महावीर के दस शिष्यों में से एक।

**सुधर्मा**—वि० [स० सुधर्मन्] अपने धर्म पर दृढ़ रहनेवाला। धर्मपरायण।

पुं०१. कुटुंब से युक्त व्यक्ति। गृहस्थ। २. क्षत्रिय। ३. जैनों के एक गणाधिप।

स्त्री० देवताओं की सभा। देव-सभा।

**सुधर्मी (र्मिन्)**—वि०[स०] धर्मपरायण। धर्मनिष्ठ।

स्त्री० देवताओं की सभा।

**सुधवाना**—स० [हिं० सुधरना का प्रे०] १. सोधने या ठीक करने का काम किसी से कराना। ठीक या दुरुस्त कराना। २. मुहूर्त आदि के संबंध में, निकलवाना।

**सुधांग**—पुं०[स० ब० स०] चन्द्रमा।

**सुधांशु**—पु०[स०] १ चन्द्रमा। २. कपूर।

**सुधांशु-रत्न**—पु०[सं०] मोती। मुक्ता।

**सुधा**—स्त्री०[स०] १. अमृत। पीयूष। २. जल। पानी। ३. गंगा। ४. दूध। ५ किसी चीज का निचोड़ा हुआ रस। ६. पृथ्वी। ७. बिजली। विद्युत्। ८. जहर। विष। ९. चूना। १०. ईंट। ११.

शह की पत्नी। १२. एक प्रकार का छन्द या वृत्त। १३. पुत्री। बेटी। १४. वधू। १५. शहद। १६. घर। मकान। १७. मकरन्द। १८. आँवला। १९. हरें। २०. मरोड़ फली। २१. गिलोय। गुडूच। २२ सरिवन। शालपर्णी।

**सुधाई**—स्त्री०[हिं० सुधा+आई (प्रत्य०)] सिंचाई। सरलता।
स्त्री०[हिं० सोधना] सोधने की क्रिया या भाव।

**सुधा-कंठ**—वि० [स०] मधुर-भाषी।
पु० कोकिल। कोयल।

**सुधाकर**—पुं० [सं०] चन्द्रमा।

**सुधाकार**—पु०[स०] १. चूना पोतने या सफेदी करनेवाला मजदूर। २. मकान बनानेवाला मिस्तरी। राज।

**सुधा-क्षार**—पु०[स०] चूने का क्षार।

**सुधा-गेह**—पुं०[स०] चन्द्रमा।

**सुधा-घट**—पु०[सं० सुधा+घट] चन्द्रमा।

**सुधाजीवी (विन्)**—पु०[स०] सुधाकार। (दे०)

**सुधाता (तृ)**—वि० [स०] सुव्यवस्थित करनेवाला।

**सुधातु**—पुं०[स०] सोना।

**सुधातु-दक्षिण**—पुं०[स०] वह जो यज्ञादि में अथवा यों ही दक्षिणा में सुवातु अर्थात् सुवर्ण देता हो।

**सुधा-दीधिति**—पुं०[स० ब० स०] सुधांशु। चन्द्रमा।

**सुधाधर**—वि०[स० ष० त०] चन्द्रमा जिसके अधरों में अमृत हो।
पु० चन्द्रमा।

**सुधाधरण**—पुं०[सं० सुधाधर] चन्द्रमा। (डिं०)

**सुधा-धवल**—वि०[सं०] १. चूने के समान सफेद। २. जिस पर चूना पुता हुआ हो।

**सुधा-धाम**—पुं०[सं० सुधा+धाम] चन्द्रमा।

**सुधाधार**—पु०[सं०] १ वह बरतन जिसमें अमृत रखा हो। २ चन्द्रमा।

**सुधाधी**—वि०[स०] सुधा के समान। अमृत के तुल्य।

**सुधा-धौत**—वि०[स०] चूना या सफेदी किया हुआ।

**सुधा-नजर**—वि० [हिं० सुधा=सीधा+नजर] दयावान्। कृपालु। (डिं०)

**सुधाना**—स०[हिं०सुध+आना (प्रत्य०)] स्मरण कराना। याद दिलाना।
स०†=सुझाना।

**सुधा-निधि**—पुं० [सं०] १. चन्द्रमा। २. कपूर। ३. समुद्र। सागर। ४. दूधक वृक्ष का एक प्रकार या भेद।

**सुधा-पाणि**—वि०[सं० ब० स०] १. जिसके हाथ में अमृत हो। २. (चिकित्सक) जिसकी दवा से सबको तुरन्त लाभ होता हो।
पुं० देवों के वैद्य। धन्वन्तरि।

**सुधापाषाण**—पुं०[सं०] सफेद खली।

**सुधा-भवन**—पुं०[सं०] अस्तर कारी किया हुआ मकान।

**सुधाभित्ति**—स्त्री०[सं०] दीवार, जिस पर चूना पुता हुआ हो।

**सुधाभुज**—पुं०[सं०]=सुधा-भोजी (देवता)।

**सुधाभृति**—पुं०[सं०]१. चन्द्रमा। २. यक्ष।

**सुधाभोजी (जिन्)**—वि० [सं०] अमृत भोजन करनेवाले।
पुं० अमृत खानेवाला, देवता।

**सुधाम**—पुं०[सं०] अच्छा घर या स्थान।
पु०=सुधामा।

**सुधामय**—वि०[सं०] [स्त्री० सुधामयी] १. जिसमें अमृत हो। अमृत से युक्त। २ सुधा से भरा हुआ। अमृत-स्वरूप। ३. चूने का बना हुआ।
पुं० राज-प्रासाद। महल।

**सुधा-मयूख**—पुं०[सं०] चन्द्रमा।

**सुधामा (मन्)**—पुं०[स०] चन्द्रमा।

**सुधा-मुली**—स्त्री०[स०] सालम मिस्री। सालब मिस्री।

**सुधा-योनि**—पु० [स०] चन्द्रमा।

**सुधार**—पु० [हिं० सुधारना] १. वह तत्त्व जो किसी के सुधरने या सुधरे हुए होने पर लक्षित होता है। २ वह प्रक्रिया जो किसी के दोष, विकार आदि दूर करने के लिए की जाती है। ३. वह काट-छाँट या संशोधन-परिवर्तन जो रचना को अच्छा रूप देने के लिए किया जाता है।

**सुधारक**—वि०[हिं० सुधार+क (प्रत्य०)] (कार्य) जो सुधार के उद्देश्य या विचार से हो। (रिफार्मेटरी)
पु०१ दोषों या त्रुटियों का सुधार करनेवाला। संशोधक। २. धार्मिक या सामाजिक सुधार के लिए प्रयत्न करनेवाला। (रिफार्मर)

**सुधारना**—स०[स० शोधन]१ बिगड़ी हुई वस्तु को इस प्रकार ठीक करना कि वह फिर से काम करने या काम में आने के योग्य हो जाय। २ दोषों, विकारों आदि का उन्मूलन कर अथवा उनमें परिवर्तन लाकर किसी स्थिति में सुधार करना। ३ लेख आदि की गलतियाँ दूर करना।

**सुधा-रश्मि**—पुं०[स०] चन्द्रमा।

**सुधारा**†—वि०=सुधा (सीधा)।

**सुधारालय**—पुं०[हिं० सुधार+स० आलय] वह स्थान जहाँ पर अपराधियों के जीवन-सुधार की व्यवस्था की जाती है। (रिफार्मेटरी)

**सुधारू**†—वि० [हिं० सुधारना+ऊ (प्रत्य०)] सुधारनेवाला। सुधारक।

**सुधा-लता**—स्त्री०[स०] एक प्रकार की गिलोय।

**सुधाव**—पुं०[हिं० सुधरना+आव (प्रत्य०)]सोधने या सुधाने की क्रिया या भाव। सुधार।

**सुधा-वर्षी (र्षिन्)**—वि०[सं०] सुधा अर्थात् अमृत बरसानेवाला।
पुं० १ ब्रह्मा। २. बुद्ध का एक नाम।

**सुधावास**—पुं०[स०]१. चन्द्रमा। २. खीरा।

**सुधाश्रवा**—वि०[स० सुधा+स्रवण] अमृत बरसानेवाला।

**सुधा-सदन**—पुं०[सं० सुधा+सदन] चन्द्रमा।

**सुधासिक्त**—भू० कृ०[स०] जिस पर चूना पोतकर सफेदी की गई हो।

**सुधांशु**—पुं०[सं०] चन्द्रमा।

**सुधांशूति**—पुं० [सं०]१. चन्द्रमा। २. यज्ञ। ३. कमल।

**सुधा-स्पर्धी**—वि०[सं० सुधा-स्पर्धिन्] १. अमृत की बराबरी करनेवाला। २. अमृत के समान मधुर (भाषण आदि)।

**सुधाक्षवा**—स्त्री० [स०]१. गले के अंदर की घंटी। मोटी जीभ। कौआ। २. श्वदंती या रुद्रवंती नामक वनस्पति।

**सुधाहर**—पुं०[सं०] गरुड़।

**सुधि**—स्त्री०[सं० शुद्ध या बोध]१. चेतना। होश। २. ज्ञान। ३. याद। स्मृति। विशेष दे० 'सुध'। ४. 'दोहा नामक छंद का दूसरा नाम। ५. दे० 'सुध'।

**सुधित**—भू० कृ०[सं०]१. सुधा से युक्त किया हुआ। २. सुधा जैसा फलत मधुर। ३. जो सुधा या अमृत के रूप में लाया गया हो। ४. सुध्यवस्थित।

**सुधी**—वि० [स०] १. अच्छी बुद्धिवाला। २. बुद्धिमान्। समझदार। पुं० १ पण्डित। विद्वान्। २ धार्मिक व्यक्ति।

**सुधीर**—वि० [स०] जिसमें यथेष्ट धैर्य हो। बहुत धैर्यवान्।

**सुधुम्नानी**—स्त्री० [सं०] पुराणानुसार पुष्कर द्वीप के सात खंडों में से एक।

**सुधूपक**—पुं० [सं०] चन्द्रमा।

**सुधूम्र-वर्चा**—स्त्री० [सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

**सुधोद्भव**—पु० [सं०] चन्वन्तरि।

**सुधोद्भवा**—स्त्री० [स०] हरीतकी। हरें।

**सुनंद**—पु० [स०] १. एक देव-पुत्र। २. बलराम का मूसल। ३. कुजृभ नामक दैत्य का मूसल जो विश्वकर्मा का बनाया हुआ माना जाता है।४ वास्तुशास्त्र मे, बारह प्रकार के राज-भवनो मे से एक। वि० आनददायक।

**सुनंदन**—पु० [स०] कृष्ण के एक पुत्र का नाम। (पुराण०)

**सुनंदा**—स्त्री० [स०] १ उमा। गौरी। २. श्रीकृष्ण की एक पत्नी। ३ सार्वभौम दिग्ज की हथिनी। ४ भरत की पत्नी। ६ एक प्राचीन नदी। ६. सफेद गौ। ७ गोरोचन। ८. बर्कपत्री। इसरौल। ९. औरत। स्त्री।

**सुनंदिनी**—स्त्री० [स०] १. आरामशीतला नामक पक्षशाक। २. एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

**सुन**—वि० १ =सुत। २.=शून्य।

**सुनका**—पु० [देश०] चौपायो के गले का एक रोग। गरारा। घुरकवा।

**सुन-कातर**—पु० [हिं० सोन+कातर ?] एक प्रकार का साँप।

**सुनकार**—वि० [हिं० सुनना+कार (प्रत्य०)] जो गाना-बजाना सुनने-समझनेवाला हो। अच्छी तरह ध्यानपूर्वक गुणों की परख करते हुए गाना सुननेवाला। उदा०—बसन्त बहार का ख्याल था; और महफिल सुनकार थी।—अमृतलाल नागर।

**सुन-किरवा**†—पु०=सोन-किरवा।

**सु-नक्षत्र**—वि० [स०] १. उत्तम नक्षत्रवाला। २. भाग्यवान्। पु० उत्तम नक्षत्र।

**सुनक्षत्रा**—स्त्री० [स०] १. कर्म मास का दूसरा नक्षत्र। २. स्कंद की एक मातृका।

**सुन-खरचा**—पु० [?] एक प्रकार का बाल जो आश्विन के अंत और कार्तिक के आरंभ में होता है।

**सुन-गुन**—स्त्री० [हिं० सुनना+अनु० गुनना] १. किसी बात की बहुत दबी हुई चर्चा जो लोगों में होती है। जैसे—अविश्वास प्रस्ताव रखने की सुन-गुन इधर कुछ दिनो से होने लगी है।

क्रि० प्र०—होना।

२. वह बात या भेद जिसकी दबी हुई चर्चा सुनाई पड़ी हो।

क्रि० प्र०—लगना।

**सु-नजर**—वि० [सं० सु+फा० नजर] दयावान्। कृपालु। (कि०)

**सुनत (ति)**†—स्त्री०=सुव्रत।

**सुनना**—स० [स० श्रवण] १. ऐसी स्थिति मे होना कि कानों के द्वारा ध्वनि, शब्द आदि की अनुभूति हो। जैसे—वर्षा से इस घटे की आवाज सुनता आया हूँ। २ सुनकर ज्ञान प्राप्त करना। जैसे—खबर सुनना। ३. किसी निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए ध्यानपूर्वक लोग या लोगों की बातें सुनना। ४. किसी की प्रार्थना आदि पर विचार करने के लिए सहमत होना। जैसे—उन्होने कहा है कि आपकी फरियाद सुनी जायगी। ५. कठोर वचनों का श्रवण करना। जैसे—तुम्हारे लिए दूसरों की बातें मुझे सुननी पडी।

क्रि० प्र०—पडना।

६. रोग आदि के सबध में, उपचार आदि से कम होना या बढ़ने से रुकना।

**सुनफा**—स्त्री० [स०?] ज्योतिष में ग्रहों का एक योग।

**सुन-बहरी**—स्त्री० [हिं० सुन+बहरी] एक प्रकार का चर्म रोग जिसकी गिनती कुष्ठ रोग मे होती है।

**सुनम्य**—वि० [सं०] १. जो सहज मे झुकाया या दबाया जा सके। २. जो गीला होने पर मनमाने ढग से और मनमाने रूप में लाया जा सके। (प्लैस्टिक) जैसे—सुनम्य मिट्टी।

पु० आज-कल रासायनिक प्रक्रियाओ से तैयार किया हुआ गीला द्रव्य जो सभी प्रकार के साँचों मे ढाला जा सकता है और जिससे खिलौने, जूते, नरमे आदि सैकडों प्रकार की चीजें बनाई जाती हैं। (प्लास्टिक)

**सुनय**—पु० [सं०] उत्तम नीति। सुनीती।

**सुनयन**—वि० [स०] [स्त्री० सुनयना] सुन्दर नेत्रोंवाला।

पु० मृग। हिरन।

**सु-नयना**—स्त्री० [सं०] १. सुन्दर स्त्री। सुदरी। २. राजा जनक की एक पत्नी जिन्होंने सीता जी को पाला था।

वि० स० सुनयन का स्त्री०।

**सुनर**—वि० [सं० प्रा० स०] नरों में श्रेष्ठ।

पु० अर्जुन। (डिं०)

†वि०=सुंदर।

†स्त्री० [सं० सु+हिं नार] =सुनारि।

**सुनरिया**†—स्त्री०=सुदरी (रूपवती स्त्री)।

**सुनर्द**—वि० [स०] बहुत गरजने या जोर का शब्द करनेवाला।

**सुनवाई**—स्त्री० [हिं० सुनना+वाई (प्रत्य०)] १ सुनने की क्रिया या भाव। २. मुकदमे या विवाद के विचार के लिए न्यायकर्ता के द्वारा दोनों पक्षों की बातें सुनने की क्रिया या भाव। (हियरिंग) ३. किसी तरह की शिकायत या फरियाद आदि का सुना जाना। जैसे—तुम लाख चिल्लाया करो, यहाँ कुछ सुनवाई नही होगी।

**सुनवैया**—वि० [हिं० सुनना+वैया (प्रत्य०)] सुननेवाला।

वि० [हिं० सुनाना+वैया (प्रत्य०)] सुनानेवाला।

**सुनस**—वि० [स०] सुदर नाकवाला।

**सुनसर**—पुं० [?] एक प्रकार का गहना।

**सुनसान**—वि० [सं० शून्य+स्थान] १. जिसमें व्यक्तियों का वास न हो। जैसे—सुनसान कोठरी। २. जिसमें जीवों का आवागमन न हो। जैसे—सुनसान दोपहरी।
पु० निर्जन स्थान। उजाड़।

**सुनहरा, सुनहरी**—वि०=सुनहला।

**सुनहला**—वि०[हिं० सोना] [स्त्री० सुनहली] १. सोने का बना हुआ। २. चमक, रंग आदि में सोने की तरह का। (गोल्डन) जैसे—सुनहले फूल, सुनहली आँखें।

**सुनहा**†—पु० [सं० श्वान] १. कुत्ता। उदा०—दरपन केरि गुफा में सुनहा पैठा आया।—कबीर। २ कोयी नामक जंतु।

**सुनाई**†—स्त्री० [हिं० सुनना+आई (प्रत्य०)] १. सुनने की क्रिया या भाव। २. सुनवाई।

**सुनाद**—वि० [सं०] सुन्दर नादवाला।
पु० शंख।

**सुनादक**—वि० [स०] सुंदर शब्द करनेवाला।
पु० शंख।

**सुनाद-प्रिय**—पु० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सुनाद-विनोदनी**—स्त्री० [स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सुनाना**—स० [हिं० सुनना का प्रे०] १. दूसरों को सुनने में प्रवृत्त करना। विशेषत: उस दृष्टि से ऊँचे स्वर में पढ़ना कि दूसरे के कानों तक वह पहुँच जाय। २. कोई ऐसी क्रिया करना जिससे लोग कुछ सुन सकें। जैसे—ग्रामोफून या रेडियो सुनाना। ३. अपना रोष प्रकट करने के लिए खरी-खोटी बातें कहना। जैसे—(क) भरी सभा में उन्होंने मंत्री जी को खूब सुनाईं। (ख) कोई एक कहेगा तो चार सुनाएँगे।
स० क्रि०—डालना।—देना।

**सुनानी**†—स्त्री०=सुनाबनी।

**सुनाभ**—पु० [सं०] १. सुदर्शन चक्र। २. मैनाक पर्वत।
वि०=सुनाभि।

**सुनाभि**—वि० [स०] १. सुन्दर नाभिवाला। २. जिसका केन्द्र-स्थल सुन्दर हो।

**सुनाम**—पु० [स०]लोक में होनेवाला अच्छा नाम जो कीर्ति या यश का सूचक होता है।

**सुनाम-द्वादशी**—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का व्रत जो वर्ष की बारहों शुक्ला द्वादशियों को किया जाता है।

**सुनामा (मन्)**—वि० [स०] जिसका अच्छा नाम या कीर्ति हो। कीर्तिशाली।
पु० १ कंस के आठ भाइयों में से एक। २. कार्तिकेय का एक पारिषद।

**सुनासिका**—स्त्री० [सं०] नथमाणा लता।

**सुनार**—पुं० [सं० स्वर्णकार] [स्त्री० सुनारिन, भाव० सुनारी] १. वह जिसका पेशा सोने-चाँदी के आभूषण बनाना हो। २. जो सुनारों के वंश में उत्पन्न हुआ हो।
पु० [सं०] १. कुतिया का दूध। २. साँप का अंडा। ३. चटक पक्षी। गौरैया।

**सुनारि**—स्त्री० [सं०] सुंदर स्त्री। सुंदरी।

**सुनारिन**—स्त्री० [हिं० सुनार+इन (प्रत्य०)] १. सुनार की पत्नी। २. सुनार जाति की स्त्री।

**सुनारी**—स्त्री० [हिं० सुनार+ई (प्रत्य०)] १. सुनार का काम, पेशा या भाव। २. दे० 'सुनारिन'।

**सुनाल**—पुं० [सं०] लाल कमल।

**सुनालक**—पु० [सं०] अगस्त्य का पेड़ या फूल।

**सुनावनी**—स्त्री० [हिं० सुनाना] १. परदेश या विदेश से किसी सगे-संबंधी की मृत्यु का आया हुआ समाचार जो स्थानिक संबंधियों के पास सूचनार्थ भेजा जाता है।
क्रि० प्र०—आना।
२. उक्त प्रकार का बुरा खबर समाचार आने पर सगे-संबंधियों आदि का होनेवाला सामूहिक शोक प्रकट, स्नान आदि।

**सुनासा**—स्त्री० [स०] कौआ ठोढ़ी। काकनासा।

**सुनासिक**—वि० [स०] सुंदर नाकवाला। सुनास।

**सुनासीर**—पुं० [सं०] १ इन्द्र। २ देवता।

**सुनाहक**†—अव्य०=नाहक (व्यर्थ)।

**सुनिद्द**—पुं० [स०] खूब सोना।

**सुनिनद**—वि० [स०] सुन्दर नाद या शब्द करनेवाला।

**सुनियाना**†—अ०[हिं० सोना?+इयाना (प्रत्य०)] पौधों, फसल आदि का शीतरोग आदि से नष्ट-प्राय हो जाना। (रहेल खंड)

**सुनिरहण**—पु० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का बस्तिकर्म जिससे पेट और आँतें बिलकुल साफ हो जाती हैं।

**सुनिश्चय**—पु० [सं०] १. पक्का निश्चय। २. सुंदर निश्चय।

**सुनिश्चित**—भू० कृ० [स०] अच्छी तरह या दृढ़ता से निश्चय किया हुआ। भली भाँति निश्चित किया हुआ।
पु० एक बुद्ध का नाम।

**सुनिश्चित पुर**—पु० [सं०] काश्मीर का एक प्राचीन नाम।

**सुनिहित**—भू० कृ० [सं०] अच्छी तरह से छिपा या दबा हुआ। उदा०—या समर्पण में ग्रहण का एक सुनिहित भाव।—पन्त।

**सुनीच**—पुं० [स०] ज्योतिष में, किसी ग्रह का किसी राशि में किसी विशेष अंश का होनेवाला अवस्थान।

**सुनीत**—वि० [सं०] [भाव० सुनीति] १. नीतिपूर्ण व्यवहार करनेवाला। २. उदार।

**सुनीति**—स्त्री० [स०] १. उत्तम नीति। २ भक्त ध्रुव की माता। पु० शिव।

**सुनीथ**—पुं० [स०] १ कृष्ण का एक पुत्र। २. सुरेण का एक पुत्र। ३ शिशुपाल का एक नाम। ४. एक प्रकार का छन्द या वृत्त।
वि० १. नीतिमान्। २. न्यायशील।

**सुनीथा**—स्त्री० [सं०] मृत्यु की पुत्री और अंग की पत्नी।

**सुनील**—वि० [सं०] १. गहरा नीला। २. गहरा काला।
पु० १. अनार का पेड़। २. लाल कमल।

**सुनीलक**—पु० [सं०] १. नीलम नामक रत्न। २. काला भौंरा।

**सुनीला**—स्त्री० [सं०] १. चणिका तृण। चनिका घास। २. नीली अपराजिता। ३. तीषी।

**सुनु**—पुं० [सं०] जल।

सुनेत्र—वि० [सं०] [स्त्री० सुनेत्रा] सुंदर नेत्रोंवाला। सुलोचन।
पुं० १. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। २. बौद्धों के अनुसार मार का एक पुत्र। ३. चकवा पक्षी।

सुनेत्रा—स्त्री० [सं०] सांख्य के अनुसार नौ तुष्टियों में से एक।

सुनैया†—वि०=सुनवैया।

सुनोची—पु० [देश०] एक प्रकार का घोड़ा।

सुन्न—वि० [सं० शून्य] १. जिसमें कुछ न हो। शून्य। २. शरीर का अंग जिसमें रक्त का संचार बिलकुल शून्य होने के फल-स्वरूप स्पंदन-हीनता हो। स्पंदनहीन। ३ शीत अथवा विशिष्ट उपचार के फल-स्वरूप किसी अंग का संज्ञाहीन होना। जैसे—आपरेशन से पहले उनका हाथ सुन्न कर लिया गया था। ४. व्यक्ति के संबंध में, स्तब्ध और किंकर्तव्य-विमूढ़। जैसे—मित्र की मृत्यु का समाचार सुनते ही वह सुन्न हो गया।
क्रि० प्र०—होना।

सुन्नत—स्त्री० [अ०] [वि० सुन्नती] लिंगेन्द्रिय के अगले भाग का चमड़ा काटने की कुछ धर्मों की प्रथा जिसे मुसलमानों में मुसलमानी और सुन्नत कहते हैं। खतना। (सरकमसीजन)

सुन्नती—वि० [हिं० सुन्नत] जिसकी सुन्नत हुई हो।
पु० मुसलमान।

सुन्नर†—वि०=सुंदर।

सुन्नसान—वि०=सुनसान।

सुन्ना—पु० [सं० शून्य] बिंदी। सिफर। जैसे—एक (१)पर सुन्ना (०) लगाने से दस (१०) होता है।
† स०=सुनना।

सुन्नी—पु० [अ०]मुसलमानों का एक वर्ग या सप्रदाय जो चारो खली-फाओं को प्रधान मानता है। चार-यारी।

सुन्नैया†—वि०=सुनवैया।

सुपंख—वि०[सं०] १.सुन्दर पंखों या परोंवाला। २. सुन्दर तीरोंवाला।

सुपंथ—पु० [सं०] सन्मार्ग।

सुपक्व†—वि०=सुपच्व।

सुपच्व—वि० [सं०] अच्छी तरह पका हुआ।
पु० बढ़िया और सुगंधित आम।

सुपक्ष—वि० [सं०] जिसके सुंदर पक्ष हों। सुंदर पंखों वाला।

सुपच—पु०=स्वपच।
† वि०=सुपाच्य।

सुपट—वि० [सं०] सुंदर वस्त्रों से युक्त। अच्छे वस्त्रोंवाला।
पु० सुन्दर पट या वस्त्र। बढ़िया कपड़ा।

सुपठ—वि० [सं०] जो सहज में पढ़ा जा सके।

सुपड़ा—पुं० [देश०] लंगर का वह अँकुड़ा जो जमीन में धँस जाता है।

सुपत—वि० [सं० सु+हिं० पत=प्रतिष्ठा]अच्छी पत या प्रतिष्ठावाला। प्रतिष्ठित।

सुपतिक—पुं० [डिं०] ऐसा डाका जो रात के समय पड़े।

सुपत्थ†—पु०=सुपथ।

सुपत्नी—स्त्री० [सं०] १. अच्छी पत्नी। २. स्त्री जिसका पति अच्छा हो।

सुपत्र—वि०[सं०] १. सुंदर पत्तोंवाला। २. सुंदर पक्षों या परोंवाला।
पु० [सं०] १ तेजपत्र। तेजपत्ता। २. इंगुदी। हिंगोट। ३. ३. हुरहुर। आदित्य-पत्र। ४. एक पौराणिक पक्षी।

सुपत्रक—पु० [सं०] सहिजन।

सुपत्रा—स्त्री० [सं०] १. शतजटा। २. शतावर। ३. शालपर्णी। सरिवन। ४ पालक का साग।

सुपत्रित—भू० कृ० [सं०] १ सुन्दर पत्तों या पत्रों से युक्त। २. सुन्दर पक्षों या परो से युक्त। ३. अच्छे तीरों से युक्त।

सुपत्री (त्रिन्)—वि० [सं०] पक्षों या तीरों से भली-भाँति युक्त।
स्त्री० गंगापत्री नाम का पौधा।

सुपथ—पु० [सं०] १ उत्तम मार्ग। अच्छा रास्ता। सत्पथ। सदाचरण। २. एक प्रकार का छन्द या वृत्त।
वि० सम-तल। हमवार।

सुपथी (थिन्)—वि० [सं०] सुपथ पर चलनेवाला।

सुपथ्य—पु०[सं०] १ ऐसा आहार या भोजन जो रोगी के लिए हितकर हो। अच्छा पथ्य। २ आम।

सुपथ्या—स्त्री० [सं०] वधूआ नामक साग।

सुपद—वि० [सं०] १ सुंदर पैरोंवाला। २ तेज चलने या दौड़नेवाला।

सुपद्मा—स्त्री० [सं०] बच। वचा।

सुपन*—पु०=स्वप्न।

सुपनक—वि० [हिं० सपना=स्वप्न] स्वप्न देखनेवाला। जिसे स्वप्न दिखाई देता हो।

सुपना†—पु०=सपना।

सुपनाना†—स० [हिं० सुपना] १. सपना देखना। २. सपना दिखाना।

सुपरण†—पु०=सुपर्ण।

सुपरन†—पु०=सुपर्ण।

सुपरमतुरिता—स्त्री० [सं०] एक देवी। (बौद्ध)

सुपर रायल—पु० [अ०] छापेवाने में कागज आदि की एक नाप जो २२ इंच चौड़ी और २५ इंच लंबी होती है।

सुपरवाइजर—पु० [अ०]=पर्यवेक्षक।

सुपरस*—पु०=स्पर्श।

सुपरिंटेंडेंट—पु० [अ०]=अधीक्षक।

सुपर्ण—वि० [सं०]१ सुंदर पत्तोंवाला। २ सुंदर पक्षों या परोंवाला।
पु० १ विष्णु। २. गरुड़। ३. देव-गन्धर्व। ४. सोम। ५. किरण। ६. एक वैदिक शाखा जिसमें १०३ मंत्र हैं। ७ एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना। ८ घोड़ा। ९ चिड़िया। पक्षी। १०. मुरगा। ११ अमलतास। १२. नागकेसर।

सुपर्णक—पु० [सं०] १ गरुड़ या दिव्य पक्षी। २ अमलतास। ३ सप्तपर्ण। सतिवन।
वि०=सुपर्ण।

सुपर्णकुमार—पु० [सं०] जैनियों के एक देवता।

सुपर्णकेतु—पु० [सं०] १ विष्णु। २. श्रीकृष्ण।

सुपर्णराज—पु० [सं०] गरुड़।

सुपर्णसद्—वि० [सं०] पक्षी पर चढ़नेवाला।
पु० विष्णु।

**सुपर्णाद**—पुं० [सं०] शूद्रा माता और सूत पिता से उत्पन्न पुत्र।

**सुपर्णा**—स्त्री० [सं०] १. पक्षिनी। कमलिनी। २ गरुड़ की माता। ३. एक प्राचीन नदी।

**सुपर्णिका**—स्त्री० [सं०] १. स्वर्ण जीवंती। पीली जीवंती। २. रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। ३ पलाशी। ४. शालपर्णी। सरिवन।

**सुपर्णी**—स्त्री० [सं०] १. गरुड की माता। सुपर्णा। २. एक देवी का नाम। ३. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। ४. रात। रात्रि। ५. मादा पक्षी। चिड़िया। ६. कमलिनी। ७ रेणुका नामक गन्ध द्रव्य। ८. पलाशी।

**सुपर्णेय**—पुं० [सं०] सुपर्णी के पुत्र, गरुड।

**सुपर्व**—वि० [सं०] १ सुंदर जोड़ोंवाला। जिसके जोड़ या गाँठें सुंदर हों। २. (ग्रन्थ) जिसमें सुन्दर पर्व या अध्याय हों।
पुं० १. शुभ मुहूर्त। शुभ काल। २ देवता। ३. तीर। बाण। ४ धूआँ। ५. बाँस।

**सुपर्वा**—स्त्री० [सं०] सफेद दूब।

**सु-पश्चात्**—अव्य० [सं०] बहुत रात गये।

**सुपाकिनी**—स्त्री० [सं०] जामा हल्दी।

**सुपाक्य**—पुं० [सं०] विडलोण नामक नमक जो अत्यंत पाचक माना गया है।

**सुपाच्य**—वि० [सं०] सहज में पचने या हजम हो जानेवाला (खाद्य पदार्थ)।

**सुपात्र**—पुं० [सं०] [स्त्री० सुपात्री] [भाव० सुपात्रता] १. अच्छा और उपयुक्त पात्र या बरतन। २. उत्तम आधार। ३. कोई अधिकारी तथा उपयुक्त व्यक्ति। ४. सुयोग्य व्यक्ति।

**सुपाद**—वि०[सं०] जिसके अच्छे या सुंदर पैर हों।

**सुपार**—वि०[सं०] जिसे सहज में पार किया जा सके।

**सुपारग**—वि०[सं०] जो सहज में पार जा सकता हो।
पुं० शाक्य मुनि।

**सुपारा**—स्त्री०[सं०] नौ प्रकार की तुष्टियों में से एक। (सांख्य)

**सुपारी**—स्त्री०[सं० सुप्रिय]१. नारियल की जाति का एक बहुत ऊँचा पेड़। २. उक्त वृक्ष का फल जो छोटी कड़ी गोलियों के रूप में होता है और जिसके छोटे छोटे टुकड़े यों ही अथवा पान के साथ खाये जाते हैं। कसैली। छालिया।
**मुहा०—सुपारी लगना**=सुपारी खाने पर उसका कोई टुकड़ा गले की नली में अटकना जिससे कुछ खाँसी और बेचैनी सी होती है। उदा०—सोर भयो सकुचे समूझे हरषाहि कह्यो हरि लागि सुपारी।—केशव। ३. लिंगेंद्रिय का अगला अंडाकार भाग जो प्रायः सुपारी (फल) की तरह होता है। (बाजारू)

**सुपारी का फूल**—पुं०[हिं० सुपारी+फूल] मोचरस या सेमल का गोंद।

**सुपार्श्व**—पु० [सं०] १. परास पीपल। राजदंड। गदेमांड। २. पाकर का पेड़। ३. एक प्राचीन पर्वत। ४. एक पौराणिक पीठ-स्थान। ५. जैन धर्म में, सातवें तीर्थंकर। ६. जटायु के भाई संपाती के पुत्र का नाम।
वि० सुन्दर पार्श्ववाला।

**सुपिंगला**—स्त्री०[सं०]१. जीवंती। डोडी शाक। २. मालकंगनी।

**सुपीत**—वि०[सु+पीत (पीला)] बहुत या बढ़िया पीला।
भू० कृ० [सं० सु+पीत (पीना हुआ)] १. अच्छी तरह या जी भर कर पीया हुआ। २. जिसने अच्छी तरह या जी भरकर पीया हो।
पुं० [सं०] १. गाजर। २. पीली कटसरैया। ३. चन्दन। ४. ज्योतिष में, एक प्रकार का मुहूर्त।

**सुपीन**—वि०[सं०] बहुत बड़ा, भारी या मोटा।

**सुपुंसी**—स्त्री०[सं०] वह स्त्री जिसका पति वीर्यवान् और सुपुरुष हो।

**सुपुट**—पु०[सं०]१. कोलकद। चमार आलू। २. विष्णुकद।

**सुपुटा**—स्त्री०[सं०] सेवती। बनमल्लिका।

**सुपुत्र**—पुं० [सं०]१. अच्छा, सुशील और सुयोग्य पुत्र। २. जीवक पुत्र।

**सुपुत्रिका**—वि०[सं०] अच्छे पुत्र या पुत्रोंवाली (स्त्री)।
स्त्री० जतुका लता। पपड़ी।

**सुपुर**—पु०[सं०] पक्का और मजबूत दुर्ग।

**सुपुरुष**—पुं०[सं०] १. सुन्दर पुरुष। उत्तम या श्रेष्ठ पुरुष। सत्पुरुष।

**सुपुर्द**—पु०=सुपुर्द।

**सुपुष्करा**—स्त्री०[सं०] स्थल कमलिनी। स्थल पद्मिनी।

**सुपुष्प**—पुं०[सं०]१. लौंग। लवंग। २. परास पीपल। ३. मृचकुद वृक्ष। ४. शहतूत। ५. पारिभद्र। फरहद। ६. सिंदिस। ७. हरिद्रु। हलदुआ। ८. बड़ी सेवती। ९. सफेद मदार। १०. देवदार। ११. पुंडरी।
वि० सुन्दर फूलों से युक्त।

**सुपुष्पक**—पुं० [सं०] १. सिरीष वृक्ष। सिरिस। २. मृचकुद। ३ सफेद मदार। ४. पलाश। ५. बड़ी सेवती।

**सुपुष्पा**—स्त्री०[सं०] १. कोशातकी। तरोई। तुरई। २. द्रोणपुष्पी। गूमा। ३. सौंफ। ४. सेवती।

**सुपुष्पिका**—स्त्री०[सं०] १. एक प्रकार का विधारा। जीर्णदाढ़। २. सौंफ। ३. सोआ नामक साग। ४. पातालगारुड़ी। ५. बन-सनई।

**सुपुष्पी**—स्त्री० [सं०]१. श्वेत अपराजिता। सफेद कोपल लता। २. सौंफ। ३. केला। ४. सोआ नामक साग। ५ विधारा। ६. द्रोणपुष्पी। गूमा।

**सुपूत**—वि०[सं०] अत्यन्त पूत या पवित्र।
†पु०=सपूत (सुपुत्र)।

**सुपूती**—स्त्री०[हिं० सुपूत+ई (प्रत्य०)]१ सुपूत होने की अवस्था या भाव। सुपूतपन। २. सुपूत का कोई कौशल। सुपूत का वीरतापूर्ण कार्य। ३. स्त्री, जो सुपूतों की जननी हो। सुपूतों की माता।

**सुपूर**—पुं०[सं०] बीजपूर। बिजौरा नींबू।
वि०१. जिसे अच्छी तरह भरा जा सके। २. खूब भरा हुआ। ३. (कार्य) जो सहज में पूरा हो सके।

**सुपूरक**—पु०[सं०]अगस्त वृक्ष। वक वृक्ष। २. बिजौरा नींबू।

**सुपेती***—स्त्री०१.=सुपेती। २.=सफेदी।

**सुपेद**†—वि०=सफेद।

**सुपेदा**†—पु०=सफेदा।

**सुफेदी**—स्त्री० [फा० सफेदी] १. ओढ़ने की रजाई। २. बिछाने की तोशक। ३. बिछौना। बिस्तर। ४. दे० 'सफेदी'।

**सुफेली**—स्त्री०[हिं० सूप+एली (प्रत्य०)] छोटा सूप।

**सु-बोध**—वि०[स०] जिसका पालन-पोषण सहज में हो सकता हो।

**सुप्त**—वि०[सं०] [भाव० सुप्ति] १. सोया हुआ। निद्रित। शयित। २. सोने के उद्देश्य से लेटा हुआ। ३. (पदार्थ का गुण, प्रभाव या बल) जो अन्दर वर्तमान होने पर भी कुछ कारणों से दबा हुआ हो और सक्रिय न हो। प्रसुप्त। (डॉर्मेन्ट) ४. ठिठुरा या सिकुड़ा हुआ। ५. जो खिला या खुला न हो। मुँदा हुआ। ६ जो अभी काम में न आ रहा हो या आ सकता हो। बेकार। ७. सुस्त।

**सुप्तक**—पुं०[सं०] निद्रा। नींद।

**सुप्तघ्न**—वि०[सं०] १. ऐसे हुए प्राणी पर आघात या वार करनेवाला। २. हिंसक।

**सुप्तजन**—पु०[सं०] स्वप्न।

**सुप्तता**—स्त्री०[स०] सुप्त होने की अवस्था या भाव।

**सुप्त-प्रलपित**—पु०[स०] निद्रित अवस्था में होनेवाला प्रलाप। सोये-सोये बकना।

**सुप्तमाली**—पुं०[सं० सुप्तमालिन्] पुराणानुसार तेइसवें कल्प का नाम।

**सुप्त-वाक्य**—पुं०[सं०] निद्रित अवस्था में कहे हुए वाक्य या बातें।

**सुप्त-विज्ञान**—पु०[स०] स्वप्न। सपना।

**सुप्तत्व**—वि०[सं०] सोया हुआ। निद्रित।

**सुप्तांग**—पुं० [सं०] वह अंग जिसमें चेतना या चेष्टा न रह गई हो। निश्चेष्ट अंग।

**सुप्तांगता**—स्त्री०[सं०] सुप्तांग होने की अवस्था या भाव। अंगों की निश्चेष्टता।

**सुप्ति**—स्त्री० [सं०] १. सोये हुए होने की अवस्था या भाव। निद्रा। नींद। २. उँघाई। निर्दोस। ३. प्रत्यय। विश्वास। ४. सुप्तांगता।

**सुप्तोत्थित**—वि० [सं०] जो अभी सोकर उठा हो। नींद से जागा हुआ।

**सुप्रकेत**—वि०[सं०] १. ज्ञानवान्। २ बुद्धिमान्।

**सुप्रचेता**—वि०[सं० सुप्रचेतस्] बहुत बड़ा बुद्धिमान् या समझदार।

**सुप्रज**—वि०[स०] अच्छी और यथेष्ट सन्तान से युक्त।

**सुप्रजा**—स्त्री०[स०]१. उत्तम संतान। अच्छी औलाद। २. अच्छी प्रजा या रिआया।

**सुप्रजात**—वि० [सं०] सुप्रज। (दे०)

**सुप्रज्ञ**—वि०[सं०] बहुत बुद्धिमान्।

**सुप्रतर**—वि०[सं०] (जलाशय) जो सहज में तैरकर या नाव से पार किया जा सके।

**सुप्रतिज्ञ**—वि० [सं०] जो अपनी प्रतिज्ञा से न हटे। दृढ़-प्रतिज्ञ।

**सुप्रतिभा**—स्त्री० [सं०] मदिरा। शराब।

**सुप्रतिष्ठ**—वि० [स०] १. अच्छी प्रतिष्ठावाला। २. बहुत प्रसिद्ध। पु० १. एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना। २ एक प्रकार की समाधि। (बौद्ध)

**सुप्रतिष्ठा**—स्त्री०[सं०]१. देव-मन्दिर, प्रतिमा आदि की स्थापना। २. अभिषेक। ३. अच्छी प्रतिष्ठा या स्थिति। ४. प्रसिद्धि। ५. कार्तिकेय की एक मातृका।

**सुप्रतिष्ठित**—भू० कृ०[स०]१. जिसकी अच्छी तरह से प्रतिष्ठा या स्थापना की गई हो। २ जिसकी लोक में प्रतिष्ठा हो।
पुं० १. गूलर। २ एक प्रकार की समाधि।

**सुप्रतीक**—पु०[स०]१. अच्छा या उपयुक्त प्रतीक। २. शिव। ३. कामदेव। ३ ईशान कोण के दिग्गज का नाम।
वि०१. सुन्दर। २. सज्जन।

**सुप्रतीकिनी**—स्त्री०[स०] सुप्रतीक नामक दिग्गज की हथिनी।

**सुप्रदर्श**—वि०[सं०] जो देखने में सुन्दर हो। प्रियदर्शन। सुदर्शन।

**सुप्रदीप**—पु०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सुप्रदोहा**—वि०स्त्री० [सं०] (मादा प्राणी) जिसका दूध सहज में दूहा जा सके।

**सु-प्रबुद्ध**—वि०[सं०]जिसे यथेष्ट बोध या ज्ञान हो। अत्यन्त बोधयुक्त।
पु० गौतम बुद्ध।

**सुप्रभ**—वि०[सं०] १ सुन्दर प्रभा या चमकवाला। प्रकाशवान्। २. सुन्दर।
पु० १ पुराणानुसार शाल्मली द्वीप के अन्तर्गत एक वर्ष या भू-भाग। २. जैनियों के नौ बलों (जिनों) में से एक।

**सुप्रभा**—स्त्री० [स०] १ स्कंद की एक मातृका। २. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। ३. सात सरस्वतियों में से एक। ४ लोमराजी। बकुची।
पु० पुराणानुसार पृथ्वी का एक वर्ष या खंड जिसके अधिष्ठाता देवता 'सुप्रभ' कहे गये हैं।

**सुप्रभात**—पु०[स०] १. प्रभात का आरम्भिक समय। २. मंगलमय प्रभात। ३. वह प्रभात जिससे आरंभ होनेवाला दिन मंगलकारक और शुभ हो।

**सुप्रभाता**—स्त्री०[स०]१. पुराणानुसार एक नदी का नाम।
वि० (रात) जिसका प्रभाव शुभ या सुन्दर हो।

**सुप्रभाव**—वि०[स०]१. प्रभावपूर्ण। २. शक्तिशाली।

**सुप्रलंभ**—वि०[स०] जो सहज में प्राप्त हो सके। सुलभ।

**सुप्रलाप**—पुं०[सं०] सुन्दर भाषण।

**सुप्रश्न**—पु० [सं०] कुशल-मंगल जानने के लिए किया जानेवाला प्रश्न।

**सुप्रसन्न**—वि० [स०] १. अत्यन्त प्रसन्न। २ अत्यन्त निर्मल। ३. अच्छी तरह खिला या फूला हुआ।
पु० कुबेर का एक नाम।

**सुप्रसाद**—पु०[सं०]१. अत्यन्त प्रसन्नता। २ शिव। ३. विष्णु। ४. कार्तिकेय का एक अनुचर।

**सुप्रसावक**—पु०=सुप्रसाद।

**सुप्रसिद्ध**—वि०[स०] [भाव० सुप्रसिद्धि] बहुत अधिक प्रसिद्ध। बहुत मशहूर।

**सुप्रसू**—वि० स्त्री०[स०] (मादा प्राणी) जो सहज में अर्थात् बिना विशेष कष्ट के प्रसव करे।

**सुप्रिय**—वि०[सं०] अत्यन्त प्रिय। बहुत प्यारा।

**सुप्रिया**—स्त्री०[स०] एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में चार नगण और एक सगण रहता है। यह चौपाई का ही एक

रूप है। यथा—कहँ द्विज गन मिलि सुख स्तुति पढ़ही।—केशव। (कुछ लोग इसे 'सुचिरा' भी कहते हैं।)

**सुचरा**—पुं० [देश०] चौकी या मेज पर बिछाने का कपड़ा।

**सुफल**—वि० [सं०] १. सुन्दर फलवाला। २. जिसका या जिसके फल अच्छे और सुन्दर हों। २. कृतकार्य। सफल।

पु० [सं०] १ वृक्ष का अच्छा और सुन्दर फल। २. किसी काम या बात का अच्छा परिणाम या फल।

मुहा०—**सुफल बोलना**=धार्मिक कृत्य, श्राद्ध आदि के उपरान्त अन्तिम दक्षिणा लेकर पंडे, पुरोहित आदि का यजमान से कहना कि तुम्हें इस कार्य का सुफल मिलेगा।

३. अनार। ४. बादाम। ५. बेर। ६. कैथ। ७. मूँग। ८. बिजौरा नीबू।

**सुफलक**—पु० [सं०] अक्रूर के पिता का नाम।

**सुफला**—वि० स्त्री० [सं०] १. यथेष्ट या सुन्दर फल अथवा फलों से युक्त। २ तेज धारवाली (कटार, छुरी या तलवार)।

स्त्री० १ इन्द्रायण। इन्द्रवारुणी। २ कुम्हड़ा। ३. केला। ४. मुनक्का। ५ काश्मरी। गंभारी।

**सुफुल्ल**—वि० [सं०] १. सुन्दर फूलोंवाला। २. अच्छी तरह फूला हुआ (पेड़ या पौधा)।

**सुफेद**—वि० [भाव० सुफेदी]=सफेद।

**सुफेन**—पु० [सं०] समुद्र-फेन।

**सुफेर**—पु० [सं० सु+हिं० फेर] १. शुभ या लाभदायक अवसर या स्थिति। २. अच्छी दशा या अच्छे दिन। 'कुफेर' का विपर्याय।

**सुबंत**—वि० [सं०] व्याकरण में शब्द) जो सुप् विभक्तियों से (अर्थात् प्रथमा से सप्तमी तक की किसी विभक्ति से) युक्त हो।

**सुबंध**—वि० [सं०] अच्छी तरह बँधा हुआ।

पु० तिल।

**सुबंधु**—वि० [सं०] जिसके अच्छे बंधु या मित्र हों।

**सुबड़ा**—पु० [देश०] ऐसी चाँदी जिसमें ताँबा या और कोई धातु मिली हुई हो।

**सुबरन**†—पु० १. स्वर्ण (सोना)। २ =सुवर्ण।

**सुबरनी**†—स्त्री० [सं० सुवर्ण] छड़ी।

**सुबल**—वि० [सं०] [स्त्री० सुबला] बली। शक्तिशाली।

पु० १. शिवजी का एक नाम। २. वैनतेय का बंधज एक पक्षी। ३. पुराणानुसार भौत्य मनु का एक पुत्र। ४. धृतराष्ट्र के ससुर गंधार नरेश।

**सुबस***—वि० [हिं० सु+बसना] अच्छी तरह बसा हुआ।

वि० [सं० स्ववश] स्वतन्त्र। स्वाधीन।

अव्य० १. स्वतन्त्रतापूर्वक। २. अपनी इच्छा से।

**सुबह**—स्त्री० [अ०] १. दिन के निकलने का समय। सवेरा।

मुहा०—**सुबह-शाम करना**=(क) किसी प्रकार जीवन के दिन बिताना। (ख) बार बार यह कहकर टालना कि आज संध्या को अमुक काम कर देंगे, कल सवेरे कर देंगे। टाल-मटोल करना।

२. व्यापक अर्थ में मध्याह्न से पहले तक का समय। जैसे—कालेज आजकल सुबह का है। ४. आरंभिक अंश। जैसे—जिंदगी की सुबह।

**सुबह-दम**—अव्य० [अ० सुबह+फा० दम] बहुत सवेरे। तड़के।

**सुबहान**—पुं० [अ०] ईश्वर को पवित्र भाव से स्मरण करना। लोक में 'सुभान' के रूप में प्रचलित।

**सुबहान अल्ला**—अव्य० [अ०] जिसका अर्थ है—मैं ईश्वर को पवित्र हृदय से स्मरण करता हूँ; और जिसका प्रयोग प्रशंसात्मक रूप में विशेष आश्चर्य या हर्ष प्रकट करने के लिए होता है।

**सुबहानी**—वि० [अ०] ईश्वरीय।

**सुबही**—वि० [अ० सुबह+ही (प्रत्य०)] सुबह का। जैसे—सुबही तारा।

**सुबाल**—वि० [सं०] १. जो अभी बिलकुल बच्चा (अर्थात् अबोध या नादान) हो। २. बच्चों का सा। बचकाना।

पुं० १. अच्छा बालक। अच्छा लड़का। २. एक देवता का नाम। ३. एक उपनिषद्।

**सुबास**—पु० [सं० सु+वास] एक प्रकार का अगहनी धान।

स्त्री०=सुवास (सुगंध)।

**सुबासना**—स्त्री० [सं० सु+वास] अच्छी महक। सुगंध। खुशबू।

स० सुवास या सुगन्ध से युक्त करना। सुगंधित करना। महकाना।

**सुबासिका**†—वि०=सुवासित।

**सुबासित**†—वि०=सुवासित।

**सुबाहु**—वि० [सं०] १. सुन्दर बाहोंवाला। २. सशक्त भुजाओंवाला। ३. वीर। बहादुर।

पु० १. एक बोधिसत्व। २. नागासुर। ३ कार्तिकेय का एक अनुचर। ४. शत्रुघ्न का एक पुत्र। ५. पुराणानुसार श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ६ धृतराष्ट्र के एक पुत्र का नाम। ७. एक राक्षस, जो मारीच का भाई था और जगत्‌ मुनि के शाप से राक्षस हो गया था।

स्त्री० सेना।

**सुबिस्ता**†—पु०=सुभीता।

**सुबीज**—वि० [सं०] अच्छे बीजोंवाला।

पु० १.अच्छा और बढ़िया बीज। २. शिव। महादेव। ३. पोस्ते का दाना। खसखस।

**सुबीता**†—पुं०=सुभीता।

**सुबुक**—वि० [फा०] १. कम भारवाला। हलका। जैसे—सुबुक गहने। २. जो अधिक गहरा या तेज न हो। जैसे—सुबुक रंग। ३. जिसमें ज्यादा जोर न लगे या न लगाया जाय। जैसे—सुबुक हाथ से लिखना।

पुं० एक प्रकार का घोड़ा।

**सुबुक-दोश**—वि० [फा०] [भाव० सुबुक-दोशी] जिसके कन्धों पर से उत्तरदायित्व या कोई और भार उतर गया हो।

**सुबुकी**—स्त्री०[फा०] १. सुबुक होने की अवस्था या भाव। हलकापन। २. लोक में होनेवाली कुछ या सामान्य अप्रतिष्ठा। हेठी।

**सुबुद्धि**—वि०[सं०] उत्तम बुद्धिवाला। बुद्धिमान्।

स्त्री० अच्छी या उत्तम बुद्धि।

**सुबुध**—वि०[सं०] १. बुद्धिमान्। धीमान्। २. सतर्क। सावधान।

स्त्री०=सुबुद्धि।

**सुबू**—पु०[फा०] मिट्टी का घड़ा।

स्त्री०=सुबह (सवेरा)।

**सुबूत**†—वि०=साबुत।

†पु०=सवृत (प्रमाण)।

**सुबोध**—वि०[सं०] (बात या विषय) जो सहज में समझ में आ जाय। सरल और बोधगम्य। जैसे—सुबोध व्याख्यान।
पुं० अच्छा बोध या ज्ञान।

**सुब्रह्मण्य**—वि०[सं०] ब्रह्मण्य के सब गुणों से युक्त।
पुं० १. शिव। २. विष्णु। ३. कार्तिकेय। ४. यज्ञों में उद्गाता पुरोहित या उसके तीन सहकारियों में से एक। ५. कन्नड़ प्रदेश का एक प्राचीन प्रदेश जो पवित्र तीर्थ माना जाता था।

**सुब्रह्म वासुदेव**—पु०[सं०] श्रीकृष्ण।

**सुभग**—पुं०[सं०] नारियल का पेड़।

**सुभ**†—वि०=सुभ्र।

**सुभक्ष्य**—वि०[सं०] भक्षण के योग्य।
पुं० अच्छा और बढ़िया भोजन।

**सुभग**—वि०[सं०] [स्त्री० सुभगा, भाव० सुभगता]१. जिसका भाग्य अच्छा हो। भाग्यवान्। फलतः समृद्ध और सुखी। २. सुन्दर। ३ प्रिय। ४. सुखद।
पु०१. सौभाग्य। २. सौभाग्य का सूचक कर्म। (जैन) ३. शिव। ४. चंपा। ५. अशोक वृक्ष। ६. पत्थरफूल। ७. गंधक।

**सुभगता**—स्त्री०[सं०]१. सुभग होने की अवस्था, गुण या भाव। २ सौभाग्य का सूचक लक्षण। ३ प्रेम। स्नेह। ४ स्त्री के द्वारा प्राप्त होनेवाला सुख।

**सुभगा**—स्त्री०[सं०]१. सौभाग्यवती स्त्री। सधवा। २ ऐसी स्त्री जो अपने पति को प्रिय हो। प्रियतमा पत्नी। ३. कार्तिकेय की एक अनुचरी। ४ पाँच वर्ष की बालिका। ५ संगीत में एक प्रकार की रागिनी। ६. तुलसी। ७ हलदी। ८. नीली दूब। ९. केवटी मोथा। १०. कस्तूरी। ११. प्रियंगु। १२. सोन केला। १३ बेला।
वि०[सं०] 'सुभग' का स्त्री०।

**सुभगानन्द**—पु०[सं०] तांत्रिकों के एक भैरव।

**सुभग्ग**†—वि०=सुभग।

**सुभट**—पुं०[सं०] [भाव० सुभटता] बहुत बड़ा योद्धा या वीर।

**सुभटबंस**—पु०=सुभट।

**सुभट्ट**—पु०[सं०] बहुत बड़ा पण्डित। दिग्गज विद्वान्।

**सुभड़**†—पु०=सुभट।

**सुभव***—वि०=शुभद (शुभकारक)।

**सुभद्र**—पु० [सं०] १. विष्णु। २. सनत्कुमार। ३. पुराणानुसार प्लक्ष द्वीप का एक वर्ष या भू-भाग। ४. भैरवी के गर्भ से उत्पन्न वसुदेव का एक पुत्र। ५. सौभाग्य। ६. मंगल। कल्याण।
वि०१. अत्यन्त भाग्यवान्। २. भला।

**सुभद्रक**—पु०[सं०]१. देवदार। २. बेल का पेड़ या दल।

**सुभद्रा**—स्त्री०[सं०]१. श्रीकृष्ण और बलराम की बहन तथा अभिमन्यु की माता जो अर्जुन को ब्याही थी। २ दुर्गा की एक मूर्ति या रूप। ३. कुछ आचार्यों के मत से संगीत में एक श्रुति। ५. बालि की पुत्री जो अवीक्षित को ब्याही थी। ५. एक प्राचीन नदी। ६. अनन्तमूल। ७. काश्मरी। गंभारी। ८. भकड़ा नाम की घास।

**सुभद्राधी**—स्त्री०[सं०] त्रायमाण लता। त्रायंती।

**सुभद्रिका**—स्त्री०[सं०]१. श्री कृष्ण की छोटी बहन। २ एक प्रकार का छन्द या वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में न, न, र, ल और ग होता है।

**सुभद्रेश**—पुं०[सं०] सुभद्रा के पति, अर्जुन।

**सुभना***—अ०[सं० सुशोभन] सुशोभित होना। सुन्दर जान पड़ना।

**सुभर**†—वि०=शुभ्र।
†पु०=सुभट।

**सुभव**—वि०[सं०] जिसका उद्भव या जन्म अच्छे रूप से हुआ हो।
पुं० साठ संवत्सरों में से अंतिम संवत्सर।

**सुभाजन**—पुं०=शोभांजन (सहिजन)।

**सुभा**†—स्त्री०=शोभा।
†स्त्री०=सुबह।

**सुभाइ***—पुं०=स्वभाव।
अव्य०=सुभाएँ।

**सुभाउ***—पु०=स्वभाव।

**सुभाएँ**—अव्य० [सं० स्वभावतः] स्वभाव से ही। स्वभावतः।
अव्य० [सं० सत्-भावत.] अच्छे भाव या विचार से। सहज भाव से।

**सुभाग**—वि०[सं०] भाग्यवान्। खुशकिस्मत।
†पु०=सौभाग्य।

**सुभागी**—वि०[सं० सुभाग] भाग्यवान्। भाग्यशाली। खुशकिस्मत।
वि०[हिं० सुभाग] [स्त्री० सुभागिनी] भाग्यवान्। सौभाग्यशाली।

**सुभाग्य**—वि०[सं०] अत्यन्त भाग्यशाली। बहुत बड़ा भाग्यवान्।
पु०=सौभाग्य।

**सुभान**—पु० दे० 'सुबहान'।

**सुभान-अल्ला**—अव्य० दे०'सुबहान-अल्ला'।

**सुभाना***—अ०[हिं० शोभना]१. शोभित होना। देखने में भला जान पड़ना। २. फबना।

**सुभानु**—पु०[सं०]१. चतुर्थ द्वापर युग के दूसरे वर्ष का नाम। २. कृष्ण का एक पुत्र।
वि० बहुत अधिक प्रकाशमान्।

**सुभाव**†—पु०=स्वभाव।

**सुभायक***—वि० [सं० स्वाभाविक] जो स्वभाव से ही होता हो।

**सुभाव**†—पु०=स्वभाव।

**सुभावित**—भू० कृ०[सं०]१. अच्छी तरह सोचा-विचारा हुआ। २. (औषध) जिसकी अच्छी तरह भावना की गई हो। अच्छी तरह तैयार किया हुआ।

**सुभाषण**—पु०[सं०] [भू० कृ० सुभाषित] सुन्दर भाषण।

**सुभाषिणी**—वि०[सं०] सं० 'सुभाषी' का स्त्री०।
स्त्री० संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सुभाषित**—भू० कृ० [सं०] अच्छे ढंग से कहा हुआ (कथन आदि)।
पु०१. वह उक्ति या कथन जो बहुत अच्छा या सुन्दर हो। सूक्ति। २. कोई ऐसी विलक्षण और सुन्दर बात जिससे हास्य भी उत्पन्न हो। चुटकुला। (विट) ३. एक बुद्ध का नाम।

**सुभाषी (षिन्)**—वि० [सं०] १. अच्छी तरह से बोलनेवाला। २. प्रिय और मधुर बातें करनेवाला।

**सुभास्‌**—वि०[सं०] बहुत प्रकाशमान्। खूब चमकीला।

**सुभास्वर**—वि०[सं०] खूब चमकनेवाला। दीप्तिमान्।
पुं० पितरों का एक गण या वर्ग।

**सुभिक्ष**—पु०[सं०]१. मूलत ऐसा समय जब भिक्षुकों को सहज में यथेष्ट भिक्षा मिलती हो। २. फलत ऐसा काल या समय जब देश में अन्न पर्याप्त हो और सब लोगों को सहज में यथेष्ट मात्रा में मिलता हो। सुकाल। 'दुर्भिक्ष' का विपर्याय। ३. अन्न की प्रचुरता।

**सुभी**—वि० स्त्री०[सं०] शुभकारक। मंगलकारक।

**सुभीता**—पुं०[सं० सुविधा]१. ऐसी स्थिति जो किसी व्यक्ति या बात के लिए अनुकूल हो और जिसमें कठिनाइयाँ, बाधाएँ आदि अपेक्षया कम हों या कुछ भी न हों। अच्छा अनुकूल और उपयुक्त अवसर या परिस्थिति। २ आराम। सुख।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।

**सुभुज**—वि०[सं०] सुन्दर भुजाओंवाला। सुबाहु।

**सुभूता**—स्त्री०[सं०] उत्तर दिशा जिसमें प्राणी भली प्रकार स्थित होते हैं। (छादोग्य)

**सुभूति**—स्त्री०[सं०]१. कुशल। क्षेम। मंगल। २. उन्नति। तरक्की।

**सुभूम**—पु०[सं०] कार्तवीर्य जो जैनियो के आठवें चक्रवर्ती थे।

**सुभूमिक**—पु०[सं०] एक प्राचीन जनपद जो सरस्वती नदी के किनारे था। (महाभारत)

**सुभूषण**—वि०[सं०] सुन्दर आभूषणो से अलंकृत। अच्छे अलंकार धारण करनेवाला।

**सुभूषित**—भू० कृ०[सं०] अच्छी तरह भूषित किया हुआ। भली भाँति अलंकृत।

**सुभृत**—वि० [सं०] बहुत अधिक। अत्यन्त।

**सुभोग्य**—वि०[सं०] अच्छी तरह भोगे जाने के योग्य।

**सुभौंडी***—स्त्री० [सं० शोभा+हिं० टी (प्रत्य०)] शोभा।

**सुभौम**—पु०[सं०] एक चक्रवर्ती राजा जो कार्तवीर्य के पुत्र थे।(जैन)

**सुभ्र**—पुं०[?] जमीन में का बिल। (डिं०)
†वि०=शुभ्र।

**सुभ्रू**—वि० [सं०] सुन्दर भौंहोंवाला।
स्त्री०१. नारी। स्त्री। औरत। २. कार्तिकेय की एक मातृका।

**सुमंगल**—वि०[सं०]१. अत्यन्त शुभ। कल्याणकारी। २. सदाचारी।
पु० एक प्रकार का विष।

**सुमंगला**—स्त्री०[सं०]१. कार्तिकेय की एक मातृका। २ एक प्राचीन नदी। ३. मकड़ा नामक घास।

**सुमंगली**—स्त्री०[सं० सुमंगला] १. विवाह के समय सप्तपदी पूजा करने के उपलक्ष्य में पुरोहित को दी जानेवाली दक्षिणा। २. नव-विवाहिता स्त्री। वधू।

**सुमंगा**—स्त्री०[सं०] एक पौराणिक नदी।

**सुमंत***—पुं०=सुमंत्र।

**सुमंत्र**—पु०[सं०]१. राजा दशरथ के मन्त्री और सारथि का नाम। २. प्राचीन भारत में राज्य के आय-व्यय की व्यवस्था करनेवाला मंत्री। अर्थमंत्री।

**सुमंत्रित**—भू० कृ०[सं०]१. जिसे अच्छी सलाह मिली या दी गई हो। जो विचार-विमर्श के उपरान्त प्रस्तुत किया गया हो। जैसे—सुमंत्रित योजना।

**सुमंथन**—पुं०[सु+मथ=पर्वत] मंदर पर्वत।

**सुमंदर**†—पु०=समुद्र।

**सुमंदा**—स्त्री०[सं०] एक प्रकार की दिव्य शक्ति।

**सुमंद्र**—पु०[सं०] एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

**सुम**—पुं०[सं०]१. पुष्प। फूल। २. चन्द्रमा। ३. आकाश।
पुं०[देश०] एक प्रकार का पेड़ जो असाम में होता है और जिस पर 'मूगा' (रेशम) के कीड़े पाले जाते हैं।
पु०[फा०] चौपायों का खुर। टाप।

**सुमज**—पु०[सं०] आनन्दोत्सव।

**सुम-खारा**—पु०[फा० सुम+खार] ऐसा घोड़ा जिसकी एक (आँख की) पुतली बेकार हो गई हो।

**सुमत**†—वि०=सुमति।

**सुमतिजय**—पु०[सं०] विष्णु।

**सुमति**—वि[सं०] सुन्दर मति (बुद्धि या विचार) वाला। २. बुद्धिमान्। होशियार।
स्त्री०१. अच्छी मति या बुद्धि। २. लोगो मे आपस मे होनेवाला मेल-जोल और सद्‌भाव। उदा०—जहाँ सुमति तहँ संपति नाना।—तुलसी। ३ राजा सगर पत्नी जिससे ६० हजार पुत्र उत्पन्न हुए थे। (पुराण) ४. मैना पत्नी।
पु०१ वर्तमान अवसर्पिणी के पाँचवें अर्हत। (जैन) २. भरत का एक पुत्र। ३. जनमेजय का एक पुत्र।

**सुमद**—वि०[सं०] मदोन्मत्त। मतवाला।

**सुमदन**—पु० [सं०] आम का पेड़ और फल।

**सुमदना**—स्त्री०[सं०] एक पौराणिक नदी।

**सुमधुर**—वि०[सं०] बहुत अधिक मधुर या मीठा।
पु० जीव शाक।

**सुमध्य**—वि०[सं०] [स्त्री० सुमध्या] १. जिसका मध्य भाग सुंदर हो। २. पतली कमरवाला।

**सुमध्यमा**—वि० स्त्री०[सं०] सुन्दर कमरवाली (स्त्री)।

**सुमन**—वि० [सं० सुमनस्] १. अच्छे मन या हृदय वाला। सहृदय। २. मनोहर। सुन्दर।
पुं० १. देवता। २. पण्डित। विद्वान्। ३. पुष्प। फूल। ४. पुराणानुसार प्लक्ष द्वीप का एक पर्वत। ५. मित्र और सहायक। (डिं०) ६. गेहूँ। ७. धतूरा। ८. नीम। ९. घृतकरंज।

**सुमन-बाण**—पुं० [सं०] कामदेव जिसका धनुष फूलों का माना गया है।

**सुमनस (नस्)**—वि०[सं०]१. अच्छे हृदयवाला। सहृदय। २. सदा प्रसन्न रहनेवाला।
पुं०१. देवता। २. फूल।

**सुमन-ध्वज**—पुं०[सं० सुमनस्+ध्वज]कामदेव।

**सुमनस्क**—वि०[सं०]१. प्रसन्न। खुश। २. सुखी।

**सुमना**—स्त्री० [सं०] १. चमेली। २. खेती। ३. कबरी गाय। ४. दशरथ की पत्नी कैकेयी का वास्तविक नाम।

**सुमनायण**—पुं०[सं०] एक गोत्र प्रवर्तक ऋषि।

**सुमनित**—भू० कृ०[सं० सुमणि+त (प्रत्य०)] सुन्दर मणियों से युक्त किया हुआ। उत्तम मणियों से जड़ा हुआ।
वि०[सं० सुमन से] फूलों से युक्त।

**सुमनोत्तरा**—स्त्री०[स०] राजाओं के अन्तःपुर में रहनेवाली स्त्री।

**सुमनीकस**—पु०[सं०] देवलोक। स्वर्ग।

**सुमन्यु**—वि०[स०] अत्यन्त क्रोधी। बहुत गुस्सेवर।

**सुम-कटा**—पु०[फा० सुम+हिं० कटना]घोड़ों का एक प्रकार का रोग जो उनके खुर के ऊपरी भाग से तलवे तक होता है।

**सुमर**—पु०[स०] १. वायु। हवा। २. स्वाभाविक रूप से होनेवाली मृत्यु।

**सुमरन**†—पुं०=स्मरण।
†स्त्री०=सुमरनी।

**सुमरना**†—स०=सुमिरना।

**सुमरनी**—स्त्री०=सुमिरनी।

**सुमरा**—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की मछली जो नदियों और विशेष कर गरम झरनों में पाई जाती है।

**सुमरीचिका**—स्त्री०[सं०] पाँच बाह्य सुष्टियों में से एक। (साख्य)

**सुमर्मग**—वि०[स०] (तीर या बाण) जो मर्मस्थान के अन्दर तक घुस जाता हो।

**सुमलिलक**—पु०[स०] एक प्राचीन जनपद।

**सुम-सायक**—पु०[स० सुमन+सायक] कामदेव। (डिं०)

**सुम-सुखड़ा**—वि०[फा० सुम+हिं० सूखना] (घोड़ा) जिसके खुर सूख कर सिकुड़ गये हों।
पुं० घोड़ों का एक रोग जिसमें उनके सुम या खुर सूखने लगते हैं।

**सुमात्रा**—पु० मलय द्वीप-पुंज का एक प्रसिद्ध बड़ा द्वीप जो बोर्नियो के पश्चिम और जावा के उत्तर-पश्चिम में है।

**सुमानस**—वि०[स०] अच्छे मनवाला। सहृदय।

**सुमनिका**—स्त्री० एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

**सुमाली (लिन्)**—वि०[सं०] १. बहुत बड़ा अभिमानी। २. प्रतिष्ठित। सम्मानित। उदा०—ये हमारे मार्ग के तारे सुमाली।—मैथिलीशरण।

**सुमान्य**—वि०[सं०] विशेष रूप से मान्य और प्रतिष्ठित।
पु० १. आज-कल कलकत्ते, बम्बई आदि बड़े नगरों में एक विशिष्ट अवैतनिक सम्मानित राजपद, जिस पर नियुक्त होनेवाले व्यक्ति को शान्ति, रक्षा और न्याय संबंधी कुछ अधिकार प्राप्त होते हैं। २. इस पद पर नियुक्त होनेवाला व्यक्ति। (शेरिफ)

**सुमाय**—वि०[स०]१. माया से युक्त। २. बहुत बुद्धिमान्।

**सुमार**—स्त्री०[हिं० सु+मारना] अच्छी तरह पड़नेवाली मार। गहरी मार। उदा०—'हठ्यौ दै इठलाय हम करैं गँवारि सुमार।—बिहारी।
पुं०=सुमार (गिनती)।

**सुमार्ग**—पु०[सं०] उत्तम और श्रेयस्कर रास्ता।

**सुमार्गी**—वि०[स०] अच्छे मार्ग पर चलनेवाला।

**सुमाल**—पुं०[स०] एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)

**सुमालिनी**—स्त्री०[सं०] एक प्रकार का वर्णवृत्त।

**सुमाली (लिन्)**—पु०[सं०] एक राक्षस जो सुकेश का पुत्र था। २. राम की सेना का एक वानर।

पु०[फा० शमाल] एक अरब जाति जो अफ्रीका के उत्तर-पूर्वी सिरे पर और अदन की खाड़ी के दक्षिणी भाग में रहती है।

**सुमाल्यवन्त**—पुं०[सं०] एक पौराणिक पर्वत।

**सुमालिन्**—स्त्री०[स०]१ फूलों की अवली या कतार। २. फूलों की माला।

**सुमित्र**—पु०[सं०]१. पुराणानुसार श्रीकृष्ण का एक पुत्र। २. अग्निमन्यु का सारथि। ३. मगध का एक राजा जो अर्हत सुव्रत का पिता था। ४. इक्ष्वाकु वंश के अंतिम राजा सुरथ के पुत्र का नाम।

**सुमित्रभू**—पु०[सं०] १. जैनियों के चक्रवर्ती राजा सगर का नाम। २. वर्तमान अवसर्पिणी के बीसवें अर्हत का नाम।

**सुमित्रा**—स्त्री०[स०]१. राजा दशरथ की एक पत्नी जो लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न की माता। २ मार्कण्डेय ऋषि की माता का नाम।

**सुमित्रा-नंदन**—पुं०[स०] रानी सुमित्रा के पुत्र लक्ष्मण और शत्रुघ्न।

**सुमित्रय**—वि० [स०] उत्तम मित्रोंवाला। जिसके अच्छे मित्र हों।

**सुमिरन**†—पु०१ =स्मरण। २ =सुमरन।

**सुमिरना***—स० [स० स्मरण] १ स्मरण करना। चिंतन करना। ध्यान करना। २ सुमिरनी फेरते हुए देवता आदि का बार बार नाम लेते रहना।

**सुमिरनी**—स्त्री०[हिं० सुमरना+ई (प्रत्य०)] १.नाम जपने की छोटी माला जो सत्ताइस दानों की होती है। २. हाथ में पहनने का एक प्रकार का दानेदार गहना।

**सुमिराना**†—स०[हिं० सुमिरना] किसी को सुमिरने में प्रवृत्त करना।

**सुमिरिनिया**†—स्त्री०=सुमिरनी।

**सु-मिल**—वि०[सं० सु+हिं० मिलना]१ किसी के साथ सहज में मिल जानेवाला। २ सहज में हेल-मेल बढ़ानेवाला। मिलनसार। ३. मेल-जोल या स्नेह का संबंध रखनेवाला। ४. अनुकूल रहकर ठीक तरह से साथ देनेवाला। उदा०—सरस सुमिल चित तुरग कीकरि अमित उठान।—बिहारी।

**सुमुख**—वि०[स०] [स्त्री० सुमुखी]१. सुन्दर मुखवाला। २. मनोहर। सुन्दर। ३. प्रसन्न। ४. अनुकूल। ५ अत्यन्त नुकीला (तीर)।
पु०१. शिव। २. गणेश। ३. पण्डित। विद्वान्। ४. गरुड़ का एक पुत्र। ५. द्रोण का पुत्र। ६ एक प्रकार का जलपक्षी। ७. एक प्रकार का साग। ८. तुलसी। ९. राई।

**सुमुखा**—स्त्री०[स०] सुन्दरी स्त्री।
वि० स्त्री० जिसका प्रवेश-द्वार अच्छा हो।

**सुमुखी**—स्त्री०[स० सुमुख—ङीप्]१. सुन्दर मुखवाली स्त्री। २. वर्ण। ३ संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना। ४. सवैया छंद का तीसरा भेद जिसके प्रत्येक चरण में सात जगण और तब लघु और गुरु वर्ण होता है। मदिरा सवैया के आदि में लघु वर्ण जोड़ने से यह छंद बनता है। इसमें ११ और १२ वर्णों पर यति होती है। ५. नीली अपराजिता। नीली कोयल। ६. शलपुष्पी। शंखाहुलि।

**सुमुदित**—भू०[सं०] शिव का एक गण।

**सुमूल**—वि०[स०]१ (वृक्ष) जिसकी जड़ें अच्छी हों। दीर्घ तथा पुष्ट जड़ोंवाला। २ उत्तम आधार वाला। ३. जिसका मूल अर्थात् आरम्भ अच्छा हो।

पुं०१. उत्तममूल। २. सफेद सहिंजन।

**सुमूलक**—पुं०[सं०] गाजर।

**सुमूला**—स्त्री०[सं०]१. सरिवन। २. शालपर्णी। ३. पिठवन।

**सुमृग**—पुं०[स०]१. श्रेष्ठ जानवर। २. वन या वनस्थली जिसमें बहुत से जंगली जानवर रहते हों। ३. वह स्थान जहाँ शिकार के लिए जंगली जानवर मिलते हों।

**सुमृति**†—स्त्री०=स्मृति।

**सुमेखल**—पुं०[सं०] मूँज। मुजतृण।

**सुमेढ़ी**—स्त्री०[?] खाट बुनने का बाध।

**सुमेध**—पु०[स०] रामायण के अनुसार एक पर्वत।

**सुमेध**—वि०=सुमेधा।

**सुमेधा (धस्)**—वि०[सं०] जिसकी मेधा-शक्ति अर्थात् बुद्धि बहुत अच्छी हो। मेधावी।

पु०१. चालुष मन्वन्तर के एक ऋषि। २. पाँचवें मन्वन्तर के विशिष्ट देवता। ३. पितरों का एक गण या वर्ग।

स्त्री० मालकगनी।

**सुमेध्य**—वि०[स०] अत्यन्त पवित्र। बहुत पवित्र।

**सुमेर**—पु०[स० सुमेरु] १ गगाजल रखने का बड़ा पात्र। २. दे० 'सुमेरु'।

**सुमेरु**—पु०[स०]१ एक कल्पित पर्वत जो पुराणों में सब पर्वतों का राजा और सोने का कहा गया है। कहते हैं कि अस्त होने पर सूर्य इसी की ओट में हो जाता है। २. जप करने की माला में सबके ऊपर वाला अपेक्षाकृत कुछ बड़ा दाना। ३. उत्तरी ध्रुव। (नार्थ पोल) ४. दक्षिणी इराक का पुराना नाम। ५ पिंगल में एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में १९ मात्राएँ होती हैं। अंत में यगण होता है, १२ मात्राओं पर यति होती है, तथा पहली आठवीं और पन्द्रहवीं मात्राओं का लघु होना आवश्यक होता है। ६. शिव।

वि० १. सबसे अच्छा। सर्वश्रेष्ठ। २ बहुत अधिक ऊँचा। ३. बहुत सुन्दर।

**सुमेरुजा**—स्त्री०[स०] सुमेरु पर्वत से निकली हुई नदी।

**सुमेरु-ज्योति**—स्त्री०[स०] सुमेरु अर्थात् उत्तरी ध्रुव के आस-पास के क्षेत्रों में कभी-कभी रात के समय दिखाई पड़नेवाली एक विशेष ज्योति या विद्युत् का प्रकाश। 'कुमेरु ज्योति' का विपर्याय। (आरोरा बोरियालिस)

**सुमेरु-वृत्त**—पु०[सं०] वह रेखा जो उत्तर ध्रुव से २३॥ अक्षांश पर स्थित है।

**सुमेरु-समुद्र**—पु०[सं०] उत्तर महासागर का एक नाम।

**सुम्ना**—पु०[स्त्री० सुम्नी] दे० 'सुआ'।

†पुं०[देश०] बकरा।

**सुम्ह**—पुं०[सं० सुम्भ] एक प्राचीन जाति।

†पुं०=सुम (खुर)।

**सुम्हार**—पुं० [?] एक प्रकार का धान।

**सुयं**—अव्य०=स्वयं।

**सुयंत्रित**—वि०[सं०]१. अच्छी तरह शासित। २. स्व-नियंत्रित। ३. अच्छे यंत्रों से युक्त।

**सुयंवर**†—पुं०=स्वयंवर।



**सुयज**—वि० [सं०] उत्तमता या सफलता से यज्ञ करनेवाला। जिसने उत्तमता से यज्ञ किया हो।

पुं०१. उत्तम यज्ञ। २. वसिष्ठ का एक पुत्र। २. ध्रुव का एक पुत्र। ४. रुचि नामक प्रजापति का एक पुत्र।

**सुयत**—वि०[सं०]०१. उत्तम रूप से संयत। सुसंयत। २. जितेन्द्रिय।

**सुयम**—पुं०[सं०] देवताओं का एक गण जिसका जन्म सुयज्ञ की पत्नी दक्षिणा के गर्भ से कहा गया है। (पुराण)

**सुयश**—पुं०[सं०] अच्छा यश। अच्छी कीर्ति। सुख्याति। सुकीर्ति।

वि० जिसे अच्छा या यथेष्ट यश प्राप्त हुआ हो।

**सुयशा**—स्त्री० [सं०]१. राजा दिवोदास की पत्नी का नाम। २. राजा परीक्षित की एक पत्नी। ३. अवसर्पिणी।

**सुयाम**—पु० [सं०] ललित विस्तर के अनुसार एक देवपुत्र।

**सुयामुन**—पु०[सं०]१. विष्णु। २ एक प्रकार का मेघ। ३. एक पौराणिक पर्वत। ४. राजभवन। महल।

**सुयुद्ध**—पु०[स०] १. धर्म, नीति और न्यायपूर्वक किया जानेवाला युद्ध। २. धर्म की रक्षा के लिए किया जानेवाला युद्ध।

**सुयोग**—पु० [स०] ऐसा अवसर या समय, जो उपयुक्त तथा समयानुकूल हो।

**सुयोग्य**—वि०[स०] [भाव० सुयोग्यता] जिसमें अच्छी योग्यता हो।

**सुयोधन**—पु० [सं०] धृतराष्ट्र के बड़े पुत्र दुर्योधन का एक नाम।

**सुरंग**—वि०[स०]१. अच्छे रंग का। २ लाल रंग का। ३ रस-पूर्ण। ४. सुन्दर। ५ सुडौल। ६. स्वच्छ। साफ।

पु० १ नारंगी। २. रंग के विचार से घोड़ों का एक भेद। ३. शिंगरफ। ४. पतंग। बक्कम।

स्त्री०[सं० सुरंगी] [अल्पा० सुरंगिका] १. जमीन खोदकर या बारूद से उड़ाकर उसके नीचे बनाया हुआ रास्ता। बोगदा। (टनेल) २. बारूद आदि की सहायता से किला या उसकी दीवार उड़ाने के लिए उसके नीचे खोद कर बनाया हुआ गहरा और लंबा गड्ढा। ३ एक प्रकार का आधुनिक यंत्र, जिससे (क) समुद्र में शत्रुओं के जहाजों के पेंदे में छेदकर उन्हें डुबाया अथवा (ख) जिसे स्थल में शत्रुओं के रास्ते में बिछाकर उनका नाश किया जाता है। (माइन, उक्त सभी अर्थों के लिए) ४. चोरी करने के लिए दीवार में लगाई जानेवाली सेंध।

क्रि० प्र०—लगना।

**मुहा०—सुरंग मारना**= दीवार में सेंध लगाकर चोरी करना।

**सुरंगड**—पुं० [सं०]पतंग या बक्कम जिससे आल नामक बढ़िया लाल रंग निकलता है।

**सुरंग-धातु**—पुं०[सं०] गेरू मिट्टी।

**सुरंग-मार**—पु०[फा०+सं०] एक प्रकार का जहाज जो समुद्र के किसी भाग में शत्रु का संचार रोकने के लिए जगह-जगह सुरंगें बिछाता चलता है। (माइन लेयर)

**सुरंग-बुहार**—पुं०[सं० सुरंग+हिं० बुहारना] एक विशेष प्रकार का समुद्री जहाज जो समुद्र में बिछाई हुई सुरंगें हटाकर अलग करता या निकालता और दूसरे जहाजों के लिए आगे बढ़ने का रास्ता साफ करता है। (माइन स्वीपर)

**सुरंग-मार्जक**—पुं०=सुरंग-सुहार।

**सुरंगा**—स्त्री० [सं०]१. कँचैतिका लता। २. सेंध।

**सुरंगिका**—स्त्री०[सं०]१. छोटी सुरंग। २. ईंट, गारे आदि से बनी हुई वह नलाकार नाली जिसके द्वारा जल, तैल आदि तरल पदार्थ दूर तक पहुँचाये जाते हैं। (एक्वेडक्ट) ३. शरीर के अन्दर की कोई ऐसी छोटी नली या नस जिससे होकर कोई चीज इधर-उधर आती-जाती हो। जैसे—मूत्राशय की सुरंगिका जिससे होकर मूत्र जननेंद्रिय के ऊपरी भाग तक पहुँचता है। ४. मरोड़फली। मूर्वा। ५. पोई का साग। ५. सफेद मकोय।

**सुरंगी**—स्त्री०[सं०] १. काकनासा। कौआठोठी। २. सुलताना चंपा। पुन्नाग। ३. लाल सहिजन। ४. आल का पेड़ वृक्ष जिससे आल नामक रंग निकलता है।

वि०[सं० सुरंग+हिं० ई (प्रत्य०)] सुन्दर रंग या रंगोंवाला।

**सुरंजन**—पुं० [स०] सुपारी का पेड़।

**सुरंधक**—पु०[सं०] १ एक प्राचीन जनपद। २. उक्त जन पद का निवासी।

**सुर**—पुं०[स०] [भाव० सुरता, सुरत्व]१. देवता। २. सूर्य। ३ अग्नि का एक विशिष्ट रूप। ४. ऋषि या मुनि। ५ पण्डित। विद्वान्। ६. पुराणानुसार एक प्राचीन नगर जो चन्द्रभागा नदी के तट पर था।

पु०[स० स्वर] गले, बाजे आदि से निकलनेवाला स्वर।

मुहा०—सुर देना = किसी के गाने के समय उसे सहारा देने के लिए किसी बाजे से कोई एक स्वर निकालना (संगत करने से भिन्न)। सुर-पूरना=(क) फूँककर बजाये जानेवाले बाजे के बजाने के लिए उनमें मुँह से हवा भरना। उदा०—मंद मंद सुर पूरत मोहन, राग मल्लार बजावता।—सूर। (ख) दे० 'किसी के सुर में सुर मिलाना'। (किसी के) सुर में सुर मिलाना =किसी की हाँ में हाँ मिलाना। खुशामद करते हुए किसी का समर्थन करना। नया सुर अलापना=कोई विलक्षण, नई या औरों से अलग तरह की बात कहना।

**सुरकांत***—पु०[स० सुर+कान्त] देवों के अधिपति, इन्द्र।

**सुरक**—स्त्री०[हिं० सुरकना]१. सुरकने की क्रिया या भाव। २. सुरकने से होनेवाला शब्द।

पु०[सं०] भाले के आकार का तिलक जो नाक पर लगाया जाता है।

**सुरकना**—स०[अनु०] सुर-सुर शब्द करते हुए तथा एक-एक घूँट भरते हुए कोई तरल पदार्थ पीना। जैसे—गरम दूध सुरकना चाहिए।

**सुर-करी (रिन्)**—पु०[सं०] देवताओं का हाथी। दिग्गज। सुरराज।

**सुर-कली**—स्त्री०[हिं०सुर+कली] संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

**सुर-कानन**—पुं०[सं०] देवताओं का वन।

**सुर-कार**—पु०[स०] देवताओं के कारीगर, विश्वकर्मा।

**सुर-कार्मुक**—पु० [स०] इन्द्र-धनुष।

**सुर-काष्ठ**—पुं०[सं०] देवदार (वृक्ष और उसकी लकड़ी)।

**सुर-कुवाच**†—पुं० [सं० सुर=स्वर+कुवाच] १. दूसरों को धोखे में डालने के लिए स्वर बदल कर बोलना। २. उक्त प्रकार से बोलने का ढंग। ३. स्वर बदल कर बोले जानेवाले शब्द।

**सुर-कुरुट**—पु०[सं०] ईशानकोण में स्थित एक देश। (बृहत्संहिता)

**सुर-कुरु**—पु०[सं०] देवताओं का निवास-स्थान। स्वर्ग।

**सुर-केतु**—पु०[सं०]१ देवताओं या इन्द्र की ध्वजा। २. इन्द्र।

**सुरक्त**—वि० [सं०] [भाव० सुरक्तता]१. जिसमें अच्छा रक्त हो। २. फलतः स्वस्थ और सुन्दर। ३ गहरे लाल रंग का। ४. बहुत अधिक अनुरक्त।

**सुरक्तक**—पु०[स०]१. कोशाम्र। कोसम। सोनगेरू।

**सुरक्ष**—पुं० [सं०] एक पौराणिक पर्वत।

वि०=सुरक्षित।

**सुरक्षण**—पु० [सं०] [भू० कृ० सुरक्षित] अच्छी तरह से रक्षा करने की क्रिया या भाव। रखवाली। हिफाजत।

**सुरक्षा**—स्त्री०[सं०]१ अच्छी तरह या समुचित रूप से की जानेवाली रक्षा। २. आक्रमण, आघात आदि से बचने के लिए किया जानेवाला प्रबन्ध। (सिक्योरिटी) जैसे—सुरक्षा परिषद्।

**सुरक्षात्मक**—वि०[सं०] १. सुरक्षा-संबंधी। २ सुरक्षा के विचार से किया जानेवाला। जैसे—सुरक्षात्मक कार्रवाई।

**सुरक्षा-परिषद्**—स्त्री०[सं०]संयुक्त राष्ट्र-संघ का वह अंग या शाखा, जो यथासाध्य इस बात का प्रयत्न करती है कि राष्ट्रों में परस्पर लड़ाई-झगड़े न होने पावें। (सिक्योरिटी कौंसिल)

**सुरक्षित**—भू० कृ०[सं०]१. जिसकी समुचित रक्षा का प्रबन्ध हो। २ जो अच्छी तरह तथा अच्छी अवस्था में रखा गया हो। जैसे—आपकी पुस्तक मेरे पास सुरक्षित है।

**सुरक्षी (क्षिन्)**—पुं०[सं० सुरक्षिन्] उत्तम या विश्वस्त रक्षक। अच्छा अभिभावक या रक्षक।

**सुरक्ष्य**—वि०[सं०]१. जिसे सुरक्षित रखना आवश्यक हो। २. जिसकी सहज में सुरक्षा की जा सकती हो।

**सुर-खंडनिका**—स्त्री०[स०] एक प्रकार की वीणा जिसे सुर-मंडलिका भी कहते हैं।

**सुरख**—वि०[फा० सुर्ख] गहरा लाल।

**सुरखा**—पु०[फा० सुर्ख]१. वह सफेद घोड़ा जिसकी दुम लाल हो। २. वह घोड़ा जिसका रंग सफेदी या सूरापन लिए काला हो। ३. मद्य। शराब।

वि०=सुर्ख (लाल)।

पु०[?] एक प्रकार का लंबा पौधा जिसमें पत्ते बहुत कम होते हैं।

**सुरखाब**—पुं०[फा०] चकवा या चक्रवाक नामक पक्षी।

पद—सुरखाब का पर=विलक्षण विशेषता।

स्त्री० बलख प्रदेश की एक नदी।

**सुरखिया**—पु० [फा० सुर्ख+इया (प्रत्य०)] बगले की जाति का एक प्रकार का छोटा पक्षी जो प्रायः गायों के पास रहता और इसी लिए 'गाय बगला' भी कहलाता है।

**सुरखी**—स्त्री०[हिं० सुरख+ई (प्रत्य०)]१. ईंटों का बनाया हुआ महीन चूरा जिसमें चूना मिलाकर जुड़ाई के लिए गारा बनाया जाता है।

स्त्री० दे० 'सुर्खी'।

**सुरखुक**—वि०=सुर्खक।

**सुरगंध**—पु०[स०] एक प्रकार का फोड़ा।

सुरग†—पु० =स्वर्ग ।
†वि०=सुरग (सुन्दर) ।

सुर-गज—पु०[ स० ]१. देवताओं का हाथी। २. ऐरावत।

सुर-गति—स्त्री०[ सं० ] दैवी गति। भावी।

सुरग-वेश्या—स्त्री०[ सं० स्वर्ग-वेश्या ] अप्सरा। (डिं०)

सुर-गर्भ—पु०[ सं० ] देवताओं की संतान।

सुर-गाय—स्त्री०[ सं० सुर+गो ] कामधेनु।

सुर-गायक—पु०[ सं० ] देवों के गायक। गंधर्व।

सुर-गिरि—पु०[ स० ] देवों के रहने का पर्वत

सुरगी—पु०[ स० स्वर्गीय ] देवता। (डिं०)
वि० स्वर्ग का रहनेवाला।

सुरगी-नदी—स्त्री० [ सं० स्वर्गीय+नदी ] गंगा। (डिं०)

सुर-गुरु—पुं०[ स० ] देवों के गुरु, बृहस्पति।

सुर-गृह—पु० [ स० ]१ देवताओं का निवास-स्थान। २. देव-मन्दिर। देवालय।

सुर-धेनु —स्त्री० [ स० सुर+धेनु ] कामधेनु।

सुर-ग्रामणी—पु०[ स० ] देवताओं का नेता, इन्द्र।

सुर-चाप—पु० [ स० ] इन्द्रधनुष।

सुरच्छन†—पु०=सुरक्षण।

सुरज (ज्)—वि०[ स० ] (फूल) जिसमें उत्तम या यथेष्ट पराग हो।
†पु०=सूरज (सूर्य)।

सुरजन—पु०[ स० ] देवताओं का वर्ग। देव-समूह।
†वि०[ हिं० सुजन ] चतुर। चालाक।
†पु०=सुजन (सज्जन)।

सुरजनपन—पु०[ हिं० सुरजन+पन (प्रत्य०) ] १. सज्जनता। भलमनसत। २ चालाकी। होशियारी।

सुरजा—स्त्री०[ सं० ] एक पौराणिक नदी।

सुर-जेठ—पु०[ सं० सुरज्येष्ठ ] ब्रह्मा। (डिं०)

सुर-ज्येष्ठ—पु०[ सं० ] देवताओं में बड़े, ब्रह्मा।

सुरजन†—स्त्री०=सुलक्षना।

सुरजना†—अ०=सुलझना।

सुरजाना†—स०=सुलझाना।

सुरझावना†—स०=सुलझाना।

सुर-टीप†—स्त्री०[ हिं० सुर+टीप ] स्वर का आलाप। सुर की तान।

सुरत—पु० [ सं० ] १. रति-क्रीड़ा। काम-केलि। संभोग। मथुन। २. दे० 'सुरति'।
स्त्री०[ स० स्मृति ] १. याद। स्मृति। २. ध्यान। सुध।
मुहा०—(किसी पर) सुरत धरना=किसी की ओर ध्यान देना। जैसे—पराये धन पर सुरत नहीं धरनी चाहिए। (किसी) की सुरत बिसराना या बिसारना=किसी को बिलकुल भूल जाना और उसे याद न करना। (किसी ओर) सुरत लगाना=किसी ओर ध्यान बँधना या लगना। सुरत सँभालना=होश सँभालना। चेतन अवस्था में आना।

सुरत-ग्लानि—स्त्री० [ सं० मध्य० स० ] रति या संभोग के उपरान्त होनेवाली ग्लानि या क्लान्तिजन्य विरक्ति।

सुरत-ताली—स्त्री०[ सं० ]१. नायक और नायिका के बीच की दूती। २. सिर पर पहना या बाँधा जानेवाला सेहरा।

सुरत-बंध—पु०[ सं० ष० त० ] संभोग का एक आसन। (कामशास्त्र)

सुर-तरंगिणी—स्त्री० [ स० ष० त० ] १. गंगा। २. सरयू नदी। ३. आकाश-गंगा।

सुर-तरु—पु० [ सं० ष० त० ] कल्पवृक्ष।

सुरता—स्त्री०[ स० सुर+तक्—टाप् ]१. सुर अर्थात् देवता होने की अवस्था या भाव। २. वह गुण जिसके कारण देवताओं की प्रतिष्ठा मानी जाती है। देवत्व। ३. देवताओं का समूह। ४. रति-सुख।
स्त्री०[ सं० स्मृति, हिं० सुरत ]१. चेत। सुध। २. किसी की ओर लगा रहनेवाला ध्यान।
†वि० समझदार और सयाना। होशियार।
†पु०[ ? ] बाँस की वह नली जिसमें डालकर बीज बोने के लिए छिड़के जाते है।

सुर ताल—पु०[ स० ] १. देवताओं के पिता, कश्यप। २ देवताओं के राजा, इन्द्र।

सुरतान—स्त्री०[ हिं० सुर+तान् ] संगीत मे सुर के आधार पर ली जानेवाली तान।
†पु०=सुलतान।

सुरति—स्त्री०[ स० ]१. पति पत्नी का वह प्रेम जो काम-वासना की तृप्ति से उत्पन्न होता है। २. मैथुन। संभोग। ३. दे० 'रति'।
†स्त्री०[ सं० श्रुति ]१. अपौरुषेय ज्ञान का भंडार, वेद। श्रुति। उदा०—सुरति, स्मृति दोउ को बिसवास। —कबीर। २ हठयोग के अनुसार अत.करण में होनेवाला अन्तर्नाद। वि० दे० 'सुरति-निरति'। उदा०—सुरति समानी निरति में, निरति रही निरधार।—कबीर।
†स्त्री०१.=सुरत। २.=सूरत।

सुरति-कमल—पु०[ सं० ष० त० ] हठ-योग में आठ कमलों या चक्रों में से अंतिम चक्र जिसका स्थान मस्तक के ऊपर माना गया है।

सुरति-गोपना—स्त्री०[ सं० ] साहित्य में ऐसी नायिका जो रति-क्रीड़ा करके आई हो और अपनी सखियों आदि से यह बात छिपाती हो।

सुरति-निरति—स्त्री०[ सं० श्रुति+निर्वृत्ति ] परवर्ती हठ-योगियों की परिभाषा में अन्तर्नाद सुनना और उसी में लीन हो जाना। (अर्थात् ससीम का असीम में या व्यक्त का अव्यक्त में समा जाना।)

सुरति रव—पुं० [ सं० मध्य० स० ] रति-क्रीड़ा के समय होनेवाली भूषणों की ध्वनि।

सुरतिबंत—वि० [ सं० सुरत+वन् ] कामातुर।

सुरति-विचित्रा—स्त्री० [ स० ब० स० ] साहित्य में ऐसी मध्या नायिका जिसकी रति-क्रिया विचित्र हो।

सुरती—स्त्री० [ सूरत (नगर)+ई (प्रत्य०) ] १. तंबाकू का पत्ता। २. उक्त पत्तों का वह चूरा, जो पान के साथ या यों ही चूना मिलाकर खाया जाता है। खैनी।

सुर-सोवक—पुं०[ सं० ष० त० ] कौस्तुभ मणि।

सुरत्त†—स्त्री०=सुरति।

सुरत्न—पुं०[ सं० प्रा० स० ] १. उत्तम या बढ़िया रत्न। २. माणिक। लाल। ३. स्वर्ण। सोना।

वि०१. उत्तम रत्नों से युक्त। २. सब में श्रेष्ठ।
**सुर-नाग**—पु०=सुर-नाता।
**सुर-नाता**—पु०[सं० ष० त०]१. विष्णु। २ श्रीकृष्ण। ३. इन्द्र।
**सुरप**—पुं०[सं० प्रा० स०]१. अच्छा या सुन्दर रथ। २. द्रुपद का एक पुत्र। ३. जनमेजय का एक पुत्र। ४. एक पौराणिक पर्वत। ५. कुश द्वीप का एक वर्ष या खंड।
**सुरपा**—स्त्री०[सं० सुरप—टाप्] एक पौराणिक नदी।
**सुरपाकार**—पु०[सं०] एक पौराणिक वर्ष या भू-खंड।
**सुर-पान**—पुं० [सं० सुर+स्थान] स्वर्ग। (डिं०)
**सुरबार**—वि०[हिं० सुर+फा० दार]१. अच्छे सुरवाला। सुरीला। जैसे—सुरदार बाजा। २. बढ़िया स्वर में गानेवाला। जैसे—सुरदार गला।
**सुर-बाध**—पुं०[सं० ष० त०] देवदार।
**सुर-वीथिका**—स्त्री०[स० ष० त०] आकाश-गंगा।
**सुर-बुंशि**—स्त्री०[सं० ष० त०]१. देवताओं का नगाड़ा। २. तुलसी।
**सुर-देवी**—स्त्री०[स० ष० त०] योगमाया। (दे०)
**सुर-देश**—पु०[सं० ष० त०] देवताओं का देश। देव-लोक। स्वर्ग।
**सुर-द्रुम**—पु०[स० ष० त०]१. कल्प-वृक्ष। २. नरकट। नरकुल।
**सुर-द्विप**—पु०[स० ष० त०]१. देवताओं का हाथी। देवहस्ती। २. ऐरावत।
**सुर-द्विष्**—वि०[सं०] देवताओं से द्वेष करनेवाला।
पुं० १. राक्षस। २. राहु।
**सुर-धनुष (ष्)**—पुं०[स० ष० त०] इन्द्र-धनुष।
**सुर-धाम (मन्)**—पु०[सं० ष० त०] देव-लोक। स्वर्ग।
क्रि० प्र०—सिधारना।
**सुर-धुनी**—स्त्री०[स० ष० त०] गंगा।
**सुर-धूप**—पु०[सं० ष० त०] धूना। राल। सर्जरस।
**सुर-धेनु**—स्त्री०[स० ष० त०] कामधेनु।
**सुर-ध्वज**—पु० [स० ष० त०] इन्द्र-ध्वज।
**सुर-नंदा**—स्त्री० [सं०] एक प्राचीन नदी।
**सुर-नगर**—पु०[सं० ष० त०] स्वर्ग।
**सुर-नदी**—स्त्री०[सं०ष०त०] १. गंगा। २. आकाश-गंगा। ३. सरयू नदी।
**सुर-नाथ**—पु०[स० ष० त०] देवताओं के स्वामी, इन्द्र।
**सुर-नायक**—पु०[सं० ष० त०] इन्द्र।
**सुर-नारी**—स्त्री०[सं० ष० त०] देवांगना। देव-वधू।
**सुर-नाल**—पुं०[सं०] बड़ा नरसल। देवनल।
**सुर-नाह**°—पु०=सुर-नाथ (इन्द्र)।
**सुर-निम्नगा**—स्त्री०[सं० ष० त०] गंगा।
**सुर-निर्झरिणी**—स्त्री०[सं० ष० त०] आकाश-गंगा।
**सुर-निलय**—पुं० [सं० ष० त०] १. देवताओं के रहने का स्थान, स्वर्ग। २. सुमेरु पर्वत।
**सुर-पंचरी**—स्त्री०=सुरपोरी।
**सुरप**°—पु०[सं० सुरपति] इन्द्र।
**सुरपति**—पु०[सं० ष० त०]१. देवराज इन्द्र। २. विष्णु।
**सुरपति-गुरु**—पुं०[सं० ष० त०] बृहस्पति।
**सुरपति-चाप**—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्र-धनुष।
**सुरपतित्व**—पु०[सं० सुरपति+त्व] सुरपति होने की अवस्था, पद या भाव।
**सुर-पथ**—पुं०[स० ष० त०] आकाश।
**सुरपन**—पुं०[स० सुरपुष्पाग] पुष्पाग। सुलताना चपा।
**सुर-पर्ण**—पु०[सं० ष० त०] एक प्रकार का सुगंधित शाक।
**सुर-पाणिक**—पु०[स० सुरपर्ण+कन्—टाप्, इत्व] पुष्पाग वृक्ष।
**सुर-पर्णी**—स्त्री०[स०]१. पलासी। पलाशी। २. पुष्पाग।
**सुर-पर्वत**—पु०[स० ष० त०] सुमेरु।
**सुर-पालुला**—स्त्री०[स० ष० त०] अप्सरा।
**सुर-पावप**—पु०[सं० ष० त०] कल्पतरु।
**सुरपाल**—पु०[सं० सुर-पालक] इन्द्र।
**सुरपुन्नाग**—पु० [सं०] एक प्रकार का पुन्नाग।
**सुर-पुर**—पु०[स० ष० त०][स्त्री० सुरपुरी] देवताओं की पुरी, अमरावती।
क्रि० प्र०—सिधारना।
**सुरपुर-केतु**—पु० [स० ष० त०] इन्द्र।
**सुर-पुरोधा (धस्)**—पु०[स० ष० त०] देवताओं के पुरोहित, बृहस्पति।
**सुरपोरी**—स्त्री० [हिं० सुर-पौर] राज-दरबार या राजमहल की पहली ड्योढ़ी। राजद्वार।
**सुर-प्रतिष्ठा**—स्त्री०[स० ष० त०] देवमूर्ति की स्थापना।
**सुर-प्रिय**—पु०[स० ष० त०] १. इन्द्र। २. बृहस्पति। ३. एक पौराणिक पर्वत। ४ अगस्त का पेड़। ५. एक प्रकार का पक्षी।
वि० जो देवताओं को प्रिय हो।
**सुर-प्रिया**—स्त्री०[स० ष० त०]१. चमेली। २. सोन-केला।
**सुर-फाकताल**—पु० [हिं०सुर+फाँक=खाली+ताल]तबला और पखावज बजाने का एक प्रकार का ताल।
**सुर-फाक्ता**—पु०=सुर-फाँक (ताल)।
**सुर-बहार**—पु०[हिं० सुर+फा० बहार] सितार की तरह का एक प्रकार का बाजा।
**सुर-बाला**—स्त्री०[स० ष० त०] देवता की स्त्री। देवांगना।
**सुरबुली**†—स्त्री०[स० सुरवल्ली ?] चिरचल नाम का पौधा।
**सुरब्रुछ**°—पु०=सुर-वृक्ष (कल्पतरु)।
**सुर-बेल**—स्त्री०[स० सुर+वल्ली] कल्पलता।
**सुर-भंग**—पु०[स० स्वरभंग] प्रेम, आनंद और भय आदि के अतिरेक के कारण होनेवाला स्वर का विपर्याय जो साहित्य में सात्विक भावों के अन्तर्गत माना गया है।
**सुर-भवन**—पु०[स० ष० त०]१. देवताओं का निवास-स्थान। मंदिर। २. देवताओं की नगरी। अमरावती।
**सुरभान**—पु०[सं० सुर+भानु]१. इन्द्र। २ सूर्य।
**सुरभि**—स्त्री०[सं०]१. पृथ्वी। २. गौ। ३. कामधेनु। ४. गौओं की जननी और अधिष्ठात्री देवी। ५. कार्तिकेय की एक मातृका। ६. सुगंध। खुशबू। ७. मदिरा। शराब। ८. सेवती। ९. तुलसी। १०. सलई। ११ सप्तजटा। १२. एलुआ। १३. केवाँच। कौंछ। १४. सुगन्धित शालिधान्य। १५ रास्ना। १६. चन्दन।
पु० [स०] १. बसंत काल। २. चैत का महीना। ३. वह आग जो

यज्ञ-धूप की स्थापना के समय जलाई जाती थी। ४. सोना। स्वर्ण। ५. गन्धक। ६. जायफल। ७. कदंब। कदम। ८. चंपक। चंपा। ९. बकुल। मौलसिरी। १०. सफेद कीकर। शमी। ११. रोहिष घास। १२. धूना। राल। १३. बबेर चन्दन।

वि० १. सुगंधित। सुवासित। २. मनोरम। सुन्दर। ३. उत्तम। श्रेष्ठ। ४. गुणवान्। गुणी। ५. सदाचारी। ६ वदन पर ठीक और चुस्त बैठनेवाला (कपड़ा)।

**सुरभि-कांता**—स्त्री० [स० ब० स०] वासंती। नेवारी।

**सुरभिका**—स्त्री० [सं० सुरभि+कन्—टाप्—इत्व] स्वर्णकदली। सोनकेला।

**सुरभि-गंध**—वि० [सं० ब० स०] सुरभित। सुगंधित।

पु० तेजपत्ता।

**सुरभि-गंधा**—स्त्री० [सं० ब० स०] चमेली।

**सुरभित**—भू० कृ० [स०] सुरभि से युक्त किया हुआ। सुगंधित। सुवासित।

**सुरभि-तनय**—पु० [स० ष० त०] १. बैल। २. साँड़।

**सुरभि-तनया**—स्त्री० [सं०] गाय। गौ।

**सुरभिता**—स्त्री० [स०] १. सुरभि का गुण या भाव। २. सुगंध। खुशबू।

**सुरभि-त्रिफला**—स्त्री० [स० ष० त०] जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनों का समूह। (बैद्यक)

**सुरभित्वक्**—स्त्री० [स० ब० स०] बड़ी इलायची।

**सुरभि-दारु**—पु० [स० मध्य० स०] धूप सरल।

**सुरभि-पत्रा**—स्त्री० [स० ब० स०] गुलाब जामुन का पेड़ और फल।

**सुरभि-पुत्र**—पु० [स० ष० त०] १. साँड़। २ बैल।

**सुरभि-भक्षण**—पु० [स०] हठ-योग की एक क्रिया जिसमें साधक खेचरी मुद्रा के द्वारा अपनी जीभ उलटकर तालू के मूल वाले छेद में लगाता और सहस्रार में स्थित चन्द्रमा से निकलनेवाला अमृत पीता है। इसे गोमांस-भक्षण भी कहते हैं।

**सुरभि-मंजरी**—स्त्री० [स० ब० स०] सफेद तुलसी।

**सुरभि-मान**—वि० [सं० सुरभिमत्] सुगंधित। सुवासित।

पु० अग्नि।

**सुरभि-मास**—पु० [सं० मध्य० स०] वसंत (ऋतु)।

**सुरभि-मुख**—पु० [सं० ब० स०] वसंत ऋतु का प्रारम्भिक काल।

**सुरभि-वल्कल**—पु० [स० ब० स०] दालचीनी।

**सुरभि-बाण**—पु० [सं० ब० स०] कामदेव।

**सुरभि-शाख**—पुं० [सं० मध्य० स०] एक प्रकार का सुगंधित साग।

**सुर-भिषक्**—पु० [सं० ष० त०] देवताओं के वैद्य, अश्विनीकुमार।

**सुरभि-समय**—पु० [सं० मध्य० स०] वसंत ऋतु, जिसमें फूलों की मधुर गंध चारों ओर फैलती है।

**सुरभी**—स्त्री०=सुरभि।

**सुरभीपुर**—पुं० [सं० ष० त०] गोलोक।

**सुर-भूप**—पुं० [सं० ष० त०] १. इन्द्र। २. विष्णु।

**सुर-भूषण**—पु० [सं० ष० त०] देवताओं के पहनने का १००८ मोतियों का चार हाथ लंबा हार।

**सुर-भूषणी**—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सुर-भूरुह**—पुं० [सं० ष० त०] १. कल्पतरु। २. देवदार।

**सुर-भोग**—पुं० [सं० ष० त०] देवताओं के भोग की वस्तु, अमृत।

**सुर-भौन**†—पुं०=सुर-भवन (स्वर्ग)।

**सुर-मंडल**—पु० [सं० ष० त०] १. देवताओं का मंडल। २. सारंगी, सितार आदि की तरह का एक प्रकार का बाजा।

**सुर-मंडलिका**—स्त्री०=सुर-मंडलिका।

**सुर-मंत्री (न्त्रिन्)**—पुं० [स० ष० त०] बृहस्पति।

**सुर-मंदिर**—पु० [सं० ष० त०] देव-मन्दिर। देवालय।

**सुरमई**—वि० [फा०] १. सुरमे के रंग का। नीला। सफेदी लिए हुलका नीला या काला। जैसे—सुरमई कबूतर, सुरमई घोड़ा। २. सुरमे के रंग में रँगा हुआ।

पुं० एक प्रकार का काला रंग।

स्त्री० काले रंग की एक प्रकार की चिड़िया जिसकी गरदन नीली होती है।

**सुरमई कलम**—स्त्री० [फा०] आँखों में सुरमा लगाने की सलाई। सुरमचू।

**सुरमचू**—पु० [फा० सुरमः+चू (प्रत्य०)] आँखों में सुरमा लगाने की सलाई।

**सुर-मणि**—पु० [स० ष० त०] चिंतामणि (रत्न)।

**सु-रम्य**—वि० [सं० प्रा० स०] बहुत अधिक रमणीय।

बहुत सुन्दर।

**सुरमा**—पु० [फ़ा० सुरमः] हलके सफेद रंग का एक प्रकार का भुरभुरा खनिज पदार्थ जिसका प्रयोग धातुओं में मिलाने तथा रासायनिक कार्यों के लिए होता है, और जिसका महीन चूर्ण आँखों की सुन्दरता बढ़ाने और उनके अनेक प्रकार के रोग दूर करने के लिए अंजन के रूप में होता है।

पु० [?] एक प्रकार का पक्षी।

स्त्री० [?] असम देश की एक नदी।

†पुं०=सूरमा (शूर-वीर)।

**सुर-मानी (निन्)**—वि० [सं०] अपने आप को देवता समझनेवाला।

**सुर-मृत्तिका**—स्त्री० [सं० ष० त०] गोपीचंदन। सौराष्ट्र मृत्तिका।

**सुर-मेदा**—स्त्री० [स०] महामेदा।

**सुरमे-दानी**—स्त्री० [फ़ा० सुरमः+दान (प्रत्य०)] लकड़ी या धातु का शीशीनुमा पात्र जिसमें आँखों में लगाने का सुरमा रखा जाता है।

**सुरमे***—वि०, पुं०=सुरमई।

**सुर-मौर**—पु० [सं० सुर+हिं० मौर] विष्णु।

**सुरम्य**—वि० [सं० प्रा० स०] १. अत्यन्त मनोरम और रमणीय। २. बहुत सुन्दर।

**सुरमा**†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की दाँती, जो झाड़ियाँ काटने के काम आती है।

**सुर-यान**—पुं० [सं० ष० त०] देवताओं की सवारी का रथ।

**सुर-युवती**—स्त्री० [सं० ष० त०] अप्सरा।

**सुर-योषित्**—स्त्री० [सं० ष० त०] अप्सरा।

**सुर-राई***—पुं० [सं० सुरराज] १. इन्द्र। २. विष्णु।

**सुर-राज**—पुं० [स०] देवताओं के राजा, इन्द्र।

**सुर-राजगुरु**—पुं० [सं० ष० त०] बृहस्पति।

सुर-राजता—स्त्री०[सं०] सुर-राज होने की अवस्था, पद या भाव। इन्द्रत्व। इन्द्रपद।

सुरराज वृक्ष—पु०[सं० ष० त०] पारिजात। परजाता।

सुरराजा (जन्)—पु०[सं० ष० त०] इन्द्र।

सुरराय*—पु०=सुरराज।

सुरराव*—पु०=सुरराज।

सुर-रिपु—पु०[स०] १. देवताओं के शत्रु, असुर। राक्षस। २. राहु।

सुर-वल्ल—पुं०[सं० सुर+हिं० रूख=वृक्ष†] कल्पवृक्ष।

सुरर्षभ—पुं०[सं० सप्त० स०] १. देवताओं में श्रेष्ठ, इन्द्र। २. महादेव। शिव।

सुरर्षि—पु०[सं० ष० त०] देवऋषि। देवर्षि।

सुर-लता—स्त्री०[ष० त०] बड़ी मालकांगनी। महाज्योतिष्मती लता।

सुर-ललना—स्त्री० [सं० ष० त०] देववाला। देवांगना।

सुरला—स्त्री०[सं०] १. गंगा। २. एक प्राचीन नदी।

सुर-वाहिका—स्त्री० [स०]१. वंशी। बाँसुरी। २. वंशी की ध्वनि।

सुरली—स्त्री०[स० सु+हिं० रली] सुन्दर और प्रेमपूर्ण क्रीड़ा।

सुरलोक—पु० [सं० ष० त०] देवताओं का लोक। स्वर्ग। देवलोक।

सुर-वधू—स्त्री०[सं० ष० त०] देवता की पत्नी। देवांगना।

सुर-वर—पुं०[स० सप्त० त०] देवताओं में श्रेष्ठ, इन्द्र।

सुर-वर्त्म (र्त्मन्)—पुं० [सं० ष० त०]१. देवों का मार्ग। आकाश। २. स्वर्ग।

सुर-वल्लभा—स्त्री०[सं०] सफेद दूब।

सुर-वल्ली—स्त्री०[सं० ष० त०] तुलसी।

सुरवस†—पु० [देश०] जुलाहों की वह पतली, हलकी छड़ी या सरकंडा जिसका व्यवहार ताना तैयार करने में होता है।

सुरवा*—पु०=श्रुवा।
†पु०=शोरवा।

सुरवाड़ी—स्त्री०[हिं० सूअर+बाड़ी(प्रत्य०)] सूअरों के रहने का स्थान। सूअरखाड़ा।

सुर-वाणी—स्त्री० [सं० ष० त०] देवताओं की वाणी, संस्कृत।

सुरवाल—पु०=सलवार।
†पु०[?] खेड़ा।

सुरवास—पु०[स० ष० त०] देव-स्थान। स्वर्ग।

सुर-वाहिनी—स्त्री०[सं०]१. गंगा।

सुर-विटप—पुं० [स० ष० त०] कल्पवृक्ष।

सुर-वीथी—स्त्री०[स० ष० त०] नक्षत्रों का मार्ग।

सुर-वीर—पुं०[सं० सप्त० त०] इन्द्र।

सुर-वृक्ष—पु०[सं० ष० त०] कल्पतरु।

सुर-वेश्म (श्मन्)—पु०[स० ष० त०] स्वर्ग। देवलोक।

सुर-वैरी—पु०[सं० सुरवैरिन्] देवों के शत्रु, असुर।

सुर-शत्रु—पु०[सं० ष० त०]१. राक्षस। २. राहु।

सुर-सनूदन्—पु० [सं० सुरसनूद्+√हन् (मारना)+क्विप्] देवताओं के शत्रुओं का नाश करनेवाले, शिव।

सुर-शयनी—स्त्री०[सं० ष० त०] आषाढ़ मास के शुक्ल पक्ष की एकादशी। विष्णु-शयनी एकादशी। देव-शयनी एकादशी।

सुर शाखी(खिन्)—पु०[स० ष० त०] कल्पवृक्ष।

सुर-शिल्पी(ल्पिन्)—पुं०[स० ष० त०] विश्वकर्मा।

सुर-श्रेष्ठ—पु०[स० सप्त० त०]१. वह जो देवों में श्रेष्ठ हो। २. विष्णु। ३ शिव। ४. गणेश। ५. इन्द्र। ६. धर्म।

सुर-श्रेष्ठा—स्त्री०[स० सुरश्रेष्ठ—टाप्] ब्राह्मी।

सुरस—वि० [स०] १. सुन्दर रसवाला। २ रसीला। सरस। ३. मधुर। ४. स्वादिष्ट। ५ सुन्दर।
पु० १ तेजपत्ता। २ दालचीनी। ३. तुलसी। ४. रूसा घास। ५. सैंभालू। ६. मोचरस। ६. बोल नामक गन्धद्रव्य। ८ पीत-साल।
†पु० दे० 'सुरवस' (जुलाहों का)।

सुर-सख—पु०[स० ष० त०] देवताओं के सखा, इन्द्र।

सुर-सत—स्त्री०=सरस्वती। (डिं०)

सुरसत-जनक—पु०[सं० सरस्वती+जनक] ब्रह्मा। (डिं०)

सुरसती*—स्त्री० [स० सरस्वती] १ सरस्वती। २. एक प्रकार की नाव।

सुर-सत्तम—पु०[स० सप्त० स०] सुरश्रेष्ठ। (दे०)

सुर-सदन—पु० [स० ष० त०] देवताओं के रहने का स्थान, स्वर्ग।

सुर-सद्म(मन्)—पु०[स० ष० त०] स्वर्ग।

सुर-समिध—स्त्री० [सं० ष० त०] देवदारु।

सुर-सर—पु०[सं० सुर+सर] मानसरोवर।
†स्त्री०=सुरसरि।

सुरसर-सुता—स्त्री०[स०] सरयू नदी।

सुरसरि—स्त्री० [स० सुरसरित्] १ गंगा। २ गोदावरी। ३ कावेरी।

सुर-सरित—स्त्री०[स० ष० त०] गंगा।

सुर-सरिता—स्त्री० =सुरसरित्।

सुर-सरी—स्त्री०=सुरसरि।

सुर-सर्षक—पु०[स० ष० त०] देव-सर्षप।

सुरसा—स्त्री०[स० सुरस—टाप्]१ पुराणानुसार एक राक्षसी, जो नागों या सर्पों की माता कही गई है और जिसने हनुमान् को लंका जाते समय समुद्र पार करने से रोकना चाहा था। २ एक प्रकार का छंद या वृत्त। ३ संगीत में एक प्रकार की रागिनी। ४. दुर्गा का एक नाम। ५ एक पौराणिक नदी। ६. अंकुश के आगे का नुकीला भाग। ७ ब्राह्मी। ८ तुलसी। ९. सौंफ। १०. बड़ी शतावर। ११. जूही। १२. सफेद निसोथ। १३ शल्लकी। सलई। १४ निर्गुंडी। १५. रास्ना। १६. भटकटैया। कंटेरी। १७. बन-भंटा। बहुती।

सुरसाई—पु० [स० सुर+हिं० साँई=स्वामी]१. इन्द्र। २. शिव। ३. विष्णु।

सुर-सागर—पु०[सुर=स्वर से+सागर]एक तरह का बाजा जिसमें बजाने के लिए तार लगे होते हैं।

सुरसाग्रज—पु०[स०] सफेद तुलसी।

सुरसाग्रणी—स्त्री०=सुरसाग्रज।

सुरसारी—स्त्री०=सुरसरि।

सुरसालू*—पु० [स० सुर+हिं० सालना] देवताओं को सतानेवाला अर्थात् असुर या राक्षस।

**सुरक्षाष्ट**—पुं० [स० ष० त०] सँभालू, तुलसी, ब्राह्मी, बनभंटा, कंटकारी और पुनर्नवा—इन सब का वर्ग या समूह।

**सुर-साहब**—पुं० [सं० सुर+फा० साहब] देवताओं के स्वामी, इन्द्र।

**सुर-सिंधु**—पुं० [सं० ष० त०] १. गंगा। २ संगीत में कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

**सुर-सुंदर**—पुं० [सं० सप्त० स०] सुन्दर देवता।
वि० देवता के समान सुन्दर।

**सुर-सुंदरी**—स्त्री० [सं०] १ दुर्गा। २. देवकन्या। ३. एक योगिनी का नाम। ४. अप्सरा।

**सुर-सुत**—पुं० [सं० ष० त०] [स्त्री० सुर-सुता] देवपुत्र।

**सुर-सुरभी**—स्त्री० [सं० सुर+सुरभी] देवताओं की गाय, कामधेनु।

**सुरसुराना**—अ० [अनु०] १. कीडों आदि का सुरसुर करते हुए रेंगना। २ शरीर में हलकी खुजली या गुरगुराहट होना।
स० कोई ऐसी क्रिया करना जिससे सुरसुर शब्द हो।

**सुरसुराहट**—स्त्री० [हिं० सुरसुराना+आहट (प्रत्य०)] १ सुरसुराने की क्रिया या भाव। २. शरीर में होनेवाली हलकी खुजली। ३ गुदगुदी।

**सुरसुरी**—स्त्री० [अनु०] १ एक प्रकार का कीड़ा जो चावल, गेहूँ आदि में होता है। २ दे० 'सुरसुराहट'।

**सुरसेन**—पु० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सुरसेनप**—पु० [स० सुर+सेनापति] देवताओं के सेनापति, कार्तिकेय।

**सुरसेना**—स्त्री० [स० ष० त०] देवताओं की सेना।

**सुरसेनी**—स्त्री०=सुर-धेनी (एकादशी)।

**सुरसैयाँ***—पु० [स० सुर+हिं० सैयाँ (स्वामी)]=सुर-साईं (इन्द्र)।

**सुर-स्त्री**—स्त्री० [सं० ष० त०] देवता की स्त्री। देवांगना।

**सुर-स्थान**—पुं० [सं०ष०] देवताओं के रहने का स्थान, स्वर्ग। सुर-लोक।

**सुर-स्रवती**—स्त्री० [सं०] आकाश-गंगा।

**सुर-स्रोतस्विनी**—स्त्री० [सं०] गंगा।

**सुर-स्वामी**—पुं० [सं० ष० त०] देवताओं के स्वामी, इन्द्र।

**सुरहउ**†—स्त्री०= सुरभि।

**सुरहद**†—वि० [?] ऊँचा। उच्च।

**सुरहना**—अ० [?] (चाव आदि का) भरना या सूखना।

**सुरहर (र)**—वि० [सं० सरल] जो सीधा ऊपर की ओर गया हो।
वि० [अनु० सुरसुर] जो सुर-सुर या सुर-हुर शब्द करता हो।
†वि० सुनहरा।

**सुरहिया**†—स्त्री०=१. सोरहिया। २.=सुरही।

**सुरही**†—स्त्री० [हिं० सोलह] १. सोलह। १. सोलह चित्ती कौड़ियाँ जिनसे जुआ खेलते हैं। २. उक्त कौड़ियों से खेला जानेवाला जुआ।
स्त्री० [सं० सुरभि] १. सुरभि। २. गाय। उदा०—इन सुरही का दूध न मीठा।—कबीर। ३. चमरी गाय। ५. परती जमीन में होनेवाली एक प्रकार की घास।

**सुरही भच्छन**†—पुं०=सुरभि-भक्षण।

**सुरहुर (र)**—वि०=सुरहरा।

**सुरहोती**†—पुं० [कर्म० सुरहोतेप] पुखराज की जाति का एक पेड़।

**सुरांगना**—स्त्री० [सं० ष० त०] १. देवस्त्री। देवांगना। २. अप्सरा।

**सुरा**—स्त्री० [सं०√सु+कट् सुष्टु रापनयनरेति वा अद्—टाप्] १ मद्य। मदिरा। शराब। २. जल। पानी। ३. पानी पीने का पात्र। ४. साँप। ५. दे० 'सुरासव'।

**सुराई**—स्त्री० [स० सुर] १. 'सुर' होने की अवस्था या भाव। २ आधिपत्य। प्रभुत्व।
*स्त्री०=शूरता (वीरता)। उदा०—हमरे कुल इन्ह पर न सुराई।—तुलसी। ३. रानियों की छतरी या समाधि। (बुंदेल०)

**सुरा कर्म (न्)**—पु० [सं० मध्य० स०] वह यज्ञ-कर्म जो सुरा द्वारा किया जाता है।

**सुराकार**—पुं० [सं०] १. वह जो सुरा या शराब बनाता हो। कलाल। कलवार। २ शराब चुआने की भट्ठी।

**सुराख**—पु०=सूराख (छेद)।
†पुं०=सुराग।

**सुराग**—पु० [अ० सुराग़] किसी गूढ़ अपराध या रहस्य का वह सूत्र जिससे उसका ठीक पता चल सके।
क्रि० प्र०—देना।—पाना।—मिलना।—लगना।—लगाना।
पु० [स० सु+राग] १. उत्तम प्रेम। गहरा प्यार। २. बढ़िया राग।

**सुरा गाय**—स्त्री० [स० सुर+गाय] एक प्रकार की दो नस्ली गाय जिसकी पूँछ एफ्फेदार होती है और जिससे चँवर बनता है। लोग इसका दूध भी पीते हैं और इन पर बोझ भी ढोते हैं। चमरी। बन-चौर।
विशेष—उत्तरी हिमालय और तिब्बत में इसी को 'याक' कहते हैं।

**सुरागार**—पुं० [स० ष० त०] १ देवताओं का स्थान। २ मद्य बनाने या बेचने का स्थान। मदिरालय।

**सुरागृह**—पु०=सुरागार।

**सुराचार्य**—पु० [स० ष० त०] देवताओं के आचार्य, बृहस्पति।

**सुराज (न्)**—वि० [सं०] सुन्दर राजा वाला। अच्छे राजा द्वारा शासित (देश)।
पुं० १.=सुराज्य। २.=स्वराज्य।

**सुराजा (जन्)***—पु० [सं०] उत्तम राजा। अच्छा राजा।
†पु०=सुराज्य।

**सुराजिका**—स्त्री० [सं०] छिपकली।

**सुराजीव**—पुं० [सं०] विष्णु।

**सुराजीवी (विन्)**—वि० [सं०] १ जो मद्य पीकर जीता हो। २. जिसका पेशा शराब बनाना और बेचना हो।

**सुराज्य**—पुं० [सं० प्रा० स०] १. अच्छा राज्य। २ ऐसा राज्य जिसमें प्रजा सुखी और सुरक्षित हो। सुराज।
†पुं०=स्वराज्य।

**सुराणी**—स्त्री० [?] लकड़ी का वह डंडा जिससे अनाज के दाने निकालने के लिए बाल आदि पीटते हैं।

**सुरात्रि**—पुं० [सं० ष० त०] देवताओं का पर्वत, सुमेरु।

**सुरादा (दृ)**—वि० [सं० प्रा० स०] १. उत्तम दान देनेवाला। बहुत बड़ा दाता। २. बहुत बड़ा धनवान्।

**सुरादानी**—स्त्री० [सं०] मद्य रखने का पात्र।

**सुराधिप**—पुं० [सं० ष० त०] देवताओं के स्वामी, इन्द्र।

**सुराधीश**—पुं०=सुराधिप।

**सुराध्यक्ष**—पुं०[सं० ष० त०]१. ब्रह्मा। २. शिव। ३. इन्द्र। ४. श्रीकृष्ण।

**सुराध्वज**—पुं०[सं० ष० त०] मद्यशाला पर लगाया जानेवाला झंडा।

**सुरानक**—पुं०[सं०ष० त०] देवताओं का नगाड़ा।

**सुरानीक**—पुं०[सं० ष० त०] देवताओं की सेना।

**सुराप**—वि०[स० सुरा√पा (पीना)+क] १ सुरा या मद्य पान करने वाला। मद्यप। शराबी। २. बुद्धिमान्। समझदार। ३. मधुर। प्रिय।

**सुरापगा**—स्त्री०[सं० ष० त०] आकाश गंगा।

**सुरा-पात्र**—पुं०[सं०ष० त०] वह पात्र (विशेषतः प्याला) जिसमें शराब पीते हैं।

**सुरा-पान**—पुं०[सं०]१. मद्यपान करने की क्रिया। शराब पीना। २. शराब पीने के समय खाई जानेवाली चटपटी चीजें। चाट।

**सुरापी(पिन्)**—वि०[सं०] शराब पीनेवाला।

**सुरा-पीत**—भू० कृ०[स० ब० स०] जिसने शराब पी हो।

**सुराबिंब**—पुं०[स० ष० त०] सुरा का समुद्र।

**सुराभाग**—पुं०[स०] वह खमीर जिससे शराब तैयार की या बनाई जाती है।

**सुरामंड**—पुं०[स० ष० त०] शराब की माँड़।

**सुरा-मुख**—वि० [स० ब० स०] जिसके मुँह में शराब हो या शराब की दुर्गन्ध आती हो। जो शराब पीये हुए हो।

**सुरा-मेह**—पुं०[सं०] वैद्यक के अनुसार प्रमेह रोग का एक भेद।

**सुरामेही(हिन्)**—वि०[सं० सुरामेह+इनि] सुरामेह से पीड़ित।

**सुराय***—पुं०[स० सु+हि० राय] अच्छा राजा।

**सुरायुध**—पुं०[सं० ष० त०] देवताओं का आयुध या अस्त्र।

**सुरारणि**—स्त्री०[स० ष० त०] देवताओं की माता, अदिति।

**सुरारि**—पुं०[स० ष०त०] देवताओं का शत्रु, राक्षस।

**सुरारिघ्न**—पुं०[स० सुरारि√हन् (मारना)+टक्] असुरों का नाश करनेवाले, विष्णु।

**सुरारिहंता(न्तृ)**—पुं०[सं० ष० त०] असुरों का नाश करनेवाले, विष्णु।

**सुरारी**—पु०[देश०] एक प्रकार की बरसाती घास।

**सुरार्चन**—पु०[सं० ष० त०] देवताओं की की जानेवाली अर्चना। देव-पूजा।

**सुरार्दन**—पु०[स० सुर√अर्द् (मारना)+ल्यु—अन] देवताओं को सतानेवाले, राक्षस।

**सुरार्ह**—पुं०[स०]१. हरिचन्दन। २ सोना। स्वर्ण।

**सुराल**—पुं०[सं०] भूना। राल।

पुं०[?] घोड़ा बेल नाम की लता जिसकी जड़ बिलाईकन्द कहलाती है।

**सुरालय**—पुं०[सं०ष०त०]१. देवताओं के रहने का स्थान। स्वर्ग। २. सुमेरु पर्वत। ३. देव मन्दिर। ४. शराब बनाने या बेचने की जगह। शराबखाना।

**सुरालिका**—स्त्री० [सं०] सातला या सप्तला नाम की जंगली बेल।

**सुराव**—पुं०[सं० प्रा० स०]१. अच्छी ध्वनि। २. एक प्रकार का घोड़ा।

**सुरावट**—स्त्री० [हि० सुर+आवट (प्रत्य०)] १. संगीत में, स्वरों का ठीक तरह से होनेवाला आरोह और अवरोह। स्वरों का सगत उतार-चढ़ाव। २ सुरीलापन। उदा०—सुरज वीणा वेणु आदिक बज उठे। बिरां बैतालिक सुरावट सज उठे।—मैथिली०।

**सुरावती**—स्त्री०=सुरावनि।

**सुरावनि**—स्त्री० [स० ष० त०]१. देवताओं की माता, अदिति। २. पृथ्वी।

**सुरा-वारि**—पुं० [सं० ष० त०] सुरा का समुद्र।

**सुरावास**—पु०[सं० ब० स०] सुमेरु।

**सुरावृत्त**—पु०[स०] सूर्य।

**सुरावेश**—पु०[स० ष० त०]सुमेरु।

**सुराष्ट्र**—पु०[सं० प्रा० स०, ब० स०] सौराष्ट्र देश का दूसरा नाम।

**सुराष्ट्रज**—पु०[स० सुराष्ट्र√जन् (उत्पन्न होना)+ड]१. गोपी चदन। सौराष्ट्र मृत्तिका। २ काला मूँग। ३ लाल कुलथी। ४ एक प्रकार का विष।

वि० सुराष्ट्र देश में उत्पन्न।

**सुराष्ट्रजा**—स्त्री० [सं०] गोपीचन्दन।

**सुरा संधान**—पु०[स० ष० त०] भभके से शराब चुआने की क्रिया।

**सुरा-समुद्र**—पु०=सुराब्धि।

**सुरासव**—पु०[सं० सुरा+आसव]१ वैद्यक मे एक प्रकार का आसव। २ एक प्रकार का बहुत तेज मादक आसव या द्रव पदार्थ जो भभके से चुआकर बनाया जाता है और जिसका व्यवहार विलायती दवाओ, शराबों, सुगधियों आदि में मिलाने अथवा तेज आँच पैदा करने के लिए जलावन के रूप में होता है। (स्पिरिट)

**सुरासार**—पु० [सं०] वह तात्त्विक तथा मूल तरल मादक द्रव्य जिससे शराब बनती है। (एलकोहल)

**सुरासुर**—पुं० [सं० द्व० स०] सुर और असुर। देवता और दानव।

**सुरासुर-गुरु**—पु०[स० ष० त०]१. शिव। २ कश्यप।

**सुरास्पद**—पु०[सं० ष० त०] देव-मन्दिर।

**सुराही**—स्त्री०[अ०]१. जल रखने का एक प्रकार का प्रसिद्ध मिट्टी, धातु, शीशे आदि का पात्र, जिसके नीचे और बीच का भाग बड़े लोटे की तरह और ऊपर का भाग लम्बे चौंगे या नल की तरह होता है। २. कुछ आभूषणों तथा दूसरे पदार्थों के सिरे पर का उक्त आकार का छोटा खड। ३ कपड़े की एक प्रकार की काट। (दरजी)

**सुराहीदार**—वि० [अ० सुराही+फा० दार] सुराही के आकार-प्रकार वाला। सुराही की सी आकृतिवाला।

**सुराहीनुमा**—वि०[अ० +फा०]१. जो देखने में सुराही के समान हो। सुराही के आकार का। २. दे० 'सुराहीदार'।

**सुराह्व**—पुं०[स०]१. देवदार। २. मरुआ। ३. हलदुआ।

**सुराह्वय**—पु०[सं० ब० स०] १ एक प्रकार का पौधा। २. देवदारु वृक्ष।

**सुरिंद**—पुं० [स० सुर] इन्द्र। (डिं०)

**सुरिया-खार**—पुं०[फा० शोरा+हि० खार] शोरा।

**सुरी**—स्त्री० [सं०] देवपत्नी। देवांगना

**सुरीला**—वि० [हि० सुर+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० सुरीली, भाव० सुरीलापन] १. सगीत में (आलाप, तान आदि) जिसका गायन स्वरों के अनुरूप या अनुसार हो रहा हो। २. महीन और मीठा (स्वर)।

सुरंगा—स्त्री०=सुरंग।
सुरंग्य—वि० [सं०] अच्छी तरह प्रकाशित। प्रदीप्त।
सुरंग—वि० [हिं० सु+फा० रंग] १. सुन्दर आकृति या रूपवाला। खूबसूरत। २ प्रसन्न रहकर दया करनेवाला। अनुकूल। उदा०—सुरंग सुमुख एक रस एक रूप तोहि।—तुलसी।
वि० दे० 'सुर्ख'।
सुरंगरू—वि०=सुर्खरू।
सुरंच—वि० [सं०] उज्ज्वल या सुन्दर प्रकाशवाला।
पुं० उज्ज्वल प्रकाश। अच्छी रोशनी।
सुरंचि—स्त्री० [सं० प्रा० रू०] १. अच्छी विशेषतः नागर और परिष्कृत रुचि। २. प्रसन्नता। ३. ध्रुव की विमाता।
वि० सुरुचिपूर्ण।
सुरंचिर—वि० [सं० प्रा० रू०] १ जिसमें तबीयत खूब रमती हो। २ व्यापक अर्थ में सुन्दर। ३. उज्ज्वल। चमकीला। प्रकाशमान्।
सुरंज—वि० [सं०] बहुत बीमार। अस्वस्थ। रुग्ण।
†पुं०=सूर्य।
सुरंजमुखी†—पुं०=सुर्यमुखी।
सुरंति*—स्त्री०=सुरति।
सुरंद्रि—स्त्री० [सं०] शतद्रु (वर्तमान सतलज) नदी का एक पुराना नाम।
सुरंर—पुं० दे० 'सरूर'।
सुरंल—पुं० [देश०] मूँगफली के पौधों में होनेवाला एक रोग।
सुरंवा—पुं० १ =भूरा। २.=शोरबा।
सुरंप—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० सुरूपा, भाव० सुरूपता] १. जिसका रूप या आकृति अच्छी हो। २. सुन्दर। खूबसूरत। ३. पण्डित। विद्वान्। ४. बुद्धिमान्। समझदार।
पुं०१ शिव। २. कपास। ३. पलास। ४. पीपल।
†पुं०=स्वरूप।
सुरूपक—वि०=स्वरूपवान्।
सुरूपता—स्त्री० [सं० सुरूप+तल्—टाप्] सुरूप होने की अवस्था या भाव। सुन्दरता। खूबसूरती।
सुरूपा—स्त्री० [सं० सुरूप—टाप्] १. सलिल। शालपर्णी। २. भारंगी। ३ सेवती ४. बेला।
वि० सुन्दर रूपवाली (स्त्री)।
सुरूपक—पुं० [सं०] खञ्जर।
सुरेंद्र—पुं० [स० ष० त०] १. सुरराज। इन्द्र। २ बहुत बड़ा राजा।
सुरेंद्र-कांत—पुं०=सुरेंद्रकांत।
सुरेंद्रक—पुं० [सं०] जंगली बेल या सूरन।
सुरेंद्रगोप—पुं० [सं०] इन्द्रगोप नामक कीड़ा। बीरबहूटी।
सुरेंद्रचाप—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्रधनुष।
सुरेंद्रजित्—पुं० [सं० सुरेन्द्र √जि (जीतना)+क्विप्—तुक्] इन्द्र को जीतनेवाले, मघड़।
सुरेंद्रता—स्त्री० [सं० सुरेन्द्र +तल्—टाप्] सुरेन्द्र होने की अवस्था, गुण या भाव। इन्द्रत्व।
सुरेंद्रपूज्य—पुं० [सं० ष० त०] बृहस्पति।
सुरेंद्रलोक—पुं० [सं० ष० त०] इन्द्रलोक।



सुरेंद्रवज्रा—स्त्री० [सं०] इन्द्रवज्रा नामक वृत्त का दूसरा नाम।
सुरेंद्राणी—स्त्री० [सं० सुरेन्द्र+अत्—अ—ङीप्] शची। इन्द्राणी।
सुरेख—वि० [सं० ब० स०] १. सुन्दर रेखाएँ बनानेवाला। २. सुन्दर रेखाओं से युक्त।
स्त्री० [प्रा० स०] सुन्दर रेखा।
सुरेज्य—पुं० [सं० ष० त०] बृहस्पति।
सुरेज्या—स्त्री० [सं०] १. तुलसी। २. ब्राह्मी।
सुरेणु—स्त्री० [सं०] १. असरेणु। २ एक प्राचीन नदी। ३ विश्वात् की पत्नी जो त्वाष्ट्री की पुत्री थी।
सुरेतना†—स० [?] खराब अनाज में से अच्छे अनाज अलग करना।
सुरेतर—पुं० [सं० पंच० त०] असुर।
वि० सुरों से इतर या भिन्न।
सुरेता (तस्)—वि० [सं० ब० स०] १. बहुत वीर्यवान्। २. विशेष सामर्थ्यवान्।
सुरेतिन*—स्त्री० [सं० सुरति] उपपत्नी। रखेली।
सुरेष—पुं० [?] सूस। शिशुमार।
सुरेनुका—स्त्री०=सुरेणु।
सुरेम—वि० [सं० ब० स०] सुन्दर स्वरवाला। सुरीला।
पुं० देवदारु।
सुरेश—पुं० [सं० ष० त०] १. देवताओं के राजा, इन्द्र। २. शिव। ३. विष्णु। ४. श्रीकृष्ण। ५. राजा।
सुरेशी—स्त्री० [सं० सुरेश+ङीप्] दुर्गा।
सुरेश्वर—पुं० [सं० ष० त०] १ देवताओं के राजा, इन्द्र। २. ब्रह्मा। ३. शिव। ४ शिव।
सुरेश्वरी—स्त्री० [सं० सुरेश्वर—ङीप्] देवताओं की स्वामिनी, दुर्गा। २. लक्ष्मी। ३. राधा। ४ आकाश-गंगा।
सुरेष्ट—पुं० [सं०] १. सुर-पुन्नाग। २ अगस्त्य का पेड़ और फूल। ३. मौलसिरी। ४. शालवृक्ष। साल।
सुरेष्टक—पुं० [सं०] शाल वृक्ष। साल।
सुरेष्टा—स्त्री० [सं०] ब्राह्मी।
सुरेस—पुं०=सुरेश।
सुरं—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास जो गर्मी के दिनों में पैदा होती है।
†स्त्री०=सुरभि।
सुरंत—स्त्री० [सं० सुरति] १. विषय-भोग के निमित्त रखी जानेवाली स्त्री। उपपत्नी। रखेल। २. वेश्या।
सुरंतबाल—पुं० [हिं०सुरंत+बाल] सुरंत या उपपत्नी से उत्पन्न सन्तान।
सुरंतिन—स्त्री० दे० 'सुरंत'।
सुरोचन—पुं० [सं०] पुराणानुसार एक वर्ष या भू-खंड।
सुरोचना—स्त्री० [सं०] कार्तिकेय की एक मातृका।
सुरोचि—वि० [सं० सुरुचि] सुन्दर।
सुरोत्तम—पुं० [सं० सप्त त०] १. देवताओं में श्रेष्ठ, विष्णु। २. सूर्य।
सुरोत्तर—पुं० [सं०] चंदन।
सुरोद—पुं० [सं० ष० त०] मदिरा का समुद्र।
सुरोदक—पुं०=सुरोद।

**सुरोदय**†—पुं०=स्वरोदय ।

**सुरोधा** (धस्) —पु०[सं०] एक गौण-प्रवर्तक ऋषि ।

**सुरोपम**—वि० [स० ब० स०] १. देवताओं के समान। देव-तुल्य।

**सुरोमा** (मन्)—वि० [सं० ब० स०] सुन्दर रोमोंवाला। जिसके रोएँ सुन्दर हों।

**सुरोका** (कस्)—पुं०[सं० ष० त०] १. स्वर्ग। २. देव-मन्दिर।

**सुर्ख**—वि० [फा० सुर्ख] रक्त-वर्ण। लाल। जैसे—सुर्ख गाल।
पुं० लाल रंग। रक्त वर्ण।

**सुर्खदाना**—पु०[फा० सुर्ख दानः] एक प्रकार की वनस्पति।

**सुर्खरू**—वि०[फा०] [भाव० सुर्खरूई] १. जिसके मुखपर लाली और फलत: तेज हो। तेजस्वी। २. यश या सफलता प्राप्त करने के कारण जिसके चेहरे पर लाली अर्थात् फूल्लता या प्रसन्नता आ गई हो। कीर्तिशाली। यशस्वी। ३. प्रतिष्ठित।

**सुर्खरूई**—स्त्री०[फा०] १. सुर्खरू होने की अवस्था या भाव। २. कीर्ति। यश। ३. प्रतिष्ठा। मान।

**सुर्खा**—पु०[फा० सुर्ख] लाल रंग का एक प्रकार का कबूतर।

**सुर्खाब**—पु०=सुरखाब (चकवा)।

**सुर्खी**—स्त्री० [फा० सुर्खी] १. लाली। ललाई। २. लेखों आदि का शीर्षक जो पहले लाल स्याही से लिखा जाता था। ३. लाल स्याही। ४. खून। रक्त। लहू। ५. दे० 'सुरखी'।

**सुर्खीदार सुरमई**—पु० [फा०] एक प्रकार का सुरमई या बैंगनी रंग जो कुछ लाली लिए होता है।

**सुर्जना**†—पु०=सहिजन (वृक्ष)।

**सुर्ता**—वि० =सुरता (समझदार)।

**सुर्ती**—स्त्री०=सुरती।

**सुर्त्त**†—स्त्री०१.=सुरत। २.=सुरति।

**सुर्मा**†—पुं०=सुरमा।

**सुर्रा**—पु०[देश०] १. एक प्रकार की मछली। २. छोटी थैली। बटुआ।
पु०[अनु० सुर-सुर] हवा का सुर-सुर करता हुआ तेज झोंका।

**सुर्लक**†—पु० दे० 'सोलक'।

**सुर्लकी**†—पुं०=सोलकी।

**सुलक्ष**—वि०=सुलक्षण।

**सुलक्षण**—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० सुलक्षणा] १. अच्छे या शुभ लक्षणोंवाला। २. भाग्यवान्।
पुं०[प्रा० स०] १. शुभलक्षण। २. एक प्रकार का छंद।

**सुलक्षणता**—स्त्री० [सं० सुलक्षण+तल्—टाप्] १. सुलक्षण होने की अवस्था या भाव। २ वह तत्त्व जिससे सुलक्षण होने का भाव सूचित होता है।

**सुलक्षणत्व**—पुं०[सं०] सुलक्षणता।

**सुलक्षणा**—स्त्री०[सं० ब० स०] अच्छे लक्षणोंवाली स्त्री।

**सुलक्षणी**—वि० स्त्री०=सुलक्षणा।

**सुलक्षित**—भू० कृ० [सं०] १. अच्छी तरह से देखा तथा पहचाना हुआ। २ लक्ष्य के रूप में आया हुआ। ३. सुपरीक्षित। ४. सुनिश्चित।

**सुलक्षना**†—वि० [सं० सुलक्षण] [स्त्री० सुलक्षनी] १. अच्छे लक्षणोंवाला। २. शुभ। जैसे—सुलक्षनी घड़ी। (पश्चिम)

***अ०=सुलगना।**

**सुलग**—स्त्री०[हिं० सुलगना] सुलगने की क्रिया, अवस्था या भाव।
स्त्री०[हिं० सु+लगना] समीप होना।
अव्य० समीप। पास।

**सुलगन**—स्त्री० [हिं० सुलगना] सुलगने की अवस्था, क्रिया या भाव। सुलग।

**सुलगना**—अ०[सं० सु+हिं० लगना] १. किसी चीज का इस प्रकार जलना कि उसमें से लपट न निकले, बल्कि धूआँ निकले। जैसे—बीड़ी या सिगेट सुलगना। २. धीरे-धीरे जलने लगना। जैसे—आग सुलग रही है। ३ लाक्षणिक अर्थ में, ईर्ष्या, क्रोध, घुटन आदि के कारण मन ही मन बहुत कुढ़ना या संतप्त होना।

**सुलगाना**—स०[हिं० सुलगना] इस प्रकार प्रयास करना कि कोई चीज सुलगने लगे। जैसे—बीड़ी सुलगाना।

**सुलग्न**—पु०[सं० प्रा० स०] शुभ मुहूर्त। शुभ लग्न। अच्छी साइत।
वि० किसी के साथ अच्छी तरह लगा हुआ।

**सुलच्छन***—वि० [स्त्री० सुलच्छनी]=सुलक्षण।

**सुलछ**†—वि०[स० सुलक्ष] १. जो भली भाँति दिखाई पड़ रहा हो। २. अच्छे लक्षणोंवाला। ३ सुन्दर।

**सुलझन**—स्त्री०[हिं० सुलझना] सुलझने की क्रिया या भाव। सुलझाव। 'उलझन' का विपर्याय।

**सुलझना**—अ०[हिं० उलझना का अनु०] १. उलझनों से मुक्त होना। २. समस्या की जटिलता, पेचीदगी आदि का दूर होना।

**सुलझाना**—स०[हिं० सुलझना का स० रूप] १. किसी उलझी हुई वस्तु की उलझन दूर करना। उलझन या गुत्थी खोलना। २. किसी बात या विषय की जटिलताएँ दूर करना। 'उलझाना' का विपर्याय। जैसे—मामला सुलझाना।

**सुलझाव**—पु० [हिं० सुलझना+आव (प्रत्य०)] सुलझने या सुलझाने की क्रिया या भाव। सुलझन।

**सुलटा**—वि०[हिं० उलटा का अनु०] [स्त्री० सुलटी] जो उल्टा न हो। सीधा।

**सुलतान**—पु०[फा०] बादशाह। सम्राट्।

**सुलताना चंपा**—पु० [फा० सुलतान+हिं० चंपा] एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी इमारती कामों और जहाज के मस्तूल तथा रेल की पटरियाँ बनाने के काम आती है। पुन्नाग।

**सुलतानी**—वि० [फा० सुलतान]१ सुलतान या बादशाह संबंधी। २. लाल (रंग का)।
स्त्री०१.सुलतान होने की अवस्था, पद या भाव। २. सुलतान का राज्य या शासन-काल। बादशाही। राजत्व।
पु०१. प्रकार का बढ़िया महीन रेशमी कपड़ा। २. पुरानी चाल का एक प्रकार का कागज जो फारस से बनकर आता था।
वि० लाल रंग का। रक्त-वर्ण। सुर्ख।

**सुलप**†—पु०[सु+आलाप] सुन्दर आलाप। (संव०)
वि० [सं० स्वल्प] १ बहुत थोड़ा। अल्प। २. धीमा। मन्द।

**सुलभ**—वि०[सं० सु+हिं० लभना] १. सहज में लभनेवाला। लभीला। २. कोमल। नाजुक। सुलायम।

सुलफा—पुं० [फा० सुल्फः] १. गाँजा, चरस आदि। २. तम्बाकू की चिलम भरने का वह प्रकार जिसमें मिट्टी के तबे का प्रयोग नहीं होता। २. सूखा तम्बाकू जिसे गाँजे की तरह पतली चिलम में भरकर पीते हैं। कंकड़। ३. चरस।
क्रि० प्र०—पीना।—भरना।
पु० [सं० शौल्फ] एक प्रकार का साग।

सुलफेबाज—वि० [हिं० सुल्फा+फा० बाज] [भाव० सुल्फेबाजी] गाँजा या चरस पीनेवाला। गंजेड़ी या चरसी।

सुलब—पु० [?] गंधक। (डिं०)

सुलभ—वि० [स०] [भाव० सुलभता, सुलभत्व] १ जो प्राप्त हो सकता हो। जिसे प्राप्त करने में विशेष कठिनाई या परिश्रम न हो। २. सरल। सहज। ३. साधारण। मामूली। ४. उपयोगी।
पु० अग्निहोत्र की अग्नि।

सुलभ-गणक—पु० [सं०] ऐसी सारिणी या सारिणी-संग्रह जिसके द्वारा नित्य के व्यवहार की गणित-संबंधी प्रक्रियाओं के फल या परिकलन सहज में जाने जा सकें। (रेकी-रेकनर) जैसे—किसी निश्चित दर से १२ दिनों का वेतन, २३ दिनों का ब्याज आदि जानने की सारिणी।

सुलभता—स्त्री० [स० सुलभ+तल्—टाप्] सुलभ होने की अवस्था, गुण या भाव। सुलभत्व।

सुलभत्व—पु० [स०] सुलभता।

सुलभ-मुद्रा—स्त्री० [स०] अर्थशास्त्र में, किसी ऐसे देश की मुद्रा जो किसी राष्ट्र या राज्य को उस देश से माल मँगाने के लिए सहज में प्राप्त हो सके। (साफ्ट करेन्सी)
विशेष—यदि हमारे देश में किसी दूसरे देश से आयात कम और निर्यात अधिक होता हो तो फलतः उस देश की मुद्रा हमारे लिए सुलभ और इसकी विपरीत दशा में दुर्लभ होगी।

सुलभा—स्त्री० [स०] १. वैदिक काल की एक ब्रह्मवादिनी विदुषी। २. तुलसी। ३. बेला। ४. जंगली उड़द। मषवन।

सुलभेतर—वि० [सं० प० त०] १ जो सहज में प्राप्त न हो सके। 'सुलभ' से भिन्न। दुर्लभ। २. कठिन। मुश्किल। ३. महँगा।

सुलभ्य—वि० [सं० सु√लभ् (प्राप्त होना)+यत्] जो सहज में मिलता या मिल सकता हो। सुलभ।

सुललित—वि० [सं० प्रा० स०] अति ललित। अत्यन्त सुन्दर।

सुलवण—वि० [सं० प्रा० स०] (खाद्य पदार्थ) जिसमें उचित मात्रा में नमक मिला हो।

सुलस—पु० [?] स्वीडन देश का एक प्रकार का बढ़िया लोहा।

सुलह—स्त्री० [फा०] १. वह स्थिति जब दो विरोधी पक्ष परस्पर विरोध-भाव छोड़कर मित्रता का संबंध स्थापित करते हैं। मेल। मिलाप। २. वह मेल जो किसी प्रकार की लड़ाई या झगड़ा समाप्त होने पर हो। ३. उक्त प्रकार के मेल के उपरान्त होनेवाली सन्धि।

सुलहनामा—पुं० [अ० सुलह+फा० नामः] १. वह कागज जिसपर आपस में लड़नेवाले दलों या व्यक्तियों में मेल होने पर उसकी शर्तें लिखी रहती हैं। २. वह कागज जिसपर दो या अधिक परस्पर लड़नेवाले राजाओं या राष्ट्रों में सुलह या मेल होने पर उस मेल की शर्तें लिखी रहती हैं। संधिपत्र। (ट्रीटी)

सुलाक—पुं० [फा० सूराख] सूराख। छेद। (लश०)
†स्त्री०=सलाख।

सुलाखना†—स० [सं० सु+हिं० लखना=देखना] सोने या चाँदी को तपाकर परखना।
†स० [फा० सलाख] सलाख से या और किसी प्रकार छेद करना।

सुलागना†—अ०=सुलगना।

सुलाना—स० [हिं० सोना का प्रे०] १. किसी को सोने में प्रवृत्त करना। शयन कराना। निद्रित कराना। २. किसी को मैथुन या सभोग के लिए अपने पास लेटाना।

सुलाब†—वि०=सुलभ।

सुलास†—पु० [सं० सु+लास्य] अच्छा नाच। उत्तम नृत्य। उदा०—आरभित तब रुचिर राम, अद्भुत सुलास जहँ।—नन्ददास।

सुलाह†—स्त्री०=सुलह।

सुलिपि—स्त्री० [स० प्रा० स०] उत्तम और स्पष्ट लिपि।

सुलूक—पु०=सलूक।

सुलेख—पुं० [स०] एक आदित्य का नाम।

सुलेख—वि० [स० ब० स०] १. शुभ रेखाओंवाला। २. शुभ रेखाएँ बनानेवाला।
पु० [?] अच्छा या उत्तम लेख। अच्छी और बढ़िया लिखावट की लिपि।

सुलेमा†—पु०=सुलेमान।

सुलेमान—पु० [फा०] १. यहूदियों का एक प्रसिद्ध बादशाह जो पैगम्बर माना जाता है। २. पश्चिमी पंजाब (आज-कल के पाकिस्तान) और बलोचिस्तान के बीच का एक पहाड़।

सुलेमानी—वि० [फा०] सुलेमान संबंधी। सुलेमान का। जैसे—सुलेमानी सुरमा।
पुं० १. एक प्रकार का प्रसिद्ध पाचक नमक जो कई ओषधियों के योग से बनता है। २. सफेद आँखोंवाला घोड़ा। ३. एक प्रकार का पत्थर जो कहीं से सफेद और कहीं से काला होता है।

सुलोक—पु० [सं० प्रा० स०] १. उत्तम लोक। २. स्वर्ग।

सुलोचन—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० सुलोचना] सुन्दर आँखोंवाला। जिसके नेत्र सुन्दर हों।
पु० १=हिरन। २.=चकोर।

सुलोचना—स्त्री० [सं० सुलोचन—टाप्] वासुकी की एक कन्या जो मेघनाद की पत्नी थी।
वि० सुन्दर नेत्रोंवाली।

सुलोचनी—वि० स्त्री० [सं० सुलोचना] सुन्दर नेत्रोंवाली। जिसके नेत्र सुन्दर हों।

सुलोम—वि० [सं०] [स्त्री० सुलोमा] सुन्दर लोमों या रोमों से युक्त। जिसके रोएँ सुन्दर हों।

सुलोमती—स्त्री० [सं०] जटामाँसी। बालछड़।

सुलोमज—वि०=सुलोम।

सुलोमशा—स्त्री० [सं०] १ काकजंघा। २. जटामाँसी।

सुलोमा—स्त्री० [सं०] १. ताम्रवल्ली। २. मांस-रोहिणी।
वि० सं० 'सुलोम' का स्त्री०।

**सुलोल**—वि०[स० प्रा० स०] बहुत इच्छुक या उत्सुक।

**सुलोह**—पुं०[स०] एक प्रकार का बढ़िया लोहा।

**सुलोहक**—पुं०[स०] पीतल।

**सुलोहित**—पु०[सं० प्रा० स०] सुन्दर रक्तवर्ण। अच्छा लाल रंग।
वि० उक्त प्रकार के रंगों का।

**सुलोहिता**—स्त्री०[सं०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

**सुल्ठा**—वि०=सुलठा ('चलटा' का विपर्याय)।

**सुल्तान**—पु०=सुलतान।

**सुल्तानी**—वि०, स्त्री०, पुं०=सुलतानी।

**सुल्फ**—पु०[?]१. संगीत में बहुत बढ़ी या तेज लय। २. किश्ती। नाव।
पद—सौदा-सुल्फ।

**सुवंश**—पु०[सं० ब० स०] वसुदेव का एक पुत्र। (भागवत)

**सुवंश**†—पु०=सुवंश।

**सुव**†—पु०=सुअन।

**सुवक्ता**—वि०[सं० सु+वक्तृ] सुन्दर बोलनेवाला। उत्तम व्याख्यान देनेवाला। वाक्पटु। वाग्मी।

**सुवक्त्र**—पु०[स०ब०स०]१ शिव। २. कार्तिकेय का एक अनुचर।
वि० सुन्दर मुखवाला। ३. वन-तुलसी।

**सुवक्ष**—वि०[सं० सुवक्षस्] [स्त्री० सुवक्षा] सुन्दर या विशाल वक्षवाला। जिसकी छाती सुन्दर या चौड़ी हो।

**सुवक्षा**—स्त्री०[सं०] मय दानव की पुत्री और त्रिजटा तथा विभीषण की माता का नाम।

**सुवच**—वि०[स०] जो सहज में कहा जा सके। जिसके उच्चारण में कठिनता न हो।

**सुवचन**—वि०[स० ब० स०]१. सुन्दर वचन बोलनेवाला। सुवक्ता। वाग्मी। २. मधुर-भाषी।
पु० मधुर वचन।

**सुवचनी**—स्त्री०[स०] एक देवी का नाम।
वि० हिं० 'सुवचन' का स्त्री०।

**सुवज्र**—पुं०[स० ब० स०] इन्द्र।

**सुवटा**†—पु०=सुआटा (तोता)।

**सुवन***—पु०[सं० सुवर्ण] सोना। सुवर्ण। (डिं०)

**सुवदन**—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० सुवदना] सुन्दर मुखवाला। सुमुख।
पु० वन-तुलसी।

**सुवदना**—स्त्री०[सं०] सुन्दर मुखवाली स्त्री। सुन्दरी स्त्री।

**सुवन**—पु०[स०]१. सूर्य। २. अग्नि। ३. चन्द्रमा।
†पु०१.=सुअन। २. सुमर्ण।

**सुवना**†—पुं०=सुगना (तोता)।

**सुवनारा**†—पु०=सुअन।

**सुवपु**—वि०[स० ब० स०] सुन्दर शरीरवाला। सुदेह।

**सुवयसी**—स्त्री०[सं० ब० स०] १. ऐसी स्त्री जिसमें पुरुषों के से कुछ लक्षण आ गये हों। २. प्रौढ़ा स्त्री।

**सुवया**—स्त्री०[सं० सुवयस्] प्रौढ़ा स्त्री।

**सुवर-कोझा**†—पु०[हिं० सूअर ?+हिं० कोना] ऐसी हवा जिसमें पाल न उड़ सके। (मल्लाह)

**सुवरण**†—वि०, पु०=सुवर्ण।

**सुवर्चक**—पु०[स०]१ स्वर्जिकाक्षार। सज्जी। २. एक वैदिक ऋषि।

**सुवर्चना**—स्त्री०=सुवर्च्चला।

**सुवर्च्चल**—पु०[स०]१ एक प्राचीन देश। २ काला नमक।

**सुवर्च्चला**—स्त्री०[स०] १. सूर्य की एक पत्नी का नाम। २. बाह्लीं। ३. तीसी। हुरहुर।

**सुवर्च्चस**—वि० [स० ब० स०] दीप्तिमान्।
पुं० शिव।

**सुवर्च्चसी (सिन्)**—पु०[स०]१ शिव का एक नाम। २. सज्जी।

**सुवर्चा (र्चस्)**—पु०[स०] १ गरुड़ का एक पुत्र। २. दसवें मनु का एक पुत्र। ३ धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ४ कार्तिकेय का एक अनुचर।
वि०१ शक्तिशाली। २. तेजस्वी।

**सुवर्चिक**—पु०=सुवर्च्चक।

**सुवर्चिका**†—स्त्री०[स०] १ स्वर्जिकाक्षार। सज्जी। २ जतुका या पहाड़ी नाम की लता।

**सुवर्च्ची**—पु०=सुवर्च्चक।

**सुवर्ण**—वि०[स० ब०स०] १. सुन्दर वर्ण या रंग का। २. सोने के रंग का। पुनर्नवा। ३ धनवान्। सम्पन्न।
पु०१ सोना नामक धातु। स्वर्ण। २ प्राचीन भारत में सोने का एक प्रकार का सिक्का जो प्राय. दस माशे का होता था। ३ किसी के मत से दस माशे की और किसी के मत से सोलह माशे की एक पुरानी तौल या मान। ४. एक प्रकार का यज्ञ। ५ एक प्रकार का छन्द या वृत्त। ६. रँगे हुए सूत से बुना हुआ पुरानी चाल का एक प्रकार का कपड़ा। ७ दशरथ का एक मंत्री। ८ सोनागेरू। ९. हरिचन्दन। १०. हलदी। ११ नागकेसर। १२ धतूरा। १३ पीली सरसों।

**सुवर्णक**—पु०[सं०]१. सोना। स्वर्ण। २ सोलह माशे की एक पुरानी तौल। ३. पीतल। ४ अमलतास।
वि० १. सोने का बना हुआ। २. सोने के रंग का। सुनहला।

**सुवर्ण-कदली**—स्त्री० [सं० उपमि० स०] चंपा केला।

**सुवर्ण-कमल**—पु०[स० उपमि० स०] लाल कमल। रक्त कमल।

**सुवर्ण-करणी**—स्त्री०[स० सुवर्ण+करणी] एक प्रकार की जड़ी।

**सुवर्ण-कर्ता**—पु०=स्वर्णकार (सुनार)।

**सुवर्णकर्ष**—पु०[स०] सोने की एक प्राचीन तौल जो किसी के मत से दस माशे की और किसी के मत से सोलह माशे की होती थी।

**सुवर्णकार**—पु०[स० सुवर्ण√कृ (करना)+अण्] सोने के गहने बनानेवाला कारीगर। सुनार।

**सुवर्ण केतकी**—स्त्री० [स० उपमि० स०] लाल केतकी। रक्त केतकी।

**सुवर्ण क्षीरिणी**—स्त्री०[सं० उपमि० स०] कटेरी। कटपर्णी। स्वर्णक्षीरी।

**सुवर्ण-गणित**—पु०[स० ष० त०] प्राचीन भारत में, बीज-गणित की वह शाखा जिसके अनुसार सोने की तौल आदि जानी जाती थी और उसके दाम का हिसाब लगाया जाता था।

**सुवर्ण-गर्भ**—पु०[स० ब० स०] एक बोधिसत्व का नाम।

**सुवर्ण-गिरि**—पुं०[स० उपमि० स०]१. राजगृह के पास का एक पर्वत।

२. अयोध्य की एक राजधानी जो किसी के मत से राजगृह में और किसी के मत से दक्षिण भारत के पश्चिमी समुद्र-तट पर थी।

**सुवर्ण-गैरिक**—पु०[सं० मध्य० स०] लाल गेरू।

**सुवर्णगोत्र**—पु०[सं० ब० स०] बौद्धों के अनुसार एक प्राचीन राज्य।

**सुवर्णघ्न**—पु०[स० सुवर्ण√हन् (मारना)+टक] राँगा। वंग।

**सुवर्ण-चूड़**—पु०[सं० ब० स०] एक प्रकार का पक्षी।

**सुवर्ण-जीविक**—पु० [सं० ब०स०] एक प्राचीन वर्णसंकर जाति जो सोने का व्यापार करती थी।

**सुवर्णता**—स्त्री०[सं० सुवर्ण+तल्—टाप्] सुवर्ण का गुण, धर्म या भाव। सुवर्णत्व। २. सुनहलापन।

**सुवर्ण-तिलका**—स्त्री० [स० ब० स०] मालकगनी।

**सुवर्ण-द्वीप**—पु०[स०] सुमात्रा टापू का पुराना नाम।

**सुवर्ण-धेनु**—स्त्री०[स० ष० त०] दान देने के लिए सोने की बनाई हुई गौ।

**सुवर्ण-पक्ष**—वि० [सं० ब० स०] जिसके पंख या पर सोने के हों।
पु० गरुड़।

**सुवर्ण-पद्म**—पु०[स० उपमि० स०] लाल कमल। रक्त कमल।

**सुवर्ण-पद्मा**—स्त्री०[स०] आकाश गंगा।

**सुवर्ण-पार्श्व**—पु०[स० ब० स०] एक प्राचीन जनपद।

**सुवर्ण-पालिका**—स्त्री०[स०] सोने का बना हुआ एक प्रकार का प्राचीन पात्र।

**सुवर्ण-पुष्प**—पु०[स० ब० स०] बड़ी सेवती। राजतरुणी।

**सुवर्ण-फला**—स्त्री०[स० ब० स०] चंपा केला। सुवर्ण कदली।

**सुवर्ण-बिंदु**—पु०[स० ब० स०] विष्णु।

**सुवर्ण-भूमि**—पु०[स० ब० स०] सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) का पुराना नाम।

**सुवर्ण-माक्षिक**—पु०[स० मध्य० स०] सोनामक्खी। स्वर्णमाक्षिक।

**सुवर्ण-माषक**—पु०[स०] बारह वान की एक पुरानी तौल।

**सुवर्ण-मित्र**—पु०[सं०] सुहागा, जिसकी सहायता से सोना जल्दी गल जाता है।

**सुवर्ण-मुखरी**—स्त्री० [सं० ब० स०] एक प्राचीन नदी।

**सुवर्ण-यूथिका**—स्त्री० [स० उपमि० स०] सोनजुही। पीली जुही।

**सुवर्ण-रंभा**—स्त्री० [स० मध्य० स०] चंपा केला। सुवर्ण कदली।

**सुवर्ण-रूपक**—पु० [सं०] सुवर्ण द्वीप (सुमात्रा) का एक प्राचीन नाम।

**सुवर्ण-रेखा**—स्त्री० [सं०] उड़ीसा और बंगाल की एक प्रसिद्ध नदी।

**सुवर्णरेता (तस्)**—पु०[स० ब० स०] शिव का एक नाम।

**सुवर्णरोमा (मन्)**—वि०[सं० ब० स०] जिसके रोएँ सुनहले हों।
पु० भेड़। मेष।

**सुवर्णलता**—स्त्री०[सं० मध्य० स०] मालकगनी। ज्योतिष्मतीलता।

**सुवर्ण-वणिक्**—पु०[सं०] बंगाल की एक वणिक् जाति।

**सुवर्ण-वर्ण**—वि०[सं० ब० स०] जिसका रंग सोने के रंग की तरह हो। सुनहला।
पु० विष्णु।

**सुवर्ण-श्री**—स्त्री०[सं० ब० स०] आसाम की एक नदी जो ब्रह्मपुत्र की मुख्य शाखा है।

**सुवर्ण-सिद्ध**—पु० [सं० ब० स०] वह जो इन्द्रजाल से सोना बना लेता हो।

**सुवर्ण स्तेय**—पुं०[सं० ष० त०] सोने की चोरी जो मनु के अनुसार पाँच महापातकों में से एक है।

**सुवर्णस्तेयी (यिन्)**—पुं०[सं० ष० त०] सोना चुरानेवाला, जो मनु के अनुसार महापातकी होता है।

**सुवर्ण-स्थान**—पु०[सं० ष० त०]१. एक प्राचीन जनपद। २. आधुनिक सुमात्रा द्वीप का पुराना नाम।

**सुवर्णा**—स्त्री०[सं०]१. अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक। २. इक्ष्वाकु की पुत्री और सुहोत्र की पत्नी। ३. हलदी। ४. काला अगर। ५. बरियारा। बला। ६. कटेरी। सत्यानाशी। ६. इन्द्रायन। इनारू।

**सुवर्णाकर**—पुं०[स० ष० त०] सोने की खान।

**सुवर्णाक्ष**—पुं०[सं० ब० स०] शिव।

**सुवर्णाक्ष्य**—पुं० [सं० ब० स०] १. नागकेसर। २. धतूरा। ३. एक प्राचीन तीर्थ।

**सुवर्णाभ**—वि०[स० ब० स०] जिसमें सोने की-सी आभा या चमक हो।
पु० रागावर्त नामक मणि। लाजवर्द।

**सुवर्णारि**—पु०[सं०] लाल कचनार।

**सुवर्णाह्वा**—स्त्री०[स० ब० स०] पीलीजुही। सोनजुही।

**सुवर्णिका**—स्त्री०[स०] पीली जीवती। स्वर्ण जीवती।

**सुवर्णी**—स्त्री० [स०] मूसाकानी। आखुपर्णी।

**सुवर्तुल**—वि०[सं०] ठीक और पूरा गोल।
पु० तरबूज।

**सुवर्म्मा (र्मन्)**—वि०[स० ब० स०] उत्तम कवच से युक्त। जिसके पास उत्तम कवच हो।
पु० धृतराष्ट्र का एक पुत्र।

**सुवर्षा**—स्त्री०[सं० सुवर्ष-टाप्, प्रा० स०] १. अच्छी वर्षा। २. मोतिया। मल्लिका।

**सुवल्लिका**—स्त्री०[सं०]१. जतुका लता। २. सोमराजी।

**सुवल्ली**—स्त्री०[स०]१. बकुची। सोमराजी। २ पुनर्नवा लता। ३. कुटकी।

**सुवसंत**—पु०[स० प्रा० स०]१. चैत्र की पूर्णिमा। चैत्रावली। २. मदनोत्सव जो उक्त पूर्णिमा के दिन मनाया जाता था।

**सुवसंतक**—पुं०[स०]१ मदनोत्सव जो प्राचीन काल में चैत्र पूर्णिमा को मनाया जाता था। २. नेवारी।

**सुवसंता**—स्त्री०[स०] १. माधवी लता। २. चमेली।

**सुवश***—वि०[स० स्व+वश] जो अपने वश या अधिकार में हो। वशवर्ती।

**सुवह**—वि०[सं०]१. जो सहज में वहन किया या उठाया जा सके। २. धैर्यशाली। धीर।
पु० एक प्रकार का वायु।

**सुवहा**—स्त्री०[स०]१. वीणा। बीन। २. रासना। ३. सँभालू। ४. हसपदी। ४. खटजटा। ६ मूसली। ७. सलई। ८. गन्धनाकुली। ९. निलोथ। १०. शेफालिका।

**सुवाँग**†—पुं०=स्वाँग।

**सुवाँगी**†—पुं०=स्वाँगी।

**सुवा**—पुं०=सुआ (तोता)।

**सुवाक्य**—वि०[सं०] सुन्दर वचन बोलनेवाला। मधुरभाषी। सुवाग्मी।

**सुबोध्य**—वि०[स० प्रा० स०] जो सहज में पढा जा सके।

**सुभाषी (षिन्)**—वि० [सं०] (तीर) जिसमें अच्छे या सुन्दर पक्ष लगे हों।

**सुभाना**†—स०=सुझाना।

**सुभागा**—स्त्री०[सं० ] वर्तमान रामगगा नदी का पुराना नाम।

**सुभार**—पु०[स० प्रा० स०] उत्तम बार। अच्छा दिन।
†पु०=सूमकार (रसोइया)।

**सुभाल**†—पु०=सवाल।

**सुभास**—पु०[स० प्रा० स०]१. अच्छी वास या महक। खुशबू। सुगंध। २. अच्छा निवास-स्थान। ३. शिव। ४. एक प्रकार का छन्द या वृत्त।
वि० जो अच्छे कपड़े पहने हो।
†पु०=श्वास। (डिं०)

**सुभासक**—पु०[स०] तरबूज।

**सुभासरा**—स्त्री०[स०] हालो नाम का पौधा। चसुर। चन्नशूर।

**सुभासा (सस्)**—पु० [स० ब० स०]१ जो अच्छे और सुन्दर कपड़े पहने हुए हो। २. (तीर) जिसमें अच्छे या सुन्दर पर लगे हो।

**सुभासिक**—वि०[सं०]=[स्त्री० सुभासिका] सुभास या सुगन्ध से युक्त। सुगंधित।

**सुभासित**—भू० कृ०[स०] सुभास या सुगंध से युक्त किया हुआ।

**सुभासिन**†—स्त्री०=सुभासिनी।

**सुभासिनी**—स्त्री०[स० प्रा० स०]१ ऐसी विवाहिता या कुआँरी स्त्री जो अपने पिता के घर मे ही रहती हो। २. सधवा स्त्री।

**सुभासी (सिन्)**—वि०[स० सु√ वस् (वास करना)+णिनि] [स्त्री० सुभासिनी] उत्तम या भव्य भवन मे रहनेवाला।

**सुभास्तु**—स्त्री०[स०] गांधार देश की आधुनिक स्वात नामक नदी का वैदिक-कालीन नाम।
पु०१. उक्त नदी के तटवर्ती देश का पुराना नाम। २ उक्त देश का निवासी।

**सुभाह**—पु०[सं० प्रा० स०]१. स्कंद का एक पारिषद्। २.अच्छा या बढ़िया घोड़ा।
वि०१. जो सहज में वहन किया या उठाया जा सके। २. अच्छे घोड़ों से युक्त।

**सुभिक्षम**—वि०[स० ब० स०] बहुत बड़ा विक्रमी या पुरुषार्थी।

**सुभिक्षांत**—वि०[सं० प्रा० स०]१. अत्यन्त विक्रमशाली। अतिशय पराक्रमी। २. बहादुर। वीर।
पु० बहादुर। वीर।

**सुभिक्ष्यात**—वि० [स० प्रा० स०] [भाव० सुभिक्ष्याति] अत्यन्त प्रसिद्ध।

**सुभिगुण**—वि०[स० प्रा० स०]१. जिसमें कोई गुण या योग्यता न हो। गुणहीन। २. बहुत बड़ा दुष्ट। नीच या पाजी।

**सुभिग्रह**—वि०[स० ब० स०] सुन्दर शरीर या रूपवाला। सुदेह। सुरूप।

**सुभिचार**—पु०[सं० प्रा० स०] १. अच्छी तरह और सूक्ष्मतापूर्वक किया हुआ विचार। २. अच्छी तरह समझ-बूझकर किया हुआ निर्णय। ३. रुक्मिणी के गर्भ से उत्पन्न कृष्ण का एक पुत्र।

**सुभिचारित**—भू० कृ०[स० प्रा० स०] सूक्ष्म या उत्तम रूप से विचार किया हुआ। अच्छी तरह सोचा-समझा हुआ।

**सुभिज्ञ**—वि० [स० प्रा० स०] बहुत अधिक विज्ञ या ज्ञानवान्। अच्छा जानकार।

**सुभिज्ञात**—वि०[स० प्रा० स०]१. जो सहज में जाना जा सके। २. बहुत बड़ा चतुर या बुद्धिमान्।

**सुभिज्ञेय**—वि०[सं० प्रा० स०] जो सहज में जाना जाता हो या जाना जा सकता हो।
पु० शिव।

**सुभित**—वि०[सं०] जो सहज में प्राप्त हो सके।
पु० १. अच्छा मार्ग। सुपथ। २ कल्याण। मंगल। ३. सौभाग्य।

**सुभितल**—पु०[स०] विष्णु की एक प्रकार की मूर्ति।

**सुभित्त**—वि० [स० ब० स०] बहुत बड़ा धनी या अमीर।

**सुभिति**—पु०[स०] एक देवता का नाम।

**सुभिद्**—पु०[स० सु √ विद् (जानना)+क्विप्] [स्त्री० सुविदा] विद्वान् या चतुर व्यक्ति।

**सुभिद**—पु०[स०] १. अंत पुर या निवास का रक्षक। संविद्। कंचुकी। २ तिलकपुष्प नामक वृक्ष।

**सुभिदत्त**—वि०[स० प्रा० स०] १ अतिशय सावधान। २. सहृदय। ३. उदार।
पु० १ अनुग्रह। कृपा। २ धन-संपत्ति। ३. कुटुंब। परिवार। ४ ज्ञान।

**सुभिदर्भ**—पु०[स० प्रा० स०] एक प्राचीन जाति।

**सुभिदला**—स्त्री०[स०] विदुषी स्त्री।

**सुभिद्य**—वि०[स० ब० स०] उत्तम विद्वान्। अच्छा पण्डित।

**सुभिध**—वि०[स० ब० स०] अच्छे स्वभाव का। सुशील।

**सुभिधा**—स्त्री०[स० प्रा० स०]१ वह तत्व या बात जिसके सहज उपलब्ध होने से किसी काम को सरलता से निष्पन्न किया जाता है। २ वह आराम या छूट जो विशेष रूप से उपलब्ध हुई हो। जैसे—यहाँ दोपहर को एक घंटे की फुरसत मिल जाती है ; यही एक सुविधा मरे लिए बहुत है।
†स्त्री० =सुमीता।

**सुभिधि**—पु०[स०] जैनियों के अनुसार वर्तमान अवसर्पिणी के नवें अर्हत का नाम।
स्त्री० १ अच्छी विधि। २. सुन्दर ढग या युक्ति।

**सुभिनय**—वि०[स० ब० स०]=सुविनीत।

**सुभिनीत**—वि०[सं० प्रा० स०] [स्त्री० सुविनीता]१ अतिशय नम्र या विनीत। २. (पशु) जो अच्छी तरह सिखाकर अपने अनुकूल कर लिया गया हो।

**सुभिनेय**—वि०[स० सु-वि√नी (ढोना)+यत्] जो सहज में शिक्षा आदि के द्वारा विनीत और अनुकूल किया जा सकता हो।

**सु-विपिन**—वि०[स० ब० स०] जहाँ या जिसमें बहुत-से जंगल हों। जगलों से भरा हुआ।

**सुभिशाल**—वि०[स० प्रा० स०] बहुत अधिक विशाल या बड़ा।

**सुभिशाला**—स्त्री०[सं०] कार्तिकेय की एक मातृका।

**सुभिशुद्ध**—पु०[स० प्रा० स०] एक लोक। (बौद्ध)

**सुभिषाण**—वि०[सं० ब० स०] बड़े दाँतों वाला (हाथी)।

**सुविष्टंभी (भिन्)**—पु०[स० ] शिव का एक नाम।
वि० अच्छी तरह पालन-पोषण करने या संभालनेवाला।

**सुविस्तर**—वि०[सं० प्रा० स०]१. बहुत अधिक विस्तारवाला। खूब लंबा-चौड़ा। २. विस्तारपूर्वक कहा हुआ।
पु०१. बहुत अधिक फैलाव या विस्तार। २. प्रचुरता। बहुतायत।

**सुवीची**—स्त्री०[स० प्रा० स०] प्राचीन भारत में, वह दालान या पाटनदार रास्ता जो चतुश्शाल के कमरों के आगे होता था।

**सुवीर**—पु०[सं० प्रा० स०]१ बहुत बड़ा वीर या योद्धा। २. शिव। ३. कार्तिकेय। ४. एकवीर नामक कन्द। छाल की बनाई हुई रस्सी।

**सुवीरक**—पु०[स०]१. बेर नाम का पेड़ और फल। २. एक वीर नामक वृक्ष। ३. सुरमा।

**सुवीरज**—पु०[सं० सुवीर√जन् (उत्पन्न करना)+ड] सुरमा। सौवीराजन।

**सुवीर्य**—वि० [स० ब० स०] बहुत बड़ा वीर्यशाली या शक्तिमान्।
पु० बेर का पेड़ और फल।

**सुवीर्या**—स्त्री० [स० सुवीर्य—टाप्]१. बनकपास। २ बड़ी शतावर। ३ नाड़ी हींग। डिकामाली।

**सुवृत्त**—वि०[सं० ब० स०] १. सच्चरित्र। २. गुणवान्। ३ सज्जन और साधु। ४ भली-भाँति छन्दों या वृत्तों में बाँधा हुआ (काव्य)।
पु० ओल। जमीकन्द। सूरन।

**सुवृत्ता**—स्त्री०[स० प्रा० स०]१ एक प्रकार का छन्द या वृत्त। २. किंशमिला। ३. रोचनी।

**सुवृत्ति**—स्त्री०[स० प्रा० स०]१. उत्तम वृत्ति या जीविका। २. सदाचार।
वि०१. जिसकी जीविका या वृत्ति उत्तम हो। २. सदाचारी।

**सुवृद्ध**—पु०[सं० प्रा० स०] दक्षिण दिशा के दिग्गज का नाम।
वि०१. बहुत वृद्ध। २. बहुत पुराना।

**सुवेग**—वि०[स० ब० स०] तेज गतिवाला। वेगवान्।

**सुवेणा**—स्त्री०[सं० ब० स०] एक प्राचीन नदी।

**सुवेद**—वि०[सं० प्रा० स०]१. वेदों का ज्ञाता। २. बहुत बड़ा ज्ञाता।

**सुवेल**—वि०[स० ब० स०]१. बहुत झुका हुआ। प्रणत।
पु० लंका में समुद्र-तट का एक पर्वत जहाँ रामचन्द्र सेना सहित ठहरे थे।

**सुवेश**—वि० [सं० ब० स०] [भाव० सुवेशता]१. सुन्दर वेश-भूषावाला। २. सुन्दर।
पु०१. सुन्दर वेष-भूषा। २. सफेद ईख।

**सुवेशित**—भू० कृ०[स० सुवेश+इतच्]जिसने सुन्दर वेश धारण किया हो।

**सुवेशी (शिन्)**—वि०[स० सुवेश+इनि] जिसने सुन्दर वेश धारण किया हो। अच्छे भेषवाला।

**सुवेष**†—वि०=सुवेश।

**सुवेषी**†—वि०=सुवेशी।

**सुवेस**†—वि०=सुवेश।

**सुवेसल**†—वि०[स० सुवेश+हिं० ल (प्रत्य०)] सुन्दर। मनोहर।

**सुवैना**—पु०[सं० सु+हिं० वैन (वचन)] १.सुन्दर वचन। २. मित्रता। दोस्ती। (डिं०)

**सुवैया**†—वि०[हिं० सोना+ऐया (प्रत्य०)] सोनेवाला।

**सुवो**†—पुं०=सुआ (तोता)।
†स्त्री०=सुवा।

**सु व्यवस्था**—स्त्री०[स० प्रा० स०] [वि० सुव्यवस्थित] अच्छी और सुन्दर व्यवस्था। सुप्रबंध।

**सुव्यवस्थित**—वि०[स० प्रा० स०] जिसकी या जिसमें अच्छी या सुन्दर व्यवस्था हो।

**सुव्रत**—वि०[सं० ब० स०]१. दृढ़ता से अपने व्रत का पालन करनेवाला। २ धर्मनिष्ठ। ३. नम्र। विनीत।
पु० [स०] १ स्कन्द का एक अनुचर। २ एक प्रजापति। ३ रौच्य मनु का एक पुत्र। ४. जैनों में वर्तमान अवसर्पिणी के २९ वें अर्हत्। मुनि सुव्रत। ५. भावी उत्सर्पिणी के ११ वें अर्हत। ६ ब्रह्मचारी।

**सुव्रता**—स्त्री० [स० ब० स०]१. सहज में दुही जानेवाली गौ। २. गुणवती और पतिव्रता स्त्री। ३. दक्ष की एक पुत्री। ४. वर्तमान कल्प के १५ वें अर्हत की माता का नाम। ५ गन्ध पलाशी।

**सुव्रांस**—वि०[स० प्रा० स०]१ अच्छी तरह से कहा जानेवाला। २. प्रसिद्ध। मशहूर। ३. प्रशंसनीय।

**सु-शक**—वि० [स०] (काम) जो आसानी से किया जा सके। सहज। सुगम।

**सुशक्त**—वि० [स० प्रा० स०] अच्छी शक्तिवाला। शक्तिशाली।

**सुशक्य**—पुं०[स० प्रा० स०] शिव। महादेव।

**सुशब्द**—वि०[स० ब० स०] अच्छा शब्द या ध्वनि करनेवाला। जिसकी आवाज अच्छी हो।
पु० अच्छा शब्द।

**सुशरीर**—वि०[स० ब० स०] सुन्दर शरीरवाला।
पु० सुन्दर शरीर।

**सुशर्मा (र्मन्)**—पु०[सं०]१. निन्दनीय अथवा निन्दित ब्राह्मण। (व्यंग्य) २ मैथुन अभिलाषी व्यक्ति।

**सुशांत**—वि०[सं० प्रा० स०] [भाव० सुशांति] अत्यन्त शांत।

**सुशांति**—पु०[स० प्रा० स०]१ पूर्ण शांति। २. तीसरे मन्वन्तर के इन्द्र का नाम। ३. अजमोढ़ का एक पुत्र।

**सुशाक**—पु०[सं० प्रा० स०] १. अदरक। आर्द्रक। २. चौलाई का साग। ३. चेंच का साग। ४. भिंडी।

**सुशारद**—पु०[सं०] शालंकायन गोत्र के एक वैदिक आचार्य।

**सुशासित**—वि०[स० प्रा० स०](प्रदेश) जिसकी शासन-व्यवस्था अच्छी हो।

**सुशिक्षित**—वि०[सं० प्रा० स०] [स्त्री० सुशिक्षिता] (व्यक्ति, संप्रदाय या समाज) जिसने अच्छी शिक्षा प्राप्त की हो।

**सुशिख**—पु०[सं० ब० स०] अग्नि का एक नाम।

**सुशिखा**—स्त्री०[सं० सुशिख—टाप्]१. मोर की चोटी। २. मुरगे की कलगी या चोटी।

**सुशिर (शिरस्)**—वि० [सं० ब० स०] सुन्दर शिरवाला। जिसका सिर सुन्दर हो।
†पुं०=सुषिर।

**सुशीत**—पु०[स० प्रा० स०]१. पीला चंदन। हरिचंदन। २. पाकर। ३. जल-बेत।
वि० बहुत अधिक शीतल या ठंढा।

**सुशीतल**—पु०[स० प्रा० स०] १. गधतृण। २. सफेद चंदन। ३ नागदौन।
वि० बहुत अधिक शीतल या ठंढा।

**सुशीम**—वि०, पु०=सुषीम।

**सुशील**—वि०[स० ब० स०] [स्त्री० सुशीला, भाव० सुशीलता] १ जिसका शील (प्रवृत्ति तथा स्वभाव) अच्छा हो। शीलवान्। २ सज्जन तथा सदाचारी। ३. सरल। सीधा।

**सुशीलता**—स्त्री०[सं० सुशील+तल्—टाप्] सुशील होने की अवस्था, गुण या भाव। सुशीलत्व।

**सुशीला**—स्त्री० [स० ब० स०] १ श्री कृष्ण की एक पत्नी। २ राधा की एक सखी। ३. यम की पत्नी। ४ सुदामा की पत्नी।

**सुशीली (लिन्)**—वि०[स०]=सुशील।

**सुशृंग**—वि०[स० ब० स०] सुन्दर शृंग से युक्त। सुन्दर सींगोंवाला।
पु० शृंगी ऋषि।

**सुशोण**—वि० [सं० प्रा० स०] गहरा लाल रंग।

**सुशोभन**—वि०[स० प्रा० स०]१ बहुत अधिक शोभावाला। २ फबनेवाली (चीज)। ३ प्रियदर्शन। सुन्दर।

**सुशोभित**—भू० कृ० [स० प्रा० स०] उत्तम रूप से शोभित। अत्यन्त शोभायमान्।

**सुश्रव**—वि०[सं० प्रा० स०] जो सहज में और अच्छी तरह सुना जा सके।

**सुश्रवा**—वि०[स०]१ उत्तम हवि से युक्त। २ कीर्तिमान्। यशस्वी। ३ प्रसिद्ध। मशहूर।
पु० एक प्रजापति का नाम।

**सुश्राव्य**—वि०[स० प्रा० स०]१. जो सुनने में अच्छा जान पड़े। २ जो अच्छी तरह और सहज मे सुनाई पड़े।

**सुश्री**—वि०[स० ब० स०] १. बहुत सुन्दर। शोभायुक्त। २. बहुत बड़ा धनी।
स्त्री० आज-कल स्त्रियो विशेषतः अविवाहित स्त्रियों के नाम के पहले लगनेवाला एक आदरसूचक और शिष्टतापूर्ण संबोधन-पद। जैसे—सुश्री पद्मा देवी।

**सुश्रोक**—पु०[सं० ब० स० कप्] सलई। शल्लकी।
वि०=सुश्री।

**सुश्रुत**—भू० कृ०[स० प्रा० स०]१. अच्छी तरह सुना हुआ। २ प्रसिद्ध। मशहूर।
पु० १ श्राद्ध के समय ब्राह्मण को भोजन करा चुकने पर उनसे यह पूछना कि आप भली भाँति तृप्त हो गये न? २. प्रसिद्ध आयुर्वेदीय ग्रथ 'सुश्रुत-संहिता' के रचयिता।

**सुश्रुत-संहिता**—स्त्री० [सं० मध्य० स०] आचार्य सुश्रुत का बनाया आयुर्वेद का एक प्रसिद्ध और सर्वमान्य ग्रन्थ।

**सुश्रूषा***—स्त्री०=शुश्रूषा।

**सुश्रूषा**—स्त्री०=शुश्रूषा।

**सुश्रोणा**—स्त्री०[स० ब० स०] एक पौराणिक नदी।

**सुश्रोणि**—स्त्री०[स० ब० स०] एक देवी का नाम।
वि० जिसके नितब सुन्दर हों।

**सुश्लिष्ट**—वि०[स० सु√श्लिष् (संयोग)+क्त] [भाव० सुश्लिष्टता] १. अच्छी तरह से मिला हुआ। व्यवस्थित। २ फबनेवाला। उपयुक्त।

**सुश्लोक**—वि०[स० ब० स]१. पुण्यात्मा। पुण्यकीर्ति। २. प्रसिद्ध। मशहूर।

**सुश्व***—पु०. शुभ्र।

**सुषम**—वि०[स० प० त०] १ बहुत सुन्दर। सुषमा-पूर्ण। २. तुल्य। समान।

**सुषमणा***—स्त्री०=सुषुम्ना।

**सुषमनि**—स्त्री०=सुषुम्ना।
पु०=सुखमणि (सिक्खो का धर्म-ग्रन्थ)।

**सुषम-आरामा**—स्त्री०[स०] जैन मतानुसार काल-चक्र के दो आरे।

**सुषमा**—स्त्री०[स० प्रा० स०]१ उत्तम शोभा। अत्यन्त सुन्दरता। २ विशेषत नैसर्गिक शोभा। प्राकृतिक सौदर्य। ३ एक प्रकार का छन्द या वृत्त। ४. एक प्रकार का पौधा। ५ जैनो के अनुसार काल का एक नाम।

**सुषमित**—भू० कृ०[स० सुषमा+इतच्] सुषमा से युक्त।

**सुषाढ़**—पु०[स० ब० स०] शिव का एक नाम।

**सुषाना***—अ०=सुखाना।

**सुषारा***—वि०=सुखारा।

**सुषि**—स्त्री० [स० सु√ सो (विनाश करना)+कि वाहु० √शुष् (सोखना)+इनिअ ·पृषो० स०] [भाव० सुषिर]१. छिद्र। छेद। सूराख। २ शरीर अथवा किसी तल पर के छोटे-छोटे छेद जिसमे से होकर तरल पदार्थ अन्दर पहुँचते या बाहर निकलते है।

**सुषिक**—पु०[स० सुषि+कन्] शीतलता। ठढक।
वि० ठंढा। शीतल।

**सुषिम**—वि० पु० =सुषीम।

**सुषिर**—वि० [स० √शुष् (शोषण करना)+किरच् श=स पृषो०] छेदो या सूराखो से भरा हुआ।
पु०१ छेद। २. दरार। ३ फूँककर बजाया जानेवाला बाजा। ४. वायु-मडल। ५ अग्नि। ६ लकड़ी। ७ बाँस। ८ लौग। ९. चूहा।

**सुषिरच्छेद**—पुं०[स० ब० स०] एक प्रकार की वधी।

**सुषिरत्व**—पु०[स० सुषिर+त्व] दे० 'छिद्रलता'।

**सुषिरा**—स्त्री० [सं० सुषिर—टाप्]१ कलिका। विद्रुम लता। २. दरिया। नदी।

**सुषीम**—पु०[स० सुशीम+पृषो०]१ एक प्रकार का साँप। २. चन्द्रकान्त मणि।
वि०१ मनोहर। सुन्दर। २ ठढा। शीतल।

**सुषुप्(प्स्)**—वि० [स०] सोने की इच्छा करनेवाला। निद्रातुर।

**सुषुप्त**—भू० कृ०[स० सु √स्वप् (सोना) +क्त] १. सोया हुआ, विशेषत गहरी नींद में सोया हुआ। २. (गुण या तत्त्व) जो निष्क्रिय अवस्था में किसी चीज मे स्थित हो।

**सुषुप्ति**—स्त्री०[स० सु√स्वप् (सोना)+क्तिन्]१. गहरी नींद में सोये हुए

होने की अवस्था या भाव। २. पातजलि दर्शन के अनुसार चित्त की एक वृत्ति या अनुभूति। ३. वेदान्त के अनुसार जीव की अज्ञानावस्था।

**सुषुप्सा**—स्त्री०[स०√स्वप् (सोना)+सन्-सप् द्वित्व—टाप्] १. सोने की इच्छा। २. नींद में होने की अवस्था।

**सुषुम्ना**—स्त्री०[स० सुषु√म्ना (अभ्यास)+क—टाप्] [वि० सौषुम्न] शरीर-शास्त्र के अनुसार एक नाडी जो नाभि से आरम्भ होकर मेरुदंड में से होती हुई ब्रह्मरध्र तक गई है। (स्थानल काई)

**विशेष**—(क) हठयोग के अनुसार यह इडा और पिंगला के बीच में है, और इसी के अन्तर्गत वह ब्रह्मनाडी है जिससे चलकर कुडलिनी ब्रह्मरध्र तक पहुँचती है।(ख) वैद्यक में, यह शरीर की चौदह प्रधान नाड़ियों में से एक है जिसके साथ बहुत-सी छोटी-छोटी नाड़ियाँ लिपटी हुई हैं।

**सुषेण**—पु० [स० सु√सेन+अच्, घञ्] १. विष्णु। २. दूसरे मनु का एक पुत्र। ३. परीक्षित का एक पुत्र। ४. धृतराष्ट्र का एक पुत्र। ५ श्रीकृष्ण का एक पुत्र। ६. करमर्द (वृक्ष)। ७. बेंत।

**सुषेणी**—स्त्री०[स०] निसोथ। त्रिवृता।

**सुषोपति***—स्त्री० =सुषुप्ति।

**सुषोप्ति***—स्त्री०=सुषुप्ति।

**सुष्ट**—पु०[स० क्षुष्ट का अनु०] [भाव० सुष्टता] अच्छा। भला। 'क्षुष्ट' का विपर्याय।

**सुष्ठु**—अव्य० [स० सु√स्था (ठहरना)+कु] [भाव० सुष्ठुता]१. अनिवार्य। अत्यन्त। २ अच्छी तरह। भली-भाँति। ३. जैसा चाहिए, ठीक वैसा। यथा-तथ्य। ४. वास्तव में।

†वि०=सुष्ट।

**सुस**—पुं०[स० √सु (गमनादि)+मक्-सुक्—पत्व] रस्सी। रज्जु।

**सुस्नता**—स्त्री० =सुस्नता।

**सुसंकट**—वि०[ग० प्रा० स०] १. दृढतापूर्वक बद किया हुआ। २. जिसकी व्याख्या करना कठिन हो।

पु०१ कठिन काम। २. कठिनता। दिक्कत।

**सु-संग**—पु०[स०+हि० सग] अच्छा सग। सु-सगति।

**सु-संगत**—वि० [स० सु+सगत, प्रा० स०] उत्तम या विशिष्ट रूप से संगत। बहुत युक्ति-पुक्त। बहुत उचित।

स्त्री०=सुगति।

वि० [सु+सगति] अच्छी सगतिवाला।

**सु-संगति**—स्त्री०[सं० प्रा० स०] अच्छे लोगों से होनेवाला सग-साथ। अच्छा सग-साथ। सत्सग।

**सुसंध**—वि०[स० ब० स०] वचन का सच्चा। बात का पक्का।

**सु-संस्कृत**—वि०[स० सु-सम् √कृ (करना)+क्त सुट्]१. (व्यक्ति या समाज) जो सास्कृतिक वृष्टि से उन्नत हो। २. (आचरण या व्यवहार) जो शिष्टतापूर्ण और सस्कृति के अनुरूप हो।

**सुसंहत**—वि० [सं० प्रा० स०] [भाव० सुसंहति] जो अच्छी तरह या विशिष्ट रूप से सहत हो। खूब अच्छी तरह गठा हुआ।

**सुस**—स्त्री०=सुसा।

**सुसकना**†—अ०=सिसकना।

**सुसकर्ण**—पुं० [सं० शश] खरगोश। खरहा। शशा। (डिं०)

**सुसका**—पुं० [अनु०] हुक्का। (सुनार)



**सुसज्जित**—भू० कृ० [स० प्रा स०] १. भली-भाँति सजा या सजाया हुआ। भली-भाँति शृगार किया हुआ। शोभायमान। २. तैयार। लैस।

**सुसताना**—अ०[फा० सुस्त+आना (प्रत्य०)] सुस्ताना।

**सुसती**†—स्त्री०=सुस्ती।

**सुसत्या**—स्त्री० [सं० ब० स०] जनक की एक पत्नी। (पुराण)

**सुसत्त्व**—वि० [स० ब० स०]१. दृढ। पक्का। २. वीर। बहादुर।

**सुसना**—पु० [?] एक प्रकार का साम।

**सु-सबद**†—पु० [स० सुशब्द] कीर्ति। यश। (डिं०)

**सु-समेय**—वि० [स० सुसभा+ढक्—एय]जो सभ्यों के समाज या सभा में अच्छी तरह अपना कौशल या चातुर्य दिखा सकता हो।

**सुसमन***—स्त्री०=सुषुम्ना (नाडी)।

**सुसमय**—पु० [स० प्रा० स०]१ सुन्दर समय। अच्छा वक्त। २. वे दिन जिनमें अकाल न हो। सुकाल। सुभिक्ष। ३. ऐसा समय जब सब प्रकार की उन्नति और कल्याण होता हो।

**सुसमा**†—स्त्री०[स० ऊष्मा] अग्नि। (डिं०)

†स्त्री०=सुषमा।

†पु०=सुसमय।

**सु-समझि***—वि० [सं० सु+हिं० समझ] अच्छी समझवाला। समझदार।

**सुसर**†—पु०=ससुर।

**सुसरण**—पु०[सं०] शिव का एक नाम।

**सुसरा**—पु०=ससुर। (उपेक्षासूचक)

**सुसरार**†—स्त्री०=ससुराल।

**सुसराल**†—स्त्री०=ससुराल।

**सु-सरित**—स्त्री०[सं० सु+सरित] १. अच्छी नदी। २. नदियों में श्रेष्ठ, गगा।

**सुसरी**†—स्त्री०[?] अनाजों में लगनेवाल. एक प्रकार का लाल रंग का छोटा कीडा। (पश्चिम)

†स्त्री०१.=ससुरी। २ सुरसुरी।

**सुसह**—वि०[सं० प्रा० स०] जो सहज में सहन किया जा सके।

पु० शिव का एक नाम।

**सुसा**†—स्त्री० [स० स्वसृ] बहन। भगिनी।

†पु०[?] एक प्रकार का पक्षी।

†पु०=शश (खरगोश)।

**सुसाइटी**†—स्त्री०=सोसाइटी (समाज)।

**सु-साध्य**—वि०[सं० प्रा० स०] (कार्य)जिसका सहज में साधन किया जा सके। जो सहज में पूरा किया जा सके। सुख-साध्य।

**सुसाना**†—अ०[स० श्वसन] सिसकियाँ भरना। सिसकना।

**सुसार**—पु०[स० ब० स०] जिसका सार उत्तम हो। तत्त्वपूर्ण।

पुं०१. अच्छा सार या तत्त्व। २ नीलम। ३ लाल खैर।

**सुसारवान्** (वत्)—वि० [स० सुसार+मतुप्-म व नुम्—दीर्घ] सुसार। (दे०)

पुं० स्फटिक।

**सु-सिकता**—स्त्री० [सं० प्रा० स०]१. अच्छी रेत। २. चीनी। शर्करा।

**सुसिद्ध**—वि० [सं० प्रा० स०, ब० स०] [भाव० सुसिद्धि]१. अच्छी

तरह पका या पकाया हुआ (खाद्य पदार्थ)। २. (व्यक्ति) जिसे अच्छी सिद्धि प्राप्त हो।

**सुसिद्धि**—स्त्री०[सं० प्रा० स०] साहित्य में, एक प्रकार का अर्थालंकार जिसमें एक व्यक्ति के प्रयत्न करने पर दूसरे व्यक्ति को उसके फल प्राप्त करने का उल्लेख होता है।

**सुसीतलताई***—स्त्री०=सुशीतलता।

**सुसीता**—स्त्री० [स० प्रा० स०] सेवती। शतपत्री।

**सुसीम**—वि०[सं० सुषिम] शीतल। ठंडा। (डिं०)

**सुसुकना***—अ०=सिसकना।

**सुसुरी**†—स्त्री० =सुसरी (क्रीडा)।

**सुसुप्ति***—स्त्री० =सुषुप्ति।

**सुसुम***—वि०[सं० सुषुम] सुषुमापूर्ण। सुन्दर।

†वि०=सूक्ष्म।

**सुसूक्ष्म**—वि०[सं० प्रा० स०] अत्यन्त सूक्ष्म। बहुत अधिक सूक्ष्म। बहुत ही छोटा।

†पु० परमाणु।

**सुसेन***—पु०=सुषेन।

**सुसेव्य**—वि०[स० प्रा० स०] १ जिसकी अच्छी तरह सेवा की जानी चाहिए। २ जिसका अनुसरण सहज में किया जा सके।

**सुसेवती**—स्त्री०[स० प्रा० स०] सिंध देश की अच्छी घोड़ी।

**सुसो***—पुं०[स० शश] खरगोश। खरहा। (डिं०)

**सुसौभग**—पु०[स० प्रा० स०] पति-पत्नी संबंधी सुख। दाम्पत्य सुख।

**सुस्त**—वि०[फा०] [भाव० सुस्ती]१ (जीव) जो भली-भाँति और मन लगाकर काम न करता हो। 'उद्योगी' का विपर्याय। २. फलत स्वभाव से अकर्मण्य तथा मंद गति से काम करनेवाला। ३ चिंता, रोग आदि के कारण अथवा निराश होने या उदास रहने के कारण अव्यय या शिथिल। ४ अस्वस्थ। बीमार। (लक्ष०) ५. जिसके शरीर में बल न हो। दुर्बल। कमजोर। ६ चिंता, परिश्रम, रोग आदि के कारण जो मंद या शिथिल हो गया हो। ७ जिसका उत्साह या तेज मंद पड़ गया हो। हतप्रभ। जैसे—मेरे रुपये माँगने पर वह सुस्त हो गया। ८ जिसकी तीव्रता या प्रबलता कम हो गई हो। जिसकी गति या वेग मंद हो गया हो। जैसे—यह घड़ी कुछ सुस्त है। ९ जिसे कोई काम करने या कोई बात समझने में आवश्यक या उचित से अधिक समय लगता हो। जैसे—इधर की गाड़ियाँ भी बहुत सुस्त हैं।

क्रि० वि० सुस्ती से। मंद गति से। जैसे—गाड़ी बहुत सुस्त चल रही है।

**सु-स्तना**—वि० स्त्री० [सं० ब० स०] सुन्दर छातियों या स्तनोंवाली (स्त्री)।

स्त्री० वह स्त्री जो पहले-पहल रजस्वला हुई हो।

**सुस्तनी**—वि० स्त्री०=सुस्तना।

**सुस्त-पाँव**—पु०[फा० सुस्त+हिं० पाँव] एक प्रकार का चतुष्पाद जन्तु जो प्रायः वृक्षों की शाखा में लटका रहता और बहुत कम तथा बहुत मंद गति से चलता है। (स्लॉथ)

**सुस्त-रीछ**—पुं०[फा० सुस्त+हिं० रीछ] एक प्रकार का पहाड़ी रीछ।

**सुस्ताई**†—स्त्री०=सुस्ती। उदा०—पंथी कहाँ, कहाँ सुस्ताई।—जायसी।

**सुस्ताना**—अ०[फा० सुस्त+हिं० आना (प्रत्य०)] अधिक श्रम करने पर तथा थकावट मिटाने के उद्देश्य से थोड़ी देर के लिए दम लेना या विश्राम करना।

**सुस्ती**—स्त्री०[फा० सुस्त] १ सुस्त होने की अवस्था या भाव। शिथिलता। २ आलस्य, चिंता, रोग आदि के कारण उत्पन्न होनेवाली वह अवस्था जिसमें शरीर कुछ-कुछ शिथिल होता है तथा मन में कुछ करने के प्रति अरुचि होती है। ३ पुरुष का अभाव या कमी। ४. बीमार होने की अवस्था। (लक्ष०)

**सुस्तैन**†—पु०=स्वस्त्ययन।

**सुस्थ**—वि०[सं० सु√स्था (ठहरना)+क]१ ठीक तरह से स्थित होना। २. भला। चंगा। नीरोग। स्वस्थ। तंदुरुस्त। ३ सब प्रकार से सुखी। ४ मनोहर। सुन्दर।

**सुस्थ-चित्त**—वि०[सं० ब० स०] जिसका चित्त सुखी या प्रसन्न हो।

**सुस्थता**—स्त्री०[सं० सुस्थ+तल्—टाप्] सुस्थ होने की अवस्था या भाव।

**सुस्थत्व**—पु०=सुस्थता।

**सुस्थल**—पु०[सं० प्रा० स०]१ अच्छा स्थान। २ एक प्राचीन जनपद।

**सुस्थावती**—स्त्री० [सं० सुस्था+मत्प्—म+ङीप्] गणित में एक प्रकार की राशिनी।

**सुस्थित**—वि०[सं० प्रा० स०] [स्त्री० सुस्थिता भाव० सुस्थिति] १ उत्तम रूप से या भली-भाँति स्थित। २ दृढ़। पक्का। मजबूत। ३ स्वस्थ। तन्दुरुस्त। ४ भाग्यवान्।

पु०१ ऐसा मकान जिसके चारों ओर छज्जे हों। २ एक प्रकार का रोग जिसमें घोड़े अपने को निहारने और हिनहिनाने रहते हैं।

**सुस्थितत्व**—पु०[सं० सुस्थित+त्व] सुस्थित होने की अवस्था या भाव।

**सुस्थिति**—स्त्री०[सं० प्रा० स०]१ अच्छी या उत्तम स्थिति। सुखपूर्ण अवस्था। २ कल्याण। मंगल। ३ प्रसन्नता। हर्ष। ४ अच्छा स्वास्थ्य।

**सुस्थिर**—वि०[स० प्रा० स०] [स्त्री० सुस्थिरा]१ जो अच्छी तरह स्थिर या शान्त हो। २. जो अच्छी तरह या दृढ़तापूर्वक जमाया, बैठाया या लगाया गया हो।

**सुस्थिरा**—स्त्री०[सं० प्रा० स०] रक्तवाहिनी। नस। लाल रग।

**सुस्ना**—स्त्री०[सं० ब० स०] खेसारी। त्रिपुट।

**सुस्नात**—वि०[स० प्रा० स०] १. जिसने यज्ञ के उपरान्त स्नान किया हो। २. जो नहा-धोकर पवित्र हो गया हो।

**सुस्मित**—पु०[सं० प० त०] [स्त्री० सुस्मिता] मधुर हँसी हँसनेवाला।

**सुस्वप**—पु०[सं० ब० स०] पितरों की एक श्रेणी या वर्ग।

**सुस्वधा**—स्त्री०[सं०]१ कल्याण। मंगल। २ सौभाग्य।

**सुस्वन**—वि०[सं० ब० स०]१ उत्तम ध्वनि या अच्छा शब्द करनेवाला। २ बहुत ऊँचा। ३ मनोहर। सुन्दर।

पु० शंख।

**सुस्वप्न**—पु०[सं० प्रा० स०]१. शुभ स्वप्न। अच्छा सपना। २ शिव का एक नाम।

**सुस्वर**—वि०[सं० प्रा० स०] [स्त्री० सुस्वरा] [भाव० सुस्वरता] १. मधुर। २. सुरीला। ३. उच्च या घोर।

पु० १ मधुर, सुरीला या उच्च स्वर। २. गला। ३. वह कर्म जिससे मनुष्य का स्वर मधुर, सुरीला या उच्च होता है। (जैन)

**सुस्वरता**—स्त्री० [सं०] सुस्वर होने की अवस्था, गुण या भाव।

**सुस्वादु**—वि० [सं० ब० स०] अत्यन्त स्वादयुक्त। बहुत स्वादिष्ट। बहुत जायकेदार।

**सुस्वाप**—पु० [सं० प्रा० स०] प्रगाढ़ निद्रा। गहरी नींद।

**सुहँग***—वि० =सुहँगा।

**सुहँगा**†—वि० [सं० सुगम] सहज। आसान।

**सुहँगा**†—वि० [हिं० महँगा का अनु०] अपेक्षया कम मूल्य का या कम मूल्य पर मिलनेवाला। सस्ता। 'महँगा' का विपर्याय।

**सुहदा***—वि० [हिं० सुहावना] [स्त्री० सुहदी] सुहावना। सुन्दर।

**सुहड़**—पु० [सं० सुभट] सुभट। योद्धा। शूर-वीर। (डिं०)

**सुहनी**†—स्त्री०=सोहनी।

**सुहबत**†—स्त्री०=सोहबत।

**सुहराना**†—स० =सहलाना।

**सुहराब**—पु० [फा०] ईरान के सुप्रसिद्ध वीर रुस्तम का बेटा जो उसी के हाथों मारा गया था।

**सुहल**†—पु०=सुहेल (तारा)।

**सुहव**†—पु०=सुहा (राग)।

**सुहाँब (ब्स्)**—पु० [सं०] एक अमिरस का नाम।

**सुहबी**†—स्त्री०=सुहा (राग)।

**सुहस्त**—वि० [सं० ब० स०] १. सुन्दर हाथोंवाला। २. जिसके हाथ किसी काम में मँज गये हों, फलतः जो कोई काम सहज में तथा बढ़िया रूप में करता हो।

**सुहा**—पु० [हिं० सुआ] [स्त्री० सुही] लाल नामक पक्षी।

†पु०=सूहा (राग)।

**सुहाग**—पु० [सं० सौभाग्य] १. विवाहिता स्त्री की वह स्थिति जिसमें उसका पति जीवित और वर्तमान हो। अहिवात। सौभाग्य।

**सुहाग भरना**=स्त्री की माँग में सिंदूर भरना। **सुहाग मनाना**=स्त्री का सदा सुहाग या सौभाग्य बना रहने की कामना करना। पति-सुख के अखंड रहने के लिए कामना करना।

२. वह वस्त्र जो वर विवाह के समय पहनता है। जामा। ३. विवाह के समय कन्या पक्ष में गाये जानेवाले मांगलिक गीत, जिनमें कन्या के सौभाग्यवती बने रहने की कामना होती है।

क्रि० प्र०—गाना।

पु० [?] मँझोले आकार का एक प्रकार का सदाबहार पेड़ जिसके बीजों से जलाने के लिए और औषध के काम में लाने के लिए तेल निकाला जाता है।

†पु०=सुहागा।

**सुहाग-बर**—पुं०=सुहाग-मंदिर।

**सुहागन**—वि० स्त्री०=सुहागिन।

**सुहाग-मंदिर**—पुं० [सं०] १. राजमहल का वह विभाग जिसमें राजा अपनी रानियों के साथ विहार करते थे। २. वह कोठरी या कमरा जिसमें वर और वधू सोते हों।

**सुहागा**—पु० [सं० सुभग] एक प्रकार का क्षार जो गरम पानी वाले गंधकी सोतों से निकलता है।

†पु० [?] खेत की मिट्टी बराबर करने का पाटा। हेंगा।

**सुहागिन**—वि० स्त्री० [हिं० सुहाग+इन (प्रत्य०)] सुहाग अर्थात् सौभाग्य प्राप्ता (स्त्री)। सधवा।

**सुहागिनी**†—स्त्री०=सुहागिन।

**सुहागिल***—स्त्री०=सुहागिन।

**सुहाता**—वि० [हिं० सहना] जो सहा जा सके। सहने योग्य। सह्य।

†वि० =सुहावना। जैसे—उसे मेरी कोई बात नहीं सुहाती है।

**सुहान**†—पु० सोहान।

**सुहाना**—अ० [सं० शोभन] १. देखने में सुन्दर प्रतीत होना। २. भला लगना। सुखद होना। ३ सत्य होना।

**सुहामण**†—वि० सुहावना।

**सुहार**†—पु०=सुहाल (पकवान)। उदा०—हारके सरोज सूकि होत है सुहार से।—सेनापति।

**सुहारी**†—स्त्री० [सं० सु+आहार] पूरी। सादी।

**सुहाल**—पु० [सं० सु+आहार] एक प्रकार का नमकीन पकवान जो मैदे का बनता है और जिसका आकार तिकोना तथा परतदार होता है।

**सुहाली**†—स्त्री०=सुहारी।

**सुहाव***—वि० [हिं० सुहाना] सुहावना। सुन्दर।

पु० [सं० सु+हाव] सुन्दर हाव-भाव।

**सुहावता**†—वि० [हिं० सुहाना] [स्त्री० सुहावती] १ सुहानेवाला। देखने में अच्छा लगनेवाला। सुहावना।

**सुहावन**†—वि०=सुहावना।

**सुहावना**—वि० [हिं० सुहाना] [स्त्री० सुहावनी] जो सुन्दर भी हो और सुखद भी। जैसे—सुहावनी बात, सुहावनी रात।

†अ०=सुहाना।

**सुहावनापन**—पु० [हिं० सुहावना+पन (प्रत्य०)] 'सुहावना' होने की अवस्था या भाव। सुन्दरता। मनोहरता।

**सुहावला***—वि०=सुहावना।

**सुहास**—वि० [सं० ब० स०] [स्त्री० सुहासा] सुन्दर हँसी हँसनेवाला।

**सुहासिनी**—वि० स्त्री [सं०] हिं० 'सुहासी' का स्त्री०।

**सुहासी (सिन्)**—वि० [सं० सुहास+इनि—दीर्घ, नलोप] [स्त्री० सुहासिनी] सुन्दर हँसी हँसनेवाला।

**सुहिणा***—पु०=स्वप्न। (राज०)

**सुहित**—वि० [सं० ब० स०] १. बहुत अधिक हित अर्थात् उपकार करने या लाभ पहुँचानेवाला। २. (कार्य) जो पूरा किया गया हो। सम्पादित। ३. तृप्त। सन्तुष्ट। ४. उपयुक्त। ठीक।

**सुहिता**—स्त्री० [सं० ब० स०] १. अग्नि की एक जिह्वा का नाम। २. सप्तजटा।

**सुहिया**†—स्त्री०=सुहा (राग)।

**सुहृत**†—वि०=सुहृत्।

**सुहृत्**—वि०, पु०=सुहृद।

**सुहृत्ता**—स्त्री०=सुहृदता।

**सुहृद**—वि० [सं०] [भाव० सुहृदता] अच्छे हृदयवाला। प्यारा।

पुं०[सं०]१. शिव का एक नाम। २. मित्र।

**सुहृदय**—वि०[स० ब० स०] [भाव० सुहृदयता]१ अच्छे हृदयवाला। २. सबसे प्यार करनेवाला। ३. सहृदय।

**सुहेल**—पु०[अ०] एक कल्पित तारा, जिसके विषय में प्रसिद्ध है कि यह यमन देश में दिखलाई देता है और इसके उदित होने पर चमड़े में सुनघ आ जाती है, तथा सब जीव मर जाते हैं। (हिंदी के कवियों ने इसका निकलना शुभ माना है।)

**सुहेलरा***—वि०=सुहेला।

**सुहेला**—वि० [सं० शुभ?] १. सुहावना। सुन्दर। २. सुखदायक। सुखद।

पु०१. विवाह के अवसर पर गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत। २. प्रशंसा, स्तुति।

**सुहेस**†—वि० [स० शुभ] अच्छा। सुन्दर। भला।

**सुहेला**—पु०[स० मुहेल] वह जो उत्तम रूप से हवन करता हो। अच्छा होता।

**सुहोत्र**—पु०[स० प्रा० स०]१. एक वैदिक ऋषि। २. एक बाह्लीश्वर का नाम। ३. सहदेव का एक पुत्र। ४. सुधन्वा का एक पुत्र। ५ वितथ का एक पुत्र।

**सुह्म**—पु०[सं०]१. एक प्राचीन प्रदेश जो गौड देश के पश्चिम में था। ताम्रलिप्ति (आधुनिक तामलूक) यही का राजनगर था। २. यवनों की एक जाति।

**सुह्मक**—पुं०=सुह्म।

**सूँ***—अव्य० [सं० सह] बजभाषा में करण और अपादान का चिह्न। सों। से।

**सूँस**†—स्त्री०=सूँस (जल-जन्तु)।

**सूँघना**—स० [सं० सिंघण]१. किसी पदार्थ की गंध जानने के उद्देश्य से उसे नाक के पास ले जाकर साँस खींचना। जैसे—फूल सूँघना। २ कोई विशेष जानकारी प्राप्त करने के लिए उक्त क्रिया करना। जैसे—रीछ ने उस मृतप्राय व्यक्ति को सूँघा।

**मुहा०—जमीन सूँघना**=बैठ बैठे इस प्रकार ऊँघना कि सिर बार बार जमीन की ओर झुकता रहे। (व्यंग्य) **(किसी छोटे का) सिर सूँघना** अपनी मंगल-कामना प्रकट करने के लिए छोटों का मस्तक सूँघना या सूँघने का नाट्य करना। **(किसी को) साँप सूँघना**=साँप का काटना जिससे आदमी मर जाता है। (व्यंग्य) जैसे—बोलते क्यों नहीं क्या साँप सूँघ गया है?

३ बहुत अल्प आहार करना। बहुत कम या नाम-मात्र का भोजन करना। (व्यंग्य) जैसे—आपने भोजन क्या किया है, सिर्फ सूँघकर छोड़ दिया है।

**सूँघा**—पु० [हिं० सूँघना]१ वह जो केवल सूँघकर यह जान लेता हो कि अमुक पदार्थ या व्यक्ति किधर गया है, अथवा किसी स्थान पर अमुक पदार्थ है या नहीं?

**विशेष**—प्राचीन तथा मध्य युग में कुछ लोग ऐसे होते थे जो केवल सूँघकर यह बतला देते थे कि चीजें चुराकर चोर कहाँ या किधर गये हैं, अथवा अमुक जमीन के नीचे पानी या खजाना है कि नहीं।

२. सूँघकर शिकार तक पहुँचनेवाला कुत्ता। ३. जासूस। भेदिया।

**सूँठ**†—स्त्री०=सोंठ।

**सूँड़**—पु०[सं० शुण्ड]१. हाथी की नाक जो बहुत लंबी होती और नीचे की ओर प्रायः जमीन तक लटकती रहती है। २ जन्तुओं के मुँह के आगे का निकला हुआ उक्त प्रकार का छोटा अंग।

**सूँड़दंड**—पु० [स० शुण्ड-दंड] हाथी। (डिं०)

**सूँड़हल**—वि०[स० शुण्डाल] सूँडवाला।

पु० हाथी।

**सूँडा**—पु०[हिं० सूँड] बड़ी शूड।

**सूँडाल**—वि०[स० शुंडाल] सूँडवाला।

पु० हाथी।

**सूँडी**—स्त्री०[सं० शुण्डी] पौधों, फलों आदि में लगनेवाला एक प्रकार का छोटा लंबोतरा कीड़ा।

**सूँधी**—स्त्री० [स० शोधन] सज्जी मिट्टी।

**सूँस**—स्त्री० [स० शिशुमार] प्रायः आठ-दस हाथ लंबा एक प्रसिद्ध बड़ा जल-जन्तु, जिसके जबड़े में तीस दाँत होते हैं।

**सूँहें**†—अव्य०=सौंहें (सामने)।

**सू**—वि० [स० √सू (उत्पन्न करना) + क्विप्] उत्पन्न करनेवाला (समासांत में)। जैसे—रलसू।

स्त्री०[फा०] ओर। दिशा।

**सूअर**—पु०[स० शूकर, सूकर] [स्त्री० सूअरी]१ एक प्रसिद्ध स्तनपायी जन्तु जो मुख्यतः दो प्रकार का होता है। (क) वन्य या जंगली और (ख) ग्राम्य या पालतू।

**विशेष**—ग्राम्य या पालतू सूअर छोटा और डरपोक होता है, पर जंगली सूअर बहुत बड़ा शक्तिशाली और परम हिंसक प्रवृत्ति का होता है।

२. एक गाली।

**पद—सूअर कहीं का**=नालायक।

**सूअर-दाद**—स्त्री०[स० शूक-दद्रु] एक प्रकार का क्षुद्र रोग जिसमें मसूड़ों में अंकुर-सा निकलने लगता है।

**सूअर-बियान**†—पु० [हिं० सूअर+बियाना=जनना] मादा सूअर की तरह बहुत अधिक संतान उत्पन्न करना।

वि० स्त्री० मादा सूअर की तरह बहुत अधिक संतान प्रायः उत्पन्न करनेवाली (भार्या या स्त्री)।

**सूअरमुखी**—स्त्री० [हिं० सूअर+मुखी] एक प्रकार की बड़ी ज्वार।

**सूआ**†—पु० [स० शुक, प्रा० सुअ] सुग्गा। तोता। शुक। कीट।

पु०[हिं० सूई] १. बड़ी, मोटी और लंबी सूई जिससे टाट आदि सीते हैं। २ बड़ी नहर की छोटी उपशाखा। (पश्चिम) ३ सीक। (लश०)

**सूई**—स्त्री०[स० सूची]१ लोहे का वह नुकीला, पतला और लंबा उपकरण जिसके छेद में धागा पिरोकर कपड़े आदि सीते हैं।

**मुहा०—सूई का फाल या भाला बनाना**=जरा सी बात को बहुत अधिक बढ़ाना। व्यर्थ विस्तार करना। **आँखों की सुई निकालना**=किसी विकट काम के प्रायः समाप्त हो चुकने पर उसका शेष थोड़ा-सा सुगम अंश पूरा करके उसका श्रेय पाने का प्रयत्न करना।

२ किसी विशेष परिणाम, अंक, दिशा आदि का सूचक तार या काँटा। जैसे—घड़ी की सूई। ३. पौधे का छोटा पतला अंकुर। ४. चिकित्सा

क्षेत्र में नली के आकार का एक प्रसिद्ध छोटा उपकरण, जिसकी सहायता से कुछ तरल दवाएँ शरीर के रगों या पट्ठों में पहुँचाई जाती हैं। पिचकारी। स्रुगक। (सीरिंज) ५. उक्त उपकरण से शरीर के रगों या पट्ठों में तरल औषध आदि पहुँचाने की क्रिया। (इंजेक्शन)

**मुहा०—सूई लगाना**=उक्त नली के द्वारा शरीर के अदर दवा पहुँचाना। **सूई लेना**=रोगी का उक्त उपकरण द्वारा कोई दवा अपने शरीर में प्रविष्ट कराना

**सूईकारी**—स्त्री० [हिं० सूई+फा० कारी (क्रिया हुआ काम)] १. कपड़े पर सूई और डोरे की सहायता से (तीलीकारी से भिन्न) बनाये हुए बेल, बूटे आदि। सूची-शिल्प। (नीडल वर्क, स्टिच-क्रैफ्ट) २. चित्र-कला में, उक्त आकार-प्रकार का अकन।

**सूई-डोरा**—पु० [हिं० सूई+डोरा] मालखभ की एक कसरत।

**सूक**—पु० [स० √ सू (प्रेरणा देना) +क्विप्—कन्] १ बाण। २ वायु। हवा। ३ कमल।

†पु० १.=शुक। २.=शुक।

**सूकना***—अ०=सूखना।

**सूकर**—पु० [स० सू√कृ (करना)+अच्] [स्त्री० सूकरी] १. सूअर। शूकर। २. एक प्रकार का हिरन। ३. कुम्हार। ३. सफेद धान। ५. पुराणानुसार एक नरक का नाम।

**विशेष**—'सूकर' के यौ० के लिए देखो 'शूकर' के यौ०।

**सूकर-खेत**†—पु०=शूकर-क्षेत्र।

**सूकरी**—स्त्री० [स० शूकर—ङीप्] १. मादा सूअर। सूअरी। शूकरी। २ वराहकाता। ३. वाराहीकद। ४. वाराही देवी। ५ एक प्रकार की चिड़िया।

**सूकरेष्ट**—पुं० [स० ष० त०] १. कसेरू। २ एक प्रकार का पक्षी।

**सूका**—पु० [स० संज्ञादक०=चतुर्थांश सहित] [स्त्री० सूकी] चार आने (अर्थात् २५ नये पैसे) के मूल्य का सिक्का। चवन्नी।

†वि०=सूखा।

†पु०[?] प्रभात।

**मुहा०—सूका उगना**=सवेरा होना।

**सूकी**†—स्त्री० [हिं० सूका=चवन्नी?] रिश्वत। घूस।

†स्त्री०=सूका (चवन्नी)।

**सूक्त**—वि० [स० सु√वच् (कहना)+क्त] उत्तम रूप से या भली भाँति कहा हुआ।

पु० १. उत्तम रूप से या भली-भाँति कही हुई बात। अच्छी उक्ति। सूक्ति। २. ऋचाओं या वेद-मत्रों का विशिष्ट वर्ग या विभाग। जैसे—देवी-सूक्त, श्रीसूक्त आदि।

**सूक्तकारी (रिन्)**—वि० [स० सूक्त√चर् (प्राप्ताधि)+णिनि] उत्तम वाक्य या परामर्श माननेवाला।

**सूक्तदर्शी (र्शिन्)**—पु० [स० सूक्त√दृश् (देखना)+णिनि] वह ऋषि जिसने वेदमत्रों का अर्थ किया हो। मंत्रद्रष्टा।

**सूक्तद्रष्टा**—पुं० [सं० ष० त०] दे० 'सूक्त-दर्शी'।

**सूक्ता**—स्त्री० [सं० सूक्त—टाप्] मैना। सारिका।

**सूक्ति**—स्त्री० [सं० प्रा० स०] अच्छे और सुन्दर ढग से कही हुई कोई बढ़िया बात। अच्छी उक्ति।

**सूक्तिक**—पुं० [स० सूक्ति+कन्] एक प्रकार की झाँझ।

**सूक्ष्म**†—वि०, पु०=सूक्ष्म।

**सूक्ष्म**—वि० [स० √सूक (चुगली करना)+स्मन्-मन्-सुकुवी] [स्त्री० सूक्ष्मा, भाव० सूक्ष्मता] १. बहुत छोटा, पतला या थोड़ा। २. जो अपनी बारीकी के कारण सब के ध्यान या समझ में जल्दी न आ सके। बारीक। (सूक्ष्म) ३ बहुत ही छोटे-छोटे अगों या उनकी प्रक्रिया, विचार आदि से सबध रखनेवाला। (फाइन)

पु० १. साहित्य में एक अलकार जिसमे किसी सूक्ष्म चेष्टा या सांकेतिक व्यापार से ही अपने मन का भाव प्रकट करने का, अथवा किसी के प्रश्न या सकेत का उत्तर देने का, उल्लेख होता है। यथा—लखि गृहजन बिच कमल सौं सीस छुवायौ स्वाम। हरि सन्मुख करि आरसी हियै लगाई बाम।—बिहारी। २ योग में, तीन प्रकार की सिद्धियो में से एक प्रकार की सिद्धि। (येव दो प्रकार निरबद्य और सावद्य कहलाते है) ३ दे० 'सूक्ष्म शरीर'। ४. परमाणु। ५ परब्रह्म। ६. शिव। ७. जैनों के अनुसार एक प्रकार का कर्म जिसके उदय होने से मनुष्य सूक्ष्म जीवो की योनि में जन्म लेता है। ८ वह औषधि जो रोग-रूप के मार्ग से शरीर मे प्रवेश करे। जैसे—नीम, हाहद, रेंडी का तेल, सेंधा नमक आदि। ९. बृहत्सहिता के अनुसार एक प्राचीन देश। १०. जीरा। ११. सुपारी। १२ निर्नमो। १३. रीठा। १४ छल। कपट।

**सूक्ष्म कोण**—पु० [सं० मध्य० स०] ज्यामिति मे, वह कोण जो समकोण से छोटा हो।

**सूक्ष्म-चंटिका**—स्त्री० [स०] सनई। क्षुद्र शणपुष्पी।

**सूक्ष्म-तंडुल**—पु० [स० ब० स०] १. पोस्त-दाना। खसखस। २. धूना। राल।

**सूक्ष्म-तंडुला**—स्त्री० [स० सूक्ष्म-तडुल—टाप्] १ पीपल। पिप्पली। २. धूना। राल।

**सूक्ष्मता**—स्त्री० [स० सूक्ष्म+तल्—टाप्] सूक्ष्म होने की अवस्था, गुण या भाव। बारीकी।

**सूक्ष्म-तुंड**—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार का कीडा। (सुश्रुत)

**सूक्ष्मदर्शक यंत्र**—पु० [स० मध्य० स०] सूक्ष्मवीक्षक यत्र। (दे०)

**सूक्ष्म-दर्शिता**—स्त्री० [सं० सूक्ष्मदर्शी+तल—टाप्] सूक्ष्मदर्शी होने की अवस्था, गुण या भाव। सूक्ष्म या बारीक बात सोचने-समझने का गुण।

**सूक्ष्मदर्शी**—वि० [स० सूक्ष्म√दृश् (देखना)+णिनि] १ सूक्ष्म बातें या विशेष समझनेवाला। बारीक बातें सोचने-समझनेवाला। कुशाग्र-बुद्धि। २. फलतः विशेष बुद्धिमान् या समझदार।

पु० एक प्रकार का यत्र जिसके द्वारा कोई बहुत छोटी चीज या उसका कोई अश बहुत बड़े आकार का दिखाई देता है। (माइक्रोस्कोप)

**सूक्ष्म-दल**—पु० [स० ब० स०] एक प्रकार की सरसो। देवसर्षप।

**सूक्ष्म-दृष्टि**—स्त्री० [सं० कर्म० स०] ऐसी दृष्टि जिससे बहुत ही सूक्ष्म बातें भी दिखाई दें या समझ में आ जायँ।

वि० उक्त प्रकार की दृष्टि रखनेवाला।

**सूक्ष्म-देह**—पु०=सूक्ष्म-शरीर।

**सूक्ष्म-देही (हिन्)**—वि० [स० सूक्ष्म-देह+इनि] सूक्ष्म शरीरवाला। जिसका शरीर बहुत ही सूक्ष्म या छोटा हो।

पु० परमाणु।

**सूक्ष्म-नाम**—पु०[स० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

**सूक्ष्म-पत्र**—पु०[स० ब० स०]१. धनिया। धन्याक। २. बन-तुलसी। ३ लाल ईख। ४. काली जीरी। ५ देव-सर्षप। ६ बेर। ७ माची-पत्र। ८. कुकरौंधा। ९. कीकर। बबूल। १० धमासा। ११. उडद। १२. अर्कपत्र।

**सूक्ष्म-पत्रक**—पु० [स० सूक्ष्मपत्र+कप्] १. पित्तपापडा। पर्पटक। २. बन-तुलसी।

**सूक्ष्म-पत्रा**—स्त्री० [सं० सूक्ष्मपत्र—टाप्] १ बन-जामुन। २. धमासा। बृहती। ४. शतमूली। ५. अपराजिता। ६. जीरे का पौधा। ७ बला।

**सूक्ष्मपत्रिका**—स्त्री० [स० सूक्ष्मपत्रक—टाप्-ह्रस्व] १ सौफ। शतपुष्पा। २. शतावर। ३. छोटी पत्तियोंवाली ब्राह्मी। ४ पोई नाम का साग।

**सूक्ष्मपत्री**—स्त्री० [स० सूक्ष्मपत्र—ङीप्] १. आकाश मांसी। २. शतावर।

**सूक्ष्मपर्णा**—स्त्री०[स० ब० स०]१. विधारा। २. बन-भटा। बृहती। ३. छोटी सनई।

**सूक्ष्म-पर्णी**—स्त्री०[स० सूक्ष्मपर्ण—ङीप्] रामतुलसी। रामदूती।

**सूक्ष्म-पाद**—वि०[स० ब० स०] छोटे पैरोंवाला। जिसके पैर छोटे हों।

**सूक्ष्म-पिप्पली**—स्त्री० [स० मध्य० स०] जगली पीपल। बन-पिप्पली।

**सूक्ष्म-पुष्पा**—स्त्री०[स० ब० स०] सनई। शण-पुष्पी।

**सूक्ष्म-पुष्पी**—स्त्री०[स० सूक्ष्म-पुष्प—ङीप्]१ शखिनी। २ यव-तिक्ता नाम की लता।

**सूक्ष्म-फल**—पुं०[सं० ब० स०]१ लिसोडा। २ बेर।

**सूक्ष्म-फला**—स्त्री०[स० सूक्ष्म-फल—टाप्]१ भुई आँवला। भूम्यामलकी। २. मालकपनी। ३ तालीशपत्र।

**सूक्ष्म-बदरी**—स्त्री०[स० मध्य० स०] झड़बेरी। भूबदरी।

**सूक्ष्म-बीज**—पु०[स० ब० स०] पोस्तदाना। खसखस।

**सूक्ष्म-भूत**—पु०[स० कर्म० स०] आकाश, अग्नि, जल आदि ऐसे शुद्ध भूत जिनका पचीकरण न हुआ हो।

**सूक्ष्म-मति**—वि०[सं० ब० स०] सूक्ष्म और तीव्र बुद्धिवाला।

**सूक्ष्म-मूला**—स्त्री०[स० ब० स०]१. जीवती। २. ब्राह्मी।

**सूक्ष्म-रूपी**—पु०[स० सूक्ष्मरूप+इनि] सगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सूक्ष्म-लोभक**—पु०[स०] जैन मतानुसार मुक्ति की चौदहवी अवस्थाओ में से दसवी अवस्था।

**सूक्ष्मवल्ली**—स्त्री० [स० कर्म० स०] १. ताम्रवल्ली। २. जतुका। ३. करेली।

**सूक्ष्म-वीक्षक**—वि० [स० ब० त०] बहुत ही सूक्ष्म चीजें देखनेवाला। पु०-सूक्ष्मदर्शी (यंत्र)।

**सूक्ष्म-शरीर**—पु०[स०कर्म० स०] वेदांत दर्शन के अनुसार जीव या प्राणी के तीन प्रकार के शरीरों में से एक जो उसके स्थूल शरीर के ठीक अनुरूप परन्तु बहुत छोटा और अँगूठे के बराबर होता है। लिंग शरीर।

**विशेष**—यह माना जाता है कि मृत्यु के समय यह शरीर स्थूल शरीर से निकल कर परलोक में अपने पाप-पुण्य का फल भोगता है। यह भी माना जाता है कि आत्मा इसी शरीर से आवृत्त रहती है। शेष दो कारण-शरीर और स्थूल-शरीर कहलाते है।

**सूक्ष्म-शर्करा**—स्त्री०[स० कर्म० स०] बालू। रेत।

**सूक्ष्म-शाक**—पु०[स० कर्म०स०] एक प्रकार की बथुरी जिसे जल-बथुरी भी कहते है।

**सूक्ष्म-शालि**—पु० [स० कर्म० स०] सोरो नामक धान।

**सूक्ष्म-स्फोट**—पु०[स०कर्म० स०] एक प्रकार का कोढ। बिचर्चिका रोग।

**सूक्ष्मा**—स्त्री०[स० सूक्ष्म—टाप्] १ जूही। मूषिका। २. छोटी इलायची। ३ मूसली। ४ छोटी जटामासी। ५ करुणी नाम का पौधा। ६ विष्णु की नौ अक्तियों मे से एक।

**सूक्ष्माक्ष**—वि० [स० ब० स०] सूक्ष्म-दृष्टिवाला। तीव्रदृष्टि।

**सूक्ष्मात्मा (त्मन्)**—पु०[स० ब० स०] शिव। महादेव।

**सूक्ष्माह्वा**—स्त्री० [स० ब० स०] महामेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि।

**सूक्ष्मेक्षिका**—स्त्री०[स० कर्म० स०]१ प्राचीन भारत मे, किसी बात या विषय की ऐसी छानबीन या जाँच-पडताल जो बहुत सूक्ष्म दृष्टि से की गई हो। २ सूक्ष्म दृष्टि।

**सूक्ष्मैला**—स्त्री०[स० कर्म० स०] छोटी इलायची।

**सूख**†—वि० सूखा।

स्त्री०[हि० सूखना] सूखने की अवस्था, क्रिया या भाव।

**सूखना**—अ० [स० शुष्क, हि० सूखा+ना (प्रत्य०)] १ किसी आर्द्र या तर पदार्थ का ऐसी स्थिति मे आना कि उसकी आर्द्रता या तरी नष्ट हो जाय। जैसे—गीली धोती सूखना, तरकारी या फल सूखना। २ किसी आधार मे के पानी का किसी प्रकार नष्ट हो जाना या न रह जाना। जैसे—कुआँ, तालाब, नदी सूखना। ३ जल के अभाव मे किसी पदार्थ का जीवनी-शक्ति से हीन होना। जैसे—वर्षा न होने से फसल सूखना, चिंता या डर से जान सूखना। ४ कष्ट, चिंता, रोग आदि के कारण शरीर का क्षीण और दुर्बल होना। जैसे—चार दिन की बीमारी मे उनका सारा शरीर सूख गया।

**मुहा०—सूखकर काँटा होना** = बहुत ही क्षीण और दुर्बल हो जाना। **सूखकर सोंठ होना** = सूखकर बिल्कुल चुनक या सिकुड जाना। **सूखे खेत लहलहाना** = कष्ट, चिंता, दुःख आदि दूर होने पर फिर से यथेष्ट प्रसन्न या सुखी होना।

सयो० क्रि०—जाना।

**सूखर**—पु०[?] एक शैव सप्रदाय।

**सूखा**—वि० [स० शुष्क] स्त्री० सूखी, भाव० सूखापन] १. जिसमे जल या उसका कोई अश न हो या न रह गया हो। निर्जल। जैसे—सूखा कपडा, सूखी नदी। २ जिसमे आर्द्रता या नमी न हो या न रह गई हो। शुष्क। जैसे—सूखा मौसम (ऐसा मौसम जिसमे वर्षा न हो और हवा मे नमी न हो)। ३ जिसमें से जीवनी-शक्ति का सूचक हरापन निकल गया हो। जैसे—सूखा पत्ता, सूखा वृक्ष। ४. जिसमें जीवनी शक्ति बहुत कम या नही के समान हो। जैसे—सूखा चेहरा, सूखा शरीर। ५. जिसमें भावुकता, मनोरजकता, सरसता आदि कोमल गुणो का अभाव हो। जैसे—सूखा व्यवहार, सूखा स्वभाव। (डाँई, उक्त सभी अर्थों के लिए) ६. कोरा। निरा। जैसे—सूखा अन्न, सूखी शेखी।

**मुहा०—सूखा जवाब देना**=साफ इन्कार करना।

७ जिसमें जल आदि का योग न हो। जिसमें आवश्यकता होने पर भी जल का उपयोग न किया गया हो। जैसे—(क) यह चूरण सूखा ही फाँट आओ। (ख) वह बोतल की सारी शराब सूखी ही पी गया।

८ (बात या व्यवहार) जो दिखाने भर को या नाममात्र को हो। तत्त्व, तथ्य आदि से रहित। उदा०—लेके मैं ओढ़ूँ, बिछाऊँ या लपेटूँ, क्या करूँ। ब्व्ली, फीकी, ऐसी सूखी मेहरबानी आपकी।—इन्शा।

पु० १. पानी न बरसने की दशा या समय। अनावृष्टि। खुश्क-साली। (ड्राट)

क्रि० प्र०—पड़ना।

२ ऐसा स्थान जहाँ जल न हो। स्थल। जैसे—सूखे पर नाव लगाना।

३ तम्बाकू का सुखाया हुआ चूरा या पत्ता।

४ एक प्रकार की खाँसी जिसमें कफ नहीं निकलता और साँस जोरों से चलता है। हब्बा-डब्बा।

५ कोई ऐसा रोग जिससे शरीर जल्दी-जल्दी सूखने लगता हो।

क्रि० प्र०—लगना।

६ माँग की सूखी हुई पत्तियाँ।

**सूक्ष्म**†—वि० सूक्ष्म।

**सूखी खाँसी**—स्त्री० [हिं०] ऐसी खाँसी जिसमें गले से कफ या बलगम न निकलता हो।

**सूखी खेती**—स्त्री० [हिं०] खेती करने की एक आधुनिक प्रणाली जिससे उन स्थानों में भी कुछ फसल उत्पन्न कर ली जाती है, जिनमें बर्षा अपेक्षया बहुत कम होती है, और जल के अभाव में सिंचाई की भी कोई व्यवस्था नहीं हो सकती। (ड्राई फार्मिंग)

**विशेष**—इस प्रणाली में कई प्रकार के उपाय होते हैं, जैसे—(क) जमीन बहुत गहरी जोतना, जिसमें पानी गहराई में समाकर जमा रहे। (ख) जमीन का ऊपरी भाग पत्थरों आदि से ढक देना, जिसमें उसकी तरी बनी रहे। (ग) खेत के सीढ़ीनुमा विभाग कर देना जिसमें बर्षा के जल का बहाव नियंत्रित किया जा सके आदि।

**सूखी धुलाई**—स्त्री०[हिं०] रासायनिक द्रव्यों के योग से कपड़े साफ करने की वह क्रिया जिसमें जल का उपयोग न हो। (ड्राइ-वाशिंग)

**सूखर**†—वि०=सुखद।

**सूच**—पुं०[सं०] कुश का अंकुर, जो सूई की तरह नुकीला होता है।

†वि०=शुचि। (डिं०)

**सूचक**—वि०[सं० √ सूच् (सूचित करना)+ण्वुल्—अक] [स्त्री० सूचिका] सूचना देनेवाला। सूचित करने या बतानेवाला। ज्ञापक। बोधक।

पु०१. कपड़ा, चमड़ा आदि सीने की सूई। सूची। २. सिलाई का काम करनेवाला कारीगर। ३. प्राचीन भारत में अभिनय का व्यवस्थापक। सूत्रधार। ४. सिद्ध पुरुष। ५ गौतम बुद्ध का एक नाम। ६. चुगलखोर अथवा दुष्ट और नीच व्यक्ति। ७. अयोगव माता और क्षत्रिय पिता से उत्पन्न पुत्र। ८. गुप्तचर। जासूस। भेदिया। ९. पिशाच। १०. कुत्ता। ११. बिल्ली। १२. कौआ। १३. गीदड़। १४. ऊँची दीवार। १५. कटघरा या जँगला। १६. छज्जा या बरामदा। १७. सोरों नामक थान।

**सूचकांक**—पुं०[सं०] खाद्यान्न, वस्त्र तथा अन्य वस्तुओं का विभिन्न समय का मूल्य बतलानेवाला अंक या लेखा। (सामान्य स्थिति के समय का मूल्य प्राय. १०० मान लिया जाता है। इससे बढ़ते या घटते हुए अंक आपेक्षिक महँगी या सस्ती के परिदर्शक होते हैं।) (इन्डेक्स नंबर)

**सूचन**—पुं० [स०√ सूच् (बताना)+ल्युट्—अन] [स्त्री० सूचनी]१ सूचित करने अर्थात् बताने या जताने की क्रिया। ज्ञापन। उदा०—जगत का अस्थिर हल्चल। तुम्हारा ही है भय सूचन।—पन्त। २. सूर्यांश फैलाने की क्रिया या भाव।

**सूचना**—स्त्री०[स० सूच+णिच्+युच्—टाप्] [वि० सूचनीय, भू० कृ० सूचित]१ सूई आदि के छेदने या भेदने की क्रिया या भाव। २ वह बात जो किसी व्यक्ति को किसी विषय का ज्ञान या परिचय कराने के लिए कही या बतलाई जाय। अवगत कराने या जताने के लिए कही हुई बात। (इन्फार्मेशन) ३ वह बात जो किसी व्यक्ति या जन-समाज को किसी विषय में सचेत या सावधान करने के लिए कही जाय। (नोटिस) ४. वह कागज या पत्र जिस पर उक्त प्रकार की कोई बात छपी या लिखी हो। इश्तहार। विज्ञापन। (नोटिस) ५ वह बात जो कोई कार्रवाई करने से पहले संबद्ध व्यक्ति या जन-समूह को पहले से विदित कराने के लिए कही या प्रकाशित की जाय। (नोटिस) ६ घटना आदि के संबंध में अदालती या और किसी तरह की कार्रवाई करने से पहले पुलिस या किसी और उपयुक्त अधिकारी से उसका हाल कहना। प्रतिवेदन। (रिपोर्ट) ७ कही से आनेवाले माल के साथ या उसके संबंध में आया हुआ विवरण, सूची आदि। बीजक। चलान। (एडवाइस)

क्रि० प्र०—देना।—पाना।—भेजना।—मिलना।

८ अभिनय। ९ नजर। दृष्टि। १० टोह या भेद लेना। रहस्य का पता लगाना। ११ हिंसा।

†स०[स० सूचन से] अवगत या सूचित करना। जतलाना। बतलाना।

**सूचना अधिकारी**—पुं० [स० ष० त०] किसी राज्य या विभाग अथवा संस्था आदि का वह अधिकारी जो जन-साधारण को मुख्य मुख्य बातों की सूचना देता रहता हो। (इनफार्मेशन आफिसर)

**सूचना-पत्र**—पुं० [स०ष०त०] वह पत्र या विज्ञप्ति जिसके द्वारा कोई बात लोगों को बताई जाय। विज्ञप्ति। इश्तहार। (नोटिस)

**सूचनालय**—पुं०[स०ष०त०] राज्य या उसके किसी विभाग का वह कार्यालय जहाँ से जन-साधारण को समय-समय पर उपयोगी सूचनाएँ दी जाती हैं। (इनफार्मेशन ब्यूरो)

**सूचनीय**—वि०[स०√ सूच् (बताना)+अनीयर] (बात या विषय) जिसकी सूचना किसी को देना आवश्यक हो अथवा जिसकी सूचना दी जा सकती हो।

**सूचयितव्य**—वि०=सूचनीय।

**सूचा**†—स्त्री०[हिं० सुचित] जो होश में हो। सचेत। सावधान।

स्त्री०[स०]=सूचना।

†वि०[स० स्वच्छ] १. शुद्ध। साफ। २ जिसमें से किसी ने कुछ खाया या चखा न हो। 'जूठा' का विपर्याय।

**सूचि**—पुं०[स० √सूच्+णिन्]१ निषाद पिता और वैश्या माता से उत्पन्न पुत्र। २. सूप बनानेवाला कारीगर। ३. उपकरण।

स्त्री०=सूची।

†वि०=शुचि (पवित्र)।

**सूचिक**—पु०[स० सूची+ठन्—इक]१. सूई से काम करनेवाला व्यक्ति। २. दरजी।

**सूचिका**—स्त्री०[सं० सूचि+कन्—टाप्]१. सूई। २. हाथी का सूंड। ३ केतकी। केवड़ा।

**सूचिका-धर**—पु०[स० ष० त०] सूँड धारण करनेवाला, हाथी।

**सूचिकाभरण**—पु०[स०] वैद्यक में एक प्रकार की औषधि जो सन्निपात, विसूचिका आदि प्राणनाशक रोगों तथा साँप के काटने की अंतिम ओषधि मानी गई है।

**विशेष**—इसका प्रयोग सूई की नोक से मस्तक की त्वचा के अन्दर पहुँचा कर भी किया जाता है और बहुत छोटी छोटी गोलियों के रूप में खिलाकर भी।

**सूचिका मुख**—वि० [स० ब० स०] जिसका मुँह सूई के समान नुकीला हो।

पु० शल्य।

**सूचिकार**—पु० [स० सूचि√कृ करना)+अण्] वह जो सुइयाँ बनाने का काम करता हो।

**सूचित**—भू० कृ०[√चि् (बताना)+क्त]१. जिसमें सूई आदि से छेद किया गया हो। २ जिसकी ओर इशारा या संकेत किया गया हो। जताया हुआ। ३ सूचना के रूप में कहा या भेजा हुआ। ४ जिसे सूचना दी गई हो।

**सूचिनी**—स्त्री०[स०√ सूच् (कहना)+णिनि-इन्—ङीप्] सूचना देनेवाली स्त्री।

स्त्री०१ सूई। २ रात।

**सूचिपत्र**—पु०[स० ब० स०] १ एक प्रकार का ऊख। २ चौपतिया नामक साग। ३. दे० 'सूचीपत्र'।

**सूचिपुष्प**—पु०[स० ब० स०] केवड़ा। केतकी।

**सूचिभेद्य**—वि०[स० तृ० त०]१. जो सूई से छेदा या भेदा जा सकता हो। २ जो इतना घना हो कि उसे छेदने या भेदने के लिए सूई की सहायता की आवश्यकता पड़ती हो। जैसे—सूचिभेद्य अन्धकार।

**सूचिरदन**—पु०[स० ब०स०] नेवला, जिसके दाँत बहुत नुकीले होते हैं।

**सूचिवदन**—पु०[स० ब० स०]१ नेवला। नकुल। २. मच्छर।

**सूचिवान्** (वत्)—वि०[स० सूचि+मतुप्=वनुप=दीर्घ] नुकीला। पुं० गरुड़।

**सूचि-श्व लि**—पु०[स० कर्म० स०] सोरों नामक धान।

**सूचि-सूत्र**—पुं०[स० ष० त०] १. सूई में पिरोया जानेवाला धागा। २. सूई-धागा।

**सूची**—स्त्री० [स० √सिव् (सीना)+चट्—टेरत्वं—ङीप्] १. कपड़ा सीने की सूई। २. शल्य चिकित्सा में, सूई के आकार-प्रकार का एक उपकरण जिससे क्षत सीया जाता था। (सुश्रुत) ३. एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना, जो लंबी और सूई के आकार की होती थी। ४. किसी प्रकार की चीजों, नामों, बातों आदि का क्रम-बद्ध लेखा या विवरण। अनुक्रमणिका। ५. ऐसा लेखा या विवरण जिसमें बहुत से नाम किसी क्रम में आये हों। तालिका। फेहरिस्त। (लिस्ट)६. सूचीपत्र। ७. चहारदीवारी आदि में हर दो खंभों के ऊपर आड़ा रखा जानेवाला पत्थर। ९. छन्दःशास्त्र में प्रत्यय के अन्तर्गत वह प्रक्रिया जिससे यह जाना जाता है कि कुछ नियत वर्णों या मात्राओं से कितने प्रकार के छंद या वृत्त बनते या बन सकते हैं और उनके आदि तथा अंत में कितनी लघु और कितनी गुरु मात्राएँ होती हैं। ९. एक प्रकार का नृत्य। १० दृष्टि। नजर। ११. केतकी। केवड़ा। १२. सफेद कुश। १३ कटघरा। जंगला। १४ दरवाजे में लगाने की सिटकिनी। १५ मैथुन या समोग का एक प्रकार।

पु०[स० सूचिन्] १ गुप्तचर। भेदिया। २ चुगलखोर। पिशुन। ३ दुष्ट और नीच। ४ दे० 'स्वयंभूचित' (साक्षी)।

**सूचीक**—पु०[स० सूची+कन्] मच्छर आदि ऐसे जंतु जिनके डंक सूई के समान होते हैं।

**सूचीकटाह-न्याय**—पु०[स० मध्य० स०] लोक व्यवहार में प्रचलित एक प्रकार का न्याय जिसका प्रयोग ऐसे अवसर पर होता है जहाँ कोई कठिन और बड़ा काम करने से पहले सहज और छोटा काम पूरा कर लिया जाता है अथवा करना अभीष्ट होता है।

**सूचीकर्म**—पु०[स० ष० त०] सूई का काम। सिलाई। सूईकारी।

**सूचीपत्र**—पु०[स० ष० त०]१ वह पत्र जिसपर कोई सूची लिखी या छपी हुई हो। २ विशेषतः वह सूचना-पत्र या पुस्तिका जिसमें किसी संस्था में उपलब्ध सामग्री का विवरण होता है। जैसे—(क) प्रकाशन संस्था का सूची-पत्र। (ख) चित्रशाला का सूची-पत्र। (फैटलाग)

**सूची पद्म**—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना।

**सूचीपाश**—पु०[स०] सूई में होनेवाला भेद।

**सूचीभेद्य**—वि०=सूचिभेद्य।

**सूचीमुख**—पु०[स० ष० त०]१ सूई की नोक या छेद जिसमें धागा पिरोया जाता है। २ हीरा। ३ कुश। ४. पुराणानुसार एक नरक।

वि० सूई के मुख के समान नुकीला।

**सूचीमुख**—पु०[सं० ब० स०] स्कंद का एक अनुचर।

**सूचीयन्त्र**—स्त्री०[स० सूची यन्त्र—टाप्]ऐसी यांत्रि जिसका द्वार इतना छोटा हो कि वह पुरुष के ससर्ग के योग्य न हो।

**सूच्छम***—वि०=सूक्ष्म।

**सूच्य**—वि०[स०] जो सूचित किया जा सकता हो या सूचित किये जाने के योग्य हो। जो जताया जा सकता हो या जनाया जाने को हो।

पु० नाटकों या रूपकों में वे अनुचित, गर्हित, ग्रम्यहीन और वर्जित बातें जो रंगमंच पर अभिनय के लिए अनुपयुक्त होने के कारण केवल अर्थापेक्षकों के द्वारा सूचित कर दी जाती हैं। सस्यूच।

**सूच्यग्र**—पु०[स० ष० त०] सूई का अगला भाग। सूई की नोक।

वि०१. जिसकी नोक सूई के समान नुकीली हो। २. सूई की नोक के बराबर, अर्थात् बहुत ही थोड़ा।

**सूच्याकार**—वि०[स० सूची। आकार] सूई के आकार का। लंबा और नुकीला।

**सूच्यार्थ**—पु०[स० ष० त०] साहित्य में, पद आदि का वह अर्थ जो शब्दों की व्यंजना शक्ति से निकलता या सूचित होता है।

**सूछम***—वि०=सूक्ष्म।

**सूछिम***—वि०=सूक्ष्म।

**सूजंघ***—स्त्री०=सुगंध। (डिं०)

**सूज***—स्त्री०१. =सृजन। २.=सुई।

**सूजन**—स्त्री० [हिं० सूजना] १. सूजे हुए होने की अवस्था या भाव। २. वह विकार जो उक्त के फलस्वरूप शरीर या शरीर के किसी अंग में दृष्टिगत होता है। शोथ। (इनफ्लेमेशन)

**सूजना**—अ० [फा० सोजिश, मि० सं० शोथ] रोग, चोट, वात आदि के प्रकोप के कारण शरीर के किसी अंग का अधिक फूल या फैल जाना। शोथ होना।

**मुहा०—(किसी का) मुँह सूजना**=आकृति से अप्रसन्नता, रोष आदि के लक्षण स्पष्टतः व्यक्त होना। जैसे—रुपये माँगते ही उनका मुँह सूज गया।

**सूजनी**†—स्त्री०=सुजनी (बिछाने की चादर)।

**सूजा**—पु० [स० सूची, हिं० सूई, मूजी] १. बड़ी और मोटी सूई। सूआ। २. उक्त अ.कार का कूचबंदों का एक औजार, जिससे कैंचियाँ बनाने के लिए दस्ते में छेद किया जाता है। ३. वह खूँटा जो छकड़ा गाड़ी के पीछे की ओर उसे टिकाने के लिए लगाया जाता है।

*वि० [अ० शजाअ=बहादुर] बहादुर। वीर।

**सुजाक**—पु० [फा०] मूत्रेंद्रिय का एक रोग जिसमें उसके अंदर घाव हो जाता है और बहुत तेज जलन होती है। उपदंश। (गनोरिया)

**सूजी**—स्त्री० [?] १. चूर्ण से भिन्न कणों के रूप में होनेवाला गेहूँ का पिसा हुआ रूप। २. एक प्रकार का खरेंस जो मांड और चूने के मेल से बनता है और बाजों के पुरजों को जोड़ने के काम में आता है।

स्त्री० [स० सूची] १. सूई। २. वह सूआ जिससे गद्देदार लोग कम्बल की पट्टियाँ सीते हैं।

पु०=सूचिक (दरजी)।

**सूझ**—स्त्री० [हिं० सूझना] १. सूझने की क्रिया, धर्म या भाव। २ दृष्टि। नजर। ३. मन में सूझने अर्थात् उत्पन्न होनेवाली कोई ऐसी नई बात, जो अनोखी या असाधारण भी हो। उद्भावना। उपज। जैसे—कवियों की सूझ अनोखी होती है।

**पद—सूझ-बूझ** (देखें)

**सूझना**—अ० [स० सज्ञान] १. दृष्टि में आना। दिखाई पड़ना। २. ध्यान में आना। ३. युक्ति के रूप में उद्भासित होना। जैसे—पते की सूझना। अ० [हि० सुलझना] छुट्टी पाना। मुक्त होना।

**सूझ-बूझ**—स्त्री० [हिं० सूझना+बूझना] १ देखने और देखकर अच्छी तरह समझने की विशिष्ट योग्यता या शक्ति। २. समझदारी।

**पद—सूझ बूझ से**=समझदारी से। किसी बात के सब पक्ष सोच-समझकर।

**सूआ**—पु० [देश०] फारसी संगीत में एक मुकाम (राग) के पुत्र का नाम।

**सूट**—पु० [अ०] १. कई ऐसे कपड़ों का जोड़ा, जो एक साथ पहने जाते हों। जैसे—कोट, पतलून, आदि का सूट; सलवार, कमीज आदि का सूट। २. दावा। नालिश। ३. मुकदमा।

**सूट-केस**—पु० [अं०] १. सूट (अर्थात् कपड़ों के जोड़) रखने का केस या खाना। २. एक प्रकार का चिपटा छोटा बक्स जिसमें यात्रा आदि के समय पहनने के कपड़े रखे जाते हैं।

**सूटा**—पुं० [अनु०] मुँह से तंबाकू, चरस या गाँजे का धूआँ जोर से खींचने की क्रिया।

क्रि० प्र०—मारना।—लगाना।



**सूठरी**†—स्त्री०=सुठरी (भूसा)।

**सूड़ा**—पु० [सं० शुक] शुक पक्षी। तोता। (डिं०)

**सूतघर**—पु० [सं० शयन+गृह] शयनागार। (राज०)

**सूत**—पु० [स०सूत्र] १. रूई, रेशम आदि का वह पतला बटा हुआ तागा, जिससे कपड़ा बुनते हैं। तंतु। धागा। डोरा। सूत्र। (ब्रेड) २. किसी चीज में से निकलनेवाला इस प्रकार का तार। ३. लंबाई नापने का एक छोटा मान। ४. इमारत के काम में जमीन, लकड़ी आदि पर विभाजन की रेखाएँ या निशान डालने की डोरी।

**मुहा०—सूत भरना, फटकना या बाँधना**=मकान आदि बनाने के समय नींव डालने से पहले उसकी लंबाई ठीक करने या कमरों, दालानों, आँगन आदि का विभाजन करनेवाली रेखाएँ निश्चित करना। (पहले उक्त सूत या डोरी पर चूने का चूरा लगाते हैं, और तब डोरी को सीध में रखकर फटकते या झटकाते हैं, जिस से जमीन पर चूने की रेखा बन जाती है।) ५. गले, बाँह आदि में पहनने का वह डोरा, जिसमें कोई जंतर या ताबीज बँधा रहता है। ६. वह मोटा डोरा, जो कमर में करधनी की तरह पहना जाता है। ७ करधनी।

पुं०=सूत्र।

†पु० [स० सुत] पुत्र। बेटा।

पुं० [स०] १. एक प्राचीन वर्णसंकर जाति, जिसकी उत्पत्ति क्षत्रिय पिता और ब्राह्मणी माता से कही गई है और जिसका कार्य रथ हाँकना था। २. रथ हाँकनेवाला व्यक्ति। सारथि। ३ चारण। भाट। बंदीजन। ४. पुराणों की कथाएँ सुनानेवाला व्यक्ति। पौराणिक। ५. बढ़ई। सूत्रकार। ६ सूर्य। ७ पारा।

†वि० [?] अच्छा। भला।

वि० १.=प्रसूत। २.=प्रेरित।

**सूतक**—पु० [स० सुतक=जन्म] १ जन्म। २ घर में संतान होने या किसी के मरने पर परिवारवालों को लगनेवाला अशौच। ३. अस्पृश्यता। छूत। उदा०—जलि है सूतकु धलि है सूतकु, सूतक सूतक ओपति होई।—कबीर। ४. चन्द्रमा या सूर्य का ग्रहण। उपराग। ५. पारद। पारा।

**सूतक-गेह**†—पु०=सूतिकागार।

**सूतका**—स्त्री० [स०] जच्चा।

**सूतका-गृह**—पुं० [स०] जच्चा-घर। सूतिकागार।

**सूतकाश**—पु० [सं०] १. वह खाद्य पदार्थ जो सतान-जन्म के कारण अशुद्ध हो जाता है। २. ऐसे घर या व्यक्ति का अन्न, जिसे सूतक लगा हो और इसी लिए जो अन्न अग्राह्य कहा गया है।

**सूतकाशौच**—पुं० [सं०] वह अशौच जो घर में सतान उत्पन्न होने के कारण होता है। जननाशौच।

**सूतकी (किन्)**—वि० [स०] जिसे सूतक (अशौच) लगा हो।

**सूतज**—वि० [सं०] =सूत से उत्पन्न।

पु०=सूत-तनय (कर्ण)।

**सूत-तनय**—पुं० [सं० ष० त०] कर्ण का एक नाम, जो उनके सूत-पुत्र होने के कारण पड़ा था।

**सूतता**—स्त्री० [सं० सूत+तल्-टाप्] सूत का कार्य, पद या भाव।

**सूत-धार**—पुं० [स० भूत्रधार] बढ़ई।

**सूतनंदन**—पु० [स० सूत√नद् (सुखदेनेवाला)+ल्यु—अन] १. उद्धवजी। २. सूत-तनय (कर्ण)।

**सूतना**†—अ०=सोना।

**सूत-पुत्र**—पु० [सं० ष० त०] १. सारथि का पुत्र। २. सारथि। ३. कर्ण। ४. कीचक।

**सूत फूल**—पु० [हिं० सूत+फूल] महीन आटा। मैदा। (बंबई)

**सूतरी**†—स्त्री०=सुतली।

**सूत-लड़**†—पु० [हिं० सूत+लड़] अरहर। रहेंड़।

**सूता**—पु० [स० सूत्र] १. भूरे रंग का एक प्रकार का रेशम जो मालदह (बंगाल) से आता है। २ जूते में वह बारीक चमड़ा, जिसमें टूक का पिछला हिस्सा आकर मिलता है। (चमार) ३. सूत। धागा।
पु० [सं० धूर्क्त] वह सीधी जिसके डोरे में की अफीम काछते हैं।
स्त्री० [स०]=प्रसूता।

**सूति**—स्त्री० [सं०√सू(प्रसव करना)+क्तिन्] १. जन्म। २. जनन। प्रसव। ३ उत्पत्ति का स्थान। उद्गम। ४. फसल की पैदावार। ५ यज्ञों में सोम का रस निकालने की क्रिया। ६. वह स्थान जहाँ यज्ञों के लिए सोम का रस निकाला जाता था। ७. कपड़ा सीने की क्रिया या भाव।
पु० हंस।

**सूतिका**—स्त्री० [स०] १ वह स्त्री या मादा जीव जिसने अभी हाल में बच्चा जना हो। सद्यःप्रसूता। २. वैद्यक में प्रसूता स्त्री को होनेवाले कुछ विशिष्ट प्रकार के रोग जो अनुचित आहार, विहार आदि के कारण होते हैं।

**सूतिकागार**—पु० [स० ष० त०] १ वह कमरा या घर जिसमें स्त्री बच्चा जनती है। सौरी। प्रसव-गृह। २. चिकित्सालय का वह पार्श्व या विभाग जिसमें प्रसव कराने के लिए प्रसूता स्त्रियाँ रखी जाती हैं। (मैटरनिटी वार्ड)

**सूतिका-गृह**—पु०=सूतिकागार।

**सूति-काल**—पु० [स० ष० त०] प्रसव करने या बच्चा जनने का समय।

**सूतिकावास**—पु०=सूतिकागार।

**सूतिकाषष्ठी**—स्त्री० [स०] संतान के जन्म से छठे दिन होनेवाला एक संस्कार तथा जच्चा का नहाना।

**सूति-गृह**—पु०=सूतिकागार।

**सूति-मास**—पु० [सं०] वह मास जिसमें किसी स्त्री को संतान उत्पन्न हो। प्रसव-मास। बैजनन।

**सूति-वात**—पुं० [स०] प्रसव के समय प्रसूता को होनेवाली पीड़ा।

**सूती**—वि० [हिं० सूत+ई (प्रत्य०)] सूत का बना हुआ। जैसे—सूती कपड़ा। सूती गलीचा।
†स्त्री० [सं० शुक्ति] सीपी।
स्त्री० स० सूत का स्त्री०। (सूत जाति की स्त्री)

**सूती-गृह**—पुं० [सं०] सूतिकागार।

**सूतीघर**—पुं०=सूतिकागार।

**सूतीमास**—पु०=सूतिमास।

**सूत्कार**—पु०=सीत्कार।

**सूत्तर**—वि० [सं०] बहुत श्रेष्ठ। बहुत बढ़कर।
†पु०=सूत। (पश्चिम)

**सूत्य**—पु०=सुत्या।

**सूत्या**—स्त्री० [स०] १ यज्ञ के उपरांत होनेवाला स्नान। अवभृथ। २. यज्ञों में सोम का रस निकालना और पीना।

**सूत्याशौच**—पु० [सं०]=सूतकाशौच।

**सूत्र**—पु० [स०] [भू० कृ० सूत्रित] १ कपास का बटा हुआ बहुत पतला और महीन डोरा या तागा। सूत। २ किसी प्रकार के रेशों का बटा या बढ़ा हुआ लंबा रूप। (ग्रेड) ३ गले में पहनने का जनेऊ। यज्ञोपवीत। ४ कमर में करधनी की तरह पहना या बाँधा जानेवाला डोरा। कटि-सूत्र। ५ शरीर के अंदर की डोरी की तरह की नली या मोटी नस। (कोंड) जैसे—स्वर-सूत्र। ६. यथासाध्य बहुत थोड़े शब्दों में कहा हुआ कोई ऐसा कथन, पद या वाक्य जिसमें बहुत-कुछ गूढ़ अर्थ भरा हो। जैसे—कल्प-सूत्र। ७ बौद्ध साहित्य में, कोई ऐसा मूल ग्रंथ जिसकी टीका या व्याख्या हुई हो। ८ कोई ऐसी संकेतात्मक बात, जिसके सहारे किसी दूसरी बहुत बड़ी बात, घटना, पहेली, रहस्य, आदि का पता लगे। संकेत। पता। सूरगा। (कन्) ९ वह सांकेतिक पद या शब्द, जिसमें कोई वस्तु बनाने या कार्य करने के मूल सिद्धांत, प्रक्रिया आदि का संक्षिप्त विधान निहित हो। (फार्मूला) १० किसी कार्य या योजना के संबंध में उन अनेक बातों में से कोई जो उस कार्य या योजना की सिद्धि के लिए सोची जाय। (प्वाइन्ट) जैसे—इस योजना के चार सूत्रों में से दो बहुत ही उपयोगी और आवश्यक हैं। ११ रेखा। लकीर। १२ किसी प्रकार की व्यवस्था करने के नियम। १३. वह मूल कारण या बात जिससे कुछ और चीजें या बातें निकली हों।

**सूत्र-कंठ**—पु० [सं० ष० त०] १. वह जो गले में यज्ञ-सूत्र या यज्ञोपवीत पहनता हो या पहने हो। २. ब्राह्मण। ३ कबूतर। ४ खंजन पक्षी।

**सूत्रक**—पु० [स०] १ सूत्र। तंतु। तार। २ माला या हार। ३ खेवड़ नामक पकवान। ४. लोहे के तारों का बना हुआ कवच।

**सूत्रकर्ता**—पु० [स० सूत्रकर्तृ] सूत्र-ग्रंथ का रचयिता। सूत्र-प्रणेता।

**सूत्र-कर्म (र्मन्)**—पु० [स०] १ बढ़ई का काम। २ मेमार या राज का काम।

**सूत्रकार**—पु० [स०] १. वह जिसने सूत्रों में किसी ग्रंथ की रचना की हो। सूत्र-रचयिता। २ बढ़ई। ३. जुलाहा। ४ मेमार। राज। ५. मकड़ी।

**सूत्र कृमि**—स्त्री० [स०] आँतों में उत्पन्न होनेवाले एक प्रकार के धागे की तरह पतले कीड़े जो शरीर में अनेक विकार उत्पन्न करते हैं। (थ्रडवर्म)

**सूत्र कोष**—पु० [स०] डमरू।

**सूत्र-कोश**—पु० [स०] सूत्र की अटी। लच्छी।

**सूत्र क्रीड़ा**—स्त्री० [स०] धागों की सहायता से कठपुतलियाँ नचाने का काम, जो ६४ कलाओं के अंतर्गत माना गया है।

**सूत्र ग्रंथ**—पु० [स०] १. ऐसा ग्रंथ जिसमें सूत्रों का संग्रह हो। २. सूत्र-रूप में प्रस्तुत किया हुआ ग्रंथ।

**सूत्र-ग्रह**—वि० [स०] सूत धारण या ग्रहण करनेवाला।

**सूत्रण**—पु० [स०] [भू० कृ० सूत्रित] सूत्र बनाने या बटने की क्रिया या भाव।

सूत्र-तकुंटी—स्त्री० [सं०] सूत कातने का तकला। टेकुवा।

सूत्र-धार—पु० [सं० सूत्र√धृ (धारण करना)+अण्] १. प्राचीन भारत में मूलतः वह व्यक्ति जो अपने हाथ में पकड़े या बँधे हुए सूत्रों अर्थात् डोरों की सहायता से कठपुतलियाँ नचाता और उनके तमाशे दिखाता था। २. परवर्ती काल में नाट्यशाला का वह प्रधान व्यवस्थापक, जो नटों को अभिनय-कला सिखाकर उनसे अभिनय कराता और रंग-मंच की व्यवस्था करता था। ३ लाक्षणिक रूप में वह व्यक्ति, जिसके हाथ में किसी कार्य की सारी व्यवस्था हो। ४. पुराणानुसार एक प्राचीन वर्णसंकर जाति, जिसकी उत्पत्ति शूद्रा माता और विश्वकर्मा पिता से कही गई है और जो प्रायः बढ़ई का काम करती थी। ५. बढ़ई। सुतार। ६ इन्द्र का एक नाम।

सूत्रधारी (रिन्)—वि० [सं०] सूत्र धारण करनेवाला।
स्त्री० सूत्रधार की स्त्री। नटी।

सूत्र पात—पु० [सं०] १. नींव आदि रखने के समय होनेवाली नाप-जोख। २ किसी नये तथा बड़े काम का होनेवाला आरम्भ। जैसे—इस योजना का सूत्र-पात सन् ६२ में हुआ था।

सूत्र पिटक—पु० [सं०] बौद्ध सूत्रों का एक प्रसिद्ध संग्रह।
दे० 'त्रिपिटक'।

सूत्र-पुष्प—पु० [सं०] कपास का पौधा जिसके फूलों डोडों से सूत बनता है।

सूत्रभृत—पु० =सूत्रधार।

सूत्र यंत्र—पु० [सं०] १. करघा। २ करघे की ढरकी। ३. सूत का बुना हुआ जाल।

सूत्रयी—वि० [सं० सूत्र] सूत्र जानने या रचनेवाला।

सूत्रला—स्त्री० [सं०] तकला। टेकुवा।

सूत्रवाप—पु० [सं०] सूत से कपड़ा बुनने की क्रिया। बपन। बुनाई।

सूत्र-वीणा—स्त्री० [सं०] प्राचीन काल की एक प्रकार की वीणा, जिसमें बजाने के लिए तार की जगह सूत्र लगे रहते थे।

सूत्र-वेष्टन—पु० [सं०] १. करघा। २. सूतों की बुनाई।

सूत्र-शाख—पु० [सं०] शरीर।

सूत्र-शाला—स्त्री० [सं०] वह स्थान या कारखाना जहाँ सूत काता, तैयार किया या बनाया जाता है।

सूत्रांग—पु० [सं०] उत्तम काँसा।

सूत्रांत—पु० [सं०] बौद्ध सूत्रों की संज्ञा।

सूत्रांतक—वि० [सं०] बौद्ध सूत्रों का ज्ञाता या पंडित।

सूत्रा—स्त्री० [सं० सूत्रकार] मकड़ी। (अनेकार्थ)

सूत्रात्मा (त्मन्)—पु० [सं०] १. एक प्रकार की परम सूक्ष्म वायु जो धनंजय से भी अधिक सूक्ष्म कही गई है। २. जीवात्मा।

सूत्राध्यक्ष—पु० [सं०] कपड़ों के व्यापार या व्यवसाय का अध्यक्ष। (कौ०)

सूत्रामा (मन्)—पु० [सं०] इन्द्र।

सूत्रावली—स्त्री० [सं०] १. सूत को लपेटकर बनाई जानेवाली माला। हार। २. गले में पहनने की मेखला।

सूत्रिका—स्त्री० [सं०] १. सेवई। २. हार। माला।

सूत्रित—भू० कृ० [सं०] १. सूत से बाँधा या मढ़ी किया हुआ। २. सूत्रों के रूप में कहा या लाया हुआ। ३. क्रम या सिलसिले से लगाया हुआ।

सूत्री (त्रिन्)—वि० [सं०] समस्त पदों के अंत में—(क) जिसमें सूत्र हों। सूत्रों से युक्त। जैसे—त्रिसूत्री योजना। (ख) नियमों से युक्त। जैसे—दीर्घसूत्री।
पु० १. काक। कौआ। २. दे० 'सूत्रधार'।

सूत्रीय—वि० [सं०] १. सूत्र-संबंधी। सूत्र का। २ सूत्रों से युक्त। सूत्री।

सूथन—स्त्री० [देश०] १. पाजामा। सुथना।
पु० एक प्रकार का बड़ा वृक्ष जिसकी लकड़ी बहुत अच्छी होती है। सेंजे।

सूथनी—स्त्री० [सुथना का स्त्री० अल्पा०] १. स्त्रियों के पहनने का पाजामा। सुथना।
†स्त्री०=सुथनी (कन्द)।

सूधार†—पु०=सुतार (बढ़ई)।

सूद—पु० [सं०√सूद् (नष्ट करना)+अच्] १. रसोइया। सूपकार। पाचक। २. पकी हुई दाल, रसेदार तरकारी आदि। ३. सारथि का काम या पद। सारथ्य। ४. अपराध। दोष। ५. एक प्राचीन जनपद। ६ उक्त जनपद का सूचक पद जो व्यक्तिवाचक नामों के साथ उत्तर पद के रूप में लगता था। जैसे—दामोदर सूद। ७ आज-कल क्षत्रियों और कुछ दूसरी जातियों के वर्गों का नाम। ८. लोध।
पु० [फा०] १. लाभ। फायदा। २. ऋण के रूप में दिये हुए धन के उपभोग के बदले में दिया या लिया जानेवाला वह धन जो मूल धन के अतिरिक्त होता है। ब्याज। (इन्टरेस्ट)
क्रि० प्र०—चढ़ना।—बढ़ना।—लगना।
पद—सूद पर सूद। (देखें)
°पु०=सूद। उदा०—सुन कत वाम्हन, हम कत सूद।—कबीर।

सूदक—वि० [सं०] सूदन। (दे०)

सूद-कर्म (न्)—पु० [सं०] भोजन बनाना। खाना पकाना।

सूदखोर—पु० [फा०] [भाव० सूदखोरी] १. वह जो अत्यधिक ब्याज की दर पर ऋण देता हो। २. वह जिसकी जीविका मिलनेवाले ब्याज से चलती हो।

सूदता—स्त्री० [सं०] सूद अर्थात् रसोइए का काम, पद या भाव। रसोईदारी।

सूदत्व—पु० [सं०]=सूदता।

सूद-दर-सूद—पु० [फा०] १. उधार दिये हुए धन के सूद या ब्याज पर भी जोड़ा जानेवाला सूद या ब्याज। चक्रवृद्धि। शिला-वृद्धि। (कम्पाउंड इन्टरेस्ट) २. उक्त के अनुसार ब्याज जोड़ने की प्रक्रिया या रीति।

सूदन—वि० [सं०] १. नष्ट करने या मार डालनेवाला। जैसे—मधुसूदन, रिपुसूदन। २. क्षिप्र। प्यारा।
पुं० १. नाश या हनन। २. ककनन।

सूदना*—स० [सं० सूदन] १. नष्ट करना। २. मार डालना।

सूदर†—पुं०=शूद्र। (वि०)

सूद-शाला—स्त्री० [सं० सूदशाला] रसोई-घर। पाकशाला। (वि०)

सूद-शास्त्र—पुं० [सं०] भोजन बनाने की कला। पाक-शास्त्र।

**सूबा**—पुं० [देश०] मध्य युग में ठगों, के गिरोह का वह आदमी, जो यात्रियों को फुसलाकर अपने दल में ले आता था।

**सूबाध्यक्ष**—पु० [सं०] रसोइयों का मुखिया या सरदार। पाकशाला का अधिकारी।

**सूबित**—भू० कृ० [स०] १. जो मार डाला गया हो। हत। २. नष्ट किया हुआ। विनष्ट। ३. आहत। घायल।

**सूदी**—वि० [फा० सूद] १ सूद से संबंध रखनेवाला अथवा सूद के रूप में होनेवाला। २. (पूँजी या रकम) जो सूद या ब्याज पर लगी हो। ब्याजू। ३. (कर्ज) जो सूद पर लिया गया हो।

**सूद्र**†—पु०=शूद्र।

**सूध**†—पु० [स० सौध] महल। प्रासाद। उदा०—मणि दीपक करि सूध मणि।—प्रिथीराज।
वि० १.=सूधा। २. सीधा।
†वि०=शुद्ध।

**सूधन**†—पुं० [सं० शोधन] शुद्ध करना। (डिं०)

**सूधना***—अ० [स० शुद्ध] १. ठीक या सत्य सिद्ध होना। २. शुद्ध होना।
† स०=शोधना।

**सूधरा**†*—वि०=सूधा (सीधा)।

**सूधे**†—अव्य० [हिं० सूधा] सीधी तरह से या नीच रूप में।

**सून**—वि० [स०] १. प्रसव किया हुआ। २. उत्पन्न। जात। ३. खिला हुआ। विकसित। (फूल)
पुं० १. जनन। प्रसव। २. पुत्र। बेटा। ३. प्रसून। फूल। ४. फल।
†वि० [सं० शून्य] १. रहित। हीन। २. निर्जन। सूना।

**सून-नायक**—पु० [सं०] कामदेव।

**सून-सर**—पुं० [सं०] कामदेव।

**सूनरी**†—स्त्री० [सं० सु+नर] सुंदरी स्त्री।
† स्त्री०=सुंदरी।

**सूनसान**†—वि०=सुनसान।

**सूना**—वि० [स० शून्य] [स्त्री० सूनी] १ (स्थान) जहाँ लोगों की चहल-पहल या आना-जाना बिलकुल न हो। जनहीन। निर्जन। जैसे—सूना घर। २. (पदार्थ या रचना) जो किसी आवश्यक, उपयुक्त या शोभन तत्त्व अथवा वस्तु के अभाव के कारण अप्रिय जान पड़े या खटके। जैसे—सीता बिना रसोइयाँ सूनी।—गीत।
**मुहा०—सूना लगना या सूना-सूना लगना**=किसी वस्तु या व्यक्ति के अभाव के कारण निर्जीव मालूम होना। उदास मालूम होना।
स्त्री० [सं० सून-टाप्] १. पुत्री। बेटी। २. वध। हत्या। ३. धर्मशास्त्र के अनुसार घर-गृहस्थी की ऐसी जगह जहाँ अनजान में प्राय. छोटे-छोटे जीवों की हत्या होती रहती है। जैसे—अनाज कूटने-पीसने की जगह, रसोई आदि। दे० 'पंच-सूना'। ४. वह स्थान जहाँ मांस के लिए पशुओं की हत्या की जाती हो। कसाई-खाना। ५. खाने के लिए मांस बेचने का काम। ६. हाथी के अंकुश का दस्ता।
पु० एकांत या निर्जन स्थान।

**सूना-दोष**—पु० [स०] वह दोष जो अनजान में गृहस्थी के कामों में होनेवाली जीव-हत्या के कारण लगता है। दे० 'पंच-सूना'।

**सूनापन**—पु० [हिं० सूना+पन (प्रत्य०)] सूना होने की अवस्था या भाव।

**सूनिक**—पु० [स०] जीव-हत्या करनेवाला।
पु० १. कसाई। २. शिकारी।

**सूनी**—पु० [स० सूनिन्] मांस बेचनेवाला। बूचड़।

**सूनु**—पु० [स०] १ पुत्र। बेटा। २. औलाद। संतान। ३ छोटा। भाई। अनुज। ४. दौहित्र। नाती। ५. सूर्य। ६ आक-मदार। ७. वह जो यज्ञों में सोम का रस निकालता था।

**सूनू**—स्त्री० [स०] पुत्री। बेटी।

**सूनृत**—पु० [स०] १. सत्य और प्रिय भाषण (जो जैन धर्मानुसार सदाचार के पाँच गुणों में से एक है)। २. आनन्द। प्रमन्नता।
वि० १. प्रिय और सत्य। २. अनुकूल। ३ दयालु।

**सूनृता**—स्त्री० [स०] १ सत्य और प्रिय भाषण। २ सत्यता। सचाई। ३ धर्म की पत्नी का नाम।

**सून्मद**—वि०=सून्माद।

**सून्माद**—वि० [स०] जिसे उन्माद रोग हुआ हो। पागल।

**सूप**—पु० [स०] १ खाने के लिए पकाई हुई दाल। २ उक्त प्रकार की दाल का पतला पानी या रस्सा। ३. रसेदार तरकारी। ४ पात्र। बरतन। ५. सूपकार। पाचक। रसोइया। ६ तीर। बाण।
पु० [स० शूर्प] अनाज फटकने का बना हुआ पात्र। सरई या सींक का छाज।
**पद—सूप भर**=ढेर सा। बहुत।
पु० [देश०] कपड़े या सन का झाड़ू; जिससे जहाज के डेक आदि साफ किये जाते हैं। (लश०)
पु० [अ० सूफ=ऊन] १. एक प्रकार का काला कपड़ा। २. दे० 'सूफ'।

**सूपक**—पु० [स० सूप] रसोइया। सूपकार।

**सूपकार**—पु० [स०] रसोइया। पाचक।

**सूपकारी**—पु०=सूपकार।

**सूपच***—पु०=श्वपच (चांडाल)।

**सूप झरना**—पु० [हिं० सूप+झरना] अनाज फटकने का एक प्रकार का सूप जिसका तल झरने की तरह छेददार होता है। इससे बारीक अनाज नीचे गिर जाता है, और मोटा ऊपर रह जाता है।

**सूपड़ा**†—पु० [हिं० सूप] सूप। छाज। (डिं०)

**सूप तीर्थ**—पु०[स० ष० स०] ऐसा जलाशय जिसमे नहाने के लिए अच्छी सीढ़ियाँ बनी हों।

**सूप-नखा**—स्त्री०=शूर्पणखा।

**सूप पर्णी**—स्त्री० [स०] वनमूँग। मुँगवन। मुद्गपर्णी।

**सूप-शास्त्र**—पु० [स०] भोजन बनाने की कला। पाक-शास्त्र।

**सूप-स्थान**—पु० [स०] पाकशाला। रसोईघर।

**सूपा**—पु० [हिं० सूप] सूप। छाज।

**सूपिक**—पु० [स०] १ पकी हुई दाल या तरकारी का रसा। २. रसोइया। सूपकार।

**सूप्य**—वि० [स०] १. सूप-संबंधी। सूपका। २. जिस का सूप, अर्थात् रसा या शोरबा बनाया जा सकता हो।
पु० रसेदार तरकारी आदि।

**सूफ**—पुं० [अ० सूफ] १ ऊन। २. वह लत्ता जो देसी काली स्याही वाली दवात में डाला जाता है।
†पु० =सूप (अनाज फटकने का)।

**सूफिया**—पु० [अ० सूफिय.] मुसलमान साधुओं का एक संप्रदाय।

**सूफियाना**—वि० [अ० सूफ़ियाना] सूफियों की तरह का सादा, परन्तु सुन्दर।

**सूफी**—वि० [अ० सूफी] १. ऊनी वस्त्र पहननेवाला। २. पवित्र और स्वच्छ। ३. निरपराध। निर्दोष।
पु० १ मुसल्मानों का एक रहस्यवादी संप्रदाय, जो यह मानता है कि मनुष्य पवित्र और स्वच्छ रहकर तपस्या और साधना के द्वारा ही परमात्मा को प्राप्त कर सकता है। इसमें यह भी माना जाता है कि जीवात्मा में परमात्मा के साथ मिलने की स्वाभाविक प्रवृत्ति होती है। इसके चार मुख्य भेद हैं; यथा—मिश्ती, कादिरी, सुहरा वरदी और नक्शबंदी। २. उक्त संप्रदाय का अनुयायी।

**सूब**—पु० [देश०] ताँबा। (सुनार)

**सूबड़ा**†—पु० [स० सुवर्ण] वह चाँदी जिसमें ताबे और जस्ते का मेल हो। (सुनार)

**सूबा**—पु० [फा० सूब.] १. किसी देश का कोई विशिष्ट खंड या भाग। प्रांत। प्रदेश। २ दे० 'सूबेदार'।

**सूबेदार**—पु० [फा० सूबा+दार (प्रत्य०)] [भाव० सूबेदारी] १. किसी सूबे या प्रांत का प्रधान अधिकारी या शासक। प्रादेशिक शासक। २ सेना विभाग में वह सैनिक जिसके अधीन कुछ और सैनिक भी रहते हों।

**सूबेदारी**—स्त्री० [फा०] १ सूबेदार होने की अवस्था या भाव। २. सूबेदार का पद।

**सूबर***—वि० [स० शुभ्र] १. सफेद। २ सुन्दर।

**सूभ**—पु० [स०] १. द्यूत। २. जल। पानी। ३ आकाश। ४. स्वर्ग।
†पु० [स० कुसुम] फूल। (डिं०)
पु० [अ० शूभ =अशुभ] कजूस। कृपण।

**सूमड़ा**—वि० पु० [स्त्री० सूमडी] सूम। कंजूस।

**सूमरी**†—स्त्री० [देश०] टूटी हुई चारपाई की रस्सी।

**सूमी**—पुं० [देश०] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़ जिसकी लकड़ी इमारतों में लगती और मेज, कुर्सी आदि बनाने के काम में आती है। इसे रोहन और सोहन भी कहते हैं।

**सूय**—पुं० [सं०] १ सोम रस निकालने की क्रिया। २. यज्ञ। जैसे—राजसूय।

**सूरंजान**—पुं० [फा०] केसर की जाति का एक पौधा जिसका कंद दवा के काम में आता है। यह दो प्रकार का होता है। मीठा और कड़ुआ।

**सूर**—पुं० [सं०] [स्त्री० सूरी] १. सूर्य। २. आक। मदार। ३ बहुत बड़ा पंडित। आचार्य। ४. वर्तमान अवसर्पिणी के सत्रहवें अर्हत् कुंथु के पिता का नाम। (जैन) ५. छप्पय छंद के ७१ भेदों में से ५४ वाँ भेद जिसमें १६ गुरु, १२० लघु, कुल १३६ वर्ण और १५२ मात्राएँ होती हैं। ६. मसूर। ७ दे० 'सूरदास'।
वि० अन्धे या नेत्र-हीन व्यक्ति के लिए आदरसूचक विशेषण।
पु० [सं० शूकर, प्रा० सूअर] १. सूअर। २. भूरे रंग का घोड़ा।
पु० [देश०] पठानों का एक भेद। जैसे—शेरशाह सूर।
†पुं० १ =शूर (वीर)। २ =शूल।

**सूर-कंद**—पुं० [सं०] जमीकंद। सूरन। ओल।

**सूर-कांत**—पु०=सूर्यकांत।

**सूर-कुमार**—पुं० [स० सूर=सूरसेन+कुमार=पुत्र] वसुदेव।

**सूरज**—वि० [सं० सूर+ज] सूर (अर्थात् सूर्य) से उत्पन्न।
पु० १. शनि। २. सुग्रीव।
पु० [स० शूर+ज] शूर अर्थात् बहादुर या वीर की संतान।
पु० [स० सूर्य] १. सूर्य। रवि।
**मुहा०—सूरज को दीपक दिखाना**= (क) जो स्वयं अत्यन्त कीर्तिशाली या गुणवान् हो, उसे गुण बतलाना। (ख) जो स्वयं प्रसिद्ध या विख्यात हो, उसका सामान्य परिचय देना। **सूरज पर धूल फेंकना**=किसी साधु व्यक्ति पर कलंक लगाना या उसका उपहास करना। २. एक प्रकार का गोदना जो स्त्रियाँ दाहिने हाथ में गुदाती हैं।
†पु० दे० 'सूरदास'।

**सूरजकुंड**—पु० [स० सूर्य+हिं० कुंड] राजस्थान, मालवे आदि में प्रचलित एक प्रकार के गीत जो शिशु के जन्म के दसवें दिन सूर्य की पूजा के समय गाये जाते हैं।

**सूरज-तनी***—स्त्री०=सूर्य-तनया (यमुना)।

**सूरज-भगत**—पुं० [स० सूर्य+भक्त] असम और नेपाल की एक प्रकार की गिलहरी जो भिन्न-भिन्न ऋतुओं के अनुसार रंग बदलती है।

**सूरज-मुखी**—पु० [स० सूर्यमुखी] १. एक प्रकार का पौधा जिसमें पीले रंग का बहुत बड़ा फूल लगता है। २. उक्त पौधे का फूल जिसका मुख सबेरे से सध्या तक प्रायः सूर्य की ओर ही रहता है। ३. आतिशी शीशा। (देखें) ४. ऐसा व्यक्ति जिसके शरीर का वर्ण लाल और आँखें प्रकृत या साधारण से कुछ भिन्न रंग की और अप्रसन्न हों। (एल्बाइनो)
**विशेष**—ऐसे लोगों का शरीर और बाल प्रायः सफेद रंग के और आँखें नीले या पीले रंग की होती हैं।
स्त्री० १. उक्त प्रकार की फूल के आकार की एक प्रकार की आतिशबाजी। २. जलूसों, राज-दरबारों आदि में प्रदर्शन और शोभा के लिए रहनेवाला एक प्रकार का पखा, जिस पर सलमे-सितारे आदि से सूर्य की आकृति बनी रहती है। ३. सुबह या शाम के समय सूर्य के आस-पास दिखाई पड़नेवाली हलकी बदली।

**सूरज-सुत**—पु०=सूर्य-पुत्र। (१. सुग्रीव। २. कर्ण। ३. शनि।)

**सूरज-सुता**—स्त्री०=सूर्य-सुता (यमुना)।

**सूरजा**—स्त्री० [सं०] सूर्य की पुत्री यमुना।

**सूरण**—पु० [स०] सूरन। जमीकंद।

**सूरत**—स्त्री० [अ०] १. जीव-जंतु, पदार्थ, व्यक्ति आदि की आकृति या रूप जिससे उसकी पहचान होती है। शकल (विशेषत. व्यक्तियों के लिए प्रयुक्त)
**मुहा०—सूरत दिखाना**=सामने आना। जैसे—तुम तो कभी

सूरत भी नहीं दिखाते। **सूरत बनाना**=(क) ऐसी अच्छी आकृति या रूप बनाना जो देखने योग्य हो जाय। (ख) किसी का वेश धारण करना। भेस बनाना। (ग) अरुचि, उपेक्षा आदि सूचित करने के लिए नाक-भौं सिकोड़ना। (उपहास और व्यंग्य) जैसे—आप तो कभी-कभी ऐसी सूरत बनाते हैं कि बात करने को जी नहीं चाहता। २. चित्र, मूर्ति आदि के रूप में बनी हुई आकृति। ३ अवस्था। दशा। जैसे—ऐसी सूरत में वहाँ जाना ठीक नहीं। ४. किसी जटिल समस्या के निराकरण के लिए सोचा हुआ उपाय या युक्ति। जैसे—अब तो तुम्हीं कोई सूरत निकालो तो काम चले।

क्रि० प्र०—निकालना।

५. शोभापूर्ण सौंदर्य। (रत्न०)

पु० [सं० सौराष्ट्र, पु० हिं० सोता] गुजरात या सौराष्ट्र प्रदेश का एक प्रसिद्ध नगर।

वि० [सं० सुरत] जो अनुरक्त होने के कारण अनुकूल, दयालु या प्रसन्न हुआ हो।

†स्त्री० १.=सुरत (स्मृति) २. =सुरति।

पु० [देश०] एक प्रकार का जहरीला पौधा।

स्त्री० [अ० सूर] कुरान का कोई प्रकरण।

**सूरत-परस्त**—वि० [अ०+फा०] [भाव० सूरत-परस्ती] १ रूप का उपासक। सौन्दर्योपासक। ३. मूर्ति-पूजक।

**सूरत-हराम**—वि० [अ०+फा०] १. जो अपने सौंदर्य से दूसरों को मुसीबत में डालता हो। २. जो शक्ल-सूरत से अच्छा, परन्तु तात्त्विक दृष्टि से निस्सार हो।

**सूरतई***—स्त्री०=सूरता (वीरता)।

**सूरति***—स्त्री०=सूरत।

*स्त्री०=सुरति।

**सूरतीखपरा**—पु०[सूरती=सूरत शहर का+सं० खर्पटी] खपरिया नामक खनिज द्रव्य।

**सूरदास**—पुं० [सं०] १. कृष्ण-भक्ति शाखा के प्रसिद्ध वैष्णव कवि जो 'सूर-सागर', 'साहित्य लहरी', आदि काव्य ग्रंथों के रचयिता माने जाते हैं। ये जन्मांध थे। [जन्म १५४० वि०—मृत्यु १६२० वि०] २ लाक्षणिक अर्थ में अन्धा व्यक्ति।

**सूरन**—पु० [सं० सूरण] एक प्रसिद्ध कंद जो स्वाद में कसैला तथा गुण में अग्नि दीपक और अर्श रोगनाशक होता है। ओल। जमी-कंद।

**सूरपनखा**†—स्त्री०=सूर्पनखा।

**सूर-पुत्र**—पु० [सं०] सूर्य-पुत्र (१. सुग्रीव। २ कर्ण। ३. शनि)।

**सूर-बीर***—पु०=शूर-वीर।

**सूरमस**—पु० [सं०] १ संभवतः असम-देश की सुरमा नदी की झून और उपत्यका का पुराना नाम। २. उक्त उपत्यका का निवासी।

**सूरमल्लार**—पुं० [सूरदास (कवि)+मल्लार (राग)] सारंग और मल्लार के योग से बना हुआ एक संकर राग जो वर्षा ऋतु में दिन के दूसरे पहर में गाया जाता है।

**सूरमा**—पु० [सं० शूर] [भाव० सूरमापन] योद्धा। वीर। बहादुर।

**सूर-मुखी***—पु० स्त्री०=सूरजमुखी।

**सूर्मा**†—पुं०=सुरमा।

**सूरसावंत**—पु० [सं० शूर+सामंत] १. युद्ध-मंत्री। २ नायक। सरदार।

**सूरसुत**—पु० [सं०] १ शनि ग्रह। २. सुग्रीव।

**सूर-सुता**—स्त्री० [सं०] यमुना।

**सूर-सूत**—पु० [सं० ष० त०] सूर्य के सारथि, अरुण।

**सूरसेन***—पु०=शूरसेन।

**सूरसेनपुर**†—पु० [सं० शूरसेन+पुर] मथुरा नगरी।

**सूरा**—पु० [हिं० सुई] अनाज के गोले में पाया जानेवाला एक प्रकार का कीड़ा, जिससे अनाज को किसी प्रकार की हानि नहीं होती। अनाज के व्यापारी इसे मामलिक समझते हैं।

पु० [अ०] कुरान के प्रकरणों में से कोई एक प्रकरण।

**सूराख**—पु० [फा०] १ छेद। छिद्र। २. छोटी कोठरी या घर। (लश०)

**सूराणण**†—पु०=सूरमापन। (राज०)

**सूरिजान**—पु०=सूरजान।

**सूरि**—पु० [सं०] १ यज्ञ करानेवाला पुरोहित। ऋत्विज्। २. बहुत बड़ा पंडित या विद्वान् आचार्य। ३. बृहस्पति का एक नाम। ४. कृष्ण का एक नाम। ५. सूर्य। ६. यादव।

**सूरी (रिन्)**—पु० [सं०] १. विद्वान्। पंडित। आचार्य। २ जैन विद्वान् यतियों की उपाधि।

स्त्री० [सं०] १ विदुषी। पंडिता। २. सूर्य की पत्नी। ३ कुनी। ४. राई।

†स्त्री० [सं० शूल] भाला।

†स्त्री०=सूली।

**सूरज**—पु०=सूर्य।

**सूर्खा***—पु०=सूरमा।

पु०=शोरबा।

**सूरे**ठ—पु० [देश०] एक हाथ लम्बी खपची जिसमें बहेलिये चोंगे में से लासा निकालते हैं।

**सूर्मि, सूर्मी**—स्त्री० [सं०] १. लोहे की बनी हुई स्त्री की मूर्ति। २ पानी बहने की नाली।

**सूर्य**—पु० [सं०] १. हमारे सौर जगत् का वह सबसे उज्ज्वल बड़ा और मुख्य ग्रह, जिसकी अन्य सब ग्रह परिक्रमा करते और जिससे सब ग्रहों को ताप तथा प्रकाश प्राप्त होता है। दिनकर। प्रभाकर।

**विशेष**—हमारे यहाँ यह बहुत बड़ा देवता माना गया है और छाया तथा संज्ञा नाम की इसकी दो पत्नियाँ कही गई हैं; और इसके रथ का सारथि अरुण माना गया है। आधुनिक विज्ञान के अनुसार यह जलती हुई गैसों का बहुत बड़ा गोला है, जो समस्त सौर जगत् को ऊर्जा तथा जीवनी-शक्ति प्रदान करता है। पृथ्वी से यह ९३०००,००० मील की दूरी पर है। इसका व्यास ८०५,००० मील है और यह पृथ्वी से १३००,००० गुना बड़ा है, परंतु इस का घनत्व पृथ्वी के घनत्व का चौथाई ही है।

**मुहा०—सूर्य को दीपक दिखाना**=जो स्वयं परम प्रसिद्ध, महान् या श्रेष्ठ हो, उसके संबंध में कुछ कहना, बतलाना या उसका परिचय देना। **सूर्य पर थूकना**=जो बहुत महान् हो, उसके संबंध में कोई अनुचित या निंदनीय बात कहना।

२ पुराणानुसार सूर्यों की संख्या बारह होने के कारण, साहित्य में बारह की संख्या का सूचक । ३ अपने क्षेत्र या विषय का बहुत बड़ा कृती, ज्ञाता या पंडित। ४ आक । मदार।

**सूर्य-कमल**—पु० [सं०] सूरजमुखी फूल।

**सूर्य-कर**—पु० [सं०] सूर्य की किरण।

**सूर्यकांत-मणि**—पु० [सं०] १. एक प्रकार का कल्पित रत्न या मणि। कहते हैं कि जब यह धूप में रखा जाता है, तब इसमें से आग निकलने लगती है। सूर्यमणि। २. सूरजमुखी शीशा । आतशी शीशा । ३. आदित्यपर्णी।

**सूर्यकांति**—स्त्री० [सं०] १ सूर्य की दीप्ति या प्रकाश । २. तिल का फूल । ३ आदित्यपर्णी नाम का पौधा और उसका फूल ।

**सूर्य काल**—पु० [सं० १. सूर्योदय से लेकर सूर्यास्त तक का समय। २ दिन का समय। ३ फलित ज्योतिष में, शुभाशुभ का विचार करने के लिए एक प्रकार का चक्र ।

**सूर्यकालानल**—पु० [सं०] फलित ज्योतिष मे, मनुष्य का शुभाशुभ जानने का एक प्रकार का चक्र।

**सूर्य-कांत**—पु० [सं०] १ संगीत में एक प्रकार का ताल। २. एक प्राचीन जनपद।

**सूर्य-ग्रह**—पु० [सं०] १ सूर्य। २ सूर्य पर लगनेवाला ग्रहण। ३. राहु। ४ केतु। ५ घड़े का पेंदा।

**सूर्य-ग्रहण**—पु०[सं०] १ पृथ्वी और सूर्य के बीच मे चन्द्रमा के आ जाने और सूर्य आड में हो जाने के कारण होने वाला ग्रहण। (सोलर इक्लिप्स) २. हठयोग की परिभाषा में, वह अवस्था जब प्राण पिंगला नाडी से होकर कुडलिनी में पहुँचते हैं।

**सूर्य-चित्रक**—पु० [सं०] एक प्रकार का उपकरण या यंत्र जिससे सूर्य के चित्र लिए और उसके ताप की घनता नापी जाती है। (हीलियोग्राफ़)

**सूर्य-चित्रीय**—वि० [सं०] १. सूर्य के चित्र से संबंध रखनेवाला । २. सूर्य-चित्रक से संबंध रखनेवाला। (हीलियोग्राफ़िक)

**सूर्यज**—वि० [सं०] सूर्य से उत्पन्न।

पु० १. शनिग्रह। २. यम। ३. सावर्णि। ४. कर्ण। ५. सुग्रीव। ६ रेवंत।

**सूर्यजा**—स्त्री० [सं०] यमुना नदी।

**सूर्य-तनय**—पु० [सं०] सूर्य-पुत्र।

**सूर्य-तनया**—स्त्री० [सं० ष० त०] यमुना।

**सूर्य-ताप**—पु० [सं०] सूर्य की किरणों से उत्पन्न होनेवाला ताप या गरमी जिससे वातावरण गरम होता है; और जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि की जीवनी शक्ति प्राप्त होती है। आतप। (इन्सोलेशन)

**सूर्य-तापिनी**—स्त्री० [सं०] एक उपनिषद् का नाम।

**सूर्य-ध्वज**—पु० [सं०] शिव का एक नाम।

**सूर्य-नंदन**—पु० [सं०] १. शनि। २. कर्ण। ३. सुग्रीव।

**सूर्य-नमस्कार**—पुं० [सं०] आज-कल एक विशिष्ट प्रकार का व्यायाम जो सूर्योदय के समय धूप में खड़े होकर किया जाता है।

**सूर्य-नाड़ी**—स्त्री० [सं०] पिंगला नाड़ी। (हठयोग)

**सूर्यपति**—पुं० [सं०] सूर्यदेवता।

**सूर्यपत्र**—पु० [स०] १. ईसरमूल। अर्कपत्री। २. हुरहुर। ३ आक। मदार।

**सूर्यपर्णी**—स्त्री०[स०] १ ईसरमूल। अर्कपत्री। २. बनउडद। मलवन।

**सूर्य-पर्व (न्)**—पु०[स०]किसी नई राशि मे सूर्य के प्रवेश करने का काल। सूर्य-संक्राति।

**सूर्य-पाद**—पु० [सं०] सूर्य की किरण।

**सूर्य-पुत्र**—पु० [सं०] १ शनि। २ यम। ३. वरुण। ४. अश्विनी-कुमार। ५ सुग्रीव। ६ कर्ण।

**सूर्य पुत्री**—स्त्री० [सं०] १ यमुना। २. बिजली। विद्युत्।

**सूर्य प्रदीप**—पु० [सं०] एक प्रकार का ध्यान या समाधि। (बौद्ध)

**सूर्य प्रभ**—वि० [सं०] सूर्य के समान प्रभावाला।

पु० योग में एक प्रकार की समाधि।

**सूर्य-प्रशिष्य**—पु० [सं०] राजा जनक का एक नाम।

**सूर्य कणि**†—पु०[सं०]फलित ज्योतिष में, एक प्रकार का चक्र, जिससे कोई कार्य प्रारंभ करते समय उसका शुभाशुभ परिणाम निकालते हैं।

**सूर्य भक्त**—पु० [सं०] बधूक नामक पौधा और उसका फूल। गुल-दुहरिया।

**सूर्य-भक्तक**—पु० [सं०] १. सूर्य का उपासक। २ गुल-दुहरिया। बन्धूक।

**सूर्यभक्ता**—स्त्री० [सं०] हुरहुर। आदित्य भक्ता।

**सूर्यभा**—वि० [सं०] सूर्य के समान अर्थात् बहुत अधिक प्रकाशमान।

**सूर्य-भ्राता**—पु० [सं० सूर्यभ्रातृ] ऐरावत हाथी का एक नाम।

**सूर्य-मणि**—पु० [सं०] सूर्यकांत मणि।

**सूर्यमाल**—पुं० [सं०] शिव का एक नाम।

**सूर्यमास**— पु०=सौर मास।

**सूर्यमुखी (खिन्)**—पु०, स्त्री० सूरजमुखी।

**सूर्य-रश्मि**—पु० [सं०] १ सूर्य की किरण। २. सविता नामक वैदिक देवता।

**सूर्यर्क्ष**—पु० [सं०] वह नक्षत्र जिसमें सूर्य की स्थिति हो।

**सूर्य-लता**—स्त्री० [सं०]=सूर्य-वल्ली।

**सूर्य-लोक**—पु० [सं०] सूर्य का लोक।

**विशेष**—ऐसा प्रवाद है कि वीर गति प्राप्त होने के उपरांत योद्धा इसी लोक में आते हैं।

**सूर्य-वंश**—पु० [सं०] क्षत्रियों के दो आदि और प्रधान वंशों में से एक जिसका आरंभ इक्ष्वाकु से माना जाता है।

**सूर्यवंशी (शिन्)**—पु० [सं०] सूर्यवंश में जन्म लेनेवाला।

**सूर्य-वंशीय**—पु०[सं०]=सूर्यवंश संबंधी।

**सूर्य-वन**—पु०[सं०] एक प्राचीन तीर्थ।

**सूर्य-वर्चस्**—वि०[सं०] सूर्य की भाँति अर्थात् बहुत अधिक प्रकाशमान।

**सूर्य-वल्लभा**—स्त्री०[सं०] १. हुरहुर। आदित्यभक्ता। २. कमलिनी।

**सूर्य-वल्ली**—स्त्री०[सं०]१. अमावुली। अर्कपुत्री। २. क्षीर काकोली।

**सूर्यवान् (वत्)**—पु०[सं०] रामायण में उल्लिखित एक पर्वत।

**सूर्यवार**—पु०[सं०] रविवार।

**सूर्य-विलोकन**—पु० [सं०] हिन्दुओं में एक प्रकार का मांगलिक कार्य जिसमें चार महीने के बच्चे को सूर्य के दर्शन कराये जाते हैं।

**सूर्य वृत्त**—पु०[सं०] १. आक। मदार। २. अषाढ़ी।

**सूर्य-व्रत**—पु०[स०]१ एक प्रकार का व्रत जो सूर्य भगवान् को प्रसन्न करने के लिए रविवार को किया जाता है। २. ज्योतिष में, एक प्रकार का चक्र।

**सूर्य-शिष्य**—पु० [स०]१ याज्ञवल्क्य का एक नाम। २. राजा जनक का एक नाम।

**सूर्य श्री**—पु० [स०] विश्वेदेवा में से एक।

**सूर्य-संक्रमण**—पु० [स०]=सूर्य-संक्रांति।

**सूर्य संक्रांति**—स्त्री० [स०] सूर्य का एक राशि से दूसरी राशि में प्रवेश, जो एक पर्व माना गया है। संक्रांति।

**सूर्य-संज्ञ**—पु० [स०] १. सूर्य। २. आक। मदार। ३. केसर। ४. ताबा। ५. एक प्रकार का मानिक।

**सूर्य-सारथि**—पु०[स०] (सूर्य का सारथि) अरुण।

**सूर्य-सावर्णि**—पु०[स०] मार्कण्डेय पुराण के अनुसार आठवें मनु का नाम। ये सूर्य और संज्ञा के गर्भ से उत्पन्न (औरस) माने गये हैं।

**सूर्यसावित्र**—पु०[स०] विश्वेदेवों में से एक।

**सूर्य-सुत**—पु०[स०]=सूर्य-पुत्र।

**सूर्यसूक्त**—पु० [स०] ऋग्वेद का एक सूक्त, जिसमें सूर्य की स्तुति है।

**सूर्यसूत**—पु०[स०] सूर्य का सारथि, अरुण (देव)।

**सूर्य स्नान**—पु०[स०] धूप-स्नान।

**सूर्यांशु**—पु०[स०] सूर्य की किरण।

**सूर्या**—स्त्री०[स०]१. सूर्य की पत्नी, संज्ञा। २ नव-विवाहिता स्त्री। नवोढा। ३ इन्द्र-वारुणी।

**सूर्याकर**—पु० स०] एक प्राचीन जनपद। (रामायण)

**सूर्याक्ष**—पुं०[स०] विष्णु।

वि० सूर्य के समान नेत्रोंवाला।

**सूर्याणी**—स्त्री० [स०] सूर्य की पत्नी, संज्ञा।

**सूर्यातप**—पु०[स०]१ सूर्यताप। २ धूप। घाम।

**सूर्यात्मज**—पु०[स०] सूर्य-पुत्र।

**सूर्यास्त**—पु०[सं०] सूर्य का अस्त।

**सूर्यास्तोक**—पु०[सं०] १. सूर्य का प्रकाश। २. धूप।

**सूर्यावर्त**—पु० [स०] १. अधकपारी या आधासीसी नाम का सिर का दर्द। २ हुरहुर। ३ सुवर्चला। ४. गज पिप्पली। ५. एक प्रकार का जल-पात्र। ६ बौद्धों में एक प्रकार की समाधि।

**सूर्यास्म (स्मन्)**—पु०[स०] सूर्यकान्त मणि।

**सूर्याश्व**—पु० [स०] सूर्य का घोड़ा।

**सूर्यास्त**—पु०[सं०]१. सूर्य का अस्त होना। २. सूर्य के अस्त होने का समय।

**सूर्येष्ठ**—पुं० [सं०]१. ताबा। ताम्र। २. आक। मदार। ३. महेन्द्र वारुणी।

**सूर्येन्दुसंगम**—पु० [स०] अमावस्या, जिसमें सूर्य और इन्दु अर्थात् चन्द्रमा एक ही राशि में स्थित रहते हैं।

**सूर्योच्च**—पु०[स०]=रवि-उच्च। (देखें)

**सूर्योदय**—पु०[स०]१. सूर्य का उदित होना या निकलना। २. सूर्य के उदित होने का समय। प्रातःकाल। सवेरा।

**सूर्योदय-गिरि**—पुं०[स०]=उदयाचल।

**सूर्योदयन**—पु०[स०]=सूर्योदय।

**सूर्योद्यान**—पु०[स०] सूर्यवन नामक तीर्थ।

**सूर्योपनिषद्**—स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम।

**सूर्योपस्थान**—पु० [स०] सूर्य की एक प्रकार की उपासना।

**सूर्योपासक**—पु०[स०] सूर्य की उपासना करनेवाला। सूर्यपूजक। सौर।

**सूर्योपासना**—स्त्री०[स०] सूर्य की आराधना, उपासना या पूजा।

**सूल**—पु०[स० शूल]१. बरछा। भाला। साँग। २. कोई नुकीली चीज। ३. किसी नुकीली चीज के गड़ने की सी पीड़ा। ४. पेट की शूल नामक पीड़ा या रोग।

क्रि० प्र०—उठना।

५. माला के ऊपर का फुंदना। ६=दे० शूल।

वि०=बेसूल। (दल्लालों की बोली)।

**सूलधर, सूलपाणि***—पु०=शूलधर (शिव)।

**सूलना**—स०[हिं० सूल+ना (प्रत्य०)]१ भाले से छेदना। २ नुकीली चीज चुभाना। ३ कष्ट देना। पीड़ित करना।

अ० १ कोई नुकीली चीज गड़ना या चुभना। २ कष्ट पाना। पीड़ित होना।

**सूलपाणि***—पु०=शूलपाणि (शिव)।

**सूली**—स्त्री० [स० शूल] १. प्राणदंड की एक प्राचीन प्रणाली जिसमें दंडित मनुष्य एक नुकीले लोहे के डंडे पर बैठा दिया जाता था और उसके सिर पर मुँगरे से आघात किया जाता था। इसमें नीचे से ऊपर तक उसका सारा शरीर छिद जाता था और वह मर जाता था।

क्रि० प्र०—चढ़ना।—चढ़ाना।—देना।—पाना।—मिलना।

२ आज-कल फाँसी नामक प्राणदंड। ३ बहुत अधिक कष्ट या पीड़ा की स्थिति।

मुहा०—**प्राण सूली पर टँगा रहना**= किसी प्रकार की दुर्दशा में पड़ने के कारण बहुत अधिक मानसिक कष्ट होना। जैसे—जब तक लड़का लौटकर नहीं आया था, तब तक प्राण सूली पर टँगे थे।

३. एक प्रकार का नरम लोहा जिसके छड़ बनाये जाते हैं। (लुहार)

४ दक्षिण दिशा। (लश०)

†पु०=शूली (शिव)।

**सूवना***—अ०[सं० स्रवण] प्रवाहित होना। बहना।

†स० प्रसव करना। जनना। (पश्चिम)

†पु० सूआ (तोता)।

**सूवर**†—पु०=सूअर।

**सूवा**—पु० [?] फारसी संगीत के अंतर्गत २४ शोभाओं में से एक।

†पु०=सूआ, (तोता)।

**सूस**—पु० [स० शिशुमार]=सूँस (जल-जन्तु)।

**सूसमार**—पु०[स० शिशुमार] सूँस (जल-जन्तु)।

**सूसला**†—पुं०[स० शश] खरगोश।

**सूसि***—पु०=सूँस (जल-जन्तु)।

**सूसी**—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का धारीदार कपड़ा।

**सूहवा**†—वि०=सधवा (स्त्री)।

†पु०=सूहा (राग)।

**सूहा**—पु०[हिं० सोहना] एक प्रकार का चमकीला गहरा लाल रंग। (ब्राइट रेड)
वि० [स्त्री० सूही] उक्त प्रकार के लाल रंग का। लाल। सुर्ख।
पुं०[स० सुहृद?] संगीत में ओडव-षाड़व जाति का एक राग जो दिन के दूसरे पहर के अंत मे गाया जाता है।

**सूहा-टोड़ी**—स्त्री०[हिं० सूहा+टोड़ी] संगीत में संपूर्ण जाति की एक संकर रागिनी।

**सूहा-बिलावल**—पु० [हिं० सूहा+बिलावल] संगीत में संपूर्ण जाति का एक संकर राग।

**सूहा-श्याम**—पु०[हिं० सूहा+श्याम] संगीत में संपूर्ण जाति का एक संकर राग।

**सृंखला**†—स्त्री०=शृंखला।

**सृंग**†—पु०=शृंग (चोटी)।

**सृंगवेरपुर**†—पु०=शृंगवेरपुर।

**सृंगी***—पु०=शृंगी (ऋषि)।

**सृंजय**—पु०[स०]१ देवबात का एक पुत्र। (ऋग्वेद) २ मनु का एक पुत्र। ३ पुराणानुसार एक प्राचीन राजवंश जिसमे धृष्टद्युम्न हुए थे।

**सृकंडू**—स्त्री०[स०] खाज या खुजली नामक रोग। कंडू।

**सृक**—पु० [स०] १ शूल। २. बरछा। भाला। ३. तीर। बाण। ४. वायु। हवा। ५. कमल।
†पु० [सं० सृक] माला या हार।

**सृगाल***—पु०=शृगाल (गीदड़)।

**सृक्कणी, सृक्किणी**—स्त्री० [स०] होठों का कोना। मुँह का कोना।

**सृक्व (न्)**—पु०[स०] होंठो का छोर। मुँह का कोना।

**सृग***—पु०[स० सृक]१ बरछा। भाला। २. तीर। बाण।
†पु०[स० सृक्] माला या हार।

**सृगाल**†—पु०=शृगाल (गीदड़)।
**विशेष**—'सृगाल' के यौ० के लिए दे० 'शृगाल' के यौ०।

**सृग्विणी***—स्त्री०=स्रग्विणी (छंद)।

**सृजक***—पु० [सं०] सृजन (सर्जन) करनेवाला।

**सृजन***—पु० [स० सृज, सर्जन] १. सृष्टि करने अर्थात् जन्म देने की क्रिया या भाव। सर्जन। रचना। २. उत्पत्ति। सृष्टि। ३. छोड़ना या निकालना।

**सृजनहार***—पु० [सं० सृज, सर्जन+हिं० हार] सृजन (सर्जन) करनेवाला। सृष्टिकर्ता।

**सृजना**—स० [स० सृज+हिं० ना (प्रत्य०)] सृष्टि करना। जन्म देना। उत्पन्न करना, रचना या बनाना।

**सृज्य**—वि०[सं०]१. जो उत्पन्न किया जाने को हो। २. जो सृजन किये जाने के योग्य हो। ३. छोड़े या निकाले जाने के योग्य।

**सृणि**—पुं०[स०]१. चन्द्रमा। २. शत्रु।
स्त्री० हाथी को वश में करनेवाला, अंकुश।

**सृणिक**—पुं०[स०] महावत का अंकुश।
स्त्री० चूक।



**सृणीक**—पु०[सं०]१. वायु। हवा। २. अग्नि। ३. वज्र। ४. मदोन्मत्त व्यक्ति।

**सृणीका**—स्त्री० [स०] चूक। लार।

**सृत**—भू० कृ०[सं०] १. जो खिसक गया हो। सरका हुआ। २ जो चला गया हो।
पु० चकमा देकर शत्रु पर शस्त्र से प्रहार करना।

**सृता**—स्त्री० [सं०] सृति। (दे०)

**सृति**—स्त्री०[स०]१ जाने या खिसकने की क्रिया या भाव। २ आवागमन। ३. जाने का मार्ग। पथ। ४ आचरण। ५ जन्म। ६ निर्माण।

**सृत्वन्**—पु० [स०] १. खिसकने या सरकने की क्रिया या भाव। २. बुद्धि। ३ प्रजापति।

**सृत्वर**—वि०[स०] १ जो जा या चल रहा हो। २ चलता हुआ। गतिशील।

**सृत्वरी**—स्त्री०[स०]१ नदी। धारा। २. माता।

**सृप**—पु०[सं०] चन्द्रमा।

**सृप्त**—भू० कृ०[स०] खिसका या फिसला हुआ।

**सृप्र**—वि०[सं०]१ चिकना। स्निग्ध। २ जिस पर हाथ या पैर फिसलता हो।
पु०१ चन्द्रमा। २ मधु। शहद।

**सृप्रा**—स्त्री०[सं०]=सिप्रा (नदी)।

**सृमर**—वि०[सं०]१ जो चल रहा हो। २ गतिशील।
पु० एक प्रकार का पशु। (कदाचित बालमृग)

**सृष्ट**—भू० कृ०[ स०]१ बनाया या रचा हुआ। २ उत्पन्न या पैदा किया हुआ। ३ मिला हुआ। युक्त। ४ छोडा या निकाला हुआ। त्यागा हुआ। परित्यक्त। ६. जिसके संबध मे दृढ़ निश्चय या संकल्प किया गया हो। ७. अलंकृत। भूषित।
पु० तिन्दुक या तेंदू का वृक्ष।

**सृष्ट-मारुत**—वि०[स०] वैद्यक में पेट की वायु को निकालनेवाला (औषध या लाघ पदार्थ)।

**सृष्टि**—स्त्री०[स० √ सृज् (सर्जन करना)+क्तिन्]१. बना या रचकर तैयार करने की क्रिया या भाव। निर्माण। रचना। २. उत्पत्ति। पैदाइश। ३ वह चीज जो बनाकर या पैदा करके तैयार की गई हो। ४. जगत् या ससार का आविर्भाव या उत्पत्ति। ५ यह सारा विश्व और इसमें के सभी चर और अचर प्राणी तथा पदार्थ। (क्रियेशन, उनत सभी अर्थों में) ६ निसर्ग। प्रकृति। ७ उदारता या दानशीलता। ८ एक प्रकार की ईंट जो यज्ञ की वेदी के लिए बनाई जाती थी। ९. गभारी का पेड़।

**सृष्टिकर्ता**—पु० [स० सृष्टिकर्तृ]१. सृष्टि या ससार की रचना करनेवाला, ब्रह्मा। २. ईश्वर। परमात्मा।

**सृष्टि-तत्व**—पु० [सं०] सृष्टि-विज्ञान।

**सृष्टिपत्तन**—पु० [सं०] एक प्रकार की मंत्र-शक्ति।

**सृष्टि-विज्ञान**—पु०[स०] वह विज्ञान जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि ब्रह्माण्ड में ग्रह, तारे, नक्षत्र आदि किस प्रकार उत्पन्न होते, बढ़ते और अन्त में नष्ट होते हैं। (कास्मोलोजी)

**सृष्टि-शास्त्र**—पु० =सृष्टि-विज्ञान।

**सृष्ट्यंतर**—पु० [सं०] चार वर्णों के अंतर्गत अंतर-जातीय विवाह से उत्पन्न होनेवाली संतान।

**सेक**—पु० [हिं० सेंकना] १ सेंकने की क्रिया या भाव। २. ताप। गरमी। ३ शरीर के किसी रुग्ण अंग पर गर्म चीज से पहुँचाई जानेवाली गर्मी। टकोर। (फ़ोमेन्टेशन) ४. किसी प्रकार का सामान्य कष्ट, विपत्ति या संकट। (परिचम) जैसे—ईश्वर करे, तुम्हें जरा भी सेंक न लगे।

क्रि० प्र०—आना।—लगना।

स्त्री० [हिं० सीक] लोहे की कमानी जो छींपी कपडे छापने के काम मे लाते हैं।

**सेंकना**—स० [सं० श्वेपण=जलाना, तपाना] १. आँच के पास या आग पर रखकर भूनना। जैसे—रोटी सेंकना। २. आँच के पास या ताप के सामने रखकर गरम करना। जैसे—(क) सरदी में अँगीठी से हाथ-पैर सेंकना। (ख) खुली जगह में बैठकर धूप सेंकना। ३. कपडा, रूई, आदि गरम करके पीडित अंग पर उसका ताप पहुँचाना। जैसे—पेट या फोड़ा सेंकना। (फोमेन्टेशन)

**मुहा०—आँखें सेंकना**= रूपवती या सुन्दरी स्त्री को बारबार देखकर तृप्त या प्रसन्न होना।

**सेंकाई**—स्त्री० [हिं० सेंकना] सेंकने की क्रिया या भाव।

**सेंकी**†—स्त्री० [फा० सीनी, हिं० सनहकी] तश्तरी। रकाबी।

**सेंगर**—पु० [स० शृंगार] १. एक प्रकार का पौधा जिसकी फलियों की तरकारी बनती है। २ उक्त पौधे की फली। ३. बबूल की फली। ४ एक प्रकार का अगहनी धान।

पु० क्षत्रियों की एक जाति।

**सेंगरा**†—पु० [फा० सग या सं० शृखल ?] मोटे बाँस का वह छोटा टुकड़ा जिसकी सहायता से पेशराज लोग मिलकर भारी घरनें, पत्थर आदि उठाते है।

**विशेष**—सेंगरे में मोटे रस्से बाँधे जाते हैं और उन्ही रस्सों पर घरनें, पत्थर आदि लटकाकर एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाये जाते हैं।

†पु० सगरा।

**सेंजी**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास। (पजाब)

**सेंट***—स्त्री० [?] वृष की धार।

पु० [अ०] १. खुशबू। २. सुगधिपूर्ण द्रव्य। जैसे—इत्र।

**सेंटर**—पु० [अ०] केन्द्र। (दे०)

**सेंट्रल**—वि० [अ०] केंद्रीय। (दे०)

**सेंठा**—पु० [देश०] १. मूँज या सरकडे के सीके का निचला मोटा मजबूत हिस्सा जो मोढ़े आदि बनाने के काम मे आता है। कचा। २. एक प्रकार की घास, जो प्राय. छप्पर छाने के काम आती है। ३. वह पोली लकड़ी जिसमे जुल्लाहे ऊरी फँसाते हैं। डाँड़।

**सेंड़**—पु० [देश०] सुनारों के काम में आनेवाला एक प्रकार का खनिज पदार्थ।

**सेंत**†—स्त्री०=सेंती।

**सेंतना**†—स०=सेंतना।

**सेंत-मेंत**—अव्य० [हिं० सेंत+मेंत (अनु०)] १. बिना दाम दिये मेंत में। २. बिना कुछ किये या दिये। मुफ्त में। ३. फजूल। व्यर्थ।

**सेंति**†—वि० आधुनिक हिंदी की 'से' विभक्ति का पुराना रूप।

स्त्री०=सती।

**सेंती**†—स्त्री० [स० सहति=(क) किफायत (ख) ढेर या राशि] ऐसी स्थिति जिसमे या तो (क) पास का कुछ भी व्यय न करना पडे, (ख) कुछ भी परिश्रम न करना पडे, अथवा (ग) अनायास ही कोई चीज बहुत अधिक मात्रा या सख्या में प्राप्त हो।

**मुहा०—सेंती का या सेंती-मेंती का**=(क) जिसके लिए कुछ भी परिश्रम न करना पड़ा हो। मुफ्त का या मुफ्त मे। जैसे—उन्हे बाप-दादा का सेंती का माल मिला है। (ख) जिसके लिए कुछ भी व्यय न करना पडा हो। उदा०—सस्ता सग लीन्हे जू सेंति के फिरत रैन दिन बन में छाये।—सूर। (ग) जो बहुत अधिक मात्रा या मान मे उपस्थित या प्रस्तुत हो। उदा०—दधि मे परी सेंति की चीटी, भो पै सबै कढाई।—सूर। (घ) बिलकुल अकारण या व्यर्थ। जैसे—इसके लिए कोई सेंती का प्रयत्न क्यों करे।

प्रत्य० [प्रा० सुतो, पचमी विभक्ति] पुरानी हिन्दी की करण और अपादान की विभक्ति, से। उदा०—राजा सेंति कुँवर सब कहही। अस अस मच्छ समुद महँ अहही।—जायसी।

**सेंधा**†—पु०=सेंठा।

**सेंधी**†—स्त्री० [स० शक्ति] छोटा भाला। बरछी।

**सेंध**†—स्त्री०=सेंध।

**सेंदुर**†—पु० [स० सिन्दूर] ईंगुर की बुकनी जो प्राय सौभाग्यवती स्त्रियाँ माँग में लगाती हैं। सिंदूर।

क्रि० प्र०—भरना।—लगाना।

**मुहा०—सेंदुर चढ़ाना**=स्त्री का विवाह होना। **सेंदुर पहनना**=माँग में सिन्दूर भरना या लगाना। (**किसी की माँग में**) **सेंदुर देना**=किसी स्त्री की माँग मे सिन्दूर डालकर उससे विवाह करना या उसे अपनी पत्नी बनाना।

**सेंदुरदानी**†—स्त्री० [हिं०सेंदुर+फा० दानी] सिंदूर रखने का छोटा डिब्बा। सिंदूर की डिबिया।

**सेंदुरा, सेंदुरिया**—वि०, पु०=सिंदूरिया।

**सेंदुरी**†—वि० स्त्री० [हिं० सेंदुर+ई (प्रत्य०)] सिंदूरी गाय।

**सेंद्रिय**—वि० [स०] १. जिसमें इन्द्रियाँ हों। इन्द्रियोंवाला। जैव। (जीव या जन्तु) (आर्गनिक) २. पुंस्त्व या पौरुष से युक्त।

**सेंध**—स्त्री० [स० सधि] १. चोरी करने के लिए मकान की दीवार मे किया हुआ बडा छेद, जिसमे से होकर चोर किसी कमरे या कोठरी में घुसता है। सधि। नकब।

क्रि० प्र०—देना।—मारना।—लगाना।

२ इस प्रकार छेद करके की जानेवाली चोरी।

क्रि० प्र०—लगना।

स्त्री० [देश०] १. गोरख ककडी। फूट। २. कचरी नामक फल। पेहँटा।

**सेंधना**†—स० [हिं० सेंध] चोरी करने के उद्देश्य से दीवार में छेद करके मकान में घुसने के लिए रास्ता बनाना।

**सेंधा नमक**—पुं० [सं० सैंधव] एक प्रकार का नमक जो पश्चिमी पाकिस्तान की खानों से निकलता है। सैंधव। लाहौरी नमक।

**सेंधिया**—वि० [हिं० सेंध] दीवार में सेंध लगाकर चोरी करनेवाला। जैसे—सेंधिया चोर।

पु० [?] १. ककडी की जाति की एक बेल जिसमें तीन-चार अंगुल लम्बे छोटे-छोटे फल लगते हैं। कचरी। सेंध। पेहँटा। २. फूट नामक फल। ३. एक प्रकार का विष।

†पु०=सिंधिया।

**सेंधी**—स्त्री० [सिंध (देश०)] १. खजूर। २. खजूर की शराब।

†स्त्री०=सेंधिया (फल)।

**सेंधुआर**†—पु०=सिंधुआर (जन्तु)।

**सेंदुर**†—पु० =सिंदूर।

**सेंबर**†—पु०=सेमल।

**सेंभा**†—पु० [देश०] घोड़ों का एक बात रोग।

**सेंवई**†—स्त्री०=सेवई।

**सेंबर**†—पु० =सेमल।

**सेंसर**—पु० [अ०] १. यह कहना कि तुमने यह दोष या भूल की है। २ निंदात्मक भर्त्सना।

**सेंसर**—पु० [अ०] १. वह सरकारी अफसर जिसे पुस्तकें, समाचार-पत्र आदि छपने या प्रकाशित होने, नाटक खेले जाने, चित्रपट दिखाये जाने पर या तार से कहीं समाचार भेजे जाने के पूर्व उन्हें देखने या जाँचने और टोकने का अधिकार होता है। २. उक्त प्रकार की जाँच का काम।

**सेंसर-बोर्ड**—पु० [सं०] सेंसर करनेवाले अधिकारियों की समिति।

**सेंह**†—स्त्री० =सेंध।

**सेंहा**—पु० [हिं० सेंध] कूआँ खोदने का पेशा करनेवाला मजदूर। कुईंरा।

†स्त्री० =सेंध।

**सेंही**†—स्त्री०=सेंध।

**सेंहुड़**—पु० [स० सेहुण्ड] थूहर।

**से**—विभ० [प्रा० सुंतो, पु० हिं० सेंति] १. करण और अपादान कारक का चिह्न। तृतीया और पंचमी की विभक्ति, जिसका प्रयोग इन अर्थों में होता है—(क) द्वारा, जैसे—हाथ से देना, (ख) आपेक्षिक मान मे कम या अधिक; जैसे—इससे कम, (ग) सीमा का आरम्भ; जैसे—यहाँ से।

**मुहा०—(स्त्री का किसी पुरुष) से रहना**=पर-पुरुष से संभोग करना। उदा०—मीर गुल से अब के रहने में हुई वह बेकली। टल गई क्या नाफदानी पेड पत्थर हो गया।—जानसाहब।

२. पुरानी हिंदी और बोलचाल में, कहीं-कहीं सप्तमी या अधिकरण के चिह्न 'पर' की तरह प्रयुक्त। उदा०—कहहिं कबिर गूँगे गुर खाया, पूछे से का कहिया।—कबीर।

वि० हिं० 'सा' (समान) का बहु०। जैसे—थोड़े से कपड़े, बहुत से लोग।

*सर्व० हिं० 'सो' (वह) का बहु०।

स्त्री०[स०]१. देवता। २. कामदेव की पत्नी रति का एक नाम।

**सेई**†—स्त्री०[हिं० सेर] अनाज नापने का काठ का एक गहरा बरतन।

†सर्व० [हिं० से (वह)+ई (प्रत्य०)] वही। उदा०—सेई तुम सेई हम कहिगत।—कबीर।

**सेउ***—पु० १. दे० 'सेव' (पकवान)। २. दे० 'सेब' (फल)। ३ दे० 'शिव'।

**सेउवा**†—स्त्री०=सेवा।

**सेकंड**—पु० [अं०] एक मिनट का ६०वाँ भाग।

वि० गिनती में दो के स्थान पर पड़नेवाला। दूसरा।

**सेक**—पु० [सं०] १. पानी से सींचने की क्रिया या भाव। सिंचाई। २ पानी का छिड़काव। ३. अभिषेक। ४. तेल आदि की मालिश। (वैद्यक)

†पु०=सेंक। (पश्चिम)

**सेकड़ा**†—पु० [देश०]वह चाबुक या छड़ी, जिससे हलवाहे बैल हाँकते हैं। पैना।

**सेकतव्य**—वि० [सं०] १. छिड़के या सींचे जाने के योग्य। २ मालिश के योग्य।

**सेक-पात्र**—पु० [सं०] पानी छिड़कने या सींचने का पात्र या बरतन।

**सेकुआ**†—पु० [देश०] काठ के दस्ते का लंबा करछी या डौवा, जिससे हलवाई दूध औटाते हैं।

**सेक्ता**—वि०[स० सेक्तृ] [स्त्री० सेक्त्री] १ सींचनेवाला। २ गौ, घोड़ी आदि में गर्भाधान करानेवाला।

पु० स्त्री का पति। खाँहर।

**सेक्रेटरी**—पु०[अ०] १. मंत्री। २ सचिव।

**सेक्रेटरिएट**—पु० [अ०]=सचिवालय।

**सेक्शन**—पुं०[अ०]१. विभाग। जैसे—इस दरजे मे दो सेक्शन हैं। २. धारा।

**सेख**†—वि०, पुं०=शेख।

†पु०=शेख।

**सेखर***—पु०=शेखर।

†पुं०=शिखर।

**सेखी**†—स्त्री०=शेखी।

**सेगा**—पु०[अ० सेग़:] १.किसी काम या बात का कोई विशिष्ट विभाग या शाखा। २. व्यवस्था, शासन आदि का महकमा।

**सेगुन**†—पुं०=सागौन (वृक्ष)।

**सेगोन, सेगौन**—पु०[देश०]मटमैले रंग की वह लाल मिट्टी जो नालों के पास पाई जाती है।

†पु०=सागौन (वृक्ष)।

**सेच**—पुं०[सं०]१ सिंचाई। २. छिड़काव।

**सेचक**—वि० [सं०]१. सेचन करने या सींचनेवाला। २. छिड़कनेवाला। तर करनेवाला।

पुं० बादल। मेघ।

**सेचन**—पुं०[सं०√सिच् (सींचना)+ल्युट्—अन] १. पानी से सींचने की क्रिया या भाव। सिंचाई करना। २. पानी छिड़कना। ३. पानी के छींटे देना। ४. अभिषेक। ५. धातुओं की ढलाई। ६. वह कड़ाही-नुमा छोटा बरतन जिससे नाव में का पानी बाहर फेंका जाता है।

**सेचनक**—पु० [सं०] अभिषेक।

**सेचनी**—स्त्री०[सं०]पानी भरने का बरतन। जैसे—डोल, बाल्टी आदि।

**सेचनीय**—वि०[सं०] जिसका सेचन हो सके या होने को हो।

**सेचित**—भू० कृ० [सं०] जो सींचा गया हो। तर किया हुआ।

**सेच्य**—वि०[स०]= सेचनीय।

**सेज**—स्त्री०[सं० शय्या प्रा० सज्जा]१. बिछौना, विशेषतः सुन्दर और कोमल बिछौना। २ साहित्यिक तथा शृंगारिक क्षेत्र मे वर या वधू का बिछौना।

क्रि० प्र०—करना।

**सेजपाल**—पुं०[हिं० सेज+पाल] प्राचीन काल में, वह सैनिक जो राजा की शय्या पर पहरा देता था।

**सेजरिया***—स्त्री०=सेज।

**सेजा**—पु०[देश०] आसाम और बंगाल मे होनेवाला एक प्रकार का पेड जिस पर टसर के कीड़े पाले जाते हैं।

**सेजिया, सेज्या**†—स्त्री०=सेज।

**सेझ**†—स्त्री०=सेज।

**सेतबंधि**†—पुं०=सह्याद्रि (पर्वत)।

**सेतबंधारि***—पु०=सह्याद्रि (पर्वत)।

**सेतना**—अ० [सं० सेचन=दूर करना, हटाना] दूर होना। हटना स० दूर करना। हटाना।

**सेट**—पु०[स०] एक प्राचीन तौल या मान।

पु०[अं०] एक साथ पहनी या काम में लाई जानेवाली चीजो का समूह। कुलक। जैसे—गहनों का सेट, कपड़ों का सेट, बरतनो का सेट।

पु०=सेंठा।

**सेटना**—अ०[सं० श्रुत] किसी का महत्त्व, मान आदि स्वीकार करना या मानना।

**सेटिल**—वि०[अं० सेटिल्ड]१. (झगड़ा या विवाद) जो निपट गया हो। २. जो निश्चित या तै हो गया हो।

**सेटिलमेंट**—पु०[अं०]१ खेती के लिए भूमि को नापकर उसका राज कर निर्धारित करने का काम। बंदोबस्त। २ आपस में होनेवाला निपटारा या समझौता। ३ नई बसाई हुई जगह।

**सेठ**—पु०[सं० श्रेष्ठी] [स्त्री० सेठानी]। १ बहुत बड़ा कोठीवाल, महाजन, व्यापारी या साहूकार। २ बहुत बड़ा धनवान् या सम्पन्न व्यक्ति। ३. स्त्रियों की एक जाति। ४. सुनारो का अल्ल या जातिनाम। ५ दलाल। (डिं०)

**सेठन**—पु०[देश०] झाड़ू बुहारी।

**सेठा**—पु०[हिं० सेंठा] सरकंडे का निचला भाग।

**सेठानी**—स्त्री०[हिं० सेठ+आनी (प्रत्य०)]१ सेठ की पत्नी। २ महाजन स्त्री।

**सेड़ा**†—पु० [देश०] भादों में होनेवाला एक प्रकार का धान।

**सेड़ी**—स्त्री० [स० चेटि, प्रा० चेडि, हिं० चेरी] सहेली। सखी। (डिं०)

**सेत**—पु० [अं० सेल] बादबान। पाल। (लश०)

क्रि० प्र०—खोलना।—चढ़ाना।—तानना।—बाँधना।—लगाना।

**मुहा०—सेत बचाना**=पाल में से हवा निकालना जिससे वह लपेटा जा सके। (लश०) **सेत सपटाना** =रस्सा खींचकर पाल तानना।

**सेतखाना**—पु० [सं० सेल=फा० खाना] १. जहाज मे वह कमरा या कोठरी जिसमे पाल भरे रहते हैं। २. वह स्थान जहाँ पाल बनाये जाते हैं।

**सेता**†—पु०[देश०] सेडा नामक भादो मास मे होनेवाला धान।

**सेत***—वि०=श्वेत (सफेद)।

पु०=सेतु।

**सेतकुली**—पु०[स० श्वेतकुलीय] सर्पों के अष्ट कुल में से एक। सफेद जाति के नाग।

**सेतदीप***—पु०=श्वेतद्वीप।

**सेत-द्युति**†—पु० [सं० श्वेतद्युति] चन्द्रमा।

**सेतना**†—स०=सेतना (सचित करना)।

**सेतबंध**†—पु०=सेतुबंध।

**सेतवा**—पु० [स० शुक्ति, हिं० सितुही] अफीम काछने की लोहे की कलछी।

**सेतवारी**†—स्त्री०[स० सिक्ता,=बालू+बारी (प्रत्य०)] हरापन लिए हुए बलुई चिकनी मिट्टी।

**सेतवाह**†—पु०[स० श्वेतवाहन]१ अर्जुन। २ चन्द्रमा। (डिं०)

**सेता**†—वि०[स० श्वेत] [स्त्री० सेती] सफेद। उदा०—सेतो सेतो सब भलो सेतो भलो न केस।

**सेतिका**†—स्त्री० [स० साकेत] अयोध्या नगरी का एक नाम।

**सेती**†—अव्य०[प्रा० सुत] १ किसी के प्रति। को। २. द्वारा।

विभ० दे० 'से'।

**सेतु**—पु०[स०]१. बाँधने की क्रिया या भाव। बन्धन। २ नदी आदि पार करने के लिए बनाया हुआ रास्ता। पुल। ३. दूर रहनेवाली दो चीजो को आपस मे मिलानेवाला अंग या रचना। (ब्रिज)४. पानी की रुकावट के लिए बँधा हुआ बाँध। ५. खेत की मेड़। ६ सीमा। हद। मर्यादा। उदा०—रावहि निज श्रुति सेतु।—तुलसी। ७ सीमा की सूचक किसी प्रकार की रचना। जैसे—डाँड़, मेंड़ आदि। ८ ओकार या प्रणव की एक संज्ञा। ९ ग्रन्थ की टीका या व्याख्या। १० वरुण वृक्ष। बरना।

†वि० श्वेत।

**सेतुक**—पु०[स०] १. पुल। २ जलाशय का धुस्स। बाँध। ३ वरुण नामक वृक्ष। बरना।

**सेतु-कर**—पु०[स०] सेतु या पुल बनानेवाला।

**सेतु-कर्म (न्)**—पु०[स०]सेतु या पुल बनाने का काम।

**सेतुज**—पु०[स०] दक्षिणापथ के एक स्थान का नाम।

**सेतुपति**—पु०[स०] दक्षिण भारत के पुराने रामनद राज्य के राजाओं की वंश परम्परागत उपाधि।

**सेतु-पथ्य**—पु०[स०] दुर्गम स्थानों में जानेवाली सड़क। ऊँची-नीची पहाड़ी घाटियो मे जानेवाली सड़क। (कौ०)

**सेतुप्रद**—पु०[स०] कृष्ण का एक नाम।

**सेतुबंध**—पु० [स०] १. पुल बनाने या बाँधने की क्रिया। २. नहर। ३. वह पथरीला मार्ग जो रामेश्वरम् से कुछ दूर आगे लंका की ओर समुद्र मे बना हुआ है। प्रवाद है कि इसे नील और उनके साथियो ने श्रीरामचन्द्र जी के लंका पर चढ़ाई करने के समय बनाया था।

**सेतुबंध रामेश्वर**—पु० [सं०] भारत की दक्षिणी सीमा का वह स्थान

जहाँ लंका पर चढ़ाई करने के लिए रामचन्द्र ने पुल बनाया और शिव-लिंग स्थापित किया था।

**सेतुबा**†—पु० =सूस।

†पु०=सेहुँवा (चर्म रोग)।

**सेतुबंध**—पु०[स०] दो देशों के बीच का सीमा-सूचक पर्वत। सरहद का पहाड़।

**सेधिका**—पु० [तेलगु सेहि, सेट्टिया, हि० सेठिया] आँख, गुदा, मूत्रेंद्रिय आदि संबंधी रोगों की चिकित्सा करनेवाला चिकित्सक। (दक्षिण)

**सेव**†—पु०=स्वेद (पसीना)।

**सेदज**†—वि० [स्वेदज] पसीने से उत्पन्न होनेवाला कीड़ा।

**सेदरा**—पु०[फा० सेह=तीन+दर=दरवाजा] वह मकान, जिसके तीन तरफ खुली जमीन हो। तिदरी।

**सेध**—पु०[स०] मनाही। निवारण।

**सेधक**—वि०[स०] हटाने या रोकनेवाला।

**सेधा**—स्त्री०[स०] साही नाम का जन्तु।

**सेन**—पु० [स०] १. तन। शरीर। २. जीवन। ३. प्राचीन भारत में, व्यक्तियों के नाम के अंत में लगनेवाला एक पद। जैसे—शूरसेन। ४. चार प्रकार के दिगम्बर जैन साधुओं में से एक। ५. बंगाल का सिद्ध राजवंश जिसने ११वीं से १५वीं शताब्दी तक राज्य किया था। ६. बंगाल की वैद्य नामक जाति का अल्ल।

वि०१ जिसके सिर पर कोई मालिक हो। सनाथ। २ अधीन। आश्रित।

†वि०=सेना (फौज)।

†पु०=श्येन (बाज पक्षी)।

†स्त्री०=सेंध।

**सेनजित्**—वि०[सं०] सेना को जीतनेवाला।

**सेनप**—पु०[स० सेनापति] सेनापति।

**सेनपति***—पु०=सेनापति।

**सेनांग**—पु०[स०]१ सेना के चार अंगों (हाथी, घोड़े, रथ और पैदल) में से हर एक। २. सैनिकों का छोटा दल या टुकड़ी। सेना का विभाग।

**सेना**—स्त्री०[स०]१ युद्ध के लिए सिखाये हुए और अस्त्र-शस्त्र से सजे हुए सैनिकों या सिपाहियों का बड़ा दल या समूह। फौज। पलटन। (आर्मी) २. किसी विशिष्ट उद्देश्य या कार्य की सिद्धि के लिए संघटित किया हुआ कोई बड़ा दल या समूह। जैसे—बालसेना, मुक्ति सेना, वानर सेना आदि।३. इन्द्र का वज्र। ४ भाला। ५. सांग। ६. इन्द्राणी। ७. वर्तमान अवसर्पिणी के तीसरे अर्हन् शंभव की माता का नाम। (जैन) ८. प्राचीन भारत में स्त्रियों के नाम के साथ लगनेवाला एक पद। जैसे—वसंतसेना।

†स०[स० सेवन]१ सेवा-टहल करना।

**मुहा०—चरण सेना**=(क) पैर दबाना। (ख) तुच्छ चाकरी या सेवा करना।

२. आराधना या उपासना करना। ३. औषध आदि का निर्मित रूप से प्रयोग या व्यवहार करना। ४. पवित्र स्थान पर निरन्तर वास करना। जैसे—काशी या वृन्दावन सेना। ५. यों ही किसी चीज पर बराबर पड़े रहना। जैसे—चारपाई सेना। ६. माता पक्षी का गरमी पहुँचाने के लिए अपने अंडों पर बैठना। ७ कोई चीज व्यर्थ लेकर बैठे रहना। (व्यंग्य)

**सेना-कक्ष**—पु०[सं०] सेना का पार्श्व। फौज का बाजू।

**सेना-कर्म**—पु०[स०]१. सेना का संचालन या व्यवस्था। २. सैनिक सेवा का काम।

**सेनागोप**—पु०[सं०] प्राचीन भारत में, वह व्यक्ति जो सेना रखता था।

**सेनाग्र**—पु०[स०] सेना का अग्रभाग। फौज का अगला हिस्सा।

**सेनाग्रणी**—पु०[स०]१ सेना का अग्रणी या प्रधान नायक। २. संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सेनाचर**—पु०[स०]१. सैनिक। २ शिविर में रहनेवाला सैनिक।

**सेनाजयंती**—स्त्री० [स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सेनाजीवी (विन्)**—पु० [सं०] सेना में रहकर अपनी जीविका चलानेवाला सैनिक। सिपाही। योद्धा।

**सेनादार**—पु०[स सेना+फा० दार] सेना-नायक। फौजदार।

**सेनाधिकारी**—पु० [सं०] फौज का अफसर। सेना का अधिकारी।

**सेनाधिप**—पु० [स०] =सेनापति।

**सेनाधिपति**—पु०[स०]=सेनापति।

**सेनाधीश**—पु०[स०] सेनापति।

**सेनाध्यक्ष**—पु०[स०] फौज का अफसर। सेनापति।

**सेनानायक**—पु० [स०] सेना का अफसर। फौजदार।

**सेनानी**—पु० [स०] १. सेनापति। सिपहसालार। २ कार्तिकेय का एक नाम। ३. एक रुद्र का नाम। ४ जूआ खेलने का एक प्रकार का पासा।

**सेनापति**—पु०[स०]१ सेना का नायक। फौज का अफसर। सिपहसालार। २ कार्तिकेय, जो देवताओं की सेना के प्रधान अधिकारी माने गये हैं। ३. शिव का एक नाम।

**सेनापत्य**—पु०[स०] सेनापति होने की अवस्था, पद या भाव।

**सेनापरिधान**—पु०[स०] सेना के साथ रहनेवाले आवश्यक व्यक्तियों का सारा सामान। लवाजमा। (एकाउन्ट्रमेंट)

**सेनापाल**—पु०[स० सेनापाल] सेनापति।

**सेनाभक्त**—पु०[स०] सेना के लिए रसद और बेगार। (कौ०)

**सेनाभक्ति**—स्त्री०[स०] प्राचीन भारत में, वह कर जो राजा या राज्य की ओर से सेना के भरण-पोषण के लिए लिया जाता था।

**सेनामर्दि**—पु०[स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सेनामोहरी**—स्त्री०[स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सेनामुख**—पु० [स०] १ सेना का अगला भाग। २ सेना का एक विभाग, जिसमें ३ हाथी, ३ रथ, ९ घोड़े और १५ पैदल सवार रहते थे। ३ नगर के मुख्य द्वार के सामने का बाहरी रास्ता।

**सेनायोग**—पु०[सं०] सैन्य-सज्जा। फौज की तैयारी।

**सेनावास**—पु०[सं०] १. वह स्थान जहाँ सेना रहती हो। छावनी। २ खेमा। डेरा। शिविर।

**सेनावाह**—पु०[सं०] सेनानायक।

**सेनाव्यूह**—पु० [स०] युद्धकाल में विभिन्न स्थानों पर की गई सेना के विभिन्न अंगों की स्थापना या नियुक्ति। सैन्य-विन्यास। दे० 'व्यूह'।

**सेनि**†—स्त्री० =श्रेणी।

**सेनिका**—स्त्री०[सं० श्येनिका]१. बाज पक्षी की मादा। मादा बाज पक्षी। २ श्येनिका नामक छन्द।

**सेनी**—स्त्री० [फा० सीनी] १. तश्तरी। रकाबी। २. एक विशेष प्रकार की नक्काशीदार तश्तरी।

स्त्री०[सं० श्येनी]१ बाज पक्षी की मादा। मादा बाज पक्षी।

†स्त्री० [सं० श्रेणी] १. अवली। पंक्ति। २. सीढ़ी। ३. दे० 'श्रेणी'।

पु०[?]विराट् के यहाँ अज्ञातवास करते समय का सहदेव का रखा हुआ कल्पित नाम।

**सेनूर**—पु०=सिंदूर।

**सेनेट**—स्त्री० दे० 'सीनेट'।

**सेनेटर**—पु०=सीनेटर।

**सेफ़**—पु०[अ०] लोहे की मोटी चादर का बना हुआ एक प्रकार का छोटा अल्मारीनुमा बक्स, जिसमें रोकड और बहुमूल्य पदार्थ रखे जाते हैं।

वि० [अं०] सुरक्षित।

†पु०=शेफ।

**सेब**—पु०[फा०] १. नाशपाती की जाति का मझोले आकार का एक पेड़। २. उक्त पेड़ का फल, जो मेवों में गिना जाता है।

†पु०=सेव।

**सेभ्य**—पु०[सं०] शीतलता। ठंढक।

वि० ठंढा। शीतल।

**सेमंतिका**—स्त्री०=सेमंती।

**सेमंती**—स्त्री० [सं०] सफेद गुलाब का फूल।

**सेम**—स्त्री० [सं० शिंबी] एक प्रकार की फली, जिसकी तरकारी खाई जाती है।

**सेमई**—पु० [हिं० सेम] सेम की तरह का हल्का सब्ज रंग।

वि० उक्त प्रकार के रंग का।

†स्त्री०=नेवड़ें।

**सेम का गोंद**—पु० [हिं०] एक प्रकार के कचनार का गोंद, जो इंडिया-जुलाब और स्त्रियों का एका हुआ रज खोलने के लिए उपयोगी माना जाता है।

**सेमर**†—पु० [देश०] दलदली जमीन।

†पु०=सेमल।

**सेमल**—पु० [सं० शाल्मलि] १. एक बहुत बड़ा पेड़, जिसके फल में से एक प्रकार की रुई निकलती है। २. उक्त वृक्ष के फल की रुई, जो रेशम की तरह चिकनी और मुलायम होती है। (सिल्क-कॉटन)

**पद—सेमल का सुआ**=व्यर्थ का काम या परिश्रम करके उसके बुरे परिणाम से दुःखी होने और पछतानेवाला। (सेमल के बीज में चोंच मारनेवाले तोते के दुष्टांत पर) उदा०—करतूँ सुआ होउ सेमर कौ, अतहि कपट न बचिवौ।—सूर।

**सेमल-मूसला**—पु० [सं० शाल्मलि-मूल] सेमल की जड़।

**सेमा**—पु० [हिं० सेम] बड़ी सेम।

**सेमार**†—पु०=सिवार।

**सेमिटिक**—पु० [अ०] दे० 'सामी' (साम देश का)।

**सेर**—पु० [?]१ एक मान या तौल, जो सोलह छटाँक या अस्सी तोले की होती है। मन का चालीसवाँ भाग।

**मुहा०—सेर का सवा सेर मिलना**=किसी अच्छे या जबरदस्त का उससे भी बढ़कर अच्छे या जबरदस्त से मुकाबला या सामना होना।

२. पानों की १०६ ढोलियों का समूह। (तमोली)

पु० (देश०) एक प्रकार का धान, जो अगहन महीने में तैयार हो जाता है और जिसका चावल बहुत दिनों तक रह सकता है।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार की मछली।

वि० [फा०] जिसका पेट या मन भर गया हो। तृप्त।

†पु०=शेर।

**सेरन**—स्त्री० [देश०] पहाड़ी देशों में होनेवाली एक प्रकार की घास।

**सेरवा**†—पु० [स० शट ?] वह कपड़ा, जिससे हवा करके अन्न बरसाते समय भूसा उड़ाया जाता है। झूली।

†पु० [हिं० सिर] चारपाई या बिस्तर का सिरहाना।

पु० [हिं० सेराना=ठंढा करना, शांत करना] दीवाली के प्रातःकाल 'दरिद्दर' (दरिद्रता) भगाने की रस्म, जो सूप बजाकर की जाती है।

**सेरही**—स्त्री०[हिं० सेर]एक प्रकार का कर या लगान, जो किसान को फसल की उपज के अपने हिस्से पर देना पड़ता था।

**सेरा**—पु० [हिं० सेर]चारपाई की वह पाटी,जो सिरहाने की ओर रहती है।

पु० [फा० सेराब] आबपाशी की हुई जमीन। सींची हुई जमीन।

†पु०=सेढ।

**सेराना**†—अ०, स०=सिराना।

**सेराब**—वि० [फा०] [भाव० सेराबी] १. पानी से तर किया या भरा हुआ। सींचा हुआ।

**सेराबी**—स्त्री० [फा०] सेराब करने की क्रिया या भाव।

**सेराह**—पु० [स०] दूध की तरह सफेद रंगवाला घोड़ा।

**सेरी**—स्त्री० [फा०] सेर होने अर्थात् अच्छी तरह तृप्त और संतुष्ट होने की अवस्था, क्रिया या भाव। तृप्ति।

स्त्री० [स० श्रेणी] लंबी पतली सड़क। (राज०)

स्त्री० [हिं० सेर] सेर भर का बटखरा या बाट। (पश्चिम)

**सेरीना**—स्त्री० [हिं० सेर] अनाज या चारे का वह हिस्सा जो असामी जमींदार को देता था।

**सेवक**—पु० [?] १. वैश्य। (सुनार)। २. वेश्याओं की परिभाषा में वह व्यक्ति, जो मुजरा सुनने आया हो।

†पुं०=सेरवा।

**सेरू**†—पु० [स० शेलु] लिसोड़े का पेड़। लभेड़ा।

†पु० [हिं० सिर] चारपाई में सिरहाने और पैताने की ओर की लकड़ियाँ। (पश्चिम)

**सेल**—पु० [स० शल, प्रा० सेल] बरछा। भाला। साँग।

पु० [स० सिलना=एक पौधा जिसके रेशों से रस्से बनते थे] १. एक प्रकार का सन का रस्सा, जो पहाड़ों में पुल बनाने के काम में आता है। २ हल में लगी हुई वह नली,जिसमें से होकर कूड़ में भरे हुए बीज जमीन पर गिरते हैं।

पु० [?] नाव से पानी उलीचने का काठ का बरतन।

स्त्री० [?] १. गले में पहनने की माला। २. एक प्रकार की समुद्री मछली, जिसके ऊपरी जबड़े बहुत तेज धारवाले होते हैं।

पु० [अ० शेल] तोप का वह गोला, जिसमें गोलियाँ आदि भरी रहती है। (फौजी)

पु० [अं०] बिक्री। विक्रय।

पद—सेल टैक्स=बिक्री-कर।

**सेलखड़ी**†—स्त्री०=सिलखड़ी (खड़िया)।

**सेलग**—पु० [स०] लुटेरा। डाकू।

**सेलना**—अ० [प्रा० सेल=जाना] मर जाना। चल बसना।

**सेला**—पु० [स० शल्लक, शल्क=छिलका; मछली का सेहरा] १. रेशमी चादर या दुपट्टा। २. एक प्रकार का रेशमी साफ़ा।

पु० [स० शालि] भुँजिया चावल।

**सेलार**—पु०=सेलिया (घोड़ा)।

**सेलिया**—पु० [स० सैराह] सफ़ेद घोड़ा। सैराह।

**सेली**—स्त्री० [हि० सेल] बरछी।

स्त्री० [हि० सेला] १. छोटा दुपट्टा। २. गाँती। ३ गोरखपंथियों में वे ऊनी धागे, जिनमें गले में पहनने की सींग की सीटी (नाद या शृंगीनाद) बँधी रहती है। ४. ऊन, रेशम या सूत की वह माला जो योगी लोग गले में पहनते या सिर पर लपेटते हैं। ५ गले में पहनने का एक प्रकार का गहना।

स्त्री० [स० शल्क=मछली का सेहरा] एक प्रकार की मछली।

स्त्री० [देश०] दक्षिण भारत में होनेवाला एक प्रकार का पेड़, जिसकी लकड़ी से खंती के औजार बनाये जाते हैं।

**सेलून**—पु० [अ०] १. उत्सवों आदि के लिए सजाया हुआ बड़ा कमरा। २. जहाजों में ऊँचे दरजे के यात्रियों के रहने का कमरा। ३ विशिष्ट प्रतिष्ठित यात्रियों के लिए बना हुआ रेल का बढ़िया डब्बा। ४ आमोद-प्रमोद, क्षौरकर्म, मद्यपान आदि के लिए बना हुआ बढ़िया और सजाया हुआ कमरा।

**सेलो**†—पु० [देश०] खेती की ऐसी जमीन जिस पर वृक्ष आदि की छाया पड़ती हो।

**सेल्हा**—पु०=सेल (भाला)।

**सेल्हा***—पु०=सेल (भाला)।

**सेल्हा**—पु० [सं० शाल] एक प्रकार का अगहनी धान जिसका चावल बहुत दिनों तक रह सकता है।

†पु० [स्त्री० अल्पा० सेल्ही] =सेला (भाला)।

**सेवँ**†—पु०[देश०] एक प्रकार का ऊँचा पेड़ जिसकी लकड़ी कुछ पीलापन या ललाई लिए सफ़ेद रंग की, नरम, चिकनी, चमकीली और मजबूत होती है। कुमार।

**सेवँई** †—स्त्री० = सेवई।

**सेवंत**†—पुं० [सं० सामन्त] एक राग जो हनुमत के अनुसार मेघ राग का पुत्र है।

**सेवँर**†—पुं०=सेमल।

**सेव**—पुं० [सं० सेविका] सूत के रूप में बना हुआ आटे, मैदे आदि का एक पकवान।

पुं० [?] खेत की हलकी या कम गहरी जोताई। 'बवाई' का विपर्याय।

†पुं०=सेब (फल)।

स्त्री० =सेवा।

**सेवई**—स्त्री० [स० सेविका] मैदे के सुखाये हुए बहुत पतले सूत के से लच्छे जो घी में तलकर या दूध में पकाकर खाये जाते हैं।

क्रि० प्र०—पूरना।—बढ़ना।

स्त्री० [स० श्यामक, हि० सावाँ] एक प्रकार की लंबी घास, जिसकी बालें चारे के काम आती हैं। कहीं-कहीं इसके दाने या बीज बाजरे के साथ मिलाकर खाये भी जाते हैं। सेवन।

**सेवक**—वि० [स०] [स्त्री० सेविका] किसी की सेवा या विनम्रता करनेवाला। जैसे—देश-सेवक, समाज-सेवक।

पु० [स्त्री० सेविका, सेवकिन, सेवकी] १ वह जो किसी की सेवा करने के काम पर नियुक्त हो। नौकर। २. वह जो किसी की छोटी-मोटी सेवाएँ या टहल करने के काम पर नियुक्त हो। चाकर। परिचारक। ३ वह जो किसी देवता का विशिष्ट रूप से आराधक, उपासक या पूजक हो। देवता का भक्त। ४. वह जो किसी वस्तु का सेवन अर्थात् उपभोग या व्यवहार करता हो। जैसे—मद्य-सेवक। ५ वह जो धार्मिक दृष्टि से किसी विशिष्ट पवित्र स्थान में नियमित या स्थायी रूप से रहता हो। जैसे—तीर्थ-सेवक। ६. सिलाई का काम करनेवाला व्यक्ति। दरजी। ७ अनाज आदि रखने का बोरा।

**सेवकाई**†—स्त्री० [स० सेवक+हि० आई (प्रत्य०)] १ ब्राह्मणों, साधु-महात्माओं की दृष्टि से, अनेक सेवकों, शिष्यों, यजमानों आदि का वर्ग या समूह। २ सेवा। टहल। उदा०—इहै हमार बड़ी सेवकाई। —तुलसी।

**सेवग***—पु०=सेवक।

**सेवड़ा**—पु० [हि० सेव+डा (प्रत्य०)] मैदे का एक प्रकार का मोटा सेव या पकवान।

पु० [स० श्वेतपट] १. एक प्रकार के देवता। २ एक प्रकार के जैन साधु।

**सेवति**†—स्त्री०=स्वाती (नक्षत्र)।

**सेवती**—स्त्री० [स० सेवंती] सफ़ेद गुलाब।

वि० उक्त गुलाब की तरह सफ़ेद।

पु० सफ़ेद रंग।

**सेव-दाना**—पु० [हि०] सोयाबीन के दाने।

**सेवन**—पु० [स०] [वि० सेवनीय, सेवित, सेव्य, कर्ता सेवी] १. परिचर्या। टहल। सेवा। २. उपासना। आराधना। ३. नियमित रूप से किया जानेवाला प्रयोग या व्यवहार। इस्तेमाल। जैसे—औषध का सेवन। ४. बराबर किसी बड़े के पास या किसी पवित्र स्थान पर रहना। जैसे—काशी-सेवन। ५. उपभोग। जैसे—मद्य-सेवन, स्त्री-सेवन। ६. कपड़े सीने का काम। सिलाई।

†पुं०=सेवई (घास)।

**सेवना**†—स०=सेना।

स० [सं० सेवन] सेवा-टहल करना।

स० दे० 'सेना'।

**सेवनी**—स्त्री० [सं०] १. सूई। सूची। २. सिलाई के टाँके। सीवन।

सीवन। ३ शरीर के अंगों में सीअन की तरह दिखाई पड़नेवाला जोड़। ४ जूही।

†स्त्री०=सेविका।

**सेवनीय**—वि० [स०] १. जिसका सेवन करना आवश्यक या उचित हो। २ पूज्य। ३ जो सीये जाने के योग्य हो।

**सेवरा**†—पु० १ =सेवड़ा। २. =सेहरा। (राज०)

**सेवरी**†—स्त्री०=शबरी।

**सेवल**—पु० [देश०] ब्याह की एक रस्म।

**सेवांजलि**—स्त्री० [स०] कर-सपुट या अजलि में भरी या रखी वस्तु गुरु, देवता आदि को समर्पण करना।

**सेवा**—स्त्री० [सं०] १ बड़े, पूज्य, स्वामी आदि को सुख पहुँचाने के लिए किया जानेवाला काम। परिचर्या। टहल।

**मुहा०—सेवा में**=बड़े के सामने आदरपूर्वक।

२. सेवक या नौकर होने की अवस्था या काम। नौकरी। ३ व्यक्ति, संस्था आदि से कुछ वेतन लेकर उनका कुछ काम करने की क्रिया या भाव। नौकरी। ४. किसी लोकोपयोगी वस्तु, विषय, कार्य आदि मे रुचि होने के कारण उसके हित, वृद्धि उन्नति आदि के लिए किया जानेवाला काम। जैसे—साहित्य-सेवा, देश-सेवा आदि। ५ सार्वजनिक अथवा राजकीय कार्यों का कोई विशेष विभाग जिसके जिम्मे कोई विशेष प्रकार का काम हो। जैसे—वैचारिक-सेवा (जुडिशियल सर्विस)। साधनिक सेवा। (इक्जिक्यूटिव सर्विस)६ इस प्रकार के किसी विभाग में काम करनेवालों का समूह या वर्ग। (सर्विस, उक्त सभी अर्थों के लिए) ७ धार्मिक दृष्टि से देवताओं की मूर्तियों आदि को स्नान कराना, फूल चढाना, भोग लगाना आदि। जैसे—ठाकुरजी की सेवा। ८ किसी के पालन-पोषण, रक्षण, संवर्धन आदि के लिए किये जानेवाले उपयुक्त काम। जैसे—गौ की सेवा, पेड़-पौधो की सेवा। ९. उपभोग। जैसे—स्त्री-सेवा। १० आश्रय। शरण। जैसे—वे बहुत दिनो तक महाराज की सेवा में पड़े रहे।

**सेवा-काकु**—स्त्री० [सं०] सेवा काल में स्वर-परिवर्तन या आवाज बदलना। (अर्थात् कभी जोर से बोलना, कभी मुलायमियत से, कभी क्रोध से और कभी खुश भाव से।)

**सेवा-काल**—पु० [स०] वह अवधि, जिसमें कोई किसी सेवा में नियुक्त रहा हो। (पीरियड आफ़ सर्विस)

**सेवाचन**—पु० [स०] सेवा करनेवाले व्यक्ति।

**सेवा-टहल**—स्त्री० [स० सेवा+हिं० टहल] बड़ों, रोगियों आदि की परिचर्या। खिदमत। सेवा-शुश्रूषा।

**सेवाती**—स्त्री०=स्वाती (नक्षत्र)।

**सेवादार**—पु० [स०+फा०] [भाव० सेवादारी] १ वह सिक्ख जो किसी सिक्ख गुरु की सेवा में रहकर परम निष्ठा और श्रद्धा-भक्तिपूर्वक उसकी सेवा करता था। २. आज-कल वह सिक्ख, जो किसी गुरुद्वारे में रहकर गुरुग्रन्थ साहब की पूजा आदि के काम पर नियुक्त रहता है। ३ द्वारपाल।

**सेवादास**—पु० [स०] [स्त्री० सेवा-दासी] छोटी-छोटी सेवाएँ करनेवाला नौकर। टहलुआ।

**सेवाधर्म**—पु० [सं०] सेवक का धर्म।

**सेवाधारी**—पु०=सेवादार।

**सेवा-पंजी**—स्त्री० [स०] वह पंजी या पुस्तिका जिसमें सेवकों विशेषत: राजकीय सेवको के सेवा-काल की कुछ मुख्य बातें लिखी जाती हैं। (सर्विस-बुक)

**सेवा-पद्धति**—स्त्री० [स०] वैष्णव सप्रदायों मे देवताओं आदि की सेवा-पूजा की कोई विशिष्ट प्रणाली।

**सेवापन**—पु० [स० सेवा+हिं० पन (प्रत्य०)] सेवा करने की क्रिया, ढंग या भाव।

**सेवा-बंदगी**—स्त्री० [स० सेवा+फा० बदगी] १ साहब-सलामत। २ आराधना। पूजा।

**सेवा-भाव**—पु० [स०] सेवा विशेषत उपकार करने की भावना। जैसे—वे साहित्य-साधना सेवा-भाव से ही करते है।

**सेवाय**†—अव्य०=सिवा (अतिरिक्त)।

**सेवायत**†—पु०[हिं० सेवा] वह जो किसी देव-मूर्ति की सेवा आदि के काम पर नियुक्त हो।

**सेवार**—स्त्री० [स० शैवाल] १ नदियों, नालों आदि मे होनेवाली लबे, कडे तना तेज किनारोवाली घास। २ मिट्टी की तहें जो किसी नदी के आस-पास जमी हों।

†पु० पान। (सुनार)

**सेवारा**†—पु०=सेवड़ा (पकवान)।

**सेवाल**†—स्त्री०=सेवार।

**सेवावद**—पु० [स०] खुशामद। चापलूसी।

**सेवावादी**—पु० [स०] खुशामदी। चापलूस।

**सेवा वृत्ति**—स्त्री० [स०] सेवा या नौकरी करके जीविका उपार्जन करना या जीवन बिताना।

**सेविंग बैंक**—पु० [अ०] आधुनिक अर्थ-व्यवस्था में वह सस्था, जिसमें लोग अपनी बचत के रूप मे जमा करते हैं और उस पर ब्याज भी प्राप्त करते हैं।

**सेविं**—पु० [स०] १ बदर फल। बेर। २. सेव नामक फल।
वि० १.=सेवी। २ –सेव्य। ३ =सेवित।

**सेविका**—स्त्री० [सं०] १ सेवा करनेवाली स्त्री। दासी। परिचारिका। नौकरानी। २ सेवर्ई नामक व्यजन।

**सेवित**—भू० कृ० [स०] १. जिसकी सेवा या टहल की गई हो। उपचरित। २ जिसकी आराधना, उपासना या पूजा की गई हो। ३ जिसका सेवन अर्थात् उपयोग या व्यवहार किया गया हो। ४ आश्रित। ५ उपभुक्त।
पुं० १ बेर। २. सेव। (फल)

**सेवितव्य**—वि० [स०]=सेव्य।

**सेविता**—स्त्री० [सं०] १. सेवक का कर्म। सेवा। दास-वृत्ति। २. आराधना। उपासना। ३. आश्रय।
पु० [सं० सेवितृ] सेवक।

**सेवी (विन्)**—वि० [स०] १. सेवा करनेवाला। २. आराधना या पूजा करनेवाला। ३ किसी वस्तु या स्थान का सेवन करनेवाला।

**सेवोपहार**—पु० दे० 'आनुतोषिक'।

**सेव्य**—वि० [स०] [स्त्री० सेव्या] १. जिसकी सेवा करना आवश्यक,

उचित या उपयुक्त हो। २. जिसकी आराधना, उपासना या पूजा करना आवश्यक, उचित या उपयुक्त हो। ३. जिसका सेवन अर्थात् उपभोग या व्यवहार करना आवश्यक, उचित या उपयुक्त हो। ४ जिसकी रक्षा करना आवश्यक या उचित हो। ५. जिसका उपभोग या भोग करना आवश्यक या उचित हो।

पु० १. स्वामी। मालिक। २. उशीर। खस। ३ अश्वत्थ। पीपल। ४ हिज्जल नामक वृक्ष। ५. लमज्जक नामक घास, या तृण। ६ गौरैया पक्षी। चिड़ा। ७. सुगंधवाला। ८ लाल चंदन। ९ समुद्री नमक। १०. जल। पानी। ११. दही। १२. पुरानी चाल की एक प्रकार की शराब।

**सेव्य-सेवक भाव**—पु० [सं०] उस प्रकार का भाव, जिस प्रकार का वस्तुत. सेव्य और सेवक के बीच में रहता हो या रहना चाहिए। स्वामी और सेवक अथवा उपास्य और उपासक के बीच का पारमार्थिक भाव।

**सेव्या**—स्त्री० [सं०] १. वदा या बाँदा नामक वनस्पति जो दूसरे पेड़ो पर रहकर पनपती है। २ आँवला। ३ एक प्रकार का जंगली धान।

**सेशन कोर्ट**—पु० [अं०] दे०—सत्र-न्यायालय।

**सेश्वर**—वि० [सं०] १. ईश्वरयुक्त। २. जिसमें ईश्वर का अंश या सत्ता मानी गई हो।

**सेष**†—पु० १ =शेष। २ =शेख।

**सेषुक**—वि० [सं०] तीर या बाण से युक्त।

**सेस**†—वि०, पु० =शेष।

**सेस-रंग***—पु० [सं० शेष+रङ्ग] सफेद रंग। (शेष नाग का रंग सफेद माना गया है।)

**सेसर**—पु० [फा० सेह=तीन+सर=बाजी] १. ताश का एक प्रकार का खेल जिसमें तीन-तीन ताश हर एक आदमी को बाँटे जाते है और उसकी तिड़ियों के जोड़ पर हार-जीत होती है। २. जालसाजी। ३. धोखेबाजी।

**सेसरिया**—वि० [हिं० सेसर+इया (प्रत्य०)] छल-कपट करके दूसरो का माल मारनेवाला। जालिया।

**सेसी**—पु० [देश०] एक प्रकार का बहुत ऊँचा पेड़ जिसकी लकड़ी के सामान बनते हैं। पगुर।

**सेह**—वि० [फा०] दो और एक तीन। यौ० के आरम्भ मे। जैसे—सेह-त्यानी। सेह-हजारी।।

†पु०=सेहा।

**सेहखान**†—पु० [फा० सेह=तीन+खाना=घर] ऐसा घर जिसमें तीन खंड हो। तिमंजिला मकान।

**सेहत**—स्त्री० [अ०] [वि० सेहती] १. सुख। चैन। राहत। २. तन्दुरुस्ती। स्वास्थ्य। ३. रोग से रहित होने की अवस्था। आरोग्य।

क्रि० प्र०—पाना।—मिलना।

**सेहत-खाना**—पु० [अ० सेहत+फा० खाना] पेशाब आदि करने और नहाने-धोने के लिए जहाज पर या मकान में बनी हुई एक छोटी-सी कोठरी।

**सेहती**—वि० [अ० सेहत] १. सेहत अर्थात् स्वास्थ्य संबंधी। २. स्वस्थ।

**सेहथना**†—स० [सं० सह+हरत=सहस्थ+ना (प्रत्य०)] १. हाथ से लीप कर साफ करना। सैंतना। २ झाड़ देना। बुहारना।

**सेहर**—पु० [अ० सेह्र] जादू-मंतर। टोना-टोटका।

†पु०=सेहरा।



**सेहरा**—पु० [हिं० सिर+हार] १ विवाह के समय वर को पहनने के लिए फूलों या सुनहले-रुपहले तारों आदि की बड़ी मालाओं की पंक्ति या पुंज। २. विवाह का मुकुट। मौर।

क्रि० प्र०—बँधना।—बाँधना।

**पद—सेहरा बँधाई**=वह धन या नेग जो दूल्हे को सेहरा बाँधने पर दिया जाता है। **सेहरे-वाले की बीवी**=वह स्त्री जिसके साथ रीतिपूर्वक सेहरा बाँधकर और धूम-धाम से बरात निकालकर विवाह किया गया हो। (उपपत्नी या रखेली से भिन्न)

**मुहा०—(किसी काम या बात का) किसी के सिर सेहरा बँधना**=किसी कार्य के सफलतापूर्ण सम्पादन का श्रेय प्राप्त होना। किसी काम या बात का यश मिलना।

३. विवाह के समय वर-पक्ष से गाये जानेवाले मांगलिक गीत या पढ़े जानेवाले पद्य। ४. मछली के शरीर पर के सीपी की तरह चमकीले छिलके जो छोटे-छोटे टुकड़ो के रूप में निकलते है। (फिश-स्केल) ५. चित्रकला मे, सजावट के लिए उक्त आकार-प्रकार का अंकन।

**सेहराबंदी**—स्त्री० [हिं० सेहरा+फा० बन्दी] विवाह के अवसर पर बरात निकलने से पहले वर को सेहरा बाँधने का धार्मिक और सामाजिक कृत्य।

**सेहरी**—स्त्री० [सं० शफरी] छोटी मछली। राहरी।

**सेहवन**—पु०=सेहुआँ (रोग)।

**सेह-हजारी**—पु० [फा०] एक उच्च पद जो मुसलमान बादशाहो के समय में सरदारो और दरबारियो को मिलता था। (ऐसे लोग या तो तीन हजार सवार या सैनिक रख सकते थे अथवा तीन हजार सैनिकों के नायक होते थे।)

**सेहा**—पु० [हिं० सेंध] कूआँ खोदनेवाला मजदूर।

**सेहिखान**—पु० [हिं० सेहियना] खलियान साफ करने का कूँचा।

**सेही**—स्त्री० [सं० सेधा, सेधी] =साही (जन्तु)।

**सेहुँड़**†—पु० [सं० सेहुण्ड] थूहर का पेड़।

**सेहुँआँ**—पु० [?] एक प्रकार का चर्म रोग, जिसमें शरीर पर भूरी-भूरी महीन चित्तियाँ-सी पड़ जाती हैं।

**सेहुआन**—पु० [देश०] एक प्रकार का करम-कल्ला, जिसके बीजों से तेल निकलता है।

**सेंगर**—पु०=सेंगर।

**सैंगर**—पु० [सं० स्वामी+नर=सार्ङ्ग-नर] पति। (डिं०)

**सैंतना**†—स० [सं० सञ्चय] १. संचित करना। इकट्ठा करना। उदा०—कंचन मनि तजि काँचहि सैंतत, या माया के लोन्हें।—सूर। २ हाथों से समेटना। ३. सँभाल और सहेज कर लेना। ४. सँभाल कर ठीक जगह पर रखना। उदा०—(क) सैंतति महरि खिलौना हरि के।—सूर। (ख) मानों संध्या के प्रकाश को जगल और पहाड़ सैंत रखने की होड़-सी लगा रहे हों।—बृन्दावनलाल वर्मा। ५ रसोई-घर में चौका लगाना और बरतन साफ करके ठीक जगह पर रखना। ६. आघात करना। ७ मार डालना। (बाजारू)

**सैंतालीस**—वि० [सं० सप्तचत्वारिंशत्, पा० सत्ततालीसति, प्रा० सत्तालीस] जो गिनती में चालीस से सात अधिक हो। चालीस और सात। पु० उक्त की संख्या, जो अंको में इस प्रकार लिखी जाती है—४७।

**सैंतालीसवाँ**—वि० [हिं० सैंतालीस+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम या गिनती में सैंतालीस के स्थान पर आता या पड़ता हो।

**सैंतीस**—वि० [स० सप्तत्रिंशत्, पा० सत्ततिंसति, प्रा० सत्तिंसइ] जो गिनती में तीस से सात अधिक हो। तीस और सात।
पु० उक्त की सूचक संख्या, जो अंकों में इस प्रकार लिखी जाती है—३७।

**सैंतीसवाँ**—वि० [हिं० सैंतीस+वाँ (प्रत्य०)] जो क्रम या गिनती में सैंतीस के स्थान पर आता या पड़ता हो।

**सैंधी**†—स्त्री० [स० शक्ति] छोटा भाला। बरछी।

**सैंदूर**—वि० [स०] १ सिंदूर से रँगा हुआ। २ सिंदूर के रंग का।

**सैंधव**—वि० [सं०] १. सिंध देश संबंधी। सिंध का। २ सिंध देश मे होने या पाया जानेवाला। ३. सिंधु अर्थात् समुद्र संबंधी। समुद्र का। ४. समुद्र में उत्पन्न होने या पाया जानेवाला।
पुं० १. सिंध देश का निवासी। २. सिंध देश का घोड़ा। ३ सेंधा नमक। ४ राजा जयद्रथ का एक नाम।

**सैंधवक**—वि० [सं०] सैंधव संबंधी।

**सैंधवपति**—पु० [सं० सैंधव+पति] जयद्रथ का एक नाम।

**सैंधवायन**—पुं० [स०] १. एक प्राचीन ऋषि। २. उक्त ऋषि के वंशज।

**सैंधवी**—स्त्री० [स०] सम्पूर्ण जाति की एक रागिनी, जो भैरव राग की पुत्र-वधू मानी गई है।

**सैंधी**—स्त्री० [स०] १. खजूर या ताड का रस। २ उक्त को सडाकर बनाई जानेवाली शराब।

**सैंधु**—स्त्री० =सैंधवी।

**सैंबल**†—पुं०=सेमल।

**सैंयाँ**†—पुं०=सैयाँ।

**सैंवर**†—पु०=साँभर।

**सैंह**—वि० [स०] १. सिंह संबंधी। सिंह का। २ सिंह की तरह।
†क्रि० वि०=गौह (सामने)।

**सैंहथी**†—स्त्री०=सेंथी (बरछी)।

**सैंहल**—वि० [स०] [स्त्री० सैंहली] सिंहली। (दे०)

**सैंहली**—स्त्री० [सं०] सिंहली पीपल।

**सैंहिक**—पुं० [सं०] सिंहिका से उत्पन्न, राहु।
वि०=सैंह।

**सैंहिकेय**—पु० [स०] (सिंहिका के पुत्र) राहु।

**सैंहुड़**†—पु०=सेहुँड।

**सैहूँ**—पु० [हिं० गेहूँ का अनु०] गेहूँ के वे दाने जो छोटे, काले और बेकार होते हैं।

**सै**—स्त्री० [स० सत्त्व] १. तत्त्व। सार। २. बल-वीर्य। ओज। शक्ति। ३ प्राप्ति। लाभ। ४. वृद्धि। बढ़ती।
वि० [सं० शत] सौ।

**सैकंट**—पु० [सं० शतकण्टक] बबूल की जाति का एक पेड़ जिसकी छाल सफेद होती है। धौला खैर। कुमतिया।

**सैकड़ा**—पु० [सं० शतकाण्ड, प्रा० सयकंड] सौ का समूह या समष्टि। जैसे—चार सैकड़े आम।

**सैकड़े**—अव्य० [हिं० सैकड़ा] प्रति सौ के हिसाब से। प्रतिशत। फी सदी। जैसे—ब्याज की दर २) सैकड़े है।
वि० सैकड़े के रूप में होनेवाला। जैसे—दो सैकड़े आम खरीदे जायँगे।

**सैकड़ों**—वि० [हिं० सैकड़ा] १. कई सौ। २. बहुत अधिक।

**सैकत**—वि० [सं०] [स्त्री० सैकती] १. सिकता या रेत से संबंध रखनेवाला। २. रेतीला। बलुआ। बालुकामय। ३. बालू से बना हुआ।
पुं० १ नदी आदि का रेतीला तट। रेती। २. रेतीली जमीन या मिट्टी।

**सैकतिक**—पु० [सं०] १. साधु। संन्यासी। क्षपणक। २. कलाई, गले आदि में बाँधा जानेवाला गंडा। मंगलसूत्र।
वि० १ सिकता या रेत से संबंध रखनेवाला। २. मरीचिका या सन्देह मे पड़ा रहनेवाला।

**सैकती (तिन्)**—वि० [सं०] सिकता-युक्त। रेतीला। बलुआ। (तट या भूमि)

**सैकल**—पु० [अ०] धातु के बरतन। हथियार आदि साफ करने और उन्हे चमकाने का काम।

**सैकलगर**—पु० [अ० सैकल+फा० गर] बरतनों, हथियारों आदि पर सैकल करनेवाला कारीगर। सिकलीगर।

**सैका**—पु० [स० शेक (पात्र)] [स्त्री० अल्पा० सैकी] १. घड़े की तरह का मिट्टी का एक बरतन जिसमे कोल्हू से गन्ने का रस निकालकर पकाने के लिये कड़ाहे मे डालते हैं। २. मिट्टी का वह छोटा बरतन जिसमे रेशम रँगने का रंग ढाला जाता है। ३. रबी की कटी हुई फसल का ढेर या राशि।
पु० [सं० शत, हिं० सै] धान, ढठलों आदि के सौ पूलों का समूह।

**सैक्य**—वि० [सं०] १ ऐक्य, अर्थात् एकता से युक्त। २ सिंजाई से सम्बन्ध रखनेवाला।
पु० एक प्रकार का बढ़िया पीतल।

**सैक्षव**—वि० [स०] ईख के रस आदि से युक्त, अर्थात् मीठा।

**सैक्सन**—पु० [अं०] योरप की एक प्राचीन जाति जो पहले जर्मनी के उत्तरी भाग में रहती थी; पर पाँचवीं और छठी शताब्दी मे जो इंगलैंड पर धावा करके वहाँ जा बसी थी।

**सैक्षाल**†—पुं०=सचान (बाज)।

**सैजन**†—पु०=सहिजन।

**सैड़**†—पु० [देश०] गेहूँ की कटी हुई फसल, जो दाँई गई हो, पर ओसाई न गई हो।

**सैन***—पु० [सं० स्वजन] मित्र। (डिं०)
†पुं०=सैन (संकेत)।
*स्त्री०=सेना।

**सैतव**—वि० [स०] सेतु संबंधी। सेतु का।

**सैंथी**—स्त्री० [सं०]=सैंथी (बरछी)।

**सैद**—पुं० [अ०] १. वह जानवर जिसका शिकार किया जाता हो या जो जाल में फँसाया जाता हो। २ किसी के जाल या फन्दे मे फँसे हुए होने की अवस्था या भाव।
†पुं०=सैयद।

**सैंदपुरी**—स्त्री० [सैंदपुर स्थान] एक प्रकार की नाव, जिसके आगे और पीछे दोनो ओर के सिरके लंबे होते है।

**सैद्धांतिक**—वि० [स०] १. सिद्धान्त के रूप में होनेवाला। २. सिद्धांत सबंधी।
पु० १. सिद्धांतों के अनुसार चलनेवाला व्यक्ति। सिद्धांतों का पालन करनेवाला। २. तांत्रिक।

**सैध्रक**—वि० [सं०] सिध्रक (वृक्ष) की लकड़ी का बना हुआ।

**सैन**—स्त्री०[सं० संज्ञपन] १. संकेत विशेषतः शरीर के किसी अंग से किया जानेवाला संकेत। २. चिह्न। निशान। ३. लक्षण।
पु० [सं० श्येन] १. बाज पक्षी। २. एक प्रकार का बगला।
†पु० -शयन।
†स्त्री०=सेना।

**सैनक**—पु० [फा० सनी, सहनक] रिकाबी। तश्तरी।
†पु० =सैनिक।
†स्त्री०=सहनक।

**सैनप**—पु० सेनापति।

**सैनपति**†—पु० -सेनापति।

**सैन-भोग** †—पु० -शयन-भोग (देवताओं का)।

**सैना**—स्त्री० सेना।
†स० सेना।

**सैनानीक**—वि० [स०] सेना के अग्र भाग का।

**सैनान्य**—पु० [स०] सेनानी या सेनापति का कार्य या पद। सैनापत्य। सेनापतित्व।

**सैनापति**†—पु० -सेनापति।

**सैनापत्य**—पु० [स०] सेनापति का कार्य या पद। सेनापतित्व।
वि० सेनापति सम्बन्धी।

**सैनिक**—वि० [स०] १ सेना संबंधी। सेना का। (मिलिटरी) जैसे—सैनिक न्यायालय, सैनिक आयोजन। २. जो सेना के लिए उपयुक्त हो, उसके ढंग पर चलता हो या उसके प्रति अनुरक्त हो। (मार्शल)
पु० १. सेना या फौज में रहकर युद्ध करनेवाला सिपाही। फौजी आदमी। २. वह जो किसी प्राणी का वध करने के लिए नियुक्त किया गया हो। ३. पहरेदार। सन्तरी।

**सैनिकता**—स्त्री० [स०] १ सैनिक या योद्धा होने की अवस्था या भाव। २. सैनिक सामग्री से युक्त और युद्ध करने की शक्ति का भाव या दशा। ३. यह विश्वास या सिद्धान्त कि सैनिक बल की सहायता से सब काम निकाले जा सकते हैं। (मिलिटरिज्म) ४. युद्ध। लड़ाई।

**सैनिक-न्यायालय**—पु० सैनिक विभाग का वह विशिष्ट न्यायालय, जो साधारणत सेना-विभाग में होनेवाले अपराधों का विचार और न्याय करता है। (कोर्ट मार्शल)

**सैनिक सहचारी**—पु० राजदूत के साथ रहनेवाला वह सैनिक अधिकारी जो सामरिक दृष्टि से उसका सलाहकार और सहायक हो। (मिलिटरी एटैची)

**सैनिका**—स्त्री० [सं० श्येनिका] एक प्रकार का छन्द।

**सैनिकीकरण**—पुं० दे० 'सैन्यीकरण'।

**सैनिटोरियम**—पुं० दे० 'आरोग्य-निवास'।

**सैनी**—पुं० [सेनागण नाई] नाई। हज्जाम।
†स्त्री०=सेना (फौज)।

**सैनूं**—पु० [हिं०नैनूँ का अनु०] नैनूँ की तरह का एक प्रकार का बूटीदार कपड़ा।

**सैनेय***—वि०=सैन्य।

**सैनेश, सैनेस**—पु० [सं० सैन्य+ईश=सैन्येश] सेनापति।

**सैन्य**—वि० [सं०] सेना का।
पुं० १. सैनिक। २. सेना। ३. पहरेदार। सन्तरी। ४. छावनी। शिविर।

**सैन्य-क्षोभ**—पु० [स० ष० त०] १. सैनिकों में होने या फैलनेवाला क्षोभ। २ सैनिक विद्रोह। गदर।

**सैन्य नायक**—पु० [स० ष० त०] सेनापति।

**सैन्य-पति**—पु० [स० ष० त०] सेनापति।

**सैन्य-पाल**—पु० [सं०] सेनापति।

**सैन्यवाद**—पु० [स०] यह वाद या सिद्धांत कि राज्य के नागर तथा राजनीतिक आदर्श सैनिक आदर्शों के अनुसार स्थिर होने चाहिए और राज्य को सदा सैनिक दृष्टि से पूर्ण सबल तथा समर्थ रहना चाहिए। (मिलिटरिज्म)

**सैन्यवादी**—वि० [स०] सैन्यवाद सबंधी। जैसे—सैन्यवादी नीति।
पु० वह जो सैन्यवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (मिलिटरिस्ट)

**सैन्य-वास**—पु० [स०] सेना का पड़ाव। छावनी। शिविर।

**सैन्य-वियोजन**—पु० दे० 'विसैन्यीकरण'।

**सैन्य-सज्जा**—स्त्री० [स० ष० त०] युद्ध के लिए होनेवाली सैनिक तैयारी। लाम-बंदी। युद्ध के लिए हथियारों से लैस होना।

**सैन्याधिपति**—पु० [सं०] सेनापति।

**सैन्याध्यक्ष**—पु० [सं०] सेनापति।

**सैन्यीकरण**—पु० [स० सैनिक+करण] लोगों को सैनिक बनाने और सैनिक सामग्री से सज्जित करने का काम। (मिलिटराइजेशन)

**सैफ**—स्त्री० [अ० सैफ़] तलवार।

**सैफ़ग**†—पु० [स० शतफल ?] लाल देवदार।

**सैफ़ा**—पु० [अ० सैफ़] जिल्दसाजों का एक औजार, जिससे वे किताबों का हाशिया काटते हैं।

**सैफ़ी**—वि० [अ० सैफ़=तलवार] १. तलवार की तरह टेढ़ा। बंक। २. आड़ा। तिरछा।

**सैमंतिक**—पु० [सं०] सीमंत अर्थात् माँग सम्बन्धी।
पु० सिंदूर।

**सैम**—पुं० [देश०] चीकरों के एक देवता या भूत।

**सैयद**—पु० [अ०] [स्त्री० सैयदा, सैयदानी, सैदानी] १. मुहम्मद साहब के नाती हुसैन के वंश का आदमी। २ मुसलमानों के चार वर्गों या जातियों में से दूसरी जाति।

**सैयाँ**—पु० [स० स्वामी, हिं० साईं] १. स्त्री का पति। स्वामी। २. प्रियतम।

**सैया**†—स्त्री०=शय्या।

**सैयाद**—पु० [अ०] १. वह जो पशु-पक्षियों को जाल में फँसाता हो। चिड़ीमार। बहेलिया। २. व्याध। शिकारी। ३. मछुआ।

**सैयार**—वि० [अ०] [भाव० सैयारी] सैर या भ्रमण करनेवाला।

**सैयारा**—पु० [अ० सैयार.] आकाश में परिक्रमा करनेवाला तारा, नक्षत्र या ग्रह।

**सैयाह**—पु० [अ०] [भाव० सैयाही] सियाहत अर्थात् पर्यटन करनेवाला। पर्यटक।

**सैरंध्र**—पु० [सं०] [स्त्री० सैरंध्री] १.घर-गृहस्थी में काम करनेवाला नौकर। २. एक संकर जाति जो स्मृतियो में दस्यु (पुरुष) और अयोगवी (स्त्री) से उत्पन्न कही गई है।

**सैरंध्रिका**—स्त्री० [सं०] परिचारिका। दासी।

**सैरंध्री**—स्त्री० [सं०] १. सैरंध्र जाति की स्त्री। २. अंतःपुर की दासी।

**सैरिभ्र**—पु० [सं०] १ पुराणानुसार एक प्राचीन जन-पद। २ दे० 'सैरंध्र'।

**सैरिभ्री**—स्त्री०=सैरंध्री।

**सैर**—स्त्री० [फा०] १ मन बहलाने के लिए और साफ जगह में घूमना-फिरना। मनोरंजन या वायु-सेवन के लिए भ्रमण। परिमार्गन। (एक्सकर्सन) २. मित्र-मंडली का शहर या बस्ती के बाहर केवल मौज लेने के लिए होनेवाला खान-पान आदि। गोष्ठी। ३. बहार। मौज। आनंद। ४ कौतुकपूर्ण और मनोरंजक दृश्य। ५. असाढ़-सावन में गाये जानेवाले एक प्रकार के लोक-गीत। (बुंदेल०) ६. रासलीला की तरह का एक प्रकार का अभिनय। (बुंदेल०)

**सैर-गाह**—पु० [फा०] सैर करने की अच्छी और खुली जगह।

**सैर-सपाटा**—पु० [फा० सैर+ हिं० सपाटा] सैर करने के लिए इधर-उधर घूमना-फिरना।

**सैरा**—पुं० [फा० सैर] १ हाथ से अंकित चित्रों में भूमिका के रूप में वह प्राकृतिक दृश्य, जिसके आगे व्यक्तियों या घटनाओं का चित्र अंकित होता है। २ अगहन में गाया जानेवाला एक प्रकार का लोक-गीत। (बुंदेल०)

**सैरि**—पु० [सं०] १ कार्तिक महीना। २ पुराणानुसार एक प्राचीन जनपद।

**सैरिक**—पु० [सं०] १ हलवाहा। हलधर। किसान। कृषक। २. हल में जोता जानेवाला बैल। ३ आकाश।
वि० सीर अर्थात् हल से संबंध रखनेवाला।

**सैरिभ्र**—पु० [सं०] १ आकाश। २. इंद्र की पुरी या लोक। ३ भैंसा नामक पशु।

**सैरिभ्री**—स्त्री० [सं०] भैंस। महिषी।

**सैरीय**—पु० [सं०] कटसरैया। झिंटी।

**सैर**—स्त्री० [फा० सैर] १. मनोविनोद के लिए किया जानेवाला पर्यटन। सैर।
स्त्री० [अ०] १. पानी का बहाव। २ बाढ़। सैलाब।
†पु० १. शैल। २. सेला।

**सैल-कुमारी**—स्त्री०=शैलकुमारी (पार्वती)।

**सैलजा**†—स्त्री० =शैलजा (पार्वती)।

**सैलवेशल आर्मी**—स्त्री० [अं०] =मुक्ति सेना। (दे०)

**सैल-सुता***—स्त्री० =शैल-सुता (पार्वती)।

**सैला**—पुं० [सं० शल्य] [स्त्री० अल्पा० सैली] १. लकड़ी की वह गुल्ली या पच्चड़ जो किसी छेद या संधि में ठोंकी जाय। किसी छेद में डालने या फँसाने का टुकड़ा। मेख। २. लकड़ी की बड़ी मेख। खूँटा। ३. नाव की पतवार की मूठिया। ४. लकड़ी की वह खूँटी जो बैलगाड़ी में कँधावर के पास दोनों ओर लगी होती है और जिसके कारण बैल अपनी गरदन इधर-उधर नहीं कर सकता। ५ यह मुँगरी जिससे कटी हुई फसल के डंठल दाना झाड़ने के लिए पीटते हैं। ६ जलाने की लकड़ी का छोटा टुकड़ा। चैला।
†पु० [फा० सैर] मध्य प्रदेश के गोंड़ों और भीलों का एक प्रकार का नृत्य।

**सैलात्मजा***—स्त्री० [सं० शैलात्मजा] पार्वती।

**सैलानी**—वि० [हिं० सैल (=सैर)+आनी (प्रत्य०)] १ जो बहुत अधिक सैर करता हो। २. इधर-उधर घूमता-फिरता रहनेवाला।

**सैलाब**—पु० [फा०] नदियों आदि की बाढ़।

**सैलाबा**—पु० [फा० सैलाब] वह फसल जो पानी में डूब गई हो।

**सैलाबी**—वि० [फा०] १ सैलाब संबंधी। सैलाब या बाढ़ का। जैसे—सैलाबी पानी। २ (जमीन) जिसकी सिंचाई सैलाब या बाढ़ के पानी से होती हो।
†स्त्री०=सीड (सील)।

**सैली**—स्त्री० [हिं० सैला] १ ढाक की जड़ के रेशों की बनी रस्सी। २ एक प्रकार की टोकरी।
वि०=सैलानी।

**सैलूक***—पु० [स्त्री० सैलूकी]=शैलूष (अभिनेता)।

**सैलून**—पुं० सेलून।

**सैव**†—वि०, पु० =शैव।

**सैवल***—पु०=शैवल (पौधा)।

**सैवलिनी***—स्त्री०=शैवलिनी (नदी)।

**सैवाल***—स्त्री० [सं० शैवाल] १ सेवार। २. जाल।

**सैविक**—वि० [सं०] सेवा-संबंधी। सेवा का।

**सैव्य**†—पु०=शैव्य (घोड़ा)।

**सैसक**—वि० [सं०] १ सीसे से संबंध रखनेवाला। २. सीसे का बना हुआ।

**सैसव***—पुं० [भाव० सैसवता] शैशव।

**सैहथी**—स्त्री० [सं० शक्ति] सैथी (बरछी)।

**सैहा**†—पु० [सं० सेक=सिंचाई+हिं० हा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० सैंही] पानी, रस आदि डालने का मिट्टी का बरतन।

**सों**†—प्रत्य० [प्रा० सुन्तो] करण और अपादान कारक का चिह्न। द्वारा। से।
†क्रि० वि०१. संग। साथ। २. समक्ष। सामने।
†सर्व०=सो (वह)।
†स्त्री०=सौंह (सौगंद)।
†वि०=सा (सदृश)।

**सोंइंडा**†—पु०=चिमटा।

**सोंच**†—पु०=सोच।

**सोंचर नमक**—पु० [सं० सौवर्चल† पा० नमक]=काला नमक।

**सोंच**†—स्त्री०=सौंज।

**सोंसिया**†—पु०=सन्सिया (साक़ीदार)।

**सोंट**†—पुं०=सोटा।

**सोंटना**†—स०[?] सुधारना।

**सोंटा**—पुं०[स० शुण्ड या हिं० सटना] [स्त्री० अल्पा० सोंटी] १ मोटी-लंबी सीधी लकड़ी या बाँस जो हाथ मे लेकर चलते है। मोटी छड़ी। डडा। लट्ठ।

**मुहा०—सोंटा चलाना या जमाना**=सोंटे से प्रहार करना।

२. भाँग घोटने का मोटा डंडा। भग-घोटना। ३. लोबिये का पौधा। ४ ऐसा लट्ठा जिससे मस्तूल बनाया जा सके। (लश०)

**सोंट-बरदार**—पु०[हिं० सोंटा+फा० बरदार] सोटा या आसा लेकर किसी राजा या अमीर की सवारी के साथ चलनेवाला। आसाबरदार। बल्लमबदार।

**सोंठ**—स्त्री०[स० शुण्ठी] सुखाया हुआ अदरक। शुण्ठी।

वि०१. जो जान-बूझकर बिलकुल चुप हो गया हो। २ बहुत बडा कंजूस।

पु० बर्र्षी। मौन।

**मुहा०—सोंठ मारना**=बिलकुल चुप हो जाना। सन्नाटा खींचना।

**सोंठ-मिट्टी**—स्त्री०[सोंठ?+हिं० मिट्टी] एक प्रकार की पीली मिट्टी जो ताल्रे या धान के खेतों मे पाई जाती है। यह कांविस बनाने के काम आती है।

**सोंठूराय**—पु०[हिं० सोंठ+राय=राजा] बहुत बड़ा कंजूस। (व्यग्य)

**सोंठौरा**†—पु० [हिं० सोंठ+औरा (प्रत्य०)]एक प्रकार का सूजी का लड्डू जिसमे मेवो के सिवा सोंठ भी पडती है। यह प्राय. प्रसूता स्त्रियो को खिलाया जाता है।

**सोंध**†—अव्य० सौंह।

**सोंधा**—वि०[स० सुगंध] [स्त्री० सोंधी] १. सुगंध युक्त। सुगंधित। खशबूदार। २ मिट्टी के नये बरतन या सूखी जमीन पर पानी पड़ने या चना, बेसन आदि भुनने से निकलनेवाली सुगंध से युक्त अथवा उसके समान। जैसे—सोंधी मिट्टी, सोंधा चना।

पु०१ एक प्रकार का सुगंधित मसाला जिससे स्त्रियाँ सिर के बाल धोती हैं। २.एक प्रकार का सुगंधित मसाला जिसे बगाल मे स्त्रियाँ नारियल के तेल में उसे सुगंधित करने के लिए मिलाती हैं।

†पु०=सुगंध।

**सोंधिया**—पु०[हिं० सोंधा=सुगंधित+इया (प्रत्य०)] सुगंध तृण। रोहिष घास।

**सोंधी**—पु०[हिं० सोंधा] एक प्रकार का बढ़िया धान जो दलदली जमीन में होता है।

वि०[सं० सुगंध] मीठी-मीठी सुगंधवाला। जैसे—सोंधी मिठाई।

**सोंधु**†—वि०=सोंधा।

**सोंपना**†—स०=सौंपना।

**सोंबनिया**—पु०[सं० सुवर्ण] नाक में पहनने का एक प्रकार का आभूषण।

**सोंह***—स्त्री०=सौंह (सौगंद)।

†अव्य०=सौंह (सामने)।

**सोंहड**†—वि०[?] सीधा-सादा। सरल।

**सोंही**†—अव्य०=सौंह (सामने)।

**सोंहै**—अ०=सौंह।

**सो**—सर्व०[सं० सः या सा+उ] 'जो' के साथ आनेवाला सबध-सूचक शब्द। वह। अव्य० इसलिए। अत.। जैसे—वह आ गया, सो मैं उससे बातें करने लगा।

*वि० दे० 'सा'।

स्त्री०[सं०] पार्वती का एक नाम।

**सोऽहम्**—अव्य०=सोऽहमस्मि।

**सोऽहमस्मि**—अव्य०[स० सः+अहम्+अस्मि] वही मैं हूँ—अर्थात् मै ही ब्रह्म हूँ। (वेदान्त का प्रसिद्ध सैद्धान्तिक वाक्य)

**सोअना**†—अ०=सोना।

†पु०=सोना (स्वर्ण)।

**सोअर**†—स्त्री०=सौरी।

**सोआ**—पु०[सं० मिकेया]१. एक पौधा। २. उक्त पौधे की पत्तियाँ जिनका साग बनाया जाता है।

**पद—सोआ-पालक**=सोआ और पालक का साग।

**सोई**—स्त्री० [सं० स्रोत, हिं० सोता] वह जमीन या गड्ढा जहाँ बाढ या नदी का पानी रुका रह जाता है और जिसमें अगहनी धान की फसल रोपी जाती है। डाबर।

†वि० सर्व०=वही (वह ही)।

†अव्य०=सो।

**सोका**†—पु० [देश०] चारपाई बुनने के समय बुनावट मे का वह छेद जिसमें से रस्सी या निवार निकालकर कसते हैं।

†पु०=शोक।

**सोकना**†—पु०=सोखन।

**सोकना**†—अ० [सं० शोक+हिं० ना (प्रत्य०)] शोक-विह्वल होना।

†स०=सोखना।

**सोकनी**†—वि०[?] कालापन लिए सफेद रग का।

पु०१ कालापन लिए सफेद रग। २ उक्त रग का बैल।

**सोकार**†—पु०[हिं० सोकना, सोखना] वह स्थान जहाँ पर मोट का पानी गिराया जाता है जिससे वह खेत तक पहुँच जाय। चौड़ा।

**सोकित***—वि०[स० शोक] जिसे शोक हुआ हो या हो रहा हो।

**सोकक***—वि० [स० शोषक]१. शोषण करनेवाला। शोषक। २. नाशक।

**सोकता**—वि०, पुं०=सोखता।

**सोकन**—पु०[देश०] १. स्याही लिए सफेद रग का बैल। सोकनी। २ एक प्रकार का जंगली धान जो नदियो के रेतीले तट पर होता है।

**सोकना**—स०[सं० शोषण]२. किसी चीज का जल या दूसरे तरल पदार्थ को अपने में खींच लेना। जैसे—आटे का घी सोकना। २. पीना। (व्यग्य)

†पुं०=सोखता।

**सोखा**†—वि० [स० सूक्ष्म या चोखा?]चतुर। चालाक। होशियार।

पुं० जादूगर।

**सोखाई**—स्त्री०[हिं० सोखना] १. सोखने की क्रिया या भाव। २. सोखने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

स्त्री० [हिं० सोखा] जादूगर ।

**सोख्त**—स्त्री०[फा०] जलन ।

**सोख्ता**—वि० [फा० सोख्तः]१. जला हुआ। २. बहुत अधिक दुखी या सन्तप्त ।

पु० स्याही सोखनेवाला एक प्रकार का मोटा खुरदरा कागज। स्याही-चूस। स्याही-सोख। (ब्लॉटिंग्ग पेपर)

**सोगंद**†—स्त्री०=सौगंध ।

**सोग**—पुं० [स० शोक]१. किसी के मरने से होनेवाला दुःख। शोक।

**मुहा०—सोग मनाना** = उक्त दुःखपूर्ण भाव सूचित करने के लिए मैले-कुचैले या विशेष प्रकार के कपड़े पहनना, उत्सवों आदि में सम्मिलित न होना।

**सोगन**—स्त्री० [हिं० सौगंध] सौगंध। कसम। (राज०) उदा०—बानें सोगन म्हारी।—मीरां।

**सोगवार**—वि०[हिं० सोग (शोक)+वार (प्रत्य०)] [भाव० सोगवारी] सोग अर्थात् शोक से युक्त ।

**सोगवारी**—स्त्री०[हिं० सोगवार] मृतक का शोक मनाने की अवस्था, क्रिया या भाव। जैसे—अभी तो उनका जवान लड़का मरा है। साल भर उसी की सोगवारी रहेगी।

**सोगिनी***—वि० स्त्री० [हिं० सोग] विरह के कारण शोक करनेवाली। शोकाकुल। शोकमाना।

**सोगी**—वि०[सं० शोक, हिं० सोग] [स्त्री० सोगिनी] जो शोक मना रहा हो। शोक विह्वल।

**सोच**—स्त्री०[हिं० सोचना] १. सोचने की क्रिया या भाव। २ यह बात जिसके सम्बन्ध में कोई बराबर सोचता रहता हो। ३. चिंता। फिक्र। ४. दुःख। रंज। ५. पछतावा। परचात्ताप।

**सोचक**—पु० [स० सौचिक] दरजी। (डिं०)

**सोचना**—अ० [सं०शोचन] १. किसी विषय पर मन में विचार करना। जैसे—ठीक है, हम सोचेंगे। २. विशेषतः किसी कार्य, परिणाम या प्रणाली के विषय में विचार करना। जैसे—वह सोच रहा था कि आगे पढ़ूं या नौकरी करूँ। ३. चिंता या फिक्र में पड़ना। जैसे—वह अपनी बूढ़ी मां के बारे में सोचता रहता है।

स० कल्पना करना। अनुमान करना। जैसे—उसने एक युक्ति सोची है।

**सोच-विचार**—पु०[हिं०सोच+सं० विचार]सोचने और समझने या विचार करने की क्रिया या भाव।

**सोचाई**†—स्त्री०[हिं० सोचना] सोचने की क्रिया या भाव।

**सोचाना**†—स०=सुचाना।

**सोचु***—पु० सोच।

**सोच्छास**—वि०[सं०]१. उच्छ्वास-युक्त। २. हाँफता हुआ।

अव्य० गहरा सांस लेते हुए।

**सोज**—स्त्री०[हिं० सुजना] वह विकार जो सूजे हुए होने का सूचक होता है।

पु०[फा०]१. जलन। दाह। २. तीव्र मानसिक कष्ट या वेदना। ३ ऐसा मरसिया या शोक-सूचक शब्द जो लय-सुर में गाकर पढ़ा जाता हो। (मुसल०)

†स्त्री० =सौज।

**सोजन***—पु०[फा०]१. सूई। २. काँटा। (लश०)।

**सोजन**†—अ०[हिं० सजना] शोभा देना। भला जान पड़ना।

**सोजनी**†—स्त्री० =सुजनी।

**सोजा**—पु०[हिं० साबज] शिकार करने के योग्य पशु या पंछी।

**सोजि**—वि०[हिं० सो+जु]१ वह भी। २ वही।

**सोजिश**—स्त्री०[फा०] सूजन। शोथ।

**सोज्ञ**—वि०, =सोझा।

**सोझण**†—पु० =शोधन । (राज०)

**सोझना**—स०[स० हि० सोधना]१. शुद्ध करना। शोधना। २. ढूंढ़ना।

**सोझा**—वि०[स० सम्मुख, म० प्रा० समुज्झ] [स्त्री० सोझी]१. जो ठीक सामने की ओर गया हो। २. सरल प्रकृति का। सीधा।

**सोटा**†—पु०१.=सोंटा। २.=सुअटा (तोता)।

**सोडा**—पु०[अ०] एक प्रकार का क्षार जो सज्जी को रासायनिक क्रिया से साफ करके बनाते है।

**सोडा-वाटर**—पु०[अं०] एक प्रकार का पाचक पेय जो प्रायः मामूली पानी मे कारबोनिक एसिड मिला करके बनाते हैं और बोतल में हवा के जोर से बंद करके रखते हैं। खारा-पानी।

**सोढ**—भू० कृ०[स०] सटा हुआ।

वि० सहनशील।

**सोढर**—वि० [हिं० सु+ढरना =ढलना, अनुरक्त होना] १. जो सहज मे किसी ओर प्रवृत्त या अनुरक्त होता हो। सुढर। २. बेवकूफ। मूर्ख।

**सोढव्य**—वि० [स०] सहन करने के योग्य। सह्य।

**सोढी (ढिन्)**—वि०[सं०] १ सहनशील। २. समर्थ। सशक्त।

**सोणक**†—वि० [स० शोण] लाल रंग का। सुर्ख। (डिं०)

**सोणत**—पु०[सं० शोणित] खून। लोहू। रक्त।(डिं०)

**सोत**†—पु०=स्रोत।

**सोता**—प० [स० स्रोत] [स्त्री० अल्पा० सोतिया]१. जल की बराबर बहनेवाली या निकलनेवाली छोटी धारा। झरना। चश्मा। जैसे—पहाड़ का सोता, कूएं का सोता। २ नदी की छोटी शाखा।

**सोतिया**†—स्त्री०[हिं० सोता=इया (प्रत्य०)] पानी का छोटा सोता।

**सोतिहा**†—वि० [हिं० सोता+इहा (प्रत्य०)] कूआं या तालाब जिसमें नीचे से सोते का पानी आता है।

**सोती**—स्त्री०[हिं० सोता का स्त्री० अल्पा०] १. पानी का छोटा सोता। २. किसी नदी से निकली हुई कोई छोटी धारा। जैसे—गंगा की सोती।

†स्त्री० = स्वाती (नक्षत्र)।

†पु० =श्रोत्रिय (ब्राह्मणों की एक जाति)।

**सोत्कंठ**—वि०[स० स०+उत्कंठा] जिसे विशेष उत्कंठा या प्रबल उत्सुकता हो।

क्रि० वि० विशेष उत्कंठा या गहरी उत्सुकता से।

**सोत्कर्ष**—वि०[सं०] उत्कर्ष युक्त। उत्तम।

**सोत्प्रास**—वि० [सं०]१. बढ़ाकर कहा हुआ। अतिरंजित। २. व्यंग्य-पूर्ण।

पु०१. प्रिय या मधुर बात। २. खुशामद से भरी बात। ३. जोर की हँसी। ठट्ठा।

**सोत्सेग**—वि०[स०] शोकाकुल। दुःखित।

**सोत्सव**—वि० [सं०] १ उत्सव-युक्त। उत्सव-सहित। २. खुश। प्रसन्न।

**सोत्साह**—अव्य०[सं० स+उत्साह] उत्साहपूर्वक। उमंग से।

**सोत्सुक**—वि०[स०] उत्सुकता से युक्त। उत्कठित।

**सोत्सेक**—वि०[स०] अभिमानी। घमंडी।

**सोध**†—पु० शोध (सूजन)।

**सोधकुंभ**—पु०[स०]नितों के उद्देश्य से किया जानेवाला एक प्रकार का कृत्य।

**सोधन**—पु०[देश०] वह कागज जिसमें छोटे-छोटे छेद करके बेल-बूटे बनाये जाते हैं और रात्री की सहायता से कपड़े पर छापते हैं।(कढ़ाई-बुनाई)।

**सोधय**—वि०[स०]१ जो बढ़ौतरी की ओर हो। २ ब्याज या सूद-समेत। वृद्धि-धन।

पु० वह मूल-धन जिसमें ब्याज या सूद भी मिल गया हो।

**सोदर**—वि०[सं० यौ० स०] [स्त्री० सोदरा] एक ही उदर से जन्म लेने वाले। सगे। जैसे—वे तीनों सोदर भाई हैं।

पु० सगा भाई।

**सोदरा (री)**—स्त्री० [स०] सहोदरा भगिनी। सगी बहिन।

**सोदरीय**—वि०=सोदर।

**सोदर्य**—वि०[स०] सहोदर। सोदर। सगा।

पु० सगा भाई।

**सोध**—पु०[स० सौध]१ महाभारत के अनुसार एक प्राचीन जनपद का नाम। २ राज-प्रासाद। महल। (डिं०)

†पु० =शोध।

**सोधक**†—वि०,पु०=शोधक।

**सोधनी**—स्त्री०[स० शोधनी] झाड़ू। बुहारी। मार्जनी। (डिं०)

**सोधना**†—पु० शोधन।

**सोधना**†—स०[स० शोधन]१. शुद्ध या साफ करना। शोधन करना। २. शुद्धता की जाँच की परीक्षा करना। उदा०—सिय लौं सोधनि तिय तनहि लगनि अगनि की ज्वाल।—बिहारी। ३. दोष या भूल दूर करना। ४. तलाश करना। पता लगाना। ढूँढना। उदा०—सोधेउ सकल विश्व मनमाहीं।—तुलसी। ५. अच्छी तरह गणना या विचार करके अथवा खूब सोच-समझकर कोई निर्णय अथवा निश्चय करना या परिणाम निकालना। ६ कुछ संस्कार करके धातुओं को औषधरूप में काम में लाने के योग्य बनाना। ७ ठीक या दुरुस्त करना। ८. ऋण या देन चुकाना। ९. मैथुन या संभोग करना।

**सोधवाना**—स०=शोधवाना।

**सोधस**—पुं०[सं० स+उद]१. जलाशय, ताल आदि। २. किनारे पर का जल।

**सोधाना**†—स० [हिं० सोधना का प्रे० रूप] सोधने का काम दूसरे से कराना। किसी को सोधने में प्रवृत्त करना।

**सोधी**†—स्त्री० [स० शुद्ध या शुद्धि या हिं० सुध का पुराना रूप] १. शुद्ध करने की क्रिया या भाव। शोधन। शुद्धि। उदा०—बादु सोधी नाहिं शरीर की, कहै अगम की बात।—दादूदयाल। २. परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान। केवल ज्ञान। उदा०—सतगुरु मैं सोधी भई, तब पाया हरि का खोज।—दादूदयाल। ३ याद। स्मृति। ४ ईश्वर या भगवान् का ध्यान या स्मरण।

**सोन**—पु०[स०शोण] एक प्रसिद्ध नद का नाम जो मध्य प्रदेश के अमरकंटक की अभिरुपका से निकला है और मध्य प्रदेश तथा बुंदेलखंड होता हुआ बिहार में दानापुर से १० मील उत्तर मे गंगा में मिला है। शोणभद्र नद।

वि० रक्तवर्ण का। लाल।

स्त्री०[हिं० सोना=स्वर्ण]एक प्रकार की सदाबहार लता जिसमें पीले फूल लगते हैं।

वि० हिं० 'सोना' का संक्षिप्त रूप जो यौ० शब्दों के पहले लगकर प्राय. पीले रंग का वाचक होता है। जैसे—सोन-जर्द, सोन-जुही आदि।

†पु०=सोना (स्वर्ण)। उदा०—मारग मानुस सोन उछारा।—जायसी।

पु०[सं० रसोनक] लहसुन। (डिं०)

पु०[देश०] एक प्रकार का जल-पक्षी।

**सोन-किरवा**—पु०[हिं० सोन+किरवा कीड़ा]१ चमकीले तथा सुनहरे परोंवाला एक प्रकार का कीड़ा। २ जुगनूँ।

**सोनकीकर**—पु०[हिं० सोना+कीकर] कीकर की जाति का एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़।

**सोन-केला**—पुं०[हिं० सोना+केला] चंपा केला। सुवर्ण कदली। पीला केला।

**सोन-गढ़ी**—पु०[सोनगढ़ (स्थान)] एक प्रकार का गन्ना।

**सोन-गहरा**—वि०, पु०[हिं० सोना+गहरा] गहरा सुनहला (रंग)।

**सोन-गेरु**—पु० दे० 'सोना गेरु'।

**सोन-चंपा**—पु०[हिं० सोना+चंपा] पीला चंपा। सुवर्ण चंपक। स्वर्ण चंपक।

**सोन-चिरी**—स्त्री० [हिं० सोना+ चिरी=चिड़िया] १. नटी। २. नर्तकी।

**सोन-जरद (र्द)**—वि०[हिं० सोना=स्वर्ण+फा० जर्द=पीला] सोने की तरह के पीले रंगवाला।

पु० उक्त प्रकार का रंग। (गोल्डेन येलो)

**सोन जूही**—स्त्री० [हिं० सोना+जूही] एक प्रकार की जूही जिसके फूल हलके पीले रंग के और अधिक सुगंधित होते हैं।

**सोन पेडुकी**—स्त्री०[हिं० सोना+पेड़की] एक प्रकार का पक्षी जो सुनहलापन लिए हरे रंग का होता है।

**सोनभद्र**—पु०=सोन (नद)।

**सोनवाना**†—वि० [हिं० सोना+वाना (प्रत्य०)] [स्त्री० सोनवानी] १. सोने का बना हुआ। २. सोने के रंग का। सुनहला।

**सोनहला**†—वि०=सुनहला।

**सोनहा**†—पु० [सं० श्वन=कुत्ता] १. कुत्ते की जाति का एक छोटा जंगली हिंसक जन्तु जो झुंड में रहता है। २. एक प्रकार का पक्षी।

**सोनहार**—पु०[देश०] एक प्रकार का समुद्री पक्षी।

**सोना**—पुं०[सं० स्वर्ण]१. एक प्रसिद्ध बहु-मूल्य पीली धातु जिसके गहने आदि बनते हैं। स्वर्ण। कांचन। (गोल्ड)

पद—सोने की कटार=ऐसी चीज जो सुन्दर होने पर भी घातक या

हानिकारक हो। **सोने की चिड़िया** ऐसा सपन्न व्यक्ति जिससे बहुत कुछ धन प्राप्त किया जा सकता हो।

**मुहा०—सोने का घर मिट्टी करना**=बहुत अधिक धन-संपत्ति व्यर्थ और पूरी तरह से नष्ट करना। **सोने में घुन लगना**=परम असभव बात होना। **सोने में सुगंध होना**=किसी बहुत अच्छी चीज में और भी कोई ऐसा अच्छा गुण या विशेषता होना कि जिससे उसका महत्त्व या मूल्य और भी बढ़ जाय।

**विशेष**—लोक में भूल से इसी की जगह 'सोने में सुहागा होना' भी प्रचलित है।

२. बहुत सुन्दर या बहुमूल्य पदार्थ। ३. राजहंस।

स्त्री०[?] प्राय एक हाथ लबी एक प्रकार की मछली जो भारत और बरमा की नदियो में पाई जाती है।

पु०[?] मझोले आकार का एक प्रकार का वृक्ष।

अ०[स० शयन]? लेटकर शरीर और मस्तिष्क को विश्राम देनेवाली निद्रा की अवस्था मे होना। नींद लेना।

**मुहा०—सोते-जागते**=हर समय।

२ शरीर के किसी अग का एक ही स्थिति में रहने के कारण कुछ समय के लिए सुन्न हो जाना। **जैसे**—पैर या हाथ सोना। ३ किसी विषय या बात की ओर से उदासीन होकर चुप या निष्क्रिय रहना।

**सोना-कुत्ता**—पु०=सोनहा (जन्तु)।

**सोना-गेरू**—पु०[हिं० सोना+गेरू]एक प्रकार का गेरू जो मामूली गेरू से अधिक लाल, चमकीला और मुलायम होता है।

**सोना-पठा**—पु०[स० शोण+हिं० पाठा]एक प्रकार का ऊँचा वृक्ष जो भारत और लका मे सर्वत्र होता है और जिसके कई भेद होते हैं। ध्यातक।

**सोनापुर**—पु०[हिं०]स्वर्ग।

**मुहा०—सोनापुर सिधारना**=मर जाना।

**सोना-पेट**—पु०[हिं० सोना+पेट=गर्भ]सोने की खान।

**सोना-फूल**—पु०[हिं० सोना+फूल]आसाम और खासिया पहाड़ियों पर होनेवाली एक प्रकार की झाड़ी।

**सोना-मक्खी**—स्त्री०[स० स्वर्णमक्षिका]१ माक्षिक नामक खनिज पदार्थ का वह भेद जो पीला होता है। (देखें मक्षिका) २. रेशम का एक प्रकार का कीडा।

**सोना-माखी**†—स्त्री०=सोनामक्खी।

**सोनार**†—पु०=सुनार।

**सोनित***—पु०=शोणित (खून)।

**सोनी**—पु०[देश०]सुन की जाति का एक वृक्ष।

†पु०=सुनार।

**सोनैया**—स्त्री०[देश०]देवदाली। घघरबेल। बंदाल।

**सोप**—पुं० [देश०] एक प्रकार की छपी हुई चादर।

पु०[अ०] साबुन।

पु०[अ० स्वाब] बुहारी। झाड़ू। (लश०)

**सोपकरण**—वि०[स०] सभी प्रकार के उपकरणों या साज-सामान से युक्त। **जैसे**—सोपकरण शय्या।

**सोपकार**—पु०[स०] ब्याज-सहित मूलधन। असल मैं सूद।

**सोपचार**—वि०[स०] शिष्टतापूर्वक बर्ताव करनेवाला।

अव्य० उपचार-पूर्वक।

**सोपत**—पु०[स० सूपपत्ति]=सुभीता।

**सोप सर्प**—वि०[स०] [स्त्री० सोपसर्पा]१. उठान या उभार पर आया हुआ। २ काम-वासना से युक्त। गरमाया हुआ।

**सोपाक**—पु०[स०]१. काष्ठौषधि बेचनेवाला। वनौषधि बेचनेवाला। २ चाडाल। श्वपच। श्वपाक।

**सोपाधि (क)**—वि०[स०] उपाधि (दे०) से युक्त।

**सोपाधिकप्रदान**—पु०[स०] ऋण लेनेवाले से ऋण की रकम बिना दिये अपनी चीज ले लेना।

**सोपान**—पु०[स०] १. सीढ़ी। जीना। २. जैन धर्म में मोक्ष प्राप्ति का उपाय या साधन।

**सोपानक**—पु०[स०] सोने के तार में पिरोई हुई मोतियो की माला।

**सोपान कूप**—पु०[स० मध्य० स०] सीढ़ीदार कुआँ। बावली।

**सोपानावरोहण-न्याय**—पु०[स०] एक प्रकार का न्याय या कहावत जिसका प्रयोग ऐसे प्रसगों मे होता है, जहाँ सीढ़ियों की तरह क्रम-क्रम से एक एक स्थल पार करते हुए आगे बढना अभीष्ट होता है।

**सोपानित**—भू० कृ०, वि० [स०] सोपान से युक्त किया हुआ। सीढ़ियों से युक्त।

**सोपारी**†—स्त्री० =सुपारी।

**सोपाश्रय**—वि०[स०] जो आश्रय या अवलम्ब से युक्त हो।

अव्य० आश्रय या अवलंब का उपयोग करते हुए।

पु० योग मे एक प्रकार की समाधि।

**सोपि**—वि०[स०+अपि]१. वह भी। २ वहीं।

**सोफता**—पु०[हिं० सुभीता]१. एकात स्थान। निराली जगह। २ अवकाश का समय। फुरसत का समय। ३ चिकित्सा के फलस्वरूप रोगो आदि मे होनेवाली कमी।

**सोफ़ा**—पु०[अ०] एक प्रकार का बढिया गद्देदार कोच या लबी बेंच जिस पर दो या तीन आदमी आराम से ढासना लगाकर बैठ सकते है।

**सोफ़ा-सेट**—पु०[अ०] कमरो की सजावट के लिए रखा जानेवाला एक प्रकार का जोड़ जिसमें साधारणत एक सोफा और बैठी हो बी, तीन या चार कुर्सियाँ होती है।

**सोफियाना**—वि०[अ० सूफी+फा० इयाना (प्रत्य०)]१ सूफियों का। सूफी-मतवाली। २. सूफियो की तरह का अर्थात् सुन्दर और स्वच्छ। सूफियाना।

**सोफी**†—पु०=सूफी।

**सोबल***—पु०=सुवर्ण।

**सोभ**—पु०[स०] स्वर्ग में गधर्वों के नगर का नाम।

†स्त्री०=शोभा।

**सोभन**†—वि०, पु०=शोभन।

**सोभना***—अ० [स० शोभन] शोभित होना। भला लगना। सोहना।

**सोभनीक**†—वि०=शोभन (सुन्दर)।

**सोभर**—पु०[?] वह कोठरी या कमरा जिसमे स्त्रियाँ प्रसव करती हैं। सौरी। सूतिकागार।

**सोभांजन**†—पु०=शोभाजन।

**सोभा**†—स्त्री०=शोभा।

**सोभाकारी**†—वि० =शोभन (सुन्दर)।

**सोभायमान**†—वि० =शोभायमान।

**सोभार**—वि०[सं० स+हि० उभार] उभारदार।
क्रि० वि० उभरते हुए। उभरकर।

**सोभित***—वि० =शोभित।

**सोम**—पु० [स०]१. एक प्राचीन भारतीय लता जिसके रस का सेवन वैदिक ऋषि विशेषत यज्ञों के समय मादक पदार्थ के रूप मे करते थे। २. हठ योग मे, तालू की जड में स्थित चन्द्रमा से निकलनेवाला रस। विशेष दे० 'अमृत'। ३ एक प्राचीन वैदिक देवता। ४ चन्द्रमा। ५. सोमवार। ६ अमृत। ७. जल। ८ कुबेर। ९ यम। १०. वायु। हवा। ११ सोम-यज्ञ। १२ वह जो सोम-यज्ञ करता हो। १३ एक प्राचीन पर्वत। १४ एक प्रकार की ओषधि। १५ आकाश। १६ स्वर्ग। १७ आठ वसुओं मे से एक वसु। १८ पितरो का एक गण या वर्ग। १९ स्त्री का विवाहित पति। २० स्त्रियो में होनेवाला एक प्रकार का रोग। २१ यज्ञ की सामग्री। २२ काँजी। २३. मांड। २४ संगीत मे एक प्रकार का राग जो मालकोश राग का पुत्र कहा गया है। २५ एक प्रकार का ऊँचा और बडा पेड जिसकी लकडी चिकनी और मजबूत होती तथा चीरने पर लाल हो जाती है। २६ दक्षिणी भारत की पथरीली भूमि मे होनेवाला एक प्रकार का क्षुप जिसकी डाली मे पत्ते कम और गाँठे अधिक होती हैं।

**सोमक**—पु०[स०]१ एक प्राचीन ऋषि का नाम। २ पुराणानुसार कृष्ण का एक पुत्र। ३. स्त्रियो का सोम नामक रोग।

**सोम कर**—पु० [स० सोम + कर] चन्द्रमा की किरण। चन्द्र-किरण।

**सोम कल्प**—पु०[स०] पुराणानुसार २१ वें कल्प का नाम।

**सोम-कांत**—पु०[स०] चन्द्रकांत मणि।
वि०१. जो चन्द्रमा के समान प्रिय तथा सुन्दर हो। २. जिसे चन्द्रमा प्रिय हो।

**सोम-काम**—पु०[स०] सोमपान करने की इच्छा।
वि० सोम-पान की कामना करनेवाला।

**सोम-क्रिय**—पु०[स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सोम-क्षय**—पु०[स०]१ चन्द्रमा की कलाओं का घटना। २ अमावस्या, जिसमे चन्द्रमा के दर्शन नही होते।

**सोम-खण्डक**—पु०[स०] नैपाल के एक प्रकार के शैव साधु।

**सोम-गर्भ**—पु०[स०] विष्णु।

**सोम-गिरि**—पु०[सं०]१ महाभारत के अनुसार एक पर्वत। २. मेरु-ज्योति। ३ संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सोम-ग्रह**—पु० [स०] १. चन्द्रमा का ग्रहण। चन्द्रग्रहण। २ घोडो का एक ग्रह जिससे ग्रस्त होने पर वे काँपा करते हैं।

**सोम-ग्रहण**—पु०[स०] चन्द्र-ग्रहण।

**सोम-चमस**—पु०[स०] सोमपान करने का पात्र।

**सोमज**—वि०[सं०] चन्द्रमा से उत्पन्न।
पु० १. बुध नामक ग्रह। २. दूध।

**सोमजाजी**†—पु०[स० सोमयाजी] सोम याग करनेवाला।

**सोमदिन**—पु०[स० सोम +दिन] सोमवार। चन्द्रवार।

**सोम-दीपक**—पु०[सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।



**सोमदेव**—पु०[स०]१. सोम नामक देवता। २. चन्द्रमा।

**सोम-देवत (त्य)**—वि०[स०] जिसके देवता सोम हों।

**सोम-दैवत**—पु०[स०] मृगशिरा (नक्षत्र)।

**सोम-धारा**—स्त्री० [सं०] १ आकाश। आसमान। २ स्वर्ग। ३. आकाश-गंगा।

**सोम-धेय**—पु०[स०] एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)

**सोमन**—पु०[स० सौमन] एक प्रकार का अस्त्र।

**सोमनस**†—पु०=सौमनस्य।

**सोमनाथ**—पु०[स०]१. प्रसिद्ध द्वादश ज्योतिर्लिंगों में से एक। २. काठियावाड के दक्षिणी तट पर स्थित एक प्राचीन नगर जहाँ उक्त ज्योतिर्लिंग का मंदिर है। इस मंदिर के अतुल धन-रत्न की प्रसिद्धि सुनकर सन् १०२४ ई० में महमूद गजनवी इसे लूटने करके यहाँ से करोडों की सम्पत्ति गजनी ले गया था। अब स्वतन्त्र भारत मे इस मन्दिर का जीर्णोद्धार हो गया है।

**सोमनेत्र**—वि०[स०]१. जिसका नेता या रक्षक सोम हो। २ जिसकी आँखे सोम के समान हो।

**सोमप**—वि०[स०]१ सोम-रस पीनेवाला। २ जिसने यज्ञ में सोम रस का पान किया हो।
पु० १ वह जिसने सोम यज्ञ किया हो अथवा जो सोमयज्ञ करता हो। सोमयाजी। २ विश्वेदेवों मे से एक का नाम। ३ एक प्राचीन ऋषि वंश। ४. पितरों का एक वर्ग। ५ कार्तिकेय का एक अनुचर। ६ एक पौराणिक जनपद।

**सोमपति**—पु०[स०] इन्द्र का एक नाम।

**सोमपत्र**—पु०[स०] कुश की तरह की एक घास। डाभ। दर्भ।

**सोमपद**—पु०[स०]१ एक लोहा। (हरिवंश) २. महाभारत काल का एक तीर्थ।

**सोम-पर्व (न)**—पु०[स०]१. सोमपान करने का उत्सवयुक्त पुण्य काल। २ कोई ऐसा पर्व जिसमें लोग सोम पीते थे।

**सोमपा**—वि०, पु० =सोमप।

**सोम-पान**—पु०[स०] सोम रस पान करना।

**सोमपायी (यिन्)**—वि०[सं०] [स्त्री० सोमपायिनी] सोम रस पीनेवाला।

**सोमपाल**—पु०[स०] सोम के रक्षक, गन्धर्व लोग।

**सोम-पुत्र**—पु०[स०] सोम या चन्द्रमा के पुत्र, बुध।

**सोम-पुरुष**—पु०[स०] १ सोम का रक्षक। २ सोम का अनुचर या भक्त।

**सोमपेय**—पु०[स०]१. एक प्रकार का यज्ञ जिसमें सोमपान किया जाता था। २ सोमपान।

**सोम प्रताप**—पु०[स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सोम प्रदोष**—पु०[स०] सोमवार को पडनेवाला प्रदोष (व्रत), जो विशेष महत्त्वपूर्ण माना गया है।

**सोम प्रभ**—वि०[स०]सोम या चन्द्रमा के समान प्रभावाला। परम कांतिमान।

**सोम प्रभावी**—स्त्री०[स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सोमबंधु**—पु०[स०]१. सूर्य। २ बुध ग्रह। ३ कुमुद।

**सोमभवा**—स्त्री०[स०] नर्मदा (नदी)।

**सौमभू**—वि० [स०] १. सोम से उत्पन्न। २ जो चन्द्रवंश में उत्पन्न हुआ हो। चन्द्रवंशी।
पु० १. चन्द्रमा के पुत्र, बुध। २. जैनों के चौथे कृष्ण वसुदेव का एक नाम।

**सोमभूपाल**—पुं० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सोम-भैरवी**—स्त्री० [स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सोम-मंजरी**—स्त्री० [सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**सोम-मद**—पु० [स०] सोमरस पान करने से होनेवाला नशा।

**सोममुखी**—पु० [स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**सोम-यज्ञ**—पुं० [सं०] एक प्रकार का वैवाहिक यज्ञ जिसमे मुख्यत सोम रस पीया जाता था।

**सोमयाजी (जिन्)**—पु०[स०] वह जो सोमयाग करता हो। सोम-पान करनेवाला।

**सोम-योनि**—पु०[स०]१ देवता। २. ब्राह्मण। ३ पीला चन्दन।

**सोम-रस**—पु०[स०]१ वैदिक काल में सोम नामक लता का रस जो ऋषि, मुनि आदि पीते थे। २ हठयोग मे, तालु-मूल में स्थित माने जानेवाले चन्द्रमा से निकलनेवाला रस जो योगी लोग जीभ उलटकर और उसे तालु-मूल तक ले जा कर पान करते है।

**सोमरा**—पु० [देश०] जुते हुए खेत का दोबारा जोता जाना। दो चरस।

**सोमराज**—पु०[स०] चन्द्रमा।

**सोमराजी**—स्त्री०[स०] १. बकुची। २ एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छन्द जिसके प्रत्येक चरण में दो रगण होते हैं। यथा—गुनी, एक रूपी, सुनी वेद गावै। महादेव जा कौं सदाचित्त लावै।—केशव।

**सोम-राज्य**—पु०[स०] चन्द्रलोक।

**सोमराष्ट्र**—पु०[स०] एक प्राचीन जनपद।

**सोमल**—पु०[देश०]एक प्रकार का संखिया जिसे सफेद सबल भी कहते है।

**सोम लता**—स्त्री०[स०]१. सोम नामक वनस्पति की लता। २. गिलोय। गुरुच।

**सोम-लोक**—पु०[स०] चन्द्र-लोक।

**सोम-वंश**—पु०[स०]१ युधिष्ठिर का एक नाम। २ क्षत्रियों का चन्द्र-वंश।

**सोमवंशीय**—वि०[स०] १ चन्द्रवंश मे उत्पन्न। २ चन्द्रवंश सम्बन्धी।

**सोमवंश्य**—वि० [स०] सोमवंशीय।

**सोमवत्**—वि०[सं०] [स्त्री० सोमवती]१ सोमयुक्त। २ चन्द्रमा से युक्त (ग्रह)। ३. चन्द्रमा के समान शीतल या सुन्दर।

**सोमवती**—स्त्री०[स०]१ एक प्राचीन तीर्थ। २ दे० 'सोमवती अमावस्या'।

**सोमवती अमावस्या**—स्त्री० [सं०] १. सोमवार को पड़नेवाली अमावस्या जो पुराणो के अनुसार पुण्यतिथि मानी गई है। प्राय. लोग इस दिन गंगास्नान और दान-पुण्य करते हैं।

**सोमवर्चस**—पु०[स०] विश्वेदेव में से एक।
वि० सोम के समान तेजवाला।

**सोम-वल्क**—पु० [स०] १. सफेद खैर। २. कायफल। ३. करंज। ४ गोंठा करंज। ५. बबूल।

**सोम-वल्लरी**—स्त्री० [सं०] १. सोम नामक लता। २. ब्राह्मी। ३. एक प्रकार का वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, जगण, रगण, जगण, और रगण होते हैं। इसे 'चामर' और 'तूण' भी कहते हैं।

**सोम-वल्लिका**—स्त्री०[स०]१. बकुची। सोमराजी। २ सोमलता।

**सोम-वल्ली**—स्त्री०[स०]१ गिलोय। गुडूची। २ सोमराजी। बकुची। ३ पाताल गारुडी। छिरैंटी। ४ ब्राह्मी। ५. सुदर्शन नामक पौधा। ६ कठकरंज। लता करंज। ७ गज-पीपल। ८ वन-कपास। ९. सोमलता।

**सोम वाय्वध्य**—पु०[स०] एक ऋषि-वंश का नाम।

**सोमवार**—पु०[सं०] सात वारो मे से एक वार जो सोम अर्थात् चन्द्रमा का दिन माना जाता है। यह रविवार के बाद और मंगलवार के पहले पडता है। चन्द्रवार।

**सोमवारी**—वि०[स० सोमवार] सोमवार संबंधी। सोमवार का। जैसे—सोमवारी बाजार, सोमवारी अमावस्या।
स्त्री०. सोमवती अमावस्या।

**सोम-वीथी**—स्त्री० [स०] चन्द्र-मंडल।

**सोम-वृक्ष**—पु०[स०]१ कायफल। कठफल। २ सफेद खैर।

**सोम संस्था**—स्त्री० [स०] सोम यज्ञ का एक पारभिक कृत्य।

**सोम सलिल**—पु०[स०] सोमलता का रस।

**सोम-सव**—पु०[स०] यज्ञ मे किया जानेवाला एक प्रकार का कृत्य जिसमे सोम का रस निकाला जाता था।

**सोम-सार**—पु० [स०] १ सफेद खैर। श्वेत खदिर। २ कीकर। बबूल।

**सोम-सिंधु**—पु०[स०] विष्णु का एक नाम।

**सोम सिद्धांत**—पु०[स०] १ एक वृद्ध का नाम। २ फलित ज्योतिष।

**सोम-सुंदर**—वि०[स०] चन्द्रमा के समान सुन्दर। बहुत सुन्दर।

**सोम-सुत**—वि०, पु०[स०] सोमरस निकालनेवाला।
पु० यज्ञ मे सोमरस की आहुति देनेवाला ऋत्विज्।

**सोम-सुत**—पु०[स०] चन्द्रमा के पुत्र, बुध।

**सोम-सुता**—पु०[स०] (चन्द्रमा की पुत्री) नर्मदा नदी।

**सोम-सूत्र**—पु०[स०] शिवलिंग की जलधरी से जल निकलने का स्थान या नाली।

**सोमांग**—पु०[स०] सोम-याग का एक अंग।

**सोमांशु**—पु०[स०]१ चन्द्रमा की किरण। २ सोम लता का अकुर। ३ सोमयज्ञ का एक कृत्य।

**सोमा**—स्त्री०[स०]१ सोम लता। २ एक पौराणिक नदी।

**सोमाब्ज**—पु०[स०] लाल कमल।

**सोमाद**—वि०[स०] सोम भक्षण करनेवाला। सोमपायी।

**सोमाधार**—पु० [स०] पितरो का एक गण या वर्ग।

**सोमापूषण**—पु०[स०] [वि० सोमापौष्ण] सोम और पूषण नामक देवता।

**सोमापौष्ण**—पु०[स०] सोम और पूषण संबंधी।

**सोमाभ**—वि०[स०] जिसमे चन्द्रमा की-सी आभा हो।
स्त्री० चन्द्रमा की किरणें। चन्द्रावली।

**सोमायन**—पु०[स०]महीने भर का एक व्रत जिसमे २७ दिन दूध पीकर रहने और तीन दिन तक उपवास करने का विधान है।

**सोमाग्र**—पु० [स०] [वि० सौमारौद्र] सोम और रुद्र नामक देवता।
**सोमारौद्र**—वि० [स०] सोम और रुद्र संबंधी।
**सोमार्च्की**—पु० [सं० सोमार्च्चिस्] स्वर्ग में देवताओं का एक प्रासाद। (रामा०)
**सोमार्द्धधारी (रिन्)**—पु० [स०] (मस्तक पर अर्द्ध चन्द्र धारण करनेवाले) शिव।
**सोमाल**—वि० [स०] कोमल। नरम। मुलायम।
**सोमालक**—पु० [स०] पुष्पराग मणि। पुखराज।
**सोमावती**—स्त्री० [स०] चन्द्रमा की माता का नाम।
†स्त्री०=सोमावती अमावस्या।
**सोमाष्टमी**—स्त्री० [स०] सोमवार को पड़नेवाली अष्टमी तिथि। इस दिन व्रत का विधान है।
**सोमास्त्र**—पु० [स०] चन्द्रमा का अस्त्र।
**सोमाह**—पु० [स०] चन्द्रमा का दिन, सोमवार।
**सोमाहुत**—वि० [स०] १ जिसे सोम की आहुति दी गई हो। २ जिसकी सोमरस से तृप्ति की गई हो।
**सोमाहुति**—स्त्री० [स०] यज्ञ-कुण्ड में दी जानेवाली सोम की आहुति। पु० मंत्र द्रष्टा भार्गव ऋषि का एक नाम।
**सोमाह्वा**—स्त्री० [स०] महा-सोमलता।
**सोमी (मिन्)**—वि० [स०] १ जिसमें सोम हो। सोम-युक्त। २ यज्ञ में सोम की आहुति देनेवाला।
पु० सोमयाजी।
**सोमीय**—वि० [सं०] १ सोम-सम्बन्धी। सोम का। २. सोमरस से युक्त।
**सोमेंद्र**—वि० [स०] सोम और इन्द्र सम्बन्धी।
**सोमेश्वर**—पु० [सं०] १. एक शिवलिंग जो काशी में स्थापित है। २ श्रीकृष्ण का एक नाम। २ दे० 'सोमनाथ'।
**सोमोत्पत्ति**—पु० [स०] १. चन्द्रमा का जन्म। २. अमावस्या के उपरान्त चन्द्रमा का फिर से निकलना।
**सोमोद्भव**—पु० [स०] (चन्द्रमा को उत्पन्न करनेवाले) श्रीकृष्ण का एक नाम।
वि० चन्द्रमा से उत्पन्न।
**सोमोद्भवा**—स्त्री० [स०] नर्मदा नदी का एक नाम।
**सोमौनी**†—स्त्री०=सोमवती अमावस्या।
**सोम्य**—वि० [स०] १. सोम-सम्बन्धी। सोम का। २. सोम से युक्त। ३. जो सोम-पान कर सकता हो या जिसे सोम-पान करने का अधिकार हो। ४. यज्ञ में साम की आहुति देनेवाला। ५. अच्छा। सुन्दर।
**सोय**†—सर्व०=सो।
**सोया**†—पु०=सोआ (साग)।
**सोयाबीन**—पु० दे० 'भटवांस'।
**सोरंजाल**†—स्त्री०=सूरजान (ओषधि)।
†पु०=सूरजन (सुगंधी का पेड़)।
**सोर**†—पु० [फा० शोर] १. कोलाहल। हल्ला। २. प्रसिद्धि। ख्याति।
†स्त्री० [सं० शठा] पेड़ों की जड़। मूल।
†पु० [?] बाइल (राज०)। उदा०—उठै सोर फाला अनल, आभ धुआं अँधियार।—डूंगरीदास।
पु० [तामिल शुडा, तेलुगु सोर] हाँगर की जाति की एक प्रकार की बहुत भीषण और बड़ी समुद्री मछली। (शार्क)
पु० [स०] वक्र गति। टेढ़ी चाल।
**सोरद्द**†—पुं०=सोरठ।
**सोरठ**—पु० [स० सौराष्ट्र] १ सौराष्ट्र (प्रदेश)। २ उक्त प्रदेश की प्राचीन राजधानी, सूरत। ३. ओडव जाति का एक राग जो हिंडोल का पुत्र कहा जाता है।
**मुहा०—खूली सोरठ कहना**=खुले आम कहना। कहने में सकोच या भय न करना।
**सोरठ मल्लार**—पु० [हि० सोरठ+मल्लार] सोरठ और मल्लार के योग से बना हुआ एक संकर राग।
**सोरठा**—पु० [स० सौराष्ट्र, हिं० सोरठ (देश)] अड़तालीस मात्राओं का एक छंद जिसके पहले और तीसरे चरण में ग्यारह ग्यारह और दूसरे तथा चौथे चरण में तेरह-तेरह मात्राएँ होती हैं। इसके सम चरणों में जगण का निषेध है। दोहे के चरणों को आगे-पीछे कर देने से सोरठा हो जाता है।
**सोरठी**—स्त्री० [सोरठ (देश)] संगीत में एक रागिनी जो मेघराग की पत्नी कही गई है।
वि० सोरठ-सम्बन्धी। सोरठ का।
**सोरण**—वि० [स०] जो स्वाद में उग्र हो। विशेषतः खट्टा और चरपरा।
**सोरनी**—स्त्री० [स० शोधनी] १. झाड़ू। बुहारी। २. जलाये हुए शव की राख बहाने का संस्कार।
**सोरबा**†—पु०=शोरबा।
**सोरभ**†—पु०=सौरभ (सुगंध)।
**सोर-भक्षी**†—स्त्री० [स० शूरभक्षी] लोप या बत्तूक। (डिं०)
**सोरह**†—वि०, पु०=सोलह।
**सोरहिया**†—स्त्री० [हि० सोलह?] पुरानी चाल की एक प्रकार की नाव जो सोलह हाथ चौड़ी होती थी।
†स्त्री०=सोरही।
**सोरही**†—स्त्री०=सोलह।
**सोरा**†—पु०=शोरा।
**सोराना**—अ० [हि० सोर=जड़] बोई हुई चीज में सोर या जड़ निकलना। उदा०—तुम्हारा आलू सोरा कर ऐसा ही रह जायगा।—जयशंकर प्रसाद।
**सोरी**—स्त्री० [सं० स्रवण=बहना या चूना] बरतन में का महीन छेद जिसमें से होकर पानी बह जाता हो।
**सोरि, सोरिक**—वि० [स०] तरंग-युक्त।
**सोलंकी**—पु० [देश०] क्षत्रियों का एक प्राचीन राजवंश जिसने बहुत दिनों तक गुजरात पर शासन किया था।
**सोल**—वि० [स०] १. शीतल। ठंढा। २. कसैला, खट्टा और तिक्त या तीता।
पु० १. शीतलता। ठंढक। २. स्वाद। जायका।
**सोलगंगो**—पु० [हि० सोलह+पंख] कँकड़ा। (डिं०)

**सोलह**—वि० [स० षोडश, प्रा० सोलस, सोरह] जो गिनती में दस से छ अधिक हो। षोडश।

पु० उक्त संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१६।

**मुहा०—सोलहो आने**=पूरा का पूरा। सब का सब। **सोलह-सोलह घंटे सुनाना**=खूब खरी-खोटी सुनाना।

**सोलह-नहीं**—पु० [हिं० सोलह+नहँ=नख] एक प्रकार का एंवी हाथी जिसके १६ नाखून होते हैं।

**सोलहवाँ**—वि० [हिं० सोलह+वाँ (प्रत्य०)] [स्त्री० सोलहवीं] संख्या के विचार से १६ की जगह पड़नेवाला।

**सोलह सिंगार**—पु० [हिं० सोलह+सिंगार] स्त्रियों के पूरा शृंगार करने के लिए बताये हुए ये सोलह कार्य—अंग में उबटन लगाना, नहाना, स्वच्छ वस्त्र धारण करना; बाल गूँथना; काजल लगाना; सिंदुर से माँग भरना; महावर लगाना, भाल पर तिलक लगाना, चिबुक पर तिल बनाना, मेंहदी लगाना; इत्र आदि सुगंधित द्रव्य लगाना; आभूषण पहनना; फूलों की माला पहनना; मिस्सी लगाना; पान खाना और होंठों को लाल करना।

**मुहा०—सोलह सिंगार सजाना**=बनना-ठनना।

**सोलही**†—स्त्री० [हिं० सोलह+ई (प्रत्य०)] १. सोलह चित्ती कौड़ियाँ। २. उक्त कौड़ियों से खेला जानेवाला जुआ। ३ पैदावार की १६-१६ अँटियों या पूलों के रूप में होनेवाली गिनती।

**सोला**—पु० [?] १. एक प्रकार की रेशमी धोती। २. एक प्रकार का बड़ा झाड़ जिसकी डालियाँ बहुत मजबूत और सीधी होती हैं।

**विशेष**—सोला हैट नामक अँगरेजी ढंग का टोप इसी की डालियों से बनता है।

**सोलाना**†—स०=सुलाना।

**सोलाली**—स्त्री० [?] पृथ्वी। (डिं०)

**सोल्लास**—वि० [स०] उल्लास-युक्त। प्रसन्न। आनंदित।

अव्य० उल्लास-पूर्वक। हर्ष से भर कर। बहुत प्रसन्न होकर।

**सोवज**—पु० १. सोवज। २. सौंज।

**सोवदू**†—पु० [स० सूत, प्रा० सूअ] सूतिकागार। सौरी।

**सोवधी**†—स्त्री० [स० शाबरी] दे० शाबरी। (डिं०)

**सोवन***—पु० [हिं० सोवना] सोने की क्रिया या भाव। शयन।

†वि० १. शोभन। २. सुनहला।

**सोवन-बानी**—वि० [सं० सुवर्ण+वर्ण] सुनहला। (राज०)

**सोवना**†—वि० [हिं० सोना=स्वर्ण] १. सोने के रंग का। सुनहला। २ सोने का। उदा०—लोच मढ़ाऊँ थारी सोवनी री।—मीराँ।

†अ०=सोना (शयन करना)।

**सोवनार***—स्त्री० [स० शयनागार] सोने का कमरा। शयनागार।

**सोवरी**†—स्त्री०=सौरी (सूतिकागार)।

**सोवा**—पु०=सोआ (साग)।

**सोवाना**†—स०=सुलाना।

**सोवारी**—पु० [?] संगीत में पन्द्रह मात्राओं का एक ताल जिसमें पांच आघात और तीन खाली होते हैं।

**सोवियत**—पु० [रूसी सोवियट] १. परिषद्। सभा। २. प्रतिनिधियों की सभा। ३. आज-कल समाजवाद के सिद्धांतों पर आश्रित रूस की वह शासन-प्रणाली जिसमें सभी छोटे-छोटे क्षेत्रों में मजदूर, सैनिकों आदि के चुने हुए प्रतिनिधियों के हाथ में सारे अधिकार रहते हैं। यही लोग जिले की शासन-परिषद् के लिए प्रतिनिधि चुनते हैं। फिर जिले की परिषदें प्रांत के शासन के लिए और तब प्रांतीय परिषदें केंद्रीय शासन के लिए प्रतिनिधि चुनती हैं।

वि० (स्थान) जहाँ उक्त प्रकार की शासन-प्रणाली प्रचलित हो। जैसे—सोवियट रूस।

**सोवैया**†—पु० [हिं० सोवना+इया (प्रत्य०)] सोनेवाला।

**सोशल**—वि० [अं०] १ समाज-संबंधी। सामाजिक। जैसे—सोशल कानफ्रेंस। २ समाज के लोगों के साथ हेल-मेल बढ़ाकर रहनेवाला। समाजशील। जैसे—सोशल लड़का।

**सोशलिज्म**—पु०=समाजवाद।

**सोशलिस्ट**—पु०=समाजवादी।

**सोषक***—वि०=शोषक।

**सोषण**†—पु०=शोषण।

**सोषना**†—स०=सोखना।

**सोषु**†—वि० [हिं० सोखना] सोखनेवाला। शोषक।

**सोष्णीष**—पु० [अ०] ऐसा घर जिसके अग्रभाग में बरामदा भी हो।

**सोष्यंती**—स्त्री० [स०] वह स्त्री जिसके शीघ्र ही प्रसव होने को हो। आसन्न-प्रसवा।

**सोष्यंती-कर्म**—पु० [स० सोष्यन्ती-कर्मन्] आसन्न-प्रसवा स्त्री के संबंध में किया जानेवाला कृत्य या संस्कार।

**सोस**†—वि० [स० शुष्क] १. सूखा। २ सोखनेवाला। शोषक।

†पु०=शोषण।

**सोसन**—पु० [फा० सौसन] १. एक पौधा जो कश्मीर में होता है। २ उक्त पौधे का फूल।

**सोसनी**—वि० [फा० सौसन] सोसन के फूल के रंग का। लाली लिए नीला।

पु० उक्त प्रकार का रंग।

**सोसाइटी, सोसायटी**—स्त्री० [अं०] १ समाज। २ संगठन। सोहबत। ३ सार्वजनिक संस्था।

**सोस्मि**†—अव्य०=सोऽहमस्मि।

**सोहँ**†—स्त्री०=सौंह (कसम)।

†अव्य०=सौंह (सामने)।

**सोहङ्**†—दे० सोऽहम्।

**सोहङ्**!—अव्य०=सोऽहम्।

†पु०=आत्म।

**सोहंग**—अव्य०=सोऽहम्।

**सोहगी**—स्त्री० [हिं० सोहाग] विवाह से पूर्व कन्या के लिए वर-पक्षवालों की तरफ से भेजी जानेवाली चीजें जो सौभाग्य-सूचक मानी जाती हैं।

**सोहगेला**—पु० [हिं० सुहाग या सोहाग] [स्त्री० अल्पा० सोहगेली] लकड़ी की वह कँगूरेदार डिबिया जिसमें विवाह के दिन सिंदूर भर कर देते हैं। सिंदूरा।

**सोहड़**†—पु०=सुभट। (राज०)

**सोहन**—वि० [सं० शोभन, प्रा० सोहण] [स्त्री० सोहनी] अच्छा लगनेवाला। सुंदर। सुहावना।
पु० १. सुन्दर पुरुष। २. स्त्री के लिए उसका पति या प्रेमी।
पु० एक प्रकार का बड़ा जंगली वृक्ष।
स्त्री० सोहन चिड़िया।
पु० [?] एक प्रकार का रदा।

**सोहन-चिड़िया**—स्त्री० [हिं०] एक प्रकार का बड़ा पक्षी जिसका मांस स्वादिष्ट होता है।

**सोहन-पपड़ी**—स्त्री० [हिं० सोहन+पपड़ी] मैदे की बनी हुई एक प्रकार की मिठाई जो जमे हुए कतरों या लच्छों के रूप में होती है।

**सोहन-हलुआ**—पु० [हिं० सोहन+हलुआ] एक प्रकार की बहुत बढ़िया और स्वादिष्ट मिठाई जो जमे हुए कतरों के रूप में और घी से तर होती है।

**सोहना**—अ० [सं० शोभा] सुशोभित होना। फबना।
वि० [स्त्री० सोहनी] सुंदर और सुहावना।
पु० [फा० सोहान] कसेरों का छेद करने का एक औजार।
स० [स० शोधन] १. साफ करना। २ निराई करना।

**सोहनी**—स्त्री० [हिं० सोहना] १. झाड़। बुहारी। २. खेत में की जानेवाली निराई। ३ निराई करते समय गाया जानेवाला गीत। ४. आधी रात के बाद गायी जानेवाली एक रागिनी।

**सोहबत**—स्त्री० [अ०] १. संग-साथ। संगत।
**पद—सोहबत का फल**=वह बात (विशेषत. बुरी बात) जो बुरी संगत के कारण सीखी गयी हो।
२. स्त्री-प्रसंग। संभोग।

**सोहबतदारी**—स्त्री० [अ०+फा०] स्त्री प्रसंग। संभोग।

**सोहबती**—वि० [अ० सुहबत] जिससे सोहबत हो। साथी। संगी।

**सोहमस्मि**—अव्य० सोऽहमस्मि।

**सोहर**—पु० [हिं० सोहना, सोहला] १ घर में संतान होने पर गाया जानेवाला मंगल गीत। २. उक्त अवसर पर गाये जानेवाले गीतों की संज्ञा। ३. मांगलिक गीत।
स्त्री० [?] १ नाव का फर्श। २ पाल खींचने की रस्सी।
**विशेष**—खिलौना (गीत) और सोहर में यह अंतर है कि सोहर में तो पुत्र-जन्म की पूर्व-पीठिका का उल्लेख होता है; परंतु खिलौना में उत्तर-पीठिका का उल्लेख होता है। इसमें आनन्द और उत्साह की मात्रा अधिक होती है।

**सोहरत***—स्त्री०=शोहरत (प्रसिद्धि)।

**सोहराना**†—स०=सहलाना।

**सोहला**†—पु०=सोहर (गीत)।

**सोहली**†—स्त्री० [?] माथे पर पहनने का एक गहना। (राज०)

**सोहाइन**†—वि०=सुहावना।

**सोहाई**—स्त्री० [हिं० सोहना+आई (प्रत्य०)] १. सोहने की क्रिया या भाव। निराई करना। २. निराई करने की मजदूरी।

**सोहाग**†—पुं०=सुहाग।

**सोहागा**†—पु०=सुहागा।

**सोहागिन(नी)**†—स्त्री०=सुहागिन।

**सोहागिल**†—स्त्री०=सुहागिन।

**सोहाता**—वि० [हिं० सोहाना] [स्त्री० सोहानी] १. सोहानेवाला। फबनेवाला। २. सत्य।

**सोहान**—पुं० [फा०] रेती नामक औजार।

**सोहाना**—अ०=सुहाना (भला लगना)।
अ० [स० सहन] बरदाश्त होना। जैसे—आप की बात उनको नहीं सोहाती। (पश्चिम)

**सोहापा**†—वि०=सुहावना।

**सोहारद**†—पु०=सौहार्द (सद्भाव)।

**सोहारी**†—स्त्री० [हिं० सोहाना=रचना] पूरी नाम का पकवान।

**सोहाल**†—पु०=सुहाल (पकवान)।

**सोहाली**—स्त्री० [?] ऊपर के दाँतों का भयूड़ा। ऊपरी दाँतों के निकलने की जगह।
†स्त्री०=सोहारी।

**सोहावटी**—स्त्री० [हिं० सोहाना ?] १ पत्थर की वह पटिया या लकड़ी का मोटा तख्ता जो खिड़की या दरवाजे के ऊपरी भाग पर पाटन के रूप में लगा रहता है। कगहना। २. ईंटों आदि की उक्त प्रकार की जोड़ाई या सीमेंट आदि की ऐसी रचना। (लिन्टल)

**सोहावन**†—वि०=सुहावना।

**सोहावना**†—वि०=सुहावना।
†अ०=सुहाना (भला लगना)।

**सोहासित**†—वि० [स० सुभाषित] प्रिय लगनेवाला। रुचिकर।
पु० चापलूसी की बातें। ठकुर-सुहाती।

**सोहि**†—अव्य० =सँहि (सामने)।

**सोहिनी**—वि० स्त्री०=सोहनी।

**सोहिल**†—पु०=सुहेल (अगस्त्य तारा)।

**सोहिला**†—पु०=सोहला (सोहर)।

**सोहीं (हैं)**†—अव्य० =सौंह (सामने)।

**सोहौटी**†—स्त्री०=सोहावटी।

**सौं**†—अव्य० १. दे० 'सों'। २. दे० 'सा' (समान)। उदा०—हरि सौ ठाकुर और न जन कौं।—सूर। ३ दे० 'सौंह' (सामने)।
†स्त्री०=सौंहि (शपथ)।

**सौंकारा**†—पु० [स० सकाल] प्रात काल। सवेरा। तड़का।

**सौंकारे, सौंकेरे***—अव्य० [स० सकाल, पु० हिं० सकारे] १ तड़के। सवेरे। २. उचित या ठीक समय से कुछ पहले ही।

**सौंचाई**—स्त्री० [हिं० सोहागा+सस्ता] अधिकता। बहुतायत। ज्यादती।

**सौंची**—वि० [?] १. अच्छा। २. उचित। ठीक। वाजिब।

**सौंचन**†—स्त्री० [स० शौच] मल-त्याग। शौच।

**सौंचना**†—स० [स० शौच] १ शौच करना। मल-त्याग करना। २. मल-त्याग के उपरान्त हाथ-पैर आदि धोना।

**सौंचर**—पु०=सोचर (नमक)।

**सौंचाना**†—स० [हिं० सौंचना का प्रे०] शौच कराना या मल-त्याग कराना। (मुख्यतः बच्चों के संबंध में प्रयुक्त)

**सौंज***—स्त्री० [फा० साज] साज (सामान)।

**सौंघा**—पु० [हिं० सौंघना] १ सुपुर्द करना। सौंपना। २. जोतने-बोने के लिए किसी को खेत देना। ३. आपस में होनेवाला परामर्श या समझौता।

†पु० [सं० श्वापद] जंगली (विशेषतः शिकारी) जानवर।

**सौंड़ (ड़)** †—पु० [हिं० सोना+ओढ़ना] ओढ़ने का (विशेषतः सोते समय ओढ़ने का) भारी कपड़ा। जैसे—रजाई, लिहाफ, आदि।

**सौंण**†—पु०=शकुन। (राज०)

**सौंतुख**—अव्य० [सं० सम्मुख] १. आँखों के आगे। प्रत्यक्ष। सामने। २ आगे। सामने।

पु० आगा। सामना।

**सौंदन**—स्त्री० [हिं० सौंदना] रेहु मिले पानी में कपड़े भिगोना। (धोबी)

**सौंदना**—स० [सं० सधम्-मिलना] १. सौंदन का काम करना। २ दे० 'सानना'।

**सौंदर्ज***—पु०=सौंदर्य।

**सौंदर्य**—पु० [सं०] १ सुंदर होने की अवस्था, गुण या भाव। सुंदरता। खूबसूरती। २ किसी वस्तु का वह गुण या तत्त्व समूह जो उसके आकार या रूप को आकर्षक और नेत्रों के लिए सुखद बनता है। सुंदरता। (ब्यूटी)

**विशेष**—यह तत्त्व प्रायः व्यक्तिगत रुचि और विचार पर आश्रित रहता है, और कला के क्षेत्र तक ही परिमित नहीं है।

३. संगीत में कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

**सौंदर्यता**†—स्त्री०=सौंदर्य।

**सौंदर्यवाद**—पु० [सं०] यह मत या सिद्धान्त कि कला में सौन्दर्य को ही प्रधानता होनी चाहिए और मनुष्य की सुरुचि उसी के प्रति रहनी चाहिए। (एस्थेटिसिज्म)

**सौंदर्यवादी**—वि० [सं०] सौन्दर्यवाद-संबंधी। सौंदर्यवाद का।

पु० वह जो सौन्दर्यवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

**सौंदर्यविज्ञान**—पु० [सं०] =सौंदर्य-शास्त्र।

**सौंदर्यशास्त्र**—पु० [सं०] वह शास्त्र जिसमें कलात्मक कृतियों, रचनाओं आदि से अभिव्यक्त होनेवाले अथवा उनमें निहित रहनेवाले सौंदर्य का तात्त्विक, दार्शनिक और मार्मिक विवेचन होता है। (एस्थेटिक्स)

**विशेष**—किसी सुंदर वस्तु को देखकर हमारे मन में जो आनन्ददायिनी अनुभूति होती है उसके स्वभाव और स्वरूप का विवेचन तथा जीवन की अन्यान्य अनुभूतियों के साथ उसका समन्वय स्थापित करना इनका मुख्य उद्देश्य होता है।

**सौंध**†—पु०=सौंध।

†स्त्री०=सुगंध।

**सौंधना**†—स० [सं० सुगंधि] सुगंधित करना। सुवासित करना। बासना।

†स० सौंदना।

**सौंधा**—वि०, पु० =सोंधा। उदा०—गंधी की सौंधने नहीं, जन जन हाथ बिकाय।—नन्ददास।

**सौंनी**—पु०=सुनार।

**सौंपना**—स० [सं० समर्पण, प्रा० सउप्पण] १. किसी के अधिकार में देना। २ पूरी तरह से और सदा के लिए किसी को दे देना। ३ समर्पण करना।

**सौंफ**—स्त्री० [सं० शतपुष्पा] १ पांच-छ फुट ऊँचा एक पौधा जिसकी पत्तियाँ सोए की पत्तियों के समान ही बहुत बारीक और फूल सोए के समान ही कुछ पीले होते हैं। फल लंबे सींकों में गुच्छों के रूप में लगते हैं। २. उक्त पौधे के बीज जो जीरे के रूप में होते और मसाले के काम में आते हैं।

**सौंफिया**—स्त्री० [हिं० सौंफ+इया (प्रत्य०)] १ सौंफ की बनी हुई शराब। २ रूसा नाम की घास जब कि वह पुरानी और लाल हो जाती है।

**सौंफी**—वि० [हिं० सौंफ] सौंफ संबंधी। सौंफ का।

स्त्री०=सौंफिया (शराब)।

**सौंभरि**—पु०=सौभरि।

**सौंर**—पु० [हिं० सौरी] मिट्टी के बरतन, भांडे आदि जो सनानोत्पत्ति के दशवें दिन (अर्थात् सूतक हटने पर) तोड़ दिये जाते हैं।

†स्त्री०=सौरी।

**सौंर्ह**†—स्त्री० [हिं० साझरा] सांझ-तापन।

**सौंरना***—स० [सं० स्मरण, हिं० सुमरना] स्मरण करना। चिंतन करना। ध्यान करना।

†अ०=संवरना।

**सौंरा***—वि०=सांवला।

**सौंराई***—स्त्री०=सांवलापन।

**सौंसे***—वि० [सं० समस्त] सब। कुल। पूरा। (पु० हिं०)

**सौंह**†—स्त्री० [हिं० सौगंद] शपथ। कसम। (पश्चिम)

क्रि० प्र०—करना।—खाना।—देना।

अव्य०=सौंहें।

**सौंहन**—पु०=सोहन।

**सौंही**—स्त्री० [?] एक प्रकार का हथियार।

†अव्य०=सौंहें (सामने)।

**सौ**—वि० [सं० शत] जो गिनती में पचास का दूना हो। नब्बे और दस। दस।

पु० उक्त की संख्या का सूचक अंक जो इस प्रकार लिखा जाता है—१००।

**पद—सौ की एक बात या सौ की सीधी एक बात**=ठीक और सार-भूत बात। वास्तविक तात्पर्य। **सौ जान से**=पूरी शक्ति से। सब तरह से।

†अव्य०=सा।

**सौक**—वि० [हिं० सौ+एक] सौ के लगभग। अर्थात् बहुत-सा। उदा०—छींन्ही सौक माला, परे अँगूरीन जप-छाला···।—सेनापति।

†पु०=शौक।

†स्त्री०=सौत (सपत्नी)।

**सौकन**†—स्त्री०=सौत।

**सौकन्य**—वि० [सं०] सुकन्या-संबंधी। सुकन्या का।

**सौकर**—वि० [सं०] [स्त्री० सौकरी] १. शूकर या सूअर संबंधी। सूअर का। २. सूअर की तरह का। ३. सूअर या बाराह अवतार से संबंध रखनेवाला।

पु० बाराह सेन नामक तीर्थ।

**सौकरक**—पु० [स०] सौकर नीर्च।

**सौकरायण**—पु० [स०] शिकारी। व्याध। अहेरी।

**सौकरिक**—पु० [स०] १ सूअर, रीछ आदि का शिकार करनेवाला शिकारी। २ शिकारी। अहेरी। ३. सूअरों का व्यापारी।
वि० सूअर संबंधी। सूअर का।

**सौकरीय**—वि० [सं०] सूअर संबंधी। सूअर का।

**सौकर्य**—पु० [स०] १ सुकर होने की अवस्था, गुण या भाव। सुकरता। सुसाध्यता। २ सुभीता। ३ कुशलता। दक्षता।
प० [स० सूकर+ष्या] सूअर अर्थात् सूअर होने की अवस्था गुण या भाव।

**सौकीन**†—वि० शौकीन।

**सौकुमारक**—पु० [स०] सौकुमार्य।

**सौकुमार्य**—पु० [स०] १. सुकुमार होने की अवस्था, गुण या भाव। नुकुमारता। २. यौवन। जवानी। ३. काव्य का एक गुण जो ग्राम्य और श्रुति-कटु शब्दों का त्याग करने और सुंदर तथा कोमल शब्दों का प्रयोग करने से उत्पन्न होता है। ४ यौवन काल। जवानी।
वि० सुकुमार।

**सौकृति**—पु० [स०] १ एक गोत्र-प्रवर्तक ऋषि। २ उक्त ऋषि का गोत्र।

**सौकृत्य**—पु० [स०] १ यज्ञादि पुण्य कर्म का सूचक अनुष्ठान। २ दे० 'सौकर्म'।

**सौकृत्यायन**—पु० [स०] वह जो सुकृत्य के गोत्र या वंश में उत्पन्न हुआ हो।

**सौक्थिक**—वि० [सं०] १ सूक्त-संबंधी। सूक्त का। २ सूक्त के रूप में होनेवाला।
पु० शौक्थिक।

**सौक्ष्म**—पु० सूक्ष्मता।

**सौक्ष्मक**—पु० [स०] छोटा पौधा।

**सौक्ष्म्य**—पु० [सं०] सूक्ष्मता।

**सौख**—पु० [स०] सुख का गुण, धर्म या भाव। सुख। आराम।
†पुं० शौक।

**सौख शायिक**—पुं० [स०] वैतालिक। स्तुति पाठक। बंदी।

**सौखा**†—वि० [हिं० सुख] सहज। सुगम।

**सौखिक**—वि० [स०] १ सुख-संबंधी। २. सुख के रूप में होनेवाला। ३ सुख चाहनेवाला। सुखार्थी।

**सौखी**†—पु० [फा० शोख या शौकीन] गुंडा। बदमाश।

**सौखीन**†—वि०=शौकीन।

**सौख्य**—पु० [सं०] १. सुख का गुण, धर्म या भाव। सुखता। सुखत्व। २ सुख। आराम।

**सौख्यद**—वि० [स०] =सुखदायी। सौख्य देनेवाला।

**सौख्यदायी (यिन्)**—वि० [सं०] सुखदायी।

**सौगंद**—स्त्री० [सं० सौगन्ध] शपथ। कसम। सौंह।
क्रि० प्र०—खाना।—देना।

**सौगंध**—पु० [सं०] १. सुगंधित तेल, इत्र आदि का व्यापार करनेवाला, गंधी। २. सुगंध। खुशबू। ३. एक प्राचीन वर्ण-संकर जाति। ४. अगिया घास। मूतृण।
वि० सुगंधित। खुशबूदार।
†स्त्री० सौगंद (शपथ)।

**सौगंधक**—पु० [स०] नीला कमल। नील कमल।

**सौगंधिक**—वि० [?] सगंधवाला।
पु० [स०] १ नील कमल। २ लाल कमल। ३ सफेद कमल। ४ गंध-तृण। रामा-कपूर। ५ रूसा नामक घास। ६ गंधक। ७ पुखराज नामक रत्न। ८ सुगंधित तेल, इत्र आदि का व्यवसायी। गंधी। ९ एक प्रकार का कीड़ा जो श्लेष्मा से उत्पन्न होता है। (चरक) १० एक प्रकार का नपुंसक जिसे किसी पुरुष की इंद्री अथवा स्त्री की योनि सूँघने से उद्दीपन होता है। नासायोनि। (वैद्यक) ११ दालचीनी, इलायची और तेजपत्ता इन तीनों का समूह। त्रिसुगंधि। १२ एक पौराणिक पर्वत।
वि० सुगंधित।

**सौगंधिका**—स्त्री० [स०] अलकापुरी की एक नदी।

**सौगंध्य**—पु० [स०] सुगंधि का भाव या धर्म। सुगंधता। सुगंधत्व।

**सौगत**—पु० [स०] सुगत (बुद्ध) का अनुयायी। बौद्ध।
वि० सुगत-संबंधी। सुगत का।

**सौगतिक**—पु० [स०] १ बौद्ध धर्म का अनुयायी। २ बौद्ध भिक्षु। ३ नास्तिक। ४ नास्तिकता।

**सौगम्य**—पु० [स०] सुगम होने की अवस्था, गुण या भाव। सुगमता। आसानी।

**सौगरिया**—पु० [?] क्षत्रियों की एक जाति या वंश।

**सौगात**—स्त्री० [तु०] किसी प्रदेश विशेष की कोई नई चीज जो उपहार के रूप में किसी को भेजी या दी जाती है। तोहफा।

**सौगाती**—वि० [हिं० सौगात] १ जो सौगात के रूप में हो या जो सौगात के रूप में दिया गया हो। जैसे—सौगाती शेव। २ जो सौगात के रूप में दिये जाने के योग्य हो, अर्थात् बहुत बढ़िया।

**सौदा**!—वि० [हिं० महँगा का अनु०] सस्ता। अल्प मूल्य का। कम दाम का। 'महँगा' का विपर्याय।

**सौच**!—पु० =शौच।

**सौचिक**—पु० [स०] सूची कर्म या सिलाई द्वारा जीविका निर्वाह करने वाला, अर्थात् दरजी। सूचिक।

**सौचिवय**—पु० [स०] सूचिक का कार्य। दरजी का काम। कपड़े आदि सीने का काम। सिलाई।

**सौचित्ति**—पु० [स०] वह जो सुचित्त के अपत्य हो।

**सौज**—वि० [स० सौजस्] शक्तिशाली। बलवान्। ताकतवर।
†स्त्री० [फा० साज] साज-सामान। उपकरण। सामग्री।

**सौजना**†—अ० सजना (शोभित होना)।

**सौजन्य**—पु० [स०] सुजन होने की अवस्था, गुण या भाव। सुजनता। भलमनसत।

**सौजन्यता**—स्त्री०=सौजन्य। (अस्सिद्ध रूप)

**सौजा**†—पु०=साबज (शिकार का जानवर)।

**सौजात**—पु० [स०] सुजात के वंश में उत्पन्न व्यक्ति।
वि० सुजात संबंधी। सुजात का।

**सौढ़**†—पु०=सौढ़ (चादर)।

**सौत**—स्त्री० [स० सपत्नी] किसी स्त्री की दृष्टि से उसके पति या प्रेमी की दूसरी पत्नी या प्रेमिका। सपत्नी।
**पद—सौतिया डाह।** (दे०)
वि० [स०] १. सूत से संबंध रखनेवाला। सूत का। २. सूत से बना हुआ। सूती।

**सौतन**†—स्त्री० सौत।

**सौताप**—पु० [हिं० सौत+आप (प्रत्य०)] १. सौत होने की अवस्था या भाव। सौतपन। २. सौतों में होनेवाली पारस्परिक ईर्ष्या या डाह। सौतिया डाह।

**सौति**—पु० [स०] सूत के अपत्य, कर्ण।
†स्त्री० =सौत (सपत्नी)।

**सौतिन**†—स्त्री० सौत।

**सौतिया**—वि० [हिं० सौत+इया (प्रत्य०)] सौत सम्बन्धी। सौत का।
**पद—सौतिया डाह।**

**सौतियाडाह**—स्त्री० [हिं०] सौतों में होनेवाली पारस्परिक ईर्ष्या या डाह।

**सौतुक (तुक)**†—पु० =सौतुत्व।

**सौतेला**—वि० [हिं० सौत+एला (प्रत्य०)] [स्त्री० सौतेली भाव० सौतेलापन] १ सौत से उत्पन्न। सौत का। जैसे—सौतेला लड़का। २ जो सौत के संबंध के विचार से नाते या रिश्ते में किसी स्थान पर पड़ता हो। जैसे—सौतेला भाई, अर्थात् मां की सौत का लड़का। सौतेली मां अर्थात् किसी की मां की सौत।

**सौत्य**—पु० [स०] सूत या सारथि का काम।
वि० १ सूत या सारथी से संबंध रखनेवाला। २ सुत्य अर्थात् सोम के अभिषेक से संबंध रखनेवाला।

**सौत्र**—वि० [स०] १ सूत-संबंधी। सूत का। २ सूत्र-संबंधी। सूत्रों का या सूत्रों के रूप में लिखा हुआ।
पु० ब्राह्मण।

**सौत्रांतिक**—पु० [स०] बौद्धों का एक भेद।

**सौत्रामण**—वि० [स०] [स्त्री० सौत्रामणी] इन्द्र-संबंधी। इन्द्र का।
पु० एक प्रकार का एकाह यज्ञ।

**सौत्रामणिक**—वि० [स०] सौत्रामणी से संबंध रखनेवाला।

**सौत्रामणी**—स्त्री० [स०] इन्द्र के प्रीत्यर्थ किया जानेवाला एक प्रकार का यज्ञ।
पु० पूर्व।

**सौत्रिक**—वि० [सं०] १. सूत्रों से संबंध रखनेवाला। २ सूत से बना या बुना हुआ। सूती।
पु० १ वह जो कते हुए सूत बेचने का व्यापार करता हो। २ जुलाहा। ३. सूतों से बुना हुआ कपड़ा या और कोई चीज।

**सौदंति**—वि० [स०] सुदंत सम्बन्धी।
पु० सुदंत के अपत्य या वंशज।

**सौदंतेय**—पु० [स०] =सौदंति।

**सौदक्ष**—वि० [स०] १ सुदक्ष-संबंधी। सुदक्ष का। २ सुदक्ष से उत्पन्न।

**सौदर्य**—वि० [स०] १ जो एक ही उदर से उत्पन्न हुए हों। सहोदर। २ सहोदरों का। ३. सहोदरों-जैसा।
पु० भाई-चारा। भातृत्व।

**सौदा**—पु० [अ०] १. खरीदने और बेचने की चीज। क्रय-विक्रय की वस्तु। माल।
**यौ०—सौदा सुल्फ (सुलफ)** =खरीदने की चीजें या वस्तुएँ। कई तरह की चीजें। **सौदा सूत** सौदा-सुलफ।
२ खरीदने-बेचने या लेन-देन की बात-चीत या व्यवहार। ३ ऐसा व्यवहार जिसमें किसी का कोई काम या हित करके उसके बदले में उससे अपना कोई काम या हित कराया जाता हो।
**मुहा०—सौदा करना या पटाना** =बात-चीत करके लेन-देन, आदान-प्रदान आदि का कोई व्यापार या व्यवहार पक्का या स्थिर करना।
४ खरीदने या बेचने की बात-चीत पक्की करना। (ब. लेन. उक्त सभी अर्थों में) जैसे—उन्होंने पचास गाठ का सौदा किया।
**पद—सौदागर।** (दे०)
५ छाट-छाँट कर साफ किये हुए वे पात जो कीड़ों से खाए गये हों। (तंबाकू)। ६ यूनानी चिकित्सा-पद्धति में मानें तुए शरीर के उन दूषित तत्वों में से एक जिसका रंग काला कहा गया है। ७ उन्माद या पागलपन लानेवाला एक जो उक्त दूषित तत्व के योग से उत्पन्न माना गया है।

**सौदाई**—पु० [अ० सौदा+ई (प्रत्य०)] जिसे सौदा या पागलपन हुआ हो। पागल। बावला।
**मुहा०—(किसी का) सौदाई होना** =(किसी के प्रेम में) पागल-सा हो जाना।

**सौदाकारी**—स्त्री० [अ०+फा०] १ सौदा खरीदने या बेचने अथवा उसके निश्चय करने के संबंध में होनेवाली बातचीत। (गार्डेनिंग) २ दे० 'सौदेबाजी'।

**सौदागर**—पु० [फा०] [भाव० सौदागरी] रोजगारी। चीजें खरीदने और बेचने का व्यापार करनेवाला। व्यापारी।

**सौदागर-बच्चा**—पु० [फा० सौदागर+हिं० बच्चा] ऐसा पुत्र या वंशज जो स्वयं भी सौदागरी करता हो। पुश्तैनी सौदागर।

**सौदागरी**—स्त्री० [फा०] सौदागर का काम, पद या भाव। व्यापार। व्यवसाय। रोजगार।

**सौदामनी**—स्त्री० [स०] १ बिजली। विद्युत्। २ विशेषतः माला के आकार की बिजली या बिजली। ३ संगीत में एक प्रकार की रागिनी जो मेघ राग की सहचरी कही गई है।

**सौदामनीय**—वि० [स०] १ सौदामनी या विद्युत् से संबंध रखनेवाला। २ सौदामनी या विद्युत्-सा।

**सौदामिनी**—स्त्री० =सौदामनी।

**सौदामिनीय**—वि० [प०] =सौदामनी संबंधी।

**सौदामेय**—पु० [स०] सुदामा के अपत्य या वंशज।

**सौदामनी**†—स्त्री० =सौदामनी।

**सौदायिक**—पु० [स० सुदाय+ठक्—इक] १ विवाह के समय वधू को उसके माता-पिता तथा संबंधियों के द्वारा मिलनेवाला धन। २. इस अवसर पर वधू को दिया जानेवाला उपहार।

**सौदेबाजी**—स्त्री० [अ० सौदा+फा० बाजी (प्रत्य०)] (खूब समझ-बूझकर या अड़कर अथवा अपने लाभ का पूरा ध्यान रखकर किसी ठहराव, लेनदेन या व्यवहार के संबंध में की जानेवाली बात-चीत। (बारगेनिंग)

**सौदेव**—पुं० [सं०] सुदेव के पुत्र, दिवोदास।

**सौद्युम्नि**—पु० [सं०] सुद्युम्न के वंशज।

**सौध**—वि० [सं०] १. सुधा से बना हुआ। २ सफेदी या पलस्तर किया हुआ।

पु० १ वह ऊँचा और बड़ा पक्का मकान जिस पर चूना पुता हुआ हो। २ प्रासाद। महल। ३. प्राचीन भारत में धवलगृह का वह ऊपरी भाग (वासभवन से भिन्न) जो केवल रानियों के उठने-बैठने के लिए रक्षित रहता था। ४. चाँदी। रजत। ५ धूसिया पत्थर। दुग्धपाषाण।

**सौधकार**—पु०[सं०] सौध अर्थात् प्रासाद या भवन बनानेवाला कारीगर। राज। मेमार।

**सौधना**†—स०=सोधना।

**सौधन्य**—वि० [सं०] १. सुधन-संबंधी। २ सुधन से उत्पन्न।

**सौधन्वा (न्वन्)**—पु० [सं०] १. सुधन्वा के पुत्र, ऋभु। २ एक प्राचीन वर्ण-संकर जाति।

**सौधर्म**—पु० [सं०] १ 'सुधर्म' का गुण या भाव। २. सुधर्म का पालन। ३ सज्जनता। साधुता। ४ जैनों के अनुसार देवताओं का निवास-स्थान। कल्प-भवन।

**सौधर्मज**—पु० [सं०] सौधर्म में उत्पन्न एक प्रकार के देवता। (जैन) वि० सौधर्म में उत्पन्न।

**सौधर्म्य**—पु० [सं०] १. सुधर्म का गुण या भाव। २ भलमनसत। सज्जनता। ३ ईमानदारी।

**सौधाकर**—वि० [सं०] सुधाकर या चन्द्रमा-संबंधी। चान्द्र।

**सौधात**—पु० [सं०] ब्राह्मण और भूज्यकठी से उत्पन्न सतान।

**सौधातिक**—पु० [सं०] सुधाता के वंशज।

**सौधार**—पु० [सं०] नाट्य-शास्त्र के अनुसार नाटक के चौदह भागों में से एक।

**सौधावति**—पु० [सं०] सुधावति के अपत्य।

**सौधृतेय**—पु० [सं०] सुधृति के वंशज।

**सौनंद**—पु० [सं०] बलराम के मूसल का नाम।

**सौनंदी (दिन्)**—पु० [सं०] सौनदधारी बलराम।

**सौन**—वि० [सं०] १. सून या सूना से संबंध रखनेवाला। २ पशु-पक्षियों के वध या हत्या से संबंध रखनेवाला।

पु० १. कसाई। बूचड़। २. बिल्ली के लिए रखा हुआ ताजा मास।

†अव्य० [सं० सम्मुख] प्रत्यक्ष। सामने।

**सौनक**—पु०=शौनक (ऋषि)।

**सौनन्द**†—स्त्री०=सौंदन।

**सौनना**—स०=सौंदना।

**सौनहोत्र**—पु०=शौनहोत्र।

**सौना**†—पुं०=सोना।

†पुं०=सौंदन।



**सौनाग**—पु० [सं०] वैयाकरणों की एक शाखा, जिसका उल्लेख पतजलि के महाभाष्य में है।

**सौनामि**—पुं० [सं०] वह जो सुनामा के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो।

**सौनिक**—पु० [सं०] १. मांस बेचनेवाला। कसाई। वैतसिक। मासिक। २ बहेलिया। व्याध।

**सौनीतेय**—पु० [सं०] सुनीति के पुत्र, ध्रुव।

**सौपर्ण**—पु० [सं०] १. पन्ना। मरकत। २. सोंठ। ३. ऋग्वेद का एक सूक्त। ४. गरुड़ के अस्त्र का नाम। ५. गरुड पुराण का एक नाम।

वि० सुपर्ण संबंधी। सुपर्ण का।

**सौपर्णेय**—पु० [सं०] सुपर्णी के पुत्र, गरुड़।

**सौपर्ण्य**—पु० [सं०] सुपर्ण पक्षी (बाज या चील) का स्वभाव या धर्म।

वि० सौपर्ण।

**सौपर्व**—वि० [सं०] सुपर्व-संबंधी। सुपर्व का।

**सौपाक**—पु० [सं०] एक प्राचीन वर्ण-संकर जाति।

**सौपिक**—वि० [सं०] १ सूप या व्यजन से संबंध रखनेवाला। २ जिसमें सूप या शोरबा मिला या लगा हो। शोरबेदार।

**सौपिष्ट**—पु० [सं०] वह जो सुपिष्ट के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो।

**सौपुष्पि**—पु० [सं०] वह जो सुपुष्प के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो। सुपुष्प का गोत्रज।

**सौप्तिक**—वि० [सं० सुप्त+ठक—इक] सुप्ति या नींद-संबंधी।

पु० १. रात के समय किया जानेवाला आक्रमण। २ सोते हुए व्यक्ति पर किया जानेवाला आक्रमण।

**सौप्रजास्त्व**—पु० [सं०] अच्छी संतानों का होना। अच्छी औलाद होना।

**सौप्रतीक**—वि० [सं०] १. सुप्रतीक दिग्गज संबंधी। २ हाथी से संबंध रखनेवाला। हाथी का।

**सौबल**—पु० [सं०] गांधार देश के राजा सुबल का पुत्र, शकुनि।

वि० सुबल संबंधी। सुबल का।

**सौबलक**—पुं० [सं०] =सौबल (शकुनि)।

**सौबली**—स्त्री० [सं०] सुबल की पुत्री, गांधारी (धृतराष्ट्र की पत्नी)।

**सौबलेय**—पुं० [सं०]=सौबल (शकुनि)।

**सौबिगा**—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की बुलबुल जो ऋतु के अनुसार रग बदलती है।

**सौबीर**†—पु०=सौवीर।

**सौभ**—पु०[सं०] १. राजा हरिश्चन्द्र की उस कल्पित नगरी का नाम जो आकाश में मानी गई है। कामचारिपुर। (महाभारत) २ प्राचीन भारत में, शाल्वों का एक नगर या जनपद।

**सौभकि**—पु०[सं०] द्रुपद का एक नाम।

**सौभग**—पु०[सं०]१ सुभग होने की अवस्था, धर्म या भाव। सौभाग्य। खुशकिस्मती। २ सुख। ३ धन-सपत्ति। ४. सुन्दरता।

वि० सुभग सम्बन्धी। सुभग का।

**सौभद्र**—वि०[सं०] सुभद्रा-संबंधी।

पु०१. सुभद्रा के पुत्र अभिमन्यु। २ वह युद्ध जो सुभद्राहरण के समय हुआ था। ३. एक प्राचीन तीर्थ।

**सौभ्रेय**—पुं०[सं०]१. सुभद्रा के पुत्र, अभिमन्यु। २. बहेड़ा।

**सौभर**—पु० [सं०] एक वैदिक ऋषि।

**सौभरायण**—पु० [सं०] वह जो सौभर के गोत्र में उत्पन्न हुआ हो। सौभर का गोत्रज।

**सौभरि**—पु० [सं०] एक प्राचीन ऋषि, जो बड़े तपस्वी थे। (भागवत)

**सौभागिनी**—स्त्री० [सं० सौभाग्य] सधवा स्त्री। सुहागिन।

**सौभागिनेय**—पु० [सं०] प्रिय पत्नी का पुत्र।

**सौभाग्य**—पुं० [सं०] १ अच्छा भाग्य। उत्तम प्रारब्ध। अच्छी किस्मत। २. यथेष्ट सुखी ३ कल्याण। मंगल। ४. स्त्रियों के पक्ष में वह अवस्था, जिसमें उनका पति जीवित और वर्तमान रहता है। अहिवात। सुहाग। ५. सिन्दूर जो सौभाग्यवती स्त्रियों का मुख्य चिह्न है। ६ अनुराग। प्रेम। ७. धन-संपत्ति। ८. सुंदरता। ९. शुभ-कामना। मंगल-कामना। १० सफलता। ११ एक प्रकार का व्रत जो सब तरह से सुखी रहने के लिए किया जाता है। १२ ज्योतिष में, विष्कंभ आदि सत्ताइस योगों में से चौथा योग जो बहुत शुभ माना जाता है। १३ एक प्रकार का पौधा। १४. सुहागा।

**सौभाग्य तृतीया**—स्त्री० [सं०] माघ शुक्ल पक्ष की तृतीया जो स्त्रियों के लिए बहुत पवित्र मानी गई है। हरितालिका तीज।

**सौभाग्यवती**—स्त्री० [सं०] १. (स्त्री) जिसका सौभाग्य या सुहाग बना हो। जिसका पति जीवित और वर्तमान हो। सधवा। सुहागिन। २. अच्छे भाग्यवाली।

**सौभाग्यवान् (वत्)**—वि० [सं०] [स्त्री० सौभाग्यवती] १ जिसका भाग्य अच्छा हो। अच्छे भाग्यवाला। खुशकिस्मत। खुशनसीब। २ सब प्रकार से सुखी और सम्पन्न।

**सौभाग्य-व्रत**—पु० [सं०] फाल्गुन शुक्ल तृतीया को किया जानेवाला एक व्रत।

**सौभास्तिक**—वि० [सं०] चमकीला। प्रकाशमान्।

**सौभिक**—पु० [सं०] जादूगर। इन्द्रजालिक।

**सौभिक्ष**—वि० [सं०] सुभिक्ष या सुसमय लानेवाला।

पु० घोड़ों को होनेवाला एक प्रकार का शूल रोग।

**सौभिक्ष्य**—पु० [सं०] = सुभिक्ष।

**सौभूत**—पु० [सं०] एक प्राचीन स्थान जो संभवतः केकय देश में था।

**सौभेय**—पु० [सं०] सौभ जनपद या नगर का निवासी।

**सौमेषज**—वि० [सं०] जिसमें सुभेषज या उत्तम ओषधियाँ हों। उत्तम औषधियों से युक्त।

**सौभ्रात्र**—पु० [सं०] अच्छा भाई-चारा। सुभ्रातृत्व।

**सौमंगल्य**—पु० [सं०] १. सुमंगल। कल्याण। २. मांगलिक द्रव्य या सामग्री।

**सौमंत्रिण**—पु० [सं०] वह जिसके अच्छा मंत्री हो।

**सौम**—वि० [सं०] १. सोमलता-संबंधी। २. सोम अर्थात् चन्द्रमा सम्बन्धी।

†वि० = सौम्य।

**सौमन**—पु० [सं०] १. एक प्रकार का अस्त्र (रामायण)। २ सुमन। फूल।

**सौमनस**—वि० [सं०] १. सुमन या फूल संबंधी। २. फूलों का बना हुआ। ३ फूल के जैसा सुन्दर और कोमल।

पु० १ आनन्द। प्रसन्नता। २ अनुग्रह। कृपा। ३ पश्चिम दिशा के दिग्गज। ४. कर्म मास या सावन की आठवीं तिथि। ५. अस्त्रों को निष्फल करने का एक सहारक अस्त्र। ६ जायफल।

**सौमनस्य**—वि० [सं०] आनन्द देनेवाला। प्रसन्न करनेवाला।

पु० १ प्रसन्नचित्तता। प्रसन्नता। आनंद। २ आगस में होनेवाला सद्भाव। ३. किसी विषय की सुबोधता। ४. श्राद्ध में पुरोहित या ब्राह्मण के हाथ में फूल देना। (भागवत)

**सौमायन**—पु० [सं०] (सोम अर्थात् चन्द्रमा के पुत्र) बुध।

**सौमिक**—वि० [सं०] १. सोमरस से किया जानेवाला (यज्ञ)। २. सोम यज्ञ संबंधी। ३ चन्द्रमा संबंधी। (व्युत्पत्ति) जैसे—सौमिक ग्रहण।

पु० १. चान्द्रायण व्रत करनेवाला। २ सोम रखने का पात्र।

**सौमिकी**—स्त्री० [सं०] १ यज्ञ के समय सोम का रस निचोड़ने की क्रिया। २ एक प्रकार का यज्ञ जिसे दीक्षणीयेष्टि भी कहते हैं।

**सौमित्तिका**—स्त्री० [सं०] १ पालकी, रथ आदि के ऊपर उन्हें ढकने के लिए डाला जानेवाला कपड़ा। ओहार। २ घोड़े, हाथी आदि की पीठ पर डाला जानेवाला कपड़ा। झूल।

**सौमित्र**—वि० [सं०] सुमित्रा-सम्बन्धी। सुमित्रा का।

पु० १ सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण। २ दोस्ती। मित्रता।

**सौमित्रा**—स्त्री० = सुमित्रा।

**सौमित्रि**—पु० [सं०] [वि० सौमित्रीय] सुमित्रा के पुत्र, लक्ष्मण।

**सौमित्रीय**—वि० [सं०] लक्ष्मण संबंधी।

**सौमिलिक**—पु० [सं०] बौद्ध भिक्षुओं का एक प्रकार का दंड जिसमें रेशम का गुच्छा लगा रहता है।

**सौमी**—स्त्री० = सौम्यी (चाँदनी)।

**सौमुख्य**—पु० [सं०] १. सुमुखता। चित्त की प्रसन्न अवस्था। २ प्रसन्नता।

**सौमेंद्र**—वि० [सं०] सोम और इन्द्र का। सोम और इन्द्र-सम्बन्धी।

**सौमेधिक**—वि० [सं०] १. सुमेधा से युक्त। २ दिव्य ज्ञान-सम्पन्न। जिसे दिव्य ज्ञान हो।

पु० सिद्ध पुरुष।

**सौमेरु**—वि० [सं०] सुमेरु संबंधी। सुमेरु का।

**सौमेरुक**—वि०, पुं० [सं०] सोना। सुवर्ण।

वि० = सौमेरु।

**सौम्य**—वि० [सं० सोम+ष्यञ्] [स्त्री० सौम्या] १. सोम संबंधी। २. चन्द्रमा संबंधी। ३. सोमलता संबंधी। ४ सोम नामक देवता से संबंध रखनेवाला। ५ शीतल और स्निग्ध। ६ कोमल ठंढा और रसीला। ७ कोमल, नम्र तथा शांत प्रकृतिवाला। ८ उत्तर दिशा का। ९. मांगलिक। शुभ। १०. प्रसन्न। ११. मनोहर। सुन्दर। १२. उज्ज्वल। चमकीला। प्रकाशमान्।

पु० १. सोमयज्ञ। २. चन्द्रमा के पुत्र, बुध। ३. ब्राह्मण। ४. ब्राह्मणों के पितरों का एक वर्ग। ५. एक प्रकार का कृच्छ्र व्रत। ६. पुराणानुसार एक द्वीप। ७ एक प्रकार का दिव्यास्त्र। ८. साठ संवत्सरों में से एक। ९. मृगशिरा नक्षत्र। १०. मार्गशीर्ष मास। अगहन। ११. फलित ज्योतिष में वृष, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन राशियाँ जो सौम्य प्रकृतिवाली मानी गई हैं। १२. पुराणानुसार सातवें युग

की संज्ञा। १३. आयुर्वेद मे लाल होने से पहले की रक्त की अवस्था या रूप। १४. आधुनिक विज्ञान में, रक्त का वह अश या तत्त्व जिसके फलस्वरूप जीव-जतु कुछ विशिष्ट रोगो से रक्षित रहते हैं। लस। (सीरम) दे० 'सौम्य-विज्ञान'। १५ पित्त। १६ बायाँ हाथ। १७. बाईं आँख। १८. हथेली का मध्य भाग। १९. सज्जनता और सुशीलता। २०. गूलर।

**सौम्य-कृच्छ्र**—पु०[सं०] एक प्रकार का व्रत जिसमे पाँच दिन क्रम से खली (पिण्याक) भात, मट्ठा, जल और सत्तू पर रहकर छठे दिन उपवास करना पडता है।

**सौम्यगंधा**—स्त्री०[स०] संवली।

**सौम्य-गोल**—पु०[स०] उत्तरी गोलार्द्ध।

**सौम्य-ग्रह**—पु०[स० मध्य० स०] चद्र, बुध, बृहस्पति और शुक्र ग्रहो मे से हर एक।

**विशेष**—फलित ज्योतिष मे इनकी गिनती शुभ ग्रहो मे होती है।

**सौम्य-ज्वर**—पु०[स०] एक प्रकार का ज्वर जिसमें कभी शरीर गरम हो जाता है और कभी ठढा। (वैद्यक)

**सौम्यता**—स्त्री०[स०]१. सौम्य होने की अवस्था, गुण या भाव। २ सुशीलता। ३ सुन्दरता। ४. शीतलता।

**सौम्यत्व**—पु०=सौम्यता।

**सौम्य-दर्शन**—वि० [स०] जो देखने मे सुन्दर हो। प्रिय-दर्शन।

**सौम्यवार**—पु०[स०] बधवार।

**सौम्य-विज्ञान**—पु०[स०] वह विज्ञान जिसमे औषध के काम के लिए जीवो के रक्त से सौम्य बनाने का विवेचन होता है।

**विशेष**—अनेक जीव-जन्तुओ के रक्त मे कुछ ऐसे तत्त्व होते है, जो उन्हे कुछ विशिष्ट रोगों से रक्षित रखते है। जैसे—बकरी के रक्त मे क्षय रोग से और कबूतर के रक्त मे पक्षाघात आदि से रक्षित रखनेवाले कुछ विशिष्ट तत्त्व होते हैं जो 'सौम्य' कहलाते हैं। सौम्यविज्ञान इसी प्रकार के तत्त्वो की परीक्षा करके और उसके रूप में उन्हे निकालकर क्षीण प्राणियो के शरीर मे इसलिए प्रविष्ट करते हैं कि वे उन रोगो से रक्षित रहे।

**सौम्य-शिखा**—स्त्री० [स०] छन्द-शास्त्र मे मुक्तक विषम वृत्त के दो भेदों में से एक जिसके पूर्व दल में १६ गुरु वर्ण और उत्तर दल मे ३२ लघु वर्ण होते है।

**सौम्या**—स्त्री०[स०]१. दुर्गा का एक नाम। २. मृगशिरा नक्षत्र। ३ मोती। ४. आर्या छन्द का एक भेद। ५. ब्राह्मी। ६. बड़ी इलायन। ७. शङ्खटा। ८. बडी मालकगनी। ९. पाताल गारुडी। १० पुंडुची। ११. कचूर। १२. मोतिया। १३. शालिपर्णी। सरिवन।

**सौम्यी**—स्त्री०[स०] चाँदनी। चन्द्रिका।

**सौर**—वि०[स० सूर या/सू (गत्यादि)+अण्] १. सूर्य संबधी। सूर्य का। २ सूर्य से उत्पन्न। ३. जिसकी गणना सूर्य के परिभ्रमण के आधार पर होती हो। जैसे—सौर मास, सौर-वर्ष। ४. सूर्य के प्रभाव से होनेवाला। (सोलर) ५. सुरा या देवता से संबंध रखनेवाला। ६ सुरा या मद्य से सबध रखनेवाला। जैसे—सौर ऋण अर्थात् वह ऋण जो सुरा या मद्य पीने के लिए दिया जाता था।

पुं०१. सूर्य का उपासक या भक्त। २. शनि ग्रह जो सूर्य का पुत्र माना गया है। ३. पुराणानुसार बीसवे कल्प का नाम। ४. तुवर। ५. धनियाँ। ६ दाहिनी आँख। ७ यम।

स्त्री०[सं० शाट, हि० साँड] चादर। ओढना। उदा०—कुस साँथरि भई सौर सुपेता।—जायसी।

†स्त्री०=सौरी (मछली)।

पु०[अ०]१. बैल या साँड। २ वृष राशि।

**सौरज**—पु०[स०]१. तुवक। तुवर। २. धनियाँ।

पु०=शौर्य (शूरता)।

**सौर-जगत्**—पु० [स०] हमारे सूर्य और उसकी परिक्रमा करनेवाले नौ ग्रहों, अट्ठाइस उपग्रहो आदि का वर्ग या समूह जो आकाशचारी पिंडों मे स्वतन्त्र इकाई के रूप मे है। (सोलर सिस्टम)

**सौरण**—वि०[स०] सूरन-सबधी।

**सौरत**—वि०[सुरत+अण्]१ सुरति से सबध रखनेवाला। २ सुरति के परिणामस्वरूप होनेवाला।

पु०१. रति-क्रीड़ा। सुरति। २ रति-सुख।

**सौरत्य**—पु०[स०] सुरति। रति-क्रीडा।

**सौरथ**—पु०[स०]१. नायक। २ योद्धा।

**सौर-दिन**—पु०[स०] एक सूर्योदय के आरम्भ से दूसरे सूर्योदय के पूर्व तक का समय, जो पूरे एक दिन के रूप मे माना जाता है। इसी को सावन दिन भी कहते हैं।

**सौरधी**—स्त्री०[स०] एक प्रकार का तबूरा या सितार।

**सौरपत**—पु०[स०] सूर्योपासक। सूर्य-पूजक।

**सौर-परिकर, सौर-परिवार**—पु० दे० 'सौर जगत'।

**सौरभ**—वि०[स०] १. सुरभि-सबधी। सुगधित। २. सुरभि (गाय) सबधी अथवा उससे उत्पन्न।

पु०१ सुरभि का भाव या धर्म। सुगध। खुशबू। महक। २. केसर। ३ तुवरू। ४. धनियाँ। ५. बोल नामक गन्ध-द्रव्य। ६ आम।

**सौरभक**—पु०[स०]एक प्रकार का वर्ण-वृत्त, जिसके पहले चरण मे, सगण, जगण, सगण और लघु; दूसरे में नगण, सगण, जगण और गुरु, तीसरे मे रगण, नगण, भगण और गुरु तथा चौथे मे सगण, जगण, सगण, जगण और गुरु होता है।

**सौरभित**—भू०कृ०[स० सौरभ] सौरभ से युक्त। सुगधित।

**सौरभी**—स्त्री० [स०] १. सुरभि नाम की गाय की पुत्री। २. गाय। गौ।

**सौरभीला**°—वि०[स० सौरभ+ईला (प्रत्य०)] १. सौरभ या सुगधि से युक्त। २. सब प्रकार से सुन्दर और सुखद। उदा०—उनका पूरा सदन उसने सौरभीला बनाया।—हरिऔध।

**सौरभेय**—वि०[स०] सुरभि-सबधी। सुरभि का।

पु० सुरभि का पुत्र अर्थात् वृष या साँड़।

**सौरभेयक**—पु०[सं०] साँड़। वृष।

**सौरभेयी**—स्त्री०[स०] गाय। गौ।

**सौरम्य**—पुं० [स०] १. सुरभि का गुण या भाव। सुरभिता। २. सुगध। खुशबू। ३. सुन्दरता। ४. कीर्ति। यश। ५. कुबेर का एक नाम।

**सौर-मंडल**—पु०=सौर-जगत्।

**सौर मास**—पु० [स०] एक सूर्य-संक्रान्ति से दूसरी सूर्य-संक्रान्ति तक का सारा समय जो लगभग ३० या ३१ दिनों का होता है।
**विशेष**—सौर गणना के अनुसार कार्तिक, माघ, फागुन और चैत ३०-३० दिनों के, मार्ग-शीर्ष और पौष २९-२९ दिनों के, आषाढ़ ३२ दिनों का और शेष सब मास ३१-३१ दिनों के होते हैं।

**सौर-वर्ष**—पुं० [स०] उतना काल जितना सूर्य को मेष, वृष आदि बारह राशियों में भ्रमण करने में लगता है। एक मेष संक्रान्ति से दूसरी मेष संक्रान्ति तक का समय। (सोलर इयर)

**सौरस**—पु० [सं०] १ सुरसा का अपत्य या पुत्र। २ जूँ नाम का कीड़ा। ३ तरकारी आदि का नमकीन रस या शोरवा।
वि० सुरसा-संबंधी। सुरसा का।

**सौर-सावन मास**—पु० दे० 'सावन मास' के अन्तर्गत।

**सौरसेन**†—पु० = शूरसेन।
†पु०[सं० सौरसेन] आधुनिक ब्रज-मंडल। शौरसेन।

**सौरसेय**—पु० [स०] कार्तिकेय या स्कंद का एक नाम।

**सौरसेव्य**—वि० [स०] १ गंगा का। गंगा-संबंधी। २ गंगा से उत्पन्न पु०१ भीष्म जो गंगा से उत्पन्न हुए थे। २. सूर्य का घोड़ा।

**सौरस्य**—पुं० [सं०] सुरस अर्थात् रसपूर्ण तथा स्वादिष्ट होने की अवस्था या भाव।

**सौराज्य**—पु० [स०] १. अच्छा राज्य। सुराज्य। २ अच्छा शासन।

**सौराष्ट्री**—स्त्री० [स०] संगीत में एक प्रकार की रागिनी।

**सौराष्ट्र**—पुं० [स०] [वि० सौराष्ट्रिक] १ गुजरात-काठियावाड़ का प्राचीन नाम। सूरत के आस-पास का प्रदेश। सोरठ देश। २. उक्त देश का निवासी। ३. एक प्रकार का वर्ण-वृत्त। ४ संगीत में सोरठ नाम का राग। ५. काँसा नामक धातु। ६. कुदरू नामक गंध-द्रव्य।
वि० सोरठ या सौराष्ट्र देश का।

**सौराष्ट्रक**—पु०[स०] १ सौराष्ट्र या सोरठ प्रदेश का रहनेवाला। २ एक प्रकार का विष। ३. पंच लौह।
वि० सौराष्ट्रिक।

**सौराष्ट्र-मृत्तिका**—स्त्री०[स०] गोपीचंदन।

**सौराष्ट्रिक**—वि[स०] १. सौराष्ट्र संबंधी। २ सौराष्ट्र में होनेवाला। पु० सौराष्ट्र का निवासी।

**सौराष्ट्री**—स्त्री०[स०] १ गोपीचंदन। २ सौराष्ट्र की भाषा।

**सौराष्ट्रेय**—वि[स०] सोरठ प्रदेश का। गुजरात-काठियावाड़ का।

**सौरास्त्र**—पु०[स०] एक प्रकार का दिव्यास्त्र।

**सौरिभ्र**—पु०[स०] [स्त्री० सौरिभ्री] १ ईशान कोण में स्थित एक जनपद। (बृहत्संहिता) २ उक्त जनपद का निवासी।

**सौरि**—पु०[स०] १. सूर्य के पुत्र, शनि। २ अर्जुन या विजयसार नामक वृक्ष। ३. दक्षिण भारत का एक प्राचीन जनपद।
†पु०=सौरि।

**सौरिक**—पु०[स०] १. शनैश्चर ग्रह। २. स्वर्ग। ३ वह ऋण जो सुरा या शराब पीने के लिए लिया गया हो।
वि०१. सुर अर्थात् देवता-संबंधी। २. सुरा-संबंधी। ३ स्वर्ग का। स्वर्गीय।

**सौरिरत्न**—पुं० [स०] नीलम नामक मणि।

**सौरी**—स्त्री० [स० सूति-गृह] वह कोठरी, जिसमें स्त्री बच्चा प्रसव करती है। सूतिकागार। जच्चाखाना। (लेबर रूम)
**मुहा०—सौरी कमाना**=नाइन चमारी आदि का सौरी में जाकर प्रसूता की सेवा-सुश्रूषा करना।
स्त्री०[स०]१ सूर्य की पत्नी। २. गाय।
†स्त्री० शफरी (मछली)।

**सौरीय**—वि[स०] सूर्य-संबंधी। सूर्य का। सौर।
पु०१. एक प्रकार का वृक्ष जिसमें से विरैला गोंद निकलता है। २. उक्त वृक्ष का विष।

**सौरेयक**—पु०[स०] गफेद कटसरैया। श्वेत झिंटी।

**सौर्य**—वि[स०] १ सूर्य-संबंधी। सूर्य का। २ सूर्य से उत्पन्न होनेवाला।
पु०१ सूर्य का पुत्र, शनिदेव। २ साठ संवत्सरों में से एक। ३ हिमालय की एक चोटी का नाम।

**सौर्य-याम**—वि[स०] सूर्य और यज्ञ संबंधी। सूर्य और यम का।

**सौर्यादयिक**—वि[स०] सूर्योदय-संबंधी।

**सौलंकी**—पु० गलंकी (राजवंश)।

**सौल**—पु०[स० शकुल] एक प्रकार की बड़ी मछली जिसका सिर साँप के सिर की तरह का होता है।
†पु० साहुल।

**सौलक्षण्य**—पु०[स०] शुभ या अच्छे लक्षणों का होना। सुलक्षणता। सुलक्षणों से युक्त होने की अवस्था, गुण या भाव। सुलक्षणता।

**सौलभ्य**—पु० [स०] सुलभता।

**सौली**†—स्त्री० सौल (मछली)।

**सौल्विक**—पु०[स०] धातु के बरतन आदि बनानेवाला अर्थात् ठठेरा।

**सौव**—पु० [स०] अनुशासन। आदेश।
वि०१ 'स्व' से सम्बन्ध रखनेवाला। २. निज का। अपना। ३ स्वर्गीय।

**सौवर**—वि०[स०] स्वर-संबंधी।

**सौवर्चल**—वि०[स०] सुवर्चल प्रदेश-संबंधी। सुवर्चल का।
पु०१. सोंचर (नमक)। २. सज्जी।

**सौवर्चला**—स्त्री०[स०] रुद्र की पत्नी का नाम।

**सौवर्चस**—वि०[स०] सुवर्चस (दीप्तिमान्)।

**सौवर्ण**—वि०[स०]१ स्वर्ण-संबंधी। सोने का। २. सोने का बना हुआ।
३ जो तौल में एक सौवर्ण या कर्ष भर हो।
पु०१ स्वर्ण। सोना। २. सोना तौलने की एक पुरानी तौल जो एक कर्ष या १६ माशे के बराबर होती थी। ३ सोने की बाली।

**सौवर्णिक**—वि०[स०] सुवर्ण-संबंधी।
पु० सुनार।

**सौवर्णिका**—स्त्री० [स०] एक प्रकार का विषैला कीड़ा। (सुश्रुत)

**सौवर्ण्य**—पु०[स०]१. 'सुवर्ण' होने की अवस्था, गुण या भाव। २. वर्णों का शुद्ध और सुन्दर उच्चारण।

**सौवस्तिक**—वि०[सं०] स्वस्ति कहने अर्थात् मंगल-कामना करनेवाला।
पु० कुल-पुरोहित।

**सौवाध्यायिक**—वि०[सं०] स्वाध्याय-संबंधी।
पुं० स्वाध्यायी।
**सौवास्तिनी**—स्त्री०=सुवासिनी (भद्र स्त्री)।
**सौवास्त्य**—वि०[स०]१. सुवास्तु अर्थात् भवन निर्माण की कुशलता से युक्त। अच्छी कारीगरी का (मकान)। २ अच्छे स्थान पर बना हुआ (मकान)।
**सौविद**—पु०[स०] अंतःपुर या रनिवास का रक्षक। कंचकी। सुविद।
**सौविदल्ल**—पु०=सौविद।
**सौवीर**—पु०[सं०]१ सिंधु नद के आसपास के एक प्राचीन प्रदेश का नाम। २ उक्त प्रदेश का निवासी या राजा। ३ संगीत में कर्णाटकी पद्धति का एक राग। ४. जौ की कांजी और फल। ५. बेर का पेड़। ६ जयद्रथ।
**सौवीरक**—पु० [स०] १ जयद्रथ का एक नाम। २ सौवीर।
**सौवीरांजन**—पु० [स० सौवीर+अंजन] सौवीर प्रदेश में होनेवाला प्रसिद्ध सुरमा।
**सौवीरा**—स्त्री० =सौवीरी।
**सौवीरी**—स्त्री० [सं०] १. संगीत में एक प्रकार की मूर्च्छना। २ सौवीर की एक राजकुमारी।
**सौवीर्य**—पु० [स०] १ 'सुवीर' होने की अवस्था, गुण या भाव। पराक्रम। बहादुरी। २ सौवीर का राजा।
वि० बहुत बड़ा वीर।
**सौव्रत्य**—पु० [स०] १. सुव्रत का भाव। २ एक निष्ठा। भक्ति। ३. आज्ञा-पालन।
**सौशम्य**—पु० [स०] सुशमता। सुशांति।
**सौशल्य**—पु० [स०] एक प्राचीन जनपद। (महाभारत)
**सौशील्य**—पु० [स०] सुशीलता।
**सौश्रव**—पु० [सं०] ऐश्वर्य। वैभव।
**सौश्रवस**—पु० [स०] १ सुश्रवा के अपत्य, उपगु। २. अच्छी कीर्ति। सुयश।
वि० कीर्तिशाली। यशस्वी।
**सौश्रुत**—वि०[स०] १ सुश्रुत-संबंधी। सुश्रुत का। २ सुश्रुत का बनाया या रचा हुआ। ३ सुश्रुत के गोत्र में उत्पन्न।
**सौषिर**—पु० [सं०] १ दाँतों तथा मसूड़ों का एक रोग। २. वाद्य-यंत्र जो हवा के जोर से या हवा फूँकने पर बजता हो। जैसे—बाँसुरी आदि।
**सौषिर्य**—पु० [स०]=सुषिरता (पीलापन)।
**सौषुम्न**—वि० [सं०] सुषुम्ना नाड़ी से संबंध रखने या उसमें होनेवाला। (स्पाइनल)
पु० सूर्य की एक विशिष्ट किरण।
**सौष्ठव**—पु० [स०] १ सुष्ठु होने की अवस्था, गुण या भाव। सुष्ठुता। २ सुन्दरता। ३. तेजी। ४. नृत्य में एक प्रकार की मुद्रा।
**सौसन**—पुं०=सोसन।
पु० [फा०] १. फारस देश का एक पौधा जिसमें लाली लिए नीले रंग के फूल लगते हैं। २. उक्त का फूल।
**सौसनी**—वि० पु०=सोसनी।
वि० [फा० सौसन] १ सौसन-संबंधी। २ सौसन-जैसा। ३ सौसन के रंग का।
**सौस्थित्य**—पु० [स०] १ अच्छी स्थिति में होने की अवस्था या भाव। २ फलित ज्योतिष में ग्रहों की अच्छी या शुभ स्थिति।
**सौस्नातिक**—वि० [स०] यज्ञ के अन्त में यजमान का याज्ञिक से यह प्रश्न कि स्नान सफल हो गया न?
**सौस्वर्य**—पु० [स०] सु-स्वर होने की अवस्था या भाव। सु-स्वरता।
**सौहँ**—स्त्री० [स० शपथ, प्रा० सवह] शपथ। कसम।
अव्य० समक्ष। सामने।
**सौहन**—पु० [देश०] पैसे का चौथाई भाग। छदाम। टुकड़ा। (सुनार)
†पु०=सोहन।
**सौहर**†—पु० १.=सौहर। २.=सोहर (गीत)।
**सौहरा**†—पु० [हिं० सुसर] १. ससुर। श्वसुर। २ ससुराल। (पश्चिम)
**सौहाँग**†—पु० [देश०] दो भर का बाट या बटखरा। (सुनार)
**सौहार्द**—पु० [स०] १. सुहृद का भाव। मित्रता। मैत्री। दोस्ती। २ सुहृद् अर्थात् मित्र का पुत्र।
**सौहार्द-व्यंजक**—पु० [सं०] मैत्रीभाव को प्रकट करनेवाला।
**सौहार्द**—पु० [स०] सौहार्द।
**सौहित्य**—पु० [सं०] १. तृप्ति। संतोष। २ पूर्णता। ३ सुन्दरता।
**सौहीं**—स्त्री० [फा० सोहन] १. एक प्रकार की रेती। २ एक प्रकार का अस्त्र या हथियार।
अव्य०=सौंह (सामने)।
**सौह्द**—वि० [स०] सुहृद् या मित्र-संबंधी।
पु० १. सुहृद्। मित्र। २. एक प्राचीन जनपद।
**सौह्रद**—पु० [स०] सौहार्द। मित्रता। दोस्ती।
**सौह्रोत्र**—पु० [स०] सुहोत्र के अपत्य अजमीढ और पुरुमीढ नामक वैदिक ऋषि।
**सौह्य**—वि० [स०] सुह्य देश का।
**स्कंद**—पु० [स०] [वि० स्कंदित] १. निकलना या बाहर आना। २ विनाश। ध्वंस। ३. कार्तिकेय जो देवों के सेनापति और युद्ध के देवता माने जाते हैं। ४. शरीर। देह। ५ तरल पदार्थ का वह रूप जो उसके गाढ़े होकर गाँठ के रूप में जमने पर प्राप्त होता है। (कलाट) जैसे—रक्त-स्कंद। ६ पारा। ७. शिव। ८. पंडित। विद्वान्। ९. राजा। १०. नदी का तट या किनारा। ११ बालकों के नौ प्राणघातक ग्रहों या रोगों में से एक।
**स्कंदक**—वि० [स०] उछलने या उछालने वाला।
पु० १. सैनिक। सिपाही। २ एक प्रकार का प्राचीन छन्द।
**स्कंद-गुप्त**—पु० [सं०] गुप्तवंश के एक प्रतापी तथा प्रसिद्ध सम्राट् जिनका राज्य-काल ई० ४५० से ४६७ तक माना जाता है।
**स्कंद-जननी**—स्त्री० [स०] (स्कंद या कार्तिकेय की माता) पार्वती।
**स्कंदजित्**—पुं० [सं०] (स्कंद को जीतनेवाले) विष्णु।
**स्कंदता**—स्त्री० [स०] स्कंद का धर्म या भाव।
**स्कंदत्व**—पुं०=स्कंदता।
**स्कंदन**—पु० [सं०] [भू० कृ० स्कंदित, वि० स्कंदनीय] १. बाहर होना।

निकलना। २ पेट का मल बाहर निकलना। रेचन। ३. सोखना। शोषण। ४. जाग। गम। ५. शरीर के रक्त का जमना।

**स्कंद पुराण**—पु० [स०] अठारह पुराणों में से एक प्रसिद्ध पुराण।

**स्कंद-माता**—स्त्री० [स० स्कन्दमातृ] (स्कद की माता) दुर्गा।

**स्कन्द-षष्ठी**—स्त्री० [स०] १ चैत सुदी छठ जो कार्तिकेय के देव सेनापति पद पर अभिषिक्त होने की तिथि मानी जाती है। २. तान्त्रिको की एक देवी जो स्कद की पत्नी मानी गई है।

**स्कंदापस्मार**—पु० [स०] एक प्रकार का बालग्रह या रोग।

**स्कदापस्मारी (रिन्)**—वि० [स०] जो स्कदापस्मार से ग्रस्त हो।

**स्कंदित**—भू० कृ० [स०] निकला हुआ। गिरा हुआ। झड़ा हुआ। स्खलित। पतित।

**स्कंदी**—वि० [स० स्कंदिन्] १ बहने या गिरनेवाला। पतनशील। २. उछलने या कूदने वाला।

**स्कंदेश्वर**—पु० [स०] एक प्राचीन तीर्थ।

**स्कंदोपनिषद्**—स्त्री० [स०] एक उपनिषद् का नाम।

**स्कंध**—पु० [स०] १ मोढा। कधा। २ वृक्ष के तने का वह ऊपरी भाग जिसमे से डालियाँ निकलती हैं। कांड। (स्टेम) ३ कोई ऐसा मूल और बडा अग जिसके साथ दूसरे छोटे अग या उपाग लगे हो। (स्टेम) ४. शाखा। डाल। ५. समूह। झुड। ६ वह स्थान जहाँ विक्रय, उपयोग आदि के लिए बहुत-सी चीजें जमा रहती हैं। भडार। (स्टाक) ७. ग्रथ का वह विभाग जिसमें कोई पूरा विषय हो। ८ शरीर। देह। ९ युद्ध। लडाई। १०. हिन्दू दर्शन शास्त्र में शब्द, स्पर्श, रूप, रस और गध। ११. बौद्ध दर्शन में रूप, वेदना, विज्ञान, सज्ञा और सस्कार। १२. मार्ग। रास्ता। १४ राज्याभिषेक के समय काम आनेवाली सामग्री। १४. राजा। १५ आचार्य। १६ आपस मे होनेवाला करार या सधि। १७. आर्या छन्द का एक भेद। १८ सफेद चील।

**स्कंधक**—पु० [स०] आर्या गीत या स्वधा नामक छद का एक नाम।

**स्कंध-काय**—पु० [स०] छिपकिला। बहेंगी।

**स्कंधज**—पु० [स०] १. सलई। शल्लकी वृक्ष। २. बड़ का पेड़। वट-वृक्ष।

**स्कंध-देश**—पु० [स०] १. कधा। २. हाथी के शरीर का वह भाग जिस पर महावत बैठता है। ३ तना।

**स्कंध-पंजी**—स्त्री० [स०] वह पंजी या बही जिसमें स्कंध या भडार मे रखी हुई वस्तुओं का विवरण हो। (स्टाक-बुक)

**स्कंध-पद्म**—पु० [स०] पगडडी।

**स्कंध-परिनिर्वाण**—पु० [स०] बौद्धों के अनुसार शरीर के पाँचो स्कधो का नाश। मृत्यु।

**स्कंध-पाल**—पु० [स०] वह अधिकारी जो किसी स्कध या भडार की देख-रेख आदि के लिए नियत हो। (स्टोर-कीपर)

**स्कंध-फल**—पु० [स०] १. नारियल का पेड़। २. गूलर।

**स्कंध-बीज**—पु० [स०] ऐसी वनस्पति या वृक्ष जिसके स्कध से ही शाखाएँ निकलकर जमीन तक पहुँचती और वृक्ष का रूप धारण करती हों। जैसे—बड़, पाकर आदि।

**स्कंध-यंत्र**—पु० [स०] एक प्रकार का यंत्र या तोवीज।

**स्कंध-मार**—पु० [स०] बौद्धो के चार मारों अर्थात् कामदेवो में से एक।

**स्कंधवह**—पु० [स०] बट वृक्ष। बड़ का पेड़।

**स्कंधवाह**—पु० [स०] १ वह जो कधो पर माल ढोता हो। २. एसा पशु जो कधो के बल बोझ खीचता हो। जैसे—बैल, घोडा आदि।

**स्कंध-वाहक**—वि० [स०] कधे पर बोझ उठानेवाला। जो कधे पर रखकर बोझ ढोता हो।

पु० =स्कद-वाह।

**स्कंधा**—स्त्री० [स०] १ पेड की डाल। शाखा। २ लता। बेल।

**स्कंधाख**—पु० [स०] कार्तिकेय के अनुसार देवताओ का एक गण।

**स्कंधावार**—पु० [स०] १ प्राचीन भारत मे, किसी बडे राजा की वह सारी छावनी या पडाव जिसमे घोडे, हाथी, सेना, सामत और छोटे या बाहर से आये हुए राजाओ के शिविर आदि होते थे। २. सेना का पडाव। छावनी। ३ सेना। ४ वह स्थान जहाँ पर यात्री, व्यापारी आदि डेरा डाले पडे हो।

**स्कंधी**—वि० [स० स्कधिन्] काड से युक्त। तने से युक्त।

पु० पेड। वृक्ष।

**स्कंधोपनेय**—पु० [स०] राजाओ मे होनेवाली एक प्रकार की सधि जिसमे नियत या निश्चित बातें क्रम-क्रम से और कुछ दिनो मे पूरी होती थी। (कौ०)

**स्कंध्य**—वि० [स०] स्कध-सबधी। स्कध का।

**स्कंभ**—पु० [स०] १ खभा। स्तभ। २ परमेश्वर जो सारे विश्व को धारण किये हुए है।

**स्कन्न**—वि० [स०] १ गिरा हुआ। पतित। च्युत। स्खलित। जैसे—स्कन्न-वीर्य। २ गया या बीता हुआ। गत। ३ सूखा हुआ। शुष्क।

**स्कब्ध**—वि० [स०] सहारा देकर ठहराया या रोका हुआ।

**स्कंध**—वि० [स०] स्कद-सबधी। स्कद का।

पु० =स्कद पुराण।

**स्कांधी (धिन्)**—पु० [सं०] स्कध के सिध्य या उनकी शाखा के अनुयायी।

**स्काउट**—पु० [अ०] १. चर। भदिया। २ दे० 'बाल-चर'।

**स्कालर**—पु० [अ०] १. वह जो स्कूल मे पढता हो। छात्र। विद्यार्थी। २ बहुत बडा अध्ययनशील और विद्वान्।

**स्कालरशिप**—पु० [अ०] =छात्र-वृत्ति।

**स्कीम**—स्त्री० [अ०] =योजना।

**स्कूल**—पु० [अ०] १ वह विद्यालय जहाँ किसी भाषा, विषय या कला आदि की आरम्भिक या सामान्य शिक्षा दी जाती हो। मदरसा। २. किसी ज्ञान या विज्ञान की कोई विशिष्ट शाखा और उसके अनुयायियो का वर्ग। शाखा।

**स्कूली**—वि० [अ० स्कूल+हिं० ई (प्रत्य०)] १. स्कूल-सबधी। स्कूल मे होनेवाला। जैसे—स्कूली पढ़ाई। २ स्कूल जानेवाला। जैसे—स्कूली लडका।

**स्कू**—पु० [अ०] वह कील या काँटा जिसके नुकीले आधे भाग पर चक्करदार गराडियाँ बनी होती हैं और जो ठोक कर नही, बल्कि घुमाकर जड़ा जाता है। पेच।

क्रि० प्र०—कसना।—खोलना।—जड़ना।—लगना।

**पद—स्कू-होल्डर**=पेचकस।

**स्खदन**—पु० [सं०] [भू० कृ० स्खदित] १. फाड़ना। चीरना। टुकड़े-टुकड़े करना। विदारण। २. वध। हत्या। ३. कष्ट देना। उत्पीडन। ४ स्थिरता।

**स्खलन**—पु० [स०] १. अपने स्थान से नीचे आना या गिरना। पतन। २. मार्ग से च्युत या विचलित होना। विशेष दे० 'चिचलन'। ३. काम मे गलती या भूल करना। ४ वंचित या विफल होना। ५ बोलने मे हकलाना। ६ रगड़। संघर्ष।

**स्खलित**—भू० कृ० वि० [स०] १. अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। पतित। २ खिसका या फिसला हुआ। ३ चूका हुआ। ४. डगमगाया हुआ। विचलित।
पु० प्राचीन भारत में धर्मयुद्ध के नियमो को छोडकर युद्ध में छल-कपट या घात करना।

**स्खलीकरण**—पु० [स०] १ स्खलित करने की क्रिया या भाव। २ उपेक्षा। लापरवाही।

**स्टांप**—पु० [अं०] १ ठप्पा। २ कागजों आदि पर की जानेवाली मोहर। ३. कुछ निश्चित मूल्य का कागज का कोई ऐसा टुकडा या कागज जिस पर राजकीय ठप्पा या मोहर छपी हो, और जिसका मूल्य किसी प्रकार के शुल्क के रूप में चुकाया जाता हो। जैसे—डाक का टिकट; अदालतो में अभियोग-पत्र उपस्थित करने का सरकारी कागज आदि।

**स्टाक**—पु० [अं०] १ बिक्री करने के लिए संचित करके रखा हुआ माल। २ वह माल जो घर मे हो और अभी बिका न हो। जैसे—उसकी दूकान में स्टाक कम है। ३. वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार की वस्तुएँ रहती हो। भडार। ४ वह धन या पूँजी जो व्यापारी लोग या उनका कोई समूह किसी काम मे लगाता हो। ५ साझे के काम मे लगाई हुई पूँजी।

**स्टाफ**—पु० [अं०] किसी कार्यालय, विभाग या संस्था के कार्यकर्ताओं का वर्ग या समूह। अमला।

**स्टाल**—पु० [अं०] १. प्रदर्शिनी, मेले आदि मे वह छोटी दूकान जिस पर बेचने के लिए चीजें सजाई रहती हैं। २. छोटी दूकान।

**स्टीम**—पु० [अं०] भाप। वाष्प।
**मुहा०—(किसी में) स्टीम भरना**=आवेश, उत्साह आदि से युक्त करना। जोश दिलाना।

**स्टीम इंजिन**—पु० [अं०] भाप से चलनेवाला इंजन।

**स्टीमर**—पु० [अं०] नदियों में चलनेवाला एक प्रकार का छोटा जहाज जो भाप से चलता है।

**स्टूल**—पुं० [अं०] एक प्रकार की ऊँची छोटी चौकी।

**स्टेज**—पुं० [अं०] १. रंग-मंच। २. मंच।

**स्टेट**—पु० [अं०] १ राज्य। २. किसी संघ राज्य की कोई इकाई। राज्य। ३. अँगरेजी। शासन में भारतीय देशी रियासत।
पु० [अं० एस्टेट] १. बड़ी जमीदारी। २. किसी की सारी जंगम और स्थावर संपत्ति। जैसे—वह दस लाख का स्टेट छोडकर मरे थे।

**स्टेशन**—पु० [अं०] १. वह स्थान जहाँ रेलगाड़ियाँ, मोटरें आदि यात्रियो को उतारने, चढ़ाने के लिए ठहरती या रुकती हों। जैसे—रेलवे-स्टेशन, बस-स्टेशन। २ किसी विशेष कार्य के संचालन के लिए नियत स्थान। अवस्थान।

**स्टोव**—पु० [अं०] एक विशेष प्रकार का आधुनिक चूल्हा जो खजाने मे भरे हुए तेल, गैस आदि से या बिजली के द्वारा गरम होकर ताप उत्पन्न करता है।

**स्ट्राइक**—स्त्री० [अं०] कर्मचारियों आदि की हडताल।

**स्तंब**—पु० [स०] १. ऐसा पौधा जिसकी जड से कई पौधे निकले और जिसमे कडी लकडी या डठल न हो। गल्म। २. घास का पूला। ३ रोहतक या रोहेडा नामक वृक्ष।

**स्तंबक**—पु० [सं०] १ गुच्छा। २ नक-छिकनी।

**स्तंबपुर**—पु० [स०] ताम्रलिप्तपुर का एक नाम।

**स्तंभ**—पु० [स०] [स्त्री० अल्पा० स्तंभिका] १ खभा। २ वह व्यक्ति, तत्त्व या तथ्य जो किसी सस्था, कार्य, सिद्धात आदि के आधार के रूप मे हो। जैसे—आप उस सस्था के स्तंभ है। ३ समाचार पत्रों के पृष्ठो, सारिणियों आदि में खडे बल का वह विभाग, जिसमे ऊपर से नीचे तक कुछ विशेष बातें, अक आदि होते हैं। ४ समाचार पत्रो मे उक्त प्रकार के विभागो का वह वर्ग जिसमे किसी विशेष विषय का प्रतिपादन या निरूपण होता है। जैसे—सपादकीय स्तंभ, स्थानिक स्तंभ आदि (कालम, उक्त सभी अर्थों के लिए) ५ पेड का तना। ६. [वि० स्तंभित] किसी कारण या घटना (जैसे—हर्ष, लज्जा, भय आदि) से अगो का बिलकुल शिथिल हो जाना। ७ साहित्य मे उक्त आधार पर माना जानेवाला एक सात्त्विक अनुभाव जिसमे भय, रोग, लज्जा, विषाद, हर्ष आदि के कारण शरीर सुन्न हो जाता है और उसमे अग-सचालन की शक्ति नही रह जाती। ८ जडता। अचलता। ९ प्रतिबध। रुकावट। १० तत्र मे किसी शक्ति को रोकनेवाला प्रयोग। ११ अभिमान। घमड। १२ रोग आदि के कारण होनेवाली मूर्च्छा।

**स्तंभक**—वि० [सं०] १ स्तभन करने या रोकनेवाला। रोधक। २ कब्जियत करनेवाला। ३. वीर्य को गिराने या स्खलित होने से कुछ समय तक रोक रखनेवाला।
पु० १. खभा। २. शिव का एक नाम।

**स्तंभ-कर**—वि० [सं०] १. रोकनेवाला। रोधक। २ जडता उत्पन्न करनेवाला। जड़ बनानेवाला।

**स्तंभकी (किन्)**—पु० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा जिस पर चमड़ा मढ़ा होता था।
स्त्री० एक देवी का नाम।

**स्तंभ-तीर्थ**—पु० [सं०] आधुनिक खभात नगर का प्राचीन नाम।

**स्तंभन**—पु० [स०] [भू० कृ० स्तभित] १ रोकने की क्रिया या भाव। रुकावट। अवरोध। २ वीर्य आदि को स्खलित होने या मल को पेट से बाहर निकलने से रोकना। ३. वीर्यपात रोकने की दवा। ४. जड या निश्चेष्ट करना। जड़ीकरण। ५. किसी की चेष्टा, क्रिया या शक्ति रोकने वाला तांत्रिक प्रयोग। ६ कामदेव के पाँचो बाणो मे से एक। ७. गिरने से रोकने के लिए लगाया जानेवाला सहारा।

**स्तंभनी**—स्त्री० [स०] एक प्रकार का इन्द्रजाल या जादू, जिससे लोगों को स्तभित या जड कर दिया जाता था।

**स्तंभनीय**—वि० [सं०] जिसका स्तभन हो सके या होने को हो।

**स्तंभ-लेखक**—पु० [स०] वह जो प्रायः भिन्न-भिन्न सामयिक पत्रों के स्तंभों के लिए लेख आदि लिखता हो। (कालमिस्ट)

**स्तंभ-वृत्ति**—स्त्री० [स०] प्राणों को जहाँ का तहाँ रोक देना, जो प्राणायाम का एक अंग है।

**स्तंभि**—पु० [स०] समुद्र। सागर।

**स्तंभिका**—स्त्री० [स०] १ चौकी या आसन का पाया। २ छोटा खंभा। खँभिया।

**स्तंभित**—भू० कृ० [स०] १ जो जड़ या अचल कर दिया गया हो या हो गया हो। जड़ीभूत। निश्चल। २ निस्तब्ध। सुन्न। ३ ठहरा या रुका हुआ।

**स्तंभित्री**—स्त्री० [स०] योग के अनुसार पाँच धारणाओं में से एक।

**स्तंभी (न्भिन्)**—वि० [सं०] १. स्तंभ या खंभों से युक्त। २. दे० 'स्तंभक'।

पुं० समुद्र। सागर।

**स्तंभोत्कीर्ण**—वि० [स०] जो खंभों में खोदकर बनाया गया हो। (आकृति, मूर्ति आदि)

**स्तन**—पु० [स०] स्त्रियों या मादा पशुओं की छाती जिसमें से दूध निकलता है। जैसे—माँ का स्तन।

क्रि० प्र०—पिलाना।—पीना।

**स्तन-कलश**—पु० [स० उपमि० स०] कलश की तरह गोल और बड़े या मोटे स्तन।

**स्तन-कील**—पु० [स०] स्त्रियों की छाती में होनेवाला घुंडी नाम का फोड़ा।

**स्तन-कूचुक**—पु० [स०] स्तन या कुच के ऊपर की घुंडी। चूची। डेंपनी।

**स्तन-ग्रंथी**—वि० स्त्री० [सं०] (छाती का) दूध पिलानेवाली।

**स्तनन**—पु० [स०] [भू० कृ० स्तनित] १ ध्वनि। नाद। शब्द। आवाज। २. बादलों की गड़गड़ाहट। ३. कराहने की आवाज। कराह।

**स्तनप**—वि०, पुं०=स्तनपायी।

**स्तन-पतन**—पु० [स० ष० त०] स्तन का ढीला पड़ना या लटकना।

**स्तन-पान**—पु० [स०] स्तन पान करना। स्तन चूसकर दूध पीना।

**स्तनपायी (यिन्)**—वि० [स०] स्तनपान करनेवाला। स्तन चूसकर दूध पीनेवाला।

पु० १. वह जो स्तन पान करता हो। दूध पीनेवाला बच्चा।

२ वे जीव जो माता का दूध पीते या दूध पीकर बड़े होते हैं। ३. उक्त प्रकार के जीवों का वर्ग।

**स्तन-बाल**—पु० [स०]१ एक प्राचीन जनपद। (विष्णु पुराण) २ उक्त देश का निवासी।

**स्तन-भर**—पु० [स०]१. स्थूल या पुष्ट स्तन। बड़ी और भारी छाती। २ ऐसा पुरुष जिसकी छातियाँ स्त्रियों की छातियों की सी बड़ी या मोटी हों।

**स्तन-भव**—पु० [स०] एक प्रकार का रति-बंध या संभोग का आसन।

**स्तन-मध्य**—पु० [स०] स्त्री के दोनों स्तनों के बीच का स्थान या गड्ढा।

**स्तन-मुख**—पु० [स०] स्तन या कुच का अगला भाग। चूचुक। चूची।

**स्तन-रोग**—पु० [स०] गर्भवती और प्रसूता स्त्रियों के स्तनों में होनेवाला रोग।

**स्तन-विद्रधि**—पुं० [सं०] स्तन पर होनेवाला फोड़ा। घुंडी।

**स्तन-वृंत**—पु० [स०] स्तन या कुच का अग्रभाग। चूचुक। चूची।

**स्तन-शिक्षा**—स्त्री० [सं०]=स्तनदूत।

**स्तन-शोथ**—पुं० [स०] स्त्रियों को होनेवाला एक प्रकार का रोग जिससे उनके स्तन सूज जाते हैं।

**स्तनांतर**—पुं० [स०]१ हृदय। दिल। २ स्त्रियों के स्तनों पर होनेवाला एक प्रकार का चिह्न जो वैधव्य का सूचक माना जाता है। (सामुद्रिक)

**स्तनाशुक**—पु० [सं०] कपड़े की चौड़ी पट्टी जिससे स्त्रियाँ स्तन बाँधती हैं।

**स्तनाग्र**—पु० [सं०] स्तन का अगला भाग। चूचुक।

**स्तनाभुज**—वि०, पु०=स्तनपायी।

**स्तनित**—पुं० [स०] १. मेघ-गर्जन। बादलों की गरज। २ आवाज। ध्वनि। शब्द। ३ ताली बजाने का शब्द। करतल ध्वनि।

भू० कृ०१ ध्वनित। २ गर्जित।

**स्तनित-कुमार**—पु० [स०] १ भवनाधीश नामक जैन देवों का वर्ग। २ उक्त वर्ग का कोई देवता।

**स्तनी (नि्)**—वि० [स०] स्तनोंवाला। स्तन-युक्त।

**स्तनोत्तरीय**—पु० [स० पु० त०] प्राचीन काल की वह पट्टी जो स्त्रियाँ स्तनों पर बाँधती थीं। कुचाशुक। स्तनाशुक।

**स्तन्य**—वि० [स०]१. स्तन-संबंधी। स्तन का। २ जो स्तन में हो।

पु० १ माता का दूध। २ दूध।

**स्तन्य त्याग**—पु० [स०] माता का दूध पीना छोड़ना।

**स्तन्यदा**—वि० [स्त्री०] जिसके स्तनों में से दूध निकलता हो। दूध देनेवाली।

**स्तन्य-दान**—पु० [स०] स्तन पिलाना। स्तन का दूध पिलाना।

**स्तन्यप**—वि० [स०] [स्त्री० स्तन्यपा] स्तन या दूध पीनेवाला। स्तनपायी।

पु० दूध पीता बच्चा। शिशु।

**स्तन्य-पान**—पु० [स०] स्तन-पान।

**स्तन्य-पायी (यिन्)**—वि०, पु०=स्तनपायी।

**स्तन्य-रोग**—पु० [स०] माता के दूध के कारण होनेवाला रोग। स्तनपान करने से होनेवाला रोग।

**स्तन्य-स्राव**—पु० [स०] १ वात्सल्य भाव से विह्वल होने पर आप से आप स्तनों से दूध बहने लगना। २ इस प्रकार बहनेवाला दूध।

**स्तब्ध**—वि० [स०] [भाव० स्तब्धता] १. जो जड़ या अचल हो गया हो। जड़ीभूत। निश्चेष्ट। सुन्न। २ अच्छी तरह जकड़ा या बाँधा हुआ। ३ दृढ़। पक्का। मजबूत। ४ धीमा। मन्द। सुस्त। ५ दुराग्रही। हठी। ६. अक्खड़ और अभिमानी।

पु० वंशी के छः दोषों में से एक जिसमें उसका स्वर कुछ धीमा होता है।

**स्तब्धता**—स्त्री० [स०]१. स्तब्ध होने की अवस्था या भाव। जड़ता। २ दृढ़ता। ३ बहरापन।

**स्तब्ध-पाद**—वि० [स०] [भाव० स्तब्धपादता] जिसके पैर जकड़ गये हों। लँगड़ा। पंगु।

**स्तब्ध-मति**—वि० [सं०] मंदबुद्धि। कुंद-जहन।

**स्तब्धि**—स्त्री० [स०] स्तब्धता।

**स्तर**—पुं० [सं०] १ एक दूसरी के ऊपर पड़ी या लगी हुई तह। परत। २. ऊपर का वह सपाट भाग, जो कुछ दूर तक समान रूप से चला गया हो और जो वैसे दूसरे भागों से अलग या स्वतन्त्र हो। तल। (लेवेल) जैसे—देश या समाज का स्तर। ३ भूमि आदि का एक प्रकार का विभाग जो भिन्न-भिन्न कालों में बनी हुई उसकी तहों के आधार पर किया गया है। (स्ट्रेटा) ४ शय्या। सेज।

**स्तरण**—पु० [स०] १. फैलाना या बिछेरना। २. वह स्थिति जिसमें कोई वस्तु स्तरों या परतों के रूप में बनी हुई होती है। ३. भू-विज्ञान में प्राकृतिक कारणों से पृथ्वी के धरातल, पर्वतों आदि के भिन्न-भिन्न स्तरों का बनना या बनावट। (स्ट्रैटिफिकेशन) ४ दीवारों आदि की अन्तरकारी। ५ बिछौना। बिस्तर।

**स्तरणीय**—वि० [सं०] १. फैलाये या बिछेरे जाने के योग्य। २ बिछाये जाने के योग्य।

**स्तरिमा (मन्)**—पु० [स०] पलंग। शय्या।

**स्तरी**—स्त्री० [स०] १ धूआँ। धूम्र। २ ऐसी गाय जो दूध न दे रही हो।

**स्तर्य**—वि०=स्तरणीय।

**स्तव**—पु० [स०] १ किसी देवता का छंदबद्ध स्वरूप-कथन या गुणगान। स्तुति। स्तोत्र। जैसे—शिव-स्तव, दुर्गास्तव। २ ईश-प्रार्थना।

**स्तवक**—पुं० [स०] १ फूलों का गुच्छा। २. एक या अनेक तरह के बहुत से फूलों को सजाकर बनाया हुआ रूप, जिसे शोभा के लिए मेजों आदि पर रखते हैं। गुलदस्ता। ३ ढेर। राशि। ४ मोर का पंख। ५. पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद। ६ स्तोत्र। स्तव।

वि० स्तव या स्तुति करनेवाला।

**स्तवित**—भू० कृ० [स०] फूलों के गुच्छों, गुलदस्तों, फूल-मालाओं आदि से युक्त या सजा हुआ।

**स्तवन**—पु० [सं०] १. स्तुति करने की क्रिया या भाव। २. स्तुति।

**स्तवनीय**—वि० [स०] जिसका स्तव या स्तुति की जा सके या की जाने को हो।

**स्तवरक**—पु० [सं०] १. कमखाब की तरह का एक पुराना रेशमी कपड़ा। २. घैरा।

**स्तवितव्य**—वि० [सं०] स्तवनीय।

**स्तविता (तृ)**—पुं० [सं०] स्तुति करनेवाला। गुण-गान करनेवाला।

**स्तव्य**—वि० [सं०] =स्तवनीय।

**स्तान**—पु० [स० स्थान से फा०] [वि० स्तानी] एक स्थान वाचक शब्द जो कुछ जातियों, पदार्थों आदि के नामों के अन्त में लगकर उनके रहने या होने के स्थान का अर्थ देता है। जैसे—अफगानिस्तान, हिन्दुस्तान, गुलिस्तान, चमनिस्तान आदि।

**स्तावक**—वि० [सं०] १. स्तव या स्तुति करनेवाला। गुण-कीर्तन करने-वाला। प्रशंसक। उदा०—स्तावक, स्तुत्य, निन्द्य और निंदक जब कि सभी हैं एक।—पन्त। २. खुशामद करनेवाला।

पुं० बन्दीजन। भाट।



**स्ताव्य**—वि० [सं०] स्तव के योग्य। स्तुत्य।

**स्तिमित**—वि० [सं०] १ भीगा हुआ। तर। नम। आर्द्र। २. निश्चल। स्थिर। ३. शांत। ४. प्रसन्न। ५. सन्तुष्ट।

पुं० १ आर्द्रता। तरी। नमी। २. निश्चलता।

**स्तीर्ण**—वि० [सं०] १ फैला या बिखेरा हुआ। छितराया हुआ। २ लंबा-चौड़ा। विस्तृत।

पुं० शिव का एक अनुचर।

**स्तुत**—भू० कृ० [सं०] १ जिसकी स्तुति की गई हो। २. प्रशंसित। ३ चूआ या बहा हुआ।

पु० १. शिव। २. स्तुति।

**स्तुति**—स्त्री० [स०] १. आदर-भाव से किसी के गुणों का कथन करना। जैसे—देवता की स्तुति करना। २ वह पद या रचना जिसमें किसी देवता आदि का गुण कथन हो। ३ प्रशंसा। तारीफ। बड़ाई। ४. दुर्गा का एक नाम।

पु० शिव का एक नाम।

**स्तुति-पाठक**—पु० [स०] बंदी जिसका काम प्राचीन काल में राजाओं की स्तुति या यशोगान करना था। चारण। मागध। सूत।

**स्तुतिवाद**—पु० [स०] प्रशंसात्मक-कथन। यशोगान। गुणगान।

**स्तुति-वादक**—पु० [स०] १ स्तुति या प्रशंसा करनेवाला। प्रशंसक। २ खुशामदी।

**स्तुत्य**—वि० [स०] १. स्तुति या प्रशंसा का अधिकारी या पात्र। प्रशंस-नीय। २ जिसकी स्तुति या प्रशंसा होने को हो या होनी चाहिए।

**स्तुभ**—पुं० [स०] १. एक प्रकार की अग्नि। २. बकरा।

**स्तूप**—पु० [स०] १ मिट्टी, पत्थर आदि का ऊँचा ढूह। २ वह ढूह या टीला जो भगवान् बुद्ध या किसी बौद्ध-महात्मा की अस्थि, दाँत, केश आदि स्मृति-चिह्नों को सुरक्षित रखने के लिए उनके ऊपर बनाया गया हो। ३ ऊँचा ढेर। ४ केश गुच्छ। बालों की लट। ५. इमारत में लगा हुआ बहुत बड़ा शहतीर।

**स्तृत**—भू० कृ० [स०] १ ढका हुआ। आच्छादित। २. फैला हुआ। विस्तृत।

**स्तृति**—स्त्री० [स०] १. ढाँकने की क्रिया। आच्छादन। २ फैलाने की क्रिया।

**स्तेन**—पुं० [सं०] १ चोर। डाकू। तस्कर। २ चोरी। ३. चोर नामक गन्ध-द्रव्य।

**स्तेय**—पुं० [स०] चोरी।

वि० चुराया हुआ।

**स्तेयी (यिन्)**—पु० [सं०] १. चोर। २. चूहा। ३. सुनार।

**स्तैन्य**—पुं० =स्तैन्य।

**स्तैन्य**—पु० [सं०] १. चुराने या डाका डालने का काम। २. दे० 'स्तेन'।

**स्तोक**—वि० [स०] १. थोड़ा। जरा। २ कुछ। कम। ३. छोटा। ४. नीचा।

पु० १ बूँद। बिंदु। २. चातक। पपीहा।

**स्तोतक**—पु० [सं०] १. पपीहा। चातक। २. वत्सनाग नामक विष। बछनाग।

**स्तोतव्य**—वि० [सं०] स्तव या स्तुति का अधिकारी या पात्र। स्तुत्य।

**स्तोता(तृ)**—वि० [सं०] १. स्तुति करनेवाला। २ उपासना करनेवाला। ३ प्रार्थना करनेवाला।
पु० विष्णु का एक नाम।

**स्तोत्र**—पु० [सं०] १ स्तव। स्तुति। २. वह रचना, विशेषतः पद्यबद्ध रचना जिसमे किसी देवता आदि की स्तुति की गयी हो। जैसे—दुर्गा-स्तोत्र, शिव-स्तोत्र।

**स्तोत्रिय, स्तोत्रीय**—वि० [सं०] स्तोत्र-संबंधी। स्तोत्र का।

**स्तोभ**—पु० [सं०] १. सामवेद का एक अंग। २. अवज्ञा, उपेक्षा या तिरस्कार। ३. स्तंभन।

**स्तोभित**—भू० कृ० [सं०] १. जिसकी स्तुति की गई हो। स्तुत। २ जिसका जय-जयकार किया गया हो।

**स्तोम**—पु० [सं०] १ स्तुति। २. यज्ञ। ३ वह जो यज्ञ करता हो। ४. ढेर। राशि। ५ मस्तक। ६. धन-सम्पत्ति। ७ अनाज। अन्न। ८. पुरानी चाल की एक प्रकार की ईंट। ९ ऐसा डंडा जिसमे लोहे की नोक लगी हो। लोहासी। १० दस धनुष्तर अर्थात् चालीस हाथ की एक माप।
वि० टेढ़ा। वक्र।

**स्तोमाधन**—पु० [सं०] यज्ञ मे बलि दिया जानेवाला पशु।

**स्तोमीय**—वि० [सं०] स्तोम-संबंधी। स्तोम का।

**स्तोम्य**—वि० [सं०] = स्तुत्य।

**स्तूपिक**—पु० [सं०] १. किसी महापुरुष के वे अस्थि, चिह्न जिन पर स्तूप बनाया गया हो। (बौद्ध) २ वह मार्जनी जो जैन यति अपने साथ रखते हैं।

**स्तौम**—वि० [सं०] स्तोभ-संबंधी। स्तोभ का।

**स्तौभिक**—वि० [सं०] स्तोभ से युक्त। जिसमे स्तोभ हो।

**स्त्यान**—वि० [सं०] १ समूहों मे इकट्ठा किया हुआ। २ कठोर। ३ घना। ४ चिकना। ५. ध्वनि या शब्द करनेवाला।
पु० १ घनापन। घनता। २. आवाज। शब्द। ३. सत्कर्म के प्रति होनेवाला आलस्य। ४ अमृत।

**स्त्येन**—पु० [सं०] १. चोर। २ डाकू। ३ अमृत।

**स्त्यैन**—पु० [सं०] १ चोर। २. डाकू।
वि० कम। थोड़ा।

**स्त्रियम्मन्य**—वि० [सं०] जो अपने को स्त्री मानता या समझता हो।

**स्त्रियोपयोगी**—वि० [सं० स्त्री + उपयोगी, शुद्ध और सिद्ध रूप स्त्र्युपयोगी] जो विशेष रूप से स्त्रियों के काम का हो। जैसे—स्त्रियोपयोगी साहित्य।

**स्त्रीइंद्रिय**—स्त्री० [सं०] स्त्री की योनि। भग।

**स्त्री**—स्त्री० [सं०] [भाव० स्त्रीत्व, वि० स्त्रैण] १ मनुष्य जाति की वयस्क मादा। 'पुरुष' का विपर्याय। २ उक्त जाति की कोई विशेष सदस्या। जैसे—पुरुष स्त्री का गुलाम बन जाता है। ३. पत्नी। जोरू। ४ मादा जन्तु। पुरुष या नर का विपर्याय। ४. एक वर्ण वृत्त जिसके प्रत्येक चरण में दो-दो गुरु वर्ण होते हैं। कामा। ५ दीमक। ६ प्रियगुलता। ७. व्याकरण में स्त्रीलिंग का संक्षिप्त रूप।
†स्त्री०—इस्त्री।

**स्त्री-करण**—पु० [सं०] १. स्त्री बनाना। पत्नी बनाना। २ संभोग। मैथुन।

**स्त्री गमन**—पु० [सं०] स्त्री-संभोग। मैथुन।

**स्त्री ग्रह**—पु० [सं०] ज्योतिष के अनुसार बुध, चन्द्र और शुक्र ग्रह जो स्त्री जाति के माने गये हैं।

**स्त्री-चंचल**—वि० [सं०] १ कामुक। कामी। २ लंपट।

**स्त्री-चिह्न**—पु० [सं०] वे सब बातें या चिह्न जिनसे यह जाना जाता है कि प्राणी स्त्री जाति का है।

**स्त्री-चोर**—पु० [सं०] लंपट। व्यभिचारी।

**स्त्री-जननी**—स्त्री० [सं०] केवल लड़कियों को जन्म देनेवाली स्त्री। (मनु)

**स्त्री-जित्**—वि० [सं०] (ऐसा पुरुष) जो पत्नी की जी-हुजूरी करता हो।

**स्त्रीता**—स्त्री० = स्त्रीत्व।

**स्त्रीत्व**—पु० [सं०] १ 'स्त्री' होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। औरतपन। २ गुण, धर्म आदि के विचार से स्त्रियों का-सा होने का भाव। जनानापन। ३ शब्दों के अंत मे लगनेवाला स्त्रीलिंग का सूचक प्रत्यय। (व्याकरण)

**स्त्री-देहार्द्ध**—पु० [सं०] शिव जिनके आधे अंग मे पार्वती का होना माना गया है।

**स्त्री-धन**—पु० [सं०] ऐसा धन जिस पर स्त्रियों का विशेष रूप से पूरा अधिकार हो और जो पुरुषों को न मिल सकता हो। यह छह प्रकार का कहा गया है—अन्वाधेय, बन्धुदत्त, भौतक, सौदायिक, शुल्क, परिणाम, लाभाधिगत और पादवन्दनिक।

**स्त्री-धर्म**—पु० [सं०] १ स्त्री या पत्नी का कर्तव्य। २ स्त्री का रजस्वला होना। रजोदर्शन। ३ मैथुन। संभोग। ४ स्त्रियों से संबंध रखनेवाला नियम या विधान।

**स्त्री-धर्मिणी**—स्त्री० [सं०] रजस्वला स्त्री।

**स्त्री-धूर्त**—पु० [सं०] स्त्री को छलनेवाला पुरुष।

**स्त्री-ध्वज**—वि० [सं०] जिसमे स्त्रियों के चिह्न हों। स्त्री के चिह्नों से युक्त।
पु० हाथी।

**स्त्रीपण्योपजीवी**—पु० = स्त्र्याजीव।

**स्त्री-पर**—वि० [सं०] कामुक। विषयी।
पु० व्यभिचारी पुरुष।

**स्त्री-पुर**—पु० [सं०] अंतःपुर। जनानखाना।

**स्त्री-पुष्प**—पु० [सं०] स्त्री का रज।

**स्त्री-प्रसंग**—पु० [सं०] मैथुन। संभोग।

**स्त्री-प्रिय**—पु० [सं०] १ आम का पेड़। २ अशोक।
वि० जिसे स्त्री प्यार करती हो।

**स्त्री-प्रेक्षा**—स्त्री० [सं०] ऐसा खेल-तमाशा जिसमे स्त्रियाँ ही जा सकती हों।

**स्त्री-भोग**—पु० [सं०] मैथुन। प्रसंग।

**स्त्री-मंत्र**—पु० [सं०] ऐसा मंत्र जिसके अंत में 'स्वाहा' हो।

**स्त्री-मय**—वि० [सं०] १ जनाना। २. जनखा।

**स्त्री-रत्न**—स्त्री० [सं०] लक्ष्मी।

**स्त्री-राज्य**—पु० [सं०] ऐसी राजनीतिक और सामाजिक व्यवस्था जिसमें सब प्रकार के अधिकार और कार्य स्त्रियों के हाथों में ही रहते हों, पुरुषों के हाथ में कुछ भी सत्ता न रहती हो। (जाइनार्की)

**स्त्री-लिंग**—पु० [स०] १. हिन्दी व्याकरण मे, दो लिंगों मे से एक जो स्त्री जाति का अथवा किसी शब्द के अल्पार्थक रूप का वाचक होता है। (फैमिनिन) जैसे—'लडका' का स्त्रीलिंग 'लड़की' या 'छूरा' का स्त्री० लिंग 'छुरी' है। २ स्त्री का चिह्न अर्थात् भग या योनि।

**स्त्री-वश (श्य)**—वि० [स०] (पुरुष) जो स्त्री के वश में हो।

**स्त्री-वार**—पु० [स०] सोम, बुध और शुक्रवार। (ज्योतिष में चद्र, बुध और शुक्र ये तीनो स्त्री-ग्रह माने गए हैं, अत इनके वार भी स्त्री-वार कहे जाते है।)

**स्त्री-वास (स्स्)**—पु० [स०] ऐसा वस्त्र जो रतिबध या सभोग के समय के लिए उपयुक्त हो।

**स्त्री-विषय**—पु० [स०] सभोग। मैथुन।

**स्त्री-वध**—पु० [स०] योनि। भग।

**स्त्री-व्रत**—पु० [स०] अपनी स्त्री के अतिरिक्त दूसरी स्त्री की कामना न करना। एक स्त्री-परायणता। पत्नी-व्रत।

**स्त्री-संग**—पु० [स०] सभोग। मैथुन।

**स्त्री-संग्रहण**—पु० [स०] किसी स्त्री से बलात् सभोग आदि करना। व्यभिचार।

**स्त्री-संभोग**—पु० [स०] स्त्री-प्रसग। मैथुन।

**स्त्री-समागम**—पु० [स०] स्त्री-प्रसग। मैथुन।

**स्त्री-सुख**—पु० [स०] १ स्त्री का सुख। २. मैथुन। सभोग। ३ ३ सहिजन।

**स्त्री-सेवन**—पु० [स०] सभोग। मैथुन।

**स्त्रैण**—वि० [स०] १ स्त्री-संबधी। स्त्रियो का। २ स्त्रियो का-सा। स्त्रियो की तरह का। ३ स्त्री या पत्नी के वश में रहनेवाला। स्त्री-रत (पुरुष)। ४ सदा स्त्रियो की मडली मे रहने की प्रकृति रखनेवाला।

**स्त्रैणकी**—स्त्री० [स० स्त्रैण से] चिकित्सा शास्त्र की वह शाखा जिसमें स्त्रियो के रोगो विशेषत उनकी जननेन्द्रिय के रोगो के निदान और चिकित्सा का विवेचन होता है। (जैनिकॉलॉजी)

**स्त्रैं-राजक**—पु० [स०] स्त्री-राज्य का निवासी।

**स्त्र्यध्यक्ष**—पु० [स०] रानियों की देख-रेख करनेवाला और अत पुर का प्रधान अधिकारी।

**स्त्र्याजीव**—पु० [स०] १ वह पुरुष जो स्त्री या स्त्रियो की सम्पत्ति का भोग करता हो। २ स्त्री या स्त्रियो से वेश्या-वृत्ति कराकर दलाली खानेवाला व्यक्ति।

**स्त्र्युपयोगी**—वि० [स० स्त्री+उपयोगी] विशेष रूप से स्त्रियों के उपयोग में आनेवाला। (भूल से 'स्त्रियोपयोगी' रूप में प्रचलित)

**स्थंडिल**—पु० [स०] १. भूमि। जमीन। २. यज्ञ के लिए साफ की हुई भूमि। ३. सीमा। हद। ४. मिट्टी का ढेर। ५. एक प्राचीन ऋषि।

**स्थंडिल शय्या**—स्त्री० [सं०] (व्रत के कारण) भूमि या जमीन पर सोना। भूमि-शयन।

**स्थंडिलशायी**—पु० [स० स्थंडिल-शायिन्] वह जो व्रत के कारण भूमि या यज्ञ-स्थल पर सोता हो।

**स्थंडिलेशय**—पु० [सं०] दे० 'स्थंडिलशायी'।

**स्थ**—प्रत्य० [स०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अत में लगकर अर्थ देता है—(क) स्थित। जैसे—तटस्थ। (ख) उपस्थित। वर्तमान। जैसे—कठस्थ। (ग) किसी विशिष्ट स्थान में रहने या होनेवाला। जैसे—ज्ञातस्थ, काशीस्थ। (घ) लीन। रत। मान। जैसे—ध्यानस्थ।

**स्थकित**—वि० [हिं० थकित] थका हुआ। शिथिल। ढीला।

**स्थग**—पु० [स०] १ धूर्त। २ ठग।

**स्थगन**—पु० [स०] [वि० स्थगित] १ छिपाना या ढाँकना। २ सभा की बैठक, बात की गुलवाई अथवा और कोई चलता हुआ काम कुछ समय के लिए रोक रखना। (ऐडजोर्नमेंट) ३ विचार आदि के लिए कुछ समय तक रोकना। (निलबन)

**स्थगन प्रस्ताव**—पु० [स०] वह प्रस्ताव जो विधायिका सभाओं आदि में यह कहकर उपस्थित किया जाता है कि और काम छोड कर पहले इसी पर विचार होना चाहिए। (एडजोर्नमेन्ट मोशन)

**स्थगिका**—स्त्री० [स०] १ पनडब्बा। पानदान। ३ अँगूठे, उँगलियो और तर्जनीइन्द्रिय के अधभाग पर के चाप पर बाँधी जानेवाली (पनडब्बे के आकार की) एक प्रकार की पट्टी। (वैद्यक)

**स्थगित**—भू० कृ० [स०] १ ढका हुआ। आच्छादित। २ ठहराया या रोका हुआ। ३ जो कुछ समय के लिए रोक दिया गया हो। मुलतवी। (एडजोर्ण्ड) ४ छिपा हुआ। गुप्त। ५. बन्द किया या रोका हुआ।

**स्थगी**—स्त्री० [स०] स्थगिका।

**स्थपति**—पु० [स०] १ राजा। २ सामत। ३ शासक। ४ अत.पुर का रक्षक। कचुकी। ५ वास्तुशास्त्र का ज्ञाता या पडित। ६ रथ बनानेवाला कारीगर। ७ सारथी। ८ वह जिसने बृहस्पति-सवन नामक यज्ञ किया हो। ९. कुबेर। १० बृहस्पति।
वि० प्रधान। मुख्य।

**स्थपनी**—स्त्री० [स०] भौहो के मध्य का स्थान जिसकी गिनती मर्मस्थानो में होती है।

**स्थपुट**—वि० [स०] १ कुबडा। कुब्ज। २ पीडित। विपन्न। ३ कठिन स्थिति मे पडा हुआ।
पु० कुबड़ा।

**स्थल**—पु० [स०] [वि० स्थलीय] १. भूमि। जमीन। २. भूमि का खड या विभाग। भू-भाग। ३ जल से रहित भूमि। खश्की। (लैण्ड) जैसे—स्थल मार्ग से जाने में बहुत दिन लगेंगे। ४. स्थान। जगह। (स्पेस) ५. ऐसी जगह जिसमें जल बहुत कम हो। निर्जल और मरुभूमि। ६ कोई ऐसी जगह, जहाँ कोई विशेष बात, रचना आदि हो या होने को हो। (साइट) ७. अवसर। मौका। ८ टीला। ढूह। ९. खेमा। तबू। १०. पुस्तक का अध्याय या परिच्छेद।

**स्थल-कंद**—पु० [सं०] जगली सूरन। कटैला जमीकद।

**स्थल-कमल**—पु० [स०] १. स्थल में होनेवाला एक प्रकार का पौधा जिसमें कमल जैसे फूल लगते हैं। २. उक्त पौधे का फूल।

**स्थल-कमलिनी**—स्त्री० [स०] स्थल कमल का पौधा।

**स्थल-काली**—स्त्री० [स०] कुर्गा की एक सहचरी।

**स्थल-कुमुद**—पुं० [स०] कनेर। करवीर।

**स्थलज**—वि० [सं०]=स्थलचर।

**स्थलगामी (मिन्)**—वि० [स०] [स्त्री० स्थलगामिनी]=स्थलचर।

**स्थल-चर**—वि० [स०] स्थल पर रहने या विचरण करनेवाला। 'जल-चर' और 'नभ-चर' से भिन्न।

**स्थलचारी (रिन्)**—वि०[स०] [स्त्री० स्थल-चारिणी]=स्थल-चर।

**स्थलज**—वि० [स०] १ स्थल में उत्पन्न होनेवाला। २. स्थल या सूखी जमीन पर रहनेवाला। (टेरेस्ट्रियल)

**स्थल-डमरुमध्य**—पु०[स०] दाहिने और बाँये पानी से घिरा हुआ, स्थल का वह लंबा भाग, जो दोनों ओर के दो बड़े स्थलों के बीच में हो और उन्हें मिलाता हो।

**स्थल-नलिनी**—स्त्री०=स्थल-कमलिनी।

**स्थल-पद्म**—पु०[स०] १. स्थल-कमल। २. मान-कच्चू। ३ गुलाब।

**स्थल-पद्मिनी**—स्त्री०=स्थल-कमलिनी।

**स्थल-युद्ध**—पु० [स०] जमीन पर होनेवाला युद्ध। हवाई और समुद्री युद्ध से भिन्न।

**स्थल-रहा**—स्त्री० [स०] स्थल-कमल।

**स्थल-विहंग**—पु० [स०] स्थल पर विचरण करनेवाले मुर्ग, मोर आदि पक्षी।

**स्थल-सेना**—स्त्री० [सं०] स्थल या जमीन पर लड़नेवाली फौज। पैदल सिपाही और घुड़सवार आदि। (आर्मी)। वायु और जल सेना से भिन्न।

**स्थला**—स्त्री० [स०] जल-शून्य भू-भाग। स्थल।

**स्थलालेख्य**—पु० [स० स्थल+आलेख्य] किसी स्थल का रेखा-चित्र। (साइट प्लान)

**स्थली**—स्त्री० [सं०] १. जल-शून्य भूभाग। खुश्क जमीन। भूमि। २. ऊँची सम भूमि। ३. जगह। स्थान। ४ ऐसा मैदान जिसमें सुन्दर प्राकृतिक दृश्य हो।

**स्थली देवता**—पु० [सं०] ग्राम-देवता।

**स्थलीय**—वि० [स०] १. स्थल या भूमि-संबंधी। स्थल का। जमीन का। २. दे० 'स्थानीय'।

**स्थलेशय**—पु० [स०] (स्थल अर्थात् भूमि पर सोनेवाले) कुरंग, कस्तूरी मृग आदि जन्तु।

**स्थलौक (स्)**—पु० [स०] स्थल-चर जीव-जन्तु।

**स्थवि**—पु० [स०] १. थैला या थैली। २ स्वर्ग। ३. अग्नि। ४ फल। ५ जंगल। ६ जूलाहा। ७ कोढ़ी।

**स्थविर**—पु० [स०] [भाव० स्थविरता] १. लकड़ी टेककर चलने वाला बूढ़ा। २. बौद्ध भिक्षुओं का एक संप्रदाय। ३ ब्रह्मा। ४. कर्दम। ५. छरीला।
वि० वृद्ध और पूज्य।

**स्थविरा**—स्त्री० [सं०] १. वृद्ध और पूज्य स्त्री। २. गोरखमुंडी।

**स्थाण्डिल**—वि० [स०] व्रत के कारण भूमि पर शयन करनेवाला।

**स्थाणि**—वि०=स्थायी।

**स्थाणव**—वि० [स०] स्थाणु अर्थात् वृक्ष के तने से बना या उत्पन्न।

**स्थाणवीय**—वि० [स०] स्थाणु या शिव संबंधी। शिव का।

**स्थाणु**—पु० [सं०] १. पेड़ का ऐसा धड़ जिसके ऊपर की डालियाँ और पत्ते आदि न रह गये हों। ठूँठ। २. खंभा। ३. शिव का एक नाम। ४ ग्यारह रुद्रों में से एक। ५. एक प्रजापति। ६ एक प्रकार का बरछा या भाला। ७. धूप-घड़ी का काँटा। ८ स्थावर पदार्थ। ९. जीवक नामक अष्ट-वर्गीय ओषधि। १०. दीमक की बाँबी। ११. घोड़े का एक प्रकार का रोग जिसमें उसकी जाँघ में व्रण या फोड़ा निकलता है। १२ कुरुक्षेत्र के थानेश्वर नामक स्थान का प्राचीन नाम जो किसी समय बहुत प्रसिद्ध तीर्थ माना जाता था।
वि० अचल। स्थावर।

**स्थाण्वीश्वर**—पु० [स०] स्थाणु तीर्थ में स्थित एक प्रसिद्ध शिवलिंग। (वामन पुराण)

**स्थात (तृ)**—वि० [सं०] १ स्थित या स्थिर रहनेवाला। दृढ़। २. अचल।

**स्थान**—पु० [स०] [वि० स्थानिक, स्थानीय] १. स्थिति। ठहराव। २ खुला हुआ भूमि-भाग। जमीन। मैदान। ३. निश्चित और परिमित स्थितिवाला वह भू-भाग जिसमें कोई वस्तु, प्राकृतिक रचना या कोई विशेष बात हो। जगह। स्थल। (प्लेस) जैसे—यहाँ देखने योग्य अनेक स्थान हैं। ४ रहने की जगह (मकान, घर आदि)। ५ सेवा या लोकोपकार आदि के काम करने की जगह। पद। ओहदा। (पोस्ट) ६ बैठने का वह विशिष्ट स्थान जो निर्वाचित अथवा प्रतिनिधित्व करनेवाले लोगों के लिए होता है। ७. देवालय, आश्रम या इसी प्रकार का और कोई पवित्र स्थान। ८ अवसर। मौका। ९ देश। प्रदेश। १० मुँह के अन्दर का वह अंग या स्थल जहाँ से किसी वर्ग या शब्द का उच्चारण हो। जैसे—कंठ, तालु, मूर्धा, दंत, ओष्ठ। (व्याकरण) ११ किसी राज्य के मुख्य आधार या बल जो चार माने गये हैं। यथा—सेना, कोश, नगर और देश। (मनु०) १२ प्राचीन भारतीय राजनीति में, वह स्थिति जब युद्ध-यात्रा न करके राजा लोग किसी उद्देश्य से चुप-चाप या उदासीन भाव से बैठे रहते थे १३. आसन में शरीर की एक प्रकार की मुद्रा। (यह आसन का एक भेद माना गया है)। १४ अभिनय में अभिनेता का कार्य या चरित्र। १५ अवस्था। दशा। १६ गोदाम। भंडार। १७ कारण। हेतु। १८. किला। दुर्ग। १९ ग्रंथ का अध्याय या परिच्छेद।

**स्थान**ः—पु०[स०]१ अवस्था। स्थिति। २ रूपक में कोई विशेष स्थिति। जैसे—पताका स्थानक। ३. जगह। स्थान। ४ नगर। शहर। ५ दरजा। पद। ६ वृक्ष का थाला। आलबाल। ७ फंस। ८ नृत्य में एक प्रकार की मुद्रा।

**स्थानकवासी**—पु०[स०] जैनों के एक विशिष्ट संप्रदाय।

**स्थान-चिंतक**—पु०[स०] वह सैनिक अधिकारी जो सेना के पड़ाव डालने, चौकी बनाने आदि के उद्देश्य से स्थान-स्थान की व्यवस्था करता है।

**स्थान-च्युत**—भू० कृ०[स०] [भाव० स्थान-च्युति]१. जो अपने स्थान से गिर, हट या अलग हो गया हो। २. पद से हटाया हुआ। पद-च्युत।

**स्थान-पदिक**—वि०[स०] नियमित रूप से या प्रायः किसी एक स्थान अथवा प्रदेश में होने या पाया जानेवाला। (एन्डेमिक) जैसे—स्थान-पदिक रोग।

**स्थान-पाल**—पु०[स०]१. स्थान या देश का रक्षक। २. चौकीदार। पहरेदार।

**स्थान-भ्रष्ट**—भू० कृ० [सं०] स्थान-च्युत।

**स्थानविद्**—वि० [सं०] जो किसी स्थान का जानकार हो।

**स्थानस्थ**—वि० [सं०] १ किसी स्थान पर टिका या टिककर रहनेवाला। २. स्थानीय।

**स्थानांतर**—पु० [सं०] १ प्रकृत या प्रस्तुत से भिन्न कोई और स्थान। दूसरा स्थान। २. एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया या भाव। बदली।

**स्थानांतरण**—पु० [सं०] भू० कृ० स्थानांतरित] किसी वस्तु या व्यक्ति को एक स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर पहुँचाना, देखना या भेजना। बदली। (ट्रान्सफ़रेन्स)

**स्थानांतरित**—भू० कृ० [सं०] जो अपने पहले स्थान से हटाकर दूसरे स्थान पर भेज दिया गया हो। (ट्रान्सफर्ड)

**स्थानाध्यक्ष**—पु० [सं०] वह व्यक्ति जिसपर किसी स्थान की रक्षा का भार हो। स्थान-रक्षक।

**स्थानापत्ति**—स्त्री० [सं०] स्थानापन्न होने की अवस्था या भाव। किसी की जगह पर या बदले में काम करना।

**स्थानापन्न**—वि० [सं०] १ जिसने किसी दूसरे का स्थान ग्रहण किया हो। २. शासनिक क्षेत्र में किसी अधिकारी की अस्वस्थता, अनुपस्थिति या अविद्यमानता में उसके स्थान पर अस्थायी रूप से काम करनेवाला। (आफिशिएटिंग)

**स्थानिक**—वि० [सं०] १. स्थान-संबंधी। २ किसी स्थान विशेष में ही होनेवाला। जिसका क्षेत्र किसी स्थान विशेष तक ही सीमित हो। स्थानीय। जैसे—स्थानिक शब्द।

पु० १. स्थान-रक्षक। २ देव मंदिर का प्रबंधक।

**स्थानिक अधिकरण**—पु० [सं०] किसी विशेष स्थान पर रहनेवाले अधिकारियों का समूह वर्ग या निकाय। (लोकल अॉथॉरिटी)

**स्थानिक-कर**—पु० [सं०] किसी स्थान विशेष पर लगनेवाला कर। (लोकल टैक्स)

**स्थानिक-परिषद्**—स्त्री० [सं०] किसी बस्ती के निवासियों के प्रतिनिधियों की वह परिषद् या सभा जिस पर वहाँ के कुछ विशिष्ट लोग-हित संबंधी सार्वजनिक कार्यों का भार हो। (लोकल बोर्ड)

**स्थानिक स्वराज्य**—पु०, दे० 'स्थानिक स्वायत्त शासन'।

**स्थानिक स्वायत्त शासन**—पु० [सं०] १. लोकतंत्र शासन प्रणाली में शहरों, कसबों, गाँवों आदि के लोगों द्वारा की जानेवाली अपने यहाँ की शासन-व्यवस्था। २ उक्त शासन का अधिकार। ३. उक्त शासन-प्रणाली। (लोकल सेल्फ गवर्नमेंट)

**स्थानी (निन्)**—वि० [सं०] १. स्थान या पद से युक्त। २. उपयुक्त। ३ स्थायी।

**स्थानीकरण**—पु० [सं०] [भू० कृ० स्थानीकृत] इधर-उधर या दूर तक फैले हुए कार्यों, व्यापारों आदि को नियंत्रित करके एक केन्द्र या स्थान में आबद्ध या सीमित करना। (लोकलाइजेशन)

**स्थानीकृत**—भू० कृ० [सं०] जो या जिसका स्थानीकरण हुआ हो या किया गया हो। (लोकलाइज्ड)

**स्थानीय**—वि० [सं०] १. उस स्थान या नगर का जिसके संबंध में कोई उल्लेख हो। उल्लिखित, वक्ता या लेखक के स्थान का। मुकामी। स्थानिक। (लोकल) जैसे—स्थानीय पुलिस कर्मचारी। स्थानीय समाचार। २. किसी स्थान पर ठहरा हुआ। स्थित।

पु० १. नगर। शहर। २. प्राचीन भारत में ८०० गाँवों के बीच में बना हुआ किला या गढ़।

**स्थानीय स्वशासन**—पु० [सं०] स्थानिक स्वायत्त शासन।

**स्थानेश्वर**—पु० [सं०] १. कुरुक्षेत्र का थानेश्वर नामक स्थान जो किसी समय एक प्रसिद्ध तीर्थ था। २. स्थानाध्यक्ष।

**स्थापक**—वि० [सं०] १. स्थापन या स्थापना करनेवाला। २ मूर्तियाँ आदि बनानेवाला। ३. अमानत या धरोहर रखनेवाला। ४. दे० 'सस्थापक'।

पु० भारतीय नाट्यशास्त्र में वह नट जो पूर्व-रंग में सूत्रधार के मंगलाचरण करके चले जाने पर वैष्णव रूप में आकर नाटक की कथावस्तु के काव्यार्थ की स्थापना करता अर्थात् सूचना देता है।

**स्थापत्य**—पु० [सं०] १ स्थपति का अर्थात् मकान आदि बनाने का कार्य। राजगीरी। मेमारी। २ भवन बनाने की विद्या। वास्तु-विज्ञान। ३ अंत.पुर का रक्षक।

**स्थापत्य-वेद**—पु० [सं०] चार उपवेदों में से एक जिसमें वास्तु-शिल्प या भवन-निर्माण कला का विषय वर्णित है। कहते हैं कि यह विश्वकर्मा ने अथर्ववेद से निकाला था।

**स्थापन**—पु० [सं०] [वि० स्थापनीय, भू० कृ० स्थापित, कर्ता० स्थापक] १. उठाना या खड़ा करना। २ दृढ़तापूर्वक जमाना, रखना या बैठाना। जैसे—वृक्ष या देवता का स्थापन। ३ दृढ़ या पुष्ट आधार पर स्थिर करना। स्थायी रूप देना। ४ कोई नई संस्था या व्यापारिक कार-बार खड़ा करना। (एस्टैब्लिशमेंट) ५ किसी को किसी पद पर काम करने के लिए लगाना या नियत करना। (पोस्टिंग) ६ कोई मत या विचार इस प्रकार युक्तिपूर्वक लोगों के सामने रखना कि वह ठीक या प्रामाणिक जान पड़े। प्रतिपादन। ७ (शरीर की) रक्षा या आयुवृद्धि का उपाय। ८ रक्त-स्राव रोकने का उपाय या क्रिया। ९ समाधि। १०. प्रसवन। ११ रहने की जगह। घर। मकान। १२ अनाज का ढेर। १३ दे० 'स्थापना'।

**स्थापन-निक्षेप**—पु० [सं०] अर्हत् की मूर्ति का पूजन। (जैन)

**स्थापना**—स्त्री० [सं०] १ स्थापित करने की क्रिया या भाव। स्थापन। २. तर्क, प्रमाण, युक्ति आदि के द्वारा अपना पक्ष या मत ठीक सिद्ध करते हुए दूसरों के सामने रखना। अपना पक्ष स्थापित करना। निरूपण। प्रतिपादन। (एस्टैब्लिशमेंट) ३ इकट्ठा या जमा करना। ४. भारतीय नाट्य-शास्त्र में नाटक के पूर्व-रंग में सूत्रधार के द्वारा मंगलाचरण हो चुकने पर स्थापक नामक नट के द्वारा इस बात का सूचित किया जाना कि नाटक की कथा-वस्तु और उसका काव्यार्थ क्या है। ५. जैन धर्म में किसी मूर्ति में देवता, व्यक्ति आदि का आरोप करना। † स० ठीक तरह से जमाना, बैठाना या रखना। स्थापित करना।

**स्थापनिक**—वि० [सं०] १. स्थापन संबंधी। स्थापन का। २. एकत्र या जमा किया हुआ।

**स्थापनीय**—वि० [सं०] स्थापित किये जाने के योग्य। जिसका स्थापन हो सके या होने को हो।

**स्थापयितव्य**—वि० [सं०] =स्थापनीय।

**स्थापयिता (तृ)**—वि० [स०] =स्थापक ।

**स्थापित**—भू० कृ० [स०] १. जिसकी स्थापना की गई हो। कायम किया हुआ। २ इकट्ठा या जमा किया हुआ। ३ सँभालकर रखा हुआ। रक्षित। ४. निर्धारित या निश्चित। ५ व्यवस्थित। ६ विवाहित। ७. दृढ़। पक्का। मजबूत।

**स्थापी (पिन्)**—पु० [स०] प्रतिमा निर्माण करने या मूर्ति बनानेवाला कारीगर।

**स्थाप्य**—वि० [सं०] =स्थापनीय।
पु० १. देवता आदि की मूर्ति। देव-प्रतिमा। २ अमानत। धरोहर।

**स्थाय**—पु० [स०] १ वह जिसमे कोई चीज रखी जाय। वह जिसमे धारित शक्ति हो। २ जगह। स्थान।

**स्थाया**—स्त्री० [स०] पृथ्वी। धरती।

**स्थायिक**—वि० [स०] १ स्थायी। २. विध्वंसनीय।

**स्थायिता**—स्त्री०=स्थायित्व।

**स्थायित्व**—पु० [स०] १. 'स्थायी' होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २ किसी वस्तु विशेषत येसा या नौकरी के पद आदि पर होनेवाला ऐसा अधिकार जो कुछ विशिष्ट नियमो के अनुसार सुरक्षित और नियत काल के लिए स्थायी हो। (टेन्योर)

**स्थायी**—वि० [स०] १ किसी स्थान पर स्थित होनेवाला। २ सदा स्थित रहनेवाला। हमेशा बना रहनेवाला। (परमानेन्ट) जैसे—स्थायी पद। ३ बहुत दिनो तक चलनेवाला। टिकाऊ। ४ स्थायी भाव। (दे०)

**स्थायीकरण**—पु० [स०] [भू० कृ० स्थायीकृत] १ किसी वस्तु, कार्य या बात को स्थायी रूप देना। २ किसी पद पर, अस्थायी रूप से अथवा परीक्षण के रूप मे काम करनेवाले व्यक्ति को उस पर स्थायी रूप से नियत करना। ३ उक्त कार्य के लिए दी जानेवाली आज्ञा या स्वीकृति। (कन्फर्मेशन)

**स्थायी कोष**—पु० [स०] किसी सस्था आदि का वह कोष या धन राशि जो उसे स्थायी रूप से बनाये रखने के लिए क्रम-क्रम से बराबर सचित होती रहती है और जिसका उपयोग उस सस्था को पुष्ट रूप देने और स्थायी बनाये रखने मे होता है।

**स्थायी निधि**—स्त्री० [स०] १. वह निधि जो कोई काम चलाये चलने के लिए स्थापित की गई हो और जिसके ब्याज मात्र से वह काम चलता हो। २ स्थायी कोष। (एन्डाउमेन्ट)

**स्थायी भाव**—पु० [स०] साहित्य में वे मूल तत्त्व या भाव जो मूलत: मनुष्यो के मन में प्राय: सदा निहित रहते और कुछ विशिष्ट अवसरो पर अथवा कुछ विशिष्ट कारणों से स्पष्ट रूप से प्रकट होते हैं। जैसे—प्रेम, हर्ष या उससे उत्पन्न होनेवाला हास्य, खेद, दु:ख, शोक, भय, वैराग्य आदि। इन्ही तत्त्वों या भावो के आधार पर साहित्य के ये नौ रस स्थिर हुए हैं—शृगार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, बीभत्स और शांत। इन्ही रसो मे मूल तथा स्थायी रूप से स्थापित रहने और किसी दूसरे भाव के आने पर भी प्रबलता तथा स्पष्ट रूप से व्यक्त होने के कारण ये भाव स्थायी कहलाते हैं।

**स्थायी समिति**—स्त्री०[सं०]१. वह समिति जो स्थायी रूप से बनी रहकर काम करने के लिए नियुक्त की गई हो। २ किसी सम्मेलन या महासभा आदि की वह समिति जो उस सम्मेलन या महासभा के अगले अधिवेशन तक सब कार्यों की व्यवस्था के लिए चुनी जाती है। (स्टैंडिंग कमिटी)

**स्थाल**—पु० [स०] १ पात्र (बरतन)। २. बड़ी थाली। थाल। ३ देगची। पतीला। ४ दाल का खोलवाला।

**स्थाली**—स्त्री० [स०] १ मिट्टी के वे बरतन जो भोजन बनाने और खाने-पीने के काम मे आते हो। जैसे—कसोरा, तश्तरी, हाँडी आदि। २ मिट्टी की वह तश्तरी जिसमे यज्ञ के समय सोम का रस निचोडा जाता था। ३ थाली। ४ खीर। ५. पाटला नामक वृक्ष।

**स्थाली-पाक**—पु० [स०] १. आहुति के लिए एक प्रकार का चरु जो दूध मे चावल या जौ डालकर पकाने से बनता था। २ वैद्यक मे लोहे की एक पाकविधि।

**स्थाली-पुलाक न्याय**—पु० [स०] एक प्रकार का न्याय या कहावत जिसका प्रयोग यह आशय सूचित करने के लिए होता है कि हाँडी मे उबाले हुए चावलो का एक दाना देखने से ही यह पता चल जाता है कि सब चावल अच्छी तरह पके है या नही। जैसे—मै ने उनका एक ही व्याख्यान सुन कर स्थाली पुलाक-न्याय से सब विषयो मे उनका मत जान लिया।

**स्थाल्य**—वि० [स०] १ स्थल-सबधी। २ स्थल पर होनेवाला।
पु० १ अन्न। २. जडी-बूटी।

**स्थावर**—वि० [स०] [भाव० स्थावरता] १ इस प्रकार जडा, रखा या लगाया हुआ कि हट न सके। स्थिर। २ जो सदा एक ही जगह जमा रहता हो और वहाँ से कभी हटता न हो। ('जगम' का विरु०) ३ अचल। गैर मनकूला। (इम्मूवेबुल) ४ उक्त प्रकार के पदार्थों से उत्पन्न होने या सबध रखनेवाला। जैसे—स्थावर विष।
पु० १ अचल सपत्ति। जैसे—बाग, मकान आदि। २ पर्वत। ३ अचेतन पदार्थ। जैसे—मिट्टी, बालू आदि। ४. वह पारिभाषिक वस्तु जिसे बेचने का अधिकार किसी को नही होता। ५ स्थूल शरीर।

**स्थावरता**—स्त्री० [स०] स्थावर होने की अवस्था, गुण या भाव।

**स्थावर-नाम**—पु० [स०] वह पाप कर्म जिसके उदय से जीव स्थावर काय (स्थूल शरीर) मे जन्म ग्रहण करते है। (जैन)

**स्थावर-राज**—पु० [स०] हिमालय।

**स्थावर-विष**—पु०[स०] वह विषय जो वृक्षो की जडो, पत्तो, फल, फूल, छाल, दूध, सार, गोद, धातु और कद मे होता है। स्थावर पदार्थों मे होनेवाला जहर। (वैद्यक)

**स्थाविर**—पु० [स०] वृद्धावस्था। वार्धक्य। बुढ़ौती।

**स्थाविर-लगुड न्याय**—पु० [स०] जैसे वृद्ध की लाठी निशाने पर नही पहुँचती वैसे यदि कोई बात लक्ष्य तक पहुँचने मे विफल हो, तो यह न्याय प्रयुक्त होता है।

**स्थित**—भू० कृ० [स०] [भाव० स्थिति] १ किसी स्थान पर खड़ा, ठहरा या बना हुआ। जैसे—दिल्ली स्थित मकान। २. बसा हुआ। जैसे—प्रयाग स्थित पारिवारिक सदस्य। ३ दृढ़। पक्का। जैसे—स्थित प्रज्ञ। ४ प्रतिष्ठित या प्रस्थापित किया हुआ। ५ बैठा हुआ। ६ ऊपर की ओर उठा हुआ। ७ अचल। ८. उपस्थित। मौजूद।
पुं० १. अवस्थान। निवास। २ कुल या परिवार की मर्यादा।

**स्थितता**—स्त्री० [स०] स्थित होने की अवस्था, गुण या भाव। स्थिति।

**स्थित-धी**—वि० [स०] १. स्थिर बुद्धिवाला । २. सोच-समझ कर निश्चय करने और उस पर स्थिर रहनेवाला । ३ सुख-दुख मे विचलित या विह्वल न होनेवाला ।

**स्थित-पाठ्य**—पु० [स०] नाट्य-शास्त्र मे विरही नायक या नायिका का एकान्त मे बैठकर कुछ सोचते हुए मन से आप ही आप बातें करना या बडबडाना।

**स्थित-प्रज्ञ**—वि० [स०] १. जिसकी विवेक-बुद्धि स्थिर हो। २ सब प्रकार के मनोविकारो से रहित या शून्य और सदा आत्मा मे ही प्रसन्न तथा सतुष्ट रहनेवाला ।

**स्थिति**—स्त्री० [स०] [वि० स्थित] १ स्थित होने की क्रिया, दशा या भाव। रहना या होना । अवस्थान । अस्तित्व । २ एक ही स्थान पर या एक ही रूप मे बना रहना । टिकाव । ठहराव । ३ आपेक्षिक, आर्थिक, सामाजिक आदि दृष्टियो से समझी जानेवाली किसी विषय या व्यक्ति की अवस्था । दशा । हालत । जैसे—(क) आज-कल उनकी स्थिति अच्छी नही है । (ख) देश की राजनीतिक (या सामाजिक) स्थिति बिलकुल बदल गई है । ४ पद, मर्यादा आदि के विचार से समाज मे किसी को प्राप्त होनेवाला स्थान । (गॉडीशन) ५ किसी व्यक्ति, सस्था आदि की वह विधिक दशा या मर्यादा जो उसे अपने क्षेत्र मे कुछ निश्चित सीमा मे प्राप्त होती है, और जो उसके पद, सम्मान आदि की सूचक होती है। (स्टटस) ६ वे बातें जो कोई पक्ष अपने वक्तव्य, अभियोग, आरोप आदि के सबध में कहता या उपस्थित करता है । (केस) जैसे—उस विषय मे मैं अपनी स्थिति आप को बतला चुका हूँ। ७ निवास-स्थान। ८ अस्तित्व । ९ पालन-पोषण । १० नियम या विधान । ११ विचारणीय विषय का निर्णय या निष्पत्ति । १२ मर्यादा । १३ सीमा । हद्द। १४ छुटकारा । निवृत्ति। १५ ढग। तरीका। १६ आकृति । रूप।

**स्थिति गणित**—पु० [स०] गणित की वह शाखा जिसमें सांख्यिक विवरण सगृहीत तथा वर्गीकृत किये जाते है और विशेष रूप से पदार्थों की सान्यावस्था पर प्रभाव डालनेवाली शक्तियों का अको में विवेचन होता है। (स्टैटिस्टिक्स)

**स्थितिता**—स्त्री० [स०] १ स्थिति का भाव या धर्म । २ स्थिरता।

**स्थितिमान् (मत्)**—वि० [स०] १ जिसमे दृढ़ता या धीरता हो। २ स्थायी। ३ धार्मिक ।

**स्थिति-शील**—वि० [सं०] [भाव० स्थितिशीलता] १. बराबर एक ही स्थिति मे होता या बना रहनेवाला । २. जो किसी स्थिति मे पहुँचकर ज्यों का त्यों रह जाय। (स्टेटिक)

**स्थिति स्थापक**—वि० [स०] [भाव० स्थिति-स्थापकता] १. दाब हट जाने पर फिर ज्यो का त्यो हो जानेवाला। नमनीय। लचीला। २ दे० 'तन्यक'।

**स्थिर**—वि० [स०] [भाव० स्थिरता] १. सदा एक ही दशा, रूप या स्थिति में रहनेवाला। अचर। निश्चल। (कांस्टेन्ट) २. बहुत दिनों तक या सदा ज्यों का त्यों बना रहनेवाला। स्थायी। (स्टैबल) ३ इस प्रकार निश्चित किया हुआ जिसमें जल्दी या सहज में कोई परिवर्तन या हेर-फेर न हो सके। जैसे—मत स्थिर करना। ४. जो किसी स्थान पर पहुँचकर स्थायी रूप से रुक या ठहर गया हो। एक ही जगह पर बहुत दिनों तक टिका रहनेवाला। (स्टेशनरी) ५. जिसमें किसी प्रकार का उद्वेग, चचलता आदि न हो। धीर। शांत। ६ (प्रस्ताव या विचार) जो निश्चय के रूप मे लाया गया हो। निश्चित। ७ एक ही स्थान पर जडा, बैठाया या लगाया हुआ। ८ स्थायी। ९ विश्वसनीय।

पु० १. शिव । २ देवता । ३ मोक्ष । ४ पर्वत। ५ वृक्ष ६ शनिग्रह। ७. ज्योतिष मे एक प्रकार का योग। ८ ज्योतिष मे वृष, सिंह, वृश्चिक, और कुभ—ये चारो राशियाँ स्थिर मानी गई हैं। ९ एक प्रकार का मत्र जिसमे शास्त्र अभिमत्रित किये जाते थे। १० वह कर्म जिससे जीव को स्थिर अवयव प्राप्त होते हैं। (जैन) ११ वृष। साँड। १२ धौ का पेड़।

**स्थिर गंध**—वि० [स०] जिसकी सुगध स्थिर रहती हो। स्थिर या स्थायी गध युक्त ।

पु० चपक चपा ।

**स्थिर-गंधा**—स्त्री० [स०] १ केवडा। केतकी। २ पाटला । पाढर।

**स्थिर-चक्र**—पु० [स०] मजबोध या मजकी नामक प्रसिद्ध वौधिसत्व का एक नाम।

**स्थिर-चित्र**—वि० [स०] १ जिसका मन स्थिर या दृढ़ हो। २ उत्तेजित, विचलित या विह्वल न होनेवाला।

**स्थिर-चेता**—वि०=स्थिर-चित्त ।

**स्थिर-जीवी (विन्)**—पु० [स०] कौआ, जिसका जीवन बहुत दीर्घ होता है।

**स्थिरता**—स्त्री० [स०] १ स्थिर रहने या होने की अवस्था, गुण या भाव। २ दृढता। मजबूती। ३ धीरता। ४ स्थायित्व।

**स्थिरत्व**—पु०=स्थिरता।

**स्थिर-बंद्धु**—पु० [स०] १ साँप। सर्प। २ ध्वनि। ३ विष्णु का वाराह अवतार।

**स्थिर-पत्र**—पु० [स०] १ श्रीताल वृक्ष। २ हिताल वृक्ष।

**स्थिर पुष्प**—पु० [स०] १ चपक वृक्ष। चपा। २ बकुल। मौलसिरी। ३ तिल-पुष्पी।

**स्थिर-बुद्धि**—वि० [स०] जिसकी बुद्धि स्थिर हो। ठहरी हुई बुद्धिवाला। दृढ़चित्त।

**स्थिर-मति**—वि०=स्थिर-बुद्धि।

**स्थिरमना**—वि० =स्थिर-चित्त।

**स्थिर मूल्य**—पु० [स०] किसी वस्तु का वह निश्चित मूल्य जिसमें कमी-बेशी न हो सकती हो। (फिक्सड प्राइस)

**स्थिर-यौवन**—वि० [स०] [स्त्री० स्थिरयौवना] जिसका यौवन-काल या जवानी अधिक दिनों तक बनी रहे।

पु० विद्याधर।

**स्थिर-यौवना**—वि० स्त्री० [स०] (स्त्री) जिसका यौवन अपेक्षया अधिक समय तक बना या स्थिर रहे।

**स्थिरा**—स्त्री० [स०] १ दृढ़ चित्तवाली स्त्री। २ पृथ्वी। ३. काकोली। ४ बनमूँग। ५ सेमल। ६ मूसाकानी। ७. माषपर्णी। मखवन।

**स्थिराशय (त्मन्)**—वि० [सं०] दृढ चित्तवाला।

**स्थिरायु**—वि० [स०] १ जिसकी आयु बहुत अधिक हो। चिरजीवी। २. अमर।

पु० सेमल का पेड़।

**स्थिरीकरण**—पु० [स०] १. स्थिर करने की क्रिया या भाव। २. घटती-बढ़ती रहनेवाली वस्तुओं का स्वरूप या मानक स्थिर करना। (स्टैबिलाइजेशन) जैसे—मूल्य या भाव का स्थिरीकरण। ३ पुष्टि। समर्थन।

**स्थूण**—पु०[सं०] १ थूनी। २ खंभा।

**स्थूणा**—स्त्री० [स०] १ थूनी। २ खंभा। ३ पेड का ठूँठ। ४. लोहे का पुतला। ५ निहाई। ६ एक प्रकार का रोग।

**स्थूणाकर्ण**—पु० [सं०] १ एक प्रकार की सैनिक व्यूह-रचना। २ एक प्रकार का तीर। ३ एक प्रकार का रोग-ग्रह।

**स्थूणापर्ण**—पु० [स०] सेना की एक प्रकार की व्यूह-रचना।

**स्थूणीय, स्थूण्य**—वि०[स०] स्तंभ-संबंधी।

**स्थूल**—वि०[स०] [भाव० स्थूलता] १. भारी और मोटे अंगोंवाला। मोटा। 'सूक्ष्म' का विपर्याय। २. तुरन्त या बिना परिश्रम के समझ में आनेवाला। ३ जिसमें छोटे और बारीक अंगों का विचार न हो। (रूप) ४ मोटे हिसाब से अनुमान किया या ध्यान में आया हुआ। (रूप) ५ अभी जिसमें से लागत, व्यय आदि न निकाला गया हो। 'पक्का' का विपर्याय। (ग्राम) जैसे—स्थूल आय। ६ जिसका तल सम न हो। ७ मूर्ख।

पु० १ वह पदार्थ जिसका साधारणतया इंद्रियों द्वारा ग्रहण हो सके। वह जो स्पर्श, घ्राण, दृष्टि आदि की सहायता से जाना जा सके। गोलर-पिंड। २ वैद्यक के अनुसार शरीर की सातवीं त्वचा। ३ अक्षमय कोश। ४ ढेर। राशि। समूह। ५. विष्णु। ६ शिव का एक गण। ७. कटहल। ८ कनगी। प्रियंगु। ९ ईख। ऊख। १०. एक प्रकार का कदंब।

**स्थूल-कंटक**—पु० [स०] बबूल की जाति का एक प्रकार का पेड़ जिसे आरी भी कहते हैं।

**स्थूल-कंद**—पु०[स०] १ लाल लहसुन। २. जमीकंद। सूरन। ३. हाथीकंद। ४ मान कंद। ५ भुआलु।

**स्थूल-कंधा**—स्त्री० [स०] नौ प्रकार की समिधाओं में से एक। (गृह्यसूत्र)

**स्थूल-जिह्व**—वि०[स०] जिसकी जीभ बहुत बड़ी हो।

पु० एक प्रकार के भृत।

**स्थूल-जीरक**—पु०[स०] मँगरैला।

**स्थूल-तंडुल**—पु०[स०] एक प्रकार का मोटा धान।

**स्थूलता**—स्त्री०[स०] १ स्थूल होने की अवस्था, गुण या भाव। स्थूलत्व। २ मोटाई। ३ भारीपन।

**स्थूलत्व**—पु०=स्थूलता।

**स्थूल-दर्भ**—पु०[स०] मूँज नामक तृण।

**स्थूल-दर्शक**—पु०[स०] सूक्ष्म-दर्शक यंत्र।

**स्थूल-देह**—पु०[स०]=स्थूल शरीर।

**स्थूल-नास (नासिक)**—पु०[स०] सूअर। शूकर।

वि० लम्बी नाकवाला।

**स्थूल-पत्र**—पु० [स०] १. दौना नामक क्षुप। दमनक। २. सप्तपर्ण। छतिवन।

**स्थूल-पर्णी**—स्त्री०[सं०] सप्तपर्ण। छतिवन।

**स्थूल-पाद**—पु०[स०]१ वह जिसे श्लीपद या फीलपा रोग हो। २. हाथी।

**स्थूल-पुष्प**—पु०[स०]१ वक या अगस्त नामक वृक्ष। २ गुलमखमली। झटकू।

**स्थूल-पुत्री**—स्त्री०[स०] शल्लिनी। यवतिका।

**स्थूल-फल**—पु०[सं०] १. सेमल। शाल्मली। २ बड़ा नींबू।

**स्थूल फला**—स्त्री० [स०]१ शणपुष्पी। बनसनई। २ सेमल।

**स्थूल भद्र**—पु०[स०] जैनियों का भेद या वर्ग। श्वेतकेवलिक।

**स्थूल मरिच**—पु०[स०] शीतलचीनी। कबाबचीनी। कक्कोल।

**स्थूल रोग**—पु०[स०] मोटा होने का रोग। मोटापे की व्याधि।

**स्थूल-लक्ष**—पु०[सं०][भाव० स्थूललक्षिता] १ वह जो बहुत अधिक दान करता हो। बहुत बड़ा दानी। २ पंडित। विद्वान्। ३ कृतज्ञ।

**स्थूल-लक्षिता**—स्त्री० [स०] १ दानशीलता। २ पांडित्य। विद्वत्ता। ३ कृतज्ञता।

**स्थूल-लक्ष्य**—पु०[सं०]१ वह जो बहुत अधिक दान करता हो। बहुत बड़ा दाता। २ किसी विषय की ऊपरी या मोटी बातें बताना।

**स्थूल-शर**—पु०[स०] रामशर।

**स्थूल-शरीर**—पु०[स०] वेदांत के अनुसार जीव या प्राणी के तीन प्रकार के शरीरों में से वह जो भौतिक तत्त्वों या हाड़ मांस का बना होता है और जो प्राण, बुद्धि, मन, कर्मेंद्रियों तथा ज्ञानेंद्रियों से युक्त होता है। जीव इसी शरीर में जन्म लेता और संसार के सब काम करता है।

**विशेष**—शेष दोनों कारण शरीर और सूक्ष्म शरीर कहलाते हैं।

**स्थूल शालि**—पु०[स०] एक प्रकार का मोटा चावल। स्थूल तंडुल।

**स्थूल-हस्त**—पु०[स०] हाथी की सूँड़।

वि० लंबे या मोटे हाथोंवाला।

**स्थूलांत्र**—पु०[स०] पेड़ू के अंदर की बड़ी अँतड़ी।

**स्थूला**—स्त्री०[स०]१ बड़ी इलायची। २ गजपीपल। ३ सौंफ। ४ मुनक्का। ५ कपास। ६ ककड़ी। ७ सोंझा नामक साग।

**स्थूलाम्र**—पु०[स०] कलमी आम।

**स्थूलास्य**—पु०[स०] साँप। सर्प।

**स्थूली (लिन्)**—पु०[स०] ऊँट।

**स्थूलोच्चय**—पुं० [सं०] हाथी की मध्यम चाल, जो न बहुत तेज हो और न बहुत सुस्त।

**स्थूलोदर**—वि०[स०] बड़ी तोंदवाला।

**स्थेय**—वि०[सं०] स्थापित किये जाने के योग्य। जो स्थापित किया जा सके या किया जाने को हो।

पु०१ पुरोहित। २ विवाद आदि का निर्णायक। न्यायकर्ता या पंच।

**स्थैर्य**—पु०[स०]१. स्थिरता। २ दृढ़ता।

**स्थोर**—पु०[स०]१ स्थिरता। २. दृढ़ता। ३ उतनी सामग्री जितनी एक बार में अपनी या किसी की पीठ पर लादकर ले जाते हैं। खेप।

**स्थौल्य**—पु०[स०]१ स्थूल होने की अवस्था, गुण या भाव। स्थूलता। २. शरीर की दोष-वृद्धि जो वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग है। मोटापा। ३. भारीपन।

**स्नपन**—पुं० [सं०] [भू० कृ० स्नपित] नहाने की क्रिया। स्नान।
**स्नसा**—स्त्री० [सं०] स्नायु।
**स्नात**—भू० कृ० [सं०] जिसने स्नान किया हो। नहाया हुआ। जैसे—चन्द्रिका स्नात।
पु०=स्नातक।
**स्नातक**—पु० [सं०] १. वह जिसने विद्या का अध्ययन और ब्रह्मचर्य व्रत समाप्त कर लिया हो। २ वह जिसने किसी विश्वविद्यालय की कोई परीक्षा पारित की हो। (ग्रैजुएट)
**स्नातकोत्तर**—वि० [सं०] (अध्ययन या परीक्षा) जो स्नातक हो जाने के उपरान्त और आगे हो। (पोस्ट ग्रैजुएट)
**स्नातव्य**—वि० [सं०] जिसे स्नान कराना आवश्यक या उचित हो।
**स्नान**—पु० [सं०] [वि० स्नात] १ स्वच्छ या शीतल करने के लिए सारा शरीर जल से धोना या जलराशि में प्रवेश करना। नहाना। २ धार्मिक दृष्टि से (क) कुछ दिनों तक बराबर नियमपूर्वक किसी जलाशय में जाकर वहाँ की जानेवाली उक्त क्रिया। जैसे—कार्तिक स्नान, माघ स्नान आदि। (ख) कुछ विशिष्ट अवसरों या पर्वों पर उक्त कार्य के संबंध में किसी तीर्थ या पवित्र स्थान में लगनेवाला मेला। जैसे—कुंभ स्नान, प्रयाग स्नान आदि। ३ धूप, वायु आदि के सामने इस प्रकार बैठना, लेटना या होना कि सारे शरीर पर उसका पूरा प्रभाव पड़े। जैसे—वायु-स्नान, आतप-स्नान। ४. इस प्रकार किसी वस्तु पर किसी दूसरी वस्तु का पड़नेवाला प्रभाव या प्रसार। जैसे—चन्द्रमा की चाँदनी में पृथ्वी का स्नान। (बाथ)
**स्नान-गृह**—पुं० [सं०] नहाने का कमरा। गुसलखाना। हमाम।
**स्नान-मूल**—पु० [सं०] कुश जिसे हाथ में लेकर नहाने का शास्त्रों में विधान है।
**स्नान-यात्रा**—स्त्री० [सं०] ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को होनेवाला एक उत्सव जिसमें विष्णु को महास्नान कराया जाता है। इस दिन जगन्नाथजी के दर्शन का बहुत माहात्म्य कहा गया है।
**स्नान-वस्त्र**—पु० [सं०] वह वस्त्र जिसे पहनकर स्नान किया जाता है। (बेदिंग सूट)
**स्नान-शाला**—स्त्री० [सं०] स्नान-गृह। गुसलखाना।
**स्नानागार**—पु० [सं०] स्नान-गृह।
**स्नानी (निन्)**—वि० [सं०] स्नान करनेवाला।
स्त्री०=स्नान-गृह।
**स्नानीय**—वि० [सं०] १. जो नहाने के योग्य हो। २ जल जिसमें स्नान किया जा सके।
**स्नानोदक**—पुं० [सं०] नहाने के काम में आनेवाला जल। नहाने का पानी।
**स्नापक**—वि० [सं०] स्नान कराने या नहलानेवाला।
पुं० वह सेवक जो स्वामी को स्नान कराता हो अथवा स्नान करने के लिए जल आदि लाता हो।
**स्नापन**—पुं० [सं०] स्नान कराना। नहलाना।
**स्नापित**—भू० कृ० [सं०] नहलाया हुआ।
**स्नायन**—पुं० [सं०] स्नान। नहाना।
**स्नायविक**—वि० [सं०] स्नायु-संबंधी। स्नायु का। (नर्वस)



**स्नायवीय**—वि० [सं०] स्नायु-संबंधी। स्नायविक।
पु० आँख, पैर, हाथ आदि कर्मेन्द्रियाँ।
**स्नायी (यिन्)**—वि० [सं०] जो स्नान करता हो। नहानेवाला।
**स्नायु**—स्त्री० [सं०] १. धनुष की डोरी। २ दे० 'तंत्रिका'। (नर्व)
**स्नायुक**—पु० [सं०] नहरुआ नामक रोग।
**स्नायु-वर्म (न्)**—पु० [सं०] आँख का एक प्रकार का रोग जिसमें उसकी कौड़ी या सफेद भाग पर एक छोटी गाँठ-सी निकल आती है। (वैद्यक)
**स्नायु शूल**—पु० [सं०] वैद्यक के अनुसार एक प्रकार का रोग, जिसमें स्नायु में शूल के समान तीव्र वेदना होती है।
**स्निग्ध**—वि० [सं०] [भाव० स्निग्धता] १ जिसमें स्नेह या प्रेम हो। २ जिसमें स्नेह या तेल रहता हो या लगा हो। चिकना (आँवली) ३ जो अपने तेलवाले अंश और चिकनेपन के कारण यंत्रों के पहियों, पुरजों आदि को सरलतापूर्वक चलने में सहायता देता हो। (लुब्रिकेटिंग)
पु० १ लाल रेंड। २ धपगरम्म या सरल नामक वृक्ष। ३ गन्धाबिरोजा। ४. दूध पर की मलाई।
**स्निग्धता**—स्त्री० [सं०] १ स्निग्ध या चिकना होने की अवस्था, गुण या भाव। चिकनापन। चिकनाहट। २ प्रेमपूर्ण भाव या व्यवहार से युक्त होने की अवस्था या गुण।
**स्निग्धत्व**—पु०=स्निग्धता।
**स्निग्ध-दारु**—पु० [सं०] १ देवदारु का पेड़। २ धूपसरल। ३ शाल वृक्ष।
**स्निग्ध पत्र**—पु० [सं०] १ घृतकरंज। पीकरंज। २ गुच्छ करंज। ३ भंगवतवल्ली। ४ भाजुरघास।
**स्निग्ध-पत्रा**—स्त्री० [सं०] १ बेर। २ पालक का साग। ३ अमलोनी। ४ काश्मरी। गंभारी।
**स्निग्ध-पत्री**—स्त्री० [सं०] स्निग्धपत्रा।
**स्निग्ध-पर्णी**—स्त्री० [सं०] १ पृष्ठपर्णी। पिठवन। २ मरोड़ फली। मूर्वा।
**स्निग्ध-फल**—पु० [सं०] गुच्छ करंज।
**स्निग्ध फला**—स्त्री० [सं०] १. फूट नामक फल। २. नकुलकंद। नाकुली।
**स्निग्धबीज**—पुं० [सं०] यशब गोल। ईशबगोल।
**स्निग्ध-मज्जक**—पु० [सं०] बादाम।
**स्निग्ध-राजि**—पु० [सं०] एक प्रकार का साँप जिसकी उत्पत्ति काले साँप और राजमती जाति की साँगिनी से होती है। (सुश्रुत)
**स्निग्धा**—स्त्री० [सं०] १ मेदा नामक अष्टवर्गीय ओषधि। २ अस्थि के अन्दर का गूदा। मज्जा। ३ चिकनन।
**स्नुषा**—स्त्री० [सं०] १. पुत्र-वधू। लड़के की स्त्री। २ पुतहू।
**स्नुहा (ही)**—स्त्री० [सं०] थूहड़।
**स्नेय**—वि० [सं०] १. जिसमें या जिससे स्नान किया जा सके। २. जो स्नान करने को हो या जिसे स्नान करना आवश्यक या उचित हो।
**स्नेह**—पुं० [सं०] १. चिकना पदार्थ। चिकनाहटवाली चीज। जैसे—

घी, तेल, चरबी आदि। २. प्रेमियों, हमजोलियों, बच्चों आदि के प्रति होनेवाला प्रेम-भाव। ३. कोमलता। मुलायमत। ४ सिर के अन्दर का गूदा। मज्जा। ५. एक प्रकार का राग जो हनुमत के मत से हिंडोल राग का पुत्र है। ६. खरलों। ७. दही या दूध पर की मलाई।

**स्नेहक**—पु० [स०] १ वह तेल या चिकना पदार्थ जो यंत्रों के पहियों आदि मे उन्हे सरलता से चलाने के लिए डाला जाता है। (लूब्रिकेन्ट) २ प्रेमी। स्नेही।
वि० १ स्निग्ध या चिकना करनेवाला। २ स्नेही।

**स्नेहन**—पु० [सं०] १ किसी चीज में स्नेह या तेल लगाने अथवा उसे चिकना करने की क्रिया या भाव। चिकनाना। २ यंत्रो आदि के अगो और पहियो में उन्हें सरलता से चलाने के लिए तेल डालना। (लूब्रिकेशन) ३ किसी चीज से चिकनाहट उत्पन्न करना या लाना ४. शरीर में तेल लगाना। ५ नवनीत। मक्खन। ६ कफ। श्लेष्म।

**स्नेहनीय**—वि० [स०] १ जिस पर तेल लगाया जा सके। २. जिसके साथ स्नेह किया जा सके।

**स्नेह-पात्र**—वि० [स०] [स्त्री० स्नेहपात्री] जो स्नेह का पात्र या भाजन हो। जिसके प्रति स्नेह हो।

**स्नेह-पान**—पु० [स०] १. तेल पीना। २. वैद्यक के अनुसार एक प्रकार की क्रिया जिसमें कुछ विशिष्ट रोगों में तेल, घी, चरबी आदि पीने का विधान है।

**स्नेह-फल**—पु० [स०] तिल।

**स्नेह-बीज**—पु० [स०] चिरौंजी।

**स्नेह-भापक**—पु० [स०] एक प्रकार का यत्र जिससे यह पता चलता है कि दूध मे स्नेह या चिकनाई (मक्खन, घी आदि का अश) कितना होता है। (बटाइरोमीटर)

**स्नेह मीन**—पु० [स०] एक प्रकार की बडी समुद्री मछली जिसका मास खाया जाता है और चरबी का उपयोग कई प्रकार के रोगों मे ऊपरिक औषधि के रूप में होता है। (कॉड)

**स्नेहल**—वि० [स०] १ स्नेह-पूर्ण। २. कोमल। ३ चिकना।

**स्नेह-वस्ति**—स्त्री० [स०] १. वह वस्ति या पिचकारी जिसमें तेल भर कर गुदा के द्वारा रोगी के शरीर में प्रविष्ट किया जाता है। (वैद्यक) २. उक्त क्रिया या भाव।

**स्नेह-वृक्ष**—पु० [स०] देवदारु।

**स्नेह-सार**—पु० [स०] मज्जा नामक धातु। अस्थिसार।

**स्नेहांग**—पु० [स०] दीपक। चिराग।

**स्नेहिक**—वि० [स०] १. स्नेह-युक्त। चिकना। २ रोगनदार।

**स्नेहित**—भू० कृ० [स०] १. स्नेह से युक्त किया हुआ। २ जिसे किसी का स्नेह प्राप्त हो। ३. जिस पर चिकनाई लगाई गई हो।

**स्नेही (हिन्)**—वि० [स०] १. जो स्नेह करता हो। ३. जिससे स्नेह किया जाता हो।
पु० १. मित्र। २ लेप आदि करनेवाला चिकित्सक। ३. चित्रकार।

**स्नेहोत्तम**—पु० [स०] तिल का तेल।

**स्नेह्य**—वि० [स०] जिसके साथ स्नेह किया जा सके। स्नेह या प्रेम का अधिकारी या पात्र।

**स्पंज**—पु० दे० 'स्पज'।

**स्पंजी**—वि० दे० 'स्पजी'।

**स्पंद**—पु० [स०] [वि० स्पदित] १ धीरे-धीरे हिलना या काँपना। २ स्पदन की क्रिया मे होनेवाला हल्का आघात या फडक। (पल्स) विशेष दे० 'स्पदन'।

**स्पंदन**—पु० [स०] [भू० कृ० स्पदित] १ रह-रहकर धीरे-धीरे हिलना या काँपना। २ जीवो के शरीर में रक्त के प्रवाह या सचार के कारण कुछ रुक-रुक कर होनेवाली वह लगक गति जो हृदय के बार-बार फूलने और सकुचित होने से आघात या खटक के रूप मे उत्पन्न होती है। (बीट) जैसे—नाडी या हृदय का स्पदन। ३ भौतिक क्षेत्रो मे किसी प्रक्रिया से होनेवाला उक्त प्रकार का व्यापार या स्थिति। फडक। (पल्सेशन)

**स्पंदित**—भू० कृ० [स०] जिसमें स्पदन उत्पन्न हुआ हो अथवा उत्पन्न किया गया हो। हिलता या काँपता हुआ।

**स्पंदिनी**—स्त्री० [स०] १. रजस्वला स्त्री। २ बराबर या सदा दूध देती रहनेवाली गौ। ३ काम-धेनु।

**स्पंदी (दिन्)**—वि० [स०] जिसमे स्पदन हो। हिलने, काँपने या फडकनेवाला। स्पदशील।

**स्परांडो**†—स्त्री० =एस्पराटो।

**स्प (र्ड) र्धन**—पु० [स०] -स्पर्धा करने की क्रिया या भाव।

**स्प (र्ड) र्धनीय**—वि० [स०] १ जिससे स्पर्धा की जा सके। २ जिसके विषय में स्पर्धा की जा सके।

**स्पर्द्धा**—स्त्री० [स०] [भू० कृ० स्पर्द्धित] १ रगड। सघर्ष। २. प्रतियोगिता आदि में किसी से होनेवाली होड़। ३ सामर्थ्य या योग्यता से अधिक कुछ करने या पाने की इच्छा। ४ किसी मे कोई अच्छी बात देखकर सद्भावपूर्वक उसके समान होने की कामना। (एम्यूलेशन) ५ साहस। हौसला। ६ ईर्ष्या। डाह। ७ बराबरी। समता।

**स्पर्द्धी (र्द्धिन्)**—वि० [स०] स्पर्द्धा करनेवाला।
पु० ज्यामिति में किसी कोण में की उतनी कमी जिसकी पूर्ति से वह कोण १८० अश का अथवा अर्द्ध-वृत्त होता है।

**स्पर्धा**—स्त्री०=स्पर्द्धा।

**स्पर्धित**—भू० कृ० =स्पर्द्धित।

**स्पर्धी**—वि०=स्पर्द्धी।

**स्पर्श**—पु० [स०] [भू० कृ० स्पर्शित, स्पृष्ट] १. त्वचा का वह गुण जिससे छूने, दबने आदि का अनुभव होता है। २. एक वस्तु के तल का दूसरी वस्तु के तल से सटना या छूना। (टच) ३. व्याकरण के उच्चारण के चार प्रकार के आभ्यन्तर प्रयत्नों में से एक जिसमें उच्चारण करते समय जीभ कुछ ऊपर उठकर और तालु को स्पर्श करके बहुत थोड़े समय के लिए श्वास रोक देती है। ('क' से 'म' तक के व्यंजनों का उच्चारण इसी प्रयत्न से होता है।) ४. ग्रहण के समय सूर्य अथवा चन्द्रमा पर छाया पड़ने लगना। ग्रहण का आरम्भ। 'मोक्ष' का विपर्याय।

५. संभोग का एक प्रकार का आसन या रति-बंध । ६ दान । ७ वायु । हवा । ८ कष्ट । पीडा ।

**स्पर्श-कोण**—पु० [स०] ज्यामिति में वह कोण जो किसी वृत्त पर खींची हुई स्पर्श रेखा के कारण उस वृत्त और स्पर्श रेखा के बीच में बनता है ।

**स्पर्श-ग्राह्य**—वि० [स०] [भाव० स्पर्श-ग्राह्यता] स्पर्श द्वारा जिसे जाना तथा समझा जाता हो । (टैक्टाइल)

**स्पर्श-जन्य**—वि० [स०] १ स्पर्श के परिणाम स्वरूप होनेवाला । जैसे—स्पर्श-जन्य सुख । २ छूनेवाला । सक्रामक ।

**स्पर्शतन्मात्र**—पु०[स०] स्पर्श भूत का आदि, अमिश्र और सूक्ष्म रूप । दे० 'तन्मात्र' ।

**स्पर्शता**—स्त्री० [स०] स्पर्श का धर्म या भाव । स्पर्शत्व ।

**स्पर्श-दिशा**—स्त्री० [स०] वह दिशा जिधर से सूर्य या चन्द्रमा को ग्रहण लगा हो या लगने को हो । चन्द्रमा या सूर्य पर ग्रहण की छाया आने अर्थात् ग्रसने का आरम्भ होने की दिशा ।

**स्पर्शन**—पु० [स०] १. स्पर्श करने या छूने की क्रिया या भाव । २ देने की क्रिया । दान । ३ लगाव । सम्बन्ध । ४ वायु । हवा ।

**स्पर्शना**—स्त्री० [स०] छूने की शक्ति या भाव ।

**स्पर्शनीय**—वि० [स०] जिसे स्पर्श किया या छूआ जा सके । स्पृश्य ।

**स्पर्शनेंद्रिय**—स्त्री० [स०] वह इन्द्रिय जिससे स्पर्श किया जाता है । छूने की इन्द्रिय । त्वक् ।

**स्पर्श-मणि**—पु० [स०] पारस-पत्थर ।

**स्पर्श-रेखा**—स्त्री० [स०] ज्यामिति मे वह सरल रेखा, जो किसी वृत्त को किसी एक बिंदु पर स्पर्श करती हुई (बिना उस वृत्त को कहीं से काटे) एक ओर से दूसरी ओर निकल जाती है । (टैनजेंट)

**स्पर्श-संबधी (न्धिन्)**—वि० [स०] (शब्दों के उच्चारण में होनेवाला प्रयत्न) जिसमें पहले श्वास-नली के साथ जीभ का थोड़ा स्पर्श और तब कुछ संघर्ष होता है । (एफ्रिकेट) जैसे—च् या ज् का उच्चारण ।

**स्पर्श-संचारी (रिन्)**—पु० [स०] शुक्र रोग का एक भेद ।

**स्पर्श-हानि**—स्त्री० [स०] शुक्र रोग मे रुधिर के दूषित होने के फलस्वरूप लिंग के चमडे में स्पर्श-ज्ञान न रह जाना ।

**स्पर्शा**—स्त्री० [स०] कुब्जा या स्त्री० छिनाल । पूंश्चली ।

**स्पर्शात्मक**—वि० [स०] स्पर्श होने पर आक्रमण करनेवाला । सक्रामक । छूतहा ।

**स्पर्शाहि**—वि० [सं०] जिसे स्पर्श की अनुभूति न होती हो ।

**स्पर्शास्पर्श**—पु० [स०] १. स्पर्श और अस्पर्श । छूना और न छूना । २. छूआछूत का भाव ।

**स्पर्शिक**—वि० [स०] १ स्पर्श करनेवाला । २. जिसे छूने से ज्ञान प्राप्त होता है ।
पु० वायु । हवा ।

**स्पर्शी (र्शिन्)**—वि० [सं०] स्पर्श करनेवाला । छूनेवाला । जैसे—हृदय-स्पर्शी ।

**स्पर्शेंद्रिय**—स्त्री० [सं०] वह इन्द्रिय जिससे स्पर्श का ज्ञान होता है । त्वचा । चमड़ा ।

**स्पर्शोपल**—पु० [स०] पारस पत्थर । स्पर्श-मणि ।

**स्पष्ट**—वि० [स०] [भाव० स्पष्टता] १. जिसे देखने, समझने, गुनने आदि में नाम को भी कोई कठिनता या बाधा न हो । बिलकुल साफ । २. (बात या व्यवहार) जिसमें किसी तरह का छल-कपट या धोखा न हो । चालाकी, दाँव-पेंच आदि से रहित और सत्यतापूर्ण । जैसे—(क) आपसी व्यवहार सदा स्पष्ट होना चाहिए । (ख) तुम्हें जो कुछ कहना हो, वह स्पष्ट कह दो ।
पु० १ फलित ज्योतिष मे, ग्रहो का वह स्फुट साधन, जिससे यह जाना जाता है कि जन्म के समय अथवा किसी और विशिष्ट काल मे कौन-सा ग्रह किस राशि के कितने अंश, कितनी कला और कितनी विकला में था । इसकी आवश्यकता ग्रहों का ठीक-ठीक फल जानने के लिए होती है । २ व्याकरण में, वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का प्रयत्न जिसमें दोनो होंठ एक दूसरे से छू जाते हैं । जैसे—प या म के उच्चारण मे स्पष्ट प्रयत्न होता है ।

**स्पष्ट कथन**—पु० [स०] व्याकरण की दृष्टि से कथन का वह प्रकार जिसमे किसी द्वारा कही हुई बात का उल्लेख ठीक उसी रूप मे किया जाता है । (डायरेक्ट स्पीच)

**स्पष्टतया**—अव्य० [स०] १. स्पष्ट रूप से । साफ-साफ । २ स्पष्ट शब्दो मे ।

**स्पष्टता**—स्त्री० [स०] १. स्पष्ट होने की अवस्था, गुण या भाव । जैसे—उसकी बातों की स्पष्टता ने सभी को प्रभावित किया । २ सफाई ।

**स्पष्टवक्ता**—वि० [स०] १. स्पष्ट बात या बातें कहनेवाला । २. बिना भय या संकोच के बातें कहनेवाला ।

**स्पष्टवादी (दिन्)**—वि० [सं०] [भाव० स्पष्टवादिता] स्पष्टवक्ता । (दे०)

**स्पष्टीकरण**—पु० [स०] [वि० स्पष्टीकृत] १. कोई बात इस प्रकार स्पष्ट या साफ करना कि उसके संबंध में कोई भ्रम न रहे । (एक्प्लिकेशन) २ जो बात स्पष्ट होने से रह गई हो उसे इस प्रकार स्पष्ट करना कि औरों का भ्रम दूर हो जाय । (क्लैरिफिकेशन) ३. इस प्रकार भ्रम दूर करने के उद्देश्य से कही जानेवाली बात । ४. किसी अपने किये हुए कार्य के विषय में आपत्ति होने पर यह बतलाना कि किन कारणों से यह काम इस रूप मे किया गया है । विवृत्ति । व्याख्या । (एक्सप्लेनेशन)

**स्पष्टीकार्य**—वि० [सं०] जिसका स्पष्टीकरण करना आवश्यक या उचित हो ।

**स्पष्टीकृत**—भू० कृ०[सं०] जिसका स्पष्टीकरण हुआ हो । साफ या खुलासा किया हुआ ।

**स्पष्टीक्रिया**—स्त्री०[सं०] ज्योतिष में, वह क्रिया जिससे ग्रहों का किसी विशिष्ट समय मे किसी राशि के अंश, कला, विकला आदि में अवस्थान जाना जाता है ।

**स्पिरिट**—स्त्री० [अं०] १. शरीर में रहनेवाली आत्मा । २.

वह सूक्ष्म-शरीर जिसका निवास स्थूल-शरीर के अन्दर माना जाता है। ३ आवेग, उत्साह आदि के मुक्त जीवनी शक्ति। ४. किसी पदार्थ का सत्त या सार। जैसे—स्पिरिट एमोनिया=नौसादर का सत। ५. दे० 'पुरासव'।

**स्वीकर**—पुं० [अ०] १. वह जो व्याख्यान देता हो। वक्ता। २. कुछ विशिष्ट राज्यों में विधान-सभा का अध्यक्ष या सभापति। ३. एक प्रकार का उच्चभाषक की तरह का यंत्र जो प्रेषित की हुई ध्वनि-तरंगों को शब्दों में बदल कर कहता है।

**स्वीच**—स्त्री० [अं०] भाषण। व्याख्यान।

**स्वीड**—स्त्री० [अं०] गति। चाल।

**स्वृक्का**—स्त्री० [सं०] १ असवरग। २. लजालू। लज्जावती। ३ ब्राह्मी। ४. मालती। ५. खेवती। ६ गंगापुत्री। पानी-लता।

**स्वृश**—वि० [सं०] स्पर्श करनेवाला। छूनेवाला।

**स्वृश्य**—वि०[सं०]१. जिसे स्पर्श कर सकें। जो छुआ जा सके। २ जिसे छूने में कोई दोष या पाप न माना जाता हो।

**स्वृष्या**—स्त्री०[सं०] हवन की नौ समिधाओं में से एक।

**स्वृष्ट**—भू० कृ०[सं०] जिसे छुआ गया हो।

पुं० व्याकरण में वर्णों के उच्चारण का एक प्रकार का आभ्यन्तर प्रयत्न।

**विशेष**—क् से म् तक के वर्णों का उच्चारण इसी प्रयत्न से होता है।

**स्वेष्टका**—पुं०[सं०] संभोग आदि के समय आलिंगन का एक प्रकार।

**स्वृष्टास्पृष्टि**—स्त्री० [सं०] १. एक दूसरे को छूना। २. छुआछूत।

**स्वृष्टि**—स्त्री०[सं०] छूने की क्रिया या भाव। स्पर्श।

**स्वृष्टी(ष्टिन्)**—वि० [सं०]=स्पर्शी।

**स्वृहण**—पुं०[सं०]=स्पृहा।

**स्वृहणीय**—वि०[सं०] जिसके लिए स्पृहा अर्थात् अभिलाषा या कामना की जा सके। वांछनीय; अर्थात् उत्तम, गौरवपूर्ण या प्रशंसनीय।

**स्वृहयालु**—वि०[सं०]१. जो स्पृहा या कामना करे। स्पृहा करनेवाला। २. लोभी। लालची।

**स्वृहा**—स्त्री०[सं०] किसी अच्छे काम, चीज या बात की प्राप्ति अथवा सिद्धि के लिए मन में होनेवाली अभिलाषा, इच्छा या कामना।

**स्वृहित**—वि०[सं०]१. जिसकी प्राप्ति की अभिलाषा की गई हो। २. जो स्पृहा या ईर्ष्या का विषय हो।

**स्वृही(हिन्)**—वि०[सं०]१. स्पृहा अर्थात् कामना या इच्छा करनेवाला। २. स्पर्धा करनेवाला।

**स्वृह्य**—वि०[सं०]=स्पृहणीय।

**स्पेशल**—वि०[अं०] विशेष। (दे०)

पुं०१. विशेष अवसर पर चलनेवाली गाडी। २ विशेष अधिकारी को ले चलनेवाली गाड़ी।

**स्पेशलिस्ट**—पुं०[अं०] किसी विद्या या विषय का विशेषज्ञ।

**स्प्रिंग**—स्त्री० [स०] यंत्रों या यांत्रिक उपकरणों में लगनेवाली कमानी।

**स्प्रिंगदार**—वि०[अं० स्प्रिंग+फा० दार (प्रत्य०)] जिसमें स्प्रिंग या कमानी लगी हो। कमानीदार।

**स्प्लिंट**—पुं०[अं०] वह पटरी जो मोच निकले या हड्डी टूटे हुए अंग पर बांधी जाती है। (आधुनिक चिकित्सा)

**स्फट**—पु०[स०]१ फट-फट शब्द। २ सांप का फन।

**स्फटिक**—पु०[स०]१ एक प्रकार का सफेद बहुमूल्य पारदर्शी पत्थर या रत्न, जिसका व्यवहार मालाएँ, मूर्तियाँ तथा दस्ते आदि बनाने में होता है। इसके कई भेद और रंग होते हैं। बिल्लौर। (पेबुल) २. सूर्यकान्त मणि। ३. काँच। शीशा। ४. कपूर। ५ फिटकिरी।

**स्फटिका**—स्त्री०[स०] फिटकिरी।

**स्फटिकाचल**—पु०[स०] कैलास पर्वत, जो दूर से देखने में स्फटिक के समान जान पड़ता है।

**स्फटिकाद्रि**—पु०[स०] =स्फटिकाचल (कैलास)।

**स्फटिकी**—स्त्री०[स०] फिटकिरी।

**स्फटिकीकरण**—पु० दे० 'मणिभीकरण'।

**स्फटिकोपल**—पु०[स०] स्फटिक। बिल्लौर।

**स्फटित**—भू० कृ०[स०] फटा हुआ। विदीर्ण।

**स्फटी**—स्त्री०[स०] फिटकिरी।

**स्फरण**—पु०[स०]१ काँपना। फड़कना। २ प्रवेश करना।

**स्फाटक**—पु०[स०]१ स्फटिक। बिल्लौर। २ पानी की बूंद।

**स्फाटिक**—वि०[स०] स्फटिक संबंधी। बिल्लौर का।

पु०=स्फटिक।

**स्फार**—वि०[स०]१ बहुत अधिक। प्रचुर। विपुल। उदा०—ऊपर हरीतिमा नभ गुंजित, नीचे चन्द्रातप छना स्फार।—पन्त। २ बड़ा और विस्तृत।

पु०१. अधिकता। २ विस्तार।

**स्फारण**—पु० =स्फुरण।

**स्फीत**—वि० [स०] [भाव० स्फीतता, स्फीति]१. बढा हुआ। वर्द्धित। २ फूला या उभरा हुआ। जैसे—गर्व से स्फीत वक्षःस्थल। ३. समृद्ध। सम्पन्न। ४. इस रूप में फूला हुआ कि बाहर से देखने में तो बड़ा या भारी जान पड़े परन्तु अन्दर अपेक्षया कम तत्त्व या सार हो। (इन्फ्लेटेड)

**स्फीतता, स्फीति**—स्त्री०[स०] स्फीत होने की अवस्था, गुण या भाव। स्फीतता। (इन्फ्लेशन)

**स्फुट**—वि० [स०] [भाव० स्फुटता] १ फूटा या टूटा हुआ। २ खुला या खिला हुआ। विकसित। ३. स्पष्ट। व्यक्त। ४. शुक्ल। सफेद। ५ अनिश्चित प्रकारों या वर्गों का। फुटकर।

पु० जन्म कुंडली में यह दिखाना कि कौन-सा ग्रह किस राशि में कितने अंश, कितनी कला और कितनी विकला में है। (फलित ज्योतिष)

**स्फुटता**—स्त्री०[स०] स्फुट होने की अवस्था, गुण या भाव।

**स्फुटत्व**—पु० [स०] =स्फुटता।

**स्फुटन**—पु०[स०] [भू० कृ० स्फुटित]१. फटना या फूटना। २. विकसित होना। खिलना।

**स्फुटा**—स्त्री०[स०] सांप का फन।

**स्फुटिका**—स्त्री०[सं०]१. किसी चीज का टूटा हुआ या काटकर निकाला हुआ अंश। २. फूट नामक फल। ३. फिटकिरी।

**स्फुटित**—भू० कृ०[सं०]१. फूटा हुआ। २. विकसित। खिला हुआ। ३. हँस कहकर अथवा और किसी प्रकार स्पष्ट रूप से प्रकट या व्यक्त किया हुआ।

**स्फुटित-कांड-भग्न**—पुं० [सं०] वैद्यक के अनुसार हड्डी टूटने का वह रूप जिसमें उसके टुकड़े-टुकड़े होकर बिखर जाते हैं।

**स्फुटी**—स्त्री० [स०]१. पादस्फोट नामक रोग। पैर की बिवाई फटना। २ फूट नामक फल।

**स्फुटीकरण**—पु०[सं० स्फुट+करण] स्फुट अर्थात् प्रकट, व्यक्त या स्पष्ट करने की क्रिया या भाव।

**स्फुर**—पुं०[सं०]१. वायु। हवा। २ स्फुरण।

**स्फुरण**—पु० [स०]१ किसी पदार्थ का जरा-जरा काँपना, लहराना या हिलना। २ अंग का फड़कना। ३ स्फूर्ति।

**स्फुरण**—स्त्री०[स०] अंगों का फड़कना।

**स्फुरति***—स्त्री०=स्फूर्ति।

**स्फुरना**—अ०[सं० स्फुरण]१. प्रकट या व्यक्त होना। २. काँपना, फड़कना, या हिलना। ३. मन में कोई बात सहसा उत्पन्न होना।

**स्फुरित**—भू० कृ०[स०] जिसका या जिसमें स्फुरण हो।

**स्फुलिंग**—पुं०[स०] वह जलता हुआ चमकीला कण, जो जलती हुई या जोर से रगड़ी जानेवाली चीजों में से निकलकर उड़ता हुआ दिखाई देता है। चिनगारी। (स्पार्क)

**स्फुलिंगिनी**—स्त्री०[स०] अग्नि की सात जिह्वाओं में से एक।

**स्फुलिंगी**—वि०[स०] जिसमें से स्फुलिंग निकलते हों या निकल रहे हों।

**स्फूर्ज**—पु०[स०]१ अचानक होनेवाला स्फोट। २ बादलों की गड़-गड़ाहट। मेघ-गर्जन। ३ इन्द्र का वज्र। ४. नायक-नायिका का प्रथम मिलन जिसमें आनन्द के साथ भय भी मिला होता है।

**स्फूर्जन**—पु०[स०]१. बादल की गरज। २ तिंदुक या तेंदू नामक वृक्ष।

**स्फूर्जा**—स्त्री०=स्फूर्ज।

**स्फूर्त**—भू० कृ०[स०]१ जो स्फूर्ति के फलस्वरूप हुआ हो। २. मन में अचानक आया हुआ।

**स्फूर्ति**—स्त्री० [स०] १. धीरे-धीरे हिलना। फड़कना। स्फुरण। २ किसी काम या बात के लिए मन में होनेवाला किसी विचार का आकस्मिक आविर्भाव। ३. तेजी। फुरती।

**स्फोट**—पु०[सं०] [वि० स्फुट]१. अंदर से भर जाने के कारण किसी वस्तु के ऊपरी आवरण का फटना और उसमें की चीज का वेगपूर्वक बाहर निकलना। फूटना। (इरप्शन) जैसे—ज्वालामुखी का स्फोट। २. शरीर पर होनेवाला फोड़ा। ३. साधना के क्षेत्र में उपाधिरहित शब्दतत्त्व। ओंकार। प्रणव। ४. मोती।

**स्फोटक**—वि०[स०] स्फोट उत्पन्न करनेवाला।
पुं० १. शरीर में होनेवाला फोड़ा। २ भिलावाँ।

**स्फोटन**—पु०[सं०]१. स्फोट उत्पन्न करने की क्रिया या भाव। २. विदीर्ण करना। फाड़ना। ३. सामने लाना। प्रकट करना। ४. सुश्रुत के अनुसार वायु के प्रकोप से सिर में होनेवाली पीड़ा, जिसमें वह फटता हुआ सा जान पड़ता है।

**स्फोटवाद**—पुं०[सं० [वि० स्फोटवादी] यह दार्शनिक मत या सिद्धान्त कि सारी सृष्टि की उत्पत्ति स्फोट अर्थात् अनित्य दैवी शब्द से ही हुई है।

**स्फोटा**—स्त्री० [स०]१ साँप का फन। २ सफेद अनन्तमूल।

**स्फोटिक**—पु०[सं०] पत्थर, जमीन आदि तोड़ने-फोड़ने का काम।

**स्फोटिका**—स्त्री०[स०] छोटा फोड़ा। फुंसी।

**स्फोरण**—पु० [स०]=स्फुरण।

**स्मय**—पु०[स०] अभिमान। घमंड।
वि० अद्भुत। विलक्षण।

**स्मर**—पु०[सं०]१. कामदेव। मदन। २. याद। स्मृति। ३. संगीत में शुद्ध राग का एक भेद।

**स्मर-कथा**—स्त्री० [स०] शृंगार रस की बातें।

**स्मर-कार**—वि०[स०] काम-वासना उद्दीप्त करनेवाला।

**स्मर-कूप**—पु०[स०] भग। योनि।

**स्मर-गृह**—पु०[स०] भग। योनि।

**स्मर-चंड**—पु०[स०] एक प्रकार का रतिबंध।

**स्मर-चक्र**—पु०[स०] एक प्रकार का रतिबंध।

**स्मरण**—पु० [सं०] [वि० स्मरणीय, भू० कृ० स्मृत]१ किसी ऐसी देखी-सुनी या बीती हुई बात का फिर से याद आना या ध्यान होना जो बीच में भूल गई हो, या ध्यान में न रह गई हो। कोई बात फिर से याद आने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—आना।—करना।—दिलाना।—रखना।—रहना।—होना।
२ भक्ति के नौ प्रकारों में से एक, जिसमें उपासक अपने इष्टदेव को बराबर याद करता रहता या मन में उसका ध्यान रखता है। ३ साहित्य में, एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें पहले की देखी हुई कोई चीज या सुनी हुई कोई बात उसी प्रकार की कोई चीज देखने या बात सुनने पर फिर से याद आने या मन में उसका ध्यान आने का उल्लेख होता है। यथा—मैं पाता हूँ मधुर ध्वनि में गूँजने में खगों के। मीठी ताने परम प्रिय की मोहिनी वंशिका की—अयोध्यासिंह उपाध्याय।
**विशेष**—इस अलंकार को कुछ लोगों ने 'स्मृति' भी कहा है।

**स्मरण पत्र**—पु०[सं०] कोई बात स्मरण करने के लिए लिखा जानेवाला पत्र। (रिमाइंडर)

**स्मरण-शक्ति**—स्त्री०[स०] वह मानसिक शक्ति जो अपने सामने होनेवाली घटनाओं और सुनी जानेवाली बातों को ग्रहण करके मन में रक्षित रखती हैं और आवश्यकता पड़ने, प्रसंग आने पर फिर हमारे मन में, स्पष्ट कर देती है। याद रखने की शक्ति। याददाश्त। (मेमरी)

**स्मरणासक्ति**—स्त्री० [स०] भगवान् के स्मरण में होनेवाली आसक्ति जिसके कारण भक्त दिन-रात भगवान् या इष्टदेव का स्मरण करता है। उदा०—(यह भक्ति) एक रूप ही होकर गुणमहात्मासक्ति, रूपासक्ति, पूजासक्ति, स्मरणासक्ति, दासासक्ति, सख्यासक्ति, कांतासक्ति, वात्सल्यासक्ति, आत्मनेवेदनासक्ति, तन्मयासक्ति, और परमविरहासक्ति रूप से एकादश प्रकार की होती है।—(हरिश्चन्द्र)

**स्मरणी**—स्त्री०[स०] सुमिरनी।

**स्मरणीय**—वि०[सं०] (घटना या बात) जो स्मरण रखी जाने के योग्य हो। याद रखने लायक। जैसे—यह दृश्य भी सदा स्मरणीय रहेगा।

**स्मरता**—स्त्री० [सं०] १. स्मर या कामदेव का भाव या धर्म। २ स्मरण रखने की शक्ति। स्मृति।

**स्मर-दशा**—स्त्री०[सं०] साहित्य में वह दशा, जो प्रेमी या प्रेमिका के न मिलन पर उसके विरह मे होती है। विरह की अवस्था।

**स्मर-दहन**—पु० [सं०] १ कामदेव को भस्म करनेवाले, शिव। २. शिव के द्वारा कामदेव के भस्म किये जाने की घटना।

**स्मर-दीपन**—वि०[सं०] जिससे काम उत्तेजित हो। कामोत्तेजक।

**स्मर-ध्वज**—पु० [सं०]१ पुरुष का लिंग। २. एक प्रकार का बाजा।

**स्मरना***—पु० [सं० स्मरण+ना (प्रत्य०)] १. स्मरण करना। याद करना। २. सुमिरना।

**स्मर-प्रिया**—स्त्री० [सं०] कामदेव की प्रिया, रति।

**स्मर-मंदिर**—पु०[सं०] भग। योनि।

**स्मर-यम**—वि०[सं०]१. प्रेम या वासना से युक्त। २. प्रेम या वासना से उद्भूत।

**स्मर-वल्लभ**—पु० [सं०] अनिरुद्ध का एक नाम।

**स्मरवती**—स्त्री०[सं०] स्त्री जिससे प्यार किया जा रहा हो।

**स्मर-वीथिका**—स्त्री०[सं०] वेश्या। रंडी।

**स्मर-शासन**—पु०[सं०] काम-देव।

**स्मर-शास्त्र**—पु०[सं०] कामशास्त्र।

**स्मरसख**—वि० [सं०] जिससे काम की उत्तेजना हो। कामोद्दीपक। पु० १. चन्द्रमा। २. वसंत।

**स्मर-स्तंभ**—पु०[सं०] पुरुषेन्द्रिय।

**स्मर-हर**—पु०[सं०] शिव। महादेव।

**स्मरागार**—पु०[सं०] भग। योनि।

**स्मरांकुश**—पु०[सं०] पुरुष की लिंगेंद्रिय। लिंग।

**स्मरारि**—पु०[सं०] कामदेव के शत्रु, महादेव।

**स्मरासव**—पु०[सं०]१ ताड़ में से निकलनेवाला ताड़ी नामक मादक द्रव्य। २ थूक। लाला।

**स्मर्ण**†—पु०=स्मरण।

**स्मर्तव्य**—वि०[सं०]=स्मरणीय।

**स्मर्ता (र्तृ)**—वि०[सं०] स्मरण करने या याद रखने वाला।

**स्मर्य**—वि०[सं०]=स्मरणीय।

**स्मशान**—पुं०=श्मशान।

**स्मारक**—वि०[सं०] स्मरण करनेवाला।

पु० १. वह कार्य, पदार्थ या रचना जो किसी की स्मृति बनाये रखने के लिए हो। यादगार। (मेमोरियल) २. वह चीज जो किसी को अपना स्मरण बनाये रखने के लिए दी जाय। यादगार। ३ वह पत्र जो किसी बड़े आदमी को कुछ बातों का स्मरण कराने या कुछ बातें स्मरण रखने के लिए दिया जाय। (मेमोरियल)। ४. दे० 'स्मारिका'।

**स्मारक-ग्रंथ**—पु० [सं०] वह ग्रंथ जो किसी महापुरुष की स्मृति बनाये रखने के लिए प्रस्तुत करके उसे भेंट किया गया हो। (कमेमोरेशन वॉल्यूम)

**स्मारण**—पु० सं०] स्मरण कराने की क्रिया या भाव। याद दिलाना।

**स्मारिका**—स्त्री० [सं०] १. किसी महत्त्वपूर्ण घटना या समारोह स्थान आदि को रक्षित रखने के उद्देश्य से प्राप्त की हुई कोई वस्तु। २. उक्त से सम्बद्ध कोई विवरणात्मक विशेषत सचित्र पुस्तिका। (सुवेनीर) ३. दे० 'स्मरणपत्र'।

**स्मारित**—पु०[सं०] ऐसा साक्षी जिसका नाम कागज-पत्र पर न लिखा हो, परन्तु जिसे प्रार्थी अपने पक्ष के समर्थन के लिए स्वय स्मरण करके बुलावे।

**स्मारी (रिन्)**—वि०[सं०] १ स्मरण रखनेवाला। २. स्मरण कराने या याद दिलानेवाला।

**स्मार्त**—वि०[सं०]१ स्मृति सबधी। स्मृति का। याद किया हुआ। २ स्मृति या स्मृतियो मे उल्लिखित।

पु०१ वह जो स्मृतियो का ज्ञाता हो। २ वह जो स्मृतियो मे बतलाये हुए धार्मिक विधानो का पालन करता हो।

**स्मार्तिक**—वि०[सं०] स्मृति सबधी। स्मृतिका।

**स्मित**—पु०[सं०] मद हास्य। धीमी हँसी।

वि०१ हँसता हुआ। २ खिला हुआ। विकसित।

**स्मिति**—स्त्री०[सं०] मदहास्य। मुस्कराहट।

**स्मिति चर**—वि० [सं०] मुस्कराता हुआ चलनेवाला। उदा०— उडती फिरतीं मुख के नभ मे, स्मिति के आतप मे ज्यों स्मितिचर।—पल्ल।

**स्मितित**—वि०[सं०] हँसता या मुस्कराता हुआ।

**स्मृत**—भू० कृ०[सं०] १. स्मरण किया हुआ। २ स्मृति मे आया हुआ। ३ स्मृति मे आया हुआ।

**स्मृति**—स्त्री० [सं०] [वि० स्मृत, स्मृतिक] १. स्मरण-शक्ति, जिससे बीती हुई बातें मन मे किसी रूप मे बनी रहती है। (मेमरी) २ बीती हुई बातो का वह ज्ञान जो स्मरण-शक्ति के द्वारा फिर से एकत्र या प्राप्त होता है। याद। अनुस्मरण। (रिफ्लेक्शन) ३ साहित्य मे, (क) किसी पुरानी या भूली हुई बात का फिर से याद आना, जो एक सचारी भाव माना गया है। (ख) प्रिय के सबध की देखी या सुनी हुई बाते रह-रहकर याद आना, जो पूर्व राग की दस दशाओं मे से एक है। सिर झुकाकर नीचे देखना, भौहें चढना आदि इसके अनुभाव कहे गये है। ४ धर्म, दर्शन, आचार, व्यवहार आदि से सबध रखनेवाले हिंदू धर्म-शास्त्र, जिनकी रचना ऋषि-मुनियो ने वेदो का स्मरण या चिंतन करके की थी। ५ उक्त प्रकार के अठारह मुख्य ग्रन्थो के आधार पर १८ की सख्या का सूचक शब्द। ६ एक प्रकार का छद। ७ 'स्मरण' नामक अलंकार का दूसरा नाम।

**स्मृति-उपायन**—पु०=स्मारिका (पदार्थ या पुस्तिका)।

**स्मृतिकार**—पु०[सं०] स्मृति या धर्मशास्त्र बनानेवाला आचार्य।

**स्मृति-कारक**—पु०[सं०] ऐसा औषध जिसके सेवन से स्मरण-शक्ति तीव्र होती हो। बेंडक।

**स्मृतिचित्र**—पु०[सं०] वह चित्र जो किसी व्यक्ति या घटना आदि की सामान्य स्मृति के आधार पर बनाया जाय और जिसमे भाव की अपेक्षा रूप या दृश्य आदि की ही प्रधानता हो।

**स्मृति-चिह्न**—पु०[सं०] कोई ऐसा तथ्य या पदार्थ जो किसी वस्तु या व्यक्ति की स्मृति बनाये रखने के लिए बचा हो अथवा दिया या लिया गया हो। निशानी।

**स्मृति-पत्र**—पु०[सं०] १ वह पत्र, पुस्तिका आदि जिसमें किसी विषय की कुछ मुख्य-मुख्य बातें स्मरण रखने या कराने के विचार से एकत्र की गई हों। २. दे० 'ज्ञापन-पत्र'।

**स्मृति-शास्त्र**—पु० [सं०] स्मृति नाम का धर्मशास्त्र।

**स्मृति शेष**—वि० [सं०] जिसकी केवल स्मृति रह गई हो, अस्तित्व न रह गया हो।

पु० किसी बहुत पुरानी चीज का वह थोडा-सा टूटा-फूटा और बचा हुआ अंश, जो उस चीज का स्मरण कराता हो। (रैलिक)

**स्यंद**—पु० [सं०] =स्यदन।

**स्यंदन**—पु० [सं०] १ तरल पदार्थ का चूना, टपकना, बहना या रसना। क्षरण। २ गलकर तरल होना। ३ शरीर से पसीना निकलना। ४. चलना या जाना। गमन। ५ वायु। हवा। ६ जल। पानी। ७ वित्र। तगदीर। ८ घोडा। ९ चन्द्रमा। १० एक प्रकार का मंत्र, जिससे अस्त्र मंत्रित किये जाते थे। ११. गत उत्सर्पिणी के २३वें अर्हत् का नाम। (जैन) १२ तिनिश वृक्ष। १३ तिन्दुक वृक्ष। तेंदू।

**स्यंदनिका**—स्त्री० [सं०] १ छोटी नदी। नहर। २ थूक या लार की बूंद।

**स्यंदनी**—स्त्री० [सं०] १ थूक। लार। २ वह नाड़ी जिसके द्वारा मूत्र शरीर के बाहर निकलता है।

**स्यंदिनी**—स्त्री० [सं०] १ वह गाय जिसने एक साथ दो बच्चों को जन्म दिया हो। २ थूक। लार।

**स्यंदी (न्दिन्)**—वि० [सं०] १ चूने, बहने या रिसनेवाला। २ तेज चलनेवाला।

**स्यंध***—स्त्री० =सधि।

**स्यंभ***—पु० =सिह।

**स्यमंतक**—पु० [सं०] पुराणोक्त एक प्रसिद्ध मणि जिसकी चोरी का झूठा आरोप श्रीकृष्ण पर लगा था।

**विशेष**—कहा गया है कि सत्राजित् यादव ने सूर्य भगवान् को प्रसन्न करके उनसे यह मणि प्राप्त की थी, जो नित्य २००० पल सोना देती थी। जब उसका भाई प्रसेनजित् इसे गले में पहनकर जंगल में शिकार खेलने गया, तब शेर उसे उठाकर जाबवंत की गुफा में ले गया, जहाँ उस मणि के प्रकाश से सारी गुफा जगमगा उठी। सत्राजित् कहने लगा कि श्रीकृष्ण ने ही मेरे भाई को मारकर वह मणि ले ली है। श्रीकृष्ण वह मणि ढूँढने-ढूढते जाबवंत की गुफा में पहुँचे। वहाँ जांबवंत ने उस मणि के साथ अपनी कन्या जांबवती भी उन्हें अर्पित कर दी। जब श्रीकृष्ण ने वह मणि लाकर सत्राजित को दी, तब उसने भी प्रसन्न होकर उस मणि समेत अपनी कन्या सत्यभामा श्रीकृष्ण को अर्पित कर दी। पर, श्रीकृष्ण ने वह मणि नहीं ली। बाद में शतधन्वा ने सत्राजित् को मारकर वह मणि ले ली। पर अंत में शतधन्वा भी श्रीकृष्ण के हाथों मारा गया और इस प्रकार वह मणि फिर सत्यभामा को मिल गई।

**स्यमंत-पंचक**—पुं० [सं०] एक प्राचीन तीर्थ, जहाँ भागवत के अनुसार परशुराम ने पितरों का रक्त से तर्पण किया था।

**स्यमिक**—पुं० [सं०] १. चींटियों या दीमकों का बनाया हुआ मिट्टी का घर। बाँबी। वल्मीक। २. एक प्रकार का वृक्ष।

**स्यमिका**—स्त्री० [सं०] १. नील का पौधा। २. एक प्रकार का कीड़ा।

**स्यमीक**—पु० [सं०] १ समय। काल। २. जल। पानी। ३. बादल। मेघ। ४. दीमकों का भीटा। ५. एक प्राचीन राजवंश।

**स्यात्**—अव्य० [सं०] शायद।

**स्याद्वाद**—पु० [सं०] १ जैन दर्शन जिसमें नित्यता, अनित्यता, सत्त्व, असत्त्व, आदि में से किसी एक को निश्चित न मानकर कहा जाता है कि स्याद यही हो, स्याद् वही हो। इसे अनेकान्तवाद भी कहते हैं। २. उक्त के आधार पर जैन धर्म का दूसरा नाम।

**स्याद्वादी**—वि० [सं०] स्याद्वाद-संबंधी। स्याद्वाद का।

पु० स्याद्वाद मत का अनुयायी, पोषक या समर्थक, अर्थात् जैन।

**स्यान**†—वि० =स्याना।

**स्यानप**†—स्त्री० =सयानपन।

**स्यानपत**—स्त्री० [हिं० स्याना+पत (प्रत्य०)] १ बहुत अधिक सयाने या चतुर होने की अवस्था, गुण या भाव। २ चालाकी। धूर्तता।

**स्यानपन**†—पु० =सयानपन।

**स्याना**—पु०, वि० =सयाना।

**स्यानाचारी**†—स्त्री० [हिं स्याना+चारी (प्रत्य०)] १ वह नियमित उपहार या कर मध्य युग में गाँव के मुखिया को मिलता था। २. सयानपन।

**स्यानापन**—पु० =सयानपन।

**स्यापा**—पु० [फा० स्याहपोश] १ किसी की मृत्यु पर शोक के कारण होने-वाला रोना-पीटना। २. पश्चिम भारत की कुछ विशिष्ट जातियों में मरे हुए मनुष्य के शोक में कुछ काल तक घर की तथा नाते रिश्ते की स्त्रियों के प्रति दिन एकत्र होकर रोने और शोक मनाने की रीति।

**मुहा०—स्यापा पड़ना** -(क) रोना-चिल्लाना मचाना। (ख) स्थान का बिलकुल उजाड़ या सुनसान हो जाना।

**स्यावत**†—वि० १ दे० 'सावित'। २ दे० 'साबुत'।

**स्यावास**†—अव्य० शाबास।

**स्याम**—पु० [सं० श्याम] भारतवर्ष के पूर्व के एक देश का नाम।

†वि० =श्याम।

**स्यामक**—पु० =श्यामक (अन्न)।

**स्यामकरन***—पु० =श्यामकर्ण।

**स्यामता**†—स्त्री० श्यामता।

**स्यामल**†—वि० =श्याम।

**स्यामलता**†—स्त्री० =श्यामलता।

**स्यामलिया**—पु० =साँवलिया।

**स्यामा***—स्त्री० =श्यामा।

**स्यामि (मी)***—पु० =स्वामी।

**स्यार***—पुं० [सं० शृगाल] [स्त्री० स्यारनी, स्यारी] १ गीदड़। सियार। २ रहस्य संप्रदाय में जगत् या ससार।

**स्यार-काँटा**—पु० [स्यार+हिं० काँटा] सत्यानासी। स्वर्णक्षीरी।

**स्यारपन**—पुं० [हिं० सियार+पन (प्रत्य०)] सियार या गीदड़ का सा स्वभाव। शृगालवृत्ति।

**स्यार-लाठी**†—स्त्री० [हिं० स्यार+लाठी] अमलतास।

**स्यारी**†—स्त्री० [सं० शीत-काल] १. जाड़े के दिन। शीत-काल। २. खरीफ (फसल)।

†स्त्री० हिं० 'स्यार' की स्त्री।

**स्याल**—पुं० [सं०] पत्नी का भाई। साला।

†पुं०[स० शीतकाल] जाड़े के दिन। (पश्चिम)
†पु०=शृगाल (गीदड़)।

**स्यालक**—पु०[स०] सम्बन्ध के विचार से पत्नी का भाई। साला।

**स्याल-काँटा**—पु०=स्यारकाँटा।

**स्याला**—पु० [देश०] बहुतायत। अधिकता। ज्यादती।
पु०=स्याल (शीतकाल)।

**स्यालिका**—स्त्री०[स०] पत्नी की छोटी बहन। साली।

**स्यालिया**†—पु०[हिं० सियार] सियार। गीदड़। शृगाल।

**स्याली**—स्त्री०[स०] सबध के विचार से पत्नी की बहन। साली।

**स्यालीपति**—पु० [स०] माली का पति। साढ़ू।

**स्यालू**—पुं० [हिं० साल्] स्त्रियो के ओढ़ने की चादर। ओढनी। उपरैनी।

**स्यालो**—पु०[स० स्याल, हिं० साला] पत्नी का भाई। साला।

**स्यावाज**†—पु०=सावज (शिकार)।

**स्याह**—वि० [फा०] काला। कृष्ण वर्ण।
पु० काले रग का घोडा।

**स्याह-कलम**—पु०[फा०] मुगल चित्रशैली के एक प्रकार के बिना रग भरे रेखाचित्र जिनमे एक-एक बाल तक अलग-अलग दिखाया जाता है और होठों, आँखो और हथेलियो में काममात्रकी और बहुत हलकी रगत रहती है। (लाइन ड्राइग)

**स्याह-काँटा**—पु०[फा० स्याह+हिं० काँटा] किंगरई नाम का कटीला पौधा। दे० 'किंगरई'।

**स्याह-गोश**—वि०[फा०] काले कानवाला। जिसके कान काले हो।
पु० बन-बिलाव नामक जंगली जतु।

**स्याह-जबान**—पु०[फा० स्याह+जबान] वह हाथी या घोडा, जिसकी जबान स्याह या काली हो। (ऐसे जानवर ऐबी समझे जाते हैं)।

**स्याह-जीरा**—पुं०[फा० स्याह+हिं० जीरा] काला जीरा।

**स्याह-तालू**—पु० [फा० वह हाथी या घोडा जिसका स्याह+हिं० तालू] तालू बिलकुल स्याह या काला हो। ऐसे हाथी-घोडे ऐबी समझे जाते हैं।

**स्याह-दिल**—वि०[फा०] दिल का काला। खोटा। दुष्ट।

**स्याहपोश**—पुं०[फा०] वह व्यक्ति जिसने शोक या मातम मनाने के उद्देश्य से काले वस्त्र पहने हों। (मुसलमान)

**स्याह-भूरा**—वि०[फा० स्याह+हिं भूरा] काला (रंग)।

**स्याहा**—स्त्री०[फा०]१. स्याह अर्थात् काले होने की अवस्था, गुण या भाव। कालापन। कालिमा।
**मुहा०—स्याही जाना**=बेलों का कालापन जाना। जवानी बीतना और बुढ़ापा आना। **स्याही छाना**=चेहरे का रग काला पडना। २. कालिख। कलौंछ।
क्रि० प्र०—पोतना।—लगाना।
३ वह प्रसिद्ध रगीन तरल अथवा कुछ गाढ़ा पदार्थ, जो लिखने या कपडे, कागज आदि छापने के काम में आता है। रोशनाई। (इंक)
**विशेष**—स्याही यद्यपि निश्चित के विचार से काली ही होगी, पर लोक-व्यवहार में नीली, लाल, हरी आदि स्याहियाँ भी होती हैं।
४. कड़ए तेल के धूएँ से पारा हुआ एक प्रकार का काजल, जिससे शरीर के अंगों में गोदना गोदते हैं।
स्त्री०=साही (जतु)।

**स्याही-चूस**—पु०[हिं०]=सोख्ता (कागज)।

**स्याही-सोख**—पुं०[हिं०]=सोख्ता (कागज)।

**स्यूवक**—पु०[सं०] एक प्राचीन जनपद। (विष्णुपुराण)

**स्यू**—स्त्री०[स०] सूत। सूत्र।

**स्यूत**—वि० [सं०] [भाव० स्यूति] १ बुना हुआ। २ सीया हुआ।
पु० थैला।

**स्यूति**—स्त्री०[स०]१ कपड़े आदि सीने की क्रिया या भाव। सिलाई। २ सीवन। ३ थैली। ४ सतान।

**स्यून**—पु० [स०] १ किरण। रश्मि। २ सूर्य। ३ थैली।

**स्यूम**—पु०[स०]१ किरण। रश्मि। २ जल। पानी।

**स्यों**—अव्य० [सं० सह, पु० हिं० सौं] १ सहित। साथ। उदा०—कहँ हसिनी हम स्यों चित्त चोरै।—केशव। (ख) २ पास। समीप। उदा०—विनती करैं आइहौ दिल्ली।—चितवर कै मोंहिं स्यो है चिल्ली।—जायसी। विशेष दे० 'सौं'।

**स्योती**†—स्त्री०=सेवती (सफेद गलाब)।

**स्योन**—पु० [सं०] १. किरण। रश्मि। २ सूर्य। ३ सुख। ४ थैला।

**स्योनाक**—पु०[सं०]=श्योनाक (सोना-पाढा)।

**स्योरंजनी**—पु०[स०] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

**स्रंस**—पु०[स०]१ गिरना। २ पतन होना। ३ फिसलन।

**स्रंसन**—वि०[स०]१ गिरने या नीचे लानेवाला। २ गर्भपात करनेवाला। ३. दस्तावर।
पु०[भू० कृ० स्रसित] १ गिरना। पतन होना। २. गर्भपात। ३ दस्त लानेवाली दवा।

**स्रंसिनी**—स्त्री०[स०] १ एक प्रकार का योनि-रोग जिसमे प्रसग के समय योनि बाहर निकल आती है, और गर्भ नही ठहरता। (भाव-प्रकाश) २. गर्भस्राव।

**स्रंसी (सिन्)**—वि०[स०] १ गिरनेवाला। पतनशील। २. असमय में गिरनेवाला (गर्भ)।
पु०१ सुपारी का पेड़। २ पीलू वृक्ष।

**स्रक्**—स्त्री०[सं०]१ फूलों की माला। २ विशेष रूप से फूलो की ऐसी माला, जिसे सिर पर लपेटते हैं। ३ ज्योतिष मे एक प्रकार का योग। ४ एक वृत्त का नाम, जिसके प्रत्येक चरण मे चार नगण और एक सगण होता है तथा छठे और सवें वर्णों पर यति होती है।

**स्रग***—स्त्री०=स्रक्।

**स्रगाल**†—पु०=शृगाल (सियार)।

**स्रग्दाम (न्)**—पुं० [सं०] वह डोरा या सूत, जिसमें माला के फूल पिरोये रहते हैं।

**स्रग्धर**—वि०[सं०] पुष्प-हार धारण करनेवाला।

**स्रग्धरा**—स्त्री०[स०]१ एक वृत्त का नाम जिसके प्रत्येक चरण में म र भ न य य य) SSS SIS SII III ISS ISSISS होता है और ७,७,७ पर यति होती है। २. बौद्धों की एक देवी।

**स्रग्वान्(वत्)**—वि०[सं०]१ जो माला पहने हो। २. जो स्रक् नामक माला पहने हो।

**स्रग्विणी**—स्त्री०[सं०]१ एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण में चार रगण होते हैं। २ एक देवी का नाम।

**स्रग्वी (विन्)**—वि०[सं०] जो माला पहने हो। मालाधारी।

**स्रज**—पु०[सं०] एक विश्वेदेवा का नाम।
†स्त्री०=स्रक् (माला)।

**स्रजन**—पु०[सं० सर्जन] रचना या सृष्टि करना। सर्जन।

**स्रजना***—स० =सृजना (सृष्टि करना)।

**स्रजित**†—वि०[सं० शोणित] लाल।

**स्रद्धा***—स्त्री० =श्रद्धा।

**स्रपाटी**—स्त्री०[?] पक्षी की चोंच।

**स्रम**†—पु०=श्रम।

**स्रमित**†—भू० कृ० दे० 'श्रमित'।

**स्रवंती**—स्त्री०[सं०]१. नदी। २ एक प्रकार की वनस्पति।

**स्रव**—पु०[सं०]१ बहाव। प्रवाह। २ झरना। क्षरण। ३. गेंगाव। मूत्र।
†पु० दे० 'श्रवण'।

**स्रवण**—पु०[सं०][वि० स्रवणीय] १ बहने की क्रिया या भाव। बहाव। प्रवाह। २ गर्भ का समय से पहले गिरना। गर्भपात। ३ स्तन जिससे दूध निकलता है। छाती। (क्व०) उदा०—'बिनु स्रवणा खीर पिला उआ।'—कबीर। ४. पसीना। ५ मूत्र। पेशाब।

**स्रवण क्षेत्र**—पु०[सं०]वह सारा क्षेत्र जहाँ का वर्षा-जल एकत्र होकर किसी नदी के मूल का रूप धारण करता हो। अपवाह-क्षेत्र। जाली। (कैचमेण्ट एरिया)

**स्रवद्गर्भा**—वि०[सं०] (स्त्री या मादा पशु) जिसका गर्भ गिर गया हो।

**स्रवन**†—पु०१.=स्रवण। २ =श्रवण।

**स्रवना***—अ०[सं० स्रवण]१. बहना। चूना। टपकना। २ गिरना। उदा०—अति गर्व गनई न सगुन असगुन स्रवहिं आयुध हाथ तें। —तुलसी।
स०१. बहाना। २. गिराना। उदा०—बलत दशानन डोलति अवनी। गर्जत गर्भ स्रवहिं सुरररवनी।—तुलसी।

**स्रवा**—स्त्री०[सं०]१ मरोड़फली। मूर्वा। २. जीवंती। डोडी।

**स्रष्टव्य**—वि०[सं०] जिसकी सृष्टि होने को हो या हो जानी चाहिए।

**स्रष्टा**—वि० [सं० सृष्ट्] १. सृष्टि या रचना करनेवाला। निर्माता। रचयिता।
पु०१. ब्रह्मा। २. विष्णु। ३ शिव।

**स्रष्टृता**—स्त्री०[सं०] सृष्टि करने का कार्य या भाव।

**स्रष्टृत्व**—पुं०[सं०]=स्रष्टता।

**स्रस्तर**—पुं०[सं० स्तर] घास-पात का बिछावन। (डिं०)

**स्रस्त**—भू० कृ०[सं०]१. अपने स्थान से गिरा हुआ। च्युत। २. शिथिल। ढीला। उदा०—तान, सरिता वह स्रस्त बरोर।—निराला। ३. तोड़ा फोड़ा हुआ। ४. आहत। घायल। उदा०—'थके, टूटे गरुड़ से स्रस्त पन्नगराज जैसे।—दिनकर। ५. अलग किया हुआ। ६. बँसा हुआ। जैसे—स्रस्त नेत्र। ७. शिथिल हुआ।



**स्रस्तर**—पु०[सं०] बैठने का आसन।

**स्रस्ति**—स्त्री०[सं०] स्रस्त होने की अवस्था, क्रिया या भाव।

**स्राकिशमिशी**—स्त्री०[फा०] हलके बैंगनी रंग का एक प्रकार का छोटा अंगूर, जो क्वेटे में होता है और जिसको सुखाकर किशमिश बनाते हैं।

**स्राद्ध**†—पु०=श्राद्ध।

**स्राप**†—पु०=शाप।

**स्रापित**†—भू० कृ०=शापित।

**स्राव**—पु०[सं०]१ जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों के भीतरी अंगों से निकलनेवाला वह तरल पदार्थ या रस, जो विशेष उद्देश्य सिद्ध करता है। (सीकेशन) २ गर्मपात। गर्भस्राव। ३. वृक्षों आदि का निर्यास।

**स्रावक**—वि० [सं०] [स्त्री० स्राविका] १ चुआनेवाला। २ बहाने या निकालनेवाला।
पु० काली (गोल) मिर्च।
†पु०=श्रावक।

**स्रावकत्व**—पु०[सं०] पदार्थों का वह गुण या धर्म जिसके कारण कोई अन्य पदार्थ उनमें से होकर निकल या रस जाता है।

**स्रावणी**†—पु०=सरावणी।

**स्रावण**—पु०[सं०] [वि० स्रावित]१ बहाने या चुआकर निकालना। २ दे० 'अभिस्रावण'।
†वि०[सं०] =स्रावक।
†पु०=श्रावण।

**स्रावणी**—स्त्री०[सं०] ऋद्धि नामक अष्टवर्गीय औषध।
†स्त्री०=श्रावणी।

**स्रावित**—भू० कृ०[सं०] स्राव के रूप में चुआया या निकाला हुआ।

**स्रावी (विन्)**—वि०[सं०]१ चुआनेवाला। २ बहानेवाला।

**स्राव्य**—वि०[सं०] जो चुआया, टपकाया या बहाया जा सके।

**स्रिंग**†—पु०[सं० शृंग] चोटी। शिखर।

**स्रिजन**†—पु०=सर्जन।

**स्रुक्**—स्त्री०[सं०]स्रुवा। (दे०)

**स्रुगा**†—पु०=स्वर्ग। (डिं०)

**स्रुगिज्झ**—पु०[सं०] अग्नि।

**स्रुत**—भू० कृ०[सं०] बहा या चुआ हुआ। क्षरित।
†वि०=श्रुत। उदा०—तदपि जथा स्रुत कहउँ बखानी। सुमिरि गिरापति प्रभु धनुपानी।—तुलसी।

**स्रुति**—स्त्री०[सं०] बहाव। क्षरण।
†स्त्री०=श्रुति।

**स्रुतिमाथ**†—पु०[सं० श्रुति+हिं० माथ] विष्णु।

**स्रुव**—पुं०[सं०] एक प्रकार की छोटी स्रुवा।

**स्रुवा**—स्त्री०[सं०] १. लकड़ी की बनी हुई एक प्रकार की छोटी करछी जिससे हवनादि में कर्षी की आहुति देते हैं। २. मलई का पेड़। ३ मरोड़-फली।

**स्रू**—स्त्री०[सं०]१. स्रुवा। (दे०) २. झरना। प्रपात।

**स्रेनी**†—स्त्री०=श्रेणी।

**स्रोणि**—पुं०[सं०]=नितंब। चूतड़।

**स्रोत**—पु०[स० स्रोतस्]१. पानी का बहाव। धारा। २. विशेषत तीव्र धारा। ३ पानी का सोता। झरना। ४ आधार या साधन, जिससे कोई वस्तु बराबर निकलती या आती हुई किसी को मिलती रहे। (सोर्स) ५. वंश-परम्परा। ६ वैद्यक के अनुसार शरीर के वे छिद्र या मार्ग जो पुरुषो मे प्रधानत ९ और स्त्रियों मे ११ माने गये हैं। इनके द्वारा प्राण, अन्न, जल, रस, रक्त, मांस, मेद, मल, मूत्र, शुक्र और आर्तव का शरीर मे सचार होना माना जाता है।

**स्रोत आपत्ति**—स्त्री०[सं०] बौद्ध शास्त्र के अनुसार निर्वाण-साधना की प्रथम अवस्था जिसमें सांसारिक बन्धन शिथिल होने लगते हैं।

**स्रोत आपन्न**—वि०[स०] जो निर्वाण साधना की प्रथम अवस्था पर पहुँचा हो।

**स्रोत-पत**—पु०[स० स्रोत+पति] समुद्र। (डिं०)

**स्रोतस्य**—पु०[स०]१. शिव का एक नाम। २ चोर।

**स्रोतस्वती**—स्त्री०[स०]१. धारा। २ नदी।

**स्रोतस्विनी**—स्त्री०[स०]१ धारा। २ नदी।

**स्रोता**†—पु०=श्रोता (सुननेवाला)।

**स्रोतोंऽजन**—पु०[स०] आँखों मे लगाने का सुरमा।

**स्रोन**†—पु०=श्रवण।

**स्रोणित**†—पु०=शोणित (रक्त)।

**स्रौतिक**—पु०[स०] सीप। शुक्ति।

**स्लिप**—स्त्री०[अ०] कागज का वह छोटा टुकड़ा, जिस पर कुछ लिखा जाता हो। चिट।

**स्लीपर**—पु०[अ०]१ एक प्रकार की जूती, जो एडी की ओर से खुली होती है। चट्टी। २ बडी घरन। ३. रेलगाडियों मे वह डिब्बा, जिसमे से यात्रियों के सोने के लिए जगह आरक्षित होती है।

**स्लेज**—स्त्री०[अ०] एक प्रकार की बिना पहिए की गाडी, जो बर्फ पर घसीटती हुई चलती है।

**स्लेट**—स्त्री०[स०] लोहे की चद्दर या काले पत्थर की बनी हुई चौरस पतली पटरी, जिस पर बच्चे चाक आदि से लिखते हैं।

**स्वंग**—पु०[स०] आलिंगन।

**स्वजन**—पु०[स०] [भू० कृ० स्वजित] आलिंगन करना। गले लगाना।

**स्वः**—पु० [स०]१. अपनापन। आत्मत्व। निजत्व। २ भाई-बन्धु। गोती। ३ स्वर्ग। ४ विषाद। ५. धन-सम्पत्ति। ६ विष्णु का एक नाम।
वि० अपना। निज का।

**स्वःपथ**—पु०[स०] (स्वर्ग का मार्ग) मृत्यु।

**स्वःसरित (रि)**—स्त्री०[स०] गगा।

**स्वःसुंदरी**—स्त्री०[सं०] अप्सरा।

**स्व**—वि०[स०] [भाव० स्वत्व] १ अपना। निज का। (सेल्फ) यौ० के आरम्भ में। जैसे—स्वतत्र, स्वदेश। २ आपसे आप होने वाला। जैसे—स्वचालित।
प्रत्य० एक प्रत्यय जो कुछ शब्दों के अंत में लगाकर ता, त्व, आदि की भाँति भाव-वाचकता (जैसे—निजस्व, परस्व) या प्राप्य धन (जैसे—धर्मस्व, राजस्व, स्वामित्व) आदि का अर्थ देता है।
सर्व० आप। स्वयं।

**स्व-अर्जित**—भू० कृ०[स०] जिसका अर्जन किसी ने आप किया हो। स्वय प्राप्त किया हुआ। (सेल्फ एक्वायर्ड)

**स्व-कंपन**—पु०[स०] वायु। हवा।

**स्वकः**—वि०[स०] अपना, निजी।
पु०१ अपनी सगत्ति। २. स्वजन।

**स्व कण्ण**—पु०[स०] किसी चीज पर अपना स्वत्व जताना। दावा करना। (को०)

**स्व करणभाव**—पु० [स०] किसी वस्तु पर बिना अपना स्वत्व सिद्ध किये अधिकार करना। बिना हक साबित किये कब्जा करना।

**स्वकर्म**—पु०[स०] १ अपना काम। २ अपना कर्तव्य और धर्म।

**स्वकर्मी (र्मिन्)**—वि० [सं०] १ अपना काम करनेवाला। २ अपने कर्तव्य और धर्म का पालन करनेवाला। ३. स्वार्थी।

**स्वकीय**—वि०[स०] [स्त्री० स्वकीया] अपना। निजी।
पु०=स्वजन।

**स्वकीया**—वि० स० स्वकीय का स्त्री० रूप।
स्त्री० साहित्य मे, वह नायिका जो विवाहिता हो तथा अपने ही पति से अनुराग करती हो। 'परकीया' का विपर्याय।

**स्वक्ष***—वि०=स्वच्छ।

**स्वगत**—अव्य० [स०] आप ही आप। स्वत.।
वि०१ अपने मे ग्रहण किया हुआ। २ मन मे आया हुआ।
पु० स्वगत-कथन। (दे०)

**स्वगत-कथन**—पु०[स०]१ मन मे आई हुई बात। २ मन मे आई हुई बात कहना। ३ भारतीय नाटको मे तीन प्रकार के सवादो मे से एक, जिसमे अभिनेता कोई बात ऐसे ढग से कहता है कि मानो दूसरे अभिनेता या पात्र उसकी बात सुन ही न रहे हो और वह मन ही मन कुछ कह अथवा सोच-समझ रहा हो। इसे 'अश्राव्य' भी कहते हैं। (सोलिलोक्वी)
**विशेष**—इस प्रकार वह मानों दर्शको पर अपने मनोभाव प्रकट कर देता है। आधुनिक नाटको मे इस प्रकार का कथन या सवाद अच्छा नही माना जाता।

**स्व-गुप्ता**—वि० स्त्री०[स०]१. जो अपने आप को गुप्त रखता या छिपाता हो। २ कैवाँच। कौछ।
स्त्री० लजालू। लज्जालू।

**स्व-ग्रह**—पु०[स०] बालकों को होनेवाला एक प्रकार का रोग।

**स्व-घर**—वि०[स०] जो खूब चलता हो।

**स्व-चल**—वि०[सं०]१. आप से आप चलनेवाला। २ (कार्य) जो बिना किसी चेतन-प्रेरणा के अथवा आप से आप या प्राकृतिक रूप से होता हो। (ऑटोमेटिक) ३. दे० 'स्वचालित'।
पुं० प्राय मनुष्य के आकार का एक प्रकार का यत्र, जो अदर के कल-पुरजो के द्वारा इधर-उधर चलता-फिरता और कई तरह के काम करता है। (ऑटोमेटन)

**स्व-चालक**—वि०[स०] (यत्र या उसका कोई अग) जो बिना किसी विशिष्ट प्रक्रिया के केवल साधारण खटके आदि की सहायता से स्वयं चलता या यत्र को चलाता हो। (सेल्फ स्टार्टर)

**स्व-चालित**—वि०[स०] (यत्र) जिसके अंदर ऐसे कल-पुरजे लगे हों कि

एक पुरजा चलाने से ही वह आप से आप चलने या कई काम करने लगता हो। (आटोमेटिक)

**स्वचित्त-कार**—पु०[स०] वह शिल्पी, जो किसी श्रेणी के अन्तर्गत होते हुए भी स्वतन्त्र रूप से काम करता हो। स्वतन्त्र कारीगर। (कौ०)

**स्वच्छंद**—वि०[स०] [भाव० स्वच्छंदता]१ इच्छा, मौज या रुचि के अनुसार अथवा सनक मे आकर काम करनेवाला। २ किसी प्रकार के अकुश, नियत्रण या मर्यादा का ध्यान न रखते हुए मनमाने ढंग से आचरण या व्यवहार करनेवाला। ३. नैतिक और सामाजिक दृष्टि से अनुचित तथा निदनीय आचरण या व्यवहार करनेवाला। भ्रष्ट चरित्रवाला। (बान्टन) ४ (जीव, जतु या प्राणी) जो बिना किसी प्रकार की अडचन या बाधा के जहाँ चाहे वहाँ विचरण करता फिरता हो। ५ (पेड पौधा या वनस्पति) जो जगलो और मैदानो मे आप से आप उत्पन्न हो।

क्रि० वि० बिना किसी भय, विचार या सकोच के।

पु० कार्तिकेय या स्कद का एक नाम।

**स्वछंदचारिणी**—स्त्री० [स०] १ कुचरित्रा स्त्री। पुश्चली। २ वेश्या। रडी।

**स्वच्छंदचारी (रिन्)**—वि० [स०] [स्त्री० स्वच्छदचारिणी]१. अपनी इच्छा के अनुसार चलनेवाला। स्वेच्छाचारी। मनमौजी। २ मनमाने ढग पर इधर-उधर घूमता रहनेवाला।

**स्वछंदता**—स्त्री०[स०] स्वच्छद होने की अवस्था, गुण या भाव।

**विशेष**—स्वच्छदता, स्वतन्त्रता और स्वाधीनता का अन्तर जानने के लिए दे० 'स्वाधीनता' का विशेष।

**स्वच्छ**—वि०[स०] [भाव० स्वच्छता]१ जिसमे किसी प्रकार की मैल या गदगी न हो। निर्मल। साफ। २. उज्ज्वल। शुभ। चमकीला। ३ नीरोग। स्वस्थ। ४ स्पष्ट। ५ पवित्र। शुद्ध। ६ निष्कपट।

पु०१. बिल्लौर। स्फटिक। २ मोती। मुक्ता। ३. अभ्रक। अबरक। स्वर्णमाक्षिक। रौप्यमाक्षिक। ४. सोनामक्खी। ५. रूपामक्खी। ६. सोने और चाँदी का मिश्रण। ७. विमल नामक उपधातु। ८. बेर का पेड। बदरीवृक्ष। ९ विमल नामक उपधातु।

**स्वच्छक**—वि० [स०] १ स्वच्छ करनेवाला। (क्लीनर) २. बहुत साफ या चमकीला।

**स्वच्छता**—स्त्री०[सं०] १. स्वच्छ होने की अवस्था, गुण या भाव। २. निर्मलता। विशुद्धता। ३ सफाई विशेषत: शरीर और आसपास की वस्तुओं-स्थानो आदि की ऐसी सफाई, जो स्वास्थ्य-रक्षा के लिए आवश्यक हो। (सैनिटेशन)

**स्वच्छना***—स०[स० स्वच्छ] स्वच्छ या निर्मल करना। साफ करना।

**स्वच्छ-भास**—वि०[सं०] स्वच्छ प्रकाशवाला। उदा०—गृहस्थी सीमा के स्वच्छ भास।—निराला।

**स्वच्छ-मणि**—पुं०[सं०] बिल्लौर। स्फटिक।

**स्वच्छा**—स्त्री०[स०] श्वेत दूर्वा। सफेद दूब।

**स्वच्छी**†—वि०=स्वच्छ।

**स्वज**—वि०[सं०] [स्त्री० स्वजा]१. स्वय उत्पन्न होनेवाला। २. जिसे स्वय उत्पन्न किया हो। ३. स्वाभाविक। प्राकृतिक।

पु०१ पुत्र। २. पसीना। ३. खून।

**स्वजन**—पु०[स०]१. अपने परिवार के लोग। आत्मीय जन। २. सगे-सबधी। रिश्ते-नाते के लोग। रिश्तेदार।

**स्वजनता**—स्त्री० [स०] १ स्वजन होने का भाव। आत्मीयता। २. नातेदारी। रिश्तेदारी।

**स्व-जन्मा (न्मन्)**—वि०[स०] जो अपने आप उत्पन्न हुआ या जन्मा हो। अपने आप से उत्पन्न या जनमा हुआ (ईश्वर आदि)।

**स्वजा**—स्त्री०[स०] पुत्री। बेटी।

**स्व-जात**—वि०[स०] अपने से उत्पन्न।

पु० पुत्र। बेटा।

**स्व-जाति**—स्त्री० [स०]१ अपनी जाति। अपनी कौम। २ अपनी किस्म। अपना प्रकार।

**स्व-जातीय**—वि०[स०]१. किसी की दृष्टि से उसी की जाति या वर्ग का। जैसे—अपने स्वजातियो के साथ खान-पान करने में कोई हानि नही है। २ एक ही जाति या वर्ग का। जैसे—ये दोनो वृक्ष स्वजातीय है।

**स्वतंत्र**—वि०[स०] [भाव० स्वतंत्रता]१. जिसका तत्र या शासन अपना हो। फलत. जो किसी के तत्र अर्थात् दबाव या शासन मे न हो। २ जो बिना किसी प्रकार के दबाव या नियत्रण के स्वय सोच-समझ कर सब काम कर सकता हो। ३. जो किसी प्रकार के दबाव या बधन मे न पडा हो। जो बिना बाधा या रुकावट के इधर-उधर आ-जा सकता हो। आजाद। (फ्री) ४. (काम या बात) जिसमे किसी दूसरे का अवलब, आधार या आश्रय न लिया गया हो। जैसे—(क) स्वतन्त्र रूप से कविता करना या ग्रथ लिखना। (ख) स्वतन्त्र मत-दान। ५ जो औरो के सपर्क आदि से रहित या सबसे अलग हो। जैसे— इस मकान मे दोनों किरायेदारो के आने-जाने के स्वतन्त्र मार्ग हैं। ६. अलग। जुदा। भिन्न। जैसे—ये दोनो प्रश्न एक दूसरे से स्वतन्त्र हैं। ७. नियमों, विधियों आदि के बधन से मुक्त या रहित। ८. (व्यक्ति) जो ऐसे राज्य का नागरिक या प्रजा हो, जिसमे निरकुश या स्वेच्छाचारी शासन न हो। (फ्री) जैसे—जब से भारत स्वाधीन हुआ है, तब से यहाँ के निवासी भी स्वतंत्र नागरिक हो गये है। ९. बालिग। वयस्क। सयाना।

**स्वतंत्रता**—स्त्री० [स०]१. स्वतन्त्र रहने या होने की अवस्था या भाव। २. ऐसी स्थिति जिसमें बिना किसी बाहरी दबाव, नियत्रण या बधन के स्वय अपनी इच्छा से सोच-समझकर सब काम करने का अधिकार होता है। आजादी। (फ्रीडम) ३ वह अवस्था, जिसमे बिना किसी प्रकार की राजकीय या शासनिक बाधा या रोक-टोक के सभी उचित और सगत काम या व्यवहार करने का अधिकार होता है। स्वातन्त्र्य। आजादी। (लिबर्टी) जैसे—भारत में सब को धर्म, भाषण और विवेक सबधी स्वतन्त्रता प्राप्त है।

**विशेष**—स्वच्छदता, स्वतन्त्रता और स्वाधीनता का अतर जानने के लिए दे० 'स्वाधीनता' का विशेष।

**स्वत:**—अव्य० [सं० स्वतस्] आप से आप। अपने आप। आपही। स्वय। जैसे—मैने स्वत: उसे रुपये दे दिये।

**स्वतोविरोध**—पु०[स० स्वत:+विरोध] आप ही अपना विरोध या खंडन करना।

**स्वतोविरोधी**—वि०[स० स्वत.+विरोधी] अपना ही विरोध या खंडन करनेवाला।

**स्वत्व**—पु० [स०]१. स्व का भाव। अपनापन। २ वह अधिकार जिसके आधार पर कोई चीज अपने पास रखी या किसी से ली या माँगी जा सकती हो। अधिकार। हक। (राइट) ३. वह स्थिति जिसमे किसी वस्तु या विषय के हानि-लाभ से किसी व्यक्ति का विशेष रूप से संबध हो। हित।

**स्वत्व शुल्क**—पु०[स०] वह आवर्तक और नियतकालिक धन, जो किसी भूमि के स्वामी, किसी नई वस्तु के आविष्कारक, किसी ग्रथ के रचयिता अथवा ऐसे ही और किसी व्यक्ति को इसलिए बराबर मिलना रहता है कि दूसरे लोग उसकी वस्तु या कृति से आर्थिक लाभ उठाने का अधिकार या स्वत्व प्राप्त कर लेते है। (रायल्टी)

**स्वत्वाधिकार**—पु० [स० स्वत्व+अधिकार] वह अधिकार, जो स्वत्व के रूप मे हो। दे० 'स्वत्व'।

**स्वत्वाधिकारी (रिन्)**—पु० [स०] [स्त्री० स्वत्वाधिकारिणी] १ वह जिसे किसी बात का पूरा स्वत्व या अधिकार प्राप्त हो। २ स्वामी। मालिक।

**स्वदन**—पु०[स०]१. खाया चखकर स्वाद लेना। आस्वादन। २ लोहा।

**स्वदेश**—पु०[सं०] अपना देश। मातृभूमि। वतन।

**स्वदेशाभिष्यंदव**—पु०[स०] राष्ट्र मे जहाँ आबादी बहुत अधिक हो गई हो, वहाँ से कुछ जनता को दूसरे प्रदेश मे बसाना। (कौ०)

**स्वदेशी**—वि०[स० स्वदेशीय]१. अपने देश में होनेवाला। जैसे—स्वदेशी कपडा। २. अपने देश से संबध रखनेवाला।

**स्वध**—पुं०[सं०]१ अपना धर्म। २. अपना कर्तव्य और कर्म।

**स्वधर्म**—पु० [सं०]१. अपना धर्म या सप्रदाय। २. अपना उचित कर्तव्य।

**स्वधर्म-शास्त्र**—पु०] व्यक्तिक विधि।

**स्वधा**—स्त्री०[स०]१. पितरो के निमित्त दिया जानेवाला अन्न या भोजन। पितृ अन्न। २. दक्ष की एक कन्या, जो पितरों की पत्नी कही गई है।

अव्य० एक शब्द या मत्र, जिसका उच्चारण देवताओ या पितरों को हवि देने के समय किया जाता है। जैसे—तस्मैस्वधा।

**स्वधाधिप**—पु०[सं०] अग्नि।

**स्वधाप्रिय**—पु०[स०] अग्नि।

**स्वधाभुक्**—पु०[स० स्वधाभुज्]१. पितर। २. देवता।

**स्वधाभोजी (जिन्)**—पु०[स०] पितृगण। पितर।

**स्वधाशन**—पुं०[सं०] पितृगण। पितर।

**स्वधिति**—पु० स्त्री० [सं०]१. कुल्हाड़ी। कुठार। २ वज्र।

**स्वधिष्ठान**—वि०[स०] अच्छी स्थिति या स्थान से युक्त।

**स्वधिष्ठित**—भू० कृ० [सं०] १. जो ठहरने या रहने के लिए अच्छा हो। २ अच्छी तरह सिखलाया या सधाया हुआ हो।

**स्वधीत**—भू० कृ०[स०] अच्छी तरह पढ़ा हुआ। सम्यक् रूप से अध्ययन किया हुआ।

**स्वधृति**—स्त्री०[स०] धृति।

**स्वन**—पु०[स०] शब्द। ध्वनि। आवाज।

**स्वन-चक्र**—पु०[स०] सभोग का एक प्रकार का आसन या रतिबन्ध।

**स्वनाम-धन्य**—वि०[स०] (व्यक्ति) जो अपने नाम से ही धन्य या प्रसिद्ध हो।

**स्वनामा (म्नृ)**—वि०[स०] स्वनाम-धन्य।

**स्वनि**—पु०[स०]१ शब्द। आवाज। २. अग्नि। आग।

**स्वनिक**—वि०[स०] शब्द करनेवाला।

**स्वनित**—भू० कृ०[स०] ध्वनित। शब्दित।

पु० १ आवाज। २ शब्द। २ बादलो की गरज। ३. किसी प्रकार का जोर का शब्द या गडगडाहट।

**स्वन्न**—पु०[सं०]१ उत्तम अन्न। २ अच्छा आहार या भोजन।

**स्वपच**†—पु०=श्वपच (चाडाल)।

**स्वपन**—पु०[स०]१ सोने की क्रिया या भाव। २ सोने की अवस्था। निद्रा। नींद। ३ सपना। स्वप्न।

**स्वपनीय**—वि०[स०] निद्रा के योग्य। सोने लायक।

**स्वपना**†—पु०=सपना (स्वप्न)।

**स्वपनव्य**—वि०[स०] निद्रा के योग्य।

**स्वप्न**—पु०[स०]१ सोने की क्रिया या अवस्था। निद्रा। नींद। २ सोते रहने की दशा मे मानसिक दृष्टि के सामने आनेवाली कुछ विशिष्ट असबद्ध और काल्पनिक घटनाएँ, चित्र और विचार। सोये रहने पर दिखाई देनेवाली ऐसी विचित्र घटनाएँ, जो अवास्तविक होती है। सपना। ख्वाब। ३ उक्त प्रकार से दिखाई देनेवाली घटनाओं का सामूहिक रूप। सपना। ख्वाब। ४ मन ही मन की जानेवाली बडी-बडी कल्पनाएँ और बाँधे जानेवाले मनसूबे। (ड्रीम, अतिम तीनो अर्थों के लिए) जैसे—आप तो उसी तरह रईस बनने के स्वप्न देखा करते है।

**स्वप्नक**—वि०[स० स्वप्नज] सोनेवाला। निद्राशील।

**स्वप्न-गृह**—पु०[स०] सोने का कमरा। शयनागार। शयन-गृह।

**स्वप्न-दर्शन**—पु०[स०] साहित्य मे वह अवस्था, जब किसी को स्वप्न मे कोई देखता है और इसी देखने के फलस्वरूप उसके प्रति मन मे उस पर अनुरक्त होता है।

**स्वप्नदर्शी (शिन्)**—वि० [सं०] १ स्वप्न देखनेवाला। २ स्वप्न-दर्शन करनेवाला। ३ मन ही मन बडी-बडी कल्पनाएँ करने और बडे-बडे बाँधू बाँधने वाला। (ड्रीमर)

**स्वप्न-दोष**—पु०[सं०] निद्रावस्था मे स्नायविक स्वप्न देखने पर वीर्यपात होना, जो एक प्रकार का रोग है।

**स्वप्न स्थान**—पु०[स०] सोने का कमरा। शयन-गृह। शयनागार।

**स्वप्नांतिक**—पु०[सं०] वह चेतना, जो स्वप्न देखने के समय होती है।

**स्वप्नादेश**—पु० [स०] वह आदेश, जो किसी को किसी बड़े स्वप्न में मिला हो।

**स्वप्नाना***—स० [स० स्वप्न+हि० आना (प्रत्य०)] स्वप्न देना। स्वप्न दिखाना।

**स्वप्नालु**—वि०[स०] जिसे नींद आ रही हो। निद्राशील। निद्रालु।

**स्वप्नावस्था**—स्त्री०[स०] १ वह अवस्था, जिसमें स्वप्न दिखाई देता है। २ धार्मिक क्षेत्र मे लाक्षणिक रूप से सांसारिक जीवन की अवस्था, जो स्वप्न के समान अवास्तविक और निस्सार मानी गई है।

**स्वप्निल**—वि०[स०]१ स्वप्न के रूप में होनेवाला। २. स्वप्न के समान जान पडनेवाला। ३. सोया हुआ। सुप्त।

**स्व-प्रकाश**—वि०[स०] जो स्वय प्रकाशमान् हो।
पु० निजी प्रकाश।

**स्व-प्रतिष्ठिक**—वि० [सं०] जो बिना किसी की सहायता के अपना सारा काम स्वय करता हो। जैसे—सूर्य जो आप ही प्रकाश देता है।

**स्व-बरन**†—पु०=सुवर्ण।

**स्वबीज**—पु०[स०] आत्मा।

**स्वभाउ**†—पु०=स्वभाव।

**स्वभाव**—पु० [स०] [वि० स्वाभाविक] १ अपना या निजी भाव। २ किसी पदार्थ का वह क्रियात्मक गुण या विशेषता, जो उसमें प्राकृतिक रूप से सदा वर्तमान रहती है। खासियत। जैसे—अग्नि का स्वभाव पदार्थों को जलाना और जल का स्वभाव उन्हे ठढा करना है। ३ जीव-जन्तुओ और प्राणियो का वह मानसिक रूप या स्थिति, जो उनकी समस्त जाति मे जन्मजात होती और सदा प्राय एक ही तरह से काम करती हुई दिखाई देती है। प्रकृति। (नेचर उक्त दोनो अर्थों के लिए) जैसे—चीते, भालू और शेर स्वभाव से ही हिंसक होते है। ४ मनुष्य के मन में वह पक्ष, जो बहुत कुछ अ-मजात तथा प्राकृतिक होता है और जो उसके आचार-व्यवहार आदि का मुख्य रूप से प्रवर्तक होता और उसके जीवन मे प्राय अथवा सदा देखने में आता है। मिजाज। (डिस्पोजीशन) जैसे—वह स्वभाव से ही क्रोधी (चिडचिड़ा, दयालु अथवा शात) है। ५ आदत। बान। (हैबिट) जैसे—तुम्हारा तो सबसे लडने का स्वभाव पड गया है।
क्रि० प्र०—पडना।—होना।

**स्वभाव-कृपण**—पु० [स०] ब्रह्मा का एक नाम।

**स्वभावज**—वि०[स०] जो स्वभाव या प्रकृति से उत्पन्न हुआ हो। प्राकृतिक। स्वाभाविक। सहज।

**स्वभावज अलंकार**—पु०[स०] साहित्य मे, सयोग शृगार के प्रसग मे स्त्रियो की कुछ विशिष्ट आकर्षक या मोहक अग-भगियाँ और बातें, जिनसे उनकी आतरिक भावनाएँ प्रकट होती हैं, और इसी लिए जिनकी गिनती उनके अलकारो में होती है। लोक मे इसी तरह की बातो को 'हाव' कहते है। दे० 'हाव'।
**विशेष**—यह नायिकाओं के सात्त्विक अलकारों के तीन भेदों में से एक है।

**स्वभावतः (तस्)**—अव्य०[सं०] स्वभाव के फलस्वरूप। स्वाभाविक अर्थात् प्रकृतिजन्य रूप से। जैसे—उसे इस प्रकार झूठ बोलते देखकर मुझे स्वभावत. क्रोध आ गया।

**स्वभाव-रसिक**—वि० [स०] जो स्वभाव से ही मीठी-मीठी बातें करने मे निपुण हो।

**स्वभाव-सिद्ध**—वि० [स०] स्वभाव से ही होनेवाला। प्राकृतिक। स्वाभाविक। सहज।

**स्वभाविक**†—वि०=स्वाभाविक।

**स्वभावी**—वि०[स० स्वभाविन्] [स्त्री० स्वभाविनी] १. स्वभाव वाला। जैसे—उग्र-स्वभावी। क्षमा-स्वभावी। २. मनमाना आचरण करनेवाला। ३. मनमौजी।

**स्वभावोक्ति**—स्त्री०[स०] साहित्य मे एक प्रकार का अलकार, जिसमें किसी वस्तु या व्यक्ति की स्वाभाविक क्रियाओं, गुणो, विशेषताओ आदि का ठीक उसी रूप में वर्णन किया जाता है, जिस रूप मे वे कवि को दिखाई देती हैं। यथा—बिहँसति सी दिये कुच आँचर बिच बाँह। भीजे पट तट को चली न्हान सरोवर माँह। —बिहारी।
**विशेष**—इसमे किसी जातिवाचक पदार्थ के स्वाभाविक गुणो का वर्णन होता है, इसलिए कुछ लोग इस अलकार को 'जाति' भी कहते हैं। कुछ आचार्यों ने इसके 'सहज' और 'प्रतिज्ञाबद्ध' नाम के दो भेद भी माने हैं।

**स्वभू**—वि०, पु०=स्वयंभू।

**स्वयं**—वि०[स० स्वयम्] १ सर्वनाम जिसके द्वारा वक्ता अपने व्यक्तित्व पर जोर देते हुए कोई बात कहता है। जैसे—मैं स्वय वहाँ गया था। २ अपने आप सब काम करनेवाला। जैसे—स्वय-चालित; स्वय-गामी। स्वयभर।
अव्य०१ एक आप से आप। बिना किसी जोर या दबाव के। जैसे—उन्होंने स्वय सब बाते मान ली। २ बिना किसी प्रयत्न के। जैसे—स्वय बातें खुल जायँगी।

**स्वयं-ज्योति**—वि०[स०] आप से आप प्रकाशमान् होने या चमकने-वाला।
पु० परब्रह्म। परमात्मा।

**स्वयं-तथ्य**—पु०[स०]ऐसा तथ्य या बात जो स्वय ही ठीक और सिद्ध हो और जिसे ठीक या सिद्ध करने के किसी प्रकार के तर्क प्रमाण आदि की अपेक्षया आवश्यकता न हो। (एक्जिअम)

**स्वयं-दत्त**—पु० [स०] ऐसा पुत्र जो अपने माता-पिता के मर जाने अथवा उनकी मृत्यु के उपरान्त अथवा उनके द्वारा परित्यक्त होने पर अपने आप को किसी के हाथ सौप दे और उसका पुत्र बन जाय। (धर्म-शास्त्र)

**स्वयं-दूत**—पु० [सं०] साहित्य मे वह नायक, जो स्वय अपना प्रेम या वासना नायिका पर प्रकट करता हो।

**स्वयं-दूतिका, स्वयं दूती**—स्त्री० [स०] वह परकीया नायिका, जो अपना दूतत्व आप ही करती हो। नायक पर स्वय ही वासना प्रकट करनेवाली परकीया नायिका।

**स्वयं-पाक**—पु० [स०] अपनी उदर-पूर्ति के लिए भोजन स्वय बनाना।

**स्वयं-पाकी**—पुं० [स०] १ अपना भोजन स्वय बनानेवाला व्यक्ति। २ ऐसा व्यक्ति जो खुद बनाया हुआ ही भोजन करता हो और दूसरो के हाथ का बनाया हुआ न खाता हो।

**स्वयं-प्रकाश**—वि०[स०] जो स्वतः प्रकाशित हो।
पु०१ ज्योतिपुंज। २ परमात्मा।

**स्वयं-प्रभ**—पुं०[स०] भावी २४ अर्हतो मे से चौथे अर्हत् का नाम। (जैन)
वि० स्वयं-प्रकाश।

**स्वयं-प्रभा**—स्त्री०[स०] इन्द्र की एक अप्सरा, जिसे मय दानव हर लाया था और जिसके गर्भ से मंदोदरी उत्पन्न हुई थी।

**स्वयं-प्रमाण**—वि०[स०] जो आप ही अपने प्रमाण के रूप मे हो और जिसके लिए किसी दूसरे प्रमाण की आवश्यकता न हो। जैसे—वेद आदि स्वयं प्रमाण हैं।

**स्वयं फल**—वि० [स०] जो आप ही अपना फल हो अर्थात् किसी दूसरे कारण से उत्पन्न न हुआ हो।

**स्वयं-भर**—वि० [सं०]१ अपने आप को या अपने में का रिक्त स्थान आप ही भरनेवाला। २. (पिस्तौल या बंदूक) जो अपने अंदर रखी हुई गोलियों में से क्रमशः एक-एक गोली आप ही लेकर छोड़े। (सेल्फ लोडिंग)

**स्वयं-भू**—पु० [स०] १. ब्रह्मा। २. अज। ३. वेद। ४ जैनियों के नौ वासुदेवों में से एक। ५. स्वयंभू।

**स्वयं भुक्ति**—पु० [स०] धर्मशास्त्र में पाँच प्रकार के साक्षियों में से ऐसा साक्षी, जो बिना बुलाये आकर किसी बात की गवाही दे।

**स्वयंभू**—वि० [स०] १ आप से आप उत्पन्न होनेवाला। २ आप से आप बन जानेवाला (बिना किसी शिक्षा, अधिकार, योग्यता आदि प्राप्त किये)। जैसे—स्वयंभू नेता या सपादक।
पु०१ ब्रह्मा। २. विष्णु। ३. शिव। ४. कामदेव। ५ काल। ६ शिवलिंगी नामक लता। ७ दे० 'स्वायंभुव'।

**स्वयंभूत**—भू० कृ०[स०] जिसने अपना निर्माण स्वयं किया हो। जो अपनी इच्छा शक्ति से अवतीर्ण हुआ या अस्तित्व में आया हो। स्वयंभू।

**स्वयंभू-रमण**—पु० [स०] अंतिम महाद्वीप और उसके समुद्र का नाम। (जैन)

**स्वयंवर**—पु० [स०]१ स्वयं वरण करना। स्वयं चुनना। २ प्राचीन काल में वह उत्सव या समारोह, जिसमें कन्या स्वयं अपने लिए उपस्थित व्यक्तियों में से वर को वरण करती थी। ३ कन्या द्वारा स्वयं अपने लिए वर को वरण करने की रीति या विधान।

**स्वयं-वरण**—पु०[स०] कन्या का अपने इच्छानुसार अपने लिए पति चुनना या वरण करना।

**स्वयंवरा**—स्त्री० [स०] ऐसी कन्या, जिसने अपने पति का वरण अपनी इच्छा से किया हो।

**स्वयंवह**—पु० [स०] ऐसा बाजा, जो चाबी देने पर आप से आप बजे। वि० स्वयं अपने आप को वहन करनेवाला।

**स्वयंवादि-दोष**—पु० [स०] न्यायालय में झूठी बात बार-बार दोहराने का अपराध।

**स्वयंवादी**—पु०[स०] मुकदमे में जिरह के समय कोई झूठ बात बार-बार दोहरानेवाला व्यक्ति।

**स्वयं-सिद्ध**—वि०[स०] [भाव० स्वयं-सिद्धि] (बात या तत्त्व) जो किसी तर्क या प्रमाण के बिना आप ही ठीक और सिद्ध हो। सर्वमान्य। (एग्जिओमेटिक)

**स्वयं-सिद्धि**—स्त्री०[स०] [वि० स्वयं सिद्ध] वह सर्वमान्य सिद्धान्त या तत्त्व, जिसे सिद्ध या प्रभावित करने की कोई आवश्यकता न हो। (एग्जियम)

**स्वयं-सेवक**—पु०[स०] [स्त्री० स्वयं-सेविका] १. व्यक्ति, जो किसी सेवा-कार्य में अपनी इच्छा से लगता हो। २. किसी ऐसे संगठन का सदस्य, जिसका मुख्य उद्देश्य लोगों की सेवा करना हो। (वालन्टियर)

**स्वयंसेवा**—स्त्री०[सं०] १ अपनी इच्छा या अंत प्रेरणा से की जानेवाली दूसरों की सेवा। २. अपना काम स्वयं करना।

**स्वयंसेवी**—पु०=स्वयं-सेवक।

**स्वयंअर्जित**—पु०[स०] स्वयं कमाया हुआ धन या संपत्ति। अपनी कमाई।

**स्वयमुक्ति**—पु० [स०] पाँच प्रकार के साक्षियों में से एक प्रकार का साक्षी। ऐसा साक्षी, जो बिना वादी या प्रतिवादी के बुलाये स्वयं ही आकर किसी घटना या व्यवहार के संबंध में कुछ बातें कहे। (व्यवहार)

**स्वयमुपगत**—पु०[स०] वह जो अपनी इच्छा से किसी का दास हो गया हो। (धर्मशास्त्र)

**स्वयमेव**—अव्य०[स०] आप ही आप। खुद ही। स्वयं ही।

**स्व-योनि**—वि०[स०] जो अपना कारण अथवा अपनी उत्पत्ति का उद्गम आप ही हो।

**स्वर्**—पु०[स०]१ स्वर्ग। २ परलोक। ३ आकाश।

**स्वर**—पु०[स०] [वि० स्वरिक, स्वरित, भाव० स्वरता] १ कोमलता, तीव्रता उतार-चढ़ाव आदि से युक्त वह शब्द, जो प्राणियों के गले अथवा एक वस्तु पर दूसरी वस्तु का आघात पड़ने से निकलता है। २ स्वर-तंत्रियों के ढीले पड़ने और तनने के परिणाम-स्वरूप उत्पन्न होनेवाली कंठध्वनि। सुर। (साउन्ड)
**मुहा०—स्वर फूंकना**=कोई ऐसा काम या बात करना, जिसका दूसरे पर पूरा प्रभाव पड़े अथवा वह अनुयायी या वशवर्ती हो जाय। **स्वर मिलाना**=किसी सुनाई पड़ते हुए स्वर के अनुसार स्वर उत्पन्न करना। ३ संगीत में, उक्त प्रकार के वे सात निश्चित शब्द या ध्वनियाँ जिनका स्वरूप, तत्परता, तीव्रता आदि विशिष्ट प्रकार से स्थिर हैं। यथा—षड्ज, ऋषभ, गांधार, मध्यम, पंचम, धैवत और निषाद।
**विशेष**—साम वेद में सातों स्वरों के नाम इस प्रकार हैं—क्रुष्ट, प्रथम, द्वितीय, तृतीय, चतुर्थ, मंद्र और अतिस्वार (या अतिस्वर) हैं। परन्तु यह उनका अवरोहण क्रम है और आजकल के म, ग, रे, स, नि ध, प के समान है।
**मुहा०—स्वर उतारना**=स्वर नीचा या धीमा करना। **स्वर चढ़ाना**=स्वर ऊँचा या तेज करना। **स्वर निकालना**=कंठ या बाजे से स्वर उत्पन्न करना। **स्वर भरना**=अभ्यास के लिए किसी एक ही स्वर का कुछ समय तक उच्चारण करना।
३. व्याकरण में, वह वर्णात्मक ध्वनि या शब्द जिसका उच्चारण बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के और आप से आप होता है और जिसके बिना किसी व्यंजन का उच्चारण नहीं हो सकता। (वॉवेल) यथा—अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ और औ।
**विशेष**—आज-कल का ध्वनि विज्ञान बतलाता है कि कुछ अवस्थाओं में बिना स्वर की सहायता के भी कुछ व्यंजनों का उच्चारण संभव है।
४. वेदपाठ में होनेवाले शब्दों का उतार-चढ़ाव जो उदात्त, अनुदात्त और स्वरित नामक तीन प्रकारों का होता है। ५ साँस लेने के समय नाक से निकलनेवाली वायु के कारण उत्पन्न होनेवाला शब्द। ६ आकाश।

**स्वर-कर**—पु०[स०] ऐसा पदार्थ जिसके सेवन से गले का स्वर मधुर और सुरीला होता है।

**स्वर कलानिधि**—स्त्री० [सं०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**स्वर-क्षय**—पु० =स्वर-भंग।

**स्व-रक्षा**—स्त्री० [स०] किसी प्रकार के आक्रमण से स्वय या अपने आप की जानेवाली अपनी रक्षा। (सेल्फ डिफेंस)

**स्वरघु**—स्त्री० [ग०] वक्षु महानदी का एक नाम।

**स्वरग***—पु० =स्वर्ग।

**स्वर-ग्राम**—पु० [स०] संगीत में, सा से नि तक के सातो स्वरो का समूह। सप्तक।

**स्वरघ्न**—पु० [स०] सुश्रुत के अनुसार वायु के प्रकोप से होनेवाला गले का एक रोग जिसके कारण गले से ठीक स्वर नही निकलता। गला बैठना।

**स्वर तंत्री**—स्त्री० [स०] स्वर-सूत्र। (दे०)

**स्वरता**—स्त्री० [ग०] १. 'स्वर' होने का भाव। २. 'स्वरित' होने की अवस्था या भाव। (सोनोरिटी)

**स्वर-नलिका**—स्त्री० [स०] स्वर-सूत्र। (दे०)

**स्वरनादी (दिन)**—पु० [स०] मुँह से फूँककर बजाया जानेवाला बाजा। (गलित)

**स्वर नाभि**—पु० [स०] प्राचीन काल का एक प्रकार का बाजा।

**स्वर-पत्तन**—पु० [स०] सामवेद।

**स्वर-पात**—पु० [स०] १ किसी शब्द का उच्चारण करने में उसके किसी वर्ण पर कुछ ठहरना या रुकना। २. उचित वेग, एकाघ आदि का ध्यान रखते हुए होनेवाला शब्दो का उच्चारण। (एक्सेंट)

**स्वर प्रधान**—वि० [स०] ऐसा राग जिसमे स्वर का ही आग्रह या प्रधानता हो। ताल की प्रधानता न हो।

**स्वर-बद्ध**—भू० कृ० [स०] स्वरों मे बाँधा हुआ। (संगीत)

**स्वर-ब्रह्म**—पु० [स०] ब्रह्म की स्वर मे होनेवाली अभिव्यक्ति।

**स्वर-भंग**—पु० [स०] १ उच्चारण में होनेवाली बाधा या अस्पष्टता। २ आवाज या गला बैठना, जो एक रोग माना गया है। ३ साहित्य मे हर्ष, भय, क्रोध, मद आदि से गला भर आना अथवा जो कुछ कहना हो उसके बदले मुख से और कुछ निकल जाना, जो एक सात्त्विक अनुभाव माना गया है।

**स्वर-भंगी (गिन्)**—पु० [सं०] १. वह जिसे स्वरभंग रोग हुआ हो। २ वह जिसका गला बैठ गया हो और मुँह से साफ आवाज न निकलती हो। ३ एक प्रकार का पक्षी।

**स्वर-भाव**—पु० [स०] संगीत में, बिना अंग-सचालन किये केवल स्वर से ही दुःख-सुख आदि के भाव प्रकट करने की क्रिया। (यह चार प्रकार के भावों में एक माना गया है।)

**स्वर-भूषणी**—स्त्री० [स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**स्वरभेद**—पु० [सं०] स्वर भंग। (दे०)

**स्वरमंडल**—पु० [सं०] वीणा की तरह का एक बाजा जिसका प्रचार आजकल बहुत कम हो गया है।

**स्वर मंडलिका**—स्त्री० [स०] =स्वर-मंडल।

**स्वर-यंत्र**—पुं० [सं०] गले के अंदर का वह अवयव या अंश जिसकी सहायता या प्रयत्न से स्वर या शब्द निकलते हैं। (लैरिंक्स)

**स्वर रंजनी**—स्त्री० [स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**स्वर-लहरी**—स्त्री० [सं०] १ ऊँचे-नीचे स्वरो की वह लहर या क्रम जो प्रायः संगीत आदि के लिए उत्पन्न की जाती है। २ संगीत मे, वह झंकार या आलाप, जो कुछ समय तक एक ही रूप मे होता है।

**स्वर-वर्तिका**—स्त्री० [सं०] बाँसुरी या मुरली।

**स्वर लिपि**—स्त्री० [स०] संगीत में किसी गीत, तान, राग, लय आदि मे आनेवाले सभी स्वरों का क्रमबद्ध लेख। (नोटेशन)

**स्वरवाही (हिन्)**—पु० [स०] वह बाजा या बाजो का समूह जो स्वर उत्पन्न करता हो। ताल देनेवाले बाजो से भिन्न। जैसे—बंशी, वीणा, सारंगी, आदि। (ढोल, तबले, मँजीरे आदि से भिन्न)

**स्वर-वेधी**—वि० =शब्द-वेधी।

**स्वर-शास्त्र**—पु० [स०] वह शास्त्र जिसमे स्वर-संबंधी सब बातों का विवेचन हो। स्वर-विज्ञान।

**स्वर-शून्य**—वि० [स०] [भाव० स्वर-शून्यता] (ध्वनि) जिसमे मधुरता, संगीतमयता या लय न हो।

**स्वर-संक्रम**—पु० [स०] संगीत मे, स्वरो का आरोह और अवरोह। स्वरो का उतार और चढ़ाव।

**स्वर-संधि**—स्त्री० [स०] व्याकरण तथा भाषा-विज्ञान मे, दो या अधिक पास-पास आनेवाले स्वरों का मिलकर एक होना। स्वरो का मेल।

**स्वरस**—पु० [स०] १ वैद्यक मे, पत्ती आदि को भिगोकर और अच्छी तरह कूट, पीस और छानकर निकाला हुआ रस। २ किसी चीज का अपना प्राकृतिक स्वर।

**स्वर-समुद्र**—पु० [स०] एक प्रकार का पुराना बाजा, जिसमे बजाने के लिए तार लगे होते थे।

**स्वरसादि**—पु० [स०] औषधियों को पानी मे औटाकर तैयार किया हुआ काढ़ा। कषाय।

**स्वर-साधन**—पु० [स०] संगीत मे, बार-बार कंठ से उच्चारण करते हुए प्रत्येक स्वर ठीक तरह से निकालने की क्रिया या भाव।

**स्वर-सूत्र**—पु० [स०] गले और छाती के अदर का सूत्र के आकार का वह अंग, जिसकी सहायता से स्वर या आवाज निकलती है। (वोकल कॉर्ड)

**स्वरांत**—वि० [सं०] (शब्द) जिसके अंत में कोई स्वर हो। जैसे—माला, रोटी आदि।

**स्वरांतर**—पु० [स०] दो स्वरों के उच्चारण के बीच का अन्तर या विराम।

**स्वरांश**—पु० [स०] संगीत में, स्वर का आधा या चौथाई अंग।

**स्वरा**—स्त्री० [स०] ब्रह्मा की बड़ी पत्नी जो गायत्री की सपत्नी कही गई है।

**स्वरागम**—पुं० [स० स्वर+आगम] निरुक्त में किसी शब्द के दो वर्णों के बीच में किसी प्रकार कोई स्वर आ लगना। जैसे—कर्म से करम रूप बनने में अ का स्वरागम हुआ है।

**स्वराघात**—पुं० [सं० स्वर+आघात] किसी शब्द का उच्चारण करने, किसी को पुकारने, कुछ कहने, गाने आदि के समय किसी व्यंजन या स्वर पर साधारण से अधिक जोर देने या अधिक प्राण-शक्ति लगाने की क्रिया या भाव। (ऐक्सेन्ट)

**विशेष**—साधारणतः. ध्वनियों पर होनेवाला आघात या प्राण-शक्ति का प्रयोग दो प्रकार का होता है। पहले प्रकार में तो जिज्ञासा विधि, निषेध, विस्मय, संशय, हर्ष आदि प्रकट करने के लिए होता है। उदाहरणार्थ जब हम कहते हैं—हम जायेंगे—तो कभी तो हमें 'हम' पर जोर देना अभीष्ट होता है, जिसका आशय होता है—हम ही जायेंगे, और कोई नहीं जायेगा। और कभी हमें 'जायेंगे' पर जोर देना अभीष्ट होता है, जिसका आशय होता है—हम अवश्य जाएँगे, बिना गये नहीं मानेंगे। ध्वनियों पर दूसरे प्रकार का आघात वह होता है, जिसमें या तो मात्रा खींचकर बढ़ाई जाती है (जैसे—क्या—आ—, जी—ई—ई, हाँ—ऐं—ऐं—आदि या उच्चारण ही कुछ अधिक या कम जोर लगाकर किया जाता है। वैदिक मंत्रों के उच्चारण के संबंध में जो उदात्त, अनुदात्त और स्वरित नामक तीन भेद हैं, वे इसी प्रकार के अन्तर्गत आते हैं। पाश्चात्य देशों की अँगरेजी आदि कुछ आर्य परिवारवाली भाषाओं में शब्दों के उच्चारण का शुद्ध रूप बतलानेवाला कुछ विशिष्ट प्रकार का स्वराघात भी होता है, जो छापाई-लिखाई आदि में एक विशिष्ट प्रकार के चिह्न (') से सूचित किया जाता है।

**स्वराजी**—पु० [सं० स्वराज्य] १ वह जो 'स्वराज्य' नामक राजनीतिक पक्ष या दल का हो। २ स्वराज्य-प्राप्ति के लिए आन्दोलन तथा प्रयत्न करनेवाले राजनीतिक दल का मनुष्य।

वि० स्वराज्य संबंधी। स्वराज्य का।

**स्वराज्य**—पु० [सं०] १ अपना राज्य। अपना देश। २ वह अवस्था जिसमें शासन-सत्ता विदेशी शासकों के हाथ से निकलकर देशवासियों के हाथों में आ चुकी होती है।

**स्वराट्**—वि० [सं०] जो स्वयं प्रकाशमान हो और दूसरों को प्रकाशित करता हो।

पु०१ ईश्वर। २. ब्रह्मा। ३ वह राजा जो किसी ऐसे राज्य का स्वामी हो, जिसमें स्वराज्य-शासन प्रणाली प्रचलित हो। ४. ऐसा वैदिक छंद जिसके सब पादों में से मिलकर नियमित वर्णों में दो वर्ण कम हों।

**स्वरापगा**—स्त्री० [सं०] आकाश-गंगा। मन्दाकिनी।

**स्वराभरण**—पु०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**स्वरालाप**—पु०[सं० स्वर+आलाप] संगीत में ऊँचे-नीचे स्वरों को नियत और नियमित रूप से लयदार और सुन्दर बनाकर उच्चारण करने की क्रिया या भाव।

**स्वरालाप**—स्त्री०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**स्वराष्टक**—पु०[सं०] संगीत में, एक प्रकार का सकर राग जो बंगाली, भैरव, गांधार, पंचम और गुर्जरी के मेल से बनता है।

**स्वराष्ट्र**—वि० [सं०] जिसका संबंध अपने राष्ट्र से हो। फलतः अन्य राष्ट्रों, उपनिवेशों से संबंध न रखनेवाला। (होम) जैसे—स्वराष्ट्र मंत्रालय, स्वराष्ट्र मंत्री।

पु० १. अपना राष्ट्र या राज्य। २ सुराष्ट्र नामक प्राचीन देश। ३ तामस मनु के पिता, जो पुराणानुसार एक सार्वभौम राजा थे और जिन्होंने बहुत से यज्ञादि किए थे।

**स्वराष्ट्र मंत्री**—पु०[सं०] किसी देश की सरकार या मंत्रिमंडल का वह सदस्य जिसके अधीन राष्ट्र की आन्तरिक व्यवस्था और सुरक्षा-संबंधी विभागों की देख-रेख और संचालन हो। (होम मिनिस्टर)

**स्वरित**—वि०[सं०] १. (अक्षर या वर्ण) जो स्वर से युक्त हो। जिसमें स्वर हो या लगा हो। २ जिसमें कुछ ऊँचा और स्पष्ट रूप से सुने जाने के योग्य स्वर हो। ३. जो अच्छे या मधुर स्वर से युक्त हो। ४ (स्थान) जिसमें स्वर भर या गूँज रहा हो। (सोनोरस)

पु० व्याकरण में स्वरों के उच्चारण के तीन प्रकारों या भेदों में से एक। स्वर का ऐसा उच्चारण जो न तो बहुत ऊँचा या तीव्र हो और न बहुत नीचा या कोमल हो। मध्यम या सम-भाव से स्वरों का होनेवाला उच्चारण। (शेष दो भेद उदात्त और अनुदात्त कहलाते हैं)

**स्वरितत्व**—पु०[सं०] स्वरित का गुण, धर्म या भाव।

**स्वरु**—पु० [सं०] १. वज्र। २ यज्ञ। ३ सूर्य की किरण। ४ तीर। बाण। ५ एक प्रकार का बिच्छू।

**स्व-रुचि**—वि०[सं०] अपनी ही रुचि या प्रवृत्ति के अनुसार सब काम करनेवाला। मन-मौजी।

स्त्री० अपनी रुचि।

**स्वरूप**—पु० [सं०] [वि० स्वरूपी] १ किसी चीज का वह पक्ष, जिसमें वह उपस्थित या प्रस्तुत होती है। रंग, रूप सामग्री आदि से भिन्न। २. किसी वस्तु, विषय, व्यक्ति का अपना या निजी आकार-प्रकार तथा बनावट, जो समान तत्त्ववाली वस्तुओं के आकार-प्रकार तथा बनावट से भिन्न तथा स्वतन्त्र होती है। आकृति। रूप। शक्ल। ३. उक्त के आधार पर किसी देवता या देवी का बना हुआ चित्र या मूर्ति। जैसे—वैष्णव भक्तों की स्वरूप-सेवा। ४ लीला आदि में किसी देवता या देवी का वह रूप, जो किसी पात्र या व्यक्ति ने धारण किया हो। जैसे—रामलीला में राम और सीता के स्वरूप। ५ किसी चीज का बँधा हुआ क्रम, ढंग या पद्धति। जैसे—वाक्य का यह स्वरूप व्याकरण सम्मत नहीं है। ६ पंडित। विद्वान्। ७ आत्मा। ८. प्रकृति। स्वभाव।

वि० १ सुन्दर। खूबसूरत। २ तुल्य। समान।

अव्य० (किसी के) तौर पर या रूप में। जैसे—प्रमाण-स्वरूप कोई मंत्र कहना या ग्रंथ का उद्धरण सामने रखना।

†पु०=सारूप्य (मुक्ति)।

**स्वरूपज्ञ**—पु० [सं०] वह जो परमात्मा और आत्मा का वास्तविक स्वरूप जानता हो। तत्त्वज्ञ।

**स्वरूपता**—स्त्री०[सं०] स्वरूप का गुण, धर्म या भाव।

**स्वरूप दया**—पु० [सं०] जीवों में ऐसी दया या जीवरक्षा जो वास्तविक न हो केवल दूसरों और परलोक में सुख पाने के लिए लोगों की देखा-देखी की जाय।

**स्वरूप प्रतिष्ठा**—स्त्री०[सं०] जीव का अपनी स्वाभाविक शक्तियों और गुणों से युक्त होना।

**स्वरूपवान्**†—वि०=स्वरूपवान् (सुन्दर)।

**स्वरूपवान्**—वि०[सं० स्वरूपवत्] [स्त्री० स्वरूपवती] जिसका स्वरूप अच्छा हो। सुन्दर। खूबसूरत।

**स्वरूप संबंध**—पु०[सं०] ऐसा संबंध जो किसी से उसके अपने स्वरूप के समान होने की अवस्था में माना जाता है।

**स्वरूपाभास**—पु०[सं०] कोई वास्तविक स्वरूप न होने पर भी उसका आभास होना। जैसे—गंधर्वनगर या मरीचिका जिसका वास्तव में

अस्तित्व न होने पर भी उनके रूप का आभास (स्वरूपाभास) होता है।

**स्वरूपसिद्ध**—वि०[सं०] जो स्वयं अपने स्वरूप से ही अनिद्ध होता हो। कभी सिद्ध न हो सकनेवाला।

**स्वरूपी (पिन्)**—वि०[सं०]१ स्वरूपवाला। स्वरूपयुक्त। २. जो किसी के स्वरूप के अनुसार बना हो अथवा जिसने किसी का स्वरूप धारण किया हो।

पु०=सारूप्य।

**स्वरूपोपनिषद्**—स्त्री०[स०] एक उपनिषद् का नाम।

**स्वरेणु**—स्त्री०[सं०] सूर्य की पत्नी संज्ञा का एक नाम।

**स्वरोचिष्**—पु० [सं०] पुराणानुसार स्वारोचिष् मनु के पिता जो कलि नामक गधर्व के पुत्र थे और वरुथिनी नाम की अप्सरा के गर्भ से उत्पन्न हुए थे।

**स्वरोद**—पु०=सरोद (बाजा)।

**स्वरोदय**—पु०[स०] वह शास्त्र जिसके द्वारा इडा, पिंगला, सुषुम्ना आदि नाडियों के श्वासों के आधार पर सब प्रकार के शुभ और अशुभ फल जाने जाते हैं। दाहिने और बाएँ नथने से निकलते हुए श्वासों को देखकर शुभ और अशुभ फल कहने की विद्या।

**स्वर्गंगा**—स्त्री०[स०] आकाश-गंगा। मंदाकिनी।

**स्वर्ग**—पुं०[स०] [वि० स्वर्गीय] १ हिंदुओं के अनुसार ऊपर के सात लोकों में से तीसरा लोक, जिसका विस्तार सूर्यलोक से ध्रुवलोक तक कहा गया है और जिसमें ईश्वर तथा देवताओं का निवास माना गया है। यह भी माना जाता है कि पुण्यात्माओं और सत्कर्मियों की मृत्यु होने पर उनकी आत्माएँ इसी लोक में जाकर निवास करती हैं। देवलोक।

**पद—स्वर्ग की धार**=आकाश-गंगा। मंदाकिनी।

**मुहा०—स्वर्ग के पथ पर पैर रखना**=(क) यह लोक छोड़कर परलोक के लिए प्रस्थान करना। मरना। (ख) जान जोखिम में डालना। **स्वर्ग छना**= स्वर्ग के सुख का इसी जीवन में अनुभव करना। उदा०—मदोन्मत्ता महर्षि-मुख देख थी स्वर्ग छूती।—हरिऔध। **स्वर्ग जाना या सिधारना**=परलोकगामी होना। मरना।

२ अन्य धर्मों के अनुसार इसी प्रकार का वह विशिष्ट स्थान जो आकाश में माना जाता है। विहिश्त। (हेवेन)

**विशेष**—भिन्न-भिन्न धर्मों में स्वर्ग की कल्पना अलग-अलग प्रकार से की गई है। तो भी प्रायः सभी धर्मों के अनुसार इसमें ईश्वर, देवताओं, देवदूतों और पवित्र आत्माओं का निवास माना जाता है और यह सभी प्रकार के सुखों और सौन्दर्यों का भंडार कहा गया है।

३ बोल-चाल में पृथ्वी के ऊपर का वह सारा विस्तार, जिसमें सूर्य, चाँद, तारे, बादल आदि निकलते, डूबते या उठते-बैठते हैं। ४. कोई ऐसा स्थान, जहाँ सभी प्रकार के सुख प्राप्त हों और नाम को भी कोई कष्ट या चिंता न हो। जैसे—यहाँ तो हमें स्वर्ग जान पड़ता है। ५ आकाश। आसमान।

**पद—स्वर्ग-सुख**=सभी प्रकार का बहुत अधिक सुख।

**मुहा०—(किसी चीज का) स्वर्ग छूना**=बहुत अधिक ऊँचा होना। जैसे—यहाँ की अट्टालिकाएँ स्वर्ग छूती थीं।

६. ईश्वर। ७. सुख। ८. प्रलय।



**स्वर्ग-काम**—वि०[स०] जो स्वर्ग की कामना रखता हो। स्वर्ग-प्राप्ति की इच्छा रखनेवाला।

**स्वर्ग-गत**—भू० कृ०, वि०[स०] जो स्वर्ग चला गया हो। मरा हुआ। स्वर्गीय।

**स्वर्ग गति**—स्त्री०[सं०] स्वर्ग जाना। मरना।

**स्वर्ग गमन**—पु०[स०] स्वर्ग सिधारना। मरना।

**स्वर्ग-गामी (मिन्)**—वि० [स०]१ स्वर्ग की ओर गमन करनेवाला। स्वर्ग जानेवाला। २ जो स्वर्ग जा चुका अर्थात मर चुका हो। मृत। स्वर्गीय।

**स्वर्ग गिरि**—पु०=स्वर्णगिरि (सुमेरु पर्वत)।

**स्वर्ग-तरंगिणी**—स्त्री०[स०] स्वर्ग की नदी, मंदाकिनी। आकाश-गंगा।

**स्वर्ग तरु**—पुं०[स०]१ कल्पतरु। २ पारिजात। परजाता।

**स्वर्गति**—स्त्री० [स०] स्वर्ग की ओर जाने की क्रिया। स्वर्ग-गमन।

**स्वर्गद**—वि०[स०] जो स्वर्ग पहुँचाता हो। स्वर्ग देनेवाला।

**स्वर्गदायक**—वि० स्वर्गद।

**स्वर्ग धेनु**—स्त्री०[स०] कामधेनु।

**स्वर्ग नदी**—स्त्री०[स० स्वर्ग+नदी] आकाश गंगा।

**स्वर्ग-पताली**—स्त्री० [स० स्वर्ग+पाताल] एक बेल जिसका एक सींग सीधा ऊपर को उठा हुआ और दूसरा सींधा नीचे की ओर झुका हुआ हो।

**स्वर्ग-पति**—पु०[स०] स्वर्ग के स्वामी, इन्द्र।

**स्वर्ग पुरी**—स्त्री०[स०] इन्द्र की पुरी, अमरावती।

**स्वर्ग भूमि**—स्त्री०[स०] १ एक प्राचीन जनपद जो वाराणसी के पश्चिम ओर था। २ ऐसा स्थान जहाँ स्वर्ग का सा आनन्द और सुख हो।

**स्वर्ग-मंदाकिनी**—स्त्री०[स०] आकाशगंगा। मंदाकिनी।

**स्वर्ग-योनि**—पु०[स०] यज्ञ, दान आदि वे शुभ कर्म, जिनके कारण मनुष्य स्वर्ग जाता है।

**स्वर्ग-लाभ**—पु०[स०] स्वर्ग की प्राप्ति। स्वर्ग पहुँचना। मरना।

**स्वर्ग-लोक**—पु० दे० 'स्वर्ग'।

**स्वर्ग लोकेश**—पु०[स०] १ स्वर्ग के स्वामी, इन्द्र। २ तन। शरीर।

**स्वर्ग-वधू**—स्त्री० [सं०] अप्सरा।

**स्वर्ग-वाणी**—स्त्री०[सं० स्वर्ग+वाणी] आकाशवाणी।

**स्वर्ग वास**—पु०[स०]१ स्वर्ग में निवास करना। स्वर्ग में रहना। २ मर कर स्वर्ग जाना। मरना। जैसे—आज उनका स्वर्गवास हो गया।

**स्वर्गवासी (सिन्)**—वि०[सं०] [स्त्री० स्वर्गवासिनी] १ स्वर्ग में रहनेवाला। २. जो मरकर स्वर्ग जा चुका हो। मृत। स्वर्गीय।

**स्वर्गसार**—पुं०[सं०] ताल के चौदह मुख्य भेदों में से एक। (संगीत)

**स्वर्ग स्त्री**—स्त्री०[स०] अप्सरा।

**स्वर्गस्थ**—भू० कृ०, वि०[स०]१ स्वर्ग में स्थित। स्वर्ग का। २ जो मरकर स्वर्ग जा चुका हो। मृत। स्वर्गीय।

**स्वर्गापगा**—स्त्री०[सं०] आकाश-गंगा। मंदाकिनी।

**स्वर्गामी (मिन्)**—वि०[स० स्वर्गामिन्] =स्वर्गगामी।

**स्वर्गारूढ**—भू० कृ०, वि० [सं०] स्वर्ग सिधारा हुआ। स्वर्ग पहुँचा हुआ। मृत। स्वर्गवासी।

**स्वर्गारोहण**—पु० [स०] १. स्वर्ग की ओर जाना या चढ़ना। २. मरकर स्वर्ग जाना।

**स्वर्गावास**—पु० [स०]=स्वर्गवास।

**स्वर्गिक**—वि०=स्वर्गीय।

**स्वर्गि-गिरि**—पु० [स०] सुमेरु पर्वत, जिसके शृंग पर स्वर्ग की स्थिति मानी जाती है।

**स्वर्गी (गिन्)**—वि० [स०]=स्वर्गीय।
पु० देवता।

**स्वर्गीय**—वि० [स०] [स्त्री० स्वर्गीया] १. स्वर्ग-संबंधी। स्वर्ग का। २ स्वर्ग में रहने या होनेवाला। ३ जो मरकर स्वर्ग चला गया हो। (मृत व्यक्ति के लिए आदरसूचक) ४ जिसकी मृत्यु अभी हाल में अथवा कुछ ही दिन पहले हुई हो। (लेट) ५. जिसमें लौकिक पवित्रता या सौन्दर्य की पराकाष्ठा हो। दिव्य। जैसे—स्वर्गीय रूप।

**स्वर्ग्य**—वि० [स०] स्वर्ग-संबंधी। स्वर्ग तक पहुँचानेवाला।

**स्वर्चक्र**—पु० [स०] ऐसी अग्नि जिसमें से सुन्दर ज्वाला निकलती हो।

**स्वर्जि**—स्त्री० [स०] १. सज्जी मिट्टी। २. क्षौरा।

**स्वर्जिक**—पु० [स०] सज्जी मिट्टी।

**स्वर्जिकाक्षार**—पु० [स०] सज्जी मिट्टी।

**स्वर्जित**—वि० [स०] जिसने स्वर्ग पर विजय प्राप्त कर ली हो। स्वर्ग-जेता।
पु० एक प्रकार का यज्ञ।

**स्वर्ण**—पु० [स०] १. सुवर्ण या सोना नामक बहुमूल्य धातु। कनक। २ धतूरा। ३. नाग केसर। ४. गौर स्वर्ण नामक साग। ५ कामरूप देश की एक नदी।
वि० सोने की तरह का पीला।

**स्वर्णकाय**—वि० [स०] जिसका शरीर सोने का अथवा सोने का-सा हो।
पु० गरुड़।

**स्वर्णकार**—पु० [स०] १. एक जाति जो सोने-चाँदी के आभूषण आदि बनाती है। २. सुनार।

**स्वर्णकारी**—स्त्री० [हिं० स्वर्णकार] सोने-चाँदी के गहने आदि बनाने का व्यवसाय। सुनारी।

**स्वर्ण-कूट**—पु० [स०] हिमालय की एक चोटी।

**स्वर्ण-केतकी**—स्त्री० [स०] पीली केतकी।

**स्वर्ण-गिरि**—पु० [स०] सुमेरु पर्वत।

**स्वर्ण गैरिक**—पु० [सं०] सोनागेरू।

**स्वर्ण ग्रीवा**—स्त्री० [स०] कालिका पुराण के अनुसार एक पवित्र नदी जो नाटक शैल के पूर्वी भाग से निकली हुई मानी गई है।

**स्वर्ण-चूड़, स्वर्ण-चूड**—पु० [सं०] नीलकंठ नामक पक्षी।

**स्वर्णज**—वि० [सं०] १. सोने से उत्पन्न। २. सोने का बना हुआ।
पु० १ रोंगा वंग। २. सोनामक्खी।

**स्वर्ण-जयंती**—स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति, संस्था आदि या किसी महत्त्वपूर्ण कार्य के जन्म या आरम्भ होने के ५० वर्ष पूरा होने पर होनेवाली जयंती। (गोल्डेन जुबली)

**स्वर्णजीवी (विन्)**—पु० [सं०] स्वर्णकार। सुनार।

**स्वर्णद**—वि० [स०] १ स्वर्ण या सोना देनेवाला। २. स्वर्ण या सोना दान करनेवाला।

**स्वर्णदी**—स्त्री० [स०] १. मदाकिनी। स्वर्गगा। २ कामाख्या के पास की एक नदी।

**स्वर्ण-द्वीप**—पु० [स०] आधुनिक सुमात्रा द्वीप का मध्ययुगीन नाम।

**स्वर्ण नाभ**—पु० [स०] एक प्रकार के शालग्राम।

**स्वर्ण पत्र**—पु० [स०] सोने का पत्तर या तबक।

**स्वर्ण-पर्पटी**—स्त्री० [स०] वैद्यक में एक प्रसिद्ध औषध, जो सग्रहणी रोग के लिए सबसे अधिक गुणकारी मानी जाती है।

**स्वर्ण पाटक**—पु० [स०] सुहागा जिसके मिलाने से सोना गल जाता है।

**स्वर्ण-पुष्प**—पु० [स०] १ अमलतास। २ चपा। ३. कीकर। बबूल। ४. कैथ। ५ पेठा।

**स्वर्ण-पुष्पा**—स्त्री० [स०] १. कलिहारी। लागली। २. सातला नामक थूहर। ३ मेढ़ा-सिंगी। ४ अमलतास। ५ पीली केतकी।

**स्वर्ण-पुष्पी**—स्त्री० [स०] १ स्वर्ण-केतकी। पीला केवड़ा। २ अमलतास ३ मातला।

**स्वर्ण-प्रस्थ**—पु० [स०] पुराणानुसार जबू द्वीप का एक उपद्वीप।

**स्वर्ण-फल**—पु० [स०] धतूरा।

**स्वर्ण फला**—स्त्री० [स०] स्वर्ण कपाली। चपा केला।

**स्वर्ण-बीज**—पु० [स०] धतूरे का बीज।

**स्वर्ण-भाज**—पु० [स०] सूर्य।

**स्वर्ण मय**—वि० [स०] १ स्वर्ण से युक्ति। २ जो बिलकुल सोने का हो। जैसे—स्वर्णमय सिंहासन।

**स्वर्ण माक्षिक**—पु० [स०] सोनामक्खी नामक उपधातु।

**स्वर्ण-माता**—स्त्री० [स० स्वर्णमातृ] हिमालय की एक छोटी नदी।

**स्वर्ण-मान**—पु० [स०] अर्थशास्त्र में, सिक्कों के संबध की वह प्रणाली जिसमें कोई देश अपनी मुद्रा की इकाई या मानक का अर्ध सोने की एक निश्चित तौल के अर्ध के बराबर रखता है। (गोल्ड स्टेन्डर्ड)
विशेष—जिस देश में यह प्रणाली प्रचलित रहती है, वहाँ (क) या तो सोने के ही सिक्के चलते हैं या (ख) ऐसी मुद्रा चलती है, जो तत्काल सोने के सिक्कों में बदली जा सकती है या (ग) लोग अपना सोना देकर टकसाल से उसके सिक्के ढलवा सकते हैं।

**स्वर्ण मानक**—पु०=स्वर्णमान।

**स्वर्ण मीन**—पु० [स०] सुनहले रंग की एक प्रकार की मछली।

**स्वर्ण मुखी (खिन्)**—स्त्री० [स०] १ मध्ययुग में, ६४ हाथ लंबी, ३२ हाथ ऊँची और ३२ हाथ चौड़ी नाव। २. सनाय।

**स्वर्ण-मुद्रा**—स्त्री० [सं०] सोने का सिक्का। अशरफी।

**स्वर्ण-यूथिका, स्वर्ण-यूथी**—स्त्री० [स०] पीली जूही। सोनजूही।

**स्वर्ण-रंभा**—स्त्री० [सं०] स्वर्ण कदली। चंपा केला।

**स्वर्ण-रस**—पु० [सं०] १. मध्यकालीन तांत्रिकों और रासायनिकों की परिभाषा में ऐसा रस, जिसके स्पर्श से कोई धातु सोना बन जाता हो या बन सकती हो। २. परवर्ती रहस्यवादी साधकों या संप्रदायों में वह क्रिया या तत्त्व, जिसमें मन की चचलता नष्ट होती हो और वह पूर्ण रूप से शांत हो जाता हो।

**स्वर्ण-रेखा**—स्त्री०=सुवर्ण-रेखा (नदी)।

**स्वर्ण-लता**—स्त्री० [सं०] १. भालकंगनी। ज्योतिष्मती। २. पीली जीवती।

**स्वर्ण-वज्र**—पु० [स०] एक प्रकार का लोहा।

**स्वर्ण-वर्ण**—पु० [सं०] १. कण-शृंगुल। २. हरताल। ३. सोना गेरू। ४ दारुहलदी।

**स्वर्ण वर्णा**—स्त्री०[स०]१. हलदी। २. दारुहलदी।

**स्वर्ण वल्ली**—स्त्री०[स०]१ सोनावल्ली। रक्तफला। २. पीली जीवती।

**स्वर्ण विंदु**—पु०[स०]१ विष्णु। २ एक प्राचीन तीर्थ।

**स्वर्ण शिव**—पु०[स०] स्वर्णचूड़ या नीलकंठ नामक पक्षी।

**स्वर्ण-शृंगी (गिन्)**—पु० [स०] पुराणानुसार एक पर्वत जो सुमेरु पर्वत के उत्तर ओर माना जाता है।

**स्वर्ण सिंदूर**—पु०=रस-सिंदूर।

**स्वर्णाकर**—पु० [स०] सोने की खान।

**स्वर्णाचल**—पु०[स०] उड़ीसा प्रदेश का भुवनेश्वर नामक तीर्थ।

**स्वर्णाद्रि**—पु०[स०]=स्वर्णाचल।

**स्वर्णाभ**—वि०[स०]१. सोने की सी आभा या चमकवाला। २. सोने के रंग का। सुनहला। ३ (प्रतिभूति) जो सब प्रकार से सुरक्षित हो और जिसके डूबने या व्यर्थ होने की कोई आशंका न हो। (गिल्ट-एज्ड)

पु० हरताल।

**स्वर्णारि**—पु०[स०]१ गधक। २. सीसा नामक धातु।

**स्वर्णिम**—वि०[स०] सोने का। सुनहला।

**स्वर्णुली**—स्त्री०[स०] एक प्रकार का क्षुप। हेमपुष्पी। सोनूली।

**स्वर्णोपधातु**—पु०[स०] सोनामक्खी नामक उपधातु।

**स्वर्धनी**—स्त्री०[स०] गंगा।

**स्वर्नगरी**—स्त्री०[स०] स्वर्ग की पुरी, अमरावती।

**स्वर्नदी**—स्त्री०[स०] आकाश-गंगा।

**स्वर्पति**—पु०[स०] स्वर्ग के स्वामी, इन्द्र।

**स्वर्भानु**—पु०[स०]१ सत्यभामा के गर्भ से उत्पन्न श्रीकृष्ण के एक पुत्र का नाम। २ राहु नामक ग्रह।

**स्वर्लोक**—पु०[स०] स्वर्ग।

**स्वर्वधू**—स्त्री०[स०] अप्सरा।

**स्वर्वापी**—स्त्री०[स०] गंगा।

**स्वर्वेश्या**—स्त्री०[स०] अप्सरा।

**स्वर्वैद्य**—पु० [स०] स्वर्ग के वैद्य, अश्विनीकुमार।

**स्वल्प**—वि०[स०] बहुत ही अल्प या कम। बहुत थोड़ा।

पु० नक्षी नामक गन्ध द्रव्य।

**स्वल्पक**—वि०[स०]=स्वल्प।

**स्वल्प-विराम ज्वर**—पु० [सं०] ठहर ठहर कर थोड़ी देर के लिए उतरकर फिर आनेवाला ज्वर।

**स्वल्प-व्यक्ति तंत्र**—पु० दे० 'अल्प-तंत्र'।

**स्वल्पायु (स्)**—वि० [सं०] जिसकी आयु बहुत अल्प या थोड़ी हो। अल्पजीवी।

**स्वल्पाहार**—पुं०[सं०] बहुत कम या थोड़ा भोजन करना।

**स्वल्पाहारी (रिन्)**—वि०[सं०] बहुत कम या थोड़ा भोजन करनेवाला।

**स्वल्पिष्ठ**—वि०[सं०]१. अत्यन्त अल्प। बहुत ही कम। २. बहुत ही छोटा।

**स्ववरण**†—पु०]=सुवर्ण (सोना)।

**स्ववर्णा रेखा**†—स्त्री०=सुवर्ण रेखा (नदी)।

**स्ववशा**—वि०[स०] [भाव० स्ववशता] १. जो अपने वश में हो। स्वतन्त्र। २. जितेन्द्रिय।

**स्ववशता**—स्त्री०[स०] स्ववश होने की अवस्था, गुण या भाव।

**स्ववश्य**—वि०[स०] [भाव० स्ववश्यता] जो अपने ही वश में हो। अपने आप पर अधिकार रखनेवाला।

**स्ववासिनी**—वि० स्त्री० [स०] (स्त्री) जो अपने घर में रहती हो। स्त्री० वह कुँआरी या विवाहिता कन्या, जो वयस्क होने के उपरान्त अपने पिता के घर में ही रहती हो।

**स्व-विवेक**—पु०[सं०] कुछ विशिष्ट नियमों और वचनों के अधीन रह कर उचित-अनुचित और युक्त-अयुक्त का विचार करने की शक्ति। (डिस्क्रीशन)

**स्व-बीज**—वि०[स०] जो अपना बीज या कारण आप ही हो।

पु० आत्मा।

**स्व-शासन**—पु०[स०] [भू० कृ० स्वशासित] १. अपने अधिक्षेत्र में शासन, राजनीतिक प्रबन्ध आदि स्वयं करने का पूरा अधिकार। (सेल्फ़ गवर्नमेंट) २. दे० 'स्वायत्त-शासन'।

**स्वशुर**—पु०=श्वसुर।

**स्व-संभूत**—वि०[स०] जो स्वयं से उत्पन्न हो। स्वयंभू।

**स्व-संवेद्य**—वि०[स०] जिसका संवेदन स्वयं ही किया जा सके।

**स्व-समुत्थ**—वि०[स०] अपने ही देश में उत्पन्न, स्थित या एकत्र होने-वाला। जैसे—स्व-समुत्थ कोष। स्व-समुत्थ बल।

**स्वसा (सृ)**—स्त्री०[सं०] भगिनी। बहन।

**स्वसित**—वि०[स०] बहुत काला।

**स्वसुर**—पु०=ससुर।

**स्वस्ति**—अव्य०[स०]१. शुभ हो। (प्रायः शुभ-कामना प्रकट करने के लिए पत्रों के आरम्भ में) २. कल्याण हो। मंगल हो। भला हो। (आशीर्वाद) ३. मान्य है। ठीक है।

स्त्री०१. कल्याण। मंगल। २. सुख। ३. ब्रह्मा की तीन पत्नियों में से एक।

**स्वस्तिक**—पु०[स०]१. एक प्रकार का बहुत प्राचीन मंगल-चिह्न जो शुभ अवसरों पर दीवारों आदि पर अंकित किया जाता है। आज-कल इसका यह रूप प्रचलित है (卐)। सथिया। २. सामुद्रिक में, शरीर के किसी अंग पर होनेवाला उक्त प्रकार का चिह्न जो बहुत शुभ माना जाता है। ३. एक प्रकार का मंगल-द्रव्य जो विवाह आदि के समय भिगोये हुए चावल पीसकर तैयार किया जाता है और जिसमें देवताओं का निवास माना जाता है। ४. प्राचीन काल का एक प्रकार का यंत्र जो शरीर में गड़े हुए शल्य आदि बाहर निकालने के काम में आता था। ५ वैद्यक में घाव या फोड़े पर बाँधी जानेवाली एक प्रकार की तिकोनी पट्टी। ६. वास्तु-शास्त्र में ऐसा घर, जिसमें पश्चिम ओर एक और पूर्व ओर दो दालान हों। ७. साँप के फन पर की नीली रेखा। ८. हठयोग की साधना में एक प्रकार का आसन या मुद्रा। ९. प्राचीन

काल की एक प्रकार की बड़िया नाव, जो प्राय. राजाओं की सवारी के काम आती थी। १०. चौमुहानी। चौराहा। ११. लहसुन। १२. रतालू। १३. मूली। १४. सुसना नामक साग। शिरियारी।

**स्वस्तिका**—स्त्री० [सं०] चमेली।

**स्वस्तिकृत**—पु० [स०] शिव। महादेव।
वि० कल्याणकारी। मंगलकारक।

**स्वस्तिद**—वि० [स०] मंगलकारक।
पु० शिव का एक नाम।

**स्वस्तिमती**—स्त्री० [स०] कार्तिकेय की एक मातृका।
वि० सं० 'स्वस्तिमान्' का स्त्री।

**स्वस्तिमान्(न्)**—वि० [स०] [स्त्री० स्वस्तिमती] १. सब प्रकार से सुखी। २ भाग्यवान्।

**स्वस्ति-मुख**—वि० [स०] जिसके मुख से शुभ, मुख देनेवाली या अशीर्वाद-पूर्ण बातें निकलती हों।
पु० १. ब्राह्मण। २. राजाओं का स्तुति-पाठक। बंदी।

**स्वस्ति-वाचक**—वि० [सं०] १. जो मंगल-सूचक बात कहता हो। २. आशीर्वाद देनेवाला।

**स्वस्ति-वाचन**—पु० [स०] मंगल-कार्यों के आरम्भ में किया जानेवाला एक प्रकार का धार्मिक कृत्य, जिसमें कलश-स्थापन, गणेश का पूजन और मंगल-सूचक मंत्रों का पाठ किया जाता है।

**स्वस्तेय**—पु०=स्वस्त्ययन।

**स्वस्त्ययन**—पुं० [स०] एक प्रकार का धार्मिक कृत्य, जो किसी विशिष्ट कार्य की अशुभ बातों का नाश करके मंगल की स्थापना के विचार से किया जाता है।

**स्वस्थ**—वि० [सं०] [भाव० स्वस्थता] १. जो स्वयं अपने बल पर या सहारे से खड़ा हो। २. फलतः आत्म-निर्भर। ३. जो शारीरिक दृष्टि से आत्म-निर्भर हो। फलतः जिसमें आलस्य, रोग, विकार आदि न हों। तन्दुरुस्त। (हेल्दी) ४ जिसमें किसी प्रकार की त्रुटि न हो। (साउन्ड) जैसे—स्वस्थ प्रज्ञ। ५ सामाजिक या मानसिक स्वास्थ्य का रक्षक। जैसे—स्वस्थ साहित्य।

**स्वस्थ-चित्त**—वि० [स०] जिसका चित्त स्वस्थ हो। मानसिक दृष्टि से स्वस्थ।

**स्वस्थता**—स्त्री० [स०] १. स्वस्थ होने की अवस्था या भाव। तंदुरुस्ती। २. सावधानता।

**स्वस्रीय**—पु० [सं०] [स्त्री० स्वस्रीया] स्वसृ अर्थात् बहन का लड़का। भानजा।

**स्वहाना**†—अ०=सुहाना (भला लगना)।
†वि०=सुहावना।

**स्वांकिक**—पु० [सं०] ढोल, मृदंग आदि ऐसे बाजे बजानेवाला, जो अपने अंक या गोद में रखकर बजाये जाते हों।

**स्वांग**—पु० [सं० स्व+अंग] १. किसी दूसरे की वेश-भूषा अपने अंग पर इसलिए धारण करना कि देखने में लोगों को वही दूसरा व्यक्ति जान पड़े। कृत्रिम रूप से दूसरे का धारण किया हुआ भेस। रूप भरने की क्रिया या भाव। जैसे—(क) रामलीला में राम और लक्ष्मण के स्वांग। (ख) अभिनय में दुष्यंत और शकुंतला के स्वांग। २ विशेषतः उक्त प्रकार से धारण किया जानेवाला वह भेस या रूप, जो या तो केवल मनोरंजन के लिए हास्यजनक हो या जिसका उद्देश्य दूसरों का उपहास करना अथवा हँसी उड़ाना हो। जैसे—(क) बाल-विवाह या वृद्ध-विवाह का स्वांग। (ख) नाक-कटैया या रामलीला के जलूस में निकलने-वाले स्वांग। ३. जन साधारण में प्रचलित एक प्रकार का संगीत-रूपक जो किसी लोककथा पर आधारित होता है। जैसे—पूरनमल या राजा हरिश्चन्द्र का स्वांग। ४ कोई बहाना बनाकर दूसरों को भ्रम में डालने या अपना कोई काम निकालने के लिए धारण किया जानेवाला झूठा रूप। जैसे—बीमारी का स्वांग रचकर घर बैठना।
क्रि० प्र०—बनाना।—रचना।
**मुहा०—स्वांग लाना**=किसी दूसरे का भेस बनाकर या कोई कृत्रिम रूप धारण करके सामने आना। जैसे—जन्म भर मे एक स्वांग भी लाये तो कोढ़ी का। (कहा०)

**स्वांग**—पु० [स०] अपना ही अंग।

**स्वांगना***—स० [हि० स्वांग] बनावटी वेश या रूप धारण करना। स्वांग बनाना।

**स्वांगी**—पु० [हि० स्वांग] १ वह जो स्वांग रचकर जीविका उपार्जन करता हो। नकल करनेवाला। नक्काल। २ बहुरूपिया।
वि० अनेक प्रकार के रूप धारण करनेवाला।

**स्वांगीकरण**—पु० [स०] [भू० कृ० स्वांगीकृत] १ किसी एक वस्तु का दूसरी वस्तु या वस्तुओं को इस प्रकार पूर्णत अपने आप मे मिला लना कि वे उसके अंग के रूप मे हो जायँ। आत्मीकरण।

**स्वांत**—पु० [स०] १ अपना अंत या मृत्यु। २ अपना प्रदेश या राज्य। ३ अंत करण। मन। ४ मन की शांति। ५ गुफा।

**स्वांतः सुखाय**—अव्य० [स०] केवल अपना अंत.करण या मन प्रसन्न करने के लिए। अपनी ही तृप्ति या संतोष के लिए।

**स्वांतज**—पु० [स०] १. कामदेव। २. प्रेम।

**स्वांस**†—पु०=सांस।

**स्वांसा**—पु० [देश०] वह सोना जिसमें ताँबा का खोट हो। ताँबे के खोट-वाला सोना।
†पु०=सांस।

**स्वाक्षर**—पु० [स०] १. अपने ही हाथों से लिखे हुए अक्षर। अपना हस्त-लेख। २. (किसी का) अपने हाथ से लिखा हुआ कोई छोटा लेख या हस्ताक्षर, जिसे लोग अपने पास स्मृति के रूप मे रखते हैं। (ऑटोग्राफ) ३. हस्ताक्षर।

**स्वाक्षरित**—भू० कृ० [स०] १ जिस पर किसी ने अपने हाथ से अपना नाम, पता, लेख आदि लिख रखा हो। २. दस्तखत किया हुआ। हस्ताक्षर से युक्त। (साइन्ड)

**स्वागत**—पु० [स०] १. किसी मान्य या प्रिय के आने पर आगे बढ़कर आदरपूर्वक उसका अभिनन्दन करना। अभ्यर्थना। (रिसेप्शन)
*२ उक्त अवसर पर पूछा जानेवाला कुशल-मंगल। उदा०—स्वागत पूँछि निकट बैठारे।—तुलसी। ३ किसी के कथन, विचार आदि को अच्छा या अनुकूल समझकर ग्रहण अथवा मान्य करने की क्रिया या भाव। जैसे—हम आपके इस विचार (या सम्मति का) स्वागत करते हैं। ४. एक बुद्ध का नाम।

अव्य० आप के आगमन पर (हम) आप का अभिनन्दन करते हैं। जैसे—स्वागत! स्वागत! बन्धुवर, भले पधारे आप।

**स्वागतक**—पु०[स०] [स्त्री० स्वागतिका]१. वह जिस पर आगत सज्जनों के स्वागत और सत्कार का भार हो। (रिसेप्शनिस्ट) २. घर का वह मालिक, जो आगत सज्जनों का स्वागत-सत्कार करता हो। (होस्ट)

**स्वागतकारिणी सभा**—स्त्री०=स्वागत-समिति।

**स्वागतकारी(रिन्)**—वि० [स०] [स्त्री० स्वागतकारिणी] स्वागत या अभ्यर्थना करनेवाला। पेशवाई करनेवाला।

**स्वागत-पतिका**—स्त्री०[स०] वह नायिका जो अपने पति के परदेश से लौटने से प्रसन्न होकर उसके स्वागत के लिए प्रस्तुत हो। आगत-पतिका। (नायिका के अवस्थानुसार दस भेदों में से एक।)

**स्वागत-प्रिया**—पु०[स०] वह नायक जो अपनी पत्नी के परदेश से लौटने से उत्साहपूर्ण और प्रसन्न होकर उसका स्वागत करने के लिए प्रस्तुत हो।

**स्वागत-समिति**—स्त्री०[स०] वह समिति, जो किसी बड़े सम्मेलन आदि में आनेवालों के स्वागत-सत्कार के लिए बनती है। (रिसेप्शन कमिटी)

**स्वागता**—स्त्री०[स०] चार चारणों का एक समवृत्त वर्णिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में क्रम से रगण, नगण, भगण, और दो गुरु होते हैं। यथा—राज-राजा दशरत्थ तनैंजू। रामचन्द्र भव-चन्द्र बने जू।—केशव।

**स्वागतिक**—वि० [स०] [स्त्री० स्वागतिका] स्वागत करनेवाला। आनेवाले की अभ्यर्थना या सत्कार करनेवाला।

पु० घर का वह मालिक, जो किसी विशिष्ट अवसर पर अपने यहाँ आये हुए लोगों का स्वागत-सत्कार करता हो। (होस्ट)

**स्वागतिका**—स्त्री० [सं०] १. स्वागत करनेवाली गृहस्वामिनी। २ आज-कल हवाई जहाजों मे वह स्त्रियाँ, जो यात्रियों की सेवा और सत्कार के लिए नियुक्त होती है। (एयर होस्टंस)

**स्वागती**—पु०=स्वागतक।

**स्वाग्रह**—पु०[स० स्व+आग्रह]१ अपने सबध मे होनेवाला आग्रह। २ अपने अधिकार, योग्यता, शक्ति के सबंध मे होनेवाला ऐसा आग्रह जिसके फलस्वरूप कोई अपना विचार प्रकट करता हो या अपने लिए उपयुक्त स्थान ग्रहण करने का प्रयत्न करता हो। (एसर्शन)

**स्वाग्रही(हिन्)**—वि०[स०] जिसमे स्वाग्रह की धारणा या भावना प्रबल हो। (एसर्टिव)

**स्वाच्छंद्य**—पु०=स्वच्छदता।

**स्वाजन्य**—पु०=स्वजनता।

**स्वाजीव, स्वाजीव्य**—वि० [स०] (स्थान या देश) जहाँ जीविका के लिए कृषि, वाणिज्य आदि साधन यथेष्ट और सुलभ हों। जैसे—स्वाजीव्य देश।

**स्वातंत्र्य**†—पु०=स्वातत्र्य।

**स्वातंत्र्य**—पु०=स्वतत्रता।

**स्वातंत्र्य-युद्ध**—पु० [स०] वह युद्ध, जो अपने देश को विदेशी शासन से मुक्त करके स्वतत्र बनाने के लिए किया गया हो, या किया जाय। (वार ऑफ इन्डिपेन्डेन्स)

**स्वात**—स्त्री०[सं० सुवास्तु] अफगानिस्तान की एक नदी।

*स्त्री०=स्वाति।

**स्वाति**—स्त्री०[सं०] आकाशस्थ पन्द्रहवाँ नक्षत्र, जो फलित ज्योतिष के अनुसार शुभ माना जाता है।

वि० जिसका जन्म स्वाति नक्षत्र मे हुआ हो।

**स्वातिकारी**—स्त्री०[सं०] कृषि की देवी। (पारस्कर गृह्य-सूत्र)

**स्वाति-पथ**—पु० [स० स्वाति+पथ] आकाश-गगा।

**स्वाति-योग**—पुं०[स०] फलित ज्योतिष मे, आषाढ़ के शुक्ल-पक्ष मे स्वाति नक्षत्र का चन्द्रमा के साथ होनेवाला योग।

**स्वाति-सुत**—पु०[स० स्वाति+सुत] मोती। मुक्ता।

**विशेष**—लोगो का विश्वास है कि जब सीपी मे स्वाति-नक्षत्र की वर्षा की बूँद पडती है, तब उसमे मोती पैदा होता है।

**स्वाति-सुवन**—पु०=स्वाति-सुत।

**स्वाती**†—स्त्री०=स्वाति।

**स्वाद**—पु०[स०]१ कोई चीज खाने या पीने पर जबान या रसनेन्द्रिय को होनेवाली अनुभूति। जायका। (टेस्ट) जैसे—नीबू का स्वाद खट्टा होता है। २. किसी काम, चीज या बात से प्राप्त होनेवाला आनन्द। रसानुभूति। मजा। सुख। जैसे—उन्हे दूसरो की निन्दा करने मे बहुत स्वाद आता है।

क्रि० प्र०—आना।—मिलना।—लेना।

**मुहा०—स्वाद चखाना**=किसी को उसके किये हुए अनुचित कार्य का दड देना। बदला लेना। जैसे—मैं भी तुम्हे इसका स्वाद चखाऊँगा।

३ आदत। अभ्यास। जैसे—भीख माँगने का उन्हे स्वाद पड गया है।

क्रि० प्र०—पडना।

४ इच्छा। कामना। चाह। ५ मीठा रस। (डिं०)

**स्वादक**—पु०[स० स्वाद] वह जो भोज्य पदार्थ प्रस्तुत होने पर यह देखने के लिए चखता है कि उन सबका स्वाद ठीक है या नही।

**स्वादन**—पु०[सं०]१. चखना। स्वाद लेना। २ किसी काम या बात का आनन्द या रस लेना।

**स्वादनीय**—वि०[सं०]१. जिसका स्वाद लिया जाने को हो या लिया जा सकता हो। २ स्वादिष्ट।

**स्वादित**—भू० कृ०[स०]१. जिसका स्वाद लिया जा चुका हो। चखा हुआ। ३. स्वादिष्ट। ३. जो प्रसन्न हो गया हो।

**स्वादित्व**—पु०[सं०] स्वाद का भाव। स्वादु।

**स्वादिमा (मन्)**—स्त्री० [स०]१. सुस्वादुता। २. माधुर्य।

**स्वादिष्ट, स्वादिष्ठ**—वि०[स० स्वादिष्ठ] जिसका जायका या स्वाद बहुत अच्छा हो। जो खाने मे बहुत अच्छा जान पडे।

**स्वादी (दिन्)**—वि० [सं०] १ स्वाद चखनेवाला। २ आनन्द के लिए रस लेने वाला। रसिक।

†वि०=स्वादिष्ट। (पश्चिम)

**स्वादीला**†—वि०[सं० स्वाद+ईला (प्रत्य०)] स्वाद-युक्त। स्वादिष्ट।

**स्वादु**—पुं०[सं०]१ मधुर रस। मीठा रस। २ मधुरता। मिठास। ३. गुड। ४. महुआ। ५ कमला नीबू। ६ चिरौंजी। ७ बेर। ८. जीवक नामक अष्टवर्गीय ओषधि। ९ अगर की लकडी। अगरु। १०. काँस नामक तृण। ११. दूध। १२. सेंधा नमक। सैंधव लवण।

वि०१. मधुर। मीठा। २. स्वादिष्ट। ३. सुन्दर।
स्त्री० द्राक्षा। दाख।

**स्वादुकंद**—पु० [सं०] १. सफेद पिंडालू। २. कोबी। केउँआ। केसूक।

**स्वादुकर**—पु०[सं०] प्राचीन काल की एक वर्णसंकर जाति। (महाभारत)

**स्वादुगंधा**—स्त्री०[सं०] लाल सहिजन। रक्त शोभांजन।

**स्वादुता**—स्त्री०[सं०]१. स्वादु का गुण, धर्म या भाव। २. मधुरता।

**स्वादु-फल**—पु०[सं०] १. बेर। बदरी फल। २. धामिन वृक्ष। धन्व वृक्ष।

**स्वादु-फला**—स्त्री० [सं०] १. बेर। बदरी वृक्ष। २ खजूर। ३. केला। ४. मुनक्का।

**स्वादु-रसा**—स्त्री० [सं०] १. मदिरा। शराब। २. काकोली। ३. दाख। ४ शतावर। ५. अमड़ा।

**स्वादुलुंगी**—स्त्री०[सं०] मीठा नींबू।

**स्वादुम्ल**—पु०[सं०]१. नारंगी का पेड़। नागरंग वृक्ष। २. कदंब वृक्ष।

**स्वादेशिक**—वि०[सं०] स्वदेशी।

**स्वाद्य**—वि०[सं०] जिसका स्वाद लिया जा सके या लिया जाने को हो। चखे जाने के योग्य।

**स्वाधिकार**—पु०[सं० स्व+अधिकार]१. किसी व्यक्ति या समाज की दृष्टि से उसका अपना अधिकार। २. स्वाधीनता। स्वतन्त्रता।

**स्वाधिपत्य**—पु०[सं० स्व+आधिपत्य] किसी दूसरे के अधीन न होकर परम स्वतन्त्र रहने की अवस्था या भाव।

**स्वाधिष्ठान**—पु०[सं० स्व+अधिष्ठान] हठयोग के अनुसार शरीर के आठ चक्रों में से दूसरा, जिसका स्थान शिश्न का मूल या पेड़ू है। यह मूलाधार और मणिपुर के बीच में छः दलों का और सिंदूर वर्ण का माना गया है। आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार इसी केन्द्र की ग्रंथियों से यौवन और शरीर में प्रजनन-शक्ति उत्पन्न और विकसित होती है। (हाइपोगैस्ट्रिक प्लेक्सस)

**स्वाधीन**—वि०[सं०] [भाव० स्वाधीनता]१ जो अपने अधीन हो। जैसे—स्वाधीन पतिका, अर्थात् वह नायिका जिसका पति उसके वश में हो। २. जो प्रत्येक दृष्टि से आत्म-निर्भर हो। जो किसी के अधीन अर्थात् पराधीन न हो। जैसे—स्वाधीन राष्ट्र। ३. अपनी इच्छा के अनुसार काम करने में स्वतन्त्र। निरंकुश।

†वि०=अधीन।

**स्वाधीनता**—स्त्री०[सं०]१ स्वाधीन होने की अवस्था, धर्म या भाव। 'पराधीनता' का विपर्याय। आजादी।२. ऐसी स्थिति, जिसमें व्यक्तियों राष्ट्रों आदि को बाहरी नियंत्रण, दबाव, आदि प्रभाव से मुक्त होकर अपनी इच्छा से सब काम करने का अधिकार प्राप्त होता है और वे किसी बात के लिए दूसरों के मुखापेक्षी नहीं होते। सब प्रकार से आत्म-निर्भर होने की अवस्था या भाव। (इन्डिपेंडेंस)

**विशेष**—स्वाधीनता, स्वतन्त्रता और स्वच्छन्दता में मुख्य अन्तर यह है कि स्वाधीनता का प्रयोग राजनीतिक और वैधानिक क्षेत्रों में यह सुचित करने के लिए होता है कि अपने सब कार्यों की व्यवस्था या संचालन करने का किसी को पूरा अधिकार है। स्वतन्त्रता मुख्यतः लौकिक और सामाजिक क्षेत्रों का शब्द है और इसमें परकीय तन्त्र या शासन से मुक्त या रहित होने का भाव प्रधान है। स्वच्छन्दता मुख्यतः आचारिक और व्यावहारिक क्षेत्रों का शब्द है और इसमें शिष्ट सम्मत नियमों और विधि-विधानों के बंधनों से रहित होने का भाव प्रधान है।

**स्वाधीन-पतिका**—स्त्री० [सं०] साहित्य में वह नायिका, जिसका पति उसके वश में हो।

**विशेष**—इसके मुग्धा, मध्या, प्रौढ़ा और परकीया ये चार भेद हैं।

**स्वाधीन-भर्तृका**—स्त्री०=स्वाधीन-पतिका।

**स्वाधीनी**†—स्त्री०=स्वाधीनता।

**स्वाध्याय**—पु०[सं०]१. वेदों की नियतर और नियमपूर्वक आवृत्ति या अभ्यास करना। वेदाध्ययन। धर्म-ग्रंथों का नियम-पूर्वक अनुशीलन करना। २ किसी गंभीर विषय का अच्छी तरह किया जानेवाला अध्ययन या अनुशीलन। ३. वेद।

**स्वाध्यायी (यिन्)**—वि०[सं०] स्वाध्याय करनेवाला।

**स्वान**—पु०[सं०] शब्द। आवाज।

†पु०=श्वान।

**स्वाना***—स०=सुलाना।

**स्वानुभव**—पु०[सं०] ऐसा अनुभव जो अपने को हुआ हो।

**स्वानुभूति**—स्त्री० [सं०] १ ऐसी अनुभूति जो अपने को हुई हो। २. धार्मिक क्षेत्र में, परब्रह्म के तत्त्व का परिज्ञान।

**स्वानुरूप**—वि०[सं०] [भाव० स्वानुरूपता]१ अपने अनुरूप। २. योग्य। ३. सहज।

**स्वाप**—पु० [सं०] १ नींद। निद्रा। २ स्वप्न। ३ अज्ञान। ४. निष्पदता।

**स्वापक**—वि०[सं०] नींद लानेवाला। निद्राकारक।

**स्वापद**†—पु०=श्वापद।

†वि० =स्वापक।

**स्वापन**—पु०[सं०]१. सुलाना। २. प्राचीन काल का एक अस्त्र, जिससे शत्रु निद्रित किये जाते थे। ३. ऐसी दवा, जिसे खाने से नींद आ जाती हो।

वि० नींद लाने या सुलानेवाला। निद्राकारक।

**स्वापराध**—पु०[सं०] अपने प्रति किया जानेवाला अपराध।

**स्वापी (पिन्)**—वि०[सं०] स्वापक।

**स्वाप्न**—वि० [सं०] स्वप्न संबंधी। स्वप्न का।

**स्वाप्निक**—वि०[सं०]१. स्वप्न में होने या उससे संबंध रखनेवाला। २. स्वप्न के कारण या फलस्वरूप होनेवाला।

**स्वाब**—पुं०[अ०] कपड़े या सन की बुहारी या झाड़ू जिससे जहाज के डेक आदि साफ किये जाते हैं। (लश०)

**स्वाभाव**—पुं० [सं०] स्व का अभाव।

**स्वाभाविक**—वि०[सं०]१ जो स्वभाव से उत्पन्न हुआ हो। जो आप ही हुआ हो। प्राकृतिक। (नैचुरल)। २. जो या जैसा प्रकृति के या स्वभाव के अनुसार साधारणतः हुआ करता हो। जैसे—तुम्हें उनकी बात पर क्रोध आना स्वाभाविक था।

**स्वाभाविकी**—वि०[सं०]=स्वाभाविक।

**स्वाभाव्य**—वि०[सं०] स्वय उत्पन्न होनेवाला। आप ही आप होनेवाला। स्वयभू।

**स्वाभिमान**—पु० [स०]१. अपनी जाति, राष्ट्र, धर्म आदि का सद् अभिमान। अपनी व्यक्तिगत प्रतिष्ठा का अभिमान। आत्म-गौरव। (सेल्फ-रेस्पेक्ट)

**स्वाभिमानी (नि)**—वि०[स०] जिसमें स्वाभिमान हो। स्वाभिमानवाला।

**स्वामिकता**—स्त्री०=स्वामित्व।

**स्वामि कार्तिक**—पु० [स०] १. कार्तिकेय। स्कद। उदा०—घरे चाप इषु हाथ स्वामि कार्तिक बल सोहत।—गोपाल। २. छ आषाढ और दस मात्राओ का ताल जिसका बोल इस प्रकार है—धा धि धो गे ना ग ति न तिरकेट तिना तिना केत्ता धिना।

**स्वामित्व**—पु० [स०]१. वह अवस्था जिसमें कोई किसी वस्तु का स्वामी या मालिक होता है। मालिक होने का भाव। मालिकी। (ओनरशिप) २ प्रभुता। प्रभुत्व।

**स्वामित्व चिह्न**—पु० [स०] वह चिह्न जो यह सूचित करता हो कि अमुक वस्तु अमुक आदमी की है। (प्रापर्टी मार्क)

**स्वामिन्**—स्त्री० =स्वामिनी।

**स्वामिनी**—स्त्री० [स०] १. 'स्वामी' का स्त्री०। २. वल्लभ सप्रदाय मे राधिकाजी की एक सज्ञा।

**स्वामि-भृत्य न्याय**—पु० [स०] नौकर के काम से जब मालिक खुश होता है, तो नौकर भी निहाल हो जाता है; अतएव दूसरे का काम सिद्ध हो जाने पर यदि अपना भी कार्य सिद्ध हो जाय तो या प्रसन्नता हो तो यह न्याय प्रयुक्त होता है।

**स्वामित्व**—पु० [स०] १ वह धन जो किसी वस्तु के स्वामी को आधिरूप से मिलता हो या मिलने को हो। २. दे० 'स्वत्व-शुल्क'।

**स्वामिहीनत्व**—पु० [सं०] किसी वस्तु के सम्बन्ध की वह स्थिति, जिसमें उसका कोई स्वामी न मिल रहा हो। चीज के लावारिस होने की अवस्था या भाव। ला-वारिसी। (बोना वैकेंशिया)

**स्वामिहीन-भूमि**—स्त्री० [स०] वह भूमि, जिसका कोई अधिकारी, शासक या स्वामी न हो, जैसी कभी-कभी दो राज्यो की सीमाओं पर हुआ करती है। (नो मैन्स लैण्ड)

**स्वामी**—पु० [स० स्वामिन्] [स्त्री० स्वामिनी, भाव० स्वामित्व] १ वह जिसे किसी वस्तु पर पूरे और सब प्रकार के अधिकार प्राप्त हो। धनी। मालिक। (ओनर, प्रोप्राइटर)२. घर का प्रधान व्यक्ति। ३. पति। शौहर। ४. साधु, सन्यासी आदि का संबोधन। ५. ईश्वर। ६. राजा। ७. सेनापति। ८. शिव। ९. विष्णु। १०. स्वामीकार्तिक। ११. गरुड़। १२. गत उत्सर्पिणी के ११ वें अर्हत् का नाम।

**स्वाम्नाय**—वि०[सं०] जो परपरा से चला आ रहा हो। परंपरागत।

**स्वाम्य**—पु० [स०] स्वामी होने की अवस्था, गुण या भाव। (ओनरशिप)

**स्वाम्युपकारक**—पु०[सं०] घोड़ा। अश्व।

**स्वायंभुव**—पु०[स०] पुराणानुसार चौदह मनुओं में से पहला मनु, जो स्वयभू ब्रह्मा से उत्पन्न माने गये हैं।

**स्वायंभुवी**—स्त्री० [सं०] ब्राह्मी (बूटी)।

**स्वायंभू**—पु०=स्वायंभुव।

**स्वायत्त**—वि० [स०] [भाव० स्वायत्तता]१. जिस पर अपना अधिकार हो। २ जिसे स्थानीय स्वशासन का अधिकार या शक्ति प्राप्त हो। (ऑटोनोमस)

**स्वायत्त शासन**—पु०[स०] [वि० स्वायत्तशासी]१. राजनीति या शासन की दृष्टि से स्थानिक क्षेत्रो में अपने सब काम आप करने की स्वतन्त्रता। (ऑटोनोमी) २. दे० 'स्थानिक-स्वशासन'।

**स्वायत्त-शासी**—वि० [स०] (देश) जिसे शासन स्वय ही करने का अधिकार प्राप्त हो। (ऑटोनोमस)

**स्वायत्तता**—स्त्री० [स०] अपनी सरकार बनाने का अधिकार। स्थानीय स्वशासन का अधिकार। (ऑटोनोमी)

**स्वार**—पु०[स०]१ घोड़े के धरौटे का शब्द। २ बादल की गरज। मेघ-ध्वनि।

वि० स्वर-सम्बन्धी। स्वर का।

†पु० =सवार।

**स्वारक्ष्य**—वि०[स०] जिसकी सहज में रक्षा की जा सकती हो।

**स्वारथ**—वि० [स० सार्थ] सफल। सिद्ध। फलीभूत। सार्थक। जैसे—चलिए, आपका परिश्रम स्वारथ हो गया।

†पु०=स्वार्थ।

**स्वारथी**†—वि०=स्वार्थी।

**स्वारसिक**—वि०[स०]१ (काव्य) जो सुरस युक्त हो। २ (काम या बात) जिसमें अच्छा रस मिलता हो। ३ प्राकृतिक। स्वाभाविक।

**स्वारस्य**—पु० [स०] १ सरसता। रसीलापन। २ आनन्द। मजा। ३ स्वाभाविकता।

**स्वाराज्य**—पु०[सं०]१ स्वर्ग का राज्य या लोक। स्वर्ग। २ स्वाधीन राज्य।

**स्वाराट्**—पु० [सं० स्वाराज्] स्वर्ग के राजा, इन्द्र।

**स्वारी**†—स्त्री०=सवारी।

**स्वारोचिष**—पु०[स०] मनु जो स्वरोचिष के पुत्र थे। विशेष दे० 'मनु'।

**स्वार्जित**—वि०[स०] अपना अर्जित किया या कमाया हुआ। (सेल्फ-एक्वायर्ड)

**स्वार्थ**—पु०[स०] [वि० स्वार्थिक, कर्ता स्वार्थी, भाव० स्वार्थता] १ अपना अर्थ या उद्देश्य। अपना मतलब। २ अपना हित साधने की उग्र भावना। ३. ऐसी बात, जिसमे स्वय अपना लाभ या हित हो। **मुहा०—(किसी बात में) स्वार्थ लेना**=किसी होनेवाले काम मे अनुराग रखना। (आधुनिक, पर बहुत प्रयोग)

४ विधिक क्षेत्रों में, किसी वस्तु या सपत्ति के साथ होनेवाला किसी व्यक्ति का वह सबध जिसके अनुसार उसे उस वस्तु या सपत्ति पर अथवा उससे होनेवाले लाभ आदि पर स्वामित्व अथवा इसी प्रकार का और कोई अधिकार प्राप्त रहता है। (इन्टरेस्ट)

†वि० =स्वार्थ।

**स्वार्थता**—स्त्री०[स०] स्वार्थ का धर्म या भाव। स्वार्थपरता। खुदगरजी।

**स्वार्थ-त्याग**—पुं०[स०] (दूसरे के हित के लिए कर्तव्य बुद्धि से) अपने स्वार्थ या हित को निछावर करना। किसी भले काम के लिए अपने हित या लाभ का विचार छोड़ना।

**स्वार्थ-त्यागी** (गिन्)—वि० [सं० स्वार्थत्यागिन्] जो ( दूसरों के हित के लिए कर्तव्य-बुद्धि से) अपने स्वार्थ या हित को निछावर कर दे। दूसरे के भले के लिए अपने हित या लाभ का विचार न रखनेवाला। स्वार्थ त्याग करनेवाला।

**स्वार्थ-पंडित**—वि०[सं०] बहुत बड़ा स्वार्थी या खुदगरज। परम स्वार्थी।

**स्वार्थपर**—वि० [सं०] जो केवल अपना स्वार्थ या मतलब देखता हो। अपना स्वार्थ या मतलब साधनेवाला। स्वार्थी। खुदगरज।

**स्वार्थ-परता**—स्त्री०[सं०] स्वार्थपर होने की अवस्था या भाव। खुदगरजी।

**स्वार्थ परायण**—वि० [सं०] [भाव० स्वार्थ-परायणता] १. जो अपने स्वार्थों की सिद्धि में रत रहता हो। २. अन्य कामों या बातों की अपेक्षा अपने स्वार्थ को अधिक महत्त्व देनेवाला।

**स्वार्थ-परायणता**—स्त्री०[सं०] स्वार्थ-परायण होने की अवस्था, गुण या भाव। स्वार्थपरता। खुदगरजी।

**स्वार्थ-साधक**—वि०[सं०] अपना मतलब साधनेवाला। अपना काम निकालनेवाला। खुदगरज। स्वार्थी।

**स्वार्थ-साधन**—पु०[सं०] अपना प्रयोजन सिद्ध करना। अपना काम या मतलब निकालना।

**स्वार्थांध**—वि०[सं०] [भाव० स्वार्थांधता] १ जो अपने स्वार्थ के फेर में पड़कर अंधा हो रहा हो और भले-बुरे का ध्यान न रखता हो।

**स्वार्थिक**—वि०[सं०]१ स्वार्थ से संबंध रखनेवाला। २ जिससे अपना अर्थ या काम निकले। ३. लाभदायक। (प्रॉफ़िटेबुल) ४. वाच्यार्थ से युक्त (कथा या वाक्य)। ५. अपने अर्थ या धन से किया या लिया हुआ (कार्य या पदार्थ)।

**स्वार्थी**(न्)—वि०[सं०]१. मात्र अपने स्वार्थों की सिद्धि चाहनेवाला। २ जिनमें परमार्थ-भावना न हो। खुदगरज।

**स्वाल**†—पुं०=सवाल।

**स्वाल्प्य**—पु०[सं०] स्वल्प होने की अवस्था या भाव। स्वल्पता। वि०=स्वल्प।

**स्वावलंबन**—पु०[सं०] अपनी समर्थता से आत्म-निर्भर होने की अवस्था, गुण या भाव।

**स्वावलंबी**(न्)— वि० [सं०] १ जिसमें स्वावलंबन की भावना हो। २. जिसे अपनी समर्थता से आत्म-निर्भरता अर्जित की हो।

**स्वाश्रित**—वि०[सं०] =स्वावलंबी।

**स्वास**†—पुं०=श्वास (साँस)।

**स्वासा**—स्त्री०[सं०] श्वास। साँस। श्वास।

**स्वास्थ्य**—पु०[सं०]१. स्वस्थ अर्थात् नीरोग होने की अवस्था, गुण या भाव। नीरोगता। आरोग्य। तन्दुरुस्ती। जैसे—उनका स्वास्थ्य आज-कल अच्छा नहीं है। २. मन की वह अवस्था, जिसमें उसे कोई उद्वेग, कष्ट या चिन्ता न हो। (हेल्थ)

**स्वास्थ्यकर**—वि०[सं०] जिससे स्वास्थ्य अच्छा बना रहे। तदुरुस्त करनेवाला। आरोग्य-वर्द्धक। जैसे—देवदार स्वास्थ्यकर स्थान है।

**स्वास्थ्य-निवास**—पु० [सं०] विशेष रूप से निश्चित या निर्मित वह स्थान, जहाँ जाकर लोग स्वास्थ्य-सुधार के लिए रहते हैं। आरोग्य-निवास। (सैनेटोरियम)

**स्वास्थ्य-रक्षा**—स्त्री०[सं०] ऐसा स्वच्छतापूर्ण आचरण और व्यवहार जिससे स्वास्थ्य अच्छा बना रहे, बिगड़ने न पावे। (सैनिटेशन)

**स्वास्थ्य-विज्ञान**—पु०[सं०] वह विज्ञान या शास्त्र जिसमें शरीर को नीरोग और स्वस्थ बनाये रखने के नियमों और सिद्धांतों का विवेचन हो। (हाईजीन)

**स्वास्थ्यिकी**—स्त्री०=स्वास्थ्य-विज्ञान।

**स्वाहा**—अव्य० [सं०] एक शब्द जिसका प्रयोग देवताओं को हवि देने के समय मंत्रों के अन्त में किया जाता है। जैसे—इदाय स्वाहा। वि०१ जो जलाकर नष्ट कर दिया गया हो। २ जिसका पूरी तरह से अन्त या नाश कर दिया गया हो। पूर्णत. विनष्ट। जैसे—कुछ ही दिनों में उसने लाखों रुपयों की सम्पत्ति स्वाहा कर दी।

स्त्री० अग्नि की पत्नी।

**स्वाहा-ग्रसन**—पु० [सं० स्वाहा+ग्रसन] देवता। (डिं०)

**स्वाहापति**—पु०[सं०] स्वाहा के पति, अग्नि देवता।

**स्वाहा-प्रिय**—पु०[सं०] अग्नि।

**स्वाहाभुक्**—पु० [सं० स्वाहाभुज्] देवता।

**स्वाहार**—पु०[सं०] अच्छा आहार या भोजन।

**स्वाहार्ह**—वि० [सं०]१ स्वाहा के योग्य। हवि पाने के योग्य। २ जो स्वाहा किया अर्थात् पूरी तरह से जलाया या नष्ट किया जा सके या किया जाने को हो।

**स्वाहावान**—पु०[सं०] देवता।

**स्विन्न**—भू० कृ०[सं०] १ जिसे स्वेद या पसीना निकला हो। २. जिसका स्वेद या पसीना निकाला गया हो। ३ पिघला या पिघलाया हुआ।

**स्विन्न**—वि० [सं०]१ पसीने से भरा हुआ। २ उबला, पका या सीझा हुआ।

**स्वीकरण**—पु० [सं०]१ स्वीकार या अंगीकार करना। अपनाना। २. कबूल करना। मानना। ३ स्त्री को पत्नी के रूप में ग्रहण करना।

**स्वीकरणीय**—वि०[सं०] स्वीकृत किये या माने जाने के योग्य।

**स्वीकर्त्तव्य**—वि०[म०]=स्वीकरणीय।

**स्वीकर्त्ता**(र्तृ)—वि० [सं०] स्वीकार करनेवाला। मंजूर करनेवाला।

**स्वीकार**—पु०[सं०]१ अपना बनाने या अपनाने की क्रिया या भाव। अंगीकार। २ ग्रहण करना। लेना। परिग्रह। ३. कोई बात मान लेना। कबूल या मंजूर करना। ४. किसी बात की प्रतिज्ञा करना या वचन देना।

**स्वीकारना***—स० [ सं० स्वीकार ] १. स्वीकार करना। मानना। २ ग्रहण करना। लेना। ३ अपनाना।

**स्वीकारात्मक**—वि०[सं०] (कथन) जिसमें कोई बात स्वीकृत की गई या मानी गई हो अथवा उसकी पुष्टि की गई हो। (अफर्मेटिव)

**स्वीकारोक्ति**—स्त्री०[सं०] वह कथन या बयान, जिसमें अपना अपराध स्वीकृत किया जाय। दोष, अपराध, पाप आदि की स्वीकृति। अपने मुँह से कहकर यह मान लेना कि हमने अमुक अनुचित या बुरा काम किया है। (कन्फ़ेशन)

**स्वीकार्य**—वि० [सं०] जो स्वीकृत किया या माना जा सके। माने जाने के योग्य।

**स्वीकृच्छ्र**—पु०[सं०] प्राचीन काल का एक प्रकार का व्रत, जिसमे तीन-तीन दिन तक क्रमशः गोमूत्र, गोबर तथा जौ की लप्सी खाकर रहते थे।

**स्वीकृत**—भू० कृ०[सं०] [भाव० स्वीकृति]१. जिसे स्वीकार कर लिया गया हो। जिसके संबध में स्वीकृति दी जा चुकी हो। (सैं कशनड) २ ग्रहण किया या माना हुआ। प्रतिपन्न। मंजूर। (ऐक्सेप्टेड) ३ जिसे आधिकारिक रूप से मान्यता मिली हो। मान्य। मान्यता-प्राप्त। (रिकग्नाइज्ड)

**स्वीकृति**—स्त्री०[सं०] १. स्वीकार करने की क्रिया या भाव। सम्मति। उदा०—(क) राष्ट्रपति ने उस बिल पर अपनी स्वीकृति दे दी है। (ख) उनकी स्वीकृति से यह नियुक्ति हुई है। २ प्रस्ताव, शर्तें आदि मान लेने या उपहार, देन आदि ग्रहण करने की क्रिया या भाव। (ऐक्सेप्टेन्स) ३. बड़ों, अधिकारियो आदि के द्वारा छोटो की प्रार्थना आदि मान लेने की क्रिया या भाव। मजूरी। (सैंक्शन)

कि० प्र०—देना।—माँगना।—मिलना।—लेना।

**स्वीय**—वि०[सं०] [स्त्री० स्वीया] स्वकीय। अपना।

पु० स्वजन। आत्मीय। संबंधी। नाते-रिश्तेदार।

**स्वीया**—स्त्री०[सं०] स्वकीया।

**स्वे***—वि०=स्व।

**स्वेच्छया**—अव्य०[सं०] अपनी इच्छा से और बिना किसी दबाव के। स्वेच्छापूर्वक। (वालन्टरिली) जैसे—स्वेच्छया किया हुआ काम।

**स्वेच्छा**—स्त्री०[स०] अपनी इच्छा। अपनी मर्जी। जैसे—वे सब काम स्वेच्छा से करते हैं।

**स्वेच्छाचार**—पु०[स०] भले-बुरे का ध्यान रखे बिना मन-माना आचरण करना। जो जी मे आये, वही करना। यथेच्छाचार।

**स्वेच्छाचारिता**—स्त्री०[स०] स्वेच्छाचार का भाव या धर्म।

**स्वेच्छाचारी (रिन्)**—वि० [स०] [स्त्री० स्वेच्छाचारिणी] स्वेच्छाचार अर्थात् मन-माना काम करनेवाला। निरकुश। अबाध्य। जैसे—वहाँ के राज-कर्मचारी बहुत स्वेच्छाचारी हैं।

**स्वेच्छा-मृत्यु**—वि० [सं०] १ अपनी इच्छा से आप मरनेवाला। २. जिसने मृत्यु को इस प्रकार वश में कर रखा हो कि अपनी इच्छा से ही मरे, इच्छा न हो तो न मरे।

पु० भीष्म पितामह, जिन्हें उक्त प्रकार का मनोबल या शक्ति प्राप्त थी।

**स्वेच्छा-सेवक**—पु० [सं०] [स्त्री० स्वेच्छा-सेविका] दे० 'स्वयसेवक'।

**स्वेच्छित**—भू० कृ०[स०] जो किसी की अपनी इच्छा के अनुकूल या अनुरूप हो। मन-चाहा।

**स्वेटर**—पुं० [अ०] बनियाइन या गंजी आदि की तरह का एक प्रकार का ऊनी पहनावा, जो कमीज के ऊपर तथा कोट आदि के नीचे पहना जाता है।

**स्वेत***—वि०=श्वेत।

**स्वेत-रंगी**—स्त्री० [सं० श्वेत+हिं० रंगी] कीर्ति। यश। (डिं०)

**स्वेद**—पुं०[सं०]१. पसीना। २. साहित्य में, रोष, लज्जा, हर्ष, श्रम आदि से शरीर का पसीने से भर जाना, जो एक सात्विक अनुभाव माना गया है। ३. भाप। वाष्प। ४. वह प्रक्रिया, जिससे कोई वस्तु भाप आदि की सहायता से आर्द्र या तर की जाती हो। (बाथ) जैसे—उष्मा-स्वेद। (देखें) ५ गरमी। ताप।

**स्वेदक**—वि०[सं०] पसीना लानेवाला। प्रस्वेदक।

पु० १. कातिसार लोहा। २. दे० 'प्रस्वेदक'।

**स्वेदकारी**—वि० [स०]=स्वेदक।

**स्वेदज**—वि०[स०] २. पसीने से उत्पन्न होनेवाला। २. गर्म भाप या उष्ण वाष्प से उत्पन्न होनेवाला (जूँ, लीक, खटमल, मच्छर आदि कीडे-मकोडे)।

**स्वेद जल**—पु०[स०] पसीना। प्रस्वेद।

**स्वेदन**—पु०[स०] [भू० कृ० स्वेदित] १ पसीना निकलना। २. पसीना निकालना या लाना। ३ औषधियाँ शोधने का एक यत्र। (वैद्यक)

**स्वेदनत्व**—पु० [स०] स्वेदन का गुण, धर्म या भाव।

**स्वेदनिका**—स्त्री० [स०] १ तवा। २ रसोई-घर। ३ अरक, शराब आदि खीचने का भभका।

**स्वेदांबु**—पु०[स०]=स्वेद जल (पसीना)।

**स्वेदापन**—पु०[स०] रोम-कूप। लोम छिद्र।

**स्वेदित**—भू० कृ०[स०]१ स्वेद या पसीने से युक्त। २ जिसे किसी प्रकार की भाप से बफारा दिया गया हो।

**स्वेदी (दिन्)**—वि०[स०] पसीना लानेवाला। प्रस्वेदक।

**स्वेद्य**—वि०[स०] जिसे पसीना लाया जा सके या लाया जाने को हो।

**स्वेष्ट**—वि०[स०] जो अपने आप को इष्ट या प्रिय हो।

**स्वै**—वि०[स० स्वीय] अपना। निज का। (डिं०)

सर्व०=सो।

**स्वैच्छिक**—वि० [सं०]१ जो किसी की अपनी या निजी इच्छा के अनुसार हो। २ किसी की निजी इच्छा से सम्बन्ध रखनेवाला। (वॉलिंटरी)

**स्वैर**—वि०[स०] १. अपने इच्छानुसार चलनेवाला। मन-माना काम करनेवाला। यथेच्छाचारी। २. मनमाना। यथेच्छा। ३ धीमा। मन्द।

**स्वैरचार**—पु०[स०] मन-माना आचरण। स्वेच्छाचार।

**स्वैरचारिणी**—स्त्री० [स०]१ मनमाना काम करनेवाली स्त्री। २. व्यभिचारिणी स्त्री।

**स्वैरचारी (रिन्)**—वि०[स०] [स्त्री० स्वैरचारिणी] मनमाना काम करनेवाला। स्वेच्छाचारी। निरकुश।

**स्वैरता**—स्त्री०[स०] मन-माना आचरण करने की अवस्था या भाव।

**स्वैरवर्ती**—वि०[स० स्वैरवर्तिन्]=स्वेच्छाचारी।

**स्वैरचुल**—वि० [स०] स्वेच्छाचारी।

**स्वैराचार**—पु०[स०] [वि० स्वैराचारी] ऐसा मनमाना आचरण जो नैतिक, धार्मिक, सामाजिक आदि नियमो या बधनो की उपेक्षा करके किया जाय।

**स्वैराचारी (रिन्)**—वि०[स०] [स्त्री० स्वैराचारिणी] १ मन-माना काम करनेवाला। २. व्यभिचारी। लपट।

**स्वैरालाप**—पु० [स०] मौज में आकर की जानेवाली इधर-उधर की बात-चीत। गप-शप।

**स्वैरिश्री**—स्त्री०=सैरिध्री।

**स्वैरिणी**—स्त्री०[स०] व्यभिचारिणी स्त्री। पुश्चली।

**स्वैरिता**—स्त्री० [स०] यथेच्छाचारिता। स्वच्छदता। स्वाधीनता।

**स्वैरी (रिन्)**—पु०[स०] [स्त्री० स्वैरिणी]१. वह जो मनमाना आचरण करता हो। २ दुराचारी। बदचलन। ३. व्यभिचारी।

**स्वोदय**—पु०[स०] किसी आकाशीय पिंड का विशेष स्थान पर उदित होना।

**स्वोपार्जन**—पु०[स० स्व+उपार्जन] [भू० कृ० स्वोपार्जित] स्वयं या अपने बाहु-बल से अपने लिए कुछ अर्जन करना। स्वय प्राप्त करना या कमाना।

**स्वोपार्जित**—वि०[स०] स्वय उपार्जन किया हुआ। अपना कमाया हुआ। जैसे—उनकी सारी सपत्ति स्वोपार्जित है।

## ह

ह—देवनागरी वर्णमाला का तेंतीसवाँ व्यजन, जो उच्चारण तथा भाषा-विज्ञान की दृष्टि से कंठ्य घोष, महाप्राण तथा ऊष्म माना जाता है।

**हंक**†—स्त्री० दे० 'हाँक'।

**हँकड़ना**†—अ० [हिं० हाँक] [भाव० हँकड़ाव] १ झगड़े के समय शेखी-भरे शब्दो में ललकारना। २ अकड़ना।

**हँकड़ान**—स्त्री० =हँकड़ाव।

**हँकड़ाव**—पु० [हिं० हँकड़ना] हँकड़ने की क्रिया या भाव।

**हँकनी**—स्त्री० [हिं० हाँकना] १ हाँकने की क्रिया या भाव। हँकान। २ वह पतली या छोटी छड़ी, जिससे पशुओ को हाँकते है। ३ हाँका (पशुओ का)।

**हँकरना**—अ० १. =हँकड़ना। २. =अकड़ना।

**हँकराना**—स० [हिं० हँकारना का प्रे०] किसी को हँकारने मे प्रवृत्त करना। उदा०—मोहन ग्वाल बाल हँकराए।—सूर।

†अ०=हँकारना।

**हँकराव(र)**†—पु० [हिं० हाँक] १. पुकारने या बुलाने की क्रिया या भाव। २ बुलाहट। बुलावा। ३ निमत्रण। ४.=हँकवा।

**हँकवा**—पु० [हिं० हाँकना] १. हाँकनेवाला। २ वह व्यक्ति जो ढोल आदि पीटकर जगल में सोये या छिपे हुए जानवरो को अपने स्थान से भगाता हो और शिकारी की दिशा मे ले जाता हो। ३. शिकार किये जाने के उद्देश्य से जगली जानवरों को डरा तथा घेर कर मचान की ओर भागने मे प्रवृत्त करने की क्रिया। हाँका।

**हँकवाना**—स० [हिं० हाँकना का प्रे०] हाँकने का काम किसी दूसरे से कराना

सयो० क्रि० देना।

स० [हिं० हाँक] हाँक लगाने, अर्थात् पुकारने का काम किसी से कराना। हाँक दिलवाना।

**हँकवैया**†—वि० [हिं० हाँकना+वैया (प्रत्य०)] हाँकनेवाला।

वि० [हिं० हँकवाना] हँकवानेवाला।

**हँका**—पु० [हिं० हाँक] १. हाँक। पुकार। २ ललकार।

क्रि० प्र०—देना।—लगाना।

**हँकाई**—स्त्री० [हिं० हाँकना] हाँकने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

**हँकाना**†—स० १.=हँकवाना। २.=हाँकना।

**हँकार**—स्त्री० [हिं० हँकारना] १. जोर से पुकारने या बुलाने की क्रिया या भाव। पुकार। हाँक। २ उक्त प्रकार से पुकारने पर होनेवाला शब्द।

**मुहा०—हाँक पड़ना**=बुलाहट होना।

३ वीरो की ललकार।

**हँकार**†—पु० =अहकार।

पु० हुकार।

**हँकारना**†—अ० [स० हुकार या हिं० हाँक] १ जोर से आवाज देकर किसी दूर के मनुष्य को पुकारना या बुलाना। हाँक देना या लगाना।

†स० =हँकरना।

†अ०=हुकार करना।

**हँकारा**—पु० [हिं० हँकारना] १ पुकार। हाँक। २ निमत्रण। बुलाहट।

क्रि० प्र०—आना।—जाना।—भेजना।

**हँकारी**—पु० [हिं० हँकार+ई (प्रत्य०)] १ वह व्यक्ति जो किसी को बुलाने के लिए उसके यहाँ भेजा जाता हो। २ दूत।

†ए० हुंकार।

**हंकालना**†—स०=हाँकना। (मध्य प्रदेश)

**हंकुआ**†—पु० १ =हँकवा। २ =हाँका।

**हंगल**—पु० [?] कश्मीर के जगलो मे रहनेवाला एक प्रकार का बारहसिंघा।

**हंगाम**—पु० [फा०] १ समय। काल। २ इरादा। विचार। ३ ताकत। बल। शक्ति। ४ बुद्धिमत्ता। समझदारी। ५ धैर्य।

**हंगामा**—पु० [फा० हगाम] १ सभा-समिति मे या मेला-तमाशा देखने के लिए एकत्र होनेवाले लोगो में उत्तेजना फैलने पर होनेवाली अव्यवस्था तथा शोरगुल। २ उक्त के फलस्वरूप होनेवाला उपद्रव या उत्पात। ३ आज-कल राजनीतिक क्षेत्र मे अचानक उत्पन्न होनेवाली कोई ऐसी विकट स्थिति, जिससे देश की शाति, सुरक्षा आदि मे बाधा पड़ने की सभावना हो। (एमर्जेंसी)

**हंगामी**—वि० [फ०] हगामा सबंधी। (एमर्जेंट)

**हंगोरी**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का बहुत बड़ा पेड़, जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है।

**हंस***—पु०=हस।

**हंटर**—पु० [अ०] लबा चाबुक। कोडा।

क्रि० प्र०—जमाना।—मारना। लगाना।

**हँडकुलिया**—स्त्री० [हिं० हँडिया+कुलिया] १ लकड़ी, धातु आदि के बने हुए तवा, परात, चकला, बेलन आदि वे छोटे-छोटे बरतन, जिनसे बच्चे खेलते है। २. लाक्षणिक अर्थ में, चूल्हे-चौके का सामान।

**हँडना**—अ० [स० हिडन] १. पैदल चलते हुए चारों तरफ घूमना-फिरना। २. व्यर्थ इधर-उधर घूमना या मारे-मारे फिरना। ३ वस्त्रो आदि का अच्छी तरह से अधिक समय तक उपयोग मे आते रहना।

**हंडर**—पु०=हडरदेट।

**हंडरवेट**—पु० [अ० हंड्रेडवेट] एक अँगरेजी तौल, जो ११२ पौंड या प्राय १ मन १४॥ सेर की होती है।

**हँडवना**—अ० [स० रमण ?] १. गौओ आदि का रँभाना। २ जोर का शब्द या घोष करना। उदा०—हरि का सतु मुरै हाड दैत सगली सैन तराई।—कबीर।

**हडा**—पु० [स० भाडक] [स्त्री०अल्पा० हडी, हँडिया, हाँडी] १ पानी रखने या भरने का पीतल या ताँबे का एक प्रकार का बडा बरतन। २ एक विशिष्ट प्रकार की वह बडी रोशनी, जिसके ऊपर हडे के आकार की शीशे की बहुत बडी चिमनी लगी रहती है। (गैस)

**हँडाना**—स० [स० अम्यटन] १ घुमाना। फिराना। २ कपडे आदि पहनकर उनका उपयोग या व्यवहार करना।

**हँडिक**—पु० [देश०] तौलने का बाट। (सुनार)

**हँडिका**—स्त्री० [स०] हँडिया। हाँडी।

**हँडिया**—स्त्री० [स० भाडिका] १. बडे लोटे के आकार का तथा चौडे मुँहवाला मिट्टी का बरतन, जिसमे चावल, दाल आदि पकाते या कोई चीज रखते हैं। हडी। हाँडी।

**मुहा०—हँडिया चढ़ाना**=कोई चीज पकाने के लिए हाँडी मे डालकर आँच पर रखना।

२ उक्त प्रकार का शीशे का एक पात्र, जिसे शोभा के लिए छत में लटकाते और उसके अन्दर मोमबत्ती जलाते है। ३. जौ, चावल आदि अनाज सड़ाकर बनाई हुई शराब।

**हंडी**†—स्त्री०=हँडिया।

**हंत**—अव्य० [स०] खेद या शोक-सूचक शब्द। जैसे—हा हत !

**हंतकार**—पु०[स० हत√कृ (करना)+अण्] अतिथि, सन्यासी आदि के लिए निकाला हुआ भोजन। हडा।

**हंतव्य**—वि० [स०√हन् (हिंसा करना)+तव्य] १. जिसका हनन किया जा सकता हो या किया जाने को हो। २ (आज्ञा या आदेश) जिसका उल्लघन हो सकता हो।

**हंता(तृ)**—वि० [स०√हन् (हिंसा करना)+तृच्] [स्त्री० हत्री] हनन अर्थात् हत्या करने या मार डालनेवाला। जैसे—पितृ-हता।

**हंतोक्ति**—स्त्री० [स० ष० त०] १ हत शब्द का प्रयोग। हतकार। २ सहानुभूति। ३ करुणा।

**हंत्री**—वि० स्त्री० [सं० हन्+ङीप्] हनन या वध करनेवाली।

**हँथीरी***—स्त्री०=हथेली।

**हँथौड़ा**†—पु० १.=हथौड़ा। २. हथ-कडा।

**हंद**—पु० [सं० हंतकार] १. पुरोहित या ब्राह्मण द्वारा अपने यजमान के यहाँ से नियमित रूप से (प्राय प्रतिदिन) लाया जानेवाला भोजन। २. पुरोहित या ब्राह्मण के लिए अलग निकाला हुआ भोजन।

**हँफनि**—स्त्री० [हिं० हाँफता] हाँफने की क्रिया या भाव। हाँफ। क्रि० प्र०—चढ़ना।—मिटना।—मिटाना।

**हंबा**—स्त्री० [स०] गाय, बैल आदि का रँभाना।

†अव्य० सहमति या स्वीकृति का सूचक शब्द। हाँ। (राज०)

**हंभा**—स्त्री० [स०] गाय या बैल आदि के बोलने का शब्द। रँभाने का शब्द।

**हंस**—पुं० [स०√हस्+अच् पृषो० सिद्ध] [स्त्री० हंसिनी, हसं] १. बतख की तरह का एक प्रसिद्ध जलपक्षी, जो नीर-क्षीर का विलगाव करनेवाला और सरस्वती का वाहन माना गया है। २ सूर्य। ३ ब्रह्मा। ४. माया से निर्लिप्त, मुक्त और शुद्ध आत्मा, जो चैतन्य-रूप होती है। जीवात्मा। ५ जीवनी-शक्ति। प्राण।

**मुहा०—हंस उड़ जाना**=शरीर से प्राण निकल जाना। उदा०—ऐंचे बासन टिकै न पानी। उडि गो हंस काया कुम्हिलानी।—कबीर। ६. ज्ञानी और भक्त पुरुष। ७. दशनामी सन्यासियो का एक भेद। ८. प्राण वायु (आत्मा, विशुद्ध रूप मे)। ९ पैर मे पहनने का नूपुर नामक गहना। १० ईश्वर। नारायण। ११ विष्णु का एक अवतार। १२. लोक-रजक और श्रेष्ठ राजा। १३ आर्य। विद्वान्। १४ गुरु-मत्र या दीक्षा देनेवाला गुरु। १५ कामदेव। १६ एक प्रकार का नृत्य। १७. प्राचीन भारत मे एक प्रकार का प्रासाद, जो प्राय हंस के आकार का होता था; और जिसके ऊपर ऊँचा शृग बना होता था। १८. घोडा। १९. भैसा। २० ईर्ष्या या द्वेष की मनोवृत्ति। २१ पर्वत। पहाड़। २२. एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक भगण और दो गुरु होते हैं। इसे 'पंति' भी कहते है। यथा—गम खरारी। २३ दोहे के नवें भेद का नाम जिसमे १४ गुरु और २० लघु वर्ण होते हैं। (पिंगल)

**हंसक**—पु० [सं० हस√कै+क] १. हस पक्षी। २ पैर की उँगलियों मे पहना जानेवाला बिछुआ नाम का गहना।

**हंस-कूट**—पु० [स० ब० स०] बैल का डिल्ला।

**हंस-गंधर्व**—पु० [स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**हंस-गति**—स्त्री० [सं० ष० त०] १. हंस के समान सुन्दर तथा धीमी चाल। २ ब्रह्मत्व या सायुज्य को प्राप्ति। ३ एक प्रकार का मात्रिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण मे २० मात्रएँ होती है। मंजुतिलका।

**हंसगदा**—स्त्री० [स० ब० स०] प्रिय भाषिणी स्त्री।

**हंस-गामनी**—स्त्री० [स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**हंस-गर्भ**—पु० [स०] एक प्रकार का रत्न।

**हंस-गामिनी**—वि० स्त्री० [स० हस्√गम् (जाना)+णिनि-ङीप] जिसकी चाल हंस की चाल के समान मंद तथा सुन्दर हो।

स्त्री० संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**हंस-गिरि**—पुं० [स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**हंसचौपड़**—पुं० [सं० हस+हि० चौपड] चौपड़ का एक प्रकार का पुराना खेल।

**हंसजा**—स्त्री० [सं० हंस√जन् (पैदा होना)+टाप्] (सूर्य की कन्या) यमुना।

**हँसता-मुखी**†—वि०=हँस-मुख।

**हस-दीपक**—पु० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**हंस-वेह**—स्त्री० [स० उपमि० स०] पाँचों तत्त्वों से रहित व्यक्ति का वह रूप, जिसमें वह परम प्रकाश तथा चैतन्य-स्वरूप ब्रह्म का अंश रहता है।

**हंस-ध्वनि**—स्त्री० [स०] संगीत में विलावल ठाठ की एक रागिनी।

**हंस-नादिनी**†—वि० स्त्री० [स० हस√नद् (बोलना)+णिनि-ङीप्] मधुर भाषिणी।

**हंसन**—स्त्री०=हँसनि (हँसी)।

**हंस-नटनी**—स्त्री० [स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**हंसना**—अ० [स० हसन] १. आनद, तृप्ति आदि प्रकट करने की एक क्रिया, जिसमें चेहरा खिल उठता है, आँखें कुछ फैल जाती हैं, मुँह खुल जाता है और गले मे से ध्वनियाँ निकलने लगती हैं।

**मुहा०—हँसते-हँसते**→(क) प्रसन्नता से। (ख) सहज मे। **हँसना-खेलना या हँसना बोलना**=प्रसन्नता और आमोद-प्रमोद की बातचीत करना। **हँस कर बात उड़ाना**=तुच्छ या साधारण समझकर हँसते हुए कोई बात टाल देना।

२. दिल्लगी या परिहास करना। ३. घर, स्थान आदि का इतना सुन्दर लगना कि हँसता हुआ-सा जान पड़े।

स० क्रि० हँसी या उपहास करना। हँसी उड़ाना। उदा०—हँसा गया मै, हँसने गया था।—मैथिलीशरण।

**मुहा०—(किसी पर) हंसना**=किसी की हँसी उड़ाना। उपहास करना। **हंसा जाना**=उपहासास्पद बनना। ऐसा मूर्ख बनना कि सब लोग हँसी उड़ावें।

**हंस-नाद**—पु० [सं०] संगीत में. कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**हंस-नारायणी**—स्त्री० [स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**हंसनि**†—स्त्री०=हँसी।

**हंस-नीलांबरी**—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**हंस-पंचम**—पु० [स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**हंस-पदी**—स्त्री० [सं० ब० स० ङीप्] एक प्रकार की लता।

**हंस-पादी**—स्त्री० [स०] =हंसपदी।

**हंस-भूषणी**—स्त्री० [स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**हंसभ्रमरी**—स्त्री० [स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**हंस-मंगला**—स्त्री० [स०] एक संकर रागिनी।

**हंस-मंजरी**—स्त्री० [स०] संगीत में, काफी ठाठ की एक प्रकार की रागिनी।

**हंसमाला**—स्त्री० [सं० ष० त०] १. हंसों की पंक्ति। २ एक प्रकार का वर्ण-वृत्त।

**हँस-मुख**—वि० [हिं० हँसना+स० मुख] १. जिसका मुख सदा हँसता हुआ-सा रहता हो। २ जो खूब हँसी-मजाक की बातें किया करता हो, हँसी-मजाक की बातें सुनकर प्रसन्न होता हो।

**हंस-रथ**—पु० [सं० ब० स०] ब्रह्मा (जिनका वाहन हंस है)।

**हंसराज**—पु० [स०] १ एक प्रकार की जड़ी या बूटी जो पहाडो में चट्टानो से लगी हुई मिलती है। सेमलपत्ती। २ एक प्रकार का अगहनी धान।

**हँसली**—स्त्री० [स० असली] १. गरदन के नीचे और छाती के ऊपर की धनुाकार हड्डी। २. गले में पहनने का एक गहना, जो प्राय. उक्त हड्डी के समानान्तर रहता है।

**हंसवती**—स्त्री० [सं० हंस+मतुप् ङीप् म→व] १. एक प्रकार की लता। २ एक प्रकार की रागिनी।

**हंस-वाहन**—पु० [स० ब० स०] ब्रह्मा (जिनकी सवारी हंस है)।

**हंस-वाहिनी**—स्त्री० [स० हस√वह् (ढोना)+णिनि-ङीप्] सरस्वती जिनकी सवारी हस है।

**हंस-श्री**—स्त्री० [स०] संगीत में खम्माच ठाठ की एक प्रकार की रागिनी।

**हंस-सुता**—स्त्री० [स० ष० त०] यमुना नदी। उदा०—हंससुता की सुन्दर कगरी।—सूर।

**हँसाई**—स्त्री० [हिं० हँसना] १ हँसने की क्रिया या भाव। २ उपहास-पूर्ण निन्दा। जैसे—यह तो जग ए मे हँसाई का काम है।

**हंसाधिरूढा**—स्त्री० [स० हस-अधि√रुह् (चढ़ना)+क्त—टाप्] सरस्वती का एक नाम।

**हंसानदी**—स्त्री० [स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**हंसाना**—स० [हिं० हँसना] किसी को हँसने में प्रवृत्त करना। ऐसी बात कहना जिससे दूसरा हँसे।

सयो० क्रि०—देना।

**हंसाय**†—स्त्री०=हँसाई।

**हंसारूढ़**—पु० [स० हस+अधि√रुह् (चढ़ना)+क्त] ब्रह्मा (जो हंस पर सवार होते हैं)।

**हंसारूढ़ा**—स्त्री० [स०] सरस्वती।

**हंसाल**—पु० [स०] झूलना नामक मात्रिक रामदडक छद का एक भेद।

**हंसालि**—स्त्री० [स०] =हसाल (छन्द)

**हंसावधूत**—पु० [स० हस+अवधूत] तत्र के अनुसार चार प्रकार के अवधूतो मे से एक, जो पूर्ण होने पर 'परमहंस' तथा अपूर्ण रहने पर 'परिव्राजक' कहलाते हैं।

**हंसावर**—पु० [स० हस] बत्तख, हंस आदि की जाति का एक सुन्दर पक्षी, जिसकी गरदन और टाँगे लबी होती हैं।

**हंसावली**—स्त्री० [स० ष० त०] हसो की पंक्ति।

**हंसिका**—स्त्री० [स० हस+कन्-टाप्] हस की मादा। हंसी।

**हंसिनि**—स्त्री०=हंसी (मादा हंस)।

**हंसिया**—स्त्री० [स० हस] १ लोहे का एक धारदार औजार जो अर्द्ध-चन्द्राकार होता है और जिससे खेत की फसल, तरकारी आदि काटी जाती है।

**विशेष**—इस आकार-प्रकार के कुछ औजार जो चमड़ा छीलने आदि के तथा कुछ और कामो मे भी आते है।

२. हाथी के अकुश के आगे का उक्त आकार का अंश।

**हंसी**—स्त्री० [हिं० हंसना] १ हँसने की क्रिया, ध्वनि या भाव।

**पद—हंसी-खुशी**=प्रसन्नता। **हंसी ठट्ठा**=विनोद। मजाक।

क्रि० प्र०—आना।—निकलना।

मुहा०—**हँसी छूटना**=हँसी आना।

२ परिहास। दिल्लगी। मजाक। ठट्ठा।

**मुहा०—(किसी को) हँसी उड़ाना**=व्यग्यपूर्ण निन्दा या उपहास करना। **हँसी या हंसी-खेल समझना**=किसी काम या बात को साधारण या तुच्छ समझना। हँसी मे उड़ाना=साधारण समझकर हँसते हुए टाल देना। **हंसी में ले जाना**=गभीर बात को हँसी की बात समझना।

३. हँसने-हँसाने के लिए होनेवाली बातें। मजाक। दिल्लगी। ४ किसी को तुच्छ या हेय समझकर उसके संबध में कही जानेवाली विनोदपूर्ण बात। उपेक्षापूर्ण हास्य की बातें। ५ लोक में होनेवाली उपहासपूर्ण निंदा या बदनामी। जैसे—ऐसा काम मत करो, जिससे चार आदमियों में हँसी हो।

**हंसी**—स्त्री० [सं० हस+ङीप्] १. हंस की मादा। स्त्री-हंस। २. पंजाब में अच्छी गायों की एक नसल या जाति। ३. २२ अक्षरों की एक वर्ण-वृत्ति, जिसके प्रत्येक चरण में दो मगण, एक तगण, तीन नगण, एक सगण और एक गुरु होता है।

**हँसीला**†—वि० [हिं० हँसना+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० हँसीली] १ हँसता हुआ या हँसता रहनेवाला। हास्य-प्रिय। २. हँसी-मजाक करनेवाला। हँसोड़ा।

**हंसुआ**†—वि० [हिं० हँसना] हँसनेवाला। हँसोड़। उदा०—हँसुआ ठाकुर खेसुआ चोर।—घाघ।†

†पु०=हँसिया।

**हंसुली**—स्त्री०=हँसली।

**हँसेल**†—स्त्री० [देश०] नाव खींचने की रस्सी। गून।

**हँसोड़**—वि० [हिं० हँसना+ओड (प्रत्य०)] १. जो खूब तथा ठहाका लगाकर हँसता हो। २. जो दूसरों को खूब हँसाता हो।

**हंसोर**†—वि०=हँसोड़।

**हँसौंहाँ**—वि० [हिं० हँसना+औंहाँ (प्रत्य०)] १ हँसी से भरा हुआ। हँसता हुआ। जैसे—हँसौंही सूरत। २ हँसने वाला।

**ह**—पु० [सं०] १. शून्य। २ आकाश। ३. स्वर्ग। ४. ज्ञान। ५. ध्यान। ६ चन्द्रमा। ७ शिव। ८. जल। पानी। ९. कल्याण। मंगल। १०. विष्णु। ११. चिकित्सक। वैद्य। १२ कारण। सबब। १३. कल्याण। मंगल। १४. रक्त। खून। १५. डर। भय। १६ घोड़ा। १७ युद्ध। लड़ाई १८ अभिमान। घमंड। १९. योग में एक प्रकार का आसन। २०. हास। हँसी।

**हंअना**†—स० [सं० हनन] १ हनन करना। मार डालना। २ नष्ट करना। उदा०—लोभ छोभ मोह गर्व शम शम ना हई।—केशव

†अ०[अनु० हाहा से] आश्चर्य करना। चकित होना। उदा०—हौ हिय रहति हई छई-नई जुगुति जग जोय।—बिहारी।

**हईं**—पुं० [सं० हयिन्, हयी] घुड़सवार।

**हउँ***—सर्व०=हौं (मैं)।

अ०=हौं (हूँ)।

**हउमं***—पु० [सं० अहं] १. अहं का भाव या विचार। उदा०—तउ मनु मानै जाते हउमै जहई।—कबीर। २. अहंकार। घमंड।

**हक**—वि० [अ० हक़] १. जो झूठ न हो। सच। सत्य। २. जो धर्म, न्याय आदि की दृष्टि से उचित या ठीक हो। जैसे—हक तो यह है कि उसकी चीज उसे मिल जानी चाहिए।

**पद—हक-नाहक**। (देखें)

पु०. ३. ईश्वर। परमात्मा। उदा०—कहे एक इन्हीं सुने जबकि दो। कि हक ने जबाँ एक दी कान दो।—कोई शायर। ४. उचित, न्यायसंगत पक्ष या बात। ५. लेने या अपने पास रखने, काम में लाने आदि का अधिकार। इख्तियार। जैसे—इस मकान पर हमारा भी हक है।

क्रि० प्र०—दबाना।—दिलाना।—माँगना।—मारना।

६. कोई काम करने-कराने का अधिकार। जैसे—इस बीच में तुम्हें बोलने का हक नहीं है। ७ न्याय, प्रथा आदि के अनुसार प्राप्त अधिकार। जैसे—ब्याह-शादी के समय नौकर-चाकरों का भी कुछ हक होता है। ८ किसी का कोई ऐसा अंग या पक्ष, जिसके साथ लाभ और हानि भी सबद्ध हो।

**पद—हक में**=(लाभ या हित के विचार से) पक्ष में। जैसे—उनकी मदद करना तुम्हारे हक में अच्छा नहीं होगा।

**मुहा०—हक अदा करना**=कर्तव्य का पालन करना। फर्ज पूरा करना।

पु० [अनु०] १. वह धक्का जो सहसा चकपका उठने या घबरा उठने से हृदय में लगता है। धक। २. शोर-गुल। हो-हल्ला। (राज०) उदा०—होइ पीरिहक गँगहण।—प्रिथीराज।

**हकतलफी**—स्त्री० [अ० हक़+फा० तलफ़ी] किसी के हक या अधिकार पर होनेवाला आघात।

**हकबक**—वि० [अनु०] हक्का-बक्का। चकित।

**हकदार**—पु० [अ० हक़+फा० दार] [भाव० हकदारी] वह जिसे किसी कार्य या चीज का कोई हक हासिल हो। स्वत्व या अधिकार रखनेवाला। जैसे—इस जायदाद के कई हकदार हैं।

**हक-नाहक**—अव्य० [अ० हक+फा० नाहक़] १ बिना उचित-अनुचित का विचार किये। जबरदस्ती। धींगा-धींगी से। २ बिना किसी कारण के। व्यर्थ।

**हकपरस्त**—वि० [अ०+फा०] [भाव० हक-परस्ती] १ ईश्वर को माननेवाला। आस्तिक। २ न्याय और सत्य के पक्ष में रहनेवाला।

**हक-बक्का**—वि०=हक्का-बक्का।

**हक-बकाना**—अ० [अनु० हक्का-बक्का] अचानक घटित होनेवाली विलक्षण बात पर स्तंभित होना। भौचक्का होना।

**हक-मालिकाना**—पु० [अ०+फा०] वह हक या अधिकार, जो किसी चीज के मालिक होने के कारण प्राप्त होता है।

**हक-मौकसी**—पु० [अ०] वह अधिकार, जो पैतृक परम्परा से प्राप्त हो।

**हकला**—वि० [हिं० हकलाना] रुक-रुक कर बोलनेवाला। हकलानेवाला।

**हकलाना**—अ० [अनु०] [भाव० हकलाहट] स्वरनाली के ठीक काम न करने या जीभ के तेजी से न चलने के कारण बोलने के समय बीच-बीच में अटकना। रुक-रुककर बोलना।

**हकलापन**—पु० [हिं०] हकला होने की अवस्था, धर्म या भाव।

**हकलाहट**—स्त्री०=हकलापन।

**हकलाहा**†—वि०=हकला।

**हक-शफा**—पुं० [अ० हक्के-शुफ़ः =पड़ोसी का अधिकार] जमीन, मकान आदि खरीदने का वह हक, जो गाँव के हिस्सेदारों अथवा पड़ोसियों को औरों से पहले प्राप्त होता है। पूर्व-क्रय। (प्रिएम्पशन)

**हक-शिनास**—वि० [अ०+फा०] [भाव० हक-शिनासी] जो न्याय, सत्य आदि का पालक और समर्थक हो।

**हक-शुफा**—पु० [अ०+फा०]=हक-शफा।

**हकार**—पुं० [सं० ह+कार] 'ह' अक्षर या वर्ण।

**हकारत**—स्त्री० [अ०] १. 'हकीर' अर्थात् तुच्छ होने की अवस्था या भाव। तुच्छता। २ किसी तुच्छ वस्तु के प्रति होनेवाला घृणायुक्त भाव। जैसे—वह सब को हकारत की नजर से देखता अर्थात् तुच्छ समझता है।

**हकारना**—स० [देश०] १. पाल तानना या खड़ा करना। २. झंडा या निशान उठाना। (लश०)

†स०=हाँकना।

**हकीकत**—स्त्री० [अ० हकीकत] १. वास्तविक स्थिति। असल और सच्ची बात। तथ्य। वास्तविकता। २. वास्तविक विवरण या वृत्तांत।

पद—हकीकत में=वास्तव में। वस्तुत।

मुहा०—हकीकत खुलना=वास्तविक रूप सामने आना। ३. इस्लाम, विशेषत सूफी संप्रदाय में साधना की वह चौथी और अंतिम स्थिति, जिसमें साधक सत्य का ज्ञान प्राप्त करके द्वैत भाव से रहित हो जाता और परमात्मा में लीन होकर परम पद प्राप्त कर लेता है। विशेष—इससे पहले की तीन स्थितियाँ शरीअत, तरीकत और मारफत कहलाती है।

**हकीकी**—वि० [अ० हकीकी] १ सच्चा। ठीक। २ रिश्ते या सम्बन्ध के विचार से, सगा। जैसे—हकीकी भाई=सगा भाई। ३. जो हकीकत अर्थात् ईश्वर से सम्बन्ध रखता हो अथवा उसकी ओर उन्मुख हो। जैसे—इश्क हकीकी=ईश्वर के प्रति होनेवाला प्रेम।

**हकीम**—पु० [अ०] १. अनेक विषयो, विशेषत तत्त्वज्ञान या दर्शन-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता और पंडित। जैसे—हकीम लुकमान। २. यूनानी चिकित्सा-पद्धति से चिकित्सा करनेवाला वैद्य। जैसे—हकीम अजमल खाँ।

**हकीमी**—स्त्री० [अ० हकीम+ई](प्रत्य०)] १. यूनानी आयुर्वेद। यूनानी चिकित्सा-शास्त्र। २ हकीम का पद या व्यवसाय।

वि० हकीम सम्बन्धी। हकीम का। जैसे—हकीमी इलाज, हकीमी नुसखा।

**हकीयत**—स्त्री० [अ० हकीयत] १. 'हक' का गुण, धर्म या भाव। २ अधिकार। स्वत्व। ३. ऐसी सम्पत्ति, जिस पर न्यायत किसी का अधिकार होना उचित हो। ४. संपत्ति आदि के अधिकारी होने की अवस्था या भाव।

**हकीर**—वि० [अ० हकीर] तुच्छ। हेय।

**हकूक**—पु० [अ० हकूक] 'हक' का बहुवचन। अनेक और कई प्रकार के स्वत्व या अधिकार।

**हकूमत**†—स्त्री०=हुकूमत।

**हक्क**—पु० [अनु०] हाथी को बुलाने का शब्द।

†पु०=हक।

**हक्का**—पु० [देश०] लाठी द्वारा आघात करने का एक प्रकार। (लखनऊ)

**हक्काक**—पु० [?] वह कारीगर, जो नगीने तराशता तथा जड़ता हो।

**हक्का-बक्का**—वि० [अनु०] १. अप्रत्याशित घटना देख या बात सुनकर जो घबरा तथा शिथिल हो गया हो। २ आश्चर्यचकित।

**हक्कार**—पुं० [सं०] चिल्ला कर बुलाने का शब्द। पुकार।

**हगनहटी**†—स्त्री० [हिं० हगना] १. मल त्याग करने की इन्द्रिय। गुदा। २. पाखाना फिरने की जगह।

**हगना**—अ० [देश०] १ गुदा के मार्ग से मल त्याग करना।

मुहा०—हग मारना=भयभीत होकर पीछे हटना।

स० १ गुदा मार्ग से कोई चीज प्रसव करना। जैसे—मुरगी सोने के अंडे हगती है। २. दबाव आदि के फलस्वरूप दे देना।

**हगनेडी**†—स्त्री०=हगनहटी (गुदा)।

**हगाना**—स० [हिं० हगना का स०] १. किसी से हगने की क्रिया कराना। पाखाना फिरने के लिए प्रवृत्त करना। जैसे—बच्चे को हगाना।

सयो० क्रि०—देना।

**हगास**—स्त्री० [हिं० हगना+आस (प्रत्य०)] हगने की आवश्यकता या प्रवृत्ति।

सयो० क्रि०—लगना।

**हगोड़ा**—वि० [हिं० हगना+ओड़ा (प्रत्य०)] [स्त्री० हगोडी] १ बहुत हगनेवाला। बहुत झाड़ा फिरनेवाला। २ भय के कारण जिसका पाखाना निकल जाता हो। बहुत बड़ा डरपोक।

**हगू**—वि० [हिं० हगना+ऊ (प्रत्य०)] हगोडा।

**हचक**—स्त्री० [हिं० हचकना] हचकने की क्रिया भाव या आघात।

**हचकना**†—अ० [अनु० हच हच] भार पड़ने पर चारपाई, गाड़ी आदि का झोंका खाना या बार-बार हिलना। धचकना।

**हचका**†—पु० [हिं० हचकना] धीरे से लगनेवाला धक्का। धचका।

सयो० क्रि०—देना।—मारना।—लगाना।

**हचकाना**—स० [हिं० हचकना का स०] झोंका देकर हिलाना।

**हचकोला**—पु० [हिं० हचकना] १ वह धक्का जो गाड़ी, चारपाई आदि के हिलाये-डुलाये जाने पर लगे। धक्का। २ किसी चलती या हिलती हुई चीज के कारण रह-रहकर लगनेवाला हलका झटका या धक्का। जैसे—रेलगाड़ी या पालकी पर बैठने से हचकोले उठते हैं।

क्रि० प्र०—आना।—लगना।

**हचना**†—अ०=हिचकना।

**हज**—पु० दे० 'हज्ज'।

**हजम**—वि० [अ० हज्म] १ (खाद्य पदार्थ) जो खा लिये जाने पर आमाशय में पच गया हो। २ लाक्षणिक रूप में, जो अनुचित रूप से ले या दबाकर रख लिया गया हो।

**हजर**—पु० [अ०] पत्थर।

**हजरत**—पु० [अ० हजरत] १ महात्मा। महापुरुष। जैसे—हजरत मुहम्मद साहब। २ आदर-सूचक सम्बोधन। जैसे—हजरत, कहाँ चले? ३. बहुत बड़ा धूर्त, धूर्त या लुच्चा व्यक्ति। (उपहास और व्यंग्य) जैसे—वे भी बड़े हजरत हैं।

**हजरत सलामत**—पु० [अ०] १. बादशाहों या नवाबो के लिए परम आदर-सूचक संबोधन का पद। २. बादशाहो का वाचक पद।

**हजल**—पु० [अ० हज्ल] फूहड़ या भद्दा परिहास।

**हजाज**—पु० दे० 'हिजाज'।

**हजाम**—पु०=हज्जाम।

**हजामत**—स्त्री० [अ०] १. सिर के बाल काटने और दाढ़ी के बाल मूँडने का काम। क्षौर।

क्रि० प्र०—बनाना।

२ सिर या दाढ़ी के बढ़े हुए बाल, जिन्हें कटाना या मुंडाना हो। जैसे—बीमारी के दिनों मे महीनों हजामत बढ़ती रही।

क्रि० प्र०—बढ़ाना।—बनवाना।

३ कोई ऐसी क्रिया, जिसमें जबरदस्ती किसी से कुछ ले लिया जाय, अथवा और किसी प्रकार उसकी दुर्दशा की जाय। उदा०—कल मियाँ हरनाम के फिरते सबों को मूँडते। शेख के कूचे में आज उनकी हजामत बन गई।—कोई शायर।

क्रि० प्र०—बनना।—बनाना।

**हजार**—वि० [फा० हज़ार] १ जो गिनती मे दस सौ हो। २. बहुत अधिक।

मुहा०—हजार हो =सब कुछ होने पर भी। जैसे—हजार हो, तो भी वह अपने ही आदमी हैं।

क्रि० वि० कितना ही। चाहे जितना अधिक हो। जैसे—तुम हजार कहो, तुम्हारी बात मानता कौन है?

पु० दस सौ की सूचक संख्या, जो इस प्रकार लिखी जाती है—१०००।

**हजार-दास्तां**—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की बढिया बुलबुल।

वि० बहुत-सी अच्छी-अच्छी और बढ़िया बातें कहनेवाला।

**हजारह**।—वि० [फा० हज़ारह] १ हजारो। सहस्रो। २ बहुत अधिक।

**हजारा**—वि० [फा० हज़ारा] (फूल) जिसमे हजार या बहुत अधिक पँखड़िया हो। सहस्रदल। जैसे—हजार गेंदा।

पु० १ एक प्रकार का बडा बरतन, जिसके मुँह पर बहुत से छेदोंवाला ढक्कन होता है, और जिससे गमलो आदि में पानी डाला जाता है। २ फव्वारा। ३ एक प्रकार की आतिशबाजी।

**हजारी**—पु० [फा० हज़ारी] १ एक हजार सिपाहियो का सरदार। वह सरदार या नायक, जिसके अधीन एक हजार फौज हो। मुगल-शासन मे सरदारों को दिया जानेवाला एक ओहदा या पद।

पद—हजारी बाजारी=बड़े सरदारो से लेकर साधारण नागरिको तक सब। सर्वसाधारण।

वि० १ हजार सबधी। जैसे—चार हजारी, तीस हजारी। २ बहुत से पुरुषो से सबध रखनेवाली स्त्री से उत्पन्न वर्ण-सकर। दोगला।

**हजारो**—वि० [फा० हज़ार+हिं० ओ (प्रत्य०)] १. कई हजार। सहस्रो। २ बहुत अधिक।

**हजूम**—पु० [अ०] किसी स्थान पर इकट्ठे हुए बहुत-से लोग। भीड़।

**हजूर**।—पु०=हुजूर।

**हजूरी**—स्त्री० दे० 'हुजूरी'।

**हजो**—स्त्री० [अ० हज्व] अपकीर्ति। निन्दा। बुराई।

**हज्ज**—पु० [अ०] १. मन में किसी बात का किया जानेवाला दृढ़ सकल्प। २ किसी पवित्र स्थान की की जानेवाली परिक्रमा। ३. मुसलमानों मे, मक्के और मदीने की तीर्थ-यात्रा। जैसे—मौलाना साहब दो बार हज्ज कर आये हैं।

**हज्जाम**—पु० [अ०] हजामत बनानेवाला। नाई। नापित।

**हज्जामी**—स्त्री० [हिं० हज्जाम] हज्जाम या नाई का धंधा या पेशा।

**हज्म**—वि० दे० 'हजम'।

**हठ**।—पु०=हठ।

**हटका**†—स्त्री० [हिं० हटकना] हटकने अर्थात् मना करने या रोकने की क्रिया या भाव। मनाही। वर्जन।

मुहा०—हटक मानना=मना करने पर किसी काम से बाज आना। निषेध का पालन करना।

**हटकन**—स्त्री०=हटक।

**हटकना**—स०[हिं० हट=दूर होना+करना] १ निषेध या वारण करना। मना करना। २. किसी दिशा मे बढते हुए चौपायों को उस दिशा मे बढ़ने से रोकना तथा दूसरी ओर मोडना।

**हटका**†—पु० [हिं० हटकना=रोकना] वह अर्गल या डडा, जो दरवाजे को खुलने से रोकने के लिए लगाया जाता है।

**हटकि***—स्त्री० [हि० हटकना] १. हठात्, जबरदस्ती। २. बिना कारण।

**हटतार**†—पु० [?] वह डोरा, जिसमे माला के दाने पिरोये रहते हैं।

**हटताल**†—स्त्री०=हडताल।

**हटना**—अ०[स० घट्टन्]? अपने स्थान से खिसक या चलकर इधर-उधर होना। एक जगह से सरककर हुए दूसरी जगह जाना। जैसे—आग के पास से जरा हटकर बैठो।

पद—हटना-बढ़ना =अपने स्थान से कुछ इधर-उधर होना या सरकना। २ जो काम या बात कोई कर रहा हो या जिसे करने का समय आया हो, उससे दूर होना, बचना या विमुख होना। मुँह मोडना। जैसे—वह लडने-भिडने से नही हटता। ३ किसी के मना करने या रोकने पर किसी काम या बात से रुकना या विमुख होना। जैसे—लाख मना करो, यह लडका खेल-कूद से किसी तरह हटता ही नही। ४ अभ्यास, प्रतिज्ञा वचन आदि का पालन करने से रुकना या हिचकना। विचलित होना। जैसे—मैंने जो कह दिया उससे कभी हटूँगा नही। ५ किसी काम या बात का समय टलना। स्थगित होना। ६ न रह जाना। दूर होना। मिटना। जैसे—चलो, तुम्हारे सिर से बला हटी।

सयो० क्रि०—जाना।

†स०=हटकना (मना करना)। उदा०—देत खुल बार बार कोउ नहिं हटत।—सूर।

**हटनी**—स्त्री० [हिं० हटना+उडना] मालखभ की एक कसरत, जिसमे पीठ के बल होकर ऊपर जाते हैं।

**हटबया**—पु० [हिं० हाट+बया (तौला)] स्त्री० हटबयी] वह जो हाट में दूकान लगाता हो। हाटवाला।

**हटवा**—पु०[हिं० हाट] हाट में दूकान लगानेवाला व्यक्ति।

**हटवाई**—स्त्री०[हिं० हाट] हाट में जाकर सौदा लेना या बेचना। क्रय-विक्रय।

पु० हाट में बैठकर सौदा बेचनेवाला।

स्त्री०[हिं० हटवाना] हटवाने की क्रिया, भाव या पारिश्रमिक।

**हटवाना**—स०[हिं० हटाना का प्रे०] कोई चीज किसी को किसी स्थान से हटाने में प्रवृत्त करना।

**हटवार**†—पु०=हटवा।

**हटवैया**—वि० [हिं० हटवाना+वैया (प्रत्य०)] हटवानेवाला।

**हटाना**—स०[हिं० हटना का स०]१. किसी को उसके स्थान से हटने में प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना, जिससे कुछ या कोई अपनी जगह

से हटे। जैसे—(क) भीड़ हटाना। (ख) कुरसी या चौकी हटाना। संयो० क्रि०—देना।—लेना।

२ आक्रमण या बल-प्रयोग करके अथवा किसी उपाय से दूर करना। जैसे—शत्रु को सीमा पर से हटाना। ३. किसी को उसके काम या पद से अलग करना। जैसे—इस दफ्तर से चार आदमी हटाये गये हैं। ४. ऐसा उपाय करना, जिससे कोई काम या बात दूर हो जाय या प्रस्तुत न रहे। जैसे—यह बखेड़ा अपने सिर से हटाओ।

संयो० क्रि०—देना।

**हटिया**—स्त्री०=हटिया।

**हटिया**—स्त्री०[हिं० हाट] १. छोटा हाट। छोटा बाजार। जैसे—लोहटिया=लोहे का छोटा बाजार।

**हठी**†—स्त्री०=हट्टी (दूकान)। उदा०—प्रेमहटी का तेल मँगा लें, जग रह्या दिन ते राती।—मीराँ।

**हदुआ**†—वि०[हिं० हाट] हाट सम्बन्धी। हाट का। जैसे—हटुआ माल।

पुं०१ हाट में बैठकर सौदा बेचनेवाला व्यक्ति। २. दूकानदार। ३. मड़ियों में अनाज तौलनेवाला कर्मचारी। बया।

**हटैता**—पु०[हिं० हाट+ऐता (प्रत्य०)] [स्त्री० हटैती] १. हाट में बिकने के लिए आई हुई चीज या जीव। २. वह जिसे हाट में से खरीदा गया हो।

**हटौती**—स्त्री०[हिं० हाड+औती (प्रत्य०)] शरीर की गठन। जैसे—उसकी हटौती बहुत अच्छी है।

**हट्ट**—पु०[स० √हट् (चमकना)+ट तेत्यम्] १ बाजार। २ दूकान।

**हट्ट-बौरक**—पुं०[स० हट्टबौर+क] वह उचक्का, जो हाट में से चीजें चुरा ले जाता हो।

**हट्टा**—पु० [स० हट्ट] १. बाजार। हाट। जैसे—पसर-हटटा। २. मार्ग। रास्ता। जैसे—चौहट्टा।

वि०=हृष्ट।

**पद—हट्टदा-कट्टदा।**

**हट्टा-कट्टा**—वि०[स० हृष्ट+काष्ठ] [स्त्री० हट्टी-कट्टी] हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा।

**हट्टी**—स्त्री०[सं० हट्ट] दूकान। (पश्चिम)

**हठ**—पुं०[√हठ् (टेक रखना)+अच्] [वि० हठी, हठीला]१ बहुत आग्रहपूर्वक और बराबर यही कहते रहना कि अमुक बात ऐसी ही है अथवा ऐसे ही होगी या होनी चाहिए। अड़। जिद। टेक।

**मुहा०—हठ ठानना या पकड़ना**=किसी बात के लिए अड़ना। किसी बात के लिए हठ या जिद करना। दुराग्रह करना। **हठ मँडिना**†=हठ पकड़ना। **(किसी का) हठ रखना**=किसी की हठपूर्वक कही हुई बात पूरी करना या मान लेना।

२ दृढ़तापूर्वक की हुई प्रतिज्ञा या संकल्प। ३. बल-प्रयोग। ४ शत्रु पर पीछे से किया जानेवाला आक्रमण। ५. किसी काम या बात की अनिवार्यता।

**हठ-धर्म**—पुं०[सं० मध्य० स०] अपने हठ पर अड़े या जमे रहना।

**हठ-धर्मी**—स्त्री० [स०] १. सत्य-असत्य, उचित-अनुचित का विचार छोड़कर अपनी बात पर जमे रहना। दूसरे की बात जरा भी न मानना। दुराग्रह। २. अपने धर्म, मत या संप्रदाय के संबंध में होनेवाला कट्टरपन, जो विचारों की संकीर्णता का सूचक हो।

**हठना***—अ०[हिं० हठ+ना (प्रत्य०)]१ हठ करना। जिद पकड़ना। दुराग्रह करना। २ दृढ़ प्रतिज्ञा या संकल्प करना।

**हठ-योग**—पु० [स० मध्य० स०, तृ० त०] योग का वह अंग या प्रकार जिसका प्रचलन नाथ-पंथियों ने अपनी साधना के लिए किया था और जिसमें ईश्वर-प्राप्ति के लिए त्रेती, धोती आदि क्रियाओं, कठिन मुद्राओं और आसनों का विधान है। इसमें शरीर के अन्दर कुण्डलिनी और अनेक प्रकार के चक्रों का भी अधिष्ठान माना गया है।

**विशेष**—इनके सबसे बड़े आचार्य योगी मत्स्येन्द्रनाथ (मछंदरनाथ) और उनके शिष्य गोरखनाथ माने जाते हैं।

**हठ-विद्या**—स्त्री० [स०] हठयोग।

**हठ-शील**—वि० [स० ब० स०] [भाव० हठशीलता] हठ करनेवाला। हठी।

**हठात्**—अव्य०[स०] १ लोगों के मना करने पर भी, अपना हठ रखते हुए। हठपूर्वक। २ बल प्रयोग करते हुए। जबरदस्ती। बलात्। ३. अचानक। सहसा। ४ निश्चित रूप से। अवश्य। जरूर।

**हठाकार**—पु०[स०] अपने हठ के अनुसार काम करते रहने का भाव।

**हठि***—अव्य० [हिं० हठ] १ हठपूर्वक। २ जबरदस्ती। उदा०—तौ तुम मोहि दरसु हठि दीन्हा।—तुलसी।

**हठी(ठिन्)**—वि० [स० हठ+इनि] हठ करनेवाला। जिद्दी। टेकी।

**हठीला**—वि०[स० हठ+ईला (प्रत्य०)] [स्त्री० हठीली] १ हठ करनेवाला। हठी। जिद्दी। २ विरोध, विवाद आदि के समय अपनी प्रतिज्ञा या स्थान पर दृढ़तापूर्वक जमा रहनेवाला। उदा०—ऐसो तोहिं न बूझिए हनमान हठीले।—तुलसी।

**हड़**—पु० [हिं० हाड=अस्थि] हिं० 'हाड' (अस्थि) का वह संक्षिप्त रूप, जो उसे यौ० पदों के आरम्भ में लगने पर प्राप्त होता है। जैसे—हड़-जोड़, हड़-फूटन।

स्त्री०=हर्रे (देखें)।

**हड़-कंप**—पु०[हिं० हाड+कँपना] भारी हल-चल या उथल-पुथल। तहलका। जैसे—बाजार में आग लगते ही सारे शहर में हड़-कंप मच गया।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

**हड़क**—स्त्री०[अनु०]१. पागल कुत्ते के काटने पर पानी के लिए होने वाली गहरी आकुलता।

क्रि० प्र०—उठना।

२ तीव्र आकुलता। उत्कट चाह।

क्रि० प्र०—लगना।

**हड़कना**—अ०[हिं० हड़क] किसी प्रकार के अभाव से दुखी होना। तरसना।

**हड़का**—पु०[हिं० हड़कना] हड़कने की अवस्था, क्रिया या भाव।

**हड़काना**—स०[देश०]१. किसी को इस प्रकार से प्रेरित तथा उत्तेजित करना कि वह किसी पर आक्रमण करने के लिए उसके पीछे लग जाय। २. तरसाना।

†अ० =हटकना।

**हड़काया**—वि०[हिं० हड़काना]१ जिसे हड़का कर किसी के पीछे उस पर आक्रमण करने के उद्देश्य से लगाया गया हो। २. बावला। पागल। ३. अत्यन्त विकल।

**हड़काव**—पु०[हिं० हड़कना] जल-सन्त्रास। (दे०)

**हड़-गिल्ला**†—पु०=हड़गीला।

**हड़-गीला**—पु०[हिं० हाड़+गिलना ?] एक प्रकार की चिड़िया। चनियारी।

**हड़-जोड़**†—पु० [हिं० हाड़=हड्डी+जोड़ना] एक प्रकार का पौधा जिसके पत्ते शरीर पर चोट लगने पर बाँधे जाते हैं। कहते हैं कि इससे टूटी हुई हड्डी भी जुड़ जाती है।

**हड़ताल**—स्त्री०[स० हृट=दूकान+ताला] दुःख, विरोध या असंतोष प्रकट करने के लिए कल-कारखानों, कार्यालयों आदि के कर्मचारियों या जनसाधारण का सब कारबार, दूकानें आदि बंद कर देना। (स्ट्राइक)

स्त्री० दे० 'हरताल'।

**हड़तालो**—पु०[हिं० हड़ताल] वह व्यक्ति या वे लोग, जो हड़ताल कर रहे हों।

वि० हड़ताल-सम्बन्धी।

**हड़ना**†—अ० [हिं० पड़ना] तौल में जाँचा जाना।

**हड़प**—वि०[अनु०]१ मुँह में डालकर निगला या पेट में उतारा हुआ। २. छिपाकर या बेईमानी से उड़ाया और अपने अधिकार में किया हुआ।

**हड़पना**—स०[अनु० हड़प]१. मुँह में डालकर निगलना या पेट में उतारना। २ किसी की चीज अनुचित रूप से लेकर दबा बैठना।

संयो० क्रि०—जाना।—लेना।

**हड़प्पा**—पु०[हिं० हड़पना] हड़पने की क्रिया या भाव।

क्रि० प्र०—मारना।

पु०[ ?] सिन्धु प्रदेश का एक प्राचीन जनपद, जहाँ एक बहुत प्राचीन सभ्यता के भग्नावशेष मिले हैं।

**हड़-फूटन**†—स्त्री० [हिं० हाड़+फूटना] शरीर में होनेवाला दर्द, जो हड्डियों के भीतर तक जान पड़े। हड्डियों तक की पीड़ा।

**हड़-फूटनी**†—स्त्री० [हिं० हड़-फूटन] जमगदड़ (जिसकी हड्डी की गुरिया पैर के दर्द में पहनी जाती है)।

**हड़-फोड़**—पु०[हिं० हाड़+फोड़ना] एक प्रकार की चिड़िया।

**हड़-बड़**†—स्त्री०=हड़बड़ी।

**हड़बड़ाना**—अ० [अनु०] जल्दी मचाते हुए आतुर होना। जैसे—अभी हड़बड़ाओ मत, गाड़ी आने में देर है।

संयो० क्रि०—जाना।

स० जल्दी मचाते हुए कोई काम करने के लिए किसी से कहना या किसी को विवश करना।

संयो० क्रि०—देना।

**हड़बड़िया**—वि०[हिं० हड़बड़ी+इया (प्रत्य०)] हड़बड़ी करनेवाला। जल्दी मचानेवाला। उतावला।

**हड़बड़ी**—स्त्री० [अनु०] १. हड़बड़ाते हुए मचाई जानेवाली जल्दी। २. वह स्थिति, जिसमें हड़बड़ाते हुए कोई काम करना पड़ता हो। जैसे—वह हड़बड़ी में पुस्तक वहीं छोड़ आया।



**हड़हड़ाना**†— अ०[अनु०] हड़-हड़ शब्द होना।

स० हड़-हड़ शब्द उत्पन्न करना।

†अ०, स०=हड़बड़ाना।

**हड़हा**†—वि०[हिं० हाड़] [स्त्री० हड़ही] जिसकी देह में हड्डियाँ ही रह गई हों। बहुत दुबला-पतला।

पु०१. वह जिसने किसी की हत्या की हो। हत्यारा। २ जंगली साँड।

**हड़ा**—पु०[अनु०]१. चिड़ियों को उड़ाने का शब्द, जो खेत के रखवाले करते हैं। २ पुरानी चाल की पत्थर-कला नामक बन्दूक।

**हड़ावर**†—पु० [हिं० हाड=आषाढ मास] पहनने के वे कपड़े जो नौकरों को गरमी के मौसिम के लिए दिए जाते हैं। 'जड़ावर' का विपर्याय।

†पु०=जड़ावल।

**हड़ावल**—स्त्री० [हिं० हाड़=स० अस्थि] १ हड्डियों की पंक्ति या समूह। २ हड्डियों का ढाँचा। ३ हड्डियों की माला।

**हड़ीला**—वि० [हिं० हाड़+ईला (प्रत्य०)] १ जिसमें हड्डी या हड्डियाँ हों। २ जिसके शरीर में हड्डियाँ ही रह गई हों या दिखाई देती हों, अर्थात् बहुत दुबला-पतला।

**हड्ड**—पु० [स०√हद्+ड नेत्वम्[पृषो० सिद्ध] अस्थि हड्डी। हाड़।

**हड्डा**—पु० [स० इडाभिक्षा] ईख या उसके नाम का कीड़ा। दे० 'ईख'।

**हड्डी**—स्त्री० [स० अस्थि, प्रा० अट्ठि, अत्थि] १ रीढ़वाले जीव-जन्तुओं के शरीर के ढाँचे का वह कठोर अंग या तत्त्व, जो बहुत कड़ा और सफेद होता है, प्रायः नली के रूप का होता है और जोड़ों के बीच में रहता है।

**पद—पुरानी हड्डी**=वृद्ध आदमी का शरीर, जो नई पीढ़ी के नवयुवकों की तुलना में अधिक दृढ़ और पुष्ट माना जाता है।

**मुहा०—हड्डी उखड़ना**=हड्डी का अपने जोड़ों पर से खिसक या हट जाना जिससे बहुत कष्ट होता है। **(किसी की) हड्डियाँ तोड़ना**=बहुत बुरी तरह से मारना-पीटना।

२ कुल। वंश। खानदान। जैसे—हिंदुओं में हड्डी देखकर ब्याह किया जाता है।

**हणवंत**†—पु०=हनुमत्।

**हत**—भू० कृ० [स० √हन् (हिंसा करना)+क्त] १ वध किया हुआ। जो मारा गया हो। २. जिस पर आघात हुआ हो। आहत। ३. जो किसी बात या वस्तु से रहित या विहीन हो गया हो। जैसे—श्री-हत, हत-प्रभ। ४ जिस पर आघात या ठोकर लगी हो। ५ बिगड़ा हुआ। विकृत। ६. परेशान तथा दुःखी। ७ रोग-ग्रस्त। ८ छूआ हुआ। ९ गुणा किया हुआ। गणित।

**हतक**—स्त्री० [अ०] अपमान। बेइज्जती। हेठी।

पुं० [सं० हत] बहुत बड़ा अनर्थ या अनिष्ट। (पूरब)

**हतक-इज्जती**—स्त्री० [अ० हतक+इज्जत] दे० 'मानहानि'।

**हत-ज्ञान**—वि० [स० ब० स०] १ जिसका ज्ञान विकृत या शून्य हो गया हो। २. संज्ञा-शून्य।

**हत-दैव**—वि०[स० ब० स०] जिस पर दैव या ईश्वर का प्रकोप हुआ हो।

**हतना**—स० [स० हन+हि० ना (प्रत्य०)] १. हत्या करना। मार डालना। २. मारना। पीटना। ३ आघात करना। चोट लगाना।

उदा०—सीता-चरण चोंचि हति भागा।—तुलसी। ४. पालन न करना। न मानना। ५ भग करना। तोडना। उदा०—ज्यो गज फटिक सिला में देखत दसनानि डारत हति।—सूर।

**हृत-अभ**—वि० [स० ब० स०] जिसकी प्रभा (अर्थात्) काति या तेज नष्ट हो गया हो।

**हृत-बल**—वि० [स० ब० स०] १ जिसका बल नष्ट हो गया हो। २ शक्ति-विहीन। उदा०—यह देश प्रथम ही था हृत-बल।—निराला।

**हृत-बुद्धि**—वि० [स० ब० स०] बुद्धि-शून्य। मूर्ख।

**हृत-भागी**—वि० [सं० हृत+भाग्य] [स्त्री० हृतभागिन, हृतभागिनी] अभागा। भाग्य-हीन।

**हृत-भाग्य**—वि० [सं० ब० स०] भाग्य-हीन। बद-किस्मत। अभागा।

**हृतवाना**—स० [हि० हतना का प्रे०] हत्या या वध कराना। मरवा डालना।

**हृत-वीर्य**—वि० [स० ब० स०] १. जिसका वीर्य नष्ट हो चुका हो। २ बल-हीन।

**हृता**—वि० स्त्री० [स० हृत—टाप्] १. (स्त्री) जिसका चरित्र नष्ट हो गया हो। २ व्यभिचारिणी।

†अ० [स्त्री० हती] ब्रज भाषा में 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था।

**हृताई**—स्त्री० [हि० हतना] हत होने की अवस्था या भाव।

**हृतादर**—वि० [स०] जिसका आदर नष्ट हो गया हो। अनादृत।

**हृताना**†—स० [हि० हतना]=हतवाना।

†अ० मारा जाना।

**हृताश**—वि० [स० हत+आशा] जिसकी आशा नष्ट हो या मिट चुकी हो। भग्नाश।

**हृतोद्वास**—वि० [सं० ब० स०] १. जिसे कहीं से कोई आश्वासन या सान्त्वना न मिल रही हो। उदा०—माते प्रहार अब हृताश्वास।—निराला। २ हताश। उदा०—यह हृतोद्वास मन भार श्वास भर बहता।—निराला।

**हृताहत**—वि० [स० द्व० स०] हत और आहत। मारे गये और घायल।

**हृतियार**†—पु० =हथियार।

**हृतो***—अ० =हता (था)।

**हृतोत्तर**—वि० [स० ब० स०] जो उत्तर न दे सके। निरुत्तर।

**हृतोत्साह**—वि० [सं० ब० स०] जिसका उत्साह नष्ट हो चुका हो।

**हृत्त**†—पु०=हत्या।

**हृत्तलबदूर**—अव्य० [अ०] यथा-शक्ति। शक्ति भर।

**हृत्थ***—पु० =हाथ।

**हृत्था**—पु० [हि० हत्थ, हाथ] १. हाथ से चलाये जानेवाले बडे औजारो और छोटी कलों का वह हिस्सा, जिसे हाथ से पकडकर घुमाने या चलाने से वे चलते हैं। दस्ता। (हैंडिल) २. कुछ विशिष्ट प्रकार के ऐसे औजार, जो प्राय हाथ का-सा काम करते हैं। जैसे—(क) करघे में का हत्था जिसे चलाने से बुने हुए सूत आपस मे सट जाते हैं। (ख) नालियों में से खेतों मे पानी उलीचने का हत्था। ३. हथेली और पजे का वह छापा, जो मागलिक अवसरों पर ऐपन से दीवारों पर लगाया जाता है। ४. केले के फलों का बड़ा गुच्छा। पजा। ५ हाथ की वह स्थिति जिसमे उससे कोई चीज पकड़ी जाती है, या कोई विशिष्ट क्रियात्मक प्रयत्न किया जाता है।

**मुहा०—हत्थे पर से उखड़ना**=(क) पतग उडाते समय गुड्डी की नख परेते या हाथ के पास से कट जाती है। (ख) किसी काम, चीज या बात के सबध मे प्राप्ति, सिद्धि आदि के बहुत कुछ समीप आ जाने पर भी पूर्णतया विफल हो जाना।

†पु० [?] एक प्रकार का मद्दा मटमैला रग जिसमे कुछ पीलापन और कुछ लाली भी होती है।

**हृत्था-जड़ी**—स्त्री० [हि० हाथी+जड़ी] एक प्रकार का छोटा पौधा जिसकी पत्तियों का रस घाव, फोडे आदि पर और जहरीले जानवरो के डक लगने पर लगाया जाता है।

**हृत्था-जोड़ी**—स्त्री० [हि० हाथ+जोडना] सरकडे की वह जड, जो दो मिले हुए पजो के आकार की होती है।

**हृत्थि***—पु० हाथी।

**हृत्थी**—स्त्री० [हि० हत्था, हाथ] १ औजार या कल का छोटा हत्था। दे० 'हत्था'। २ पत्थर आदि के वे दो चौकोर छोटे टुकडे, जिन पर हाथ रखकर पहलवान लोग डड पेलते है। ३ वह लकडी जिससे कडाही में खौलता हुआ ऊख का रस चलाते हैं। ४ चमडे का वह टुकडा, जिसे छापी कपडे छापते समय हाथ मे लगा लेते हैं। ५ वह थैली, जिसे हाथ मे पहनकर साईस लोग घोडे का बदन पोछते है। ६ जुलाहो की वह लकडी, जिसमे पीतल के दाँत लगे रहते है और जो कपडा बुनते समय उसे ताने रहने के लिए करघे मे लगाई जाती है। ७ गुप्त रूप से और बुरे उद्देश्य से दिया जानेवाला प्रोत्साहन।

क्रि० प्र०—देना।

**हृत्थे**—अव्य० [हि० हाथ] हाथ से। द्वारा। जैसे—नौकर के हत्थे पुस्तक भिजी।

**मुहा०—(कोई चीज) हत्थे चढ़ना**=(क) हाथ मे आना। अधिकार मे आना। (ख) हस्तगत होना। मिलना। **(किसी काम का) हत्थे चढ़ना**=अभ्यास हो जाने पर किसी काम का सरलता से होते चलना।

**हृत्थे-दंड**—पु० [हि० हत्था+दड] वह दड (कसरत) जो ऊँची ईंट या पत्थर पर हाथ रखकर किया जाता है।

**हृत्या**—स्त्री० [स०] १ किसी को मार डालने की क्रिया। वध। खून।

**मुहा०—हृत्या लगना**=किसी को मार डालने का पाप लगना। २ अनजान में अथवा यों ही सयोगवश (मार डालने के उद्देश्य से नहीं) किसी के प्राण ले लेना। (होमीसाइड) ३ बहुत ही झगडे-बखेडे का या बिलकुल व्यर्थ का और कष्टदायक काम या बात।

**मुहा०—हृत्या टलना**=झझट दूर होना। **हृत्या (अपने) पीछे लगाना**=व्यर्थ की झझट या झगड़ा अपने जिम्मे लेना। **हृत्या सिर लेना**=हत्या पीछे लगाना। (दे०)

**हृत्या**†—वि०=हत्यारा।

**हृत्यारा**—वि० [स० हत्या+हि० आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० हृत्यारिन, हृत्यारी] दूसरों को जान से मार डालनेवाला। हिंसा करनेवाला।

**हृत्यारी**—स्त्री० [हि० हत्यारा] १ हत्या। हिंसा। वध। २ हत्या के फल-स्वरूप लगनेवाला पाप।

कि० प्र०—लगना।

३. हत्या करने का अपराध।

**हथ**†—पु०=हाथ।

उप० [हिं० हाथ] 'हाथ' का वह संक्षिप्त रूप, जो उपसर्ग के रूप में यौगिक शब्द के आरम्भ में लगता है। जैसे—हथ-कड़ी, हथ-गोला, हथ-बाँही, हथ लेवा आदि।

उप० [हिं० हाथी] हाथी का वह संक्षिप्त रूप, जो उपसर्ग के रूप में यौगिक शब्दों के आरम्भ में लगता है। जैसे—हथ-नाल, हथ-सार, आदि।

**हथ-उधार**—पु० [हिं० हाथ+उधार] वह कर्ज जो थोड़े समय के लिए यों ही बिना किसी प्रकार की लिखा-पढ़ी के लिया जाय। हथ-फेर।

कि० प्र०—देना।—माँगना।—लेना।

**हथ-कंडा**—पु० [हिं० हाथ+कंडा] १ हाथ से किये जानेवाले कामों में दिखाई पड़नेवाला कौशल और सफाई। २ कोई उद्देश्य सिद्ध करने का ऐसा कौशल, जो चालाकी या धूर्तता से युक्त हो।

कि० प्र०—दिखलाना।

**हथ-कड़ी**—संज्ञा० [हिं० हाथ+कड़ी] अपराधियों के हाथ में शासनिक अधिकारियों के द्वारा पहनाई या बाँधी जानेवाली वह कड़ी या जंजीर जिसका मुख्य उद्देश्य उन्हें कोई और अपराधपूर्ण काम करने से रोकना होता है।

कि० प्र०—डालना।—पड़ना।—लगना।—लगाना।

**हथ-करघा**—पु० [हिं० हाथ+करघा] कपड़ा बुनने का वह करघा, जो हाथ से (यांत्रिक बल से नहीं) चलाया जाता है। (हैंड-लूम)

**हथ-करा**—पु० [हिं० हाथ+करना] १. धुनिये की कमान में बँधा हुआ कपड़े या रस्सी का टुकड़ा, जिसे वह हाथ से पकड़ रहता है। २ चमड़े का वह दस्ताना, जो कँटीले झाड़ काटते समय हाथ में पहनते हैं।

**हथ-करी**—स्त्री० [हिं० हाथ+कड़ा] बढ़ई के किवाड़ों में लगा हुआ एक प्रकार का ताला, जो एक कड़ी से जुड़े हुए लोहे के दो कड़ों के रूप में होता है और दोनों ओर ताले के अँकुड़े की तरह खुला रहता है। इसी में हाथ डालकर कुंडी लगा दी जाती है।

†स्त्री०=हथकड़ी।

**हथ-कल**—स्त्री० [हिं० हाथ+कल] १ कोई ऐसी छोटी कल या यंत्र जो हाथ से चलाया जाता हो। २ लोहारों का एक प्रकार का पेंच-कस। ३ करघे की दो डोरियाँ जिनका एक छोर तो हत्थे के ऊपर बँधा रहता है और दूसरा लरघे में।

†स्त्री०=हथ-कड़ी।

**हथ-कोड़ा**—पु० [हिं० हाथ+कोड़ा] कुश्ती का एक पेंच।

†पुं०=हथ-कंडा।

**हथ-गोला**—पु० [हिं० हाथ+गोला] धातुओं पर हाथ से फेंका जानेवाला कोई विस्फोटक गोला। (ग्रेनेड, हैंड-बाम्ब) तोप से फेंके जानेवाले गोले से भिन्न।

**हथ-छुट**—वि० [हिं० हाथ+छूटना] जिसका हाथ मारने के लिए बहुत जल्दी छूटता या उठता है। जो बात-बात में दूसरों को पीटने लगता हो।

**हथ-चरी**†—स्त्री० [हिं० हाथ+चरना] लकड़ी की वह पटरी, जो नाव से जमीन तक लगाकर दो आदमी इसलिए पकड़े रहते हैं कि उस पर से होकर सवार लोग उतर जायँ।

**हथ-नार**†—स्त्री०=हथ-नाल।

**हथ-नाल**†—पु० [हिं० हाथी+नाल] वह तोप जो हाथियों पर रखकर चलाई जाती थी। गजनाल। उदा०—हल नालि हमाई कुकह बान कवि। —प्रिथीराज।

**हथनी**—स्त्री० [हिं० हाथी] १. मादा हाथी। २. तालाबों आदि के घाट पर की वह वास्तु-रचना, जो ऊपर की ओर बहुत ऊँची रहती और नीचे की ओर क्रमशः बड़ी-बड़ी सीढ़ियों के रूप में नीची होती जाती है।

**हथ-पान**—पु० [हिं० हाथ+पान] हथेली की पीठ पर पहनने का पान के आकार का एक गहना।

**हथ-फूल**—पु० [हिं० हाथ+फूल] १ हथेली की पीठ पर पहनने का एक जड़ाऊ गहना जो सिकड़ियों के द्वारा एक ओर तो अँगूठियों से बँधा रहता है, और दूसरी ओर कलाई से। हाथ-साँकला। हथ-सकर। २. एक प्रकार की आतिशबाजी।

**हथ-फेरी**—पु० [हिं० हाथ+फेरना] १. प्यार करते हुए शरीर पर हाथ फेरने की क्रिया। २. 'हथ-फेरी'। ३ दे० 'हथ उधार'।

**हथ-फेर**—स्त्री० [हिं० हाथ+फेरना] कभी यहाँ और कभी वहाँ चालाकी से भरी हुई की जानेवाली कारवाइयाँ। उदा०—बदमाशों की हथ-फेरियाँ दिन पर दिन बढ़ती जा रही थीं।—शौकत थानवी।

**हथ-बेंटा**—पु० [हिं० हाथ+बेंट] एक प्रकार की कुदाल जो खत में से गन्ने काटने के काम आती है।

**हथरकी**—स्त्री० [हिं० हाथ] चरखे की मूठिया जिसे पकड़कर चरखा चलाते हैं।

**हथ-रस**—पु० [हिं० हाथ+रस] हस्त-मैथुन। हस्त-क्रिया।

**हथ-लेवा**—पु० [हिं० हाथ+लेना] विवाह के समय वर का अपने हाथ में कन्या का हाथ लेने की रीति। पाणि-ग्रहण। उदा०— दियौ हियौं सग हाथ कै, हथ लेमैं (लेवै) ही हाथ।—बिहारी।

**हथ-वाँस**—पु० [हिं० हाथ+बाँस (प्रत्य०)] नाव चलाने के उपकरण। जैसे—लग्गा, पतवार, डाँड़ा इत्यादि।

**हथ-वाँसना**†—स० [हिं० हाथ+अवाँसना] किसी व्यवहार में लाई जानेवाली वस्तु में पहले-पहल हाथ लगाना। प्रयोग या व्यवहार का आरम्भ करना।

**हथ-सकर**—पु० [हिं० हाथ+साँकर] हथेली की पीठ पर पहनने का हाथ-फूल नाम का एक गहना।

**हथ-साँकला**†—पु०=हथ-सकर।

**हथ-सार**—स्त्री० [हिं० हाथी+स० शाला, हिं० सार] वह घर जिसमें हाथी रखे जाते हैं। गज-शाला।

**हथा**—पु० [हिं० हाथ] मांगलिक अवसरों पर गीले पिसे हुए चावल और हल्दी पोतकर बनाया हुआ पंजे का चिह्न। ऐपन का छापा।

†पु०=हत्था।

**हथा-हथी***—अव्य [हिं० हाथ] १ हाथों-हाथ। २ चटपट। तुरन्त। स्त्री०=हाथा-पाई।

**हथिनी**†—स्त्री०=हथनी।

**हथिया**—पु० [सं० हस्त (नक्षत्र), प्रा० हत्थ] हस्त नक्षत्र जिसमें प्राय. मूसलधार वर्षा होती है।

कि० प्र०—बरसना।

२ करघे मे कपी के ऊपर की लकड़ी।
स्त्री० [हिं० हाथ] छोटा हत्था।

**हथियाना**—स० [हिं० हाथ+आना (प्रत्य०)] १. हाथ में लेना। हाथ से पकड़ना। २ दूसरे की चीज पर कौशल से या बलात् कब्जा कर लेना। ३ अपने प्रभुत्व या अधिकार में कर लेना। जैसे—उन्होंने सस्था को हथिया लिया है।
संयो० क्रि०—लेना।

**हथियार**—पुं० [हिं० हथियाना+आर (प्रत्य०)] १. कोई चीज जो हाथ मे पकड़कर दूसरो को मारने के लिए चलाई जाय। शस्त्र। जैसे—छुरा, तलवार, बन्दूक आदि।
क्रि० प्र०—चलाना।
**मुहा०—हथियार बाँधना या लगाना**=अस्त्र-शस्त्र धारण करना। २. कोई ऐसा उपकरण जिसकी सहायता से हाथ से कोई चीज बनाई जाय। औजार। ३. पुष्प का लिंग। (बाजारू)

**हथियार-बंद**—वि० [हिं० हथियार+फा० बद, सं० बध] [भाव० हथियार-बंदी] (व्यक्ति) जो हथियारों से लैस हो। सशस्त्र। (आर्मड) जैसे—हथियार-बद फौज।

**हथियार-बंदी**—स्त्री० [हिं० हथियार बद+ई (प्रत्य०)] हथियारो से लैस होना या करना। (आर्माइट)

**हथुई-मिट्टी**—स्त्री० [हिं० हाथ+मिट्टी] वह मिट्टी जो कच्ची दीवारो का तल चिकनाने के लिए उन पर लगाई जाती हो।

**हथुई-रोटी**—स्त्री० [हिं० हाथ+रोटी] वह रोटी जो गीले आटे को हाथ से गढकर बनाई गई हो। (चकले पर बेलने से बेलकर बनाई हुई रोटी से भिन्न।)

**हथेरा**—पुं० [हिं० हाथ+एरा (प्रत्य०)] खेतों में पानी डालने का हाथा (देखें) नामक उपकरण।

**हथेरी**—स्त्री०=हथेली।

**हथेल**—स्त्री० [हिं० हाथ] वह लम्बी कमाची जिस पर बना हुआ कपडा तानकर रखा जाता है। पनिका। पनखट।

**हथेली**—स्त्री० [स० हस्त+तल] हाथ पर का कलाई के आगे का वह ऊपरी चौडा हिस्सा, जिसके आगे उँगलियाँ होती है। कर-तल। हस्त-तल।
**पद—हथेली सा**=बिलकुल सपाट या समतल।
**मुहा०—हथेली खुजलाना**=(क) द्रव्य मिलने का आगम सूचित होना। कुछ मिलने का लक्षण होना। (ख) कोई नया और विलक्षण काम करने को जी चाहना या प्रवृत्ति होना। **(किसी काम में) हथेली देना या लगाना**=सहायता या सहारा देना। **हथेली पर जान लेकर**=जान जोखिम में डालकर। **हथेली पर दही या सरसों जमाना**=इतनी उतावली या जल्दबाजी करना कि मानो समय-साध्य काम क्षण भर में हो सकता हो। (हास्यास्पद तथा वीप्सातात्पर्यवाचक)। **हथेली पर लिए फिरना**=यह ढूँढने या देखते रहना कि हमारी अमुक चीज कौन लेता है। कुछ देने के लिए हर समय किसी का तैयार रहना। **हथेली बजाना**=कर-तल ध्वनि करना। ताली बजाना।
**कहा०—किस की हथेली में बाल जमे हैं**? सस्तार में ऐसा कौन वीर है? **जैसे—किसकी हथेली मे बाल जमे हैं** जो उसे मार सकता है।

**हथेवा**†—पुं० [हिं० हाथ] हथौड़ा। घन।

**हथौरी***—स्त्री०=हथेली।

**हथौटी**—स्त्री० [हिं० हाथ+औटी (प्रत्य०)] कारीगरी या दस्तकारी का काम करने का विशिष्ट ढग या हाथ चलाने का प्रकार।

**हथौड़ा**—पुं० [हिं० हाथ+औडा (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० हथौडी] एक प्रसिद्ध औजार जिससे चीजें ठोंकी-पीटी जाती हैं। (हैमर)
**विशेष**—यह प्राय लोहे का ऐसा लम्बोतरा टुकडा होता है, जिसके बीच मे दस्ता या मूठ लगी रहती है। बढइयों, लुहारो-सुनारों, आदि के हथौड़े अलग-अलग आकार-प्रकार के होते हैं।

**हथौना**†—पुं० [हिं० हाथ+औना (प्रत्य०)] दूल्हे और कुलहन के हाथो मे आशीर्वाद देने या शुभ कामना प्रकट करने के लिए मिठाई रखने की रीति। (पूरब)

**हथ्यार**†—स० =हथियाना।

**हथ्यार**†—पु०=हथियार।

**हद**—स्त्री० [अ०] १ किसी वस्तु के विस्तार का अतिम सिरा। किसी चीज की लम्बाई, चौडाई ऊँचाई या गहराई की सब से अन्तिम रेखा या पार्श्व। सीमा। मर्यादा। जैसे—गाँव या बगीचे की हद। २ किसी प्रकार की मर्यादा या सीमा।
**पद—हद से ज्यादा या बाहर**=नियत सीमा के आगे। मर्यादा के बाहर।
**मुहा०—हद करना**=कोई काम या बात चरम सीमा तक पहुँचाना। जैसे—तुमने भी मिलनसारी की हद कर दी।

**हदका***—पु०=धक्का।

**हद-बंदी**—स्त्री० [अ०+फा०] दो खेतों, प्रदेशों, राज्यों, देशो की सीमा निर्धारण करना।

**हदस**—स्त्री० [अ० हादसा ?] वह भय जो मन से जाता न हो।

**हदसना**†—अ० [हिं० हदस] डर जाना। भयभीत होना। जैसे—इस तरह डराने से लडका हदस जायगा।

**हदसाना**†—स० [हिं० हदसना का स०] ऐसा काम करना, जिससे कोई हदस जाय। किसी के मन मे डर या भय बैठाना।

**हदीस**—स्त्री० [अ०] मुसलमानो का वह धर्म-ग्रन्थ, जिसमें मुहम्मद साहब के कार्यों के वृत्तान्त और भिन्न-भिन्न अवसरों पर कहे हुए वचनो का सग्रह है और जिसका व्यवहार बहुत-कुछ स्मृति के रूप मे होता है।

**हद्द**†—स्त्री०=हद।

**हन**†—अव्य० =हाँ। (राज०)
†सर्व०=उन। (पूरब)

**हनन**—पुं० [सं०√हन् (हिंसा करना)+ल्युट्—अन] [वि० हननीय, भू० कृ० हनित] १ मार डालना। वध करना। २. आघात या प्रहार करना। चोट लगाना। ३ गणित में, गुणन या गुणा करना।

**हनना**†—स० [स० हनन] १. मार डालना। वध करना। २. आघात या प्रहार करना। ३. ठोंकना-पीटना।

**हननीय**—वि० [सं०√हन् (हिंसा करना)+अनीयर्] जिसका हनन किया जाना उचित अथवा संभव हो। जो हनन किया जाने को हो या किया जा सकता हो।

**हनफी**—पुं० [अ० हनफ़ी] मुस्लिमों का एक वर्ग या संप्रदाय।

**हनवाना**—स०[हिं० हनना का प्रे०] हनने का काम दूसरे से कराना। किसी को हनने में प्रवृत्त करना।
†स०=नहवाना (नहलाना)।

**हनाना**†—अ० =नहाना। (बुन्देल०)

**हनिवंत**†—पु०=हनुमन्।

**हनिवंत**†—पु०=हनुमान्।

**हनु**—स्त्री०[सं० √हन् (मारना)+उन्] १. दाढ़ की हड्डी। जबड़ा। २. चिबुक। ठोढ़ी।
†पुं० हनुमान्।

**हनुका**—स्त्री०[स०] दाढ़ की हड्डी।

**हनु-ग्रह**—पुं०[स०] एक रोग जिसमे जबड़े बैठ जाते है और जल्दी खुलते नहीं।

**हनु-चाल**—पु०[स० हनु+हिं० चाल] एक प्रकार का मात्रिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण मे बारह मात्राएँ और अन्त मे गुरु-लघु होते हैं।

**हनु-भेद**—पु०[स०] जबड़े का खुलना।

**हनुमंत**—पु०=हनुमान।

**हनुमंत-उड़ी**—स्त्री०[हिं० हनुमत+उड़ना] मालखभ की एक कसरत जिसमे सिर नीचे और पैर ऊपर की ओर करके सामने लाते हैं और फिर ऊपर खसकते हैं।

**हनुमंती**—स्त्री०[हिं० हनुमत] मालखभ की एक कसरत जिसमें एक पाँव के अँगूठे से बेत पकड़कर और फिर दूसरे पाँव को अटी देकर और उससे बेत पकड़कर बैठते हैं।

**हनुमत्कवच**—पु० [स०] १. हनुमान् को प्रसन्न करने का एक मंत्र जिसे लोग ताबीज वगैरह मे रखकर पहनते हैं। २. हनुमान् का एक स्तोत्र।

**हनुमद्धारा**—स्त्री०[स०] चित्रकूट का एक पवित्र स्थल।

**हनुमान्**—वि० [स० हनुमत्] १ दाढ़वाला। जबड़ेवाला। २ बहुत बड़ा वीर।
पु० पंपा के प्रसिद्ध एक वीर बानर जिन्होंने सीता-हरण के उपरान्त रामचन्द्र की पूरी सेवा और सहायता की थी। ये रामचन्द्र के परम भक्त कहे गये है और देवताओ के रूप मे माने जाते है।

**हनुमान**—पु०=हनुमान्।

**हनुमान-बैठक**—स्त्री०[हिं० हनुमान+बैठक] एक प्रकार की बैठक (कसरत) जिसमें एक पैर पँतरे की तरह आगे बढ़ाते हुए बैठते-उठते है।

**हनु-शोथ**—पु०[स०] दाढ़ का एक रोग जिसमें बहुत दर्द होता है और मुँह खोलने में बहुत कष्ट होता है।

**हनुस**—वि०[सं० हनु√ ला (लेना)+क] जिसकी दाढ़ें तथा जबड़े पुष्ट हो।

**हनुवँ**†—पु०=हनुमान्।

**हनु-स्तंभ**—पु०[स०]१ किसी प्रकार के शारीरिक विकार के कारण जबड़ों का इस प्रकार जमकर बैठ जाना कि वे खुल या हिल न सकें। २. धनुर्वात का एक प्रकार, जिसमें उक्त अवस्था होती है। (लॉक-जॉ)

**हनूँ**†—पु०=हनुमान्।

**हनूमान**—पुं०=हनुमान्।

**हनूष**—पुं०[सं०] दैत्य। राक्षस।

**हनोज**—अव्य०[फा० हनोज]१. अभी। २. अभी तक।

**हनोव**—पुं०[देश०] संगीत मे, एक प्रकार का राग जो हिंडोल राग का पुत्र कहा गया है।

**हब्राहु**†—पु०=सब्राह (कवच)।

**हम्यमान**—वि०[स०]=हननीय।

**हप**—पु०[अनु०] कोई चीज मुँह में चट से लेकर होठ बद करने का शब्द। जैसे—हप से खा गया।

**हपना**—स०[हिं० हप+ना (प्रत्य०)]१ हप शब्द करते हुए कोई चीज मुँह मे रखना या निगलना। २ हडपना।

**हप्पा**—पु०[हिं० हडपना या अनु०]१ बच्चों की बोली मे, खाने की कोई अच्छी चीज। २. घूस। रिश्वत। (पश्चिम)

**हप्पू**—पु०[हिं० हपना] वह जो बहुत खाता हो या बहुत खाने के लिए लालायित रहता हो। पेटू।
†पु०=आफू (अफीम)।

**हफ्त**—वि०[फा० हफ्त] सात।

**हफ्तगाना**—पु०[फा० हफ्त गान.] गाँव के पटवारी के ये सात कागज जिनमे वह जमीन लगान आदि का लेखा रखता है—खसरा, बहीखाता, जमाबदी, स्याहा, बुझारत, रोजनामचा और जिंसवार।

**हफ्ता**—पु०[स० सप्ताह से फा० हफ्त]१ सात दिनों का समय। २. विशेषत एक सोमवार (या एतवार) से दूसरे सोमवार (या एतवार) तक का समय।

**हफ्ती**—स्त्री०[फा० हफ्ती] एक प्रकार की जूती।

**हफ्तेवार**—वि० [फा०] साप्ताहिक। (वीकली)

**हबकना**—स० [अनु०] झपटकर किसी को दाँत से काटना।

**हबड़ा**—वि०[देश०] १. जिसके बहुत बड़े-बड़े दाँत हो। बड़दता। २ कुरूप। भद्दा।

**हबर-हबर**—अव्य०[अनु०] जल्दी-जल्दी। उतावली से।

**हबराना**†—स०=हड़बड़ाना।

**हबश**—पु०[अ० हब्श] उत्तरी अफ्रीका का एक प्रदेश जो हबशियो की जन्म-भूमि है।

**हबशिन (न)**—स्त्री० [हिं० हबशी]१ हबशी स्त्री। २ काली-कलूटी स्त्री। ३ शाही महल की चौकीदारी करनेवाली स्त्री।

**हबशी**—पु०[फा०]१ हबश देश का निवासी जिसके शरीर का रग बहुत काला होता है। २ एक प्रकार का बडा और काला अगूर। वि० १. हबश देश-सबधी। २ हबशियो का।

**हबशी-सनर**—पु०[फा०] एक प्रकार का अफ्रीकी गैंडा जिसके दो सीग या खाँग होते हैं।

**हबाब**—पु०[अ०] १ पानी का बुलबुला। २ शीशे का एक प्रकार का गोला जो अन्दर से बिल्कुल पोला होता है, और प्राय सजावट के लिए छतों मे लटकाने के काम आता है।

**हबाबी**—वि०[अ०]१ हबाब सम्बन्धी। २ हबाब या पानी के बुल-बुले की तरह का। बहुत कमजोर और जल्दी टूट जानेवाला।

**हबाबी-आहना**—पु० [फा०] वह शीशा जिसका दल बहुत पतला होता और जल्दी टूट जाता है।

**हबि**†—पु०=हवि।

**हबीब**†—पु० [अ०] १ दोस्त। मित्र। २. प्रिय व्यक्ति।

**हबूब**—पु० [अ० हबाब या हुबाब] १. पानी का बुलबुला। बुल्ला। २ तुच्छ और निस्सार चीज या बात।

**हबेली**†—स्त्री०=हवेली।

**हब्बा**—पु० [अ० हब्ब] १. अन्न का दाना। २. बहुत ही अल्प या सूक्ष्म अंश। ३ एक रत्ती की तौल।

**हब्बा-डब्बा**—पु० [हिं० हाँफ, अनु० डब्बा] जोर-जोर से साँस या पसली चलने की बीमारी जो बच्चों को होती है। पसली चलने (अर्थात् फड़कने) का रोग।

**हब्बुल-आस**—पु० [अ०] एक प्रकार की मेंहदी, जो बगीचों में लगाई जाती है और दवा के काम में आती है। बियाछली मेंहदी।

**हब्स**—पु० [अ०] १ कैद। कारावास। २ कारागार। कैदखाना। ३ ऐसी स्थिति जिसमें थोड़ी-सी बन्द जगह में बहुत-से लोगों के रहने या हवा न आने के कारण दम घुटता हो।

**हब्स-दम**—पु० [अ०+फा०] १. दमा या श्वास नामक रोग। प्राणायाम।

**हब्स-बेजा**—पु० [अ०+फा०] अनुचित रीति से किसी को कहीं बन्द कर रखना जो विधि की दृष्टि से अपराध है।

**हम**—सर्व० [स० अहम् या अस्मत् पा०, प्रा० अम्हे] उत्तम पुरुष बहुवचन का सूचक सर्वनाम। 'मैं' का बहुवचन।

पु० अहंभाव। अहंकार। घमंड।

उप० [स० सम से फा०] एक उपसर्ग जो कुछ संज्ञाओं से पहले लगकर ये अर्थ देता है—(क) तुल्य या समान। जैसे—हम-उम्र=समवयस्क। (ख) संग या साथ। जैसे—हमदर्दी=सहानुभूति। हमराही=साथ चलनेवाला पथिक या यात्री।

**हम-असर**—पु० [फा०+अ०] १ वे जिन पर एक ही प्रकार का प्रभाव पड़ा हो। २. समान संस्कार या प्रवृत्ति वाले। ३ सम-कालीन। ४ प्रतियोगी। प्रतिस्पर्धी।

**हम-अहद**—वि० [फा०+अ०] सम-कालीन।

**हम-उम्र**—वि० [फा० हम+अ० उम्र] अवस्था में समान। समवयस्क।

**हम-कदम**—वि० [फा०+अ०] बराबर साथ-साथ कदम मिलाकर चलनेवाला अर्थात् संगी या साथी।

**हम-कौम**—वि० [फा० हम+अ० कौम] एक ही जाति के। सजातीय।

**हम-जिंस**—वि० [फा०] एक ही वर्ग या जाति के। एक ही प्रकार के।

**हम-जोली**—पु० [फा०+हिं० जोड़ी?] वे जो प्रायः साथ रहते हों। साथी। सखा।

**हमता***—स्त्री० [हिं० हम+ता (प्रत्य०)] अहंभाव। अहंकार।

**हम-दम**—वि० [फा०] १. (वह) जो अपने मित्र का आखिरी दम तक साथ देता हो। २. अत्यन्त घनिष्ठ मित्र।

**हम-दर्द**—पु० [फा०] [भाव० हमदर्दी] १. किसी की दृष्टि से वह व्यक्ति जो उसके दुःख में शरीक होता हो या सहानुभूति प्रकट करता हो। २. दूसरे के दुःख से द्रवित होनेवाला।

**हम-दर्दी**—स्त्री० [फा०] १. हमदर्द होने की अवस्था, गुण या भाव। २ दूसरे के दुःख से दुःखी होने का भाव। सहानुभूति।

**हममा**†—सर्व० [हिं० हम] १. हम लोग। उदा०—हमन हैं इश्क मस्ताना हमन को होशियारी क्या।—कोई शायर।

**हम-निवाला**—वि० [फा०] वे मित्र जो एक साथ बैठकर भोजन करते हों। आहार-विहार के सखा। घनिष्ठ मित्र।

पद—**हम-निवाला हम-प्याला**=(मित्र) जो एक साथ खाने-पीते और सुख भोग करते हों।

**हम-पंच**†—सर्व० [हिं० हम पंच] हमलोग।

**हम-पल्ला**—वि० [फा० हम-पल्ला] बराबरी का। जोड़ का। समकक्ष।

**हम-पेशा**—वि० [फा० हम-पेशा] एक ही तरह का पेशा करनेवाले। जो व्यवसाय एक करता हो, वही व्यवसाय करनेवाला दूसरा। सह-व्यवसायी।

**हम-बिस्तर**—वि० [फा०] किसी के विचार से वह व्यक्ति जो उसके साथ एक ही बिछौने पर सोता हो।

**हम-बिस्तरी**—स्त्री० [फा०] १ एक ही बिछौने पर साथ सोने की क्रिया। २ स्त्री-प्रसंग। संभोग।

**हम-मजहब**—वि० [फा० हम+अ० मज़हब] किसी के विचार से वह व्यक्ति जो उसी के मजहब को मानता हो। सह-धर्मी।

**हम-रकाब**—पु० [फा०] १ घुड़सवारी में साथ रहनेवाला। २ बराबर साथ रहनेवाला संगी। साथी। उदा०—हम-रकाब, साथ लेता सेना निज।—निराला।

**हमरा**†—सर्व०, वि०=हमारा।

**हम-राह**—अव्य० [फा०] (कहीं जाने में किसी के) साथ। संग में। जैसे—लड़का उसके हमराह गया।

वि० [भाव० हमराही] जो साथ-साथ एक ही रास्ते पर चलते हों।

**हम-राही**—पु० [फा०] १ हमराह होने की अवस्था या भाव। २ रास्ते में साथ चलने या यात्रा करनेवाला। रास्ते का साथी।

**हमल**—पु० [स० हम्ल] स्त्री के पेट में बच्चे का होना। गर्भ। वि० दे० 'गर्भ'।

क्रि० प्र०—रहना।—होना।

**मुहा०—हमल गिरना**=गर्भ-पात या गर्भ-स्राव होना।

**हमला**—पु० [अ० हम्ल] १ मारने या प्रहार करने के लिए आगे बढ़ना। आक्रमण। (अटैक) २ प्रहार। वार। ३. शत्रु पर की जानेवाली चढ़ाई। आक्रमण। (अटैक) जैसे—होवर्ड हमला। ४ किसी को नीचा दिखाने या हानि पहुँचाने के लिए किया जानेवाला कार्य या कही जानेवाली बात।

**हमला-आवर**—वि० [अ०+फा०] [भाव० हमला आवरी] चढ़ाई करनेवाला। आक्रमणकारी।

**हमलावर**—वि०=हमला-आवर।

**हम-वतन**—पु० [फा०+अ०] एक ही प्रदेश के रहनेवाले। देशभाई। किसी की दृष्टि से वह व्यक्ति जो उसी के वतन का हो।

**हमवार**—वि० [फा०] [भाव० हमवारी] जिसकी सतह बराबर हो। समतल। जैसे—जमीन हमवार करना।

†पु० [हिं० हम+वार (प्रत्य०)] हमलोग या हमारे जैसे लोग।

**हम-शीरा**—स्त्री० [फा० हम+शीर] सगी बहन। भगिनी।

**हम-सफर**—वि० [फा०+अ० सफ़र] सफर में साथ देनेवाला। सह-यात्री।

**हम-सबक**—वि० [फा० हम-सबक़] एक साथ पढ़नेवाले। सह-पाठी।

**हम-सर**—वि० [फा०] [भाव० हम-सरी] १. बराबर का। बराबरी के दरजे का। २. प्रतिद्वंद्वी।

**हम-सरी**—स्त्री० [फा०] १. समानता का भाव या स्थिति। बराबरी। २ प्रतियोगिता। प्रतिस्पर्धा।

**हम-साया**—पु० [फा० हमसाय] [स्त्री० हमसाई, भाव० हम-सायगी] पड़ोसी। प्रतिवेशी।

**हम-सिन**—वि० [फा०+अ०] बराबरी की उमरवाला। सम-वयस्क।

**हम-हमी**—स्त्री०=हमाहमी।

**हमाम**—पु०=हम्माम।

**हमायल**—स्त्री० [अ०] १ गले मे डालने का परतला। २. छोटे आकार का कुरान जिसे गले मे डाल सके। २ गले मे पहनने का एक गहना।

**हमार**†—वि०=हमारा।

**हमारा**—वि०, सर्व० [हि० हम=आरा (प्रत्य०)] [स्त्री० हमारी] 'हम' का सबंधकारक रूप। जैसे—हमारा काम। हमारा मकान।

**हमाल**—पु० [अ० हम्माल] १ भार ढोनेवाला। मजदूर। कुली। २ देख-रेख करनेवाला व्यक्ति। रक्षक। (क्व०)

**हमालय**—प० [स० हिमालय] सिहल या सीलोन का सबसे ऊँचा पहाड़ जिसे आदम की चोटी' कहते है।

**हमाहमी**—स्त्री० [हि० हम+हम] १ यह समझना कि जो कुछ हैं, वह हम ही हैं। अहमन्यता। २ दृढता या हठपूर्वक यह कहना कि जो बात हम कह रहे हैं, वही होनी चाहिए। हठ दर्जे की जिद।

**हमीर**—प० हम्मीर।

**हमें**—सर्व० [हि० हम] 'हम' का कर्म और सप्रदान कारक का रूप। हमको। जैसे—(क) हमे बताओ। (ख) हमे दो।

**हमेल**†—स्त्री० =हुमेल (गहना)।

**हमेव**†—प० [स० अहम्+एव] १ यह समझना कि जो कुछ हैं, वह हम ही है, या हम भी बहुत कुछ है। २ अभिमान। घमड।

**हमेशा**—अव्य० [फा० हमेश] सब दिन या सब समय। सदा। सर्वदा।

**हमेसा**†—अव्य० हमेशा।

**हमैं**†—सर्व० =हमें।

**हम्द**—पु० [अ०] ईश्वर की महिमा का गान। ईश्वर की स्तुति।

**हम्माम**—पु० [अ०] स्नान करने का कमरा। स्नानागार।

**हम्मामी**—पु० [अ०] हम्माम मे लोगो को नहलानेवाला कर्मचारी।

**हम्माल**—पु० [अ०] बोझ उठानेवाला मजदूर। कुली।

**हम्मीर**—पु० [स०] १. संपूर्ण जाति का एक सकर राग जो शकराभरण और मारू के मेल से बना है। २. रणथभोर गढ का एक वीर चौहान राजा जो सन् १३०० ई० मे अलाउद्दीन खिलजी के हाथो युद्ध में मारा गया था।

**हम्मीर-नट**—पु० [स०] संपूर्ण जाति का एक सकर राग जो नट और हम्मीर के मेल से बना है।

**हम्हा**—सर्व० [सं० अहम्] =हम।

**हर्यंब**—पु० [स० हर्यन्व] बडा या अच्छा घोडा।

**हय**—पु० [सं०] [स्त्री० हया, हयी] १ घोडा। अश्व। २. उच्चैःश्रवा के सात मुखों के आधार पर काव्य में सात की सख्या का सूचक पद। ३ इन्द्र। ४. एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण मे चार मात्राएँ होती हैं।

**हय-ग्रीव**—पु० [सं० ब० स०] १. विष्णु के चौबीस अवतारों मे से एक। २ एक राक्षस जो कल्पान्त में ब्रह्मा की निद्रा के समय वेद उठा ले गया था। विष्णु ने मत्स्य अवतार लेकर वेद का उद्धार और इस राक्षस का वध किया था। ३ बौद्ध तांत्रिकों के एक देवता।

वि० जिसकी गरदन घोडे की गरदन की तरह हो।

**हयग्रीवा**—स्त्री० [सं० हयग्रीव—टाप्] दुर्गा का एक नाम।

**हयन**—पु० [स०√हि (प्राप्ति आदि)+ल्युट्—अन] वर्ष। साल।

**हयना**—स० [स० हत, प्रा० हय+हिं० ना (प्रत्य०)] १ मार डालना। २ नष्ट करना।

**हय-नाल**—स्त्री० [स० हय+हिं० नाल] वह तोप जिसे घोडे खीचते है।

**हय-मुख**—पु० [म० ब० स०] १ एक कल्पित देव जिसके सबध में प्रसिद्ध है कि वहाँ घोडे के से मुँहवाले आदमी बसते है। २ और ऋषि का क्रोध रूपी तेज जो समुद्र में स्थित होकर 'बडवानल' कहलाता है। (रामायण)

**हय-मेध**—पु० [स० प० त०] अश्वमेध।

**हय-लास**—पु० [स० हय+लास्य] घोड़ा नचानेवाला, घुडसवार।

**हय-शाला**—स्त्री० [स० ष० त०] अश्व-शाला। घुडसाल। अस्तबल।

**हय-शिर**—पु० [स० हय-शिरस्] १ एक प्राचीन ऋषि। २ एक प्रकार का दिव्यास्त्र।

वि० जिसका सिर घोडे के सिर की तरह का हो।

**हय-शीर्ष**—पु० [स० ष० स०] विष्णु का हयग्रीव रूप।

**हयांग**—पु० [स०] धनु-राशि।

**हया**—स्त्री० [अ०] वह प्राकृतिक मनोवृत्ति जो मनुष्य को नैतिक तथा सामाजिक दृष्टि से कोई अनुचित या निंदनीय काम करने से रोकती और उसके मन में सकोच उत्पन्न करती है। स्वाभाविक शील के कारण उत्पन्न होनेवाली लज्जा या शर्म।

विशेष—शर्म और हया मे यह अतर है कि शर्म तो आपराधिक या नैतिक दृष्टि से भी होती है और स्वाभाविक रूप से मनोगत या मानसिक भी होती है। हम यह तो कहते है कि तुम्हे झूठ बोलते हुए शर्म नही आती, परतु ऐसे प्रसगो में 'शर्म की जगह 'हया' का प्रयोग नही कर सकते। हाँ, हम यह अवश्य कहते हैं कि हयादार आदमी कभी झूठ नही बोलता। ऐसे प्रसगो में 'हयादार' की जगह 'शर्मदार'का प्रयोग नही होता। हया मनुष्य की स्वाभाविक लज्जाशीलता है और उसकी गणना मनुष्य के स्वाभाविक गुणो में होती है।

**हयात**—स्त्री० [अ०] जिंदगी। जीवन।

पद—**हीन हयात**=जीवन भर के लिए। **हीन हयात में**=जीते जी।

**हयादार**—वि० [अ० हया+फा० दार] वह जिसे हया हो। लज्जाशील।

**हयादारी**—स्त्री० [अ० हया+फा० दारी] हयादार होने की अवस्था, गुण या भाव। लज्जाशीलता।

**हयाध्यक्ष**—पु० [स० ष० त०] घुडसाल का प्रधान अधिकारी और घोड़ो का निरीक्षक।

**हयानन**—पु० [स० ब० स०] हयग्रीव।

**हयानना**—स्त्री० [स०] एक योगिनी।

**हयायुर्वेद**—पु० [स०] घोडों की चिकित्सा का शास्त्र। शालिहोत्र।

**हयालय**—पु० [स० ष० त०] अश्वशाला। अस्तबल। घुडसाल।

**हयाशन**—पु० [स०] एक प्रकार का धूप। सरलीक का पौधा।

**हयी**—पु० [सं० हयिन्] घुड़सवार।
स्त्री० स० हय का स्त्री०। घोड़ी।

**हर**—वि० [स० √हृ (हरण करना)+अच्] एक विशेषण जो यौ० शब्दों के अंत मे प्रत्यय के रूप मे लगकर नीचे लिखे अर्थ देता है—१ हरण करने अर्थात् छीनने या लूटनेवाला। जैसे—धनहर, मनोहर। २ दूर करने या हटानेवाला। जैसे—पापहर, रोगहर। ३. नाश या वध करनेवाला। जैसे—असुरहर। ४ लेजानेवाला या वहन करनेवाला। जैसे—सदेशहर।
पु० १. महादेव। शिव। २. अग्नि। आग। ३. माली नामक राक्षस का पुत्र जो विभीषण का मत्री था। ४. गणित मे, वह सख्या जिससे किसी सख्या को भाग देते है। भाजक। (दिवाहर) ५ छप्पय नामक छद के दसवें भेद का नाम। ६. टगण के पहले भेद का नाम। ७ गधा।
प्रत्य० [सं० गृह से वि०] एक प्रत्यय जो शब्दों के अत मे लगकर घर, स्थान आदि का अर्थ देता है। जैसे—खँडहर, मैहर, पीहर आदि।

†पु० [सं० गृह] १. घर। मकान। २. निवास। उदा०—डोला डीली हर किया, मृ क्या मनह बिसारि।—डोलामारू।

†वि० जो जल्दी ही किसी क्रिया की समाप्ति तक पहुँचने को हो। आसन्न। (प्रत्य) यौ० के अन्त में। जैसे—गिरहर मकान= ऐसा मकान जो जल्दी ही गिर पडने को हो।

†वि० [स० धर] धारण करनेवाला। जैसे—जलहर =जलधर।

†पु०=हल (खेत जोतने का)। जैसे—हरवाहा।

†पु०=[स० स्मर, प्रा० भर] उत्कट आकांक्षा। प्रबल इच्छा।

वि० [फा०] प्रत्येक। एक-एक। जैसे—(क) हर आदमी को एक-एक घडी मिली। (ख) हर बार यही जवाब मिला।

**पद—हर एक**= एक एक, प्रत्येक **हर कोई**=प्रत्येक व्यक्ति। **हर दम**=हर समय। प्रतिक्षण। **हर रोज**=प्रतिदिन। **हर हमेशा**=नित्य। सदा।
पु० [जरमन] अँगरेजी ('मिस्टर' शब्द का जरमन पर्याय। महाशय। जैसे—हर स्ट्रेस्मैन।

**हरएँ***—अव्य० [हिं० हरुवा] १. धीरे-धीरे। मद गति से। २ बिना विशेष बल-प्रयोग किए।

**हरक**—वि० [स०] १ हरण करनेवाला। २. ले जानेवाला या पहुँचानेवाला।
पु० १. चोर। ठग। ३. गणित मे भाजक। ४. अपने प्रलयकर रूप मे शिव का एक नाम।

**हरकत**—स्त्री० [अ०] [बहु० हरकात] १. हिलना-डोलना। गति। चाल। २ वह स्पदन या कपन जो क्रियाशीलता तथा सजीवता का सूचक हो। जैसे—अभी नब्ज में हरकत है। ३. अनुचित चेष्टा या व्यवहार। जैसे—अब कभी ऐसी हरकत मत करना।

**हरकना**†—अ० [?] किसी वस्तु की प्राप्ति की इच्छा करना या उसके लिए आतुर होना। उदा०—जनि बहु हरकहु जनि बहु झनकहु, जनि मन करहु उदास ए।—ग्राम-गीत।

†स०=हटकना। उदा०—उन हरकी हसि के इतै, इन सौंपी मुसकाय।—बिहारी।

**हरकारा**—पु० [फा०] १. चिट्ठी-पत्री या सदेशा ले जानेवाला कर्मचारी। २ आज-कल, वह व्यक्ति जो गाँवो आदि मे डाक की चिट्ठियाँ, पार्सल आदि एक स्थान से दूसरे स्थान पर पहुँचाता है। (डाकिए से भिन्न)

**हरकेस**—पु० [स० हरिकेश] एक प्रकार का अगहनी धान।

**हरख***—पु० =हर्ष।

**हरखना***—अ० [हिं० हरख+ना (प्रत्य०)] हर्षित होना। प्रसन्न होना।

**हरखाना***—स० [हि० हरखना] प्रसन्न करना। खुश करना। आनदित करना।
अ०=हरखना। उदा०—तुरत उठे लछिमन हरखाई।—तुलसी।

**हरगिज**—अव्य० [फा० हरगिज] किसी दशा मे। कदापि। कभी। (केवल नहिक भाव मे और 'न' या 'नही' के साथ) जैसे—यह बात हरगिज नही हो सकती।

**हर-गिरि**—पु० [स० ष० त०] कैलास पर्वत।

**हरि-गिला**†—पु० दे० 'लमटेंक' (पक्षी)।

**हर-गोरी-रस**—पु०=रससिंदूर। (वैद्यक)

**हर-बंद**—अव्य० [फा०] १. कितनी ही तरह से। अनेक प्रकार से। २ बहुत बार। ३ अगरचे। यद्यपि।

**हरजा**†—पु०=हर्ज।

**हरजा**—पु० [फा० हर+जा (जगह)] सगतराशो की वह टाँकी जिससे वे मतह को हर जगह बराबर करते हैं। चौरसी।
†पु० १. =हर्ज। २.=हरजाना।

**हर-जाई**—पु० [फा०] १. हर जगह घूमनेवाला व्यक्ति। २. किसी स्त्री की दृष्टि से उसका वह प्रेमी जो अन्य स्त्रियो से सबध स्थापित किये हो। ३ व्यभिचारी पुरुष।
स्त्री० व्यभिचारिणी स्त्री।

**हर-जाना**—पु० [फा० हर्जानः] वह धन जो किसी को उसकी क्षति-पूर्ति करने के उद्देश्य से दिया जाता हो।

**हर-जेबड़ी**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की छोटी झाडी, जिसकी जड़ और पत्तियो का व्यवहार औषधि के रूप मे होता है।

**हर-जोता**—पु० [हि० हल+जोतना] १. वह जो हल जोतने का काम करता हो। २ उजड्ड और गँवार। ३. मुडा नामक पक्षी।

**हरट***—वि० [स० हृष्ट] हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा। मजबूत।

**हरठिया**†—पु० [हि० रहँट] रहँट के बैल हाँकनेवाला।

**हरड़ा**†—पुं०=हड (हरें)।

**हरण**—पु० [स० √हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १. किसी की वस्तु उसकी इच्छा के विरुद्ध बलपूर्वक ले लेना। छीनना या लूटना। २ किसी को उसकी वस्तु मे अनुचित रूप से रहित या वचित करना। ३. रुपया वसूल करने या और कोई अर्थ सिद्ध करने के लिए किसी व्यक्ति को बलपूर्वक कही उठा ले जाना और छिपाकर रखना। (किडनैपिंग) ४. दूर करना। हटाना। जैसे—सकट-हरण। ५. नाश या नष्ट करना। ६. गणित में, किसी संख्या का भाग करना। ७. विवाह के

समय कन्या को दिया जानेवाला दहेज। ८. यज्ञोपवीत के समय बालक को दी जानेवाली भिक्षा।

**हरणि**—स्त्री०[स०] मृत्यु। मौत।

**हरणीय**—वि० [स० √हृ (हरण करना)+अनीयर] जो हरण किया जा सके या किया जाने को हो।

**हरता**†—वि०=हर्ता (हरण करनेवाला)।

**हरता-धरता**—वि० [स० हर्ता+धर्ता (वैदिक)] १ रक्षा और नाश दोनों करनेवाला। २. जिसे सब कुछ करने का पूरा अधिकार प्राप्त हो। कर्ता-धर्ता।

**हरतार**†—स्त्री०=हरताल।

**हरताल**—स्त्री०[स० हरिताल] पीले रंग का एक प्रसिद्ध चमकीला खनिज पदार्थ जो दवा, रँगाई आदि के काम आता है।

मुहा०—**(किसी चीज या बात पर) हरताल लगाना**=पूरी तरह से रद्द या व्यर्थ कर देना। जैसे—तुमने मेरे सारे किये-धरे पर हरताल लगा दी।

**विशेष**—मध्ययुग में प्रतिलिपि, लेखा आदि का जो लिखित अंश मिटाना होता था, उस पर गीली हरताल लगा देते थे, जिससे वह अंश बिल्कुल मिट जाता था। उसी से यह मुहा० बना है।

†स्त्री० दे० 'हटताली'।

**हरताली**—वि० [हि० हरताल] हरताल के रंग का।

पुं० उक्त प्रकार का गन्धकी या पीला रंग।

**हरतेजस्**—पु० [स०] पारा। पारद।

**हरद***—स्त्री०=हल्दी।

**हरदा**—पु०[हिं० हरदी] कीटाणुओं का वह समूह जो पीली या गेरू के रंग की बकनी के रूप में फसल की पत्तियों पर लगकर उन्हें हानि पहुँचाता है। गेरुई।

**हरदिया**†—वि०[पु० हिं० हरदी] हल्दी के रंग का। पीला।

पुं० १ उक्त प्रकार का रंग। उक्त रंग का घोड़ा।

**हरदिया देव**—पु० दे० 'हरदौल'।

**हरदी**†—स्त्री०=हल्दी।

**हरदू**—पुं०[देश०] एक प्रकार का बड़ा पेड़ जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत और पीले रंग की होती है। इस लकड़ी से बढ़ई के जुवे, कथियाँ और नावें बनती हैं।

**हरदौल**—पु० [सं० हरदत्त] ओरछा के राजा जुझार सिंह (सन् १६२६–३५ ई०) के छोटे भाई जो बहुत सत्यशील और मातृभक्त थे। इन्हें 'हर-दिया देव' भी कहते हैं।

**हरद्वान**—पुं० [?] [वि० हरद्वानी] एक प्राचीन स्थान, जहाँ की तलवार प्रसिद्ध थी।

**हरद्वानी**—वि०[हिं० हरद्वान] हरद्वान में होने या बननेवाला।

स्त्री० हरद्वान में बननेवाली एक तरह की तलवार।

**हरद्वार**†—पुं०=हरिद्वार।

**हरना**—स० [स० हरण] १. किसी की वस्तु उसकी इच्छा के विरुद्ध और बलपूर्वक ले लेना। छीन या लूट लेना। हरण करना। २. दूर करना या हटाना। जैसे—किसी का दुःख हरना। ३. न रहने देना। नष्ट करना। जैसे—किसी के प्राण हरना। ४. ले जाना। वहन करना। ५. हठात् ले लेना। अपने वश में कर लेना। जैसे—किसी का मन हरना=किसी को अपने ऊपर मोहित करना।

वि०[स्त्री० हरनी] हरने या हरण करनेवाला। जैसे—कष्ट-हरनी (भवानी)।

†पुं०=हिरना।

†स०=हारना।

**हरनाकस***—पु०=हिरण्यकशिपु।

**हरनाच्छ***—पु०=हिरण्याक्ष।

**हरनी**—स्त्री०[हिं० हड़] कपड़ों में हड का रंग देने की क्रिया।

स्त्री० 'हरन' या 'हिरन' की मादा।

**हरनौटा**—पु०[हिं० हरिन+औटा (प्रत्य०)] हिरन का बच्चा। छोटा हिरन।

**हर-परेवरी**—स्त्री० [हिं० हर (हल)+पड़ना] किसानों की औरतों का एक टोटका जो वे पानी न बरसने पर करती हैं।

**हरपा**—पु०[देश०] सुनारों का तराजू रखने का डिब्बा।

**हर-पुजी**—स्त्री०[हिं० हर=हल+पूजा] कार्तिक में हल का पूजन जो किसान करते हैं। कार्तिक में किसानों के द्वारा होनेवाली हल की पूजा।

**हर-प्रिय**—पु०[स०] करवीर। कनेर।

**हरफ**—पु०[अ० हर्फ़] अक्षर। वर्ण।

मुहा०—**(किसी पर) हरफ आना** ऐसी स्थिति होना जिसमें किसी पर कोई कलंक या दोष लग सके या उसकी हेठी हो सके। जैसे—किसी की इज्जत पर हरफ आना। **हरफ उठाना**=अक्षर पहचानकर पढ लेना। जैसे—अब तो बच्चा हरफ उठा लेता है। **हरफ बनाना**=(क) सुन्दर अक्षर लिखना। (ख) अक्षर लिखने का अभ्यास करना। (ग) लिखे हुए अक्षर को बदलकर उसके स्थान पर कोई और अक्षर रखना या लगाना।

**हरफ-गीर**—वि०[फा० हर्फ़गीर] [भाव० हरफगीरी] १ किसी लेख के अक्षर के गुण-दोष दिखाने या बतानेवाला। २ बहुत बारीकी से दोष देखने या पकड़नेवाला। ३. बाल की खाल निकालनेवाला।

**हरफा**—पु० [देश०] लट्ठों आदि से घेरकर बनाया हुआ भूसा रखने के लिए स्थान।

**हरफ-रेजरी**†—स्त्री०=हरफा-रेवड़ी।

**हरफा-रेवड़ी**—स्त्री० [हरफा ?+हिं० रेवड़ी] १. कमरख की जाति का एक प्रकार का वृक्ष। २ उक्त वृक्ष के छोटे खट-मीठे सफेद फल जो देखने में रेवड़ी के आकार के होते हैं।

**हर-बर**†—स्त्री०=हड़बड़ी।

**हरबराना**†—अ०, स०=हड़बड़ाना।

**हर-बल**—पुं०=हरावल।

**हरबा**—पुं० [अ० हर्ब.] १. अस्त्र। हथियार। २ पुरुष की लिंगेंद्रिय। (बाजारू)

**हर-बीज**—पुं० [सं० ष० त०] पारा। पारद।

**हर-बोंग**—वि० [हि० हर, हल+बोंग=लठ] अक्खड, उजड्ड और गँवार।

पुं० १. उत्पात। उपद्रव। २. कोलाहल। हो-हल्ला। ३. बहुत बड़ी अव्यवस्था या गड़बड़ी।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

**हर-बोला**—पु०[स० हर=महादेव+हिं० बोलना] मध्ययुग के हिंदू योद्धा या सैनिक की संज्ञा। उदा०—बुंदेले हरबोलों के मुँह से हमने सुनी कहानी थी।—सुभद्राकुमारी।

**विशेष**—मराठा युग के सैनिक 'हर हर महादेव' नाद करते हुए शत्रुओं पर आक्रमण करते थे। इसलिए वे लोग 'हरबोला' कहलाते थे।

**हर-भूली**—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का धतूरा जिसके बीज दवा के काम आते हैं।

**हरम**—पु० [सं० हर्म्य से अ०?] १. राज-प्रासाद या महल का वह हिस्सा जिसमें रानियाँ रहती हैं। जनानखाना। २. जनानखाने में रहनेवाली स्त्रियाँ।

स्त्री० १. स्त्री। पत्नी। २ रखेली। ३. दासी।

**हरम-जदगी**—स्त्री०[फा० हरामजादः] हरामजादा की तरह की शरारत। बदमाशी।

**हर-मल**—पु०[देश०]१ डेढ़-दो हाथ ऊँची एक प्रकार की झाड़ी जिसकी पत्तियाँ ओषधि के रूप में काम आती हैं। इसके बीजों से एक प्रकार का लाल रंग भी निकलता है। २ उक्त के बीजों से निकला हुआ लाल रंग।

**हरम-सरा**—स्त्री०[अ०] अन्त पुर। जनान-खाना।

**हरयाल**†—स्त्री०=हरियाली।

†वि० =हरा-भरा।

**हरवल**—पु० [हिं० हर=हल+औल (प्रत्य०)] वह रुपया जो हलवाहों को बिना ब्याज के पेशगी या उधार दिया जाता है।

†पु०=हरवल।

**हरबली**—स्त्री०[तु० हरावल] सेना की अध्यक्षता। फौज की अफसरी।

**हर-वल्लभ**—पु०[स०] संगीत में ताल के साठ मुख्य भेदों में से एक।

**हरवा**—वि०=हरुआ (हलका)।

†पु०=हार (गले में पहनने का)।

**हरवाना**—स०[हिं० हारना] ऐसा कार्य करना जिससे कोई हार जाय।

†अ०, स०=हड़बड़ाना।

**हरवाल**—पु०[देश०] एक प्रकार की घास। मुरारी।

**हरवाह**†—पु०=हलवाहा।

**हरवाहन**—पु०[स० ष० त०] शिव के वाहन अर्थात् नन्दी।

**हरवाहा**†—पु०=हलवाहा।

**हरवाही**—स्त्री०[हिं० हरवाह=ई (प्रत्य०)] हलवाहे का काम या मजदूरी।

**हर-शंकरी**—स्त्री०[स० हरशंकर] पीपल और पाकड़ के एक साथ लगे हुए पेड़ जो हिन्दुओं में पवित्र माने जाते हैं।

**हर-शेखर**—स्त्री० [स० हरशेखर+अच्—टाप्] गंगा (जो शिव के सिर पर रहती हैं)।

**हरष**†—पु०=हर्ष।

**हरषना***—अ०[हिं० हरष, हर्ष+ना (प्रत्य०)] १. हर्षित होना। प्रसन्न होना। २ पुलकित या प्रफुल्लित होना।

**हरषाना***—स०[स० हर्ष] हर्षित करना। प्रसन्न करना।

†अ०=हरषना।

**हरषित**†—वि० हर्षित।

**हरसना**†—अ०, स०=हरषना।

**हरसाना**†—अ०, स०=हरषाना।

**हर-सिंगार**—पु०[स० हार+सिंगार]१. मँझोले कद का एक प्रकार का पेड़। यह शरद ऋतु में फूलता है। २. उक्त वृक्ष के छोटे फूल जो बहुत सुगंधित होते हैं।

**हर-सौवा**†—पु०[हिं०हरिस] कोल्हू का वह पाटा जिस पर बैठकर बैल हाँके जाते हैं।

**हरहट**†—वि० [हिं० हटकना] नटखट।

**हरहठ**†—वि० [स० हृष्ट] १. हट्टा-कट्टा। २. प्रबल और उद्दंड या दुष्ट।

**हरहराना**—अ०[अनु०] 'हरहर' की आवाज होना।

स० 'हरहर' शब्द उत्पन्न करना।

**हरहा**—पु०[देश०] भेंड़िया। वृक।

†वि० हरहट।

**हरहाया**—वि० [हिं० हरहा] [स्त्री० हरहाई] (पशु) जो चारों ओर उपद्रव और फसल आदि की हानि करता-फिरता हो। हरहट। जैसे—हरहाया साँड, हरहाई भैंस।

**हर-हार**—पु० [स० ष० त०] १ शिव का हार। सर्प। साँप। २ शेषनाग।

**हर-हारा**—पु०[स्त्री० हरहारी] दे० 'हौलिहार'।

**हर-हीरवा**†—पु०[देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

**हराँस**†—पु० [अ० हर=गरम होना+स० अंश] मंद ज्वर। हरारत।

**हरा**—वि०[स० हरित] [स्त्री० हरी] १. जो ताजी उगी हुई घास या वृक्ष में लगी हुई पत्तियों के रंग का हो। हरित। सब्ज। जैसे—हरा कपड़ा, हरा काग़ज। २ (स्थान) जिसमें उक्त प्रकार और रंग की पत्तियाँ आदि दूर तक फैली हुई हों। हरियाली से भरा हुआ। (ग्रीन) जैसे—हरा खेत, हरा मैदान।

**मुहा०—हरी-हरी सूझना** निराशा, विपत्ति आदि के समीप होने पर भी उसका कोई ज्ञान न होना। संकट आदि की कल्पना या ज्ञान न होने के कारण निश्चिन्त और प्रसन्न रहना। जैसे—यहाँ जान आफत में पड़ी है और तुम्हें हरी-हरी सूझ रही है। हरे में आँखें फूलना या होना=दे० ऊपर 'हरी-हरी सूझना'।

३. (दाना, पत्ता या फल) जो अभी भुरझाया या सूखा न हो, और फलत कठोर न हुआ हो।

**पद—हरा-भरा।** (देखें)

४. (घाव) जो अभी भरा और सूखा न हो। ५ (मनुष्य अथवा उसका मन) जिसकी थकावट या शिथिलता मिट गई हो और जो फिर से प्रफुल्लित या प्रसन्न हो गया हो। जैसे—(क) अच्छी, ठंढी और साफ हवा लगने से आदमी हरा हो जाता है। (ख) गरमी में शरबत पीने से मन हरा हो जाता है।

पु० १ ताजी घास या पत्ती का सा रंग। सब्ज रंग। २. उक्त प्रकार के रंग का घोड़ा।

स्त्री०[हर का स्त्री०] पार्वती।

पुं० [हिं० हार] गले में पहनने का हार। उदा०—अपने कर मोतिन गुह्यो, भयो हरा हर हार।—बिहारी।

†वि० [सं० हर, हिं० हारना] १. रहित या शून्य। २. जिसका कुछ हरण हो गया हो, अर्थात् चला गया या निकल चुका हो। जैसे—सत-हरा=जो सत्य से रहित हो चुका हो या सत्य छोड़ चुका हो।

वि०[स० हर (प्रत्य०)] एक विशेषण जो कुछ संख्या-वाचक शब्दों के अंत में लगकर उनके उतनी बार होने का भाव प्रकट करता है। जैसे—दोहरा, तेहरा, चौहरा आदि।

**हराई**—स्त्री० [हिं० हल] खेत में हल जोतने की क्रिया या भाव। (गिनती के विचार से) जैसे—दोहराई खेत जोतना।

स्त्री०[हिं० हारना] हारने की क्रिया, दशा या भाव। हार।

**हराठा**†—वि० [स० हृष्ट] [स्त्री० हराठी] हृष्ट-पुष्ट। मोटा-ताजा और मजबूत। (पूरब)

**हरानद**—पु०[स०] रावण का एक नाम।

**हराना**—स०[हिं० हारना का स०] १. प्रतियोगिता, युद्ध आदि में प्रतिद्वंद्वी या शत्रु को पछाड़ना या परास्त करना। २. दौड़ा-दौड़ाकर शिथिल और परस्त करना। (पूरब)

सयो० क्रि०—डालना।

**हरापन**—पु०[हिं० हरा+पन (प्रत्य०)] हरे होने की दशा, गुण या भाव। हरितता। सब्जी।

**हरा-भरा**—वि०[हिं०] [स्त्री० हरी-भरी] १. जो हरे पेड़-पौधों और घास आदि से भरा हो। २ सब प्रकार से प्रफुल्लित, सम्पन्न और सुखी। जैसे—तेरी गोद हरी-भरी रहे।

**हराम**—वि०[अ०]१ जो इस्लाम धर्म-शास्त्र में वर्जित या त्याज्य हो। निषिद्ध। 'हलाल' का विपर्याय। २. बुरा। दूषित। ३. बहुत ही अप्रिय और कटु।

**मुहा०—(कोई बात) हराम करना**=कोई कार्य परम कष्टदायक और फलत असभव कर देना। जैसे—तुमने हमारा खाना-पीना हराम कर दिया है।

पुं०१. अधर्म। पाप। जैसे—चोरी करना या झूठ बोलना हराम है। २. धर्मशास्त्र द्वारा निषिद्ध की हुई चीज या बात।

**पद—हराम का**=(क) जो बेईमानी से प्राप्त हो। (ख) मुफ्त का। जैसे—हराम का खाना और मसजिद में सोना।

३. स्त्री और पुरुष का अनुचित संबंध। व्यभिचार। जैसे—हराम-जादा। हराम का लड़का।

**पद—हराम का पेट**=व्यभिचार के कारण रहनेवाला गर्भ।

४. सूअर, जिसका मांस मुसलमानों के लिए निषिद्ध और वर्जित है।

**हराम-कार**—पु०[अ०+फा०] १. निषिद्ध कर्म करनेवाला। २. व्यभिचारी।

**हराम-कारी**—स्त्री०[अ०+फा०] १. निषिद्ध कर्म। पाप। २. व्यभिचार।

**हराम-खोर**—पुं० [अ० हराम+फा० खोर] [भाव० हरामखोरी] १. हराम की कमाई खानेवाला। २. बिना पूरा परिश्रम किये या प्रतिफल दिये मुफ्त का माल खानेवाला। मुफ्तखोर।

**हराम-खोरी**—स्त्री० [अ० हराम+फा० खोरी] हराम-खोर होने की दशा या भाव।

**हराम-जादा**—पु० [अ० हराम+फा० जादा.] [स्त्री० हरामजादी] १ व्यभिचार से उत्पन्न पुरुष। दोगला। २ बहुत बड़ा दुष्ट या पाजी।

**हरामी**—वि० [अ० हराम] १ हराम का। हराम संबंधी। जैसे—हरामी कमाई। २. हराम या व्यभिचार से उत्पन्न। दोगला। वर्ण-संकर। ३. बहुत बड़ा दुष्ट, नीच और पाजी।

**पद—हरामी का पिल्ला**=(क) दोगला। वर्ण-संकर। (ख) बहुत बड़ा दुष्ट या पाजी।

**हरारत**—स्त्री० [अ०] १. गर्मी। ताप। २ मन्द या हलका ज्वर। थोड़ा बुखार। जैसे—आज हमें कुछ हरारत मालूम होती है।

**हरावर**—पु० १ =हरावल। २ =हड़ाबड़।

**हरावल**—पु० [तु०] १. सेना का अगला भाग। २ सिपाहियों का वह दल, जो फौज में सब से आगे रहता है। ३. मध्य-युग में ठगों या डाकुओं का सरदार, जो आगे चलता था।

**हरास**—पु० [फा० हिरास] १ भय। डर। २ आशंका। खटका। ३. दुःख। विषाद। ४ ना-उम्मेदी। निराशा।

†पु० दे० 'हर्रास'।

†पु० =ह्रास।

**हराहा**—वि० [हिं० हरहट] (पशु) जो प्रायः सींग से आक्रमण करता हो। मरकहा।

**हराहर**†—वि०=हलाहल।

†स्त्री० [हिं० हारना] बलान्ति। थकावट।

पु०=हलाहल।

**हरि**—वि० [स० √हृ (हरण करना) + इन्] १ पीला। २ बादामी या भूरा। ३ हरा।

पुं० १. ईश्वर। भगवान्। २. विष्णु। ३ इन्द्र। ४ सूर्य। ५ चन्द्रमा। ६ किरण। ७. शेर। सिंह। ८. सिंह राशि। ९. अग्नि। आग। १०. वायु। हवा। ११. श्रीकृष्ण। १२. रामचन्द्र। १३ शिव। १४ शुक्र ग्रह। १५ यम। १६ पुराणानुसार एक वर्ष या भू-भाग। १७. एक प्राचीन पर्वत। १८. अठारह वर्णों का एक प्रकार का छंद या वृत्त। १९ बौद्धों के अनुसार एक बहुत बड़ी संख्या। २० हंस। २१. मोर। २२ तोता। २३. साँप। २४ मेंक। २५. गीदड़।

अव्य० [हिं० हरए] धीरे। आहिस्ते। उदा०—सूखा हिया हार या भारी। हरि-हरि प्रान तजहिं सब नारी।—जायसी।

**हरिअर**†—वि० दे० 'हरा' (रंग)। उदा०—यह तन हरिअर खेत, तरुनी हरनी चर गई।

**मुहा—हरिअर सूझना***=दे० 'हरा' के अन्तर्गत 'हरी-हरी सूझना'।

†पु० हरा रंग।

**हरिअराना**†—अ०=हरिआना (हरा होना)।

स० हरा करना।

**हरिअरी**†—स्त्री० [हिं० हरिअर+ई (प्रत्य०)] =हरियाली।

**हरिआना**†—अ० [हिं० हरिअर] १. हरा होना। सब्ज होना। २ हरे फूल-पत्तों की तरह ताजा होना। ३. ताजगी तथा प्रसन्नता से भर उठना।

†स० हरा करना।

पुं०=हरियाना ।

**हरियाली**—स्त्री० [सं० हरित+आलि]=हरियाली ।

**हरिरक**—पु० [सं०] १. लाल या भूरे रंग का घोड़ा । २. चोर । जुआरी ।

**हरि-कथा**—स्त्री० [सं० ष० त०] ईश्वर या उसके अवतारों के गुण, यश, आदि का वर्णन या चर्चा । उदा०—हरि, अनन्त हरि-कथा अनन्ता ।—तुलसी ।

**हरि-कर्म**—पुं० [सं० मध्य० स०] यज्ञ ।

**हरिकारा**†—पु०=हरकारा ।

**हरि-कीर्तन**—पु० [स० ष० त०] भगवान् या उनके अवतारों की स्तुति का गान । भगवान् का भजन ।

**हरि-केलीय**—पुं० [सं० हरिकेलि+छ—ईय] बंग देश का एक नाम ।

**हरि-केश**—वि० [स० ब० स०] भूरे बालोंवाला ।
पु० शिव ।

**हरि-क्रांता**—स्त्री० [स० ब० स०] एक प्रकार की लता ।

**हरि-क्षेत्र**—पु० [सं०] पटना के पास का एक तीर्थ । हरिहरक्षेत्र ।

**हरि-गंध**—पु० [स० ब० स०] पीले चन्दन का पेड़ और लकड़ी ।

**हरि-गीता**—स्त्री०=हरि-गीतिका (छन्द) ।

**हरि-गीतिका**—स्त्री० [सं०] पिंगल में एक प्रकार का छन्द जिसके प्रत्येक चरण में २८ मात्राएँ होती है, अंत में एक लघु और एक गुरु होता है और १६ मात्राओं पर यति होती है । इसकी पाँचवी, उन्नीसवी और छब्बीसवी मात्राएँ लघु होनी चाहिएँ ।

**हरिचंद**†—पुं०=हरिश्चन्द्र ।

**हरि-चन्दन**—पुं० [सं० ष० त०] १. एक प्रकार का बढ़िया चन्दन । पीले चन्दन का पेड़ और लकड़ी ।
पुं० १. स्वर्ग-स्थित पाँच प्रकार के पेड़ों में से एक । २ कमल का पराग । ३. केसर । ४. चन्द्रमा की चाँदनी ।

**हरि-चर्म**—पु० [सं० ष० त०] व्याघ्र चर्म । बाघंबर ।

**हरि-चाप**—पु० [स० ष० त०] इंद्र-धनुष ।

**हरिजन**—पु० [स० ष० त०] १ भगवान् का बंदा । २ वह जिसे ईश्वरीय कृपा से भगवद्-भक्ति सुलभ हुई हो । भगवान् का भक्त । उदा०—इन मुसलमान हरि-जनन पर कोटिन्ह हिंदुन वारिए ।—भारतेन्दु । ३ आज कल पद-दलित तथा अस्पृश्य हिंदू जातियों की सामूहिक संज्ञा ।

**हरिजाई**†—पु०=हरजाई ।

**हरिण**—पुं० [सं० √हृ (हरण करना) + इनल्] [स्त्री० हरिणी] १ मृग । हिरन । २. हंस । ३. सूर्य । ४. विष्णु । ५ शिव । ६ पुराणानुसार एक लोक ।
वि० हरा (रंग) ।

**हरिणक**—पु० [सं०] हिरन का बच्चा या छोटा हिरन ।

**हरिण-कलंक**—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा ।

**हरिण-प्लुता**—स्त्री० [सं०] एक प्रकार का समवृत्त जिसके विषम चरणों में तीन सगण, एक लघु और एक गुरु होता है तथा सम में एक नगण, दो भगण और एक रगण होता है ।

**हरिण-लक्षण, हरिण-लांछन**—पु० [स०] चन्द्रमा ।

**हरिण-हृदय**—वि० [स० ब० स०] जिसका हृदय हिरन के जैसा हो अर्थात् भीरु ।

**हरिणांक**—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा ।

**हरिणाक्ष**—वि० [स० ब० स०] [स्त्री० हरिणाक्षी] जिसकी आँखें हिरन की आँखों के समान सुन्दर हों ।

**हरिणाश्व**—पु० [स०] वायु ।

**हरिणी**—स्त्री० [स० हरिण-ङीप्] १. मादा हिरन । हिरन की मादा । २ पीली चमेली । ३ मजीठ । ४ काम-शास्त्र में लिखित चार प्रकार की नायिकाओं में से एक । वि० दे० 'चित्रिणी' ।

**हरिणेश**—पु० [स० ष० त०] सिंह । शेर ।

**हरित**—वि० [स०√हृ+इति] १ भूरे या बादामी रंग का । कपिश । २ हरे रंग का । हरा ।
पु० १ सिंह । शेर । २ सूर्य । ३ सूर्य के रथ का घोड़ा । ४. मरकत नामक रत्न । पन्ना । ५. विषाद । ६ एक प्रकार का तृण । ७ हल्दी ।

**हरित**—वि० [स० हृ+इतच्] १ भूरे या बादामी रंग का । २ हरा । ३ पीला । ४ ताजा । जैसे—हरित गोमय (गोबर) ।
पु० १ बारहवें मन्वन्तर का एक देवगण । २ शेर । सिंह । ३ फौज । सेना । ४ हरियाली ।

**हरितक**—पु० [स०] १ शाक । साग । २ हरी घास ।

**हरित-कपिश**—वि० [स० ब० स०] पीलापन या हरापन लिए भूरा । लोहे के रंग का ।

**हरितकी**—स्त्री० दे० 'हरीतकी' ।

**हरित-मणि**—पु० [स० मध्य० स०] मरकत । पन्ना ।

**हरिता**—स्त्री० [स० हरि+तल्—टाप्] १ हरि या विष्णु का भाव । विष्णुपन । २ हल्दी । ३. नीली दूब । ४ भूरी गौ । ५. हरा अंगूर । ६ संगीत में एक प्रकार की स्वर-भक्ति ।

**हरिताभ**—वि० [स० ब० स०] जिसमें हरी आभा हो । हरी आभा से युक्त ।

**हरिताल**—पु० [स० ब० स०] १. ऐसा कबूतर, जिसका रंग कुछ-कुछ पीलापन या हरापन लिए हो । २ हरताल नाम की उपधातु ।

**हरितालक**—पु० [स०] १ हरिताल (कबूतर) । २ अभिनेता-अभिनेत्रियों की सजावट ।

**हरितालिका**—स्त्री० [स० ब० स०—कप् इत्व—टाप्] भादों के शुक्ल पक्ष की तृतीया जो स्त्रियों के लिए व्रत का दिन है । तीज ।

**हरितावली**—स्त्री० [स०] १ आकाश में मेघ आदि की पतली धज्जी या रेखा । २ वायु । हवा । ३. तलवार का धारवाला अंश या भाग । ४ मालकंगनी । ५ हरतालिका तीज ।

**हरितांशु (नु)**—पु० [स० मध्य० स०] १. मरकत मणि । पन्ना । २ तूतिया ।

**हरितांश्व**—वि० [स० ब० स०] जिसके घोड़े का रंग पीला या हरा हो ।
पु० सूर्य ।

**हरि-तुरंग**—पु० [स०] इन्द्र ।

**हरितोपल**—पु० [स० मध्य० स०] मरकत । पन्ना ।

**हरि-दर्भ**—पु० [स० ब० स०] १. सूर्य । २ सज्जा घोड़ा ।

**हरिदश्व**—पु० [स० ब० स०] १ सूर्य । २ आक या मदार का पेड़ ।

**हरि-दास**—पु० [सं० ष० त०] १. विष्णु का भक्त या सेवक । २. दक्षिण

भारत मे वह कीर्तनकार, जो भजन आदि गाकर लोगों को धार्मिक और पौराणिक कथाएँ सुनाता हो।

**हरि-दिन, हरि-दिवस**—पु० [स०] विष्णु का दिन, अर्थात् किसी पखवारे की एकादशी।

**हरि-दिशा**—स्त्री० [स० ष० त०] पूर्व दिशा जिसमे इन्द्र का निवास माना जाता है।

**हरि-देव**—पु० [स० ब० स०] १ विष्णु। २. श्रवण नक्षत्र।

**हरिद्र**—पु० [स०] पीला चन्दन।

**हरिद्रक**—पु० [स०] पीला चन्दन।

**हरिद्रा**—स्त्री० [स०] १ हल्दी। २ जगल। वन। ३ कल्याण। मगल। ४ सोना नामक धातु। ५ एक प्राचीन नदी।

**हरिद्रा-गणपति**—पु० [स० मध्य० स०] गणपति या गणेश जी की एक मूर्ति जिस पर मत्र पढकर हल्दी चढाई जाती है।

**हरिद्रा-द्रव**—पु० [स० ष० त०] हल्दी और दारुहल्दी।

**हरिद्रा-प्रमेह**—पु० [स० मध्य० स०] प्रमेह का एक भेद जिसमे हल्दी के समान पीला पेशाब होता है और जलन होती है।

**हरिद्रा-मेह**—पु०=हरिद्रा-प्रमेह।

**हरिद्रा-राग**—वि० [स० उपमि० स०] १ हल्दी के रग का। २ फलतः जिस पर पक्का रग न चढा हो। ३ जिस पर प्रेम का रग पूरा-पूरा न चढा हो।

पु० पूर्व राग का एक भेद, जिसमे प्रेम हल्दी के रग की तरह कच्चा होता है।

**हरि-द्वार**—पु० [स० ष० त०] १. हरि का द्वार। विष्ण-लोक का द्वार। २ पश्चिमी उत्तरप्रदेश मे गगा-तट पर स्थित एक प्रसिद्ध तीर्थ, जिसके सबध मे प्रसिद्ध है कि उसके सेवन से विष्णु-लोक का द्वार खुल जाता है।

**हरि-धनुष**—पु० [स० ष० त०] इन्द्र-धनुष।

**हरि-धाम**—पु० [स० ष० त०] विष्णु-लोक। बैकुण्ठ।

**हरिन**—पु० [स० हरिण] [स्त्री० हरनी, हरिनी] कुछ कालापन लिए पीले रग का एक प्रसिद्ध सीगवाला चौपाया जो चौकडियाँ भरता हुआ बहुत तेज दौडता है और जिसके छोटे-बडे अनेक भेद और उपभेद है। मृग। हिरन।

**मुहा०—हरिन हो जाना**=हरिन की तरह तेज भागते हुए जल्दी से गायब हो जाना। (ख) झट-पट दूर हो जाना। जैसे—नशा हरिन हो जाना।

स्त्री० [हि० हरा ?] पीलापन लिए हरे रग की एक भारी गैस या वाष्प जिसमे कुछ उग्र और अप्रिय गध भी होती है। (क्लोरिन)

**हरि-नक्षत्र**—पु० [स० ष० त०] श्रवण नक्षत्र जिसके अधिष्ठाता देवता विष्णु हैं।

**हरि-नख**—पु० [स० ष० त०] १. सिंह या बाघ का नाखून। २. उक्त का बनाया हुआ जत्र या तावीज, जो गले मे पहनते हैं। बघ-नहाँ।

**हरि-नग***—पु० [सं०] सर्प की मणि।

**हरिन-हरां**—पु० [देश०] सुहाग नाम का वृक्ष जिसके बीजों से जलाने का तेल निकलता है।

**हरिनाकुल**†—पु०=हिरण्यकशिपु।

**हरिनाक्ष**†—पु०=हिरण्याक्ष।

**हरि-नाथ**—पुं० [सं० ष० त०] (बंदरों में श्रेष्ठ) हनुमान्।

**हरि-नाम**—पु० [स० ष० त०] ईश्वर का नाम।

**हरि-नारायणी**—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**हरिनी**—स्त्री० [हि० हरिन] १ मादा हिरन। स्त्री जाति का मृग। २ जूही का फूल। ३. बाज पक्षी की मादा।

**हरिन्मणि**—पु० [स०] मरकतमणि। पन्ना।

**हरि-पद**—पु० [स० ष० त०] १ विष्णु-लोक। बैकुण्ठ। २ एक प्रकार का अर्धसम मात्रिक छन्द जिसके पहले और तीसरे चरणो मे १६-१६ तथा दूसरे और चौथे चरणो में ११-११ मात्राएँ होती हैं।

**हरिपुर**—पु० [सं० ष० त०] विष्णु-लोक। बैकुण्ठ।

**हरि-पैड़ी**—स्त्री० [हि० हरि+पैड़ी=सीढ़ी] हरिद्वार तीर्थ में गंगा का एक विशेष घाट जहाँ के स्नान का बहुत माहात्म्य है।

**हरि-प्रस्थ**—पु० [स०] इन्द्र-प्रस्थ।

**हरि-प्रिय**—पु० [स० ष० त०] १ कदंब। २. गुलबहिरिया। ३ शंख। ४. सन्नाट। बकनर। ५ पागल। विक्षिप्त। ६ मूर्ख व्यक्ति। ७ सगीत मे कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

**हरि-प्रिया**—स्त्री० [स० ष० त०] १ विष्णु की प्रिया अर्थात् लक्ष्मी। २. तुलसी। ३ पृथ्वी। ४ मध्य। शहद। ५ मद्य। शराब। ६ द्वादशी तिथि। ७. लाल चन्दन। ८ मात्रिक सम दण्डक (छन्द) का एक प्रकार या भेद जिसके प्रत्येक चरण मे १२-१२-१२ और १० के विराम से कुल ४६ मात्राएँ होती है।

**हरि-प्रीता**—स्त्री० [स०] ज्योतिष मे एक शुभ मुहूर्त। अभिजित्।

**हरि-बीज**—पु० [स० ष० त० अच् वा] हरताल।

**हरि-बोधिनी**—स्त्री० [स० हरि√बध् (ज्ञान करना)+णिच्-णिनि-ङीप्] कार्तिक शुक्ल एकादशी। देवोत्थान एकादशी।

**हरि-भक्त**—पु० [स० ष० त०] [भाव० हरिभक्ति] विष्णु या भगवान् का प्रभक्त। ईश्वर का प्रेमी।

**हरि-भक्ति**—स्त्री० [स० ष० त०] विष्णु या ईश्वर की भक्ति। ईश्वर-प्रेम।

**हरि-भुज**—पु० [स० हरि√भुज्+क्विप्] साँप। सर्प।

**हरि-मंथ**—पुं० [स० ब० स०] १ अग्नि-मथ या गनिधारी का वृक्ष। २ मटर। ३ चना। ४ एक प्राचीन जनपद।

**हरिमा(न्)**—स्त्री० [सं०] १ पीलापन। २ हरापन।

**हरि-मेध**—पु० [स०] १. अश्व-मेध यज्ञ। २ विष्णु।

**हरियं**—पुं० [स०] पिंगल वर्ण का घोड़ा।

**हरियर**†—पु०=हरीरा।

वि० हरा।

**हरियराना**—अ०=हरिआना (हरा होना)।

**हरियल**†—वि०=हरिअर (हरा)।

†पु०=हारिल (पक्षी)।

**हरिया**†—पु० [हि० हर (हल)] हल जोतनेवाला। हलवाहा।

**हरियाई**†*—स्त्री०=हरियाली।

**हरिया धोया**—पु० [हि० हरा+धोया] नीला थोथा। तूतिया।

**हरि-यान**—पु० [सं० ष० त०] (विष्णु के वाहन) गरुड।

**हरियाना***—अ० [हि० हरिअर] १. पेड़-पौधों का हरा होना।

२. प्रफुल्लित या प्रसन्न होना। उदा०—मख राखन को रग पाइ नरपति हरि आने।—रत्नाः।

स० १. हरा-भरा करना। २. प्रसन्न करना।

पु० दे० 'बाँगड़' (प्रदेश) जहाँ की गौएँ और भैसें प्रसिद्ध हैं।

**हरियानी**—वि० [हिं० हरियाना प्रदेश] 'हरियाना' अर्थात् बाँगड प्रदेश का। बाँगडू।

स्त्री०=बाँगड़ (बोली)।

**हरियारी**†—स्त्री०=हरियाली।

**हरियाला**—वि० [हिं० हरा] हरे रग का। हरा।

**हरियाली**—स्त्री० [हिं० हरियाला] १. हरे-भरे पेड-पौधो का विस्तृत फैलाव या समूह। २. उक्त के सुखद प्रभाव के आधार पर आनन्द और प्रसन्नता। उदा०—भोला मुहाग इठलाता हो, ऐसी हो जिसमे हरियाली।—कोई कवि।

मुहा०—**हरियाली सूझना**=कठिन अवसर मे भी उमग, प्रसन्नता या दूर की असभव बातें सूझना। हरी-हरी सूझना।

३. चौपायो को खिलाया जानेवाला हरा चारा। ४ दूब।

**हरियाली-तीज**—स्त्री० [हिं० हरियाली+तीज] भादो सुदी तीज। हरतालिका तीज।

**हरियावं**—पु० [देश०] मध्य युग मे फसल की एक प्रकार की बँटाई जिसमे ९ भाग असामी और ७ भाग जमीदार लेता था।

**हरिला**—पु०=हारिल (पक्षी)।

**हरि-लीला**—स्त्री० [स० ष० त०] १. ईश्वरीय लीला। २ एक प्रकार का समवृत्त वर्णिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में तगण, मगण, दो जगण और गुरु लघु वर्ण होते हैं। इसके अनिम लघु को गुरु करने पर वसन्त-तिलका छन्द बन जाता है।

**हरि-लोक**—पु० [स० ष० त०] विष्णु-लोक। वैकुण्ठ।

**हरिलोचन**—पु० [स० ब० स०] १ केकडा। २ उल्लू।

**हरि-वंश**—पु० [स० ष० त०] १ कृष्ण का कुल। २ हिन्दुओ का एक प्रसिद्ध धार्मिक ग्रन्थ जो महाभारत का परिशिष्ट और एक उप-पुराण माना जाता है, और जिसमे श्रीकृष्ण तथा उनके कुल के यादवो का वर्णन है।

**हरि-वर**—पु० [स०] १. ईश्वर का भक्त। हरि-भक्त। २ कोयल।

**हरि-वर्ष**—पु० [स०] पुराणानुसार जम्बू द्वीप के नौ खण्डो मे से एक।

**हरि-वल्लभा**—स्त्री० [स० ष० त०] १ लक्ष्मी। २ तुलसी। ३. अधिक मास के कृष्ण पक्ष की एकादशी।

**हरि-वास**—पु० [स० ब० स०] अश्वत्थ या पीपल जिसमे विष्णु का निवास माना गया है।

**हरि-वासर**—पु० [स० ष० त०] विष्णु का दिन अर्थात् एकादशी।

**हरि-वाहन**—पु० [स० ष० त०] १. विष्णु का वाहन अर्थात् गरुड। २. सूर्य। ३. इन्द्र।

**हरि-शंकर**—पु० [स० द्व० स०] विष्णु और शिव का युग्म।

**हरि-शयनी**—स्त्री० [स० ब० स०] आषाढ शुक्ल एकादशी। कहते है की इस दिन विष्णु सो जाते हैं और चार महीने बाद देवोत्थान एकादशी को जागते हैं।

**हरिशर**—पुं० [स०] शिव। महादेव।

**हरिश्चंद्र**—वि० [स०] सोने की सी चमकवाला। स्वर्णाभ। (वैदिक) पु० सूर्य-वश के एक प्रसिद्ध राजा, जो बहुत बडे दानी और सत्य-निष्ठ थे। ये त्रिशकु के पुत्र थे, और इन्हे अपनी सत्य-निष्ठा के लिए बहुत अधिक कष्ट सहने पडे थे।

**हरिष**—पु० [स०] हर्ष।

**हरिषेण**—पु० [स०] १ विष्णु-पुराण के अनुसार दसवें मनु के पुत्रों में से एक। २ जैन पुराणो के अनुसार भारत के दस चक्रवर्तियो मे से एक।

**हरिस**—स्त्री० [स० हलीषा] १ हल का वह लम्बा लट्ठा, जिसके एक सिरे पर फालवाली लकडी और दूसरे सिरे पर जुआ अटका रहता है। २ हलके हरिस की तरह का टकडा जो बैल-गाडी मे भी होता है।

**हरि-सिंगार**—पु०=हरसिंगार (पेड और फूल)।

**हरि-सुत**—पु० [स० ष० त०] १ श्रीकृष्ण के पुत्र, प्रद्युम्न। २. अर्जुन जो इन्द्र के अश से उत्पन्न माने गये हैं।

**हरि-हंस**—पु० [स०] प्रातःकालीन सूर्य। बाल-सूर्य। उदा०—हरि हस सापरु ससि हर हीर।—पृथ्वीराज।

**हरिहर-क्षेत्र**—पु० [स० मध्य० स०] पटने के पास का एक तीर्थ स्थान जहाँ कार्तिकी पूर्णिमा को गगा-स्नान और भारत का एक बहुत बडा मेला होता है। यहाँ हाथी, घोडे आदि जानवर बिकने के लिए आते है। कहते है कि गज और ग्राहवाली पौराणिक घटना यहीं हुई थी।

**हरि-हरित**—पु० [स०] वीर-बहूटी। इन्द्र-वधू।

**हरिहाया**—वि० [स्त्री० हरिहाई] हरियाया।

**हरि**—स्त्री० [स०] १ कन्यप की कपिला नाम की पत्नी के गर्भ से उत्पन्न दस कन्याओं मे से एक, जिनसे सिंह, बन्दरों आदि की उत्पत्ति मानी गई है। २ चौदह वर्णों का एक प्रकार का वर्ण-वृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे जगण, रगण, जगण, रगण और अत मे लघु गुरु होते है।

स्त्री०[हि०हर=हल] मध्यप्रदेश मे वह परिपाटी जिसके अनुसार असामी या खेतिहर अपना हल और बैल ले जाकर जमीदार के खत जोतते है।

स्त्री० स० हर] का हिं० रूप स्त्री०। उदा०—हरी धौ यह हर की। (केसर की पहेली)

†पु०=हरि।

वि०=हिं० हरा' का स्त्री०।

**हरी-कसीस**—स्त्री०=हीरा-कसीस।

**हरी-केन**—पु० [अ० ह्यरिकेन] एक प्रकार की लालटेन जिसकी बत्ती मे हवा का झोका नहीं लगता।

**हरी खाद**—स्त्री० [हिं०] खेती के काम के लिए नील, मूँग, सन आदि के कुछ विशिष्ट पौधे जो थोडे बडे होने पर हल जोत कर खेत की मिट्टी मे मिला दिए जाते है। (यौन मैन्योर)

**हरी-चाह**—स्त्री० [हिं० हरी+चाह] एक प्रकार की घास, जिसकी जड मे नींबू की सी सुगध होती है। गध-तृण।

**हरी-चुग**—वि० [हिं० हरी (हरियाली)+चुगना] वह जो केवल अच्छे समय मे साथ दे। सम्पन्न अवस्था मे साथ देनेवाला। फलन. स्वार्थी।

**हरीत**†—पु०=हारीत।

**हरीतकी**—स्त्री० [स० हरि√ई (गमनादि)+क्त—कृदीर्घ] हड़। हर्रे।

**हरीतिमा**—स्त्री० [सं०] १. हरापन। २. हरियाली।

**हरीफ**—पु० [अ० हरीफ] १ दुश्मन। शत्रु। २. प्रतिद्वंद्वी।

**हरी-बुलबुल**—स्त्री० =हरेवा (पक्षी)।

**हरीरा**—पु० [अ० हरीर.] दूध को औटाकर तथा उसमे कुछ विशिष्ट मसाले और मेवे डालकर बनाया जानेवाला वह पेय, जो मुख्य रूप से प्रसूता स्त्रियों को पिलाया जाता है।

वि० उक्त पेय के रग का अर्थात् हरा।

वि० [हिं० हरा] प्रसन्न।

**हरीरी**—वि० [हिं० हरीरा] हरीरे के रग का। जैसे—दरवाजों पर हरीरी पर्दे लगे थे।

†पु० १ हरीरा (पेय पदार्थ)। २ एक प्रकार का रेशमी कपड़ा। (मध्य युग)

**हरील**†—पु० =हारिल।

**हरीश**—पु० [स० ष० त०] १ बन्दरों के राजा। २ हनुमान। ३ सुग्रीव।

**हरीस**—वि० [अ०] हिर्स अर्थात् लालच करनेवाला। लालची। लोभी।

†पु० हरिस।

**हरुअ, हरुआ**†—वि० [स० लघुक, पा० लहुअ, विपर्यय 'हलुअ'] [स्त्री० हरुई] जो भारी न हो। हलका।

**हरुआई**†*—स्त्री० [हिं० हरुआ+ई (प्रत्य०)] १. 'हरुआ' अर्थात् हलके होने की अवस्था, गुण या भाव। हलकापन। २. तेजी। फुरती।

**हरुआना**†—अ० [हिं० हरुआ+ना (प्रत्य०)] १ हलका होना। २ जल्दी या तेजी मे आना।

†स० हलका करना।

**हरुए**†—अव्य० [हिं० हरुआ] १. धीरे-धीरे। आहिस्ता से। २. इतने धीरे से कि आहट या शब्द न होने पाए अथवा कोई दूसरा न सुन पाए। उदा०—हरुए कहु मो मन बसत सदा बिहारीलाल।—बिहारी।

**ह वा**†—वि० हरुआ।

**हरू**†—वि०=हरुआ (हलका)।

**हरूफ**—पु० [अ० हर्फ का बहु०] अक्षर। वर्ण। हरफ।

**हरे**—पु० [स०] 'हरि' शब्द का सबोधन रूप।

अव्य० [हिं० हरुआ] १ धीरे से। २. बिना कोई उग्रता या तीव्रता दिखलाये। कोमलतापूर्वक और सहज मे।

वि० १. धीमा। मद। २. कोमल। मृदु। ३ हलका।

**हरेऊ**†—पु०=हरेव। (देश०) उदा०—खुरासान औ चला हरेऊ।—जायसी।

**हरेक**—वि० [हिं० हर+एक] प्रत्येक। हर एक। (अशुद्ध रूप)

**हरेणु**—पुं० [सं०] १ मटर। २. हद बाँधने के लिए बनाई जानेवाली बाढ़।

**हरेना**†—पु०[हिं० हरा] वह विशेष प्रकार का चारा, जो ब्यानेवाली गाय को दिया जाता है।

**हरेरा**†—वि० [स्त्री० हरेरी] =हरा।

पुं० =हरीरा।

**हरेरी**†—स्त्री० =हरियरी (हरियाली)।

**हरेव**—पु० [अ० हिरात] १. मंगोलों का देश। २. उक्त देश में बसनेवाले लोग, अर्थात् मंगोल।

**हरेवा**—पु० [हिं० हरा] मधुर स्वर में बोलनेवाली बुलबुल के आकार-प्रकार की हरे रग की चिड़िया। हरी बुलबुल।

**हरे**†—अव्य० =हरे।

**हरेना**—पु० [हिं० हर (हल)+ऐना (प्रत्य०)] [स्त्री० अल्पा० हरैनी] १ वह टेढी गाबदूम लकडी जो हल के लट्ठे (हरिस) के एक छोर पर आडे बल मे लगी रहती है और जिसमे लोहे का फार ठोका रहता है। २ बैलगाडी मे सामने की ओर निकली हुई लकडी।

**हरैनी**†—स्त्री० =हरैना।

**हरैया**†—वि० [हिं० हरना] १ हरण करने अर्थात् हरनेवाला। २. दूर करने या मिटानेवाला।

**हरोल, हरौल**†—पु० =हरावल।

**हर्ज**—पु०[अ०]१ काम मे होनेवाली ऐसी बाधा या रुकावट, जिसमें कुछ हानि भी होती हो।

**पद—हर्ज-मर्ज**=अडचन। बाधा।

२ हानि। नकसान। जैसे—हमारे दो घटे हरज हुए हैं।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

**हर्तव्य**—वि० [स०] जो हरण किया जा सके या किया जाने को हो।

**हर्ता(र्तृ)**—वि० [स०] [स्त्री० हर्त्री] १ हरण करनेवाला। २ दूर या नष्ट करने वाला।

**हर्तार**—वि० [स०] हरण करनेवाला। हर्ता।

**हर्द**†—स्त्री० =हलदी।

**हर्दी**†—स्त्री० =हलदी।

**हर्फ**—पु०=हरफ।

**हर्बा**—पु० =हरबा (हथियार)।

**हर्म्य**—पु० [स० √हृ+यत्-मुट् च] १. राज-भवन। महल। २ बहुत बडा मकान। हवेली। ३ नरक।

**हर्म्य-पृष्ठ**—पु० [स० ष० त०] मकान की पाटन या छत।

**हर्य-कुल**—वि० [स०] सूर्यवश मे उत्पन्न।

**हर्यक्ष**—वि० [स० ब० स०] भूरी आँखोवाला।

पु० १. सिंह। शेर। २ सिंह राशि। ३ शिव। ४ कुबेर। ५. बदर। ६ एक प्रकार का रोगकारक ग्रह।

**हर्यश्व**—पु० [स० ष० त० ब० स० वा] १. इन्द्र का भूरे रग का घोडा। २ इन्द्र। ३. शिव।

**हर्र**—स्त्री०=हरें (हरीतकी)।

**हर्रा**—पु० [स० हरीतकी] बडी जाति की हड़, जिसका उपयोग त्रिफला मे होता है और जो रँगाई के काम में भी आती है।

†पु० [१] गन्दगी। मैला।

††पु०=हरें।

**हर्रे**—स्त्री० [स० हरीतकी] १. एक बडा पेड़, जिसके पत्ते महुए के पत्तो की तरह चौड़े होते है और जिसका फल त्रिफला मे का एक है। २ उक्त फल के आकार के चाँदी, सोने आदि के बनाये हुए वे टुकड़े या इसी प्रकार के और नगीने या रत्न जो मालाओं या हारो के बीच-बीच मे शोभा के लिए पिरोये जाते हैं। जैसे—मोतियो की माला में सोने (या पन्ने) की हर्रे पिरोई थी। ३ एक प्रकार का गहना, जो हड़ के आकार का होता है और नाक में पहना जाता है। लटकन।

**हरँया**—स्त्री० [हिं० हरँ] १. हाथ में पहनने का एक गहना, जिसमें हरँ के-से सोने या चाँदी के दाने पाट में गुथे रहते हैं। २. माला या कंठे के दोनों छोरों पर का चिपटा दाना जिसके आगे सुराही होती है।

†वि० [हिं० हरण] हरण करनेवाला।

**हर्ष**—पु० म०√हृष् (खुश होना) +अच् ] [वि० हर्षित] १. प्रसन्नता या भय के कारण रोएँ खड़े होना। रोमांच। २ साहित्य में संयोग-शृंगार के अंतर्गत एक संचारी भाव जिसमें प्रसन्नता के कारण रोएँ खड़े हो जाते हैं या चेहरे पर कुछ पसीना आता है। ३. प्रसन्नता। आनंद। खुशी।

**हर्षक**—वि० [सं० √हृष् (खुश होना)+णिच्-ण्वुल्-अक् ] हर्ष उत्पन्न करनेवाला।

**हर्षकर**—वि० [स०] आनंद देनेवाला। हर्षकारक।

**हर्ष-कौलक**—पु० [स०] कामशास्त्र में एक प्रकार का आसन या रति-बंध।

**हर्षण**—पु० [म०√हृष् (खुश होना)+णिच्-ल्यु-अन] १. हर्ष या भय से रोंगटों का खड़ा होना। जैसे—लोम-हर्षण। २ प्रफुल्ल या प्रसन्न होना। ३. कामदेव के ५ बाणों में से एक। ४ आँख का एक रोग। ५ एक प्रकार का श्राद्ध। ६ फलित ज्योतिष में एक प्रकार का योग। ७. शस्त्रों का एक प्रकार का प्रहार या वार। ८ काम के वेग से पुरुष की इन्द्रिय में होनेवाला तनाव।

**हर्षणीय**—वि० [स०] जिसमें हर्ष होना हो।

**हर्ष-पारिका**—स्त्री० [स०] संगीत में चौदह प्रकार के मुख्य तालों में से एक प्रकार का ताल।

**हर्षना**—अ० [सं० हर्षण] हर्षित या प्रसन्न होना। खुश होना।

**हर्षभाग**—वि० [स०√हृष्+भानच्+भक्] हर्षयुक्त। प्रसन्न।

**हर्ष-वर्द्धन**—पु० [स०] विक्रमी ७ वीं शती का उत्तरी भारत का एक क्षत्रिय-सम्राट् जो बौद्ध था।

**हर्षाना**—अ० [स० हर्ष+हिं० आना (प्रत्य०)] हर्ष से युक्त या आनंदित होना। प्रसन्न होना।

स० हर्ष से युक्त या आनंदित करना।

**हर्षाश्रु**—पु० [म० मध्य० स० प० त० वा] आनंद से निकले हुए आँसू। आनंद के आँसू।

**हर्षित**—भू० कृ० [स० हर्ष+इतच्] १. जिसे हर्ष हुआ हो। प्रसन्न किया हुआ। २ जिसे रोमांच हुआ हो।

पु० हर्ष। प्रसन्नता।

**हर्षी (र्षिन्)**—वि० [स०] १. प्रसन्न करनेवाला। २ प्रसन्न।

**हर्षुक**—वि० [सं०] प्रसन्न करनेवाला।

**हर्षुल**—वि० [म०√हृष्+उलच्] १ हर्ष से भरा हुआ। २ अपनी प्रवृत्ति या स्वभाव से जो प्रसन्न रहता हो।

पु० १ स्त्री का नायक या प्रियतम। २ मृग। हिरन। ३. गौतम बुद्ध का एक नाम।

**हर्षुला**—स्त्री० [स० हर्षुल-टाप्] ऐसी कन्या, जिसकी ठोढ़ी पर बाल हों।

**विशेष**—ऐसी कन्या धर्मशास्त्र के अनुसार विवाह के अयोग्य मानी जाती है।

**हर्षोत्फुल्ल**—वि० [स० तृ० त०] खुशी से फूला हुआ।

**हर्षोन्माद**—पु० [स० हर्ष+उन्माद] वह स्थिति जिसमें मनुष्य बहुत अधिक आनंद या हर्ष के कारण सुध-बुध भूलकर पागलों का-सा आचरण करने लगता है। (एक्सटेसी)

**हर्सा**†—पु०=हार्स (हल का लट्ठा)।

**हल**—वि० [स०] (अक्षर या वर्ण) जिसके अन्त में 'अ' स्वर का उच्चारण न होता हो। जैसे—देवनागर में का 'त्' हल् है।

पु० टेढ़ी रेखा के रूप में वह चिह्न (्) जो व्यंजनों के नीचे लगाया जाता है, जिनसे उन के अन्त में स्थित 'अ' का उच्चारण न हो।

**हलंत**—वि० [स० ब० स०] (शब्द) जिसका अंतिम अक्षर या वर्ण हल् हो। जैसे—'पठत्' शब्द हलंत है।

**हल**—पु० [म०√हल् (खेत जोतना)] क घञर्थे करणे] १. खेत जोतने का एक प्रसिद्ध यंत्र, जो पहले लकड़ी का ही बनता था; पर अब लोहे का भी बनने लगा है।

क्रि० प्र०—चलाना।—जोतना।

मुहा०—हल जोतना=खेती में हल चलाना।

२ सामुद्रिक के अनुसार पैर में होनेवाली एक रेखा, जो उक्त यंत्र के आकार की होती है। ३ अंगुल नापने का पुरानी चाल का लट्ठा। ४ प्राचीन काल का एक प्रकार का अस्त्र। ५ एक प्राचीन देश जो उत्तर भारत में था।

पु० [अ०] १. हिसाब लगाना। गणित करना। २ वह पूरा विवरण जो गणित के फल के उत्तर के रूप में तैयार किया जाता है। ३. किसी कठिन विषय या समस्या का निराकरण या मीमांसा। (सॉल्यूशन)

**हल-कंप**†—पु० हड़-कंप।

**हलक**—पु० [अ० हल्क] गले की नली। कंठ।

मुहा०—हलक के नीचे उतरना=(क) मुँह में डाली हुई चीज का पेट में ले जानेवाले स्थान में जाना। पेट में जाना। (ख) मन में बैठना। २ कोई उपदेश या सीख का मन पर असर होना।

**हलकई**†—स्त्री० [हिं० हलका+ई (प्रत्य०)] १. हलकापन। २ ओछापन। तुच्छता। ३. अशिष्टता। टेढ़ी।

**हलक-कुदव**—पु० [सं०] हल की वह लकड़ी, जो लट्ठे की छोर पर आड़ बल में जड़ी रहती है और जिसमें फाल ठोका रहता है। हरैना।

**हलक-तालू**—पु० [हिं०] संगीत में ऐसी तान या स्वर, जो हलक और तालू से निकलता हो। (जबड़े से नहीं)। उदा०—गले में कोकिला-गायन के हड्डी ही नहीं, गोया, हजारों में कहीं ये हलक ये तालू निकलते हैं। —ज्ञान साहब।

**विशेष**—संगीत में हलक-तालू का गाना श्रेष्ठ समझा जाता है और इसके विपरीत जबड़े का निकृष्ट।

**हलकना**—अ० [स० हल्लन अथवा अनु० हल-हल] १. किसी पात्र आदि में तरल पदार्थ का इस प्रकार हिलना कि उससे शब्द उत्पन्न हो। जैसे—पेट के पानी का हलकना। उदा०—सखि बात सुनो इक मोहन की निकसैं मटकी सिर लै हलकैं।—केशव। २ तरंगित होना। लहराना।

**हलका**—वि० [स० लघुक, प्रा० लहुक वर्ण विपर्यय से पु० हिं० 'हलुक'] [स्त्री० हलकी] १. जो तौल में अपेक्षाकृत अधिक भारी न हो। कम भारवाला। 'भारी' का विपर्यय। जैसे—यह पत्थर हलका है तुम उठा सकते हो। २ आनुपातिक दृष्टि से कुछ कम या थोड़ा।

३. जो अपने मान, मूल्य, वेग, शक्ति आदि के मानक या साधारण स्थिति से कुछ कम या घट कर हो। जैसे—हलका दर्द, हलका बुखार, हलका रंग, हलकी सरदी। ४. जिसमे उग्रता, तीव्रता आदि साधारण से कुछ कम या घटकर हो। जैसे—हलकी चोट, हलका वार। ५ (व्यक्ति) जिसके स्वभाव में गम्भीरता, सौजन्य आदि अपेक्षाकृत कम हो। ओछा। तुच्छ। ६. (कथन या बात) जिसमें गुरुत्व या शालीनता अपेक्षया कम हो। जैसे—हलकी बात। ७. (काम) जिसमें अधिक परिश्रम न करना पडता हो। सहज। सुगम। ८ किसी प्रकार के भार आदि से मुक्त या रहित। जैसे—लडकी का ब्याह करके वह भी हलके हो गया। ९. जिसके कारण भार कम पड़ता हो। जैसे—हलका भोजन। १०. (खेत या जमीन) जो कम उपजाऊ हो। जैसे—यह खेत तुम्हारे खेत से कुछ हलका है। ११. कम। थोडा। जैसे—हलके दाम का कपडा। १२ (प्रकृति या शरीर) जिसमे प्रफुल्लता हो। जैसे—नहाने से तबीयत हलकी हो जाती है। १३. किसी की तुलना मे कम अच्छा। घटिया। जैसे—हलका माल। १४. जिसका विशेष गौरव, प्रतिष्ठा या मान न हो। जैसे—देखो, हमारी बात हलकी न पडने पाए।

**पद—हलका सोना** = हलका सुनहरी रग। (रँगरेज) **हलकी बात** = ओछी, तुच्छ या बुरी बात।

**मुहा०—हलका करना** = (क) अपमानित करना। (ख) तुच्छ ठहराना। जैसे—तुमने दस आदमियों के बीच मे हल्का किया। **(मन) हलका-भारी होना** = (क) उकताना। ऊबना। (ख) मन में किसी प्रकार की चंचलता या विकार का अनुभव करना। (ग) लोगो की दृष्टि मे कुछ तुच्छ ठहरना। **हलके-हलके**=धीरे धीरे। मद गति से। वि०[हिं० हलक या हड़कना]पागल (कुत्ते, गीदड आदि के लिए प्रयुक्त)। जैसे—हलका कुत्ता।

पु०[हल-हल से अनु०] पानी की तरग। लहर।

पुं०[अ० हल्क]१. किसी चीज के चारों ओर का घेरा। मडल। २ गोलाकार रेखा। वृत्त। ३. वृत्त की परिधि। ४ किसी प्रकार का सीमित क्षेत्र। ५. शासनिक आदि कार्यों के लिए निर्धारित किया हुआ कोई विशिष्ट क्षेत्र या भू-खड। जैसे—पुलिस के सिपाही रात को अपने-अपने हलके मे गश्त लगाते हैं। ६ गोल घेरा बनाकर रहनेवाले पशुओं का झुण्ड। जैसे—मुगल बादशाहों के साथ हाथियो के हलके चलते थे। ७. पशुओं के गले मे पहनाया जानेवाला पट्टा। ८ लोहे का वह गोलाकार बंद, जो पहियों पर जडा रहता है। हाल।

**हलकाई**†—स्त्री०[हिं० हलका+ई (प्रत्य०)]=हलकापन।

**हलकान**†—वि०=हलाकान।

**हलकाना**†—अ० [हिं० हलका+ना (प्रत्य०)] हलका होना। बोझ कम होना।

स० हलका करना।

†अ०[हिं० हड़क] (कुत्ते, गीदड आदि का) पागल होना।

स० पागल करना या बनाना।

स०[हिं० हलकना] १. किसी वस्तु मे भरे हुए पानी को हिलाना या हिलाकर बुल्लाना। २. तरंग या लहर उत्पन्न करना।

†स० हिल जाना।



**हलकानी**†—स्त्री० =हलाकानी।

**हलकापन**—पुं०[हिं० हलका+पन (प्रत्य०)]१. हलके होने की अवस्था, गुण या भाव। २ ओछापन। तुच्छता।

**हलका पानी**—पु० [हिं०] ऐसा पानी जिसमे खनिज पदार्थ बहुत थोड़े हों। नरम पानी।

**हलकारना**†—स०[अ० हल+हिं० करना] १. हल करके बहुत ही महीन चूर्ण के रूप मे लाना। जैसे—सोना हलकारना। (चित्रकला) २ तितर-बितर करना। छितराना।

**हलकारा**†—पुं०=हरकारा।

**हलकारी**—स्त्री० [हिं० हड+कारी] १. कपडा रँगने के लिए पहले उसमे फिटकरी, हड या तेजाब आदि का पुट देना जिसमे रग पक्का हो।

स्त्री०[हिं० हलदी] कपडो की वह छाप जो हलदी के रग के योग से होती है। (छीपी)

**हलकारी-सोना**—पु०[हिं० हलकारना+सोना] चित्र कला मे सोने के बरकों का वह चूर्ण, जो चित्रो पर लगाने के लिए तैयार किया जाता है।

**हलकोरा**†—पु० [अनु० हल-हल] हिलोरा। तरग। लहर।

**हल-गोलक**—पु०[स०] एक प्रकार का कीडा।

**हल-ग्राही (हिन्)**—वि० [स० हल√ ग्रह् (पकडना)+णिच्+णिनि] हल पकडनेवाला। हल की मूठ पकडकर खेत जोतनेवाला।

पु० किसान। खेतिहर।

**हल-चल**—स्त्री०[हिं० हलना-चलना]१ वह अवस्था या स्थिति जिसमे किसी स्थान पर लोगों का चलना-फिरना अर्थात् आना-जाना या घूमना-फिरना लगा रहता हो। २ किसी स्थान पर लोगो के आने-जाने या काम करने के कारण होनेवाली चहल-पहल तथा शोर-गुल।

**मुहा०—हल-चल मचना**=(क) शोर मचना। (ख) उद्वेग होना। (ग) आतक, भय आदि के कारण भगदड मचना।

**हल-जीवी (विन्)**—वि०[सं० हल√ जीव् (जीना)+णिच्—णिनि] हल चलाकर अर्थात् खेती करके निर्वाह करनेवाला। किसान।

**हल-जुता**—पु०[हिं० हल+जोतना]१ साधारण किसान। २ गँवार।

**हलज्वा**†—पु०=हलरा (लहर)।

**हल-दंड**—पु०[सं० ष० त०] हल का लम्बा लट्ठा। हरिस।

**हलदा**†—स्त्री०=हलदी।

**हलद-हाथ**—स्त्री० [हिं० हलदी+हाथ] विवाह के तीन या पाँच दिन पहले वर और कन्या के शरीर मे हलदी (और तेल) लगाने की रस्म। हलदी चढ़ाना।

**हलदिया**—पुं०[हिं० हलदी]१. एक प्रकार का विष। २ कमल नामक रोग। कौंचला।

**हलदी**—स्त्री०[सं० हरिद्रा] एक प्रसिद्ध पौधे की जड, जो पकी गाँठ के रूप में होती और मसाले तथा रँगाई के काम आती है।

**मुहा०—हलदी उडना, चढ़ना या लगाना**=विवाह से पहले दूल्हे और कुलीन के शरीर मे हलदी और तेल लगाना। हलदी लगना=विवाह होना। **हलदी लगा के बैठना**=(क) घमड मे फूले रहना। अपने को बहुत लगाना। (ख) कोई काम-धन्धा न करते हुए चुपचाप बैठे रहना।

**कहा०—हलदी लगे न फिटकिरी**=बिना कुछ खर्च या परिश्रम किये हुए। मुफ्त में।

**हलबू**—पुं०[हिं० हलद (हलदी)] एक प्रकार का बहुत बड़ा और ऊँचा पेड़ जिसकी लकड़ी खेती और सजावट के सामान, कर्षियाँ, बन्दूकों के कुंदे आदि बनाने के काम आती है।

**हल-धर**—वि०[सं० ष० त०] हल धारण करनेवाला।
पुं० बलराम का एक नाम।

**हल-पत्त**—पुं०[हिं० हल+पट्ट, पाटा] हल की आड़ी लगी हुई लकड़ी, जो बीज में चौड़ी होती है। परिहृत।

**हल-पाणि**—पु०[स० ब० स०] बलराम (जो हाथ में हल लिये रहते थे)।

**हलफ**—पु०[अ० हल्फ] वह स्थिति जिसमें कोई बात ईश्वर को साक्षी रखकर बिलकुल सत्यतापूर्वक कही जाती है। शपथ। सौगन्ध।
**मुहा०—हलफ उठाना या लेना**=किसी बात की सत्यता का उल्लेख करते हुए ईश्वर को साक्षी रखकर कहना।

**हलफन**—अव्य०[अ० हल्फ़न] हलफ लेकर। शपथपूर्वक।

**हलफ-नामा**—पु०[अ०+फा०]=शपथ-पत्र। (एफिडेविट्)

**हलफल**†—स्त्री०=हल-चल।

**हलका**—पुं० [अनु० हल-हल] १. हिलोर। लहर। तरंग। २. दमे के रोग मे श्वास का वेग से चलना।
क्रि० प्र०—आना।—उठना।—मारना।

**हलकी**—वि०[अ० हल्की] हलफ लेकर कहा या दिया हुआ (बयान)।

**हलब**—पु०[देश०] [वि० हलब्बी] फारस के पास का एक देश, जहा का शीशा प्रसिद्ध था।

**हल-बल**†—स्त्री० १ हलचल। २=हड़बड़ी।

**हलबलाना**†—अ०[अनु०][भाव० हलबलाहट] भय या शीघ्रता आदि के कारण घबराना।
स० किसी को घबराने मे प्रवृत्त करना।

**हलबलाहट**—स्त्री०[अनु०] हलबलाने की क्रिया या भाव। घबराहट।

**हलबली**†—स्त्री०=हड़बड़ी। (लखनऊ) उदा०—जो काम है निगोडा, तेरा सो हलबली का।—इन्शा।

**हलबी**—स्त्री०=हलब्बी।

**हलब्बी**—वि०[हलब देश०] १. हलब देश का (बढ़िया शीशा)। २ बहुत बडा, भारी और मोटा। जैसे—हलब्बी शहतीर।

**हल-भल**†—स्त्री०१. हल-चल।२=हड़बड़ी।

**हल-मली**†—स्त्री० १ हड़बड़ी। २ =चलबली। ३ =हल-चल।

**हल-भृति**—पु०[स०] शंकराचार्य का एक नाम।

**हल-भृत्**—पु०[स० हल√ भृ (भरण-पोषण करना)] बलराम।

**हल-परिखा**—स्त्री०[पुं० आल्मारी] जहाज के नीचे का खाना। (लदा०)

**हलमिल-लेजा**—पु० [सिंहली] एक प्रकार का बडा पेड़, जिसकी लकड़ी बहुत मजबूत होती है और खेती के सामान आदि बनाने के काम आती है।

**हल-मूल**—पुं०[स० ष० त०] हल का फाल।

**हल-मुखी (खिन्)**—पु०[स०] एक प्रकार का वर्णवृत्त, जिसके प्रत्येक चरण मे क्रम से रगण, नगण और सगण आते हैं।

**हल-यंत्र**—पु०[स० मध्य० स०] जमीन जोतने का वह बडा हल, जो इजन की सहायता से चलता है और जिससे बहुत अधिक भूमि बहुत जल्दी जोती जाती है। (ट्रैक्टर)

**हलरा**—पुं०[हिं० लहर] पानी मे उठनेवाली लहर। हिलोर।
क्रि० प्र०—आना।—उठना।

**हलराना**—स० [हिं० हिलोरना] १. (बच्चो को) हाथ पर लेकर इधर-उधर हिलाना-डुलाना। प्यार से हाथ पर झुलाना। २. दे० 'लहराना'।
†अ०=लहराना।

**हलवत**—स्त्री०[हिं० हल+औत (प्रत्य०)] नये वर्ष में पहले-पहल खेत मे हल ले जाने की रीति या कृत्य। हरौनी।

**हलवा**—पुं०=हलआ।

**हलवाहन**—स्त्री०[हिं० हलवाई] हलवाई की अथवा हलवाई जाति की स्त्री।

**हलवाई**—पु०[अ० हलवा+ई (प्रत्य०)] [स्त्री० हलवाइन] १. अनेक प्रकार की मिठाइयाँ बनाने और बेचनेवाला दूकानदार। २. हिन्दुओं मे एक जाति, जो मुख्यत उक्त काम करती हो।

**हलवाई-खाना**—पु०[हिं० हलवाई+फा० खाना=घर या स्थान] वह स्थान जहाँ हलवाई बैठकर मिठाई, नमकीन, पूरी आदि बनाते है।

**हलवान**—पु०[अ०]१. भेड़, बकरी आदि का वह छोटा बच्चा, जो अभी दूध पर ही पल रहा हो और सानी, घास आदि न खाता हो। २ उक्त का मास जो खाने मे बहुत मुलायम होता है।

**हलवाह**—पु०[स०] वह जो दूसरे के यहाँ हल जोतने का काम करता हो। हलवाहा।

**हलवाहा**†—पु० =हलवाह।

**हल-हला**—स्त्री० [अन०] आनंद-सूचक ध्वनि। किलकार।

**हल-हलाना**†—स० [हिं० हलना या अनु० हल-हल]१ ऐसा पात्र हिलाना जिसमे पानी भरा हो। २. जोर से या झटका देकर हिलाना। झकझोरना। ३. काँपना।
†अ० काँपना। थरथराना।

**हला**—स्त्री० [स०] १ सखी। २ पृथ्वी। ३ जल। ४ मदिरा।

**हलाक**—वि०[अ०]१ ध्वस्त या नष्ट किया हुआ। २. वध किया हुआ। हत।

**हलाकत**—स्त्री०[अ०] १. हलाक करने की क्रिया या भाव। २. ध्वस। विनाश। ३ वध। हत्या। ४ मृत्यु। मौत।

**हलाकान**—वि० [अ० हलाक या हलाकत] [भाव० हलाकानी] जो दौड़-धूप या परिश्रम करता-करता बहुत ही तंग या परेशान हो गया हो।

**हलाकानी**—स्त्री०[हिं० हलाकान] हलाकान होने की अवस्था या भाव। परेशानी।

**हलाकी**—वि०[अ० हलक+हिं० ई (प्रत्य०)] हलाक करनेवाला।

**हलाकू**—वि०[अ० हलाक+ऊ (प्रत्य०)] हलाक करनेवाला।
पुं० एक तुर्क सरदार जो चंगेजखाँ का पोता था और उसी के समान क्रूर तथा हत्यारा था।

**हलचली**†—स्त्री०=हल-चल।

**हलाना**†—स०=हिलाना।

**हलाम**—पु०[स० ब० स०] वह घोड़ा जिसकी पीठ पर काले या गहरे रंग के रोएँ बराबर कुछ दूर तक चले गए हों।

**हला-भला**—पु० [हिं० भला+हला (अनु०)] १. निबटारा। निर्णय। २. परिणाम। फल।

**हलाभियोग**—पु०[स०] हरौती।

**हलायुध**—पुं०[स० ब० स०] बलराम।

**हलाल**—वि० [अ०] जो शरअ या इस्लामी धर्म-शास्त्र के अनुसार अथवा उसके द्वारा अनुमोदित हो। 'हराम' का विपर्याय।

**पद—हलाल का**=धर्म की दृष्टि से उचित और विहित। **हलाल की कमाई**=वह धन जो कठोर परिश्रम से तथा उचित साधनों से कमाया गया हो।

**मुहा०—(किसी जीव को) हलाल करना**=मुसलमानी शरअ के अनुसार कलमा पढते हुए किसी धारदार अस्त्र से धीरे-धीरे गला रेतकर हत्या करना। जैसे—मुर्गी या बकरा हलाल करना। **(काम चीज या बात) हलाल करना**=कोई काम ईमानदारी और परिश्रम से पूरा करके उचित रूप से प्रतिफल देना। जैसे—मालिक का पैसा हलाल करके खाना चाहिए।

पु०१ ऐसा पशु जिसका मास खाने की मुसलमानी धर्म-पुस्तक मे आज्ञा हो। वह जानवर जिसके खाने का निषेध न हो। २ ऐसा पशु जो मुसलमानी धर्म के अनुसार और कलमा पढ़कर धारदार शस्त्र से मारा गया हो।

**मुहा०—(पशु को) हलाल करना**=पशु का मास खाने के लिए उसे मुसलमानी शस्त्र के अनुसार गला रेतकर उसके प्राण लेना। जबह करना। **(व्यक्ति को) हलाल करना**=बहुत ही बुरी तरह से अत्याचार और अन्याय-पूर्वक अत्यन्त कष्ट पहुँचाना, अथवा उससे धन आदि ऐंठना।

**हलालखोर**—वि०[अ० हलाल+फा० खोर] [भाव० हलालखोरी, स्त्री० हलालखोरिन] जो उचित साधनों से तथा कठोर परिश्रम द्वारा धन कमाता हो। धर्म द्वारा अनुमोदित काम करके जीविका चलानेवाला। पु० मेहतर।

**हलालखोरी**—स्त्री० [अ० हलाल+फा० खोर] हलालखोर का काम, पद या भाव।

†स्त्री० 'हलालखोर' का स्त्री० रूप।

**हलाहल**—पु०[स० हल-आ√हल्+अच्] १. वह प्रचण्ड विष, जो समुद्र-मंथन के समय निकला था। २. उग्र विष। भारी जहर। ३. एक प्रकार का जहरीला पौधा, जिसके संबंध मे यह प्रसिद्ध है कि उसकी गन्ध से ही प्राणी मर जाते हैं।

†वि० पूरा-पूरा। भर-पूर। उदा०—ता दिशि काल हलाहल होय।—घाघ।

**हलिङ्ग**—पुं०[सं० ब० स०] एक प्रकार का सिंह।

**हलि-प्रिया**—स्त्री०[सं० ष० त०] १. मद्य। शराब। मदिरा। २. ताड़ी।

**हली (लिन्)**—पुं०[सं० हल+इनि]१. किसान। खेतिहर। २. बलराम का एक नाम।

वि० हल जोतनेवाला।

**हलीक**—पुं०[सं०] केतकी।

पुं०[देश०] मटर के डंठल, जो बँबई की ओर काटकर जानवरों को खिलाये जाते हैं।

वि० [अ०] [भाव० हलीमी] शान्त और सहनशील।

पुं० मुसलमानों में एक प्रकार का व्यंजन जो मुहर्रम में बनता है।

**हलीमक**—पुं०[सं०] एक प्रकार का पाण्डु रोग।

**हलीमी**—स्त्री०[अ०] हलीम अर्थात् शान्त, सहनशील और सुशील होने की अवस्था, गुण या भाव।

**हलीसा**—पु० [स० हलीषा] चप्पू।

**हलुआ**—पुं०[अ० हल्व]१ आटे, बेसन, मैदे, सूजी, दाल, गाजर आदि को घी मे भूनकर और उसमे चीनी, खोआ आदि मिलाकर तैयार किया जानेवाला एक प्रसिद्ध व्यंजन।

**मुहा०—(किसी का) हलुआ निकालना**=मारते-मारते बे-दम कर देना। **अपने हलुए माँड़े से काम रखना**=केवल स्वार्थ-साधन का ध्यान रखना। जैसे—तुम्हें तो अपने हलुए माँड़े से काम है, किसी का चाहे कुछ हो।

२ उक्त प्रकार के व्यंजन की तरह की कोई गाढ़ी और मुलायम चीज। जैसे—गर्दये रात को सोने के समय गले पर पान का हलुआ बाँधते हैं।

**हलुआई**†—पु० [स्त्री० हलुआइन]=हलवाई।

**हलुक**†—वि०=हल्का।

**हलुकाई**†—स्त्री०=हलकाई (हलकापन)।

**हलुवा**†—पु०=हलुआ।

**हलुवाई**†—पु०=हलवाई।

**हलूक**—स्त्री०[अ० हलूक]१. उनना पदार्थ जितना एक बार वमन मे मुँह से निकले। क़ै। वमन।

**हलूफ़**—पु०[अ० हलूफ़] वे मिठाइयाँ, पकवान आदि, जो कुछ जातियो मे विवाह से दो-एक दिन पहले कन्या-पक्षवालों के यहाँ से वर पक्षवालो के यहाँ भेजी जाती हैं।

**हलोर**†—स्त्री०=हिलोर (लहर)।

**हलोरना**†—स० दे० 'हिलोरना'।

**हलोहल**†—स्त्री०=हल-चल। (राज०)

**हल्क**—पु०[अ० हल्क़]=हलक।

**हल्की**—वि०, पु०=हलका।

**हल्द**†—स्त्री०=हलदी।

**हल्द-हाथ**—स्त्री०=हलद-हाथ।

**हल्दी**—स्त्री०=हलदी।

**हल्य**—वि०[स० हल+यत्]१ हल-सम्बन्धी। हलका। २ (खेत) जो हल से जोता जा सके। ३. भद्दा। कुरूप। ४. फैलाने या विस्तृत करने योग्य। उदा०—जिनकी कीर्ति सकल दिशि दिप्ति हल्या।—निराला।

पु०१. जोता हुआ या जोतने योग्य खेत। २ कुरूपता। भद्दापन।

**हल्लक**—पु० [सं०] लाल कमल।

**हल्लन**—पु०[स०]१. करवट बदलना। २. हिलना-डोलना।

**हल्ला**—पुं० [अनु०]१. एक या बहुत से लोगों का जोर-जोर से चिल्लाना और बोलना। कोलाहल। शोर। जैसे—तुम तो बहुत हल्ला मचाते हो।

**पद—हल्ला-गुल्ला**=शोर-गुल।

क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

२ लड़ाई के समय की ललकार। हाँक। ३. विरोधियो का शत्रुओं पर अचानक वेगपूर्वक किया जानेवाला आक्रमण। धावा। हमला।

क्रि० प्र०—बोलना।

**हल्लिल्ल**—वि०[सं० हल् (विकास करना)+ष्ट्रन] जोर से हिलाने-वाला।

पुं० वह उपकरण या यंत्र, जिसमे कई चीजें एक मे मिलाने के लिए रखकर खूब जोर से हिलाई जाती है।

**हुल्लीश**—पु०[सं०]१. नाट्य शास्त्र मे अठारह उपरूपको मे से एक प्रकार का नृत्य तथा संगीत-प्रधान उपरूपक, जो एक ही अंक का होता है, जिसमे पात्र रूप मे बातें करनेवाला एक पुरुष और-आठ दस स्त्रियाँ होती हैं। २ उक्त के अनुकरण पर होनेवाला एक प्रकार का नृत्य, जिसमे एक पुरुष और कई स्त्रियाँ घेरा बाँधकर नाचती हैं।

**हुल्लीशक**—पु०[सं०] घेरा या वृत्त बनाकर नाचना।

**हुव**—पुं० [सं० हु (देना लेना) +अच्] १. आहुति। बलि। २. अग्नि। आग। ३. आज्ञा। आदेश। ४. चुनौती।

**हवन**—पु०[सं०√हु (देव निमित्त देना)+ल्युट्—अन]१. धार्मिक पद्धति में, देवताओं को प्रसन्न करने के लिए अग्नि मे घी, जौ आदि की आहुति देने की क्रिया। होम। २. अग्नि। आग। ३. अग्नि-कुण्ड। ४. आहुति देने का यज्ञ-पात्र। स्रुवा।

**हवन-कुंड**—पु०[स० ष० त०] वह कुंड जिसमे हवन के समय आहुति डाली जाती है।

**हवनी**—स्त्री०[सं०]१ होम कुंड। २. स्रुवा।

**हवनीय**—वि०[सं० √हु (देना) +अनीयर् कर्मणि] वह (पदार्थ) जिसे आहुति के रूप मे अग्नि मे डालना हो।

पु० घी, जौ आदि पदार्थ जो हवन के लिए आवश्यक हैं।

**हवशक**—वि० [अ० हवशक:=एक परम मूर्ख अरब का नाम] बहुत बड़ा उजड्ड। गँवार और मूर्ख।

**हवलदार**—पु०[अ० हवाल: +फा० दार=रहनेवाला]१. मुसलिम शासनकाल में वह सैनिक अधिकारी, जो राजकर की ठीक-ठीक वसूली और फसल की निगरानी के लिए नियुक्त होता था। २ आज-कल पुलिस या सेना का जमादार जिसके अधीन कुछ सिपाही रहते हैं।

**हवस**—स्त्री०[अ०] वह इच्छा जिसकी संतुष्टि बराबर अथवा बार-बार की जाती हो, पर फिर भी जो और अधिक संतुष्टि के लिए उत्कट रूप धारण किये रहती हो।

क्रि० प्र०—पूरी करना।

मुहा०—हवस पकाना= व्यर्थ कामना करना। मन-मोदक खाना।

**हवा**—स्त्री०[अ०]१. प्रायः सर्वत्र चलता रहनेवाला वह तत्त्व जो सारी पृथ्वी मे व्याप्त है और जिसमें प्राणी साँस लेते हैं। हवा।

पद—हवा-पानी। (देखें)

मुहा०—हवा उड़ना=लोक मे कोई अफवाह या खबर फैलना। हवा करना=पंखे आदि से हवा चलाना। (कोई चीज) हवा करना=गायब करना। उड़ा लेना। हवा के घोड़े पर सवार होना=(क) बहुत जल्दी मे होना। (ख) किसी प्रकार के नशे या गहरी उमंग मे होना। हवा के रुख जाना=जिस ओर हवा बहती हो, उसी ओर जाना। हवा खाना=(क) शुद्ध वायु का सेवन करना। (ख) विकल या विचित होना। (कहीं की) हवा खाना=कहीं जाकर रहना। जैसे—जेल की हवा खाना। हवा गिरना=तेज चलती हुई हवा का धीमा या मंद होना। (किसी काम या बात की) हवा देना=प्रचार मे प्रोत्साहन देना। बढ़ाना। जैसे—परदे की प्रथा ने वेश्यावृत्ति को हवा दी। हवा पलटना=कोई नई स्थिति उत्पन्न होना। हालत बदल जाना। हवा पीकर या फाँककर रहना=बिना भोजन किये समय बिताना। (व्यंग्य) हवा फिरना=दे० ऊपर 'हवा पलटना'। (किसी की) हवा बताना=किसी का उद्देश्य बिना सिद्ध किये उसे यों ही चलता करना। टालना जैसे—वह सब को यों ही हवा बताता है। हवा बदलना=दे० ऊपर 'हवा पलटना'। (कहीं की) हवा बिगड़ना=(क) वातावरण आदि मे रोगों के कीटाणु फैलना। (ख) सारी परिस्थिति या वातावरण खराब होना। (कहीं की या किसी की) हवा लगना=किसी प्रकार का बुरा परिणाम या अवांछित प्रभाव होना। हवा से बातें करना=(क) बहुत तेज दौड़ना या चलना। (ख) आप ही आप या यों ही व्यर्थ की बातें बकते रहना। हवा से लड़ना=बिना किसी कारण या बात के लड़ाई-झगड़े करना। हवा हो जाना=(क) भाग जाना। (ख) बहुत तेजी से चलने लगना। (ग) गायब या गुम हो जाना।

२ गिनती के विचार से पालतू कबूतरों को हवा अर्थात् आकाश मे उड़ाने की क्रिया। उदा०—वे सवेरे कबूतरों को खोलकर दाना देते और तब एक दो हवा उड़ाते थे।—मिर्जा रुसवा। ३ भूत, प्रेत आदि जिनकी स्थिति हवा के रूप मे मानी जाती है। ४. कीर्ति। यश। ५ महत्त्व या खरे व्यवहार का विश्वास। साख।

मुहा०—हवा बाँधना=(क) कीर्ति या यश फैलना। (ख) बाजार मे साख होना। हवा बिगड़ना=पहले की सी मर्यादा या धाक न रह जाना।

वि० (रंगों के संबंध मे) साधारण से कम गहरा। हलका। जैसे—हवा गुलाबी=हलका गुलाबी।

स्त्री०[अनु०]१ इच्छा। कामना। २. इन्द्रियों अथवा शरीर के सुख-भोग की कामना। जैसे—हवा-परस्त=इन्द्रिय-लोलुप।

**हवाई**—वि० [अ० हवा +ई (हि० प्रत्य०)]१. हवा या वायु से संबंध रखनेवाला। २ हवा मे उड़ने, चलने, रहने या होनेवाला। वायव। (एरिअल) जैसे—हवाई जहाज, हवाई हमला। ३. (बात) जिसका कोई वास्तविक आधार न हो। बिलकुल काल्पनिक और निर्मूल। जैसे—हवाई खबर, हवाई गप।

स्त्री०१ एक प्रकार की आतिशबाजी, जो छूटने पर ऊपर कुछ दूर तक हवा मे जाती और तब वृक्ष जाती है।

मुहा०—(चेहरे या मुँह पर) हवाइयाँ उड़ना=निराशा, भय आदि के कारण चेहरे का रंग फीका पड़ना। हवाई गुम होना=आश्चर्य, भय आदि के कारण बुद्धि का कुछ भी काम न करना।

२ तोप। उदा०—प्रेम पलीता सुरति हवाई, गोला सिआनू चलाइआ। —कबीर। ३. हलकी छाया या प्रभाव। ४ हलकी रंगत। आभा।

स्त्री०पिस्ते, बादाम आदि मेवों के कतरे हुए छोटे छोटे टुकड़े, जो मिठाइयों आदि के ऊपर उनकी शोभा और स्वाद बढाने के लिए छिडके जाते हैं।

**हवाई-अड्डा**—पु०[हि०]हवाई जहाजों के उतरने, रुकने या प्रस्थान करने का स्थान। (एरोड्रोम)

**हवाई-किला**—पु०[हि०+अ०]१ मन मे बाँधा जानेवाला ऐसा बहुत बड़ा मंसूबा या की जानेवाली अभिलाषा जो जल्दी पूरी न हो सके। २. युद्ध मे काम आनेवाला एक प्रकार का बहुत बड़ा हवाई जहाज। (एअर-फोर्टरेस)

**हवाई-कैंप**—पु०[हि०+स०]वह स्थान जहाँ से सैनिक हवाई जहाज उड़ाकर दूसरी जगह जाते और फिर लौटकर वहीं आ ठहरते हों। (एअर बेस)

**हवाई-जहाज**—पु० हवा में उडनेवाली सवारी। वायुयान। (एरोप्लेन)

**हवाई-डाक**—स्त्री० दे० 'परिछत्र'। (पैराशूट)

**हवाई-डाक**—स्त्री०[हिं०+अं०] वह डाक या चिट्ठियाँ आदि, जो हवाई जहाज के द्वारा एक स्थान से दूसरे स्थान पर भेजी जाती हों। (एयर मेल)

**हवाई-दीदा**—वि० [हिं० हवाई+फा० दीद.] जो लज्जा छोड़कर सबसे आँखें लड़ाता फिरे। उदा०—लड़की खुद ही हवाई दीदा थी, निकल गई किसी के साथ।—शौकत थानवी।

**हवाई-पट्टी**—स्त्री० [हिं०] दे० 'अवतरण पथ'।

**हवाई-महल**—पु० दे० 'हवाई किला'।

**हवा-कश**—पु० [अ०+फा०] १ कमरों की दीवारों में वह ऊपरवाला झरोखा, जिसमें से गंदी हवा बाहर निकलती और साफ हवा अंदर आती है। रोशनदान। २ पंखे की तरह का, उक्त काम करनेवाला एक प्रकार का उपकरण। (वेन्टिलेटर)

**हवा-गीर**—पु०[फा०] आतशबाजी के बान बनानेवाला कारीगर।

**हवाई-चक्की**—स्त्री० [हिं० हवा+चक्की] आटा पीसने, खेतों में पानी उलीचने आदि की वह चक्की या कल जो हवा के जोर से चलती हो।

**हवादार**—वि०[अ०+फा०] [भाव० हवादारी] (कमरा, मकान या स्थान) जहाँ खूब या ताजी हवा बराबर चलती रहती हो।
पु० वह हल्का तख्त, जिस पर बैठाकर बादशाह को महल या किले के भीतर एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते थे।

**हवादारी**—स्त्री० [फा०] १ ऐसी अवस्था या व्यवस्था जिससे कमरे, कोठरी आदि में ताजी हवा ठीक तरह से आती रहे और गंदी हवा बाहर निकलती रहे। व्यजन-संचालन। (वेंटिलेशन) २. शुभ-चिंतन। खैरख्वाही।

**हवान**—पु०[?] जहाज पर रखकर चलाई जानेवाली तोप। कोठी तोप।

**हवाना**—पु०[हवाना द्वीप] हवाना नामक द्वीप का तम्बाकू, जो बहुत अच्छा समझा जाता है।

**हवा-परस्त**—वि० [अ०+फा०] [भाव० हवा-परस्ती] केवल इन्द्रियों का सुख भोग चाहनेवाला। इन्द्रिय-लोलुप।

**हवा-पानी**—पु०[अ०+हिं०] १ किसी स्थान की वायु, जल आदि के प्राकृतिक धर्म, जिनका प्राणियों, वनस्पतियों आदि के जीवन, स्वास्थ्य विकास आदि पर प्रभाव पड़ता है। जलवायु। २. विशेषतः किसी प्रदेश की सामान्य वातावरणिक स्थिति। (क्लाइमेट)

**हवा-बाज**—पुं०[अ०+फा०] [भाव० हवाबाजी]१. हवाई जहाज। २. हवाई जहाज चलानेवाला।

**हवा-महल**—पुं०[अ०] महलों आदि में वह सबसे ऊँचा कमरा या मकान जिसमें चारों ओर से हवा खूब आती हो। बहार-बुर्ज।

**हवामान**†—पु० दे० 'ताप-मान'।

**हवाल**—पु० [अ० अहवाल]१. अवस्था। दशा। २. विशेषतः बुरी अवस्था। दुर्दशा। उदा०—जो नर बकरी खात है, तिनका कौन हवाल।—कबीर। ३. समाचार। हाल।

**हवालदार**†—पु०=हवलदार।

**हवाला**—पुं०[अ० हवालः] १. किसी बात की पुष्टि के लिए किसी के वचन या किसी घटना का किया जानेवाला उल्लेख या संकेत। प्रमाण का उल्लेख। (रेफरेंस) २. किसी की कही या लिखी हुई बात का वह अंश, जो उक्त प्रकार से कही कहा या लिखा गया हो। उद्धरण। (साइटेशन) ३. उदाहरण। दृष्टान्त।
क्रि० प्र०—देना।
३. किसी को कोई चीज देख-रेख, रक्षा आदि के विचार से सौंपने की क्रिया या भाव। सुपुर्दगी।
**मुहा०—(किसी के) हवाले करना**=किसी को दे देना। सौंपना। **(किसी के) हवाले पड़ना**=विवशता की दशा में किसी के अधिकार या अधीनता में जाना, रहना या होना।

**हवालात**—स्त्री०[अ०]१. पहरे के अन्दर रखे जाने की क्रिया या भाव। २. जेल, थाने आदि की वह कोठरी, जिसमें अभियुक्त निर्णय या विचार होने तक बन्द रखे जाते हैं।
क्रि० प्र०—में देना।—में रखना।

**हवालाती**—वि०[अ० हवालात] जो हवालात में रखा गया हो।

**हवाली**—स्त्री०[अ०] आस-पास के स्थान।
**पद—हवाली-भवाली**=किसी के आस-पास या संग-साथ रहनेवाले ऐरे-गैरे लोग।

**हवास**—पु०[अ०]१. शरीर की ज्ञानेन्द्रियाँ। २. इन्द्रियों के द्वारा होनेवाला ज्ञान या संवेदन। ३. चेतना। ज्ञान। होश।
**पद—होश-हवास।**
**मुहा०—हवास गुम होना**=बुद्धि या होश ठिकाने न रहना।

**हवि**—पु०[स० हविस्]१. हवन की वस्तु या सामग्री। वे चीजें, जिनकी हवन में आहुति दी जाती है। २ आहुति। ३ बलि।

**हविर्दा**—स्त्री०[स०√हृ (देना)+ष्ट्रन्—ङीप्] हवन-कुण्ड।

**हविर्धानी**—स्त्री०[स०] कामधेनु।

**हविर्भुज**—पु०[स०] अग्नि।

**हविष्पात्र**—पु०[स० ष० त०] हवि रखने का बरतन।

**हविष्मती**—स्त्री०[स० हविष्+मतुप्—ङीप्] कामधेनु।

**हविष्मान्**—वि०[स० हविष्मत्] [स्त्री० हविष्मती] हवन करनेवाला।
पु०१. पितरों का एक गण या वर्ग। २ छठे मन्वंतर के सप्तर्षियों में से एक। ३ अंगिरा के एक पुत्र।

**हविष्य**—वि०[स० हविष्+यत्]१. (पदार्थ) जिसकी हवन में आहुति दी जा सकती हो या दी जाने को हो। २. (देवता) जिसके उद्देश्य से आहुति दी जाने को हो।
पु० १. हवि। २. हविष्यान्न।

**हविष्यान्न**—पु० [स० कर्म० स०] वह विहित सात्विक अन्न या आहार, जो यज्ञ के दिनों में किया जाता है। जैसे—जौ, तिल, मूँग, चावल इत्यादि।

**हविस्सा**†—स्त्री०=हवस।

†पु०=हविष्य।

**हवीस**—पुं०[?] परेते की तरह का वह यंत्र जिसमें लंगर डालने के समय जहाज की रस्सियाँ बाँधी या लपेटी जाती हैं।

**हवेली**—स्त्री०[अ०]१. राजाओं, रईसों के वर्ग के रहने का ऊँचा, पक्का और बड़ा मकान। २. जोरू। पत्नी। (पूरब) ३. काठियावाड़, गुजरात आदि में वल्लभ संप्रदाय के मन्दिरों की संज्ञा। ४. उक्त मन्दिरों

मे होनेवाला वह कीर्तन, जिसमे शास्त्री शैली के राग और रागिनियाँ गाई जाती हैं।

**हव्य**—वि०[सं० √ हु (देना)+यत्] जो हवि के रूप मे अग्नि में डाला जाने को हो या डाला जा सकना हो।
पु० हवन की सामग्री।

**हव्यभुक्**—पु०[स०] अग्नि।

**हव्य-योनि**—पु०[स० ब० स०] देवता।

**हव्य-वाह**—पु०[स० हव्य√ वह् (ढोना)+यञ्]१. अग्नि। २ पीपल।

**हव्याद**—वि०[स० हव्य√ अद् (खाना)+अच्] हव्य खानेवाला।
पु० अग्नि।

**हव्याशन**—पु०[स० ब० स०] अग्नि।

**हशमत**—स्त्री०[अ० हश्मत]१ गौरव। बड़ाई। २ ऐश्वर्य। वैभव।

**हशर**—पु०=हश्र।

**हश्र**—पु०[अ०]१ उठना। २. ईशाइयों, मुसलमानो आदि के मत से मृष्टि का वह अंतिम दिन, जब सभी मृत व्यक्ति कब्रों से निकलकर ईश्वर के सामने उपस्थित होगे और वहाँ उनके जीवन-काल के कर्मों का विचार तथा निर्णय होगा। ३. अत। नतीजा। परिणाम। ४ रोना-पीटना। विलाप। ५. बहुत जोरो का शोर या हो-हल्ला।

**हश्ती***—स्त्री०[स० हस्तिका]१. ज्यौंठी। २. एक प्रकार की मल्लिका। ३. शाकिनी। ४ एक प्राचीन नदी।

**हसत***—पु०=हस्त (हाथ)।
पु०=हस्ति (हाथी)।

**हसती***—पु०= हस्ति (हाथी)।
†स्त्री०=हस्ती (अस्तित्व)।

**हसब**—पु०[अ०] ईर्ष्या। डाह।

**हसन**—पु०[स०]१ हँसने की क्रिया या भाव। हास। २ ठट्ठा। परिहास। मजाक। ३. कार्तिकेय का एक अनुचर।
पु०[अ०] अली के दो बेटो मे से एक, जो मजीद के साथ लड़ाई मे मारा गया था और जिसका शोक शीया मुसलमान महर्रम मे मनाते हैं। (इसके भाई का नाम हुसैन था।)

**हसनीय**—वि०[स० √हस् (हँसना)+अनीयर्]=हास्यास्पद।

**हसनैन**—पु०[अ०] हसन और हुसैन नामक दोनों भाई, जो अली के पुत्र थे। उदा०—जहँ हसनैन बतूल-सनेहा, तहाँ समाइ न दूसरि देहा। —नूर मोहम्मद।

**हसब**—अव्य० [अ० हस्ब] अनुसार। मुताबिक। जैसे—हसब हैसियत=अपनी हैसियत के अनुसार।

**हसम**—पु० [अ० हश्म] १ धन-सम्पत्ति। वैभव। उदा०—हसम हयगाय देस अति पति सायर मज्जाद।—बदबरदाई। २ ठाट-बाट। ३ शोभा।

**हसर**—पु० [अ० हजर] रिसाले के सवारो के तीन भेदों मे से एक जिनके अस्त्र तथा घोड़े भी हलके होते हैं और वर्दियाँ चटकीले रगों की होती हैं। अन्य दो भेद लेसर और ड्रैगून कहलाते हैं।

**हसरत**—स्त्री० [अ०] १. कामना। वासना। २. खेद। दुख। ३. पश्चात्ताप।

**हसावर**—पु० [हिं० हंस] खाकी रंग की एक प्रकार की बड़ी चिड़िया जिसकी गरदन हाथ भर लम्बी और चोंच केले के फल के समान होती है।

**हसिका**—स्त्री० [स०] १. हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २. उपहास। ठट्ठा।

**हसित**—भू० कृ० [स०] १. जो हँसा हो या हँस रहा हो। २. जिस पर हँसा गया हो। ३ जिस पर लोग हँसते हो।
पु० १ हँसी। हास। २ कामदेव के धनुष का नाम।

**हसीन**—वि० [अ०] सुन्दर। खूबसूरत। (व्यक्ति)

**हसीला**†—वि०=असील (सीधा)।

**हस्त**—पु०[स०√हन् (हास करना)+तन् नेट्] १. हाथ। २. हाथी का सूँड। ३ हाथ की लिखावट। ४ छन्द का कोई चरण या पद। ५. एक हाथ अर्थात् २४ अगुल की एक पुरानी नाप। ६ एक नक्षत्र, जिसमे पाँच तारे होते हैं और जिसका आकार हाथ का सा माना गया है। ७ नृत्य, सगीत आदि मे हाथ हिलाकर भाव बताने की क्रिया। ८. गुच्छा या झब्बा। जैसे—केश-हस्त।
वि० हाथों के द्वारा किया हुआ या किया जानेवाला। (मैनुअल)
यौगिक शब्दो मे पूर्व-पद के रूप म। जैसे—हस्तकला, हस्तकौशल आदि।
†पु०=हस्ति (हाथी)।

**हस्तक**—पु० [स०] १ हाथ। २ नृत्य मे, भाव बताने के लिए बनाई जानेवाली हाथ की मुद्रा। ३ सगीत मे, हाथ से किया जानेवाला ताल। ४ कर-ताल। ५ हाथ से बजाई जानेवाली ताली। कर-तल-ध्वनि।

**हस्तकार्य**—पु० [स० ष० त०] हाथ से किया जानेवाला कारीगरी का काम। दस्तकारी।

**हस्त-कोहली**—स्त्री० [स०] वर और कन्या की कलाई मे मगलसूत्र बाँधने की क्रिया या रीति।

**हस्त-कौशल**—पु० [स० ष० त०] हाथ से किये जानेवाले कामो से सम्बन्ध रखनेवाला कौशल, दक्षता या सफाई।

**हस्त-क्रिया**—स्त्री० [स० ष० त०] १. हाथ का काम। दस्तकारी। २ दे० 'हस्त-मैथुन'।

**हस्तक्षेप**—पु० [स० ष० त०] १. हाथ फेंकना। २ किसी दूसरे के काम मे अनावश्यक रूप से तथा बिना अधिकार दखल देना। ३ किसी चलते या होते हुए काम मे कुछ फेर-बदल करने के लिए हाथ डालना या फेर-बदल करने के लिए उसके कर्ताओं से कुछ कहना। (इन्टरफिअरेंस)

**हस्तगत**—भू० कृ० [स० ष० त०] हाथ मे आया हुआ। मिला हुआ। प्राप्त।

**हस्तग्रह**—पु० [सं० हस्त√ग्रह् (पकड़ना)+अच्, ष० त०] १. हाथ पकड़ना। २ पाणि-ग्रहण। विवाह।

**हस्त-चापल्य**—पुं० [सं० ष० त०] हाथ की चालाकी, फुरती या सफाई।

**हस्ततल**—पु० [स० ष० त०] हथेली।

**हस्त-त्राण**—पु० [सं० ष० त०] हाथो का रक्षक। दस्ताना।

**हस्त-दोष**—पु० [स० ष० त०] कोई चीज तौलने, नापने आदि के समय की जानेवाली वह चालाकी जो स्वार्थवश की जाती है। देने के समय कम और लेने के समय अधिक तौलना या नापना।

**हस्त-धारण**—पु० [सं०] १. सहारा देने के लिए किसी का हाथ पकड़ना। २. पाणि-ग्रहण। विवाह। ३. किसी का वार हाथ पर रोकना।

**हस्त-पुस्तिका**—स्त्री० [स०] छोटे आकार की कोई ऐसी पुस्तक, जिसमे किसी विषय की सभी मुख्य बाते सक्षेप मे लिखी हो। (हैन्डबुक, मैनुअल)

**हस्त-पृष्ठ**—पु० [सं० ष० त०] हथेली का पिछला या उलटा भाग।

**हस्त-प्रचार**—पु० [स० ष० त०] अभिनय या नृत्य के समय की जानेवाली हाथों की चेष्टाएँ।

**हस्तबिंब**—पुं० [स०] शरीर मे सुगधित द्रव्यो का लेपन करना।

**हस्त-मणि**—पु० [स० ष० त०] कलाई पर पहनने का रत्न।

**हस्त-मैथुन**—पु० [स० मध्य० स०] वीर्य-पात करने के लिए हाथ से इन्द्रिय को बार-बार जोर से सहलाना। हस्त-क्रिया।

**हस्त-रेखा**—स्त्री० [स० ष० त०] हथेली मे बनी हुई लकीरों मे से हर-एक। **विशेष**—सामुद्रिक मे इनके आधार पर शुभाशुभ फलो का विचार किया जाता है।

**हस्त-लाघव**—पु० [स० ष० त०] १ हाथ से काम करने का उत्कृष्ट कौशल। २ हाथ की चालाकी, फरती या सफाई।

**हस्त-लिखित**—भू० कृ० [स० तृ० त०] (लेख या पाडुलिपि) जो हाथ से लिखी गई हो।

**हस्त-लिपि**—स्त्री० [स० ष० त०] किसी के हाथ की लिखावट या लिपि। (हैन्डराइटिंग)

**हस्त-लेख**—पु० [स० ष० त०] किसी के हाथ का लिखा हुआ लेख या ग्रन्थ। (मैनस्क्रिप्ट)

**हस्त-वातरक्त**—पु० [स०] एक प्रकार का रोग जिसमे हथेलियो मे छोटी-छोटी फुन्सियाँ निकलती हैं और धीरे-धीरे सारे शरीर मे फैल जाती है।

**हस्तवान् (वत्)**—वि० [सं० हस्त+मतुप्] जो हाथ से काम करने मे कुशल हो।

**हस्त-वारण**—पु० [सं० तृ० त०] हाथ से वार या आघात रोकना।

**हस्त-शिल्प**—पु० [स० ष० त०] मुख्यत. हाथों से प्रस्तुत किया जानेवाला शिल्प। दस्तकारी। (हैड-क्राफ्ट)

**हस्त-श्रम**—पु० [स० ष० त०] हाथों (अर्थात् शरीर) से किया जानेवाला परिश्रम। (मैनुअल लेबर)

**हस्त-सूत्र**—पु० [स० ष० त०] मगल-सूत्र। (दे०)

**हस्ताक**—पु० [स० हस्त+अक] १. किसी के हाथ के लिखे हुए अक्षर या लिखावट। (हैंडराइटिंग) २ दे० 'हस्ताक्षर'।

**हस्ताकन**—पु० [स० ष० त०] [भू० कृ० हस्ताकित] हाथ से अकन करने, लिखने आदि की क्रिया।

**हस्ताक-पत्र**—पुं० [स० हस्त-अंक ब० स०, पत्र कर्म० स०] वह पत्र जिसके आधार पर बिना कुछ रेहन रखे और हाथ-उधार कुछ रकम कर्ज ली जाती है और जिसमे सूद सहित वह कर्ज चुकाने की प्रतिज्ञा लिखी रहती है। (प्रोनोट, हैन्ड-नोट)

**हस्ताकित**—भू० कृ० [सं० तृ० त०] हाथ से अकित किया या लिखा हुआ।

**हस्ताजलि**—स्त्री० [स० ष० त०] दोनों हाथों को जोड़कर दोने के समान बनाई जानेवाली अंजलि।

**हस्तांतर**—पु० [स०] दूसरा हाथ।

**हस्तांतरक**—पु० [सं०] वह जो कोई सम्पत्ति या सबध के अधिकार आदि दूसरे को देता हो। हस्तांतरण करनेवाला। अतरिक। (ट्रासफरर)

**हस्तांतरण**—पु० [स०] भू० कृ० हस्तांतरित] (सम्पत्ति, स्वत्व आदि का) एक के हाथ से दूसरे के हाथ मे जाना या दिया जाना। अतरण। (ट्रासफरेन्स)

**हस्तांतरणीय**—वि० [स० हस्तांतरण+छ-ईय] जिसका हस्तातरण हो सकता हो। सक्राम्य। (ट्रासफरेबुल)

**हस्तांतरित**—भू० कृ० [स० हस्तातर+इतच्] (सम्पत्ति या अधिकार) जो एक के हाथ से दूसरे के हाथ मे गया हो। जिसका हस्तातरण हुआ हो। (ट्रासफर्ड)

**हस्तांतरिती**—पु० [स० हस्तातरित] वह जिसे किसी सम्पत्ति का अधिकार दिया या सौपा गया हो। अतरिती। (ट्रासफरी)

**हस्ता**—स्त्री० [स० हस्त-टाप्] हस्त-नक्षत्र।

**हस्ताक्षर**—पु० [स० ष० त०] १ हाथ से बनाये हुए अक्षर। २ किसी व्यक्ति द्वारा लिखा जानेवाला अपना नाम जो इस बात का सूचक होता है कि ऊपर लिखी हुई बातें मैंने लिखी है और उनका उत्तरदायित्व मुझ पर है। (सिग्नेचर)

**हस्ताक्षरक**—पु० [स०] वह जो लेख आदि पर हस्ताक्षर करे। दस्तखत करनेवाला। (सिगनेटरी)

**हस्ताक्षरित**—भू० कृ० [स० हस्ताक्षर+इतच्] जिस पर किसी के हस्ताक्षर हुए हो। दस्तखत किया हुआ।

**हस्ताग्र**—पु० [स० ष० त०] १ हाथ का अगला भाग। २ उँगलियो के पोर।

**हस्तादान**—पु० [स० तृ० त०] हाथ से ग्रहण करना या लेना।

**हस्ताभरण**—पु० [सं० ष० त०] १. हाथ मे पहनने का गहना। २ एक प्रकार का साँप।

**हस्तामलक**—पु० [स० मध्य० स०] १. हाथ मे लिया हुआ आँवला, जो बिलकुल स्पष्ट दिखलाई देता हो। २ ऐसी वस्तु या विषय जिसका अग-प्रत्यंग हाथ मे लिए हुए आँवले के समान अच्छी तरह दिखाई दे और समझ मे आ गया हो। वह चीज या बात जिसका हर पहलू उसी तरह साफ-साफ जाहिर हो गया हो जिस तरह हथेली पर रखे हुए आँवले का होता है।

**हस्ता-हस्ति**—स्त्री० [स०] हाथो से होनेवाली खीच-तान। हाथा-पाई।

**हस्ति**—पु०=हत्ती (हाथी)।

**हस्तिकंद**—पु० [स० मध्य० स०] एक पौधा जिसका कद खाया जाता है। हाथीकद।

**हस्तिक**—पु० [सं० हस्ति+कन्] हाथियों का समूह।

**हस्ति-कर्ज**—पु० [स० उपमि० स०] बडी जाति का करज या कजा।

**हस्ति-कर्ण**—पु० [स० ब० स०] १ अडी का पेड। रेंड। २. टेसू। पलास। ३ कच्चू। बडा। ४. एक गण देवता। ५. शिव का एक गण।

**हस्ति-कर्णिका**—स्त्री० [सं०] हठयोग मे एक प्रकार का आसन।

**हस्तिका**—स्त्री० [स०] एक प्रकार का प्राचीन बाजा जिसमे बजाने के लिए तार लगे रहते थे।

**हस्ति-जिह्वा**—स्त्री० [सं०] दाहिनी आँख की एक नस।
**हस्ति-दंत**—पु० [स० ष० त०] १. हाथी-दाँत। २. खूँटी। ३. मूली।
**हस्ति-दंती**—पु० [स०] मूली।
**हस्ति-नख**—पु० [स० ष० त०] १. हाथी के नाखून। २ वह बुर्ज या टीला जो गढ की दीवार के पास उन स्थानो पर बना होता है जहाँ चढ़ाव होता है।
**हस्तिनपुर**—पु० [स०]=हस्तिनापुर।
**हस्तिनापुर**—पु० [सं० तृ० त० अलुक् स०] आधुनिक दिल्ली के उत्तर-पूर्व का एक प्रसिद्ध प्राचीन नगर जहाँ महाभारत के सबध की अनेक घटनाएँ हुई थी।
**हस्ति-नासा**—स्त्री० [सं० ष० त०] हाथी का सूँड।
**हस्तिनी**—स्त्री० [स० हस्तिन्-ङीप्] १ मादा हाथी। हथिनी। २ काम-शास्त्र और साहित्य के अनुसार चार प्रकार की स्त्रियो मे ऐसी स्त्री जिसका शरीर बहुत अधिक मोटा हो, जो बहुत अधिक खाती हो और जिसमे काम-वासना बहुत प्रबल हो। ऐसी स्त्री बहुत निकृष्ट और अदम्य मानी गई है।
**हस्ति-पिप्पली**—स्त्री० [सं० मध्य० स०] गज-पिप्पली।
**हस्ति-प्रमेह**—पु० [स०] प्रमेह का एक भेद जिसमे मूत्र के साथ हाथी के मद-जैसा पदार्थ रुक-रुककर निकलना है।
**हस्ति-मकर**—पु० [स०] गवप नामक जल-जंतु। (ड्यूगांग)
**हस्ति-मल्ल**—पु० [स० सप्त० स०] १ ऐरावत। २. गणेश। ३ उड़ती हुई धूल। ४. पीला।
**हस्ति-मुख**—पु० [स० ब० स०] गणेश।
**हस्ति-मेह**—पु० [स०]=हस्ति-प्रमेह।
**हस्ति-व्यूह**—पु० [स० मध्य० स०] प्राचीन भारत, मे सेना के हाथियो का वह व्यूह जिसमे आक्रमण करनेवाले हाथी उरस्य मे, तेज दौडने-वाले (अपवाह्य) मध्य मे, और व्याल (मतवाले) पक्ष मे होते थे। (कौ०)
**हस्ति-शुंडक**—पु० [स०] १ काला सावाँ। २. बाजरा।
**हस्ती (स्तिन्)**—पु० [सं०] [स्त्री० हस्तिनी] १. हाथी। २. अजमोदा।
**हस्ती**—स्त्री० [सं० अस्ति से फा०] १. वर्तमान होने की अवस्था। अस्तित्व। २ किसी व्यक्ति का अस्तित्व या व्यक्तित्व। जैसे—मेरे सामने उसकी हस्ती ही क्या है।
**हस्ते**—अव्य० [सं०] किसी के हाथ से। मारफत। द्वारा। जैसे—यह माल तो तुम्हारे हस्ते ही वहाँ गया था। (महाजनी बोल-चाल)
**हस्त्य**—वि० [स० हस्त+यत्] १. हाथ-सबधी। हाथ का। २ हस्त नक्षत्र-सबधी।
पु० हाथ में पहनने का दस्ताना।
**हस्त्यध्यक्ष**—पु० [स० स० त०] हाथियों का प्रधान अधिकारी और निरीक्षक।
**हस्त्यायुर्वेद**—पुं० [सं० हस्ति-आ√जीव् (जीना) णिच्-अच्] १. हाथियो का व्यवसायी। २. पीलवान। महावत।
**हस्त्यायुर्वेद**—पु० [स० मध्य० स०] आयुर्वेद या चिकित्सा-शास्त्र का वह अग जिसमे हाथियों के रोगों और उन्हें दूर करने के उपायों का विवेचन है।
**हस्त्यालुक**—पु० [सं०] हाथी-कद।
**हस्ब**—अव्य० [अ०] किसी के अनुकूल या अनुसार। मुताबिक। जैसे—हस्ब कानून=कानून के अनुसार। हस्ब मामूल=साधारणतः जैसा होता आया हो, वैसा।
**हहर**—स्त्री० [हिं० हहरना] १ हहरने की अवस्था, क्रिया या भाव। कँपकँपी। २ डर। भय।
**हहरना**—अ० [अनु०] १ काँपना। थरथराना। २ डर या भय से काँपना। थर्राना। ३ चकित या दग हो जाना। ४ ईर्ष्या से क्षुब्ध होना।
सयो० क्रि०—उठना।—जाना।—पड़ना।
**हहराना**—स० [हिं० हहरना का स०] किसी को हहरने में प्रवृत्त करना।
†अ हहरना (काँपना)।
**हहल**—पु०=हलाहल (विष)।
†स्त्री०=हहर।
**हहलना**†—अ०=हहरना।
**हहलाना**—स०, अ०=हहराना।
**हहा**—स्त्री० [धन०] जोर से हँसने का शब्द। ठहाका।
स्त्री० [हिं० हाय-हाय] १ गिड़गिड़ाकर दीनता प्रकट करने की क्रिया या भाव।
**मुहा०—हहा खाना**=हाय-हाय करते हुए गिड़गिड़ाना।
२ हाहाकार।
**हहु***—अ० [हिं० हो' (होना क्रिया से) का अवधी रूप] हो।
**हाँ**—अव्य० [स०] एक अव्यय जिसका प्रयोग नीचे लिखे अर्थों मे होता है।
१ कोई प्रश्न होने पर उसके उत्तर मे सम्मति सूचित करने के लिए। जैसे—हाँ जा सकते हो। २ कोई विचार, प्रस्ताव आदि प्रस्तावित या प्रस्तुत होने पर उसका समर्थन करने के लिए। जैसे—हाँ जरूर चलना चाहिए।
**मुहा०—(किसी की) हाँ में हाँ मिलाना**=बिना सोचे-विचारे किसी की बात का समर्थन करना।
३. कुछ बतलाये या पुकारे जाने पर उत्तर के रूप मे तत्परता सूचित करने के लिए। जैसे—(क) हाँ तो फिर क्या हुआ? (ख) हाँ, पिता जी। ४ किसी उल्लिखित नकारात्मक कथन के बाद कोई और रियायत देने के प्रसग में। जैसे—मै उसके घर नहीं जाऊँगा, हाँ यदि वह आया तो उससे मिल अवश्य लूँगा।
**हाँक**—स्त्री० [स० हुंकार] १. किसी को पुकारने या बुलाने के लिए अथवा कोई बात सूचित करने के लिए जोर से कहा जानेवाला शब्द। पुकार।
**मुहा०—हाँक देना या हाँक लगाना**=जोर से पुकारना या सबको सुनाने के लिए कोई बात कहना। **डाँक-पुकार कर कहना**=खुले आम, डके की चोट या सब को सुनाकर कहना।
२ किसी को डाँटने-डपटने, बढ़ावा देने या ललकारने आदि के लिए जोर से कहा जानेवाला शब्द। ३ सहायता प्राप्त करने के लिए मचाई जानेवाली पुकार। दुहाई।
**हाँकना**—स० [हिं० हाँक+ना (प्रत्य०)] १. जोर से चिल्लाकर बुलाना। हाँक देना या हाँक लगाना। २. लड़ाई के समय हुंकार करते हुए शत्रु

को ललकारना। ३ खुले अथवा गाडी आदि में जुते हुए जानवरों को आगे बढ़ाने के लिए मुँह से कुछ कहते हुए चाबुक लगाना या ऐसी ही और कोई क्रिया करना। जैसे—घोड़ा या बैल हाँकना। ४. कोई ऐसी सवारी चलाना जिसमे कोई पशु जुता हो। जैसे—एक्का, ताँगा या बैल-गाड़ी हाँकना ५ उक्ति या कथन सबधी कुछ शब्दो के सबध में, बहुत बढ़-चढ़ कर या लबी-चौडी बाते करना। जैसे—गप हाँकना, झूठी-सच्ची बातें हाँकना, शेखी हाँकना। ६ पसे के सबध मे, झलना। हिलाना। जैसे—पखा हाँकना। ७ मक्खियों आदि के सबध मे, किसी वस्तु या स्थान पर बैठने से रोकने के लिए किसी चीज से हवा करना या कोई चीज हिलाना। जैसे—मिठाई के थाल पर बैठनेवाली मक्खियाँ हाँकना।

**हाँका**—पु० [हिं० हाँकना] जगली जानवरो का शिकार करने के लिए उन्हे हाँक कर ऐसी जगह ले जाना, जहाँ सहज मे उनका शिकार हो सके। हँकुआ।

पु० [हिं० हाँक] १ पुकार। टेर। २ ललकार। ३ गरज। ४ 'हैंड्वा'।

**हाँ-कारी**—पु० [हिं०] किसी के पक्ष या समर्थन में 'हाँ' कहनेवाले लोग या सदस्य।

स्त्री० किसी प्रस्ताव के पक्ष के समर्थन मे 'हाँ' कहने की क्रिया या भाव।

**हाँगर**†—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की बडी मछली। (शार्क)

**हाँगा**—पु० [स० अग] १ शरीर का बल। बूता। ताकत। २ साहस। हिम्मत। ३ बलपूर्वक किया जानेवाला अनुचित काम। अत्याचार। जबरदस्ती।

†वि० [?] दुबला-पतला और कमजोर।

**हाँगी**—स्त्री० [हिं० हाँ] हामी। स्वीकृति।

मुहा०—हाँगी भरना=हामी भरना।

†स्त्री०=आँगी (चलगी)।

**हाँडना**—अ० [स० हिडन] १. पैदल चलना। २ इधर-उधर घूमना-फिरना। ३ पीछे हटना। भागना।

वि० [स्त्री० हाँडनी] व्यर्थ इधर-उधर घूमता फिरता रहनेवाला। जैसे—हाँडनी नारि।

†स०=हँडवना।

**हाँडी**—स्त्री० [स० हडिका] १ देगची के आकार का मिट्टी का वह छोटा गोलाकार बरतन, जिसमे खाने-पीने की चीजें उबाली या पकाई जाती हैं। हडी। हँड़िया।

पद—काठ की हाँड़ी=ऐसा छल जो एक बार तो उद्देश्य सिद्ध कर दे, पर हर बार सिद्ध न कर सके। बावली हाँडी=ऐसी हाँड़ी जिसमे कई तरह की दालें, तरकारियाँ और इस तरह की दूसरी कई चीजें पकने के लिए एक साथ डाल दी गई हों।

मुहा०—हाँड़ी उबलना=ओछे व्यक्ति का बहुत अभिमान करना या इतराना। हाँड़ी चढ़ाना=भोजन बनाने के लिए आग या चूल्हे पर हाँडी रखना। हाँड़ी पकना=(क) हाँड़ी में पकाई जानेवाली चीज का पकना। २. किसी बात के सबध में गुप्त रूप से परामर्श होना। जैसे—कल उन यारों में खूब हाँड़ी पक रही थी।



मुहा०—(किसी के नाम पर) हाँड़ी फोड़ना=(क) किसी के चले जाने पर प्रसन्न होना। (ख) किसी बिगडे हुए काम का दोष किसी के मत्थे मढ़ना। किसी को दोषी ठहराना।

३. उक्त आकार का शीशे का वह पात्र, जो गजाबट के लिए कमरे में टाँगा जाता है और जिसमे मोमबत्ती जलाई जाती है।

**हाँतना**—स० [स० हात]१ अलग या जुदा करना। २. दूर या परे करना।

†स०=हतना (वध करना)।

**हाँता**०—वि० [स० हात=छोडा हुआ] [स्त्री० हाँती] अलग किया या छोड़ा हुआ। त्यक्त।

**हाँति**†—अव्य० [हिं० हाँता] पृथक्। अलग। उदा०—वीर रस मवमाते रन ते न होत हाँते।—सेनापति।

**हाँपना**†—अ०=हाँफना।

**हाँफना**—अ० [देश०] थकावट, भय आदि के कारण फेफड़ो का जल्दी-जल्दी और लबे-लबे साँस लेने लगना।

**हाँफा**—पु० [हिं० हाँफना] १ हाँफने का रोग। २ हाँफने के समय श्वास के जल्दी-जल्दी और जोर-जोर से चलते रहने का क्रम।

क्रि० प्र०—छूटना।—लगना।

**हाँफी**—स्त्री० [हिं० हाँफना] हाँफा।

**हाँबीरी**—स्त्री० [स०] एक प्रकार की रागिनी।

**हाँमेला**—पु० [देश०] एक प्रकार की चिड़िया।

**हाँवं**†—वि० [स० हीन?] रहित। विहीन। (लखनऊ) उदा०—इस पर भी लय ये हाँवं रही।—मिर्जा रुसवा।

**हाँस**†—स्त्री० हाँसी (हँसी)।

**हाँस**—वि० [स०] हस सम्बन्धी। हस का।

**हाँसना**†—अ० =हँसना।

**हाँसल**†—पु०=हाँसुल।

**हाँसवर**†—वि०=हँसीला।

**हाँसिल**—स्त्री० [अ० हाजर]१ रस्सा लपेटने की गड़ारी। २ जहाज या नाव के लगर में बाँधा जानेवाला रस्सा।

†वि०=हासिल।

**हाँसी**†—स्त्री०=हँसी। जैसे—रोग का घर खाँसी, लड़ाई का घर हाँसी। (कहा०)

**हाँसु**†—स्त्री० १.=हँसी। २. हँसली।

**हाँसुल**—पु०[?] ऐसा घोड़ा जिसका सारा शरीर मेहदी के रग का और पैर कुछ काले हों।

**हाँ-हाँ**—अव्य० [हिं० अहाँ=नही] निषेध या वारण करने का शब्द। जैसे—हाँ-हाँ! यह क्या कर रहे हो?

अव्य० सहमति या स्वीकृति का शब्द।

**हा**—अव्य० [स० √हा+का] १. दुख, भय, शोक आदि का सूचक शब्द।

मुहा०—हा हा खाना=बहुत ही दीनतापूर्वक और गिडगिडाकर रक्षा, सहायता आदि की प्रार्थना करना।

२. आश्चर्य या प्रसन्नता का सूचक शब्द। ३. हनन करनेवाला। मार डालनेवाला। यौ० के अन्त मे। जैसे—वृत्रहा।

अव्य०, स्त्री०=हाय।

*अ०[स्त्री० ही] 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था। उदा०—तोसों कबहुँ भई ही भेंटा।—तुलसी।

**हाद**†—अव्य० [सं०] हाय।

**हादकन**—पु० [अ० हादफन] पर्दों के योग का सूचक चिह्न (-) जो यौगिक शब्दों के बीच मे लगाया जाता है। जैसे—दिल-दिमाग, धरती-आसमान।

**हाई**—स्त्री० [स० घात?] १ दशा। हालत। जैसे—अपनी हाई और परछाई। २ ढग। तरीका। ३ घात करने की चाल या तरकीब। उदा०—यातनि मुहृद, करम कपटी के, चले चोर की हाई।—सूर। †स्त्री०—हाही।

**हाई-कोर्ट**—पु० [अ०] उच्च न्यायालय।

**हाउ**†—अव्य०—हाँ। उदा०—हाउ हाउ वह स्वर्ण-पुरुष।—पन्त।

**हाउस**—पु० [अ०] १ घर। मकान। २ दे० 'सदन'।

**हाऊ**†—पु० दे० 'हौआ'।

**हाकर**—पु० [अ०] फेरी करके छोटी-मोटी वस्तुएँ बेचनेवाला व्यक्ति। फेरीदार।

**हाकलि**—स्त्री० [ग०] एक प्रकार का मात्रिक समछन्द, जिसके प्रत्येक चरण मे १४ मात्राएँ होती है। इसके पहले और दूसरे चरणो मे ११ तथा तीसरे और चौथे चरणो मे १० अक्षर होते हैं।

**हाकलिका**—स्त्री० [स०]=हाकलि (छन्द)।

**हाकिनी**—स्त्री० [स०] डाकिनी की तरह की एक प्रचड देवी।

**हाकिम**—पु० [अ०] १ हुकूमत करनेवाला व्यक्ति। शासक। २ प्रधान या बडा अधिकारी।

**हाकिमान**:—वि० [अ० हाकिम+फा० आन.] हाकिमो के ढग, तरह या प्रकार का।

**हाकिमी**—स्त्री० [अ० हाकिम+ई (प्रत्य०)] १ हाकिम होने की अवस्था या भाव। २ हाकिम का पद।

**हाकी**—पु० [अ०] १. गेंद खेलने की एक प्रकार की छडी, जिसका अगला सिरा कुछ मुडा हुआ होता है। २ उक्त छडियो तथा गेद से खेला जानेवाला खेल।

**हाजत**—स्त्री० [अ०] १ ऐसी अपेक्षा या आवश्यकता, जिसकी पूर्ति यथासाध्य शीघ्र की जाने को हो। जैसे—पानाने या पेशाब की हाजत। २ वह स्थान जहाँ हिरासत मे लिया हुआ आदमी बद रखा जाता है। (कस्टडी)

क्रि० प्र०—मे देना।—में रखना।

**हाजती**—वि० [हि० हाजत] १ जिसे किसी चीज की हाजत या आवश्यकता हो। २ लाक्षणिक रूप मे, दरिद्र और दीन-हीन। ३ (व्यक्ति) जो हाजत या हवालात मे रखा गया हो। हवालाती।

स्त्री० वह पात्र जो रोगियों के बिस्तर के पास मल-मूत्र का त्याग या विसर्जन करने के लिए रखा रहता है।

**हाजमा**—पु० [अ० हाजिम] १. पाचन-क्रिया। २ पाचन-शक्ति।

**हाजरी**†—स्त्री०—हाजिरी।

**हाजिक**—वि० [अ० हाजिक] किसी विषय का बहुत बड़ा ज्ञाता या पडित।

**हाजिर**—वि० [अ० हाजिर] १. उपस्थित। मौजूद। २. प्रस्तुत।

क्रि० प्र०—करना।—होना।

**हाजिर-जवाब**—वि० [अ० हाजिर-जवाब] [भाव० हाजिर-जवाबी] प्रश्न या बात का उत्तर विशेषत. यथोचित उत्तर तुरत देनेवाला। उत्तर देने मे निपुण।

**हाजिर-जवाबी**—स्त्री० [अ०] हाजिर-जवाब होने की अवस्था, गुण या भाव।

**हाजिर-बाश**—वि० [अ०+फा०] [भाव० हाजिर-बाशी] सदा अथवा प्राय. हाजिर अर्थात् सेवा मे उपस्थित रहनेवाला।

**हाजिर-बाशी**—स्त्री० [अ०+फा०] १ सदा किसी की सेवा मे उपस्थित या हाजिर रहने की अवस्था, क्रिया या भाव। २. उक्त स्थिति मे रहकर की जानेवाली खुशामद और छोटी-मोटी सेवाएँ।

**हाजिराई**—वि०, पु०=हाजिरगी।

**हाजिरात**—स्त्री० [अ०] [वि० हाजिराती] एक प्रकार का प्रयोग जिसमे आराधना करके अथवा मनोबल से किसी पर भूत व्यक्तियो को आत्माएँ बुलाई जाती हैं और उससे अनेक प्रकार के प्रश्नो के उत्तर प्राप्त किये जाते है।

**हाजिराती**—वि० [अ० हाजिरात] हाजिरात-सबधी। हाजिरात का।

पु० वह जो हाजिरात करता हो।

**हाजिरी**—स्त्री० [अ० हाजिरी] १ हाजिर रहने या होने की अवस्था या भाव। २ बडो के सामने उपस्थित रहना या होना।

क्रि० प्र०—देना।—बजाना।

३ नौकरो की अपने कार्य, पद या समय पर होनेवाली उपस्थिति।

क्रि० प्र०—देना।—लिखना।—लिखाना।—लेना।

४ अँगरेजो आदि का सवेरे का जल-पान।

**हाजिरी-बही**—स्त्री० दे० 'उपस्थिति पजी' (अटेडेंस रजिस्टर)

**हाजी**—पु०[अ०] वह मुसलमान जो (क) हज की यात्रा करने आ रहा हो, या (ख) हज की यात्रा कर आया हो।

**हाट**—स्त्री०[स० हट्ट] १ प्राचीन काल मे वह बाजार, जो कुछ नियत या विशिष्ट स्थानो, विशिष्ट अवसरो पर या विशिष्ट दिनों मे लगता था। २ परवर्ती काल मे स्थायी रूप से बना और बसा हुआ बाजार।

**पद—हाट-बाट।**

**मुहा०—हाट करना**= बाजार जाकर चीजें या सामान खरीदना। **(किसी चीज का) हाट चढ़ना**= बिकने के लिए बाजार मे आना या पहुँचना।

३ दुकान।

**हाटक**—पु० [स० √हट्+ण्वुल्—अक] १. भाडा। किराया। जैसे—नौका-हाटक। २. सोना। स्वर्ण। ३. महाभारत के अनुसार एक प्राचीन देश।

**हाटक-पुर**—पु० [स० मध्य० स०] लंका जो लोक-प्रवाद के अनुसार सोने की बनी हुई थी।

**हाटक-लोचन**—[पुं० स० ब० स०] हिरण्याक्ष।

**हाटकी**—स्त्री०[सं०] अधोलोक या पाताल की एक नदी।

**हाटकीय**—वि० [स० हाटक+ईय] १. स्वर्ण-सबधी। सोने का। २. सोने का बना हुआ।

**हाटकेश**—पु०[स० ष० त०] शिव की एक मूर्ति जिसका प्रधान मन्दिर दक्षिण भारत मे गोदावरी के तट पर है।

**हाड़**—पु० [स० हड्ड] १. शरीर में की अस्थि। हड्डी। २. कुल या वश की परम्परा के विचार से मनुष्य का गौरव या महत्व। कुलीनता की मर्यादा।

†पु०[स० आषाढ़] [वि० हाड़ी] आषाढ़ मास। असाढ़।

**हाड़ना**†—स०[स० हरण] कोई चीज तौलने से पहले यह देखना कि तराजू के दोनो पलड़े बराबर हैं या नही और यदि न हो, तो उन्हें बराबर करना। धडा करना।

†अ० =हाड़ना।

**हाड़ा**—पु०[?] क्षत्रियो की एक शाखा।

†पु०=हड्डा (बरें)।

पु०=कौआ।

**हाड़ी**—वि०[हिं० हाड =आषाढ] आषाढ मास सबधी। असाढी।

पु० एक प्रकार का पहाड़ी राग।

पु०[?] १ एक प्राचीन अन्त्यज जाति जो पहले बौद्ध थी, पर पीछे नाथमार्गी हो गई थी। २ एक प्रकार का बगला।

†स्त्री०[हिं० हाडी?] धान कूटने की ओखली। ऊखल।

**हात**—वि०[स० √हा (त्याग देना)+क्त] छोडा हुआ। त्यागा हुआ।

†पु० हाथ।

**हातव्य**—वि० [स० √हा (छोडना)+तव्य] छोड़ जाने के योग्य। त्याज्य।

**हाता**—वि०[स० हत] मारनेवाला। वध करनेवाला।

†वि०[स० हान] [स्त्री० हाती] नष्ट या बरबाद किया हुआ।

†पु०१ =अहाता। २. =हाथा।

**हातिम**—पु०[अ०]१. निपुण। चतुर। २. प्राचीन काल का एक प्रसिद्ध अरब सरदार जो बहुत बड़ा दानी और परोपकारी था। मुहा०—हातिम की कब्र पर लात मारना=बहुत अधिक परोपकार करना। (व्यग्य)

३. बहुत बडा दानी और परोपकारी व्यक्ति।

**हातु**—पु०[स०]१ मृत्यु। मौत। २. सडक।

**हाथ**—पु०[स० हस्त, प्रा० हत्थ]१. मनुष्य के शरीर में कंधे से उँगलियों तक का वह अंग, जिससे अधिकतर काम किये जाते हैं और चीजें खाई, पकड़ी या ली-दी जाती हैं। कर। हस्त।

**विशेष**—(क) वानर जाति के प्राणियों मे उनके अगले दोनों पैर और पक्षियों मे उनके दोनो पैर ही मनुष्य के हाथो का बहुत कुछ काम देते हैं। (ख) मनुष्यों के सबध मे यह अग उनकी क्रियाशीलता या कर्मठता, अधिकार या वश, उदारता, कृपणता, चतुरता, दक्षता आदि का भी सूचक होता है। आज-कल अँगरेजी के अनुकरण पर यह शब्द काम करनेवाले व्यक्तियों का भी वाचक हो गया है।

**पद**—**हाथ का चक्का**= जो ठीक तरह से या दक्षतापूर्वक काम न कर सकता हो। **हाथ का छूठा**= चोर, धोखेबाज या बेईमान। **हाथ का दिया**= जो दान के रूप मे या परोपकार के लिए दिया गया हो। **हाथ का सच्चा**=(क) जो लेन-देन आदि में किसी प्रकार का छल या बेईमानी न करता हो। (ख) जिसका आघात, युक्ति या वार ठीक और पूरा काम करता हो। **हाथ या हाथ-पैर की मैल**=बहुत ही तुच्छ पदार्थ या वस्तु। जैसे—रुपया-पैसा तो उनके लिए हाथ-पैर की मैल है। **हाथ से**=द्वारा। माफ्त। जैसे—उसी के हाथ से तो किताबें भी भेजी थी। **हाथों-हाथ** से। हाथो हाथ=(क) एक के हाथों से दूसरे के हाथो मे होते हुए। जैसे—बात की बात मे सारा सामान हाथों-हाथ उठकर दूसरे मकान मे चला गया। (ख) तत्काल। तुरन्त। जैसे—यहाँ तो माल आते ही हाथो-हाथ बिक जाता है। **रँगे हाथ (या हाथो)**=कोई अपराध करते समय उसके प्रमाण के साथ। जैसे—चूनी (या चोर) रँगे हाथो पकड़ा गया। **लगे हाथ (या हाथो)**=(क) जिस समय कोई काम हो रहा हो, उसी समय और उसके साथ ही साथ। जैसे—जब आप सशोधन कर ही रहे है, तब लगे हाथ इस कविता का भी सशोधन कर दीजिए। (ख) साथ ही साथ। उदा०—पनघट पे जो अपनी कभी असवारी गई है। तो वाँ भी लगे हाथ यही स्वारी गई है।—नजीर।

**मुहा०—(कोई चीज) हाथ आना** प्राप्त होना। मिलना। उदा०—जलाकर हिज्र ने मारा, कजा के हाथ क्या आया?—कोई शायर। **हाथ उठाकर कोसना**=ईश्वर से यह प्रार्थना करते हुए कोसना कि हमारा शाप पूरा हो। **(किसी को) हाथ उठाकर** देना=अपनी इच्छा, उदारता या प्रसन्नता से किसी को कुछ देना। जैसे—हमे तो तुम जो कुछ हाथ उठाकर दे दोगे, वही हम खुशी से ले लेंगे। **(किसी काम या बात से) हाथ उठाना**=अलग या दूर होना। बाज आना। उदा०—हम हाथ उठा बैठे तुझ्झो के असर से।—कोई शायर। **(किसी को) हाथ उठाना**=अभिवादन, नमस्ते या सलाम करना। जैसे—वे जिधर जाते थे, उधर सब लोग हाथ उठाते थे। **(किसी पर) हाथ उठाना**=किसी को मारना, पीटना या किसी प्रकार का आघात करना। **हाथ ऊँचा होना** दान, व्यय आदि के लिए मन मे सदा उदारता का भाव रखना। **किसी के आगे) हाथ जोड़ना**= दे० नीचे 'हाथ पसारना या फैलाना'। **हाथ कटना या कट जाना**=(क) प्रतिज्ञा, लेख्य आदि से इस प्रकार बद्ध हो जाना कि उसके विपरीत कुछ किया न जा सके। (ख) साधन, सहायक आदि से रहित हो जाना। जैसे—भाई के मरने से उनके हाथ कट गये। **हाथ के नीचे या हाथ-तले आना**=अधिकार या वश मे आना। वशुल में फँसना। जैसे—जब वह तुम्हारे हाथ के नीचे आ ही गया, तब कहाँ जा सकता है। **हाथ खाली जाना**=प्रहार या वार का ठीक लक्ष्य पर न बैठना। **हाथ खाली होना**=(क) व्यय करने के लिए कुछ भी पास न होना। (ख) करने के लिए कोई काम हाथ मे न होना। **(किसी काम या बात से) हाथ खींचना**= कोई काम करते करते सहसा उससे अलग या दूर होना, अथवा उसमे त्रुटि या शिथिलता करने लगना। **हाथ खुजलाना**=(क) किसी को मारने को जी करना। (ख) आर्थिक प्राप्ति या लाभ का योग या लक्षण दिखाई देना। **हाथ खुलना**=किसी मे मारने-पीटने की प्रवृत्ति का आरभ होना। जैसे—इसी तरह अगर उसका हाथ खुल गया, तो वह तुम्हे रोज मारने लगेगा। **हाथ खुला होना**=दान, व्यय आदि के संबध मे उदार प्रवृत्ति होना। जैसे—उनका हाथ खुला था, इसलिए थोडे ही दिनो मे सारी पूँजी खत्म हो गई। **हाथ गरम होना**=किसी प्रकार की आर्थिक प्राप्ति या लाभ होना। **हाथ चलना**=(क) किसी काम मे हाथ का हिलना-डोलना। (ख) मारने

के लिए हाथ उठना। (ग) व्यय आदि के लिए उचित या यथेष्ट आय अथवा प्राप्ति होना। (किसी के) हाथ चूमना=किसी की कला, निपुणता आदि पर मुग्ध होकर उसके हाथों का भरपूर आदर या सम्मान करना। जैसे—इस चित्र को देखकर जी चाहता है कि चित्रकार के हाथ चूम लूँ। हाथ छूटना=किसी को मारने के लिए हाथ उठना। (किसी पर) हाथ छाड़ना=मारना-पीटना। प्रहार करना। (किसी काम में) हाथ जमना, बैठना, मँजना या सधना=कोई काम करने का ठीक और पूरा अभ्यास होना। (किसी को) हाथ जोड़ना=(क) अभिवादन, नमस्कार या प्रणाम करना। (ख) किसी प्रकार का अनुग्रह या कृपा प्राप्त करने के लिए अनुनय-विनय करना। (दूर से) हाथ जोड़ना=बिलकुल अलग या दूर रहना। किसी प्रकार का संपर्क या संबंध न रखना। हाथ झाड़कर खड़े हो जाना=खाली हाथ दिखा देना। कह देना कि मेरे पास कुछ नहीं है या मुझसे कुछ नहीं हो सकता। जैसे—तुम्हारा क्या, तुम तो हाथ झाड़कर खड़े हो जाओगे सारा खर्च हमारे सिर पड़ेगा। (किसी काम में) हाथ झाड़ना=खुद चालाकी, फुर्ती या सफाई दिखाना। अच्छी तरह हाथ चलाना। जैसे—लड़ाई में योद्धाओं ने तलवारों के खूब हाथ झाड़े। हाथ झुलाते या हिलाते आना=कुछ भी करके या लेकर न लौटना। खाली हाथ आना। (किसी काम में) हाथ डालना=(क) किसी काम में योग देना, सम्मिलित होना या उसका सम्पादन आरंभ करना। (ख) दखल देना। हस्तक्षेप करना। (किसी पर) हाथ डालना=(क) किसी को मारना-पीटना। (ख) किसी से छेड़-छाड़ करना। जैसे—मेले में उसने किसी स्त्री पर हाथ डाला था, इसलिए लोगों ने उसे खूब मारा। हाथ तंग होना=हाथ में व्यय के लिए यथेष्ट धन न होना। हाथ दबना=(क) पास में यथेष्ट धन न होना। (ख) असमंजस या कठिनता में पड़ना। जैसे—अभी तो इस मुकदमे के कारण हमारा हाथ दबा है। हाथ दबाकर खर्च करना=जहाँ तक हो सके, कम खर्च करना। (किसी काम में) हाथ दिखाना=हाथ का कौशल या निपुणता दिखाना। (किसी चिकित्सक को) हाथ दिखाना=रोग का निदान कराने के लिए चिकित्सक से नाड़ी की परीक्षा कराना। (किसी ज्योतिषी को) हाथ दिखाना=भविष्य या भाग्य का हाल जानने के लिए हथेली की रेखाओं आदि की परीक्षा कराना। (किसी को) हाथ देना=(क) सहारा देना। सहायक होना। (ख) इशारा या संकेत करना। (ग) दे० 'हाथ मिलाना'। (किसी का) हाथ धरना=दे० नीचे 'हाथ पकड़ना'। (किसी चीज से) हाथ धोना=(क) गँवा या खो देना। (ख) प्राप्ति की आशा छोड़ देना। हाथ धोकर पीछे पड़ना=पूरी तरह से प्रयत्न में लग जाना। हाथ न रखने देना=(क) बातों में जरा भी न आना। जैसे—उसे कैसे राजी करें, वह हाथ तो रखने ही नहीं देता। (ख) कुछ भी दबाव या नियन्त्रण सहन न करना। जैसे—यह घोड़ा इतना तेज है कि हाथ नहीं रखने देता। (किसी स्त्री का हाथ) न होना=मासिक धर्म या रजस्वला होने के कारण घर-गृहस्थी के काम करने के योग्य न होना। जैसे—आज बहू का हाथ नहीं था, इसलिए माता जी को रसोई बनानी पड़ी। (किसी का) हाथ पकड़ना=(क) किसी को कोई काम करने से रोकना। (ख) किसी के सहायक बनकर उसे अपने आश्रय या शरण में लेना। (ग) पाणि-ग्रहण या विवाह करके पत्नी बनाना। (किसी के) हाथ पड़ना या हाथ में पड़ना=किसी के अधिकार या वश में होना। किसी के पल्ले पड़ना। उदा०—छाड़हु पाछउ मानहु बात नाहिं तो परिहौ जम के हाथ।—कबीर। हाथ पर नाग खेलाना=बहुत जोखिम का और विकट काम करना। हाथ पर हाथ धरे बैठे रहना=खाली बैठे रहना। कुछ न करना। (किसी के) हाथ पर हाथ मारना=प्रतिज्ञा, वचन आदि का पालन करने की दृढ़ता या निश्चय सूचित करने के लिए किसी की हथेली पर अपनी हथेली जोर से पटकना या मारना। (कुछ) हाथ पल्ले न पड़ना=(क) कुछ भी प्राप्ति न होना। (ख) कोई लाभदायक परिणाम या फल न मिलना। (किसी के आगे) हाथ पसारना या फैलाना=कुछ पाने या माँगने के लिए हाथ आगे करना। हाथ पसारे=खाली हाथ। बिना कुछ लिए। उदा०—मुट्ठी बाँधे आया है, हाथ पसारे जायगा। (कहा०) (लड़की के) हाथ पीले करना=लड़की का किसी के साथ विवाह कर देना।

**विशेष**—हिंदुओं में यह प्रथा है कि विवाह से एक दो दिन पहले वर और वधू के हाथों और पैरों पर हल्दी और तेल लगा देते हैं। इसी से उक्त मुहा० बना है।

**मुहा०**—हाथ-पैर चलाना, मारना या फेंकना=(क) जीविका-निर्वाह के लिए कोई काम-धंधा करना। (ख) किसी उद्देश्य या कार्य की सिद्धि के लिए प्रयत्न करना। (किसी के आगे) हाथ-पैर जोड़ना=बहुत दीनतापूर्वक अनुनय-विनय करना। हाथ-पैर निकालना=(क) मोटा-ताजा होना। (ख) नियत्रण, मर्यादा आदि का उल्लंघन करने हुए नये और मनमाने ढंग से आचरण करने लगना। हाथ-पैर पटकना या मारना=बहुत-कुछ परिश्रम या प्रयत्न करना। हाथ-पैर फूल जाना=घबराहट, भय आदि के कारण इतना विचलित होना कि कुछ करने-धरने न बने। हाथ-पैर हारना=(क) प्रयत्न करते-करते विफल होने पर साहस या हिम्मत छोड़ बैठना। (ख) वृद्धावस्था के कारण बहुत शिथिल हो जाना। (किसी के) हाथ बिकना=(क) पूरी तरह से किसी का अनुगामी दास या भक्त होना। उदा०—मीराँ सिरिधर हाथ बिकानी, लोग कहे बिगरी।—मीराँ। (ख) पूरी तरह से किसी के अधीन या वशवर्ती होना। उदा०—अजहूँ माया हाथ बिकानो।—सूर। (किसी चीज पर) हाथ फेरना मारना या साफ करना=चालाकी से या चुपके से कोई चीज कहीं से उड़ा या हथिया लेना। जैसे—किसी के माल पर हाथ फेरना। (किसी व्यक्ति पर) हाथ फेरना=स्नेह-पूर्वक किसी का शरीर सहलाना। (किसी के काम में) हाथ बँटाना=किसी के काम में सम्मिलित होना। योग देना। (किसी के आगे) हाथ बाँध खड़े रहना=हाथ जोड़कर सदा सेवा में उपस्थित रहना। (किसी के) हाथ बिकना=किसी का परम अनुयायी, आज्ञाकारी और दास होना। उदा०—मैं निरगुनिया गुन नहिं जानी, एक धनी के हाथ बिकानी।—मीराँ। हाथ मराड़ना=हाथ मलना। पछताना। उदा०—अब पछताव दरब जस जोरी। करहु स्वर्ग पर हाथ मरोरी।—जायसी। हाथ मलना=(क) दोनों हथेलियाँ एक दूसरी से मिलाकर उन्हें आपस में मलना या रगड़ना जो किसी बात के लिए दुखी होने या पछताने का सूचक है। (ख) पछताना।

**(किसी से) हाथ मिलाना**=(क) किसी से भेंट होने पर उसकी हथेली अपने हाथ में लेकर प्रसन्नता और सद्भाव प्रकट करना। (ख) लेन-देन आदि का अथवा और किसी प्रकार का संपर्क या संबंध स्थापित रखना। **हाथ मींड़ना*** दे० ऊपर 'हाथ मलना'। उदा०—मींडत हाथ, सीस धुनि रोवत, सदन करत नृप पारथ।—सूर। **हाथ में करना** अपने अधिकार या वश में करना। **(किसी के) हाथ में किसी का हाथ देना**=किसी के साथ किसी का विवाह कर देना। **हाथ में रंगना**=अनुचित रूप से धन प्राप्त करना। **(किसी पर) हाथ रखना**=ऐसी बात करना, जिससे कोई दोषी या उत्तरदायी बताया जा सके या कुछ दबाया जा सके। जैसे—आज तुमने भी उस पर अच्छा हाथ रखा, जिससे वह चुप हो गया। (किसी के मुँह पर) **हाथ रखना**=किसी को बोलने से रोकना। (किसी के) सिर पर **हाथ रखना**=(क) किसी को अपने आश्रय या संरक्षण में लेना। जैसे—अब आप ही इस अनाथ के सिर पर हाथ रखें। (ख) किसी की कसम खाने के लिए उसका सिर छूना। **हाथ रोपना** दे० ऊपर 'हाथ पसारना'। **(किसी काम में) हाथ लगना**=कार्य आरंभ होना। जैसे—पुस्तक की छपाई में हाथ लग गया है। **(किसी काम में किसी का) हाथ लगना**=किसी प्रकार का संपर्क या संबंध स्थापित होना। जैसे—जिस काम में तुम्हारा हाथ लगेगा, वह कभी पूरा न होगा। **(किसी चीज में) हाथ लगना**=किसी चीज का उपयोग या व्यय आरम्भ होना। जैसे—अब मिठाई में तुम्हारा हाथ लगा है, तब वह कौन दूसरों के लिए रखेगी। **(कुछ) हाथ लगना**=(क) किसी प्रकार की प्राप्ति होना। गणित में जोड़ लगाते समय वह संख्या नई गिनती में आती, जो अंक की संख्या लिख लेने पर बाकी रहती है। जैसे—१२ के दो रखे, हाथ लगा १। **(एक चीज) हाथ लगना**=प्राप्त होना। मिलना। **हाथ लगाना**=(क) स्पर्श करना। छूना। (ख) कार्य आरंभ करना। **हाथ साधना**=(क) हाथ से किये जानेवाले काम का अभ्यास करना। (ख) कोई विकट काम करने से पहले यह देखने के लिए उसका आरंभ या परीक्षण करना कि यह काम हमसे पूरा हो सकेगा या नहीं। **(किसी चीज पर या किसी पर) हाथ साफ करना**=अच्छी तरह अंत या नाश करना। किसी काम के योग्य न रहने देना या बिलकुल न रहने देना। **हाथों के तोते उड़ जाना**=अचानक कोई बहुत बड़ा, अनिष्ट या दुर्घटना होने पर भौचक्का या स्तब्ध हो जाना। **(किसी को) हाथों में रखना**=बहुत ही आदर या प्रेमपूर्वक अपने पास या साथ रखना। **(किसी को) हाथों हाथ लेना**=बहुत आदर और सम्मानपूर्वक आवभगत या स्वागत-सत्कार करना। २ लम्बाई की एक नाप जो मनुष्य की कोहनी से लेकर पंजे के छोर तक मानी जाती है। चौबीस अंगुल का मान। (क्यूबिट) जैसे—दस हाथ की धोती। बीस हाथ लंबा बाँस।

**मुहा०—हाथ भर का कलेजा होना** (क) बहुत अधिक साहसी होना। (ख) बहुत अधिक प्रसन्नता होना। **हाथों कलेजा उछलना**=(क) कलेजे में बहुत धड़कन होना। (ख) बहुत अधिक प्रसन्नता होना। ३. किसी कार्य के संचालन में होनेवाला किसी का अंश या प्रेरणा। जैसे—इस मुकदमे में उनका भी कुछ हाथ है। ४. हाथ से किया जाने वाला कोई काम या उसे करने का कोई खास ढंग। जैसे—तलवार का हाथ, लिखावट का हाथ। ५. हाथ से खेले जानेवाले खेलों में हर खिलाड़ी के खेलने की बारी। दाँव। जैसे—तुम तो अपना हाथ चल चुके, अब हमारा हाथ है।

क्रि० प्र०—चलना।

**मुहा०—हाथ मारना**=दाँव या बाजी जीतना।

६ आदि से अन्त तक कोई ऐसा पूरा खेल जो एक बार में हाथ से खेला जाता हो। जैसे—आओ, हमसे भी दो हाथ खेल लो। ७ किसी कार्यालय के कार्यकर्ता। जैसे—आज-कल हमारे यहाँ चार हाथ कम हो गये हैं। ८. औजार या हथियार का दस्ता। मूठिया। हत्था।

**हाथ-कंडा**†—पु०=हथकडा।

**हाथ-करघा**—पु०[हिं०] कपड़ा बुनने का कर्घा जो हाथ से चलाया जाता है, बिजली या इंजन से नहीं। (हैंडलूम)

**हाथ-घुलाई**—स्त्री०[हिं०] वह मजदूरी, जो चमारों आदि को मरे हुए गाय़लू पशुओं को फेंकने के बदले में दी जाती है।

**हाथ-फूल**†—पु०=हथफूल।

**हाथ-बाँह**—स्त्री० [हिं० हाथ+बाँह] बाँह नामक करधत करने का एक प्रकार।

**हाथल**†—पु० [हिं० हाथ] हाथ का पंजा। उदा०—हाथल बल निरभै हियौ, सरभर न को समत्थ।—बाँकीदास।

**हाथा**—पुं०[हिं० हाथ]१ दो-तीन हाथ लंबा लकड़ी का एक औजार जिस से सिंचाई करते समय खेत में आया हुआ पानी उलीच कर चारों ओर पहुँचाते हैं। २. तलवार आदि का वार करने का एक ढंग या प्रकार। ३. तलवार का वार। ४ मंगल अवसरों पर हलदी आदि से दीवारों पर लगाई जानेवाली पंजे की छाप। ५ दे० 'हत्था'।

**हाथा-छाँटी**†—स्त्री० [हिं० हाथ+छाँटना] १ चालाकी। धूर्तता। चालबाजी। २ चालाकी या बेईमानी से कोई चीज उड़ाने या लेने की क्रिया।

**हाथा-जड़ी**—स्त्री०=हत्थाजड़ी।

**हाथा-जोड़ी**†—स्त्री०=हत्थाजोड़ी

**हाथा-पाई**†—स्त्री० =हाथा-बाँही।

**हाथा-बाँही**—स्त्री०[हिं० हाथ+बाँह] वह लड़ाई जिसमें एक दूसरे के हाथ को पकड़कर खींचते और ढकेलते हैं।

**हाथा-हाथी**†—अव्य०[हिं० हाथ+हाथ] हाथों-हाथ। तुरंत।

**हाथी**—पु०[सं० हस्तिन्] [स्त्री० हथिनी]१. एक बहुत बड़ा प्रसिद्ध स्तनपायी चौपाया, जो अपने स्थूल और विशाल आकार तथा सूँड के कारण सब जानवरों से विलक्षण होता है। गज।

**पद—हाथी का खाया कैथ**=ऐसा पदार्थ जो ऊपर से देखने में बिलकुल ठीक और सार-युक्त जान पड़े पर जिसके अंदर का सार या तत्व निकल गया हो। (कहते हैं कि हाथी पूरा कैथ बिना चबाये निगल जाता है और तब वह ठीक उसी रूप में उसकी गुदा से निकलता है, पर उस समय उसके अन्दर से गूदे की जगह लीद भरी रहती है। **हाथी की डहर या राह**=आकाश-गंगा जिसके संबंध में लोक में यह प्रसिद्ध है कि इन्द्र के हाथी इसी रास्ते से आते-जाते हैं। **सफेद हाथी** दे० स्वतन्त्र शब्द।

**मुहा०—हाथी के साथ गधे खाना**=किसी काम या बात में ऐसे आदमी की बराबरी करने का प्रयत्न करना जिसकी बराबरी की हीन न जा सकती हो। **हाथी पर चढ़ना**=बहुत अधिक प्रतिष्ठित, सम्पन्न या सम्मानित

होना। **हाथी बाँधना**= ऐसा काम करना या ऐसी चीज अपने पास रखना, जिसमे प्राय व्यर्थ का और बहुत अधिक खर्च होता हो। २ शतरज का एक मोहरा जिसे किश्ती या फील कहते है।

स्त्री० [हि० हाथ] हाथ से दिया जानेवाला सहारा। उदा०—रीझि हँसि हाथी हमे सब कोउ देत, कहा रीझि हँसि हाथी एक तुमहि पै देत हौ।—भूषण।

**हाथी-कान**—पु० [हि०] एक प्रकार का बड़ा सेम या चिपटी फली, जिसकी तरकारी बनती है।

**हाथी-खाना**—पु० [हि० हाथी+फा० खान] वह स्थान जहाँ हाथी रखे जाते हैं। फील-खाना।

**हाथी-चक**—पु० [हि० हाथी+स० चक्र] एक प्रकार का पौधा, जो औषध के काम आता है।

**हाथी-चिंघार**—पु० [हि० हाथी+स० चीत्कार] एक प्रकार का बडा भाला, जिससे युद्ध क्षेत्र मे हाथी पर वार किया जाता था।

**हाथी-दाँत**—पु० [हि० हाथी+दाँत] नर हाथी के मुँह के दोनो छोरो पर डेढ हाथ निकले हुए सफेद दाँत जो केवल दिखावटी होते है, पर जिनसे अनेक प्रकार की सुन्दर, बहु-मूल्य चीजे बनती है।

**हाथी-नाल**†—स्त्री०=हथनाल।

**हाथी-पाँव**—पु० [हि० हाथी+पाँव] १ एक प्रकार का बढिया सफेद कत्था। २. फील या श्लीपद नामक रोग।

**हाथी-पीच**—पु० [हि० हाथी+पीच] एक प्रकार का हाथी-चक (पौधा) जो औषध के काम आता है।

**हाथी-बच**—स्त्री० [हि० हाथी+बच] एक पौधा जिसके पत्ता की तरकारी बनाई जाती है।

**हाथीवान**—पु० [हि० हाथी+वान (प्रत्य०)] वह जो हाथी चलाता हो। फीलवान। महावत।

**हाथा-सूँड**—पु० [हि०] एक प्रकार का पौधा, जिसमे लबी-लबी पत्तियो के रूप मे हलके उन्नाबी रग के फूल लगते है।

**हादसा**—पु० [अ० हादिस] बुरी घटना। दुर्घटना।

**हादी**—पु० [अ०] १ हिदायत करने अर्थात् उपदेश देनेवाला। २ मार्ग-दर्शक।

**हान***—स्त्री०=हानि।

**हानि**—स्त्री० [स० √हा (त्यागना)+क्त-इनि] १ परित्याग करना। छोडना। २. पूरी तरह से नष्ट हो जाना। न रह जाना। जैसे—तिथि-हानि, प्राण हानि। ३. ऐसी स्थिति जिसमे कोई विशेष अपकार, घाटा, त्रुटि या कोई बुरी बात हुई हो। अनिष्ट या अपकार। क्षति। नुकसान। 'लाभ' का विपर्याय। (लॉस)। जैसे—धन, मान या स्वास्थ्य की हानि।

क्रि० प्र०—उठाना।—पहुँचाना।

**हानिकर**—वि० [सं० हानि√कृ (करना)+अच्] हानि करनेवाला। नुकसान पहुँचानेवाला।

**हानि-कारक**—वि०=हानिकर।

**हानिकारी**†—वि०=हानिकर।

**हानि-मूल्य**—पु० दे० 'क्षति-मूल्य'।

**हानीय**—वि० [स०] हातव्य। त्याज्य।

**हानु**—पु० [स०] दाँत।

**हाफिज**—वि० [अ० हाफ़िज़] हिफाजत अर्थात् रक्षा करनेवाला। रक्षक। जैसे—तुम्हारा खुदा हाफिज है।

पु० मुसलमानो मे वह धर्मशील व्यक्ति, जिसे सारा कुरान कंठस्थ हो।

**हाफिजा**—पु० [अ० हाफिज़] स्मरण-शक्ति। धारणा-शक्ति।

**हाबिस**—पु० [देश०] जहाज का लगर उखाडने या खीचने की क्रिया।

**हाबुल**—पु० [स० हविष्य] एक प्रकार का नमकीन व्यजन जो गेहूँ और जौ की कच्ची और कोमल बाले आग पर भूनकर बनाया जाता है।

**हाबूड़ा**—पु० [देश०] १ लूटमार, चोरी आदि करनेवाली एक अर्धसभ्य और अशिक्षित जाति। २. उक्त जाति का कोई व्यक्ति।

**हाबूडी**—स्त्री० [हि० हाबूडा] १ हाबूडा जाति की स्त्री। २ हाबूडा जाति की बोली।

**हाम**—वि० [?] किसी मे पूरी तरह से लगा या समाया हुआ। लीन। विलुप्त। उदा०—मीरॉ ना प्रभु गिरधर नागर, चरन कमल चित हाम रे।—मीरॉ।

†पु० [?] १ साहस। हिम्मत। २ प्रसन्नता।

**हामिद**—वि० [अ०] हम्द अर्थात् प्रशसा करनेवाला। प्रशसक।

**हामिल**—पु० [अ०] = हम्माल (भारवाहक)।

**हामिला**—वि० [अ० हामिल] गर्भवती।

**हामी**—स्त्री० [हि० हाँ] हाँ करने या कहने की क्रिया या भाव। स्वीकृति।

**मुहा०—हामी भरना**=किसी के अनुरोध की रक्षा या प्रार्थना की स्वीकृति के रूप मे 'हाँ' कहना।

वि० [अ०] १. हिमायत करनेवाला। २ मददगार। सहायक।

**हाय**—अव्य० [स० हा] घोर मानसिक या शारीरिक कष्ट होने पर अथवा उसका भय उत्पन्न होने पर मुँह से निकलनेवाला व्यथा-सूचक अव्यय।

**मुहा०—(किसी की) हाय पड़ना**=पीडित व्यक्ति का शाप लगना। मुझे लगता है कि उसकी हाय मुझ पर पडी है। **हाय मारना**=पीडित करनेवाले को क्रोध मे कोप-भरे शब्द कहना।

**हायन**—पु० [स० √हा (त्यागना)+ल्यु—अन] १ गुजरता। बीतना। २ छोडना। परित्याग। ३ वर्ष। साल।

**हायनक**—पु० [स०] लाल रग का एक प्रकार का मोटा चावल।

**हायल***—वि० [स० हाय=छोडा हुआ] पागल। उदा०—किय हायल चित चाप लॉग बजि पायल तब पाय।—विहारी।

वि० [अ०] १. आड़ करनेवाला। २ बाधा देने या रोकनेवाला।

**हाय-हाय**—अव्य० [अनु०] कष्ट, पीडा, शोक आदि का सूचक शब्द।

स्त्री० १. वह स्थिति जिसमे बाजार मे वस्तुएँ न उपलब्ध होने के कारण जन-साधारण मे पुकार मची हो। २. किसी दुर्लभ या दुष्प्राप्य चीज को प्राप्त करने के लिए होनेवाली तीव्र इच्छा।

**हार**—पु० [सं०√हृ (हरण करना)+अण्—प्रज्ञा] १. हरण करने अर्थात् जबरदस्ती छीन ले जाने की क्रिया या भाव। जैसे—**गो-हार**=गौएँ छीन ले जाना। २ अपराध आदि के दड स्वरूप राज्य के द्वारा होनेवाला सपत्ति का हरण। जब्ती। ३. किसी प्रकार कोई चीज ले जाने या ले लेने की क्रिया या भाव। ४. युद्ध। लड़ाई। ५. वियोग, विरह आदि। ६ गणित मे वह सख्या जिससे भाग देते हैं। भाजक

(डिवाइजर) ७ शरीर के वीर्य का क्षय या नाश। ८ पिंगल या छन्द-शास्त्र मे गुरुमात्रा की सज्ञा।

वि० १. ले जाने या वहन करनेवाला। २ नष्ट करनेवाला। नाशक। ३. मन हरनेवाला। मनोहर।

पु०[फा०] फूलो, मोतियो आदि की माला।

स्त्री०[स० हरि] १. खेल, प्रतियोगिता, युद्ध आदि मे प्रतिद्वद्वी से पराजित या परास्त होने की अवस्था या भाव। हारने की क्रिया, दशा या भाव। पराजय। 'जीत' का विपर्याय।

मुहा०—हर खाना=पराजित या परास्त होना। हारना। हार देना=पराजित या परास्त करना। हराना।

२. वह शारीरिक स्थिति, जिसमे मनुष्य काम करते-करते इतना शिथिल हो जाता है कि और आगे काम करने की शक्ति या साहस नही रह जाता। थकावट।

पु०[देश०] १ वन। जगल। २ गाव मे बाहर की ओर के तख्ते।

पु०[हिं० हल]१ खेत। २ चरागाह।

†पु० हाल (दशा)।

†प्रत्य०[स्त्री० हारी] दे० हारा ('वाला' का बोधक प्रत्यय)। जैसे—करनहार, हरनेवाला, मरनहार=मरणोन्मुख।

हारक—वि० [स० हर √ण्वुल्—अक]१. हरण करनेवाला। २ बलपूर्वक छीननेवाला। ३ कष्ट आदि दूर करने या हटानेवाला। ४ जानेवाला। ५ मनोहर। सुन्दर। ६ चलाने-वाला धूर्त चालाक।

पु०१ गले मे पहनने का एक हार। २ गणित मे भाजक अक या सख्या।

हार-गुटिका—स्त्री०[स० प० न०] हार की गुरिया। माला के दाने।

हार जीत—स्त्री०[हिं०] १ हारने और जीतने की क्रिया या स्थिति। २ हानि और लाभ।

हारद*—पु०[स० हृदय] हृदय की बात।

वि०=हार्दिक।

हारना—अ०[हिं० हार]१. युद्ध, खेल, प्रतिद्वद्विता आदि मे प्रतिपक्षी के सामने विफल या पराजित होना। 'जीत' का विपर्याय। जैसे—मुकदमे या लड़ाई मे हारना। २ प्रयत्न मे विफल होना।

मुहा०—हारकर=कोई उपाय या मार्ग न रह जाने की दशा मे। असमर्थ या विवश होकर। जैसे—अब और कुछ न हो सका तो हारकर फिर मेरे पास आये। हारे बरजे=लाचार या विवश होने की दशा मे। हारकर।

३ प्रयत्न या परिश्रम करते-करते इतना थक जाना कि कुछ करने की शक्ति न रह जाय। बहुत ही शिथिल हो जाना। उदा०—धीरे चल हम हारी हे रघुवर।—ग्रामगीत।

संयो० क्रि०—जाना।

पद—हारे-गाढ़े=ऐसी स्थिति में जब कि मनुष्य बहुत ही विवश या शिथिल हो गया हो अथवा भारी विपत्ति या सकट मे पड़ा हो। जैसे—हारे-गाढे पडोसी ही तो काम आते हैं।

मुहा०—हारे पड़ना*=(क) थककर गिरना। उदा०—हारे परिहै सबे राखु धन कहे हमारे।—दीनदयाल गिरि। (ख) लाचार होकर। उदा०—हारि परे अब पूरा दीजै।—कबीर।

स० १. प्रतियोगिता, युद्ध, खेल आदि मे सफल न होने के कारण हाथ से उसे या उससे सबध रखनेवाली चीज जाने देना। जैसे—लड़ाई धन या बाजी हारना। २ गँवाना। खोना। उदा०—नैकु वियोग मीन नहि मानत, प्रेम-काज वपु हारयो।—सूर। ३. न रख सकने या निर्वाह न कर सकने के कारण छोड देना। जैसे—हिम्मत हारना। ४. किसी को कुछ इस प्रकार देना कि उसे लौटा न सके या उससे पीछे न हट सके। जैसे—वचन हारना।

हार-फूल=पु०[स०] पाँच लडियो का हार।

हार-बंध—पु०[स० मध्य० स०] एक प्रकार का चित्र-काव्य जिसमे किसी पद्य के अक्षर हार के आकार मे रखे जाते है।

हारमोनियम—पु०[अ०] सदूक के आकार का एक प्रसिद्ध पाश्चात्य बाजा जिसके परदो से उँगलियो से दबाने पर स्वर निकलते है।

हार-यष्टि—स्त्री०[स० ष० त०] हार या माला की लडी।

हारल†—पु०=हारिल (पक्षी)।

हार-सिंगार—पु० हर-सिंगार (परजाता)।

हार-हूण—पु० [स०] १ एक प्राचीन देश। २ उक्त देश का निवासी।

हारा—वि०[स०]१ (व्यक्ति) जिसका कुछ हरण कर लिया गया हो। २. जो अपना कुछ या सब खो या गँवा चुका हो। (यौ० के अत मे) जैसे—सर्वहारा आदि।

प्रत्य०[?] [स्त्री० हारी] एक प्रत्यय जो क्रियार्थक सज्ञाओ मे लगकर 'वाला' का अर्थ देता है। जैसे—करनहारा, गलाबनहारा।

हारावलि (ली)—स्त्री०[स० उपमि० स०] मोतियो की लडी।

हारि—पु० [स० √हृ (हरण करना)+णिच्] १ हार। पराभव। पराजय। २ यात्रियो या पथिकों का दल। कारवाँ।

†पु०=हार।

†वि०=हारक।

हारिक—पु०[स०] एक प्राचीन जनपद।

हारिका—स्त्री० [स०] एक प्रकार का छन्द या वृत्त।

हारिज—वि० [अ०] १ हरज अर्थात् हानि करनेवाला। २ बाधक।

हारिण—वि०[स० हरिण+अण्] हरिण-सबधी। हिरन का।

पु० हिरन का मास।

हारिणाक्षा—स्त्री० [स०] सगीत मे मूर्च्छना जिसका स्वर-ग्राम इस प्रकार है—ग, म, प, ध, नि, स, रे। स, रे, ग, म, प, ध, नि, स, रे, ग, म, प।

हारित—भू० कृ०[स० √हृ (हरण करना)+णिच्—क्त हार+इतच् वा] १ हरण किया हुआ। छीना या लूटा हुआ। २ रहित। वचित। या हीन या किया हुआ। ३. खोया या गँवाया हुआ। ४ जो परास्त हो चुका हो। पराजित। ५ लाया हुआ। ६. मुग्ध या मोहित किया हुआ।

पु० तोता नामक पक्षी।

हारितक—पु० [स०] हरी तरकारी, शाक।

हारिद्र—वि० [स० हरिद्रा+अण्]१. हल्दी से रँगा हुआ। २ हल्दी के रंग का। पीला।

पुं०१. एक प्रकार का विष जिसका पौधा हल्दी के समान होता है और जो हल्दी के खेतों मे ही उगता है। इसकी गाँठ बहुत जहरीली होती

है। २ एक प्रकार का प्रमेह जिसमें हलदी के रंग का पीला पेशाब आता है।

**हारिल**—पु०[स० हारीत] झुंड मे रहनेवाली एक चिड़िया जो प्रायः अपने चंगल मे तिनका या छोटी पतली लकड़ी लिए रहती है। हरियिल। उदा०—मृगमद छाँडि न जात, गही ज्यौं हारिल लकरी।—भगवत रसिक।

**पद—हारिल की लकड़ी**=ऐसा आधार या आश्रय जो जल्दी या किसी प्रकार छोड़ा न जा सके। उदा०—हमारे हरि हारिल की लकरी।—सूर।

**विशेष**—इसकी यह विशेषता है कि यदि घायल होकर किसी वृक्ष की शाखा मे लटक जाय, तो मरने पर भी इसके पंजो से वह शाखा नही छूटती इसी आधार पर यह पद बना है।

*वि०[हिं० हारना]१. हारा हुआ। २. थका हुआ।

**हारी(रिन्)**—वि०[स०√हृ (हरण करना)+णिनि] [स्त्री० हारिणी]१ हरण करनेवाला। हारक। यौ० के अन्त मे। जैसे—कष्टहारी। २ पहुँचाने या ले जानेवाला। वाहक। ३. चुरानेवाला या लूटनेवाला। ४ दूर करने या हटानेवाला। ५ ध्वस्त या नष्ट करनेवाला। ५ उगाहने या वसूल करनेवाला। ७ जीतनेवाला। विजेता। ८. मन हरने वाला। सुन्दर।

वि० [फा० हार] हार या माला पहननेवाला।

पु० एक प्रकार का वर्णवृत्त जिसके प्रत्येक चरण मे एक तगण और दो गुरु होते है।

प्रत्य० हार का स्त्री० रूप।

**स्त्री०**[हिं० हारना] १ हारने की क्रिया या भाव। पराजय। हार। उदा०—हारी जानि पीर हरि मेरी।—सूर।

क्रि० प्र०—मानना।

२ थकावट। शिथिलता। उदा०—मोहि मग चलत न होइहि हारी। —तुलसी।

†पु०[हिं० हर=हल] हल जोतनेवाला। हलवाहा। उदा०—अहिर दनदिया वाम्हन हारी।—चाप।

**हारीत**—पु०[स० √हृ (हरण करना) णिच्—ईतच् वा]१ चोर। डाकू या लुटेरा। २ उक्त प्रकार के लोगो का काम या पेशा। ३ कबूतर।

**हार्क**—पु० [स० √हृ (हरण करना)+ण्वुल्]१ हरण करनेवाला। छीननेवाला। २. ले जानेवाला।

**हार्द**—पु०[अ०]१ उद्दण्ड और नटखट घोड़ा। २ दूत। ३ हरकारा। ४ नेता। सरदार।

**हारीलं**—पु० =हरावल (सेना का अगला भाग)।

**हार्द**—पु०[स० हृदय+अण् हृदादेश]१ हृदय के अन्दर की बात। जैसे—शास्त्र-साहित्य का हार्द समझने मे इस आलोचना से बहुत सहायता मिलेगी। २. अनुराग। प्रेम। स्नेह।

वि०=हार्दिक।

**हार्दिक**—वि०[स० हृदय+ठक्—हृदादेश.] हृदय मे रहने या होनेवाला। हृदय का। 'मौखिक' का विपर्याय। जैसे—हार्दिक सहानुभूति, हार्दिक स्नेह।

**हार्दिक्य**—पु०[स० हार्दिक+ष्यञ्] मित्र-भाव। मित्रता। सुहृद्-भाव।

**हार्दी(दिन्)**—वि०[स०] १. स्नेह-युक्त। २. सहृदय। ३. परम-प्रिय।

**हार्य**—वि०[स० √हृ (हरण करना)+ण्यत्]१. जो हरण किये जाने के योग्य हो अर्थात हरण किया जाने को हो। २. जो इधर-उधर हटाया जा सके। ३ (नाटक या रूपक) जिसका अभिनय हो सके या होने को हो। ४. (गल्पा) जिसका भाग होने को हो। भाव्य।

**हाल**—पु०[स०]१. खेत जोतने का हल। २. बलराम का एक नाम। ३ एक प्रकार का पक्षी।

पु०[अ०]१ वह समय जो अभी तक या बीत रहा हो। वर्तमान काल।

**पद—हाल का**=(क) बीते ही दिन पहले का। (ख) ताजा या नया। जैसे—किसी पत्रिका का हाल का अंक। **हाल में**=वर्तमान समय से कुछ ही दिन पहले। कुछ ही दिन पूर्व। जैसे—उनके घर हाल मे ही लड़का हुआ है।

२. वर्तमान से कुछ ही पहले का समय। जैसे—(क) यह तो हाल की बात है। (ख) हाल मे वे दिल्ली गये थे। ३ अवस्था। दशा। हालत। जैसे—उनके यहाँ का हाल है।

**मुहा०—हाल बेहाल होना**=बहुत ही बुरी दशा या स्थिति मे होना। ४ ऐसी दशा या स्थिति जिसमे ठीक तरह से काम चल सकता हो। उदा०—साबित है जो दशा तो नही है गोजो मे कुछ हाल।—सौदा।

५ बहुत ही बुरी और शोचनीय दशा। बहुत खराब हालत।

**मुहा०—(किसी का) हाल करना**=बहुत ही बुरी दशा को पहुँचाना। गत बनाना। हाल पतला होना=अवस्था बहुत ही दयनीय होना।

६ अवस्था या दशा का ब्यौरा या विवरण। वृत्तांत। समाचार। जैसे—उनका भी कुछ हाल मिला? ७ ब्योरा। विवरण।

**मुहा०—(किसी से) हाल माँगना**=अधिकारपूर्वक यह पूछना कि यह बात क्यो या कैसे हुई। कैफियत तलब करना। उदा०—एक कोठे पंच मिकदारा पर्च मांगहिं हाला।—कबीर।

८ ईश्वर की चर्चा या चिंतन के समय भक्ति के आवेश के कारण होनेवाली तन्मयता, आत्मविस्मृति या विभोरता। (मंसल०) उदा०—खेलत-खेलत हाल करि, जो कुछ होहि सुहोइ।—कबीर।

**मुहा०—हाल आना**=आवेश, उद्वेग आदि के कारण अपने आप को भूल जाना। आत्म-विस्मृत या उन्मत्त होना। उदा०—एक दम से देख उसको होगी को हाल आया।—नजीर।

अव्य० वर्तमान काल मे। इस समय। उदा०—स्वर्ग यदि न भी मिलेगा हाल।—मैथिलीशरण।

स्त्री०[हिं० हालना] काठ के पहिये पर चारों ओर चढ़ाया जानेवाला लोहे का घेरा या गोलाकार बंद। २. कोई गोल चक्र या मंडल।

स्त्री०[हिं० हालना]१ हिलने की क्रिया या भाव। कंप। २. हिलने के कारण लगनेवाला झटका। जैसे—रेल के सफर मे उतनी हाल नही लगती।

क्रि० प्र०—लगना।

पु०[अ० हॉल] बहुत बड़ा या खूब सजा कमरा। जैसे—टाउन हॉल।

**हालक**—पु०[स०] पीलापन लिए भूरे रंग का घोड़ा।

**हाल-गीला**†—पुं०=गेंद (खेलने का)।

**हाल-डाल**—स्त्री० [हिं० हालना+डोलना] १. हिलने-डोलने की क्रिया या भाव। गति। २. हल-चल। ३. कंप।
†पु० [अ० होलडाल] बिस्तरबंद।

**हालत**—स्त्री० [अ०] १. अवस्था। दशा। २. परिस्थिति। जैसे—आज-कल बाजार की हालत नाजुक है।

**हालना**—अ० [स० हल्लान] १. हिलना-डोलना। २. झूलना। ३. झूलना।

**हालरा**—पु० [हिं० हालना] १. बच्चों को हाथ में लेकर हिलाने की क्रिया। २ झटका। झोंका। ३. लहर। हिलोर।

**हालहल, हालहाल**—पु०= हलाहल।

**हाल-हली**—स्त्री० [स०] मदिरा। शराब।

**हाल-हवाल**—पु० [अ० हाल+अहवाल] १. किसी विशिष्ट प्रकार की अवस्था या दशा। २. उक्त प्रकार की दशा का वर्णन या वृत्तान्त।

**हाल-हूल**—स्त्री० [हिं० हल्ला] १. हल्ला-गुल्ला। कोलाहल। २ हल-चल।

**हालाँकि**—अव्य० [फा०] १. यद्यपि। २. अगरचे।

**हाला**—स्त्री० [स०] मद्य। शराब।
पुं० [अ० हाल] १. गोल घेरा। मंडल। २. चारों ओर पड़नेवाला गड्ढा। उदा०—रोय-रोय नैनन मे हाले परै जाले परै...।—कबिन्द।
†पु० [हिं० हल] १. मध्य युग मे वह कर जो जोतने के हलो पर लगता था। २. जमीन की मालगुजारी। लगान। (पूरब)

**हालात**—पु० बहु० [फा० हाल का बहुवचन रूप] १ स्थितियाँ। २ परिस्थितियाँ।

**हालाहल**—पु० [स०] १. हलाहल नामक प्रचण्ड विष। २ एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ बहुत जहरीली होती है। ३. एक प्रकार की बहुत जहरीली छिपकली।

**हालाहली**—स्त्री० [स०] मदिरा।
स्त्री० [हिं० हाली=जल्दी] १. जल्दी मचाने की क्रिया या भाव। २. जल्दी।
अव्य० शीघ्रतापूर्वक। जल्दी-जल्दी।

**हालिनी**—स्त्री० [स०] एक प्रकार की छिपकली।

**हालिम**—पु० [देश०] एक प्रकार का पौधा जिसके बीज औषध के काम आते है। चन्द्रसुर। चन्सुर।

**हाली**†—अव्य० [हिं० हिलना] जल्दी। शीघ्र।
†पु० [हिं० हल] हल जोतनेवाला।

**हालूक**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की निम्नश्रेणी भेड, जिसका ऊन बहुत अच्छा होता है।

**हाली**†—पु०=हालिम (पौधा)।

**हाव**—पु० [स० √ह्वे+घञ् भावे√ हु+करणे वा] १. पास बुलाने की क्रिया या भाव। पुकार। बुलाहट। २. साहित्य के शृंगारिक क्षेत्र मे नायिका की वे आकर्षक तथा मोहक क्रियाएँ और मुद्राएँ, जो वे स्वाभाविक रूप से संयोग के समय नायक के सामने करती है।
**विशेष**—साहित्यकारों ने इनकी गणना नायिकाओं के अंगज और स्वभावज अलंकारों में की है; और इसके लीला, विलास, विच्छित्ति, विभ्रम, किलकिंचित, मोहायित, कुट्टमित आदि अनेक प्रकार या भेद बतलाये गये हैं।
**पद—हाव-भाव।**

**हावक**—वि० [स० √हु (देना)+ण्वुल्—अक] हवन या यज्ञ करनेवाला।

**हावका**—पु० [हिं० हाव=मुँहबाने का शब्द] १. किसी का उत्कर्ष देखकर या अपनी किसी भारी क्षति का स्मरण करके लिया जानेवाला ठंढा साँस। दीर्घ निश्वास। गहरी या ठंढी साँस।
क्रि० प्र०—भरना।—लेना।
२. किसी बात की प्रबल इच्छा या कामना।

**हावनीय**—वि० [सं० हवन+छण्—ईय] (पदार्थ) जो हवन के लिए उपयुक्त या योग्य हो।

**हाव-भाव**—पु० [स०] वे आकर्षक और कोमल चेष्टाएँ, जो स्त्रियाँ प्रायः पुरुषो को अनुरक्त तथा मुग्ध करने के लिए करती हैं।
क्रि० प्र०—दिखाना।

**हावर**—पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा पेड जिसकी लकड़ी मजबूत होती और खेती के सामान बनाने के काम मे आती है।

**हावला-बावला**—वि० [हिं० बावला] [स्त्री० हावली-बावली] जो बहुत कुछ बावलो या पागलो का-सा आचरण करता हो।

**हाव-हाव**†—स्त्री० हाय-हाय।

**हावी**—वि० [अ०] १ कुशल। दक्ष। प्रवीण। २. जो अपने गुण, बल, विशेषता आदि के कारण दूसरे को दबा ले या पराभूत कर दे।
वि० [सं०] हावक (हवन करनेवाला)।

**हाशिया**—पु० [अ० हाशिय] १. किसी फैली हुई वस्तु का किनारा। कोर। बारी। जैसे—किताब का हाशिया। कपड़े का हाशिया। (बार्डर)
२. कपड़ों मे टाँकी जानेवाली गोट या मगजी।
क्रि० प्र०—चढाना।—लगाना।
३. दस्तावेज या लेख्य का वह पार्श्व जो आवश्यकतानुसार कुछ विशिष्ट बातें बढ़ाने या लिखने के लिए खाली रखा जाता है। जैसे—टीका-टिप्पणी लिखने, गवाहों के हस्ताक्षर आदि के लिए हाशिया छोडना।
**पद—हाशिये का गवाह**=वह गवाह या साक्षी जिसने किसी दस्तावेज के किनारे पर हस्ताक्षर किये हों।
**मुहा०—(किसी बात पर) हाशिया चढ़ाना**=टीका-टिप्पणी, व्याख्या आदि के रूप मे कोई व्यर्थपूर्ण बाते कहना।

**हास**—पु० [स०√ हस् (हँसना)+घञ् भावे] १ हँसने की क्रिया या भाव। हँसी।
**विशेष**—साहित्य मे यह हास्य रस का स्थायी भाव माना गया है, और कहा गया है कि किसी के आकार-प्रकार, रूप-रग, बोल-चाल, आदि मे कोई विलक्षण विकार दिखाई देने पर मनुष्य के चेहरे का जो प्रसन्नता-सूचक विकास होता है वह हास कहलाता है।
२. साहित्य मे केवल कौतुक के लिए कही जानेवाली वह बात या बनाया जानेवाला वह रूप या वेश जो आह्लाद या प्रसन्नता का सूचक और उत्पादक होता है। यह सात्विक भावो के अन्तर्गत है। ३ दिल्लगी। परिहास। मजाक। ४. दे० 'उपहास'।

**हासक**—पुं० [स० √हस्+णिच्—ण्वुल्—अक] हँसानेवाला।

**हासकर**—वि० [सं० हास√कृ (करना)+अच्, ष० त०] हँसानेवाला।

**हासन**—पु०[सं०] हँसाना।
वि० हँसानेवाला।

**हासना**†—अ०१ दे० 'हँसना'। २. दे० 'हींसना'।

**हासनिक**—पु०[ग०] विनोद या क्रीड़ा आदि मे साथ रहनेवाला व्यक्ति। आमोद-प्रमोद का साथी।

**हास-कीला**—स्त्री०[सं० मध्य० स०] हँसी-ठट्ठा। मजाक।

**हासवती**—स्त्री०[स०] बौद्ध तान्त्रिको की एक देवी।

**हास-शील**—वि०[स० ब० स०] हँसानेवाला। हँसोड़। विनोदी।

**हासा(सस्)**—पु०[स० √हस्(हँसना)+णिच्—असुन्] चन्द्रमा।

**हासास्पद**—पु०[स०]=हास्यास्पद।

**हासिका**—स्त्री०[स०√हस् (हँसना)+भावे० ण्वुल्—अक इत्व—टाप्] १. हास। हँसी। २. मजाक। ठट्ठा।

**हासिद**—वि०[अ०] हसद अर्थात् डाह करनेवाला। ईर्ष्यालु।

**हासिल**—वि०[अ०] पाया या मिला हुआ। प्राप्त। लब्ध।
पु०१ जोड मे किसी सख्या का वह अश जो अतिम अग के नीचे लिखे जानेपर बच रहे। २. गणित की क्रिया का फल। ३. पैदावार। उपज। ४. लाभ। नफा। ५ जमीन का लगान। ६ वह धन जो किसी से अधिकारपूर्वक लिया जाता हो। जैसे—लिाज, चौथ आदि। उदा०—ठौर ठौर हासिल उगाहत है साल को।—भूषण

**हासी (हासिन्)**—वि०[स० हास+इनि] [स्त्री० हासिनी] १ हँसनेवाला। जैसे—चार-हासी। २. धवेत। सफेद।

**हास्तिक**—वि०[स०हस्ति+ठण्—अक] हाथी सबधी। हाथी का।
पु०१. हाथी का सवार। २ महावत। २ हाथियों का झुण्ड या पुल।

**हास्तिदंत**—वि०[स०]१ हाथी-दाँत सबधी। २. हाथी-दाँत का बना हुआ।

**हास्य**—वि० [सं०√हस्+ण्यत्]१ हास सबधी। हास की। २ (काम या बात) जिससे लोग प्रसन्न होकर हँस पडें। जिसमे लोगों को हँसाने की योग्यता या शक्ति हो। ३ जिस पर लोग व्यग्यपूर्वक हँसते हों। जिसकी हँसी उड़ाई जाती हो या उडाई जाय। उपहास के योग्य।
पु० १ हँसने की क्रिया या भाव। हँसी। २ साहित्य मे, नौ स्थायी भावो या रसो में से एक जो शृंगार रस से उत्पन्न और शुभ्र वर्ण का माना गया है तथा जिसके देवता 'प्रमथ' अर्थात् शिव के गण कहे गये हैं। **विशेष**—इसका स्थायी भाव हास कहा गया है, और आचार-व्यवहार तथा वेश-भूषा की अयुक्तता, असगति, भद्दापन, विकृति, धृष्टता, चपलता, प्रलाप, व्यंग्य आदि इसके विभाग माने गये हैं। आलस्य, अपहित्थ, तद्रा, निद्रा, असूया आदि इसके अभिचारी भाव कहे गये हैं। यह शृगार, वीर और अद्भुत् रसो का पोषक माना गया है। ३. दिल्लगी। ठट्ठा। मजाक। ४. उपेक्षा और निन्दा से युक्त हँसी। उपहास।

**हास्यकर**—वि०[स० ष० त०]१. हँसानेवाला। २. जिसे देख या सुनकर हँसी आती हो। हास्यास्पद।

**हास्यास्पद**—वि०[सं० ब० स०]१. (ऐसा बेढंगा, फूहड या भद्दा), जिसे देखकर लोग उपेक्षा या व्यग्यपूर्वक हँसते हों। उपहास का पात्र।

**हास्योत्पादक**—वि०[सं० ष० त०] जिससे लोगो को हँसी आये। उपहास के योग्य।

**हा हंत**—अव्य०[सं०] मृत्यु या मृत्यु-तुल्य कष्ट उपस्थित होने का सूचक अव्यय।

**हाहल***—पुं०=हलाहल* (विष)।

**हा-हा**—पु० [अनु०]१. जोर से हँसने का शब्द।
२. बहुत गिडगिड़ाकर अनुनय-विनय करने का शब्द। उदा०—हाहा करि हारि रहे, मोहन पायँ परे जिन्ह लातनि मारे।—केशव।
**मुहा०—हा-हा खाना**=बहुत गिडगिडाकर विनती करना। अत्यन्त दीनता और नम्रता से दया की भीख माँगना।
पुं० एक गन्धर्व का नाम।

**हाहाकार**—पु०[सं० हाहा√कृ (करना)+अण्] भय के कारण बहुत आदमियों के मुँह से निकला हुआ 'हाहा' शब्द। घबराहट की चिल्लाहट। भय, दुख या पीडा सूचित करनेवाली जन-समूह की पुकार। कुहराम।
क्रि० प्र०—पड़ना।—मचना।—होना।

**हाहा-ठीठी**—स्त्री०[अनु० हाहा+हि० ठट्ठा] हँसी-ठट्ठा। विनोद-क्रीडा। जैसे—तुम्हारा सारा दिन हाहा-ठीठी मे बीतता है?।

**हाहाहूत***—पु०[अनु०]=हाहाकार।

**हाहा-हूह**—पु०[अनु०] =हाहा-ठीठी।

**हाही**—स्त्री०[हि०हाय] कोई चीज और अधिक मात्रा मे प्राप्त करते चलते रहने की ऐसी उत्कट इच्छा या लोभ जो दूसरों का अनुचित तथा बेहूदा लगता हो। जैसे—तुम्हें तो खाने की हाही पडी रहती है।
क्रि० प्र०—पडना।—मचना।

**हा-हू***—पुं० [अनु०] १ हल्ला-गुल्ला। कोलाहल। २ धूम-धडक्का।

**हाहूत**—पु०[अ०]कुछ मुसलमान साधको के अनुसार ऊपर की नौ पुरियों या लोकों मे से पाँचवी पुरी या लोक।

**हाहू-बेर**—पु०[ देश० हाहू+हिं० बेर] जगली बेर। झडबेरी।

**हिं**—विभ० हिन्दी की हि विभक्ति का बहु० रूप। जैसे—तिनहिं, उन्हें।

**हिंकरना**—अ०[अनु० हिनहिन] घोडो का हिनहिनाना। हीसना।

**हिंकार**—पु०[स०]१. गौ के रँभाने का शब्द। २. चीते, शेर आदि की गरज या दहाड़। ३ व्याघ्र। बाघ। ४ सामगान का एक अग जिसमे उद्गाता गीत के बीच-बीच मे 'हिं' का उच्चारण करता है।

**हिंकिया**—स्त्री०[सं०]=हिंकार।

**हिंग**—पु०[स० हिंगु] एक प्राचीन देश।
†स्त्री०=हींग।

**हिंगनबेर**—पु०[हि० हिंगोरट+बेर] हिंगुदी वृक्ष। गोदी।

**हिंगलाज**—स्त्री०[सं० हिंगुलाजा] देवी की एक मूर्ति जिनका मुख्य मदिर सिन्ध और बलोचिस्तान के बीच की पहाड़ियों मे है। यहाँ अँधेरी गुफा मे ज्योति के उसी प्रकार दर्शन होते हैं, जिस प्रकार काँगड़े के ज्वालामुखी नामक स्थान मे होते हैं।

**हिंगली**†—स्त्री०[देश०] एक प्रकार का तम्बाकू।

**हिंगाष्टक चूर्ण**—पुं०=हिंग्वाष्टक चूर्ण।

**हिंगु**—पुं०[स० हिंम√गम् (जाना आदि)+डु] हींग।

**हिंगुक**—पुं०[सं०] वह पेड़ जिससे हींग निकलती है।

**हिंगुपत्र**—पु०[स० ब० स०] इंगुदी। हिंगोट।

**हिंगुल**—पु०[सं० हिंग√ला (लेना)+क]१. इंगुर। सिंगरफ। २. एक प्राचीन नदी।

**हिंगुला**—स्त्री०[सं०] एक प्रदेश जो सिंध और बलूचिस्तान के बीच में है. जहाँ हिंगलाजा या हिंगलाज देवी का मन्दिर है।

**हिंगुलाजा**—स्त्री०[सं०] दुर्गा देवी का एक रूप। वि० दे० 'हिंगलाज'।

**हिंगोट**—पु०[सं० हिंगुपत्र, प्रा० हिंगुवत्त] मँझोले आकार का एक झाड़दार कँटीला जंगली पेड़ जिसकी इधर-उधर सीधी निकली हुई टहनियाँ गोल और छोटी होती हैं। इंगदी।

**हिंग्वाष्टक चूर्ण**—पु०[सं० हिंगु+अष्टक] वैद्यक में एक प्रसिद्ध पाचक चूर्ण जो हींग में सात चीजें मिलाने से बनता है।

**हिंच**—पु०[अ० हिंच] झटका। आघात। चोट। (लश्करी)

**हिंचना**†—अ०[?] पीछे की ओर हटना। खिंचना।

**हिंछना**†—अ०[स० इच्छण] इच्छा करना। चाहना।

**हिंछा**—स्त्री०=इच्छा।

**हिंडक**—वि० [स० हिंड्+ण्वुल्—अक—कँ+क व] १. घूमता फिरता रहनेवाला। २. भ्रमणशील। घुमक्कड़।

**हिंडन**—पु०[स०√हिंड्((घूमना)+ल्युट्—अन] घूमना या चलना-फिरना

**हिंडिक**—पु०[स०] फलित ज्योतिष का आचार्य।

**हिंडी**—स्त्री०[स०] दुर्गा का एक नाम।

**हिंडी-बदाम**—पुं० [देश० हिंड+फा० बादाम] अडमन टापू में होनेवाला एक प्रकार का बड़ा पेड़ जिसमें एक प्रकार का गोंद निकलता है और जिसके बीजों में बहुत तेल होता है।

**हिंडीर**—पु० [स०√हिंड्+ईरन्] १. एक प्रकार की समुद्री मछली की हड्डी जो 'समुद्र फेन' के नाम से प्रसिद्ध है। २ नर या पुरुष जाति का प्राणी। ३. अनार।

**हिंडुक**—पु०[सं०] शिव का एक नाम।

**हिंडोरना**†—पुं०=हिंडोला
अ०=डोलना।

**हिंडोरा**—पु०[स्त्री० अल्पा० हिंडोरी] हिंडोला।

**हिंडोल**—पु०[स०हिन्डोल] १ हिंडोला। २ संगीत में एक प्रकार का राग।
**विशेष**—कहते हैं कि जब यह राग अपने शुद्ध रूप में गाया जाता है, तब हिंडोला अपने आप चलने लगता है।

**हिंडोलना**—पुं०[हिं० हिंडोल+ना (प्रत्य०)] छोटा हिंडोला।

**हिंडोला**—पुं०[सं० हिन्दोल] [स्त्री० अल्पा० हिंडोली] १. एक विशेष प्रकार का चक्राकार झूला जिसमें बैठने के लिए आसनों के चार विभाग होते हैं और जो ऊपर-नीचे चक्कर काटता हुआ घूमता है। २. बच्चों को झुलाने का पालना जो आगे-पीछे चलता है। ३. छत, पेड़ आदि में रस्सों से लटकाया हुआ झूला।

**हिंडोली**—स्त्री० [स०] एक रागिनी जो हनुमत के मत से हिंडोल राग की प्रिया है।

**हिंताल**—पुं०[स०]१. खजूर की जाति का एक प्रकार का छोटा पेड़ जो देखने में बहुत सुन्दर होता है। २. उक्त वृक्ष का फल।

**हिंद**—पुं०[फा०] हिंदोस्तान। भारतवर्ष।

**हिंदवाना**†—पु० [फा० हिंद+वान] तरबूज।

**हिंदवी**—स्त्री०[फा०]१. हिंद या हिंदोस्तान की भाषा। आधुनिक हिंदी भाषा का पुराना नाम।

**हिंदी**—वि०[स० सिन्ध् से फा० हिन्द] हिंद या हिंदोस्तान का। भारतीय।
पु० हिंद का निवासी। भारतवासी।
स्त्री० १. हिंद या हिन्दोस्तान की भाषा। २. आज-कल मुख्य रूप से, सारे उत्तर और मध्य भारत की एक प्रधान भाषा जो संस्कृत की प्रत्यक्ष उत्तराधिकारिणी होने के कारण मुख्य रूप से प्राय सारे भारत की राष्ट्र-भाषा रही है, और स्वतन्त्र भारत की राज-भाषा मानी गई है, तथा जो देवनागरी लिपि में लिखी जाती है।
**विशेष**—इसका प्रचार उत्तर प्रदेश, बिहार, मध्य प्रदेश और राजस्थान में व्यापक रूप से है एवं इनके आस-पास के अनेक प्रदेशों में भी यह बहुत कुछ बोली और समझी जाती है। अवधी, बघेली, बिहारी, बुंदेलखंडी, ब्रजी आदि अनेक बोलियाँ इसी के अन्तर्गत मानी जाती हैं, और मैथिली, राजस्थानी आदि भी इसी की शाखाएँ कही जाती हैं। प्राय १३वीं या १४वीं शती से इस भाषा का आरम्भ माना गया है, और इसका प्राचीन साहित्य बहुत अधिक है। अब भी भारत की आधुनिक भाषाओं में इसका भंडार बहुत बड़ा है और दिन पर दिन इसका प्रचार-व्यवहार, बढ़ता जाता है।
**मुहा०—हिंदी की चिंदी निकालना**=(क) बहुत सूक्ष्म पर व्यर्थ के या तुच्छ दोष निकालना। (ख) कुतर्क करना।

**हिंदीरेवंद**—पु०[फा०] एक प्रकार का पौधा जिसकी जड़ औषध के काम में आती है और चीनी रेवंद या रेवंद चीनी भी कहलाती है।

**हिंदुई**†—स्त्री०=हिंदवी (भाषा)।

**हिंदुत्व**—पु०[स०]१. हिन्दू होने की अवस्था, गुण धर्म या भाव। २ हिन्दुओं का आचार-विचार और व्यवहार।

**हिंदुस्तान**—पुं०[फा० हिंदोस्तान]१. हम लोगों के रहने का यह भारत देश। भारत-वर्ष। भारत। २ हमारे इस देश का उत्तरीय और मध्य भाग जो दिल्ली से लेकर पटना तक और दक्षिण में नर्मदा के किनारे तक माना जाता है। यही खास हिंदोस्तान कहा जाता है।

**हिंदुस्तानी**—वि०[फा०] हिन्दुस्तान का। हिंदुस्तान संबंधी। भारतीय।
पु० हिन्दुस्तान का निवासी। भारतवासी। भारतीय।
स्त्री०१. हिंदोस्तान की भाषा। २ उत्तरी भारत के मध्य भाग की बोल-चाल या लोक-व्यवहार की (पर साहित्यिक से भिन्न) वह हिंदी जिसमें न तो अरबी के शब्द अधिक हों और न संस्कृत के।

**हिंदुस्तानी-संगीत**—पु०[हिं०+स०] उस पद्धति या शैली का संगीत जो उत्तर भारत में प्रचलित है। (कर्नाटकी संगीत से भिन्न)

**हिंदुस्थान**†—पु०=हिंदुस्तान।

**हिंदू**—पुं०[फा० सं० सिन्धु से] भारतवर्ष में बसनेवाली आर्यजाति के वंशज जो भारत में पल्लवित आर्य धर्म, संस्कार और समाज-व्यवस्था को मानते चले आ रहे हैं। भारतीय आर्य-धर्म का अनुयायी।

**हिंदूकुश**—पु०[फा०] एक पर्वत श्रेणी जो अफगानिस्तान के उत्तर में है और हिमालय से मिली हुई है।

**हिंदूपन**—पु०[फा० हिंदू+पन (प्रत्य०)] हिंदू होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। हिंदुत्व।

**हिंडोरना**—स०[म० हिंदोल+ना (हिं० प्रत्य०)] तरल पदार्थ मे हाथ या कोई चीज डालकर इधर-उधर घुमाना। घँरोलना।

**हिंडोल**—पुं० हिंडोल।

**हिंडोलक**—पु०[सं०] छोटा हिंडोल। पालना।

**हिंडोस्तान**†—पु०=हिंदुस्तान।

**हिंडोस्तानी**†—वि०, पु०, स्त्री०=हिंदुस्तानी।

**हिंयाँ**†—अव्य०=यहाँ।

**हिंव, हिंवार**†—पुं०=हिम (बरफ़)।

क्रि० प्र०—पड़ना।

**हिंस**†—स्त्री०=हींस।

**हिंसक**—वि० [स०हिंस+ण्वुल्—अक]१. हिंसा करनेवाला। हत्यारा। घातक। २. दूसरो को कष्ट पहुँचानेवाला या पीडित करनेवाला। ३ ईर्ष्या-द्वेष करनेवाला। ४. (पशु) जो दूसरे जीवो या पशुओ की हत्या करता हो। जैसे—शेर, चीते, भालू आदि हिंसक होते हैं।

पु० १. शत्रु। २. उच्चाटन, मारण आदि प्रयोग करनेवाला तात्रिक ब्राह्मण।

**हिंसन**—पु०[सं० √हिंस् (मारना)+ल्युट्—अन][वि० हिंसनीय, हिंस्य, भू० कृ० हिंसित]१. जीवों का वध करना। जान से मार डालना। २. जीव या प्राणी को कष्ट देना। ३. पीड़ित करना। ४. किसी का कोई अनिष्ट या हानि करना। ४. किसी से ईर्ष्या या द्वेष करना।

**हिंसना**†—अ०=हींसना।

**हिंसनीय**—वि० [स०√हिंस् (मारना)+अनीयर्]१. हिंसा करने योग्य। २. जिसकी हिंसा की जा सके या की जाने को हो।

**हिंसा**—स्त्री०[स० √हिंस् (मारना)+अ—टाप्]१. जीव की हत्या करना या उसे किसी प्रकार का कष्ट पहुँचाना जो प्रायः सभी धर्मों में पाप माना गया है। २. किसी को किसी प्रकार की हानि पहुँचाना। अनिष्ट अथवा अपकार करना।

**हिंसा-कर्म**—पु०[सं० ष० त०] १. वध करने या पीड़ा पहुँचाने का कर्म। मारने या सताने का काम। २ उच्चाटन, मारण आदि ऐसे तात्रिक प्रयोग जिनसे दूसरो का अनिष्ट होता हो।

**हिंसात्मक**—वि०[स० ब० स०] जिसमे हिंसा हो। हिंसा से युक्त। जैसे—हिंसात्मक मनोवृत्ति।

**हिंसाद**—पु० [सं०] १. हिंस्र पशु। खूँखार जानवर। २. बाघ या शेर।

**हिंसालु**—वि०[स० हिंसा+आलुच्]१. हिंसा करनेवाला। मारने या सतानेवाला। हिंसक। २. जिसकी प्रवृत्ति निरन्तर हिंसा करते रहने की हो।

**हिंसित**—भू० कृ० [सं० हिंसा+इतच्]१ जिसकी हिंसा की गई हो। मारा हुआ। २. जिसे क्षति पहुँचाई गई हो।

पु० क्षति। हानि।

**हिंसतव्य**—वि०[स०√हिंस् (हिंसा करना)+तव्य] जिसकी हिंसा की जा सकती हो।

**हिंस्य**—वि०[स०]=हिंसनीय।

**हिंस्र**—वि०[स० √हिंस्+रक्] हिंसा करनेवाला। हिंसक। जैसे—हिंस्र पशु।

**हिंस्रक**—पु०[स०] हिंस्र पशु। खूँखार जानवर।

**हिंस्रिका**—स्त्री०[स०] खुसमों या डाकुओ की नाव।

**हि**—वि०[सं० हि] एक पुरानी विभक्ति जिसका प्रयोग पहले तो सब कारकों मे होता था, पर पीछे कर्म और सप्रदान मे ही('को' के अर्थ मे) रह गया। जैसे—रामहि प्रेम समेत लखि।

†अव्य०=ही।

**हिअ***—पु० [स० हृदय] १. हृदय। २. छाती।

**हिआ**—पु०[स० हृदय, प्रा० हिअ] १. हृदय। २. छाती।

**हिआउ**†—पु०=हियाव (साहस)।

**हिआव**†—पु०=हियाव।

**हिकड़ा**—पु० [फा० से०=तीन+कोड़ी] तीन कोड़ी कपडो का समूह।

**हिकमत**—स्त्री० [अ०] १ तत्त्व-ज्ञान। २. कोई काम कौशलपूर्वक करने की युक्ति। अच्छी और बढ़िया तरकीब। ३. कार्य सिद्ध करने का उपाय या युक्ति। तदबीर।

क्रि० प्र०—निकालना।—लगाना।

४. हकीम का काम या पेशा। ५ यूनानी चिकित्सा-प्रणाली।

**हिकमती**—वि०[अ० हिकमत+हि० ई (प्रत्य०)]१ कार्य-साधन की युक्ति निकालनेवाला। कार्य-पटु। २ चालाक। होशियार।

**हिकलाना**†—अ० हकलाना।

**हिकायत**—स्त्री०[अ०] कथा। कहानी।

**हिकारत**—स्त्री० हकारत (घृणा)।

**हिक्कल**—पु०[?] बौद्ध सन्यासियो या भिक्षुओ का दण्ड।

**हिक्का**—स्त्री०[स०]१. हिचकी। २. बहुत अधिक रोने के कारण बँधने वाली हिचकी। ३. एक प्रकार का रोग, जिसमे लगातार बहुत हिचकियाँ आती है।

**हिक्किका**—स्त्री०[स०] हिक्का। हिचकी।

**हिक्की**—पु०[स० हिक्किन्] वह जिसे हिक्का का रोग हो। हिचकी का रोगी।

**हिचक**—स्त्री० [हिं० हिचकना]१. हिचकने की क्रिया या भाव। २ कुछ करने या करने के समय मन मे होनेवाला आगा-पीछा या रुकावट।

**हिचकी**—स्त्री०[सं० हिक्का या हिचहिच से अनु०]१. खाँसी, छींक, डकार आदि की तरह का एक शारीरिक व्यापार जिसमे साँस लेने के समय क्षण भर के लिए फेफड़े का मुँह सिकुड़कर बन्द हो जाता है और पेट की वायु कुछ रुकती और हलका शब्द करती हुई बाहर निकलती है। २ उक्त के फल-स्वरूप झटके से होनेवाला तीव्र शब्द जो कठ से निकलता है। ३. एक प्रकार का रोग जिसमे बार बार उक्त प्रकार की क्रिया तथा शब्द होता है।

क्रि० प्र०—आना।

**हिचकोला**—पु०=हचकोला।

**हिचर-मिचर**—स्त्री०[हिं० हिचक] वह स्थिति जिसमें कोई काम करने या कुछ कहने मे हिचक प्रकट होती हो।

**हिजड़ा**—पु०[?] ऐसा व्यक्ति जिसमे शारीरिक दृष्टि से स्त्री और पुरुष दोनो के कुछ-कुछ चिह्न तथा लक्षण जन्मजात और प्राकृतिक रूप से हो। ऐसा व्यक्ति न पूर्णत. पुरुष ही होता है और न स्त्री ही।

(यूथक)

**हिजरत**—स्त्री० [अ] १. शत्रु के समय अपनी जन्म-भूमि छोड़कर कहीं दूसरी जगह चले जाना। देश-त्याग। २ मुहम्मद साहब के जीवन की वह घटना जिसमे वे अपनी जन्म-भूमि मक्का का परित्याग करके मदीने चले गये थे। हिजरी सन् का आरम्भ उसी समय से चला है। दे० 'हिजरी'।

**हिजरा**†—पु०=हिजडा।

**हिजरी**—पु० [अ०] प्रसिद्ध मुसलमानी सन् या सवत् जिसका आरम्भ मुहम्मद साहब की हिजरत के दिन (१५ जुलाई सन् ६२२ ई०) हुआ था।

**विशेष**—यह विशुद्ध चांद्र सन् या सवत् है और सौर वर्ष से प्राय. १०-११ दिन छोटा होता है। इसका प्रचलन मुहम्मद साहब के बाद खलीफा उमर ने किया था। इनके महीनो के नाम ये है—मुहर्रम, सफर, रबी-उल्-अव्वल, रबी उस्सानी, जमादि-उल्-अव्वल, जमादि-उल् आखिर, रजब, शअबान, रमजान, शव्वाल, जिलकअद और जिलहिज्ज।

**हिजलाना**†—अ०=लिजलाना।

**हिजली-बादाम**—पु० [हिजली। हिं० बादाम] काठ् नामक वृक्ष के फल जो प्राय बादाम के समान होते है और जिनसे एक प्रकार का तेल निकलता है। यह भून कर खाया भी जाता है और इसका मुरब्बा भी बनता है।

**हिजाज**—पु०[अ० हिजाज] १ पश्चिमी अरब का वह क्षेत्र या प्रदेश जिसमे मक्का, मदीना आदि नगर है, और जो अब मऊदी अरब के अन्तर्गत है। २ फारसी सगीत मे, एक प्रकार का मकाम या राग। ३ उर्दू-फारसी मे एक प्रकार का छन्द जिसमे प्राय. रुबाइयाँ लिखी जाती है।

**हिजाब**—पु०[अ०] १. आड। ओट। परदा। २ लज्जा। शरम।

**हिज्र**—स्त्री० [हिं० जिच्च या अनु०] वह स्थिति जिसमे कार्य किया, प्रयत्न, वाद-विवाद आदि करते-करते जी बहुत झिजला गया हो और आगे बढने का कोई रास्ता न दिखाई देता हो।

†पु० १=हिजडा। २ हिजल।

**हिज्जल**—पु०[स०] एक प्रकार का पेड।

**हिज्जे**—पु०[अ०हिज्जा] १. वे वर्ण या अक्षर जिनसे कोई शब्द बना हो। वर्तनी। २ किसी शब्द के वर्णों का किया जानेवाला अलग-अलग और क्रमिक उच्चारण।

मुहा०—(किसी बात के) **हिज्जे करना**=व्यर्थ का तर्क-वितर्क करना।

**हिज्र**—पु०[अ०] जुदाई। वियोग। विछोह।

**हिटकना**†—स०=हटकना।

**हिडंब**—पु०[?] [स्त्री० हिडबी] भैसा।

**हिडिंब**—पु०[स०] एक प्रसिद्ध राक्षस जो भीम के हाथ से मारा गया था।

**हिडिंबा**—स्त्री० [स०] हिडिंब राक्षस की बहन, जिससे भीम ने विवाह किया था। घटोत्कच इसी के गर्भ से उत्पन्न हुआ था।

**हिडोर**†—पु०=हिंडोला।

**हित**—पु० [सं०√धा (धारण-पोषण करना) +क्त-धा-हि] १. कल्याण। मगल। २. भलाई। उपकार। ३. लाभ। फायदा। ४. शुभ-कामना से युक्त अनुराग या प्रेम। ५. विविध क्षेत्रो में किसी वस्तु या विषय के साथ होनेवाला किसी वस्तु का वह सबंध जिसके अनुसार उस विषय या वस्तु के कारण भविष्य मे होनेवाली हानि या लाभ से उस व्यक्ति की भी हानि या लाभ होता या हो सकता हो। (इन्टरेस्ट) ६ स्नेह। **मुहब्बत। ७. वह जो किसी की भलाई चाहता या करता हो। हितैषी।**

उदा०—पाँच पति हित हारि बैठे, रावरैं हित मीरै।—सूर। ८ सबधी। रिश्तेदार। उदा०—रही फेरि मुँह हेरि इत, हित समूहै चित नारि—बिहारी। ९. नाता। रिश्ता।

वि०१. उपकारी। लाभदायक। २ अनुकूल। मुआफिक। ३ शुभ-चिन्तक।

अव्य० १. (किसी की भलाई या प्रसन्नता के) विचार से। उदा०—जौ अनाथ हित हम पर नेहू।—तुलसी। २. निमित्त। लिए। वास्ते। उदा०—हरि हित हरहु चाप गरुआई।—तुलसी।

**हितक**—पु०[स० हित+क] जानवर का बच्चा।

**हितकर**—वि०[स० हित√कृ(करना)+अच्—प० त०]१ (व्यक्ति)जो दूसरो का हित करता हो। २ (बात या चीज) जिससे हित होता हो। लाभदायक। ३ शरीर को नीरोग तथा स्वस्थ रखनेवाला।

**हितकर्ता (र्तृ)**—वि०[स० ष० त०] भलाई करनेवाला।

**हित-काम**—पु०[स० ष० त०] भलाई की कामना या इच्छा। खैरख्वाही। वि० हित की कामना करनेवाला। हितेच्छु।

**हितकारक**—वि०[स०]=हितकर।

**हितकारी(रिन्)**—वि० [स०] [स्त्री० हितकारिणी] =हितकर।

**हित-चिंतक**—वि० [स० ष० त०] भलाई चाहनेवाला। खैरख्वाह।

**हित-चिंतन**—पु० [स० ष० त०] किसी की भलाई का चिंतन अर्थात् कामना या इच्छा। उपकार की इच्छा। खैरख्वाही।

**हितता***—स्त्री०[स० हित+ता] भलाई। उपकार।

**हित-प्रिय**—पु०[स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**हित-भाषिणी**—स्त्री०[स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**हित-वचन**—पु०[स० चतु० त०] कही हुई कोई ऐसी बात, जिससे किसी का हित होता है। भलाई के विचार से कही हुई बात।

**हितबना**†—अ०=हिताना।

**हितबाद**—पु०[स० हित√वद् (कहना)+घञ्] किसी के हित के विचार से कही हुई बात। हित-वचन।

**हितबादी(दिन्)**—वि०[स०] [स्त्री० हितबादिनी] हित की बात कहने वाला। भली सलाह देनेवाला।

**हितबार**†—पु०[स० हित] प्रेम। स्नेह।

**हित-हरिवंश**—पु० [स०] राधावल्लभी सम्प्रदाय के सस्थापक एक प्रसिद्ध महात्मा जो ब्रज-भाषा के सुकवि भी थे। (स० १५५९-१६०९)

**हिताई**—स्त्री० [स० हित+आई (हिं० प्रत्य०)] १. नाता। रिश्ता। सबध। २ नातेदार या रिश्तेदार का घर और परिवार। (पूरब)

**हिताकांक्षी (क्षिन्)**—वि० [स० हित-आ√काक्ष (चाहना)+णिनि]हित की आकाक्षा करने या भलाई चाहनेवाला।

**हिताधिकारी**—पु०[स० हित+अधिकारी] वह जिसे किसी बात या व्यवस्था से कोई आर्थिक लाभ हो रहा हो या भविष्य मे होने को हो। (बेनिफीशिअरी)

**हिताना***—अ० [सं० हित+हिं० आना (प्रत्य०)] १. अनुकूल। लाभदायक या हितकर होना। २. अनुराग या प्रेम के भाव से युक्त होना। ३. अच्छा और प्रिय लगना।

**हितार्थी (र्थिन्)**—वि०[स० हितार्थ+इनि] हित की कामना रखनेवाला। हितेच्छु।

**हितावह**—वि० [सं०] जिसके भलाई हो। हितकारी।

**हितोहित**—पु० [सं० द्व० स०] हित और अहित। भलाई-बुराई। उपकार-अपकार। जैसे—जिसे अपने हिताहित का विचार न हो, वह भी कोई आदमी है।

**हिती**—वि० [सं० हित+ई (हि० प्रत्य०)] १. भलाई चाहनेवाला। खैरख्वाह।
पुं० दोस्त। मित्र।

**हितु**†—पु० १ =हित। २.=हितू।

**हितू**—पु० [स० हित] १. भलाई करने और चाहनेवाला। हितैषी। खैरख्वाह। २. निकट का सबंधी। नजदीकी रिश्तेदार। ३. गुहृद। स्नेही।

**हितेच्छा**—स्त्री० [स० ष० त०] भलाई की इच्छा या चाह। खैरख्वाही। उपकार का ध्यान।

**हितेच्छु**—वि० [सं० ष० त०] हित या भला चाहनेवाला। कल्याण मनानेवाला। खैरख्वाह।

**हितैषणा**—स्त्री० [स० हित+एषण] किसी के हित या मगल की कामना। शुभ-कामना। खैरख्वाही।

**हितैषिता**—स्त्री० [सं०] हितैषी होने की अवस्था, गुण या भाव।

**हितैषी**—वि० [स० हितैषिन्] [स्त्री० हितैषिणी] भला चाहनेवाला। खैरख्वाह। कल्याण मनानेवाला।
पु० दोस्त। मित्र।

**हितोक्ति**—स्त्री० [स० चतु० त०] किसी के हित या भलाई के विचार से कही हुई बात।

**हितोपदेश**—पु० [सं० चतु० त०] १. किसी का हित या उपकार करने के उद्देश्य से दिया जानेवाला उपदेश। अच्छी नसीहत। २. विष्णु शर्मा रचित सस्कृत का एक प्रसिद्ध ग्रन्थ जिसमे व्यवहार-नीति की बहुत-सी अच्छी-अच्छी बातें कहानियो के रूप मे कही गई हैं।

**हितौना**†—अ०=हिताना।

**हित्ती**—पु० पश्चिमी एशिया की एक प्राचीन जाति, जिसने ई० पू० १५००० के लगभग वहाँ एक साम्राज्य स्थापित किया था। (हिट्टाइट)

**हिदायत**—स्त्री० [अ०] १ पथ-प्रदर्शन। रास्ता दिखाना। २ अ.धि-कारिक रूप से यह कहना कि अमुक कार्य इस रूप मे होना चाहिए, अथवा अमुक प्रकार की बात नही होनी चाहिए। अनुदेश। (इन्स्ट्रक्शन)
क्रि० प्र०—करना।—देना।—होना।

**हिनक**—स्त्री० [हि० हिनकना] हिनकने की क्रिया या भाव। हिनहिना-हट।

**हिनकना**—अ० [अनु०] घोड़े का हिनहिनाना। हीसना।

**हिनकाना**—स० [हि० हिनकना का स०] घोड़े को हिनकने मे प्रवृत्त करना।

**हिनती**†—स्त्री० [सं० हीनता] हीनता। तुच्छता।

**हिनवाना**—पु०=हिंदवाना (तरबूज)।

**हिनहिनाना**—अ० [अनु० हिन-हिन] [भाव० हिनहिनाहट] घोड़े का हिन-हिन शब्द करना। हीसना।

**हिनहिनाहट**—स्त्री० [हि० हिनहिनाना] हिनहिनाने की क्रिया, भाव या शब्द।

**हिना**—स्त्री० [अ०] मेहदी का झाड और पत्तियाँ।

**हिनाई**—वि० [अ०] हिना अर्थात् मेहदी की पिसी हुई पत्तियो के रग का।
पु० उक्त प्रकार का रग।

**हिफाजत**—स्त्री० [अ० हिफ़ाजत] रक्षा या उसके विचार से की जाने-वाली देख-भाल।

**हिफाजती**—वि० [अ० हिफ़ाजती] जो हिफाजत के लिए अथवा हिफाजत के रूप मे हो। जैसे—हिफाजती कार्रवाई।

**हिब्बा**—पु० [अ० हब्बा] १. अन्न आदि का कण। दाना। २ किसी चीज का बहुत ही छोटा अश या खड। ३ दो जौ अथवा किसी-किसी के मत से एक रत्ती की तौल।

**हिब्बानामा**—पु० [अ०हिब्बा+फा० नामा] दान-पत्र।

**हिमंचल**†—पु०=हिमाचल।

**हिमत**†—पु०=हिंमत।

**हिम**—पु० [स०√हि+मक्] १ आकाश या बादलो मे रहनेवाले जलीय अश का वह ठोस रूप, जो सरदी से जमने के कारण होता है। तुषार। पाला। २ बहुत कडी सरदी। जाडा। पाला। ३ जाडे की ऋतु। शीत-काल। ४ पुराणानुसार पृथ्वी का एक विशिष्ट भू-खड या वर्ष। ५ ऐसी दवा जो रात भर ठढे पानी मे भिगोकर सवेरे मलकर छान ली जाय। ठढा क्वाथ या काढ़ा। ६. चन्द्रमा। ७ चन्दन। ८ कपूर। ९ मोती। १०. रोआ। ११ ताजा मक्खन १२. कमल।
वि० ठढा। शीतल।

**हिम-उपल**—पु० [स० मध्य० स०] आकाश से गिरनेवाले बरफ के टुकडे। ओला। पत्थर।

**हिम-ऋतु**—स्त्री० [स० मध्य० स०] जाडे का मौसम। हेमत-ऋतु।

**हिम-कण**—पु० [स० ष० त०] बर्फ या पाले के छोटे-छोटे टुकड़े।

**हिम-कर**—पु० [स० ब० स०] १. चन्द्रमा। २ कपूर।
वि० ठढा या शीतल करनेवाला।

**हिम-किरण**—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा।

**हिम-खंड**—पु० [स० ष० त०] १. हिमालय। २ दे० 'हिमानी'।

**हिम-गह्वर**—पु० [स० ष० त०] बरफीले पहाडो मे वह गहरा गोलाकार गड्ढा, जो हिमानी के प्रवाह के कारण पत्थरो के छीजने और बह जाने से बनता है।

**हिममु**—पु० [स०] चन्द्रमा।

**हिम-गृह**—पु० [स० ष० त०] १. बरफ का घर। बरफ पर बनाया हुआ घर। २. बहुत ही ठढा कमरा। सर्द खाना।

**हिमज**—वि० [स० हिम√जन् (उत्पन्न होना)] १ हिम या बरफ से होनेवाला। २. हिमालय मे होनेवाला।
**हिमजा**—स्त्री० [स० हिमज—टाप्] १. पार्वती। २. खिरनी का पेड़। ३. यवनाल से निकली हुई चीनी।

**हिम-झंझावात**—पु० [स०] ऐसा तूफान जिसके साथ ओले भी गिरते हों। बर्फीला तूफान। (ब्लिजर्ड, स्नो-स्टार्म)

**हिम-तैल**—पु० [स०] कपूर के योग से बनाया हुआ तेल।

**हिम-बंधा**—पु० दे० 'तुषार-बंध'।

**हिम-दीधित**—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा।
**हिम-धाव**—पुं० [स०] दे० 'हिमानी'।
**हिम-पात**—पु० [स० ष० त०] पाला पड़ना। बर्फ गिरना।
**हिम-पुरुष**—पु०=हिम-मानव।
**हिम-प्रस्थ**—पु० [स० ब० स०] हिमालय पहाड़।
**हिमप्लवा**—स्त्री० दे० 'हिम-शैल'।
**हिम-बालुका**—स्त्री० [स० ष० त०] कपूर।
**हिम-भानु**—पु० [सं० ब० स०] चन्द्रमा।
**हिम भयूख**—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा।
**हिम-मानव**—पु० [स०] एक प्रकार का अज्ञात और रहस्यमय भीषण और विकराल जतु जिसके अस्तित्व की कल्पना हिमालय की कुछ बरफीली चोटियों पर दिखाई देनेवाले बड़े-बड़े तथा विलक्षण पद-चिह्नों के आधार पर की गई है। येती। (स्नोमैन)
**हिम-रश्मि**—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा।
**हिम- वि**—पु० [स० ब० स०] चन्द्रमा।
**हिमरेखा**—स्त्री० [स०] पहाड़ो की ऊँचाई की वह सीमा, जिसके ऊपरी भाग पर सदा बरफ जमा रहता है। (स्नो-लाइन)
**हिमर्तु**—स्त्री० [स० मध्य० स०] हेमत ऋतु। जाड़े का मौसम
**हिमवत्**—[स०] पु० हिमवान्।
**हिमवत्-खड**—पु० [सं०] स्कदपुराण के अनुसार एक खड या भू-भाग।
**हिमवान्**—वि० [स० हिमवत्] [स्त्री० हिमवती] बर्फवाला। जिसमे बर्फ या पाला हो।
पु० १ हिमालय। २. कैलास पर्वत। ३ चन्द्रमा।
**हिम-विवर**—पु० [स०] दे० 'हिम-गह्वर'।
**हिम-शर्करा**—स्त्री० [सं० मध्य० स० उपमि० स० ब०] एक प्रकार की चीनी जो यवनाल से बनाई जाती है।
**हिम-शैल**—पु० [स० मध्य० स०] १ हिमालय। २. बरफ की वे चट्टानें, जो उत्तरी ध्रुव की हिमानी मे अलग होकर समुद्र मे पहाड़ों की तरह तैरती हुई दिखाई देती हैं। (आइसबर्ग)
**हिम-शैलजा**—स्त्री० [स० हिमशैल√जन् (पैदा होना)+ड] पार्वती।
**हिम-सुत**—पु० [स० ष० त०] चन्द्रमा।
**हिमाक**—पु० [स० ब० स०] कपूर।
**हिमांगी**—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।
**हिमांत**—पु० [स० ष० त०] जाड़े के मौसम की समाप्ति। हेमत ऋतु का अन्त।
**हिमांशु**—पु० [स० ब० स०] १ चन्द्रमा। २. कपूर।
**हिमा**—स्त्री० [सं०] १. हेमत ऋतु। २. दुर्गा। ३. छोटी इलायची। ४. नागरमोथा।
**हिमाकत**—स्त्री० [अ०] अहमक होने की अवस्था या भाव। बेवकूफी। मूर्खता।
**हिमाचल**—पुं० [सं० मध्य० स०] हिमालय पहाड़।
**हिमाच्छन्न**—भू० कृ० [स० तृ० त०] बरफ से ढका हुआ।
**हिमाच्छादित**—भू० कृ० [सं०] हिमाच्छन्न।
**हिमाद्रि**—पुं० [स० मध्य० स०] हिमालय पहाड़।
**हिमानिल**—पुं० [सं० मध्य० स०] बहुत ठंडी और बर्फीली हवा।
**हिमानी**—स्त्री० [स० हिम-ङीप् आनुक्] १ बरफ का ढेर। हिम-राशि। २ बरफ की वह बहुत बड़ी राशि, जो पर्वतो पर से फिसलती हुई नीचे गिरती है। (एवलाच)
**हिमाब्ज**—पु० [स०] नील कमल।
**हिमाभ**—वि० [स० ब० स०] १. हिम की आभा से युक्त। २. जो देखने मे बरफ की तरह हो।
**हिमामदस्त**—पु० [फा० हावनदस्त] खरल और बट्टा। हावनदस्ता।
**हिमायत**—स्त्री० [अ०] [कर्ता० हिमयती] किसी व्यक्ति के किसी आपत्तिजनक अथवा विवादास्पद कार्य या बात का दृढ़तापूर्वक किया जानेवाला ऐसा पोषण और समर्थन, जिसमे पक्षपात की भी कुछ झलक हो। तरफदारी। पक्षपात।
**हिमायती**—वि० [फा०] १ हिमायत के रूप मे होनेवाला। प्रेरणा-जनक तथा पक्षपातपूर्ण। २ किसी व्यक्ति अथवा उसके कार्यों की हिमायत करनेवाला। पक्षपाती।
**हिमारति**—पु० [स०] १ अग्नि। आग। २ सूर्य। ३ आक। मदार। ४ चित्रक या चीता नामक वृक्ष।
**हिमालं**—पु०=हिमालय।
**हिमालय**—पु० [स० प० त०] १ भारतवर्ष की उत्तरी सीमा पर पूर्व से पश्चिम तक फैला हुआ एक बहुत बड़ा और ऊँचा पहाड़, जो ससार के सब पर्वतो से बड़ा और ऊँचा है। इसकी सबसे ऊँची चोटी, सागरमाथा या एवरेस्ट २९००२ फुट ऊँची है। उत्तर भारत की बड़ी नदियाँ इसी पर्वत-राज से निकली हैं। २ सफेद खैर का पेड़।
**हिमाह्व**—पु० [स०] १. जबू द्वीप का एक वर्ष या खड। २ कपूर।
**हिमि**°—पु०—हिम।
**हिमिका**—स्त्री० [स०] पाला। तुषार।
**हिमित**—भू० कृ० [स०] १ जो बरफ के रूप मे आया या उसमे परि-णत हो गया हो। २ बरफ से ढका हुआ।
**हिमियानी**—स्त्री० [फा०] एक प्रकार की पतली, लंबी थैली जो रुपए आदि भरकर कमर मे बाँधी जाती है। टाँची। बसनी।
**हिमी**—वि० [स० हिम+हिं० ई (प्रत्य०)] १. हिम सबधी। २ हिम या ओलों से युक्त। (फॉल्टी) जैसे—हिमी वर्षा।
**हिमी वर्षा**—स्त्री० [स० हिम+वर्षा] ऐसी वर्षा जिसमे पानी के साथ-साथ हिम या ओले भी बरसें। (स्लीट)
**हिमेश**—पु० [स० ष० त०] हिमालय।
**हिमोपल**—पुं० [स० हिम+उपल] जाड़े मे वर्षा के साथ गिरनेवाला ओला या पत्थर।
**हिम्मत**—स्त्री० [अ०] १. भयरहित होकर कोई जोखिम का काम करने का सामर्थ्य। साहस। २. उक्त सामर्थ्य की द्योतक मानसिक दृढ़-धारणा।
क्रि० प्र०—करना।—पड़ना।—होना।
मुहा०—हिम्मत हारना=साहस छोड़ना। उत्साह से रहित होना।
**हिम्मती**—वि० [अ० हिम्मत+हिं० ई (प्रत्य०)] १. हिम्मतवाला। साहसी। २. पराक्रमी। बहादुर।
**हिम्य**—वि० [सं०] १. हिम या बर्फ से ढका हुआ। २. बहुत अधिक ठंडा।

**हिय**—पु० [सं० हृदय, प्रा० हिअ] १. हृदय। मन। २. साहस। हिम्मत।
**मुहा०—हिय हारना**=साहस छोड़ देना। हिम्मत हारना।

**हियरा**—पु० [हिं० हिय+रा (प्रत्य०)] १. हृदय। मन। ३. छाती। वक्षःस्थल।

**हियाँ**—अव्य०=यहाँ।

**हिया**—पु० [सं० हृदय, प्रा० हिअ] १. हृदय। मन।
**पद—हिये का अन्धा**=जिसे कुछ भी ज्ञान या समझ न हो। परम मूर्ख।
**मुहा०—हिया फटना**=कलेजा फटना। अत्यन्त शोक या दुःख होना। **हिया भर आना**=करुणा, दुःख आदि से हृदय द्रवित या आकुल होना। **हिया भर लेना**=बहुत अधिक दुःखी होकर गहरा साँस लेना। **हिये का फूटना**=ज्ञान या बुद्धि न रहना। अज्ञान रहना।
२ वक्षःस्थल। छाती।
**मुहा०—हिये से लगाना**=आलिंगन करना। गले लगाना।

**हियाव**—पु० [हिं० हिय+आव (प्रत्य०)] कोई विशेष प्रकार का जीवित का काम करने की वह साहसपूर्ण तथा निःसकोच की वृत्ति, जो उस तरह का काम पहले एक या अनेक बार कर चुकने से उत्पन्न होती है।
**मुहा०—हियाव खुलना**=निःसकोच तथा साहसपूर्वक कोई काम करने की समर्थता से युक्त होना। जैसे—उस लड़के का, बड़ों को खरी-खोटी सुनाने का हियाव खुल गया है।

**हियकना**—अ० [स० हिक्क=समीप] १. परचने के कारण धीरे-धीरे पास आने लगना। परचना। हिलगना। २ बहुत पास आना। सटना।
सयो० क्रि०—जाना।

**हियकाना**†—स० [हिं० हियकना का स०] १ परचाना। हिलगाना। २. बहुत पास लाना। सटाना।

**हियगना**†—अ०=हियकना (हिलगना)। उदा०—जहाँ सो नागिनी हिरणँ कहिअ सो अग।—जायसी।

**हियगाना**†—स०=हियकाना (हिलगाना)। उदा०—मकु हियगाइ लेइ हम बाता।—जायसी।

**हियगी**—स्त्री० [हिं० हीर+गुन=सूत] एक प्रकार की बढ़िया कपास जो सिंध में होती है।

**हिरण**—पु० [स०√हृ (हरण करना)+ल्युट्—अन] १ सोना। स्वर्ण। २. वीर्य। ३. कौड़ी। ४. हिरन।

**हिरण्मय**—वि० [स० हिरण्य+मयट्] [स्त्री० हिरण्मयी] १ सोने का बना हुआ। २. सुनहला।
पु० १ हिरण्यगर्भ। ब्रह्मा। २ जंबू द्वीप के नौ खंडों या वर्षों में से एक, जो श्वेत और शृंगवान् पर्वतों के बीच में स्थित कहा गया है।

**हिरण्य**—पु० [सं० हिरण+यत्] १. सृष्टि का नित्य तत्त्व। २. हिरण्यमय नामक भू-खंड या वर्ष। ३. सोना। स्वर्ण। ४. ज्ञान। ५ ज्योति। तेज। ६. अमृत। ७. पुरुष का वीर्य। शुक्र। ८. धतूरा। कौड़ी।

**हिरण्य-कशिपु**—वि० [स० ब०स०] सोने के तकिये या गद्दीवाला।
पु० एक प्रसिद्ध विष्णु-विरोधी दैत्य राजा जो प्रह्लाद के पिता थे।

**हिरण्य-कशिपु**=पुं० हिरण्यकशिपु।

**हिरण्य-कामधेनु**—स्त्री० [स० मध्य० स०] दान देने के लिए बनाई हुई सोने की कामधेनु गाय। (इसका दान १६ महादानों में है)

**हिरण्यकार**—पुं० [स० हिरण्य√कृ (करना)+अण्] स्वर्णकार। सुनार।

**हिरण्य-केश**—पु० [स० ब० स०] विष्णु का एक नाम।

**हिरण्य-गर्भ**—पु० [सं० ब० स०] १. वह ज्योतिर्मय अंड, जिससे ब्रह्मा और सारी सृष्टि की उत्पत्ति हुई है। २ ब्रह्मा। ३ विष्णु। ४. सूक्ष्म-शरीर से युक्त। आत्मा।

**हिरण्यनाभ**—पु० [स० ब० स०] १ विष्णु। २ मेनाक पर्वत। ३ भारतीय वास्तु शास्त्र के अनुसार ऐसा भवन जिसमें पश्चिम, उत्तर और पूर्व की ओर तीन पंडी-बंडी शाखाएँ निकली हों।

**हिरण्यपुर**—पु० [स०] सुरों का एक नगर जो समुद्र के पार वायु-मंडल में स्थित कहा गया है। (हरिवंश)

**हिरण्य-पुष्पी**—स्त्री० [स० ष० स०] एक प्रकार का पौधा।

**हिरण्य-बाहु**—पु० [ब० स०] १ शिव का एक नाम। २ शोण या सोन नद का एक नाम।

**हिरण्यरेता (तस्)**—पु० [स० ब० स०] १ अग्नि। आग। २ सूर्य। ३ नागरु आदि्यों में से एक। ४ शिव। ५ चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

**हिरण्यरोमा (मन्)**—पु० [स० ब० स०] १ लोकपाल जो मरीचि के पुत्र हैं। २ भौमक का एक नाम

**हिरण्यव**—पु० [स०] १ किसी देवता या मंदिर पर चढ़ा हुआ धन। देवस्व। देवोत्तर संपत्ति। २ सोने का गहना।

**हिरण्यवस्त्र**—पु० [स० मध्य० स०] वैदिक काल का सुनहले तारों का बना एक प्रकार का कपड़ा।

**हिरण्यवान्**—वि० [स० हिरण्यवत्] [स्त्री० हिरण्यवती] सोनेवाला। जिसमें या जिसके पास सोना हो।
पु० अग्नि। आग।

**हिरण्यवाह**—पु० [स० हिरण्य√वह (ढोना)+णिच्] १ शिव। २ सोन नामक नद।

**हिरण्यविंदु**—पु० [सं० ब० स०] १. अग्नि। आग। २ एक प्राचीन पर्वत। ३. एक प्राचीन तीर्थ।

**हिरण्यवीर्य**—पु० [स० ब० स०] १ अग्नि। आग। २. सूर्य।

**हिरण्य-सर (स्)**—पु० [स० हिरण्यसरस्] महाभारत के अनुसार एक प्राचीन तीर्थ।

**हिरण्याक्ष**—पु० [स० ब० स० पचू] एक प्रसिद्ध दैत्य जो हिरण्य-कशिपु का भाई था। विष्णु ने वाराह अवतार धारण कर इसे मारा था।

**हिरण्याश्व**—पु० [स० मध्य० स०] दान देने के लिए बनाई हुई घोड़े की सोने की मूर्ति। इसका दान १६ महादानों में है।

**हिरदा**†—पु०=हृदय।

**हिरदा**†—पु०=हृदय।

**हिरदावल**—पु० [स० हृदावर्त्त] घोड़ों की छाती की भौंरी जो बहुत अशुभ मानी जाती है।

**हिरन**—पु० [स० हरिण] [स्त्री० हिरनी] हरिन नामक सींगवाला चौपाया। मृग।

**विशेष**—सं० हरिण से व्युत्पन्न होने के कारण इस शब्द का वाचक रूप 'हरिन' ही होना चाहिए; परन्तु उर्दूवालों के प्रभाव से 'हिरन' रूप ही विशेष प्रचलित हो गया है।

**मुहा०—हिरन हो जाना**=बहुत तेजी से भागकर गायब हो जाना।

**हिरन-खुरी**—स्त्री० [हिं० हिरन+खुर] एक प्रकार की बरसाती लता जिसके पत्ते हिरन के खुर से मिलते जुलते होते हैं।

**हिरन-मूसा**—पुं० [हिं०] चूहे की जाति का एक जन्तु जिसकी पिछली टाँगें बहुत लंबी और अगली टाँगें बहुत छोटी होती हैं। यह छलाँगें भरता हुआ बहुत तेज दौड़ता है।

**हिरना**†—अ० [सं० हरण] छीना या दूर किया जाना। हरण होना। उदा०—कोटिक पाप पुन बहु हिरई।—कबीर।

†मु०=हरना।

†पु०=हिरन (पशु)।

**हिरनाकुस**†—पु०=हिरण्यकशिपु।

**हिरनौटा**—पु० [सं० हरिणपोतु या हिं० हिरन+औटा (प्रत्य०)] हिरन का बच्चा। मृग-शावक।

**हिरफत**—स्त्री० [अ० हिरफत] १ व्यवसाय। पेशा। २. हाथ की कारीगरी। दस्तकारी। ३ कौशलपूर्वक कार्य-सम्पन्न करने का गुण। हुनर। ४ चालाकी। धूर्तता।

**हिरफतबाज**—वि० [अ० हिरफत+फा० बाज] [भाव० हिरफतबाजी] चालबाज। धूर्त।

**हिरमजी**—स्त्री० [अ० हिरमजी] लाल रंग की एक प्रकार की मिट्टी जिससे कपड़े, दीवारें आदि रँगते हैं। हिरौंजी।

वि० उक्त प्रकार के रंग का।

**हिरमिजी**†—स्त्री०=हिरमजी।

**हिरवा**†—पु०=हीरा।

**हिरवा-चाय**—स्त्री० [हिं० हीरा+चाय] एक प्रकार की सुगंधित घास जिसकी जड़ से नीबू की-सी सुगंध निकलती है और जिससे सुगंधित तेल बनता है।

**हिरस**†—स्त्री०=हिर्स।

**हिरा**—स्त्री० [सं०] रक्तवाहिनी नाड़ी या शिरा।

**हिरात**—पु० [?] अफगानिस्तान की सीमा के पास का एक प्रदेश।

**हिरानी**—वि० [हिरात प्रदेश] हिरात नामक स्थान का।

पु० उक्त देश का घोड़ा जिसके संबंध में कहा जाता है कि वह गरमी में भी नहीं थकता।

**हिराना**†—अ०[हिं० हिलाना=प्रवेश करना] खेतों में भेड़, बकरी, गाय आदि चौपाये रखना जिसमें उनकी लेंडी या गोबर से खेत में खाद हो जाय।

अ०, स०=हेराना।

**हिरावल**†—पु०=हरावल।

**हिरास**—स्त्री० [फा०] १. भय। त्रास। २. खेद। दुःख। ३. निराशा। ना-उम्मेदी।

वि० १. खिन्न। दुःखी २. निराश या हताश।

**हिरासत**—स्त्री० [अ०] [वि० हिरासती] किसी को इस प्रकार अपने बन्धन या देख-रेख में रखना कि वह भागकर कहीं जाने न पाये। जैसे—पुलिस ने अभियुक्तों को हिरासत में ले लिया। अभिरक्षा। परिरक्षा। (कस्टडी) २ वह स्थान जहाँ उक्त प्रकार के लोग बंद कर के रखे जाते हैं। (लाक-अप)

क्रि० प्र०—में करना।—में लेना।

**हिरासती**—वि० [अ० हिरासत] १. हिरासत संबंधी। हिरासत का। जैसे—हिरासती कोठरी। (व्यक्ति) जो हिरासत में रखा गया या लिया गया हो।

**हिरासाँ**—वि० [फा०] १ निराश। ना-उम्मेद। २. जो साहस छोड़ या हिम्मत हार चुका हो। पस्त। ३. उदासीन या खिन्न।

**हिरिस**—पु० [देश०] एक प्रकार का छोटा वृक्ष जिसकी छाल भूरे रंग की होती है। यह फागुन और चैत में फलता है। इसके फलों का स्वाद खट-मीठा होता है।

†स्त्री०=हिर्स।

**हिरौंजी**—वि०, स्त्री०=हिरमजी।

**हिरौल**†—पु०=हरावल।

**हिर्फत**—स्त्री०=हिरफत।

**हिर्स**—स्त्री० [अ०] १ ऐसी तृष्णा या लोभ जो सहसा मिट न सके और जिसकी तृप्ति की आकांक्षा बनी रहे। निम्न कोटि का लालच या वासना।

क्रि० प्र०—मिटना।—मिटाना।

**मुहा०—हिर्स छूटना**=मन में लालच होना। तृष्णा होना।

२. किसी की देखा-देखी होनेवाली कुछ काम करने की इच्छा या प्रवृत्ति। स्पर्द्धा। रीस।

**पद—हिर्सा-हिर्सी**।

**हिर्सा हिर्सी**—अव्य० [अ० हिर्स] दूसरों को करते देखकर उनसे होड़ करने के लिए।

**हिर्सी**—वि० [अ०] बहुत अधिक हिर्स या लालच करनेवाला। लालची।

**पद—हिर्सी टट्टू**=दूसरों की देखा-देखी लोभ या हिर्स करनेवाला व्यक्ति।

**हिर्सी हा**—वि० [अ० हिर्स+हिं० आँहा (प्रत्य०)] जिसे बहुत अधिक हिर्स हो। लालची। लोभी।

**हिलंका**—वि० [देश०] [स्त्री० हिलंकी] मोटा-ताजा। हट्टा-कट्टा।

**हिलकना**†—अ० [अनु० या सं० हिक्का] १. हिचकियाँ लेना। २. सिसकना। उदा०—देखकर चुप-चाप हिलक उठी।—वृन्दावन लाल वर्मा। ३. सिकुड़ना।

†अ०=हिलगना।

**हिलकी**†—स्त्री० [अनु० या सं० हिक्का] १. हिचकी। २ सिसकी।

**हिलकोर**†—स्त्री०=हिलकोरा (हिलोर)।

**हिलकोरना**—स० [हिं० हिलकोरना] १. हिलकोरे या लहरें उत्पन्न करना। २. ताल, नदी आदि के शांत जल को क्षुब्ध करना।

**हिलकोरा**—पुं० [सं० हिल्लोल] हिलोर। लहर। तरंग।

क्रि० प्र०—उठना।

**मुहा०—हिलकोरे लेना**=तरंगित होना। लहराना।

**हिलगा**†—स्त्री०=हिलगत।

**हिलगत**—स्त्री० [हिं० हिलगना] १. हिलगने की अवस्था, क्रिया या

भाव। २. लगाव। सम्बन्ध। ३. प्रेम। स्नेह। ४. हेल-मेल। ५. आदत। टेव। बान।
क्रि० प्र०—डालना।—पड़ना।

**हिलगन***—स्त्री० =हिलगत। उदा०—हिलगन कठिन है या मन की।—कुंभनदास।

**हिलगना**—अ० [स० अधिलग्न, प्रा० अहिलग्न] १. किसी वस्तु के साथ लगकर अटकना, ठहरना या रुकना। २ उलझना। फँसना। ३. प्रायः पास आते रहने के कारण हिलना-मिलना। परचना। जैसे—बच्चे का नये नौकर के साथ हिलगना। ४. बहुत पास या समीप आना। सटना।

**हिलगाना**—स० [हिं० हिलगना का स०] हिलगने मे प्रवृत्त करना। ऐसा करना जिससे कुछ या कोई हिलगे।

**हिलना**—अ० [स० हल्लन] १. अपने स्थान से कुछ इधर या उधर होना। कुछ या सूक्ष्म गति मे आना। चलायमान होना। जैसे—हवा से पेड़ की पत्तियाँ हिलना।
मुहा०—हिलना-डोलना =(क) थोड़ा इधर-उधर होना। (ख) घूमना-फिरना। (ग) किसी काम के लिए उठना या आगे बढ़ना। (घ) काम-धंधा, उद्योग या परिश्रम करना। २. कंपित होना। काँपना। ३. लहराना। ४ झूमना। ५ जमा या दृढ न रहना। ढीला होना। ६ (पानी मे) पैठना। धँसना। ७ (मन का) चंचल होना। डिगना। ८ किसी चीज का खिसकना या सरकना।
अ०[हिं० हिलगना] हेल-मेल मे आना। परचना। हिलगना। जैसे—यह लड़का हमसे बहुत हिल गया है।
पद—हिलना-मिलना =(क) मेल-जोल या घनिष्ठ संबंध स्थापित करना। (ख) एक चीज का दूसरी चीज मे पूरी तरह से मिल जाना।
हिल-मिलकर =(क) मेल-जोल के साथ। एक होकर। (ख) इकट्ठे या सम्मिलित होकर। हिला-मिला या हिला-जुला =मेल-जोल मे आया हुआ। परचा हुआ। परिचित और अनुरक्त। जैसे—यह बच्चा तुमसे खूब हिला-जुला है।

**हिलमोचिका, हिलमोची**—स्त्री० [स०] एक प्रकार का साग।

**हिलसा**—स्त्री० [स० इल्लिश] एक प्रकार की मछली जो चिपटी और बहुत कँटिदार होती है।

**हिलाना**—स० [हिं० हिलना का स०] १ किसी को हिलने मे प्रवृत्त करना। ऐसा कार्य करना जिससे कुछ या कोई हिले। २. किसी को उसके स्थान से ऊपर-नीचे या इधर-उधर करना। खिसकाना या हटाना। ३. कंपित करना। काँपाना। ४. प्रविष्ट करना या कराना।
सयो० क्रि०—डालना।—देना।
स०=हिलाना। जैसे—बच्चे को प्यार करके अपने साथ हिलाना।

**हिलाल**—पु० [अ०] १. शुक्ल पक्ष के आरम्भ का चन्द्रमा जो प्रायः धनुषाकार होता है। २ बाँधी हुई पगड़ी की वह उठी हुई ऐंठन जो सामने माथे के ऊपर पड़ती है।

**हिलुड़ना**†—अ० [हिं० हिलोर] (जल का) लहरों से युक्त होना।
†अ०=हिलना।

**हिलोर**—स्त्री० [सं० हिल्लोल] तरंग। लहर।
क्रि० प्र०—आना।—उठना।

**हिलोरना**—स० [हिं० हिलोर+ना (प्रत्य०)] १. पानी को इस प्रकार हिलाना कि उसमे तरंगे उठें। २. किसी तरल पदार्थ को मथने की-सी क्रिया करना। ३. इधर-उधर हिलाते रहना। लहराना। ४. बिखरी हुई चीजें जल्दी-जल्दी समेटना। ५. चारो ओर से खूब तेजी से इकट्ठा करना। जैसे—आज-कल वह खूब रुपये हिलोर रहे हैं।

**हिलोरा**—पु० [हिं० हिलोर] बड़ी तथा ऊँची लहर।

**हिलोल**—पु०=हिल्लोल।

**हिल्ल**—पु० [अ०] १. सहनशीलता। २. सुशीलता।

**हिल्सा**—पु० [?] कीचड़।
†पु०=हीला (मिस)।

**हिल्लोल**—पु० [स०] १ हिलोरा। तरंग। लहर। २. आनन्द या प्रसन्नता की तरंग। मौज। ३ काम-शास्त्र मे एक प्रकार का आसन या रति-बन्ध। ४. हिंडोल राग।

**हिल्लोलन**—पु० [स०] [भू० कृ० हिल्लोलित] १. तरंग या तरंगें उठना। लहराना। २ काँपना। ३. झूलना। ४. हिलना।

**हिल्सा**—स्त्री०=हिलसा (मछली)।

**हिवँ**—पु० [स० हिम] १ बर्फ। २. पाला।

**हिवंचल**—पु० [स० हिम] हिम। पाला। बरफ।
†पु०=हिमाचल (हिमालय)।

**हिवाँ**—अव्य० १. अब। २. अभी। (राज०)

**हिवड़ा**†—पु०=हिय। हृदय। (राज०) उदा०—चोट लगी निज नाम हरीरी, म्हारे हिवड़े खटकी।—मीरा।

**हिवैर**—पु० [स० हिम+आलि] १. बरफ। पाला। तुषार।
वि० हिम की तरह का। बहुत ठंढा।

**हिस**—पु० [अ०] १ अनुभव। ज्ञान। २ चेतना। सत्ता।
पद—हिस व हरकत निश्चेष्ट और निःसत्व। बेहोश और सुन्न।

**हिसका**—पु० [स० ईर्ष्या, हिं० हींस] १. ईर्ष्या। डाह। २ प्रतिस्पर्धा। होड़।
पद—हिसका-हिसकी =चढ़ा-ऊपरी। होड़।

**हिसाब**—पु० [अ०] [वि० हिसाबी] १ वह कला या विद्या, जिसके द्वारा संख्याएँ गिनी, घटाई और जोड़ी जानी हैं अथवा उनका गणा या भाग किया जाता है। गणित। (एरिथमेटिक) २. उक्त विद्या के अनुसार मान, मूल्य, आदि गिन, जोड़ या समझकर उनका ब्योरा या लेखा तैयार करने का काम। (कल्कुलेशन)
क्रि० प्र०—करना।—जोड़ना।—निकालना।—लगाना।
४. आय-व्यय, लेन-देन आदि का लिखा जानेवाला ब्योरा या विवरण। लेखा। (एकाउन्ट)
पद—कच्चा हिसाब =ऐसा हिसाब जिसमें या तो ब्योरे की बातें पूरी तरह से न भरी गई हों अथवा जिसमें के लेन-देन का विवरण अंतिम और निश्चित रूप से लिखा जाने को हो। चलता हिसाब=ऐसा हिसाब जिसमे लेन-देन का क्रम अभी चल रहा हो और जिसका खाता अभी बन्द न हुआ हो। पक्का हिसाब=आय-व्यय, लेन-देन आदि की सब मदों का ठीक और पूरा लिखा हुआ हिसाब। बे-हिसाब=(क) जिसका लेखा या विवरण ठीक तरह से न रखा गया हो। (ख) इतना अधिक कि

सहज में उसका हिसाब लगाया न जा सकता हो। (ग) साधारण नियम, परिपाटी, प्रथा आदि के विरुद्ध। **मोटा हिसाब**=अनुमान, कल्पना आदि के आधार पर स्थूल रूप से प्रस्तुत किया हुआ ऐसा हिसाब जिसमें आगे चलकर कमी-बेशी की जा सकती हो। **मुहा०—(किसी का) हिसाब करना**=यह स्थिर करना कि कितना पावना या लेना है और कितना देना। **हिसाब चलना**=(क) लेन-देन का क्रम चलता रहना। (ख) लेन-देन का लेखा चलता रहना। **हिसाब चुकता, बराबर या बेबाक करना**=किसी का जो कुछ बाकी निकलता हो, वह उसे दे देना। **हिसाब चुकाना**=हिसाब चुकता करना। **हिसाब जाँचना**=यह देखना कि आय-व्यय की जो मदें लिखी गई हैं,वे सब ठीक हैं या नहीं। **हिसाब जोड़ना**=अलग-अलग लिखी हुई रकमों का जोड़ लगाना। योग करना। **(किसी का) हिसाब देना या समझाना**=आय-व्यय का जमा खर्च आदि का ठीक और पूरा विवरण बतलाना। **हिसाब बंद करना**=लेन-देन आदि का व्यवहार समाप्त करना। **हिसाब बैठाना या लगाना**=आय-व्यय आदि का ठीक और पूरा जोड़ प्रस्तुत करना। **हिसाब में लगाना**=अपने पिछले पावने या लेन-देन के खाते में सम्मिलित करना। जैसे—उन्होंने ये दोनों रकमें हिसाब में लगा ली हैं। **हिसाब रखना**=(क) आमदनी-खर्च आदि का ब्योरा लिखना। (ख) किसी से ली और उसे दी हुई चीजों या रकमों का ब्योरा लिखते चलना। **(किसी से) हिसाब लेना या समझना**=यह जानना और समझना कि आय-व्यय कितना हुआ है; और जो हुआ है, वह ठीक है या नहीं। ४. गणित से संबंध रखनेवाला वह प्रश्न जो विद्यार्थियों की योग्यता की परीक्षा के लिए उनके सामने रखा जाता है। जैसे—आठ में से मेरे पाँच हिसाब ठीक निकले और तीन गलत हुए।

क्रि० प्र०—करना।—निकालना।—लगाना।

५. किसी वस्तु के मान, मूल्य, संख्या आदि का निश्चित अनुपात या दर। भाव। जैसे—यह चावल तुमने किस हिसाब से खरीदा है।

६. किसी की दृष्टि में होनेवाला महत्त्व, मान, मूल्य आदि का विचार। जैसे—(क) हमारे हिसाब से तो वह कुछ भी नहीं है, तुम्हारे हिसाब से भले ही बहुत बड़ा पण्डित हुआ करे। (ख) हमारे हिसाब से जैसे तुम, वैसे वह। ७. किसी प्रकार का निश्चित नियम, परिपाटी या व्यवस्था। जैसे—तुम्हारे आने-जाने का कोई ठीक हिसाब ही समझ में नहीं आता। ८. किसी के आचार-व्यवहार आदि का क्रम या ढंग; अथवा उसके फलस्वरूप होनेवाली अवस्था या दशा। जैसे—उनका जो हिसाब पहले था, वही अब भी है। ९. ऐसी स्थिति जिसमें भले-बुरे, हानि-लाभ आदि का ठीक तरह से ध्यान रखा जाता है। जैसे—वह बहुत हिसाब से रहता है; और थोड़ी आमदनी होने पर भी इतनी बड़ी गृहस्थी चलाये चलता है। १० पारस्परिक व्यवहार, साहचर्य आदि में होनेवाली अनुकूलता या समानता।

**मुहा०—(किसी से) हिसाब बैठाना**=प्रकृति, व्यवहार आदि की ऐसी अनुकूलता जिसमें संग, साथ या साहचर्य बना रहे। जैसे—उससे तुम्हारा हिसाब नहीं बैठता, इसी लिए प्रायः खटपट होती रहती है।

११. किसी कार्य की सिद्धि के लिए निकाला जानेवाला ढंग या युक्ति।

**मुहा०—हिसाब बैठाना**=ऐसा उपाय या युक्ति करना, जिससे कार्य सिद्ध हो जाय। जैसे—तुम मुँह ताकते रह गये और उसने अपनी नौकरी का हिसाब बैठा ही लिया।

**हिसाब-किताब**—पु० [अ०] १. आय-व्यय आदि का (विशेषतः लिखा हुआ) ब्योरा या लेखा। २. उक्त से संबंध रखनेवाली पोथियाँ और बहियाँ। ३ व्यापारिक लेन-देन का व्यवहार। ४. ढंग। तरह। प्रकार। जैसे—उनका हिसाब-किताब हमारी समझ में नहीं आता।

**हिसाब-चोर**—पु० [अ० हिसाब+हिं० चोर] वह जो व्यवहार या लेखे में कुछ गड़बड़ी करता या लोगों की रकमें दबा लेता हो।

**हिसाब-बही**—स्त्री० [अ० हिसाब+हिं० बही] वह पोथी या बही, जिसमें आय-व्यय या लेन-देन आदि का व्यौरा लिखा जाता हो।

**हिसाबिया**—पु० [हिं० हिसाब] १. हिसाब या गणित का अच्छा जानकार। २ वह जो हर काम या बात में सब बातों का खूब आगा-पीछा सोचने का अभ्यस्त हो। जैसे—जो बहुत बड़ा हिसाबिया हो, उसकी बात-चीत में पार पाना कठिन है।

पु०=हिसाबी।

**हिसाबी**—वि० [अ०] १ हिसाब-संबंधी। २. हिसाब से, फलतः समझ-बूझकर काम करनेवाला। ३. चतुर। चालाक।

**हिसार**—पु० [फा०] १. अहाता। घेरा। २ किले आदि की चहार-दीवारी या परकोटा।

**मुहा०—हिसार बाँधना**=चारों ओर सैनिक आदि खड़े करके घेरा डालना।

३. फारसी संगीत की २४ शोभाओं या अलंकारों में से एक।

**हिसालू**—पु० [हिं० आलूका अनु०] एक प्रकार का छोटा पौधा या बेल जिसके लाल गूदेदार और रसीले फल खाये जाते हैं। (स्ट्राबेरी)

**हिस्सा**†—स्त्री० [सं० ईर्ष्या] १. तुल्यता। समानता। २. किसी की बराबरी करने की भावना। प्रतियोगिता। होड़।

**हिस्टीरिया**—पु० [अ०] एक प्रकार का स्नायविक रोग, जो प्रायः स्त्रियों को अधिक होता है और जिसमें रोगी बहुत अधिक उत्तेजित होकर प्रायः बे-होश-सा हो जाता है।

**हिस्सा**—पुं० [अ० हिस्स.] १. उन अवयवों में से हर एक, जिनके योग से कोई चीज बनी हो। जैसे—(क) पानी का एक हिस्सा आक्सीजन है और दो हिस्से हाइड्रोजन। (ख) खून भी हमारे शरीर का एक हिस्सा है। २. किसी वस्तु के विभक्त किये हुए अलग-अलग समझे या माने जानेवाले अथवा कुल से कुछ घटकर या कम होनेवाले अंगों में से हर एक। जैसे—(क) एक सेब के चार हिस्से करना। (ख) इस योजना के भी तीन हिस्से हैं। (ग) मकान के आगे और पीछेवाले हिस्से बाद में बनेंगे। ३. बँटवार, विभाजन आदि में जो कुछ किसी एक व्यक्ति या पक्ष को प्राप्त हुआ या होना हो। जैसे—(क) पिता की विशाल संपत्ति में से उसके हिस्से में दो मकान और एक दुकान ही आई है। (ख) उसका हिस्सा उसके भाई मार ले गये है। ४. वह धन जो किसी साझे की वस्तु या व्यवसाय में कोई एक या हर एक साझेदार लगाये हुए हो। पत्ती। जैसे—इस कारोबार में उनका पाँच आने का हिस्सा है। ५. साझेदार को अपने हिस्से के अनुसार मिलनेवाला लाभ का आनुपातिक अंश। ६. वह गुण या बात जिसमें

विशेष रूप से कोई उत्कृष्ट या प्रबीण हो। जैसे—गंज मे चोज लाना बाबू बालमुकुद गुप्त के ही हिस्से था। ७ किसी चीज के साथ मिला हुआ उसका कोई अंग या अवयव। जैसे—छाती के बाएँ हिस्से मे जिगर या हृदय होता है।

**हिस्सा-रसद**—अव्य० [अ०+फा०] किसी चीज के विभाग या हिस्से होने पर आनुपातिक रूप से। हर पानेवाले के हिस्से के मुताबिक। हर हिस्सेदार के अंश के अनुसार। जैसे—यह सारी जायदाद सभी उत्तराधिकारियों मे हिस्से-रसद बाँटी जायगी।

**हिस्सेदार**—पु० [अ०हिस्स+फा० दार (प्रत्य०)] [भाव० हिस्सेदारी] १. वह जिसका किसी सपत्ति या व्यवसाय मे हिस्सा हो। अशधारी। (शेयर होल्डर) जैसे—(क) इस मकान के चारो भाई बराबर के हिस्सेदार हैं। (ग) इस सस्थान मे मैं ४ आने का हिस्सेदार हूँ। २ किसी कार्य, सेवा आदि मे योगदान करनेवालो मे से हर एक। जैसे—चोरी की योजना बनाने मे वे सभी हिस्सेदार रहे हैं।

**हिस्सेदारी**—स्त्री० [अ० हिस्स+फा० दारी] हिस्सेदार होने की अवस्था, अधिकार या भाव।

**हिहिनाना**—अ० [अनु० हि हि] घोड़ों का हिनहिनाना। हीसना।

**ही**—अ० ब्रज-भाषा और अवधी 'हीं' (घी) का बहु०। उदा०—जिनको नित नीके निहारत हौं... ।—घनानन्द।

**हींग**—स्त्री० [स० हिंगु] एक प्रकार का छोटा पौधा जो अफगानिस्तान और फारस मे आप से आप और बहुत होता है। २. उक्त पौधे का निर्यास जो जमकर गोंद के समान हो जाता है तथा जो औषध और मसाले के रूप मे व्यवहृत होता है। (एसेफेटाइडा)

**हींगड़ा**†—पु० [हि० हींग+डा (प्रत्य०)] एक प्रकार की घटिया हींग।

**हींगना**†—अ०=हींसना।

**हींगलू**—पु० [स० हिंगुल] हँगुर। (राज०) उदा०—ग्रिह ग्रिह पति भीति सुगारि हींगलू।—प्रिथीराज।

**हींचना**†—स०=खींचना।

**हींछ**†—स्त्री०=इच्छा।

**हींछना**†—स० [स० इच्छा] इच्छा करना। चाहना।

**हींछा**†—स्त्री०=इच्छा।

**हींजड़ा**†—पु०=हिजड़ा।

**हींठी**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की जोक।

**हींडना**†—अ० [हि० हडना] चलना-फिरना। घूमना। उदा०—सोवन कविरन हीडिया सुत्र समाधि लगाय।—कबीर।
स० [?] तलाश करना। खोजना। ढूँढना।

**हींडल**†—पु० [स० हिंदोल] झूला। हिंडोल। उदा०—भवि मैं हीवी हीउलै मणिधर।—प्रिथीराज।

**हींस**†—स्त्री० [अनु०] १. घोड़ो के हीसने या हिनहिनाने की क्रिया या भाव। २ हीसने या हिनहिनाने का शब्द। हिनहिनाहट।

**हींसना**—अ० [हि० हींस+ना] १. घोड़ के का हिनहिनाना। २. गधे का रेंकना।

**हींसा**†—पु०=हिंसा।
†स्त्री०=हिंसा।

**हीं हीं**—स्त्री० [अनु०] तुच्छता-सूचक हँसने का शब्द।

**ही**—अव्य० [स० हि (निश्चयार्थक)] एक अव्यय जिसका प्रयोग नीचे लिखे अर्थों मे होता है। (क) केवल जोर देने के लिए। जैसे—अब तुम ही बतलाओ कि क्या किया जाय। (ख) केवल मात्रा आदि की तरह अल्पता या परिमिति सूचित करने के लिए। जैसे—वहाँ दो ही तो आदमी थे। (ग) किसी प्रकार की बढ़ता या निश्चय सूचित करने के लिए। जैसे—(क) वह काम तो होकर ही रहेगा। (ख) मैने यही बात कही थी। (ग) अवज्ञा, उपेक्षा, हीनता आदि सूचित करने के लिए। जैसे—अब वह आकर ही क्या करेगा। (घ) बहुत कुछ समान। प्राय। लगभग। जैसे—वह शोभा के विचार से श्री की बहन ही थी।

**विशेष**—कुछ सर्वनामों तथा अव्ययों के साथ यह संयुक्त भी हो जाता है। इसी=इस+ही, उसी=उस+ही, यही यहाँ+ही, कहीं=कहाँ+ही, वही=वहाँ+ही।

†अव्य० १ ब्रजभाषा मे 'था' वाचक 'हौं' का स्त्री०। उदा०—मुनि नारी पाषान ही।—रहीम। २ अवधी मे 'था' वाचक 'हौं' का स्त्री०।

पु०=हिय (हृदय)। जैसे—ही-तल=हृदय-तल।

**हीअ**—पु०=हिय (हृदय)।

**हीक**—स्त्री० [स० हिक्का] १ हिचकी। २. किसी प्रकार की अप्रिय, सडी हुई तथा तीव्र गन्ध। जैसे—(क) हुक्के के पानी की हीक। (ख) इस तरकारी मे से कुछ हीक आ रही है। (ग) हाजमा खराब होने पर ही पेट मे से हीक उठती है।
क्रि० प्र०—आना।

**हीचना**†—अ० [अनु०] =हिचकना।

**हीछना**†—स०=होछना (चाहना)।

**हीछा**†—स्त्री०=इच्छा।

**हीजा**†—वि० [हि० हिजड़ा] १. आलसी। २. सुस्त।

**हीजड़ा**†—पु०=हिजडा।

**हीठना**—अ० [स० अधिष्ठा, प्रा० अहिट्ठा] १. पास जाना। समीप। जाना। २ कही जाना या पहुँचना। ३ घमना। पैठना। जैसे—उसे अपने यहाँ हीठने न देना।

**हीड**—स्त्री० [?] एक प्रकार का प्रबन्ध काव्य जो बुन्देल-खड, मालवे, राजस्थान आदि मे गूजर लोग दिवाली के समय गाते है।

**हीलना**†—अ०=हीडना (घूमना-फिरना)।

**ही-तल**—पु० [स० हृदय+तल] १ हृदय का तल। २ हृदय। उदा०—उच मधुर मूर्ति अनीत के करत हीतल गीत।—प्रसाद।

**हीन**—वि० [स०√हा (छोडना)+क्त त न-दीर्घ] [स्त्री० हीना, भाव० हीनता] १ छोडा या त्यागा हुआ। त्यक्त। २. किसी की तुलना मे बहुत ही खराब, घटकर या बुरा। जैसे—हीन दशा। ३. जिसका कुछ भी महत्व या मूल्य न हो। तुच्छ और नगण्य। ४. समस्त पदो के अत मे किसी गुण, तत्त्व, वस्तु आदि से रहित। खाली। जैसे—जन-हीन, धन-हीन, बल-हीन। ५ औरो या बहुतो की अपेक्षा घटकर। निम्न कोटि का। जैसे—उसने भी मुझे हीन समझा और मुझे क्रोध-पूर्वक देखने लगा। (इन्फीरियर) ६ किसी की तुलना मे कम, थोड़ा या हलका।

पु० धर्म-शास्त्र में ऐसा साक्षी जो प्रामाणिक या विश्वसनीय न हो। पु० [अ०] काल। समय।

**यौ०—हीन-हुयात**। (देखें)

**हीनक**—वि० [सं०] किसी चीज या बात से वंचित या रहित।

**हीनक मनोग्रंथि**—स्त्री० [सं०] मन में होनेवाली यह धारणा या भावना कि हम किसी दूसरे से या औरों से छोटे या हीन है। (इन्फीरियॉरिटी कॉम्प्लेक्स)

**हीन-कर्मा**—वि० [स० ब० स०] १ यज्ञादि विधेय कर्म से रहित। जैसे—हीनकर्मा ब्राह्मण। २. अनुचित या बुरे कर्म करनेवाला।

**हीन-कुल**—वि० [स०] ब० स०] बुरे या नीच कुल का।

**हीन-क्रम**—पु०[स०] साहित्य में, एक प्रकार का दोष जो वहाँ माना जाता है, जहाँ जिस क्रम से गुण गिनाये गये हों, उसी क्रम से गुणी न गिनाये गये हों।

**हीन-ग्रंथि**—स्त्री० [स० हीन+ग्रंथि] द० 'हीनक मनोग्रंथि'।

**हीन-चरित्र**—वि० [स० ब० स०] जिसका आचरण बरा हो। दुराचारी।

**हीनजिह्विक**—पु० [स०] वह सर्प या श्रेणी जो कुल, मान-मर्यादा, शक्ति आदि में बहुत घटकर हो। (कौ०)

**हीनता**—स्त्री० [स० हीन+तल्-टाप्] १. हीन होने की अवस्था या भाव। २ वह आचरण, कार्य या बात जो किसी के हीन होने का सूचक हो। ३ न होने की अवस्था या भाव। अभाव। ४ ओछापन। तुच्छता।

**हीनत्व**—पु० [स०]=हीनता।

**हीन-पक्ष**—पु० [स० मध्य० स०] न्याय में ऐसा पक्ष जो प्रमाणित या सिद्ध न हो सकता हो।

**हीन-बल**—वि० [स० ब० स०]=बलहीन (कमजोर)।

**हीन-बुद्धि**—वि०[स०ब० स०] १. खराब या दुष्ट बुद्धि वाला। दुर्बुद्धि। २. बुद्धि से रहित। मूर्ख।

**हीन-भावना**—स्त्री०=हीनक मनोग्रंथि।

**हीन-यान**—पु० [स०] बौद्ध धर्म की एक प्रसिद्ध पारम्भिक शाखा या सम्प्रदाय, जिसमें त्याग वैराग्य आदि के द्वारा निर्वाण प्राप्त करने के लिए साधना की जाती थी।

**विशेष**—परवर्ती शाखाओं ने केवल तिरस्कार के भाव से उक्त शाखा का यह नाम रखा था। इसका विकास बरमा, श्याम आदि देशों में हुआ था।

**हीन-यानी**—वि० [स० हीन-यान] हीन-यान संबंधी। हीन-यान का। पु० हीन-यान का अनुयायी।

**हीन-योग**—वि० [स० ब० स०] जो योग-साधना से च्युत या भ्रष्ट हो चुका हो।

पुं० वैद्यक में वह अवस्था, जिसमें कोई औषधि या वस्तु अपनी उचित मात्रा से कम मिलाई गई हो।

**हीन-योनि**—वि० [स० ब० स०] १. कुलटा या चरित्र-भ्रष्ट स्त्री से उत्पन्न। २. जिसकी उत्पत्ति छोटे या नीच कुल में हुई हो।

**हीन-रस**—पु० [स०] साहित्य में एक प्रकार का दोष, जो किसी रस का वर्णन करते समय उस रस के विरुद्ध प्रसंग लाने से होता है।

**हीन-वर्ण**—पु० [सं० ब० स०] नीच जाति या वर्ण। शूद्र वर्ण। वि० निम्न जाति या वर्ण का।

**हीन-वाद**—पु० [स०] १. व्यर्थ का तर्क। फजूल की बहस। २ झूठी गवाही।

**हीन-वादी**—वि० [सं० हीनवादिन्] [स्त्री० हीन-वादिनी] १ व्यर्थ का तर्क करनेवाला। २ झूठी गवाही देने या झूठा मुकदमा चलानेवाला। ३. परस्पर-विरोधी बातें कहनेवाला।

**हीन-वीर्य**—वि० [स० ब० स०] १. बल या शक्ति से रहित। बिलकुल कमजोर। २. नपुंसक।

**हीन-ह्यात**—पुं० [अ०] १. वह समय जिसमें कोई जीता रहा हो। जीवन-काल। जैसे—उन्होंने हीन-ह्यात में ही सारी जायदाद का बँटवारा कर दिया था।

अव्य० जब तक जीवन रहे तब तक। जैसे—हीन-ह्यात मुआफी।

**होनाग**—वि०[स० ब० स०]१. अंग या अंगों से रहित। नष्ट या नष्टप्राय अंगवाला। २. अधूरा।

**होना-पठीन**—पु०[स०] ऐसा जुरमाना जिसके साथ हरजाना भी देना पड़े।

**होनार्थ**—वि०[स०] १ जिसका कार्य सिद्ध न हुआ हो। निष्फल। २ जिसे कोई लाभ न हुआ हो। ३. जिसका कोई अर्थ न हो, अथवा अनुचित या बुरा अर्थ हो।

**होनित**—भू० कृ०[स०] किसी चीज या बात से रहित या वंचित किया हुआ।

**होनोपमा**—स्त्री० [सं०] साहित्य में उपमा का एक प्रकार, जिसमें बड़े उपमेय के लिए छोटा उपमान लिया जाय। बड़े की छोटे से दी जानेवाली उपमा।

**होय**†—पु०=हिय।

**होयमान**—वि०[स०] परिमाण, सीमा आदि के विचार से जो बराबर घटता या कम होता जा रहा हो। (डिक्रीजिंग)

**होयरा**†—पु०=हियरा (हृदय)।

**होया**†—पु०=हिय (हृदय)।

**हीर**—पुं० [स० √हृ+क] १. हीरा नामक रत्न। २ शिव का एक नाम। ३. सिंह। ४. सर्प। साँप। ५. विद्युत्। बिजली। ६ मोतियों की माला। ७. छप्पय के ६२ वें भेद का नाम। ८ एक प्रकार का वार्णिक समवृत्त छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में मगण, सगण, नगण, जगण, नगण और रगण होते हैं। ९. एक प्रकार का मात्रिक समवृत्त छन्द, जिसके प्रत्येक चरण में ६, ६ और ११ के विराम से २३ मात्राएँ होती हैं। कुछ लोग इसे हीरक और हीरा भी कहते हैं।

पु० [हिं० हीरा] १. किसी वस्तु के अन्दर का मूल तत्त्व या सार भाग। गूदा या सत। सार। जैसे—गेहूँ का हीर, सोफ का हीर। २ इमारती लकड़ी के अन्दर का सार-भाग जो छाल के नीचे होता है। जैसे—इस लकड़ी का हीर लाल होता है। ३. शरीर के अन्दर का धातु या वीर्य नामक रस। जैसे—अब उनके शरीर में हीर तो रह ही नहीं गया है। ४. ताकत। बल। शक्ति।

पु०[देश०] एक प्रकार की लता जिसकी टहनियों और पत्तियों पर भूरे रंग के रोएँ होते हैं। इसकी जड़ और पत्तियों का व्यवहार औषधि के

रूप में होता है। इसके पके फलों के रस से बैंगनी रंग की स्याही बनती है, जो बहुत टिकाऊ होती है।

**हीरक**—पु० [सं०] १. हीरा नामक रत्न। २. हीर नामक मात्रिक सम-वृत्त छन्द।

**हीरक-जयंती**—स्त्री० [सं०] किसी व्यक्ति, संस्था, महत्त्वपूर्ण कार्य आदि की वह जयंती जो उसके जन्म या आरंभ होने के ६० वें वर्ष होती है। (डायमण्ड जुबिली)

**हीरा**—पु० [सं० हीरक] १. एक रत्न या बहुमूल्य पत्थर, जो अपनी कठोरता या चमक के लिए प्रसिद्ध है। वज्रमणि।

**विशेष**—वैज्ञानिक दृष्टि से यह विशुद्ध कार्बन है जो रवे के रूप में जमा हुआ होता है।

**मुहा०—हीरा खाना या हीरे की कनी चाटना**—हीरे का चूर खाना जो प्राय. मृत्यु का कारण होता है।

२. लाक्षणिक रूप में बहुत ही अच्छा आदमी। नर-रत्न। जैसे—वह तो हीरा था। ३ अपने वर्ग की सबसे अच्छी चीज। सर्वोत्तम वस्तु। ४. साधुओं की परिभाषा में दक्षक या इसी प्रकार का और कोई अकेला मनका जो प्राय. साधु लोग गले में पहनते हैं। ५ एक प्रकार का दुधा। भेड़ा।

**हीराकसीस**—पु० [हिं० हीर+स० कसीस] लोहे का वह विकार जो गंधक के कारण रासायनिक यौग से होता है।

**हीरा-दाबी**—पु०[हिं० हीरा+दाबी] विजयसाल का गोंद जो दवा के काम में आता है।

**हीरा-नखी**—पु० [हिं० हीरा+नख] एक प्रकार का बढ़िया अगहनी धान जिसका चावल बहुत महीन और सफेद होता है।

**हीरा-पन्ना**—पु० [हिं० हीरा+मणि] एक प्रकार का कल्पित तोता जिसका रंग सोने का सा माना जाता है।

**हील**†—पु० [देश०] १. पनाले आदि का गदा कीचड़। गलीज। २ कीचड़ ३. एक प्रकार का सदाबहार पेड़, जिसके तने से गोंद निकलता है। अरदल। गारक।

**हीलना**†—अ० =हिलना।

**हीला**—पु० [अ० हील] १. छल। धोखा। २ ऐसा कारण या हेतु जो कुछ छिपा या दबा रहकर किसी प्रकार का परिणाम या फल दिखाता हो। निमित्त। बसीला। व्याज। जैसे—चलो इसी हीले से बेचारे को कुछ दिनों के लिए नौकरी तो मिल गई।

**मुहा०—हीला निकालना**=उपाय, ढंग या रास्ता निकालना। ३. किसी काम या बात के संबंध में ऐसा वह ना जिसका नाम-मात्र के थोड़ा-बहुत वास्तविक आधार या कारण भी हो।

**विशेष**—'बहाना' से इसमें यह अंतर है कि यह उतना कल्पित या निंदनीय नहीं होता, जितना 'बहाना' होता है।

**क्रि० प्र०—ढूंढ़ना।—निकालना।—बनाना।**

**पद—हीला-हवाला।**

४. दे० 'बहाना' और 'मिस'।

†पु०=हिल्ला (कीचड़)।

**हीला-हवाला**—पु०[अ० हील:+हवाल.] टाल-मटोल या बहानेबाजी की बातें।

**हीला-हवाली**—स्त्री०=हीला-हवाला।

**हीला-हुल**—पु० [सं० हिल्लोल] हल्ला। शोर। (राज०) उदा०—हेका कह हेका हीलो-हुल।—प्रिथीराज।

**हीस**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कँटीला लता, जो गरमी में फूलती और बरसात में फलता है। इसकी पत्तियां और टहनियां हाथी बहुत चाव से खाते हैं।

**हीसका**†—स्त्री०[?] ईर्ष्या।

**हीसना**—स०[सं० ह्रस=घटना] कम करना। घटाना।

अ० कम होना। घटना।

†पु०=हींसना (हिनहिनाना)।

**हीसा***—स्त्री० दे० 'हीसका'।

†पु०=हिस्सा।

**ही-ही**—स्त्री०[अनु०] अशिष्टता या असभ्यतापूर्वक हीं-हीं शब्द करके हँसने की क्रिया। तुच्छतापूर्वक हँसना।

**हुँ**—अव्य०[अनु०] एक सकारात्मक शब्द जो किसी बात को सुननेवाला यह सूचित करने के लिए बोलता है कि हम सुन रहे हैं। हां।

**हुंकना**†—अ०=हुंकारना।

**हुंकरना**†—अ०=हुंकारना।

**हुंकार**—पु० [सं० कृ+कृ (करना)। घञ्] १ जोर से डाँटने-डपटने का शब्द। २ लड़ने-भिड़ने के लिए ललकारने का शब्द। ३. किसी प्रकार का उग्र और जोर का शब्द। ४ चिल्लाहट। चीत्कार।

**हुंकारना**—अ०[सं० हुंकार+ना (प्रत्य०)] १ डाँटने-डपटने के लिए जोर का शब्द करना। २ लड़ने-भिड़ने के लिए ललकारना। ३. जोर से चिल्लाना।

**हुँकारी**—स्त्री०[हुँ+कृ+णि+ङी] १ किसी की बात सुनते समय अपनी सचेतता या अवधान सूचित करने के लिए 'हुँ' करने की क्रिया। २ स्वीकृति-सूचक शब्द। हामी।

क्रि० प्र०—भरना।

†स्त्री०=विकारी (धन का मान सूचित करनेवाला चिह्न)।

**हुंकृत**—पु० [सं० हुं+कृ+क्त] १ हुंकार। २. सुअर की गुर्राहट। ३. बादल की गरज। ४ गौ के रँभाने का शब्द। ५ भय।

**हुंकृति**—स्त्री०=हुंकार।

**हुंड**—पु०[सं०] १ भारत की एक प्राचीन बर्बर जाति। २. बाघ। व्याघ्र। ३. सूअर। ४. मेढ़ा। ५ राक्षस। ६ अनाज की बाल। वि० जड बुद्धिवाला। मूढ़।

**हुंडन**—पु०[सं०] १. अंग का सुन्न या स्तब्ध हो जाना। २ शिव का एक गण।

**हुंडा**—पु०[सं०] आग के दहकने का शब्द।

पु०[हिं० हुंडी] वह रुपया जो कुछ जातियों में वर-पक्ष से कन्या के पिता को ब्याह के लिए दिया जाता है।

**हुंडा-भाड़ा**—पु० [हिं० हुंडी+भाड़ा] महाजनी बोलचाल में महसूल, भाड़ा आदि सब कुछ देकर कहीं पर माल पहुँचाने का निश्चयात्मक भार। (आज-कल के अँगरेजी एफ० ओ० आर० की तरह का पुराना भारतीय पद)।

**हुंडार**—पु०[सं० हुंड=मेढ़ा अरि=शत्रु] भेड़िया।

**हुंडावन**—स्त्री० [हिं० हुंडी] १. वह रकम, जो हुंडी लिखने के समय दस्तूरी के रूप मे काटी जाती है। २. हुंडी लिखने की दर।

**हुंडिका**—स्त्री० [स०] १. प्राचीन भारत मे सेना के निर्वाह के लिए दिया जानेवाला आदेशपत्र। २ दे० 'हुंडी'।

**हुंडियावा**†—स्त्री०=हुंडावन।

**हुंडी**—स्त्री० [देश०] १ भारतीय महाजनी क्षेत्र मे वह पत्र, जो कोई महाजन किसी से कुछ ऋण लेने के समय उसके प्रमाणस्वरूप ऋण देनेवाले को लिखकर देता था और जिस पर यह लिखा होता है कि यह धन इतने दिनों में ब्याज समेत चुका दिया जायगा। पुराने ढग का एक प्रकार का हैंड-नोट।

**मुहा०—हुंडी करना**=किसी के नाम हुंडी लिखना। **हुंडी पटना**=हुंडी के प्राप्य धन का चुकता होना। **हुंडी सकारना**=यह मान लेना कि हम इस हुंडी के रुपए चुका देंगे।

२. रुपए उधार लेने की एक रीति जिसमें लेनेवाले को कुछ निश्चित समय के अंदर ब्याज समेत कुछ किस्तो मे सारा ऋण चुका देना पड़ता है। ३. अपना प्राप्य धन या उसका कोई अंश पाने के लिए किसी के नाम लिखा हुआ वह पत्र जिस पर यह लिखा होता है कि इतने रुपए अमुक व्यक्ति, महाजन या बैंक को दे दिये जायँ। (ड्राफ्ट, बिल या बिल आफ एक्सचेंज)

**पद—दर्शनी हुंडी**। (देखें)

**हुंडी-बही**—स्त्री० [हिं० हुंडी+बही] वह किताब या बही, जिसमे सब तरह की हुंडियों की नकल रहती है।

**हुंडी-बेंत**—पु० [देश० हुंडी+हिं० बेंत] एक प्रकार का बेंत। मयूरी बेंत।

**हुँत**—प्रत्य० [प्रा० विभक्ति 'हिंतो']१. पुरानी हिंदी मे पचमी और तृतीया की विभक्ति। से। उदा०—तव हुँत तुम बिनु रहै न जीऊ।—जायसी।

अव्य०१. निमित्त। लिए। वास्ते। २ जरिये से। द्वारा।

**हुँते**†—अव्य० [प्रा० हिंतो] १ से। द्वारा। २. ओर से। तरफ से।

**हुंबा**—पु० [देश०] समुद्र की चढ़ती हुई लहर। ज्वार।

**हुंभी**—स्त्री० [स०] गाय के रँभाने का शब्द।

**हुं**†—अ० [वैदिक स० ऊ=और, आगे; प्रा० उपु, हिं० ऊ] अतिरेक सूचक शब्द। भी। जैसे—रामहु=राम भी। हामहु=हम भी।

**हुअ***—पु० [स० हुत] अग्नि। आग। उदा०—हुअ हूत जरत घरत पग धरनी।—तुलसी।

**हुआँ**—पु० [अनु०] गीदड़ो के बोलने का शब्द।

अव्य०=वहाँ।

**हुआ**—भू० कृ० हिं० 'होना' क्रिया का भूत कृदन्त रूप। जैसे—खेल खतम हुआ।

**हुआना**—अ० [अनु० हुआँ] गीदड का 'हुआँ हुआँ' करना।

**हुक**—पु० [अं०] अकुश के आकार की बड़ी कील जो चीजें फँसाने और लटकाने के लिए दीवार आदि मे गाड़ी जाती है।

†स्त्री० [हिं० हूक] कमर, पीठ आदि में अचानक किसी नस के झटका खाने से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का दर्द।

क्रि० प्र०—पड़ना।

**हुकना**†—अ० [देश०] १. भूल जाना। विस्मृत होना। २ वार या निशाने का चूकना।

पुं० सोहन चिड़िया नामक पक्षी।

**हुकारना**—अ०=हुँकारना।

**हुकर-हुकर**—स्त्री० [अनु०] १ कलेजे की धड़कन। २ अधीरता के कारण मन मे होनेवाली बेचैनी या विकलता।

**हुकारना**†—अ०=हुँकारना।

**हुकुम**†—पु०=हुक्म।

**हुकुर-हुकुर**—स्त्री० [अनु०] दुर्बलता, रोग आदि मे होनेवाला श्वास का मन्द और शिथिल स्पन्दन।

**हुकूमत**—स्त्री० [अ०] १. वह अवस्था जिसमे किसी पर कोई हुक्म चलाया जाता हो। जैसे—मारे घर पर उन्ही की हुकूमत है।

**मुहा०—हुकूमत चलाना**=दूसरो का आधिकारिक रूप से आज्ञा देना। जैसे—बैठे बैठे हुकूमत चलाने से कुछ न होगा, उठकर कुछ काम करो। **हुकूमत जताना**=प्रभुत्व प्रदर्शित करना। रोब दिखाना।

२. राजकीय व्यवस्था या शासन।

**हुक्का**—पु० [अ०] तम्बाकू का धूआँ खीचने या पीने के लिए बना हुआ एक विशेष प्रकार का उपकरण या यत्र, जिसमे दो नालियाँ होती है। एक पानी भरे पेदे से ऊपर की ओर खड़ी की जाती है जिस पर चिलम रहती है, और दूसरी पार्श्व मे जिसके सिरे पर मुँह लगाकर धूआँ खीचते हैं। इसके गडगडा, फरसी आदि कई प्रकार या भेद होते है।

**पद—हुक्का-पानी**।

क्रि० प्र०—गुड़गुड़ाना।—पिलाना।—पीना।

**मुहा०—हुक्का ताजा करना**=हुक्के का पानी बदलना। **हुक्का भरना**=चिलम पर आग, तम्बाकू वगैरह रखकर हुक्का पीने के लिए तैयार करना।

२ दिग्दर्शक यत्र। कपास। (लश०)

**हुक्का-पानी**—पु० [अ०+हिं०] हिंदुओ का अपनी जाति या बिरादरी के लोगों के साथ एक दूसरे के हाथ से हुक्का लेकर तम्बाकू पीने और पानी पीने का व्यवहार।

**मुहा०—(किसी का) हुक्का-पानी बंद करना**=किसी को जाति या बिरादरी से अलग करना। पारस्परिक, सामाजिक व्यवहार छोड़ना या बन्द करना।

**हुक्काम**—पु० अ० 'हाकिम' का बहु०] हाकिम लोग। अधिकारी वर्ग। बड़े अफसर।

**हुक्कू**—पुं० [देश०] एक प्रकार का बन्दर।

**हुक्म**—पु० [अ०] १. आधिकारिक रूप से दिया जानेवाला ऐसा आदेश जिसका पालन औरों के लिए अनिवार्य या आवश्यक हो। आज्ञा।

क्रि० प्र०—करना।—देना।—मानना।—लेना।

**पद—जो हुक्म**=आपकी जैसी आज्ञा है, वैसा ही होगा।

**मुहा०—हुक्म उठाना***=(क) आज्ञा पालन करना। (ख) आज्ञानुसार सब तरह की सेवाएँ करना। **हुक्म चलाना**—(क) आज्ञा देना। (ख) अपना बड़प्पन दिखाते हुए दूसरों को काम करने के लिए कहना। जैसे—बैठे-बैठे हुक्म चलाते हो, आप जाकर क्यो नही उठा लाते। **हुक्म बजाना या बजा लाना**=आज्ञा का पालन करना।

२. अधिकार, प्रभुत्व आदि की वह स्थिति जिसमे कोई औरों को हुक्म

देता रहता है। जैसे—आप का हुक्म बना रहे। (आशीर्वाद और शुभ कामना)

मुहा०—(किसी के) हुक्म में होना = अधिकार या वश मे होना। अधीन होना। जैसे—मै तो बराबर हुक्म मे हाजिर रहता हूँ।

३ अधिशासित रूप से बनाये हुए नियम। विधि-विधान। जैसे—इस विषय मे राज्य की एक नयी सरकारी हुक्म निकला है। ४ ताश के पत्तों का एक रग जिसमे काले रग का पान बना रहता है।

**हुक्म अदूली**—स्त्री० [अ०] बडो की आज्ञा का पालन न करना, जिसकी गिनती अशिष्टता और उद्दडता मे होती है।

**हुक्म-चोट**—स्त्री० [?] खजूर का गोद।

**हुक्मनामा**—प० [अ०+फा०] १ वह कागज जिस पर कोई हुक्म लिखा गया हो। २ विशेषत राजकीय आज्ञा-पत्र। शाही हुकुमनामा।

**हुक्म-बरदार**—वि० [अ०+फा०] [भाव० हुक्म-बरदारी] आज्ञा के अनुसार चलनेवाला। सेवक। अधीन।

**हुक्म-बरदारी**—स्त्री० [अ०+फा०] १. आज्ञा-पालन। २ बडो की सेवा।

**हुक्मी**—वि० [अ० हुक्म] १. दूसरे के हुक्म अर्थात् आज्ञा के अनुसार काम करनेवाला। जैसे—मै तो हुक्मी बदा हूँ, मेरा क्या कसूर ? २ निश्चित रूप से पालन एव प्रभाव या फल दिखानेवाला। जैसे—हुक्मी दवा, हुक्मी तिलस्मा। ३ जो अवश्य किया जाय या होने को हो। जरूरी।

**हुचका**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की सुदर लता या बेल जिसके फूल लगभग और सुगधित होते है।

**हुँचना**†—अ० [?] बारी ओर से दबाव पडने पर निकलर या विवश होना। उदा०—हुचा हाल पर भी बडा खेल जाता था, हालाँकि शास्त्र के अनुसार गया की बारी आनी चाहिए थी।—प्रेमचन्द।

**हुजर**—प० [अ० हजार] एक प्रकार के पाश्चात्य घुडसवार सैनिक जिनके हथियार हलके और बन्दूकें चमकीली होती है। उदा०—हुजर सवारों का कर्तव्य शत्रु की सेना पर आक्रमण करने की योजना थी।—वृदावनलाल वर्मा।

**हुजरा**—पु० [अ० हुजर] कोठरी विशेषत वह कोठरी, जिसमे बैठकर ईश्वर का ध्यान किया जाता हो। (मुसलमान)

**हुजूम**—प० [अ०] बहुत से लोगों का जमावडा। भीड-भाड।

**हुजूर**—स० [अ० हुजूर] १. किसी बडे की समक्षता, समीपता या सान्निध्य।

पद—हुजूर में = किसी बडे आदमी के समक्ष या सामने। के आगे। जैसे—वह सब बादशाह के हुजूर मे लाये गये।

२ बादशाह या बहुत बड हाकिम का दरबार।

पद—हुजूर महाल = मुसलमानी शासन मे वह क्षेत्र, जिसमे शासन की जमादारी होती थी।

३. बहुत बडे लोगों को सम्बोधित करने का आदर-सूचक शब्द।

अव्य० (किसी बडे के) कुजर मे। बडे के सामने। समक्ष। उदा०—निर्मल ही की आसा, सार्थ सदा हजूरि।—कबीर।

**हुजूरी**—स्त्री० [अ० हुजूर+हि० +ई (प्रत्य०)] किसी बहुत बडे व्यक्ति का सान्निध्य या सामीप्य।

पु० किसी बडे आदमी के सान्निध्य में रहनेवाला। हुजूर मे रहनेवाला। बडे आदमियों का दरबारी या पार्श्ववर्ती।

पु०१ किसी बादशाह या राजा के पास सदा रहनेवाला सेवक। २. दरबारी। मसाहब

वि० हुजूर-दारी। हुजूर का।

**हुज्जत**—स्त्री० [अ०] [कर्ता हुज्जती] १ दो व्यक्तियो या पक्षों मे होनेवाला व्यर्थ का तर्क-वितर्क और कहा-सुनी। २ किसी साधारण सी बात को मान न लेकर हुए उसके सबध मे किये जानेवाले व्यर्थ के प्रश्न या उठाई जानेवाली आपत्तियाँ। ३. जबानी होनेवाला झगडा। कहासुनी। तकरार।

**हुज्जती**—वि० [अ० हुज्जत] १ हुज्जत करने की प्रवृत्ति या स्वभाव वाला। २ झगडालू।

**हुड**—पु० [स०]१ मेढा। २ एक प्रकार का ढब या सुराखिर द्रव्य।

**हुड़कना**—अ० [अनु०] [भाव० हुड़क, हुड़कन] १ प्रिय के वियोग के कारण (विशेषत उसे न पाने या बहुत दुर्लभ होने और रहने। २ भयभीत और चकित होना। ३ तरसना।

**हुड़क**—पु० [हि० हुड़कना] १ हुड़कने की अवस्था या भाव। २. किसी के विरह मे होनेवाली उग्र मानसिक विक्षिप्तावस्था, जिसमे कभी कभी व्यक्ति, विशेषत नारद स्वभाव-प्रधान पागलपन या बावरा बनने लगता है।

क्रि० प्र०—उठना।—लगना।

**हुड़काना**—स० [हि० हुड़कना (धातु०)] १ किसी को हुड़कने मे प्रवृत्त करना। ऐसा काम करना, जिससे कोई हुड़के। २ अधिक भयभीत या चकित करना। लजवाते हुए लगाना।

**हुड़दंग**—स्त्री० [अनु०] [कर्ता हुड़दगी] ऐसी उछल-कूद और उपद्रव जिसमे बहुत से लोग एकत्र होकर या शोर-गुल करते हो।

क्रि० प्र०—मचाना।—मचना।

**हुड़दंगा**—वि० [हि० हुड़दंग] [स्त्री० हुड़दगी] हुड़दग मचानेवाला। पु० हुड़दग।

**हुड़दंगी**—स्त्री० हुड़दग।

**हुड़क**—प० [स० पुटक?] १ एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल, जिसे प्राय कलदर भालू आदि बजाते है। २ दे० 'हुडक्क'।

**हुड़क्क**—प० [स० √हुड+उक] १ एक प्रकार का बहुत छोटा ढोल। २ मसखरा आदमी। ३ वह डडा जिसके सिरे पर लोहा जडा हो। लोहासद। ४. चिडियों मे लगाने का अगखा। ५ दात्यूह पक्षी।

**हुत**—भू० कृ० [स० √हु (देना)+क्त]१. आहुति के रूप मे दिया हुआ। जिसकी हवन मे आहुति दी गई हो। २ जिसका पूर्ण रूप से उत्सर्जन या समर्पण हुआ हो।

प०१ हवन की वस्तु। २. शिव का एक नाम।

[अ० पुरानी हिन्दी मे 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। उदा०—हुत पहिर ओ सब है सोई।—जायसी।

अव्य० [प्रा० हिंतो] द्वारा। से। (अवधी)

**हुतका**—प० [?]१. धूँआ। भपका। २. जोर का धक्का। (पूरब)

**हुतना**—अ० [स० हुत] आहुति के रूप मे आग मे पड़ना। हुत होना। स०—हुतना।

**हुतभुक**—प० [स० हुत√भुज् (खाना)+अच्] आहुति का भक्षण करनेवाला। अग्नि। आग।

**हुतभुक्, हुतभुज्**—पुं० [स०]१ अग्नि। आग। २. चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

**हुत-वह**—पुं०[सं०हुत√वह् (ढोना)+अच्] अग्नि। आग।

**हुत-शेष**—पु० [स० पु० ष०] हवन करने मे बची हुई सामग्री।

**हुता**†—अ०[हिं० हुत] [स्त्री० हुती] 'था' का अवधी और बुन्देलखंडी रूप।

**हुताग्नि**—पु०[सं० ष० स०]१ वह जिसने हवन किया हो। २ अग्निहोत्री। ३. हवन-कुंड की अग्नि।

**हुतात्मा**—पु०[ष० हुतात्मन्] जिसने अपनी आत्मा या अपने आप को किसी काम मे लगाकर पूरी तरह से समाप्त कर दिया हो।

**हुतादन**—पु०[ष० हुत√अद्(खाना)+अच्] १ अग्नि। २ तीन प्रकार की अग्नियो के आधार पर तीन का वाचक पद। ३ चित्रक या चीता नामक वृक्ष।

**हुताशन**—पु०[ष० स० स०] [वि० हौताशन] अग्नि। आग।

**हुति**—अव्य० [पु० हिंदी]१ पुरानी हिन्दी मे अपादान और करण कारक का चिह्न। से। द्वारा। २. ओर से। तरफ से।

**हुती***—अ० [प्रा० हुंती] [स्त्री० हुती] ब्रज भाषा मे 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था।

**हुतुम**—पुं० हुतना।

**हुदकना**—अ० [?]१. उमग मे आकर आगे बढना। २ दे० 'फदकना'।

**हुदकाना**—स० [देश०] उत्तेजित करना। उसकाना।

**हुदकाव**†—पु० [हिं० हुदकना] हुदकने की क्रिया या भाव।

**हुदहुद**†—पु० धक्का।

**हुदहुदा**—अ० [स० हुंहुद] १. स्तब्ध होना। २. ठहरना। रुकना।

**हुदहुद**—पु०[फा०] एक प्रकार का सुन्दर पक्षी जिसका सारा शरीर चमकीले और भडकीले परो से ढका रहता है और जिसके सिर पर ताज की तरह लबी चोटी होती है। मुसलमान इसे 'शाहसुलैमान' भी कहते है। यह प्राय दव की जडे खोदता रहता है, इसलिए 'डूबिया' भी कहलाता है।

**हुदहुदी**—स्त्री०[अनु०] भय। डर।

**हुदारना**—स०[देश०] बँधे हुए रस्से पर कोई चीज फैलाना या लटकाना।

**हुद्दा**—स्त्री०[देश०] एक प्रकार की मछली।

पि०=चोइया (पद)।

**हुन**—पु०[स० हूण, हूद=सोने का एक पुराना सिक्का] १. मोहर। अशर्फी। स्वर्ण-मुद्रा। २. सोना। स्वर्ण।

**मुहा०—(कहीं) हुन बरसना**=बहुत अधिक आय होना।

अव्य०=अब। (पश्चिम)

**हुनकाँ**—सर्व०=उनका। (मैथिली) उदा०—हमर अभाव, हुनक कोन दोस।—विद्यापति।

**हुनना**—स०[सं० हु, हुन्+हि०ना(प्रत्य०)] १. जलाने के लिए कोई चीज आग में छोडना या डालना। २. आहुति देना।

†स०=हनना (मार डालना)।

†स०=धुनना।

**हुनर**—पु०[फा०]१ कला। कारीगरी। २. कोई काम करने का कौशलपूर्ण गुण। ३. चतुराई। चालाकी। (व्व०)



**हुनरमंद**—वि०[फा०] जो किसी हुनर या कला का जानकार हो। कला-कुशल। निपुण।

**हुनरमंदी**—स्त्री० [फा०] हुनरमद होने की अवस्था, क्रिया या भाव। कला-कुशलता। निपुणता।

**हुनरा**—पु०[फा० हुनर] वह बदर या भालू जो नाचना और खेल दिखाना सीख गया हो। (कलदर)

वि० जिसके हाथ मे हुनर हो। कलाकार।

**हुनिया**—स्त्री०[देश०] भेडों की एक जाति जिनका ऊन अच्छा होता है। पु० उक्त भेडों से प्राप्त होनेवाला ऊन।

**हुन्ना**†—पुं०=हुन।

**हुब**, **हुब्ब**—पु०[अ०]१. अनुराग। प्रेम। २ भक्ति और श्रद्धा। ३. उत्साह। उमग।

**हुबाब**—पु०=हबाब (बुलबुला)।

**हुमकना**—अ० [अनु०हूँ (प्रयत्न का सूचक शब्द)]१ उछलना। कूदना। उदा०—हुमकि लात कुदर पर मारी।—तुलसी। २ पैरो से ठेलना या ढकेलना। ३ शरीर का सारा जोर लगाते हुए दबाना। ४.दे० 'हुमगना'। ५ दे० 'हुमसना'।

**हुमगना**†—अ०=हुमकना।

**हुमसना**—अ०[स० उल्लास+?] १ आनन्द या उमग मे आना। उल्लसित होना। २ मन मे भाव या विचार उत्पन्न होना।

**हुमसानना, हुमसाना**—स०[हिं० हुमसना का स०] १ उल्लास या प्रसन्नता से युक्त करना। २. उत्तेजित करना। उकसाना।

**हुमा**—स्त्री०[फा०]एक पवित्र पक्षी, जिसके सबध मे कहा जाता है कि केवल हड्डी ही खाता है और जिसके ऊपर उसकी छाया पड जाय, वह बादशाह हो जाता है।

**हुमाई**—वि०[फा०]१ हुमा सबधी। २ जिस पर हुमा की छाया पड़ी हो; फलत भाग्यशाली।

**हुमेल**—स्त्री०[सं० हमायल]१. धातु के गोल टुकडों या सिक्कों की माला जो गले मे पहनी जाती है। २. घोडों आदि के गले मे पहनाया जानेवाला उक्त आकार-प्रकार का एक गहना।

**हुम्मा**—पु०[हिं० उमग] लहरों का उठना।

**हुर**—पु०[देश०] सिंध मे रहनेवाले एक प्रकार के अर्ध-सभ्य मुसलमान।

**हुरक***—पुं०[अ० हूर=परी] [स्त्री० हुरकिनी] हूरों की तरह का अर्थात् परम सुन्दर पुरुष।

†स्त्री०१=हुडक। २.=हुडक्क।

**हुरदंग**†—स्त्री०=हुड़दंग।

**हुरदंगा**†—वि०, पुं०=हुड़दंगा।

**हुरमत**—स्त्री०[अ०] आबरू। इज्जत। मान।

**हुरहुर**†—पुं०=हुलहुल (पौधा)।

**हुरहुरिया**—स्त्री० [सं० हुलहुली] एक प्रकार की चिडिया।

**हुरिजक**—पु०[स०] १ पुराणानुसार निषाद और कबरी स्त्री से उत्पन्न एक संकर जाति। २. उक्त जाति का व्यक्ति।

**हुरिआ**†—पु० [हिं० हूरना ?] लात से किया जानेवाला प्रहार। उदा०—पगा बिनु हुरिआ मारता।—कबीर।

**हुरिहार**†—पु०=होलिहार।

**हुक्क**—पु०=हुडक (बाजा)।

**हुक्मयी**—स्त्री०[सं०] प्राचीन भारत में एक प्रकार का नृत्य।

**हुर्र**—वि०[अनु०] जो देखते-देखते अदृश्य या लुप्त हो गया हो। जैसे—भीड का हुर्र हो जाना।
†पु०=हुर्र।

**हुर्रा**—पु०[अ०] एक प्रकार की हर्ष-ध्वनि।

**हुर्रे**—पु०=हुर्रा।

**हुल**—पु०[सं०] एक प्रकार की दो-धारी बड़ी छुरी।
†पुं०=फूल (फूल)।

**हुलकना**—अ०[फा० हुलक] कै करना। वमन करना।

**हुलकी**—स्त्री०[हिं० हुलकना] १ कै। वमन। उलटी। २ विसूचिका या हैजा नामक रोग।

**हुलना**—अ०[हिं० हुलना] हुला जाना।
†स०=हुलना।

**हुलसना**—अ०[स० उल्लास, हिं० हुलास+ना (प्रत्य०)] १. बहुत अधिक प्रसन्न होना। २ उत्पन्न होकर बढ़ना। उभरना। उमडना।

**हुलसाना**—स०[हिं० हुलसना का स०] उल्लसित करना। हर्ष की उमग उत्पन्न करना।
†अ०=हुलसना।

**हुलसावन**—वि०[हिं० हुलसाना] हुलसाने का प्रयत्न करनेवाला।

**हुलसी**—स्त्री०[हिं० हुलसना] १ हुलास। उल्लास। आनन्द। २ प्रसिद्ध पद "गोद लिए हुलसी फिरैं, तुलसी सो सुत होय।" के आधार पर कुछ लोगो के मत से गोस्वामी तुलसीदास की माता का नाम।

**हुलहुल**—पु०[?] एक प्रकार का छोटा बरसाती पौधा, जिसे अर्क-पुष्पिका या सूरजवर्त भी कहते हैं।

**हुलहुला**—पु०[देश०] १ विलक्षण बात। अद्भुत बात। २ उत्पात। उपद्रव। ३. झूठे अभियोग का आरोप। ४ उत्साह। उमग।

**हुलहुली**—स्त्री०[स०] बहुत अधिक प्रसन्न होने की दशा मे अथवा आनद के अवसरों पर स्त्रियों के मुँह से निकलनेवाला एक प्रकार का अस्फुट शब्द।

**हुला**—पु०[हिं० हुलना] लाठी का अगला तथा नुकीला छोर या नोक।

**हुलाना**†—स०[हिं० हुलना] १. किसी को कुछ हुलने मे प्रवृत्त करना। २ दे० 'हुलसाना'।

**हुलास**—स्त्री० [हिं० हुलसना] तरग। लहर।

**हुलास**—पु० [स० उल्लास] १ आनन्द की उमग। उल्लास। हर्ष की प्रेरणा। २ उत्साह। उमंग।
†स्त्री०=सुँघनी।

**हुलासवानी**—स्त्री०[हिं० हुलास+दान] हुलास या सुँघनी रखने की डिबिया। सुँघनीदानी।

**हुलासी**—वि०[हिं० हुलास] १. सदा प्रसन्न रहनेवाला। आनन्दी। २ उत्साही।

**हुलिंग**—पु०[सं०] मध्यदेश के अन्तर्गत एक प्राचीन प्रदेश।

**हुलिया**—पु०[अ० हुल्यि] १. चेहरे की गठन और बनावट। मुख की आकृति और रूप-रग।
**मुहा०—हुलिया तंग होना**=बहुत ही परेशान और हैरान होना। कष्ट, चिंता आदि के कारण बहुत विकल होना।
२. किसी मनुष्य के रूप, रग आदि का वह विवरण जो उसकी पहचान के लिए किसी को बतलाया जाता है।
**मुहा०—हुलिया लिखाना**=किसी भागे हुए या लापता आदमी का पता लगाने के लिए उसकी शकल, सूरत आदि का विवरण सरकारी अधिकारियो के पास लिखाना।

**हुलुक**—पु०[देश०] एक प्रकार का बन्दर।

**हुलेया**—स्त्री०[हिं० हुलना] डूबने के पहले नाव के डगमगाने की अवस्था या क्रिया। (मल्लाह)
क्रि० प्र०—खाना।—लेना।

**हुल्क**—पुं०[सं०] एक प्रकार का नृत्य।

**हुल्लड़**—पुं०[अनु० या स० हुल्लुल] १ शोरगुल। हल्ला। कोलाहल।
२. उत्साह। उपद्रव। २ दगा। फसाद।
क्रि० प्र०—मचना।—मचाना।

**हुल्लास**—पुं०[स० उल्लास] चौपाई और त्रिभगी के मेल से बना हुआ एक प्रकार का छंद।

**हुश्**—अव्य०[अनु०] एक निषेधवाचक शब्द जो उपेक्षा, तुच्छता आदि का भी सूचक है। अनुचित बात मुँह से निकालने पर रोकने का शब्द। जैसे—हुश्! यह क्या बकते हो।

**हुशकारना**—स०[हुश से अनु०] हुश-हुश शब्द करके कुत्ते को किसी की ओर काटने आदि के लिए उत्तेजित करना।

**हुशियार***—वि०=होशियार।

**हुसैन**—पु०[अ०]१ मुहम्मद साहब के दामाद अली के बेटे जो करबला के मैदान मे मारे गये थे। शीया मुसलमान इन्हो के शोक मे मुहर्रम मनाते हैं। २. चाँदी के दो छल्ले जो मुसलमान स्त्रियाँ मुहर्रम के दिनो मे हुसैन की स्मृति मे बच्चो के गले मे रक्षा के विचार से पहनाती हैं।

**हुसैन-बंब**—पु०[अ०+फा०]हाथ मे पहनने का एक जनाना गहना।(मुसल०)

**हुसैनी**—पु०[अ० हुसैन] १ फारसी सगीत के बारह मुकामो मे से एक। २ एक प्रकार का अगूर।
स्त्री० कर्नाटकी सगीत पद्धति की एक रागिनी।

**हुसैनी कान्हड़ा**—पु० [अ० हुसैनी+हिं० कान्हड़ा] सगीत मे कान्हड़ा राग का एक प्रकार या भेद।

**हुस्न**—पु०[अ०]१ (स्त्रियों के सबध मे) शरीर विशेषत. मुख का उत्कृष्ट सौन्दर्य। २. कोई उत्कर्ष-सूचक गुण या बात। ३. सुन्दरता बढानेवाली कोई विशिष्ट बात। जैसे—हुस्न-काफिया।

**हुस्नदान**—पु० [अ० हुस्न+हिं० दान] पानदान। खासदान। (स्त्रियाँ)

**हुस्नपरस्त**—वि० [अ०+फा०] [भाव० हुस्नपरस्ती] स्त्री-सौन्दर्य के उपासक। स्त्री की सुन्दरता से प्रेम करनेवाला।

**हुस्नपरस्ती**—स्त्री० [अ०+फा०] हुस्नपरस्त होने की अवस्था, गुण या भाव। सौन्दर्य की उपासना।

**हुस्न-महफिल**—पुं०[अ० हुस्ने-महफिल] एक प्रकार का हुक्का।

**हुस्न-हिना**—पु० [अ० हुस्ने-हिना] एक प्रकार का पौधा और उसके सुन्दर फूल जो रात को बड़िया सुगन्ध देते हैं। रात की रानी।

**हुश्यार**†—वि०=होशियार।

**हुस्यारी**—स्त्री०=होशियारी।

**हुहब**—पुं० [स०] एक नरक का नाम।

**हुहाना**—अ०[हु हु से अनु०] हु हु शब्द होना।
स० हु हु शब्द करना।

**हुहुआना**†—अ० [अनु०] आवेश मे आकर हु हु शब्द करना।

**हूँ**—अव्य०[अनु०] १. किसी प्रश्न के उत्तर मे स्वीकृति का सूचक शब्द। २ अनुमोदन, समर्थन या स्वीकृति का सूचक शब्द। ३ कोई बात सुनते समय अपनी सचेतता या सावधानता सूचित करने का शब्द। ४ किसी कारण न बोल सकने की दशा म निषेध या वारण का सूचक शब्द। अ० वर्तमानकालिक क्रिया 'है' का उत्तम पुरुष एक वचन रूप। जैसे—मैं हूँ।
†अव्य० १ राजस्थानी बोली मे कही 'मे' और कही 'से' के स्थान पर विभक्ति के रूप मे प्रयुक्त होनेवाला शब्द। उदा०—'घणा हाथ हूँ घडे घणा'—प्रिथीराज। २. दे० 'हूं'।
†वि०=हौं (मै)। उदा०—हूँ तेरो पथ निहारूँ स्वामी।—कबीर।

**हूँकना**—अ०[अनु०]१ गाय का बछडे के वियोग मे या और कोई दुख सूचित करने के लिए धीरे-धीरे बोलना। हुडकना। २. सिसक-सिसककर रोना। ३. दे० 'हुकारना'।

**हूँकार**†—पुं०=हुकार।

**हूँठ**—वि० [स० अर्धचतुर्थ, प्रा० अद्धुट्ठ (स० 'अध्युष्ट' कल्पित जान पड़ता है] साढे तीन गुना।

**हूँठा**—पुं० [हिं० हूँठ] साढ़े तीन का पहाडा। अढैठा।

**हूँड़**†—स्त्री० [?] रसौनी (कृषकों की पारस्परिक सहायता की प्रथा)।

**हूँत**—अव्य०[प्रा० हिंतो] से।

**हूँतीं**†—अव्य०[प्रा० हिंतो] राजस्थानी भाषा में हूँत की तरह 'से' विभक्ति के स्थान पर प्रयुक्त होनेवाला शब्द।

**हूँस**—स्त्री०[हिं० हूँसना]१. हूँसने की क्रिया या भाव। जैसे—हूँस से रीस भली।—कहा०। २ किसी को बराबर हूँसते रहने के कारण उस पर पड़नेवाला कुप्रभाव या दुष्परिणाम। जैसे—मेरे बच्चे को तेरी हूँस लगी है। (स्त्रियाँ)
कि० प्र०—पड़ना।—लगना।
३. ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण मन में होनेवाली कुढ़न या जलन।

**हूंसना**—स० [अनु०] [भाव० हूँस]१. रह रहकर कुढ़ते और चिढ़ते हुए किसी को बुरा-भला कहना। उदा०—कैसी गधी हो, बच्चों का खाना हो हूँसती। रातिब तो तीन टट्टू का जाती हो थूर आप।—जान साहब। २. ईर्ष्या, द्वेष आदि के कारण बिगड़ते और डाँट सुनाते रहना। कोसना, काटना।

**हूं-हां**—स्त्री०[अनु०]कोई बात सुनने पर 'हूँ', 'हाँ' या उसी तरह का कोई और कहा जानेवाला शब्द। जैसे—वह मेरी सब बातें चुपचाप सुन गया, पर बीच में कही हूँ-हाँ नही की।

**हू**†—अव्य० [ वैदिक स० उप=आगे और, प्रा० उव, हिं० ऊ] पुरानी हिन्दी मे अतिरेक-बोधक शब्द। भी। जैसे—तुमहू, बाहू, हमहू आदि।
पुं०[अनु०]१. गीदड़ के बोलने का शब्द। २. हवा के जोर से चलने पर होनेवाला हु-हू शब्द।

**पद—हू का आलम**—बिलकुल सुन-सान जगह मे वह स्थिति जब हवा जोरों से हु हु करती हुई चल रही हो। भयावने सन्नाटे की स्थिति।

**हूक**—स्त्री०[स० हिक्का] कलेजे, छाती, पसली आदि मे अचानक बहुत जोर से उठनेवाली पीडा या शूल।
कि० प्र०—उठना।—मारना।
२. कसक। दर्द। पीडा। ३ घोर मानसिक कष्ट। ४. आशंका।

**हूकना**—अ०[हिं० हूक+ना (प्रत्य०)]१ हूक की पीडा या शूल उठना। २ कोई बहुत कष्ट या उग्र बात या स्मृति मन मे कसकना या सालना। रह-रहकर पीड़ित करना। ३ अचानक होनेवाले कष्ट या पीड़ा से चौक पड़ना।

**हूकनि**†—स्त्री०=हूक। उदा०—ऊख मयूख मयूखनि हूकनि लाग अहूख लखै सुर रूखे।—देव।

**हूठना**†—अ०[स० हुड्=चलना] १ हटना। टलना। २ किसी की ओर पीठ करना। ३ घूमना। मुडना।

**हूठा**—पुं०[हिं० अँगूठा] १ किसी को चाही हुई वस्तु न देकर उसे चिढ़ाने के लिए अँगूठा दिखाने की अशिष्ट मुद्रा। ठेंगा। २ स्त्री की दोनो हाथो की मुट्ठियाँ बाँधकर तथा कमर पर रखते हुए मटक कर चलने की क्रिया या भाव। उदा०—हुठ्यौ दै इठलाइ दुग, करैं गँवारि सुवार।—बिहारी।

**हूड़**—वि० [हूण (जाति)] १. उजड्ड। गँवार। २ अनाड़ी। मूर्ख। ३ जिद्दी। हठी।

**हूडा**—पुं०[देश०] दक्षिणी भारत में होनेवाला एक प्रकार का बाँस।

**हूण**—पुं०[?] एक प्राचीन असभ्य और क्रूर मगोल जाति, जो पहले चीन की पूर्वी सीमा पर लूट-मार किया करती थी, पर ई० चौथी, पाँचवी सदियों से अत्यन्त प्रबल होकर एशिया, यूरोप के सभ्य देशों पर आक्रमण करती हुई बहुत दूर तक फैल गई थी। पर जान पड़ता है कि बाद मे यह अन्य असभ्य जातियों में मिलकर समाप्त हो गई थी। २. बहुत बड़ा उजड्ड और क्रूर व्यक्ति।

**हूआ***—अ०=होना। उदा०—हूण देह हरि के चरन निवासा।—कबीर।

**हूडंना**—स०[?] बार बार ठोकर या आघात लगाकर तोडना-फोडना। (बुंदेल०) उदा०—उठते सींगों से घने घने को हूडें।—मैथिली शरण।

**हूदा**—वि० [फा० हूद:] ठीक। दुरुस्त।
**पद—बेहूदा।**
†पुं०=बेहूदा।

**हूनना**—स०[सं० हवन] १. आग में डालना। २ आग पर रखकर भूनना। ३. विपत्ति में फँसाना।

**हूनिया**—स्त्री० [हूण (देश०)] एक प्रकार की तिब्बती भेड।

**हूब**—स्त्री०=हूब।

**हू-बहू**—वि० [अ०]१. पहले या मूलत: जैसा रहा हो ठीक वैसा ही। २. किसी के बिलकुल अनुरूप या समान।

**हूय**—पुं० [सं०] आवाहन करना। बुलाना। जैसे—देव-हूय, पितु-हूय।

**हूर**—स्त्री० [अ०] मुसलमानों के अहिश्त अर्थात् स्वर्ग की अप्सरा।
†पुं०=हुर (जाति)।

**हुरना**—स० [हिं० हुलना] १. जोर से घुसाना या धँसाना। हुलना। २. जोर से धक्का देना। ढकेलना।
स० [हिं० हुरा] मुक्कों से मारना।
स० [?] बहुत अधिक भोजन करना।

**हुर-हूण**—पु० [स०] हूणों की एक शाखा जिसने यूरोप में जाकर हलचल मचाई थी। श्वेत-हूण।

**हुरा**—पु० [अनु०] घूँसा। मुक्का।
पु०=हुला।

**हुरा-हुरो**—स्त्री० [स०] एक त्योहार या उत्सव, जो दिवाली के तीसरे दिन होता है।
स्त्री० [हिं० हूरना] १. आपस में एक दूसरे को ढकेलते हुए मारना-पीटना। २ उक्त प्रकार की लड़ाई करने के लिए तत्परता दिखाना।

**हुल**—स्त्री० [स० शूल] १ हुलने अर्थात् नुकीली चीज जोर से गड़ाने, धँसाने या भोंकने की क्रिया या भाव। २ लासा लगाकर चिड़िया फँसाने का बाँस या लग्घी। ३. शूल। हूक।
स्त्री० [स० हुल-हुल] १ कोलाहल। हल्ला। धम। उदा०—पुरी हुल, जोगिन गद छेका।—जायसी। २ हर्ष-ध्वनि। ३ ललकार। ४. आनन्द। खुशी। प्रसन्नता।

**हुलना**—स० [हिं० हुल+ना (प्रत्य०)] १. लाठी, भाले, तलवार आदि का सिरा किसी चीज में धँसाना। २ हूल या तीव्र वेदना उत्पन्न करना।

**हुल-फूल**—स्त्री० [हिं० हुल+अनु०] आनन्द। प्रसन्नता।

**हुला**—पु० [हिं० हुलना] शस्त्र आदि हुलने की क्रिया या भाव।
क्रि० प्र०—देना।

**हुस**—वि० [हिं० हुड़] अशिष्ट और असभ्य। उजड्ड।

**हूँसड़ा**—वि०=हुस।

**हूह**—स्त्री० [अनु०] हुंकार।
**मुहा०—हूह देना**=जोर से हूह शब्द करना। हुंकारना।

**हू-हू**—पु० [अनु०] अग्नि के जलने का शब्द। जैसे—आग हू-हू करके जल रही थी।

**हृच्छूल**—पु० [स० हृत्-हृदय+शूल] छाती के नीचेवाले भाग में होनेवाली एक प्रकार की बहुत ही भीषण और विकट पीड़ा, जिससे रोगी का दम घुटने लगता है। (एनाजिना पैक्टोरिस)

**हृत**—भू० कृ० [सं० √हृ (हरण करना)+क्त] १ जिसे ले गये हो। पहुँचाया हुआ। २ जो हरण किया गया हो। छीना हुआ। ३. चुराया या जबरदस्ती लिया हुआ। ३ समस्त पदों के आरम्भ में, रहित या वंचित किया हुआ। जैसे—(क) हृतवंध जिसके भाई-बंधु छिन गये हों। (ख) हृत-मानस=बेसुध या बेहाश।

**हृति**—स्त्री० [स० √हृ (हरण करना)+क्तिन्] १ हरण करने की क्रिया या भाव। हरण। २. लूट। ३ नाश।

**हृत्कंप**—पुं० [स० ष० त०] १. हृदय का काँपना। हृदय में होनेवाला कंपन। २. एक रोग जिसमें हृदय कुछ समय तक या बार बार धड़कता रहता है। धड़कन। (पैल्पिटेशन आफ़ हार्ट) ३. आशंका, भय आदि के कारण दहलना।

**हृत्तंत्री**—स्त्री० [स० मध्य० स०] हृदय रूपी तंत्री या वीणा।

**हृत्पिंड**—पु० [स० ष० त०] हृदय का कोष या थैली। कलेजा।

**हृत्पुरुष**—पु०=चैत्यपुरुष। (देखें)

**हृद्**—पु० [स०] हृदय। दिल।

**हृदयंगम**—वि० [स० हृदय√गम् (प्राप्त होना)+खच्-मुम्] १. हृदय या मन में अच्छी तरह आया और बैठा हुआ। २. अच्छी तरह समझ में आया और बैठा हुआ।

**हृदय**—पु० [स० √हृ (हरण करना)+कयन्-दक् च] १. प्राणियों के शरीर में छाती के अंदर बाईं ओर का वह मांस कोष जिसके स्पन्दन के फलस्वरूप सारे शरीर की नाड़ियों में रक्त-संचार होता रहता है। कलेजा। दिल।
**विशेष**—महा० के लिए दे० 'कलेजा' और 'दिल' के महा०।
२ इसी के पास छाती के मध्यभाग में माना जानेवाला वह अंग जिसमें, प्रेम, हर्ष, शोक, करुणा, क्रोध आदि मनोविकार उत्पन्न होते और रहते हैं। (हार्ट, उक्त दोनों अर्थों के लिए) जैसे—यदि तुम में हृदय होता, तो तुम कभी ऐसे निष्ठुर न होते।
**पद—हृदय की गाँठ**=मन में बैठा हुआ घृणित या बैर।
**मुहा०—हृदय उमड़ना**=करुणा, प्रेम आदि के कारण मनःप्रवृत्ति और विकल होना। **हृदय भर आना**=हृदय उमड़ना। **हृदय विदीर्ण होना**=करुणा, शोक आदि के कारण मन में बहुत अधिक कष्ट या घबराहट होना। ३. अंतःकरण। विवेक। जैसे—(क) इसका हृदय तो यह कहता है कि उसने ऐसी क्रूरता कभी न की होगी। (ख) तुम अपने हृदय से पूछो कि ऐसा होना चाहिए या नहीं। ४. वक्षःस्थल। छाती।
**मुहा०—(किसी को) हृदय से लगाना**=(क) आलिंगन करना। गले लगाना। (ख) आत्मीय और प्रिय बनाना। जैसे—माधवाचार्य जी तो बराबर यह कहते थे कि अच्युतजी को हृदय से लगाओ।
५. परम प्रिय व्यक्ति। प्राणाधार। ६ किसी वस्तु का सार भाग। ७. बहुत ही गूढ़ या गूढ़ बात। रहस्य। ८ किसी काम या बात का मूल कारण या स्रोत।

**हृदय-ग्रह**—प० [स० हृदय√ग्रह् (पकड़ना)+अच्—ष० त०] कलेजे में होनेवाली शूल या ऐंठन।

**हृदय-ग्राही (हिन्)**—वि० [स० हृदय√ग्रह (पकड़ना)+णिच्—णिनि] १ हृदय को ग्रहण करने अर्थात् पकड़न वाला। दिल को जीतनेवाला। २ आकर्षक और सुन्दर। ३ रुचिकर।

**हृदय-निकेत**—पु० [स० ब० स०] मनसिज। कामदेव।

**हृदय-प्रभाषी (षिन्)**—वि० [स०] [स्त्री० हृदय-प्रभाषिणी] १ मन का अस्थिर या चंचल करनेवाला। २ मन को मोहित करनेवाला।

**हृदय-वल्लभ**—पु० [स० ष० त०] [स्त्री० हृदय-वल्लभा] परम प्रिय व्यक्ति। प्रियतम।

**हृदयवान् (वत्)**—वि० [स० हृदय+मतुप्] [स्त्री० हृदयवती] १. दिलवाला। सहृदय। २ भावुक। रसिक।

**हृदय-विदारक**—वि० [स० ष० त०] १ हृदय को विदीर्ण करनेवाला। जिससे दिल फटने लगे। २ अत्यन्त शोक पैदा करनेवाला। ३. मन में परम करुणा या दया उत्पन्न करनेवाला।

**हृदयवेधी (धिन्)**—वि० [स० हृदय√विध (वेधन करना)+णिनि] [स्त्री० हृदयवेधिनी] १. हृदय को वेधनेवाला। दिल को घायल करने

वाला। जैसे—हृदयवेधी कटाक्ष। २. मन को बहुत व्यथित करनेवाला। ३ मन को बहुत अप्रिय या बुरा लगनेवाला।

**हृदय-तबद्ध**—पु०[स० ष० त०] हृदयातिपात। (हार्ट फेल्योर)

**हृदय-स्पर्शी (र्शिन्)**—वि० [स० हृदय√स्पर्श (छूना) +णिच्+णिनि] [स्त्री० हृदयस्पर्शिणी]१. हृदय को स्पर्श करनेवाला। दिल को छूनेवाला। २ दिल पर असर करनेवाला। ३ मन में क्या उत्पन्न करके उसे द्रवित करनेवाला।

**हृदयहारी (रिन्)**—वि० [स० हृदय√हृ+णिनि] [स्त्री० हृदय-हारिणी] मन मोहनेवाला या लुभानेवाला। मनोहर।

**हृदयातिपात**—पु० [स० हृदय+अतिपात] एक रोग जिसमें हृदय की गति सहसा बन्द हो जाने से प्राणी की मृत्यु हो जाती है। (हार्ट-फेल्योर)

**हृदयामय**—पु० [स०]=हृद्रोग।

**हृदयालु**—वि० [स० ष० त० हृदय+आलुच्] १. सहृदय। भावुक। २ सुशील।

**हृदयावरण**—पु० [स०हृदय+आवरण, ष० त०] शरीर के अन्दर का वह झिल्ली के हृदय को चारों ओर से घेर रहता है। (पेरीकार्डियम)

**हृदयावसाद**—पु० [स० हृदय+अवसाद] चिकित्सा के क्षेत्र में, प्राण मृत्यु से पहले होनेवाली वह स्थिति जिसमें मनुष्य की सारी शक्तिया क्षीण हो जाती है और वह अचेत तथा निश्चेष्ट हो जाता है। (कालैप्स)

**हृदयाक, हृदयी (यिन्)**—वि० [स० हृदय+ठन—इक]१ हृदय-संबंधी। २ दिलवाला। ३. साहसी। ४. सहृदय।

**हृदयेश**—पु०[स० ष० त०] [स्त्री० हृदयेशा] हृदयेश्वर (प्रियतम)।

**हृदयेश्वर**—पु०[स० ष० त०] [स्त्री० हृदयेश्वरी]१ प्रेमपात्र। प्रियतम। २ स्त्री के लिए उसका पति।

**हृदयोन्मादिनी**—स्त्री० [स० हृदय-उत्√मद् (नशा करना)+णिनि-ङीप्] कुछ लोगों के मत से संगीत में एक श्रुति।

**हृदयोन्मादी**—वि० [स० हृदयोन्मादिन्] [स्त्री० हृदयोन्मादिनी]१. हृदय को उन्मत्त या पागल करनेवाला। २ मन को पूर्ण तरह से मोहित करनेवाला।

**हृद्गत**—वि० [स० सप्त० त०] १. हृदय में होनेवाला। हृदय का। आन्तरिक। जैसे—हृद्गत भाव। २ मन में जमा या बैठा हुआ। ३. प्यारा। प्रिय।

**हृद्य**—वि०[स० हृद्+यत्] १. हृदय संबंधी। हृदय का। २. हृदय में रहने या होनेवाला। हार्दिक। ३. हृदय को अच्छा या भला लगनेवाला। मनोहर या सुन्दर। ४ स्वादिष्ट।

पु० १ प्राचीन भारत में वे मंत्र, जो दूसरों के हृदय पर अधिकार पाने अथवा दूसरों को अपने वश में करने के लिए जपे या पढ़े जाते थे। २. महुए की शराब। ३. दही। ४. सफेद जीरा। ५ कपित्थ। कैथ।

**हृद्गंध**—पु०[स० ब० स०]१ बेल का पेड या फल। २ सोंचर नमक।

**हृद्भानु**—पु०[स० ब० स०] चद्रमा।

**हृद्या**—स्त्री०[स० हृद्य-टाप्] १. वृद्धि नाम की जड़ी। २. बकरी।

**हृद्रोग**—पु०[स० ष० त०] १. हृदय में होनेवाला कोई रोग। (हार्ट डिसीज)२. फुंसी राशि।

**हृल्लास**—पु०[सं० ब० स०] बार-बार कै या वमन करने की जी चाहना। मितली। मिचली। गोंडिया।

**हृषि**—स्त्री०[स०]१ हर्ष। आनन्द। २ आभा। चमक।

**हृषित**—भू० कृ० [सं०√हृष् (खुश होना) +क्त]१. जिसे हर्ष हुआ हो। हर्षित। २ रोमांचित। ३ चकित। ४ शस्त्रास्त्र से सज्जित। ५ हताश।

**हृषीक**—पु०[स० √हृष् +ईकक्] इंद्रिय।

**हृषीकेश**—पु०[स० ष० त०] १. विष्णु जो इंद्रियों के स्वामी कहे जाते हैं। २ श्रीकृष्ण का एक नाम। ३ पूस का महीना। पौष मास।

**हृष्ट**—वि० [स० √हृष् (खुश होना) +क्त] १ हर्षित होनेवाला। प्रसन्न। २. उठा या खड़ा हुआ (शरीर का रोआं) ३. जो कठोर या कड़ा हो गया हो।

**हृष्ट-पुष्ट**—वि०[स०] जो मोटा-ताजा और फलत प्रसन्न तथा सुखी हो।

**हृष्टयोनि**—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार का नपुंसक।

**हृष्ट्**—स्त्री०[स० √हृष् (खुश होना) +क्तिन्]१ हर्ष। प्रसन्नता। २. गर्व से इतराना या फूलना।

**हृष्यका**—स्त्री०[स०] संगीत में, एक मूर्च्छना जिसका स्वर-ग्राम इस प्रकार है—प ध नि स रे ग म। धनि सरे गम पध नि सरे गम।

**हेगा**†—पु० [स० अश्वग=पोतना] जोते हुए खत को मिट्टी बराबर करने का पाटा।

क्रि० प्र०—चलाना।

**हेंगाई**†—स्त्री०[हिं० हेंगा] खत में हेंगा चलाने की क्रिया, भाव या मजदूरी।

**हेंगाना**†—स [हिं० हेंगा] खेत में हेंगा चलाना।

**हेंगुरी**†—स्त्री०=उँगली। उदा०—हेंगुरी एक खेल दुई गाटा।—जायसी।

**हेंच**†—पु०=हिंस।

**हें हें**—पु०[अनु०]१. तुच्छतापूर्वक घीरे-से हँसने की क्रिया या शब्द। २. दीनतापूर्वक या गिड़गिड़ाकर कही जानेवाली बात।

**हे**—अव्य० [स०] संबोधन सूचक अव्यय। जैसे—हे राम।

†अ० ब्रज भाषा के 'हों' (था) का बहु० रूप। थे। उदा०—मानी हार बिमुख बुरजोधन जाके जोधा हे सौ भाई।—सूर।

**हेउ सी**—स्त्री०[देश०] देशावरी रूई।

**हेक**—वि० [हिं० एक]१. एक। उदा०—हय न लागी हेक, पारस राणे प्रतापसी।—बुरसाजी। २ एक-दो। बहुत थोड़। कुछ।

**हेकड़**—वि० [हिं० हिया+कड़ा] १ मोटा-ताजा। हट्टा-कट्टा। २ उग्र और प्रचंड। ३. अक्खड और उद्दंड। ४ तौल से पूरा। (बाजारू)

**हेकड़ा**—पु० [हिं० हेकड] समूह गान में वह व्यक्ति जो किसी बोल या स्वर को बहुत अधिक लंबा खींचता हो।

**हेकड़ी**—स्त्री०[हिं० हेकड] १. हेकड़ होने की अवस्था, गुण या भाव। २. अक्खडपन मिली हुई उद्दंडता। ३ बल-प्रयोग। जबरदस्ती।

**हेकली**†—वि०=अकेला। (राज) उदा०—लाखा बाता हेकलो चूड़ी मो न लजाय।—कवि राजा सूर्यमल।

**हेका**†—अव्य० [स० एक] एक ओर। (राज०) उदा०—हेका कह हेका हीलो हुल।—प्रिथीराज।

**हेक्का**—स्त्री०[स० हिक्का+पु०रू०] हिक्का। हिचकी।

**हेच**—वि० [स० हेय से फा०?] १. जिसका कुछ भी महत्त्व न हो। तुच्छ। २ निःसार।

**हेजमा**†—पु० [अ० हज्जाम] १. नाई। हज्जाम। २ दूत जिसका काम पहले हजाम लोग ही करते थे।

**हेठ**—वि० [स० अवस्थ. प्रा० अहट्ठ] १ नीचा। जो नीच हो। २ किसी की तुलना मे घटकर या हीन।

क्रि० वि० नीचे की ओर। नीचे।

पु०[स०] १. बाधा। विघ्न। २ नुकसान। हानि। ३. आघात। चोट।

**हेठा**—वि०[हिं० हेठ] १ जो नीचे हो। नीचा। २ किसी की तुलना मे तुच्छ या हेय। ३ तुच्छ।

**हेठापन**—पु०[हिं० हेठा+पन (प्रत्य०)] 'हेठा' होने की अवस्था, गुण या भाव। तुच्छता। नीचता।

**हेठी**—स्त्री०[हिं० हेठा] १. प्रतिष्ठा मे होनेवाली कमी। मान-हानि। २. अपमान। बेइज्जती। ३ जहाज मे पाल का पाया। (लश०)

**हेड**—पु०[स०√हेड् (अनादर करना)+अच्] उपेक्षा या अपमान करना।

वि०[अ०] प्रधान। मुख्य। जैसे—हेड आफिस, हेडमास्टर।

**हेड़ा**—पु० [देश०] मांस। गोश्त।

**हेडिंग**—स्त्री०[अ०] -शीर्षक।

**हेडि**—स्त्री० - हेड़ी। (राज०)

**हेडी (ड़ी)**—स्त्री० [हिं० हेड़ी] १ बिक्री के लिए बाजार मे लाये जानेवाले पशुओ का दल। २. झुड।

†पु० शिकारी।

**हेत**†—अव्य० [स० हेतु] १. लिये। वास्ते। २ चक्कर या फेर मे। सबय दिन गये विषय के हेत।—सूर।

†पु० =हेतु।

**हेति**—स्त्री०[स० √हन् (मारना)+क्तिन् कण्णे] १ वज्र। २ अस्त्र। ३ भाला। ४ घाव। चोट। ५ सूर्य की किरण। ६ आग की लपट। लौ। ७ धनुष की टकार। ८. औजार। ९ अकुर।

पु० १. पुराणानुसार वह प्रथम राक्षस राजा जो मधमास या चैत्र मे सूर्य के रथ पर रहता है। यह प्रहेति का भाई और विद्युत्केश का पिता कहा गया है। (वैदिक)

†पु० [हिं० हितू] रिश्तेदार। सबधी। उदा०—मदन के हेति डोर ज्ञानहू के कन रेति...।—सेनापति।

**हेतु**—पु [स०√हि+तुन्] १ वह मूली बात जिसे ध्यान मे रखकर अथवा जिसके उद्देश्य या विचार से कोई काम किया गया हो या कोई बात कही गई हो। अभिप्राय। उद्देश्य। (मोटिव) जैसे—वहाँ जाने मे मेरा एक विशेष हेतु था। २ कारण। वजह। सबब।

**विशेष**—यद्यपि हेतु का एक अर्थ कारण भी होता है। फिर भी कारण और हेतु मे तात्त्विक दृष्टि से बहुत अतर है। कारण मुख्यत वह क्रिया, घटना या व्यापार है जिसका कोई परिणाम या फल प्रस्तुत होता है। जैसे—चूल्हे मे चिनगारी रह जाना ही घर में आग लगने का कारण था। परन्तु हेतु वस्तुत: वह इच्छा, उद्देश्य या मनोगत भाव है जो कोई काम करने के लिए प्रवृत्त करता अथवा उसका प्रेरक होता है, और जिसके फलस्वरूप कोई कार्य या व्यापार होता है। जैसे—उसकी हर बात मे कुछ-न-कुछ हेतु होता है।

३. न्याय-शास्त्र मे वह तर्क या युक्ति जिसका कोई निष्कर्ष निकलता हो या जो कोई बात प्रमाणित या सिद्ध करने के लिए उपस्थित की गई हो। साधक। जैसे—जो हेतु अभी आपने उपस्थित किया है, वह आपकी इन बातो से सिद्ध नही होता। ४. किसी प्रकार का साधारण तर्क या दलील। ५ साहित्य म, एक प्रकार का अर्थालकार जिसमे या तो (क) कारण के होते ही कार्य के भी हो जाने का उल्लेख होता है। (जैसे—उन्हे देखते ही मेरे मन म श्रद्धा उत्पन्न हुई थी।) अथवा (ख) कारण का ही कार्य रूप मे उल्लेख होता है। (जैसे—आपकी कृपा ही मेरा कल्याण है।)

†पु०[स०हित] प्रम। स्नेह। उदा०—देखि भरत पर हेतु।—तुलसी।

**हेतुकी**—स्त्री०[स० हेतु+कै] वह शास्त्र जिसमे रोगो के निदान या पहचान का विवेचन होता है। निदान-शास्त्र। (टटियाखाजी)

**हेतुता**—स्त्री०[स० हेतु+तल्—टाप्] हेतु की अवस्था, गुण या भाव।

**हेतुत्व**—पु०[स०]—हेतुता।

**हेतु-भेद**—पु०[स०] ज्योतिष म ग्रह-युद्ध का एक भेद। (बृहत्संहिता)

**हेतुमत् (मत्)**—वि० [स० हेतु+मतु] [स्त्री० हेतुमती] जिसका कुछ हेतु हो। हेतु-मूलक।

पु० हेतु के फल-स्वरूप होनेवाला कार्य।

**हेतु-वचन**—पु०[स० मध्य० स०] किसी बात के कारण के सबध मे होनेवाली बहस या विवाद।

**हेतुवाद**—पु० [स० हेतु√वद् (कहना)+घञ्] १ सब बातो का हेतु ढूँढना या सबके विषय मे तर्क करना। २ नास्तिकता-पूर्ण कुतर्क। ३ व्यर्थ की कहा-सुनी या वाद-विवाद। ४. दे० 'तर्क-शास्त्र'।

**हेतुवादी**—वि०[स० हेतुवादिन्] [स्त्री० हेतुवादिनी] १ तार्किक। दलील करनेवाला। २ नास्तिक।

**हेतु विज्ञान**—पु०[स०]=हेतुकी।

**हेतुविद्या**—स्त्री०[स०ष० त०] तर्क शास्त्र।

**हेतु-शास्त्र**—पु०[स० ष० त०]१. वह शास्त्र या शास्त्र जिसमे स्मृतियों आदि का खडन या विरोध हो। २ तर्कशास्त्र।

**हेतु-हेतुमद्भाव**—पु०[स०]१. कार्य और कारण का भाव। २ कारण और कार्य का सबध।

**हेतु हेतुमद्भूतकाल**—पु०[स०]व्याकरण मे, क्रिया के भूतकाल का वह भेद या रूप जिसमे ऐसी दो बातो का न होना सूचित होता है जिनमे दूसरी पहली पर निर्भर रहती है। जैसे—यदि तुम मुझसे माँगते तो मैं अवश्य देता।

**हेतूत्प्रेक्षा**—स्त्री० [स० ब० स०] साहित्य मे, उत्प्रेक्षा अलकार का एक भेद जिसमे अहेतु को हेतु अथवा अकारण को कारण मानकर किसी प्रकार की उत्प्रेक्षा की जाती है। यथा—मोर-मुकुट की चन्द्रकनि, यो राजत नँद नन्द। मनु ससि-सेखर की अकस, किअ सेखर सत-चन्द।—बिहारी।

**हेत्वापह्नुति**—स्त्री० [स०] साहित्य मे, अपह्नुति अलकार का एक भेद जिसमे उपमेय का सकारण निषेध करते हुए उपमान की स्थापना की जाती है। यथा—सिवसरजा के कर लसे सोन होय किरवान।—भूज-भुजगेस भुजगिनी, भखति पौन औ पान।—भूषण।

**हेत्वाभास**—पु० [सं० हेतु-आ√भास् (प्रकाशित होना)+अच्—घञ् वा] तर्कशास्त्र में, वह अवस्था जिसमें वास्तविक हेतु का अभाव होने पर या किसी अवास्तविक अनइ हेतु के वर्तमान रहने पर भी वास्तविक हेतु का आभास मिलता या अस्तित्व दिखाई देता है; और उसके फल-स्वरूप भ्रम होता या हो सकता है। (फैलेसी)

**विशेष**—भारतीय नैयायिकों ने इसके ये पाँच भेद कहे हैं—स-व्यभिचार, विरुद्ध, प्रकरणसम, साध्य-सम और कालातीत।

**हेमंत**—पुं० [सं० हि+झ-अन्त-मद्+च] छ ऋतुओं में से पाँचवीं ऋतु, जिसमें अगहन और पूस के महीने पड़ते हैं। जाड़े का मौसम। शीत-काल।

**हेमंती**—स्त्री० [सं०] जाड़े का मौसम। हेमंत ऋतु।

**हेम**—पु० [सं० हि+मन्] १ हिम। पाला। २ सोना। स्वर्ण। ३ कपित्थ। कैथ। ४ नागकेसर। ५ एक माशे की तौल। ६. बादामी रंग का घोड़ा। ७. गौतम बुद्ध का एक नाम।

**हेम-कंदल**—पु० [सं० हेमकन्द√ ला (लेना)] मूँगा।

**हेमक**—पु० [सं०] १ सोने का टुकड़ा। २. एक प्राचीन वन।

**हेम-कल्याण**—पु० [ग०] संगीत में, कल्याण राग का एक प्रकार या भेद।

**हेम-कांति**—स्त्री० [सं० ब० स०] १. वन-हलदी। २ आँवा हलदी।

**हेम-कूट**—पुं० [सं० ब० स०] पुराणों के अनुसार एक पर्वत जिसकी चोटी सोने की मानी गई है। यह हिमालय के उत्तर और मेरु के दक्षिण में कि पुरुषवर्ष तथा भारतवर्ष के बीच में माना गया है।

**हेम-केश**—पु० [सं० ब० स०] शिवजी का एक नाम।

**हेम-गर्भ**—पु० [सं० ब० स०] उत्तर दिशा का एक पर्वत। (वाल्मीकि)

**हेमगिरि**—पु० [सं० मध्य० स०] सुमेरु पर्वत (जो सोने का कहा गया है)।

**हेमधन**—पु० [सं०] सीसा नामक धातु।

**हेमज**—वि० [सं० हेम√जन् (उत्पन्न होना)+ड] हेम से उत्पन्न।

पु० रांगा।

**हेमतर**—पु० [सं०] धतूरा।

**हेमतार**—पु० [सं० हेम√तृ (उत्कृष्ट करना)+णिच्—अण्] नीला थोथा। तूतिया।

**हेम-ताल**—पु० [सं०] उत्तराखंड का एक पहाड़ी प्रदेश।

**हेम-तुला**—स्त्री० [सं०] वह तुला-दान जिसमें किसी के भार के बराबर सोना तौलकर दान किया जाता है।

**हेम-पर्वत**—पु० [सं० मध्य० स०] १ सुमेरु पर्वत। २ दान के लिए बनाया जानेवाला सोने का पहाड़।

**हेम-पुष्प**—पु० [सं० ब० स०] १. चंपा। २ अशोक वृक्ष। ३. नाग-केसर। ५. अमलतास।

**हेम-पुष्पिका**—स्त्री० [सं०] १. सोनजुही। २ गुड़हर।

**हेम-पुष्पी**—स्त्री० [सं० हेमपुष्प—ङीप्] १ मजीठ। २ मूसली-कंद। ३. कंटकारी।

**हेम-फला**—स्त्री० [सं० ब० स०] एक प्रकार का केला।

**हेम-बाला**—स्त्री० [सं० ब० स०] यम की पत्नी।

**हेम-माली**—पुं० [सं० हेममालिन्] १. सूर्य। २. खर नामक राक्षस का पिता।

**हेम-मुद्रा**—स्त्री० [सं० ष० त०] सोने का सिक्का। अशरफी। मोहर।

**हेम-यूथिका**—स्त्री० [सं० उपमि० स०] सोनजुही।

**हेम-रागिनी**—स्त्री० [सं० हेमराग+इनि—ङीप्] हलदी।

**हेमरेणु**—पु० [सं०] त्रसरेणु।

**हेमलंब, हेमलंबक**—पु० [सं०] बृहस्पति के साठ संवत्सरों में से ३१वाँ संवत्सर।

**हेमल**—पु० [सं० हेम√ला (लेना)+क] १. सोनार। २ कसौटी। ३. गिरगिट। ४. छिपकली।

**हेमवती**—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**हेम-सागर**—पु० [सं०] १ एक प्रकार का पौधा, जिसे 'जरूमहयात' भी कहते हैं। २ एक प्रकार का बढ़िया आम जो बंगाल में होता है।

**हेमसार**—पु० [सं० हेम√ सृ (निर्मल करना)+णिच—अण्] नीला थोथा। तूतिया।

**हेम-सुता**—स्त्री० [सं०] पार्वती। दुर्गा।

**हेमांग**—पु० [सं० ब० स०] १ ब्रह्मा। २ विष्णु। ३ गरुड़। ४. सिंह। ५ चंपा।

**हेमांगद**—पु० [सं० ष० त०] १ सोने का विजायठ। २. वसुदेव का एक पुत्र।

**हेमा**—स्त्री० [सं०] १ सुन्दरी स्त्री। २ पृथ्वी। ३ माधवी लता।

**हेमाचल**—पु० [सं० मध्य० स०] सुमेरु पर्वत।

**हेमाद्रि**—पु० [सं० मध्य० स०] सुमेरु पर्वत।

**हेमाल**—पु० [सं०] एक राग जो दीपक का पुत्र कहा जाता है।

†वि० [सं० हिम] बरफ की तरह ठंडा। शीतल।

†पु० हिमालय।

**हेम्न**—पु० [सं०] मंगल-ग्रह।

**हेम्ना**—स्त्री० [सं०] संगीत में संकीर्ण राग का एक भेद।

**हेम्य**—वि० [सं० हेम+यत] १ सोने का। २ सुनहला।

**हेय**—वि० [सं० √हा (छोड़ना)+यत्] १ घृणित तथा तुच्छ। २ फलतः छोड़ने या त्यागने योग्य। ३. गमन करने या जानेवाला।

**हेरंब**—पुं० [सं० हे√रम्ब+अच्, अलक्] १. गणेश। २ बुद्ध का एक नाम। ३. धीरोद्धत नायक। ४ भैंसा।

**हेरंबक**—पुं० [सं०] एक प्राचीन जाति।

**हेर**—प० [सं०] १ किरीट। २ हलदी। ३ आसुरी माया।

†स्त्री० [हिं० हेरना] १ हेरने की क्रिया या भाव। २. खोज। तलाश। ३ प्रेमपूर्ण चितवन या दृष्टि। उदा०—हरी हरिहारी हारि है हे रे री हेरी।—सेनापति।

†पु०=अहेर (शिकार)।

**हेरक**—पु० [सं०] शिव के एक गण का नाम।

†वि० [हिं० हेरना] हेरने या ढूँढ़नेवाला।

**हेरनहार**—वि० [हिं० हेरना] हेरनेवाला।

**हेरना**†*—स० [हिं० अहेर] १. तलाश करना। ढूँढना। खोजना। २. ढूँढ़ने के लिए इधर-उधर देखना। ३. ताकना। देखना। ४. जाँचना। परखना।

**हेरना-फेरना**—स० [हिं० हेरना+फेरना] १. इधर-उधर करना। हेर-फेर करना। २. अदला-बदली करना। बदलना। विनिमय करना।

**मुहा०—हेर-फेर कर=(क) घूम फिरकर। (ख) घुमाव-फिराव की बातें करके।**

**हेर-फेर**—पु०[हिं० हेरना+फेरना]१. घुमाव। चक्कर। २ चक्कर में डालनेवाली या घुमाव फिराव की और पेंचीली बात। ३ चाल-बाजी। दाँव-पेंच। ४ अदला-बदली। विनिमय। ५. अन्तर। फरक। ६ किसी चीज के कुछ अंश हटा बढ़ाकर इधर उधर करना या निकाल देना और उनके स्थान की पूर्ति नये अंशों से करना। रद्दोबदल। (आल्टेशन)

**हेरवा**†—पु० [हिं० हेरना] १. तलाश। ढूँढ़। खोज। २ किसी के चले जाने पर उसे खोजने और उसके न मिलने पर बच्चों को होनेवाला दुख या पड़नेवाला वियोगजन्य कुप्रभाव।

क्रि० प्र०—पड़ना।

**हेरवाना**†—स० [हिं० हेराना] खोना। गँवाना।

संयो० क्रि०—डालना।—देना।

स०[हिं० हेरना का प्रे०] तलाश करवाना। ढूँढ़वाना।

**हेराना**†—अ०[स० हरण]१ किसी चीज का खो जाना। गुम होना। २ किसी वस्तु का निरौहित या पहुँच के बाहर होना। उदा०—नयनन नींद हेरानी।—गुलाबिप्रिया। ३ किसी चीज या बात का अभाव या तिरोभाव होना, न रह जाना। उदा०—(क) गन न हेरानो, गुन-गाहक हेरानो है। (ख) ऊधो को गम ज्ञान हेरायो।—सूर। ३ ऐसी अवस्था में रहना या होना कि ढूँढने पर भी जल्दी पता न मिले। ४. आत्म-विस्मृत होना। अपनी सुध-बुध भूलना। उदा०—नित नई नई रुचि बन हेरत हेराइ री।—केशव।

संयो० क्रि०—जाना।

स०[हिं० हेरना का प्रे०] तलाश कराना। ढूँढ़वाना।

म० खो या गँवा देना। गुम कर देना।

**हेरा-फेरी**—स्त्री०[हिं० हेरना+फेरना] इधर का उधर या उधर का इधर होने की अवस्था या भाव। हेर-फेर।

**मुहा०—हेरा-फेरी करना**=(क) इधर से उधर आते-जाते रहना। (ख) चीजें इधर से उठाकर उधर और उधर से उठाकर इधर रखना। (ग) अदल-बदल करना।

**हेरिक**—पु०[स० √हि+इक—रुट् च] गुप्तचर। भेदिया।

**हेरियाना**—पु०[देश०] जहाज के अगले पालों की रस्सियाँ तानकर बाँधना। हेरिया मारना। (लश०)

**हेरी**†—स्त्री०[हिं० हेरना] बुलाने के लिए दी जानेवाली आवाज। पुकार।

**मुहा०—हेरी देना**=पुकारना। उदा०—कोउ हेरी देत, परस्पर स्याम सिखावत।—सूर।

**हेरुक**—पुं० [सं०√हि+उक् रुट् च] १. गणेश का एक नाम। २. महादेव का एक नाम। ३ एक बोधिसत्व।

**हेल**—स्त्री० [हिं० हेलना] हेलने की क्रिया या भाव।

पु०[हिं० हिलना=परचना] किसी से हिल-मिल जाने की क्रिया या भाव।

**पद—हेल-मेल।**

पु०[हिं० हील]१ कीचड़। २ गोबर आदि का ढेर। ३. ढेर। राशि।

पुं०[सं० हेलन]१. अवज्ञा। उपेक्षा। २. घृणा। नफरत।

हेलन—पु० [स०√हिल् (अनादर करना)+ल्युट्—अन] [वि० हेलनीय, भू० कृ० हेलित] १ तुच्छ समझकर तिरस्कार करना। २. क्रीड़ा या सलोविनोद करना। खेलवाड़। ३ अपराध। कसूर।

हेलना—अ० [सं० हेलन]१. क्रीड़ा करना। केलि करना। २. विनोद या हँसी-ठट्ठा करना। ३ खेलवाड़ की तरह तुच्छ या हेय समझना। ४ तुच्छ समझते हुए अवज्ञा या तिरस्कार करना। ५. ध्यान न देना। उपेक्षा करना। ६ प्रवेश करना। पैठना। जैसे—घर या पानी में हेलना। ७ तैरना।

**हेलनीय**—वि० [सं० √हिल्+अनीयर] उपेक्षा या तिरस्कार के योग्य। उपहास।

**हेल-मेल**—पु०[हिं० हिलना-मिलना]१ हिलने-मिलने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ वह अवस्था जिसमें लोग औरों के साथ अच्छी तरह हिल-मिल जाते और परस्पर घनिष्ठ आत्मीय संबंध स्थापित करते हैं। ३ आपस में इस प्रकार का होनेवाला घनिष्ठ संबंध। परिचय बढ़ जाने पर होनेवाला सख्य-भाव।

**हेलना**—अ०[स०]१ क्रीड़ा या खेलवाड़ के रूप में। २ सहज में।

**हेला**—स्त्री०[सं०√हिल् (अनादर करना)+अ—टाप्]१ किसी को कुछ समझने या उसके प्रति होनेवाली अवज्ञा या तिरस्कार का भाव। २ ध्यान न देना। उपेक्षा। ३ क्रीड़ा। खेलवाड़। ४. शृंगारिक प्रहसन में उत्तेजनापूर्ण प्रेमपूर्ण भावों। वेष्टि। ५. साहित्य में मुख्य नायिका की वे सभी क्रियाएँ जो उसकी शृंगारिक भावनाएँ प्रकट करती हैं।

यौ०—छिन छिन बात बनायो हरी। बार बार्कर उरझत धरै। अति सिंगार मनो मन रचै। ताको कवि हेला छवि कहै।—नन्ददास।

**विशेष**—परवर्ती भाषाचार्यों ने इसकी गणना एक 'शिष्ट हाव' के रूप में की है।

६ परवर्ती साहित्य में, संयोग शृंगार के अन्तर्गत एक विशिष्ट हाव जिसमें नायिका आँखें या भौंहें नचाकर मिलने की अभिलाषा कुछ धृष्टतापूर्ण और अधिक स्पष्ट रूप से प्रकट करती है।

[अव्य०[सं० हेलया] खेलवाड़ के रूप में। बहुत सहज में। उदा०—जेहि बारीस बँधायें हेला।—तुलसी।

प०[हिं० हल्ला]१ पुकार। हाँक। २ धावा। चढ़ाई।

पु०[हिं० रेलना] धक्का। रेला।

पु०[हिं० हेल=खेना]१ उतना बोझ जितना एक बार ठोकरे में रखकर नाव, गाड़ी आदि में ले जा सकें। खेप। पारी। बारी। हल्ला। जैसे—इस हेले में यह काम पूरा हो जायगा।

पु०[हिं० हेल-मेल] [स्त्री० हेलिन] भंगी, मेहतर आदि की तरह की एक जाति जिसका काम मल आदि उठाकर फेंकना है।

**हेलान**—पु० [देश०] डाँड़ को नाव पर रखना। (लश०)

**हेलाल**—पु० हिलाल (चालचन्द्र)

**हेलिकाप्टर**—पु०[अं०] एक प्रकार का बहुत छोटा हवाई जहाज।

**हेलित**—भू० कृ०[स० हेला+इतच्] जिसका हेलन (अवज्ञा या तिरस्कार) हुआ हो।

**हेलिन**—स्त्री० [हिं० हेला] हेला जाति की स्त्री। मेहतरानी। गलीज उठानेवाली।

**हेली***—अव्य० [हिं० हे(संबोधन)+स० अली] हे सखी। उदा०—हेली म्हाँसू हरि बिनि रह्यो न जाय।—मीराँ।
†स्त्री० सखी। सहेली।
वि० [हिं० हेल=निकट संबंध] जिससे हेल-मेल हो।
**पद—हेली-मेली।** (देखें)

**हेली-मेली**—वि० [हिं० हेल-मेल] जिससे हेल-मेल अर्थात् आपसदारी का संबंध और संग-साथ हो।

**हेलुआ†**—पु० [हिं० हेलना=पैठना] पानी में खेला जानेवाला एक प्रकार का खेल। (ब्रज)
†पु०=हलुआ।

**हेलुवा†**—पु०=हेलुआ।
†पु०=हलुआ।

**हेवंत***—पु०=हेमंत।

**हेवर**†—पु०=हैवर।

**हेवाँय†**—पु० [स० हिमालि] पाला। हिम। बर्फ।

**हेव**—पु० [स०] घोड़े की हिनहिनाहट।

**हेषी (षिन्)**—पु० [स० √हिंष् +णिनि] घोड़ा।

**हेस-नेस**—पु० [फा० हस्त=होना+नेस्त=न होना, मि० स० अस्ति+नास्ति] वह स्थिति जिसमें दुविधा या संशय दूर करने के लिए यह निश्चय होता है कि अमुक काम सचमुच हो जायगा या बिलकुल नहीं हो सकेगा।

**हैं**—अ० हिन्दी की 'होना' क्रिया के वर्तमान-कालिक कृदन्त 'है' का विकारी बहु० रूप।
अव्य० [अनु०] एक अव्यय जो आश्चर्य, असम्मति आदि का सूचक है। जैसे—हैं! यह क्या हुआ।
प्रत्य० ब्रजभाषा में 'गा' भविष्यत् कालिक प्रत्यय का बहु०। जैसे—जैहैं, देहैं आदि।

**हैंगुल**—वि० [स०] हिंगुल-संबंधी। ईंगुर का।

**हैंडबिल**—पु० [अ०]=परचा।

**हैंडबैग**—पु० [अ०] चमड़े आदि का एक छोटा बक्स या लबोतरा थैला, जो छोटी-मोटी चीजें रखने के लिए हाथ में लटकाया जाता है।

**हैंडिल**—पु० [अ०] उपकरण, औजार या ऐसी ही और कोई चीज पकड़ने का दस्ता। मठिया। हत्था।

**हैंस**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार का छोटा पौधा, जिसकी जड़ जहरीले फोड़ों को जलाने के लिए घिसकर लगाई जाती है। उदा०—गहन गभीर हैंस मकोई।—नूर मोहम्मद।

**हैं**—अ० [हिं० होना] हिन्दी की 'होना' क्रिया का वर्तमान कालिक एक वचन रूप। जैसे—वह जाता है।

**हैउत†**—पु०=हेमंत (ऋतु)। उदा०—हैउत हैउत ही दिन माँझ समौ करि राख्यौ बसत-बसती।—देव।

**हैकड़†**—वि०=हेकड़।

**हैकड़ी†**—स्त्री०=हेकड़ी।

**हैकल**—स्त्री० [स० हय+गल] १. चौकोर या पान के से दानों की गले में पहनने की एक प्रकार की माला। हमेल। २. उक्त प्रकार की वह बड़ी माला, जो घोड़ों के गले में पहनाई जाती है।

**हैजम**—स्त्री० [देश०] १. सेना की पंक्ति। २. तलवार। (डिं०)



**हैजा**—पु० [अ० हैज] दस्त और कै की साधातिक बीमारी, जो संक्रामक रूप में फैलती है। विसूचिका। (कालरा)

**हैट**—पु० [अं०] पाश्चात्य देशों की वह छज्जेदार बड़ी टोपी, जिससे धूप का बचाव होता है। टोप।

**हैंदा**—पु० [देश०] एक प्रकार का अगर।

**हेतुक**—वि० [स० हेतु+ठण्—इक] १ जिसका कोई हेतु हो। जो किसी उद्देश्य से किया जाय। २ किसी पर अवलंबित या आश्रित।
पु० १ तर्कशास्त्र का पंडित। तार्किक। २ वह जो व्यर्थ के तर्क करना हो। कुतर्की। ३. नास्तिक। ४. मीमांसा-दर्शन का अनुयायी या समर्थक।

**हैवर**—पु० [अ०] शेर।

**हैन**—स्त्री० [देश०] एक प्रकार की घास। तकड़ी।

**हैफ**—अव्य० [अ० हैफ़] खेद या शोक, सूचक शब्द। अफसोस। हाय।

**हैबत**—स्त्री० [अ०] १ भय। त्रास। दहशत। २ आतंक।

**हैबतनाक**—वि० [अ०] भयानक। डरावना।

**हैबर***—पु० [स० हयवर] अच्छा घोड़ा।

**हैमंत-हैमतिक**—वि० [स०] १ हेमन्त से संबंध रखनेवाला। २. हेमंत ऋतु में उत्पन्न होनेवाला।
पु० हेमंत।

**हैम**—वि० [स० हिम+अण्] [स्त्री० हैमी] १. हेम अर्थात् स्वर्ण से संबंध रखनेवाला। २ सोने का बना हुआ। ३. सोने के से रंग का। सुनहला।
पु० १ शिव का एक नाम। २ चिरायता।
वि० [स० हिम] १. हिम-संबंधी। हिम का। २ हेमंत ऋतु से संबंध रखने या उसमें होनेवाला। ३ बरफ में होनेवाला।
पु० १ ओला। पाला। २ ओस।

**हैमन**—वि० [स० हेमन्त+अण्—लोप] १. जाड़े का। शीतकालीन। २ जाड़े के लिए उपयुक्त।
पु०१ हेमंत ऋतु। २ शालि-धान्य।

**हैमवत**—वि० [स० हिमवत्+अण्] [स्त्री० हैमवती] १. हिमालय का। हिमालय-संबंधी। २ हिमालय पर रहने या होनेवाला।
पु०१ हिमालय का निवासी। २ एक प्राचीन धार्मिक संप्रदाय। ३ पुराणानुसार एक भू-खंड या वर्ष का नाम। ४ एक प्रकार का विष। ५ मोती।

**हैमवतिक**—वि० [स० हिमवत्+ठक्—इक] हिमालय पर्वत पर निवास करनेवाला।

**हैमवती**—स्त्री० [स०] १ उमा। पार्वती। २. गंगा। ३. हरीतकी। हड़। ४ अलसी। तीसी। ५. रेणका नामक गंध-द्रव्य।

**हैमवरी**—स्त्री० [स०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**हैमा**—स्त्री० [स० हेम+अण्—टाप्] १. सोनजूही। २. पीली चमेली।

**हैमी**—स्त्री० [स० हैम-ङीप्] १ केतकी। २. सोनजूही।
वि०=हैमा।

**हैयंगवीन**—पु० [स०] एक दिन पहले के दूध के मक्खन से बनाया हुआ घी। ताजे मक्खन का घी।

**हैया†**—पु०=होआ।

**हेरंब**†—वि० [सं०] हेरम्ब या गणेश संबंधी।
पु० हेरब अर्थात् गणेश का उपासक या भक्त। गाणपत्य।

**हैरण्य**—वि०[सं० हिरण+अण्]१. हिरण्य-संबंधी। २ सोने का बना हुआ। ३. सोना उत्पन्न करनेवाला।

**हैरण्यक**—पु०[सं०] स्वर्णकार। सुनार।

**हैरण्यगर्भ**—वि०[सं०] हिरण्यगर्भ-संबंधी।

**हैरण्यवत**—पु०[सं०] जैन पुराणों के अनुसार जम्बू द्वीप के छठें खंड का नाम।

**हैरण्यिक**—पु०[सं० हिरण्य+ठक्—इक] स्वर्णकार। सुनार।

**हैरत**—स्त्री० [अ०] १. आश्चर्य। अचरज। तअज्जुब। २. फारसी संगीत में एक मकाम या राग।

**हैरान**—वि०[अ०] [भाव० हैरानी]१ आश्चर्य, चमत्कार, अप्रत्याशित व्यवहार आदि से चकित तथा स्तब्ध। २ बहुत देर तक दौड़ते-धूपते, खोजने-बूँढ़ने आदि के कारण जो दुःखी तथा व्यग्र हो रहा हो। जैसे—उस दिन तुम्हारा घर खोजते खोजते हम हैरान हो गये।

**हैरानी**—स्त्री०[अ०]१ हैरान होने की अवस्था या भाव। २ विस्मय। ३ परेशानी।

**हैरिक**—पु०[सं०] १. चोर। २ गणचर।

**हैवर**†—पु० [सं० हयवर] अच्छा घोड़ा।

**हैवान**—पु० [अ०] [भाव० हैवानियत] १ पशु। जानवर। इंसान का विपर्याय। २ बहुत ही उजड्ड या गँवार आदमी।

**हैवानात**—पु० [अ०] 'हैवान' का बहुवचन।

**हैवानियत**—स्त्री० [अ०] १ हैवान या पशु होने की अवस्था या भाव। पशुत्व। २. पशुओं का सा और विवेकहीन या क्रूर आचरण। 'इन्सानियत' या 'मनुष्यत्व' का विपर्याय।

**हैवानी**—वि०[अ० हैवान] १. हैवान अर्थात् पशु-संबंधी। २ पशुओं का सा।

**हैस-बैस**—स्त्री०[अ०] १ लड़ाई-झगड़ा। २ हो-हल्ला। ३ व्यर्थ का तर्क-वितर्क या वाद-विवाद।

**हैसियत**—स्त्री० [अ०] १ रंग-ढंग। तौर-तरीका। २ शक्ति या सामर्थ्य सूचक योग्यता। ३ आर्थिक, सामाजिक आदि दृष्टियों से किसी की योग्यता-सूचक स्थिति। जैसे—थोड़े ही दिनों में उसने अपनी अच्छी हैसियत बना ली है। ४ मालियत या मूल्य के विचार से सारी धन-संपत्ति। जैसे—उसने थोड़े ही दिनों में लाखों रुपयों की हैसियत बरबाद कर दी। ५. सामाजिक मान-मर्यादा। इज्जत। प्रतिष्ठा। जैसे—बड़ों से बातें करते समय तुम्हें अपनी हैसियत का भी ध्यान रखना चाहिए।

**हैहय**—पु० [सं० हैहय+अण्] एक क्षत्रिय वंश जो यदु से उत्पन्न कहा गया है। पुराणानुसार इन्होंने शकों के साथ-साथ भारत के अनेक देश जीते थे। प्राचीन काल में इस वंश का सबसे प्रसिद्ध राजा कार्तवीर्य सहस्रार्जुन था, जिसे परशुराम ने मारा था।

**हैहयराज**—पु०[सं०] हैहयवंशी कार्तवीर्य सहस्रार्जुन।

**हैहयाधिराज**—पु० [सं०] हैहयराज।

**है है**—अव्य०[हाहा]१. शोक या दुःख-सूचक शब्द। हाय। अफसोस। हाहंत। २. परम आश्चर्य का सूचक शब्द। (स्त्रियाँ) जैसे—है है! यह क्या हो गया।

**हों**—अ० [हिं० होना] हिन्दी की सत्तार्थक क्रिया 'होना' का सभाव्य काल के 'हों' का बहुवचन रूप। जैसे—शायद वे वहाँ से चले गये हों।

**हौंकरना**—अ० [अनु०] १ हौ-हौ शब्द करना। २ जोर से और कटुतापूर्वक बोलना। ३ हुँकारना।

**हौंठ**—पु० [सं० ओष्ठ, पु० हिं० ओठ] प्राणियों के मुख-विवर के आगे के उभरे हुए दोनों किनारे जो ऊपर-नीचे होते हैं; और जिनसे दाँत ढके रहते हैं। ओष्ठ। रदच्छद।
**मुहा०—हौंठ काटना** = दे० नीचे 'होंठ चबाना'। **हौंठ चबाना**=दाँतों से बार-बार होंठ दबाना जो तीव्र क्रोध का सूचक है। **हौंठ चाटना**=बहुत स्वादिष्ट वस्तु खाकर अतृप्ति प्रकट करना। जैसे—हलुआ ऐसा बना था कि लोग होंठ चाटते रह गये। **हौंठ चिपकना**=मीठी वस्तु का नाम सुनकर मुख की उक्त प्रकार की स्थिति से लालच के लक्षण प्रकट होना। **(किसी के) हौंठ चूसना**= होंठों का चुम्बन करते हुए उनका रस लेना। अधर पान करना। **हौंठ हिलाना**=धीरे से कुछ बोलना। जैसे—सब बातें हो गईं, पर उसने होंठ तक न हिलाये।

**हौंठल**—वि०[हिं० होंठ+ल (प्रत्य०)] बड़े और मोटे होंठोंवाला।

**हौंठी**—स्त्री०[हिं० होंठ]१ ऊँचा उठा हुआ किनारा। अबेंठ। बादबारी। २ किसी चीज का छोटा टुकड़ा।

**हों**—अ०[हिं० होना]१. सत्तार्थक क्रिया 'होना' के अन्य पुरुष सभाव्य काल तथा मध्यम पुरुष बहुवचन के वर्तमान काल का रूप। जैसे—शायद वह हो।
[अ० ब्रज भाषा में वर्तमान कालिक क्रिया 'है' का सामान्य भूत रूप। था।
पु०[अनु०] किसी को जोर से पुकारते समय संबोधन-सूचक शब्द। जैसे—क्यों हो पाण्डेय जी।

**हौंड**—स्त्री० दे० 'अहोंट' (पूजन)

**होंसला**—पु०[देश०] एक प्रकार का नरसल या नरकट।

**होंजन**—पु०[?] एक प्रकार का हाशिया या किनारा जो कपड़ों में बनाया जाता है।

**होटल**—प०[अ० होटल]आधुनिक ढंग का वह विश्राम-स्थान, जहाँ लोग मूल्य देकर कुछ खा-पीते या किराया देकर कुछ समय के लिए ठहरते हों।

**होड़**—स्त्री०[सं० हार=लड़ाई, विवाद]१ शर्त। बाजी।
क्रि० प्र०—बदना।—लगाना।
२ चढ़ा-ऊपरी। प्रतिस्पर्धा। ३ किसी के बराबर होने के लिए किया जानेवाला प्रयत्न। उदा०—बढ़ी बिदाई में भी अच्छी होड़।—निराला। ३. जिद। हठ।
पु०[सं०] नाव। नौका।

**होड़ना**†—अ०[हिं० होड] किसी से होड़ लगाना। प्रतियोगिता या स्पर्धा करना। उदा०—निंदकु सो जो निंदा होरै (होड़ै)।—कबीर।

**होड़ा**—पु० [सं०] १. चोर। २. लुटेरा। ३. डाकू।

**होड़-बादी**—स्त्री० [हिं० होड+बदना] =होड़ा-होड़ी।

**होड़-होड़ी**—स्त्री० [हिं० होड] १. एक दूसरे से आगे बढ़ जाने का प्रयत्न। प्रतिस्पर्धा। २ बाजी। शर्त।

**होत**—स्त्री० [हिं० होना या सं० भूति] १. होने की अवस्था, गुण या

भाव। अस्तित्व। २ पास मे धन होने की दशा। सपन्नता। उदा०—होत का बाप अनहोत की माँ। ३. समाई। सामर्थ्य।

**होतव**—पु०[स० भवितव्य] वह बात जो दैव की ओर से अवश्यभावी हो। भावी। होनहार।

**होतव्य**†—पु०=होतव।

**होतव्यता**—स्त्री०[स० भवितव्यता] अवश्य और अनिवार्य रूप से होनेवाली बात। होनहार। भवितव्यता।

**होता**—पु०[सं० होतृ][स्त्री० होत्री] [वि० हौतृक]१. यज्ञ मे आहुति देनेवाला। ऋत्विज। २ यज्ञ करानेवाला पुरोहित। ३. अग्नि। ४. शिव।

**होता-सोता**—वि० [हिं० होना+सोना (अन्०)] निकट का सम्बन्धी। जैसे—अपने होते-सोतों की ऐसी बातें अच्छी नहीं लगती।

**होतृक**—पु०[स०] दे० 'होत्रक'।

**होते-सोते**—अव्य [हिं० होता-सोता] किसी के वर्तमान रहते हुए। जैसे—हमारे होते-सोते तुम्हें कौन कुछ कह सकता है।

**होत्र**—पु० [स०√हु (देना या लेना)+ष्ट्रन्] १ हवि। २ होम। ३. हवन की सामग्री।

**होत्रक**—पु०[स०] होता का सहायक।

**होत्री**—स्त्री० [स०] १. यज्ञ मे यजमान के रूप मे शिव की मूर्ति। २. शिव की आठ मूर्तियो मे से एक।
पु०=होता।

**होत्रीय**—वि० [स० होत्र-होतृ वा+छ—ईय] होता से सबध रखनेवाला।
पु०१. होता। २. हवन अथवा यज्ञ करने का मडल या स्थान।

**होनहार**—वि०[हिं० होना+हारा (प्रत्य०)]१. (घटना या बात) जो अवश्य होने को हो। होनी। भावी। २ (व्यक्ति विशेषत. बालक) आगे चलकर जिसके सुयोग्य होने की आशा हो या सभावना हो। अच्छे लक्षणोवाला। उदीयमान। (प्रॉमिसिंग)
पु० वह बात, जो दैवी या प्राकृत रूप से अवश्य होने को हो। अवश्यभावी घटना या बात। भवितव्यता। होनी। जैसे—होनहार हिरवै बसै, बिसर जाय सब सुद्ध। (कहा०)

**होना**—अ०[स० भवन, प्रा० होन] १.एक बहुत प्रचलित और प्रसिद्ध क्रिया जो प्रयोग और व्यवहार की दृष्टि से 'करना' क्रिया के अकर्मक रूप का काम देती है। यद्यपि व्युत्पत्तिक दृष्टि से इसका सबध स० भवन (बनना) से है, फिर भी साधारण क्रिया के रूप मे यह अस्तित्व, उपस्थिति, विद्यमानता, सत्ता आदि के अनेक प्रकार के भावो से युक्त हो गई है, और प्राय: नीचे लिखे अर्थों मे प्रयुक्त होती है। २. किसी प्रकार के अथवा किसी रूप मे अस्तित्व मे आना। किसी प्रकार अथवा किसी रूप में बनकर प्रकाश मे या सामने आना। जैसे—(क) वृक्षों मे फल होना। (ख) दिन के बाद रात (या रात के बाद दिन) होना। ३. किसी क्रिया या व्यापार का पूर्णतया समाप्ति पर आना या पहुँचना। जैसे—(क) लड़के का जनेऊ (या विवाह) होना। (ख) पुस्तक का छपकर प्रकाशित होना। (ग) विरोधी दलो मे मेल (या समझौता) होना।

**पद—हो चुका**=(क) नही हो सकता। कभी न होगा। जैसे—तुमसे तो यह काम हो चुका। (ख) अन्त या परिणाम अशिष्ट या शुभ नहीं होगा। (नैराश्य-सूचक) जैसे—यदि ऐसे ही शिक्षक यहाँ आते रहे, तो फिर पढ़ाई हो चुकी। **तो क्या हुआ**=कुछ आपत्ति, चिन्ता, दोष या हर्ज की बात नही है, अत: इसका ध्यान या विचार छोड़ दो। जैसे—यदि वह रूठकर चला ही गया है, तो क्या हुआ (अथवा क्या हो गया)।

**मुहा०—(किसी काम या बात का) होकर रहना**=अवश्य और निश्चित रूप से पूरा या सम्पन्न होना। किसी तरह न चलना या न रुकना। जैसे—तुम लाख चिल्लाया करो, पर हमारा काम तो होकर रहेगा। **(किसी व्यक्ति का) हो चुकना**=देहावसान या मृत्यु हो जाना। मर जाना। जैसे—लड़के के घर पहुँचने से पहले ही वे हो चुके थे। **होना जाना या होना-होवाना**=जो कुछ होने का हो या हो सकता हो। जैसे—(क) इस तरह की बातों से कुछ भी होना जाना नहीं है। (ख) जो कुछ होना-होवाना हो, वह आज ही हो जाय।
३. किया हुआ कार्य या घटना का क्रियात्मक अथवा वास्तविक रूप मे सामने आना। जैसे—(क) परार्धीन देश का स्वतन्त्र होना। (ख) आगम म मारपीट या लड़ाई-झगड़ा होना।
**पद—हो न हो**=बहुत कुछ सम्भावना इसी बात की जान पडती है। जैसे—हो न हो, यह चोरी उसी नये नौकर ने कराई है।
४ किसी क्रिया या व्यापार का उचित, नियमित या नियत क्रम अथवा रूप मे चलना। जारी रहना। जैसे—(क) गाना होता है। (ख) पढाई होनी थी। (ग) पानी बरसता है। (घ) हवा चलती है।
५ उपस्थित, वर्तमान या विद्यमान रहना। जैसे—(क) आज-कल वे यही है। (ख) मेरे पास ऐसी कई पुस्तकें हैं। (ग) हमारे लिए उनका होना और न होना दोनो बराबर है। (घ) मैं हो हूँ जो बराबर तुम्हारी रक्षा कर रहा हूँ।
**मुहा०—(किसी के) होते-सोते**=उपस्थित, वर्तमान या विद्यमान रहने पर। जैसे—तुम्हारे होते-सोते कौन मेरी तरफ आँख उठाकर देख सकता है।
६. उत्पत्ति, जन्म, रचना, सृष्टि आदि के फलस्वरूप दिखाई देना या सामने आना। जैसे—(क) घर मे बच्चो का जन्म होना। (ख) फसल पककर (या रमोई बनकर) तैयार होना। (ग) किसी को बुखार (लकवा या हैजा) होना। ७ पहली या पुरानी अवस्था, रूप आदि से बदलकर नई अवस्था, रूप आदि मे आना। जैसे—(क) यह लडका तो अब जवान हो चला है। (ख) उनके सिर के बाल सफेद हो रहे हैं। (ग) चार दिन की बीमारी मे तुम क्या से क्या हो गये।
८. किसी क्रिया, बात या वस्तु से कोई परिणाम या फल निकालना। किसी प्रकार की कार्य-सिद्धि दिखाई देना। जैसे—(क) इस उपचार (या औषध) से रोगी को लाभ हो रहा है। (ख) सौ रुपयो से तो यहाँ कुछ भी न होगा। ९ किसी निश्चित और विशिष्ट अवस्था, दशा या स्थिति मे आना या पहुँचना। जैसे—(क) विद्यार्थी का पढकर पण्डित होना। (ख) स्त्री का गर्भवती (या रजस्वला) होना। (ग) हिन्दू का ईसाई या मुसलमान होना।
**मुहा०—(किसी का कुछ) हो बैठना**=वास्तविक गुण, योग्यता आदि के अभाव मे भी किसी विशिष्ट पद या स्थिति मे पहुँचना अथवा यह प्रकट करना कि हम कुछ बन गये हैं। (हिन्दी के बन-ठँनना, मुहावरे की तरह प्रयुक्त) जैसे—(क) आज-कल तो वह ज्योतिषी या वैद्य

हो बैठा है। (ख) हम तो सब कुछ दे-दिलाकर कगाल हो बैठे है। **(किसी स्त्री का) हो बैठना**=मासिक धर्म से अथवा रजस्वला होना। १० अवधि, समय आदि का गुजरना या बीतना। जैसे—(क) उसे यहाँ आये अभी दो ही दिन हुए हैं। (ख) उनका देहावसान हुए महीनो हो गये। ११. किसी विशिष्ट कारणवश कही जाना अथवा जाकर कुछ समय तक वर्तमान रहना। कही जाना और वहाँ कुछ ठहरना या रुकना। जैसे—(क) जब कलकत्ते जाते हो, तब जगन्नाथजी भी होते आना। (ख) वे भले ही पजाबी हो, पर अब तो वे काशी के हो गये है।

**मुहा०—(किसी के यहाँ) होते हुए आना (या जाना)**=आने या जाने के समय बीच मे किसी से मिलने हुए। जैसे—अब चाँक जाते हो, तब शर्मा जी के यहाँ से होते या होते हुए आना (या जाना)। (किसी **जगह) से होते हुए**=जाने या आने के समय बीच मे कोई स्थान पार करते हुए। जैसे—हम कलकत्ते गये तो थे पटने होते हुए पर लौटे गया होते हुए। **(किसी जगह) के या पर ही** के) हो रहना=कही जाने पर अकारण, अनावश्यक रूप से या आवश्यकता से अधिक समय तक ठहरे या रुके रहना। जैसे—यह नौकर जहाँ जाता है, वही का हो रहता है। १२ रिश्ते या सबध के विचार से किसी के साथ सबद्ध रहना। जैसे—रिश्ते मे वे हमारे भाई होते है।

१३. किसी रूप मे किसी का आत्मीय या निकट सबधी, बनना या रहना। जैसे—जो तुम्हारा हो उससे सहायता माँगो।

**पद—होता-सोता** जिसके साथ आत्मीयता का सम्पर्क या निकट का सबध हो। जैसे—यह सब रोना-धोना जाकर अपने होतो-सोतो को सुनाओ। **(वह) कौन होता है**=(उसका) प्रस्तुत विषय से क्या सबध है! (उसे) इस बीच मे बोलने या हस्तक्षेप करने का क्या अधिकार है! जैसे—वह हमारे चहेते मामले मे बोलनेवाला कौन होता है। (प्रथम पुरुष में इसी का रूप होता है—मैं कौन होता हूँ।)

१४. किसी के साथ आत्मीयता या घनिष्ठता का सबध स्थापित करके उसके अधीन या वशवर्ती बनना। उदा०—तुम हमारे हो न हो, पर हम तुम्हारे हो चुके।—कोई शायर।

**मुहा०—(किसी के) हो जाना या हो रहना**=किसी के अधीन या वशवर्ती बन जाना। उदा०—अपना किसी को कर लो, या हो रहो किसी के।—कोई शायर।

१५. किसी प्रकार की अनिष्टकारक, अप्रिय, अवाछनीय और असाधारण घटना, बात या स्थिति का प्रकट या प्रत्यक्ष रूप मे सामने आना। उदा०—दिले नादाँ तुझे हुआ क्या है? तेरे इस दर्द की दवा क्या है?—गालिब।

**मुहा०—(किसी को) कूछ) हो जाना**=(क) किसी प्रकार की अनिष्ट-सूचक दशा या स्थिति दिखाई पडना। जैसे—(क) जान पडता है कि इसे कुछ हो गया है। (ख) न जाने आज-कल तुम्हे क्या हो गया है कि तुम सीधी तरह से बात ही नही करते।

**विशेष**—(क) इस क्रिया के अलग-अलग कालो के हुआ, था, है, हो, होना, होता आदि अनेक विकारी रूप होते है, जिनमे लिंग, और वचन के अनुसार कुछ और विकार भी होते है। (ख) जब इस क्रिया का कोई रूप अकेला आता है और साधारण क्रिया के रूप मे प्रयुक्त होता है, तब वह अपना स्वतत्र अर्थ रखता है; पर जब इसके दो रूप साथ-साथ आते है, तब दूसरा रूप सहकारी क्रिया का काम देता है। (ग) इस क्रिया के था, है, होगा सरीखे कुछ रूपो के सबंध मे अनेक वैयाकरणों का मत है कि इनका प्रयोग केवल काल-सूचित करने के लिए होता है। परन्तु वस्तुत: ये रूप उसी दशा मे काल-सूचक होते है, जब इनका प्रयोग सहकारी क्रिया के रूप मे अर्थात् किसी दूसरी क्रिया के साथ होता है। जैसे—वह जाता था, मैं बैठा हूँ—सरीखे प्रयोगों मे था और हूँ केवल काल-सूचक है। शेष अवस्थाओ मे ऊपर बताये हुए अर्थों मे से इसका कोई न कोई अर्थ होता ही है। (ग) कुछ अवस्थाओ मे यह क्रिया वाक्यो मे उद्देश्य और विधेय मे सबध स्थापित करने के लिए केवल कड़ी के रूप मे भी प्रयुक्त होती है। जैसे—पुस्तक सुन्दर है। पृथ्वी गोल है। फल मीठा था। आदि। (घ) कुछ अवस्थाओ मे इसका प्रयोग 'बनना' की तरह या इस के पर्याय के रूप मे भी होता है। जैसे—रस्सी बनना और रस्सी होना। पर कुछ अवस्थाओं मे ऐसा नही भी होता है। जैसे—दीवार (या मकान) बनना की जगह दीवार (या मकान) होना नही कहा जाता।

**होंगिहार**†—पु०=होनहार।

**होनी**—स्त्री० [हिं० होना] १ होने की क्रिया या भाव। जैसे—मुझसे गलती होनी ही थी। २ उत्पत्ति। जन्म। पैदाइश। ३ ऐसी घटना या बात, जिसका घटित होना अनिवार्य, अवश्यभावी या निश्चित हो। भवितव्यता। जैसे—जो होनी है, वह होकर ही रहेगी। ४. होनहार।

**होबार**—पु० [देश०] सोहन चिड़िया का एक भेद। तिल्लर।

**होर**†—पु० [?] घोडा। (डिं०)

**होम**—पु० [स०√हु (देना-लेना)+मन्] अग्नि मे घृत, जौ आदि डालने का धार्मिक कृत्य। हवन।

**मुहा०—(कोई चीज) होम करना**=(किसी चीज का) इस प्रकार उपयोग या व्यवहार करना कि कुछ भी बाकी न रह जाय। **जी-जान होम करना**=सारी शक्ति लगा देना।

**होमक**—पु० [स०] वह जो होम या हवन करता हो। होता।

**होम-काष्ठी**—स्त्री० [स०] यज्ञ की अग्नि प्रज्वलित करने की फुँकनी। सामिधेनी।

**होम-कुड**—पु० [सं० ष० त०] वह गड्ढा या धातु का बना हुआ गहरा पात्र, जिसमे होम के लिए आग जलाई जाती है।

**होमना**—स० [सं० होम+हिं० ना (प्रत्य०)] १. देवता के उद्देश्य से अग्नि मे कोई चीज डालना। हवन करना। २ पूर्ण रूप से उत्सर्ग या परित्याग करना। बिलकुल छोड देना। उदा०—होमति सुख करि कामना, तुमहिं मिलन की लाल।—बिहारी। ३ पूरी तरह से नष्ट या बरबाद करना।

सयो० क्रि०—देना।

**होम-धेनु**—स्त्री० [स० चतु० त०] वह गौ जिसका दूध होम-संबंधी कार्यों के लिए बुहा जाता हो।

**होमाग्नि**—स्त्री० [स० ष० त०] होम करने के लिए जलाई हुई अग्नि।

**होमार्जुनी**—स्त्री० [स०]=होम-धेनु।

**होमि**—पु० [स०] १. अग्नि। आग। २. घृत। घी। ३. जल। पानी।

**होमियोपैथ**—पु० [अ०] [भाव० होमियोपैथी] होमियोपैथी नामक चिकित्सा-पद्धति से चिकित्सा करनेवाला व्यक्ति।

**होमियोपैथिक**—वि० [अ०] १. होमियोपैथी से सबद्ध। २. होमियोपैथ से सबद्ध।

**होमियोपैथी**—स्त्री० [अ०] रोगो की चिकित्सा की एक पाश्चात्य प्रणाली जो इस सिद्धान्त पर आश्रित है कि जिन औषधो के प्रयोग से किसी स्वस्थ व्यक्ति के शरीर मे किसी विशिष्ट रोग के लक्षणों का आविर्भाव होता है, उन्ही औषधों की बहुत सूक्ष्म मात्रा से वे रोग दूर भी होते हैं। (एलोपैथी से भिन्न और उसके विपरीत)

**होमीय**—वि० [सं०] होम-सबधी। होम का। जैसे—होमीय द्रव्य।

**होम्य**—वि० [स० होम+यत्] १ होम-सबधी। होम का। २ जो होम किया, अर्थात् हवन की अग्नि मे डाला जाने को हो।

पु० घृत। घी।

**होर**—वि० [अनु०] रुका या ठहरा हुआ।

†स्त्री० =होड।

**होरना**†—स०=हेरना (ढूँढना)।

अ० दे० 'होडना'।

**होरमा**—पु० [देश०] सौंकन नामक घास, जो पशुओ के चारे के काम आती है।

**होरसा**—पु० [स० घर्ष=घिसना] पत्थर की वह गोल छोटी चौकी, जिस पर चदन आदि घिसते या रोटी बेलते है। चौका।

**होरहा**—पु० [स० होलक] १. चने का छोटा पौधा जो प्राय: जड से उखाड कर बाजारों मे बेचा जाता है और जिसमे से चने के ताजे और हरे दाने निकलते हैं। होरा (होला)।

**पद—होरहे का दाना**=हरा और ताजा चना।

२. चने का ताजा दाना। ३. चने का ताजा और भुना हुआ दाना।

**होरा**—स्त्री० [स० यूनानी भाषा से गृहीत] १ एक अहोरात्र का चौबीसवाँ भाग। घटा। २. किसी राशि या लग्न का आधा अश। ३. जन्म-कुडली। ४. जन्म-कुडली के अनुसार फलाफल-निर्णय की विद्या। जातक-ग्रन्थ।

†पु०=होला।

†पु०=होरहा।

**होरिल**—पु० [देश०] नवजात बालक। नया पैदा लड़का। उदा०—माँए कर होरिल को सीस राखि दाहिनें सों गहे कुच प्यारी पय-पान करावति है।—सेनापति।

**होरिहार**†—पु०=होलिहार।

**होरी**†—स्त्री० [?] एक प्रकार की बडी नाव, जो जहाजों पर का माल लादने और उतारने के काम में आती है।

स्त्री० [हिं० होली] १. संगीत में, धमार की तरह का एक प्रकार का गीत जो अनेक राग-रागिनियों मे गाया जाता है। इसमे अधिकतर श्रीकृष्ण और गोपियों के होली खेलने का वर्णन होता है। २. दे० 'होली'।

**होल**—पुं० [देश०] पश्चिमी एशिया से आया हुआ एक प्रकार का पौधा जो घोड़ों और चौपायों के चारे के लिए लगाया जाता है।

**होलक**—पु० [स०] आग मे भुनी हुई चन, मटर आदि की हरी फलियाँ। होरा। होरहा।

**होलकर**—पु० [होल नामक गाँव से] [स्त्री० होलकरी] १. होल गाँव का निवासी। २. मध्ययुगीन भारत मे इदौर नामक देशी राज्य के राजाओं की उपाधि।

**होलड़**—पु० [देश०] १. नया उत्पन्न बच्चा। होरिल। २ बच्चे के जन्म के समय गाया जानेवाला एक प्रकार का गीत।

**होला**—स्त्री० [स०] होली का त्योहार।

पु० सिक्खो की होली, जो होलिका-दाह के दूसरे दिन होती है।

पु० [सं० होलक] १ आग मे भूनी हुई चने, मटर आदि की फलियाँ। २. उक्त भूनी हुई फलियो मे से निकाले हुए दाने।

†पु०=होरहा।

**होलाक**—पु० [स०] आग की गरमी पहुँचाकर पसीना लाने की एक क्रिया। एक प्रकार की स्वेदन-विधि। (आयुर्वेद)

**होलाष्टक**—पु० [स० ष० त०] फाल्गुन शुक्ल अष्टमी से पूर्णिमा तक के ८ दिन जिनमे यात्रा तथा दूसरे शुभ कार्य प्राय नही किये जाते।

**होलिका**—स्त्री० [स०] १ एक प्रसिद्ध राक्षसी। २ होली का त्योहार। ३ होली में जलाई जानेवाली लकडियो आदि का ढेर। दे० 'होली'।

**होलिकाष्टक**—पु०=होलाष्टक।

**होलिहार**—पु० [हिं० होली] १ वह जो धूम-धूम कर धूम-धाम से होली खेलता फिरता हो। २ चारो ओर से मन-माने ढग से उपद्रव मचानेवाला।

**होली**—स्त्री० [स० होलिका] १ हिंदुओ का एक प्रसिद्ध त्योहार, जो फाल्गुन की पूर्णिमा को होता है और जिसमे चौराहो आदि पर आग जलाते, एक दूसरे पर रग-अबीर डालते और परस्पर हास-परिहास करते हैं।

**पद—होली का भड़ुआ**=वह बे-ढगा और भद्दा पुतला, जो होली के दिनों मे हास-परिहास के लिए कही खडा किया जाता अथवा जलूसों के साथ निकाला जाता है।

**मुहा०—होली खेलना**=आपस मे एक-दूसरे पर अबीर, रग डालना और हास-परिहास करके होली का त्योहार मनाना।

२. लकड़ियों आदि का वह ढेर, जो उक्त दिन प्राय: रात को एक निश्चित समय पर जलाया जाता है। ३. एक विशेष प्रकार का गीत, जो माघ-फागुन में अनेक धुनों और राग-रागिनियों मे गाया जाता है। ४. प्राय: अनावश्यक रूप से अथवा व्यर्थ के कामो मे बिना सोचे-समझे किया जानेवाला व्यय। जैसे—बात की बात मे हजार रुपयो की होली हो गई।

५ किसी उत्सव या समारोह के समय आनद मनाने के लिए खुली जगह मे और सब लोगों के सामने जलाई जानेवाली आग। ६. अनिष्टकारक या त्याज्य वस्तुओं का अग्नि रूप से विनाश करने के लिए सार्वजनिक रूप से उनकी राशियों मे जलाई जानेवाली आग। (बानफायर) जैसे—विलायती कपडो की होली।

क्रि० प्र०—जलना।

स्त्री० [देश०] एक प्रकार का कँटीला झाड या पौधा।

**होलू**—पु० [हिं० होला] भुने या उबाले हुए चने। (सोमचेवालो की बोली)

**होल्डर**—पु० [अ०] वह चीज जिसका उपयोग किसी दूसरी चीज को पकड़े रहने के लिए होता है। जैसे—कलम का होल्डर, जिसमे निब लगाई जाती है। बिजली के लट्टू का होल्डर, जिसमें बिजली का लट्टू लगाया जाता है।

**होल्डाल**—पु० [अं० होल्ड-आल] यात्रा के समय काम आनेवाला एक प्रकार का बहुत लंबा थैला, जिसमे बिस्तर के साथ पहनन के कपडे आदि भी रख लिए जाते हैं और जो लपेटकर गद्दर या बडल के रूपमे कर लिया जाता है। बिस्तर-बद।

**होश**—पु० [फा०] १ बुद्धिमत्ता। समझदारी। २ ज्ञान या बोध की वृत्ति जो चेतनता, बुद्धिमत्ता, स्मृति आदि की परिचायक या सूचक है। चेतना। सज्ञा।

**पद—होश की दवा करो**=अपनी बद्धि ठिकाने लाओ। अच्छी तरह समझ-बूझकर काम करो। **होश-हवास**=व्यक्ति या शरीर की ऐसी चेतनावस्था, जिसमे यह सब काम ठीक तरह से कर सकता और सब बातें सोच-समझ सकता है।

**मुहा०—होश उड़ जाना**=अचानक कोई भीषण, विकट या विलक्षण स्थिति उत्पन्न होने पर कुछ समय के लिए किंकर्तव्य-विमूढ हो जाना या सुध-बुध खो बैठना। **होश करना**=ऐसी स्थिति मे आना कि चेतना और बुद्धि ठीक तरह से काम करने लगे। **होश ठिकाने होना**—(क) चित्त स्वस्थ होना। चित्त की अधीरता या व्याकुलता मिटना। (ख) भ्रांति या मोह दूर होने के फल-स्वरूप बद्धि ठीक होना। (ग) दड, फल आदि भोगने पर अभिमान या घमड दूर होना। **होश दंग होना**=दे० ऊपर 'होश उड जाना'। **होश पकड़ना**=(क) दे० ऊपर 'होश करना'। (ख) दे० नीचे 'होश सँभालना'। **होश में आना**—अज्ञान, बे-सुध या सज्ञा-शून्य हो जाने के उपरात फिर से चैतन्य होना। बेहोशी दूर होने पर सुध मे आना। **होश सँभालना**=बाल्यावस्था समाप्त होने पर ऐसी अवस्था मे आना कि धीरे-धीरे सब बातें समझ मे आने लगें। वयस्कता का आरभ होना। ३. याद। स्मृति।

**मुहा०—होश दिलाना**=याद या स्मरण कराना।

**होशमंद**—वि० [फा०] [भाव० होशमदी] जिसे होश अर्थात् अच्छी समझ हो। समझदार। होशियार।

**होशियार**—वि० [अ० होशयार] १ जिसके होश-हवास ठीक हों। २. सावधान। ३ चतुर। चालाक। ४ कुशल। दक्ष। ५ वयस्क। जैसे—अब तो उनका लडका भी होशियार हो चला है।

**विशेष**—चालाक और होशियार मे मौलिक अतर यह है कि 'चालाक' व्यक्ति तो प्राय कपट, छल अथवा कौशल पूर्ण युक्ति से भी काम लेता है। पर 'होशियार' मे केवल बुद्धिमत्ता और सब प्रकार की सचेतना का भाव ही प्रधान है, कौशल आदि का नही।

**होशियारी**—स्त्री० [फा०] १. होशियार होने की अवस्था गण या भाव। कौशल। दक्षता। २. चतुराई। चालाकी। ३ सावधानता।

**होस**†—पु० १ =होश। २.=हौस।

**होस्टल**—पु०[देश०] एक प्रकार का छद जिसके प्रत्येक चरण मे एक जगण और एक गुरु होता है। सुखि।

**होहा**—पु० [अ०] =छाद्यावास।

**हौं**†—सर्व० [स० अहम्] ब्रजभाषा का उत्तम पुरुष एक वचन सर्वनाम। मैं।

†अ० हि० 'होना' क्रिया के वर्तमान-कालिक उत्तम पुरुष एक वचन 'हूँ' का स्थानिक रूप।

**हौंकना**— अ० [हि० हकार] १ गरजना। हुकार करना। २. हाँफना।

†स०=धौंकना।

**हौंस**—स्त्री० [अ० हविस] कामना। लालसा। उदा०—रात दिवस हौंस रहत, मान न बिनु ठहराय।—बिहारी।

**हो**—अ० [हि० होना] १. हिन्दी की 'होना' क्रिया का मध्यम पुरुष एक वचन, वर्तमान कालिक रूप। हो। २ 'होना' क्रिया का भूतकालिक रूप। था।

†अव्य०=हाँ। (स्वीकृति सूचक)

† अ० -है। (पूरब)

**हौआ**—स्त्री० [अ० हौवा] पैगम्बरी मतो के अनुसार सब से पहली स्त्री जो पृथ्वी पर आदम के साथ उत्पन्न हुई थी और जो मनुष्य-जाति की आदि माता मानी जाती है। (ईव)

†पु० [हौ हौ से अनु०] एक प्रकार का कल्पित और भीषण या विकराल जन्तु या प्राणी, जिसके नाम का उपयोग किसी को बहुत अधिक भयभीत करने के लिए किया जाता है। (बांगी)

**हौंका**—पु० [हिं० हाथ] -हाथ।

**हौज**—पु० [अ० हौज] १. पानी जमा रहने का चहबच्चा। कुड। २. मिट्टी आदि का बना हुआ नाँद नामक अर्ध-गोलाकार बडा पात्र।

**हौजा**—पु० [फा० हौज] हाथी का हौदा।

**हौताशन**—वि० [स०] अग्नि-सबधी। हुताशन सबधी। अग्नि का।

**हौताशनि**—पु० [स०] १ स्कद। २ नील नामक बदर।

**हौतृक**—वि० [स०] होता से सबद्ध।

पु० होता का कार्य या पद।

**हौत्र**—पु० [स०] -होता।

**हौत्रिक**—वि० [स० होतृ+ठक्-इक] होता के कार्य से सबध रखनेवाला।

**हौद**—पु० -हौज।

**हौदा**—पु० [फा० हौज] हाथी की पीठ पर रखकर कसा जानेवाला आसन जिसके चारो ओर रोक रहती है, और पीठ ठिकाने के लिए गद्दी रहती है।

क्रि० प्र०—कसना।

पु० [हिं० हौद] [स्त्री० अल्पा० हौदी] मिट्टी आदि का नाँद के आकार का गोलाकार बडा पात्र। होज।

**हौमीय**—वि० [स०]=होमीय।

**हौर**—पु० [अ० हौल] १ डर। भय। २ डरावनी चीज या बात। भयानक वस्तु। उदा०—सुत के भएँ बधाई गाई, लोगनि देखत हौर। —सूर।

**हौरा**†—पु० [अनु० हाव, हाव] शोर-गुल। हल्ला। कोलाहल।

क्रि० प्र०—करना।—मचना। मचाना।—होना।

**हौरे**—अव्य०=हौले।

**हौल**—पु०[अ०] डर। भय।

क्रि० प्र०—बैठना।—समाना।

**हौल-जौल**—स्त्री०[अ० हौल+जौल अनु०] १. जल्दी। शीघ्रता। २. हड़बड़ी।

**हौलदार**†—पु०=हवलदार।

**हौलदिल**—पु० [फा०] [वि० हौलदिला] १ दिल मे बैठा हुआ भय। २ उक्त भय के उग्र होने पर दिल मे होनेवाली घबराहट। ३ दिल की धड़कन। हृदय-कंप। ४ दिल घबराने का रोग।

**हौल-दिला**—वि० [फा० हौलदिल] [स्त्री० हौल-दिली] ऐसे दुर्बल हृदयवाला जिसके मन मे जल्दी भय समा जाता हो। जो जल्दी डरकर घबरा जाता हो।

**हौल-दिली**—स्त्री० [फा०] यशब नामक पत्थर का वह चिपटा छोटा टुकड़ा, जो प्राय डोरे मे पिरोकर गले मे पहना जाता है। कहते हैं कि इससे कलेजे की धड़कन आदि रोग दूर होते है।

**हौलनाक**—वि०[अ०+फा०] दिल मे भय बैठानेवाला। अत्यन्त भयानक।

**हौला-जौली**—स्त्री० हौल-जौल।

**हौली**—स्त्री०[स० हाला-मद्य]१ वह स्थान, जहाँ मद्य उतरता और बिकता है। आबकारी। २. वह दूकान, जहाँ देशी शराब बिकती हो और लोग बैठकर पीते हों।

**हौल्ला**†—वि० [हिं० हौल]=हौल-दिला।

**हौले**—अव्य० [हिं० हरुआ] १ धीरे। आहिस्ता। २. मद गति से। जैसे—हौले-हौले चलना।

**पद—हौले हौले** धीरे-धीरे। आहिस्ते से।

**हौवा**—स्त्री०, पु०—हौआ।

**हौस**—स्त्री०[अ० हवस]१ मन मे बैठी हुई किसी बात की गहरी चाह या प्रबल लालसा, जिसकी पूर्ति की उत्सुकतापूर्वक प्रतीक्षा की जाती हो। २ मन की उमग या तरग। ३ किसी काम, चीज या बात के प्रति होनेवाला उत्साह। हौसला।

क्रि० प्र०—निकालना।—पूरी करना।—मिटाना।

**हौसला**—पु०[अ० हौसल] १ पक्षियो के पेट का वह ऊपरी भाग, जिसमे खाये हुए दाने आदि एकत्र होते हैं। पोटा। २. उक्त के आधार पर, मनुष्य का ऐसा साहस या हिम्मत, जिसके फलस्वरूप वह किसी प्रकार की प्रसन्नता या सतोष प्राप्त करना चाहता है। जैसे—उसने बड़े हौसले से अपने बेटे का ब्याह किया है।

मुहा०—**(मन का) हौसला निकालना**=जिस काम या बात के लिए मन मे बहुत उमग या चाह हो, उसे पूरी कर लेना। **हौसला पस्त होना**=प्रयत्न करके विफल होने पर मन का उत्साह नष्ट हो जाना।

३. साहस। हिम्मत। जैसे—वह बहुत हौसलेवाला आदमी है।

मुहा०—**(किसी का) हौसला बढ़ाना**=उत्तेजित और प्रोत्साहित करना। जैसे—तुम्ही ने तो उसका हौसला बढ़ाकर उसे इस रोजगार मे लगाया था।

**हौसलामंद**—वि०[फा०]१. लालसा। रखनेवाला। साहसी। २. उदार।

**ह्याँ**—अव्य०=यहाँ।

**ह्याउ**—पु०=हियाव।

**ह्यो**—पुं०='हिया' (हृदय)।

**ह्र०**=ह्रस्व। (व्याक)

**ह्रद**—पु०[स० √ह्रद+अच् नि०]१ बड़ा तालाब। झील। २. जलाशय। सरोवर। ३ ध्वनि। नाद। ४ किरण। ५ मेढ़ा नामक पशु।

**ह्रदिनी**—स्त्री० [स० ह्रद+इनि—ङीप्] नदी।

**ह्रसित**—भू० कृ०[स०] जिसका ह्रास हुआ हो या किया गया हो।

**ह्रसिमा (मन्)**—स्त्री०[स०] ह्रस्वता।

**ह्रस्व**—वि० [स०√ह्रस+क्वन] [भाव० ह्रस्वता]१.छोटे आकार-प्रकार का। जो दीर्घ न हो। २. (स्वर) जो खीचकर न बोला जाता हो। (शार्ट)

पु० व्याकरण मे, स्वरों के दो भेदों मे से एक, जिसमे ध्वनि को अधिक खीचकर नही बोला जाता। 'दीर्घ' से भिन्न। (अ, इ, उ और ऋ स्वर ह्रस्व है)।

**ह्रस्वक**—वि०[स०] बहुत छोटा।

**ह्रस्वजात रोग**—पु० [स०] एक प्रकार का रोग जिसमे दिन के समय वस्तुएँ बहुत छोटी दिखाई पड़ती है।

**ह्रस्वता**—स्त्री० [स०] ह्रस्व+तल्—टाप्] ह्रस्व होने की अवस्था, गुण या भाव।

**ह्रस्व प्रवासी**—पु०[स० ह्रस्व-प्र√वस् (वसना) —णिनि] थोड़े समय के लिए कही बाहर या विदेश गया हुआ व्यक्ति। वह जो कुछ ही काल के लिए परदेश गया हो। (कोo)

**ह्रस्वांग**—वि० [स० ब० स०]१ छोटे अगोवाला। २ ठिगना। नाटा। ३ बौना। वामन।

पु० जीवक नामक पौधा।

**ह्रस्वाग्नि**—पु० [स० पक्ष० त०] आक का पौधा। मदार। अर्क।

**ह्राद**—पु०[स० √ह्राद् (शब्द करना)+घञ्] १ ध्वनि। शब्द। आवाज। २ बादल की गरज। ३ हिरण्यकशिपु का एक पुत्र।

**ह्रादिनी**—स्त्री०[स० ह्राद+णिनि—ङीप्] १ नदी। २ एक प्राचीन नदी। ३. बिजली। विद्युत्।

**ह्रादी**—वि० [स० ह्रादिन्] [स्त्री० ह्रादिनी]१ शब्द करनेवाला। २. गरजनेवाला।

**ह्रास**—पु०[स० √ह्रास् (कम होना)+घञ्]१ बल, शक्ति, स्मृति आदि का घटना, क्षीण होना या न रह जाना। (डिक्लाइन) जैसे—(क) चेतना या स्मृति का ह्रास होना। (ख) मुगल-शासन का ह्रास होना। २. कमी। घटती। (डिक्रीमेन्ट) ३. किसी प्रकार घिसने, छीजने, नष्ट होने या व्यर्थ जाने की क्रिया या भाव। ४. आवाज। ध्वनि।

**ह्रासक**—वि०[स०] ह्रास या कमी करनेवाला।

**ह्रासन**—पु० [स०] ह्रास अर्थात् कमी करना। घटाना।

**ह्रासनीय**—वि०[सं०√ह्रास् (कम होना)+अनीयर] जिसका ह्रास हो सकता या किया जाने को हो।

**ह्री**—स्त्री०[सं० ह्री+क्विप्]१ लज्जा। व्रीडा। शर्म। हया। २. दक्ष की एक कन्या जो धर्म को ब्याही थी। ३. जैनों की एक देवी।

**ह्रीका**—स्त्री०[स०√ह्री+कन्] लज्जाशीलता। हया।

**ह्रीच**—वि०[स०]१. लज्जा से युक्त। जैसे—ह्रीचमुख। ३. लज्जित। शरमिन्दा।

**ह्रीत**—भू० कृ०[सं०] [भाव० ह्रीति]१. लजाया हुआ। २. लाज से भरा हुआ।

**ह्रीति**—स्त्री० [सं० ह्री+क्तिन्] १. लजाये या लाज से भरे हुए होने की अवस्था या भाव। २ लज्जा। लाज।

**ह्रीमान्**—वि०[सं० ह्रीमत्] [स्त्री० ह्रीमती] लज्जाशील। हयादार। शर्मदार।
पुं० एक विश्वेदेवा।

**ह्री-मूढ**—वि०[स० तृ० त०] जो बहुत लज्जित होने के कारण कुछ भी कर या कह न सकता हो। जो लज्जा के कारण मूढ हो गया हो।

**ह्रीवेर**—पु०[स० ब० स०] सुगंधबाला।

**ह्रेषा**—स्त्री०[सं०] (घोड़े की) हिनहिनाहट।

**ह्रेषी (षिन्)**—वि०[स०] हिनहिनानेवाला।

**ह्लाद**—पु० [स०]=आह्लाद (प्रसन्नता)। उदा०—बस रहा पृथ्वी पर स्वर्गिक स्पर्श ह्लाद सा।—पन्त।

**ह्लादक**—वि०[स०] प्रसन्न करनेवाला। आह्लादक।

**ह्लादन**—पु०[स०] [वि० ह्लादनीय भू० कृ० ह्लादित] आनंदित या प्रसन्न करना। खुश करना।

**ह्लादिनी**—स्त्री०[स० √ह्लाद+णिनि—ङीप्] १. बिजली। वज्र। २. एक देवी या शक्ति का नाम। ३. ह्लादिनी नदी का दूसरा नाम।
वि०[स०] 'ह्लादी' का स्त्री०। उदा०—शशि असि की प्रेयसी स्मृति, जगी हृदयह्लादिनी।—पन्त।

**ह्लादी (दिन्)**—वि०[स०] [स्त्री० ह्लादिनी] १. प्रसन्न करने, रहने या होनेवाला। २. शब्द करनेवाला।

**ह्लाँ**!—अव्य०=वहाँ।

**ह्लावन**—पु०[स०]=आह्वान।

**ह्लिस्की**—स्त्री० [अ० ह्लिस्की (शराब)] एक प्रकार की प्रसिद्ध विलायती शराब।

**ह्लेल**—स्त्री०[अ०] एक प्रकार का प्रसिद्ध स्तनपायी जन्तु जो बहुत बड़े आकार का होता है और जिसकी अनेक जातियाँ या भेद होते हैं।

—०—

# परिशिष्ट (क)

## छूटे हुए शब्द और अर्थ



अ

**अँकना**†—अ०[हिं० आँकना का अ०] १. आँका जाना। कूता जाना। २. अंकित या चिह्नित किया जाना। अंकित होना।

**अंकास्य**—पु०[सं०] नाटक मे अर्थोपक्षेपक का एक भेद जिसमे किसी अंक की समाप्ति पर उसी अंक के पात्रो द्वारा किसी छूटी हुई बात की सूचना दी जाती है। कुछ विद्वानो ने इसे अंकावतार के ही अंतर्गत माना है।

**अंकुश-कृमि**—पु०[स०] मनुष्य की आँतो से उत्पन्न होनेवाले एक प्रकार के कीटे जिनके मुँह के पास अंकुश या काँटिया की तरह का एक अवयव होता है। ये मनुष्य का रक्त चूसते और कई प्रकार के रोग उत्पन्न करते है। (हुक-वर्म)

**अंगुली छाप**—स्त्री०=उँगली छाप।

**अंगुश्त**—स्त्री०[स० अंगुष्ठ से फा०] हाथ की उँगली।

**अँजू**†—पु०[स० अश्रु] आँसू।

**अंडाणु**—पु०[सं०] स्त्री के गर्भाशय का वह अणु जो पुरुष के शुक्राणु से मिलकर स्त्रियो के गर्भ-धारण का कारण होता है।

**अंतःकालीन**—वि० [स० अंतःकाल, मध्य० स०+ख-ईन] दो काल-विभागों या समयो के बीच मे पड़नेवाले काल या समय से संबंध रखने या उससे होनेवाला। (प्रॉविजनल)

**अंतःप्रज्ञा**—स्त्री०[स०] प्राणियों के अंतःकरण मे रहनेवाली वह शक्ति जिसके द्वारा उन्हें किसी विषय में बिना कुछ सोचे-विचारे अपने-आप और तत्काल ज्ञान हो जाता है। (इन्टयूशन)

**अंतःसत्ता**—स्त्री०[सं०] शरीर के अन्दर की वह सत्ता, जिसमे आंतर प्राण, आंतर मन और आंतर शरीर के साथ चैत्य पुरुष विद्यमान रहता है। (इनर-बीइंग)

**अंतःस्राव**—पु०[सं०] १. आधुनिक आयु-विज्ञान मे, शरीर के कुछ अंगों की विशिष्ट ग्रंथियों में से कई प्रकार के रासायनिक तरल पदार्थ या रस निकलने की क्रिया जिससे दूसरे अंगों के पोषण तथा अनेक प्रकार की शारीरिक प्रक्रियाओं में सहायता मिलती है। २. उक्त प्रकार से निकलनेवाला द्रव या रस। (हॉर्मोन)

**अंतरण**—पु० [सं०] [भू० कृ० अंतरित] १. अंतर दिखाने या रखने के लिए पदार्थों के बीच में कुछ जगह छोड़ना। (स्पेसिंग)

**अंतरणुक**—वि०[सं० कर्म० स०] (तत्व) जो दो या अधिक पदार्थों के अणुओं में समान रूप से पाया जाता हो। (इन्टर-मोलक्यूलर)

**अंतरपणन**—पु०[सं०] आधुनिक वाणिज्य क्षेत्र में, विदेशी विनिमय से सम्बद्ध वस्तुएँ और लेन-देन के कागज-पत्र, हुँडियाँ आदि सस्ते बाजार मे खरीदने और तेजी वाले बाजारों मे बेचने की क्रिया या भाव। (आर्बिट्रेज)

**अंतरा**—पु०

**विशेषशास्त्रीय दृष्टि से** यह गति के चार अंगो या अंशो मे दूसरा अंग या अंश माना जाता है। इसके स्वर मध्यम और पंचम कहलाते हैं। शेष तीन अंग या अंश स्थायी, सचारी और आरोहण कहलाते हैं।

**अंतरात्मा (त्मन्)**—स्त्री० १ वह दिव्य सत्ता जो जीव-मात्र के शरीर के अन्दर उसके हृदय-केन्द्र मे बीज रूप मे वर्तमान रहती है। जीवात्मा। (सोल)

**अंतरारंभ**—पु०[स०] कई प्रकार के मानसिक रोगो का एक वर्ग जिसमे रोगी या तो आस-पास की परिस्थितियो से उदासीन हो जाता है, या उसके विचार भ्रमात्मक हो जाते है, या वह निश्चेष्ट और मूढ हो जाता है, या उग्र तथा प्रचड रूप से असाधारण आचरण करने लगता है। (स्किजोफ्रीनिया)

**अंतरावर्त**—पु०[स० अंतर+आवर्त] किसी पर-राष्ट्र का वह भू-खड जो किसी कथित या विशिष्ट देश के भीतरी भाग मे पड़ता हो और प्राय चारो ओर उसकी सीमाओ से घिरा हो। 'बहिरावर्त' का विपर्याय। (एन्क्लेव) जैसे—भारत की पूर्वी सीमा पर पूर्वी पाकिस्तान के बहुत से अंतरावर्त हैं।

**अंतरावेश**—पुं०[स०]=अंतरावर्त।

**अंतरिक्ष**—पु० १. पृथ्वी अथवा अन्य ग्रहों को आवृत्त करनेवाले वातावरण के उपरांत और आगे का सारा अनत विस्तार। आकाश से और आगे और ऊपर का वह सारा विस्तार जो समस्त-ब्रह्माड मे फैला है। (स्पेस)

**अंतरिक्ष-किरण**—स्त्री० [स०]=ब्रह्माड-किरण।

**अंतरिक्ष-यान**—पुं०[स०] एक प्रकार का आधुनिक यान जो पृथ्वी के वातावरण से बाहर निकलकर सैकडों मील की ऊँचाई पर अंतरिक्ष अथवा ऊपरी आकाश मे भ्रमण करता है और जिसमे कुछ यात्री तथा अनेक प्रकार के यंत्र भी रहते हैं। (कॉस्मोनॉट, स्पेसशिप)

**अंतर्ग्रही**—वि०[सं०] आकाशस्थ ग्रहों आदि के पारस्परिक दूरी, योजना आदि से संबंध रखनेवाला। ग्रहों आदि को पारस्परिक संबंध के विचार से होनेवाला। (इंटर-स्टेलर) जैसे—अंतर्ग्रही अवकाश; अंतर्ग्रही उड़ान या यात्रा।

स्त्री०=अंतर्गृही।

**अंतर्जातीय**—वि० [स० कर्म० स०+छ—ईय] दो या अधिक जातियो से पारस्परिक संबंध रखनेवाला अथवा उनमे होने या पाया जानेवाला। (इन्टर-कास्ट) जैसे—अंतर्जातीय विवाह।

**अंतर्वीक्षन**—पु० [सं०] १. अंदर की ओर देखना। २. दार्शनिक क्षेत्र में, अपनी आंतरिक या मानसिक प्रक्रियाओं और स्थितियों के सुधार के लिए उनका चिंतन, मनन और विवेचन करना। आत्म-निरीक्षण। (इन्ट्रोस्पेक्शन)

**अंतर्दृष्टि**—स्त्री० २. ऐसी दृष्टि या समझ जिसमें किसी चीज या बात का भीतरी तत्त्व या रहस्य जाना जाय। (इनसाइट)

**अंतर्धातुक**—वि० [सं० ब० स० कप्] (तत्त्व) जो दो या अधिक धातुओं में समान रूप से पाया जाता हो। (इन्टर-मेटैलिक)

**अंतर्ध्वंस**—पु० [सं०] जान-बूझकर और बुरे उद्देश्य से कोई चलता हुआ काम या बनी हुई चीज नष्ट करना या बिगाड़ना। तोड़-फोड़। (सैबोटेज) जैसे—कुछ विद्रोहियों ने गुप्त रूप से अस्त्र-शस्त्र बनाने के कारखानों में अंतर्ध्वंस आरम्भ कर दिया था।

**अंतर्प्रांतीय**—वि० [सं० कर्म० स० छ-ईय] किसी देश या राज्य के दो या अधिक प्रांतों के पारस्परिक व्यवहार से सम्बन्ध रखने या उनमें होनेवाला। (इन्टर-प्राविन्शल)

**अंतर्भावना**—स्त्री० २. मनोविज्ञान में चित्त की वह प्रवृत्ति, जिससे कोई चीज देखने या कोई बात सुनने पर उसकी गति, गुण, विस्तार में मनुष्य 'स्व' को लीन कर देता और तब उनका अनुभव या ज्ञान प्राप्त करता है। (इम्पीलिंग)

**अंतर्मार्ग**—पु० [सं०] संगीत में, वह मधुर विचित्रता और सौंदर्य, जो किसी गीत के बीच-बीच में विभिन्न स्वरों के पारस्परिक संयोग के द्वारा प्रस्तुत किया जाता है। बोल-चाल में इसी को 'बोल बनाना' कहते हैं।

**अंतर्राष्ट्रवाद**—पु० [सं०] वह वाद या सिद्धांत, जिसके अनुसार यह माना जाता है कि सब देशों या राष्ट्रों को समानता के आधार पर और बिना अपने हितों का त्याग किये परस्पर मित्रतापूर्वक रहना और व्यवहार तथा सहयोग करना चाहिए। (इन्टरनेशनलिज्म)

**अंतर्राष्ट्रीय**—वि० [सं० अंतर्राष्ट्र मध्य० स०+छ—ईय] १. अपने राष्ट्र की भीतरी बातों से संबंध रखनेवाला। २. अपने राष्ट्र से होनेवाला। ३. आज-कल मुख्य रूप से, दो या अधिक राष्ट्रों के पारस्परिक व्यवहार से संबंध रखने या उनसे होनेवाला। सार्वराष्ट्रीय। (इन्टरनेशनल)

**अंतर्राष्ट्रीय न्यायालय**—पुं० [सं०] संयुक्त राष्ट्र-संघ द्वारा स्थापित एक सर्वोच्च न्यायालय जिसमें संघस्थ राष्ट्रों के आपसी झगड़ों का विचार या निर्णय होता है। इसकी स्थापना सन् १९४६ में हेग नगर में हुई थी।

**अंतर्राष्ट्रीय विधि**—स्त्री० [सं०] ऐसी विधि या कानून, जिसमें वे नियम रहते हैं जिनका पालन करना सभी राष्ट्रों के लिए आवश्यक होता है। (इन्टरनेशनल लॉ)

**अंतर्वर्ग**—पु० [सं०]=उपगण।

**अंतर्वलन**—पु० [सं०] किसी चीज का चक्राकार घूमते हुए अन्दर की ओर मुड़ना। (इन्वोल्यूशन)

**अंतर्हित**—भू० कृ० २. किसी के अंदर छिपा या दबा हुआ। निगूढ़। निहित। (लेटेन्ट)

**अंतश्चेतना**—स्त्री० [सं०] अंतःकरण के भीतरी भाग में रहनेवाली चेतना जो हमें सद् और असद् का ज्ञान कराती है। विवेक। (इनर-कान्शेन्स)

**अंतस्थ चेतना**—स्त्री० [सं०] अतस्थ सत्ता में रहनेवाली चेतना। (अरविंद-दर्शन के अनुसार इस चेतना की जाग्रति या प्राप्ति होने पर विश्व-शक्तियों की सभी अदृश्य क्रियाएँ और गतियाँ जानी जा सकती हैं।)

**अंतस्थ राज्य**—पु० [सं०] दो बड़े राज्यों के बीच में या उनकी सीमाओं पर स्थित होनेवाला वह छोटा राज्य, जो उन दोनों राज्यों में संघर्ष के अवसर न आने देता हो। (बफर स्टेट)

**अंतस्थ सत्ता**—स्त्री० [सं०] मनुष्य की स्थूल सत्ता के पीछे विद्यमान रहनेवाली वह सूक्ष्म सत्ता जो ऊपर की ओर उच्चतर अतिचेतन स्तरों की ओर भी और नीचे अवचेतन स्तरों की ओर भी खुली रहती है और जिसमें एक बृहत्तर मन और प्राण तथा स्वच्छ सूक्ष्म शरीर रहता है। (सब्लिमिनल बीइंग)

**अंतस्था**—स्त्री० [सं०]=मंजूषा।

**अंतिम**—वि० ३. (निश्चय या विचार) जो पूरी तरह से किया जा चुका हो और जिसमें सहसा कोई परिवर्तन या फेर-बदल न हो सकता हो। (फ़ाइनल)

**अंत्य लेख**—पु०[सं०]=उपसंहार।

**अंत्याधार**—पु० [सं०] १ अंतिम छोर या सिरे पर रहनेवाला वह आधार जिस पर कोई भारी चीज टिकी रहती हो। २ आधुनिक वास्तु-रचना में, मेहराबों आदि के नीचे के वे खंभे या स्थूण सरीखी रचनाएँ जो छतों, फूलों आदि का पूरा भार संभाले रहती हैं। (एबटमेन्ट)

**अंध-विश्वास**—पु० किसी अज्ञात, रहस्यमय या रहस्यपूर्ण बात या विषय के संबंध में अथवा किसी मत या सिद्धांत के प्रति होनेवाला ऐसा दृढ़ विश्वास, जो किसी प्रकार का तर्क-वितर्क मानने या सुनने न दे। बिना सोचे-समझे किया जानेवाला पक्का विश्वास। (सुपरिस्टिशन) जैसे—(क) प्रेत या देवी-देवताओं पर अथवा पौराणिक कथाओं या परंपरागत रीति-रवाजों पर होनेवाला अंध-विश्वास। (ख) किसी के आदेश, कथन या मत पर होनेवाला अंध-विश्वास।

**विशेष**—इनका मूल मानव जाति की उस आरंभिक अवस्था से माना जाता है, जिसमें वास्तविक ज्ञान का बहुत-कुछ अभाव न था; और लोग भयवश अदृश्य शक्तियों पर ही विश्वास रखते थे।

**अंधी घाटी**—स्त्री० [हिं०] भूगोल में, ऐसी घाटी जहाँ पहुँचकर किसी नदी का जल जमीन के अन्दर समाने लगता है; और पृथ्वी तल पर उसके प्रवाह का अन्त हो जाता है। (ब्लाइंड वैली)

**अंबपाली**—स्त्री० [सं० अ अपाली] वैशाली की एक प्रसिद्ध लिच्छवि वेश्या, जो गौतम बुद्ध के उपदेश से उनकी शिष्या बन गई थी।

**अंबिया**—पु० [सं० नदी का बहु०] नदी लोग या ईश्वर के दूत, जिन्हें वह समय-समय पर इस संसार में लोकोपकार के लिए भेजता रहता है।

**अंश-विभूति**—स्त्री० [सं०] अरविंद दर्शन के अनुसार ईश्वरीय चेतना और शक्ति का वह अंश जो किसी विशिष्ट कार्य के लिए इस लोक में प्रक्षिप्त होता है और वह कार्य पूरा करके फिर अपने मूल में जा मिलता है।

**विशेष**—कहा जाता है कि इस लोक में आने पर भी वह अपने मूल

से संबद्ध रहती और आवश्यकता होने पर अवतरित हो सकती या यहाँ आ सकती है। (एमैनेशन)

**अंश-शोधन**—पुं० [सं०] [भू० कृ० अंश-शोधित] किसी वस्तु के अशो का विभाजन करके उनके मान अंकित या स्थिर करना। अशन। (कैलिब्रेशन)

**अंशांक**—पुं० [स०] अशो के रूप मे मान सूचित करनेवाले यत्रो में अशसूचक अक। (डिग्री)

**अकल-खुरी**—स्त्री० [हिं० अकलखुरा] अकल-खुरे होने की अवस्था या भाव। परम स्वार्थपरता। उदा०—डर यही है कि मेरे पीछे यह निगोड़ी अकल-खुरी न रहे।—दन्शा।

**अकलुष हस्पात**—पु० [स०+हिं०] एक प्रकार का साफ किया हुआ इस्पात, जो कुछ और धातुओं के मिश्रण से ऐसा हो जाता है कि वातावरण के प्रभाव मे दागी नही होने पाता और जग या मोरचे मे बचा रहता है। (स्टेनलेस स्टील)

**अकल्यता**—स्त्री० [स०] १ बेचैनी। २. अस्वस्थता। बीमारी।

**अकाय**—वि० [स० अकार्याय] जिसका कोई शुभ परिणाम या फल न हो।। अकारण। निरर्थक। व्यर्थ। उदा०—हरि इच्छा सबते प्रबल, विक्रम सकल अकाय।—भिखारीदास। (ख) करम, धरम, तीरथ विना साधन सकल अकाय।—सूर।

क्रि० वि० बिना किसी अर्थ के। व्यर्थ।

†वि०=अकथ्य।

**अकादमिक**—वि० [अ० एकैडेमिक] १. किसी विषय के शास्त्रीय अध्ययन, विवेचन आदि से सबध रखनेवाला। २ अपने उक्त प्रकार के स्वरूप के कारण जो केवल तर्क, विवेचन आदि के क्षेत्र का ही रह गया हो, व्यवहार के क्षेत्र मे न आ सकता हो। (एकैडेमिक)

**अकाल-प्रसूत**—वि० [स०] १. जो अकाल-प्रसव के फलस्वरूप उत्पन्न हुआ हो। २ जो अपने उचित या नियत समय से पहले ही उत्पन्न या प्रकट हुआ हो।

**अकृत**—वि० ३. जो किये जा चुकने पर भी न किये के समान कर दिया गया हो। (नल्)

**अकृतीकरण**—पु० [सं०] १. जो काम किया जा चुका हो उसे ऐसा रूप देना कि वह न किये हुए के समान हो जाय। २. दे० 'निर्विधायन'।

**अकोला**—पु० [देश०] एक प्रकार का मझोला पेड़, जिसके पत्ते प्रति वर्ष शिशिर ऋतु में झड जाते हैं।

†पुं०=अंकोला।

**अक्काद**—पुं० [सामी] ईरान का एक प्राचीन नगर और उसके आस-पास का प्रदेश जो दजला और फरात नदियो के बीच मे था। बेबिलोनिया के प्राचीन नगर इसी प्रदेश में थे। ईसा से ढाई-तीन हजार वर्ष पहले यहाँ के राजाओं ने बहुत बडा साम्राज्य स्थापित किया था।

**अक्मातिशयोक्ति**—स्त्री० साहित्य मे, अतिशयोक्ति अलंकार का एक प्रकार जिसमें कारण और कार्य के एक साथ ही घटित होने का उल्लेख होता है। यथा—दोऊ बातें छूटी गजराज की बराबर ही, पाँव ग्राह मुख तैं प्रथा निज मुख तैं।—मतिराम। (कुछ आचार्यों ने इसे कारणातिशयोक्ति का ही एक प्रकार माना है।)

**अक्रियावाद**—पु० बौद्ध-काल का एक दार्शनिक मतवाद जिसमे यह माना जाता था कि न तो कोई कर्म या क्रिया है और न कोई प्रयत्न। इसलिए मनुष्य के कार्यों का कोई अच्छा या बुरा फल नही होता। जैन और बौद्ध दार्शनिकों ने इस मतवाद का खडन किया था।

**अक्षय वट**—पु० १. पुराणानुसार वह वट वृक्ष जो प्रलयवाली बाढ के बाद भी बचा रहता है, और जिसके एक एक पत्ते पर ईश्वर छोटे से बालक के रूप मे बैठकर सृष्टि का उलट-फेर देखते-रहते हैं।

**अक्षर-धाम (न्)**—पु० १ शुद्ध द्वैत मत के अनुसार पूर्ण पुरुषोत्तम का धाम या निवास-स्थान। गो-लोक। २ ब्रह्म-लोक।

**अक्षि-साक्षी**—पु० [स०] दर्शन-साक्षी।

**अक्षत्तर**—पु० [स० नक्षत्र से फा०] आकाश का नक्षत्र या तारा। सितारा।

**अगूढ़-अर्थ्य**—पु० [स०] गणीभूत व्यग्य का एक भेद, जिसमें व्यग्यार्थ बहुत ही स्पष्ट तथा वाच्यार्थ के बहुत कुछ समान होता है और सरलता से समझ मे आ जाता है। (साहित्य)

**अगूढ़-व्यंग्या लक्षणा**—स्त्री० [स०] ऐसी लक्षणा, जो अगूढ़ व्यग्य (देखे) से युक्त हो। (साहित्य)

**अगोचरी**—स्त्री० [स०] हठयोग मे, साधना की एक मुद्रा, जिसका स्थान कान मे माना गया है, और जिसमे बाह्य शब्दो का सुनना बद करके मन को उन्मनी की ओर प्रवृत्त करने का अभ्यास किया जाता है।

**अग्नि**—स्त्री० १. पच-तत्त्वो मे से तेज नामक तत्त्व का वह गोचर या दृश्य रूप, जो सब चीजों को जलाता और ताप तथा प्रकाश उत्पन्न करता है। आग। (फायर)

**विशेष**—(क) ससार के अनेक धर्मों में और विशेषत: वैदिक धर्म मे इसे देवता और उपास्य माना गया है। यूनान और रोम मे इसकी पूजा राष्ट्र की देवी के रूप मे होती थी। (ख) कर्मकांड में गार्ह-पत्य, आहवनीय, दक्षिणाग्नि, सभ्याग्नि, आवसथ और औपसनाग्नि छः प्रकार की अग्नियाँ मानी गई हैं।

२. शरीर का वह ताप, जिससे शरीर के अंदर पाचन आदि क्रियाएँ होती हैं। जठराग्नि। वैद्यक में इनके तीन भेद हैं—भौम, दिव्य और उदर। ३. कोई ऐसा ताप, जो सब प्रकार के मलो या विकारों का नाश करके तेज, निर्मलता, प्रकाश आदि का आविर्भाव करता हो। ४. पूर्व और दक्षिण के बीच का दिशा या कोना। ५ कृत्तिका नक्षत्र। ६. क्षत्रियों का एक प्रसिद्ध वश या कुल। ७. रहस्य संप्रदाय मे, (क) ज्ञान-प्राप्ति की प्रबल इच्छा या उसके लिए होनेवाली आकुलता। (ख) काम, कोध आदि मनोविकार। (ग) सुषुम्ना नाड़ी। ८. वह बड़ा ऊसर या मैदान, जिसमे कही नाम को भी छाया या हरियाली न हो, और इसी लिए जो बहुत तपता हो। प्राचीन भारत मे स्थान नामों के अत मे प्रयुक्त। जैसे—काडाग्नि, त्रिभुजाग्नि आदि। ९. चित्रक या चीता नामक वृक्ष। १०. भिलावाँ। ११. नीबू। १२. सोना। स्वर्ण।

**अग्नि-परीक्षा**—स्त्री० ३. बहुत ही कठिन और ऐसी विकट परिस्थिति जिसमें योग्यता, शक्ति आदि की उत्कट परीक्षा होती हो और जिससे पार पाना बहुत ही कष्ट-साध्य हो। दिव्य-परीक्षा। (आर्डिएल)

**अग्नि-रक्षक रेखा**—स्त्री० [सं०] जंगलों मे घास-पात और पेड़-पौधे

काटकर और कुछ दूर तक की जमीन साफ करके बनाई जानेवाली वह रेखा, जो जंगलों में लगी हुई आग दूर तक फैलने से रोकने के लिए जगह-जगह पर बनाई जाती है। अग्नि-रेखा। (फ़ायर-लाइन)

**अग्नि रेखा**—स्त्री० [सं०] १ अग्नि-रक्षक रेखा। २. अग्नि-वर्षक रेखा।

**अग्नि वर्षक रेखा**—स्त्री० [सं०] युद्ध, शिकार आदि में योद्धाओं, शिकारियों आदि की वह सबसे आगेवाली पंक्ति, जहाँ से शत्रुओं, चीतों, शेरों आदि पर गोलियाँ चलाई जाती हैं। (फ़ायर-लाइन)।

**अग्नि-शामक**—वि० [सं०] अग्नि का शमन करनेवाला। आग ठंढी करने या बुझानेवाला।

पु० एक प्रकार का छोटा दस्ती उपकरण, जिससे किसी जगह लगी हुई आग बुझाने के लिए उस पर कुछ विशिष्ट रासायनिक पदार्थ छिड़कते हैं। (फ़ायर एक्सटिंग्विशर)

**अग्निष्टोम**—पु० पाँच दिनों में होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ, जिसका प्रतिपादन अध्वर्यव और राजसूय यज्ञ करनेवालों के लिए आवश्यक होता है।

**अग्न्याशय**—पु० शरीर के अन्दर उदर में आमाशय के नीचे की एक बड़ी ग्रंथि, जिससे निकलनेवाले रस से खाई हुई चीजें पककर पचती हैं। पेट में रहनेवाली जठराग्नि का मूल स्थान। पक्वाशय। (पैन्क्रियास)

**अघ्न-घर्षक**—वि० [सं०] अघ्न-घर्षण करनेवाला। (ऐंघसर)

**अघ्न-घर्षण**—पु० [सं०] [भू० कृ० अघ्न-घर्षित] स्वयं आगे बढ़कर किसी पर कोई आक्रमण करना। झगड़ा या बैर-विरोध खड़ा करनेवाला काम करना। (ऐंघसन)

**अघ्न-घर्षिता**—स्त्री०=अघ्न-घर्षण।

**अघ्नता**—स्त्री० [सं०] १. सबसे आगे अर्थात् पहले रखे जाने या होने की अवस्था या भाव। २ वह आधिकारिक स्थिति जिसमें बड़प्पन, महत्त्व आदि के विचार से किसी वस्तु या व्यक्ति को औरों से पहले बैठाया, रखा या लगाया जाता है। (प्रेसीडेन्स) ३ दे० 'प्राथमिकता'।

**अघ्र-शाखा**—स्त्री० [सं०] हाथ (या पैर) की उंगली।

**अघोरपथ**—पु० [सं०] एक प्रसिद्ध तांत्रिक शैव सम्प्रदाय जो मन में सम-बुद्धि उत्पन्न करके भेद-भाव दूर करने के लिए मद्य-मांस के सिवा महामांस तक का भी उपभोग करता है। इसे 'अवधूत' और 'सरभंग' भी कहते हैं।

**अघ्राणता**—स्त्री० [सं०] १ घ्राण-शक्ति का अभाव। २. गंधनाश नामक रोग। (ऐनोस्मिया)

**अचका**—पु० [हिं० अँचक] एक प्रकार की अनमेल कविता। ढकोसला।

**अचिति**—स्त्री० [सं०] अचित या अचेतन होने की अवस्था या भाव। 'चिति' का विपर्याय। (अनकान्शसनेस्)

**अचेतिकी**—स्त्री० [सं० अचेत+इकी] वह आधुनिक विज्ञान जिसमें औषधों के द्वारा शरीर के अंगों को अचेत या सुन्न करने के उपायों या सिद्धांतों का विवेचन होता है। (एनिस्थिसियोलॉजी)

**अच्छल**—वि० [सं०] सुन्दर। सुहावना।

**अछपा जाप**—पु० [हिं०] मंत्र जपने का वह प्रकार जिसमें मन ही मन जप किया जाता है, मुंह से नाम का उच्चारण नहीं किया जाता, और न माला फेरी जाती है।

**अज्ञात-चेतन**—पु० [सं०] आधुनिक मानव शास्त्र या मनोविज्ञान में मानस का वह अंश या भाग, जिसका हमें कोई ज्ञान नहीं होता। अचेतन। (अनकान्शस)

**अज्ञात-नामिक पत्र**—पु० [सं०] डाक-विभाग में, ऐसा पत्र जो ठीक या पूरा नाम, पता आदि न लिखा होने के कारण अपने उद्दिष्ट स्थान पर न पहुँच सका हो। (डेड् लेटर)

**अज्ञात-वास**—पु०

**विशेष**—इस प्रकार का वास अपनी इच्छा से भी किया जाता है; और प्राचीन काल में अपराधियों आदि को दंड-स्वरूप भी इसके लिए विवश किया जाता था। महाभारत में पांडवों का अज्ञातवास प्रसिद्ध है।

**अज्ञेयवाद**—पु० पाश्चात्य दर्शन में, यह सिद्धांत कि आत्मा, परमात्मा आदि परम तत्त्व अज्ञेय हैं और उनका ठीक-ठीक ज्ञान न तो अभी तक किसी को प्राप्त हो सका है और न आगे हो सकेगा। (ऐग्नास्टिसिज्म)

**विशेष**—इसकी मुख्य मान्यता यह है कि किसी विषय का इंद्रियों के द्वारा हम जो ज्ञान होता है, वह अधूरा ही होता है और उस विषय का मूल या वास्तविक तत्त्व अज्ञेय या अनजाना ही रहता है।

**अटकाव**—पु० [हिं० अटकना] १ अटकने या अटकाने की क्रिया या भाव। २ अटकन। बाधा। विघ्न। ३ कोई ऐसा काम या बात जिसके कारण कुछ करने में अटकना या रुकना पड़े। रुकावट। रोक। जैसे—घर में किसी को चेचक या माता निकलने पर कई तरह के अटकाव करने पड़ते हैं। अर्थात् कई तरह के कामों से बचना पड़ता है।

**अट-कौशल**—स्त्री० [सं० अष्ट-कौशल] गुप्त परामर्श।

**अटा**—पु० [?] जंगलों में झाड़ियों आदि से घेर कर बनाया हुआ वह सुरक्षित स्थान, जिसमें शिकारी लोग छिपकर बैठते और जहाँ से छिपे हुए जन्तुओं का शिकार करते हैं। (पूर्व)

**अठवारो**—अ० [हिं० अठवारा] कई अठवारों या सप्ताहों तक। पु० कई अठवारे। कई सप्ताह। जैसे—उन्होंने जरा-सी काम में अठवारो लगा दिये।

**अणु**—पु० १. किसी द्रव्य का वह सबसे छोटा टुकड़ा, जो स्वतंत्र अवस्था में भी रह सकता हो और जिसमें उसके मूल द्रव्य के सभी गुण वर्त्तमान हों। (मॉलिक्यूल)

**विशेष**—ऐसे प्रत्येक अणु में साधारणतः दो या अधिक परमाणु होते हैं। आज-कल इसका प्रयोग परमाणु के स्थान पर होने लगा है; क्योंकि पहले परमाणु ही द्रव्य का सबसे छोटा टुकड़ा माना जाता था। दे० 'परमाणु'।

**अणु-कीट**—पु० [सं०] अणुओं के समान वे बहुत ही छोटे-छोटे जीव जो प्राणियों में भी और वनस्पतियों में भी रोग, विकार आदि उत्पन्न करते हैं। [माइक्रोब]

**अणु-बम**—पु० दे० 'परमाणु-बम'।

**अणु-वीक्षण विज्ञान**—पु० [सं०] वह विज्ञान, जिसमें अणु-वीक्षण यंत्र के द्वारा अनुसंधान करने की प्रक्रियाओं तथा सिद्धांतों का विवेचन होता है। (माइक्रोस्कोपी)

**अणु-व्रत**—पु० जैन धर्म में वे पाँच छोटे व्रत, जिनका विधान श्रावकों और साधारण गृहस्थों के लिए है—अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह। योग-शास्त्र में इन्हीं को यम कहा गया है।

**अताई**—वि० [अ० अता=प्रदान] १ जो अपनी ईश्वरदत्त प्रतिभा के बल पर ही बिना किसी शिक्षक की सहायता से कोई काम सीख ले। २. साधारण बोल-चाल में जिसने बिना किसी शिक्षक से शिक्षा पाये यों ही देख-सुनकर किसी विद्या या विषय का थोड़-बहुत ज्ञान प्राप्त कर लिया हो। (उपेक्षा-सूचक) ३ जो बहुत जल्दी कोई काम सीख लेता हो।

**अतिक्रमण**—पु० २ अपने सुख-सुभीते के विचार से अपनी अधिकृत सीमा से निकलकर इस प्रकार आगे बढ़ना या दूसरे की सीमा में जाना कि दूसरों के सुख-सुभीते में बाधा हो। (ट्रान्सग्रेशन)

**अतिचार**—पु० २. किसी के क्षेत्र या निवास-स्थान में उसकी इच्छा के विरुद्ध किया जानेवाला अनधिकार-प्रवेश। (ट्रेसपास)

**अतिचेतन**—पु० [स०]† आधुनिक मनोविज्ञान में, वह स्थिति जिसमें स्नायविक संस्थान के अत्यधिक उत्तेजित होने के कारण चेतना-शक्ति असाधारण रूप में तीव्र हो जाती है। ऐसा प्राय. ज्वर अथवा स्नायविक रोगों में होता है। २. दे० 'ऊर्ध्वचेतन'।

**अति-मानस**—पु० [स०] [वि० अति-मानसिक] मन से परे की और बहुत ऊँची वह अनंत चेतना, जो अज्ञान से पूर्णत मुक्त, परम सत्यमयी होती है और जो अरविंद-दर्शन में सच्चिदानंद के एक यंत्र के रूप में काम करनेवाली मानी गई है। (सुपर-माइन्ड)

**विशेष**—अरविंद-दर्शन के अनुसार इसी अति-मानस सत्ता का लोक, महर्लोक या महर्लोक कहलाता है।

**अति-मानसिक पुरुष**—पु०=अति-मानव।

**अतिमूर्च्छा**—स्त्री० [स०] विकट आघात या रोग के कारण उत्पन्न होनेवाली वह मूर्च्छा, जो प्राय: अधिक समय तक निरंतर बनी रहती है और अंत में घातक सिद्ध हो सकती है। सन्यास। (कोमा)

**अति-यथार्थवाद**—पु० [स०] कला और साहित्य के क्षेत्र में एक आधुनिक पाश्चात्य मत या सिद्धांत जिसमें सर्व-मान्य भौतिक तथा मानवी सिद्धांतों की उपेक्षा करके अवचेतन या उपचेतन की प्रवृत्तियों के सहारे कोरे काल्पनिक तथा स्वप्निल क्षेत्रों की बातों को सच-कुछ मानकर ऊलजलूल के आधार पर जीवन की विकृत दशाओं का अंकन या चित्रण किया जाता है। (सर-रियलिज्म)

**अति-यथार्थवादी**—वि० [स०] अति-यथार्थवाद संबंधी। अति-यथार्थवाद का।

पु० वह जो अति-यथार्थवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

**अति-राष्ट्रीयता**—स्त्री० [स०] [वि० अति-राष्ट्रीय] कुछ व्यक्तियों में होनेवाली राष्ट्रीयता की वह उग्र और धर्मडभरी भावना, जिसके परिणामस्वरूप वे तर्क, विवेक आदि छोड़कर हरदम लड़ने-भिड़ने के लिए तैयार रहते हैं। (शाविनिज्म)

**अति-राष्ट्रीयतावाद**—पु० [स०] राजनीतिक क्षेत्र में, यह मत या सिद्धांत कि अपना राष्ट्र ही सब-कुछ है, और इसके सामने किसी राष्ट्र या व्यक्ति का कुछ भी महत्त्व नहीं है। इसमें धर्म, नीति, न्याय आदि के लिए कोई स्थान नहीं होता, और न औचित्य-अनौचित्य, कर्त्तव्य-अकर्त्तव्य का ही कोई ध्यान रखा जाता है। (अल्ट्रा नेशनलिज्म, शाविनिज्म)

**अति-राष्ट्रीयतावादी**—वि० [स०] अति-राष्ट्रीयतावाद संबंधी। अति-राष्ट्रीयता वाद का।

पु० वह जो अति-राष्ट्रीयतावाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो। (अल्ट्रा नेशनलिस्ट, शाविनिस्ट)

**अति-वृद्धि**—स्त्री० [स०] रोग, विकार आदि के कारण शरीर के किसी अंग का असाधारण रूप से और नियत या स्वाभाविक मान से अधिक बढ़ा हो जाना।

**अतिशयोक्ति**—स्त्री०—

**विशेष**—इसके ये आठ भेद कहे गये हैं—रूपकातिशयोक्ति, भेदकातिशयोक्ति, संबंधातिशयोक्ति, असंबंधातिशयोक्ति, चपला या चपलातिशयोक्ति, अत्यंततिशयोक्ति और सापह्नवातिशयोक्ति।

**अनिसर्पण**—पु० ३. अपने अधिकार, कार्य-क्षेत्र अथवा भोग्य सीमा पार करके ऐसी जगह पहुँचना जहाँ जाना, पहुँचना या रहना अनुचित, अवैध या मर्यादा-विरुद्ध हो। (एनक्रोचमेन्ट)

**अति-सूक्ष्मदर्शी**—पु० [स०] एक प्रकार का सूक्ष्म-दर्शी उपकरण या यंत्र जिससे अणु के समान छोटे-छोटे कण भी बहुत बड़े आकार के दिखाई देते हैं। (अल्ट्रामाइक्रास्कोप)

**अति-स्वन**—वि० [स०] जिसकी गति शब्द की गति (प्रति सेकेन्ड १०८७ फुट या प्रति घंटे ७३८ मील) से अधिक तीव्र हो। (सुपर-सोनिक) जैसे—अब भारत में अति-स्वन विमान (हवाई जहाज) बनाने की भी व्यवस्था हो रही है।

**अतींद्रिय-ज्ञान**—पु० [स०] शारीरिक इंद्रियों की सहायता के लिए बिना केवल आध्यात्मिक या मानसिक बल से दूसरे के मन की बातें या विचार जानने की क्रिया या विद्या। दूर-बोध। पारेंद्रिय-ज्ञान। (टेलिपैथी)

**अतींद्रिय-ज्ञानी**—पु० [स०] ऐसा व्यक्ति, जिसमें अतींद्रिय ज्ञान प्राप्त करने का गुण या शक्ति हो। (टेलिपैथिस्ट)

**अतींद्रिय-दर्शन**—पु०[स०] अतींद्रिय दृष्टि के द्वारा बहुत दूर की या बिलकुल छिपी हुई चीजें देखने की क्रिया या भाव। (क्लेयरवायन्स)

**अतींद्रिय-दर्शी**—पु० [स०] वह जिसमें अतींद्रिय-दर्शन की शक्ति हो। (क्लेयरवायंन्ट)

**अतींद्रिय दृष्टि**—स्त्री० [स०] कुछ विशिष्ट लोगों में होनेवाली वह दृष्टि या शक्ति, जिसके द्वारा वे बहुत दूर की और बिलकुल छिपी या दबी हुई चीजें या बातें देख लेते हैं। (क्लेयरवायन्स)

**विशेष**—'अतींद्रिय दृष्टि' और 'दिव्य-दृष्टि' का अंतर जानने के लिए देखें 'दिव्य-दृष्टि' का विशेष।

**अतींद्रिय श्रवण**—पु० [स०] कुछ लोगों में होनेवाली वह श्रवण-शक्ति जिसके द्वारा वे बहुत अधिक दूर की ऐसी बातें सुन लेते हैं, जो साधारण लोगों को किसी तरह सुनाई नहीं पड़ती। (क्लेयर-आडिएन्स)

**अत्यंततिशयोक्ति**—स्त्री० साहित्य में, अतिशयोक्ति अलंकार का एक प्रकार जिसमें कारण या हेतु से पहले ही कार्य के पूरे होने का उल्लेख होता है। यथा—जात भयो पहले तन छाय, दो पीछे मिलाय भयो मन

भावते।—भिखारीदास। (कुछ आचार्यों ने इसे कारणातिशयोक्ति के अंतर्गत ही माना है।)

**अत्युक्ति**—स्त्री० ३. साहित्य के अतिशयोक्ति की तरह का एक अर्थालंकार, जिसमें किसी की उदारता, यश, योग्यता, शक्ति आदि उचित से बहुत अधिक और बढ़ा-चढ़ा करकिया हुआ वर्णन होता है। जैसे—हे राजन्, आपके दान से याचक कल्पतरु हो गये हैं। उदा०—भूषण भार सँभारिहै, क्यों यह तन सुकुमार। सूषे पाय न परत धर शोभा ही के भार।—बिहारी।

**अत्रि**—पु० [स०] १. एक प्रसिद्ध वैदिक और मंत्र-द्रष्टा, जिसकी गिनती दस प्रजापतियों और सप्तर्षियों में होती है। २ सप्तर्षि-मंडल का एक तारा। ३. रामायण काल के एक ऋषि, जो अपनी पत्नी अनसूया के साथ चित्रकूट के दक्षिण में रहते थे।

**अथर्वन**—पु० १ ऐसा व्यक्ति जो चित्त-वृत्तियों का निरोध करके समाधि लगाता हो। २ एक वैदिक मुनि, जो ब्रह्मा के पुत्र, वैदिक आर्यों के पूर्व-पुरुष और अग्नि के उत्पादक कहे गये हैं। ३ यज्ञ करनेवाला व्यक्ति। ऋत्विज्।

**अथर्व वेद**—पु० [स०] हिंदुओं के चारों वेदों में से अंतिम या चौथा वेद जिसमें मोहन, उच्चाटन, मारण, जादू-टोने, झाड़-फूँक, ज्योतिष, रोग-निदान आदि के संबंध की बहुत-सी बातें हैं। कुछ लोग आयुर्वेद को इसी का उपवेद मानते हैं।

**अदल-बदल**—पु० २. दो चीजों, व्यक्तियों आदि में आपस में होनेवाला स्थान आदि का परिवर्तन। पहले का दूसरे के स्थान पर और दूसरे का पहले के स्थान पर आना, जाना या होना। व्यतिहार। (इन्टर-चेन्ज) ३. दे० 'अदला-बदली'।

**अदह**—पु० कुछ विशिष्ट प्रकार के ऐसे खनिज द्रव्यों का वर्ग जिनमें चमकीले सफ़ेद रेशे होते हैं। इन पर आग और विद्युत् का प्रभाव नहीं होता है। इसी लिए इन रेशों के जो कपड़ बनते हैं, वे आग में जल नहीं सकते। (एस्बेस्टस)

**अदिति**—स्त्री० २ बंधन-हीनता। स्वतंत्रता। ३ ऋग्वेद में, एक मातृ-देवी, जो इन्द्र और आदित्यों को उनकी शक्ति प्रदान करनेवाली मानी गई है। ४. पुराणानुसार दक्ष-प्रजापति की एक कन्या, जो कश्यप को ब्याही थी और जिससे सूर्य आदि ३३ देवता उत्पन्न हुए थे। ५. माता। माँ। ६. पृथ्वी। ७ प्रकृति। ८ वाणी। ९. गाय। गौ। १०. पुनर्वसु नक्षत्र। ११. गरीबी। निर्धनता।

**अदृष्ट**—पु० १. न्याय-दर्शन के अनुसार पूर्व-जन्म में कर्मों के ऐसे फल, जिनका मूल दिखाई नहीं देता, पर जो मनुष्य को सुख-दुःख देते हैं।

**विशेष**—अग्नि, जल आदि के कारण होनेवाले दैवी प्रकोपों की गणना भी अदृष्ट में होती है।

२. तकदीर। प्रारब्ध। भाग्य।

**अदृष्ट जकना**—वि० स्त्री० [स०] (स्त्री) जो इतनी अधिक लज्जाशील या सकोची हो कि जल्दी अपनी आँख भी न देखती हो।

**अद्यतन**—वि० १. आज के दिन का। आज से संबंध रखनेवाला। २. आज-कल की उपयोगिता, जानकारी, प्रचलन, रुचि आदि के विचार से जो ठीक या पूरा हो। दिनांत। (अप-टू-डेट)

**अद्वैतवाद**—पु० २. पाश्चात्य दर्शन में यह सिद्धान्त कि सारी सृष्टि एक ही मूल-तत्त्व से उत्पन्न हुई है। (ऐब्सोल्यूटिज्म)

**अधःशैल**—पु० [स०] भू-शास्त्र में, पहाड़ों के नीचे की वे चट्टानें, जो भू-गर्भ के अन्दर रहती हैं। (बैथोलिथ)

**अधस्तल**—पु० [स० ष० त०] १. किसी चीज के सबसे नीचेवाला तल या तह जिसके आधार पर ऊपरवाले तलों का निरूपण या वर्गीकरण होता है। २ भूगोल में, नदी के नीचे का वह तल, जिसकी मिट्टी काटकर वह बहा नहीं पाती, और इसी लिए जिसकी गहराई और बढ़ नहीं सकती। (बेस-लेवल) ३ जमीन के नीचे बनाया हुआ कमरा या घर। तहखाना।

**अधारना**—स० [स० आधार] किसी को अपना आधार या आश्रय-स्थल बनाना या मानना। उदा०—नानक छुटिया जिन राम अधार।—गुरु नानक।

**अधिक**—पु० साहित्य में अतिशयोक्ति के वर्ग का एक अलंकार जिसमें आधार अथवा आधेय के लोक-रीति पर जो दोनों अपेक्षित बहुत बड़े होने का उल्लेख किया जाता है। (एक्सीडिंग)

**अधिक पद**—पु० [स०] साहित्य में, एक प्रकार का भाषा-दोष, जो उस समय माना जाता है, जब किसी वाक्य में अनावश्यक रूप से किसी पद या शब्द का प्रयोग किया जाता है।

**अधिकार**—पु० २. किसी वस्तु या विषय पर होनेवाला किसी प्रकार का स्वत्व। इन्टिरेस्ट। (राइट)

**अधिकार-लेख**—पु० [स०] एकरबनामा।

**अधिकारिता**—स्त्री० १. अधिकारी होने की अवस्था, गुण या भाव। २ किसी व्यक्ति का वह स्थिति, जिसमें कोई काम करने के संबंध में उसका अधिकारी होना विधिक दृष्टि से सर्व-मान्य हो। (लोकस स्टेंडी)

**अधिकारी तंत्र**—पु० [स०]=नौकरशाही।

**अधिगम**—पु० ३. किसी काम, बात या स्थान में होनेवाली पहुँच। गति। (ऐक्सेस)

**अधिदान**—पु० [स०] राज्य या शासन की ओर से उद्योग-धंधों की अभिवृद्धि के लिए उनके कर्ताओं या संचालकों को दी जानेवाली आर्थिक सहायता। (सब्सिडी)

**अधिनायकवादी**—वि० [स०] अधिनायक-वाद संबंधी। अधिनायक-वाद का।

पु० वह जो अधिनायक-वाद का अनुयायी, पोषक अथवा समर्थक हो।

**अधिनियम**—पु० २ वह महत्त्वपूर्ण नियमावली जो किसी विधान के अधीन बनी हो और सबके पालन के लिए विधान-सभा से स्वीकृत हो चुकी हो। कानून। (ऐक्ट) ३. दे० 'विधान'।

**अधिनियमिति**—स्त्री० [स०]=अधिनियमन।

**अधिन्यस्त**—भू० कृ० [स०] (धन या पदार्थ) जो अधिन्यास के रूप में किसी का दिया या सौंपा गया हो। (एसाइन्ड)

**अधिन्यास**—पु० [स०] १. किसी विशिष्ट उद्देश्य से कुछ नियत या निश्चित करना। २. उपहार, दान आदि के रूप में कोई चीज किसी को देते हुए सौंपना। (एसाइनमेंट)

**अधिन्यासक**—पु० [सं०] वह जो अधिन्यास के रूप मे कोई चीज किसी को देता या सौपता हो। (एसाइनर)

**अधिन्यासी**—पु० [सं० अधिन्यासिन्] वह जिसे अधिन्यास के रूप मे कोई चीज मिली या सौंपी गई हो। (एसाइनी)

**अधि-भाषण**—पु० [सं०] न्यायालय मे अधिवक्ता या किसी विधिज्ञ द्वारा दिया जानेवाला भाषण या वक्तव्य। (ऐड्रेस आफ ऐड्वोकेट)

**अधि-प्रभार**—पु० [सं०]=अधिभार।

**अधिमत**—पु० २ किसी विवादास्पद विषय के संबध मे पंच या मध्यस्थ का निर्णायक मत। (वर्डिक्ट)

**अधिमूल्य**—पु० कंपनियो मे ऋणपत्रो, हिस्सों आदि का अंकित अथवा निर्गत मूल्य से बढ़ा हुआ वह अतिरिक्त मूल्य, जो कुछ विशिष्ट परिस्थितियो मे दिया या लिया जाता है। बढ़ौती। (प्रीमियम)

**अधिराज**—पु० १. प्राचीन भारत मे, ऐसा राजा जो किसी सम्राट के अधीन होता था। २ आज-कल, किसी अधिराज्य का ऐसा स्वामी जिसे सब प्रकार के अधिकार और सत्ताएँ प्राप्त हो। बादशाह। सम्राट्। (सॉवरेन)

**अधिरोध**—पु० [सं०] ऐसी आज्ञा या उसके अनुसार होनेवाली रुकावट, जिससे कोई माल कहीं भेजा या कहीं से लाया न जा सके। घाट-बंदी। (एम्बार्गो)

**अधिवक्ता (क्तृ)**—पु० आधुनिक विधिक क्षेत्र मे, वह प्रशिक्षित व्यक्ति (वकील से भिन्न और उससे उच्च वर्ग का) जिसे उच्च न्यायालय तक मे किसी व्यक्ति की ओर से उसके पक्ष के प्रतिपादन तथा समर्थन का अधिकार प्राप्त होता है। (ऐडवोकेट)

**अधिवासी**—वि० ३ आज-कल, विधिक क्षेत्र मे, ऐसा किसान जो जमींदारी प्रथा टूटने के उपरान्त कोई खेत जोतने-बोने का अधिकारी बन गया हो। (उत्तर प्रदेश)

**अधिवृक्क**—पु० [सं०] स्तनपायी जंतुओ के शरीर मे वृक्क या गुरदे के ऊपरी भाग मे होनेवाली दो ग्रंथियाँ जिनसे एक प्रकार का स्राव होता है। (ऐड्रिनल)

**अधिशासक**—वि० [सं०] [स्त्री० अधिशासिका] अधिशासन करनेवाला। अधिकारपूर्वक वश मे रखनेवाला।

पु० वह जो अधिशासन करता हो। अधिशासन-कारी। (गवर्नर)

**अधिशासन**—पुं० [सं० अधि+शासन] [भू० कृ० अधिशासित, वि० अधिशासक, अधिशासी] कार्य, व्यक्ति, संस्था, स्थान आदि को इसप्रकार नियंत्रण या वश मे रखना कि किसी प्रकार मर्यादा का उल्लंघन न होने पाए। (रेजिमेन्टेशन)

**अधिशासनिक**—वि० [सं०] १. अधिशासन संबधी। अधिशासन का। २. अधिशासन के रूप में होनेवाला। (गवर्निंग)

**अधिशासी**—वि० [सं० अधिशासिन्] अधिशासन करनेवाला। (गवर्निंग) जैसे—अधिशासी परिषद्।

**अधिशेष**—वि० [सं०] (धन या पदार्थ) जो उपयोग या व्यवहार के उपरान्त बच रहे। काम में आने के बाद भी बाकी बचा हुआ। (सर्प्लस)

पुं० मूल्य, मान आदि के विचार से जितना आवश्यक हो या साधारणतः जितना होना चाहिए, उसकी तुलना से होनेवाली अधिकता। बचती। (सर्प्लस)

**अधि-सूचित**—भू० कृ० [सं०] (बात या विषय) जिसके संबध मे अधिसूचना दी गई हो। (नोटिफ़ाइड) जैसे—अधिसूचित क्षेत्र।

**अध्यक्ष**—पु० ३. जन-तांत्रिक राज्यो मे लोक-सभा का प्रधान और सभापति। (स्पीकर)

**अध्यांतरण**—पु० [सं०] मनन या विचार के क्षेत्र मे वह प्रवृत्ति, जिससे किसी सीमित या स्थूल वस्तु के बाह्य रूप के आधार पर उसमे निहित असीम और सूक्ष्म रूप के ज्ञान का परिचय प्राप्त किया जाता है। (इन्टलेक्चाइज़ेशन)। जैसे—फूल को देखकर उसकी पवित्रता, सरसता और सौंदर्य की ओर, चित्र को देखकर उसके माधुर्य, शांति आदि की ओर, या काव्य पढ़कर उसके ओज, प्रसाद आदि गुणो की ओर ध्यान जाना अथवा उनका चिंतन करना।

**अध्यात्मवाद**—पु० दर्शन-शास्त्र का वह आरंभिक रूप जिसके अनुसार यह माना जाता है कि यह संसार ऐसी दैवी शक्तियों से अनुप्राण है, जो हमारी अनिष्ट भी कर सकती हैं और हित भी। आत्मा इसी विश्वात्मा का एक अंश है और शरीर न रहने पर वह दिव्य-लोक मे चली जाती है और मनुष्य को परलोक का ध्यान रखते हुए आत्मिक उन्नति करनी चाहिए।

**अध्यात्मवादी**—वि० [सं० अध्यात्मवादिन्] अध्यात्मवाद संबधी। अध्यात्मवाद का।

पु० वह जो अध्यात्म-वाद का अनुयायी या समर्थक हो।

**अध्यायी**—पु० १. जो किसी विषय का गंभीर और गूढ़ अध्ययन करने मे लगा रहता हो। (स्टडेन्ट) जैसे—वे आजीवन इतिहास के अध्यायी रहे। २. साधारण विद्यार्थी। जैसे—गंहाध्यायी।

**अध्वर्यु**—पु० १ वह जो यज्ञ करता हो। २ वैदिक कर्म-काड मे, यज्ञ के चार ऋत्विजो मे से पहला ऋत्विज जो यजुर्वेद के मंत्रों का उच्चारण करता हुआ वेप ऋत्विजो से यज्ञ की समस्त विधियो का संपादन कराता था।

**अध्वा**—पु० [सं०] १ तात्रिक मत मे, यह जगत् या सृष्टि। २ मार्ग या रास्ता।

**अनंग**—वि० २. साहित्य मे, जो किसी प्रस्तुत विषय का अंग न हो और इसी लिए जिसका कोई विशेष महत्त्व न हो।

**अनंग-वर्णन**—पु० [सं०] साहित्य मे एक प्रकार का रस-दोष, जो उस समय माना जाता है, जब अनंग, अर्थात् अमुख्य और ऐसे विषय का अधिक वर्णन करने से होता है जो रस का उपकारक या साधक न हो।

**अनंगावह**—वि० [सं०] मन मे काम-वासना उत्पन्न करनेवाला।

**अन-उपजाऊ**—वि० [हिं०] (भूमि) जो उपजाऊ अर्थात् उर्वर न हो। अनुर्वर।

**अनग्रदंत**—वि० [सं०] जिसके आगे के दाँत न हों।

पुं० कुछ ऐसे स्तनपायी जंतुओं का वर्ग जिनके दाँत बिलकुल होते ही नही, या केवल चौभद होते हैं और आगे के दाँत नही होते। (ईडेन्टेट) जैसे—चींटीखोर, बन-रोहू आदि।

**अनन्यपूर्व**—वि० [सं०] [स्त्री० अनन्यपूर्वा] जिसका अभी तक किसी से विवाह न हुआ हो। अविवाहित। कुमार। कुँआरा।

**अनन्यपूर्वा**—स्त्री० २ कृष्ण-भक्त संप्रदायों में वह कुमारी, जो कृष्ण को अपने पति के रूप में प्राप्त करने की साधना करती है और आजीवन विवाह नहीं करती। 'अन्य-पूर्वा' से भिन्न।

**अनन्वय**—पु० २. साहित्य में एक प्रकार का अर्थालंकार, जिसमें एक ही वस्तु का उपमान के रूप में भी और उपमेय के रूप में भी वर्णन होता है। अर्थात् यह बतलाया जाता है कि उपमेय अपने से भिन्न किसी और उपमान के साथ उपमित नहीं हो सका। यथा—आज गरीब-नवाज महीं पर तो सो तुही सिवराज विराजै।—भूषण।

**अनपैठ**—वि० [हिं० अन+पैठना] (स्थान) जहाँ जल्दी प्रवेश न हो सकता हो या बहुत कठिनता से हो सकता हो।

**अनभौ***—पु० [सं० अनुभव] १. अनुभव। २. रहस्य संप्रदाय में किसी काम या बात का वह ज्ञान, जो उसका साक्षात् प्रयोग या व्यवहार करने पर प्राप्त होता है। वि० दे० 'अनभो'।

**अनमेल**—स्त्री० ऐसी उक्ति या कविता, जिसमें बिलकुल बेमेल, निरर्थक या असंभव बातें हों। डकोसला। जैसे—भैंसिया चढी बेर पै लपलप गूलर खाय।

**अनलहक**—अव्य० [अ०] एक प्रसिद्ध अरबी पद, जिसका अर्थ है—मैं ही ब्रह्म हूँ। स० 'अह ब्रह्मास्मि' का अरबी रूप।

**विशेष**—इस पद का प्रचार ईरान के प्रसिद्ध सूफी महात्मा मंसूर ने ई० नवी-दसवीं शती में किया था। पर यह कथन इस्लाम की मान्यताओं के विरुद्ध था, इसी लिए मंसूर को सूली दी गई थी।

**अनशन**—पु० ३. आजकल आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में, तब तक अन्न न ग्रहण करने की प्रतिज्ञा करना जब तक कोई अभीष्ट उद्देश्य सिद्ध न हो जाय अथवा किसी प्रकार की माँग पूरी न हो जाय। (हंगर-स्ट्राइक)

**विशेष**—अनशन और उपवास का अंतर जानने के लिए देखे उपवास का विशेष।

**अनाक्रम्य**—वि० [सं०] जिस पर आक्रमण न हो सकता हो। 'आक्रम्य' का विपर्याय।

**अनाक्रम्यता**—स्त्री० [सं०] अनाक्रम्य होने की अवस्था या भाव। 'आक्रम्यता' का विपर्याय।

**अनागारिक**—वि० [सं० अन्+आगारिक] जिसके रहने का कोई घर-बार न हो।

पु० वह जो घर-बार छोड़कर त्यागी, संन्यासी या साधु हो गया हो।

**अनात्मवाद**—पु० १ यह मत या सिद्धांत कि आत्मा वास्तव में कुछ है ही नहीं। २. बौद्ध दर्शन का यह सिद्धांत कि आत्मा न तो शाश्वतवाद द्वारा प्रतिपादित रूप में है और न उच्छेदवाद में प्रतिपादित मत के अनुसार उसका सर्वथा अभाव ही है। वह वस्तुतः इन दोनों के मध्य की ऐसी स्थिति है, जिसका निरूपण नहीं हो सकता।

**अनात्मवादी**—वि० [सं०] अनात्मवाद संबंधी। अनात्मवाद का।

पु० वह जो अनात्मवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

**अनाम-पत्र**—पु० [सं०]=अज्ञात-नामिक पत्र।

**अनार्तव**—पुं० [स०] वह शारीरिक स्थिति जिसमें किसी रोग या विकार के कारण स्त्रियों का रजस्राव बंद हो जाता है।

**अनावर्त्तन**—पु० ३. किसी काम या बात का एक बार होकर ही रह जाना; फिर न होना। 'आवर्त्तन' का विपर्याय। (नॉन रेकरेन्स)

**अनावर्ती**—वि०=अनावर्तक।

**अनावृतन**—पु० [स०]=अनावृतीकरण।

**अनावृतीकरण**—पु० [स०] १. अनावृत या नंगा करना। ऊपर का आवरण उतारना या हटाना। २ जल-प्रवाह, वर्षा, वायु, सूर्य-ताप आदि का भूमि के ऊपरी भाग की मिट्टी आदि उड़ा या बहाकर दूर हटाते जाना, जिससे नीचे का चट्टानी या पथरीला अंश ऊपर निकल आता है। (डेन्यूडेशन)

**अनाहत**—पु० १. अव्यक्त परम तत्त्व का सूचक वह शब्द-ब्रह्म, जो व्यापक नाद के रूप में सारे ब्रह्मांड में व्याप्त है; और जिसकी ध्वनि परम मधुर संगीत की-सी मानी गई है।

**विशेष**—पाश्चात्य देशों के पुराने दार्शनिक भी इसके अस्तित्व में विश्वास करते थे।

२. वह शब्द जो दोनों कानों को हाथों के अँगूठे से बंद करने पर सुनाई पड़ता है, और जो उक्त विश्वव्यापी नाद का सूचक अंश माना जाता है। हठ-योग में, शरीर के अंदर हृदय के पास माना जानेवाला एक चक्र जो आकार में कमल के समान और अनेक रंगों के दलोंवाला माना गया है। इसके देवता रुद्र कहे गये हैं। (हार्ट प्लेक्सस)

**विशेष**—कहते हैं कि उक्त प्रकार का शब्द इसी चक्र से उत्पन्न होता है।

**अनाहत-नाद**—पु० १. नाद के दो भेदों में से एक। ऐसा नाद या शब्द जो प्रकृति के सभी पदार्थों में नैसर्गिक रूप से निहित और व्याप्त रहता है। जैसे—कानों के छेदों को उँगलियों से बंद करने पर अंदर से होनेवाला साँय साँय शब्द। दूसरा भेद आहत-नाद कहलाता है। २. हठयोग आदि में अंतःकरण में होनेवाला एक विशिष्ट प्रकार का नाद या शब्द, जो योगियों और साधकों को ध्यानस्थ होने पर सुनाई पड़ता है। कहते हैं कि इसके सुनते रहने पर चित्त अंत में नाद-रूपी ब्रह्म में लीन हो जाता है।

**अनिबद्ध**—वि० [स०] १. जो बँधा या बाँधा हुआ न हो। २. (संगीत का वह अंग या रूप) जो ताल-बद्ध न हो, अर्थात् जिसके साथ तबला, पखावज आदि बाजे न बजते हों। 'निबद्ध' का विपर्याय। जैसे—आलाप।

**अनिभृत**—वि० [स०] [स्त्री० अनिभृता] १. चंचल। चपल। २. प्रकट। स्पष्ट। ३. सकोच-रहित। ४. जिसमें किसी तरह का दुराव अथवा लुकाव-छिपाव न हो।

**अनीश्वरवाद**—पु० [सं०] १. यह दार्शनिक मत या सिद्धांत कि वास्तव में ईश्वर और देवी-देवताओं आदि का कोई अस्तित्व नहीं है। २. विस्तृत अर्थ में वे सभी मत या सिद्धांत जो ईश्वरवादी धर्मों के विरोधी हैं। सभी प्रकार के प्रत्यक्ष वादी, भौतिकवादी, संदेह वादों आदि का समष्टिक रूप। (ऐग्नास्टिसिज्म)

**अनीश्वरवादी**—वि० [सं०] अनीश्वरवाद संबंधी। अनीश्वरवाद का।

पु० वह जो अनीश्वरवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

**अनुकूल**—पु० साहित्य में, हेतु अलंकार की तरह का एक अर्थालंकार जिसमें किसी प्रतिकूल बात से अनुकूल कार्य होने का उल्लेख होता है। जैसे—हे सुन्दरी! यदि तुम नायक से रुष्ट हो तो उसके मुख पर नखों से क्षत करके उसका केश अपने भुज-पाश में बाँध लो।

**अनुकूलन**—पुं० ३. दूसरे की कोई बात लेकर उसे अपने अनुकूल बनाकर ग्रहण करना। (एडाप्टेशन)

**अनुक्रमणी**—स्त्री० [सं०] १. अनुक्रमणिका। २. तालिका। सूची। ३. किसी वेद से संबद्ध वह सूची, जिसमें उसके प्रत्येक मंत्र के ऋषि, देवता, छंद आदि का उल्लेख होता है।

**अनुक्रमवाद**—पुं० [सं०]=क्रमिकतावाद।

**अनुक्रिया**—स्त्री० [स०] २ एक ओर से दिखाई पड़नेवाली किसी क्रिया, भावना, वृत्ति या व्यवहार के फलस्वरूप दूसरी ओर से होनेवाली कोई क्रिया, भावना, वृत्ति या व्यवहार। (रेस्पान्स)

**अनुचितार्थ**—पुं० [स०] साहित्यिक रचना का एक प्रकार का दोष जो वहाँ माना जाता है, जहाँ कोई पद या शब्द अनुचित अर्थ का बोध कराता हो। जैसे—रे गिय-ठठ क्यों सठ करै, वाही पै किन जात। मे त्रिय के साथ 'सठ' (शठ) का प्रयोग अनुचित अर्थ का बोधक है।

**अनुच्छेद**—पुं० ३. नियमावली, विधान आदि की कोई स्वतंत्र धारा या पद। अधि-पद। (आर्टिकल)

**अनुज्ञप्ति**—स्त्री० किसी व्यक्ति को कोई काम करने के लिए दिया जानेवाला अधिकार या उसका सूचक पत्र। (लाइसेन्स)

**अनुज्ञप्तिधारी**—पुं० [स०] वह जिसे कोई काम करने के लिए अनुज्ञा प्राप्त हो। (लाइसेन्सी, लाइसेन्स-होल्डर)

**अनुज्ञा-अधिकारी**—पुं० [स०] वह अधिकारी, जो लोगों को किसी काम के लिए अनुज्ञा (लाइसेन्स) देता हो। (लाइसेन्सिंग आफिसर)

**अनुज्ञा-पत्र**—पुं० वह पत्र जिस पर किसी प्रकार की अनुज्ञा लिखी हो और जिसके अनुसार किसी को कोई विशिष्ट कार्य करने का अधिकार प्राप्त हो। (लाइसेन्स)

**अनुनासिकता**—स्त्री० [स०] अनुनासिक होने की अवस्था, परिणाम या भाव। (नैसलाइज़ेशन)

**अनुनेतव्य**—वि० [सं०] [स्त्री० अनुनेतव्या] जिससे अनुनय-विनय करना आवश्यक या उचित हो।

**अनुपजाऊ**—वि० [हिं०]=अन-उपजाऊ।

**अनुपात**—पुं० [सं०] १. एक के बाद दूसरे का आना, गिरना, पड़ना या होना। २ दो या अधिक मानों या संख्याओं मे रहनेवाला वह निश्चित या स्थिर पारस्परिक संबंध, जो इस विचार से निरूपित होता है कि एक का दूसरे से कितनी बार गुणा या भाग हो सकता है। (रेशियो) ३ किसी वस्तु के विभिन्न अंगों मे होनेवाला वह पारस्परिक संबंध जो उस वस्तु मे समति या सामंजस्य स्थापित करता है। (प्रोपोर्शन) वि० दे० 'समानुपात'।

**अनुपिटक**—पुं० [सं०] बौद्धों के वे धार्मिक ग्रंथ, जो तीनों पिटकों के बाद पाली भाषा मे लिखे गये थे।

**अनुपूरक**—वि० [सं०] १. बाद मे किसी के साथ मिलकर उसे पूरा करनेवाला। २. विशेष रूप से किसी पूर्ण वस्तु की उपादेयता, सार्थकता आदि बढ़ाने के लिए स्वतंत्र इकाई के रूप मे जोड़ा या लगाया जानेवाला। 'सपूरक' से भिन्न। (सप्लिमेन्टरी)

**अनुभाग**—पुं० [सं०] [वि० अनुभागीय] किसी काम या चीज के भाग या हिस्से का कोई छोटा भाग, उप-विभाग या टुकड़ा। (सेक्शन)



**अनुभागीय**—वि० [सं०] किसी अनुभाग से संबंध रखने या उसमे होनेवाला। (सेक्शनल)

**अनुमत**—अव्य० [?] पूर्व काल में (पहले से)।

**अनुमानवाद**—पुं० [स०] दे० 'अनुमितिवाद'।

**अनुमित**—वि० ३. तर्क-संगत निष्कर्ष के रूप मे निकाला हुआ। (इन्फर्ड)

**अनुमिति अद्भुत**—पुं० [स०] साहित्य मे, अद्भुत रस का वह प्रकार या भेद, जिसमें अनुमान के आधार पर ही कोई चीज या बात देखकर परम आश्चर्य या विस्मय होता है। यथा—चित्र अलिकत भरमत रहत, कहाँ नही है बास। बिकसित कुसुमन मैं अहै, काको सरस विकास।—हरिऔध।

**अनुमितिवाद**—पुं० [सं०] साहित्य मे, कुछ आचार्यों का यह मत या सिद्धांत कि विभावो, अनुभावो, संचारियो आदि के कारण अभिनेताओं या नटों मे वास्तविक कृष्ण राम आदि की जो प्रतीति होती है, वह अनुमान या अनमिति के आधार पर ही होती है। अनुमानवाद।

**अनुमितिवादी**—वि० [स०] अनुमितिवाद-संबंधी। अनुमिति-वाद का। पुं० वह जो अनुमितिवाद का अनुयायी, पोषक या समर्थक हो।

**अनुमोदक**—वि० [सं०] अनुमोदन करनेवाला।

**अनुयोग**—पुं० ३ नम्रतापूर्वक कुछ आग्रह करने हुए किसी से कोई काम करने के लिए कहना। (सोलिसिटेशन) ४. ईश्वर, देवता आदि का मनोयोगपूर्वक किया जानेवाला ध्यान। ५ जैन आगमो की टीका या व्याख्या।

**अनुरक्षण**—पुं० [स०] [भू० कृ० अनरक्षित] वह देख-भाल या व्यवस्था जो किसी चीज को ठीक दशा मे और काम के योग्य बनाये रखने के लिए मरम्मत आदि के रूप मे की जाती है। (मेन्टेनेन्स) जैसे—किसी इमारत, नहर या रेल की लाइन का अनुरक्षण।

**अनुराधक**—वि० [सं०] अनुराधन करनेवाला।

**अनुरेख**—पुं० [स०] अनुरेखन की क्रिया के द्वारा प्रस्तुत की हुई प्रति। (ट्रेसिंग)

**अनुर्वरता**—स्त्री० [स०] १. अनुर्वर होने की अवस्था, गुण या भाव। 'उर्वरता' का विपर्याय। २. वह स्थिति जिसमे पुरुष अथवा स्त्री मे संतान उत्पन्न करने की शक्ति नही होती अथवा नही रह जाती।

**अनुर्वरीकरण**—पुं० [सं०] [भू० कृ० अनुर्वरीकृत] १. अनुर्वर करने की क्रिया या भाव। २. कोई ऐसी यांत्रिक या रासायनिक प्रक्रिया, जिसके द्वारा प्राणियों, वनस्पतियो आदि को प्रजनन की शक्ति से रहित या हीन किया जाता है। (स्टरिलाइज़ेशन)

**अनुलोम**—वि० [सं०] १. जो अपने ठीक और नियत या बँधे हुए क्रम से चलता या होता है। जैसे—अनुलोम विवाह, अनुलोम स्वर-साधन। २. जिसमें किसी प्रकार का उलटापन या विपरीतता न हो। ठीक और सीधा। (पॉजिटिव) ३ अनुकूल। मुताबिक।

**अनुविधेय**—वि० [सं०] [स्त्री० अनुविधेया] किसी की आज्ञा या इच्छा के अनुसार आचरण करनेवाला।

**अनुशासित**—स्त्री० [सं०] १. किसी को शासन या नियंत्रण में रखने के लिए की जानेवाली कार्रवाई। २. आज-कल, किसी देश या राष्ट्र के प्रति कई देशों या राष्ट्रों का मिलकर कोई ऐसी कार्रवाई करना, जिसके

फलस्वरूप वह राष्ट्र अंतर्राष्ट्रीय नियमों का उल्लंघन करना छोड़ दे, या ठीक तरह से उन नियमों का पालन करने के लिए विवश हो। (सैंक्शन)

**विशेष**—साधारणतः किसी देश के कोई अनुचित काम करने पर अन्य देश या राष्ट्र मिलकर जो यह निश्चय करते हैं कि उस प्रदेश को ऋण देना अथवा उसके साथ व्यापार करना बन्द कर दिया जाय, उसी को राजनीतिक क्षेत्र मे अनुज्ञाशित कहते हैं।

**अनुसंधाता**—वि० [सं० अनुसंधातृ] अनुसंधान करनेवाला। अनुसंधायक।

**अनुसमुद्री**—वि० [सं०] समुद्र में होने या उससे संबंध रखनेवाला। समुद्री। (मेरिटाइम)

**अनुहरण**—पुं० १. किसी का अनुहार या नकल करना। अनुकरण। २. वह स्थिति जिसमें कुछ जीव या वनस्पतियाँ या वस्तुओं का अनुकरण करके अपना रूप-रंग भी उन्हीं परिस्थितियों के अनुरूप बना लेती हैं। (मिमिक्री) जैसे—तितलियाँ अनुहरण की क्रिया से ही अपना रूप-रंग फूल-पत्तियों का सा बना लेती हैं। ३. समता। बराबरी।

**अनृत-शंस**—वि० [सं०] झूठी प्रशंसा करनेवाला। खुशामदी।

**अनेकांतिक**—वि० [सं०] १. जो ऐकांतिक न हो। २. जिसका मन किसी एक बात पर स्थिर न हो। अस्थिर-चित्त।

**अन्न-प्राण**—पुं० [सं०] अन्नमय अर्थात् जड़ तत्वों से बने हुए भाग मे अवस्थित रहनेवाला प्राण-तत्त्व। (फिजिकल वाइटल)

**अन्नमय**—वि०[सं०] जड तत्व का या जड से बना हुआ। भौतिक। (मेटिरियल)

**अन्नमय पुरुष**—पु० [स०] वह चेतनमय सत्ता, जो हमारे शरीर मात्र मे रहती है। (मेटिरियल बीइंग)

**अन्नमय सत्ता**—स्त्री०[सं०] जीवों या पदार्थों का वह अश, जो जड तत्वों से बना हुआ हो ; अर्थात् शरीर।

**अन्यथा**—वि० १ उद्दिष्ट, कथित या प्रस्तुत से भिन्न अथवा विपरीत। जैसे—मैंने जो कुछ कहा है, उससे अन्यथा नही होगा। २. सत्य या वास्तविक से विपरीत। मिथ्या। झूठ।

**अन्यपूर्वा**—स्त्री० कृष्ण-भक्त सप्रदायों में, ऐसी विवाहिता स्त्री, जो अपने लौकिक पति को छोडकर श्रीकृष्ण को अपने प्रेमी तथा पति के रूप मे ग्रहण करने की लालसा रखती है। 'अनन्यपूर्वा' से भिन्न।

**अन्यीय संबंध**—पुं० [सं०] प्रत्यभिदेश।

**अन्वाकड**—वि० [सं० अनु+आरूढ] पीछे की ओर बैठा, बैठाया या लगाया हुआ।

**अपकर्ष**—पुं० ५ साहित्य में रचना का वह दोष, जिसके कारण उसका अर्थ या आशय समझने में कठिनता होती और देर लगती है।

**अपकर्षण**—पुं० ४ डरा-धमकाकर या बल-प्रयोग करके किसी से कुछ प्राप्त करना। ऐंठना। (एक्सटॉर्शन)

**अपकृति**—स्त्री० ३ विधिक क्षेत्र में, कुछ विशिष्ट प्रकार का ऐसा अपकार या क्षति, जिसकी पूर्ति न्यायालय से कराई जा सकती हो। (टॉर्ट)

**अपग्रास**—पुं०[सं०] चंद्र अथवा सूर्य ग्रहण से कुछ पहले की वह अवस्था जिसमें अधकार का कुछ-कुछ आरंभ होने लगता है। छाया।

**अपचयन**—पुं०[सं०] [भू० कृ० अपचयित]=अपचय।

**अपत**°—वि० ३ अधम। नीच। उदा०—पावन किये रावन रिपु तुलसिहु से अपत।—तुलसी।

**अपतह**—वि०[हिं० अ+पति] जो अपनी पति अर्थात् मान-मर्यादा खो चुका हो। उदा०—हम अपतह अपनी पति खोई।—कबीर।

**अपदाभीकरण**—पु० [सं०] अपमिश्रण।

**अपनत्व**—पु०[हिं० अपना] अपनापन। आत्मीयता। (असिद्ध रूप)

**अपना**—सर्व० (ग) (सामाजिक दृष्टि से) जिसके साथ बहुत अधिक आत्मीयता या घनिष्ठता का व्यवहार या सबध हो। जैसे—जो हमारे समय पर काम आये, वही हमारे लिए अपना है। उदा०—सोई अपनो आपनो, रहै निरन्तर साथ। नैन सहाई पलक ज्यों, देह सहाई हाथ।

**अपधान**—पु० [सं०]१ अर्थ इधर-उधर घूमना। २. कही से टल या हट जाना। ३ अपनी प्रतिज्ञा, स्थान आदि से पीछे हटना या विरत होना। ४ सेना का अपने स्थान पर न ठहर सकने के कारण पीछे हटना। (रिट्रीट)

**अपर-निवेचन**—पु०[स०] [भू० कृ० अपर-निर्वेचित] भिन्न भिन्न पौधों या फूलो के पराग और पु-केसर के योग से नये प्रकार के पौधे या फूल उत्पन्न करने की क्रिया या विद्या। (क्रॉस फ्रटिलाइज़ेशन)

**अपरांग**—पु० [सं०]१ अपर या दूसरा अग। २ दे० 'अपराग व्यंग्य'।

**अपरांग व्यंग्य**—पु०[स०] गुणीभूत व्यग्य का एक प्रकार या भेद। ऐसा व्यगार्थ जो दूसरे व्यगार्थ का अग हो जाने या उसकी पुष्टि करने के कारण अप्रधान या गौण हो गया हो।

**अपरिणत**—वि० ३ जो ठीक तरह बढ न सकने के कारण उचित रूप मे न आया हो। जैसे—अपरिणत प्रसव।

**अपरिवृत्ति**—स्त्री० [स०] साहित्य मे एक प्रकार का अर्थालकार, जो परिवृत्ति या विनिमय नामक अलकार के बिलकुल विपरीत होता है ; और जिसमे इस बात का कथन होता है कि दाता ने दिया तो बहुत कुछ, पर उसके बदले मे उसे मिलना कुछ भी नही है। क्या—तुम कौन धौ पाटी पढ़े हो लला, मन लेते ही दै न छटाक नही।

**अपवर्जन**—पु०३. कोई काम करते समय किसी विशेष कारण से कोई बात छोड़ देना या अलग कर देना (एक्सक्ल्यूजन)

**अपवहन**—पु० १ किसी चलने या बहने वाली चीज का अपना उचित या नियत मार्ग छोड़कर इधर-उधर होना। (ड्रिफ्ट)

**अपवारित**—वि० २. छिपाया या ढका हुआ।

पु० नाट्य-शास्त्र मे, नियत-श्राव्य के दो भेदो मे से एक। रंग-मंच पर किसी पात्र का दूसरी ओर मुँह करके किसी दूसरे पात्र के मन की गुप्त बात इस प्रकार कहना कि मानों वह दूसरा पात्र सुन ही न रहा है।

**अपवाह**—पुं० २. नदी की जाली। स्रवण-क्षेत्र। (कैचमेन्ट)

**अपवाह-क्षेत्र**—पु०[स०]=स्रवण-क्षेत्र (नदी की जाली)।

**अपवीर्य**—वि०[स०] (वीर्य-रहित)

पुं० नपुसक। हिजड़ा।

**अपसामान्य**—वि०[स०] जो सामान्य न हो, बल्कि उससे कुछ आगे-पीछे या इधर-उधर घटा-बढा हो। (एब-नार्मल)

**अपहरण**—पु० २ विधिक क्षेत्र में, किसी व्यक्ति, विशेषतः स्त्री को संभोग के उद्देश्य से उठा या भगा ले जाना। अपनयन। (ऐडक्शन)

**अपहर्ता (र्तृ)**—वि० ४ बच्चे, स्त्री आदि को भगा ले जानेवाला। अपनेता। (एब्डक्टर)

**अपहसित**—पुं० साहित्य मे, हास्य का वह प्रकार या भेद, जिसमे कोई आदमी बिना कोई विशेष बात हुए असमय पर ही हँस पड़ता है और उसका सिर तथा कन्धे भोंडेपन से हिलने लगते हैं।

**अपाकरण**—पु० ४. किसी व्यापारिक संस्था का पावना वसूल करके और देना चुका कर उसका कारबार बन्द करने की क्रिया या भाव। परिसमापन। (लिक्विडेशन ऑफ कम्पनी)

**अपुंस**—वि०[स०]=नपुसक।

**अपुष्टार्थ**—पु०[स०] साहित्य मे, एक प्रकार का अर्थ-दोष, जो वहाँ माना जाता है, जहाँ (क) उक्ति या कथन से मुख्य अर्थ अच्छी तरह प्रकट या सिद्ध न होता हो; अथवा (ख) जहाँ अर्थ का बोध कराने के लिए प्रौढ़ उक्ति से काम न लिया गया हो।

**अपेक्षित**—वि० २. (धन) जो किसी से पावना हो। प्राप्य। (ड्यू)

**अप्रत्यक्ष**—वि० २ (काम या व्यवहार) जो नियमित या सीधे उपाय अथवा मार्ग से नही,बल्कि किसी और ही उपाय या मार्ग से किया जाय, अथवा किसी और के द्वारा कराया जाय। (इन्डाइरेक्ट)

**अप्रत्यक्ष-निर्वाचन**—पु० दे० 'परोक्ष-निर्वाचन'।

**अफ्रेशिया**—पु०[हि० अफ्रीका। एशिया] अफ्रीका और एशिया दोनो महाद्वीपों का सयुक्त नाम। (एफ्रा-एशिया)

**अफ्रेशियाई**—वि०[हि० अफ्रेशिया] अफ्रेशिया सबधी। अफ्रेशिया का। (एफ्रो-एशियन)

पु० अफ्रीका और एशिया मे रहनेवाले लोग। (एफ्रो-एशियन्स)

**अब**—अव्य० ६. कुछ अवसरो पर केवल जोर देने के लिए, पर या परन्तु की तरह। जैसे—असल बात तो यही है, अब अपनी-अपनी राय अलग हो सकती है।

**अबाध-व्यापार**—पु० आधुनिक राजनीति मे, दूसरे देशो के साथ होनेवाला ऐसा व्यापार, जिसमें आयात और निर्यात पर राज्य की ओर से कोई विशेष बाधा या बंधन न हो। (फ्री ट्रेड)

**अबाध-सयुक्त**—पुं०[स०]=महा-सम्पद।

**अभंग श्लेष**—पु०[स०] साहित्य मे, श्लेष अलकार का वह प्रकार या भेद जिसमें किसी पूरे श्लिष्ट शब्द के ही दो अर्थ हों; इस शब्द के अगों या अक्षरों का विच्छेद न करना पडता हो।

**अभावक**—पु० लिखने में यह चिह्न, जो किसी बात के अतर्गत यह सूचित करने के लिए लगाया जाता है कि यहाँ अमुक पद या शब्द छपने या लिखने से छूट गया है। यह इस प्रकार लिखा जाता है— ( ∧ )।

**अभिकलन**—पु० दे० 'संगणन'।

**अभिकल्प**—पुं० १. किसी उद्देश्य या ध्येय की सिद्धि के लिए पहले से सोच-समझकर की जानेवाली वह कल्पना, जिसके द्वारा उससे संबध रखनेवाली सब क्रियाओं या बातों को कम-बद्ध और व्यवस्थित रूप दिया जाता है। बनत। भंत। (डिज़ाइन) जैसे—कोई भवन बनाने के लिए पहले उसका अभिकल्प प्रस्तुत किया जाता है। २. अलंकरण, मनोरंजन, शोभा आदि के विचार से किया जानेवाला किसी प्रकार का रेखांकन। (डिज़ाइन)

जैसे—इस चित्र (या साड़ी) मे बेल-बूटो का नया अभिकल्प दिखाई देता है।

**अभिकल्पक**—वि० [सं०] अभिकल्प करनेवाला। (डिज़ाइनर)

**अभिकल्पन**—पु० [स०] [भू० कृ० अभिकल्पित] अभिकल्प करने की क्रिया या भाव।

**अभिकल्पना**—स्त्री०[सं०] १.=अभिकल्प। २.→अभिकल्पन।

**अभिक्रांत**—भू० कृ० [स०] जो अपने स्थान से हटा या अलग कर दिया गया हो। विस्थापित। (डिस्प्लेस्ड)

**अभिक्रियक**—वि० [सं०] अभिक्रिया करनेवाला।

पु० भौतिक शास्त्र में, एक प्रकार का यंत्र, जिसके द्वारा पारमाण्विक शक्ति उत्पन्न करने के उपरान्त किसी अविष्ठान मे नियत्रित और सुरक्षित रूप मे रखी जाती है। (रिऐक्टर)

**अभिक्रिया**—स्त्री० [स०] [वि० अभिक्रियक] रसायन-शास्त्र मे, पदार्थों मे होनेवाला रासायनिक परिवर्तन या विकार। (रिऐक्शन)

**अभिक्षेप(प)**—पु० [स०] [भू० कृ० अभिक्षिप्त] १. दूर फेंकना। २. किसी चीज के अगले भाग से प्रहार करना। जैसे—कोडे से अभिक्षेप करना। ३. अपमानित या तिरस्कृत करना।

**अभिगणन**—पु० [सं०] गणना का वह गभीर और जटिल प्रकार या रूप जिसमें साधारण गणना के सिवा अनुभवों, घटनाओं, नियत सिद्धांतो आदि का भी उपयोग किया जाता है। संगणन। (कम्प्यूटेशन) जैसे—फलित ज्योतिष में आँधियों, भू-कपों आदि की भविष्यद्-वाणियाँ अभिगणन के आधार पर होती हैं।

**अभिग्रहण**—पु० २. आज-कल विधिक क्षेत्र मे, राज्य या शासन का अधिकारिक रूप से, परतु उचित मूल्य चुकाकर किसी की जमीन या मकान सार्वजनिक कार्य के लिए स्वय प्राप्त करना, अथवा किसी सस्था को दिलवाना। (ऐक्विजीशन)

**अभिजात वर्ग**—पुं०[सं०] सामन्तशाही में समाज के ऐसे उच्चतम लोगों का वर्ग, जिनमें जमीदार, नवाब, महाजन और रईस लोग होते हैं। (एरिस्टोक्रेसी)

**अभित्याग**—पु० २. उत्तरदायित्व, कर्तव्य-पालन आदि से बचने के लिए अपना कार्य, पद या स्थान छोड़ कर भाग या हट जाना। (डिजर्शन)

**अभिधर्म**—पु० ३. परवर्ती बौद्ध धर्म में धम्मपद, सुत्त-निपात आदि कुछ ऐसे छोटे ग्रथों का वर्ग, जिनमे गौतम बुद्ध के उपदेशों के सिवा धर्म-संबधी कुछ अतिरिक्त बातें भी सगृहीत थीं।

**अभिनवीकरण**—पुं० दे० 'नवीकरण'।

**अभिनिविद्ध**—भू० कृ० [सं०] जिसका अभिनिवेश किया गया हो या हुआ हो।

**अभिनिवेश**—पुं० [सं०] [भू० कृ० अभिनिविद्ध] १. अच्छी या पूरी तरह से किया हुआ निवेश। २. आज-कल, आपत्तिजनक या दूषित प्रकाशनों आदि का प्रचार रोकने के लिए राज्य या शासन की ओर से निषेधात्मक आज्ञा या व्यवस्था। बाधन। (प्रास्क्रिप्शन)

**अभिप्रेरक**—वि०[सं०] अभिप्रेरण करनेवाला।

पुं० विधिक क्षेत्र में, वह व्यक्ति जो किसी प्रकार का अपराध करने के लिए अभिप्रेरित या प्रोत्साहित करता हो।

**अभिप्रेरण**—पुं० [सं०] [भू० कृ० अभिप्रेरित] १. कोई कार्य करने के

लिए उत्पन्न होनेवाली या किसी को दी जानेवाली प्रेरणा। वह तत्त्व जो कोई काम करने के लिए प्रेरित करता है। (मोटिवेशन) २. विधिक क्षेत्र में, किसी को कोई अपराध करने के लिए की जानेवाली प्रेरणा या दिया जानेवाला प्रोत्साहन।

**अभिमत व्यक्ति**—पु० [सं०]=ग्राह्य व्यक्ति।

**अभियंता**—पु० [स०] वह जो अभियांत्रिकी अर्थात् यंत्र-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता और प्रशिक्षित हो। (इंजीनियर)

**अभियांत्रिक**—वि० [स०] अभियांत्रिकी अर्थात् यंत्र-शास्त्र से संबंध रखनेवाला। (इंजिनियरिंग) जैसे—अभियांत्रिक विभाग।

पुं० वह जो अभियांत्रिकी विद्या का ज्ञाता हो। (इंजिनियर)

**अभियांत्रिकी**—स्त्री० [सं०] वह कला या विज्ञान, जिसमें अनेक प्रकार के यंत्र आदि बनाने और चलाने तथा अनेक प्रकार की सूचनाएँ प्रस्तुत करने का विवेचन होता है। (इंजीनियरिंग)

**विशेष**—इसकी बहुत-सी शाखाएँ हैं। जैसे—वास्तु-निर्माण, यंत्र-निर्माण, सिंचाई, नदी-नियंत्रण, चालिक सरचना आदि।

**अभियाचना**—स्त्री० ३. आधिकारिक रूप से किसी से कुछ करने या देने के लिए कहना। माँग। (डिमैन्ड)

**अभियोग-पत्र**—पु० २. वह पत्र, जिसमें किसी बड़े अधिकारी, न्यायालय आदि की ओर से किसी को यह सूचित किया जाता है कि तुम पर अमुक-अमुक अभियोग लगाये जाते हैं, अतः तुम इनके संबंध में अपनी सफाई दो। फर्दजुर्म। (चार्ज-शीट)

**अभिलेखागार**—पु० [स०] वह भवन जिसमें किसी राज्य की प्रशासकीय और सार्वजनिक बातों से संबंध रखनेवाले अभिलेख, प्रलेख आदि सुरक्षित रखे जाते हैं। (आर्काइव्स)

**अभिवृत्ति**—स्त्री० [स०] १. कुछ करने-धरने, सोचने-समझने आदि का वह विशिष्ट ढंग, जिससे मनुष्य की प्रवृत्ति, मत, विचार आदि का पता चलता है। रवैया। उ० जैसे—आजकल मेरे प्रति उनकी अभिवृत्ति कुछ बदली हुई है। २. वह मानसिक स्थिति, जिसके आधार पर कोई व्यक्ति, घटनाओं, वस्तुओं आदि का मूल्यांकन करता है। (एटिच्यूड) उक्त दोनों अर्थों के लिए)

**अभिव्यंजनावाद**—पु० [स०] कला और साहित्य में, पाश्चात्यों से गृहीत यह मत या सिद्धांत कि कलाकार या साहित्यकार किसी बाह्य वस्तु का नहीं, बल्कि अपने आंतरिक मनोभाव ही अभिव्यक्त करता है, अर्थात् वह यथार्थ का प्रतिनिधित्व, अंकन या चित्रण नहीं करता; बल्कि उसके संबंध में अपनी भावनाओं या विचारों का ही अंकन या चित्रण करता है। (एक्सप्रेसनिज्म)

**विशेष**—इस वाद के अनुयायियों का यह मत है कि कलाकार या साहित्यकार का काम यथार्थ का अंकन या चित्रण करना नहीं है, बल्कि यथार्थ को देखने पर उसके मन में जो भाव या विचार उत्पन्न होते हैं उन्हीं का अभिव्यंजन उसका कर्तव्य होता है।

**अभिव्यंजनावादी**—वि० [स०] अभिव्यंजनावाद-संबंधी। अभिव्यंजनावाद का।

पुं० वह जो अभिव्यंजनावाद का सिद्धान्त मानता हो या उसका अनुयायी हो।

**अभिव्यक्ति**—स्त्री० ३. कला और साहित्य में, किसी विशिष्ट परिस्थिति में मन में उत्पन्न होनेवाला भाव या विचार किसी कृति में इस प्रकार व्यक्त या स्पष्ट करना कि वह लोगों की दृष्टि में सहज में प्रत्यक्ष हो सके अथवा सजीव-सा जान पड़े। (एक्सप्रेशन)

**अभिशप्त**—वि० १. जिसे अभिशाप मिला हो। २. जिसकी निंदा या बदनामी हुई हो। ३. जिसकी हत्या या हिंसा हुई हो। ४. जिस पर विपत्ति पड़ी हो। ५ विधिक दृष्टि से जिस पर अपराध सिद्ध या प्रमाणित हुआ हो। अभिशसित। (कन्विक्टेड)

**अभिशस्ति**—स्त्री० ६. विधिक दृष्टि से किसी अभियोग या अपराध की पुष्टि होना। ७ न्यायालय द्वारा उक्त प्रकार से अपराध की घोषणा करने की क्रिया या भाव। अभिशंसा। (कन्विक्शन)

**अभिश्लेषण**—पु०[स०] [भू० कृ० अभिश्लेषित] १ दो चीजों का आपस में मिलाकर एक करना। मिश्रण। २ दे० 'संश्लेषण'।

**अभिसार**—पु० ३ साहित्य में, नायिका का नायक से मिलने के लिए जाना अथवा उसे अपने पास बुलवाना।

**अभिसूचक**—वि०[स०] अभिसूचना देने या करनेवाला।

पुं० १ कोई ऐसा चिह्न या लक्षण जो किसी घटना, क्रिया, स्थिति आदि का सूचक हो। २ किसी प्रकार की चीजों, नामों, बातों आदि का क्रमबद्ध लेखा या विवरण। अनुक्रमणिका। (इन्डेक्स)

**अभिस्थापन**—पु०[स०] =आस्थापन।

**अभिहस्तांतरक**—वि०[स०] अभिहस्तांतरण करनेवाला। संप्रेषनकार। (कन्वेन्सर)

**अभिहस्तांतरण**—पु०[स०] [भू० कृ० अभिहस्तांतरित] संपत्ति, विशेषतः अचल संपत्ति का लेख्य आदि के द्वारा एक के हाथ से दूसरे के हाथ में जाना या दिया जाना। संप्रेषन। (कन्वेएन्स)

**अभीक्षक**—वि०[स०] १ अच्छी तरह देखनेवाला। २. किसी काम, चीज या बात को ध्यानपूर्वक देखते रहनेवाला। देखरेख या निगरानी करनेवाला। अवधाता। (केयर-टेकर)

**अभीक्षक सरकार**—स्त्री० अवधात्री सरकार।

**अभीक्षण**—पु०[स०] [भू० कृ० अभीक्षित] १ अच्छी तरह देखना-भालना। २ इस बात की देख-रेख करते रहना कि कोई अनुचित या हानिकारक घटना या बात न होने पाये।

**अभेद रूपक**—पु०[स०] साहित्य में, रूपक अलंकार के दो मुख्य भेदों में से एक, जिसमें उपमान का ज्यों का त्यों और बिना कुछ घटाये-बढ़ाये उपमेय में आरोप किया जाता है।

**अभेदवाद**—पु० [स०] यह दार्शनिक मत या सिद्धांत कि जीवात्मा और परमात्मा में कोई भेद नहीं है।

**अभ्यर्थक**—वि०[स०] अभ्यर्थना करनेवाला।

पु० आवश्यक कार्यालयों, संस्थाओं आदि में वह अधिकारी, जिसके जिम्मे आनेवाले लोगों को आदर-पूर्वक बैठाकर उनका कार्य समझना, उन्हें उपयुक्त कर्मचारियों के पास या नियत विभागों में भेजना तथा दूसरी आवश्यक बातें बतलाना होता है। (रिसेप्शनिस्ट)

**अभ्याप्ति**—स्त्री०[स०] =आप्ति।

**अभ्यारोपण**—पु० [सं० अभि+आरोपण] [भू० कृ० अभ्यारोपित] न्यायालय में साक्षी के आधार पर जूरी का अभियुक्त से यह कहना कि तुम अमुक अपराध के अपराधी हो। (इन्डिक्टमेन्ट)

**अमरांगना**—स्त्री० [स० अमर+अंगना] अमर अर्थात् देवता की पत्नी। देवांगना। देवी।

**अमला**—पुं० २. कार्यालय मे किसी बडे अधिकारी के साथ काम करनेवाले लोगों का समूह। (स्टाफ़)

**अमानस**—वि०[सं०] मानस से रहित या हीन।

**अमानस्ता**—स्त्री० [स०] वह स्थिति जिसमे मनुष्य की स्मरण-शक्ति आघात, रोग, वृद्धावस्था आदि के कारण बिलकुल नष्ट हो जाती है। बुद्धि-दौर्बल्य। (एमेन्शिया)

**अमान्य**—वि० ३. जो ठीक, नियमित या विहित न होने के कारण माना न जा सकता हो। (इनवैलिड)

**अमिताभ**—पुं० ३. महायानी बौद्धो के अनुसार वर्तमान जगत् के अधीश्वर तथा सरक्षक बुद्ध का नाम।

**अमृत पुत्र**—पुं०[स०] १. देवता का पुत्र या सतान। २ दैवी गुणो से सम्पन्न ऐसा पराक्रमी और वीर महापुरुष जिसने देवत्व प्राप्त करने के लिए इस लोक मे जन्म लिया हो और जिसकी कीर्ति या यश कभी क्षीण न हो। जैसे—महाकवि निराला अमृत पुत्र थे।

**अमृतवर्षिणी**—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**अमैथुनी सृष्टि**—स्त्री०[स०] पौराणिक क्षेत्र मे, ऐसी सृष्टि जो स्त्री और पुरुष के नैसर्गिक सबध से नही ; बल्कि किसी अप्राकृतिक रूप से हुई हो। जैसे—घडे से अगस्त्य मुनि की अथवा बैवस्वत मनु की छींक से इक्ष्वाकु की उत्पत्ति।

**अम्ल-शूल**—पुं०[स०] एक प्रकार का रोग जिसमे पित्त की अम्लता के कारण भोजन के उपरांत कलेजे के आस-पास जलन सी मालूम देता है। उत्क्लेश। (हार्ट-बर्न)

**अमोली**†—वि०=अमूल्य। उदा०—हरिहर नाम अपार अमोली।—गुरु नानक।

**अयत्नज**—वि०[सं०] बिना किसी प्रकार के यत्न अर्थात् प्रयत्न या प्रयास के होनेवाला।

**अयत्नज्ञ अलंकार**—पुं०[सं०] नाट्य-शास्त्र मे, तीन प्रकार के सात्त्विक अलकारों में से एक, जिसके अतर्गत नायिकाओं की शोभा, कांति, दीप्ति, माधुर्य, प्रगल्भता, औदार्य और धैर्य ये सात ऐसी बाते आती हैं, जो उनमे बिना किसी यत्न किये प्राकृतिक रूप से रहती हैं।

**अयन-वृत्त**—पुं० ३. पृथ्वी के वे क्षेत्र या प्रदेश, जो कर्क-रेखा और मकर-रेखा के बीच में पड़ते हैं और जिनमें गरमी अपेक्षया अधिक पड़ती है। (ट्रापिक्स)

**अयस्क**—पुं० १. कोई ऐसा खनिज पदार्थ, जिसमें से कोई धातु या कुछ धातुएँ निकाली जा सकती हों। (ओर)

**अरज**—पुं०[?] संगीत मे भैरव ठाठ का एक राग।

**अरणि**—स्त्री०[स०] माता। माँ। यौ० के अन्त में, जैसे—गुहारणि=गुह की माता; विश्वारणि=विश्व की माता।

**अरध-उरध**—पुं०[सं० अर्वाच्+उर्ध्व.] रहस्य संप्रदायों तथा हठयोग की साधना मे (क) अरध अर्थात् शरीर के मेरु-दंड के नीचेवाले भाग मे स्थित मूलाधार और (ख) उरध अर्थात् उसके ऊपरी भाग का सहस्रार चक्र। इन दोनों का अंतर समाप्त करके मूलाधार मे स्थित कुंडलिनी को सहस्रार मे पहुँचाकर स्थित करना ही योग-साधना का चरम उद्देश्य कहा गया है। उदा०—अरध-उरध बिचै धरी उठाई। गगि सुन्न मैं बैठा जाई। —गोरखनाथ।

**अरविंद**—पुं० ४. सवैया छद का एक भेद, जिसके प्रत्येक चरण मे आठ सगण और अत में लघु होता है। इसमे १२ वर्णों पर यति होती है।

**अरविंद दर्शन**—पु०[स०] श्री अरविंद घोष के दार्शनिक विचारों और सिद्धांतों का समुदाय।

**विशेष**—यह दर्शन श्री अरविंद की साधना-जन्य आध्यात्मिक अनुभूतियों पर आश्रित है। इसमे जगत् और ब्रह्म दोनों को सत्य माना गया है; और यह प्रतिपादित किया गया है कि जगत् और मनष्य का निरतर विकास होता रहता है ; और इसमे अवरोहण-आरोहण अथवा निवर्तन-विवर्तन का चक्र सदा चलता रहता है। इसमे जड और चेतन दोनों को सत्य माना गया है , और यह निरूपित किया गया है कि मनष्य आध्यात्मिक उन्नति करता हुआ स्वय तो देवत्व प्राप्त कर ही सकता है, स्वय देवत्व को भी इस पृथ्वी पर अवतरित कर सकता है। इसके लिए आवश्यकता है साधना के द्वारा केवल उपयुक्त भूमि तैयार करने की। उनका योग व्यक्तिगत लाभ के लिए नही, बल्कि सारी मानव जाति के उद्धार के लिए है।

**अरुण**—पुं० २. सूर्योदय और सूर्यास्त के समय आकाश मे दिखाई देनेवाली लाली। ३. प्रात काल का सूर्य। बाल-सूर्य।

**अर्चना-गीत**—पु०[स०] दे० 'स्तुति-गीत'।

**अर्थवाद**—पु० २. प्रशसा, स्तुति आदि के रूप मे कही जानेवाली ऐसी बातें, जो अपना कोई उद्देश्य सिद्ध करने के लिए कही या की जायँ। चापलूसी की बातें।

**अर्थापत्ति**—पु० ३. साहित्य मे एक प्रकार का अलकार, जिसमे कोई बात कहने पर उसके एक पद मे कहा हुआ तथ्य उसके दूसरे पदों के सबध मे आप से आप सिद्ध या स्पष्ट हो जाता है। जैसे—यदि कहा जाय कि सारा मकान जल गया हो, तो इसमे आप से आप यह भी सिद्ध हो जायगा की सब चीजें भी जल गईं। उदा०—उसके आशय की थाह मिलेगी निसको। जलकर जननी भी जान न पाई जिसको।—मैथिलीशरण।

**अर्थार्थी-भक्ति**—स्त्री०[स०] वह गौणी भक्ति (देखें) जो धन, पुत्र आदि की प्राप्ति या वृद्धि के विचार से की जाती हो।

**अर्थोपक्षेपक**—वि० [सं०] अर्थ का उपक्षेपण करने अर्थात् सूचना देनेवाला। पु० भारतीय नाट्य-शास्त्र मे वह तत्त्व, जो ऐसी सूक्ष्म बातो की सूचना देता है, जो रसहीन होने के कारण रगमच पर प्रत्यक्ष अभिनय के योग्य नही मानी जाती। इसके ये पाँच प्रकार या भेद है—विष्कभक, चूलिका, अकास्य, अंकावतार और प्रवेशक।

**अर्धचेतन**—वि०. पु०=अवचेतन।

**अर्ध-साप्ताहिक**—वि०[स०] हर तीन दिन के बाद अर्थात् सप्ताह मे दो बार होनेवाला। (बाइ-वीकली)

**अर्ह**—वि० ४. जिसने अनुभव, प्रशिक्षण आदि के द्वारा किसी विशिष्ट कार्य के लिए आवश्यक या उपयुक्त योग्यता प्राप्त कर ली हो। परिगणी। योग्य। (क्वालिफ़ाइड)

**अर्हत**—वि० [स० √अर्ह्+शतृ] १ सर्वज्ञ। २. राग-द्वेषादि से रहित। ३. पूज्य और मान्य।

**अर्हता**—स्त्री०[स०] १. अर्ह होने की अवस्था, गुण या भाव। २. आज-

कल कोई काम कर सकने की ऐसी क्षमता, जो विशिष्ट रूप से उस कार्य के अनुभव, प्रशिक्षण आदि के द्वारा अर्जित की गई हो। परिगुण। योग्यता (क्वालिफ़िकेशन)

**अलंकरण**—पु० ४. कोई ऐसी क्रिया या वस्तु, जिससे किसी दूसरे कार्य या वस्तु का सौन्दर्य बढ़ता हो। [एम्बेलिशमेन्ट]

**अलकसाना**†—अ०[हिं० अलकस=आलस्य] अलकस या आलस्य करना। कोई काम करने मे आलस्य दिखाना।

**अलकासी**†—स्त्री०=आलकस (आलस्य)।

**अलक्षेंद्र**—पु०[स०] ग्रीक के सुप्रसिद्ध विजयी वीर एलैक्ज़ेन्डर (सिकन्दर) के नाम का वह रूप जो भारतीय संस्कृत साहित्य मे मिलता है।

**अलग-थलग**—वि०[हिं० अलग+अनु० थलग] एक दम से या बिलकुल अलग। जैसे—वह बहुत दिनो से इसी तरह सबसे अलग-थलग रहती है।

**अलहदी**†—पु०[हिं० अहदी] वह जो अपने आलस्य या सुस्ती के कारण किसी काम के योग्य न रह गया हो।

**अलूचा**—पु०=आलूचा।

**अल्प-तंत्र**—पु० १. ऐसी शासन-प्रणाली, जिसमे सारी राज-सत्ता थोड़े-से या इने-गिने लोगो के हाथ मे हो। २ ऐसा देश, जिसमे उक्त प्रकार की शासन-प्रणाली हो। (ओलीगार्की)

**अवगलित**—पु० साहित्य मे, रूपक (नाटक) की एक प्रकार की प्रस्तावना। जिसके ये दो भेद कहे गये हैं—(क) जहाँ एक क्रिया से किसी एक काय के साथ-साथ दूसरा कार्य भी सिद्ध हो जाय। जैसे—वन-विहार की इच्छा करनेवाली सीता को नट मे छोड़ देने पर उसकी इच्छापूर्ति के साथ-साथ राम के द्वारा उसका परित्याग भी हो जाता हो। (ख) जिसमे एक कार्य करने की दशा मे कोई दूसरा ही कार्य सिद्ध हो जाता है। जैसे—दही बेचने के लिए निकलनेवाली ग्वालिन को श्रीकृष्ण के दर्शन।

**अवगाढ़**—वि० ३. डूबा हुआ। ४. भरा हुआ।

**अवचेतन**—वि० [स०] १ जो चेतना के ऊपरी तल में नही, बल्कि उसके गहरे और भीतरी तल से सबध रखता हो। (सबकॉन्शस) २ जो साधारणतः चेतना मे न होने पर भी थोड़े प्रयास से उसकी गहराई मे से निकलकर चेतना के ऊपरी तल पर आ सकता या लाया जा सकता हो। (मानसिक क्रियाओ और प्रतिक्रियाओ के सबध मे प्रयुक्त) ३. अचेत, बे-होश।

पु० आधुनिक मनोविज्ञान मे, मानस का वह अश या पक्ष, जो चेतन से कुछ नीचे रहता है और जिसमे दबी हुई कल्पनाएँ, भावनाएँ आदि धूमिल रूप मे रहती और थोड़ा प्रयास करने पर चेतन अश मे आती या आ सकती हैं। (सबकान्शस) विशेष दे० 'मानस'।

**अवटुका**—स्त्री० [स०] गले के अन्दर की स्वर-नली। (लैरिक्स)

**अवटु-ग्रंथि**—स्त्री० [स०]=गल-ग्रंथि।

**अवतारी(रिन्)**—वि० ४. जो अवतारो का कारण रूप हो। अवतार करानेवाली। उदा०—अवतारी सब अवतारन को महतारी महतारी।

**अवदान**—पु० २. किसी के बहुत बड़े और महत्त्वपूर्ण कार्यों का वर्णन। ३. किसी का गौरवपूर्ण चरित्र या जीवनी। ४ ऐसी लोक-कथा या लोक-प्रवाद, जो किसी महत्त्वपूर्ण घटना, व्यक्ति, स्थान आदि के आधार पर बहुत दिनों से प्रचलित हो और जिसमें वास्तविक बातों के सिवा कुछ आकर्षक तथा मनोरजक बातें भी बाद में सम्मिलित हो गई हों। (लिजेन्ड) जैसे—राजा भरथरी (या विक्रमादित्य) का अवदान।

**अवधारण**—पु० १. कोई काम या बात देखकर उसके सबध मे कोई मत या विचार मन मे धारण करना। (कन्सेप्शन)

**अवधूतिका**—स्त्री० [स०] बौद्ध हठ-योग मे ललना (इडा) और रसना (पिंगला) के बीच की एक नाडी, जो साधना को सहज या सुगम करने मे सहायक होती है।

**अवधूपन**—पु० [सं०] [भू० कृ० अवधूपित] धूप आदि सुगधित द्रव्य जलाकर उसके धूएँ से किसी वस्तु को सुगधित करने की क्रिया या भाव।

**अवपात**—पु० २ किसी तल या स्तर का कुछ नीचे की ओर झुकना, दबना या धँसना। (डिप्रेशन)

**अवपीड़न**—पु० [स०] [भू० कृ० अवपीडित] किसी को इस उद्देश्य से कष्ट देना या पीडित करना कि वह कोई कार्य करने या दबने के लिए विवश हो। ज़ोर-जबरदस्ती। बल-प्रयोग। (कोएर्शन)

**अवप्रेरण**—पु० [स०] [भू० कृ० अवप्रेरित] किसी को किसी अनचित, आपत्तिजनक या तितर-बितर काम करने की प्रेरणा करना अथवा सहायता देना। बुरे काम के लिए उकसाना या मदद देना। (एबेटमेन्ट)

**अवभेद**—पु० [स०] किसी चीज के रूप आदि का विकृत होना।

**अवरण**†—पु०=औरण।

**अवरि**†—स्त्री०=अवली। जैसे—मघावरि (मेघों की अवली), वाणावरि (बाणों की अवली)।

**अवरोह-पात**—पु०[स०] ज्योतिष मे वह सिद्ध या स्थान, जहाँ किसी ग्रह या नक्षत्र की कक्षा नीचे उतरते समय क्रान्ति-वृत्त को काटती है। (डिसेन्डिंग नोड) विशेष दे० 'पात'।

**अवज्ञंसा**—स्त्री० [स०] किसी व्यक्ति या दोष के सबध मे यह कहना कि इसके लिए अमुक व्यक्ति उत्तरदायी है। किसी को दोषी ठहरराना या बतलाना। अवक्षेप। दोषारोप। (ब्लेम)

**अवसाद**—पु० ७ आज-कल, वैज्ञानिक क्षेत्र मे, किसी तरल मिश्रण का वह गाढ़ा अश, जो उसके तल मे या नीचे बैठ गया हो। फल्क। तलछट। (सेडिमेन्ट)

**अवसादी(दिन्)**—वि० ४. जो अवसाद या तलछट के रूप मे नीचे गया हो। (सेडिमेन्टरी)

**अवस्फीति**—स्त्री० [सं०] मुद्रा-शास्त्र मे वह स्थिति, जब बाजार मे मुद्राओं का प्रचलन कम रहता है और जिसके फलस्वरूप चीजों का दाम बढ़ने नही पाता। 'स्फीति' का विपर्याय। (डिफ्लेशन)

**अवहट्ठ**—पु० [स० अपभ्रष्ट] एक प्रकार की प्राचीन भाषा, जिसे कुछ लोग अपभ्रश का ही एक रूप तथा कुछ लोग आधुनिक भारतीय आर्य-भाषाओ का पूर्व रूप मानते हैं। सभवतः विद्यापति के समय मे यह साहित्यिक भाषा के रूप मे प्रचलित थी।

**अवहसित**—पु० [स०] हास्य या हँसी का वह प्रकार या भेद, जो असभ्य पर और प्रायः व्यर्थ होता है तथा जिसमे बरबस दूसरों को हँसाने के लिए हँसनेवाला सिर और कंधे कुछ हिलाने लगता है।

**अवहार**—पु० [स० अव√हृ (हरण)+ण] १. किसी की धन-सपत्ति छीन लेना या जब्त कर लेना। २ वह जो उक्त प्रकार से धन-सपत्ति ले-लेता हो। ३. जल-हस्ती। ४. आह्वान। निमत्रण। ५. किसी

प्रकार के काम का बंद होना या रुकना। ६ किसी कारण से कुछ समय के लिए युद्ध, वैर-विरोध या पारस्परिक संघर्ष स्थगित करना। (दूस) ७. दे० 'विराम-संधि'।

**अवाप्त**—वि० २ (भवन या स्थान) जो उचित प्रतिमूल्य देकर सार्वजनिक उपयोग के लिए प्राप्त किया गया हो।

**अवाप्ति**—स्त्री० २ सार्वजनिक उपयोग के उद्देश्य से राज्य या शासन का किसी की भूमि या सम्पत्ति उचित प्रतिमूल्य देकर ले लेना। अभिग्रहण। अभ्याप्ति। (एमि जीजन)

**अव्यलीक**—वि० [सं० अ+व्यलीक] १ जो व्यलीक अर्थात् अनुचित, दूषित या बुरा न हो। बिलकुल अच्छा और ठीक। २ जो कपट, छल, दोषादि से पूर्णत रहित हो। शुद्ध और साफ। ३ जिसमे नाम को भी झूठ या मिथ्यात्व न हो। पूर्णत सत्य। बिलकुल सच। ४ निरपराध। बेकसूर। ५ कष्ट, चिंता, दुख आदि से बिलकुल रहित।

पु० वह जो सदा सत्य बोलता हो। परम सत्यवादी।

**अशक्त**—वि० २ जो रोग, शारीरिक विकार आदि के कारण कोई काम-धन्धा करने के योग्य न रह गया हो। (इनवैलिड)

**अश्म-क्षति**—स्त्री० [सं०] पहाड़ का वह अश, जिसमे से इमारती कामो के लिए पत्थर खोदकर निकाल जाते है। खदान। (क्वैरी)

**अश्रु-गैस**—स्त्री० रासायनिक क्रिया से तैयार की जानेवाली एक गैस, जिससे आँखों मे जलन उत्पन्न होती है तथा अत्यधिक आँसू निकलने लगते हैं। (टियर-गैस)

**अश्रु-ग्रंथि**—स्त्री० शरीर के अन्दर माथे के पास की वे ग्रंथियाँ, जो अश्रु या आँसू उत्पन्न करती हैं। (लैक्रिमल ग्लैन्ड)

**अश्व-धावन**—पु० [स०] घुड़दौड़ का खेल या प्रतियोगिता।

**अष्टग्रही**—स्त्री० [स० अष्ट+ग्रह+हि० ई (प्रत्यय)] ज्योतिष मे एक प्रकार का योग, जो किसी राशि मे आठ ग्रहो के एक साथ आ जाने पर होता है; और फलित ज्योतिष के अनुसार जिसका फल बहुत ही अशुभकारक होता है।

**अष्ट-बाहु**—वि० [स०] आठ बाहों वाला।

पुं० एक प्रकार की भीषण समुद्री मछली, जिसके शरीर के चारो ओर बाहों की तरह आठ लंबे, लंबे अग निकले हुए होते हैं। (आक्टोपस)

**अष्ट-मूर्ति**—पु० ३. शिव जिनकी आठ मूर्तियाँ मानी गई हैं—शिव, भैरव, श्रीकठ, सदाशिव, ईश्वर, रुद्र, विष्णु और ब्रह्मा।

**अष्ट-याम**—पु० [सं०] वह कविता, जिसमे देवी-देवता, नायक-नायिका अथवा किसी अन्य व्यक्ति के संबध मे यह वर्णित होता है कि वह प्रति दिन आठो पहरो मे से क्रमात् क्या-क्या किया करता है। जैसे—कृष्ण या राम का अष्ट-याम।

**अष्ट-सखा**—पुं० [सं०] १. पुष्टि मार्ग मे, श्रीकृष्ण और उनके बाल्य तथा कैशोर के ये सात मित्र या सखा जो वय, शील आदि में बहुत कुछ उन्ही के समान थे—ताके, अर्जुन, ऋषभ, तुकल, श्रीयामा, विशाल और भोज।

**अष्टाध्यायी**—पु० [सं०] पाणिनी-कृत व्याकरण का एक प्रसिद्ध और प्रामाणिक ग्रंथ, जिसकी गिनती ६ वेदांगों में होती है। (रचना काल—ई० पू० चौथी शताब्दी)

**असज्ज**—वि० [सं०] १. जो सज्ज या सजाया हुआ न हो। २. जिसने कोई अपराध न किया हो। निरपराध।

**असम**—वि० ३. अनुपम। बेजोड़।

**असमर्थ**—वि० २. जो रोग, शारीरिक विकार आदि के कारण काम-धन्धा करने के योग्य न रह गया हो। (इन वैलिड)

**असार**—पु० ४ खनिज पदार्थों, विशेषत धातुओं मे से निकाले हुए वे अनुपयोगी अश या तत्त्व, जिनका व्यापारिक दृष्टि से कोई मूल्य नही होता। (गैंग)

**असिकाय**—पु०[स०] किसी नाम का कीड़ा।

**असि-क्रीड़ा**—स्त्री०[स०] तलवार चलाने या तलवार से लड़ने का अभ्यास।

**असुंदर व्यंग्य**—पु०[स०] गुणीभूत व्यग्य का एक प्रकार या भेद जिसमे वाच्यार्थ की तुलना मे व्यग्यार्थ घटकर और चमत्कार-रहित होता है। यथा—उस सजी-सी आभरण-रहित चित्र वसना। गिहरे प्रम, माँ को देख हुई जड रसना।—मैथिलीशरण। । यहाँ कौशल्या के 'आभरण-रहित' और 'सित वसना' के व्यग्यार्थ की तुलना मे राम के सिहरने और उनकी रसना के जड होने के वाच्यार्थ मे अधिक चमत्कार है।

**असुरी**—वि०=आसुरी।

स्त्री०=असूरी।

**असूक्षा**—वि० पु० =असूज।

**असूया**—स्त्री० २ मन की वह स्थिति, जिसमे दूसरो के पास कोई ऐसी अच्छी चीज देखकर जलन होती है, जो स्वय हमे प्राप्त न हो। (एन्वी)

**असूरी**—स्त्री०[सामी असूर] प्राचीन असूर जाति की भाषा, जो सामी परिवार की भाषाओ की एक शाखा है।

**अस्तित्ववाद**—पु०[स०] पाश्चात्य-दर्शन की एक आधुनिक शाखा, जिसका उपयोग साहित्यिक विवेचन पद्धति मे भी होने लगा है। इसमे प्रस्तुत और यथार्थ अस्तित्व का ही सबसे अधिक महत्त्व माना जाता है और आस्तिकता, तर्क, परम्परा आदि को व्यर्थ समझकर मानव-जीवन को भी निरर्थक माना जाता है, और कहा जाता है कि मनुष्य को ससार मे दर्शक के रूप मे ही रहना चाहिए। (एग्जिस्टेन्शियलिज्म)

**अस्तित्ववादी**—वि०[स०] अस्तित्ववाद सबधी। अस्तित्ववाद का।

पु० वह जो अस्तित्ववाद का अनुयायी या समर्थक हो।

**अस्थाई**—स्त्री० दे० 'अस्थाई'।

*वि०१. =स्थायी। २ =अस्थायी।

**अस्थायी**[—स्त्री० दे० 'अस्थाई'।

**अस्थि-दौर्बल्य**—पु०[स०] एक प्रकार का रोग, जो मुख्यत. बालको को यथेष्ट पौष्टिक भोजन, सूर्य का प्रकाश आदि न मिलने के कारण होता और जिसमे शरीर की हड्डियाँ मुलायम होकर झुकने और मुड़ने लगती हैं। (रिकेट्स)

**अस्पताल**—पु०२ वह स्थान, जहाँ शरीर के किसी विशिष्ट अग के रोगो की चिकित्सा होती हो। जैसे—आँखो या दाँतो का अस्पताल।

**अस्पताल गाड़ी**—स्त्री०[हि०] वह गाडी जिसमे घायल, रोगी आदि उठाकर अस्पताल पहुँचाये जाते हैं। (एम्बुलेन्स)

**अस्फुट व्यंग्य**—पु०[स०] साहित्य मे, गुणीभूत व्यग्य का एक प्रकार या भेद, जिसमे व्यग्य इतना अधिक अस्फुट या अस्पष्ट रहता है कि अच्छे सहृदय भी उसे सहज में नही समझ सकते। यथा—अनदेखे चहँ,

देखें बिछुरन मीत। देखें बिनु, देखुहुं पै, तुम सौ सुख नहीं मीत।

**अस्वीकार्य व्यक्ति**—पु०[स०]=अग्राह्य व्यक्ति।

**अहंकार**—पु०३ वज्रयानी साधना में वह स्थिति, जब साधक अपने आप को देवता या देवतुल्य समझने लगता है।

**अहंता**—स्त्री० १ वह स्थिति, जिसमे अहभाव की अनुभूति होती है।

**अहंपद**—पु० २ दे० 'सोहं'।

**अहंवाद**—पु०३. आधुनिक पाश्चात्य दर्शन का एक मत या सिद्धांत, जिसमे यह माना जाता है कि ज्ञाता को अपनी अनुभूतियों तथा इच्छाओ के सिवा और किसी बात का ज्ञान नही होता; इसलिए अपनी सत्ता के सिवा और कुछ भी वास्तविक नही। (सालिप्सिज्म)

**अहंस्पति**—पु०[स०] क्षयमास का दूसरा नाम।

**अहदी**—वि०१. जिसने किसी बात का अहद अर्थात् प्रतिज्ञा कर रखी हो। २. जो अपने प्रण या प्रतिज्ञा के फलस्वरूप निरतर किसी एक ही काम में तल्लीन होकर समय बिताता हो। उदा०—बाबा मैं तो राम नाम की अहदी।—कबीर।

**अहरमन**—पु०[पार० अहिमन] पारसी धर्म मे, ईश्वर का प्रतिद्वंदी वह राक्षस या शैतान, जो विषय-वासनाओं का प्रतीक और ससार का विनाशक माना जाता है।

**अहाता**—पु० ३. कोई विशिष्ट प्रदेश या भू-खड। जैसे—बगाल या बिहार का अहाता। ४ सीमा। हद। जैसे—यहाँ तक हमारा अहाता है।

**अहाल**—पु०२ अपनी सहायता के लिए की जानेवाली पुकार। ३ ख्याति। प्रसिद्धि। शोर। उदा०—भइ अहाल सिगरी कुलिआई।—जायसी।

**अहीर**—पु०२ एक प्रकार का मात्रिक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे ११ मात्राएँ होती हैं। इसके अन्त मे जगण रहना आवश्यक है। यथा—सुरभित मद बयार साथे सुमन स-ढार।

**अहेरी**—पु०२ रहस्य सप्रदाय में वह साधक जो विषयासक्त मन, रूपी मृग का गुरु के वचन रूपी बाण से आखेट करता है। इस मृग का मास 'ज्ञान' कहा गया है, जिसे खाने (प्राप्त करने) की बहुत महिमा है।

**अहोम**—पुं०[?] असम प्रदेश मे रहनेवाली एक प्राचीन जाति, जो चीनियो के ताई परिवार की एक शाखा मानी जाती है। इनके वशज अभी तक यहाँ वर्तमान हैं।

आ

**आंग्ल**—वि०[अ० ऐंग्लो] अ० ऐंग्लो को दिया हुआ भारतीय या सस्कृत रूप। अँगरेजों से सबध रखनेवाला। अँगरेजों का। जैसे—आग्ल साहित्य।

**आंचलिकता**—स्त्री०[स०] आंचलिक होने की अवस्था या भाव।

**आंतर चक्र**—पु०[स०] किसी क्षेत्र, वर्ग या सस्था मे अन्दर बहुत कुछ गप्त रहकर काम करनेवाले लोगों का ऐसा दल, जो जनसाधारण या बाहर के लोगो से बिल्कुल भिन्न हो। (इनर सर्किल)

**आंतर सत्ता**—स्त्री०[स०]=अत.सत्ता। (दे०)

**आंतरायिक**—वि०[स०] जो थोडे थोडे अतर पर अर्थात् ठहर-ठहर कर या रुक-रुककर होता हो। (इन्टरमिटेन्ट) जैसे—आतरायिक ज्वर=अंतरिया बुखार।

**आंतरायिक ज्वर**—पु०=विसर्गीज्वर।

**आंतरिक मूल्य**—पु०[स०] किसी वस्तु का वह मूल्य, जो केवल उसके उपादान या तत्व के विचार से निश्चित होता है और जो उसके प्रत्यक्ष मूल्य से बहुत भिन्न होता है। (इन्ट्रिन्जिक वैल्यू) जैसे—आज-कल बाजार मे चलनेवाले धातु के रुपए का प्रत्यक्ष मूल्य तो १०० नये पैसे है; पर उसका आतरिक मूल्य १० या १५ नये पैसो से अधिक नही है।

**आंत्र**—पु०[स०] आंत्रिक ज्वर। मिआदी बुखार।

**आइल-कोम**—पु०[अ०] दूध, फलो के टुकडों या रसों के योग से आधुनिक यत्रों की सहायता से बनाई हुई एक प्रकार की कुल्फी।

**आई**—प्रत्य०[दिश०] एक प्रत्यय जो क्रियाओ, विशेषणों आदि मे उनके भाववाचक रूप बनाने मे लगता है। जैसे—चढाई, लडाई, चिकनाई, मिठाई आदि।

**विशेष**—कुछ अवस्थाओ मे यह पूर्वी हिन्दी की सज्ञाओ के अत मे लगता है। जैसे—लडकाई।

**आउटलैक**—पु०[स०] एक प्रकार का छोटा उपकरण, जिसकी सहायता से बिजली के तार, रेडियो आदि से आये हुए समाचार सुनाई पडते है। (हेडफोन)

**विशेष**—यह प्राय लोहे की अर्धचद्राकार पट्टी के रूप मे होता है, जिसके दोनो सिरों पर वे उपकरण लगे रहते हैं, जिनसे आवाज सुनाई पडती है। यह सिर के ऊपर से पहन लिया जाता है। हवाई जहाजों आदि के चालक इसी के द्वारा अपने केन्द्रो से आए हुए समाचार और सूचनाएँ सुनते हैं।

**आकांक्षा**—स्त्री०[स०] [वि० आकाक्षित, भू० कृ० आकाक्षित, कर्ता आकाक्षी]१ किसी प्रकार के अभाव के कारण मन मे उत्पन्न होनेवाली इच्छा या चाह। २ व्याकरण और साहित्य मे, वह स्थिति जिसमे किसी पद या वाक्य के अपूर्ण रहने के कारण पाठक या श्रोता के मन मे उसका पूरा आशय जानने की उत्सुकता होती है।

**विशेष**—न्यायशास्त्र मे यह वाक्यार्थ ज्ञान के चार प्रकार के हेतुओ मे से एक है।

३ किसी चीज या बात की होनेवाली अपेक्षा। ४ जैनों मे एक प्रकार का अतिचार, जो उस दशा मे माना जाता है, जब दूसरों की विभूति देखकर उसे पाने की इच्छा होती है। ५ अनुसधान। खोज।

**आकार-विज्ञान**—पु० दे० 'आकारिकी'।

**आकारिकी**—स्त्री० दे० 'आकृति-विज्ञान'।

**आकाश**—वि० जिसमे कुछ भी न हो। बिलकुल खाली। जैसे—आकाश-रोमथन=मुँह मे कुछ भी न होने पर भी गौ-भैस आदि का योही जुगाली करने का मुँह चलाते रहना।

**आकाश-वाणी**—स्त्री० ४. भारत सरकार द्वारा सचालित वह विभाग और व्यवस्था, जिसके द्वारा उक्त प्रकार से समाचार आदि प्रसारित किये जाते हैं। (आल इडिया रेडियो) जैसे—आकाशवाणी दिल्ली, आकाशवाणी पटना आदि।

**आकृति-विज्ञान**—पु० आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमें इस बात का अध्ययन और विवेचन होता है कि जीव-जन्तु और वनस्पतियाँ किन अवस्थाओ मे कैसी आकृति या रूप धारण करती हैं, या उनकी बनावट किन आधारों पर होती है। (मॉरफोलाजी)

**आक्रम्य**—वि०[स०] जिस पर आक्रमण हो सकता हो, या होने को हो।

**आक्रम्यता**—स्त्री०[स०]१ आक्रम्य होने की अवस्था या भाव। २. वह स्थिति, जिसमे शरीर आदि पर रोगो आदि का आक्रमण हो सकता हो। (ससेप्टिबिलिटी)

**आक्षेपक**—पु० [सं०] एक प्रकार का वात-रोग जिसमे शरीर के हाथ, पैर आदि अंग रह-रहकर ऐंठते और काँपते है। ऐंठन। (कन्वल्शन)

**आख्यान नृत्य**—पु० [स०] ऐसा नृत्य, जिसके साथ किसी आख्यान से सबद्ध पद भी गाये जाते हो। (बैलेट डान्स)

**आख्यान-पुरुष**—पुं० [स०] -कथा-पुरुष।

**आख्यानिक**—वि०[स०]१ आख्यान-सबधी। आख्यान का। २. जो आख्यान के रूप मे हो। ३ जिसका उल्लेख आख्यानों अथवा अनुश्रुतियों मे आया हो। अनुश्रुत। (लीजेन्डरी)

**आख्यापक**—पु०३ वह जो किसी प्रकार का आख्यापन या एलान करता हो। (एनाउन्सर)

**आख्यायिका**—स्त्री० ३. सस्कृत साहित्य मे गद्यकाव्य के दो भेदो मे से वह भेद, जिसकी कथावस्तु लोगो को ज्ञात हो या सत्य हो। (दूसरा भेद कथा कहलाता है।)

**आगणन**—पु० [सं०] किसी काम या बात के महत्त्व, व्यय, स्वरूप आदि के सबध में पहले से किया जानेवाला अनुमान। कूत। प्राक्कलन।

**आगम**—पु०३. किसी काम, चीज या बात मे बाहर से किसी नये और प्रभावशाली तत्त्व का आकर क्रियात्मक रूप मे सम्मिलित या स्थापित होना। (इन्डक्शन) जैसे—शब्दो मे होनेवाला नये अर्थों का आगम। १६ मिलन। समागम। १७ स्त्रीप्रसग। सभोग।

**आगा—चुहा०—(किसी का) आगा काटना**—किसी चलते हुए व्यक्ति के सामने आकर उसका रास्ता रोकना। उदा०—इतने मे भिखारिन ने आकर उसका रास्ता काटा।—उप।

**आगारिक**—वि०[स०] जो अपने रहने के लिए घर बनाता या घर मे रहता हो।

पु० गृहस्थ। घर-बारी।

**आग्रहण**—पु० २. अधिकारिक या विधिक रूप से प्राप्य धन या वस्तु कही से प्राप्त करना या लेना। (ड्राइंग)

**आचार-शास्त्र**—पु० वह शास्त्र, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि मनुष्य को सामाजिक व्यवहारों मे अपने आचार-विचार किस प्रकार नैतिक दृष्टि से श्रेष्ठ रखने चाहिए। (एथिक्स)

**विशेष**—यह हमारे यहाँ के नीति-शास्त्र का एक अग-मात्र है।

**आचार-संहिता**—स्त्री० [स०] ऐसे नियमो का संग्रह, जो किसी विशिष्ट वर्ग के आचरण और व्यवहार के सबध मे नियत या निश्चित किये गये हों। (कोड ऑफ कन्डक्ट) जैसे—राजकर्मचारियों या समाचार-पत्रों की आचार-सहिता।

**आजीविक**—पुं०[स०] एक श्रमण सम्प्रदाय, जो वैदिक धर्म के सिवा बुद्ध और महावीर का भी प्रबल विरोधी था।

**आतंक**—पु०५ किसी विकट या चिंताजनक घटना के कारण लोगों को होनेवाला वह भय, जिसके फलस्वरूप लोग अपनी रक्षा के उपाय सोचने लगते हैं। सनसनी। (पैनिक)

**आतति**—स्त्री०[सं०] खिचने या खीचने के कारण पड़नेवाला तनाव। तान। (टेन्सन)

**आतप**—पु०२ सूर्य का ताप। सूर्य की गरमी। (इन्सोलेशन)

**आतानक**—वि०[स०] खींच या तानकर फैलाने या आगे बढ़ानेवाला। (टेन्सर) जैसे—पैरों या हाथो की आतानक पेशियाँ।

**आत्म-चिंतन**—पु० [स०] आत्मा के संबध मे चिंतन या विचार करना। २ दे० 'आतदर्शन'।

**आत्म-चेतना**—स्त्री० दर्शन और मनोविज्ञान मे वह स्थिति, जिसमे यह ज्ञान होता है कि हमारा स्वतन्त्र अस्तित्व है, हम कुछ कर रहे हैं, अथवा हमे अनेक प्रकार की अनुभूतियाँ होती है। (सेल्फ़-कान्शसनेस)

**आत्म-निरीक्षण**—पु०=आतदर्शन।

**आत्म-निर्भर**—वि०[स०] [भाव० आत्म-निर्भरता]१ जो सब बातो मे अपने आप पर ही निर्भर हो, किसी दूसरे का आश्रित न हो। २. दे० 'आत्म-पूर्ण'।

**आत्म-निर्भरता**—स्त्री०[स०]१ आत्म-निर्भर होने की अवस्था, गुण या भाव। २ राजनीतिक क्षेत्र मे वह स्थिति, जिसमे कोई देश, राज्य या सस्था सब कामो या बातो मे अपने आप पर निर्भर हो, दूसरों पर आश्रित न हो। आत्म-पूर्णता। (आटार्की)

**आत्म-निष्ठ**—वि०[स०]१ अपने आप मे निष्ठा या विश्वास रखनेवाला। २. अध्यात्म या दर्शन मे, जो कर्त्ता या विचारक के आत्म (चेतना या मन) मे ही उत्पन्न हुआ हो अथवा स्वय उसी मे संबध रखता हो। 'वस्तु निष्ठ' का विपर्याय। ३ कला और साहित्य मे, (अभिव्यजना या कृति) जो किसी के आत्म (चेतना या मन) मे ही उद्भूत हो और उसकी अनुभूतियों तथा विचारो पर ही आश्रित रहकर उन्हे प्रदर्शित करे, बाह्य पदार्थों आदि पर आश्रित न हो। 'वस्तु-निष्ठ' का विपर्याय। (सब्जेक्टिव, अन्तिम दोनो अर्थों के लिए)

**आत्म-पीड़न**—पु०१. अपने आपको पीडित करने या कष्ट देन की क्रिया या भाव।

**आत्म-पूर्ण**—वि०[सं०]१. जो अपने आप मे स्वय हर तरह से पूर्ण हो; अर्थात् जिसे अपने अस्तित्व, निर्वाह आदि के लिए बाहरी तत्त्वो,साधनों आदि की अपेक्षा या आवश्यकता न रहती हो। २ (देश, या राज्य) जो अपनी आवश्यकता की प्रायः सभी चीजें स्वयं उत्पन्न करता हो और दूसरे देशों या राज्यों पर आश्रित न रहता हो। आत्म-निर्भर। (आटार्किक, आटार्किकल)

**आत्म-पूर्णता**—स्त्री०[स०] १. किसी वस्तु की वह स्थिति,जिसमे वह अपनी आवश्यकताओ की पूर्ति के सभी साधन अपने अतर्गत रखती और बाहरी तत्त्वों या साधनों से निरपेक्ष रहती है। २ आधुनिक अर्थशास्त्र में, किसी देश या राज्य की वह स्थिति, जिसमे वह अपनी आवश्यकता की सभी वस्तुएँ स्वय उत्पन्न करता है और दूसरे देशो या राज्यों से चीजें मँगाने से बचा रहता है। आत्म-निर्भरता। (आटार्की)

**आत्म-भर्त्सन**—पु०[सं०] कोई अनुचित या निंदनीय काम कर बैठने पर आप ही अपनी भर्त्सना करना। स्वयं अपने आप को बुरा-भला कहना।

**आत्म-रति**—स्त्री०३ यौन-विज्ञान मे, एक प्रकार की यौन-विकृति (देखें) जिसमे अपनी काम-वासना की तृप्ति के लिए पुरुष अपना वीर्य स्खलित कर लेता है या स्त्री अपना रज स्खलित कर लेती है।

**आत्मसंकोच**—पु० [सं०] [वि० आत्म-संकोची] मन की वह स्थिति, जिसमें मनुष्य औरों के सामने अपने महत्त्व आदि के विचार से कुछ सकुचित होता, और खुलकर कोई काम नहीं कर सकता या कोई बात नहीं कह सकता। (सेल्फ़कान्शसनेस)

**आत्म-सिद्धि**—स्त्री० १ वह स्थिति, जिसमें मनुष्य अपनी आत्मा का ठीक स्वरूप जान लेता और इसकी असीम शक्तियों से परिचित होकर परमात्मा के साथ एकात्म्य स्थापित कर लेता है। (सेल्फ-रियलाइज़ेशन)

**आत्म-स्थापन**—पु० [सं०] अपने अधिकार, विचार, सत्ता आदि का दृढ़तापूर्वक किया जानेवाला प्रस्थापन। यह कहना कि हम या हमारे विचार भी महत्त्वपूर्ण हैं, और हमें या हमारे विचारों को भी उचित मान्यता मिलनी चाहिए। (सेल्फ-एसर्शन)

**आत्म-स्वीकृति**—स्त्री० [सं०] विधिक क्षेत्र में, अपने किसी अपराध, दोष या भूल के संबंध में यह मान लेना कि हाँ, हमने ऐसा किया है। (कन्फ़ेशन)

**आत्मीकरण**—पुं० [सं०] [भू० कृ० आत्मीकृत] एक पदार्थ का दूसरे पदार्थ को अपने साथ मिलाकर इस प्रकार एक कर लेना कि उस दूसरे पदार्थ का अस्तित्व ही न रह जाय। स्वांगीकरण। (एसिमिलेशन) जैसे—हमारा शरीर खाद्य पदार्थों का आत्मीकरण कर लेता है।

**आत्यंतिक प्रलय**—पु० [सं०] मन की वह स्थिति, जिसमें परम तथा पूर्ण ज्ञान की प्राप्ति होने पर वह चित् या ब्रह्म में पूर्ण रूप से लीन हो जाता है। (वेदान्त)

**आदत**—स्त्री० [अ०] १. प्रवृत्ति, रुचि आदि की विलक्षणता के कारण उत्पन्न होनेवाली वह स्थिति, जो बार-बार कोई काम करते रहने पर अथवा किसी बात के अभ्यस्त होने पर प्रकृति या स्वभाव का अंग बन जाती है। अभ्यास। टेव। बान। (हैबिट) २ प्रकृति। स्वभाव। (नेचर)

**आदरार्थक**—वि० [सं०] (शब्द) जिसका प्रयोग विशेष रूप से किसी के आदर के विचार से किया जाय। जैसे—'तुम' साधारण सर्वनाम है, और 'आप' आदरार्थक।

**आदायक**—वि० [सं०] १ ग्रहण करने या लेनेवाला। ग्राही। २ पाने या प्राप्त करनेवाला। प्रापक।

पु० विधिक क्षेत्र में, किसी दिवालदग्रस्त या दिवालिये आदि की सम्पत्ति का वह व्यवस्थापक, जो न्यायालय के द्वारा नियुक्त किया गया हो। प्रापक। (रिसीवर)

**आदि-ग्रंथ**—पु० [सं०] सिक्खों का प्रसिद्ध धर्मग्रन्थ, जो लोक में 'गुरु ग्रंथ साहब' के नाम से प्रसिद्ध है और जिसका संकलन गुरु अर्जुनदेव ने सन् १६०४ में कराया था।

**आदितः**—अव्य० [सं०] बिलकुल आदि या आरंभ से। आरंभतः। (ऐब इनिशिओ)

**आदि-पंचम**—पु० [सं०] संगीत में कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**आदेशिका**—स्त्री० [सं०] न्यायालय का वह आज्ञापत्र, जिसमें किसी व्यक्ति को न्यायालय में उपस्थित होने अथवा कोई चीज उपस्थित करने का आदेश होता है। (प्रोसेस)

**आदेशिकी**—पुं० [सं०] वाणिज्य क्षेत्र में वह, जिसके नाम कोई हुंडी लिखी जाय या चेक काटा जाय। (डाई)

**आधर्षण**—पु० मध्ययुगीन अंगरेजी विधिक क्षेत्र में, किसी अपराधी को प्राणदंड मिलने पर राज्य के द्वारा होनेवाली उसकी संपत्ति की जब्ती।

**आधर्षित**—वि० (व्यक्ति या संपत्ति) जिसका आधर्षण हुआ हो।

**आघात**—पु० २ आजकल वैज्ञानिक क्षेत्रों में कोई तरल पदार्थ शरीर की किसी नस के अंदर पहुँचाने की क्रिया या भाव। (इन्फ़्यूज़न) जैसे—शरीर में किया जानेवाला नमकीन पानी या रक्त का आघात।

**आधार**—पुं० २ वह मूल तत्त्व, तथ्य या वस्तु जिसके ऊपर किसी प्रकार की रचना प्रस्तुत या विकसित होती हो। जमीन। (ग्राउन्ड)

**आधार-पत्र**—पु० [सं०] वह पत्र, जिस पर किसी प्रकार के क्रय-विक्रय, देने-पावने आदि का ठीक हिसाब या भेजे जानेवाले माल का पूरा विवरण लिखा रहता है। (वाउचर)

**आधार-शैल**—पु० [सं०] आधुनिक भू-विज्ञान में पृथ्वीतल के नीचे की वे आग्नेय चट्टानें, जिनके ऊपर बाद में तहें या परतें जमती और बनती चली गई थीं और जिनके नीचे तहों या परतों का कोई चिह्न नहीं मिलता। (बेड-रॉक)

**आधुनिकीकरण**—पु० [सं०] किसी परंपरागत या पुरानी कार्य-प्रणाली, व्यवस्था, संघटन आदि को आधुनिक अर्थात् नये ढंग का बनाने की क्रिया या भाव। (मॉडर्नाइज़ेशन)

**आनंद-योगी**—पु० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**आनंद-वाद**—पु० [सं०] [वि० आनंदवादी] आध्यात्मिक क्षेत्र का यह मत या सिद्धान्त कि मनुष्य की आत्मा स्वभावतः आनन्द या ब्रह्मानन्द में पूर्ण है, अतः मनुष्य को आत्मरूप में लीन रहकर सदा आनन्दमय रहना चाहिए।

**आनंदवादी**—वि० [सं०] आनंदवाद संबंधी। आनन्दवाद का।

पु० वह जो आनन्दवाद का अनुयायी या समर्थक हो।

**आन**—स्त्री० १ किसी की मर्यादा या महत्त्व के प्रति मन में होनेवाली आदरपूर्ण भावना या पूज्य बुद्धि। उदा०—ठोकरें निकली हैं बच्चे को पड़ा फिरता है। कुछ किसी बात की भी आन है गोइयाँ तुमको।—जानसाहब।

**मुहा०—(किसी की) आन मानना**—(क) किसी की मर्यादा, महत्त्व आदि का उचित आदर करना और ध्यान रखना। जैसे—भले घर की स्त्रियाँ बड़े-बड़ों की आन मानती हैं। (ख) किसी का प्रभुत्व या बड़प्पन मानकर उसके सामने झुकना या दबना। उदा०—देखकर कुरती गले में सब्जपोशी आपकी। पान के भी खेत ने अब आन मानी आपकी।—नजीर।

६. अपनी मर्यादा, सुरक्षा आदि के विचार से किया जानेवाला कोई ऐसा निश्चय, जिसके फलस्वरूप किसी काम या बात का निषेध या वर्जन होता हो। जैसे—(क) तुम्हें तो हमारे यहाँ आने की आन है। (ख) उनके घर में हरी चूड़ियों की आन है। (स्त्रियाँ) ७ अपनी मर्यादा आदि की रक्षा के विचार से किया जानेवाला ऐसा दृढ़ निश्चय या संकल्प, जो जिद या हठ के रूप में परिणत हो गया हो। जैसे—न जाने उसे क्या आन पड़ गई है कि वह किसी तरह मनाये नहीं मानता।

क्रि० प्र०—पड़ना।

८. अपनी मर्यादा, महत्त्व आदि की उत्कट भावना के कारण उत्पन्न

होनेवाला मिथ्या अभिमान। अकड़। ऐंठ। जैसे—तुम तो बात बात मे अपनी आन ही दिखाते रहते हो।

**आनी-बानी**—वि० [हिं० आन+बान] आनबानवाला। स्त्री० पाजीपन। शरारत।

**आनुवंशिक विज्ञान**—पु० [स०] आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि जीवों और वनस्पतियों मे आनुवंशिकता किस प्रकार चलती है और उसमे समय-समय पर किन परिस्थितियो मे किस प्रकार के विभेद उत्पन्न होते हैं। (जेनेटिक्स)

**आनुवंशिकी**—स्त्री० दे० 'आनुवंशिक विज्ञान'।

**आन्वीक्षिकी**—स्त्री० १ सृष्टि के तत्त्व का विचार करनेवाला शास्त्र।

**आपात**—पु० १. आज-कल राजनीतिक क्षेत्र मे, अचानक उत्पन्न होनेवाली कोई ऐसी विशिष्ट स्थिति जिसके फलस्वरूप देश की शान्तिरक्षा या सुरक्षा मे बाधा पड़ने की सभावना हो। हगामा। (एमर्जेन्सी, अतिम दोनो अर्थों के लिए)

**आपेक्ष**—पु० [स०] =उपेक्षा।

**आपेक्षिकता**—स्त्री० [स०] आपेक्षिक होने की अवस्था, गुण या भाव। (रिलेटिविटी)

**आपेक्षिकतावाद**—पु० [स०] [वि० आपेक्षिकतावादी] आधुनिक भौतिकी का यह नया मत या वाद कि गति और त्वरण दोनों परस्पर निरपेक्ष नहीं है, बल्कि एक दूसरे के आपेक्षिक हैं। (रिलेटिविटी थियोरी)

**आप्त**—पु० १. ऐसा व्यक्ति जिसने दर्शन और धर्म की सब बातें अच्छी तरह जान ली हों और जो जीव मात्र पर दया करता तथा सदा सच बोलता हो। ५. आज-कल विधिक क्षेत्र मे वह व्यक्ति, जो दो प्रतिस्पर्धी या विरोधी दलों के झगड़े या विवादास्पद विषय का अन्तिम निर्णय करने के लिए चुनकर नियुक्त किया गया हो। (अम्पायर)

**आप्त प्रमाण**—पु० [स०] ऐसा प्रमाण, जो आप्त पुरुष के उपदेश या कथन पर आश्रित हो; और इसलिए जिसकी सत्यता में किसी प्रकार का सदेह न किया जा सकता हो। जैसे—वेदों के मत्र आप्त प्रमाण है।

**आप्रवास**—पु० [स०]=आप्रवासन।

**आप्रवासन**—पु० [सं०] [भू० कृ० आप्रवासित] अपना देश या मूल निवास-स्थान छोड़कर प्राय स्थायी रूप से बसने के लिए किसी दूसरे देश मे जाकर बसना या रहना। (इमिग्रेशन)

**आबंध**—पु० ४ कोई बात निश्चित या पक्की करना। ठहराव। परियुक्ति। (एग्रीमेन्ट)

**आबादकार**—पु० ऐसे लोग, जो किसी कम आबादीवाले देश मे जाकर खेती-बारी, व्यापार आदि करने के उद्देश्य से बस गये हों, और उसकी आबादी, सपन्नता आदि बढ़ाने मे सहायक हुए हों। (सेटलर्स)

**आभिचारिक**—वि० २ अभिचार के रूप मे होनेवाला।
पुं० १. वह जो उक्त प्रकार से अभिचार करता हो।

**आभुक्ति**—स्त्री० १. किसी चीज का फल भोगने की क्रिया या भाव। २. किसी की जमीन पर या मकान में किराया, भाड़ा आदि देकर उसमें रहने और उसका सुख भोगने की क्रिया या भाव। आभोग। (टेनेमेन्ट)

**आभोग**—पु० ३. विधिक क्षेत्र में, किसी की जमीन पर या मकान में किराया आदि देकर रहने और उसका सुख भोगने की क्रिया या भाव। आभुक्ति। (टेनेमेन्ट) ४. शास्त्रीय संगीत में गीत के चार अंगों में से चौथा अंश या अश, जो हाता तो बहुत कुछ अतरे की तरह ही है; परन्तु जिसमें गायक ऊँचे से ऊँचे स्वरो तक अर्थात् तार-सप्तक के पचम स्वर तक जा सकता है।

**विशेष**—शास्त्रीय दृष्टि से गीत के आरभिक तीन अग या अश, स्थायी, अतरा और सचारी कहलाते हैं।

**आभोगी**—स्त्री० सगीत मे काफी ठाठ की एक रागिनी।

**आम चुनाव**—पु० [अ०+हिं०]=साधारण निर्वाचन।

**आमाशय शोथ**—पु० [स०] एक प्रकार का रोग, जिसमे आमाशय की भीतरी झिल्ली सूजने के कारण पेट मे पीडा होती है, और रोगी को कै तथा दस्त होने लगते है। (गैस्ट्राइटिस)

**आमास**—पु० [फा०] शोथ। सूजन।

**आमुख**—पु० १ नियमावली, विधि-विधान आदि के आरभ का वह अश, जिसमे उसके उद्देश्यो, प्रयोजनों आदि का उल्लेख होता है। (प्रिएम्बुल) ४ नाटक या रूपक का 'प्रस्तावना' नामक अश। ५ पुस्तक की प्रस्तावना।

**आयतन**—पु० ५ आकाश का उतना अश, जितना कोई काया घेरती है। (वॉल्यूम) ६. आध्यात्मिक क्षेत्र मे वे अग, या तत्त्व जिनमे तृष्णाओ का निवास या मूल माना गया है। जैसे—आँख, जीभ, नाक, शरीर की त्वचा और मन जिनसे रूप, रस, गध आदि के सुख की कामना होती है।

**आय-व्यय परीक्षक**—पु० दे० 'लेखा-परीक्षक'।

**आयुध**—पु० १ युद्ध-क्षेत्र मे काम आनेवाले अस्त्र या हथियार। (आर्म्स)

**आयुर्विज्ञान**—पु० [स०] विज्ञान की वह शाखा, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि शरीर किस प्रकार निरोग किया जाता है और उसके रोग आदि किस प्रकार दूर किये जाते हैं। चिकित्सा-शास्त्र। आयुर्वेद इसी की भारतीय शाखा है।

**आयोजना**—स्त्री० [सं०] कोई काम आरंभ करने से पहले उसके सभी अंगों और उपांगों पर अच्छी तरह विचार करके बनाई जानेवाली योजना। (प्लान)

**आरंभ**—पु० ४. नाट्य-शास्त्र मे रूपक की पाँच अवस्थाओ मे पहली अवस्था, जिससे यह सूचित होता है कि नायक या नायिका कौन सा उद्दिष्ट फल प्राप्त करने के लिए उत्सुक हैं। इसी से नाटक के लक्ष्य, साध्य और फल का पहले से पता मिल जाता है।

**आरंभतः**—अव्य० २. बिलकुल नये सिरे से। आदितः। (ऐबइनिशिओ)

**आर**—प्रत्य० [स० कार] एक प्रत्यय जो कुछ सज्ञाओ के अन मे लगकर उनके कर्ता का सूचक होता है। जैसे—लोहार, सुनार आदि।

**आरती**†—स्त्री० [स० आर्ति] १. आर्त्त होने की अवस्था या भाव। २. आर्त अर्थात् परम दुःखी और निस्सहाय होने की अवस्था मे परित्राण या रक्षा के लिए की जानेवाली पुकार। आर्त्तनाद। उदा०—राम मिलन के काज सखी मोरे आरति उर मे जागी री।—मीरा। †स्त्री०=आरती।

**आरेख**—पु० [सं०] १ प्राय. चित्र के रूप मे होनेवाला कोई ऐसा अकन, जो परिकल्पनाओं, विचारो, स्थितियों आदि का परिचायक हो। (डायग्राम) २. दे० 'रेखा-चित्र'।

**आरेखन**—पुं० [सं०] [भ० कृ० आरेखित] आरेख प्रस्तुत करने की क्रिया या भाव।

**आरोग्य-आश्रम**—पुं० 'आरोग्य-निवास'।

**आरोग्य-निवास**—पु०[स०] ऐसा स्थान, जो साधारणतः स्वास्थ्य-रक्षा के लिए विशेष उपयुक्त हो, और इसी लिए लोग जहाँ स्वास्थ्य-सुधार के उद्देश्य से जाकर कुछ समय तक रहते हों। (सैनिटोरियम)

**विशेष**—ऐसे स्थान प्रायः जंगलों में, पहाड़ों पर, समुद्र के किनारे या ऐसे स्थानों में होते हैं, जहाँ का जलवायु प्राकृतिक रूप से स्वच्छ और स्वास्थ्यवर्द्धक होता है।

**आरोह-पात**—पुं०[स०] ज्योतिष में वह बिन्दु या स्थान, जहाँ किसी ग्रह या नक्षत्र की कक्षा ऊपर चढ़ते समय क्रांति-वृत्त को काटती है। (एसेंडिंग नोड) विशेष दे० 'पात'।

**आर्कुनायन**—पु०[स०]१. प्राचीन भारत में, समुद्रगुप्त के समय का एक गणतंत्र राज्य जो आधुनिक अलवर, भरतपुर और मथुरा के आसपास था। २. उक्त राज्य का नागरिक या निवासी।

**आर्तव**—पु० १. वह स्थिति जिसमें युवती और प्रौढ़ा स्त्रियों की जननेंद्रिय से प्रति चौथे सप्ताह तीन से चार दिनों तक रजस्राव होता है। मासिक धर्म। रजोधर्म। (मेनस्ट्रुएशन)

**आर्थिक भू-विज्ञान**—पु०[सं०] भूगोल की वह शाखा, जिसमें धन-संपत्ति के उत्पादन, वितरण, विनिमय और उपभोग संबंधी तथ्यों का अध्ययन तथा विवेचन होता है। (एकोनामिक जियोग्रेफ़ी)

**आर्थिक भौमिकी**—स्त्री०[स०] आधुनिक भौमिकी की वह शाखा, जिसमें पृथ्वी से उत्पन्न होनेवाली धातुओं, पत्थरों, तेलों, खनिज पदार्थों आदि का विवेचन होता है।

**आर्द्रता-मापी**—वि० [सं०] आर्द्रता का मान नापने या स्थिर करनेवाला। पुं० एक प्रकार का य , जिसमें पदार्थों या वातावरण की आर्द्रता या नमी का परिमाण जाना जाता है। (हाइग्रोमीटर)

**आर्द्रता-विज्ञान**—पु०[स०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि वातावरण की आर्द्रता किस प्रकार घटती बढ़ती है और परिस्थितियों पर इसका क्या परिणाम या प्रभाव होता है। (हाइग्रालाजी)

**आलकसी**†—वि०=आलसी।

**आलवार**—पु० [त० अध्यात्म सागर में अवगाहन करनेवाला] दक्षिण भारत के तमिल क्षेत्र में रहनेवाली एक प्राचीन वैष्णव जाति,जिसमें अनेक भक्त कवि हो गये हैं। इनका समय ई० ५ वीं शती से ९ वीं शती तक माना गया है।

**आली-काली**—स्त्री०[?] हठ योग में, ललना या इडा नाडी और रसना या पिंगला नाड़ी के दूसरे नाम।

**आलेख**—पु० ४. आलेखन की क्रिया से अथवा रेखाओं आदि के द्वारा अंकित किया हुआ चित्र या रूप। (ड्राइंग)

**आलेखन**—पुं० २. किसी प्रकार की आवृत्ति बनाने के लिए रूप-सूचक रेखाएँ अंकित करना। चित्र बनाना। (ड्राइंग)

**आवर्तिकी**—स्त्री०[सं०]=आवर्ती।

**आवंती**—स्त्री०[सं०] नाट्य-शास्त्र में, वह प्रवृत्ति जो भृंग-कच्छ, मालव, विदिशा, सिन्धु, सौराष्ट्र आदि देशों की वेश-भूषा, आचार-व्यवहार, बोलचाल आदि के तत्त्वों से युक्त हो।

**आवक**—वि०[हिं० आवना=आना] १. जो कहीं बाहर से अन्दर की ओर आ रहा हो। बाहर से आनेवाला। जैसे—आवक डाक। उक्त प्रकार से आनेवाली चीज से संबंध रखनेवाला। (इन्वर्ड) जैसे—आवक माड़ा।

स्त्री० बाहर या दूसरे स्थानों से चीजें या माल आने की अवस्था या भाव। आयात। (पश्चिम) जैसे—इस साल मंडी में गेहूँ की आवक कुछ कम है।

**आवक्ष**—वि०[स०] जो वक्ष अर्थात् छाती तक हो। जैसे—आ-वक्ष चित्र।

क्रि० वि० वक्ष अर्थात् छाती तक।

पु० ऐसा चित्र या मूर्ति, जिसमें सिर और छाती अर्थात् धड़ ही दिखलाया गया हो, नीचे के अंग न दिखाये गये हों। (बस्ट)

**आवर्त**—पु० ६. मनुष्यों की कोई घनी आबादी या बस्ती। ७ ऐसा क्षेत्र या देश,जिसमें दूर-दूर तक बहुत-सी छोटी-बड़ी आबादियाँ या बस्तियाँ हों। जैसे—आर्यावर्त्त, ब्रह्मावर्त आदि। ८ मनुष्यों की कोई छोटी-मोटी आबादी या बस्ती। जैसे—अंतरावर्त, बहिरावर्त आदि।

**आवर्तन**—पु० ६ किसी काम या बात का कुछ समय के बाद फिर उसी क्रम, प्रकार या रूप से घटित होना। (रेकरेन्स)

**आवर्धन**—पु० २ किसी छोटी या सूक्ष्म वस्तु के प्रतिबिम्ब आदि कुछ विशिष्ट क्रियाओं से बहुत बढ़ाना। (मैग्निफ़िकेशन)

**आवास**—पु० १. किसी स्थान पर प्राय स्थायी रूप से रहने की अवस्था या भाव। २ रिहाइश। २ वह स्थान, जहाँ कोई नियमित या स्थायी रूप से बराबर रहता हो। रिहाइश (रेजीडेन्स)

**आवासिक**—वि०[स० आवास+ठक+इक] १. आवास-संबंधी। आवास का। २ किसी के आवास के रूप में अथवा आवास के लिए बना हो। रिहाइशी। (रेसिडेन्शल)

**आवासी**—पु० [स० आवासिन्] [स्त्री० आवासिनी] वह जो किसी स्थान को अपना आवास बनाकर वहाँ रहता हो। (रेसिडेन्ट)

**आवासीय**—वि०[स०]१ आवासिक। २. (स्थान) जो आवास के योग्य हो।

**आवृत्ति**—स्त्री० १ कोई काम या बात बार-बार होना। दोहराया, तेहराया जाना। (रिपीटीशन) ३. यह मत या सिद्धांत कि संसार के सभी काम और बातें चक्र की तरह चलती रहती हैं और उनकी मुख्य घटनाओं की रह-रह कर आवृत्ति होती रहती है।

**आवृत्तक**—पु०[स०] वह जो कहीं से चलकर और विशेषतः पैदल चलकर कहीं ठहरने, बसने या रहने के लिए आया हो।

**आवृत्तन**—पु०[स०]१. चलना-फिरना या घूमना। २. एक स्थान से चलकर दूसरे स्थान पर जाना या पहुँचना।

**आशंसा**—स्त्री० ४ किसी के उत्कर्ष, मंगल आदि के लिए प्रकट की जानेवाली आशीर्वादात्मक कामना। (ब्लेसिंग)

**आशनाई**—स्त्री०[फा०]१. आशना होने की अवस्था या भाव। २. जान-पहचान। परिचय। ३. दोस्ती। मित्रता। ४. पर-पुरुष और पर-स्त्री में होनेवाला अनुचित और अवैध लैंगिक संबंध।

**आशय**—पुं० २. किसी प्रकार का पात्र।

**आशु-लिपि**—स्त्री०[सं०] किसी लिपि के अक्षरों के छोटे और संक्षिप्त संकेत या चिह्न बनाकर तैयार की हुई वह लेख-प्रणाली, जिससे कथन या भाषण बहुत जल्दी लिखे जाते हैं। (शार्ट-हैन्ड)

**आशु-लिपिक**—पु० [सं०] वह जो आशु-लिपि की प्रणाली से भाषण आदि लिखता है। (स्टेनोग्राफर)

**आशु-लेखन**—पु० [सं०]=आशु-लिपिक।

**आश्रित राज्य**—पु०[सं०] आधुनिक राजनीति मे ऐसा राज्य, जो स्वतंत्र न हो और जहाँ स्वायत्त-शासन-व्यवस्था के स्थान पर किसी दूरस्थ राज्य का नियंत्रण हो। (डिपेन्डेंसी)

**आश्वलायन**—पु० [सं०] ऋग्वेद की २१ शाखाओं मे से एक। इस शाखा के अनुसार न तो अब ऋक-संहिता ही मिलती है और न ब्राह्मण ही, परन्तु ये तीनों कल्प-सूत्र अवश्य मिलते है—गृह्य-सूत्र, धर्म-सूत्र और श्रौत-सूत्र।

**आष्टांगिक मार्ग**—पु० [सं०] बौद्ध धर्म मे तृष्णाओ या वासनाओ का नाश करनेवाली ये आठ बातें—अच्छी दृष्टि, अच्छा संकल्प, अच्छे वचन, अच्छे कर्म, अच्छी जीविका, अच्छा व्यायाम, अच्छी स्मृति और अच्छी समाधि।

**आस**—स्त्री० [सं० आश्वस्] किसी काम या बात मे किसी को मिलनेवाला थोड़ा या हलका सहारा। जैसे—कुछ आस मिले तो हम भी सीढ़ियां चढ़ जायें।

**मुहा०—आस मिलना** संगीत मे, किसी के गाने के समय बीच मे किसी दूसरे का भी कुछ गा या बजा देना, जिससे गानेवाले को कुछ सहारा मिले। जैसे—वाली ठेका भी देते चलो तो कुछ आस मिले।

**आसज्जा**—स्त्री० [सं०] १. सजकर या ठीक स्थिति मे आकर कुछ करने के लिए उथत या तत्पर होना। तैयारी। २ आधुनिक मनोविज्ञान में, किसी व्यक्ति की वे मानसिक और शारीरिक स्थितियां जिनके आधार पर यह स्थिर किया जाता है कि वह अमुक कार्य के लिए उपयुक्त या प्रस्तुत है। तैयारी। (रेडिनेस)

**आसन-कोपी**—वि० [सं० आसन-कोपिन्] (व्यक्ति) जो एक ही आसन अथवा मुद्रा मे अर्थात् शांत भाव से किसी जगह अधिक समय तक न बैठ सकता हो ; फलतः बहुत ही चंचल या चिलबिल्ला।

**आसुत**—भू० कृ० [सं०] जो असवन की क्रिया से प्रस्तुत किया गया हो। आसव के रूप मे तैयार किया हुआ। चुआया हुआ। (डिस्टिल्ड) जैसे—आसुत जल, आसुत मद्य।

**आस्ताँ**—पुं० [सं० आस्थान से फा०] रहने का स्थान। निवास-स्थान।

**आस्तित्विक**—वि० [सं०] अस्तित्व से संबंध रखनेवाला। अस्तित्व का।

**आस्थगित**—भू० कृ० [सं०] (विषय) जो किसी विशेष कारणवश या कोई शर्त पूरी होने तक के लिए रोक रखा गया हो। (डेफर्ड)

**आस्थाई**—स्त्री० [सं० स्थायी] ख्याल, ठुमरी आदि गीतों का पहला चरण, जो प्रत्येक चरण या पद के बाद दोहराकर गाया जाता है।

**आहत**—वि० ३. जिसका अंत हो चुका हो। समाप्त। ४. (प्राचीन मुद्रा या सिक्का) जिस पर ठप्पे से कोई चिह्न अंकित हो, उसे चलानेवाले का नाम या समय अंकित न हो। (पंच-मार्कड)

**आहत नाद**—पु० [सं०] नाद के दो भेदों में से एक। ऐसा नाद, जो किसी प्रकार के आघात से उत्पन्न होता है। जैसे—घंटे, घड़ियाल आदि अथवा बाजो से उत्पन्न होनेवाला नाद। नाद का दूसरा भेद अनाहत नाद कहलाता है।

**आहरण**—पु० २. बलपूर्वक कही से कुछ निकालना या किसी से कुछ लेना। (एज्जैक्शन)

**आहार-तंत्र**—पु० [सं०]=पाचक-तंत्र।

**आहार नाल**—पु० [सं०] पाचन-कोल।

**आहुत**—भू० कृ० [सं०] १. जिसे आहुति दी गई हो। जो तृप्त किया गया हो। जैसे—सोमाहुत।

## इ

**इंजील**—स्त्री०[अं० इवेन्जेलियन] १. ईसाइयों के धर्म-ग्रंथ बाइबिल का एक विशिष्ट अंश, जिसमे ईसु-समाचार का उल्लेख है कि ईसा-मसीह ईश्वर की ओर से लोक-कल्याण के लिए आये थे। ईसाइयो का धर्म-ग्रंथ। बाइबिल।

**इंदिरा**—स्त्री० ४. एक प्रकार का वर्णिक समवृत्त छन्द, जिसके प्रत्येक चरण मे एक नगण, दो रगण, एक लघु और एक गुरु होता है।

**इंदु-वीर्वाणी**—स्त्री०[सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**इंदु-श्यामली**—स्त्री०[सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**इंदु-शोभी**—पु०[सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**इंदु-शीतल**—पु०[सं०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**इंद्रियवाद**—पु०[सं०] [स्त्री० इंद्रियवादी] यह मत या सिद्धांत कि इंद्रियो के सुख-भोग को ही प्रधान मानना चाहिए, और इंद्रियों का सुख भोगते रहना चाहिए। (हेडोनिज्म)

**इक-तरफा**—वि० १ दे० 'एक-तरफा'। २ दे० 'एकपक्षीय'।

**इकबाल मंद**—वि०[अ०-फा०] [भाव० इकबालमंदी] (व्यक्ति) जो यथेष्ट प्रभावशाली और सम्पन्न हो।

**इकबाली**—वि०[अ०] १. इकबाल या स्वीकृत करनेवाला। २ जिसका यथेष्ट प्रताप, वैभव आदि हो।

**इकबाली गवाह**—पु० [अ०+फा०] वह अपराधी जिसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया हो और जो अपने साथी अपराधियो के विरुद्ध गवाही दे। भेद-साक्षी। (एप्रूवर)

**इच्छापत्र**—पु० वह पत्र या लेख, जिसमें कोई व्यक्ति यह लिखता है कि मेरी मृत्यु के उपरान्त मेरी सम्पत्ति का विभाजन और व्यवस्था अमुक प्रकार से हो। वसीयतनामा। (विल)

**इजारेदार**—पु० [फा० इजारादार] [भाव० इजारेदारी] वह जिसने किसी काम या बात का इजारा या एकाधिकार ले रखा हो।

**इजारेदारी**—स्त्री० १. इजारेदार होने की अवस्था या भाव। २. इजारेदार की प्राप्त होनेवाला अधिकार। एकाधिकार। (मोनोपोली)

**इटली**—स्त्री०[?] दक्षिण यूरोप का एक प्रसिद्ध और बड़ा प्रायद्वीप।

**इडली**—स्त्री०[?] अच्छे चावलों को पीस कर बनाया जानेवाला एक प्रकार का दक्षिण भारतीय पकवान।

**इतालवी**—वि० पुं० स्त्री०=इटालियन।

**इतालिया**—पु०=इटली (प्रायद्वीप)।

**इतालो**—पु०, स्त्री०, वि०=इतरानी।

**इमामबाड़ा**—पु० [अ०+हिं०] मुसलमानों मे वह धर्म-मंदिर, जो विशेष

रूप से हजरत अली और उनके पुत्रों की स्मृति मे बनाया गया हो।

**विशेष**—मुहर्रम मे इमामबाड़ों मे शीया मुसलमानों की शोक-सूचक मजलिसें तथा अन्य अवसरों पर अनेक प्रकार के धार्मिक कृत्य होते हैं।

**इरम**—पु० २ ऊसर या बंजर भूमि।

**इलाकाई**—वि०[हिं० इलाका+ई (प्रत्य०)] १. इलाके से संबंध रखने या उसके अंतर्गत होनेवाला। २. दे० 'क्षेत्रिक'।

**इलाजपट्टी**—स्त्री० [हिं०] १ मरहम-पट्टी। २. किसी को दंड देने के लिए अच्छी तरह मारना-पीटना। (व्यंग्य) उदा०—मालूम पड़ता है कि उसकी इलाज-पट्टी करानी जरूरी है।—उग्र।

**इल्मे-मजलिस**—पु०[अ०+फा०] शिष्ट तथा सभ्य समाज मे उठने-बैठने, बोलने-चालने आदि का ज्ञान या विद्या।

**इष्टि**—स्त्री० ५. यज्ञ, विशेषत अग्निहोत्र, दर्शपूर्ण माय, चातुर्मास्य, पशुयज्ञ और सोम-यज्ञ। बाद मे इनमे पाक-यज्ञ, हविर्यज्ञ आदि भी सम्मिलित हो गये थे।

**इसराईल**—पु० [यहू०] दक्षिण-पश्चिम एशिया का आधुनिक स्वतंत्र यहूदी राज्य, जो सन् १९४८ मे स्थापित हुआ था।

**इस्पंजी**—वि०[हिं० इस्पंज] जो इस्पंज की तरह छिद्रमय हो और जिसमे तरल पदार्थ सोखने की शक्ति हो। (स्पार्जी)

## ई

**ई०**—हिं० ईसवी सन् का संक्षिप्त रूप।

**ई० पू०**—हिन्दी ईसा पूर्व (सन्) का संक्षिप्त रूप।

**ईज-गिरी**—पु० [सं०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**ईज-गोड़**—पु०[स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**ईज-मोहोरो**—स्त्री०[स०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**ईशावास्य**—पु० [स०] एक उपनिषद्, जो शुक्ल यजुर्वेद की मंत्र-संहिता का ४० वाँ अध्याय है और सब उपनिषदों मे पहला माना जाता है।

**ईस्टर**—पु०[स०] यहूदियों, रोमनो, ईसाइयो का एक प्रसिद्ध त्योहार जो प्राय. अप्रैल मे पड़ता है।

## उ

**उँगली छाप**—स्त्री०[हिं०] किसी व्यक्ति विशेषत: अपराधी आदि की पहचान के लिए ली जानेवाली उँगली के अगले भाग की छाप।

अंगुली-प्रतिमुद्रा। अंगुली छाप। (फ़िंगरप्रिन्ट)

**उकताहट**—स्त्री०[हिं० उकताना] उकताने की क्रिया, गुण, धर्म या भाव।

**उगाई**—स्त्री० [हिं० उगना] उगने की क्रिया, भाव या स्थिति।

स्त्री०[हिं० उगाना] १ उगाने की क्रिया, भाव या स्थिति। २. उगाने का पारिश्रमिक या मजदूरी।

**उग्र राष्ट्रवाद**—पु० दे० 'अति-राष्ट्रीयतावाद'।

**उग्रवाद**—पु०[स०]=अंतिवाद।

**उग्रवादी**—पु०[स०]=अतिवादी

**उच्चक मनोवृत्ति**—स्त्री०[स०] मन मे रहनेवाली यह धारणा या भावना कि हम किसी दूसरे से अथवा औरों से ऊँचे या बड़े हैं। 'हीनक भावना' का विपर्याय। (सुपीरियोरिटी कम्प्लेक्स)

**उच्चतम न्यायालय**—पु०[स०] दे० 'सर्वोच्च न्यायालय'।

**उच्च-भाषक**—पु०[स०] एक प्रकार का आधुनिक यंत्र, जो बड़े चोंगे के रूप मे होता है; और जिसके छोटे गोल मुँह पर कही जानेवाली बात जोर की ओर अधिक दूर तक सुनाई पड़ती है। (लाउड स्पीकर)

**उच्चमान**—पु०[स०] १ किसी काम या बात का वह सबसे ऊँचा और बड़ा मान, जो पहले के उस प्रकार के सभी मानो के आगे बढ़ा हुआ हो; और जिसका सार्वजनिक रूप से अभिलेख हुआ हो और जो विशेष प्रशंसनीय और महत्त्वपूर्ण माना जाता हो। जैसे—(क) तैराकी या दौड़ मे स्थापित किया हुआ उच्चमान। (ख) हवाई जहाज मे बहुत अधिक ऊँचाई तक उड़कर स्थापित किया हुआ उच्चमान। २. गरमी, सरदी, तीव्रता, मूल्य आदि की ऐसी अधिकता या वृद्धि जो अपने वर्ग मे सबसे आगे बढ़ी या ऊपर हुई हो। जैसे—(क) चाँदी या सोने के मूल्य का उच्चमान। (ख) वर्षा या हिमपात का उच्चमान। (रिकार्ड)

**उच्चांक**—पु० [स० उच्च+अंक] १. किसी काम या बात का उच्च मान सूचित करनेवाला अंक। २. दे० 'उच्चमान'।

**उच्चायुक्त**—पु०[स० उच्च+आयुक्त] राजदूत की तरह के एक प्रकार के राजकीय अधिकारी, जो एक राज्य के प्रतिनिधि के रूप मे किसी दूसरे राज्य मे नियुक्त होकर रहता है। (हाई कमिश्नर)

**उच्चालक**—पु०[स०] १. दूर करने या हटाने वाला। ३ ऊपर उठाने या ले जानेवाला।

पु० एक प्रकार का आधुनिक यंत्र, जो भारी सामान अथवा बहुत से आदमियों को नीचे से उठाकर ऊपर या ऊँची जगहों पर पहुँचाता है। (एलिवेटर) जैसे—जहाज पर माल चढ़ाने का उच्चालक।

**उच्चालन**—पु०[स०] ऊपर की ओर उठाना, चढ़ाना या ले जाना। (एलिवेशन)

**उच्चालित्र**—पु० [स०] उच्चालक (यंत्र)।

**उच्चित्र**—पु० चित्र-कला मे, आवश्यकतानुसार दिखाई जानेवाली ऊँचाई और निचाई। तलांकन। निम्नोन्नत। (रिलीफ)

**उजलना**—अ० [हिं० उजाला का अ०] १ उजला या चमकीला होना। जैसे—बरतन उजलना। २. दीप्त या प्रज्वलित होना। जैसे—दीया उजलना।

स० उजालना।

**उठक-बैठक**—स्त्री०[हिं० उठना+बैठना] १. बार-बार उठने और बैठने की क्रिया या भाव। २. बैठक या बैठकी नाम की कसरत।

**उठाना**—स० १०. किसी चीज का कोई तरल पदार्थ सोखकर अपने अन्दर करना। जैसे—गुलायब आटा बहुत पानी उठाता है।

**उठाव**—पु० [हिं० उठना] १ उठने की अवस्था, क्रिया या भाव। उठान। २ शरीर के किसी अंग मे होनेवाला कोई ऐसा विकार, जो फोड़े, सूजन आदि का रूप धारण कर सकता हो। जैसे—इस उँगली मे कोई उठाव उठ रहा है।

क्रि० प्र०—उठना।

**उठावन**—पु० [हिं० उठाना, पु० हिं० उठावना] १. उठाने की क्रिया या भाव। २. कोई ऐसा कार्य, जो किसी को आगे बढ़ाने या ऊपर उठाने में प्रवृत्त करता या सहायक होता है। (लिफ़्ट) जैसे—किसी को अधिकारी की कृपा से नौकरी मे उठावन मिलना। ३. बिजली की

सहायता से चलनेवाला उत्थापक नामक यंत्र, जिससे लोग ऊँचे भवनों में नीचे-ऊपर आते-जाते हैं। ४ दे० 'उठावना'।

**उड़न-तश्तरी**—स्त्री० [हिं० उड़ना+तश्तरी] बहुत बड़ी तश्तरी के आकार का एक प्रकार का ज्योतिर्मय उड़ाकर या पदार्थ, जो कभी कभी आकाश में उड़ता हुआ दिखाई देता है। उड़न-थाल। (फ्लाइंग डिश, फ्लाइंग सासर)

**विशेष**—इधर इस प्रकार के पदार्थ आकाश में उड़ते हुए देखकर इनके संबंध में लोग तरह-तरह की कल्पनाएँ करने लगते थे। पर अब वैज्ञानिकों का कहना है कि ये हमारे सौर जगत् के किसी दूसरे ग्रह से हमारी पृथ्वी का हाल जानने और हम लोगों से संपर्क स्थापित करने के लिए आते हैं। फिर भी अभी तक इनकी अधिकतर बातें अज्ञात और रहस्यमय ही हैं।

**उड़न-दस्ता**—पुं० [हिं० उड़ना+फा० दस्त.] =उड़ाका दल।

**उड़ाका दल**—पुं० [हिं०+सं०] पुलिस, सेना, आदि की वह छोटी टुकड़ी या दल, जो कोई विशेष आवश्यकता पड़ने या दुर्घटना होने पर सूचना पाते ही तुरन्त वहाँ जा पहुँचता और व्यवस्था, गहायता आदि का काम करता हो। उड़न-दस्ता। (फ्लाइंग स्क्वाड)

**उत्कीर्णन**—पुं० [सं०] पत्थर, लकड़ी, हाथी-दाँत आदि का तल छील और गढ़कर उनमें आकृतियाँ, बेल-बूटे, मूर्तियाँ आदि बनाने की कला। (कार्विंग)

**उत्केंद्र**—पुं० २ दे० 'कंप-केंद्र'।

**उत्केंद्रक**—वि० [सं०] जो अपने केंद्र से कुछ इधर-उधर हटा हुआ हो। (एक्सेन्ट्रिक)

**उत्कमण**—पुं० २ कोई क्रम उलटने की क्रिया या भाव। (रिवर्शन)

**उत्कमणीय**—वि० [सं०] जिसका उत्कमण हो सके, किया जा सके या किया जाने को हो।

**उत्कांत**—वि० ३ उलटा। विपरीत।

**उत्कांति**—स्त्री० ३. विपरीतता।

**उत्खनन**—पुं० २ आज-कल मुख्य रूप से जमीन खोदने की वह क्रिया, जो गहराई में दबे हुए प्राचीन अवशेषों का पता लगाने के लिए की जाती है। खोदाई। (एक्सकेवेशन)

**उत्तर-जीवन**—पुं० [सं०] साधारणतः अपने वर्ग के औरों का अंत या मृत्यु हो जाने पर भी बना, बचा या जीवित रहना। परिजीवन। (सर्वाइवल)

**उत्तर-जीवित**—भू० कृ० [सं०] जिसने उत्तर-जीवन प्राप्त किया हो। परिजीवी। (सर्वाइवर)

**उत्तरजीवी (विन्)**—पुं० [सं०] वह जिसने उत्तर-जीवन का भोग किया हो। साधारणतः वय से अधिक समय तक जीता रहनेवाला प्राणी। परिजीवी। (सर्वाइवर)

**उत्तरी सागर**—पुं० [सं०] एटलांटिक महासागर का वह अंश, जो ग्रेटब्रिटेन के उत्तर तथा नारवे के पश्चिम में है।

**उत्थापक**—पुं० बिजली की सहायता से चलनेवाला एक प्रकार का यंत्र, जिसकी सहायता से लोग बहुत ऊँची-ऊँची इमारतों या भवनों पर (बिना सीढ़ियाँ चढ़े-उतरे) ऊपर-नीचे आते-जाते हैं। उठावन। (लिफ्ट)

**उत्पल**—पुं० ३. कश्मीर का एक राजकुल जो ई० ९वीं और १०वीं शताब्दियों में वहाँ राज्य करता था।

**उत्पाद्य**—पुं० इतिवृत्त के विचार से रूपक की कथा-वस्तु के तीन भेदों में से एक। ऐसी कथा-वस्तु, जो कवि की कल्पना से उत्पन्न या प्रस्तुत हुई हो।

**विदेव**—शेष दो भेद प्रख्यात और मिश्र कहलाते हैं।

**उत्प्लवन**—पुं० [सं०] १ तरल पदार्थ के तल पर ठोस या भारी पदार्थ के उतराने या तैरने की क्रिया या भाव। २ प्लावन नामक उपकरण जो पानी पर तैरता रहता है। दे० 'प्लावन'।

**उत्संग**—पुं० ६ प्राचीन भारत में वह कर, जो राजा के यहाँ पुत्र उत्पन्न होने पर प्रजा से लिया जाता था।

**उदयन**—पुं० [सं०] वत्स देश का एक प्रसिद्ध चन्द्रवंशी राजा, जो सहस्रानीक का पुत्र था और जिसकी राजधानी कौशाम्बी थी।

**उदरपाद**—वि० [सं०] जिसके पैर पेट के अन्दर रहते हों।

पुं० घोंघे, शंख आदि के वर्ग के वे जन्तु जिनके चलने के अंग उनके खोल के अन्दर रहते हैं, और आवश्यकतानुसार बाहर निकाले जा सकते हैं। (गैस्ट्रोपोड)

**उदर्या**—स्त्री० [सं०] उदरावरण।

**उदात्तीकरण**—पुं० [सं०] उदात्त करने अर्थात् बहुत ऊँचा उठाने की क्रिया या भाव।

**उद्गाता**—पुं० १ वह जो खूब जोर से गाता हो।

**उद्ग्रहण**—पुं० २ राज्य या शासन का आधिकारिक रूप से आदाय, कर, शुल्क नियत करके वसूल करना। (लेवी)

**उद्देश्य**—पुं० ४ कथात्मक साहित्य के छः तत्त्वों में अन्तिम तत्त्व जिसमें लेखक जीवन के संबंध में अपना दृष्टिकोण या जीवन-दर्शन उपस्थित या स्पष्ट करता है।

**उद्धार**—पुं० २ किसी को दासता, बंधन, हीनावस्था आदि से मुक्त करके ऐसी स्थिति में लाना कि वह स्वतंत्रतापूर्वक अपनी उन्नति या विकास कर सके। (इमैन्सिपेशन) जैसे—पर्दे की प्रथा से स्त्रियों का उद्धार।

**उद्यम**—पुं० २ किसी ऐसे नये काम में प्रवृत्त होना, जिसके लिए अपेक्षया अधिक बल, योग्यता, साहस आदि की आवश्यकता हो। ३ उक्त के फलस्वरूप होनेवाला कोई कार्य या व्यापार। (एन्टरप्राइज, उक्त दोनों अर्थों के लिए)

**उद्यान-विज्ञान**—पुं० [सं०] वह विज्ञान, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि पेड़-पौधे आदि किस प्रकार लगाये, बढ़ाये और सुरक्षित रखे जाते हैं। फल, फूल, साग-सब्जी आदि उत्पन्न करने की कला इसी के अन्तर्गत है। (हार्टिकल्चर)

**उधरना**—अ० २. मुक्ति या मोक्ष प्राप्त करना। उदा०—जाके नाम अजामिल उधरयो, गनिका हू गति पाई।—गुरु नानक।

**उधार-बाढ़ी**—स्त्री० [हिं० उधार+बढ़ना] उधार लिया हुआ ऐसा ऋण, जिसका सूद बराबर बढ़ता रहता है।

क्रि० प्र०—देना।—माँगना।

**उधारा**†—वि०=उधार।

**उन्नायन**—पुं० [सं०] उन्नयन करने अर्थात् ऊपर उठाने की क्रिया या भाव।

**उन्मोचन**—पुं० ३. अपराध या दोष न सिद्ध होने पर अभियुक्त को छोड़ देना। (डिस्चार्ज)

**उपकरण**—पुं० ४. कोई ऐसा छोटा यंत्र, जिसमें बहुत से छोटे-छोटे कल-पुरजे हों। (एपरेटस)

**उपकला**—स्त्री० [सं०] शरीर-शास्त्र मे, एक प्रकार की बहुत चिकनी और महीन झिल्ली, जो शरीर के सभी भीतरी अगों को ऊपर से लपेटे रहती है। (एपिथीलियम)

**उप-कुलपति**—पुं० [सं०] किसी विद्यालय का वह प्रधान अधिकारी, जो कुलपति के अधीन रहकर उसके काम करता हो। (वाईस-चासलर)

**उप-क्षार**—पुं० [सं०] जीव-जतुओं, वनस्पतियों आदि मे से निकाला हुआ ऐसा पदार्थ, जिसमे क्षारीय तत्त्व यथेष्ट मात्रा मे होता है। (एल्कलॉएड)

**विशेष**—कुनैन, कोकेन, अफीम आदि इसी वर्ग के पदार्थ हैं।

**उप-क्षेपक**—वि० [सं०] उपक्षेप करनेवाला।
पु० दे० 'अर्थापक्षेपक'।

**उप-क्षेपण**—पुं० [सं०] १ गिराना या फेंकना। २. अभियोग या दोष लगाना। ३ कही से लाकर सामने रखना। ४ सूचित करना।

**उप-गण**—पुं० [सं०] किसी गण, वर्ग या श्रेणी के अन्दर होनेवाला छोटा गण, वर्ग या श्रेणी। (सब-आर्डर)

**उपचर्या**—स्त्री० रोगियों की सेवा सुश्रूषा का काम। (नर्सिंग)

**उपचारिका**—स्त्री० [सं०] रोगियो का उपचार या सेवा-सुश्रूषा करनेवाली स्त्री। (नर्स)

**उपज**—स्त्री० १. उपजने की क्रिया या भाव। २. सामूहिक रूप से वे सब चीजें, जो खेतो आदि में फसल उत्पन्न करने पर प्राप्त हो। जैसे—गेहूँ या चावल की उपज। ३. यत्रों आदि से बनाकर तैयार की हुई चीजें।

**उपजाति**—पुं० वह पदार्थ, जो कोई दूसरा पदार्थ बनाने के समय बीच मे प्रसग या सयोगवश निकल आता या बन जाता हो। उपसर्ग। (बाइ-प्रॉडक्ट)

**उपजाति छंद**—पुं० [सं०] छद-शास्त्र मे ऐसा छद, जो भिन्न प्रकार के योगों से बना हो। जैसे—(क) इन्द्र-वज्रा और उपेन्द्र-वज्रा; (ख) इन्द्रवशा और वशस्थ अथवा (ग) तोटक और मनोरमा के योग से बने हुए उपजाति छन्द कहलाते हैं।

**उपदान**—पुं० २ वह धन जो राज्य या शासन की ओर से किसी ऐसे देश या राज्य को सहायता रूप मे दिया जाता है, जो किसी दूसरे देश या राज्य से लड रहा हो। ३. वह धन जो राज्य या शासन की ओर से किसी ऐसे व्यापार या शिल्प को प्रोत्साहित करने के लिए सहायता रूप में दिया जाता है, जो देश कि आर्थिक उन्नति या विकास के लिए उपयोगी समझा जाता हो। (सबसिडी)

**उपदेश-कथा**—स्त्री० [सं०] कथा का वह प्रकार या रूप, जिसमे पशु-पक्षियों, वृक्षों आदि को पात्र बनाकर उनके आचरणों, व्यवहारो आदि को उपदेशात्मक कथा का रूप दिया जाता है। (फ़ेबुल) जैसे—पंचतंत्र, हितोपदेश आदि।

**उपदेश-वाद**—पुं० [सं०] साहित्यिक क्षेत्र मे यह मत या सिद्धांत कि जो कुछ लिखा जाय, वह लोगों को नैतिक उपदेश देने के उद्देश्य से लिखा जाय। (डाइडेक्टिसीज्म)

**उपनयन**—पुं० [सं०] जनेऊ या यज्ञोपवीत पहनाने का आधुनिक सस्कार।

**उपनागर-अपभ्रंश**—स्त्री० [सं०] मध्य युग मे, अपभ्रश भाषा का वह रूप, जो प्राकृत और आभीरी के योग से उद्भूत हुआ था और जो गुजरात तथा पूर्वी सिन्ध मे प्रचलित था।

**उप-पंजीयक**—पुं० [सं०] वह अधिकारी, जो पजीयक के सहायक रूप मे उसके अधीन रहकर काम करता है। (सब-रजिस्ट्रार)

**उपपत्ति**—स्त्री० ५ किसी बात या विषय के सबध मे ऐसा निरूपित और प्रचलित मत, जो प्रायः ठीक माना जाता हो। सिद्धात। (थिअरी)

**उपरूपक**—पुं० नाटक शास्त्र मे, ऐसा रूपक, जिसमे गीतो और नृत्यो की प्रधानता हो।

**उपरोपण**—पुं० [सं०] [भू० कृ० उपरोपित] वनस्पति-विज्ञान मे, किसी पौधे या वृक्ष की टहनी दूसरे पौधे या वृक्ष की डाल या तनो पर इस उद्देश्य से लगाना कि वह टहनी भी दूसरे पौधे या वृक्ष का अश बनकर बढने और फलने-फूलने लगे। कलम लगाना। (ग्रैफ्टिंग)

**उप-विभाग**—पुं० २. दे० 'अनुभाग'।

**उपशमन**—पुं० २ किसी काम या बात मे होनेवाली कमी। घटाव। (एबेटमेन्ट)

**उप-शिक्षक**—पुं० ऐसा शिक्षक, जो विद्यालय मे पढ़नेवाले विद्यार्थी को उसके अतिरिक्त समय में पढ़ाई मे सहायता देने के लिए शिक्षा देता हो। (ट्यूटर)

**उप-शिक्षण**—पुं० [सं०] ऐसा शिक्षण, जो किसी विद्यालय मे पढनेवाले विद्यार्थी को उसके अतिरिक्त समय मे उसकी पढ़ाई पक्की करने के लिए दिया जाता हो। (ट्यूशन)

**उपशुल्क**—पुं० [सं०] कोई ऐसा छोटा कर या शुल्क, जो किसी छोटे परिमित क्षेत्र मे ही लगता हो। (रेट) जैसे—नगरों में लगनेवाले अलग अलग प्रकार के उप-शुल्क।

**उपसंधि**—स्त्री० [सं०] १. नाट्य-शास्त्र में, सधियों का एक छोटा या हल्का रूप, जिसके २१ प्रकार या भेद कहे गये हैं। २ आधुनिक राजनीति मे, परस्पर युद्ध करनेवाले राष्ट्रों के सैनिक अधिकारियों का युद्ध स्थगित करने अथवा इसी प्रकार की दूसरी बातों के सबंध में होनेवाला समझौता, जिसका पालन सभी पक्षो के लिए आवश्यक होता है। अभिसमय। (कन्वेन्शन)

**उपसाधक**—वि० [सं०] (चीज या बात) जो किसी काम मे गौण रूप से सहायक हो। (एक्सेसरी)

**उपसाधन**—पुं० [सं०] कोई ऐसा तत्त्व, जो किसी काम या बात की सिद्धि मे गौण रूप से सहायक हो। (एक्सेसरी)

**उपस्कर**—पुं० ५ वे सब साधन या सामान, जिनकी आवश्यकता या उपयोग ठीक तरह से कोई काम पूरा करने में होता हो। साज-सामान। (इक्विपमेन्ट)

**उपस्तंभ**—पुं० [सं०] पत्थर, लकड़ी आदि का वह ऊँचा या लंबा

आधार, जिस पर और चीजें जमा या टिकाकर रखी जाती हैं। धानी। (स्टैण्ड) जैसे—घड़ौंची, दीयट आदि।

**उपहृत**—वि० ३ जिसका गुण या शक्ति नष्ट अथवा विकृत कर दी गई हो।

**उपहास काव्य**—पु० [स०] हास्य-रस का कोई ऐसा काव्य, जिसमे किसी प्रथा, वस्तु, व्यक्ति, स्थिति आदि का निंदनीय रूप सामने रखकर उसकी हँसी उड़ाई गई हो।

**उपहास-चित्र**—पु० [स०] वह अंकन या चित्र, जिसमे किसी घटना, वस्तु या व्यक्ति का रूप केवल हसी उड़ाने के लिए विकृत करके दिखाया गया हो।

**उपाधि**—स्त्री० ४ बोल-चाल मे, झगड़े-बखेड़े की कोई ऐसी बात, जो किसी काम मे बाधक हो। ५ कपट। छल।

**उपाध्याय**—पु० १ वह व्यक्ति, जिसके पास लोग किसी विषय का अध्ययन करने के लिए जाते हों।

**उपापचयन**—पु० [स०]=चयापचयन।

**उपाय-कौशल**—पु० [स०] एक प्रकार की बौद्ध पारमिता, जिसके द्वारा बौद्ध-भिक्षु घूम-घूम कर लोगो को महात्मा बुद्ध के उपदेश सुनाते और महायान धर्म के सिद्धांत का प्रचार करते थे।

**उपार्जक**—पु० [स०] उपार्जन अर्थात् अनुयाचन या मतार्थन करने-वाला।

**उपार्जन**—पु० [स०] १. दे० 'अनुयाचन'। २ दे० 'मतार्थन'।

**उपार्जना**—स्त्री० [स०] =उपार्जन।

**उपालंभ काव्य**—पु० [स०] साहित्य मे, कोई ऐसा काव्य, जिसमे प्रिय के वियोग-काल मे उत्कट प्रेम के आवेश मे परम आत्मीयतापूर्वक ऐसे मनोभाव प्रकट किये जाते हैं। ऐसे काव्य प्रेमी और प्रेमिका को भी संबोधित करके लिखे जाते हैं और इष्टदेव को संबोधित करके भी। जैसे—भ्रमर-गीत।

**उपास्थि**—स्त्री० [स० उप+अस्थि] प्राणियों के शरीर मे होनेवाले दृढ़ लचीले ऊतक, जो मिलकर प्राय. हड्डी के समान हो जाते हैं। कुरकुरी। (कार्टिलेज)

**उपोत्पाद**—पु० [स०]=उपजात (पदार्थ)।

**उभयचर**—पु० मछलियों और सरीसृपों के बीच के रीढ़दार जंतुओं का एक वर्ग, जिसके जीव जल मे भी रह सकते हैं और स्थल मे भी। (ऐम्फीबिया) जैसे—कछुआ, मेढक आदि।

**उभयलिंगी**—वि० [स०] जिसमें स्त्री और पुरुष दोनों लिंग हों। पु० १. मनुष्यों मे ऐसा व्यक्ति, जिसमे पुरुष और स्त्री दोनों के चिह्न या लिंग वर्तमान हो। २ ऐसे जीव या वनस्पतियाँ, जिनमे स्त्री और पुरुष दोनों के प्रजनन के अंग समान रूप से रहते हों। (हर्माफ्रोडाइट) जैसे—केचुआ, काई आदि।

**उभय-वेदांत**—पु० [सं०]=विशिष्टाद्वैत

**उभाअरण**—पु० [स०] संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**उन्मीलना**†—स० [स० उन्मीलन] १. खोलना। २. प्रकाशमान करना। ३. उल्लसित या प्रसन्न करना। (राज०)

अ० १. खुलना। २ प्रकाशमान होना। चमकना। ३. उल्लसित या प्रसन्न होना, (राज०)



**उरःशूल**—पु० [स०] एक प्रकार का रोग, जिसमे उर या हृदय के ऊपरी भाग में रह-रह कर तीव्र पीडा होती है। (इनजाइना पेक्टोरिस)

**उरग**—पु० [सं०]ऐसे पृष्ठवंशी जन्तुओं का एक वर्ग, जो पेट के बल रेंगते हुए चलते हैं। जैसे—कछुआ, घड़ियाल, छिपकली, साँप आदि।

**उराव**†—पु० [हि० उर=हृदय] १ मन की उमग या भाव। २ साहस। हिम्मत।

पु०, स्त्री०=उरांव (आदि और भाषा)।

**उरुबेला**—स्त्री० [पा०] प्राचीन पाली साहित्य मे, फलगू नदी का वह रेतीला तट, जो गया और बुद्ध गया के बीच मे पड़ता है।

**उर्दू**—स्त्री० १ बादशाही छावनी।

**उर्मिला**—स्त्री० [स०] राजा सीरध्वज जनक की कन्या और सीता की छोटी बहन जो लक्ष्मण को ब्याही थी।

**उल्लङ्घ**†—पु०=उल्लंघन।

**उल्लंघन**—स्त्री० ३ ऐसी स्थिति जिसमे किसी विषय से संबंध रखने-वाली कई कठिन, चिंतनीय और पेचीदी बाते एक साथ आ उपस्थित हो। (काम्प्लीकेशन)

**उलटा कूआँ**—पु० [हि०] मध्ययुगीन हठयोगियों की परिभाषा में, ब्रह्म-रध्र, जिसका मुँह ऊपर की ओर माना जाता है और जिसमे अमृत-तत्त्व के भडार की कल्पना की गई है।

**उल्लेख**—पु० २ लेख, आदि के रूप मे होनेवाली चर्चा या जिक्र। वर्णन। (मेन्शन)

**उशना (नस्)**—पु० अर्थ-शास्त्र और राजनीति के आचार्य एक प्राचीन वैदिक ऋषि।

**उष्णांक**—पु० [स०]=उष्मांक।

**उष्मा**—स्त्री० २ वैज्ञानिक क्षेत्र मे, गरमी या ताप, जिसके फलस्वरूप जीव-जन्तुओ और वनस्पतियो मे जीवन का सचार होता है। (हीट)

**उष्मा-रोधक**—वि० [स०] उष्मा अर्थात् गरमी या ताप रोकनेवाला। पु० आधुनिक विज्ञान मे, कोई ऐसा उपकरण या रचना, जो दो चीजो के बीच मे इसलिए लगाई जाती है कि एक ओर का ताप, विद्युत् या शब्द दूसरी ओर न जा सके। (इन्सुलेटर)

**उष्मिक**—वि० [स०] उष्मा-संबंधी। उष्मा का।

**ऊँचाई**—स्त्री० २ विशिष्ट रूप से किसी नियत तल या स्तर से ऊँचे होने की अवस्था या भाव। (आल्टिच्यूड) जैसे—(क) किसी पर्वत या स्थान की समुद्र तल से ऊँचाई। (ख) किसी ग्रह या नक्षत्र की पृथ्वी-तल से ऊँचाई।

**ऊँट-पथ**—पु० [हि०+प०] मरुभूमि मे और पहाड़ियों पर ऊँटो के काफिले के चलने के लिए बना हुआ मार्ग। (कैमेल ट्रैक)

**ऊतक-विज्ञान**—पु० [स०] आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमे शरीर की रचना करनेवाले ऊतको का अध्ययन होता है। (हिस्टोलॉजी)

**ऊनता**—स्त्री० २ विशेषण ऐसा अभाव या कमी, जिसके बिना सहसा काम न चल सकता हो। (वान्ट)

**ऊर्णाजिन**—पु० [स०] कुछ विशिष्ट प्रकार के जंतुओं के ऐसे चमड़े, जिनके ऊपर चमकीले, मुलायम और लंबे रोएँ होते हैं। (फर)

**विशेष**—ऐसे चमड़े बहुत मूल्यवान होते हैं और प्रायः बड़े आदमियों के कोट, कुरतियाँ आदि बनाने के काम आते हैं।

**ऊर्ध्व चेतन**—पु० [सं०] १. दार्शनिक क्षेत्र में, योगियों आदि को प्राप्त होनेवाली वह उच्च कोटि की चेतना, जिससे उन्हें बैठे-बैठे भूत, भविष्य और वर्तमान की सब बातों का अपने-आप ज्ञान होता रहता है। २. दे० 'अति-चेतन'।

**ऊष्मक**—वि० [सं०] ऊष्मा उत्पन्न करनेवाला।
पु०=तापक (यंत्र)।

**ऊष्मांक**—पु० [सं० ऊष्म+अंक] १. आधुनिक विज्ञान में, तापमान नापने की बहुत छोटी इकाई। २ उक्त के आधार पर स्वाभ पदार्थों के द्वारा शरीर में ऊर्जा उत्पन्न करनेवाली शक्ति नापने की इकाई। (कैलरी)

## ऋ

**ऋचा**—स्त्री० १. प्रशंसा। स्तुति। २ अर्चन। पूजा। ३ ऋग्वेद के वे मंत्र, जिसमें अग्नि, इन्द्र, वरुण, विष्णु आदि देवताओं की स्तुति है।

**ऋणक**—पुं० [सं० ऋण से] लिखाई, छापे आदि में एक प्रकार के चिह्न, जो दो राशियों या संख्याओं के बीच में रहकर यह सूचित करता है कि पहलेवाली राशि या संख्या में से बादवाली राशि या संख्या घटाई जानी चाहिए। वह इस प्रकार लिखा जाता है—(√)।

**ऋण-पत्र**—पु० १ वह पत्र, जो ऋण लेने के समय महाजन को ऋण के प्रमाण-स्वरूप लिखकर दिया जाता है और जिस पर लिखा रहता है कि यह ऋण अमुक समय पर ब्याज सहित चुका दिया जायगा। (बाँड)

**ऋणात्मक**—वि० [सं०] १ ऋण संबंधी। ऋण का। २. जो ऋण के रूप में हो। ३ जिसमें किसी प्रकार का अभाव हो। नहिक। (नेगेटिव)

**ऋतु-काल**—पु० २ पशु-पक्षियों में वह विशिष्ट ऋतु या समय, जब वे जोड़ा खाते हैं। (मेटिंग सीजन)

**ऋषभ-प्रिय**—पु० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**ऋषभ-वाहिनी**—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**ऋषभांगी**—स्त्री० [सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

## ए

**एक**—वि० ४. अनिश्चित या निश्चित संख्यावाचक शब्दों के अन्त में लगने पर, प्रायः। लगभग। जैसे—कुछ एक, दस एक आदि।

**एक-तंत्रवाद**—पु० [सं०] राजनीति में, यह मत या सिद्धांत कि राज्य का सारा अधिकार और शासन किसी एक परम प्रधान राजनीतिक दल या वर्ग के हाथ में रहना चाहिए; और बाकी सब दल या वर्ग अवैध घोषित हो जाने चाहिए। (टोटलिटेरिएनिज्म)
**विशेष**—यह वाद वास्तव में जन-तंत्र, लोक-तंत्र, राज-तंत्र आदि तथा जनता की समानता की भावना के बिलकुल विपरीत और विरोधी है।

**एक नटनाटक**—पु० [सं०] ऐसा नाटक या रूपक, जिसमें एक ही नट या पात्र रहता और सारी कथा-वस्तु का स्वागत भाषण के रूप में अभिनय करता है। जैसे—संस्कृत के भाण नामक नाटक अथवा सेठ गोविन्ददास कृत "चतुष्पथ", "शाप" और "वर" नामक नाटक।

**एक-पक्षीय**—वि० २ कई पक्षों में से किसी एक पक्ष से रहने या उसकी ओर से होनेवाला। (यूनिलेटरेल)

**एक-परा**—पु० [फा० यक+हिं० पर+आ (प्रत्य०)] एक प्रकार का कबूतर जिसका सारा शरीर सफेद होता है, केवल डैनों पर दो-एक काली चित्तियाँ होती हैं।

**एक पात्रीय नाटक**—पु०=एक नट नाटक।

**एकम**—स्त्री० [हिं० एक] चांद्र मास के हर पक्ष की पहली तिथि। प्रतिपदा।

**एक-रंग**—वि० ३. (व्यक्ति) जो अन्दर और बाहर सदा एक-सा रहता हो; फलत निष्कपट और शुद्ध हृदय का।

**एकल**—वि० ४ जो किसी एक ही पर आश्रित हो अथवा बिना किसी की सहायता के स्वयं सब कुछ करता हो। (सोल) जैसे—एकल निगम।

**एकल निगम**—पु० [सं० कर्म० स०] ऐसा निगम, जो एक ही व्यक्ति पर आश्रित हो, और जो बिना किसी की सहायता के स्वयं या अपने आप सब कार्य करता हो। (सोल कार्रिएन्स) जैसे—राजा एकल निगम होता है।

**एक-भूतता**—स्त्री० [सं०] १ एक-सूत्र होने की अवस्था या भाव। २ चीजों या बातों में रहनेवाला समन्वय। ताल-मेल। (कोऑर्डिनेशन)

**एकांगी**—वि० ४ एक ही पत्नी (या पति) के साथ निष्ठापूर्वक जीवन बितानेवाला (या वाली)। ५ एक ही के आसरे या भरोसे में रहने-वाला। एक-निष्ठ।

**एकांतिक**—पु० [सं०] वैष्णव सम्प्रदाय का एक पुराना नाम। (शुद्ध रूप ऐकान्तिक)।

**एकाचार**—पु० [सं०] १. सदा एक ही प्रकार का अथवा एक-रस बना रहनेवाला आचार। २ एक ही पुरुष (या स्त्री) के साथ रह-कर संयमपूर्वक जीवन बिताने की अवस्था या क्रिया या भाव।

**एकाचारी**—वि० [सं०] [स्त्री० एकाचारिणी] १ सदा एक ही प्रकार का आचार रखनेवाला। २ सदा एक ही के साथ रहकर निर्वाह करने या जीवन बितानेवाला।

**एकात्मक**—वि० [सं०] १ एक के रूप में होने या एक से संबंध रखने-वाला। २ किसी एक ही इकाई से संबंध रखनेवाला। मानिक। (यूनिटरी)

**एकात्मक राष्ट्र**—पुं० [सं०] वह राष्ट्र, जिसके सब प्रदेश या राज्य एक ही केन्द्र से शासित होते हैं। एक ही शासन के अधीन होनेवाला राष्ट्र। (यूनिटरी स्टेट)

**एकायन**—पु० ३ शैवागम नामक भागवत सम्प्रदाय का अनुयायी।

**एकार्थ**—पु० साहित्य में वाक्य का कथित-पद (देखें) नामक दोष।

**एकालाप**—पु० [सं० एक+आलाप] १ किसी व्यक्ति का लगातार बहुत देर तक आप ही बोलते रहना और दूसरों को बोलने का अवसर न देना। २ ऐसी कविता या कहानी, जिसमें कोई पात्र या व्यक्ति आप ही सब बातें लगातार कहता चलता हो और जिसमें किसी प्रकार

का कथोपकथन न हो। ३. अभिनय या नाटक में की आत्मोक्ति या स्वगत-कथन। (मोनोलॉग)

**एकीकरण**—पु० कला पक्ष मे, भिन्न-भिन्न तत्त्वों को मिलाकर इस प्रकार एक स्थान पर एकत्र करना कि उनके योग से सारी कृति एक-रूप और अच्छी तरह गढ़ी हुई जान पड़े।

**एकीय**—वि० [स०]=एकात्मक।

**एकैकी**—अव्य० [स०] एकमात्र। केवल एक। एक ही।

**एक्स-रे**—स्त्री० [अ०] बहुत ही छोटी तरंगोवाली एक प्रकार की विद्युत्-किरण, जिसमे चमक नही होती।

**विशेष**—ये किरणे अपारदर्शी और ठोस पदार्थों के अन्दर भी पहुँच जाती है। इसीलिए इसकी सहायता से पदार्थों, शरीरों, आदि के भीतरी अश देखे जा सकते और उनके चित्र लिये जा सकते है।

**एक्स-रे चित्रण**—पु०=रेडियो-चित्रण।

**एटम**—पु० [अ०]=परमाणु।

**एटम-बम**—पु०=परमाणु बम।

**एटमी**—वि०=पारमाणविक।

**ए० डी० कांग**—पु० [अ० एड डी कैंप] किसी बहुत बड़े राजकीय या सैनिक अधिकारी का निजी सरक्षक या सचिव।

**एतो**†—वि० [स्त्री० एती]=इतना।

**एनामेल**—पु० [अ० एनामल] एक प्रकार का चमकीला पारदर्शी पदार्थ, जो गलाकर धातुओ आदि पर उनमे चमक लाने के लिए चढाया जाता है।

**एलकोहल**—पु० [स०] तीक्ष्ण गधवाला एक विशिष्ट प्रकार का तरल पदार्थ, जो ज्वलनशील और वर्णहीन होता है और खुला रहने पर हवा मे मिलकर उड जाता है। इसका प्रयोग कुछ अवस्थाओं में ईथर की तरह और प्राय. औषधो और मद्यो मे मिलाने के लिए तथा उद्योग-धधों मे होता है।

**ऐंग्लो-इंडियन**—पु० [अ०] उन अगरेजो के वशज, जो भारत मे बस गये थे अथवा जिन्होंने भारतीय स्त्रियो को पत्नी के रूप मे ग्रहण कर लिया था।

**ऐंठन**—स्त्री० ४ आक्षेपक नामक रोग।

**ऐकक**—वि० [स०]=एकात्मक।

**ऐकांतिक**—पु० वैष्णव धर्म का एक पुराना नाम।

**ऐतिहासिकता**—स्त्री० [स०] ऐतिहासिक होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव।

**ऐतिहासिकतावाद**—पु० [स०] यह मत या सिद्धांत कि दर्शन, धर्म, संस्कृति, साहित्य आदि की सभी बातो का विवेचन उनकी ऐतिहासिकता के आधार पर ही होना चाहिए।

**ऐहिक राज्य**—पुं० [सं०] दे० 'धर्म निरपेक्ष राज्य'।

**ओज**—पु० [स०] १. तेज। २. प्रताप। ३. चमक। दीप्ति। ४. उजाला। प्रकाश।

**ओड़िया**—वि०, स्त्री०, पु०=उड़िया।

**ओढ़ुल**†—पु०=अड़हुल।

**ओपरा**—वि० [स० अपर] [स्त्री० ओपरी] १. (व्यक्ति) जो आत्मीय न हो। पराया। २ जिसमे आत्मीयता या वास्तविकता न हो। (पश्चिम) जैसे—उसने ओपरे दिल से सहानुभूति प्रकट की है।

**ओलगना**†—स० [सं० अव-लगन] सेवा करना। (राज०)

**औ**

**औत्सुक्य**—पु० २. साहित्य मे, तैतीस सचारी भावो मे से एक, जो उस समय माना जाता है, जब इष्ट की प्राप्ति या प्रिय के मिलन के लिए मन उत्सुक होता है। ठढे सांस लेना, मुँह लटकाकर कुछ सोचना और लेटने पर सोने की इच्छा होना इसके लक्षण कहे गये हैं।

**औद्भिदवी**—स्त्री० [स० उद्भिद से] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा, जिसमे उद्भिदों या वनस्पतियो के आकार-प्रकार, जीवन, वृद्धि आदि से सबध रखनेवाली बातों का विवेचन होता है। वनस्पति-विज्ञान। (बॉटैनी)

**औपरिष्ट**—वि० [स०] ऊपर का। ऊपरी।

**औपरिष्टक**—पु० [स०] काम-शास्त्र मे मैथुन का एक प्रकार का आसन या रतिबध।

**औपयोगिक**—वि० २ उपयोग के क्षेत्र या रूप मे होनेवाला।

**औपायनिक**—पु० प्राचीन भारत मे वह भेट, जो लोगो को राजा के दर्शन के समय अनिवार्य रूप से देनी पड़ती थी।

**औरसी**—स्त्री०१ पुत्री। बेटी।

**औषध-विज्ञान**—पु० [स०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा, जिसमे औषधियो के गुणो, प्रभावों, व्यवहारो आदि के सिवा इस बात का भी विवेचन होता है कि वे किस प्रकार तैयार की जाती है। (फार्माकॉलोजी)

**औषध-शास्त्र**—पु० [स०] आधुनिक चिकित्सा-शास्त्र की वह शाखा, जिसमे प्रत्येक औषधि के गुण, उपयोग, मात्रा आदि का विचार होता है। (मैटीरिया मेडिका)

**कंक्रीट**—पु०=ककरीट।

**कंटियल**†—वि०=कँटीला।

**कंडम**—वि० [अ० कन्डेम्ड] बिलकुल निकम्मा, रद्दी या व्यर्थ का। जैसे—तुम तो बाजार से कडम माल उठा लाते हो।

**कंडिका**—स्त्री० ३ किसी साहित्यिक ग्रथ, रचना, लेख आदि का स्वतत्र पद। अनुच्छेद। (पैराग्राफ)

**कंदर्प पुष्प**—पु० [स०] ऐसा फूल, जिसमे काम-रति रूपी बल देने की क्षमता हो।

**कंदिल**—वि० [स० कन्द से] जो आकार-प्रकार, रूप-रग आदि मे वानस्पतिक कन्द के समान हो। कन्द की तरह का। (ट्यूबरस)

**कंप**—पु० ४. किसी चीज का काँपना, थर्राना या रह-रहकर हिलना। जैसे—हृद्-कंप।

**कंप-केंद्र**—पु० [स०] भू-गर्भ मे भू-कंप के केन्द्र के ठीक ऊपरवाला पृथ्वी-तल, जिसके चारो ओर भू-कंप के धक्के लगते है। अधिकेन्द्र। उत्केन्द्र। (एपिसेन्टर)

**कंबुज**—पु० [स०] कबोज।

**कँवल सोरा**—पु०=रमन-मोरा (मछली)।

**कँहरुआ**†—पु० [हि० कहार] वे गीत, जो कहार लोग कुलहिन की पालकी ले जाने के समय गाया करते है।

**कच्चा-पानी**—पुं० [हिं०] ऐसा पानी, जो औटाया या पकाया न गया हो।

**कच्चा लोहा**—पु० [हिं०] बिना साफ किया हुआ वह लोहा, जो पहले-पहल भट्टी से गलाने पर तैयार होता है। ढलवाँ लोहा। (पिग-आयरन)

**कजरा**—पु० १ काजल। २. बालक का जन्म होने पर छठी के दिन गाये जानेवाले एक प्रकार के गीत, जिसमे प्रसवा को नजर लगने से बचाने के लिए उसकी ननद के द्वारा अथवा नवजात शिशु को नजर लगने से बचाने के लिए उसकी बूआ के द्वारा काजल लगाने का उल्लेख होता है। ३. काले रग की आँखोंवाला बैल।

**कटाव**—स्त्री० ३ जलाशय के तटका वह थोडा सा भाग, जो पानी के तोड़ से कट गया हो और जिसके अन्दर कुछ दूर तक पानी चला गया हो। (इन्लेट)

**कटुआँ**—वि० [हिं० काटना] जो काटकर बनाया गया हो।

**कटौती**—स्त्री० २ किसी काम या बात मे किसी रूप मे की जानेवाली या होनेवाली कमी। घटाव। (एबेटमेन्ट)

**कठ**—वि० ६. काठ की तरह जड या निर्बुद्धि। जैसे—कठ-मुल्ला।

**कड़खड़ा**—वि० १ (व्यक्ति) जिसके कुछ बाल सफेद हो गये हो और कुछ काले रह गये हो।

**कड़ाह परशाद**—पु० [हि० कडाह+स० प्रसाद] वह हलुआ, जो सिक्खो मे गुरु ग्रन्थ साहब को चढाकर लोगो में प्रसाद के रूप मे बाँटा जाता है।

**कणिका**—स्त्री० [स०] १. किसी चीज का बहुत ही छोटा कण। कनी। २ शरीर-शास्त्र में, रक्त में तैरनेवाले एक विशेष प्रकार के बहुत छोटे कण, जो लाल और सफेद दो रगों के होते है और जिनके कुछ विशिष्ट कार्य होते हैं। (कार्पसल)

**कथकाली**—पु० [स० कथक=कथावाचक ?] दक्षिण भारत, विशेषत: केरल का एक प्रकार का प्रसिद्ध अभिनयात्मक नृत्य, जिसके साथ सगीत भी सम्मिलित रहता है।

**कथनी**—स्त्री० ३ भारतीय सन्त समाज में ऐसी कोरी मौखिक बाते, जो महात्मा लोग दूसरो को उपदेश देने के समय तो कह जाते हो, पर स्वय जिनका आचरण या पालन न करते हो। 'करनी' से भिन्न और उसके विपरीत।

**कथा**—स्त्री० ३ सस्कृत साहित्य मे, गद्य काव्य के दो भेदो मे से एक, जिसकी कथा-वस्तु अशत सत्य होने पर भी अधिकतर काल्पनिक हो।

**कथा-काली**—पु० दे० 'कथकाली' (नृत्य)।

**कथा-काव्य**—पु० [स०] ऐसा काव्य, जो किसी लोक प्रचलित कथा या कहानी के आधार पर बना हो। (ऐसे काव्यो मे प्राय. शृगार रस की प्रधानता होती है।)

**कथा-पुरुष**—पुं० [स०] ऐसा महापुरुष, जिसके चरित्र आदि की बहुत सी बातें आख्यानों या कथाओ के रूप मे लोक मे प्रचलित हो गई हो। आख्यान पुरुष। (लीजेन्डरी पर्सन) जैसे—महात्मा गाँधी भारत में कथा-पुरुष बन गये हैं।

**कथा-सार**—पुं० [सं०] किसी कथा, कथानक अथवा वर्णित विषय का वह सक्षिप्त रूप, जिसमे उसकी सभी मुख्य-मुख्य बातें आ गई हो। (सिनॉप्सिस)

**कथा-सूत्र**—पु० [स०] कथा, कहानी आदि की विषय-वस्तु। (थीम) विशेष दे० 'विषय-वस्तु'।

**कथित पद**—पु० [स०] साहित्य मे एक प्रकार का शब्द-दोष, जो उस समय माना जाता है, जब एक ही अर्थ सूचित करनेवाले अनेक शब्दों का एक साथ अनावश्यक रूप से प्रयोग किया जाता है। एकार्थ-दोष।

**कदाशय**—वि० [स०] जिसका आशय (उद्देश्य या विचार) दूषित या बुरा हो।

पु० वह स्थिति, जिसमे कोई व्यक्ति किसी बुरे आशय या उद्देश्य से कोई काम करता हो। 'सदाशय' का विपर्याय। (मेलाफाइडीज)

**कदाशयता**—स्त्री० [स०] १ कदाशय होने की अवस्था, गुण या भाव। २ विधिक क्षेत्र मे,वह स्थिति जिसमे मनुष्य बुरी नीयत या बेईमानी से अथवा मन मे कोई बुरा आशय या उद्देश्य रखकर कोई काम करता है। 'सदाशयता' का विपर्याय। (मेला-फाइडीज)

**कदाशयी**—वि० [स०] १. कदाशय सबधी। २. (व्यक्ति) जिनके मन मे कोई कटु या बुरा आशय हो। ३ (काम या बात) जो किसी बुरे आशय या उद्देश्य से किया गया हो। "सदाशयी" का विपर्याय। (मेला-फाइडी)

**कनक-गिरि**—पु० २ सगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**कनक भवानी**—स्त्री० [स०] सगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**कनक-भूपावली**—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**कनक-वसंत**—पु० [स०] सगीत मे, कर्णाटकी पद्धति का एक नया राग।

**कनकांबरी**—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**कन-सुरा**—वि० [हि० काना। सुर=स्वर] [स्त्री० कन-सुरी] १. जिसका स्वर बहुत ही कर्ण-कटु हो। जैसे—वह बहुत कन-सुरी थी। २. जिनमे से कर्ण-कटु स्वर निकलता हो। जैसे—कन-सुरा गला, कन-सुरी सारगी।

**कनिष्क**—पु० [सं०] कुषाण वश का एक बहुत बडा सम्राट्, जो बहुत बडा विजयी वीर होने के सिवा कला, धर्म और साहित्य का बहुत बड़ा पोषक भी माना जाता है। इसके शिला-लेख पेशावर से बंगाल तक पाये गये हैं। इसका समय ईसा के लगभग या उसके कुछ ही बाद कहा जाता है।

**कन्यका**—स्त्री० १. कुमारी कन्या। २ प्राचीन आचार्यों के ग्रन्थों मे, अनूढ़ा नायिका का एक पर्याय। (दे० 'अनूढ़ा')

**कन्या**—स्त्री० वैष्णव सप्रदाय मे वे कुमारी गोपियाँ, जो श्रीकृष्ण को ही अपना पति मानकर उनके साथ विहार करती थीं।

**कपड़-कीड़ा**—पु० [हिं० कपडा+कीडा] एक प्रकार का छोटा कीड़ा, जो ऊनी, रेशमी आदि कपड़ों मे उत्पन्न होकर उन्हीं में अंडे देता और रहता है, और कपडो को काट या छेदकर अथवा और कई तरह से खराब कर देता है। (क्लोथ्स मॉथ)

**कपास**—स्त्री० ३. सन्त साहित्य मे, मन की एक सज्ञा जिसे धुनना आवश्यक कहा गया है।

**कपोतक**—पु० [स०] १. छोटा कबूतर। २. फाख्ता नामक पक्षी, जो कपोत वर्ग का ही माना गया है। ३. नृत्य मे, एक प्रकार की मुद्रा, जिसमे दोनों हाथ सटाकर छाती पर रखे जाते हैं।

**कपोत-पाली**—स्त्री० [सं०] प्राचीन भारत का कैचाल नामक अलकार या गहना।

**कबीरा**—पु० [सत कबीर के नाम पर] लोक मे प्रचलित एक प्रकार के निर्गुणी गीत, जो वस्तुत सत कबीरदास के रचे हुए न होने पर भी उनके मत या विचारो की छाया से युक्त होते हैं और जिनमे गीतकार के नाम की जगह 'कबीर' या 'कबीरा' शब्द लगा रहता है।

**कबूलदाना**—सं० ३. अपराध या दोष स्वीकृत करना।

**कबूलो**†—स्त्री० [हि० कबूलना] कोई बात कबूल करने की क्रिया या भाव। यह मान लेना कि ऐसा ही हुआ है, अथवा ऐसा ही किया जायगा। उदा०—कुबरी करि कबुली कैकेयी। कपट छुरी उर पाहन देई।—तुलसी।

क्रि० प्र०—करना।—कराना।

**कबूलना**—स० [फा० कबूल+हि० ना (प्रत्य०)] २ यह मान लेना कि हमने अमुक अपराध या दोष किया है। ३. किसी के आग्रह या प्रार्थना के सबध मे दृढता या निश्चय-पूर्वक यह कहना कि हम उसे मान लेंगे।

**कबूली**—स्त्री० [अ० कबूल, हि० कबूलना] कबूल करने अर्थात् मानने की क्रिया या भाव। स्वीकृति। (उदा० दे० 'कबुली' के अन्तर्गत)

क्रि० प्र०—करना।—कराना।

**कमजात**—वि० [फा० कमजात] बहुत ही निकृष्ट या हीन जाति का।

**कमल**—पु० १७. एक प्रकार का सम-वृत्त वर्णिक छन्द, जिसके प्रत्येक चरण मे तीन सगण, एक नगण और एक गुरु वर्ण होता है। यथा—तरु चन्दन उज्वलता तन धरे।—केशव।

**कमल नारायणी**—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**कमल रंजनी**—स्त्री० [स०] सगीत मे बिलावल ठाठ की एक रागिनी।

**कमलाभरण**—पु० [स०] सगीत मे, कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

**कमला-मनोहरी**—स्त्री० [स०] सगीत में, कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**कमलिनी**—स्त्री० ३. बौद्ध हठ-योग में, अवधूतिका का एक नाम।

**कमान**—स्त्री० [फा०] ९. बसीत नाम का जहाजी यत्र। दे० 'बसीत'। स्त्री० [अ० कमाड] ४ वह प्रधान अधिकारी या निकाय, जिसकी आज्ञा या शासन मे बहुत से कार्य और लोग रहते हों। जैसे—कांग्रेस हाई-कमान।

**कमारी**†—स्त्री० [हिं० कमेरा का स्त्री०] घर के छोटे-मोटे काम करनेवाली दासी। मजदूरनी।

**कमवाली**—स्त्री०=कैवाल (गहना)।

**करवा**—पु० ५. दे० 'कड़वा'।

**करनी**—स्त्री० ६. भारतीय संत समाज में ऐसी अच्छी बातों का किया जानेवाला आचरण या व्यवहार, जो दूसरों को उपदेश के रूप में कही या बतलाई जाती हों।

**करपात्री**—पु० [स० करपात्रिन्] वह जो खाने के समय हाथ मे ही रोटी, दाल, तरकारी आदि लेकर खाता हो। भोजन के लिए पात्रो का उपयोग न करता हो। (साधु-महात्माओं की त्याग-वृत्ति का सूचक पद)।

**करम**—पु० सत साहित्य मे, मन की वाचक सज्ञा।

**कर-भोग**—पु० [स०] सरकारी मालगुजारी या लगान वसूल करके अनुचित रूप से खा जाना या हजम कर जाना।

**करवट काशी**—पु०=काशी करवट।

**करी**—स्त्री० [?] चौपाई या चौपैया छन्द का एक नाम।

†स्त्री० १.=कली। उदा०—कँवल करी तू परमिनि मैं निसि भएहु विहान।—जायसी। २.=कडी।

**करुण विप्रलंभ**—पु० [स०] साहित्य मे, विप्रलभ शृगार का वह भेद, जिसमे प्रेमी या प्रेमिका की मृत्यु के उपरात भी उसके प्रति दु.खपूर्ण प्रेम-भाव बना रहता है, पर साथ ही मन मे यह आशा भी बनी रहती है कि इसी जन्म में और इसी शरीर से फिर उससे भेट होगी।

**करुणाकरी**—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**करेंचा**|—स्त्री०=कौछ (केवाँच)।

**कर्कट**—पु० ३. एक प्रसिद्ध घातक और भीषण रोग, जिसमे शरीर के किसी अग के अनको की कोशिकाएँ विकृत होकर उसी प्रकार चारो ओर फैलने लगती हैं, जिस प्रकार उक्त जन्तु के पैर होते है। अब तक यह प्राय: असाध्य ही माना जाता था, पर अब इसके कई नये उपचार निकले है, जो अनेक अवसरो पर फलप्रद भी होते हैं। (कैन्सर)

**कर्ण-पटह**—पु० [स०] कान के अन्दर की चमड़े की वह झिल्ली, जिस पर वायु का आघात होने से शब्द सुनाई पडते हैं। (इयर-ड्रम)

**कर्णी-रथ**—पु० [स०] प्राचीन भारत मे, स्त्रियो के बैठने का वह छोटा सा रथ, जिसे आदमी खीचकर ले चलते थे।

**कर्णोत्पल**—पु० [स०] कान मे पहनने का करनफूल नामका गहना।

**कर्तागिरी**—स्त्री० [स०+फा०] घर-गृहस्थी के कर्ता अर्थात् हर तरह से मालिक होने और सब काम-काज चलाने की अवस्था या भाव।

**कर्दन**—पु० [स०] वायु के प्रकोप से पेट मे होनेवाली गडगडाहट।

**कर्मण्यक**—वि० [सं०] (तत्त्व या पदार्थ) जो किसी दूसरे तत्त्व, पदार्थ आदि को कर्मण्य बनाता अर्थात् किसी कार्य मे प्रवृत्त करता हो। (ऐक्टिवेटर)

**कर्म-वाद**—पु० ३ भारतीय दर्शन का यह मत-वाद कि मनुष्य को उसके किये हुए कर्मों के अनुसार ही अच्छे और बुरे फल भोगने पडते हैं।

**कर्मांत**—पु० ४ जीविका निर्वाह के लिए किया जानेवाला काम या धन्धा।

**कल-कंठी**—स्त्री० [स०] सगीत मे कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**कल-वसंत**—पु० [स०] सगीत मे कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

**कल-विंकक**—पु० [स०] बहुत ही मधुर स्वर मे गानेवाला एक प्रसिद्ध ईरानी पक्षी, जो बुलबुल हजार दास्ताँ (देखें) के नाम से प्रसिद्ध है।

**कलाभरणी**—स्त्री० [सं०] सगीत मे कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**कला-बूँदी**†—स्त्री०=कलाबाजी।

**कलाली**—स्त्री० [हिं० कलाल] १. कलाल का काम या पेशा। २ कलाल जाति की स्त्री।

पु० १. कलाल। कलवार। २. रहस्य संप्रदाय और सत साहित्य

में—(क) आत्मा। (ख) परमात्मा जो प्रेम रूपी मद्य पिलाकर भक्तों को सुखी करता है। (सूफियों तथा फारसी साहित्य के 'साकी' के स्थान पर प्रयुक्त)

**कलावती**—स्त्री० ४ संगीत मे, खम्माच ठाठ की एक रागिनी।

**कलावाद**—पु० [सं०] आधुनिक कला और साहित्य के क्षेत्र मे यह मत या सिद्धांत कि किसी प्रकार की रचना करते समय मुख्य ध्यान उसके कला-पक्ष पर ही रहना चाहिए। उपयोगितावाद से भिन्न।

**कलावादी**—वि० [स०] कलावाद-संबंधी। कलावाद का।
पु० कलावाद का अनुयायी या समर्थक।

**कला-विलय**—पु० [स०] अध्ययन और अनुशीलन का वह अंश या क्षेत्र, जो मनुष्य को अपने जीवन-निर्वाह तथा उच्च कोटि का ज्ञान प्राप्त करने के योग्य तथा समर्थ बनाता है। (आर्ट्स)

**कला-स्वरूपी**—स्त्री० [सं०] संगीत मे, कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**कलिल**—पु० ३ आज-कल रसायन-शास्त्र मे ऐसे विशिष्ट पदार्थों मे पाये जानेवाले कण, जो पानी मे पूरी तरह घुल जाते हैं। (कोल्लायड)

**कलेश**—पु० १२ किसी प्रकार के बोझ की तल-छट। अवसाद। (ऐडिमेन्ट)

**कल्प-कथा**—स्त्री० [स०] ऐसी कथा या कहानी, जिसकी घटनाएँ, पात्र आदि वास्तविक नही, बल्कि केवल कल्पित हों। (फिक्शन)

**कल्प-बंध**—पु० [सं०] वैदिक काल के वे यज्ञ, जिनमे यज्ञों से संबंध रखनेवाले कर्म-काड का विवेचन होता था।

**कल्पितार्थ**—पु०=परिकल्पना। (हाइपोथेसिस)

**कल्प**—पु० ५. सूफी साहित्य मे, अंतःकरण का वह अंग या वृत्ति, जिसकी सहायता से मनुष्य की बौद्धिक क्रियाएँ होती है। (रूह या आत्मा से भिन्न)

**कल्याण केसरी**—पु० [स०] संगीत मे, कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

**कल्याण-वसंत**—पुं० [स०] संगीत मे, कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

**कल्लोल**—पु० संगीत में, कर्णाटकी पद्धति का एक राग।

**कवक**—पु० ४. एक प्रकार के बहुत छोटे कीटाणु, जिनकी गिनती पहले वनस्पतियों में होती थी, पर जो जडो, तनो पत्तियो आदि से रहित होने के कारण जीव-वर्ग मे गिने जाने लगे है। इनके उपनिवेश प्राय वनस्पतियों पर ही होते है। फसलो पर लगनेवाले कंडुआ, रतुआ आदि रोग और ऊली या भुकडी इसी वर्ग मे आती है। (फगस)

**कवच कोठरी**—स्त्री० [सं०+हिं०] आधुनिक युद्ध-सज्जा मे ककड सीमेन्ट आदि के योग से बनी हुई वह पक्की और बहुत मजबूत तल-चौकी या दमदमा, जिस पर तोप के गोले और बमो आदि का भी सहज मे कोई प्रभाव नही पडता। (पिल-बॉक्स)
**विशेष**—इस प्रकार की कोठरियाँ प्राय सीमा पर थोडी-थोडी दूर पर बनाई जाती हैं, जिनके झरोखों में से आक्रमणकारी शत्रु के सैनिको पर बन्दूकों, मशीनगनों आदि से गोलियाँ चलाई जाती है। इनका अधिकाश पृथ्वी तल से नीचे होता है केवल झरोखो वाला थोड़ा सा अश पृथ्वी तल से कुछ ऊपर रहता है।

**कविवरा**—वि० [स०] जिसने कवियो को धारण किया हो; अर्थात् जिसमे बहुत-से कवि रहे या हुए हों। उदा०—उस कविवरा भू-भाग मे अनेक सरस कवि हुए।—विश्वनाथप्रसाद मिश्र।

**कव्वाल**—पु०=कौआल।

**कव्वाली**—स्त्री०=कौआली।

**कशेरुक**—पु० २ रीढवाले प्राणियो की पीठ पर की वे लंबी हड्डियाँ जो रीढ के दोनो ओर निकली रहती है।

**कशेरुक-डंडी**—पु० [स०] आधुनिक जीव-विज्ञान मे ऐसे प्राणियों का वर्ग, जिनकी पीठ मे रीढ की हड्डी होती है। (वर्टिब्रेट) जैसे—चौपाये, मछलियाँ, मनुष्य।
**विशेष**—ऐसे जीवो मे खोपड़ी और मस्तिष्क होता है; और इनके रक्त मे लाल रग के कण होते है।

**कशेरुकी**—पु०=कशेरुक-डंडी।

**कष्ट-कल्पना**—स्त्री० २. भारतीय साहित्य मे, एक प्रकार का रस-दोष जो वहाँ माना जाता है, जहाँ सहज मे यह पता ही न चलता हो कि इसमे अनुभाव क्या है और विभाव क्या है।

**कष्टत्व**—पु० [स०] साहित्य मे, कष्टार्थ नामक दोष।

**कष्टार्थ**—पु० ३ साहित्य मे, उक्ति का वह दोष, जिसके कारण शब्दो में स्थित अर्थ, जल्दी प्रकट या स्पष्ट नही होने पाता। ऐसा अर्थ जिसे जानने या समझने मे विशेष कष्ट या परिश्रम करना पडता है। कष्टत्व।

**कसु**[1]—सर्व०=किसी।

**कहरुआ**—पु० दे० 'कहैरुआ'।

**कहा**—क्रि० वि०=क्या। उदा०—मो को कहा ढूँढे बदे मैं तेरे पास रे।—कबीर।

**कहानीकार**—पु० [हिं०+स०] वह जो प्राय कहानियाँ रचता या लिखता हो। कहानी-लेखक।

**कहीं**—अव्य० ६ किसी तरह। किसी प्रकार। उदा०—छूट जाएँ गम के हाथो से जो निकले दम कही।—कोई शायर।

**कांकायन**—पु० [स०] कक गोत्र या कक जाति का व्यक्ति।

**कांचन-संधि**—स्त्री० [स०] दे० 'संगत-संधि'।

**कांचि-मल**—पु० [हिं० कांचि+स० मल] जगयज्ञ जीवों के प्रसव के उपरात निकलनेवाले मास-खड। खेडी। (स्लॅग)

**कांडाग्नि**—पु० [स०] कच्छ-भुज प्रदेश के उत्तर-पूर्व वाले रन का पुराना नाम। (आज-कल का 'कांडला' नामक स्थान)

**कांति-सार**—पु० [स०]=क्रांति-सार (लोहा)।

**कांति-चक्र**—पु० [स०]=परिमडल। (देखें)

**कांति-सार**—पु० [स० कांत-सार] एक प्रकार का साफ किया हुआ ढलवाँ लोहा, जिसकी कडाहियाँ आदि बनती हैं।

**कांस्य**—पु० २ मद्य पीने का प्याला। चषक।

**कांकतीय**—पु० [स०] दक्षिण भारत का एक प्राचीन राजवश। (ई० बारहवी-तेरहवी शती)

**कांकोच्छ्वास**—पु० [स०] कष्ट, पीडा आदि के कारण उखड़ा या टूटा हुआ साँस।

**काक्वाक्षिप्त**—पु० [स० काकु+आक्षिप्त] साहित्य मे, गुणीभूत व्यंग्य का एक प्रकार या भेद, जिसमे काकु अथवा कठ-ध्वनि के द्वारा व्यग्यार्थ आक्षिप्त होता अर्थात् खींचकर लाया जाता है। यथा—सुनु दसमुख खद्योत प्रकाशा। कबहुँ कि नलिनी करई बिकासा।—तुलसी। इसमे काकु से तो यही अर्थ निकलता है कि खद्योत के प्रकाश

मे नलिनी विकसित नही होती ; परन्तु इसमे का काक्षाक्षिप्त व्यग्य यह सूचित करता है कि सीता नलिनी है और वह राम रूपी सूर्य की ओर देखने पर ही विकसित होती है।

**काम**—पु० ३. रहस्य संप्रदायों और सन्त समाज मे अज्ञान के अन्धकार में पडा हुआ चित्त या मन। उदा०—कागिलगर फाँदिया, बटेरै काज जीता।—कबीर।

**काचू काटिया**—पु० [प० काचू+काचू-हिं० काटना] मध्य युग मे, पजाबी, व्यक्तियों या विरक्तो का एक सप्रदाय।

**विशेष**—इस सप्रदाय के त्यागी किसी के शिष्य नही होते थे, बल्कि चाकू से अपनी चुटिया आप ही काट कर मानो अपनेआप को ही अपना गुरु बना लेते थे। (कहा जाता है कि ये लोग प्राय. आपस मे भी लडते-भिडते रहते थे और मद्य, मास आदि का भी सेवन करते थे।

**काजला**—पु०=कजरा (गीत)।

**काठक**—पु० [स०] १. कठ-मुनि की प्रवर्तित शाखा। २ उक्त शाखा का अनुयायी व्यक्ति।

**कातंत्रिक**—पु० [स०] वह जो कातत्र व्याकरण का बहुत बडा पडित हो।

**कातिल**—वि० ५ बहुत अधिक चालाक, गहरा या भरपूर वार करने या हाथ मारनेवाला है। जैसे—कातिल रोजगारी।

**कादिरी**—पु० [फा०] एक सूफी सम्प्रदाय जिसके प्रवर्तक अब्दुल कादिर अलजीलानी (जन्म सन् १०७८ ई०) थे।

**कानटीन**—वि० [हिं० काना=एक आँखवाला] एकाक्ष। काना। (उपेक्षा और परिहास)

**काना**†—पु० ऐब। खराबी। दोष। उदा०—सूरदास की एक आँख है ताह में कुछ कानो।—सूर।

**कापालिक**—पु० ४ शैव सम्प्रदाय की पाशुपत शाखा के अनुयायी एक प्रकार के विरक्त साधु। ५ उक्त के अनुकरण पर बौद्ध तान्त्रिकों और हठ-योग मे ऐसा साधक, जिसने डोबी की साधना पूरी कर ली हो।

**काबूली**—पु० [फा० काबुल] बहुत बडा दुष्ट और धूर्त व्यक्ति।

**कामकार**—पु०[स०] प्राणियों की प्रबल कामवासना की सूचक शारीरिक क्रिया या चेष्टा।

**काम-चलाऊ**—वि० ३ (उपाय या व्यवस्था) जो अस्थायी रूप मे या कुछ समय के लिए काम चलाने के लिए उपयोगी सिद्ध हो सके और फलत. पूर्णरूप से उपयोगी या सुदृढ न हो। (मेकशिफ्ट) जैसे—झगडा निपटाने का मार्ग तो निकाल लिया गया, पर वह कामचलाऊ ही था।

**काम-पिशाच**—पुं० [स०] बहुत बडा कामुक।

**काम-कला**—स्त्री० [सं०] पुष्टि-मार्गीय वैष्णवों में भक्ति का वह प्रकार जिसमें एक-मात्र कृष्ण के प्रति आसक्ति रहती और उन्हीं की प्राप्ति की कामना होती है। गोपियों की कृष्ण के प्रति भक्ति इसी वर्ग में आती है।

**काम-लिंग**—पु० [सं०] वे चिह्न या लक्षण, जिनसे पता चलता है कि मनुष्य कामुक है या उसमें इस समय काम-वासना प्रबल हो रही है।

**कामाक्षा**—स्त्री० [स०] १. कामरूप की वह पहाड़ी, जिस पर कामाक्षी देवी का मंदिर है। २. दे० 'कामाक्षी'।

**कामित**—पु० [स०] सभोग की मनोवृत्ति। काम-वासना।

**काय-चिकित्सक**—पु० [स०] वह जो मैथज-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता हो और काय-चिकित्सा करता हो। (फ़िज़ीशियन)

**काय-बंधन**—पु० [स०] ऐसा कपडा, जो शरीर मे बाँध या लपेटकर पहना जाता हो। जैसे—धोती, पटका, साफा आदि।

**कायस्थ**—पु० ५ प्राचीन भारत मे, किसी कार्यालय या विभाग के लिखिको आदि का प्रधान अधिकारी।

**काया-पलट**—पु० ३ योग-शास्त्र की एक क्रिया जिसमे प्राणायाम आदि के द्वारा शरीर का काया-कल्प किया जाता है।

**कायिकी**—स्त्री० [स० कायिक से] आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमे इस बात का अध्ययन और विवेचन होता है कि जीव-धारियो की काया या शरीर के किन-किन अगो मे कैसी-कैसी आतरिक क्रियाएँ होती है और उनके क्या-क्या परिणाम होते हैं। (फीज़ियोलॉजी)

**कारणातिशयोक्ति**—स्त्री० [स०] साहित्य मे, अतिशयोक्ति अलकार का एक प्रकार या भेद, जिसमे कारण या हेतु का अतिशयोक्तिपूर्ण उल्लेख होता है। कुछ आचार्य अक्रमातिशयोक्ति और अत्यतातिशयोक्ति को भी इसी के अतर्गत मानते है।

**कारवाँ-सराय**—स्त्री० [फा० कारवाँ+तातारी सरा] मध्य युग मे, अफ्रीकी और एशियाई देशो मे बडे और विस्तृत आँगनवाले वे भवन, जिनमे यात्रा के समय कारवाँ अर्थात् यात्रियो और व्यापारियो के दल ठहरा करते थे।

**कार्बन**—पु० [स०] १ रसायन-शास्त्र मे एक प्रसिद्ध अधातवीय तत्त्व, जो भौतिक सृष्टि के मूल-तत्त्वो मे से एक है। यह स्वतत्र रूप मे भी मिलता है और मिश्र रूप मे भी। कोयले और हीरे मे यह स्वतत्र रूप मे होता है, पर खडिया, सगमर्मर आदि मे मिश्र रूप मे पाया जाता है। २ एक तरह का महीन कागज जिस पर स्याही लगी होती है तथा जो प्रतिलिपि तैयार करने के काम मे आता है।

**कार्यक**—पु० [स०] वह जो दीवानी मुकदमा लड़ता हो। वादी और प्रतिवादी दोनो।

**कार्य-काल**—पु० [स०] वह नियत काल, जिसमे कोई अधिकारी या प्रतिनिधि अपने पद पर रहकर कार्य करता हो। (टर्म)

**कार्य-वाहक**—वि० [स०] १ कार्य का भार वहन करने या काम चलानेवाला। २ (अधिकारी) जो किसी स्थायी अधिकारी की अनुपस्थिति मे उसके पद पर रह कर उसके सब काम चलाता हो। (ऐक्टिंग)

**कार्यांग**—पु० दे० 'कार्य-पालिका'।

**कार्यान्विय**—पु० [स०]=कार्यान्विति।

**कार्यान्विति**—स्त्री० [स०] १. कार्यान्वित होने की अवस्था, गुण या भाव। २. कर्तव्य, निश्चय, प्रतिज्ञा, वचन आदि का कार्य रूप मे किया जानेवाला पालन। अभिपूर्ति। (इम्प्लिमेन्टेशन)

**काल-गंडिका**—स्त्री०[स०] कश्मीर की एक प्राचीन नदी। (राज० त०)

**काल-क्रम-विज्ञान**—पु० [स०] वह विज्ञान या विद्या, जिसके द्वारा ऐतिहासिक घटनाओं आदि का किसी विशिष्ट सन् तथा संवत् के आधार पर काल-क्रम निश्चित किया जाता है। (क्रोनोलॉजी)

**काल-भोजन**—पु० [स०] ठीक और नियत या विहित समय पर किया जानेवाला भोजन।

**काल-मापी**—वि० [स०] काल का माप करने या समय की नाप बतलानेवाला।
पु० एक प्रकार की बहुत बढ़िया घड़ी जो बिलकुल ठीक समय बतलाती है, और जिसके द्वारा सभी स्थानों पर स्थानीय समय, देशांतर आदि कुछ और बातें भी जानी जाती है। (क्रोनोमीटर)

**काल-लिख**—पु० [स०] एक प्रकार का यंत्र, जिसकी सहायता से बहुत थोड़े-थोड़े अन्तर पर घटित होनेवाली घटनाओं का अंतर एक मानचित्र पर अंकित होता चलता है। (क्रोनोग्राफ)

**काला धन**—पु० दे० 'दूषित धन'।

**काला बाजार**—पु० [हि०]=चोर बाजार।

**काला सोना**—पु० [हि०] पत्थर के कोयले का वाचक पद, जो उसके बहुमूल्य उपयोगिताओं का सूचक है। (ब्लैक गोल्ड)

**कालिदास**—पु० [स०] संस्कृत के एक सुप्रसिद्ध और सर्वोत्कृष्ट कवि, जो प्रकृति के वर्णन के सिवा उपमाएँ देने में भी बेजोड़ थे। इनके काल और देश का अभी तक ऐतिहासिक दृष्टि से प्रामाणिक निर्णय नहीं हुआ है। पर ये उज्जयिनी के राजा विक्रमादित्य के राज-कवि माने जाते हैं और कश्मीर तथा मध्यप्रदेश से विशिष्ट रूप से संबद्ध जान पड़ते हैं।

**काली बेगम**—स्त्री० [हि०] १ अफीम। (परिहास और व्यंग्य) २. ताश का एक प्रकार का खेल।

**काली मिट्टी**—स्त्री० २. खेती की काले या गहरे भूरे रंग की भुरभुरी और महीन मिट्टी, जो विशेष उपजाऊ होती है। ऐसी मिट्टी विशेषत. यूरोप और अमेरिका के कुछ भागों में अधिकता से होती है। (ब्लैक अर्थ)

**कालोचित**—वि० [स०]=समयोचित।

**कालोचितता**—स्त्री० [स०]=समयोचितता।

**काव्य-पाक**—पु० [स०] साहित्य में सुकवि की रचना का वह परिपाक या परिपक्वन रूप, जो विशेष अध्ययन और अभ्यास से प्राप्त होता है।

**काव्य-पुरुष**—पु० [स०] १ कवि की वह अद्भुत और अलौकिक कल्पना, जो उसके काव्य में आत्मा या पुरुष के रूप में रहती है।

**काव्य-हरण**—पु० [स०] साहित्य में, किसी कवि का प्रयुक्त विशिष्ट पद, शब्द आदि ज्यों के त्यों लेकर अपनी कविता में रख लेना, जो एक प्रकार की साहित्यिक चोरी है।

**काव्य-हेतु**—पु० [स०] साहित्य में, ऐसी बातें या साधन, जिनसे मनुष्य में काव्य-रचना की योग्यता या शक्ति उत्पन्न होती है। यथा—प्रतिभा, व्युत्पत्ति या बहुज्ञता, अभ्यास, समाधि या मन की एकाग्रता आदि।

**काशिकेय**—वि० [स०] काशी संबंधी। काशी का।
पु० काशी का निवासी।

**काष्ठ-कलह**—पु० [स०] प्राचीन भारत में, सैनिकों की वह नकली लड़ाई, जो काठ के बने हुए हथियारों से केवल अभ्यास के लिए होती थी।

**किंगरिहा**†—पु० [हि० किंगरी+हा (प्रत्य०)] ऐसा भिक्षुक जो किंगरी बजाकर भीख माँगता फिरता हो।

**किञ्चन**—पु० [स०] खमीर उठाने के उद्देश्य से किसी चीज को सड़ाने की क्रिया। (फर्मेन्टेशन)

**किंनरी**†—स्त्री० १=किंनरी। २.=किंगरी (बाजा)।
५ आर्थिक विषयों में सावधानतापूर्वक की जानेवाली ऐसी व्यवस्था, जिसमें व्यर्थ का नाश या व्यय न होने पावे और ठीक या पूरा लाभ होता हो।

**किनाराकशा**—वि० [फा०] [भाव० किनाराकशी] किसी काम या बात से अपना संबंध तोड़कर किनारे अर्थात् अलग या दूर हो जानेवाला।

**किनाराकशी**—स्त्री० [फा०] किनाराकश होने की अवस्था, गुण या भाव।

**किलो**—पु० [अ०] १ =किलोग्राम। २.=किलोमीटर।

**किलोग्राम**—पु० [अ०] दाशमिक प्रणाली की एक तौल, जो १००० ग्राम के बराबर होती है और जो अब भारत में भी प्रचलित हो गई है।

**कीट-नाशी**—वि० [स० कीट-नाशिन्] [स्त्री० कीट-नाशिनी] (औषध या द्रव्य) जिसके प्रयोग से कीड़े दूर भागते हों। (इन्सेक्ट रिपेलेन्ट)

**कीर्तिमान**—पु० [स०] असाधारण अध्यवसाय, परिश्रम या प्रयास से किया हुआ कोई ऐसा बड़ा या श्रेष्ठ कार्य, जो किसी बहुत ऊँचे मान या माप तक पहुँचा हो और इसीलिए जो सार्वजनिक रूप से अभिलषित हुआ हो और कर्त्ता के लिए विशेष रूप से कीर्त्ति या यश देनेवाला माना जाता हो। (रेकार्ड) जैसे—मई, १९६५ में भारतीय पर्वतारोही दल ने एवरेस्ट पर्वत पर चढ़ाई का नया कीर्तिमान स्थापित किया था।

**कीर्तिस्व**—पु० [स०] किसी व्यवसायिक संस्था के सुनाम और सुयश का वह लाभ, जो उसके उत्तराधिकारी को प्राप्त होता है। (गुडविल)

**कुंतल-भौलि**—पु० [स०] सिर के बालों का जूड़ा

**कुँवार-छल**—पु० [स० कुमार>कुँवारा या कुँवारी+छल (प्रत्य०)] कुमारी या बालिका की वह स्थिति, जिसमें उसका कौमार्य भंग न हुआ हो। अक्षत-योनि होने की स्थिति।
**मुहा०—(कुँवारी या बालिका का) कुँवार छल उतारना**=अक्षत-योनि या कुमारी के साथ पहले-पहल संभोग या समागम करना। कुमारी का कौमार्य भंग करना।

**कुत्तरा**†—पु०[स्त्री० कुत्तरी]=कुत्ता। उदा०—जो घन बरसैं उत्तरा। भात न छठैं कुत्तरा। (कहा०)

**कुफेर**—पु० [स० कु+हि० फेर] १. अशुभ या हानिकारक अवसर या स्थिति। २ बुरी दशा या बुरे दिन। 'सुफेर' का विपर्याय।

**कुमेरु ज्योति**—स्त्री० [स०] कुमेरु अर्थात् दक्षिणी ध्रुव के आस-पास के क्षेत्रों में कभी-कभी रात के समय दिखाई पड़नेवाली एक विशेष प्रकार की ज्योति या विद्युत् का प्रकाश। 'सुमेरु-ज्योति' का विपर्याय। (ऑरोरा ऑस्ट्रेलिस)

**कुमुद्ध**—वि० [स०] [स्त्री० कुमुद्धा] जो बिना कुछ किये-धरे और व्यर्थ ही बुड्ढा हो गया हो।

**कुशल-मंगल**—पु० [स०]=कुशल-क्षेम।

**कुसूल**—पु० अनाज रखने का कोठला।
पु०=कुशूल।

**कूट-चित्र**—पुं० [सं०] १. आज-कल आधुनिक चित्र-कला मे ऐसा चित्र, जिसमे ऊपर से तो एक ही घटना या पदार्थ दिखाई देता हो, पर सूक्ष्म दृष्टि से देखने पर उसमे कुछ और घटनाएँ या पदार्थ भी दिखाई देते हों। जैसे—चित्र मे साधारणतः एक वृक्ष और उसकी शाखाएँ ही दिखाई देती हों; परन्तु उन शाखाओ का अकन ऐसे कौशल से हुआ हो कि कही उसमें आदमी, बिल्ली, भालू या शेर की आकृति भी बनी हो। २ दे० 'श्लेष-चित्र'।

**कृतित्व**—पुं० [सं०] किसी कृति अथवा रचना का गुण, धर्म या भाव।

**कृते**—अव्य० [सं०] की ओर से। के लिए। के वास्ते। (फॉर)

विशेष—इसका प्रयोग पत्रो आदि के अत मे किसी की ओर से किये जानेवाले हस्ताक्षर के पहले होता है। जैसे—रामनाथ शर्मा, कृते प्रधान सपादक। अर्थात् प्रधान सपादक के प्रतिनिधि रूप मे हस्ताक्षर।

**कृष्ण सागर**—पुं० [सं०] दक्षिण यूरोप का एक समुद्र, जो सोवियत रूस, एशिया माइनर और बालकन प्रायद्वीप से घिरा हुआ है। (ब्लैक सी)

**केंद्रक**—पुं० [सं०] कोई ऐसा तत्त्व या पदार्थ, जो केंद्र बनकर चारो ओर अपने अगो का विकास करता अथवा अपने कार्य-क्षेत्र आदि का विस्तार करता है। नाभिक। (न्यूक्लिअस)

**केकय-अपभ्रंश**—स्त्री० [सं०] केकय अर्थात् पश्चिमी कश्मीर और पश्चिमी पजाब में ई० छठी से दसवी शताब्दियो तक प्रचलित अपभ्रंश भाषा का वह रूप, जिससे आधुनिक पश्चिमी पंजाबी का विकास हुआ है। इस अपभ्रंश का साहित्य मध्ययुग में नष्ट हो जाने के कारण अब अप्राप्य है।

**केवड़ा-जल**—पुं० [हिं०+सं०] केवड़े के फूलो का भभके से उतारा हुआ सुगधित अर्क।

**केवल-ज्ञान**—पुं० [सं०] परब्रह्म या परमात्मा के वास्तविक स्वरूप का ज्ञान, जो बहुत बडे-बडे महात्माओ, योगियों आदि को ही होता है।

**केवाल**—पुं० [सं०] एक प्रकार का अलकार या गहना। कपोतपाली।

**केश-वस्त्य**—पुं० [सं०] ऐसी चीजें या दवाएँ, जो सिर के बालों को झड़ने से रोकती या उनकी जड मजबूत करती हैं। (हेयर टॉनिक)

**केश-संभारज**—पुं० [सं०] स्त्रियो मे, सिर के बालों को सुदर रूप से घुमा-फिराकर उनके गुच्छ या लटें बनाने अथवा जूड़ा आदि बाँधने की कला या क्रिया। (हेयर-ड्रेसिंग)

**कैफियत**—स्त्री० ३ किसी कथन या बात के स्पष्टीकरण के लिए कही जानेवाली कोई दूसरी छोटी बात। (रिमार्क)

**कैरलिक**—वि० [सं०] किरणों से सबध रखनेवाला। किरणों का।

**कैरलिकी**—वि० दे० 'किरिकरण-विज्ञान'।

**कैशोरक**—पुं० [सं०] नवयौवन। नई जवानी।

**कैसी**—अव्य० [हिं० कैसा का स्त्री०] क्या। जैसे—राम राम अब मैं कैसी करूँ अर्थात् क्या करूँ। (ब्रज०)

**कोमल**—स्त्री० [?] चोरी करने के लिए दीवार में किया जानेवाला छेद। सेंध। उदा०—इस साए मे कोमल हुई कल रात को इग्या।—इग्या।

**कोकोया**†—पुं० दे० 'महुलाब' (पक्षी)।

**कोडा गंबल**—पुं० दे० 'रगन' (वृक्ष)।



**कोठे-वाली**—स्त्री० [हिं० कोठा+वाली (प्रत्य०)] रडी या वेश्या जो प्रायः कोठे पर रहती या बैठती है।

**कोण-शिला**—स्त्री० [सं०] १ मकान आदि बनाने के समय नीव का वह पत्थर, जो भारतीय आर्यों में अग्नि-कोण मे तथा अन्यान्य जातियों और देशों मे ऐसे ही किसी दूसरे विशिष्ट कोण मे रखा जाता है। (कार्नर स्टोन) २ आधार-शिला। नीव का पत्थर।

**कोणिक दिशा**—स्त्री० [सं०] दो दिशाओ के बीच की दिशा। कोण।

**कोप**—पुं० ३ एक प्रकार का घातक रोग जिसमे घाव लगने या रक्त का प्रवाह रुकने के कारण शरीर का कोई अग गलने या सडने लगता है। (गैंग्रीन)

**कोशिका**—स्त्री० ३ बहुत ही सूक्ष्म कणो या छोटे-छोटे कोषो के रूप मे वह मूल तत्त्व, जिससे जीव-जतुओ के शरीर और खनिज पदार्थ आदि बने होते हैं। ४. वह आधान या पात्र, जिसमे बिजली उत्पन्न करनेवाले रासायनिक तत्त्व भरे रहते है। ५ छोटी और अँधेरी कोठरी। काल कोठरी। (सेल, अन्तिम तीनों अर्थों मे) जैसे—कारागार मे विकट अपराधियो को रखने की कोशिका।

**कोषाणु**—पुं० [सं०] दे० 'कोशिका' ३।

**कौंध प्रकाश**—पुं० [हिं० -सं०] ऐसा तीव्र या प्रबल प्रकाश, जो आँखों मे चकाचौंध उत्पन्न करता हो। (फ्लैशलाइट)

**कौआ परी**—स्त्री० [सं०] ऐसी काली-कलूटी युवती जो प्राय. चटक-मटक से रहती है, बहुत बनाव-सिंगार करके अपने आपको रूपवती समझती है। (बाजारू)

**क्रमिकता**—स्त्री० [सं०] क्रमिक होने की अवस्था, गुण या भाव।

**क्रमिकतावाद**—पुं० [सं०] यह सार्वजनिक मत या सिद्धांत कि सभी चीजो और बातो का उस प्रकार क्रमिक रूप से और धीरे-धीरे विकास होता है कि साधारणतः ऊपर से देखने पर इस विकास या वृद्धि का सहसा पता नही चलने पाता। अनुक्रमवाद। (ग्रैजुएलिज्म)

**क्रमित**—भू० कृ० [सं०] १ जो क्रम मे रखा या लगाया गया हो। क्रम से युक्त किया हुआ। २. जिसके साथ उतार-चढाव आदि का क्रम निश्चित हो। (ग्रैजुएटेड) जैसे—वेतन का क्रमित मान।

**क्रिया-कलाप**—पुं० ३ किसी कार्य या व्यवहार से सबध रखनेवाली सभी विशिष्ट क्रियाएँ। प्रविधि। (टेक्नीक)

**क्रिया-विज्ञान**—पुं० [सं०] आधुनिक जीव-विज्ञान की वह शाखा, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि जीवो के अग और इन्द्रियाँ किस प्रकार अपनी क्रियाएँ या व्यापार करती हैं। (फीजियोलोजी)

**क्रिया-विधेय**—पुं० [सं०] व्याकरण मे, वह विधेय जो कर्ता से निर्दिष्ट होनेवाली क्रिया की स्थिति बतलाता है।

**क्षीर**—पुं० [अ०] १. दूध के ऊपर जमा होनेवाली मलाई। २ दूध और मलाई के योग से बनाये जानेवाले कई प्रकार के खाद्य और पेय पदार्थ। जैसे—बरफ का क्षीर, फलों का क्षीर। ३. अगराग के रूप मे काम आनेवाला कोई ऐसा पदार्थ जो देखने मे मलाई की तरह का हो; या जिसमे मलाई की तरह की कोई चीज जमीन के रूप में काम मे लाई गई हो।

**क्वारीरी**†—स्त्री० [सं० कुमारी] १. ऐसी कन्या या स्त्री, जिसका अभी तक विवाह न हुआ हो। २. रहस्य संप्रदाय और संतों की परिभाषा

मे माया, जो सबको अपने रूप-जाल में फँसाकर अपनी ओर अनुरक्त करती है।

क्षति-पूर्त्य—पु० [सं०] वह धन जो किसी की कोई क्षति या हानि होने पर उसके बदले में उसे दिया जाय। प्रति-कर। क्षति-पूर्ति। हरजाना। (डैमेजेस)

क्षारता—स्त्री० [स०] क्षार अथवा क्षारीय की अवस्था, गुण या भाव। क्षारीयता। क्षारापन। (ऐल्कालिनिटी)

क्षीणेंद्रिय—वि० [स०] जिसने विषय-भोग मे अपनी सारी पुसत्व-शक्ति गवाँ दी हो।

क्षुद्रांत्र—पु० २ पेट के अन्दर की आँतो का वह ऊपरी भाग जो नीचे-वाले भाग की अपेक्षा छोटा और पतला होता है। (स्मॉल इन्टेस्टाइन)

क्षुधा-अभाव—पु० [स०]=क्षुधा-नाश।

क्षेत्रक—पु० [स०] किसी बड़े क्षेत्र या भू-खड का वह छोटा टुकड़ा जो किसी विशिष्ट प्रशासनिक अथवा व्यवस्थात्मक कार्य के लिए अलग किया गया हो। (सेक्टर)

क्षेत्र-संन्यास—पु० [स०] एक प्रकार का सन्यास, जिसमे किसी बहुत ही परिमित क्षेत्र मे रह कर यह निश्चय कर दिया जाता है कि हम इस क्षेत्र के बाहर नहीं जायँगे।

क्षेत्राधिकार—पु० [स० क्षेत्र+अधिकार] विधिक दृष्टि से किसी अधिकारी को अपने कार्य-क्षेत्र मे प्राप्त होनेवाला वह विशिष्ट अधि-कार जिसके अनुसार वह सब कार्य करता या कर सकता है। (जुरि डिक्शन)

क्षेत्रिक—वि० [स० क्षेत्र+इक] १ किसी विशिष्ट क्षेत्र अर्थात् भू-भाग से सबध रखने या उसके अतर्गत होनेवाला। (टेरिटोरियल) २ दे० 'क्षेत्रिय'।

क्षेत्रीय—वि०=क्षेत्रिय।

क्षेत्रीय समुद्र—पु० [स०]=प्रादेशिक समुद्र।

क्षेप्यास्त्र—पु० [स० क्षेप्य+अस्त्र] कोई ऐसा अस्त्र, जो दूर से फेंककर चलाया अथवा किसी प्रकार का वेग उत्पन्न करके दूर तक पहुँचाया जाता हो। (मिस्सिल) जैसे—कमान का तीर, तोप का गोला, बन्दूक की गोली।

क्षैतिज—वि०[स०] १. क्षितिज-सबधी। क्षितिज का। २ ऐसा सपाट या समतल, जिसके दोनो सिरे सीधे दोनों ओर के क्षितिजो तक गये हो। (होराइज़ेन्टल)

खंडनात्मक—वि०[स०] (कथन या बात) जिसमे किसी तथ्य आदि का खंडन किया गया हो अथवा जो किसी प्रकार के खडन से युक्त हो। खडनक। (कन्ट्राडिक्टरी)

खंडाकार—पु० [सं० खड+आकार]=लुप्ताकार।

खंडिया—पु०[हि० खडी=राजकर+इया( प्रत्य०)] मध्ययुग में वह छोटा राजा, जो किसी बड़े राजा या सम्राट् को खडी अर्थात् राज-कर दिया करता था।

खगवत—पु०[स०] पक्षियों का सबेरे और संध्या के समय का कलरव।

खगोल-विद्या—स्त्री०[स०]=खगोल-विज्ञान।

खटोली—स्त्री०[हि० खटोला] १. छोटे बच्चों के लिए छोटी खाट। २. डोली नाम की सवारी, जिसे कहार ढोते हैं। (बिहार)

खत्ता—पु० ४. एक ही तरह की बहुत-सी चीजों का ढेर। कूत। (ढम्प)

खपरा†—पु०[स० खर्पर] चाँदी, सोना आदि गलाने की परिया। खर्पर। (क्यूपल)

खपरिया—पु०[स० खर्पर] सोना, चाँदी आदि गलाने की परिया। दे० 'खर्पर'।

खबरदार—पु०[फा०] राजाओ, नवाबों आदि के दरबारी मे वह नौकर जिसका काम आनेवाले लोगो के सबध मे पहले से आकर सूचना देना होता था। जैसे—इतने मे खबरदार ने आकर खबर दी कि बड़े नवाब साहब आ रहे हैं।

खरीदी†—स्त्री०=खरीद। जैसे—फसल के दिनो मे होनेवाली गेहूँ या जौ की खरीदी।

खरोंच—स्त्री० ३. किसी बडी चीज की रगड से शरीर मे होनेवाला क्षत। (एबरेजन)

खर्रा—वि०[हि० खरखर] [स्त्री० खर्री] (खाट) जिस पर बिछौना न बिछा हो और इसीलिए जिसकी बुनावट बदन मे गडती हो।

खवास—पु० ४ किसी वस्तु मे होनेवाला कोई विशेष गुण। खासियत। उदा०—अक्सीर का खवास है, उनके बिछौने मे।—कोई शायर।

खाई—स्त्री० ३ पृथ्वी तल मे वह कृत्रिम या प्राकृतिक गड्ढा, जो कुछ दूर तक चला गया हो और जिसमे से होकर नदी, वर्षा आदि का जल बहता हो।

खामना—स० ३ पत्र आदि कही भेजने के लिए लिफाफे मे रखकर उसका मुँह बन्द करना।

खारापन—पु०[हि०] खारे होने की अवस्था, गुण या भाव। (ऐल्कानि-निटी)

खिलंदरा†—वि०[हि० खेल] [स्त्री० खिलडरी] खेल या खिलवाड की तरह का। जैसे—उसने पीछे से आकर खिलडरे ढग से उसकी आँखें बन्द कर ली।

खिलौना—पु० ४. पुत्र के जन्म के समय गाये जानेवाले उन गीतों की सज्ञा जिनमे शिशु के रोदन,माता-पिता और परिवार के अन्य लोगो के आनन्द-मगल और इस आनन्दमगल के उपलक्ष्य में किये जानेवाले कार्यों का वर्णन होता है। 'सोहर' से भिन्न। †५ सोहर।

खुश का नूर—पु० [हि०] मुसलमानो मे दाढी के लिए आदर और सम्मान का सूचक पद। उदा०—और लो मैं क्या कहूँ, बन आये हो लगूर से। दाढी मुँडवा लो, मैं बाज आई खुश के नूर से।—जान साहब।

खुला—वि० ९ (काम) जो सबके सामने और जान-बूझकर प्रकट रूप से किया गया हो और जिसे छिपाने का कोई प्रयत्न न किया गया हो। खुले आम किया हुआ। प्रकट। (ओवर्ट)

खुला समुद्र—पु०[स०]=महा समुद्र।

खुश-दामन—स्त्री०[फा०] पति या पत्नी की माता अर्थात् सास का वाचक आदरसूचक पद। (मुसल०)

खून-खच्चर—पु०=खून-खराबी।

खेरची†—स्त्री०[?] रेजगी (या रेजगारी=छोटे सिक्के)।

खेरीज†—स्त्री०[?] रेजगी (या रेजगारी=छोटे सिक्के)।

खेल†—पु०=सूचन (बूझ)।

**खेलना**—स० ५. कोई ऐसा आचरण करना जिसमे कौशल, धूर्तता, फुरती, साहस आदि की आवश्यकता हो। जैसे—किसी के साथ चालाकी खेलना।

**खोई**—स्त्री०[हिं० खोना] १. खोने अर्थात् गँवाने की क्रिया या भाव। २. रोजगार, सट्टे आदि मे होनेवाली आर्थिक हानि। बाटा। 'कमाई' का विपर्याय। जैसे—रोजगार में खोई-कमाई लगी रहती है।

**खोजवती**—स्त्री०[हिं०]=विप्रयत्न प्रकाश।

**गंध-पाषर्व**—पु०[स०] कनपटी।

**गंदी बस्ती**—स्त्री० [हिं०] मजदूरो या गरीबों की गंदी बस्तियाँ। मलिनावास। (स्लम)

**गंध शलाका**—स्त्री०[स०] आज-कल एक प्रकार की प्रसाधन-सामग्री जो सुगंधित शलाका के रूप मे होती है। (कोलन स्टिक)

**गंधसार तेल**—पु०[स०+हिं०]=गंध-तैल।

**गंधोदक**—पु०[स०] रासायनिक क्रिया से बनाया हुआ एक प्रकार का सुगंधित तरल पदार्थ, जिसका व्यवहार सिर के बाल और शरीर की त्वचा सुगंधित करने के लिए होता है। (टॉयलेट वाटर)

**गजेटियर**—पु०[अ०] प्राय. राज्य द्वारा आधिकारिक रूप से प्रकाशित होनेवाला एक प्रकार का ग्रथ, जो बहुत से भागों मे होता है और जिसमे कस्बों, नगरों आदि के ऐतिहासिक भौगोलिक, और सामाजिक विवरण होते हैं।

**गड्डी**†—स्त्री० [?] गरदन पकड कर किसी को कही से धक्का देते हुए निकालने की क्रिया। गरदनियाँ।
क्रि० प्र०—देना।—मिलना।

**गण-तांत्रिक**—वि०[स०]=गण-त्री।

**गणनाकार**—वि०[स०] गणना करनेवाला।
पु० १.=गणक। २.=परिगणक।

**गणिका-दारिका**—स्त्री०[स०] वह लडकी, जिसे गणिका अपने पास रख-कर नाच-गाना सिखाती हो और जिसके बड़े होने पर वेश्या-वृत्ति कराती हो। नौची।

**गणित**—भू० कृ० १. जिसकी गणना हुई हो। गिना हुआ। २ गणना के द्वारा निश्चित या स्थिर किया हुआ। जैसे—गणित ज्योतिष।

**गणित ज्योतिष**—पु०[स०] ज्योतिष का वह अग या शाखा (फलित ज्योतिष से भिन्न) जिसमें आकाशस्थ ग्रहों, नक्षत्रों आदि की गति-विधि की गणना और विवेचना होती है। खगोल-विज्ञान। (ऐस्ट्रोनॉमी)

**गणित्र**—वि०, पु०[सं०]=गणक।
पु०=परिकलक।

**गत-यौवन**—वि० [स०] [स्त्री० गत-यौवना] जिसका यौवन-काल बीत चुका हो। अधेड।

**गतानुगतिकता**—स्त्री०[सं०] गतानुगतिक होने की अवस्था या भाव।

**गतावधि**—वि०[स० गत+अवधि] १. जिसके महत्त्वपूर्ण दिन बीत चुके हों। २. जो पुराना पड़ने के कारण इतना निरर्थक और महत्त्वहीन हो चुका हो कि प्रस्तुत काल में उसका कोई उपयोग न हो सकता हो। बात-चाम। 'अद्यतन' का विपर्याय। दिनातीत। (आउट आफ़ डेट)

**गति**—स्त्री० ऐसी स्थिति, जिसमें किसी प्रकार का उतार-चढ़ाव या कमी-बेशी होती रहे। जैसे—अरण-गति। (रेट रेट)

**गद्य-गीति**—स्त्री० दे० 'गद्य-काव्य'।

**गबाई**—वि०[हिं० गब्बा] गब्बे के रग का। हलका नीलापन लिए हुए हरा।
पु० उक्त प्रकार का रग।

**गल-ग्रंथि**—स्त्री० [स०] शरीर के अन्दर श्वास-नली और स्वर-यंत्र के पास की कुछ विशिष्ट ग्रथियाँ या उनका समूह। अवट्-ग्रथि। (थाइ-राएड ग्लैण्ड)

**गलचौर**†—स्त्री०[हिं० गाल+चौर (प्रत्य०)] मनबहलाव के लिए की जानेवाली बातचीत।

**गलन-रोध**—पु०[स०] ताप आदि का प्रभाव पडने पर भी चीजों को गलने से रोकने की क्रिया, गुण, भाव या शक्ति।

**गलनरोधी**—वि०[स०] जो ताप का प्रभाव पडने पर भी चीजो को गलने से रोकता हो। तापावरोधक।

**गलित-यौवना**—वि० स्त्री० २ (मुहावरे) जिसका यौवन समय से पहले ही ढल या समाप्त हो चुका हो।

**गहना-पत्तर**†—पु०[हिं०] शरीर पर पहने जानेवाले अनेक प्रकार के गहने। जैसे—सभी स्त्रियाँ गहने-पत्तर से सजी हुई थी।

**गहना-पाती**—पु० दे० 'गहना-पत्तर'।

**गह्वर**—पु० १० पश्ची-तल में पाया जानेवाला कोई ऐसा गहरा गड्ढा, जो प्राकृतिक कारणो से बना हो।

**गांधीवादी**—वि०[हिं०] गाधी-वाद सबधी।
पु० वह जो गाधीवाद का अनुयायी हो।

**गाँव-गिरॉव**—पु०[हिं० गाँव+स० ग्राम] १. गाँव-देहात। २. गाँव या देहात मे होनेवाली सपत्ति।

**गाँव-देहात**—पु० [हिं०+फा०] छोटे या बडे गाँवो का वर्ग या समूह।

**गायन**—स्त्री०[हिं० गाना] रईसों, राजाओ आदि के महलों में आनेवाली स्त्री।

**गायब-गुल्ला**—वि०[अ० गायब+गुल्ला (अनु०)] १ (पदार्थ) जो चुरा-छिपाकर या धोखा देकर गायब किया या हटाया-बढाया गया हो। २ धन जो बुरी तरह से और व्यर्थ नष्ट किया गया हो।

**गारंटी**—स्त्री०[अ० गैरेन्टी] -प्रत्याभूति।

**गार्भिकी**—स्त्री०[स० गर्भ से] स्त्री के गर्भवती होने की अवस्था या भाव। गर्भावस्था। (प्रेग्नैन्सी)

**गिंदौड़ा**—पु०[फा० कद+हिं० बडा] [स्त्री० अल्पा० गिंदौड़ी] बडी और मोटी रोटी के आकार की वह मिठाई, जो खाली चीनी गलाकर बनाई जाती और मागलिक अवसरो पर वधू-बाँधवो मे बाँटी जाती है।

**गिंदौरा**†—पु०=गिंदौड़ा।

**गिरॉव**†—पु०[स० ग्राम] गाँव। जैसे—गाँव-गिरॉव।

**गिराऊ**—वि०[हिं० गिरना+आऊ (प्रत्य०)] १ गिरनेवाला। २. जो टूटा-फूटा या पुराना होने के कारण जल्दी गिर जाने को हो।

**गिरावँ**—पु० [स० ग्राम] कोई छोटा-मोटा गाँव। जैसे—गाँव-गिरावँ से लोग आते रहते हैं।

**गिरि-पाद**—पु०[स०] पहाड के नीचे का मैदानी भाग।

**गिरि-मंदिर**—पु० दे० 'दरी-मदिर'।

**गिरि-संकट**—पु० [सं०] दो पहाड़ों के बीच का तंग या सँकरा रास्ता। दर्रा। (पास)

**गिलास-पट्टी**—स्त्री० [?+हिं० पट्टी] लोहे की एक प्रकार की कुछ मोटी और कम चौड़ी पट्टी, जो इमारत के काम में आती है।

**गीगला**—पु० [?] [स्त्री० गीगली] छोटा बच्चा। (राज०)

**गीत**—वि० दुबला-पतला और कमजोर।

**गीत-कथा**—स्त्री० [सं०] वह कथा या कहानी, जो गीतों के रूप में हो और प्रायः लोक-गीत के रूप में गाई जाती हो।

**गीति-नृत्य**—पु० [सं०] ऐसा नृत्य जिसमें नाचनेवाले नाच के साथ-साथ कुछ गाते भी हों। जैसे—गुजरात का गरबा या पंजाब का भाँगड़ा नृत्य।

**गुंडागर्दी**—स्त्री० [हिं० गुंडा+फा०] गुंडों की-सी गाली-गलौज या लड़ाई-झगड़ा। २ गुंडापन। गुंडई।

**गुणक**—पु० ३. लिखाई, छापे आदि में एक प्रकार का चिह्न, जो दो राशियों या संख्याओं के बीच में रहकर यह सूचित करता है कि पहलेवाली राशि या संख्या को बाद वाली राशि या संख्या से गुणा करना चाहिए। यह इस प्रकार लिखा जाता है—×।

**गुणन-खंड**—पु० [सं०] गणित में ऐसी राशि या राशियाँ, जिनसे किसी बड़ी राशि को भाग देने पर शेष कुछ न बचे। अपवर्तक। (फैक्टर)

**गुणवाची**—वि० [सं०] (भाव या शब्द) जो किसी मूर्त पदार्थ के गुण, विशेषता आदि का वाचक या बोधक हो। (ऐब्सट्रैक्ट) जैसे—सौन्दर्य गुणवाची तत्त्व है।

**गुण-सूत्रक**—पु० [सं०] जहाज या बड़ी नाव का मस्तूल, जिसमें गून की रस्सी बाँधकर खींचते हुए आगे से चलते हैं।

**गुणावतार**—पु० [सं०] वह अवतार, जिसमें ब्रह्म-पुरुष प्रकृति के गुणों को अपना आधार या श्री-विग्रह बनाकर आविर्भूत होता है। इसी आधार पर ब्रह्मा, विष्णु और महेश तीनों गुणावतार कहलाते हैं, क्योंकि ये प्रकृति के एक-एक गुण के श्री-विग्रह हैं।

**गुद्दी**—स्त्री० २ मुँह के अन्दर गले का वह निचला भाग, जिससे जबान का भीतरी सिरा सटा रहता है। जैसे—बहुत बढ़-बढ़ कर बातें करोगे तो गुद्दी में से जबान खींच लूँगा।

**गुनाना**—स० [हिं० गुनना का स०] किसी को गुणों से युक्त करना। जैसे—लड़के को पढ़ाना-गुनाना।

**गुप्त-गत**—वि० [सं०] (व्यक्ति) जो कुछ खा या पचा तो जाय, पर दूसरों पर जल्दी प्रकट न होने दे।

**गुप्त-चर्या**—स्त्री० [सं०] गुप्तचरों का काम। गुप्त रूप से विदेशियों, विपक्षियों आदि की क्रिया-प्रक्रियाओं का पता लगाने का काम। (एस्पायनेज)

**गुप्तरोमश**—पु० [सं०] ऐसा पुरुष, जिसके दाढ़ी-मूँछ के बाल न हों या अपेक्षया बहुत कम हों। मुकुन्दा।

**गुफा-मंदिर**—पु० दे० 'दरी-मंदिर'।

**गुरु ग्रंथ साहब**—पु० [हिं०] गुरु नानक के पश्चात्यक उपदेशों और वचनों का संग्रह, जिसे सिक्ख लोग अपना धर्म-ग्रंथ मानते हैं। इसे 'आदि-ग्रंथ' भी कहते हैं।

**गुरु-जल**—पु० [सं०] एक प्रकार का रासायनिक तरल पदार्थ, जिसका उपयोग परमाणुओं का विस्फोट करने में होता है। भारी पानी। (हैवी वाटर)

**गुरु-मंडल**—पु० [सं०] भू-गर्भ शास्त्र में पृथ्वी के तीन मुख्य पटलों में बीच का पटल, जो अनेक प्रकार की धातु-मिश्रित चट्टानों का बना हुआ बहुत गरम और ठोस है और जिसके ऊपरी पटल पर मनुष्य बसते और वनस्पतियाँ उगती हैं। (बैरिस्फियर)

**गुलमट्टा**—पु० [स्त्री० गुलमट्टी] हिन्दी गुलाम शब्द का उपेक्षात्मक और तुच्छतासूचक रूप।

**गुह्य-साधना**—स्त्री० [सं०] ऐसी तांत्रिक साधना, जिसे गुप्त रूप से या सबसे छिपाकर करना आवश्यक तथा विहित हो और जिसके प्रकट होने पर साधना नष्ट हो जाती हो। (ऐसी साधना हिन्दुओं के सिवा जैनों और बौद्धों में भी प्रचलित थी।)

**गूढ़-भाव**—वि० [सं०] [स्त्री० गूढ़-भावा] अपने मन का भाव छिपाकर रखनेवाला।

**गृहिणी**—स्त्री० ३. बौद्ध तांत्रिकों में, महामुद्रा (नैरात्मा प्रज्ञा) जिसके संबंध में कहा गया है कि इसे गृहिणी अर्थात् पत्नी के रूप में ग्रहण करना चाहिए।

**गृहोपवन**—पु० [सं०] घर के अन्दर या आस-पास लगा हुआ बगीचा।

**गेय नाटक**—पु० [सं०]—सांगीत। (ओपेरा)

**गैसल**—पु० —गायताल।

**गैसीय**—वि० [अ० गैस से] १ गैस संबंधी। गैस का। २ जिसमें गैस हो। गैस से युक्त। (गैसिअस)

**गोट**—स्त्री० २ ढोल, तबले आदि पर मढ़े हुए चमड़े के चारों ओर मढ़ा हुआ गोलाकार दूसरा चमड़ा जो प्रायः दो-तीन अंगुल चौड़ा होता है और जो देखने में कपड़े पर जड़ी हुई गोट के समान जान पड़ता है।

**गोटियाचाली**—स्त्री० [हिं० गोटियाचाल] गोटियाचाल चलने की क्रिया या भाव।

**गोदी**—स्त्री० २ बंदरगाहों में वह घेरा हुआ स्थान, जहाँ यात्रा के मध्य में जहाज कुछ समय के लिए ठहरा या रुककर रसद-पानी लेते और यंत्रों आदि की छोटी-मोटी मरम्मत करते हैं।

**गोपासनी**—स्त्री० [सं०] खिड़की का ऊपरी भाग या सिरा।

**गोरिल्ला**—पु० २ आधुनिक युद्ध में, ऐसी अनियमित सैनिक टुकड़ी का सदस्य, जिसका काम लुक-छिपकर शत्रु को रसद पहुँचानेवाले दस्तों पर छापा मारकर उन्हें लूटना-मारना होता है। छापामार।

**गोला-बारूद**—पु० [हिं०] बंदूकों से चलाई जानेवाली गोलियाँ, तोपों से चलाये जानेवाले गोले और उन्हें चलाने के लिए काम आनेवाली बारूद आदि सामग्री। (एम्युनिशन)

**गोष्ठी-कक्ष**—पु० [सं०] आज-कल विधान-सभाओं आदि में वह कक्ष या कमरा, जिसमें सदस्य लोग अवकाश के समय बैठकर आपस में बात-चीत करते हैं। उपांतिका। (लॉबी)

**गो-स्तन**—पु० [सं०] १. गौ का थन। २. लकड़ी का वह छोटा टुकड़ा, जो ऊपर से थोड़ा नीचे गिरकर अन्दर से दरवाजा बन्द कर लेता है। बिलैया।

**गौण चांद्रमास**—पु० [सं०] चांद्रमास के दो भेदों में से एक, जो चांद्रमास की कृष्ण प्रतिपदा से आरंभ होकर पूर्णिमा को समाप्त होता है। इसी

की 'पूर्णिमांत मास' भी कहते हैं। (दूसरा भेद 'मुख्य चांद्रमास' या 'अमांत' कहलाता है।

**गौणी भक्ति**—स्त्री० [सं०] देवपूजन, नाम-कीर्तन, भजन आदि के रूप में की जानेवाली भक्ति, जो परा भक्ति की पहली सीढ़ी होने के कारण गौण या कम महत्व की कही गई है।

**गौणी लक्षणा**—स्त्री० [स०] साहित्य में सारोपा तथा साध्यवसाना लक्षणाओं का एक प्रकार या भेद, जो उस दशा में माना जाता है, जब दो विभिन्न प्रकार के पदार्थों में बहुत अधिक सादृश्य होने पर उनका अन्तर स्पष्ट नहीं होने पाता।

**गौरव-गीति**—स्त्री०=प्रशस्ति गीति।

**ग्रंथि**—स्त्री० मनोग्रंथि का वह संक्षिप्त रूप, जो उसे यौ० पदों के अन्त में लगने पर प्राप्त होता है। (कॉम्प्लेक्स) जैसे—दलित-ग्रंथि।

**ग्रंथी**—पु० [स० ग्रथ+हि० ई (प्रत्य०)] सिक्ख गुरुद्वारों में वह सत, जो ग्रंथ साहब का पाठ लोगों को सुनाता है और पौरोहित्य करता है।

**ग्रह-चार**—पु० [स०] आकाशस्थ ग्रहों, नक्षत्रों आदि की नियमित और नियत ग्रंथि।

**ग्राम**—पु० [अ०] दशमिक प्रणाली में तौल की एक आधारिक इकाई जो $\frac{1}{28}$ आउन्स के बराबर होती है।

**ग्राम्य-राग**—पु० [स०] संगीत में, रागों का देशी नामक प्रकार या भेद। (दे० 'देशी' के अन्तर्गत)

**ग्राम्यवाद**—पु० [स०] [वि० कर्ता ग्राम्यवादी] आधुनिक साम्यवाद का वह मतवाद कि गाँवों में खेती-बारी के योग्य जितनी भूमि हो, वह सभी खेतिहरों में बराबर-बराबर बँटी हुई होनी चाहिए। (अंग्रेरियनिज्म)

**ग्लिसरोल**—पु० [अ०] एक प्रकार का गाढ़ा मोटा तरल पदार्थ, जो कुछ पशुओं की चरबी या तेल से बनाया जाता है।

**घट वादक**—पु० [सं०] वह जो घटवाद्य बजाता हो।

**घटवाद्य**—पु० [स०] वह घड़ा, जो उलटकर जमीन पर रखा और तबले की तरह बजाया जाता है।

**घटाव**—पु० ५. घटाकर कम करने की क्रिया या भाव। अवकरण। (रिडक्शन)

**घन**—वि० २ (कलन या गणित) लंबाई, चौड़ाई और मोटाई, तीनों के गुणन-फल का सूचक। (क्यूबल)

**घन-वाद**—पु० [स०] चित्र-कला की एक आधुनिक शैली, जिसमें भग्न रेखाओं के स्थानों पर कोणिक रेखाओं का उपयोग करके आकृतियों को बहुत घन का रूप दिया जाता है। (क्यूबिज्म)

**घनवादी**—वि० [स०] घनवाद संबंधी। घनवाद का। २. घनवाद का अनुयायी या समर्थक।

**घनालक**—वि० [सं० घन+अलक] [स्त्री० घनालिका] घने बालोंवाला।

**घर-घुसना**—पु०=घर-घुसना।

**घरैत**—पु० [हि० घर+ऐत (प्रत्य०)] [स्त्री० घरैतिन] [भाव० घरैती] १. वह जो किसी ऐसे घर का मालिक हो, जिसमें किरायेदार भी रहते हों। हि० 'भड़ैत' का विपर्याय। २. वह जो किसी घर या परिवार में सबसे बड़ा और उसका मालिक हो। गृह-स्वामी। ३. पत्नी की दृष्टि से उसके पति का वाचक या संबोधक शब्द।

**घरैती**†—स्त्री० [हि० घरैत+ई (प्रत्य०)] घरैत होने की अवस्था, धर्म या भाव।

†पु०=घरैत।

**घाटी**—पु० [हि० घाट] महाराष्ट्र में ऐसा व्यक्ति, जो पूर्वी समुद्र-तट अर्थात् मद्रास की ओर का रहनेवाला हो।

**घात**—पु० ५. वह स्थान या स्थिति जिसमें कोई व्यक्ति, किसी पर शारीरिक आघात या प्रहार करने के लिए छिपकर और ताक लगाये बैठा रहता है। (ऐम्बुश)

**घिनियाना**†—अ० [हि० घिन=घृणा] घृणा करना।

**घुड़क**—स्त्री० [हि० घोड़ी] वीणा, सितार आदि की तूँबी पर रखा जानेवाला हड्डी, हाथी दाँत आदि का वह पहला टुकड़ा, जिस पर बैठा कर उसके तार ऊपर से नीचे तक बाँधे जाते हैं।

**घुस-पैठिया**—पु० [हि० घुसपैठ+इया (प्रत्य०)] वह जो उत्पात, उपद्रव आदि के उद्देश्य से किसी दूसरे के क्षेत्र में लुक-छिपकर या बल-पूर्वक प्रवेश करता हो। (इन्ट्रूडर)

**घुस-पैठी**—पु०=घुसपैठिया।

**घोड़ा-चढ़ी**—स्त्री० [हि० घोड़ा+चढ़ना] घोड़े पर चढ़कर देहातों में घूम-फिरकर नाचने-गाने का पेशा करनेवाली निम्न कोटि की वेश्या। ('डेरेदार' से भिन्न)

**चंचलातिशयोक्ति**—स्त्री० [स०] साहित्य में, अतिशयोक्ति अलंकार का एक प्रकार या भेद, जिसमें कारण के उल्लेख मात्र से कार्य का ज्ञान होता है। इसी लिए इसकी गणना कारणातिशयोक्ति के अंतर्गत होती है।

**चंटई**—स्त्री० [हि० चट+ई (प्रत्य०)] बहुत अधिक चालाकी या धूर्तता। चटपन।

**चंटपन**—पु०=चटई।

**चंडाग्नि**—स्त्री० [स०] वज्रयानी बौद्ध तांत्रिकों के अनुसार शरीर के अंदर की एक विशिष्ट अग्नि, जिसे प्रज्वलित करने पर सब प्रकार के क्लेश और वासनाएँ जलकर भस्म हो जाती हैं।

**विशेष**—कहा गया है कि पवन-निरोध (साँस रोकने) के उपरान्त नौ इन्द्रिय-द्वारों को बंद करके जब दसवाँ द्वार (ब्रह्म-रन्ध्र या वैरोचन द्वार) खुला रखा जाता है, तब यह अग्नि प्रज्वलित होती है।

**चंडालिका**—स्त्री० ४ सोलह वर्ष की कुमारी युवती।

**चंदायनी**—स्त्री० [हि० चंदा=व्यक्ति वाचक संज्ञा] उत्तर प्रदेश, छत्तीसगढ़ आदि में प्रचलित एक प्रकार की गीत-कथा।

**चंद्र-शिला**—स्त्री० [स०] भारतीय स्थापत्य में पत्थर का वह अर्धचंद्राकार टुकड़ा, जो प्रायः सीढ़ियों में नीचे की ओर शोभा के लिए लगाया जाता था और जिस पर कमल आदि की आकृतियाँ उत्कीर्ण होती थीं। (मून-स्टोन)

**चंद्र-सखी**—स्त्री० [स०] १ भक्ति की कृष्णाश्रयी शाखा की एक लोक-गायिका जिसके गीत मालवे, राजस्थान और ब्रज में बहुत प्रचलित हैं। २. उक्त गायिका के बनाये हुए अथवा उनके अनुकरण पर बने हुए एक प्रकार के लोक-गीत।

**चंपी**—स्त्री० [हि० चाँपना] १. किसी के थके हुए अंग को विश्राम देने के लिए उसे बार-बार हाथों से दबाना। जैसे—किसी के सिर में चंपी करना।

**चंपीवाला**—पु० [हिं०] वह जो दूसरों के सिर में तेल लगाने और शरीर के अंगों में चंपी करने का पेशा करता हो।

**चकमा**—पु० २. सनसनी फैलानेवाला कोई ऐसा कार्य, जो किसी गुप्त उद्देश्य से लोगों का ध्यान किसी अवास्तविक या झूठी बात की ओर आकृष्ट किया जाय। (स्टन्ट)

**चक्रवातीय वर्षा**—स्त्री० [स०] चक्रवातों के साथ होनेवाली वर्षा, जो प्रायः धीमी होती है, घनघोर झड़ी के रूप में नहीं होती। इसमें पानी की बौछार भी चक्कर-सा काटती रहती है। (साइक्लोनिक रेन)

**चक्र-साधना**—स्त्री०[स०] वाममार्गियों की वह सामूहिक उपासना या पूजा, जिसमें स्त्रियाँ और पुरुष मिलकर मद्य, मांस आदि का सेवन करते हुए अनेक प्रकार के तांत्रिक अनुष्ठान और प्रयोग करते हैं।

**चक्षु-विज्ञान**—पु०[स०] दे० 'नेत्र-विज्ञान'।

**चला**—वि० [हिं० चल-चखा] [स्त्री० चखी] व्यर्थ की बकवाद करनेवाला और तुच्छ या हीन। (उपेक्षा-सूचक) चल चखी, दूर हो, परे भी हट।—दत्ता।

**चखड़पन**—पु०[हिं० चखड़+पन (प्रत्य०)] चालाकी। धूर्तता।

**चखड़ाई**—स्त्री०=चखड़पन।

**चहर**—स्त्री०[हिं० चौ=चार+दर] वह घोड़ागाड़ी, जिसमें चार-चार घोड़ों की चार कतारें जुती रहती थीं। उदा०—इस छकड़ी के सिवा चहर नाम की एक गाड़ी में चार-चार घोड़ों की चार कतारों में सोलह घोड़े जोते जाते थे।—सेठ गोविन्ददास।

**चपती**—स्त्री० २. लकड़ी की वह पट्टी, जो प्राय शरीर की कोई हड्डी टूटने पर उसके ऊपर इसलिए बाँधी जाती है कि अंग एक ही अवस्था में रहे, इधर-उधर हिलने न पाये। (स्प्लिन्ट)

**चपलातिशयोक्ति**—स्त्री०=चचलातिशयोक्ति।

**चमार-सियार**—पु०[हिं०] बहुत ही छोटी और अस्पृश्य मानी जानेवाली जातियों के लोग।

**चयापचयन**—पु०[स०] विपचन।

**चरर्**—वि० विचरण करने अर्थात् चलने या घूमने-फिरनेवाला।

**चरक**—पु० ८. प्राचीन भारत में वे विद्वान्, जो घूम-घूमकर सब जगह ज्ञान और विद्या का अध्ययन तथा प्रचार करते थे।

**चरकट**—पु०[हिं० चारा+काटना] १. वह जो चौपायों के लिए जंगल से चारा काट कर लाता हो। २ बहुत ही निकृष्ट कोटि का आदमी।

**चरखा**—पु० १४ सन्त साहित्य में, मनुष्य का यह शरीर। उदा०—जौ चरखा जरि जाय, बढ़ै या न मरै।—कबीर।

**चरम**—पु० २०. निर्माण, परिवर्तन, विराम आदि की क्रियाओं का कोई ऐसा विशिष्ट अंग या अश, जो किसी निश्चित समय के अन्दर पूरा होता हो अथवा जिसमें किसी कार्य-विभाग की समाप्ति होती हो। (स्टेज) जैसे—इस्पात के इस कारखाने का दूसरा चरण अब समाप्ति पर आ चला है।

**चरमावस्था**—स्त्री०[सं० चरम+अवस्था] १. घटनाओं, विचारों आदि के क्रम या शृंखला में सब के अंत की या सबसे आगे बढ़ी हुई अवस्था, जिसके उपरान्त पतन या ह्रास का आरम्भ होता है। (क्लाइमैक्स)

**चरित-काव्य**—पु०[स०] तात्त्विक दृष्टि से प्रबध-काव्य का एक प्रकार या रूप, जिसमें कथा-काव्य और इतिवृत्त की भी अनेक बातें होती और जिसमें मुख्य रूप से किसी महापुरुष या और पुरुष का चरित्र वर्णित होता है। जैसे—दशकुमार-चरित, बुद्ध-चरित, हर्ष-चरित आदि।

**चर्चरी-पद**—पु०[सं०] वे पद या गीत, जो बौद्ध तांत्रिक लोग चर्चरी के समय गाते थे।

**चल**—वि० ५ जो एक ही स्थान पर या एक ही स्थिति में स्थिर न रहता हो, बल्कि प्रायः इधर-उधर हटता-बढ़ता रहता हो। (फ्लोटिंग) जैसे—चल-द्वीप। ५. जो एक स्थान पर ठहरा न रहता हो, बल्कि आवश्यकता पड़ने पर सभी जगह आ-जा सकता हो। (फ्लाइंग) जैसे—सैनिकों का चल-दस्ता। ७ (धन) जो स्थायी रूप से किसी काम में न लगा हो, बल्कि कभी एक ओर कभी दूसरे काम में लगता रहता हो। (फ्लोटिंग) जैसे—चल-पूँजी।

**चल-द्वीप**—पु०[स०] कुछ विशिष्ट जलाशयों में होनेवाले वे छोटे भू-भाग, जो पानी पर तैरते हैं। (फ्लोटिंग आइलैंड)

**चल-यंत्र**—पु०[स०] गाड़ी आदि पर रखा हुआ ऐसा यंत्र, जो आवश्यकतानुसार एक स्थान से दूसरे स्थान पर आ-जा सकता हो। (मोबाइल-प्लान्ट)

**चलवासी**—पु० [स०] स्थानाबदोश। यायावर। (नोमैड)

**चलाक्ष**—वि०[स०] [स्त्री० चलाक्षी] चचल नेत्रोंवाला।

**चलावा**—पु० ४. चलाने की क्रिया, ढग या भाव।

**चलिष्णु**—वि०[स०] [भाव० चलिष्णुता] जो चलता अर्थात् अपने स्थान से आगे-पीछे या इधर-उधर हटता-बढ़ता हो। (मोबाइल)

**चहका**†—पु०[हिं० चहकना] १ चहकने की क्रिया या भाव। २ पूर्वी उत्तर प्रदेश में होली के अवसर पर गाया जानेवाला एक प्रकार का लोक-गीत।

†पु=चहला (कीचड़)।

**चांडाली**—स्त्री० ४ बौद्ध तत्र-शास्त्र में सुषुम्ना नाड़ी का एक नाम।

**चांद्र**—वि० २ जो गणना में चद्रमा के उदय और अस्त के आधार पर होता हो। (लूनर) जैसे—चान्द्र मास, चान्द्र-वर्ष। ३ दे० 'सौमिक'।

**चांद्र सावन मास**—पु० दे० 'सावन मास' के अंतर्गत।

**चाँपा कल**—स्त्री० [हिं० चाँपना=दबाना+कल] कोई ऐसी कल या यंत्र, जिसे चलाने के लिए ऐसा मुट्ठा लगा हो, जो हाथ से बार-बार दबाना पड़ता हो। जैसे—कुएँ या जमीन से पानी निकालने की चाँपा-कल।

**चाक्रिक**—वि० ४ जो चक्र या चक्कर के रूप में चलता हो। चक्कर लगानेवाला। (सर्क्यूलेटरी) जैसे—शरीर में रुधिर प्रवाह का चाक्रिक रूप।

**चालुंडी**—स्त्री०[स०] सगीत में, कर्णाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**चाय**—स्त्री० ४. कुछ विशिष्ट पदार्थों का एक प्रकार से तैयार किया हुआ पेय। जैसे—अदरक की चाय, तुलसी की चाय।

**चाय-बगान**—पु०[हिं० चाय+फा० बाग] वह क्षेत्र जहाँ चाय की खेती होती है, और चाय की पत्तियाँ सुखाकर तैयार की जाती हैं।

**चार सौ बीस**—पु० [हिं०] १. किसी प्रकार का स्वार्थ सिद्ध करने के लिए चालाकी या धूर्तता से भरा हुआ कोई ऐसा काम करना, जिससे किसी की कोई आर्थिक हानि हो अथवा उसे मानसिक या शारीरिक कष्ट पहुँचे अथवा उसके मान-सम्मान में किसी प्रकार ह्रास हो। २. उक्त

प्रकार की चालाकी या धूर्तता करके अपना स्वार्थ सिद्ध करनेवाला व्यक्ति।

**विशेष**—भारतीय दंड विधान की ४२० वीं धारा के अनुसार उक्त प्रकार के काम करना दंडनीय अपराध माना गया है; और उसी के आधार पर इधर कुछ दिनों से उक्त पद ऊपर लिखे अर्थों में प्रयुक्त होने लगा है।

**चारिणी**—वि०[हिं० चारण] १. चारण संबंधी। चारण का। २. चारणों का सा। जैसे—कविता पढ़ने का चारिणी ढंग।

**चारुक**—वि०[सं०] [स्त्री० चारुका] मनोहर। सुंदर।

**चारु-लीला**—स्त्री०[सं०] स्त्रियों के सुंदर नखरे या हाव-भाव।

**चार्ट**—पुं०[सं०] किसी बात या विषय के संबंध में कुछ विशिष्ट सूचना या जानकारी करानेवाला ऐसा नक्शा, जिसमें मुख्य मुख्य ज्ञातव्य बातों का क्रमिक उल्लेख या प्रदर्शन हो। जैसे—जहाजियों का चार्ट जिसमें समुद्र की गहराई, बीच में पड़नेवाली चट्टानें, आस-पास के मार्गों और स्थानों का पता चलता है।

**चार्वाक**—वि०[सं० चारु-वाक्] जो अपना मत या विषय लोगों के सामने प्रभावशाली ढंग से उपस्थित करने में कुशल हो।

**चालकता**—स्त्री०[सं०] १ चालक होने की अवस्था, गुण, धर्म या भाव। २ दे० 'संवाहकता'।

**चालन**—पुं० ४. कौशलपूर्वक ऐसी क्रिया करना, जिससे कोई कार्य ठीक तरह से सम्पन्न या सिद्ध हो। (मैनिपुलेशन) जैसे—किसी यंत्र का चालन।

**चालमोगरा**—पुं०[हिं० चावल?+मोगरा] १ एक प्रकार का वृक्ष, जिसमें बड़े बेर की तरह के फल होते हैं। २. उक्त वृक्ष के फल जिनका तेल कुष्ठ, वात रोग आदि में बहुत उपकारी माना जाता है।

**चिट-फुट**—वि० दे० 'चट-फुट'।

**चिकित्सा-विज्ञान**—पुं० [सं०] विज्ञान की वह शाखा जिसमें रोगों को दूर करने के उपायों, तत्त्वों, सिद्धान्तों आदि का निरूपण होता है। आयुर्विज्ञान। (मेडिकल साएन्स)

**चिकित्सा-शास्त्र**—पुं० [सं०]=चिकित्सा, विज्ञान।

**चिकित्सीय**—वि० [सं०] १. चिकित्सा संबंधी। चिकित्सा का। २. चिकित्सा के रूप में होने अथवा चिकित्साशास्त्र से संबंध रखनेवाला। (मेडिकल)

**चित्त-ज्ञान**—पुं० [सं०] दूसरे के मन की बात ताड़, भाँप या समझ लेना।

**चित्त-वृत्ति**—स्त्री० २ चित्त की वह स्थिति, जो उसे किसी ओर प्रवृत्त करती हो। मन का झुकाव। (डिस्पोज़ीशन)

**चित्तेश्वर**—सुं०[सं०] कामदेव।

**चित्र-लिपि**—स्त्री० २. किसी उपन्यास या नाटक की कथा-वस्तु अथवा कहानी का वह रूप जो चल-चित्र के रूप में दिखाने के लिए प्रस्तुत किया जाता है। (स्क्रीन-प्ले)

**चित्राक्षर**—सुं०[सं०] वर्णमाला के अक्षरों या वर्णों से भिन्न ऐसे विशिष्ट चिह्न या संकेत जो कोई भाव या विचार करने के लिए स्थिर किये जाते हैं। (आइडियोग्राम) जैसे—जोड़ का सूचक चिह्न +, गुणा का सूचक चिह्न ×, समानता का सूचक चिह्न =।

**चित्राधार**—पुं०[सं०] मोटे तथा सादे कागजों की वह पुस्तिका जिसमें लोग फोटो-चित्र टाँककर सुरक्षित रखते हैं। (एलबम)

**चित्रावली**—स्त्री०[सं०] १. चित्रों की पंक्ति। २. एक ही क्रम या शृंखला के अनेक चित्रों का वर्ग या समूह। ३. दे० 'चित्राधार'।

**चित्रित**—वि० ६. जिस पर कोई चित्र या आकृति अंकित हो या बनी हो। (फिगर्ड)

**चित्रीकरण**—पुं० ४ किसी कहानी आदि को चित्रों का रूप देना। ५. किसी कहानी का फिल्मी चित्र बनाना। ६. दे० 'चित्रण'।

**चिर-भोग**—पुं०[सं०] १. उचित या नियत समय के उपरान्त भी किसी वस्तु या विषय का भोग करते चलना। २. बहुत दिनों तक किसी सम्पत्ति का इस रूप में भोग करना कि उस पर एक प्रकार का अधिकार या स्वत्व हो जाय। (प्रेस्क्रिप्शन)

**चिरौंड़ी**—स्त्री०[?] खड़िया की तरह का एक प्रकार का खनिज पदार्थ। (जिप्सम)

**चींटी-चोर**—पुं०[हिं०+फा०] एक प्रकार का जंतु, जिसका मुँह बहुत छोटा और पतला होता है और जो प्रायः चींटियाँ या चूँटियाँ खाकर ही निर्वाह करता है। (ऐंट-ईटर)

**चीड़**—पुं० ३. एक प्रसिद्ध बड़ा पेड़, जिसकी चिकनी और नरम लकड़ी इमारत, संदूक आदि बनाने के काम आती है। इस लकड़ी में तेल का अंश अधिक होता है, जो निकाला जाता और तारपीन के तेल के नाम से बिकता है। गंधकिरोजा इसी पेड़ का नाम है। इसका प्रयोग औषध, गंधद्रव्य आदि के रूप में होता है।

**चीर-घर**—पुं०[हिं० चीरना+घर] अस्पतालों आदि का वह स्थान, जहाँ दुर्घटनाओं आदि से अथवा संदिग्ध अवस्था में मरे हुए लोगों की लाशें चीरकर उनकी मृत्यु के वास्तविक कारण का पता लगाया जाता है।

**चुभन**—स्त्री० ३. मन में चुभने या खटकनेवाली बात के कारण होनेवाला मानसिक कष्ट, कसक।

**चूआँ**†—पुं०[हिं० कूआँ का अनु०] १. पहाड़ी सोतों आदि के उद्गम के पास का वह गहरा गड्ढा, जिसमें पानी जमकर किसी ओर बढ़ता है। २. नदियों आदि के रेतीले तट पर खोदा हुआ वह गड्ढा, जिसमें नीचे का पानी आकर भर जाता है।

**चूना-पत्थर**] पुं०[हिं०] वह विशिष्ट प्रकार का पत्थर, जिसमें चूने का अंश बहुत अधिक होता है और जिसे भट्टी में फूँकने पर चूना तैयार होता है। (लाइम-स्टोन)

**चेर-पुत्र**—पुं०[सं०] [स्त्री० चेर-पुत्री] दास की संतान।

**चैकित्सिक**—वि०[सं०] चिकित्सा-संबंधी। चिकित्सा का। (मेडिकल)

**चैत्य**—पुं० ८ ज्वालामुखी पर्वतों में कभी कभी होनेवाला उद्गार।

**चैत्य पुरुष**—पुं०[सं०] अरविंद-दर्शन में, हृदय में स्थित वह दिव्य पुरुष जो अंशतः भगवत् का अंश है और जो प्रत्येक जन्म धारण करने पर बढ़ता, बदलता और विकसित होता रहता है। यही प्रत्येक व्यक्ति का सच्चा स्वरूप और अंतरात्मा का वैयक्तिक रूप है। हृत्पुरुष। (साइकिक बीइंग)

**चैत्य-सत्ता**—स्त्री० १. क्रमिक विकास के द्वारा निर्मित होनेवाला चैत्य पुरुष का वैयक्तिक स्वरूप। चैत्य पुरुष। (दे०)

**चैत्यीकरण**—पु०[स०] अर्हदि दर्शन में वह क्रिया, जिससे चैत्य पुरुष के प्रभाव से मनुष्य का मन, प्राण और शरीर चैत्यमय हो जाता है। (साइकिसाइडेशन)

**चोरकचहरी**—स्त्री०[हिं०] नवाबी शासन में वह विभाग, जो गुप्त रूप से चोरों, बदमाशों आदि के कुकर्मों का पता लगाता था। खुफिया जाँच का विभाग।

**चौकीदार**—पु०[हिं०] वह जो चौकीमारी करता हो। सरकार की चौकी से बाजिब माल बेचनेवाला व्यापारी। (स्मगलर)

**चौकीमारी**—स्त्री०[हिं०] चोरी, तट-कर आदि की चौकियों की निगाह बचाकर और चोरी से बाहरी माल देश में लाकर बेचने की क्रिया। तस्कर-व्यापार। तस्करी। (स्मगलिंग)

**चोख**—पु०[स०] एक प्राचीन भागवत सम्प्रदाय, जिसके अनुयायी एकायन कहलाते और छूआछूत का बहुत विचार करते थे।

**चौखोपचार**—पु० [स०] छूआछूत का ढोंग।

**चौखलिया**—पुं०[स०] स्वामी नारायण सम्प्रदाय के अनुयायी, जो प्राय: गुजरात में पाये जाते और छूआछूत का बहुत विचार रखते हैं।

**चौधराहट**—स्त्री० [हिं० चौधरी+आहट (प्रत्य०)] १. चौधरी होने की अवस्था या भाव। २ चौधरी का काम या पद।

**चौदहवीं**—स्त्री० [हिं० चौदहवाँ] शुक्लपक्ष की पूर्णिमा तिथि। पूरनमासी।

**पद—चौदहवीं का चाँद**=(क) पूर्णिमा का चन्द्रमा। पूर्ण चन्द्र। (ख) बहुत ही सुन्दर व्यक्ति।

**विशेष**—मुसलमानों में महीने का आरम्भ शुक्ल पक्ष द्वितीया से माना गया है, इसी लिए उनकी पूर्णिमा चौदहवीं तारीख को पड़ती है। इसी आधार पर उक्त पद बना है।

**चौ-धारा**—वि०[हिं० चार+स० धारा] चार धारों वाला।

**मुहा०—चौ-धारा बहाना**=बहुत अधिक रोना।

**चौपड़**—स्त्री० ४ एक प्रकार का राजस्थानी लोक-गीत जो स्त्रियाँ प्राय झूला झूलते समय गाती हैं।

**चौरंगा**—वि० २ जिसके चारों ओर मुख (द्वार या रास्ते) हो। उदा०—सो किमि-जान्यो जाय,गह चौरंगी सोहै।—पुधाकर द्विवेदी।

**चौरंगी**—स्त्री०[हिं० चौरंगा] चौमुहानी। चौराहा।

**च्युत-संस्कार**—वि०[स०] [भाव० च्युत-संस्कारता] १ जो संस्कार से च्युत होने अथवा संस्कार के अभाव के कारण *त्याज्य* या दूषित माना जाता हो। २ (साहित्यिक रचना) जो व्याकरण संबंधी दोषों से युक्त हो।

**छँड़ाई**—स्त्री० ३ पेड़-पौधों की फालतू या बढ़ी हुई डालों को काट-छाँट कर अलग करने की क्रिया या भाव। (प्रूनिंग)

**छंदतः**—क्रि० वि०[स०] १. छल कपट से। २. स्वच्छन्दता से।

**छंदकर**—वि०[सं०] [स्त्री० छदकरी] आज्ञाकारी।

**छकड़ी**—स्त्री० ३ वह गाड़ी, जिसमें छः घोड़े जूते हों। उदा०—राष्ट्रपति की सवारी अब भी छकड़ी पर ही निकलती है।—सेठ गोविन्ददास। स्त्री०[हिं० छ.+कौड़ी] १. एक प्रकार का चौसर का खेल, जो छः कौड़ियों से खेला जाता है। २. एक प्रकार का जूआ जो छः कौड़ियों से खेला जाता है।

**छक्का**—पु० ६ गेंद बल्ले के खेल में वह स्थिति, जब बल्ले से मारा हुआ गेंद बिना जमीन को छुए हुए खेल के मैदान की सीमा पार कर जाता है और जिसके फलस्वरूप बल्ला लगानेवाले खेलाड़ी को छः दौड़ें मानी जाती हैं।

**क्रि० प्र०**—मारना।—लगना।—लगाना।

**छड़ा-छाँड़**—वि०[हिं० छडा+छँडना=छोड़ना] १ जो सबको छोड़कर बिलकुल अकेला हो गया हो। २. जिसके साथ कोई न हो। अकेला ३ जिसकी स्त्री, बच्चे, आदि न हों।

**छतरी सैनिक**—पु० [हिं० छतरी+स० सैनिक] आधुनिक युद्ध में वे सैनिक जो वायुयानों से छतरी के सहारे शत्रु देशों में युद्ध करने के लिए उतारे जाते हैं। (पैराट्रूपर)

**छत्तीस**—वि० २ जो औरों की तुलना में अच्छा या बढ़कर हो। (बाजाक) जैसे—यह माल उससे छत्तीस पड़ता है।

**छद्मावरण**—पु०[स० छद्म+आवरण] १ वास्तविक बात का रूप छिपाने के लिए ऊपर से कोई नया रूप देना जिससे देखनेवाले धोखे में पड़ जायँ। २ युद्ध-क्षेत्र में, अपनी तोपों, मोर्चों आदि को शत्रु की दृष्टि से बचाने के लिए वृक्षों की डालियों, पत्तियों आदि से ढकना। (कैमोफ्लेज)

**छनाव**—पु०[हिं० छानना या छानना] छानने या छानने की क्रिया या भाव।

**छल्लक**—स्त्री०[हिं० छतल्ला] गणित में, योग-सूचक चिह्न जो इस प्रकार लिखा जाता है—+। (लसनक)

**छल्ला**—पु० ५ किसी कोमल और लचीले पदार्थ का बना हुआ एक प्रकार का आधुनिक गोल और छोटा उपकरण, जो स्त्रियों के गर्भाशय के मुख पर इसलिए बैठा दिया जाता है कि गर्भाधान की क्रिया न होने पावे। (लूप)

**विशेष**—गर्भधारण की कामना होने पर यह निकालकर अलग भी किया जा सकता है।

**छाँवर**†—पु० [?] मछलियों के बच्चों का समूह। झोल।

**छापामार**—पु० [हिं०] सैनिकों की वह टुकड़ी या दल, जो शत्रुओं पर छापा मारने अर्थात् अचानक आक्रमण करने की कला में प्रवीण हो, और इसी काम पर नियुक्त हो। (गोरिल्ला)

**छापामार लड़ाई**—स्त्री०[हिं०] वह लड़ाई, जो छापामार सैनिकों की सहायता से लड़ी जाती है। (गैरिल्ला वारफेयर)

**छाया-चित्र**—पु० ३ किसी वस्तु या व्यक्ति की वह आकृति, जो किसी प्रकाशमान तल पर उसकी छाया पड़ने पर चित्र के रूप में बनती है। (शैडोग्राफ)

**छाया-पुरुष**—पु० २ किसी व्यक्ति या शरीर की ऐसी आकृति,जो केवल कल्पना या भ्रमवश आँखों के सामने उपस्थित होती हो; परन्तु जिसकी कोई वास्तविक सत्ता या स्थिति न हो। (फ्रैंटम)

**छिद्र-द्वार**—पु०[स०] चोर दरवाजा।

**छिद्रल**—वि०[स०] १. जिसमें छेद हो। छेद या छेदों से युक्त। २.(शरीर या वानस्पतिक तल) जिसमें ऐसे बहुत-से छोटे-छोटे छेद हों, जिनके द्वारा तरल पदार्थ अंदर जा और बाहर निकल सकते हों। (पोरस)

**छिद्रलता**—स्त्री०[स०] छिद्रल होने की अवस्था, गुण या भाव। (पोरोसिटी)

**हिया परतन**—पु०[हि०+फा०] वह जो वास्तव में किसी काम या बात में बहुत बढ़ा-चढ़ा हो, पर साधारणतः लोग जिसकी वास्तविक स्थिति से परिचित न हों।

**छिपाव**—पु० २. किसी से कोई काम, चीज या बात छिपाने की क्रिया। जैसे—बुराव-छिपाव की बातें मुझसे न किया करो।

**छींटाकशी**—स्त्री० दे० 'आवाजाकशी'।

**छुटापा**†—पु० [हिं० छोटा+आपा (प्रत्य०)] १ छोटे होने की अवस्था या भाव। छुटपन। २. बाल्यावस्था। लड़कपन। ('बुड़ापा' के अनुकरण पर) उदा०—भाड़ मे जाय यह छुटापा।—अजीमबेग चगताई।

**छूना**—स० ७. किसी के साथ कोई ऐसा काम, बात या व्यवहार करना जिससे उसको कुछ कष्ट हो। उदा०—छूआ है कुछ न छेडा है, किसी ने अब तलक उनको।—इन्शा।

**छड़े-छाँड़**—क्रि० वि० [हिं० छडा-छाँड़] बिना किसी को साथ लिये। अकेले।

**जंगल का कानून**—पद। ऐसी राजनीतिक या सामाजिक स्थिति, जिसमे लोग न्याय-अन्याय आदि का ध्यान छोड़कर जंगली पशुओं की तरह आचरण और व्यवहार करते हो और केवल अपने बल के भरोसे ही स्वार्थ सिद्ध करते हो। (लॉ ऑफ़ जगल)

**जंगल में मंगल**—पद सूने स्थान मे होनेवाला मगल।

**जंघाकर**—पु०[सं०] वह दूत जो सदेश देकर भेजा जाता था। धावन। हरकारा।

**जंजीरा**—पु० ३. भारतीय बही-खाते में जोड़ लगाने की एक रीति, जिसमे रुपए, आने, पैसे आदि सब एक साथ जोड़ दिये जाते हैं।

**जंती**—पु०[सं० यंत्र] वह जो यंत्रों से युक्त हो अर्थात् शरीर। उदा०—जस जती महि जीउ समाना।—कबीर।

**जंघी**—पु० २. समय को निश्चित भागों में बाँटने की क्रिया।

**जकड़**—स्त्री० ३. ऐसी गाँठ या पेच, जिससे दो या कई चीजें एक दूसरी से जकड जायँ।
क्रि० प्र०—लगाना।

**जकीरेदार**—पु०[अ०+फा०] [भाव० जकीरेदारी] १. वह जिसके पास कोई जखीरा हो। जखीरे का मालिक। २ वह जो सस्ते दामों मे चीजें खरीदकर महँगे भाव पर बेचने के लिए उनका जखीरा या राशि अपने पास एकत्र करके रखता हो। जमाखोर। (होर्डर)

**जगतानुबोध**—पुं०[सं०] संतों या सिद्धों की परिभाषा में, संसार के वास्तविक स्वरूप का ऐसा बोध, जिससे मन की भ्रान्ति नष्ट हो जाती है।

**जच्चा**—पुं० [अ० जच्चः] मुसलमानों में, सोहर की तरह के वे गीत, जो पुत्र जन्म के समय गाये जाते हैं। (लोक में इसके १०-१२ प्रकार या भेद मिलते हैं।)

**जटामासी**†—स्त्री०[हिं० जटना=ठगकर रुपए ले लेना] किसी को ठगकर या धोखा देकर उससे कुछ धन वसूल करने की क्रिया या भाव। (दलाल और बूकानदार)

**जटाधरकर**—पुं०[सं०] शिव। महादेव।

**जटा-शंकरी**—स्त्री०[सं०] शंकर की जटा में रहनेवाली गंगा।



**जड़-मति**—पु०[सं०] ऐसा व्यक्ति जिसे प्रायः कुछ भी बुद्धि न हो, या बहुत ही थोड़ी और छोटे बच्चो की सी बुद्धि हो। (इडियट)

**जड़-वाद**—पुं० २ आज-कल अधिक प्रचलित अर्थ में, वह सिद्धांत कि धन-सपत्ति के भोग मे ही मनुष्य को आनन्द या सुख मिलता है, आत्म-चिंतन आदि व्यर्थ की बातें है। भौतिकवाद। (मेटीरिअलिज्म) ३. आज-कल कला और साहित्य के क्षेत्र में, यह मत या सिद्धान्त कि सब काम जन-साधारण का ध्यान रखकर और उन्हीं का महत्त्व स्थापित करने के उद्देश्य से होने चाहिए।

**जड़वादी**—पु० वह जो जडवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (मैटीरिअलिस्ट)

**जन-कवि**—पु० [स०] ऐसा कवि या कवि-समुदाय, जिसकी कविता का विषय मुख्य रूप मे जनता के व्यापक जीवन से संबद्ध रहता हो। (ऐसी कविता की विषय-वस्तु व्यक्ति-निष्ठ भावनाएँ नहीं होती, और उसके कवि की दृष्टि अन्तर्मुखी नहीं होती, प्रत्युत बाह्यमुखी होती है।)

**जन-गीत**—पु०[स०] लोक-गीत

**जनता-जनार्दन**—पु०[स०] देश की सारी जनता, जो ईश्वर का रूप मानी जाती है।

**जननिक**—वि०[स०] जनन अर्थात् सतान के प्रसव से संबंध रखनेवाला। (जेनेटिव)

**जननी मक्खी**—स्त्री०=रानी मक्खी।

**जन-मत**—पु०[स०] दे० 'लोक-मत'।

**जन-मत संग्रह**—पु०[स०] आधुनिक राजनीति मे किसी विशिष्ट प्रदेश या स्थान के वयस्क निवासियों का वह मत, जो किसी प्रकार की संधि या सार्वराष्ट्रीय सस्था के निर्णय के अनुसार यह जानने के लिए लिया जाता है कि वे लोग किस अथवा किसके राज्य या शासन में रहना चाहते हैं। (प्लेबिसाइट)

**जन-वध**—पु०[स०]=जन-सहार।

**जनवादी**—वि०[सं०] जनवाद-संबंधी।
पु० वह जो जनवाद के सिद्धांत मानता हो। जनवाद का अनुयायी।

**जन-विद्या**—स्त्री० [सं०] विज्ञान की वह शाखा, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि जनन, मरण, विवाह आदि की सख्याओं का किसी देश की आबादी पर कितना और कैसा प्रभाव पडता है। जनाकिकी। (डेमोग्राफी)

**जन-संहार**—पु०[स०] किसी जाति या वर्ग को समाप्त करने के उद्देश्य से उसके व्यक्तियों की व्यवस्थित और संघटित रूप से की जानेवाली हत्या। (जेनोसाइड)

**जनाकिकी**—स्त्री०[सं०]=जन-विद्या।

**जना**†—पु० [स० जन=व्यक्ति] [स्त्री० जनी] मनुष्य। व्यक्ति। जैसे—चार जने, दस जनियाँ।

**जनी**—स्त्री० [स० जनी से फा० जन] नव विवाहिता स्त्री। वधू। २. औरत। स्त्री। ३ जोरू। पत्नी।

**जनेच्छा**—स्त्री० [सं० जन+इच्छा] जनता अर्थात् लोक या समाज की इच्छा।

**जन्मपूर्व**—वि०[सं०]=प्राग्जसव। (दे०)

**जब्त**—वि० ३. (लेख या साहित्य) जो दूषित या हानिकारक समझा जाने के कारण राज्य के द्वारा अपने अधिकार मे कर लिया गया हो। राज्यसात्। (कॉन्फिस्केटेड)

**जब्ती**—स्त्री० २ राज्य के द्वारा संपत्ति, साहित्य आदि के जब्त किये जाने की क्रिया या भाव। राज्यसात्करण। (कॉन्फिस्केशन)

**जम-जम**—अव्य० [सं० जन्म, पु० हिं० जमना=जन्म लेना] बहुत प्रसन्नता-पूर्वक सदा ऐसा होता रहे। (स्त्रियों की शुभाशंसा) उदा०—जम जम वह आँखें, उसकी जो बरछी सी तेज हैं। दुश्मन के दिल मे चुभती उसी की अति रहे।—इन्शा।

**जम-जम**—पु० [अ० जम्-जम] मक्के का एक प्रसिद्ध कूआँ, जिसका पानी मसलमानों में बहुत पवित्र और मांगलिक समझा जाता है।

**जम-जमा**—पु०[?] सितार मे एक के बाद दूसरा स्वर बहुत जल्दी और तेजी से बजाने की क्रिया जो आलंकारिक मानी जाती है।

**जमूरा**—पु० [फा० जमूर या जमूरक] १ एक प्रकार की छोटी नाव। २. तोप लादने की गाड़ी। ३ लोहारो आदि का एक प्रकार का औजार, जो सँडसी की तरह होता है। ४ नटो, बाजीगरो आदि के साथ रहनेवाला वह छोटा लडका, जो अनेक प्रकार के करतब और खेल दिखलाता है और बडे-बडे खेलों मे उनके सहायक के रूप मे काम करता है।

**जमाखोर**—पुं०[अ०+फा०] वह जो सस्ते दामो मे चीजे खरीदकर अपने गोदाम में भर रखता हो और बाद मे बहुत महँगे भाव पर बेचता हो। जखीरेदार। (होर्डर)

**जमाखोरी**—स्त्री०[अ०+फा०] जमाखोर होने की प्रवृत्ति या स्थिति। जखीरेदारी। (होर्डिंग)

**जमीन**—स्त्री० ८. ऐसा आरंभिक तत्त्व जिसके आधार पर आगे कोई और काम होता है। मूल आधार। (ग्राउन्ड)

**जय-काव्य**—पु०[सं०] महाभारत नामक प्रसिद्ध ग्रथ का पहला और पुराना नाम।

**जल-कुंड**—पु० [स०] १ पानी का छोटा तालाब। २. भूगोल मे, नदी के किनारे का वह गड्ढा, जिसमे नदी के मूख जाने पर भी पानी भरा रहता है। (वाटरपूल)

**जल-ग्रह क्षेत्र**—पु०[स०] नदियों के उद्गम के आसपास का वह सारा क्षेत्र, जहाँ की वर्षा का जल इकट्ठा होकर नालों आदि के द्वारा नदियो मे जाकर मिलता और उसका विस्तार बढाकर उनमे बाढ़ आदि लाता है। जाली। ग्रवण-क्षेत्र। (कैचमेन्ट एरिया)

**जल-बिजली**—स्त्री०=पन-बिजली।

**जल-भीति**—स्त्री०[स०] जल से होनेवाला वह भय जो पागल कुत्तो आदि के काटने के फलस्वरूप उत्पन्न होता है। (हाइड्रोफोबिया)

**जल-लेखी**—स्त्री०[सं०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमे नदियो, नहरों, समुद्रो आदि की गहराई और विस्तार का विशेषत इस दृष्टि से अध्ययन किया जाता है कि व्यापारिक कार्यों मे उनका कितना और कैसा उपयोग हो सकता है। (हाइड्रोग्राफ़ी)

**जलवायु-विज्ञान**—पु०[स०] आधुनिक विज्ञान की वह शाखा जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि वायु-मडल मे होनेवाले परिवर्तनो का प्राणियों, वनस्पतियो आदि पर क्या और कैसा प्रभाव पड़ता है। (क्ल्याइमेटोलॉजी)

**जल-विज्ञान**—पु०[स०] वह विज्ञान जिसमे विशेषत: भूतल के नीचे के जल के गुणो, नियमों, प्रवाहो, विभाजनो आदि का विचार होता है। नैरिक्षेय। (हाइड्रोलॉजी)

**जल-विद्या**—स्त्री०[स०]=जल-विज्ञान।

**जल-बिद्युत्**—स्त्री०[स०]=पन-बिजली।

**जल-सह**—वि०[स०] (पदार्थ) जिस पर पानी का कोई प्रभाव न हो, जो पानी मे न भीग सकता हो अथवा जिसके तल के अन्दर पानी न पहुँच सकता हो। (वाटर-प्रूफ)

**विशेष**—प्राय कपडो आदि पर मोम, रबर आदि की तह जमाकर उन्हें जल-सह बनाया जाता है।

**जल-सेतु**—पु०[स०] बहुत दूर से पानी या और कोई तरल पदार्थ लाने के लिए बनाया हुआ वह बडा और लबा तल, जिसके नीचे जगह-जगह सहारे के लिए छोटे-छोटे खभे या पाये बनाये जाते हैं। सुरगी। सेतु-वाही।

**जल-स्थल चर**—पु०[स०]=उभय-चर।

**जल-स्थलीय**—वि०[स०]=उभय-चर।

**जलागार**—पु०[स० जल+आगार] वह स्थान जहाँ आवश्यक कार्यों के लिए यथेष्ट जल इकट्ठा करके या भरकर रखा जाता है। (वाटर-रिजर्वायर)

**जलावतरण**—पु०[स० जल+अवतरण] १ जल मे उतरने की क्रिया या भाव। २ जहाजो, नावों, आदि का बनकर तैयार होने पर अथवा मरम्मत के बाद स्थल से हटाकर जल मे उतारा या लाया जाना। (लॉन्चिग)

**जलूसा**—पु०[फा० जुलूस] १. किसी प्रकार के आधिक्य, वैभव, सभ्यता आदि का प्रदर्शन। २ उक्त का प्रदर्शित होनेवाला रूप।

**जलोढ़**—वि०[स०] जो नदियों आदि के प्रवाह के साथ बहकर आई हुई मिट्टी के योग से बना हो। पुलिनमय। (एल्यूवियल) जैसे—जलोढ़ क्षेत्र।

**जलोढ़क**—पु०[स०] वह क्षेत्र जो नदियो आदि के बहाव के साथ आई हुई मिट्टी, रेत आदि के योग से बना हो।

**जलोत्सव**—पु०[सं० जल+उत्सव]जलाशयो मे होनेवाला ऐसा उत्सव जिसमे तैराकी, नावो की दौड़ आदि क्रीड़ाएँ होती है। (रिगेटा)

**जहाजराज**—पु०[फा०] वह जो नदियो, समुद्रों आदि मे नावें या जहाज चलाने की कला या विद्या जानता हो या चलाता हो, नौचालक। (नेवीगेटर)

**जहाजरानी**—स्त्री०[फा०] नदियो, समुद्रो आदि में नावें या जहाज चलाने की कला या विद्या। नौचालन। (नेवीगेशन)

**जातिविकी**—स्त्री०[स० जातिवत् से]=प्राणि-विज्ञान।

**जाति-शोध**—पु०[स०] जाति-वध।

**जाति-वध**—पु०[स०] किसी देश मे बसनेवाली जाति का अत या नाश करने के लिए, उसके बहुत से लोगो का एक साथ ही होनेवाला वध या हत्या। (जेनोसाइड)

**जाया-जीवी**—प०[स०] वह जो अपनी पत्नी से व्यभिचार कराता और उसकी आय से अपनी जीविका चलाता हो।

**जावक**—वि०[हिं० जाना] १ बाहर या दूसरे स्थानों की ओर जानेवाला। जैसे—जावक डाक। २ उक्त प्रकार की चीजो से संबध रखनेवाला। 'आवक' का विपर्याय। (आउटवर्ड) जैसे—जावक धाड़ा।

स्त्री० १. दूसरे देशों या स्थानों को भेजा जानेवाला माल। निर्यात। (एक्सपोर्ट) जैसे—अब तो यहाँ से चने की भी जावक होने लगी है। (पश्चिम) 'आवक' का विपर्याय। २. वह पंजी या रजिस्टर जिसमें भेजी जानेवाली चिट्ठियों और चीजों का ब्योरा लिखा जाता है। (डिस्पैच रजिस्टर)

**जिब**—वि० जिसके पास किसी के तर्क का उत्तर न रह गया हो। निरुत्तर। जैसे—मेरी बात सुनकर वे जिब हो गये।

**जिप्सी**—वि०[स्त्री० जिप्सी]=जितना।

**जीप**—स्त्री०[अं०] चार पहियोंवाली एक प्रकार की छोटी मोटरगाड़ी, जो ऊबड़-खाबड़ जमीन में भी अच्छी तरह चलती है। (इसका प्रचलन पहले-पहल अमेरिका ने दूसरे महायुद्ध के युद्धक्षेत्रों में किया था।)

**जीव-द्रव्य**—पु०[स०]=जीव-धातु।

**जीवन-संगी**—वि०[स०] [स्त्री० जीवन-संगिनी] जो जीवन में बराबर साथ रहता हो।
पु० स्त्री का पति।

**जीवन-साथी**—पु०[स०]=जीवन-संगी।

**जीव-भौतिकी**—स्त्री०[स०] भौतिकी या भौतिक विज्ञान की वह शाखा जो मुख्यत. जीव-जन्तुओं और पेड़-पौधों के विवेचन से संबद्ध है। (बायोफ़िजिक्स)

**जीव-मंडल**—पु०[स०] वैज्ञानिक क्षेत्रों में, जल, स्थल, और आकाश का उतना अंश जिसमें कीड़े-मकोड़े, जीव-जंतु, वनस्पतियाँ आदि रहती तथा होती हैं। (बायोस्फीयर)

**जीव-रसायन**—पु०[स०] रसायन-शास्त्र की वह शाखा, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि जीव-जंतुओं और पेड़-पौधों के अंदर किस प्रकार की रासायनिक प्रक्रियाएँ होती हैं और उन प्रक्रियाओं का उनके जीवन-क्रम पर क्या प्रभाव पड़ता है। (बायोकेमिस्ट्री)

**जुग-बंदी**—स्त्री०=जुगलबंदी।

**जुगलबंदी**—स्त्री०[हिं० जुगल+फा० बंदी] संगीत में एक ही वर्ग के दो बाजों का साथ-साथ बजाया जाना। जैसे—तबले और पखावज की जुगल-बंदी, बाँसुरी या सरोज अथवा सारंगी की जुगलबंदी। (ड्यूएट)

**जुगोना**†—स० [हिं० जुगत] बचा और सँभाल कर रखना। जैसे—उसने कुछ रुपए अपने पास जुगो रखे थे।

**जूतम-जाता**—पु०=जूतम-जुत्ता।

**जूतम-जुत्ता**—पु०[हिं० जूता] आपस में जूतों से होनेवाली मारपीट।

**जूरी**—स्त्री०[हिं० जरना] १. घास, पत्तों आदि का एक बँधा हुआ छोटा पूला। जूही। जैसे—तमाकू की जूरी। २. सूरन आदि पौधों के नये कल्ले, जो बँधे हुए निकलते हैं। ३ एक प्रकार का पकवान, जो कई प्रकार के पत्तों को बेसन में लपेटकर घी या तेल में पकाया हुआ होता है। पतौड़ा। (पूरब) ४. काठियावाड़, गुजरात आदि की दलदल में होनेवाला एक पौधा, जिसमें से क्षार निकाला जाता है।
पु०[अं० ज्यूरी]=ज्यूरी।

**जेट**—पुं०[अं०] एक प्रकार का हवाई जहाज, जो धूआँ और हवा बहुत तेजी से पीछे की ओर फेंकता हुआ और उसी के बल से आगे बढ़ता हुआ चलता है।

**जेतो**†—वि०[स्त्री० जेती]=जितना।

**जैजात**†—स्त्री०=जायदाद (संपत्ति)।

**जैव विष**—पु०[स०] अनेक प्रकार के कीटाणुओं के कारण उत्पन्न होने-वाला वह विष, जिससे शरीर में अनेक प्रकार के रोग होते हैं। (टॉक्सिन)

**जोर-जबरदस्ती**—स्त्री०=बल-प्रयोग।

**जौनपुरी**—वि०[जौनपुर, उत्तर प्रदेश का एक नगर] जौनपुर नगर संबंधी। जौनपुर का। जैसे—जौनपुरी खरबूजा।

**ज्ञापन**—भू० कृ०[स०] जापित, ज्ञप्त] जानने की क्रिया या भाव।

**ज्ञप्त**—भू० कृ०[स०]=ज्ञापित।

**ज्ञापन-पत्र**—पु०[स०] १ किसी संस्था आदि के मुख्य-मुख्य नियमों आदि की पुस्तिका। २ वह पत्र या पुस्तिका, जिसमें किसी विषय की मुख्य बातें लोगों को जतलाने के उद्देश्य से लिखी गई हों। ३. वह पत्र या लेख, जो किसी विषय को स्पष्ट करने के लिए स्मारक के रूप में लिखा गया हो। जैसे—किसी सभा, मंडली आदि के उद्देश्यों और व्यवस्था से संबंध रखनेवाला पत्र या पुस्तिका। (मेमोरैण्डम)

**ज्यूरी**—पु०[अं०] १ विधिक क्षेत्र में, जन-साधारण में से चुने हुए वे लोग, जो कुछ विशिष्ट फौजदारी अभियोगों में न्यायाधीश के साथ बैठकर गवाहियाँ आदि सुनते और न्यायालय को अभियुक्त के दोषी अथवा निर्दोष होने के संबंध में अपना मत देते हैं। २ वे चुने हुए विशेषज्ञ लोग, जो मेलों आदि में हार-जीत का निर्णय करते और विजयी के लिए पुरस्कार आदि का निर्णय करते हैं।

**ज्वालामुख**—पु०[स०] ज्वालामुखी पर्वत के शिखर पर का गड्ढा, जिसके पेंदेवाले बिवर में से ज्वाला और गले हुए पत्थर निकलकर ऊपर उठते हैं। (क्रेटर)

**ज्वालामुख झील**—स्त्री० [सं० ज्वालामुख+झील] किसी मृत या चिर-शांत ज्वालामुखी पर्वत के ऊपरी भाग या मुख में बना हुआ वह जला-शय, जो वर्षा आदि का जल इकट्ठा होने से बनता है। (क्रेटर लेक)

**ज्वालामुखी**—वि०[स० ज्वालामुखिन्] १. जिसके मुख में ज्वाला हो। २ जिसके मुख से ज्वाला निकलती हो। जैसे—ज्वालामुखी पर्वत।

**झँझोड़ी**—स्त्री०[हिं० झँझोड़ना] झँझोड़ने की क्रिया या भाव। जैसे—मैंने उन्हें खूब झँझोड़ियाँ दीं, अर्थात् खूब झँझोड़ा।
क्रि० प्र०—देना।

**झटकाई**†—पु०[हिं० झटका] वह जो झटके की रीति से पशुओं का वध करके उनका मांस बेचता या लाता हो।

**झड़प**—स्त्री० ३. परस्पर विरोधी सेनाओं की टुकड़ियों में अकस्मात् सामना होने पर कुछ समय तक चलनेवाली छोटी-मोटी लड़ाई। (स्कर्मिश)

**झड़ूस**—पु०[हिं० झाड़] १. जिस पर झाड़ की मार पड़ती हो, या पड़ी हो २. बहुत ही घृणित और निकृष्ट। उदा०—आग लगे उस मुख झड़ूस की सूरत को।—चौकत थानवी।

**झलकी**—स्त्री० ३. किसी बड़ी घटना के संबंध की विशेष महत्त्वपूर्ण या मुख्य बात या दृश्य का विवरण। (हाईलाइट) जैसे—कांग्रेस अथवा संसद के अधिवेशन की झलकियाँ।

**झाँकी**—स्त्री० ७. किसी बड़े कार्य या घटना का वह छोटा अनुकरणात्मक दृश्य, जो उसका वास्तविक रूप दिखलाने के लिए आकर्षक और सुन्दर

रूप में प्रस्तुत किया गया हो ; और जो देखने में प्रायः अचल या स्थिर जान पड़ता हो। (हेलो)

**झाड़ी-बन**—पुं० [हिं०+स०] भूमध्य सागर के आस-पास के प्रदेशों में पाया जानेवाला छोटी-छोटी वनस्पतियों या झाड़ियों का बना समूह। (चैपरेल)

**झुग्गा**—पुं० [?] [स्त्री० अल्पा० झुग्गी] १ झोपड़ा। २. दे० 'झब्बा'

**झुलझुला**—पुं० २ जन्मोत्सव के समय गाये जानेवाले वे गीत, जिनमे संबंधियों के द्वारा शिशु के हाथ मे झुनझुना देकर उसे खिलाने का उल्लेख होता है।

**झूंगा**†—पु०=झँगा (घाल या घलआ)।

**झूलना पुल**†—पु०=झूला पुल।

**झूला पुल**—पु० [हिं० झूला+फा० पुल] जगली या पहाड़ी नदियों और नाले पार करने के लिए, उनके दोनों किनारो पर ऊँचे खभो. चटानों या पेड़ो की डालों पर रस्से बाँध कर बनाया जानेवाला वह पुल, जिसका बीचवाला भाग अधर मे लटकता और इधर-उधर झूलता रहता है।

**झेरन**†—स्त्री० [देश०] झोबरा नाम की घास।

**टंकी जहाज**—पु० [हिं० टकी+फा० जहाज] एक प्रकार का बडा समुद्री जहाज, जिसमें पेट्रोल, मिट्टी का तेल आदि ढोने के लिए बहुत सी बड़ी-बड़ी टंकियाँ बनी होती है । (टकर)

**टकराव**—पु० [हिं० टकराना] १. टकराने की क्रिया, भाव या स्थिति। २. टक्कर ।

**टपका**—पु० ५ कुछ बँधी हुई और विशिष्ट प्रकार की प्रक्रियाओं से भोले-भाले लोगों को मूर्ख बनाकर उन्हें ठगने की कला या विद्या। ६ दे० 'टपक'।

**टपके बाज**—पु० [हिं० टपका+फा० बाज] [भाव० टपकेबाजी] वह ठग या धूर्त जो भोलेभाले आदमियों को चकमा देकर उनसे धन वसूल करके गायब हो जाता हो। (चीट)

**टपकेबाजी**—स्त्री० [हिं०टपका+फा० बाजी] टपकेबाज का काम या पेशा। (चीटिंग)

**टर्प्पत**—वि० [हिं०टप्पा+एत (प्रत्य०)] टप्पा गाने मे कुशल और प्रवीण, जैसे—टर्प्पत गला, टर्प्पत गवैया।

**टाइपकारी**—स्त्री० [अ०+हिं०] टाइप मशीन के द्वारा छापने की कला, क्रिया या भाव। (टाइप-राइटिंग)

**टाइप मशीन**—पु० [अ०] आज-कल छापे की एक प्रकार की छोटी कल, जिसमे अलग-अलग पत्तियों पर अक्षर खुदे होते है ; और उन पत्तियो को जोर से दबाने पर वे अक्षर ऊपर लगे हुए कागज पर छपते चलते हैं। इससे प्राय. चिट्ठियाँ, छोटे लेख आदि छापे जाते हैं। (टाइप राइटर)

**टिंडी**—स्त्री० ३ हाथ मे, कधे से नीचे और कोहनी से ऊपर का भाग। मुश्क। जैसे—उनकी टिंडिया कसी हुई थी ; अर्थात् मुश्क बँधी हुई थी।

**टिप्पणी**—स्त्री० ६. किसी घटना, बात या व्यक्ति के संबंध में बहुत ही सक्षेप में प्रकट किया जानेवाला मत या विचार। उप-कथन। (रिमार्क)

**टिल्ली**†—स्त्री० [अनु०] खोपड़ी या चाँद पर लगाई जानेवाली हलकी चपत। (लक्षनक)

**टीकाकार**—पु० [हिं० टीका= रोग निवारक रस+ स० कार] आज-कल वह कर्मचारी जो चेचक, हैजे आदि महामारियों की रोक-थाम करने के लिए लोगो को टीके लगाता हो। (वैक्सिनेटर)

**टुकड़ा**—पु० ५ गाने-बजाने मे कुछ विशिष्ट प्रकार के बोलों का वह समूह, जो बीच-बीच मे अलकरण के लिए जोड़ा या लगाया जाता है।

**टुकड़ी**—स्त्री० ६ निपाहियो, सैनिको आदि का छोटा दल या वर्ग, जो व्यवस्थित रूप मे कोई कार्य करने के लिए नियुक्त किया गया हो। दस्ता। (कॉलम)

**टूटदार**—वि० [हिं० टूटना : फा० प्रत्य० दार] कोई ऐसी कडी और बड़ी चीज (जिसकी रचना ऐसी युक्ति से हुई हो कि बीच में कही से या कई स्थानो पर टूट या मुड़कर छोटे टुकडों के रूप मे आ सके और फलतः अपेक्षया कम स्थान घेरे। टूटदाँ। (फोल्डिंग) जैसे—टूटदार कुर्सी। खिडकी या दरवाजे का टूटदार परदा, टूटदार मेज आदि।

**टूटदाँ**†—वि०= टूटदार। (दे०)

**टोका-टाकी**—स्त्री० [हिं० टोकना +अनु०] किसी के कोई काम करते रहने की दशा मे उसे बीच मे टोकने या टोकते रहने की क्रिया या भाव। (इन्टरप्शन)

**टोकाटोकी**†—स्त्री०=टोका-टाकी।

**टोहक**—वि० [हिं० टोह+क (प्रत्य०)] टोह अर्थात् थाह लेने या पता लगानेवाला।

**टौढेक**†—वि० [देश०] जो सभी दृष्टि से अच्छी और ठीक दशा मे हो। (थाजाक) जैसे—टौढेक मकान।

**ठंडा गोदाम**—पु० [हिं०]=शीतल भडार।

**ठगहारा**†—पु० [स्त्री० ठगहारी]=ठग।

**ठमका**—वि० [हिं० ठमकना] [स्त्री० ठमकी] कम ऊँचाईवाला। नाटा। उदा०—उनकी देह दोहरी और कद ठमका था।—अमृतलाल नागर।

**ठुस**—वि० [हिं० ठुसकी] बहुत ही घटिया, निकम्मा या हलके दरजे का। मलाव—पु० [हिं० डालना] वह स्थान जहाँ कूटा-करकट डाला अर्थात् फेंका जाता है। कूड़ाखाना। घूरा।

**ठहरा**†—पु० [?] लोहे का वह तसला, जिससे मल्लाह नाव के अदर आया हुआ पानी बाहर फेंकते है।

**डाक पाल**—पु० [हिं० डाक+स० पाल] डाक-खाने का वह प्रधान अधिकारी जो वहाँ के सब कामो की देखरेख करता है। (पोस्ट मास्टर)

**डिंडित्व**—पु० [सं०] गुडापन।

**डिंडी**—पु० [स०डिण्डिन्] गुडा और बदमाश।

**डिंभ**—पु० ३. कीडे-मकोडो का वह आरभिक रूप, जो उन्हे अंडे से निकलने पर प्राप्त होता है और जिसमे कुछ दिनो तक रहने के उपरान्त उनके पख, पैर आदि विकसित होते है। (लार्वा)

**डिडिया**—स्त्री० [?] कौडी। (मुहा०)

**डेढ़-खुभा**—वि० [हिं० डेढ+फा० खुभ] जिसमे एक अंग पूरा सीधा हो और दूसरा आधा टेढ़ा। जैसे—डेढ़-खुभा हुक्का।

**डेरेदार**—स्त्री० [हिं० डेरा+फा० दार (प्रत्य०)] वह वेश्या, जो किसी नगर मे डेरा या मकान लेकर स्थायी रूप से रहती और नाचने-गाने का पेशा करती हो। ('पोडचढ़ी' से भिन्न)

**डेल्टा**—पु० [अ०] नदी के मुहाने पर का वह स्थान, जहाँ नदी के स्रोत

बहकर आई हुई मिट्टी और रेत के कारण छोटे-छोटे तिकोने भू-खंड बन जाते हैं।

**डोंचा**†—पुं० [हिं० डुबाना] कपड़ों आदि की सिलाई में पड़नेवाला टाँका।

**डोंबरी**—स्त्री० [देश०] वनस्पतियों आदि का अंकुर।
†पुं०=डोंच (सिलाई का टाँका)।

**डोरीला**—वि० [हिं० डोरा] [स्त्री० डोरीली] (नेत्र) जिसमें डोरे पड़े हों। डोरेदार (आँख)। उदा०—बड़ी-बड़ी डोरीली करुण आँखें।—उच्च।

**ढलवाँ लोहा**—पुं० दे० 'कच्चा लोहा'।

**ढिक्कू**†—पु०[?] भारतीय आदिवासियों की दृष्टि में वे भारतीय जो उनकी तरह आदिवासी नहीं होते।

**ढीली**†—स्त्री०[हिं० ढीला] आधुनिक दिल्ली का पुराना नाम। (राज०)

**ढुलमुल-यकीन**—वि०[हिं०+अ० ] भाव० ढुलमुल-यकीनी] जो बिना सोचे-समझे सहज में दूसरों की बातों पर विश्वास करके प्राय अपनी धारणाएँ बदलता रहता हो।

**ढोरचोर**—पु० दे० 'गोरू-चोर'।

त

**तंत्रिका**—स्त्री० ३ प्राणियों के सारे शरीर में जाल के रूप में फैली हुई बहुत ही सूक्ष्म नसों में से प्रत्येक नस। (नर्स)

**तंत्रिका-तंत्र**—पु० [सं०] शरीर के अंदर की समस्त तंत्रिकाओंओं र उनकी कोशिकाओं तथा तंतुओं का सारा समूह जिससे उनमें चेतना या ज्ञान के अतिरिक्त सब प्रकार की अनभूतियाँ, क्रियाएँ तथा शारीरिक व्यवहार या व्यापार होते हैं। (नर्वस सिस्टम)

**तंद्रा**—स्त्री० ३ किसी जीव या तत्त्व की वह स्थिति, जिसमें उसकी सब क्रियाएँ और चेष्टाएँ कुछ समय तक बिलकुल बंद या स्थगित रहती हैं। प्रसुप्ति। (डॉर्मेंसी)

**तकनीक**—पु० [अ० टेकनीक] वे सब विशिष्ट क्रियाएँ, जो कोई कार्य करने अथवा कोई वस्तु प्रस्तुत करने में की जाती हैं। प्रविधि। (टेकनीक)

**तकनीकी**—वि०[अं० टेकनीक] तकनीक के रूप में होने या उससे संबंध रखने वाला। प्राविधिक। (टेकनिकल)

**तट-कर**—पुं०[सं०] वह कर जो किसी राज्य की ओर से देश के आयात और निर्यात पर समुद्री बंदरगाहों आदि पर लिया जाता है। (ड्यूटी)

**तट-बंध**—पु०[स०] किसी नदी के किनारे कुछ दूर बनाया जानेवाला वह बाँध, जो बाढ़ से उस किनारे के खेतों, बस्तियों आदि की रक्षा करता हो। (एम्बैंकमेन्ट)

**तट-रक्षक**—पुं०[सं०] उन कर्मचारियों का दल, जो सरकार की ओर से समुद्र-तट पर अवैध आयात रोकने, संकट में पड़े हुए जहाजों की सहायता करने आदि के लिए नियत रहता है। (कोस्ट गार्ड)

**तड़ित-संवाहक**—पुं०[सं०] दे० 'वज्र-धारक'।

**तत्काल-गणक**—पुं०[सं०]=मुहूर्त-गणक।

**तत्त्व-मीमांसा**—स्त्री०[सं०] दर्शन-शास्त्र की वह शाखा, जिसमें परम तत्त्व अर्थात् सृष्टि की उत्पत्ति, वास्तविकता और सत्ता के स्वरूप का विवेचन होता है। (मेटाफ़ीज़िक्स)

**तथाकथन**—पुं०[सं०] किसी प्रसंग में दूसरे की कही हुई बात ज्यों की त्यों उद्धृत करना या कह सुनाना। (रिप्रोडक्शन)

**तथ्य-वाद पद**—पु० [स०] ऐसा वाद-पद या विचारणीय विषय, जिसका संबंध तथ्यों अर्थात् वास्तविक घटनाओं से हो। विधि वाद पद से भिन्न। (इशू ऑफ़ फ़ैक्ट)

**तदात्मिक**—वि०[स०] बीता हुआ। गत। 'आवर्तिक' का विपर्याय।

**तदात्म्य**—वि०[स०] [भाव० तादात्म्य] जो आकार, रूप आदि में किसी के ठीक अनुरूप या समान हो।

**तद्रूपता**—स्त्री० २. आकार, रूप आदि में किसी के ठीक समान होने की अवस्था, गुण या भाव। तादात्म्य। (आइडेन्टिटी)

**तनहारा**—पु०[हिं० तानी+हारा (प्रत्य०)] जुलाहों में वह कारीगर जो बुने जानेवाले कपड़ों के लिए तानी तैयार करता है।

**तनाव**—पु० ३. तनने या ताने जाने के फलस्वरूप पड़नेवाला खिंचाव। (टेन्शन)

**तनावर**—वि०[फा०] बड़े डील-डौल वाला। जैसे—तनावर जवान, तनावर पेड़।

**तनु-कीर्ति**—स्त्री०[स०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**तन्मयता**—स्त्री० २ वह मानसिक स्थिति, जो किसी विषय पर बिलकुल एकाग्र भाव से अधिक समय तक चिंतन करते रहने से प्राप्त होती है और जिसमें उसकी अंतश्चेतना तो बनी रहती है; परन्तु बाह्य जगत् की सुध-बुध प्रायः नहीं रह जाती। किसी विषय में होनेवाली मन की परम एकाग्रता या लीनता। (ट्रान्स) जैसे—जब वे ईश्वर के चिंतन या भजन में पूर्ण रूप से लीन हो जाते थे, तब उनकी तन्मयता बहुत ही दर्शनीय और प्रभावोत्पादक होती थी।

**तपतीक्ष**—स्त्री०[अ०]=तफतीश। जाँच-पड़ताल।

**तबला-सरंगा**—पु०[हिं०+स०] ऐसे सात तबले (डग्गियाँ या बाएँ नहीं) जो अलग-अलग स्वरों में मिलाए हुए होते हैं और जिन पर बारी-बारी से आघात करके संगीतात्मक स्वर निकाले जाते हैं।

**तमावरण**—पु०[स० तम+आवरण] १. वह स्थिति, जिसमें शत्रुओं के आक्रमण, विशेषत. हवाई आक्रमण से रक्षित रहने के लिए रोशनी या तो बुझा दी जाती है, या चारों ओर से इस प्रकार ढक ली जाती है कि उसका प्रकाश बाहर न फैलने पाये। २ लाक्षणिक रूप से, वह स्थिति जिसमें कोई घटना या बात जानबूझकर इसलिए छिपाई जाती है कि वह चारों ओर फैलने न पाये। (ब्लैक-आउट)

**तरही**—वि०[अ०] उर्दू कविता में, तरह (पंक्ति के लिए स्थिर किया हुआ पद) से संबंध रखनेवाला। जैसे—तरही मुशायरा =ऐसा मुशायरा, जिसमें पहले से स्थिर की हुई तरह पर गजलें पढ़ी जाती हैं।

**तरीकात**—स्त्री०[अ०]इस्लाम धर्म में,विशेषत.सूफी सम्प्रदाय में,परमात्मा तक पहुँचने और धार्मिक ज्ञान प्राप्त करने के लिए चार स्थितियों में से दूसरी स्थिति, जिसमें साधक के लिए किसी को अपना गुरु या पीर बनाना पड़ता है।
**विशेष**—तीन स्थितियाँ शरीअत, मारफत और हकीकत कहलाती हैं।

**तरौंवा**—पु०[हिं० तरना+औवा (प्रत्य०)] विभिन्न आकार-प्रकार वाले वे पीपे, जो बाँधकर इसलिए समुद्र तल पर तैराये जाते हैं कि आने-जाने वाले जहाजों को मार्ग के संकटों और सुविधाओं की सूचना मिलती रहे। (ब्वॉय)

**तर्कनावाद**—पुं०[सं०] आज-कल यह मत या सिद्धान्त कि धार्मिक आदि

विषयो मे वही बाते मानी जानी चाहिए, जो बुद्धि और युक्ति की दृष्टि से ठीक सिद्ध हों। (रैशनलिज्म)

**तर्कनावादी**—वि० [स०] तर्कनावाद-संबंधी। तर्कनावाद का। पुं० वह जो तर्कनावाद का अनुयायी या पोषक हो। (रैशनलिस्ट)

**तर्कबुद्धिवाद**—पु० [स०]=तर्कनावाद।

**तल-घर**—पु० [स० तल+हिं० घर] १. जमीन के नीचे बनाया हुआ कोई कमरा या घर। तहखाना। २. समुद्री जहाजो मे नीचे की ओर बना हुआ वह कमरा, जिसमें इजन चलाने के लिए कोयला भरा रहता है। (बकर)

**तल-घात**—पु० [स०] करतलो के आघात से ध्वनि उत्पन्न करना। ताली बजाना।

**तल-चौकी**—स्त्री० [स०+हिं०] युद्धक्षेत्र मे, जमीन के अन्दर की वह गहरी और बडी खाई, जिसमे सैनिक लोग कई-कई सप्ताह तक प्राय स्थायी रूप से रहते हैं। दमदमा। (बकर)

**तल-टीप**—स्त्री० [स०+हिं०] लेखों आदि के नीचे लगाई जानेवाली पाद-टिप्पणी। (फ़ुटनोट)

**तलेंदू**†—वि० [हिं० तले=नीचे] (बच्चा) जो किसी बच्चे के तले अर्थात् ठीक बाद मे जन्मा हो। उदा०—मुआ दरवान का लडका, तलेंदू मझले भाई था।—इन्शा।

**तलोच्छेदन**—पु० [स० तल+उच्छेदन] [भू० कृ० तलोच्छेदित] किसी काम, चीज या बात के आधार या मूल पर ऐसा आघात या प्रहार करना, जिससे वह नष्ट-भ्रष्ट या निरर्थक हो सकता हो। (अडर-माइनिंग)

**तसदीक**—स्त्री० ५ विधिक क्षेत्र मे, शपथपूर्वक या हस्ताक्षर करके यह प्रमाणित करना कि अमुक कथन या लेख ठीक और सत्य है। (एफ़ेडेविट)

**तस्कर**—वि० [स०] जो राजकीय नियमो का उल्लघन करके चोरी से या छिपाकर किया जाता हो। जैसे—सोने का तस्कर व्यापार। २. (माल या सामान) जिसका आयात या निर्यात राज्य द्वारा वर्जित होने पर भी चुरा-छिपाकर लाया या ले जाया जानेवाला।

**तस्कर व्यापार**—पु० [सं०] सरकारकी चोरी से किया जानेवाला ऐसी चीजो का व्यापार, जिन्हें देश मे बाहर से लाना निषिद्ध या वर्जित हो अथवा देश के एक भाग से दूसरे भाग में लाने-ले जाने आदि की मनाही हो। चौकीमारी। (स्मगलिंग)

**तस्कर व्यापारी**—पु० [स०] वह जो तस्कर-व्यापार करता हो। चौकीमार। (स्मग्लर)

**तस्करी**—स्त्री० [स० तस्कर+हिं० ई (प्रत्य०)] १. चोर का काम। चोरी। २. आज-कल राज्य द्वारा निषिद्ध या वर्जित चीजें बाहर से लाकर देश मे बेचने की क्रिया या भाव। चौकीमारी। (स्मगलिंग)

**तहतक**†—स्त्री०=तहतुक।

**तहतुक**—स्त्री० [अ०] आपस में होनेवाली साधारण कहा-सुनी या जबानी झगड़ा। तूतू-मैं मैं।

**तहमद**†—स्त्री०=तहमत।

**तांत्रिक मत**—पुं० [स०] कोई ऐसा मत, जिसमें तंत्र-शास्त्र या तांत्रिक सिद्धातों को ही लौकिक तथा पारलौकिक उद्देश्यों की प्राप्ति और सिद्धि का मूल साधन माना गया हो। दे० 'तंत्र'।

**विशेष**—इस मत का प्रारभ ई० ६०० के लगभग भारत मे आरभ हुआ था और कुछ ही शताब्दियों मे बौद्ध धर्म के द्वारा चीन, तिब्बत, बरमा, आदि दूर-दूर के देशों मे भी इसका बहुत कुछ प्रचार हो गया था। इसके अतर्गत अनेक प्रकार के मत-मतांतर तथा शाखा-प्रशाखाएँ भी विकसित हुई थी। फिर भी इन सब मे मुख्य एकता यही थी कि तात्रिक साधना मात्र को प्रधानता प्राप्त थी। इसमें बीज मत्रों के जप, भूत-प्रेत आदि की साधना तथा हठयोग की अनेक क्रियाएँ भी सम्मिलित हो गई थी। पर अब धीरे-धीरे इसका प्रचार कम होता जा रहा है।

**तांत्रिक**—वि०=तात्रव।

**ताका**—पु० [अ० ताक] कपड़े का वह थान, जो दफ्ती पर दोनो ओर घुमाकर लपेटा हुआ हो। जैसे—गलमल का ताका, साटन का ताका।

**विशेष**—थान बनाने का यह प्रकार नगरी तहवाले थान से अलग प्रकार का होता है।

**ताड़**—स्त्री० [हिं० ताडना] ताडने (अर्थात् दूर से देखकर जानने या भाँपने) की क्रिया या भाव। उदा०—हम से क्या उड सके कोई प्यारी। लाख ताडो मे अपनी ताड है एक।—इन्शा।

**तात्कालिक**—वि० ३ (काम) जिसे तत्काल या तुरत पूरा करना आवश्यक हो। तुरती। सद्यस्क। (अर्जेन्ट)

**तादात्म्य**—पु० २ आकार, गुण, रूप आदि मे किसी के ठीक अनुरूप या समान होने की अवस्था, गुण या भाव। तद्रूपता। (आइडेंटिटी)

**तान पलटा**—पु० [हिं०] सगीत मे वह स्थिति जिसमे बडी या लबी तानें भी होती है, और कुछ विशिष्ट प्रकार से तानो के ऊँचे स्वरों से पलटकर नीचे स्वरों पर भी आते है।

क्रि० प्र०—लेना।

**तानिका-शोध**—पु० [स०]=मन्यास्तभ।

**ताप बिजली**—स्त्री० [स० ताप+हिं० बिजली] वह बिजली, जो आज-कल अल्प मात्रा मे रासायनिक पदार्थों के योग से बैटरियो के द्वारा और प्रचुर मात्रा मे बडे-बडे इजनों मे कोयला आदि जलाकर तैयार की जाती है। 'जल बिजली' या 'पन बिजली से भिन्न। (थर्मल इलेक्ट्रिसिटी)

**ताप-विद्युत्**—स्त्री० [स०]=ताप बिजली।

**ताप-सह**—वि० [सं०] (पदार्थ) जिसमे बहुत अधिक ताप सहने की असाधारण क्षमता हो। (हीट-प्रूफ़)

**तापावरोधक**—पु० २ ताप का प्रभाव पडने पर भी चीजों को गलने से रोकनेवाला। गलन-रोधी। (रिफ़्रैक्टरी)

**तापीय**—वि० २ ताप के द्वारा उत्पन्न होनेवाला। (थर्मल)

**ताम्रद्रिव**—पु० [स०] एक प्राचीन भारतीय जाति, जो किसी समय आधुनिक उत्तर प्रदेश और बिहार के क्षेत्रो मे बसती और प्राय: ताँबे के अस्त्र-शस्त्रो का प्रयोग करती थी। (सभवत: असुर, नाग और निषाद इसी की शाखाओ के रूप मे थे।)

**तारकाभ**—पु० [स०]=क्षुद्र-ग्रह।

**तार्किकीकरण**—पु० [स०] आधुनिक मनोविज्ञान में, अपनी व्युत्पत्तियों, वृत्तियों, दोषो आदि को उचित और तर्कसगत सिद्ध करने के लिए झूठ-मूठ व्यर्थ के और कारण ढूँढते फिरना और उनके आधार पर अपने

आपको निर्दोष सिद्ध करना। व्यर्थ के तर्कों और हेतुओं के आधार पर अपना दोष छिपाना। जैसे—नाचना न आने पर यह कहना कि यहाँ कि जमीन ही ऊँची-नीची या ऊबड़-खाबड है।

**तालबद्ध**—वि० [स०] (संगीत का वह अंग या रूप) जो ताल के नियमों से बँधा हुआ हो; और इसी लिए जिसके साथ तबला, मृदंग आदि बाजे बजते हों।

**ताल-मेल**—पु०अ. कामो, बातो आदि मे होनेवाली एक-सूत्रता या सामंजस्य। समन्वय। (कोआर्डिनेशन)

**तास-घड़ियाल**—पु० [अ० तास=थाल+हिं० घड़ियाल] मध्ययुग मे, एक प्रकार का समय सूचक-यत्र, जिसमे समयो पर घडियाल या घटा भी बजता था।

**विशेष**—कहते हैं कि इसका आविष्कार सुलतान फिरोजशाह ने थट्टा के युद्ध के बाद (सन् १३६२–१३६३ ई०) इसलिए किया था कि बादलो या रात के समय भी नमाज पढनेवालो को इस घडियाल या घटे का शब्द सुनकर यह पता चल जाय कि नमाज पढने का समय हो गया है। जायसी ने इसी को राज-घडियाल (देखें) कहा है।

**तित्ता**†—वि० [स्त्री० तित्ती] =तता।

†वि० [स्त्री० तित्ती]=तीता (तिक्त)।

**तिमाही**—वि० [हिं० तीन+फा० माह=मास] हर तीसरे महीने होनेवाला। त्रैमासिक। (क्वार्टर्ली)

पु० किसी वर्ष के तीन महीनो का समूह। वर्ष का चौथाई भाग। (क्वार्टर)।

**तिमिर-चित्र**—पु० दे० 'छाया-चित्र'।

**तिहाजू**—पु०[हिं० हाजू का अनु०] वह पुरुष, जिसकी दो विवाहिता स्त्रियाँ मर चुकी हों और जो फिर तीसरी बार विवाह कर रहा हो अथवा जिसने तीसरा विवाह किया हो।

**तीया**†—पु० [हिं० तीन] १ मुसलमानों मे किसी की मृत्यु के बाद आनेवाला तीसरा दिन। तीजा। २ ताश मे तिड़ी नाम का पत्ता, जिस पर तीन बूटियाँ होती हैं। ३. ढोल, तबले आदि बजाने मे किसी बोल की तीन बार होनेवाली वह आवृत्ति, जिसकी समाप्ति सम पर होती है। तिहाँया।

**तुंगता**—स्त्री० [स०] १ तुग होने की अवस्था, गुण या भाव। २ आजकल मुख्य रूप से पृथ्वी-तल अथवा समुद्र-तल से सीधे ऊपर की ओर होनेवाली ऊँचाई। (ऐल्टीच्यूड) जैसे—वह स्थान ४००० फुट की तुगता पर स्थित है।

**तुंगता-मापी**—पु०[सं० तुगतामापिन्] एक प्रकार का यंत्र, जिससे पर्वतों अथवा उडते हुए वायुयानों पर चढे हुए लोग यह पता लगाते हैं कि हम इस समय पृथ्वी-तल से कितनी ऊँचाई पर हैं। (ऐल्टीमीटर)

**तुरंती**—वि० [हिं० तुरत] (आज्ञा या कार्य) जिसका पालन या सपादन तुरत अथवा तत्काल किया जाना आवश्यक हो। सद्यस्क। (अर्जेन्ट)

**तुलन-पत्र**—पु०[सं०] व्यापारिक, सार्वजनिक सस्थाओं आदि के आय-व्यय का वह लेखा, जिसमे किसी निश्चित समय के अंत तक का यह विवरण रहता है कि किन-किन मदों मे कितनी आय और कितना व्यय हुआ; तथा अन्त में देने या पावने के खाते में कितना धन शेष है। (बैलेन्स शीट)

**तुल्यांक**—पुं०[स० तुल्य+अंक] दो या अधिक वस्तुओं की मात्रा, मान आदि के परस्पर समान होने की अवस्था, गुण या भाव। (इक्विवेलेन्ट)

**तुषार-दंश**—पु०[स०] बहुत अधिक सरदी पडने पर और शरीर पर तुषार के कण लगने के कारण शरीर के किसी अंग मे होनेवाला क्षत या सूजन। हिम-दंश। (फ्रॉस्ट-बाइट)

**तूतमलंगा**—पु०[?] १ एक प्रकार की वनस्पति। २ उक्त वनस्पति के बीज जो औषध के काम आते हैं।

**तूफान**—पु०४ आज-कल वैज्ञानिक क्षेत्र में वह वायु, जो ६५ से ७५ मील प्रति घंटे की तेजी से चलती हो। (स्टॉर्म)

**तेल-कूप**—पु०[हिं० तेल+स० कूप] जमीन के अन्दर खुदा हुआ वह बहुत गहरा और बडा गड्ढा, जिसमे पेट्रोल, मिट्टी का तेल आदि खनिज तेल निकलते है। तैल-कूप। (ऑयल वेल)

**तेल-पोत**—पु०[हिं० तेल+स० पोत]=टकी जहाज।

**तेल-कुप**—पु०[स०]=तेल-कूप।

**तोड़-फोड़**—स्त्री० कोई ऐसा काम करना, जिससे उत्पादन, प्रबध शासन आदि मे बहुत गडबडी या बाधा हो। अंतर्ध्वंस। (सैबोटेज)

**तोप-गाड़ी**—स्त्री०[हिं०] वह गाडी, जिस पर तोप रखकर युद्ध-क्षेत्र मे एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाते हैं। अगवा। (गन कैरेज)

**तोप-वाहिनी**—स्त्री०=ताप-गाडी।

**तोलवाँ**—वि०[हिं० तोल या तौल] जो इतना उपयक्त और ठीक हो कि मानो तौल (या नाप) कर बनाया गया हो। जैसे—सभी लडकियाँ तोलवाँ जोडे पहने थी। (लखनऊ)

**त्रिभाजन**—पु०[स०] [भू० कृ० त्रिभाजित] तीन खंडों या भागों में बाँटना। तीन टुकडे करना।

**त्रिविम**—वि०[स० त्रि+विमा] तीन विमाओंवाला। जिसमें तीन विमाएँ हो। (थ्री डाइमेन्शनल)

**त्वक्क्षति**—स्त्री० [स०] छूतवाले रोगो के सक्रमण के कारण शरीर की त्वचा मे होनेवाली जलन या प्रदाह।

**त्वरित**—भू० कृ०[स०] जिसकी चाल तेज की गई हो। (एक्सेलरेटेड)

क्रि० वि० जल्दी या तेजी से। शीघ्रतापूर्वक।

**थाला**—पु०३ वह सारा क्षेत्र, जिसमे किसी नदी और उसकी शाखाओं के जल से सिंचाई होती हो। द्रोणी। (बेसिन)

**दंतकारी**—स्त्री०[स० दतकार+ई (प्रत्य०)] दतकार का काम, पद या भाव। दातकी। (डेन्टिस्ट्री)

**दफ्तरशाही**—पु०[स०] (सरकारी या गैर सरकारी) नौकरी मे वेतन वृद्धि के मार्ग मे आनेवाली वह बाधा, जो आवश्यक योग्यता या निपुणता के अभाव से उत्पन्न होती है। (एफिशिएन्सी बार)

**दड़ा**†—पु०[?] छोटे नगरो मे होनेवाली वह सट्टेबाजी, जो बडे नगरों के सट्टेबाजो के अनुकरण और उन्ही के बाजार भाव के अनुसार होती है।

**दद्दा**†—पु०=दादा (बड़ा भाई)। (बुदेल०)

**दफ्तरशाही**—स्त्री०[फा०]=नौकरशाही।

**दमदमा**—पु० ३ युद्ध-क्षेत्र मे सैनिक रक्षा के लिए जमीन के नीचे खोदी हुई गहरी और लबी खाई, जिसमे सैनिक कई-कई सप्ताह तक स्थायी रूप से रहते हैं और जिसे आज-कल तप-चौकी कहते हैं। (बकर)

**दर**—स्त्री० [हिं०] ३. वह नियत मात्रा, या मान जो किसी काम या बात

के अनुपातके विचार से निश्चित किया जाता हो। (रेट) जैसे—भत्ते या वेतन की दर योग्यता के अनुसार निश्चित होती है।

**दरजाबंदी**—स्त्री० [फा०] आदमियों, चीजों आदि को अलग-अलग दर्जों में बाँटने की क्रिया या भाव। अनुपातन। श्रेणीकरण। (ग्रेडिंग)

**दरजे**—अव्य० [फा० दर्ज] अवस्था या दशा में। उदा०—एक दरजे मर्द को घर मे बुला ले, पर ऐसी औरतो को न बुलावे।—मिरजा रुसवा। (उमरावजान अदा में)

**पद—हारे दरजे**=लाचारी की हालत मे। विवशता की दशा मे। जैसे—हारे दरजे मुझे ही वहाँ जाना पडा।

**दरद नारायण**—पु० [स०] दरिद्रो का वर्ग या समूह, जो पहले बहुत ही तुच्छ और हेय समझा जाता था, परन्तु अब जो सब प्रकार के आदर और सम्मान का पात्र माना जाने लगा है।

**दरी-मंदिर**—पु० [स०] वह मदिर या भवन, जो किसी पर्वत की दरी या गुफा मे खोदकर या चट्टान काटकर बनाया गया हो। जैसे—अजन्ता दरी- मदिर।

**दर्शक**—पु० २ वह जो किसी दर्शनीय अथवा महत्त्वपूर्ण सम्पदा, स्थान आदि को ध्यानपूर्वक देखने अथवा उसका परिचय प्राप्त करने के लिए आता हो। (विजिटर) जैसे—(क) भारतमाता का मदिर देखने के लिए आनेवाले दर्शक। (ख) कश्मीर देखने के लिए आनेवाले दर्शक। (ग) अजन्ता की गुफाएँ देखने के लिए आनेवाले दर्शक।

**दरेती**†—स्त्री० [हिं० दरना=दलना] छोटी चक्की।

**दर्शक-कक्ष**—पु० [स०] किसी बडे भवन का वह कक्ष या कमरा, जिसमे बैठ- कर लोग भाषण, सगीत आदि सुनते अथवा खेल-तमाशे आदि देखते हैं। आस्थानी। (आडिटोरियम)

**दर्शक-पंजी**—स्त्री० [स०]=दर्शक-पुस्तिका।

**दर्शक-पुस्तिका**—स्त्री० [स०] वह पजी या पुस्तिका, जिसमे किसी बड़ी सस्था में आनेवाले प्रतिष्ठित और सम्मानित लोग, उस सस्था के सबध में अपने विचार लिखकर हस्ताक्षर करते हैं। आगतुक पजी। दर्शक-पजी। (विजिटर्स बुक)

**दर्शन-साक्षी**—पु० [स०] ऐसा गवाह,जो स्वय देखी हुई घटना की बातें बत- लाता हो। अनुभावी। (आइ-विटनेस)

**दर्शपति**—पु० [स०] किसी बडी सस्था का वह सर्वप्रधान और सम्मा- नित अधिकारी, जिसे बीच-बीच आकर उस सस्था का निरीक्षण करने का अधिकार होता है और जो प्राय उसका सर्वप्रधान सरक्षक भी माना जाता है। (विजिटर) जैसे—भारतीय विश्वविद्यालयो के दर्शपति साधारणत. यहाँ के राष्ट्रपति ही हुआ करते है।

**दर्शाधिकारी**—पु० [स० दर्श+अधिकारी] वह अधिकारी, जिसे विधिक दृष्टि से किसी सस्था का निरीक्षण करते रहने का अधिकार प्राप्त होता है और जो उसकी त्रुटियाँ आदि दूर करने के सुझाव देता रहता है। (विजिटर) जैसे—कारागार या जेलखाने का दर्शाधिकारी।

**दलनियाँ**†—स्त्री० [हिं० दालान] छोटा और पतला दालान।

**दलित वर्ग**—पु० २. भारतीय हिन्दू समाज मे कुछ ऐसी जातियाँ, जो छोटी और हीन समझी जाती हैं। (डिप्रेस्ड क्लासेज) जैसे—चमार, धोबी आदि।

**दलितोद्धार**—पुं० [स० दलित+उद्धार] दलित अर्थात् समाज की दबी या पिछडी हुई जातियों और लोगों को आर्थिक तथा सामाजिक दृष्टि से ऊपर उठाने की क्रिया या भाव।

**दशमेश**—पु० [स० दशम+ईश] फलित ज्योतिष में, जन्म-कुंडली के दसवें घर का स्वामी ग्रह। २. सिक्खों के दसवें गुरु श्री गोविंदसिंह की संज्ञा।

**दस नंबरी**—वि० [हिं० दस+अ० नंबर] ऐसा प्रसिद्ध और बहुत बड़ा बदमाश,जो कई भीषण अपराधों में दड पा चुका हो और जो बिना पुलिस को सूचित किये हुए अपना गाँव छोडकर और कहीं न जा सकता हो।

**विशेष**—पुलिस के अभिलेखो मे एक पंजी या रजिस्टर होता है, जो दसवें नबर का रजिस्टर कहलाता है और जिसमे हल्के के ऐसे लोगों की नामावली रहती है। इसी आधार पर यह पद बना है।

**दस्ता**—पु०१२ किसी बेडे की वह छोटी टुकडी, जिसमे कई जहाज साथ मिलकर कोई काम करने के लिए नियुक्त किये जाते हैं। (स्क्वैड्रन) जैसे—समुद्री जहाजो का दस्ता, हवाई जहाजो का दस्ता आदि।

**दस्तावेज**—स्त्री०२ कोई ऐसी लिखी हुई चीज या कागज-पत्र,जो प्रामाणिक माना जाता अथवा प्रमाण के रूप मे उपस्थित किया जा सकता हो। प्रलेख। (डॉक्यूमेन्ट)

**दस्तावेजी**—वि०२ जो दस्तावेज के रूप मे अर्थात् लिखा हुआ और फलतः प्रामाणिक हो। लिखित लेख्य। (डॉक्यूमेन्टरी)

**दहन**—पु० रासायनिक क्षेत्र मे, किसी ऐसे पदार्थ का धीरे-धीरे जलना जो तत्काल सहज मे और स्वभावतः आग पकड सकता हो। (कम्बस्चन)

**दांडिक**—वि० २. (क्रिया) जो दड के रूप मे हो। दंडात्मक। (प्यूनिटिव)

**दांडिक पुलिस**—स्त्री०[स०+अं०] पुलिस के सिपाहियों के वे दस्ते जो किसी ऐसे स्थान पर रखे जाते हैं, जहाँ शांति-भग का कोई विशेष उपद्रव होता है, और जिसका व्यय उस स्थान के निवासियो से दड- स्वरूप लिया जाता है। ताजीरी पुलिस। (प्यूनिटिव पुलिस)

**दांतिकी**—स्त्री०[सं० दंत से] दाँतों के रोगों की चिकित्सा करने और उन्हें निकालने, नये नकली दाँत लगाने आदि के प्रकारों और सिद्धांतो का विवेचन होता है। (डेन्टिस्ट्री)

**दागीला**†—पु०[?] गहना। (गुजरात-महाराष्ट्र)

**दाहक रजत**—पु०[स०]=क्षारक रजत।

**दिग्-सूचक**—वि० [स०] दिशा या दिशाएँ सूचित करनेवाला।

पु० दिग्दर्शक यत्र। कुतुब-नमा। (कंपास)

**दिल-चाक**—वि०[फा०] बहुत ही खुले दिल का और परम उदार। उदा० —ऐसा दिल-चाक आदमी न मैंने रईसों मे देखा, न शाहजादों मे।— मिरजा रुसवा (उमरावजान अदा मे)

**दिवालिया**—वि० २ (व्यक्ति) जिसके सबध में न्यायालय ने यह निश्चय कर दिया हो कि यह अपना ऋण चुकाने में अक्षम या असमर्थ है। (बैंकरप्ट)

**दिव्य-परीक्षा**—स्त्री०[स०] १. प्राचीन भारत में, होनेवाली एक प्रकार की शारीरिक विकट परीक्षा, जिसके द्वारा यह पता लगाया जाता था कि अभियुक्त वास्तव मे अपराधी है या निर्दोष।

**विशेष**—स्मृतियों के अनुसार इसके नीचे लिखे नौ प्रकार होते थे—घट, अग्नि, उदक, विष, कोष, तंदुल, तप्त-मापक, फूल और धर्मज। भिन्न

भिन्न प्रकार के अपराधों, अपराधियों, ऋतुओं और ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र आदि वर्णों के विचार से कुछ विशिष्ट प्रकार की परीक्षाओं के लिए अलग-अलग विधान और निषेध भी स्थिर थे।

२. कोई ऐसी बहुत ही कठोर या विकट परिस्थिति,जिससे पार पाने के लिए किसी को अपनी यथेष्ट योग्यता, शक्ति, सहनशीलता आदि का परिचय देना पड़ता हो। अग्नि-परीक्षा। (आर्डिएल)

**विज्ञा**—स्त्री०९. वह बिंदु, जिसकी ओर कोई गतिमान वस्तु या व्यक्ति बढ़ता हो। (डाइरेक्शन)

**दिशा-बिंदु**—पुं०[सं०] दे० 'दिग्बिंदु'।

**दीपक-पद**—पुं०[सं०] साहित्यिक रचना में ऐसा पद, जिसका प्रयोग देहली दीपक न्याय से आगे और पीछे दोनों ओर होता है। जैसे—'हम न तुम' में का 'न' 'हम' के लिए भी और 'तुम के लिए भी प्रयुक्त होने के कारण दीपक पद है।

**दीपकुसल्यल**†—पुं०=कुशदीप।

**दीप-थर**—पु०[हिं०]=प्रकाश-स्तम्भ।

**दीबा**—पु०[फा०] एक प्रकार का बढ़िया महीन कपड़ा।

**दीवानी**—वि० ३. संपत्ति आदि के मुकदमे से संबंध रखनेवाला। (सिविल) जैसे—दीवानी मुकदमा।

**दीवानी विधि**—स्त्री०=अर्थ-विधि।

**दुंबाला**—पु०[फा० दुबाल]१. किसी ओर निकली हुई लंबी नोक। २. दे०'दुबाल'।

**दुंबालादार**—वि०[हिं०+फा०] नुकीला। उदा०—एक तो जालिम तेरी ये आँखें उस पर कयामत सुरमा और वह भी दुबालादार।—शौकत थानवी।

**दुखतर**—स्त्री०[सं० दुहितृ से फा०] पुत्री। बेटी।

**दुगाना**—पु०[हिं० दु=दो+हिं० गाना] १. एक तरह का गीत, जिसके एक चरण में एक व्यक्ति कुछ प्रश्न करता और दूसरे चरण में दूसरा व्यक्ति उसका उत्तर देता है।२. ऐसा संगीत, जो दो व्यक्तियों के कंठस्वर से अथवा दो बाजों के सम्मिलित स्वरों से युक्त हो। जुगलबंदी।

**दुछत्ती**—स्त्री०[हिं० दो+छत] मकान के दूसरे खंड या मंजिल के ऊपर की छत।

**दुम्मट**—स्त्री०[हिं० दो+मट=मिट्टी] ऐसी जमीन, जिसमें साधारण मटमैले रंग की मिट्टी के सिवा हलके पीले रंग की मिट्टी और कुछ बालू भी मिली होती है। (लोम)

**विशेष**—ऐसी मिट्टी भुरभुरी होने के कारण पानी अधिक सोखती और अधिक समय तक नम रहती है। इसी लिए खेतीबारी के कामों के लिए अच्छी समझी जाती है।

**दुर्विनियोग**—पुं०[सं०]१. अनुचित रूप या बुरे उद्देश्य से किया जानेवाला विनियोग। २. किसी के रखे हुए धन में से अपने स्वार्थ के लिए अथवा अनुचित रूप से किया जानेवाला उपयोग। अपयोजन। खयानत। (मिस एप्रोप्रिएशन)

**दुष्कृति**—स्त्री० २. विधिक क्षेत्र में दूसरों को हानि पहुँचानेवाला कोई ऐसा काम, जिसकी प्रतिपूर्ति न्यायालय के द्वारा कराई जा सकती हो। (टार्ट)

**दुहाज**—पुं०[हिं० दो+विवाह] दूसरी बार होनेवाला विवाह।



**दूध-पिलाई**—स्त्री० ५. वह छोटी बोतल या शीशी, जिसके मुँह पर रबर की डेंपनी लगी रहती है और जिससे छोटे बच्चों को दूध पिलाया जाता है। (फीडिंग बाटल)

**दूधिया**—वि० ६. (पेड़ या पौधा) जिसके डंठल, तने, पत्ते आदि तोड़ने पर अन्दर से दूध की तरह गाढ़ा सफेद तरल पदार्थ निकलता हो। आक्षीरी। (लैक्टिफ़ेरस)

**दूर-कंप**—पु०[सं०] किसी जगह भू-कंप आने के फलस्वरूप उसकी विपरीत दिशा में बहुत दूर तक होनेवाला पृथ्वी का कंप। (टेलिसीइज्म)

**दूर-मार**—वि०[हिं०] (अस्त्र) जिसकी मार बहुत दूर तक पहुँचती हो। जैसे—दूरमार तोप।

**दूर-संचार**—पुं०[सं०] ऐसी व्यवस्था, जिसके द्वारा बहुत दूर के लोगों से किसी रूप में बात-चीत हो सके, या ऐसा ही और कोई संबंध स्थापित किया जा सके। (टेलिकम्यूनिकेशन)

**दूरान्वयी**—वि०[सं०] (संबंध) जो पास का नहीं, बल्कि कुछ या बहुत दूर का हो।

**दूरान्वित**—भू० कृ० [स०] जो दूरान्वय वाले तत्त्व से युक्त किया गया हो अथवा हुआ हो।

**दूलभ**†—वि०=दुर्लभ।

**दूषित धन**—पु० [स०] घूसखोरी, चोरबाजारी आदि अनैतिक या दूषित उपायों से प्राप्त किया हुआ ऐसा धन, जो अधिकारियों की नजर से बचाकर जमा किया गया हो और जिसका आगे चलकर इसी प्रकार के अनैतिक या दूषित कामों के लिए उपयोग होता या हो सकता हो। (ब्लैक मनी) जैसे—आज-कल अफसरों, ठेकेदारों, व्यापारियों आदि के पास बहुत सा दूषित धन जमा हो गया है।

**दृढ़ीक्ति**—स्त्री०[सं० दृढ़+उक्ति] दृढ़तापूर्वक अर्थात् प्रमाण का निश्चय रखते हुए कही जानेवाली बात। (एसर्शन)

**दृष्टांत-कथा**—स्त्री० [सं०] कथा का वह प्रकार या भेद, जिसमें आचार, धर्म, नीति आदि से संबंध रखनेवाले सिद्धांतों का प्रतिपादन करने के लिए कुछ विशिष्ट मानव-पात्रों की योजना की जाती है। (पैरेबुल) जैसे—बौद्धों की जातक कथाएँ।

**देय**—वि० ३. (धन) जो न्याय, विधि या व्यवहार की दृष्टि से किसी को चुकाया या दिया जाने को हो। (ड्यू)

पुं० वह धन जो न्याय, विधि या व्यवहार की दृष्टि से किसी को चुकाया या दिया जाने को हो। (ड्यूज)

**देव-कथा**—स्त्री० [सं०]=पुराण-कथा।

**देवढ़ा**†—पुं० [सं० देव] भूत-प्रेत झाड़ने और मंत्र-तंत्र करनेवाला ओझा। (पूरब)

**देवार**°—पुं०=देवारा (नदी का रेतीला किनारा)।

स्त्री०=दीवार (भीत)।

**देवारा**†—पुं० [?] नदी का वह रेतीला किनारा, जो बहुत दूर तक फैला हो। (पूरब) जैसे—गंगा, राप्ती या सरयू का देवारा।

**देशीकरण**—पुं० [सं० देशीयकरण] आधुनिक राजनीति में वह अवस्था, जिसमें कोई राष्ट्र किसी विजातीय या विदेशी व्यक्ति को अपने यहाँ पूर्ण नागरिक अधिकार देकर उसे अपना अंग या सदस्य बनाता हो। (नेचुरलाइज़ेशन)

**देशीय**—वि० [स० देश+छ—ईय] १. किसी देश से संबंध रखनेवाला। देशी। २ किसी देश के भीतरी भाग मे होनेवाला।

**देशीयकरण**—पुं० [स०]=देशीकरण। (दे०)

**देह-स्वभाव**—दे० 'शील' १. का विशेष।

**देहातीयत**—स्त्री० [हिं० देहात] देहातीपन। जैसे—इस नाम या पहनावे मे कुछ देहातीयत है।

**दो दाम घट**—पुं० [हिं० दो+दाम=धन+घटना=चूकता होना] महाजनी लेन-देन आदि मे वह प्रथा, जिसके अनुसार किसी उधार की हुई रकम का सूद बहुत बढ जाने पर मूल धन का दूना देकर ऋण चुकता किया जाता है।

**दो-दिली**—स्त्री० [हिं० दो+दिल] गर्भवती स्त्री, जिसके उदर मे एक दूसरा दिल (अर्थात् जीव) भी होता है।

**दो-रसी मिट्टी**—स्त्री० [हिं०] चुम्मट जमीन की मिट्टी जो, कुछ तो पीली और कुछ मटमैली होती है और जिसमे बालू का भी कुछ अश मिला रहता है। (लोम)

**दोषारोप**—पुं० [स० दोष+आरोप] १ किसी त्रुटि, दोष या भूल के संबंध मे किसी व्यक्ति पर किया जानेवाला आरोप। ऐसा कथन कि अमुक खराबी या दोष के लिए अमुक व्यक्ति उत्तरदायी है। अवक्षेप। अवशसा। (क्लेम) २ दे० 'दोषारोपण'।

**दो-सखुना**—पुं० [फा० दो+सखुन] एक प्रकार की पहेली, जिसमे दो प्रश्नो का ऐसा एक ही उत्तर होता है, जिससे सब प्रश्नों का समाधान हो जाता है। इसे दो-सुखना भी कहते हैं। जैसे—(क) घोडा क्यो अड़ा? पान क्यों सडा? उत्तर—फेरा न था। (ख) बडा क्यो न लाया? जूता क्यो न पहना? उत्तर—तला न था। (ग) मुमा-फिर प्यागा क्यों? घोड़ा उदासा क्यों? उत्तर—लटान था।

**दौड़ाक**—पुं० [हिं० दौडना+आक (प्रत्य०)] प्रतियोगिता आदि मे दौड लगानेवाला। धावक। (रनर)

**द्रव-इंजीनियरी**—स्त्री० [स० द्रव+हिं० इंजिनियरी] भौतिक विज्ञान की वह शाखा, जिसमे इस बात का विवेचन होता है कि जल तथा अन्य द्रव पदार्थों के गुणो, शक्तियो आदि का इंजिनियरी के काम मे कितना और किस प्रकार का उपयोग होता या हो सकता है (हाईड्रॉलिक्स)

**द्रव-चालित**—वि० [स०] (इजन या यत्र) जो जल या किसी द्रव पदार्थ के प्रवाह के वेग से चलता हो। तोयाक्रिक। (हाईड्रॉलिक)

**द्रव्यमान**—पुं० [स०] किसी काम मे होनेवाली द्रव्य की मात्रा। (मास)

**द्रष्टांक**—पुं० [स०] दे० 'बीसा'।

**द्वाभा**—स्त्री० [स०] ऐसी स्थिति, जिसमे दो भिन्न-भिन्न तत्त्वों का मेल या संयोग होता है। सगम। जैसे—दिव्य और पार्थिव की मिलन-छाया।

**द्वितंत्री**—वि० [स०] जिसमे दो प्रकार के तत्र हों। दो प्रकार के तत्रों से युक्त।
स्त्री० दे० 'द्वैध-शासन'।

**द्विनेत्री**—स्त्री० [सं०] युद्ध-क्षेत्र में काम आनेवाली ऐसी दूरबीन, जिसमें दोनों आँखों के लिए दो ताल होते हैं और जिससे दूर की चीजें पास दिखाई देती हैं। (बाइनाक्यूलर)

**द्वि-भाजन**—पुं० [स०] [भू० कृ० द्विभाजित] किसी चीज को बीच मे से काट कर या और किसी प्रकार से अलग करके दो भागों में विभक्त करने की क्रिया या भाव। (बाइसेक्शन)

**द्विलिंगी**—वि०, पु० [स०]=उभयलिंगी।

**द्विविध**—वि० [स० द्वि+विधा] जिसकी दो विधाएँ हों। दो विधाओं-वाला। (टु-डाइमेन्शनल)

**द्वि-सदनी**—वि० [स० द्वि+सदन] (प्रजातंत्री शासन-व्यवस्था) जिसमे दो सदन होते हैं। (बाइकेमरल)

**द्वैध शासन**—पुं० [स०] वह शासन-प्रणाली, जिसमे कुछ विभाग सरकार के हाथ मे और कुछ प्रजा के प्रतिनिधियों के हाथ मे हों। द्वितंत्री। (डायार्की)

**धनुस्तंभ**—पुं०=धनुष-टकार (रोग)।

**धपियाना**—स०=धपाना।

**धरती पुत्र**—पुं० [हिं०] स० वह यशस्वी और वीर पुरुष, जिसने अपनी मातृभूमि की गौरव-वृद्धि, रक्षा आदि के लिए त्यागपूर्वक बड़े-बड़े काम किये हो।

**धर्म-गाथा**—स्त्री० [स०] ऐसी पौराणिक कथाएँ, जिनमे देवी-देवताओं, असुरो आदि के अद्भुत या विलक्षण कार्यों का वर्णन होता है और जिन पर किसी विशिष्ट धर्मावलबी की पूरी या बहुत-कुछ आस्था होती है। पुराण-कथा। (मिथ)

**धर्म-तत्री**—वि० [स० धर्म-तत्रिन्] १ धर्म-तत्र सबधी। धर्म-तत्र का। २ धर्म-तत्र के अतर्गत या अधीन रहने या होनेवाला। मजहबी। (थिओक्रेटिक)

**धर्मतंत्री राज्य**—पुं० [स०] ऐसा राज्य, जो किसी विशिष्ट धर्म या मजहब के सिद्धान्तो पर ही मुख्य रूप से शासित हो और जिसमे ऐहिक या लौकिक बातो का ध्यान और स्थान उपेक्षया गौण रहता हो। मजहबी राज्य। 'धर्म-निरपेक्ष राज्य' से भिन्न। (थिओक्रेटिक स्टेट) जैसे—मुख्यत इस्लामी सिद्धान्तो पर सघटित और स्थापित होने के कारण इसराईल और पाकिस्तान धर्म-तत्री राज्य हैं।

**धर्मदाय**—पुं०=धर्मस्व।

**धर्म-निरपेक्षता**—स्त्री० [स०] धर्म-निरपेक्ष होने की अवस्था, गुण या भाव। (सेक्युलरिज्म)

**धर्म-निरपेक्ष राज्य**—पुं० [स०] आधुनिक राजनीति में ऐसा राज्य, जिसमे केवल लौकिक या सासारिक दृष्टि से ही प्रशासन के सब कार्य होते हों और जिसमे सब लोगों को अपने धार्मिक आचार-व्यवहार सपन्न करने की पूरी स्वतत्रता प्राप्त हो। (सेक्युलर स्टेट)

**धर्म-संप्रदाय**—पुं० [स०] उडीसा, छोटा नागपुर और बंगाल मे प्रचलित एक धार्मिक सप्रदाय, जिसमे 'धर्म' नामक देवता की पूजा होती है।

**धर्मस्व**—पुं० २ ऐसी धनराशि या सपत्ति, जो इस दृष्टि से सुरक्षित रखने के लिए दान की गई हो कि उससे होनेवाली आय से धर्म, परोपकार या लोक-सेवा का कोई काम बराबर चलता रहे। (एन्डाउमेन्ट)

**धर्मालिनिक**—पुं० [स०]=धर्माध्यक्ष।

**धातुक**—पुं० [सं० धातु+क (प्रत्य०)] खनिज पदार्थों के प्राकृतिक

या मूल रूप,जिसमे कई तरह की चीजें छिपी रहती हैं और जिसे गला तथा शोधकर कोई विशिष्ट धातु निकाली जाती है। (ओर)

**धातु-पिंड**—पुं० [स०] किसी साफ की हुई धातु का वह चौकोर या लंबोतरा खड या पिंड, जिसे काट या गला कर तरह-तरह की चीजे बनाई जाती हैं। सिल। (इन्गोट) जैसे—चाँदी या सोने का धातुपिंड।

**धातु-पाश्ची**—स्त्री० [स०] धातुओ की खडखडाहट की तरह की बोलने-चालने की शैली।

**धानी**—स्त्री० *८.* वह आधार जिस पर कोई चीज खडी करके या टिका-कर रखी जाय। उपस्तभ। (स्टैन्ड)

**धार्मी संप्रदाय**—पुं० [स० धाम =ब्रह्म-लोक। सप्रदाय] सत प्राणनाथ का चलाया हुआ एक प्रसिद्ध धार्मिक सम्प्रदाय, जिसमे ब्रह्म के प्रति प्रेम की प्रधानता मानी जाती है, और इसी लिए किसी धर्म या सप्रदाय से द्वेष या भेद-भाव नही रखा जाता।

**धारावेग मापी**—पुं० [स०]- बहावमापी।

**धार्या**—स्त्री० [स०] सिपाहियों आदि की बरदी।

**धिक्कारवादी**—वि० [स०] [स्त्री० धिक्कारदिनी] धिक्कारनेवाला।

**धुंध**—पुं० ५ ऐसा घना कोहरा, जिसमे प्राय दिन के समय भी कुछ दूर की चीजें न दिखाई देती हो।

**धुनैनी**—स्त्री० [हिं०] धनियाँ जाति की स्त्री।

**धुरधविया**—पुं० [स० ध्रुपद] वह जो ध्रुपद गाने मे प्रवीण हो।

**धोखा**—पुं० विधिक क्षेत्र मे, जानबूझ कर की जानेवाली ऐसी चालाकी या धूर्ततापूर्ण क्रिया, जो दूसरों का धन, सम्पत्ति आदि अनुचित रूप से हस्तगत करने के लिए की जाय। उपधा। फरेब। (फ्रॉड)

**धौरित**—पुं० [स०] घोडों आदि की दुलकी चाल।

**धौलिया**†—स्त्री० [स० धवलिका] माल ढोने की एक प्रकार की बहुत बड़ी नाव, जिस पर ५-६ सौ मन तक माल लाद सकता था।

**ध्रुव-घड़ी**—स्त्री० [स०+हिं०] दिशाओं का ज्ञान करानेवाला एक छोटा यत्र। कुतुबनुमा। दिग्दर्शक यत्र। (कंपास)

**ध्रुवत्व**—पुं० [सं०] ध्रुवता।

**ध्वजारोहण**—पुं० [स० ध्वज+आरोहण] कुछ विशिष्ट अवसरो पर होनेवाला वह कृत्य या समारोह, जिसमे झडे की पहले से झुकाई हुई पताका फिर से ऊँचाकर ध्वजदड के ऊपर पहुँचाई और फहराई जाती है। (प्रजैन-होएस्टिंग)

**ध्वनि-वर्धक**—वि० [स०] ध्वनि को बढ़ाकर उच्च या तीव्र करने-वाला।

पुं० एक प्रकार का यंत्र जिसकी सहायता से साधारण या सूक्ष्म ध्व-नियाँ या शब्द भी अधिक जोर के या तीव्र होकर सुनाई पड़ते हैं। (माइक, माइक्रोफ़ोन)

**ध्वनि-संकर**—पुं० [स०] साहित्य मे वह स्थिति, जब किसी उक्ति मे दो ध्वनियाँ एक साथ ही मिली हुई आती हैं।

**ध्वानिक**—वि० [स०] ध्वनि या आवाज से संबंध रखनेवाला। (एकॉस्टिक)

**ध्वानिकी**—स्त्री० [सं० ध्वानिक से] वह शास्त्र, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि ध्वनि या आवाज किस प्रकार निकलती, फैलती और गूँजती है। (एकॉस्टिक्स)

**नकबी बुर्जा**—पुं० [हिं०] वह पुर्जा जो विक्रेता क्रेता को कुछ खरीद करने पर देता है। (कैश-मेमो)

**नकशाबंद**—पुं० [अ०+फा०] [भाव० नकशाबदी] जूलाहो मे वह कारीगर जो गलीचो, साडियों आदि की तैयारी से पहले उनमे बनाये जानेवाले बेल-बूटो आदि के नकशे या नमूने बनाता है।

**नक-सुरा**—वि० [हिं० नाक। सुर-स्वर] [स्त्री० नक-सुरी] (स्वर) जिसके साथ अनुस्वार की भी कुछ छाया हो। जैसे—उसकी आवाज थोडी नकसुरी थी। २ (व्यक्ति) जिसके स्वर मे अनु-स्वार की भी कुछ छाया रहती हो। जैसे—नक-सुरा गवैया।

**नकारवादी**—वि० [स०] १ नकारवाद सबधी। नकारवाद का। २ जो नकारवाद के सिद्धातो का अनयायी, पोषक या समर्थक हो।

**नकारी**—वि० [हिं० नकार] नकार या नही का सूचक। नकारात्मक। नहिक।

स्त्री० १. नकारने अर्थात् नही करने की क्रिया या भाव। २ अस्वी-कृति। नामजूरी।

**नकाशु**—पुं० [सं० नक्र+अश्रु] दे० 'मगरमच्छ' के अन्तर्गत "मगर मच्छ के आँसू"।

**नक्शबंदी**—पुं० [फा०] भारत मे प्रचलित एक प्रकार का सूफी सप्र-दाय।

**नख-पद**—पुं० [स०] नाखूनो की खरोच।

**नखर**—पुं० पशु-पक्षियों आदि की ऐसी उँगलियो का समूह, जिनमे नाखून भी निकले हो। पजा। (क्लॉ)

**नगर-निकाला**—पुं० [हिं०] वह दड जो किसी को नगर से बाहर निकालने के रूप मे दिया जाता है।

**नगर-पालीं**†—स्त्री०=नगर-पालिका।

**नटवरी**—वि० [हिं० नटवर] नटवर सबंधी। नटवर का। जैसे—नटवरी नृत्य।

**नतोन्नत**—पुं० दे० 'उच्चिव्र'।

**नचिया-बंध**—वि० स्त्री० [हिं०] वेश्या की वह नौची या लडकी, जिसका अभी तक किसी पुरुष से सबध न हुआ हो।

**नदीदा**—वि० [हिं० न+फा० दीद.=आँख] [स्त्री० नदीदी] ऐसा निर्लज्ज लालची, जिसके सबध में ऐसा जान पडता हो, कि इसने कभी कोई अच्छी चीज देखी ही न हो।

**नदी-पात्र**—पुं० [स०] वह समस्त भूमि-क्षेत्र, जिस पर से होकर नदियाँ बहती है। नदी के नीचे का तल। (बेसिन)

**नदीष्ण**—वि० [स०] [भाव० नदीष्णता] १ जो नदी में नहा रहा हो, या पडा हो। २ जिसे नदी के बहाव, रुख और विकट स्थानो आदि का अच्छा ज्ञान हो। ३ अनुभवी और बुद्धिमान। होशियार। जैसे—इस विकट कार्य में आप भी बहुत ही नदीष्ण हैं।

**नदीष्णता**—स्त्री० [स०] नदीष्ण होने की अवस्था, गुण या भाव।

**नमस्य**—पुं० [स०] १. व्यक्ति की वह स्थिति, जिसमे लोग उसे आदर-पूर्वक नमस्कार करते हों। २. बडप्पन। महत्त्व।

**नमस्वी**—पुं० [स० नमस्विन्] वह जो आदरणीय अथवा पूज्य व्यक्तियों को नमस्कार करता हो।

वि० नमस्कार करनेवाला।

**नयाचार**—पुं० [सं० नय+आचार] १. नीतिपूर्ण आचरण और व्यवहार। २. आधुनिक राजनीति में, राज्यों के सर्व-प्रधान अधिकारियों अथवा राज्य-मंत्रियों में पारस्परिक होनेवाला औपचारिक तथा सौजन्यपूर्ण आचरण और व्यवहार। (प्रोटोकोल)

**नर-भक्षिता**—स्त्री० [स०] मनुष्यों की कुछ जंगली जातियों में प्रचलित वह प्रथा, जिसके अनुसार वे मनुष्यों की हत्या करके उनका मांस खाते हैं। (कैनिबुलिज्म)

**नर-भक्षी**—पु० २. ऐसा अत्यन्त और जंगली व्यक्ति, जो मनुष्यों को मारकर उसका मांस खाता हो। (कैनिबुल)

**नरम पानी**—पुं० [हिं०] (क) ऐसा पानी जिसके बहाव में अधिक वेग न हो। (ख) ऐसा पानी, जिसमें खनिज तत्व अपेक्षया कम हों।

**नर-संहार**—पु० [स०]=जन-संहार।

**नव-आगरण**—पु० [सं०] पाश्चात्य ऐतिहासिक परंपरा मे, यूरोप के मध्य युग और आधुनिक युग के बीचवाले लक्ष्मण काल की वह स्थिति, जिसमे बहुत दिनों की सामाजिक कुंठित के बाद नये-नये अन्वेषणों, आविष्कारो आदि का आरंभ हुआ था और दर्शन, धर्म, विज्ञान, संस्कृति आदि का नये सिरे से पुनरुद्धार या सस्कार होने लगा था। (रिनेसाँ)

**नवागंतुक**—सुं० [स० नव+आगतुक] वह जो कही से अभी हाल मे आया हो। अजनबी और नया आया हुआ आदमी।

**नवीकरण**—पु० [सं० अभिनव से] किसी पुरानी वस्तु को कुछ विशिष्ट उपकरणों, क्रियाओं आदि के द्वारा फिर से नया रूप देने की क्रिया या भाव। (रिजोवेशन)

**नाँधना**†—स्त्री०=लाँघन।

**नाँदा**—पुं० [हिं० नाँद] १ मिट्टी की बड़ी नाँद। २. नाँद के आकार के मिट्टी, लकड़ी आदि के वे पात्र, जिनमें बाग-बगीचों की शोभा के लिए पेड़-पौधे लगाये जाते हैं।

**नाग-यज्ञ**—पुं० [स०] जनमेजय का वह प्रसिद्ध यज्ञ, जो उन्होंने नागों का नाश करने के लिए किया था।

**नागर-युद्ध**—पु० [स०]=गृह-युद्ध।

**नाग-सामंत**—पु० [सं०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**नागाभरणी**—स्त्री० [सं०] संगीत मे, कर्नाटकी पद्धति की एक रागिनी।

**नाटेरफ**—पुं० [सं०] नटी का पुत्र या संतान।

**नाट्टो**†—स्त्री० [हिं० नाटा का स्त्री० नाटी ?] युवती और दुश्चरित्रा स्त्री।
पुं० दे० 'नैटो' (सघटन)।

**नाद्येटी**—स्त्री० [स० नाद+हिं० पेटी] ग्रामोफोन आदि बाजों मे डिबिया के आकार का वह छोटा अंग या पुरजा, जिसके द्वारा रेकार्डों में आवाज भरी जाती और रेकार्डों में भरी हुई आवाज फिर से बाहर निकल कर सुनाई पड़ती है। (साउन्ड-बॉक्स)

**नाद-स्वर**—पु० [सं०] नफीरी की तरह का एक बाजा, जिसका अधिकतर प्रचलन दक्षिण भारत में है।

**नाबदानी**—स्त्री० [फा०] स्त्री का गर्भाशय।

**नाबर**—वि० [सं० निर्बल] कमजोर। निर्बल। जैसे—हम क्या रुपया खरचने में किसी से नाबर हैं।

**नाभिक**—वि० [स०] नाभि-संबंधी। नाभि का।
पु० केन्द्रक।

**नाम-रूपवाद**—पुं० [स०] दार्शनिक क्षेत्र में, यह मत या सिद्धांत कि इस जगत् में नाम और रूपवाली जितनी सत्ताएँ हैं, वे सब कोरी काल्पनिक हैं, और उनकी कोई वास्तविक सत्ता नहीं है। (नॉमिनेलिज्म)
विशेष—यह हमारे यहाँ के आभासवाद (देखें) का एक प्रकार का भेद ही है।

**नामिक विधेय**—पु० [स०] व्याकरण मे वह विधेय, जो कर्ता की क्रिया या व्यापार, गुण, लक्षण आदि का निर्देश करता है।

**नामिका**—स्त्री० [स०] ऐसे चुने हुए या विशिष्ट लोगों के नामों की सूची, जिनमे से किसी विषय के विचार या विवेचन के लिए कुछ लोग छाँटकर अलग किये जाने को हो। (पैनेल)

**नारेबाजी**—स्त्री० [हिं० नारा+फा० बाजी] केवल प्रचार के उद्देश्य से खूब चिल्ला-चिल्लाकर या बार-बार नारे लगाते रहने की क्रिया या भाव।

**ना-शुकरा**—वि० [हिं० ना+फा० शुक्र=धन्यवाद] [स्त्री० ना-शुकरी] जो कृतज्ञता प्रकट करना न जानता हो।

**ना-शुकरी**—स्त्री० [हिं० ना-शुकरा] ना-शुकरा होने की अवस्था या भाव। कृतघ्नता।

**नासदानी**—स्त्री०=नासदान।

**निःस्वामिक**—वि० [स०] (वस्तु) जिसका कोई स्वामी या मालिक न हो। २. भू-खंड जिस पर किसी का आधिपत्य या शासन न हो।

**निकास पंखा**—पु० [हिं०] वह पंखा जो कमरों की गरम और श्वास से दूषित वायु बाहर निकालने के लिए दीवारो के ऊपरी भाग मे झरोखों आदि मे लगाया जाता है। रेचक पखा। (एग्ज़ॉस्ट फ़ैन)

**निगूढ़**—वि० ३. किसी के अन्दर छिपा या दबा हुआ।

**निजी**—वि० ४ जिसका व्यक्तिविशेष से ही संबंध हो, सब लोगों से न हो। 'सार्वजनिक' से भिन्न। खासगी। व्यक्तिगत। (प्राइवेट)

**निजी सचिव**—पु० [हिं०+स०] किसी बड़े अधिकारी का निजी मंत्री। (प्राइवेट सेक्रेटरी)

**नित्य-चर्या**—स्त्री० [स०] नित्य या प्रतिदिन और नियमित रूप से किया जानेवाला काम। नैत्यक। (रूटीन)

**नित्य-प्रिया**—स्त्री० [स०] वैष्णव भक्तों के अनुसार वे गोपियाँ, जो सदा वृन्दावन मे रहकर श्रीकृष्ण के साथ नृत्य-लीला करती हैं। कहा जाता है कि बहुत लंबी साधना के उपरांत जीवों को यह रूप प्राप्त होता है।

**निदर्शक**—पु० वह व्यक्ति जो विज्ञान, रेखागणित आदि में उदाहरण, प्रयोग आदि के द्वारा विद्यार्थियों को यह समझाता हो कि कैसे कोई चीज काम करती या उपयोग मे आती है। (डिमॉन्स्ट्रेटर)

**निदान-शाला**—स्त्री० [सं०]=निदान-गृह।

**निदानिका**—स्त्री० [सं०]=निदान-गृह।

**निदेशन**—सुं० [सं०] निदेश करने या देने की क्रिया या भाव। (डाइरेक्शन)

**निदेशालय**—पुं० २. वह केन्द्रीय कार्यालय, जहाँ से अधीनस्थ कार्य-

कर्ताओं को उनके कामों के संबंध में आवश्यक निदेश भेजे जाते हैं। ३. किसी संस्था के निदेश का वर्ग या समूह। (डाइरेक्टोरेट)

**निधान**—पु० ७. किसी काम या रोजगार में रुपए लगाना। निवेश। (इन्वेस्टमेन्ट)

**निपटान**—स्त्री० [हिं० निपटना या निपटाना] १. निपटने की क्रिया या भाव। २. हाथ मे आये हुए काम को निपटाने या पूरा करने की क्रिया या भाव। ३. अनावश्यक या अनुपयोगी वस्तुओं को या तो बेचकर या और किसी प्रकार अलग या दूर करने की क्रिया या भाव। (डिस्पोजल)

**निबौरी**—स्त्री० [सं० नूपुर] एक प्रकार का गहना। उदा०—छरा निबौरी बिछि भई बौरी, जगत ठगौरी जनु इक ठौरी।

**निमित्तिक छुट्टी**—स्त्री० [हिं०]=आकस्मिक छुट्टी।

**निमोया**†—वि० [हिं० नि+भूअना=मरना] [स्त्री० निमोई] जिसे मौत भी न आती हो। (स्त्रियों की गाली) उदा०—फिर निमोई औरतों पर जो न हो, थोड़ा है जुल्म।—ज्ञान साहब।

**नियतन**—पुं० [स०] १. नियत करने की क्रिया या भाव। २. कोई चीज हिस्से के मुताबिक सब लोगों को नियत मात्रा मे बाँटने की क्रिया या भाव। (एलॉटमेन्ट)

**नियम-निष्ठ**—वि० [स०] [भाव० नियमनिष्ठता] नियमों, परिपाटियों, रूढ़ियों आदि का पालन करनेवाला।

**नियम-निष्ठता**—स्त्री० [सं०] ऊपरी या बाहरी दिखावट के लिए नियमों, परिपाटियों, रूढ़ियों आदि का पालन करने की अवस्था, क्रिया, गुण या भाव।

**नियामक**—पुं० २. कोई ऐसा तत्व, पदार्थ या व्यक्ति, जो औरो को ठीक तरह से काम करने में प्रवृत्त करता और उनकी गति-विधि का नियंत्रण करता हो। ३. किसी यंत्र का वह अंग या पुरजा, जो यंत्र की गति-विधि आदि का नियंत्रण करता और उसे ठीक तरह से चलाता हो। (रेग्युलेटर)

**निरंकुश शासक**—पु० [सं०] वह शासक, जो बिना किसी का परामर्श लिये अपनी इच्छा और मनमाने ढंग से शासन करता हो। (ऐबसोल्यूट मॉनर्क)

**निरंग रूपक**—पुं० [सं०] साहित्य में रूपक अलंकार का एक भेद, जिसमें केवल अंगी का आरोप होता है, उसके अंगों का आरोप या उल्लेख नहीं होता। जैसे—मुख कमल है। यहाँ केवल मुख पर कमल का आरोप है; मुख के अवयवों पर कमल के अवयवों का आरोप नही है।

**निरंतरता**—स्त्री० [सं०] किसी काम या बात के निरंतर अर्थात् लगातार होते रहने की अवस्था, गुण या भाव। सातत्य। (कांटिन्यूइटी)

**निरपेक्षता-वाद**—पुं० [सं०] वह दार्शनिक मत या सिद्धांत, जिसमें किसी निरपेक्ष सत्ता को सारी सृष्टि का कारण माना गया हो। (ऐब्सोल्यूटिज्म)

**निरसन**—पुं० [सं०] विधायिका सभा की वह प्रक्रिया, जो किसी बने हुए विधान को रद्द या समाप्त करने के लिए होती है। कानून या विधान रद्द करना। (रिपील)

**निरापद**—वि० ४. जो किसी आपदा या संकट से पूर्ण रूप से सुरक्षित हो। (इम्यून)

**निरापदता**—स्त्री० [सं०] १. निरापद होने की अवस्था, गुण या भाव। २. वह स्थिति जिसमे मनुष्य किसी विशिष्ट प्रकार की आपदा या संकट से पूरी तरह बचा हुआ या सुरक्षित रहता है। (इम्युनिटी)

**निरुढ़**—वि० ४. जो किसी के अन्दर प्राकृतिक और स्थायी रूप से वर्तमान रहता हो। (इन्हेरेन्ट)

**निर्जीवीकरण**—पुं० [सं०] किसी सजीव को निर्जीव करने की क्रिया, प्रणाली या भाव।

**निर्दलीय**—वि० [सं०] जो किसी दल या पक्ष मे न हो।

**निर्देशी**—पु० [सं० निर्देशित] वह जो कोई विवादास्पद विषय उत्पन्न होने पर यह बतलाता हो कि सिद्धांततः ऐसा होना चाहिए। अभिदेशिकी। (रेकरी)

**निर्बंधन**—पु०किसी प्रकार का निर्बंध या रोक लगाने की क्रिया या भाव। पाबंदी। (रेस्ट्रिक्शन)

**निर्मलीकरण**—पुं० [स०] निर्मल करने अर्थात् दोष, विकार आदि दूर करके किसी चीज को साफ करने की क्रिया या भाव। (क्लॅरिफिकेशन) जैसे—कूएँ या नदी के जल का निर्मलीकरण।

**निर्मेय**—वि० [सं०] जिसका निर्माण किया जाने को हो अथवा होने को हो।
पु० तर्कशास्त्र मे, वह बात या विषय, जिसे विचारपूर्वक ठीक सिद्ध करने की आवश्यकता हो, अथवा जो ठीक सिद्ध किया जाने को हो। (प्रॉब्लेम)

**निर्वनीकरण**—पुं० [स०] जमीन साफ करने के लिए जंगल या वन साफ करने की क्रिया या भाव। वनकटाई। (डिफ़ोरेस्टेशन)

**निर्वहण**—पु० ३. आज्ञा, कर्तव्य आदि का निर्वाह या पालन। (डिस्चार्ज)

**निर्वाहिका**—स्त्री० [स०] उतना पारिश्रमिक या वेतन, जितने से कार्यकर्ता और उसके परिवार का निर्वाह या भरण-पोषण हो सके। निर्वाह-वृत्ति। (लीविंग वेज)

**निलंबन**—पु० १. अस्थायी रूप से किसी को कोई काम करने से रोकना। २. कोई काम या बात अंतिम निर्णय के लिए कुछ समय तक रोक रखने या स्थगित करने की क्रिया या भाव। ३. किसी कर्मचारी या कार्यकर्ता के किसी अपराध, त्रुटि या दोष की सूचना मिलने पर उसकी ठीक जाँच या निर्णय होने तक उसे उसके पद से अस्थायी रूप से हटाये जाने की क्रिया या भाव। मुअत्तली। (सस्पेन्शन)

**निलंबित**—भू० कृ० [सं०] (कार्य या व्यक्ति) जिसका निलंबन हुआ हो। जो अंतिम निर्णय की प्रतीक्षा मे टाला, रोका या हटाया गया हो। मुअत्तल। (सस्पेन्डेड)

**निलहारा**—पुं० [हिं० नील (रंग)+हारा (प्रत्य०)] [स्त्री० निलहारिन, निलहारी] वह जो शरीर के अंगों मे नील के योग से गोदना गोदने का व्यवसाय करता हो। गोदनहारा।

**निलाई**—स्त्री०=निराई। (पश्चिम)

**निविदा**—स्त्री० [सं० निवेद] वह पत्र जिसमें किसी प्रस्तावित कार्य के संबंध में यह लिखा रहता है कि हम इतने पारिश्रमिक पर अमुक

रूप में यह काम पूरा कर देंगे, और जो उपयुक्त अधिकारियों के सामने स्वीकृति के लिए रखा जाता है। (टेन्डर)

**विशेष**—प्रायः अधिकारियों को जब कोई काम कराना होता है, या किसी आवश्यकता की पूर्ति करानी होती है, तब वे सार्वजनिक सबध मे ठीकेदारों से अपने दर की निविदाएँ माँगते हैं, और तब उनकी शर्तों, स्थितियो आदि पर विचार करके किसी ठीकेदार को उसकी निविदा के आधार पर वह काम सौंपते हैं।

**निवृत्ति**—स्त्री० ८. किसी विशिष्ट उद्देश्य या विचार से किसी काम या बात से अलग रहना या बचना। उपरति। (ऐब्स्टिनेन्स)

**निवृत्तिका**—स्त्री०=निवृत्ति-वेतन।

**निवृत्ति-वेतन**—पु० [स०] वेतन का वह प्रकार, जो किसी कर्मचारी को बहुत दिनों तक काम करते रहने पर उसकी वृद्धावस्था मे काम के लिए अक्षम हो जाने पर अथवा उसकी किसी विशिष्ट योग्यता, सेवा आदि के विचार से भरण-पोषण के लिए वृत्ति के रूप मिलता है। (पेन्शन)

**निवेश**—पु० ५ व्यापार आदि मे धन या पूँजी लगाने की क्रिया या भाव। (इन्वेस्टमेन्ट)

**निश्चयी**—वि० [स०] १. जिसका कोई निश्चित मान या स्थिर स्वरूप हो। २ संकारात्मक। (पॉज़िटिव) ३ जिसे किसी बात या विषय मे पूरा निश्चय हो चुका हो। (कॉन्फिडेन्ट)

**निश्चेत**—वि० [स०] जिसकी चेतना शक्ति नष्ट हो गई हो। निश्चेतन।

**निश्चेतक**—वि० [स०] (औषधि या पदार्थ) जो शरीर या उसके किसी अग को कुछ समय के लिए निश्चेत या सुन्न कर देता हो। चेतना या सवेदन से रहित करनेवाला। सवेदनहारी।

पु० उक्त प्रकार का प्रभाव उत्पन्न करनेवाली कोई दवा। (एनिस्थेटिक)

**निश्चेतन**—पु० २ वह स्थिति, जिसमे किसी रोग या निश्चेतक औषधि के प्रयोग के कारण शरीर या उसका कोई अग बिलकुल सुन्न हो जाता है; और उसमे ताप, पीडा आदि का अनुभव करने की शक्ति नष्ट हो जाती है। (एनेस्थीसिया) ३ बेहोश होने की क्रिया या भाव।

**निश्चेतनीकरण**—पु० [स०] १ निश्चेत करने की क्रिया या भाव। २ चिकित्सा-शास्त्र मे, चीर-फाड आदि से पहले शरीर का कोई अग औषधो के प्रयोग से निश्चेतन या सुन्न करना। (एनेस्थिसिस)

**निश्चेष्टता**—स्त्री० [स०] १ निश्चेष्ट होने की अवस्था या भाव। २ वह अवस्था, जिसमे मनुष्य का सारा शरीर सुन्न या स्तब्ध हो जाता है। (इनर्शिया)

**निषिद्ध**—भू० कृ० [स०] (पदार्थ) जिसके आयात-निर्यात, क्रय-विक्रय आदि का राज्य की ओर से निषेध हो। (कॉन्ट्राबैंड)

**निषेध**—पु० ६ अविरोध। घाट-बदी। (एम्बार्गो)

**निषेधवाद**—पु० [स०] [वि० निषेधवादी] आधुनिक पाश्चात्य क्षेत्रों मे निराश भाव मे यह मानना कि यह ससार और मनुष्य का जीवन सब निरर्थक है, आदर्शों का कोई मूल्य या महत्त्व नही है और सभी सासारिक बातें तुच्छ और निस्सार हैं और अन्त मे छिन्न-भिन्न होती रहती हैं। (नेगेटिविज्म)

**निषेधाज्ञा**—स्त्री० [सं० निषेध+आज्ञा] वह आज्ञा, जो न्यायालय कोई होता हुआ काम रोकने के लिए देता है। व्यादेश। (इन्जंक्शन)

**निष्कर्ष**—पु० विधिक क्षेत्र मे, किसी अभियोग या वाद की पूरी सुनवाई हो चुकने पर न्यायाधीश अथवा न्यायालय द्वारा निकाला हुआ परिणाम। (फ़ाइन्डिंग)

**निष्क्रमण**—पु० २ किसी देन या आवर्त्तक भार से मुक्त होने के लिए एक ही बार मे कुछ धन एक साथ देकर उससे छुटकारा पाना। (रिडेम्पशन)

**निष्क्रांत**—पु० वह जो किसी विपत्ति या सकट से त्रस्त होकर अपना देश या निवास-स्थान छोडकर दूसरी जगह चला गया हो, या जा रहा हो। निष्क्रमिती। (इवैक्यूई)

**निष्क्रिय-विरोध**—पु० [स०]=निष्क्रिय प्रतिरोध। सत्याग्रह।

**निष्पत्ति**—स्त्री० अध्ययनमय अथवा शिक्षा आदि के द्वारा प्राप्त की हुई योग्यता या विशेषता। (एटेनमेन्ट) जैसे—शैक्षणिक योग्यता।

**निष्पवन**—पु० [स०] [भू० कृ० निष्पादित] १ तरल पदार्थ का चू या रिस कर बाहर निकलना। क्षरण। २ किसी तरल पदार्थ को इस प्रकार एक पात्र मे से दूसरे पात्र मे पहुँचाना या ले जाना कि उसमे की मैल पहलेवाले पात्र मे ही रह जाय। छानना। (फिल्ट्रेशन)

**निस्तारण**—पु० आज-कल विशेष रूप से समुद्र मे डूबे हुए जहाजो, जलने हुए मकानों आदि मे से धन-सपत्ति बचाकर बाहर निकालने की क्रिया या भाव। (सैल्वेज)

**निहित स्वार्थ**—पु० [स०]=अधिष्ठित स्वार्थ।

**नीति-दर्शन**—पु० [स०]=नीति-शास्त्र।

**नीति-विज्ञान**—पु० [स०]=नीति-शास्त्र।

**नीर-क्रिया**—स्त्री० [स०] नल के द्वारा एक स्थान से जल, तेल आदि द्रव पदार्थ पहुँचाने की क्रिया या भाव। नीरण। (पाइपिंग)

**नील-मुद्र**—पु० [स०] १ इमारतों आदि के बनावट से सबध रखनेवाला वह खाका या रेखाकृति, जो छाया-चित्रण की प्रक्रिया से नीले कपड़े या कागज पर उतारी जाती है। २ किसी महत्त्वपूर्ण घटना के सबध का वह विवरण, जो राज्य या शासन की ओर से प्रकाशित किया जाता है। (ब्लूप्रिन्ट)

**नील-मुद्रण**—पु० [स०]=नीलिका-मुद्रण।

**नुक्केदार**—वि० [हिं० नुक्का+फा० दार (प्रत्य०)] १. नोकदार। नुकीला। २ जिसका अगला भाग कुछ दूर तक निकला या बढ़ा हुआ हो। जैसे—नुक्केदार टोपी, नुक्केदार दाढी।

**नेटो**—पु०=नैटो।

**नेति**—स्त्री० न रहने या न होने की अवस्था या भाव। नकारात्मकता। (नेगेशन)

**नेत्र-विज्ञान**—पु० [स०] चिकित्सा-शास्त्र की वह शाखा, जिसमे आँखो की बनावट, उनके अगों की क्रिया-प्रणाली और रोगो का विवेचन होता है। (आफ्थाल्मोलाजी)

**नेम**—पुं० ३. नित्य और नियमित रूप से प्रतिदिन किया जानेवाला काम। नित्य-चर्या। नैत्यक। (स्टीन)

**नैटो**—पु० [अ० नॉर्थ एटलांटिक ट्रीटी आर्गनाइज़ेशन के आरम्भिक अक्षरों का सम्मिलित रूप] अमेरिका और इगलैण्ड द्वारा स्थापित

एक संघटन, जिसमे उत्तरी ऐटलांटिक की रक्षा के उद्देश्य से और भी कई राष्ट्र सम्मिलित हैं।

**नैन मटक्का**—पुं० [हिं० नैन+मटकाना] आँख नचाने या मटकाने की क्रिया या भाव।

**नैन-मूतना**—वि० [हिं० नैन=आँख+मूतना] [स्त्री० नैन+मूतनी] जिसकी आँखो से बहुत जल्दी आँसू निकल पडते हो। जल्दी रो पडने-वाला। (परिहास और व्यंग्य) उदा०—नैन-मूतनी इस कदर बन जाइए क्या फ़ायदा।—इन्शा।

**नैमित्तिक**—वि० ४ जो किसी विशेष (उद्देश्य या कार्य) के लिए किया, दिया या रखा गया हो। (कैजुअल) जैसे—नैमित्तिक कर्मचारी, नैमित्तिक छुट्टी आदि।

**नोका**—पुं० =नोक।

**नोखा**†—वि० [हिं०] [स्त्री० नोखी] =अनोखा।

**नौ आबादी**—स्त्री० [फा०] १ ऐसी आबादी या बस्ती, जो अभी हाल मे बसी हो। नई बस्ती। २. उपनिवेश। (कॉलोनी)

**नौचालन**—पुं० [सं०] नदियों, समद्रों आदि मे नाव या जहाज चलाने की क्रिया, भाव या विद्या। जहाजरानी। (नेविगेशन)

**नौजित**—वि० [सं०] १. समुद्री डाके मे लूटा हुआ। २ युद्धकाल मे शत्रु के समुद्री जहाजों से छीना या लूटा हुआ।

**नौजित न्यायालय**—पुं० [सं०] वह न्यायालय, जो इस बात का विचार करता है कि युद्ध-काल मे समुद्री जहाजों पर रोका हुआ माल विधिक दृष्टि से जब्त किया जा सकता है या नही। (प्राइज कोर्ट)

**नौजित-माल**—पुं० [सं० नौ-जित+फा० माल] १ समुद्री जहाजो पर डाका डालकर लूटा हुआ माल। २ आधुनिक राजनीति मे वह माल, जो शत्रु-देश के जहाजो को रोककर बलपूर्वक उतरवा लिया गया हो अथवा अपने अधिकार मे ले लिया गया हो। (प्राइज)

**न्याय-तंत्र**—पुं० [सं०] वह समस्त राजकीय व्यवस्था, जिसके अन्तर्गत न्यायालयों के द्वारा न्याय के सब काम होते हैं। (जुडिशिअरी)

**न्याय-दर्शन**—पु० [सं०] भारतीय आर्यों के छ. दर्शनों मे से एक, जिसमे किसी तथ्य या बात का यथार्थ ज्ञान प्राप्त करने के लिए तार्किक दृष्टि से उसके विवेचन के नियम और सिद्धात निरूपित हैं। इसके कर्ता कणाद या गौतम ऋषि हैं।

**न्याय-पालिका**—स्त्री० [सं०] १ =न्याय-तंत्र। २. =न्यायांग।

**न्याय-पीठ**—पु० [सं०] १ न्यायालय के न्याय-कर्ता या न्यायाधीश के बैठने का स्थान। न्यायासन। २. लाक्षणिक रूप में, स्वय न्याय-कर्ता अथवा न्यायकर्ताओं का वर्ग या समूह। (बेंच)

**न्यायवादी**—वि० [सं० न्यायवादिन्] [स्त्री० न्यायवादिनी] सदा न्याय-सगत और सच बात कहनेवाला।

पु० विधिक क्षेत्र में, जिसे किसी की ओर से मामले-मुकदमे लड़ने या उनकी पैरवी करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त हो।

**विशेष**—यह पद मुख्तार और वकील के पदों से भिन्न और बहुत उच्च है।

**न्याय-शास्त्री**—पुं० [सं० न्यायशास्त्रिन्] १ न्याय-दर्शन का ज्ञाता या पंडित। नैयायिक। २. दे० 'विधि-शास्त्री'।

**न्यायांग**—पु० [स० न्याय+अग] शासन या सरकार का वह अग या पक्ष, जो न्यायालयों मे न्यायाधीशो के द्वारा न्याय-सबधी सब काम करता-कराता है। न्याय-तत्र। न्याय-पालिका। (जडिशिअरी)

**न्यायाधीन**—वि० [स० न्याय+अधीन] (मकदमा या विवाद) जो अभी विचार के लिए किसी न्यायालय मे उपस्थित हुआ हो, लेकिन जिसका अभी निर्णय न हुआ हो। (सब जुडिस)

**न्यायिक**—वि० [स० न्याय से] १. न्याय सबधी। न्याय का। २ न्यायालयो अथवा न्यायाधीशो से सबध रखने या उनके द्वारा होने-वाला। (जुडिशियल)

**न्यास-धारी**—पु० [स०] वह जिसे किसी प्रकार के न्यास की व्यवस्था का अधिकार दिया गया या उत्तरदायी बनाया गया हो। न्यासी। (ट्रस्टी)

**न्यून रूपक**—पु० [स०] साहित्य मे रूपक अलकार का एक भेद, जिसमे उपमान का आरोप करते समय उपमेय को इससे न्यून अर्थात् घटकर या हीन बतलाया जाता है। यथा—विप्रजि के मन्दिन तजि, करत ताप सब ठौर। भाव सिंह भूपाल की तेज तरनि यह और।—मतिराम।

**पड़ती**—स्त्री० २ कोई ऐसी खाली पडी हुई जमीन, जो कभी जोती-बोई तो न गई हो, फिर भी प्रयत्नपूर्वक खेतीबारी के योग्य बनाई जा सकती हो। (फैलो)

**पतौड़ा**†—पु० [हिं० पत्ता+बडा (पकवान)] कुछ विशिष्ट प्रकार के पत्तो को बेसन में लपेटकर बनाया हुआ पकौडा या बड़ा। जूरी। (पश्चिम)

**पत्र-पंजुवा**—स्त्री० [स०] =पत्र-पेटी।

**पत्थर-तोड़**—वि० [हिं० पत्थर+तोडना] १ (काम) जो उतना ही कठिन और परिश्रम-साध्य हो जितना पत्थर तोडना होता है। २. (आचरण या कथन) जो उतना ही कठोर और विकट परिणाम उत्पन्न करनेवाला हो जितना पत्थर का प्रहार होता है। जैसे—पत्थर-तोड जवाब।

पु० वह व्यक्ति जो पत्थरो को तोडकर उनके छोटे-छोटे टुकडे बनाने का काम करता हो।

**पद-ग्राही**—वि० [स० पद-ग्राहिन्] जो किसी का पद ग्रहण करे और इस प्रकार उसे अपने पद से कुछ समय के लिए हटने का अवसर दे। भार-ग्राही। (रिलीविंग) जैसे—पदग्राही अधिकारी।

**पद-नामित**—भू० कृ० [स०] जिसकी नियुक्ति किसी पद पर हो चुकी हो; परन्तु जिसने अभी तक उस पद का भार न सँभाला हो। (डेजिग्नेटेड) जैसे—पदनामित प्रधान मत्री।

**पद-संज्ञा**—स्त्री० [सं०]=पद-नाम।

**पद्धति**—स्त्री० ४. कोई वैज्ञानिक कार्य करने का वह विशिष्ट ढग या प्रकार, जिसके कुछ निश्चित नियम आदि हों; और जिसके फलस्वरूप उसकी गिनती एक स्वतत्र इकाई के रूप मे होती हो। (सिस्टम) जैसे—चिकित्सा की आयुर्वेदिक पद्धति या यूनानी पद्धति।

**परजीव**—स्त्री० [स० प्रतिजिह्व] जीभ के नीचे का भाग। उदा०—जीभ जाय परजीभ न जाचै। (कहा०)

**परती**—वि० [हिं० परत] १. परत या तह से सबंध रखनेवाला। २ जो परतों या तहो के रूप मे हो। जैसे—परती लकड़ी। (दे०)

**परती लकड़ी**—स्त्री० [हिं०] कुछ विशिष्ट यांत्रिक प्रक्रियाओं से इमारती लकड़ियों की बनी हुई पतली चादर, जो वस्तुतः जमाई हुई परतों के रूप में होती है, और अलमारियों, खिड़कियों, दरवाजों आदि में लकड़ी के तख्तों की जगह लगाई जाती है। (प्लाइ उड, प्लाउ वुड)

**पर-हत्था**—वि० [हिं० पर=पराया+हाथ] [स्त्री० पर-हत्थी] (काम) जो स्वयं अपने हाथों से न किया जाय, बल्कि किसी दूसरे के द्वारा कराया जाता हो। जैसे—पर-हत्था रोजगार, पर-हत्थी खेती आदि।

**परहितवाद**—पुं० [सं०]=परार्थवाद।

**परिक्रमण**—पुं० [सं०] किसी चीज का किसी दूसरी चीज के चारो ओर घूमना। (रिवोल्यूशन)

**परिक्रय**—पुं० ७ बचन मे पड़े हुए व्यक्ति को कुछ धन देकर उसके बदले उसे छुड़ाने की क्रिया। ८ उक्त काम के लिए दिया जानेवाला धन। निष्क्रीत धन। (रैन्सम)

**परिचयी**—वि० [सं० परिचय से] परिचय कराने या देनेवाला। परिचायक। जैसे—पुराने परिचयी ग्रंथों में सन्-संवतों का प्रायः अभाव है।

**परिपाक**—पुं० ५ विकृति-विज्ञान में, वह क्रिया या प्रक्रम, जो शरीर मे किसी रोग के कीटाणु पहुँचने, उस रोग के परिपक्व होने और बाह्य लक्षण या स्वरूप प्रगट होने तक होती है। (इनक्युबेशन)

**परिपुष्टि**—स्त्री० २. किसी के कथन या बात की दूसरे व्यक्ति या साधन के द्वारा पुष्टि या समर्थन। (कोरोबोरेशन)

**परिभोग**—पुं० ३ आज-कल विधिक क्षेत्र में किसी जमीन पर मकान मे रहनेवाले व्यक्ति को आस-पास की जमीन से प्राप्त होनेवाला ऐसा सुभीता, जिससे उसे किसी तरह का आराम या सुख मिलता हो। सुख-भोग। (ईजमेन्ट)

**परिरक्षक**—वि० [स०] १. अच्छी तरह से या सब प्रकार से रक्षा करनेवाला। २ (उपाय या क्रिया) जिसकी सहायता से कोई वस्तु इस प्रकार बचा और सँभालकर रखी जा सके कि वह बहुत दिनों तक काम में आ सके। (प्रिजर्वेटिव)

**परिरक्षण**—पुं० [सं०] [भू० कृ० परिरक्षित] १. अच्छी तरह और सब प्रकार से बचाकर रखने की क्रिया या भाव। २. किसी विशिष्ट उपाय या क्रिया से किसी वस्तु को ऐसा रूप देना कि वह अधिक दिनो तक काम में आने के योग्य रह सके अथवा बचाकर रखी जा सके। (प्रिजर्वेशन)

**परिरक्षा**—पुं० [सं०] १. =परिरक्षण। २. =अभिरक्षा (हिरासत)।
क्रि० प्र०—में देना।—में रखना।—में लेना।

**परिवर्तक**—वि० ५. एक रूप से दूसरे रूप मे परिवर्तन करनेवाला। (ट्रान्सफ़ॉर्मर)

**परिवीक्षण**—पुं० ३ व्यक्ति को किसी काम या पद पर स्थायी रूप से नियुक्त करने से पहले कुछ समय तक इससे वह काम करवाकर देखना कि उसमें यथेष्ट योग्यता या सामर्थ्य है या नहीं। (प्रोबेशन)

**परिवीक्षा**—स्त्री० [सं०]=परिवीक्षण।

**परिशून्य**—वि० २. जिसका प्रभाव, शक्ति आदि नहीं के बराबर कर दी गई हो। प्रभावहीन। (सॉबंड)

**परिसंपत्ति**—स्त्री० [सं०]=परिसंपद।

**परिसंवाद**—पुं० २. किसी सचिंतित गोष्ठी या सभा-समिति में होनेवाली ऐसी बात-चीत, जिसमे किसी विशिष्ट विषय का विचार या विवेचन होता है। (सिम्पोज़ियम)

**परिसीमा**—स्त्री० ३. ज्यामिति में, किसी क्षेत्र या तल के चारों ओर से घेरनेवाली बाहरी रेखा अथवा ऐसी रेखा की लंबाई या विस्तार। (पेरिमीटर)

**परेषक**—वि० [स०] भेजनेवाला। प्रेषक।
पुं० वह जो किसी तक पहुँचने के लिए कोई माल भेजता हो। (कन्साइनर)

**परेषण**—पुं० [स०] [भू० कृ० परेषित] १. भेजने की क्रिया या भाव। प्रेषण। २. कहीं या किसी को पहुँचाने के लिए माल भेजने की क्रिया या भाव। ३. उक्त प्रकार से भेजी हुई चीज या माल। (कन्साइनमेन्ट)

**पर्यायवाचक**—वि० ३. शब्द जिसका अर्थ किसी दूसरे शब्द के अर्थ के समान ही हो। समानार्थक। (सिनोनिमस)

**पर्वतारोहण**—पुं० [स० पर्वत+आरोहण] १ पहाड पर चढना। २ आज-कल मुख्य रूप से बहुत ऊँचे और प्रायः बरफीले पहाडों पर चढने की क्रिया, जिसके लिए बहुत कुछ कौशल और प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है। (माउन्टेनियरिंग)

**पर्वतारोही**—वि० [सं० पर्वत+आरोही] [स्त्री० पर्वतारोहिणी] पहाड पर चढनेवाला।
पुं० आज-कल ऐसा व्यक्ति, जो ऊँचे और बरफीले पहाडों पर चढने की कला में प्रवीण हो। (माउन्टेनियर)

**पलायन**—पुं० ३ किसी प्रकार के दंड-भोग आदि से बचने के लिए भाग कर कहीं दूर चले जाना। अपसरण। (ऐबस्काण्डिन्ग)

**पशुचोर**—पुं० दे० 'गोरू-चोर'।

**पहेला**†—पुं० [हिं० पहेली] बडी और विकट पहेली। उदा०—भानमती का बैला तुम ही यार पहेला।—बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'।

**पाचक-तंत्र**—पुं० [स०] शरीर के अन्दर के वे सब अंग और यंत्र, जो भोजन पचाते हैं। आहार-तंत्र। (एलिमेन्टरी सिस्टम)

**पाचन-तंत्र**—पुं० [स०]=पाचक-तंत्र।

**पाचन-नाल**—स्त्री० [स०] गले के अंदर की वह नली, जिससे होकर आहार या भोजन पेट तक पहुँचता है। (एलिमेन्टरी केनाल)

**पारंपरिक**—वि० [स०] जो परंपरा से चला आ रहा हो। परंपरागत। (ट्रैडीशनल)

**पारेंद्रिय-ज्ञान**—पुं० [सं०]=अतींद्रिय-ज्ञान। (टेलिपैथी)

**पारेषण**—पुं० [स०] १. कोई चीज कहीं भेजने की क्रिया या भाव। २. विद्युत्-यंत्रों के द्वारा समाचार आदि कहीं भेजने की क्रिया या भाव। (ट्रान्समीशन)

**पिछैता**†—वि० [हिं० पीछा+ऐता (प्रत्य०)] [स्त्री० पिछैती] पीछे से अर्थात् बाद में आने, रहने या होनेवाला। 'अगैता' का विपर्याय। जैसे—पिछैती फसल।

**पीत-ज्वर**—पुं० [सं०] एक प्रकार का ज्वर, जिसमें रोगी को कामला या पीलिया नामक रोग हो जाता है और कै आने लगती है। यह कुछ

विशिष्ट प्रकार के मच्छड़ों के द्वारा शरीर में विषाणु प्रविष्ट होने पर उत्पन्न होता है। पीला बुखार । (यलो फीवर)

**पीयूषिका**—स्त्री० [स०]=पीयूष-ग्रंथि।

**पीला बुखार**=पु०=पीत ज्वर।

**पुनर्विचार**—पु० [स०] १ किसी काम या बात के संबंध में एक बार विचार हो जाने पर उसे ठीक करने या सुधारने के लिए फिर से होनेवाला विचार। २. विविध क्षेत्र में, न्यायालय द्वारा किये हुए विचार या निर्णय पर छ विशिष्ट अवस्थाओं में फिर से किया जानेवाला विचार। नजरसानी। (रिविजन)

**पुराख्यान**—पु० [स०]=पुराण-कथा।

**पुराण-कथा**—स्त्री० [स०] १ किसी धर्म सम्प्रदाय के पुराणों आदि में वर्णित देवी-देवताओं आदि की ऐसी अद्भुत और अलौकिक कथाएँ, जिन पर उस धर्म या संप्रदाय के अनुयायियों की आस्था, विश्वास या श्रद्धा हो। (मिथ) २. सभी धर्मों या मतप्रदायों से संबंध रखनेवाली उक्त प्रकार की कथाओं का विज्ञान, शास्त्र या समूह। कथा-शास्त्र। (माइथोलॉजी)

**पुरालेखविद्**—पु० [सं०] वह जो पुरालेख आदि पढ़कर उनके अर्थ लगाने में निपुण हो। पुरालेखों का ज्ञाता। (एपिग्राफ़िस्ट)

**पुलिया**—स्त्री० [हिं० पुल का स्त्री० अल्पा०] वह छोटा पुल जो रेल की पटरियाँ बिछाने या सड़कें बनाने के समय बीच में पड़नेवाले छोटे नालों पर बाँधा जाता है। (कल्वर्ट)

**पुष्टिकरण**—पु० [स०] किसी की कही हुई बात या किये हुए काम की मान्यता या स्वीकृति करते हुए उसकी पुष्टि करने की क्रिया या भाव। संपुष्टि। (कन्फ़र्मेशन)

**पूँजी-पदार्थ**—पु० [हिं०+सं०] ऐसे पदार्थ जिनका उपयोग तरह-तरह की चीजें या माल तैयार करने में होता है। (कैपिटल गूड्स) जैसे—(क) कपड़े बनाने के लिए ऊन, कपास, रेशम आदि। (ख) तरह-तरह की चीजें बनानेवाले कारखानों में लगे हुए यंत्र।

**पूछताछ घर**—पु० [हिं०] किसी कार्यालय या विभाग का वह विशिष्ट स्थान जहाँ उस कार्यालय या विभाग से संबंध रखनेवाली बातें पूछकर जानी जाती हैं। (एन्क्वायरी ऑफ़िस)

**पूति-दूषित**—वि० [स०] (शरीर का अंग) जो पूति से युक्त होने के कारण विषाक्त हो गया हो और सड़ने लगा हो। (सेप्टिक)

**पूर्व-कथ**—पु० [स०]=हक-हफ़ा।

**पूर्वता**—स्त्री० [स०] १. 'पूर्व' का गुण या भाव। २ आगे या पहले होने की अवस्था, गुण या भाव। अग्रता। (प्रेसिडेन्स)

**पूर्व-धारणा**—पु० [स०] तर्क आदि की सिद्धि के लिए पहले से कोई बात कल्पित कर लेना या मान लेना। अभ्युपगम। (एजम्प्शन)

**पूर्वलेख**—पु० २. अनुबंध, संधि, समझौते आदि का वह मूल मसौदा, जिसकी पुष्टि आगे चलकर संबद्ध दलों या पक्षों की ओर से होने को हो। (प्रोटोकोल)

**पूर्वायोजन**—पु० [सं० पूर्व+आयोजन] १. कोई बड़ा कार्य आरंभ करने से पहले उसके लिए किया जानेवाला आयोजन, तैयारी या व्यवस्था। २. कोई बड़ा काम आरंभ करने से पहले उसके संबंध में बनाई जानेवाली योजना। (प्लान)



**पृष्ठाधार**—पु०=पृष्ठ-भूमि।

**पेशगी**—स्त्री०=पेशगी।

**पैमान**—पुं० [फा०] किसी से की जानेवाली प्रतिज्ञा। किसी को दिया जानेवाला वचन।

**पोर्टमैंटो**—पु० [अ०] १. पाश्चात्य ढंग का एक प्रकार का थैला, जिसमें आवश्यक कागज-पत्र आदि रखे जाते हैं। २. दे० 'सूटकेस'।

**पोषक**—वि० १. खिलाने-पिलानेवाला। २. भरण-पोषण करनेवाला। (फ़ीडर)

**पोष-शाला**—स्त्री० [स०]=संवर्धन-शाला।

**पौध-घर**—पु० [हिं०] वह स्थान जहाँ वृक्षों के छोटे-छोटे पौधे इसलिए लगाये जाते हैं कि (क) उनकी उन्नति, विकास और संवर्धन के लिए प्रयोग किये जा सकें अथवा (ख) वे तैयार करके ग्राहकों के हाथ बेचे जा सकें। जंगीरा। (नर्सरी)

**पौधा-घर**—पु० दे० 'पौध-घर'।

**पौर-कर**—पु० [स०] वह कर जो किसी पुर अर्थात् नगर या नगरपालिका में लगता हो। (रेट) जैसे—मकानों पर पानी आदि का लगनेवाला कर।

**पौराणिक**—वि० २ किसी धर्म या संप्रदाय के पुराणों में आई हुई अद्भुत और अलौकिक कथाओं से संबंध रखनेवाला। (माइथोलाजिकल)

**प्रकंद**—पु० [स०] कुछ विशिष्ट प्रकार के ऐसे कंद जो प्रायः पृथ्वी के नीचे होते हैं और जिनकी जड़ें नीचे की ओर और पत्तियाँ ऊपर की ओर होती हैं। (राइजोम)

**प्रकल्पन**—पु० [स०] [भू० कृ० प्रकल्पित] १ किसी भावी घटना या बात के संबंध में कल्पना करने की क्रिया या भाव। २ दे० 'प्रकल्पना'।

**प्रकल्पना**—स्त्री० ५ गणित में, कोई विशिष्ट मान या राशि निकालने से पहले उसके लिए कोई निश्चित मान या राशि या चिह्न अवधारित करना। (प्रीडेस्टीन)

**प्रकाश-गृह**—पु० [स०]=प्रकाश-स्तंभ।

**प्रकाशिकी**—स्त्री० [स० प्रकाश से] भौतिक विज्ञान का वह अंग या शाखा, जिसमें इस बात का विचार होता है कि प्रकाश में क्या-क्या गुण या तत्त्व होते हैं और दृष्टि या नेत्रों को देखने में उससे किस प्रकार की और किस रूप में सहायता मिलती है। (ऑप्टिक्स)

**प्रक्षेप-पथ**—पु० [स०] दे० 'प्रक्षेप-वक्र'।

**प्रक्षेप-वक्र**—पु० [स०] ज्यामिति में वह वक्र रेखा, जो एक ही कोण वाले कई बिंदुओं पर से होती हुई आगे बढ़ती है। २. उक्त रेखा का मार्ग। (ट्रैजेक्टरी)

**प्रचालक**—वि० [सं०] प्रचालन करने या चलानेवाला।

पु० वह जो किसी यंत्र आदि का प्रचालन करता हो। यंत्र से काम लेने के लिए रखे चलानेवाले कारीगर। (ऑपरेटर)

**प्रतिक्षेप**—पु० [स० प्रति√क्षिप् (प्रेरित करना)+घञ्] १. आघात या प्रहार करना। चोट पहुँचाना, २ गृहीत, मान्य या स्वीकृत न करना। अग्राह्य, अमान्य या अस्वीकृत करना। ३. वेगपूर्वक पीछे की ओर मुड़ना, लौटना या हटना। जैसे—खटका हटने पर कमानी का पीछे की ओर होनेवाला प्रतिक्षेप। ४ आगे की ओर किये जाने-

वाले आघात की प्रतिक्रिया के फल के रूप में पीछे की ओर लगनेवाला आघात या झटका। जैसे—बन्दूक या राइफल छोड़ने पर शिकारी के शरीर पर होनेवाला प्रतिक्षेप।

**प्रतिनिधि-मंडल**—पु० [सं०] कुछ विशिष्ट लोगों का वह दल या मंडल जिसे कहीं जाकर प्रतिनिधित्व करने का अधिकार प्राप्त हुआ हो। (डेलिगेशन)

**प्रतिपत्र**—पुं०[सं०] वह पत्र या लेख, जिसके द्वारा किसी सभा, समिति आदि का एक सदस्य अपनी ओर से मतदान करने का अधिकार किसी दूसरे सदस्य को प्रदान करता है। (प्रॉक्सी)

**प्रतिपाल्य**—पुं० आज-कल कोई ऐसा अल्पवयस्क या शारीरिक दृष्टि से असमर्थ व्यक्ति, जो किसी दूसरे के यहाँ रहकर प्रतिपालित होता है। (वार्ड) जैसे—आज-कल भी उनके यहाँ दो अनाथ बालक (अथवा विधवाएँ) प्रतिपाल्य हैं।

**प्रतिफल**—पु० आज-कल विधिक क्षेत्र में वह धन, जो आपस में होनेवाले करार के अनुसार कोई कार्य या सेवा करने के बदले में पारिश्रमिक, शुल्क आदि के रूप में दिया या लिया जाता है। (कान्सिडरेशन) जैसे—जिस समय पुस्तक का अनुवाद कराना निश्चित हुआ था, उस समय उसके प्रतिफल की कोई चर्चा नहीं हुई थी।

**प्रतिबंधित**—भू० कृ० [सं०] जिसके संबंध में कोई प्रतिबंध या शर्त लगी हो। पणित। (कन्डिशन्ड)

**प्रतिवर्तन**—पुं० ५ किसी कार्य या निश्चय को इस प्रकार बदलना कि उसका रूप बिलकुल उलटा हो जाय। (रिवर्सन)

**प्रति-समाघात**—पुं० [सं०] एक स्थान पर होनेवाले समाघात (आघात या प्रहार) के परिणाम अथवा फल के रूप में किसी दूसरे और दूरस्थ स्थान पर लगनेवाला झटका या उत्पन्न होनेवाला संक्षोभ। (रिपर्कशन)

**प्रति-साम्य**—पु०=सम-मिति।

**प्रत्यक्षतः**—क्रि० वि० [सं०] १. प्रत्यक्ष रूप से। २. ऊपर से या पहले-पहल देखने पर। प्रथम दृष्ट्या। (प्राइमा फेसी)

**प्रत्यावर्तन**—पु० २. किसी तल या पदार्थ पर पड़नेवाले ताप, प्रकाश, शब्द आदि का उलटकर किसी ओर मुड़ना। ३ उक्त प्रकार से लौटकर पड़ने या आनेवाला ताप, प्रकाश या शब्द। (रिफ्लेक्शन) जैसे—किरण या तरंग का प्रत्यावर्तन।

**प्रत्याशा**—स्त्री० ४. किसी काम या बात की संभावना के लिए मन में होनेवाली आशा। आशंसा। (एक्सपेक्टेशन)

**प्रथम वृद्ध्या**—क्रि० वि० [सं०] पहले पहल अथवा ऊपर से देखने पर। प्रत्यक्षतः। (प्राइमा फेसी)

**प्रदाहक**—वि० [सं०] १. प्रदाह करनेवाला। २. इन्द्रिय ऊतकों को जलाने या नष्ट करनेवाला। क्षारक। दाहक। (कॉस्टिक)

**प्रभार**—पु० [सं०] किसी व्यक्ति पर रखा जानेवाला कोई ऐसा कार्य-भार, जिसके लिए वह उत्तरदायी ठहरता हो। (चार्ज)

**प्रभिन्न**—वि० [सं०] [भाव० प्रभिन्नता] जो अपनी किसी प्रकार की विशिष्टता के कारण अपने वर्ग के औरों से अलग या भिन्न माना और समझा जाता हो। (डिस्टिंक्ट)

**प्रभिन्नता**—स्त्री० [सं०] प्रभिन्न होने की अवस्था, गुण या भाव। (डिस्टिंक्शन)

**प्रभेद**—पु० ३ वह स्थिति, जिसमें कोई वस्तु या व्यक्ति अपने किसी विशेष गुण या तत्त्व के कारण औरों से अलग या भिन्न माना जाता हो। ४. उक्त प्रकार की स्थिति में रहने के कारण प्राप्त होनेवाला गौरव, प्रमुखता या सम्मान। (डिस्टिंक्शन) उक्त दोनों अर्थों में।

**प्रभेदी (दिन)**—वि० [स०] (गुण या तत्त्व) जिसके कारण कोई औरों से प्रभिन्न या प्रभेद-युक्त माना जाता हो। (डिस्टिंक्टिव)

**प्रयासी**—वि० [स० प्रयासिन्] प्रयास अर्थात् कोशिश करनेवाला।

**प्रशासकीय**—वि० [स०] १. प्रशासन-संबंधी। २ प्रशासक का। २. दे० 'प्रशासनिक'।

**प्रशिक्षणार्थी**—पु० [स० प्रशिक्षणार्थिन्] [स्त्री० प्रशिक्षणार्थिनी] वह जो किसी कला या विद्या का प्रशिक्षण प्राप्त कर रहा हो। (ट्रेनी)

**प्रशिक्षार्थी**—पु० [स०]=प्रशिक्षणार्थी।

**प्रसंगवाद**—पु० [स०] यह सिद्धांत कि ईश्वरीय विधान के अनुसार मन और शरीर दोनों सभी प्रसंगों में एक दूसरे पर प्रतिक्रियात्मक रूप में कार्य करते हैं। (ओकेजनलिज्म)

**प्रसारण-गृह**—पु० [स०] वह भवन या स्थान, जहाँ से रेडियो द्वारा वार्ताएँ, संगीत, सूचनाएँ आदि प्रसारित की जाती हैं। (ब्रॉडकास्टिंग स्टेशन)

**प्रसुप्त**—भू० कृ० २ (पदार्थ का गुण, प्रभाव या बल) जो अन्दर वर्तमान होने पर भी कुछ कारणों से अभी दबा हुआ हो और सक्रिय न हो। (डार्मेन्ट)

**प्रसुप्ति**—स्त्री० २ किसी जीव या तत्त्व की वह स्थिति, जिसमें उसकी सब क्रियाएँ और चेष्टाएँ कुछ समय तक बिलकुल बंद या स्थगित रहती हैं। तंद्रा। (टार्मेन्सी)

**प्रसूति-विद्या**—स्त्री० [सं०] =धात्री विद्या।

**प्रस्राव**—पु० २. किसी वस्तु के अन्दर से कोई तरल पदार्थ निकलकर बाहर की ओर बहना। ३. घाव, फोड़े, आदि में से मवाद या कोई दूषित तरल अंश बहना या रस कर बाहर निकलना। ४ उक्त प्रकार से बाहर निकलनेवाला तरल अंश या मवाद। (डिस्चार्ज)

**प्रहार**—पु० २ कोई ऐसा आक्रामक कार्य, जो जान-बूझकर किसी को हानि पहुँचाने अथवा कोई दूषित परिणाम उत्पन्न करने के लिए किया गया हो। (एसॉल्ट)

**प्राक्कल्पना**—स्त्री० [सं०] पहले से की जानेवाली कोई ऐसी कल्पना, जो किसी भावी या संभावित स्थिति के संबंध में निरूपित की गई हो और जिसके आधार पर आगे के लिए कोई तर्क, निर्णय या विचार किया जाता हो। तर्क, विचार आरंभ करने के लिए किसी ऐसी बात या मत की कल्पना कर लेना, जिसके घटित होने की कोई संभावना हो सकती हो। (हाइपोथेसिस) जैसे—मान लीजिए कि इस जंगल में आग लग जाय, तो फिर जलाने की लकड़ी कहाँ से आयेगी। इसमें "मान लीजिए कि इस जंगल में आग लग जाय" प्राक्कल्पना है।

**प्राक्कल्पित**—भू० कृ० [स०] (धारणा, निर्णय या विचार) जो किसी भावी घटना या बात के संबंध में यह मान या सोचकर स्थिर किया गया हो कि यदि ऐसा हुआ, तो। पहले से यह सोचकर कल्पित किया हुआ कि यदि ऐसा हुआ तो। (हाइपोथेटिकल)

**प्रागुपस्तव**—वि० [स०] किसी के संबंध के विचार से उसके प्रसव अर्थात्

जन्म से पहले होनेवाला। जन्म-पूर्व। (ऐन्टि-नेटेल) जैसे—हिंदुओं मे बालकों के कुछ प्रागुप्रसव संस्कार भी होते हैं। जैसे—गर्भाधान, पुंसवन आदि।

**प्राप्य**—पु० किसी की ओर बाकी निकलनेवाला वह धन, जो विधिक दृष्टि से प्राप्त होने को हो अथवा प्राप्त किया जा सकता हो। किसी के यहाँ बाकी पड़ी हुई रकम। (ड्यूड)

**प्रायोजना**—स्त्री० [स० प्र+आयोजना] किसी बड़ी बहुमुखी या या विस्तृत योजना का कोई ऐसा मुख्य अश या कार्य, जिसे आरंभ करने के लिए विशेष अध्यवसाय और प्रयत्न की आवश्यकता होती हो। (प्रोजेक्ट)

**प्रेरक हेतु**—पु० [स०] वह उद्देश्य या हेतु, जिससे प्रेरित होकर कोई काम किया जाता है। प्रयोजन। (मोटिव)

**प्रेषक**—वि० २ किसी के नाम कोई पारसल आदि भेजनेवाला। परेषक। (कन्साइनर)

**प्रेषिती**—पु० [स०] वह व्यक्ति, जिसके नाम रेल-पार्सल अथवा उसकी बिल्टी भेजी जाय। (कन्साइनी)

**फर्फंद**—स्त्री० [हि०]=फफूँदी।

**फरेब**—पु० २ कपट और छल से युक्त ऐसा आचरण या व्यवहार जो दूसरों की धन-संपत्ति आदि अनुचित रूप से प्राप्त करने के लिए किया जाय। धोखा। (फ्रॉड)

**फर्द-जुर्म**—स्त्री० [फा० फर्द-जुर्म] वह पत्र, जिसमे किसी के किये हुए अपराधो या किसी पर लगाये हुए अभियोगों की तालिका रहती है। आरोप-पत्र। अभियोग-पत्र। कलदरा। (चार्ज-शीट)

**फर्द-सजा**—स्त्री० [फा० फ़र्द-सज़ा] वह पत्र, जिस पर किसी को मिले हुए दडो या सजाओं की तालिका रहती है।

**फालदू**†—पु० [देश०] उत्तरी भारत के पहाड़ी प्रदेशो मे बोझ ढोनेवाला मजदूर।

**फुल-माल**—स्त्री० [हि० फूल+माला] फूलो की माला। पुष्प-माल।

**फुल-हार**—पु० [हि० फूल+हार=माला] फूलों का हार। फूलो की माला।

†पु०=फूल-हारा।

**बक्तर**—पु० [स० वक्त्र (एक प्रकार का पहनावा) से फा० बकतर] मध्य युग मे, युद्ध के समय पहना जानेवाला एक प्रकार का अँगरखा जिसमे आगे और पीछे दो-दो तवे लगे रहते थे। कवच। चार-आईना। सन्नाह। (आर्मर)

**बक्तरपोश**—पु० [फा० बकतर पोश] ऐसा घोड़ा, जो बक्तर पहनकर युद्ध करता था।

**बक्तरबंद**—वि० [फा० बकतरबद] (गाडी या ऐसी ही और कोई चीज) जिस पर रक्षा के लिए बक्तर की तरह लोहे की मोटी-मोटी चादरें या तवे जड़े हों। कवचित। (आर्मर्ड)

**बक्तरबंद गाड़ी**—स्त्री० [फा० बकतरबद+हि० गाड़ी] युद्ध मे सैनिको के काम आनेवाली ऐसी गाडी, जिस पर गोले-गोलियो आदि की मार से रक्षित रहने के लिए लोहे की मोटी-मोटी चादरें जडी रहती हैं; और जिन पर प्राय छोटी या हल्की तोपें या मशीनगनें भी रहती हैं। कवचित गाडी। (आर्मर्ड कार)

**बक्तर**—पु० =बकतर।

**बचाव**—पु० ३. अपने आपको आक्रमण, कष्ट, सकट आदि से बचाने के लिए किया जानेवाला उपाय या प्रयत्न। प्रतिरक्षा। (डिफेंस)

**बच्चा-घर**—पु० [हि०]=शिशु-शाला। (नर्सरी)

**बछ-पाड़ा**—पु० [हि० बछडा+पाडा] गाय और भैंसे के सयोग से उत्पन्न बछडा।

**बजरी**—स्त्री० चट्टानों, पहाडों आदि से झडकर निकलनेवाली बहुत ही छोटी-छोटी ककडियाँ, जिनमे प्राय कुछ मिट्टी या रेत भी मिली होती है। (ग्रैवेल)

**बढ़ौती**—स्त्री० [हि० बढना+औती (प्रत्य०)] १ बढ़ने की अवस्था, क्रिया या भाव। २ कपनियो के ऋण-पत्रो हिस्सों आदि का अकित अथवा नियत मूल्य से बढा हुआ वह अतिरिक्त मूल्य, जो कुछ विशिष्ट परिस्थितियो मे दिया या लिया जाता है। अधिमूल्य। बढोत्तरी। (प्रिमियम)

**बद-सलूका**—वि० [फा० बद+अ० सलूक] दूसरो के साथ अशिष्ट या बुरा व्यवहार करनेवाला।

**बनकटाई**—स्त्री० [हि० बन+काटना] किसी स्थान पर के जगल या वन इसलिए काटना कि वह साफ होकर खेती-बारी या बस्ती के लिए उपयक्त हो जाय। निर्वनीकरण। (डिफारेस्टेशन)

**बप्पा-बैर**—पु० [हि० बाप+बैर=शत्रुता] १ आपस मे होनेवाला ऐसा वैर या शत्रुता जो बाप-दादा के समय से चली आ रही हो। २. लाक्षणिक रूप में प्रबल शत्रुता।

**बम्हनई**†—स्त्री० [हि० बाम्हन=ब्राह्मण] १. ब्राह्मण होने की अवस्था, गुण या भाव। ब्राह्मणत्व। २ यजमानों आदि से पुजाने की ब्राह्मणो की वृत्ति।

**बम्हनौटी**†—स्त्री० [हि० बाम्हन=ब्राह्मण] गाँव का वह अंश या विभाग, जिसमे अधिकतर ब्राह्मण रहते हैं।

**बलूजा कागज**—पु० दे० 'रेशमाल'।

**बल्लिका**—स्त्री० [बलिया शहर के नाम पर मल्लिका का अनु०] कुछ लोगों के अनुसार बलिया और उसके आस-पास की बोली, जो भोजपुरी की एक शाखा है।

**बहिरावर्त**—पु० [स० बहिर्+आवर्त] किसी कथित या विशिष्ट राष्ट्र का वह भू-खंड, जो किसी पराये राष्ट्र के भीतरी भाग मे पडता हो और प्राय चारों ओर से घिरा हुआ हो। 'अंतरावर्त' का विपर्याय। (एक्सक्लेव) जैसे—पूर्वी पाकिस्तान मे भारत के बहुत-से बहिरावर्त हैं।

**बहुक निगम**—पु० [सं०]=समष्टि निगम।

**बहु-भाषक**—वि० [सं०] बहुत अधिक बोलनेवाला।

**बहु-भाषज्ञ**—पु० [सं०] वह जो बहुत-सी भाषाएँ जानता हो। अनेक भाषाओं का ज्ञाता या पडित।

**बहु-भाषी**—वि० बहुत अथवा अनेक भाषाओं से संबंध रखनेवाला। जैसे—बहुभाषी सामयिक पत्र।

**बाँझ**—वि० [स० वंध्या] १ (मादा जंतु या स्त्री) जो किसी शारीरिक विकार के कारण संतान प्रसव करने मे पूर्णत असमर्थ हो। २. जो किसी प्रकार का उत्पादन या फल की सृष्टि न कर सकता या न

कर सका हो। उदा०—दिन की घड़ियाँ रह गईं, हाय बाँझ की बाँझ।—बालकृष्ण शर्मा नवीन। ३ संतों की परिभाषा मे अज्ञान या ज्ञानहीन (व्यक्ति)।

**बाधा**—स्त्री० किसी काम या बात के बीच में पडनेवाली कोई ऐसी रुकावट, जिससे वह काम या बात कुछ समय के लिए रुकती या स्थगित होती हो। (इन्टरप्शन)

**बाधरिया**—पु० [?] जिप्सी जाति के लोगो की भारतीय शाखा, जिनके कुछ लोग अपराधशील होते और कुछ जगह-जगह घूम कर कँची, चाकू आदि कई तरह की चीजें बेचते फिरते हैं।

**बीमा-किस्त**—स्त्री० [फा० बीमा+अ० किस्त] कुछ नियत अवधियो पर किस्त या खडिका के रूप मे वह धन, जो बीमा करानेवाले को अपने जीवन या सम्पत्ति के बीमे के बदले चुकानी या देनी पडती है। (प्रिमियम)

**बुझाव**—पु० [हिं० बुझाना] बुझाने की क्रिया, ढग या भाव।

**बुझावा**—पु० [हिं० बुझाना+ठ ा या शीतल करना] औद्योगिक क्षेत्र मे वह क्रिया, जिसमे किसी गरम या पिघली हुई धातु को किसी रासायनिक घोल मे इसलिए डालते हैं कि धातु मे कोई नया गुण या विशेषता उत्पन्न हो। (एटेम्परमेन्ट)

क्रि० प्र०—देना।

**बुद्धि-दुर्बलता**—स्त्री० [स०]=बुद्धि-दौर्बल्य।

**बुद्धि-दौर्बल्य**—पुं० २. दे० 'अमानसता'।

**बुलक्कड़**†—पु० [हिं० बोलना] वह जो बहुत अधिक बोलता या बातें करता हो। बहुत बडा वाचाल।

**बेड़ा**—पु० ३. आज-कल लडाई मे काम आनेवाले बहुत-से ऐसे समट्टी अथवा हवाई जहाजों का समूह, जो किसी एक प्रधान अधिकारी की अधीनता में किसी विशिष्ट क्षेत्र या भू-भाग मे काम करता हो। (फ्लीट)

**भगत**†—स्त्री० [हिं० भगत?] दूसरों को छलने या ठगने अथवा धोखे मे रखकर अपना स्वार्थ सिद्ध करने की क्रिया या भाव।

**भगतबाज**—पु० [हिं०+फा० ] [भाव० भगतबाजी] वह जो भगत के द्वारा अर्थात् झूठे आर्थिक प्रलोभन मे फँसाकर लोगो से धन-दौलत ठगता हो। भगलिया। (स्विंडलर)

**भगतबाजी**—स्त्री० [हिं०+फा०] भगतबाज होने की अवस्था, गुण या भाव। (स्विंडलिंग)

**भगीरथ-प्रयत्न**—पु० [स०] बहुत कुछ वैसा ही प्रबल और विकट प्रयत्न, जैसा राजा भगीरथ को स्वर्ग से इस पृथ्वी पर गंगा को लाने के लिए करना पड़ा था।

**भग्नाश**—वि० [स० भग्न+आशा] जिसकी आशा टूट चुकी हो। हताश।

**भटमास**†—पु०=भटवाँस।

**भड़ैती**—स्त्री० [हिं० भड़ैत] भड़ैत होने की अवस्था या भाव।
†पु० [स्त्री० भड़ैतिन]=भड़ैत।

**भद्राक्ष**—पु० [सं०] रुद्राक्ष की तरह का एक वृक्ष, जिसके फल के बीज देखने में बहुत कुछ रुद्राक्ष की तरह होते हैं। परन्तु धार्मिक दृष्टि से इन बीजो का महात्म्य रुद्राक्ष की अपेक्षा कम माना जाता है।

**भस्मी**—स्त्री० [सं० भस्म+हिं० ई (प्रत्य०)] १. हिंदुओं में मृतक के दाहकर्म के उपरान्त चिता जल चुकने के बाद बची हुई राख और हड्डियाँ, जो प्रायः तीसरे दिन एकत्र करके नदी जाती और बहते में किसी पवित्र जलाशय या नदी मे प्रवाहित की जाती है। चिता का भस्मावशेष। फूल। २ अग्निहोत्र की राख, जो धार्मिक दृष्टि से पवित्र मानकर तिलक रूप में मस्तक पर तथा शरीर के और अगों पर लगाई जाती है।

**भारग्राही**—वि० [स० भारग्राहिन्] जो किसी अधिकारी के कहीं चले जाने पर और अस्थायी रूप से उसके कार्य का भार ग्रहण करता और चलाता हो।

**भारी-भड़कम**—वि०=भारी-भरकम।

**भारी-भरकम**—वि० [हिं० भारी+अनु० भरकम] १ बहुत अधिक भारी। जैसे—भारी-भरकम शरीर। २ बहुत अधिक बडा और विस्तृत। जैसे—भारी-भरकम योजना। ३ भव्य और विशाल। जैसे—भारी-भरकम मकान।

**भाषण**—पु० ५. दूसरो को कोई गभीर या कुछ विषय अच्छी तरह समझाने या सिखाने के लिए उसके सबध मे कही जानेवाली विवेचनात्मक और विस्तृत बाते। (लेक्चर) जैसे—विश्वविद्यालय की कक्षा मे होनेवाला प्राध्यापक का भाषण। (ख) भवनो की मडली या श्रोताओ के सामने होनेवाला धर्माचार्य का भाषण। ५. वक्तृता। व्याख्यान।

**भाषांतरण**—पु० [स०] [भृ० कृ० भाषांतरित] एक भाषा मे लिखे हुए लेख आदि का दूसरी भाषा मे अनुवाद करने की क्रिया या भाव। अनूदन। (ट्रान्सलेशन)

**भाषा-तत्त्व**—पु० अनुशीलन की वह शाखा (भाषा-विज्ञान से भिन्न) जिसमे किसी विशिष्ट भाषा की प्रकृति, विकास, व्याकरण, कलात्मक सौंदर्य, स्वरूप आदि का अध्ययन, मनन, विश्लेषण आदि किया जाता है। भाषिकी। (लिंविस्टिक्स)

**भाषा-तत्त्वज्ञ**—पु० [स०] वह जिसने किसी विशिष्ट भाषा का भाषा-तत्त्व की दृष्टि से अध्ययन, अनुशीलन और मनन किया हो। 'भाषा-विज्ञानी' से भिन्न। भाषिकी-वेत्ता। (लिंविस्ट)

**भाषा-विज्ञानी**—वि० [स०] भाषा-विज्ञान सबधी। भाषा-विज्ञान का। पु० वह जो भाषा-विज्ञान का अच्छा ज्ञाता या पडित हो। 'भाषा-तत्त्वज्ञ' से भिन्न। (फ्राइलोलोजिस्ट)

**भाषिकी**—स्त्री० [स० भाषिक से]=भाषा-तत्त्व। (दे०)

**भाषिकी-वेत्ता**—पु०=भाषा-तत्त्वज्ञ। (दे०)

**भू-मंडल**—पु० २. सारी पृथ्वी का गोलाकार पिंड। (ग्लोब)

**भू-मितिक**—वि० दे० 'भौमितिक'।

**भौमितिक**—वि० [स०] भू-मिति सबधी। भू-मिति का।

**मंदा**—पु० बाजार में वह स्थिति, जब किसी चीज के ग्राहक बहुत कम होते हैं या दाम कुछ गिरने लगता है। मदी। उदा०—मुकुति आदि मंदे में मेली।—सूर।

**मक्खी**—स्त्री० ३ एक विशेष प्रकार का बहुत छोटा पेंच, जो बन्दूक की नाल के अगले सिरे पर कसा जाता है और जिसकी सहायता से निशाने की ठीक सीध देखी जाती है। (फोरसाईट)

**मक्खियाँ वही**—पुं० [हिं०] ऐसे दूध का जमाया हुआ दही, जिसमे से मक्खन पहले ही अलग निकाल लिया गया हो।
'सजाव दही' से भिन्न।

**मक्खिया दूध**—पु० [हिं०] ऐसा दूध जिसमे से मक्खन निकाल लिया गया हो।

**मछवाहा**†—पु०=मछुआ।

**मछुआ**†—पु०=मछुआ।

**मछेरा**†—पु० मछुआ।

**मजहबी राज्य**—पु० [अ+स०] =धर्मतंत्र राज्य।

**मत**—पु० किसी विषय मे विचारपूर्वक निरूपित या स्थिर किया हुआ ऐसा सिद्धात, जिसे साधारणत सब लोग ठीक मानते हों। उपपत्ति। वाद। (विलगी)

**मत-गणक**—पु० [स०] वह जो सभा, सस्थाओ आदि मे सदस्यों के मत-पत्रो की गणना करके उनका परिणाम अधिकारियो को बतलाता हो। (टेलर)

**मत-गणन**—पु० [स०] लोक-तत्री व्यवस्था मे किसी विषय मे लोगों के दिये हुए मतो या मत-पत्रो की आधिकारिक रूप से गणन करने की क्रिया। अधिकारियो, मत-दाताओ आदि को बतलाने के लिए प्राप्त मतो की गिनती करना।

**मताग्रह**—पु० [स० मत+आग्रह] अपने मत अर्थात् विचार, सिद्धांत आदि के सबध मे होनेवाला अतिरिक्त आग्रह या हठ। (डॉगेटिज्म)

**मतार्थक**—पु० [स० मत+अर्थक] वह जो मतदाताओ से यह कहता-फिरता हो कि आप निर्वाचन के समय अमुक व्यक्ति के पक्ष मे अपना मत दे। (कैन्वॉसर)

**मध्यवर्ती राज्य**—पु० [स०]=अतस्थ राज्य।

**मनमाना**—वि० ३ (बात या विचार) जो किसी तर्क या सिद्धात पर आश्रित न हो, बल्कि केवल अपनी प्रवृत्ति या रुचि के अनुसार और बिना उपयुक्तता का ध्यान रखे व्यक्त या स्थिर किया गया हो। (आर्बिट्रेरी)४ जिससे या जिसे मन मानता हो अर्थात् अच्छा, अनुकूल या उपयुक्त समझता हो। मनोनुकूल। जैसे—अब तो तुम्हें मनमाने मित्र मिल गये न। ५ जिसे मन हर तरह से ठीक मानता हो, फिर चाहे वह अच्छा हो या बुरा। फलत. जो उच्छृखल और स्वच्छन्द वृत्ति के अनुरूप हो। जैसे—मनमाना आचरण, मन-मानी कार्रवाई। ६ जो मन को पूरी तरह सन्तुष्ट और सुखी करता हो। जैसे—मनमाना सुख।

**मनस्तत्त्व**—पु० [स०] मन का वह अश, तत्त्व या शक्ति, जो बिलकुल नैसर्गिक रूप से काम करती है और जिसके विषय मे भौतिक या वैज्ञानिक दृष्टि से कुछ भी जाना नही जा सकता। (साइकिक एलिमेन्ट)

**महेनजर**—अव्यय० [फा०] निर्णय, विचार आदि के समय दृष्टि के सामने रखकर। ध्यान में रखते हुए। जैसे—आपको इस झगडे का फैसला हमारी सब बातों को महेनजर रखकर करना चाहिए।
क्रि० प्र०—रखना।

**मनिआर्डर**—पु० [अ०] दे० 'धनादेश'।

**मनानी**†—स्त्री० [हिं० मामा+आनी (प्रत्य०)] मामा की पत्नी, मामी। (मूसल०)

**मरणोत्तरक**—वि० [स० मरण+उत्तर+क (प्रत्य०)] किसी के सबध के विचार से उसकी मृत्यु के उपरान्त होनेवाला। (पौस्थमस, पोस्थमस) जैसे—(क) मरणोत्तरक उपाधि=किसी की मृत्यु के उपरान्त उसे दी जानेवाली उपाधि। (ख) मरणोत्तरक सतान=किसी की मृत्यु के उपरान्त जन्म लेनेवाली उसकी सन्तान।

**महनायथ**†—पु०=महना-मत्थन।

**महासाधिक**—पु० [स०] गौतम बुद्ध के वे अनुयायी, जो बौद्ध धर्म मे अनेक प्रकार के सुधार करके उसे अधिक उदार तथा व्यापक रूप देने के पक्षपाती थे। आगे चलकर यही लोग महायान संप्रदाय के प्रवर्तक हुए और महायानी कहलाए।

**माध्यम**—पु० ५ रसायन-शास्त्र मे, वह निस्कीटित पोषक द्रव्य, जिसमें पालन-पोषण, सवर्धन आदि के लिए जीवाणु या विषाणु रखे जाते हैं। ६ प्रेतात्म विद्या मे, जिसके सबध में यह माना जाता है कि आवाहन करने पर प्रेतात्माएँ उस शरीर मे आती हैं और उसी के द्वारा प्रश्नो के उत्तर अथवा अपने सन्देश देती हैं। (मीडियम)

**मानकीकरण**—पु० २ किसी वस्तु के उत्पादन, निर्माण या रचना के सबध मे उनका ऐसा रूप स्थिर करना कि उनके खरेपन, शुद्धता, श्रेष्ठता आदि के सबध में किसी प्रकार का सन्देह करने का अवकाश न रह जाय। (स्टैन्डर्डाइज़ेशन) जैसे—औषधों या वस्त्रों का मानकीकरण।

**मानव-कल्प**—पु० [स०] वानर जाति के कुछ ऐसे प्राणियो की सज्ञा, जो मानसिक और शारीरिक दृष्टि से अपेक्षया अधिक उन्नत और विकसित होते हैं। (ऐंथोपॉएड) जैसे—ओरग-ऊटग, गिबन, गोरिल्ला, सिम्पैन्जी आदि।

**मानविकी**—स्त्री० [सं० मानव से] १ समस्त ससार में बसी हुई सारी मानव जाति। २ मनुष्यों मे रहनेवाले सभी आवश्यक और शुभ गुणों का समाहार या सामूहिक रूप। ३ वे सब शास्त्र, जिनमें मानव जाति के श्रेष्ठ विचारों का विवेचन या निग्रह होता है, जैसे—इतिहास, कला, दर्शन, साहित्य आदि। (ह्यूमैनिटी)

**मान्यता**—स्त्री० वह स्थिति, जिसमे कोई बात अपने तर्क, बुद्धि, विश्वास, श्रद्धा आदि के आधार पर मान ली जाती है। (एजम्प्शन)

**मापड़ा**†—पु० [?] किसी व्यक्ति के लिए तुच्छता सूचित करते हुए उसकी हँसी उडाने का शब्द। (बाजारू)

**मापड़ी**—स्त्री० [?] नवयुवती और सुन्दरी स्त्री।

**मापनी**—स्त्री० २ गज आदि की तरह का कोई ऐसा उपकरण जिससे चीजों की लबाई, चौडाई आदि नापी जाती हों। (स्केल)

**मालगुंजी**—स्त्री० [स०] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

**मालमता**—पु० २ किसी व्यक्ति की वह सारी सम्पत्ति, जिसे सहज मे बेचकर दाम खड़े किये जा सकते हों अथवा जिसे द्रव्य या धन के रूप में परिवर्तित किया जा सकता हो। परिसपद। (एसेट्स)

**मालियाना**—वि० [फा० मालियान] माल अर्थात् धन-सपत्ति से सबंध रखनेवाला। आर्थिक। माली। जैसे—किसी सवाल का मालियाना पहलू।
†पुं०=मालगुजारी (जमीन की)

**मालीखौलिया**—पु०=मालीखूलिया।

**माहपारा**—पुं० [फा० माहपारः] इतना अधिक सुन्दर कि देखने में चाँद के टुकड़े के समान जान पड़ता हो।

**मिजाज**—पुं० मनुष्य के मन की वह सामान्य और स्वाभाविक स्थिति जो उसकी क्रियाओं, प्रवृत्तियों, रुचियों आदि की निर्णायक भी होती है और सूचक भी। (डिस्पोजीशन) जैसे—उसका मिजाज शुरू से ही चिड़चिड़ा (या सख्त) है।

**मिथ्याचारी**—पुं० [सं० मिथ्याचारिन्] [स्त्री० मिथ्याचारिणी] वह जो प्रायः अथवा स्वाभाविक रूप से मिथ्याचार करता हो। ढोंगी। (हिपोक्रीट)

**मिलावटी**—वि० [हिं० मिलावट+ई (प्रत्य०)] (पदार्थ) जिसमें कोई घटिया या रद्दी चीज मिलाई गई हो। अपमिश्रित। (एडल्टेरेटेड) जैसे—मिलावटी घी, मिलावटी चाँदी।

**मिली भगत**—स्त्री० [हिं० मिलना+भगत (छल-कपट) ?] ऐसी स्थिति, जिसमें दो या कई दल या व्यक्ति मिलकर आपस में किसी प्रकार की गुप्त अभिसंधि या षड्यंत्र रचते हों और दूसरों को अपने जाल में फँसाकर स्वार्थ सिद्ध करते हों। (कोन्यूजन) जैसे—जान पड़ता है कि भारत की कुछ भूमि हड़पने के लिए यह चीन और पाकिस्तान की मिली भगत है।

**विशेष**—'मिली भगत' और 'साट-गाँठ' का अन्तर जानने के लिए देखें 'साट-गाँठ' का विशेष।

**मुद्रालेख**—पुं० [सं०] मुद्रा अर्थात् सिक्के पर अंकित वह लेख या किसी प्रकार का चिह्न जिससे उसके चलानेवाले का नाम, देश और समय सूचित होता है। सिक्के पर का लेख। (लीजन्ड)

**मुद्रीकरण**—पुं० [सं०] [भू० कृ० मुद्रीकृत] १ मुद्रा या सिक्के बनाने की क्रिया या भाव। २. किसी वस्तु को ऐसा रूप देना कि वह विधिक दृष्टि से मुद्रा या सिक्के की तरह प्रचलित हो सके। (मनीटाइजेशन) जैसे—कागज के नोटों का मुद्रीकरण।

**मुफलिस**—वि० ऐसा व्यक्ति, जिसके पास कुछ भी धन-संपत्ति न हो। परम धनहीन। अकिंचन। (पॉपर)

**मुर्की**—स्त्री० गाने-बजाने में तीन स्वर एक साथ और बहुत जल्दी या तेजी से कोमलता या सुन्दरता-पूर्वक निकालने की क्रिया, जो अलंकारिक मानी जाती है।

**मुलाकाती**—पुं० वह जो किसी से मुलाकात या भेंट करने के लिए आता हो या आया हो, मिलने के लिए आनेवाला व्यक्ति। (विजिटर)

**मूल्य-ह्रास**—पुं० [सं०] चीजों के घिसने-पिसने या बाजार में भाव गिरने आदि के कारण किसी वस्तु के मूल्य में होनेवाली कमी। अर्घ-पतन। (डेप्रिसिएशन)

**मृद्भांड**—पुं० १. मिट्टी का बर्तन। २ दे० 'मृण्पात्र'।

**मौंजवान् (वत्)**—वि० [सं० मौंज+मतुप्, म=व, तुम दीर्घ न लोप] मुंजवान नामक पर्वत में होने या उससे संबंध रखनेवाला।

**मौंजी**—पुं० [सं० मौंजिन्] वह जो मूँज की मेखला पहने हो।
वि० मौंजीय।

**मौंजीय**—वि० (सं० मुंजा+छ, छ=ईय) १ मूँज संबंधी। २ मूँज का बना हुआ।

**मौकुलि**—पुं० [सं० मुकुल+इञ्] कौआ।

**मौच**—पुं० [सं०√मुच् (छोड़ना)+अण्] केला (फल)।

**मौद्गलि**—पुं० [सं० मुद्गल+इञ्] कौआ।

**मौनता**—स्त्री० [सं० मौन+तल-टाप्] मौन होने या रहने की अवस्था या भाव। चुप होना। चुप्पी। मौन।

**मौष्टिक**—पुं० [सं० मुष्टि+ठक, ठ=इक] चोरी।

**मौसम-विज्ञान**—पुं० [अ०+सं०] वह विद्या या विज्ञान जो वातावरण संबंधी विक्षोभों आदि की विवेचना करके मौसम संबंधी बातें पहले से बतलाता है। (मिटिअरोलॉजी)

**म्लेच्छ-मुख**—पुं० [सं०] तोंबा।

**यंत्र-पुत्रिका**—स्त्री० [सं०] एक तरह की कठपुतली, जो यंत्रों से चलाई जाती है।

**यंत्र-सज्ज**—वि० [सं०] १. यंत्रों से युक्त। २ अस्त्र-शस्त्रों से युक्त (सेना)।

**यंत्रांश**—पुं० [सं० ब० स०] संगीत में एक प्रकार का राग जो हनुमत के मत से हिंडोल राग का पुत्र है।

**यंत्रिकी**—स्त्री० [सं०] छोटी साली।

**यक्षता**—स्त्री० [सं० यक्ष+तल्] यक्ष होने की अवस्था, धर्म या भाव। यक्षपन।

**यक्षत्व**—पुं० [सं० यक्ष+त्व] =यक्षता।

**यक्षप**—पुं० [सं० उप० स०]=यक्ष-पति।

**यक्ष-रस**—पुं० [सं० ष० त० स०] एक प्रकार का मादक द्रव।

**यक्षांगी**—स्त्री० [सं० ब० स०] एक प्राचीन नदी।

**यक्षामलक**—पुं० [सं० ष० त० स०] पिंड-खजूर।

**यक्ष्मि**—वि० [सं०] १ यक्ष्मा संबंधी। २. जिसमें यक्ष्मा के कीटाणु हों। ३ यक्ष्मा की ओर प्रवृत्त।

**यजुश्रुति**—पुं० [सं० ष० त० स०] यजुर्वेद।

**युजुष्पात्र**—पुं० [सं० ष० त० स०] एक प्रकार का यज्ञ-पात्र।

**यजूवर**—पुं० [सं० ष० त० स०] ब्राह्मण।

**यमजात**—पुं०=यमज।

**यम-प्रस्थ**—पुं० [सं० ष० त० स०] एक प्राचीन नगर जो कुरुक्षेत्र के दक्षिण में था।

**यमया**—स्त्री० [सं० यम+√या+क, टाप्] ज्योतिष के अनुसार एक प्रकार का नक्षत्र-योग।

**यम-सूर्य**—पुं० [सं० द्वंद्व स०] दो कमरोंवाला ऐसा घर, जिसका एक कमरा उत्तर को और दूसरा कमरा पश्चिम को खुलता है।

**यम-स्तोम**—पुं० [सं० द्वन्द्व स०+अच्] एक दिन में होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

**यमातिशय**—पुं० [सं० ष० त० स०] ४९ दिनों में होनेवाला एक प्रकार का यज्ञ।

**यमादित्य**—पुं०[सं० यम+आदित्य, कर्म० स०] सूर्य का एक रूप।

**यवभत्यक**—पुं०[सं० यव+त्वा (आदान)+क, यवत्व+क] एक पक्षी (सुश्रुत)

**यव-शाक**—पुं०[सं० ष० त० स०] एक प्रकार का साग।

**यव-सुरा**—स्त्री०[सं० ष० त० स०] यव-मद्य। (दे०)

**यवान**—वि०[सं० यु+मानच्] वेगवान्। तेज। क्षिप्र।

**यवानिका**—स्त्री०[स० यव+ङीप्+आनुक] अजवायन।

**यवाम्ल**—पु०[सं० ष० त० स०] जौ के माँड की काँजी।

**यवाश**—पु०[स० उप० स०] एक प्रकार का कीडा, जो जौ की फसल को हानि पहुँचाता है।

**यविरा**—स्त्री०[स० यव रा] यव अर्थात् जौ का बना हुआ शीतल, हल्का मादक पेय। (बियर)

**यवोदभव**—पु०[सं० ब० स०] जवाखार।

**यवावती**—स्त्री० [स०√यु+यत्+टाप्—यव्या+मतुप्+ङीप] १ वैदिक युग की एक नदी। २ उक्त नदी के तट पर का एक प्राचीन नगर।

**याग-संतान**—पु०[सं० ष० त० स०] इन्द्र के पुत्र जयत का एक नाम।

**याज**—वि०[स०√यज्+णिच्] यज्ञ करनेवाला। याचक।
पु० १ अनाज। अन्न। २ एक प्राचीन ऋषि।
†पु० यज्ञ।

**याजुषी-अनुष्टुप**—पु० [स० याजुष+ङीप्, याजुषी-अनुष्टुप्, ब्यस्तपद] एक वैदिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे आठ वर्ण होते है।

**याजुषी-उष्णिक**—पु० [स० ब्यस्तपद] एक वैदिक छद, जिसके प्रत्येक चरण में सात-सात वर्ण होते है।

**याजुषी गायत्री**—स्त्री० [सं० ब्यस्तपद] एक वैदिक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे ६ वर्ण होते हैं।

**याजुषी जगती**—स्त्री०[स० ब्यस्तपद] एक वैदिक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे बारह वर्ण होते हैं।

**याजुषी त्रिष्टुप**—पु०[स० ब्यस्तपद] एक वैदिक छद, जिसके प्रत्येक चरण मे नौ वर्ण होते है।

**याजुषी बृहती**—स्त्री० [स० ब्यस्तपद] एक वैदिक छद जिसके प्रत्येक चरण मे नौ वर्ण होते हैं।

**यावतूर**—पु०[स० यवतूर+अण्] एक प्रकार का साम।

**यावु**—पु०[स०√या+उ+टक] १ जल। पानी। २ तरल पदार्थ।

**याह**—वि०[स०] यवु सबधी। यवु का।
पु० वरुवजी।

**याप्या**—स्त्री०[स०√या+णिच्+क—याप्त+टाप्] जटा।

**यामक**—पु०[स० यम+ण्वुल्] पुनर्वसु (नक्षत्र)।

**यामकिनी**—स्त्री० [स० यामक+इनी+ङीप्] १ कुल-वधू। कुल-स्त्री। २ लडके की पत्नी। पुत्र-वधू। ३ बहन। भगिनी।

**यामीर**—पु०[स० याम+ईरच्] चन्द्रमा।

**यार्कायन**—पु०[स० यर्क+फक्] यर्क ऋषि के गोत्र में उत्पन्न पुरुष या अपत्य।

**यावक**—पु०[स० यव+ण्वुल्] मक्का। जुआर।

**यावु**—पु०[सं०] १ आलिंगन। परिरभण। २. मैथुन। सभोग।

**युगल-बंदी**—स्त्री० [स०+फा०] ऐसा गाना, जो दो आदमी मिलकर गाते हों। २ ऐसा बाद्य सगीत जिसमे दो अलग-अलग प्रकार के बाजे साथ मिलकर बजाये जाते हो। जुगल-बदी। (इयूएट) जैसे—बाँसुरी और शहनाई की युगल-बदी।

**युक्त**—वि० [सं०√युज् (योग)+यत्] १. मिला हुआ। संयुक्त। २. जो मिलाया जा सके या मिलाया जाने को हो। ३. उपयुक्त।
पु० १. मिलान। संयोग। २ सबधावस्था। नातेदारी। ३. स्वजन। बधु। ४ एक प्रकार का साम।

**युधिक**—वि०[स०√युध्+ठक्] युद्ध करनेवाला।

**युनेस्को**—पु०[अ० यूनाइटेड नेशन्स एजुकेशनल साइटिफिक ऐंड कल्चरल आर्गनाइजेशन के आरंभिक अक्षरो का समूह] सयुक्त राष्ट्र सघ की शाखा के रूप में एक सस्था, जो सारे ससार मे शिक्षा, विज्ञान और सांस्कृतिक विषयों का प्रचार और समन्वय करने के उद्देश्य से बनी है।

**योग-निद्रालु**—पु०[स० योग-निद्रा+आलुच] विष्णु जो प्रलय के समय योगनिद्रा लेते है।

**योगापत्ति**—स्त्री०[स०] प्रथा, रीति-नीति आदि के कारण होनेवाला सस्कार।

**योगिका**—स्त्री०[स०] छपाई, लिखाई आदि मे एक प्रकार का चिह्न जो यौगिक पदो या शब्दो मे एक दूसरे से उनका पार्थक्य दिखाने के लिए बीच मे लगाया जाता है; और जिसका रूप होता है '–' सयोजन-चिह्न। (हाइफेन)

**यौध**—पु०[स० योध+अण्] योद्धा। सिपाही।

**रंग-भेद**—पु० [स०] आधुनिक राजनीति मे, जिसमे मनुष्य के शरीर के काले, गोरे, पीले, आदि वर्णों के भेद के कारण उन्हे छोटा-बडा माना जाता है, और अपने वर्ण के सिवा दूसरे वर्ण के लोगो के साथ समानता का व्यवहार नही किया जाता। (कलर बार)

**रंग-मध्य**—पु० [स० ष०त० स०] रगमच। रग-स्थली।

**रक्त-आमातिसार**—पु० [स० ष० त० स०] एक प्रकार का आतिसार रोग जिसमे लहू के दस्त आते है।

**रक्त-केशी (शिन्)**—वि०[स० रक्त-केश+इनि] जिसके बाल लाल रंग के हों।

**रक्त-पद्मी**—स्त्री० [सं० ब० स०] लज्जावती पौधा।

**रक्त-वह**—वि०[स०] (नस) जिसमे से होकर शरीर का रक्त बहता है।

**रक्तातिमय**—पु० [स० मध्य० स०] एक प्रकार का अधिमय रोग, जो रक्त के विकार के कारण होता है।

**रक्ताभिष्यंद**—पु०[स० रक्त-अभिष्यद, कर्म० स०] आँखो के लाल होने यथा उनमे से लाल पानी टपकने का एक रोग।

**रक्तिम**—वि० [स०] [भाव० रक्तिमा] रक्त के रग की सी आभा-वाला।

**रक्षोपाय**—पु०[स० रक्षा+उपाय] पहले से किया जानेवाला ऐसा उपाय या व्यवस्था, जिससे आगे चलकर किसी प्रकार के संकट या हानि से बचाव या सुरक्षा हो सकती हो। रक्षा-कवच। (सेफ-गार्ड)

**रजोविरति**—स्त्री०[सं०] रजो-निवृत्ति। (दे०)

**रट्टू**—वि०[हि० रटना] १ बहुत अधिक या लगातार रहनेवाला। २. (बालक या विद्यार्थी) जो अपना पाठ रट तो लेता हो; पर उसे पूरी तरह से हृदयगम न करता हो।

**रत-आली**—स्त्री० [स०] कटनी।

**रतिक**—वि०[स०] रति-सबधी। रति का।
पु० संगीत मे कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**रति-नाग**—पु० [स० ष०त० स०] सोलह प्रकार के रति-बधों मे से एक। (काम-शास्त्र)

**रद्द-बदल**—पु०[फा० रद्दोबदल] पहले की कुछ चीजों या बातों को रद्द या निरर्थक करके उनके स्थान पर नई चीजें या बातें रखना। २ आमूल अथवा आंशिक परिवर्त्तन। हेर-फेर। (ऑल्टरेशन)

**रद्दोबदल**—पु०[फा०]=रद्द-बदल।

**रन**—पुं०[सं० इरण=रेगिस्तान] १. मरुभूमि। रेगिस्तान। २. भारत के पश्चिमी प्रदेश कच्छ का वह रेगिस्तानी इलाका, जो समुद्र-तल से कुछ नीचा पड़ता है और वर्षा-ऋतु मे समुद्री ज्वार के जल से भर जाता है।

**रनि-रत्नक**—पु०[स० रणिरत्न+कन्] माणिक्य। मानिक।

**रवैया**—पु० ४ किसी कार्य के प्रति होनेवाला दृष्टिकोण या मनोवृत्ति। अभिवृत्ति। रुख। (ऐटिच्यूड)

**रस-नायक**—पु०[ष० त०] १. शिव। २ पारा।

**रसायक**—पु०[स० ब० स०] एक प्रकार की घास।

**रसाली (लिन्)**—पु०[सं० रसाल+इनि] १. गन्ना। २. चना। ३. एक प्रकार का कर्णाटकी राग।

**रहस्य-भाव**—पुं०[स० ष० त०] १. संसार के झगड़ों को छोड़कर एकांत स्थान मे निवास करना। २. वह जो उक्त प्रकार से संसार छोड़कर विरक्त हो गया हो।

**रहाइशी!**—वि०=रिहाइशी।

**राकेट**—पु०[अ० रकेट] १. बान नाम की आतिशबाजी। २ उक्त के अनुकरण पर बना हुआ एक प्रकार का आधुनिक यंत्र, जिसके एक सिरे पर भभकनेवाले पदार्थ भरे रहते हैं, जो जलनेपर उस यंत्र को आकाश मे बहुत ऊपर उड़ा ले जाते हैं।

**विशेष**—कुछ राकेट तो आकाश मे पहुँचकर सकेतात्मक प्रकाश करते हैं, कुछ घातक अस्त्रों का काम करते हैं; और कुछ का उपयोग अनेक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसधानो के लिए होता है।

**राजकीय**—वि० २. राजा या महाराजा से संबध रखनेवाला। राजशाही। (रॉयल)

**राज-क्षमा**—स्त्री०[स०] ऐसे राजनीतिक अपराधियों को राज्य की ओर से मिलनेवाली सार्वजनिक क्षमा, जिन्होंने राज्य के विरुद्ध कोई अनुचित कार्य या अपराध किया हो। (एमनेस्टी)

**राजत्व**—पु० २ किसी देश या राज्य मे एकमात्र राजा का ही होनेवाला अनियंत्रित शासन। राजशाही। शाही। (किंगशिप)

**राजदूर्वा**—स्त्री०[स० ष० त०] मोटे कांडों वाली एक प्रकार की दूब।

**राज-धर्तूरक**—पु०[स० राज-धर्तूर, ष० त०+कन्] एक प्रकार का धतूरा, जिसके फूल कई आवरण के होते हैं। कनक-धतूरा।

**राज-नीम**—पु०[सं० ष० त०] मरकत मणि। पन्ना।

**राज-पटोल**—पु०[स० मध्य स०] एक प्रकार का परवल।

**राज-पट्टिका**—स्त्री०[स० ष० त०] बकोर। चातक।

**राजपर्णी**—स्त्री० [सं० ष० त०] प्रसारिणी लता।

**राज-भद्रक**—पु०[स० ष० त०] १. पारदर का पेड़। परिभद्रक। २. नीम। ३. कड़ा नामक वनस्पति। ४ कुटज। ५ सफेद मदार।

**राजशाही**—वि०[हिं० राजा+फा० शाह] राजाओं या महाराजाओं से संबध रखनेवाला। राजकीय। (रायल) २. राजाओं-महाराजों आदि की तरह का। राजसी। जैसे—राज-शाही ठाट-बाट।

स्त्री० वह स्थिति, जिसमें किसी देश पर राजा का अनियंत्रित शासन होता है। राजत्व। शाही। (किंगशिप) जैसे—कश्मीर मे उन्हें राजशाही का अंत करने के प्रयत्न में बार-बार जेल जाना पड़ा।

**राजस्थानी**—वि०[हिं० राजस्थान] राजस्थान संबधी। राजस्थान का। जैसे—राजस्थानी लोकगीत।

पु० राजस्थान का निवासी।

स्त्री० राजस्थान की बोली या भाषा।

**राजिक**—पु०[स०]=बनगाय।

**राज्य-धर**—पु०[स० राज्य√धृ (धारण)+अच्] राज्य का पालन। शासन।

**राज्य-मंडल**—पु०[स०] आधुनिक राजनीतिक मे दो या अधिक देशों या राज्यों के योग से बना हुआ वह मडल या संस्था, जिसे किसी विशिष्ट उद्देश्य से स्थायी रूप प्राप्त हुआ हो। परिसघ। (कनफेडरेशन)

**राज्य-स्थायी (यिन्)**—पु० [स० राज्य√स्था (गति-निवृत्ति)+णिनि] राजा। शासक।

**राज्यसात्**—वि०[स०] जिसे राज्य या शासन ने किसी विशेष कारणवश पूरी तरह से अपने अधिकार या कब्जे मे कर लिया हो। जब्त किया हुआ। (कान्फिस्केटेड) जैसे—राज्यसात् सपत्ति, राज्यसात् साहित्य।

**राज्यसात्करण**—पु०[स०] १ दड के रूप मे सरकार द्वारा किसी के धन या सपत्ति का छीन लिया जाना। उस पर कब्जा कर लेना। २. राज्य का किसी दूषित और हानिकारक लेख, सामयिक पत्र, साहित्य आदि का प्रचलन या प्रचार रोकने के लिए उसकी सब प्रतियाँ अपने अधिकार मे कर लेना। जब्ती। (कान्फिस्केशन)

**रामधुन**—स्त्री०[स० राम+हिं० धुन (ध्वनि)] राम-राम, सीताराम, रघुपति राघव राजाराम आदि राम-संबधी भजनो का कीर्तन।

**रामा-प्रिय**—पु०[स० ष० त०] दारचीनी।

**रात्र्या**—स्त्री०[स०√रम् (क्रीडा)+ष्यन्+टाप्] रात्रि। रात।

**राशनिंग**—स्त्री०[अ०] अनुभाजन।

**राष्ट्रपति शासन**—पु०[स०] वह शासन प्रणाली, जिसमे प्रधान अर्थात् राज्य का अध्यक्ष राज्य का मुख्य तथा सर्वोपरि होता है। मत्रि-मडलीय शासन-प्रणाली से भिन्न। (प्रेज़िडेंशियल गवर्नमेंट)

**राष्ट्रिक**—पु० ३ आज-कल वैधानिक दृष्टि से वह व्यक्ति, जो या तो जन्म से या वैधीकरण की विधि के अनुसार किसी राष्ट्र का अधिकार-प्राप्त अग या सदस्य हो। (नेशनल)

**राष्ट्रिकता**—स्त्री०[स०] १ राष्ट्रिक होने की अवस्था, गुण या भाव। २ आज-कल मुख्य रूप से वह स्थिति, जिसमे कोई व्यक्ति वैधानिक दृष्टि से किसी राष्ट्र का राष्ट्रिक (अग और सदस्य) होता है। (नैशनेलिटी)

**राष्ट्रिका**—स्त्री [स० राष्ट्र+ईष्+क+टाप्] कटकारी। भटकटैया।

**राह-चबैनी**—स्त्री०[फा० राह+हिं० चबैना] हिंदुओं मे दान की एक प्रथा, जिसमें ३६० लड्डू कुछ मुने हुए चने और थोड़ी दक्षिणा इस उद्देश्य से ब्राह्मणो को बाँटी जाती है कि दाता को मरने के उपरान्त परलोक की यात्रा मे साल भर तक बराबर खाने को मिलता रहे।

**राहित्य**—पु० [स०] रहित होने की अवस्था, गुण या भाव। रहितत्व।

**राहुच्छत्र**—पु०[स० ष० त०] अदरक। आदी।

**रिंखण**—पु० [स०√रिंख् (गति)+ल्युट्] १. फिसलना। लड़खड़ाना। २. विचलित होना। डिगना।

**रिआयत**—स्त्री०५. किसी के कष्ट, संकट आदि का ध्यान रखते हुए उसे दी जानेवाली कोई ऐसी सहायता या सुविधा, जिससे उसके कष्ट में कुछ कमी हो। ६. किसी प्रकार के उपचार, औषध आदि से पीड़ा, रोग, आदि में होनेवाली कमी या न्यूनता। (रिलीफ़, उक्त दोनों अर्थों में) जैसे—इस दवा से बुखार तो उतरेगा ही खाँसी में भी कुछ रिआयत होगी।

**रिक्ति**—स्त्री०[सं०] १. रिक्त होने की अवस्था, गुण या भाव। २. दे० 'रिक्तिका'।

**रिक्तिका**—स्त्री०[सं०] किसी बात या वस्तु में कोई ऐसा अवकाश या छिद्र, जिसमें से कोई चीज बाहर निकल सकती हो। ऐसा छिद्र या मार्ग, जिसमें बाहर निकल सकने का अवसर मिल सकता हो। (लेकुना) जैसे—इस विधान में कई रिक्तिकाएँ हैं, जिससे इसका उद्देश्य पूरी तरह से सिद्ध नहीं हो सकता।

**रिक्थ**—पु०[स०√राध् (संसिद्धि)+अच् (वा) इत्व] वसत ऋतु.

**रिपुवाह**—वि०[स० रिपु+√वह् (प्रवाह)+अच्] पाप या पातक का नाश करनेवाला।

**रिषोक**—पु० [स०√रिष् (हिंसा)+ईकन्] १. शिव। २. तन्दवार।

**रिहाइश**—स्त्री० ३. किसी स्थान पर रहने की क्रिया या भाव। आवास। (रेज़िडेन्स)

**रिहाइशी**—वि०[फा०] (भवन या स्थान) जिसमें कोई रिहाइश या आवास करता हो। आवासीय। (रेज़िडेन्शल)

**रीज्या**—स्त्री०[सं०√रिज् (गर्जन)+क्यन्+टाप्] १ घृणा। नफरत। २ निंदा। ३. भर्त्सना।

**रीढ़क**—पु०[स० रीढ+कन्] रीढ़।

**रीति-बंधिक**—पु०[सं०] संगीत में, कर्नाटकी पद्धति का एक राग।

**रस**—पु० किसी काम या बात के संबंध में मनुष्य का वह मनोगत भाव जो उसे कुछ करने या न करने के लिए प्रवृत्त करता है। अभिवृत्ति। रुझान। (एटिट्यूड)

**रूँधना**†—स०=रौंधना। उदा०—माटी कहे कोंहार सों तू का रूँधे मोंहि। एक दिन ऐसा आयगा मैं रूँधूँगी तोहि।—कबीर।

**रूढ़**—वि० जो लोक में किसी रूढ़ि के अनुसार परंपरा से चला आया हो, या प्रचलित हो। (कन्वेन्शनल)

**रूढ़िवाद**—पु०[सं०] यह मत या सिद्धांत कि हमें रूढ़ियों अर्थात् परंपरा से चली आई प्रथाओं, रीतियों, व्यवहारों आदि का ही पालन करना चाहिए; उनका परित्याग नहीं करना चाहिए। (कन्वेन्शनलिज्म)

**रूढ़िवादी**—वि०[सं०] रूढ़िवाद-संबंधी। रूढ़िवाद का।

पु० वह जो रूढ़िवाद का अनुयायी या समर्थक हो। (कन्वेन्शनलिस्ट)

**रूपांतरण**—पु० २. विधिक क्षेत्र में, एक प्रकार के दंड को बदलकर उसके स्थान पर दूसरे प्रकार का अथवा दूसरा ऐसा दंड देना, जो अपेक्षया कम कठोर हो। (कम्यूटेशन) जैसे—फाँसी की सजा रद्द करके उसकी जगह आजीवन कारावास की सजा देना।

**रेगमाल**—पु०[फा०] एक प्रकार का कागज, जिस पर बालू और कुरड पत्थर का चूरा चिपकाया जाता है; और जिससे लकड़ी की चीजें रगड़कर चिकनी और साफ की जाती हैं। बलुआ कागज। (एमरी-पेपर)

**रेचक-पंथा**—पु०[स०+हिं०]=निकास-पंखा।

**रेडार**—पु०[अं०] दे० 'तेजोन्वेष'।

**रेडियाई**—वि०[अं० रेडियो+हिं० आई (प्रत्य०)] १ रेडियो संबंधी। रेडियो का। जैसे—रेडियाई कवि सम्मेलन। २. रेडियो के द्वारा प्रस्तुत किया जानेवाला। जैसे—प्रसाद की कहानी का रेडियाई रूपांतर।

**रैन-बसेरा**—पु०[हिं० रैन=रात+बसेरा] १ वह स्थान जहाँ रहकर सुख से रात बिताई जाती हो। २ आजकल बड़े नगरों में वह स्थान, जहाँ ऐसे गरीब कुछ किराया देकर अथवा यों ही रात बिताते हैं, जिनका कोई घरबार नहीं होता।

**रैली**—स्त्री० [अं०] बहुत से ऐसे लोगों का जमावड़ा, जो किसी विशिष्ट उद्देश्य की सिद्धि के लिए किसी विशिष्ट स्थान पर हो। जैसे—बाल-चरों की रैली; राष्ट्रीय स्वयंसेवक दल की रैली, श्रमिक दल की रैली आदि।

**रोग-विज्ञान**—पु०[स०]=विकृति-विज्ञान।

**रोजही**†—स्त्री०[फा० रोज—हिं० ही (प्रत्य०)] १ काम करने की वह प्रथा, जिसमें पारिश्रमिक या वेतन प्रति दिन के हिसाब से मिलता है। २. उक्त प्रकार से मिलनेवाला पारिश्रमिक या वेतन।

क्रि० प्र०—कमाना।

३. रुपए उधार देने और लेने की एक प्रथा, जिसमें सूद प्रतिदिन के हिसाब से जोड़ा और लिया या दिया जाता है।

मुहा०—**रोजही चलाना**=उक्त ढंग से लोगों के रुपए उधार देने का व्यवसाय करना। **रोजही लेना**=उक्त ढंग से किसी से ऋण लेना।

**रोधाधिकार**—पु० [स० रोध+अधिकार]=निषेधाधिकार।

**रोना**—वि० ३ जो देखने में रोना हुआ सा जान पड़े। जैसे—रोनी सूरत। ४ बहुत ही उदास और तेजहीन। प्रभा, शोभा आदि से बिलकुल रहित।

**रोमांतिका**—स्त्री० [स०] खसरा या मसूरिका नाम का रोग। (मीज़िल्स)

**रोब**—पु० ३. किसी प्रकार का अपमान या हानि होने पर मन में उत्पन्न होनेवाली अप्रसन्नता या नाराजगी। अमर्ष। (रिजेन्टमेन्ट)

**लंकाई**—वि० [हिं० लंका+ई (प्रत्य०)] १. लंका संबंधी। लंका का। २. लंका में रहने या होनेवाला।

पु० लंका देश का निवासी।

स्त्री० लंका देश की भाषा।

**लंकेश्वरी**—स्त्री० [स०] १. लंका की रानी। २. रावण की पत्नी मन्दोदरी। ३. संगीत में, एक प्रकार की रागिनी।

**लंचा**—पुं० २. अंगवात नामक रोग, जिसमें शरीर का कोई अंग या पार्श्व बहुत-कुछ निर्जीव या संज्ञा-शून्य हो जाता है। पक्षाघात। (पैरालिसिस)

**लखनवी**—वि० [लखनऊ, उत्तर प्रदेश का नगर] १. लखनऊ संबंधी। लखनऊ का। लखनौआ। २. लखनऊ में रहने या होनेवाला। जैसे—मीर लखनवी। (उर्दू)

**लखनौआ**†—वि० उम० [लखनऊ, उत्तर प्रदेश का नगर] १. लखनऊ संबंधी। लखनऊ का। जैसे—लखनौआ खरबूजा, लखनौआ टोपी। २. लखनऊ में रहने या होनेवाला।

**लघुकरण**—पु० २. किसी कड़ी या बड़ी सजा को हलकी या छोटी सजा का रूप देना। (कम्यूटेशन, उक्त दोनों अर्थों के लिए)

**लगाम**—स्त्री० [फा०]=लगाम।

**लटकन**—पु० २. कोई ऐसी छोटी गोलाकार या लंबोतरी चीज, जो किसी बड़ी चीज के नीचे शोभा, सुन्दरता आदि बढ़ाने के लिए लटकती हुई लगाई जाती है। (पेन्डेन्ट) जैसे—मोतियों की माला या हीरे के हार का लटकन।

**लड़ाव**—पु० [हिं० लड़ना+आव (प्रत्य०)] एक दूसरे से लड़ने की क्रिया या भाव। २ टक्कर खाना। टकराना। जैसे—समुद्र की लहरें लड़ाव पर थीं।—उग्र।

**लतिहाव**†—पु० [हिं० लात+हाव (प्रत्य०)] खच्चरों, घोड़ों आदि का आपस में एक दूसरे पर अपनी पिछली टाँगों से प्रहार करना। जैसे—तबेले में होनेवाला लतिहाव।

**लपाड़िया**†—वि० [हिं० लप-लप से अनु०] १ झूठा। मिथ्यावादी। २. बहुत बढ़-बढ़ कर बोलनेवाला। डींग हाँकनेवाला। लबार।

**लपोड़ा**†—पु०=लप्पड (थप्पड़)।

**लबरा**—वि० २. बहुत बढ़-बढ़कर बोलनेवाला। डींग हाँकनेवाला।

**लबाड़**—वि० ३. बहुत बढ़-बढ़ कर बोलनेवाला। डींग हाँकनेवाला।

**लब्धिका**—स्त्री० [सं० लब्धि से] कोई ऐसी समता या विशेषता, जो विशेष परिश्रम या प्रयत्नपूर्वक अर्जित या प्राप्त की गई हो। उप-लब्धि। (एटेनमेन्ट)

**लबारी**†—पु० [हिं० नील या लाल ?] वह जो कपड़े रँगने का व्यवसाय करता हो। रँगरेज। (पश्चिम)

**ललित**—वि० ६ जो इतना सुकुमार और सुन्दर हो कि सहज में लोगों को मुग्ध कर सके। (फाइन) जैसे—ललित कला।

**ललित पंचम**—पु० [सं०] संगीत में एक प्रकार का राग।

**ललिता गौरी**—स्त्री० [सं०] संगीत में, एक प्रकार की रागिनी।

**ललीका**—स्त्री० ३ शरीर में कुछ विकृत अवस्थाओं से उत्पन्न होनेवाला एक प्रकार का वर्णहीन तरल पदार्थ, जो ऊतकों में से निकलता और रक्त में जा मिलता हो। (लिम्फ)

**लहरा**—पु० ३ सब कामों की ओर से निश्चिन्त होकर पूर्ण मनोयोग से सुख-भोग की ओर प्रवृत्त होना या उसका आनन्द लेना। जैसे—बरसात में वह कई-कई दिन बगीचे में रहकर लहरा लेते हैं। ४. कोई ऐसी क्रिया या बात, जिसके फलस्वरूप लोगों में किसी प्रकार का ईर्ष्या-द्वेष, लड़ाई-झगड़ा, प्रतिस्पर्धा आदि उत्पन्न हो। जैसे—तुम्हें भी लहरा लगाना खूब आता है।

क्रि० प्र०—लगाना।

**लहराव**—पु० [हिं० लहराना] लहराने की अवस्था, क्रिया या भाव।

**लापड़**†—पु० [हिं० पापड़ का अनु०] कई तरह की दालों को पीसकर बनाया हुआ पापड़। (राज०)

**लाभांश**—पु० २. उद्योग-धंधे, व्यापार आदि में यथेष्ट लाभ होने पर उसका वह अंश जो हिस्सेदारों के सिवा कर्मचारियों आदि को भी प्रसन्न तथा संतुष्ट रखने के लिए उनके वेतन आदि के अतिरिक्त दिया जाता है। (बोनस)

**लार-गद्दी**—स्त्री० [हिं०] छोटे बच्चों का एक प्रकार का पहनावा जो उनके गले में और छाती पर इसलिए पहनाया जाता है कि उनके मुँह से गिरनेवाली लार से उनके बदन पर के अच्छे कपड़े खराब न हों। (बिब)

**लाल-ताला**—पु० [हिं०] राज्य द्वारा रक्षित वनों की सड़कों के मुहाने पर बने हुए फाटकों पर बंद किया जानेवाला वह ताला, जो शिकारियों आदि को दूर या बाहर रखने के लिए लगाया जाता है और जिसे पार करके जंगलों में जाना अपराध माना जाता है। (रेड लॉक)

**लाश-घर**—पु० दे० 'मुरदा-घर'।

**लिटर**—पु० [अ०] दशमिक प्रणाली में, आधानों, पात्रों आदि की धारिता निश्चित करने का एक आधारिक मान, जो ६१.०२५ घन इंचों के बराबर होता है।

**विशेष**—इसका उपयोग प्रायः तरल पदार्थ नापने के लिए होता है। अब भारत में भी इसका प्रचलन हो गया है।

**लिप्यंतर**—पु० [सं० लिपि+अंतर] किसी भाषा के लेख या विचार का वह रूप, जो उसकी मूल लिपि में प्रस्तुत किया गया हो, परन्तु मूल की भाषा ज्यों की त्यों रहने दी गई हो। (ट्रैन्सिलटरेशन)

**लिप्यंतरण**—पु० [सं० लिपि+अंतरण] किसी भाषा में लिखे हुए लेख या विचार ज्यों के त्यों उसी भाषा में, परन्तु दूसरी लिपि में लिखने की क्रिया या भाव। (ट्रैन्सिलटरेशन)

**लिफाफिया**—पु० वह जो केवल दूसरों को दिखाने के लिए ऊपरी तड़क-भड़क या बनावटी दिखावट रखता हो।

**लिफाफेबाज**—पु० [भाव० लिफाफेबाजी]=लिफाफिया।

**लुगदी**—स्त्री० [देश०] १ गीली पीसी हुई चीज की छोटी गोली। जैसे—भाँग की लुगदी। २ आजकल कुछ विशिष्ट प्रकार की घासों, डंठलियों, पत्तियों, बाँसों आदि से तैयार किया हुआ वह गूदा, जिससे कागज बनाया जाता है। (पेपर पल्प)

**लुप्ति**—स्त्री० [सं०] १ लुप्त अर्थात् गायब या गुम होने की अवस्था या भाव। २ किसी काम या बात के बीच में भूल से कोई अंश छूट या रह जाने की अवस्था या भाव। चूक। (ओमीशन)

**लैटिन**—वि० [अ०] १ प्राचीन रोम और इटली से संबंध रखनेवाला या उससे उद्भूत। २ उक्त की प्राचीन भाषा, संस्कृति और सभ्यता से संबंध रखनेवाला या उससे प्रस्तुत।

**लैटिन अमेरिका**—पु० [सं०] पश्चिमी गोलार्द्ध में अमेरिका के संयुक्त राज्यों, कनाडा तथा ब्रिटेन के उपनिवेशों को छोड़कर बाकी के सभी देश, जिनमें पुर्तगाली, फ्रांसीसी और स्पेनी भाषाएँ बोली जाती हैं।

**लोकतंत्र**—पु० १. लोक अर्थात् सारे जन-समाज का तंत्र या शासन। २ आधुनिक राजनीति में ऐसी शासन-प्रणाली, जिसमें सभी वयस्क पुरुषों और स्त्रियों को यह अधिकार प्राप्त होता है कि शासन-कार्य के लिए वे अपने प्रतिनिधि चुनें।

**विशेष**—इस शासन-प्रणाली के मुख्य लक्षण या विशेषताएँ ये हैं—(क) इसमें बहुमत का निर्णय ही सब लोगों को मानना पड़ता है। (ख) इसमें अल्पसंख्यकों के हितों की रक्षा का भी ध्यान रखा जाता है। (ग) इसमें साधारणतः सब लोगों को समान रूप से नागरिक अधिकार प्राप्त होते हैं; अपनी इच्छा और विश्वास के अनुसार धर्म-

चरण की स्वतंत्रता होती है और बिना किसी बाधा के अपने विचार प्रकट कर सकते और संघटन बना सकते है ; और (घ) लोक-तंत्री शासन-प्रणाली मे सर्व-प्रधान अधिकारी या शासक निर्वाचित भी हो सकता है, और उसका पद वंशानुक्रमिक भी हो सकता है। 'गणतंत्र' से इसमे यही मुख्य अंतर है।

३. ऐसा देश या राज्य, जिसमे उक्त प्रकार की शासन-प्रणाली प्रचलित हो। ४. सम्पाओ, समाजों आदि की वह स्थिति, जिसमें सब मनुष्यो को समान अधिकार प्राप्त होते है और सब समस्याओ का निराकरण बहुमत के अनुसार होता है। (डेमो-क्रेसी, उक्त सभी अर्थों मे)

**लोकशाही**—स्त्री० [सं० लोक+फा० शाही]=लोक-तंत्र।

**लोक-संहार**—पु० [सं०] किसी जाति या वर्ग के सब अथवा बहुत से लोगों का एक साथ किया जानेवाला वध या संहार। सर्व-संहार। (प्रोग्राम)

**लोक-समाज**—पु० [सं०] किसी देश, नगर, भू-भाग आदि में रहने-वाले उन सभी लोगो का समाज जो एक ही तंत्र मे शासित होते है और जिनके स्वार्थ या हित प्राय एक से होते है। (कम्यनिटी)

**लोक-साहित्य**—पु० [सं०] लोक अर्थात् जन-साधारण में पढा जाने-वाला साहित्य, विशेषत ऐसा साहित्य जो विशद विद्वत्तापूर्ण तथा शास्त्रीय साहित्य से भिन्न हो। (फोक लिटरेचर)

**विशेष**—साधारणत. अशिक्षितो, असभ्यो और आदिम जातियो आदि मे प्रचलित साहित्य तो इसके अंतर्गत आता ही है, इसके अतिरिक्त सभ्य समाज मे प्रचलित ऐसे परंपरागत साहित्य का इसमे अंतर्भाव होता है, जो लोक मे मौखिक रूप से प्रचलित हो अथवा जिसके कर्ता रचयिता आदि अज्ञात हो।

**लोपन**—पु० ४ आज-कल किसी मुद्रित या लिखित प्रति मे से उसका कोई अश काटकर निकाल देना। (डिलीशन)

**लोह-आवरण**—पु० दे० 'लौह-आवरण'।

**लौंद का साल**—पु० दे० 'अधिवर्ष'।

**लौकिक राज्य**—पु० [सं०] दे० 'धर्म निरपेक्ष राज्य'।

**ली**—स्त्री० [?] किसी काम, चीज या बात की ओर लगनेवाला ऐसा पक्का और पूरा ध्यान, जो सहसा कभी छूटता या टूटता न हो। मन की लगन।

**मुहा०—लौ लगाना**=एकाग्रचित्त होकर किसी काम, चीज या बात की ओर पूरा-पूरा ध्यान लगाना।

**लौह-आवरण**—पु० [सं०] १. एक पद, जो आरभ मे सोवियत रूस की उस अवस्था के लिए प्रयुक्त होता था, जिसके अनुसार वे अपनी भीतरी आर्थिक, राजनीतिक आदि बातें अन्य देशो मे पूरी तरह छिपाकर रखते थे और सहसा शेष जगत् पर प्रकट नहीं होने देते थे। २. उक्त प्रकार की कोई ऐसी व्यवस्था, जो किसी बडी बात को व्यापक रूप से छिपाये रखने के लिए की जाती हो। (आयरन कर्टेन)

**बंदी प्रत्यक्षीकरण**—पु० [सं०] विविध क्षेत्रो में, एक विशिष्ट प्रकार की व्यवस्था, जिसके अनुसार राज्य द्वारा बंदी किया हुआ कोई व्यक्ति न्यायालय से यह प्रार्थना कर सकता है कि मुझे न्यायालय में बुलाकर इस बात का निर्णय किया जाय कि राज्य द्वारा बंदी किया जाना नियमित था विधि-विहित है या नहीं। (हैबियस कॉर्पस)

**वक्तृता**—स्त्री० ३ सस्था, सभा, समाज आदि मे किसी उपस्थित या प्रासंगिक विषय पर धारा-प्रवाह रूप मे किसी के द्वारा प्रस्तुत किये जानेवाले विवेचनात्मक और विस्तृत विचार। व्याख्यान। (स्पीच) जैसे—सभाओ मे राजनीतिक या सामाजिक नेताओ की होनेवाली वक्तृता।

**वचनबद्धता**—स्त्री० [सं०] वचनबद्ध होने की अवस्था, क्रिया या भाव। (कमिटमेन्ट)

**वटु**—पु० ३. भारतीय आर्यों मे ऐसा बालक, जिसका अभी तक यज्ञोपवीत या व्रतबध न हुआ हो।

**वर्णन**—पुं० बातचीत के समय प्रसगवश किसी काम, चीज या बात की होनेवाली चर्चा। उल्लेख। (मेन्शन)

**वशंवद**—वि० ३ कहने के अनुसार काम करनेवाला।

**वर्तिका**—स्त्री० [सं०] सगीत मे एक प्रकार की रागिनी।

**वसापायस**—पु० [सं०] अम्लाशय और पित्त विकार से बननेवाला सफेद रग का वह पदार्थ, जो शरीर मे से मूत्र के साथ निकलता है। (काइल)

**वस्तु-विनिमय**—पु० [सं०] १. किसी से एक चीज लेकर उसके बदले मे उसे दूसरी चीज देना। चीजो की अदला-बदली। २. व्यापार मे वह स्थिति जिसमे किसी से कोई चीज लेने पर उसका मूल्य धन के रूप मे नही चुकाया जाता, बल्कि उतने ही मूल्य की कोई और चीज उसे दी जाती है। अदला-बदली। (बार्टर)

**वहा-मापी**—पु० [सं० वहा-मापिन्] वह यत्र, जिससे पानी या किसी तरल पदार्थ के बहाव की गति, मात्रा, वेग आदि मापते हैं। धारावेग-मापी। (करेन्टमीटर)

**वहिष्कर्ण**—पु० [सं०] १. प्राणियों के कानो का बाहर की ओर निकला हुआ अश या भाग। २ किसी चीज का कोई ऐसा अग या भाग, जो कानों की तरह बाहर निकला हो। (आरिकल)

**वाँस**†—पु० [सं० पाश] किसी प्रकार का पाश, फदा या बधन। यौगिक के अन्त मे , जैसे—चिलवाँस, ढेलवाँस आदि।

**वाङ्पीठ**—पु० [सं०] किसी ऐसे जन-समूह का मच, जिस पर बैठकर लोग लोकोपयोगी अथवा सामयिक विषयो पर विचार-विमर्श करते हैं। (फोरम)

**वाग्विश्वास**—पु० [सं० वाक्+विश्वास] १. सैनिक क्षेत्र मे, युद्ध के बन्दियो के द्वारा दिये हुए इस विशिष्ट वचन पर किया जानेवाला विश्वास कि यदि कैद से छोड दिये जाएँगे, तो अपने बन्दी करनेवालो के आदेश का पालन करेंगे, अथवा भविष्य मे युद्ध मे सम्मिलित न होंगे। साधारणत: इस प्रकार का विश्वास दिलाने पर वे कैद से छोड दिये जाते हैं। २. विधिक क्षेत्र मे, कैदियों के दिये हुए इस वचन पर किया जानेवाला विश्वास कि यदि वे अस्थायी रूप से कुछ समय के लिए छोड़ दिए जाएँगे, तो फिर लौटकर जेल मे आ जाएँगे, अथवा यदि स्थायी रूप से छोड़ दिये जाएँगे तो भविष्य मे कोई अपराध न करेंगे। ३. वह अवस्था जिसमे कैदी लोग उक्त प्रकार का वचन देने पर कैद से अस्थायी अथवा स्थायी रूप से छोड़ दिये जाते हैं। (पैरोल; उक्त सभी अर्थों में)

**वातापि**—पु० [सं०] एक राक्षस, जो आतापि का भाई था और जो अगस्त्य मुनि द्वारा मारा गया था।

**वाद-कारण**—पुं० [सं०]=वाद-मूल।

**वाद-विवाद**—पुं० ३. केवल औपचारिक रूप से होनेवाली उक्त प्रकार की ऐसी बातचीत, जिसमें पारस्परिक मतों या विचारों का खंडन-मंडन होता है। (डिबेट)

**वायु-वाद-मापक**—पुं० [हिं०] वह यंत्र जिससे किसी स्थान या वातावरण के घटने या बढ़नेवाले ताप-क्रम का पता चलता है। (बैरोमीटर)

**विधुक**—पुं० २. आजकल पिचकारी की तरह का शीशे का एक छोटा उपकरण, जिसमें भरा हुआ तरल पदार्थ एक-एक बूँद करके गिराया या टपकाया जाता है। (ड्रॉपर)

**विकर्षण**—पुं० [सं०] १. दूसरी ओर या विपरीत दिशा में होनेवाला खिंचाव। 'आकर्षण' का विपर्याय। २ आगे बढ़ाई या फेंकी हुई चीज को फिर खींच कर अपनी ओर लाना। वापस बुलाना। लौटाना। ३. न रहने देना। नष्ट करना। ४. कामदेव के पाँच बाणों में से एक। ५. किसी को बलपूर्वक पीछे की ओर ढकेलना या हटाना। जैसे—आक्रमण करनेवाले शत्रु का विकर्षण। ६ अपने अनुकूल न समझकर या अरुचिकर होने पर अलग या दूर करना अथवा हटाना। ७. किसी प्रकार के गुण, प्रवृत्ति आदि का उत्कट विरोध होने के कारण एक तत्त्व या पदार्थ का दूसरे तत्त्व या पदार्थ को दूर हटाना। (रिपल्शन, अन्तिम तीनों, अर्थों में)

**विकिरण**—पुं० ताप-प्रकाश की किरणों के फल-स्वरूप होनेवाली दूर-व्यापी प्रक्रिया। (रेडियो)

**विकिरणशीलता**—स्त्री० [सं०] आधुनिक विज्ञान की वह स्थिति जिसमें अणुबमों आदि के विस्फोट के कारण विषाक्त किरणें निकलकर चारों ओर फैलती और वातावरण दूषित करके जीव-जन्तुओं, वनस्पतियों आदि को बहुत हानि पहुँचाती हैं। (रैडियो-ऐक्टिविटी)

**विकृति-विज्ञानी**—पुं० [सं०] वह जो विकृति-विज्ञान का अच्छा ज्ञाता हो। (पैथोलॉजिस्ट)

**विकय-लेख्य**—पुं० [सं०]=विक्रय-पत्र।

**विखंडन**—पुं० [सं०] [वि० विखंडनीय, भू० कृ० विखंडित] १. किसी चीज के छोटे-छोटे टुकड़े करना। २ किसी चीज को तोड़-फोड़ कर उसके खंड या टुकड़े करना। ३. विज्ञान में, ऐसी क्रिया करना, जिससे किसी अणु के परमाणु अलग-अलग हो जायँ। (स्प्लिटिंग)

**विचारण**—स्त्री० ४ विधिक क्षेत्र में वह अवस्था, जिसमें न्यायालय के द्वारा न्न बात का विचार किया जाता है कि अभियुक्त किसी अभियोग का वस्तुतः दोषी है या नहीं। (ट्राएल)

**विचार-धारा**—स्त्री० २ व्यक्तियों अथवा उनके दलों, वर्गों आदि की वह विशिष्ट विचार-प्रणाली और उसके आधार पर स्थिर किये हुए सिद्धान्त, जिनका उपयोग आर्थिक, राजनीतिक, सामाजिक आदि क्षेत्रों में अनुकरणीय और पालनीय आदर्शों के रूप में होता है। (आइडियॉलॉजी)

**विचाराधिकार**—पुं० [सं० विचार+अधिकार] १ किसी बात या विषय पर कुछ सोच-विचार करने का ऐसा अधिकार, जो उसके लिए आवश्यक योग्यता रखने से प्राप्त होता है। २ आज-कल विधिक क्षेत्र में, अधिकारी या न्यायालय का वह अधिकार, जिससे उसे किसी अपराध या दोष की ओर ध्यान देकर उसका प्रतिकार करने की क्षमता प्राप्त होती है। (कॉग्निजैन्स)

**विच्छेदन**—पुं० २ चिकित्सा-शास्त्र में, शरीर के किसी दूषित, पीड़ित या विषाक्त अंग को शस्त्रक्रिया के द्वारा काटकर अलग करने की क्रिया या भाव। अंगच्छेदन। (ऐम्प्युटेशन)

**विजय**—स्त्री० शत्रु को युद्ध-क्षेत्र में हराकर उसके देश अथवा किसी प्रदेश पर अधिकार प्राप्त करने की क्रिया या भाव। जीत। (कॉनक्वेस्ट)

**विजयोपहार**—पुं० [सं० विजय+उपहार] १ वह उपहार, जो किसी को विजय प्राप्त करने पर भेंट के रूप में मिलता है। २. ढाल, कवच आदि के रूप में वह विजय-चिह्न, जो खिलाड़ियों आदि को कोई प्रतियोगिता जीतने पर मिलता है। ३ किसी प्रकार के शत्रु को जीतने पर प्राप्त की हुई कोई ऐसी चीज, जो उस विजय का स्मरण कराती हो। जय-चिह्न। (ट्रॉफी) जैसे—घड़ियाल, चीते, भालू, शेर आदि को मारकर उनकी उतारी हुई खाल।

**विद्युत्-दाब**—स्त्री० [सं०+हिं०] विद्युत् की गति या धारा का वह मान, जो उसकी दाब के आधार पर आँका या नापा जाता है। (वाल्टेज)

**विधि**—स्त्री० १ कोई काम करने या चीज बनाने का नियत और निश्चित ढंग या प्रकार। प्रक्रिया। (प्रोसेस) २ व्याकरण में वाक्य की वह स्थिति जिसमें उसकी क्रिया किसी प्रकार के अनुरोध, आज्ञा, आदेश, उपदेश आदि की सूचक हो। (इम्परेटिव मूड) जैसे—(क) सदा गुरुजनों की आज्ञा पालन करो। (ख) अब आप भी अपने विचार प्रकट करें।

**विधिवेत्ता**—पुं० [सं०] वह जो विधि-शास्त्र, अर्थात् कानून का बहुत अच्छा ज्ञाता हो, अथवा जिसने तत्संबंधी विषयों पर अच्छे ग्रंथ लेख आदि लिखे हों। (ज्यूरिस्ट)

**विधि-शास्त्र**—पुं० [सं०] १ वह शास्त्र जिसमें किसी विशिष्ट विषय के नियमों, विधियों, सिद्धान्तों आदि का निरूपण और विवेचन होता है। जैसे—अन्तर्राष्ट्रीय विधिशास्त्र, चिकित्सीय विधि-शास्त्र आदि। २. मुख्य रूप से वह शास्त्र जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि कानून या विधि-विधान किन नियमों के आधार पर बनाये जाने चाहिए और विवादों आदि का निर्णय या न्याय किन सिद्धान्तों के अनुसार होना चाहिए। न्याय-शास्त्र। (जुरिस्प्रूडेन्स)

**विधि-शास्त्री**—पुं० [सं० विधिशास्त्रिन्] वह जो किसी विधि-शास्त्र का अच्छा ज्ञाता या पंडित हो। (जुरिस्प्रूडेन्ट)

**विनय**—पुं० किसी को नियंत्रण या शासन में रखने के लिए कही जानेवाली ऐसी बात, जिसके साथ अवज्ञा के लिए दंड का भी भय दिखाया गया हो। विधान किया गया हो। (स्मृति)

स्त्री० नम्रतापूर्वक की जानेवाली प्रार्थना या विनती।

**विनियमन**—पुं० [सं०] [भू० कृ० विनियमित] १. विनियम बनाने की क्रिया या भाव। २. ऐसी व्यवस्था करना, जिससे कोई काम या बात ठीक ढंग से और नियमित रूप में होती चले। (रेगुलेशन)

**विपद समाहर्ता**—पुं०=प्राप्यक समाहर्ता।

**विमुद्रीकरण**—पुं० [सं०] [भू० कृ० विमुद्रीकृत] जिस चीज या मुद्रा या सिक्के के रूप में प्रचलन हो उसके संबंध में ऐसी विधिक क्रिया करना कि उसका वह मुद्रा या सिक्केवाला महत्व, मूल्य या रूप नष्ट

हो जाय और उसका प्रचलन बन्द हो जाय। 'मुद्रीकरण' का विपर्याय। (डिमनीटाइजेशन) जैसे—(क) पहले इस देश मे हजार पए वाले नोट भी चलते थे। पर बाद मे सरकार ने उनका विमुद्रीकरण कर दिया। (ख) लोगों के पास काला या दूषित धन निकलवाने के उद्देश्य से अब कुछ लोग यह भी कहने लगे हैं कि सौ रुपयेवाले नोटों का विमुद्रीकरण कर दिया जाय।

**विलोप**—पुं० किसी वस्तु का इस प्रकार नष्ट या समाप्त हो जाना कि उसका कोई अश या चिह्न न रह जाय। अस्तित्व का पूरी तरह मिट जाना। लोप। (एक्सटिंकशन)

**विवरणिका**—स्त्री० १. किसी नये कार्य, व्यापार, संस्था आदि से सबध रखनेवाली मुख्य-मुख्य बातें बतलानेवाला विवरण-पत्र। २. किसी शैक्षणिक सस्था के सबध का वह विवरण-पत्र, जिसमे उसके नियमों, पाठ्य-क्रमो आदि से सबध रखनेवाली सभी मुख्य बातो का उल्लेख हो। (प्रॉस्पेक्टस)

**विषाद**—पुं० ६ एक प्रकार का मानसिक रोग जिसमे रोगी बहुत ही उदास, दुखी और विरक्त होकर प्रायः चुपचाप सिर झुकाये बैठा रहता है। मालीखोलिया। (मेलान्कोलिया)

**विस्फोटन**—पुं० २ भभकनेवाले पदार्थों मे इस प्रकार आग लगाना कि उसके फलस्वरूप कोई चीज टूट-फूट कर छिन्न-भिन्न या नष्ट-भ्रष्ट हो जाय अथवा उसके टुकडे-टुकडे होकर हवा मे उड या छितरा जाय। (ब्लैस्टिंग)

**विह्वल**—वि० ३. दया, प्रेम, सहानुभूति आदि के आवेग मे होने के कारण जो अपना आप भूलकर मग्न और विभोर हो रहा हो। जैसे—प्रेम-विह्वल।

**वीथी**—स्त्री० ७ बडे मकानों आदि मे दर्शकों के बैठने के लिए बना हुआ ऊँचा और सीढ़ीनुमा स्थान। दीर्घा। (गैलरी)

**वृत्तिका**—वि० [स०] जो किसी जीव या प्राणी की वृत्ति या मूल स्वभाव से उद्भूत या संबद्ध हो। मन मे सहज भाव से और आपमे आप उत्पन्न या उद्भूत होनेवाला। सहज। साहजिक। (इन्स्टिंक्टिव)

पुं० मनुष्य मे उन सभी कार्यों और वृत्तियों का सामूहिक रूप जिसके आधार पर वह अपने जीवन मे उन्नति या प्रगति करता है और जिसका उसके भविष्य पर प्रभाव पडता है। जीवक। (कैरियर)

**वैखरी**—स्त्री० ४. वाणी का वह रूप जो वर्णमाला, अक्षरों या वर्णों से निरूपित होता है और जो बोलचाल के शब्दो के रूप मे सामने आता है।

**व्याख्यान**—पुं० ४. सस्था, सभा, समाज आदि मे किसी उपस्थित या प्रासंगिक विषय पर धारा-प्रवाह रूप में किसी के द्वारा प्रस्तुत किये जानेवाले विवेचनात्मक और विस्तृत विचार। भाषण। वक्तृता। (स्पीच) जैसे—आज-कल राजनीतिक समस्याओं पर प्रायः सभी जगह नित्य कुछ न कुछ व्याख्यान होते रहते हैं।

**व्यापार-चक्र**—पुं० [स०] वह सारी अवधि या समय, जिसमें व्यापार सबंधी तेजी-मदी आदि की तरह की कुछ विशिष्ट घटनाओ की रह रहकर आवृत्ति होती रहती है। (ट्रेड-साइकिल)

**व्यापार-चिह्न**—स्त्री० [सं०+हिं०] व्यापारियो आदि का परिचायक वह चिह्न या निशान, जो उनकी वस्तुओं आदि पर अंकित हो। मार्का। (ट्रेडमार्क)

**व्युत्पत्ति-विज्ञान**—पुं० [स०] वह विज्ञान या शास्त्र, जिसमे शब्दो के मूल उद्गम या व्युत्पत्ति का विचार और विवेचन होता है। (एटिमोलोजी)

**शब्दार्थ-विज्ञान**—पुं० [सं०] वह विज्ञान या शास्त्र, जिसमे शब्दों के सूक्ष्म अर्थों का विवेचन हो।

**शरीर-गठन**—स्त्री० [स०+हिं०] शरीर की बनावट या सरचना जिसके अन्तर्गत आकार, रूप आदि बातें आती हैं और जिसमे उसके बल या शक्ति का पता चलता है। अग-लेट। (फ़िज़ीक)

**शर्त**—स्त्री० ४. कोई काम या बात पूरी करने से पहले उसके सबध मे बतलाया जानेवाला कोई अनिवार्य, अपेक्षित या आवश्यक तत्त्व। (कन्डिशन) जैसे—मैं तो वहाँ चलने के लिए तैयार हूँ ; पर शर्त यह है कि आप भी मेरे साथ रहें।

**शलाका मुद्रा**—स्त्री० २. परवर्ती काल में, उक्त प्रकार की वे मुद्राएँ जिन पर किसी व्यापारिक श्रेणी (सघ या सस्था) की सूचक छाप अकित होती थी। आहत-मुद्रा। (पचमार्क्ड क्वॉएन)

**शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व**—पुं० [स०] आधुनिक अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति मे यह नया मत या सिद्धात कि सब देशो या राष्ट्रो को आपस मे शांतिपूर्वक रहकर अपना-अपना अस्तित्व बनाये रहना चाहिए और आपस के विवाद शांतिपूर्वक बातचीत करके ही निपटाने चाहिए। युद्ध के द्वारा नहीं। (पीसफुल कोएग्जिस्टेन्स)

**शांति-सेना**—स्त्री० [स०] आधुनिक राजनीति मे तटस्थ देशों की वह सेना, जो दो या अधिक शत्रु-देशो का युद्ध रोकने अथवा गृह-युद्ध विद्रोह आदि रोकने के लिए नियुक्त की जाती है। (पीस फोर्स)

**शाठ्य**—पुं० [स०] शठ होने की अवस्था, गुण या भाव। शठता।

**शाठ्य-ग्रंथि**—स्त्री० [सं०] शठता अर्थात् बहुत बडी दुष्टता करने के उद्देश्य से कुछ लोगों का आपस मे मिलकर कोई गुट या दल बनाना। साट-गाठ। (कॉल्यूज़न)

**शास-पत्र**—पुं० [स०] वह अधिकार-पत्र जो राजा या सरकार से किसी विशेष प्रकार के अधिकार के सबध मे किसी व्यक्ति या संस्था को दिया गया हो। (चार्टर)

**शास-पत्रित**—भू० कृ० [स०] (व्यक्ति या सस्था) जिसे किसी काम के लिए शास-पत्र मिला हो। (चार्टर्ड) जैसे—शास-पत्रित लेखपाल।

**शास-पत्रित लेखपाल**—पुं० [स०] वह लेखापाल जिसे आय-व्यय आदि की जाँच करने के सबध मे शास-पत्र मिला हो। (चार्टर्ड एकाउन्टेन्ट)

**शास्त्री**—स्त्री० [स० शास्त्र+ई (प्रत्य०)] देवनागरी लिपि। हिन्दी भाषा। (पश्चिम)

**शाहखर्च**—भू०=शाहखर्च।

**शाहखर्ची**—स्त्री०=शाहखर्ची।

**शिशु-शाला**—स्त्री० [सं०] १. वह स्थान जहाँ शिशु अर्थात् छोटे-छोटे बच्चे पालन-पोषण आदि के लिए रखे जाते हैं। २. आज-कल बडे-बडे कारखानो मे वह स्थान, जहाँ काम करनेवाली स्त्रियाँ अपने छोटे बच्चो को सुरक्षित रूप से रहने के लिए छोड देती हैं और वहाँ उन बच्चों की सब प्रकार से देखभाल होती है। बच्चा-घर। (नर्सरी)

**शीत-निद्रा**—स्त्री० [सं०] कुछ जीव-जंतुओं की वह शीतकालीन निद्रा, जिसमे वे चुपचाप बिना कुछ खाये-पीये गुफाओं आदि मे अथवा जमीन के नीचे दबे पड़े रहते हैं। परिशयन। (हाइबर्नेशन)

**शील-भंग**—पु० [सं०] किसी सच्चरित्रा कुमारी अथवा विवाहिता स्त्री के साथ उसकी इच्छा के वि द्ध समोग करके उसे चरित्र-भ्रष्ट और कलंकित करना।

**शून्यवाद**—पु० २. यह पाश्चात्य दार्शनिक मत या सिद्धांत कि ज्ञान और सत्य का कोई मूल और वास्तविक आधार नही है। ३. यह मत या सिद्धांत कि बहुत दिनो से जो धार्मिक प्रथाएँ और नैतिक विश्वास आदि चले आ रहे है। वे व्यर्थ है और उनका अनुसरण और पालन नही होना चाहिए। (निहिलिज्म)

**शृंगक**—पु० [सं०] चिकित्सा-क्षेत्र मे, एक प्रकार की छोटी पिचकारी जिसकी सहायता से शरीर के अन्दर दवा पहुँचाई जाती है। (सीरिंज)

**शैल-संस्तर**—पु० [स०]=आधार-शैल।

**शोध**—पु० ६ खोज। गवेषणा (रिसर्च)

**श्मशान**—पु० ४ आज-कल एक प्रकार की बडी भट्ठी, जिसमे प्राय बिजली की सहायता मे शव जलाये जाते हैं। (क्रेमेटोरियम)

**श्रमिक**—पु० [सं०] वह जो केवल शारीरिक परिश्रम के काम करके अपनी जीविका चलाता हो। श्रमकर। मजदूर। (लेबरर)

**श्रव्यकला**—स्त्री० [स०] कला के मुख्य दो वर्गो मे से एक, जिसमे कविता-पाठ, संगीत आदि का अनर्भाव होता है। दूसरा वर्ग 'प्रेक्ष्य कला' कहलाता है।

**श्रुति-व्यवस्था**—स्त्री० [सं०] बडे-बडे कमरो आदि की रचना मे वह व्यवस्था, जिसमे आवाज सब जगह साफ सुनाई दे और गूँजने न पावे। (एकाउस्टिक्स)

**संकेंद्रण शिविर**—पु० [स०] १ वह स्थान, जहाँ चारो ओर भेजने के लिए सेनाएँ एकत्र की जाती है। २ युद्ध-काल मे वह स्थान जहाँ विदेशियों, शत्रुओं आदि के सन्दिग्ध व्यक्ति एकत्र करके पहरे मे रखे जाते हैं। ३ वह स्थान, जहाँ अपने देश के ऐसे विरोधी दलो के लिए लोग पहरे मे रखे जाने है, जिनसे किसी प्रकार के अनिष्ट की आशका होती है। बदी शिविर। (कन्सेन्ट्रेशन कैंप)

**संकेतक**—वि० [स०] सकेत करनेवाला।

पु० १. कोई ऐसी चीज या बात, जिसका उपयोग किसी प्रकार का मार्ग-दर्शन या और कोई सकेत करने के लिए होता है। २ वह विशिष्ट प्रकार का सकेत, जो आकाश मे उडनेवाले जहाजो को उनके निर्देशन, मार्ग-दर्शन आदि के लिए रेडियो के द्वारा किया जाता है। (बेकन)

**संकेत-लिपि**—स्त्री० [सं०] आज-कल राजनीतिक क्षेत्र मे, एक प्रकार की गुप्त लेख-प्रणाली, जिसमें साधारण पदों, वाक्यों और शब्दो के लिए कुछ सांकेतिक शब्द नियत होते हैं और जिनका आशय वही लोग समझ सकते हैं, जिनके पास उनकी कुंजी हो। गुप्त-संहिता लिखने की लिपि। (साइफर कोड)

**संगठन**—पु० २. राजनीतिक, व्यापारिक, आदि संस्थाओं के प्रतिनिधियो सदस्यो आदि की ऐसी सभा या सम्मेलन, जो महत्त्वपूर्ण विषयो के संबध मे कोई अधिसमय, प्रथा या रूढि निश्चित करने के लिए होता हो। (कन्वेन्शन)

**संभरक**—वि० [स०] संभरण करनेवाला।

पु० कोई ऐसी चीज या साधन जो आगे चलकर किसी बड़ी व्यवस्था या आवश्यकता की पूर्ति करती हो। (फ्रीडर) जैसे—(क) संभरक नहर=वह बडी नहर जो छोटी-छोटी नहरो मे पानी पहुँचाती हो। (ख) संभरक रेल=छोटी शाखा के रूप मे चलनेवाली वह रेलगाडी जो आगे चलकर किसी बडे रेलमार्ग पर चलनेवाली रेलगाड़ियों तक यात्रियों को पहुँचाती हो।

**संयुग्मन**—पु० [स०]=युग्मन।

**संयोजन-चिह्न**—पु० [स०]=योगिका। (हाईफेन)

**संलग्नक**—पु० [स०] वह पत्र या लेख जो किसी पत्र के साथ संलग्न करके भेजा जाय। सह-पत्र। (एन्क्लोजर)

**संवर्धक-शाला**—स्त्री० [स०] वह स्थान जहाँ छोटे-छोटे जीव-जन्तुओं आदि का ठीक तरह से पालन-पोषण करके उनके वर्ग की उन्नति तथा वृद्धि की जाती है। पोष-शाला। (नर्सरी) जैसे—मछलियों की संवर्धन-शाला, रेशम के कीडो की संवर्धन-शाला आदि।

**संविध**—स्त्री० [स०] [वि० सांविधिक] १ ऐसी विधि अर्थात् परिपाटी या रीति, जो लोक मे प्रामाणिक मानी जाती है। २. आधुनिक राजनीति मे, वह विधान जो विधायिका सभा मे स्वीकृत हो चुका हो और जिसके प्रचलन मे कोई अड़चन न रह गई हो। (स्टैट्यूट)

**संविधि-ग्रंथ**—पु० [स०] आधुनिक राजनीति मे वह ग्रंथ या पुस्तिका, जिसमे राज्य द्वारा स्वीकृत विधान या कानून औपचारिक रूप से लिखकर रखे जाते हैं। संविधि-पुस्तक। (स्टैट्यूट बुक)

**संविधि-पुस्तक**—स्त्री० [स०]=संविधि-ग्रंथ।

**सकत**†—स्त्री० [स० शक्ति] शक्ति।

**सखरच**†—वि० [फा० शाहखर्च] [भाव० सखरची] बहुत उदारता पूर्वक या जी खोलकर खरच करनेवाला। उदा०—बनियों का सखरच ठकुरा क हीन। बैद क पूत व्याधि नहि चीन्ह।—घाघ।

**सजाव दही**—पु० [हिं० सजाना+दही] शुद्ध दूध को उबालकर जमाया हुआ दही। 'मखनिया दही' से भिन्न।

**सपरेटा**†—पु० [अ० सेपरेटेड मिल्क]=मखनिया दूध। ऐसा दूध जिसमे से मक्खन निकाल लिया गया हो। मखनिया दूध।

**सबै**†—वि०=सभी। उदा०—सबै दिन जात न एक समान।

**समग्र युद्ध**—पु० [स०] ऐसा विकट और व्यापक युद्ध जो सैनिक क्षेत्रो तक ही परिमित न हो, बल्कि जिसमे शत्रु के नागरिक और सामाजिक क्षेत्रों पर भी प्रहार करके उनका विनाश किया जाता हो। (टोटल वार)

**समय-सूचक**—वि० [सं०] [भाव० समय-सूचकता] १. जो समय सूचित करता हो। समय का ज्ञान करानेवाला। २. (व्यक्ति) जो समय की आवश्यकता देखते हुए उसके अनुरूप कोई ठीक काम करता हो।

**समर्थांग**—वि० [स०] समर्थ अंगो वाला। हट्टा-कट्टा। (एबल-बॉडीड)

**समुद्र-विज्ञान**—पु० [स०] भूगोल की वह शाखा, जिसमें इस बात का विवेचन होता है कि समुद्र मे कहाँ कितनी अधिक या कम गहराई होती है, कहाँ कैसी लहरें उठती हैं; और कहाँ कैसे खनिज पदार्थ, जीव-जन्तु, वनस्पतियाँ आदि होती हैं। (ओसेनोग्राफ़ी)

**सरभी**†—स्त्री०=सहरी। (पश्चिम)

**सह-पत्र**—पु० [स०] वह पत्र या लेख, जो किसी पत्र के साथ नत्थी करके कहीं भेजा जाय। संलग्नक। (एन्लोज़र)

**साँचा**—वि० [स्त्री० सांची] =सच्चा। उदा०—शुभ नाम प्रभु का साँचा। तन हाड़ चाम का ढाँचा।—भजन।

**सांविधिक**—वि० [सं० संविधि से] १. संविधि संबंधी। संविधि का। २. नियम या निश्चय, जिसे संविधि अर्थात् संविधान का रूप प्राप्त हो चुका हो। ३. (कार्य या क्रिया) जो संविधि के अनुसार अथवा संविधि के रूप में प्रचलित और व्यवहृत हो। (स्टैट्यूअरी) जैसे—सांविधिक रूप से होनेवाली राशन, व्यवस्था।

**सांसर्गिक**—वि० [स०]=समर्गज।

**साट-गाँठ**†—स्त्री०=साठ-गाँठ।

**सादरा**—पु० [फा० शाह+दर+आमद=महाराज का आगमन] शास्त्रीय संगीत मे, धमार और ध्रुपद के वर्ग का एक प्रकार का गायन जिसके गीत अनेक राग-रागिनियों में बँधे होते है।

**विशेष**—कहते है कि दरबार मे नवाब, बादशाह, राजा-महाराजा आदि जब आकर बैठते थे, तब उनके सामने पहले इसी प्रकार का गायन होता था। इसी लिए पहले इसे 'शाह दरामद' कहते थे, जिसका परवर्ती रूप सादरा है।

**सामंतशाही**—स्त्री० [स०+फा०] वह स्थिति जिसमे किसी देश में सामंतों का राज्य या शासन होता है। सामंती। (फ्यूडलिज्म)

**साम्राजियत**—स्त्री० [हि० साम्राज्य+फा० इयत (प्रत्य०)] साम्राज्यवाद।

**साहित्यिकी**—स्त्री० [स० साहित्य से] साहित्यिक कृतियों या रचनाओं की आलोचनात्मक चर्चा। साहित्यिक बातों और विषयों का विवेचन।

**सिएटो**—पु० [अ० के साउथ-ईस्ट एशियन ट्रीटी आर्गेनिज़ेशन के आरंभिक अक्षरों का समूह] आज-कल दक्षिण-पूर्वी एशिया के कुछ राज्यों और कुछ पाश्चात्य राज्यों की वह संस्था, जिसका उद्देश्य संसार के उक्त क्षेत्र मे कम्यूनिज्म का प्रसार रोकना है।

**सिजल**—वि० [?] जो देखने में बहुत ही उपयुक्त, सुन्दर और सुडौल हो। जैसे—सिजल आदमी, सिजल पहनावा।

**सिजिल**†—वि०=सिजल।

**सींक-सलाई**—वि० [हिं०] बहुत अधिक दुबला-पतला। क्षीणकाय।

**सुखभोग**—पु० आज-कल विधिक क्षेत्र मे, किसी स्थान में रहनेवाले व्यक्ति का वह अधिकार, जिसमे उसे किसी आस-पास की जमीन या मकान से अपने परपरागत सुभीते के आधार पर सुख भोगने के रूप मे प्राप्त होता है। परिभोग। (ईजमेन्ट) जैसे—यदि हमारे मकान में बहुत दिनों से किसी बाहरी ओर खिड़की चली आ रही हो, तो हमे आधिकारिक रूप में प्रकाश और वायु का सुख-भोग प्राप्त होता है। और इसी लिए कोई नया मकान बनानेवाला हमारी दीवार के सटाकर कोई ऐसी दीवार खड़ी नहीं कर सकता, जिससे हमारे उक्त सुख-भोग में बाधा होती हो।

**सुखौआ**—वि० [हिं० सुखा+औआ (प्रत्य०)] जो बहुत अधिक सूख गया हो। जैसे—सुखौआ आम, सुखौआ गाजर।

**सुखौता**†—वि० [स्त्री० सुखौती]=सुखौआ।

**सुत**†—पु०=सूत्र। (बौद्ध)

**सुना-सुनाया**—वि० [हि० सुनना] [स्त्री० सुनी-सुनायी] कथन या वृत्तान्त जो केवल दूसरों के मुँह से सुना गया हो और जिसकी प्रामाणिकता, सत्यता आदि का कोई निश्चय न हो। जैसे—यों ही सुनी-सुनायी बातों पर उसे दौड़ना ठीक नहीं है।

**सुलह-सफाई**—स्त्री० [अ०+फा०] ऐसी स्थिति, जिसमें परस्पर विरोधी दलों या पक्षों मे मेल-जोल हो जाय और किसी प्रकार का मनोमालिन्य न रह जाय।

**सूफियाना**—वि० [अ० सूफ़ी से] १ सूफी सप्रदाय से संबंध रखनेवाला। २ सूफियों की तरह का। ३. जो देखने में बिलकुल सादा होने पर भी बिलकुल सुन्दरता से युक्त हो।

जैसे—सूफियाना पहनावा।

**विशेष**—साधारणत सूफियों की सभी चीजें और बातें, बिलकुल सादी होने पर भी भली और सुन्दर जान पड़ती है। इसी आधार पर यह शब्द उक्त अर्थ मे प्रचलित हुआ है।

**सेंटो**—पु० [अ० के सेन्ट्रल ट्रीटी आर्गेनिज़ेशन के आरंभिक अक्षरों का समूह] आधुनिक राजनीति मे, यूरोप तथा एशिया के कुछ देशों का एक संगठन, जिसका उद्देश्य पारस्परिक सहयोगपूर्वक कम्यूनिज्म का प्रसार रोकना है।

**सेतु-वाही**—पु० [स० सेतुवाहिन्] =जल-सेतु।

**सेर-बीन**—स्त्री० [फा०] दूरबीन की तरह का एक छोटा उपकरण जो किसी खाने या छोटे सन्दूक के मुँह पर लगा रहता है और जिसके द्वारा अन्दर रखे हुए दृश्यों, पदार्थों आदि के छोटे चित्र परिवर्द्धित रूप या बड़े आकार मे दिखाई पड़ते है। (पीप-शो)

**स्त्री-केसर**—पु० [स०]=गर्भ-केसर।

**स्थायी**—पु० [स०] साधारण गीतों मे उसका पहला चरण या पंक्ति जिसका गायन आगे चलकर दूसरे चरणों या पंक्तियों के बाद बार-बार होता है। लोक-व्यवहार मे इसे टेक भी कहते है।

**विशेष**—शास्त्रीय संगीत मे गीत का पहला अंश स्थायी कहलाता है, जो मंद्र और मध्य सप्तकों तक ही सीमित रहता है। इसका कोई अंश तार सप्तक मे नहीं जाता।

**स्थितिकी**—स्त्री०=स्थिति-गणित।

**स्वजीवी**—पु० [स० स्वजीविन्] प्राणी-विज्ञान मे, वनस्पतियों आदि के दो वर्गों मे से एक, जो जल आदि से स्वय अपना आहार प्राप्त करके अपने बल पर और स्वतंत्र रूप से जीवित रहते और बढ़ते है। 'परजीवी' का विपर्याय।

**स्वपीड़न**—पु० [स०]=आत्म-पीडन।

**स्वभावी**—वि० [स०]=स्वभाववाला। (प्राय. यौगिक के अंत मे) जैसे—शीत-स्वभावी।

**स्वर-नली**—स्त्री० [स०] गले के अन्दर की वह नली जिसकी सहायता से स्वरों अर्थात् शब्दों का उच्चारण होता है। अवटुका। (लैरिक्स)

**स्वीकार्य व्यक्ति**—पु० [सं०]=ग्राह्य व्यक्ति।

**हवाई पट्टी**—स्त्री० [हि०] हवाई जहाज के अड्डो पर पक्की लंबी सड़क, जिस पर से चलकर हवाई जहाज उड़ते हैं और उतरकर चलते हुए ठहरते हैं। (एयर स्ट्रिप)

# परिशिष्ट ख

## अंग्रेजी-हिन्दी शब्दावली



Abacus—गिनतारा।
Abandoned—परित्यक्त।
Abandoning—अपसर्जन, परित्यजन, परित्याग।
Abatement—१. अपचय, छूट। २. उपशमन। ३. कटौती।
Abbreviation—संक्षिप्त आलेख, संक्षिप्तक।
Abcess—फोड़ा।
Abdication—अधिकार-त्याग।
Abdomen—उदर।
Abducted—अपनीत, अपहृत।
Abduction—अपनयन, अपहरण, भगाना।
Abductor—अपनेता, अपहर्त्ता, अपहारक।
Aberration—अपरेण, विपथन।
Abetment—अभप्रेरण।
Abettor—दुरुत्साहक।
Abeyance—प्रसुप्तावस्था।
Abidance—पालन।
Abiding—अनुसारी।
Ability—१. क्षमता, २ योग्यता।
Abinitio—आदित, आरंभत।
Ablative case—अपादान कारक।
Able—योग्य।
Abnormal—अपसामान्य, अप्रसम।
Abnormally—अप्रसमत।
Abode—आवास, वासस्थान।
Abolished—उन्मूलित।
Abolition—उन्मूलन।
Abrasion—खरोंच।
Abscond—प्रपलायन, फरार होना, भाग जाना।
Absconder—प्रपलायक, फरार, भगोड़ा।
Absconding—प्रलायन।
Absence—अनुपस्थिति।
Absent—अनुपस्थित।
Absolute—१. अबाध। २ असीम। ३ परम।
Absolute monarch—निरकुश शासक।
Absolute monarchy—निरकुश शासन।
Absolute order—परम आज्ञा।
Absolute power—परम सत्ता।
Absolutism—१. अर्द्वतवाद। २ निरपेक्षवाद।
Absorption—अवशोषण, अवृषण, शोषण।
Abstinence—उपरति, निवृत्ति।
Abstract—वि० १. अमूर्त। २. गुणवाची। स० १ तत्त्व। २ सत्त, सत्व, सार। ३. सारांश। ४. सार-सूची। ५ समस्तिका।
Abutment—अध्याधार।
Abuttal—चतु:सीमा।
Abuttals—अनुसीमा।
Academic—१ अकादमिक। २ शैक्षणिक, शैक्षिक। ३ शास्त्रीय, सारम्बन।
Academy—अकादमी।
Accelerated—त्वरित।
Acceleration—त्वरण।
Accent—स्वर-पात, स्वराघात।
Acceptance—१. प्रतिग्रहण। २ सकार। ३ स्वीकृति।
Accepted—१ प्रतिगृहीत, २ स्वीकृत।
Access—अधिगम।
Accessory—वि० उपसाधक। पु० उपसाधन।
Accessory after the fact—अनुघगी।
Accessory before the fact—पुर सगी।
Accident—दुर्घटना।
Accidental—१. आनुषगिक। २ आकस्मिक।
Accidentalism—आकस्मिकतावाद।
Accomplice—सह-अपराधी।
Accomplished—निष्ण, निष्णात।
Accordance—अनुसारता।
Accordingly—अनुसारत।
Account—१. खाता। २ लेखा। हिसाब।
Accountant—लेखाकार, लेखापाल।
Accountant General—महालेखापाल।
Account book—लेखा-बही।
Accounting—१ लेखा-कर्म। २ लेखा-शास्त्र।
Accrual—प्रोद्भवन।
Accrued—प्रोद्भूत।
Accumulated—पुजित, संचित।
Accumulation—सचय, सचयन।
Accuracy—परिशुद्धि।
Accurate—परिशुद्ध।
Accusable—अभियोज्य।
Accusation—अभियोग, अभियोजन।
Accused—अभियुक्त, मुलजिम।
Acid—अम्ल, तेजाब।
Acidic—अम्लीय।
Acidification—अम्लीकरण।
Acidimetry—अम्लमिति।
Acidity—१ अम्लता। २ अम्ल-पित्त।
Acoustic—ध्वनिक।
Acoustics—१ ध्वनिकी। २. श्रुति-व्यवस्था।
Acquisition—अभिग्रहण,अभ्याप्ति,अवाप्ति।
Act—अधिनियम।
Acting—वि० १ कारक। २ कार्यवाहक। पु० अभिनय।
Action—क्रिया, व्यापार।
Activation—कर्मण्यन।
Active—सक्रिय।
Active voice—कर्तरि प्रयोग, कर्तृ-वाच्य।
Activity—सक्रियता।
Actor—अभिनेता।
Actress—अभिनेत्री।
Acute angle—न्यून कोण।
Adaptation—अनुकूलन।
Additional—अतिरिक्त।
Address—१ पता, वाह्यनाम। २ अभिभाषण। ३. अभिनदन-पत्र।
Addressee—वाह्यनामिक।
Address of Advocate—अभिभाषण।
Ad hoc committee—तदर्थ समिति।
Adjacent angle—आसन्न कोण।
Adjective—विशेषण।
Adjourned—स्थगित।
Adjournment—स्थगन।
Adjournment motion—स्थगन प्रस्ताव।
Adjudication—१ अधिनिर्णय, न्यायिक निर्णय। २ अधिनिर्णयन।
Adjusted— समंजित।
Adjustment—समजन।
Administration—प्रशासन
Administrative—प्रशासनिक, प्रशासकीय।
Administrator— शासक।
Administrator General—महाप्रशासक।
Admiral—नौसेनाध्यक्ष।
Admiralty—नवाधिकरण।
Admirer—प्रशसक।
Admission—प्रवेश।
Adolescent—किशोर।
Adopted—अभि हीत।
Adopted son—दत्तक।

Adoption—दत्तक-ग्रहण।
Adrenal—अधिवृक्क।
Adulterated—अपमिश्रित, मिलावटी।
Adulteration—अपमिश्रण, घालमेल, मिलावट।
Adultery—जार-कर्म, जिना, व्यभिचार।
Ad valorem—यथा-मूल्य।
Advance—अगाऊ, अग्रिम, पेशगी।
Advent—आगमन।
Adverse—प्रतिकूल।
Advice—१ परामर्श, मंत्रणा, सलाह। २. सज्ञापन। ३. सूचना।
Adviser—मंत्रणाकार।
Advisory Council—मंत्रणा-परिषद्।
Advocate—अधिवक्ता।
Advocate General—महाधिवक्ता।
Aerial—वि० वायव, हवाई। स० वायवीय।
Aerodrome—हवाई अड्डा।
Aerology—वायु-मंडल-विज्ञान।
Aeronautic—वैमानिकी।
Aeroplane—हवाई जहाज।
Aestheticism—सौंदर्यवाद।
Aesthetics—सौंदर्य-शास्त्र।
Affectation—बनावट।
Affection—अनुरक्ति, अनुराग।
Affectionate gift—प्रसाद-दान।
Affidavit—शपथ-पत्र, हलफनामा।
Affiliation—संबंधीकरण।
Affirmation—अभिवचन, प्रतिज्ञान, प्रतिज्ञापन।
Affirmative—सकाराकारात्मक, स्वीकाराकारात्मक।
Afforestation—वन-रोपण।
Affricate—स्पर्श-संघर्षी।
Aforesaid—उक्त, उपर्युक्त।
Afro-Asia—अफ्रेशिया।
Afro-Asian—अफ्रेशियाई।
After-effect—पश्च-प्रभाव।
Age—१. अवस्था, वय। २ आयु, उमर।
Agency—अभिकरण, साधन।
Agenda—कार्य-सूची, कार्यावली।
Agent—अभिकर्ता।
Aggravation—अतिरेक।
Aggregate—संकलित।
Aggregate Corporation—समष्टि निकाय, समष्टि निगम।
Aggression—१ अद्यर्षण। २ प्रथमाक्रमण।
Aggressor—१. अद्यर्षक।
Agitation—आंदोलन।
Aglutination—संश्लेषण।
Agnosticism—१. अज्ञेयवाद। २ अनीश्वरवाद।
Agrarianism—ग्राम्यवाद।
Agreed—अनुबद्ध।
Agreement—१. अनुबंध। २ अनुबंध-पत्र, इकरारनामा। ३ रजामंदी, सहमति।
Agricultural year—कृषि-वर्ष।
Aid de camp—० डी० कांप।
Air base—हवाई अड्डा हवाई केंद्र।
Air bath—वायु-स्नान।
Air-conditioned—वातानुकूलित।
Air-conditioning—वातानुकूलन।
Air fortress—हवाई किला।
Air hostess—स्वागतिका।
Air Mail—हवाई डाक।
Air Navigation—विमानन।
Air port—विमान-पत्तन, हवाई अड्डा।
Air route—वायु-मार्ग।
Air stream—अवतरण-पथ, हवाई पट्टी।
Albino—सूरज-मुखी।
Album—चित्राधार।
Alcohol—सुरासार।
Alcoholism—मानात्यय, मदात्यय।
Alert—चौकन्ना।
Algebra—बीजगणित।
Alimentary canal—आहार-नाल, पाचन-नाल।
Alimentary system—आहार-तंत्र, पाचक-तंत्र, पचन-संस्थान।
Alive—जीवित
Alkali—क्षार, खार।
Alkalimetry—क्षार-मिति।
Alkaline—क्षारीय।
Alkalinity—क्षारता, क्षारीयता, लावपन।
Alkaloid—उपक्षार, क्षारोद।
Allegation—१.अभिकथन,कथन। २ आरोप।
Alleged—अभिकथित, कथित।
Allegiance—१. अनुवर्तिता। २. निष्ठा।
Allegory—प्रतीक-कथा, साध्यवसान रूपक।
Alliance—मैत्री, संश्रय।
Allied—संश्रित, समवर्गी।
Alligator—मगर
All India Radio—आकाश-वाणी।
Alliteration—अनुप्रास।
Allocation—विनिधान।
Alloted—नियत प्रदिष्ट।
Allotment—नियतन, प्रदेशन।
Allotrope—अपर-रूप।
Allotropy—अपर-रूपता।
Allowance—अभिदेय, भत्ता।
Alloy—मिश्रधातु।
All-party—सर्व-दलीय।
All-rounder—सर्वतोमुखी।
Alluvial—अलोढ़, पुलिनमय।
Alluvial land— कछार।
Alphabet—अक्षर।
Alphabetical order—अक्षर-क्रम।
Alteration—रद्द-बदल, रद्दोबदल, हेर-फेर।
Alternative—अनुकल्प, विकल्प।
Altimeter—ऊंचामापी।
Altitude—१ उन्नतांश। २. ऊँचाई, तुंगता।
Altruism—परहितवाद, परार्थवाद।
Alum—फिटकिरी।
Amalgamation—एकीकरण।
Ambition—उच्चाकांक्षा।
Ambitious—उच्चाकांक्षी।
Ambulance car—अस्पताल गाड़ी,परिचार गाड़ी।
Ambush—घात।
Amendment—संशोधन।
Amenerrhoea—रुद्धार्तव।
Amenity—सुख-सुविधा।
Amentia— अमानसता, बालिश्य, बुद्धि-दौर्बल्य।
Ammonia—१ तिक्ताक्ति। २. नौसादर।
Ammunition—१ आयुधीय, युद्धोपकरण। २ गोला-बारूद।
Amnesty—सर्व-क्षमा।
Amount—१ धन-राशि। २. धनांक।
Amphibia—उभयचर, जल-स्थल-चर।
Amphibian—उभय-चर, जल-स्थलीय।
Amputation—अगच्छेदन, विच्छेदन।
Amusement—आमोद।
Anachronism—काल-दोष।
Anaemia—रक्त-क्षीणता।
Anaesthesia—निश्चेतन, संवेदन-हरण।
Anaesthesiology—अचैतिकी।
Anaesthesis—अचेतनीकरण, निश्चेतनीकरण।
Anaesthetic—निश्चेतनक, संवेदनहारी।
Analogous—अनुधर्मक, अनुधर्मी।
Analogy—अतिदेश।
Analysis—विश्लेषण।
Analytical—विश्लेषणात्मक, वैश्लेषिक।
Anarchism—अराजकतावाद।
Anarchist—वि० अराजक। पु० अराजकतावादी।
Anarchy—अराजकता।
Anatomy—शरीर-शास्त्र, शरीर-विज्ञान।
Ancient—प्राचीन।
Anger—क्रोध।
Angina pectoris—हृच्छूल।
Anglo-Indian—अंगरेज।
Angular—कोणिक।
Anhydrous—अजल।
Animal husbandry—पशु-पालन।
Announcement—अभिज्ञापन, आख्यापन, ऐलान।
Announcer—अभिज्ञापक, आख्यापक।

Annual—वि० वार्षिक।
स० वार्षिकी।
Annuity—वार्षिकी।
Anode—धनाग्र।
Anomalistic year— परिवर्ष।
Anorexia—क्षुधा-अभाव, क्षुधा-नाश।
Anosmia—अघ्राणता, गंध-नाश।
Ant-eater—चींटी-खोर।
Antenatal—जन्म-पूर्व, प्राग्प्रसव।
Anthology—चयनिका।
Anthropo-geography—मानव-भूगोल।
Anthropoid—मानव-कल्प।
Anthropological—मानव-शास्त्रीय।
Anthropologist—मानव-शास्त्री।
Anthropology—मानव-शास्त्र।
Anticipated—प्रत्याशित।
Anticipation—प्रत्याशा।
Anti-climax—१.प्रतिकाष्ठा। २.पतत्प्रकर्ष। (अलंकार)
Anti-diluvial—पूर्व-प्लावनिक।
Antidote—वि० प्रतिकारक, मारक, विषहन।
सं० उतार।
Antimony—अंजन, सुरमा।
Antiquarian—पुराविद्।
Antique—पुराकालीन।
Antiquities—पुरावशेष।
Antiquity—पुराणता।
Anti-septic—प्रतिपौतिक।
Antomology—कीट-विज्ञान।
Aorta—महाधमनी।
Apartheid—पृथग्वासन।
Apathy—अरति, उदासीनता।
Ape—वानर।
Aphelion—रवि-उच्च।
Aphrasia—वाग्घात, वाग्लोप।
Apogee—१. भूयुच्च। २. पराकाष्ठा।
Apparatus—उपकरण, यंत्र, साधित्र।
Apparently—प्रतीयमानतः।
Appeal—पुनर्वाद।
Appeasement—१ अपतुष्टि, अभिरावन।
२. तुष्टीकरण।
Appellant—पुनर्वादी।
Appellate—पौनर्वादिक।
Appellate order—पौनर्वादिक आज्ञा।
Appended—संलग्न।
Appendix—परिशिष्ट।
Applicable—प्रयोज्य।
Application—१. अर्जी, आवेदनपत्र, प्रार्थनापत्र। २. अनुप्रयोग, अनुप्रयोजन।
Applied—१. अनुप्रयुक्त। २. प्रायौगिक।
Applied arts—व्यावहारिक-कला।
Applied sciences—व्यावहारिक-विज्ञान।
Appointment—नियुक्ति।
Apportionment—अवापन।
Apprehension—आशंका।
Appropriation—विनियोग, विनियोजन।
Approval—अनुमोदन।
Approver—इकबाली गवाह, भेद-साक्षी।
Aqueduct—जलसेतु, सुरंगिका, सेतु-वाही।
Arbitrage—अंतरपणन।
Arbitrary—मनमाना।
Arbitrator—पंच।
Arborial—वृक्ष वासी।
Arboriculture—१. तरु-रोपण। २ वानस्पत्य।
Arch—तोरण, मेहराब।
Archaeologist—पुरातत्त्वज्ञ, पुराविद्।
Archaeology—पुरातत्त्व।
Archaeozoic era—आदि-कल्प।
Archipelago—द्वीप-पुंज।
Architecture—वास्तु-कला।
Archives—अभिलेखागार, लेखागार।
Area—क्षेत्र-फल।
Argument—तर्क।
Aristocracy—१ अभिजात-तंत्र, कुलतंत्र, कुलीन-तंत्र। २ अभिजात वर्ग।
Aristotle—अरस्तू।
Arithmetic—अंकगणित, पाटी-गणित, हिसाब।
Armament—शस्त्रिया-वंदी।
Armaments—शस्त्रीकरण।
Armed—आयुध, हथियारबंद।
Armed neutrality—सशस्त्र तटस्थता।
Armistice—अस्त्रहार, विराम-संधि।
Armour—कवच, चार-आईना। बख्तर।
सन्नाह।
Armoured—कवचित, बख्तरबंद।
Armoured car—कवचित यान, बख्तरबंद गाड़ी।
Arms—आयुध।
Arms Act—आयुध-विधान।
Army—१ फौज, सेना; २ स्थल-सेना।
Arrest—गिरफ्तारी।
Art—कला।
Artery—धमनी।
Art gallery—कला-शाला।
Arthritis—पर्वि-शोथ।
Article—१ अनुच्छेद, अभिपद। २ धारा। ३ प्रवस्तु।
Articulation—उच्चारण।
Artist—कलाकार।
Artistic—कलात्मक।
Arts—कला-विषय।
Art-therapy—कला-चिकित्सा।
Asafoetida—हींग।
Asbestos—अदह्य।
Ascending—आरोही।
Ascending node—आरोह-पात।
Ascent—आरोह
A-septic—अपौतिक।
Asphalt—अश्मज।
Asphyxia—श्वासावरोध।
Aspirant—अभिलाषी, आकांक्षी।
Aspiration—अभीप्सा।
Assault—प्रहार, वार।
Assembly House—सभा-गृह।
Assent——अनुमति।
A sertion—१ दर्शित। २ स्वाग्रह।
Assessee—निर्धार्यिती।
Assessment—निर्धारण।
Assessor—पंच।
Asset—परिसंपद्, मालमत्ता।
Assigned—अधिन्यस्त, अभ्यर्पित।
Assignee—अधिन्यासी, अभ्यर्पिती।
Assignment—अधिन्यास, अभ्यर्पण।
Assignor—अधिन्यासक, अभ्यर्पक।
Assimilation—आत्मीकरण, स्वांगीकरण।
Association—१ समुदाय। २ सहचार, साहचर्य।
Assumption—१ अभ्युपगम, पूर्वधारणा। २ मान्यता।
Assurance—आश्वासन।
Asterism—तारा-पुंज।
Asteroid—क्षुद्र-ग्रह, तारकाभ।
Asthma—दमा, श्वास (रोग)।
Astrology—फलित ज्योतिष।
Astrometry—खगोलमिति।
Astronomy—१ खगोल-विज्ञान, खगोल-विद्या। २ गणित ज्योतिष।
Asylum—आश्रय।
Atlantic—अतलांतक।
Atlas—मानचित्रावली।
At least—अंततः।
Atmospheric pressure—वायु-भार।
Atoll—प्रवाली।
Atom—परमाणु।
Atom bomb—पारमाणु बम।
Atomic—पारमाणविक।
Atomic test—परमाणु-परीक्षण।
Atomism—परमाणुवाद।
Atomist—परमाणुवादी।
Atomistics—परमाण्विकी।
Attached—१. अनुलग्न, आसक्त, संलग्न। २ आसक्त।
Attachment—१. आसक्ति। २ कुरकी। ३ संयोजन।
Attack—आक्रमण, हमला।
Attainment—१. उपलब्धि, लब्धिका। २.निष्पत्ति, सिद्धि।

Attemperment—बुझावा।
Attendance officer—उपस्थिति अधिकारी।
Attendance register—उपस्थिति पंजी, हाजिरी बही।
Attestation—१ तसदीक, प्रमाणीकरण। २ साक्ष्यकन।
Attested—साक्ष्यकित।
Attitude—अभिवृत्ति, रवैया, रुख।
Attorney—न्यायवादी।
Attorney General—महान्यायवादी।
Attraction—आकर्षण।
Attractive—आकर्षक।
Auction—नीलाम, प्रतिक्रोश।
Audibility—श्रव्यता।
Auditing—लेखा-परीक्षण।
Auditor—अकेक्षक, लेखा-परीक्षक।
Auditorium—आस्थानी, दर्शक-कक्ष।
Auditory—श्रोत्र-ग्राह्य।
Augment—आगम।
Augmentation—आवर्धन, संवर्धन।
Auricle—१ आलंद (हृदय का)। २ वहिकर्ण।
Aurora Australis—कुमेरु-ज्योति।
Aurora Borealis—मेरु-ज्योति,सुमेरु-ज्योति।
Autarchic, Autarchical—आत्मनिर्भर, आत्म-पूर्ण।
Autarchy—आत्म-निर्भरता, आत्म-पूर्णता।
Authorised—अधिकृत, प्राधिकृत।
Authoritarianism—सत्तावाद।
Authoritative—१.आधिकारिक, २ प्रामाणिका ३ साधिकार।
Authoritatively—साधिकार।
Authority—१ अधिकारी। २ प्राधिकारी। ३. प्राधिकार। ४ अधिकरण्य। ५ आधिकारिकी।
Authority letter—अधिकार-पत्र।
Authorization—प्राधिकरण।
Autobiography—आत्म-कथा,आत्मचरित।
Autograph—स्वाक्षर।
Automatic—स्वचल, स्वचालित।
Automaton—स्वचल।
Autonomous—स्वायत्त, स्वायत्त-शासी।
Autonomy—स्वायत्तता, स्वायत्त-शासन।
Available—प्राप्य।
Avalanche—हिमानी।
Average—औसत, माध्य।
Aviation—विमान-चालन।
Award—पंचाट, परिनिर्णय।
Awkward—भद्दा।
Axe—कुल्हाड़ा।
Axial—अक्षीय।
Axiom—स्वयं-सत्य, स्वयं-सिद्ध।
Axiomatic—स्वयं-सिद्ध।
Axis—अक्ष, कीली, धुरा, धुरी।
Axle—अक्ष।
Ayes—हाँकारी।
Azimuth—दिगंश।
Azurian—चनई।

## B

Baboon—श्व-वानर।
Baby—शिशु।
Babylove—बाबिल।
Back—पश्च।
Backache—पृष्ठ-शूल।
Backbiting—पैशुन्य।
Backbone—मेरु-दंड।
Background—१. पूर्वपीठिका, पृष्ठभूमि, पृष्ठिका, भूमिका। २ परभाग, पृष्ठाधार। (चित्रकला)
Backing—पृष्ठाधान।
Bacteria—जीवाणु, रोगाणु।
Bad conductor—कुचालक।
Bad land—बंजरभूमि।
Bail—जमानत, प्रतिभूति।
Bailable—प्रतिभाव्य।
Balance—तराजू, तुला, समतुलन।
Balanced—सतुलित।
Balance of payment—भुगतान-तुला।
Balance sheet—आय-व्यय फलक, चिटठा, तल-पट, तुला-पत्र, पक्का-चिट्ठा।
Balancing—सतुलन, सम-तोलन।
Baldness—गंज (सिर का रोग)।
Ballad—गाथा।
Ballad dance—आख्यानक नृत्य।
Ballot—१. गुह्य-पत्र, मत-पत्र, शलाका। २ चिट्ठी।
Ballot box—मतदान पेटिका।
Ballot paper—मत-पत्र, शलाका-पत्र।
Bankrupt—दिवालिया।
Banqueting hall—आहार-मंडप।
Bar—बाध।
Barb—क्षुर।
Barber's saloon—क्षौर-मंदिर।
Bargain—सौदा।
Bargaining—१.सौदाकारी। २.सौदेबाजी।
Barometer—१.वायु-दाब मापक। २. वायु-भार मापक।
Barred—बाधित।
Barred by limitation—अवधि बाधित, तमादी।
Barrier—पारिघ।
Barter—अदला-बदली, वस्तु-विनिमय।
Baryosphere—गुरु-मंडल।
Base—१. आधार। २. मूलांश। ३.अड्डा। (जहाजों आदि का)
Base level—अधस्तल।
Basic—आधारिक।
Basic language—आधारिक भाषा।
Basin—थाला, द्रोणी, नदी-तल, नदी-पात्र।
Bat—बल्ला।
Bath—१ स्नान। २ स्वेद (यौ० के अन्त में)।
Bathing suit—स्नान-वस्त्र।
Batholith—अधःशैल।
Bay—उपसागर, खाड़ी।
Beach—पुलिन।
Beacon १ प्रकाश-स्तंभ। २ संकेतक।
Beak—चंचु, चोंच।
Bean—फली।
Beat—स्पंदन।
Beauty—सौंदर्य।
Bed—१ क्यारी। २. बिछौना, बिस्तर। ३. पलंग, शय्या। ४. तल (नदी का)। ५ सस्तर।
Bed rock—आधार-शैल, शैल-सस्तर।
Bed sore—शय्या-व्रण।
Beginning—आरंभ।
Being—सत्ता।
Belief— विश्वास।
Belligerent—परियुद्धक, युद्धकारी।
Bell metal—घंट-धातु।
Belt—पेटी।
Bench—१. न्याय-पीठ। २. पीठ।
Bend— वलनी।
Beneficiary—हिताधिकारी।
Benefit—लाभ।
Bent bar coin—शलाका मुद्रा।
Bequest—उत्तरदान।
Beri beri—वातव, लासक।
Beryl—लहसुनियाँ, बैदूर्य।
Bibliography—संदर्भिका।
Bicameral—द्विसदनात्मक, द्वि-सदनी।
Biennial—द्विवार्षिक।
Bigamy—द्वि-विवाह।
Bigot—कट्टर।
Bilateral—द्वि-पक्षी।
Bile—१ पित्त। २. लार-गद्दी।
Biliary—पैत्तिक।
Bilious—पित्त-रजक, पित्तारुण।
Bill—१ प्राप्यक, विपत्र। २. विधेयक। २ हुंडी। ४ प्रायद्वीप-खंड।
Bill collector—प्राप्यक समाहर्ता, विपत्र समाहर्ता।
Billiard—अटा।
Bill of exchange—हुंडी।
Bill of lading—वहन-पत्र।
Bill of rights—अधिकार-पत्र।
Bi-metallic—द्विधातविक।

Bi-metallism—द्विधातु-वाद।
Binocular—द्विनेत्री, दूरबीन।
Binomial—द्विपद।
Bio-chemistry—जीव-रसायन।
Biology—जीव-विज्ञान, प्राणि-विज्ञान।
Bio-physics—जीव-भौतिकी।
Bio-sphere—जीव-मंडल, प्राणी-मडल।
Birth certificate—जन्म-प्रमाणक।
Birthday—जन्म-दिन।
Birth rate—जनन-गति।
Birth register—जन्म-पंजी।
Bi-section—द्वि-भाजन।
Bison—अरना भैंसा
Bite—काटना।
Bi-weekly—अर्द्ध-साप्ताहिक।
Black—काला, कृष्ण।
Black earth—काली मिट्टी।
Black gold—काला सोना (पत्थर का कोयला)।
Black-hole—काल-कोठरी।
Black list—काली सूची, वर्ज्य सूची।
Black mail—भयादोहन।
Black market—काला बाजार, चोर बाजार।
Black money—काला धन, दूषित धन।
Black-out—१. चिराग-गुल। २ तमावरण।
Black Sea—कृष्णसागर।
Black water fever—काल-मेह।
Blame—१. अवक्षेप, अवक्षसा। २. क्षेपारोपण।
Blank verse—अतुकांत (काव्य या छंद), अनुप्रासहीन (काव्य या छंद), मुक्त छंद।
Blast furnace—धमन-भट्टी।
Blasting—१. अभिधमन। २ विस्फोटन।
Bleaching—प्रक्षालन।
Blessing—१. आशसा, आशीर्वाद। २. स्वस्त्ययन।
Blind valley—अंधी घाटी।
Blinking—मुलमुलाना।
Blister—फफोला।
Blizzard—बर्फानी तूफान, हिम-झझावात।
Blockade—१. घेराबंदी, नाकेबदी, रोध। २. सरोध।
Blood bank—रक्तदान बैंक।
Blood pressure—रक्त-चाप।
Blood sugar—रक्त-शर्करा।
Blood vessel—शिरा।
Blotting paper—सोखता, स्याही-चूस, स्याही-सोख।
Blow-hole—वायु-छिद्र।
Blue—नीला।
Blue print—नील-मुद्र।
Blue printing—नीलिका मुद्रण।
Bluff—धौंस।
Boar—जंगली सूअर।
Boat bridge—नाव का पुल।
Bodice—अगिया, चोली।
Bodily—कायिक।
Body—१. काया, शरीर। २ निकाय, सस्था।
Body-guard—अग रक्षक, शिरोरक्षी।
Bogy—हौआ।
Boiling point—क्वथनाक।
Bolt—सिटकिनी।
Bombast—शब्दाडबर।
Bomber—बम-वर्षक।
Bombing—बम-बारी।
Bona fide—वि० १. सदाशय, सदाशयी। २ सद्भावी। स० सदाशयता।
Bona vacatia—अस्वामिकता, स्वामी-हीनत्व।
Bond—१. ऋण-पत्र। २ बध-पत्र। ३. मुचलका।
Bond of surety—प्रतिभू-पत्र।
Bone oil—अस्थि-तैल।
Bonfire—होली।
Bonus—लाभाश।
Book-post—पुस्त-डाक।
Border—१ किनारा। २ हामिया। ३. उपात। ४ सीमा।
Bore—परिवेध।
Boring—परिवेधन।
Borrower—उद्धारणिक।
Boss—अधिपुरुष, मालिक।
Botany—औद्भिदकी, वनस्पति शास्त्र।
Boundary—१ चतुःसीमा. चौहद्दी। २ सीमा। ३ पर्यंत।
Boxing—मुक्केबाजी।
Boycott—बहिष्कार।
Boy scout—बाल-चर।
Bracket—कोष्ठक।
Brag—डींग।
Brain—मस्तिष्क।
Branch—शाखा।
Brass—पीतल।
Bravado—डींग।
Breach—भग।
Breach of law—विधि-भग।
Breach of peace—शाति-भंग।
Breach of trust—न्यास-भग।
Breath—श्वास, सांस।
Breeding—प्रजनन।
Brevity—लाघव।
Bribe—उत्कोच, घूस, रिश्वत।
Bridge—पुल, सेतु।
Brief—संक्षिप्त।
Bright red—सूहा (रंग)।
Brilliantine—शुभ्रक।
Brimstone—गधकाम्ल।
Broadcasting—प्रसारण।
Broadcasting station—आकाशवाणी, प्रसारण-गृह।
Bronze—कौसा।
Bronze age—कास्य-युग।
Budget—आय-व्ययक।
Buffer state—अतस्थ राज्य, मध्यवर्ती राज्य।
Bulb—गाँठ।
Bunker—तल-घर, तल-चौकी, दमदमा।
Buoy—बैंदा, प्लाव।
Burden—भार।
Bureaucracy—१ अधिकारी-तंत्र, दफ्तरशाही। २ नौकर-शाही।
Burner—१ कल्ला। २ ज्वालक।
Burning point—ज्वलनाक।
Burnisher—शोपनी, घोंटा।
Bust—आवक्ष।
Butter—मक्खन।
Butyrometer—स्नेहमापक।
Bye-election—उप-निर्वाचन।
Bye-law—उपविधि।
Bye-product—उपजात, उपसर्ग, उपोत्पाद।
By law—विधित'।
By virtue of office—पदेन।

## C

Cabbage—करमकल्ला।
Cabinet council—मत्रि-परिष ्।
Cable—समुद्री तार।
Cadema—शोफ।
Cadmium—अरगजी।
Cairn—तुमुली।
Calamity—आपात, विनिपात।
Calculation—परिकलन. हिसाब।
Calculator—गणक, गणित्र, परिकलक।
Calendar—काल-दर्श, दिन-पत्र
Calendar month—पचांग मास।
Calendar year—पचांग वर्ष।
Calibration—अशन, अश-शोधन।
Caliph—खलीफा।
Calomel—रस-कपूर।
Calorie—उष्मांक।
Calx—भस्मक।
Camel track—ऊँट-पथ।
Camouflage—छद्मावरण, छलावरण।
Camphor—कपूर।
Canal—कुल्या, नहर।
Cancellation—निरसन।
Cancellation of common factor—अपवर्तन।

Cancelled—निरस्त।
Cancer—१. कर्क राशि, सरतान। २. कर्कट रोग, कर्कटार्बुद, सरतान।
Candidate—अभ्यर्थी, उम्मेदवार, प्रत्याशी।
Cane sugar—इक्षु-शर्करा।
Cannibal—नर-भक्षी।
Cannibalism—नर-भक्षिता।
Cannon—तोप।
Cannon fodder—तोप का ईंधन या चारा।
Canon—अधि-मत।
Cantonment—छावनी।
Canvasser—१ अनुयाचक, उपार्थक। २ मतार्थक।
Canvassing—१. अनुयाचन, उपार्थन, मतार्थन।
Capacity—१. क्षमता, सामर्थ्य। २ धारिता, समाई।
Cape—अंतरीप।
Capillary—वि० कौशिक। स० केशिका।
Capital—पूँजी।
Capital goods—पूँजी-पदार्थ।
Capitalism—पूँजीवाद।
Capitalist—१ पूँजीदार, पूँजीपति। २ पूँजीवादी।
Capital punishment—प्राण-दंड, मृत्यु-दंड।
Capsule—पुटी, संपुटिका।
Carat—करात।
Carbon—अंगारक, कार्बन।
Carbon paper—कार्बन।
Cardinal number—गण-संख्या।
Cardinal points—दिग्बिंदु, दिशा-बिन्दु।
Care—अवधान।
Career—आचरित, जीवक, वृत्तिक।
Caretaker—अभीक्षक, अवधाता।
Caretaker Government—अभीक्षक सरकार, अवधात्री सरकार।
Cargo —पोत-भार।
Cargo-ship—पोत-भारक।
Caricature—१ विकृतिकरण। २. उपहास चित्र।
Carmine—वि० किरमिजी, गुलाबी। स० किर्याह, किरमिज, कृमिराग।
Carpel—गर्भ-केसर, स्त्री-केसर।
Carrier—संवाहक।
Cartilage—उपास्थि, कुरकुरी।
Cartoon—व्यंग्य-चित्र।
Cartridge—कारतूस।
Carving—उत्कीर्णन।
Cascade—प्रपाती।
Case—१. अवस्था, दशा। २. स्थिति। ३. खाना, घर। ४. कारक (व्याकरण)। ५. प्रघटन।
Cash balance—रोकड़-बाकी।
Cashed—भुक्त।
Cashier—खजानची, रोकड़िया।
Cash memo—नकदी पुर्जा, रोक-टीप।
Casting vote—निर्णायक मत।
Casual—नैमित्तिक।
Casual leave—आकस्मिक छुट्टी।
Casualty—१. आकस्मिकी। २ समापत्ति।
Catalogue—सूची-पत्र।
Catalysis—उत्प्रेरण।
Cataract—मोतियाबिंद।
Catarrh—नजला, प्रतिश्याय, प्रसेक,श्लेष्म।
Catchment area—जलग्रह क्षेत्र, जाली, बहेत।
Catechism—प्रश्नोत्तरी।
Catechu—कत्था।
Categorical—नि र्पाधि।
Cattle—मोरू।
Cattle-lifter—रेलू-चोर, ढोर-चोर, पशु-चोर।
Cattle pound—पशु-निरोधिका।
Caucasus—काफ।
Causality—कारणि कता।
Cause—कारण।
Cause of action—१. कार्य-हेतु। २. वाद-मूल, वाद-हेतु।
Caustic—क्षारक, दाहक, प्रदाहक।
Caustic silver—क्षार-रजत, दाहक-रजत।
Caveman—गुहा-मानव।
Cavity—बिवर।
Ceasefire—युद्ध-विराम, युद्ध-स्वगन।
Ceded—हस्तांतरित।
Cell—१. कोषाणु, कोशिका (शारीरिक)। २. कोशिका (बिजली की)। ३ कोशिका (वास्तु की)।
Cenozoic era—नव-कल्प।
Censure motion—निंदा-प्रस्ताव।
Census—१. गणना। २ जन-गणना, मर्दुमशुमारी।
Centenary—शतवार्षिकी।
Central—केंद्रीय।
Central Government—केंद्रीय-शासन, केंद्रीय-सरकार।
Centralisation—केंद्रीकरण।
Centralised—केंद्रित।
Centre—केंद्र।
Centre of gravity—गुरुत्व-केंद्र।
Centric—केंद्रिक।
Centrifugal—अपकेंद्री, केंद्राभसारी।
Centripetal—केंद्राभिमुखी।
Century—शताब्दी, शती।
Cerebral—प्रमास्तिष्क।
Certainty—निश्चय।
Certificate—प्रमाणक, प्रमाण-पत्र।
Certification—प्रमाणन।
Certifier—प्रमाण-कर्ता।
Cerulean—विष्णु-कांति।
Cess—अबवाब, उपकर।
Cession—हस्तांतरण।
Chain—१. शृंखला। २ पर्वतमाला।
Chair—१ कुरसी। २ पीठ।
Chalk—खड़िया, दूधिया।
Chamber of Princes—नरेंद्र-मंडल।
Chancellor—कुलपति।
Change—परिवर्तन।
Channel—१ प्रणाली। २. ार।
Chaparral—झाड़ी-वन।
Chapter—अध्याय, प्रकरण।
Character book—आचरण-पंजी।
Characteristic—लाक्षणिक।
Characteristics—अनुभाव।
Charcoal—काठ-कोयला।
Charge—१ अभिरोप, आरोप, ोपारोपण। २. अवधान। ३ कार्य-भार। ४ प्रभार, भार। ५. पद-भार।
Chargeable—परिव्ययनीय।
Charge certificate—भार-प्रमाणक।
Charge-holder—भार-धारक।
Charge sheet—अभियोग-पत्र, आरोप-प , कलंदरा, फर्दजुर्म।
Charitable—धर्मार्थ, पुण्यार्थ।
Charitable endowment—धर्मस्व-निधि, पुण्यार्थ-निधि।
Charter—शास-पत्र।
Chartered—शास-पत्रित।
Chartered accountant—अधिकृत लेखा-पाल, शासपत्रित-लेखापाल।
Chasm—गह्वर।
Chauvinism— अति-राष्ट्रीयता, अति-राष्ट्रीयतावाद।
Chauvinist—अति-राष्ट्रीयतावादी।
Cheap—सस्ता।
Cheat—टपकेबाज।
Cheating—१ वंचना। २ टपकेबाजी।
Chemical—रस-द्रव्य।
Chemistry—रसायन-शास्त्र।
Chief Minister—मुख्यमंत्री।
Child Welfare Centre—शिशु-कल्याण केंद्र।
Chin—ठोड़ी।
Chlorine—हरिन।
Cholera—हैजा।
Chord—चाप-कर्ण।
Chorus—गूँथ-संगीत, समेत-गान, सहू-गान।

Chronicle—इति-वृत्त।
Chronograph—काल-लेख।
Chronology—काल-क्रम।
Chronometer—१ काल-मापी। २. देशांतर-सूचक यंत्र।
Chyle—रसायस।
Cilia—रोमिका।
Cinema—चल-चित्र, चित्र-पट।
Cipher—१ गूढ़-लेख, संकेताक्षर। २ बिंदु, शून्य।
Cipher code—१ गूढ़-संहिता। २. संकेत-लिपि।
Cipher procedure—बीजांक-प्रक्रिया।
Circle—१ मंडल। २ वृत्त।
Circle inspector—परिधिक निरीक्षक।
Circuit—परिपथ।
Circular—वि० गोल।
स० गश्ती चिट्ठी, परिपत्र।
Circulatory—चाक्रिक।
Circulatory system—रक्त-वह तंत्र।
Circumcision—१ खतना। २. मुसलमानी, सुन्नत।
Circumference—परिधि।
Circumscribed—परिगत।
Circumstances—परिस्थिति।
Circumstantial—परिस्थितिगत।
Citation—१. आकारक, उपस्थितिपत्र। २ उद्धरण।
Citizen—नागरिक।
Citizenship—नागरता, नागरिकता।
City Corporation—महापालिका।
City planning—नगर-सन्निवेश।
Civet cat—मुश्क-बिलाव।
Civics—नागरिक शास्त्र।
Civil—१ अर्थ, दीवानी। २ नागर। ३. सभ्य।
Civil case—अर्थ-व्यवहार, दीवानी मुकदमा।
Civil court—अर्थ-न्यायालय, दीवानी अदालत।
Civil disobedience—सविनय अवज्ञा।
Civility—नागरता।
Civilization—सभ्यता।
Civil law—अर्थ-विधि, दीवानी विधि।
Civil marriage—लौकिक विवाह।
Civil procedure—अर्थ-प्रक्रिया।
Civil process—अर्थ-प्रसर।
Civil remedy—अर्थोपचार।
Civil right—नागर अधिकार।
Civil suicide—सन्यास।
Civil war—गृह-युद्ध।
Claim—१ अध्यर्थन। २ दावा।
Clair-audience—अतींद्रिय-श्रवण, परोक्ष-श्रवण।
Clair-voyance—अतींद्रिय-दर्शन। २ अतीन्द्रिय-दृष्टि।
Clair-voyant—अतींद्रिय-दर्शी।
Clarification—निर्मलीकरण। २ स्पष्टीकरण।
Class—१. कक्षा। २ श्रेणी।
Class-fellow—सहपाठी, सहाध्यायी।
Classification—वर्गीकरण।
Classified—वर्गित, वर्गीकृत।
Class struggle—वर्ग-संघर्ष।
Claw—नखर, पंजा।
Clay—चिकनी मिट्टी, मटियार।
Cleavage—फटन।
Cleaver—स्वच्छक।
Clerk—लिपिक।
Climate—जल-वायु, हवापानी।
Climatology—जल-वायु-विज्ञान।
Climax—१ चरम, चरमावस्था। २. साराश।
Clinic—निदान-गृह, निदान-शाला, निदानिका।
Clinical—नैदानिक।
Clog—अर्गल।
Closure—संवरण।
Clot—स्कंद।
Cloth—कपड़ा।
Clothes moth—कपड़-कीड़ा।
Cloud—मेघ।
Cloud burst—मेघस्फोट।
Cloudy—१ मेघ-श्याम (वर्ण)। २ मेघाच्छन्न।
Clove—लौंगिया।
Clue—सूत्र।
Clumsy—भोंदा।
Coalition Government—संयुक्त सरकार।
Coaltar—अलकतरा।
Coast-guard—तट-रक्षक।
Cobalt—मविता (तू)।
Cobra—नाग।
Cocktail-party—गात्र-गोष्ठी।
Cod—स्नेहमीन।
Code—१ संहिता। २ विधायन-संहिता। ३ संकेतकी।
Code of conduct—आचार-संहिता।
Codification—संहिताकरण।
Codified—संहित।
Coercion—१. अवपीड़न। २ बलप्रयोग।
Co-existence—१. सह-अस्तित्व। २ सह-जीवन (वनस्पति विज्ञान)।
Coffee—कहवा।
Coffee-house—कहवाखाना।
Cognizable—अवेक्षणीय, प्रज्ञेय।
Cognizance—१. प्रज्ञान। २. विचाराधिकार।
Cognizant—प्रज्ञाता।
Cohesion—संसक्ति।
Coin—मुद्रा, सिक्का।
Coitus—मैथुन, संभोग।
Cold—जुकाम, प्रतिश्याय, सरदी।
Cold front—शीतांग्र।
Cold storage—ठंडा दैदाम, शीतल भंडार, शीतागार, मर्द-खाना।
Cold war—ठंडा युद्ध, शीत युद्ध।
Cold wave—शीत तरंग।
Colic pain—शूल।
Collaboration—सहयोग।
Collapse—१ पात। २ हृदयावसाद।
Collation—१ परिशीलन। २ मिलान, समाकलन।
Colleague—सहकर्मी (मित्र)।
Collection—१. अनुग्रहण, वसूली, समाहरण। २ संग्रहण। ३ संग्रह।
Collective—१ सामूहिक। २ समुच्चयार्थक। (व्याकरण)
Collectivism—समष्टिवाद।
Collector—समाहर्त्ता।
College—महाविद्यालय।
Colloid—कॉलिल।
Collusion—१. साठ-गाँठ। २ मिली-भगत।
Cologne-stick—गंध-बलाका।
Colonial—औपनिवेशिक।
Colony—उपनिवेश, नौआबादी।
Colour bar—रंग-भेद।
Colour blind—वर्णान्ध।
Colour blindness—वर्णान्धता।
Column—१ स्तंभ (सामयिक पत्रों का)। २ दुकड़ी, दस्ता। (सैनिक)
Columnist—स्तंभ-लेखक।
Coma—अतिमूर्च्छा, सन्यास (रोग)।
Combination—१ संयोग, संयोजन। २. समुच्चय।
Combustible—दहन-शील, दह्य।
Combustion—दहन।
Comet—केतु, धूम-केतु, पुच्छल तारा।
Comma—अल्प-विराम।
Command—आदेश, समादेश।
Commander—समादेशक।
Commemoration volume—स्मारक-ग्रंथ।
Commencement—आरंभ।
Commendable—संस्ताव्य।
Commendation—संस्तवन।
Commentary—टीका, वृत्ति।
Commentator—टीकाकार, वृत्तिकार।
Commerce—वाणिज्य।
Commission—आयोग।

Commissionary—प्रमंडल।
Commitment—१ वचन-बद्धता। २ सपुर्दगी।
Committed—सपुर्द।
Commixture—मिश्रण (अलंकार)।
Commode—गमला, शौचासनी
Commodity—पण्य-वस्तु।
Common—१ साधारण। २ सर्व-सामान्य। ३ सार्व-जनिक। ४ सर्व-साधारण।
Common factor—समापवर्तक।
Common law—सामान्य विधि।
Common sense—सामान्य बुद्धि।
Commonwealth—राष्ट्र-मंडल।
Communal—साम्प्रदायिक।
Communalism—साम्प्रदायिकता।
Communication—१ संगमन। २ संचार। ३ यातायात।
Communique—विज्ञप्ति।
Communism—साम्यवाद।
Community—लोक समाज।
Commutation—१ परिवर्त्तन। २. रूपान्तरण (दंड का)। ३ लघुकरण। ४ परिणाम (अलंकार)।
Company—समवाय।
Comparison—तुलना, मिलान।
Compass—कुतुबनुमा, दिग्दर्शक यंत्र, दिग्सूचक यंत्र, ध्रुव-घड़ी।
Compassion—करुणा।
Compatibility—संगति।
Compendium—सार-संग्रह।
Compensation—प्रतिकर, प्रतिमूल्य, मुआवजा।
Competency—सक्षमता।
Competent—सक्षम।
Competition—प्रतियोगिता।
Compilation—संकलन।
Complaint—परिवाद, फरियाद, शिकायत।
Complainant—अभियोगी।
Complement—संपूरक।
Complementary—पूरक, संपूरक।
Complex—ग्रंथि, मनोग्रंथि।
Complication—उलझन।
Compost—वानस्पतिक खाद।
Compound—समस्त।
Compounder—संमिश्रक।
Compounding—संमिश्रण।
Compound interest—चक्र-वृद्धि, शिला-वृद्धि, सूद-दर-सूद।
Compound sentence—संयुक्त वाक्य।
Comprehensive—व्यापक।
Compression—संपीड़न।
Compromise—समझौता।
Computation—अभिगणन, समगन।
Concave—अवतल, नतोदर।
Concealment—अपह्नुति (अलंकार)।
Concentration—संकेंद्रण।
Concentration camp—बंदी शिविर, संकेंद्रण शिविर।
Conception—१ अवधारणा। २ संकल्पन। ३. गर्भ-धारण।
Conceptualism—१. प्रत्ययवाद। २ प्रमाणवाद।
Concession—रिआअत।
Conciliation—सराधन।
Conciliation officer—सराधक अधिकारी।
Concise—मिताक्षर, संक्षिप्त।
Conclusion—निष्कर्ष, परिणाम।
Concomittant—सहवर्ती।
Concrete—१ ठोस। २ मूर्त।
Concubine—रखैली, रखैल, रखैल।
Concurrent—१ सवर्ती। २ समवर्ती।
Condition—१ अवस्था। २ प्रतिबंध, शर्त।
Conditioned—गणित, प्रतिबंधित।
Conditioning—संबलन।
Condolence—संवेदना।
Condominium—१. द्वैराज्य। २ सहराज्य।
Conduct—१. आचरण। २. व्यापार।
Conduction—संवाहन।
Conductivity—संवाहकता।
Cone—१. कोण। २ शंकु।
Confederation—परिसंघ, राज्य-मंडल।
Conference—सम्मेलन।
Confession—१ अपराध-स्वीकरण। २. आत्म-स्वीकृति, स्वीकरण। ३ स्वीकारोक्ति।
Confident—निडर्यी।
Confidential—१. गोपनीय। २ प्रत्ययिक, विश्वस्त।
Confirmation—१ अभिपोषण, दृढ़ायन, पुष्टीकरण। २ सपुष्टि। ३ स्थायीकरण।
Confiscated—जबत, राज्यसात्।
Confiscation—जबती, राज्यसात्करण।
Conflagration—अग्नि-कांड, अवदाह।
Conflict—१. विरोध। २. संघर्ष।
Congenital—सहजात।
Congratulation—बधाई।
Conics—शंकु-गणित।
Conjectural—अटकलपच्चू।
Conjoint Consonant—संयुक्ताक्षर।
Conjugation—घृग्मन, संयुग्मन, संयोजन।
Conjunction—युति, योग, संयुति।
Conjunction of stars—योग।
Connected description—सहोक्ति।
Connecting—संबंधक
Connection—संबंध।
Connective—योगी।
Conquest—जीत, विजय।
Conscience—अंतःकरण, विवेक।
Conscription—अनिवार्य भर्ती।
Consecutive—क्रमागत, क्रमिक।
Consent—सम्मति, सहमति।
Consequence—परिणाम, फल।
Consequent—१ अनुवर्ती। २. परिणामी।
Considerate—सतर्क।
Consideration—१. विचार। २. प्रतिफल।
Consigned—प्रेरित, प्रेषित।
Consignee—प्रेषिती।
Consigner—प्रेषक, प्रेरक।
Consignment—प्रेषण।
Consistancy—संगति।
Consolidated—संहत।
Consolidation—संहति।
Consolidation of holdings—चकबंदी।
Consonant—वि० सन्नादी। पु० व्यंजन।
Conspiracy—अभिसंधि, षडयंत्र।
Constable—सिपाही (पुलिस का)।
Constabulary—रक्षी दल।
Constant—१ अविरत, निरंतर, लगातार। २ स्थिर।
Constipation—कोष्ठबद्धता, कब्जीयत।
Constipative—कोष्ठबद्धक।
Constituency—निर्वाचन-क्षेत्र।
Constituent Assembly—संविधान परिषद।
Constitution—संविधान।
Constitutional—संविधानिक संविधानी, सवैधानीय।
Constitutionalism—संविधानवाद।
Constitutionalist—संविधानवादी।
Constitutional monarchy—सवैधानिक राजतंत्र।
Constraint—अभिभव, निरोध।
Consumer—उपभोक्ता।
Consumption—उपभोग।
Contact—संसर्ग।
Contagious—संक्रामक, सांसर्गिक।
Contemplation—मनन।
Contemporary—समकालीन, समसामयिक।
Contents—अंतर्वस्तु।
Context—१. प्रसग। २ संदर्भ।
Contiguity—संसक्ति।
Contiguous—संसक्त।
Continent—महादेश।
Continued—क्रमागत।
Continuity—निरंतरता, सातत्य।
Contortion—व्यावरण।
Contour—परिरेखा।
Contraband—निषिद्ध, वर्जित, विनिषिद्ध।
Contraband trade—विनिषिद्ध व्यापार।

Contract— ठीका, संविदा।
Contract deed—ठीका-पत्र, संविदापत्र।
Contraction—आकुंचन।
Contractor—ठीकेदार।
Contradiction—खंडन, प्रतिवाद।
Contradictory—खंडनक, खंडनात्मक।
Contribution—अंश-दान।
Contributor—अंश-दाता।
Contributory—अंश-दायिक।
Control—नियंत्रण।
Controversion—विवादास्पद।
Convener—संयोजक।
Convention— १. अभि-समय। २. उप-संधि। ३ रूढ़ि। ४ संगमन।
Conventional—१. अभि-सामयिक।२ रूढ़।
Convergence—अभिसरण।
Converging—अभिसारी।
Converse—प्रतिलोम।
Conversely—विलोमत.।
Conversion—मत-परिवर्त्तन।
Convex— उत्तल, उन्नतोदर।
Conveyance—१. अभि-हस्तांतरण, संनयन। २. प्रवहण, वाहन, सवारी।
Conveyancer—अभि-हस्तांतरक, संनयन-कार।
Conveyancing—१. संनयन-लेखन।२. संनयन-विद्या।
Convicted—अभिशंसित, अभिशस्त।
Conviction—अभिशंसा, अभिशस्ति।
Convocation—समावर्तन।
Convocation Address—दीक्षांत भाषण।
Convulsion—आक्षेपक, ऐंठन।
Cooling—शीतन।
Co-operation—सहकार, सहकारिता, सहयोग।
Co-operative society—सहकार-समिति।
Co-opted—प्रगृहीत, सहयोजित।
Co-option—प्र हण, सहयोजन।
Co-ordination— एक-सूत्रता, तालमेल, समन्वय।
Co-partner—सहभागी।
Copy— प्रतिलिपि।
Copyist—प्रतिलिपिक।
Copyright—प्रतिक-स्वत्व।
Coral—मूँगा, मूँगी।
Coral island—प्रवाल-द्वीप।
Cord—सूत्र।
Co-relation— अनुबंध।
Cork—काग।
Corner-stone — १. कोण-शिला। २. आधार-शिला, नींव का पत्थर।
Cornice—कगनी, छज्जी।
Corollary—उपप्रमेय।
Corona— कांति-चक्र, परि-मंडल।
Coronation—राज्याभिषेक।
Corporated—निगमित।
Corporation— १. निगम, श्रेणी। २. महानगर-पालिका, महापालिका।
Corporation aggregate—समष्टि-निकाय।
Corporation sole— एकल निगम।
Corpuscle— कणिका।
Corrected— शोधित।
Correction— शोधन, संशोधन।
Corrective—संशोधक।
Correspondence—चिट्ठी-पत्री।
Correspondent—संवाद-दाता।
Corridor—गलियारा।
Corroboration—पुनर्पुष्टि।
Corrosion—संक्षारण।
Corrosive—संक्षारक।
Corrupt—प्रदुष्ट, भ्रष्ट।
Corruption—प्रदोष, भ्रष्टाचार।
Corundum—कुरुविंद।
Co-sharer—सहांशी।
Cosmetics—अगराग, शृंगार-सामग्री।
Cosmic—विश्वक, ब्रह्मांडीय।
Cosmic rays—अनरिक्ष किरण, ब्रह्मांड किरण।
Cosmism—विश्ववाद।
Cosmography—सर्ग-लेख।
Cosmology—सृष्टि-विज्ञान।
Cosmonaut—अंतरिक्ष-यान।
Cosmopolitan—सार्वभौम, सार्वभौमिक।
Cost—परिव्यय, लागत।
Cost of management—प्रबंध-व्यय।
Cost of suit—वाद-व्यय।
Costs—अर्थ-दंड, हरजाना।
Cottage industry—कुटी उद्योग।
Cough—खाँसी।
Council—परिषद।
Councillor—पारिषद।
Counsel General—महावाणिज्य दूत।
Counteraction—प्रतिकरण, प्रतिकार।
Counteractive—प्रतिकारिक।
Counter-attack—प्रत्याक्रमण।
Counter-balance—प्रति-तुलन।
Counter-charge—प्रत्यारोप।
Counter-exception—प्रतिपसंग।
Counterfeit—कूट, प्रतिरूप।
Counterfeiter—प्रतिरूपक।
Counterfoil—प्रति-पर्ण।
Counter-revolution—प्रति-क्रांति।
Countersea!—प्रतिमुद्रांकन।
Countersigned—प्रतिहस्ताक्षरित।
Countersigning—प्रतिहस्ताक्षरण।
Counting—गणन, गिनना।
Coupling—युग्मन।
Coupon—पर्णिका।
Courage—साहस।
Course—१. क्रमक। २ पाठ्य-क्रम।
Court—अदालत, कचहरी, न्यायालय।
Court fee—अधिकरण-शुल्क, न्याय-शुल्क।
Court Inspector—व्यवहार-निरीक्षक।
Court Martial—सैनिक न्यायालय।
Court Officer—अधिकरणिक।
Court of records—अभिलेख-अधिकरण।
Court of wards—प्रतिपालक अधिकरण।
Covenant—प्रसविदा।
Cover—आवरण-, ढक्कन।
Crab—केंकड़ा।
Crane—उत्लोलक, उत्लोलक यंत्र।
Crater—ज्वाला-मुख।
Crater lake—ज्वाला-मुख झील।
Cream—मुलतानी।
Creation—सृष्टि।
Credential—प्रत्ययवादी।
Credentials—प्रत्यय-पत्र।
Credit—वि० धन।
सं० १. ऋण। २ साख।
Credit sale—उधार विक्रय।
Credit side—ऋण-पक्ष, धन-पक्ष।
Creeping—बिसर्पी।
Crematorium—१. दाह-गृह। २. श्मशान।
Cricket—गेंद-बल्ला।
Criminal—१ अपराधशील। २आपराधिक।
Criminal Procedure—आपराधिक प्रक्रिया।
Criminology—अपराध विज्ञान।
Crimson—वि० किरमिजी, सतालुई।
पु० किरमिज।
Criterion—कसौटी।
Crocodile*—घड़ियाल।
Crocodile tears—मकराश्रु*, मगरमच्छ के आँसू।
Croon—सिसकी।
Crop—फसल।
Cross-breeding—अन्योन्य प्रजनन, संकरण।
Cross-examination—प्रति-परीक्षण।
Cross-fertilization—अपर-निषेचन।
Cross-reference—अन्योन्य संदर्भ, प्रत्यभिदेश।
Crossword—वर्ग-पहेली।
Crude—अन-गढ़।
Crystal— १. कलम, केलास, रवा। २. बिल्लौर, स्फटिक।

---

*Crocodile वास्तव में घड़ियाल है। परन्तु घड़ियाल और मगर का ठीक अन्तर न समझने के कारण Crocodile tears के लिए चूक से 'मकराश्रु' शब्द बना लिया गया है।

Crystallization—केलसन, मणिभीकरण।
Cube—घन।
Cube measure—घन-मान।
Cube root—घन-मूल।
Cubism—घन-वाद।
Culpable—अपराधिक।
Cult—पंथ।
Cultivated—कृष्ट, कृषित।
Cultivation—१. कृषि-कर्म। २. सवर्धन।
Culturable land—खेती-भूमि।
Cultural—सास्कृतिक।
Culture—१ सवर्धन। २ संस्कार। ३. संस्कृति।
Culvert—पुलिया।
Cumulated—संयुत, समुच्चित।
Cumulation—सयुति, समुच्चय।
Cuneiform—कीलाक्षर।
Cupel—खपरा, खपरिया, खर्पर।
Curable—चिकित्स्य।
Curator—संग्रहालयाध्यक्ष।
Curiosity—कुतूहल।
Curious—कुतूहली।
Currency—चल-मुद्रा, चलार्थ, मुद्रा।
Current—१ चलित,प्रचलित। २. सांप्रतिक। स० धारा, प्रवाह, वहा।
Current account—चलता खाता।
Currentmeter—धारा-वेगमापी, वहामापक, वहामापी।
Curriculum—पाठ्य-चर्या।
Curtain—परदा।
Curve—१ वक्र-रेखा। २. मोड़।
Custodian—अभिरक्षक।
Custody— १. अभिरक्षा, परिरक्षा। २ हिरासत, हाजत।
Customary— आचारिक।
Cut—कटौती।
Cut motion—कटौती का प्रस्ताव।
Cycle—चक्र।
Cyclic—चक्रीय।
Cyclic order—चक्र-क्रम।
Cyclone—चक्रवात, बवडर।
Cyclonic rain—चक्रवातीय वर्षा।
Cyclostyle—चक्र-लेखित्र।

## D

Daily—दैनिक।
Dairy—दुग्ध-शाला।
Dam—बाँध, ओघ।
Damages—क्षति-मूल्य।
Dark age—अंधकार युग।
Date—तारीख, तिथि, दिनांक।
Dated—तिथित।
Day-dream—दिवा-स्वप्न।
Dead letter—अज्ञात-नामिक-पत्र, अनाम-पत्र।
Dead-lock—गति-रोध, जिच।
Deal—अर्थ-वय।
Dean of faculty—संकायाध्यक्ष।
Dearness allowance—मँहगाई।
Death-bed—मृत्यु-शय्या।
Death duty—मृत्यु-कर।
Death rate—मृत्यु-दर, मरणगति।
Death roll—मृत्यु-सख्या।
Debatable—विवाद्य, सभाद्य।
Debate—वाद-विवाद, संभाषा।
Debenture—ऋण-प ।
Debit—विकलन।
Debris—मलबा।
Debt—ऋण।
Decade—दशक।
Decantation— निथारना।
Decease—प्रमीति।
Deceased—प्रमीत।
Decentralization—विकेंद्रीकरण।
Deception—कपट, छल।
Decimalization—दशमलवकरण।
Decimal system—दशमिक प्रणाली।
Decision—१. निर्णय। २. विनिश्चय।
Decisive—निर्णयात्मक।
Declaration—घोषणा, प्रख्यापन।
Declension—रूप-साधन।
Decline—ह्रास।
Decoction—का ा, क्वाथ, जोशाँदा।
Decomposition—सडन।
Decontrol—विनियंत्रण।
Decoration—अलकरण, सजाना, सजाव।
Decorative art—सज्जा-कला।
Decreasing—ह्रीयमान।
Decree—आज्ञप्ति।
Decrement—ह्रास।
Dedication—समर्पण।
Deduction—१. अभ्युपगम। २. निगमन।
Deed—दस्तावेज, विलेख।
Deed of gift—दान-पत्र।
Deem—गमझना।
Deep carmine—अलताई।
De facto—वस्तुतः।
Defalcation—खयानत।
Defamation—मानहानि।
Defect—१. त्रुटि। २. दोष।
Defence—१. प्रतिरक्षा, बचाव। २. सफाई।
Defence witness—सफाई का गवाह।
Deferment—आस्थगन।
Deferred—आस्थगित।
Deficit—१. अवघर्त्त, कमी। २. घटती, घटी, घाटा।
Defined—परिभाषित।
Definite—निश्चित।
Definition—परिभाषा।
Deflation—अवस्फीति, विस्फीति।
Deforestation—निर्वनीकरण, वन-कटाई।
Defraction—व्याभग।
Defraying—अदायगी।
Degenerated—अपजात।
Degeneration—आपजात्य।
Degradation—कोटिच्युति।
Degraded—कोटिच्युत।
Degree—१ अश। २. अशाश। ३. कला।
Dehydrated—निर्जलित।
Dehydration—निर्जलीकरण, विजलीकरण।
Deism—प्रकृति-देव-वाद।
De jure—विधितः।
Delegation—प्रतिनिधि-मडल।
Deletion—लोपन, विलोपन।
Deliberation—विमर्श।
Delimitation—परिसीमन।
Delineation—रेखाचित्र।
Delinquency—अपचार।
Deliquent—प्रस्वेद।
Deliquescence—प्रस्वेदन।
Delirium—प्रलाप।
Delivery—१. दाति, सप्रदान। २. प्रसव।
Deluge—प्रलय।
De lux edition—राज-सस्करण।
Demand—१. अभियाचना। २. माँग।
Demarcated—सीमांकित।
Demarcation—सीमाकन।
Dementia—बुद्धि-भ्रश, मनो-भ्रश।
Demilitarisation—अर्मेन्यीकरण, विसैन्यीकरण।
Democracy—लोक-तत्र।
Democratic—लोक-तांत्रिक।
Demography—जन-विद्या, जनाकिकी।
Demonology—पैशाचिकी।
Demonstration—१ उपपादन। २ निदर्शन। ३ प्रदर्शन।
Demonstrative—प्रदर्शक, प्रदर्शनात्मक, प्रादर्शनिक।
Demonstrator—१. उपपादक। २. निदर्शक। ३. प्रदर्शक।
Demulcent—शमक।
Demmrage—विलब-शुल्क।
Denatured—अपहृत।
Dengue—डडक-ज्वर।
Dentist—दंत-कार।
Dentistry—दंत-कारी, दांतिकी।
Denudation—अनावृतीकरण।
Department—विभाग।
Departmental—विभागीय।

Departure—प्रस्थान।
Dependancy—आश्रित-राज्य।
Depilatory—विलोमक।
Deportation—विपत्तन।
Deposit—निक्षेप।
Deposited—अभिन्यस्त, निक्षिप्त।
Depreciation—अर्घ-पतन, मूल्य-ह्रास।
Depreciation fund—मूल्य-ह्रास-निधि।
Depressed—दलित, पद-दलित।
Depressed classes—दलित-वर्ग।
Depression—१. अवनमन, अवपात। २. प्रावसादन।
Deprived—वंचित।
Deputation—१ प्रतिनिधान। २. शिष्ट-मंडल।
Deputed—प्रतिनियुक्त।
Deputy Commissioner—उपायुक्त।
Derangement—क्रम-भंग।
Derivation—निरुक्ति, व्युत्पत्ति।
Derivative—व्युत्पत्तिक।
Derogation—१. अपकर्ष। २. अप्रतिष्ठा।
Descendant—वंशज।
Descending—अवरोही।
Descending node—अवरोहपात केतु।
Descent—उद्भव।
Description—वर्णन।
Desert—मरु-स्थल।
Deserted—परित्यक्त।
Deserter—अपसरक।
Desertion—१. अभित्याग। २ अपसरण।
Design—अभिकल्प, तरह, परिरूप, बनत, भाँत।
Designated—पदनामित।
Designation—अभिधान, पदनाम, पद-संज्ञा।
Designer—१. अभिकल्पक। परिरूपक। २ रूपांकक।
Designing—अभिकल्पन, रूपांकन।
Despatch book—प्रेषण-पुस्तक।
Despatch register—जावक।
Despondency—विषाद।
Despot—निरंकुश।
Destiny—नियति।
Destroyer—वि० विनाशी। पुं० विध्वंसक (जहाज़)।
Desulphurization—विगंधकीकरण।
Detached—अनासक्त।
Detachment—अनासक्ति।
Detention—निरोध।
Detenu—नज़र-बंद।
Determination—अवधारण, निश्चय।
Determinism—नियति-वाद।
Determinist—नियतिवादी।
Detonation—प्रस्फोटन।
Detonator—प्रस्फोटक।
Detritus—मलबा, विघट्ट राशि।
Devaluation—अवमूल्यन।
Development—१ अभिवर्धन, अभिवृद्धि। २. विकास।
Deviation—विचलन।
Devotion—भक्ति।
Dew—ओस।
Dew-point—ओसांक।
Diabetes—मधु-मेह।
Diacritical mark—विशेषक-चिह्न।
Diagnosis—निदान, रोग-निदान।
Diagonal—वि० विकर्ण। सं० विकर्ण।
Diagonally—विकर्णत।
Diagram—आरेख, रेखा-चित्र।
Dialect—उपभाषा, बोली, विभाषा।
Diamond Jubilee—हीरक जयंती।
Diaphoretic—प्रस्वेदक, स्वेदक।
Diarchy—१. द्वितंत्र, द्वैध-शासन। २. द्वि-दलशासन प्रणाली।
Diarrhoea—अतिसार।
Diary—दैनिकी।
Dice—पासा।
Dictator—अधिनायक, तानाशाह।
Didacticism—उपदेश-वाद।
Diet—भोजन।
Dieted—भोजन-प्राही।
Dietetics—आहार-विज्ञान।
Difference—अंतर।
Different—भिन्न।
Difficult—कठिन।
Difficulty—कठिनाई।
Digression—१ उत्क्रम। २ विषयांतर।
Dilemma—धर्म-संकट।
Dilution—तनूकरण।
Dimension—१. आयाम। २ परिमाप। ३ विमा।
Dimensional—विमीय।
Diminutive—१ अल्पक। २ तुच्छार्थक।
Diphtheria—रोहिणी।
Diploma—पदवी-पत्र।
Diplomacy—कूट-नीति।
Direct—प्रत्यक्ष।
Direction—१ अभिदिशा, दिशा। २ निदेश, निदेशन।
Directive—निदेश, निर्देशन।
Director—निदेशक।
Directorate—निदेशालय।
Direct speech—स्पष्ट-कथन।
Direct tax—प्रत्यक्ष-कर।
Disaffection—अपरक्ति, अपराग।
Disarmament—निरस्त्रीकरण।
Disc—१ चकती। २. तवा। ३. बिम्ब, मंडलक।
Discharge—१ अवरोपण। २ उन्मोचन, उन्मुक्ति। ३ निर्वहण, पालन। ४. प्रस्राव।
Disciple—शिष्य।
Disciplinary—अनुशासनिक।
Discipline—अनुशासन, विनय।
Discovery—आविष्कार।
Discretion—सविवेक, स्वविवेक।
Discretionary—विवेकाधीन।
Discrimination—भेद-भाव, विभेद।
Discussion—वाद-विवाद।
Disease—रोग, व्याधि।
Disgrace—अपमान।
Disguise—वेश।
Dishonesty—अनार्जव, बेईमानी।
Dishonouring—अनादरण।
Disinfectant—संक्रमण-नाशक।
Disintegration—विघटन।
Dismissal—पद-च्युति, बरखास्तगी।
Dismissed—१. खारिज। २ पदच्युत।
Disobedience—अवज्ञा, आज्ञा-भंग।
Disparity—असमानता।
Displaced—अभिक्रांत, उद्वासित, विस्थापित।
Displacement—अभिक्रांति, उद्वासन, विस्थापन।
Disposal—१ निपटान निस्तारण। २. निसर्ग। ३ समापन।
Disposition—१ मिजाज, स्वभाव। २. चित्त-वृत्ति, प्रवृत्ति। ३. शील। ४ व्यवस्था।
Dispute—विवाद।
Disputed—विवादित।
Disregard—१. अवमान। २ अवहेलन।
Dissatisfaction—असंतोष।
Dissection—व्यवच्छेद।
Dissent—विमत, विसम्मति।
Dissertation—१. मत-व्यय। २. शोध-बंध, शोध-निबंध।
Dissimilar—विसदृश।
Dissimilation—विसमीकरण।
Dissolved—विघटित।
Distillation—आसवन।
Distilled—आसुत।
Distiller—आसवक।
Distillery—आसवनी।
Distinct—प्रभिन्न, भिन्न।
Distinction—१. प्रभिन्नता। २. प्रभेद।
Distinctive—प्रभेदी।
Distribution of labour—श्रम-विभाजन।
Distributor—वितरक।
Distributory—वितरक-नदी।
Ditch—खाई।

Diver— गोताखोर।
Divergence—अपसरण, अपसृति।
Dividend—लाभांश।
Division—१. भाग। २ विभाग। ३ प्रखंड। ४ भाजक, हार। ५ वाहिनी (सेना की)।
Divisor—भाजक।
Divorce—तलाक, विवाह-विच्छेद।
Dock—गोदी।
Doctrine— मत, सिद्धांत।
Doctrine of Universals—विश्वक सिद्धांत।
Document—दस्तावेज, प्रलेख, लेख्य।
Documentary—१ लिखित। २ लेख्य। ३ दस्तावेजी।
Documentary film—वृत्त-चित्र।
Documentation—प्रलेख-पोषण।
Dogma—अनंतिम।
Dogmatic— मताग्रही।
Dogmatism—१. आदेशवाद। २ मताग्रह।
Dome—गंबद।
Domestic science—गार्हस्थ्य विज्ञान।
Domicile—अधिवास।
Domiciled—अधिवासी।
Dominion—अधिकार-क्षेत्र।
Donation—दान, दत्त।
Doomsday—कयामत।
Dormancy—सुप्ति, प्रसुप्ति।
Dormant—अनुद्भूत, प्रसुप्त, सुप्त।
Dose—ऊँघ।
Dosing—ऊँघना।
Double member constituency—द्विसदस्य निर्वाचन क्षेत्र।
Draft—१ खाका। २ प्रारूप प्रलेख, मसौदा। ३. धनादेश। ४. हुंडी। ५. पांडु-लेख।
Drafting—पांडु-लेखन।
Draftsman—पांडु-लेखक, नकशा-नवीस, मान-चित्रक।
Drama—नाटक।
Dramatic—नाटकीय।
Drawal—मकारी।
Drawee —आदेशिती।
Drawer—आग्राहक, आगृहीत।
Drawing—१. आलेख, आलेखन, लेखन। २ लेख्य। ३ रेखा-चित्र, नकशा। ४ आग्रहण।
Dread—त्रास, विभीषिका।
Dream—स्वप्न।
Dreamer— स्वप्नदर्शी।
Dress—परिच्छद, पोशाक।
Dressing—१. प्रतिसारण। २ प्रसाधन।
Dressing room—१. प्रतिसारण-शाला। २. वस्त्रागार।
Drift—१. अपवहन, अपवाह। २ बहाव।
Drink—१. पेय। २ पानीय।
Drizzle—झींसी, फुहार।
Drop—बूंद, बिंदु।
Dropper—बिंदुक।
Dropping—अवपातन।
Drought—सूखा।
Drug—औषधि।
Dry—सूखा।
Dry dressing—निर्जल प्रतिसारण।
Dry farming—निर्जल खेती, सूखी खेती।
Dry fruit—मेवा।
Dry washing—सूखी धुलाई, निर्जल धुलाई।
Dualism—द्वैतवाद।
Dualist—द्वैतवादी
Ductile—तन्य, प्रनम्यत्व।
Ductility—तन्यता, प्रनम्यत्वता।
Due—१ अपेक्षित। २ देय। ३. प्राप्य ४.दातव्य।
Dues—१. देय। २ प्राप्य।
Duet—जुगलबंदी, युगल-गान, दुगाना।
Dugong—गवय, हस्ति-मकर।
Dump—खत्ता, गंज।
Dumping—१. गड्डाई। २ पाटना,पटाई।
Duplicate—द्वितीयक
Duration—भोग-काल।
Dust din—धूड़ा-कोठ।
Dusting—धूलन।
Dust-well—धूल-कूप।
Dutiable—शुल्काई।
Duty—१ कर्तव्य। २. तट-कर, सीमा-शुल्क।
Dynamic—गतिक।
Dynamics—गति-विज्ञान।
Dysentry—पेचिश, प्रवाहिका।
Dysmenonrhoea—कष्टार्तव।

## E

Eager—उत्सुक।
Eagerness—उत्सुकता
Eal—वर्ण-मीन।
Ear-drum—कर्ण-पटह, कर्ण-मृदंग।
Earned—अर्जित।
Earthquake—भूकंप।
Easement—परिभोग, सुखभोग।
Easy chair—आराम-कुर्सी, सुखासन।
Ebony—आबनूस।
Eccentric—वि० उत्केन्द्रक, विमध्य। सं० १. उत्केन्द्र। २. सनकी।
Eccentricity—१. उत्केन्द्रता, विमध्यता। २ सनक।
Echo—अनुनाद, ॅज, प्रतिध्वनि।
Echo word—प्रतिध्वनिक शब्द।
Eclipse—उपराग, ग्रहण।
Eclipse (lunar)—चन्द्र-ग्रहण।
Eclipse (partial)—खंड-ग्रहण।
Eclipse (solar)—सूर्य-ग्रहण।
Ecliptic—क्रांतिवृत्त, रविमार्ग।
Ecology—परिस्थिति-विज्ञान।
Economic—आर्थिक।
Economic Geography—आर्थिक भ-विज्ञान।
Economics—अर्थ-शास्त्र।
Economist—अर्थ-शास्त्री।
Economy—किफायत।
Ecstasy—१. अत्यानंद। २ हर्षोन्माद। ३ हाल (धार्मिक तन्मयता)।
Eczema—पामा।
Edentate—अनग्रदत।
Edible—खाद्य।
Editing—संपादन।
Edition—आवृत्ति, संस्करण।
Editor—संपादक।
Education—शिक्षा।
Educational—शैक्षणिक, शैक्षिक।
Educationist—शैक्षिक।
Effect—प्रभाव।
Effective—प्राभाविक।
Efficiency—दक्षता निपुणता, प्रवुण।
Efficiency bar—कौशल-बाध, दक्षता-रोध।
Effort—प्रयत्न।
Ego—अहं।
Egoism—१. अस्मिता। २. अहंकार।
Egotism—अहंकार, अहम्मन्यता।
Eight-wheeler—अठ-पहिया।
Elastic—प्रायस्य।
Elasticity—प्रायस्यता।
Elder—वृद्ध।
Elderman—नगर-वृद्ध।
Elected—निर्वाचित।
Election—निर्वाचन।
Election petition—चुनाव-याचिका।
Electoral College—निर्वाचक-मंडल।
Electorate—निर्वाचक।
Electricity—बिजली।
Electrolysis—विद्युत्-विश्लेषण।
Electrometer—विद्युत् मापक।
Electroscope—विद्युद्दर्शी।
Element— तत्त्व।
Elementary—आरंभिक।
Elevation—१. उत्थान, उठान, उत्सेध। २. उन्नयन। ३ उच्चता, उत्सेध। ४. उच्चालन।
Elevator—उच्चालक।
Eligible—पात्र।
Elocution—वक्तृत्व-कला।

Elongation—दीर्घीकरण।
Elucidation—स्पष्टीकरण।
Emanation—अंश-विभूति।
Emancipation—१. उद्धार। २. मुक्ति।
Embankment—तट-बंध, पुश्ता, बाँध।
Embargo—१. प्रतिरोध, घाट-बंदी। २. निषेध, रोक।
Embellishment—अलंकरण, परिष्करण।
Embezzlement—अपहार, गबन।
Embryo—भ्रूण।
Embryology—भ्रूण-विज्ञान, भ्रौणिकी।
Emergency—१. आपात। २. हंगामा।
Emergent—१ आपातिक, आपाती। २. हंगामी।
Emery paper—बलूआ कागज, रेगमाल।
Emission—उत्सर्जन।
Emphasis—बलाघात।
Empirical—आनुभविक।
Empiricism—प्रत्यक्षवाद।
Employed—अधियुक्त।
Employee—अधियुक्ती।
Employer—अधियोक्ता, नियोक्ता।
Employment—अधियुक्ति, अधियोजन।
Employment bureau—अधियोजनालय।
Employment exchange—नियोजनालय।
Emulation—स्पर्धा।
Emulsification—पायसीकरण।
Emulsion—पायस।
Enactment—अधिनियमन, विधायन।
En bloc—समूहतः।
Encirclement—घेरा-बंदी।
Enclave—अंतरावर्त।
Enclosed—१. परिवेष्टित, संवेष्टित, समवृत। २. अनुलग्न।
Enclosure—१ घेरा। २. समावरण। ३. अनुलग्नक, संलग्नक, सह-पत्र।
Encounter—मुठ-भेड़।
Encroachment—अतिक्रमण, अतिसर्पण।
Encumbered—भारित।
Encumbrance—भार।
Encyclopaedia—विश्व-कोश।
End—अंत।
Endemic—स्थान-पदिक।
Endiometer—वायु-मापी।
Endiometry—वायु-मिति।
Endogamy—सवर्ण-विवाह।
Endogen—अंतर्जात।
Endomosis—रसापकर्षण।
Endorsed—पृष्ठांकित।
Endorsement—पृष्ठांकन।
Endowment—१. वर्चस्व। २. स्थायी-निधि।
Enema—अनुवास, वस्तिकर्म।
Energy—ऊर्जा।
Engagement—१. आबंध, वचन-बंध। २. नियुक्ति। ३. परियुक्ति।
Engima pectoris—उर-शूल।
Engine—इंजन।
Engineer—अभियंता, अभियान्त्रिक।
Engineering—वि० अभियान्त्रिक। स० अभियंत्रण, अभियान्त्रिकी, यंत्रशास्त्र।
Engrave—उकेरना।
Engraving—उकेरी।
Enlarged—परिवर्धित।
Enlargement—परिवर्धन।
Enquiry—परिप्रश्न, पूछ-ताछ।
Enquiry office—पूछ-ताछ घर।
Enrolment—नाम-निवेश।
Ensign—पोत-ध्वज।
Ensuant—अनुभाव।
Entente—समहित।
Entered—अनुविष्ट, निविष्ट।
Enterprise—१ उद्यम। २ साहस।
Enterpriser—१. उद्यमी। २ साहसी।
Enterprising—आरंभी।
Entertainment—आमोद-प्रमोद, मनोरंजन।
Entertainment tax—मनोरंजन-कर।
Entitled—अधिकारी।
Entry—१ अनुवेश, इंदराज, निविष्ट, प्रविष्टि, लेखी। २ प्रवेश।
Enumeration—परिगणन।
Enumerator—परिगणक, गणनाकार।
Envy—अमूया।
Epicentre—अधिकेन्द्र, उत्केन्द्र, कंप-केंद्र।
Epidemic—मरक, मरी, महामारी।
Epidemicology—मरक-विज्ञान, महामारी-विज्ञान।
Epigraph—पुरालेख।
Epigraphist—पुरालेखविद।
Epigraphy—पुरालेख-शास्त्र।
Epilepsy— अपस्मार, मिरगी।
Epitaph—समाधि-लेख।
Epitheleum—उप-कला।
Epoch—अनुयुग।
Equal—सम, समान।
Equality—समता।
Equation—समीकरण।
Equator—निरभ्र,भूमध्य-रेखा ,विषुवत् रेखा।
Equilateral—सम-भुज।
Equilibrium—साम्यावस्था।
Equipment—उपस्कर, साज-समान, प्रसाधन, सज्जा।
Equipped—सज्जित।
Equitable—साम्यामूलक, साम्यिका।
Equivalent—वि० ऐकार्थक, समानार्थक। सं० तुल्याक ।
Era—कल्प।
Erosion—कटाव।
Errata—शुद्धि-पत्र।
Error—भूल।
Errors and omissions—भूल-चूक।
Erruption—स्फोट।
Escheat—वि० राजग, राजगामी। स० नजूल, प्रत्यापत्ति।
Esoteric—१ गुह्य। २ दीक्षणीय।
Espionage—गुप्त-चर्या।
Essay—निबंध।
Essence—सार।
Essential oil—गंध-तैल, गंधसार तेल।
Established—सिद्ध।
Establishment—१ संस्थापन, स्थापन, स्थापना। २ अधिष्ठान।
Estate—भूमि।
Estate duty—भू-शुल्क।
Estimate—१. अनुमान। २. तखमीना। ३ प्राक्कलन।
Estimated—अनुमित।
Estimation —१ आकलन, आगणन, प्राक्कलन। २ कूत। ३ मूल्यांकन।
Estuary—सागर-संगम।
Etcetera—आदि, इत्यादि, वगैरह।
Eternal—शाश्वत।
Ether—आकाश।
Ethics—१ आचार-शास्त्र। २ नीति-शास्त्र।
Etiology—निदान-शास्त्र,हेतु-विज्ञान, हेतुकी।
Etymology—१. निरुक्त, निरुक्ति। २ व्युत्पत्ति। ३ व्युत्पत्ति-विज्ञान।
Eucalyptus—गंध-सफेदा।
Eunuch—हिजड़ा।
Evacuee—निष्कमिती, निष्कांत।
Eve—हौआ।
Even—सम।
Evening party—साध्य-गोष्ठी।
Eviction—अधिनिष्कासन।
Evidence—१ गवाही, साक्षी। २ प्रमाण।
Evolution—विकास, विवर्त्तन।
Exaction—आहरण।
Exaggerated—अतिरंजित।
Exaggeration—१. अतिरंजन। २. अतिशयोक्ति, अत्युक्ति।
Examination—परीक्षा।
Examined—परीक्षित।
Examinee—परीक्षार्थी।
Examiner—परीक्षक।
Examining—१ परीक्षण। २. समीक्षा।
Example—उदाहरण।
Excavation—उत्खनन, खोदाई।
Exceeding—अधिक, समधिक।
Except—अतिरिक्त, सिवा।
Exception—अपवाद।

Exceptional—अपवादिक।
Excess—अतिरिक्त।
Excessive—अतिशय, अत्यधिक।
Excess profit—अतिरिक्त-लाभ।
Exchange—१ मिलाप-केंद्र। २ विनिमय।
Excise duty—आबकारी शुल्क, उत्पादन शुल्क।
Excited—उत्तेजित।
Excitement—उत्तेजना।
Exclave—बहिर्गयर्त।
Exclusion—अपवर्जन।
Exclusive—एकांतिक, ऐकांतिक।
Ex-convict—पूर्वदंडित।
Excursion—परिभ्रमण, सैर।
Executed—निष्पन्न।
Execution—१ इजरा। २ निष्पत्ति, निष्पादन।
Executive—कार्य-पालिका।
Executor—निर्वाहक, निष्पादक।
Exemption—विमुक्ति।
Exercise—१ कसरत, व्यायाम। २. अभ्यास।
Exertion—आयास।
Exhaust—निकास।
Exhaust fan—निकास पंखा, रेचक पंखा।
Exhibition—नुमाइश, प्रदर्शिनी।
Existence—१ अस्तित्व। २ भाव।
Existentialism—अस्तित्ववाद।
Ex-officio—पदेन।
Exogamy—असवर्ण-विवाह।
Expansionism—विस्तारवाद।
Expectation—आशंसा, प्रत्याशा।
Expediency—कालोचितता, समयोचितता।
Expedient—कालोचित, समयोचित।
Expedition—अभियान।
Expelled—अपसृत।
Experience—अनुभव, तजरुबा।
Experiment—प्रयोग।
Experimental—प्रायोगिक।
Experimentalism—प्रयोगवाद।
Experimental science—प्रायोगिक विज्ञान।
Expert—प्रवीण।
Expiration—समाप्ति।
Expiry—समाप्ति।
Explanation—१. व्याख्या। २ स्पष्टीकरण।
Exploitation—शोषण।
Exploiter—शोषक।
Exploration—अन्वेषण, गवेषण, समग्वेषण।
Explosive—विस्फोटक।
Export—निर्यात, जावक।
Export duty—निर्यात शुल्क।
Exporter—निर्यातक।
Express—आशुग।
Expressed—अभिव्यंजित, अभिव्यक्त।
Expression—अभिव्यंजन, अभिव्यक्ति।
Expressionism—अभिव्यजनवाद।
Expressive—अभिव्यंजक।
Express letter—आशुग-पत्र।
Extension—अतिदेश, विस्तरण, विस्तार।
Extensive—विस्तृत।
Extent—आयति, प्रसार, विस्तार।
Extermination—उन्मूलन।
External trade—बहिर्वाणिज्य।
Extinction—१. निर्वापण। २. विलोप। ३ समाप्ति।
Extortion—अपकर्षण।
Extra—अतिरिक्त।
Extradition—प्रत्यर्पण।
Extraordinary—असाधारण।
Extreme—बाह्यपद।
Extremism—अतिवाद, उग्रवाद, परम-पद।
Extremist—अतिवादी, उग्रवादी, परम-पदी।
Eye-ball—अक्षि-गोलक।
Eye-witness—अक्षि-साक्षी, अनुभावी, दर्शन-साक्षी।

## F

Fable—१ आख्यान, कथा। २ उपदेश-कथा।
Facsimile—अनुलिपि, प्रतिकृति, प्रतिमुद्रण।
Factor—१. कारक, घटक। २ तत्त्व। ३ अपवर्तक, गुण-खंड। (गणित)
Factory—उद्योगालय, कारखाना।
Faculty—१ मनीषा। २ सकल्प। ३ सकाय।
Fallacy—हेत्वाभास।
Fallow—परती (जमीन)।
Family—१ कुल। २ परिवार।
Family planning—कुटुम्ब-नियोजन, परिवार-नियोजन।
Farewell—विदाई।
Far-fetched—विलष्ट-कल्पित।
Farm—फारम।
Fashion—भूयाचार।
Fast—उपवास।
Fat—वसा।
Fatal—घातक, सांघातिक।
Fatherland—पितृ-देश।
Fatty—वसीय।
Fault—दोष।
Favour—अनुग्रह।
Feature programme—रूपक कार्य-क्रम।
Federal—संघीय।
Federal Court—संघ-न्यायालय।
Federation—संघ।
Feeder—वि० पोषक। सं० संभरक।
Feeding bottle—दूध-पिलाई।
Felon—आततायी।
Feminine—स्त्रीलिंग।
Fermentation—किण्वन, सधान।
Fern—पर्णांग।
Ferrous—लोहित।
Ferry toll—घट्ट-कर।
Fertile—उपजाऊ, उर्वर।
Fertilizer—उर्वरक।
Festival—त्योहार।
Feudal—सामंतिक, सामती।
Feudalism—१. सामंतवाद। २. सामंतशाही, सामंती।
Feudal system—१. सामत-तत्र। २. सामंत-प्रणाली। ३ सामंत-प्रथा।
Fibre—तंतु, रेशा।
Fiction—१ कल्प-कथा। २. उपन्यास।
Fifth column—पंचमांग।
Fifth columnist—पचमांगी।
Figurative—आलकारिक।
Figure—१ अंक। २ आकृति।
Figured—उच्चित्र, चित्रित।
Figure of speech—अलंकार।
Filament—तंतु।
File—१ तस्थी, संचिका। २ पत्रजात, गिमिल। ३ रेती।
Filed—१ दाखिल। २ नस्तित।
Fill-in-blanks—पद-पूरण।
Filmed—चल-चित्रित।
Filming—चल-चित्रण।
Filtration—छानना, निस्यदन।
Final—अंतिम।
Finance—वित्त।
Finance bill—वित्त-विधेयक।
Finance Minister—अर्थ-मत्री, वित्त-मत्री।
Finances—वित्त-साधन।
Financial—वित्तीय।
Financial year—वित्त-वर्ष, वित्तीय वर्ष।
Finding—निष्कर्ष।
Fine—सं० अर्थ-दड, जुरमाना। वि० १ ललित। २ सूक्ष्म।
Fine arts—ललित कला।
Finger-print—अगुली छाप, उँगली छाप।
Fire—अग्नि, आग।
Fire-arms—आग्नेय अस्त्र। आग्नेयास्त्र।
Fire-brigade—दम-कश।
Fire-extinguisher—अग्नि-शामक।
Fire-line—अग्नि-रक्षक रेखा, अग्नि रेखा।
Fire-proof—अग्नि-सह।
Fire-red—आतिशी।
Fire-wood—ईंधन।
Fire-works—आतिशबाजी।

Firing line—अग्नि-वर्षक रेखा।
Firm—कोठी।
Firmament—महाव्योम।
First aid—प्रथमोपचार, प्राथमिक उपचार।
Firstly—प्रथमतः।
First person— उत्तम पुरुष।
Fish scale—सेहरा।
Fistula—भगंदर।
Fit—उपयुक्त।
Fixed price—स्थिर-मूल्य।
Flag—झंडा।
Flag day—झंडा दिवस।
Flag-hoisting—१. ध्वजारोपण। २ ध्वजारोहण।
Flag pole—ध्वज-दंड।
Flag-ship—ध्वज-पोत।
Flash light—कौंधप्रकाश।
Flavour—रस।
Fleet—बेड़ा।
Fleshy—मांसल।
Flexible—आनम्य।
Flint—चकमक।
Floating—चल।
Floating island—चल-द्वीप।
Flower—फूल।
Flower-leaf—फूल-पत्ती।
Fluctuation—उतार-चढ़ाव।
Flying—चल।
Flying dish—उड़न-तश्तरी, उड़न-थाल।
Flying fortress—उड़न-किला।
Flying saucer—उड़न-तश्तरी, उड़नथाल।
Flying squad—उड़न-दस्ता, उड़ाका दल।
Foetus—भ्रूण।
Fog—धंध।
Foil—पर्ण।
Folding—१ टूटदार, टूटवाँ। २. वलनिक।
Folk dance—लोक-नृत्य।
Folk literature—लोक-साहित्य।
Folk lore—लोक-वार्ता।
Folk song—लोक-गीत।
Follower—अनुयायी।
Fomentation—सेंक, सेंकाई।
Foodgrains—खाद्यान्न।
Food-pipe—भोजन-नालिका।
Food-rationing—खाद्य अनुभाजन।
Foot-note—तल-टीप, पाद-टिप्पणी।
Foot-rule—फुटा।
Footwear—पादुका।
For—हते (हस्ताक्षर के पहले)।
Forbidding—निषेध।
Force—१ बल। २. शक्ति।
Forceps—१. चिमटी। २. संदेश।
Fore-arm—पूर्व-बाहु।
Forecast—पूर्वानुमान।
Forefathers— पूर्व पुरुष।
Foreign Minister—पर-राष्ट्र मंत्री।
Foreign policy—पररराष्ट्र नीति।
Foresight—१. पूर्व-दृष्टि। २ मक्खी (बन्दूक की)।
Forest culture—वन-संस्कृति।
Forest ranger—राजिक, वनपाल।
Forethought—पूर्व-विचार।
Forgery—जाल, जालसाजी।
Form—१ रूप, शकल। २ आकार-पत्र, प्रपत्र।
Formal—औपचारिक, रीतिक।
Formalism—१ नियम-निष्ठता। २ रीतिवाद।
Formality—औपचारिकता।
Formally—उपचारतः।
Formal talk—वार्ता।
Formation—बनावट।
Formula—सूत्र।
Fort—किला, गढ़, दुर्ग।
For the time being—समय विशेष पर।
Fortnight—पक्ष।
Fortnightly —पाक्षिक।
Forum—वाक्पीठ।
Forwarding—अग्रसारण।
Fossil—जीवाश्म।
Foundation stone—आधार-शिला, नींव का पत्थर।
Fraction—१. अंश। २. भिन्न। (गणित)
Fractionation—अंशन।
Fracture—अस्थि-भंग, काट-भंग, विभंग।
Franchise—मताधिकार।
Fraud—१. उपधा, धोखा, फरेब। २ धोखेबाजी।
Fraudulent—औपधिक, कपटपूर्ण।
Free—स्वतंत्र।
Freedom—स्वतन्त्रता।
Free trade—अबाध व्यापार, मुक्त व्यापार।
Fresco—भित्ति-चित्र।
Friction—घर्षण।
Frigid Zone—शीत-कटि-बंध।
Front elevation—पुरोदर्शन।
Frontier—सीमा।
Frost—तुषार, पाला।
Frost-bite—तुषार-दंश।
Frosty—हिमी।
Fruit-sugar—फल-शर्करा।
Frustrum—छिन्नक।
Fuel—ईंधन।
Fuller's earth—सज्जी।
Full marks—पूर्णांक।
Full stop—पूर्ण-विराम।
Fumigation—धूम्रकरण।
Function—१. कृत्य। २. समारोह।
Functionary—कृत्यवाह।
Fund—निधि।
Fundamental—मूलभूत, मौलिक।
Funding—निवयन।
Fungative—छत्रकाय मान।
Fungus—कवक, खुमी, छत्रक, फफूंद, फफूँदी।
Funnel—१ कीप। २ चिमनी।
Fur—उर्णाजिन।
Furniture—उपस्कर, उपस्कार, परिष्कार, साज।
Further—उपर।
Fused—संमेकित।
Fusible—संमेकनीय।
Fusion— १ संमेकन। २. सायुज्य।

## G

Gain—१ प्राप्ति। २ लाभ।
Galaxy—आकाश-गंगा, छाया-पथ, मंदाकिनी।
Gale—वात्या।
Gall bladder—पित्ताशय।
Gallery—चूलदान, दीर्घा, वीथी।
Galvanisation—यंशदीकरण।
Game—सावज।
Gangrene—क्षोथ।
Gangue—असार।
Garden house—उद्यान-गृह।
Garden party—उद्यान-गोष्ठी।
Gaseous—गैसीय
Gaso-meter—गैस-मापी।
Gastritis—आमाशय-शोथ।
Gastropod—उदर-पाद।
Gazette—राज-पत्र।
Gazetted—राज-पत्रित।
Gazetteer—भौगोलिकी।
Geneology—वंशावली।
General—१. आम, सार्विक। २ सामान्य।
General election—आम-चुनाव, साधारण-निर्वाचन।
Generalisation—साधारणीकरण।
Generality—१ सामान्यता। २ व्याप्ति।
General secretary—प्रधान मंत्री।
Generation—पीढ़ी, पुश्त।
Genetic—जननिक।
Genetics—आनुवंशिक विज्ञान, आनुवंशिकी।
Genius—प्रतिभा।
Genocide—१. जन-वध, जन-संहार। २. जाति-नाश, जाति-वध।
Genuine—अकूट, असली।
Genus—जाति।
Geographical—भौगोलिक।

Geography—भूगोल।
Geology—भू-विज्ञान, भौतिकी।
Geometry—ज्यामिति।
Geophysics—भू-भौतिकी।
Germ—कीटाणु।
Germination—अंकुरण।
Gesture—इंगित, मुद्रा।
Geurilla—छापामार।
Geurilla warfare—छापामार लड़ाई।
Gift—१ उपहार, भेंट। २. दान।
Gift-deed—दान-पत्र।
Gilt-edged—स्वर्णाभ।
Glacier—हिमनदी, हिमानी।
Gladness—आह्लाद।
Glance—झाँकी।
Glass—काँच, शीशा।
Global—१. गोलकीय। २ भू-मंडलीय।
Globe—१ गोलक। २ भू-मंडल।
Gloom—विषाद।
Glorification—प्रशस्ति।
Glossary—शब्दावली।
Glucose—द्राक्ष-शर्करा।
Glycerine—ग्लिसरिन।
Goal—रूढ़।
Goal keeper—गोली।
Goiter—गल-गंड, घेंघा।
Gold—सोना, स्वर्ण।
Golden—सुनहला।
Golden Jubilee—स्वर्ण-जयंती।
Golden yellow—सोना-जरद।
Gold standard—स्वर्ण-मानक।
Gonorrhoea—सूजाक।
Good conductor—सुचालक।
Good-will—कीर्तिस्व।
Gorilla—गोरिल्ला (जंतु)।
Governance—अभिशासन, शासन।
Governing—अधिशासनिक, अधिशासी।
Governing Body—१. प्रबंध परिषद्। २ शासन-निकाय, शासी निकाय।
Government—शासन, सरकार।
Governor—१. शासक। २ राज्यपाल।
Governor General—महाराज्य-पाल।
Gradation—अनुपातन, श्रेणीकरण।
Grade—कोटि, श्रेणी।
Graded—कोटि-बद्ध, श्रेणीकृत।
Grade examination—कोटि-परीक्षा।
Grading—अनुपातन, दरजाबंदी, श्रेणीकरण।
Gradual—क्रमिक।
Gradualism—अनुक्रम-वाद, क्रमिकतावाद।
Gradually—क्रमतः, क्रमशः।
Graduate—स्नातक।
Graduated—१. अंशांकित। २. क्रमित।
Graduation—अंशांकन।
Grafting—उप-रोपण।
Grain—अनाज, अन्न, गल्ला।
Granary—अन्नशाला।
Grant—अनुदान।
Graph—१ खाका, बिंदु-रेख। २. लेखा-चित्र।
Gratification—अनुतोष, अनुतोषण, परितोष।
Gratuity—आनुतोषिक।
Gravel—बजरी।
Gravimeter—भार-मापी।
Gravitation—गुरुत्वाकर्षण।
Gravity—गुरुत्व, मध्याकर्षण।
Gray—धूसर।
Greatest—१ अधिकतम। २. महत्तम।
Great power—महा-शक्ति।
Great war—महायुद्ध।
Greed—लोभ।
Greedy—लोभी।
Green—हरा।
Green manure—हरी खाद।
Green pigeon—हारिल।
Grenade—हथ-गोला।
Grid—जालक।
Grief—दुःख।
Groating—पिलाई।
Gross—स्थूल।
Gross assets—कच्ची निकासी।
Ground—१. जमीन, भूमि। २ आधार-भूमि। ३ आधार।
Growing crop—बढ़ती फसल।
Guarantee—प्रतिभूति, प्रश्यभूति।
Guardian—अभिभावक, संरक्षक।
Guerilla—छापामार।
Guerilla warfare—छापामार लड़ाई।
Guess—अटकल, अनुमान।
Guessed—अनुमित।
Guest—अतिथि, मेहमान।
Guest house—अतिथि-शाला।
Guild—श्रेणी। (व्यापारियों की)
Guilt—दोष।
Guinea worm—नहरुआ।
Gulf—आखात, खाड़ी।
Gun carriage—अराबा, तोपगाड़ी।
Gutter press—पतालिया-पत्र।
Gutturopalatal—कंठ्य-तालव्य।
Gynaecology—स्त्रैणिकी।
Gynarchy—स्त्री-राज्य।
Gypsum—चिरौंड़ी, सफेद सुरमा।
Gyration—विघूर्णन।
Gyrostat—घूर्णिका।

## H

Habeas corpus—बंदी प्रत्यक्षीकरण।
Habit—आदत, स्वभाव।
Haemocology—रुधिर-विज्ञान।
Hair dressing—केश-संभारण।
Hair-dye—केश-कल्प।
Hair-style—केश-विन्यास।
Hair tonic—केश-बल्य
Half—अर्ध।
Half pant—अर्धोरुक।
Half-yearly—छमाही, षाण्मासिक।
Hallucination—मति-भ्रम, विभ्रम।
Halo—परिवेश, प्रभा-मंडल, भा-मंडल।
Hammer—१ हथौड़ा, हथौड़ी। २. घोड़ा (बन्दूक का)।
Hand-bill—परचा।
Hand bomb—हथ-गोला।
Hand book—हस्त-पुस्तिका।
Handicraft—हस्त-शिल्प।
Handle—हत्था।
Handloom—करघा, हथकरघा।
Handnote—हस्तांक-पत्र।
Handwriting—लिखावट, हस्तलिपि, हस्ताक्ष।
Haphazard—अललटप्पू।
Happiness—आनन्द।
Harbour—गौताश्रय।
Harmony—ताल-मेल, संगति, सामंजस्य।
Harvest—फसल।
Head—१ शीर्ष। २. सिर।
Heading—शीर्षक।
Head-lamp—अग्र-दीप।
Head master—प्रधानाध्यापक।
Head of cattle—रास।
Head office—प्रधान कार्यालय, मुख्यालय।
Head quarter—मुख्यालय।
Health—स्वास्थ्य।
Health certificate—आरोग्य-प्रमाणक।
Healthy—स्वस्थ।
Hearing—सुनवाई।
Hearsay—श्रुतानुभूत।
Heart—कलेजा, हृदय।
Heartburn—अम्ल-शूल, उत्क्लेश।
Heart disease—हृद्रोग।
Heart failure—हृदय-संघट्ट, हृदयातिपात।
Heart plexus—अनाहत-चक्र।
Heat—उष्मा, ताप।
Heater—ऊष्मक, तापक।
Heat-proof—ताप-सह।
Heat treatment—तापोपचार।
Heat-wave—ताप-तरंग।
Heaven—स्वर्ग।
Heavy water—गुरु जल, भारी पानी।
Hebrew—इबरानी।
Hectic fever—प्लेषक।

Hedonism—इंद्रियवाद।
Height—ऊँचाई।
Heir—उत्तराधिकारी, दायाधिकारी।
Heliograph—सूर्य-चित्रक।
Heliographic—सूर्य-चित्रीय।
Helminthology—कृमि-विज्ञान।
Helpless—असहाय।
Hemiplegia—अर्धांग, पक्षाघात।
Hemisphere—लोार्द्ध।
Hence—अतः।
Herald—१. अग्रदूत। २. वैजयंतिक।
Hereby—एतद्द्वारा।
Hereditary—आनुवंशिक, पुश्तानुक्रमिक, वंशानुक्रमिक।
Heredity—आनुवंशिकता।
Hermaphrodite—उभय-लिंगी, द्वि-लिंगी।
Hero-worship—वीर-पूजा।
Herpetology—सरीसृप-विज्ञान।
Herring—बहुला।
Hesitation—असमंजस।
Heterogeneous—विजातीय, विषमांग।
Hettite—हित्ती।
Hexagon—षट्भुज।
Hexagonal—षट्-कोण।
Hibernation—परिशयन, परिनिद्रा।
Hiccup—हिचकी।
Hidden—प्रच्छन्न।
Hierarchy—पुरोहित-तंत्र।
High blood pressure—उच्च रक्त-चाप।
High Commissioner—उच्चायुक्त।
High Court—उच्च न्यायालय।
Highlight—झलकी।
High seas—अबाध समुद्र, खुला समुद्र, महा-समुद्र
High vacuum—अतिनिर्वात।
Hindrance—अड़चन।
Histology—ऊतक-विज्ञान, औतिकी।
Historical—ऐतिहासिक।
History—इतिहास।
History-sheet—इति-वृत्तक।
History-sheeter—इति-वृत्ती।
Hoarder—जखीरेदार, जमाखोर।
Hoarding—१. गाड़ना। २. जखीरेदारी। ३. अपसंचय, जमाखोरी।
Hobby—शगल।
Hogdeer—पाड़ा।
Holdall—बिस्तर-बंद।
Home—१. गृह, घर। २. स्वराष्ट्र।
Homeguard—गृह-रक्षक।
Home Minister—गृह-मंत्री। स्वराष्ट्र-मंत्री।
Home Ministry—गृह-मंत्रालय।
Home Secretary—गृह-सचिव।
Homesick—गृहासक्त।
Homicide—नर-हत्या, हत्या।
Homogeneous—१. समांग। २. सहजातिक।
Homologous—सजात।
Homonym—सम-ध्वनिक।
Homonymous—सम-ध्वनिक
Honest—ईमानदार, ऋजु।
Honesty—ईमानदारी, ऋजुता।
Honeymoon—मधु-चंद्र।
Honorarium—मानदेय।
Honorary—अवैतनिक।
Honourable—माननीय।
Honouring (of a draft)—सकारना।
Hook-worm—अकुश-कृमि।
Hope—आशा।
Horizon—क्षितिज।
Horizontal—१. अनुप्रस्थ, आड़ा। २ क्षतिज, सपाट।
Hormone—अंत:स्राव।
Horoscope—१ जन्म-कुंडली। २ जन्म पत्री।
Horse power—अश्व-शक्ति।
Horticulture—उद्यान-कर्म, उद्यान-विज्ञान।
Host—आतिथेय, स्वागतक।
Hostage—ओल।
Hostel—छात्रावास।
Hostile—अरिपक्षी।
House—१ घर, मकान। २ सदन।
House-boat—शिकारा।
House of Commons—लोक-सभा।
House of Lords—सामंत-सभा।
House of Peoples—लोक-सभा।
Howler—बहूक।
Human—मानवीय।
Humanism—मानवतावाद।
Humanitarian—मानवतावादी।
Humanities—मानव-शास्त्र, मानविकी।
Humanization—मानवीकरण।
Hunger-strike—अनशन।
Hurdle—चोही।
Hurricane—प्रभंजन।
Husk—१. भूसा। २ तूसी, भूसी।
Hydraulic—उदिक, तोयालिक, द्रव-चालित।
Hydraulics—द्रव-इंजीनियरी।
Hydrocele—अंड-वृद्धि।
Hydro-electricity—पन-बिजली।
Hydrogen—उदजन।
Hydrography—जल-लेखी।
Hydrology—जल-विज्ञान, नैरिकेय।
Hydrolysis—जल-विश्लेषण।
Hydrometer—जल-मापक।
Hydroplane—जल-वायुयान।
Hydrophobia—जल-भीति, जल-सन्नास, जलातंक।
Hygiene—स्वास्थ्य-विज्ञान
Hygrology—आर्द्रता-विज्ञान
Hygrometer—आर्द्रता-मापी
Hyphen—योगिका, संयोजन चिह्न
Hyperbole—अतिशयोक्ति। (अलंकार)
Hypnotism—संमोहन।
Hypnotist—संमोहक।
Hypochondria—पित्तोन्माद।
Hypocrisy—पाखंड।
Hypogastric plexus—स्वाधिष्ठान (चक्र)।
Hypothecated—भाराक्रांत।
Hypothecation—भाराक्रांति।
Hypothesis—१. परिकल्पना, प्राक्कल्पना। २ प्रमेय।
Hypothetical—परिकल्पित, प्राक्कल्पित, सोपाधिक।
Hysteria—अपतंत्रक, वातोन्माद।

## I

Iceberg—हिम-शैल।
Idea—प्रत्यय, विचार।
Ideal—आदर्श।
Idealisation—आदर्शीकरण।
Idealism—१. आदर्शवाद। २ प्रत्ययवाद।
Idealist—आदर्शवादी।
Identification—अभिज्ञान, पहचान, शिनाख्त।
Identity—१. अभिज्ञान, पहचान, शिनाख्त, २ तद्रूपता, तादात्म्य। ३. एकात्मता।
Ideogram—चित्राक्षर।
Ideography—भावांकन, भावलिपि।
Ideology—विचार-धारा, वैचारिकी।
Idiot—जड़-मति।
Ignatius beam—नपीनिया।
Igneous—अग्निज।
Ignominy—अपयश।
Ignoring—अवगणन।
Ill-advised—कुमंत्रित।
Illegal—अविधिक, अवैध।
Illegal practice—अवैधाचरण।
Illimitable—असीम्य।
Illusion—१. अध्यास, धोखा, भ्रम। २ माया।
Illustration—निदर्शन।
Imaginable—कल्पनीय।
Imagery—प्रतिमावली, मूर्तविधान।
Imaginary—कल्पित, काल्पनिक।
Imagination—कल्पना।
Imitation—१. अनुकरण। २. अनुकृति।
Imitator—अनुकारक।
Immature—अपक्व।
Immeasurable—अमापनीय।

Immersion—निमज्जन।
Immigration—आप्रवास, आप्रवासन।
Immoderate—अमर्याद।
Immodest—अविनीत।
Immodesty—अविनय।
Immorality—अनाचार, अनैतिकता।
Immovable—अचल, स्थावर।
Immovable property—अचल संपत्ति।
Immune—निरापद।
Immunity—१. अभिमुक्ति, उन्मुक्ति। २. निरापदता।
Impact—संघात।
Impeachment—महाभियोग।
Imperative—आज्ञार्थक।
Imperative mood—विधि। (व्याकरण)
Imperceptible—अगोचर।
Imperfect—अधूरा, अपूर्ण।
Imperialism—साम्राज्यवाद।
Imperialist—साम्राज्यवादी।
Imperishable—अविनश्वर।
Impersonal—अव्यक्तिक।
Impersonal case—भावे प्रयोग।
Implement—उपकरण।
Implementation—अभिपूर्ति, कार्यान्विति।
Implication—विपक्षा।
Import—आयात, आयक।
Importance—महत्त्व।
Import duty—आयात-शुल्क।
Imported—आयात।
Imprisoned—कारारुद्ध।
Imprisonment—कारावास, कैद, सजा।
Improbable—असंभाव्य।
Impulse—आवेग।
Inadvertance—असावधानता।
Incest—अगम्यागम्य।
In-charge—१. अवधायक। २. कार्यभारी।
Incidence—१. आपतन। २. घटना। ३. अनुपग, संयोग।
Incidental—आनुषंगिक।
In-circle—अंतर्वृत्त।
Incited—उत्तेजित।
Incitement—उत्तेजना।
Inclination—१. झुकाव, नति। २. प्रवृत्ति।
Included—अंतर्गत।
Inclusion—अंतर्भाव।
Incombustible—अदह्य।
Income—आय।
Income-tax—आय-कर।
Incomparable—१. अतुल्य। २. अनुपम, बेजोड़।
Incomplete—अधूरा, अपूर्ण।
Incomprehensible—अबोध्य।
Inconceivable—अचिंत्य, अभावनीय।



Incongruity—विषम (अलंकार)
Inconsistency—असंगति।
Incorporated—निगमित।
Incorporation—निगमीकरण।
Increment—वृद्धि।
Incubation—परिपाक।
Incurable—अचिकित्स्य, असाध्य।
Incurred—उपगत।
Indebtedness—ऋणग्रस्तता।
Independence—स्वाधीनता।
Index—वि० अभिसूचक। स० १. अनुक्रमणिका। २. विषयानुक्रमणिका।
Index number—सूचकांक।
Indianisation—भारतीयकरण।
Indictment—अभ्यारोपण।
Indifferent—उदासीन।
Indigestion—अपच।
Indigo—नील।
Indirect—१. अप्रत्यक्ष। २. परोक्ष।
Indirect description—अप्रस्तुत प्रशंसा।
Indirect election—अप्रत्यक्ष निर्वाचन, परोक्ष निर्वाचन।
Indirect tax—अप्रत्यक्ष कर, परोक्ष कर।
Indistinct—अस्पष्ट।
Individual—व्यक्तिक।
Individualism—व्यक्तिवाद।
Individualist—व्यक्तिवादी।
Individuality—व्यक्तिकता।
Indology—भारत-विद्या।
Induction—१. अनुगम। २. आगम। ३. प्रेरणा।
Industrial—औद्योगिक।
Industrialisation—उद्योगीकरण।
Industrialist—उद्योग-पति।
Industry—उद्योग-धंधा।
Inequality—असमता।
Inertia—निश्चेष्टता।
Inevitable—१. अनिवार्य। २. अवश्यंभावी।
Inexpedient—अनुपयुक्त।
Inexplicable—अव्याख्येय।
Infamy—अपकीर्ति।
Infant—शिशु।
Infections—औपसर्गिक, क्षुतहा, संसर्गज।
Inference—१. अनुमान, अनुमिति। २. अध्याहरण, अध्याहार।
Inferior—१. अधोवर्ती। २. अवर। ३. घटिया। ४. हीन।
Inferiority complex—हीनक मनोग्रंथि।
Inferior servant—अवर-सेवक।
Inferior service—अवर-सेवा।
Inferred—१. अनुमित। २. अध्याहृत।
Infinite—अनंत।
Infinity—अनंतता, अनंती।
Infirmary—रुग्णालय।
Infix—मध्य प्रत्यय।
Inflammation—शोथ, सूजन।
Inflated—स्फीत।
Inflation—१. स्फीतता, स्फीति। २. मुद्रा-स्फीति।
Influence—प्रभाव।
Influx—अंतरागम।
In force—१. प्रचलित। २. बलवत्।
Informal—१. अनौपचारिक। २. अरीतिक।
Information—सूचना।
Information bureau—सूचनालय।
Information Officer—सूचना अधिकारी।
Infrangible—अभंगुर।
Infringement—व्याघात
Ingot—धातु-खंड, सिल।
Inherent—अतर्निष्ठ, निगूढ।
Inheritance—उत्तराधिकार।
Inheritor—उत्तराधिकारी।
Initial—वि० आदिक। स० आद्याक्षर।
Initialled—आद्याक्षरित।
Initiative—पहल।
Injection—सूई।
Injunction—निषेधाज्ञा, व्यादेश, समावेश।
Injury—आघात।
Ink—स्याही।
Inland—अंतर्देशीय।
Inlet—प्रवेशिका।
Inner being—अंतः-सत्ता।
Inner circle—अंतर-चक्र।
Inner conscience—अंतश्चेतना।
Inner feeling—अंतर्भावना।
Innings—पाली।
Innumerable—असंख्येय।
Inoperative—अप्रवर्ती।
Inordinate—अमित।
Inorganic—अजैव।
In part—अंशतः।
Inscribed circle—अंतर्वृत्त।
Inscription—लेख।
Insect repellant—कीट-सारी।
Insectivorous—कीट-भोजी।
Insemination—ससेचन।
Inseparable—अन्विश्न।
Inserted—सन्निविष्ट।
Insight—अंतर्दृष्टि।
Insolation—आतप, सूर्य-ताप।
Insolvent—दिवालिया।
Insomnia—अनिद्रा, उन्निद्रा (रोग)।
Inspection—निरीक्षण।
Inspector—निरीक्षक।

Inspiration—प्रेरणा।
Instalment—किस्त, खंडनी, खंडिका।
Installation—प्रस्थापन, संस्थापन।
Instance—दृष्टांत।
Instinct—सहज-बुद्धि।
Instinctive—वृत्तिक, सहज, साहजिक।
Institute—१. ज्ञानालय। २. पीठ। ३ संस्था, संस्थान।
Instruction—१. अनुदेश, हिदायत। २. अनुदेशन।
Instructor—अनुदेशक।
Instrument—१. औजार। २. करण। ३ साधन।
Instrumental case—करण कारक। (व्याक०)
Instrumental music—वाद्य-संगीत।
Insulator—उष्मारोधक।
Insulin—मधु-सूचनी।
Insult—अपमान।
Insurance—बीमा।
Intellect—१. प्रज्ञा, बुद्धि, समझ। २. विचार-शक्ति।
Intellectual—बौद्धिक।
Intellectualism—प्रज्ञावाद, बुद्धिवाद।
Intellectualist—बुद्धिवादी।
Intend—मतव्य।
Intended—अभिप्रेत।
Intense—अतिशय, अत्यंत, उत्कट, तीव्र।
Intensity—तीव्रता।
Intent—अभिप्राय।
Intention—१. आशय। २ नीयत।
Inter-caste—अंतर्जातीय।
Intercepted—अंतरावरोधित।
Interception—अंतरावरोधन।
Interchange—अदल-बदल, व्यतिहार।
Interest—१. अभिरुचि, दिलचस्पी, रस। २ स्वार्थ, हित। ३. व्याज, सूद।
Interference—हस्तक्षेप।
Interim—अंतरिम।
Interim order—अंतरिम आदेश।
Interleaved—अंतर्पत्रित।
Interleaving—अंतर्पत्रण।
Intermediary—मध्यवर्ती।
Intermediary profit—अंतर्वर्तित आय।
Intermediate—अंतर्वर्ती।
Inter-metallic—अंतर्धातुक।
Intermittent—आंतरायिक।
Intermittent fever—आंतरिक ज्वर, किरायी ज्वर, विसर्गी ज्वर।
Inter-molecular—अंतरणुक।
Internal—१ आंतस्थ, आंतरिक। २. देशिक।
Internalisation—अभ्यंतरण।
Internal trade—अंतर्वाणिज्य।
International—अंतर्राष्ट्रीय, सार्वराष्ट्रीय।
Internationalism—अंतर्राष्ट्रवाद।
International law—अंतर्राष्ट्रीय विधि।
Internment—अंतरायण, नजरबंदी।
Interpolation—अंतर्वेशन।
Interpretation—अर्थापन, निर्वचन, विवृत्ति।
Interprovincial—अंतःप्रांतीय।
Interruption—१ टोकाटाकी। २ बाधा।
Inter-stellar—अंतर्ग्रही।
Interval—मध्यांतर।
Intestine—अंत्र, आंत।
Intimacy—आत्मीयता।
Intimate—आत्मिक, आत्मीय।
Intransitive verb—अकर्मक क्रिया।
Intrinsic—आंतर।
Intrinsic value—आंतरिक मूल्य।
Introduction—प्रस्तावना।
Introspection—अंतर्दर्शन।
Intruder—घुसपैठिया।
Intrusion—घुसपैठ।
Intuition—अंतर्ज्ञान। अंतःप्रज्ञा।
Invalid—१ अमान्य। २ अशक्त। ३ असमर्थ।
Invalid deed—दुर्लेख्य।
Invented—उपज्ञात।
Invention—आविष्कार, ईजाद, उपज्ञा।
Inventor—आविष्कर्ता, आविष्कारक, उपज्ञाता।
Inversion—उत्क्रमण।
Inverted—अपवृत्त।
Investigation—१ अनुसंधान। २. जाँच, तफ्तीश।
Investiture—मानाभिषेक।
Investment—निधान, निवेश, लग्गत।
Invigilator—अभिजागर।
Invisible—अदृश्य।
Invoice—बीजक।
Involution—१ अंतर्वलन। २ निवर्तन।
Involved—अंतर्वस्त।
Inward—आवक।
Iron—लोहा।
Iron age—लोह-युग।
Iron curtain—लोह-आवरण, लोह-जाल, लौह-आवरण।
Irony—व्यंग्य।
Irregular—अनियमित।
Irresponsible—अनुत्तरदायी।
Irrigation—आबपाशी, सिंचाई।
Ism—वाद।
Isolation—आतपन।
Issue—१. निर्गम। २ वाद-पद।
Issue capital—निर्गमित पूँजी।
Issue of fact—तथ्य वाद-पद।
Issue of law—विधि वाद-पद।
Issue price—निर्गम-मूल्य।
Ivory—हाथी दाँत।

## J

Jacket—गीदड़।
Jack fruit—कटहल।
Jade—संगयशब।
Jail—कारा, कारागार, कैदखाना।
Jailor—कारागारिक, कारापाल।
Jaundice—कमल, कामला, पीलिया।
Jealousy—ईर्ष्या, मात्सर्य।
Jelly—अवलेह।
Jerk—झटका।
Jet black—कोयली (रंग)।
Joint—संधि।
Joint account—संयुक्त-खाता।
Journal—वृत्त-पत्र।
Journalism—पत्रकारिता।
Journalist—पत्रकार।
Jubilee—जयंती।
Judgement creditor—वाद-ऋणी।
Judicial—न्यायिक।
Judicial Authority—न्यायिक अधिकारी।
Judiciary—न्याय-तंत्र, न्यायपालिका, न्यायांग।
Juice—रस।
Junction—संगम।
Junior—कनिष्ठ।
Jupiter—बृहस्पति।
Jurisdiction—१. अधि-क्षेत्र, अधिकार क्षेत्र। २. क्षेत्राधिकार।
Jurisprudence—न्याय-शास्त्र, विधि-शास्त्र।
Jurist—विधि-वेत्ता, न्यायशास्त्री।
Jury—१ अधिनिर्णायक, जूरी, ज्यूरी, न्याय-सभ्य। २. पंच।
Just—न्याय-संगत।
Justice—न्याय-मूर्ति।
Juvenile—अल्पवयस्क, किशोर।
Juvevile literature—बाल-साहित्य।

## K

Keel—नौतल।
Key—कुंजी।
Kick—ठोकर, पदाघात।
Kidnapping—हरण।
Kidney—गुरदा, वृक्क।
Kind—प्रकार।
Kindness—कृपा।
Kindred—सगोत्र।
Kingfisher—किरकिरा, किलकिला। (पक्षी)
Kingship—राजत्व, राजशाही, बादशाही।

King's yellow—अमलतासी।
Kinsman—सगोत्र।
Kinship—सगोतता।

## L

Label—अंकितक, नाम-पत्र।
Laboratory—प्रयोगशाला।
Labour—श्रम।
Labour bureau—श्रम-कार्यालय।
Labour dispute—श्रम-विवाद।
Labourer—कमकर, श्रमिक।
Labour room—प्रसूति भवन, सौरी।
Labour union—श्रम-संघ।
Labour welfare—श्रमिक कल्याण-कार्य।
Labyrinth—भूल-भुलैया।
Laconic—अल्पाक्षरिक।
Lacrimal gland—अश्रु-ग्रंथि।
Lactiferous—आक्षीरी, दूधिया।
Lactometer—दुग्ध-मापक।
Lacuna—रिक्ति, रिक्तिका।
Lake-dwelling—जल-निवास।
Lamina—फार।
Lampoon—अवगीति।
Land—१ जमीन, भूमि। २ स्थल।
Landing ground—अवतरण भूमि।
Land revenue—भू-आगम, मालगुजारी, राजस्व।
Landscape—भू-दृश्य।
Land-slip—भू-स्खलन।
Land-survey—भू-परिमाप।
Land-tenure—भू-धृति।
Lane—गली।
Lapis lazuli—वैदूर्य मणि।
Lapsed—क्षीन।
Larva—डिंभ।
Larynx—स्वर-नली।
Lassitude—अवसाद, शिथिलता।
Lasso—फाँसा।
Last—अंतिम।
Lastly—अंततः।
Late—स्वर्गीय।
Late fee—विलंब-शुल्क।
Latent—१. अंतर्हित। २. निगूढ़।
Later—१. अंततर। २. परवर्ती।
Latest—अंततम।
Latitude—अक्षांश।
Latteral—पार्श्विक।
Laughter—अट्टहास, ठहाका।
Launching—जलावतरण।
Lavatory—शौचालय।
Lavender—अंगरेजिया (रंग)।
Law—विधान, विधि।
Lawfully—विधितः।
Law-maker—विधि-कर्ता।
Lawn—दूर्वा-क्षेत्र, प्रस्तार।
Law of contract—संविदा प्रविधि।
Law of jungle—जंगल का कानून।
Lawyer—विधिज्ञ।
Lay out—अभिन्यास।
Lead—सीसा।
Leader—१ अग्र-लेख। २ नेता।
Leader of the House—सदन-नेता।
Leading article—अग्र-लेख।
Leaf—पर्ण।
League of Nations—राष्ट्र-संघ।
Leap year—अधिवर्ष, लौंद का साल।
Leasc—पट्टा।
Lease-deed—पट्टा-लेखप्र।
Lease holder—पट्टाधारी।
Leave account—अवकाश-लेखा।
Lecture—भाषण।
Ledger—खाता, खाता-बही, प्रपंजी।
Legacy—रिक्थ।
Legal—विधिक।
Legal proceeding—विधिक-व्यवहार।
Legal representative—विधिक प्रतिनिधि।
Legation—दूतावास।
Legend—१. अनुश्रुति। २ आख्यान, अवदान। ३ मुद्रा-लेख।
Legendary—१. अनुश्रुत। २ आख्यानिक, ऐतिह्य।
Legendary person—आख्यान-पुरुष। कथा-पुरुष।
Legislative Assembly—विधान-सभा।
Legislative Council—विधान-परिषद।
Legislator—विधायक।
Legislature—विधान-मंडल, विधानांग।
Leguminous—फर्व/दार।
Lens—१. तेजो-जल (आँख का)। २. ताल (शीशे का)।
Leprosy—कुष्ठ, कोढ़।
Lesson—पाठ।
Letter—१. अक्षर। २ चिट्ठी, पत्र।
Letter book—पत्र-पंजी।
Letter-box—पत्र-पेटी।
Letter of request—निवेदन-पत्र।
Letter-pad—पत्रावली।
Letters patent—अधिकार-लेख, एकस्व-पत्र।
Leucoderma—श्वेत-कुष्ठ।
Leucorrhoea—अपर, श्वेत-प्रदर।
Level—१. तल, सतह। २ स्तर।
Levelling—चौरसाई, समतलन।
Levy—उगाही, उद्ग्रहण।
Lexicographer—कोशकार।
Lexicography—कोश-रचना।
Lexicology—कोश-कला।
Lexicon—निघंटु, पुरा-कोश।
Liability—दायित्व, देन, धार्मत्व।
Liaison officer—संपर्क अधिकारी।
Libel—अपमान लेख।
Liberal—उदार।
Liberalism—उदारतावाद।
Liberty—स्वतंत्रता।
Liberty of thought—विचार-स्वातंत्र्य।
Librarian—पुस्तकालयाध्यक्ष, पुस्त-पाल।
Licence—१ अनुज्ञप्ति, अनुज्ञा। २ अनुज्ञा-पत्र।
Licencee—अनुज्ञप्ति-धारी।
Licence-holder—अनुज्ञप्ति-धारी।
Lecencing officer—अनुज्ञा-अधिकारी।
Life—जीवन।
Life-boat—जीवन-नौका।
Life-certificate—जीवन-प्रमाणक।
Life-companion—जीवन-संगी।
Life-history—जीवन-वृत्त।
Life insurance—जीवन-बीमा।
Lift—१ उठावन। २. उत्थापक (यंत्र)।
Ligament—स्नायु।
Light—प्रकाश।
Lighthouse—कंडीलिया, दीप-घर, प्रकाश-स्तंभ।
Light maroon—उन्नाबी।
Lightning—बिजली।
Lightning arrestor—तड़ित-रक्षक, बिजली-बचाव।
Lightning protector—बिजली-बचाव।
Light year—प्रकाश-वर्ष।
Like—सदृश।
Limestone—चूना-पत्थर।
Limit—सीमा।
Limited—परिमित, परिसीमित, सीमित।
Limitless—असीम।
Line-drawing—रेखाह-कलम।
Linguist—भाषा-तत्त्वज्ञ, भाषिकी-वेत्ता।
Linguistics—भाषा-तत्त्व, भाषिकी।
Lintel—सोहावटी।
Liquidation—अपाकरण, परिसमापन।
Liquidator—अपाकर्ता, परिसमापक।
List—सूची।
Literacy—साक्षरता।
Literate—साक्षर।
Literature—साहित्य।
Lithograph—प्रस्तर-मुद्रण, शिला-मुद्रण।
Liver—यकृत।
Live-stock—पशु-धन।
Living wage—निर्वाह-मृति, निर्वाहिका।
Lizard—गरट।
Load—भार।

Loam—१. बुम्मट, दोमट (जमीन)। २. दो-रसी मिट्टी।
Lobby—उपांतिका, गोष्ठी-कक्ष, प्रकोष्ठ।
Local—स्थानीय।
Local authority—स्थानिक अधिकारी।
Local board—स्थानिक परिषद।
Localization—स्थानीकरण।
Localized—स्थानीकृत।
Local self-government—स्थानिक स्वायत्त शासन।
Local tax—स्थानिक कर।
Lock-jaw—हनुस्तंभ।
Lock-out—तालाबंदी।
Lock-up—हिरासत।
Locomotive—चलित्र।
Locus standi—अधिकारिता।
Log—अभिलेख।
Logic—तर्क-शास्त्र।
Logical—तर्क-संगत।
Logistics—सैन्य-तंत्र।
Longing—उत्कंठा।
Longitude—देशांतर।
Loop—छल्ला।
Loop-device—छल्ला-विधि।
Loss—१. घाटा। २. हानि।
Lot—भाग्य-पत्रक।
Lottery—भाग्यदा, लाटरी।
Loudspeaker—उच्च-भाषक।
Louse—जूँ।
Lower—अधस्तन।
Lubricant—स्नेहक।
Lubricating—स्निग्ध।
Lubrication—स्नेहन।
Lucrative—प्रलाभी।
Luminosity—जगमगाहट, दीप्ति।
Luminous—दीप्त।
Lunar—सौमिक।
Lunar month—चांद्र-मास।
Lunar-year—चांद्र-वर्ष।
Lung—फेफड़ा।
Luxury—विलास।
Lymph—लसीका, लासक।
Lyric—प्रगीत।

## M

Mace—१. गदा। २. जावित्री।
Macedonia—मकदूनिया।
Machine—कल, पेंच, यंत्र।
Magna Carta—महाधिकार-पत्र।
Magnate—चुबक।
Magnification—अधिरूपण, आवर्धन।
Magnifier—आवर्धक।
Maintenance—१. अनुरक्षण। २. पालन, पोषण, भरण-पोषण।
Maintenance allowance—पोषण-वृत्ति।
Majority—१. अधिकांश। २. बहुमत।
Make-shift—काम-चलाऊ।
Malafide—कदाशयी।
Malafides—कदाशय, कदाशयता।
Malaria—जूड़ी, फसली बुखार, विषम ज्वर।
Malnutrition—कु-पोषण।
Malt—यव।
Maltose—यव-शर्करा।
Management—प्रबंध, व्यवस्था।
Management charges—प्रबंध-परिव्यय।
Management committee—प्रबंध-समिति।
Manager—प्रबंधक, व्यवस्थापक।
Managing agent—प्रबंध अभिकर्ता।
Managing director—प्रबंध-संचालक।
Managing editor—प्रबंध-संपादक।
Mandate—प्रादेश।
Mandatory—प्रादेशात्मक।
Manganese—मंगल, मैंगनीज।
Manifestation—अभिव्यक्ति।
Manifesto—लोक-घोषणा।
Manipulation—चालन।
Manner—प्रकार।
Manual—वि० हस्त (यौ० के आरंभ में) सं० १. नियमावली। २. गुटका, हस्त-पुस्तिका।
Manual labour—हस्त-श्रम।
Manure—खाद।
Manuscript—पांडु-लिपि, हस्त-लेख।
Map—मानचित्र।
Mapping—मान-चित्रण।
Marching song—प्रयाण-गीत।
Margin—उपांत।
Marginal—१. उपांत, उपांतिक। २ न्यूनाधिक।
Marginal heading—पार्श्व-शीर्षक।
Marginal note—पार्श्व-टिप्पणी।
Margin witness—उपांत-साक्षी।
Marital—वैवाहिक।
Maritime—अनुसमुद्री, समुद्री।
Marketing—विपणन।
Marrow—सार।
Mars—मंगल-ग्रह।
Marsh—दलदल।
Marsupium—शिशु-धानी।
Martial—सैनिक।
Masculine—पुंलिंग।
Masochism—आत्म-पीडन।
Mass—वि० बहु-मात्र।
सं० १. द्रव्यमान। २. संहति।
Massacre—कटा, सामूहिक वध।
Mass production—बहुमात्र-उत्पादन।
Master—अधिपति।
Mastic—मस्तगी।
Material—वि० १. अन्नमय। २. भौतिक।
सं० १. उपकरण, उपादान। २ द्रव्य, पदार्थ।
Material being—अन्नमय-पुरुष।
Materialism—जड़-वाद, भौतिकवाद।
Materialist—जड़-वादी।
Materia Medica—औषध-शास्त्र।
Maternity—मातृत्व।
Maternity leave—प्रसवावकाश।
Maternity ward—सूतिकागार।
Mating season—ऋतु-काल।
Mathematics—गणित।
Matriarchal—मातृक।
Matriarchy—मातृ-तंत्र।
Matricide—मातृ-हत्या।
Matron—मातृका, मेट्रन।
Matter—१. महाभूत। २. द्रव्य, पदार्थ। ३. विषय। ४. विषय-वस्तु।
Mature—परिपक्व।
May Day—मई दिवस।
Mayor—नगर-प्रमुख।
Meadow—चारागाह।
Mean—मध्यमान।
Meander—वि० विसर्पी।
सं० १. विसर्पण। २. गो-मूत्रिका।
Meaning—अर्थ।
Means—साधन।
Means of communication—संचार-साधन।
Measles—खसरा, मसूरिका, रोमांतिका।
Measurement—नाप, मापनी।
Mechanic—वि० यांत्रिक।
सं० यंत्रकार।
Mechanical—यांत्रिक।
Mechanics—यांत्रिकी।
Mechanism—यंत्रकारी।
Medal—पदक।
Median—माध्यिक।
Mediation—मध्यस्थता।
Mediator—मध्यस्थ।
Medical—चिकित्सीय, चैकित्सिक।
Medical certificate—चिकित्सक प्रमाणक।
Medical leave—चिकित्सावकाश, रुग्नावकाश।
Medical science—आयुर्विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान, चिकित्सा शास्त्र।
Medicine—औषध, दवा।
Medieval—मध्ययुगीन।
Medium—माध्यम।
Medulla—मज्जका।
Melancholia—सालीखोलिया, विषाद

(रोग)।
Melting-point—द्रवणांक।
Member—सदस्य, समासद।
Membership—मेंबरी, सदस्यता।
Membrane—कला।
Memo—पत्रक।
Memorandom—१. ज्ञापन-पत्र। २. परिचय-पत्र।
Memorial—स्मारक।
Memory—१. स्मृति। २. स्मरण-शक्ति।
Meningitis—गरदन-तोड़ बुखार, तानिका शोथ, मन्यास्तंभ।
Menopause—रजोनिवृत्ति।
Menses—मासिक धर्म, रजोधर्म।
Menstruation—आर्तव, रजोधर्म।
Mental deficiency—मनोदौर्बल्य।
Mental hospital—मानसिक चिकित्सालय।
Mentality—मानसता, मनोवृत्ति।
Mental science—मानस-विज्ञान।
Mental weakness—मनोदौर्बल्य।
Mention—उल्लेख, वर्णन।
Mentioned—उल्लिखित।
Merchandise—पण्य-वस्तु।
Mercantile—आपणिक, वाणिज्य।
Mercantile mark—वाणिज्य चिह्न।
Mercantilism—वाणिज्यवाद।
Mercenery—भृत-भोगी।
Mercuric—पारदिक।
Mercury—१. पारद, पारा। २ बुध (ग्रह)।
Mercy—दया।
Merge—विलयत।
Merging—विलन।
Meridian—१. याम्योत्तर रेखा। २. याम्योत्तरवृत्त।
Merits—गुण-दोष।
Mermaid—जलपरी।
Meriment—प्रमोद।
Mesmerism—मूर्च्छन।
Mesopotamia—इराक।
Mesozoic era—मध्यजीव कल्प।
Message—संदेश।
Metabolims—उपापचयन, चयापचयन।
Metallic age—धातु-युग।
Metallurgy—धातु-विज्ञान।
Metaphysics—तत्त्व-मीमांसा।
Meteor—उल्का।
Meteorite—उल्काश्म।
Meteorlogy—मौसम-विज्ञान।
Meter—मापक।
Methylated—उपहृत।
Metre—छंद।
Metrical—छंदोबद्ध।
Mica—अबरक।
Microbe—अणु-जीव।
Microphone—ध्वनि-क्षेपक-यंत्र, ध्वनि-वर्धक।
Microscope—सूक्ष्मदर्शी, सूक्ष्मवीक्षक।
Microscopy—अणुवीक्षण-विज्ञान।
Micro-wave—अणु-तरंग।
Middle Ages—मध्य-युग।
Middle class—मध्यवर्ग।
Middle-East—मध्य-पूर्व।
Middleman—बिचौती, मध्यस्थ।
Midwife—दाई, धात्री, प्रसाविका।
Midwifery—कुमार-भृत्या, धात्री-विद्या, प्रसूति-विद्या।
Migration—प्रवसन, प्रवजन।
Milestone—मील-पत्थर।
Militarisation—अस्त्रीकरण, सैन्यीकरण।
Militarism—१ सामरिकता, सैनिकता। २. सामरिकवाद, सैन्यवाद।
Militarist—सैन्यवादी।
Military—सैनिक।
Military kttache—सैनिक सहकारी।
Milk-sugar—दुग्धशर्करा।
Milky—दूधिया।
Milky-way—आकाश-गंगा।
Millenium—सहस्राब्दि।
Mimicry—अनुहरण।
Mind—मानस।
Minded—मनस्क।
Mine—खान, सुरंग।
Mine-layer—सुरंग-प्रसार।
Mineral—खनिज।
Mineralogy—खनिज-विज्ञान।
Mine-sweeper—सुरंग-बुहार।
Minimum—अल्पक, अल्पतम।
Minister—मंत्री।
Ministerial—सचिव।
Ministry—१. मंत्रि-मंडल। २ मंत्रालय। सचिवाधिकार।
Minor—अवयस्क, नाबालिग।
Minority—अल्पांश।
Mint—१. टकसाल। २ पुदीना।
Minute—कला।
Minute book—कला-पंजी।
Miraculous—चमत्कारिक।
Mirage—मरीचिका, मृग-मरीचिका।
Misappropriation—अपयोजन, दुर्विनियोग।
Miscarriage—१. अपवहन। २. गर्भस्राव।
Miscarried—अपवाहित।
Miscarry—अपवहन।
Miscellaneous—प्रकीर्ण, फुटकर, विविध।
Missile—क्षिपणी, क्षेप्यास्त्र।
Mist—कोहरा।
Mistake—१ बधुद्धि। २. भूल।
Misunderstanding—गलत-फहमी, विभ्रम।
Mixture—मिश्रण।
Mobile—चलिष्णु।
Mobile plant—चल-यंत्र।
Mobilization—लामबंदी, ससज्जन।
Model—१. प्रतिमान। २. साँचा।
Moderate—संयत।
Moderate breeze—समीर।
Moderation—संयम।
Modern—अर्वाचीन, आधुनिक।
Modernisation—आधुनिकीकरण।
Modesty—१. विनय। २. शील।
Modification—अनुशोधन।
Modules—मापांक।
Molasses—राब।
Molecular—आणविक।
Molecule—अणु।
Molestation—छेड़छाड़।
Momentum—परिवल, संवेद।
Monarchy—राजतंत्र।
Money—द्रव्य, धन, मुद्रा।
Money-bill—अर्थ-विधेयक।
Money order—धनादेश।
Monism—अद्वैतवाद।
Monogamy—एक-विवाह।
Monologue—१. आत्मोक्ति, स्वगतकथन। २ एकालाप।
Monoplegia—एकांग-घात।
Monopoly—एकाधिकार, इजारेदारी।
Monotheism—एकेश्वरवाद।
Monotonous—एक-सुर।
Monotony—एक-सुरापन।
Monsoon—पावस।
Monument—कीर्ति-स्तंभ
Mood—मनोदशा।
Moon-stone—चंद्र-शिला।
Morality—सदाचार।
Mordant—रंग-स्थापक।
Moritorium—ऋण-स्थगन।
Morning star—अर्धचंदी।
Morphene—संबंध-तत्व।
Morphology—१ आकारिकी, आकृति-विज्ञान, २. रूप-विधान। (भाषा विज्ञान)
Mortal—अनित्य।
Mortgage—बंधक, रेहन।
Mortgage with possession—भोग-बंधक।
Mortgagor—बंधक-कर्त्ता।
Mortuary—मुरदा-घर, लाश घर।
Mother tincture—मूलार्क।
Motif—अभिप्राय।
Motion—१. गति। २. प्रस्ताव।

Motion of no-confidence—अविश्वास-प्रस्ताव।
Motivation—अभिप्रेरण।
Motive—हेतुप्रयोजन, प्रेरक-हेतु।
Mould—साँचा।
Mountaineer—पर्वतवासी, पर्वतारोही।
Mountaineering—पर्वतारोहण।
Mourning—शोक।
Mouse deer—मूसा-हिरन।
Mouthpiece—मुखाग्र।
Mouthwash—मुख-धावक।
Movable property—चल-संपत्ति।
Movie—चल-चित्र।
Multiple—१. अपवर्त्य, गुणित। २ गुणज, बहुगुण। ३. बहुलित।
Multiplication—गुणन, गुणा।
Multiplication table—पहाड़ा।
Multiplier—गुणक।
Multi-purpose—बहु-हेतुक।
Mumps—कन-पेड़ा।
Municipal fund—नगर-निधि।
Municipality—नगर-पालिका।
Munsif—विचारक।
Muscle—पेशी।
Museum—अजायब-घर, संग्रहालय।
Mushroom—खुमी।
Musician—गवैया, गायक।
Musk—कस्तूरी।
Musk deer—कस्तूरी-मृग।
Mutation—नाम-चढ़ाई, नामांतरण।
Mutiny—गदर।
Mutual—पारस्परिक।
Myrtle—मेहदिया, मेहदी।
Mysticism—रहस्यवाद।
Myth—दैव-कथा, धर्म-गाथा, पुराण-कथा।
Mythological—पौराणिक।
Mythology—दैवकथा-शास्त्र, पुराण-विद्या।

## N

Nadar—अब स्वस्तिक।
Nail—काँटा।
Nasalisation—अनुनासिकता।
Nation—राष्ट्र।
National—वि० राष्ट्रीय। पु० राष्ट्रिक।
Nationalism—१. राष्ट्रीयता। २ राष्ट्र-वाद।
Nationality—राष्ट्रिकता।
Natural—१. नैसर्गिक, प्रकृत, प्राकृतिक। २. स्वाभाविक।
Natural history—प्रकृति-विज्ञान।
Naturalisation—देशीकरण, देशीयकरण।
Naturalism—१ नैसर्गिकी। २ प्रकृतिवाद।
Naturalist—१ प्रकृतिवादी। २ प्रकृति-वेत्ता।
Natural science—प्रकृति-विज्ञान।
Nature—१. निसर्ग, प्रकृति। २. आदत, स्वभाव।
Nature cure—प्राकृतिक-चिकित्सा।
Naturopathy—प्राकृतिक-चिकित्सा।
Nausea—हृल्लास।
Nautical science—नौ-विज्ञान।
Naval—समुद्रिय।
Naval service—नौ-सेवा।
Navigable—नाव्य, नौतरणीय। (जल-मार्ग)
Navigation—जहाजरानी, नौचालन।
Navigator—जहाजरान।
Navy—जल-सेना, नौ-सेना।
Nebula—नीहारिका।
Necessity—आवश्यकता, जरूरत।
Nectar—अमृत।
Needle-work—सूईकारी।
Negation—नकारात्मकता, निषेध, नेति।
Negative—१ अभावात्मक। २ ऋणात्मक। ३ नत्वर्थक। ४ नहिक।
Negativism—निषेधवाद।
Nepthritis—वृक्क-शोथ।
Neptune—उडुग।
Nerve—नाड़िका, सवेदन-सूत्र, स्नायु।
Nervous—स्नायविक।
Nervous system—नाड़िका-तंत्र।
Nett assets—पक्की निकास।
Neutral—तटस्थ।
Neutrality—तटस्थता।
Never-ending—अनंत।
New-fashioned—अभिनव।
News—खबर, समाचार।
Newspaper—अखबार, समाचार-पत्र।
Nib—डंक।
Nihilism—नाशवाद, शून्यवाद।
Node—१. पात। २. पर्ण-ग्रंथि।
Nomad—खानाबदोश, चलवासी, यायावर।
No Man's Land—स्वामीहीन-भूमि।
Nomenclature—नाम-कोश।
Nominal—अभिहित, नामिक।
Nominalism—नाम-रूपवाद।
Nominated—नामांकित।
Nomination—नामाकन।
Nomination paper—नामाकन-पत्र।
Nominative case—कर्ता कारक।
Nominee—नामांकित।
Non-agricultural—अकृषिक।
Non-bailable—अप्रतिग्राह्य।
Non-cognizable—अनवलंबनीय।
Non-cognizance—अनवेक्षा।
Non-conductor—अचालक।
Non-co-operation—असहयोग।
Non-descript—अज्ञात-कुल।
Non-dieted—अशोजन-ग्राही।
Non-ferrous—अलौहिक।
Non-matter—अपदार्थ।
Non-metal—अधातु।
Non-metallic—अधात्विक।
Non-occupancy tenant—गैर-दखलिकार।
Non-recurrence—अनावर्तन।
Non-recurring—अनावर्तक।
Non-resident—अनवासिक।
Non-sale—अविक्रय।
Non-vegetarian—आमिषभोजी।
Norm—प्रमानता, प्रमाणान्यता।
Normal—१. प्रसम, प्रमाणान्य, सामान्य। २ प्रकृत, सहज।
Normality—प्रसमता।
Normally—सामान्यत।
Normative science—आदर्श-विज्ञान।
North pole—उत्तरी ध्रुव, सुमेरु।
Notation—१ अंकनी। २. स्वर-लिपि।
Note—१. टीप। २ पत्रक।
Note of Interrogation—प्रश्न-चिह्न।
Notice—सूचना, सूचना-पत्र।
Notification—अधिसूचन, अधिसूचना।
Notified—१ अधिसूचित। २ विज्ञापित।
Notified area—विज्ञापित क्षेत्र।
Noun—संज्ञा (व्याकरण)।
Novel—उपन्यास।
Novelist—उपन्यासकार।
Nucleus—वि० नाभिक। सं० केंद्रक, नाभि।
Nudism—नग्नवाद।
Nudist—नग्नवादी।
Nuisance—१. कंटक। २. लोक-कंटक।
Null—अकृत।
Nullification—१. अकृतीकरण। २. निर्विधायन, व्यर्थन।
Nullified—निर्विधायित।
Number—१. अंक। २. संख्या। ३. वचन। (व्या०)
Numbering—संख्यांकन।
Numberless—असंख्य।
Numeral—संख्यांक।
Nurse—उपचारिका, दाई, धाभी।
Nursery—१. जच्चीरा, नौरना, पौध घर। २. बच्चा-घर, शिशुशाला। ३. पोष-शाला, संवर्धन-शाला।
Nursing—१. उपचर्या। २. परिचार।
Nutrition—पोषाहार।

## O

Oasis—मरु-द्वीप।
Oath—शपथ।
Object—१. उद्देश्य। २. पदार्थ।
Objection—आपत्ति।
Objective—वि० १. वस्तु-निष्ठ। २ कर्म-प्रधान।
स० कर्म।
Objective case—कर्म-कारक।
Obligation—१. आभार। २ दायित्व।
Obliged—अनुगृहीत।
Obliging—अनुग्राहक।
Obliteration—अभिलेपन।
Obloquy—अपवाद।
Obscene—अश्लील।
Observance—प्रेक्षण।
Observation—प्रेक्षण।
Observer—प्रेक्षक।
Obstacle—बाधा।
Obstetrics—प्रासविक-विज्ञान, प्रसूति-विज्ञान।
Obstetrical—प्रासविक।
Obtuse angle—अधि-कोण।
Obverse—सीधा।
Occasional—अवसरिक।
Occasionalism—प्रसगवाद।
Occlusion—अधिधारण, सरोध।
Occupancy right—भोगाधिकार।
Occupancy tenant—दखिलकार।
Occupant—काबिज।
Oceanography—समुद्र-विज्ञान।
Octagon—अष्ट-भुज।
Octahedra—अष्ट-फलक।
Octahedral—अष्ट-फलक।
Octave—सप्तक।
Octavo—अठपेजी।
Octopus—अष्ट-बाहु, अष्टपाद।
Octroi—चुगी।
Odd—विषम।
Ode—संबोधन-गीति।
Odour—गध।
Offence—अपराध।
Offender—अपराधी, मुजरिम।
Offer—प्रस्ताव।
Offeree—प्रस्तावित।
Offering—अर्पण।
Office—कार्यालय, दफ्तर।
Officer—अधिकारी।
Officer-in-charge—भारवाही अधिकारी।
Official—अधिकारिक।
Official residence—पदावास।
Officiating—निर्वाहणिक, स्थलापन्न।
Off-print—अधिमुद्रण।
Oil colour—तैल-रग।
Oil painting—तैल-चित्र।
Oil well—तेल-कूप, तैल-कूप।
Oily—स्निग्ध।
Oligarchy—अल्पतत्र।
Omission—१ अकरण, अनाचरण। २. चूक, लुप्ति।
Omnipotent—सर्वशक्तिमान।
One-act-play—एकांकी। (नाटक)
Opacity—अपारदर्शिता।
Opaque—अपारदर्शी।
Opening balance—आद्य-शेष।
Opera—गीति-रूपक, सगीतिका, सांगीत।
Operation—१ व्यापार। २ शल्योपचार।
Operator—सचालक।
Ophicephalus—सर्प-शीर्ष।
Ophthalmology—चक्षु-विज्ञान, नेत्र-विज्ञान, नैत्रिकी।
Opinion—अभिमत, राय, सम्मति।
Opium—अफीम।
Opportunism—अवसरवाद।
Opportunist—समानुवर्ती।
Opposite—सन्मुख।
Opposition—विरोध।
Opposition bench—विरोध-पीठ।
Optics—प्रकाशिकी।
Optimist—आशावादी।
Option—विकल्प।
Optional—वैकल्पिक।
Oration—वक्तृता, वाग्मिता।
Orator—वक्ता, वाग्मी।
Orbicular—मडलाकार।
Orchestra—वाद्य-वृन्द।
Ordeal—अग्नि-परीक्षा, दिव्य-परीक्षा।
Order—१. आज्ञा। २ क्रम। ३ गण, श्रेणी।
Order form—माँग-पत्र।
Order-sheet—आज्ञा-फलक।
Ordinal—क्रम-सूचक।
Ordinance—अध्यादेश।
Ordinary—साधारण।
Ordinate—कोटि, भुजमान।
Ore—धातुक।
Organ—मुख-पत्र।
Organic—सेंद्रिय।
Organisation—सघटन।
Orientalism—प्राच्य-विद्या।
Orientalist—प्राच्य-विद्या वेत्ता, प्राच्य-वेत्ता।
Oriental sore—प्राच्य-व्रण।
Orignial—मौलिक।
Originality—मौलिकता।
Ornament—अलंकार, आभूषण, गहना।
Ornamental—अलकारिक।
Ornithology—पक्षी-विज्ञान।
Orphanage—अनाथालय।
Orthodox—परंपरानिष्ठ, सनातन।
Orthography—शिक्षा।
Osmosis—रसाकर्षण, परिसरण।
Ostentation—आडबर।
Other—भिन्न।
Otherwise—अन्यथा।
Outdoor—बहिर्द्वारी।
Outerfile—बिसर्पी।
Outfall—निकास, निष्काष।
Outfitter—वेशकार।
Outgrown—अधिवृद्ध।
Outgrowth—अधिवृद्धि।
Outline—१ खाका, रूप-रेखा। २. बहिरेखा।
Out of date—अनद्यतन, गतावधि, दिनातीत, यात-याम।
Outskirt—बाह्यांचल।
Outward—आवक।
Oval—अडाकार।
Ovary—अडाशय।
Over-cooling—अतिशीतन।
Over-draft—अधि-विकर्ष।
Over hauling—पुनःकल्पन।
Over-hitting—अतिसधान।
Overlapping—वि० परस्पर-व्यापी।
स० अतिच्छादन।
Over-population—अति-प्रजन।
Over-production—अति-उत्पादन।
Over-ruling—व्यवस्था।
Overseer—अधिकर्मी।
Oversight—दृष्टि-दोष।
Overt—खुला, प्रकट।
Overtone—अधि-स्वर।
Ovule—बीजांड।
Owner—स्वामी।
Ownership—स्वामित्व, स्वाम्य।
Owner's risk—जोखिम घनीसिर।
Oxygen—प्राण-वायु।

## P

Pacific Ocean—प्रशांत महासागर।
Pacifism—शांतिवाद।
Pacifist—शांतिवादी।
Packer—सवेष्टक।
Packing—सवेष्टन।
Pad—कवालिका, गद्दी।
Pagoda tree—ल-चीन।
Paid—१. दत्त। २. भृत। वैतनिक।
Pain—पीड़ा।

Painted scroll—आख्यान-पट।
Painter—रंग-चित्रक, रंग-शाक।
Painting—१. चित्रण, चित्रांकन। २. चित्र, तस्वीर। ३. रंग-चित्र। ४. रंग-चित्रण।
Palaeontology—जीवाश्म-विज्ञान, पुरा-जीविकी।
Palaeozoic era—पुरा-काल।
Palate—तालू।
Palmate—पंजक।
Palpitation of heart—हृत्कंप।
Pancreas—अग्नाशय।
Pandemic—विश्वपदिक।
Panel—नामिका, चयनक।
Pangolin—बन-रोहू।
Panic—आतंक, भीतिका, सनसनी।
Pantheism—सर्वात्मवाद, सर्वेश्वरवाद।
Pantheist—सर्वात्मवादी, सर्वेश्वरवादी।
Pantheon—देव-गण।
Paper—१. कागज, पत्र। २. अभिपत्र।
Paper currency—धन-पत्र। नोट।
Paper-cutter—पत्र-कर्तक।
Paper-money—पत्रक-धन।
Paper-pulp—लुगदी।
Papers—पत्र-जात।
Paper-weight—दाब।
Parable—दृष्टान्त-कथा।
Parachute—अवतरण-छत्र, छतरी, हवाई छतरी।
Paragraph—अनुच्छेद, कडिका।
Paralapsis—आक्षेप-अलंकार।
Parallel Government—समकक्ष सरकार।
Paralysis—अग-घात, पक्षाघात, लकवा।
Paramount—सर्वोपरि।
Paramount power—सर्वोपरि सत्ता।
Paranomatic—श्लेष (अलंकार)।
Paraplegia—अराग-घात।
Para-psychology—परा-मनोविज्ञान।
Parasite—परजीवी, पराश्रयी, परापजीवी।
Paratrooper—छतरी सैनिक।
Parasol—आतपत्र।
Parcel post—पीट-डाक।
Parliament—संसद।
Parliamentarian—संसदी।
Parliamentary—सांसद।
Parliamentary Secretary—उपन-सचिव, सांसद सचिव।
Parole—वाग्विश्वास।
Part—१. अंश। २. भाग। ३. भूमिका।
Partial—आंशिक।
Partial eclipse—खंड-ग्रहण।
Particle—कण।
Partly—अंशतः।
Partridge—तीतर।
Partnership—भागिता, हिस्सेदारी।
Party—दल।
Pass—१. पारक, पार-पत्र। २. गिरि-संकट, दर्रा।
Passed—पारित।
Passing—१. पारण। २. संक्रमण।
Passive resistance—निष्क्रिय प्रतिरोध, निष्क्रिय-विरोध, सत्याग्रह।
Passive voice—कर्म-वाच्य।
Passport—पारपत्र, राहदारी का परवाना।
Pastoral song—ग्वाल-गीत।
Pasture—पशुचर।
Pasture land—गोचर, गोचर-भूमि।
Patent—एकस्व।
Pathologist—निदानज्ञ, विकृति-विज्ञानी, विकृति-वेत्ता।
Pathology—रोग-विज्ञान, विकृति-विज्ञान, वैकारिकी।
Patriarchal—पैतृक्य।
Patrol—गश्त।
Patron—संरक्षक।
Pattern—प्रतिमान।
Pauper—अकिंचन, मुफलिस।
Pavilion—मंडप, प्रशालिया।
Pay—वेतन।
Paying—दायक।
Pay order—देयादेश, धनादेश।
Pea—मटर।
Peace—शांति।
Peace force—शांति सेना।
Peaceful co-existence—शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व।
Peace treaty—शांति-संधि।
Pearl—१. मुक्ता, मोती। २. खसखसी, मौतिया (रंग)।
Pebble—स्फटिक।
Peculiar allegation—विशेषोक्ति।
Pedagogy—शिक्षण-विज्ञान।
Pedestal—पादपीठ, मंची।
Pediatrics—कौमार-भृत्य, शैशविकी।
Peep-show—सैर-बीन।
Petiole—पर्ण-वृन्त, वृन्त।
Pelvis—पेड़ू, श्रोणी।
Penal code—दंड-संहिता।
Penalogy—दंड-विज्ञान, दंड-शास्त्र।
Penalty—दंड, शास्ति।
Pendant—१. जुगनू। २ लटकन।
Pending—लंबित।
Pen friend—पत्र-मित्र।
Peninsula—प्रायद्वीप।
Pension—निवृत्ति-वेतन, पेन्शन।
Pentagon—पंच-भुज।
Penumbra—उपच्छाया।
Peon-book—पत्रवाह-पंजी।
Percent—प्रतिशत।
Percentage—प्रतिशतक।
Perception—अवबोधन, प्रत्यक्ष-ज्ञान।
Percussion—समाघात।
Perennial—परिवार्षिक, वर्षानुवर्षी, सदा-बहार।
Perfection—पूर्णता।
Performance—पालन।
Perfumery—गंधकारिता।
Pericardium—हृदयावरण।
Pericarp—फलावरण।
Perihelion—रवि-नीच।
Peimeter—परिमाप, परिसीमा।
Period—कालावधि।
Periodic—कालिक।
Periodical—वि० कालिक। सं० सामयिक पत्र।
Period of service—सेवा-काल।
Peripheri—परिरेखा।
Peritoreum—उदरावरण, उदर्या।
Permanent—स्थायी।
Permanent Advance—अप्रतिदेय।
Permeable—प्रवेश्य, भेद्य।
Permission—अनुज्ञा, अनुमति।
Permissive—अनुज्ञापक।
Permitted—अनुज्ञप्त।
Permutation—प्रस्तार।
Perpendicular—लंब।
Perpetual—सतत।
Perpetuity—तातत्य।
Perseverance—अध्यवसाय।
Persona grata—अभिमत व्यक्ति, ग्राह्य व्यक्ति, स्वीकार्य व्यक्ति।
Personal—निजी, वैयक्तिक।
Personal assistant—निजी सहायक।
Personal bond—वैयक्तिक बंध।
Personality—व्यक्तित्व।
Personal law—वैयक्तिक विधि।
Persona non grata—अग्राह्य व्यक्ति, अस्वीकार्य व्यक्ति।
Perspective—परिदृष्टि, परिप्रेक्ष्य, संदर्भ।
Pervasive—व्याप्ति।
Pessimism—निराशावाद।
Pessimist—निराशावादी।
Petition—याचिका।
Petition of objection—आपत्ति-पत्र।
Petroleum—शु-तैल।
Phallicism—लिंग-पूजा।
Phallicist—लिंग-पूजक।
Phantom—छाया पुरुष, मनोलोका।
Pharaoh—फरओ।
Pharmacology—औषध-विज्ञान।

Pharmacopia—भेषज-संग्रह, मान्य-औषध-कोश।
Pharmacy—भैषजिकी।
Phenomenal world—दृश्य-जगत्।
Philologist—भाषा-विज्ञानी।
Philology—भाषा-विज्ञान।
Philosophical system—तत्त्ववाद।
Phobia—भीति।
Phoenix—अमर-पक्षी।
Phonetic—ध्वनिक।
Phonetics—ध्वनि-विज्ञान।
Photo—छाया-चित्र।
Photo-chemistry—प्रकाश-रसायन।
Photography—आलोक चित्रण, छाया-चित्रण।
Photo-synthesis—प्रकाश-संश्लेषण।
Phraseology—पदावली।
Physical—भौतिक।
Physical geography—भौतिक भूगोल।
Physical vital—अन्न-प्राण। (अरविंद-दर्शन)
Physician—काय-चिकित्सक।
Physics—भौतिक-विज्ञान।
Physiology—कायिकी, क्रिया-विज्ञान, दैहिकी।
Physio-theraphy—भौतिक-चिकित्सा।
Physique—अंगलेट, शरीर-गठन।
Picketing—धरना।
Picnic—गोठ।
Pictography—चित्र-लिपि।
Picture gallery—चित्र-शाला।
Pier—पोत-घाट।
Pigeon—कबूतर।
Pig iron—१. कच्चा लोहा। २. ढलवाँ लोहा।
Pigment—वर्णक।
Piles—अर्श, बवासीर।
Pill-box—कवच कोठरी।
Pilot—वैमानिकी।
Piloting—निर्याण।
Pin—आलपीन, कंटिका।
Pine-apple—अनन्नास।
Pioneer—पुरोगामी।
Piping—नीर-क्रिया, नीरण।
Pirate—जल-दस्यु, समुद्री डाकू।
Pisciculture—मत्स्य-पालन।
Pistel—गर्भ-केसर, स्त्री-केसर।
Pitch—१. काकु (झलकार) २. तार (स्वर)।
Pith—सार।
Pithy—अर्थ-गर्भित।
Pituitary gland—पीयूष ग्रंथि, पीयूषिका।
Pity—अनुकंपा।
Pivot—कूपक।
Place—जगह, स्थान।
Place of occurrence—घटना-स्थल।
Plagiarism—१. भाव-हरण। २. साहित्यिक चोरी।
Plagiarist—१. भावहारी। २. साहित्यिक चोर।
Plagiary—साहित्यिक चोरी।
Plaint—अर्जीदावा।
Plan—आयोजना, पूर्वयोजन, योजना।
Planet—ग्रह।
Planning—योजना।
Planning Commission—योजना आयोग।
Plaster of Paris—गच।
Plastic—सुघट्य, सुनम्य।
Plasticity—सुघट्यता।
Plateau—पठार।
Platform—अलिंद, चबूतरा।
Play—क्रीडा, खेल।
Play-back—पार्श्व-संगीत।
Play-ground—क्रीडा-स्थल।
Pleader—अभिवक्ता।
Pleading—अभिवचन।
Plebiscite—जनमत-संग्रह।
Pledge—रेहन।
Pledged—प्रतिभूत।
Pleurisy—उरोग्रह।
Plexus—चक्र।
Pliable—आनम्य।
Plinth—कुरसी।
Plot—१. कथा-वस्तु, संविधानक। २. कुचक्र, षड्यंत्र। ३ भू-खंड।
Plotosus—कटकार।
Plum—आलूचा।
Plumate—चकुर, साहुल।
Pluralism—बहुक-वाद, बहुल-वाद।
Pleutocray—धनिक-तंत्र।
Plywood—परती-लकड़ी।
P. M.—अपराह्न
Pod—फली।
Poem—काव्य।
Poet—कवि।
Poetry—कविता।
Pogrom—लोक-संहार, सर्व-संहार।
Point—१. विंदु। २. सूत्र।
Point of order—नियमापत्ति।
Poison—विष।
Poisonous—जहरीला, विषाक्त।
Polar—ध्रुवीय।
Polar axis—ध्रुवाक्ष।
Polarity—ध्रुवता, ध्रुवत्व।
Polarization—ध्रुवण।
Polarizer—ध्रुवीयक।
Pole—मेरु।
Police action—आरक्षक कार्य।
Police force—आरक्षिक दल।
Policy—नीति।
Politics—राजनीति।
Pollen—पराग।
Pollination—परागण।
Polling booth—मतदान-कोष्ठ।
Polling station—मतदान-केन्द्र।
Polyandry—बहुपतित्व।
Polygamy—बहु-विवाह।
Polygyny—बहुपत्नित्व।
Polytheism—बहुदेव-वाद।
Pomp—आटोप, तड़क-भड़क।
Popular—लोक-प्रिय, सर्व-प्रिय।
Popular Government—लोक-शासन।
Popularity—लोकप्रियता, सर्व-प्रियता।
Porosity—छिद्रलता।
Porous—छिद्रल।
Portfolio—संविभाग।
Portion—भाग।
Pose—ठवन।
Position—१ स्थिति। २ बाना। ३. ठिकाना। (सैनिक)
Positive—वि० १. अनुलोम। २. गरम। ४. निश्चयात्मक। ५ विध्यात्मक। ५. सकारात्मक। ६. सहिक।
सं० धनाणु।
Positiveness—सहिकता।
Positivity—सहिकता।
Possession—१ अधिकार। २. आधिपत्य, कब्जा। ३. भुक्ति, भोग।
Possibility—संभावना।
Possible—संभव।
Post—१. पद, ओहदा। २. चौकी। ३. डाक। ४ स्थान।
Posted—नियत।
Poster—प्रज्ञापक।
Post graduate—स्नातकोत्तर।
Postgram—तार-पत्र।
Posthumous—मरणोत्तरक।
Posting—स्थापन।
Postmaster—डाकपाल।
Postmaster General—महाडाक-पाल।
Post-mortem—शव-परीक्षा।
Post office—डाकखाना, डाकघर।
Postscript—गद्यचलेख
Postscriptum—पुनश्च।
Posture—ठवन-मुद्रा।
Potency—प्रभविष्णुता।
Potsherd—ठीकरा।
Pottery—१. कुम्हारी। २. मृण्पात्र, मृद्भाड।
Powder—१. चूर्ण। २. मुख-चूर्ण।
Power—१. अधिकार। २. क्षमता। ३. घात (गणित)। ४. बल, शक्ति। ५. सत्ता।

Power politics—बल-नीति।
Pox—चेचक, बड़ी माता।
Practical—क्रियात्मक।
Practice—अभ्यास।
Praise—प्रशंसा।
Preamble—आमुख।
Precaution—पूर्व-सावित्य।
Precautionary—वारणिक।
Precautionary measure—पूर्वोपाय।
Precedence—अग्रता, पूर्वता।
Precedent—पूर्विका।
Precipitated—अवक्षिप्त।
Precipitation—अवक्षेपण।
Precise—अदित्थ।
Precognition—पूर्व-दर्शन।
Preconscience—पूर्व-चेतन।
Predecessor—पूर्वाधिकारी।
Prediction—भविष्यद्वाणी।
Pre-emption—पूर्व-क्रय, हक-शफा।
Pre-existence—प्राग्भाव।
Preface—भूमिका।
Preferable—अधिमान्य, वरीय।
Preference—अधिमान, वरीयता।
Preferential—अधिमानिक।
Preferred—अधिमानित।
Pregnancy—गर्भिणी।
Pregnant—गर्भवती, गर्भिणी।
Pre-historic—प्रागैतिहासिक।
Prejudice—पूर्वग्रह।
Prejudiced—पूर्वग्रस्त।
Pre-knowledge—पूर्व-ज्ञान।
Premium—१. अधिमूल्य, बढ़ौतरी, बढ़ौती। २. बीमा किस्त।
Prepaid—पुरदत्त।
Preparation—उपक्रम, तैयारी।
Prepayment—पुर-दान। प्रतिज्ञा।
Prerogative—परमाधिकार।
Prescribed—१ नियत। २. प्रदिष्ट।
Prescriber—प्रदिष्टा।
Prescription—१ प्रदेशन। २. चिर-भोग। ३. नुस्खा।
Presence chamber—श्रीमंडप।
Present—१. प्रस्तुत। २. वर्तमान।
Preservation—परिरक्षण।
Preservation of fruits—फल-परिरक्षण।
Preservative—परिरक्षक।
Preserved—परिरक्षित।
President—१. अध्यक्ष। २. राष्ट्रपति। ३. सभापति।
Presidential Government—प्राधानिक शासन।
Presiding—अध्यासीन, पीठासीन।
Presiding officer—१. अधिपति, अधिष्ठता। २. पीठासीन अधिकारी।
Press—१. छापाखाना। २ पत्र, समाचार-पत्र।
Pressure gauge—दाब-मापक।
Presumption—१. प्रकल्पना। २. अवलेप। ३. अर्थापत्ति अलंकार।
Presumptuous—१. अवक्षिप्त। २ अवलेपक।
Presumptuousness—अवलिप्ति।
Previous instruction—पूर्वदिश।
Pride—अभिमान, घमंड।
Priest—पुरोहित।
Priesthood—पौरोहित्य।
Prima facie—ऊपर से देखने पर, प्रत्यक्षतः, प्रथम दृष्ट्या।
Primary—प्राथमिक।
Primary education—प्राथमिक शिक्षा।
Prime Minister—प्रधान मंत्री।
Primitive—आदिम।
Primitive race—आदिम जाति।
Principal—आचार्य, प्रधानाचार्य।
Principle—सिद्धांत।
Printing press—छापाखाना, मुद्रणालय।
Priority—प्रथमता, प्राथमिकता।
Prison—कारागार, कैदखाना, बंदी-गृह।
Prisoner—कैदी, बंदी।
Prisoner of war—युद्ध-बंदी।
Private—खासगी, वैयक्तिक।
Private Secretary—निजी सचिव।
Privilege—अधिकार, विशेषाधिकार।
Privy pot—शौचनी।
Prize—१. इनाम, पारितोषिक, पुरस्कार। २. नौ-जित माल।
Prize Court—नौ-जित न्यायालय।
Probation—परिवीक्षण, परिवीक्षा।
Problem—१. समस्या। २. निर्मेय। (तर्क-शास्त्र)
Procedure—प्रक्रिया।
Proceeding—प्रक्रिया।
Proceedings—कार्य-विवरण।
Proceeds—अर्थागम।
Process—१. प्रक्रम। २. प्रक्रिया, विधि। ३. आदेशिका।
Process fee—प्रसर-शुल्क।
Process server—प्रसर-पात्र।
Proclamation—१. उद्घोषणा, घोषणा। २. घोषणा-पत्र।
Procuress—कुटनी।
Produced—प्रस्तुत।
Product—गुणन-फल।
Production—१. उत्पादन। २ उपज।
Productivity—उपजाऊपन।
Profession—पेशा।
Profession tax—वृत्ति-कर।
Professor—प्राध्यापक।
Profile—एक-चक्षम, पार्श्वगत।
Profit—१. लाभ। २. लभ्यांश।
Profitable—लाभदायक, स्वार्थिक।
Profit and loss—लाभालाभ।
Profiteer—मुनाफाखोर।
Profiteering—मुनाफाखोरी।
Programme—कार्य-क्रम।
Progress—१. उन्नति। २. प्रगति।
Progression—१. पुरोगति। २. श्रेढ़ी।
Progressive—१. पुरोगामी। २. प्रगतिशील। ३. श्रेढिक।
Prohibitory—प्रतिषेधक।
Project—प्रयोजना।
Projected—प्रक्षिप्त।
Projection—प्रक्षेपण।
Projector—प्रक्षेपक।
Proletariat—सर्वहारा।
Promise—प्रतिश्रुति।
Promising—उदीयमान, होनहार।
Promoted—उन्नीत।
Promotion—१. उन्नयन। २ पदोन्नति।
Promulgated—प्रचारित।
Promulgation—प्रख्यापन।
Pronote—हुंडी-पत्र।
Pronoun—सर्वनाम।
Pronunciation—उच्चारण।
Proof—१. उपपत्ति। २ प्रमाण, सबूत। ३ शोधन-पत्र।
वि० कवच, सह (यौ० के अन्त में)।
Propaganda—अभिप्रचारक।
Propagandist—अभिप्रचारक।
Proper—उपयुक्त।
Property—१ गुण, गुण-धर्म, धर्म। २ जायदाद, संपत्ति।
Property mark—स्वामित्व-चिह्न।
Property tax—संपत्ति-कर।
Prophet—पैगंबर।
Proportion—अनुपात, समानुपात।
Proportional—आनुपातिक।
Proportionate—समानुपातिक।
Proposal—प्रस्ताव।
Proposition—प्रतिज्ञा।
Proprietor—स्वामी।
Prorogation—सत्रावसान।
Proscribed diet—प्रतिषेधभोजन।
Proscription—१. वाचन। २. अभिनिषेध।
Prose—गद्य।
Prosody—पिंगल।
Prospectus—विवरण-पत्र, विचरणिका।
Prostate gland—अष्ठीला ग्रंथि।
Prostitution—वेश्यावृत्ति।
Protection—संरक्षण।

Protection duty—संरक्षण-शुल्क।
Protectionism—संरक्षण-वाद।
Protective—संरक्ष्य।
Protectorate—रक्षित राज्य, संरक्षित राज्य।
Protein—प्रोटीन।
Protest—प्रत्याख्यान।
Prothesis—पूर्वांग।
Protocol—१. नयाचार। २. पूर्व-लेख, संलेख।
Protoplasm—जीव-द्रव्य, जीव-धातु।
Protraction—अविलंबन।
Protractor—चाँदा।
Proved—प्रमाणित, सिद्ध।
Proverb—कहावत।
Provided—उपबंधित।
Providence—पूर्व-विवेचन।
Province—प्रदेश, प्रांत, क्षेत्र।
Provincialism—प्रांतीयता, प्रादेशिकता।
Provident fund—निर्वाह-निधि, भविष्य-निधि संभरण निधि।
Provision—१ उपबंध, शर्त। २ व्यवस्था।
Provisional—अंतर कालीन, अंतकालीन।
Proviso— उपबंध, प्रतिबंध।
Provocation—उत्तेजना।
Provocative—उत्तेजक, भड़काऊ।
Proxy—प्रति-पत्र।
Pruning—छँटाई।
Psychic—प्रेतात्म-विद्या।
Psychic being—वैयक्य पुरुष।
Psychic element—मनस्तत्व।
Psychicisation—चैत्यीकरण।
Psychics—आत्मिकी।
Psycho-analysis—मनोविश्लेषण।
Psychological—मनोवैज्ञानिक।
Psychologist—मनोवैज्ञानिक।
Psychology—मनोविज्ञान।
Public—वि० सार्वजनिक। स० जनता, सर्वसाधारण।
Publication—प्रकाशन।
Public career—लोक-वाहक।
Public health—लोक-स्वास्थ्य।
Public life—लोक-जीवन।
Public office—लोक-पद।
Public opinion—लोक-मत।
Public peace—लोक-शांति।
Public place—महाभूमि।
Public servant—लोक-सेवक।
Public service—लोक-सेवा।
Public Service Commission—लोक-सेवा आयोग।
Public spirit—लोक-भावना।
Public Utility Service—लोकोपयोगी सेवा।
Public works—लोक-वास्तु।
Pulley—गड़ारी।
Pulp—१. गूदा। २ लुगदी।
Pulsation—स्पंदन।
Pulse—१. नाड़ी। २ स्पंद।
Pump—दमकल।
Pun—श्लेष।
Punch marked—आहत (मु०)।
Punch marked coin—आहत मुद्रा, शलाका मु०।
Punctual—समयनिष्ठ।
Punctuality—समयनिष्ठता।
Punctuation—विराम-चिह्न।
Punishment—दंड।
Punitive—ताजीरी, दांडिक।
Punitive force—ताजीरी पुलिस, दांडिक पुलिस।
Purchases journal—क्रय-पंजी।
Purchases ledger—क्रय-प्रपंजी।
Purging—सारण।
Purification—पूतीकरण।
Purple— बैंगनी
Purpose—अभिप्राय।
Purrefaction—पूयन।
Pyrrhoea—परिदर, पूय-दंत।
Pyrite—माक्षिक।
Pyrometer—उत्तापमापी।

## Q

Quadrant—पाद।
Quail—बटेर।
Quake—कंप।
Qualification—अर्हता, परिगुण, योग्यता।
Qualified—अर्ह, परिगुणी, योग्य।
Quality—गुण।
Quandary—उभय-संकट, धर्म-संकट।
Quantity—परिमाण।
Quantum—प्रमात्रा।
Quarantine—१. सग-रोध, संस रोध। २. निरोध।
Quarry—१. उत्खनन। २. अश्मखनि, खदान।
Quarter—तिमाही, त्रिमास।
Quarterly—तिमाही, त्रैमासिक।
Quarto—चौपेजी।
Que—पंक्ति।
Q. E. F.—इतिकृत।
Queen bee—जननी मक्षी, रानी मक्षी।
Query—१. अनुयोग, पूछताछ। २ शंका।
Question—१. प्रश्न। २. सवाल। ३. शंका।
Questionable—शंकनीय।
Questionaire—प्रश्नावली।
Questioner—प्राश्निक।
Quibbling—वाक्-छल।
Quorum—गण-पूर्ति।
Quota—नियतांश, यथांश।
Quotation—अवतरण, उद्धरण।

## R

Racial discrimination—वर्ण-भेद।
Racialism—जातिवाद।
Rack—टाँड।
Radar—तेजोत्वेष।
Radiant of meteors—उल्का-पंच।
Radiation—विकिरण।
Radiator—विकिरक।
Radicalism—अतिवाद।
Radio-active—तेजस्क्रिय।
Radio-activity—तेजस्क्रियता, विकिरण-शीलता।
Radiograph—रेडियो-चित्रण।
Radiography—एक्स-रे चित्रण, रेडियो चित्रण।
Radiology—विकिरण-विज्ञान।
Radio-meter—विकिरण-मापी।
Radio-therapy—रेडियो-चिकित्सा।
Radius—त्रिज्या।
Raillery—फबती।
Rainbow—इन्द्र-धनुष।
Rain gauge—वर्षा-मापक।
Rally—१. चक्र। २. समवेतन।
Ramp—ढलान, ढाल, रपटा।
Range—१. परास, मार। २. शृंखला (पर्वत आदि का)।
Rank—पदवी।
Ransom—निष्कृति-धन, परिक्रय।
Rape—जिना-बिल-जब्र, बलात्कार।
Rare—१. स्वच्छित्। २. दुर्लभ।
Rate—१. दर, भाव। २. पौर-कर। ३. उप-शुल्क।
Rate-circular—रचौती।
Ratification—१. अनुसमर्थन, अभिपोषण। २. सत्यांकन।
Ratified—१. अनुसमर्थित, अभिपुष्ट। २. सत्याकित।
Ratio—अनुपात।
Ration—१. अनुभक्तक। २. रसद।
Rationalism—तर्कनावाद, बुद्धिवाद।
Rationalist—तर्कनावादी।
Rationed—अनुभक्त।
Rationing—अनुभाजन।
Raw material—कच्चा माल।
Reaction—१. अभिक्रिया। २. प्रतिक्रिया।
Reactionism—प्रतिक्रियावाद।
Reactor—१. अभिक्रियक। २.प्रतिक्रियक।
Readiness—१. आसज्जा। २. तैयारी।

Reading—१. अध्ययन। २ पढ़त, पाठ, वाचन।
Reading room—वाचनालय।
Re-agent—प्रतिकर्मक।
Real—वास्तविक।
Realism—यथार्थवाद।
Reality—यथार्थता, वास्तविकता।
Re-armament—पुनरस्त्रीकरण।
Reason—युक्ति।
Recall—प्रत्याहृ वान।
Receipt—प्राप्तिका, रसीद।
Receiver—१. आदाता, आदायक, प्रापक, ३. ग्राहक-यंत्र। ३. प्रतिग्राहक।
Receptacle—१. आधय। २. थानी, पात्र।
Reception—१ प्राप्ति। २. स्वागत।
Reception committee—स्वागत-समिति।
Receptionist—अभ्यर्थक, स्वागतक।
Reciprocal—अन्योन्य।
Reciprocity—अन्योन्यता।
Recital—उद्धरणी।
Recitation—१ पठन, पाठ। २. काव्य-पाठ। ३. प्रपठन।
Reckoning—सगणन।
Recognised—मान्य, मान्यताप्राप्त, स्वीकृत।
Recognition—मान्यता।
Recoil—प्रतिक्षेप।
Recollection—१. अनुस्मरण, स्मृति।
Recommendation—अनुशंसा। संस्तुति, सिफारिश।
Recommended—अनुशसित।
Reconstruction—पुनर्निर्माण।
Record—१ अभिलेख। २. ध्वन्यालेख। ३ उच्चमान। ४ उच्चाक।
Recording—१ अभिलेखन। २ ध्वन्यालेखन।
Recording machine—अभिलेखन यंत्र।
Record-keeper—अभिलेखपाल।
Record room—अभिलेखालय।
Recovery—प्रतिप्राप्ति।
Rectangle—आयत।
Rectangular—आयताकार।
Rectification—१. ऋजुकरण। २. परिशोधन।
Rector—अधिशिक्षक।
Rectum—मलाशय।
Recurrence—आवर्तन।
Recurring—आवर्तक।
Redeemed—निष्क्रीत।
Redemption—१ निष्क्रय। २. निष्क्रयण।
Red-handed—कर्म-गृहीत, रँगे हाथ, रँगे हाथों।
Red heat—रक्त ताप।
Red-hot—रक्त तप्त।
Re-distribution—पुनर्विभाजन।
Red lock—लाल ताला।
Red Sea—लोहित-सागर।
Red-tape—लाल-फीता।
Reduction—१ अवकरण, कमी, घटांव। २. कटौती।
Re-embursement—प्रतिपूर्त्ति।
Re-enacted—पुनर्निहित।
Re-enactment—पुनर्विधायन।
Re-examination—पुनर्परीक्षण।
Referee—अभिदेशिकी, निर्देशी।
Reference—१. निर्देश, निर्देशन। २. संदर्भ, हवाला।
Reference book—निर्देश-ग्रंथ।
Reference books—संदर्भ-साहित्य।
Referendum—जन-निर्देश।
Refinement—परिष्कृति।
Refinery—१. परिष्करण-शाला, परिष्करणी। २. परिष्कार।
Reflection—परावर्तन, प्रत्यावर्तन।
Reflector—प्रकाश-परावर्तक।
Reformatory—वि० सुधारक। पु० सुधारालय।
Reformer—सुधारक।
Refractoriness—गलन-रोध, तापावरोध।
Refractory—गलनरोधी, तापावरोधक।
Refrigeration—प्रशीतन।
Refrigerator—प्रशीतक।
Refugee—शरणार्थी।
Refund—प्रतिनिचयन।
Refutation—खंडन।
Regatta—जलोत्सव।
Regent—राजप।
Regimentation—अधिशासन।
Register—पंजिका, पंजी।
Registered—निबद्ध।
Registrar—पंजीयक।
Registration—पंजीयन।
Regression—१. प्रत्यागमन। २ प्रतिपायन।
Regret—खेद।
Regular—नियमित।
Regulating—नियमन।
Regulation—१. नियमन, विनियमन। २ विनियम।
Regulator—नियामक।
Rehabilitation—पुनर्वास।
Rehearsal—१. पूर्वाभ्यास। २ पूर्वाभिनय।
Rejected—अस्वीकृत।
Rejection—अस्वीकरण।
Rejoinder—प्रत्युत्तर।
Relapse—पुनरावर्तन।
Relapsing fever—पुनरावर्ती ज्वर।
Relative—अनुपाती, सापेक्ष, सापेक्षिक।
Relative order—क्रम।
Relativity—आपेक्षिकता, सापेक्षता।
Relativity theory—आपेक्षिकतावाद।
Relay—पुनर्सारण।
Relayed—पुनर्सारित।
Relay race—चौकी दौड़।
Relevancy—संगति।
Relevant—प्रासंगिक, संगत।
Relic—स्मृति-शेष।
Relief—उच्चित्र, निम्नोन्नत।
Relieved—पद-न्यस्त।
Relieving—पद-ग्राही, भारग्राही।
Religious—१ धार्मिक। २. धर्मपरायण।
Religiousness—धर्मपरायणता।
Remark—१. उपकथन, टिप्पणी। २. कैफियत।
Remedial—प्रतिविधिक।
Remedy—प्रतिविधि।
Reminder—अनुस्मारक, स्मरण-पत्र।
Reminiscence—तत्स्मरण।
Remission—१ अवसर्ग। २ छूट।
Remuneration—पारिश्रमिक।
Renaissance—नव-जागरण, पुनरुत्थान, पुनर्जागरण।
Renewal—नवीनीकरण।
Renovation—नवीकरण, पुनरुद्धार।
Rent—किराया।
Rent officer—भाटक अधिकारी।
Repairs—मरम्मत।
Repayment—परिशोध।
Repeal—निरसन।
Repercussion—प्रति-संघात।
Repetition—आवृत्ति, पुनरावृत्ति,पुनरुक्ति।
Replacement—पुनःस्थापन।
Report—१. प्रतिवेदन। २. विवरण-पत्र। सूचना।
Reported—प्रतिवेदित।
Reporter—१ प्रतिवेदी। २. संवाददाता।
Representation—प्रतिनिधित्व।
Representative—प्रतिनिधि।
Representative Government—प्रतिनिधि शासन।
Reprint—पुनर्मुद्रण।
Reprisal—प्रतिपीड़न, प्रतिशोध, प्रत्याघात।
Reproduction—१. तथाकथन। २. प्रजनन। ३. पुनर्जीवन।
Republic—गण-तंत्र, गण-राज्य।
Republican—गणतंत्री।
Repudiation—अस्वीकरण।
Repugnancy—विरोध।
Repulsed—प्रतिक्षिप्त।

Repulsion—विकर्षण।
Request—प्रार्थना।
Requirement—अपेक्षा।
Requisition—अधियाचन।
Rescinding—निरसन।
Research—खोज, गवेषणा, शोध।
Resentment—अमर्ष, रोष।
Reservation—आरक्षण।
Reserved—आरक्षित।
Residence—आवास, निवासगृह।
Residency—पदावास।
Resident—वासामात्य।
Residential—आवासिक, आवसीय, निवासी।
Resignation—त्याग-पत्र।
Resolution—१ निश्चय। २ मंतव्य। ३ संकल्प।
Resonance—अनुनाद।
Resources—संबल, साधन।
Response—अनुक्रिया।
Responsible—उत्तरदायी।
Rest—विश्राम।
Restaurant—भोजनालय।
Restoration—पुनरुद्धार।
Restricted—निर्बंद।
Restriction—१ आरोध। २. पाबंदी, प्रतिबंध, रोक।
Result—परिणाम।
Resultant—फलिक।
Resumption—१. पुनरारंभ। २. पुनर्ग्रहण।
Retail—खुदरा, परचून।
Retired—अवकाश-प्राप्त।
Retirement—१. अवकाश-ग्रहण। २. निवृत्ति ३. विश्रांति।
Retreat—अपयान, अपावर्तन।
Retrenchment—छँटनी।
Retrocognition—पश्च-दर्शन।
Retrogression—पश्चगमन।
Retrogressive—पश्चगामी।
Retrospected—सिंहावलोकित।
Retrospection—अनुदर्शन, पश्च-दर्शन, सिंहावलोकन।
Retrospective—१. पश्चदर्शित, सिंहावलोकित। २. पूर्व-व्यापित।
Return—१. वापसी। २. प्रतिलाभ। ३. प्रत्याय। ४. लेखा, विवरणी।
Returning officer—निर्वाचन अधिकारी।
Return ticket—वापसी टिकट।
Revenge—प्रतिशोध, बदला।
Reversion—१. उत्क्रमण, प्रतिवर्तन। २. विपर्यय।
Review—१. पुनरीक्षण, पुनर्विलोकन। २. प्रत्यालोचन, समालोचना, समीक्षा।
Revised—पुनरीक्षित।
Revision—१. पुनरावलोकन, पुनरीक्षण। २. पुनर्विचार, नजरसानी।
Revival—पुनरुज्जीवन।
Revived—पुनरुज्जीवित।
Revocation—प्रतिसहरण।
Revolution—१ परिक्रमण। २ क्रांति।
Rhetoric—वक्तृत्व-शास्त्र।
Rheumatism—गठिया।
Rhinoceros—गैंडा।
Rhizome—कंद, प्रकंद।
Rhombus—सम-चतुर्भुज।
Rhythm—लय।
Rhythmical—लयिक।
Rickets—अस्थिदौर्बल्य (रोग)।
Riddle—पहेली।
Right—१. अधिकार। २ स्वत्व।
Right of easement—सुखाधिकार।
Right of passage—मार्गाधिकार।
Right wing—दक्षिण-मार्ग।
Rigorous imprisonment—कड़ी सजा, सपरिश्रम-कारावास।
Rise—उदय।
Risk—जोखिम।
Risk owner's—धनी सिर।
Ritual right—संस्कार।
Rival—प्रतिस्पर्धी।
Rivalry—प्रतिस्पर्धा।
Roasting—भूनना।
Robe—महावस्त्र।
Robot—यंत्र-मानव।
Rod—दंड।
Role—चौरंक।
Roll—खर्रा।
Roller—बेलन।
Rope-way—रज्जु-मार्ग।
Rose—गुलाब।
Rosy—गुलाबी।
Rotation—घूर्णन, परिभ्रमण।
Rough—स्थूल।
Round—चक्र।
Roundworm—केंचुआ।
Routine—नित्यचर्या, नेम, नैत्यक।
Royal—राजकीय, राजशाही।
Royalty—स्वत्व-शुल्क।
Rule—नियम।
Rule of three—त्रैराशिक।
Ruling—व्यवस्था।
Runner—१. दौड़ाक। २. धावक।
Rural uplift—ग्राम-सुधार।

## S

Sabotage—अंतर्ध्वंस, तोड़-फोड़, ध्वंसन।
Saccharimeter—शर्करामापी।
Saccharose—इक्षु-शर्करा।
Sacrament—संस्कृति।
Safeguard—रक्षाकवच, रक्षोपाय।
Safety—क्षेम।
Saffron—केसर
Sagittarius—धनु (राशि)।
Sale-deed—बैनामा, विक्रय-पत्र।
Sales journal—विक्रय-पंजी।
Sales tax—बिक्री-कर, विक्रय-कर।
Salivary gland—लाला-ग्रंथि।
Salmon—वि० गेरुआ।
स० मुषुपश्चा (मछली)।
Salvage—१. निस्तार, निस्तारण। २. भ्रशोद्धार।
Salvation army—मुक्ति-सेना।
Sample—बानगी।
Sanction—१. मंजूरी, स्वीकृति। २. अनुशासन, अनुशासित।
Sanctioned—स्वीकृत।
Sanctuary—शरण-क्षेत्र, शरण-स्थान।
Sandfly—मरु-मक्षिका।
Sanitation—१. शुचिता, स्वच्छता। २. स्वास्थ्य-रक्षा।
Sanitorium—आरोग्य-आश्रम, स्वास्थ्य-निवास।
Sap—रस।
Sappers and miners—सफरमैना।
Sapphire—नीलम, नील-मणि।
Sapwood—रस-दारु।
Sarcasm—कटाक्ष।
Satellite—उपग्रह।
Satire—व्यंग्य-गीति।
Satisfaction—मनस्तोष।
Saving—बचत।
Scale—१. काँटा। २. परिमाण, मापनी। ३ शल्क।
Scale leaf—पाताली पत्ती।
Scalene—विषम-बाहु, विषम-भुज।
Scandal—बदनामी।
Scattering—प्रकीर्णन।
Scene—दृश्य।
Scenery—दृश्य।
Scepticism—संशयवाद।
Schedule—परिगणित।
Scheme—परियोजना, योजना।
Schizophrenia—अंतरबंध।
Scholar—कृत-विद्य।
Scholarship—छात्र-वृत्ति।
School—१. शाखा। २. संप्रदाय। ३. विद्यालय।
Sciatica—गृध्रसी।
Science—१. विज्ञान। २. शास्त्र।

Scolding—आक्रोश।
Scorched earth—धर्ब-क्षार।
Scorpio—वृश्चिक (राशि)।
Scout—चर।
Screen play—चित्र-लिपि।
Screw—पेच।
Scriptures—आगम।
Scrofula—कंठ-माला।
Scroll—छर्रा, चीरक, वर्ति-लेख।
Scrutiny—सपरीक्षण, सवीक्षा।
Scurrility—अपभाषण।
Scurvy—प्रशीतांद।
Sea-green—समुद्र-लहरी।
Seal—मुद्रा, मोहर।
Seal of office—पद-मुद्रा।
Seance—आत्मायन।
Sea-quake—समुद्र-कंप।
Search-light—अन्वेषक-प्रकाश, विचयन-प्रकाश, खोजबत्ती।
Seasoning—लोनना (लकड़ी)।
Sea voyage—समुद्र-यात्रा।
Secant—छेदिका।
Secondarily—परतः।
Secondary—परवर्ती (वनस्पति विज्ञान)।
Secondary education—माध्यमिक शिक्षा।
Seconding—अनुमोदन, समर्थन।
Second person—मध्यम पुरुष।
Secret—रहस्य।
Secretariat—सचिवालय।
Secretary—सचिव।
Secretion—१ नि.सारण। २. स्राव।
Section—१. अनुभाग, प्रभाग। २. दफा, धारा।
Sectional—अनुभागीय।
Sector—१. क्षेत्रक। २ वृत्तखंड। (ज्यामिति)
Secular—१. ऐहिक, धर्म-निरपेक्षता। २. लौकिक।
Secularism—धर्म-निरपेक्ष।
Secular state—ऐहिक राज्य, धर्म-निरपेक्ष राज्य, लौकिक राज्य।
Security—१. सुरक्षा। २. प्रतिभूति, मुचल्का।
Security Council—सुरक्षा-परिषद।
Sedative—शामक।
Sediment—अवसाद, कल्क, तलछट।
Sedimentary—अवसादी।
Sedition—राजद्रोह।
Seismic—भूकंपीय।
Seismograph—भूकंप-लेखी।
Seismology—भूकंप-विज्ञान।
Seismometer—भूकंप-मापी।
Select Committee—प्रवर-समिति।
Self—आत्म।
Self-acquired—स्व-अर्जित। स्वार्जित।
Self-assertion—आत्म-स्थापन।
Self-confidence—आत्म-विश्वास।
Self-consciousness—१. आत्म-चेतना। २. आत्म-संकोच।
Self-contained—आत्म-संरित।
Self-defence—स्व-रक्षा।
Self-determination—आत्म-निर्णय।
Self-government—स्व-शासन।
Self-loading—स्वयं-भर।
Self-p aise—आत्म-प्रशंसा।
Self-realization—आत्म-सिद्धि।
Self-respect—आत्म-गौरव, स्वाभिमान।
Self-starter—स्वचालक।
Semanteme—अर्थ-तत्व।
Semantic change—अर्थ-विकार।
Semantics—अर्थ-विधान।
Semblance—साम्य, सारूप्य।
Semi—अर्ध।
Semi-circle—अर्ध-वृत्त।
Seminar—विचार-गोष्ठी।
Semination—गर्भ-स्थापन।
Sender—प्रेषक।
Senility—वृद्धावस्था।
Senior—प्रवर।
Sensation—सनसनी।
Sense—१ भाव। २ संज्ञा।
Sense of humour—विनोद-वृत्ति।
Sense organ—ज्ञानेन्द्रिय।
Sensibility—संवेदना।
Sensory—सांवेदिक।
Sensualism—इंद्रियार्थवाद।
Sentence—वाक्य।
Sentiment—१. मनोभाव। २. रस।
Septic—वि० पूतिदूषित, पौतिक। सं० पूति।
Septic tank—पूति-कुंड, सडास-टंकी।
Sequnce—अनुक्रम।
Serial number—क्रम-संख्या।
Series—१. क्रमक। २ शृंखला। ३. श्रेणी।
Serpentine—सर्पिल।
Serum—सौम्य।
Servant—१. नौकर। २. सेवक।
Service—१. अनुपालन। २. नौकरी। ३ सेवा।
Service book—सेवा-पंजी।
Session—१ अधिवेशन। २. सत्र।
Session Court—सत्र-न्यायालय।
Session Judge—दौरा-जज।
Set—कुलक।
Set aside—अन्यथा करना।
Set square—कोनिया।
Settlers—आबादकार।
Sex—लिंग।
Sexology—यौनिकी।
Sexual—यौन, लैंगिक।
Sexuality—यौनता, लिंगित्व।
Sexy—यौनिक।
Shade—१. छाया। २. आभा। ३. छाँप।
Shading—छायाकरण।
Shadowgraph—छाया-चित्र।
Shaft—कूपक।
Shaker—हल्लित्र।
Shape—आकृति।
Share—अंश, हिस्सा।
Share-holder—अंश-धारी, हिस्सेदार।
Sharer—सह-भागी।
Shark—शोर, हाँगर।
Shavings—छीलन।
Sheet—फलक।
Shell—खोल।
Shelter—१ आश्रय। २. शरणगृह।
Sheriff—सुमान्य।
Shield—ढाल, सिपर।
Shift—पाली।
Shirt—कमीज।
Shock—संक्षोभ।
Shorthand—१ आशुलिपि। २. संक्षिप्त-लिपि।
Short-lived—१. अल्प-जीवी, अल्पायु। २. अल्पकालिक।
Show-down—बल-परीक्षा।
Shrinkage—आकुंचन।
Shrub—क्षुप।
Sib—सहोदर।
Side—भुजा।
Sidereal year—नाक्षत्र-वर्ष।
Siege—घेराबंदी, नाकेबंदी, रोध।
Sighting—लक्ष्य-साधन।
Signatory—हस्ताक्षरक।
Signature—हस्ताक्षर।
Sign-board—नाम-पट्ट।
Signed—स्वाक्षरित।
Silencer—नि.शब्दक।
Silent—अनुच्चरित।
Silk cotton—सेमल।
Silver Jubilee—रजत जयंती।
Silver screen—रजत-पट।
Silver standard—रजत-मानक।
Similar—सदृश, समान।
Similarity—सादृश्य।
Simple—सादा।
Simple imprisonment—सादी सजा।
Simplification—सरलीकरण।

Simultaneous—१. युगपत्, समकालीन। २. समकालिक।
Sinew—कंडरा।
Singular—वि० अनूठा। सं० एकवचन (व्याकरण)।
Sinus—नाड़ी व्रण, नासूर।
Sit-down strike—बैठकी हड़ताल, बै-हड़ताल।
Site—स्थल।
Site plan—स्थलालेख्य।
Sitting—बै क।
Size—आकार।
Sketching—आकार-रेखन।
Skillful—कुशल।
Skilled—कुशल।
Skin—चमड़ा।
Skirmish—झड़प
Skull—कपाल, खोपड़ी।
Sky—आकाश।
Sky-blue—आसमानी।
Sky-scraper—अभ्रंकष, गगनचुंबी।
Slag—१ कांच, मल, खेड़ी। २ धातु-मल। ३ कंकर।
Slaughter house—बधालय।
Sleeper—शयनिका।
Sleeping movement—निद्रा-गति।
Sleet—हिमी-वर्षा।
Slight—अवधीरण।
Slip—चूक, भूल।
Slogan—घोष, नारा।
Sloth—आलावली, सुस्तपाँव।
Slow fever—मंद-ज्वर।
Slum—गंदी बस्ती, मलिनवास।
Small intestine—क्षुद्रांत्र।
Smoke-blue—अब्बासी (रंग)।
Smoke-screen—धूम-पट।
Smuggler—चौकीमार, तस्कर-व्यापारी।
Smuggling—चौकीमारी, तस्करी, तस्कर-व्यापार।
Snipe—चाहा (पक्षी)।
Snow-bite—तुषार-दंश, हिम-दंश।
Snow-line—तुषार-रेखा, हिम-रेखा।
Snowman—हिम-मानव।
Snow-storm—बर्फानी, तूफान, हिम-झंझावात।
Soap stone—चेरा पत्थर।
So-called—तथाकथित, तथोक्त।
Socialism—समाजवाद।
Socialist—समाजवादी।
Socialization—समाजीकरण।
Social reform—समाज-सुधार।
Social reformer—समाज-सुधारक।
Society—सोसाइटी।
Sociology—समाज-शास्त्र।
Socrates—सुकरात।
Soft—कोमल।
Soft currency—सुलभ-मुद्रा। तत्काल-गणक।
Solace—तोष।
Solar—सौर।
Solar eclipse—सूर्य-ग्रहण।
Solar system—सौर-जगत, सौर मंडल।
Solar year—सौर वर्ष।
Soldering—१. झलाई। २. कोई।
Sole—एकल।
Sole Corporation—एकल निगम।
Solicitation—अनुयोग।
Soliloquy—स्वगत-कथन।
Solipcism—अहंवाद।
Solitary cell—काल-कोठरी।
Solstice—अयन।
Soluble—विलेय।
Solution—१ घोल, मिश्रण। २. हल (समस्या का)।
Sonority—स्वरता।
Sonorous—स्वरित।
Sore throat—गल-शोथ।
Sorrow—दुःख।
S. O. S.—संकट-संकेत।
Soul—अंतरात्मा, आत्मा।
Sound—वि० स्वरूप। सं० १. ध्वनि, शब्द। २ स्वर।
Sound box—नाद-पेटी।
Source—स्रोत।
South Pole—कुतुब, दक्षिणी ध्रुव।
Souvenir—स्मारिका।
Sovereign—वि० प्रभु-सत्ताक। सं० अधिराज।
Sovereign state—प्रभु-राज्य।
Sovereignty—१ प्रभु-सत्ता। २. अधिराज।
Soya-bean—भटतास, भटवाँस।
Space—१ अंतरिक्ष। २. अवकाश।
Space-ship—अंतरिक्ष-यान, व्योम-यान।
Spacing—अंतरण, अंतरालन।
Spark—स्फुलिंग।
Spasm—ऐंठन।
Speaker—१. अध्यक्ष। २. प्रमुख। ३ वक्ता।
Specialization—विशिष्टीकरण।
Special number—विशेषांक।
Spectrum—वर्ण-क्रम।
Speculation—फाटका, सट्टा।
Speculator—सट्टेबाज।
Speech—वक्तृता, व्याख्यान।
Speech of brevity—समासोक्ति।
Spelling—अक्षरी, वर्तनी।
Spermatozoan—शुक्राणु।
Sphere of influence—प्रभाव-क्षेत्र।
Spherical—१. गोल, गोलाकार। २. सर्व-वर्तुल।
Spicing—छौंकना, बघारना।
Spike—सूली।
Spinal—सौषुम्न।
Spinal cord—मेरु-रज्जु।
Spine—पृष्ट-वंश।
Spinning—कताई, कातना।
Spiral—पेचक।
Spirit—१. अंतरात्मा। २ प्रेतात्मा। ३ सुरा। ४ सुरासव।
Spiritual—१ आध्यात्मिक। २ प्रेतात्मक
Spiritualism—१ आध्यात्मिकी। २ प्रेतात्मवाद।
Spiritualist—प्रेतात्मवादिक।
Spiritualistic—अध्यात्मवादिक।
Spite—विद्वेष।
Spiteful—विद्वेषी।
Spleen—तिल्ली, प्लीहा।
Splint—बपती, खपची।
Split personality—खंडित व्यक्तित्व।
Splitting—विस्फोटन, विभेदन।
Spokesman—प्रवक्ता।
Sporigy—इल्पर्जी।
Sporadic—छुट-पुट।
Spring—कमानी।
Sprue—संग्रहणी।
Squad, Squadron—दस्ता।
Stabilization—स्थिरीकरण।
Stable—वि० स्थिर। सं० अस्तबल।
Staff—१. अमला। २ ध्वजदंड।
Stage—१ अवस्था, अवस्थान। २ चरण। ३ मंच। ४ रंग-मंच।
Stainless steel—अकलुष इस्पात।
Stamen—पराग-केसर, पुंकेसर।
Stamp paper—पक्का कागज।
Stand—उप-स्तंभ, थाती।
Standard—मानक।
Standardization—मानकीकरण।
Standardized—मानकित।
Standard time—मानक, समय।
Standing committee—स्थायी समिति।
Standing crop—खड़ी फसल।
Starch—१. मंड। २ श्वेत-सार।
Star-dust—तारिका-धूलि।
Star-fish—समुद्र-तारा।
Starvation—भूखमरी।
State—१. दशा। २. राज्य।
State Funds—राज्य-निधि।
Statement—१. अभ्युक्ति, कथन। २ बयान, वक्तव्य। ३. विवरण।

Statesmen—राज-मर्मज्ञ।
State socialism—राजकीय समाजवाद।
Static—स्थितिवील।
Station—अवस्थान।
Stationary—स्थिर।
Stationery—लेखन-सामग्री।
Statics—स्थिति-गणित, स्थैतिकी।
Statistics—१. अंक-शास्त्र। २. सांख्यिकी।
Status—स्थिति।
Status quo—यथा-पूर्व स्थिति।
Statute—संविधि।
Stayed—स्थगित।
Steam—भाप।
Steamer—अगिन-बोट, धूआँ-कल।
Steel—इस्पात।
Stem—स्कंध।
Stenographer—आशुलिपिक, आशुलेखक।
Step—कदम।
Step-motherly—वैमात्रिय।
Sterile—बंध्य।
Sterilization—१. अनुर्वरीकरण। २ निष्कीटन। ३ विसक्रमण।
Sterilized—निष्कीटित।
Sterilizer—निष्कीटक।
Sterling balance—पाउंड-पावना।
Stilt—बैसाखी (लकड़ी का उपकरण)।
Stipula—अनुपत्र।
Stitchcraft—सूईकारी।
Stock—भंडार, मांडार, स्कंध।
Stock-book—मांडार पंजी, स्कंध-पंजी।
Stockist—मांडार-पाल।
Stock-keeper—स्कंध-पाल।
Stomach—आमाशय।
Stone—१. पत्थर, प्रस्तर। २. अष्ठि (फलों की गुठली)। ३. अश्मरी, पथरी (रोग)।
Stool examination—मल-परीक्षा।
Storey—खंड।
Storm—तूफान।
Story—कहानी।
Straight forwardness—ऋजुता।
Stranger—अजनबी, अनजान।
Strangury—मूत्र कृच्छ (रोग)।
Strata—स्तर।
Strategic area—कूट-क्षेत्र।
Strategic point—कूट-स्थल।
Stratification—स्तरण।
Strawberry—हिसालू।
Strength—शक्ति।
Strike—हड़ताल।
Striker—आघातक (तोप, बन्दूक आदि का)।
Striving—उद्यम।
Strong gale—चंडवात, प्रबल झंझा।
Structure—संरचना।
Struggle—संघर्ष।
Struggle for existence—जीवन-संघर्ष।
Student—१. विद्यार्थी। २ अध्यायी।
Study—१. अध्ययन। २ अनुशीलन।
Study leave—अध्ययनावकाश।
Study room—पाठागार।
Stunt—चकमा।
Stupour—जड़िमा।
Style—सज।
Stylish—सजीला।
Sub—अध।
Sub-clause—उप-खंड।
Sub-conscious—अज्ञात चेतन, अवचेतन।
Sub-family—उप-कुल।
Subject—१. प्रजा। २ विषय।
Subject committee—विषय-निर्धारिणी-समिति।
Subjective—आत्मनिष्ठ।
Sub-judice—न्यायाधीन, विचाराधीन।
Subjugation—अधीनीकरण।
Sublimerial being—अतस्थ सत्ता।
Sub-marine—गोताखोर, पनडुब्बी।
Sub-normal—अनुप्रनम।
Sub-normally—अनुप्रसमत।
Sub-order—उप-गण।
Sub-ordinate—अवस्थ, अधीनस्थ, मातहत।
Sub-ordinate Court—अधीनस्थ न्याय-लय।
Sub-ordinate officer—अधीनस्थ अधि-कारी।
Sub-registrar—उप-पंजीयक।
Subrogation—संकर्षण।
Sub-rule—उप-नियम।
Sub-Scription—चंदा।
Sub-section—उप-धारा।
Subsequent—परवर्त्ती।
Subsidy—उपदान।
Sub-soil—अधोभूमि।
Substance—माद्य।
Substitute—प्रतिस्थापति।
Substitution—प्रतिस्थापन।
Subsumption—उपनय।
Subtle—सूक्ष्म।
Suburle—उप-नगर, परि-नगर।
Suburban—परिनागर।
Succession certificate—उत्तराधिकार प्रमाणक।
Successively—१. अनुपूर्वतः। २. क्रमतः।
Successor—उत्तराधिकारी।
Sufficient—पर्याप्त।
Suffix—पर-प्रत्यय।
Suffocation—घुटन।
Suggestion—सुझाव।
Suicide—आत्म-हत्या।
Suit—दावा, वाद।
Sum—धन-राशि।
Summary—वि० सरसरी। सं० १. सारांश। २. सारांशक।
Summary proceeding—सरसरी प्रक्रिया।
Summary trial—सरसरी व्यवहार दर्शन।
Summer vocation—ग्रीष्मावकाश।
Summit conference—शिखर सम्मेलन।
Summon—आह्वान।
Summons—आकारक, समन।
Sun bath—आतप-स्नान।
Superannuation—अतिहायन।
Superintendence—अवेक्षण।
Superintendent—अधीक्षक।
Superior—प्रवर, वरिष्ठ।
Superiority Complex—उच्चक मनोग्रंथि।
Superman—अतिमानव।
Super-mind—अतिमानस।
Supernatural—आधिदैविक।
Supernumerary—अधिसंख्य।
Superposition—अध्यारोप।
Superseded—अधिकांत।
Supersession—अधिक्रमण, अधिक्रांति।
Supersonic—अति-स्वन।
Superstition—अंधविश्वास।
Super tax—अधि-कर।
Supervising—पर्यवेक्षक।
Supervisor—पर्यवेक्षक।
Supplanting—अभिरोपण।
Supplement—१. अतिरिक्त-पत्र, क्रोड-पत्र, परिशिष्ट। २. अनुपूरक, पूरक।
Supplementary—अनुपूरक, पूरक।
Supplementation—अनुपूरण।
Supplied—समायुक्त।
Supplier—समायोजक।
Supply—१. आपूर्ति। २. पूर्ति। ३. संभरण।
Supposition—कल्पना।
Supreme—सर्वोच्च।
Supreme Court—सर्वोच्च न्यायालय।
Surcharge—अधिप्रभार, अधिभार।
Surfacing—पृष्ठकरण।
Surgical—शल्यक।
Surgical operator—शल्योपचारी।
Surgeon—शल्यकार।
Surgery—१. शल्यकारी, शल्यक्रिया। २. शल्यशास्त्र।
Surmise—अवकल्पना।
Surplus—वि० अतिरिक्त। सं० अभिशेष, बढ़ती।
Surplus budget—उद्वर्त्त।
Surprise—आश्चर्य, ताज्जुब।

Surrealism—अति-यथार्थवाद।
Surrender—आत्म-समर्पण, समर्पण।
Surrender Value—समर्पण-मूल्य।
Survey—१. पैमा श, भूमापन, भूमिति। २. पर्यवलोकन, सर्वेक्षण।
Surveyor—सर्वेक्षक।
Survival—अतिजीवन, उत्तर-जीवन उत्तर-जीविता, परि-जीवन।
Survivor—अतिजीवी, परिजीवी, उत्तर जीवी।
Susceptibility—ग्राह्यता।
Suspected—संदिग्ध।
Suspended—लिलंबित, मुअत्तल।
Suspense—१. अनुलंब। २ असमंजस।
Suspense account— १ उधत, उचित। २. उधत खाता, उचित खाता।
Suspension—निलंबन, मुअत्तली।
Suspicion—संदेह।
Swindler—भगलबाज, भगलिया।
Swindling—भगल, भगलबाजी।
Switch—खटका। बटन।
Symbiosis—सह-जीवन।
Symbal -प्रतिक।
Symbolism—प्रतीकवाद।
Symmetrical—सम-मित, सम्मित।
Symmetry—प्रतिसाम्य, सममिति।
Sympathetic fever—आगतुक ज्वर।
Sympathy—संवेदना, सहानुभूति, हमदर्दी।
Symposium—परिचर्चा, परि-संवाद।
Synchronisation—समकालन, समक्रमण।
Synchroniser—सम-कामक।
Synchronous—सम-क्रमिक।
Syndicate—अभिषद्।
Synod—धर्म-सभा।
Synonym—पर्यायवाची, समानार्थक।
Synonymist—पर्यायज्ञ।
Synonymous—पर्यायवाचक, समानार्थक।
Synonyms—१. पर्याय, समानार्थ। २. पर्याय।
Synonymy—पर्यायकी।
Synopsis—कथा-सार।
Synthe is—संश्लेषण।
Synthetic—सिलष्ट, संश्लिष्ट।
Syphillis—आतशक, उपदंश, गरमी ( रोग)।
Syringe—१. पिचकारी। २. भृगक, सुई।
System—१. पद्धति, प्रणाली। २ तंत्र, संहति-तत्र।

## T

Table—१. मेज। २. सारणी।
Tableau—झाँकी।
Table-Land—अधित्यका, प्रस्थ।
Taboo—वर्जन, वर्जना।
Tabulation—सारणीकरण, सारणीयन।
Tabulator—१. सारणिक। २. सारणी-यंत्र। ३. सारणीकार।
Tactile—स्पर्श-ग्राह्य।
Tadpole—छुछ मछली।
Talk—वार्ता।
Talkie—बोल-पट।
Tangent—स्पर्श-रेखा।
Tangible—मूर्त।
Tanker—टंकी जहाज, तेल पोत।
Tanning—अ० सोझना (चमड़े का)। स० सोझाना (चमड़ा)।
Tap—टोंटी।
Tape—फीता।
Taproot—मूसला।
Tarpanlin—तिरपाल।
Tartan gold—अनारी (रंग)।
Taste—स्वाद।
Tax—कर।
Taxicology—विष-विज्ञान।
Taxidermist—चर्म प्रसाधक। (परि०)
Tear gas—अश्रु-गैस।
Technical—१ पारिभाषिक (शब्द)। २ तकनीकी, प्राविधिक, रचना-तत्री।
Technicality—प्राविधिकता।
Technician—प्रविभिज्ञ।
Technical term—परिभाषा, पारिभाषिक शब्द।
Technique—क्रिया-कलाप, तकनीक प्रविधि, रचना-तत्र।
Telecommunication—दूर-सचार।
Telegram—तार, दूर-लेख।
Telegraph—दूर-लेखक।
Telegraphic—दूर-लेखी।
Telegraphically—दूर-लेखत।
Telegraphic money order—दूर-लेखी धनादेश।
Telegraphist—दूर-लेखक।
Telemeter—दूर-मापक।
Telepathist—अतींद्रिय ज्ञानी।
Telepathy—अतींद्रिय ज्ञान, पारेंद्रिय ज्ञान।
Telephone—दूर-भाषक।
Telephonic—दूर-भाषिक।
Telephotograph—दूर-चित्रण।
Telephotography—दूर-चित्रण।
Teleprint—दूर-मुद्र।
Teleprinter—दूर-मुद्रक।
Teleprinting—दूर-मुद्रण।
Telescope—दूर-दर्शक, दूर-वीक्षक।
Telescism—दूर-कंप।
Television—दूर-दर्शन।
Teller—मत-गणक।
Telling—गत-गणन।
Temperate zone—उष्णशीतोष्ण कटिबंध।
Temperature—तापमान।
Tempest—अतिवात।
Temporary—१. अल्पकालिक। २. अस्थायी।
Temptation—प्रलोभ, प्रलोभन।
Tenacious—अभिसक्त।
Tenacity—अभिसक्ति।
Tenant—असामी, काश्तकार।
Tendency—प्रवृत्ति।
Tender—निविदा।
Tendon—कंडरा।
Tenement—आधृक्ति, आभोग।
Tense—आतानिक।
Tenser—आतानक।
Tension—आतति, तनाव।
Tenure—१. पदावधि। ३. स्थायित्व।
Tenure holder—खातेदार।
Term—अवधि। २ कार्य-काल। ३ शर्त।
Terminal—१ आंतिक, आवसानिक। २. आवधिक।
Terminal tax—आवसानिक-कर, सीमा-कर।
Termination—१. अवसान। २. परिसमापन। ३. पर-प्रत्यय (व्याकरण)।
Terminology—पारिभाषिकी, शब्दावली।
Terminus—अवसानक।
Terrace gun—बुर्ज-तोप।
Terrace-like—सम-समुन्नत, सीढीनु
Terracota—मृण्मूर्ति।
Terrestrial—स्थलज।
Territorial—१. क्षेत्रिक। २. प्रादेशिक।
Territorial Army—प्रादेशिक सेना।
Territorial waters—क्षेत्रीय समु , जल-प्रांगण, प्रादेशिक समुद्र।
Territory—भू-भाग, राज्य-क्षेत्र।
Terror—आतंक।
Terrorism—आतकवाद।
Terrorist—आतकवादी।
Terse—परिसहत।
Testing—परीक्षण।
Test piece—परीक्षण शलाका।
Test tube—परीक्षण नलिका।
Tetanus—धनुर्वात, धनुष-टकार, धनुस्तंभ।
Tetra hedron—चतुष्फलक।
Tetraoden—मनुष्य शीर्ष।
Text—पाठ, मूल-पाठ।
Text book—पाठ्य-पुस्तक।
Textual criticism—पाठालोचन।
Texture—पोत।
Theism—१. आस्तिकता। २. ईश्वरवाद।
Theist—ईश्वरवादी।
Theme— १. कथा-सूत्र। २. विषय। ३. विषय-वस्तु।
Theocracy—धर्म-तंत्र।
Theocratic—धर्म-तंत्री, मजहबी।

Theocratic State—धर्म-तंत्री राज्य, मध-हवी राज्य।
Theomania—धर्मोन्माद।
Theorem—प्रमेय।
Theory—१. उपपत्ति, सिद्धांत। २. मत, वाद।
Theory of evolution—विकास-वाद।
Therapy—चिकित्सा।
Thermal—तापीय।
Thermal electricity—ताप-बिजली।
Thermograph—ताप-लेखी।
Thermometer—तापमापक-यंत्र।
Thermos—फलंघ।
Thesis—प्रबंध।
Third person—अन्य-पुरुष। (व्या०)
Thorn—काँटा।
Thorny—कटकाकीर्ण, कँटीला।
Thread सूत, सूत्र।
Threadworm—सूत्र-कृमि।
Threat—धमकी।
Three dimensional—त्रिविध।
Thrombosis—शिरावरोध।
Thumb impression—अँगूठे का निशान, अँगूठे की छाप।
Thyroid अवटुका।
Thyroid gland—अवटुका ग्रंथि, अवटु ग्रंथि, गल ग्रंथि।
Tick—किलनी।
Tidal waters—वेला-जल।
Tide—भाटा।
Tie and dye—बाँधनू।
Timber—इमारती लकड़ी।
Time—काल।
Time-barred—कालातीत।
Time bomb—समय-बम।
Time signal—समय-संकेत।
Time-table—समय-सारिणी।
Tinge—आभा।
Tissue—ऊतक।
Title—१. आगम। २. उपाधि, पदवी।
Title of honour—मानोपाधि।
Title page—मुख पृष्ठ।
Titration—अनुमापन।
Toilet—अभ्यंजन, प्रसाधन।
Toilet water—गंधोदक।
Token—संकेत।
Toll tax—पथ-कर, मार्ग-कर।
Tonnage—नौभार।
Tonsil—गलांकुर, तुंडिका।
Tonsillitis—तुंडिका शोथ।
Tool—औजार।
Torid zone—उष्ण-कटिबन्ध।
Tort—दुष्कृति।
Toss—निक्षेप-निर्णय।
Total—जोड़, योग।
Total eclipse—खग्रास (ग्रहण)।
Totalitarianism—एक दल-वाद।
Total war—समग्र युद्ध।
Totally—सर्वतः।
Touch—स्पर्श।
Touchstone—कसौटी।
Tour—परिक्रम।
Toxic—विषाक्त, वैषिक।
Toxin—जैव-विष।
Town area—पत्तन-क्षेत्र।
Trachea—श्वास-नली।
Tracing—अनुरेख, अनुरेखन।
Tract—भूखण्ड।
Tractor—कृषि-यन्त्र, हल-यन्त्र।
Trade—व्यापार।
Trade balance—व्यापार-तुला।
Trade cycle—व्यापार-चक्र।
Trade mark—मार्का, व्यापार छाप।
Trades tax—व्यापार कर।
Trade union— व्यवसाय संघ।
Tradition—परम्परा।
Traditional—परम्परागत, पारम्परिक।
Traditionalism—परम्परावाद।
Tragacanth—कतीरा (गोंद)।
Trained—प्रशिक्षित।
Trainee—प्रशिक्षणार्थी, प्रशिक्षार्थी।
Training—प्रशिक्षण।
Training college—प्रशिक्षण महाविद्यालय।
Training school—प्रशिक्षण विद्यालय।
Trajectory—१. प्रक्षेप-पत्र। २ प्रक्षेप-चक्र। ३ प्रासायन।
Trance—१ तन्मयता। २. समाधि।
Tranquillity—प्रशान्ति।
Transaction—पणाया, परायावर्त्त।
Transcription—प्रतिलेखन।
Transfer—बदली।
Transferable—हस्तान्तरणीय।
Transferee—१. अन्तरिती (तिन्)। २. हस्तांतरिती, हस्तान्तरी।
Transference—१ अन्तरण। २. स्थानान्तरण। ३ हस्तान्तरण।
Transferor—१. अन्तरितक। २. हस्तान्तरक, हस्तांतर-कर्त्ता।
Transferred—१ स्थानान्तरित। २. हस्तान्तरित।
Transformation—रूपान्तरण।
Transformer—सं० परिणामित्र। वि० परिवर्तक।
Transfusion—आधान।
Transgression अतिक्रमण।
Transit—पार-गमन, पार-वहन।
Transit pass—निकासी-पत्र।
Translation—१. अनूदन, भाषान्तरण। २. अनुवाद, उल्था, तरजुमा, भाषान्तर।
Translator—अनुवादक, भाषान्तरकार।
Transliteration—१. लिप्यन्तरण। २. लिप्यन्तर।
Transmigration—पुनर्जन्म।
Transmission—पारेषण, सम्प्रेषण।
Transmitter—पारेषक, संप्रेषक।
Transparent—पारदर्शक।
Transport—परिवहन।
Transposition—क्रम-परिवर्तन, विपर्यय।
Transverse—अनुप्रस्थ, आड़ा।
Travelling—सचल।
Travelling allowance—यात्रा-भत्ता।
Treasure—कोष, खजाना।
Treasurer—कोषाध्यक्ष, खजानची।
Treasury—१. खजाना। २. राजकोष।
Treatment—१ उपचार। २. चिकित्सा।
Treaty—१. सन्धि, सुलह। २ सन्धि-पत्र, सुलहनामा।
Trench—खाई।
Trespass—अतिचार।
Trial—परिदर्शन, विचार, विचारण।
Tribunal—अधिकरण, न्यायाधिकरण।
Tributary—सहायक नदी।
Trick—१ चाल, २. चालबाजी।
Triennal—त्रैवार्षिक।
Trigger—लिबलिबी।
Triplate—त्रयी।
Trisection—सम-त्रिभाजन।
Trolly—ठेला।
Trophy—जय-चिह्न, विजयोपहार।
Tropic—कटिबन्ध।
Tropical year—सायन वर्ष, सावन वर्ष।
Tropics—अयन-वृत्त।
Truce—अवहार।
True—सत्य।
Trump—तुरुप (खेल)।
Trump card—विजयास्त्र।
Trust—न्यास, प्रन्यास।
Trustee—न्यासधारी, न्यासी।
Tuberous—कन्दिल।
Tube well—नल-कूप।
Tuition—उपशिक्षण।
Tumour —अर्बुद।
Tunnel—जोगड़ा, सुरंग।
Turning point—आवर्त्त-बिन्दु।
Turpentine—तारपीन।
Tutor—उपशिक्षक।
Twilight—१. अरुणाभा, झुटपुटा। २. सन्ध्यालोक, सान्ध्य-प्रकाश।
Twist—ऐंठन।
Two dimensional—द्विविम।

Type—१. प्रकार। २. मु । ३. प्रतिरूप, प्ररूप।
Type metal—मुद्र-धातु।
Type writer—मु -लेख।
Type writing—टंकण, टाइपकारी, मुद्र-लेखन।
Typhoid—आंत्रिक ज्वर, मिआदी बुखार।
Typhus—तंत्रिक ज्वर।
Typical—१. । २. प्ररूपी, प्रारूपिक।
Typist—कंक, मुद्रलेखक।
Tyranny—अत्याचार, जुल्म।
Tyrant—अत्याचारी।

## U

Ultimately—अंततोगत्वा।
Ultra microscope—अतिसूक्ष्मदर्शी।
Ultra nationalism—अति राष्ट्रीयतावाद।
Ultra nationalist—अति-राष्ट्रीयतावादी।
Umbra—पछाया।
Umpire—१ अकबार, आप्त। २. पच।
Unable—असमर्थ।
Unacquainted—अनभिज्ञ।
Unalterable—अविवर्त्य।
Unanimity—सर्व-सम्मति।
Unarmed—निरस्त्र।
Unavoidable—अनिवार्य।
Uncalled for—अनाहत।
Uncastrated—आँड़।
Uncertainty—अनिश्चय।
Uncommon—असाधारण।
Unconscious—अचेत, बेहोश।
Unconsciousness—अचेतना, बेहोशी।
Unconstitutional—अवैधानिक।
Uncontrolled—अनियंत्रित।
Uncultivated—अकृषित।
Uncurrant—अप्रचलित।
Under—अधस्थ।
Under-current—अंतर्धारा।
Underground—पाताली, भूमिगत।
Underline—अधोरेखा।
Underlining—अधोरेखन।
Undermining—तलोच्छेदन।
Understood—अध्याहृत।
Undesirable—अवांछनीय।
Undone—अकृत।
Undue—अनुचित।
Unearned—अनर्जित।
Uneducated—अशिक्षित।
Unemployed—अनियुक्त, बेकार।
Unemployment—अनियुक्ति, बेकारी।
Unending—अनंत।
Unfortunate—अभागा।
Uni-axial—एकाक्ष।
Unicameral—एकसदनी।
Unification—एकीकरण।
Uniform—वि० एक समान। सं० परिच्छद, वरदी, वर्दी।
Unilateral—एक-पक्षीय।
Unique—अद्वितीय।
Unisexual—एकलिंगी।
Unit—१ अवद। २. इकाई। ३. मानक-इकाई।
Unitary—एकात्मक, मात्रिक।
Unitary state—एकात्मक राज्य।
United Nations—संयुक्त-राष्ट्र-संघ।
Unity—१ एकता, एका। २. अन्विति। (नाटक की)
Universal—१. विश्वक। २. सर्वव्यापी, सार्विक। ३. सार्वत्रिक, सार्वदेशिक।
Universalism—सर्ववादवाद।
University—विश्वविद्यालय।
Unknowable—अज्ञेय।
Unknown—अज्ञात।
Unlimited—१ अपरिमित। २ असीम।
Unnatural—अनैसर्गिक, अप्रकृत, अप्राकृतिक।
Unobserved—अलक्षित।
Unpaid—१ अदत्त। २. अभृतक।
Unparliamentary—असांसद।
Unquestionable—अशंकनीय।
Unsaleable—अविक्रेय।
Unscientific—अवैज्ञानिक।
Unseated—अनासीन।
Unseen—अनदेखा।
Unsexual—अलैंगिक।
Unstability—अस्थिरता।
Unstable—अस्थायी।
Unsymmetrical—अ-सम्मित।
Unthinkable—अविचार्य।
Untimely—असामयिक।
Untouchability—अस्पृश्यता।
Untouchable—अछूत, अस्पृश्य।
Untrained—अप्रशिक्षित।
Unusual—अप्रायिक।
Unveiled—अनावृत।
Unveiling—अनावरण।
Unvoluntary—अनैच्छिक।
Upper class—उच्च वर्ग।
Uprising—उत्प्लव, विद्रोह, विप्लव।
Uptodate—अद्यतन, दिनाप्त।
Uranus—उरण।
Ureltra—मूत्र-मार्ग।
Urge—प्रेरक।
Urgent—तात्कालिक, तुरंती, सद्यस्क।
Urinasy bladder—मूत्राशय, वस्ति।
Urine examination—मूत्र-परीक्षा।
Ursa Major—सप्तर्षि।
Urti caria—जुड़-पित्ती, शीतपित्त।
Usage—१ उपचार। २. प्रचलन, प्रथा। ३ प्रयोग।
Use—१. उपयोग। २. प्रयोग।
Usual—१. चलित। २. प्रायिक। ३. साधारण।
Uterus—गर्भाशय।
Utilitarian—उपयोगितावादी।
Utilitarianism—उपयोगितावाद।
Utility—उपयोगिता।
Utterance—उक्ति।
Uvula—अलि-जिह्वा।
Uvular—अलि-जिह्वीय।

## V

Vacancy—रिक्तता।
Vacation—अधिग्रहण, छुट्टी।
Vaccination—टीका।
Vaccinator—टीकाकार।
Vacuum—वि० निर्वात। सं० विशून्य।
Valid deed—सलेख।
Valuation—मूल्यन, मल्यांकन।
Valve—कपाट।
Vaporization—वाष्पन।
Vapour—भाप, वाष्प।
Vapour bath—१. उष्मा स्वेद। २ वाष्प-स्नान।
Variable—चल (गणित)।
Vascular—वाहिनीय।
Vegetarian—निरामिष-भोजी, शाकाहारी।
Venerecology—मैथुनिकी।
Venom—गरल।
Ventilater—वातायनी, हवाकश।
Ventilation—अंजन-संचालन, हवादारी।
Ventral—अक्षीय।
Ventricle—निलय।
Verbal noun—क्रियार्थक संज्ञा।
Verdict—अधिमत।
Verification—सत्यापन।
Verified—सत्यापित।
Vermition—सं०, ईं र, सिंदूर। वि० सिंदूरी (रंग)।
Verse—पद्य।
Vertebrate—कशेरुक-दंडी, कशेरुकी।
Vertex—शीर्ष।
Vertical—उदग्र, ऊर्ध्व। खड़ा।
Vertical angle—शीर्ष-कोण।
Vessel—वाहिका, वाहिनी।
Vested—अधिष्ठित।
Vested interest—अधिष्ठित स्वार्थ।
Vesting—अधिष्ठान।
Veterinary—पशु-चिकित्सा।

Veterinary surgeon—पशु-चिकित्सक।
Veto—निषेधाधिकार, प्रतिषेधाधिकार, रोध अधिकार।
Via media—मध्यम मार्ग।
Vice-chairman—उपाध्यक्ष।
Vice-chancellor—उप-कुलपति।
Vice-President—उप-सभापति।
Vice Versa—प्रतिक्रमात।
View—दृश्य।
Viewpoint—दृष्टिकोण।
Vigilance—१. चौकसी, सतर्कता। २. निगरानी।
Vigilant—चौकस, जागरूक, सतर्क।
Vigour—ओज।
Virgin—अक्षत-योनि, कुमारी।
Virgo—कन्या (राशि)।
Venris—विषाणु।
Visa—अनुवेश-पत्र, अनुवेशिका, वीजा।
Visibility—दृश्यता।
Visitor—१. मुलाकाती। २. दर्शक। ३. दर्शयति। ४. दर्शाधिकारी (परि०)
Visitor's book—आगंतुक पंजी, दर्शक पंजी, दर्शक पुस्तिका। (परि०)।
Visual—दृश्य।
Vitamin—विटामिन।
Vitriol—कासीस।
Vituperation—गाली-गलौज।
Viva voce—मौखिक परीक्षा।
Vocabulary—शब्दावली।
Vocal cord—स्वर-सूत्र।
Vocation—व्यवसाय।
Void—परिशून्य।
Volatile—वाष्पशील।
Volt—ऊर्म।
Voltage—ऊर्जमान, विद्युत दाब।
Volume—१. आयतन। २. खंड (ग्रंथ का)।
Volumetric—आयतनीय।
Volumetry—आयतन मिती।
Vuluntarily—स्वेच्छया।
Voluntary—स्वैच्छिक।
Volunteer—स्वयंसेवक।
Vote—मत।
Voting—मतदान।
Voting paper—मत-पत्र।
Voucher—आधार-पत्र।
Vowel—स्वर।
Vulva—भग।

## W

Waiting room—प्रतीक्षालय।
Walkout—१. अपक्रमण। २. सदन-त्याग।
Walnut—अखरोट।
Want—ऊनता।
Wanton—स्वच्छन्द।
Ward—१. प्रतिपालय। २. संरक्षित।
Wardboy—किंकर।
Warden—संरक्षक।
Warning—चेतावनी।
War of Independence—स्वातंत्र्य युद्ध।
War of nerves—आतंक युद्ध।
Warrant—अधिपत्र।
Warrior—योद्धा।
Warship—युद्ध-पोत।
Wasp—गंवारिका, बर्रे, भिड़।
Wasting disease—क्षीणक रोग।
Water chestnut—सिंघाड़ा।
Water colour—जल-रंग।
Waterfall—जल-प्रपात। प्रपात, दरी।
Water gas—जल-वायु।
Water-glass—जल-कांच।
Water mark—जल-चिह्न।
Water pipe—नल।
Water pool—जलकुंड। (परि०)।
Waterproof—जल-सह।
Water-rate—१. आबियाना, जल-कर। २. जल-शुल्क।
Water reservoir—जलागार।
Water spout—जल-स्तंभ।
Water tap—नल।
Water tight—जल-रुद्ध।
Water ways—जल-मार्ग।
Wealth tax—विभव कर।
Weapon—शस्त्र।
Weaver—जुलाहा, बुनकर।
Week-end—सप्ताहांत।
Weekly—साप्ताहिक, हफ्तेवार।
Weight—१. तौल। २. भार।
Welding—संधान।
Welfare—१ कुशल-क्षेम, कुशल-मंगल। २ कल्याण।
Westernization—पाश्चात्यीकरण।
Wet-droppery—मद्यनाशुक।
Wheel—चक्र, पहिया।
Whet stone—१. कुरड, कुंडे। २ सान, ३ सिल्ली।
Whip—सचेतक।
Whisper—कानाफूसी, फुसफुस।
White elephant—सफेद-हाथी।
White paper—श्वेत-पत्र।
Whole—समस्त।
Whole sale—थोक।
Whooping cough—कुं-कास, कुकुरखांसी, हांसी।
Wild Buffalo—असा (भैंसा)।
Will—इच्छा-पत्र, रिक्थ-पत्र, वसीयतनामा।
Wind—पवन।
Wind furnace—पवन-भट्ठी।
Winding up—समापन।
Windmill—पवन-चक्की।
Wind storm—आँधी।
Wine—१ आसव। २. मदिरा, शराब।
Wire—तार।
Wire guage—तार-जाली।
Wireless—तारहीन।
Wish—कामना।
Wit—बोध, सुबाधित।
Withdrawal—परावर्तन।
Witness—गवाह, साक्षी।
Wonderful—अद्भुत।
Wooden—काष्ठीय।
Word—शब्द।
Word-meaning—पदार्थ, शब्दार्थ।
Working committee—कार्य-समिति।
Working day—कार्य-दिवस।
Workshop—कर्म-शाला।
Worry—चिंता।
Worth—अर्घ।
Writ—आदेश-लेख, परमादेश, प्रादेश, समादेश।
Writing off—अपलेखन।
Writ of mandamus—परमादेश, समादेश-याचिका।
Writ of prohibition—प्रतिषेध-लेख।
Writ petition—समादेश-याचिका।

## Y

Year book—शब्द-कोष, वर्ष-पुस्तिका, वर्ष-बोध।
Yearly—वार्षिक, सालाना।
Yellow fever—पीत ज्वर, पीला बुखार।
Yoke—पीतक।
Younger—कनिष्ठ।

## Z

Zodiac—क्रान्तिवृत्त, शिरोबिंदु।
Zenith—शशि-चक्र।
Zone—१. क्षेत्र। २. मंडल।
Zoo—चिड़िया-घर।
Zoologist—प्राणी-विज्ञ।
Zoology—प्राणी-विज्ञान।